हुइ है सोई (जो) राम रचि राखा,
को करि तरक बढा वहि साषा।

–गोस्वामी तुलसीदासजी

सत्यमेव जयते

उप शिक्षा मंत्री
भारत
DEPUTY EDUCATION MINISTER
INDIA

नई दिल्ली
जनवरी ६, १९६७ ई०

सन्देश

हमारे अपने देश में, जिसे हिन्दी भाषा कहते हैं; उसके अन्तर्गत अनेक उपभाषायें सम्मिलित हैं, जिनमें राजस्थानी का अपना विशेष महत्व है। मेरा सदैव से यह विश्वास रहा है कि हिंदी की उपभाषाओं को शक्तिशाली बनाने से अन्त्वतोगत्वा हिंदी को ही बल मिलेगा और उसके शब्द-भण्डार में वृद्धि होगी। अतः राजस्थानी भाषा के विकास के लिये जो कुछ भी किया जा रहा है, अथवा आगे किया जायेगा, वह समर्थन के योग्य होगा।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि राजस्थान सरकार के तत्वावधान में श्री सीताराम लालसजी जिस राजस्थानी शब्द कोश का संकलन तथा सम्पादन कर रहे हैं, उसका द्वितीय खण्ड प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे उसके प्रथम खण्ड को देखने का अवसर मिला था और मुझे यह अंकित करते हुये प्रसन्नता है कि उसके संकलन तथा सम्पादन में बड़े परिश्रम तथा अध्यवसाय का परिचय दिया गया है। मुझे विश्वास है कि राजस्थानी शब्द कोश का यह द्वितीय खण्ड पहले से भी अधिक उच्चस्तर का होगा और इसके प्रकाशन से राजस्थानी के विकास में विशेष सहयोग मिलेगा।

अतः इस अवसर पर मैं अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ। मैं परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूँ कि इस शब्द कोश का शेष कार्य शीघ्र ही सम्पूर्ण हो और उन सब खण्डों के प्रकाशन के फलस्वरूप राजस्थानी तथा हिन्दी की अतुलनीय सेवा हो सके।

भक्त दर्शन

अपनी बात

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'राजस्थांनी सबद कोस' का द्वितीय खंड हम दो जिल्दों में जिज्ञासु पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में समर्थ हो सके हैं इस 'कोस' का प्रथम खंड आज से चार वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और उसके पश्चात निरंतर आर्थिक कठिनाइयों और विषम परिस्थितियों के बीच में कोश के परिवर्धन, संशोधन एवं संपादन का कार्य तो चलता रहा -- लेकिन प्रकाशन की गति अत्यन्त धीमी हो गई। परिणाम स्वरूप चार वर्ष का दीर्घ व्यवधान आ गया -- जो हमारी पूर्ण विवशता का प्रतिफलन है। हम आज भी यह कहने की स्थिति में नहीं हैं कि आने वाले तृतीय एवं चतुर्थ खंड यथा समय पाठकों की सेवा में पहुँचा सकेंगे -- लेकिन यह अदम्य विश्वास अवश्य है कि जिज्ञासु एवं विद्वान पाठकों के आशीर्वाद से यह कार्य अवश्य पूर्ण होगा और कार्य की गति में तीव्रता आयेगी।

हम द्वितीय खंड को दो विभिन्न जिल्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पूर्व हमने प्रथम खंड में यह इच्छा जाहिर की थी कि द्वितीय खंड की एक जिल्द में 'च', 'ट' तथा 'त' वर्ग तक पहुंच जायेंगे किन्तु अब शीघ्रातिशीघ्र पाठकों तक पहुँचने की दृष्टि से यह निर्णय लेने पर विवश हुए हैं कि प्रत्येक खंड को दो दो उप-खंडों में विभाजित कर दें — ताकि बहुत बड़े समय तक हम नये कार्य से पाठकों को वंचित न रखें।

द्वितीय खंड की संपूर्ति ने हमारे मन में जहाँ एक ओर आत्म विश्वास को दृढ़ बनाया है — अर्थाभाव की कठिनाइयों के कारण चार वर्षों में प्रत्येक क्षण ने मन को झकझोर भी दिया। कितने ही ऐसे अवसर भी आये — जब यह विश्वास ही टूटने लगा कि कोश का वृहद एवं पवित्र कार्य कही अधूरा ही नहीं रह जाय — लेकिन कोशकर्ता एवं संपादक श्री सीताराम लालस के अपार धैर्य, आश्वस्त निष्ठा और अनवरत साधना के कारण कार्य चलता ही रहा और ऐन-केन सफलता भी मिली ही। हमारे लिये यह अत्यन्त कठिन निर्णय था कि आने वाले भागों के वृहद खंडों को उपखंडों में विभाजित करें या न करें। उससे पाठक लाभान्वित होंगे या नहीं। कहीं कोश की योजना को आघात तो नहीं पहुँचेगा। किन्तु कोश की संपूर्ण आत्मा को सशक्त एवं सजीव बनाये रखने का अमित विश्वास हमें यह शक्ति प्रदान कर सका कि उपखंडों का विभाजन मात्र बाह्य-आकार का ही परिवर्तन है — इससे न सर्वांगीणता में अन्तर आयेगा और न शब्द-विवेचना की गंभीरता में ही फर्क आने वाला है। मुख्य योजना को भी बदलने का प्रयास नहीं है — यह उपखंडीय विभाजन तो व्यवस्थागत कठिनाइयों का व्यावहारिक प्रतिपालन मात्र है। कोशकार्ता एवं संपादक श्री सीताराम लालस की एकनिष्ठ साधना एवं शब्दगत तन्मयता को ही हमने अपने सामने रखना उचित समझा।

कोश-प्रकाशन की आर्थिक कठिनाइयों का विगतवार हवाला स्वयं कोशकर्ता एवं संपादक ने अपने संपादकीय निवेदन में व्यक्त किया है। किन्तु उन कठिनाइयों के दौरान में स्वजनों के सद्भाव उनकी सत्प्रेरणा और विश्वास दिलाने की कनुकंपा ही हमारे लिए सौभाग्य की बात थी। इस काल में डा० लक्ष्मीमल सिंघवी संसद सदस्य, ठाकुर श्री भैरूंसिंहजी खेजडला, ठाकुर श्री केसरीसिंहजी जोजावर, ठाकुर श्री गोवर्धनसिंहजी मेड़तिया आई.ए.एस. एवं ठाकुर श्री ओंकारसिंहजी जोधा आई.ए.एस. जैसे प्रवर उदारमना महानुभावों का स्नेहपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही साथ राज्य एवं केन्द्रीय सरकार से सहायता प्राप्त करने एवं सही मार्ग बताने की दृष्टि से केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री श्री भक्तदर्शन, राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री वृजसुन्दर शर्मा एवं राज्य के शिक्षा सचिव श्री विष्णुदत्तजी शर्मा आई.ए.एस. का पूर्ण सहयोग एवं समर्थन प्राप्त हुआ। सहयोगी बन्धु ठा० श्री नारायणसिंह भाटी एवं कठिनाइयों में भी साथ रहने वाले कोश-कार्यालय के कार्यकर्ताओं को भी धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य है। उपर्युक्त सभी कृपालु महानुभावों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करना चाहते हैं।

इस कोश के प्रकाशन के लिये राजस्थान सरकार एवं भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रादेशिक भाषाओं के विकास की योजना के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग मिलता रहा है और उसी योजना एवं सहायता के कारण कोश का कार्य भी चल रहा है — अतः दोनों सरकारों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

उपरोक्त सहायता के अतिरिक्त द्वितीय खंड के लिये एक मात्र स्वयं प्रेपित अनुदाता श्रीमान महाराजा राजबहादुर श्री मयूरध्वजसिंहजी ध्रांगध्रा के प्रति भी कोश उप-समिति अपना आभार प्रकट करती है -- जिनकी इस कोश एवं साहित्य में अदम्य रुचि रही है।

अन्त में मैं उन सब महानुभावों एवं साहित्य प्रेमियों को भी उपसमिति की ओर से धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने समय समय पर यथा शक्य सहायता एवं सहयोग प्रदान किया है और इस कार्य को पूर्ण करने में अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। श्री सीताराम लालस को साधुवाद है कि उनका परिश्रम, उनकी लगन और तपस्या द्वितीय खंड के रूप में अवतरित हो सकी है।

शुभाभिलाषियों की प्रेरणा और श्री लालस की एकान्तिक साधना के बल पर अब हम कोश के तृतीय खंड की ओर अग्रसर हो रहे हैं — सफलता के अमिट विश्वास के साथ।

विनीत

(कर्नल) ठा० श्यामसिंह

सचिव

उपसमिति, राजस्थांनी सबद कोस, जोधपुर.

संपादकीय

"निवेदन"

"राजस्थांनी सबद कोस" के इस द्वितीय खण्ड को आपके हाथों में रखते हुए प्रसन्नता का अनुभव होना तो स्वाभाविक ही है परन्तु इस प्रसन्नता के पीछे अन्तर्वेदना और स्वानुभूति की जो दीर्घ रेखायें हैं उन्हें भी इसी अवसर पर प्रकट करने के लिए यह बोझिल हृदय आतुर सा हो रहा है। न चाहते हुए भी इस द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य में तीन वर्ष की दीर्घावधि व्यतीत हो गई। यद्यपि इस भाग की सभी सामग्री तैयार थी और प्रकाशन हेतु मैं निरन्तर प्रयत्नशील था फिर भी अर्थाभाव की जो विकट घाटी उपस्थित हुई उसे पार करना सहज न हो सका। तीन वर्ष का यह काल इस कोश रचना कार्य में विकट आर्थिक विवशता और विषम परिस्थितियों का काल रहा है। यह तो सत्य है कि इस बढ़ती हुई मंहगाई के युग में इस आकार में कोश रचना करना व्यय साध्य तो है ही फिर भी यथा समय क्वचित बाधाओं के बाद भी यदि अर्थ व्यवस्था का सहयोग प्राप्त हो जाता है तो कार्य सम्पादित हो सकता है। इस द्वितीय खण्ड के प्रकाशन का काल जिन परिस्थितियों के मध्य गुजरा है उससे तो यही स्पष्ट है कि हमारे लिए लक्ष्मी ने सरस्वती के प्रति अपनी चिर वैमनस्यता का ही पालन किया। ऐसी स्थिति में दृढ़ चित्त व्यक्ति भी विचलित हो सकता है तो फिर मुझ अकिंचन का तो सामर्थ्य ही क्या! इसी अवधि में यह सत्य प्रतीत हुआ कि आर्थिक सहयोग ही सब कुछ नहीं है, इससे भी प्रबल हैं सहृदयजनों की सद्भावनायें, सुसहयोग एवं सत्प्रेरणायें। इसी सम्बल के सहारे व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकता है।

इन विगत तीन वर्षों की विषम आर्थिक विवशताओं के बीच मैं जिन सत्प्रेरणाओं के सम्बल को प्राप्त कर खड़ा रह सका हूँ उन्हें कैसे भुलाया जा सकता है। साहित्य संवर्द्धक श्रद्धेय श्रीमान् रोडला ठाकुर साहब कर्नल श्री श्यामसिंह जी एवं उदारमना सज्जन प्रवर श्रीमान् ठाकुर साहब श्री गोरधन सिंह जी I.A.S. तथा जनगण मान्य डॉ० लक्ष्मीमल जी सिंघवी संसद सदस्य की परम उदारता एवं महत्ती कृपा का ही यह फल है कि कोश का द्वितीय खण्ड आपके हाथ में है। यह व्यक्त करने में मुझे किसी प्रकार का संकोच नहीं होता कि इस विकट अर्थ द्वंद के बीच उक्त महानुभावों ने जिस अनुपम उदारता एवं सद्भावना के साथ तन मन धन से सहयोग दिया है वह आपकी निस्वार्थ सेवा का उच्चादर्श है। राजस्थानी कोश ही नहीं अपितु समस्त साहित्य जगत आप जैसे हित चिन्तकों का चिर ऋणी है।

"राजस्थांनी सबद कोस" को चार खण्डों में सम्पूर्ण रूप से प्रकाशित करने की निश्चित योजना थी जिसका उल्लेख कोश के प्रथम खण्ड की भूमिका में किया जा चुका है। इसी योजना के अनुसार ही प्रथम खण्ड जिसमें "अ" से "घ" वर्ण तक के शब्दों का संकलन है, प्रकाशित किया गया। द्वितीय खण्ड में "च" से "न" वर्ण तक के शब्दों को सम्मिलित करने की ही निश्चित योजना थी। जैसा कि कोश के प्रथम खण्ड की भूमिका में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्णमाला के सभी वर्णों के प्राप्य शब्दों का अकारादि क्रम से रजिस्ट्रों में संग्रह किया जा चुका है उसी के अनुसार "न" वर्ण के शब्दों की प्रेस कॉपी भी तैयार की गई। परन्तु अर्थाभाव का जो संघर्ष रहा उसी के कारण प्रकाशन कार्य योजनानुसार सम्पन्न न हो सका। ऐसी स्थिति में इस द्वितीय खण्ड को जिल्दों में विभक्त करने की विवशता आ गई। इस बात के लिए मुझे हार्दिक दुःख है कि चाहते हुए और सभी सामग्री तैयार रहते हुए भी मैं कोश के द्वितीय खण्ड को योजनानुसार "न" वर्ण तक के शब्दों सहित आपके समक्ष प्रस्तुत नहीं कर सका। इस जिल्द विभाजन से उत्पन्न होने वाली सभी असुविधाओं के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

इस द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य को प्रारम्भ हुए अभी कुछ भी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ था कि धीरे धीरे आर्थिक सहयोग के सभी द्वार बंद हो गए। अनेक संकटों के मध्य भी कार्य में कुछ काल तक निरन्तरता अवश्य रही परन्तु उसका निर्वाह तब तक सम्भव था। मझधार डूबने की स्थिति आ ही गई। ऐसी स्थिति में कोश के दृढ़ स्तम्भ श्रीयुत् ठाकुर साहब श्री गोरधनसिंह जी ने कोश नैया को पार लगाने हेतु रोड़ ठाकुर साहब से आर्थिक ऋण के लिए निवेदन किया। इस पर रोड़ ठाकुर साहब श्री शम्भूसिंहजी ने कोश कार्य को यथा विधि निरन्तर रखने के लिए धनराशि ऋण के रूप में देकर अपना सहयोग दिया। आपका यह सामयिक सहयोग मेरे लिए एक बड़ा सहारा सिद्ध हुआ। आपके इस सहयोग के लिए मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस खण्ड के प्रकाशन कार्य की अवधि में उपस्थित होने वाली आर्थिक विवशताओं को शिथिल एवं पराजित करने में हमें संसद सदस्य डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी का अपरिमित सहयोग प्राप्त हुआ। आपने अपने अत्यधिक व्यस्त जीवन काल में से कुछ अमूल्य क्षण हमें प्रदान कर इस कोश के लिये केन्द्रीय सरकार से दस हजार रुपये की धनराशि का अनुदान प्राप्त करवाया। यह आर्थिक सहयोग प्रथम खण्ड के प्रकाशन के बाद अप्राप्य सा ही हो गया था परन्तु डॉ० सिंघवी साहब के सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप ही उक्त धन राशि केन्द्रीय सरकार से अनुदान के रूप में प्राप्त कर सके। प्रकाशित कोश का प्रथम खण्ड, कोश की समस्त सामग्री एवं कोश के लिए प्राप्त सम्मतियां देखकर आप अत्यधिक प्रभावित हुए और आपने राजस्थानी के इस बृहद कोश को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व० श्री लालबहादुर शास्त्रीजी की सेवा में अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने की जिज्ञासा प्रकट की। इस पावन कार्य के लिए मैं सहर्ष सहमत हुआ। तब आपने शीघ्र ही मान्यवर प्रधानमंत्री से साक्षात्कार कराने की व्यवस्था कर दी। यह आप ही का प्रयास था कि मैं अकिंचन सम्माननीय पूज्यवर स्व० श्री लालबहादुर शास्त्रीजी से साक्षात्कार कर उनके दर्शन लाभ करता हुआ अपने इस कोश की सम्पूर्णता की हार्दिक चाहना उनके सामने प्रकट कर सका। डॉ० सिंघवी साहब के इस अतुल सहयोग के लिए मैं सदैव सदैव के लिए आभारी हूँ।

केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होने वाले अनुदान के लिए जब जब भी दिल्ली जाने का अवसर मिला तो वहाँ पर मुझे श्रीमान् ठा० समदरसिंह जी शेखावत, (मैनेजर) राजस्थान भवन दिल्ली से पर्याप्त सहयोग प्राप्त होता रहा। अपनी निजी असुविधाओं के बीच भी आपने इस कोश तथा मेरे प्रति जिस आत्मीयता को प्रकट किया उसे किसी क्षण भुलाया नहीं जा सकता!

सरकार द्वारा प्राप्त होने वाले आर्थिक सहयोग की कड़ी में इस कोश के प्रथम खण्ड के प्रकाशन काल में केन्द्रीय अनुदान के साथ राज्य सरकार से भी कुछ आर्थिक अनुदान आरम्भ हुआ था परन्तु इस विगत अवधि में आर्थिक सहयोग के अन्य स्रोतों के अवरुद्ध होने ही विवशताओं को और विकट बनाने के लिए यह द्वार भी प्रायः बन्द सा हो गया और केन्द्रीय सरकार से स्वीकृत कराये गये अनुदान को राज्य सरकार से प्राप्त करने में भी बाधायें उपस्थित होने लगी। इस कोश के शुभचिन्तकों को किसी भी स्थिति में यह स्वीकार नहीं था। अतः ऐसी स्थिति में उक्त स्वीकृत धनराशि को प्राप्त करवाने में श्रद्धेय श्री लक्ष्मीलालजी जोशी, भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग व परमादरणीय श्रीयुत् विष्णुदत्तजी शर्मा शिक्षा सचिव राजस्थान ने जिस सौजन्यता एवं सौहार्द्र का परिचय दिया उसे शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता। आपकी असीम कृपा एवं सद्प्रयासों के फलस्वरूप ही केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत अनुदान वित्तीय बजट की समाप्ति के अन्तिम क्षणों में प्राप्त करने में सफल हुआ।

राज्य सरकार की ओर से पर्याप्त आर्थिक सहयोग के अभाव में कोश कार्य को निरन्तर रखने के लिए ऋण का सहारा लेना अनिवार्य हो गया। ऋण की व्यवस्था करना भी उतना ही विकट हो गया जितना आर्थिक अनुदान प्राप्त करना। ऐसी स्थिति में "उपसमिति राजस्थानी सबद कोस" ने जो श्रीमान् ठाकुर केशरीसिंहजी सदस्य विधान सभा की अध्यक्षता में कार्य कर रही है अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। उक्त समिति ने श्री जवर बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की निधि में से २०,०००) रुपये का ऋण कोश के लिए प्राप्त किया। इस ऋण को प्राप्त कराने में कर्नल श्रीमान् मोहनसिंहजी भाटी ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। श्री जवर बोर्डिंग हाउस की प्रबंधक समिति तथा कर्नल मोहनसिंह जी भाटी एवं श्रीमान् ठाकुर केसरीसिंह जी के सहानुभूति पूर्ण सुसहयोग के लिए मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

कोश पर वढ़ता हुआ ऋण भार घोर चिन्ता का विषय बना हुआ था परन्तु इसी समय दूसरे वर्ष पुनः केन्द्रीय सरकार से २३,७,५०) के आर्थिक अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई। इस स्वीकृति अनुदान को राज्य सरकार के कोष से प्राप्त कराने में मान्यवर श्री वृजसुन्दर जी शर्मा, शिक्षा मंत्री राजस्थान व उनके निजी सचिव श्री कोमल कोठारी का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ। आपने समय समय पर मेरे प्रति जो उपकार किए हैं उनके लिए मैं पूर्ण उपकृत हूँ और इसके साथ ही आपने जिस सद्‌भावनाओं के साथ मेरा मार्ग प्रदर्शन किया है उसके लिए मैं हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ।

यद्यपि मेरे परम हितेषियों के अनुपम सहयोग से (राजकीय) सहयोग प्राप्त अवश्य हुआ परन्तु इस कार्य के लिये यह आंशिक मात्र था। इस अनुदान से कोश का पूर्व का ऋण मात्र ही कुछ हल्का हो पाया। कार्य को आगे वढ़ाने की समस्या तो सामने खड़ी ही थी। यह अभाव सभी वैतनिक कार्य कर्त्ताओं को हताश कर ही चुका था। आर्थिक अभाव के इन भीषण थपेड़ों में कोश कार्य को आगे वढ़ाना असम्भव ही था। परन्तु सदैव की भांति इस कोश के मूल कर्णाधार रोडला ठाकुर साहव कर्नल श्री श्यामसिंहजी ने अपनी पूर्ण उदारता का परिचय दिया। जब जब भी मैं आपके पास पहुंचा तो आपने हृदय से मेरी विवशताओं को समझा और अपूर्व आत्मीयता प्रकट की। कोश के प्रति आपकी सच्ची निष्ठा देखकर यह व्यक्त करने में किसी भी प्रकार की अत्योक्ति नहीं कि कोश प्रकाशन के गुरुतर भार को आपने अपने बलिष्ठ कंधों पर वहन नहीं किया होता तो यह कार्य कृति के रूप में प्रकट ही नहीं हो सकता था। ठाकुर साहव कर्नल श्री श्यामसिंहजी की उदारता यहाँ शब्दों में सीमित नहीं की जा सकती परन्तु हृदय के भाव भी प्रकट हुए बिना रह नहीं पा रहे हैं। अर्थभाव में जब भी कार्य रुका आपने अपनी ओर से सहयोग दे कर कार्य को निरन्तर रखा! निस्सन्देह आपका सच्चा स्नेह जो मुझ पर प्रकट हुआ है उसे किसी भी स्थिति में विस्मृत नहीं किया जा सकता।

वृहद् आकार में कोश के सम्पादन कार्य में आर्थिक अभाव तो एक विकट विवशता है ही इसमें दो राय नहीं हो सकती परन्तु अनेकानेक उदारमना साहित्य सेवी सहृदजन अर्थ सम्पन्न सज्जनों का यहाँ अभाव नहीं है। उन्हें किसी भी स्थिति में ऐसे सत्कार्य का अवरोध स्वीकार्य नहीं होता। वे किसी भी प्रकार आर्थिक सहयोग जुटाकर इस विवशता को शिथिल कर ही देते है। राष्ट्र को राष्ट्र के साहित्य सेवियों पर महान् गर्व है। आर्थिक सहयोग के साथ साथ इस कार्य की सार्थकता एवं उपादेयता के लिए अत्यन्त आवश्यक होती है, सदभावनाओं, सत्प्रेरणाओं एवं सन्नमार्ग दर्शन की। यह प्रकट करते हुए अतीव प्रसन्नता होती है कि मेरे आत्मीय स्वजनों विद्धदवर; गुरुजनों और साहित्य मनीषियों की ओर से सदैव मुझ पर असीम कृपा रही और इसी के फलस्वरूप मुझे निरन्तर प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा।

अपने इन सभी परम हितेषियों में परमादरणीय समालोचक प्रवर श्रीयुत भगवत शरण उपाध्याय, संपादक ''हिन्दी विश्व कोष'' के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रकाशित होने वाली ''भाषा'' नामक पत्रिका में **''राजस्थान सबद कोस''** का सही सही मूल्यांकन करते हुए मेरा पथ निर्देश किया और कोश कार्य के लिए नवीन दिशा भी दी। इनके साथ ही मैं मान्यवर पद्मविभूषण श्री हरिभाऊ उपाध्याय भूतपूर्व शिक्षा मंत्री राजस्थान, के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस कोश का अध्ययन कर इसके लिये अपनी सुसम्मति प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया।

इस कोश में संग्रहित जैन ग्रंथों के अनेकानेक शब्दों के अर्थ एवं उनकी व्युत्पत्ति आदि स्पष्ट करने में पूज्यवर पद्मश्री पुरातत्वाचार्य मुनि श्री जिन विजय जी, संचालक प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान एवं **श्री गोपाल नारायण जी बहुरा** उपाध्यक्ष प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर का निरन्तर रूप से सौहाद्र पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। आपके सहयोग से जैन शब्दों की अर्थ व्याख्या एवं अनेक शब्दों की अर्थ पुष्टि के लिए वंशभाष्कर से उदाहरणों की प्राप्ति में पूर्ण सुगमता रही। शब्दों की व्युत्पत्ति एवं अर्थ व्याख्या के लिए आपसे किए गए विचार विमर्ष से शब्दों के मूल रूप तक पहुंचाने में सुविधा रही जिससे राजस्थानी में वहुत जैन शब्दों को कोश में उपयुक्त स्थान मिल सका। इसके लिए मैं आप दोनों ही महानुभावों का हृदय से आभार मानता हूँ। इसी प्रसंग में श्री वहुरा जी के सहायक श्री लक्ष्मीनारायण जी गोस्वामी ने भी समय समय पर अपना हार्दिक सहयोग प्रदान किया है इसके लिये निश्चय ही आप धन्यवाद के पात्र हैं।

इसी शृंखला में मैं वयोवृद्ध श्रीयुत बालाराम जी कवि किंकर की सौजन्यता एवं सहयोग को विस्मृत नहीं कर सकता जिन्होंने अनेक जैन पारिभाषिक शब्दों के स्पष्टीकरण के लिए मुझे अपना समय दिया और ऐसे ही अनेक शब्दों के लिए उपयुक्त उदाहरणों की व्यवस्था भी की। इस कोश कार्य के लिए आपका सहयोग मुझे निरन्तर रूप से प्राप्त होता रहा इसके लिए मैं हृदय से आपका धन्यवाद करता हूं।

राजस्थानी साहित्य में ज्योतिष सम्बन्धी शब्दों एवं नक्षत्रों का भी व्यापक प्रयोग हुआ है। इसी उद्देश्य से कोश में ऐसे शब्दों को उपयुक्त स्थान देकर उनकी उचित व्याख्या की गई है इसके लिए मैं श्री मांगीलालजी दवे अध्यापक संस्कृत महा विद्यालय, जोधपुर को हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझे अधिक समय देकर ज्योतिष सम्बन्धी शब्दों की सही अर्थ व्याख्या करने एवं विभिन्न नक्षत्रों की उपयुक्त परिभाषा बनाने में सुगमता प्रदान की। रात्रि में नक्षत्रों की स्थिति को दिखाकर तदनुकूल परिभाषा बनाने में आपने सराहनीय सहयोग प्रदान किया वस्तुतः आप धन्यवाद के पात्र हैं।

कोश सम्पादन कार्य में शब्द संग्रह एवं शब्दार्थ व्याख्या का महत्त विद्वद्जनों से छिपा नहीं है। शब्द संग्रह कार्य में मुझे श्री मोहनलाल पुरोहित एम. ए., बी. एड., साहित्यरत्न द्वारा सुसहयोग सदैव ही प्राप्त होता रहा है। आपने कोश के प्रथम खण्ड के प्रकाशन में मेरे साथ अनुलेखक के रूप में कार्य करते हुए प्रथम खण्ड के स्वरूप को सुन्दर एवं उपयुक्त बनाने में पूरा पूरा सहयोग दिया है। इस अवधि में आपने गोडवाड़ क्षेत्र में व्यापक रूप से व्यवहृत होने वाले शब्दों का उनकी अर्थ व्याख्या सहित अच्छा संग्रह दिया। शब्द की आत्मा को पहिचान उसके मूल अर्थ तक पहुंचने की आप की सूझ वस्तुतः सराहनीय है। आपने जिन सद्भावनाओं से प्रेरित हो कोश सम्पादन में मुझे सहयोग दिया है उसके लिए मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

अपने सहृदय सहयोगियों की स्मृति जब भी मुझे होती है तो मेरा हृदय राजस्थान के भूतपूर्व उपशिक्षा मंत्री श्रीयुत् पूनमचंदजी बिश्नोई के प्रति अपना आभार प्रकट किए बिना नहीं रहता। आपने इस कोश के प्रथम खण्ड के प्रकाशन के समय जिस अपूर्व सहयोग एवं सत्प्रेरणाओं द्वारा समय समय पर मुझे उत्साहित किया था वही सहयोग प्रत्येक परिस्थिति में सदैव प्राप्त होता रहा है। आपकी इन सद्भावनाओं के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

कोश कार्य में प्रारम्भ से ही निरन्तर सद्भाव के साथ सहयोग देने वालों में मुझे श्री कोमल कोठारी और श्री विजयदान देथा की स्मृति सदैव हो आती है। आप दोनों ही ने सच्ची लगन के साथ मेरे कोश को देखा और सच्चे स्नेहीजन के रूप में प्रत्येक स्थिति में मुझे प्रोत्साहित किया। साहित्य के प्रति आप पूर्ण निष्ठावान हैं और लोक साहित्य में आपकी विशिष्ट रुचि है। अतः भाषा विकास के वर्तमान काल में इस "राजस्थांनी सबद कोस" की पूर्ण उपयोगिता के प्रति आपने अपना पूर्ण विश्वास प्रकट किया। सरकारी अनुदान प्राप्त कराने में श्री कोमल कोठारी जी का विशेष सहयोग रहा है। आपने निजी सुविधाओं और असुविधाओं का ध्यान न रखते हुये सदैव मेरे कार्य को प्राथमिकता दी। आप दोनों ही सज्जनों के स्नेहपूर्ण व्यवहार एवं सहयोग के प्रति, जो मुझे सदैव प्राप्त होता रहा है, मैं हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

साहित्य शोध एवं कोश कार्य में रुचि रखने वाले कतिपय सुहृद साहित्य मर्मज्ञ, भाषा विशेषज्ञ एवं विद्वद्जन ने समय समय पर कोश कार्यालय में पधार कर कोश रचना प्रणाली और कोश का निकट से अध्ययन किया और उस अवसर पर अपनी सद्भावनाओं से मुझे प्रोत्साहित किया। ऐसे साहित्य मनीषियों में उदारमना श्रीमान् महाराजा साहिब राजबहादुर श्रीमयूरध्वजसिंहजी ध्रांगधड़ा का नाम सर्वोपरि है जिन्होंने इस "राजस्थांनी सबद कोस" की आधुनिक समय में उपयोगिता एवं उपादेयता का मूल्यांकन किया इसके साथ ही आपने १००१) रुपये का नगद आर्थिक अनुदान देकर अपनी साहित्य सेवा भावना का भी परिचय दिया। आपकी सहृदयता एवं सद्भावनाओं के लिए मैं पूर्ण कृतज्ञ हूँ। आपके अतिरिक्त जापानी भाषा विशेषज्ञ श्री के० दोई, डॉ० नगेन्द्र, दिल्ली विश्व विद्यालय, डॉ० रसिकलाल तिवारी, भोगीलाल सांडेसरा, श्री उदयनारायण तिवारी, श्री नारायण चतुर्वेदी, सम्पादक सरस्वती समालोचना, एवं श्री केशवराम शास्त्री ने भी यहाँ पधार कर मुझे पूर्ण अनुग्रहीत किया। आप सभी ने कोश रचना के कार्य को देखा, अनेक विषयों पर विचार विमर्श भी

किया और अपनी सत्प्रेरणाओं द्वारा मुझे प्रोत्साहित भी किया। मेरे कार्य के प्रति आप सज्जनों ने जो सद्भावनायें प्रकट की उनके लिए मैं आप सभी का आभार स्वीकार करता हूँ।

इस कोश कार्य के माध्यम से ही मुझे इस अवधि में अनेक सज्जन वृंद के निकट सम्पर्क में आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिन्होने समय समय पर मुझे प्रोत्साहित ही नहीं किया अपितु इस कोश को सुगम एवं सफल बनाने के लिए भी अपना हार्दिक सहयोग प्रकट किया। महाराजा श्री हरिश्चंद्रजी झालावाड़, ठा० श्री भैरुंसिंहजी खेजड़ला, ठा० केसरीसिंहजी राखी, ठा० श्रीमनोहरसिंहजी धामली, ठा० श्री ओंकारसिंहजी जोधा बावरा I.A.S., श्रीमती राणीजी श्रीलक्ष्मीकुमारी चुंडावत सदस्य विधान सभा ठा० श्री अक्षयसिंहजी रतनू, कुँ० श्रीजालमसिंहजी मेड़तिया खानपुर तथा श्रीरैंवतदानजी कल्पित आदि आदि सज्जनों के नामविशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मुझे कोश कार्य करते हुए जहां जिस क्षेत्र में आवश्यकता प्रतीत हुई आप महानुभावों ने सच्चे हृदय से अपना सहयोग देकर मेरे प्रति अपनी सद्भावनायें प्रकट की। आप सभी के इस सहयोग के प्रति कृतज्ञता का भाव अनुभव करता हूँ।

कोश के इस खंड के यथा विधि प्रकाशन में स्थानीय साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का समुचित सहयोग प्राप्त हुआ है। कोश सामग्री में निरंतर रूप से परिवर्द्धन होने के कारण उन्हें अवश्य ही अनेक असुविधाएं हुई हैं, फिर भी आपने कोश कार्य के लिए प्राथमिकता देकर जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

अन्त में मैं उन सभी उदार महानुभावों एवं सहयोगी बन्धुओं के प्रति साभार कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे कोश सामग्री संग्रह करने तथा इसके सम्पादन के लिए समय समय पर यथा विधि सहयोग प्रदान किया है। मानवीय भूल प्रवृति के प्रभाव से ही यदि किन्हीं महानुभावों के प्रति नामोल्लेख द्वारा आभार प्रदर्शित न कर पाया हूँ तो उनसे विनम्र भाव से क्षमा याचना करता हूँ।

—सीताराम लाळस

* निवेदन *

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नहीं, अपणी मायाईश । रोग पैल ग्राखद रचै, जगवाला जगदीश ॥१॥
साच न वूढो होय, साच ग्रमर संसार में । कैंतो धोवो कोय, ग्रो सेवट प्रकटै 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै ग्राज, सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । ग्रावे इण एवाह, ईशर कीरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजल संदेश, उदयराज उजल ग्रखे । दीपै वांरा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानो तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में ग्रपणी भासा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु ग्रान्दोलन पत्रों में शुरू हुवो ।

राजस्थानी रो विरोध में ग्रकसर ग्रा बात कही जाती के इण रो कोई ग्राधुनिक कोश नहीं हो । ग्रो घाटो मिटावण सारु में श्री सीतारामजी लालस ने क्यो क्योकि हूँ जाणता हो के डिंगल रा शब्द संग्रह रो उणां ने कांफी ग्रनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग से मैनत सूं कोश रो काम शुरू कियो ने इण में खर्चे रीमदत रो जरुरत हुई तो उसा बाबत म्हें स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब वार एटला पोकरण ने ग्ररज करी । इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १–५–५१ सूं रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवी । सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दियो ग्रौर म्हें दोनू तारीख १–५–५१ सूं सन् १९५२ रा ग्राखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई । इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बन्द रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री पूरी लगन ही । म्हें करनल श्री सोमसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देण सारु कागद लिखियों उण रो जबाव उणां तारीख २९–६–५६ रा कागद में म्हने लिखियों के कोश सारु मावार रु० ५०), ३ या ४ साल तक या काश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणांरा पिता करनल श्री ग्रनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू में देरी हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में मास नवम्बर रा ग्रन्त में ने दिसम्बर रा सरु में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर ग्राया ग्रौर फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दिया क्योकि जद उणां रो तबादला जोधपुर में हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों री स्लिप कोपिया पेलो वणी हुई ही । उणारी स्लिपां काट काटकर ग्रक्षरवार ग्रलग ग्रलग कर दी गई ने नवा शब्द भी जो मिलिया के शामिल कर दिया गया । इणतरे सब शब्द ग्रक्षरवार किया जाय ने उणां ने ग्रक्षरवार रजिस्टरों में लिख लिया गया । इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ग्रो कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया रीं सहायता सूं पूरी हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी वणाइण रो काम चालू हुवे । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सू श्री नीवांज ठाकुर साहब सू रुपियां री सहायता लेने करायो ने करे छपण री प्रवन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११–३–१९५६ ने सीतारामजो ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदत ही इण वास्ते वैकुंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां । तारीख २२–५–५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो :—

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी उज्जवल यन्त्री (मिकेनिक) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा हैं राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान काय प्रशंसा करेंगे। फक्त नित्यानंद शास्त्री।

इणी तरे ननरा विश्वविद्यालय मूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओ रो जाणकार है ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनी विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान में आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनूं कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारा मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है :—

THINITY COLLEGE, CAMBRIDGE 26 Feb., 1960.

It is excellent news for Indo-Aryan Linguistics that the Rajastani Dictionary of Shri Udayraj Ujjwal and Shri Sitaram Lalas,is now to be published Rajasthani has long presented a serious gap in the comparative Study of the vaca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the devoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no longer be denied.

Sd. W. S. Allen. M.A.P.H.D.
Protessor of Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों रो रुपीया रो मदत सूं शुरू होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक महे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कवित, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इणा ने दोनूं सरदारो रो धन्यवाद रे तौर पर वणने है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोश मरु बाणरो शुभे वण्यो नह किणी सू, लाख शब्दो तणो वडो लेखो गया भूपात कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
गुटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ धन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लागवे घणी सरसे। मिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसे ॥३॥
पांग मरु थांन है प्रांत रो परंपर. वेण परताप राजस्थान ऊचों। रखी नह पढण में भायखां प्रांतरी, निरखतां जाय है प्रांत नीचों ॥४॥
वगई चारणों व्याकरण विधोविध, वणेगो कोश ही लाख सबदो। सीत रो परिश्रम अथग फलियों सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसिंह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कीयो। पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामंसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमवज आज अखियाज कीधी। वार विपरीत में हजारो खरचवे, दाद ऊजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणा दोय मिल व्याकरण कोश रचि, वण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मित्रकियी सुभकांमजो, महीयो कियो नह वीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल्ल मिशण ने वनाया वंश भास्कर बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदियापुर रान के कोष बल धरके।
सीताराम लालस ने कीन राजस्थानी कोश, उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोश हित कोष वने दानी धनवधर के।
प्रान्त की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा विबुधन दीनमाल वीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
टूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है।
जीवित रहेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके वनेगे शिवाला है।

Compared by
Sd Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्वल
Sd. Nemi chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता का नाम
अं०	अंग्रेजी	
अ०	अरबी	
अक०	अकर्मक	
अक० रू०	अकर्मक रूप	
अनु०	अनुकरण	
अनेक०, अनेका०	अनेकार्थी कोश	श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
अप०	अपभ्रंश	
अमरत	अमरत सागर	श्री महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर)
अ०मा०	अवधान माला	श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
अ०रू०	अकर्मक रूप	
अल्प० अल्पा०	अल्पार्थ रूप	
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	सिवदास गाडण
अव्य०	अव्यय	
इब०	इबरानी	
उ०	उदाहरण	
उप०	उपसर्ग	
उभ०लि०	उभयलिंग	
ऊ०र०	उक्ति रत्नाकर	
ऊ०का०	ऊमर काव्य	श्री ऊमरदांन लालस
एका०	एकाक्षरी नांम माला	श्री वीरभांण रतनू, श्री उदयरांम बारहट (गूंगा)
ऐ०जै०का०सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपादक-अगरचंद जी नाहटा
क०कु०बो०	कविकुल बोध	श्री उदयरांम बारहट
क०च०	करणी चरित्र	ठा० किशोरसिंह बार्हस्पत्य
कर्म०वा०, कर्म०वा०रू०	कर्म वाच्य रूप	
कहा०	कहावत	
कां०दे०प्र०	कान्हड़ दे प्रबंध	श्री पद्मनाभ
क्रि०	क्रिया	
क्रि०अ०	क्रिया अकर्मक	
क्रि०प्र०	क्रिया प्रयोग	
क्रि०प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण	
क्रि०स०	क्रिया सकर्मक	
क्व०क्व०प्र०	क्वचित् प्रयोग	
क्षेत्र	क्षेत्रीय प्रयोग	
ग०मो०	गज मोख	हरसूर बारहठ
गी०रां०	गीत रांमायण	श्री अमृतलाल माथुर (कुचेरा निवासी)
गु०	गुजराती	

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
गु०रू०बं०	गुण रूपक बंध	श्री केसोदास गाडण
गो०रा०	गोरादि	
गो०रू०	गोगादे रूपक	श्री पहाड़ खां आढो
ची०	चीनी	
चेत मांनखा	चेतमांनखा	श्री रेवतदांन कल्पित
चोबोली	चोबोली	सम्पादक डॉ० कन्हैयालाल सहल
ज०खि०	जगा खिड़िया रा कवित	श्री जगो खिड़ियो
जा०	जापानी	
ज्यो०	ज्योतिष	
डिं०	डिंगल	
डिं०को०	डिंगल कोस	कविराजा मुरारिदांन जी (बूंदी)
डिं०नां०मा०	डिंगल नांम माला	श्री हरराज (कवि)
ढो०मा०	ढोला मारू *	सम्पादक श्री रामसिंह श्री सूर्य करण पारीक श्री नरोत्तमदास स्वामी
तु०	तुर्की	
द०दा०	दयालदास री ख्यात	श्री दयालदास सिंढायच
दसदेव	दस देव	नांनूरांम संस्कर्ता
द०वि०	दलपत विलास	सम्पादक श्री रावत सारस्वत
दे०	देसी	
देवि, देवी	श्री देवियांण	श्री ईसरदास बारहठ
द्रौ०पु०	द्रोपदी पुकार	श्री गंगनाथ कवियो
ध०व०ग्रं०	धर्म वर्धन ग्रंथावली	संपादक अगरचंद नाहटा
ना०मा०	नांम माला	अज्ञात
ना०डिं०को०	नागराज डिंगल कोस	श्री नागराज पिंगल
ना०द०	नाग दमण	श्री साइयां झूला
नी०प्र०	नीति प्रकास	श्री सगरांम सिंह मुहणोत
नैणसी	मुहणोत नैणसी री ख्यात	प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पं०	पंजाबी	
पं०पं०चौ०	पंच पंडव चरित्र	शालिभद्र सूरि
प०च०चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कविलब्धोदय
पर्याय	पर्यायवाची शब्द	
पा०	पाली	
पा०प्र०	पाबू प्रकास	कवि श्री मोडजी आसियो
पिं०प्र०	पिंगल प्रकास	श्री हमीरदांन रतनू
पी०ग्रं०	पीरदांन ग्रंथावली	पीरदांन लालस

* इनके अतिरिक्त हमने "ढोला मारू" की भिन्न २ लेखकों द्वारा लिखित हस्तलिखित वार्तों की प्रतियों में से भी शब्द लिए हैं, उनका भी संकेत चिन्ह ढो.मा. ही रखा गया है।

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
पु०	पुल्लिंग	
पुर्त०	पुर्तगाली	
पृष०	पृषोदरादि	
पे०रू०	पेमसिंह रूपक	श्री प्रतापदान गाडण
प्र०	प्रत्यय	
प्रा०	प्राकृत	
प्रा०प्र०	प्राचीन प्रयोग	
प्रा०रू०	प्राचीन रूप	
प्रे०	प्रेरणार्थक	
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	
फा०	फारसी	
फ्रां०	फ्रांसिसी	
बहु०	बहु वचन	
बां०दा०	बांकीदास ग्रंथावली भाग १,२,३,	श्री बांकीदास
बां०दा०ख्या०	बांकीदास री ख्यात	श्री बांकीदास
बी०दे०	बीसल दे रासो	बीसल दे
भ०मा०	भक्तमाल	श्री ब्रह्मदास जी दादूपंथी
भाव०	भाव वाचक	
भाव वा भाव वा०रू	भाव वाच्य रूप	
भिक्खु	भिक्खु दृष्टान्त	
भि०द्र०	,, ,,	
भू०	भूतकाल	
भू०का०क्रि०	भूत कालिक क्रिया	
भू०का०कृ०	भूतकालिक कृदन्त	
भू०का०प्र०	भूत कालिक प्रयोग	
भ्रं०पु०	भ्रंगी पुराण	श्री हूंफदास
म०	मराठी	
मह०महत्व०	महत्ववाची शब्द	
मा०	मागधी	
मा०का०प्र०	माधवानल काम कंदला प्रबंध	कवि गणपति
मा०म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी श्री देवी प्रसाद
मि०	मिलाओ	
मीरां	मीरां बाई	
मु०मुहा०	मुहावरा	
मेघ०	मेघदूत	श्री नारायणसिंह भाटी
मे०म०	मेहाई महिमा	श्री हिंगलाजदान कवियो
यू०	यूनानी	
यौ०	यौगिक	
र०ज०प्र०	रघुवरजस प्रकास	श्री किसनो आढो

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
र०रू०	रघुनाथ रूपक गीतां रो	श्री मंछाराम, मंछकवि
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महाराजा मानसिंह जोधपुर
रा०	राजस्थानी	
रा०ज०रासो	राउ जैतसी रो रासो	अज्ञात
रा०जै०सी०	राउ जैतसी रो छंद	श्री बीठू सूजो नगराजोत
रा० वाणी	राजस्थानी वांणी संग्रह	नृसिंह राजपुरोहित
रा०दू०	राजस्थानी दूहा	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
रा०प्र०	राजस्थानी प्रत्यय	
रां०रा० / रांम रासो	रांम रासो	श्री माधोदास दधवाड़ियो
रा०रू०	राज रूपक	श्री वीरभांण रतनू
रा०वं०वि०	राठौड़वंस री विगत	अज्ञात
रा०सा०सं०	राजस्थानी साहित्य - संग्रह भाग १	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
ल०पि०	लखपति पिंगळ	श्री हमीरदान रतनू
ला०रा०	लावा रासौ	श्री गोपालदांन कवियो
लू०	लू	ठा० चन्द्रसिंह बीको
लै०	लैटिन	
लो०गी०	राजस्थानी लोक गीत	
वं०भा०	वंश भास्कर	श्री सूर्यमल मीसण
व०	वर्तमान काल	
व०का०कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त	
वचनिका	वचनिका रतनसिंह महेशदासोत री	श्री जग्गो खिड़ियो
वरसगांठ		श्री मुरलीधर व्यास
व०स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा आदि
वांणी	संत वाणी	
बादळी	बादळी	ठा० चन्द्रसिंह बीको
वि०	विशेषण	
वि०कु०	विनय कुमार कुसुमांजली	
विलो०	विलोम	
वि०वि०	विशेष विवरण	
वि०स०	विरद सिणगार	कविराजा करणीदान कवियो
वी०दे०	वीसल दे रासो	
वी०मा०	वीरमायण	बहादुर ढाढी
वी०स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी०स०टी०	वीर सतसई टीका	श्री किसोरदांन बारहट
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	महाराजा प्रिथीराज राठौड़
वेलि०टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
व्या०	व्याकरण	
शक०	शकंदादि	
शा०हो०	शालि होत्र	
शि०वि०	शिखर वंशोत्पत्ति	श्री गोपाल कवियौ
शि०सु०रू०	शिवदांन सुजस रूपक	श्री लालदांन बारहट
सं०	संस्कृत	
सं०उ०	संज्ञा उभय लिंग	
सं०पु०	संज्ञा पुल्लिंग	
सं०स्त्री	संज्ञा स्त्री लिंग	
स०	सकर्मक	
स०कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजली	महाकवि समय सुन्दर
स०रू०	सकर्मक रूप	
सर्व०	सर्वनाम	
सू०प्र०	सूरज प्रकाश	कविराज करणीदान कवियौ
स्त्री०	स्त्री लिंग	
स्पे०	स्पेनिश	
श्री हरि पु०	श्री हरि पुरुषजी	
ह०नां० / ह०ना०मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनूं
ह०पु०वा०	श्री हरि पुरुषजी की वांणी	
ह०प्र०	हंस प्रबोध	श्री हमीरसिंहजी राठौड़
ह०र०	हरि रस	श्री ईसरदास बारहठ
हा०झा	हाला झालां रा कुण्डलिया	श्री ईसरदास बारहठ

* [यह संकेत इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल कविता में ही प्रयोग होता हैं।

लालबहादुर जसलियो, नितहित हिंद निभार ।
तन छोटे मोटे मते, (थारी) बावन ज्यूं बलिहार ॥

स्व० प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री, कोशकर्त्ता व संपादक श्री सीताराम लाळस,
डॉ० लक्ष्मीमलजी सिंघवी (संसद सदस्य)
के साथ "राजस्थांनी सबद कोष' का अवलोकन करते हुए ।

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश

[द्वितीय खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

च

च-संस्कृत, देवनागरी तथा राजस्थानी वर्ण-माला का छठा व्यञ्जन। यह स्पर्श वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंऊ—देखो 'चऊ' (रू.भे.)

चंग-सं०पु० [फा०] १ भेड़ या बकरे के चमड़े से मढ़ा हुआ लकड़ी का बना गोल वाद्य जो फाल्गुन मास में ग्रामीण लोगों द्वारा बजाया जाता है। उ०—वजि अदंग **चंग** रंग उपंग वारंग। अनंग छबि **चंग** उमंग अंग-अंग। (सू.प्र.)

अल्पा०—चंगड़ी, चंगड़ौ। मह०—चंगड़।

[सं० चं=चंद्रमा] २ पतंग, गुड्डी। उ०—उड्डंत **चंग** मधि आसमांण। वरजांण अमर सोभित विमांण। (सू.प्र.)

[सं०] ३ पवित्रता, उत्तमता।

[रा०] ४ घोड़े की एक जाति या इस जाति का घोड़ा (शा. हो.)

५ मुसलमान, यवन. ६ सितार का चढ़ा हुआ सुर (संगीत) ७ गजीफे का एक रंग. ८ स्वस्थ एवं तंदुरुस्त व्यक्ति. ९ राजस्थानी में प्रयुक्त होने वाला एक (गीत) छंद जिसके प्रथम चरण में १६ मात्रायें, द्वितीय चरण में ११ मात्रायें तथा तृतीय व चतुर्थ चरण में प्रथम छः भगण एवं अंत में एक गुरु लघु होते हैं।

वि०—मोटाताजा, हृष्ट-पुष्ट। उ०—१ पांणी पंथऊ पवंग, खंग **चंगऊ** खुरसांणी। विग्या नगरी वस्त्र एक, विण सुर सिरवांणी। —ढो.मा. उ०—२ किधौ म्रिग जुत्थन पै म्रिगराज, किधौ लखि **चंग** कुलंगनि वाज।—ला.रा.

चंगड़ी, चंगड़ौ—देखो 'चंग' (१) (अल्पा. रू. भे.)

चंगांण-सं०पु०—चक्कर।

उ०—मारू हंदा नयण दोउ, जेहा अरजन वांण। जिहि दिस देखे निजर भर, त्यां दिस पड़ै **चंगांण**।—ढो.मा.

क्रि०प्र०—खाणौ।

चंगाटी—देखो 'चंगांण' (अल्पा. रू.भे.)

चंगास-सं०पु०—[सं०] गोमूत्र।

चंगासणी, चंगासवौ-क्रि०अ०—गाय का पेशाव करना।

चंगी-सं०स्त्री०—[सं०] १ कीर्ति, यश। २ श्रेष्ठता। उ०—पंगी उबारकौ **चंगी** चौढ़ाड़ै जोधांण पांणी।—हुकमीचंद खिड़ियौ

वि०—देखो 'चंगौ' का स्त्री०। उ०—उत्तर आज स वज्जियउ, सीय पड़ेसी पूर। दहिसी गात निरद्धणां, धण **चंगी** घर दूर।—ढो.मा.

चंगुल-सं०पु० [फा०] १ जाल, फंदा। २ षड़यंत्र। ३ चार अंगुलियों के मोड़ में फँसने का भाव या फँसाने के समय अँगुलियों की स्थिति।

मुहा०—चंगुल में पड़णौ—चंगुल में फंसना, वश में आना।

चंगेड़ी-सं०स्त्री० [सं० चंग+पेटा=(मा०) चंग वेड़ी] मिठाई आदि रखने का पात्र, करंडिया।

चंगेर, चंगेरी-सं०स्त्री०—'चूका' नाम की एक जड़ी (वैद्यक)

चंगौ-वि०—[सं० चङ्ग] (स्त्री० चंगी) १ निरोग, स्वस्थ, तंदुरुस्त।

उ०—१ पूरब कमाइ पाइये कुण **चंगा** कुण मंदा।—केसोदास गाडण उ०—२ पती झगड़ा करनै तीन वार नींव रा पाटा बांध **चंगौ** हुवौ। इण स्त्री पाटां सारू घर में नींव वाय दूध पाय बडौ कियौ सो कहै।—वी.स.टी.

२ साफ, पवित्र, निर्मल। उ०—मन भावणी माधुरी मोहणी, चंद बदन चित **चंगी**। अंतकाळ में अरथ न आवत, कांमणि नैण कुरंगी। —ऊ. का.

कहा०—मन चंगा तौ कठौती में गंगा—अगर मन पवित्र है तो पवित्रता के वाह्य आडंबरों की आवश्यकता नहीं होती।

३ दृढ़, मजबूत, जबरदस्त। उ०—सिर मांडव गुजरात सिर, दळ सझ कीधी दौड़। उण 'सांगा' रौ वैसणौ, **चंगौ** गढ़ चीतौड़। —बां.दा.

४ सुहावना, सुंदर। उ०—धवळा सूं राजै धणी, **चंगौ** दीसै ग्वाड़। नारायण मत नांखजै, धवळा ऊपर धाड़।—बां.दा.

५ उत्तम, श्रेष्ठ। उ०—१ आपण मझ आपसूं, अह ग्यांन खड़ग्गा। जुध करता रात दिन, सौ रोवत **चंगा**।—केसोदास गाडण

उ०—२ चहूं भ्रात चौंरी चढै नेह **चंगा**। उचारै दुजां देव वांणी उमंगा।—सू.प्र.

सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा। उ०—चढ़ ऊभा **चंगा** भिड़ै, अंगां आचे खग्गां ऊनंगां।—रा.रू.

(मि० चंग-४)

२ डफ के आकार का एक वाद्य, देखो 'चंग' (१) (रू.भे.)

चंच-सं०स्त्री० [सं० चञ्चु] १ चोंच। उ०—१ **चंच चंच** जिण अगनि चमंकै। दांमणि जांणि अनेक दमंकै।—सू.प्र.

उ०—२ बाबहिया बग **चंचड़ी**, बोल्यौ मक्करि वांण। कांइं बोलंती मुस्ट करै, कै परदेसी पिव आंण।—ढो.मा.

अल्पा०—चंचड़ी।

[रा०] २ पार्वती. ३ दुर्गा।

चंचत्पुट-सं०पु० [सं०] संगीत का एक ताल जिसमें पहले दो गुरु, तब एक लघु, फिर एक प्लुत मात्रा होती है (संगीत)

चंचन, चंचनू—देखो 'चंच' (रू.भे.) २ गिरिजा, पार्वती। (क. कु. बो.)

चंचरी-सं०स्त्री० [सं० चंचरीक] १ भ्रमर, भौंरा (ह. नां.) २ एक प्रकार की चिड़िया जो भारत में स्थायी रूप से रहती है. ३ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १२, १२, १२, १० के विराम से ४६ मात्रायें होती हैं। अंत में गुरु होता है। इसका दूसरा

नाम हरिप्रिया भी है. ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, नगण, जगण, जगण, भगण एवं रगण सहित १८ वर्ण होते हैं। (चित्त प्रमाण) ५ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ होती हैं।

चंचरीक—सं०पु० [सं०] भौंरा, भ्रमर (ह. नां.)

चंचळ—वि० [सं० चंचल] १ अस्थिर, चल, चलायमान, गतिशील।
उ०—इम गिर नारांन सु पावसि बैठा, सुर सूता थिउ मोर सर। चातक रटै बलाहकि चंचळ, हरि सिणगारे अंबर।—वेलि.
२ नटखट, चुलबुला, चपल।
कहा०—चंचळ नार बारलो झांको, घर को कांम सूझे कांको—चंचल या चपल स्त्री को अपने घर के कार्य की परवाह नहीं, उसकी निगाह बाहर ही रहती है। चंचल स्त्री सुलक्षणा नहीं होती।
३ फुर्तीला। उ०—दुसमणां रौ वंध बींद नै घर में पग पैसतां वड़तां मुगीजियो उण हीज वेळा अंचळ कपड़ा रै गांठ ही तिका छुडाय नै चंचळ घोड़ा नै दुसमणां री फौज ऊपरै संवाहयो।—वी स.टी.
४ उद्विग्न, विव्हल। उ०—देखण लागौ यक्ष आंखडी आंसू भरियां, नीतै मन कुम्हलाय आज आ किमड़ी बिलियां। निरख्यां ऐड़ा मेघ संजोगी चंचळ होवै, वांरा कांई हवाल कांमणी कंठ न होवै।—मेघ.
सं०पु०—१ पवन (ह. नां.)
२ घोड़ा (अ. मा.) उ०—अंतरीख मग उरस चंचळ सातहमुख चालै। तुरंग पंग सारथी हेक चक्रह रथ हालै।—सू.प्र.
३ मन, दिल, हृदय (अ. मा.) ४ चंद्रमा (नां. मा.) ५ पारा। उ०—करि निनांन अस्टम दिन काढ़ै। चंचळ सोळ मास मझि चाढ़ै।—सू.प्र.
सं०स्त्री० [सं० चंचला] ५ लक्ष्मी, माया। उ०—चवा चरत करंती चंचळ, सारा किया संसारह सवळ। मारू राव दीवांण निरमळ, छळै 'मूजउत' तो जांणू छळ।—कमा विहारी रौ गीत
६ नर्तकी। उ०—चंचळ केक करै नृत चाळा। बार' तेरै वरसां मझि बाळा।—सू.प्र.
७ मछली (ह. नां.) उ०—जोत वाग भळकै मिळ नदि जळ। चमकै मंगर ऊछळै चंचळ।—सू.प्र.
८ बिजली।
क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी (ह. ना.)

चंचळता, चंचळताई—सं०स्त्री० [सं० चंचलता] १ अस्थिरता, गतिशीलता. २ नटखटपन, चुलबुलापन।

चंचळ रूप—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा. हो.)

चंचळा—सं०स्त्री० [सं० चंचला] १ बिजली, विद्युत (ह. नां.)
उ०—अर चक्री रा चक्र रै समांन मही रै माथै प्रतिबिंब पाड़ता सतुरंग नक मेघमाळा में चंचळा रा चपळ भाव में चूक पाड़ता चंद्रहास नचाया।—वं.भा.
२ लक्ष्मी, माया. ३ घोड़ी. ४ पिप्पली (अ. मा.) ५ मछली. (अ. मा.) ६ प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रम से १६ वर्ण का एक वर्ण वृत्त।
वि०स्त्री०—अस्थिर, चलायमान, चपल।

चंचळाई, चंचळाट, चंचळाहट—देखो 'चंचलता' (रू.भे.)। उ०—वेगी फुरती चंचळाई तथा उमंग, नित नित री रझांट-री झट झाल नहीं सकणै रै कारण काया कोटड़ी नै खाली करण लागी।—वरसगांठ

चंचळी—देखो 'चंचल'। उ०—चित्रउड़ धणी चंचळि चडेय, खरहंड लेय आयउ खड़ेय। मेवाड़ रांण परभोमि मांहि, सीकरी सेन आयउ सनाहि।—रा.ज.सी.

चंचाळ—१ पक्षी. २ देखो 'चंचळ' (२) (रू.भे.) उ०—चेवह वांटी चेभड़ा, एकल दाअड़ियाळ। कांनां सुण वूडै कमंद, चाहकाया चंचाळ।
—पा.प्र.

चंचाळी—सं०स्त्री०—मांसाहारी पक्षी। उ०—चरियौ अगन नको चंचाळी, भव चै कांम न आयौ भाळ। मारू राव असमरां मुंहडै, तिल तिल हुय पड़ियौ रिणताळ।—गोरधन कूंपावत रौ गीत

चंचु—सं०स्त्री [सं०] १ चोंच, तुंड. २ अरंड का पेड़. ३ मृग, हिरण.

चंचुका, चंचुपुट—सं०स्त्री [सं०] चोंच, तुंड।

चंचुभ्रत—सं०पु० [सं० चञ्चुभृत] पक्षी।

चंचुमांन—सं०पु० [सं० चञ्चुमान्] पक्षी।

चंचुराय—सं०पु०—सूर्यवंशी एक राजा का नाम। इसका दूसरा नाम चाप भी मिलता है। यह रोहिताश्व उनका पौत्र था (सू.प्र.)

चंचू—देखो 'चंचु' (रू.भे.)

चंचेड़ण, चंचेड़ू, चंछेड़ण—सं०पु०—मक्खन को गर्म करने के बाद उसे छानने पर छलनी में बचा हुआ अवशिष्ट अंश जो छाछयुक्त होता है।

चंछेड़णौ, चंछेड़बौ—क्रि०स०—१ छेड़ना, तंग करना. २ हिलाना, डुलाना, झकझोरना।

चंट, चंटेल—चतुर, होशियार, चालाक, धूर्त।

चंड—सं०पु० [सं०] १ ताप, गर्मी. २ एक दैत्य जो दुर्गा के हाथों मारा गया था. ३ एक शिव-गण. ४ एक भैरव. ५ राम की सेना का एक बन्दर. ६ सम्राट पृथ्वीराज की सेना का एक सामंत. ७ कुबेर के आठ पुत्रों में से एक (पौराणिक) ८ कार्तिकेय।
सं०स्त्री०—९ चंडी, देखो 'चंडिका'। उ०—१ ऊडंड पाखरां भड़ां भुज डंड ब्रह्मंड अड़ै, तुज चड सिहायक भल असुळा, राव ऊथपण थपण अद रड़मलां, करां थारा आज वर्ण 'कुसळा'।
—हटोजी खिड़ियौ
वि०—१ तेज, तीक्ष्ण, प्रखर. २ कठोर, कठिन, विकट. ३ घोर, भयंकर। उ०—१ वितंड चंड दंड दें उदंड छंडते वहें।—ऊ.का.
उ०—२ अलावुद्दीन रा अनीक नूं चंड चंद्रहास चखावण री चहै।
—वं.भा.
४ बलवान, प्रबल।

चंडकर—सं०पु० [सं०] तीक्ष्ण किरण वाला, सूर्य, भानु।

चंडका-सं०स्त्री० [सं० चंडिका] १ देवी, दुर्गा (क.कु.बो.) २ पार्वती (ह.नां.) ३ कलहप्रिय या झगड़ालू स्त्री।

चंडकोसिय, चंडकोसिक-सं०पु० [सं० चण्डकौशिक] १ एक सर्प जिसने भगवान महावीर को सताया था (जैन) २ एक मुनि का नाम।

चंडघंटा-सं०स्त्री० [सं० चण्डघण्टा] चौसठ योगिनियों में से ग्यारहवीं योगिनी।

चंडता-सं०स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता, उग्रता, प्रवलता।

चंडनयर—देखो 'चंडीनगर' (रू.भे.) उ०—अवरंग असपति हुवौ विखम चंडनयर विचाळै।—सू.प्र.

चंडनायिका-सं०स्त्री० [सं०] १ दुर्गा. २ दुर्गा की सखी मानी जाने वाली अष्टनायिकाओं में से एक (तांत्रिक)

चंडमुंड-सं०स्त्री०—देवी के हाथों से मारे जाने वाले दो राक्षस।

चंडमुंडा-सं०पु०—१ देखो 'चंडमुंड'।

सं०स्त्री०—२ इन दो राक्षसों को मारने वाली देवी, चामुण्डा।

चंडमुंडी—१ देखो 'चंडनायिका' (रू.भे.) २ देखो 'चंडमुंडा' (रू.भे.)

चंडरुद्रिका-सं०स्त्री० [सं०] अष्टनायिकाओं को पूजने से प्राप्त होने वाली एक सिद्धि (तांत्रिक)

चंडवती-सं०स्त्री० [सं] १ दुर्गा. २ अष्टनायिकाओं में से एक (तांत्रिक)

चंडवारण-सं०पु० [सं०] ४९ क्षेत्रपालों में से २२वां क्षेत्रपाल।

चंडांसु-सं०पु० [सं० चण्डांशु] सूर्य, भानु (डि.को)

चंडा-सं०स्त्री०—१ अष्टनायिकाओं में से एक (तांत्रिक) २ कर्कशा, तेज स्वभाव की स्त्री।

वि०—भयंकर। उ०—चखां झाळ तूटै मुखां झाळ चंडा। परस्सी फरस्सी भ्रमावै प्रचंडा।—सू.प्र.

चंडाई-सं०स्त्री—१ शीघ्रता, जल्दी. २ प्रबलता, उग्रता. ३ ऊधम, अत्याचार।

चंडातक-सं०पु० [सं०] लहंगा, घघरी।

उ०—जावक पावक जिम रडातक जीवै, सातां ठोडां सूं चंडातक सीवै।—ऊ.का.

चंडाळ-सं०पु० [सं० चंडाल] (स्त्री० चंडाळण) अत्यन्त नीच मानी जाने वाली जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति। डोम, श्वपच।

वि०—पतित, दुष्ट, दुरात्मा, क्रूर, निष्ठुर।

यौ०—चंडाळ-चौकड़ी।

चंडाळ-चौकड़ी-सं०स्त्री०यौ०—उपद्रवी मनुष्यों का गुट या समूह (जो चार पांच व्यक्तियों से अधिक न हो) षड़यन्त्रकारी मण्डली।

चंडाळणी-सं०स्त्री०—१ दोहा छंद का भेद विशेष जिसमें विषम चरण में जगण आता हो। ऐसा दोहा अशुभ समझा जाता है 'चंडालिनी'। २ चांडाल जाति की स्त्री, देखो 'चंडाल'।

चंडाळता-सं०स्त्री० [सं० चंडालता] १ नीचता, अधमता. २ चंडाल होने का भाव।

चंडाळ-पक्षी-सं०पु० [सं० चंडाल पक्षी] कौआ।

चंडाळ-वाळ-सं०पु०—किसी के सिर में निकल आने वाला मोटा व कड़ा बाल (अशुभ)

चंडाळि—देखो 'चंडाळी' (रू.भे.) उ०—संसार सुपहु करता ग्रह संग्रह, तिणि हिज पंचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारे करि मूंकिया चंडाळि।—वेलि.

चंडाळिका-सं०स्त्री० [सं० चंडालिका] १ दुर्गा, भवानी. २ एक प्रकार की वीणा।

चंडाळिणी—देखो 'चंडाळणी' (रू भे.)

चंडाळी-सं०स्त्री०—१ देखो 'चंडाळिणी' (रू.भे.) २ क्रोध, कोप, गुस्सा। उ०—किणी नै आपरा रूप रै सिवाय दूजी कीं चीज निजर नीं आई। हाथी नै बेसुमार चंडाळी छूटी। वौ रीस रै पांण चिंघाड़ियौ।—कोमल कोठारी

क्रि०प्र०—छूटणी।

चंडाळीक-सं०पु०—चौहान वंश की चित्रावा शाखा की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति (वं.भा.)

चंडाळीमंत्र-सं०पु०यौ०—वाममार्गीय मंत्र। उ०—अर त्रयी रा तिरस्कार करि किसड़ी नीच चंडाळीमंत्र री साधन करै।—वं.भा. (मि०—मैला मंतर)

चंडावळ—देखो 'चंदावळ' (रू.भे.)

चंडासि-सं०पु०—चौहान वंश का राजपूत (वं.भा.)

चंडिक, चंडिका-सं०स्त्री० सं० चंडिका] १ दुर्गा, देवी, शक्ति। उ०—घमक सेलक वंवक धकधक। तदि उबकि पत्र चंडिका त्रपतक।—सू.प्र.

२ लड़ाकी स्त्री, कर्कशा।

वि०—लड़ाकू, कर्कशा।

चंडी-सं०स्त्री० [सं०] १ दुर्गा देवी का वह शक्ति रूप जो महिषासुर नामक राक्षस के वध के लिये धारण किया गया था. २ दुर्गा, भवानी. ३ देखो 'चंडी नगर' (रू.भे.)

चंडी नगर-सं०पु०—दिल्ली शहर का एक नाम। उ०—चवै चंडी नगर 'अमर' ढुळंतां चमर, राज कर छतर धर आव राजा।

—आणंदरांम दधवाड़ियौ

चंडीपति-सं०पु०यौ० [सं०] १ शिव, महादेव. २ बादशाह।

चंडीपुर-सं०स्त्री०—दिल्ली।

चंडीपुरौ-सं०पु०—१ दिल्ली का बादशाह. २ दिल्ली नगर का रहने वाला व्यक्ति. ३ यवन, मुसलमान. ४ चौहान वंश का राजपूत।

चंडीस-सं०पु० [सं० चंडीश] शिव, महादेव। उ०—जोमंगी भंडीस जाग आयौ जिऊं चंडीस जायौ। राजपत्री आयौ ज्यूं थंडीस वाळै रेस।—हुकमीचंद खिड़ियौ

चंडीसा-सं०पु०—भाटों की एक शाखा।

चंडीसुर-सं०पु० [सं० चंडीश्वर] १ एक तीर्थ-स्थान. २ महादेव. ३ बादशाह।

चंडू-सं०पु०—अफीम का [illegible] के समान बनाया हुआ गाढ़ा अवलेह, जिसका धुआं [illegible] एक नली द्वारा पीया जाता है।

विशेष०—[illegible] के बने चाड़ू (एक प्रकार के बरतन) पर अफीम का अवलेह सेंका जाता है या उस अवलेह से बनी हुई [illegible] की बत्ती [illegible] पर रखी जाती है। चाडू का सम्बन्ध एक लकड़ी की नली से [illegible] है। फिर चाडू को जलते हुए दीपक की लौ पर रखा जाता है। पीने वाला अफीम का धुआं बिस्तर पर लेट कर या बैठ कर नली द्वारा पीता है और नशे में बेहोश हो जाता है।

क्रि०प्र०—पीणौ।

यौ०—चंडूखांनौ, चंडूबाज।

चंडूखानौ-सं०पु०—वह स्थान या घर जहां चंडू पीने वाले व्यक्ति चंडू पीने के लिए एकत्रित होते हैं।

चंडूबाज-सं०पु०—चंडू पीने का व्यसनी।

चंडूळ-सं०स्त्री०—खाकी रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो वृक्षों पर बहुत सुन्दर घोंसला बनाती है और बहुत ही मधुर बोलती है।

उ०—जिकै विण समझ चंडूळ पंखी जिही जे न रघुनाथ चौ नांम जांणै।—र.ज.प्र.

वि०—१ मूर्ख. २ बहुत झगड़ालू।

चंडेस्वर-सं०पु० [सं० चंडेश्वर] शिव का एक गण जिसका वर्ण रक्त के समान गहरा लाल होता है।

चंडेस्वरी-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम।

चंडोदरी-सं०स्त्री० [सं०] सीता को रावण के पक्ष में करने के लिये समझाने हेतु स्वयं रावण द्वारा नियुक्त की गई एक राक्षसी।

चंडोल, चंडोळ-सं०पु०स्त्री० [सं० चंद्र+दोल] १ हाथी के हौदे या अंबारी की आकृति की चार मनुष्यों द्वारा उठायी जाने वाली एक प्रकार की पालकी. २ मिट्टी का एक खिलौना. ३ देखो 'चंदोल' (रू.भे.)

चंडोळी—देखो 'चंदावळ' (रू.भे.) उ०—सु जिण दिन हरौळी आंबेर रा राजा जैसिंघजी है। फौज लाख तीन सू वा पछाड़ी चंडोळी पर जसवंतसिंहजी है फौज हजार असी सूं।—द.दा.

चंड़ार-सं०पु०—वह वृक्ष जिसके ऊपर सिचाई के अभाव में पत्ते न हों।

चंतामण, चंतामणि—देखो 'चिंतामणि' (रू.भे.)

चंद-सं०पु० [सं० चंद्र] १ देखो 'चंद्र' (रू.भे.) (ना.डि.को.) २ नाक का बायां छिद्र (योग) ३ पृथ्वीराज चौहान के दरबार का एक प्रसिद्ध कवि. ४ चंद्रक रागिनी (संगीत), ध्रुपद का एक भेद।

उ०—स्रांगिणि जळ तिरफ इन्द्र अग्नि पिअति, मरुत चक्र करि निदन मन। रामसरी गुमरी नागी रह, धूया माठा चंद धन।

—वेलि.

५ डिंगल का वेलियां सांणोर छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ३२ लघु, १८ गुरु, कुल ६८ मात्रायें हों तथा इसी क्रम से अन्य द्वालों में ३२ लघु १५ गुरु कुल ६२ मात्रायें हों (पि.प्र.) ६ राजा हरिश्चंद्र (रू.भे.) उ०—सतव्रत सुत हरिचंद सत जिहाज। रोहितास चंद सुत महाराज।—सू.प्र.

७ देखो 'चंदोळ' (रू.भे.) उ०—डाक तबल मुरसलां, हाक इतमांम जसोलां। चंद गोळ बाजुवां, हुवै रंगराग हरोळां।—सू.प्र.

वि०—१ श्वेत, सफेद॰ (डि.को.) २ काला॰ (डि.को.)

[फा०] ३ अल्प, थोड़ा, किंचित्।

चंदक-सं०पु० [सं०] १ चंद्रमा, चांद. २ चांदनी, चंद्रिका।

चंदकांत—देखो 'चंद्रकांत' (रू.भे.)

चंदगी-सं०स्त्री०यौ० [सं० चंद्रक+रा. प्र. ई] १ धन-दौलत, संपत्ति।

कहा०—करोला वदगी तौ पाम्रोला चंदगी—किसी की सेवा करने से कुछ लाभ अवश्य मिलता है।

(मि०—करोगे सेवा तो पावोगे मेवा)

२ आर्थिक सहायता।

उ०—लोग पण घणा दिन तिणसूं तह खरच हुइ रहियो छै, सो उहरी पण चंदगी करणी।—ठाकुर जैतसी री बात

चंदण-सं०पु० [सं० चंदन] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी बहुत ही सुगन्धित होती है। यह वृक्ष अधिकतर मैसूर, कुर्ग, हैदराबाद, नीलगिरी, पश्चिमी घाट आदि स्थानों में बहुत होता है।

उ०—ग्रिह ग्रिह प्रति भींति सुगारि, हींगळू ईंट फिटक मैं चुणी अचंभ। चदण पाट कपाट ई चंदण, खुंभी पनां प्रवाळी खंभ।

—वेलि.

पर्याय०—अहिप्रिय, अहिभखक, अहिमन, उत्तमतर, गंधअपार, गंधगात, गंधसार, चीलप्यार, पनंगपाळ, मळयज, मळयातर, मळियागरी, रूंखासिणगार, रूंखांगिरै, रूपवन, रोहण, रोहणीद्रुम, वल्लवसिवा, वासमुद्रुम, व्याळपाळ, सार, सीतरूंख, सुगंधक, सुझाड़, सुनग, सुरभी, सौरंभमूळ, स्रीखंड।

मुहा०—१ चंदण उतारणौ—चंदन को पानी के साथ घिसना। बेवकूफ बना कर माल हड़पना। २ चंदण चढ़ाणौ—घिसा हुआ चंदन लगाना; मूर्ख बनाना। ३ चंदण लगाणौ—खर्चा करवाना।

रू०भे०—चंदग, चंदन।

यौ०—चंदणगिरि, चंदणगोह, चंदणजोत, चंदणधेनु, चंदणहार।

२ इस वृक्ष की लकड़ी. ३ इसकी लकड़ी के टुकड़ों को घिस कर बनाया जाने वाला लेप।

कहा०—चावळ, चदण, त्रण, त्रिया, तुरी, राग अर तार—ए दस पतळा ही भला, सिह, सरप, सरदार—चावल, चंदन, घास, स्त्री, राग, तार, सिंह, सर्प और योद्धा इन सबका पतला होना ही अच्छा है (पतलेपन की प्रशंसा)

४ छप्पय छंद के तेरहवें भेद का नाम जिसमें ५८ गुरु ३६ लघु सहित ९४ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं (र.ज.प्र.) ५ डिंगल भाषा का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रथम चरण में चार सगण तथा २ लघु तथा द्वितीय चरण में दो भगण एक रगण व एक गुरु होता है.

६ डिंगल के 'वेलिया सांणोर' छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ३६ लघु १४ गुरु कुल ६४ मात्रायें हों तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में ३६ लघु १३ गुरु सहित कुल ६२ मात्रायें हों (पिं.प्र.) ७ केसर (ह.नां.)

वि०—श्वेत, सफेद॰ (डि.को.)

चंदणगिरि—देखो 'चंदन-गिरि' (रू.भे.)

चंदणगोह–सं०स्त्री०—एक प्रकार की विषैली गोह जो आकार में छोटी और रंग में कुछ सफेदी लिये होती है।

चंदणजोत, चंदणज्योत, चंदणज्योति–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा. हो.)

चंदणता–सं०स्त्री०—चंदनत्व। उ०—कुकव हूंत आछौ कुतर, ऊगे चंदण पास। लहि चंदण सौरभ लहै, चांदणता गुण रास।—बां.दा.

चंदणधेनु–सं०स्त्री०—[सं० चंदनधेनु] सौभाग्यवती मृत माता के पीछे पुत्र द्वारा चंदन अंकित कर दान में दी जाने वाली गाय।

चंदनहार–सं०पु०यौ० [सं० चंदन+हार] गले में धारण करने का एक मूल्यवान हार, चंद्रहार।

चंदणौ—देखो 'चांदणौ' (रू. भे.) उ०—बाहर भीतर चंदणा अनबंध अवाह।—केसोदास गाडण

चंदन—देखो 'चंदण' (रू. भे.)

चंदनगिरि–सं०पु०—[सं०] मलयागिरि पर्वत।

चदनगोह—देखो 'चंदणगोह' (रू.भे.)

चंदनांम, चंदनांमौ–सं०पु०—१ यश, कीर्ति। उ०—१ रिण रमाइण जिसौ रचावां, लड़ै मरां चंदनांम लिखावां।—वचनिका

उ०—२ सरण वखांणै जगत, चित वखांणै जेम सिध। मौज किव वखांणै चंदनांमौ।—र. ज. प्र.

२ उज्ज्वलता।

चंदनादितैल–सं०पु०यौ०[सं०] आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध तेल जो लाल चंदन के योग से बनता है।

चंदपहास, चंदप्रहास–सं०स्त्री० [सं० चंद्रहास] चंद्रहास, तलवार। —ह.नां.

उ०—केहरि कहियौ पैज करि, ग्रहियां चंद्रपहास। गोइंद गिणियां मारियौ, पख इकरणी काइ मास।—सू.प्र.

चंदबांण–सं०पु० [सं० चंद्रहास] एक प्रकार का बाण।

चंदभागा—देखो 'चंद्रभागा' (रू.भे.) उ०—पुकारां करै ऊभी घरै पोतरी, पांण पूजै न क्यूं रहै पाली। मंद भागा खीर लयण तसकर मिळै, चंदभागा नीर तू पियण चाली।—गोपीनाथ गाडण

चंदमा—देखो 'चंद्रमा' (रू.भे.)

वि०—२ श्वेत, सफेद॰ (डि.को.)

चंदमारी–सं०स्त्री०—१ घोड़े के होने वाला एक प्रकार का रोग जिसके कारण घोड़ा अधिक सांस लेता है और मुंह बंध रखता है।

२ देखो 'चांदमारी' (रू. भे.)

चंदमुखी–सं०स्त्री० [सं० चन्द्रमुखी] चन्द्रमा के सामान मुख वाली, सुंदर स्त्री। उ०—चंदमुखी हंसा गमणि, कोमळ दीरघ केस। कंचन वरणी कांमणी, वेगउ आवि मिळेस।—ढो.मा.

चंदरगढ़–सं०पु०—चित्तौड़गढ़ का एक नाम।—र. हमीर

चंदरमणि–सं०स्त्री०यौ० [सं० चन्द्रकान्त मणि] चन्द्रकान्त मणि।

उ०—चंदर मणियां जड़ी जाळियां गोख सुहावै, मेघ न आडा आय सुधाकर किरण मिळावै।—मेघ०

चंदरायण—देखो 'चांद्रायण' (रू. भे.)

चंदरेवौ–सं०स्त्री०—चंदोवा, वितान।

चंदरोळियौ—देखो 'चंद्रमा' (अल्पा. रू.भे.)

चंदळ–सं०पु०—[सं० चंदिल] चंद्रमा, चांद (ना. डिं. को.)

चंदळई, चंदळाई–सं०स्त्री०—छोटा पौधा विशेष जिसकी पत्तियों का शाक बनाया जाता है।

चंदळियौ, चंदळेवौ–सं०पु०—देखो 'चंदळाई' (रू.भे.)

चंदवदण, चंदवदणी, चंदवदनी, चंदवयणि, चंदवयणी—देखो 'चंद्रवयणी' (रू.भे.) उ०—१ तूठा कुमेर वूठा वरुण, अणखूटा धण आविया। कव कहौ चंदवदनी कहै, (कन) राजा पदम रिझाविया।—द.दा.

उ०—२ तणी वधावण नेत बंध धरण सोढ़ां तणी, तरण चंदवदण कज वरण तावू। अमर कथ करण प्रथमाद सिर ऊपरा, परणवा पधारे राव पावू।—गिरवरदांन सांदू

उ०—३ चंदवयणि चंपक वरणि, अहर अलत्ता रंगि। खंजर नयणी खीण कटि, चंदण परिमळ चंगि।—ढो.मा.

चंदवाळ—देखो 'चंदावळ' (रू.भे.) उ०—१ गाहट हरवळ गोळ चोळ चंदवळ करि चुख चुख।—सू.प्र. उ०—२ दांनयार दहलियौ, हुतौ सभि हफतहजारी। तजि हरवळ तापहूँ, मिळे चंदवळ दळ भारी।—सू.प्र.

चंदवौ–सं०पु०—[सं० चन्द्रापत] १ राजा-महाराजा या देवी-देवताओं के सिंहासन या गद्दी के ऊपर ताना जाने वाला छोटा मंडप जो प्राय: बढ़िया वस्त्र का बनाया जाता है और उसमें जरी तार आदि का कार्य किया जाता है। वितान।

पर्याय०—उच्चोळ, कदक, चंदेरवौ, चंद्रोदय, वितांन. २ मोर के पंख पर का चंद्राकृति भाग।

चंदांण, चंदांणा–सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा।

चंदाणणि–वि०स्त्री० [सं० चद्रानन+रा०प्र०इ] चंद्रवदनी, चंद्रमुखी।

उ०—चंदाणणि चीर चमीर न चंचळ, कुंवर भंडार न चित करिया। माहव समा खंगार मरण दिन, सोयण सुणिजी संभरिया। —खंगार सोढ़ा रौ गीत

चंदावत–सं०पु०—सीसोदिया वंश की शाखा, या इस शाखा का व्यक्ति।

चंदावळ–सं०स्त्री०—सेना के पीछे का भाग। (विलो० 'हरावळ')

रू०भे०—चंडावळ, चंडोळ, चंडौळ, चंदवळ, चंदोळ, चंदौळ, चंदौळी।

चंदिका—देखो 'चंद्रिका' (रू.भे.)

चंदिर, चंदिड़—सं०पु० [सं० चंदिरः] चन्द्रमा, चांद (ना.डि.को.)

चंदुबाई—सं०स्त्री०—चारण उदयराम सिढ़ायच की पुत्री जो देवी के रूप में प्रसिद्ध हुई।

चंदेरवौ—देखो 'चंदवौ' (रू.भे.)

चंदेरी—सं०स्त्री०—ग्वालियर राज्य का एक प्राचीन नगर।

चंदेरीपति—सं०पु०यौ० [सं०] चंदेरी नगरी का राजा शिशुपाल। (महाभारत)

चंदेल—सं०पु०—राठौड़ वंश की १२ प्रमुख शाखाओं में से एक अथवा इस शाखा का व्यक्ति।

चंदेळौ—देखो 'चंदळाई' (रू. भे.) उ०—तीजे रंवावां चीरा खीचड़ी, चौथे चंदेळै री साग, मेहा झड़ मांडियो।—लो.गी.

चंदोड—देखो 'चंदोवौ' (रू. भे.)—उ. र.

चंदोळ—देखो 'चंदावळ' (रू. भे.) उ०—१ बाजू गोळ चंदोळ महाबळ, दळ गळ बीच धसै धुवि दमगळ।—सू.प्र. उ०—२ तद कूच कियौ। सो पदमसिंहजी सबुमाळ रतनोत हरवळ किया। चंदोळ, जंगाळ बंगाळ बगाय नै कूच कियौ सो गनीम आय हरवळ सूं राड़ जे खाधी।

—पदमसिंह री वात

चंदोळी—१ देखो 'चंदावळ' (रू.भे.) उ०—तद नवाब महाराज नूं बुलाय कही—चंदोळी तुम संभाळो।—पदमसिंह री वात

क्रि०वि०—२ पृष्ठ भाग में, पीछे। उ०—तीरथ जात समस्त नरक साधां मिळ संगा, रास तमासा रमें हुळस नाचे हुड़दंगा। गांजी-मेळा सांग देव राखी चंदोळी, मिदर मंडी मसांण होळिका फाग हरोळी।—ऊ.का.

चंदोवौ—देखो 'चंदवौ' (रू.भे.)

चंदौ—सं०पु० [सं० चद्र] १ चंद्रमा, चंदा। उ०—साजन ऐसी प्रीत कर, निस अर चंदे हेत। चंदे विन निस सांवळी, निस विन चंदौ सेत।

—अज्ञात

[फा० चद] २ किसी कार्य के लिए पूरे व्यय का व्यक्तिगत या समूह से इच्छानुसार दिया गया कुछ अंश. ३ किसी पत्र या पत्रिका का वार्षिक शुल्क. ४ किसी सभा, सोसायटी या क्लब का मासिक या निश्चित अवधि पर दिये जाने वाला शुल्क या धन-राशि।

चंदौळ—देखो 'चंदोळ' (रू.भे.) उ०—हणै खग झाट अमीर हरोळ, तूरै गळ गोळ अनेक चंदौळ।—सू.प्र.

चंद्दर—सं०पु० [सं० चंदिरः] चंद्रमा, चांद (नां.मा.)

चंद्या—सं०स्त्री०—छोटी रोटी। उ०—चंद्या दे सुत ! चाकरिन, पेट स्वांस पाळंत। चाकरि प्रदेस वळ चढ़यां, झड़झड़ कंगळ जंत।

—रेवतसिंह भाटी

चंद्र—सं०पु० [सं०] १ चंद्रमा, चांद (अ.मा.) २ एक की संख्या॰ (डि.को.) ३ कपूर. ४ १८ उपद्वीपों में से एक (पौराणिक) ५. पिंगल में टगण के दसवें भेद का नाम ॥ ऽ ॥ (र.ज.प्र.) ६ मृगशिरा नक्षत्र।

चंद्रई—सं०पु० [सं० चंद्र] चंद्रमा, चांद। उ०—चंद्रई ग्यारमौ देव है, तीसरी चंद्र दइ खोड़ीला जोगी। काल जोगण भद्रा नहीं पुख नक्षत्र नई कातिक मास।—वी.दे.

चंद्रक—सं०पु० [सं०] १ चंद्रमा, चांद. २ देखो 'चंद्रिका' (रू.भे.) ३ मालकोश राग का एक पुत्र (संगीत)

चंद्रकन्यका—सं०स्त्री०—इलायची (अ.मा.)

चंद्रकळा—सं०स्त्री० [सं० चंद्रकला] १ चंद्रमा की किरण. २ चांदनी, चंद्रिका. ३ एक प्रकार की बहुमूल्य स्त्रियों के ओढ़ने की साड़ी। उ०—गुजरात में चंद्रकळा साड़ी उमदा हुवै।—बां.दा. ख्यात ४ सोलह की संख्या॰।

चंद्रकळाधर—सं०पु०यौ० [सं० चंद्रकलाधर] महादेव, शिव।

चंद्रकांत—सं०पु० [सं०] १ एक प्राचीन काल्पनिक रत्न या मणि जिसके विषय में यह प्रचलित है कि वह चंद्रमा के सामने करने पर पसीजता है और बूंद-बूंद कर टपकता है। २ एक राग (संगीत)

चंद्रकांतमणि—देखो 'चंद्रकांत' (१)

चंद्रकांता—सं०स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की पत्नी. २ रात्रि, रात।

चंद्रका—देखो 'चंद्रिका' (रू.भे.) उ०—१ चंद्र हूंत चंद्रका द्रस्ट वीछड़ी न देखी, घण निवास वीजळी पासि तजि टळी न पेखी।

—रा.रू.

उ०—२ इम निसि सुकळ बाग न्रप आए। विमळ चंद्रका साज वणाए।—सू.प्र.

चंद्रकार—सं०पु०—एक प्रकार का बाण।

चंद्रकीरति—सं०पु० [सं० चंद्रकीर्ति] १ वह घोड़ा जिसके ललाट पर दो भौंरी हो। यह शुभ माना जाता है (शा.हो.)

चंद्रकुळ्या—सं०स्त्री० [सं० चंद्रकुल्या] काश्मीर की एक नदी का नाम (प्राचीन)

चंद्रकूट—सं०पु० [सं०] कामरूप प्रदेश में स्थित एक पर्वत (पौराणिक)

चंद्रकूप—सं०पु०—काशी में स्थित एक कूप जो तीर्थस्थान माना जाता है।

चंद्रगच्छ—जैनियों का एक कुल।

चंद्रगुप्त—सं०पु०—१ चित्रगुप्त का एक नाम. २ मगध देश का प्रथम मौर्य्य वंशी राजा (ऐतिहासिक)

चंद्रगोळ—सं०पु० [सं० चंद्रगोल] चंद्रमंडल।

चंद्रग्रहण—सं०पु०यौ० [सं०] चंद्रमा का ग्रहण।

वि०वि०—देखो 'ग्रहण'।

चंद्रघंटका, चंद्रघंटा—सं०स्त्री० [सं० चंद्रघंटिका] नव दुर्गाओं के अंतर्गत एक दुर्गा। उ०—देवी चंद्रघंटा महम्माय चंडी, देवी वीहळा अम्राळा वडु-वडी।—देवि.

चंद्रचूड़—सं०पु०—अपने शिर पर चंद्रमा को धारण करने वाला, शिव, महादेव।

चं. चूड़ामणि—सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का एक योग।

चंद्रज—सं०पु०—चंद्रमा का पुत्र, बुध।

चंद्रतहास—देखो 'चंद्रहास' (रू.भे.)
चंद्रदास-सं०स्त्री० [सं०] चंद्रमा को व्याही गई दक्ष की २७ कन्यायें जो २७ नक्षत्र स्वरूप हैं (पौराणिक)
चंद्रदुरंग-सं०पु०—चित्तौड़गढ़ का एक नाम। उ०—तुरंगां में ज्यूं सूरज रौ तुरंग, दुरंगां में इण भांत चंद्रदुरंग।—र. हमीर
चंद्रद्युति-सं०स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा का प्रकाश या किरण. २ चांदनी।
चंद्रधर, चंद्रपीड़-सं०पु०—शिव, महादेव।
चंद्रपुरिया-सं०पु०—रामावत साधुओं का एक भेद।
चंद्रप्रभा-सं०स्त्री [सं०] १ चंद्रमा की रोशनी. २ अर्श, भगंदर और प्रमेहादिक रोगों पर दी जाने वाली एक गुटिका (वैद्यक)
चंद्रप्रभु—जैनियों के आठवें तीर्थंकर का नाम।
चंद्रप्रहास—देखो 'चंद्रहास' (रू. भे.) उ०—ऊगां सूर समौ ऊदावत, वढ़े वसू बोळ विरोळ। चळग्रळ अरी तणौ चीतौड़ा, चंद्रप्रहास नित रहे चोळ।—प्रथ्वीराज राठौड़
चंद्रवघूटी-सं०स्त्री०—वीरवहूटी।
चंद्रवाळा-सं०स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की स्त्री. २ चंद्रमा की किरण. ३ स्त्रियों के शिर पर धारण करने का आभूषण विशेष।
चंद्रबिंदु-सं०पु० [सं०] अर्द्ध चंद्राकार या अनुस्वार की बिंदी जो सानुनासिक वर्ण पर लगती है।
चंद्रभांणु-सं०पु० [सं०चंद्रभानु] श्री कृष्ण की रानी सत्यभामा का एक पुत्र।
चंद्रभाग-सं०पु० [सं०] १ चंद्रमा की कला. २ हिमालय पर्वत श्रेणी के अंतर्गत एक पर्वत शिखर. ३ सोलह की संख्या।
चंद्रभागा-सं०स्त्री० [सं०] हिमालय के शिखर चंद्रभाग से निकलने वाली एक नदी जिसे चिनाब भी कहते हैं। उ०—आगळि वहै प्रवाह अथागा, भळहळ सुजळ नदी चंद्रभागा।—सू.प्र.
चंद्रभाळ-सं०पु० [सं०चंद्रभाल] मस्तक पर चंद्रमा धारण करने वाला, शिव, महादेव। उ०—देख गरुड़ अंग्रेज दळ, वणिया न्रप अन व्याळ। जठे मांन 'जोधा' हरौ, भूप हुवौ चंद्रभाळ।—बांकीदास
चंद्रमण, चंद्रमणि, चंद्रमणी [सं० चन्द्रमणि]—चंद्रकांत मणि।
चंद्रमांनौ-सं०पु०—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा।
चंद्रमा-सं०पु० [सं० चंद्रमस्] पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला एक उपग्रह जो सूर्य से प्रकाश लेकर आकाश में चमकता है।
पर्याय०—अंब, अपधांतस, अपघ्यांन, अम्रतभव, इंदु, उडपति, उडराज, एणपताका, ओखधीस, कंजारी, कमोदी, कळानिधि, किरणउजळ, कुमदवंधु, गुणयळ, गुणरासि, गोघर, ग्रहि, ग्लौ, चंचळ, चक्रवाकवियोग, छंदनाच, छपाकर, छायावाळ, जगवंदक, जटाग्रमीभर, जरण, तपस, तारापत, दधिसुत, दरपणजगत, द्रुजपत, द्रुजराज, नखत्रेस, नभगांमी, नरजपुर, निसकर, निसचरण, निसनेत्र, निसमंडण, निसाकर, पदमणीपती, बुधजांमी, भ्रातालछी, मघुकर, मयंक, अगंक, अगवाह, रजनीपति, रतन, राकेस, रोहणीधव, विधु, विसदसरीर,ससहर, ससि, सारंग, सिंधुसुवण, सिवभाळी, सीतंसु, सीतहर, सुखमादसद, सुधांसु, सुधाकर, सुधाधर, सुधारसम, सुधास्रव, सुभरासि, सुभ्रकर, सुभ्रकरण, सेतकरण, सोम।
मुहा०—चंद्रमा बळवांन होणौ—अच्छा समय होना।
रू०भे०—चंद, चंद्र, चंद्र, चांद, चांदौ।
अल्पा०— चंद्रोळियौ, चंद्रियौ, चांदड़ौ।
चंद्रमाललाट-सं०पु०यौ० [सं० चंद्रमा+ललाट] शिव, महादेव।
चंद्रमाळा-सं०पु० [सं०चंद्रमाला] १ प्रत्येक चरण में प्रथम दस लघु फिर एक गुरु अंत में आठ लघु, इस प्रकार कुल १९ वर्णों का वर्णिक छंद. २ २८ मात्राओं का छंद विशेष. ३ चंद्रहार।
चंद्रमिणि—१ देखो 'चंद्रमणि' (रू.भे.) २ एक प्रकार का नग विशेष (अ.भा.)
चंद्रमौळी-सं०पु० [सं० चंद्रमौली] शिव, महादेव।
चंद्ररूप-सं०पु०यौ०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
चंद्रलोक-सं०पु०यौ० [सं०] चन्द्रमा का लोक।
चंद्रवंस-सं०पु० [सं० चंद्रवंश] क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध वंश।
चंद्रवंसी-वि० [सं० चंद्रवंशिन्] चंद्रवंश में उत्पन्न व्यक्ति।
चंद्रवधू-सं०स्त्री—वीरवहूटी।
चंद्रवयणि, चंद्रवयणी-सं०स्त्री यौ० [सं०चंद्रवदनी] चंद्रमा के समान सुन्दर मुख वाली, चंद्रमुखी।
चंद्रवौ—देखो 'चंदवौ' (रू.भे.) उ०—आभा चित्र रचित तेणि रंगि, अनि अनि मणि दीपक करि सूध मणि। मांडी रहे चंद्रवा तणौ मिसि, फण सहसेई सहसफणि।—वेलि.
चंद्रव्रत—देखो 'चांद्रायण' (रू.भे.)
चंद्रसरोवर-सं०पु०—व्रज में एक तीर्थ-स्थान।
चंद्रसार-सं०पु०—डिंगल भाषा में प्रयुक्त एक गीत (छंद) विशेष।
चंद्रसाळ-सं०पु० [सं० चंद्रशाला] १ छत पर खुला भाग जो किसी कमरे के सामने हो। अटारी। उ०—गवाक्ष तें अगाक्ष की कटाक्ष तें निगै नहीं। थिराभ चंद्रसाळ चंद्रसाळ पै थिगै नहीं।—ऊ.का. २ चांदनी, चंद्रिका।
चंद्रसिखर—देखो 'चंद्रसेखर' (रू.भे.)
चंद्रसूरिए-सं०पु०—घोड़े के ललाट पर होने वाली दो भंवरियां या चक्र (शुभ) (शा.हो.)
चंद्रसेखर-सं०पु० [सं० चंद्रशेखर] १ शिव, महादेव (ह.नां.) २ एक पर्वत. ३ संगीत का एक ताल।
चंद्रस्वारथी-सं०पु०—वह घोड़ा जिसका वर्ण श्वेतमिश्रित लाल हो व श्वेत नेत्र हों। (शा.हो.)
चंद्रहार-सं०पु०—गले में धारण किया जाने वाला मणियों का एक अर्द्धचंद्राकार हार विशेष।
चंद्रहास-सं०स्त्री०—१ तलवार, खंग (ह.नां. अ.मा.) उ०—१ सिंह

नै थारै गैडां री उराग कुंभां रै कनारै चामुंडराज री चंद्रहास भमियौ।—वं.भा.

उ०—चंद्रहास रूद्र घरे नहोड़े, तेर हजार दुगह भड़ तोड़े।—सू.प्र.

रू०भे०—चंद्रहास, चंद्रपहास, चंद्रहास।

चंद्रांणी-सं०स्त्री०—दुर्गा का एक नाम। उ०—देवी वैस्णवी ब्रह्मांणी, देवी इंद्रांणी चंद्रांणी नरांणी।—देवि.

चंद्रानन-सं०स्त्री—१ चंद्रमुखी, सुन्दरी। उ०—मिळिया नह साजण उच्छव मेळा। चंद्राणण राग करंत सचेळा।—सू.प्र.

२ देखो 'चांद्रायण' (रू.भे.)

चंद्रानणि, चंद्राणणी—देखो 'चंद्रानन' (१).

उ०—चंद्राणणी कहतां चांदवदनी रुखमणी जी।—वेलि.टी.

चंद्रापीड़-सं०पु० [सं०] १ शिव, महादेव. २ पांडुपुत्र अर्जुन के मित्र का नाम।

चंद्रायन, चंद्रायणौ-सं०पु०—१ देखो 'चांद्रायण' (रू.भे.)

२ २१ मात्राओं का एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ११ और १० पर यति हो। प्रथम विराम पर जगण तथा दूसरे विराम पर रगण होता है।—ल.पिं.

३ गोरी-पूजन के समय गाया जाने वाला एक प्रकार का लोक गीत।

चंद्रालोक-सं०पु० [सं०] १ चद्रमा का प्रकाश, चांदनी।

२ देखो 'चंद्रलोक' (रू.भे.)

चंद्रावत-सं०पु०—सीसोदिया क्षत्रियों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चंद्रावळ-सं०पु०—चांद्रायण व्रत।

चंद्रावळी-सं०स्त्री० [सं० चंद्रावली] श्री कृष्ण पर अनुरक्त एक गोपी का नाम।

चंद्रासक—देखो 'चंद्रहास' (रू.भे.) उ०—हरी सुत ऊदल भांण हठाळ, चंद्रासक ग्रास हणै चमराळ।—सू.प्र.

चंद्रिका-सं०स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा का प्रकाश, चांदनी, ज्योत्स्ना।

२ मयूरपंख के ऊपर का अर्द्ध चंद्राकार भाग जो सुनहले मंडल के मध्य चमकता है. ३ पंजाब की चिनाव नदी का नाम. ४ जूही. ५ चमेली. ६ संस्कृत का व्याकरण का एक ग्रंथ।

चंद्रूवौ—देखो 'चंदोवौ' (रू.भे.) उ०—पट्ट कूल मेघवन्नां करचां, कोठइ कोठइ विमणां धरचां। रत्नजड़ित चंद्रूआ थिकां, दीसइ मोती नां झूंबखां।—कां.दे.प्र.

चंद्रूदय, चंद्रोदय-सं०पु० [सं० चंद्रोदयः] १ चंद्रमा का उदय. २ गंधक, पारा और सोने की भस्म के योग से बनाया जाने वाला एक रस (वैद्यक) ३ चंदोवा, वितान।

चंनण—१ देखो 'चंदण' (रू.भे.) २ प्रकाश, उजाला।

चंप-सं०पु०—१ राठौड़ वंश की चांपावत शाखा या इस शाखा का व्यक्ति. २ भय, डर, शंका. ३ चंपा नामक वृक्ष या इस वृक्ष का पुष्प। उ०—महकीय रंभ गळै चंप माळ।—गो.रू.

४ मार, प्रहार, चोट। उ०—ताहरां पठांणां सेती लडाई की सु मुगळां री फौज मुई। वांमा पठांणे चंप की तीरां री। ताहरां मुगळ विचळते होज मार की।—दळपत विलास

चंपई—देखो 'चंपाई' (रू.भे.)

चंपउ-स०पु०—देखो 'चंपौ' (रू.भे.) उ०—थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ। गुणे सुगंधी मारवी, महकी सहु वणराइ।

—ढो.मा.

चंपक-सं०पु०—१ चंपा। उ०—पुहपां मिसि एक एक मिरि, पातां खाटिया द्रब मांडिया उखेलि। दीपक चंपक लाखे दीधा, कोड़िधजा फहरांणी केळि।—वेलि.

२ संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत)

३ पीला, पीत वर्ण का, चंपे के रंग का (डिं.को.)

चंपककळी-सं०स्त्री०यौ०—स्त्रियों द्वारा गले में धारण किया जाने वाला आभूषण।

चंपकमाळा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] १ चंपा के फूलों की माला, हार।

उ०—सोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण। चंपक माळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण।—वां.दा.

२ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पाद में क्रमशः भगण, मगण, सगण और अन्त में एक गुरु होता है।

चंपकळी-सं०स्त्री०—१ चंपा के फूल की कली। उ०—चंपकळी चकचूर टळी चित चाह सूं। नख कमळां दळ नीरक हीर निबाह जूं।

—वां.दा.

२ चंपा के समान नेत्र. ३ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चंपकवरणी-सं०स्त्री०—१ चंपा के समान रंग वाली स्त्री, गौर वर्ण वाली स्त्री। उ०—सुंदर गोरी ओळूं थारी परी रे निवार, चंपकवरणी, बावोसा री ओळूं सुसरोजी भांगसी।—लो.गी.

रू०भे०—चंपकवण्णी, चंपावरणी।

चंपणी-वि०—१ भयभीत होने वाला. २ दबने वाला. ३ छिपने वाला. ४ लज्जित होने वाला।

चंपणौ, चंपवौ-क्रि०अ०—१ भयभीत होना। उ०—चंपै सींचांणूं मग असमांणूं पुळत न जांणूं पंखांणूं। तळ खंचे वांणूं दुसटी पांणूं रहे नगांणूं रखिमांणूं।—भगतमाळ

२ छिपना। उ०—या सुणतां ही लोहछक होय पड़िये थके ही मलय लेर चालुक्यराज हमीर कैमास री कांख में चंपियो, आपरा स्वांमी नूं झाटकियो।—वं.भा.

३ पैर रखना, कदम रखना। उ०—प्रस्थांन रै प्रथम वारहठ लोहठ नरेस नूं कहियौ—मंडोवर रै अधीस हम्मीर पड़िहार आपणा चरण चंपै जतरी जमी द्विजां नूं देण कही।—वं.भा.

४ दबाना, दावना। उ०—रद चंपै होठ डसै रढ़ रावण अंग खड़ा रोमंच अभावण।—र.रू.

५ पकड़ना। उ०—आगळै प्रिया प्री चौथे आरंभि, फेरा त्रिण्हि

इण भांति फिरि । कर सांगुस्ट ग्रहण कर सूं करि, करो कमळ चपियौ किरि ।—वेलि.

६ चौंकना. ७ लज्जित होना ।

चंपणहार, हारौ (हारी) चंपणियौ—वि० ।

चंपवाडणौ, चंपवाड़बौ, चंपवाणौ, चंपवाबौ, चंपवावणौ, चंपवाववौ —प्रे०रू०

चंपाड़णौ, चंपाड़बौ, चंपाणौ, चंपाबौ, चंपावणौ, चंपाववौ —क्रि०स०प्रे०रू०

चंपिग्रोड़ौ, चंपियोड़ौ, चंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

चंपीजणौ, चंपीजबौ—क्रि० भाव वा०, कर्म वा० ।

चंपत—वि०—गायब, अंतर्धान, चलता ।

क्रि०प्र०—बणणौ, होणौ ।

चंपलौ—देखो 'चंपौ' (अल्पा. रू.भे.) उ०—म्हारी धीयड़ चोळी पांन की, जंवाई चंपलै री फूल, आज म्हारी अमली फळ रही ।—लो.गी.

चंपहरी—सं०पु०—एक विशेष प्रकार के रंग का घोड़ा (शा.हो.)

चंपा—सं०स्त्री०—१ प्राचीन काल के अंग देश की राजधानी (महाभारत)

२ घोड़ों की एक जाति विशेष ।

चंपाई—वि०—चंपा वृक्ष के फूल के रंग के समान, पीले रंग का ।

चंपाकळी—सं०स्त्री०— १ स्त्रियों का गले में पहिनने का एक आभूषण विशेष जिसमें चंपा की कली के आकार के सोने के दाने जंजीर या रेशम के धागों में गुंथे रहते हैं. २ चंपा वृक्ष की कली या फूल ।

चंपाणौ, चंपाबौ—क्रि०स०—१ भयभीत करना । उ०—नारव कौ देवा निगळि अग्गै उफणाया, इत नर उर न्रिप के सचिव चाळुक चंपाया ।—वं.भा.

२ लज्जित कराना. ३ चौंकाना. ४ छिपाना. ५ दबाना ।

चंपाधप, चंपाधिप—सं०पु०यौ० [सं० चम्पाधिप] कर्ण का एक नाम (अ.मा.)

वि०वि०—महाभारत में एक स्थान पर लिखा है कि दुर्योधन ने कर्ण को अंग देश का राज्य दे दिया था । अंग देश की राजधानी चंपापुर थी, अतः कर्ण 'चंपाधिप' कहलाने लगे ।

चंपानयरी, चंपानरी—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की तलवार.

२ चंपानगरी ।

चंपापुर—देखो 'चंपा' (रू.भे.)

चंपायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ.

२ चौंकाया हुआ. ३ लज्जित किया हुआ. ४ दबवाया हुआ ।

(स्त्री० चंपायोड़ी)

चंपारण्य, चंपारन—सं०पु० [सं० चंपारण्य] प्राचीन काल का एक जंगल, चम्पारन ।

चंपावणौ, चंपावबौ—देखो 'चंपाणौ' (रू.भे.)

चंपावरनी, चंपावरणी—देखो 'चंपकवरणी' (रू.भे.)

चंपावियोड़ौ—देखो 'चंपायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चंपावियोड़ी)

चंपियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ छुपा हुआ. २ भयभीत. ३ लज्जित, शंकित (स्त्री०—चंपियोड़ी)

चंपी—सं०पु०—१ चांपना या दबाना क्रिया का भाव । उ०—पगचंपी में करूं आपरी, हाजर खड़ी हजूर । घूणी ऊपर पड़चौ रहूंला, नहीं आपसूं दूर ।—अज्ञात

२ शिर में तेल डाल कर मालिश करने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी ।

चंपू—सं०पु० [सं०] वह काव्य ग्रंथ जिसमें गद्य के साथ पद्य भी हो । गद्य-पद्यमय काव्य ।

चंपेल—सं०पु०—चमेली का तेल । उ०—बांधूं वड़ री छांहड़ी, नीरूं नागर वेल । डांम संभाळूं हाथ सूं, चोपड़ सूं चंपेल ।—ढो.मा.

चंपेली—१ देखो 'चमेली' (रू.भे.) उ०—म्हारी धीयज हाथ री मूंदड़ी, जंवाई म्हारै चंपेली रौ फूल, सहेल्यां ए आंबौ मोरियौ । —लो.गी.

२ देखो 'चंपेल' (रू.भे.)

चंपेलू—देखो 'चंपेल' (रू.भे.)

चंपोराव—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चंपौ—सं०पु० [सं०चंपक] १ हल्के पीले रंग के सुगंधित फूलों वाला एक वृक्ष तथा इसका फूल । उ०—चंपौ चीतोड़ाह, पोरस तणौ 'प्रतापसी' । सौरभ अकबर साह, अलियळ आभड़ियौ नहीं ।—सूरायच टापरियौ

२ एक प्रकार का बड़ा सदाबहार पेड़ जो दक्षिण भारत में बहुतायत से पाया जाता है ।

३ चंपा जाति का एक रंग विशेष का घोड़ा ।

रू०भे०—चांपौ ।

अल्पा०—चंपलौ ।

चंबल—सं०स्त्री [सं०चर्मण्यवती] राजस्थान की दक्षिणी पूर्वी सीमा पर बहने वाली एक नदी जो विंध्याचल पर्वत से निकल कर यमुना में मिलती है ।

चंबुक—सं०पु० [सं० चुंबक] १ एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर लोहे की चोट पड़ने से आग निकलती है । चकमक ।

२ देखो 'चुंबक' (रू.भे.)

चंबेली—देखो 'चमेली' (रू.भे.)

चंमर—देखो 'चंवर' (रू.भे.)

चंमांट—सं०स्त्री—चिमटी । उ०—हरी वाळ चंमांट जेही चहोड़ै । तमासा ज्यूंहीं खांचि धांनंख तोड़ै ।—सू.प्र.

चंमाळीस—देखो 'चमाळीस' (रू.भे.)

चंम्मर—देखो 'चंवर' (रू.भे.) उ०—दळां गहमह कीध डंवर, चौसरा सिर हुवा चम्मर । गाजतां गज मेघ गाजा, वाजतां मंगळीक वाजा । —सू.प्र.

चंयाळीस—देखो 'छयालीस' (रू.भे.)

चंवटौ—देखो 'चौंवटौ' (रू.भे.) उ०—चंवटै ऊतरिया हालरिया रा बाप, ओरां में उतरी सीतळा ।—लो.गी.

चंवर-सं०पु० [सं० चामर] १ राजाओं या देव-मूर्तियों के सिर पर पीछे या बगल से डुलाया जाने वाला सुरा गाय की पूंछ के बालों का गुच्छा जो काष्ठ, चांदी या सोने के डंडे में लगा रहता है।
क्रि०प्र०—करणो, डुलाणो, ढुळाणो।
पर्याय०—वालव्यजरण, रोमगुच्छ।
रू०भे०—चम्मर, चांमर।
यौ०—चंवरदार।
२ देखो 'चंवरी' (२) (रू.भे.) उ०—पहुवै नह पौंढ़ीह, उर कोडी बिलगी ग्रगां। चांवर वीन ढोळीह, किम कर सोढ़ी कांमणी—पा.प्र.
वि०—श्वेत, सफेद० (डि.को.)

चंवर गाय-सं०स्त्री०—वह गाय जिसके पूंछ के बाल सफेद हों तथा गुच्छेदार हों।

चंवरदार-सं०पु०—चंवर डुलाने वाला सेवक।

चंवरियौ—देखो 'चांवरौ' (अल्पा.)

चंवरी-सं०स्त्री—१ काठ की डंडी में घोड़े की पूंछ के बालों का लगाया हुआ गुच्छा जो प्रायः मक्खियां आदि उड़ाने के काम में लिया जाता है।
[सं० चतुरिका, चत्वर, प्रा० चउरी] २ विवाह-मंडप, वेदी।
उ०—१ चाल करि कुनणपुर एम चंवरी चढे। 'जगा' री किसनगढ़ जोध जेही।—कमो नाई
उ०—२ परणीजतां मंगळीक बाजतौ हो, उण ढोल रा ही बाजा सूं मूंढ भुंहारां सूं मिळी ही सो म्हैं तो चंवरी में ही परख लीधो—कंत सूरवीर जुद्ध में मरणवाळो है।—बी.स.टी.
मुहा०—चंवरी चढ़णो (बैठणो)—विवाह के लिये वर या वधू का विवाह-मंडप में प्रवेश करना।
रू०भे०—चांमरी, चम्मरी, चउरी।
यौ०—चंवरी-दापो।
३ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाला प्राचीन समय का सरकारी कर।
४ विवाह-मंडप में पाणिग्रहण संस्कार हेतु दूल्हे के आगमन पर गाया जाने वाला एक मारवाड़ी लोकगीत. ५ वह गाय जिसके पूंछ के बाल सफेद व गुच्छेदार हों।
रू०भे०—चंवर गाय।
६ जागीरदारों द्वारा प्रजा से विवाह के अवसर पर कन्या के पिता या संरक्षक से लिया जाने वाला कर।

चंवरीदापो-सं०पु०यौ०—विवाह-मंडप में भांवरी संस्कार होने के बाद उसी समय कुल-गुरु को नेग के रूप में दिया जाने वाला द्रव्य।

चंवरौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का वृषभ जिसके पूंछ व आंखों दोनों के बाल सफेद होते हैं। यह अशुभ माना जाता है. २ जमीन के काष्ठ के मोटे व मजबूत डंडे गाड़ कर उस पर छाजन आदि डाल कर बनाई जाने वाली झोंपड़ी। लकड़ियों के सहारे बना कच्चा मकान. ३ शरीर के अंगों पर से मैल उतारने का उभरे हुए दानों का एक उपकरण विशेष. ४ काष्ठ की डंडी में घोड़े की पूंछ के बालों का लगाया हुआ गुच्छा जो प्रायः मक्खियां आदि उड़ाने के काम में लिया जाता है।

चंवळाई—१ देखो 'चंदळाई' (रू.भे.) २ देखो 'चंवळेरी' (रू.भे.)

चंवळेरी, चंवळोड़ी-सं०स्त्री०—चौला नामक द्विदलीय अनाज की फली।

चंवळौ-सं०पु०—एक प्रकार का द्विदलीय अनाज जिसकी दाल बनाई जाती है, चौंला।

चंवार-सं०स्त्री०—मूंग, मोठ, चौंला आदि अनाज के पौधों के पुष्प।

चंवाळियौ-सं०पु०—भारी पत्थर उठाने की मजदूरी करने वाला मजदूर (इमारत)

च-सं०पु०— १ आलिंगन. २ ज्वाला. ३ अग्नि. ४ चंद्रमा. ५ समूह. ६ मुख. ७ ग्रह. ८ मनोहर. ९ संपत्ति. १० मूर्ख. ११ चोर. १२ दुर्जन. १३ कच्छप (एका०)
अव्य०—और। उ०—दीसइ विवहचरियं जांणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो अप्पणं च कळिज्जइ, हुंडिज्जइ तेण पुहवीए।—ढो.मा.

चइ-सं०स्त्री० [अनु०] हाथी को घुमाने आदि के समय महावतों द्वारा बोला जाने वाला शब्द।
अव्य०—के। उ०—पूगळ देस दुकाळ थियुं, किणहीं काळ विसेसि। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चइ देसि।—ढो मा.

चइलो, चईलो-सं०पु०— १ मार्ग, राह, रास्ता. २ गाड़ियों के पहियों के निशानों से बना हुआ रास्ता।
२ लोहे की बनी रेल की पटरी. ४ परिपाटी, रूढ़ि।
रू०भे०—चहिलो, चहीलो, चीलो, चील्लो, चील्हो।

चउंर—देखो 'चंवर' (रू.भे.)
उ०—मारू अउ राउ सहदेइ मत्ति ताणावि छत्र वइठउ तखत्ति। ऊजलां चउंर ढळकइ अवीह, सिरि छत्र अविच्चळ जइतसीह।
—रा.ज.सी.

चउ-वि० [सं०चतुर] चार। उ०— १ केसव कुळ सुखसिह उचित कहि घुर भट ए चउ गेह धरे—वं.भा.। उ०—२ कीधा इण खेतल कंवर आगै चउ उपयांम—वं.भा.।
अव्य०—संबंधसूचक, का। उ०—ढोलउ मारू परणिया, वरदळ हुवउ उछाह। आ पूगळ ची पदमिणी, अउ नरवर चउ नाह।—ढो.मा.

चउक—देखो 'चौक' (रू.भे.) उ०—मोती चउक पुराविया। वाजीत्र बाजै घुरइ निसांण।—बी.दे.
देखो—'चौकी' (रू.भे.) उ०—ढोलउ मारू पउढिया, रस मइं चतुर सुजांण। च्यारे दिसि चउकी फिरइ, सोहड़ भूप जुवांण।
—ढो.मा.

चउकोवट्ट-सं०पु० [सं० चतुष्कपट्टः] काष्ठ की चौकी।

चउगठि, चउगट्टि—देखो 'चौखट' (रू.भे.) (उ.र.)

चउगणउ, चउगणो, चउगिणउ, चउगुणउ, चउगुणो—देखो 'चौगुणो'

(रू.भे.) (उ.र.) उ०—१ धन दिहाड़उ आज कउ, देव उठि दीयौ चउगिणउ मांन।—वी.दे. उ०— २ पांडचा परधांन तेड़ावीयौ आंणि। देसू जव लगि चउगणौ मांन—वी.दे.

चउघड़यउ, चाउघड़िउ—देखो 'चौघड़ियौ' (रू.भे) (उ.र.)

उ०—माघ पंडित बोलइ तिणि ठाई। उचघड़यउ वाजइ सीह दुवारि।—वी.दे.

चउचाळक-सं०पु०—कछुआ। उ०—गज ठगियां घण ग्राह, बाह जणियां वादाळक। तणियां करभ तिमीस, चरम भणियां चउचाळक।
—वं.भा.

चउडोत्तरसउ—देखो 'चौड़ोतरसौ' (रू.भे.) (उ.र.)

चउतरौ—देखो 'चबूतरौ' (रू.भे.) उ०—घड़ी-घड़ी घड़ियाळे सांन, राति दिवस नुं लाभइ मांन। चहुटां चउक चउतरां घणां, ठांमि ठांमि मांडई पेखणां।—कां.दे.प्र.

चउत्थ—१ देखो 'चौथौ' (रू.भे.) उ०—पहर चउत्थै पौढ़ियौ, गिणतौ फौज गरीव। दोय घड़ी जक जीभ नूं, वैरी आंण नकीव।
—वी.स.

स्त्री०—चउत्थी।

२ देखो 'चौथ' (रू.भे.) ३ एक प्रकार का व्रत जिसमें तीन समय छोड़ कर चौथे समय भोजन किया जाता है (जैन)

चउत्थौ—देखो 'चौथौ' (रू.भे.) उ०—सुमिरि सु चउत्थि हड्डिय सतिय काय हाय रक्खहिं किलन।—वं.भा.

स्त्री०—चउत्थी।

चउत्रीस—देखो 'चौतीस' (रू.भे.) (उ.र.)

चउथ, चउथउ, चउथि, चउथी—देखो 'चउत्थ' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—१ चउथ अंधारी (दि) नई मंगळवार, चंद उजाळउ घरि घरि बारि।—वी.दे. उ०— २ विढ़यउ जउत चउथि सिनिवारे।
—रा.ज.सी.

उ०— ३ त्रीजीइ अणतउ सीसोदीउ, जइत वाघेळउ चउथी रहिउ।—कां.दे.प्र.

चउथौ—देखो 'चउत्थौ' (रू.भे.) उ०—पदमनांभ पंडित मति कही, चउथा खंड समाप्ति हुई।—कां.दे.प्र. (स्त्री० चउथी)

चउदंती-सं०पु० [सं० चतुर्दन्ती] इन्द्र का एरावत हाथी जिसके चार दांत माने जाते हैं। उ०—चउदंतौ चउ पासी रूप मणोहर।—स.कु.

चउदंतौ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चउद—१ देखो 'चवदै' (रू.भे.) २ देखो 'चवदस' (रू.भे.)

चउदसी—देखो 'चवदस' (रू.भे.) (उ.र.)

चउदह, चउद्दह—देखो 'चवदै' (रू.भे.) उ०—करण अरथ चउदह विद्या वे उर व्याकरण भला गुण जांणगर।—ल.पिं.

चउदमउ, चउदमौ—देखो 'चवदमौ' (रू.भे.)

चउपट-क्रि०वि०—खुलेआम। उ०—हुई वेढ़ि सरोवर तिणि वार, राउति भलां कियां हथियार चउपट। घाइ एक मना भिड़चा, लखणउ नइ साल्हउ रिण पड़चा।—कां.दे.प्र.

सं०पु०—देखो 'चौपट' (रू.भे.)

चउपन—देखो 'चौपन' (रू.भे.) (उ.र.)

चउफळा-क्रि०वि०—देखो 'चौफेर' (रू.भे.) उ०—रचीइ चंद्रूआ चउफळा ए मांहि मोतीयड़े जाळ।—कां.दे.प्र.

चउरसउ-वि० [सं० चतुस्रः] चार (उ.र.)

चउरांणूं, चउरांणू—देखो 'चौरांणू' (रू.भे.) (उ.र.)

चउरासियौ-सं०पु०—१ वह राजपूत जिनके अधिकार में भूमि न हो। २ देखो 'चौरासियौ' (रू.भे.)

चउमाळीस—देखो 'चौमाळीस' (रू.भे.) (उ.र.)

चउरासी—१ देखो 'चौरासी' (रू.भे.) उ०—कुं कुं चंदन पाका पांन, कर जोड़े राजा कहई। चालउ चउरासी राव की की जांन।
—वी.दे.

चउरी—देखो 'चंवरी' (रू.भे.) उ०—गढ अजमेरां गम करउ, चउरी बइसौ पखाळज्यौ पाव।—वी.दे.

चउवांण—देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चउवीस—देखो 'चौवीस' (रू.भे.) (उ.र.)

चउसट्ठि, चउसठि—देखो 'चौसठ' (रू.भे.) उ०—१ देवड़ी नांमि उमा घरणि, मारुवणी तसु धू कुमरि। चउसठि कळा सुंदरी चतुर, कथां तास कहिसुं सुपरि।—ढो.मा.

उ०— २ घूम्मै खेतरपाळ ले घन रत्त घुटक्कै। चाहै रत्त चटट्ठिके चउसट्ठि चहक्कै।—वं.भा.

चउसाळउ—देखो 'चौसाळा' (रू.भे.) (उ.र.)

चउहट्ट, चउहट्टइ—देखो 'चौहटौ' (रू.भे.) उ०—लाखीक मिळइ मांडही लोक, चउहट्ट हाट मांणिक्क चौक।—रा.ज.सी.

चउहूंगमाह-क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—रउद्रगइ फेरियउ चकराह, गाजिया गोण चउहूंगमाह।—रा.ज.सी. (मि. चौफेर)

चउहत्तरी—देखो 'चौहोतर' (रू.भे.)

चऊ-सं०स्त्री०—हल में फाल (हळवांणी) के नीचे लगाया जाने वाला काष्ठ का नुकीला व सम्मुख से चपटा उपकरण। उ०—कूमठ रौ हळ चऊ सुरंगी, नाई बीजणी सोवै। काढ़ ऊमरा धरती थारी, आभै नै कांई जोवै।—रेवतदांन

चउआंण—देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चऊदह, चऊदै—देखो 'चवदै' (रू.भे.) उ०—रहित चऊदह खट सौ रूप, अठरह मात्रा छंद अनूप।—ल.पिं.

चऊपट—देखो 'चउपट' (रू.भे.) उ०—आवी पाद्रि सइंफळउं मांडचउं, लीधा चउपट घाउ। सोरठिया राउत सपरांणा, न दीइ पाछा पाउ।—कां.दे.प्र.

चऊरस-सं०पु०—प्रथम चार लघु फिर दो गुरु सहित कुल ६ वर्ण का एक वरण वृत्त।—र.ज.प्र.

क्रि०वि०—चारों ओर।

चक-सं०पु० [सं० चक्र, प्रा० चक्क] १ जमीन का बड़ा भाग, भूखंड।

२ किसी बात के लिये निरन्तर किया जाने वाला हठ. ३ दांतों से काटने का काम या क्रिया। उ०—म्हारै चक बोड़चो म्हाराज। थोर नी म्हारै कूंडै न काढ़ै।—दरसणांठ।

४ दांतों से कटा हुआ शरीर का कोई स्थान या कटे हुए स्थान पर दांतों का चिन्ह, दंतक्षत। (मि० 'चकारो' २)

५ किला। उ०—चक प्रचळानळ चळचळे, गहण गूघळै गरट्ठ।—भगवानजी रतनू

६ पृथ्वी, जमीन. ७ देखो 'चक्र' (रू.भे.)

क्रि०वि०—१ ओर, तरफ। उ०—चहक पावक बमक चहु चक। तव अरक रन परक कौतिक।—सू.प्र.

चकई-सं०स्त्री० [सं० चक्रवाक+रा. प्र. ई] मादा चकवा पक्षी।

चकचौकम-वि०—चकित, स्तंभित, विस्मित, प्रज्ञाशून्य।

मुहा०—चकचौकम होणौ—आश्चर्य में पड़ना, किंकर्तव्यविमूढ़ होना।

चकचौटोप-सं०पु०—शिरस्त्राण, लोहे का टोप।

चकचक, चकचकाहट-सं०स्त्री० [अनु०] १ पक्षियों का कलरव, चहचहाहट. २ जनरव, बकवास. ३ लोकोपवाद। उ०—मिनख रो मुख मांय, गुपत वात जब तक गिणै। जब मुख सूं कढ़ जाय, चकचक होवै चकरिया।—मोहनलाल साह

४ गहरे घी में बना पदार्थ, जिसमें से घी चूता हो।

चकचकाणौ-सं०पु०—चकचक या चहचहाहट होने की क्रिया।

चकचकाणौ, चकचकावौ-क्रि०अ०—चकचक करना, चहचहाना।

चकचकी-सं०स्त्री०—एक प्रकार की छुरी। उ०—पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्यानां मांहां काडजै छै।—रा.सा.सं.

चकचवक—देखो 'चकचक' (रू.भे.)

चकचाळ-सं०स्त्री०—१ चर्चा, वार्ता आदि प्रारम्भ करने की क्रिया या भाव. २ छेड़छाड़।

चकचाळौ-सं०पु०—१ उपद्रव, उत्पात।

मुहा०—चकचाळौ छेड़णौ—उपद्रव करना, उत्पात आरंभ करना।

२ युद्ध, लड़ाई। उ०—'नांपा' करण मुर्दं चकचाळा। ऊदा वाळा वंश उजाळा।—रा.रू.

चकचूंदियौ, चकचूंध, चकचूंधियौ-सं०पु०यौ० [सं० चक्षु+रा.प्र.ऊंदियौ] १ अधिक तेज प्रकाश के कारण आंखों की झपक अथवा दृष्टि की अस्थिरता, तिलमिलाहट. २ संध्याकाल का वह समय जब न पूर्ण अंधेरा हो और न पूरा प्रकाश ही हो. ३ काष्ठ के नुकीले डंडे पर चंद्राकार लकड़ी रख कर उसके दोनों सिरों पर बैठ कर गोल चक्कर में झूले जाने का एक यंत्र विशेष. ४ बाह्य प्रदर्शन, दिखावा।

वि०—आकर्षक, मोहक, मनोहर।

चकचूर, चकचूरण-सं०पु० [सं० चक्र+चूर्ण] १ नाश, ध्वंस।

उ०—मर्णोभ्रम 'नाहर' जूटत नूर। चंद्रासक मेछ करै चकचूर।

—सू.प्र.

२ मर्दन।

वि०—१ चकनाचूर, खंड-खंड। उ०—१ लरयौ तन तेगन तें चकचूर, पुकारत मेक मसूर मसूर।—ला.रा.

उ०—२ हठ नाठ पेठ बाजार हाट, प्राजळै महल चंदण कपाट। नानरे गवण चकचूर चोट, कांगरां अंबारथ भुरज कोट।—वि.सं. (मि०—चकनाचूर)

२ मदोन्मत्त, नशे में चूर। उ०—चिपि नसां मांय चकचूर हुय, सरमा दूर सिधावसी। गित राड़ि समै किय खत्रियां, वाड़ खेत नै खायसी।—ऊ.का.

३ तन्मय, मग्न, तल्लीन, चूरचूर। उ०—इतरै यवन री फेट सूं रतनां री साड़ी री पल्लो पिण दूर हुवो जदे कंवर री चित घणो चकचूर हुओ।—र. हमीर

चकचोळ-वि०—१ क्रुद्ध, कुपित. २ लाल. ३ मादक, मदयुक्त।

सं०स्त्री०—१ क्रीड़ा। उ०—नभ सरणी रै बात फुहारां गात सुहावै, ठाडी छांह मंदार विसांणी लैण लुभावै। चळ करती चकचोळ सुरां उर हांम जगाती, रमै धिवड़ियां कोड हेम-रज रतन लुकाती।—मेघ.

२ लाल नेत्र, आरक्त नेत्र. ३ चपलता, चंचलता।

उ०—अधर बिच पोढ़ी सांस भुलाय, सांयत जग भर की सणचेत। चंचळ अंगां री चकचोळ, लेयगी नभ पथ किसी कुमेत।—सांझ

चकचौंध, चकचौंह—देखो 'चकचूंध' (१) (रू.भे.)

चकडोळ, चकदोळ-सं०स्त्री० [सं० चक्र+दोलः] १ नशे की खुमारी, मादकता. २ पालकी, डोली। उ०—१ साह बेगम री चकडोळ साथै छै। कोस दोय रै आंतरै डेरा किया।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ तिसै चावड़ी वीरमती सहेल्यां रा साथ सूं चकडोळ बैस ने आप री बाग छै तठै आई।—जगदेव पंवार री वात

चकत—१ देखो 'चगताई' (रू.भे.) २ देखो 'चकित' (रू.भे.)

उ०—नमामी सामरथ्य प्रबळ बळ व्यरथ प्रभु विना, विसुद्धी रुद्धीसी चकत मय बुद्धि विभु दिना।—ऊ.का.

चकताई—१ देखो 'चगताई' (रू.भे.)

चकती, चकत्तौ, चकत्यौ—१ देखो 'चगताई' (रू.भे.) उ०—१ चखाड़े कूंत चकतां धणी चापड़े, रौद धड़ पछाड़े अचळ राखी। जीवतां सिंभ महाराज वरणियो 'जसो', समर चा करै रवि चंद साखी।

—राठौड़ महाराजा जसवंतसिंह गजसिंघोत रौ गीत

उ०—२ वळट्ठ दुसट्ठ हठाळ वंगाळ, चकत्या इसा चालिया काळ चाळ।—वचनिका

२ दांतों से काटने पर होने वाला चिन्ह, दंतक्षत।

क्रि०प्र०—नांकणौ, भरणौ, मांडणौ।

४ खंड, टुकड़ा. ५ रक्त-विकार से अथवा खुजलाने से शरीर पर होने वाली चकती की तरह गोल चपटी व बराबर सूजन।

चकनचूर, चकनाचूर-वि०—१ जिसके टूट-फूट कर बहुत से छोटे-छोटे टुकड़े हो गये हों, खंड-खंड। उ०—केते कुठार बाहत करूर, परिघन कितेक सिर चकनचूर। बंके छछोह करि चोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट खेल।—ला.रा.

२ पूर्ण थका हुआ, क्लांत।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

३ देखो 'चकचूर' (रू.भे.)

चकपत्त-सं०पु०यौ० [चक = दिशा+पति] दिक्पाल। उ०—चले चकपत्त चळद्दळ भांति, तळातळ ज्यौं अतळा विचळाति। ससत्रनि तेज हुतासन धुक्ख, प्रळै रवि की मनु तुट्टि मयुक्ख।—ला.रा.

चकबंदी-सं०स्त्री—भूमि को भागों में विभाजित कर सीमाबंदी करने की क्रिया।

चकबंध-सं०पु० [सं० चक्रबंधु] सूर्य (नां मा.)

चकबस्त-सं०पु० [फा०] भूमि का विभाजन कर उसमें सीमाबंदी करने की क्रिया, हदबंदी।

चकवी-सं०स्त्री—चकवी (जल-पक्षी विशेष) उ०—ज्यूं चकवी मनि रहै उदास, ऐसे आतम फूलि ले सुवास।—ह.पु.वा.

चकमक-सं०स्त्री० [तु० चक्मक] १ एक प्रकार का कड़ा पत्थर, जिस पर चोट पड़ने व घर्षण होने से आग की चिनगारियां उत्पन्न होती हों।

२ चमक, दमक। उ०—चांद्या तेरी चकमक रात, जी कोई नणद भोजाई पांणी नीसरी।—लो.गी.

३ आग, अग्नि। उ०—कहर झड़ै चकमक चखां चांपिया नाग कळ।

—रावत अरजुणसिंह चूंडावत री गीत

चकमार—देखो 'चूकमार' (रू.भे.) उ०—गुरजां चकमारां, अंग अपारां डावै पहां जमडड्ड।—गु.रु.बं.

चकमाळा—सं०स्त्री०—छेड़छाड़। उ०—मन में आ धारणा थी सो औरंगजेब सूं हर भांत चकमाळी कर अड़ां लड़ां तो केतौ सुरंग नुं खड़ां कै खंड-विहंड होय खेत में पड़ां।

—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात।

चकमौ-सं०पु० [सं० चक्र = भ्रांत] १ भुलावा, धोखा।

मुहा०—१ चकमौ उठाणौ—किसी के धोखे में आ जाना। २ चकमौ खाणौ—धोखा खाना, भुलावे में आना। ३ चकमौ देणौ—धोखा देना। ४ चकमा में आणौ—धोखा खाना।

२ हानि, नुकसान।

मुहा०—चकमौ उठाणौ—हानि सहना।

[रा०] ३ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र। उ०—१ तद सीसोदणी कयौ 'जी चकमा ओढ़ डेरै जावौ, अठे थांनूं कुण जीमासी'।—द.दा.

उ०—२ भरमल माटी री ऊंचौ मोटौ चौक करायौ तिण ऊपर खड़ी छै। घूघीदार चकमौ ओढियां छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

चकर—१ देखो 'चक्र' (रू.भे., अ.मा.) उ०—तूंगा चकर तूजीहां, कूंत भूथांण हवाई।—वखतौ खिड़ियौ

२ बलिदान किये जाने वाले पशु पर किया जाने वाला तलवार का प्रहार। (मि०—वरकौ) ३ देखो 'चक्कर' (रू.भे.)

चकरअणदीठ, चकरअदीठ, चकरअदीठौ-सं०पु०—१ अदृश्य या दैवी आपत्ति, सहसा उपस्थित होने वाली आपत्ति. २ अदृश्य रूप से प्रहार होने वाला अस्त्र। उ०—चकरअदीठ चक्रवत रा वैरहरां ऊपर वहै।—उमेदजी सांदू

चकरड़ी—१ देखो 'चकरी' (अल्पा. रू.भे.)। उ०—फेरइ चकरड़ी माता प्रेरइ। बाळूड़ा बलिहारी तेरइ।—ऐ.जै.का.सं.

२ देखो 'चक्री' (अल्पा. रू.भे.)

चकरणौ, चकरबौ—देखो 'चकराणौ' १,२,३ (रू.भे.)

चकरधर, चकरधरण—देखो 'चक्रधर' (रू.भे.)। उ०—गुरड़धज तरण गज अमर पति, अगम गति चकरधरण ओळगै।—पिं.प्र.

चकरवरती—देखो 'चक्रवरती' (रू.भे.) उ०—वंरासी अमल चकरवरती रौ, तदि आवसी कि पर धरत्री रौ।—सू.प्र.

चकराकत-वि०—१ विस्मित, आश्चर्यान्वित, किंकर्त्तव्यविमूढ़.

२ भयभीत, आतंकित।

चकराणौ, चकराबौ-क्रि०अ० [सं० चक्र] १ अचम्भित होना, चकित होना, चकराना. २ (शिर का) चक्कर खाना, घूमना. ३ भ्रम में पड़ना, भूलना।

रू०भे०—चकरणौ, चकरबौ।

क्रि०स०—४ अचम्भित करना, चकित करना, चकराना. ५ भ्रम में डालना, भुलाना।

चकराणहार, हारौ (हारी), चकराणियौ—वि०।

चकरवाड़णौ, चकरवाड़बौ, चकरवाणौ, चकरवाबौ, चकरवावणौ, चकरवावबौ, चकराड़णौ, चकराड़बौ, चकरावणौ, चकराववौ

—प्रे०रू०

चकरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चकराईजणौ, चकराईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

चकरणौ, चकरबौ—अक० रू०।

चकरायत-सं०पु० [सं० चक्र+रा०प्र० आयत] योद्धा, शूरवीर।

उ०—गड़गड़ै नगारां नाद गहरायतां। चौगणां जोस मुख चढ़ै चकरायतां।—महादांन महड़ू

चकरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चकराया हुआ, विस्मित, चकित. २ (शिर) चक्कर खाया हुआ. ३ भ्रम में पड़ा हुआ; भूला हुआ. ४ विस्मित किया हुआ, चकित किया हुआ. ५ भ्रम में डाला हुआ, भुलाया हुआ।

स्त्री०—चकरायोड़ी।

चकरावणौ, चकराववौ—देखो 'चकराणौ' (रू.भे.)

चकरावियोड़ौ—देखो 'चकरायोड़ौ' (रू.भे.)

स्त्री०—चकरावियोड़ी।

चकरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अचम्भित, चकित. २ भूला हुआ, भ्रमित।

स्त्री०—चकरियोड़ी।

चकरियौ-सं०पु०—१ कपड़ा बुनने का एक जुलाहों का औजार।

२ देखो 'चक्र' (अल्पा. रू.भे.) उ०—व्यावां घर दोगणा दिपणा, मुरधर में माटी तणा। चांद चकरिया रेल कोरण, सिर सूणा खदा खिणा।—दसदेव

चक्क—१ देखो 'चक्र' (रू.भे.) उ०—दरम्मद मरि मुग्तांग दद, मत्तमद्द दाने चक्क ।—रा.ज.सी.

२ देखो 'चक्र' (रू.भे.) उ०—१ उम्मेद मुरति थंग में, रसबीर संतुलि रंग में। दरबीर वारह ने प्रवीरन, चक्क ले चहुवांग्र।

—वं.भा.

उ०—२ विछोह चक्क चक्कयं, अनेक वीर वक्कयं।—ला.रा.

चक्कडोटीन—देखो 'चक्रडोटीन' (रू.भे.)

चक्कधरी—सं०पु० [सं०चक्र = राज्य + धारिन्] चक्रवर्ती राजा, राजा।
उ०—जिन ममगाउरी टंडु, भूमंडलि जिम चक्कधरी। संघह माहि मुणिंदु, तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरो।—ऐ.जै.का.सं.

चक्कय—सं०स्त्री०—मादा चकवा पक्षी। उ०—विछोह चक्क चक्कयं अनेक वीर वक्कयं।—ला.रा.

चक्कर—सं०पु०—१ देखो 'चक्र' (रू.भे.) उ०—१ चढ़ ऊतर वाय चलाय सु चक्कर, राख लियो अपणाय'र रे। अहियां ब्रिद लाज उबारण ग्रायक काज इसा महाराज करे।—भक्तमाळ

उ०—२ दरगण देहरे हुवो मातु वाक्य तो मुख रो। काठो हुवै निसंक चक्कर वहसी करणी रो।—ठाकर जैतसी री वारता

२ गोल या मंडलाकार घेरा, वृत्ताकार परिधि, मंडल।

मुहा०—१ चक्कर काटणौ—वृत्ताकार परिधि में घूमना, परिक्रमा करना, इधर-उधर घूमना. २ चक्कर खाणौ—भटकना, भ्रांत होना, हैरान होना. ३ चक्कर मारणौ—चारों ओर घूमना, इधर-उधर फिरना, भटकना. ४ चक्कर में आणौ—चकित होना, अचंभे में आना. ५ चक्कर में नांखणौ—चकित करना, हैरान करना, परेशान कर देना. ६ चक्कर लगाणौ—चारों ओर घूमना, इधर-उधर फिरना, फेरा लगाना, घूमना-फिरना।

३ मंडलाकार, मार्ग, घुमाव का रास्ता।

मुहा०—१ चक्कर खाणौ—घुमाव-फिराव के साथ जाना, सीधे न जाकर टेढे-मेढे जाना. २ चक्कर पड़णौ—जाने के लिये सीधा न पड़ना, घुमाव या फेर पड़ना।

४ पहिये का अक्ष पर घूमना।

मुहा०—१ चक्कर खाणौ—पहिये की तरह घूमना, अक्ष पर घूमना. २ चक्कर देणौ—मंडल बांध कर घूमना, प्रदक्षिणा करना, मंडराना। ३ चक्कर लगाणौ—परिक्रमा करना, मंडराना।

५ घुमाव, जटिलता, दुरूहता, फेर-फार।

मुहा०—१ चक्कर में आणौ—धोखे में आना। २ चक्कर में नांखणौ—असमंजस में छोड़ना, धोखे में डालना। ३ चक्कर में पड़णौ—असमंजस या दुविधा में पड़ना। ४ चक्कर में फंसणौ—धोखे में आना; दम, अधिकार या चंगुल में आना।

६ सिर घूमना, घुमटा, मूर्च्छा।

मुहा०—चक्कर आणौ—सर चकराना, घुमटा आना।

७ पानी का भंवर. ८ जंजाल।

मुहा०—चक्कर आणौ—विपत्ति आना, आफत आना।

चक्करजीवन—सं०पु०—कुंभकार, कुम्हार।

चक्करदार—वि०प्रो०—जिसमें चक्कर हो। उ०—गुरड़ी तेरी रंग-रंगीली, तकळी चक्करदार। चोखो वण्यो दमकड़ो तेरो, कूकड़िये री लार।—लो.गी.

चक्करवरती, चक्कवई, चक्कवट्टि, चक्कवत, चक्कवै, चक्कव्रत्ति—१ देखो 'चक्रवरती' (रू.भे.)

उ०—१ नकतो अकबर चक्कवै, पतसाहां पतसाह। चतुरंगी फौजां चढै, दिये दुरंगां दाह।—बां.दा.

उ०—२ अगहल्य जगत सिर जळहळे, दस द्रिगपाळ दहुवकवै। महि 'माल' छहां जिहां, चौथे पहोरे चक्कवै।—सू.प्र.

उ०—३ जुग पांणिग्रहण हुई वार जिण सोम सक्कवै, दुलही सजोड़ लीधा दुलह च्यारूं फेरा चक्कवै।—रा.रू.

उ०—४ तिणि परि हुउ संति जिणेसरु, संगह संति करउ परमेसरू चक्कवट्टि किरि पंचमउ।—पं.पं.च.

उ०—५ जांणे तीह नइ छइ चक्कवत्ति रिद्धि चऊद रयण छइं अन नव विधि।—चि. चउपई

चक्की—सं०स्त्री० [सं० चक्री] १ पत्थर के दो गोल पाटों को एक दूसरे पर रख कर आटा पीसने या दाना दलने के लिये बनाया जाने वाला एक यंत्र।

मुहा०—१ चक्की पीसणौ—लगातार काम करना, चक्की चलाना. २ चक्की में जुतणौ—काम में लगना। ३ चक्की टांचणौ—चक्की को टांकी से खोद-खोद कर खुरदरा करना जिससे दाना अच्छी तरह पीसा जावे।

२ जमा कर चौकोर काटा हुआ किसी खाद्य पदार्थ का टुकड़ा अथवा इसी प्रकार की कोई अन्य वस्तु. ३ एक प्रकार की मिठाई।

४ दांतों को काटने का भाव या दांतों से काटने पर होने वाला चिन्ह, दंतक्षत. ५ तलवार (ना.डि.को.) ६ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिला कर ६ गुरु और ४५ लघु वर्ण सहित ५७ मात्रायें हों (र.पिं.)

चक्कू—देखो 'चाकू' (रू.भे.)

चक्को—सं०पु० [सं० चक्र, प्रा० चक्क] १ पहिया. २ पहिये के आकार के समान कोई गोल वस्तु. ३ जमा हुआ कतरा, अंथरी, थक्का—ज्यूं दही रो चक्को।

चक्ख—देखो 'चख' (रू.भे.) उ०—हुई दौड़ हैमरां, नरां ऊपरां करारां। सेख ज्वाळ सल्लकी, कनां सिव चक्ख विकारां।—रा.रू.

चक्खी—देखो 'चक्की' (रू.भे.) उ०—सो रोगांनी रोसनी केसरिया चक्खी, भांति भांति की मिठाई। मेवे की पुलाव अनेक आई।

—सू.प्र.

चक्खेव—देखो 'चख' (रू.भे.) उ०—साळीग्राम चक्खेव अक्खे सरोसं, गिर्ग कांन वे सारिखा सीहगोसं।—वचनिका

चक्यउ—वि० [सं० चकित] चकित, अचंभित। (उ.र.)

चक्रअंग, चक्रंग—देखो 'चक्रांग' (रू.भे.) (नां.मा.)

चक्रंगी—देखो 'चक्रांग' (रू.भे.) २ हंसी, मादा हंस।

चक्र—सं०पु० [सं०] १ वायु, पवन (अ.मा.) २ राजा, नृप. ३ एक प्रकार का पाखंड. ४ पहिये के आकार का बना लोहे का एक अस्त्र विशेष जिसकी परिधि की धार बड़ी तीक्ष्ण होती है। ५ विष्णु भगवान का एक विशेष अस्त्र, सुदर्शन चक्र।

यौ०—चक्रधर, चक्रधरण, चक्रधारी, चक्रपांण, चक्रपांणी, चक्रभ्रत, चक्रमुद्रा।

६ शस्त्र, हथियारा। उ०—आव्रत्त हुआै एकै घड़ी, हुआ सुभट्टां सत्थरा। संग्रांम चक्र वूहा सत्रां, सूरसिंघ चक्रव्रत्त रा।—गु.रू.बं.

७ देवी का एक शस्त्र विशेष। उ०—१ कर ढोवौ निसंक रौ, चक्र वहसी चारण रौ।—द.दा. उ०—२ और वीं फौज मांहीं माताजी स्री करणी जी रा चक्र वुहा सो सारी साथ आपस रै मांहीं कट कर मुवौ।—ठाकर जैतसी री बात

८ सेना, फौज, दल (अ.मा., ह.नां.) उ०—१ 'सतौ' हालियौ आगरै चक्र सज्जै, वजे बंब भेरी घुरे त्रंब बज्जै।—वं.भा.

उ०—२ सखी अमीणौ साहिबौ, गिणै पराई देह। सर वरसै पर चक्र सिर, ज्यूं भादवड़ै मेह।—बां.दा.

९ योग या तंत्र के अनुसार राजस्थानी में माने जाने वाले छः चक्र या आठ कमल। देखो 'कमल' (११)

१० समूह, झुण्ड (अ.मा.) ११ देव-पूजन का यंत्र. १२ पुस्तक का भाग. १३ वातचक्र, ववंडर. १४ युद्ध के लिये बनाई जाने वाली सेना की स्थिति।

यौ०—चक्रकुंड, चक्रव्यूह।

१५ गांवों या नगरों का समूह, मंडल, प्रदेश।

यौ०—चक्रपाळ।

१६ राज्य।

यौ०—चक्रवत, चक्रवति, चक्रवती।

१७ घुमाव, चक्कर, फेरा। उ०—न लाभत सावत सीस नत्रीठ, देतौ चक्र दंड फिरै त्रणदीठ।—मे.म.

१८ पहिया। उ०—वद 'किसन' रकार मकार विहुं, सत रथ चक्र समाथ का। भव जन तमांम कारक अभय, नांम अंक रघुनाथ का।

—र.ज.प्र.

क्रि०प्र०—चलणौ, चलाणौ, फेरणौ।

यौ०—चक्रणधुर, चक्रपाद।

१९ घेरा, आवेष्टन। उ०—तिण समय चंद्रमा रै चारौं तरफ परिवेस रै प्रमांण भाले सिंहदेव साठि हजार सेना सूं स्वकीय स्यांमी रा सिविर रै छवीना रौ चक्र चलायौ।—वं.भा.

क्रि०प्र०—डालणौ, देणौ, नांखणौ।

२० क्रोध, गुस्सा. २१ सर्प (मि० 'चक्री' ११, रू.भे.)

२२ तेल पेरने का कोल्हू।

यौ०—चक्रचर।

२३ कुम्हार का चाक।

यौ०—चक्रचर, चक्रजीवक।

२४ चक्रवाक पक्षी, चकवा पक्षी।

यौ०—चक्रवंधु, चक्रविजोग, चक्रवियोग, चक्रवीर।

२५ विस्मय, आश्चर्य. २६ भ्रम, भूल. २७ हाथ की अंगुलियों और पैर के तलुवे पर गोलाकार बनी बारीक रेखाओं के चिन्ह (सामुद्रिक) २८ तीर्थ स्थान पर पहुंचने पर वहां शरीर के किसी अंग पर अंकित कराये जाने वाले देव-मूर्तियों के चिन्ह। उ०—पवित्र खंभां वे करिस एण पर, अंक दिवाड़ संख चक्र ऊपर।—ह.र.

२९ वृत्त, गोलाकार आकृति।

यौ०—चक्रभ्रमर, चक्रमंडळ, चक्रमंडळी।

रू०भे०—चक, चकर, चक्क, चक्कर, चक्करौ।

३० एक छंद विशेष जिसके प्रथम चरण में क्रमशः एक भगण, तीन नगण तथा लघु-गुरु होता है। (र.ज.प्र.) ३१ युद्ध में वीरगति प्राप्त करने की अभिलाषा रखने वाले राजपूतों के शरीर पर लगाया जाने वाला एक चिन्ह विशेष। उ०—ताहरां आप रांमसिंघजी चक्र आप रै हाथ दिया।—द.वि.

३२ कुत्ता (अ.मा., डि.को.) (मि० 'मंडळ' ५)

३३ जल का भँवर, चक्कर. ३४ एक प्रकार की काव्य-रचना.

३५ नदी की गूंज. ३६ सभा। उ०—द्रढ़ प्रताप आठूं दिसा पसरै हितु कमळ फूलै विहंद भांत चक्र हण भर।—र.रू.

३७ आटा पीसने का यंत्र, चक्की. ३८. विष्णु की पूजा करते समय शरीर पर लगाया जाने वाला चिन्ह। उ०—परभात हुयौ ताहरां हिंदू ठाकुर सहू को सेवा करि करि अर चक्र संख दे अर मरणे सूं होइ होइ अर डेरै बैठा छै।—द.वि.

३९ दौर, फरा। उ०—धीर वीर धनवांन, कई हुयग्या कई होवसी। समय चक्र असमांन, चलतौ रहसी 'चकरिया'।

—मोहनलाल साह

चक्रअंग—देखो 'चक्रांक' (रू.भे.)

चक्रकुंड—सं०पु०यौ० [सं०] चक्रव्यूह का मध्य भाग। उ०—किता अग्र पाछै किता चक्रकुंडे, तरक्कै किता साहता वाह तुंडे।—रा.रू.

चक्रचर—सं०पु०यौ० [सं०] १ तेली. २ कुम्हार।

चक्रजीवक—सं०पु०यौ० [सं०] कुम्हार।

चक्रणधुर—सं०पु०यौ० [सं० चक्रधुरीण] रथ (डि.नां.मा.)

चक्रत—वि०—चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित। उ०—आडंबर असवाव अपाळां, थटै रसालां गज थूआ। देखै 'गुमांन' तणा रा दूथी, हव चक्रवत चक्रत हुआ।—महाराजा मांनसिंह (जोधपुर) रौ गीत

चक्रताळ—सं०पु०यौ० [सं० चक्रताल] एक प्रकार का चौताला ताल (संगीत)

चक्रति-वि० [सं० चकित] चकित, विस्मित। उ०—चत्रदिस जाइ न सकै चकति, निजर काळ देखै नयण। त्रिण जीव सरण मारीजतो, [illegible] ।—ज.खि.

चक्रतीरथ-सं०पु०यौ० [सं० चक्र+तीर्थ] तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित एक तीर्थ-स्थान।

चक्रदंड-सं०पु०यौ० [सं०] एक प्रकार का व्यायाम।

चक्रदंस्ट्र-सं०पु०यौ० [सं० चक्रदंष्ट्र] सूअर।

चक्रधर, चक्रधरण चक्रधारि चक्रधारी-वि०—चक्र धारण करने वाला। उ०—आदगी पंच दिस दिस जुवा, वासो वळे वसावसी। चिता चेत समर हरि चक्रधर, एक तिको दिन आवसी।—ज.खि.

सं०पु०—१ विष्णु भगवान। उ०—करे सिनांन वंदन करि ध्यानं चित धरे चक्रधर।—सू.प्र.

२ श्री कृष्ण। उ०—धरां फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैंज। मो सूरां सिर सेहरो, नर पुंगव सुरनैज।—बां.दा.

३ बाजीगर. ४ सर्प, सांप. ५ सूर्य, भानु (नां.मा.)

६ एक राग विशेष (संगीत)

चक्रपांण, चक्रपांणि, चक्रपांणी-सं०पु०यौ० [सं० चक्रपाणि] १ हाथ में चक्र धारण करने वाले विष्णु, ईश्वर। उ०—चक्रपांणि उर चिंत एम 'चहुवांण' उचारै। वडम बोल विस्तरै बोल सोई कुळ सा(ता)रै।—रा.रू.

२ श्री कृष्ण। उ०—जिमाड़े जिके भावता भोग जांणी, परूसे जसोदा जमो चक्रपांणी।—ना.द.

चक्रपाद-सं०पु०यौ० [सं०] १ गाड़ी. २ रथ।

चक्रपाळ-सं०पु०यौ० [सं०] १ किसी प्रदेश का शासक, सूबेदार. २ चक्र धारण करने वाला, विष्णु।

चक्रपूजा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] तांत्रिकों की एक पूजा-विधि।

चक्रफळ-सं०पु०यौ० [सं० चक्रफल] गोल फल लगा हुआ एक अस्त्र विशेष।

चक्रबंध-सं०पु०यौ०—एक विशेष प्रकार का चित्र काव्य जिसके अक्षर चक्र के भीतर बैठाये जाते हैं।

चक्रबंधु, चक्रबांधव-सं०पु०यौ० [सं० चक्रबंधु] चकवा पक्षी के नर मादा के जोड़े को मिलाने वाला सूर्य।

चक्रभ्रत-सं०पु०यौ [सं० चक्रभृत] चक्रधारी, विष्णु भगवान।

चक्रभेदिनी-सं०स्त्री०यौ० [सं०] चकवा पक्षी के युगल अर्थात नर व मादा को पृथक करने वाली रात्रि, रजनी।

चक्रभोग-सं०पु०यौ० [सं०] ग्रहों की वह गति जिसमें वे एक स्थान से चल कर पुनः उसी स्थान को प्राप्त होते हैं (ज्योतिष)

चक्रभ्रमर-सं०पु०यौ० [सं०] एक प्रकार का नाच।

चक्रमंडळ-सं०पु०यौ० [सं० चक्रमंडल] चक्र की भांति घूम कर नाचने का एक नृत्य।

चक्रमंडळी-सं०पु०यौ० [सं० चक्रमंडली] अजगर सर्प।

चक्रमीमांसा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] वैष्णवों की एक चक्रमुद्रा धारण करने की विधि।

चक्रमुख-सं०पु०यौ० [सं०] शूकर, सूअर।

चक्रमुद्रा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] विष्णु के आयुध यथा चक्रादि के चिन्ह जो वैष्णवों द्वारा अपने शरीर के अंगों पर चित्रित या अंकित कराये जाते हैं। (मि० 'चक्र' २८, २९ व ३८)

चक्रयंत्र-सं०पु०यौ० [सं०] ज्योतिष का एक यंत्र।

चक्रवत, चक्रवति, चक्रवती-सं०पु०—१ एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण से प्रथम और अंत में दो गुरु और अन्य १२ लघु वर्ण सहित कुल १४ वर्ण होते हैं।

२ देखो 'चक्रवरती' (रू.भे.) उ०—१ जूनै गढ़ गढ़पत जांगळवै, सामै चक्रवत 'कला' सुजाव।—द.दा.

उ०—२ चक्रवत होसी अभनमो 'चूंडो', घणूं सराहूं कसूं घणो।
—तेजसी खिड़ियो

उ०—३ चक्रवत तो पीढ़ी लग चवदा। रवदां खय करसी खैरवदा।
—सू.प्र.

उ०—४ आरंभे समर चक्रवती उभै, चमर ढुळंतां चालिया।—सू.प्र.

उ०—५ धज चमर छत्र कर रेख धम्र। चक्रवती तणा साचा चहन्र।
—सू.प्र.

उ०—६ करि वप सनाह आवध कसे, लिये सकति जप जय लभी। चक्रवती झपट हुंतां चमर, आय गयंद चढ़ियो 'अभी'।—सू.प्र.

चक्रवरत, चक्रवरती-वि०—आसमुद्रांत भूमि का स्वामी, एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक की भूमि पर राज्य करने वाला।

सं०पु० [सं० चक्रवर्तिन्] १ वह राजा जिसका राज्य एक समुद्र से लेकर दूसरे समुद्र तक फैला हुआ हो. २ कोई महान राजा या सम्राट। उ०—१ जगि करत राज चक्रवरत जेम।—सू.प्र.

उ०—२ हरखंत सहर उछाह। चक्रवरत दरसण चाह।—सू.प्र.

३ एक प्रकार का घोड़ा जिसके बांयें पार्श्व में भौंरी होती है (शा.हो.)

रू०भे०—चकवत, चकवती, चकवै, चक्कवटि, चक्कधरो, चक्करवरती, चक्कवत, चक्रत, चक्र्वती, चक्रव्रत, चक्रत्रति।

चक्रवांन-सं०पु० [सं० चक्रवान्] चौथे समुद्र में स्थित एक पर्वत।
(पौराणिक)

चक्रवाक-सं०पु० [सं०] १ चकवा पक्षी। उ०—१ विधि पाटक सुक सारस रस वंछक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगळभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।—वेलि. उ०—२ सहस किरण परकास, पंकज चक्रवाक अति प्रीतम। इळ नव खंड उजास, सूरजदेव नमो कासिव सुत।—सू.प्र.

यौ०—चक्रवाक बंधु।

२ वह घोड़ा जिसके चारों पैर सफेद हों, शरीर पीला हो व नेत्र श्याम वर्ण के हों।—(शुभ, शा.हो.)

वि०—पीला, पीत वर्ण॰ (डि.को.)

चक्रवाकवियोग–सं०पु०यौ० [सं. चक्रवाक+वियोग] चंद्रमा, चांद। (ह.नां.)

वि०वि०—देखो 'चकवौ' (१)

चक्रवाळ–सं०पु० [सं० चक्रवाल] १ एक प्रसिद्ध पौराणिक पर्वत। २ घेरा। उ०—जिकौ सुणि सांखलै वीरमदेव आपरा स्वांमी नूं पयादौ जांणि चांमुडराज सिंहदेव प्रमुख सांमंतां रौ समूह रोकण रै काज आडा आय वाजी रा वेग रौ चक्रवाळ तांणियौ।—वं.भा. ३ मंडल, आवृत।

चक्रवाहविजोग—देखो 'चक्रवाकवियोग' (रू.भे.)

चक्रवीर–सं०पु० [सं० चक्र+रा. वीर) सूर्य। (अ.मा.) (मि० 'चक्रबंधु')

चक्रव्यूह, चक्रव्यूहू, चक्रव्रूंह–सं०पु०यौ० [सं० चक्रव्यूह] प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा हेतु उसके चारों ओर सेना को घेरे में खड़ा करने की स्थिति विशेष। उ०—१ दिणि आथमतई हणिउ हाथि हरि पंडव हरखीया, दिणि तेरमइ चक्रव्यूहु तउ कउ रवि मांडीया।—पं.पं.च. उ०—२ धारूजळ मुग्गळ तूटत ध्रूंह, विढ़े अभमुन्य ज्यूंही चक्रव्रूंह।—सू.प्र.

चक्रव्रत—देखो 'चक्रवरती' (रू.भे.) उ०—आव्रत हुआ एकै घड़ी हुआ सुभट्टां सत्थरां। संग्रांम चक्र वूहा सत्रां सूरसिंघ चक्रव्रत रा। —गु रु.वं.

चक्रसुद्रसण—देखो 'सुदरसणचक्र' (रू.भे.) उ०—वप तप इम दीसै उण वेळा। भांण बार चक्र सुद्रसण भेळा।—सू प्र.

चक्रांक–सं०पु० [सं०] वैष्णवों द्वारा अपने बाहु आदि पर दगवाया हुआ चक्र का चिन्ह।

चक्रांकित–वि०यौ० [सं०] जिसने अपने शरीर के किसी अंग पर विष्णु के आयुधों का चिन्ह अंकित कराया हो।

सं०पु०—वैष्णवों का एक संप्रदाय भेद।

चक्रांग–सं०पु० [सं० चक्राङ्गी] (स्त्री० चक्रांगी) १ चकवा पक्षी. २ हंस (अ.मा.) ३ रथ या गाड़ी. ४ कुटकी नामक औषधि।

चक्रांस–सं०पु० [सं० चक्रांश] राशि चक्र का ३६०वां अंश।

चक्रा–सं०पु० [सं० चक्रिन्] सर्प, सांप (अ.मा.)

चक्राअंग—देखो 'चक्रांग' (रू.भे.)

चक्राकार–वि० [सं०] वृत्तालुकार, मंडलाकार, गोल।

चक्राकी–सं०स्त्री० [सं०] हंसिनी, मादा हंस।

चक्राक्रत–सं०पु०—चक्र, चक्रव्यूह। उ०—सुत आणंद महेस, खगे पंडवेस घड़च्छे। पिंड वाजै पड़िहार, व्यूह चक्राक्रत अच्छे।—रा.रू.

चक्राजुध—देखो 'चक्रायुध' (रू.भे.)

चक्राय–सं०पु० [सं०] कौरव पक्ष का एक योद्धा (महाभारत)

चक्रायुध–सं०पु०यौ [सं०] विष्णु भगवान।

चक्राळ–सं०पु०—रथ (डिं.नां.मा.)

चक्रावळ–सं०पु० [सं० चक्रावलि] घोड़े के पैरों में होने वाला एक रोग जिसके कारण उसके पैरों में घाव हो जाता है।

चक्रासन–सं०पु०—योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन विशेष जिसमें दोनों हाथों की अंगुलियों से दोनों पांव की अंगुलियों को पकड़ कर सोया जाता है। कुछ लोगों के अनुसार इसका नाम वर्तुलासन भी है।

चक्रिक–सं०पु० [सं०] चक्र धारण करने वाला।

चक्रित–वि० [सं० चकित] १ विस्मित, दंग, भौंचक्का, चकित। उ०—हुवे रथ चक्रित देव निहंग, खहाव्रत मेघ कि वेग खसंग। —रा.रू. २ सशंकित, भयभीत, कायर।

चक्रिन–सं०पु० [सं०] सर्प, सांप। उ०—धारण तुझ घड़ै न्रप धूकै चक्रिन भ्रम छळहूंत अचूकै।—सू.प्र.

चक्रियवंत–सं०पु०यौ० [सं० चक्रीवंत] गधा। उ०—वंदनवंत वसंत विभावर चंदन चक्रियवंत चढ़ायौ।—ऊ.का.

चक्रियांण–सं०पु०—चक्र धारण करने वाला यथा विष्णु, श्रीकृष्ण आदि उ०—किले 'रैण' वाळै माया आसुरां न लागै, कजी ऐवजी फाटकां था पहरी चक्रियांण।—बांकीदास

चक्रिवा—देखो 'चक्रियवंत' (रू.भे.)

चक्री–सं०पु० [सं० चक्रिन्] १ चक्र धारण करने वाला व्यक्ति यथा विष्णु, श्रीकृष्ण आदि। उ०—चक्री रा चक्र रै समांन मही रै माथै प्रतिबिंब पाड़ता चतुरंग चक्र मेघमाळा में चंचळा रा चपळ भाव में चूक पाड़ता चंद्रहास चलाया।—वं.भा.

२ चक्र नामक अस्त्र (मि० 'चक्र' ४, ५)

३ सर्प, सांप। उ०—करी सिंह वाराह रै तुंड केती, लसै ग्राह चक्री मुखी वाह लेती।—वं.भा.

४ चक्रवाक पक्षी, चकवा।

वि०वि०—देखो 'चकवौ'

५ कुंभकार, कुम्हार. ६ जासूस, खुफिया व्यक्ति. ७ तेली. ८ चक्रवर्ती सम्राट।

सं०स्त्री०—९ तेल पेरने का कोल्हू. १० चक्राकार या गोल घेर में घुमाने की क्रिया (घोड़े को)। उ०—पिले रांन लागां तिणै ठेक पेरै। फरे वाज चक्री रसी वाल फेरै।—वं.भा.

११ एक प्रकार का आर्य छंद का २२ वां भेद जिसमें ६ गुरु और ४५ लघु होते हैं।

देखो 'चकरी' (२) (रू.भे.) उ०—पवन का परवांह, गुलाब की मूठ, सधराज की गोटका, तारे की टूट, आतस को भभकौ, चक्री की चाल, छाती की ढाल।—दरजी मयारांम री वात

१३ सभा। उ०—चक्री विचाळ रघुवर विसाळ, जंपै जरूर सुण भरथ सूर।—र.रू. (मि० 'चक्र' ३६)

१४ आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र, चक्की. १५ मंडली, टोली। १६ देवी, दुर्गा।

वि०—१ क्रमित. २ भ्रमित।

चक्रीवांन—सं०पु० [सं० चक्रीवन्त] गधा (ह.नां.)

चक्रेस्वर, चक्रेस्वरी—सं०स्त्री० [सं० चक्रेश्वरी] राठौड़ वंश की कुलदेवी।
उ०—१ रचि समर वंसवां हूंत रुक। देवि चक्रेसुर लीध दूठ।—सू.प्र.
उ०—२ चक्रेस्वरी वळे स्यांने राटेस्वरी तथा रट, पंखणी सप्त मात्रेणु नागणेची नमस्तुते।—पा.प्र.

चख—सं०स्त्री० [सं० चक्षुस्] १ आंख, नेत्र (ना.डि.को., ह.नां.)
उ०—१ गिर हमियौ ग्रप चख सकुचांणै। आतमघात वात चित आंणै।—सू.प्र.
उ०—२ सो तो दीठो आज साच निज चखां निहारे। वाळि सरीखो पित वहै, जै रांम जुहारे।—सू.प्र.
२ [फा० चख] झगड़ा, युद्ध।
उ०—चख रा वचन सुणे चड़तायो, अंग असळाक मोड़तो आयो।
—विरजूबाई
यौ०—चख-चख।
[रा०] ४ घोड़े के जबाड़ों में होने वाला एक रोग (शा.हो.)

चखएक—वि०यौ०—एक आंख वाला, एकाक्ष, काना।
सं०पु०यौ [चक्षुः+एक] दैत्यगुरु शुक्राचार्य (अ.मा.)

चखचख—देखो 'चकचक' (रू.भे.)

चखचांधी—सं०स्त्री०—चकाचौंध। उ०—आई उमड़ अविद्या आंधी, चारु वरण चढगी चखचांधी।—ऊ.का.

चखचूंदरी—सं०स्त्री०—छछुंदर नामक जंतु।

चखचूंधी—देखो 'चखचांधी' (रू.भे.)
उ०—देखूं नैणां दोय, चखचूंधी छाई चहूं। कहो री दीसै कोय, जीवण जोती जेठवा।—जेठवा

चखचूंधौ—वि० (स्त्री० चकचूंधी) १ जिसकी आंखें मिची-मिची सी एवं छोटी हों. २ धुंधला व चमकीला।
सं०पु०—चकाचौंध।

चखचोळ—वि०—१ रक्तिम नेत्र, लाल आंखें वाला। उ०—उर चाट कपाट पछाड़ अधी, तिण ताळ हुवौ चखचोळ तवी।—पा.प्र.
२ क्रुद्ध, कुपित।

चखचौंध—देखो 'चकाचौंध' (रू.भे.)

चखण—सं०पु०—१ चखने का पदार्थ. २ चखने की क्रिया या भाव।

चखणौ, चखबौ—देखो 'चाखणौ' (रू.भे.)
चखणहार, हारौ (हारी) चखणियौ—वि०।
चखवाड़णौ, चखवाड़बौ, चखवाणौ, चखवाबौ, चखवावणौ, चखवावबौ
—प्रे०रू०।
चखाड़णौ, चखाड़बौ, चखाणौ, चखाबौ, चखावणौ, चखावबौ
—रू०भे०।
चखिओड़ौ, चखियोड़ौ, चख्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चखीजणौ, चखीजबौ—कर्म वा०।

चखताळो—सं०पु०—एक प्रकार का पकाया हुआ मांस विशेष।
उ०—कलिया पुलाव विरंज दुप्याजा जेरी विरियां अराती चखताळा भांति-भांति के मजे।—सू.प्र.

चखतौ—देखो 'चकतौ' (रू.भे.)। उ०—हाथियां घड़ा विहंडते हाथां, लाखां दळां वगोळ लड़। 'चांपाहरै' पुराया चाचर, चखतां वाजा हिये चड़।—वीठळ गोपाळदासोत रौ गीत

चखदेव—सं०पु०यौ० [सं० देवचक्षु] स्वामी कार्तिकेय (नां.मा.)

चखधूसहस—सं०पु०यौ०—शेषनाग, जिसके सहस्र नेत्र कहे जाते हैं। (अ.मा.)

चखबाहर—सं पु०यौ० [सं० द्वादश चक्षु] बारह आंखों वाला, स्वामी कार्तिकेय (ह.नां.)

चखमग—सं०पु०यौ० [सं० चक्षुमार्ग] दृष्टि-पथ, नजर।

जखस्रवा—सं०पु०यौ० [सं० चक्षुः श्रवस्] सांप, सर्प, भुजंग (अ.मा.)

चखांमज्जीठौ—वि०यौ० [सं० चक्षुः+मजीष्ठा+रा०प्र० औ] क्रोधपूर्ण, क्रोधित, क्रोध में लाल नेत्र वाला।

चखांसरव—सं०पु० [सं० सर्वचक्षु] सूर्य, भास्कर, भानु। उ०—रच्या रांम रा दोय चित्रांम रूड़ा, चखांसरव एको वियो संखचूड़ा।—मे.म. (मि०—जगचख)

चखाचखी—सं०स्त्री०—चखने की क्रिया का भाव।

चखाणौ, चखाबौ—क्रि०स०—चखाना, स्वाद कराना।
चखाणहार, हारौ (हारी) चखाणियौ—वि०।
चखायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चखायीजणौ, चखाईजबौ—कर्म वा०।
चखणौ—रू०भे०।

चखायोड़ौ—भू०का०कृ०—चखाया हुआ (स्त्री० चखायोड़ी)

चखावणौ, चखावबौ—देखो 'चखाणौ' (रू.भे.)
चखावणहार, हारौ (हारी) चखावणियौ—वि०।
चखाविओड़ौ, चखावियोड़ौ, चखाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चखावीजणौ, चखावीजबौ—कर्म वा०।

चखावियोड़ौ—देखो 'चखायोड़ौ' (स्त्री० चखावियोड़ी)

चखि—देखो 'चख' (रू.भे.) उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। स्त्रिय जीत पति गुण परखि चखि, सुख सरवस पखि जिम सुंदरी।—रा.रू.

चखियोड़ौ—भू०का०कृ—चखा हुआ (स्त्री० चखियोड़ी)

चखु, चख्ख—१ देखो 'चख' (रू.भे.)
२ दृष्टि-दोष, नजर। उ०—खंजर नेत विशाळ गय, चाही लागइ चख्ख। एकण साटइ मारुवी, देह ऐराकी लख्ख।—ढो.मा.

चख्खड़ाई—सं०स्त्री०—चख्खड़ा की पुत्री एक देवी विशेष।

चख्खु—देखो 'चक्षु' (रू.भे.)

चग—सं०पु०—एक प्रकार की घास जो अपने तने पर खूब फैली हुई होती है। इसमें कड़े डंठल अथवा लकड़ी नहीं होती है और इसकी

एक ही जड़ होती है। यह घर अथवा 'ग्वाळ' छाने के काम में लिया जाता है। सूखने पर इसे जलाने के काम में भी ले लेते हैं।

उ०—बांधै गांठड़ियां बड़ियां चग वाळै, राली गूदड़ ले कांधै पर राळै।—ऊ.का. (मि० 'सिणियौ')

चगचग—देखो 'चकचक' (रू.भे.)

जगचगाट—देखो 'चहचहाट' (रू.भे.) उ०—चगचगाट चिड़ करै मिरगला मौजां माणै। गूंजै माखी भंवर, महक खीचड़ रंग खांणै।
—दसदेव

चगणौ, चगबौ—क्रि०अ०—१ बूंद-बूंद टपकना, चूना। उ०—वाभी देवर नींद बस, बोलीजै न उताळ। चगता घावां चौंकसी, जे सुणसी बंबाळ।—वी.स.

२ चिढ़ना, क्रोध करना. ३ फुसलाना, बहकाना।

चगत, चगताई—सं०पु—१ चगताई खां से चला हुआ मध्य एशिया के तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश या इस वंश का व्यक्ति. २ बादशाह।

उ०—चगतां तगत कहै चित्तौड़ा, सांम कांम हर करन सरू। मार अंतार न दीधी मोनैं, जार मार दे गयौ जरू।
—राणा राजसिंह री गीत

३ यवन, मुसलमान।

रू०भे०—चकत, चकताई. चकतौ, चकत्तौ, चकत्थौ, चगताळ, चगतौ, चगत्थ, चगथ, चगथांण, चगथांणी, चगथौ, चिगत, चिगथौ।

चगताईखां—सं०पु०—प्रसिद्ध मंगोल चंगेजखां का एक पुत्र (ऐतिहासिक)

चगताळ, चगताह—देखो 'चगताई' (रू.भे.) उ०—१ काळ लंकाळ कर ढाल कमंध, वहै विकराळ रगताळ वांई। भाळ छकड़ाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळगी भाळ भर धरण तांई।—तेजसी खिड़ियौ

उ०—२ उजबकि ईरांनी गोळ आप. चगताह तुरांनी द्रस्त चाप।
—वि.सं.

चगती, चगत्थ, चगथ—१ देखो 'चगतौ' (रू.भे.)

२ देखो 'चगताई' (रू.भे.) उ०—१ तीर अखत ढाल गज तोरण, चहुंदस कळळ समंगळ चार। चवरी बड़ौ पेखियौ चगतौ, 'करन' कळाधर राजकंवार।—किसनौ आढौ

उ०—२ हलकार भड़ां ललकार हुवै, चगथां मुख तेज सरेज चुवै।
—रा.रू.

चगतांण, चगथांणी—देखो 'चगताई' (रू.भे.) उ०—'घासी' नै 'सादूळ' घड़ा चूरै चगथांणी।—रा.रू.

चगथौ—१ देखो 'चकतौ' (रू.भे.)

२ देखो 'चगदौ' (रू.भे.)

३ देखो 'चगताई' उ०—नरवर प्रथी खबर सुजपाया, चगथौ आवै राह चलाया।—रा.रू.

चगदायळ—वि०—घावों से परिपूर्ण, घायल। उ०—पड़ि. वत्थ गळत्थियां हथ पड़ी, चगदायळ मुख चीवरां। बीवरां तबल-बंधां वहसि, खांगी बंधां खीमरां।—सू.प्र.

चगदौ—सं०पु०—१ घाव, क्षत, चोट। उ०—घड़ इण भरोस कर गरव, घव न गहौ घाराळ। अज-सिर चगदा पाड़िआ, भंजे की भुरजाळ।—रेवतसिंह भाटी

२ कुचलने या चूर्ण करने का भाव।

चगर—सं०पु०—घोड़े की एक जाति।

चगाड़णौ, चगाड़बौ, चगाणौ, चगाबौ—देखो 'चिगाड़णौ' (रू.भे.)

चगाड़णहार, हारौ (हारी), चगाड़णियौ, चगाणहार, हारौ (हारी), चगाणियौ—वि०।

चगाड़िओड़ौ, चगाड़ियोड़ौ, चगाड़योड़ौ, चगायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चगावणौ, चगावबौ—रू०भे०।

चगाईजणौ, चगाईजबौ—कर्म वा०।

चगायोड़ौ—देखो 'चिगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री०—चगायोड़ी)

चगावणौ, चगावबौ—क्रि०स०—देखो 'चिगाणौ' (रू.भे.) उ०—'दलौ' चगावै देस नै, इसड़ौ बुध आंवेज। भायां नै भूलावतां, जिण रै कासूं जेज।—वी.मा.

चगावणहार, हारौ (हारी), चगावणियौ—वि०।

चगाविओड़ौ, चगावियोडौ, चगाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चगावीजणौ, चगावीजबौ—कर्म वा०।

चगावियोड़ौ—देखो 'चगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चगावियोड़ी)

चगाहटौ—सं०पु० [अनु०] १ ध्वनि, आवाज, चहचहाहट, रव. २ यश वर्णन की ध्वनि।

चगियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ बूंद-बूंद कर टपका हुआ, चूआ हुआ।

२ चुना हुआ, छांट कर एकत्रित किया हुआ. ३ फुसलाया हुआ, बहकाया हुआ. ४ भुलाया हुआ, ठगा हुआ (स्त्री० चगियोड़ी)

चगूंटियौ—देखो 'चूंटियौ' (रू.भे.)

चड़—देखो 'चड़स' (रू.भे.)

चड़खणौ, चड़खबौ—क्रि०स०—१ चूसना. २ चाटना।

क्रि०अ०—क्रोध करना।

चड़खणहार, हारौ (हारी), चड़खणियौ—वि०।

चड़खावणौ, चड़खावबौ—रू०भे०।

चड़खिओड़ौ, चड़खियोड़ौ, चड़ख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चड़खीजणौ, चड़खीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

चड़खाणौ, चड़खाबौ—क्रि०अ०—१ क्रोध करना. २ जोश में आना।

उ०—चख रा वचन सुणै चड़खायौ, अंग असळाक मोड़तौ आयौ।
—विरजूबाई

क्रि०स०—३ चूसाना, चटाना।

चड़खाणहार, हारौ (हारी), चड़खाणियौ—वि०।

चड़खावणौ, चड़खावबौ—रू०भे०।

चड़खायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चड़खाईजणौ, चड़खाईजबौ—भाव वा०।

चड़खायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ क्रोध किया हुआ, क्रुद्ध. २ जोश में आया हुआ. ३ चूसाया हुआ. ४ चटाया हुआ (स्त्री० चड़खायोड़ी)

चड़्गावणो, चड़्गावबो—देखो 'चड़्गाणो' (रू.भे.)

चड़्गावणहार, हारो (हारी) चड़्गावणियो—वि०।

चड़्गावियोड़ो, चड़्गावियोड़ो, चड़्गाय्योड़ो—भू०का०कृ०।

चड़्गावीजणो, चड़्गावीजबो—कर्म वा०।

चड़्गावियोड़ो—देखो 'चड़्गायोड़ो' (स्त्री० चड़्गावियोड़ी)

चड़्गियोड़ो–भू०का०कृ०—१ चूमा हुआ. २ चाटा हुआ। (स्त्री० चड़्गियोड़ी)

चड़ड़, चड़चड़–सं०स्त्री० [अनु०] १ सूखी लकड़ी के फटने या चिरने से उत्पन्न ध्वनि. २ चूमने से होने वाली आवाज, पेय पदार्थ को दांत भींच कर खींच कर पीने या इस प्रकार चूस कर पीने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, ध्वनि-विशेष। उ०—१ चड़चड़ जोगणियां रत चोस, जुड़ै भिड़ धूहड़ बाघं जोस।—गो.रू. उ०—२ दड़द्दड़ मुण्ड रड़्ब्बड़ दीस। अड़ब्बड़ लेत चड़च्चड़ ईस।—वचनिका

चड़णो, चड़बो—देखो 'चिड़णो' (रू.भे.)

चड़बड़, चड़भड़–सं०स्त्री० [अनु०] १ व्यर्थ की बकबक, निरर्थक प्रलाप. २ टंटा, फिसाद।

चड़भड़णो, चड़भड़बो–क्रि०अ०—१ क्रोध करना. २ कुपित होकर लड़ाई करना, परस्पर लड़ना। उ०—१ यो कह्यो, लाडक पण आरै हुवो। तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चड़भड़िया।—नैणसी उ०—२ तरै ऊ वचन सांभळ पिउसंघी कह्यो—कुट्टण मुंडका क्या, आधी हमारी है, आधी तुम्हारी है, तठै क्यूं चड़भड़ो रजपूतां रो साथ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

चड़भड़ाणो, चड़भड़ाबो, चड़भड़ावणो, चड़भड़ावबो–क्रि०स० ['चड़भड़णो' का प्रे० रू०] १ क्रोध कराना. २ लड़ाई कराना।

चड़भड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—१ क्रुद्ध. २ कुपित होकर लड़ाई किया हुआ (स्त्री० चड़भड़ियोड़ी)

चड़स–सं०पु०—१ गांजे के पेड़ का वह नशीला गोंद या चेप जिसे चिलम में जला कर नशे के लिए धुंआ खींचा जाता है। एक मादक पदार्थ।

क्रि०प्र०—पीणो, बाळणो।

२ कुये से पानी निकालने का चमड़े या लोहे का बना उपकरण, चरस, मोट।

रू०भे०—चड़'।

अल्पा०—चड़सियो।

चड़सियो–सं०पु०—१ कुये के बाहर भरे हुए चरस को खाली करने वाला व्यक्ति।

२ देखो 'चड़स' (अल्पा.)

वि०—चरस नामक मादक पदार्थ का नशा करने वाला।

चड़ाचड़–सं०पु०—छोटी टिकिया के आकार की एक आतिशबाजी जिसे पत्थर पर रगड़ने से वह चड़-चड़ की आवाज के साथ जलती है। चटरपटर।

चड़ापड़–क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, चटापट, चटपट। उ०—गड़ा पड़ बीगड़ै नहीं हरगिज गहूं, चाड़ापड़ न आवै रोग चाळो।

—रेतसी बारहठ

चड़ापो–सं०पु०—प्रहार, चोट।

चड़ियड़–सं०स्त्री० [अनु०] चड़चड़ की ध्वनि।

उ०—गोळी तीर आछटै गोळा, दोळा आलम तणा दळ। पड़ दड़ियड़ चड़ियड़ चहुं पासै, लूमांणै लूंबिया खळ।

—राजा भीमसिंह सिसोदिया (टोड़ा) रो गीत

चड़ियोड़ो—देखो 'चिड़ियोड़ो' (रू.भे.)

चड़ी–सं०स्त्री० [सं० चटक] १ मादा चिड़िया. २ अधिक चर्बी होने से उत्पन्न सिकुड़न. ३ अधिक बल या दबाव देने से होने वाली ग्रंथी।

चड़ोकलो—देखो 'चिड़ोकलो' (रू.भे.) (स्त्री० चड़ोकली)

चड़ो—देखो 'चिड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चड़ी)

चचो–सं०पु०—१ वर्णमाला का च वर्ण, चकार. २ पिता का छोटा भाई, चाचा (मि० 'काको')

चचोक, चचोक्क–वि० [सं० चकित] १ विस्मित, चकित. २ चौकन्ना. ३ भयभीत, सशंकित. ४ घबराया हुआ।

चच्चो—देखो 'चचो' (रू.भे.) उ०—चाच्चे मामूं की धी चकार, बिसमल्ला करै न वार-वार।—ऊ.का.

चज–सं०पु०—१ छल, कपट। उ०—मो चावड़ी सूं इसो चज करो जो कठै ही कंवरजी नै खबर हुई तो थांरो नांम कहिसी, अठै माल-जादियां रा घर था।—जगदेव पंवार री वात

२ लक्षण।

सं०स्त्री०—३ बुद्धि।

चट–क्रि०वि० [सं० चटुल] तुरंत, फौरन, शीघ्र। उ०—चट बाग झलाय जाय तळाव में पड़ियो अोर सनांन करणै लागियो।

—सूरे खींवै री वात

मुहा०—१ चटचट करणो—शीघ्र करना. २ चट सूं—झट से. ३ चट सूं करणो—बहुत जल्दी करना. ४ चट सूं होणो—बहुत जल्दी होना. ५ चट होणो—गायब होना, गुम होना।

कहा०—चट मेरी मंगणी पट मेरा व्याव—शीघ्र मेरी सगाई हुई और शीघ्र मेरा विवाह हो गया। किसी कार्य को शीघ्र करने पर।

यौ०—चटपट, चटापट।

वि०—गहरा (लाल), नितांत (लाल)

यौ०—लालचट।

सं०पु०—१ गर्मी का घाव या जख्म का दाग. २ छत पर कंकरीट जमाने की क्रिया. ३ पर्वतीय चौड़ी शिला, चट्टान।

[अनु०] ४ किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होने वाला शब्द।

५ देखो 'चट्ट' (३, रू.भे.)

चटक–सं०स्त्री०—१ गर्व, दर्प, घमंड। उ०—राखण रूप वडा राठोड़ां, चित्तौड़ा दाखण चटक। रणमल थाटी बार रोकियो, किलमां चा घाटी कटक।—अमरसिंह राठौड़ रो गीत

२ एक प्रकार की चिड़िया, गौरैय्या. ३ नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा।

रू०भे०—चिटक।

४ चालाकी. ५ चटकीलापन, चमकदमक, कांति। उ०—श्रा श्रोपमा देवै है सारा ही कव लोकां री कटक पिण इण मुख री कठै चंद्रमा में चटक। जिण दीठां पछै अंतर न भावै एक खिण री। इण मूंढा री होड करै मूंढौ किणरौ।—र. हमीर

वि०—१ चटक-मटकयुक्त, चपल।

उ०—अलबेली हे कलाळण दारू दे, थांरी चटक चाल मोहि लागी, एक रात म्हारौ मारू ले।—लो.गी.

६ स्फूर्ति, शीघ्रता।

यौ०—चटकमटक।

वि०—२ नाजुक, नखरायुक्त. ३ चटपटा, चरपरा, तीक्ष्ण स्वाद का।

मुहा०—चटक-मटक—मसाला मिर्च आदि पड़ा हुआ या चटपटा भोजन।

४ चटकीला, शोख. ५ फुर्तीला. तेज।

चटकउ—१ देखो 'चटकौ' (रू.भे.)

२ शीघ्रता। उ०—ससनेही सज्जण मिळया, रयण रही रस लाइ। चिहुं पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ।—ढो.मा.

चटकणियौ—देखो 'चटकणौ' (अल्पा. रू.भे.)

चटकणी—सं०स्त्री० [अनु०] किवाड़ों को बंद करने या अड़ाने के लिये उनमें लगाई जाने वाली छड़, सिटकनी।

चटकणौ—वि०—१ चट-चट करने वाला. २ चट-चट की ध्वनि कर के टूटने वाला।

सं०पु०—वह बैल जिसके चलने पर पैर से चटचट की ध्वनि होती है।

अल्पा०—चटकणियौ।

चटकणौ, चटकबौ—क्रि०अ०—१ 'चट' शब्द करते हुए टूटना, फूटना या तड़कना। उ०—चंद्रहासां रा चीरिया जठी तठी बकतर टोपां रा टूक चटकिया अर कायरां रा प्राण केवल नाड़ियां मांहे अटकिया। —वं.भा.

२ चट-चट की ध्वनि होना. ३ सांप, विच्छू आदि विषैले जंतुओं का डसना या डंक मारना।

चटकणहार, हारौ (हारी) चटकणियौ—वि०।

चटकवाड़णौ, चटकवाड़बौ, चटकवाणौ, चटकवाबौ, चटकवावणौ, चटकवावबौ—प्रे०रू०।

चटकाड़णौ, चटकाड़बौ, चटकाणौ, चटकाबौ, चटकावणौ, चटकावबौ —क्रि०स०।

चटकिओड़ौ, चटकियोड़ौ, चटक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चटकीजणौ, चटकीजबौ—भाव वा०।

चटकमटक—सं०स्त्री०यौ—१ चटकीलापन, नाज, नखरा. २ चमक-दमक, तड़क-भड़क. ३ चटपटा (भोजन)।

चटकदार—वि०यौ [रा० चटक+फा० प्र० दार] १ चटकीला. २ चमकीला. ३ चटपटा।

चटकलौ—देखो 'चटकीलौ' (रू.भे.) उ०—चटकला मटकला मोही न सुहाई, घन कह हियड़उ हाथ न लाई।—वी.दे.

चटकाणौ, चटकाबौ—क्रि०स० ['चटकणौ' का प्रे० रू०] १ 'चट' शब्द करते हुए तोड़ना, फोड़ना या तड़काना. २ चट-चट की ध्वनि करना. ३ सांप-बिच्छू आदि विषैले जंतुओं का डसना या डंक मारना।

चटकाणहार, हारौ (हारी), चटकाणियौ—वि०।

चटकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चटकाईजणौ, चटकाईजबौ—कर्म वा०।

चटकणौ, चटकबौ—अ०रू०।

चटकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ तिराड़ डाला हुआ, तोड़ा हुआ, तड़काया हुआ. २ डंक मारा हुआ. (स्त्री० चटकायोड़ी)

चटकाळौ—देखो 'चटकीलौ' (रू.भे.)

चटकावणौ, चटकावबौ—देखो 'चटकाणौ' (रू.भे.) उ०—चोर गुरु बिच्छू चटकावै, ग्यांन राब विरळा गटकावै।—ऊ.का.

चटकावणहार, हारौ (हारी), चटकावणियौ—वि०।

चटकाविओड़ौ, चटकावियोड़ौ, चटकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चटकावीजणौ, चटकावीजबौ—क्रि० कर्म वा०।

चटकणौ—अ० रू०।

चटकावियोड़ौ—देखो 'चटकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चटकावियोड़ी)

चटकाहट—सं०स्त्री०—१ चटकने, फूटने या तड़कने का शब्द या भाव. २ कलियों के विकसित या प्रस्फुटित होने का भाव।

चटकियौ—१ देखो 'चटकौ'. (रू.भे.)

२ वह बैल या अन्य पशु जिसके चलने से पैर या खुर से चट-चट की ध्वनि उत्पन्न हो।

रू०भे०—चटकणियौ, चटकणौ।

चटकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ डंक मारा हुआ. २ छूटा हुआ. ३ तड़का हुआ, तराड़ खाया हुआ. ४ टूटा हुआ।

(स्त्री० चटकियोड़ी)

चटकी—सं०स्त्री०—१ छड़ी, बेंत. २ शीघ्रता, स्फूर्ति. ३ चट-चट की ध्वनि. ४ गाय, बैल आदि पशु द्वारा खुर को झटका देकर चलाई जाने वाली लात।

चटकीलौ—वि०पु० (स्त्री० चटकीली) १ चटक-मटक से रहने वाला, तड़क-भड़कयुक्त। उ०—अथ कंवरी रै पर्गा सिद्ध श्री लग्न री लड़ी, जीवरी जड़ी, सजीली, फबीली, लजीली, छबीली, रमकीली, लंकीळी, झमकीली, छकीली, लटकीली, चकीली, चटकीली, बत्तीस लखणी, चौसठ कळा, विचखणी, केळ रसबयारी, प्रांणप्यारी जिण सूं म्हारौ निज नेह दुरस भांत रा छजै देह।—र. हमीर

चटकौ—सं०पु०—विच्छू द्वारा डंक मारने की क्रिया या भाव. या किसी छोटे जंतु द्वारा काटने की क्रिया।

क्रि०प्र०—देणी, मरणी, मारणी, मेलणी, लगाणी, लागणी ।

२ तड़क-भड़क, ठसक. ३ नाज-नखरा. ४ प्रहार, चोट, मार ।

उ०—१ हरराज देवै नै दांठी तद देवै घोड़े नू चटको वाही ।

—नैणसी

उ०—२ कंध चटका जे सहै, दूजा करह गिमार ।—ढो.मा.

५ दर्द, कसक, रह-रह कर होने वाला दर्द, टीस ।

क्रि०प्र०—ठठणी, चलणी, चालणी, होणी ।

६ नौसादर और नीले-थोथे को मिला कर तैयार किया जाने वाला एक मसाला जो सोने को साफ करने के काम में आता है (स्वर्णकार) ७ दो लकड़ियों को जोड़ने के लिए लगाया हुआ लोहे का टुकड़ा. ८ अंगुलियों को चटकाने से उत्पन्न चट-चट की ध्वनि. ९ गाय बैल आदि पशुओं का एक रोग विशेष जिसमें पीड़ित पशु खुर को झटका देकर बार-बार लात फेंकता है ।

क्रि०प्र०—चालणी ।

१० टुकड़ा, खंड ।

चटको-मटको—सं०पु०यौ०—नाज, नखरा, बनाव, ठसक ।

उ०—चटका मटका लटका चुगली, बस अंतर भाव छटा उगली ।

—ऊ.का.

मि०—चटकमटक (रू.भे.)

चटक्क—देखो 'चटक' (रू.भे.)

चटक्कड़ो—सं०पु०—१ (पशुओं को छड़ी से) मारने या ताड़ने से उत्पन्न चट-चट शब्द. २ छड़ी का प्रहार या चोट । उ०—लांबी कांब चटक्कड़ा, गय लबावइ जाळ । ढोलउ अजे न बाहुड़इ, प्रीतम गो मन साल—ढो.मा. ३ देखो 'चटको' (अल्पा. रू.भे.)

चटक्कणो, चटक्कबो—देखो 'चटकणो' (रू.भे.)

चटक्को—देखो 'चटको' (रू.भे.) उ०—आवधां वैरियां वाळा माथा रा चटक्का उडे, बटक्का 'चैन' रा काच सीसी ज्यूं बढ़त ।

—सूरजमल मीसण

चटड़ो—देखो 'चटोकड़ो' (रू.भे.)

चटचट—सं०स्त्री० [अनु०] चटकने, टूटने या तड़कने से उत्पन्न शब्द ।

क्रि०वि०—शीघ्र चटपट, फौरन (मि० 'चटपट')

चटचटाणो, चटचटाबो—क्रि०अ०—१ चटचट की ध्वनि होना ।

क्रि०स०—२ चटचट की ध्वनि करना ।

चटच्चट, चटटाट—देखो 'चटचट' (रू.भे.) उ०—चटच्चट पत्र रगत्र चटट्टि, समं अनुसार रमं चवसट्टि ।—मे.म.

चटट्टणो, चटट्टबो—क्रि०स०—१ जीभ से चाटना । उ०—चटच्चट पत्र रगत्र चटट्टि, समं अनुसार रमं चवसट्टि ।—मे.म.

२ चटचट का शब्द करना ।

क्रि०अ०—३ चटचट का शब्द होना. ४ बोझ से लदे रथ या गाड़ी के चलने पर ध्वनि होना ।

चटणी—सं०स्त्री०—१ पुदीना, धनिया, मिर्च, खटाई आदि को एक साथ पीस कर बनाई हुई गीली चरपरी वस्तु जो भोजन करते समय स्वाद हेतु थोड़ी-थोड़ी खाई जाती है ।

मुहा०—१ चटणी करणी—बहुत महीन पीसना, चूर-चूर कर देना, मार डालना. २ चटणी बणाणी—देखो 'चटणी करणी' ३ चटणी होणी—खूब पिस जाना चट हो जाना ।

२ चाटने की वस्तु, अवलेह ।

चटपट—क्रि०वि० [अनु०] शीघ्र, जल्दी, तुरंत । उ०—सूरज रा रे सून. रो' घर घर मत रोवणा । चांन दई सो चून, चटपट देसी चकरिया ।—मोहनलाल साह

चटपटाणो, चटपटाबो—क्रि०अ० [अनु०] हड़बड़ी मचाना, शीघ्रता करना, बेचैनी से घबराना ।

चटपटी—सं०स्त्री०—१ शीघ्रता, उतावली, त्वरा । उ०—इसी गल्हां वातां करतां डेरै आइया सो कुंवरसी नूं तौ चटपटी सी लाग रही छै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२ बेचैनी, आतुरता । उ०—साह रा सत खोळा होय गया, घरै आय सूतो पण नींद नहीं आवै, चटपटी लागी ।

—पलक दरियाव री बात

३ देखो 'चटपटो' का स्त्री० ।

चटपटो—वि० (स्त्री० चटपटी) चरपरा, मसालायुक्त, नमकीन, तीक्ष्ण स्वाद का ।

चटरजी—सं०पु० [बं०] बंगाल के ब्राह्मणों की एक शाखा, चट्टोपाध्याय ।

चटळ—वि० [सं० चटुल] चंचल, चपल (ह.नां.)

चटसाळ, चटसाळा—सं०स्त्री० [सं० चेटक+शाला] पाठशाला ।

उ०—पूत कपूतन की चटसाळ कि, ज्यूं कुलटा सुसराल सुणायो ।

—ऊ.का.

चटांलट—सं०स्त्री०—टक्कर, भिड़ंत, युद्ध, गुत्थमगुत्थ । उ०—अइयो अमलीमांण, असुरां सूं भारथि 'अमर' । करतो घाउ कटारिआं, चटांलटा चळआंण ।—वचनिका

चटाई—सं०स्त्री०—घास-फूस, बांस की पतली फट्टियों, ताड़ के पत्तों आदि से बनाया हुआ बिछावन ।

चटाक—क्रि०वि० [अनु०] शीघ्र, फुरती से, तुरंत, चट से ।

उ०—आवते ही चटाक दे नारेळ बांध लियो, प्रोहित नजदीक आय तिलक कियो ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—चटाक पटाक करणी—बहुत जल्दी करना, चटपट का शब्द करना ।

चटाको, चटाचट—सं०पु०—कड़ी वस्तु के टूटने पर होने वाला शब्द, चट-चट की ध्वनि ।

चटाणो, चटाबो—क्रि०स० ('चाटणो' का प्रे० रू०) १ चाटने का काम कराना, जीभ के सहयोग से थोड़ा-थोड़ा अंश मुंह में जाने देना. २ थोड़ा-थोड़ा अवलेह किसी दूसरे के मुंह में डालना. ३ रिश्वत देना, घूस देना ।

चटाणहार, हारौ (हारी), चटाणियौ—वि० ।
चटाड़णौ, चटाड़बौ, चटावणौ, चटावबौ—रू०भे० ।
चटायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
चटाईजणौ, चटाईजबौ—कर्म वा० ।

चटापड़, चटापट-सं०स्त्री०—शीघ्रता, फुर्ती, जल्दी ।

चटापटी—१ मि० 'चटपटी' (१) २ लड़ाई, टंटा, फिसाद।

चटायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चटाया हुआ, रिश्वत दिया हुआ ।
(स्त्री० चटायोड़ी)

चटावण-सं०स्त्री०—चाटने या चटाने योग्य पदार्थ ।

चटावणौ, चटावबौ—देखो 'चटाणौ' (रू.भे.)
चटावणहार, हारौ (हारी), चटावणियौ—वि० ।
चटाविग्रोड़ौ, चटावियोड़ौ, चटाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चटावीजणौ, चटावीजबौ—कर्म वा० ।

चटावियोड़ौ—देखो 'चटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चटावियोड़ी)

चटी-सं०स्त्री०—१ लडाई, मुठभेड़. २ कुश्ती. ३ चिड़िया।

चटीवाळ-वि०—लड़ाई-झगड़ा करने वाला, फसादी ।

चटु-सं०पु० [सं०] १ चाटु, प्रिय वाक्य. २ खुशामद, चापलूसी. ३ पेट ।
सं०स्त्री०—४ कनिष्ठा अंगुली ।

चटुड़ी—देखो 'चटु' ४ (अल्पा. रू.भे.)

चटुड़ौ—देखो 'चटोकड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चटुड़ी)

चटैल-वि० धूर्त ।
सं०पु०—शीघ्रता का भाव ।

चटोकड़ौ, चटोरौ—देखो 'चट्टौ' (अल्पा. रू.भे.)
(स्त्री० चटोकड़ी, चटोरी) ।

चट्ट—१ देखो 'चट' (रू.भे.) उ०—मिळ चट्ट वगट्ट सुभट्ट मिळै, दुजड़ाहत 'पाल' भड़ै दुजलं ।—पा.प्र.
सं०पु०—२ चोटी । उ० —लट्टां चट्टां लूंविया वेदल भर बाथ्यां ।
—द.दा.
३ विद्यार्थी । उ०—नेसालिया ते देखी मूरख, मूरख चट्ट कहंति । तिम तिम ते मनि दूहवीइ, अंतराय फळ हूंति ।—वि.वि.प.

चट्टसाळ—देखो 'चटसाल' (रू.भे.) उ०—विसाळ चट्टसाळ वीच, वेद की धुनी नहीं। महारुमी गिरारुमी गुनी नहीं ।—ऊ.का.

चट्टांण-सं०स्त्री०—किसी पहाड़ी भूमि का पत्थर का बड़ा खण्ड, शिलाखंड ।

चट्टी-सं०स्त्री०—१ टिकने का स्थान, पड़ावस्थल. २ मंजिल. ३ देखो 'चटी' (रू.भे.)
वि०—४ स्वादिष्ट चीजें खाने वाली (लोभिन)

चट्टू—देखो 'चट्टौ' (रू.भे.)

चट्टौ-सं०पु०—स्त्री के गुंथे हुए बालों की चोटी ।
वि० (स्त्री० चट्टी) १ स्वादिष्ट चीजें खाने का लोभी, चट्टू, स्वादू । २ लोलुप, लोभी ।
रू०भे०—चट्टू ।
अल्पा०—चटोकड़ौ, चटोरौ ।

चट्ठच – देखो 'चट्ट' ३ (रू.भे.)

चठठ-सं०स्त्री० [अनु०] बोझ से लदे रथ या गाड़ी आदि के चलने पर उत्पन्न ध्वनि । उ०—चठठ हमलां टलां बोल तोपां चरख ।
—अज्ञात

चठठणौ, चठठबौ—देखो 'चटट्टणौ' (रू.भे.) उ०—१ अठठ पड़ डंडाळां चठठिया बांण अत । खाग झट विकट थट खळां सिर खीज ।
—वीरंभियौ मूळौ
उ०—२ ज्यां पर सिलह ससत्र तन जड़िया । कळहण जोस चठठती कड़िया ।—सू.प्र. उ०—३ चठीठत सावळ ढाल चढंत । कंदोइग्र घेवर जांण कढ़ंत ।—सू.प्र.

चठठाक, चठठाल-सं०स्त्री०—चटचट की ध्वनि ।

चठ्ठ—देखो 'चठठ' (रू.भे.)

चठ्ठणौ, चठ्ठबौ—देखो 'चटट्टणौ' (रू.भे.)

चठमठौ-वि०—कंजूस, कृपण (डि.को.)

चट्ठा-सं०स्त्री० [अनु०] द्रव पदार्थ को जीभ से खींच कर पीने से होने वाली चटचट की ध्वनि । उ०—पह बीरहाक पनाक पणचां, बाज डाक त्रंवाक । असनाक पर ग्रीधाक आवध, करण बाज कजाक । चट्ठा करत खप्पराक छंडी, राग वज अयराक । रिणछाक चढ़ रवि ताक राघव, लखण सहित लड़ाक ।—र.ज.प्र.

चडणौ, चडबौ— देखो 'चढ़णौ' (रू.भे.) उ०—कळ चडै जोय चंदजसनांमी करै । मरद सांचा जिकै आय अवसर मरै ।—हा.झ.
चडणहार, हारौ (हारी), चडणियौ—वि० ।
चडवाड़णौ, चडवाड़बौ, चडवाणौ, चडवाबौ, चडवावणौ, चडवाववौ,—प्रे.रू. ।
चडाड़णौ, चडाड़बौ, चडाणौ, चडाबौ, चडावणौ चडावबौ
—क्रि०स० ।
चडिग्रोड़ौ, चडियोड़ौ, चड्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चडीजणौ, चडीजबौ—भाव वा० ।

चडमौ-वि०— १ सवारी के योग्य (ऊंट) २ ऊंचा चढ़ने योग्य. ३ उन्नति के योग्य ।

चडतव-सं०स्त्री०—समुद्र, सागर (ना.डि.को.)

चडवा-सं०स्त्री०—कपड़े की रंगाई व छपाई का व्यवसाय करने वाली एक मुसलमान जाति ।

चडवायोड़ौ—देखो 'चढ़वायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चडवायोड़ी)

चडाचड-सं०स्त्री०—१ चढ़ाई, आक्रमण । उ०—गोम तज भार रज वोम रव गड़ागड़, झड़ै खग वड़ावड़ रूप जमरा । 'कसन' हर भड़ां अणीयां धकै, कडाकड़ आज री चडाचड कठो 'अमरा' ।
—अमरसिंह सिसोदिया री गीत

२ चढ़ने-उतरने की क्रिया।

चडाणी, चडाबौ—देखो 'चढ़ाणी' (रू.भे.)

चडापौ—देखो 'चढ़ावौ' (रू.भे.)

चडायोड़ी—देखो 'चढ़ायोड़ी' (रू.भे.) (स्त्री० चडायोड़ी)

चडावडी—देखो 'चढ़ावड़ी' (रू.भे.)

चडावणी, चडावबौ—देखो 'चढ़ावणी' (रू.भे.)

चडावणहार, हारौ (हारी), चडावणियौ—वि०।

चडाविप्रोड़ी, चडावियोड़ी, चडाव्योड़ी—भू०का०कृ०।

चडावीजणी, चडावीजबौ—कर्म वा०।

चडावियोड़ी—देखो 'चढ़ावियोड़ी' (रू.भे.) (स्त्री० चडावियोड़ी)

चडावौ—देखो 'चढ़ावौ' (रू.भे.)

चडियोड़ी—देखो 'चढ़ियोड़ी' (रू.भे.) (स्त्री० चढ़ियोड़ी)

चडी री पिलांण—देखो 'चढ़ी री पलांण' (रू.भे.)

चड्ड—देखो 'चाड' (रू.भे.) उ०—मारू रायां 'माल' हर, सारू खळां अगड्ड। मोटां चींत संभावणा, जे नव कोटां चड्ड।—रा.रू

चड्डी—सं०स्त्री०—एक प्रकार का लंगोट, अधोवस्त्र, कच्छा।

चढ़णासितवारण—सं०पु०यौ०—इन्द्र (डि.को.)

चढ़णी, चढ़बौ—क्रि०अ० [सं० उच्चलन, प्रा० उच्चडन, चढ्ढन] १ नीचे से ऊपर को जाना, ऊंचे स्थान पर जाना।

मुहा०—१ चढ़ा ऊतरी करणी—बार-बार चढ़ना और उतरना. २ दिन चढ़णी—दिन का प्रकाश फैलना, दिन या काल व्यतीत होना. ३ सूरज या चांद चढ़णी—सूर्य या चन्द्रमा का उदय होकर क्षितिज के ऊपर आना।

२ बढ़ना, उन्नति करना, आगे बढ़ना। उ०—१ धरम तप जप वेद विद्या उच्चरे छै। राजा रौ चढ़तौ दीह छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ दुरजोधन बीर करे ग्रह द्रोपां, खांच सभा विच चीर खड़ौ। पनांयो पण भीर हुवौ परमेसर, चीर न खूटोय सोभ चढी।

—भक्तमाळ

मुहा०—१ चढ़-बढ़ नै—अधिक अच्छा होना, श्रेष्ठ होना. २ चढ़ा-ऊपरी करणी—एक दूसरे से आगे जाने की कोशिश करना।

कहा०—चढ़णी जितौ ही उतरणी—जितना ऊपर चढ़ेगा वह उतना ही अधिक गिरेगा। उन्नति-पतन एवं दुख-सुख भाई हैं।

३ चढ़ाई करना, हमला करना, आक्रमण करना। उ०—चढिया हरि सुणि संकरखण चढ़िया, कह कवण नह घणा किय। एक उजाथर वळहि एहवा, सायी सह आखाड़ासिय।—वेलि.

मुहा०—चढ़ आणी—चढ़ाई करना, आक्रमण करना।

४ ऊपर चढ़ना, उड़ना—ज्यूं आकास में गरद चढ़णी।

५ किसी नीचे लटकती वस्तु या ढीली वस्तु का सिकुड़ कर या खिनक कर ऊपर की ओर बढ़ना या तंग होना. ६ एक वस्तु के ऊपर दूसरी वस्तु का मढ़ना, आवरण के रूप में ऊपर आना. ७ किसी वस्तु आदि का मँहगा होना, भाव तेज होना या दाम ऊपर बढ़ना. ८ (नदी आदी का पानी) बाढ़ पर आना, बढ़ना. ९ स्वर का तीव्र होना, सुर ऊंचा होना. १० किसी मामले को लेकर अदालत तक जाना।

मुहा०—कचेड़ी चढ़णी—अदालत में किसी के विरुद्ध मुकदमा या दावा दायर करना।

कहा०—चढ़े दरबार जाय घर-बार—मुकदमेबाजी की निंदा।

११ प्रस्थान करना, रवाना होना. १२ किसी सवारी पर सवार होना। उ०—१ जमारौ सुधारौ कियौ कहै सारौ जग 'दूदा' रौ, पोतरौ चढ़े रंभ रथ धोळे दीह।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ चढ़ि-चढ़ि गज भिड़जां नयण चोळ, बह हले प्रघळ जळ दळाबोळ।—सू.प्र.

१३ ढोल, सितार आदि डोरी वाले वाद्यों की डोरी कस जाना, अथवा चंग, खंजरी आदि वाद्यों का गर्मी पाकर तनना, अकड़ना।

मुहा०—नस चढ़णी—नस का अपने स्थान से कुछ हट जाने के कारण तन जाना।

१४ किसी सामग्री या वस्तु का किसी महापुरुष, देवता आदि के अर्पित होना. १५ किसी बही, पुस्तिका अथवा अन्य कागज पर अंक का अंकित होना, दर्ज होना, खाते में लिखा जाना. १६ निर्दिष्ट समय यथा वर्ष, मास, दिन, सप्ताह आदि का आरंभ होकर आगे वृद्धि पर होना—ज्यूं दसा चढणी। १७ किसी के ऊपर ऋण का होना, कर्ज का बढ़ जाना—ज्यूं ब्याज चढ़णी। १८ किसी मादक वस्तु का बुरा अथवा उत्तेजक असर होना—ज्यूं नसौ चढणी, भांग चढणी।

कहा०—चढी पर चढाव, सिर दूखै न पांव—नशे के बढ़ने पर या पी हुई शराब पर फिरसे पीने से शरीर को कोई दर्द महसूस नहीं होता.

१९ आवेश होना, जोश आना, प्रभावित होना—ज्यूं क्रोध चढणी, जोश चढणी।

उ०—सो जांणै बाभीसा तोरण माथै वींद जाय ज्यूं थारी देवर सोळौ चढ़ियोड़ा जाय रया छै।—वी.स.टी.

२० पकने या आंच देने के लिये किसी वस्तु का चूल्हे पर रखा जाना।

कहा०—चढी हांडी नै ठोकर नहीं मारणी—चूल्हे पर चढ़ी हुई हांडी को ठोकर नहीं मारना चाहिए। चलती हुई आजीविका या आय को नहीं छोड़ना चाहिए।

२१ लेप चढ़ना. रोगन चढ़ना, खोल चढ़ना।

मुहा०—रंग चढ़णी—किसी वस्तु पर रंग का आना, प्रभाव होना, असर होना।

२२ पसंद आना, दिल को जँचना।

मुहा०—चित चढ़णी—मन को पसंद आना।

२३ बहुत से आदमियों का दल बांध कर चलना, साज बाजे के साथ-साथ चलना (बारात)।

चढ़णहार, हारौ (हारी), चढ़णियौ—वि०।

चढ़वाड़णौ, चढ़वाड़बौ, चढ़वाणौ, चढ़वावौ, चढ़वावणौ, चढ़वावबौ —प्रे० रू०

चढ़ाड़णौ, चढ़ाड़बौ, चढ़ाणौ, चढ़ाबौ, चढ़ावणौ, चढ़ावबौ —क्रि० स०।

चढ़िग्रोड़ौ, चढ़ियोड़ौ, चढ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चढ़ीजणौ, चढ़ीजबौ—भाव वा०।

चढ़तौ–वि०—१ बढ़ कर, उन्नत। उ०—तद व्यासजी कही—म्हारी खातर जमा छै। मोटियार मोसूं चढ़ता छै।—अमरसिंह री वात २ अधिक।

चढ़मौ–सं०पु०—सवारी के योग्य (ऊंट)

चढ़ाई–सं०स्त्री०—१ चढ़ने की क्रिया का भाव. २ ऐसी भूमि जो क्रमशः ऊंचाई की ओर बढ़ती जाय. ३ आक्रमण, हमला।

क्रि०प्र०—करणी।

४ किसी देवता की पूजा की व्यवस्था, चढ़ावा।

चढ़ाऊपरी–सं०स्त्री०यौ०—एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़, प्रतिस्पर्धा।

चढ़ाक–वि०—१ चढ़ने वाला. २ सवारी में चतुर व्यक्ति. ३ चढ़ने में निपुण।

चढ़ाचढ़ी–सं०स्त्री०यौ०—परस्पर आगे बढ़ने की होड़, प्रतिस्पर्धा।

चढ़ाणौ, चढ़ावौ–क्रि०स०—१ नीचे से ऊपर की ओर ले जाना, ऊंचाई पर ले जाना. २ चढ़ने का काम कराना, चढ़ने में प्रवृत्त करना. ३ किसी लटकने वाली या ढीली वस्तु को सिकोड़ कर या खिसका कर ऊपर की ओर ले जाना. ४ हमला कराना, आक्रमण कराना. ५ (किसी की) उन्नति कराना, ऊंचा चढ़ाना. ६ एक वस्तु के ऊपर दूसरी वस्तु का सटाना, मढ़ना, आवरण रूप से लगाना. ७ किसी वस्तु आदि का भाव ऊंचा करना, मंहगा करना, दाम बढ़ाना। ८ स्वर को ऊंचा करना, स्वर तीव्र करना. ९ प्रस्थान कराना. रवाना कराना. १० सवारी पर बैठाना, सवारी कराना. ११ ढोल, सितार आदि की डोरी को कसना या तानना. १२ किसी देवता या महात्मा आदि को भेंट देना, अर्पित करना. १३ चटपट पी जाना, गले से उतार जाना. १४ ऋण का बढ़ाना, किसी को देनदार ठहराना. १५ किसी पुस्तक, वही, कागज आदि पर लिखना, दर्ज करना, खाते लिखाना. १६ पकने या आंच देने के लिये चूल्हे पर रखना. १७ लेप करना, पोतना. १८ वर पक्ष की ओर से वधू के घर जेवर आदि भेजना. १९ पसंद कराना, दिल में जंचा देना. २० धनुष आदि में तार या डोरी कस कर बांधना।

चढ़ाणहार, हारौ (हारी), चढ़ाणियौ—वि०।

चढ़ाड़णौ, चढ़ाड़बौ, चढ़ावणौ, चढ़ावबौ—रू०भे०।

चढ़ाविग्रोड़ौ, चढ़ावियोड़ौ, चढ़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चढ़ावीजणौ, चढ़ावीजबौ—कर्म वा०।

चढ़णौ—अ०रू०।

चढ़ापौ—देखो 'चढ़ावौ' (रू.भे.)

चढ़ावढ़ी—देखो 'चढ़ाचढ़ी' (रू.भे.)

चढ़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—चढ़ाया हुआ। (स्त्री० चढ़ायोड़ी)

चढ़ावढ़ी—देखो 'चढ़ाचढ़ी' (रू.भे.)

चढ़ावणौ, चढ़ावबौ—देखो 'चढ़ाणौ' (रू.भे.) उ०—कविराजूं कूं सीमुख हुकम करि बगसावते हैं। सलाम असीस करि चंडी मंत्र पढ़िकै चढ़ावते हैं।—सू.प्र.

चढ़ावणहार, हारौ (हारी), चढ़ावणियौ—वि०।

चढ़ाविग्रोड़ौ, चढ़ावियोड़ौ, चढ़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चढ़ावीजणौ, चढ़ावीजबौ—कर्म वा०।

चढ़णौ—अ०रू०।

चढ़ावियोड़ौ—देखो 'चढ़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चढ़ावियोड़ी)

चढ़ावौ–सं०पु०—देवता आदि को चढ़ाई जाने वाली सामग्री।

रू०भे०—चड़ावौ, चडावौ चढ़ापौ।

चढ़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—चढ़ा हुआ (स्त्री० चढ़ियोड़ी)

चढ़ीरौ–सं०पु०—सवारी के योग्य ऊंट या घोड़ा तथा इनके पीठ पर जमाये जाने वाला चारजामा।

चढ़ीरौपलांण–सं०पु०—ऊंट पर सवारी करने का चारजामा।

चण, चणउ, चणक—१ देखो 'चणौ' (रू.भे.)—उ.र.

२ एक ऋषि का नाम।

सं० स्त्री० [रा०] लचक, मोच (शरीर में प्रायः यह कमर, कलाई अथवा पैर के टखने में ही पड़ती है।)

चणकरिखौ—देखो 'चाणक्य' (रू.भे.)

चणकार–सं०पु०—१ चने का खेत. २ चना बोने के लिये तैयार की हुई भूमि. ३ ध्वनि विशेष।

चणखार—देखो 'चणाखार' (रू.भे.)

चणग–सं०स्त्री०—चिणगारी, अग्निकण।

चणणंक—देखो 'चणण' (रू.भे.)

चणणंकणौ, चणणंकबौ–क्रि०अ०—जोश या भय आदि के कारण रोमांचित होना. रोयां-रोयां खड़ा होना। उ०—चणणंके भड़ चिहुर छीजि कातर छणणंकै।—वं.भा.

चणण–सं०स्त्री०—१ जोश का भय आदि के कारण रोमांचित होने का भाव। उ०—चणण रोम चाचर घरण घाक घर थरर चख, खंभ बड़ड़ कड़ड़ दसण खिजायौ।—ब्रह्मदास दादूपंथी

२ धधकते हुए अंगारों को पानी में डालने से अथवा उन पर पानी डालने से होने वाली छम्म छम्म की ध्वनि. ३ तीरों अथवा बंदूकों की गोलियों की बौछार की ध्वनि।

चणणाक—देखो 'चणण' (१)

चणणाट, चणणाटियौ, चणणाटौ—१ देखो 'चणण' (रू.भे.)

२ ध्वनि विशेष। उ०—सुतर नाल्यां जूंब रा नाल्यां, रामचंगी हय, नाल्यां रा चणणाट वाजै छै।—रा.सा.सं.

३ नाश, बरबाद (अल्पा. 'चणणाटियौ')

चणणाणो, चणणावो–क्रि०अ०—रोमांच आना, रोयां-रोयां खड़ा होना।
उ०—ज्यूं सूरां पूरां रा चाचरां ग केम चणणाई नैं ऊभा हुऐ।
—वचनिका

मि०—चणणांकणो।

चणणो, चणवो–क्रि०स०—१ किन्हीं वस्तुओं आदि को एक दूसरे के ऊपर रखते हुए उन्हें जमाना, चुनना. २ वस्तुओं को एक-एक कर उठाना, बीनना. ३ अंगुलियों से चुनना, खोंटना।

चणाखार–सं०पु०यो०—चने के डंठलों और पत्तियों आदि को जला कर निकाला हुआ क्षार।

चणायकां–सं०स्त्री०—१ चाणक्य नीति के श्लोक. २ वह पुस्तक जिसमें ऐसे श्लोकों का संग्रह हो।

चणारी–सं०स्त्री०—१ पैर के तलुवे में होने वाला फफोला विशेष. २ एक छोटा काला जन्तु।

चणियोटी—देखो 'चुणियोटी' (रू.भे.) (स्त्री० चणियोड़ी)

चणो–सं०पु० [सं० चणक] १ रबी की फसल का एक अन्न जिसका पौधा लगभग डेढ़ फुट से दो फुट तक ऊंचा होता है। इसकी पत्तियां छोटी होती हैं और कुछ खार और खटाई लिये होती हैं। इसका दाना गोल होता है जिसकी दाल भी बनती है।

पर्याय०—चण, हरिमंथक।

मुहा०—१ चणा चावणा—कष्ट से दिन निकालना, चने चबा कर निर्वाह करना, कठिन कार्य करना, परिश्रम का कार्य करना. २ एक चणो, दो दळ होणो—अलग-अलग होना, मतभेद, आपस में फूट होना।

कहा०—घर में नहीं चणा को चून, बेटो मांगे मोतीचूर—घर में तो पेट भरने को आटा भी नहीं और बेटा मीठे पकवान मांगता है। साधारण भोजन का भी जहां अभाव हो वहां मिष्ठान्न या पकवान की आशा करना मूर्खता है।

चत—देखो 'चित' (रू.भे.)

कहा०—चत चंगोड़ी मन, माळवे हियो हाड़ोती जाय—मन की एकाग्रता नहीं होने से कार्य की सफलता नहीं मिलती।

चतड़ाचोथ–सं०स्त्री०—भाद्रपद शुक्लपक्ष की चतुर्थी, गणेशचतुर्थी।

उ०—चतड़ाचोथ भादूड़ो, दे दे माई लाडूड़ो। लाडूड़ा में पांन सुपारी, चोदो रांणी हुई विरांणी।—लो.गी.

चतभरम–वि०यो० [सं० चित्त+भ्रम] चित्तभ्रम, पागलपन, उन्माद।

चतनाटो–वि०यो०—कंजूस, कृपण, मूंजी (डि.को.)

चतरंग–वि०—चतुर, निपुण। उ०—सायर चतरंग नार हो जिसके घर गुण जांन, जिसके कुटिला नार हो। परदेसां जी प्यारी प्रीत कर परनावो सूं ल्यावें मेरी ज्यान जी।—लो.गी.

सं०स्त्री०—चतुरंगिणी सेना। उ०—वरनै चंद तांम चढ़े जुध वीर, सजे चतरंग है सेन सधीर।—वि.सु.रू.

२ चित्तौड़गढ़। उ०—रव रथ पोहर थकत हुय रहियौ, नमो चतरंग नरेस। जुगां न जाय नांम ससं जड़ियां, पड़िया तो चढ़ियो पंडवेस।—महारांणा वटा अड़सी रो गीत

३ शतरंज। उ०—चाल न आ चतरंग री, चतरंगिण री चाल। अद चत बाजी मारणो, घरघां सरै घाराळ।—रेवतसिंह भाटी

चतरंगणी—देखो 'चतुरंगिणी' (रू.भे.) उ०—रणखेतां चतरंगणी सिन्या गाढी नींद सुवायै तूं।—गणपति स्वामी

चतर–वि०—चतुर। उ०—साजण विसराया भला सुमरयां करै बेहाल, देखो चतर विचार के साची कहै जमाल।—जमाल

कहा०—१ चतर नै इसारो घणो—होशियार आदमी को इशारा मात्र काफी होता है। भले या समझदार आदमी को संकेत मात्र काफी होता है. २ चतर री चार घड़ी मूरख रो जमारो—चतुर या दक्ष व्यक्ति को किसी कार्य के लिए बहुत थोड़ा समय काफी होता है परन्तु मूर्ख तो जिन्दगी भर नहीं कर सकता. ३ चतर री एक पो'र मूरख री सारी रात—देखो कहा० २।

सं०पु०—१ चतुर व्यक्ति। उ०—सठ सनेह जीरण वसन, जतन करंतां जाय। चतर प्रीत रेसम लछा, घुळत घुळत घुळ जाय।
—र.रा.

२ ब्रह्मा।

चतरणो, चतरबो–क्रि०स०—चित्रकारी करना, चित्रण करना।

चतरता—देखो 'चतुरता' (रू.भे.)

चतरभुज–सं०पु०यो० [सं० चतुर्भुज] १ चार भुजाओं से घिरा हुआ क्षेत्र. २ चार भुजाओं वाला, यथा–विष्णु।

चतरांम–सं०पु०—चित्र, तस्वीर। उ०—तावड़ो डोर में भड़ज देखै तर्क, जके रह जाय चतरांम जेही।—बखतो खिड़ियो

चतरांमकर–सं०पु० [सं० चित्रकार] चित्रकारी करने वाला, चित्रकार।

चतराई—देखो 'चतुराई' (रू.भे.) उ०—१ छंद गाळी बोलै न हसै है ऊठी आइ आधि रात आपां छानो करै नहीं बात यूं कहि सिगळी बाहर आई तद रतनां कीनी चतराई मिस कर ऊठी।—र. हमीर

उ०—२ वींका हाथ भरया चनवायी रै, वींकै चुड़लै री चतराई रै।
—लो.गी.

कहा०—घणी चतराई घणी भूंडी—अधिक चतुराई अच्छी प्रतीत नहीं होती।

चतारण–सं०पु० [सं० चतुरानन] ब्रह्मा (डि.नां.मा.)

चतारो–सं०पु०—चित्रकार, चितेरा।

चतुरंग–सं०पु०—१ चार प्रकार के बोल से गठा हुआ गायन (संगीत) २ देखो 'चतुरंगिणी' (रू.भे.) उ०—१ चतुरंग मिळै दरगाह चंद। सामळै जांणि घणि नदी समंद।—सू.प्र.

उ०—२ नही तो चतुरंग चक्र री आतंक देख बलात्कार सूं वणाय लेवा री बात कतरीक छै।—वं.भा.

उ०—३ ऊमर उतावळि करइ, पल्लांणियां पवंग। खुरसांणी सूंवा सयंग, चढ़िया दळ चतुरंग।—ढो.मा.

चतुरंगण, चतुरंगणि, चतुरंगणी—देखो 'चतुरंगिणी' (रू.भे.)
उ०—१ चतुरंगण लै म्हैं चलूं, रिख न मेल्हूं रांम ।—रांमरासौ
उ०—२ समहर सैंद काच री सीसी, साथै चतुरंगणि वावीसी ।
—रा.रू.

चतुरंगपत, चतुरंगपति-सं०पु०यौ०—चतुरंगिणी सेना का सेनापति या प्रमुख अधिकारी ।

चतुरंगिणी, चतुरंगिनी, चतुरंगी-सं०स्त्री० [सं० चतुरंगिनी] वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल—ये चार अंग हों ।
उ०—१ हूंत नगीनै अजमल हालै, चतुरंगी सेन्या संग चालै ।
—रा.रू.
उ०—२ चंकतौ अकबर चक्कवै, पतसाहां पतसाह । चतुरंगी फौजां चढ़ै, दिये दुरंगां दाह ।—वां दा.
रू०भे०—चतरंग, चतरंगणी, चतुरंग, चतुरंगण, चतुरंगणि, चतुरंगणी, चतुरंगिनी, चतुरंगीनी ।
वि०—१ चार अंगों वाली. २ दक्ष, चतुर । उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति उवै चतुरंगी रायजादी क्रितियां री झुंविखौ मोतीआं री लड़ी हुवै ।—रा.सा.सं.

चतुरंत-वि० [सं० चतुर्थ] चौथा, चतुर्थ । उ०—तुकां वेलिये गीत री, आद दुतिय चतुरंत । तिय पद दोय दुमेल तुक, दीपक सौ दाखंत ।
—र.रू.

चतुर-वि० [सं०] १ प्रवीण, होशियार, निपुण ।
पर्याय०—अभिजांणण, कुसळ, क्रतमुख, चतुर, नागर, निपुण, निसणात, पटु, परवीण ।
२ धूर्त, चालाक. ३ फुर्तीला, तेज ।
[सं० चत्वार] ४ चार की संख्या ।
५ शृंगार रस का वह नायक जो अपने चातुर्य से प्रेमिका के साथ संभोग का साधन करे. ६ कपट. ७ कवि (अ.मा.)

चतुरई—देखो 'चतुराई' (रू.भे.)

चतुरक-सं०पु० [सं०] चतुर व्यक्ति, प्रवीण व्यक्ति ।

चतुरक्रम-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का ताल (संगीत)

चतुरगति-सं०पु०यौ०—कच्छप, कछुआ (ह.नां.)

चतुरजातक-सं०पु०यौ० [सं० चतुर्जातक] इलायची (बीज) दालचीनी (छाल) तेजपत्र (पत्ता) और नागकेसर (फूल)—इन चार का समूह या मिश्रण (वैद्यक)

चतुरजुग-सं०पु०यौ [सं० चतुर्युग] चार युग—सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग ।

चतुरजोणि, चतुरजोणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० चतुर्योनि] प्राणियों के चार प्रकार से उत्पन्न होने की क्रिया—अंडज, जरायुज, स्वेदज, तथा उद्‌भिज ।

चतुरता-सं०त्री०—चतुर होने का भाव ।

चतुरथ-वि० पु० [सं० चतुर्थ] चौथा ।

चतुरथी-वि०स्त्री०[सं० चतुर्थी] चौथी । उ०—कवित्रीजी री आध करि, सजि पंचमी सराहि । पंगती त्रीजी पंचमी, मेलि चतुरथी मांहि ।
—ल.पि.
सं०स्त्री०—चंद्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि ।

चतुरदंत, चतुरदंती-सं०स्त्री० [सं० चतुर्दंतिन्] एरावत हाथी ।

चतुरदस-वि० [सं० चतुर्दश] दस और चार का योग, चौदह ।
उ०—व्याकरण पुरांण सम्रति सासत्र विधि, वेद च्यारि खट अंग विचार । जांणि चतुरदस चौसठ जांणी, अनंत अनंत तसु मधि अधिकार ।—वेलि.

चतुरदसी-सं०स्त्री० [सं० चतुर्दशी] मास के प्रत्येक पक्ष की चौदहवीं तिथि । उ०—१ रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणौ विलासी ।—रा.रू. उ०—२ चतुरदसी वैसाख वद, तजगा कोट तुरक्क । पुर जाळंधर मारियौ, कमधां वांध कटक्क ।—रा.रू.

चतुरद्रस्ट्र-सं०पु० [सं० चतुर्दंष्ट्र] १ ईश्वर. २ कार्तिकेय. ३ एक राक्षस का नाम ।

चतुरदिक, चतुरदिस-सं०पु०यौ० [सं० चतुर्दिक, चतुर्दिश] चारों दिशायें ।
क्रि०वि०—चारों ओर ।

चतुरधांम-सं०पु०यौ० [सं० चतुर्धाम] चारों मुख्य तीर्थ-स्थान ।

चतुरपदी-सं०पु०यौ०—१ चौपाया पशु. २ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में तीस मात्रायें होती हैं । १४ व १६ पर यति एवं अंत में गुरु होता है (र.ज.प्र.)

चतुरबाह, चतुरबाहु-सं०पु०यौ० [सं० चतुर्बाहु] जिसके चार भुजायें हों यथा-विष्णु । उ०—झिले रागवागां मुठी वाउ झल्लै, चतुरबाह रा रत्थ ज्यूं पत्थ चल्लै ।—वचनिका

चतुरबूह-सं०पु०यौ० [सं० चतुर्व्यूह] १ चार पदार्थों का योग. २ चार मनुष्यों का समूह. ३ विष्णु ।

चतुरभुज-सं०पु०—देखो 'चतरभुज' (रू.भे.) उ०—रूप चतुरभुज प्रकटत रीधौ, दरसण निज माता नै दीधौ ।—र.रू.

चतुरभुजा-सं०स्त्री०यौ० [सं० चतुर्भुजा] १ एक विशिष्ट देवी. २ गायत्री रूप धारिणी महाशक्ति ।

चतुरभुजी-सं०पु० [सं० चतुर्भुज+रा०प्र० ई] १ एक वैष्णव संप्रदाय. २ इस संप्रदाय का अनुयायी. ३ विष्णु ।
सं०स्त्री०—४ दुर्गा, देवी. ५ एक प्रकार की तलवार ।
वि०—देखो 'चतुरभुज' (रू.भे.)

चतुरमास-सं०पु०यौ० [सं० चातुर्मास] वर्षा ऋतु के चार मास—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और क्वार ।

चतुरमुख-सं०पु०यौ० [सं० चतुर्मुख] १ जिसके चार मुख हों—ब्रह्मा. २ विष्णु. ३ एक प्रकार का चौताला ताल (संगीत) ४ अनिरुद्ध का एक नाम ।
वि०—चार मुख वाला ।

चतुरमुगती-सं०स्त्री०यौ० [सं० चतुर्मुक्ति] चार प्रकार का मोक्ष—सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य और सालोच्य ।

चतुरवरग–सं०पु०यौ० [सं० चतुर्वर्ग] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों का समुदाय।

चतुरवरण–सं०पु०यौ० [सं० चतुर्वर्ण] १ चार प्रकार के वर्ण—क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र. २ अनिरुद्ध का एक नाम।

चतुरविद्या–सं०स्त्री०यौ०—चारों वेदों में लिखी हुई विद्या।
वि०—चारों वेदों को जानने वाला।

चतुरविध–क्रि०वि०—चार प्रकार का। उ०—चतुरविध वेद प्रणीत चिकित्सा समय उपाय मंत्र तंत्र सुधि। काया कजि उपचार करंतां हुवै नु वेलि जपंति हुवि।—वेलि.

चतुरवेद–सं०पु० [सं० चतुर्वेद] १ चार वेद—ऋगवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और सामवेद. २ ईश्वर।
वि०—चारों वेदों का ज्ञाता।

चतुरवेदी–सं०पु० [सं० चतुर्वेदिन्] १ चारों वेदों को सही-सही जानने वाला व्यक्ति. २ ब्राह्मणों का एक वंश या गोत्र।

चतुरह–सं०पु० [सं०] चार दिनों में होने वाला योग (ज्योतिष)

चतुरा–सं०स्त्री० [सं०] नृत्य में नर्तकी द्वारा धीरे-धीरे अपनी भौंहों को कंपाने की एक क्रिया विशेष।

चतुराई–सं०स्त्री० [सं० चतुर+रा० प्र० आई] १ निपुणता, दक्षता, होशियारी। उ०—चौसठ अवधांन तणी चतुराई, बोलण महाराजा बिरद। गूवी मिळी धारणा ख्यातां, जगदंबा तो क्रपा जद।—बां.दा. २ धूर्तता. ३ चातुर्य, चालाकी।
मुहा०—१ चतुराई छांटणी—चालाक बनना, अपनी चतुराई की बड़ाई करना. २ चतुराई छोलणी—देखो 'चतुराई छांटणी'।

चतुराणण–सं०पु०यौ० [सं० चतुरानन] जिसके चार मुख हों—ब्रह्मा।

चतुरातमक–सं०पु० [सं० चतुरात्मक] कुशल बुद्धि वाला, कुशाग्र बुद्धि वाला व्यक्ति। उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक। सरव जीव विस्वक्रति ब्रह्म सूं, नरवर हंस देह नायक।—वेलि.

चतुरातमाविय–सं०पु०यौ—अनिरुद्ध का एक नाम।

चतुरात्मा—सं०पु० [सं०] ईश्वर. २ विष्णु।

चतुरानन—देखो 'चतुराणण' (रू.भे.)

चतुरासम–सं०पु०यौ० [सं० चतुराश्रम] चार प्रकार के आश्रम—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

चतुरेस–वि०—दक्ष, निपुण प्रवीण।
सं०पु० [सं० चतुरेश] विष्णु।

चतुसंप्रदाय–सं०पु० [सं० चतुःसंप्रदाय] श्री, माधव, रुद्र और सनक नाम के वैष्णवों के चार संप्रदाय।

चतुसकळ–वि०—वह जिसमे चार मात्रा हो।

चतुसपद–सं०पु० [सं० चतुष्पद] १ ज्योतिष में ग्यारह करणों में से एक का नाम. २ चार पैरों वाला जीव या पशु, चौपाया।

चतुसपदी–सं०स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १ प्रत्येक चरण में १५ मात्रा वाला छंद. २ चार पद का गीत।

चतुस्करणी–सं०स्त्री० [सं० चतुष्कर्णी] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

चतुस्कळ—देखो 'चतुसकळ' (रू.भे.)

चतुस्कोण–वि० [सं० चतुष्कोण] चार कोण वाला, चौकोना।

चतुस्टय–सं०पु० [सं० चतुष्टय] १ चार वस्तुओं का समूह. २ चार की संख्या. ३ जन्म-कुंडली में केंद्र लग्न और लग्न से सातवां तथा दसवां स्थान।

चतुस्ताळ–सं०पु० [सं० चतुस्ताल] एक प्रकार का चौताला ताल। (संगीत)

चतुस्पथरता–सं०पु० [सं० चतुष्पथरता] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

चतुस्पद—देखो 'चतुसपद' (रू.भे.)

चतुस्पदा–सं०स्त्री० [सं० चतुष्पदा] एक प्रकार का चौपाया छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्रायें होती हैं।

चतुस्पदी—देखो 'चतुसपदी' (रू.भे.)

चतुस्पांणि–वि० [सं० चतुस्पाणि] चार हाथों वाला, चतुर्भुज।
सं०पु०—विष्णु।

चतुस्सन–सं०पु० [सं०] १ सनक, सनत्कुमार, सनंदन और सनातन ये चारों ऋषि. २ विष्णु।

चत्रंग—देखो 'चतरंग' (रू.भे.) उ०—गोळा नाळ चत्रंग गढ़ गाजे, गाहे मीर सधीर घणो। 'जगा' सुत नहं दीये जीवतां, तीजो लोचन प्रिथी तणो।—पत्ता चूंडावत री गीत

चत्रंगद–सं०पु०—१ चित्तौड़. २ चितौड़गढ़ का निर्माण करने वाला। (एक मौर्यवंशी राजा, चित्रांगद)

चत्र–वि०—१ चतुर, दक्ष, पटु. २ चालाक, धूर्त, छली. ३ चार।
उ०—१ चत्र विधि मंगळ करता चालो।—ल.पि. उ०—२ कळि कळप वेलि वळि कांमधेनुका, चितामणि सोममल्लि चत्र। प्रकटित प्रिथिमी प्रिथु मुख पंकज, अखरावळि मिसि थाइ एकत्र।—वेलि.

चत्रकोट, चत्रकोटगढ़, चत्रकोठ, चत्रगढ़–सं०पु०—चित्तौड़गढ़ (रू.भे.)
उ०—१ समर धूबै आंबाट होय नाद सिंधू सबद, जंगम अंग और जूथ जड़ा जाडो। दूठ 'सारंग' हुओ आवियां दळण दळ, अभंग भड़ धरा चत्रकोट आडो।—सारंगदेव कांनोड़ री गीत
उ०—२ वाढ़ भड़ बीजळां दाये वे वे वरंग, चाड चत्रकोट री लड़ै चोजां। धरा कज आपणी लड़ै 'चूंडो' धणी, 'फता' रो सतारा तणी फौजां।—प्रतापसिंह रावत आंमेट री गीत
उ०—३ विरद धारियां भुजां भड़ालियां ऊवांवरां, हिचै खळ ढाल पाखर जड़ै हेमरां। धणी छळ स्यांमध्रम रखण चत्रगढ़ धरा धुपटी वाह रे खगां ईडर धरा।—सांरगदेव कांनोड़ री गीत

चत्रगुपत—देखो 'चित्रगुप्त' (रू.भे.)

चत्रधा–वि०—चार प्रकार का। उ०—रांम लखण सत्रघण, भरथ

सूरज वंस सिंगार। एक अंस चत्र वप अवधि, ऐ चत्रधा अवतार।
—सू.प्र.

चत्रवाह—देखो 'चतुरवाहु' (रू.भे.)

चत्रभांण, चत्रभांनू—सं०पु० [सं० चित्रभानु] १ अग्नि (ह.नां.) २ चित्रक. ३ आक का वृक्ष. ४ सूर्य (नां.मा.) ५ अर्जुन की पत्नी चित्रांगदा के पिता जो मणिपुर के राजा थे।

चत्रभुज, चत्रभुज्ज, चत्रभूज—सं०पु० [सं० चतुर्भुज] १ देखो 'चतरभुज' (रू.भे.) उ०—१ चौथिआ वार वाहर करि चत्रभुज, संख चक्रधर गदा सरोज। मुख करि किसूं कहीजै माहव, अंतरजांमी सूं आलोज।
—वेलि.

उ०—२ देवी पौन रै रूप तूं गरुड़ पाडै, देवी गरुड़ रै रूप चत्रभूज चाडै।—देवि.

२ सूर्य (नां.मा.) ३ परमेश्वर (ह.नां.) ४ मंगल-ग्रह (अ.मा.)

चत्रभूजवाहण—सं०पु०यौ० [सं० चतुर्भुज+वाहन] विष्णु का वाहन, गरुड़ (ह.नां.)

चत्रसाळ, चत्रसाळा—देखो 'चित्रसाला' (रू.भे.) उ०—ढोला वाईजी नै वेग बुलावौ। म्हारी चत्रसाळां सथिया दिवावौ।—लो.गी.

चत्रांम—सं०पु०—१ चित्र, तस्वीर. २ प्रतिमा, मूर्ति। उ०—मगज करता जकै चत्रांमां मंडांणा। वैर हर पखांणा वीच वसिया।

३ चित्रकारी। —नाथौ बारहठ

चत्रंग—सं०पु०—चतुरंगिनी सेना। उ०—कराळ देस राकसां, कुमार ऐन मोकळूं। जिग सहाय काज जै, चत्रंग साजि मैं चलूं।—सू.प्र.

चत्रु—वि०—चार। उ०—ए त्रिहु सवद उदार आदि गुण रै मैं आंणै। स्रीपति मंगळ सरूप ब्रह्म चत्रु वेद वखांणै।—सू.प्र.

चत्वरवासिनी—सं०स्त्री०—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

चत्वार—वि०—चार। उ०—अखैराज अरक ओहोसियौ, नर नरंद भजेव निस। कळकळै किरण दीपै कमळ, दस ही दिस चत्वार दिस।
—नैणसी

चदिर—सं०पु० [सं०] १ कपूर. २ चंद्रमा. ३ हाथी. ४ सांप, सर्प।

चनण—देखो 'चंदण' (रू.भे.)

चनणगो'—सं०स्त्री०यौ०—देखो 'चंदणगोह' (रू.भे.)

चनणियौ—सं०पु०—चन्दन (अल्पा०) उ०—तूं तौ मोल चनणियां रौ रूंख, बीमांणी लाल इतरोसौ चनण म्हांनै चाहियै।—लो.गी.

वि०—चन्दन का रंग।

चनरमा—देखो 'चंद्रमा' (रू.भे.) उ०—बावल बाई नै खोळै लीनी कहौ किसौ भरतारौ हो रांम, कै'वौ तौ सूरजजी आंणां कै'वौ तौ चनरमां जी हो रांम।—लो.गी.

चनवाई, चनवायी—सं०पु०—सोने की पत्तियों से मढ़ा हुआ हाथी दांत का चूड़ा। उ०—वीं का हाथ भर्‌या चनवायी रे।—लो.गी.

चनाब—सं०स्त्री०—सिंधु नदी की एक सहायक पंजाब की एक नदी का नाम।

चनिचर—देखो 'सनिचर' (रू.भे.)

चनिचरियौ—देखो 'सनिचरियौ' (रू.भे.)

चनेयक—वि०—तनिक, थोड़ा, अल्प।

चन्नण—देखो 'चंदण' (रू.भे.) उ०—छूटिया प्रधारक अति छछोह बावनां चन्नणां लियण बोह।—वि.सं.

चन्नणगो'—देखो 'चंदणगोह' (रू.भे.)

चप—क्रि०वि० [अनु०] १ तुरन्त, फौरन, शीघ्र. २ यकायक, अकस्मात।

चपक—सं०पु०—सेना का बायां भाग (डिं.को.)

चपकणौ—वि०—देखो 'चिपकणौ' (रू.भे.)

चपकणौ, चपकवौ—क्रि०अ०—देखो 'चिपकणौ' (रू.भे.)

चपकणहार, हारौ (हारी), चपकणियौ—वि०।

चपकवाडणौ, चपकवाड़वौ, चपकवाणौ, चपकवावौ—प्रे०रू०।

चपकाड़णौ, चपकाड़वौ, चपकाणौ, चपकावौ, चपकावणौ, चपकाववौ
—क्रि०स०।

चपकिओड़ौ, चपकियोड़ौ, चपक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चपकीजणौ, चपकीजवौ—भाव वा०।

चपकाणौ, चपकावौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू.भे.)

चपकायोड़ौ—देखो 'चिपकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपकायोड़ी)

चपकावणौ, चपकाववौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू.भे.)

चपकावियोड़ौ—देखो 'चिपकावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपकावियोड़ी)

चपकियोड़ौ—देखो 'चिपकियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपकियोड़ी)

चपकौ—सं०पु०—किसी रोग विशेष के कारण किसी धातु को गर्म कर के रोग-स्थान या शरीर के अंग विशेष पर लगाया जाने वाला चिन्ह। (मि० 'डांम')

चपड़-चपड़—सं०स्त्री० [अनु०] कुत्ते की जाति के पशुओं के मुंह से पानी पीते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि. २ अनावश्यक बक-बक।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

चपड़ास—सं०स्त्री०—१ धातु का वह चौकोर अथवा आयताकार चपटा टुकड़ा जिस पर संबंधित कार्यालय या संस्था का नाम खुदा रहता है और जिसे वस्त्र या चमड़े की पट्टी पर लगा कर संबंधित कार्यालय के प्रमाणस्वरूप चपरासी या चौकीदार अपने शरीर पर धारण करते हैं. २ मालखंभ की एक कसरत।

चपड़ासौ—सं०पु०—चपरासी अथवा चौकीदार के हाथ में रहने वाला डंडा या लकड़ी।

चपड़ासी—सं०पु० (स्त्री० चपड़ासण) १ चपड़ास धारण किया हुआ व्यक्ति, चपरासी. २ नौकर, अनुचर, सेवक।

चपड़ी—सं०स्त्री०—१ तखती, पटिया. २ साफ की हुई लाख जो प्रायः मुहर लगाने के काम में ली जाती है।

चपड़ौ—सं०पु०—१ शक्कर की चासनी का जमाया हुआ पतला चपटा पत्तर, एक प्रकार की मिठाई. २ अनाज के ऊपर का छिलका, भूसा, चापड़।

चपट-सं०स्त्री० [सं०] चपत, तमाचा, थप्पड़ ।
चपटणौ-वि०—देखो 'चिपटणौ' (रू.भे.)
चपटणौ, चपटबौ—देखो 'चिपटणौ' (रू.भे.)
चपटाणौ, चपटाबौ—देखो 'चिपटाणौ' (रू.भे.)
चपटायोड़ौ—देखो 'चिपटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपटायोड़ी)
चपटावणौ, चपटावबौ—देखो 'चिपटाणौ' (रू.भे.)
चपटावियोड़ौ—देखो 'चिपटावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपटावियोड़ी)
चपटियोड़ौ—देखो 'चिपटियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपटियोड़ी)
चपटी-सं०स्त्री०—१ हाथ की उँगलियों एवं अंगूठे के बीच समा सकने वाली सामग्री, हाथ की उँगलियों एवं अँगूठे की बनाई हुई वह स्थिति जो किसी (भिखारी आदि) को आटा आदि देने के लिये बनाई जाती है ।
वि०—देखो 'चपटौ' का स्त्री० ।
चपटौ-वि० (स्त्री० चपटी) १ पथराया हुआ, फैलाया हुआ. २ जो कहीं से उठा हुआ या उभरा हुआ न हो । जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो ।
चपणौ, चपबौ-क्रि०अ०—१ दबना. २ लज्जित होना. ३ नष्ट होना. ४ चिपकाना. ५ झेंपना ।
चपणहार, हारौ (हारी), चपणियौ—वि० ।
चपाड़णौ, चपाड़बौ, चपाणौ, चपाबौ, चपावणौ, चपावबौ —क्रि०स० ।
चपिश्रोड़ौ, चपियोड़ौ, चप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चपीजणौ, चपीजबौ—भाव वा० ।
चपत-सं०स्त्री० [सं० चपट] १ तमाचा, थप्पड़ ।
क्रि०प्र०—खाणी, जमाणी, मारणी, लगाणी ।
मुहा०—चपत जमाणी, चपत झाड़णी, चपत धरणी—तमाचा मारना ।
२ हानि ।
क्रि०प्र०—खाणी, लागणी ।
चपदस्त-सं०पु० [फा०] एक प्रकार का घोड़ा जिसका एक पैर सफेद हो (शा.हो.)
चपरकौ-सं०पु०—एक प्रकार का प्रहार विशेष ।
चपरास—देखो 'चपड़ास' (रू.भे.)
चपरासी—देखो 'चपड़ासी' (रू.भे.) (स्त्री० चपरासण)
चपरी—देखो 'चपड़ी' (रू.भे.)
वि०—देखो 'चपरौ' का स्त्री०
चपरौ—देखो 'चपड़ौ' (रू.भे.)
वि०—तेज मिजाज वाला, वाचाल । (स्त्री० चपरी)
चपळ-वि० [सं० चपल] १ स्थिर न रह सकने वाला, चंचल (अ.मा.) २ फुर्तीला. ३ जल्दबाज. ४ चुलबुला, नटखट. ५ बहुत काल तक न रहने वाला, क्षणिक. ६ कायर ।
सं०पु०—१ कामदेव (अ.मा.) २ पारा (मि० 'चंचळ' ५) ३ पपीहा ४ वेग (अ.मा.) ५ मछली (मि० 'चंचळ' ७) ६ बिजली ।
उ०—दरसंत जांमणि रूप दांमणि प्रगटि मिट तम प्रगटही । द्रग मिळत अमिळत चपळ देखत अवनि पर जन अघटही ।—रा.रू. (मि० 'चंचळ' ८)
क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)
चपळता-सं०स्त्री० [सं० चपलता] १ चंचलता । उ०—किहीं रै कांधै चढ़ै किहीं रा हाथ खेंचै, चपळता आसंगगिरी करबो करै ।
—सूरे खीवे री बात
२ चालाकी, धूर्तता. ३ कायरता ।
चपळभाव-सं०पु०यौ० [सं० चपल+भाव] चंचलता, चपलता ।
उ०—अर चक्री रा चक्र रै ग्मांन मही रै माथै प्रतिबिंब पाड़ता चतुरंग चक्र मेघमाळा मैं चंचळा रा चपळभाव मैं चूक पाड़ता चंद्रहास चलाया ।—वं.भा.
चपळमती-वि०स्त्री०यौ० —जिसकी बुद्धि चंचल हो, चंचलमती ।
उ०—चपळमती दुराचारणी, चित्त भाव विभचार । सीघ्र त्याग कर सुर सभा, कर नर अंगीकार ।—अज्ञात
चपळवास-सं०पु०यौ०—गरुड़ (नां.मा.)
चपळा-सं०स्त्री०—१ दुर्गा. २ लक्ष्मी (ह.नां.) ३ बिजली ।
उ०—पेख्यां चिपटी तूझ चळापळ चपळा चोखी, वो परबत वा प्रीत चितारै हिवड़ौ दोखी ।—मेघ.
४ पुंश्चली स्त्री. ५ पिप्पली वृक्ष, पीपल. ६ जिह्वा, जीभ. ७ मदिरा (अ.मा.) ८ जिस आर्या दल के प्रथम गण के अंत में गुरु हो, द्वितीय गण जगण हो, तृतीय गण दो गुरु का हो, चतुर्थ गण जगण हो, पांचवें गण का आदि गुरु हो, छठा गण जगण हो, सातवां गण जगण न हो, अंत में गुरु हो उसे चपला कहते हैं ।
वि०—पीला* (डिं.को.)
चपळाई, चपळात-सं०स्त्री० [सं० चपलता] चंचलता, चपलता ।
उ०—चंचळ वयण स्रवण चपळाई, विध कमळा कुळ रीत बताई ।
—अज्ञात
चपळौ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष (शा.हो.)
वि०—१ चपल, चंचल. २ फुर्तीला । (स्त्री० चपळी)
चपाचप-क्रि०वि० [अनु०] झट-पट, शीघ्र, तुरंत ।
चपेट-सं०स्त्री०—१ तमाचा, थप्पड़ । उ०—प्रतिहार रा प्रहारां नूं सिराहि चामुंडराज प्रतापसिंह रा सीस रै दो ही हाथां री चपेट दीधी ।—वं.भा.
२ किसी भारी वस्तु के वेगपूर्वक चलने पर पड़ने वाला दबाव, झोंका, रगड़, धक्का, आघात ।
उ०—बुजावै बरा दावि दे काळ धक्का, पड़ै काच ज्यूं आव जावां पळक्का । फटै कोट चोड़ा जिकां चोट फेटां, चलै सीम हूं कुंढचपट्टी चपेटां ।—वं.भा.

चपेटणौ, चपेटबौ–क्रि०स०—१ वलपूर्वक दवाव डालना, दवाना. २ वलपूर्वक भगाना. ३ डांटना, फटकारना।

चपेटणहार, हारौ (हारी), चपेटणियौ—वि०।

चपेटाड़णौ, चपेटाड़बौ, चपेटाणौ, चपेटाबौ, चपेटावणौ, चपेटाववौ—क्रि०स०, प्रे०रू०।

चपेटिग्रोड़ौ, चपेटियोड़ौ, चपेटचोड़ौ—भू०का०कृ०।

चपेटीजणौ, चपेटीजबौ—कर्म वा०।

चपेटाणौ, चपेटावौ–क्रि०स० ('चपेटणौ' का प्रे.रू.) चपेटने का कार्य ग्रन्य से कराना।

चपेटायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चपेटाया हुग्रा. २ दववाया हुग्रा. ३ डांटा हुग्रा (स्त्री० चपेटायोड़ी)

चपेटावणौ, चपेटाववौ—देखो 'चपेटाणौ' (रू.भे.)

चपेटावियोड़ौ—देखो 'चपेटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चपेटावियोड़ी)

चपेटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ दवाया हुग्रा. २ भगाया हुग्रा. ३ पीटा हुग्रा. ४ डांटा हुग्रा (स्त्री० चपेटियोड़ी)

चप्पल–सं०स्त्री०—चिपटी एड़ी का बिना दीवारों का जूता जिसके नीचे केवल समतल तला ग्रौर ऊपर पट्टियां होती हैं।

चवक—देखो 'चवकौ' (रू.भे.)

चवकणौ, चवकवौ–क्रि०ग्र०—रह-रह कर पीड़ा का उठना, टीस चलना, कसक उठना।

चवकौ–सं०पु०—१ रह-रह कर उठने वाली पीड़ा, टीस, कसक, दर्द।

रू०भे०—चवक, चभकौ।

२ किसी नोकदार शस्त्र का प्रहार या प्रहार का क्षत।

चवड़कौ—देखो 'चवकौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

चवणौ—देखो 'छवणौ' (रू.भे.)

चवणौ, चववौ–क्रि०ग्र०—चवाये जाने का कार्य होना, चवना।

चवर—देखो 'चंवर' (रू.भे.)

चवरक, चवरकौ–सं०पु०—१ ब्राह्मणों के विवाह के समय गौडीय पद्धति के ग्रनुसार चतुर्थी कर्म में वर-वधू के सहभोज की प्रणाली. २ कैंची से काटने की क्रिया का भाव. ३ नुकीले पदार्थ के चुभने का प्रभाव।

चववाणौ, चववावौ–क्रि०स०—'चवाणौ' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप, देखो 'चवाणौ'।

चवाई–सं०स्त्री०—चवाने की क्रिया।

चवाणौ, चवावौ–क्रि०स० [सं० चर्वनम्] दांतों मे कुचलना या काटना, चवाना।

चवावणहार, हारौ (हारी), चवावणियौ—वि०।

चवाड़णौ, चवाड़बौ—रू०भे०।

चवायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चवाईजणौ, चवाईजवौ—कर्म वा०।

चवणौ—ग्रक० रू०।

मुहा०—चवा-चवा नै वातां करणी—वहुत वन-वन कर धीरे-धीरे वातें करना।

चवायोड़ौ–भू०का०कृ०—चवाया हुग्रा (स्त्री० चवायोड़ी)

चवावणौ, चवाववौ—देखो 'चवाणौ' (रू.भे.)

चवावणहार, हारौ (हारी), चवावणियौ—वि०।

चवाविग्रोड़ौ, चवावियोड़ौ, चवाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चवावीजणौ, चवावीजवौ—कर्म वा०।

चवणौ—ग्रक० रू०।

चवावियोड़ौ—देखो 'चवायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चवावियोड़ी)

चवियोड़ौ–भू०का०कृ०—चवा हुग्रा (स्त्री० चवियोड़ी)

चवीण, चवीणौ—देखो 'चरवण' (रू.भे.) उ०—ढुळ ढुळ ग्रावै नींदड़ली, लूम्यां री डोडी। सासू चवीणौ देय, वारी ए लूम्यां री डोडी।—लो.गी.

चवु–वि०—चार।

चवूतरौ–सं०पु० [सं० चतुरस्त, चत्वरं या चत्वाल] १ ऊंची उभरी हुई चौरस जगह. २ जमीन को कुछ उठा कर चौकोर या ग्रायताकार वनाया गया स्थान. ३ वैठने के लिये वनाई हुई ऊँची चौरस जगह।

पर्याय०—वितरदिका, वेदी।

रू०भे०—चांतरौ, चूंतरौ, चौंतरौ।

ग्रल्पा०—चवूतरियौ।

चवेणौ—देखो 'चवीणौ' (रू.भे.)

चव्वलियौ–सं०पु०—१ जल से भरा छोटा गड्ढा।

चव्वू–वि०—बहुत चवाने वाला।

चभकौ—देखो 'चवकौ' (रू.भे.)

चभड़चभड़–सं०पु० [ग्रनु०] १ किसी वस्तु को चवाते समय मुंह के हिलने से उत्पन्न शब्द. २ कुत्ते-विल्ली ग्रादि के द्रव पदार्थों के पीने से होने वाला शब्द।

चमंक, चमंकउ—देखो 'चमक' (रू.भे.) उ०—रातिज वादळ सघण घण, वीज **चमंकउ** होइ। इण समईयइ हे सखी, साल्ह जगाई मोइ।—ढो.मा.

चमंकदार—देखो 'चमकदार' (रू.भे.)

चमंकी–सं०स्त्री०—१ चमक, तेज, ज्योति. २ तलवार. ३ पानी में गोता लगाने की क्रिया, डुवकी।

चमंकौ—देखो 'चमक' (रू.भे.)

उ०—पवन का परवाह, गुलाव की मूठ, सघराज को गोटको, तारे की तूट, ग्रातस को भभको, चक्री की चाल, चपळा को **चमंकौ**, छाती की ढाल।—दरजी मयाराम री वात

चमंट–क्रि०वि०—शीघ्र, तुरंत, चटपट।

चमंठ–सं०पु०—किनारा, तट।

चमंडा–सं०स्त्री० [सं० चामुण्डा] चामुण्डा देवी।

चमक-सं०स्त्री०—१ प्रकाश, ज्योति । उ०—ऊपर सूं बादळ झुक रिया है, कोई कोई बूंदां पड़ रही है, चमकां री धुप लाग रही है।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ कान्ति, आभा, दीप्ति ।

यौ०—चमक-चांदणी, चमक-दमक ।

३ नखरा, सैन । उ०—गांनूं नानें लागी तिरछी निजर कवर नैं जांणें है, हमैं चमक नवदंन हुई, लजकांणी पड़ गई जांणें अंग में सीत चढ़ गई ।—र. हमीर

४ कमर पर यकायक अधिक बल पड़ जाने के कारण पड़ने वाली लचक. ५ चौंकने की क्रिया या भाव, डर, भय (ह नां.) ६ मिर्च मसाले रखने का खानेदार एक उपकरण. ७ संदेह, आशंका ।

उ०—१ तरै ऊठि मुजरो करि कागद हाथ दियो वे अरज करि नै हाथ जोड़ि नै कह्यौ दूध मिस्री मांहि विस छै। देस नै आरोग्यजो तितरै गवाग दूध मिस्री भेळा करि ल्यायो तिको कांनड़देजी रै आगै चमक हीज नै तरवाळा निजर आया ।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ चमक छै पण क्यूं देखे तो कहै ।—जलाल बूबना री वात

चमकआरती-सं०स्त्री०—विवाह की एक रस्म जिसमें तोरण द्वार पर सास द्वारा दीपक भरे थाल से दूल्हे की आरती की जाती है । परछन ।

चमकचांदणी-सं०स्त्री०यौ०—बन-ठन एवं साज-शृङ्गार के साथ रहने वाली कुलक्षणा स्त्री ।

चमकचूड़ी-सं०स्त्री०यौ०—कलाई पर पहिनने की सोने की वह चूड़ी जिस पर मोगरे लगे होते है ।

चमक-चोट-सं०स्त्री०—अचानक चोट ।

चमकणौ-वि० (स्त्री० चमकणी) १ चमकने वाला. २ चौंकने वाला । ३ चिढ़ने वाला. ४ चमचमाहट करने वाला ।

चमकणौ, चमकबौ-क्रि०अ०—१ प्रकाशित होना, जगमगाना. २ कान्तियुक्त होना, झलकना, आभायुक्त होना । उ०—सखि वदळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकंत । मुळकत ढोलउ चमकियउ, बीजळ खिवी क दंत ।—ढो.मा.

३ समृद्ध होना, यश प्राप्त करना. ४ चौंकना, डरना, भयभीत होना । उ०—१ जइ तूं ढोला नाविवउ, काजळिया री तीज । चमक मरेसी मारवी, देख खिवंती बीज ।—ढो.मा.

५ भड़कना, अधिक प्रभावशाली होना ।

उ०—१ मरदी चमकणी है सीरस्यां रजायां वणावणी है ।
—वरसगांठ

उ०—२ हमें कांई करसां ओ हालरिया रा बाप, माताजी चमकिया देस में ।—लो.गी.

उ०—३ मिगसर पाळो चमकियो, प्यारो लागै पीव ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

६ जागृत होना । उ०—काळी कांठळ में दांमणियां दमकी, चित में कांमणियां विरहानळ चमकी ।—ऊ.का.

७ चौंकना, बिजली का दमकना ।

उ०—बादैनी ए धुर मांही गुदळा सहर । काळी नैं कांठळ में चमकी बीजळी ।—लो.गी.

चमकणहार, हारौ (हारी), चमकणियौ—वि० ।

चमकाणौ, चमकाबौ, चमकावणौ, चमकावबौ—क्रि०स० (प्रे०रू०)

चमकिओड़ौ, चमकियोड़ौ, चमक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चमकीजणौ, चमकीजबौ—भाव वा० ।

चमकतेज-सं०पु०यौ०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चमकदमक-सं०स्त्री०यौ०—कांति, दीप्ति, तड़कभड़क, ठाटबाट ।

चमकदार-वि०यौ०—कांति या आभायुक्त, चमकीला, भड़कीला ।

चमकवाय-सं०पु०—ऊंटों में होने वाला एक रोग विशेष जिससे ऊंट खड़ा-खड़ा यकायक चौंकता है या भाग जाता है ।

चमकाणौ, चमकाबौ-क्रि०स०—१ प्रकाशित करना, चमकाना. २ कान्ति लाना, उज्ज्वल करना. ३ प्रसिद्धि कराना, कीर्ति फैलाना. ४ भड़काना, प्रभावशाली कराना. ५ भय दिलाना, डराना, सशंकित करना ।

उ०—भर सकतीपुर चे सांम प्रांण सुरतांण संकायौ गांजे घड़ गज रूप जीत आलम चमकायौ ।—नैणसी

चमकाणहार, हारौ (हारी), चमकाणियौ—वि० ।

चमकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

चमकावणौ, चमकावबौ—रू०भे० ।

चमकाईजणौ, चमकाईजबौ—कर्म वा० ।

चमकणौ—अक०रू० ।

चमकायोड़ौ-भू०का०कृ०—चमकाया हुआ (स्त्री० चमकायोड़ी)

चमकावणौ, चमकावबौ—देखो 'चमकाणौ' (रू.भे.)

चमकावणहार, हारौ (हारी), चमकावणियौ—वि० ।

चमकाविओड़ौ, चमकावियोड़ौ, चमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चमकावीजणौ, चमकावीजबौ—कर्म वा० ।

चमकणौ—अक०रू० ।

चमकावियोड़ौ—देखो 'चमकायोड़ौ' (स्त्री० चमकावियोड़ी)

चमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, प्रकाशित, उज्ज्वल. २ कांति प्राप्त किया हुआ, आभा प्राप्त किया हुआ. ३ कीर्ति प्राप्त किया हुआ, यश प्राप्त किया हुआ. ४ भड़का हुआ. ५ भयभीत, सशंकित (स्त्री० चमकियोड़ी) देखो 'चमकणौ'

चमकीलौ-वि०पु०—(स्त्री० चमकीली) १ चमकदार, चमकने वाला, प्रकाश-युक्त, जिसमें चमक हो. २ आभायुक्त, कांतियुक्त ।

चमकौ—देखो 'चमकौ' (रू.भे.)

उ०—मुळक मुळक बोली मारवी, सेम पधारो कंत । चिहुं दिस नैं चमको हुवो, बीजळ खिवी क दंत ।—ढो.मा.

चमक्कणौ, चमक्कबौ—देखो 'चमकणौ' (रू.भे.)

चमक्की-सं०स्त्री०—तलवार, कृपाण (ना.डि.को.)

चमंक्की—देखो 'चमकी' (रू.भे.)

चमगादड़—सं०स्त्री० [सं० चर्मचटका] एक उड़ने वाला जंतु जिसके चारों पैर परदार होते हैं। यह चूहे की आकृति का होता है। यह उड़ता है किन्तु पक्षी की जाती में इसकी गणना नहीं होती। यह अंडे नहीं देता अपितु बच्चे देता है। यह केवल रात्रि को ही बाहर निकलता है। दिन में किसी वृक्ष या खंडहर के अंधकारयुक्त भाग में उलटा लटकता रहता है।

मुहा०—चमगादड़ होणौ—दोनों पक्षों में रहने वाला होना।

चमड़—देखो 'चमड़ौ' (रू.भे.) २ देखो 'चमड़पोस' (रू.भे.)

चमड़पोस—सं०पु०—वह हुक्का जिसके नीचे का हिस्सा चमड़े का बना हो। उ०—दारू मांस दपट्ट अमल अणमाप अरोगै, **चमड़पोस** रै चींठ भंवर मादक सुख भोगै।—ऊ.का.

चमड़ी—देखो 'चांमड़ी' (रू.भे.)

मुहा०—चमड़ी उधेड़णी—चमड़ी उतार डालना, बहुत मारना, बहुत कठोर दण्ड देना।

चमड़ौ—सं०पु० [सं० चर्म+रा०प्र०ड़ौ] शरीरधारियों के शरीर का ऊपरी आवरण जिसके कारण उनके मांस, नसें आदि दिखाई नहीं देतीं। चर्म, त्वचा।

अल्पा०—चमड़ी, चांमड़ी।

रू०भे०—चांमड़ौ।

चमचम—देखो 'चमाचम' (रू.भे.) उ०—१ ऊंचा-ऊंचा धोरा म्हारा, उजळी निरमळ रेत। **चमचम** चमके चांदणी, ज्यूं चांदी रा खेत।—लो.गी.

उ०—२ ऐ सहेली म्हारी गरजत वदळी आवै, **चमचम चमचम** चमके विजळियां, ठंडी लहर सुहावै।—लो.गी.

चमचमाट—सं०स्त्री०—१ चमक, दीप्ति, तेज, प्रकाश. २ चकाचौंध उत्पन्न करने वाली चमक। उ०—वरछियां री अणी **चमचमाट** जु करै छै।—वेलि.टी.

चमचमाणौ, चमचमावौ—क्रि०अ०—१ चमकना, दमकना, जगमगाना। क्रि०स०—२ चमकाना, चमक लाना।

चमचमौ—सं०पु०—मिर्च-मसालायुक्त तीक्ष्ण स्वाद का खाद्य, नमकीन पदार्थ।

वि०—१ तीक्ष्ण स्वाद वाला, नमकीन. २ चमक-दमकदार, चमकयुक्त।

चमचाटक—सं०स्त्री० [सं० चर्मचाटक] चमगादड़। उ०—कटचा चक्र झाटक हेक रकाव, वणै **चमचाटक** वेख नवाव।—मे.म.

वि०वि०—देखो 'चमगादड़'।

चमची—सं०स्त्री०—१ छोटा चम्मच. २ आचमन का पात्र, आचमनी।

चमचेड़—देखो 'चमगादड़' (रू.भे.)

चमचौ—सं०पु० [फा० चमचा] चम्मच।

अल्पा०—चमची।

चमजुई, चमजूं—सं०स्त्री०यौ० [सं० चर्म+युका] एक प्रकार की बहुत छोटी जूं या कीड़ा जो पशुओं या मनुष्यों के शरीर के बालों की जड़ों में उत्पन्न हो जाता है।

चमटकार—देखो 'चमत्कार' (रू.भे.)

चमटी—देखो 'चमठी' (रू.भे.)

चमटौ—देखो 'चिमटौ' (रू.भे.)

चमठाणौ, चमठावौ—क्रि०स०—कान ऐंठना, कान मरोड़ना।

उ०—चाहे जितरौ चीख, मूढ़ सला' मांनै नहीं। सहजे आसी सीख, **चमठायां** सूं चकरिया।—मोहनराज साह

चमठी—सं०स्त्री० [सं० मुचुटी] चुटकी। उ०—या कुमणौती कंत री, ग्रोर न पूगै ग्रोज। **चमठी** खाली होवतां, नमठी चाली फौज।
—वी.स.

चमठ्णौ, चमठ्वौ—क्रि०स०—१ चुटकी में पकड़ना।

उ०—किलमायुध हट्ठिय सायक पट्ठिय चाप **चमठ्ठिय** जोर दये।
—ला.रा.

२ चुटकी भरना।

चमतकार—देखो 'चमत्कार' (रू.भे.) उ०—वीरा रस तमक पढ़ण धुन **चमतकार** पर। अरथामस 'पाल' दुत दरस तात पर।—पा.प्र.

चमतकारी—देखो 'चमत्कारी' (रू.भे.)

चमतवंदी—सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

चमत्करण—सं०पु० [सं०] चमत्कार करने या घटने की क्रिया।

चमत्कार—सं०पु० [सं०] १ आश्चर्य, विस्मय. २ आश्चर्य का विषय, विचित्र घटना, अद्भुत व्यापार. ३ करामात।

रू०भे०—चमटकार, चमतकार।

चमत्कारिक—वि० [सं० चमत्कारक] १ चमत्कार प्रकट करने वाला, विलक्षणता दिखाने वाला. २ विस्मयपूर्ण। उ०—सो आपरा स्वांमी रौ दीधौ अपूरव **चमत्कारिक** फळ रांणी अनंगसेना नै जार रै भेट कीधौ।—वं.भा.

चमत्कारी—वि० [सं०] चमत्कार दिखाने वाला, अद्भुत, विचित्र।

चमन—सं०पु० [फा०] १ हरी क्यारी. २ उपवन, बगीचा, उद्यान, फुलवारी।

वि०—रौनकदार, सरसब्ज, गुलजार।

चमनी—देखो 'चिमनी' (रू.भे.)

चमर—सं०पु० [सं० चामर] १ चँवर। उ०—हुतां **चमर** हलिया, अधिक रंगराज उछाहां। जोए सहर जलूस, उरड़ गहमह उच्छाहां।—सू.प्र. २ घोड़े के सिर पर लगाई जाने वाली कलंगी. ३ प्रत्येक चरण में २६ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष (ल.पि.)

[सं०] ४ एक प्रकार का मृग।

चमरक, चमरख—सं०स्त्री०—चरखे के आगे की ओर छोटी पिढ़ई के आसपास की खूंटियों में लगी रहने वाली मूंज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें होकर तकुआ घूमता है।

चमरबंध, चमरबंधो—सं०पु०यौ० [सं० चामर+बंध] १ वह व्यक्ति जिसके सिर पर चंवर ढुलता हो यथा राजा, सरदार, योद्धा आदि । उ०—आंगेरा सहत तीन समर झुकवट, कूंकळा भोक नग जड़त कूंडा । धनंग धनंग तणो कुमर उतारियो, चमरबध धारियो कुमर चूंडा ।

—अज्ञात

चमरबंबाळ—वि०यौ०—महान शक्तिशाली, वीर, योद्धा ।

उ०—राव अरणगाळ रिणमलोत तद बगड़ी रहे । तद धरती में मेर घणो बिगाड़ करता सो बगड़ी कनै आबू नदी री तळाई कने वित ले जावै । एक दिन सवार री चांपो उदरतो थो सु चोळी ऐ चमरबंबाळ असवार ५०० पाळा २०० । चांपो लियो बाहर हुई ।

—राव रिड़मल री बात

चमरसिखा—सं०स्त्री०यौ० [सं० चमर+शिखा] घोड़े की कलंगी ।

चमरांण—देखो 'चमर' (१, रू.भे.) उ०—वरे रंभ वैसि भळूस विमांण, चले रंग राग हुतां चमरांण —सू.प्र. ।

चमराळ, चमराळो—सं०पु०—१ मुसलमान, यवन । उ०—दीवांण तणा फिरिया दक्कक, कळळिया डाहि ढाहे कटक्क । चमराळां हूई अचंग चाळ, छोगाळ छिलई करिमाळ काळ ।—रा.ज.सी.

उ०—२ चमराळ फिरे दळ बळ चिहूं दंग तोप गोळा दमंग । तिण वार भड़ां मुरधर तणा परम कहे ओरे पमंग ।—सू.प्र.

२ घोड़ा । उ०—१ घटा बांध चमराळ पखराळ फोजां घसण, दुजड़ तड़िताळ छिब भाळ दखतौ । आंण अणगाळ री गिरां अग्राजियो, वेरियां काळ वसराळ 'वखतौ' ।—कविराजा करणीदांन

उ०—२ चमराळां पाए उडी चींध, गूंदळइ अविखा मुभइ गईध ।

—रा.ज.सी.

३ देखो 'चमरबध' (रू.भे.)

चमरी—देखो 'चंवरी' (रू.भे.) उ०—प्रथम नेह भीनो महा क्रोध भीनो पछै, लाभ चमरी समर भोक लागै । राय कंवरी वरी जेण वागै रसिक, वरी घड़ कंवारी तेण वागै ।—बांकीदास

चमस—सं०पु० [सं०] (स्त्री० चमसी) १ चमचा, चम्मच. २ एक ऋषि का नाम. ३ नौ योगीश्वरों में से एक ।

चमसी—सं०स्त्री० [सं०] यज्ञ में आहुति देने का छोटा लकडी का बना चम्मच, स्रुवा ।

चमसोद्भेद—सं०पु० [सं०] प्रभास क्षेत्र के पास का एक तीर्थ (महाभारत)

चमाचम—वि० [अनु०] १ चमचमाहट करने वाला, भड़कता हुआ. २ उज्ज्वल, कांतियुक्त, झलकपूर्वक ।

सं०स्त्री०—चमचमाहट ।

चमार—सं०पु० [सं० चर्मकार] (स्त्री०चमारण, चमारी) १ चमड़े का काम करने वाली एक जाति विशेष अथवा इस जाति का व्यक्ति. २ चमड़े का काम करने वाला व्यक्ति ।

चमाळ—देखो 'चमाळीस' (रू.भे.) उ०—पाए एकणि रूप पणि, चवदळ सहस चमाळ । सघण च्यारि लघु दोइ सुजि, रूपक नांम रमाळ ।—ल.पिं.

चमाळियो—सं०पु०—दीवार चुनने का कार्य करने वाला ।

चमाळो—देखो 'चमाळीस' (रू.भे.)

चमाळी'क—वि०—चवालीस के लगभग ।

चमाळीस—वि० [सं० चतुश्चत्वारिंशत्, प्रा० चउच्चत्तालीसा] चालीस और चार के योग के बराबर ।

सं०पु०—४४ की संख्या ।

चमाळीसमो—वि०—जो क्रम में तेंतालीस के बाद पड़ता हो, चवालीसवां ।

चमाळीसी—सं०स्त्री०—चवालीस गांवों की भूमि ।

चमाळीसे'क—वि०—४४ के लगभग ।

चमाळीसो, चमाळो—सं०पु०—४४ वां वर्ष ।

चमीर, चमीरळ—सं०पु० [सं० चामीकर] स्वर्ण, सोना ।

उ०—चंदाणणि चीर चमीर न चंचळ, कुंवर भंडार न चित करिया । माहव समा खंगार मरण दिन, सोयण सुणि जी संभरिया ।

—खंगार सोढ़ा री गीत

वि०—उज्ज्वल, उदार ।

उ०—समीरळ धमीरळ चक धक दळां सम थट खळां नमीरळ जुध उथापो ।। रजै पतसाह नर समंद चत चमीरळ चत वलंद अमीरळ छजै 'चांपो' ।—कविराजा करणीदांन

चमु, चमू—सं०स्त्री० [सं० चमू] १ वह सेना जिसमें ७२९ हाथी ७२९ रथ २१८७ घुड़सवार और ३६४५ सिपाही हों. २ सेना (ह.नां.) ३ चार की संख्या* ।

चमूप—सं०पु० [सं०] सेनापति, सेनानायक (डि.को.)

चमूय—देखो 'चमू' (रू.भे) उ०—चमूय सस्त्र अस्त्र लेय दिव्य दिग्गिजे चढ़े, स्वसुद्ध ऊम्मरेस की विसुद्ध भारती बढ़े ।—ऊ.का.

चमेलिय—वि०—चमेली के रंग का ।

चमेली—स०स्त्री० [सं० चंपकवेलि या चम्बेली] १ एक भाड़ी या लता जिसमें सफेद रंग के सुगन्धित फूल लगते हैं. २ इस लता का पुष्प ।

चमोटो—सं०पु० [सं० चर्मपुट] १ चाबुक, कोड़ा. २ लोहे की रगड़ से बचाने के लिये बेड़ी के नीचे लगाया जाने वाला चमड़ा ।

३ वह चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई अपने उस्तरे की धार तेज करते हैं. ४ चमड़े का वह लम्बा फीता जिसे खींचने से खराद या सान का चक्कर घूमता है ।

चमोतर, चमोतरो—देखो 'चिमोतर' (रू.भे.)

चम्मक—देखो 'चमक' (रू.भे.)

चम्मच—देखो 'चमचो' (रू.भे.)

चम्मर, चम्मरो—देखो 'चंवर' (रू.भे.) उ०—१ हुवै चम्मरां भाटका जोति हूवै । सदा ऊतरै आरती सांभ सूवै ।—मे.म.

उ०—२ ओपियो विरदै ऊबरै, चौसरै ढुळतै चम्मरै ।—रा.रू.

चम्माळीस—देखो 'चमाळीस' (रू.भे.)

चम्माळीसमों—देखो 'चमाळीसमो' (रू.भे.)

चम्माळीसे'क—देखो 'चमाळीसेक' (रू.भे.)

चम्माळीसौ—देखो 'चमाळीसौ' (रू.भे.)

चय–सं०पु० [सं०] १ समूह, झुंड (अ.मा.) उ०—सायर जळ कपि केत सर, पंचाळी चय चीर। यांसूं मौजां आपरी, वधती 'जेहळ' वीर।—वां.दा.
२ गढ़ (ह.नां.) ३ दिक्पाल, दिग्गज। उ०—१ चयं तजि चक्क हुवै वीर हक्क, कटक्क कहाक हुवै बहु हाक।—सू.प्र.
उ०—२ चयं तांम छडंत चक्क।—सू.प्र.
सं०स्त्री० [रा०] ४ धैर्य, शान्ति।

चयन–सं०पु०—१ संग्रह. २ चुनने का कार्य, चुनाई. ३ क्रम से लगाने की क्रिया।

चयार–वि० [सं० चत्वार] चार। उ०—वेद चयार संसार विध मय ख्यात सवै भण, जीता भारत इळ जवर पांडू पांचूं पण।—प्र.प्र.
सं०पु०—चार की संख्या।

चर–सं०पु० [सं०] १ गुप्त रूप से किसी रहस्य या भेद का पता लगाने के लिये नियुक्त व्यक्ति, गुप्तचर. २ किसी विशेष कार्य से कहीं भेजा जाने वाला व्यक्ति, दूत। उ०—१ चर वहुवै दिस नृपत चलावै, पटफर सेत रंग नह पावै।—सू.प्र. उ०—२ अद्धी के घरियार चर पत्र लगाया। धुजि थरत्थर नाजरूं अवरोध चलाया।—वं.भा.
३ खंजन पक्षी. ४ मंगल, भौम. ५ पैदल व्यक्ति।
उ०—धू ध्यांन धरंदे, पच वरसंदे, छोड़ चलंदे राजंदे। तव नृपत सुनंदे, चर पटयंदे, सिर पदवंदे नारंदे।—भक्तमाळ
६ रेत, धूलि, रज (अ.मा.) ७ सूअर. ८ हाथी का अनुचर. ९ चोर. १० वह जो चलता हो।
यौ०—निसचर, अनुचर।
११ ज्योतिष में देशांतर जो दिनमान निकालने में सहायक होता है. १२ पशुओं के घास चरने की क्रिया का भाव. १३ पशुओं का खाद्य पदार्थ, घास। उ०—इण जमीन री चर चोखी कोनी जिणसूं वळद थाकोड़ा है।
१४ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक (ज्योतिष वाळवोध)
१५ दास, सेवक। उ०—हे पती! आज आपरौ वेगौ रात्री वदीत लुवां विना ही जागणौ और चर (चरवादार) घोड़ा नै वेगी कसियौ तिणसूं म्हांनै उनमांन हुवै है के कोई पांहुणा मिळिया है।—वी.स.टी.
[अनु०] १६ कागज, कपड़ा आदि फटने का शब्द (रू.भे. 'चरड़')
वि०—आप से आप चलने वाला. २ एक स्थान पर नहीं रहने वाला, अस्थिर. ३ खाने वाला, आहार करने वाला।

चरक–सं०पु० [सं०] १ चर, दूत, अनुचर. २ वैद्यक शास्त्रों के अनुसार वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका रचा हुआ ग्रंथ 'चरक संहिता' प्रसिद्ध ग्रंथ है. ३ चरक संहिता नामक ग्रंथ।
४ देखो 'चरख' (रू.भे.)

चरकचूंडी—देखो 'चकचूंदियौ' (३, शेखावाटी)

चरकटौ–सं०पु० हाथियों का चरवादार।
वि०—नालायक, नीच।

चरकसंहिता–सं०स्त्री०यौ० [सं०] चरक ऋषि का बनाया हुआ प्रसिद्ध वैद्यक ग्रंथ।

चरकाई–सं०स्त्री०—चटपटापन, मिर्च का स्वाद। उ०—चरकाई, इण भांति रा सत्तर भ्रख भोजन कहीजै, अठारमौ ठंडौ पांणी।
—रा.सा.सं.

चरकी कौळी–सं०स्त्री०—देवी को वलि दिया जाने वाला वकरा आदि, मांस. (विलो० 'मीठी कौळी')

चरकीन–सं०स्त्री० [अ०] टट्टी, पाखाना, विष्ठा। उ०—चुगली उगली चीज है, चुगली है चरकीनां, काग हुवै कै कूतरौ, इणरे रस आधीन।
—वां.दा.
वि०—निकृष्ट, हीन, अधम।

चरकूं-फरकूं, चरकूं-मरकूं–सं०पु०यौ० [अनु०] १ चटपटा व्यंजन विशेष। २ एक ध्वनि विशेष। उ०—ताकू तेरौ सोवणौ, लाल गुलाबी माळ। चरकूं-मरकूं फिरै घेरणी, मधरौ मधरौ चाल।—लो.गी.

चरकौ–वि०—१ तीक्ष्ण, चरपरा, तेज. २. नमकीन, मसालायुक्त.

चरकौ-फरकौ, चरकौ-मरकौ—देखो 'चरकूं-फरकूं' (रू.भे.)

चरक्ख, चरख–सं०स्त्री०—१ तोप खेंचने की गाड़ी। उ०—धुवे नाळ अरावां 'चरक्खां' वोम गोम धूजै जंगां जैत वारां सदा करे खळां जेर।—अज्ञात
[फा० चर्ख] २ देखो 'चरखी' (रू.भे.)। उ०—रमै वसंत राजंद पतंग चरखां अप्पाळां।—सू.प्र.
सं०पु०—३ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चरखणौ, चरखवौ–क्रि०अ०—पहिये के गतिमान होने पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—वळदां री रे वीरा वाजी छै टाळ, गाड चरखता म्हे सुण्या जे।—लो.गी.

चरखलियौ, चरखलौ, चरखियौ—१ देखो 'चरखौ' (अल्पा. रू.भे.)
उ०—चरकूं-मरकूं फिरै घेरणी, मधरौ मधरौ चाल। चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।—लो.गी.
२ गन्ने का रस निकालने का यंत्र।

चरखी–सं०स्त्री०—१ तोप को खेंचने वाली गाड़ी. २ तोप. ३ पहिये की तरह घूमने वाली कोई वस्तु. ४ कूए से पानी निकालने की गराडी, गिर्री. ५ सूत, डोर आदि लपेटने की चकरी. ६ छोटा चरखा. ७ कुम्हार की चाक, चक्र. ८ कपास ओटने की वेलनी, ओटनी. ९ वह आतिशवाजी जो छूटने के वाद खूव चक्कर लगाती हुई घूमती है।
उ०—लोक भणे माहुति व्रत लेखै, सूर महा त्यां हूत विसेखै। कै सरकै, सहजै अणकंपै, चरखी फूलझड़ी भुंय कंपै।—रा.रू.
१० मस्त ऊंट के दांतों के वजने की क्रिया या ढंग।

उ०—चसळकै दंत चरखी चलाय, खिज रया दिवांणा भंग खाय ।
—पे.रू.

११ मूंज आदि की रस्सी बनने का यंत्र. १२ प्राचीन काल में मृत्यु-दंड देने के लिये उपयोग में लाया जाने वाला एक यंत्र ।

वि०वि०—देखो 'गड़गड़ी' ।

१२ वह गिर्री जिस पर पतंग की डोर लपेटी जाती है। यह बांस की कमचियों की बनी होती है. १३ चक्रीदार आतिशबाजी की तरह का बारूद का एक उपकरण विशेष जिसमें एक बांस के डंडे के ऊपर दो अन्य बारूद से भरी बांस की नालियां + या × के आकार में बांधी जाती है और जिसे किसी उन्मत्त हाथी को वश में करने के लिए उसके सामने चलाया जाता है ।

वि०वि०—जब उन्मत्त हाथी काबू से बाहर हो जाता है और उसे वश में करने के अन्य सभी प्रयत्न असफल हो जाते हैं तो इस बारूद के उपकरण में पलीता लगा दिया जाता है और इसे हाथी के सामने कर दिया जाता है और वर्त्ती में पलीता लगाते ही जोर से धड़ाके के साथ आवाज होती है और बारूद की नालियां चक्र की भांति जोर से घूमती हुई हाथी के सामने धूआंधोर उत्पन्न कर देती हैं ।

यौ०—चरखीदार ।

चरखेरौ गळखोड़ौ-सं०पु०—कुश्ती का एक पेंच ।

चरखौ-सं०पु०—१ लकड़ी का एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा ऊन या रूई को कात कर धागा बनाया जाता है। चरखा।

क्रि०प्र०—कातणौ, चलणौ, चलाणौ।

कहा०—भूं रै चरखा भूं, घर में मालक थूं—चरखे, तू चक्र चला या आवाज कर कारण कि घर में तू ही मालिक है। जिस पर जीविका आधारित होती है उसका क्रियाशील या गतिशील होना आवश्यक है ।

२ पानी खींचने का रहंट. ३ सूत लपेटने की गिर्री, गराड़ी, चरखी. ४ बड़ा या बेडौल पहिया. ५ कोई टंटा या झंझट का काम. ६ कुश्ती का एक पेंच ।

चरख्यौ—१ देखो 'चरखलौ' (रू.भे.)

२ गन्ने पेलने का एक यन्त्र, कोल्हू । उ०—रहंट फिरै चरख्यौ फिरै, पिण फिरवा में फेर । वो तौ बाड़ हरया करै, ओ छूंतां रौ ढेर ।—महाराजा चतुरसिंह

चरड़-सं०स्त्री० [अनु०] १ एक ध्वनि विशेष जो बैलगाड़ी के चलने से बहुधा उसके पहिये द्वारा उत्पन्न होती है. २ नई जूती पहिन कर चलने से उत्पन्न ध्वनि. ३ देखो 'चर' (१६, रू.भे.)

यौ०—चरड़-मरड़ ।

वि०—लाल । उ०—खीज चख चरड़ नख बरड़ अघक खग, भड़ां हड़बड़ बरड़ घाव भाराथ ।—अज्ञात

चरड़क, चरड़कौ-सं०पु०—१ शरीर पर तेज गर्म धातु के स्पर्श से होने वाला दाह का चिन्ह या दर्द ।

मुहा०—चरड़कौ लागणौ (किसी का कथन)—बहुत बुरा लगना।

२ गर्म धातु के स्पर्श से त्वचा के जलने या दाह चिन्ह अंकित होने की ध्वनि. ३ शरीर पर दाह चिन्ह लगाने के लिए गर्म की हुई छड़।

चरड़णौ, चरड़बौ-क्रि०स०—१ आंख फोड़ना. २ किसी गर्म छड़ आदि से शरीर के किसी भाग को दग्ध करना. ३ छिछले पानी के पोखर में पानी पीना. ४ क्रोध करना, कोप करना ।

चरड़मरड़—देखो 'चरड़' (रू.भे.)

चरड़ौ-सं०पु०—एक छोटा पक्षी जो प्राय: झुंड बना कर चलता है और खेती को बहुत हानि पहुँचाता है ।

चरच-सं०पु० [सं० चर्चन] चर्चन, लेपन, लेप ।

चरचणी-सं०स्त्री०—अनामिका अंगुली ।

चरचणौ, चरचबौ-क्रि०स० [सं० चर्चन] १ उबटन लगाना, लेप करना।

उ०—अतर गुलाब अबीर, सोभ जांनियां सरीकां। चन्नण केसर चरच, कियौ उच्छव मछरीकां।—रा.रू.

२ अध्ययन करना, समझना. ३ चरचा करना। उ०—ग्यांनी पुरसां रा किया, ग्यांनी चरचै ग्रंथ।—बांकीदास

४ लथपथ होना। उ०—पातल तूझ तणौ पड़ियाळग, रुधर चरचियौ सदा रहै।—महारांणा परताप रौ गीत

५ पूजा करना, अर्चन करना। उ०—जिकां काट मांजिया छांट ऊजळ जळ छोळां। रचि सिंदूर चितरांम चरचि आंगण रंग चोळां।
— मे.म.

चरचणहार, हारौ (हारी), चरचणियौ—वि०।

चरचवाड़णौ, चरचवाड़बौ, चरचवाणौ, चरचवाबौ—प्रे०रू०।

चरचाड़णौ, चरचाड़बौ, चरचाणौ, चरचाबौ, चरचावणौ, चरचावबौ
—क्रि०स०।

चरचिओड़ौ, चरचियोड़ौ, चरच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चरचीजणौ, चरचीजबौ—कर्म वा०।

चरचर—देखो 'चराचर' (रू.भे.) उ०—बंस जदु अवतंस ऋसन करता चरचर का।—दुरगादत्त बारहठ

चरचराणौ, चरचराबौ-क्रि०अ०—१ चर-चर करते हुए टूटना. २ नमक, क्षार या अन्य तीक्ष्ण पदार्थ लगाने से शरीर के घाव या अन्य छिले स्थान में पीड़ा होना, दर्द करना, पीड़ा होना ।

चरचराहट-सं०स्त्री० [अनु०] १ चर-चर की ध्वनि. २ किसी वस्तु के चर-चर शब्द के साथ टूटने से उत्पन्न ध्वनि. ३ दर्द विशेष ।

चरचरिका-सं०स्त्री० [सं० चर्चरी] १ वसंत ऋतु में गाया जाने वाला गायन. २ एक रागिनी (संगीत)

चरचरी-सं०स्त्री०—१ वसंत ऋतु में गाया जाने वाला गीत विशेष, फाग अथवा होली का हुल्लड़. २ ताल का एक मुख्य भेद. ३ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा. ४ चींचीं की आवाज करने वाला एक जंतु विशेष. ५ एक वर्ण वृत्त (छंद) का नाम (र.ज.प्र.)

चरचरौ–वि०पु०(स्त्री० चरचरी) १ तीक्ष्ण स्वाद का, नमकीन, चरपरा। उ०—लूंगां सरीसी प्यारी घणा चरचरी ओ राज, राज ढोला राखोनी थांरै मुखड़ै रै मांय।—लो.गी.

२ तेज मिजाज का. ३ सुन्दर, खूबसूरत, सलौना।

चरचा–सं०स्त्री० [सं० चर्चा] १ शास्त्रार्थ, वाद-विवाद।

क्रि०प्र०—करणी, चालणी, होणी।

२ जिक्र, वर्णन, बयान। उ०—घन तन मिटसी धांम, नांम कांम दुय ना मिटै। गुण अवगुण सब गांम, चरचा करसी चकरिया। —मोहनराज साह

क्रि०प्र०—ऊठणी, करणी, चलणी, चालणी, होणी।

३ वार्तालाप, बातचीत। उ०—गोप गायां त्रिया सहत वसिया गिरत। चिरत अदभुत तणी करत चरचा।—वां.दा.

क्रि०प्र०—चलणी, चालणी, छिड़णी, छेड़णी, होणी।

४ बक-झक, बकबक, व्यर्थ का प्रलाप। उ०—भली बुरी जो बात, होणी थी सो हो गई। रोज वही दिन रात, चरचा खोटी चकरिया। —मोहनराज साह

क्रि०प्र०—करणी, छेड़णी (मि० 'गांगरत')

५ कुबेर की नौ निधियों में से एक।

चरचाणौ, चरचाबौ–क्रि०स० ('चरचणौ' का प्रे०रू०) १ लेप कराना, उबटन लगाने का कार्य अन्य से कराना। उ०—केसर भरियौ बाटको, सूवा अंग चरचाऊं रे। मीरां पासी सूवा की रांमराती, चरणां चित लगाऊं रे।—मीरां

२ पूजा कराना. ३ अनुमान कराना. ४ अध्ययन कराना, समझाना. ५ लथपथ कराना।

चरचायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ लेप कराया हुआ. २ पूजा कराया हुआ. ३ अध्ययन कराया हुआ. ४ पूर्ण लथपथ किया हुआ।

(स्त्री० चरचायोड़ी)

चरचारी–वि०—१ चर्चा करने वाला, विषय वर्णन करने वाला, जिक्र करने वाला. २ निंदक।

चरचावणौ, चरचावबौ—देखो 'चरचाणौ' (रू.भे.)

चरचावणहार, हारौ (हारी), चरचावणियौ—वि०।

चरचाविओड़ौ, चरचावियोड़ौ, चरचाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चरचावीजणौ, चरचावीजबौ—कर्म वा०।

चरचावियोड़ौ—देखो 'चरचायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चरचावियोड़ी)

चरचित–वि० [सं० चर्चित] १ लेपन या उबटन लगाया हुआ. २ पूजा किया हुआ, पूजित. ३ वर्णित।

चरचियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चर्चित. २ पूजा किया हुआ. ३ उबटन लगाया हुआ. ४ अध्ययन किया हुआ. ५ लथपथ।

(स्त्री० चरचियोड़ी)

चरच्चणौ, चरच्चबौ—देखो 'चरचणौ' (रू.भे.) उ०—भ्रकुट्टिहि भाव जिसौ निल भख्खु, चरच्चयौ जांणि रगत्तहि चख्खु। —रा.ज. रासौ

चरच्चियोड़ौ—देखो 'चरचियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चरच्चियोड़ी)

चरज–सं०स्त्री०—पक्षी विशेष। उ०—लगतूं रमतूं के आतुरी चरज सीचांणूं सो लाग आतुरी।—सू.प्र.

चरजा–सं०स्त्री०—देवी की स्तुति जो लय के साथ गा कर की जाती है।

वि०वि०—इसके दो भेद होते हैं—करुणाजनक पुकार को 'छाडउ' एवं अन्य प्रकार की मांगलिक या श्रद्धापूर्वक की गई स्तुति को 'सीघाऊ' कहते हैं।

चरट–सं०पु० [सं०] खंजन पक्षी।

चरणंग, चरण–सं०पु० [सं० चरण] १ पैर, पांव (अ.मा.)

उ०—१ मात चरणंग करंग प्रणमंग। सुजस गंग रंग कथंग सरवंग। —सू.प्र.

उ०—२ चरणे चामीकर तणा चंदाणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळतणा मकरंद कजि।—वेलि.

मुहा०—१ चरण छूणा—अभिवादन करना, नमस्कार करना, खुशामद करना. २ चरण पड़णा—आगमन होना, चरण पर माथा रखना, विनती या सिफारिश करना. ३ चरण लागणौ—देखो 'चरण छूणा'।

यौ०—चरणचिन्ह, चरणदास, चरणदासी, चरणपादुका, चरणपीठ, चरणसेवा, चरणाम्रत।

२ किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद।

यौ०—चरणगुप्त।

३ किसी पदार्थ या वस्तु का चौथाई भाग, चतुर्थांश. ४ मूल, जड़. ५ गमन, जाना. ६ चरने का काम, भक्षण. ७ मारे गये पशु की खाल उतार कर मांस को अलग करते समय उसके आमाशय से निकाला जाने वाला मल।

चरणगांठ–सं०स्त्री०यौ०—ऐड़ी के ऊपर टखने के दोनों ओर कुछ उभरी हुई हड्डी।

चरणगुप्त–सं०पु०यौ० [सं०] कोष्ठक में अक्षर भर कर बनाया जाने वाला चित्रकाव्य जिसके कई भेद होते हैं।

चरणचतु–सं०पु०—हाथी (डिं.नां.मा.)

चरणचिन्ह–सं०पु०यौ० [सं०] १ कीचड़, रेत या बालू आदि पर पड़े हुये पैर के तलुए का चिन्ह, पैर का निशान. २ किसी महान पुरुष के पदचिन्ह जो पत्थर खोद कर बनाये जाते हैं और उनकी पूजा की जाती है. (मि० 'पगलिया' १) ३ पैर के तलुए की रेखायें।

चरणदास–सं०पु०—१ एक प्रसिद्ध महात्मा का नाम जिनका जीवन-काल सं० १७६० से १८३९ बताया जाता है। इन्होंने अपना नया संप्रदाय चलाया था जिसके अनुयायी चरणदासी साधू कहलाते हैं. २ सेवक।

चरणदासी–सं०पु०—१ महात्मा चरणदास द्वारा प्रचलित संप्रदाय का अनुयायी साधू।

सं०स्त्री०यौ० [सं० चरण+दासी] २ जूती, पन्ही. ३ सेविका।

चरणट्ट-सं०पु०—गरुड़ पक्षी (ना.डि.को.)

चरणप-सं०पु०—वृक्ष, पेड़, तरु (डि.को.)

चरणपादुका-सं०स्त्री०यौ० [सं०] १ खड़ाऊ. २ पत्थर पर बने चरण-चिन्ह जिनकी प्रायः पूजा की जाती है।

चरणपीठ-सं०स्त्री०यौ० [सं०] चरणपादुका, खड़ाऊ।

चरणम्रत—देखो 'चरणाम्रत' (रू.भे.)

चरणसेवा-सं०स्त्री०यौ०—१ सेवा-सुश्रूषा, वड़े लोगों की सेवा. २ पैर चांपने या दवाने का कार्य।

चरणा-अम्रत—देखो 'चरणाम्रत' (रू.भे.) उ०—हाथ दीधा जिकै जोड़ आगळहरी, उदर परसाद चरणा-अम्रत पाय। दीधा जिकै 'किसन' पर-दख फिर, नाच नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा।
—र.ज.प्र.

चरणाजुध-सं०पु० [सं० चरणायुध] मुर्गा।

चरणाद्रि-सं०पु० [सं०] काशी और मिर्जापुर के बीच में स्थित चुनार नामक स्थान।

चरणादूहौ—एक प्रकार का मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रथम और द्वितीय चरण में सोलह-सोलह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ हों।—र.ज.प्र.

चरणानुग-वि० [सं०] १ किसी वड़े और विज्ञ के साथ या उसकी शिक्षा के अनुसार चलने वाला अनुगामी। शरणागत।

चरणाम्रत, चरणाम्रति-सं०पु०यौ० [सं० चरणाम्रत] १ किसी महात्मा, वड़े आदमी या देव-प्रतिमा के चरणों का धोया हुआ जल, पादोदक। उ०—उदर पवित्र करिस अपरंपर। चरणाम्रत तो घरै चक्रधर।
—ह.र.

मुहा०—१ चरणाम्रत देणौ—कोई चीज वहुत कम मात्रा में पीने के लिए देना, किसी पूज्य व्यक्ति का चरण धोकर देना, शालिग्राम का नहलाया जल देना. २ चरणाम्रत लेणौ—किसी वड़े का चरण धोकर पीना या आचमन करना, शालिग्राम का धोया जल पीना या आचमन करना।

२ दूध, दही, घी, शहद और चीनी—इन पांच पदार्थों को मिला कर वनाया हुआ देव-प्रसाद जो देव-पूजा आदि के वाद प्रसाद रूप में सेवन किया जाता है।

कहा०—चरणाम्रत का गटका नै मटै चौरासी रा भटका—देव-प्रसाद चरणामृत का महत्व।

चरणायका-सं०स्त्री०—चाणक्य कृत राजनीति शास्त्र।

चरणायुध, चरणायुधक-सं०पु० [सं०] मुर्गा।

चरणारद्ध-वि० [सं० चरणार्द्ध] १ किसी वस्तु का आठवां भाग। २ किसी छंद या श्लोक का आधा चरण या पद।

चरणारवंद, चरणारविंद-सं०पु०यौ०—कमल के समान कोमल पैर, चरण। उ०—'गुमांनां' सुतन वीनती करे गरज री, दीनती अरज री भाव दासा। जळधरनाथ महाराज अण जीव रै, एक चरणारवंद तणी आसा।—महाराजा मांनसिंह

चरणि-सं०पु०—१ आदमी, मनुष्य. २ किसी छंद आदि का एक पद, चरण या पंक्ति (पिंगल)

चरणिया-सं०पु० [वहु०] शिकार किये हुए पशु के पांव।

चरणियौ-वि०—१ चरने वाला. २ विचरण करने वाला. ३ देखो 'चरण्यौ' (रू.भे.)।

चरणी—१ देखो 'चरणि' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—२ चरने की क्रिया का भाव।

वि०—१ चरने वाला (पशु) २ भक्षण करने वाली।

उ०—चरणी तूंह निसाचरां, दाखे धिन महदेस। 'करणी' सुख सह दिन करे, हरणी दुख हमेस।—अज्ञात

चरणोई-सं०स्त्री०—१ घास। उ०—१ तद महल अरज करी जे पांणी री निवास छै, घणा रूंखां री झाड़ी छै। मोकळी चरणोई छै सो सूअर दस दिन तांई आवै नहीं।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तठै खड़ री दुख हुवौ नै पाटण समीयौ अवल चरणोई घणी हुई।—नैणसी

२ पशुओं के चरने-फिरने का स्थान या घास चरने की भूमि. ३ पशु द्वारा घास खाने का ढंग।

चरणोदक-सं०पु० [सं०] चरणामृत।

चरणौ-सं०पु०—एक प्रकार का ढीला पायजामा। उ०—सिकार मुरगावो ऐकठी कर तळाव सूं वाहर पधारजै छै। लीली पोतां दूर कीजै छै। चरणा पहरजै छै। सू किण भांत रा चरणा छै? इळायचै रा, मिसरू रा, गुलवदन रा, मालनेरी रा, वाफतां रा चाळीस-चाळीस हाथां रा छै।—रा.सा.सं.

चरणौ, चरवौ-क्रि०स० [सं० चर्] १ पशुओं द्वारा खेत या मैदान में घास आदि खाना, घास खाना। उ०—१ नागरवेली नित चरइ, पांणी पीवइ गंग।—ढो.मा. उ०—२ भेद कहि लाजां मरां, थांनै आसी रीस। थांरै आंगण वेलड़ी, थे नीरौ हूँ चरीस।—र.रा.

मुहा०—अकळ चरण नै जावणी—वेवकूफी का कार्य करना।

कहा०—१ चरतियां अर उछरतियां कै सागै होणौ—सव के साथ चलने को तैयार रहना. २ चरै फिरै जकै री कांई मरै—जो फिरता है और खाता है वह भूखों नहीं मरता।

२ विचरना, घूमना। उ०—मारवणी मनि रंगि, वाटइ तिणि आवी वहइ। कुंझां एकणि संगि, तालि चरंती दिट्ठियां।—ढो.मा.

३ भक्षण करना, खाना। उ०—चरै अगन की पंखण आचरै सिव कंठ किसूं करै सिणगार।—गोरधन कूंपावत री गीत

मि०—'चरणी' वि०।

चरण्यौ—१ राज-दरवार में सामन्तों आदि के पदत्रानों की रक्षा करने वाला. २ देखो 'चरणियौ' (रू.भे.)

चरणहार, हारौ (हारी), चरणियौ—वि०।

चरवाड़णौ, चरवाड़वौ, चरवाणौ, चरवावौ, चरवावणौ, चरवाववौ
—प्रे०रू०।

चराड़णौ, चराड़वौ, चराणौ, चरावौ, चरावणौ, चरावबौ—क्रि०स० ।
चरिग्रोड़ौ, चरियोड़ौ, चरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
चरीजणौ, चरीजबौ—कर्म वा० ।

चरत—देखो 'चरित्र' (रू.भे.) उ०—चवा चरत करंती चंचळ, सारे किया संसारह सबळ ।—कमा विहारी री गीत

चरतणौ, चरतबौ—क्रि०ग्र०—१ ठगना, छलना । उ०—वोह रूपी वोह दीपी वाळी, भूपाळां चाखी नह भाळी । 'पीर' हरौ वर वीर प्रवाळी, चरतै तो जांणू चरताळी ।—कमा विहारी री गीत
२ निंदा करना ।

चरताळौ—वि० (स्त्री० चरताळी) १ चकित करने वाला, पाखंडी, धूर्त । उ०—वोह रूपी वोह दीपी वाळी, भूपाळां चाखी नह भाळी । 'पीर' हरौ वर वीर प्रवाळी, चरतै जांणूं तो चरताळी ।
—कमा विहारी री गीत
२ अद्भुत चरित्र रखने वाला, वीर ।
उ०—इतरी वात सुणि वीरमदे नै रीस ऊपनी । तिकौ पाखती भैंसा रै ग्राय चरताळै कडियां सूं तरवार वाही, तिकौ सींग नै मांथौ वाढि दोय वटका कर नाख्या ।—वीरमदे सोनगरा री वात
३ देखो 'चरिताळौ, चिरताळौ' (रू.भे.)

चरतियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ ठगा हुग्रा, छला हुग्रा. २ निंदा किया हुग्रा. (स्त्री० चरतियोड़ी)

चरन—देखो 'चरण' (रू.भे.)

चरनक्षत्र, चरनखत्र—सं०पु०यौ० [सं० चरनक्षत्र] स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण ग्रादि कई नक्षत्र जिनकी संख्या विभिन्न मतानुसार ग्रलग-ग्रलग है ।

चरनदासी—देखो 'चरणदासी' (रू.भे.)

चरनाकूळक—सं०पु०—प्रत्येक चरण में सोलह मात्रा का मात्रिक छंद । (र.ज.प्र.)

चरनादूहौ—देखो 'चरणादूहौ' (रू.भे.)

चरनिसा—सं०पु०यौ० [सं० निशा+चर] राक्षस, निशाचर ।

चरपट—सं०पु०—१ चारण कुलोत्पन्न एक नाथ संप्रदाय का सिद्ध पुरुष जो चौरासी सिद्धों में से एक माना जाता है. २ एक प्रकार का मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्रा होती हैं ।

चरपराणौ, चरपराबौ—क्रि०ग्र०—शुष्कता के कारण घाव में तनाव या सिकुड़न होकर दर्द करना । घाव का चर्राना ।

चरपराट, चरपराहट—सं०स्त्री०—१ स्वाद की तीक्ष्णता. २ घाव ग्रादि की जलन. ३ ईर्ष्या, डाह ।

चरपरौ—वि०—१ तीक्ष्ण स्वाद वाला, नमकीन, मसाला युक्त. २ चुस्त, तेज, फुर्तीला. ३ वाचाल, वातुनी ।

चरबण—सं०पु० [सं० चर्वण] १ वह भुना हुग्रा खाद्य पदार्थ जो चवा कर खाया जाता है । चर्वेना. २ वह वस्तु जो चवा कर खाई जाय. ३ किसी वस्तु को मुंह में रख कर बरावर चवाने की क्रिया ।

चरबी—सं०स्त्री० [फा०] वैद्यक के ग्रनुसार शरीर की सात धातुग्रों में से एक जो मांस से बनती है । यह पदार्थ कुछ सफेद तथा पीलापन लिये हुए गाढ़ा होता है ग्रौर प्रायः समस्त प्राणियों के शरीर एवं कुछ पौधों ग्रौर वृक्षों में पाया जाता है । मेद, वसा ।
मुहा०—१ चरबी चढ़णी—खूब मोटा-ताजा होना, शरारत सूझना. २ चरबी छाणी—देखो 'चरबी चढ़णी' ।

चरबेचर—सं०पु०—१ चराचर, जड़ ग्रौर चेतन ।
उ०—मनच्छा बीज चलावै मूळ, थयौ चरवेचर सुखम थूळ ।
—ह.र.
२ संसार, जगत ।

चरभ—सं०पु० [सं०] चर राशि, चर गृह ।

चरभर—सं०पु०—एक प्रकार का देशी खेल जो एक स्थान पर बैठ कर दो ग्रादमियों द्वारा खेला जाता है ।

चरभवन—सं०पु०—चर नामक राशि (ज्योतिष)

चरम—सं०पु० [सं०] १ ग्रंत. [सं० चर्म] २ चर्म, चमड़ा. ३ ढाल ।
उ०—गज ठणिया घणग्राह, वाह जणिया वादाळक । तणियां करभ तिमीस चरम भणियां चउ चाळक ।—वं.भा.
४ छाल । उ०—द्रुम्म चरम मधु भरे पत्र ग्रंकुरे विपुळ वन । फाग राग माधुरे सुरे नर नारि हरे मन ।—रा.रू.
वि० [सं०] ग्रंतिम, हद दरजे का, सर्वोच्च, चोटी का ।

चरमकार—सं०पु० [सं० चर्मकार] चमड़े का काम करने वाला, मोची, चमार ।

चरमकाळ—सं०पु०यौ० [सं० चरमकाल] ग्रंतिम काल, मृत्यु समय ।

चरमकील—सं०पु०यौ० [सं० चर्मकील] १ एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में नुकीला फोड़ा निकल ग्राता है जिससे ग्रधिक पीड़ा होती है । २ बवासीर (ग्रमरत)

चरमचड़ी—सं०स्त्री०—चमगादड़, चर्मचटी (डिं.को.)

चरमणवती—सं०स्त्री० [सं० चर्मण्यवती] चंवल नदी का एक नाम ।
उ०—खीची त्रास में मूढ़ होइ लागै जेर बंघ ही घोड़ौ चरमणवती क''' दह में ठेलियौ ।—वं.भा.

चरम तित्थयर—सं०पु० [सं० चरम-तीर्थङ्कर] महावीर स्वामी (जैन)

चरमदळ—सं०पु० [सं चर्म दल] एक प्रकार का कोढ़ का रोग । (ग्रमरत)

चरमनग—सं०पु०—वह पर्वत जहां सूर्य ग्रस्त होता है, ग्रस्ताचल (वं.भा.)

चरमफालिका—सं०स्त्री—कुल्हाड़ी, फरसा (डि.नां.मा.)

चरमराट, चरमराटौ, चरमराहट—सं०पु० [ग्रनु०] १ चरमर की ध्वनि. २ घाव के चर्राने की क्रिया. ३ चर्राने से उत्पन्न होने वाला दर्द ।
क्रि०प्र०—करणौ, लागणौ ।
कहा०—चरमराटौ तौ मट जाय पण गड़वड़ाटौ नी मटै—घाव का चर्राना तो मिट सकता है परन्तु दिल में चुभी बातों से पड़ा प्रभाव नहीं मिट सकता ।

चरमवती—देखो 'चरमणवती' (रू.भे.)

चरमवरिसारत-सं०पु० [सं० चरम वर्षारात्र] चातुर्मास का अंतिम समय (जैन)

चरमवस्त्र-सं०पु०यौ०—युद्ध की पोशाक, कवच।

चरमावती—देखो 'चरमणवती' (रू.भे.)

चरमी—देखो 'चिरमी' (रू.भे.)

चरमीचोळ-सं०पु०—गुघची के रंग का घोड़ा (शा.हो.)

चरम्म—देखो 'चरम' (रू.भे.)

चरराट—देखो 'चरचराहट' (रू.भे.)

चररासि-सं०स्त्री०यौ० [सं० चर राशि] मेष, कर्क, तुला और मकर नाम की राशियां।

चरराहट-सं०पु० [अनु०] १ रात्रि में एक विशेष जन्तु द्वारा निरन्तर रूप से की जाने वाली ध्वनि। ध्वनि विशेष। उ०—चवरी चरराहट चांसरियां, हुड बोलत गूघड हालरियां।—पा.प्र.

२ देखो 'चरमराट' (रू.भे.)

चरवण—देखो 'चरवण' (रू.भे.)

चरवाई—देखो 'चराई' (रू.भे.)

चरवादार-सं०पु०—१ घोड़े की देखभाल करने वाला, सईस।

उ०—१ हे पती! आज आपरौ वेगौ रात्री वदीत हुवां विना ही जागणौ ग्रौर चर (चरवादार) घोड़ा नै वेगौ कसियौ तिण सूं म्हांनै उनमांन होवै है कि कोई पांहुंणा मिळिया है।—वी.स.टी.

उ०—२ मो सुणायदै मैहणा, खेंग नाम घर खार। वूड़ा वाळी ऊपरै, चढ़ तूं चरवादार।—पा.प्र.

२ चरवाहा।

चरवौ-सं०पु०—१ तांबे या पीतल का बना हुआ एक पात्र।

उ०—हांकण रथां सारथी होवै, भीड़ पड़यां होयौ भाराथ। चोरां तणौ सीस दे चरवा, जिण घर धन पटकै जगनाथ।—भक्तमाळ

अल्पा०—चरवी।

२ शिकार किये गये पशु की खाल उतार कर मांस अलग करते समय उसके आमाशय को साफ करने की क्रिया।

चरस—१ देखो 'चड़स' (रू.भे.) २ रीति-रिवाज. ३ आनन्द, उत्साह, खुशी। उ०—महाराजा दळ मेलिया, चरस वधे चड़चोट। अघपति पय आया इता, कमंध जिता नव कोट।—रा.रू.

४ एक प्रकार का मादक पदार्थ जो चिलम के साथ प्रयोग किया जाता है। यह गांजे के पेड़ से निकलता है तथा एक प्रकार का गोंद या चेप की तरह का होता है. ५ आंख (ना.डि.को.)

वि०—श्रेष्ठ, उत्तम। उ०—चत्रभुज व्रजवासी कीध लीला चरसं।
—पि.प्र.

क्रि०वि०—१ रीति अनुसार. २ परंपरा से।

चरसी—देखो 'चड़सियौ' (रू.भे.)

चरसौ—देखो 'चड़स' (रू.भे.)

चराई-सं०स्त्री०—चराने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

चराक—देखो 'चिराक' (रू.भे.)

चराकी—१ देखो 'चिराक' (रू.भे.) २ चिराग जलाने वाला व्यक्ति।

चराग—देखो 'चिराक' (रू.भे.) उ०—माळा उड़ जोत लसी सुरमाग, चसी रण आंगण जोत चराग।—मे.म.

चराचर-वि० [सं०] १ चर और अचर, जड़ व चेतन।

उ०—राजतणी इच्छा रघुराया, अखिल चराचर जीव उपाया।
—ह.र.

२ जगत, दुनिया, विश्व।

चराचरगुर, चराचरगुरू-सं०पु०यौ० [सं० चराचरगुरु] १ ब्रह्मा. २ परमेश्वर, ईश्वर।

चराणौ, चरावौ-क्रि०स०—१ पशुओं को घास खिलाना. २ विचरण कराना, घुमाना. ३ मांस को नमक से धोना। ४ भली प्रकार से मांस को भेदन कर के उसमें मसाले आदि मिलाना।

उ०—तरै तरै रा दसतां री भांत तिकां छुरचां सूं मांस छुनजे छै। मसाला वेसवार लूंण चरायजै छै।—रा.सा.सं.

चराणहार, हारौ (हारी) चराणियौ—वि०।

चरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चराईजणौ, चराईजवौ—कर्म वा०।

चरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चराया हुआ. २ विचरण कराया हुआ। (स्त्री० चरायोड़ी)

चरावण-गाय-सं०पु०यौ०—१ गोपाल, श्रीकृष्ण (नां मा.)

२ परमेश्वर (ह.नां.)

चरावणी—देखो 'चराई' (रू.भे.) उ०—जै राव फील चरावणी न देवै ग्रौर पण लाजमे रा जवाब सवाल न करै।
—राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री वात

चरावणौ, चराववौ—देखो 'चराणौ' (रू.भे.)

चरावणहार, हारौ (हारी) चरावणियौ—वि०।

चरावावणौ, चरावाववौ—प्रे०रू०।

चराविअोड़ौ, चरावियोड़ौ, चराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चरावीजणौ, चरावीजवौ—कर्म वा०।

चरावियोड़ौ—देखो 'चरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चरायोड़ी)

चरास-सं०पु०यौ० [सं० चर+आस] सेवक, चर, दास (अ.मा.)

चरिअ, चरिउ—देखो 'चरित' (रू.भे.)

उ०—माइ नमी मनि हरि कूं धरिउ, पुरुस पासि कहवाइं चरिउ।
—पं.पं.च.

चरित-सं०पु० [सं० चरित्र] १ रहन-सहन, चाल-चलन, आचरण. २ काम, करनी, करतूत।

रू०भे०—चरितर।

३ जीवन-चरित्र, जीवनी।

यौ०—चरितनायक, चरितवांन।

४ लीला, चरित्र। उ०—जठै वैताळां रा आस्फाळ, डाकिणी गणां

रा डमरू रा डाक्कार, फेरवियां रा फेत्कार, प्रेतां रा आलाप, राक्षसां रा रास, कुणपां रा कपाळां रा कटकटाहट, चिता रा अंगारां करि चित्र-विचित्र वडौ अदभुत **चरित** देखियौ ।—वं.भा.

५ छल, कपट. ६ पाखंड, ढोंग ।

चरितनायक–सं०पु०यौ० [सं०] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी गई हो ।

चरितर–सं०पु० [सं० चरित्र] १ धूर्तता की चाल, बहाना, नखरेबाजी । मुहा०—चरितर दिखाणौ—आडंबर दिखाना, धूर्तता की चाल दिखाना । २ देखो 'चरित्र' (रू.भे.)

चरितवांन—देखो 'चरित्रवांन' (रू.भे.)

चरितारथ–वि० [सं० चरितार्थ] १ वह जिसके अर्थ या अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो, कृतकृत्य. २ जो ठीक-ठीक घटे, जो पूरा उतरे ।

चरिताळौ–वि०—१ चरित्र करने वाला, लीला करने वाला ।

उ०—कहत 'समांन कंवर दसरथ रौ, वीर वडौ **चरिताळौ** ।

—समांनबाई

२ देखो 'चरताळौ' (रू.भे.)

चरित्तपुरिस–सं०पु०यौ० [सं० चारित्रपुरुष] चरित्रवान पुरुष (जैन).

चरित पुलाय–सं०पु०यौ० [सं० चरित्रपुलाय] वह साधु जिसका चरित्र निस्सार (दोष सहित) हो (जैन)

चरित्त-बुद्ध–सं०पु०यौ० [सं० चारित्र बुद्ध] चरित्र रूप से बोध प्राप्त (जैन)

चरित्तबोहि–सं०स्त्री०यौ० [सं० चारित्र बोधि] चरित्र रूप से धर्म प्राप्ति करना (जैन)

चरित्तमोह, चरित्तमोहण [सं० चरित्रमोह, चारित्रमोहन] चारित्र का अटकाव (जैन)

चरित्तलोय–सं०पु०यौ० [सं० चारित्रलोक] सामायिकादि पांच चारित्र रूप लोक (जैन)

चरित्त, चरित्र–सं०पु० [सं० चरित्र] १ स्वभाव. २ आचरण, व्यवहार. ३ वह जो किया जाय, कार्य, करनी, करतूत, लीला. ४ संयम, अनुष्ठान, सदाचार (जैन)

रू०भे०—चरत, चरित, चरित्त, चरित्र ।

चरित्रनायक—देखो 'चरितनायक' (रू.भे.)

चरित्रवांन [सं० चरित्रवान] उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी, सुआचरण वाला ।

चरिय—देखो 'चरित' (उ.र.)

चरियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चरा हुआ, घास खाया हुआ. २ विचरा हुआ. ३ भक्षण किया हुआ । (स्त्री० चरियोड़ी)

चरी–सं०स्त्री०—१ पशुओं के चरने के लिए जमींदार द्वारा किसानों को बिना लगान पर दी गई जमीन. २ पीतल या अन्य धातु का एक बरतन जो जल डालने या दूध दुहने के उपयोग में लिया जाता है । उ०—बीजोड़ां नै ए मा **चरी**-**चरी** घीव, बाई नै दीनौ ए सासू डोरौ तेल रौ ।—लो.गी.

मह०—चरौ ।

३ देखो 'चरित्र' (रू.भे.) उ०—धरमिहिं अचळ वधामणउं ए विधा विलासह **चरी** ए ।—वि.वि.प.

चरीय—देखो 'चरित्र' (रू.भे.) उ०—दीसइ विवह **चरीयं** जांणिज्जय सयण दुज्जण सहावौ । अप्पाणं चकळिज्जइ, हंडिज्जइ तेण पुहवीए ।—ढो.मा.

चरु–सं०पु० [सं०] १ हवन या यज्ञ में आहुति दिये जाने के लिये पकाया जाने वाला अन्न. २ वह पात्र जिसमें हवन आदि की आहुति का अन्न पकाया जाता है ।

३ देखो 'चरू' (रू.भे.)

उ०—उण राजा हून नै मो मित्राई हुती सो मोनूं तीस **चरु** मोहरां रा भरिया सांपिया छै ।—नैणसी

चरुसुकाळ—देखो 'चरूसुकाळ' (रू.भे.) उ०—चाढण सुजळ उभै कुळ 'चौंडौ', **चरुसुकाळ** विरदां धर 'चौंडौ' ।—सू.प्र.

चरूंटियौ—देखो 'चूंटियौ' (रू.भे.)

चरू–सं०पु० [सं० चरु] १ धातु का बना हुआ एक बरतन विशेष जिसके मुंह पर पकड़ने के लिये कड़े लगे होते हैं । यह प्रायः प्राचीन समय में भूमि में धन गाड़ने के उपयोग में लिया जाता था ।

उ०—१ देगां, **चरू**, कढ़ाई, कुड़छी, खुरपा, ड्होला, झरहर, चालणी आदि ।—रा सा.सं.

उ०—२ मदनौ कुंवरजी रा हुकम पखौ हीज भूंजाई रा **चरू**, थाळी, भूंजाई री भिणकार, घोड़ौ चहुवांण रांमदास री पेस रौ, परणिया तदि पेसकस कियौ ।—द.वि.

चरूसुकाळ, चरूसुगाळ–सं०पु० यौ०—वह उदार पुरुष जो अतिथि-सत्कार करने तथा अनाथों को भोजन कराने का नियम रखता हो । वि०वि०—ऐसे व्यक्ति के दरवाजे से कोई व्यक्ति भूखा नहीं लौट सकता । ऐसा प्रसिद्ध है कि राव चूंडा ने भूखी प्रजा को भोजन कराने का प्रण ले रक्खा था, अतः चरूसुकाळ उसका विरुद था ।

चरेभरे—देखो 'चरभर' (रू.भे.)

चेरौ–सं०पु०—वह बछड़ा जो प्रारंभिक अवस्था में स्तन पान पर रहता है और कभी कभी घास की कोमल पत्ती खाने का प्रयत्न करता है । (पोकरण)

चरचा–सं०स्त्री०—क्रिया, वह जो किया जाय । आचरण । उ०—आपरा अग्रज री **चरचा** इण रीति सुणि बंगराज गौड़ हरिचंद्र री रांणी पण पति रा महा प्रस्थांन रै अनंतर निज पुत्र गोपीचंद रै योंही वीतराग जोग रौ उपदेस लगायौ ।—वं.भा.

चळ, चल–सं०पु०—१ दोहा नामक छंद का १२ वां भेद जिसमें ११ गुरु वर्ण और १६ लघु वर्ण सहित ४८ मात्रायें होती हैं (र.ज.प्र.) २ शिव (ह.नां.) ३ विष्णु (ह.नां.) ४ पारा. ५ कंपकंपी. ६ चलने की क्रिया. ७ शरीर ८ स्वभाव, प्रकृति (ह.नां.) ९ सेना (ह.नां.)

वि०—अस्थायी, चंचल, चलायमान। उ०—१ चळ वैभव संपत सुचळ, चळ जोवण चळ देह। चळाचळी के खेल में, भला भली कर लेह।—अज्ञात उ०—२ जळ उभळ भळ भळ धार जळ, चळ विचळ दिग्गज अचळ चळ।—र.रू.

चळकणी—वि०—चमकने वाला, चमकीला, उज्ज्वल।

चळकणौ, चळकबौ—क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना।
उ०—थांकी नथ झळके, माथौ थारौ चळके ओ।—लो.गी.
२ चौंकना।
चळकणहार, हारौ (हारी), चळकणियौ—वि०।
चळकाणौ, चळकाबौ, चळकावणौ, चळकाववौ—क्रि०स०।
चळकिओड़ौ, चळकियोड़ौ, चळक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चळकीजणौ, चळकीजबौ—क्रि० भाव वा०।

चळकरण—सं०पु०यौ०—घोड़ा (डि.नां.मा.)

चळकाणौ, चळकाबौ—क्रि०स० ('चळकणौ' का स०रू०) चमकाना, झलकाना (मि० 'चमकणौ')

चळकायोड़ौ—भू०का०कृ०—चमकाया हुआ। (स्त्री० चळकायोड़ी)

चळकावणौ, चळकाववौ—देखो 'चळकाणौ' (रू.भे.)

चळकावियोड़ौ—देखो 'चळकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चळकावियोड़ी)

चळकियोड़ौ—भू०का०कृ०—चमका हुआ (स्त्री० चळकियोड़ी)

चळकेतु—सं०पु० [सं० चलकेतु] पश्चिमोदयी एक इंच ऊंची व दक्षिण की ओर झुकी हुई शिखा वाला पुच्छल तारा। यह ज्यों-ज्यों उत्तर की ओर जाता है त्यों-त्यों इसकी लंबाई बढ़ती है। यह सप्तर्षि ध्रुव और अभिजित को स्पर्श कर लौट कर दक्षिण में अस्त होता है। इसके उदय के फल महामारी व दुर्भिक्ष आदि होते हैं। (महा अशुभ)

चलगत, चलगति—सं०पु०—१ स्वभाव. २ चाल।
उ०—रूंखां जैड़ा टेटा नै बाप जैड़ा बेटा। मा करै सो धी करै। आ तौ देखादेखी री चलगत है।—विजयदांन

चळचत—वि०यौ० [सं० चल+चित्त] अस्थिर चित्त वाला, विक्षिप्त।

चळचळ—१ देखो 'चळचाळ' (रू.भे.) उ०—बंदोबस्तां में बाकी नह बाकी, चळचळ प्रजा थाकी बाकी में चाकी।—ऊ.का.
२ विचलित, चलायमान। उ०—चकल इळतळ वितळ चळचळ मंगळ झळ चंड घमळ मंगळ।—सू प्र.
३ कंपायमान। उ०—कमंध मुरड़ 'कुसळेस' जम प्रथी चळचळ करण।—ठाकुर कुसळसिंह चांपावत री गीत

चळचळणौ, चळचळबौ—क्रि०अ०—चलायमान होना, विचलित होना।
उ०—चळचळिय चक्कवइ यारि छंद, दळरजी पाइ छयउ दुणिंद। मूगळे जिनावर बांणि मारि, आयास हूंत आंगइ उतारि।
—रा.ज.सी.

चळचळियोड़ौ—भू०का०कृ—कंपित, कंपायमान (स्त्री० चळचळियोड़ी)

चळचाळ—वि० [सं० चलचाल] चंचल, अस्थिर, चल।

चळचूंचूं—सं०पु०—चकोर।
वि०—अस्थिर, चलायमान।

चळच्चळ—वि०—देखो 'चळचळ' (रू.भे.) उ०—जैसिंघ हेतू जळ थाळ ज्यौं, थया चळच्चळ काळ लखि। आंबेर हाल विण गण इसौ, सेख ज्वाळ सैदां परखि।—रा.रू.

चलण—सं०पु०—१ चलने का भाव. २ चाल, गति। उ०—हंस चलण कदळीह जंघ, कटि केहर जिम खीण। मुख सिसहर खंजर नयण, कुच स्रीफळ कंठ वीण।—ढो.मा.
३ पैर, चरण (ह.नां.) उ०—१ गज आरोह वड वडा गढ़पत, चौरस घर वंदे चलण।—अज्ञात
उ०—२ करहा वांमन रूप करि, चिहुं चलणे पग पूरि। तूं थाकउ हूं ऊसनउ, भुइं भारी घर दूरि।—ढो.मा.
४ रिवाज, रस्म।
मुहा०—चलण सूं चालणौ—अपनी मर्यादा के अनुसार काम करना, उचित रीति से व्यवहार करना।
५ किसी चीज का व्यवहार, प्रयोग, उपयोग।
क्रि०प्र०—उठणौ, चलणौ, होणौ।
यौ०—चलणसार।
[सं०] ६ हिरन. ७ ज्योतिष में वह गति जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।
[रा०] ८ लहंगा, घाघरा।

चलणसार—वि०—१ प्रचलित होने वाला. २ जो बहुत दिनों तक चले।

चलणिया—सं०पु० (बहु०)—चरण, पैर।

चलणिया-सार—सं०पु०यौ०—एक प्रकार का बढिया लोह।
उ०—तरवारचां किण भांत री छै?···वरगत में वाही दोय टूक करै, चौरंग में वाही थकी सीकसिरौ चलणिया-सार बाढ़ै।—रा.सा.सं.
मि०—'चरणिया' (रू.भे.)

चळणी—सं०स्त्री०—महीन कपड़ा या जाली का एक घेरे में मढ़ा हुआ पात्र जिससे आटा, भूसा आदि छाना जाता है अथवा इसी आकार का लोह या पीतल का बना बड़ा छेददार उपकरण जिससे अनाज आदि छान कर साफ किया जाता है।
रू०भे०—चाळणी, छांणणी, छाणणी।

चलणी—१ देखो 'चळणी'। २ देखो 'चल्लणी'।

चळणू—सं०पु०—भैंस का मूत्र। उ०—कीच निहारचां कनै भैंस रो चळणूं भारी। पैल बळद पग प्रगट खिसै नह दीठां खारी।—ऊ.का.

चळणौ, चळबौ—क्रि०अ०—१ बासी होना, सड़ना. २ विकृत होना।

चलणौ, चलबौ—क्रि०अ०—१ एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाना, गमन करना, प्रस्थान करना।
मुहा०—चलतौ करणौ—रवाना करना।
२ हिलना, गतिमान होना।
मुहा०—१ कांम चलणौ—गुजर होना, निर्वाह होना. २ चलती

गाड़ी में रोड़ौ अटकाणौ—होते काम में अड़चन डालना. ३ मन चलणौ—मन में इच्छा उत्पन्न होना, पसंद होना, मन का डांवाडोल होना. ४ मूंह चलणौ—खाना, भक्षण करना।

३ प्रवाहित होना, बहना. ४ आरंभ होना, छिड़ना, ज्यूं—जिकर चलणौ. ५ प्रचलन होना, व्यवहार में आना, जारी होना या रहना।

मुहा०—चलतौ गाणौ—वह गाना जो बहुत प्रचलित हो।

६ काम में आना, लेनदेन के काम आना, ज्यूं—औ रुपयौ चलै कोयनी. ७ तीर, गोली आदि का छूटना. ८ मरना।

उ०—ऊदावत अमरसिंघजी रौ वडौ वेटौ माधोसिंहजी वडौ अड़पदार हौ। ऊ चलियां पछै कल्यांणसिंघजी अमरसिंघोत नींवाज रौ धणी हुवौ।—वां.दा.ख्यात

मुहा०—चल वसणौ—मर जाना।

९ किसी खेल में अपना क्रम या अपनी चाल अदा करना. १० कार्य-निर्वाह में समर्थ होना, निभना. ११ क्रम या परंपरा का निर्वाह होना, जारी रहना, ज्यूं—नांम चलणौ. १२ प्रयुक्त होना, व्यवहृत होना, ज्यूं—झगड़ा में तलवार चलणी. १३ आचरण करना, व्यवहार करना, ज्यूं—वडां रै कियां सूं नी चलै जद दुख पावै. १४ खाने-पीने की वस्तु का परोसा जाना, खाने के लिये रक्खा जाना, ज्यूं—अबै सीरौ चलै कोयनी (जीमन में) १५ बराबर काम देना, टिकना, ज्यूं—ऐ पगरखियां तौ दो महीना ही नी चलै।

चलणहार, हारौ (हारी), चलणियौ—वि०।

चलवाड़णौ, चलवाड़बौ, चलवाणौ, चलवाबौ, चलवावणौ, चलवावबौ —प्रे०रू०।

चलाड़णौ, चलाड़बौ, चलाणौ, चलाबौ, चलावणौ, चलावबौ —क्रि०स०।

चलिओड़ौ, चलियोड़ौ, चल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चलीजणौ, चलीजबौ—भाव वा०।

चलतौ पहाड़—सं०पु०यौ०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चलतौ—वि० (स्त्री० चलती) १ चलने वाला. २ चुस्त, चंचल।

यौ०—चलती-पुरजौ।

३ वह जिसका प्रचलन हो।

चळदळ, चळद्दळ—सं०पु० [सं० चलदल] पीपल का वृक्ष (ह.नां.)

उ०—१ चले चक पत्र चळद्दळ भांति, तळातळ यौं अतळा विचळाति। —ला.रा.

उ०—२ वीरा रस रत्त वळव्वळ वीर, भयातुर पत्त चळद्दळ भीर। —मे.म.

वि०—१ चंचल* (डिं.को.) २ अधीर।

चळपत, चळपत्र—सं०पु० [सं० चलपत्र] पीपल का वृक्ष।

उ०—१ ढोलउ मन चळपत थयउ, ऊमड़ साहइ लाज। सांम्हउ वीसू आवियउ, आइ कियउ सुमराज।—ढो.मा.

उ०—२ चळपत्र पत्र थियौ दुज देखे चित, सकै न रहति न पूछि सकंति। औ आवै जिम जिम आसन्नौ, तिम-तिम मुख धारण तकंति। —वेलि.

मि०—चळदळ।

चळविचळ—देखो 'चळविचळ' (रू.भे.) उ०—ऊजड़ हुआ सुणि दिल्ली सहित प्रतीची दिसा री आधी आरयावरत चळविचळ थयौ। —वं.भा.

२ भयभीत, घबराया हुआ। उ०—उर चलत हंस किरवांन कर, चलंत मुगळ चळविचळ चित।—ला.रा.

चळविळ—वि०—१ घबराया हुआ. २ आतुर।

चळवचळ—देखो 'चळविचळ' (रू.भे.) उ०—हुए चळवचळ दली 'चत्र' हालियौ, नाथरै कि नहचळ यसौ नांम। —चत्रसाळ हाडा री गीत

चळवणौ, चळवबौ—क्रि०अ०—जाना, प्रस्थान करना। उ०—वळ पायाळ चळवियौ बोलै, जुग बोलियौ घणा दिन जाय।—अज्ञात

चळवळ, चळवल—सं०पु०—रक्त, खून। उ०—चळवळां जोगण खपर चढ़वै, सिभ कमळां संग। जगजीत चिहुंवै वळां जाहर, सुजस हुवै सुढ़ंग।—र.ज.प्र.

वि०—डांवाडोल, विचलित। उ०—सेखावत जळहर समर, फिर चळवळ फिरंगांण। प्रथी संग कळहळ पड़ै, भळहळ ऊगां भांण। —गिरवरदांन कवियौ

चळवळणौ, चळवळबौ—क्रि०अ०—१ घबराना, विचलित होना।

२ अधिक समय तक पड़ा रहने के कारण किसी पदार्थ का विकृत होना, सड़ना या बासना। (मि० 'चळणौ')

चळवळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ घबराया हुआ. २ विचलित।

(स्त्री० चळवळियोड़ी)

चळवळौ—वि०पु० (स्त्री० चळवळी) चिंतायुक्त, चिंतातुर।

चळविचळ—वि०—१ जो अपने स्थान से विचलित हो गया हो, डांवाडोल।

उ०—मेर गिर चळविचळ थयौ जैसिंघ महि, गुरड़ भारथ रै ढके गजगाह।—अज्ञात

२ चलायमान। उ०—तिण समै सो वा वेळा देख उणरी सूरत देख मन चळविचळ हुवौ छै।—पंचदंडी री वारता

३ अंडवंड, अव्यवस्थित, ऊटपटांग। उ०—कंवर रै पिण पलकां पीक, अधरां काजळ री लीक, आळस अंग, भाळ अळता री रंग, लाल नैण, चळविचळ वैण, हियै गडियौ हार, तुररा रा तूटा तार, नखां री रेख।—र० हमीर

चळविळ—वि०—१ कंपायमान. २ डांवाडोल।

चळवौ—देखो 'चुळवौ' (रू.भे.)

चलांणौ—देखो 'चलावौ' (रू.भे.)

यौ०—हलांणौ-चलांणौ।

चलांन—सं०स्त्री०—१ चलने की क्रिया, गतिमान करने या होने का भाव या क्रिया।

सं०पु०—२ अपराधी को अदालत में पेश करने का भाव. ३ वह कागज जिसमें किसी सूचना के लिये वस्तुओं की फेहरिस्त हो।

चळा–सं०स्त्री० [सं० चला] १ बिजली. २ लक्ष्मी. ३ पिप्पली. ४ नारी. ५ पृथ्वी, जमीन (ह.नां.)

चलाऊ–वि०—१ चलने योग्य. २ उपयोग में आने योग्य. ३ बहुत चलने या फिरने वाला।

चलाक—देखो 'चालाक' (रू.भे.)

चलाकी—देखो 'चालाकी' (रू.भे.) उ०—एकै दिन आपरी सैंगाहर मांहे सांपड़ै छै नै आपरो अंतेवर हजूर चलाकी कर संपड़ावै छै।
—वीरमदे सोनगरा री वात

चळाचळ–वि०यौ०—चंचल, अस्थिर, चलायमान (ह.नां.)
सं०स्त्री०—गति, चाल।

चळाचळणौ, चळाचळवौ–क्रि०अ०—१ चलायमान होना. २ भयभीत होना।

चळाचळा–सं०स्त्री०यौ०—देवी, दुर्गा। उ०—चळचळा चामुंडा चपळा, विकट विकट भू वाळा विमळा।—देवि.

चलाचली–सं०स्त्री०—चलने की शीघ्रता. २ बहुत से लोगों का आगे-पीछे प्रस्थान. ३ चलने की तैयारी।

चलाणौ, चलावौ–क्रि०स० ('चलणौ' का प्रे० रू०) १ चलाना, चलने के लिए प्रेरित करना. २ रवाना करना. ३ हिलाना, डुलाना, गतिमान करना। उ०—माया जळ अति विमळ, तास कोइ पार न पावै। लहर लोभ उठंत, मन्न जेहाज चलावै।—ज.खि.
मुहा०—१ मन चलाणौ—इच्छा करना, लालसा करना. २—मुंह चलाणौ—खाना, भक्षण करना, बकवाद करना।
४ प्रवाहित करना, बहाना. ५ प्रचलित करना, प्रचार करना, ज्यूं—धरम चलाणौ. ६ कार्य-निर्वाह में समर्थ करना, निभाना. ७ किसी मशीन, यंत्र आदि को आरंभ करना. ८ बराबर बनाये रखना, जारी रखना, ज्यूं—नांम चलाणौ, कारखांनौ चलाणौ. ९ खाने की वस्तु परोसना, ज्यूं—अबै पकौड़ियां चलावौ (जीमन में) १० आरंभ करना, छेड़ना, ज्यूं—जिकर चलाणौ. ११ व्यवहार में लाना, लेन-देन के काम में लाना, ज्यूं—खोटौ रुपयौ चलाणौ. १२ व्यवहृत करना, प्रयुक्त करना, ज्यूं—तलवार चलाणौ, कलम चलाणौ, हाथ चलाणौ आदि. १३ फेंकना। उ०—ताहरां इयै पइसौ चींपटी मांसूं चलाय दियौ सो देहरै मांहीं जाय पड़ियौ।
—पंचदंडी री वारता
मुहा०—चला'र करम में भाटौ लेणौ—स्वयं आगे होकर आपत्ति मोल लेना। आफत गले में बांधना।
१४ तीर, बंदूक, तोप आदि को छोड़ना या दागना. १५ किसी वस्तु से प्रहार करना, ज्यूं—लाठी चलाणौ।
चलाणहार, हारौ (हारी), चलाणियौ—वि०।
चलाड़णौ, चलाड़बौ, चलावणौ, चलावबौ—रू० भे०।
चलायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चलाईजणौ, चलाईजवौ—कर्म वा०।
चलणौ—अक० रू०।

चळापळ–सं०स्त्री०—चमक-दमक। उ०—चळापळ ओगनियां री कोर, भीपणा किण फूलां री भार।—सांझ

चलायमांन–वि० [सं० चलायमान] १ चलने वाला. २ चंचल. ३ विचलित।

चलायोड़ौ–भू०का०कृ०—चलाया हुआ, देखो 'चलाणौ' (स्त्री० चलायोड़ी)

चलावकौ–वि०—चलाने वाला, चालाक। उ०—राज माहंइ इणि परिरहई राज चलावकै और परधांन।—वी.दे.

चलावणौ—देखो 'चलाणौ' (रू.भे.) उ०—सीस कलंगी सेहरौ, केसर वोळ दुकूळ। कीजै मूझ चलावणौ, मरियां नावै मूळ।—वी.स.

चलावणौ, चलावबौ—देखो 'चलाणौ' (रू.भे.) उ०—तिणसूं हमें इणनूं चलावणौ छै, जल्दी तयारी करौ।—कुंवरसी सांखला री वारता
चलावणहार, हारौ (हारी), चलावणियौ—वि०।
चलाविओड़ौ, चलावियोड़ौ, चलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चलावीजणौ, चलावीजवौ—कर्म वा०।
चलणौ, चलवौ—अक० रू०।

चलावियोड़ौ—देखो 'चलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० चलावियोड़ी)

चलावौ–सं०पु०—१ चलाने की क्रिया या भाव. २ मृत व्यक्ति की अर्थी को श्मशान भूमि की ओर ले जाने के लिये प्रस्थान करने की क्रिया. ३ जौहर में जलने के लिय प्रस्थान करने की क्रिया।
रू०भे०—चलांणौ।
यौ०—हलावौ-चलावौ।

चलित–वि० [सं०] चंचल, अस्थिर, चलायमान।
सं०स्त्री०—नृत्य में एक प्रकार की चेष्ठा।

चलित-ग्रह–सं०पु०यौ० [सं०] १ ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जिसका कुछ भाग तो भोगा जा चुका हो और कुछ भाग अवशेष रह गया हो. २ वह ग्रह जिसकी स्थिति चलित कुण्डली में जन्मकुण्डली की स्थिति से अन्य, पूर्वापर भाव में हो।

चळियळ—देखो 'चळवळ' (रू.भे.)

चलियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ विचलित. २ चला हुआ. ३ प्रस्थान किया हुआ. ४ मरा हुआ (स्त्री० चलियोड़ी)
(मि० 'चलणौ')

चळुअल–सं०पु० [सं० चलतल] रक्त, खून। उ०—ऊगां सूर समौ ऊदावत, वड़ै वसू छळ वोळ विरोळ। चळुअल अरी तणौ चीतोड़ा, चंद्रप्रहास रहै नित चोळ।—प्रथ्वीराज राठौड़

चळू–सं०पु० [सं०चुलुक] १ अंगुलियों को मोड़ कर गहरी की हुई हथेली, जिसमें भर कर पानी आदि पीया जा सके। एक हाथ की अंगुलियों सहित हथेली का बनाया हुआ गड्ढा। चुल्लू। उ०—खाती कूप

वचायौ अहि वरण, तूटी लाव संधांणी । हाकड़िया री हेक चळू कर, पीगी आवड़ पांणी ।—अज्ञात

मुहा०—१ चळू भर पांणी में डूबणौ—लज्जा के मारे मर जाना । २ चळू भर पांणी में डूब मरणौ—बहुत अधिक शरमा जाना.

२ भोजन के पश्चात् हाथ धोने व कुल्ला करने की क्रिया ।

उ०—१ नारी होय तौ धीरे-धीरे खाय, मरद मूंछाळौ तौ ओ झटदै जीम चळू करै ।—लो.गी. उ०—२ करि अचवन जळ चळू करावै । भक्ष पर पचक चूरण भुगतावै ।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ ।

चलू–वि०—प्रचलित ।

सं०स्त्री०—चलाने या चलने की क्रिया या भाव ।

क्रि०वि०—शुरू, आरम्भ, प्रारम्भ ।

चळूळ–वि०—रक्त के समान लाल । उ०—१ करोळां निवाजे यूं तेजाळां भड़ां भूल कीधां । नेजाळां चळूळ कीधां आवै प्रथीनाथ ।

—सूरजमल मीसण

उ०—२ गै घड़ा विरोळै जोधा दोवळा चळूळां गोसां ।—अज्ञात

सं०पु०—रक्त, खून । उ०—भुजंगी लचक्कै देत कोम धकै भोम भार, वकै वळोवळी खेळा कळकै वीरांण । छिलै धाव चळूळां सूरमां घावां लोह छकै, उभै सेना हवकै उचक्कै आरांण ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

चळूळ, चळूळौ–सं०पु०—मुसलमान । उ०—बाजे घाव जांगियां कुरांण वाच लगां वोम, रोस भीना दोवड़ा चळूळा ऊडे रीठ । साइकां छड़ाळां धारां कटारां जवंना सेती, ताखा भड़ां बापू कारे मेलिया नत्रीठ ।

—धीरतसिंह राठौड़ री गीत

चळोअळ, चळोवळ—देखो 'चऴवळ' (रू.भे.) उ०—'भांण' रै लोह सुरतांण घड़ भेळियौ, चळोवळ पंड मो पूर चढ़ियौ ।—अज्ञात

चळौ–सं०पु०—भैंस, गधा या घोड़े का पेशाब, मूत्र ।

चल्लणी–सं०स्त्री०—१ गति, चाल. २ मार्ग, रास्ता ।

उ०—चहुवांणां कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय । चाड न घट्टै खूंद की, सीस पलट्टै तोय ।—रा.रू.

चल्लणौ, चल्लवौ—देखो 'चलणौ' (रू.भे.) उ०—ढोलइ चलतां परिठ्यउ, अग्गळी मौजां 'सल्ल' । ढोलउ गयउ न वाहुड़इ, सूया मनावण चल्ल ।—ढो.मा.

चल्लौ–सं०स्त्री०—प्रत्यंचा । उ०—सुणतांई जोधारपुर चोगड़द तूटे, कबांण के चल्ले तें सायक से छूटे ।—र.रू.

चवंड—देखो 'चामुण्डा' (रू.भे.) उ०—चवंड चिता डाकणी, मांहे बैठी खाय ।—ह.पु.वा.

चव–वि०—१ चार. २ चतुर्थ । उ०—पहली त्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख । चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिण नूं भाख ।—र.ज.प्र.

क्रि०वि०—चारों ओर ।

उ०—चव इम सुणी दियै वर चाहै । माळा देवि विभ गिर मांहै ।

—सू प्र.

चवड़ै देखो 'चौड़ै' (रू.भे.) उ०—सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ, बेगमां घसे पड़दा विचाळ ।—वि.सं.

मुहा०—चवड़ै आणौ—प्रकट रूप में आना, खुले मैदान में आना ।

यौ०—चवड़ै-धाड़ै ।

चवड़ै-धाड़ै—देखो 'चौड़ै-धाड़ै' (रू.भे.)

चवड़ौ—देखो 'चौड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चवड़ी)

चवणौ–वि०—चूने वाला, टपकने वाला ।

चवणौ, चववौ–क्रि०अ०—१ मकान की छत या छाजन में से पानी टपकना । उ०—झिरमिर झिरमिर मेहसड़लौ (जी) वरसे, मैड़ियां में चवण लागौ ।—लो.गी.

२ कहना । उ०—१ मांणस हवां त मुख चवां, म्हे छां कूंझड़ियांह, प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पंखड़ियांह ।—ढो.मा.

उ०—२ छुटै अम्रताच्चार अप्पार छंद । चवै वंस वाखांण वे भांण चंद ।—सू.प्र.

३ तरवतर होना, लथपथ होना । उ०—तिका काळी डीगी, मोटा दांत, दूबळी घणी, डरावणी, माथा रा लटा विखरिया, घणा तेल मांहे चवती, धवळा केस ।—जगदेव पंवार री वात

४ चुसाना, रसना । उ०—मुवां पछै हुवौ मनमांन्यौ, ऊभायंगां न दीधी एक । चवता खुरां धेन घर चाली, टुक-टुक ऊपर पग टेक ।

—ईसरदास मोहिल री गीत

५ 'चा'णौ' तथा 'चावणौ' क्रिया का अक० रू० ।

चवणहार, हारौ (हारी), चवणियौ—वि० ।

चववाणौ, चववावौ—प्रे०रू० ।

चवाड़णौ, चवाड़वौ, चवाणौ, चवावौ, चवावणौ, चवाववौ

—क्रि०स० ।

चविओड़ौ, चवियोड़ौ, चव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चवीजणौ, चवीजवौ—भाव वा० ।

चवत्थ—१ देखो 'चौथ' (रू.भे.) २ चौथा, चतुर्थ ।

चवत्थौ–वि० [सं० चतुर्थ] जो क्रम में तीन के बाद आवे, चौथा ।

उ०—हेम सेत मंझार न की हिव अत्थ न रावह ईत्थ. चवत्थौ राव हुवत जंपियौ सरोवह ।—नैणसी

चवथ—देखो 'चवत्थ' (रू.भे.) उ०—१ गज गत तीजै पाय गुणीजै, ओण चवथ गथ सरप अखीजै ।—र.ज.प्र.

उ०—२ तीजौ लख तिण वार, 'अजा' भादा कर अप्पै । भण ताराचंद भाट मौज लख चवथ समप्पै ।—स.प्र.

चवत्थमौ–वि०—चौथा, चतुर्थ । उ०—तै अपभ्रंस तीतरै, मगधदेसी चवथमै । सरस सूरसेनीस, पढ़ं थांनक पंचमै ।—सू.प्र.

चवदंत–सं०पु०—प्रकट । उ०—त्यांसूं चाळै लागी, तिरछी निजर कंवर नै जोवै है, हमै चमक चवदंत हुई, लजकांणी पड़ गई, जांणै

अंग में हीज वड़ गई ।—र.हमीर

चवद, चवदई—देखो 'चवदे' (रू.भे.) उ०—परसे परसपर कर प्रीत पूछी रहण की परतीत किय मो पिता वयण प्रकास वरसां चवद रौ वनवास । —र.रू.

चवदमौं—वि० [सं० चतुर्दश] चौदहवां, जो क्रम में तेरह के बाद पड़ता हो ।

चवदस, चवदसि, चवदस्स—सं०स्त्री० [सं० चतुर्दशी] किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि । उ०—१ चवदस आज सहेलियां, चोवयां वैठा राव । अणचींत्या साजण मिळया, पड़या निसांणां घाव ।—ढो.मा.

उ०—२ चवदसि चितवणि सव मिटी, अण वोल्या कछु गाय ।
—ह.पु.वा.

चवदह, चवदा, चवदे, चवदेस, चवदै—वि० [सं० चतुर्दशन्, प्रा० चउदह, चउद्दह] चौदह । उ०—सगण पंच भमरावळी स ज दो भ रह विवेक । सुकळ हंस चवदह लघु, र भ स गुरु पद एक ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—चउद, चउदह, चउद्दह, चऊदह, चऊदै ।

सं०पु०—चौदह की संख्या ।

चवदै'क—वि०—चौदह के लगभग ।

चवदौ—सं०पु०—चौदह का वर्ष, चौदहवां वर्ष ।

चवद्दस—देखो 'चवदस' (रू.भे.)

चवद्दह, चवद्दै—देखो 'चवदै' (रू.भे.) उ०—१ थूं हिंदुस्तांन में जंगळधर देस न जांणी, जठै चवद्दह जणां हुता राजा हिंदवांणी ।—मे.म.

उ०—२ चवद्दै हजार किया जंग चौड़ै, डळा ग्रीध गाळा लियै प्रेत दौड़ै ।—सू.प्र.

चवधवौ—देखो 'चवधौ' (रू.भे.)

चव-धार—देखो 'चौधार' (रू.भे.)

उ०—१ समर हुवां सैंफळा, जोध 'अवरंग' 'जसा' रा । घड़ चव-धारां वमकि, रीठ वागा खगधारां ।—सू.प्र.

उ०—२ आप मुहरि 'अभपती' भिड़ज औरू गज भारां । जड़ूं मुगळ जरदैत, घमक भळहळ चवधारां ।—सू.प्र.

चवधौ—१ देखो 'चवदौ' (रू.भे.) २ शुभ रंग का घोड़ा ।

चवन-प्रास—सं०पु० [सं० च्यवनप्राश] च्यवनप्राशावलेह नामक एक पौष्टिक औषधि । (आयुर्वेद)

चवरंग—देखो 'चौरंग' (रू.भे.) उ०—१ दुसट घड़ा हसती गजदंती, आसति अति गति अंग अनींद । पाट उधोर 'रयण' परणेवा, चुंवरी चूंपी चढै चवरंग ।—दूदो उ०—२ भोग विकळ हल्लिया मन भेळै, घटि-घटि आउध विघन घड़ी । रंग पंड पलंग पौढ़ियौ 'रतनौ', चवरंग खग खूंमार चडी ।—दूदो

चवरग—सं०पु०यौ० [सं० चवर्ण] वर्णमाला में च से लगा कर ञ तक के अक्षरों का समूह ।

चवरासि, चवरासी—देखो 'चौरासी' (रू.भे.) उ०—हणै सत्रतीस दसां निज हाथ, पड़ै चवरासिय घाव निपात ।—पा.प्र..

चवरी—देखो 'चंवरी' (रू.भे.) उ०—सत्थरां सोय सारा सुखी, चवरी ढुळंतां चौसरां । तन लगन तीसरां री तिकां, मंगत ध्यांन मन मोसरां ।—ऊ.का.

चवळांरी—देखो 'चंवळेरी' (रू.भे.)

चवळाई—देखो 'चंवळाई' (रू.भे.)

चवळेरी, चवळैड़ी—देखो 'चंवळेरी' (रू.भे.)

चवळौ—देखो 'चंवळौ' (रू.भे.)

चवसट्ट, चवसट्टि—१ देखो 'चौसठ' (रू.भे.) २ रणचंडी, योगिनी ।

उ०—चवसट्ट अखाड़ै रंग चाय, अरधंग सहत सिव खड़ाह आय ।
—वि.सं.

चवसठ—१ देखो 'चौसठ' (रू.भे.) २ देखो 'चौसठी' (रू.भे.)

उ०—१ चवसठ मझि वावन चिरताळा, मद छकिया रमै मतवाळा ।
—सू.प्र.

उ०—२ पड़ै रुधिर पत्र भरै प्रचंडा, चवसठ सहित पियै चामुंडा ।

चवसठि—१ देखो 'चौसठ' (रू.भे.) २ देखो 'चौसठी' (रू.भे.)

उ०—घर अंबर रज डंबर अंधारां, जोगण करि चवसठि जयकारां ।
—सू.प्र.

चवसठै'क—देखो 'चौसठै'क' (रू.भे.)

चवसठ्ठ, चवसठ्ठि—देखो 'चौसठ' (रू.भे.)

चवहट, चवहट्ट—वि०—कठोर॥ (डिं.को.)

चवांण—देखो 'चौहांन' (रू.भे.) उ०—सांखला गोड़ हाडा सधीर, भाटी चवांण निरवांण धीर ।—पे.रू.

चवांणी—सं०पु०—वर्षा में छत से टपकने वाला पानी ।

चवा—सं०पु० (वहु०)—छत से चूने वाली पानी की बूंद (शेखावाटी)

चवाणौ, चवावौ—क्रि०स० ('चवणौ' क्रिया का प्रे० रू०) १ खिलाना. २ दांतों से कटवाना । ३ देखो 'चावणौ' का प्रे०रू०

चवाळियौ—देखो 'चंवाळियौ' (रू.भे.)

चवू—देखो 'चऊ' (रू.भे.)

चवेळी—१ देखो 'चवळेरी' (रू.भे.) २ देखो 'चमेली' (रू.भे.)

चव्य—सं०स्त्री०—एक औषधि विशेष, पीपरामूल की डंडी ।

चसक—स०पु० [सं० चषक] १ शराव पीने का पात्र. २ द्रव पदार्थ या शराव पीते समय होने वाली ध्वनि । उ०—भद्र काळी लोहित रूप आसव रा चसक रै साथ उपदंस करि पीधी ।—वं.भा.

३ देवी का खप्पर । उ०—प्रेत गीधादिक पळचरां नूं धपाइ चंडी रा चसक में आपरौ अस्त्र-आसव पूरि च्यारि तरवारि लागां जीवतौ ही खेत रहियौ ।—वं.भा.

४ हलकी टीस, कसक, पीड़ा ।

चसकणौ, चसकवौ—क्रि०अ०—१ हल्का-हल्का दर्द होना, टीस चलना. २ चुस्की लेना, चूस-चूस कर घूंट उतारना ।

चसकौ—सं०पु० [सं० चषण] १ किसी वस्तु विशेष के स्वाद आदि से या काम में एक वार या अनेक वार मिला आनंद जिसको प्राप्त

करने की बार-बार इच्छा हो, चाट, शौक, लत। उ०—जद मैं नणदल जांणियौ, बिगड़ण री वातांह। अधरां चसकौ ऊठियौ, भाभी वतळातांह।—र. हमीर

क्रि०प्र०—पड़णौ, लागणौ, होणौ।

२ दर्द, टीस। उ०—उमराव म्हारे रात्यूं चसका चाले मेरी जांन। —लो.गी.

क्रि०प्र०—चालणौ।

चसणौ, चसबौ—क्रि०अ०—चमकना, प्रकाशित होना, दमकना।

उ०—१ चसै नैंण ज्यूं रैंण जूपी चरागां, जईमैंण रा नैंण ज्यूं क्रोध जागां।—अगयाअगेंद्र उ०—२ भरमल री मां कन्है बैठी दारू पीवै छै। पीलसोतां चस रही छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ माळा उड जोत लसी सुरभाग, चसी रण आंगण जोत चराग।—मे.म.

चसम—सं०स्त्री० [फा० चश्मा] १ आंख, नेत्र। उ०—१ रंग पायलड़ी री रणक, मिळी झमक मंजीर। चंगा चसमां री चमक, सोहत झमक सरीर।—र.रा. उ०—२ प्रीत कर पुर ऊपर, उठै रघुवर आप। सहस भग किय चसम सहसा, सकत मेटै स्राप।—र.रू.

रू०भे०—चस्म।

यौ०—चसमदीद।

चसमदीद—देखो 'चस्मदीद' (रू.भे.)

चसमांण—सं०स्त्री० [फा० चस्म+रा०प्र० आंण] देखो 'चसम' (रू.भे.)

चसमौ—सं०पु० [फा० चश्मा] १ पानी का स्रोत, झरना. २ कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी तालों का बना हुआ जोड़ा जो आंखों की दृष्टि बढ़ाने या ठंडक के लिए पहना जाता है। ऐनक।

क्रि०प्र०—रखणौ, राखणौ, लगणौ, लगाणौ, लागणौ।

वि०—स्नेहपूर्ण नेत्रों वाला।

चसम्म—देखो 'चसम' (रू.भे.) उ०—रोसाळ मिळे ग्रीखम रसम्म। चित्ता विडाळ नाहर चसम्म।—वि.सं.

चसळक—देखो 'चसळकौ' (रू.भे.)

चसळकणौ, चसळकबौ—क्रि०अ०—१ गाड़ी या चरख पर रखे हुये बोझा आदि को आगे खींचने से आवाज होना। उ०—चसळके तोप चरखां चलंत। भरळकै सेल ग्रीधण भ्रमंत।—पे.रू.

२ मस्ती में आने पर ऊंट के दांतों की पंक्ति के परस्पर टकराने से आवाज होना या करना। उ०—चसळके दंत चरखी चलाय। खिज रया दिवांणा भंग खाय।—पे.रू.

चसळकौ—सं०पु०—१ शीतकाल में ऊंट के मस्ती में आने पर उसके दांतों की पंक्तियों के परस्पर टकराने से उत्पन्न आवाज।

उ०—जिकै ऊंट हाथी ज्यों जोहां खाता, भाद्रवै री गाज ज्यूं आवाज करता, साठी करै भमण ज्यूं चसळका करता भागै, गाडै ज्यूं बठठाट करता।—रा.सा.सं.

[अनु०] २ ध्वनि विशेष।

चसावणौ, चसाववौ—क्रि०स०—प्रज्वलित करना, ज्योतियुक्त करना।

उ०—ढोला नाईकी नै वेग बुलावौ, म्हारे महलां चौमुख दिवलौ चसावौ।—लो.गी.

चसीड़णौ, चसीड़बौ—क्रि०स० [सं० चष = भक्षणे] १ द्रव पदार्थ को भर पेट पीना. २ खाना, भक्षण करना. ३ दांतों को भींच कर वायु के साथ या श्वास के साथ द्रव पदार्थ को खींच कर पीना।

उ०—चसीड़ै वासी मुंहडै छास, वसै न एकण बीजै वास।

—रंगरेलौ बीठू

रू०भे०—चहीड़णौ, चहीड़बौ, चहोड़णौ, चहोड़बौ।

चस्कौ—देखो 'चसकौ' (रू.भे.)

चस्म—देखो 'चसम' (रू.भे.)

चस्मदीद—वि०यौ० [फा० चश्मदीद] आंखों से देखा हुआ, प्रत्यक्ष देखा हुआ।

रू०भे०—चसमदीद।

चस्मनुमाई—सं०स्त्री०यौ० [फा० चश्मनुमाई] घूर कर देखते हुए किसी में भय उत्पन्न करने का भाव।

चस्मपोसी—सं०स्त्री०यौ० [फा० चश्मपोशी] परोक्ष में होने वाला भाव, आँखें चुराने का भाव।

चस्मौ—देखो 'चसमौ' (रू.भे.)

चह—सं०स्त्री०—१ अग्नि-संस्कार के लिए काठ को चुनने का ढंग, चिता।

उ०—वांसां घरां सूं राजा री सुणावणी आई, पाघ आई रांणी वळण नूं तयार हुई, चह खिड़क तयार करी।—नैणसी

[सं०] २ चाह, इच्छा।

सं०पु० [फा०] ३ गड्ढा, गर्त।

चहक—सं०स्त्री० [अ०] पक्षियों द्वारा की जाने वाली चह-चह की ध्वनि। चहकने का भाव। पक्षियों का कलरव।

चहकणौ, चहकबौ—क्रि०अ० [अनु०] १ पक्षियों का आनंदित होकर मधुर ध्वनि करना, चहचहाना।

उ०—१ चहकीय चील पंखी कळचाळ।—गो.रू.

२ नाडी दे पग तातौ न्याळी, थर लीली रंग करवै थाळी। चहकै बैठ सिरै चांचाळी, कांठळ बंधै उतर दिस काळी।—वर्षा विज्ञान

२ आवेश या जोश में आकर हर्षपूर्वक कोलाहल करना।

उ०—चहकिया नहर घर चढ़े चाक, डहकिया डमर हर बाक डाक। घर करण मांमला क्रोध धांक, नीसरै किलै कप्पाट नांक।—वि.सं.

चहकणहार, हारौ (हारी), चहकणियौ—वि०।

चहकवाड़णौ, चहकवाड़बौ, चहकवाणौ, चहकवाबौ, चहकवावणौ, चहकवावबौ—प्रे०रू०।

चहकाड़णौ, चहकाड़बौ, चहकाणौ, चहकाबौ, चहकावणौ, चहकावबौ —क्रि०स०।

चहकिओड़ौ, चहकियोड़ौ, चहक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चहकीजणौ, चहकीजबौ—भाव वा०।

चह्कियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चहचहाया हुआ. २ आवेश या जोश में आकर हर्षपूर्वक कोलाहल किया हुआ (स्त्री० चह्कियोड़ी)

चहक्कणौ, चहक्कबौ—देखो 'चहकणौ' (रू.भे.) उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणै आणंद चहक्की। संग बेळ सूरमा, वास अगरेल महक्की।—रा.रू. उ०—२ चाहे रत्त चटट्टिकै चउसट्टि चहक्कै। काय उभक्कै के कटै भरि पाय भभक्कै।—वं.भा.

चहचहणौ, चहचहबौ, चहचहाणौ, चहचहावौ—क्रि०अ० [अनु०] पक्षियों का कलरव करना, चहचहाना। उ०—चहुं दिस चिड़ियां चहचही, बोल्या पंखी व्रंद।—स्रीपाळ रास

चहचहाहट-सं०स्त्री० [अनु०] पक्षियों के कलरव की मधुर ध्वनि।

चहचाणौ, चहचावौ—देखो 'चहचहाणौ' (रू.भे.) उ०—खूमांणी वांणी घणइ ख्यांत, भैरव चहचांणी तिणइ भांत।—वि.सं.

चहच्चह-सं०स्त्री०—१ द्रव पदार्थ को मुंह से खींच कर पीने की क्रिया। उ०—१ वजै सिर गह्वर धजर वाढ़ि, चहच्चह चंड पिये रत चोळ। —सू.प्र.

उ०—चहच्चह चंड पिये रत चोळ, वंबाळव गात हुवै भकबोळ। —सू.प्र.

२ प्रसन्नता से हँसने की ध्वनि अट्टहास। उ०—चहच्चह नारद संकर चंड, वहै इम गूजर गूजर खड।—सू.प्र.

चहटणौ, चहटबौ—क्रि०अ०—चिपकना, चिमटना। उ०—तिके वूथां उड़ि-उड़ि तुरकां रै डील रै जाय लागी नै चहटी। —वीरमदे सोनगरा री वात

चहटणहार, हारौ (हारी), चहटणियौ—वि०।

चहटवाणौ, चहटवावौ—प्रे०रू०।

चहटाड़णौ, चहटाड़बौ, चहटाणौ, चहटावौ, चहटावणौ, चहटाववौ —क्रि०स०

चहटिओड़ौ, चहटियोड़ौ, चहट्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चहटीजणौ, चहटीजवौ—भाव वा०।

चहटाणौ, चहटावौ—क्रि०स०—चिपकाना, चिमटाना।

चहटाणहार, हारौ (हारी), चहटाणियौ—वि०।

चहटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चहटाईजणौ, चहटाईजवौ—कर्म वा०।

चहटणौ—अक०रू०।

चहटायोड़ौ-भू०का०कृ०—चिपकाया हुआ (स्त्री० चहटायोड़ी)

चहटावणौ, चहटाववौ—देखो 'चहटाणौ' (रू.भे.)

चहटावणहार, हारौ (हारी), चहटावणियौ—वि०।

चहटाविओड़ौ, चहटावियोड़ौ, चहटाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चहटावीजणौ, चहटावीजवौ—कर्म वा०।

चहटणौ—अक०रू०।

चहटावियोड़ौ—देखो 'चहटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चहटावियोड़ी)

चहटियोड़ौ-भू०का०कृ०—चिपका हुआ, चिमटा हुआ। (स्त्री० चहटियोड़ी)

चहडुणौ, चहडुबौ—देखो 'चडणौ' (रू.भे.) उ०—बीज न देख चहड़िया, प्री परदेस गयांह। आवण लीय भबूकड़ा, गळि लागी सहरांह।—ढो मा.

चहणौ, चहवौ-क्रि०अ०—चाहना, इच्छा करना। उ०—बाळापणौ जवांनी वोई, बोवण चहत बुढाई नै।—ऊ.का.

चहणहार, हारौ (हारी), चहणियौ—वि०।

चहिओड़ौ, चहियोड़ौ, चह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चहीजणौ, चहीजवौ—भाव वा०।

चहन-सं०पु० [सं० चिन्ह] १ लक्षण, संकेत, चिन्ह।

उ०—लछी रा चहन घण बीज वाळी लपट।—र.ज.प्र.

सं०स्त्री०—२ ध्वजा, पताका (अ.मा.)

चहबचौ-सं०पु० [फा० चाह+बच्चा] १ छोटा कुंड। उ०—ओ महल केसर गुलाव सूं छांटीजै छै। मांहे जळ गुलाव सूं चहबचा भरियो छै।—रा.सा.सं.

२ हाथी का चारजामा, हौदा। उ०—१ पागड़ा जोर छक छोह रै पराक्रम, विखम गजबोह रै समै बागी। सिंदुरां बोह रै बीच जागी सगत, लोह रै चहबचै तेग लागी।—कविराजा करणीदान

उ०—२ तरै अखितयारखां हाथी रै चहबचे बैठो थो। उण एक तीर वाहियो सु जसवंतजी रै गळै लागो।—राव मालदेव री वात

चहर-सं०पु० [सं० चिकुर] १ शिर के केश, बाल (ह.नां.) (रू.भे. चंवचौ) [रा०] २ कलंक

वि०—श्रेष्ठ, उत्तम। उ०—कोपियै छाकियै चहर भड़ अहर करि, फुरळतै पिसण घड़ फेरवी अफिर फिरि।—हा.भा.

चहर की बाजी-सं०स्त्री०यौ०—पक्षियों का कलरव। उ०—यौ संसार चहर की बाजी, सांभ पड़्यां उठ जासी। कहा भयां था भगवां पहरयां, घर तज लयां संन्यासी।—मीरां

चहरणौ, चहरबौ-क्रि०अ०—आलोचना करना, निंदा करना।

उ०—जांणै तूज अभनमा 'जोधा', 'धीर' अखाड़ै खड़ग धर। न रहियौ सत्रहर अणनांमी, नमिया चहरण हार नर।—महमद वारहठ

२ व्यंग कसना, ताना मारना। उ०—भोळा की चहरौ भड़ां, ईखौ चारण एण। केहौ कहता कायरां, वाढां चाबुक वैण। —वी.स.

चहरणहार, हारौ (हारी), चहरणियौ—वि०।

चहरवाड़णौ, चहरवाड़बौ, चहरवाणौ, चहरवाबौ, चहरवावणौ, चहरवाववौ—प्रे०रू०।

चहराड़णौ, चहराड़बौ, चहराणौ, चहरावौ, चहरावणौ, चहराववौ —क्रि०स०।

चहरिओड़ौ, चहरियोड़ौ, चहरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

चहरीजणौ, चहरीजबौ—भाव वा०।

चहराड़णौ, चहराड़बौ, चहराणौ, चहरावौ-क्रि०स०—निंदा कराना, आलोचना कराना। उ०—१ थारौ सुयस अमर 'करणावत' वासुर,

वहु दिन हुवै व्यतीत । वाढां ढयौ पाघड़ौ विढंतै, चहराड़ियौ नहीं वड चीत ।—पदमसिंह री वात

उ०—२ पाघरै खेत भारात री पाड़ियौ, साथ भूलाड़ियौ रुधर सूरा । पागड़ौ खगां वहराड़ियौ सीस पर, भोयण चहराड़ियौ नहीं भूरा ।—वहादुरसिंह रौ गीत ।

चहरायोड़ौ–भू०का०कृ०—आलोचना कराया हुआ, निंदा कराया हुआ (स्त्री० चहरायोड़ी)

चहरावणौ, चहरावबौ—देखो 'चहराणौ' (रू.भे.)

चहरावियोड़ौ—देखो 'चहरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चहरावियोड़ी)

चहरौ—देखो 'चैहरौ' (रू.भे.)

उ०—१ कुंवर सी भरमल नूं कही जे आज इतनौ आळस क्यूं मोड़ा कियां पधारिया, चहरौ उदास क्यूं छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—चहरा करणा—आलोचना करना, व्यंग कसना ।

चहल–क्रि०वि०—चारों ओर । उ०—भ्रमे चहल अर भंजिया, मांणी रख मरजाद । नीलौ वाहणा नाहरौ, विजय समापी वाद ।

—रेवतसिंह भाटी

चहल-पहल, चहल-वहल–सं०स्त्री०यौ०—बहुत से लोगों के आने-जाने की क्रिया या धूम । धूमधाम, ठाटवाट, रौनक ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

चहलम–सं०पु० [फा० चेहलुम] किसी के मरने के दिन से चालीसवां दिन, चालीसवां (मुसल.)

चहळाबहळ—१ देखो 'चहल-पहल' (रू.भे.) २ बिजली की चमक ।

चहळावणौ, चहळावबौ–क्रि०अ०—चमकना । उ०—१ बीजुळियां चहलादहलि, आभइ आभइ एक । कदी मिळूं उण साहिवा, कर काजळ की रेख ।—ढो.मा. उ०—२ बीजळियां चहळावहळि, आभइ आभइ च्यारि । कदी मिळूंली सज्जणा, लांबी वांह पसारि ।—र.रा.

चहवचौ—देखो 'चहवचौ' (रू.भे.) उ०—इण नूं ज्यूं कपड़ा पहिरावां त्यूं चहवचै मांहे गिरि गिरि पड़ै ।—द.वि.

चहि–सं०स्त्री०—शव-दाह के लिये चुन कर रखा गया लकड़ियों का ढेर, चिता । उ०—मारवणी ने सचेत करि सदासिव पारवतीजी अलोप होय गया । मारवणी ढोला जी ने पूछै लागी—लकड़ा भेळा करि चहि क्यूं कीनी ? तद ढोलोजी बोलिया—मारवणी थे निरजीव हुय गया छा, पीवणा सांप रा डंक सूं ।—ढो.मा.

(मि० 'चह' (१))

चहियै–अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है, मुनासिब है । उ०—जब द्वारा-साह नै ऐसा कह्या जो उसका कळेजा निकाळ कर उसी के हाथ में दिया चहियै ।—द.दा.

चहिरौ—देखो 'चैहरौ' (रू.भे.) उ०—तरै जांणियौ वाप जिसौ हुवै कै माता सरीसौ हुवै तिकौ इणरी माता कौ रंग चहिरौ दीसै छै ।

—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात

चहिलौ—देखो 'चईलौ' (रू.भे.)

चही–अव्यय—चाहिये । उ०—कळ त्रितीय सोडस वळे, दसकळ चतुरथी तुक में चही ।—र.रू.

सं०स्त्री०—देखो 'चहि' (रू.भे.)

चहीड़णौ, चहीड़बौ—देखो 'चसीड़णौ' (रू.भे.)

चहीजै–अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है । उ०—नहीं जाऊं तौ पती री धरम जावै है, अब कांई करणौ चहीजै ।—वी.स.टी.

चहीलौ—देखो 'चईलौ' (रू.भे.) उ०—दियै चहीलै चालतां, आर गाळ इक दोय । खाड़ेती खोटौ हुवै, धवळ न खोटौ होय ।—वां.दा.

चहुं–क्रि०वि०—चारों ओर ।

वि०—चार,चारों । उ०—प्रभुता जग में पाय, मोद न लावै जो मनुस । वे नरवर जग मांय, चहुं दिस में धन चकरिया ।

—मोहनराज साह

चहुंआंण—देखो 'चौहान' (रू.भे.) उ०—तूंअर गया पाहाड़ तक्कि, चहुंआंण चूरि चाड़िया चक्कि ।—रा.ज.सी.

चहुंऐवळा, चहुंओर, चहुंगमां, चहुंगमे, चहुंगम्मा, चहुंघा, चहुंचक्कां चहुंरतफ, चहुंघां, चहुंवळ–क्रि०वि०—चारों तरफ, चारों ओर ।

उ०—१ गढ़ भुरज सजिया चहुंगमे, असमांण पड़तौ आंग में ।

—रा.रू.

उ०—२ टींगर-टोळी ले चटपट घण टोळी, चहुंधां चींघणसी दुवधा घट दोळी ।—ऊ.का.

उ०—३ धूंकळ जिण धाराळ री, धुव चहुंचक्कां धाक । भाळ कंत अर रा भंवै, चित्त ह्वै कुम्हार चाक ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—४ चहुंतरफां वणि चौहटां, अटा वुतंग अखंड । घुमड़े जांणै घणघटा, दमक छटा छवि-डंड ।—वगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—५ चहुंधां चरित्र वैस्णवै विचित्र, त्रैलोक तत्र वह मिळत अत्र ।—ऊ.का. उ०—६ जोधा नाकारी जरां, सिर आया खुरसांण । गिर चहुंबळ कळ सालळी, फिर मातौ आरांण ।—रा.रू.

चहुंअळ–वि०—चंचल, अस्थिर (ह.नां.)

रू०भे०—'चहुळ' ।

चहुंवळ, चहुंवळां–क्रि०वि०—चारों तरफ । उ०—१ हुय हाक चहुंवळ कळळ हूंकळ, असुर सुर सुरदळ आहुड़ै ।—रा.रू.

उ०—२ वजि त्रंवाळ चहुंवळां दुगम आरवा दगाया ।—सू.प्र.

चहुंवां–वि०—चारों । उ०—करि चाळ वीर सांजति करै, घणा जोम हुंता घणा । किण भांति तरफ दहुंवां कहूं, तिके रूप चहुंवां तणा ।

—सू.प्र.

क्रि०वि०—चारों ओर, मि० 'चहुवां' ।

चहुंवांण—देखो 'चौहान' (रू.भे.) उ०—भाट विड़द तिहां ऊचरै, धनि धनि हो वीसळ चहुंवांण ।—वी.दे.

चहुंवै–वि०—चारों ।

चहुंवैचकां, चहुंवैवळ, चहुंवैवळ, चहुंवैवळा, चहुंवोवळा–क्रि०वि०—चारों ओर, चारों तरफ । उ०—१ चविजे 'वीर' पाटि राव 'चौंडौ',

चहुंवै चकां करण जस 'चौंडो' ।—सू.प्र. उ०—२ चहुंवां सर चहुंवैवळ छूटै, तीड अनेक जांणि दळ तूटै ।—सू.प्र.

उ०—३ वेठ तोपां वरर वरर चहुंवौवळा, झाट पड़ केमरां साट भरळक झळां । खाटखड़ ढाळड़ां टूक ऊछळ खळां, वाज गरकाव कीवा समर वांवळां ।

—राठौड़ उदयसिंह, नरसिंह अोर लखवीर रौ गीत

चहुर—सं०पु० [सं० चिकुर] वाल, केश । उ०—गिरदै उदै चहुर गहराई । अनंग जांणि परवाज वणाई ।—सू.प्र.

चहूळ—देखो 'चहुंळ' (रू.भे.)

चहुवां—क्रि०वि०—चारों ओर । उ०—चहुवां इम चहुं मंत्र उचारै, पह नांभळि निज महल पधारै ।—सू.प्र.

चहुवांण, चहुवांन—देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चहुवे, चहुवै—देखो 'चहुंवै' (रू.भे.) उ०—१ वळ चहुवे कळ सालळी, चळ चळ पुर हलचल्ल ।—रा.रू.

उ०—२ चूरै दुसह सहंस पंच चहुवै । दळपति 'अमर' विहंडवा दहुवै । —सू.प्र.

चहूं—देखो 'चहुं' (रू.भे.) उ०—जवनां वीत चहूं दिस जावै, ऊंठ चटांण रसत नह आवै ।—रा.रू.

चहूंकूंट, चहूंकोर, चहूंगमां, चहूंचकां, चहूंवळ, चहूंवळ, चहूंवैवळा—क्रि०वि०—चारों ओर, चारों तरफ । उ०—१ विध विध भोग विलास करै, उच्छब कौतूहळ । पछै किया छत्रपती, विदा फुरमांण चहूंवळ ।—सू.प्र.

उ०—२ वांसपुर भांजतां सोच पड़ चहूंवळ, सकळ खळ मांण तज सेव सावै ।—मांनसिंह आसियो उ०—३ विस्तार जस चहूंवैवळा, साधार सेवग सांवळा ।—र.ज.प्र.

चहोड़णौ, चहोड़वौ—१ देखो 'चढ़ाणौ' (रू.भे.) उ०—कुंदणपुर सुवरण का कळस चहोड़ीजै छै ।—वेलि.टी.

२ उखाड़ना । उ०—हरौ वाळ चंमांट जेही चहोड़ै । तमासा ज्युंही खांचि धानंख तोड़ै ।—सू.प्र.

३ काटना । उ०—चंद्रहास भट धके चहोड़े । तेर हजार दुसह भड़ तोड़े ।—सू.प्र.

४ मानना, चाहना । उ०—आप प्रमांणि चहोड़ै आखल, 'केहरि' को मोटा करण । जो अवतार दियै हरि जाचण, जरू वार साधार जग ।

—राठौड़ हरिसिंह राजावत रौ गीत

५ देखो 'चसीड़णौ' (रू.भे.)

चहोतर—देखो 'चिमोतर' (रू.भे.)

चहोतरे'क—देखो 'चिमोतरे'क' (रू.भे.)

चहोतरौ, चहोतरौ—देखो 'चिमोतरौ' (रू.भे.)

चां—अव्यय—के । उ०—सेवति नवै प्रति नवां सवे सुख, जग चां मिसि वासी जगति । रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति ।—वेलि.

रू०भे०—'चा' ।

चांक—सं०स्त्री० [सं० चक्रांकन] खलिहान में साफ किये हुए अन्न के ढेर पर डाला जाने वाला एक प्रकार का चिन्ह ।

चांकणी—सं०पु०—पहिचान के लिये पशु या वस्तु आदि पर लगाया जाने वाला चिन्ह ।

चांकणौ, चांकवौ—क्रि०स०—१ खलिहान में साफ किये हुए अन्न के ढेर पर राख, मिट्टी या कटे हुए ठप्पे आदि से चिन्ह अंकित करना जिससे यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय. २ किसी स्थान पर सीमा बांधने के लिये किसी वस्तु से रेखा आदि खींच कर चारो ओर से घेरना, हद बांधना. ३ पहिचान के लिये किसी वस्तु आदि पर चिन्ह अंकित करना. ४ अन्न के दानों को बोने के लिए मुट्ठी भर-भर कर खेत में बिखेरना ।

चांकणहार, हारौ (हारी), चांकणियौ—वि० ।

चांकणवाड़णौ, चांकवाड़वौ, चांकवाणौ, चांकवावौ, चांकवावणौ, चांकवाववौ—क्रि०प्रे०रू० ।

चांकाड़णौ, चांकाड़वौ, चांकाणौ, चांकावौ, चांकवणौ, चांकववौ —क्रि०स०

चांकिओड़ौ, चांकियोड़ौ, चांक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चांकीजणौ, चांकीजवौ—कर्म वा० ।

चांकाणौ, चांकावौ—क्रि०स० ('चांकणौ' का प्रे०रू०) १ खलिहान में पड़े अन्न के ढेर पर चिन्ह अंकित कराना. २ सीमा बांधने के लिये किसी वस्तु आदि से रेखा खींचाना. ३ पहिचान के लिए पशु या वस्तु आदि पर चिन्ह लगवाना. ४ अन्न के दानों को मुट्ठी भर कर फेंकवाना ।

चांकाणहार, हारौ (हारी), चांकाणियौ—वि० ।

चांकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

चांकाईजणौ, चांकाईजवौ—कर्म वा० ।

चांकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ खलिहान में अन्नराशि के ढेर पर चिन्ह आदि लगाया हुआ. २ रेखा आदि द्वारा सीमा में बांधा हुआ. ३ पहिचान के लिए चिन्ह आदि लगवाया हुआ. ४ बोने के लिए अन्न के दानों को मुट्ठी में भर-भर कर फेंकाया हुआ (स्त्री० चांकायोड़ी)

चांकावणौ, चांकाववौ—देखो 'चांकाणौ' (रू.भे.)

चांकावणहार, हारौ (हारी), चांकावणियौ—वि० ।

चांकाविओड़ौ, चांकावियोड़ौ, चांकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चांकावीजणौ, चांकावीजवौ—कर्म वा० ।

चांकावियोड़ौ—देखो 'चांकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चांकावियोड़ी)

चांकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ खलिहान में राख, मिट्टी आदि से अंकित किया हुआ (अन्न आदि का ढेर) २ सीमा बांधने के लिए किसी वस्तु या रेखा आदि से घेरा हुआ, हद बांधा हुआ ।

३ पहिचान के लिये चिन्ह लगाया हुआ. ४ भूमि पर मुट्ठी भर-भर कर फेंक कर बोया हुआ (अनाज) (स्त्री०—चांकियोड़ी)

चांख—सं०स्त्री०—जमीन पर हल चलने से बनने वाली गहरी रेखा, सीता।

चांग—देखो 'चंग' (रू.भे.)

चांगलाई—सं०स्त्री०—नटखटपन, चंचलता, शैतानी। (ह.नां.)

चांगलौ—वि० (स्त्री० चांगली) इतराया हुआ।

सं०पु०—घोड़े का एक रंग विशेष।

चांगल्यौ—सं०पु०—मिट्टी के बर्तनों में तैयार किया हुआ अवैधानिक शराब।

चांगियौ—वि०—चारपाई के बान की चार-चार लड़ी को ऊपर नीचे रख कर बुनी हुई (खाट, चारपाई आदि)

चांच—सं०स्त्री० [सं० चंचु] १ चोंच।

उ०—सुन्न सरोवर हंस मन, मोती आप अनंत। 'दादू' चुगचुग **चांच** भर, यूं जन जीवै संत।—दादूदयाळ

कहा०—चांच दी जकौ चुगौ ही देही—जिसने चोंच दी है वह खाने को दाना भी देगा अर्थात् ईश्वर ने उत्पन्न किया है तो जीवित रहने के लिये साधन भी देगा। ईश्वर को प्रत्येक प्राणी के पालन-पोषण करने का फिक्र है।

रू०भे०—चूंच, चोंच।

महत्व०—चांचड़।

अल्पा०—चांचड़ली, चांचड़ी, चांचली, चोंचजड़ी।

२ ढेकली. ३ बैलगाड़ी का वह अग्र पतला व लंबोतरा भाग जिसके ऊपर के सिरे पर जुआ कसा रहता है।

चांचड़—सं०पु०—१ बाजरी का वह सिट्टा जिस पर परिपक्व अवस्था के दाने होते हैं। उ०—चरण बछेड़ा **चांचड़ा**, जिण दीध फड़ंदे। कूक तणा कोळू महां, नित ढोल रणंदे।—पा.प्र.

२ 'चांच' का महत्व, चांच, चंचु।

चांचड़ली—देखो 'चांच' (अल्पा० रू.भे.) उ०—पांखड़ल्यां पर लिखूं ए धण रा ओळवा, **चांचड़ली** पर लिखू ए सात सिलांम।—लो.गी.

चांचली—सं०स्त्री०—देखो 'चांच' (अल्पा० रू.भे.) उ०—मांणस हवां त मुख चवां, रे लाल, म्हां सूं कह्यौय न जाय। लिख म्हारी सोवन **चांचली**, ए गोरी अर रतनाळी पांख।—लो.गी.

वि०स्त्री०—चोंचधारी, चंचुधारी (पक्षी)

चांचलौ—वि० (स्त्री० चांचली) १ लम्बी चोंच वाला, जिसके लंबी चोंच हो। २ जिसका नीचे का होंठ दबा हुआ और दांत बाहर निकले हुए हों (ऊंट)

सं०पु०—पक्षी।

चांचल्य—सं०स्त्री [सं०] चंचलता, चपलता। उ०—**चांचल्य** चित्त सिद्धांत चूक, सब सेखसली के हैं सलूक।—ऊ.का.

चांचवौ—सं०पु०—ऊंट आदि के किसी अंग पर गोल वृत्ताकार लगाया जाने वाला दग्ध चिन्ह (क्षेत्रीय)

चांचाळ, चांचाळौ—वि० (स्त्री० चांचाळी) चोंचदार, जिसके चोंच हो, चोंच वाला।

सं०पु०—गिद्ध पक्षी।

उ०—चुगती चोळ थयी **चांचाळी**, परसी सुरख हुवा पाहाड़।—द.दा.

चांचियौ—सं०पु०—१ कुआं खोदने का एक प्रकार का औजार. २ पक्षी।

वि०—१ चोंच वाला, जिसके चोंच हो. २ जिसमें ढेकली द्वारा पानी निकाला जाता हो (कुआं) ३ जिसका नीचे का होंठ दबा हुआ हो और दांत बाहर निकले हुए हों (ऊंट)

रू०भे०—चांचलौ।

चांचू—सं०पु० [सं० चंचु] चोंच।

वि०—चोंचदार, चोंच वाला।

चांचौ—देखो 'चांचियौ' (रू.भे.)

चांटिय, चांटी—सं०स्त्री०—१ बेगार में कराया जाने वाला कार्य।

उ०—पांचां ठाकुरां मोनूं **चांटी** भोळाई है सो हूं करूं छूं।
—बां.दा. ख्यात

२ सेवा, चाकरी। उ०—अब केताय कांम किया पैहली, सिध **चांटिय** 'पाल' तणी छेहली।—पा.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, काडणी, लेणी।

३ तेज भागने की क्रिया या भाव, दौड़। उ०—चरख्यां चटीठ अंगीठ चख, पीठ समोवड़ पालणां। पाकेट सज्या सौ कोस पथ, हेकण **चांटी** हालणा।—मे.म.

क्रि०प्र०—करणी, देणी, लगाणी।

सं०पु०—४ सेवक, अनुचर। उ०—सब पापिन सिरमौड़, नमक हरांमी क्रतघणी। अब बाकी रा ओर, चेला-**चांटी** चकरिया।
—मोहनराज साह

चांटीलौ—वि०—बिना वेतन या मजदूरी के कार्य करने वाला, बेगार में काम करने वाला। (स्त्री० चांटीली)

चांटौ, चांठौ—सं०पु०—१ देखो 'चौवटौ' (रू.भे.)

२ चपत, थप्पड़, तमाचा।

चांड—वि० [सं० चंड] बलवान, शक्तिशाली।

चांडम—सं०पु०—आभूषण (अ.मा.)

चांडाळ—देखो 'चंडाळ' (रू.भे.) उ०—बळि बंधण मूझ स्याळसिंघ बळि, प्रासै जो बीजौ परणै। कपिळ धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी चांडाळ तणै।—वेलि.

चांण—सं०स्त्री०—एक देवी का नाम।

चांणक—सं०पु० [सं० चाणक्य] १ चंद्रगुप्त मौर्य्य का महामात्य, चाणक्य, कौटिल्य (ऐतिहासिक)

स्त्री०—चिंता (बां.दा.)

चांणचक्य—क्रि०वि०—अचानक, अकस्मात्, यकायक।

सं०पु०—देखो 'चांणक' (रू.भे.)

चांणक्य—देखो 'चाणक'।

चांणुर, चांणूर—सं०पु०—एक राक्षस का नाम जो कंस के दरबार में मल्लयुद्ध में विशेषता रखने के कारण रक्खा गया था और श्रीकृष्ण द्वारा इसका वध किया गया था।

उ०—किलम सिलहबंध खांडू जस कर । प्रचंड किसन चाणूर तणी पर ।—सू.प्र.

चांतरणी, चांतरबौ—क्रि०अ०—पीछे हटना ।

उ०—जीव ऊपर हटा फिरै तिण में पग चांतरै नहीं पूठ फेरै नहीं । —रा.सा.सं.

चांतरौ—देखो 'चवूतरौ' (रू.भे.) उ०—खांख मांयलो मटिया थैलो चांतरा माथै धरयौ ।—विजयदांन देथौ

चांद—सं०पु० [सं० चंद्र, चंद्रक] १ चंद्रमा, शशि ।

मुहा०—चांद चढ़णौ—चंद्रमा निकल आना, भाग्य चमकना. २ चांद ढळणौ—रात्रि का व्यतीत होना, अवनति होना. २ चांद माथै कुंडळ बैठणौ—बदली पर प्रकाश पड़ने के कारण चंद्रमा के चारों ओर एक वृत्त या घेरा सा बन जाना. ४ चांद माथै (कांनी) थूकणौ—निर्दोष पर कलंक लगाना, मूर्खता करना, दूसरे को इस प्रकार कलंकित करना कि उसका कुछ न हो और अपने को स्वयं कलंकित होना पड़े. ५ चांद रौ टुकड़ौ—अत्यन्त खूबसूरत. ६ चांद सो मुखड़ौ—बहुत सुंदर मुख. ७ चार चांद लगणा—बढ़ना, शोभा का अधिक होना. ८ चार चांद लगाणा—चौगुणी इज्जत करना, सौन्दर्य अत्यन्त बढ़ा देना ।

कहा०—१ चांद गरण गिंडकां नै भारी ह—चंद्रग्रहण पर कुत्तों को अधिक कष्ट होता है । इसका कारण यह है कि ग्रहण के समय याचक मांगने के लिये गलियों में निकलते हैं जिन्हें देख कर कुत्ते भोंकते रहते हैं । जानबूझ कर बेकार में दूसरों के कारण कष्ट सहने पर. २ चांद पचासां मूआ जिवावै—चंद्र ग्रह की दशा अत्यन्त शुभ मानी जाती है । आई हुई घोर आपत्ति भी इसके प्रभाव से टल जाती है । यह पचास दिन तक रहती है । (ज्यो०) ३ चोर-चोर कठैई जावौ चांद तौ ऊपर रैही—चोर कहीं जाय, चंद्रमा तो ऊपर ही रहेगा; ईश्वर सब के कार्य देखता है । किसी की सुविधा या असुविधा से विधि या प्रकृति का क्रम नहीं बदलता । प्रकृति का क्रम तो नियति के अनुसार ही चलता है । ४ चांद रे डावै वळ—देखो कहा० ७ । ५ चांद वळू व्है तौ तारा भख मारै—चंद्रमा अनुकूल हो तो अन्य नक्षत्रों का प्रभाव कोई महत्व नहीं रखता (ज्यो०) । किसी बड़े व्यक्ति का सहारा मिल जाने पर छोटे-मोटे व्यक्तियों के सहारे की आवश्यकता नहीं रहती. ६ चूलै रौ चांद नै हांडी रौ हमीर—अकर्मण्य और खाने में अधिक. पेटू के प्रति । ऐसे व्यक्ति के प्रति जो प्राय: स्त्रियों के पास घर में चूल्हे के निकट ही बैठा रहता है. ७ जाइजै चांद रै डावै वळ—चंद्रमा के बायीं ओर होना । लोकोपवाद के अनुसार कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन संध्या समय कृत्तिका नक्षत्र चंद्रमा के पीछे रहता है । रात्रि व्यतीत होने पर चंद्रमा के अस्त होने के समय कृत्तिका नक्षत्र चंद्रमा के आगे होकर दाहिनी ओर हो जाय तो आने वाला वर्ष सुकाल माना जाता है और यदि वह बायीं ओर हो जाय तो आने वाला वर्ष बुरा गिना जाता है । अनुपयुक्त एवं अनुपयोगी व्यक्ति के प्रति ।

२ एक प्रकार का आभूषण जो द्वितीया के चंद्रमा के आकार का होता है. ३ ढाल के ऊपर की गोल फुलिया. ४ चांदमारी का वह काला दाग जिस पर निशाना लगाया जाता है. ५ घोड़े के शिर की एक भौंरी (शा.हो.) ६ स्त्रियों द्वारा अपनी कलाई के ऊपर गोदाया जाने वाला एक प्रकार का गोदना. ७ भालू की गर्दन के नीचे सफेद बालों का समूह. ८ मयूरपंख के बीच की चंद्रिका. ९ चंद्र के आकार का मंडल जो जल में तेल की बूंद डालने से बन जाता है ।

अल्पा०—चांदड़लौ, चांदड़ल्यौ, चांदड़ौ, चांदलउ ।

चांदड़लौ, चांदड़ल्यौ, चांदड़ौ—देखो 'चांद' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—चांदड़लौ भंवरजी चढ़ियौ गिगनार ।—लो.गी.

चांद चढ़ियौ गिरनार—सं०पु०—एक राजस्थानी लोकगीत का नाम ।

चांदछठ—सं०स्त्री०—भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी ।

वि०वि०—देखो 'ऊबछठ'

चांदणियौ—सं०पु०—प्रकाश, ज्योति (अल्पा.) उ०—चांदा थारै चांदणियै, तारां रौ तेज मोळौ रे ।—लो.गी.

चांदणी—सं०स्त्री०—चंद्रमा का प्रकाश, चांदनी ।

पर्याय०—चंद्रापत, ज्योत्स्ना, प्रकाश, हिम-प्रकाश ।

मुहा०—चार दिनां री चांदणी—थोड़े दिन रहने वाला सुख या आनन्द, क्षणिक समृद्धि ।

कहा०—च्यार दिनां री चांदणी फेर अंधारी रात—सुख के दिन थोड़े ही होते हैं, फिर दुख एवं विपत्ति तो भुगतनी ही पड़ती है. २ बारंबार चांदणी रातां को आवै नी—सुख के दिन बार-बार नहीं आते, सुअवसर सदैव नहीं मिलता ।

यौ०—चांदणी रात ।

२ पर्दानशीन स्त्रियों के बाहर निकलने पर पर्दे के लिए उन पर फैलाया जाने वाला वस्त्र ।

वि०वि०—पैदल चलते समय प्राय: यह वस्त्र ओढ़ लिया जाता है, किन्तु गाड़ी या रथ पर चलते समय इसे ऊपर फैला दिया जाता है ।

३ मकान की वह खुली छत जो किसी कमरे के बाहर निकली हुई हो. ४ गद्दे के ऊपर बिछाई जाने वाली सफेद चादर ।

उ०—ऊपरा गदरा चांदणी बिछायजै छै ।—रा.सा.सं.

५ सफेद रंग के फूलों का एक प्रकार का पौधा विशेष या इस पौधे का फूल जो रात्रि में ही खिलता है (रा.सा.सं.). ६ कपड़े से बनाया हुआ वह आवरण जो चांदी या सोने की परत चढ़ी हुई छड़ी पर चढ़ाया जाता है । उ०—ऊपर बनात री कलावूती चांदणी रूपैरी चोभां सूं खड़ी की छै ।—रा.सा.सं.

७ घोड़े व पशुओं की एक बीमारी जिसके फलस्वरूप उनका शरीर अकड़ जाता है (शा.हो.) ८ वह भैंस जिसके दोनों नेत्र सफेद हों. ९ सिर के सामने वाले भाग में सफेद टीके वाली भैंस. १० रथ के ऊपर तानने का सफेद कपड़ा ।

चांदणूं, चांदणौ–सं०पु० [सं० चंद्र] प्रकाश, ज्योति। उ०—उल्लू उर में आंण, खतम अंधारौ खुभियौ। चारूं तरफ चांदणूं, चोर सूझै चित चुभियौ।—ऊ.का.

यौ०—चांदणौ पख।

चांदणौ पख–सं०पु०यौ० [सं० चंद्रन पक्ष] चांद्रमास का शुक्ल पक्ष।

चांदतारौ–सं०पु०यौ०—चांद और तारे के आकार की बूटी या छाप का एक वस्त्र या मलमल. २ एक आभूषण विशेष।

चांदवाळा–सं०स्त्री०यौ०—कानों में पहना जाने वाला अर्द्ध चंद्राकार आकृति का एक आभूषण।

चांदमारी–सं०स्त्री०—बंदूक द्वारा निशाना लगाने का कार्य या निशाना साधने का अभ्यास।

चांदराइयण, चांदराईण, चांदरायण—देखो 'चांद्रायण' (रू.भे.)

उ०—जो मांहरी बाई चांदराईण वरत कीयौ थौ सो बांमण कोई आयौ नहीं अर दख्यणा दीधी नहीं है सो थांनै संकळप रै वासतै मांहरी बाई आपनै बुलावै है।—राजा रा गुर रा बेटा री वात

चांदळ–सं०पु० [सं० चंदिर] चांद, चंद्रमा (ना.डिं.को.)

चांदळउ—देखो 'चांद' (अल्पा. रू.भे.)

चांदळौ—देखो 'चांदळ' (रू.भे.) उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति सरद रित रै समै री पूनिम रौ चंद्रमा सोळै कळा लियां संपूरण निरमळी रैण रौ उजळौ चांदळौ रै किरण करि नै हंस नूं हंसणी देखै नहीं नै हंसणी हंस देखै नहीं छै।—रा.सा.सं.

चांदसलांम, चांदसलांमी–सं०स्त्री०—१ अमावस्या के बाद नये चंद्रोदय के समय प्रजा से वसूल किया जाने वाला कर विशेष. २ द्वितीया के चंद्रोदय के अवसर पर छोड़ी जाने वाली तोप की ध्वनि।

चांदसूरज–सं०पु०यौ०—स्त्रियों का एक प्रकार का आभूषण जो सिर पर धारण किया जाता है। उ०—ओ म्हारा चांदसूरज नणदोई सा, म्हारी बायां ने बाजू लाओ सा।—लो.गी.

चांदा–सं०स्त्री०—परमार वंश की एक शाखा।

चांदावत–सं०पु० [सं० चंद्रपुत्र] राठौड़ों की एक उपशाखा।

चांदी–सं०स्त्री०—१ एक चमकीली सफेद तथा नरम धातु जिससे प्रायः आभूषण, सिक्के और वर्तन आदि बनाये जाते हैं।

पर्याय०—खरजूर, जीवन, जीवनीय, तार, वसु, रजत, रूपौ, सुभ्र।

मुहा०—१ चांदी घड़णी—रुपया पैसा कमाना, धन प्राप्त करना, चांदी के आभूषण बनाना। २ चांदी रा जूता मारणा (लगाणा) रुपये देकर अपने वश में करना, रुपये खर्च करने को विवश करना। ३ चांदी रा जूता लागणा—अर्थ-दंड भुगतना। ४ चांदी होणी—खूब मजे होना। जखम होना, घाव पड़ना।

कहा०—चांदी रा लागोड़ा जूत घणा दिन चरचराट करै—अर्थ-दंड भुगतने से होने वाली मानसिक पीड़ा दीर्घ काल तक बनी रहती है।

२ घाव, जख्म जो मांस के ऊपरी सतह तक ही सीमित है।

क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।

३ एक प्रकार की लाल मिट्टी. ४ हुक्के या चिलम में जला हुआ नशीला पदार्थ. ५ दहीवड़ा नामक खाद्य-पदार्थ।—(मेवात अलवर) ६ अधिक पीटने से होने वाली अवस्था. ७ अपने मान-सम्मान की रक्षार्थ निर्बल व्यक्ति का आततायी के विरुद्ध अपने शरीर पर जख्म कर लोहू निकाल देने की क्रिया (एक प्रकार का सत्याग्रह)

क्रि०प्र०—करणी।

चांदू–सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चांदोड़ी–सं०पु०—महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (मेवाड़) के समय में प्रचलित एक मेवाड़ी सिक्का (मेवाड़)

चांदौ, चांद्यौ–सं०पु०—१ चंद्रमा. उ०—१ चांदा थारै चांदणियै, तारां री तेज मोळी रे।—लो.गी. उ०—२ चांद्या तेरी चकमक रात जी, कोई नणद भोजाई पांणी नीसरी।—लो.गी.

अल्पा०—चांद्यौ।

२ दूरदर्शक यंत्र लगाने का लक्ष्य-स्थान. ३ चांदावत शाखा का राठौड़ क्षत्रिय व्यक्ति. ४ भूमि के नाप में वह विशेष स्थान जिसकी दूरी को लेकर हदबंदी की जाती है।

५ कच्चे फूस के छाजन या खपरैल आदि के मकान के आजू-बाजू की दीवार का ऊंचा उठा हुआ हिस्सा जिस पर बेंडरी रहती है।

६ रेखा गणित का एक उपकरण।

चांदोरांणौ–सं०पु०—लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।

चांद्र–सं०पु०—१ चांद्रायण व्रत. २ चंद्रकान्त मणि।

वि०—चंद्रमा सम्बन्धी।

चांद्रमसायण–सं०पु० [सं० चांद्रमस+अयन=चांद्रमसायन] बुध ग्रह।

चांद्रमांण–सं०पु० [सं० चांद्रमान] चन्द्रमा की गति के अनुसार निर्धारित किया जाने वाला काल का परिमाण।

चांद्रमास–सं०पु०यौ० [सं०] चन्द्रमा की गति के अनुसार होने वाले मास।

चांद्रवरती, चांद्रव्रतिक–वि०—चन्द्रायण व्रत करने वाला।

सं०पु०—राजा।

चांद्रायण–सं०पु० [सं०] १ पूर्ण मास भर का एक कठिन व्रत जिसमें चन्द्रमा की कलाओं के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार में भी घटा-बढ़ी की जाती है. २. ११ और १० के विराम पर प्रत्येक चरण में २१ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें पहिले विराम पर जगण ।ऽ। और दूसरे पर रगण ऽ।ऽ होता है।

रू०भे०—चंदरायण, चांदराइयण, चांदराइण, चांदरायण।

चांद्रिणु—देखो 'चांनणौ' (रू.भे.)

चांनणछठ–सं०स्त्री०—भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी।

वि०वि०—देखो 'ऊब छठ'

चांनणियौ–सं०पु०—देखो 'चांनणौ' (अल्पा.) उ०—दिवलौ उजाळौ लागो जेझ, चांदा रै चांनणियै लिख दौ ओळवा।—लो.गी.

चांनणौ—देखो 'चांदणौ' (रू.भे.)

यौ०—चांनणी रात ।

चांनणी–सं०पु०—प्रकाश, उजाला । उ०—पंडत और मसालची, दोऊं उलटी रीत, और दिखावै चांनणौ, आप अंधेरै बीच ।
—दादूदयाळ

मुहा०—१ घर रौ चांनणौ—घर का उजाला, कुलदीपक, परिवार की इज्जत बढ़ाने वाला, संतान. २ चांनणौ करणौ—कोई महत्वपूर्ण कार्य करना ।

कहा०—आपरी आंखियां चांनणौ है—आपकी आंखों ही प्रकाश है । किसी व्यक्ति विशेष पर पूर्ण निर्भर रहने पर उस व्यक्ति के प्रति कही जाने वाली कहावत ।

रू०भे०—चांदणौ ।

यौ०—चांनणौ पख ।

अल्पा०—चांनणियौ ।

चांनणौ पख–सं०पु०यौ० [सं० चंद्रपक्ष] चंद्र मास का शुक्ल पक्ष ।

चांनमारी—देखो 'चांदमारी' (रू.भे.)

चांनवाळ—देखो 'चांद्रवाळ' (रू.भे.)

चांनी–स०स्त्री०—१ सोने चांदी के गहनों पर जाली की खुदाई करने का लोहे का कीला विशेष । २ देखो 'चांदी' (रू.भे.)

चांप–सं०पु०—१ चंपा का वृक्ष. २ देखो 'चांपावत' (रू.भे.)

चांपणी–सं०स्त्री०—१ पैर दबाने की क्रिया. २ डर, भय ।

चांपणौ–सं०पु०—घोड़े की एक जाति विशेष ।

चांपणौ, चांपबौ–क्रि०स०अ०—१ अधिकार में करना, कब्जे में करना । उ०—ले परगह सह आप री, चढियो 'खींवकरन्न' । 'करन' हरां पुर चांपिया, उर कांपिया जवन्न ।—रा.रू.

२ पैर दबाना, चरण चांपना । उ०—१ जग जाडा जूंझार, अकबर पग चांपै अधिप । गउ राखण गुंजार, पिंड में रांण प्रतापसी ।
—दुरसौ आढो

उ०—२ हे सखी कंकांणी हैंकरी स्रो पगां री मांस खावै है तिणनै तौ कहै आ म्हारै पती रा चरण चांपै छै ।—वी.स.टी.

३ कुचलना. ४ किसी के द्वारा कोई किसी गुप्त या भड़काने वाली कही गई बात या अपनी ओर से किसी असत्य या भड़काने वाली बात को दूसरे संबंधित व्यक्ति को भड़काने के उद्देश्य से कह देना ।

५ डराना, भय खाना, भयभीत होना । उ०—एवही भूमि विखम मइं चांपी, खाडा प्रांणइ लोधी । देवगिरि जे राउत रांमदे, तणइ बेटी दीधी ।—कां.दे.प्र.

६ क्रोध करना । उ०—कहर भड़ै चकमक चखां, चांपिया नाग कळ ।—अरजुणसिंघ चूंडावत रौ गीत

७ जाग्रत होना, चेतन होना. ८ गिरना. ९ लज्जित होना. १० दबना, भींचा जाना ।

चांपणहार, हारौ (हारी), चांपणियौ—वि० ।

चांपवाड़णौ, चांपवाड़बौ, चांपवाड़णौ, चांपवाड़बौ, चांपवावणौ, चांपवावबौ—प्रे०रू० ।

चांपाड़णौ, चांपाड़बौ, चांपाणौ, चांपाबौ, चांपावणौ, चांपावबौ
—क्रि०स० ।

चांपिओड़ौ, चांपियोड़ौ, चांप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चांपीजणौ, चांपीजबौ—कर्म वा० ।

चंपणौ, चंपबौ—अक० रू०, रू०भे० ।

चांपर–वि०—१ दृढ़, पक्का. २ तैयार, कटिबद्ध । उ०—घोड़ा सवार ए हिज घणां, चांपर कर सागै चड़ण । मैं चढे पीठ डाला मथै, लें हाला आई लड़ण ।—मे.म.

चांपलौ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चांपा–सं०स्त्री०—१ देववृक्ष (अ.मा.) २ राठौड़ वंश के राजपूतों की एक शाखा जो राव चांपा से आरंभ हुई मानी जाती है ।

चांपाणौ, चांपाबौ–क्रि०स०—१ अधिकार में करने को प्रेरित करना, कब्जे में कराना. २ पैर दबवाना. ३ डराना. ४ क्रोध दिलाना. ५ जाग्रत करना. ६ गिरना. ७ कुचलाना. ८ लज्जित करना. ९ दबाना, भींचना ।

चांपाधिप–सं०पु०—दानवीर राजा कर्ण (ह.नां.)

चांपायोड़ौ–भू०का०कृ०—चांपने की क्रिया कराया हुआ, देखो 'चांपणौ'
स्त्री०—चांपायोड़ी ।

चांपावणौ, चांपावबौ —देखो 'चांपाणौ' (रू.भे.)

चांपावत–सं०पु०—राठौड़ राव चांपा के वंशज राठौड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

चांपावियोड़ौ—देखो 'चांपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० चांपावियोड़ी)

चांपियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ अधिकार में किया हुआ. २ पैर दबाया हुआ. ३ भयभीत हुआ हुआ. ४ क्रोध किया हुआ. ५ जाग्रत हुआ हुआ. ६ गिरा हुआ. ७ कुचला हुआ. ८ दबाया हुआ, भींचा हुआ. ९ लज्जित । (स्त्री० चांपियोड़ी)

चांपेयक–सं०पु०—चंपा वृक्ष (नां.मा.)

चांपौ–सं०पु०—१ चांपावत राजपूत. २ देव वृक्ष, चंपा. ३ चरने जाने वाली गायों का समूह । उ०—चतुरां क्यूं ऊंडी चिंता चांपा री, आछी ईसुर री भूंडी आपां री ।—ऊ.का.

चांपौ फूल–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा ।

चांव–सं०स्त्री०—देखो 'चांम' (रू.भे.)

चांवड़, चांवडउ, चांवड़ौ–सं०पु० [सं० चर्मन्] खाल, चमड़ी ।
अल्पा०—चांवड़ी ।

चांवर–सं०पु०—एक प्रकार का घास ।

चांवळ—देखो 'चंवळ (रू.भे.) उ०—रांमसिंघ बीकावत । संमत १६८६ प्रथीराज बलुवोत रै कांम आयौ । पठांण री बेड चांवळ नंदी ऊपर हुई तठै ।—नैणसी

चांवली, चांवलीरा, चांवलीरास, चांवलीराह–सं०स्त्री०—चमड़े या खाल की बनी चपटी रस्सी ।

चांवोचांव–सं०पु०—संपूर्ण खेत, पूरा खेत।

चांवौ–सं०पु० [सं० चर्म] खाल, चमड़ा। उ०—उपाड़ नै आला चांवां मांहे बांध नै गाडे मांहीं घातियौ।—नैणसी

चांमंड—देखो 'चांमुंड' (रू.भे.)

चांमंधर–सं०पु० [सं० चर्मधर] शिव, महादेव।

चांम–सं०स्त्री० १ खेत में जमीन जोतने के लिये हल से खींची जाने वाली गहरी रेखा, सीता. [सं० चर्म] २ चर्म, चमड़ी, खाल, त्वचा।

उ०—मुख में आळौ चांम काढ़ नाखौ ने दूरी, स्वाद वाद बकवाद कपट करवा ने सूती।—सगरांम

कहा०—१ चांम नै चांम को पुगै नी—कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य के बराबर नहीं हो सकता; सब मनुष्य समान नहीं होते। २ चांम प्यारौ नहीं दांम प्यारौ है—चमड़ा अर्थात् मनुष्य प्यारा नहीं, धन प्यारा है। धन का लोभी घर में आई हुई वधू को महत्व नहीं देता, उसे तो दहेज में प्राप्त धन ही अच्छा लगता है। धनलोलुप के प्रति. ३ चांम रौ कांई प्यारौ, कांम प्यारौ—कामचोर व्यक्ति किसी को अच्छा नहीं लगता चाहे वह कितना ही सुंदर एवं निकट सम्बन्धी ही क्यों न हो।

रू०भे०—चांव।

मह०—चांमड।

चांमकस, चांमवस–सं०पु०—एक प्रकार का भूमि पर छितराने वाला पौधा जो पुष्टि के लिए घोट कर पीया जाता है।

चांमड़—देखो 'चांम' (मह. रू.भे.)

चांमड़पोस—देखो 'चमड़पोस' (रू.भे.)

चांमड़ियाळ–सं०पु०—मुसलमान, यवन। उ०—आवट सेन हुए साहआलम, पट हत पील पठांण पड़ै। आडौ रांण तणौ भड़ ऊभौ, चांमड़ियाळ न दुरंग चडै।—अज्ञात

चांमड़ी–सं०स्त्री०- चमड़ी, चर्म, खाल, त्वचा। उ०—हरसा वीर म्हारा रे। मारूंगी वादस्या नै गळ घोट। जांमण का रै जाया, भूरां कटवांवूं रे थारी चांमड़ी।—लो.गी.

मुहा०—१ चांमड़ी में लूण भरणौ—अधिक कड़ी सजा देना, असाध्य पीड़ा पहुँचाना. २ चांमड़ी उतारणी—अधिक पीटना. ३ चांमड़ी तोड़णी—अधिक पीटना।

कहा०—जीवती चांमड़ी रा सौ लागू है—जीते जी के सब पीछे लगे रहते हैं और अपना स्वार्थ पूरा करते रहते हैं। मरने पर परिवार के सदस्यों को कोई सहायता के लिए नहीं पूछता। मनुष्य के जीवन में सैकड़ों दुख लगे रहते हैं।

चांमड़ौ–सं०पु० [सं० चर्म+रा०प्र०ड़ौ] देखो 'चांम' (रू.भे.)

चांमचोर–सं०पु०—व्यभिचारी, दुराचारी व्यक्ति।

उ०- मूरख मलीन महा हरांमी हरांमखोर, चोर चांमचोर चाह चाहना न चाही तें।—ऊ.का.

चांमचोरी–सं०स्त्री०—व्यभिचार, पर-स्त्री-गमन।

चांमटी, चांमठी–सं०स्त्री० [सं० चर्म+यष्टि] चाबुक।

उ०—सुकव आवियां नजर मेलाय भटकै सदा, कसर सुं चलै मछरां कराता। अदावां वसर वण लगै नह आंमटी, तुरी वण चांमटी न हुँ ताता।—पीरदांन आढ़ौ

कहा०—माठा रै लागै चांमठी, ताता रै लागै घाव—हल या गाड़ी का जो बैल धीरे चलता है उसके चाबुक की मार पड़ती है तथा तेज चलने वाले के हलकी हलवाणी से लग कर घाव होने का भय रहता है। अति सर्वत्र वर्जयेत।

चांमणी–सं०स्त्री०—आंख (डिं.को.)

चांमर—१ देखो 'चंवर' (रू.भे.) उ०—चडी त्रिकळसइ सांतल बइसइ, बिहुं पखि चांमर ढालइ। कटक मांहि सिंघासणि वइठउ, पातिसाह निहाळइ।—कां.दे.प्र.

२ प्रत्येक चरण में एक गुरु, एक लघु—इस क्रम से १५ वर्ण का एक वर्णिक छंद। मतान्तर से यह क्रमशः रगण, जगण, रगण जगण, एवं रगण से १५ वर्णों का वर्णिक छंद होता है।

३ पूंछ। उ०—डकर करै अग्राजियौ, चांमर सीस चढ़ाय। घेंघींगर करतौ घसां, घसियौ जळ में जाय।—गजउद्धार

चांमरआळ, चांमरयाळ, चांमरिआळ, चांमरियाळ–सं०पु०—१ मुसलमान, यवन। उ०—१ इंद्र धरा व्रज ऊपरै, ज्यां पैले जळ जाळ। घर हिंदू सुर पीड़वा, आया चांमरआळ।—रा.रू. उ०—२ वेढ़ नत्रीठा वज्जिया, दोय पोहर दाढ़ाळ। 'भांण' भले रिण भांजिया, चौड़ै चांमरयाळ।—रा.रू.

२ देखो 'चांमरी' (रू.भे.)

रू०भे०—चांमड़ियाळ, चांमरीयाळ।

चांमरियौ–सं०पु०—चमड़े का कार्य करने वाला, चर्मकार।

उ०—यूं माहोमांह भाखंतां मुंहगै मोद, चांमरिया छपरां में डेरौ चांपियौ।—अज्ञात

चांमरी–सं०पु० [सं० चामरिन्] घोड़ा, अश्व (डिं.को.)

वि०—चंवर जैसी, चंवर से संबन्धित। उ०—चोवड़ी धूव रा चांमरी पूंछ रा, निमंसी नळी रा।—रा.सा.सं.

चांमरीयाळ—देखो 'चांमरियाळ' (रू.भे.) उ०—वड वाहां देखौ मुकनावत, ए दहुं मारग न छेलै आळ। चांमरियाळ घास मुख चीनौ, मरगण डाळ न लाभै माल।—रुगी मुंहतौ वालरवा वाळौ

चांमरौ—देखो 'चंवर' (रू.भे.)

चांमळ—देखो 'चंवळ' (रू.भे.) उ०—समहर वळवंत वाहतां असमर, छूटा फिरंग दळां रतछोळ। रातौ देख अचंभ रतनाकर, चांमळ किम कीधौ रंग चोळ।—हाडा वळवंतसिंह रौ गीत

चांमस–सं०पु० [फा० चश्म] १ नेत्र. २ चश्मा, ऐनक।

चांमाचेड़, चांमाचेड—देखो 'चमचेड़' (रू.भे.)

चांमाळीसौ, चांमाळौ–सं०पु०—४४ वां वर्ष।

चांमासौ–सं०पु० [सं० चतुर्मास] वर्षा ऋतु के चार मास।

चांमिकर—देखो 'चांमीकर' (रू.भे.) उ०—सत्यां न जग सह

सुंदरयां, नह जग हुवै न सूर। चमकै सह नह चांमिकर, सह रत रंग न सिंदूर।—रेवतसिंह भाटी

चांमी-सं०स्त्री०—लाल मिट्टी।

चांमीकर, चांमीर-सं०पु० [सं० चामीकर] १ स्वर्ण, सोना (ह.नां.)
उ०—१ चरणे चांमीकर तणा चंदाणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि.
उ०—२ जगा जोत आदीत री जोत ओपै, उभै हीर चांमीर में संग ओपै।—सू.प्र.
२ धतूरा।
रू०भे०—चांमिकर।

चांमुंड, चांमुंडा-स०स्त्री० [सं० चामुण्डा] १ एक देवी का नाम जिसने शुंभ-निशुंभ व चंड-मुंड नामक दो दैत्यों का संहार किया था।
उ०—देवी मात जनिसुरी ब्रह्म मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा।
—देवि.
२ चौसठ योगिनियों के अंतर्गत इकसठवीं योगिनी. ३ गिरिजा, पार्वती।
रू०भे०—चाउंड, चाउंडा, चांवंडा।

चांमुंडानंदन-सं०पु०—भैरव (डि.को.)

चांमोदर-सं०पु०—आटा आदि भरने का चमड़े का बड़ा थैला।
उ०—खल्या खेसलिया भाखलिया खांधै, वेभड़ दांमोदर चांमोदर वांधै।—ऊ.का.

चांय-सं०स्त्री०—एक रोग विशेष जिसमें दाढी, मूंछ, सिर आदि के बाल उड़ जाते हैं।

चांयलौ-सं०पु०—एक रोग विशेष जिसमें दाढ़ी-मूंछ व सिर आदि के बाल उड़ जाते हैं और फिर नहीं उगते। इन्द्रलुप्त (अमरत)
वि०—जिसके बाल उड़ गये हों।

चांवटौ—देखो 'चौवटौ' (रू.भे.) उ०—बाई ऐ मांमाजी आया है चांवटै। बाई ऐ लीवा है परा रे बधाय, मोहरौ मूंहगा मोल रौ।
—लो.गी.

चांवळ-सं०पु०—१ देखो 'चावळ' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—२ चंबल नदी।
वि०—उज्वल, श्वेत॥ (डि.को.)

चांवली राह—देखो 'चांवली राह' (रू.भे.)

चा-सं०पु०—१ कनौजिया ब्राह्मण. २ कार्य।
सं०स्त्री०—३ कन्या. ४ द्रौपदी. ५ अग्नि (एकाक्षरी). ६ देखो 'चाय' (रू.भे.)
अव्यय—के। उ०—हुइ हरख घणौं सिसुपाळ हालियौ ग्रंथे गायौ जेणि गति। कुंण जांणौं संगि हुआ केतला, देस देस चा देसपति।
—वेलि.

चाअणौ, चाअबौ, चा'णौ, चा'बौ—१ देखो 'चाहणौ' (रू.भे.)
२ देखो 'चबाणौ' 'चावणौ' (रू.भे.)

चाअरौ-सं०पु०—चौपाया पशु।

चाइ-सं०स्त्री०—१ चाह, लगन। उ०—सखिये साहिब अविया, जांह की हूंती चाइ। हियड़उ हेमांगिर भयउ, तन पंजरे न माइ।—ढो.मा.
२ प्रकार, तरह। उ०—सुणि एकलि पखे सकळ, कळ छावीस कहाइ। इळि जस 'लाखै' रौ अमर, चमर छंद इणि चाइ।—ल.पिं.

चाइजे, चाइजै-अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है। 'विधि' सूचित करने के लिये यह शब्द क्रियाओं के साथ भी लगता है।
रू०भे०—चइजै, चईजै, चहियै, चाइजै, चाइयै।

चाईजै—देखो 'चाहियै' (रू.भे.)

चाउंड, चाउंडा—देखो 'चांमुंडा' (रू.भे.) उ०—चाउंड वसाउ ताजी सचेउ, हइ जास खेच वांसइ हरेउ।—रा.ज.सी.

चाउड़ा—देखो 'चावड़ा' (रू.भे.)

चाउर—१ देखो 'चावर' (रू.भे.) उ०—कांकळ प्रगळ वाहणी काढ़ै, महपत सबळ घणां दळ मांण। सत्रहर डगळ किया सह सूधा, दळ चाउर फेरै दईवांण।—बरजूबाई
२ देखो 'चावळ' (रू.भे.)

चाउळ—देखो 'चावल' (रू.भे.) उ०—लाख लाख साहणा नी वाट, दस दस सहस दीवांणी हाट। लाभइ चाउळ मूंग नइ लूण, आटा गुळ घी खाइ कूण।—कां.दे.प्र.

चाऊ-वि०—१ शुभचिंतक. २ चाहने वाला, चाहक, प्रेमी।
उ०—सालुळै रौद रौळा सरू, धणी चाऊ अधीयांवणा।
—वखतौ खिड़ियौ
३ खूब उत्तम व गरिष्ठ पदार्थ खाने का इच्छुक, भोजन-लोलुप.
४ रिश्वतखोर (व्यंग्य) (मि. खाऊ)

चाओड़ा—देखो 'चावड़ा' (रू.भे.)

चाक-सं०स्त्री० [सं० चक्र] १ पहियेनुमा गोल मंडलाकार पत्थर या चिकनी मिट्टी को पथरा कर बनाया हुआ मोटा गोल चक्र जिसे घुमा-घुमा कर कुम्हार मिट्टी के वर्तन उतारता है। उ०—कुळ मांहीं कुम्हार, माटी रा मेळा करै। चाक उतारणहार, नवौ घड़ीदे नागजी।
—र.रा.
मुहा०—१ चाक चढ़णौ—किंकर्तव्यमूढ़ होना. २ चाक चढ़ाणौ—असमंजस में डालना, किंकर्तव्यमूढ़ करना, उत्तेजित करना।
२ चरखी, गिराड़ी, चकरी. ३ चक्की. ४ छुरी, चाकू, कटार आदि की धार तेज करने की सान. ५ वह मिट्टी की जमाई हुई लोथ या पिंडी जो ढेकली के पिछले छोर पर बोझ के लिये बांधी जाती है. ६ खरिया मिट्टी. ७ तृप्तता, पूर्ण अघाने का भाव।
८ प्रत्यञ्चा चढ़ाने का भाव या क्रिया. ९ सेना (डि.को.)
[अं०] १० खरिया मिट्टी की बनी सिगरेटनुमा वस्तु जिससे अध्यापक छात्रों के सम्मुख श्याम पट्ट पर लिखते हैं।
अल्पा०—चाकड़ली।
सं०पु०—११ पहिया, चक्का. १२ वात-चक्र, ववंडर।

उ०—चौगड़द धोम रज डमर चाक, वीछटिया मेळा चक्रवाक।
—सू.प्र.

वि०—१ तैयार। उ०—हुसनाकां तरकसां सूं मैंण कपड़ री खोळी उतारि लीधी छै, कवांण चाक कीजै छै।—रा.सा.सं.

२ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। उ०—१ राजा रा बेटा नै मोसूं मूंढै बोलिया नै चार मास हुवा, न जांणीजै देही चाक छै कै न छै।
—सेठ री वात

उ०—२ हिवै नागजी दिन दिन डील में गळतौ जावै। सु सारां मुलकां रा वैद बुलाया पिण नागजी चाक न हुवै।
—नागजी नागवंती री वात

३ पूर्ण रूप से तैयार, सुसज्जित। उ०—चौड़े झांपता विडंगां ताता बोलता जरद्दां चाक, बाजतां सिरमी पांनां होतां रनां बाट। उडंतां वंदूकां आग जागता छड़ा(ळा) अणी, नगारा धुवंतां आयौ अछायौ निराट।—बगसी खिड़ियौ

४ पूर्ण आघाया हुआ, तृप्त।

उ०—१ मनुहारां हुवै छै, देसीत आरोगै छै, अमलां चाक हुयजै छै।
—रा.सा.सं.

उ०—२ जोगेसर कह्यौ अबार तीजै पोहर रोटी खाई छी सो गाढौ चाकां छूं।—जगमाल मालावत री वात

चाकड़ली—देखो 'चाक' (अल्पा. रू.भे.)

चाकणौ, चाकबौ—देखो 'चाखणौ' (रू.भे.)

चाकर—सं०पु० [फा०] (स्त्री० चाकरण, चाकरणी, चाकरांणी) सेवक, नौकर, दास, भृत्य।

पर्याय०—अनुग, अनुचर, किंकर, खवास, खांनजाद, गुलांम, गोलौ, खास, चेट, चेर, चैंड़ौ, डिंगर, दास, नफर, निजोज, पतप्रीत, परजाल, परजीत, परपधत, परपिंडात, परभ्रत, परसकंद, पराचित, प्रईक, भुजक, भ्रत, विघकर, सेवकर।

चाकरड़ी—देखो 'चाकरी' (अल्पा. रू.भे.) उ०—१ चाकरड़ी रे मारू थारे हाळीड़े ने मेल, राय अबके रे वरसाळै म्हारा मारू घर वसौ।
—लो.गी.

उ०—२ म्हांने रे, मारू कसूंबे रौ जाभौ चास, राय थे सिधावौ रे ईडरगढ़ री चाकरी। चाकरड़ी रे मारू थांरे बाबेजी नै मेल, राय हमकै रे चौमासे, रे म्हांरा गाढ़ा मारू घर वसौ।—लो.गी.

चाकरण, चाकरणी—सं०स्त्री०—दासी, सेविका, नौकरानी।

रू०भे०—चाकरांणी।

चाकर-बांगर—सं०पु०यौ०—नौकर, सेवक, दास। उ०—वडा भील वडा सड़ा मांहे वैसाणियां आदमी ४०० चाकर-बांगर बीजा सड़ा मांहे वैसांणिया।—नैणसी

चाकरांणी—देखो 'चाकरणी' (रू.भे.)

चाकरी—सं०स्त्री०—१ सेवा, टहल, परिचर्या। उ०—महानस री मालिक होई चारण री चाकरी में चित लगाई चातुराई री रीझ चही।—वं.भा.

क्रि०प्र०—करणी, देणी, बजाणी, साजणी।

२ वेतन लेकर कार्य करने का भाव, नौकरी। उ०—दिल्ली चाकरी में दौड़ि 'जगता' 'मांन' जाया। नागांणा ठिकांणा बादिसाहां सें लिखाया।—शि.वं.

कहा०—चाकरी ना कीजिए घास खोद खाइये—नौकरी करने की अपेक्षा घास खोदना अधिक अच्छा है। नौकरी की निंदा।

अल्पा०—चाकरड़ी।

चाकलियौ—सं०पु०—१ चक्की (अल्पा.) उ०—फोड़ू फोड़ूं मा चाकलिये री ए पाट। चाकलिये रौ पाट, वगड़ बखेरूं मा पीसणूं जे।—लो.गी.

२ देखो 'चाकलौ' (अल्पा. रू.भे.) ३ चक्की का पाट (अल्पा.)

४ चकला (अल्पा.)

चाकली—१ देखो 'चक्की' (अल्पा. रू.भे.) उ०—मंहदी पीसी पीसी चाकली रे पाट, पेम रस मेंहदी राचणी।—लो.गी.

२ घोड़ों का एक रोग विशेष जो उनके चारों पैरों में होता है (शा.हो.)

चाकलौ—सं०पु० [सं० चक्र+रा०प्र०लौ] प्रायः काष्ठ का बना एक गोल चक्र जिसके घेरे में रस्सी वैठाने के लिए गड्ढ़ा बना रहता है और जिस पर रस्सी या लाव डाल कर कुयें से मोट आदि द्वारा पानी निकालते हैं। (मेवात) (मि०—भूंण)

अल्पा०—चाकलियौ।

२ एक प्रकार का छोटा बिछौना. ३ देखो 'चकलौ' (अल्पा. रू.भे.)

चाकवौ—सं०पु०—१ पपीहा पक्षी. २ चकवा पक्षी।

चाकाबंध—सं०पु०—योद्धा, वीर पुरुष। उ०—हाकौ हाका ऊपड़ै वेंडाकां साम्हा खेत हक्कै, छाकां सूर लोहां वोहां दुरद्दां विछोड़। डाकां वागां उजाळै जोधांण जोध धोळै दीह, चाकाबंध भल्ला भलौ दिखाड़ै चित्तौड़।—हरदांन भादौ

चाकी—सं०स्त्री०[सं० चक्र] आटा पीसने या दाना दलने की चक्की।

उ०—चाकी के पाट पिसावियां, महंदी ली कपड़े जी छांण, सोदागर महंदी राचणी।—लो.गी.

चाकू—सं०पु० [तु०] शाक-भाजी, फल, कलम आदि छोटी-मोटी चीजों को काटने या छीलने का औजार।

रू०भे०—चक्कू।

चाकचुगा—सं०पु०यौ०—एक प्रकार का शस्त्र।

चाकोर—देखो 'चकोर' (रू.भे.) उ०—वर्ण कोकिला मोर चाकोर वांणी, सुकं सारिकायं सुवायं सुहांणी।—रा.रू.

(स्त्री० चाकोरी)

चाकौ—सं०पु० [सं० चक्र] १ रहट का वह कंगूरेदार चक्र जिसके धक्के से दूसरा कंगूरेदार चक्र घूमता है, रहट का मूल चक्र।

चाख—सं०स्त्री०—१ व्यसन, दुर्व्यसन।

[सं० चक्षु] २ दृष्टिकोण, नजर, दीठी।

चाखड़, चाखड़ा, चाखड़ी—सं०स्त्री०—१ हड्डी टूटने पर उसे पुनः जोड़ने के लिए उस पर बांधी जाने वाली बांस की खपच्ची।

२ महाऊ। उ०—आखियो जिती घर ओयण थायो इळा, सुभोजन चाखियो थाळ साथे। तांत्र पत्र ढाकियो चाखड़ां थांन तळ, हतेरण राखियो आप हाथे।—खेतसी बारहठ

३ लकड़ी का वह विशेष उपकरण जो चक्की के ऊपर रहने वाले पाट के मध्य के छेद में लगा रहता है। यह चक्की की कील पर रह कर पाट को घुमाने में सहायक होता है. ४ मवेशियों के मुंह में हाथ डालने के लिए हाथ की सुरक्षा के लिए बना लकड़ी का उपकरण. ५ दही मथने के निमित्त मथदंड के नीचे के भाग में लगाया जाने वाला काष्ठ का एक उपकरण. ६ सेना।

उ०—चढ़ै रण चाखड़ी सांमहो चालियो, भूंभतै भलो रायसिंग तैं भाळियो।—हा.झा.

महत्व०—चाखड़।

चाखणो, चाखबो–क्रि०स० [सं० चष] १ चखना, स्वाद लेना, आस्वादन करना. २ स्वाद की अनुभूति के लिए वस्तु का अंश जीभ पर रखना।

चाखणहार, हारौ (हारी), चाखणियो—वि०।

चाखिओड़ो, चाखियोड़ो, चाख्योड़ो—भू०का०कृ०।

चाखीजणो, चाखीजबो—क्रि० कर्म वा०।

चखणो, चखबो—रू०भे०।

चाखाळ–सं०पु०—खून, रक्त, लहू।

चाखियोड़ो–भू०का०कृ०—चखा हुआ। (स्त्री० चाखियोड़ी)

चागी–सं०स्त्री०—नकल, अनुकरण।

चाड़–वि०—चुगलखोर। उ०— ऐ दूहा म्हैं आखिया, रस नीत रा रहाड़। सभा भरी मंभ सांभळे, चिड़ै जिको हिज चाड़।—बां.दा.

देखो 'चाड़ी' (रू.भे.)

चाड़ी–सं०स्त्री०—पीठ पीछे की जाने वाली निन्दा, चुगली।

उ०— सायब वडा सरदार, केता चुगल चाड़ी करै। हाथी गैल हजार, भुसै गिंडक रे भैरिया।—महाराजा बळवंतसिंह

चाचक–सं०पु०—राठोड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चाचगदे–सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चाचपुट–सं०पु०—ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक (संगीत)

चाचर–सं०पु०—१ मस्तक, सिर। उ०—१ गौड़ राजा अरजुनसिंघ वैरियां रा थाट विरोळि वेंडां गजां रै चाचर चंद्रहास चलाइ सैंकड़ां सूरां नूं साथि करि महारुद्र री माळा में आपरा मुंड रो मेरु चढ़ाई।

—वं.भा.

उ०—२ चरणे नहीं नमायो चाचर, जिण तिण नै ओळगै जिके।

—र.रू.

२ ललाट, भाल। उ०—विरळा दांतां री पांतां विरळाती। चोड़ै चाचर री चोड़ै चिरळाती।—ऊ.का.

३ भाग्य. ४ होली के अवसर पर फाल्गुन मास में गाया जाने वाला गीत या इस प्रकार के गीत की राग विशेष।

उ०—फागण मास वसंत रित, जे ढोलो नावेस। चाचर के मिस खेलती, होळी झंपा वेस।—ढो.मा.

५ उपद्रव. ६ हलचल, शोर-गुल।

[सं० चत्वर = प्रा० चच्चर] ७ युद्ध-स्थल, युद्ध-भूमि।

उ०—चोटियाळी कूदै चौसठि चाचरि, ध्रू ढळियै ऊकसै धड़। अनंत अनै सिसुपाळ ओभड़ै, भड़ मातो मांडियो भड़।—वेलि.

८ मैदान। उ०—प्रीतम मीर तणी घड़ पीणक, वेधक विघन तणो वीमाह। रहियो विचै खड़गहथ 'रतनो', अत मोहर रण चाचर मांह।

—दूदो

[सं० चर्चरी] ९ नगारा। उ०—हाथियां घड़ा विहंडतै हाथां, लाखां दळां विरोळ लड़। 'चांपा' हरे घुराया चाचर, चखतां बाजा हियै चड़।—विठळ गोपाळदासोत री गीत

१० सात मात्राओं की ताल. ११ देखो 'चाचरो' (रू.भे.)

चाचरि, चाचरी–सं०स्त्री० [सं० चर्चरी] १ योग की एक मुद्रा।

२ देखो 'चाचर' (रू.भे.) उ०—घण अहिरण घण घाउ, सांम्है चाचरि सात्रवां। वाहै साहै वीठलो, खांडो खांडेराउ।—वचनिका

३ देखो 'चरचरी' (रू.भे.)

चाचरे, चाचरै–क्रि०वि०—१ ऊपर, ऊंचा। उ०— हठ नाळ पैठ बाजार हाठ, प्राजळै महल चंदण कपाट। चाचरै गयण चकचूर चोट, कांगरा अंबारथ भुरज कोट।—वि.सं.

२ अत्यन्त दूर से। उ०—चाचरै हूंत मावळ सुणे, ग्रहण भीड़ मेटण धणी। काळमी चढ़ै ऊपर करण, धांधलोत आवो धणी।

—पा.प्र.

चाचरो—१ देखो 'चाचर' (रू.भे.) उ०—१ कांमठां सूं तीर छूटिया मुंह आगे आंण-आंण पड़ण लागिया। तद भूंडण चाचरो ऊपर उठाय नै सांम्हे दीठो।—डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—२ हाथियां रै जुद्ध रै समै कपोळ सांमै चाचरै जुद्ध री ढाल बंधै है।—वी.स.टी.

स०पु०—२ स्त्रियों की जननेंद्रिय, भग, योनि।

चाचेरा–सं०पु०—१ चौहान वंश की एक उपशाखा. २ पिता के छोटे भाई के वंशज, चचेरा। (मि० काकाई)

चाचो–सं०पु०—पिता का छोटा भाई, काका। (स्त्री० चाची)

चाट–सं०स्त्री०—१ किसी वस्तु के उपभोग का चसका।

उ०—१ निज थाट खोय फीटा निलज, साट न बूझै सार री। आठवाठ भागे अकल, चाट लगे विभचार री।—ऊ.का.

उ०—२ अजहुं न आयो कंवर नंद को, प्यारी लागी चाट। छांड गयो मझधार सांवरो, बिना अकल री जाट।—मीरां

क्रि०प्र०—पड़णी, लगाणी, लागणी, होणी।

२ प्रबल इच्छा, कड़ी चाह।

क्रि०प्र०—लागणी, होणी।

३ आदत, टेव, लत. ४ मिर्च-मसाला व खटाई आदि डाल कर बनाई हुई तीक्ष्ण या चरपरे स्वाद की वस्तु. ५ बड़ी शिला, चट्टान।

चाटकाणी, चाटकावौ–क्रि०स०—तेज गति से घोड़े आदि को भगाने के लिए चाबुक लगाना, तेज गति से भगाना। उ०—चेवह वांटी चेभड़ा, एकल दात्रड़ियाळ। कांनां सुण 'वूढै' कमंद, चाटकाया चंचाळ।—पा.प्र.

चाटकायोड़ौ–भू०का०कृ०—तेज भगाया हुआ। (स्त्री० चाटकायोड़ी)

चाटकावणौ, चाटकावबौ—देखो 'चाटकाणौ' (रू.भे.)

चाटकावियोड़ौ—देखो 'चाटकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चाटकावियोड़ी)

चाट री टांगड़ी–सं०स्त्री०यौ०—कुश्ती का एक दाव।

चाटकौ–सं०पु०—१ शोधन के समय किसी पदार्थ से पृथक किया जाने वाला पदार्थ. २ चाबुक या बेंत का प्रहार।

वि०—१ जिव्हा-लोलुप. २ चालाक, धूर्त।

चाटण–सं०स्त्री०—१ चाटने या खाने के योग्य वस्तु. २ चरपरे स्वाद की वस्तु।

वि०—चाट खाने का शौकीन, चटोरा।

चाटणौ, चाटबौ–क्रि०स०—१ किसी खाद्य पदार्थ को जीभ से चाट-चाट कर खाना, किसी रसदार या गाढ़े पदार्थ को जीभ से पोंछ-पोंछ कर खाना।

२ चट कर जाना, साफ कर जाना।

३ स्नेह या प्यार से वस्तु या प्राणी पर जीभ फेरना (पशु)

चाटणहार, हारौ (हारी), चाटणियौ—वि०।

चटवाड़णौ, चटवाड़बौ, चटवाणौ, चटवाबौ, चटवावणौ, चटवावबौ —प्रे०रू०।

चटाड़णौ, चटाड़बौ, चटाणौ, चटाबौ, चटावणौ, चटावबौ —स०रू०।

चाटिओड़ौ, चाटियोड़ौ, चाटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

चटाईजणौ, चटाईजबौ—कर्म वा०।

चाटाळ–वि०—१ वह दूध देने वाला पशु जो गिजा खाये विना दूध न देता हो. २ स्वाद का लोभी व्यक्ति. ३ रिश्वतखोर।

चाटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चाटा हुआ. २ साफ किया हुआ, चट किया हुआ। (स्त्री० चाटियोड़ी)

चाटु—देखो 'चाटू' (रू.भे.)

चाटुकार–सं०पु० [सं०] खुशामद करने वाला, झूठी प्रशंसा करने वाला, चापलूस।

चाटुकारिया–सं०स्त्री० [सं० चाटुकारिकाणी) खुशामद। (उ.र.)

चाटुकारी–सं०स्त्री० [सं० चाटुकार+रा०प्र०ई] खुशामद, चापलूसी, झूठी प्रशंसा का कार्य।

वि०—खुशामदखोर, चापलूसी करने वाला।

चाटू–सं०पु०—काठ का चम्मच।

वि० [सं० चाटु] १ खुशामदी, चापलूस. २ स्वाद या चाह का लोलुप।

चाटौ–सं०पु०—१ पशुओं को खिलाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ. २ स्वादिष्ट वस्तु।

मुहा०—चाटौ नांकणौ—लोभ देना, लालच दिखाना, रिश्वत देना।

यौ०—चांटौ-वांटौ।

चाठ—देखो 'चाट' (रू.भे.) उ०—१ पर निंदा आठूं पहर, चाटै विखरी चाठ। क्यौं नह तूं प्रांणी करै, पंच रतन री पाठ।—वां.दा.

चाठौ–सं०पु०—चकत्ता, दाग, धब्बा।

चाड–सं०स्त्री०—१ रक्षार्थ बुलाने या पुकारने की ध्वनि, पुकार।

उ०—१ नरहरि थंभ विदारियौ, सेवग हंदी चाड। हेक हाथ चूरण हुआ, हिरणाकुस रा हाड।—वां.दा.

२ त्राहि-त्राहि की पुकार, आर्तनाद। उ०—१ चहुवांणां कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय। चाड न घट्टै खूंद की, सीस पलट्टै तोय।—रा.रू. उ०—२ पहळाद समरियौ आयौ जगपति, चत्रभुज निमौ भगत री चाड। बहनांमी रै दाढ़ तणौ वळ, हरिणख तणौ जांणिसै हाड।—पीरदांन लाळस

३ रक्षा, सुरक्षा। उ०—सेवग भीम धणी धरती सम, दुथणी जायौ न कु दूओ। जमी चाड अवगाढ़ 'अजीता', हमकै डाढ़ वाराह हुओ।—किसनौ आढौ

४ सहायता, मदद। उ०—भाई चाड करण रिण भिड़तै, अर साझै खागां अमळ। चरण विना लोटै घट चौरंग, कर विन घट घट विन कमळ।—द.दा.

५ वमन, कै. ६ उन्नति, बढ़ने का भाव. ७ युद्ध, लड़ाई।

उ०—आदू चाडां आगळा, गुणी पयंपै गीत। राठौड़ां कुळ वट्टड़ां, 'पत्तौ' रखण प्रवीत।—किसोरदांन बारहठ

८ घोड़े के नाक का अगला भाग, नथुना। उ०—चुभै चित्त नासां मुड़ै वक्र चाडा। गयां संकड़ै पंथ, छै कै छ गाडा।—वं.भा.

९ चाह, इच्छा। उ०—पंखण समर वचार धरै पुर, चतुरंग वर पूरै कुण चाड। लोहां वोह लालवत लेतौ, वळ करतौ वांकौ भड़ वाढ़ —सांगा रौ गीत

१० ऊंचाव, चढ़ाई. ११ प्रयोजन, मतलब, अभिप्राय. १२ घर का भेद, रहस्य. १३ कुयें की मुंडेर का वह स्थान जहां पानी खींचने के लिए खड़े होते हैं। (मि० 'ढांणौ' १)

१४ विपत्ति। उ०—पर धड़ा वरण पर चाडां पैसण, जगत वखांणै 'चंद' जिम। खाटै खगै नवा खेड़ेचौ, करै पुरांणा वैर किम। —राठौड़ सुर्जनसिंह रौ गीत

सं०पु०—१५ चुगली करने वाला, चुगलखोर। उ०—करै चाड पर काचड़ा अठी उठी नूं ईख। पग विच हाडक परछियां, तिणसूं स्वांन सरीख।—वां.दा.

१६ रक्षक। उ०—जोध भयंकर जोधहर, अडर मुरद्धर आड। सरण छत्रधर सांप नै, वणे अकव्वर चाड।—रा.रू.

(मि० 'चाड़' रू.भे.)

चाडणौ, चाडवौ—१ देखो 'चढ़ाणौ' (रू.भे.)

क्रि०स० [सं० चडि] २ राज-सत्ता के विरुद्ध किसी सामंत का विद्रोह करना, विद्रोही होना. ३ कोप करना।

चाडणहार, हारौ (हारी), चाडणियौ—वि०।

चाडिग्रोड़ो, चाडियोड़ौ, चाड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चाडीजणौ, चाडीजवौ—कर्म वा०।

चडणौ, चडवौ—ग्रक० रू०।

चाडव-सं०पु० [सं० चदि याचने] कवि, काव्यकार (डि.को.)

चाडाउ-सं०स्त्री०—१ अधिक संकट या विपत्ति के समय देवी-देवता के समक्ष संकट निवारणार्थ की जाने वाली करुणायुक्त पुकार।

वि०वि०—देखो 'चरजा'।

यौ०—चाडाउ-चरजा।

२ संकट विशेष के समय लोगों को सहायतार्थ एकत्रित करने के लिये की जाने वाली ढोल की ध्वनि।

चाडापुरी-सं०स्त्री०—ग्रप्सरा, परी। उ०—जाडा थंडा जुड़ै जगजेठी, चाडापुरी भणै एक चाव। गळिया पियण गुणां रा गाडा, ग्रलवलिया लाडा रथ ग्राव।—महादांन महड़ू

चाडियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ देखो 'चढ़ायोड़ौ' (रू.भे.)

२ क्रुद्ध, कुपित. ३ विद्रोही, वागी। (स्त्री० चाडियोड़ी)

चाडौ-सं०पु०—१ बुद्धि या विचार-शक्ति का ग्रंश. २ दही मथने का बड़ा बर्तन विशेष. ३ छोटी मटकी।

चाढ़-सं०स्त्री०—१ इच्छा, ग्रभिलाषा। उ०—नायक रै विदेस गमण ग्रापरी ग्रंगना रै समांन राजपुत्रियां भी कुळ रा धरम रै ग्रनुसार पावक रा प्रवेस विनां ही उणही विदेस में वसण री चाढ़ लागी।

—वं.भा.

२ देखो 'चाड' (रू.भे.)

चाढ़कसौ-सं०पु०—१ योद्धा, वीर पुरुष. २ भील जाति का व्यक्ति।

चाढ़णौ, चाढ़वौ—१ देखो 'चढ़ाणौ' (रू.भे.) उ०—१ के मेल्हया पूगळ दिसइ, किहीं भुलाया भार। साल्हकुंवर करहइ चढ्यउ, वांसइ चाढ़ी नार।—ढो.मा. उ०—२ वेणी पवित्र करिस लिखमीवर, मसतग चाढ़े तुळसी मंजर।—ह.र. उ०—३ मोनूं पुत्र सौ वरस मझारां। पूजा वळ चाढ़ै न पमारां।—सू.प्र.

चाढ़णहार, हारौ (हारी), चाढ़णियौ—वि०।

चाढ़िग्रोड़ो, चाढ़ियोड़ौ, चाढ़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चाढ़ीजणौ, चाढ़ीजवौ—कर्म वा०।

चढ़णौ—ग्रक०रू०।

चाढ़ियोड़ौ—देखो 'चढ़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चाढियोड़ी)

चातक-सं०पु० [सं०] पपीहा पक्षी।

रू०भे०—चातग, चात्रंग, चात्रांगि, चात्रंगी, चात्रक, चात्रक्क, चात्रग, चात्रिग, चात्रिग।

चातकानंदन-सं०पु० [सं०] १ मेघ. २ वर्षाकाल।

चातग—देखो 'चातक' (रू.भे.) उ०—चहुं दिस दांमणि सघन घन, पीउ तजी तिण वार। मारू मर चातग भए, पिउ पिउ करत पुकार।—लो.गी.

चातरंग, चातर, चातरक—देखो 'चतुर' (रू.भे.) उ०—चंदण री चुटकी भली, गाडौ भलौ न काठ। चातर तो एकज भलौ, मूरख भला न साठ।—ग्रज्ञात

उ०—२ रात दिवस हाजर रहै, रस में ग्रत रूड़ीह। लख जावै दिल री लगन, चातर चतरूड़ीह।—र. हमीर

चातळ-सं०पु०—बड़ा कछुग्रा (किशनगढ़)

चाती-सं०स्त्री०—फोड़े-फुन्सी, गांठ ग्रादि पर मरहम के लेप से युक्त लगाई जाने वाली पट्टी।

वि०—चिपका रहने वाला।

मुहा०—चाती होणौ—किसी के साथ लगा रहना।

चातुक—देखो 'चातक' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

चातुरंग-सं०स्त्री०—चतुरंगिनी सेना। उ०—चमरबंध ग्रनराव थंडण मोहर, चातुरंग मतंग हवदां खतंग पाव मंडण।

—दौलजी भादो

चातुर—देखो 'चतुर' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—१ गणिका, वेश्या (ग्र.मा.) २ बुद्धि (ह.नां.)

चातुरई-सं०पु०—चतुरता।

चातुरज-सं०पु० [सं० चातुर्य्य] कपट, छल (ग्र.मा.)

चातुरजात-सं०पु०यौ० [सं० चातुर्जात] नाग केसर, इलायची, तेजपत्र व दालचीनी इन चार सुगंधित द्रव्यों का समूह। (वैद्यक)

चातुरता—देखो 'चतुरता' (रू.भे.)

चातुरदस-सं०पु० [सं० चतुर्दश] १ राक्षस. २ वह जो चतुर्दशी को उत्पन्न हो।

वि०—चौदह।

चातुरभद्रावलेह-सं०पु० [सं० चातुर्भद्रावलेह] वैद्यक के ग्रनुसार एक प्रसिद्ध ग्रवलेह।

चातुरमास, चातुरमास्य—देखो 'चतुरमास' (रू.भे.)

चातुरय—देखो 'चातुरच' (रू.भे.)

चातुराई, चातुरी-सं०स्त्री० [सं० चातुर्य्य] १ चतुराई, निपुणता।

उ०—१ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी में चित लगाई चातुराई री रीझ चही।—वं.भा.

उ०—२ उर ग्यांन भगती नीत उपजै, चातुरी लह चोज सूं। ग्रवधेस चिरतां हुवै वाकव, मिळै सदगत मोज सूं।—र.रू.

चातुरच-सं०पु०—चतुराई, दक्षता। उ०—१ ऐसी विध पंडतराज चातुरच कळा-प्रवीण त्रिलोकूं का प्रबंध ग्रनेक विध विमळ वांणी सैं उच्चरै जिनूं सैं रीझ स्री माहाराज कनक जग्योपवीत चढ़ाया।

—सू.प्र.

चात्रंग, चात्रंगि, चात्रंगी, चात्रक, चात्रक्क, चात्रग, चात्रग्ग—देखो 'चातक' (रू.भे.)   उ०—१ सांवरण आयौ सायवा, वेलां झुर रहि वाड़। चात्रंग झुरै मेघ विन, पिय बिन झुर रहि नार।—र.रा.

उ०—२ उवकंवी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस लुध्ध। ऊंची चढ़ि चात्रंगि जिउं, मागि निहाळइ मुध्ध।—ढो.मा.

उ०—३ जेण सद्द जीवंत मोर चात्रक वावीहा, तेण सद्द जीवंत सिद्ध साधक वोह दीहा।—ह.र.

उ०—४ परनाळ खाळ पहाड़ खड़कीग्रा छै। चात्रग मोर्‍वी बोलीनै रहीग्रा छै।—रा.सा सं.

उ०—५ जसवळा तरणा हाका सजोर, मिळि सनद जांणि चात्रग मोर।
—सू.प्र.

वि०—चतुर, दक्ष।   उ०—१ कागद में अत हेत कहावौ, द्रग दरसरण वेगौ दरसावौ। चात्रक मनै जीवती चावौ, आप हमैं तुरंगां खड़ आवौ।—लो.गी.

चात्रण—सं०स्त्री०—शत्रुग्रों को काटने की क्रिया, शत्रुदल का संहार।

चात्रणौ, चात्रबौ—क्रि०स०—संहार करना, मारना।   उ०—हरि समररण रस समभरण हरिरणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढ़ि।
—वेलि.

चात्रिग, चात्रिग—देखो 'चातक' (रू.भे.)   उ०—मिळि करत नाच छात्र कोहक मोर, स्रुक चात्रिग कोकिल करत सोर।—सू.प्र.

वि०—चतुर, चालाक।

चादर सं०स्त्री० [फा०] १ ओढ़ने या पलंग पर बिछाने का वस्त्र।

उ०—जावौ तोसाखांनै से एक वाफता लावौ, सो मंगाय चादर उठै हीज वैठा सिवाई।—पदमसिंह री वात

मुहा०—चादर देख नै पग पसाररणा—अपनी शक्ति के अनुसार काम करना। २ कंधे आदि पर रखने का छोटा वस्त्र।   उ०—आप आप रा घोड़ां नूं देसोत बाफता री चादरां सूं पवन कर रह्या छै।
—रा.सा.सं.

मि०—अंगोछौ।

मुहा०—चादर उताररणी—वेइज्जत करना।

३ किसी धातु का बड़ा चौखंटा, पत्तर. ४ किसी देवता या पूज्य स्थान पर चढ़ायी जाने वाली फूलों की राशि।

क्रि०प्र०—चढ़ारणी।

५ महात्मा या साधुग्रों द्वारा अपने शरीर को ढकने के लिये ओढ़ा जाने वाला कपड़ा। उ०—ग्यांनी तन गोरा ठोरमठोरा चादर में चिळकंदा है।—ऊ.का.

मुहा०—चादर ओढावरणी—चेला स्वीकार करना, चेला वनाना।

६ वेग से बहती हुई नदी या पानी के तेज प्रवाह में कहीं कहीं पर होने वाली जल की एक स्थिति विशेष।

वि०वि०—ऐसे स्थान पर जल की ऊपरी सतह बिल्कुल समतल और शान्त होती है अर्थात् उसमें हिलोरें और भंवर आदि नहीं पड़ते हैं तथा पानी फैला हुआ रहता है।   उ०—चोळ अगनि रत नदी वीच चलि। होज फुंहार अगनि चादर हलि।—सू.प्र.

७ जल की चौड़ी धारा जो ऊपर से गिरती है।

उ०—फवहार धार घरण फरहरंत, वागीचा चादर जळ वहंत।—सू.प्र.

८ तंवू, खेमा, रावटी।   उ०—१ मारे कांम जगस मन आंणी, सांभर 'अजन' लई न सुहांणी। असपत दी चादर दिस उत्तर, धारे अमरख सीस मुरद्धर।—रा.रू.

उ०—२ जोधपुरै जाळोर सिरि, कांम तिकौ पकड़ेह। कीयौ आरंभ कळह रौ, वाहिरि चादर देह।—गु.रू.वं.

उ०—३ लाखां ग्यांन असंख लसक्कर, बांह लहै दुहुं लाख वहादर। आरंभ खुरम किया आडंवर, चालरण चाळा दीनी चादर।—गु.रू.वं.

चादरौ—सं०पु०—१ किनारे पर पतली गोट या मगजी लगा हुआ एक वस्त्र विशेष जिसे पर्दानशीन स्त्रियां बाहर जाने पर पहने हुए वस्त्रों के ऊपर ओढ़ती हैं. २ पलंग पर गद्दे के ऊपर विछाया जाने वाला कपड़ा, पलंगपोश।

चाप—सं०पु० [सं०] १ धनुष (ह.नां.)   उ०—भळावे जती 'सीत' ले चाप भार्थ, सिकारी हुवा रांम मारीच सार्थ।—सू.प्र.

२ अर्द्धवृत्त क्षेत्र. ३ धनुराशि. ४ पैर की आहट।

सं०स्त्री०—५ पत्थर की छोटी व चपटी पट्टी जिसे दीवार चुनते समय खंडों या ईंटों के बीच खाली जगह रहने पर या कहीं जोड़ के स्थान पर मजवूती के लिये लगाते हैं. ६ रस्सी बुनने के निमित्त बनाई हुई धागों की पतली रस्सी (शेखावाटी). ७ ठगरण के तृतीय भेद का नाम। (र.ज.प्र.)

चापड़—देखो 'चापड़ौ' (मह० रू.भे.)

चापड़णौ, चापड़बौ—क्रि०अ०स० [सं० चपेटम्] १ दवाना, चांपना।

उ०—सिव रण कुळवट अधिप सिर, चहुँ मंगे चौरंग। चहुँ दे धड़ लड़ चापड़ै, रंग रजवट रजरंग।—रेवतसिंह भाटी

२ भयभीत होना।   उ०—अन अन देस धरै गिर अवर, संकोड़ौ संसार सहि। चहुवांण पिथम सूं चापड़ै, गज्जरणवै सुरतांण गहि।
—नैणसी

३ तीतर पक्षी का बोलना, आवाज करना. ४ भागना. ५ पीछा करना. ६ युद्ध करना।   उ०—पळ खंड चंड भुव डंड खिड, तिका रंण खळ खूटिया। चापड़ै वीस चवदह चडै, आरोयरण आवट्टिया।
—नैणसी

चापड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दवाया हुआ. २ भयभीत. ३ भागा हुआ. ४ पीछा किया हुआ. ५ युद्ध किया हुआ।

(स्त्री० चापड़ियोड़ी)

चापड़ियौ—देखो 'चापड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

चापड़ै—क्रि०वि०—खुलेग्राम, प्रकट रूप में।   उ०—१ ऊपर ग्रीखम आवियौ, उर नह धरी अवेर। चडियां घोड़ां चापड़ै, 'अजै' लियौ अजमेर।—रा.रू.

उ०—२ आपड़ै दाव मत देर ओट, चापड़ै आव समसेर चोट।
—वि.सं.

सं०पु०—युद्ध, रण। उ०—१ मारै मुगळांह वधि वधि खांडा वाहतौ, चारण जूटौ चापड़ै वरमौ धाराळांह।—वचनिका

उ०—२ कैरवां न मांगी दीधी पांडवां ढीली कीधी, चापड़ै भिड़ाय जे दिखाया चाळा चीत। रैणां कंस खपायौ थपायौ उग्रसेन राजा, जिका रैण रीझ देणौ 'जसारौ' 'अजीत'।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

उ०—३ आरुढ़ हुवै जे नांम असि, रवि उगमणौ पर गड़ै। गजसिंह दमांमा गाजतां, चढ़ि आयौ तव चापड़ै।—गु.रू.बं.

चापड़ौ-सं०पु०—१ आटा पीसने पर निकलने वाला दाने का भूसा, चोकर। आटे की चलनी से छानने पर यह भूसी आटे से पृथक हो जाती है. २ रहट के कंगूरेदार चक्र के जोड़ के टूटने पर मजबूती के लिए लगाई जाने वाली लकड़ी।

रू०भे०—चापट।

अल्पा०—चापड़ियौ।

मह०—चापड़।

चापजरीब-सं०स्त्री०यौ०—किसी भूमि की लम्बाई का माप।

चापट-सं०स्त्री० [सं० चपेट] १ चपेट, चोट. २ चपत।
३ देखो 'चापड़ौ' (१,२ रू.भे.)

चापटिया-सं०पु०—कुम्भट की फली तथा उसके बीज।
(मि० कूमटिया)

चापटी-सं०स्त्री०—१ पतले कान वाली बकरी. २ चावुक।

चापटौ-वि०—चपटा। उ०—तरै वडी रामचंगी री गोळी वाहि दीठी। तिकौ चापटौ होय पड़ियौ, पिण ढाल रै रंग री चिटक उतरी नहीं।—कहवाट सरवहिया री वात

सं०पु०—हलवाहे या गाड़ीवान का डंडा, बड़ी चावुक।

चापधारी-सं०पु०—धनुर्धारी। उ०—भरत्यं विदा कीध दे सीख भारी। धरा चित्रकोटां वसै चापधारी।—सू.प्र.

चापर-सं०स्त्री० [सं० चापलं] १ ताकीद, शीघ्रता। उ०—चापर करौ सवेगा चालौ।—रांमरासौ
२ टिड्डीदल से भूमि आच्छादित होने का भाव।

चापरि, चापरी-सं०स्त्री० [सं० चापल्य] शीघ्रता। उ०—भाईवंद कड़ूवौ भेळौ, पिंड न राखौ हेक पुळ। चापरि करै अंग सिर चाढ़ौ, काढ़ौ काढ़ौ कहै कुळ।—प्रथ्वीराज राठौड़

चापळणौ, चापळबौ-क्रि०अ०—हमला करने के लिये ताक लगाते हुए भूमिसात् होकर बैठना, छिप कर घात में बैठना। उ०—अण-चींत्यौ खतरौ जांण गोरियावर हळफळतौ वांटकां में चापळग्यौ।
—वांणी

चापळियोड़ौ-भू०का०कृ०—छिप कर घात में बैठा हुआ।
(स्त्री० चापळियोड़ी)

चापळी-सं०स्त्री० [सं० चपला] विद्युत, बिजली। उ०—सळसळी चापळी चळी सिर सेख रै। बीजळी तणी वपु देण बिवा।
—बालावक्स बारहठ

चापलूस-वि० [फा० चापलूस] झूठी प्रशंसा करने वाला, खुशामदी, चाटुकार।

चापलूसी-सं०स्त्री० [फा० चापलूसी] खुशामद, चाटुकारी।

चापी-सं०पु० [सं० चापिन्] १ धनुष धारण करने वाला व्यक्ति. २ शिव, महादेव. ३ धनुराशि।

चाफ[illegible]-२ चाफळबौ—देखो 'चापळणौ' (रू.भे.)

चाफळियोड़ौ—देखो 'चापळियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चाफळियोड़ी)

चाव-सं०स्त्री० [सं० चव्य] १ गजपिप्पली नामक पौधे की जाति का एक पौधा। इस पौधे की जड़ और लकड़ी जो औषधि के काम आती है. २ वस्त्र, कपड़ा।

चावक, चावकियौ, चावकौ, चावख-सं०पु०—गाड़ीवान या हलवाहे के पास रहने वाला लकड़ी का वह डंडा जिसके सिरे पर चमड़े की रस्सी के टुकड़ों का गुच्छा लगा होता है। चावुक, कोड़ा।

उ०—१ थे तौ कोई एक ने नै कोई दो या चार ने वाढ मौ नै म्हे चारण जुद्ध रा भागळ हजारां कायरां ने चावक (चावकियां) जिसा वचनां सूं काट न्हांकसां।—वी.स.टी.

उ०—२ सुरंद खंगार विण कहौ कुण सांसवै, चारणां चावकां तणी चोट।—खंगारसिंह सेखावत रौ गीत

उ०—३ हे देरांणी म्हारै देवर नै अवार दारू लेतां थूं कोई ऐ थारा चावक जेड़ा वचन कहे मती नहीं तौ औ दारू री छकियोड़ौ लाखां नै छांग न्हांकैला, खाती डाळा छांगै जिण तरै।—वी.स.टी.

उ०—४ आगी आगी मारुजी नै रीस, गोरी पर वायौ चावकौ जी म्हारा राज।—लो.गी.

रू०भे०—चावुक।

अल्पा०—चावकियौ।

चावण—देखो 'चरवण' (रू.भे.)

चावणी-सं०स्त्री०—वह अनाज जिससे कृषक खलिहान में से भूस्वामी द्वारा अनाज के रूप में लिये जाने वाले लगान लेने के पहले उससे पूर्व स्वीकृति प्राप्त कर खाने के लिये ले जाता है।

चावणौ, चावबौ-क्रि०स०—दांतों से कुचलना, चवाना।

उ०—जीरा मेरी वाई ये, तिसियौ मैं पीस्यूं ठंडी पून, जांमण की ये जायी, भूखौ मैं चावूं ये वन रा पांनड़ा।—लो.गी.

चावणहार, हारौ (हारी), चावणियौ—वि०।

चाविओड़ौ, चावियोड़ौ, चाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चावीजणौ, चावीजबौ—कर्म वा०।

चवणौ—अक० रू०।

चावली-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का खंजरी के आकार का वाजा विशेष. २ इस वाजे पर गाया जाने वाला गीत विशेष. ३ छोटी डलिया।

चावियोड़ौ–भू०का०कृ०—चवाया हुआ। (स्त्री० चावियोड़ी)

चावी–सं०स्त्री०—१ (ताले की) कुंजी. २ घड़ी या इसी प्रकार के अन्य यंत्र को चलाने के लिए नियमित रूप से घुमाया जाने वाला पुरजा।

मुहा०—चावी भरणी—बहकाना, लड़ाई कराने के लिए उत्तेजित करना।

चावुक—देखो 'चावक' (रू.भे.) उ०—भोळा की चहरी भड़ां, ईखौ चारण ऐण। के ही कढ़ता कायरां, बाढ़ां चावुक वैण।—वी.स.

चावुकसवार–सं०पु०यौ० [फा०] १ घोड़े को विभिन्न प्रकार की चाल सिखाने वाला. २ घोड़े को चलाने वाला।

चावुकसवारी–सं०स्त्री०—चावुक सवार का कार्य (देखो 'चावुकसवार')

चावुकियौ—देखो 'चावक' (अल्पा. रू.भे.)

चावेदार–सं०पु०—१ चोबदार का कार्य करने वाली एक जाति अथवा इस जाति का व्यक्ति. २ चोवदार।

चाभूलेया–सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा।

चाय–सं०स्त्री०—१ एक पौधा या झाड़ जो लगभग ४-५ फुट की ऊंचाई तक का होता है, जिसकी पत्तियां पहिले अनेक प्रक्रियाओं से शुद्ध एवं सुगंधित की जाती हैं। यह लोगों द्वारा उबाल कर पी जाती है. २ चाह, इच्छा। उ०—चीत मरण रण चाय, अकवर आधीनी विना। पराधीन दुख पाय, पुनि जीवै न प्रतापसी।

—दुरसौ आढौ

३ उत्साह। उ०—जतन 'अजीत' भळाय सब, उतन सचीत मिटाय। एम दुरग्गह मारवां, किया सुरंगे चाय —रा.रू.

चायक—देखो 'चाहक' (रू.भे.)

चायगुर–सं०पु०यौ०—वीर, योद्धा, वहादुर। उ०—कलमांधर गाहै 'करनावत', चायगुर कनक तुला चाडियौ। भल दाता चेळौ तो भारी, असपत चेळौ ऊपड़ियौ।—महारांणा जगतसिंह रौ गीत

चायतौ–वि०—इच्छित, चहेता। उ०—पुरां कीधां सळह उर पख राव दापतां, चांमंडा भवांनी हुवै मन चायता।—महादांन महडू

चायना-सं०स्त्री०—१ इच्छा, चाहना, अभिलाषा. २ जरूरत, आवश्यकता।

चायलवाड़ौ–सं०पु० [चायल+सं० पटक] चायल जाति के जाटों के राज्य का प्रदेश जो बीकानेर राज्यान्तर्गत था (ऐतिहासिक) (द.दा.)

चायोड़ौ—१ देखो 'चावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चावियोड़ी)

चार–वि०—१ तीन और एक के बराबर।

मुहा०—१ चार आंख होणी—नजर से नजर मिलाना, प्रेम होना. २ चार चांद लागणा—अधिक प्रतिष्ठा होना, सुंदरता बढ़ना, चौगुणी शोभा होना. ३ चार री पाच भेळणी—इधर-उधर की बात बनाना, अपनी ओर से उत्तेजित करने के उद्देश्य से कोई बात जोड़ना।

कहा०—चार हो खूणां एकादसी नै बीच में सिवरात्री—अधिक निर्धनता की द्योतक, अत्यधिक गरीबी के प्रति।

२ थोड़ा, कुछ।

मुहा०—१ चार दिन—थोड़े दिन, कुछ दिन. २ चार पैसे—कुछ धन, कुछ रुपया-पैसा।

[सं० चारु] ३ सुंदर। उ०—पट वसन हाट अपार, आछादि अंबर चार। निरखंत रूप सनेम, प्रति महल त्रिय अति प्रेम।—रा.रू.

सं०पु०—१ चार की संख्या।

[सं०] २ गति, चाल. ३ बंधन, कारागार. ४ गुप्तदूत, गुप्तचर (डि.को.)

उ०—तिकौ मंत्र उपहार भी चार लोकां रा चतुरपणा थी चौड़ै आयौ।—वं.भा.

५ कृत्रिम विष. ६ मोठ की सूखी पत्तियां. ७ पशुओं को डाला जाने वाला घास, चारा। उ०—मुरणै ढलेत खगेत मह, जमै न जे जंग जोर। चार धाव भाग न चरै, ढोवै बोझौ ढोर।

—रेवतसिंह भाटी

८ भोज्य पदार्थ। उ०—चिड़ी बचां री चांच में, चांच दिए भर चार। दुरजण मुख इण विध दियै, मूरख सवण मझार।

—बां.दा.

चारआंनी–सं०स्त्री०यौ०—चवन्नी।

चारआइनौ–सं०पु० [फा० चार आइना] चार पटरी लगा हुआ एक प्रकार का कवच (वं.भा.)

चारक–सं०पु० [सं०] १ चलाने वाला. २ गति, चाल. ३ सहचर, साथी. ४ गुप्तचर. ५ ब्राह्मण छात्र, ब्रह्मचारी. ६ चराने वाला, ग्वाला।

चारखी—देखो 'चरखी' (रू.भे.) उ०—दळां रोळ दंताळ ऐसा दुगम्म, जम चालिया सांमुहा जांणि चम्म। रजी ऊमटै बोम नूं रोस रत्ता, धुआंधार चारख्खियां धत्तधत्ता।—वचनिका

चारखांणी–सं०स्त्री०यौ०—चार प्रकार से उत्पन्न होने वाले प्राणी—जरायुज, उद्भिज, अंडज और स्वेदज। उ०—जेण सद्द जीवंत चारखांणी चत्रवांणी।—ह.र.

चारचक्षु–सं०पु०यौ० [सं० चारचक्षुष्] वह राजा जो अपने गुप्तचरों के द्वारा सब बातों की जानकारी रखे।

चारज–सं०पु० [अ० चार्ज] १ कार्यभार, काम की जिम्मेदारी।

क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ।

२ जुर्माना।

क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ।

चारजांमौ–सं०पु०—घोड़े, ऊंट आदि की पीठ पर कस कर सवारी करने का चमड़े या कपड़े का बना हुआ आसन।

चारण–सं०पु० (स्त्री० चारणी) राजस्थान, मध्यभारत एवं गुजरात में फैली हुई एक जाति विशेष अथवा इस जाति का व्यक्ति। राजस्थान का अधिकतर साहित्य इसी जाति के व्यक्तियों द्वारा लिखा गया है।

चारणविद्या—सं०पु०यौ० [सं०] अथर्ववेद का एक अंश।

चारणियावंट—सं०पु०यौ० [सं०] भूमि का भाइयों में किया जाने वाला परस्पर समान बटवारा।

चारणी—सं०स्त्री०—१ चारण जाति की स्त्री. २ चारण कुलोत्पन्न देवी, शक्ति। उ०—कीधो तैं कोप साजियो 'कांनो', रड़मल नैं दीधो तैं राज। चारण वाड़ां तणी चारणी, लोक मही तूं राखै लाज।—बां.दा.

३ चलनी।

चारणौ, चारबौ—क्रि०स०—देखो 'चराणौ' (रू.भे.)

चारणहार, हारौ (हारी), चारणियौ—वि०।

चारिग्रोड़ौ, चारियोड़ौ, चारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

चारीजणौ, चारीजबौ—कर्म वा०।

चारदिवारी, चारदीवारी—सं०स्त्री० [फा० चारदीवारी] चारों ओर की दीवार, परकोटा, अहाता। उ०—लोटचौ जाट करणियौ मीणौ, करै किलै की सैल। फिर घिर देखी चारदिवारी, नांय लगाई देर।
—डूंगजी जवारजी री पड़

चारलोक—सं०पु०—१ दूत, हलकारा। उ०—तिकौ मंत्र उपव्हर भी चारलोकां रा चतुरपण थी चौड़ै आयौ थकौ पहली ही इसौ घाट घड़ता तीजा साहजादा ओरंगजेब रै सहायक वणियौ।—वं.भा.

२ चार प्रकार के लोक—देवलोक, मृत्युलोक, पाताललोक व नागलोक।

चारवाक, चारवाक्य—सं०पु० [सं० चार्वाक] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक।

चाराजोई—सं०स्त्री० [फा०] नालिश, फरियाद।

चारि—देखो 'च्यार' (रू.भे.)

चारिणी—१ देखो 'चारणी' (रू.भे.) उ०—पार री बोध लाधण प्रथम, आपै अकल आधारणी। जिण पार जीत आखूं जुगत, सुमत समापै चारिणी।—पा.प्र.

[सं०] २ आचरण करने वाली, चलने वाली।

चारित—देखो 'चरित्र' (रू.भे.) उ०—चारत ले देहि दंडै, अन आंबिल करि खात। सो तौ चारित कोई और है, जहां कांम क्रोध भ्रम जात।
—ह.पु.वा.

चारिताळी—वि०—विभिन्न चरित्र करने वाली।

चारित्र—देखो 'चरित्र' (रू.भे.) उ०—इंद्र गोतम अहिलिया अलज चारित्र अनंत।—रांमरासौ

चारी—वि० [सं० चारिन्] विचरण करने वाला, चलने वाला।

चारु—वि० [सं०] सुंदर। उ०—कुळ कौ वणतौ कुठार, वंस कौ देतौ बिगार, चारण वरण चारु छार में छिपाता।—ऊ.का.

चारुदेस्ण—सं०पु० [सं० चारुदेष्ण] कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

चारुधारा—सं०स्त्री०यौ० [सं०] इन्द्र की पत्नी, शची (डिं.को.)

चारुविंद—सं०पु० [सं०] श्री कृष्ण का एक पुत्र।

चारुवेस—सं०पु०यौ० [सं० चारुवेश] श्री कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी से उत्पन्न हुआ था।

चारुस्रवा—सं०पु० [सं० चारुश्रवस] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारूं—वि०—चारों।

मुहा०—चारूं खाना चित पड़णौ—ऐसा चित गिरना जिससे हाथ-पांव फैल जांय।

चारूंमेर—क्रि०वि०यौ०—चारों ओर। उ०—चारूंमेर थे चकारा देता, भूखां नैं वेकारां फिरलौ। रोटी रा टुकड़ा टुकड़ा नै, वे मौत विलखताई मरलौ।—रेवतदांन

चारू—वि०—चरने वाला (पशु)

कहा०—चारू कदै न हारू—चरने वाला या पेट भरने वाला कभी नहीं थकता।

चारूवळ, चारूवळां—क्रि०वि०—चारों ओर।

चारेक—वि०—चार के लगभग।

चारोळी—सं०स्त्री०—१ चिरूंजी. २ नारियल की गिरी का टुकड़ा। उ०—मीठी द्राख चारोळी चाखवी निंबोळी कुण खायौ रे।—स.कु.

३ होली का दूसरा दिन।

चारौ—सं०पु०—१ पशुओं के खाने की घास। उ०—आरुण करणि रूप अधिकारौ। चरै महिख गूंदगिरी चारौ।—सू.प्र.

२ मूंग व मोठ के सूखे पत्ते. ३ भोजन, खाद्य वस्तु।

उ०—१ कण एक लिया किया एक कण कण, भर खंचे भंजियौ भिड़। वळभद्र खळै खळां सिर वैठी, चारौ पळ ग्रीधणी चिड़।
—वेलि.

[फा० चारा] ४ उपाय, तदवीर. ५ बस। उ०—इहां कोई नौ नही छै चारौ, वांक न कोई इहां (अछै) पितारौ।—स्रीपाळ रास

चाळ—सं०स्त्री०—१ धरा, धरती. २ कुर्ते के अग्र भाग का झोलीनुमा बनाया हुआ पल्ला। उ०—जैस अपजस जाचक पढ़ै, मांगै चाळ विलूंब। नहीं चिढ़ै उत्तर न दे, घांमघूम हुै सूंब।—बां.दा.

मुहा०—१ चाळ लूंबणौ—शरण मे जाना, शरण मांगना. २ चाल झूंवणौ—देखो मुहा० नं० १।

३ खलिहान में धूलि-मिश्रित अनाज को साफ करने का बड़ा उपकरण, बड़ी चलनी. ४ छेड़छाड़। उ०—कासीद आंणि इम कहिय वत्त, सुनि मीर खांन परगह समस्त। कौ करहि काळ से चाळ कोपि, को जात सिंधु पर तीर लोपि।—ला.रा.

५ क्रोध, गुस्सा. ६ परगना। उ०—चवदै चाळा कछ चवदै पड़गना है, पड़गना नू चाळ कहै। कछ धरा खावै परा जीतै।
—बां.दा. ख्यात

७ भुवन, लोक (पुराणानुसार लोक चौदह हैं। सात स्वर्ग और सात पाताल) उ०—चळचळै चवदह चाळ, थट हुवा जिम जळ थाळ। सुत 'विसन' सह वधि सोच, इम लिखे खत आलोच।—सू.प्र.

चाल—सं०स्त्री०—१ चलने की क्रिया, गति, चलने का ढंग।

उ०—चकरथा इसा चालिआ काळ चालमं।—वचनिका

२ आचरण, व्यवहार, चालचलन ।

मुहा०—१ चाल ठीक करणी—आदत सुधारना, चाल-चलन ठीक रखना. २ चाल सुधारणी—आचरण ठीक करना ।

३ आकार, आकृति. ४ रीति-रिवाज, प्रथा । उ०—परंतु जैतो अब ही सों मीणां री चाल छोडि रजपूतां री राह में रहण रौ लेख करि सूंपै तौ यो संबंध करण में आवै ।—वं.भा.

क्रि०प्र०—निभाणी, राखणी ।

५ चालाकी, कपट, धूर्तता । उ०—वृथा झूट नर बोल, आज काल करता रहै । आखिर उघड़ै पोल, चाल छिपै नहिं चकरिया ।

—मोहनराज साह

मुहा०—१ चाल खेलणी—धोखा देना, कपट करना. २ चाल चलणी—धोखे से काम पूरा करना, धोखेबाजी करना ।

यौ०—चालबाज, चालबाजी ।

६ ढंग, विधि । उ०—रौळ बिगाड़ै राज नूं, मौळ बिगाड़ै माल । सनै सनै सिरदार री, चुगल बिगाड़ै चाल ।—बां.दा.

७ शतरंज या चौपड़ में अपनी पारी पर गोटी को आगे बढाने या चलाने की क्रिया. ८ हलचल, धूमधाम. ९ सर्प (अ.मा.). १० नकल, अनुकरण । उ०—जैपुर रौ राजा माधोसिंघजी हाथ री दस ही आंगळियां में वींटियां राखता आ रांणांजी री चाल ।— बां.दा.

चाळक—सं०पु०—१ सोलंकी वंश या इस वंश का व्यक्ति (सू.प्र.)

२ सिंह. ३ एक राक्षस जो आवड़ देवी के हाथों मारा गया था. ४ आवड़देवी का एक नाम ।

वि०वि०—देखो 'आवड़' ।

अल्पा०—चाळकौ ।

चालक—वि०—१ चलाने वाला, गतिमान करने वाला. २ चलने वाला. ३ संचालक ।

सं०पु०—१ नृत्य में हाथ चलाने की एक क्रिया. २ अंकुश की भी परवाह न करने वाला हाथी ।

चाळकनाराय, चाळकनेची—सं०स्त्री०—आवड़ देवी का नाम ।

वि०वि०— देखो आवड़' ।

चाळकरौ—वि०—१ छेड़-छाड़ करने वाला. २ युद्ध करने वाला ।

सं०पु०—३ चालुक्यवंशीय राजपूत ।

चाळकौ—देखो 'चाळक' (४) (अल्पा. रू.भे.)

चाळगारौ—देखो 'चाळागारौ' (रू.भे.)

चालचलगत—सं०स्त्री०यौ०—१ रीतिरिवाज, चाल, प्रथा ।

२ देखो 'चालचलन' (रू.भे.)

चालचलन, चालढ़ाल—सं०स्त्री०यौ०—१ चरित्र. २ आचरण, व्यवहार ।

उ०—बूबना नूं पोसाक पहराय खांडा कन्है आंणि और मूमना री चालढ़ाल देख कही ।—जलाल बूबना री वात

चालणी—देखो 'चलणी' (रू.भे.)

कहा०—चालणी सुई नै हंसै—चलनी में अनेक छेद होते हुए भी सूई पर हँसती है; स्वयं के अनेक दोषों पर ध्यान न देकर दूसरे में दोष निकालने वाले के प्रति ।

चाळणौ, चाळबौ—क्रि०स०—उकसाना, छेड़ना । उ०—कुण थांनै चाळा चालिया जी कोई कुण थांनै लाय दिखायौ जी राज क लहरयौ लेदौ जी ।— लो.गी.

चालणौ चालबौ—देखो 'चलणौ' (रू.भे.) उ०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह, रहरह कोइ वह रहे रह । सुजु दुज पुरा नीसरे सूतौ, निसा पड़ी चालियौ नह ।—वेलि.

कहा०—१ चालणौ रस्तैसर हुवौ भलांई घेर ही—सदैव रास्ते-रास्ते ही चलना चाहिये चाहे उसमें घुमाव-फिराव कितने ही क्यों न हों । हमेशा नियम एवं मर्यादापूर्वक कार्य करते रहना चाहिये । २ चालता बळद कै आर देणी—चलते हुए बैल के लकड़ी या लकड़ी में लगी कील चुभाना । कार्यशील व्यक्ति को बेकार में तंग करना ।

चालणहार, हारौ (हारी), चालणियौ—वि० ।

चालिओड़ौ, चालियोड़ौ, चाल्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चालीजणौ, चालीजबौ—भाव वा० ।

चाळनेच—सं०स्त्री०—आवड़ देवी का एक नाम ।

चाळबंद, चाळबंध—सं०पु०यौ० [चाळ = भूमि + बंध] राजा, भूमिपति ।

उ०—१ सांकं राव सको सिरोई, पोहरा कुंभळमेर पड़ै । सत्र तोसुं समहर 'सूजावत', चाळबंध नह कोय चड़ै ।—मैंपजी बारहठ

उ०—२ कहि चहुवांण तणा भड़ केहा । जम हूं लड़ै चाळबंध जेहा ।

—सू.प्र.

मि०—चाळाबंध ।

चालबाज—वि० [यौ०] धूर्त्त, कपटी, छली ।

चालबाजी—सं०स्त्री०यौ०—धूर्त्तता, चालाकी, कपट ।

चाळराय—सं०स्त्री०—आवड़ देवी का एक नाम ।

चाळवणौ, चाळवबौ—क्रि०स०—छेड़-छाड़ करना, छेड़ना ।

उ०—१ वेंडा जुधां गयंदां ढाल, वे खेत वेढ़ीगारौ । चाळवै ससत्रां पंजा, विरूथौ सचाळ ।—बुधसिंह सिंढायच

उ०—२ खळ खेंगरण वडा व्रिद खाटण, वैरां सूं चाळवण विरोध । सोमि सनाह दुवाहा सांमंत, जगि जणियार कळोघर जोध ।

—राठौड़ सुजांनसिंह आसकरणोत रौ गीत

२ प्रहार करना । उ०—कोट कटारी चाळवी, खटकी खूमांणांह । मोटै ईसर मारियौ, डाकी भरड़ांणांह ।—बां.दा. ख्यात

३ छानना ।

चालसखा—सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।

चालहर—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा ।

चालांन—सं०पु०—१ व्यापारियों द्वारा भेजे गये माल की सूची, बीजक. २ भेजा हुआ माल व रुपया. ३ पुलिस द्वारा मुजरिम को अदालत में उपस्थित करने का कार्य ।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, भरणौ, होणौ ।

यौ०—चालांनदार, चालांनवही।

चालांनदार-सं०पु०यौ०—१ वह व्यक्ति जिसकी जिम्मेदारी पर माल उसके साथ ही भेजा जाता है। २ जिसके पास राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त माल लाने और ले जाने का अनुमति पत्र हो।

चालांन वही-सं०स्त्री०यौ०—बाहर से माल आने या बाहर से भेजे जाने का ब्यौरा लिखे जाने की बही।

चालाक-वि०—१ चतुर, निपुण, दक्ष. २ धूर्त, चालबाज।

चालाकी-सं०स्त्री०—१ व्यवहार-कुशलता, दक्षता, चतुराई. २ धूर्तता, छल।

मुहा०—चालाकी खेलणी—होशियारी से काम निकालना, मक्कारी करना, धूर्तता करना।

चालाकौ-वि०—गतिवान, चलने वाला।

चाळागार, चाळागारियौ, चाळागारौ-वि०यौ० (स्त्री० चाळागारी)

१ उपद्रवी, झगड़ालू, कळहप्रिय। उ०—यारीं करणा सो करौ, इस ही अवसर का। खाणा देणा खरचणा, सिमरण ईस्वर का। जमीं चाळागारियां, ठरकेतां वरका। अपणी अपणी कर गया, सब हिंदु तुरकां।—दुरगादत्त बारहठ

२ राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ. ३ पाखंडी, आडम्बरी।

४ वीर, योद्धा। उ०—चाळागारा भूपाळां ऊमरां माळा मेर 'चंपा', उजाळा दीपक्कां ढाळा विरद्दां अमांग।—अज्ञात

चाळावंध-वि०—लड़ने वाला, उपद्रवी। उ०—फैल क्रोध चसम्मां कराळां आग झाळा फुणां ताळा दे भुजाळा त्यूं गुपाळा तीरवांन। विरदाळा सिघाळा अहाळा जोध चाळावंध जूटा विहु काळा नैं विचाळा जोरवांन।—र.ज.प्र.

चालि-सं०स्त्री०—वस्त्र का छोर, आंचल। उ०—जातैं काळ नूं चालि सूं झालि जूटै, तरुआर ज्यां तेज रा ताप त्रूटै।—वचनिका

चालियोड़ौ—देखो 'चलियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चालियोड़ी)

चाली—देखो 'चाल' (रू.भे.)

चाळीस-वि० [सं० चत्वारिंशत्, प्रा० चत्तालीसा] तीस तथा दस के योग के बराबर।

सं०पु०—चालीस की संख्या।

चाळीसमउ, चाळीसमौं, चाळीसवौं-वि० [सं० चत्वारिंशति (त् ?) तमः] जो क्रम में उनतालीस के बाद पड़ता हो।

देखो 'चालीसौ' (रू.भे.)

चाळीसे'क-वि०—चालीस के लगभग।

चाळीसौ-सं०पु०—१ ४० वां वर्ष. २ वह ग्रंथ जिसमें चालीस पद्यांशों का संग्रह हो। ३ चालीस वस्तुओं का संग्रह. ४ मृत व्यक्ति के पीछे चालीस दिनों के बाद किया जाने वाला भोज (मुसल.)

उ०—सेख मुगल पठांण, आं तीन खांपां रै आ रीत है—कुरांण री आग्या मुजब पिता रौ चाळीसौ कर अवद्धा माता नूं पुत्र जाय कहै—म्हारौ पिता थारौ भरतार मर गयौ, उण मार्थं ईमांन राख तूं बैठी रहै तौ भलां ही, नहीं तौ थारा मन में आवै जिणसूं निका कर।—बां.दा. ख्यात

मुहा०—अल्ला री मा रौ चाळीसौ—अव्यवस्थित रूप से किया जाने वाला कार्य।

५ चालीसवां दिन।

चालुक, चालुक्क-सं०पु० [सं० चालुक्य] भारत के दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश जो बहुत प्रबल और प्रतापी था (ऐतिहासिक)

चालू-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

वि०—१ गतिवान, चलने वाला. २ प्रचलित।

क्रि०वि०—आरंभ, शुरू।

चालेवौ-सं०पु०—शवयात्रा, जनाजा। उ०—चालेवौ चक्रवती निजर सुरपती निहारे। भाग धन्य भूपती एम सोभाग उचारै।—रा.रू.

चाळोरी-सं०पु०—होली का दूसरा दिन। इस दिन मनाया जाने वाला उत्सव।

क्रि०प्र०—खेलणी, रमणी।

चाळौ चाळहौ-सं०पु० [सं० चल] कष्ट पहुंचाने वाली आकस्मिक घटना, उत्पात। उ०—गड़ापड़ बीगड़ै नहीं हरगिज गहूं। चड़ापड़ न आवै रोग चाळौ।—खेतसी बारहठ

२ युद्ध, झगड़ा, कलह। उ०—१ तैं घण दुरंग काढ़िया ताळा, मतवाळा करि घांण मथांण। वार-बार फेरे विसटाळा, चाळा मति मांडे चहुवांण।—बळवंतसिंह हाडा रौ गीत

उ०—२ इकताळौ लागौ वरस, चाळौ सरस गहीर। सोझत हुई सुजांण नूं, थई पढांण तरीर।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणौ।

३ उपद्रव, विद्रोह। उ०—लाख दुरवेस दहलिया, आयौ देस नरेस। अठ ताळै चाळौ थयौ, रांणावाळै देस।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

४ छेड़छाड़। उ०—चालता काळ सूं चाळौ कीधौ किनां। सूता म्रिगराज री नासिका रौ लोम तांणियौ।—वं.भा.

क्रि०प्र०—करणौ।

५ चाल. ६ भूत-प्रेतादि की चपेट या प्रकोप।

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, होणौ।

७ खेल-तमाशा। उ०—१ विण सिर धड़ ऊठै विकराळा। चिरत गिणे बाळक जिम चाळा।—सू.प्र. उ०—२ कैरवां न मांगी दीधी पांडवां ढिली कीधी, चापड़ै भिड़ाया जे दिखाया चाळा चीत।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

क्रि०प्र०—करणौ।

८ प्रेम। उ०—काळा में कोडाय, चाहि खायौ कर चाळा। मोड़ा उघड़या मींत, चिरत थारा चिरताळा।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणौ।

९ उमंग । उ०—मल्हपै किर गिर चढ़ि हेमाळै । चंद्रकुमार खेल्ह नह चाळै । —सू.प्र.

१० चमत्कार विशेष । उ०—१ भोळै बावै मन में इचरज करियौ के पांणी बरसियां नै तौ बरस व्हिया पण इण नांढ रौ श्रो कांई चाळौ । विमांण सूं नीचा उतरया ।—बांणी उ०—२ विरदां तणौ गुमेज, आडंबर सत्ता वाळौ । घणौ रूप गरकाव, चलत माया रौ चाळौ ।—अज्ञात

११ ढोंग, पाखंड, आडंबर ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

१२ वस्त्र का छोर, आंचल. १३ रहस्य, भेद । उ०—पण दळपत वातां करै, ये दोनूं आपरी सलाह करै, सो सारा कुसळसिंह सू वातां करै और राजा रै सारी चाळौ पूछणौ ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

१४ कलोल, क्रीड़ा । उ०— बादळ काळा वरसिया, अत जळमाळा आंण । कांम लगौ चाळा करण, मतवाळा रंग मांण ।—र.रा.

चावंडदे—सं०स्त्री०—१ भाटी वंश की एक शाखा. २. चामुंडा देवी ।

चाव—सं०पु०—१ चाह, रुचि । उ०—टुक बीच टोडा बीच आई, आई लैरिया री पोट, राज लैरचौ लेची जी, लैरचौ तौ लेची, गोरी का सायबा जी, कांई थारी घण नै लैरिया रौ चाव, राज लैरचौ लाद्योजी ।—लो.गी.

२ इच्छा, अभिलाषा । उ०—भवनी अमराव दया मन भारी, दाव लखाव किणीक दियौ । दिल भूपत चाव लगौ खग देखण, काढ़त बीज सळाव कियौ ।—भक्तमाळ

मुहा०—चाव निकाळणौ—इच्छा पूरी करना ।

३ उत्साह, उमंग, जोश । उ०—१ ताव अलाजां तरस सरस रण चाव सलाजां । वणै न राजा वहिर गहिर तोपां घण गाजां ।

—वं.भा.

उ०—२ भरहरियौ आभ नकूं मांडे भड़, विखमां जग परहरियौ वाव । जो गुणांतरौ थरहरियौ जग में, चाळक न परहरियौ चाव ।

—लाधा सोलंकी रौ गीत

४ उत्सव । उ०—महिले दीपक थिर जगे, दीवाळी रौ चाव ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

५ आनंद, खुशी, प्रमोद, हर्ष । उ०—भाखै सहियां भाल लियां क्रिस भाव नै । चित पिय कोमळ ताय वधावै चाव नै ।—बां.दा.

६ स्वभाव (अ.मा.)

७ मान, प्रतिष्ठा, आदर. ८ दान । उ०—मांडण जिम मोर पिता सिर मांणक, चूंडा हरौ समापै चाव । लूणकरण चीतोड़ लीलवत, रांण तणी घर वूठौ राव ।—राव लूणकरण रौ गीत

चावउ—देखो 'चावौ' (रू.भे.)

चावक—सं०पु०—एक प्रकार का बाण (अ.मा.)

चावगर—वि०—१ कदर करने वाला, कद्रदान. २ रुचि रखने वाला, चाह रखने वाला, चाहक. ३ अभिलाषा रखने वाला ।

चावगुर—वि०—महत्वाकांक्षी ।

उ०—पौह घणा भागळां गई मुहराइ पड़ि, चावगुर जसौ जिण वार सोह चड़ि ।—हा.झा.

चावड़—सं०स्त्री०—१ सूत की चार पतली लड़ों से बना रस्सा ।

चावड़ा—सं०स्त्री०—एक प्राचीन राजपूत वंश ।

रू०भे०—चाउड़ा, चाओड़ा ।

चावड़ै—देखो 'चौड़ै' (रू.भे.)

चावड़ौ—सं०पु—(स्त्री० चावड़ी, चावोड़ी) राजपूत वंश की चावड़ा शाखा का व्यक्ति ।

रू०भे०—चावोड़ौ ।

चावण—सं०पु०—गुजरात का एक प्रसिद्ध और प्राचीन राजपूत वंश ।

चावणौ, चाववौ—देखो 'चाहणौ' (रू.भे.) उ०—करता रौ है कौल, मैं, मैं कर वकरौ मरै । मैं ना मैं ना बोल, चावै मेवौ चकरिया ।

—मोहनराज साह

[सं० चर्वनम्] २ दांत से काट खाना, दंतक्षत लगाना. ३ प्यार करना, स्नेह करना. ४ प्रयत्न करना, जोर करना, कोशिश करना. ५ लेने या पाने की इच्छा प्रकट करना, मांगना ।

चावणहार, हारौ (हारी), चावणियौ—वि० ।

चवाणौ, चवावौ, चवावणौ, चवाववौ—प्रे०रू० ।

चाविओड़ौ, चावियोड़ौ, चाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चावीजणौ, चावीजवौ—कर्म वा० ।

चावर—सं०स्त्री०—जोती हुई जमीन को समतल करने के लिये उस पर घुमाया जाने वाला लकड़ी का पाटा, पटेला । उ०—कुण खेड़ै आहव क्रसी, करसा वर-अणकूल । फिर चावर चंदहास फट, डगळ डील डट धूळ ।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—चाउर । (मि०—संवार)

चावरी—सं०स्त्री०—१ वह बकरी जिसके मुंह पर लाल-पीली लकीरें हों । २ वह बकरी जिसके पेट के नीचे का रंग ललाई लिये तथा ऊपर का रंग काला हो ।

वि०—ठिगनी, बौनी ।

चावळ—सं०पु०—१ एक प्रसिद्ध सफेद रंग का अन्न, भात, चावल ।

पर्याय०—अखसत, चोखा, तंदुळ, साळ ।

मुहा०—१ चावळ चढ़णा—मान बढ़ना, गौरव बढ़ना. २ चावळ चढ़ाणा—मान देना, प्रतिष्ठा देना. ३ पीळा चावळ देणा (मेलणा) किसी शुभ अवसर पर सम्मिलित होने के लिये निमंत्रण देना ।

रू०भे०—चांवळ ।

अल्पा०—१ चांवळयौ. २ एक रत्ती का आठवां भाग ।

३ देखो 'चावर' (रू.भे.)

चावळियौ, चावळयौ—सं०पु०—देखो 'चावळ' (१, अल्पा.) उ०—जीण मेरी बाई श्रे, उजळा रंधाद्यूं श्रे थांनै चावळया, हरियै मूंगां री बाई नै दाळ ।—लो.गी.

चावोड़ौ-वि० (स्त्री० चावोड़ी) १ प्रसिद्ध, विख्यात. २ देखो 'चावड़ौ' (रू.भे.)

चावौ-वि० (स्त्री० चावी) प्रसिद्ध, प्रख्यात। उ०—अड़सठ तीरथ तणी, आभरण चावौ पावन चार चक। राखण वात सेवियो रड़मल, जग जाणणी वाळो जनक।—वां.दा.

सं०पु०—कूआ या गड्ढा खोदते समय खोदने के लिये काटी या खोदी जाने वाली भूमि की तह।

क्रि०प्र०—देणी, लेणी।

चास-सं०स्त्री०—१ धरा, पृथ्वी (ना.डि.को.)

उ०—वीर वडवानळ तण झाळ समइ, पुण मेच्छ न आपूं चास किमइ।—श्रीधर

[सं० चापः अथवा चास] २ नीलकंठ पक्षी. ३ खबर, संदेश।

उ०—चवी यह दूतन भूतन चास, सुनी सब कूरम सांवळदास।

—वं.भा.

यौ०—चास-मास।

४ शोक। उ०—म्हांने मारू क़सूंवे रौ जाजौ चास, राय थे सिघावौ ईडरगढ़ री चाकरी।—लो.गी.

चासणी, चासनी-सं०स्त्री० [फा० चाशनी] १ चीनी, मिश्री या गुड़ का वह रस जो आंच पर चढ़ा कर गाढ़ा और लसीला किया गया हो।

मुहा०—चासणी देखणी—किसी व्यक्ति का गाम्भीर्य देखना, गहराई तक पहुँचना।

२ चस्का. ३ नमूने का वह सोना जो सुनार को गहना बनाने के लिये देने वाला ग्राहक अपने पास रखता है और जिससे वह बने हुए गहनों के सोने का मिलान करता है।

चास-विदार-सं०पु०यौ०—१ हल (डि.को.) २ सूअर।

(मि०—भूविदार)

चास-मास-सं०स्त्री०यौ०—खबर, संदेश।

चासू-वि०—चुस्त, फुरतीला। उ०—बांहे सुंदरि वहरखा, चासू चुड़स विचार। मनुहरि कटि थळ मेखळा, पग झांझर झणकार।—ढो.मा.

चासौ-सं०पु०—बंगाली कृषक। उ०—अवढ़ झाड़खां अड़ै, फूटरा कपड़ा फाटै। चासां रै ना चाव, रीस रोजी नै काटै।—दसदेव

चाह-सं०स्त्री० [सं०] १ इच्छा, अभिलाषा। उ०—म्हारै कन्यांदांन रा फळ री चाह जांणि गमार अत्यंत ही आणंद मैं ऊफणिया न मावसी।—वं.भा.

२ प्रेम. ३ लगन। उ०—इण सांवरा री लागी चित में चाह, म्हारा सीताजी हे, थांनै मिळैला वर सांवरौ।—गी.रां.

४ आवश्यकता, जरूरत। उ०—चाह वीर मिळै चित चायौ, हेर भलौ हुवै हित हरखायौ।—ऊ.का.

६ [फा०] कुआ, कूप (मि०—चाही)

चाहक-वि०—चाहने वाला, चाह रखने वाला, प्रेमी, प्रेम करने वाला।

चाहड़-सं०पु०—चौहान वंश की चिआवा शाखा की उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चाहड़दे-सं०पु०—१ राठोड़ राव वीरम के पुत्र चाहड़दे के वंशज। २ राठोड़ों की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

चाहण-सं०स्त्री०—इच्छा, चाहना, चाह।

चाहणदेवी-सं०स्त्री०—चारण वंशोत्पन्न एक देवी।

चाहणौ-वि०—चाहने वाला। उ०—सुज ब्रद साहणौ रे, निबळ निवाहणौ, चित जिस चाहणौ रे, गज थट गाहणौ।—र.ज.प्र.

चाहणौ, चाहबौ-क्रि०स०—इच्छा करना, चाहना। उ०—१ मन अरपण कीधँ हरि मारग, चाहै व्रज ओटै चडी।—वेलि.

उ०—२ सो थे राजपूती री राह चालणी चाहौ नै तांहरौ उद्धार चाहौ तौ धणी री बुरी नै आपरी न्यूंनता जाणौ, धणी री कोई बुरी कहै तिणनै डंड देवौ।—वी.स.टी.

२ हित करना, भला करना, ज्यूं—म्हैं थनै घणौ चाह्यौ।

चाहणहार, हारौ (हारी), चाहणियौ—वि०।

चाहिओड़ौ, चाहियोड़ौ, चाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चाहीजणौ, चाहीजबौ—कर्म वा०।

चाहरौ—देखो 'चाअरौ' (रू.भे.)

चाहल-सं०पु०—१ एक राजपूत वंश. २ जलसा, उत्सव।

चाहवांण—देखो 'चौहांण' (रू.भे.)

चाहि—देखो 'चाह' (रू.भे.) (ह.नां.)

चाहिजे, चाहिजै, चाहियइ-अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है।

उ०—१ बीजौ रुखमणीजी कौ मन राख्यौ चाहिजै।—वेलि.

उ०—२ प्रथम तौ वळिभद्रजी की आज्ञा मांनी चाहियइ।—वेलि.टी.

चाहिल-सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या व्यक्ति।

चाही-सं०स्त्री०—कुए के पानी से सिंचाई की जाने वाली भूमि।

वि०—इच्छित।

चाहीजै—देखो 'चाहिजै' (रू.भे.)

उ०—महाराज आज री वेढ़ रा धणी राठौड़ां। राठौड़ां मांहे ह'इज। मुदै मोनूं कहि ओइज चाहीजै।—वचनिका

चाहु—देखो 'चाहू' (रू.भे.)

चाहुआंण, चाहुवांण—देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चाहू-वि०—चाहने वाला, प्रेमी।

चाहूआंण, चाहूयांण—देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चाहोड़-सं०पु०—चौहान वंश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

चाह्यौ-वि०—मनवांछित, मनचाहा। उ०—पूरी मदत नवावां पाऊं, असपत चो चाह्यौ कर आऊं।—रा.रू.

चिंओ-सं०पु० [सं० चिंचा] इमली का बीज, चिया।

चिंगण-सं०स्त्री० [सं० चितागण] श्मशान भूमि की आग।

उ०—चिंगण चाळवियांह, खीरां मांहि खंखेरियां। रांणा राख थयांह, वीसरसां जद बाघ नै।—आसौ बारहठ

चिंगरज-सं०स्त्री० [सं० चिन्हरज] भूमि, पृथ्वी (ना.डि.को.)

चिगो–सं०पु०—घोड़ा, अश्व (ना.डि.को.)

चिघाड़–सं०स्त्री०—चीख मारने से उत्पन्न शब्द, हाथी की बोली।

चिघाड़णौ, चिघाड़बौ–क्रि०अ०—१ चीखना, चिल्लाना. २ हाथी का जोर से आवाज करना, चिंघाड़ना।

चिघाड़णहार, हारौ (हारी), चिघाड़णियौ—वि०।

चिघाड़िओड़ौ, चिघाड़ियोड़ौ, चिघाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिघाड़ीजणौ, चिघाड़ीजबौ—भाव वा०।

चिघाड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—चिघाड़ा हुआ (स्त्री० चिघाड़ियोड़ी)

चिचड़ौ—देखो 'चींचड़ौ' (रू.भे.)

चिचौ–सं०पु० [सं० चिचा] इमली का बीच, चिंया।

चिंडाळ—देखो 'चंडाळ' (रू.भे.) (स्त्री० चिंडाळी)

कहा०—१ जात चिंडाळ कोनी, करम चिंडाळ है—जाति से मनुष्य नीच नहीं होता, नीच कर्म के कारण ही नीच होता है। नीच कर्मों की निन्दा. २ चोर को माल चिंडाळ खावै—बुरे कार्यों से अर्जित धन बुरे व्यक्तियों द्वारा बुरे कार्यों के लिए ही खर्च होता है। बुरे कार्यों द्वारा धन-उपार्जन की निंदा।

चिंडाळी—देखो 'चंडाळी' (रू.भे.) उ०—खिजमत करतां खिजै छैल छूटै चिंडाळी। सुणै न नांम सिनांन गंध दे लाखां गाळी।
—ऊ.का.

चिंत–स०स्त्री० [सं० चिंता] १ चिंता, सोच, फिक्र। उ०—दाखियौ प्रभू कुण चित देव। भाखियौ सुरां दुख रांण भेव।—सू.प्र.

२ चिंतन। उ०—भोग्य चित भजै, ग्रीधणी गरज्जै। नीर धार निजै, सोहड़ै सलज्जै।—रा.रू.

३ याद, स्मरण। उ०—१ हंसां नै सरवर घणा, सुगणां घणा ज मित। जाय पड़्या परदेस में, साजन आया चित।—र.रा.

उ०—डूंगरियां रा मोरिया, पीहरियां रा मित। ज्यूं-ज्यूं सांवण ओलरै, त्यूं-त्यूं आवै चित।—र.रा.

चिंतक–वि० [सं०] १ चिंता करने वाला. २ चिंतन करने वाला, सोचने वाला।

चिंतकरि–सं०पु०—कपट (ह.नां.)

चिंतण–सं०पु० [सं० चिंतन] ध्यान, बार-बार स्मरण, मनन।

उ०—नरोत्तम उत्तम तार नितार, चराचर चिंतण हार चितार।
—ऊ.का.

चिंतणीय–वि० [सं० चिंतनीय] १ चिंतन करने के योग्य, मनन-योग्य. २ चिंता करने योग्य।

चिंतणौ, चिंतबौ–क्रि०स० [सं० चिंतना] १ चिंतन करना, मनन करना. २ चिंता करना, फिक्र करना।

चिंतणहार, हारौ (हारी), चिंतणियौ—वि०।

चिंतिओड़ौ, चिंतियोड़ौ, चिंत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिंतमण—देखो 'चिंतामणी' (रू.भे.)

चिंतवण—देखो 'चिंतण' (रू.भे.)

चिंतवणौ, चिंतवबौ—देखो 'चिंतणौ' (रू.भे.) उ०—चिंतातुर चिंत इम चिंतवती, थई छींक तिम धीर थई।—वेलि.

चिंतवणहार, हारौ (हारी), चिंतवणियौ—वि०।

चिंतविओड़ौ, चिंतवियोड़ौ, चिंतव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिंतवीजणौ, चिंतवीजबौ—कर्म वा०।

चिंता–सं०स्त्री० [सं०] १ किसी प्राप्त दुख या दुख की आशंका से उत्पन्न होने वाली भावना, सोच, फिक्र। उ०—कहियौ सुणै वीर कुदरत्ती। मेट जती चिंता महपत्ती।—सू.प्र.

मुहा०—चिंता लागणी—किसी बात का हर समय फिक्र रहना।

२ ध्यान, चिंतन, मनन. ३ रस विषय में करुण रस का व्यभिचारी भाव (साहित्य)

चिंताकुळ, चिंतातुर–वि० [सं० चिंताकुल] चिंता से व्याकुल, व्यथित, चिंतित। उ०—तैं वासतै मैं ढांकि राखियौ हुतौ, राजा चिंतातुर हुयौ।—चौबोली

चिंतामण, चिंतामणि, चिंतामणी, चिंतामिणी–सं०पु० [सं० चिंतामणि] १ एक कल्पित रत्न विशेष जिसके लिये यह बात प्रसिद्ध है कि उसके समक्ष जो अभिलाषा प्रकट की जाती है वह उसी समय पूर्ण हो जाती है। उ०—१ समुद्र और छीलर, कांजी और अम्रत, कल्पव्रक्ष और धतूरो, चिंतामण और पत्थर, सक्कर और लूण।
—पंचदंडी री वारता

उ०—२ चिंतामणि पारस पोरसौ, सुधा सरोवर कामगा। संपजै तांम सुत संपनै, ग्रिह सुरधांम विरांमगा।—रा.रू.

उ०—३ रचे चिंतामणी सुहार, कंठि रंक कीजियै। पलं पलं विलोकि पुत्र, जेण भांति जीजियै।—सू.प्र.

२ ब्रह्मा. ३ परमेश्वर. ४ सरस्वती का एक मंत्र विशेष जो विद्यार्थियों द्वारा विद्या प्राप्त करने की इच्छा से अपनी जीभ पर लिखा जाता है।

५ कपिल के यहां जन्म लेने वाला एक गणेश (स्कंदपुराण) ६ घोड़े के गले या नाक पर की भौंरी (शुभ, शा.हो) ७ वह घोड़ा जिसके ऐसी भौंरी हो। ८ यात्रा का एक योग।

चिंतार–सं०स्त्री०—स्मृति।

चिंतारणौ, चिंतारबौ–क्रि०स०—स्मरण करना। उ०—विसारियां न वीसरइ, चिंतारियां नावंत। मारू सायर लहर ज्यूं, हिवड़ै द्रव काढंत।
—ढो.मा.

चिंतावंत–वि०—चिंतायुक्त, चिंताशील। उ०—जोई आवै छै। त्यांनै पूछिजै छै। महा चिंतावंत हुआ छै।—वेलि.टी.

चिंताहर–सं०पु०—चिंता का हरण करने वाला, ईश्वर।

उ०—चिंताहर नागर चिंता नह चीनी। करुणासागर भी करुणा नह कीनी।—ऊ.का.

चिंतिय–वि०—चिंतित (जैन)

चिंती–वि०—चित्तवाली। उ०—जिण घर घोड़ौ लीलड़ौ, ऊजळ चिंती नार। तिण घर सदा उजासणौ, दिवलै तेल न बाळ।—र.रा.

चितु—देखो 'चित' (रू.भे.)

चित्या—देखो 'चिता' (रू.भे.) उ०—मतना मेरी माता श्रे मतना कर जीवण केरो सोच, मेरी रातादेई जीवण चित्या श्रे कुळ में हूं करूं। —लो.गी.

चित्रंगदु—सं०पु०—एक राजा का नाम (जैन)

चिंदी—सं०स्त्री०—कपड़े की धज्जी, कपड़े का बहुत छोटा लंबोतरा टुकड़ा मुहा०—१ चिंदी चिंदी करणी—छोटे छोटे टुकड़े करना. २ चिंदी देणी—तलाक देना, पति-पत्नी का पारस्परिक सम्बन्ध विच्छेद होना। ३ चिंदी फाड़णी—देखो 'चिंदी देणी'।

चिंध—सं०पु० [सं० चिन्ह] चिन्ह, निशानी। उ०—पाउइ चिंध कबंध वंध धर मंडळि रोळई।—पं.पं.च.

चिंधपट्ट—सं०पु०—खास निशानयुक्त पट्टा (जैन)

चिंम—सं०स्त्री०—आंख में चोट आदि लगने से होने वाला दृष्टि-अवरोधक विकार।

चिंयों—सं०पु०—१ जलाशय के किनारे-किनारे पानी में उत्पन्न होने वाली घास विशेष. २ कच्चे फल का आरंभिक रूप। [सं० चिंचा] ३ इमली का बीज। ४ वणिक, वनिया। उ०—चित की हूं कोळा-चिंयो, विहूं आंगळी वेख। खंत कढ़े कर खग खड़ी, दो हथ म्हारा देख।—रेवतसिंह भाटी

चि—सं०पु०—१ सूर्य, भानु। स्त्री०—२ आवाज. ३ दीवार. ४ चित्र. ५ वकरी (एका.) ६ पिंड. ७ भय।

चिश्रार, चिश्रारि, चिश्रारे—वि० [सं० चत्वार] चार। उ०—१ चत्रभुज भाग अनुज चिश्रारि।—रा.रा. उ०—२ चत्रमुख वेद चिश्रारे।—रा.रा.

चिऊंकार—देखो 'चिकुर' (रू.भे.)

चिक—सं०स्त्री० [तु० चिक] खिड़की व दरवाजे आदि पर डाला जाने वाला पर्दा जो बांस व सरकंडे की तीलियों से बनता है।

चिक-चिकतौ—वि०—तरवतर, चकाचक। मि०—चकाचक।

चिकचिकी—सं०स्त्री०—१ अधिक स्निग्ध पदार्थ से बने खाद्य पदार्थ को खाने पर उत्पन्न होने वाली अरुचि. २ अधिक कमजोरी या बुखार आदि के कारण होने वाला पसीना।

चिकछा—देखो 'चिकित्सा' (रू.भे.) उ०—चारि विधि की चिकिछा वेदें कही छै। जितना सरीर मांहे रोग छै त्यां सिघळां ऊपरि। सु कोण चिकछा। एक तौ ससत्र करम जासों चीरै।—वेलि.टी.

चिकट—सं०पु० [सं० चिक्कण] स्निग्ध पदार्थ।

चिकटणौ, चिकटवौ—क्रि०अ०—मैल या स्निग्ध पदार्थों के जमने के कारण चिपचिपा होना।

चिकटाई—सं०स्त्री०—चिकनापन, स्निग्धता।

चिकटियोड़ौ—भू०का०कृ०—मैल या स्निग्ध पदार्थों के जमने के कारण चिपचिपा। (स्त्री० चिकटियोड़ी)

चिकडोर—सं०पु०यौ०—जालीदार कपाट।

चिकणाई—सं०स्त्री० [सं० चिक्कण+रा०प्र०आई] १ चिकना होने का भाव, चिकनाई, स्निग्धता. २ घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ।

चिकणाट—सं०पु०—देखो 'चिकणाई' (रू.भे.)

चिकणाणौ, चिकणावौ—क्रि०स० [सं० चिक्कण] १ चिकना करना, खुरदरा न रहने देना. २ स्निग्ध करना।

चिकणाय—सं०पु०—१ शक, संदेह, आशंका. २ स्निग्ध पदार्थ।

चिकणावट, चिकणास, चिकणाहट—देखो 'चिकणाट' (रू.भे.)

चिकणी माटी—देखो 'चीकणी माटी' (रू.भे.)

चिकणौ—देखो 'चीकणौ' (रू.भे.)

चिकणौ, चिकवौ—क्रि०अ०—किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छिद्रों से होकर सूक्ष्म कणों में बाहर निकलना। चुकचुकाना, चूना, चुचाना।

चिकता, चिकतेस, चिकतौ—देखो 'चगताई' (रू.भे.)

चिकत्सथांन—सं०पु०—चिकित्सालय, अस्पताल। उ०—अमैं न भिच्छु भिच्छु की मयांन दांन मांन की, न औसधी चिकत्सथांन दोसधी निदांन की।—ऊ.का.

चिकन, चिकन्न—सं०पु० [फा० चिकिन] एक प्रकार का कशीदा जो रेशम या सूत से कपड़े पर काढ़ा जाता है। उ०—सजत के चिकन्न साज, सुंदरा ससोभरा।—सू.प्र.

चिकर—१ देखो 'चिकुर' (रू.भे.) २ सर्प आदि पेट पर रेंगने वाले जन्तु. ३ गिलहरी. ४ छछूंदर।

चिकल—सं०पु० [सं० चिकिलः] कीचड़, पंक।

चिकाणौ, चिकावौ—क्रि०स०—औषधियों आदि के पुट देना। उ०—तठा उपरायंत पुराणं, अगर रौ चिकायौ सूंधौ मंगायजै छै। —रा.सा.सं.

चिकार—सं०पु०—१ समूह, झुंड। उ०—चिरे वहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर है। भिरे भटाळि भाळ में भिखार भूर भूर है।—उ.का. [सं० चीत्कार, प्रा० चिक्कार] २ चिंघाड़, चिल्लाहट। उ०—जहां तहां हत्थनी चंड चिकार।—वं.भा.

चिकारौ—सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य जो सारंगी की तरह का होता है तथा उसमें नीचे की ओर चमड़े का मढ़ा कटोरा रहता है और ऊपर डांडी निकली रहती है। चमड़े के ऊपर से गए हुए तारों या घोड़े के वालों को कमानी से रेतने से शब्द निकलता है। (संगीत) २ हरिण विशेष।

चिकाळ—सं०स्त्री०—मदिरा, शराब (अ.मा.)

चिकिछा—देखो 'चिकित्सा' (रू.भे.) उ०—चारि विध की चिकिछा वेदें कही छै।—वेलि.टी.

चिकित्सिक—सं०पु० [सं०] रोग दूर करने का उपाय करने वाला, औषधि उपचार करने वाला।

चिकित्सा-सं०स्त्री० [सं०] रोग दूर करने का उपाय या क्रिया, इलाज, उपचार, निदान। उ०—चतुर विध वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखध मंत्र तंत्र सवि।—वेलि.

चिकिल-सं०पु० [सं० चिकिल:] कीचड़, पंक (ह.नां.)

चिकीरसष-सं०स्त्री० [सं० चिकीर्षा] इच्छा, अभिलाषा (ह.नां.)

चिकुर-सं०पु० [सं०] शिर के केश, बाल (अ.मा.)

चिकोतरी—देखो 'चकोतरी' (रू.भे.)

चिक्कट—देखो 'चिकट' (रू.भे.)

चिक्कण-वि०—देखो 'चिकणौ' (रू.भे.) उ०—पतसाह रा चिक्कण कुंभ पर सघण बुंद वांणी सुजण।—रा.रू.

सं०स्त्री०—एक प्रकार की ककड़ी (किसनगढ)

चिक्कण, चिक्कणी-सं०स्त्री० [सं०] सुपारी, चिकनी सुपारी का एक भेद।

चिक्करणौ, चिक्करबौ-क्रि०अ०—हाथी का चिंघाड़ना। उ०—चौंकै दिग्गज चिक्करै उर कल्प अमाया। ध्यांन समाधी छोरि कै मन चित्र बढ़ाया।—वं.भा.

चिक्कस-सं०पु० [सं०] उबटन। उ०—मह मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप अह मह जुई। जह मह विवाह लागा जुड़ण, हाडां घर गह मह हुई।—वं.भा.

चिक्खल, चिक्खिल-सं०पु० [सं० चिकिल:] कीचड़, पंक (जैन)

चिख-सं०पु० [सं० चक्षु] १ नेत्र, नयन, चक्षु। उ०—धुव लाल चख हुय धोम, जुध काळ चढ़ अंत जोम। भड़ चढ़ै त्रसळी भाळ, कमवेस चिख लंकाळ।—पे.रू.

२ देखो 'चिक' (रू.भे.) ३ कीचड़, पंक।

चिगंदौ—देखो 'चिगदौ' (रू.भे.) उ०—'सेवैई' तरह सौं कांमखांनी नैं भगाया, चिगंदा तीन छोटा क्यांमख्यांजी कै लगाया।—शि.वं.

चिग—देखो 'चिक' (रू.भे.) उ०—१ औ जाळियां चिगां ढाळिनै रही छै।—रा.सा.स.

उ०—२ पछै पातसाहजी आपरी अंगरह थी तठै ठौड़ संवराई। मोहल री लोग पिण चिगां रै ओळै देखण आयो।—नैणसी

चिगचिगी-सं०स्त्री०—कमजोरी या बुखार की अवस्था में होने वाला पसीना।

चिगट—देखो 'चिकट' (रू.भे.)

चिगणौ, चिगबौ-क्रि०अ०—चिढ़ना, खीझना। उ०—सेठ कह्यौ इयै में चिगण री तौ बात ई कोयनी, आ तौ वैवार री बात है।

—वरसगांठ

चिगत, चिगथौ—देखो 'चगताई' (रू.भे.) उ०—भाऊ जिसा अरोड़ा भाई, भड़ जसवंत जे हो भरतार। चिगथां लड़ण चलावै चोटां, 'सम्रसळ' सधू वजावै सार।—जसमांदै हाडीरांणी री गीत

चिगथ्थौ-सं०पु०—१ किसी कपड़ या कागज का टुकड़ा।

२ चिगथौ (अल्पा. रू.भे.)

चिगदणौ, चिगदबौ-क्रि०स०—कुचलना। उ०—धणी री रुंड सीस विनां री धड़ जुध्ध करतौ हौ नै पड़ियौ नहीं हौ उठा पैली थूं वैरियां रा झुंड नै टापां सूं मार चिगद टूक-टूक होय धणी कवंध हुवौ लड़तां धणी रा धड़ पहली पड़ियौ।—वी.स.टी.

चिगदौ-सं०पु०—१ छोटा घाव, जख्म। उ०—कोई दीह तांई घाव में लूणि न आया। चिगदा छा सजोरा सेव सिवजी धांम पाया।—शि.वं.

२ धब्बा. ३ खंड, टुकड़ा।

चिगळणौ, चिगळबौ-क्रि०स०—१ किसी पदार्थ को जीभ पर रख कर स्वाद लेने के लिए मुंह में इधर-उधर डुलाना. २ तरसाना।

चिगाड़णौ, चिगाड़बौ-क्रि०स०—१ तरसाना, लालायित करना. २ भुलावा देना, फुसलाना। उ०—सोफी सबद सुणाय चोर रंग देत चिगाड़ै। वैरागी नैं जगत जगत नै भेख बिगाड़ै।—ऊ.का.

३ चिढ़ाना।

चिगाड़णहार, हारौ (हारी), चिगाड़णियौ—वि०।

चिगाड़िअोड़ौ, चिगाड़ियोड़ौ, चिगाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिगाड़ीजणौ, चिगाड़ीजबौ—कर्म वा०।

चिगाड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तरसाया हुआ. २ फुसलाया हुआ। (स्त्री० चिगाड़ियोड़ी)

चिगाणौ, चिगाबौ—देखो 'चिगाड़णौ' (रू.भे.)

चिगाणहार, हारौ (हारी), चिगाणियौ—वि०।

चिगाड़णौ, चिगाड़बौ, चिगावणौ, चिगावबौ—रू०भे०।

चिगायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चिगाईजणौ, चिगाईजबौ—कर्म वा०।

चिगणौ, चिगबौ—अक० रू०।

चिगायोड़ौ—देखो 'चिगाड़ियोड़ौ' (स्त्री० चिगायोड़ी)

चिगाळी-सं०स्त्री०—किसी को चिढ़ाने के लिए उसके कार्यों या आकृति की उतारी गई नकल।

चिगावणौ, चिगावबौ—देखो 'चिगाड़णौ' (रू.भे.)

चिगावणहार, हारौ (हारी), चिगावणियौ—वि०।

चिगाविअोड़ौ, चिगावियोड़ौ, चिगाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिगावीजणौ, चिगावीजबौ—क्रि० कर्म वा०।

चिगणौ, चिगबौ—अक० रू०।

चिगावियोड़ौ—देखो 'चिगाड़ियोड़ौ' (स्त्री० चिगावियोड़ी)

चिगिच्छय-सं०पु० [सं० चिकित्सक] चिकित्सक (जैन)

चिगी—देखो 'चिगाळी' (रू.भे.)

चिग्ग—देखो 'चिक' (रू.भे.) उ०—साईवांन चिग्गां जरी तार सोहै। मंडै झालरी मोतियां हंस मोहै।—सू.प्र.

चिड़-सं०स्त्री०—१ चिड़चिड़ाने का भाव, चिढ़, कुढ़न. २ नफरत, घृणा. ३ अप्रसन्नता, खिजलाहट, विरक्ति. ४ एक प्रकार का पक्षी जो चिड़ी से छोटा होता है. ५ चिड़ियों का समूह। उ०—चगचगाट चिड़ करै मिरगला मोजां माणै। गूंजै माखी भंवर महक खीचड़ रंग खाणै।—दसदेव

६ देव मूर्ति का आभूषण।

चिड़उ—देखो 'चिड़ौ' (रू.भे.)

चिड़कल—देखो १ 'चिड़ी' 'चिड़ौ' (मह. रू.भे.)

चिड़कली—१ देखो 'चिड़ी' (अल्पा. रू.भे.) उ०—मेरा मोवी रै बेटा, लैरां तौ छोडी रै भोळी चिड़कली, हरसा मेरा बेटा रै, होवेली सांझ सवेरी रै रोज मेरा समरथ मोवी! भोजन री वेळचां रै ऊभी रोवसी।—लो.गी.

सं०स्त्री०—२ चरखे का हत्था जिसे पकड़ कर चक्र घुमाया जाता है।

वि०—देखो 'चिड़ोकलौ' (रू.भे.)

चिड़कलौ—सं०पु०—(स्त्री० चिड़कली) १ नर चिड़िया या चिड़ा। उ०—छोह कर ताळियां चिड़कला छड्डही। अभंग जसवंत जुध गुरड़ नहं उड्डही।—हा.झा.

२ चित्रा नक्षत्र. ३ मतान्तर से अश्लेषा नक्षत्र।

वि० (स्त्री० चिड़कली) चिढ़ने वाला।

चिड़कोलौ, चिड़कोल्यौ (स्त्री० चिड़कोली) देखो 'चिड़कलौ' (रू.भे.) उ०—क्रूर उनाळै हरियां पतां, चिड़कोल्यां चग चग करै। कुर दसिया कुत्ता विल्ला, चढ रेळ रंग रळ भंग भरै।—दसदेव

चिड़चिड़ाट, चिड़चिड़ाहट—सं०स्त्री०—१ चिड़चिड़ाने का भाव. २ चिढ़ने या खीजने का भाव।

चिड़चिड़ौ—वि० (स्त्री० चिड़चिड़ी) १ चिड़चिड़े स्वभाव वाला. २ शीघ्र चिढ़ने वाला।

चिड़णौ, चिड़बौ—क्रि०अ०—१ चिढ़ना. २ क्रोधित होना, झल्लाना. ३ द्वेष करना।

चिड़णहार, हारौ (हारी), चिड़णियौ—वि०।

चिड़वाड़णौ, चिड़वाड़बौ, चिड़वाणौ, चिड़वावौ, चिड़वावणौ, चिड़वावबौ—प्रे०रू०।

चिड़ाणौ, चिड़ावौ, चिड़ावणौ, चिड़ावबौ—क्रि०स०।

चिड़िओड़ौ, चिड़ियोड़ौ, चिड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिड़ीजणौ, चिड़ीजबौ—भाव वा०।

चिड़पड़ौ—वि०—चिढ़ने वाला, शीघ्र अप्रसन्न होने वाला, तुनक मिजाज। कहा०—चिड़चिड़े सुभाग सूं रांडापौ चोखौ—चिढ़ने वाले पति के साथ रहने या परस्पर कभी न बनती हो तो ऐसे सुहाग की अपेक्षा वैधव्य ही भला। चिड़चिड़े स्वभाव वाले साथी की निन्दा।

चिड़भड़णौ, चिड़भड़बौ, चिड़भिड़णौ, चिड़भिड़बौ—देखो 'चड़भड़णौ' (रू.भे.)

चिड़याटूक—देखो 'चिड़ियाटूंक' (रू.भे.)

चिड़यानाथ—देखो 'चिड़ियानाथ' (रू.भे.)

चिड़ाणौ, चिड़ावौ—क्रि०स०—१ चिढ़ाना, खिझाना. २ अप्रसन्न करना, कुपित या खिन्न करना. ३ कुढ़ाने के लिए किसी की आकृति या कार्य की नकल करना. ४ उपहास करना।

चिड़ाणहार, हारौ (हारी), चिड़ाणियौ—वि०।

चिड़ावणौ, चिड़ावबौ—रू०भे०।

चिड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चिड़ाईजणौ, चिड़ाईजबौ—कर्म वा०।

चिड़णौ—अक० रू०।

चिड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चिढ़ाया हुआ, खिझाया हुआ. २ अप्रसन्न किया हुआ. ३ कुढ़ाया हुआ. ४ उपहास किया हुआ। (स्त्री० चिड़ायोड़ी)

चिड़ावणौ, चिड़ावबौ—देखो 'चिड़ाणौ' (रू.भे.)

चिड़ावणहार, हारौ (हारी), चिड़ावणियौ—वि०।

चिड़ाविओड़ौ, चिडावियोड़ौ, चिड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिड़ावीजणौ, चिड़ावीजबौ—कर्म वा०।

चिड़णौ—अक० रू०।

चिड़ावियोड़ौ—देखो 'चिड़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिड़ावियोड़ी)

चिड़िखेत, चिड़िखेतियौ—देखो 'चिड़ीखेत' (रू.भे.)

चिड़िया—सं०स्त्री०—आकाश में उड़ने वाला छोटा पक्षी, पंखेरू। मुहा०—चिड़िया फंसाणी—किसी स्त्री को बहका कर सहवास के लिए राजी करना (बाजारू), किसी देने वाले धनी आदमी को अपने अनुकूल करना। किसी मालदार को दांव पर चढ़ाना।

चिड़ियाखांनौ—सं०पु०—वह घर या स्थान जहां अनेक जाति के पक्षी रक्खे जाते हैं।

चिड़ियाचूंटी—सं०स्त्री०—एक प्रकार की घास।

वि०वि०—देखो 'चिड़ीखेत'।

चिड़ियाछट—सं०स्त्री०—भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। (मि० ऊबछठ)

चिड़ियाटूंक—सं०पु०—एक पहाड़ी का नाम जिस पर आजकल जोधपुर का किला बना हुआ है।

चिड़ियानाथ—सं०पु०—जोधपुर की चिड़ियाटूंक पहाड़ी पर संवत् १५१५ में रहने वाले एक महात्मा।

वि०वि०—ये नाथ संप्रदाय के एक प्रसिद्ध महात्मा थे तथा चिड़ियाटूंक की पहाड़ी पर, जहां पर एक जल का कुंड है, तपस्या करते थे। तत्कालीन राव जोधा ने मंडोर को अपने अधिकार में करने के बाद चिड़ियाटूंक पहाड़ी पर पानी की बाहुल्यता देख कर अपना किला बनाने की योजना बनाई। किले की जब नींव डाली गई तो महात्मा को हटने के लिए कहा गया। जब महात्मा नहीं हटे तो उन्हें अनेक प्रकार से तंग किया गया। अधिक तंग होने पर महात्मा ने जोधा को शाप दिया कि जिस पानी के कारण तुम मुझे हटा रहे हो उसी पानी के लिए तुम्हारे राज्य की प्रजा हमेशा कष्ट उठायेगी। इसके बाद चिड़ियानाथ ने यह पहाड़ी छोड़ दी तथा अन्य स्थान को चले गये। कहा जाता है कि तभी से हर तीसरे वर्ष मारवाड़ को अकाल व अनावृष्टि का कष्ट उठाना पड़ता है।

चिड़ियाळ–सं०पु०—एक प्रकार की भांग विशेष।

चिड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—चिढ़ा हुआ, खीझा हुआ। (स्त्री० चिड़ियोड़ी)

चिड़ी–सं०स्त्री० [सं० चटक] (पु० चिड़ो) उड़ने वाला एक प्रकार का छोटा पक्षी, चिड़िया।

मुहा०—१ चिड़ी फंसाणी—देखो 'चिड़िया फंसाणी'. २ चिड़ी बणाय उडाणी—उपहास करना, हँसी उड़ाना।

कहा०—१ चिड़ियां सूं खेत छांनां कोयनी—उड़ने वाली चिड़ियों से कोई खेत छुपा हुआ नहीं। विज्ञ या निपुण व्यक्ति से कोई बात छिपी हुई नहीं रहती। २ चिड़ियां में भाटौ गेरणौ—चिड़ियों के बीच पत्थर फेंकना, तितर-बितर करना, अस्त-व्यस्त करना।

रू०भे०—चिड़िया।

अल्पा० चिड़कली। (मह० चिड़कल)

यौ०—चिड़ीमार।

चिड़ीखेत, चिड़ीखेतियौ, चिड़ीधांणियौ–सं०पु०—वर्षा ऋतु में होने वाली एक घास विशेष जो पीले रंग की और तंतुओं के समान होती है।

वि०वि०—ऐसा माना जाता है कि इसके जड़ नहीं होती और ये तंतु घास या वृक्षों पर अपने आप फैलते रहते हैं। प्रायः लोग इसे चिड़ियों की सेव भी कहते हैं।

चिड़ीमार–सं०पु०—चिड़िया पकड़ने वाला व्यक्ति, व्याध, बहेलिया।

चिड़ी-मोठ, चिड़ी-मोठियौ–सं०पु०—एक प्रकार का घास विशेष जो लता के समान फैलता है। इसके फलियां लगती हैं और इसका बीज कड़ुवा होता है।

अल्पा०—चिड़ी मोठियौ। (मह० चिड़ीमोठड़)

चिड़ुकुलउ–सं०पु०—चिड़िया पक्षी। उ०—चिड़ुकलउ जेम ऊडई चिड़ाह। वहुणउ पंथि खड़ि वाह वाह।—रा.ज.सी.

चिड़ोकड़, चिड़ोकड़ौ, चिड़ोकलौ–वि० (स्त्री० चिड़ोकड़ी, चिड़ोकली) चिड़चिड़े स्वभाव का, शीघ्र चिढ़ने वाला, खीझने वाला।

चिड़ौ–सं०पु० [सं० चटकः] (स्त्री० चिड़ी) नर चिड़िया।

अल्पा०—चिड़कलौ। (मह० चिड़कल)

चिचकियौ–सं०पु०—स्त्रियों की जननेंद्रिय, योनि, भग।

चिचांन–सं०पु० [सं० सचान] एक प्रकार का बाज पक्षी।

चिच्चि–सं०स्त्री०—भयंकर आवाज (जैन)

चिच्चिका–सं०स्त्री० [सं०] वाद्य विशेष।

चिजारौ–सं०पु०—भवन आदि निर्माण करने वाला, कारीगर।

चिट–सं०स्त्री० [सं० चीण्ठिका] १ कागज का टुकड़ा. २ छोटा रुक्का. ३ किसी कपड़े का छोटा टुकड़ा. ४ जिद्द, दुराग्रह।

उ०—करै न अक्कल कांम, अधगेला ढिग एक री। समझावै खुद स्यांम, चिट नहिं छोडै चकरिया।—मोहनराज साह

रू०भे०—चिट्ट।

चिटक–सं०स्त्री०—१ टुकड़ा, खंड, भाग. २ नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। उ०—धूपिया थकै चिटकां धिरत धकधकै, वारुणी डकडकै तरफ बांमी। बकबकै वीर जोगण छकै दोय वखत, भकभकै हुतासण हेत भांमी।—मे.म.

३ पपड़ी। उ०—तरै वडो रांमचंगी री गोळी वाहि दीठी तिको चापटी होय पड़ियो पिण ढाल रै रंग री चिटक ऊतरी नहीं।

—कहवाट सरवहिया री वात

चिटकण–सं०पु०—१ बैलों में होने वाला एक रोग विशेष जिसके कारण बैल पिछले पैर को झटका देकर चलता है और चलते समय पैर से चटचट की आवाज करता है. २ इस रोग से पीड़ित बैल।

चिटकणी—देखो 'चटकणी' (रू.भे.)

चिटकणौ, चिटकबौ—देखो 'चटकणौ' (रू.भे.)

चिटकणहार, हारौ (हारी), चिटकणियौ—वि०।

चिटकवाणौ, चिटकवाबौ—प्रे०रू०।

चिटकाड़णौ, चिटकाड़बौ, चिटकाणौ, चिटकाबौ, चिटकावणौ, चिटकावबौ—स०रू०।

चिटकओड़ो, चिटकियोड़ो, चिटक्योड़ो—भू०का०कृ०।

चिटकीजणौ, चिटकीजबौ—भाव वा०।

चिटकौ—देखो 'चटकौ' (रू.भे.)

चिटली—देखो 'चिटू' (अल्पा. रू.भे.) उ०—नणदल मांडी चिटली आंगळी, थारी घण मांडया दोनूं हाथ, सोदागर महंदी राचणी।

—लो.गी

वि०—छोटी।

चिटियौ–सं०पु०—हाथ में रखने की वह छड़ी जो ऊपरी सिरे पर अर्द्ध-चंद्राकार होती है। उ०—१ देवरजी नखराळा रै चिटियौ दांत रो हो राज।—लो.गी. उ०—२ वैरे हाथ में सोने रो चिटियौ वैरे हाथ में फूलां री छड़ी।—लो.गी.

चिटी–सं०स्त्री० [सं०] १ चांडाल वेष धारिनी वह योगिनी जिसकी उपासना वशीकरण के लिये की जाती है।

२ देखो 'चिट्ठी' (रू.भे.)

चिटुड़ी—देखो 'चिटू' (अल्पा. रू.भे.)

रू०भे०—चिटली।

चिटुलौ–सं०पु० काले नाग का छोटा बच्चा।

उ०—आरीसा सारीखा कपोळां जांणै सोना रा तवक विराजिआ छै, केसरिआ अलकावळि काळा नाग रा चिटुला ज्यौं चिळकनै रही छै।—रा.सा.सं.

चिटू–सं०स्त्री०—कनिष्ठा अंगुली। उ०—'वेलौ' कही सहनांण दिखावौ तद 'नांपै' आगै होय जीवणै हाथ री आंगळी चिटू पकड़ी।

—नांपै सांखला री वारता

अल्पा०—चिटली, चिटुड़ी।

चिटोकड़ौ—देखो 'चट्टौ' (१, अल्पा. रू.भे.)

चिटौ–वि०—स्पष्ट, खुलासा।

क्रि०प्र०—बोलणो।
रू०भे०—चिट्टो।

चिट्ट—देखो 'चिट' (रू.भे.)

चिट्टो–वि०—१ श्वेत, सफेद. २ देखो 'चिटो' (रू.भे.)

चिट्ठ–वि०—बहुत, अधिक (जैन)

चिट्ठण–सं०पु० [सं० स्थान] खड़ा (जैन)

चिट्ठणा–सं०स्त्री०—स्थिति, बैठना (जैन)

चिट्ठा–सं०स्त्री०—चेष्ठा (जैन)

चिट्ठिअ, चिट्ठित–सं०पु० [सं० चेष्ठित] १ चेष्ठा, सविकार अंग (जैन) २ अवस्थान, स्थिति (जैन)

चिट्ठी–सं०स्त्री० [सं० चीष्ठिका] वह पत्र या कागज जिस पर कुछ संदेश अथवा समाचार लिख कर किसी दूसरे के पास भेजा जाता हो। पत्र, खत।
रू०भे०—चिठी।
यौ०—चिट्ठी-पत्री।

चिट्ठो–सं०पु०—१ जमा-खर्च आदि का हिसाब रखने की वही. २ वह कागज जिस पर वर्ष भर का आय-व्यय का विवरण लिखा जाता है. ३ किसी रकम या खर्च आदि की सूची, ब्यौरा।

चिडिग–सं०पु० [सं० चिटिक] पक्ष विशेष (जैन)

चिढ़–सं०स्त्री०—चिढ़ने का भाव, कुढ़न, अप्रसन्नता, विरक्ति, क्रोध लिए हुए घृणा, खिजलाहट।
मुहा०—चिढ़ काडणी—ढूंढ कर ऐसी बात कहनी जिससे कोई चिढ़े। चिढ़ाने की युक्ति निकालना।

चिण–सं०स्त्री०—चिनगारी।

चिणक—१ देखो 'चणक' (रू.भे.) २ ताव, गुस्सा, क्रोध।
उ०—इतरी वात सुणतां ही ठाकुर लोगां नूं चिणक लागी सो खिजिया।—डाढ़ाळा सूर री वात

चिणकियौ—देखो 'चिणगियौ' (रू.भे.)

चिणख—१ देखो 'चणक' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—२ चिनगारी।

चिणगटी–सं०स्त्री०—१ चपत, थप्पड़, तमाचा. २ छोटी जूं।

चिणगार, चिणगारी–सं०स्त्री० [सं० चूर्ण+अंगार] अग्नि का छोटा कण, चिनगारी। उ०—हमें सखियां मिळ रतना ने सिणगार राखी है सो जांणै सोर में चिणगार नाखी है।—र.हमीर
(मह० चिणगार)

चिणगियौ–सं०पु०—मूत्र संबंधी एक रोग जिसके कारण पेशाब दर्द एवं जलन के साथ रह रह कर निकलता है। एक प्रकार का मूत्र कृच्छ्र रोग।

चिणगी—देखो 'चिनगारी' (रू.भे.) उ०—सो हरीसिंघ री नांव सुणतां ही भाई म्होकमसिंघ बैठौ थौ सो इसौ भभकियौ जांणै दारू रा गंज मांहे आग री चिणगी पड़ै।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात

चिणणौ, चिणबौ—देखो 'चुणणौ' (रू.भे.)

चिणणहार, हारौ (हारी), चिणणियौ—वि०।
चिणवाड़णौ, चिणवाड़बौ, चिणवाणौ, चिणवाबौ, चिणवावणौ, चिणवावबौ—प्रे०रू०।
चिणाड़णौ, चिणाड़बौ, चिणाणौ, चिणाबौ, चिणावणौ, चिणावबौ—क्रि०स०।
चिणिओड़ौ, चिणियोड़ौ, चिण्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चिणीजणौ, चिणीजबौ—कर्म वा०।

चिणाई—१ देखो 'चणाई' (रू.भे.) २ देखो 'चुणाई' (रू.भे.)

चिणाखार—देखो 'चणाखार' (रू.भे.)

चिणाणौ, चिणाबौ–क्रि०स०—देखो 'चुणाणौ' (रू.भे.)
उ०—अन्नण चन्नण चिता चिणाई, नारेळां में दाग। आर पार फिर जाट लोटियै, लांपौ दियौ लगाय।—डूंगजी जवारजी री पड़
चिणाणहार, हारौ (हारी), चिणाणियौ—वि०।
चिणायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चिणावणौ, चिणावबौ—रू०भे०।
चिणाईजणौ, चिणाईजबौ—कर्म वा०।

चिणायोड़ौ—देखो 'चुणायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिणायोड़ी)

चिणावणौ, चिणावबौ—देखो 'चुणाणौ' (रू.भे.) उ०—१ तू क्यूं ऐ मैड़ी वैरण डगमगी, तेरी लगी ऐ धरम री नीम, एक दिन राजन खड़्या ऐ चिणावता।—लो.गी. उ०—२ दसम रे चिणावूं धरमी रे देवरौ, चवदस जातोड़ौ जाय ओ।—लो.गी.

चिणावियोड़ौ—देखो 'चुणायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिणावियोड़ी)

चिणियाकपूर–सं०पु०यौ०—एक प्रकार का कपूर।

चिणियोड़ौ—देखो 'चुणियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिणियोड़ी)

चिणूं—देखो 'चिणौ' (रू.भे.)

चिणोठी, चिणोढ़ी–सं०स्त्री० [सं० चित्रपृष्ठा] गुंजा, घुंघची (अ.मा.) (उ.र.) (मि० 'चिरमी')

चिणौ—१ देखो 'चणौ' (रू.भे.)
मुहा०—१ लोह रा चिणा—अत्यन्त कठिन कार्य, दुष्कर कार्य। २ लोहे रा चिणा चाबणा—अत्यन्त कठिन कार्य करना।
कहा०—१ उखेल चिणा बाव गऊं—चनों को उखाड कर गेहूँ बोना। ठीक से कार्य न करने पर। २ चिणां उछल ने की भाड़ फोड़े—यदि चना उछलता भी है तो भी वह भाड़ नहीं फोड़ सकता। ३ चिणा है जठै दांत कोनी दांत है जठै चिणा कोनी—जहां चने हैं वहां खाने के लिये दांत नहीं हैं और जहां दांत हैं वहां चने नहीं हैं। प्रतिकूल परिस्थिति अथवा अनमेल वस्तुओ के प्रति।
२ बंदूक के कान के छेद को बढ़ने से रोकने के लिये लगाया जाने वाला उपकरण. ३ तृण, तिनका।
सं०पु० [सं० चीनक] ४ चीनी कर्पूर (उ.र.)

चित–वि० [सं०] किसी आधार के बल इस प्रकार से लेटा हुआ कि सामने वाला भाग (यथा मुंह पेट आदि) ऊपर की ओर हो। पीठ के बल सीधा पड़ा हुआ।

मुहा०—चित करणौ—कुश्ती में पछाड़ना।

सं०पु० [सं० चित्त] १ मन, दिल, हृदय। उ०—नैण भलांईं लागजो, तूं मत लागे चित्त, नैण छूटसी रोय नै, (थूं) बंध्यो रहसी नित्त।—र.रा.

मुहा०—१ चित उतरणौ—भूल जाना, विस्मरण होना, कदर या मान घटना, मूल्य कम होना, नफरत करना, घृणा करना. २ चित ऊठणौ—जी न लगना. ३ चित चढ़णौ—पसंद आना. ४ चित चुराणौ—मन मोहित करना. ५ चित चूळिये सूं उतरणौ—पागल होना, दिल का ठिकाने न रहना. ६ चित देणौ—ध्यान लगाना, आसक्त होना. ७ चित फाटणौ—तबियत हट जाना, अरुचि होना. ८ चित में जमणौ—किसी बात का दिल में पक्का हो जाना. ९ चित में बैठणौ—देखो 'चित में जमणौ'. १० चित लागणौ—मन लगना, प्यार होना. ११ चित सूं उतरणौ—हृदय में स्थान न रहना, स्मरण न रहना।

यौ०—चितचोर, चितधारी, चितभंग, चितहर।

सं०स्त्री०—२ बुद्धि. ३ चेतना, ज्ञान, चित्तवृत्ति।

रू०भे०—चित्त, चीत, चीति।

[सं० चित्र] ४ तस्वीर, चित्र।

रू०भे०—चित्त।

चितइलोळ-सं०पु०—डिंगल का एक गीत छंद विशेष।

चितकबरौ-वि० [सं० चित्रकर्बुर] काले, पीले, श्वेत आदि मिश्रित दाग वाला रंग-विरंगा।

चितकूट—देखो 'चित्रकूट' (रू.भे.)

चितगुपति-सं०पु०—देखो 'चित्रगुप्त' (रू.भे.)

चितचोजी-वि०—१ दिल से आनंद लूटने वाला, मौजी। उ०—मुळकै वेली चख पोळच लख मौजी, चेली दीठां ज्यूं साधू चितचोजी।
—ऊ.का.

२ शौकीन, छैला. ३ उत्साही।

चितधारी-वि०यौ०—उदार।

चितबंको-वि०—१ उदार. २ वीर, साहसी।

चितवाहु-सं०पु० [सं०] तलवार का एक हाथ।

सं०पु०—मतिभ्रम, बुद्धिलोप, भौंचक्कापन।

चितभंग, चितभंगौ-वि०—१ उन्माद रोग से पीड़ित. २ भग्न हृदय, उदासीन। उ०—सुण भंवरा भंवरी कहै, तू क्यूं फिरै चितभंग। जे इण महलां रम रही, लाल करू सब रंग।—र.रा.

चितभरम, चितभरमियौ-वि०—१ चित्तभ्रम, पागल।

उ०—१ ताहरां सहर रे धणी नूं खबर हुई एक इसौ रजपूत सिरदार छै सु चित भरम थकियौ बोलै छै।—रा.ध.

उ०—२ कोई समद मांहै साह गयौ थौ, तिकै एक म्रितक देह दीठी थी, तिण री वात रांणां कूंभा नूं कही तद रांणौ कूंभौ चितभरमियौ हुवौ।—नैणसी

चितमठियौ-वि०—कृपण, कंजूस।

चितरंगताळ—मन को प्रिय लगने वाले छोटे-छोटे ताल-तलैय्या।

उ०—टीबां वरसौ डैरियां वरसौ, हो चितरंगताळ विछावौ बदळी। जेठ उतरियौ असाढ़ उतरियौ हो सांवण उतरियौ जाय बदळी।
—लो.गी.

चितरंगमहल-सं०पु०यौ०—रंगमहल, सुरतिमहल। उ०—भलौ वी करै ए अम्मा, घुड़ला रा असवार कौ म्हारै दीवी सिर पर ढाल, ल्याय वी पुंचायी ए अम्मा चितरंगमहल में जी।—लो.गी.

चितरगुप्त—देखो 'चित्रगुप्त' (रू.भे.)

चितरणौ, चितरबौ-क्रि०स० [सं० चित्रण] १ चित्रित करना, चित्र बनाना।

२ नक्काशी करना. ३ हाथी दांत की चूड़ियां बनाना, खराद से उतारना। उ०—चितरयौ ए चितरायौ, हां ए बाई, थारौ पड़चौ ए मणियारां री हाट।—लो.गी.

चितरणहार, हारौ (हारी), चितरणियौ—वि०।

चितराड़णौ, चितराड़बौ, चितराणौ, चितराबौ, चितराबौण, चितराववौ—क्रि०स०।

चितरिग्रोड़ौ, चितरियोड़ौ, चितरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

चितरीजणौ, चितरीजबौ—कर्म वा०।

चितरांण, चितरांणौ-सं०पु०—चित्तौड़ का अधिपति। उ०—व्रवतौ द्रव रीझ झड़ी में केळव्रछ, सोभा समंद झड़ी में साद। जिम चितरांण जीव जड़ी में, आवै घड़ी घड़ी में याद।—गीत रांणा सिंभूसिंघ री

चितरांम-सं०पु०—तस्वीर, चित्र। उ०—१ जिकां काट मांजिया छांट ऊजळ जळ छोळां। रचि सिंदूर चितरांम चरचि आंगण रंग चोळां।—मे.म.

उ०—२ अनेक अनेक रंग का चितरांम छै।—वेलि. टी.

चितराणौ, चितराबौ-क्रि०स० [सं० चित्रण, 'चितरणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ चित्रित कराना. २ हाथीदांत की चूड़ियां बनाना, खराद से उतराना।

उ०—चुड़लौ चितरा दे ए मां, हां ए म्हांरी रातादेई माय, आई ए सांवणिये री तीज।—लो.गी.

चितराणहार, हारौ (हारी), चितराणियौ—वि०।

चितरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चितराईजणौ, चितराईजबौ—कर्म वा०।

चितराड़णौ, चितराड़बौ, चितरावणौ, चितराववौ—रू०भे०।

चितरायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चित्रित कराया हुआ. २ खराद से उतारा हुआ। (स्त्री० चितरायोड़ी)

चितरावणौ, चितराववौ—देखो 'चितराणौ' (रू.भे.)

चितरावियोड़ौ—देखो 'चितरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चितरावियोड़ी)

चितरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चित्रित किया हुआ. २ खराद से उतारा हुआ (चूड़ा)। (स्त्री० चितरियोड़ी)

चितळ-सं०स्त्री० [सं० चित्रल] १ एक प्रकार का सर्प जो आकार में मोटा और शरीर पर चकत्ते लिये होता है।
सं०पु०—२ एक प्रकार का हिरण जिसके शरीर पर सफेद चकत्ते होते हैं।

चितळती-सं०स्त्री०—चितकबरी बकरी (क्षेत्रीय)

चितळी-वि०—मन में समाई हुई, चित चढी हुई। उ०—सांप्रत जांणी सोमता, चितळी जांणी चुड़ेल। हार गयौ अद्धतौ हुवौ, छतां थकां ही छैल।—बां.दा.

चितवण, चितवणि-सं०स्त्री०—कटाक्ष, चितवन, दृष्टि।
उ०—आकरसरण, वसीकरण, उनमादक, परठि, द्रवणि, सोखरण, सरपंच। चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा संच।—वेलि.

चितवणौ, चितवबौ-क्रि०स० [सं० चिंतन] १ मन में सोचना, विचारना। उ०—चित अोध दिसा नह चितवियौ। कमधज 'दला' सिर लोह कियौ।—गो.रू.
२ इच्छा करना. ३ निश्चय करना. ४ देखना।
चितवणहार, हारौ (हारी), चितवणियौ—वि०।
चितविओड़ौ, चितवियोड़ौ, चितव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चितवीजणौ, चितवीजबौ—कर्म वा०।

चितवाळी-वि०—१ चंचल, चपल. २ सुंदर. ३ उदार।

चितवियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ सोचा हुआ, विचारा हुआ. २ देखा हुआ. ३ इच्छा किया हुआ. ४ निश्चय किया हुआ।
(स्त्री० चितवियोड़ी)

चितविलास-सं०पु०—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रथम चरण में दो पटकल तथा उनके मध्य में गुरु हो। दूसरे पद में चौदह मात्रायें हों। तुक अंत में पद के आदि से ही मिलता हो।

चितहर-सं०पु० [सं० चित्तहर] वस्त्र (अ.मा.)
वि०—मनोहर, सुन्दर, आकर्षक।

चितहरण-वि०—चित्त को हरने वाला, मनोहर, चित्ताकर्षक।

चितांमण—देखो 'चितामणि' (रू.भे.) उ०—लखि रूप चितांमण वारि लियां, कसि तग उतंग सु त्यार कियां।—रा.रू.

चिता-सं०स्त्री०—१ मृतक की शवदाह के लिये चुन कर लगाई गई लकड़ियों का ढेर. २ चित्रक नामक औषधि. ४ चगतई वंश का मुसलमान, मुगल।

चिताणौ, चितावौ-क्रि०स०—१ सचेत करना. सावधान करना, होशियार करना. २ स्मरण कराना, याद दिलाना. ३ आत्म-बोध कराना. ४ सुलगाना, प्रज्वलित करना।

चितानळ-सं०स्त्री०यौ०—शव के दाह-संस्कार की अग्नि।
उ०—हेळ मिट काळ कळचाळ कर हात सूं, गेल पग रात सूं पतंग गाहै। जोधपुर नाथ सूं रहै ऊमरड़ जिता, चितानळ वाथ सूं भरण चाहै।—चिमनजी आढ़ौ

चिताभूमि-सं०स्त्री०यौ०—दाह-संस्कार का स्थान, श्मशान, मरघट।

चितारणी-सं०स्त्री०—१ याददाश्त या स्मृति स्वरूप दिया जाने वाला आभूषण या पदार्थ विशेष, स्मृतिचिन्ह. २ स्मृति, याद।

चितारणौ, चितारबौ-क्रि०स० [सं० चिंतन] १ स्मरण करना, याद करना। उ०—चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि चुगि चित्तारेह। कुरझी बच्चा मेल्हि कइ, दूरि थकां पाळेह।—ढो.मा.
२ चित्र बनाना।
चितारणहार, हारौ (हारी), चितारणियौ—वि०।
चितारिओड़ौ, चितारियोड़ौ, चितारचोड़ौ—भू०का०कृ०।
चितारीजणौ, चितारीजबौ—कर्म वा०।

चितारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ. २ चित्रित किया हुआ। (स्त्री० चितारियोड़ी)

चितारौ-वि० [सं० चित्रक] १ चित्रकला का कार्य करने वाला, चित्रकार. २ लकड़ी या दीवार आदि पर चित्रकारी व नक्काशी करने वाला. ३ चित्रित करने वाला, वर्णन करने वाला।
उ०—दातार सूरूं राजूं का पुत्र जैसे प्यारे सूंबूं कायर राजूं कौ विख जैसे खारे। राजसभा के भूखण दिल के उदार विरदूं के भारे समसेर बहादरूं के समसेरूं के चितारे।—सू.प्र.

चिताळ-सं०स्त्री०—वह पत्थर या बडी शिला जिस पर स्नान किया जाता हो या कपड़े धोये जाते हों।

चितावणी—देखो 'चेतावणी' (रू.भे.)

चितावणौ, चितावबौ—देखो 'चिताणौ' (रू.भे.)
चितावणहार, हारौ (हारी), चितावणियौ—वि०।
चिताविओड़ौ, चितावियोड़ौ, चिताव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चितावीजणौ, चितावीजबौ—कर्म वा०।

चितावर-सं०पु०—चितौड़। उ०—काळंजर घेरियौ नव लाख असवार मिळ, सूर सकबंधी जुर मूवां आप वळ मैं। चितावर घेरियौ सुलतांन हूं अलावदीन, वारा वरस जुध कळ कांत भयौ दळ मैं।—द.दा.

चितावियोड़ौ—देखो 'चेतावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चितावियोड़ी)

चिति-सं०पु०— १ चित्त (ह.नां.)
उ०—चिति निति हेत सही चितवियौ, रीझवियौ रुखमण रमण।
—ह.नां.
२ ज्ञान। उ०—कहि चिति निति समपित्र हरि कीरति, कीरति वेद पुरांण कही।—ह.नां.
[सं० चैत्य] ३ समाधि-स्थान (जैन)

चितिय—देखो 'चिति' (रू.भे.)

चितेरण-सं०स्त्री०—१ चित्र बनाने वाली स्त्री. २ चित्रकार की स्त्री. २ ब्यौरा, वर्णन।

चितेरणौ, चितेरबौ-क्रि०स०—चित्र खींचना, चित्रित करना।

चितेरौ-सं०पु० [सं० चित्रकार] चित्र बनाने वाला, चित्रकार।
पर्याय०—चतरगहार, चतरांमकर, रंगजीव।

चित्तौड़–सं०पु० [सं० चित्रकूट, प्रा० चित्तऊड] चित्रांगद मोरी (मौर्य वंश) द्वारा राजपूताने के मेवाड़ राज्य में स्थापित किया गया प्राचीन गढ़ (ऐतिहासिक)

रू०भे०—चतरंग, चत्रंग, चत्रंगद, चत्रकोट, चत्रकोटगढ़, चत्रगढ़, चात्रंग, चात्रक, चितावर, चित्तंगी, चित्रकूट, चित्रकोट, चीतगढ़, चीतदुरंग, चितोड़, चीत्रोड़, चीत्रोड़ि।

चित्तौड़ी–सं०पु०—१ चांदी का एक प्राचीन सिक्का जो चित्तौड़ के महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय द्वारा चलाया गया था. २ शिसोदिया राजपूत।

सं०स्त्री०—३ चित्तौड़गढ़ के समीप की पहाड़ी।

वि०—चित्तौड़ का, चित्तौड़ सम्बन्धी।

रू०भे०—चीतोड़ी।

चितौड़ो–सं०पु०—१ चित्तौड़ का अधिपति. २ शिसोदिया वंश का राजपूत. ३ चित्तौड़ निवासी। (स्त्री० चितौड़ी.)

वि०—चित्तौड़ सम्बन्धी, चित्तौड़ का।

रू भे०—चीतोड़ो।

चित्तंग–सं०पु० [सं० चित्राङ्क] एक प्रकार का कल्प-वृक्ष (जैन)

चित्तंगी–सं०पु०—चित्तौड़। उ०—मंडी ग्रास मळे छं, खट्टण खंड दुग्ग चित्तंगी। कित्ती खंड विहंडं, जित्ती हार धार सुरतांणी।—रा.रू.

चित्त—१ देखो 'चित' (रू.भे.)

सं०पु०—२ चित्तनायक एक जैन मुनि (जैन)

[सं० चैत्र] ३ चैत्रमास (जैन)

[सं० चित्र] ४ चित्र, आकृति (जैन) ५ चित्र नामक एक पर्वत। (जैन) ६ वेणुदेव और वेणुदालि इन्द्र के लोकपाल का नाम। (जैन)

चित्त-उत–सं०पु० [सं० चित्रगुप्त] १ जम्बूद्वीप के भारत खंड में होने वाले सोलहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

२ देखो 'चित्रगुप्त' (रू.भे.)

चित्तकणगा–सं०स्त्री० [सं० चित्रकनका] एक विद्युत्कुमारी देवी विशेष। (जैन)

चित्तकार—देखो 'चित्रकार' (रू.भे.) (जैन)

चित्तकूड—देखो 'चित्रकूट' (रू.भे.) (जैन)

चित्तग–सं०पु० [सं० चित्रक] पशु विशेष, चीता। (जैन)

चित्तगर–सं०पु०—देखो 'चित्रकार' (रू.भे.) (जैन)

चित्त-गुत्त–स०पु० [सं० चित्रगुप्त] चित्रगुप्त। (जैन)

चित्त-गुत्ता–सं०स्त्री० [सं० चित्रगुप्ता] १ सोम नामक लोकपाल की अग्र महिषी (जैन) २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसने वाली एक दिक्कुमारी (जैन)

चित्तचंगो सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा। (शा.हो.)

वि०—उज्वल चित्त, पाक दिल।

चित्तचावो–वि०—मनचाहा, इच्छित, अभीष्ट।

उ०—चिलमी अमली के जुलमी चितचावा, दासी वेस्यां रा मदवां रै दावा।—ऊ.का.

चित्तचूरमी–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चित्तण्णु–वि० [सं० चित्तज्ञ] मन की जानने वाला (जैन)

चित्त-पक्ख–सं०पु० [सं० चित्रपक्ष] वेणु देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल (जैन)

चित्त-पत्तग्र–सं०पु० [सं० चित्रपत्रक] चार इन्द्रियधारी, विचित्र पंख वाला जन्तु विशेष (जैन)

चित्तप्रसादण, चित्तप्रसादन–सं०पु० [सं० चित्तप्रसादन] चित्त का वह संस्कार जो मैत्री, करुणा, हर्ष, उपेक्षा आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा होता है। (योग)

चित्तभंग—देखो 'चितभंग' (रू.भे.) उ०—किसे असूधो कज्ज किनां निद्रां भर सोयो, कै हुवो चित्तभंग, किनां रावां दिस जोयो।

—जगदेव पंवार री वात

चित्तभू–सं०स्त्री० [सं०] कामदेव (डिं.को.)

चित्तभूमि–सं०स्त्री० [सं०] योग के अनुसार चित्त की पांच अवस्थायें, क्षिप्र, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, और निरुद्ध।

चित्तभ्रम–वि०—मूर्ख, पागल, मतिभ्रम।

रू०भे०—चितभरम।

चित्तरंजण, चित्तरंजन–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चित्त रस–सं०पु० [सं० चित्र रस] विचित्र रस का भोजन देने वाला एक कल्पवृक्ष (जैन)

चित्तळ–सं०पु० [सं० चित्रल] १ एक प्रकार का मृग. २ चिता। ३ देखो 'चितळ' (रू.भे.)

चित्तवणि–सं०स्त्री०—देखो 'चितवन' (रू.भे.)

चित्तवांन–वि० [सं०चित्तवान्] उदार।

चित्तविक्षेप–सं०पु० [सं०] योग में बाधक मानी जाने वाली चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्तविब्भम, चित्तविभ्रम–सं०पु० [सं० चित्तविभ्रम] भ्रांति, भ्रम, मतिभ्रम।

चित्तव्रत्ति–सं०स्त्री० [सं० चित्तवृत्ति] चित्त की अवस्था।

चित्र संभूइय–सं०पु० [सं० चित्त संभूतीय] चित्त और संभूत नामक चाण्डाल विशेष के वृत्तान्त वाला उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन (जैन)

चित्तहिलोळ–सं०पु०—डिंगल का एक गीत छंद विशेष।

चित्तारो–सं०पु० [सं० चित्रकार] चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चित्तासाळि–सं०स्त्री०—चित्रशाला।

चित्तोड़—देखो 'चित्तौड़' (रू.भे.)

चित्तोड़ी—देखो 'चितौड़ी' (रू.भे.)

चित्तौर—देखो 'चितौड़' (रू.भे.)

चित्यामणि, चित्यामणी—देखो 'चिंतामणि' (रू.भे.)

चित्तसभा–सं०स्त्री०यौ० [सं० चित्रसभा] चित्रशाला (जैन)

चित्ता–सं०स्त्री०—१ चित्रा नक्षत्र (जैन) २ देखो 'चिता' (रू.भे.)

चितार-सं०पु० [सं० चित्रकार] चित्रकार (जैन)

चित्र-सं०पु० [सं०] १ किसी वस्तु. आकृति आदि का आकार जो कलम व विविध रंगों के मेल से बना हो। किसी वस्तु का वह स्वरूप जो किसी कागज, कपड़ा आदि पर बनाया गया हो। तस्वीर।

उ०—आभा चित्र रचित तेणि रंगि अनि अनि, मणि दीपक करि मूथ मणि। मांडि रहे चंद्रवा तणे मिनि, फण सहसेई सहस फणि। —वेलि.

क्रि०प्र०—उतारणी, कोरणी, खींचणी, बणाणी, मांडणी।

यौ०—चित्रकला, चित्रकार, चित्रमंदिर, चित्रमहल।

२ काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि कोई चित्र का आकार बन जाता है. ३ रस, अलंकार आदि के चमत्कारयुक्त शब्दों की रचना, काव्य, कविता।

उ०—ज्योतिषी वैद पौरांणिक, जोगी संगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तौ अरथ कहि।—वेलि.

४ कुष्ठ रोग का एक भेद. ५ चित्रगुप्त. ६ मुसलमान, यवन।

७ दृश्य। उ०—चढ्यां चक्रपांण विछूटत चित्र। नवै लख तूटत जांण नखित्र।—मे.म.

८ शृंगार में एक आसन विशेष।

वि०—विचित्र, विलक्षण।

चित्रक-सं०पु० [सं०] १ एक प्रकार का छोटा क्षुप। इसका फूल रंगभेद से कई प्रकार का होता है परन्तु अधिकतर सफेद रंग का ही फूल पाया जाता है। चीताक्षुप (अमरत). २ चीता. ३ हिरन।

उ०—खर अंत ततौ चित्रक अखव, नह चित्रक नर जांणिये। नर नहीं नरां नायक निपट, प्रभव भांण पहचांणिये।—र.ज.प्र.

चित्रकर-सं०पु० [सं०] चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चित्रकरम-सं०पु०यौ० [सं० चित्रकर्म] बहत्तर कलाओं के अंतर्गत एक कला।

चित्रकळा-सं०स्त्री०यौ० [सं० चित्रकला] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकार-सं०पु०यौ० [सं०] चित्र बनाने वाला, चितेरा।

चित्रकारी-स०स्त्री०—चित्र बनाने का कार्य, ६४ कलाओं के अंतर्गत एक कला।

चित्रकाव्य-सं०पु०यौ० [सं०] एक प्रकार का काव्य जिसमें अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि लिखने से कोई चित्र बन जाता है।

चित्रकूट-सं०पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध पर्वत जहां वनवास के समय राम, सीता और लक्ष्मण ने निवास किया था. २ राजस्थान में मेवाड़ का एक प्रसिद्ध नगर चित्तौड़, चित्तौड़गढ़। उ०—अर ऊठी चित्रकूट चडाणिराज हम्मीर रा पुत्र रत्नसिंह नूं सरणै राखि रांणा लक्खण-सिंह रो मन आपरै आयांण आवता अलावुद्दीन रा अनीक नूं चंड चंद्रहास चखावण री चहै।—वं.भा.

चित्रकेतु-सं०पु० [सं०] १ चित्रित पताका रखने वाला व्यक्ति. २ लक्ष्मण का एक पुत्र (भागवत). ३ गरुड का एक पुत्र. ४ देव भाग यादव का कंसा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

चित्रकोट—देखो 'चित्रकूट' (रू.भे.) उ०—पग मांडो 'जैमल' 'पता' हूं अकबर जग जीत। चित्रकोट में जांणियौ, चित्रकोट मझ चीत। —बां.दा.

उ०—२ सिर जटा राखि दसरथ सुतन, चित्रकोट ऊपर चढ़ै। —पीरदांन लाळस

चित्रगढ़-सं०पु०—चित्तौड़गढ़ का एक नाम, देखो 'चित्तौड़'।

उ०—दिल्ली पह आयां रांण अत ढिल्लवियौ, तिण सूं कहै चित्रगढ़ तूझ। 'जैमल' जोध कांम तौ जेहौ, मारुआं राव म ढील स मूझ। —जैमल मेड़तिया रो गीत

चित्रगुप्त-सं०पु० [सं०] चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं। ये कायस्थ जाति के आदि पुरुष माने जाते हैं।

रू०भे०—चितरगुपत, चितरगुप्त।

चित्रघटा-सं०स्त्री० [सं०] नौ दुर्गाओं में मानी जाने वाली एक देवी।

चित्रण-सं०स्त्री०—१ चित्रित करने का कार्य, चित्र बनाने का कार्य. २ वर्णन।

चित्रणी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के चार प्रकार के भेदो में से एक। (कामशास्त्र)

चित्रणौ, चित्रबौ-क्रि०स०—१ चित्रित करना। उ०—१ फेरि कारीगर की पूतळी चित्रणै चाहै।—वेलि.टी.

उ०—२ आरंभ मैं कियौ जेणि उपायौ, गावण गुणनिधि हूं निगुण। किरि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण। —वेलि.

२ वर्णन करना।

चित्रणहार, हारौ (हारी), चित्रणियौ—वि०।

चित्राड़णौ, चित्राड़बौ, चित्राणौ, चित्राबौ, चित्रावणौ, चित्राबबौ —प्रे०रू०।

चित्रिओड़ौ, चित्रियोड़ौ, चित्र्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चित्रीजणौ, चित्रीजबौ—कर्म वा०।

चित्रताळ-सं०पु० [सं० चित्रताल] संगीत में एक प्रकार का ताल। (संगीत)

चित्रपदा-सं०पु० [सं०] १ प्रत्येक चरण में दो भगण और दो गुरु वाला एक छंद।

सं०स्त्री०—मैना चिड़िया।

चित्रपुंख-सं०स्त्री० [सं०] तीर, बाण। (अ.मा.)

चित्रपुट-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का छः ताला ताल (संगीत)

चित्रपूख—देखो 'चित्रपुंख' (रू.भे.) (ह.ना.)

चित्रविचित्र-वि०यौ०—अद्भुत, अजीब। उ०—चितारा अंगारां करि चित्रविचित्र, वडो अद्भुत चरित देखियौ।—वं.भा.

चित्रभांण, चित्रभांणू, चित्रभांनु-सं०पु० [सं० चित्रभानु] १ अग्नि (ह.नां.) २ सूर्य (अ.मा., नां.मा.) ३ अश्विनीकुमार. ४ भैरव.

५ साठ संवत्सरों के बारह युगों में से चौथे युग का प्रथम वर्ष. ६ अर्जुन की पत्नी चित्रांगदा के पिता जो मणिपुर के राजा थे।

चित्रमंदिर–सं०पु०यौ०—चित्रशाला। उ०—सर सरिता बहु बाग सडंबर, मझि तिण सिंगी कांम चित्रमंदिर।—सू.प्र.

चित्रमणि–सं०स्त्री०—घोड़े के पेट पर सीप के आकार की भौंरी (शा.हो.)

चित्रमद–सं०पु० [सं०] रंगमंच पर किसी स्त्री का अपने प्रिय का चित्र देख कर विरह भाव प्रदर्शित करना।

चित्रमहल–सं०पु०—वह महल जिसमें चित्रकारी हो। उ०—सुंदर न्रप चित्रमहल बसाई। बाग चंद्रिका जेणि बणाई।—सू.प्र.

चित्रयोग–सं०पु० [सं०] चौसठ कलाओं में से एक कला।

चित्ररथ–सं०पु० [सं० चित्ररथः] १ सूर्य. २ एक गंधर्व. ३ श्रीकृष्ण का एक पौत्र. ४ अंग देश के एक राजा का नाम (महाभारत). ५ एक यदुवंशी राजा।

चित्ररेखा–सं०स्त्री० [सं०] बाणासुर की कन्या, ऊषा की एक सहेली।

चित्रल–वि० [सं०] चितकवरा।

चित्रलेख–चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखता है। उ०—मर मर थाका जरमनी, लिख थाको चित्रलेख। तोइ न थाकी 'ताहरी', 'पातल' रूक परेख।—किसोरदांन बारहठ (मि० चित्रगुप्त)

चित्रलेखा–सं०स्त्री० [सं०] १ एक वर्णवृत जिसके प्रत्येक चरण में १ मगण, १ भगण, १ नगण और ३ यगण होते हैं।
२ देखो 'चित्ररेखा' (रू.भे.) ३ एक अप्सरा का नाम. ४ चित्र चित्रित करने की कूंची।

चित्रवन–सं०पु० [सं०] गंडकी नदी के किनारे का एक वन (पौराणिक)

चित्रवरमा–सं०पु० [सं० चित्रवर्मा] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक कौरव।

चित्रविचित्र—देखो 'चित्रविचित्र' (रू.भे.)

चित्रविद्या–सं०स्त्री०—चित्रकला।

चित्रसारी, चित्रसाळा, चित्रसाळी–सं०स्त्री० [सं० चित्रशाला] १ रंग-महल। उ०—१ सुख लाधै केळि स्यांम स्यांमा संगि, सखिये मन राखिए संघट। चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाट।—वेलि.
२ ऐसा स्थान जहां चित्रों का व्यापार होता हो या चित्र टांगे जाते हों या चित्रकला सिखाई जाती हो।

चित्रसिखंडी–सं०पु० [सं० चित्रशिखंडिन्] सप्त ऋषि—१ मरीचि, २ अंगिरा, ३ अत्रि, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु, ७ वशिष्ठ।

चित्रसिखंडिज–सं०पु०यौ० [सं० चित्रशिखंडिज] बृहस्पति (अ.मा.)

चित्रसेन–सं०पु० [सं०] १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र. २ परीक्षित के वंश का एक पुरुवंशी राजा।

चित्रांग—देखो 'चित्रांगद' (रू.भे.)

चित्रांगढ़–सं०पु०—चित्तौड़गढ़।

चित्रांगद–सं०पु० [सं०] १ राजा शांतनु का एक पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और विचित्रवीर्य का छोटा भाई था. २ देवी भागवत के अनुसार एक गंधर्व का नाम।

चित्रांगदा–सं०स्त्री० [सं०] १ अर्जुन को व्याही जाने वाली चित्रवाहन राजा की एक कन्या. २ रावण की एक स्त्री।

चित्रांम–सं०पु०—१ चित्र, तस्वीर।
उ०—छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मंडियं जिणि आणंद मई। कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रंति चित्रांम थई।—वेलि.
२ नक्काशी।

चित्रांमण–सं०स्त्री—एक देवी।

चित्रांमणि—देखो 'चित्रमणि' (रू.भे.)

चित्रांमिण—देखो 'चितामणि' (रू.भे.)

चित्रा–सं०स्त्री० [सं०] १ सत्ताइस नक्षत्रों में चौदहवां नक्षत्र (अ.मा.) २ चितकवरी गाय. ३ एक नदी का नाम. ४ एक अप्सरा का नाम. ५ संगीत में एक मूर्छना का नाम (सू.प्र.)
सं०पु०—६ प्राचीन काल का एक बाजा जिसमें तार लगे रहते हैं. ७ एक सर्प का नाम. ८ एक प्रकार का छंद जो चौपाई का एक भेद है। इसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं और अंत में एक गुरु होता है। इसकी पांचवीं, आठवीं और नवीं मात्रा लघु होती है।

चित्रावा–सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा।

चित्रावौ–सं०पु०—चौहान वंश की चित्रावा शाखा का व्यक्ति।

चित्रारौ–सं०पु०—चित्र बनाने वाला, चित्रकार, चितेरा।
रू०भे०—चीत्रारौ।

चित्रावळ—देखो 'चित्रक' (रू.भे.)

चित्रावेलि–सं०स्त्री० [सं० चित्रकवल्ली] चित्रकवल्ली (उ.र.)

चित्रिकोट—देखो 'चित्रकूट' (रू.भे.)

चित्रित–वि० [सं०] १ चित्र खींचा हुआ. २ चित्र द्वारा दर्शाया हुआ।

चित्रु, चित्रू—देखो 'चीतौ' (रू.भे.) एक प्रकार के शिकारी के लिए शिक्षित किए हुए चीते। इनकी आंख पर ढक्कन लगे रहते हैं। और शिकार के समय आंख का ढक्कन खोल देते हैं।
उ०—१ तिस पर चित्रु कूंलू का घाव, सीहगोसूं के दाव।—सू.प्र.
उ०—२ आपणौ ख्वायंद की फौजूं के लोहे की ढाल, सेरूं की सावजूं चित्रूं की मिसाल।—सू.प्र.

चित्रोत्तर–सं०पु० [सं०] काव्य का एक अलंकार जिसमें पूछे जाने वाले प्रश्न में ही उत्तर निहित हो या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर हो।

चिथड़ौ, चियरौ–सं०पु० [सं०चीर्ण = फटा हुआ] १ कपड़े की धज्जी. २ फटा-पुराना कपड़ा। उ०—कोई दिन पहना कोई दिन ओढ़ा, कोई दिन चियरा पथरणा रे। करणा फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहणा रे।—मीरां

चिदाकास-सं०पु० [सं० चिदाकाश] परब्रह्म, परमेश्वर।

चिदानंद, चिदानंद-सं०पु० यौ० [सं०चिदानन्द] सच्चिदानंद, परब्रह्म, ईश्वर (ह.नां.)

उ०—चिदानंद वह चतुर आप विणि पार अमूळ।—पीरदांन लाळस

चिदानंदी-वि०—चित्त से प्रसन्न रहने वाला। उ०—हमें भी तरणी है नहिंन कछु करणी हित कहूं। चिदानंदी चन्नौं मरणपुल सनौं चित चहूं।—ऊ.का.

चिदाभास-सं०पु० [सं०] जीवात्मा।

चिद्रूप-सं०पु० [सं०] ज्ञानमय परमात्मा, चैतन्यस्वरूप परमेश्वर।

चिनग-देखो 'चिनगारी' (रू.भे.)

चिनकियेक, चिनकियोक, चिनकोक-वि०—किंचित, अल्प, जरासा।

चिनख-सं०स्त्री०—चिनगारी, अग्निकण। उ०—हुव जेठ तावड़ा दुसह होम, धावड़ा अंगारां चिनख धोम।—वि.सं.

चिनाब-सं०स्त्री० [सं०चन्द्रभागा] सिन्धु नदी की पांच सहायक नदियों में से एक जो पंजाब में बहती है, चन्द्रभागा।

चिनिया केळौ-सं०पु०—छोटी जाति का एक केला।

चिनियोक-वि०—किंचित, अल्प, थोड़ा।

चिनियौ घोड़ौ-सं०पु०—वह घोड़ा जिसके चारों पैर सफेद हों।

वि०वि०—इसके सारे बदन पर लाल और सफेद रंग के मिश्रित बाल होते हैं। (शा.हो.)

चिनीक-वि०—थोड़ा, अल्प, कम।

चिनौ-सं०पु०—एक रंग विशेष का घोड़ा (शा.हो.)

चिन्न-वि० [सं० चीर्ण, प्रा. चिण्ण] १ आचरित, अनुष्ठित. २ विहित कृत. ३ चिन्ह, निशान (जैन)

चिन्योक—देखो 'चिनियोक' (रू.भे.)

चिन्ह-सं०पु० [स० चिह्न] १ वह लक्षण जिससे किसी वस्तु की पहचान हो, संकेत, निशान। उ०—जबर जबर जोधार, सहसबाहु सिसुपाळ सा। छिन में होग्या छार, चिन्ह रह्यौ नह चकरिया।—मोहनराज साह

पर्याय०—अहनांण, लच्छण, सहनांणक, सेलांण।

रू०भे०—चहन।

२ किसी प्रकार का दाग या धब्बा. ३ पताका, ध्वजा झंडी. ४ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम ।ऽ।

चिन्हाई-सं०पु०—चीन देशोत्पन्न घोड़ा, एक प्रकार का घोड़ा।

चिपक-सं०पु०—एक प्रकार का पक्षी जो शिकार कराने में सहायक होता है। उ०—बोवड़ां ऊपर चिपक छूटै छै, बुरजां ऊपर तुरमती छूटै छै।—रा.सा.सं.

चिपकणौ, चिपकवौ-क्रि०अ० [सं० चिपिट] १ किसी लसीली वस्तु के माध्यम से दो वस्तुओं का परस्पर इस प्रकार सटना या जुड़ना जिससे वे सरलता से पुनः पृथक न हो सकें। चिमटना. २ प्रगाढ़ रूप से संयुक्त होना, लिपटना. ३ स्त्री व पुरुष का परस्पर प्रेम-व्यापार करना, आलिंगन करना अथवा संभोग करना. ४ किसी धंधे पर लगना, रोजगार पर लगना।

चिपकणहार, हारौ (हारी), चिपकणियौ—वि०।

चिपकवाड़णौ, चिपकवाड़बौ, चिपकवाणौ, चिपकवाबौ, चिपकवावणौ, चिपकवावबौ—प्रे०रू०।

चिपकाड़णौ, चिपकाड़बौ, चिपकाणौ, चिपकाबौ, चिपकावणौ, चिपकावबौ—क्रि०स०।

चिपकिओड़ौ, चिपकियोड़ौ, चिपक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिपकीजणौ, चिपकीजबौ—भाव वा०।

चिपकाणौ, चिपकाबौ-क्रि०स०—१ लसीली वस्तु के माध्यम से दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना, चिमटाना. २ प्रगाढ़ आलिंगन करना, लिपटाना. ३ नौकरी लगाना, धंधे पर लगाना।

चिपकाणहार, हारौ (हारी), चिपकाणियौ—वि०।

चिपकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चिपकाड़णौ, चिपकाड़बौ, चिपकावणौ, चिपकावबौ—रू०भे०।

चिपकाईजणौ, चिपकाईजबौ—कर्म वा०।

चिपकणौ, चिपकबौ—अक० रू०।

चिपकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चिपकाया हुआ, श्लिष्ट किया हुआ. २ परस्पर लिपटाया हुआ. ३ नौकरी धंधे पर लगाया हुआ।

(स्त्री० चिपकायोड़ी)

चिपकावणौ, चिपकावबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू.भे.)

चिपकावणहार, हारौ (हारी), चिपकावणियौ—वि०।

चिपकवावणौ, चिपकवावबौ—प्रे०रू०।

चिपकाविओड़ौ, चिपकावियोड़ौ, चिपकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चिपकावीजणौ, चिपकावीजबौ—कर्म वा०।

चिपकणौ—अक० रू०।

चिपकावियोड़ौ—देखो 'चिपकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिपकावियोड़ी)

चिपकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चिपका हुआ. २ लिपटा हुआ, आलिंगन किया हुआ. ३ नौकरी या काम-धंधे में लगा हुआ।

(स्त्री० चिपकियोड़ी)

चिपड़ौ—१ देखो 'चपड़ौ' (रू.भे.)

चिपचिप-सं०पु० (अनु०) किसी लसदार पदार्थ को छूने से होने वाला शब्द या अनुभव।

क्रि०प्र०—करणौ।

चिपचिपाट-सं०पु०—लसीलापन, चिपचिपाने का भाव।

रू०भे०—चिपचिपाहट।

चिपचिपाणौ, चिपचिपाबौ-क्रि०अ०—छूने से चिपचिपा मालूम होना, लसदार मालूम होना।

चिपचिपाहट—देखो 'चिपचिपाट' (रू.भे.)

चिपचिपौ-वि०—जिसके छूने से हाथ चिपकता सा जान पड़े, लसीला, लसदार, चिपकने वाला।

चिपटणौ, चिपटबौ—देखो 'चिपकणौ' (रू.भे.)

चिपटणहार, हारौ (हारी), चिपटणियौ—वि०।

चिपटवाड़णौ, चिपटवाड़बौ, चिपटवाणौ, चिपटवाबौ, चिपटवावणौ, चिपटवावबौ—प्रे०रू० ।
चिपटाड़णौ, चिपटाड़बौ, चिपटाणौ, चिपटाबौ, चिपटावणौ, चिपटावबौ—क्रि०स० ।
चिपटिश्रोड़ौ, चिपटियोड़ौ, चिपट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चिपटीजणौ, चिपटीजबौ—भाव वा० ।

चिपटाणौ, चिपटाबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू.भे.)
चिपटाणहार, हारौ (हारी), चिपटाणियौ—वि० ।
चिपटायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
चिपटाईजणौ, चिपटाईजबौ—कर्म वा० ।
चिपटणौ—अक० रू० ।

चिपटायोड़ौ—देखो 'चिपकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिपटायोड़ी)

चिपटावणौ, चिपटावबौ—देखो 'चिपकावणौ' (रू.भे.)
चिपटावणहार, हारौ (हारी), चिपटावणियौ—वि० ।
चिपटवावणौ, चिपटवावबौ—प्रे०रू० ।
चिपटाविश्रोड़ौ, चिपटावियोड़ौ, चिपटाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चिपटावीजणौ, चिपटावीजबौ—कर्म वा० ।
चिपटणौ—अक० रू० ।

चिपटावियोड़ौ—देखो 'चिपटायोड़ौ' (रू.भे.)

चिपटियोड़ौ—देखो 'चिपकियोड़ौ' (स्त्री० चिपटियोड़ी)

चिपटी—देखो 'चपटी' (अल्पा. रू.भे.)
सं०स्त्री०—१ चुटकी. २ चुटकी बजाने से उत्पन्न ध्वनि ।
क्रि०प्र०—देणी, बजाणी ।

चिपटौ—देखो 'चपटौ' (रू.भे.)

चिपठी—सं०स्त्री०—अंगुली व अंगठे के मिलाने से बनने वाली पकड़ या दोनों के मिलने का स्थान ।
रू०भे०—चिवठी, चिमठी ।
क्रि०प्र०—डालणी, देणी, फेंकणी, भरणी ।

चिपणौ, चिपबौ—१ देखो 'चिपकणौ' (रू.भे.)
२ चोट लगना । उ०—जुध टोळी जपिया जठै, चिपि गोळी चुपचाप। बटको दोळी बांधनै, पंपोळी न प्रताप ।—जुगतीदांन देथौ
चिपणहार, हारौ (हारी) चिपणियौ—वि० ।
चिपवाणौ, चिपवाबौ—प्रे०रू० ।
चिपाड़णौ, चिपाड़बौ, चिपाणौ, चिपाबौ, चिपावणौ, चिपावबौ—क्रि० स० ।
चिपिश्रोड़ौ, चिपियोड़ौ, चिप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चिपीजणौ, चिपीजबौ—भाव वा० ।

चिपाणौ, चिपाबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू.भे.)
चिपाणहार, हारौ (हारी), चिपाणियौ—वि० ।
चिपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
चिपाईजणौ, चिपाईजबौ—कर्म वा० ।
चिपणौ—अक० रू० ।

चिपायोड़ौ—देखो 'चिपकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिपायोड़ी)

चिपावणौ, चिपावबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू.भे.)
चिपावणहार, हारौ (हारी), चिपावणियौ—वि० ।
चिपवावणौ, चिपवावबौ—प्रे०रू० ।
चिपाविश्रोड़ौ, चिपावियोड़ौ, चिपाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चिपावीजणौ, चिपावीजबौ—कर्म वा० ।
चिपणौ, चिपबौ—अक० रू० ।

चिपावियोड़ौ—देखो 'चिपकावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिपावियोड़ी)

चिपिड—वि०—चिपिट, चपटा (जैन)

चिपियोड़ौ—देखो 'चिपकियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिपियोड़ी)

चिप्प—सं०पु०—नाखून के नीचे मांस में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा ।
वि०वि०—इस रोग से नाखून पक जाता है और कभी-कभी हाथ से अलग भी हो जाता है ।

चिप्पिड़—सं०पु०—१ अन्न विशेष. २ क्यारा (जैन)

चिबक—देखो 'चिबुक' (रू.भे.) (अ.मा.)

चिबड़ियौ—देखो 'चिब्भड़' (रू.भे.)

चिबटियौ—सं०पु०—दोनों हाथों की तर्जनी के बीच में पकड़ कर फेंका जाने वाला कंकड़ ।
क्रि०प्र०—फेंकणौ, मारणौ ।
रू०भे०—चिमटियौ, चिमठियौ ।

चिबटी, चिबठी—सं०स्त्री० [सं० चुमुटि] १ चुटकी. २ चुटकी बजाने से उत्पन्न ध्वनि. ३ देखो 'चिपटी' (रू.भे.) ४ अंगुली और अंगूठे के कोरों के बीच समाने वाला पदार्थ ।

चिबुक, चिब्बुक—सं०स्त्री० [सं०चिबुक] ठोड़ी, ठुड्डी ।
उ०—१ अलक डोरी तिल चड़सबौ, निरमळ चिबुक निवांण । सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण ।—बां.दा.
उ०—२ क्रूर करनाळ करवाळ खित भाळ भमैं। चिब्बुक लौं स्रोण ताळ कांप्यौ जिय काळी कौ ।—स्वांमी गणेस पुरी

चिब्भड़—सं०पु० [सं० चिर्भिट] ककड़ी, फल विशेष (जैन)

चिब्भड़िया—सं०स्त्री० [सं० चिर्भिटका] १ ककड़ी की लता. २ इस लता का फल ।

चिब्भड़ियौ—देखो 'चिबड़ियौ' (रू.भे.)

चिमंठी—देखो 'चिबटी' (रू.भे.)

चिम—सं०स्त्री० [सं० चिह्न] १ आंख में चोट आदि लगने से होने वाला दर्द या चोट से होने वाला चिन्ह. २ आंख दुखने या किसी चोट के कारण अधिक समय तक बंद रहने से पुतली में होने वाला सफेद चिन्ह ।

चिमक—देखो 'चमक' (रू.भे.) उ०—गाज नगारा चिमक खग, वरसत बाजत डाक । घटा नहीं आ कांम री, आवै फौज लड़ाक । —र.रा.

चिमकणौ, चिमकबौ—देखो 'चमकणौ' (रू.भे.)

उ०—बांकली में आपरी घोड़ी नै पांणी पावै। पण पनड़ी री खड़िद मूं घोड़ी चिमकै।—बांगी

चिमकाणी—देखो 'चमकाणो' (रू.भे.)

चिमकी—सं०स्त्री०—पानी के अंदर पैठने की क्रिया, गोता, डुबकी।

चिमगादड़—देखो 'चमगादड़' (रू.भे.)

रू०भे०—चमचेड़।

चिमचिमाही—सं०स्त्री०—एक प्रकार का दर्द विशेष (अमरत)

चिमचिमी—सं०स्त्री०—मस्सा, भगंदर, फोड़ा आदि रोगों से होने वाली पीड़ा विशेष (अमरत)

चिमची—स०स्त्री०—देखो 'चमचो' (अल्पा० रू.भे.)

चिमचो—देखो 'चमचो' (रू.भे.)

चिमटणो, चिमटबो—क्रि०अ०—१ सटना, चिपकना. २ दृढ़ता से आलिगन करना, लिपटना. ३ हाथ, पैर आदि सब अंगों को सटा कर दृढ़ता से पकड़ना। जकड़ जाना, गुथना. ४ किसी कार्य के लिये पीछे पड़ जाना। पीछा न छोड़ना।

चिमटणहार, हारो (हारी), चिमटणियो—वि०।

चिमटवाड़णो, चिमटवाड़बो, चिमटवाणो, चिमटवाबो, चिमटवावणो, चिमटवावबो—प्रे०रू०।

चिमटाड़णो, चिमटाड़बो, चिमटाणो, चिमटाबो, चिमटावणो, चिमटावबो—क्रि०स०।

चिमटिओड़ो, चिमटियोड़ो, चिमटचोड़ो—भू०का०कृ०।

चिमटीजणो, चिमटीजबो—भाव वा०।

चिमटाणो, चिमटाबो—क्रि०स०—१ सटाना, चिपकाना. २ दृढ़ता से आलिगन कराना, लिपटाना. ३ सब अंगों को सटा कर मजबूती से जकड़ाना, गुंथाना. ४ पीछा न छुड़ाना, पिंड पकड़ाना।

चिमटाणहार, हारो (हारी), चिमटाणियो—वि०।

चिमटायोड़ो—भू०का०कृ०।

चिमटाईजणो, चिमटाईजबो—कर्म वा०।

चिमटाड़णो, चिमटाड़बो, चिमटावणो, चिमटावबो—रू०भे०।

चिमटणो, चिमटबो—अक० रू०।

चिमटायोड़ो—भू०का०कृ०—१ सटाया हुआ, चिपकाया हुआ. २ दृढ़ता से आलिगन कराया हुआ, लिपटाया हुआ. ३ सब अंगों को सटवा कर दृढ़ता से जकड़ाया हुआ, गुंथाया हुआ। ४ पिंड पकड़ाया हुआ, पीछे डाला हुआ। (स्त्री० चिपटायोड़ी)

चिमटावणो, चिमटावबो—देखो 'चिमटाणो' (रू.भे.)

चिमटावणहार, हारो (हारी), चिमटावणियो—वि०।

चिमटाविओड़ो, चिमटावियोड़ो, चिमटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

चिमटावीजणो, चिमटावीजबो—कर्म वा०।

चिमटाड़णो, चिमटाड़बो—रू०भे०।

चिमटणो—अक० रू०।

चिमटावियोड़ो—देखो 'चिमटायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चिमटावियोड़ी)

चिमटियोड़ो—भू०का०कृ०—१ सटा हुआ, चिपका हुआ. २ दृढ़ता से आलिगन किया हुआ, लिपटा हुआ. ३ सब अंगों को सटा कर दृढ़ता से जकड़ा हुआ, गुंथा हुआ. ४ पीछे पड़ा हुआ, पिंड पकड़ा हुआ। (स्त्री० चिमटियोड़ी)

चिमटियो—देखो 'चिवटियो' (रू.भे.)

चिमटी—१ देखो 'चिवटी' (रू.भे.)

२ सुनारों का एक औजार जिससे वे सोने चांदी के बारीक कण पकड़ कर उठाते हैं. ३ प्रेस में अक्षर उठाने का एक औजार विशेष।

चिमटो—देखो 'चीमटो' (रू.भे.)

चिमठणो, चिमठबो—देखो 'चिमटणो' (रू.भे.)

चिमठाणो, चिमठाबो—देखो 'चिमटाणो' (रू.भे.)

चिमठायोड़ो—देखो 'चिमटायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री०चिमठायोड़ी)

चिमठावणो, चिमठावबो—देखो 'चिमटाणो' (रू.भे.)

चिमठावियोड़ो—देखो 'चिमटायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री०चिमठावियोड़ी)

चिमठियोड़ो—भू०का०कृ०—१ कान ऐंठा हुआ. २ चुटकी काटा हुआ (स्त्री० चिमठियोड़ी)

चिमठियो—देखो 'चिवटियो' (रू.भे.)

चिमठी—देखो 'चिवटी' (रू.भे.) उ०—बीजोड़ां नै ए मां घोबां घोबां खांड, बाई नै दीवी सासू चिमठी लूण री।—लो.गी.

चिमतकारी—देखो 'चमत्कारी' (रू.भे.) उ०—समझ संभातां सीह सूरां सूं संग्राम सझि, चौगणौ चिमतकारी वाह वाह चरचायौ तूं।

—जुगतीदांन देथौ

चिमतकारी मणी—सं०पु०यौ०—१ उत्तम मणी. २ गुणयुक्त वस्तु या व्यक्ति।

चिमनप्रास—देखो 'चवनप्रास' (रू.भे.)

चिमनी—सं०स्त्री०—१ धुएँ को ऊपर निकालने के लिये बनाई हुई शीशे अथवा धातु की लम्बी नली जो छत से काफी ऊपर उठी हुई होती है। २ एक प्रकार का छोटा दीपक जो मिट्टी के तेल से जलाया जाता है।

चिमलपोस—देखो 'चिलमपोस' (रू.भे.)

चिमोटियो—देखो 'चिवटियो' (रू.भे.)

चिमोटो—सं०पु०—उस्तरे की धार तेज करने के लिये नाई के पास रहने वाला एक चमड़े का उपकरण।

चिमोतर—वि० [सं० चतुस्सप्तति, प्रा० चोसत्तरि, अप० चोवत्तरि] सत्तर और चार का योग, चौहत्तर।

सं०पु०—चौहत्तर की संख्या।

चिमोतरे'क—वि०—चौहत्तर के लगभग।

चिमोतरो—सं०पु०—चौहत्तरवां वर्ष।

चिय—सं०पु० [सं० चित] उपचय, वृद्धि (जैन)

चियका, चियगा—सं०स्त्री० [सं० चिता] शव के दाह-संस्कार हेतु एकत्रित की हुई लकड़ियों का ढेर, चिता (जैन)

चियत्त–वि० [सं० त्यक्त] छोड़ा हुआ, त्यक्त (जैन)

चियां–सं०पु०बहु०—१ कच्चे मकानों की छत या छाजन का वह भाग जो आजू-बाजू की दीवारों के बाहर निकला होता है।
मि०—नेव (क्षेत्रीय)
कहा०—चियां को पांणी मगरचां नी चढ़े—केल्हू वाले मकान पर का पानी ढाल के विरुद्ध बंडेरी की ओर नहीं चढ़ सकता। कार्य अपनी स्वाभाविक गति के अनुसार ही होता है विपरीत से नहीं।
२ इमली का बीज (अमरत) ३ कच्चा फल। उ०—जंगळ जाळां माथ, छा रयी विदवी वेलां। फूलां चियां फळीज, झिलोरां झिलवै केळां।—दसदेव

चिया–सं०स्त्री० [सं० चिता] चिता (जैन)

चियाग, चियाय–सं०पु० [सं० त्याग] त्याग (जैन)

चियाप–सं०पु०—मितव्ययिता।

चियापू–वि०—मितव्ययी, कम खर्च करने वाला।

चियावास–सं०पु० [सं० चैत्य वास] चैत्य वास। उ०—खर हरा चारित्र धर गुरु एह विरुद्ध प्रकासियु, उथाप्पिय चियावास सुविहिय संघ वसहि निवासिउ।—ख.ग.प.

चियार, चियारइ, चियारि, चियारी—देखो 'चार' (रू.भे.)
उ०—१ चतुरभुज दाखै वेद **चियार**, वदै मुख सास्तर बैण विचार।—ह.र.
उ०—२ सूरती खूब वणी कासिव सुत, वेद **चियारइ** वांणी वाह।
—पीरदांन लाळस
उ०—३ मइं घोड़ा वेच्या घणा, रहियउ मास **चियारि**। राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ राज दुवारि।—ढो.मा.

चियारै–वि०—चारों। उ०—**चियारै** वसै मंदरां आत च्यारै, प्रिय च्यार आए जठै हेत प्यारै।—सू.प्र.

चिरंजी–सं०पु०—एक प्रकार का फल। उ०—आखोड़ अनास **चिरंजी** अनूपा, सिरै खारक तीन विधि सरूपा।—अज्ञात
वि०—चिरायु, चिरंजीवी, दीर्घायु।
उ०—अम कुळ रा अवतंस, रैण पर **चिरंजी** रहै, वजै सिघारां वंस कहवत तैं साची करी।—पा.प्र.

चिरंजीत–क्रि०वि०—चिर काल तक। उ०—इण वासतै देवतांआं रा थांनां में पगलिया पूजावौ सो चूड़ौ थांरी स्त्रीआं रौ **चिरंजीत** रहै।
—वी.स.टी.

चिरंजीव–वि० [सं० चिरजीवी] चिरायु, दीर्घायु। उ०—१ ऊभी धावळियाळ पह, विरदावै 'पाल' नैं। **चिरंजीवी** सुपखाळ, लजधारी मो लज रखी।—पा.प्र.
उ०—२ इक कपि राकस दंत इक, दूणा दोय दुजात। यां जिम नांम उदार रौ, **चिरंजीव** सुखदात।—बां.दा.

चिरंजीवी–वि० [सं० चिरजीवी] दीर्घायु, चिरायु, सात की संख्या-सूचक॰।

चिर–वि० [सं० चिर] बहुत दिनों का।
क्रि०वि०—दीर्घकाल तक, अधिक समय तक।

चिरकणौ, चिरकबौ–क्रि०अ०—थोड़ा-थोड़ा मल निकालना।
चिरकणहार, हारौ (हारी), चिरकणियौ—वि०।
चिरकवाड़णौ, चिरकवाड़बौ, चिरकवाणौ, चिरकवाबौ, चिरकवावणौ, चिरकवावबौ—प्रे०रू०।
चिरकाड़णौ, चिरकाड़बौ, चिरकाणौ, चिरकाबौ, चिरकावणौ, चिरकावबौ—क्रि०स०।
चिरकिओड़ौ, चिरकियोड़ौ, चिरक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चिरकीजणौ, चिरकीजबौ—भाव वा०।

चिरकाणौ, चिरकाबौ–क्रि०स० ['चिरकणौ' का प्रे०रू०] थोड़ा-थोड़ा कर हंगाना।

चिरकायोड़ौ–भू०का०कृ०—थोड़ा-थोड़ा कर हंगाया हुआ।
(स्त्री० चिरकायोड़ी)

चिरकाळ–सं०पु० [सं० चिरकाल] बहुत समय।

चिरकावणौ, चिरकावबौ—देखो 'चिरकाणौ' (रू.भे.)

चिरकियोड़ौ–भू०का०कृ०—थोड़ा-थोड़ा कर के मल निकाला हुआ।
(स्त्री० चिरकियोड़ी)

चिरकौ–सं०पु०—पतली दस्त का थोड़ा सा अंश।

चिरचणी–सं०स्त्री०—हाथ की वह अंगुली जिससे तिलक किया जाता है, अनामिका।

चिरचणौ, चिरचबौ–क्रि०स०—१ पूजन करना। उ०—बीच आंगण स्यंघासण वणाय, आभूखण कर त्रिये बैठ आय। अंतर फूलेल चिरचंत अंग, सुभ लियां किनका गोद संग।
—वगसीरांम प्रोहित री वात
२ देह में चंदन आदि का लेप करना।

चिरजा—देखो 'चरजा' (रू.भे.) उ०—तद करणसिंघजी स्री देसनोक पधारिया, स्री करणीजी नूं आ **चिरजा** स्रीमुख सूं वणाय मालम करी।—द.दा.

चिरजीव, चिरजीवी, चिरजीवौ–सं०पु०—१ विष्णु. २ कौआ. ३ सेमर का वृक्ष. ४ मार्कण्डेय ऋषि।
देखो 'चिरंजीव' (रू.भे.)

चिरट्ठिइ, चिरट्ठिय–वि० [सं० चिरस्थितिक] दीर्घ काल तक जीवित रहने वाला (जैन)

चिरणाटियौ–सं०पु०—नाश, ध्वंस।

चिरणाम्रत—देखो 'चरणाम्रत' (रू.भे.)

चिरणोटियौ–सं०पु—सधवा स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

चिरणौ, चिरबौ–क्रि०अ०—१ सीधा फट जाना. २ लकीरनुमा सीधा घाव होना या किसी अंग का कटना।
चिरणहार, हारौ (हारी), चिरणियौ—वि०।
चिरवाड़णौ, चिरवाड़बौ, चिरवाणौ, चिरवाबौ, चिरवावणौ, चिरवावबौ—प्रे०रू०।

चिराड़णौ, चिराड़वौ, चिराणौ, चिराबौ, चिरावणौ, चिराववौ—प्रे०रू०।

चीरणौ, चीरवौ—क्रि०रू०।

चिरिओड़ौ, चिरियोड़ौ, चिरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

चिरीजणौ, चिरीजवौ—भाव वा०।

चिरत, चिरतत—देखो 'चरित' (रू.भे.) उ०—१ झट तोड़ खंभ चढ़ चल्यौ जत्र, तब हुआ विसरजन चरित तत्र।—पा.प्र.

उ०—२ विण सिर धड़ ऊठै विकराळा, चिरत गिणै बाळक जिम चाळा।—सू.प्र.

उ०—३ हणु दीह हुआ चिरतत अलेख; दरक निज सहस सत दरक देख।—पा.प्र.

चिरताळ—वि०—१ चरित्र करने वाला, ढोंगी, धूर्त।

उ०—चित फाटौ संसार सूं, तिय देखे चिरताळ। थयौ वैरागी भरतरी, धारा नगर भोपाळ।—पा.प्र.

२ देखो 'चिरताळौ' (रू.भे.)

चिरताळू, चिरताळौ—वि० (स्त्री० चिरताळ, चिरताळी) १ कपटी, ठग, धूर्त। उ०—काळा में कोडाय चाहि खायौ कर चाळा। मोड़ा उघड़चा मींत चिरत थारा चिरताळा।—ऊ.का.

२ दुराचारी, व्यभिचारी। उ०—चेली चिरताळी निज नखराळी चितवाळी चितंदा है।—ऊ.का.

३ कुतूहल उत्पन्न करने वाला। उ०—चवसठ मझि बावन चिरताळा, मदछकिया रमै मतवाळा।—सू.प्र.

चिरनाटियौ—सं०पु०—नाश, ध्वंश।

चिरपड़ौ—वि०—थोड़ा-थोड़ा या बूंद-बूंद कर बरसने वाला (मेह)।

चिरपटी—सं०स्त्री०—ककड़ी।

चिरपोट—देखो 'चिरपोटियौ' (रू.भे.)

चिरपोटण—सं०स्त्री०—काक माची (अमरत)

चिरपोटियौ—सं०पु०—एक प्रकार का पौधा जिसके बीज सूजन (रोग) होने पर लगाये जाते हैं।

चिरवरणौ, चिरवरवौ—क्रि०अ०—किसी घाव या कोमल अंग में मिर्च आदि लगने से दर्द का होना, चिरमिराना।

चिरवराट—सं०पु०—किसी घाव या कोमल अंग में मिर्च आदि लगने से उत्पन्न होने वाला दर्द। चरमराहट।

चिरभट—सं०स्त्री० [सं० चिर्भट] ककड़ी (उ.र.)

चिरम—देखो 'चिरमी' (रू.भे.) उ०—कंचन चिरम बराबरि तूले, पड़चा अगनि में न्योरौ। चिरम जळै कंचन ज्यूं कौ त्यूं, मिटै चिरम कौ जोरौ।—ह.पु.वा.

चिरमठड़ी, चिरमठि—सं०स्त्री०—१ वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाली घास विशेष (क्षेत्रीय) २ गुंजा, घुंघची।

उ०—मोती कउ हो जउ पहिरउ हार; तउ चिरमठि कुण पहिरइ हियइ।—स.कु.

चिरमही—देखो 'चिरमेही' (रू.भे.) (ह.नां.)

चिरमिटी, चिरमी—सं०स्त्री०—गुंजा, घुंघची, गुंजाफल (अ.मा.)

रू०भे०—चिरमठड़ी, चिरमठि।

चिरमेह, चिरमेही—सं०पु० [सं० चिरमेहिन्] गर्दभ, गधा (ह.नां.)

चिरमौटियौ—देखो 'चिवटियौ' (रू.भे.)

चिरळाणौ, चिरळाबौ—क्रि०अ०—चिल्लाना, चीखना।

चिरळायोड़ौ—भू०का०कृ०— चिल्लाया हुआ। (स्त्री० चिरळायोड़ी)

चिरवाई—सं०स्त्री०—चीरने का कार्य या इस प्रकार के कार्य करने की मजदूरी।

चिरवाणौ, चिरवाबौ—क्रि०प्रे०—चीरने का काम अन्य से कराना।

चिरस्थायी—वि०—दीर्घ काल तक रहने वाला।

चिराई—देखो 'चिरवाई' (रू.भे.)

चिराक—देखो 'चिराग' (रू.भे.)

चिराकी—देखो 'चिरागी' (रू.भे.) उ०—जिन्हां हंदा जोत का रवि चंद चिराकी।—केसोदास गाडण

चिराग—सं०स्त्री० [फा०] १ काठ या लोह के डंडे पर रूई या वस्त्र आदि लपेट कर घास तेल या तिल के तेल से जलाई जाने वाली मशाल। २ दीपक। उ०—जामें कसब जड़ाव नग, मरदां कळा अनूप। जोति चिरागां जगमगै, हेक हुवंदा रूप।—गु.रू.बं.

मुहा०—१ चिराग गुल होणौ—रौनक मिटना; चिराग बुझना, कुल का समाप्त हो जाना। २ चिराग ठंडी करणी—किसी कुल का समाप्त कर देना, चिराग बुझा देना। ३ चिराग नीचे इंधारौ—किसी सम्मानित व्यक्ति द्वारा ही बुराई होना, विरुद्ध बात होना।

रू०भे०—चिराग।

यौ०—चिराग-बत्ती।

चिरागी—सं०पु०—१ दीपक जलाने का कार्य करने वाला। २ मशाल रखने वाला, मशालची।

सं०स्त्री—३ किसी मजार पर या तकिये पर चिराग जलाने के लिये ली जाने वाली लाग।

वि०—चिराग के समान, चिराग के रूप का।

चिराणौ, चिराबौ—क्रि०स० ('चिरणौ' क्रिया का प्रे.रू.) चीरने का काम कराना, चिरवाना। उ०—चुड़लौ चिरासी धण रौ सायबौ रे, लंजा ओठीड़ा ऐ लो।—लो.गी.

चिराणहार, हारौ (हारी); चिराणियौ—वि०।

चिरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चिराईजणौ, चिराईजवौ—कर्म वा०।

चिरणौ, चिरवौ—अक० रू०।

चिरायतौ—सं०पु० [सं० चिरतिक्त] पर्वतीय तराई, विशेषतया हिमालय की जो प्रायः ठंडा स्थान होता है, में उत्पन्न होने वाला दो तीन फुट ऊंचा पौधा जिसकी पत्तियां तुलसी के पौधे से मिलती-जुलती होती हैं। संपूर्ण पौधा औषधि के काम आता है। इसका स्वाद अधिक कड़ुवा होता है।

चिरायु, चिरायू–वि० [सं० चिरायुस्] दीर्घायु, चिरंजीवी । उ०—इण सरीर रौ ग्रासरौ, दियौ भलां जगदीस । रखौ चिरायू ईसवर, इण सरीर ग्रासीस ।—जैतदांन बारहठ

चिरायोड़ौ–भू०का०कृ०—चिरवाया हुग्रा, फड़वाया हुग्रा । (स्त्री० चिरायोड़ी)

चिराळ–सं०पु०—'रघुवरजस प्रकास' के ग्रनुसार 'ढगण' के एक भेद का नाम जिसमें प्रथम लघु फिर गुरु ।ऽ होता है ।

चिरावणौ, चिराववौ—देखो 'चिराणौ' (रू.भे.)

चिरावणहार, हारौ (हारी), चिरावणियौ—वि० ।

चिराविग्रोड़ौ, चिरावियोड़ौ, चिराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चिरावीजणौ, चिरावीजवौ—कर्म वा० ।

चिरणौ—ग्रक० रू० ।

चिरावियोड़ौ–भू०का०कृ०—देखो 'चिरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिरावियोड़ी)

चिरिताळौ—देखो 'चिरताळौ' (रू.भे.) उ०—दीसता दीनदयाळा चिरिताळा निमौ देव ग्रकरूर ग्राळा, भलै तमासा ग्रलेख ।—पीरदांन लाळस

चिरियोड़ौ—चिरा हुग्रा, फटा हुग्रा । (स्त्री० चिरियोड़ी)

चिरी–सं०स्त्री०— चिड़िया ।

चिरूंजी, चिरौंजी–सं०पु०—पियाल या पियार नामक वृक्ष विशेष के फल के बीजों की गिरी जो ग्राचार ग्रादि में स्वाद के लिये डाली जाती है । उ०—नोजा चिरूंजी जायफळ, ग्रनंतास ग्रणछेर ।—गजउद्धार

चिलँवकत—देखो 'चिलत' (रू.भे.) उ०—मिळै तदि हेक निमख मभारि, चिलँवकत तूट लगी खग च्यारि ।—सू.प्र.

चिळक, चिळका–सं०स्त्री०—चमक, द्युति, ग्राभा, कांति । उ०—ग्रलक चिळक चित में चढ़ी, कुटिळ भ्रकुटी हिये घाव कियौ ।—गी.रां.

चिळकणौ, चिळकवौ–वि० (स्त्री० चिळकणी)—चमचमाने वाला, चमकने वाला, द्युतियुक्त । उ०—हीरा नैं सरीखी थांरी घणा चिळकणी, हो राज, राज ढोला राखौ नी थांरै कंठां रै मांय ।—लो.गी.

चिळकणौ, चिळकवौ–क्रि०ग्र०—१ चमकना, चमचमाना, भलकना, द्युति देना । उ०—चिळकै सोने रा चोलरिया, बंधगी वां रूपाळी पाळ ।—सांभ. २ बच्चे का चौंकना ।

चिळकणहार, हारौ (हारी), चिळकणियौ—वि० ।

चिळकवाड़णौ, चिळकवाड़वौ, चिळकवाणौ, चिळकवावौ, चिळकवाववौ—प्रे०रू० ।

चिळकाड़णौ, चिळकाड़वौ, चिळकाणौ, चिळकावौ, चिळकावणौ, चिळकाववौ—क्रि०स० ।

चिळकिग्रोड़ौ, चिळकियोड़ौ, चिळक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चिळकीजणौ, चिळकीजवौ—भाव वा० ।

चिळकाणौ, चिळकावौ–क्रि०स०—१ चमकाना, भलकाना, उज्ज्वल करना. २ बच्चे को चौंकाना ।

चिळकाणहार, हारौ (हारी), चिळकाणियौ—वि० ।

चिळकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

चिळकाईजणौ, चिळकाईजवौ—कर्म०वा० ।

चिळकणौ—ग्रक० रू० ।

चिळकायोड़ौ–भू०का०कृ०—चमकाया हुग्रा, द्युतिमान किया हुग्रा, उज्ज्वल किया हुग्रा । (स्त्री० चिळकायोड़ी)

चिळकारौ–सं०पु०—देखो 'चिळकौ' (रू.भे.) उ०—हरकण छाई दिस चिळकारौ हरियौ । करसण करसणियां किलकारौ करियौ ।—ऊ.का.

चिळकावणौ, चिळकाववौ—देखो 'चिळकाणौ' (रू.भे)

चिळकावणहार, हारौ (हारी), चिळकावणियौ—वि० ।

चिळकाविग्रोड़ौ, चिळकावियोड़ौ, चिळकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चिळकावीजणौ, चिळकावीजवौ—कर्म वा० ।

चिळकणौ—ग्रक० रू० ।

चिळकावियोड़ौ—देखो 'चिळकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिळकावियोड़ी)

चिळकियोड़ौ–भू०का०कृ०—चमका हुग्रा, द्युतिमान । (स्त्री० चिळकियोड़ी)

चिळकौ–सं०पु०—चमक, चमचमाहट, प्रकाश ।

चिलगोजा–सं०पु० [फा०] एक प्रकार का मेवा जो चीड़ या सनोवर का फल होता है ।

चिलड़ौ–सं०पु०—एक प्रकार का छोटा क्षुप ।

चिलणौ, चिलवौ–क्रि०ग्र०—१ चमकना, भलकना, दीप्तिमान होना । उ०—चिलते भिलंव ग्रायुध चढ़ाय, ग्रसवार हुवौ गज पीठ ग्राय ।—वि.सं. २ चीरा जाना ।

चिलत, चिलतौ–सं०पु० [सं० चिल-वसने या फा० चिलतः] एक प्रकार का कवच । उ०—१ चिलतह भिलम चढाय, ससत्र ग्रंग कसे सचेळा । चढि रैवंतपसाव, 'वखत' ग्रायौ जिण वेळा ।—सू.प्र. उ०—२ हमगीर करण जुध हैमरां, घोम ग्ररावां घरहरै । चिलतह छतीस ग्रावध चुरस, कुळ छतीस राजस करै ।—सू.प्र.

चिळविळौ–वि०यौ० [सं० चल+वल] चंचल, चपल, नटखट ।

चिलम–सं०स्त्री० [फा०] १ हुक्के के ऊपरी भाग पर रक्खा जाने वाला वह पात्र जिसमें तम्बाकू भर कर ग्राग रक्खी जाती है । उ०—१ रूपै रा कुनावा लागा थका, सोनै री टूंटी, रूपै री चिलम चिलमपोस छै ।—रा.सा.सं. उ०—२ सुलफी गुड़गुड़िया चिलम होकां री हळकी । हांडी वूरै हरख ग्राभूखण रिपियां रळकी ।—दसदेव

क्रि०प्र०—चढ़ाणी, चाढणी, भाड़णी, पीणी, भरणी ।

यौ०—चिलमपोस।

२ तम्बाकू पीने के लिए लकड़ी अथवा मिट्टी का बना वह उपकरण जिसके नीचे नली होती है तथा ऊपर कटोरीनुमा हिस्सा होता है जिसमें तम्बाकू रख कर ऊपर से आग रखते हैं। यह कभी-कभी नली के द्वारा तथा कभी हुक्के के ऊपर रख कर पीया जाता है।

उ०—करड़ी डांवळी गो, सू इण भांत री तमाकू सूं चिलमां भरीजै छै।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—खींचणी, झाड़णी, पीणी, भरणी।

मुहा०—१ चिलम खींचणी—चिलम पर तम्बाकू जला कर धुंआ खींचना. २ चिलम चढ़ाणी—गुलामी करना, चिलम पर तंबाकू रख कर आग रखना। ३ चिलम पीणी—चिलम पर तंबाकू पीना. ४ चिलम भरणी—देखो 'चिलम चढाणी'।

अल्पा०—चिलमड़ी।

(मह०—चिलमड़)

चिलमगरदा—सं०स्त्री० [फा० चिलमगर्दा] हुक्के में लगाई जाने वाली हाथ भर की लम्बी नली जो नीचे के जलपात्र के मध्य में लगी रहती है और ऊपर जिसके तम्बाकू भरने का पात्र रखा जाता है।

चिलमड़ी—देखो 'चिलम' (अल्पा. रू.भे.)

चिलमचट—वि०—बहुत अधिक चिलम पीने वाला व्यसनी।

चिलमची—वि०—अधिक चिलम पीने वाला व्यसनी।

सं०स्त्री०—वह पात्र जिसमें हाथ धोये जाते हैं।

रू०भे०—चिलमी।

चिलमपोस—सं०पु० [फा० चिलमपोश] धातु का बना एक झरझरीदार ढक्कन जो प्राय: हुक्के की चिलम पर या चिलम पर चिनगारी आदि न उड़ने के कारण से लगाया जाता है। उ०—रूपै रा कुलावां लाग्या थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलम, चिलमपोस छै। —रा.सा.सं.

चिलमरदो—सं०पु०—बैलगाड़ी के अग्र भाग को भूमि से ऊपर रखने के निमित्त जुआ बांधने के स्थान से कुछ ऊपर की ओर दो लम्बे डंडे (जो नीचे की ओर लटकते हैं) को बांधने का खाल का रस्सा।

चिलमियौ—सं०पु०—चिलम पर तम्बाकू जलाने के लिये रक्खा जाने वाला अंगारा। उ०—१ चिलमियां करण चित चाह सूं, टळण हार नहि टाळणा। अमलियां तणा सिद्धांत ए, वळै जठा तक बाळणां —ऊ.का.

उ०—२ ऊपरां थोहर रा आकरा कोयलां रा चिलमियां मेल्हजै छै।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—चढ़ाणौ, चाढ़णौ, झाड़णौ।

रू.भे.—चिलम्यौ।

चिलमी—देखो 'चिलमची' (रू.भे.)

चिलम्यौ—देखो 'चिलमियौ' (अल्पा०)

कहा०—चिलम्यां चढ़ियोड़ा ही राखे—चिलम पर आग चढ़ी ही रहती है, हर समय तम्बाकू के नशे में चूर रहने वाले के प्रति।

चिलाइया—सं०स्त्री [सं० किरातिका] किरात देश की स्त्री (जैन)

चिलाईपूत—सं०पु० [सं० चिलातीपुत्र] राज-गृह निवासी धनाशा सेठ की चिलाती नामक दासी का पुत्र, एक जैन साधु।

चिलातिया, चिलाती—सं०स्त्री० [सं० किरातिका] किरात देशोत्पन्न दासी (जैन)

चिलाय—सं०पु० [सं० किरात] किरात देश।

चिलिचल्ल, चिलिच्चिल, चिलिच्चील, चिलिण—वि०—अशुचि, अपवित्र (जैन)

चिलिमिणी, चिलिमिलिया—सं०स्त्री०—१ ढकने का वस्त्र। २ पर्दा।

चिलौ—सं०पु० [फा०चिल्ल:]—१धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा। उ०—करि खंच्चै धांनख चिलै बंधि टंक अढ़ारै ग्रहि मूंठी आछटै दंत गजराज उखारै।—रा.रू. (रू.भे. 'चिल्लौ')

२ चमचमाहट, प्रकाश।

चिल्लग—वि०—प्रकाशमान, देदीप्यमान (जैन)

चिल्लड़—सं०पु०—शिकारी पशु विशेष, चिता (जैन)

चिल्लाणौ, चिल्लावौ—क्रि०अ०—शोर करना, चीखना, चिल्लाना।

चिल्लाणहार, हारौ (हारी), चिल्लाणियौ—वि०।

चिल्लायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चिल्लाईजणौ, चिल्लाईजबौ—भाव वा०।

चिल्लायोड़ौ—भू०का०कृ०—चिल्लाया हुआ, चीखा हुआ।

(स्त्री० चिल्लायोड़ी)

चिल्लाहट—सं०स्त्री०—चिल्लाने की क्रिया, चीख, शोर, हल्ला।

चिल्लित, चिल्लिय—वि०—१ प्रदीप्त, चमकयुक्त। २ सुशोभित (जैन)

चिल्लौ—सं०पु०—१ मुसलमानों के चालीस दिन का व्रत।

२ देखो 'चिलौ' (रू.भे.) उ०—कर छूटी बांण चिल्लैं कवांण, बोलिया जहर अहंकार बांण।—वि.सं.

चिल्ही-सं०स्त्री०—चील पक्षी।

चिवटी, चिवठी—देखो 'चिवटी' (रू.भे.) उ०—इण कबर्णती पती री ओज रीस नैं दूजौ कोई पूगै नहीं, तीर छूटतां चिवटी खाली होवतां ही निमटी नीवड़ती चाली चाली जावे है।—वी.स.टी.

चिसतिया, चिस्तिया—सं०पु०—मुसलमान सूफियों का एक संप्रदाय विशेष।

चिह—देखो 'चह' (रू.भे.) उ०—देवांगना कजिहि दाधि चालउ ए दासि बांधि चिह मांहि घालउ।—वि.प.

चिहउं—वि०—चार, चारों।

चिहन—देखो 'चिन्ह' (रू.भे.) उ०—सोभा नांम रूप विसतारा, सुपन चिहन कहिया न्रप सारा।—सू.प्र.

चिहर—देखो 'चिहुर' (रू.भे.)

चिहरबंद—सं०पु०—बंधन, बंध। उ०—तठा उपरांयत वागां रा चिहरबंद छूटे छै।—रा.सा.सं.

चिहुं–वि०—चार, चारों। उ०—ससनेही सज्जरा मिळया, रयरा रही रस लाइ। चिहुं पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ।—ढो.मा.

चिहुंएवळा, चिहुंवळ–क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—१ वरसंते चिहुंएवळा, रंगियौ ज्याग रगत्त।—रांमरासौ

उ०—२ वळिवंत अतुळवळ जूटा चिहुंवळ झळहळ दळ वीजळ ए।—गु.रू.बं.

चिहुंर, चिहुर–सं०पु० [सं० चिकुर] बाल, केश। उ०—१ उजळ दीहि 'हींगोळ' हर आभरण, भाजती भीर भाराथि भिळियौ। ऊजळा चिहुंर राता करै आवधां, मुणिस-गुरु ऊजळी जोति मिळियौ।—राठौड़ सेखा दुरजनसालोत पातावत री गीत

उ०— २ चरणांके भंड़ चिहुर छीजी कातर छणांकै।—वं.भा.

रू०भे०—चिहर।

चिहुरबंद, चिहुरबंध—देखो 'चिहरबंद' (रू.भे.) उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति अतरा मांहे वागां रा चिहुरबंध छूटै छै।—रा.सा.सं.

चिहूंवै, चिहूंवै–वि०—चार, चारों। उ०—फिरिया उलाक चिहुंवै दिसी, हुई राजथांना हुटक।—गु.रू.बं.

चिहूंवैवळा–क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—जगजीत चिहूंवैवळा, आहर सुजस हुवै सुढंग।—र.ज.प्र.

चिह्न–सं०पु० [सं०] १ देखो 'चिन्ह' (रू.भे.) २ दाग या धब्बा. ३ झंडी, पताका।

चीं–सं०स्त्री० (अनु०)—१ पक्षियों द्वारा चहचहाने का वारीक स्वर।

२ वच्चों अथवा पक्षियों का शोर।

३ व्यर्थ का प्रलाप। वकझक। उ०—आवत दुख इक सार, क्या ग्यांनी क्या मूढ़ नै। इक सह धीरज धार, चींचीं कर इक चकरिया।—मोहनराज साह

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

मुहा०—चींचीं करणी—चीं चीं की ध्वनि करना। वकझक करना।

चींकणौ—जंगली जानवरों का नाक या थुथने से आवाज करना।

उ०—चिल्हर चींकिया त्यां ऊपर सूअर भूंडरा घिरिया।—कुंवरसी सांखला री वारता

चींकळमांदौ–सं०पु०—गोमय के अंदर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का जन्तु, गुवरैला (मि० ओकीरौ)

चींगट—देखो 'चीकट' (रू.भे.)

चींगण–सं०स्त्री०—१ पूर्व और दक्षिण के मध्य की आग्नेय दिशा का नाम। उ०—मणी चंख भींच मटी मरजाद। चवै दिस तीतर चींगण साद।—पा.प्र.

२ देखो 'चिगरा' (रू.भे.)

चींगरड़ि–सं०स्त्री०—'पांनड़ी' से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

देखो 'पांनड़ी' (२) उ०—पाखती अरटां री झींगड़ि चींगरड़ि पड़िनै रही छै। इुहा रौ खटाकौ लागिनै रहियौ छै। पाखती नाळि वभिनै रही छै।—रा.सा.सं.

चींगौ–सं०पु०—घोड़ा (ना.डि.को.)

चींघण–सं०स्त्री०—१ देखो 'चिगरा' (रू.भे.)

२ देखो 'चींगरा' (रू.भे.) ३ श्मशान भूमि, मरघट।

उ०—टींगर टोळी ले चटपट घरा टोळी, चहुंघां चींघण सी दुवधा घट दोळी।—ऊ.का.

४ मरघट में पड़ी हुई वे लकड़ियां जो दाह क्रिया के समय जलती हुई शेष रह जाती हैं. ५ वह लम्वी लकड़ी जिससे दाह क्रिया के समय शव को चिता में इधर उधर करते हैं।

चींचड़—देखो 'चींचड़ौ' (मह० रू.भे.) उ०—चींचड़ ईतां व्रुग दोळा चैठीड़ा, आंणै झोळी में टुकड़ा अेंठोड़ा।—ऊ.का.

चींचड़ी–सं०स्त्री०—१ लकड़ी की वह कीली जो हल के मध्य में लगाये जाने वाले डंडे 'हरीसा' को उसमें मजवूत करने के लिये हल के पृष्ठ भाग में लगाई जाती है।

२ देखो 'चींचड़ौ' (स्त्री.)

चींचड़ौ–सं०पु० (स्त्री० चींचड़ी) किलनी या किल्ली नामक कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर त्वचा में चिपट कर उनका रक्त पीता है।

चींचपड़–सं०स्त्री० (अनु०) निर्वल का सवल या किसी वड़े व्यक्ति के सामने प्रतिकार या विरोध के लिये किया जाने वाला कार्य या शब्द।

चींचाड़णौ, चींचाड़वौ—देखो 'चींचाणौ' (रू.भे.)

चींचाट–सं०पु०—चिल्लाने की आवाज, शोर। उ०—चळ अर गडूरि चेवरा, चढ़ कर मत्त चींचाट। सूरी जाया कर सकै, दळां घेर दहवाट।—रेवतसिंह भाटी

चींचाणौ, चींचावौ–क्रि०अ०—१ चिल्लाना। उ०—राखै जिण विध रांम, राजी हुइ उण विध रहौ। कोई सरै नहिं कांम, चींचायां सूं चकरिया।—मोहनराज साह

२ (छोटे वच्चे आदि को) तंग करना व रुलाना. ३ कष्ट देना।

चींटी–सं०स्त्री० (पु० चींटौ) चिउंटी। उ०—खग उडचा आकास कूं, चींटी परां समाय। जहां चींटी की गमन नहिं, तहां खग वैठा जाय।—ह.पु.वा.

चींटौ–सं०पु० (स्त्री० चींटी) चिउंटा।

चींण–सं०स्त्री०—१ घाघरे या लहंगे में नाड़ा डालने के लिये ऊपर के सिरे पर लगाई जाने वाली कपड़े की पट्टी. २ पत्थर की लम्वी पतली शिला जो प्राय: मकान की छत ढकने के काम आती है. ३ लोहे की मोटी जंजीर या सण, सूत, चमड़े आदि का वह रस्सा जो रहट में वैलों के जुए से वंध कर वैल हांकने वाले के वैठने के भाग के नीचे की कील में कसा रहता है।

चींत—देखो 'चिंता' (रू.भे.) उ०—'लखौ' 'कमौ' 'आचागळौ', 'सूजौ' 'जैत' हरांह। चींत भळावी 'दुरगसी', लेखवि प्रीत घरांह।—रा.रू.

चींतणौ, चींतवौ–क्रि०स०—सोचना, विचार करना, चिंतन करना।

उ०—देखरा लागी यक्ष आंखड़ी आंसू भरियां, चींतै मन कुरळाय आज या किसड़ी विळियां।—मेघ.

चींतरियौ, चींतरी—देखो 'चींथड़ौ' (रू.भे.)

चींतवणौ, चींतवबौ–क्रि०स० [सं० चिति = चिंतनं] १ देखो 'चितवणौ' (रू.भे.) उ०—ग्रर कारी की सु इम चींतवि ग्रर की हुती जु जीव रै जोखं लग ग्रटकळी हुंता, का घरवार हुंती रहै।—द.वि.

२ स्मरण करना, याद करना। उ०—रिख सिख गंगाराम सेवै पद कंज मजु सीतावर सो राघौ पै 'किसना' चींतव निस दिवस उर चंगा।—र.ज.प्र.

चींतवियोड़ौ—देखो 'चितवियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चींतवियोड़ी)

चींताणौ, चींताबौ–क्रि०स० [सं० चिंतनं] स्मरण दिलाना, याद कराना। उ०—ग्रापरा ग्रनेक प्रत्युपकार चींताइ ग्रावरत्त प्रमुख ग्रनेक ग्रनुकार रा नाच करती ग्ररवती नूं विस्रांम दे'र जोडये धीरण राडोड़ रै कंठ खड़ग री ग्राघात कीधौ।—वं.भा.

चींतायोड़ौ—देखो 'चितायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चींतायोड़ी)

चींतावणौ, चींतावबौ—देखो 'चींताणौ' (रू.भे.) उ०—'वाले वरस वत्तीस वय' संभर वैरीसाल। जनक छत्र घरियौ जठै, चींतावै कुळ चाल।—वं.भा.

चींतावियोड़ौ–भू०का०कृ०—याद दिलाया हुग्रा, स्मरण कराया हुग्रा (स्त्री० चींतावियोड़ी)

चींथड़—देखो 'चींथड़ौ' (मह० रू.भे.)

चींथड़ियौ—देखो 'चींथड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

चींथड़ी–सं०स्त्री०—देखो 'चींथड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

चींथड़ौ–सं०पु०—फटा पुराना कपड़ा, पुराने कपड़े का टुकड़ा, कपड़े की धज्जी।

रू०भे०—चींतरौ, चींथरौ, चीं'ड़ौ, चीरड़ौ।

ग्रल्पा०—चींतरियौ, चींथड़ियौ, चींथड़ी, चींथरियौ, चींथरी, चीं'ड़ी, चीरड़ियौ, चीरड़ी।

चींथणौ, चींथबौ–क्रि०स०—१ रौंदना, कुचलना।

चींथणहार, हारौ (हारी), चींथणियौ—वि०।

चींथवाड़णौ, चींथवाड़बौ, चींथवाणौ, चींथवाबौ, चींथवावणौ, चींथवावबौ—प्रे०रू०।

चींथाड़णौ, चींथाड़बौ, चींथाणौ, चींथाबौ, चींथावणौ, चींथवबौ—क्रि०स०।

चींथिग्रोड़ौ, चींथियोड़ौ, चींथ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चींथीजणौ, चींथीजबौ—कर्म वा०।

चींथर—देखो 'चींथड़ौ' (मह० रू.)

चींथड़ियौ—देखो 'चींथड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

चींथरी–सं०स्त्री०—देखो 'चींथड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.) उ०—जावक पावक जिम रंडातक जीवै, सातां ठोडां सूं चंडातक सीवै। ग्रावी उगळांची कांचळियां ग्रावी, बिलिये चूड़ी विन चींथरियां वांधी।—ऊ.का.

चींथरौ—देखो 'चींथड़ौ' (रू.भे.)

मुहा०—चींथरा फाड़णा—कपड़े फाड़ना, पागल होना, उन्माद में ग्राना।

चींथाणौ, चींथाबौ–क्रि०स० ('चींथणौ' का प्रे०रू०) रौंदाना, कुचलाना।

चींथाणहार, हारौ (हारी), चींथाणियौ—वि०।

चींथायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चींथाईजणौ, चींथाईजबौ—कर्म वा०।

चींथरियौ—देखो 'चींथड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

चींथायोड़ौ–भू०का०कृ०—कुचलाया हुग्रा, रौंदाया हुग्रा। (स्त्री० चींथायोड़ी)

चींथावणौ, चींथावबौ—देखो 'चींथाणौ' (रू.भे.)

चींथावणहार, हारौ (हारी), चींथावणियौ—वि०।

चींथाविग्रोड़ौ, चींथावियोड़ौ, चींथाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चींथावीजणौ, चींथावीजबौ—कर्म वा०।

चींथावियोड़ौ—देखो 'चींथायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चींथावियोड़ी)

चींथियोड़ौ–भू०का०कृ०—कुचला हुग्रा, रौंदा हुग्रा। (स्त्री० चींथियोड़ी)

चींद—देखो 'चींध' (रू.भे.)

चींदड़, चींदड़ियौ, चींदळ, चींदळियौ—देखो 'चींधड़' (रू.भे.)

उ०—धोळी ग्रांखां रा चींदड़ भड़ धीठा।—ऊ.का.

चींदी—देखो 'चिंदी' (रू.भे.)

चींध–सं०स्त्री० [सं० चिह्न] १ झंडी, पताका। उ०—१ गजां ऊपरै धजां, नेजां, चींधां फरकिनै रही छै जांणै हेमाचळ रै टूंकां माथै केसू फूलनै रहिग्रा छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ सारंग खांन वहियास हित्ति, खट दूण खांन मोखावि खित्ति। पट्टांण फतेपुरि खेति पाड़ि, चक्रवइ जोधि जस चींध चाड़ि।—रा.ज.सी.

उ०—३ वैरक चींध धजां गज डंबर, नेजे नेजे मीर वहादर।—गु.रू.वं.

२ धूल, रज। उ०—चमराळां पाए ऊडी चींध, गूंदळइ व्रिक्ख मूभइ गईंध।—रा.ज.सी.

रू०भे०—चींद, चींधी, चीद, चीध।

चींधड़, चींधड़ियौ, चींधळ, चींधळियौ–सं०पु० [सं० चिह्न = ध्वजा + रा.प्र. ड़, ड़ियौ] १ वह व्यक्ति जो ग्रपना स्वयं का झंडा रखने में समर्थ हो, वीर, योद्धा। उ०—१ जोगीदास वैरसीयोत, सं० १६५८ जाजीवाळ वरकरार। पछै छाडनै रांणाजी रै गयौ। सं० १६६४ वळै ग्रायौ तद जाजीवाळ दीवी। सं० १६७८ रांम कह्यौ। भलौ चींधड़ थौ।—नैणसी

उ०—२ तिणनूं रावळ कहै छै, 'ग्रा घोड़ी ली चाहीजै' तरै भोग्रौ कहै छै 'कूंभौ तौ पाघारियां घोड़ी देणरौ न छै' सु कूंभा नूं तेड़ दरवार वैसांणियौ छै ग्रादमी ५०० चींधड़ सिलह पेहरै सांमा वठा छै।—नैणसी

उ०—३ कूंपैजी जाय राव गांगैजी सूं ग्ररु जैतैजी सूं सला करी गांव वोळहरै थांणौ वैठायौ हजार च्यार चींधड़ां सूं। हमैं वरसोवरस सोभत रा गांव दोय च्यार दावता जावै।—द.दा.

उ०—४ रांमसिंघजी आगै राव चंदसेण भागो। इण वात री विसतार आगै कहीजसी। बुरै हुवाल हुइ नीसरियौ। रावळा चींधड़िया वांसै आय आपड़िया।—द.वि.

उ०—५ ताहरां मदनौ पूंदां तांणि पड़ियौ। पाछौ हीज विगर लोहड़ै लागै। ताहरां कुंवरजी रै चीधड़िये घाव वाहिया। घावै गोइंद टेमांणी पड़ियौ।—द.वि.

२ वह निरुद्यमी व्यक्ति जो याचना के आधार पर ही अपना पेट पालता हो, मांग कर पेट भरने वाला निकम्मा व्यक्ति। अकर्मण्य व्यक्ति. ३ मलिन और घृणित व्यक्ति।

रू०भे०—चींदड़, चींदळ, चीदड़, चीदळ, चीधड़, चीधळ।

अल्पा०—चींदड़ियौ, चींदळियौ, चींधड़ियौ, चींधळियौ, चीदड़ियौ, चीदळियौ, चीधड़ियौ, चीधळियौ।

चींधाळ, चींधाळौ—सं०पु०—१ वह हाथी जिस पर झंडा बांधा जाता है।

उ०—थियौ चोळ सिंदूर कुंभाथळयूं व्रन गेरुअ जांण विंझाचळयं। चींधाळां चींध अयास चढ़ै, अनळी पंख जांण भमै अनड़ै।—गु.रू.बं.

२ देखो 'चींधड़' (रू.भे.)

चींधो—देखो 'चींदी' (रू.भे.)

चींनणौ, चींनवौ—देखो 'चीनणौ, चीनवौ' (रू.भे.)

चींनियोड़ौ—देखो 'चीनियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चींनियोड़ी)

चींप—१ देखो 'चीप' (रू.भे.)

२ देखो 'चींपियौ' (रू.भे.) उ०—मिळ अक्ष गुणावळ कंठ भई, लख चींप कमंडळ हाथ लई।—पा.प्र.

चींपड़—देखो 'चींपड़ौ' (महत्व. रू.भे.)

रू०भे०—चीपड़।

चींपड़ी—सं०स्त्री०—नाक के बाल पकड़ कर उखाड़ने का नाई का एक औजार, छोटा चिमटा।

वि०स्त्री०—देखो 'चींपड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

चींपड़ौ—सं०पु०—१ आँख का मैल।

२ देखो 'चीमटौ' (अल्पा. रू.भे.)

अल्पा० —चींपड़ी। (मह०—चींपड़)

वि०—(स्त्री० चींपड़ी) वह जिसकी आँखों में अधिक मैल रहता हो एवं मैल से आँखें चिपचिपी रहती हों।

रू०भे०—चीपड़ौ।

चींपटी—सं०स्त्री०—१ देखो 'चिवटी' (रू.भे.) उ०— ताहरां इयै पइसौ चींपटी मांसूं चलाय दियौ सो देहरै मांहीं जाय पड़ियौ।—पलक दरियाव री वात

चींपटौ—देखो 'चींपियौ' (रू.भे.)

२ देखो 'चींपटौ' (अल्पा. रू.भे.)

चींपटौ—देखो 'चीमटौ' (रू.भे.)

चींपलौ—१ देखो 'चींपड़ौ' (रू.भे.)

चींपियौ—१ देखो 'चींमटौ' (अल्पा. रू.भे.) २ योनि, भग (बाजारू)

चींभड़ौ—सं०पु० [सं० चिर्भटी] १ छोटी ककड़ी, कचरी।

२ सूअर का बच्चा।

चींमटौ—देखो 'चीमटौ' (रू.भे.)

चींयौ—देखो 'चियौ' (रू.भे.)

चींवटौ—सं०पु०—कच्चा फल, भ्रूण। उ०—मूंगी छम लावड़ियां लियां, विच विच चुन्नी चींवटा। खोढ़ मदीनां खड़ा मोहै, सकड़ सदीनां मींवटा।—दसदेव

ची—सं०स्त्री०—१ स्याही. २ कंघी. ३ हस्तिनी. ४ माया. ५ शिव की जटा। (एका०)

अव्य०—षष्टी विभक्ति 'की'

उ०—विधि सहित वधावै वाजित्र वावै, भिन भिन अभिन वांणी मुख भाखि। करै भगति राजांन क्रिसन ची, राजरमणि रुखमिणि ग्रिह राखि।—वेलि.

चीक—देखो 'चीख' (रू.भे.)

सं०पु० [सं० चिकिल] २ कीचड़। उ०—ताहरां पातिसाहजी खुदाई वगस इकदंता हाथी असवार हुया। आप सर हुतौ सु पातसाहजी कहियौ चीक छै।—द.वि.

रू०भे०—चीखल, चीखलि।

चीकट—सं०पु० [सं० चिक्कण] १ घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ. २ घी या तेल की स्निग्धता, चिकनाहट।

चीकणाई—सं०स्त्री०—चिकनाई, स्निग्धता। उ०—मूंगां सूं मसळ चीकणाई उतारजै छै।—रा.सा.सं.

चीकणी—वि०स्त्री०—देखो 'चीकणौ' का स्त्री०।

उ०—सीयाळइ तउ सी पड़इ, ऊन्हाळइ लू वाइ। वरसाळइ भुइं चीकणी, चालण रत्ति न काइ।—ढो.मा.

मुहा०—चीकणी-चुपड़ी—फुसलाने वाली, धोखा देने वाली।

चीकणी चुट्ट—वि०स्त्री०यौ०—अत्यन्त चिकनी।

उ०—परुस चीकणी चुट्ट पड़ै डागळिया पक्कां। सुद्ध पाघरी पड़ी जकी सगळी विन टक्कां।—दसदेव

चीकणौ—वि० [सं० चिक्कण] (स्त्री० चीकणी) १ जो छूने में खुरदरा न हो. २ जिस पर पैर आदि फिसले।

मुहा०—चीकणौ देख कर फिसळणौ—धन वा रूप पर लुभा जाना।

३ जिसमें रुखाई न हो, जिसमें तेल हो या लगा हो।

उ०—घड़ै चीकणौ छांट रैवै नां तिसळै नीचै। घट काचै पट रचै जंचै रंग सोणी सींचै।—दसदेव

मुहा०—१ चीकणौ घड़ौ—जिस पर अच्छी बातों का कुछ असर न हो, बेहया। २ चीकणा घड़ा माथै पांणी पड़णौ—किसी पर किसी प्रकार का असर या प्रभाव न पड़ना।

४ साफ-सुथरा, सँवारा हुआ।

५ चाटुकार, खुशामदी।

सं पु० [सं० चिक्कण:] १ सुपारी का वृक्ष ।
[सं० चिक्कणम्] २ सुपारी का फल ।

चीकार—सं०पु०[सं० चीत्कार] १ चीत्कार, चीख. २ चिंघाड़ ।
उ०—दिकपाळां रा गाढ़ समेत दिग्गजां रा मद छूटि आठूं ही अनेकप चकितपणा रा चीकार करण लागा ।—वं. भा.

चीकू—सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष और उस पर लगने वाला फल ।

चीकूण—सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

चीख—सं०स्त्री० [सं० चीत्कार] १ चिल्लाहट । उ०—दईं कोप वैसारिजै लांप चीखा, सदा भारतां मीख तो ही असीखा ।—रा.रू.
करुण-क्रंदन । उ० —पण सेठांणी ल्हास नै संभाळ लीवी । बीरा री फाटोड़ी मायौ खोळा में लियां बाद उणरौ हियौ फाटण लाग्यौ अर मूंडा सूं एक चीख निकळगी ।—रातवासौ

चीखणौ, चीखबौ—क्रि०अ०—कष्ट पीड़ा आदि के कारण जोर से चिल्लाना । उ०—चाहे जितरो चीख, मूढ़ सला मांने नहीं । सहजे आसी सीख, चमठायां सूं चकरिया ।—मोहनराज साह
चीखणहार, हारौ (हारी), चीखणियौ—वि० ।
चीखवाड़णौ, चीखवाड़बौ, चीखवाणौ, चीखवाबौ, चीखवावणौ, चीखवावबौ—प्रे०रू० ।
चीखाड़णौ, चीखाड़बौ, चीखाणौ, चीखाबौ, चीखावणौ, चीखावबौ—क्रि.स. ।
चीखिओड़ौ, चीखियोड़ौ, चीख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चीखीजणौ, चीखीजबौ—भाव वा० ।

चीखल, चीखलि, चीखलियौ—देखो 'चीखलौ' (रू.भे.)
उ०—'अमरांणी' जीमें जठै, जुड़ै सुहड़ां झंड । चळू करै जिण चीखलै, मीन रहै घर मंड ।—अज्ञात

चीखलौ—सं०पु० [सं० चिकिल] १ कीच, दलदल, कीचड़ ।
उ०—दोइ टूक हुवा नै हेठौ पड़ियौ. लोही रौ चीखलौ हुवौ ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
२ छोटा मिट्टी का बना जल पात्र । उ०—आज हूं तौ पांणीड़ौ भरण नै जासूं हे माय, नरसी मूंते री हूं वाळकी, चीखलौ भरूं कै डूब मर जाऊं हे माय, नरसी मूंते री हूं वाळकी ।—रतनौ खाती
रू०भे०—चुकलियौ ।
३ एक प्रकार का सर्प (क्षेत्रीय) ४ सर्प का छोटा बच्चा (क्षेत्रीय)
अल्पा०—चीखलियौ ।
मह०—चीखल, चीखल्ल ।

चीखल्ल—देखो 'चीखल' (मह. रू.भे.)

चीगट—देखो 'चीकट' (रू.भे.)

चीगटड़ौ—वि०—१ जो मैल अथवा स्निग्ध पदार्थों के जमने से चिकना हो गया हो ।
२ देखो 'चीकट' (अल्पा. रू.भे.)

चीगटास—देखो 'चीकट' (रू.भे.)

चीगटौ—वि०—स्निग्ध पदार्थ की चिकनाई व मैल से भरा हुआ, स्निग्धतायुक्त ।

चीघटियौ—देखो 'चीगट' (अल्पा. रू.भे.)

चीड़—सं०पु०—१ ऊंट का मूत्र. २ हिमालय पर्वत के ढाल में होने वाला एक ऊंचा वृक्ष जिसकी लकड़ी अन्दर से मुलायम व चिकनी होती है । चीढ़ ।
३ एक प्रकार का छोटा बारीक मोती । कांच की गुरिया का दाना, पोत । उ०—गळै बांधण रा तिमणिया री चीड़ां सूं ही सुहाग न्याय है ।—वी.स.टी.

चीड़णौ, चीड़बौ—क्रि०अ०—ऊंट का पेशाब करना । उ०—थोड़ी देर तक कोई एक सब्द ई नहीं बोल्यौ । सिरफ ऊंट चीड़ता रह्या—तरर-तरर-तरर ।—रातवासौ

चीड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—पेशाब किया हुआ (ऊंट) (स्त्री० चीड़ियोड़ी)

चींड़ौ—सं०स्त्री०—देखो 'चींथड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

चींड़ौ—देखो 'चींथड़ौ' (रू.भे.)

चीचूअणौ, चीचूअबौ [सं० चीत्कार] चीखना ।

चीज, चीजड़ी—सं०स्त्री० [फा० चीज] १ सत्तात्मक वस्तु, पदार्थ, द्रव्य ।
यौ०—चीज-वस्त ।
२ गहना, आभूषण. ३ किसी प्रकार का गायन, गीत आदि. ४ महत्व की वस्तु. ५ विलक्षण वस्तु । उ०—देस विदेसां मिळ वणाई माटी री सै रीजड़ी । खगदो खातर नांव नुवा चतराई री चीजड़ी ।—दसदेव
अल्पा०—चीजड़ी ।

चीटल, चीटलौ—सं०पु०—सर्प का बच्चा । उ०—नागण जाया चीटला, सीहण जाया साव ।—वी.स.

चीटौ—देखो 'चीठौ' (रू.भे.)

चीठ—सं०स्त्री०—१ मैल. २ कंजूसी ।

चीठणौ, चीठबौ—क्रि०अ०—सटना, चिपकना ।
उ०—दारू मंस दपट्ट अमल अणमाप अरोगे । चमड़पोस रे चीठ भंवर मादक सुख भोगे ।—ऊ.का.
चीठणहार, हारौ (हारी), चीठणियौ—वि० ।
चीठाड़णौ, चीठाड़बौ, चीठाणौ, चीठाबौ, चीठावणौ, चीठावबौ—क्रि०स० ।
चीठिओड़ौ, चीठियोड़ौ, चीठ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
चीठीजणौ, चीठीजबौ—भाव वा० ।

चीठियोड़ौ—भू०का०कृ०—सटा हुआ, चिपका हुआ । (स्त्री० चीठियोड़ी)

चीठी—सं०स्त्री०—१ देखो 'चिट्ठी' (रू.भे.) २ देखो 'चीठौ' का स्त्री० । ३ कृपण, कंजूस ।

चीठौ—सं०पु०—१ स्निग्ध पदार्थों के कीट जमने से चिकना मैल ।
क्रि०प्र०—आणौ, जमणौ. भिलणौ, वंधणौ, लागणौ ।
२ मजबूती से सटने वाला ।
वि०—१ सटा हुआ. २ जो आसानी से न फटे व टूटे, गाढ़ा, मजबूत. ३ कृपण, कंजूस ।
रू०भे०—चींड़ौ, चीटौ, चींडौ ।

चीडोत्र–सं०पु०—चित्तौड़गढ़ (रू.भे.) उ०—मइ लीधा माळव चंदेरी मांडव सारंगपुर रिणथंभोर चीडोत्र भलागढ़ वळी लीउ नागुर। —कां.दे.प्र.

चीं'डौ—देखो 'चीठौ' (३,४, रू.भे.)

चीढ—देखो 'चीड़' (२, रू.भे.)

चीण—देखो 'चींण (रू.भे.)

चीणदार–वि०यौ०—वह जिसके कपड़े की पट्टी या फीता लगा हो।

चीणंसुय–सं०पु० [सं० चीनांशुक] चीन देश की बनावट का रेशमी वस्त्र (जैन)

चीणपिट्ठ, चीणविट्ठ–सं०पु० [सं० चीनपिण्ट] चीन देश में बुना हुआ एक प्रकार का उत्तम वस्त्र (जैन)

चीणी–सं०स्त्री०—१ चीनी, शक्कर। उ०—हात कमाई घाट हरक सूं, पतळी गट-गट पीणी। घोर रेत सम चेत घमंडी, चोर लियोड़ी **चीणी**।—ऊ.का.

२ लोहा काटने का एक औजार।

रू०भे०—छीणी।

३ एक प्रकार की मिट्टी विशेष जो प्रारंभ में चीन देश में प्राप्त हुई थी। कहीं-कहीं अन्य स्थानों में भी प्राप्त होती है। इसके तरह-तरह के खिलौने, तश्तरी, प्याले आदि बनाये जाते हैं। इसके बने बर्तनों पर पॉलिश बहुत अच्छी होती है।

यौ०—चीणी मिट्टी।

वि०—चीन देश का, चीन देश संबंधी।

चीणी चंपौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का केला, चीनिया केला (उत्तम) २ एक प्रकार का रंग विशेष का घोड़ा।

चीणी माटी, चीणी मिट्टी—देखो 'चीणी' (३)

चिणोटियौ–सं०पु० [सं० चीन-पट] स्त्रियों के ओढ़ने का एक मूल्यवान वस्त्र।

चीणौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का रंग विशेष. २ एक रंग विशेष का घोड़ा (शा.हो.)

उ०—रोहड भड़ वंकड़े, सेल्ह पद्धर कर तोलै। अस **चीणौ** ओरियौ, रुद्र जाडां धमरोळै।—रा.रू.

३ सफेद रंग का कबूतर. ४ एक प्रकार का घटिया दरजे का अनाज जिसका दाना राई के दाने के समान होता है।

५ देखो 'चीणी' (रू.भे.)

चीत—१ देखो 'चित्त' (रू.भे.) उ०—१ कसै चाप केमं, जती **चीत** जेमं।—र.ज.प्र.

उ०—२ जड़ियौ तिलक जवाहरां, जांणै दीपक जोत। वालम **चीत** पतंग विधि, हित सूं आसक होत।—र.रा.

सं०पु०—२ चित्र, तस्वीर।

उ०—उपजे कविता आपरी, इसी न उपजै ओर। भीत प्रमांणै **चीत** व्है, रीत 'प्रताप' निहोर।—जैतदांन बारहठ

३ चीता। उ०—नित ऊगां भूलै नहीं, सिंघा **चीत** सिकार। न्रिपति 'अभौ' तिम नागपुर, भूलै नहीं लिगार। —रा.रू.

[सं०स्त्री०] ४ स्मृति, याद। उ०—तरै अरड़कमल कह्यौ तिका वात हमार क्यूं **चीत** आई ?—नैणसी

५ चिंता। उ०—तण 'अजमाल' हूंत डरपंती, पतसाहां त्रिय **चीत** पड़ी। बुगचा आळमाळ कर बैठी, खड़े पाय हुय तड़ा खड़ी। —अभयसिंह रौ गीत

चीतकार–सं०पु० [सं० चीत्कार] १ चिल्लाहट, हल्ला. २ करुण-क्रंदन। [सं० चित्रकार] ३ चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चीतगढ़–सं०पु०—चित्तौड़गढ़। उ०—१ गढ़ बीकांण **चीतगढ़** सगपण, 'कलौ' उदैसिंघ इळ आकास।—द.दा.

उ०—२ गहै आवटै थाट कुरखेत जिम **चीतगढ़**, रूकमे रीठ रिण हुवै रहियौ।—ईसरदास मेड़तिया रौ गीत

चीतणौ, चीतबौ—देखो 'चींतणौ' (रू.भे.) उ०—नर री **चीती** वात हुवै नह, हर री चीती वात हुवै।—ओपौ आढौ

चीतणहार, हारौ (हारी), चीतणियौ—वि०।

चीतिओड़ौ, चीतियोड़ौ, चीत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चीतीजणौ, चीतीजबौ—कर्म वा०।

चीत दुरंग–सं०पु०—चित्तौड़ दुर्ग, चित्तौड़गढ़। उ०—राखै रांण बराबरी, आतपत्र उतवंग। तैं अकबर खड़ आवियौ, गांजण **चीत दुरंग**।—वां.दा.

चीतर—देखो 'चीतरौ' (मह० रू.भे.)

चीतरी–सं०स्त्री०—१ समीप-समीप छितरे हुए छोटे-छोटे बादलों के समूह। उ० –दिन ऊगां री **चीतरी**, सिंझ्या रा गडमेळ। रात्यूं तारा निरमळा, ए काळां रा खेल।—वर्षा विज्ञान

२ मादा बघेरा. ३ गूंदे हुए आटे के बहुत देर पड़े रहने पर उस पर रेखाओंयुक्त जमने वाली पपड़ी।

क्रि०प्र०—आणी।

चीतरौ–सं०पु० (स्त्री० चीतरी) नर बघेरा।

चीतळ–सं०पु०—१ चीते के रंग का एक मृग विशेष जिसके सींग सांभर जैसे होते हैं। इसके शरीर पर सफेद चित्तियां या बुंदियां होती हैं। उ०—आतु सूं के धमके वांणूं की चोट, संमळ **चीतळ** पाठे केते लोटपोट।—सू.प्र.

२ एक जाति का अजगर।

सं०स्त्री०—३ बड़ा पत्थर, शिला खंड. ४ एक प्रकार का लकड़ी का बना उपकरण जिसे फेंक कर खरगोश व तीतर आदि की शिकार की जाती है।

चीतळती–सं०स्त्री—चितकबरी बकरी।

चीतवणौ, चीतवबौ–क्रि०स०—१ सोचना, विचारना। उ०—ढींबौ मांहे सूतौ **चीतवै** छै। वारै चोर छै।—चौबोली

२ दृढ़ करना, निश्चय करना। उ०—कीजै नह आज चढ़े किरणाल, सत्रां रा **चीतविया** सु पखाळ।—गो.रू.

३ स्मरण करना।

चीतवणहार, हारौ (हारी), चीतवणियौ —वि० ।

चीतवाणौ, चीतवाबौ, चीतवावणौ, चीतवाववौ—प्रे०रू० ।

चीतविग्रोड़ौ, चीतवियोड़ौ, चीतव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चीतवीजणौ, चीतवीजवौ—कर्म वा० ।

चीतवर—सं०पु०—योद्धा, वीर, साहसी पुरुष ।

चीतवियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ सोचा हुआ, विचारा हुआ. २ निश्चय किया हुआ. ३ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ ।
(स्त्री० चीतवियोड़ी)

चीताणौ, चीतावौ—देखो 'चींताणौ' (रू.भे.)

चीतामेर—सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति । (वां.दा. ख्यात)

चीतायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ सोचाया हुआ, विचार कराया हुआ. २ स्मरण कराया हुआ. ३ निश्चय कराया हुआ ।
(स्त्री० चीतायोड़ी)

चीतारणौ, चीतारवौ—देखो 'चितारणौ' (१, रू.भे.)

उ०—१ चीतारंती चुगतियां, कुंझी रोवहियांह । दूरा हुंता तउ पलइ, जऊ न मेल्हहियांह ।—ढो.मा.

उ०—२ आपरा झूंपड़ा आय वसावता ही वैरियां सूं वैर चीतारियौ । घर रौ वैर भूलौ नहीं ।—वी.स.टी.

चीतारणहार, हारौ (हारी), चीतारणियौ—वि० ।

चीतारिग्रोड़ौ, चीतारियोड़ौ, चीतारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

चीतारीजणौ, चीतारीजवौ—कर्म वा० ।

चीतारियोड़ौ—देखो 'चितारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० चीतारियोड़ी)

चीतालंकी—वि०स्त्री०यौ०—सिंह या चीते के समान पतली कमर वाली ।

उ०—१ मारूजी रै रंधावूं गुदळी खीर, खीर ही, चीतालंकी रा ढोलाजी हो, हां रै आई रुत मांगी हो बीकानेर ।—लो.गी.

उ०—२ खागां नयण खतंग मझि, काजळ सार ःगरूर । चीतालंकी चतुर रैं, वदन्न वरसै नूर ।—र.रा.

चीताळ—सं०स्त्री०—कपड़े धोने की शिला, बड़ा पत्थर ।

चीति—देखो 'चित' (रू.भे.) उ०—ढोला ग्रांमण दूमणउ, नख ती खूंदइ भीति । हम थां कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीति ।—ढो.मा.

चीतियोड़ौ—सोचा हुआ, विचारा हुआ । (स्त्री. चीतियोड़ी)

चीती—सं०पु०—एक सर्प विशेष जिसके विष से प्राणी सड़-सड़ कर मरता है ।

चीतेरण—वि०स्त्री०—चित्र बनाने वाली, चित्रकार । उ०—गांवां-गांवां में गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह चीतेरण चा'ती ।—ऊ.का.

चीतेवांण—सं०पु०—शिकार के लिये चीते को शिक्षण देने वाला व्यक्ति, चीते को पालने वाला ।

चीतोड़ी—देखो 'चितौड़ी' (रू.भे.)

चीतोड़ौ—सं०पु०—देखो 'चितौड़ौ' (रू.भे.)

उ०—१ ले वदनेर अजैगढ़ लीधौ, गढ़ बावन भागौ गुमर । चित मैं धार वळै चीतोड़ौ, पावां लागौ जोधपुर ।—मयौ वीठू

उ०—२ नर तेथ निमांणा निलजी नारी, अकवर गाहक वट अवट । चौहटै तिण जायर चीतोड़ौ, वेचै किम रजपूत वट ।
—प्रिथ्वीराज राठोड़

चीतौ—सं०पु० (स्त्री० चीती) १ एक बड़ा हिंसक पशु जो बिल्ली की जाति का होता है जो अधिकतर दक्षिणी एशिया (विशेषतया भारत) के जंगलों में पाया जाता है. २ एक प्रकार का बड़ा पौधा जिसकी पत्तियां जामुन की पत्तियों से मिलती-जुलती होती हैं ।

वि०—सोचा हुआ, विचारा हुआ । उ०—मन चीतौ होवै नहीं, हर चीतौ ततकाळ ।—अज्ञात

चीत्तौड़—देखो 'चीतौड़' (रू.भे.)

चीत्तौड़ौ—देखो 'चीतौड़' (रू.भे.)

चीत्र—१ देखो 'चित्र' (रू.भे.)

२ शरीर, देह ? उ०—धिनौ धारणा राज री राजगिर सै धणी, दूसरी भुळावण नकौ दीनी । चारणा वरण री चीत्र हंस चालतां, करण सिवरण तणी वार कीनी ।—हरराज रावळ (जैसलमेर) रौ गीत

चीत्रउड़, चीत्रकोट, चीत्रगढ़—देखो 'चित्तौड़' (रू.भे.)

उ०—१ चीत्रउड़ धणी चंचळि चड़ेय, खरहंड लेय आयउ खड़ेय ।
—रा.ज.सी.

उ०—२ राज-कुंवर तेड़ावियौ, पाट पटोळा कुलह कवाई । दीधौ सोनौ सोळमौ, चीत्रकोट दीधौ तिण ढाई ।—वी.दे.

उ०—३ धड़क मत चीत्रगढ़, जोधहर धीरवै । गंज सत्रां दळां करूं गजगाह ।—जैमल मेड़तिया रौ गीत

चीत्रणौ, चीत्रवौ—क्रि० स० [सं० चित्र] चित्रित करना, चित्र बनाना ।

उ०—छवि नवी नवी नव नवा महोछ्व, मंडियै जिणि आणंद मई । कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रंति चित्रांम थई ।—वेलि.

चीत्रस—सं०पु०—एक प्रकार के रंग का घोड़ा ।

चीत्रांगद—देखो 'चित्रांगद' (रू.भे.)

चीत्रांम—सं०पु०—देखो 'चित्रांम' (रू.भे.)

चीत्रारौ—देखो 'चित्रारौ' (रू.भे.)

उ०—आरंभ में कियौ जेणि उपायौ, गावण गुणनिधि हूं निगुण । करि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण ।—वेलि.

चीत्रीगढ़—सं०पु०—चित्तौड़गढ़

चीत्रुड़ी, चीत्रोड़, चीत्रोड़ि, चीत्रोड़ी, चीत्रौड़, चीत्रौड़ी—१ देखो 'चित्तौड़' (रू.भे.) उ०—१ पोळि फूटरी पाटण तणी, चीत्रुड़ी नइ ढीली तणी ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ तियै प्रस्तावि राव कल्यांणमल री पुत्र पाटरख्यक महाराजाधिराज महारांजा स्त्री रायसिंघ चीत्रोड़ि परणीजण पधारिया हुता ।—द.वि.

उ०—३ आगै चीत्रोड़ि रांणा उदैसिंघ राज करै छै तिणरो विस्तार आगै कहीजसी ।—द.वि.

उ०—४ डहतौ पड़तौ खांण भुजाडंड, भड़ां अगड़ राठौड़ अभंग । अकबर दुरंग चालितौ 'ईसर', दीठौ सिर चीत्रोड़ दुरंग ।

—ईसरदास मेड़तिया रौ गीत

उ०—५ विढण सु प्रवि चीत्रौड़ि 'वीर' उत, वह दळ पींजरिया वांणासि । धुक धक हेक गया धड़ धरती, अध धड़ हेक गया अकासि ।

—ईसरदास मेड़तिया रौ गीत

चीथड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'चींथड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

चीथड़ौ—देखो 'चींथड़ौ' (रू.भे.)

चीथणौ—देखो 'चींथणौ' (रू.भे.)

चीथरी—सं०स्त्री०—देखो 'चींथड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

चीथाणौ, चीथावौ—क्रि०स०—देखो 'चींथाणौ' (रू.भे.)

चीथायोड़ौ—देखो 'चींथायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चीथायोड़ी)

चीथावणौ—देखो 'चींथाणौ' (रू.भे.)

चीथावियोड़ौ—देखो ''चींथायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चिथावियोड़ी)

चीथियोड़ौ—देखो 'चींथियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चीथियोड़ी)

चीद—देखो 'चींध' (रू.भे.)

चीदड़—देखो 'चींधड़' (रू.भे.)

चीदड़ियौ—देखो 'चींधड' (अल्पा. रू.भे.)

चीदळ—देखो 'चींधड़' (रू.भे.)

चीदळियौ—देखो 'चींधड़' (अल्पा. रू.भे.)

चीध—देखो 'चींध' (रू.भे.) उ०—१ विचत्रां रज घर घर विचै, ऊलां कीध प्रमांण । वहरंगी चीधां लखी, अवरंगी नीसांण ।—रा.रू.

उ०—२ चीध फरक्कै भंडां प्रचडां कोडंडां भणंक्कै चिला । माळ-रूंडां काज संडां खेड़िया महेस ।—जालमसिंह चांपावत री गीत

चीधड़—देखो 'चींधड़' (रू.भे.)

चीधड़ियौ—देखो 'चींधड़' (अल्पा. रू भे.)

चीधळ—देखो 'चीधड़' (रू.भे.)

चीधळियौ—देखो 'चीधड़' (अल्पा. रू.भे.)

चीन—सं०पु०—भारत के उत्तर में स्थित एक देश जो एशिया महाद्वीप में दक्षिण पूर्व में स्थित है ।

चीनणौ, चीनबौ—क्रि०स०—मांस को काट कर छोटा करना । मांस के टुकड़े करना. २ पहिचानना, समझना । उ०—ठां ठां ठरड़ाया मुख दुख कुण सूझै, विपदा वरड़ाया विपदा कुण बूझै । चिंताहर नागर चिंता नह चीनी, करुणांसागर भी करुणा नह कीनी ।—ऊ.का.

चीनणहार, हारौ (हारी), चीनणियौ—वि० ।

चीनवाड़णौ, चीनवाड़बौ, चीनवाणौ, चीनवावौ, चीनवावणौ, चीनवाववौ, चीनाड़णौ, चीनाड़बौ, चीनाणौ, चीनावौ, चीनावणौ, चीनाववौ—प्रे०रू० ।

चीनिओड़ौ, चीनियोड़ौ, चीन्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चीनीजणौ, चीनीजबौ—कर्म वा० ।

चींनणौ, कींनवौ, चीन्हणौ, चीन्हबौ—रू०भे० ।

चीनवड़ौ—सं०पु०—एक विशेष प्रकार के रंग का घोड़ा ।

चीनार—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा ।

चीनियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ (मांस) २ पहिचाना हुआ । (स्त्री० चीनियोड़ी)

चीनीफरोस—सं०पु०—चीनी मिट्टी के खिलौने बेचने वाला ।

उ०—मैं नांही चीनीफरोस मैं हफतहजारी ।—सू.प्र.

चीन्हणौ, चीन्हबौ—देखो 'चीनणौ' (रू.भे.)

उ०—१ हरि सब मांहि सकळ हरि मांही, ता साहिब कूं चीन्है नांही ।—ह.पु.वा.

उ०—२ द्वादसी सुकरवार तभी यह पूरण कीन्हौ, पुस्तग सत वैराग मुक्ति का मारग चीन्हौ ।—रांमस्वरूप स्वांमी

चीन्हियोड़ौ—देखो 'चीनियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चीन्हियोड़ी)

चीप—सं०स्त्री०—१ ऊँट के चमड़े का या धातु का बना बड़ा पात्र जो प्रायः तेल या घी रखने के काम आता है ।

२ ढोल या डफ के बजते समय लय मिलाने के लिये लगाये जाने वाले डंडे के अतिरिक्त दो पतली व लचकीली छड़ियां. ३ डफ बजाते समय बजाने के डडे के अतिरिक्त लगभग छः इन्च लम्बी लचीली पतली किसी पेड़ की टहनी अथवा मोरपंख का डंठल जो लय मिलाने के लिये डफ के साथ हाथ से इस प्रकार सटा देते हैं कि अंगुली से पीटने पर वह डफ पर लगती है. ४ बड़े पत्थर आदि को दीवार में चुनते समय बराबर जमाने के लिये पत्थर के नीचे रही खोखली जगह पर लगाया जाने वाला छोटा, पतला व चपटा पत्थर या इस प्रकार के उपयोग में आने वाली कोई अन्य वस्तु. ५ संधिस्थान में लगाने का पत्थर ।

मुहा०—चीप लगाणी—किसी स्थान में जोड़ लगाना, खाली स्थान की पूर्ति के लिये पत्थर के छोटे टुकड़े को रखना । डफ की लय मिलाना ।

चीपड़, चीपड़ौ—देखो 'चींपड़ौ' (रू.भे.)

चीपटी—सं०स्त्री—१ देखो 'चीपटौ' (अल्पा. रू.भे.)

२ छोटा चिमटा ।

चीपटौ—सं०पु०—१ ज्वार के पौधों को काट कर इकट्ठा किया हुआ घास.

२ देखो 'चीमटौ' (रू.भे.)

३ देखो 'चीप' (अल्पा. रू.भे.)

चीपडीउ—सं०पु० [सं० चिपटः] आँख का मैल, चीपड़ (उ.र.)

चीपनी—सं० स्त्री०—देखो 'सीपनी' (रू.भे.)

चीपलौ—वि०—देखो 'चींपड़' (रू.भे.)

चीपिडउ—सं०पु० [सं० चिपिटः] चपटी नाक वाला ।

चीपी—सं०स्त्री०—दूध दुहने का पात्र । उ०—जंगलों में चरै छी सो अव्याई भोटी आई । 'मोकळ' का कनां सूं 'सेख' चीपी में दुहाई ।

—शि.वं.

चीफ-सं०पु० [ग्रं०] बड़ा सरदार या राजा।
वि०—प्रमुख, मुख्य, प्रधान।
चीफ कमिस्नर-सं०पु०यौ० [ग्रं० चीफ कमिश्नर] १ किसी डिविजन का प्रधान ग्रधिकारी. २ किसी कार्य करने के सम्बन्ध में प्रधान ग्रधिकारी।
चीफ कोरट-सं०पु०यौ० [ग्रं० चीफ कोर्ट] प्रधान न्यायालय।
चीफ जज-सं०पु०यौ० [ग्रं०] प्रधान न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश।
चीफ जसटिस-सं०पु०यौ० [ग्रं० चीफ जस्टिस] उच्च न्यायालय का प्रमुख न्यायाधीश।
चीफाड़-सं०पु [सं० चित्तस्फोटकः] चित्तस्फोटक।
चीब-सं०स्त्री०—ग्रादत, टेव, स्वभाव। उ०—इतरा में बादसाह रै घोड़ो एक ऐराक सूं ग्रायो। वडो ग्राछो घोड़ो.........बादसाह तीं घोड़ा नूं देख खुस हुवो पण जद चाबुकसवार चारजांमो कर फेरै जद तो ग्राछो फिरै ग्रोर जिण वखत तंग खांचै उण वखत घोड़ो बैठ जावै सो बादसाह सारां नूं दिखायो पण घोड़ै री खोड़ चीब छूटै नहीं, सारा खस रह्या।—दूलची जोइये री वारता
चीबड़ी-सं०स्त्री० [सं० चिर्भटी] १ ककड़ी. २ सूग्रर का मादा बच्चा। (पु० चीबड़ो)
चीबड़ो—देखो 'चीबड़ी' (स्त्री.)
चीबटो, चीबठो—देखो 'चीपटो' (रू.भे.)
रू०भे०—चीबटी, चीबठी।
चीबरो-सं०स्त्री०—१ उल्लू की जाति का एक पक्षी विशेष जो ग्राकार में कबूतर से छोटा होता है। यह प्रायः रात्रि में ही बोलता है जिसके ग्राधार पर शकुन लिये जाते हैं।
चीबी-सं०स्त्री०—१ ऊंट के बच्चे के दौड़ने, उछलने या खेलने ग्रादि का कार्य. २ मादा ऊंट का मस्ती में होने का भाव या ऐसे समय में दौड़ने ग्रादि की क्रिया. ३ चौहान वंश की एक शाखा।
चीबरो-सं०पु०—मुसलमान।
चीबौ-सं०पु०—१ चौहान वंश की 'चीबी' शाखा का व्यक्ति।
२ मुसलमान, यवन। उ०—भयाणंक चीवा जिकै रोम भूरा, पखै पार बीवा हिलै थाट पूरा।—वचनिका
रू०भे०—चीबरो।
चीभड़वाळ-सं०स्त्री०यौ०—वह मादा सूग्रर जिसके बहुत से बच्चे हों। उ०—विचै थट भूंडण चीभड़वाळ, दयै नह तोड़ण कोट डाढ़ाळ। —पा.प्र.
चीभड़ियो—देखो 'चिरभट' (ग्रल्पा. रू.भे.)
चीभड़ी-सं०स्त्री० [सं० चीभिटी] ककड़ी।
चीभड़ो-सं०पु०—१ देखो 'चिरभट' (रू.भे.)
२ (स्त्री० चीभड़ी) सूग्रर या सूग्रर का बच्चा।
उ०—चेवह वांटी चीभड़ा, एकल दात्रड़ियाळ। कांनां सुण 'बूडै' कमंद, चाटकाया चंचाळ।—पा.प्र.
रू०भे०—चीबड़ो, चीमड़ो।
चीमड़-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम। उ०—ईंदावाटी में घूतांवर गांव चीमड़ विराजै, खांडो देवळ वडो देवळ है।—वां.दा. ख्यात
चीमड़ियो, चीमड़ो—देखो 'चीभड़ो' (रू.भे.)
चीमटो-सं०पु०—१ लकड़ी या धातु की दो लचीली फट्टियों को जोड़ कर बनाया जाने वाला एक उपकरण जिससे प्रायः वे वस्तुएँ पकड़ कर उठाते हैं जहां हाथों का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
रू०भे०—चिमटो, चींपटो, चींमटो, चीपटो।
२ उन्मत्त हाथी को वश में करने के लिए उसके ग्रगले पैर में तेज जकड़ के साथ डाला जाने वाला लोहे का एक उपकरण जिसका ग्रगला भाग हाथी के पैर की मोटाई के बराबर गोलाकार रूप में दो भागों में होता है। इस गोलाई में छड़ के साथ लोहे के नुकीले छोटे-छोटे भाले लगे रहते हैं। इस उपकरण में पीछे की ग्रोर लगी कमानी को दबाने से यह गोलाकार भाग खुल जाता है ग्रोर पैर में डाल कर छोड़ते ही पैर को जकड़ लेता है ग्रोर उसमें लगे छोटे छोटे भाले पैर में घुस जाते हैं।
चीयै-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम।
चीर-सं०पु०—१ स्त्रियों के ग्रोढ़ने का वस्त्र, ग्रोढ़नी।
उ०—बांणासुर छेद भुजा बळवंत, कीधो बोह चीर लिछम्मीकंत। —ह.र.
२ वस्त्र, कपड़ा (ग्र.मा.) ३ पुराने कपड़े का टुकड़ा, चिथड़ा, लत्ता. ४ गाय का थन. ५ गुग्गल का पेड़. ६ चीरने की क्रिया या भाव.
यौ०—चीर-फाड़।
७ वृक्ष की छाल।
चीरड़—देखो 'चीरड़ो' (महा. रू.भे.)
चीरड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'चींथड़ो' (ग्रल्पा. रू.भे.)
चीरड़ो—देखो 'चींथड़ो' (रू.भे.)
उ०—सैंती सैंती पीड़ ताडो लपेट लकड़ी लीरड़ा। तीजै दिन वन पयांन करै, त्याग दुवाई चीरड़ा।—दसदेव
मुहा०—१ चीरड़ा चावणा—उन्माद में होना, पागल होना।
२ चीरड़ा चुगणा—निर्धन होना, कंगाल होना, गिरी हुई ग्रवस्था को प्राप्त होना।
चीरणी-सं०स्त्री०—१ एक ग्रोजार जो लकड़ी की बनी वस्तुग्रों (यथा-कपाट ग्रादि) की सुंदरता बढ़ाने के काम में लिया जाता है. २ पत्थर पर खुदाई करने का ग्रोजार. ३ लोहा काटने का ग्रोजार, छेनी।
चीरणौ, चीरबौ-क्रि०स० [सं० चर्तन या चीर्ण] किसी वस्तु या पदार्थ को सीधा फाड़ना या काटना, विदीर्ण करना।
चीरणहार, हारो (हारी), चीरणियो—वि०।
चीरवाड़णौ, चीरवाड़बौ, चीरवाणौ, चीरवाबौ, चीरवावणौ, चीरवावबौ, चीराड़णौ, चीराड़बौ, चीराणौ, चीराबौ, चीरावणौ, चीराववौ—प्रे०रू०।
चीरिग्रोड़ो, चीरियोड़ो, चीरचोड़ो—भू०का०कृ०।
चीरीजणौ, चीरीजबौ—कर्म वा०।

यौ०—चीरणौ-फाड़णौ।
(चिरणौ—ग्रक० रू०)

चीरफाड़–सं०स्त्री०यौ०—१ चीरने का फाड़ने या कार्य या भाव. २ नश्तर से घाव आदि चीरने का कार्य।

चीरतल–सं०पु० [सं०] पक्षी विशेष (जैन)

चीराई–सं०स्त्री०—चीरने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

चीरागुर, चीरागुरु–सं०पु०यौ०—नाथ संप्रदाय का वह व्यक्ति जो इस संप्रदाय में किसी को दीक्षित करते समय कान में छेद करता है या कान चीर कर उसमें मुद्रा पहिनाता है।

चीराजिण सं०पु० [सं० चीराजिनं] व्याघ्र ग्रौर मृग चर्म (जैन)

चीराणौ, चीरावौ–क्रि०स० ('चीरणौ' का प्रे०रू०)—चीरने का कार्य अन्य से कराना।
चीराणहार, हारौ (हारी), **चीराणियौ**—वि०।
चीरायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चीराईजणौ, चीराईजबौ—कर्म वा०।

चीरायतौ—देखो 'चिरायतौ' (रू.भे.)

चीरायुस—देवता (डिं.को.)
वि०—दीर्घायु, चिरायु।

चीरायोड़ौ–भू०का०कृ०—चीरने का कार्य कराया हुआ।
(स्त्री० चीरायोड़ी)

चीराळी–सं०स्त्री० [सं० चर्तल] १ किसी पदार्थ या फल आदि का चीरा हुआ भाग, खंड, फांक. २ लम्बा घाव, क्षत।

चीरावणौ, चीराववौ—देखो 'चीराणौ' (रू.भे.)
चीरावणहार, हारौ (हारी), **चीरावणियौ**—वि०।
चीराविग्रोड़ौ, चीरावियोड़ौ, चीराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चीरावीजणौ, चीरावीजवौ—कर्म वा०।

चीरावियोड़ौ—देखो 'चीरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चीरावियोड़ी)

चीरिग, चिरिय–सं०पु० [सं० चीरिक] १ एक जैनी भिक्षु वर्ग. २ फटे हुए कपड़े पहनने वाला साधु (जैन)

चीरियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. २ नश्तर लगाया हुआ। (स्त्री० चीरियोड़ी)

चीरी–सं०स्त्री० [सं० चृ=छेदने] १ फल या किसी पदार्थ आदि का चीरा हुआ भाग, खंड, फांक. २ लम्बा घाव, क्षत. ३ भींगुर. ४ मृत्यु-भोज की चिट्ठी (मेवाड़) ५ पत्र, चिट्ठी। उ०—पंच सहेली मिळी धन साथ, **चीरी** म्हेली धन अपरगइ हाथ।—वी.दे.
[सं० चीरिः] ६ पर्दा। उ०—जन हरिदास या जीव कै, दुख सुख चालै साथि। अब या **चीरी** क्यूं मिटै, ता दिन आई हाथि।
—ह.पु.वा.

चीरौ–सं०पु०—१ किसी द्वार के चौखटे के ऊपरी डंडे के ऊपर बाहर की ओर लगाया जाने वाला चित्रित पत्थर. २ मकान बनते समय दीवार के बाहर छोड़ी गई चार इंच की जगह. ३ नश्तर आदि से चीर कर बनाया हुआ क्षत या घाव. ४ एक प्रकार का लगान जो जागीरदार कृषक वर्ग से लेता था. ५ चीरने की क्रिया या भाव. ६ पगड़ी, उष्णीष। उ०—१ कसबी **चीरा** पै बांधूं तेरे, पहिरण चोळा मोहन मेरे।—स.कु.
उ०—२ चमकै रतन पेच **चीरां** रा। हार मुकत भूखण हीरां रा।
—सू.प्र.
७ टुकड़ा, खण्ड, धज्जी। उ०—ताहरां पाघड़ी आपरी उतारि अर **चीरा** बि किया।—द.वि.
अल्पा०—चीरी।

चील–सं०स्त्री० [सं० चिल्ल] गिद्ध या बाज की जाति की एक बड़ी चिड़िया। यह मांसभक्षी होती है। झपट्टा मार कर शिकार करना या खाद्य पदार्थ प्राप्त करना इसकी विशेषता है।
पर्याय०—आतापी, कांवळी, चील, समळी, सांवळी, सुनखी।
सं०पु०—२ चौहान वंश की एक शाखा का या इस शाखा का व्यक्ति. ३ सर्प। उ०—**चीलां** गरण न तजै द्रुम चंदण, माछां गरण न तजै महण।—रिवदांन महडू
यौ०—चीलपत, चीलपति, चीलप्यार, चीलराज, चीला-राव।
४ शेषनाग। उ०—मचक्कै फुणाटां **चील** लचक्कै कमट्ठी मौर, बोम ढंकै उडै खेहा रुकै धीर वाट। अजादा ददेस मुक्कै भँचक्के भवेस मींट, तणौ धूनरेस हकै हैजमां तुराट।—हुकमीचंद खिड़ियौ
५ गेहूँ की फसल में उगने वाला घास का एक पौधा जिसका शाक बनाया जाता है. ६ मार्ग, रास्ता।

चीलक, चीलख—देखो 'चील' (१) उ०—१ हडोई ऊपर चील का कागला झड़ाफड़ करतै रह्या छै।—रा.सा.सं.
उ०—२ लहरचौ सुकायौ सांमै बाड़ पर जी, कोई **चीलख** झपटा लेवै जी, क लहरचौ लै दौ जी।—लो.गी.

चीलड़ी–सं०स्त्री०—देखो 'चील' (१) (अल्पा. रू.भे.)

चीलड़ौ–सं०पु० [सं० चिल्लीशाकम्] १ गेहूँ की फसल में होने वाला एक पौधा जिसकी पत्तियों का लोग शाक बनाते हैं।
रू०भे०—चीला।
२ चने, मौठ के आटे या पिसी दाल के घोल को तवे पर छितरा कर घी या तेल में सिका कर बनाई हुई नमकीन या मीठी रोटी या खाद्य पदार्थ।

चीलपत, चीलपति–सं०पु०यौ०—शेषनाग (मि० 'चीळ' ३, ४)

चीलप्यार–सं०पु०यौ०—(सर्प का प्यारा) चंदन वृक्ष (ह.नां.)

चीलमण–सं०पु०यौ०—सर्प मणि।
उ०—चाळक रा गज **चीलमण**, निज कर मांहि लियंत। मोताहळ-मय कुंभ रै, ऊपर वार दियंत।—वां.दा.

चीलम्मौ—देखो 'चिलमियौ' (रू.भे.) उ०—**चीलम्मां** मैल टिकड़ी चतुराई, भली भांत दासी भर लाई।—अज्ञात

चीलर–सं०पु०—१ रेजगारी, छुट्टे सिक्के. २ छिछले पानी का पोखर।

अल्पा०—चीलरियो ।

चीलराज-सं०पु०यौ०—शेष नाग ।

चीलरियो—देखो 'चीलर' (अल्पा. रू.भे.) उ०—चिळकै सोनै रा चीलरिया, वंधगी वा रूपाळी पाळ । कूंपलो किणरो दुळियो आज ? गुदळती घण असमानी ढाल ।—सांभ

चीलवो—एक प्रकार का पत्तीदार शाक विशेष (अमरत)

रू०भे०—चील, चीलड़ो ।

चीलार-सं०पु०यौ०—१ देवता ।

[रा० चिल्ल+सं० अरि] २ गरुड़ । उ०—जटी जोग पारावारां घावां सुभ्रतटी जेम, गैणवटां तावां ऊंच सुभावां गोवंद । चीलार पुरंद्र चावां च्यंद्र ज्यु, नखत्र चावां नरां लोक दावां सरै 'किसनेस' री वंद ।—हुकमीचंद खिड़ियो

चीलू—देखो 'चिल्लो' (रू.भे.) उ०—लोद्रां चीलू आंघ, भागी सोह कोई भरां सोभड़ा खग सात मैं, वावा तोरण वांध ।—नैणसी

चीलो, चील्लो—देखो 'चइलो' (रू.भे.)

चील्ह, चील्हणि—१ देखो 'चील' (रू.भे.) उ०—१ भड़ सो ही पहलां पड़े, चील्ह बिळग्गा चेक । नैण बचावै नाह रा, आप कळेजो फेंक ।

—वी.स.

उ०—२ गई चढ़ि चील्हणि गीवणि गैण, नसो करि वेल चढ़्यो त्रण नैण ।—मे.म.

२ देखो 'चीलड़ो' (१, रू.भे.)

चील्हर-सं०पु०—शूकरी का वच्चा, सूअर का वच्चा ।

उ०—महीना पूरा हुआ जद चील्हर पांच जाया ।

—डाढ़ाळा सूर री वात

चील्हांराव-सं०पु०यौ०—शेष नाग (मि० 'चील' ३,४)

चील्ही—देखो 'चीलो' (रू.भे.) उ०—कहियो वय थांरो कढ़ै, सम म्हारो तदि सूर । कुळ चील्हा ऊजळ करो, जांणं मरण जरूर ।

—वं.भा.

चीवणी-सं०स्त्री०—किवाड़ों की खूवसूरती के लिये उन पर लगाई जाने वाली एक प्रकार की किनारी ।

चीवर-सं०पु०—कपड़ा, वस्त्र (जैन)

चीवा-सं०स्त्री०—चौहान वंश की शाखा । रू०भे०—चीवा ।

चीस-सं०स्त्री०—१ रह-रह कर चलने वाली कसक, पीड़ा, वेदना, शूल, दर्द. २ चिल्लाहट ।

क्रि०प्र०—ऊठणी, चालणी ।

चीसणो, चीसवो-क्रि०अ०—१ पीड़ा से कराहना. २ चीत्कार करना, चीखना. ३ सिसकना । उ०—चीसै नाग चमू जोम हुए तोम चकाचूंध, धमे कोम भमै गोम पड़ै सार धोम । विग्रहंतो देख महा असोम संग्रांम वोलै, वाह-वाह अहो सूर गिरवांण वोम ।

—हुकमीचंद खिड़ियो

चीसणहार, हारो (हारी), चीसणियो—वि० ।

चीसाणो, चीसावो, चीसावणो, चीसाववो—क्रि०स० ।

चीसिओड़ो, चीसियोड़ो, चीस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

चीसीजणो, चीसीजवो—भाव वा० ।

चीसळी, चीसाळी—देखो 'चीस' (रू.भे.) उ०—ओभक ऐळी में आवेस अळूझै, सीळी रेळी में चीसळियां सूझै ।—ऊ.का.

चीह-सं०स्त्री० १ करुण क्रंदन । उ०—ढोलां पड़सी धीह, करळा स्वाळा कूकतां । चारणियां चीह, स्रवणां हूं कदे न सुणूं ।

—पा.प्र.

२ टीस, कसक, चीस ।

चीहलो—देखो 'चीलो' (रू.भे.) उ०—मरुधर ढूंढाड़ आहाड़ माळवो, राजा हींदवसथांन रहै । चांपावतां घातीया चीहलां, वळ जां चीहलां कमण वहै ।—दुरसो आढ़ो

चीहोर-सं०पु०—एक विशेष प्रकार के रंग का घोड़ा (शा.हो.)

चुं—देखो 'चूं' (रू.भे.)

चुंगळ-सं०पु० [फा० चंगाल] हाथ द्वारा किसी वस्तु को उठाते या पकड़ते समय मनुष्य के हाथ के पंजे की होने वाली स्थिति ।

मुहा०—१ चुंगळ में आणो—कावू में आना, किसी के पंजे में फँसना । २ चुंगळ में फसणो—वश में आना, पकड़ में आना ।

चुंगलाळ-सं०पु०—मुसलमान, यवन । उ०—चुंगलाळां करि चौड़, गिरधारी गाहे गजां । चढ़ियो खग धारां चढ़ै, रंभ-रथां राठौड़ ।

—वचनिका

चुंगाणो, चुंगावो-क्रि०स०—१ चुसाना. २ स्तन-पान कराना ।

चुंगाणहार, हारो (हारी), चुंगाणियो—वि० ।

चुंगावणो, चुंगाववो—क्रि०स० (रू०भे०)

चुंगायोड़ो—भू०का०कृ० ।

चुंगाईजणो, चुंगाईजवो कर्म वा० ।

चुंगायोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्तन-पान कराया हुआ. २ चुसाया हुआ । (स्त्री० चुंगायोड़ी)

चुंगावणो, चुंगाववो—देखो 'चुंगाणो' (रू.भे.)

चुंगावणहार, हारो (हारी), चुंगावणियो—वि० ।

चुंगाविओड़ो, चुंगावियोड़ो, चुंगाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

चुंगावीजणो, चुंगावीजवो—कर्म वा० ।

चुंगावियोड़ो—देखो 'चुंगायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुंगावियोड़ी)

चुंगी-सं०स्त्री०—१ किसी शहर के भीतर आने वाले माल पर लगने वाला महसूल, आयातकर. २ देखो 'चूंगी' (रू.भे.)

चुंघाड़णो, चुंघाड़वो—देखो 'चुंगाणो' (रू.भे.)

चुंघाड़ियोड़ो—देखो 'चुंगायोड़ो (रू.भे.) (स्त्री० चुंघाड़ियोड़ी)

चुंघाणो, चुंघावो—देखो 'चुंगाणो' (रू.भे.)

चुंघायोड़ो—देखो 'चुंगायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुंघायोड़ी)

चुंघावणो, चुंघाववो—देखो 'चुंगाणो' (रू.भे.) उ०—मेरा वाछा रमे छै गो-ठांण. कूण चुंघावै वावल तेरी धीय विना, तेरी भाभ्यां चुंघासी तेरा वाछड़ा ।—लो.गी.

चुंघावियोड़ौ—देखो 'चुंगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुंघावियोड़ी)

चुंनड़ी—देखो 'चूनड़ी' (रू.भे.) उ०—ऊभी थी घर प्रांगणे, सज्जण सांभरीयाह। चारे पोहरे चुंनड़ी, रोई रोई भीजवियांह।—ढो.मा.

चुंबक–सं०पु०—१ चुंबन करने वाला व्यक्ति. २ धूर्त व्यक्ति. ३ एक प्रकार का पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है।

चुंबणौ, चुंबबौ—देखो 'चूंबणौ' (रू.भे.)

चुंबन–सं०पु० [सं०] प्रेमातिरेक या काम के आवेग में होठों से किसी के गाल आदि अंगों को छूने या दबाने की क्रिया, चुम्मा, बोसा।

चुंबित–वि० [सं०] १ चूंमा हुआ. २ स्पर्श किया हुआ, छुआ हुआ। उ०—दाड़िमी बीज विसतरिया दीसै, निउंछावरि नांखिया नग। चरणे लुंचित खग फळ चुंबित, मधु मुंचंति सीचंति मग।—वेलि.

चुंबी–वि० [सं०] चूमने वाला।

चुंबौ—देखो 'चुंबन' (मह. रू.भे.)

चुंभी–सं०स्त्री० (अनु०—चुभ-चुभ) पानी में पैठने की क्रिया, डुबकी, गोता, चुभकी। उ०—बडौ तळाव रौ पांणी छै। कुंवर तळाव मांहे चुंभी मारै छै सो पूठौ नीसरियौ नहीं।—पलक दरियाव री बात

चुंवळौ–सं०पु०—चवला नामक अनाज, चौरा, लोबिया। उ०—सू मूंग किण भांत रा छै! मगरै रा नीपना, भरत रै खेत रा, हरियै रंग रा, चुंवळां जेवड़ा, इण भांत रा मूंग हाथां सूं रळकायजै छै।—रा.सा.सं.

चुंहटी–सं०स्त्री०—चुटकी, चिमटी।

चु–सं०स्त्री०—१ पृथ्वी. २ शरद।
पु०—३ काल. ४ वज्र. ५ उपधान (एका.)

चुअणौ, चुअबौ–क्रि०अ० [सं० चुड् = च्यवनं] १ बूंद-बूंद गिरना, चूना, टपकना. २ रसमय होना।
चुअणहार, हारौ (हारी), चुअणियौ—वि०।
चुआणौ, चुआबौ, चुआवणौ, चुआवबौ—क्रि०स०।
चुइओड़ौ, चुइयोड़ौ—भू०का०कृ०।
चुईजणौ, चुईजबौ—भाव वा०।

चुआई–सं०स्त्री०—१ बूंद-बूंद कर टपकाने की क्रिया. २ रसमय करने की क्रिया।

चुआणौ, चुआबौ–क्रि०स०—१ चुआना, बूंद-बूंद टपकाना. २ रसमय करना, रसीला करना।

चुआयोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बूंद-बूंद कर टपकाया हुआ. २ रसीला बनाया हुआ। (स्त्री० चुआयोड़ी)

चुआवणौ, चुआवबौ–देखो 'चुआणौ' (रू.भे.)
चुआवणहार, हारौ (हारी), चुआवणियौ—वि०।
चुआविओड़ौ, चुआवियोड़ौ, चुआव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुआवीजणौ, चुआवीजबौ—कर्म वा०।
चुअणौ, चुअबौ—अक० रू०।

चुआवियोड़ौ—देखो 'चुआयोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुआवियोड़ी)

चुइणौ, चुइबौ—देखो 'चुअणौ' (रू.भे.) उ०—तांह कौ जु रस चुइ पड़ै छै सोई मांनौं छिड़काव होइ छै। मारग छांटिजै छै।—वेलि.टी.

चुई–सं०स्त्री०—कपड़े बुनने का एक औजार।

चुकंदर–सं०पु० [फा०] तरकारी बनाने के काम आने वाली गहरे लाल रंग की गाजर या शलगम की तरह की एक जड़।

चुकणौ, चुकबौ–क्रि०अ० [सं० च्युत्क, प्रा० चुक्कि] १ समाप्त होना, खतम होना, बाकी न रहना. २ अदा होना, चुकता होना. ३ देखो 'चूकणौ' (रू.भे.)
चुकणहार, हारौ (हारी), चुकणियौ—वि०।
चुकवाड़णौ, चुकवाड़बौ, चुकवाणौ, चुकवाबौ, चुकवावणौ, चुकवावबौ—प्रे०रू०।
चुकाड़णौ, चुकाड़बौ, चुकाणौ, चुकाबौ, चुकावणौ, चुकावबौ—क्रि०स०।
चुकिओड़ौ, चुकियोड़ौ, चुक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुकीजणौ, चुकीजबौ—भाव वा०।

चुकमार—देखो 'चूकमार' (रू.भे.) उ०—तुपक्कनि तोप जमूर जुलाळ, परघ्घन सूळ गदा भिंदिपाळ। गुपत्तिय खंजर धूप कटार, करत्तिय चक्र चलै चुकमार।—ला.रा.

चुकळणौ, चुकळबौ–क्रि०अ०—बदहवास होना, घबराना।

चुकळीजणौ, चुकळीजबौ—भाव वा०।

चुकळाणौ, चुकळाबौ–क्रि०स०—१ बदहवास करना. २ भुलाना, भ्रमित करना।

चुकलियौ–सं०पु०—मिट्टी का छोटा जल-पात्र। उ०—आज ई तन मन सूं उण कांम में लाग्योड़ौ चुकलिया सूं लोटियौ भर नै ल्यावै अर बाजरी रै गोड में उंधाय दै।—रातवासौ
मुहा०—चुकलिया ढोळणा—किसी मृत व्यक्ति के पीछे द्वादशे के दिन मृतभोज आरम्भ करने के पूर्व छोटे-छोटे जल-पात्रों को जो गिनती में बारह होते हैं, भर कर उलटने की प्रथा (हिन्दू)। किसी व्यक्ति को दी जाने वाली एक गाली जिसमें उसकी मृत्यु की कामना निहित होती है।

चुकली–सं०स्त्री०—१ मिट्टी का बना जल का छोटा पात्र. २ मृत व्यक्ति के पीछे द्वादशे के दिन किया जाने वाला सामूहिक भोज, मृत्यु भोज. ३ मृत्योपरांत मृतक के निमित्त द्वादशे के दिन मिट्टी के छोटे-छोटे बारह जल पात्रों को भर कर के तर्पण हेतु उलटने की प्रथा (हिन्दू)

चुकळीजणौ, चुकळीजबौ–क्रि०अ० ('चुकळणौ' क्रिया का भाव वा०) घबरा जाना, बदहवास होना।

चुकल्यौ—देखो 'चुकलियौ' (रू.भे.) उ०—वीरा ओ, आई आई मनड़ा में रीस, ले चुकल्यौ सरवर सांचरी—लो.गी.

चुकाई–सं०स्त्री०—चुकने या चुकता करने की क्रिया या भाव।

चुकाणी, चुकावी–क्रि०स०—१ बेबाक करना, अदा करना. २ निवटाना. ३ प्राप्त करने में असफल करना, लक्ष्य भ्रष्ट करना।
४ भ्रम में डालना, भुलाना। उ०—हिवै तिण समै पातिसाह स्री अकबर अजमेर पधारिया छै। मुंहतै करमचंद राजि नूं मसलत हुंता चुकाइ अर सिवांणै हुंता राजाजी नूं कहियौ जु राजि पातिसाह रै पाए अजमेर पधारै।—द.वि.
चुकाणहार, हारौ (हारी), चुकाणियौ—वि०।
चुकाड़णौ, चुकाड़बौ, चुकावणौ, चुकावबौ—रू०भे०।
चुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चुकाईजणौ, चुकाईजबौ—कर्म वा०।
चुकणौ, चुकबौ—अक० रू०।

चुकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बेबाक किया हुआ, अदा किया हुआ. २ निवटाया हुआ. ३ लक्ष्य-भ्रष्ट किया हुआ. ४ भुलाया हुआ। (स्त्री० चुकायोड़ी)

चुकावणौ, चुकावबौ—देखो 'चुकाणौ' (रू.भे.) उ०—कंता मती चुकावज्यौ तीजां तणा तिवार।—लो.गी.
चुकावणहार, हारौ (हारी), चुकावणियौ—वि०।
चुकाविओड़ौ, चुकावियोड़ौ, चुकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुकावीजणौ, चुकावीजबौ—कर्म वा०।
चुकणौ, चुकबौ—अक० रू०।

चुकावियोड़ौ—देखो 'चुकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुकावियोड़ी)

चुकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बेबाक, चुका हुआ. २ निवटा हुआ. ३ लक्ष्यभ्रष्ट. ४ भ्रमित। (स्त्री० चुकियोड़ी)

चुकुमार—देखो 'चूकमार' (रू.भे.) उ०—चुकुमार धनुस तुनीर सर, सार टोप पक्खर झिलम। करि मित्र भाव हनुमंत कौ, वैर छंडि भेजे किलम।—ला.रा.

चुक्खड़—देखो 'चुखड़ौ' (मह० रू.भे.)

चुख–सं०पु०—खंड, टुकड़ा। उ०—घण लोह वाहि झेलूं घणा, वप चुखचुख ही रंभ वरूं। काय होय सिंभजीवत कळह, कर मरंग मुजरौ करूं।—सू.प्र.

चुखड़ौ–वि०—कृपण, कंजूस।
मह०—चुक्खड़।

चुखचुख, चुखचुक्ख, चुखच्चुख—१ देखो 'चुख' (रू.भे.) २ खंड-खंड, टुकड़े-टुकड़े।
उ०—१ घण वाहै झेलै घणी, 'किसनेस' किरम्मर। चुखचुख हुय पड़ियौ 'अचल', 'उदल' सुत अहुर।—सू.प्र.
उ०—२ चुखचुख हुग्रौ धार ग्रणियां चढ़ वणियौ क्रीत न जाय वर। केलपुरा वाळै सिर कारण, कीवा संभू हजार कर।—महादांन महड़ू
उ०—३ वहै सर सावळ धार विहार। वढ़ै चुखचुक्ख हुवौ जिण वार।—सू.प्र.
उ०—४ वजै रव डैरव वीस बतीस, उचै रव फेरव देत असीस। चंडी द्रहवाट करै चतुरंग, उडै खग झाट चुखच्चुख अंग।—मे.म.
उ०—५ जुड़ै इम सावळ व्याकुळ जीव, हुवा अवतार घणा हयग्रीव। करै चुखच्चुख घणा मुगळांण, पोथी जिम मंदिर वेद पुरांण।—सू.प्र.

चुग–सं०पु०—१ पक्षियों को दिया जाने वाला चुग्गा. २ आहार, भोजन। उ०—चुग नहिं मिळै पळचार सचीता, चखण काज लभै नह चारौ। 'वीर' गयौ यर थाट धकावण, हाल गयौ दळ मेळणहारौ।—सुखजी खिड़ियौ

चुगणौ, चुगबौ–क्रि०स० [सं० चयन] १ पक्षियों का अपनी चोंच से दाना उठा कर खाना, दाना बीनना। उ०—१ चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि-चुगि चितारेह। कुरझी बच्चा मेल्हिकइ, दूरि थकां पाळेह।—ढो.मा. उ०—२ सारसड़ी मोती चुगै, चुगै त कुरळै काय। सुगुण पियारा जे मिळै, मिळै त विछड़ै काय।—र.रा.
२ चुनना, बीनना। उ०—सो वटका-वटका न्यारा सा चुग भेळा कर ओठियां लिया।—सूरे खींवे री वात
३ पशुओं का चारा खाना। उ०—करहउ कूड़इ मनि थकइ, पग राखीयउ जांण। ऊकरड़ी डोका चुगइ, अपस डंमायउ आंण।—ढो.मा.
चुगणहार, हारौ (हारी), चुगणियौ—वि०।
चुगवाड़णौ, चुगवाड़बौ, चुगवाणौ, चुगवाबौ, चुगवावणौ, चुगवावबौ—प्रे०रू०।
चुगाड़णौ, चुगाड़बौ, चुगाणौ, चुगाबौ, चुगावणौ, चुगावबौ—क्रि०स०।
चुगिओड़ौ, चुगियोड़ौ, चुग्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुगीजणौ, चुगीजबौ—कर्म वा०।

चुगद–सं०पु० [फा०] मूर्ख, बेवकूफ।

चुगल–सं०पु० [फा०] वह कंकड़ जिसे चिलम के छेद पर रख कर तम्बाकू भरते हैं। गिट्टी। उ०—करै न चुगली कांकरी, चुगल दिरांणौ नांम। विखम अगारा चिलम विच, जळै तेण अठ जांम।—बां.दा.
२ मुसलमान. ३ पीठ पीछे निंदा करने वाला व्यक्ति, इधर की उधर लगाने वाला।
कहा०—चुगल को चूकै नी, और सगळा चूकै है—निंदा करने वाला व्यक्ति अपने कार्य से कभी नहीं चूकता। अन्य भले ही अपना कार्य न कर सकें परन्तु चुगली करने वाला व्यक्ति निंदा किये बिना नहीं रह सकता। चुगलखोर की निंदा।
यौ०—चुगलखोर।

चुगलखोर–वि०यौ० [फा०] परोक्ष में निंदा करने वाला, पीठ पीछे किसी की निन्दा करने वाला।
पर्याय०—करणेजप, खळ, दोयजीह, पिसुन, प्रच्छन्न, सूचक।

चुगलखोरी–सं०स्त्री०यौ० [फा०] पीठ पीछे निन्दा करने का कार्य, चुगली खाने का कार्य।

चुगळणौ, चुगळबौ—क्रि०स०अ०—१ चूसना. २ स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को मुंह में इधर-उधर डुलाना, घुमाना. ३ किसी के टोकने या बाधा डालने के कारण क्रम भंग होने पर बदहवास होना, चूकना ।

चुगळणहार, हारौ (हारी), चुगळणियौ—वि० ।

चुगळिओड़ौ, चुगळियोड़ौ, चुगळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चुगळीजणौ, चुगळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

चुगलाळ, चुगलाळौ—सं०पु०—१ चुगली करने वाला, निंदा करने वाला. २ मुसलमान । उ०—लोहि वधारण लाज, चुगलाळां दळ चूरतां । भाटी रिण जूटा भला, 'सुंदर' 'अजौ' सुकाज ।—वचनिका ३ यवन बादशाह । उ०—रोळ विरोळ सहर जैतारण, तो जिम करै जिके रजपूत । चुगलाळा वाळो दळ परवळ, भुजळग चोळ किया अद्भूत ।—नीमाज ठाकुर जगरांमसिंह ऊदावत री गीत

चुगलियौ—देखो 'चुगल' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—भडवा भड़वापणूं चुगलिया चुगली चासी ।—ऊ.का.

चुगली—सं०स्त्री०—१ पीठ पीछे की जाने वाली निंदा । उ०—ताहरां मुंहतै सूं कुंवर भोपतजी देज रै लियै कुमया करता सु मुंहतै राजाजी आगै कुंवर स्री भोपतजी री चुगली खाधी ।—द.वि.

मुहा०—चुगली करणी, चुगली खाणी—किसी की शिकायत करना । २ सिर में रक्खी जाने वाली बालों की शिखा ।

चुगवौ—वि०—चुनिन्दा, चुना हुआ, छँटा हुआ, बढ़िया ।

चुगाई—सं०स्त्री०—१ बीनने या चुनने की क्रिया. २ इस कार्य की मजदूरी ।

चुगाणौ, चुगावौ—क्रि०स० (चुगणौ क्रि० का प्रे०रू०) पक्षियों को दाना खिलाना, चुगने के लिये प्रेरित करना।

चुगाणहार, हारौ (हारी), चुगाणियौ—वि० ।

चुगाड़णौ, चुगाड़बौ, चुगावणौ, चुगावबौ—रू०भे० ।

चुगायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

चुगाईजणौ, चुगाईजबौ—कर्म वा० ।

चुगायोड़ौ—भू०का०कृ०—पक्षियों को दाना खिलाया हुआ. २ चुना हुआ, बीना हुआ. ३ चारा खिलाया हुआ (पशु) (स्त्री० चुगायोड़ी)

चुगावणौ, चुगावबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू.भे.)

चुगावणहार, हारौ (हारी), चुगावणियौ—वि० ।

चुगाविओड़ौ, चुगावियोड़ौ, चुगाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चुगावीजणौ, चुगावीजबौ—कर्म वा० ।

चुगावियोड़ौ—भू०का०कृ०—देखो 'चुगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुगावियोड़ी)

चुगियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दाना चुगा हुआ. २ चुना हुआ. ३ बीना हुआ । (स्त्री० चुगियोड़ी)

चुगुलखोर—देखो 'चुगलखोर' (रू.भे.)

चुगुलखोरी—देखो 'चुगलखोरी' (रू.भे.)

चुगौ—सं०पु०—१ पक्षियों को खाने के लिये डाला जाने वाला दाना या अनाज. २ चारा. ३ आहार, भोजन. ४ एक प्रकार का बाण (अ.मा.)

५ ठोस वस्तु जैसे तार आदि को पकड़ कर मोड़ने का लोहे का एक औजार ।

चुग्गल—देखो 'चुगल' (रू.भे.)

चुग्गौ—देखो 'चुगौ' (रू.भे.)

चुड़—देखो 'चूड़ौ' (रू.भे.) उ०—बांहे सुंदरि बहरखा, चासू चुड़ सब चार । मनुहरि कटि-थळ मेखळा, पग झांझर झणकार ।—ढो.मा. रू०भे०—'चूड़'

चुड़कली—सं०स्त्री०—चिड़िया (अल्पा.)

चुड़खणौ, चुड़खबौ—क्रि०अ०—१ पीड़ा या वेदना से दुखी होना या कराहना । उ०—'सोभड़ै' कियौ सुगाळ मुंहंगौ एकण ताळ में, खेतळ वाहण खड़खड़े चुड़खे चांमरियाळ ।—नैणसी

क्रि०स०—पशुओं का जंगल में छोटा छोटा घास चरना, खाना ।

चुड़खौ—सं०पु०—छोटा हरा घास ।

चुड़लियौ—देखो 'चूड़ौ' (अल्पा. रू.भे.) उ०—ए मां काकोजी नै कह कै मनै चुड़लियौ मंगा दै, मैं खेलण जास्यूं लूरड़ी ।—लो.गी.

चुड़ली—देखो 'चूड़ी' (अल्पा.)

चुड़लौ—देखो 'चूड़ौ' (अल्पा. रू.भे.) उ०—१ मेहड़ौ हुवणदै, चुड़लौ चिरावूं हाथी दांत रौ ।—लो.गी.

उ०—२ बाइ ऐ म्हारे घर है चुड़ला रौ कांम, सोनीड़ा रौ बेटौ पत्ती झेलसी ।—लो.गी.

उ०—३ म्हारे चुड़ले चूंप दिराओ सा, ओ म्हारा चांद सूरज नणदोईसा ।—लो.गी.

चुड़ल्यौ—देखो 'चूड़ौ' (अल्पा. रू.भे.) उ०—म्हारै रिमक-झिमक भाती आज्यौ, वीरा म्हारै पूंचा नै चुड़ल्यौ लाज्यौ ।—लो.गी.

चुड़ैल—सं०स्त्री०—१ भूतनी, डायन, पिशाचिनी । उ०—घण घूमर भूत पिसाच घली, हळवै पग गैल चुड़ैल हली ।—मे.म.

२ कुरूपा स्त्री. ३ क्रूर स्वभाव वाली स्त्री ।

चुचुक—सं०पु० [सं०] स्तन के सिरे पर की गोल घुंडी, कुचाग्र भाग ।

चुज्जेण—सं०स्त्री०—चतुराई । उ०—वनिता पति विदेस गय, मंदिर मझे अद्धरयणीए । बाळा लिहइ भुयंगी कहि, सुंदरि कवण चुज्जेण ।—ढो.मा.

चुटकलौ—सं०पु०—१ विनोदभरी बात ।

मुहा०—चुटकलौ कै'णौ, चुटकलौ छोडणौ—मौके की या चुभती बात कहना, हँसी की बात कहना ।

२ कोई चमत्कारपूर्ण उक्ति ।

चुटकि, चुटकी—१ देखो 'चिवटी' (रू.भे.)

मुहा०—१ चुटकियां में उडाणौ—कुछ परवाह न करना, हँसी में उड़ाना । आसान समझना. २ चुटकियां में होणौ—जल्दी होना, आसानी से होना ।

२ चुटकी बजाने की क्रिया या इससे उत्पन्न शब्द ।
उ०—रांणा कुळ की लाज गमाई, सावां के संग भटकी । नित प्रत उठ जाऊं गुर दरसण, नाचूं दे दे चुटकी ।—मीरां
मुहा०—चुटकी बजावतां—बहुत जल्दी, बहुत आसानी से, हंसी में ।
३ चुटकी काटने का कार्य, चिकोटी भरना ।

चुटियो—१ देखो 'चिटियो' (रू.भे.)
सं०पु०—२ गेंद खेलने का बल्ला, डंडा ।

चुट्टणो, चुट्टबो—देखो 'चूंटणो' (रू.भे.) उ०—ढाढी एक संदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ। जोवन चांपउ मउरियउ, कळी न चुट्टइ आइ ।—ढो.मा.

चुट्टियोड़ो—देखो 'चूंटियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुट्टियोड़ी)

चुटलिअ, चुडलिय—सं०पु०—रजोहरण के फेरते हुए वंदना करना, गुरु-वंदना का एक दोष (जैन)

चुणणो, चुणबो—क्रि०स० [सं० चिञ्] १ एक-एक कर एकत्रित करना, चुनना । उ०—चुणे कर मुंड अिड़ावर चाह, संपेख संपेख सराह सराह ।—रा.रू.
२ तह पर तह लगाना, क्रमवार रखना. ३ दीवार या भींत बनाना ।
उ०—चुण्या संवारया ढह पड़ै, ढहिया संवारै ।—केसोदास गाडण
४ चुगना, बीनना, एक-एक कर उठाना । उ०—इण भांत रा मूंग हाथां सूं रळकायजै छै, चुण बीण कांकरा काढ़जै छै ।—रा.सा.सं.
चुणणहार, हारौ (हारी), चुणणियौ—वि० ।
चुणवाड़णो, चुणवाड़बो, चुणवाणो, चुणवाबो, चुणवावणो, चुणवावबो चुणाड़णो, चुणाड़बो, चुणाणो, चुणाबो, चुणावणो, चुणावबो —प्रे०रू० ।
चुणिओड़ो, चुणियोड़ो, चुण्योड़ो—भू०का०कृ० ।
चुणीजणो, चुणीजबो—कर्म वा० ।

चुणाई—सं०स्त्री०—१ तह पर तह लगाने का कार्य. २ भवन आदि निर्माण करने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी. ३ चुनने का कार्य।

चुणाणो, चुणाबो—क्रि०स० (चुणणो क्रि० का प्रे०रू०) १ चुनाना. २ तह पर तह लगवाना. ३ दीवार की जोड़ाई कराना ।
उ०—बापी बाव कबीर बणाई, चोखी ईंटां पकी चुणाई ।—ऊ.का.
२ छंटवाना ।
चुणाणहार, हारौ (हारी), चुणाणियौ—वि० ।
चुणाड़णो, चुणाड़बो, चुणावणो, चुणावबो—रू०भे० ।
चुणायोड़ो—भू०का०कृ० ।
चुणाईजणो, चुणाईजबो—कर्म वा० ।

चुणायोड़ो—भू०का०कृ०—१ तह पर तह लगाया हुआ. २ चुनाया हुआ. ३ छंटवाया हुआ । (स्त्री. चुणायोड़ी)

चुणाव—सं०पु०—१ बहुत से मनुष्यों या वस्तुओं में से कुछ को किसी कार्य के लिये पसंद करना या नियुक्ति करना । चुनने का कार्य, चुनाव. २ मत देने का कार्य, निर्वाचन ।

चुणावट—सं०पु०—चुनने की क्रिया, चुनाव ।

चुणावणो, चुणावबो—देखो 'चुणाणो' (रू.भे.) उ०—गैली ए धण म्हारी बोल न जांणै, हर ओछा घर की गोरी डावड़ी जी । हर आंमी-सांमी मैं तो पोळ चुणावूं, हर बीच वहण का गोरी ओबरा जी ।—लो गी.
चुणावणहार, हारौ (हारी), चुणावणियौ—वि० ।
चुणाविओड़ो, चुणावियोड़ो, चुणाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
चुणावीजणो, चुणावीजबो—कर्म वा० ।

चुणावियोड़ो—देखो 'चुणायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुणावियोड़ी)

चुणावो—सं०पु०—ऐसा समूह जिसमें चुनी हुई वस्तुएँ अथवा चुने हुए व्यक्ति हों ।
उ०—माधवदासोत, करमसियोत, मंडळावत, रूपावत, भाटी, कछवाह, तंवर, चंद्रावत, पंवार, सोनगरा इतरा साथ लिया । आठ हजार फौज साथ लीन्ही, भलो चुणावो साथ सागे लियो ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

चुणिंदो—वि०—१ चुना हुआ, छंटा हुआ ।
उ०—मिरजै कन्है असवार हजार डोढ हुता पणि अवलि चुणिंदा ।—द.वि.
२ मनपसंद, बढ़िया. ३ खास, प्रधान, मुख्य ।

चुणियोड़ो—भू०का०कृ०—१ चुना हुआ, छांटा हुआ. २ क्रमवार रखा हुआ. ३ चुना हुआ, चुनाई की हुई (दीवार, मकान आदि) ४ एकत्रित किया हुआ, बीना हुआ (स्त्री० चुणियोड़ी)

चुणौती—सं०स्त्री०—ललकार, चुनौती, उत्तेजना ।
मुहा०—चुणौती देणी—उत्साहित करना, ललकारना ।

चुण्ण—सं०पु० [सं० चूर्ण] चूर्ण (जैन) मंत्रित चूर्ण (जैन)

चुण्णकोसय—सं०पु० [सं० चूर्णकोशक] एक जातीय खाद्य पदार्थ (जैन)

चुण्णपेसिया—सं०स्त्री० [सं० चूर्णपेषिका] आटा पीसने वाली दासी (जैन)

चुण्णिओ—वि० [सं० चूर्णित:] चूर्ण किया गया हुआ (जैन)

चुतरंग, चुतरंगदळ—सं०पु०—देखो 'चतुरंगिणी' (रू.भे.)
उ०—दूसरा 'माल' संग लियां चतुरंगदळ, यर हरां मार सैणां ऊवारै । रण भड़ां सहल जु भाग हल राठवड़, सहल रमतां पड़ै दहल सारै ।—कल्यांणदास महडू

चुतरावेल—सं०स्त्री०—एक लता विशेष जिसके साथ में कोई भी वस्तु रखने पर वृद्धिगत हो जाती है ।

चुतरेस—सं०पु०—चार भुजाओं वाला, विष्णु, ईश्वर ।

चुतरो—सं०पु०—ब्रह्मा, जिसके चार मुख हैं । उ०—मुज दूसरा वर्ग्रं वहन, मुज यारी इसो इ सुभाव । चुतरा में कोई चूक छै, दे छै या हिव दाव ।—अज्ञात

चुदक्कड़—वि०—१ बहुत अधिक स्त्री-प्रसंग करने वाला, अत्यन्त कामी. २ पुरुष से अधिक संभोग कराने वाली ।

चुदणी–वि०—अधिक संभोग कराने वाली, अत्यन्त कामी।

चुदणौ, चुदबौ–क्रि०अ०—चोदा जाना, पुरुष से संयुक्त होना।

चुदवाई–सं०स्त्री०—१ स्त्री-प्रसंग, मैथुन. २ मैथुन कराने के बदले में प्राप्त हुआ धन।
रू०भे०—चुदाई।

चुदवाणौ, चुदवाबौ—देखो 'चुदाणौ' (रू.भे.)

चुदाई—देखो 'चुदवाई' (रू.भे.)

चुदाणी–वि०—अधिक मैथुन कराने वाली, अत्यन्त कामुक।

चुदाणौ, चुदाबौ–क्रि०स० ['चोदणौ' का प्रे०रू०] १ किसी स्त्री को किसी पुरुष से संयुक्त कराना. २ चोदने का काम कराना, मैथुन कराना।
रू०भे०—चोदाणौ।

चुदायोड़ी–भू०का०कृ०—पुरुष से संभोग कराई हुई, मैथुन कराई हुई।
रू०भे०—चोदायोड़ी।

चुदावणौ, चुदाववौ—देखो 'चुदाणौ' (रू.भे.)

चुदावियोड़ी—देखो 'चुदायोड़ी' (रू.भे.)

चुदास–सं०स्त्री०—सभोग कराने या करने की इच्छा, मैथुनेच्छा।

चुदियोड़ी–भू०का०कृ०—पुरुष से प्रसंग कराई हुई, मैथुन से निपटी हुई।

चुद्रा–सं०स्त्री०—दाख, किसमिस (अ.मा.)

चुनड़ियौ–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है। इस प्रकार के घोड़े के तालू का रंग भिन्न होता है।

चुनड़ी—देखो 'चूनड़ी' (रू.भे.) उ०—सोयां विना रह्यौ श्रे न जाय, हिंगळू ढोल्या रा थांरी धण खिण लियौ, जी म्हांरा राज, चुनड़ी तौ सरब सुहाग।—लो.गी.

चुनाळ, चुनाळजौ—? उ०—१ काळ लंकाळ करठाळ जड़ियौ कमंद, वहै विकराळ रगताळ वांई। भाळ छकडाळ चगताळ चुनाळ भिद, ताळ गो भाल भर धरण तांई।—वखतौ खिड़ियौ
उ०—२ भड़ाळी मंगळा भळा सरखी जका, कवरगुर पळा भकती दळां काढ़। ऊभर दावी बुगल परा जाय ऊकसी, चुनाळजौ काळजौ वाढ़।—अज्ञात

चुनिया गूंद–सं०पु०—पलास का गोंद, कमरकस।

चुनियौ–सं०पु०—अधिक मीठा खाने से पेट में उत्पन्न होने वाला एक श्वेत छोटा कीड़ा जो मल के साथ वाहर आता है।
रू०भे०—चुरणियौ।

चुनी–सं०स्त्री०—किसी रत्न का छोटा टुकड़ा, नग या नगीना।

चुनौती—देखो 'चुणौती' (रू.भे.)

चुन्न–सं०पु० [सं० चूर्ण] चूर्ण (जैन)

चुन्नी–सं०स्त्री०—१ देखो 'चुनी'(रू.भे.) उ०—मूंगी छम लोवड़ियां लियां, विच विच चुन्नी चींवटा। खोढ़ मदीनां खड़ा मोहै, सकड़ सदीनां मींवटा।—दसदेव
२ छोटी लड़कियों के ओढ़ने का छोटा डुपट्टा।

चुप–वि०—खामोश, मौन, शान्त, अवाक्।
मुहा०—चुप करणौ—बोलने न देना। अवाक् करना। चुप होना, मौन रहना।
सं०स्त्री०—मौन, खामोशी। ज्यूं– सब सूं भली चुप।
मुहा०—चुप साधणी—मौन धारण कर लेना।

चुपके–क्रि०वि०—१ छिपे-छिपे. २ विना आहट किये, चुपचाप।
उ०—हिया सूं भीड़ होकौ हमैं राज भलेंई राखलौ। आपसूं अरज इतरी अवस चुपके पांणी चाखलौ।—ऊ.का.
३ शांत भाव से।

चुपकौ–वि०—खामोश, मौन, शांत।

चुपड़णौ, चुपड़बौ–क्रि०स०—१ किसी लसदार, गीली या स्निग्ध वस्तु को फैला कर लगाना. २ चापलूसी करना।
चुपड़णहार, हारौ (हारी), चुपड़णियौ—वि०।
चुपड़ाड़णौ, चुपड़ाड़बौ, चुपड़ाणौ, चुपड़ाबौ, चुपड़ावणौ, चुपड़ाववौ, चुपड़वाणौ, चुपड़वाबौ—प्रे०रू०।
चुपड़ीजणौ, चुपड़ीजबौ—कर्म वा०।

चुपड़ाणौ, चुपड़ाबौ–क्रि०स० (चुपड़णौ क्रि० का प्रे०रू०) चुपड़ने का कार्य दूसरे से कराना।
चुपड़ाणहार, हारौ (हारी), चुपड़ाणियौ—वि०।
चुपड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चुपड़ाईजणौ, चुपड़ाईजबौ—कर्म वा०।

चुपड़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—किसी लसदार वस्तु या स्निग्ध पदार्थ को फैला कर अन्य से चुपड़ाया हुआ। (स्त्री० चुपड़ायोड़ी)

चुपड़ावणौ, चुपड़ाववौ—देखो 'चुपड़ाणौ' (रू.भे.)
चुपड़ावणहार, हारौ (हारी) चुपड़ावणियौ—वि०।
चुपड़ाविओड़ौ, चुपड़ावियोड़ौ, चुपड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुपड़ावीजणौ, चुपड़ावीजवौ—कर्म वा०।

चुपड़ावियोड़ौ—देखो 'चुपड़ायोड़ौ' (स्त्री० चुपड़ावियोड़ी)

चुपचाप–वि०—मौन, खामोश।
क्रि०वि०—१ विना कुछ कहे-सुने. २ शांत भाव से. ३ निरुद्योग, प्रयत्नहीन।

चुपणौ, चुपबौ—देखो 'चिपणौ' (रू.भे.)

चुपाणौ, चुपाबौ—देखो 'चिपाणौ' (रू.भे.)

चुपायोड़ौ—देखो 'चिपायोड़ौ' (रू.भे.)

चुपियोड़ौ—देखो 'चिपियोड़ौ' (रू.भे.)

चुप्पक–वि०—चुपचाप, शांत, मौन।

चुप्पालय–सं०पु०—१ विजय नामक देवता का शस्त्रागार. २ शस्त्रागार (जैन)

चुवारौ—देखो 'चोवारौ' (रू.भे.)

चुभकी–सं०स्त्री० (अनु०—चुभ-चुभ) पानी में पैठने की क्रिया, डुबकी, गोता।

क्रि०प्र०—मारणी, लगाणी।
रू०भे०—चुंभी, चुमकी।
चुभणो-क्रि०अ०—१ किसी नुकीली वस्तु का नरम या कोमल वस्तु में दबाव के साथ अन्दर घुसना, धंसना, पैठना. २ हृदय में खटकना, मन में व्यथा उत्पन्न करना. ३ हृदय पर अंकित होना, मन में बैठना, दिल पर प्रभाव होना।
चुभणहार, हारो (हारी), चुभणियो—वि०।
चुभवाड़णो, चुभवाड़बो, चुभवाणो, चुभवाबो, चुभवावणो, चुभवावबो —प्रे०रू०।
चुभाड़णो, चुभाड़बो, चुभाणो, चुभाबो, चुभावणो, चुभावबो —क्रि०स०।
चुभिग्रोड़ो, चुभियोड़ो, चुभ्योड़ो—भू०का०कृ०।
चुभीजणो, चुभीजबो—भाव वा०।
चुभाणो, चुभाबो-क्रि०स०—नुकीली वस्तु को भीतर धंसाना, गड़ाना।
चुभाणहार, हारो (हारी), चुभाणियो—वि०।
चुभायोड़ो—भू०का०कृ०।
चुभाईजणो, चुभाईजबो—कर्म वा०।
चुभणो—अक० रू०।
चुभायोड़ो-भू०का०कृ०—नुकीली वस्तु को गड़ाया हुआ, चुभाया हुआ। (स्त्री० चुभायोड़ी)
चुभावणो, चुभावबो—देखो 'चुभाणो' (रू.भे.)
चुभावणहार, हारो (हारी), चुभावणियो—वि०।
चुभाविग्रोड़ो, चुभावियोड़ो, चुभाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
चुभावीजणो, चुभावीजबो—कर्म वा०।
चुभणो—अक० रू०।
चुभावियोड़ो—देखो 'चुभायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुभावियोड़ी)
चुभियोड़ो-भू०का०कृ०—नुकीली वस्तु के दबाव के साथ कोमल वस्तु में धँसी हुई, चुभी हुई। (स्त्री० चुभियोड़ी)
चुभोणो, चुभोबो—देखो 'चुभाणो' (रू.भे.)
चुभोयोड़ो—देखो 'चुभायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुभायोड़ी)
चुमकार-सं०पु०—प्यार आदि प्रकट करने के लिये होठों से निकाला जाने वाला चूमने का सा शब्द। पुचकार।
अल्पा०—चुमकारो।
चुमकारणो, चुमकारबो-क्रि०स०—प्यार आदि प्रकट करने के लिये होठों से चूमने का सा शब्द करना, पुचकारना, दुलारना।
चुमकारियोड़ो-भू०का०कृ०—पुचकारा हुआ, दुलारा हुआ। (स्त्री० चुमकारियोड़ी)
चुमकारो—देखो 'चुमकार' (अल्पा. रू.भे.)
चुमकी-सं०स्त्री०—देखो 'चुभकी' (रू.भे.)
चुमटी—देखो 'चिवटी' (रू.भे.)
चुमाणो, चुमाबो-क्रि०स० ['चूमणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ किसी दूसरे से चूमने का कार्य कराना. २ किसी दूसरे के सामने चूमने के लिए प्रस्तुत करना।
चुमायोड़ो-भू०का०कृ०—चूमने का कार्य कराया हुआ। (स्त्री० चुमायोड़ी)
चुमावणो, चुमावबो—देखो 'चुमाणो' (रू.भे.)
चुमावियोड़ो —देखो 'चुमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चुमावियोड़ी)
चुम्मक—देखो 'चुंबक' (रू.भे.)
चुम्मो—देखो 'चुंबन' (रू.भे.)
चुयाचंदण, चुयाचंदन-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
चुरड़णो, चुरड़बो—दांतों को परस्पर भिड़ा कर किसी पेय पदार्थ को वायु के साथ या श्वास के साथ खींच कर पीना जिससे ध्वनि उत्पन्न हो। उ०—जगरांमसिंघ जी बोल्या ग्रो गूदड़ भंवरियो सात सेर दूध री चरी ऊभो ई चुरड़ जावै।—वांणी
(मि० चसीड़णो)
चुरड़ो-सं०पु०—चुल्लू। उ०—संकर सागर हुयगो सुरड़ा, करण मिळै नहिं पांणी कुरडा। चोभ मांय ठहरै नहिं चुरड़ा, जिण री पाळ पड़ै दस जुरड़ा।—ऊ.का.
वि०—कम, थोड़ा।
चुरट-वि०—१ लाल। उ०—जै में तो चीर जग्रे ऊमादे रांणी, डबोइयो यो तो राच्यो छै चुरट मजीठ।—लो.गी.
२ देखो 'चुरुट' (रू.भे.)
चुरठ-वि०—हृष्ट-पुष्ट, मोटाताजा।
सं०पु०—देखो 'चुरुट' (रू.भे.)
चुरणाटो—एक प्रकार की ध्वनि।
चुरणियो, चुरनियो—देखो 'चुनियो' (रू.भे.)
चुरयण, चुरवुण—देखो 'चरवण' (रू.भे.)
चुररो-सं०पु०—महीन काट कर किया गया चूरा, चूर्ण। उ०—गिणाता जिसा निवाह्यो गुर रो, जस लोकां मुररो मजवूत। कर चुररो भेळो सिव कीधो, उतमंग रो तुररो अदभूत।—महादांन महडू
चुरस, चुरसि-वि०—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। उ०—१ चुरस जग जीवणो रखो चित चाह री, तो कड़तळां नाह री आस कीजो।
—रांमलाल आसियो
उ०—२ पहल त्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख! चरण दूहा चुरस कर, भल कवि तिणनूं भाख।—र.ज.प्र.
उ०—३ छळ वळ समर वछेक, वीर असि लोह उडाऊं। धाऊं खळ, दळ घणां, चुरसि कुळि सुजस चढ़ाऊं।—सू प्र.
सं०पु०—रीति-रिवाज, परंपरा।
चुराई-सं०स्त्री०—चोरी करने का कार्य या क्रिया।
चुराणो, चुराबो-क्रि०स० ['चोरणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ विना मालिक की जानकारी के उसकी वस्तु या संपत्ति का हरण करना।
मुहा०—चित्त चुराणो—मन को आकर्षित करना।

२ लोगों की दृष्टि से बचाना, छिपाना।
मुहा०—आंख चुराणी—नजर बचाना, सामने मुंह न करना।
३ किसी वस्तु को देने या काम करने में कसर रखना।
चुराणहार, हारौ (हारी), चुराणियौ—वि०।
चुरवाड़णौ, चुरवाड़बौ, चुरवाणौ, चुरवाबौ, चुरवावणौ, चुरवावबौ —प्रे०रू०।
चुराड़णौ, चुराड़बौ, चुरावणौ, चुरावबौ—रू०भे०।
चुरायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चुराईजणौ, चुराईजबौ—कर्म वा०।

चुरायोड़ौ–भू०का०कृ०—चुराया हुआ। (स्त्री० चुरायोड़ी)

चुरावणौ, चुरावबौ—देखो 'चुराणौ' (रू.भे.)
चुरावणहार, हारौ (हारी), चुरावणियौ—वि०।
चुराविग्रोड़ौ, चुरावियोड़ौ, चुराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुरावीजणौ, चुरावीजबौ—कर्म वा०।

चुरावियोड़ौ—देखो 'चुरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुरावियोड़ी)

चुरु—देखो 'चरु' (रू.भे.) उ०—चुरु आतसूं के झलपट जग्गे अथाह, दूसरे सठमठ राजूं के हियें पर दाह।—सू.प्र.

चुरुट–सं०पु० [अं०] तम्बाकू के चूरे से बनी बीड़ी से कुछ मोटी वत्ती विशेष जिसको धूम्रपान के लिये लोग उपयोग में लेते हैं।
रू०भे०—चुरट।

चुरुसुकाळ—देखो 'चरूसुकाळ' (रू.भे.)

चुळ–सं०स्त्री० [सं० चल] १ खुजलाहट।
क्रि०प्र०—चालणी।
२ कामोद्दीपन में होने वाली सरसराहट, मस्ती (स्त्री०)
मुहा०—१ चुळ ऊठणी—प्रसंग की इच्छा होना, काम का वेग होना।
२ चुळ मिटणी—कामवासना तृप्त होना।

चुळका–सं०पु०—एक मात्रिक छंद जिसमें क्रमशः १३, १६, १६ व १३ से कुल ५८ मात्रायें होती हैं।

चुळचुळाणौ, चुळचुळावौ–क्रि०अ०—१ खुजली चलना. २ शरीर में काम के आवेग में सरसराहट उत्पन्न होना, मस्ती होना।

चुळचुळाहट–सं०स्त्री०—खुजली चलने का भाव, खुजलाहट।

चुळचुळी–सं०स्त्री०—१ चंचलता, चपलता. २ गुदगुदी, सरसराहट. ३ मैथुनेच्छा।

चुलणी–सं०स्त्री—१ ब्रह्मदत्त नामक बाहरवां चक्रवर्ती राजा की माता (जैन)
२ द्रुपद राजा की स्त्री (जैन)

चुलणीपिय–सं०पु० [सं० चुलणी पितृ] भगवान महावीर का एक मुख्य उपासक (जैन)

चुळणौ, चुळबौ–क्रि०अ०—१ अपनी जगह से हिलना। उ०—सांप्रत सनमुख सीत ऊंट नंह चुळै अनाड़ी, देखै मौसर डूम अटै नह पैंड अगाड़ी।—ऊ.का.
२ डांवाडोल होना। उ०—आंधी खूंखाटा करती उठ आवै, फदके फूंफाटा चेता चुळ जावै।—ऊ.का.
३ पथभ्रष्ट होना, पतित होना। उ०—वाका फाटोड़ा थाका दम बाकी, डेळी चुळियोड़ा डुळियोड़ा डाकी।—ऊ.का.
४ पके हुए खाद्य पदार्थ (विशेषतया खीच, घाट, चावल, राब आदि) का अधिक समय तक पड़े रहने से अथवा अधिक हिलाने से पानी छोड़ कर विकृत होना, सड़ना, खराब होना।
चुळणहार, हारौ (हारी), चुळणियौ—वि०।
चुळवाड़णौ, चुळवाड़बौ, चुळवाणौ, चुळवाबौ, चुळवावणौ, चुळवावबौ —प्रे०रू०।
चुळाड़णौ, चुळाड़बौ, चुळाणौ, चुळावौ, चुळावणौ, चुळाववौ —क्रि०स०।
चुळिग्रोड़ौ, चुळियोड़ौ, चुळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुळीजणौ, चुळीजबौ—भाव वा०।

चुळवळ—देखो 'चुळवळ' (रू.भे.) उ०—नाळां री चुळवळ में न्हावै, पाळां रा पग खोल।—लो.गी.

चुळवुळ–सं०पु०—चंचलता, चपलता।

चुळवुळाणौ, चुळवुळावौ–क्रि०अ०—१ चंचल होना, अस्थिर होना, डांवाडोल होना. २ देखो 'चुळचुळाणौ' (रू.भे.)

चुळवुळौ–वि० (स्त्री० चुळवुळी) चंचल, चपल, नटखट।

चुळवळ–सं०पु०—रक्त, खून। उ०—खपिया जठै अठारै खोयण, आधी रहिया तेण अवाह। चौसट खपर पूरिया चुळवळ, हेकण कमंध तणी हथवाह।—प्रथ्वीराज जैतावत री गीत
रू०भे०—चुळवळ।

चुळवौ—देखो 'चुल्लू' (रू.भे.)

चुळसी, चुळसीइ–सं०स्त्री०—अस्सी और चार के योग की संख्या (जैन)

चुळाणौ, चुळाबौ–क्रि०स०—१ स्थान से हटाना. २ अस्थिर करना, डांवाडोल करना. ३ पथ-भ्रष्ट करना. ४ सड़ाना।

चुळायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ स्थान से हटाया हुआ. २ अस्थिर किया हुआ, डांवाडोल किया हुआ. ३ पथ-भ्रष्ट किया हुआ. ४ सड़ाया हुआ। (स्त्री० चुळायोड़ी)

चुळावणौ, चुळावबौ—देखो 'चुळाणौ' (रू.भे.)

चुळावियोड़ौ—देखो 'चुळायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुळावियोड़ी)

चुळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ अपने स्थान से हटा हुआ. २ डांवाडोल. ३ पथ-भ्रष्ट. ४ सड़ा हुआ। (स्त्री० चुळियोड़ी)

चुल्ल–सं०पु०—छोटा बच्चा, शिशु (जैन)
वि०—छोटा, लघु।

चुल्लसयग–सं०पु० [सं० चुल्लशतक] चुल्लशतक नामक महावीर स्वामी का एक श्रावक (जैन)

चुल्लहिमवंत–सं०पु०—एक पर्वत का नाम (जैन)

चुल्ल हिमवंतकूड–सं०पु० [सं० चुल्ल हिमवंतकूट] चुल्ल पर्वत का एक शिखर (जैन)

चुल्ली-सं०स्त्री०—छोटा चूल्हा, देखो 'चूल्हौ' (अल्पा.) (जैन)

चुल्लू, चुल्लौ-सं०पु० [सं० चुलुक] १ अंगुलियों को मोड़ कर गहरी की हुई हथेली जिसमें भर कर पानी आदि पीया जा सके। गहरी की गई हथेली की अवस्था जिससे गड्ढा सा बन जाय।

मुहा०—चुल्लू भर पांणी में डूबणौ, चुल्लू भर पांणी में डूब मरणौ—मुंह न दिखाना, लज्जा के मारे मर जाना।

२ इस प्रकार के हाथ की अंगुलियों के गड्ढे में समा सके उतना द्रव पदार्थ।

मुहा०—चुल्लू भर—जितना चुल्लू में आ सके, बहुत थोड़ा।

चुवणौ, चुवबौ—देखो 'चुअणौ' (रू.भे.) उ०—१ ताहरां हेकरसी सूंटी पाखती सेक दियौ, वळै तेल सेती दियौ। राखा चोपड़ि अर वळै बीजी ही वार तिम हीज राती करि चुवण लागौ ताहरां दियौ। —द.वि.

उ०—२ जिसड़ौ टचके टचके चुवण लागौ रातौ लाल कियौ। —द.वि.

चुवणहार हारौ (हारी), चुवणियौ—वि०।

चुवाड़णौ, चुवाड़बौ, चुवाणौ, चुवाबौ, चुवावणौ, चुवावबौ —क्रि०स०।

चुविओड़ौ, चुवियोड़ौ, चुव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चुवीजणौ, चुवीजबौ—भाव वा०।

चुवाणौ, चुवाबौ—देखो 'चुआणौ' (रू.भे.)

चुवायोड़ौ—देखो 'चुआयोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुवायोड़ी)

चुवारौ-सं०पु०—मुसलमानों में बच्चे की इन्द्रिय के आगे सुपारी पर का चढ़ा हुआ चमड़ा काटने वाला व्यक्ति। सुन्नत करने वाला व्यक्ति। (मुसलमानी प्रथा)

चुवावणौ, चुवावबौ—देखो 'चुआणौ' (रू.भे.)

चुवावणहार, हारौ (हारी), चुवावणियौ—वि०।

चुवाविओड़ौ, चुवावियोड़ौ, चुवाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चुवावीजणौ, चुवावीजबौ—कर्म वा०।

चुवणौ—अक० रू०।

चुवौ-सं०पु०—मज्जा।

चुसकी-सं०स्त्री० [सं० चषक] १ शराब पीने का पात्र, मद्यपात्र, प्याला. २ शराब पीने का एक विशेष प्रकार का पात्र जिसके ऊपर एक पतली महीन सूराख वाली नली लगी रहती है जिसमें से चुसकी के साथ शराब पी जाती है। ३ होठ से लगा कर किसी पीने के पदार्थ को वायु के साथ खींच कर पीने की क्रिया. ४ उतना पदार्थ जितना एक बार खींच कर पिया जाय, घूंट।

क्रि०प्र०—लैणी।

चुसणौ, चुसबौ-क्रि०अ०—१ चूसा जाना, होठों से खींच कर पीया जाना. २ निचुड़ जाना, सारहीन होना. ३ शक्तिहीन होना।

चुसणहार, हारौ (हारी), चुसणियौ—वि०।

चुसवाड़णौ, चुसवाड़बौ, चुसवाणौ चुसवाबौ, चुसवावणौ, चुसवावबौ, चुसाड़णौ, चुसाड़बौ, चुसाणौ, चुसाबौ, चुसावणौ, चुसावबौ —प्रे०रू०।

चुसिओड़ौ, चुसियोड़ौ, चुस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चुसीजणौ, चुसीजबौ—भाव वा०।

चूसणौ, चूसबौ—सक०रू०।

चुसाई-सं०स्त्री०—चूसने की क्रिया या इस क्रिया का पारिश्रमिक।

चुसाणौ, चुसाबौ-क्रि०स० (चुसणौ क्रि० का प्रे०रू०) १ चूसने का कार्य अन्य से कराना. २ सारहीन कराना. ३ शक्तिहीन कराना।

चुसायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चुसाया हुआ २ सारहीन किया हुआ. ३ शक्तिहीन किया हुआ। (स्त्री० चुसायोड़ी)

चुसावणौ, चुसावबौ—देखो 'चुसाणौ' (रू.भे.)

चुसावियोड़ौ—देखो 'चुसायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुसावियोड़ी)

चुसियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चूसा गया हुआ. २ सारहीन. ३ शक्तिहीन। (स्त्री० चुसियोड़ी)

चुस्त-वि० [फा०] १ जिसमें सुस्ती न हो, फुर्तीला. २ तत्पर. ३ दृढ़।

चुस्ती-सं०स्त्री० [फा०] १ फुर्ती, तेजी, फुर्तीलापन. २ दृढ़ता, मजबूती।

चुहणौ, चुहबौ-क्रि०अ०—१ देखो 'चुसणौ' (रू.भे.)

क्रि०स०—२ देखो 'चूसणौ' (रू.भे.)

चुहळ-सं०स्त्री०—ठठोली, मजाक, हँसी।

यौ०—चुहळबाज, चुहळबाजी।

चुहळबाज-वि०यौ०—ठठोली करने वाला, मसखरा।

चुहळबाजी-सं०स्त्री० [यौ०] ठठोली, मजाक, दिल्लगी।

चुहियौ-सं०पु०—प्राणी के किसी दर्द स्थान पर गर्म की हुई धातु से लगाया जाने वाला चिन्ह। अग्निदग्ध क्रिया। (मि० ठाडौ)

उ०—इम हीज च्यारि चुहिया दिया, राता लाल चुवता करि-करि। —द.वि.

चुही-सं०स्त्री०—खान आदि में पत्थर तोड़ने के लिये सेंध लगाने की क्रिया। उ०—गरीबां गोता मेट चुही वढ़ चम्मा चाळै। हाथां री सो दांत, भाठियौ भलौ दिखाळै।—दसदेव

चुहुटली-सं०स्त्री० [सं० चञ्चुपुटिका] चोंच, चंचुपुट (उ.र.)

चूं-सं०पु० [अनु०] १ छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द. २ चूं शब्द। उ०—निपट भयौ नादांन, अकड़ै किण अभिमांन में। जिण पुळ जासी जांन, चूं नहिं होसी चकरिया।—मोहनराज साह

मुहा०—१ चूं करणौ—कुछ करना, विरोध में कुछ कहना।

२ चूं होणौ—देखो 'चूं करणौ'।

चूंक-सं०स्त्री०—स्त्रियों द्वारा सम्मुख के दांतों पर या उनके बीच में लगाया जाने वाल सोने का आभूषण।

चूंकणौ, चूंकबौ-क्रि०स०—१ ऊंट के छः दांत निकलने के बाद में दो दांतों का निकलना. २ टोकना।

चूंकळणौ, चूंकळबौ—क्रि०स०—१ नुकीली वस्तु को किसी कोमल वस्तु में दबाव के साथ भीतर घुसाना, धँसाना, चुभाना।
उ०—सुकनै भळको पड़ियौ थौ तिकौ भाल नै लाखै सोलंकी राज नूं चूंकळियौ सु राज रै थण रै लाग गयौ।—नैणसी
२ टोकना।

चूंकलौ—सं०पु०—१ किसी नुकीले शस्त्र तलवार, भाला आदि का नीचे का नुकीला भाग. २ किसी नुकीले या तीक्ष्ण औजार या शस्त्र का प्रहार. ३ म्यान के सिर पर लगा हुआ धातु का उपकरण।

चूंकारौ—सं०पु० [अनु०] १ चूं शब्द या चूं शब्द की ध्वनि।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।
२ किसी बात आदि के उत्तर में अंगूठा दिखाते समय हाथ की बनाई जाने वाली मुद्रा।
क्रि०प्र०—दिखाणौ, बताणौ।

चूंकौ—सं०पु०—रूई या ऊन के रेशों का गुच्छा।

चूंखणौ, चूंखबौ—१ देखो 'चूसणौ' (रू.भे.)
२ स्तनपान करना. ३ रूई या ऊन के गुच्छों को रेशों में पृथक-पृथक कराना।

चूंखड़ियौ—सं०पु०—दुबला-पतला ऊँट का बच्चा।

चूंखाणौ, चूंखावौ—१ देखो 'चूसाणौ' (रू.भे.)
२ स्तनपान कराना. ३ रूई या ऊन के गुच्छों को रेशों में पृथक कराना।

चूंखायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्तनपान कराया हुआ. २ चुसाया हुआ। (स्त्री० चूंखायोड़ी)

चूंखावणौ, चूंखावबौ—देखो 'चूंखाणौ' (रू.भे.)

चूंखावियोड़ौ—देखो 'चूंखायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंखावियोड़ी)

चूंखियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्तनपान किया हुआ. २ चूसा हुआ। (स्त्री० चूंखियोड़ी)

चूंखौ—सं०पु०—१ छोटा बादल का टुकड़ा। उ०—१ ऊंडा टूक उळूंडिया, चूंखां में चमकीह। जांण बूझतां बीजळी, जोड़ी भल ढूंढीह।—बादळी
उ०—२ अकास में बादळ रौ चूंखौ नहीं। लाय पड़ै तौ इसी कै कच्चा चिणां नाख'र रेत में सेकलौ।—वरसगांठ
२ देखो 'चूंकौ' (रू.भे.)

चूंग—सं०पु०—१ एक प्रकार का अस्त्र विशेष।
सं०स्त्री०—२ 'चूंगना' क्रिया का भाव।

चूंगणौ, चूंगबौ—क्रि०स०—१ स्तनपान करना। उ०—माता जुद्ध में जातां कहै म्हारा हांचळ चूंगियौ है सो लजाजे मती।—वी.स.टी.
२ चूसना।
चूंगणहार, हारौ (हारी), चूंगणियौ - वि०।
चूंगवाड़णौ, चूंगवाड़बौ, चूंगवाणौ, चूंगवावौ, चूंगवावणौ, चूंगवावबौ—प्रे०रू०।
चूंगाड़णौ, चूंगाड़बौ, चूंगाणौ, चूंगावौ, चूंगावणौ, चूंगावबौ—क्रि०स०।
चूंगिओड़ौ, चूंगियोड़ौ, चूंग्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चूंगीजणौ, चूंगीजबौ—कर्म वा०।

चूंगथणौ—सं०पु०—दुधमुहां बच्चा, स्तन पान करने वाला बच्चा।
उ०—थट रुंधाया भीलण चूंगथणा, तेइ पूत वजै रजपूत तणा।—पा.प्र.

चूंगाणौ, चूंगावौ—देखो 'चुंगाणौ' (रू.भे.)

चूंगायोड़ौ—देखो 'चुंगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंगायोड़ी)

चूंगावणौ, चूंगावबौ—देखो 'चुंगाणौ' (रू.भे.)

चूंगावियोड़ौ—देखो 'चुंगावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंगावियोड़ी)

चूंगियोड़ौ—भू०का०कृ०—स्तन पान किया हुआ। (स्त्री० चूंगियोड़ी)

चूंगी—१ देखो 'चुंगी' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—२ शीतकाल में ताप हेतु बालकों द्वारा जलाई जाने वाली अग्नि में जलाने के लिये प्रत्येक बालक द्वारा डाला जाने वाला ईंधन।

चूंघणौ, चूंघबौ—देखो 'चूंगणौ' (रू.भे.)
चूंघणहार, हारौ (हारी), चूंघणियौ—वि०।
चूंघाड़णौ, चूंघाड़बौ, चूंघाणौ, चूंघावौ, चूंघावणौ, चूंघावबौ—क्रि०स०।
चूंघिओड़ौ, चूंघियोड़ौ, चूंघ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चूंघीजणौ, चूंघीजबौ—कर्म वा०।

चूंघाणौ, चूंघावौ—देखो 'चुंगाणौ' (रू.भे.)

चूंघायोड़ौ—देखो 'चुंगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंघायोड़ी)

चूंघावणौ, चूंघावबौ—देखो 'चुंगाणौ' (रू.भे.) उ०—आगै देखै तौ छवरे हेठै पालणौ राखियौ तौ सु सीहणी आय चूंघावण लागी।—देवजी बगड़ावत री बात

चूंघावियोड़ौ—देखो 'चुंगावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंघावियोड़ी)

चूंघियोड़ौ—देखो 'चूंगियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंघियोड़ी)

चूंच—वि०—१ पूर्ण तृप्त, परितुष्ट। उ०—कटकां बिहुं हुइ कूच, गड़गड़ त्रंबागळ गुड़ै। हड़वड़ भड़ हुई हैंवरां, चढ़िया पौरस चूंच।—वचनिका
क्रि०प्र०—होणौ।
सं०स्त्री० [सं० चंचु] १ चोंच। उ०—कीधौ कांम वधै नवकोटां, चूंच पकड़ लीधौ चड़ चोटां।—रा.रू.
२ उमंग, जोश, आवेग। उ०—प्रसणां करवा पाधरा, थट री काढण चूंच, क्रोधीला 'खुस्याळ' री, अड़ै भुहारां मूंच।—आउआ ठाकुर कुसाळसिंह रा दूहा

चूंचक—सं०पु०—१ विवाहित कन्या के प्रथम प्रसव के बाद उसे ससुराल भेजते समय पिता के घर से दिया जाने वाला विभिन्न प्रकार का घरेलू सामान जिसमें वस्त्र, आभूषण, बर्तन आदि होते हैं (शेखावाटी)
२ देखो 'चूंचकौ' (रू.भे.)

चूंचकी, चूंचड़ी, चूंचाड़ी—देखो 'चूंची' (अल्पा. रू.भे.)

चूंचाणौ चूंचावौ–क्रि०स०—१ किसी वस्तु आदि को उचित सीमा से अधिक प्रयुक्त करना. २ स्त्री-संभोग करना, मैथुन करना।

चूंचाणहार, हारौ (हारी), चूंचाणियौ—वि०।

चूंचाड़णौ, चूंचाड़वौ चूंचावणौ, चूंचाववौ—रू०भे०।

चूंचायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंचाईजणौ, चूंचाईजवौ—कर्म वा०।

चूंचायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु आदि को उचित सीमा से अधिक प्रयुक्त किया हुआ. २ स्त्री के साथ संभोग किया हुआ, मैथुन से निवृत्त। (स्त्री० चूंचायोड़ी)

चूंचाळी—देखो 'चूंची (रू.भे.)

चूंचावणौ, चूंचाववौ—देखो 'चूंचाणौ' (रू.भे.)

चूंचावियोड़ौ—देखो 'चूंचायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंचावियोड़ी)

चूंची–सं०स्त्री०—१ ताप के लिये अग्नि के पास बैठ बालसुलभ चपलता से व्यर्थ में ही किसी लकड़ी से आग को इधर-उधर करने की क्रिया या इस आग में से कोई जलती लकड़ी हाथ में लेकर उसे इधर-उधर हिलाने की क्रिया।

२ इस प्रकार की क्रिया करने की आग में जलती हुई लकड़ी।

अल्पा० रू०भे०—चूंचकी, चूंचड़ी, चूंचाड़ी, चूंचाळी।

वि०वि०—यह क्रिया प्रायः बच्चे अपनी बाल-चपलता के कारण करते हैं।

मुहा०—चूंची लगाणी—किसी वस्तु को नष्ट करना, क्रोधावेश में किसी वस्तु को खाक करने के लिये कहने का भाव।

३ स्लेट पर लिखने की वर्तिका का आगे का नुकीला भाग. ४ स्तन, कुच।५ स्तन का अग्र भाग, कुच के ऊपर की घुंडी।

उ०—अगली घर ऊंची छेड़त चूंची, कड़ कूंची कोकंदा है।—ऊ.का.

चूंचौ–सं०पु०—१ आग, पलीता।

क्रि०प्र०—लगाणौ।

२ स्तन, कुच।

चूंट–सं०पु०—१ 'चूंटणौ' क्रिया का भाव, देखो 'चूंटणौ'. २ फुटकर खर्च, छोटा-मोटा व्यय. ३ थोड़ा-थोड़ा कर के बार-बार किया जाने वाला एक ही वस्तु पर का व्यय।

चूंटणौ, चूंटवौ–क्रि०स० [सं० चुट] १ चुन-चुन कर अंगुलियों से तोड़ना, बीनना, चुनना। उ०—१ लड़ालूंम डाळयां लमूटै जांणै झवरख झूंटणा, ओयण में लसकर लुगायां खाणा चुगणा चूंटणा।—दसदेव

उ०—२ लांबौ मत हेरौ बाबा सांगर चूंटै, ओछौ मत हेरौ बाबा बादन्यूं बतावै।—लो.गी.

२ (पौधे आदि को) ऊपर से काट कर छोटा करना, छांटना. ३ खर्च से दबाना, व्यर्थ के खर्च से बरबाद करना. ४ नोचना।

चूंटणहार, हारौ (हारी), चूंटणियौ—वि०।

चूंटवाड़णौ, चूंटवाड़वौ, चूंटवाणौ, चूंटवावौ, चूंटवावणौ, चूंटवाववौ चूंटाड़णौ, चूंटाड़वौ, चूंटाणौ, चूंटावौ, चूंटावणौ, चूंटाववौ—प्रे०रू०।

चूंटिओड़ौ, चूंटियोड़ौ, चूंटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंटीजणौ, चूंटीजवौ—कर्म वा०।

चूंटाणौ, चूंटावौ–क्रि०स० ('चूंटणौ' का प्रे० रू०) १ फूल, वस्तु आदि चुनने, बीनने या छांटने का कार्य अन्य से कराना. २ खर्च से दबवाना, व्यर्थ के व्यय से बरबाद कराना।

चूंटाणहार. हारौ (हारी), चूंटाणियौ—वि०।

चूंटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंटाईजणौ, चूंटाईजवौ—कर्म वा०।

चूंटाड़णौ चूंटाड़वौ, चूंटावणौ, चूंटाववौ—रू०भे०।

चूंटायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ अंगुलियों से चुनने का कार्य कराया हुआ. २ वृक्ष. पौधे आदि को छंटाया हुआ. ३ व्यर्थ के खर्च से बरबाद किया हुआ। (स्त्री० चूंटायोडी)

चूंटावणौ, चूंटाववौ—देखो 'चूंटाणौ' (रू.भे.)

चूंटावियोड़ौ—देखो 'चूंटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंटावियोड़ी)

चूंटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ अंगुलियों से चुन-चुन कर तोड़ा हुआ। २ पौधे या वृक्ष का ऊपरी भाग काट कर छोटा किया हुआ. ३ खर्च से बरबाद किया हुआ, व्यय से दबा हुआ। (स्त्री० चूंटियोड़ी)

चूंटियौ–स०पु० [सं० चुट] १ हाथ के अंगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को पकड़ कर खींचने या इस प्रकार से दर्द पहुंचाने की क्रिया। उ०—एक सायण हँसती-हँसती बोली किणनै पाछौ भेजियौ अे धापू ? दूजोड़ी बोली थनै कांई मतळब, होसी कोई, अर धापू रै पसवाड़ा में चूंटियौ भरियौ।—रातवासौ

क्रि०प्र०—भरणौ।

२ एक प्रकार का व्यंजन जो आटे या बेसण को घी में सेक कर बनाया जाता है। उ०—गाढ़ी कादै जिसी छाछ री है छिब न्यारी। रंधै खीचड़ौ खूब चूंटियै रै उणियारी।—दसदेव

यौ०—चूंटियौ-चूरमौ।

चूंटीजणौ, चूंटीजवौ–क्रि०स० ('चूंटणौ' क्रिया का कर्म वा० रू०) १ नोचा जाना। उ०—तौ थोड़ौ पथ लेलौ, भूखं रौ तौ काळजौ ई चूंटीजै।—बरसगांठ

२ बीना जाना।

चूंटौ–सं०पु०—१ छोटा घास जो सरलता से हाथ की पकड़ में न आवे. २ फल का वह डंठल जिससे वह लता या वृक्ष से जुड़ा रहता है।

मुहा०—चूंटै उतरणौ—किसी फल का लता या डाल पर ही परिपक्व अवस्था को पहुँचना।

३ घी या मक्खन की टिकिया। उ०—खड़ी जिसड़ी रांप पंचाम्रित पांणी पालर, मोल मळाई स्याळ चीकणा चूंटौ कालर।—दसदेव

चूंडणौ, चूंडवौ–क्रि०स०—बनाना, आकृति देना। उ०—धीयां चाकी चूळ मुळकती मांडा मांडै, सरवर माटी साज खेल री चीजां चूंडै।—दसदेव

चूंडाळौ–सं०पु० (स्त्री० चूंडाळी) एक पक्षी विशेष।

चूंडावत–सं०पु०—१ राठौड़ राव चूंडा के वंशज. २ शिशोदिया वंश के राणा लाखा के पितृभक्त पुत्र चूंडा के वंशज, शिशोदिया वंश की एक शाखा।

चूंण–सं०पु०—१ चुग्गा, दाना।

उ०—खग इण साकर खोर रे, संग न कर गूंण। सबदिन पूरै सांइया, चांच दई सो चूंण।—बां.दा.

[सं० चूर्ण] २ चून, आटा. ३ जव का आटा (मेवाड़)

चूंणौ, चूंवौ—देखो 'चवणौ' (१, (रू.भे.) उ०—आंख्यां मसळतां उणें मांची दूजी कांनी खेंच्यौ पण उठै उणसूं ई ज्यादा चूंतौ हो।

—रातवासौ

चूंतरी–सं०स्त्री०—छोटा चबूतरा।

चूंतरौ–सं०पु०—चबूतरा। उ०—याद राखजै जे थूं कांम आयग्यौ तौ उण ठौड़ कोई मकरांणं री चूंतरौ नहीं बणावैला।—रातवासौ

चूंथणौ, चूंथवौ–क्रि०स०—१ देखो 'चींथणौ' (रू.भे.) २ लूटना, डाका डालना. ३ किसी वस्तु को हाथों से महीन करना या तोड़ना, हाथ से हिला कर प्रयोग करना, मसलना। उ०—परभातां हर पैंल, वगड़ावत गावै विटळ। चूंथै काती छैल, मैल जगत री मोतिया।

—रायसिंह सांदू

चूंथणहार, हारौ (हारी), चूंथणियौ—वि०।

चूंथवाणौ, चूंथवावौ, चूंथवावणौ, चूंथवाववौ, चूंथाड़णौ, चूंथाड़बौ, चूंथाणौ, चूंथावौ, चूंथावणौ, चूंथाववौ—प्रे०रू०।

चूंथिओड़ौ, चूंथियोड़ौ, चूंथ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंथीजणौ, चूंथीजवौ—कर्म वा०।

चूंथाणौ, चूंथावौ–क्रि०स०—१ देखो 'चींथाणौ' (रू.भे.) २ लूटाना, डाका डलाना. ३ हाथों से द्रव पदार्थ के साथ तुड़वाना या बारीक करवाना, हाथ से हिला कर मसलाना।

चूंथायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ देखो 'चींथायोड़ौ' (रू.भे.) २ डाका डलाया हुआ. ३ हाथों से द्रव पदार्थ के साथ तुड़वाया हुआ या बारीक कराया हुआ, हाथों से हिला कर मसला हुआ।

(स्त्री० चूंथायोड़ी)

चूंथावणौ, चूंथाववौ—देखो 'चुंथाणौ' (रू.भे.)

चूंथावणहार, हारौ (हारी), चूंथावणियौ—वि०।

चूंथाविओड़ौ, चूंथावियोड़ौ, चूंथाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंथावीजणौ, चूंथावीजवौ—कर्म वा०।

चूंथावियोड़ौ—देखो 'चूंथायोड़ौ' (स्त्री० चूंथावियोड़ी)

चूंथियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ रौंदा हुआ, कुचला हुआ. २ लूटा हुआ. डाका डाला हुआ. ३ हाथों से द्रव पदार्थ के साथ तोड़ कर बारीक किया हुआ, हाथों से हिला कर मसला हुआ। (स्त्री० चूंथियोड़ी)

चूंदड़ी–सं०स्त्री०—१ स्त्रियों के ओढ़ने का एक प्रकार का बुंदियादार लाल रंग का वस्त्र विशेष।

वि०वि०—आजकल चूंदड़ी कई रंगों और कई प्रकार की बुंदियों की बनती है। इसे प्रायः सधवा स्त्रियाँ ही ओढ़ती हैं।

उ०—१ कापड़ियां नै कापड़ा, गीतां वाळी नै चूंदड़ उढ़ाय, झालर बाजै राजा रांम री।—लो.गी.

उ०—२ मंई तौ काते बाई कातणी, वाद वणावै थारे रंग चूंदड़ी।

—लो.गी.

(मह०—चूंदड़)

रू०भे०—चूंनड़ी।

चूंदड़ीमंगळ—देखो 'चूनड़ीमंगळ' (रू.भे.)

चूंदड़ी साफौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का बिंदियादार विशेष रंग का शिर पर पहिनने का साफा।

वि०वि०—इस प्रकार के साफे में बिंदियां बंधन के कार्य से डाली जाती हैं और यह कई रंगों में मिलता है।

चूंदौ–वि०पु० (स्त्री० चूंदी) १ वह जिसे धुंधला दिखाई दे, जिसे स्पष्ट सुझाई न पड़े. २ छोटी आँखों वाला। उ०—कर खेंचातांणी, चूंदी कांणी, सुरवांणी सोकंदा है।—ऊ.का.

चूंध–सं०स्त्री०—अत्यन्त तीव्र चमक के कारण दृष्टि की अस्थिरता, चकाचौंध।

चूंधौ—देखो 'चूंदौ' (रू.भे.) उ०—सेवक जहां तहां ही स्वांमी, सबद विचार वस्या सब ठौर। चूंधी आंखि चपल मति खूटी, चितवतं तां सब मिट गईं दौर।—ह.पु.वा.(स्त्री० चूंधी)

चूंन–सं०पु० [सं० चूर्ण] १ आटा, चून। उ०—भड़ दूजा भाराथ रा, धुर खंचण वळ घूंन। सुत 'सिरदार' 'सुमेर' रौ, चलै उजाळण चूंन।—किसोरदांन बारहठ

२ चूर्ण, चूरा। उ०—साईं दे दे सज्जना, रातइ इंणि परि रूंन। उरि ऊपरि ऑर ढळइ, जांणि प्रवाळी चूंन।—ढो.मा.

चूंनड़—देखो 'चूंदड़ी' (मह. रू.भे.) उ०—कोई कोई ओढचां झीणी झीणी चूंनड़, कोई कोई ओढचां दिखणी चीर।—लो.गी.

चूंनड़ियाळी–सं०स्त्री०—१ 'चूंदड़ी' नामक वस्त्र को ओढ़ने वाली स्त्री. २ सधवा स्त्री।

चूंनड़ी—देखो 'चूंदड़ी' (रू.भे.)

चूंप–सं०स्त्री०—१ शौक, चाव, उत्साह। उ०—रटौ जांम आठूं सदा हो जना चूंप सूं रांम रांम।—र.ज.प्र.

२ लगन. ३ प्रबल इच्छा, उत्साह। उ०—१ चवंडदास का भैरूं-दास के रूप चांवंड सी चंद्रप्रहास अरि ग्रास की चूंप।—रा.रू.

उ०—२ अब नोंखचोख की वातां वणावै छै। सनेह की चूंप जगावै छै।—वगसीरांम प्रोहित री बात

४ स्वच्छता।

यौ०—चूंपचाप।

५ चतुराई, दक्षता। उ०—पल पल मांहीं पिये, चूंप कर चिलम्यां चाढ़ै।—ऊ.का.

६ देखो 'चूंक' (रू.भे.) ७ नग, नगीना (अ.मा.) ८ दांतों में सोने का जड़वाया जाने वाला छोटा सा आभूषण। उ०—अधर प्रवाळ ना आगजे, दांत दाड़िमी बीज। रसना नागर पांन सी, चूंपां चमकै बीज।—कुंवरसी सांखला री वारता

९ दांत, नालियर आदि की चूड़ी के तिड़कने पर उसको मजबूती के लिये जोड़ पर लगाई जाने वाली पत्ती विशेष।

उ०—म्हारी देवर चुड़लौ हाथ को, देरांणी म्हारी चुड़ला री चूंप, आज म्हारी अमली फळ रही।—लो.गी.

१० शोभा, सुन्दरता, छवि। उ०—प्रजंक ओप तें अनोप रूप चूंप पार में, हुए विछात सूलि लूंब झूल फूल हार में।—रा.रू.

चूंपचाप-सं०स्त्री०यौ०—स्वच्छता, सफाई।

चूंपणौ, चूंपवौ-क्रि०स०—१ चूसना. २ स्पर्श करना, छूना।

उ०—जद थूं जांगें वाली माटी, चीर काळजौ सूंपै। प्रांण सजीवण करै मिनख रा, झुक झुक पगल्या चूंपै।—रेवतदांन

३ देखो 'चूंपणौ' (३, रू.भे.) उ०—आ ग्रे झमकूं, खाटौ छमकूं। आ ग्रे रूपां, खाटौ चूंपां।—लो.गी

चूंपियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चूसा हुआ. २ स्पर्श किया हुआ। ३ देखो 'चूंथियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंपियोड़ी)

चूंबणौ, चूंबवौ—देखो 'चुंमणौ' (रू.भे.)

चूंबियोड़ौ—देखो 'चूंमियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंबियोड़ी)

चूंमणौ, चूंमवौ-क्रि०स० [सं० चुम्बन] स्नेह या प्रेमाधिक के कारण होठों से गाल आदि अंगों को स्पर्श करना, चुम्मा लेना, चूमना।

चूंमणहार, हारौ (हारी), चूंमणियौ—वि०।

चूंमाड़णौ, चूंमाड़वौ, चूंमाणौ, चूंमावौ, चूंमावणौ, चूंमाववौ —प्रे०रू०।

चूंमिओड़ौ, चूंमियोड़ौ, चूंम्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंमीजणौ, चूंमीजवौ—कर्म वा०।

चूंमाणौ, चूंमावौ-क्रि०स० (चूंमणौ क्रि०का० प्रे०रू०)—चूमने का कार्य अन्य से कराना, चुंबन लिवाना।

चूंमायोड़ौ-भू०का०कृ०—चुमाया हुआ, चुम्मा लिवाया हुआ। (स्त्री० चूंमायोड़ी)

चूंमावणौ, चूंमाववौ—देखो 'चूंमाणौ' (रू.भे.)

चूंमावणहार, हारौ (हारी), चूंमावणियौ—वि०।

चूंमाड़णौ, चूंमाड़वौ, चूंमाणौ, चूंमावौ—रू०भे०।

चूंमाविओड़ौ, चूंमावियोड़ौ, चूंमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूंमावीजणौ, चूंमावीजवौ—कर्म वा०।

चूंमावियोड़ौ—देखो 'चूंमायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंमावियोड़ी)

चूंळाई-सं०स्त्री०—एक प्रकार का क्षुप जिसकी पत्तियों का शाक बनाया जाता है। चंदलाई (क्षेत्रीय)

चूंळाफळी-सं०स्त्री०—चौंला नामक अनाज की फली।

चूंळियौ—देखो 'चूळियौ' (रू.भे.)

चूंळौ-सं०पु०—१ चौंला नामक अनाज या इसका पौधा. २ देखो 'चूळौ' (रू.भे.)

चूक-सं०पु०—१ भूल, त्रुटि, गलती। उ०—पड़ी चाकरी चूक घणी जद घणौ रिसायौ। झुरतौ कांमण छोड रांमगिरि यक्ष सिधायौ।—मेघ.

क्रि०प्र०—करणौ, पड़णौ, होणौ।

२ धोखा, कपट, छल। उ०—१ ऊंचा रंगमहल मांहे बैठा मिसलत मांडी। रावजी सूं चूक कीजै तौ राज आपणौ आपणै घरै रहै।—राव रिणमल री वात

उ०—२ एक दिन किणी रै दीवै सूं गाडै लाय लागी। रजपूत सोह लाय बुझावण नूं गया। राव कनै लाडक ऊभौ छै, मन मांहे चूक। —नैणसी

३ षड़यंत्र। उ०—१ रावत जसवंतसिंघ नूं सं० १६९० रांणै जगतसिंघ चूक कराय मरायौ।—बां.दा. ख्यात

४ कमी, अभाव। उ०—अर चक्री रा चक्र रै समांन मही रै माथै प्रतिबिंब पाड़ता चतुरंग चक्र मेघमाळा में चंचळा रा चपळ भाव मैं चूक पाड़ता चंद्रहास चलाया।—वं.भा.

५ अद्भुत कार्य। उ०—झझक्कत वारंग फेर झुकंत, हुवै इम चूक मुनेस हसंत।—सू.प्र.

६ संभ्रम, गफलत। उ०—इधकाय इसड़ौ गजर उडियौ धाय खग जुड़ि घूमरा, पहराय न सकै माळ कंठ परि, आय न सकै अपछरा, इण चूक ऊपर हसै मुनि इंद्र सभै जोगिंद चौसरां, रोस रा धाव करंत किरमर मिळै भोहर मोसरां।—सू.प्र.

[सं० चुक्रः] ७ अमलवेत या खट्टा शाक विशेष।

चूकणौ, चूकवौ-क्रि०अ०—१ त्रुटि करना, गलती करना, भूलना।

उ०—मेहाई महिमा मुणी, मैं मूरख मतिमंद। जिण अंदर चूकौ जिकौ, कीजै माफ कविंद।—मे.म.

२ लक्ष्यभ्रष्ट होना. ३ छोड़ना, अवसर खोना।

उ०—१ विदर सहेल्यां बीच में, हंस-हंस मारै होड। चेली सूं चूकै नहीं, मोको लागां मोड।—ऊ.का.

उ०—२ असली री ऐलाण, बुरौ किणी री ना करै। वेगरड़ा री वांण, चूकै वार न चकरिया।—मोहनराज साह

उ०—३ क्रम क्रम ढोला पंथ कर, ढांण म चूके ढाळ।—ढो.मा.

४ फैसला होना, निबटारा होना। उ०—ताहरां राजा कनकरथ कह्यौ—आप तखत विराजै, हूं तौ झागड़ू छू म्हारौ झगड़ौ चूकसी तथा पछै बैसस्यां।—पलक दरियाव री बात

चूकणहार, हारौ (हारी), चूकणियौ—वि०।

चूकवाणौ, चूकवावौ, चूकवावणौ, चूकवाववौ—प्रे०रू०।

चूकाणौ, चूकावौ, चूकावणौ, चूकाववौ—क्रि०स०।

चूकिओड़ौ, चूकियोड़ौ, चूक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूकीजणौ, चूकीजवौ—भाव वा०।

चूकमार-सं०पु०—एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

उ०—वरछिग्रां रा घमोड़ा लाग रह्या छै। चूकमारां री खाटखड़ लाग रही छै।—रा.सा.सं.

चूकाणौ, चूकावौ—देखो 'चुकाणौ' (रू.भे.)

चूकाणहार, हारौ (हारी), चूकाणियौ—वि०।

चूकावणौ, चूकाववौ—रू०भे०।

चूकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

चूकाईजणौ, चूकाईजवौ—कर्म वा०।

चूकायोड़ौ—देखो 'चुकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चुकायोड़ी)

चूकावणौ, चूकाववौ—देखो 'चुकाणौ' (रू.भे.)

चूकावणहार, हारौ (हारी), चूकावणियौ—वि०।

चूकाविग्रोड़ौ, चूकावियोड़ौ, चूकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूकावीजणौ, चूकावीजवौ—कर्म वा०।

चूकावियोड़ौ—देखो 'चुकावियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूकावियोड़ी)

चूकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ त्रुटि किया हुग्रा, भूल किया हुग्रा. २ फैसला किया हुग्रा, निवटारा किया हुग्रा. ३ लक्ष्यभ्रष्ट. ४ ग्रवसर चूका हुग्रा. ५ छोड़ा हुग्रा। (स्त्री० चूकियोड़ी)

चूकौ—सं०पु०—एक प्रकार का खट्टा साग, चुका (ग्रमरत)

चूड़—सं०स्त्री०—१ प्रायः विधवा स्त्रियों द्वारा कलाई या वाहु पर धारण करने का सोने या चांदी का एक ग्राभूषण. २ शिर के बाल, चिकुर।

चूड़लियौ, चूड़लौ—देखो 'चूड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

उ०—१ चूड़लियै मजीठ थारै हाथां मैंदी सोवै ग्रो।—लो.गी.

उ०—२ नणदल बाई रै चूड़लियौ चिराय ग्रो घण वारी रै हुंजा। देवरजी नखराळा रै चिटियौ दांत रौ ग्रो राज।—लो.गी.

उ०—३ खूंटचां टंक्या नवसर हार वाला जो, हाले तौ चिरादूं थारे चूड़लौ ए पणिहारी ऐ लो।—लो.गी.

चूड़ल्यौ—देखो 'चूड़ौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

चूड़ाकरण—सं०पु० [सं०] हिन्दुग्रों के सोलह संस्कारों के अंतर्गत एक संस्कार जिसमें वच्चे का प्रथम वार शिर मुंडवा कर शिखा रखवाई जाती है।

चूड़ाक्रम—सं०पु० [सं० चूड़ाकर्म] चूड़ाकरण।

चूड़ामण—सं०पु०—सोलंकी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चूड़ामणि, चूड़ामणी—सं०पु० [सं० चूड़ामणि] १ शीशफूल नामक स्त्रियों का गहना। उ०—दई दीध सो मुद्रका सीत दीधी, लहे मुद्र चूड़ामणी दीध लीधी।—सू.प्र.

२ प्रधान, मुखिया. ३ सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति।

चूड़ाळ—सं०पु०—दोहा छंद का एक भेद जिसके विषम पद तेरह तेरह मात्रा के ग्रौर सम पर सोलह सोलह मात्रा के होते हैं।

चूड़ाळी—वि०—चूड़ा पहनने वाली, सधवा। उ०—चूड़ाळी क्यूं यूं रै'वै चवै, मन में वयूं जाणे न। एकां फळ खारा हुवै, एका खाइज फेन। —जलाल वूवना री वात

चूड़ावण—सं०स्त्री०—१ चुड़ैल, प्रेतनी. २ दुष्टा स्त्री।

चूड़ावळि, चूड़ावळी—सं०स्त्री०—१ वह स्त्री जो चूड़ा धारण किये हो, सौभाग्यवती. २ चुड़ैल, पिशाचिनी।

चूड़ासमा—सं०स्त्री०—यादव वंश की एक शाखा।

चूड़ी—सं०स्त्री०—१ परिधि मात्र का वह मंडलाकार पदार्थ जिसके मध्य का स्थान खाली हो. २ किसी मशीन के पुर्जे या पेच के ग्रासपास के घेरे की लकीरें जो कसने या इधर-उधर न हिलने देने के लिये होती हैं. ३ ग्रामोफोन पर बजाया जाने वाला रेकॉर्ड। यौ०—चूड़ीबाजौ।

४ स्त्रियों द्वारा हाथों में पहनने का एक वृत्ताकार गहना जो कांच, लाख, चाँदी या सोने का बनता है। उ०—१ ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वाज्या विरह निसांण। हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुग्रा संघांण।—ढो.मा.

उ०—२ कोई वीर स्त्री भागळ पती नै कहै छै—हे कंथ! ग्राप भलां भागनै जीवता घरे ग्राया, ग्रवै म्हारौ वेस धारण करावौ, ग्रवै म्हनै ग्रां चूडियां सूं लाज ग्रावै छै।—वी.स.टी.

मुहा०—१ चूड़ियां तोड़णी—ग्रपने शौहर के मरने पर स्त्री का ग्रपनी चूड़ियां तोड़ना। २ चूड़ियां पैं'रणी—स्त्री वनना, कायर बनना। ३ चूड़ियां वदरणी—चूड़ियों का टूटना। ४ चूड़ियां वदारणी—चूड़ियों को तोड़ कर हाथों से ग्रलग करना। (चूंकि चूड़ियां तोड़ना ग्रशुभ माना जाता है, ग्रतः 'चूड़ियाँ वदारणी' का प्रयोग करते हैं।)

५ किसी तंग व लंबी मोहरी वाले पाजामा के मोहरी के ग्रंत में डाली जाने वाली शिकनें या घेरे।

६ वह वकरी जिसके पैर सफेद व चूड़ी के ग्राकार के हों।

चूड़िगर—सं०पु०—१ नारेली, गेंडे की ढाल ग्रथवा हाथीदांत का चूड़ा ग्रादि वनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष जो ग्रपने को सैयद कहते हैं. २ इस जाति का व्यक्ति।

चूड़ीदार—वि०यौ०—चूड़ी या छल्ले के ग्राकार के घेरे युक्त।

चूड़ीबाजौ—सं०पु० [यौ०] फोनोग्राफ, ग्रामोफोन का बाजा।

चूड़ौ—सं०पु०—१ स्त्रियों द्वारा भुजाग्रों में पहनने का चूड़ियों का वह समूह जिसमें छोटी चूड़ी कुहनी के पास तथा सबसे बड़ी चूड़ी बाहु-मूल में रहती है जो किसी जाति में नववधू ग्रौर किसी जाति में प्रायः सब विवाहिता स्त्रियां पहनती हैं। चूड़े प्रायः हाथीदांत के ग्रधिक प्रयोग में लिये जाते हैं। इनकी चूड़ियां कुहनी से बाहुमूल तक गाव-दुम रहती हैं।

उ०—फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळा-डळा। खवां खांच चूड़ै खावंद रै, उणहिज चूड़ै गई यळा।—वां.दा.

मुहा०—१ चूड़ौ ग्रमर (ग्रखि) रै'णौ—ग्राशीर्वादात्मक सौभाग्य-सूचक शब्द, सौभाग्य ग्राजीवन बना रहना. २ चूड़ौ पैं'रणौ—पुन-र्विवाह करना, किसी पुरुष के साथ पति का सम्बन्ध स्थापित करना. ३ चूड़ौ फूटणौ—वैधव्य को प्राप्त होना, सौभाग्य खंडित होना. ४ चूड़ौ भागणौ—देखो 'चूड़ौ फूटणौ' २ ग्रहिवात, सौभाग्यचिह्न।

उ०—पुत्रवती सोहागवति, पतिव्रता पिण सोय। स्त्री राणी चूड़ौ सथिर, वांणी भणै सकोय।—रा.रू.

३ चोटी, शिखा।

यौ०—चूड़ाकरम, चूड़ामणि।

४ हरिजन, भंगी (मा.म.) उ०—ऊंच नीच अंतर नहिं एको, रांम भजै सोइ रूड़ो। परमेस्वर नै नहीं पिछांणी चार वरण में चूड़ो।

—ऊ.का.

अल्पा०—चुड़लियौ, चुड़लो, चुड़ल्यो, चूड़लियो, चूड़लो, चूड़ल्यो।

चूची-सं०स्त्री० [सं० चूचुक] स्तनों के ऊपर की घुंडी, कुचाग्र।

चूजो-सं०पु०—मुर्गी का बच्चा।

चूण—देखो 'चुण' (रू.भे.) उ०—अनड़ पंख आकास में, नित चूण दिराड़ै।—केसोदास गाडण

चूणि-सं०पु० [सं० चूर्णि] १ चूर्ण. २ सौ कौडियों के योग या जोड़ (जैन)

चूणो, चूवो—देखो 'चवणो' (१ रू.भे.)

चूत-सं०स्त्री० [सं० च्युति] योनि, भग, जननेन्द्रिय।

चूति-सं०पु० [सं० च्युति] १ पतन. २ अलगाव, पृथकता. ३ टपकना।

चूतियाचक्कर, चूतियापंथी-सं०पु०यौ०—मूर्खता, नासमझी, बेवकूफी।

चूतियो-वि०—मूर्ख, नासमझ।

यौ०—चूतियाचक्कर, चूतियापंथी।

चून—देखो 'चूण' (रू.भे.) उ०—आटौ खाण्यां नह अड़चा, भीड़ पड्यां ग्या भाज। चून खावण्यां चंड हैं, लड़ राखी वर लाज।

—रेवतसिंह भाटी

वि०—श्वेत, सफेद *।

चूनउ-सं०पु०—[सं० चूर्णकः] १ भुना या पिसा हुआ अनाज।

२—देखो 'चूनो' (रू.भे.)

चूनगर-सं०पु०—चूने का कार्य करने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति. २ चूना बनाने या चूने से लीपने, पोतने का कार्य करने वाला।

चूनड़—देखो 'चूंदड़ी' (मह.) उ०—१ मोतीड़ां री ईंडी जद सोवै म्हारै चूनड़ अमोलक होय, भर ल्यावूं पांणीड़ो।—लो.गी.

उ०—२ कोई कोई ओढ़यां, झीणी झीणी चूनड़, कोई कोई ओढ़्यां दिखणी चीर, होळी आई ए।—लो.गी.

चूनड़िया साफो-सं०पु०यौ०—चुनरी की भांति रंगा हुआ बुंदियादार साफा।

चूनड़ी—१ देखो 'चूंदड़ी' (रू.भे.) उ०—पैहरण आछी चूनड़ी, कुंकुं चंदण खोळ कराई। उठो सवारां चालस्यां, गाढ़ी रोई गोरी गळिलाई।—वी.दे.

२ विवाह के अवसर पर वधू की माता के भाई के आने पर उसके स्वागत में गाया जाने वाला एक लोक गीत।

चूनड़ी-मंगळ-सं०पु०यौ०—फलित ज्योतिष में एक योग जब मंगल ग्रह कन्या की जन्म, कुण्डली में प्रथम, (द्वितीय), चतुर्थ, सप्तम, अष्टम व द्वादश स्थानों में से किसी एक स्थान में हो।

वि०वि०—इन स्थानों में मंगल के अतिरिक्त शनि या राहु की स्थिति भी चूंदड़ी मंगल मानी जाती है। यह स्थिति लग्न से चंद्र व शुक्र से भी जानी जाती है, यह अशुभ माना जाता है, इसमें विवाह वर्जित है।

रू०भे०—चूंदड़ी मंगळ। (मि० मोळिया-मंगळ)

चूनड़ी साफो—देखो 'चूनड़िया साफो' (रू.भे.)

चूनादांनी—वह पात्र विशेष जिसमें खाने के लिये पान, सुपारी व सुरती आदि रखी रहती हो।

चूनारो-सं०पु०—देखो 'चूनगर' (रू.भे)

चूनाळ, चूनाळजो, चूनाळि—देखो 'चुनाळजो' ? (रू.भे.)

उ०—म्यान आप गाजियौ, हाथि हरणाकस हणियौ चूनाळि जिम चावियौ, खरौ तैं काळिज खिणियौ करि कोप मुख रातो कियो तूं नरसिंघ न लाजियौ।—पीरदांन लाळस

चूनाळो-सं०पु०—योद्धा, वीर पुरुष। उ०—घण घाओ घमचाळि, चूनाळा थिय चालणी। आप तणा तण अरि हरां, छडिया उवर छड़ाळि।—वचनिका

चूनी-सं०स्त्री०—१ रत्न कण, नग ? उ०—जांणी सोना री तौ रंग कपोळां रा रंग सूं उरै है, पिण चीका री चहन ही करणफूलां री चूनियां में दुरै है।—र. हमीर

चूनीरंग-सं०पु०—एक प्रकार का रंग विशेष का घोड़ा।

चूनू-वि०—श्वेत* (डिं.को.)

सं०पु०—देखो 'चूनो' (रू.भे.)

चूनेवाळियां-सं०स्त्री० (बहु०)—वे मुसलमान वेश्यायें जो बरात के साथ नाचने गाने के लिये जाया करती हैं (मा.म.)

चूनो-सं०पु० [सं० चूर्णः चूर्णकः] मुरड़, पत्थर, कंकर, मोती, सीप आदि को भट्टी में फूंक कर तैयार किया गया एक तीक्ष्ण क्षार जो प्रायः दीवार की जोड़ाई या पोतने के काम आता है।

मुहा०—१ चूनो लगाणो—आर्थिक क्षति पहुँचाना, धन आदि का हरण करना, धोखा देना। २ नाक रै चूनो लगाणो—किसी की इज्जत में बट्टा लगाना।

चून्यो-सं०पु०—१ हीरा, जवाहरात।

२ देखो 'चूनो' (रू.भे.)

चूप-सं०स्त्री०—१ चतुराई, बुद्धिमानी। उ०—सरवंग उदर उर-वर सरूप, चत्रवदन रचै किर परम चूप।—रा.रू.

२ चाह, इच्छा। उ०—हाथी सवा लखी नायक नै पातसाह फरमायौ है तौ ल्यायौ छै तैसू कुंवरजी रै चूप छै तौ आप राखो।

—पलक दरियाव री वात

३ देखो 'चूंप' (रू.भे.)

चूपणो, चूपवो—देखो 'चूंपणो' (रू.भे.) उ०—जुग तरण जुहारै परण पधारै चरण कमळ चूपंदा है।—ऊ.का.

चूवारा-सं०पु०—रुई धुनने और चूने व कली का काम करने वाली हिन्दुओं की एक जाति।

चूमणौ, चूमबौ—देखो 'चूंमणौ' (रू.भे.) उ०—मुखड़ौ माताजी चूमे चाव सूं, कोई मनां न मावै मोद।—गी.रां.

चूमाणौ, चूमावौ—देखो 'चूंमाणौ' (रू.भे.)

चूमायोड़ौ—देखो 'चूंमायोड़ौ (रू.भे.) (स्त्री० चूंमायोड़ी)

चूमावणौ, चूमाववौ—देखो 'चूंमाणौ' (रू.भे.)

चूमावियोड़ौ—देखो 'चूंमायोड़ौ' (रू.भे.) स्त्री० (चूंमावियोड़ी)

चूमियोड़ौ—देखो 'चूंमियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चूंमियोड़ी)

चूर–सं०पु० [सं० चूर्ण] १ देखो 'चूरौ' (रू.भे.)
२ ध्वंस, नाश। उ०—१ करी चूर कुळ सुभाव हूंत सादूळ कह विधु नखित्र सोम भरपूर बरसै।—र.ज.प्र.
उ०—२ कैजमां भळक सिलहां खळक, भळळ तेज अणियां भमर। देवड़ां चूर करिवा दुभल, 'सूर' चढ़ै आरंभ समर।—सू.प्र.
मुहा०—चूर होणौ—नाश होना, ध्वंश होना, लीन होना, अनुरक्त होना, उन्मत्त होना।

चूरण–सं०पु० [सं० चूर्ण] १ बहुत महीन पीसा हुआ या महीन-महीन टुकड़े किया हुआ पदार्थ. २ चूर-चूर होने का भाव. ३ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिला कर १८ दीर्घ और २१ ह्रस्व सहित ५७ मात्रा हो (ल.पि.)

चूरणौ, चूरबौ–क्रि०स० [सं० चूर्ण] १ टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना, महीन चूरा करना। उ०—सड़-सड़ वाहि म कंवड़ी, रांगां देह म चूरि। बिहुं दीपां बिचि मारुई, मो थी केती दूरि।—ढो.मा.
२ नाश करना, ध्वंस करना। उ०—१ चौरंग चूरिया वर सेत, 'चांदे' भिड़ै नवली भांति। गौरड़ी काढ़ै गात गोखै, रड़ै गळती राति।
—चांदा वीरमदेवोत री गीत
उ०—२ चउदह हजार खळ चूरिया जैत जै जगदीस री।
—पीरदांन लाळस
चूरणहार, हारौ (हारी), चूरणियौ—वि०।
चूराणौ, चूरावौ, चूरावणौ, चूराववौ—प्रे०रू०।
चूरिओड़ौ, चूरियोड़ौ, चूरचोड़ौ—भू०का०कृ०।
चूरीजणौ, चूरीजबौ—कर्म वा०।

चूरण्यौ–सं०पु०—गुदा के मुंह पर मल में पड़ने वाला छोटा कीट।

चूरमियौ, चूरमूं—देखो 'चूरमौ' (अल्पा. रू.भे.)
उ०—१ राधा चूरमियौ करजो तैयार, म्हे हां तीरथ वासी।
—लो.गी.
उ०—२ गैलो गांव, गांव गैले नै, गिणै नहीं गरवाई नै। चित जिंदां रौ करचो चूरमूं, कनै राखि कड़वाई नै।—ऊ.का.

चूरमूर–वि०—चूर्णवत, महीन, बहुत बारीक, चूर-चूर।
उ०—हमं गज्ज गाहं भयं चूरमूरं।—ला.रा.

चूरमौ–सं०पु० [सं० चूर्ण] रोटी, बाटी या पूरी आदि को चूर कर घी व शक्कर मिला कर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ।
उ०—१ फेर भोर कूट छांण मांहे बूरो घातजै छै। चूरमौ कुतवी वणायजै छै।—रा.सा.सं.
उ०—२ ग्वाळां नै म्हारै गळछट चूरमौ, हाळियां नै खीर लापसी अे।
—लो.गी.
अल्पा०—चूरमियौ।

चूरीभाटौ, चूरूभाटौ–सं०पु०—सफेद रंग का नर्म पत्थर जो चूर्ण बना कर चूने में मिलाया जाता है या स्त्रियां जिसको लड्डू में मिला कर खाती हैं।

चूरौ–सं०पु० [सं० चूर्ण] किसी वस्तु का पीसा हुआ भाग, चूर्ण, बुरादा।

चूळ–सं०पु०—१ रहट के चक्र को खड़ा रखने के लिये दोनों ओर लगाये जाने वाले लट्ठों को जोड़ने का लकड़ी का उपकरण. २ किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसके साथ जोड़ने या उसमें घूमने के लिए लगाया जाय।
मुहा०—चूळ निकाळणौ—लकड़ी खोदना।
३ कूल्हे की हड्डी।
अल्पा०—चूळियौ।
४ देवी की भुजाओं में धारण किया जाने वाला एक आभूषण. ५ फरसे की तेज धार।

चूलड़ी–सं०स्त्री०—देखो 'चूलौ' (अल्पा. रू.भे.)

चूळिका–सं०स्त्री० [सं० चूलिका] १ एक भाषा विशेष. २ स्त्रियों का कान में पहनने का एक आभूषण, कर्णफूल।

चूळियौ–सं०पु०—१ देशी या सादे कपाट के नीचे व ऊपर लगाया जाने वाला वह नुकीला भाग जिस पर आधारित रह कर कपाट बंद हो सकता है और खुल सकता है।
वि०वि०—यह कब्जेरहित किवाड़ों में ही लगाया जाता है।
२ कूल्हा।
मुहा०—१ चूळियौ कुटावणौ—किसी के पास रह कर उसकी सेवा-टहल करना, अथक परिश्रम करना, किसी स्त्री का पुरुष से संभोग कराना. २ चूळियौ कूटणौ—किसी व्यक्ति से अधिक श्रम लेना, स्त्री के साथ संभोग करना।
रू०भे०—चूळियौ।

चूलियौ—देखो 'चूलौ' (अल्पा. रू.भे.)

चूळीयाळ, चूळीयाळौ–सं०पु०—तेरह एवं सोलह मात्रा पर यति वाला एक मात्रिक छंद विशेष।

चूलौ–सं०पु० [सं०चुल्लिः] घोड़े के नाल के आकार का अर्द्ध चंद्राकार लोहे या मिट्टी का बना अंगीठी के समान वह पात्र जिसमें आग आदि जला कर उस पर भोजन आदि पकाया जाता है।
मुहा०—१ चूला में ऊंदरा दौड़णा—खाने को बिल्कुल न मिलना। २ चूला में जाणौ, चूला में नांखणौ—फेंक देना, दूर करना। ३ चूला में पड़णौ—नष्ट-भ्रष्ट होना, अस्तित्व मिटना। ४ चूलै चढाणौ—पकाने के लिये तैयार करना। ५ चूलै री चांद

होणौ--अधिक भोजन-प्रिय होना, स्त्रैण स्वभाव का होना। ६ चूलौ फूंकणौ--रसोई बनाना।

कहा०--१ चवदै चूलां री धूळ उडणी--पूर्ण निर्धन होना, अत्यन्त निर्धनता के प्रति. २ चूलौ कै' हूं सात सोवणी वेवणी कै' हूं गूंडां में बैठी हूं--चूल्हा अपने आपको बहुत श्रेष्ठ बताता है तो उससे संलग्न वह भाग जिसमें राख एकत्रित होती है, कहता है कि मैं तुम्हारे अत्यन्त निकट हूं, तुम्हारे गुणों को जानती हूं, तुम्हारे स्वयं के कहने की आवश्यकता नहीं है। अपने अत्यन्त निकट रहने वाले व्यक्ति के समक्ष गुणानु-वर्णन करने की आवश्यकता नहीं, वह पूर्णरूपेण गुणावगुण से परिचित होता है। डींग व शेखी बघारना बहुत बुरा है।

रू०भे०--चूल्हौ।

अल्पा०--चूलड़ी, चूलियौ, चूल्हड़ी।

चूल्हड़ी--देखो 'चूलड़ी' (रू.भे.)

चूल्ही-सं०स्त्री०--देखो 'चूल्हौ' (अल्पा. रू.भे.)

चूल्हौ--देखो 'चूलौ' (रू.भे.) उ०--कहियौ मीसण सस सकळ, चूल्हां दीध चढ़ाइ।--वं.भा.

चूवणौ, चूवबौ--देखो 'चुअणौ' (रू.भे.)

चूवणहार, हारौ (हारी), चूवणियौ--वि०।

चूवाणौ, चूवाबौ, चूवावणौ, चूवावबौ--प्रे०रू०।

चूविओड़ौ, चूवियोड़ौ, चूव्योड़ौ--भू०का०कृ०।

चूवीजणौ, चूवीजबौ--भाव वा०।

चूवाणौ, चूवाबौ-क्रि०स० ('चूअणौ' क्रि० का प्रे०रू०). देखो 'चुआणौ' (रू.भे.)

चूवायोड़ौ--देखो 'चुआयोड़ौ' (रू.भे.)

चूवावणौ, चूवावबौ--देखो 'चुआणौ' (रू.भे.)

चूवावियोड़ौ--देखो 'चुआयोड़ौ' (रू.भे.)

चूवियोड़ौ--देखो 'चुयोड़ौ' (रू.भे.)

चूसणौ, चूसबौ-क्रि०स० [सं० चूष] १ होंठ व जीभ के संयोग से किसी द्रव पदार्थ को खींच-खींच कर पीना, चूसना. २ सारहीन करना।

चूसणहार, हारौ (हारी), चूसणियौ--वि०।

चूसाणौ, चूसाबौ, चूसावणौ, चूसावबौ--प्रे०रू०।

चूसिओड़ौ, चूसियोड़ौ, चूस्योड़ौ--भू०का०कृ०।

चूसीजणौ, चूसीजबौ--कर्म वा०।

चूसमार-सं०पु०--एक प्रकार का हिंसक पक्षी जो पक्षियों को मार कर उनका रक्त चूसता है।

चूसा-सं०स्त्री० [सं० चूषा] वह पेटि या पट्टा जो हाथी की कमर में बांधा जाता है।

चूसाणौ, चूसाबौ-क्रि०स० ('चूसणौ' क्रि० का प्रे०रू०) चूसने का कार्य दूसरे से कराना।

चूसायोड़ौ-भू०का०कृ०--चुसाया हुआ, सारहीन कराया हुआ।

चूसावणौ, चूसावबौ--देखो 'चूसाणौ' (रू.भे.)

चूसावणहार, हारौ (हारी), चूसावणियौ--वि०।

चूसाविओड़ौ, चूसावियोड़ौ चूसाव्योड़ौ--भू०का०कृ०।

चूसावीजणौ, चूसावीजबौ--कर्म वा०।

चूसावियोड़ौ--देखो 'चूसायोड़ौ' (रू.भे.)

चूसियोड़ौ-भू०का०कृ०--१ चूसा हुआ, रस खींचा हुआ. २ सारहीन किया हुआ। (स्त्री० चूसियोड़ी)

चूह-सं०पु०--एक प्राचीन राजपूत वंश।

चूहण, चूहांण--देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चूहादांन, चूहादांनी-सं०स्त्री०--चूहों को पकड़ने या फंसाने का एक विशेष प्रकार का पिंजड़ा।

चूहड़ौ--देखो 'चूड़ौ' ३ (रू.भे.)

चूहौ-सं०पु०--प्राय: घरों व खेतों में बिल बना कर उसके अन्दर रहने वाला चार पैर का एक प्रसिद्ध छोटा जंतु।

वि०वि०--भारत में खाकी रंग के चूहे अधिक प्राप्त होते हैं। इसके दांत बड़े तेज होते हैं, जिससे खाने-पीने की वस्तुओं के अतिरिक्त कपड़े, कागज व अन्य वस्तुओं को भी काट डालता है। इसका शत्रु बिल्ली है जो बड़े चाव से इसका शिकार करती है।

चें--देखो 'चैं' (रू.भे.)

चेंठणौ--देखो 'चैंठणौ' (रू.भे.)

चे-सं०पु०--१ रवि. २ चंद्रमा. ३ कृष्ण. ४ मन. ५ तलवार. ६ समूह (एका.)।

चेअर-सं०स्त्री० [अं०] बैठने की कुरसी।

चेइ-सं०पु० [सं० चेदि] १ चेदि देश (जैन)

[सं० चैत्य] २ शव के दाह-स्थान पर बनाया हुआ स्मारक (जैन) ३ जैन मंदिर. ४ इष्टदेव की मूर्ति, जिन देव की मूर्ति।

चेइय-सं०पु० [सं० चैत्य] देव-स्थान (जैन)

चेइय खंभ-सं०पु० [सं० चैत्यस्तंभ] चैत्यस्तंभ, स्तूप (जैन)

चेइय भूम--चैत्य स्तूप।

चेइय रुक्ख-सं०पु० [सं० चैत्य वृक्ष] १ वह वृक्ष जहां जैन तीर्थंकर या जिन देव को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ हो. २ वह वृक्ष जिसके नीचे चबूतरा हो. ३ मनुष्यों के विश्राम-स्थान का वृक्ष (जैन)

चेउ खेप-सं०पु० [सं० चेलोत्क्षेप] आकाश से होने वाली वस्त्रों की वृष्टि (जैन)

चेड़-सं०स्त्री०--१ बड़ा भोज, सामूहिक भोज. २ विशाल मृत्यु-भोज।

चेड़ौ-सं०पु०--१ भूत-प्रेत का उपद्रव. २ आफत, इल्लत, बला।

उ०--तैं करी कुवधि केरी तिका, वैरी कदे न वीसरूं। चित हूंत हटै चेड़ौ अचळ, नेड़ौ फेर न नीसरूं।--ऊ.का.

३ वस्त्र का किनारा, छोर।

रू०भे०--छेड़ौ।

चेचक-सं०स्त्री०--शीतला का रोग।

चेचि-सं०पु०--एक प्रकार का घोड़ा (सू.प्र.)

चेजारो-सं०पु०—दीवार चुनने का कार्य करने वाला व्यक्ति।
उ०—लियां तगारी नार सांझ रोटी ले जावं, चेजारै री चाव मजूरी मुंह री पावै।—दसदेव

चेजो-सं०पु०—१ दीवार की जोड़ाई का कार्य। उ०—नांखै मोल मजूर लदै ऊंटां पर बोरा, गार गिलोवरणहार चिरणावै चेजै ओरा।
—दसदेव

२ (पशु-पक्षियों का) आहार, भोजन। उ०—१ मूंछ न तोड़ी कोट में, कढ़ियां छोडै काळ। काळां घर चेजो करै, मूसा परण मूंछाळ।
—वी.स.

उ०—२ इतरी कही डाढाळो चेजो करणै नूं गयो।
—डाढाळा सूर री बात

३ गुजारा, निर्वाह।

चेट-सं०पु० [सं०] १ दास, सेवक, नौकर (ह.नां.) २ पति, स्वामी। ३ नायक व नायिका को मिलाने वाला व्यक्ति, भांड, भड़ुआ।

चेटक-सं०पु०—एक रंग विशेष या भौंरी विशेष का घोड़ा (शा.हो.)
वि०वि०—इस रंग का घोड़ा मेवाड़ के महाराणा प्रताप के पास था जो उन्हें बहुत प्यारा था।

चेटकी-वि०—१ क्रोधी चिड़चिड़े स्वभाव का. २ उतावला, उद्धत।
उ०—रांमसिंह रा ठरणिया दक्षिरणी ऊठिया अर कन्हीरांम रांमसिंहोत खैर री चेटकी सो महाराजा वखतसिंहजी सूं वांणक न रही।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

चेटल-सं०पु०—सिंह का बच्चा। उ०—केळ चतर लख कवर, भूलो मत भ्रम भाव। चेटल ही गज पर चढ़ै, सींहां जात सुभाव।
—र. हमीर

चेटिका, चेटी-सं०स्त्री० [सं०] सेवा करने वाली स्त्री, दासी, सेविका।

चेड, चेडो-सं०पु० (स्त्री० चेडी) नौकर, दास (ह.नां.)

चेढ़ी-सं०स्त्री०—राज्य का एक भाग, प्रदेश। उ०—वडो अळियळ देस चवदै चेढ़ी गांव लागै, चेढी १ री मांन ५६० तिरण चवदै चेढ़ी रा गांव ७८४० हुआ।—नैणसी

चेढ़ीमणो-वि०—योद्धा, वीर, पराक्रमी।

चेढो-सं०पु०—नग, रत्न। उ०—प्यारी देख्यो थांरा कपोल रो तिल चकारा में रयो है किसोक तिळ जिको कनक रै आंगरण जड़ाउ थांणो जिणमें सिरणगार रस रो हीज चेढो लागै जांणो।—र.हमीर

चेत-सं०पु० [सं० चेतस्] १ चित्त की वृत्ति, चेतना, संज्ञा, होश।
उ०—इतरै डाढ़ाळा नूं चेत हुवो।—डाढ़ाळा सूर री बात
क्रि०प्र०—आणो, करणो, होणो।
२ सावधानी।
मुहा०—चेत नै हालणो—सावधानी या सतर्कता से चलना।
३ स्मरण, याद. ४ मन (ह.नां.) ५ देखो 'चैत' (रू.भे.)

चेतकी-सं०स्त्री०—१ हरड़, हरै (अ.मा.) २ सात प्रकार की हरड़ों में से एक विशेष प्रकार की हरड़ जिस पर तीन धारियां होती हैं. ३ एक रागिनी (संगीत)

चेतणो, चेतबो-क्रि०अ० [सं० चेतनम्] १ होश में आना, संज्ञा में होना। सावधान होना। उ०—घरणो बतावै ग्यांन, समय जाय है सहज में। भूलै किम भगवांन, चेतै क्यूं नहि चकरिया।—मोहनराज साह
२ छिड़ना, आरंभ होना (लड़ाई) उ०—चीरण उदंगळ चेतयो, दळ मझ गयो दुवाह। फरक फतूहां फावियो, आरण कियो उछाह।
—किसोरदांन बारहठ
३ प्रज्वलित होना।
क्रि०स०—४ विचार करना, सोचना।
चेतणहार, हारो (हारी), चेतणियो—वि०।
चेताणो, चेताबो, चेतावणो, चेतावबो—क्रि०स०।
चेतिओड़ो, चेतियोड़ो, चेत्योड़ो—भू०का०कृ०।
चेतीजणो, चेतीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

चेतन-सं०पु० [सं०] १ आत्मा, जीव। उ०—चेतन बंध्या मन सूं, मन करमें बंध्या।—केसोदास गाडण
२ प्राणी, जीवधारी। उ०—चेतन किण विध तजै, मन ज्यां वसियो मोह। चुकमक सूं जाय'र चिपै, लखो अचेतन लोह।
—र. हमीर
३ मनुष्य, आदमी. ४ ईश्वर। उ०—चवतां चरित तुहारा चेतन, जगत नहीं पुनरपि मानव जन।—ह.र.

चेतनता-सं०स्त्री० [सं०] चैतन्यता, सज्ञानता।

चेतना-सं०स्त्री० [सं०] १ होश, संज्ञा, सचेत अवस्था। उ०—इयां बोलतो बोलतो चेतना-सून्य हो'र मूंधै मूंडै जाय पड़ियो।—वरसगांठ
२ बुद्धि, ज्ञान. ३ याद, स्मृति. ४ सावधानी, सतर्कता।

चेतवणो, चेतवबो—देखो 'चेतणो' (रू भे.)

चेतवियोड़ो—देखो 'चेतियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चेतवियोड़ी)

चेताचूक-वि०—१ बदहवाश. २ गाफिल, बेसुध. ३ व्याकुल।

चेताणो, चेताबो-क्रि०स० ('चेतणो' क्रि० का प्रे०रू०) १ होश में लाना, चेतन करना. २ सावधान करना, सचेत करना. ३ प्रज्वलित करना, धधकाना (अग्नि). ४ (युद्ध) छेड़ना।
चेताणहार, हारो (हारी), चेताणियो—वि०।
चेतायोड़ो—भू०का०कृ०।
चेताईजणो, चेताईजबो—कर्म वा०।
चेतणो—अक०रू०।

चेतायोड़ो-भू०का०कृ०—१ सचेत किया हुआ. २ सावधान किया हुआ. ३ आरंभ किया हुआ. ४ प्रज्वलित किया हुआ।
(स्त्री० चेतायोड़ी)

चेतावणी-सं०स्त्री०—सतर्क होने के लिये दी गई सूचना, चेतावनी।
उ०—एकाएक मेघ गरजना दाई एक भारी गळै रा चेतावणी भरियोड़ा सबद कांनां में पड़िया।—वरसगांठ
रू०भे०—चितावणी।

चेतावणो, चेतावबो—देखो 'चेताणो' (रू.भे.)
चेतावणहार, हारो (हारी), चेतावणियो—वि०।

चेताविग्रोड़ो, चेताविद्योड़ो, चेताव्योड़ो—भू०का०कृ०।
चेतावीजणो, चेतावीजबो—कर्म वा०।
चेतावनी—देखो 'चेतावणी' (रू.भे.)
चेताविद्योड़ो—देखो 'चेतायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चेताविद्योड़ी)
चेतियोड़ो—भू०का०कृ०—१ होश में आया हुआ. २ सचेत, सावधान ३ चिन्तन किया हुआ. ४ आरंभ हुआ हुआ, प्रज्वलित। (स्त्री० चेतियोड़ी)
चेतुरा—सं०पु०—संसार के प्रायः सब भागों में पाई जाने वाली एक प्रकार की चिड़िया।
चेतो—सं०पु० [सं० चेतः] १ चेतना, संज्ञा, होश।
मुहा०—चेता चूळणा—होशहवास न रहना, ध्यान न रहना।
२ बोध, ज्ञान। उ०—१ जणां कुंवरसी आपरा साथ नूं कही—म्हे आज रात भींतर जावां छां, थां अठै हीज खड़ा रहिज्यो, ताहरां सगळो साथ कहण लागियो—चेतो ठौड़ छै क नहीं।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ आत्मा मरियां पछै मिनख नैं भूंडा-भला री चेतो को रैवै नी।—वांणी
३ सावधानी, सतर्कता।
४ स्मृति, याद। उ०—दुख दे जेतो दुसट, तिको कुण जांणै तेतो। चेतो कुळ चूकगो, दूर सूं धूळ न देतो।—ऊ.का.
मुहा०—चेतै उतरणो—भूल जाना, विस्मरण होना।
चेत्रि—देखो 'चैत्रि' (रू.भे.) उ०—जइ तूं ढोला नावियउ, कइ फागुण कइ चेत्रि।—ढो.मा.
चेदि—सं०पु० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम (महाभारत)
चेदिराज—सं०पु० [सं०] चेदि देश का राजा शिशुपाल जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था (महाभारत)
चेप—सं०पु०—१ चिपचिपा या लसदार रस. २ चिपकाने का भाव।
चेपकी—सं०स्त्री०—१ आवरण, ढक्कन. २ चुगली, निंदा।
वि०—चुगली करने वाला।
चेपणो, चेपबो—१ देखो 'चिपकाणो' (रू.भे.) २ लाठी, तमाचा आदि का प्रहार करना।
चेपणहार, हारो (हारी), चेपणियो—वि०।
चेपाणो, चेपाबो, चेपावणो, चेपावबो—प्रे०रू०।
चेपिग्रोड़ो, चेपियोड़ो, चेप्योड़ो—भू०का०कृ०।
चेपीजणो, चेपीजबो—कर्म वा०।
चेपाणो, चेपाबो—क्रि०स० ('चेपणो' क्रि० का प्रे०रू०) १ चिपकाने का कार्य कराना. २ लाठी, तमाचे आदि का प्रहार कराना।
चेपायोड़ो—भू०का०कृ०—चिपकाया हुआ। (स्त्री० चेपायोड़ी)
चेपावणो, चेपावबो—देखो 'चेपाणो' (रू.भे.)
चेपावणहार, हारो (हारी), चेपावणियो—वि०।
चेपाविग्रोड़ो, चेपावियोड़ो, चेपाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
चेपावीजणो, चेपावीजबो—कर्म वा०।
चेपाचापो—सं०पु०यौ०—१ काम चल सकने लायक गुजर, निर्वाह। २ समझौता, मेल। उ०—तद नापै नूं बुलाय कही—धरती आ लेणी पण मोहिल टणका, धरती रो इलाज करणो, हमार मुलक रो उजाड़ करै छै सो थे जाय चेपाचापो करो तद नापो द्रोणपुर आयो, मोहिलां सूं मिळियो, वात कीवी।—नापा सांखला री वारता
चेपियोड़ो—भू०का०कृ०—१ चिपकाया हुआ. २ लाठी, तमाचे आदि का प्रहार किया हुआ। (स्त्री० चेपियोड़ी)
चेपो—सं०पु०—१ आहार, भोजन. २ गुजर, निर्वाह।
यौ०—चेपाचापो।
३ कमरा, संदूक, अलमारी आदि को बंद कर खुलने के संधि-स्थान पर चिपकाया जाने वाला कागज का वह पुर्जा जिस पर प्रायः कोई निशान या हस्ताक्षर बने रहते हैं। इससे कमरा संदूक या अलमारी आदि को किसी के द्वारा खोलने पर वह कागज का पुर्जा फट जाता है और खोले जाने का पता चल जाता है। ४ किन्हीं दो परस्पर विरोधी व्यक्तियों या दलों के मध्य में राज्य सरकार द्वारा मध्यस्थता के रूप में मनकूला अथवा गैर मनकूला सम्पत्ति पर लगाया जाने वाला राजकीय मोहर सहित कागज जो फैसला पूरा होने तक लगा रहता है। उ०—ढोर डांगर थोड़ो घणो गैंणो-गांठो, राछपीछ और दोनां झूंपड़ा जिकां नैं रणछोड़ै रात दिन एक कर नैं बडी मुसकिल सूं वंणाया हा, सगळाई सेठां रा हे गया। झूंपड़ां रा बारणा माथै राज रा चेपा लाग गया।—रातवासो
चेवड़ो, चेवरो—सं०पु०—सुअर का छोटा बच्चा। उ०—१ सुतन अंद्रसींग केहर अनैं संभुसुत, चेवड़ां वीयां जिम नकूं चलियो।—अज्ञात
उ०—२ चल अर गडूर चेवरा, चढ़ कर मत चींचाट। सूरी जाया कर सकै, दळां घेर दहवाट।—रेवतसिंह भाटी
चेय—सं०पु०—चित (जैन)
चेयर—देखो 'चेअर' (रू भे.)
चेर—सं०पु०—सेवक, दास, नौकर (अ.मा.)
चेराई—सं०स्त्री०—सेवा, दासता, नौकरी।
चेरियो—सं०पु०—चरखे में तकुआ लगाने का उपकरण।
चेरी—सं०स्त्री० [सं० चेटक, प्रा० चेडअ] १ दासी, सेविका।
उ०—चंदण घिस लाई वांसै प्रीतड़ी लगाई, वांनै लाज ना आई। देखो जी ऊधोजी आखिर चेरी की जाई रे।—मीरां
२ शिष्या, चेली।
चेरो—सं०पु० [सं० चेटक, प्रा० चेडअ] १ दास, सेवक. २ शिष्य। (स्त्री० चेरी)
चेळ—सं०पु०—१ कपड़ा, वस्त्र।
चेल—देखो 'चेलो' (रू.भे.) उ०—थित दाहन मेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की।—ऊ.का.
चेलक, चेलकड़ो—सं०पु० (स्त्री० चेलकी) १ बच्चा। उ०—वट वाटै

घाट ओघटे रणवन, जळ थळ महियळ अजर जरै। चेलक चाड आप रायां रण, करणी सदा सहाय करै।—बां.दा.

२ भक्त. ३ शिष्य, अनुगामी।

चेलकाई–सं०स्त्री०—१ शिष्यत्व. २ वचपन।

चेलकी–सं०स्त्री०—१ दासी। उ०—हस्यारथ करे चेलकी, भोज घणां देसी तेड़ वहोड़। कहइ समझाई कर पेलवी, रोजा कोसवी तु मांगि चितौड़।—वी.दे. २ शिष्या।

चेळकौ—१ देखो 'चेळौ' (रू.भे.) २ तराजू का पलड़ा।

चेलर–सं०पु०—सूअर का बच्चा।

रू०भे०—चील्हर।

चेला–सं०स्त्री०—एक छोटी जाति विशेष जिसके व्यक्ति प्रायः मजदूरी करते हैं। ये घोटेवरदार भी कहलाते हैं।

चेलिकाई—देखो 'चेलकाई' (रू.भे.)

चेलिय—देखो 'चेली' (रू.भे.) उ०—थित दाहन मेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की।—ऊ.का.

चेली–सं०स्त्री०—दासी। उ०—मीरां कूं प्रभु दरसण दीज्यौ, जनम जनम की चेली।—मीरां २ शिष्या।

चेळौ–सं०पु०—१ तराजू का पलड़ा, तुला-पाट। उ०—१ वणक कहै आवै वसत, कै कूड़ै कै गूण। चेळै पड़ै सो होय सुध, सैंभर पड़ै सो लूण।—बां.दा.

उ०—२ लाखां लोकां रो लाखां भर लीनौ। दुरलभ वेळा में चेळां भरि दीनौ।—ऊ.का.

४ पक्ष, पलड़ा। उ०—१ चेळा वंस छतीस, गुर घर गहलोतां तणौ। राजा रांणा रीस, कहतां मत कोई करौ।—सूरायच टापरचौ

उ०—२ चुंडाहरा तुहारा चेळा, वंस छत्तीस वधंतै वांन। सूरां गुर गाढ़ां गुर सवदी, महाराजा रायां गुर मांन।—बांकीदास

चेलौ–सं०पु० [स० चेटक, प्रा० चेडअ] (स्त्री० चेली)

१ शिष्य। उ०—पछै आडा दिन देय आगो नीसरियौ, अतीत रो वेस वणाइयौ, च्यार चेला सागै रहै, वहता हालै।—महाराज जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता।

क्रि०प्र०—करणौ, वणाणौ, मूंडणौ, होणौ।

मुहा०—चेलौ मूंडणौ—शिष्य बनाना, अनुयायी बनाना।

२ सूअर का वच्चा. ३ दास, सेवक। उ०—असि चढि विसवनि रमै अकेलो, चौकीदास खवास न चेलो।—सू.प्र.

यौ०—चेलाचांटी।

चेल्हर–सं०पु०—सूअर का बच्चा।

रू०भे०—चील्हर।

चेसटा–सं०पु० [सं० चेष्टा] १ कायिक व्यापार जो मन के भावों को प्रकट करते हों. २ नायक या नायिका का वह प्रयत्न या उपाय जो उनके पारस्परिक प्रेम को प्रकट करता हो. ३ प्रयत्न, कोशिश, यत्न। उ०—पंच सगळां नै आपरै रंग में रंगण री चेसटा करता र'या।—वरसगांठ

४ इच्छा, कामना।

चेस्टक–सं०पु० [सं० चेष्टक] वह जो चेष्टा करे, चेष्टा करने वाला व्यक्ति।

चेस्टा—देखो 'चेसटा' (रू.भे.)

चेस्टावळ–सं० पु० [सं० चेष्टावल] ग्रहों का किसी विशेष गति या स्थिति के अनुसार अधिक वलवान होना (फलित ज्योतिष)

चेह–सं०स्त्री० [सं० चिता] १ चिता। उ०—रुत घ्रति चंदण कपूर सझे समसांण सझाई। विविध अमित सुचि वसत चेहग्नि निमति चलाई।—रा.रू.

रू०भे०—चह।

२ श्मशान, मरघट।

चेहरणौ, चेहरवौ—देखो 'चै'रणौ' (रू.भे.) उ०—१ वीरां तू वेहलेह कमध अमां कज मरण कर, सारो जुग चेहरहे, सगता में नांहीं साको। —पा.प्र.

उ०—२ भूलौ नहीं अंजण माया भ्रम, जिण कीरत हित जांणी। सोदागर चेहरिया सांमं, मोटै रा मालांणी।—नैणसी

चेहरौ—देखो 'चै'रौ' (रू.भे.)

चेहलुम–सं०पु० [फा०] मोहर्रम के चालीसवें दिन होने वाली मुसलमानों की एक रस्म।

चैंकणौ, चैंकवौ–क्रि०अ०—चौंकना, चमकना। उ०—वाभी देवर नींद वस, वोलीजै न उताळ। चगतां घावां चैंक सी, जै सुणसी वंवाळ।

चैंकणहार, हारौ (हारी), चैंकणियौ—वि०।

चैंकाणौ, चैंकावौ, चैंकावणौ, चैंकाववौ—क्रि०स०।

चैंकिअोड़ौ, चैंकियोड़ौ, चैंकयोड़ौ—भू०का०कृ०।

चैंकीजणौ, चैंकीजवौ—भाव वा०।

चैंकाणौ, चैंकावौ–क्रि०स०—चौंकाना।

चैंकायोड़ौ–भू०का०कृ०—चौंकाया हुआ। (स्त्री० चैंकायोड़ी)

चैंकावणौ, चैंकाववौ—देखो 'चैंकाणौ' (रू.भे.)

चैंकावियोड़ौ—देखो 'चैंकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चैंकावियोड़ी)

चैंकियोड़ौ—भू०का०कृ०—चौंका हुआ। (स्त्री० चैंकियोड़ी)

चैंचाट—देखो 'चहचाहट' (रू.भे.)

उ०—घणी चिड़कलियां री चैंचाट, रूंख री डाळां रौ संसार। —सोझ

चैंचैं–सं०स्त्री० [अनु०] १ चिड़ियों का कलरव. २ व्यर्थ की वकझक, वकवाद।

चैंट, चैंठ–सं०स्त्री०—१ प्रयत्न, लगन. २ चिंता. ३ पेट के भीतर होने वाला एक विकार विशेष. ४ चिपकने का भाव।

मुहा०—चैंठ करणी—चिपक जाना। रुकने के लिये अनुरोध करना।

५ वोये हुए अनाज का भूमि की परत पकड़ कर अंकुरित होने का भाव।

मुहा०—चैंठ करणी—खेतों में अनाज का पुख्तता से अंकुरित होना।

चैंठणो, चैंठवौ—क्रि०अ०—१ चिपकना। उ०—झट नेड़ा वण जाय, मतलब हुवै जद मांनवी। इसड़ा चैंठै आय, चींटी गुड़ ज्यूं चकरिया।
—मोहनराज साह

२ (कुत्ते या किसी जन्तु आदि का) काटना, दांत लगाना या डंक मारना।

मुहा०—चैंटणो—क्रोध में वकभक करना। नाराज होना।

३ वोये हुए अनाज का भूमि की परत में चिपकर पुष्टता से अंकुरित होना।

चैंठणहार, हारौ (हारी), चैंठणियौ—वि०।

चैंठवाड़णो, चैंठवाड़वौ, चैंठवाणो, चैंठवावौ, चैंठवावणो; चैंठवाववौ
—प्रे०रू०।

चैंठाड़णो, चैंठाड़वौ, चैंठाणो, चैंठावौ, चैंठावणो, चैंठाववौ—स०रू०।

चैंठिओड़ौ, चैंठियोड़ौ, चैंठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चैंठीजणो, चैंठीजवौ—भाव वा०।

चैंठाणो, चैंठावौ—क्रि०स०—१ चिपकाना, सटाना. २ (कुत्ते आदि का) दांत लगाना. ३ वोये हुए अनाज को पुष्टता से अंकुरित करना।

चैंठायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चिपकाया हुआ, सटाया हुआ. २ दाँत लगाया हुआ (कुत्ते या जंतु आदि का) ३ पुष्टता से अंकुरित किया हुआ। (स्त्री० चैंठायोड़ी)

चैंठावणो, चैंठाववौ—देखो 'चैंठाणो' (रू.भे.)

चैंठावियोड़ौ—देखो 'चैंठायोड़ौ' (स्त्री० चैंठावियोड़ी)

चैंठियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चिपका हुआ, सटा हुआ. २ (कुत्ते या किसी जंतु आदि का) दांत लगा हुआ. ३ पुष्टता से अंकुरित। (अनाज) (स्त्री० चैंठियोड़ी)

चै—अव्य०—संवंधसूचक अव्यय 'के'। उ०—१ मन. म्रिग चै कारणि मदन ची वागुरि जांणि विसतरण।—वेलि.

उ०—२ देवाधिदेव चै लाधै दूवै, वाचण लागो व्राहमण।—वेलि.

सं०पु०—१ दूत. २ चोर. ३ युद्ध (एका.)

वि०—१ प्रेरक. २ दुष्ट (एका.)

चैंड़ौ—सं०पु०—राठोड़ वंश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

चैडौ—सं०पु० [सं०चेटक] १ नोकर, सेवक, दास (अ.मा.) २ घूंघट।

चैत—सं०पु० [सं० चैत्र] फाल्गुन के वाद और वैशाख के पहले पड़ने वाला महिना जिसकी पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र को पड़ती है।
रू०भे०—चेत।

चैतन्य—सं०पु० [सं०] १ चित्तस्वरूप, आत्मा. २ ज्ञान, वुद्धि. ३ परमेश्वर. ४ वंगाल में उत्पन्न एक प्रसिद्ध धर्म-प्रचारक महात्मा।

वि०—१ सचेत, सावधान. २ चेतन, जाग्रत।

चैतन्य भैरवी—सं०स्त्री०यौ०—एक भैरवी का नाम (तांत्रिक)

चैतरी—वि० [सं० चैत्र रा०प्र०ई] चैत्र मास में होने वाला, चैत्र मास से संवंधित।

सं०पु०— चैत्र मास में कृष्ण पक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की एकादशी तक मारवाड़ राज्य में वालोतरा के पास तिलवाड़ा ग्राम में होने वाला एक प्रकार का पशु-मेला।

चैतवाड़ौ—सं०पु०—चैत्र मास की मौसम, वसंत ऋतु।

चैती—सं०स्त्री०—चैत्र मास में काटी जाने वाली फसल।

वि०—चैत्र मास का, चैत्र संवंधी।

चैत्य—सं०पु० [सं०] १ मंदिर. २ यज्ञशाला. ३ चिता।

चैत्यपरवाड़ी—सं०स्त्री०यौ० [सं० चैत्यपरिपाटी] अनुक्रम से मन्दिरों की यात्रा (जैन)

चैत्र, चैत्रक—देखो 'चैत' (रू.भे.)

चैत्रगौड़ी—सं०स्त्री० [सं०] औडव जाति की एक रागिनी (संगीत)

चैत्ररथ—सं०पु० [सं०] १ कुवेर का वगीचा. २ एक प्राचीन मुनि (महाभारत)

चैत्रावळि, चैत्रावळी—सं०स्त्री—१ चैत्र मास की पूर्णिमा. २ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी।

चैत्रि, चैत्री—देखो 'चैतरी' (रू.भे.)

चैन—सं०पु०—१ सुख, आराम, आनंद, शांति। उ०—जावूं किणनै जाय, दुनियां में दीखै नहीं। विन सुमरयां व्रजराज, चैन मिळै नहि चकरिया।—मोहनराज साह

मुहा०—१ चैन उडणो, चैन उडाणो—आनन्द में रहना। २ चैन पड़णो—शांति मिलना, सुख मिलना. ३ चैन सूं कटणो—सुखपूर्वक समय वीतना।

२ देखो 'चहन' (रू.भे.) उ०—थारा चैन इसा मोहि दीसै, म्हारा पिया ने थूं चोरसी।—लो.गी.

चैनराव—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चैनसुख—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

चैनाळ—वि०स्त्री०—कुलटा, दुराचारिनी।

चैनिया—सं०स्त्री०—पड़िहार वंश की एक शाखा।

चैवचौ—देखो 'चहवचौ' (रू.भे.) उ०—वाभीसा आप खरच गिणता हा वो म्हारो पती सीलै छै अरथात हाथी रै चैवचै (होदै) पर तरवार वाहै छै।—वी.स.टी

चैवरौ—सं०पु०— सूअर का छोटा वच्चा।

उ०—पाठड़ा नवीन चैवरा परा आज भालां रौ भार पड़तां आकुळ दुःखी है।—वी.स.टी.

चैवास—अव्य० [फा० शावाश] एक प्रशंसासूचक शव्द खुश रहो, वाहवाह।

चैवासी—सं०स्त्री० [फा० शावाशी] वाहवाही।

क्रि०प्र०—देणी, मिळणी।

चैल—सं०पु० [सं०] १ कपड़ा, वस्त्र. २ पोशाक।

चैर—सं०पु०—गहरे रंग का एक मरुस्थली पौधा जो सीधी शलाकों के रूप में ऊपर वढ़ता है। यह रस्सा वँटने व छाजन के उपयोग में लिया जाता है। राजस्थान में इसे खींप भी कहते हैं।

चैं'रणो, चैं'रवौ—क्रि०स०—आलोचना करना, निन्दा करना।

चैंराड़णौ, चैंराड़बौ—क्रि०स०—निन्दा कराना, आलोचना कराना ।
उ०—म्हारो सुजस अमर करणावत, वासुर जग बहु हुवै वितीत । वाघारियो पाघड़ो विढंतै, चैंराड़ियौ नहीं वडचीत ।—द.दा.

चैंराड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—निन्दा कराया हुआ । (स्त्री० चैंराड़ियोड़ी)

चैंराणौ, चैंराबौ—देखो 'चैंराड़णौ' (रू.भे.)

चैंरायोड़ौ—देखो 'चैंराड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चैंरायोड़ी)

चैंरावणौ, चैंराववौ—देखो 'चैंराड़णौ' (रू.भे.)

चैंरावियोड़ौ—देखो 'चैंराड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चैंरावियोड़ी)

चैंरौ–सं०पु० [फा० चेहरा] १ शरीर में गर्दन के ऊपर का वह सम्मुख का भाग जिसमें मुंह, नाक, कान, आंख आदि सम्मिलित हैं ।
मुहा०—१ चैंरौ उतरणौ—मुख पर चिंता के लक्षण होना, उदास होना । २ चैंरौ चढणौ—कोप करना, गुस्सा करना । ३ चैंरौ तमतमाणौ—मुख लाल होना, क्रोध या आवेश में आना । ४ चैंरौ फक होणौ—चेहरे का तेज फीका पड़ना, घबरा जाना । ५ चैंरौ फीको पड़णौ—देखो 'चैंरौ फक होणौ' । ६ चैंरौ बिगड़णौ—मुंह उदास होना । ७ चैंरौ लाल होणौ—चेहरे पर खून आना, रौनक आना, मुख लाल होना, क्रोध में आना ।
२ किसी लीला या विनोद आदि में स्वरूप बनाने या स्वांग रचने के लिए चेहरे के ऊपर बांधी जाने वाली किसी धातु, मिट्टी-कुट्टी आदि की बनी किसी देवता, दानव, पशु आदि की आकृति ।
३ एक प्रकार की शिर की हजामत ।
रू०भे०—चेहरौ ।

चैंलक–सं०पु० [सं०] एक प्राचीन वर्णशंकर जाति ।

चैंल-पैंल—देखो 'चहल-पहल' (रू.भे.)

चैलेंज–स०पु० [अं०] ललकार, चुनौती ।

चैंहन–सं०स्त्री० [सं० चिह्न] ध्वजा, पताका (ह.नां.)

चैंहरणौ—देखो 'चैंरणौ' (रू.भे.)

चैंहरौ—देखो चैंरौ' (रू.भे.)

चैंहैन–सं०पु०—१ देखो 'चैन' (रू.भे.)
सं०स्त्री० [सं० चिह्न] २ झंडा, ध्वजा (ह.नां.)

चौंगियौ–सं०पु०—चारपाई या खाट की बुनावट का एक प्रकार जिसमें खाट बुनने की मूंज आदि की रस्सी के चार-चार ताने या बाने डाले जाते हैं ।

चोंच, चोंचजड़ली—१ देखो 'चांच' (रू.भे.)
उ०—उडि जावो री म्हारी सोन चिड़ी । काहे सूं मंढाऊं थारी आंख पांखड़ी, काहे सूं मंढाऊ थारी चोंचजड़ी ।—मीरां
मुहा०—चोंच निरोणी—ग्रास लेना, थोड़ा सा भोजन करना ।
२ गाड़ी के अगाड़ी का नुकीला भाग ।

चोंचदार–वि०यौ०—चोंच वाला, जिसके चोंच लगी हो ।
सं०पु०—सिर पर बांधी जाने वाली पगड़ी का बांधने का एक ढंग विशेष या इस ढंग से बांधी जाने वाली (पगड़ी) ।
रू०भे०—चांचदार ।

चोंटियौ—देखो 'चूंटियौ' (रू.भे.)

चोंतरी–सं०स्त्री०—देखो 'चोंतरौ' (अल्पा. रू.भे.)

चोंतरौ–सं०पु०—चबूतरा ।

चोंदौ—देखो 'चांदौ' (रू.भे.)

चोंप—देखो 'चूंप' (रू.भे.)

चोंपौ–सं०पु०—गाय बैल भैंस आदि का सम्मिलित समूह जो ग्वाले की देखरेख में जंगल में चरने के लिये बाहर जाता है ।
उ०—फजरां चोंपा घेरिया, धूळी अंबर धूंद । कै घण माट विलोवसी, कै घट जासी घूंद ।—वी.स.

चो–सं०पु०—१ मनुष्य. २ बैल. ३ अश्व, घोड़ा. ४ महावत (एका.)
सं०स्त्री०—५ गौ, गाय. ६ चतुरंगिनी सेना (एकां.)
अव्य०—षष्ठी विभक्ति अथवा संबंधकारक का चिन्ह 'का' ।
उ०—हेली हूं हेर न सकी, थिर जादू की थाय । चिरै बाढ़ चंदहास चो, चंड अर-उर चिर जाय ।—रेवतसिंह भाटी

चोग्रौ–सं०पु० —एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ विशेष । उ०—फूलां रा चोसर पेहरीग्रा थकां अगरचै मरगचै, केसरिऐ कचमैलै वागै कीऐं घणै चोग्र अंतर फुलेल गळा मांहि भीनां थकां ।—रा.सा.सं.
रू०भे०—चोवौ ।

चोइग्रौ, चोइज्जौ–वि० [सं० चोदितः] प्रेरित (जैन)

चोकड़ी—देखो 'चौकड़ी' (रू.भे.) उ०—कुसळसिंह रै हाथ रै गुह रै लागी, सूरजमल रै माथै तरवारियां री चोकड़ी पड़ी सो ओ ही सरदार ढळ पड़ियौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

चोकड़ौ— देखो 'चौकड़ौ' (रू.भे.)

चोकौ—देखो १ 'चोकौ' । २ 'चोखौ' (रू.भे.)

चोख–सं०स्त्री०—१ फुरती, तेजी. २ उमंग, जोश । उ०—चांपावत रांम हरी धरी चोख । समोसर नाहर खांन सरोख ।—रा.रू.
३ शौक । उ०—१ दोनूं ही घणी ही चोख सूं जीम्है छै, हंसै छै, वातां करै छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ फकीर रै मन में तौ वात तीसूं वैठ गयौ सो सतावौ सूं जीम लियौ ओर भीतर तौ परूसगारौ हुवै, होळै होळै चोख सूं जीमै ।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात

चोखउ—देखो 'चोखौ' (रू.भे.)

चोखतीख—देखो 'चौकतीख' (रू.भे.)

चोखळौ—देखो 'चोखळौ' (रू.भे.) उ०—ठाकुरसिंह री धाक पड़ै चोखळै मांहि । रजपूतां वळ राख कोई वोलै नांहि ।
—ठाकुर जैतसी री वारता

चोखा–सं०पु० (बहु०व०)—चावल । उ०—तठा उपरायंत सीरो पूड़ी वर्ण छै, सोहितै सारू देवजीभी जोइजै छै । विरंजै सारू चोखा मंगायजै छै ।—रा.सा.सं.

चोखाई–सं०स्त्री०—चोखापन, अच्छाई ।

चोखौ–वि०[सं० चोक्ष, चोक्षम्] (स्त्री० चोखी) १ अच्छा, बढ़िया,

उत्तम। उ०—महमा वढ़ि मयंक कुळ मंडण, पोह अनकारां प्रभत पढ़ी। कटकां तणी दुयण रै कोटे, चोखी रज कांगरै चढ़ी।—अज्ञात २ सब में चतुर या श्रेष्ठ. ३ सच्चा, ईमानदार।

यौ०—चोखो-वींठो।

चोखी-वींठी-वि०यौ०—भला-बुरा, अच्छा-बुरा। उ०—पोखै प्रांणां नै नीसरिग्या परचा, चोखै-वींठै री वीसरिग्या चरचा।—ऊ.का.

चोगट, चोगड़दा, चोगड्डा—देखो 'चौगड़द' (रू.भे.)

उ०—मुणतांई जोधपुर चोगड़द तूटै। कवांन के चल्लेतें सायक से छूटै।—रा.रू.

चोगर-सं०पु०—उल्लू की सी आंखों वाला घोड़ा (अशुभ)

चोगांन—देखो 'चौगांन' (रू.भे.) उ०—सिपाहां समेत हाडै नरेस हालू आपरा रोकिया दुरग थी वारै कढ़ि चोगांन में सज्ज होई धारा तीरथ में मरण री ही मनोरथ गहियो।—वं.भा.

चोगुड़दाई-क्रि०वि०—चारों ओर, चारों तरफ।

चोघड़ियौ—देखो 'चौघड़ियौ' (रू.भे.) उ०—जयसळमेर जाय डेरा किया, उठे रावळजी री टीको आइयो, चोघड़िये केसरिया कर असवार हुवा।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

चोघणौ, चोघवौ-क्रि०स०—ढूंढना, तलाश करना, खोजना।

उ०—जांववंती री सहेली पिण पाटण मांहे देखती चोघती फिरै छै। —जगदेव पँवार री वात

चोघणहार, हारौ (हारी), चोघणियौ—वि०।

चोघाणौ, चोघावौ, चोघावणौ, चोघाववौ—क्रि०स०।

चोघिओड़ो, चोघियोड़ौ, चोघ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चोघीजणौ, चोघीजवौ—कर्म वा०।

चोघरौ-सं०पु०—तिवारी के अंदर का मकान (देखो 'तिवारी' शेखावाटी)

चोघाणौ, चोघावौ-क्रि०स०—ढूंढ़ाना, तलाश कराना, पता लगाना।

चोघायोड़ौ-भू०का०कृ०—ढूंढाया हुआ, तलाश कराया हुआ। (स्त्री० चोघायोड़ी)

चोघावणौ, चोघाववौ—देखो 'चोवाणौ' (रू.भे.)

चोघावणहार, हारौ (हारी), चोघावणियौ—वि०।

चोघाविओड़ो, चोघावियोड़ो, चोघाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चोघावीजणौ, चोघावीजवौ—कर्म वा०।

चोघावियोड़ौ—देखो 'चोघायोड़ो' (रू भे.) (स्त्री० चोघावियोड़ी)

चोघियोड़ौ-भू०का०कृ०—ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ। (स्त्री० चोघियोड़ी)

चोड़े-वाड़े—देखो 'चौड़ै-धाड़ै' (रू.भे.)

चोच-सं०स्त्री० [सं०] १ चर्म, चमड़ी, खाल. २ छाल, वल्कल. ३ छल, कपट, धूर्तता. ४ आडम्बर।

चोचळा-सं०पु० [अनु०] जवानी की उमंग में प्रकट किये जाने वाले कायिक हावभाव, नाज, नखरे।

चोचळी, चोचली-वि०स्त्री०—नखरेबाज, नाज-नखरे दिखाने वाली।

चोचा-सं०पु०(बहु०व०)—१ लड़ाई, टंटा, झगड़ा, कलह. २ अपकीर्ति, निंदा।

चोचाकारौ-वि०—लड़ाई करने वाला, कलहप्रिय. २ निंदा करने वाला, चुगली करने वाला।

चोचाळौ-वि०पु० (स्त्री० चोचाळी) कलह करने वाला, झगड़ा करने वाला। उ०—वसे तूं रोमाळी कवन थळ खाली तुज विनां। लखां से चोचाळी कळ कि वळसाळी अज कितां।—ऊ.का.

चोची-वि०—अल्प, थोड़ी, साधारण।

कहा०—चोची खेती घर ना धणिये खाय—थोड़े स्थान पर या छोटे पैमाने पर की गई खेती घर के स्वामी को खा जाती है। थोड़े पैमाने पर किये गये कार्य में कोई विशेष लाभ नहीं होता।

चोचौ-सं०पु०—१ झगड़ा, कलह. २ उपद्रव. ३ प्रलाप, बकवाद. ४ आडम्बर, पाखंड, ढोंग। उ०—वाणियै रै बेटै नै बेटो कहै नहीं। चोचो करै तौ चाचर कहै, का कोई बीजो ठहरावै। —पलक दरियाव री वात

चोज-सं०पु०—१ मनोविनोद के लिये कही हुई उक्ति विशेष, मजाक, हँसी, ठट्टा, दिल्लगी. २ उमंग, उत्साह। उ०—इण भांत रा रजपूतां नै अमल सिरदार आपरा हाथां करावै छै। घणै चोज सूं मन लियां मनहारां कीजै छै।—रा.सा.सं.

३ साहस. ४ कपट, छल, धोखा. ५ चतुराई। उ०—करस्यां वात कबूल भली सू भासण सुणस्यां। गुण री है नहिं गरज चोज कर औगुण चुणस्यां।—ऊ.का.

६ रसास्वादन। उ०—१ मुनहारां हुय रही छै। घणी फीन सताई चोज लियां अरोगजे छै।—रा.सा.स.

उ०—२ सो आय अरोगणै बैठा, सारो साथ घणै चोज सूं जीम रहियो छै, खुस छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

७ आनन्द, मौज। उ०—तठै गुल कोयल री छिब लीवी इसी चोज ऊपर हास्य इणनूं आयो।—र. हमीर

८ स्थान, जगह? उ०—डूम न जांणे देव जस, सूम न जांणे मोज। मुगळ न जांणे गउ दया, चुगल न जांणे चोज।—वां.दा.

सं०स्त्री०—९ आभा, कांति। उ०—पीछोला की पेखवौ, मांनसरोवर मोज। पांणी भरै छै पदमणी, चंदवदनी मुख चोज। —बगसीरांम प्रोहित री वात

चोजाळौ, चोजीलौ-वि० (स्त्री० चोजाळी, चोजीली)—१ हँसी-मजाक या दिल्लगी करने वाला. २ गुप्त बात जानने वाला, भेद जानने वाला. ३ बातचीत में निपुण, वाक-पटु।

चोजौ-सं०पु०—धोखा, छल, कपट। उ०—कुणनै बेटो कहै छै? इसो चोजो करै छै।—पलक दरियाव री वात

चोट-सं०स्त्री०—१ एक वस्तु की किसी दूसरी वस्तु पर लगने वाली जोर की टक्कर, आघात, प्रहार। उ०—लगाऊं सुरां वायकां चोट लागै। जती वोलियो क्रोध पावक जागै।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—देणी, पड़णी, पहुँचाणी, मारणी, मेलणी, लगणी, लगाणी, लागणी, सै'णी।

मुहा०—चोट झेलणी—आघात सहन करना।

२ आघात या प्रहार का प्रभाव, जख्म, घाव।

क्रि०प्र०—आणी, लागणी।

३ किसी को मारने के लिये हथियार आदि चलाने की क्रिया, वार, आक्रमण।

मुहा०—चोट खाली जाणी—वार खाली जाना, आक्रमण व्यर्थ जाना।

४ मानसिक व्यथा, दुःख, शोक, संताप, हृदय पर लगने वाला आघात।

५ किसी को क्षति पहुँचाने या किसी का अनिष्ट करने के लिये चली हुई चाल. ६ व्यंग्यपूर्ण उक्ति, ताना. ७ विश्वासघात, धोखा। ८ छेड़छाड़। उ०—झोटां ज्यूं साधू झपट, जोटां दे जुग टाळ। चेलो सूं चोटां करै, रोटां हित रुगटाळ।—ऊ.का.

चोटड़ियाळ, चोटड़ियाळी–वि०—जिसके चोटी हो।

सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की भांग विशेष (रा.सा.सं.) २ एक प्रकार का तारा. ३ एक प्रकार का पक्षी।

उ०—पांणी नाडा भरनै रह्या छै। चोटड़ियाळ डहकनै रही छै।

—रा.सा.सं.

रू०भे०—चोटिआळ, चोटीआळी।

चोटलियौ–सं०पु०—देखो 'चोटी' (अल्पा. रू.भे.) उ०—फाटा घावळिया घाघरिया फाटा, फरके चोटलिया देता फरराटा।

—ऊ.का.

चोटियाळ–सं०पु०—१ प्रहास गीत के दो पदों के बाद १० मात्रायें रख कर तुकान्त मिलाया जाने वाला गीत विशेष।

२ देखो 'चोटियाळी' (रू.भे.)

चोटियाळी—देखो 'चोटड़ियाळ' (रू.भे.) उ०—चोटियाळी कूदै चौसठि चाचरि, घ्रू ढ़ळियै ऊकसै धड़। अनंत अनै सिसुपाळ औझड़ै, झड़ मातौ मांडियौ झड़।—वेलि.

चोटियौ–सं०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसमें जांगड़ा गीत (जिसके प्रथम व तृतीय पद में १६ मात्रायें और द्वितीय व चतुर्थ पद में १२ मात्रा तथा प्रथम द्वाले के प्रथम पद में १८ मात्रायें होती हैं) का द्वाला जोड़ कर फिर एक पांचवां चरण होता है, इसमें १६ मात्रायें अंत में दो गुरु सहित होती हैं। इस प्रकार से जहां द्वाले की रचना होती है वहां चोटिया गीत होता है (र.रू.)

२ राजस्थानी साहित्य में दोहे का एक भेद जिसमें दोहे के पूर्वार्द्ध पर १२ मात्रा अधिक हो और उत्तरार्द्ध में १० मात्रा अधिक हो। ३ छोटा रस्सा. ४ एक प्रकार का घोड़ा विशेष. ५ घास के विस्तृत मैदानों में उसका विभाजन करने के लिये खड़ी घास के कुछ तृणों को शामिल लेकर उसमें गाँठ लगा कर बनाया हुआ संकेत विशेष। ६ साफ किये हुए आक के महीन रेशों को कातने के निमित्त चोटी के आकार की बनाई हुई पूनी. ७ शिखर वाली ढेरी।

उ०—नापै कही, जी दीवांण सलांमत, मुरट ऊगै छै, पछै पाकै जद कांटा लागै, पछै खारी रै लकड़ी बांध एक हाथ झालै पछै लकड़ी एक चीर झाटकणी करै, तेसूं कांटा झाड़ के चोटिया करै, भेळा करै।

—नांपा सांखला री वारता

८ चोटी के आकार का बंधा घास का पुआल।

चोटी–सं०स्त्री० [सं० चूड] १ खोपड़ी के पीछे थोड़े से सपटे भाग में कुछ बड़े वे बाल जिन्हें हिन्दू रखना आवश्यक व पवित्र समझते हैं, शिखा।

मुहा०—१ एडी री चोटी उतरणी—अथक परिश्रम करना, पसीना बहाना। २ चोटी दबणी—वश में होना, अधिकार में होना। ३ चोटी पकड़णी—काबू में करना, अधिकार में करना, किसी बात का मूल पहिचानना। ४ चोटी री पसीनौ एडी तक आणौ—कठिन मेहनत करना। ५ चोटी हाथ में आणी—काबू में आना, किसी प्रकार के दबाव में आना, वश में होना।

२ स्त्रियों के गुंथे हुए सिर के बाल, वेणी।

क्रि०प्र०—करणी, गूंथणी, बांधणी।

३ किन्ही-किन्ही पक्षियों के शिर के वे पर जो कुछ ऊपर की ओर उठे रहते हैं. ४ सब से ऊपर का ऊंचा भाग, शिखर।

मुहा० —चोटी चढणी—ऊपर उठना, उन्नति को प्राप्त होना, सर्व श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करना. ५ पुत्र जन्म के इक्कीसवें दिन या जब कभी शुभ मुहूर्त्त हो जच्चा को स्नान करा कर नये वस्त्र पहिनाने, घट-पूजन कराने तथा उबाले हुए गेहूं व गुड़ बाँटने की पुष्करणा ब्राह्मणों की एक रस्म। इस दिन स्त्री की सुगंधित द्रव्यों से चोटी गूंथी जाती है तथा पिता एवं उसके मित्र बच्चे के हाथ में रुपये देते हैं।

चोटीआळ, चोटीआळी—देखो 'चोटड़िआळ' (रू.भे.)

उ०—पांणी एक नाळ भरिया। चोटीआळी डहकिनै रहीआ छै।

—रा.सा.सं.

चोटीआळौ–वि०—जिसके चोटी हो, चोटी वाला। (स्त्री० चोटीआळी)

सं०पु०—१ हिन्दू। उ०—मरते मोडे मारिया, चोटीआळा चार।—अज्ञात

२ दोहा का एक भेद जिसके अनुसार द्वितीय और चतुर्थ चरण में १६ मात्रा हो तथा प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ चरण की तुकबंदी हो।

चोटीकट–वि०—जिसकी चोटी कटी हुई हो।

वि०वि०—देखो 'चोटीवडियौ' उ०—म्हैं किव 'किसन' हुलासे चित में, आस लियौ अमंदौ। वर-सी राज रै चोटीकट वंदौ।

—र.ज.प्र.

चोटीबंध–सं०पु०—स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष।

चोटीवडियौ–वि०—जिसकी चोटी कटी हुई हो।

वि०वि०—जागीर प्रथा के समय जागीरदार की प्रजा का वह व्यक्ति जिसे जागीरदार ने विशेष सहूलियत देकर अपनी जागीर में आबाद

किया हो। ऐसे व्यक्ति को शादी व मृत्यु के अवसर पर कुछ भेंट-पुरस्कार आदि प्राप्त हो जाता था।

सं०पु०—मुसलमान, इस्लाम मत का अनुयायी।

चोटीयाळ, चोटीयाळो—देखो 'चोटीआळो' (रू.भे.)

चोटीवाळो—देखो 'चोटीआळो' (रू.भे.) उ०—ग्रीघाळ गूदाळ कजे गहर्के, चहर्के चोटीयाळ सीयाळ चर्के।—गो.रू.

सं०पु०—जटा वाला (नारियल) उ०—चढ़ै नै चढ़ावै थारै चूरमो, चोटीवाळा नारेळ, सेवगां की ओ बाबा भली करो।—लो.गी.

चोटो—सं०पु०—मोटी व लम्बी चोटी।

चो'ट्टो—सं०पु०—वह जो चोरी करता हो, चोर।

चोडंडी—वि०—जिसके चारों ओर डंडा लगा हुआ हो।

चोडाळ—सं०पु०—एक प्रकार की सवारी या वाहन।

उ०—सुखासण पालखी चोडाळ रथ पाइक वणीनै रहिआ छै।—रा.सा.सं.

चोडी—सं०स्त्री०—कुयें में पानी एकत्र करने के उद्देश्य से एक ओर जहां जल खींचने का पात्र डूबता हो वहां कुछ गहरा खुदा हुआ गड्ढा।

चोडोळ, चोडोळो—सं०पु० [सं० चतुर्दोल] हाथी, गज (डि.नां.मा.)

चोढरो—वि०—चढ़ने वाला, सवारी करने वाला।

चोढ़ाड़णो—देखो 'चढ़ाणो' (रू.भे.) उ०—पंगी ऊवारकां चंगी चोढाड़ै जोवांण पांणी, मारकां पोढ़ाड़ै भड़ां पौढ़ियो समीच।—महेसदास कूंपावत री गीत

चोतरफ—देखो 'चौतरफ' (रू.भे.) उ०—महाराज गजसिंहजी कही अठै ही खड़ा रहो, चोतरफ तोपखांनै री जंजीरबंदी करो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

चोताळो—देखो 'चौताळो' (रू.भे.) उ०—पाखती चोताळै रा सैंधा लोग उणनै माळ कंय नै बतळावै।—वांणी

चोदक, चोदक्कड़—सं०पु०—१ स्त्री-प्रसंग या संभोग के लिये उकसाने वाला. २ बहुत अधिक स्त्री प्रसंग करने वाला, अत्यन्त कामी व्यक्ति (बाजारू)

चोदणो, चोदबो—क्रि०स०—स्त्री प्रसंग करना, संभोग करना।

चोदणहार, हारो, चोदणियो—वि०।

चोदीजणो, चोदीजबो—कर्म वा०।

चोदन—सं०पु०—स्त्री-प्रसंग, मैथुन, संभोग।

चोदस—देखो 'चौदस' (रू.भे.) उ०—जोगणी चोसठ नूं उमादे भख देती तरै चोदस रै दिन इतरी वारता उमादे करसी, थानूं संपड़ावसी।—पंचदंडी री वारता

चोदाई—सं०स्त्री०—१ स्त्री-प्रसंग, संभोग, मैथुन. २ मैथुन कराने के बदले मिलने वाला पारिश्रमिक।

चोदाकड़—देखो 'चोदक्कड़' (रू.भे.)

चोदाणो—देखो 'चुदाणो' (रू.भे.)

चोदायोड़ो—देखो 'चुदायोड़ो' (रू.भे.)

चोदास—सं०स्त्री०—स्त्री की पुरुष प्रसंग की अथवा पुरुष को स्त्री प्रसंग की प्रबल कामना, उत्कट कामेच्छा।

चोदासो—वि०—१ जिसे संभोग की प्रबल इच्छा हो. २ कामुक, कामी।

चोदियोड़ो—भू०का०कृ०—जिसके साथ संभोग किया जा चुका हो।

चोदू—वि०—डरपोक, भीरू, कायर, निकम्मा।

चोद्दग—वि०—चौदह (जैन)

चोद्दसम—देखो 'चवदै' (रू.भे.) (जैन)

चोद्दसरयणाहिवई—सं०पु० [सं० चतुर्दशरत्नाधिपति] चौदह रत्नों का स्वामी (जैन)

चोधार, चोधारण, चोधारो—देखो 'चौधार' (रू.भे.)

उ०—चोधारां लाल लालचख चौरंग, वयंडां भड़ां ओरवै वाज।—चांवंडदांन

चोप—सं०स्त्री०—१ सेवा। उ०—चोप अरज हरि चरण चोप फिर रे परदछण।—र.ज.प्र.

२ प्रार्थना, विनती। उ०—चोप करे कर जोड़ जंनम सरजंत आगळ जण।—र.ज.प्र.

३ ध्यान। उ०—चोप करे चित बीच नांम सिर अगर सु नरहर।—र.ज.प्र.

४ लगन। उ०—चंनण घस जुत चोप कमळ त्यूं तिलक चोप कर।—र.ज.प्र.

५ भक्ति. ६ श्रद्धा। उ०—अत चोप भजन सी-वर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर।—र.ज.प्र.

७ कृपा, दया, अनुकम्पा। उ०—कवि चहै चोप रघुराज को, कर-कर चोप स भजन कर।—र.ज.प्र.

क्रि०वि०—चारों तरफ।

चोपई—सं०स्त्री०—प्रत्येक चरण में ११ और १३ पर यति सहित २४ मात्रा का एक मात्रिक छंद (पिं.प्र.)

चोपग, चोपगो—देखो 'चौपगो' (रू.भे.)

चोपड़—सं०पु०—घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ। उ०—गोरस चोपड़ एकठा दोय एक दिखाया।—केसोदास गाडण

यौ०—चोपड़-चापड़।

चोपड़णो, चोपड़बो—देखो 'चुपड़णो' (रू.भे.) उ०—१ वांधउं वड़ री छांहड़ी, नीरूं नागर वेल। डांभ संभाळूं करहला, चोपड़ि सूं चंपेल।—ढो.मा.

उ०—२ ताहरां हेकर सो सूंटी पाखती सेक दियो, वळै तेल सेती दियो। राखा चोपड़ि अरवळै बीजी ही वार तिम हीज रातो करि चुवण लागो ताहरां दियो।—द.वि.

चोपड़णहार, हारो (हारी), चोपड़णियो—वि०।

चोपड़ाणो, चोपड़ाबो, चोपड़ावणो, चोपड़ावबो—क्रि०स०।

चोपड़िओड़ो, चोपड़ियोड़ो, चोपड़योड़ो—भू०का०कृ०।

चोपड़ीजणो, चोपड़ीजबो—कर्म वा०।

चोपड़ाणी, चोपड़ावी—देखो 'चुपड़ाणी' (रू.भे.)

चोपड़ाणहार, हारी (हारी), चोपड़ाणियौ—वि० ।

चोपड़ायोड़ी—भू०का०कृ० ।

चोपड़ाईजणौ, चोपड़ाईजवौ—कर्म वा० ।

चोपड़ायोड़ौ—देखो 'चुपड़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चोपड़ायोड़ी)

चोपड़ावणौ, चोपड़ाववौ—देखो 'चुपड़ाणौ' (रू.भे.)

चोपड़ावियोड़ौ—देखो 'चोपड़ायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चोपड़ावियोड़ी)

चोपड़ास-सं०पु०—स्निग्धता, चिकनाई ।

चोपड़ियोड़ौ—देखो 'चुपड़ियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चोपड़ियोड़ी)

चोपड़ौ-सं०पु०—१ तिलहन या ग्वार की फसल का एक रोग विशेष जिसमें पौधे के पत्ते चिकने से हो जाते हैं । कीटाणु विशेष लगने से फसल नष्ट हो जाती है ।

२ देखो 'चौपड़ौ' (रू.भे.)

चोपण-सं०स्त्री०—१ गर्म लोहे को ठीक करने व सुधारने का एक औजार. २ आभूषणों पर खुदाई के काम में कोने दबाने का एक औजार (स्वर्णकार)

चोपदार—देखो 'चोबदार' (रू.भे.) उ०—१ सागै चोपदारां सा'ब भादुरजी खिनाया । भैरूं सिंघजी नै राजगादी पै बैठाया ।—शि.वं.

उ०—२ देखि अंगद वहौ चोपदार अति मांम वचारे । चंद मंद बुद्धि धीर चव असतूति अपारे ।—सू.प्र.

चोपन—देखो 'चौपन' (रू.भे.)

चोपनियौ—देखो 'चौपनियौ' (रू.भे.)

चोपनौ—देखो 'चौपनौ' (रू.भे.)

चोपाड़-सं०स्त्री०—पुरुषों का सम्मिलित होकर बैठने का स्थान, चौपाल (क्षेत्रीय)

चोपायी-सं०स्त्री०—१ चौपाई. २ चारपाई ।

चोपाळौ-सं०पु०—पालकी, शिविका ।

चोप्पड़—देखो 'चोपड़' (रू.भे., जैन)

चोप्पाळ-सं०पु०—सूर्याभदेव का अस्त्रागार (जैन)

चोप्पाळग-सं०पु०—मस्त हाथी (जैन)

चोफाड़णौ, चोफाड़बौ-क्रि०स०—१ काटना, चार भागों में विभाजित करना । उ०—तिण समय अरिसिंघ गदा री आघात दे'र दूजा सिंधुर रौ सीस चोफाड़ी करि पटकियौ ।—वं.भा.

२ नष्ट करना ।

चोफाड़, चोफाड़ा-क्रि०वि०—१ चारों तरफ, चारों ओर ।

चोफुली—देखो 'चौफूली' (रू.भे.)

चोफेर—देखो 'चौफेर' (रू.भे.) उ०—पुरी अवध परवेस सजोड़ा साथियां । चमर करै चोफेर हलै चढ़ हाथियां ।—र.रू.

चोव-सं०स्त्री०—१ चुभने की क्रिया या भाव. २ किसी नुकीले पदार्थ के अकस्मात् नेत्र में चुभने से होने वाला दर्द. ३ कुआ खोदने के कार्य को आरम्भ करने की क्रिया. ४ कुछ छोटे पौधे (विशेष कर मिर्च, प्याज आदि) को एक स्थान से दूसरे स्थान में गाड़ने की क्रिया या गाड़े जाने वाले पौधे. ५ तालाव या कुयें के मध्य में किया हुआ वह गहरा गड्ढा जहां पानी कुछ अधिक मात्रा में एकत्रित रहता है । [फा०] ६ शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा. ७ नगाड़ा या ताशा बजाने का डंडा. ८ सोने या चांदी से मढ़ा डण्डा ।

यौ०—चौबदार ।

चोबचीणी-सं०स्त्री० [फा० चोबचीनी] १ प्रायः चीन और जापान में अधिक होने वाली एक लता की जड़, एक काष्ठौषध. २ हुबास नामक वृक्ष की जड़ जिसका रंग हलका भूरा होता है ।

चोबणौ-सं०पु०—जूते पर किया जाने वाला कसीदा विशेष ।

उ०—लाल चोवणौ मांमा मोचा, लाल कनारी जोड़ी ।

—डूंगजी जवारजी री पड़

चोवणौ, चोवबौ-क्रि०स०—पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाना या गाड़ना ।

चोवणहार, हारौ (हारी), चोवणियौ—वि० ।

चोवाणौ, चोवाबौ, चोवावणौ, चोवाववौ—प्रे०रू० ।

चोविओड़ौ, चोवियोड़ौ, चोव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

चोवीजणौ, चोवीजवौ—कर्म वा० ।

चोवदार-सं०पु०—वह नौकर जिसके पास 'चोव' या 'आसा' रहता है । प्रतिहार ।

वि०वि०—ऐसे नौकर राजा महाराजाओं या किसी रईस के यहां समाचार आदि लाने या ले जाने के लिये रक्खे जाते हैं । ये राजा की सवारी निकलते समय आगे-आगे हाथ में सोने या चांदी के चद्दर से मढ़ा डंडा लेकर चलते हैं ।

पर्याय०—उतसारक, दंडी, द्वारपाळ, प्रतिहार, वेतधर, वैत्री ।

चोवाई-सं०स्त्री०—चोवने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी ।

देखो 'चोवणौ' ।

चोवाई गांठ-सं०स्त्री०यौ० [सं० चतुर्व्याप्तिग्रंथि] टूटी हुई रस्सी का जोड़ विशेष ।

चोवाणौ, चोवाबौ-क्रि०स० ('चौवणौ' क्रि० का प्रे०रू०)—किसी पौधे को उखड़वा कर अन्य जगह पर लगवाना ।

चोवायोड़ौ-भू०का०कृ०—किसी पौधे को उखाड़ कर अन्य जगह पर लगवाया हुआ । (स्त्री० चोवायोड़ी)

चोवारौ—देखो 'चौवारौ' (रू.भे.) उ०—वांवौ अंग फरकण लागौ, फरकत वांवी आंख । साजन आसी हे सखी ! चढ़ चोवारे झांक ।

—र.रा.

चोवावणौ, चोवाववौ—देखो 'चोवाणौ' (रू.भे.)

चोवाविओड़ौ—देखो 'चोवायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० चोवावियोड़ी)

चोवियोड़ौ-भू०का०कृ०—किसी पौधे व बीज आदि को किसी क्यारी आदि में गाड़ना, लगाना । (स्त्री० चोवियोड़ी)

चोवोलो-सं०पु०—एक प्रकार का मात्रिक छंद ।

चोवी—सं०पु०—शक, सन्देह, आशंका ।

चोम—सं०स्त्री०—१ देखो 'चोव' (रू.भे.) उ०—१ संकर सागर हुयगो सुरड़ा, करण मिळे नहि पांणी कुरड़ा । चोभ मांय ठहरै नहि चुरड़ा, जिण री पाळ पड़ै दस जुरड़ा ।—ऊ.का.

उ०—२ ऊपर वनात री कलावूती चांदणी रूपै री चोभां सूं खड़ी की छै ।—रा.सा.सं.

चोभको—सं०पु०—तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु चुभाने से होने वाली पीड़ा । उ०—एक कांनी व्याज वाळा पल्लो खांचै है तो वीजै पासी थे घर वाळा चोभको देवो हो ।—वरसगांठ

चोभणी—देखो 'चोवणी' (रू.भे.)

चोभणो, चोभवो—देखो 'चोवणो' (रू.भे.)

चोभणहार, हारो (हारी), चोभणियो—वि० ।

चोभाणो, चोभावो, चोभावणो, चोभाववो—प्रे०रू० ।

चोभिओड़ो, चोभियोड़ो, चोभ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

चोभीजणो, चोभीजवो—क्रि० कर्म वा० ।

चोभिओड़ो—देखो 'चोविओड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० चोभिओड़ी)

चोभो—सं०पु०—अनेक प्रकार की दवाइयों की बंधी हुई पोटली जिससे शरीर के कोई पीड़ित अंग या आंख आदि पर सिकताव किया जाता है ।

चोमकदीवो—सं०पु०यौ०—चौमुखा दीपक, चार वत्तियों वाला दीपक ।

चोमालहण—सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।

चोमुखो—देखो 'चौमुखो' (रू.भे.) उ०—देहरो एकलिंगजी रो चोमुखो छै ।—नैणसी

चोमोतर—देखो 'चिमोतर' (रू.भे.)

चोय—सं०स्त्री० [सं० त्वचा] त्वचा, छाल (जैन)

चोयअ—सं०पु० [सं० चोयक] एक प्रकार का फल (जैन)

चोयण—वि० [सं० चोदनम्] प्रेरणा करने वाला (जैन)

चोयणा—सं०स्त्री० [सं० चोदना] प्रेरणा (जैन)

चोयाळ—सं०स्त्री०—गढ के ऊपर बैठने का स्थान (जैन)

चोयाळा, चोयाळीसा—सं०पु० [सं० चतुश्चत्वारिंशत्] चमालीस ।

चोरंग—देखो 'चौरंग' (रू.भे.) उ०—१ सावळ अणियां सांकुही, चोरंग वणियां चेत । भायां सूं भेळप नहीं, हुरकणियां सूं हेत ।—बां.दा.

उ०—२ चोरंग वाळ गिलण चुगलाळा, घोळै दिन लागा धाराळा ।—रा.रू.

चोर—सं०पु० [सं०] छिप कर पराई वस्तु का अपहरण करने वाला व्यक्ति । वह मनुष्य जो स्वामी की अनुपस्थिति या अज्ञानता में छिप कर कोई वस्तु या धन ले जाय । चोरी करने वाला ।

पर्या०—अलांम, एकागर, कुवधमूळ, कुवधी, गूढ़चर, चोंटो, तेन, तसकर, दसु, दुस्ट, निसचर, परमोख, परसंतोख, परासकंदी, पाटच्चर, पारपंथक, प्रतरोधक, प्रतिरोधक, मरमोख, मलमलुच, मलीमलुच ।

मुहा०—चोर माथै मोर पड़णो—धूर्त के साथ धूर्तता करना ।

कहा०—घणां चोरां चोरी मूंगी—अधिक चोर शामिल होने पर चोरी महंगी पड़ जाती है । अधिक चोरों के इकट्ठे होने पर पकड़े जाने की संभावना रहती है । अति सर्वत्र वर्जयते । २ चोर का पग काचा होवै—चोर के मन में दृढ़ता नहीं होती । ३ चोर कै पग को होवै नी—देखो कहा० २ । ४ चोर को माल चिडाळ खाय—चोरी से प्राप्त किया हुआ माल दुष्टों द्वारा भी नष्ट होता है अर्थात् चोरी से प्राप्त हुआ धन सदुपयोग नहीं होता । बुरी कमाई की निंदा । ५ चोर-चोर मासियाई भाई—कुकर्म करने वाले या दुष्ट स्वभाव वाले परस्पर मिल कर रहते हैं । ६ चोर ढोर ना सूं भरोसा करणो—चोर और पशु का भरोसा नहीं किया जा सकता, न मालूम वे कब हानि पहुंचादें । ७ चोर रा तो सौ दा'ड़ा धणी नो एक दा'ड़ो—पकड़े जाने पर सौ चोरियों की कसर एक साथ निकल जाती है । बुरे कार्यों का फल हमेशा अनुकूल नहीं होता । ८ चोर नै कह चोरी कर, कुत्तै नै कह भुस, साहू नै कह जाग—उस व्यक्ति के प्रति जो हर प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्ति से मिल कर रहे । बुरे कार्य के लिए उकसाने वाले उस बुरे व्यक्ति के प्रति जो अवसर पाने पर उसे हानि भी पहुंचा दे । ९ चोर रा पग चोर ओळखै—चोर की गति को चोर ही समझता है । दुष्ट व बुरा व्यक्ति अपने स्वभाव वाले को शीघ्र पहचान जाता है ।

१० चोर री दाढ़ी में तिणकलो—किसी मनुष्य में कोई अवगुण हो और उसके समक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उसी अवगुण की आलोचना की जाय तो वह अपने ही ऊपर उसे समझ कर जब बिगड़ने लगता हैं तब यह कहावत कही जाती है । ११ चोर री मां छांनै छांनै रोवै—चोर की मां छिप कर रोती है । चोर को जब किसी प्रकार की सजा होती हैं तो उसकी मां छिप कर रोती है, इसलिये कि कहीं चोर के साथ पुत्र का नाता प्रकट न हो । बुरे व्यक्तियों से अपना संबंध साधारणत: लोग प्रकट नहीं करते । १२ चोर री मां नै हीज मारणी—बुरे आदमी को नहीं बल्कि बुराई के मूल कारण को ही नष्ट करना चाहिये । १३ मिनखां में चोर छांनां को रैवै नी—मनुष्यों में चोर छिपा नहीं रह सकता, वह अपने अमानवीय या अस्वाभाविक व्यवहार से अपने आपको प्रकट कर ही देता है ।

यौ०—कांमचोर, चोरआळी, चोरखिड़की, चोरगळी, चोरगाय, चोरचकार, मूंहचोर ।

अल्पा०—चोरड़ो, चोरटो ।

२ लीपने-पोतने के कार्य में असावधानी से रह जाने वाला बिना लिपा-पुता भाग ।

३ ताश का वह पत्ता जिसे छिपाये रखने से दूसरे खिलाड़ियों को जीतने में बाधा पड़ती है. ४ एक गंध द्रव्य. ५ एक प्रकार का सर्प ।

वि०वि०—देखो 'पीणो'

वि०—१ जिसके वास्तविक स्वरूप का बाह्य आकार से पता न चले. २ काला, श्याम‡ (डिं.को.)

चोरश्राळो-सं०पु०यौ०—दीवार में बना हुआ वह गुप्त ताका जिसका आसानी से किसी को पता न चले। यह ताका धन, जेवर आदि सुरक्षित रखने के लिये बनाया जाता है।

चोरकार, चोरकारी, चोरकळी, चोरकाळी-सं०स्त्री० [सं० चौर्यकार, चौर्यकारी] चोर का कार्य, चोरी।

चोरखांनो-सं०पु०यौ०—किसी सन्दूक आदि का गुप्त खाना, दराज।

चोरखिड़की-सं०स्त्री०यौ०—छोटा गुप्त द्वार।

चोरग-सं०पु० [सं० चोरक] एक सुगंधित वनस्पति (जैन)

चोरगळी-सं०स्त्री०यौ०—१ वह गुप्त और तंग छोटी गली जिसकी जानकारी बहुत कम लोगों को हो. २ दोनों जांघों के बीच में रहने वाला पाजामे का भाग, मियानी।

चोरगाय-सं०स्त्री०—वह गाय जो दूध दुहते समय पूरा दूध न दे और दूध को थनों में ही ऊपर रोक रखे।

चोरड़ो—देखो 'चोर' (अल्पा. रू.भे.) उ०—कोमळ हरियौ मरु नरां री नेतौ धरमी धोरड़ौ, राज प्रक्रिति मेळ न राखै मरु जेळां जरु चोरड़ौ।—दसदेव

चोरजमी, चोरजमीन-सं०स्त्री०यौ०—वह जमीन जो देखने में समतल व ठोस प्रतीत हो परन्तु पैर रखते ही उसमें पैर धँस जाय।

चोरटो-सं०पु० [सं० चोरटः] (स्त्री० चोरटी) चोर, उचक्का (अल्पा.)

चोरणो, चोरबो—देखो 'चुराणौ' (रू.भे.)

चोरणहार, हारौ (हारी), चोरणियौ—वि०।

चोराणो चोराबो, चोरावणो, चोराववौ—प्रे०रू०।

चोरिओड़ो, चोरियोड़ो, चोरयोड़ो—भू०का०कृ०।

चोरीजणो, चोरीजबो कर्म वा०।

चोरताळो-सं०पु०यौ०—ऐसा ताला जिसके लगे होने का पता आसानी से न लगे या जिसके खोलने में विशेष बुद्धिमानी की आवश्यकता हो।

चोरदरवाजो-सं०पु०यौ०—किसी मकान आदि का वह गुप्त द्वार जिसकी जानकारी सामान्य लोगों को न हो।

चोरदांत-सं०पु०यौ०—बत्तीस दांतों के अतिरिक्त दांतों की पंक्ति में आगे या पीछे निकलने वाले दांत।

चोरपहरौ, चोरपैंरौ-सं०पु०यौ०—वह पहरा जो शत्रु के जासूसों से सेना की रक्षा के लिये लगाया जाता हो। किसी प्रकार का गुप्त पहरा।

चोराकूटो-सं०पु०यौ०—डकैती, लूट-पाट।

चोरा-चोरी-क्रि०वि०—गुपचुप, छिपे-छिपे, चुपके-चुपके।

चोरावणो, चोराववौ—देखो 'चुरावणौ' (रू.भे.)

चोरिक्क-सं०पु० [सं० चौरिक्य] चोरी।

चोरिय-सं०पु० [सं० चोरिक] १ मनुष्य को मार कर चोरी करने वाला (जैन)

[सं० चोरित] २ चोरी।

चोरियोड़ो-भू०का०कृ०—चुराया हुआ, अपहरण किया हुआ। (स्त्री० चोरियोड़ी)

चोरी-सं०स्त्री० [सं० चुर, चोरिका, चौरिका] छुप कर किसी दूसरे की वस्तु लेने या अपहरण करने का कार्य, चुराने की क्रिया या भाव।

मुहा०—चोरी-चोरी—छिपे तौर पर।

यौ०—चोरी-चकारी, चोरी-जारी।

चोळ-सं०पु० [सं० चोल] १ भारत के दक्षिण का एक प्राचीन राज्य, चोल राज्य. २ एक प्राचीन राजपूत वंश. ३ लाल रंग का वस्त्र, चीर विशेष. ४ गहरा लाल रंग। उ०—लेता भारी लाल चोळ रंग लागा चोखा, कोंडी फेर किया अजब द्रग धमळ अनोखा।

—अज्ञात

५ कवच. ६ मजीठ. ७ आनंद, उमंग। उ०—पुटियां टोळ पंचोळ चोळ चंपै चित आलां।—दसदेव

८ कामक्रीड़ा, मैथुन। उ०—करड़ो कुच नूं भाखता, पड़वा हूंदी चोळ। अब फूलां जिम अंग में, सेलां री धमरोळ।—बी.स.

९ क्रीड़ा, किलोल। उ०—१ सूंघै मैंगळ सूंड हुंकाळा चोळ करंतां, फळियां गूलर वन्न सुहांणी चाल बहंतां।—मेघ.

उ०—२ मैंगळ कुटंब सहत उनमत रै, आव हिलोळ चोळ की अतरै।

—र.ज.प्र.

१० रुचि, लगन। उ०—जा मुखि रांम न ऊचरै, आंन कथा मन चोळ। जन हरिदास ते मांनई, काग बिलाई कोळ।—ह.पु.वा.

वि०—लाल। उ०—१ चख चोळ भाळ विकराळ चूंच, कळ चाळ प्रगट दाढ़ाळ कूंच।—वि.सं.

उ०—२ चोळ अगनि रत नदी वीच चलि, होजफुंहारा अगनि चादर हलि।—सू.प्र.

यौ०—चोळ-बोळ।

चोळग-वि०—लाल, रक्त। उ०—अजगर के कंध टांमक से सीस, चखूं चोळग सैल रीस।—सू.प्र.

चोळगोळ-स०पु०यौ०—आग से तपा हुआ लाल गोला।

चोळचंचोळ-सं०पु०यौ०—क्रोधपूर्ण नेत्र, गुस्से में लाल नेत्र।

चोळचख-सं०पु०—शेर (ना.डि.को.)

चोळचखो-वि०—क्रोधपूर्ण या लाल नेत्र वाला।

चोळबोळ-वि०—१ लाल रंग से रंगा हुआ रक्तवर्णक।

उ०—१ प्रचंड लोह पाखरां, चोळबोळां चखचोळां।—सू.प्र.

उ०—२ थूर हथ धवळ री थाट मैंवट थियो, काळ चाळो चखां चोळबोळां कियो।—हा.झा.

२ उन्मत्त, मस्त। उ०—मोछण ठुंगार हुय रहचौ छै, चोळबोळां हुयजै छै।—रा.सा.सं.

चोळरंग-सं०पु०—मजीठ का रंग, गहरा लाल।

चोळवट, चोळवटउ-सं०पु० [सं० चोलपट्ट] लाल वस्त्र (उ.र.)

चोळवांन, चोळवन्न-वि० [सं० चोलवर्ण] रक्त वर्ण, गहरा लाल।

उ०—अंगां ऊपरै सवायो तायो सुरां वैण रांण वाळा, वडाळां छोह में छायो चखां चोळवन्न ।—र.रू.

चोळाहड़ो–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष (शा.हो.)

चोळियो–सं०पु०—देखो 'चोळो' (अल्पा. रू.भे.)

चोळी–स०स्त्री०—१ स्त्रियों का एक पहनावा जो स्तनों को ढकने के लिये छाती पर बांधा या पहिना जाता है। कंचुकी, अंगिया।

उ०—सिरी सीस कूंभां मणी हेम साऊ, जया नारी वक्षोज चोळी जड़ाऊ।—वं.भा.

२ मजीठ। उ०—१ प्रीतम वीछुड़ियां पछइ, मुई न कहिजइ काइ। चोळी केरे पांन ज्यूं—दिन दिन पीळी थाइ।—ढो.मा.

उ०—२ म्हारी धीयड़ चोळी पांन की, जँवाई चंपले रो फूल, म्हारी आज अमली फळ रही।—लो.गी.

३ स्त्रियों की अंगरखीनुमा पहनने का वस्त्र विशेष (पुष्करणा ब्राह्मण)

चोळीमारग–सं०पु० [सं० चोलीमार्ग] वाममार्गियों का एक भेद विशेष।

वि०वि०—देखो 'कांचळिया पंथ'।

चोळीय–सं०पु०—नौ नाथों में एक नाथ (पा.प्र.)

चोळवौ–वि०—लाल, लाल रंग का। उ०—कड़ी कुहटं गाळी ओकडां सांतरां पटाड़ां रा चोळवा वणायां थकां, कांगा कसणा कियां थकां चढ़ खड़िया छै।—रा.सा.सं.

चोळौ–सं०पु०—१ साधु, फकीर, मुल्ला आदि के पहनने का घुटनों तक लम्बा एक प्रकार का ढीला-ढाला सादा कुरता. २ ढीला-ढाला लम्बी बांहों का साधारण कुरता। उ०—विधि होय जद वांम, दोसत ही दुसमण हुवै। वदळ जाय जद वांम, चोळौ वैरी चकरिया।
—मोहनराज साह

३ देह, शरीर। उ०—घरचा रहै सब धांम, मात पिता सुत नारि घन। कोई न आवै कांम, चोळौ छूटचां चकरिया।—मोहनराज साह

मुहा०—१ चोळौ छोडणौ—मर जाना। २ चोळौ वदळणौ—एक शरीर छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करना, नया रूप धारण करना।

४ इल्लत, आफत।

चोल्यो–सं०पु०—टोकरी। उ०—दूंणा रेत चोल्यां यां कना सू तौ नखाया। पाछै दोय चोल्या ठाकुरांणी वताया।—शि.वं.

चोवखो—देखो 'चोखो' (रू.भे.) उ०—दूलची जाय घणी आछी सादी की। घणी चोवखौ दात दायजै दीयो।
—दूलचीं जोइये री वारता

चोवड़ो–वि०—चार लड़ों वाला। उ०—दूजा दोवड़ा चोवड़ा, ऊंट कटाळउ खांणा।—ढो.मा.

चोवटियो, चोवटो—१ देखो 'चौवटो' (रू.भे.)

उ०—१ हे चुड़लो आयो गोरी चोवटै, लूंदारियो लै, चोवटिये दांन चुकाय, जाजौ मरवौ लै।—लो.गी. उ०—२ अणमणौ करियां टेपा कांन, चोवटै ऊभौ हेकल सांढ। सेवट किण घर रो मिजमांन, भलां ओ सीरोळै रो सांड।—सांझ उ०—३ चन्नण पड़ियो चोवटै, ले उड फिर-फिर जाय। आसी चनण रो पारखी, लेसी मोल चुकाय।—र.रा.

[सं० चतुर्+हट्ट] २ वह स्थान जिसके चारों ओर हाटें (दुकानें) हों, बाजार। उ०—सोनो रूपो पहरती, मोत्यां भरती भार। सो कासी रै चोवटै, हरचद वेची नार।—अज्ञात

चोवन—देखो 'चौवन' (रू.भे.)

चोवा-चनण–सं०पु०यौ०—सुगन्धित पदार्थ, अर्गजा चंदनादि पदार्थ।

चोवौ–सं०पु०—एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि के मिलाने से बनता है। उ०—१ म्हे नै ढोलो भूं'विया, म्हां नूं आवी रीस। चोवा केरै कूंपलै, ढोळी साहिब सीस।—ढो.मा.

रू०भे०—चोग्रो।

चोस–सं०स्त्री०—कांसी (डि.को.)

चोसट—देखो 'चौसठ' (रू.भे.)

चोसठी—देखो 'चौसठी' (रू.भे.)

चोसणी, चोसबौ—देखो 'चूसणौ' (रू.भे.) उ०—चड़ चड़ जोगणियां रत चोस, जुड़ै भिड़ धूहड़ वाधै जोस।—गो.रू.

चोसर—देखो 'चौसर' (रू.भे.) उ०—ऊजळा फूलां रा चोसर घातियां हाथ ऊजळां फूलां रा गेंद उछाळती थकी।—रा.सा.सं.

चोसरो—देखो 'चौसरो' (रू.भे.) उ०—मालण लाई चोसरा, फूल अनोखा पोय। मन मुरझायो देखतां, ऊतर दीन्हो रोय।—र रा.

चोसांगी, चोसींगी–सं०स्त्री० [सं० चतुर शृंगी] एक प्रकार का कृषि उपकरण जिसके लम्बे डंडे के एक सिरे पर चार छोटे व पतले सींग के आकार के डंडे जो आगे से नुकीले होते हैं और कुछ गोलाई में मुड़े होते हैं। (मि. चौकनी)

चोस्क–सं०पु० [सं०] उत्तम जाति का घोड़ा (शा.हो)

चोहट, चोहटो—देखो 'चौवटो' (रू.भे.) उ०—१ लेवा कै थानक लाखावत, घण समदाये सेन घणा। चलणै तलक तुहाळै चोहट, 'मोकळ' सह मंडळीक तणा।—महारांणा मोकळ रौ गीत

उ०—२ घटां घटां चौरंग चा नारंग ऊलट्ट। किर फूटै विच चोहटां रंगरेजां मट्ट।—द दा.

चोहथी—देखो 'चौहथी' (रू.भे.)

चोहां–वि०—चारों। उ०—चोहां दिस रोहां रुक्कं छोहां भट छक्कं, जड्डं जंजीर न जरै वड्डुं गज वक्कं।—वं.भा.

चोहांन–सं०पु०—१ फदाली जाति के व्यक्तियों की एक शाखा (मा.म.)

२ देखो 'चौहांन' (रू.भे.)

चोहिल–सं०पु०—पड़िहार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चौंकलो–सं०पु०—भाले की नोंक, भाले का नुकीला भाग।

उ०—सु प्रथीराज सिकार रमण गयो थो सु सिकार रमतो एक लुगाई घड़ो भरिये जाती थी तिण रै चौंकला री लगाई।—नैणसी

चौंगियौ—देखो 'चोंगियौ' (रू भे.)

चौंडासमा-सं०स्त्री०—यादव वंश की एक शाखा। उ०—झाला चौंडासमा झळहळै, हाला हर हैकंप हुवा।—द.दा.

चौंतरौ-सं०पु०—चबूतरा। उ०—किणहेक सहर वाटाउ थकौ किणहेक रै वारणा रै चौंतरै ऊतरियौ हुतौ।—नैणसी

चौंतीस—देखो 'चौतीस' (रू.भे.)

चौंतीसमौं—जो क्रम में तेतीस के वाद पड़ता हो।

चौंतीसे'क-वि०—चौतीस के लगभग।

चौंतीसौ-सं०पु०—चौतीसवां वर्ष।

चौंप-सं०स्त्री०—१ कीर्ति, यश. २ देखो 'चोप' (रू.भे.)

चौंरी—देखो 'चंवरी' (रू भे.) उ०—१ क्रम न्रिप उच्छव कियौ, वेद सनीत विचार। दुलहरिग जुग लीधा दुलहि, चौंरी फेरा च्यार। —रा.रू.

उ०—२ चहूं भ्रात चौंरी चढै नेह चंगा। उचारै दुजां देव वांणी उमंगा।—सू.प्र.

चौ-सं०पु०—१ मनुष्य. २ बैल. ३ अश्व, घोड़ा. ४ महावत. ५ रस (एका.)

स्त्री०—६ गौ (एका.)

वि०—चार। उ०—छंद अध नाराच री, चौ तुक हेक दवाळ। वरण छंद सौ गीत वद, दूणौ अठौ दिखाळ।—र.ज.प्र.

अव्य०—देखो 'चो' (रू.भे.) उ०—हूं आखूं नय वयण हिक, सांभळ भरथ सुजांण। करणौ तौ मो अवस कर, पित चौ हुकम प्रमांण।—र.ज.प्र.

चौअटौ—देखो 'चौवटौ' (रू.भे.)

चौईगी—देखो 'चोसींगी' (रू.भे.)

चौईस-वि० [सं० चतुर्विंशति, प्रा० चउवीस] बीस और चार का योग, चौबीस।

सं०पु०—चौबीस की संख्या।

चौईसमौं-वि०—जो क्रम में तेईस के वाद पड़ता हो।

चौईसे'क-वि०—चौबीस के लगभग।

चौईसौ-सं०पु०—चौबीसवां वर्ष।

चौओतर—देखो 'चिमोतर' (रू.भे.)

चौओतरमौं—देखो 'चिमोतरमौं' (रू.भे.)

चौओतरौ—देखो 'चिमोतरौ' (रू.भे.)

चौओ—१ देखो 'चोभौ' (रू.भे.) २ देखो 'चौवौ' (रू.भे.)

चौओड़ी-सं०स्त्री०—चावड़ा वंश की कन्या। उ०—सुज कंत अंत अमरां सुपुरि, चौओड़ी हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह चंद्र, छडी सेखावत व्रत संभरै।—रा.रू.

चौक-सं०पु० [सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क] १ चौकोर खुली भूमि. २ नगर या गांव के बीच का वह खुला मैदान जिसके चारों ओर रास्ता गया हो, चौराहा। उ०—चौक गोकळै तणै साय बैठौ चडी, गरड़वुज भुयंग जमराव रौ धणी।—रुपमणी हरण

३ घर के अन्दर का वह खुला स्थान जिसके ऊपर किसी प्रकार का छाजन न हो। आंगन, सहन. ४ चार कोने वाला चबूतरा।

उ०—वीकैजी आ जागा आछी देखी तद तळाव री पाळ माथै स्री गोरैजी री मूरत पधराई, चौक करायौ।—द.दा.

५ मैदान, खुला स्थान। उ०—आवध धारियां चौक पधारै छै। —रा.सा.सं.

मुहा०—१ चौक करणौ—मैदान की ओर प्रस्थान करना। २ चौक पधारणौ—मैदान में आना, खुले स्थान की ओर गमन करना।

६ मांगलिक अवसर पर आंगन में या खुले स्थान में आटे, अबीर आदि से बनाये हुए रेखा चित्र। उ०—ओपै रूप घणौ राय अंगण, चौक मुक्त कण केसर चंनण।—रा.रू.

मुहा०—चौक पूरणौ—आंगन या सहन में कल्पना के चित्र चित्रित करना।

७ पीठ। उ०—तिकौ जसवंतजी रौ गळा मांहे हुयनै गुदड़ी रै पाखती ऊकसीयौ नै जसवंतजी उणरै छाती मांहै बरछी री दीधी सु उणरै चौक मां हाथ एक जाती बाहिर फूटी।—राव मालदेव री वात

८ धातु, काष्ट आदि की बनी हुई चौकी। उ०—कनक चौक थाळह कनक, सांमिल दहू नरेसुरां। सासत्रां जेम भोजन सतर, रीति आदि राजेस्वरां।—सू.प्र.

९ भूल, चूक। उ०—कहियौ न्रप सिध हूं जोड़े कर, आयस हसे चौक किण ऊपर।—सू.प्र.

चौकड़ा-सं०पु०—मर्दो के कान का आभूषण जिसमें दो मोती तथा एक माणक की लाल मणि होती है।

चौकड़ालगांम-सं०स्त्री०यौ०—घोड़े के मुंह में लगाई जाने वाली एक लगाम विशेष। उ०—हजार घोड़ा तयार कीजै छै, चौकड़ा लगांम दीजै छै।—रा.सा.सं.

चौकड़ियौ-सं०पु०—चांदी का वह चौकोर टुकड़ा जो पाणिग्रहण संस्कार के समय मेंहदी के साथ वर-वधू के हाथ में रखा जाता है।

(पुष्करणा ब्राह्मण)

चौकड़ी-सं०स्त्री०—१ चार या इससे अधिक मनुष्यों की मंडली।

यौ०—चंडाळचौकड़ी।

२ चार युगों का समूह। उ०—चहुं जुगां चौकड़ी छतीस जुगाई, चौकड़ियां इकोतरां इंद्र राज कराई।—केसोदास गाडण

३ चारपाई की एक बुनावट विशेष जिसमें चार-चार सुतड़ियां इकट्ठी कर बुनी जाती हैं।

४ अनेक तलवारों का एक साथ पड़ने वाला प्रहार, चोट।

उ०—१ पाळां झगड़ौ कियौ, तारां रावजी लूणकरणजी ऊपर तरवारां री चौकड़ी पड़ी।—द.दा.

उ०—२ तरवारियां रौ रीठ वागियौ। माथै चौकड़ी पड़ रही छै। —सूरे खींवे कांधळोत री वात

५ चारों पैरों से एक साथ कूद कर भरी जाने वाली छलांग (हरिन)

उ०—करी मातरी त्यार, श्रोकळी सोवण मुख भर। मिरग चौकड़ी मूल, चौकड़ी नेवैं दिन भर।—दसदेव

६ प्रायः सड़कों पर मिट्टी डालने के लिये सड़कों के श्रासपास या तालाब खोदते समय मजदूरों द्वारा खोदा जाने वाला चौकोर गड्ढा, ७ बाण के श्रंतिम सिरे पर लगाया जाने वाला उपकरण जिससे बांण प्रत्यञ्चा पर मजबूती से स्थिर होता है। उ०—खुरसांण रा उतारिया, माठी रा तिलाग्यिा ऊपर रूपं रा सांवा छै, पीतळ तांबैं रा छला छै, दांत री चौकड़ी छै।—रा.सा.सं.

८ शिर पर पेचा या पगड़ी बांधने की एक विधि विशेष जिसमें पगड़ी शिर पर बांधते समय सामने वाले भाग पर क्रॉस के चिह्न की सी अनेक चौकड़ी पड़ती जाती हैं।

९ चार घोड़ों की बग्घी।

चौकड़ो—सं०पु०—१ घोड़े के मुंह में लगाई जाने वाली एक लगाम जिसमें मुंह में रहने वाला हिस्सा लोहे का बना एक पतला डंडा सा होता है। उ०—घोड़ा कायजे हुआ ऊभा छै, चौकड़ो चावैं छै।
—जगदेव पंवार री वात

२ एक प्रकार का श्राभूषण विशेष।

उ०- कुंवरसी साळै नूं साथ ले श्राइयौ। श्रापरै डेरै श्राय कटारी तरवार जड़ाऊ चौकड़ो मोतियां री कंठी दीवी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

चौकणौ, चौकबौ—क्रि०स०—१ श्रनाज बोने के पूर्व भूमि को जोतना। हल द्वारा भूमि को इस प्रकार जोतना कि पहले की जुताई की रेखायें दूसरी बार की जुताई की रेखाओं से कट जांय. २ खेत में श्रनाज को बोने के लिए हाथ से इधर-उधर फेंकना या बिखेरना. ३ चारों श्रोर से श्रावेष्ठित करना, घेरना। उ०—श्रहमंदपुर नज्जीक श्राय, चौकियौ दुरग रसबीर चाय।—सू.प्र.

४ चकित होना।

चौकणहार, हारौ (हारी), चौकणियौ—वि०।

चौकवाड़णौ, चौकवाड़बौ, चौकवाणौ, चौकवाबौ, चौकवावणौ, चौकवावबौ, चौकाड़णौ, चौकाड़बौ, चौकाणौ, चौकाबौ, चौकावणौ, चौकावबौ—प्रे०रू०।

चौकिश्रोड़ौ, चौकियोड़ौ, चौक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चौकीजणौ, चौकीजबौ—कर्म वा०।

चौकतीख—सं०स्त्री०—मान, प्रतिष्ठा। उ०—तुटै कळा छुटै ठौड़ ठौड़ री खंचांणी तोपां, लाखां हाडां गोड़ री कुरंमां श्राडी लीक। जोड़ रा ठिकांणां घणां मगेजी मेल दी जठै, तठै रही राठौड़ री हेक चौकतीख।—महाराजा मांनसिंह रौ गीत

चौकनी—सं०स्त्री०—खलिहान में गेहूँ को भूसे से अलग करने के लिए हवा में ऊपर फेंकने का काष्ठ का बना एक उपकरण (मि. चोसींगी)

चौकन्नौ—वि० (स्त्री० चौकन्नी) सतर्क, सावधान, होशियार, सजग।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ चार कान वाला।

चौकळ—सं०पु० [सं० चतुष्कल] १ चार मात्राओं का समूह। इसके पांच भेद होते हैं—SS, IIS, ISI, SII, IIII २ संगीत में एक ताल, चतुष्कल।

वि०—चार कलाओं वाला।

चौकळौ—देखो 'चौखळौ' (रू.भे.) उ०—वा'र चढ़ै बा'रू वज्यां, चंड चौकळा हेत। है न जमी हिक चांम पिण, जांन भोंक जंग देत।
—रेवतसिंह भाटी

चौकळियौ—सं०पु०—वह छंद जिसमे चार-चार मात्राओं के समूह हों।

चौकस—सं०स्त्री०—ढूंढने की क्रिया, तलाश। उ०—१ कोटवाळ नट गयौ तद इण चौकस कर फेर कहायौ। कोटवाळ क्यूं'क वाद कर फेर नट गयौ।—पदमसिंह री वात

उ०—२ सहिनांण सब मिळिया पण डूबी बात छै। चार ही ठावा मांणस मेल्ह सांची खबर मंगावौ, चौकस करि श्रावैं।
—पलक दरियाव री बात

वि०—१ सचेत, सतर्क, चौकन्ना, सावधान. २ ठीक, सही, सत्य। उ०—पण मांणस च्यार ठावा जाय सांची खबर ले श्रावैं। बात चौकस है। महाराज पधारसी।—पलक दरियाव री बात

३ पक्का, निश्चित। उ०—रांणी वातां सुण कहण लागियौ जै श्रायसैं चौकस कै नहीं।—कुंवरसी सांखला री वारता

४ स्पष्ट। उ०—विजळी चमकी तद ढाल चौकस दीसी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०वि०—१ प्रत्यक्ष, सामने। उ०—ताहरां हरमाळा कह्यौ न मांनौ तौ थे जावौ चौकस देखौ।—पलक दरियाव री बात

२ निश्चय ही, श्रवश्य। उ०—१ चौकस श्रास किसी चुड़ला री, कहोरी श्रवै सुहाग किसौ। देवी इसौ भरतार म दे री, जिण सिर वैरी 'मांन' जिसौ।—मांनजी लाळस उ०—२ जिण दिन लीली जळै जवासी, मांडै राड़ सांप री मासी। बादळ रहै रात रा बासी, यूं जांणै चौकस मेह श्रासी।—वर्षा विज्ञान

चौकसाई, चौकसी—सं०स्त्री०—१ सावधानी, सतर्कता. २ निगरानी, देखरेख।

वि०—चांदी सोने की कसौटी पर परीक्षा करने वाला (किसनगढ़)

रू०भे०—चौगसी।

चौका—सं०पु०—तलवार की मूठ के निचले भाग का वह मध्य का चौड़ा चपटा भाग जहां उसकी खूबसूरती के लिये नक्कासी श्रादि की जाती है श्रौर पकड़ने के गोल उभरे भाग को मजबूती के साथ उसमें लगाया जाता है।

चौकाणौ, चौकाबौ—क्रि०स०—१ खेत या फसल बोने की भूमि को हल द्वारा सीधा व खड़ा जुताना. २ बोने के लिये श्रनाज को हाथ से फिकवाना. ३ चकित करना, चमकाना।

चौकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हल द्वारा जुताई हुई या चिराई हुई भूमि. २ बीज हाथ से फेंक कर बुवाया हुश्रा. ३ चौंकाया हुश्रा।
(स्त्री० चौकायोड़ी)

चौकावणौ, चौकाववौ—देखो 'चौकाणौ' (रू.भे.)

चौकावियोड़ौ—देखो 'चौकायोड़ौ' (स्त्री० चौकावियोड़ी)

चौकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हलों द्वारा जुताई किया हुआ (खेत) २ हाथ से फेंक कर बीज बोया हुआ. ३ चमका हुआ, चौंका हुआ। (स्त्री० चौकियोड़ी)

चौकी—सं०स्त्री० [सं० चतुष्की] १ चार पायों का काठ या पत्थर का चौकोर आसन. २ मंदिर में मंडप के ऊपर का घेरा जिस पर शिखर होता है तथा इस घेरे के नीचे का स्थान. ३ पड़ाव या ठहरने का स्थान. ४ आसपास के स्थान की सुरक्षा के लिये रक्खे जाने वाले कुछ सिपाहियों के रहने का स्थान. ५ पहरा, निगरानी।

उ०—१ रथ सतरि लाख चौकी विराज, सौ लाख गयंद नग हीर साज।—सू.प्र.

उ०—२ कळाहीण ह्वै भाजि कूके कहोकी, चले जाय कूकी जठै रांण चौकी।—सू.प्र.

६ गले में पहनने का एक आभूषण, चौरसी. ७ पुरुषों की भुजा पर धारण करने का आभूषण विशेष।

८ भुजा पर या गले में धारण करने का सोने, चांदी या तांबे का आभूषण जिसमें जंत्र मंत्र के साथ अभिमंत्रित धागा भी होता है।

उ०—तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत री जंत्र मादळिया में तथा चौकी में मंडाईजजो।—वी.स.टी.

९ सेना की टुकड़ी। उ०—पांच पांच सै रजपूतां री चौकी सात बैठी छै।—जैतसी ऊदावत री वात

१० रोटी बेलने का चकला. ११ राजाओं या जागीरदारों को अपने घर निमंत्रित करने पर उन्हें भेंट या नजर की जाने वाली धनराशि।

उ०—चौकी रुपियां लाख री, हाथी निजर तुरंत। रकम जवाहर उंच रुचि, पद तळ वसन सुरंग।—रा.रू.

१२ छोटा चबूतरा. १३ वह लगान या कर जो खेत व पशु आदि की निरन्तर चौकसी करने वाले को दी जाती है।

मुहा०—चौकी भरणी—चौकसी पर निगरानी का कर देना।

१४ ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूंटियां हों।

१५ तोरणद्वार के इर्द-गिर्द बना चबूतरे के आकार का स्थान।

रू०भे०—चउकी।

चौकीखांनौ—सं०पु०यौ०—चौकी या पहरा देने का स्थान। उ०—गढ़ रै पाखती जलाल री महल छै, उठै मूमना रहै नै जलाल चौकीखांनै दोय घड़ी दिन चढ़तां आवै।—जलाल बूबना री वात

चौकीदार—सं०पु०यौ०—चौकसी करने वाला, पहरेदार, रखवाला।

चौकीदारी—सं०स्त्री०यौ०—१ रखवाली करने अथवा पहरा देने का कार्य. २ चौकीदार का पद. ३ वह कर या चंदा जो चौकीदार के वेतन के लिये एकत्रित किया जाता है. ४ चौकीदार को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

चौकीवट—सं०पु० [सं० चतुष्क पट्टः] काष्ट की बनी चौकी (उ.र.)।

चौकूणौ—वि० [सं० चतुष्कोण, प्रा० चउक्कोण] (स्त्री० चौकूणी) जिसके चार कोने हों, चौकोर।

चौकोर—सं०पु०—क्षत्रियों की एक शाखा।

वि०—चार कोने वाला।

चौकौ—सं०पु०[सं० चतुष्क प्रा० चउक] १ किसी पत्थर का चौकोर टुकड़ा. २ किसी पवित्र कार्य के लिये जल या गोबर के लेप से शुद्ध किया हुआ स्थान. ३ वह लिपा-पुता स्थान जहां हिन्दू (विशेष कर ब्राह्मण) लोग रसोई बनाते हैं।

मुहा०—चौकौ फेरणौ—घर की सब सम्पत्ति को बरबाद कर देना।

कहा०—तीन पग तांणिया नै चित्तौड़ तांई चौकौ—तीन पैर बाहर निकले और चित्तौड़ तक अपना चौका बना लिया। यात्रा में बाहर निकल कर छुआछूत में अधिक विश्वास रखने वाले के प्रति व्यंग। यात्रा में निकलने पर छुआछूत पालने की आवश्यकता नहीं।

वि०वि०—इस स्थान पर बाहरी लोग या बिना नहाये-धोये घर के लोग भी नहीं जाने पाते।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ, फेरणौ, राखणौ।

यौ०—चौका-बरतन।

४ एक ही स्थान पर एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह. ५ ताश की चार बूटियों वाला पत्ता. ६ चार का अंक. ७ चार का वर्ष. ८ सामने के चार दांतों का समूह। उ०—१ हसतां फूल झड़ै है, चौका री चकाचूंध में मुख नीठ निजर पड़ै है।—र. हमीर

उ०—२ छोटी सी बरछी थी सु इण छळ वाही दांत चार चौके रा पाड़ नै गुदड़ी में उकसी।—नैणसी

मुहा०—१ चौकौ तोड़णौ—बुरी तरह मारना। चौकौ पाड़णौ—सामने के चार दांतों के समूह को गिरा देना।

९ दांतों के काटने से बना हुआ गोल निशान, दंत-क्षत।

उ०—सोना री तौ रंग कपोळां रा रंग सूं उरै है पिण चौका री चहन ही करणफूलां री चूनियां में दुरै है।—र. हमीर

१० शव को सुलाने के लिये गोमय से लिपा-पुता स्थान।

चौखंड—वि०—१ चार मंजिल का, चार मंजिल वाला. २ जिसमें चार खंड हो, चार भाग वाला।

चौखंडी—सं०स्त्री०—चौथी मंजिल। उ०—जाई करि बैठी चौखंडी, पेहली बांची उपली ओळि।—वी.दे.

वि०—चौमंजिला।

चौखड़ौ—सं०पु०—एक प्रकार की घोड़े की लगाम।

चौखट—सं०स्त्री० [सं० चतुष्काष्ठिका] १ दीवार में लगाया जाने वाला पत्थर या लकड़ी का बना आयताकार ढांचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं. २ देहलीज. ३ ताश के पत्तों में चौकोर बूटी का रंग या इस बूटी का पत्ता।

चौखटियौ, चौखटौ—सं०पु०—१ चार लकड़ियों का ढांचा जिसमें तस्वीर या शीशा जड़ा जाता है. २ देखो 'चौखट' (अल्पा.) ३ आकृति, सूरत।

वि०—चार कोने वाला।

अल्पा०—चौखटियौ।

चौखणौ-वि०—१ चार कोने वाला. २ चार खंड का, चौमंजिला।

उ०—ऊंचा मंदिर चौखणा, ऊंना घणु आवास। अजब झरोखा जाळियां, सीस्यां मूंगावास।—रा.रू.

३ चार दराजों या खानों वाला।

चौखळौ-सं०पु०—चारों ओर के पड़ोसी गावों का समूह।

उ०—१ म्हारै गांव रा रासोजी वाजो वातां रा ई पूतळा, चौखळा में वाजिदा।—बांगी

उ०—२ इण तरै सूं गांव में ईज नीं पण पूरा चौखळा में सेठां री ठरको जम्योड़ो हो।—रातवासौ

मुहा०—चौखळौ करणौ—किसी अवसर विशेष पर अड़ोस-पड़ोस के गांवों को भोजन के लिये निमंत्रित करना।

रू०भे०—चोखळौ।

चौखूंट-सं०पु० [सं० चतुष्कोटि] १ चारों दिशा. २ भूमंडल, जगत।

चौखूंटौ-वि०—जिसमें चार कोने हों, चौकोना।

चौगड़द, चौगड़दाई-क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—१ दारुण 'गोयंद' चौगड़द, फिरिया पह फट्टी। श्रो भी श्रागि श्रजागि श्रंग, नाराज निछट्टी।—सू.प्र.

उ०—२ जग जणणी जायौ न जो, गरब सकै मो गाळ। फोगट चौगड़दा फिरै, काळ झाल करवाळ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—३ गुदा के आसपास चौगड़दाई दोय अंगुळ मांहीं फुणणी होय।—अमरत

चौगड़ौ-वि०—चार। उ०—चीतवि त्रिगड़ौ चौगड़ौ, सोजि मेलि करि सात। सात दसां पर संचरै, वात कही विख्यात।—ल.पिं.

सं०पु०—जांणिजै अांक चौगड़ौ जेथि, तळि च्यारि रुप मांडिजे तेथि।
—ल.पिं.

चौगट—देखो 'चौखट' (रू.भे.)

चौगटियौ-सं०पु०—१ किसी मेहराव के ऊपर का पत्थर. २ देखो 'चौखटियौ' (रू.भे.)

चौगणौ-वि० [सं० चतुर्गुण, प्रा० चउग्गुण] (स्त्री० चौगणी) चार गुना, चौगुना।

चौगणौ, चौगवौ-क्रि०स०—देखना।

चौगरद—देखो 'चौगड़द' (रू.भे.) उ०—फूलां की माळा सूं चौगरद आच्छादित कीया छै।—वेलि.टी.

चौगस—देखो 'चौकस' (रू.भे.) उ०—हूरां कह तुरक अछर कह हींदू, दरवा कारण वाद वढै। हटैसींग ऊपर हठ लागी, चौगस वै तो रयां चडै।—हठीसिंह जोधा रो गीत

चौगसी—देखो 'चौकसी' (रू.भे.)

चौगान-सं०पु० [फा०] मैदान, विस्तृत आंगन। उ०—१ दिन पांच कल्यांणपुर रहिया। चौगांन रमिया।—द.वि.

उ०—२ लगावै फळां भोमि आहार लीधो, कपी बाग ऊंधांमि चौगांन कीधो।—सू.प्र.

चौगानियौ-वि० [फा० चौगान+रा०प्र० इयौ] चार तह का।

उ०—सू नमचा किण भांत रा छै? बीटीवा, चौगानिया, घणै वनात रा लपेटिया साळू लपेटिया।—रा.सा.सं.

सं०पु०—वह भैंसा जिसे मद्यपान करा कर दशहरे के दिन चौगान में छोड़ा जाता है और उसे घुड़सवार तलवारों से काटते हैं। उ०—घडां हूंत वैर घिर करै, अरियां इम अवगाह। चढ़ियौ मद चौगानियौ, दपटै दळण दुवाह।—रेवतसिंह भाटी

चौगिरद-क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—१ आदमी बीसेक तरवारां काढ़ली अर पालखी रै चौगिरद लग गया।—पदमसिंह री वात

उ०—२ जणां कुंवरसी री लोग खरळां रा लोक नू परा किया अर आप चौगिरद कड़ी करि ऊभा रहिया।—कुंवरसी सांखला री वारता

चौगुड़दा—देखो 'चौगड़द' (रू.भे.)

चौगुणौ-वि० [सं० चतुर्गुणम्] (स्त्री० चौगुणी) चार गुना।

उ०—कीधी विगुण भयांणक काया, माया हूंत चौगुणी माया।
—सू.प्र.

रू०भे०—चउगणउ, चउगणौ, चउगिणउ, चउगुणउ, चउगुणौ, चौगणौ।

चौगौ-सं०पु०—१ वह बैल या भैंसा जिसके आयु अनुसार केवल चार दांत ही निकले हों। लगभग ३॥ या ४ वर्ष की अवस्था में चार दांत निकलते हैं. २ चार का अंक।

चौगोन—देखो 'चौगांन' (रू.भे.)

चौगोनी-सं०स्त्री०—१ गेंद का बल्ला. २ हाथ में रखने की पतली छड़ी, बेंत।

चौघड़ौ, चौघड़ियौ-सं०पु० [सं० चतुर्घटिकम्] १ एक प्रकार का नगारे के आकार का वाद्य विशेष जो प्रहर या चार घड़ी के अन्तर से बजाया जाता है। उ०—पाछलौ चौघड़ियौ बाजियौ जणां भरमल ऊठ मुजरौ कर डेरै गई।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ समय विशेष, लगभग १३/५ घंटे (लगभग चार घड़ी) की अवधि।

उ०— इण भांत तमासौ करतां पाछलौ चौघड़ियौ आय रह्यौ छै।
—रा.सा.सं.

३ किसी मांगलिक कार्य या यात्रादि को आरम्भ करने के लिये वार गणना से निकाला हुआ मुहूर्त।

वि०वि०—ऐसा प्रतीत होता है कि 'चौघड़िया' जैन ज्योतिष से आया है।

'चौघड़िये' संख्या में सात होते हैं जिनके नाम क्रमशः निम्न लिखित हैं—

(१) उद्वेग—रविवार के दिन का प्रथम चौघड़िया।
(२) अम्रत (अमृत)—सोमवार ,, ,, ।
(३) रोग—मंगलवार ,, ,, ,, ।
(४) लाभ—बुधवार ,, ,, ,, ।
(५) सुभ(शुभ)—गुरुवार ,, ,, ,, ।
(६) चल—शुक्रवार ,, ,, ,, ।
(७) काळ (काल)—शनिवार ,, ,, ,, ।

इनमें अमृत, लाभ, शुभ और चल श्रेष्ठ हैं और उद्वेग, रोग और 'काळ' नेष्ठ हैं। इनका उपयोग यात्रा मुहूर्त के अतिरिक्त दैनिक आवश्यक कार्यों के लिये भी होता है। ये दिन में आठ और रात्रि में आठ आते हैं। इस प्रकार दिन रात में कुल सोलह होते हैं। इनका स्पष्ट मान दिन या रात्रि के अष्टमांश तुल्य होता है; अतः दिन या रात्रि के घटने-बढ़ने से चौघड़ियों का मान भी घटता-बढ़ता है।

चौघड़ियों की गणना दो प्रकार से होती है—

१. सूर्योदय से वार का प्रथम और फिर वार-क्रम से छठा। छठा चौघड़िया क्रमशः आता जाता है, इस प्रकार दिन रात में सोलह चौघड़िये छः के अन्तर से क्रमशः आते जाते हैं, जैसे रविवार का प्रथम चौघड़िया उद्वेग हैं अतः रविवार के दिन में सूर्योदय के समय उद्वेग तत्पश्चात् उद्वेग से छटा चौघड़िया चले (जोकि शुक्रवार का प्रथम चौघड़िया है) लगेगा। तीसरा शुक्र से छठा बुध का यानी लाभ का रहता है और आगे इसी प्रकार छः के अन्तर से क्रमशः आते जाते हैं और दूसरे दिन सोमवार के सूर्योदय में गणना-क्रम के अनुसार अमृत चौघड़िया लग जाता है। यह गणना पूर्वी भारत में प्रसिद्ध है।

२. इस गणना के अनुसार सूर्योदय से वार क्रम से छठा-छठा चौघड़िया आता जाता है और दिन का प्रथम व अंतिम चौघड़िया एक ही होता है जैसे रविवार के दिन का सूर्योदय के समय का प्रथम चौघड़िया उद्वेग है तो सूर्यास्त के समय अंतिम (आठवां) चौघड़िया भी उद्वेग ही होगा, जैसे, रविवार को सूर्योदय के समय प्रथम उद्वेग दूसरा रवि से छठा शुक्र का चल। तीसरा शुक्र से छठा बुध का लाभ, इसी प्रकार क्रमशः छठा-छठा अमृत काल शुभ रोग और सूर्यास्त के समय अंतिम (आठवां) चौघड़िया उद्वेग आ जाता है।

इस गणना में रात्रि के चौघड़िये वार क्रम से पांचवें। पांचवें आते जाते हैं। दिन की तरह रात्रि के भी प्रथम और अंतिम चौघड़िये समान होते हैं, जैसे रविवार के सूर्यास्त उद्वेग चौघड़िये पर दिन समाप्त हो जाता है तो उद्वेग से पांचवां चौघड़िया शुभ से रात्रि प्रारम्भ होगी। तत्पश्चात् उस रात्रि में पांच-पांच के वार क्रम के अनुसार क्रमशः चौघड़िये लगते जायेंगे, अतः रात्रि के प्रारम्भ में शुभ तथा शुभ से पांचवां अमृत, इसी प्रकार क्रमशः पांचवां-पांचवां चल, रोग, काल, लाभ, उद्वेग और अंतिम (आठवें) शुभ चौघड़िये पर रवि की रात्रि समाप्त हो जायेगी, शुभ से पांचवां चौघड़िया अमृत होता है जो कि सोमवार के दिन का प्रथम चौघड़िया है। इस प्रकार दिन और रात्रि में कुल सोलह चौघड़िये हो जाते हैं। यह गणना पूर्वी भारत को छोड़ कर सब जगह प्रचलित है।

चोड़–सं०पु०—नाश, ध्वंस। उ०—चुगलाळां करि चोड़, गिरधारी गाहे गजां। चढ़ियो खगधारां चढ़े, रंभ रथां राठौड़।—वचनिका

चौड़ाई–सं०स्त्री०—लंबाई के दोनों किनारों के बीच की लम्बवत् दूरी। लम्बाई के विपरीत किनारे का विस्तार।

चौड़े–क्रि०वि०—प्रकट रूप में। उ०—आपरी बेटी सारा जगत रा आंटा उधारा लै है सो आप वरज देओ, अे वचन पती री वीरपणो चौड़े करण रा छै।—वी.स.टी.

यौ०—चौड़े-धाड़े।

रू०भे०—चवड़े।

चौड़े-धाड़े–क्रि०वि०यौ०—खुलेआम, दिनदहाड़े। उ०—१ चौड़ेधाड़े चोर ढंग विन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नहीं किण जोग मिळया घर घर रा मेढ़ी।—ऊ.का.

उ०—२ घसे हरवळां चौड़ेधाड़े आडा लोहां लड़ां अखाड़े। —सू.प्र.

रू०भे०—चवड़े-धाड़े।

चौड़ोतरसौ–सं०पु०यौ० [सं० चतुरुत्तरमृशतम्] एक सौ चार की संख्या या गिनती।

चौड़ौ–वि० (स्त्री० चौड़ी) लम्बाई के भिन्न दिशा की ओर फैला हुआ, लम्बाई के दोनों किनारों के बीच का विस्तार।

चौज—१ देखो 'चोज' (रू.भे.) उ०—१ जिण भळियो न्रिप चौज तन, मांग लियो माहेस। जोड़ै भतीज 'किसन्न' जे, निस दिन जतन नरेस। —रा.रू.

उ०—२ चढ़ि मसंद वैसि इम कहै चौज, कुण देस नगर पूरब कन्नौज।—सू.प्र.

२ उदारता। उ०—चाढ़णौ कुळ जळ, दळद चौजां, वाढ़णौ विरदैत।—र.ज.प्र.

चौजीलौ—देखो 'चोजीलौ' (रू.भे.)

चौजुगी–सं०स्त्री०—चार युगों का समय।

चौंटौ—देखो 'चौवटौ' (रू.भे.)

चौडोळ—२ हाथी. १ पालकी। उ०—चौडोळ लगे रुखमणी जी जिहि भांति चाल्या छै, सुकवि कहै छै।—वेलि.

चौतरफ–क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—चौतरफ लिख फुरमांण चलवे, डाकदार उदार। धाविया वह जूंग धारक' पैक वड अणपार। —सू.प्र.

चौतरौ—देखो 'चवूतरौ' (रू.भे.) (स्त्री० चौतरी)

चौतार–सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष। उ०—सू किण भांत रा वागा छै सिरीसाफ, भैरव, चौतार, कसवो, महमूदी, फूलगार, अधरस, सेला, बाफता, डोरिया।—रा.सा.सं.

चौतारौ–सं०पु०—चार तारों का एक वाद्य विशेष।

चौताळ–सं०पु०—मृदंग का एक ताल (संगीत)

चौताळीस—देखो 'चमालीस' (रू.भे.)

चौताळौ–सं०पु०—आसपास के गावों का समूह। उ०—तिणसूं सूराचंद रै गोखै चौताळै असैंधा असवार देखै तरै पूछण री गाढ़ घणी करै।—जैतसी ऊदावत री वात

मि०—चौखळौ।

जिसमें चार ताल हों चार ताल का।
वि०—चार तालयुक्त।

चौतीणो–सं०पु०—वह चौड़ा कुआं जिस पर चार मोट या चार रहंट एक साथ चल सकें। उ०—महावीर गोतम मुख मोड़ी, चौतीणो खिणियो मिण चोंड़ी।—ऊ.का.

चौतीस–वि० [सं० चतुस्त्रिंशत, प्रा० चोत्तीस, अ०चोत्रिस] तीस और चार के योग के बराबर।
रू०भे०—चउत्रीस।
सं०पु०—३४ की संख्या।

चौतीसमों–वि०—जो क्रम में तेंतीस के बाद पड़ता हो।

चौतीसेक,–वि०—चौतीस के लगभग।

चौतीसौ–सं०पु०—३४ वां वर्ष।

चौतुको–वि०—जिसमें चार तुक हों।
सं०पु०—चार चरणों की तुक मिलने का एक प्रकार का छंद।

चौत्रफ—देखो 'चोतरफ' (रू.भे.) उ०—मल्लांनी ईडर मिळाया मारवाड़ मध्य, चौत्रफ चलायो चावो वांनो वीरताई को।
—जुगतीदांन देथौ

चौत्रीस—देखो 'चौतीस' (रू.भे.)

चौथ–सं०स्त्री० [सं० चतुर्थी] १ माह के किसी पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थी।
मुहा०—१ चौथ रो चांद—ऐसी वस्तु जिसके देखने से कलंक लगे। २ चौथ रो चांद देखणो—व्यर्थ में कलंकित होना।
२ विवाह के बाद चौथे दिन का संस्कार विशेष. ३ चौथा भाग, चतुर्थांश।
[सं० चतुर्थांश] ४ मराठों द्वारा पराजित राजाओं से लिया जाने वाला कर जिसमें आमदनी का चतुर्थांश भाग वसूल किया जाता था।
५ रक्षा के लिए डाकुओं या लूटने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष के व्यक्ति विशेष को रक्षा का उत्तर दायित्व लेनेपर नियमित रूप से दिया जाने वाला कर।
रू०भे०—चउत्थ, चउत्थी चउथी, चउथी, चउथ।

चौथपण, चौथपणो–सं०पु०—मनुष्य के जीवन की चौथी एवं अंतिम अवस्था, वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

चौथ भक्त—उपवास (जैन)

चौथाई–सं०स्त्री०—किसी वस्तु के चार भागों में से एक, चौथा भाग।

चौथियो–सं०पु०—१ प्रति चौथे दिन आने वाला ज्वर. २ 'चौथ' नामक कर वसूल करने वाला, देखो 'चौथ' (४,५) ३ चौथे भाग को प्राप्त करने का हकदार।

चौथी पछेवड़ी–सं०स्त्री०यौ०—जीवन की अंतिम अवस्था, वृद्धावस्था।
उ०—हे कंथ, आपरै मुंहडै धोळा खत रा केस देखतां आपरै विसेख तो जीवण री आस नहीं, चौथी पछेवड़ी आयोड़ा हो।—वी.स.टी.

चौथो–वि० [सं० चतुर्थ] (स्त्री० चौथी) क्रम में तीन के बाद के स्थान पर पड़ने वाला।
रू०भे०—चउत्थ, चउत्थौ, चउथ, चउथो।

चौथो आसरम–सं०पु०यौ० [सं० चतुर्थाश्रम] मनुष्य जीवन का चौथा काल, वृद्धावस्था. २ सन्यासाश्रम।

चौदंत–वि०—प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त। उ०—च्यारि चक्क नव खंड प्रिथी रा जगजेठ जोधार, जमदूत राजिंद्र जोगिंद्र रूप करि उजेणि खेति नर हैंवर धेंधिगर चौदंत हुआ।—वचनिका

चौदंतो–वि० [सं० चतुर्दंत] १ चार दांतों वाला, बचपन और युवावस्था के बीच का (बैल, भैंसा, या अन्य नर पशु)

चौदस, चौदसि, चौदस्स–सं०स्त्री० [सं० चतुर्दशी] प्रत्येक पक्ष की चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी। उ०—१ चौदसि मन चौथी दसा, गया लोक तजि लाज।—अज्ञात उ०—२ देवी सप्तमी अष्ठमी नोम तूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम्म पूजा।—देवि.

चौधर—देखो 'चौधराई' (रू.भे.) उ०—नरसिंघ नूं म्हे मरावसां जै भांड़ग में चौधर म्हारी राखो तो।—द.दा.

चौधरण–सं०स्त्री०—चौधरी की स्त्री। देखो 'चौधरी'।
उ०—तद सारणां सारांई भेळा हुयनै कयो-चोधरी ! चौधरण री अबोलणी भांजसां।—द.दा.

चौधराई, चौधरात–सं०स्त्री०—१ चौधरी का पद, चौधरी का कार्य. २ चौधरी को उसके काम के बदले मिलने वाला धन या पारिश्रमिक।

चौधरी–सं०पु० [सं० चतुर्धरी] १ जागीरदार द्वारा गांव की प्रजा में से (अधिकतर कृषक वर्ग या व्यापारी वर्ग में से) चुना हुआ वह सम्मान्य व्यक्ति जो जागीरदार के पास उस गांव की प्रजा का प्रतिनिधित्व करता था. २ देशी राज्यों में राजा की तरफ से चुना हुआ बड़ा सामन्त जिसकी राय राज्य के प्रत्येक आवश्यक कार्य, नये कानून या कर आदि लगाने पर लेनी आवश्यक थी। ये संख्या में चार होते थे।
३ जाट, सीरवी, कुनबी (पटल) आदि कृषक वर्ग का व्यक्ति।
(स्त्री० चौधरण) (सम्मान)

चौधार, चौधारण, चौधारो–सं०पु०—१ चारों ओर तेज धार वाला भाला विशेष (ना.डिं.को.)
उ०—१ चारण ग्रहि चौधार सत्रु मारण अवसांण सिंध, वागो डारुण वेंणउत सिरदारां सिरदार।—वचनिका
उ०—२ त्रुट पड़ै ऊधड़ै वगतर, चौधारां धारां खग चोट।
—राजा भीमसिंह शिशोदिया टोडा रो गीत
उ०—३ त्रवारा चौधारा जड़े भव्वता रा, पाटूरा प्रहारा ढिका ढिच्चणां रा।—नां.द.
२ एक प्रकार का बाण (अ.मा.)

चौनिजर, चौनिजरे, चौनीजर–क्रि०वि०—समक्ष, सम्मुख, सामने।
उ०—१ चौनिजर मिळै भड़ समर चाव, रिण समै मिळै खग जोधराव।—पे.रू.
उ०—२ जठै मूणसिंघजी व कोटवाळ चौनिजरे हुआं दौढ़ी भीतर।
—द.दा.
उ०—३ हे वाह कर आपनें पूगोड़ा जोधारां पाछा ......

कठै पधारो, मरदां सूं चौनिजर हुवोड़ा कोई बिनां घांवां जाय सकै नहीं ।—वी.स.टी.

चौपइया, चौपई—सं०स्त्री०—एक मात्रिक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्रायें होती हैं और अंत में जगण होता है ।

चौपखेर, चौपखैर—देखो 'चौफेर' (रू.भे.) उ०—१ पत्री च्यारि विचाळै दिराई आंगुळ विहुं विहुं रै पहनै री । अर फिरवाज चौपखेर पणि आंगुळां बिहुं विहुं रै पहनै री ।—द.वि.

उ०— २ ढांकणियै पहाड़ ऊपरै गढ़ करायौ, चौपखैर कोस २ रै आंतरै पहाड़ ऊपरा वळे गढ कराय नै राजथांन वांध्यौ ।

—राव रिणमल री वात

चौपग, चौपगौ, चौपग्गौ—सं०पु०—चार पैर वाला पशु, चौपाया पशु (ह.नां.)

मुहा०—चौपगौ होणौ—विवाहित होना, शादी करना ।

चौपड़—सं०स्त्री० [सं० चतुष्पट, प्रा० चउप्पट] १ चौसर नामक खेल । इस खेल की बिसात और गोटियां आदि । उ०—करे खाग पासौ भरतखंड चौपड़ करै, दुगम खेळा मिळै भिड़ दुवाहां । दियंतौ घण घाव दाव जिम, सारां जिमि जोध रमाड़ै वादसाहां ।

—जयसिंह आंमेर रा धणी री वात

२ चौसर के खानों के अनुसार पलंग की बुनावट ।

यौ०—चौपड़-भांत ।

३ वह स्थान जहां से चार रास्ते विभिन्न दिशाओं में जाते हों ।

सं०पु०—घृत (ह.नां.)

रू०भे०—चोपड़ ।

चौपड़ा—सं०स्त्री०—१ परिहार वंश की एक शाखा. २ जैन समुदाय की एक जाति ।

चौपड़ाबंध—वि०यौ०—चौसर के खानों के आकार का बना हुआ ।

चौपड़ी—सं०स्त्री०—१ कापी, पंजिका. २ छोटी वही. ३ किताब, पुस्तक. ४ चौपड़ नामक खेल । उ०—चित चौपड़ी चेतन धारि चौथै, दोऊं मेलि जुग हूवा । खेलैं सदा सुरति के नाकै फूटि न चालैं जूवा ।

—ह.पु.वा.

चौपड़ौ—सं०पु०—१ पंचांग, पत्रा. २ कुंकुम पत्रिका. ३ पूजा के लिये कुंकुम चावल आदि रखने का दो खाने का एक पात्र. ४ भाटों द्वारा वंशावली लिखने की बड़ी पुस्तक या वही. ५ जमाखर्च करने की वही ।

चौपट—वि०—१ चारों ओर से खुला हुआ, अरक्षित. २ नाश, ध्वंस । उ०—भार ग्रहे घणनाद जिसा भट, चौपट मार अचोता ।—र.ज.प्र.

मुहा०—१ चौपट करणौ—वरबाद कर देना । २ चौपट होणौ—विगड़ जाना ।

३ देखो 'चौपड़' ३ (रू.भे.)

चौपथ—सं०पु० [सं० चतुष्पथ] चौराहा, चौरास्ता ।

चौपद—सं०पु० [सं० चतुष्पद] चार पैरों वाला पशु, चौपाया ।

चौपदार—देखो 'चोवदार' (रू.भे.) उ०—साथै कांमदार कांम रै वास्तै वेणीदास नै लियौ । चंदन चौपदार, मोहण सेजवरदार और भी कुंवर रा सारा हजूरियां नै साथै लिया ।—पलक दरियाव री वात

चौपन—वि० [सं० चतुःपञ्चाशत्, प्रा० चउप्पण्णा, अ० चउवण्णा] पचास और चार के योग के बराबर ।

सं०पु०—५४ की संख्या ।

चौपनमौं—वि०—जो क्रम में तरेपन के बाद पड़ता हो ।

चौपनियौ—सं०पु०—छोटी वही, रोजनामचा ।

चौपनै'क—वि०—चोपन के लगभग ।

चौपनौ—सं०पु०—५४ वां वर्ष ।

चौपाई—सं०स्त्री० [सं० चतुष्पदी] मात्रिक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्रायें होती हैं । इसमें केवल द्विकल और त्रिकल का ही प्रयोग होता है ।

चौपायौ—सं०पु० [सं० चतुष्पद प्रा० चउप्पाव] चार पैरों वाला पशु । उ०—खूटा नीर नीवांणां खारा, चौपायां घर मिळै न चारा ।

—ऊ.का.

चौफड़ी—देखो 'चौपड़ी' (रू.भे.)

चौफळौ—वि०—१ वह जिसमें चारों ओर तेज धार हो. २ चारों पैरों को एक साथ उठा कर दौड़ने वाला । चौकड़ी भरने वाला ।

चौफाड़—सं०स्त्री०—किसी वस्तु को चीर कर किये हुए चार भाग ।

मुहा०—चौफाड़ वोलणौ—खुलेआम अश्लील भाषा का प्रयोग करना ।

चौफूली—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की छोटी मेख विशेष. २ आक या मदार के पुष्प का अंदर का भाग ।

चौफूली-चौपण—सं०स्त्री०यौ०—१ आभूषणों पर खुदाई का काम करने का एक औजार. २ आठ फूलों की एक खुदाई विशेष (स्वर्णकार)

चौफेर—क्रि०वि० यौ० [चौ+फेर] चारों ओर, चारों तरफ । उ०—अरै थूं वण ऐंड़ी इकलांण. लाई बीती वातां घेर । याद री जूनी जाजम ढाळ, फिरगी पल भर में चौफेर ।—सांझ

चौफेरी—सं०स्त्री०—१ चारों ओर घूमने का कार्य, परिक्रमा. २ क्षत्रियों एवं चारणों में दूल्हा, दुल्हिन के मिलने की प्रथम रात्रि का नाम । इस रात्रि में रात्रि भर ढोलनियां गाती रहती हैं । उ०—चौफेरी रौ रंग चढ, अज किम वण्यौ अजांण । कजियौ करवा काळ सूं, पिसणां कीध प्रयांण ।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०वि०—चारों ओर । उ०—कसवां वांध कतार वजै वड़ बीकानेरी, डूंगर गढ डूंगरां, तीव्र चूरू चौफेरी ।—दसदेव

चौवंदी, चौवंधी—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की छोटी चुस्त अंगिया या कुरती. २ घोड़ों के चारों पैरों में लगाई जाने वाली नालें । उ०—हूनरवंधां हूनर घणी तिण दिन मुंहगाई, चत्र रुपियां चौवंधी जंगम खुरताळ जड़ाई ।—सू.प्र.

चौव—देखो 'चोव' (रू.भे.)

चौवगळौ—सं०पु०—कुरती, फतुही और अंगे आदि में वगल के नीचे की ओर कली के ऊपर का भाग ।

उ०—हुनरबंधां हूनर घणी तिण दिन मूंहगाई, चत्र रुपियां चोवंधी जंगम नुरनाळ जड़ाई।—सू.प्र.

चोवळ–क्रि०वि०—चारों ओर, चारों तरफ।

चोवळदी–सं०स्त्री०—चार बैलों की गाडी।

चोवा–सं०स्त्री० [सं० चतुर्वेदी] ब्राह्मणों की एक जाति जो अपने आपको चतुर्वेदी कहते हैं।

चोवाई–सं०स्त्री०—एक प्रकार की गांठ या टूटी रस्सी के सिरों को जोड़ने का ढंग विशेष।
रू०भे०—चोवाई-गांठ।

चोवायो–वि०—चारों तरफ का, चहुं ओर का।

चोवार–वि० [सं० चतुर्द्वार] १ जिसके चार दरवाजे हों. २ प्रकट, खुले-आम।
मुहा०—चोवार करणो—प्रकट करना, विख्यात करना।

चोवारी–सं०स्त्री०—देखो 'चोवारो' (अल्पा. रू.भे.)

चोवारो–सं०पु० [सं० चतुर्+द्वार] १ चारों ओर से खुले दरवाजों वाला स्थान या कमरा जो पहली मंजिल या छत पर बना होता है।
उ०—घोमारां धड़हड़ां, डाकदारां हीकारां। चौवारां प्रज चढ़े, पड़े हटनाळ बाजारां।—सू.प्र.
२ मकान की छत पर स्वतंत्र रूप से बनाया गया कमरा जो नव विवाहित दम्पत्ति के सोने-उठने के काम आता हो (क्षेत्रीय)
३ बैठक के लिए बना हुआ वह स्थान जो चारों ओर खुला हो और ऊपर से छाया हुआ हो. ४ चौथी बार उलटा कर तैयार किया हुआ शराब।

चोविस, चोवीस–वि० [सं० चतुर्विंशति, प्रा० चउवीस] बीस और चार का योग।
सं०पु०—२४ की संख्या।
रू०भे०—चउवीस, चोइस, चोईस, चोवीस।

चोवीसमों—देखो 'चोईसमों' (रू.भे.)

चोवीसे'क—देखो 'चोईसे'क' (रू.भे.)

चोवीसो–सं०पु०—२४ वां वर्ष।

चोवे—देखो 'चोवा' (रू.भे.)

चोवोलो–सं०पु०—१ एक मात्रिक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ८ और ७ पर यति सहित कुल १५ मात्रायें होती हैं और अंत में लघु और गुरु होता है. २ प्रथम चरण में १६ मात्रा, द्वितीय में १४ मात्रा—इस क्रम से चारों चरणों में ६० मात्रा का मात्रिक छंद विशेष (पिं.प्र.) ३ 'रघुवरजस प्रकास' के अनुसार १६, १४ पर यति युक्त मात्रा का मात्रिक छंद जिसके अंत में गुरु वर्ण होता है।

चोवो–सं०पु०—ब्राह्मणों की चोवा शाखा का व्यक्ति।

चोभंग–वि०—निर्भय, निशंक।
उ०—रांणा री बेटी बरछीयां री चंवरी बांध परणीया राठोड़ नैं वळै पग पसार चोभंग होइ नै चीतोड़ ऊपरा पोढ़ै छै।
—राव रिणमल री वात

चोभट–वि०—खुला, प्रकट।

चोभुजा–वि०—चार भुजाओं वाला।
सं०पु०—विष्णु।

चोमंजिलो–वि०—चार मंजिल या चार खंड वाला।

चोमक–सं०पु०—हटड़ी।

चौमख-दिवलो—देखो 'चौमखदीवो' (रू.भे.)

चौमाळ, चौमाळी, चौमाळीस—देखो 'चमालीस' (रू.भे.)
उ०—धुर अठार चवदह दुति, बारह तीजी वेस। तीन कंठ घर तुक तणा मत चौमाळ मुणेस।—र.ज.प्र.

चौमाळीसो, चौमाळो–सं०पु०—४४ वां वर्ष।

चौमास—देखो 'चौमासो' (रू.भे.)

चौमासियो–वि०—वर्षा ऋतु संबंधी।

चौमासी–सं०स्त्री०—वर्षा के समय या वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक प्रकार का लोकगीत।

चौमासो–सं०पु० [सं० चतुर्मास] १ वर्षा ऋतु का समय, वर्षाकाल, वर्षा ऋतु के चार महीने। उ०—१ पावस चौमासो आयां जक पड़े, घरे रहै जितरै चौमासो न आवै, इतरै पैलां सत्रुआं ने घणी दहल पड़ै छै।—वी.स.टी. उ०—२ आसा आसा ऊमड़ै, चौमासै घण थाट। काळी घटा निहारतां, प्यारी जोवै बाट।—र.रा.
उ०—३ हरसा वीर म्हारा रे, बावल आवै म्हांरै याद। जांमण का रे जाया, नैणां चौमासो रे म्हांरै लग रह्यो।—लो.गी.
२ आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी तक वर्षा काल में कुछ-कुछ दिनों का अंतर देकर किया जाने वाला व्रत (जैन)

चौमेळो–सं०पु०—परस्पर दृष्टि मिलने का भाव, चार आंखें होने का भाव। (मि० चौनिजर)

चौमुख–क्रि०वि०—१ चारों ओर, चारों तरफ. २ देखो 'चौमुखो' (रू.भे.)

चौमुखो–वि०—चार मुंह वाला, जिसके चार मुख हों।

चौरंग–सं०पु०—१ तलवार का वार करने का एक ढंग, तलवार का एक हाथ। उ०—चौरंग चूरिया वर सेत 'चांदै' भिड़ै नवली भांति।—राठौड़ चांदा वीरमदेवोत मेड़तिया रो गीत
२ देखो 'चौरंगो' (रू.भे.) उ०—भाई चाड करण रिण भिड़तं, अर साभे खागां अमळ। चरण विना लोटै घट चौरंग, कर विन घट घट विन कमळ।—द.दा.
३ युद्ध, समर। उ०—१ 'चांपा' चौरंग अग्गळा, 'कांन्ह' अनै 'हरनाथ'। सोजत ऊपर हल्लिया, बांधै फौज समाथ।—रा.रू.
उ०—२ मोनूं 'गोयंद' मारणो, चित नहिं अनिचाळा। सुरतांणां दळ मझि सभो, चौरंग चिरताळा।—सू.प्र.
४ संसार का आवागमन। उ०—वेवै मात पिता त्रिय बंधव, कुळ धन बंधव काचो। चौरंग मझ जम हूं त बचायब, साहित्र राघव सांचो।
—र.ज.प्र.
वि०वि०—संसार की मुख्य चार योनियां मानी गई हैं—जरायुज, अंडज, उद्भिज, स्वेदज और इन्हीं चार से संसार के लिये चौरंग शब्द का प्रयोग किया गया है।

५ मैदान, क्षेत्र। उ०—धार विहार अणी घट घौरंग, चुख चुख होय पडूं रिण चौरंग।—सू.प्र.

६ वलिदान के लिये लाया हुआ वह भैंसा जिसके सींगों में रस्सा बांध कर अगले पैरों के बीच से निकाल कर रस्से से पिछले पैरों को बांध दिया जाता है। उ०—तरवारयां किण भांत री छै।···वगतर में वाही दोय टूक करै, चौरंग में वाही थकी सीक सिरौ चलणिया सार वाढ़ै।—रा.सा.सं.

७ योद्धा, वीर।

सं०स्त्री० [सं० चतुरंगिनी] ८ सेना, फौज। उ०—चौरंग में चौरंग विण, वळि की सर्क विगाड़। चट ऊछळ हेकज चणौ, भंवै न फोड़ै भाड़।—रेवतसिंह भाटी

९ चतुरंगिनी सेना. उ०—घटां घटां चौरंग चा नारंग उलट्ट, किर फूटै विच चोहटां रंगरेजां मट्ट।—द.दा.

वि०—१ चार. २ वह जिसके चार अंग हों, चार प्रकार का, (अ) जैसे चार प्रकार की सेना—१ हाथी; २ घोड़े; ३ रथ; ४ पैदल। उ०—हळावोळ चौरंग दळां वीच मुजै हरण गजां कुळ कुळत हुए घर गाह।—कल्यांणदास महडू

यौ०—चौरंग-दळ।

(आ) जैसे—चार प्रकार की लक्ष्मी—१ राज्य लक्ष्मी; २ विजय लक्ष्मी; ३ गृह लक्ष्मी; ४ धन-दौलत (भोग्य लक्ष्मी)

उ०—१ समपै लाख पसाव, गांव पटा औधा गरथ। चौरंग लक्ष्मी चाव, जिण तिण घर कीन्हौ 'जसा'।—ऊ.का.

उ०—२ धजवंधी कोड़ीधज लखेसरी दौलतिवंत चौरंग लिखमी रा लाडला लोक वडा वापारी घणा सुख चैन सूं वसै छै।—रा.सा.सं.

यौ०—चौरंग-लक्ष्मी।

चौरंगि, चौरंगी—देखो 'चौरंग' (रू.भे.) उ०—१ मुंह विहंडियौ भुजै राव मारू, दुजड़ै भड़ां दाखतै देख। चौरंगि चहुं दळां 'चांदाउत, आगळि' हुवा तणौ अविसेख।—राठौड़ गोरधनसिंह चांदावत रौ गीत

उ०—२ कसियै जरदि मरद नवकोटी, चौरंगि चढ़िये प्रभत चड़े। ऊभौ जां वांसै 'आसावत', परि हुंस सु नहं पुरांणि पड़ै।

—राठौड़ अमरसिंह आसकरणोत (कूंपावत) रौ गीत

चौरंगौ—सं०पु०—१ वह व्यक्ति जिसके दोनों हाथ व दोनों पैर काट डाले गये हों। उ०—भभारा भभक्कं, चौरंगा उचक्कं।—सू.प्र.

२ हाथ पैर काट डालने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

३ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

उ०—तरवारां रा छणकार हुयनै रह्या छै, चौरंगां री खाटखड़ हुयनै रही छै, कटोरां मांहै फूल लीजै छै।—रा.सा.सं.

वि०—जिसमें चार रंग हों। चार रंगों वाला।

चौर—देखो 'चोर' (रू.भे.)

चौरक, चौरगौ—सं०पु० —पीणा नामक सर्प।

वि०वि०—देखो 'पीणौ'

चौरस—वि० [सं० चतुरस्रः] १ जो समतल हो, जो ऊंचा-नीचा न हो. २ वर्गाकार।

सं०स्त्री०—चौपड़ नामक खेल। उ०—मैं रात पिया संग चौरस खेली, रम-रम हारी मैं, रात पिया संग चौरस खेली।

—लो.गी.

चौरसा—सं०स्त्री०—प्रथम नगण, फिर यगण सहित कुल छः वर्ण का वर्णिक छंद विशेष (पिं.प्र.)

चौरसियौ—सं०पु०—वहुत छोटा हथौड़ा जो प्रायः कांच के नगीने या कोमल वस्तुओं पर चोट लगाने के काम में आता है।

चौरसी—सं०स्त्री०—वढ़ई का एक औजार विशेष जो लकड़ी खोदने तथा चूल निकालने के काम आता है।

चौरांगि—सं०पु०—१ खुला मैदान. २ युद्ध।

चौरांणवौ—सं०पु०—९४ वां वर्ष।

चौरांणू—वि० [सं० चतुर्नवति, प्रा० चउणाउइ] नव्वे और चार के योग के वरावर।

सं०पु०—९४ की संख्या।

चौरांणूक—वि०—चौरानवे के लगभग।

चौरांणूमौ—वि०—जो क्रम में तिरानवे के वाद पड़ता हो।

चौरा—सं०पु०—चौवारा, महल। उ०—थाप्या चौरा चउखंडि थाप्या, सांभरिक का रणवास। राजा चाल्यौ उलगइं, सहू अंतेवरी मेल्ही नीसास।—वी.दे.

चौरासियौ—सं०पु०—८४ वां वर्ष।

चौरासी—वि० [सं० चतुरशीति, प्रा० चउरासीइ] अस्सी और चार के योग के वरावर।

सं०पु०—१ ८४ की संख्या. २ प्राणियों की चौरासी लाख योनियां। (पुराणों के अनुसार जीव चौरासी लाख प्रकार के माने गये हैं।)

उ०—१ क्रम वधण वंधियौ न्याइ भटकै चौरासी। सुज छोडण रिण छोड अगम ओहिज अविणासी।—ज.खि.

उ०—२ रात दिवस हिक रांम, पढ़िए जो आठूं पहर। तारै कुटंव तमांम, मिटै चौरासी मोतिया।—रायसिंह सांदू

३ नाचते समय पैरों में वांधने का एक प्रकार का घुंघरू. ४ पत्थर काटने की एक प्रकार की टांकी, छैणी. ५ योग के चौरासी आसन. ६ कामशास्त्र के अंतर्गत चौरासी आसन।

वि०वि०—देखो 'आसण'।

७ चौरासी गांवों का समूह।

चौरासीक—वि०—चौरासी के लगभग।

चौरासीवंध—सं०पु०यौ०—डिंगल के चौरासी प्रकार के गीत (छंद)

उ०—दोय प्रकार का काव्य रूप, च्यार प्रकार की वांणी, सात प्रकार का सर, च्यार सूं लेके चाढावै। आठ में सर की झपट पर वे चौरासीवंध रूपकों के सिरजणहार।—सू.प्र.

चौरासीमौ—वि०—जो क्रम में तिरासी के वाद पड़ता हो।

चोरास्टक-सं०पु० [सं० चोराष्टक] पाडव जाति का एक संकर राग। (संगीत)

चौरिंद्रय-सं०पु०यौ०—चार इन्द्रिय वाले जीव (डांस, मच्छर, मक्खी, तीड़, पतंग, भ्रमर, वृश्चिक (बिच्छू) केंकड़े, मकड़ी, कंसारी इत्यादि)

चौरी—देखो 'चंवरी' (रू.भे.) उ०—पुत्र सजोड़ी परणिया, चौरी वंदि चिमारि।—रामरासौ

चौळ—देखो 'चोळ' (रू.भे.)

उ०—१ लागीणी संदेस सुणै घण चौळ करंती। लै सुख मिळण जितोक सैण-वव बोल सुणंती।—मेघ.

उ०—२ रीस कसीय घुमंती रमती, चवती मदन महारस चौळ। हालै घड़ नीसांण हुवाए, रिण पाखर करि नेवर रोळ।—दूदौ

चौलड़ौ-वि० (स्त्री० चौलडी) १ चार तह का, चार लड़ों वाला, चार परत का. २ चौगुना। उ०—अंग-अंग में दखण री सी दमक जिणसूं ग्रहणां री दो लड़ी, तेलड़ी, चौलड़ी चमक। —र. हमीर

चौळाई-सं०स्त्री०—एक प्रकार की पत्ती वाली सब्जी, चंदलाई।

चौवड़, चौवड़ौ—देखो 'चौलड़ौ' (रू.भे.)

चौवटियौ, चौवटौ-सं०पु०—१ गांव के मध्य का खुला मैदान. २ गांव के बीच का वह खुला मैदान जिसके चारों ओर दूकानें हों. ३ गायों के एकत्रित होकर रात्रि को विश्राम करने का स्थान. ४ चौराहा, चौरास्ता।

रू०भे०—चउहट्ट, चउहट्टइ, चांवटौ, चौंटौ, चौ'टौ, चोहटौ, चौहट्टौ।

अल्पा०—चौवटियौ।

चौवळ, चौवळी, चौवळै-क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—चौवळ ग्राह तंत गज चरणां। जकड़ डबोवण खंच जवरणां।—र.ज.प्र.

चौवळौ—देखो 'चौलड़ौ' (रू.भे.) उ०—चाळै जागा यळा धंकी बीजळा भटक्कै चखां। भूल पेखै ग्रावळा चौवळा देखै भोक। —डूंगजी जवारजी री गीत

चौवाळै-क्रि०वि०—चारों तरफ, चहुं ओर। उ०—वळ वाहड़दे जेड़ जेण पंड्यौ परजाळै। वाहड़दे अंस चढ़ै वैर गंजै चौवाळै।—नेणसी

चौवास्या-सं०पु० [सं० चतुर्मास] वर्षाकाल के चार माह।

चौवितार-सं०पु०यौ०—चार प्रकार का आहार (जैन)

चौवीस—देखो 'चौबीस' (रू.भे.)

चौवीसटौ, चौवीसौ—देखो 'चौइसौ' (रू.भे.) उ०—इम चैत चौवीसटौ अवचळ। स्री बीकानेर विराजे ए।—स.कु.

चौवोतर—देखो 'चौहतर' (रू.भे.)

चौवोतरे'क—देखो ('चौहतरे'क' रू.भे.)

चौवौ—१ देखो 'चोवौ' (रू.भे.) उ०—चौवा चंदन लाय तन, करता वहोत सिंगार।—ह.पु.वा.

२ हाथ की चार अंगुलियों का समूह।

चौस—सं०पु०—फूलों का हार, पुष्पहार। उ०—चौहटे मांहे नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहणहार सोळै सिणगार ठवियां थकां फूलां रा चौस पहरियां थकां।—रा.सा.सं.

रू०भे०—चौसरौ।

चौसट—देखो 'चौसठ' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—चौसठ शक्तियां (योगिनियां) उ०—पाट अंग वरंग जग भाट खागां पड़ै, वहै धड़ खाग पड़िया अगुट वड़वड़ै। हर खड़ा वीर चौसट सहत हड़हड़ै, लूथ वथ हुआ अमराव खावंद लड़ै। —नीमाज ठाकुर सुरतांणसिंह री गीत

चौसटमौं—देखो 'चौसठमौ' (रू.भे.)

चौसटौ—देखो 'चौसठ' (रू.भे.) उ०—फौजां लड़ंग पेल तोपां हुए, चौसटी खेल लगवीर चाळौ। ताइयां ठेल जुध हेल टणका तणी, वणायौ दुरंग गज वेल वाळौ।—जवांनजी आढ़ौ

चौसटे'क—देखो 'चौसठेक' (रू.भे.)

चौसठ-वि० [सं० चतुष्पष्टि, प्रा० चोसट्ठि] साठ और चार के योग के बराबर।

सं०पु०—१ ६४ की संख्या।

सं०स्त्री०—२ चौसठ शक्तियां (योगिनियां)

चौसठमौं-वि०—जो क्रम में तरेसठ के बाद पड़ता हो।

चौसठि, चौसठी—देखो 'चौसठ' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—१ चौसठ कलायें। उ०—व्याकरण पुरांण सम्रिति सासत्र, विधि वेद च्यारि खट अंग विचार। जांणि चतुरदस चौसठि जांणि, अनंत अनत तसु मधि अधिकार।—वेलि.

वि०वि०—देखो 'कळा'।

२ चौसठ योगिनियां। उ०—१ चोटियाळी कूदै चौसठि चाचरि, धू ढळियै ऊकसै धड़। अनंत अनै सिसुपाळ ओभड़ै, भड़ मातौ मांडियौ भड़।—वेलि.

उ०—२ चौसठी पियै भरि पत्र चंड। सिर माळ सभै आरोह संड। —सू.प्र.

चौसठे'क-वि०—चौसठ के लगभग।

चौसठौ-सं०पु०—६४ वां वर्ष।

चौसर-सं०पु०—१ केश, वाल। उ०—हले थाट दखणाद लग टल तोपां हसत, खसत मद मींढ़रा नरां खागां। मरट तिण वार राखी विकट मोसरां, सुपेती चौसरां तणी 'सांगा'। —रावत संग्रांमसिंह सक्तावत री गीत

सं०स्त्री० [सं० चतुस्सारिः] २ एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार चार गोटियों से खेला जाता है। गोटी चलने के लिये पाशा या कोड़ी फेंकी जाती है. ३ किसी पुरुष की चौथी पत्नी। ४ मूछ, श्मश्रु।

उ०—भूतांण रांम रा वांण चौसरां अणाय भ्रूहां, खेड़ेच वेढ़ाक दळां ऊफणाय खीज।—महादांन महडू

५ देखो 'चौसरौ' (रू.भे.) उ०—१ पहर चौसर सुवर अपछर, सधर रघुवर दुछर वह सर ।—र.ज.प्र.

उ०—२ झिलमां सहितां सिर झड़ै, कर वारै संकर। कंठ चौसर घातै करै, छक सूर अपच्छर ।—सू.प्र.

६ देखो 'चौसरां' (रू.भे.) उ०—१ चौसर सिर हूतां चमर, दळ सभि हले दुभाल । मिळण 'साह महमंद' हूँ, महाराजा 'अभमाल' । —सू.प्र.

उ०—२ वाजा चौसर वाजिया, जस प्रगटै जैकार । दोन्हो कूरम्मां दुग्रो, 'अभो' हुवौ असवार ।—रा.रू.

चौसरां, चौसरा, चौसरियै, चौसरै—क्रि०वि०—चारों ओर।

उ०—१ सत्थरां सोय सारा सुखी, चवरी दुळतां चौसरां। तन लगन तीसरां री तिकां, मंगत ध्यांन मन मोसरां ।—ऊ.का.

उ०—२ दळां गहमह कीध ढंवर, चौसरा सिर हुवा चंम्मर । गाजतां गज मेघ गाजा, वाजतां मंगळीक वाजा ।—सू.प्र.

उ०—३ जिस प्यालू के वीच ही अन्नार, दालचोनी, परतकाळी, अंगूरी गले-गुलाब एसी भांति भांति के फूल ऐराक भरते हैं। उस वखत चौसरियै पति करि जरकसी समियांनां स्रीसाप का मंगसखांना खड़ा करि सुनहरी की चौकी धरि तिस परि भोजन पूर कनकथाळ विराजमांन करि खिजमत गारू नै अरज कीवी भोंजाई की तयारी ।—सू.प्र.

उ०—४ ऐसे मगज सौं आय तख्त परि विराजै, चौसरै चमर होय इंद्र सा छाजै ।—सू.प्र.

चौसरियौ, चौसरौ—सं०पु० [सं०चतुर+सर] १ पुष्पहार, फूलों की माला। उ०—सू सारै साथ नै वकसजै छै। फूलां रा चौसरा घातजै छै ।—रा.सा.सं.

२ मुंड-माला। उ०—इधकाय इसड़ो गजर उडियौ, घाय खळ जुड़ि घूमरा । पहराय न सकै माळ कंठ परि, आय न सकै अपछरा । इण चूक ऊपर हसै मुनि-इंद्र, सभै जोगिद चौसरा। रोस रा घाव करंत किरमर, मिळै भौंहर मोसरा ।—सू.प्र.

३ आंखों से लगातार बूंद बूंद रूप में गिरने वाली आंसुग्रों की अविरल धारा, अश्रु-धारा, अश्रु-प्रवाह। उ०—१ सजण सिधाया हे सखी, ऊभी आंगण वीच । नैणां चाल्या चौसरा, काजळ माच्यौ कीच । —अज्ञात

उ०—२ चख जळ चालै चौसरा, सारौ सहर उदास । मुरधर विलखै मारुवां, अव नह दरसण आस ।—ठा. फतहसिंह आसोप

४ चौथी बार उलट कर निकाला हुआ तेज शराव। उ०—वाई जी सूं थोड़ो सो पियां मतवाळो हुवै, इसो चौसरौ कढ़ाय रे, विदेसीड़ा रे, आयौ छै चौमासौ ।—लो.गी.

रू०भे०—चौसर।

अल्पा०—चौसरियौ।

चौसहणौ, चौसहवौ—देखो 'चूसणौ' (रू.भे.)

चौसाकौ—सं०पु० [सं० चतुस्+शाक] वह धातु का बना पात्र जिसमें चार कटोरी नुमा पात्र लगे होते हैं तथा बीच में उन्हें पकड़ने की एक कड़ी होती है। इसे साग परोसने के काम में लिया जाता है।

चौसारौ—देखो 'चौसरौ' (रू.भे.) उ०—सोचण लागी इसै रूप री भेट किण नै देऊंला । आंख्यां में चौसारा छूट गया ।—वरसगांठ

चौसाळा—सं०स्त्री० [सं० चतुःशालम्] वह मकान जिसके चारों ओर खुले वरामदे हों।

चौसाळी—सं०स्त्री०—बैल गाड़ी के आगे के भाग में लगाये जाने वाले सीधे लम्बे डंडे।

मि०—सालियौ।

चौसींगौ—देखो 'चोसींगौ' (रू.भे.)

चौसौ—सं०पु०—चार सौ धागों का ताना (जुलाहा)

चौहट—देखो 'चौवटौ' (रू.भे.)

चौहटी—सं०स्त्री०—पेड़ की शाखा। उ०—ताहरां पीपळ री माळी हेरि नै आया, पाछिलि राति घड़ी चार थकां चौहटियां नुं तोड़ि नै वैसांणिया ।—चौबोली

वि०—गांव के चौहटे में बैठने वाला।

चौहटौ, चौहट्टौ—देखो 'चौवटौ' (रू.भे.) उ०—ग्यांन चौसर मंडी, चौहटे सुरत पासा सार ।—मीरां

चौहतर, चौहत्तर—वि० [सं० चतुस्सप्तति, प्रा० चासत्तरि] सत्तर और चार का योग।

सं०पु०—७४ की संख्या।

चौहत्तरमौं—वि०—जो क्रम में तिहत्तर के वाद पड़ता हो।

चौहत्तरे'क—वि०—चौहत्तर के लगभग।

चौहत्तरौ—सं०पु०—७४ वां वर्ष।

चौहथी—सं०स्त्री०—१ वह वस्तु जो चार हाथ चौड़ी, लम्बा या माटा हो. २ बकरी के वालों से बुनी हुई मोटी खुरदरी पट्टी जो गाड़ी पर बड़ी-बड़ी लकड़ियां खड़ी कर उसके अन्दर की तरफ चारों ओर खींचने के काम आती है, जिसके अंदर प्रायः भूसा, पाला आदि भर कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से लेजा सकते हैं।

वि०—चार हत्थों वाली।

चौहरौ—देखो 'चौलड़ौ' (रू.भे.)

चौहवंटौ—देखो 'चौवटौ' (रू.भे.) उ०—वाई ए वीरा रे पळकै मोहळियौ, भावज रे चमकै चूड़लौ। वीरौ बैठा है चौहवंटा रे मांहि, जाणूं जायल रौ जाट खींवाड़ा री चौधरी ।—लो.गी.

चौहांन—सं०पु०—क्षत्रियों की एक वहुत प्रसिद्ध वंश या इस वंश का व्यक्ति।

चौहींगौ—देखो 'चोसींगौ' (रू.भे.)

चौहोतर—देखो 'चौहतर' (रू.भे.)

च्यंत, च्यांत—सं०स्त्री०—चिन्ता, सोच। उ०—जाल जळाखौ··· गोरड़ी, सोवन पायल पय झळकंति । रतन जड़ित सिर राखड़ी, सवि गति वीसरी थारी च्यंत ।—वी.दे.

च्यहूपरि—क्रि०वि०—चार प्रकार से।
च्यांनणी—देखो 'चांदणी' (रू.भे.)
च्यार—देखो 'चार' (रू.भे.) उ०—नवे वरस च्यार हुवा जद जवरी नूं वीसळदे इणसूं रत कियो।—वां.दा. ख्यात
च्यार-ग्रांनी—सं०स्त्री०यौ०—चार ग्राने का सिक्का, चवन्नी।
च्यारइ-पासई—क्रि०वि०यौ०—चारों ग्रोर।
च्यारक—देखो 'चार' (रू.भे.)
च्यारमों—वि०—जो क्रम में तीन के बाद पड़ता हो, चौथा, चतुर्थ।
च्यारि—वि०—चार। उ०—वरसवि च्यारि न मेह वरखि। पड़ै धर काळ नागो लगि पखि।—रा.रू.
च्यारिभुज—सं०पु०यौ० [सं० चतुर्भुज] चतुर्भुज, विष्णु।.
च्यारुं, च्यारु—वि०—चारों। उ०—परवतसर चौरासी मारोठ री दाळ ग्रावै ग्रौर च्यारुं पासां री माल खायजै।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात
च्यारूंमेर, च्यारूमेर—क्रि०वि०यौ०—चारों तरफ।
उ०—गूजरी कह्यौ—म्हे तो पैसतो दीसो न छै नै पैठो छै नै मांहै छो तो राजि देस रा धणीयां ग्रागै कठै जाय ? सढो मोटो छै नै च्यारूमेर सदा दोळां ऊतरो, विराजो, ठंडाई करो।—राव रिणमल री वात
च्यारे—वि०—चार। उ०—'दीपो' 'गोइंद' 'देद' गिण, रूक हला रिण ढांण। तैसा च्यारे 'कुंभ' तण, जैसा पंडव जांण।—रा.रू.
च्यारेक—वि०—चार के लगभग।
च्यारचांमेर—देखो 'च्यारूं-मेर (रू.भे.) उ०—च्यारचांमेर कूवा सूर हाडां सूं भरायो। कोसां च्यारि तांई बीर वाळू सो बुरायो।—शि.वं.
च्योंरी—देखो 'चंवरी' (रू.भे.)

छ

छ—संस्कृत, देवनागरी और राजस्थानी वर्णमाला में व्यंजनों के स्पर्श नामक भेद के अन्तर्गत चवर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

छंगा-वि०—काटा हुआ।

छंगाणौ, छंगावौ—देखो 'छांगाणौ' (रू.भे.)

छंगायोड़ौ—देखो 'छांगायोड़ौ' (स्त्री० छंगायोड़ी)

छंगावणौ, छंगाववौ—देखो 'छांगाणौ' (रू.भे.)

छंगावियोड़ौ—देखो 'छांगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छंगावियोड़ी)

छंचेड़ू-सं०पु०—मक्खन को गरम करने पर घी को अलग लेने के पश्चात अवशेष रहा हुआ कीटा।

छंछाळ, छंछाळौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) २ हाथी (डि.को.) उ०—१ आग्राजै ऊवा थका, छूटा पटां छंछाळ।

—महादांन महडू

उ०—२ घम्म घमंतइ घूघरइ, पग सोने री पाळ। मारू चाली मंदिरे, जांणि छुटौ छंछाळ।—ढो.मा.

वि०—मस्त, उन्मत्त। उ०—दळ सिणगार विरोळ दळ, दावानळ दंताळ। दिया 'जसै' 'ओरंग' दुवा, छोडौ गज छंछाळ।—वचनिका

छंछुहौ-क्रि०वि०—शीघ्र।

छंछेड़णौ, छंछेड़वौ-क्रि०स०—पकड़ कर इधर-उधर हिलाना।

छंछेड़ू—देखो 'छंचेड़ू'(रू.भे.)

छंट-सं०स्त्री०—१ छांटने की क्रिया या भाव. २ बदबू, दुर्गन्ध. ३ समुद्र के बीच की भूमि।

छंटणी-सं०स्त्री०—छांटने का कार्य, छंटने का कार्य।

छंटणौ, छंटवौ-क्रि०अ०—१ कट कर अलग होना, पृथक होना. २ किसी भुंड से अलग होना, दूर होना. ३ साथ छूटना, साथ से अलग होना. ४ चुन कर अलग किया जाना, चुना जाना. ५ साफ होना, मैल निकलना. ६ क्षीण होना, पतला होना, दुबला होना।

छंटणहार, हारौ (हारी), छंटणियौ—वि०।

छंटवाड़णौ, छंटवाड़वौ, छंटवाणौ, छंटवावौ, छंटवावणौ, छंटवाववौ प्रे०रू०।

छंटाड़णौ, छंटाड़वौ, छंटाणौ, छंटावौ, छंटावणौ, छंटाववौ —क्रि०स०।

छंटिओड़ौ, छंटियोड़ौ, छंटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

छंटीजणौ, छंटीजवौ—भाव वा०।

छंटवाड़ौ-सं०पु०—हलकी वर्षा, वर्षा के छींटे।

छंटाई-सं०स्त्री०—छांटने की क्रिया या कार्य तथा इस कार्य के लिये दी जाने वाली मजदूरी।

छंटाणौ, छंटावौ-क्रि०स० ('छंटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ छंटने का कार्य दूसरे से कराना, छंटाना, चुनवाना. २ छिड़कवाना।

उ०—१ ताहरां मेळी जागियौ सिखरे जी आंख्यां छंटायां।

—ऊदै उगमणावत री वात

उ०—२ ठांम ठांम विछि गिलम विमळ आरांम वणाया, वाग जयनिवास रा माग कुमकुमे छंटाया।—सू.प्र.

३ मृत पुरुष की मृत्यु पर मुंडित होने वालों का १२ वें दिन हजामत कराना. ४ बाल या दाढ़ी आदि कटवाना। ५ युवा अवस्था में प्रथम बार डाढ़ी की हजामत करना, इस अवसर पर बड़ी खुशी मनाई जाती है।

छंटाणहार, हारौ (हारी), छंटाणियौ—वि०।

छंटाड़णौ, छंटाड़वौ, छंटावणौ, छंटाववौ—रू०भे०।

छंटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छंटाईजणौ, छंटाईजवौ—कर्म वा०।

छंटणौ, छंटवौ—अक० रू०।

छंटायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ छंटाया हुआ. २ चुनवाया हुआ. ३ पृथक कराया हुआ. ४ छिड़काया हुआ. ५ बाल, डाढ़ी आदि कटाया हुआ। (स्त्री० छंटायोड़ी)

छंटाव-सं०पु०—छांटने की क्रिया या भाव।

छंटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पृथक हुआ हुआ. २ कटा हुआ. ३ दूर हुआ हुआ. ४ चुना हुआ। (स्त्री० छंटियोड़ी)

छंटीजणौ, छंटीजवौ-क्रि०भाव वा०—१ छंटा जाना, चुना जाना, पृथक हुआ जाना।

२ बकरी का गर्भवती होना।

छंटेल-वि०—१ धूर्त, चालाक, बदमाश. २ छंटा हुआ।

[अनु०] एक ध्वनि।

छंडणौ, छंडवौ-क्रि०स०—१ छोड़ना, त्यागना। उ०—१ वाळउं बाबा देसड़उ, पांणी संदी ताति। पांणी केरइ कारणइ, प्री छंडइ अधराति।

—ढो.मा.

उ०—२ क्रम पाछा न देवै केलपुरो, रिण भू जेथ न छंडे राव। सनस तणी वेढ़ी सीसोदे, पहरी 'रतन' तेण परजाव।

—राव रतनसिह चूंडावत शिशोदिया रौ गीत

२ (राजसत्ता के विरुद्ध होकर) लूट-खसोट करना।

छंडणहार, हारौ (हारी), छंडणियौ—वि०।

छंडवाड़णौ, छंडवाड़वौ, छंडवाणौ, छंडवावौ, छंडवावणौ, छंडवाववौ, छंडाड़णौ, छंडाड़वौ, छंडाणौ, छंडावौ, छंडावणौ, छंडाववौ

—प्रे०रू०।

छुडियोड़ो, छुंडियोड़ो, छुंडयोड़ो—भू०का०कृ० ।
छुंडोजणो, छुंडोजबो—कर्म वा० ।

छंडाणो, छंडाबो—क्रि०स०—१ छीनना. २ छुड़वाना. ३ छुड़ा कर ले लेना ।
रू०भे०—छंटाड़णो, छंडाड़बो, छंडावणो, छंडाववो ।

छंडायोड़ो—भू०का०कृ०—१ छीना हुआ. २ छुड़ाया हुआ. ३ छुड़ा कर आधीन किया हुआ । (स्त्री० छंडायोड़ी)

छंडियोड़ो—भू०का०कृ०—छोड़ा हुआ, त्याग किया हुआ (स्त्री० छंडियोड़ी)

छणकणो, छणकवो—क्रि०स०—शाक छौंकना ।

छंणका—सं०स्त्री० [अनु०] एक ध्वनि विशेष ।

छंणेरी—सं०स्त्री०—रसोईघर के अंदर का मिट्टी का कच्चा बना हुआ स्थान जिसमें जलाने के कंडे व उपले रखे जाते हैं ।

छंद—सं०पु० [सं० छंदस्] १ वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि के नियम के आधार पर बना हुआ वाक्य । यह दो प्रकार का होता है । जिस छंद के प्रति चरण में अक्षरों की संख्या व लघु गुरु के क्रम का विचार होता है वह वर्णिक या वर्णवृत और जहां केवल मात्राओं की संख्या का विचार होता है वह मात्रिक छंद कहलाता है. २ वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो. ३ अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया वेद वाक्यों का भेद. ४ वेद. ५ कपट, छल । छल छंद (सहचारी) ६ अभिप्राय, मतलब. ७ विष, जहर । ८ आज्ञा, हुकम. ९ हृदयगत गुप्त भाव ।
सं०स्त्री०—१० ७२ कलाओं में से एक ।

छंदक—वि०—छली, कपटी ।
सं०पु०—१ छल. २ श्री कृष्ण का एक नाम ।

छंदगार, छंदगारो, छंदगाळ, छंदगाळो—(स्त्री० छंदगारी, छंदगाळी)—देखो 'छंदागारो' (रू.भे.) उ०—१ सहेल्यां म्हारो सांवरो छंदगारो ।—अज्ञात उ०—२ हो छंदगारी रा बालम बोलो वन वन तो भंवर वेलड़ियां में बोले ।—अज्ञात
उ०—३ छाछ, छांवळी, छोकरा अर छंदगाळी नार । ये चारों छ छा तब मिळे, तब तूठे करतार ।—अज्ञात

छंदणा—सं०स्त्री० [सं० छन्दना] जैन धर्मानुसार साधुओं का एक कर्त्तव्य जिसमें साधु गृहस्थ के यहां से भिक्षा के रूप में आहार लाकर गुरुजनों को आमंत्रण करने की प्रार्थना करता है । (मतान्तर से)
साधुओं का किसी गृहस्थी से आहार लाना और उसको गुरुजनों को देकर सम विभाग करवा कर भाग प्राप्त कर के उसमें से यतियों को निमंत्रित करने की प्रार्थना (जैन)

छंदणो, छंदवो—क्रि०अ०—स्वच्छंद होना, उच्छृंखल होना ।
उ०—छंदै ज्वाव न उच्चरै, नह वंदै फरमांण । उर मेरे जेतो वसी, सो कहसी दीवांण ।—रा.रू.

छंदनाच—सं०पु० [सं० छंद = तरंग + नृत्य] जल-तरंग में नृत्य करने वाला, चन्द्रमा ।

छंदागारो, छंदागाळो—सं०पु०—(स्त्री० छंदागारी, छंदागाळी) १ वह व्यक्ति जो अपने भीतर कुछ भेद, गुप्त रहस्य आदि छिपाये रखे । कुटिल. २ शिष्ट, सभ्य, व्यवहारकुशल. ३ आज्ञाकारी ।
रू०भे०—छंदगार, छंदगारो, छंदगाळ, छंदगाळो ।

छंदोबद्ध—वि० [सं०] छंद के नियमानुसार लिखा गया वाक्य या पद, वृत्त जो पद्यरूप में हो ।

छंदोभंग—सं०पु० [सं०] छंद रचना के नियम यथा वर्ण मात्रा आदि की गणना व लघु गुरु का क्रम पालन न होने के कारण छंद रचना में होने वाला एक दोष । उ०—बादू घाटि आंका दोय मो'रा सा मिळाया । छंदोभंग छंदां प्रबंध रीति गाया ।—शि.वं.

छंदो—सं०पु०[सं० छन्द] १ बाह्य प्रेम, दिखावा. २ गुप्त भेद, रहस्य । ३ छिपाव, दुराव । उ०—छोरां सूं छंदो कियो, धरती सांप्यो धन्न । पुखतापं पिछतावियो, हुई सो जांणे मन्न ।—अज्ञात
४ छल, कपट. ५ इच्छा, अभिलाषा (जैन) ६ विषयाभिलाषा. (जैन) ७ अभिप्राय (जैन) ८ आज्ञा, हुकम

छंम—वि० [सं० क्षम] १ उपयुक्त. २ सशक्त. ३ योग्य. ४ वशमें करना समर्थ ।
सं० स्त्री०—१ वचना क्रिया । उ०—ज्यों दव लग्गे जंगळे, रहै छंम कोई घास । यों मेवाड़ उबेळियो, मेट कमंधां त्रास ।—रा.रू.
२ ध्वनि विशेष ।

छयाळीस—वि०—चालीस और छः का योग ।
सं०पु०—४६ की संख्या ।

छंयाळीसमों—वि०—४६ वां ।

छंयाळीसेक'—वि०—४६ के लगभग ।

छंयाळीसो—सं०पु०—४६ वां वर्ष ।

छंवरियो—सं०पु०—गेहूं की फसल के पकते समय उसमें होने वाला रोग जिससे कच्चा गेहूं सूख कर गोल पड़ जाता है व बाल खाली रह जाती है ।

छ—सं०पु०—१ केकी. २ रवि. ३ ध्वनि. ४ शशि. ५ कूंज. ६ हाथ. ७ छवि (एकाक्षरी)
[सं०] ८ काटना. ९ ढांकना. १० घर. खंड, टुकड़ा ।
वि०—१ निर्मल, साफ ।
[सं० षट, प्रा० छ] २ पांच और एक का योग, वह जो पांच से एक अधिक हो. ३ देखो 'छै' (रू.भे.)
उ०—तद दरबारी कह्यो कनकरथ तो बंधुगढ़ रो राजा छै ।
—पलक दरियाव री बात

छइ—देखो 'छै' (रू.भे.) उ०—ढोलइ मनह विमासियउ, सांच कहइ छइ एह । करह भेकि दोनूं चढचा, कूट न संभाळेह ।—ढो.मा.
वि०—छः । उ०—जब साहमी ऊठी कूंयरी ततखिण परीछण घरी, बोलइ वात कूंयरी घणी वीती छइ जमारा तणी ।—कां.दे.प्र.

छइदरसण—देखो 'खटदरसण' (रू.भे.) उ०—छइदरसण छयागावइ पाखंड कउ अधार, बाळउ चकरवति धन-धन हो राजा अचळेसर ।
—अ/वचनिका

छउम–सं०पु० [सं० छद्मन्] १ कपट, माया (जैन) २ आत्मा को आच्छादन करने वाला ज्ञानावरणी आदि आठ कर्म (जैन) ३ छद्मस्थ अवस्था (जैन)

छउमत्थ–वि० [सं० छद्मस्थ] १ अपूर्ण ज्ञान वाला मनुष्य. २ वह मनुष्य जिसमें राग-द्व हो (जैन)

छएक–वि०—छः के लगभग।

छएल–वि०—श्रेष्ठ। उ०—डोह घड़ चौवड़ा फतह जंग खळां डळां। खत्री गुर रौ छएल करै नित धूंकळा।
—रावत सारंगदेव दुतीय कानोड़ रौ गीत

छक–सं०पु०—१ वैभव, ऐश्वर्य। उ०—छक घोड़ां छक छत्रियां, छक वीरता उछाह। कीरत छक 'पातळ' कमंध, सह छक तूझ सराह।—जैतदांन बारहठ

२ गर्व, अभिमान। उ०—१ वदे 'जसौ' जिण बार कंवर अग्गळ जोड़े कर, मीणां अधम गमार घणै छक अनड़ रहै घर।—वं.भा.

उ०—२ महरावखांन दहळे मुगळ, गयौ भाजि तजि छक गर्जं। पतिसाह हुकम विण जोधपुर, इम खग वलि लीधौ 'अर्जं'।—सू.प्र.

३ नशा, मादकता, खुमारी। उ०—नवा अमल रौ नेह देह दूणा छक आंणै।—अरजुनजी बारहठ

४ उत्साह, जोश। उ०—१ परंतु मीणां रै ठाकुरपणौ रहियां तौ रजोगुण रा छक कौ ह्रास उपजियौ।—वं.भा.

उ०—२ रजवट छक वोलै इम रावत, 'करणौ' भाऊ सुत कूंपावत।
—सू.प्र.

५ आनन्द, वहार। उ०—चित्रकूट पर रघुवर रम रह्या ओ छक भर छायौ रे, वावा छक भर छायौ रे।—गी.रां.

६ अवसर, मौका। उ०—मनां देखि देखि छक भलौ लाधौ, इसौ अवसर वळै वहोड़ि लाभसि नहीं।—ह.पु.वा.

७ यौवन, युवावस्था। उ०—अव मदन रस लूटिया, छछवा छूटिया गुळ छक सी विकसी, भंवर गुंजार निकसी।—र. हमीर

८ कान्ति, दीप्ति, शोभा। उ०—इंद्र जेम ओपियौ, 'अजौ' नरिंद अवतारी। हित सु वहौ छक हरख, धरै ऊच्छव छत्रधारी।—सू.प्र.

९ शौर्य, वहादुरी। उ०—नरां दावागिरां पाघरा नमासी, पर घरा जमासी समंद पाजा। तखत जोधांण राखै सरम ताठवड़, राठवड़ 'भीम' छक भीम राजा।—महाराजा भीमसिंह राठौड़ जोधपुर रौ गीत

१० वल, शक्ति। उ०—वळवळां अंजस सयणां वधे, भडां खळां छक भांजियौ। सुत 'वाघ' तणौ उछरंग सभै 'गंगराव' अग्राजियौ।
—सू.प्र.

११ भय, आतंक, डर। उ०—आपरा पति रौ व्यंग्यारथ छै, सीह कहावण जैड़ो म्हारौ पति छै, उण उप्रंत थे मोनूं किसूं छक वतावौ छौ।—वी.स.टी.

१२ दल, सेना। उ०—तदि कहे ताप मांनै तुरक, तिहूं छक छांडि तराज का, महि सरव अरावा दे मिळूं, म्हैं वंदा महाराज का।
—सू.प्र.

१३ लालसा, इच्छा।

१४ हर्ष, प्रसन्नता। उ०—इम जीपे आवियौ 'गंगा' वाजतां नगारां सुजस वधै घर सिरै, उछक छक वधै अपारां।—सू.प्र.

१५ साहस, हिम्मत।

वि०—१ मस्त, मदोन्मत्त। उ०—काढ़ै नाहर काळजा, छक मां अचरज छाक। केस जाळ लग काळजै, साल्है को सूराक।—वां.दा.

२ श्रेष्ठ. ३ सुन्दर। उ०—पावड़ियां सहत नरम पद पंकज, नूपुर हाटक परमपुनीत। छक कड़वंध सुछंगां छाजै, पट अगां राजै पुण पीत।—र.रू.

४ तीव्र, तीक्ष्ण, तेज। उ०—जिण तेज अरक जिम छक जहूर, सुंदर प्रवीण दातार सूर।—वि.सं.

५ पूर्ण। उ०—करणावत कळिचाळ, तांम पूछै 'अभपत्ती'। दुरगावत 'अभमाल' पांण छक कहै प्रभत्ती।—सू.प्र.

छकड़ाळ–सं०पु०—कवच। उ०—सारवट सूथण मोजा सार। जड़ै छकड़ाळ कड़ा जोधार।—गो.रू.

छकड़ाळौ–सं०पु०—कवचधारी, योद्धा। उ०—उण दिन था राणां अगे, हैंवर दोय हजार। सांवत कळचाळा सघर, छकडाळा सिरदार।
—पा.प्र.

वि०—१ प्रचण्ड. २ वलवान. ३ पुरुषार्थी।

छकड़ियौ—कवचधारी योद्धा, शूरवीर।

छकड़ी–सं०स्त्री०—१ छः का समूह. २ ताश का एक खेल जिसमें छः व्यक्ति शामिल होकर आठ आठ पत्तों द्वारा खेलते हैं. ३ चलने की शीघ्रता. ४ छः कहारों द्वारा उठाई जाने वाली पालकी।

वि०—वह जो छः से बना हुआ हो।

मुहा०—छकड़ी भूलणौ—होश-हवास खो बैठना।

छकड़ौ–सं०पु० [सं० शकट, प्रा० सगडो] १ दो पहियों की वोझ लादने की गाड़ी जो बैलों द्वारा खींची जाती है। आजकल सुविधा व अधिक बोझा लादने के लिये इसमें मोटर के पहियों का उपयोग किया जाता है। उ०—जठै खड़री महा दुकाळ पड़ियौ जांणि आपरी वसी रा लोकां सहित छकड़ां में भार घलाई सकुटुंव सिरोही, जाळोर, गुजरात रै कांकड़ संधै त्रिण नेपै देखि आइ रहिया।—वं.भा.

क्रि०प्र०—चलाणौ, जोतणौ, भरणौ, लादणौ।

२ कवच। उ०—कहाड़ौ विरद वंका भीड़ियां छकड़ा कड़ां, वधै रोळै भड़ां आगा वाधै वंसवांन।
—रावत सारंगदेव दूसरा कानोड़ रौ गीत

वि०—जिसका ढांचा ढीला हो गया हो, जिसके अंजर-पंजर ढीले हो गये हों, टूटा-फूटा।

छकणो–वि० [सं० चक] तृप्त होने वाला। उ०—ताता लील तुरंग अरक चा अस्व अवेखौ, मद छकणा गज मेघ डूंगरां भिळता लेखौ।
—मेघ.

छकणौ, छकवौ–क्रि०अ० [सं० चक] १ तृप्त होना, अघाना. २ नशे

में चूर होना, मदोन्मत्त होना । उ०—फूलां री सिवारा दारू पी' र मस्त रहे । दिन रात सारो साथ मतवाळो छकियो रहै। सो इण भांत जलाल राजस करै ।—जलाल बूबना री बात

३ चकराना, आश्चर्य करना, हैरान होना. ४ (घावों से) पूर्ण होना, शरीर पर घाव का लग जाना । उ०—घाव आप छकै पैलां हजारां छकावै घावै, घू वोम अड़क्कै चीत जोम हूं घारीक ।

—चांवंडदांन मेहडू

छकणहार, हारौ (हारी), छकणियौ—वि० ।

छकवाड़णौ, छकवाड़बौ, छकवाणौ, छकवावौ, छकवावणौ, छकवावबौ —प्रे०रू० ।

छकाड़णौ, छकाड़बौ, छकाणौ, छकाबौ, छकावणौ, छकावबौ —क्रि०स० ।

छकिग्रोड़ौ, छकियोड़ौ, छक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छकीजणौ, छकीजबौ—भाव वा० ।

छकपुर-सं०पु०—गर्व, घमंड (डि.को.)

छक बंबाळ-वि०यौ०—महान शक्तिशाली, जबरदस्त ।

उ०—छकबंबाळ अपछरा छायळ, अरज कीध 'पदमैं' अजरायळ ।

—सू.प्र.

छकसार-सं०पु०—द्वारपाल, छड़ीबरदार (अ.मा.)

छकाछक-वि०—१ तृप्त, संतुष्ट, परिपूर्ण. २ उन्मत्त, नशे में चूर ।

छकाणौ, छकाबौ—क्रि०स०—१ तृप्त करना । उ०—आनंद आगर सुखड़ा रौ सागर नागर नगर सरायौ, छटा निहारी नवल छैल री, छवि सूं लोक छकायौ ।—गी. रा.

२ नशे में चूर करना, उन्मत्त करना. ३ दिक करना, हैरान करना. ४ आश्चर्य में डालना, चकित करना. ५ (घावों से) पूरित करना, पूर्ण करना । उ०—घाव आप छकै पैलां हजारां छकावे घावे, घू वोम अड़क्के चीत जोम हूं घारीक ।—चांवंडदांन महडू

छकाणहार, हारौ (हारी), छकाणियौ—वि० ।

छकाड़णौ, छकाड़बौ, छकावणौ, छकावबौ—रू०भे० ।

छकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

छकाईजणौ, छकाईजबौ—कर्म वा० ।

छकणौ, छकबौ—अक० रू० ।

छकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ. २ नशे आदि में उन्मत्त किया हुआ. ३ दिक किया हुआ. ४ आश्चर्य में डाला हुआ. ५ क्षत, प्रहारों से पूर्ण (स्त्री० छकायोड़ी)

छकार, छकारौ-सं०पु०—हिरण, मृग (डि.को.) उ०—देवी छकारा रूप तैं रांम छळिया, देवी रांम रै रूप दसकंध दळिया ।—देवि.

छकियार-वि०—मध्याह्न का खेत में भोजन लाने वाला, पाथेय लाने वाला ।

उ०—१ म्हारा काकोजी चरावै टोरड़िया, म्हारा माऊजी लावै छकियार ।—लो.गी.

उ०—२ थे तो वण जाज्यो कोलिया, मारूजी, मैं पातळड़ी छकियार ।

—लो.गी.

छकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तृप्त. २ मस्त. ३ हैरान ।

(स्त्री० छकियोड़ी)

छकी-वि०—मस्त, तृप्त ।

छकीली-वि०स्त्री०—मस्त, मदमत्त, छकाने वाली । उ०—अथ कंवरी रै पत्री सिद्ध सी लग्न री लड़ी, जीव री जड़ी, सजीली, फबीली, लजीली, छबीली, रमकीली, लंकीली, कसकीली, चकीली लटकीली, छकीली, बत्तीस लछणी, चोसट कळा विचछणी केळरसक्यारी, प्रांण-प्यारी, जिण सूं मांहरो निज नेह, दुरस भांत राजै छै देह ।—र. हमीर.

छकीलौ-वि० (स्त्री० छकीली) मस्त, मगन, छकाने वाला ।

छकेल, छकैल-वि०—मदमस्त, उन्मत्त, छका हुआ, पूर्ण तृप्त, अघाया हुआ ।

छकौ—देखो 'छक्कौ' (रू.भे.)

छकोटौ-सं०पु०—समूह, पुंज । उ०—सुणं छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रंज । धन राघव मोटा धणी, भवजन तोटा भंज ।—र.ज.प्र.

छक्कड़ौ—देखो 'छकड़ौ' (रू.भे.) उ०—कोरड़ा लोहड़ा तूटै विछूटै छक्कड़ा कड़ा, नीधकां नीवाड़ा भड़ां हाकळै नत्रीठ । घूघ ओजड़ा झड़ां धजवड़ां भांजि घड़ा, राठोड़ां ग्रोनाड़ां लागौ वागो विनै रीठ ।

—राठौड़ किसनसिंह रौ गीत

छक्कणौ, छक्कबौ—देखो 'छकणौ' (रू.भे.)

छक्कौ-सं०पु०—१ छः की संख्या का अंक, ६. २ ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की छः बूटियां बनी हों. ३ पासा फेंकने का एक दांव जिसमें छ बिंदियां ऊपर पड़ें. ४ छः का समूह, छः अवयवों से बनी वस्तु. ५ पांच ज्ञानेन्द्रिय और छठे मन का समूह. ६ सुध, होश-हवास, ख्याल । उ०—छैला छोगाळा छक्का छूटोड़ा, फिरतां गिरतां रा फींफर फूटोड़ा ।—ऊ.का.

मुहा०—छक्का छूटणा—होश-हवास खोना, ध्यान च्युत होना ।

७ वह (व्यक्ति) जिसके पंजे में छः अंगुलियां हों. ८ वह पशु (बैल भैंस आदि) जिसके छः दांत निकल आये हों ।

छग, छगड़ौ-सं०पु० [सं० छगल] बकरा (डि.को.) (स्त्री० छगड़ी)

छगण-सं०पु०—सूखा गोबर, कंडा, उपला (डि.को.)

छगनमगन-सं०पु०यौ०—प्यारे बच्चे, छोटे-छोटे बच्चे (प्यार का शब्द)

छगळ, छगल, छगल्ल-सं०पु० [सं० छगल] बकरा, छाग ।

छगां-छगां-सं०स्त्री०—चलने की गति विशेष, चाल विशेष ।

उ०—छगां छगां धरि नगां, चढ़ै आसणां महावत । राह रूत रवि पूत, धूत थापलिया धूरत ।—सू.प्र.

छगाळियौ-सं०पु०—१ वह बैल जिसके केवल छः दांत आये हों २ बकरा ।

छगौ, छग्गौ—देखो 'छक्कौ' (रू.भे.) (स्त्री० छगी)

छघळी-सं०पु०—चाबुक । उ०—ह्रदै-हीण छघळो हणें, घरट्ट वड घुमवाय । फूलै पुणि पुणि फेंफड़ा, भ्रम विपत्ताहि द्रढ़ाय ।
—रेवतसिंह भाटी

छड़ंग-वि०—अकेला, एकाकी (मि. 'छड़ौ')

छड़-सं०पु०—१ भाला, नेजा । उ०—१ अंत वाढ़ अणी छड़ ओपवियौ, लंकाळ कराळ सेलाळ लियौ ।—गो.रू.

उ०—२ लोही घड़ वहि वहि फळ लोहां, छड़ गहि गहि ऊठंत छछोहां ।—सू.प्र.

२ धातु अथवा किसी लकड़ी का पतला लम्बा टुकड़ा. ३ वह डंडा जिसके आगे भाले का फल लगा रहता है ।

उ०—तुरंग जोर भालै तणी, हुई राव हथवाह । अस पूठी उलटावतां, छड़ बारै फळ मांह ।—अज्ञात

४ भाले के ऊपरी भाग की पैनी नोंक । उ०—भाजै छड़ां खरड़कै भाला, पड़ै न पिड़ देतौ पसार । एकळ 'जैत' 'सलख' ग्राहेड़ी, सकै न पाड़ै भड़ सिहर ।—नैणसी

५ देखो 'छड़छड़ीलौ' (रू.भे.) (अमरत)

छड़कणौ, छड़कवौ—देखो 'छिड़कणौ' (रू.भे.)

छड़काणौ, छड़कावौ—देखो 'छिड़काणौ' (रू.भे.)

छड़कायोड़ौ—देखो 'छिड़कायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छड़कायोड़ी)

छड़कियोड़ौ—देखो 'छिड़कियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छड़कियोड़ी)

छड़छड़ीलौ, छड़छबीलौ-सं०पु० [सं० शैलेय] काई के साथ मिल कर बढ़ने वाला लच्छेदार पौधा विशेष जो हल्का भूरापन लिये हुए होता है और सूखने पर मीठी सुगन्ध देता है । यह पत्थर के चकतों व उभरे हुए भागों पर भी पैदा हो जाता है और कड़ी सर्दी व गर्मी को सहन कर सकता है । औषधि में भी इसका प्रयोग होता है तथा कई प्रकार के मसालों में भी इसको डालते हैं (अमरत)

रू०भे०—छड़, छड़छबीलौ, छड़ीलौ ।

छड़णौ, छड़बौ-क्रि०स०—१ ओखली में कूटे हुए अनाज को सूप से साफ करना. २ घोड़े का सीधा न चल कर इधर-उधर मुंह मोड़ते हुए फदक-फदक कर चलना ।

छड़णहार, हारौ (हारी), छड़णियौ—वि० ।

छड़वाड़णौ, छड़वाड़बौ, छड़वाणौ, छड़वावौ, छड़वावणौ, छड़वाववौ, छड़ाड़णौ, छड़ाड़वौ, छड़ाणौ, छड़ावौ, छड़ावणौ, छड़ाववौ—प्रे०रू० ।

छड़िओड़ौ, छड़ियोड़ौ, छड़योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छड़ीजणौ, छड़ीजवौ कर्म वा० ।

छड़वड़ी, छड़वड़ौ-सं०पु० [अनु०] ऐसा समय जब कि कुछ अंधकार और कुछ प्रकाश हो, झुकमुख, झुटपुटा ।

वि०—१ थोड़ा, कम । उ०—आप छड़वड़ै हीज साथ थौ, सु रावळ हेरौ करायौ ।—नैणसी

२ समवयस्क, सम आयु का । उ०—तरै असवारी कर काळियैद्रह सिधाया, रागरंग हुवै छै, छड़वड़ा खिलवत रा साथ सूं बैठा छै ।
—राव रिणमल री वात

छड़हड़, छड़हड़ौ-सं०स्त्री० [अनु०] घोड़े के टापों की ध्वनि ।

छड़ाछड़-सं०स्त्री० [अनु०] १ छींक से उत्पन्न ध्वनि. २ ध्वनि विशेष ।

क्रि०वि०—१ शीघ्र, जल्दी. २ निरंतर, लगातार । उ०—दे पटपोरा दोय नाक में दावै नींकां, मूंढ़ौ खांधौ मोड़ छड़ाछड़ खावै छींकां ।
—ऊ.का.

छड़ाळ, छड़ाळि, छड़ाळौ, छड़ियाळ-सं०पु०—१ भाला (ना.डि.को.)

उ०—१ हिलोळि छड़ाळ ग्रहै चंद्रहास, तछै घण मीर कलम्म तरास ।
—सू.प्र.

उ०—२ घण घाग्रे घमचाळि, चूनाळा थीग्र चाळणी । आप तणा तण अरि हरां, अड़िग्रा भलां छड़ाळि ।—वचनिका

उ०—३ वाजतां त्रंबाळौ ध्रीह नराळाळौ खड़े वाज, तोलियां छड़ाळौ पांण पंखाळ सुतांण ।—पहाड़खां आढ़ौ

उ०—४ धुणियाळ धकै चड खेंग धणों । असमांन लगा छड़ियाळ अणी ।—पा.प्र.

२ भाला रखने वाला, योद्धा, वीर । उ०—१ छत्रियां धरम पाळण छड़ाळ, 'पेंसा' करण खटवरन पाळ ।—पे.रू.

उ०—२ अड़ियाळ लये कोइ तुरस ओट । छड़ियाळ करै केइ ध्रखळ चोट ।—पा.प्र. उ०—३ छड़ां झलि वाह करै छड़ियाळ । करै घट पार कड़ां कड़ियाळ ।—सू.प्र.

छड़ी-सं०स्त्री०—१ सीधी व पतली लकड़ी. २ झंडी जो मजार या देवालय पर चढ़ाई जाती है. ३ लात या लत्ती मारने की क्रिया ।

मुहा०—छड़ी ग्राछटणी—१ लात फेंकना. २ तड़फना, पैर पटकना ।

४ छेड़-छाड़, झगड़ा । उ०—खलक लोक तमासौ देखै । जलाल कहै—छड़ी मतां करौ । तमासौ देखण देवौ ।—जलाल बूबना री वात

५ पाजामे या लहंगे की सीधी टंकाई (दरजी)

वि०स्त्री० (पु० छड़ौ)—१ अकेली, एकाकी. २ स्वतंत्र, आजाद. ३ संतानहीन ।

छड़ीभाल, छड़ीदार, छड़ीबरदार-सं०पु० [सं० शर=छड़+रा०प्र०ई+फा० दार=छड़ी रखने वाला और छड़ी+फा० बरदार] १ राजा, रईसोंया सरदारों का नौकर विशेष जिसके हाथ में सोने या चांदी से मढ़ा मोटा डंडा रहता है । चोवदार, द्वारपाल, छड़ीबरदार ।

उ०—१ छड़ीभाल परवरै हाक उपडै जवांनां ।—बखतौ खिड़ियौ

उ०—२ ताहरां पुरोहित छड़ीदार नै मांहे बुलायौ ।
—पलक दरियाव री वात

पर्याय०—उच्चारक, छकसार, डंडी, दंडी, दरवारी, दरवांन, द्वारपाळ, पोळियौ, प्रतिहार, हुसियारक ।

२ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

वि०—पतली सीधी लकीरों वाला ।

छड़ीलौ—देखो 'छड़छड़ीलौ' (रू.भे.)

छड़ौ-सं०पु०—१ पैर में पहिनने का चूड़ी के आकार का स्त्रियों का गहना जो प्रायः चांदी की पतली छड़ या ऐंठे हुए तार से बनाया

जाता है. २ मोती या पोत की लड़ों का गुच्छा. ३ सूत या चमड़े की रस्सी, लड़. ४ स्त्रियों का एक प्रकार का आभूषण विशेष जिसे वे पैर के पंजे के ऊपर धारण करती हैं।

वि०पु० (स्त्री० छड़ी)—१ अकेला, एकाकी।

मुहा०—छड़ो होणो—पत्नीरहित होना, पत्नी का मर जाना।

२ वाहन, शस्त्र या अन्य सामग्रीविहीन। उ०—सू सिरदारां रो सारो ही साथ वहीर हुवो नै रावजी रै तंबू खनै छड़ा चाकर सोएक र'या।—द.दा.

३ बन्धनमुक्त, आजाद. ४ सन्तानहीन।

छचोकियो–सं०पु०—१ तिवारी के कोने का मकान (क्षेत्रीय) २ छोटी डलिया।

छच्छूंदर, छच्छूंदरो—देखो 'छछूंदर' (रू.भे.)

छच्छोह—देखो 'छछोह' (रू.भे.)

उ०—छच्छोह पायगह छड़हड़ा, धुरा विरद करवत धरा। करि घाव जाव इसड़ा तिकै, पाव घड़ी जोजन परा।—सू.प्र.

छछक–सं०स्त्री०—धारा। उ०—लोहित लंबी छछक छूटी प्रेत न जक पारै। सायक मय दुसार घायक घट सारै।—वं.भा.

छछवा–सं०पु० (बहु०व०)—स्वेद कण, पसीने की बूंदें।

उ०—अब मदन रस लूटिया, छछवा छूटिया। गुल छ कळी विकसी, भंवर गुंजार निकसी।—र. हमीर

छछवि, छछवी–वि०स्त्री० (पु० छछवो) तेज, तीव्र, चंचल।

उ०—छछवी छैलण छूट छकी छिब छोल में, परिहां इण विध ऊभी आय पटाफर पोळ में।—र. हमीर

छछहो—देखो 'छछोहो' (रू.भे.) उ०—जैसे मखतूळ की डोरी तूटी छै अर गुण मोती छछहा कहतां उतावळा छिटकि छिटकि पड़ै छै।
—वेलि.टी.

छछियार–सं०स्त्री०—वह पात्र जिसमें दही का मंथन कर मक्खन व मट्ठा अलग-अलग किया जाता है। उ०—मूंधा पड़चो रे विलोवणो, रीतो रै'वै जाय छछियार, वारी, म्हारा गूगा, भल रही वो।—लो.गी.

छछुंदर, छछुंदरो–सं०पु० [सं० छुछुन्दरः] १ चूहे की जाति का एक जंतु जिसकी बनावट चूहे की सी होती है, परन्तु इसके नाक का नथना अधिक निकला हुआ और नुकीला होता है।

उ०—आया मांणस सुण पिया, म्हारी या गति होय। उत पीहर इत पीव सुख, सांप छछूंदर होय।—कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री० छछूंदरी)

२ एक प्रकार का यंत्र या तावीज।

छछूंक—गुनाहगार, शत्रु, चूक करने वाला। उ०—प्रोहित कही होणे री थी जे हुई, ठाकुर काया मतां पड़ो, सारा भला हुई चालो ज्यूं छछूक परा काढ़ो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता।

छछेड़णो, छछेड़बो—देखो 'छंछेड़णो' (रू.भे.)

छछोरो—देखो 'छिछोरो' (रू.भे.) उ०—कोई गंभीर सूरवीर छछोरा टोळी रा दुसमण जमी लेण रो करै तिकां नै कहै है।—वी.स.टी.

(स्त्री० छछोरी)

छछोह, छछोहक, छछोहो, छछोहौ–सं०पु०—१ आभा, कांति, प्रभा, रूप. २ फुहार, फव्वारा। उ०—कुमकुमै मंजण करि धौत वसत धरि, चिहुरे जळ लागो चुवण। छोणे जांणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूळ गुण।—वेलि.

वि०—१ तीक्ष्ण, तेज। उ०—छछोहा छडाळां भटां खग भाळां।
—स.प्र.

२ स्वच्छ, निर्मल। उ०—छछोहै आव गहर फौंहारा छूटै। जमीं सैं मेघ जांणि आसमांन सैं जूटै।—सू.प्र.

३ उत्साहयुक्त, जोशपूर्ण। उ०—अभंग अथाह अप्रेय अरूप, छछोह वदन्न मदन्न सरूप।—ह.र.

४ शीघ्रगामी, तेज चलने वाला।

उ०—छछोह होसनायकूं की हमराह से छूटै। जगजेठूं की तरबीत जोम से जूटै।—सू.प्र.

५ योद्धा, वीर।

उ०—१ असुरां घट बाढ़त खाग अरोड़। छछोहक 'सूर' तणो रिणछोड।—सू.प्र.

उ०—२ छिबता उरस छछोह, चुरस वीरा रस चालै। एक हत्थी आछटै, भांण कौतग रण भाळै।—सू.प्र.

६ स्फूर्ति वाला, तेज। उ०—१ 'छतो' भड़ 'रांम' सुतन्न छछोह। लोहा पहराक हणै भठ लोह।—सू.प्र.

उ०—२ छछोहक स्रोण घड़ां उछटंत। दारू धिख भैच पजांण दगंत।—सू.प्र.

७ स्फूर्ति, तेजी। उ०—नवि चीतारइ घर सुख साथ, वाहइ वहकि छछोहा हाथ। रे रे ! मुगळ आंधा ढोर, इम कहि वाहइ खग अघारे।—गोरा बादळ री चौपाई

क्रि०वि०—१ तीव्र, तेज। उ०—मुंहडो कुण मोड़ै ज्यूं भला मोटियार चढि छीनण में छछोहा फिरै अर डांडियां री कड़ाकड़ हुवै।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ शीघ्रता से, तेजी से। उ०—तगस्सेस नागां सिरै जांणि तूटो। छछोह जिसो रांम रो बांण छूटो।—सू.प्र.

छज–सं०पु०—१ बुद्धि, अक्ल. २ व्यवहार, पटुता. ३ मकान को ऊपर से छाने की सामग्री. ४ छत, छाजन।

क्रि०प्र०—उतारणो, चढाणो।

वि०—मर्यादा रखने वाला, रक्षक। उ०—बंधव 'जैत' जोड़ बांहांळो, ईंदां छज कुळवाट उजाळो।—रा.रू.

(मि० ढाकण)

छजणो, छजबो–क्रि०अ०स०—१ (कच्चे मकान का) छत से पटना, आच्छादित होना. २ शोभा देना, उचित जंचना, सुशोभित होना।

उ०—तपवंत भूप निज धांम तत्र, छज कनक सिंघासण चमर छत्र।

दुतिवंत करे सन्मान दांन, विध राज सासत्र विधांत ।—सू.प्र.

३ देखो 'छाजणौ' (रू.भे.)

छजणहार, हारौ (हारी), छजणियौ—वि० ।

छजिग्रोड़ौ, छजियोड़ौ, छज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छजीजणौ, छजीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

छजली—देखो 'छज्जौ' (अल्पा. रू.भे.)

छजेड़ी–सं०स्त्री०—कच्ची दीवार के ऊपर डाला जाने वाला वह छाजन जिससे वर्षा आदि से उसकी रक्षा हो सके। यह छाजन दीवार पर कांटे आदि बिछा कर उस पर घास-फूस डाल कर गीली रेत से जमाई जाती है। (मि. पलांणी)

छजौ—देखो 'छाजौ' (रू.भे.)

छज्जल—देखो 'छाजड़ौ' (मह० रू.भे.) उ०—कटचा घण सज्जन छज्जळ कांन, सिर गिर कज्जळ कूट समांन ।—मे.म.

छज्जीवणि-काय–सं०पु० [सं० षड्जीवनिकाय] छः प्रकार के काया जीवों का समूह, छः प्रकार के काया जीव—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, वनस्पति और त्रसकाय (जैन)

छज्जीवणिया–सं०स्त्री० [सं० षडजीवनिकाय] वह जिसमें छः काया जीव की रक्षा का अधिकार, दस वैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन का नाम (जैन)।

छज्जौ–सं०पु०—१ छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है. २ किसी दरवाजे या खिड़की आदि के ऊपर लगी हुई पत्थर की वह पट्टी जो दीवार के बाहर निकली रहती है. ३ धूप के बचाव के लिये टोपी या टोप के अगले किनारे का निकला हुआ भाग।

अल्पा०—छजली, छजलौ, छाजड़यौ।

छटक–सं०पु० [सं०] रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

क्रि०वि०—शीघ्र, फुर्ती से। उ०—मगरा केरा वाहळा, ओछा नरां सनेह। वहता वहै उतावळा, छटक दिखावै छेह।—हा.झा.

छटकणौ–वि० (स्त्री० छटकणी) उड़ने वाला, छटकने वाला।

छटकणौ, छटकबौ—देखो 'छिटकणौ' (रू.भे.) उ०—करम लिखायौ साध संगत में, हर सागर में लटकी। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भो-सागर से छटकी।—मीरां

छटकाणौ, छटकाबौ—देखो 'छिटकाणौ' (रू.भे.)

छटकायोड़ौ—देखो 'छिटकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छटकायोड़ी)

छटकावणौ, छटकावबौ—देखो 'छिटकाणौ' (रू.भे.)

छटकियोड़ौ—देखो 'छिटकियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छटकियोड़ी)

छटकौ—देखो 'चटकौ' (रू.भे.)

छटछट—देखो 'चटचट' (रू.भे.)

छटपट–क्रि०वि०—अति शीघ्र, झटपट, तुरंत, फौरन।

सं०स्त्री० [अनु०] छटपटाने की क्रिया, बेचैनी, घबराहट।

छटपटाणौ, छटपटाबौ–क्रि०अ० [अनु०] १ छटपटाना, बंधन या पीड़ा के कारण हाथ पैर फटकारना, तड़फड़ाना. २ बेचैन होना, व्याकुल होना. ३ किसी वस्तु आदि की प्राप्ति के लिये आकुल होना, अधीरतापूर्वक उत्सुक होना।

छटपटाणहार, हारौ (हारी), छटपटाणियौ—वि०।

छटपटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छटपटाईजणौ, छटपटाईजबौ—भाव वा०।

छटपटावणौ, छटपटावबौ—रू०भे०।

छटपटायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छटपटाया हुआ, तड़फड़ाया हुआ. २ अधीर, व्याकुल (स्त्री० छटपटायोड़ी)

छटपटी–सं०स्त्री०—घबराहट, व्याकुलता, अधीरता, अधीरतायुक्त उत्कंठा।

छटांक–सं०स्त्री०—सेर का सोलहवां भाग, एक तोल।

छटांन–सं०स्त्री०—छटा, चमक, दीप्ति। उ०—सनाहवांन सांघणा घटा कि उमड़ी घणां, खिवंत सेल खेह में, मिटै छटांन मेह में।
—रा.रू.

छटा–सं०स्त्री० [सं०] १ शोभा। उ०—सील सजीलौ रूप-रसीलौ छैल छवीलौ छावै, नील जळज तन छटा निराळी, लख लख कांम लजावै।—गी. रां.

२ कांति, दीप्ति, आभा, चमक. ३ बिजली (अ.मा.)

उ०—वपु नीलवसन मझि इम वखांण, जगमगत घटा मझि छटा जांण।—सू.प्र.

४ प्रभाव, रौब. ५ सूअर के शरीर के बाल। उ०—डाढाळौ निलोह थकियौ परलै पासै जाय ऊभौ खेरूं करै छै। छटा धूणै छै। संख सूं खग लगाय फौज सांम्हीं जोवै छै।—डाढ़ाळा सूर री बात

छटाटोप–सं०पु० [सं०] ४९ क्षेत्रपालों में से २३ वां क्षेत्रपाल।

छटाणिया–सं०स्त्री०—राव सीहा के वंश में राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

छटाधर–सं०पु०—योद्धा, वीर।

उ०—धकै क्रोध हरसाह 'जेहवार' बटाधर, दुरद मद पटाधर जेम दोवै। धार खग झटा अघटा पड़ै छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवै।—हुकमीचंद खिड़ियौ

छटाधाव–सं०पु०—शेर, सिंह (अ.मा.)

छटाभा–सं०स्त्री०—१ बिजली की चमक. २ कांति, ओज।

छटायत–वि०—कांतिवान, आभायुक्त। उ०—ताखड़ा उलट मेवासियां लटायत, छटायत नाहरां भड़ां छोगै, रमै खग झटायत तो जहीं 'हमीरा' भलां जे पटायत पटा भोगै।

—रावत हमीरसिंह चूंडावत भदेसर रौ गीत

छटेल—देखो 'छंटेल' (रू.भे.)

छट्ट, छट्ठ–सं०स्त्री० [सं० षष्ठी, प्रा० छट्ठी] चन्द्र मास के प्रत्येक पक्ष की छठी तिथि। उ०—परणीजण पधारियौ, जेसांणै 'अगजीत'। छट्ट ऊजळी छावनै, पख आसाढ़ सप्रीत।—रा.रू.

छट्ठभत्त-सं०पु० [सं० षष्ठभक्त] लगातार दो दिनों का उपवास (बेला) (जैन)

छट्ठी-सं०स्त्री० [सं० षष्ठी] १ जन्म के बाद का छठा दिन या रात्रि या उस रात्रि को मनाया जाने वाला उत्सव. २ छठी के दिन पूजी जाने वाली एक देवी. ३ शरीर की अंतिम अवस्था, मृत्यु, मौत। उ०—खंभ जंगां जैत री वराकां छट्ठी जाग सूतो, अराकां उनंगी आग अंग री प्रजाग। सेना थाट काको 'कन्ह पंग'री वछाय सूतो, ज्यूं सरेव सज्या सूतो गंग री जड़ाग।—हुकमीचंद खिड़ियो

छट्ठो-वि० [सं षष्ठः] (स्त्री० छट्ठी) छठा, ६ वां। उ०—छट्ठै पुहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार।—ढो.मा.

छठ—देखो 'छट्ठ' (रू.भे.)

कहा०—छठ सूं चौदस करणी—छठी तिथि से आगे चतुर्दशी बताना, किसी वायदे को आगे से आगे बढ़ाना, अधिक लम्बा करना।

छठांरीहांण-सं०पु०—छः दांत आया हुआ युवा ऊंट।

छठी—देखो 'छट्ठी' (रू.भे.)

छठौ, छट्ठोड़ो-वि० [सं० षष्ठः] छठा, जो क्रम में छः के स्थान पर हो। उ०—पह 'सूर' करे रूपक परख, वरे कुरब वह क्रीत वर। छत्रपती लाख दीधौ छठौ, कविया भांनीदांन कर।—सू.प्र.

अल्पा०—छट्ठोड़ो।

छडुणौ, छडुबौ-क्रि०स०—छोडना, त्यागना। उ०—छोह करताळियां चिड़कला छडुही, अभंग जसवंत जुध गुरड़ नहं उडुही।—हा.झा.

छणंक-सं०स्त्री० [अनु०] १ अग्नि में तपे हुए ठोस पदार्थ पर जल का छींटा पड़ने पर उत्पन्न होने वाली छन छन की ध्वनि. २ तीर तलवार आदि के तेज प्रहार के समय होने वाली सन सन की ध्वनि। उ०—१ कर सीस छणंक छणंक कटै, तरुआर खणक खणंक तुटै।

—पा.प्र.

उ०—२ छुट तीर जहां कोडंड छणंक, खग झाट वटका खळ खणंक।

—रांमदांन लाळस

छण—१ देखो 'क्षण' (रू.भे.) २ छनकने से उत्पन्न शब्द। देखो 'छणकणौ'। ३ देखो 'छिम' (मेवाड़)

छणकणौ, छणकबौ-क्रि०अ०—१ चमकना, दमकना. २ छन छन शब्द करना, झनझनाना।

छणकणहार, हारौ (हारी), छणकणियौ—वि०।

छणकिओड़ौ, छणकियोड़ौ, छणक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छणकीजणौ, छणकीजबौ—भाव वा०।

छणक-मणक-सं०स्त्री० [अनु०] १ आभूषणों की झनकार. २ साज-सजावट, ठसक।

छणकार-सं०स्त्री०—१ झनकार, एक ध्वनि विशेष. २ तलवार के प्रहार की ध्वनि। उ०—तरवारां रा छणकार हुयनै रहिया छै।

—रा.सा.सं.

छणछणाणौ, छणछणाबौ-क्रि०अ०—१ किसी तपी हुई धातु या अन्य ठोस पदार्थ पर पानी गिरने से छन-छन शब्द होना. २ झनझनाना।

छणणंकणौ, छणणंकबौ-क्रि०अ०—१ छन-छन शब्द उत्पन्न होना, झनझनाना।

२ झनकार करना. ३ भय से भगना। उ०—चरणंकै भड़ चिहुर छीजि कातर छणणंकै।—वं.भा.

छणणौ-सं०पु०—वह वस्तु जिससे कोई पदार्थ छाना जाय, छनना।

छणणौ, छणबौ-क्रि०अ०—१ छनना, किसी चूर्ण या तरल पदार्थ का महीन कपड़े या बारीक जाली के छिद्रों से होकर इस प्रकार निकलना कि उसका मैल या खूंद उस कपड़े या जाली में ऊपर रह जाय. २ छोट-छोटे छेदों से होकर आना. ३ चूना टपकना. ४ किसी नशे का छाना जाना. ५ स्थान-स्थान पर छिद्र हो जाना, छलनी हो जाना. ६ बिंध जाना, अनेक चोट खाना. ७ किसी बात की छानबीन होना, निर्णय होना, जांच होना।

छणणहार, हारौ (हारी), छणणियौ—वि०।

छणवाड़णौ, छणवाड़बौ, छणवाणौ, छणवाबौ, छणवावणौ, छणवावबौ, छणाड़णौ, छणाड़बौ, छणाणौ, छणाबौ, छणावणौ, छणावबौ

—प्रे०रू०।

छणिओड़ौ, छणियोड़ौ, छण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छणीजणौ, छणीजबौ—भाव वा०।

छणदा-सं०स्त्री० [सं० क्षणदा] रात, रात्रि (डिं.को.)

छणहण-सं०स्त्री० [अनु०] १ घुंघरु के हिलने व बजने से उत्पन्न झन-झन का शब्द। उ०—छिलतै तेज रथां पाय छणहण, वेगा छेड़ कंठीरव वाहण। त्रसकतां सेवग करण त्रभै तण, आई आवजै ग्रहियां उग्राहण।

—द.दा.

२ पैरों के आभूषणों की झनझनाहट।

छणाई-सं०स्त्री०—१ किसी चूर्ण या द्रव पदार्थ के छनने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी. २ पैर के तलुए में होने वाला एक विशेष प्रकार का फोड़ा जिसके लिये यह बात प्रसिद्ध है कि यह फोड़ा एक विशेष जानवर के ऊपर पैर लग जाने से होता है. ३ एक जंतु विशेष जो काला होता है, इसके लिये यह किंवदंती प्रचलित है कि उस पर पैर लग जाने से तलुए में फोड़ा उत्पन्न हो जाता है।

छणाको-सं०पु०—सिक्का बजने की झनकार या झनझनाहट, झनकार, खनाका, ठनाका।

छणारी—देखो 'छणाई' (२, ३)

छणारौ-सं०पु०—मल त्यागने का अवयव, मलद्वार, गुदा। २ उपलों तथा कंडों को तरतीब से जमा कर बनाया हुआ ढेर।

छणिक—देखो 'क्षणिक' (रू. भे.)

छणियारौ-सं०पु०—१ कांसी के वर्तनों का व्यापार करने वाला व्यक्ति। २ विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोकगीत। ३ देखो 'छणारौ' (रू. भे.)

योड़ी–भू०का०कृ०—१ छना हुआ. २ टपका हुआ. ३ छलनी हुवा हुआ. ४ बिंधा हुआ (स्त्री. छणियोड़ी)

छणेरी–सं०स्त्री०—१ चूल्हे के समीप ही उपले या कंडे रखने के निमित्त बनाया हुआ स्थान। २ देखो 'छणाई' (२, ३) (रू. भे.)

छत–सं०स्त्री० [सं० छत्र, प्रा० छत्त] १ कमरे की दीवारों पर पट्टियां रख कर उस पर चूना, कंकरीट आदि डाल कर बनाया हुआ फर्श।
क्रि०प्र०—कूटणी, जमाणी, ढाकणी, बणाणी।
२ घर के ऊपर का खुला भाग। [सं० क्षिति] ३ भूमि, पृथ्वी. ४ जगह, स्थान. [सं० छटा] ५ शोभा, कान्ति।
उ०—देख देख सगळी गत दाखी, भूप अभूत रूप क्षत भाखी।
—रा.रू.
सं०पु०—६ देखो 'छत्र' (२, ३) (रू.भे.) [सं० क्षत] ७ घाव
उ०—अर वड़ाहर रा प्रस्थान रा समय रै पूरब ही आपरा अंग में छुरिका रा छत लगाय समस्त स्वादु द्रव्य मिळाय पूरब री तरह तप्त तैल रा कटाह में बराबर झंपा लेर भद्रकाळी नूं प्रसन्न करी।—वं.भा.
८ खतरा, जोखा।
उ०—दळै न छत जो देस री, कदर न राखै कोय।
हूं छतरी छतरिहुं भली, तपै न भीगै तोय॥
—रेवतसिंह भाटी
९ व्रण, फोड़ा [सं० क्षत:] १० प्रभुता, प्रधानता। उ०—मोह सराव खराब है, छत उमत छाकी।—केसोदास गाडण

छतड़ी—देखो 'छतरी' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—ठाला भूला जिणां लारै ब्रांमण भोजन करायो तथा मा'राज पदमसिंघजी ऊपर छतड़ी तापी नदी ऊपर दाह री जागा करवाई।—द.दो.

छतड़ो—देखो 'छातो' (अल्पा०, रू.भे.)।

छतज–सं०पु० [सं० क्षतज] क्षत से उत्पन्न, रक्त, रुधिर, खून (डि.को.)
वि०—लाल, सुर्ख॥ (डि.को.)।

छतप–सं०पु० [सं० छत्रप, छत्रपति अथवा क्षितिप] नरेश, नृप, राजा।

छतर–सं०पु० [सं० छत्र] १ छत्र।
उ०—असपतियां उतबंग सूं, ऊंचा छतर उतार। रांणै दीधा रैणआं, 'सांगै' जग साधार।—वां.दा.
मुहा०—छतरछैया होणी—पूर्ण कृपा होना।
२ छाता. ३ सर्प का फन।

छतरड़ी—देखो 'छतरी' (अल्पा०, रू.भे.)

छतरड़ो—देखो 'छातो' (अल्पा०, रू.भे.)

छतरधर, छतरधारण, छतरधारी—देखो 'छत्रधारी' (रू.भे.)
उ०—घटा सिंधुर डमर पटा ओसर घरर, वाज साकुर पखर ददर वारो। छतरधर असुर ऊपर खींवै पर छटा, थिर अतर अडर नर धजर थारो।—महाराजा अभैसिंह रो गीत

छतर-पत–सं०पु०—१ सूर्य (डि.को.) [सं० छत्रपति] २ छत्रपति, राजा।

छतरी–सं०स्त्री० [सं० छत्र+रा.प्र.ई] १ शव के दाह स्थल पर या समाधि के स्थान पर बनाया गया छज्जेदार मंडप। २ देखो 'छातो' (अल्पा०, रू.भे.) ३ वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का छतरी के आकार का उद्भिज जिसकी गणना खुमी के अन्तर्गत मानी जाती है।
अल्पा०—छतड़ी, छतरड़ी।
सं०पु० [सं० क्षत्रिय:] ४ क्षत्रिय। उ०—छतरी चराता छाळियां, धांन न खाता धाप। मौ'रां रा बट्टण मिळै 'पातल' री परताप।
—जुगतीदांन देथो

छतलोट–सं०स्त्री०—पेट के बल लेट कर लोटने की एक कसरत।

छत्तल्लो—देखो 'छातो' (अल्पा०, रू.भे.)

छतां–क्रि०वि० [सं० सत्] १ होते हुए, होते। उ०—सुख दुख पाप पुण्य सूं न्यारो, कांम छतां निसकांमी रे।—गी.रां.
वि०—मौजूद, तैयार।
कहा०—छतां गाडी पाळो क्यूं—गाड़ी मौजूद होते हुए पैदल क्यों चला जाय। साधन मौजूद हो तो उसका उपयोग अवश्य करना चाहिए। साधन होते हुए उसका उपयोग न करना मूर्खता ही है.
२ लिये, वास्ते।
रू०भे०—छतै।

छति–सं०पु० [सं० छत्र] १ बादशाह, राजा। उ०—साह मिळै अभसाह सूं, सिरै दियौ सनमांन। छात नचीतौ लेख छति, जांणै वात जहांन।—रा.रू.
सं०स्त्री० [सं० क्षति] २ हानि, नुकसान. ३ देखो 'छती' (रू.भे.)

छती–सं०स्त्री० [सं० क्षिति] १ पृथ्वी, धरा। उ०—ओपो आढ़ो कहै ईसवर, नित राखूं चित थारो नांम। तूं छती मांय देवण सुख तूं, रणां तणी वसती तूं रांम।—ओपो आढ़ो
२ वक्षःस्थल, छाती। उ०—मीरां जी तो बिना कल ना पड़ै, पल छिन नाहीं सरै। छतियां तपै नैणां नीर झरै रे।—मीरां

छतीस–वि० [सं० षटत्रिंशत्, प्रा० छत्तीस, छत्रिस] तीस से छः अधिक, तीस और छः का योग।
सं०पु०—छतीस की संख्या।

छतीसमौं–वि०—जो क्रम में पैंतीस के बाद आता हो, छत्तीसवां।

छतीसिका–सं०स्त्री०—छत्तीस छंद या दोहों का एक काव्य विशेष (वां.दा).

छतीसियो—देखो 'छत्तीसो' (अल्पा०, रू.भे.)

छतीसी–वि०स्त्री०—१ छत्तीस की संख्यायुक्त. २ कुलटा, कुलक्षणा।

छतीसे'क–वि०—छत्तीस के लगभग।

छतीसो–सं०पु०—३६वां वर्ष।
वि० (स्त्री० छतीसी) मक्कार, धूर्त।
अल्पा०—छतीसियो।

छतु—देखो 'छती' (रू.भे.) (उ.र.)।

छतै—देखो 'छतां' (रू.भे.) उ०—१ ऊभां सीहां केस इक, कर लैणो मुसकल्ल। पांण छतै क्यूंकर पड़ै, ऊभां सीहां खल्ल।—वां.दा.
उ०—२ सांस छतै जीवै सकळ, ऊमर रै आधार। जस सूं जीव जगत में, सांस पखै सुदतार।—वां.दा.

छतौ-वि० (स्त्री० छती) १ प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—'जवदळ' 'पदम' रायसिंघ 'जुजळ', हरचंद प्रीछत भोज हुग्रा। मांणी मता छता महिमंडळ, मता न मांणी जिता मुग्रा।—गोरधन खीची

२ प्रकट, जाहिर। उ०—वहनांमी मत राखो वाधा, लाधा म्हे धारा लखरा। छता हुग्रा किमि रहिसो छिपिया, घट मांहीं ग्रजुग्राळ घरा।
—पीरदांन लाळस

३ मौजूद. ४ देखो 'छातौ' (रू.भे.)।

क्रि०वि०—होते हुए।

रू०भे०—छत्तौ।

छत्त-सं०स्त्री०—देखो 'छत' (रू.भे.) (जैन)

छत्तधारी—देखो 'छत्रधारी' (रू.भे.)।

उ०—इता छत्तधारी मिळे ज्याग ग्राया। छितं धूप लागै नहीं छत्रछाया।—सू. प्र.

छत्तर—देखो 'छत्र' (रू. भे.)

छत्तरयंण—देखो 'छत्ररत्न' (रू.भे.) (जैन)

छत्ति-सं०स्त्री०—१ शस्त्र विशेष। उ०—जड़े छक्कड़ी टोप नांहीं जरद्दा, गुपत्तिन कत्तिन छत्तिन गद्दा।—ना.द.

२ देखो 'छाती' (रू.भे.) उ०—छेदै तीरन छत्ति यां वीरन विरमाया। सेल घमाको संकुळे, छाकां कि छकाया।—वं.भा.

छत्ती—देखो 'छाती' (रू.भे.)। उ०—१ करावै हुग्रां टूक पै घाउ कत्ती, छिके ग्रंत्र पाड़ै गजां चाढ़ि छत्ती।—वचनिका

उ०—२ ग्रग्घे ग्रग्घे होहु यौं, वँडे भट वकैं। त्यौं त्यौं पय पच्छे लगैं, छत्ती धक धक्कैं।—वं.भा.

छत्तीस—देखो 'छतीस' (रू.भे.)

छत्तीसमौं—देखो 'छतीसमौं' (रू.भे.)

छत्तीसे'क—देखो 'छतीसे'क' (रू.भे.)

छत्तीसौ—देखो 'छतीसौ' (स्त्री० छत्तीसी)

छत्तौ—देखो 'छतौ' (रू.भे.) उ०—छत्तौ सिरजरा पीव छत, भँवर पिसरा भमियाह। धुव दाटक धासक धुवां, थिर लख ग्रंध थयाह।
—रेवतसिंह भाटी

छत्र-सं०पु० [सं०] १ छाता. २ देवता या राजा महाराजाग्रों का छाते के ग्राकार का चिन्ह। उ०—सोळ हजार पमार संघारे। धरपत्ती छत्र कुरगढ धारे।—सू. प्र.

यौ०—छत्रछांह, छत्रधर, छत्रधरण।

३ राजा, नृप (डिं.को.) ४ क्षत्रिय (डिं.को.) ५ चांदनी, चंदोवा, वितान. ६ मंडप। उ०—वीजळि दुति दंड मोतिये वरिखा, झालरिए लागा झड़रा। छत्रे ग्रकास एम ग्रोछायो, घरा ग्रायौ किरि वररा घरा।
—वेलि.

७ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक योग (ज्योतिष)

यौ०—छत्रचक्र, छत्र-भंग।

८ डिंगल के वेलिया सांणोर छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५८ लघु ३ गुरु कुल ६४ मात्रायें हों तथा शेष के द्वाले में ५८ लघु २ गुरु कुल ६२ मात्रायें हों। (पि. प्र.)

९ घास, भूसे ग्रादि के ढेर पर छाया जाने वाला ग्राच्छादन।

१० सर्प की छतरी नामक उद्भिज, खुमी.

वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि। उ०—छत्रपती ग्रभो छत्रकुळ छतीस, वहतर कळा लखरा वतीस।—वि. सं.

रू०भे०—छत्तर।

छत्रक-सं०पु० [सं.] १ कुकुरमुत्ता, खुमी. २ छ'ता. ३ स्मारक, देवल. ४ देव मंदिर. ५ मंडप. ६ मधुमक्खी का छत्ता।

छत्रचक्र-सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष का एक चक्र जिसके ग्रनुसार शुभाशुभ फल निकाला जाता है (ज्योतिष)।

छत्रछांगीर-सं०पु०—बादशाह का छत्र।

छत्रछांह-सं०स्त्री०—१ रक्षा, शरण. २ कृपा।

छत्रधर, छत्रधरण, छत्रधार-सं०पु० [सं० छत्र+धारिन्] (स्त्री० छत्रधारणी) १ वह व्यक्ति जो छत्र धारण करे. २ राजा, नृप।

उ०—१ सुणो स्रवण हहकार छत्रधर सरव सोचियो, क्रूर भणंकार भौ चहूं कांनी। सुकवि हंसा तणो मांनसर सूकगो, देवपुर साधतां चंडदांनी।—सूरजमल मोतीसर

उ०—२ ग्रागळ धर पूरौ परी, धीर पतौ छत्रधार।
—किसोरदांन बारहठ

२ सर्प, नाग. ३ राजा के ऊपर छत्र रखने वाला सेवक.

४ देवता।

रू०भे०—छतरधारी, छत्तधारी, छत्रधारी।

छत्रधारणि, छत्रधारणी-सं०स्त्री०—१ छत्र धारण करने वाली. २ देवी, शक्ति. ३ रानी।

छत्रधारी—देखो 'छत्रधर' (रू.भे.) (स्त्री० छत्रधारणी)

उ०—१ ग्रहिसुर ग्रसुर ईढ़ न ग्रावै, वहस किसी नर इढ़ वीयै। धर सारी जोतां छत्रधारी, धारी किण ही न होड थियै।
—सांवळदांन कवियौ

उ०—२ ग्रनि नृप कोय न ग्रेहौ, जग मझि जैचंद जेहौ। कुळ दळ वळ ग्रग्रकारी, धर पूरव छत्रधारी।—सू.प्र.

छत्रधीस-सं०पु० [सं० छत्र+ग्रधीस] छत्र का ग्रधिपति, राजा।

रू०भे०—छत्राधीस।

छत्रधोड़-सं०पु० [सं० क्षत्र+धुरा] क्षत्रिय धर्म।

छत्रपत, छत्रपति, छत्रपती, छत्रपत्त, छत्रपत्तिय, छत्रपत्ती-सं०पु० [सं० छत्र+पति] १ छत्र का ग्रधिपति, राजा। उ०—१ छत्रपत लिये कांकरण इम छाजै, वड़वानळ रवि चंद्र विराजै।—सू.प्र. उ०—२ बावन दुरंग बंके विविध, सब क्षिति छोगौ छत्रपति। वखतेस तनय वनराव निप, करत राज ग्रलवर निपति।—ला.रा.

उ०—३ छत्रपतियां लागी नंह छांणत, गढ़पतियां धर परी गुमी।
—बां.दा.

उ०—४ हव हींस हुकम्म हुलास हुवं, भय भंग भयं छत्रपत्त हुवं ।
—पा.प्र.

उ०—५ पीपळोद राजै छत्रपत्तिय, आयौ मियां मेळ असपत्तिय ।
—रा.रू.

उ०—६ वळ दे दे वाकरां भणै जय जय भगवत्ती, धारि रुधिर मद धार छाक दीधी छत्रपत्ती ।—मे.म.

२ देवता. ३ सर्प, नाग ।

छत्रप्पती—देखो 'छत्रपत' (रू.भे.) उ०—छत्रप्पती उछाह में, धनेस माल उद्धमं । वेदोगत विधानयं, दुजां अनेक दांनयं ।—सू.प्र.

छत्रबंध-सं०पु०—१ राजा, नृप, भूपति । उ०—पवन वाजसी गजबंध छत्रबंध गजराज गुड़सी ।—वचनिका

२ एक प्रकार का चित्रकाव्य ।

छत्रभंग-सं०पु० [सं०] १ ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना जाता है । २ अराजकता । उ०—गौरी झालियौ तद जोसी जगजोत आय कह्यौ—'दिल्ली छत्रभंग होय तिसड़ौ जोग छै ।
—नरणसी

३ हाथी का एक दोष जो उसके दांतों के ऊपर नीचे होने के कारण माना जाता है । ४ छत्र के आकार की छत्रदंड सहित पीठ पर भौंरी वाला घोड़ा जो अशुभ माना जाता है (शा.हो.) ।

छत्ररत्न-सं०पु० [सं०] १ सेना के ऊपर १२ योजन लम्बा ६ योजन चौड़ा छत्ररूप बनने वाला छत्र जो शीत, ताप, वायु आदि उपसर्ग से स्व-रक्षण करता है (जैन) ।

२ चक्रवर्ती के चौदह रत्नों में से नवां रत्न (जैन) ।

छत्रांधर—देखो 'छत्रधर' (रू.भे.) ।

छत्राळ-सं०पु०—वह जिसके सिर पर छत्र हो । उ०—मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह.र.

छत्राधीस—देखो 'छत्रधीस' (रू.भे.) ।

छत्राळौ-सं०पु० [सं० छत्र+सं० आलुच] छत्र वाला, राजा ।
उ०—भाटी सुरतांणोत भुजाळौ, छिळतै मछर 'रुघौ' छत्राळौ ।
—वचनिका

छत्रिय-सं०पु० [सं० क्षत्रियः] क्षत्रिय, राजपूत ।

छत्रियधरम-सं०पु० [सं० क्षत्रिय-धर्म] क्षत्रियत्व, क्षत्रियधर्म, क्षात्रधर्म ।
वि०—रक्त वर्ण, लाल* ।

छत्रियांण-सं०पु० [सं० क्षत्रिय+रा०प्र० आंण] राजपूत, क्षत्रिय ।
उ०—करण वाखांण दुनियांण धिन धिन कहै, धरम छत्रियांण भुज अमर धारू । अटक सूं लियां हिंदवांण आयौ उरड़, मुरड़ पतसाह वीकांण मारू ।—देदौ

छत्री-वि० [सं० छत्रिन्] छत्र धारण करने वाला ।
सं०पु० [सं० क्षत्रियः] १ क्षत्रिय, वीर, सुभट । उ०—महि अपणा मां-बाप प्रांण हूं छत्री प्यारा । इण आफत हूं अळग बचै जदि तरुण विचारा ।—ऊ.का.

२ देखो 'छतरी' (रू.भे.) ।

छत्रीधरम—देखो 'छत्री धरम' (रू.भे.) उ०—काढ़ कटारौ रांणाजी वैठिया, ल्यौ मीरां नै मार । इत मारां उत दोस लगै, कोई छत्री-धरम घट जाय ।—मीरां

छत्रीवट-सं०पु० [सं० क्षत्रियवर्ती] क्षत्रवट, क्षत्रियत्व, रजपूती ।
उ०—रटत लखां कव लोक जस आज रा, 'चुंड' रज छत्रीवट साज रा जोस छवता ।—आईदांन सोदौ

छत्रीस—देखो 'छतीस' (रू.भे.) । उ०—खागि त्यागि सौभागि, वंस छत्रीस तणा गुर ।—वचनिका
सं०पु०—क्षत्रिय वंश, क्षत्रिय कुल ।

छत्रीसमौ—देखो 'छतीसमौ' (रू.भे.) ।

छत्रीसूं, छत्रीसे—देखो 'छतीसौ' (रू.भे.) ।

छत्रेत-सं०पु० [सं० छत्र+रा० प्र० एत] छत्रधारी ।
उ०—वडा विर-देत करमेत रा वीरवर, अंजसै दुरग जोधांण घर ऐत । फरै फिरत अणी सावळ फळां, छळणहारां गिळै तुहिज छत्रेत ।
—नरवद

छत्रेस्वर-सं०पु० [सं० छत्र+ईश्वर] वह जो छत्र धारण करे, छत्रपति । (स्त्री० छत्रेस्वरी) उ०—अम्बा ! ओयण रीह, छाया राख छत्रे-स्वरी । दिल मझ दोयण रीह, व्यापै ताप न बीस हथ ।—अज्ञात

छदंभ-सं०पु० [सं० छद्म] छल, कपट (ह.नां.)

छद-सं०पु० [सं० छद्म] १ कपट, छल (अ.मा.) [सं० छद]
२ पत्र, पत्ता (अ मा.) ३ कागज, पत्र (डिं.को.) उ०—जमीं न पह पीठांण जिण, रद छद जेम रुळेह । वेखे कुण कठ विहड़ वन, सूळगै किना सुळेह ।—रेवतसिंह भाटी
४ पंख. ५ आच्छादन, आवरण, ढकने की वस्तु ।

छदन-सं०पु० [सं०] १ आवरण, ढक्कन. २ पंख. ३ पत्र, पत्ता (डिं.को.) उ०—छदन कोरणी दार फूटरा कूंट कूंटाळा ।
४ पत्ते की नस । —दसदेव

छदम-सं०पु० [सं० छद्म] छिपाव, दुराव, कपट, छल । उ०—सरम्म ना सुहाई सून्य छदम छेकाछेकी तें ।—ऊ.का.

छदमस्ती-वि०—मस्त, शौकीन ।

छदमी—देखो 'छद्मी' (रू.भे.) उ०—परमेसर पाखे आ अभिलाखे छदमी क्यूं छूटंदा है ।—ऊ.का.

छदर-सं०पु० [सं० छिद्र] १ ढोंग, आडम्बर, पाखंड. २ छल, कपट ।

छदांम-सं०स्त्री०—१ पैसे का चौथाई भाग ।
कहा०—छदांम रौ छाजळौ टकौ गंठाई रौ—छदांम का तो सूप और उसकी गंठाई एक टक्का । अर्थात् जब कम कीमत की वस्तु या कम लाभ के लिए अधिक व्यय हो तब यह कहावत कही जाती है ।
२ एक प्राचीन तोल विशेष ।

छदांमौ—देखो 'सुदांमौ' (रू.भे.) उ०—हर हर सुम्मरियां हरै, संत छदांमा सारसां कोड़ीधज्ज कियाह ।—ह.र.

छद्म-सं०पु०[सं०] कपट, छल। उ०—उठै फौज री हाजरी दीठि आतां, वगाई किता सूचकां छद्म वातां।—वं.भा.

यौ०—छद्मघातक, छद्मवेधी।

छद्मघातक-सं०पु०— छल से घात करने वाला, धूर्त। उ०—तिण समय चालुक्यराज अजमेर रै मारग छद्मघातक भेजिया।—वं.भा.

छद्मी-वि० [सं० छद्मिन्] १ असली रूप छिपा कर बनावटी वेष धारण करने वाला, छली, कपटी. २ ढोंगी, पाखंडी।

छद्रम-सं०पु० [सं० छद्म] १ छिपाव, गोपन. २ आडम्बर, दिखावा. ३ छल, कपट।

छनंकणौ, छनंकबौ-क्रि०अ०—तीर का वेग से चलने के कारण सन-सन की ध्वनि का होना। उ०—खनंकिय सायक धार करूर, भनंकिय भांभर रंभनि भूर। छनंकिय तीर वरच्छनि छोह, ननंकिय वोह विलंवनि लोह।—ला.रा.

छन—देखो 'क्षण' (रू.भे.)। उ०—छन मुरछा छन चेतना सीतावरजी कोई छन छन छीजे देह प्यारा रघुवरजी।—गी. रां.

छनीछर—देखो 'सनिचर'। उ०—डाकोतियै खनै गिरै-गोचर देखाय अर छनीछरजी री दांन कियौ।—वरसगांठ

छनीछरियौ—देखो 'सनिचरियौ' (रू.भे.)।

छपई—देखो 'छप्पय' (रू.भे.)।

छपकौ-सं०पु०—१ पानी का बड़ा छींटा. २ पानी में कूद कर या गिर कर हाथ पैर मारने की क्रिया या भाव अथवा पानी में इस प्रकार कूदने से होने वाली ध्वनि।

छपटणौ, छपटबौ-क्रि०अ०—चिपकना, किसी वस्तु से लगना या सटना।

छपटणहार, हारौ (हारी), छपटणियौ—वि०।

छपटाड़णौ, छपटाड़बौ, छपटाणौ, छपटाबौ, छपटावणौ, छपटावबौ—क्रि०स०।

छपटिओड़ौ, छपटियोड़ौ, छपटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपटीजणौ, छपटीजबौ—भाव वा०।

छपटाणौ, छपटाबौ-क्रि०स०—१ चिपकाना, किसी वस्तु से सटाना. २ आलिंगन कराना, सीने से लगाना।

छपटाणहार, हारौ (हारी), छपटाणियौ—वि०।

छपटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपटाईजणौ, छपटाईजबौ—कर्म वा०।

छपटणौ—अक० रू०।

छपटायोड़ौ-भू०का०कृ०—चिपकाया हुआ, सटाया हुआ. २ आलिंगन कराया हुआ। (स्त्री० छपटायोड़ी)

छपटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चिपका हुआ, सटा हुआ. २ छाती से लगा हुआ। (स्त्री० छपटियोड़ी)

छपटी-सं०स्त्री०—किसी लकड़ी को छीलने से उस पर से दूर होने वाला छिलका या टुकड़ा।

छपणौ, छपबौ-क्रि०अ०—१ छपना, चिन्हित होना, अंकित होना. २ छापेखाने में मुद्रित होना. ३ देखो 'छिपणौ' (रू.भे.)

उ०—जो पां'ड़ दसी चालगा। आगै चोर पां'ड़ माहै था। जदी विचै जाता सात चोर मिळया। जदी ई छपवा लागा।
—पंचमार री वात

छपणहार, हारौ (हारी), छपणियौ—वि०।

छपाड़णौ, छपाड़बौ, छपाणौ, छपाबौ, छपावणौ, छपावबौ—क्रि०स०।

छपिओड़ौ, छपियोड़ौ, छपयोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपीजणौ, छपीजबौ—भाव वा०।

छपद-सं०पु० [सं० षट्पद] भौंरा, भ्रमर। उ०—सिंधुर मदभर सिद्ध रा, ऊखेड़ै वणराय। तज कावेरी कमळ वन, छपदां लीधा छाय।—बां.दा.

छपन-वि०—देखो 'छप्पन' (रू.भे.)।

सं०पु०—५६ की संख्या।

छपनमौ—देखो 'छप्पनमौ' (रू.भे.)।

छपनिया-सं०स्त्री०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

छपनियौ-सं०पु०—राठौड़ वंश की 'छपनिया' उपशाखा का व्यक्ति।

वि० [सं० षट्पत्र] छः पत्तों वाला।

छपनेक-वि०—५६ के लगभग।

छपनौ-सं०पु०—५६ वां वर्ष।

छपन्न—देखो 'छप्पन' (रू.भे.) उ०—जपै पग कोटि छपन्न जादव्व, वंदै सुखदेव जिसा वैसनव्व।—ह.र.

छपय-सं०पु० [सं० षट्पद] १ भ्रमर, भौंरा. २ देखो 'छप्पय' (रू.भे.)

छपरड़ौ—देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

छपर—देखो 'छपरौ' (मह०, रू.भे.)

छपरवंदी-सं०स्त्री०—छप्पर छाने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

छपरियौ—देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

छपरी-सं०पु०—१ ऊंट की एक जाति विशेष या इस जाति का ऊंट। उ०—सू ऊंठ किण-किण दिसावर रा छै? काछी, वोदला, छपरी, वगरू, जाळोरी, बलोची, सिववाड़िया, खाडाळिया अोर ही अनेक जात भांत रा ऊंठ छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

छपकौ—देखो 'छपाकौ' (रू.भे.)

छपरौ-सं०पु०—घास-फूस आदि से छाई हुई मकान की छत या ऐसी छत का खुला स्थान जो धूप व वर्षा से सुरक्षा के लिये बनाया जाता है। उ०—सु कोटवाळजी री हवेली हिरण वांधियौ दीठौ। एक छपरौ तिण में जिनावरखांनौ है तठै वांधियौ दीठौ।—द.दा.

क्रि०प्र०—करणौ, छाणौ, बणाणौ।

अल्पा०—छपरड़ौ, छपरियौ, छपरी, छप्परड़ौ, छप्परियौ, छप्परी।

महत्व०—छपर, छप्पर।

छपा-सं०स्त्री० [सं० क्षिपा] रात, रात्रि, निशा। उ०—गैण तारौ तूटौ छपा छुटौ कै तोप सूं गोळी, चला सूं वछूटौ वांण नारंग चटेल। जोगी जटा थटा हूंत खुटौ वीरभद्र जांणै, असे रूप आय जुटौ नाहंतौ अठेल।—फतैसिह महड़

रू०भे०—छिपा।

छपाई-सं०स्त्री०—१ छापने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी. २ मुद्रण, अंकन।

छपाकर-सं०पु० [सं० क्षिपाकर] चंद्रमा (डि.को.)

छपाकौ-सं०पु०—१ पानी में जोर से कूदने या किसी वस्तु के जोर से गिरने पर उत्पन्न होने वाला शब्द।

क्रि०प्र०—करणौ, मारणौ।

२ पानी का बड़ा छींटा जो जोर से उछाल कर या फेंक कर लगाया जाता है।

क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ, लागणौ।

३ पित्त की अधिकता से शरीर पर पड़ने वाला चकत्ता, एक प्रकार का रोग विशेष।

रू०भे०—छपकौ, छवकौ।

छपाखांनौ—देखो 'छापाखांनौ' (रू.भे.)।

छपाड़णौ, छपाड़बौ—१ देखो 'छिपाणौ' (रू.भे.)।
२ देखो 'छपाणौ' (रू.भे.)।

छपाड़णहार, हारौ (हारी), छपाड़णियौ—वि०।

छपाड़िओड़ौ, छपाड़ियोडौ, छपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छपाड़ीजणौ, छपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

छपणौ—अक० रू०।

छपाणौ, छपावौ, छपावणौ, छपाववौ—रू०भे०।

छपाड़ियोड़ौ—देखो 'छपायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छपाड़ियोड़ी)

छपाणौ, छपावौ-क्रि०स०—छपाना, मुद्रित कराना. २ प्रकाशित कराना. ३ देखो 'छिपाणौ' (रू.भे.)

छपाणहार, हारौ (हारी), छपाणियौ—वि०।

छपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपवावणौ, छपवाववौ—प्रे०रू०।

छपाईजणौ, छपाईजबौ—कर्म वा०।

छपणौ—अक० रू०।

छपायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ छपाया हुआ, मुद्रित कराया हुआ. २ प्रकाशित कराया हुआ. ३ छिपाया हुआ। (स्त्री० छपायोड़ी)

छपावणौ, छपाववौ—देखो 'छपाणौ' (रू.भे)। उ०—जद परधांन कहै। खोटी वणी मैं तो मोहे राजा आगे भांड करसी। जद परधांन रजपूतांणी है, कहै मोहे कठे छपाव।—कांगा रजपूत री वात

छपावणहार, हारौ (हारी), छपावणियौ—वि०।

छपाविओड़ौ, छपावियोड़ौ, छपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छपावीजणौ, छपावीजवौ—कर्म वा०।

छपणौ—अक० रू०।

छपावियोड़ौ—देखो 'छपायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छपावियोड़ी)

छपियोड़ौ-भू०का०कृ०—छपा हुआ, मुद्रित, प्रकाशित। (स्त्री० छपियोड़ी)

छपै, छप्पई—देखो 'छप्पय' (रू.भे.) उ०—नगारूं की घोर नकीवूं के हाके छपै कपोलूं क्रीला करते छुट्टै छंछाळ छाके रज डंवर का पूर चढ़ि ढंके भांण।—सू.प्र.

छप्पन-वि० [सं० षट्पञ्चाशत्, प्रा० छप्पण्णा] पचास से छः अधिक।
सं०पु०—१ ५६ की संख्या। २ देखो 'छप्पनगिर' (रू.भे.)
उ०—दुरग खड़े दक्खिण दिसा, अकवर सूं हित आख। कर घर गुज्जर जीमणै, छप्पन वांमे राख।—रा.रू.

छप्पनगिर-सं०पु० यौ०—मारवाड़ राज्य के सिवाना तहसील का प्रसिद्ध पहाड़।

छप्पनमौं-वि०—५६वां।

छप्पने'क-वि०—छप्पन के लगभग।

छप्पनौ—देखो 'छपनौ' (रू.भे.)

छप्पय-सं०पु० [सं० षट्पद] १ छः चरणों का एक मात्रिक छंद। इसमें प्रथम चार पद रोला छंद के तथा अंतिम दो पद उल्लाला छंद के होते हैं। इसके लघु गुरु क्रम से कुल ७१ भेद होते हैं।
१ अजै (अजय) २ इंदु (इंद) ३ कंद. ४ कनक. ५ कमळ. ६ कमळाकर. ७ करण (करन) ८ करतळ. ९ कुंजर. १० कुरम्म (कोम) ११ कुसुम. १२ कोकिल (कोइल) १३ क्रस्ण. १४ गगन. १५ गरुड़. १६ ग्रीखम. १७ चंदण (सं० चंदन) १८ जंगम. १९ तालंक. २० दाता. २१ दीप. २२ घवळ. २३ ध्रुव. २४ नर. २५ नवरंग. २६ पयोधर (पयोहर) २७ वळी (वळ) २८ बुध (बुधी) २९ वेताळ (वैताल, वितालय) ३० ब्रहम. ३१ ब्रहमजळ (ब्रिहनट) ३२ भ्रमर. ३३ मकर. ३४ मछ (मत्स्य) ३५ मद. ३६ मदन. ३७ मनोहर. ३८ मरकट (मरक्कट) ३९ मेघ. ४० मेर (मेरु) ४१ यंजंगम (अजंगम) ४२ यूतिस्ट. ४३ रंजण (रंजन) ४४ रतन. ४५ रुर. ४६ वारण. ४७ विजै (विजय) ४८ वीर. ४९ वसू. ५० सेख (सेस) ५१ सव्द. ५२ समर. ५३ सर (सरस) ५४ सरभ. ५५ सल्य. ५६ ससि. ५७ सारंग. ५८ सारद. ५९ सारदूळ. ६० सारस. ६१ सिंघ (सिंह) ६२ सिद्ध (सिंघ) ६३ सुआंन (स्वान) ६४ सुभंकर. ६५ सुमण. ६६ सुसर. ६७ सूर. ६८ सेखर. ६९ हर. ७० हरि. ७१ हीर।
उपरोक्त भेदों के अतिरिक्त डिंगल साहित्य में २२ प्रकार के भेद और मिलते हैं जो निम्न हैं—
१ अहर-अळग. २ एकळ वयण. ३ कमळवंध. ४ करपल्लव. ५ कुंडळियो. ६ चौटियो. ७ चौप. ८ छत्रवंध. ९ जातासंख. १० ताळूरव्यंव. ११ नाट. १२ नीसरणीवंध. १३ वळता-संख. १४ मझ अ०खरो. १५ मुगताग्रह. १६ लघुनाळीक. १७ विघांनीक. १८ वेधहीरा. १९ वघनाळीक. २० संकळ. २१ समवळ. २२ हल्लव।
[सं० षट्पद] भ्रमर, भौंरा।
रू०भे०—छपई, छपय, छपै, छप्पई, छप्पै।

छप्पर—देखो 'छपरो' (महत्व०) (रू.भे.)
छप्परड़ी, छप्परियो—देखो 'छपरो' (अल्पा०, रू.भे.)
मुहा०—भगवांन देवै जद छप्पर फाड़ नै देवै—ईश्वर का सहारा अनायास ही प्राप्त होता है।
छप्पै—देखो 'छप्पय' (रू.भे.)
छप्रभंग-सं०स्त्री० घोड़े की पीठ पर बैठने के स्थान पर की भौंरी (अशुभ, शा.हो.)
छब-वि०—सब, सर्व, समस्त।
सं०स्त्री०—छवि, शोभा। उ०—माथा नै मैंमद अधक विराजै, तो रखड़ी री छब न्यारी जी।—लो.गी.
छब-अजव-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
छबकाळ-सं०पु०—डिंगल में एक प्रकार का साहित्यिक दोष जिसमें छंद रचना में दूसरी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होने पर माना जाता है।
वि०—जिसमें दाग व छबके हों।
रू०भे०—छवकाळ।
छबकाळी-वि०स्त्री० (पु० छबकाळो) चित्र-विचित्र, रंग-बिरंगे चिन्ह-युक्त। उ०—मोरियो मुजरो कर बोल्यो, सांझ री जांझ पड़ी भणकार। छबकाळी ईंढांणी धर सीस, चाली पिणघट नै पिणिहार।
—सांझ
छबको-सं०पु०—चकत्ता, धब्बा, दाग।
छबड़—देखो 'छाब' (मह० रू.भे.)
छबड़ली—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
छबड़लो-सं०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
छबड़ि—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
छबड़ियो-सं०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
छबड़ी—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
छबड़ो, छबड़्यो-सं०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—महंदी तो चूंटण घण गई, सोनै रो छबड़ो जी हाथ, सोदागर महंदी राचणी।—लो.गी.
छबजांण-सं०पु० [सं० सर्वज्ञ] ईश्वर।
वि०—सारी बातें जानने वाला। सर्वज्ञ।
छबणो-सं०पु०—दरवाजे की चौखट के ऊपरी भाग पर लगाया जाने वाला गढ़ा हुआ पत्थर या लकड़ी का पाटा जो चौखट के ऊपर की लकड़ी के बराबर होता है और उस पर पूरा दबाव रखता है।
छबणो, छबबो-क्रि०अ०—१ स्पर्श होना, छूना। उ०—उरस छबता थका आविया अड़ाकी आखता असुर रघुवीर आगां कोप लोयण कियां।—र.रू.
२ छवि देना, शोभा देना, फबना. ३ छाया जाना, आच्छादित होना।
छबभुत-वि० [सं० अद्भुत] विचित्र, अद्भुत।
छबर-छबर-सं०स्त्री० [सं० शंबर] नेत्र जल-धारा, अश्रु-प्रवाह।
छबल—१ देखो 'छाब' (मह० रू.भे.)
२ देखो 'छाबली' (मह० रू.भे.)
छबलड़ी—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'छाबली' (अल्पा०, रू.भे.)
छबलड़ो-सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'छाबली' (अल्पा०, रू.भे.)
छबलि—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'छाबली' (रू.भे.)
छबलियो-सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा० रू.भे.)
२ देखो 'छाबली' (अल्पा०, रू.भे)
छबली—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'छाबली' (रू.भे.)
छबलो, छबल्यो-सं०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—हरे वांस रा दोय छबल्या मंगावो, नीचो साल क्यारी भांग चुंटाओ।—लो.गी.
२ देखो 'छाबली' (अल्पा०, रू.भे.)
छबा—देखो 'सभा' (रू.भे.) उ०—छजंत भूपती छबा, सलांम भूपती सजै। कपूर पांनदांन केक, राखि भूपती रजै।—सू.प्र.
छबि-सं०स्त्री० [सं० छविः] १ शोभा, कान्ति। उ०—छबि नवी नवी नव नवा महोछब, मंडियै जिणि आणंद मई। कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चित्रांति चित्रांम थई।—वेलि.
२ प्रभा, किरण. ३ सौन्दर्य. ४ तस्वीर, चित्र। उ०—पछै आपरी छबि मंगाय नै दीवी जे इणरो सदा दरसण करिजै, सेवा कीजै इतरा में हूं आऊं ही छूं।—कूंवरसी सांखला री वारता
५ रूप, स्वरूप। उ०—आई देखन मनमोहन को, मोरे मन में छबि छाय रही। मुख पर का आंचल दूर किया, तब ज्योति में ज्योति समाय रही।—मीरां
रू०भे०—छबी, छवि, छवी।
छबिलो-सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
२ देखो 'छबीलो' (रू.भे.)
छबी—देखो 'छबि' (रू.भे.) उ०—हेकण हलवाई री दुकांन मांही पदमसिंहजी री छबी जड़ी थी सो निराठ दुरस्त थी।
—पदमसिंह री वात
छबीनो-सं०पु०—रात्रि में सेना के चारों ओर चक्कर लगाने वाला घुड़सवार। उ०—तिण समय चंद्रमा रै चारों तरफ परिवेस रै प्रमांण भाले सिंहदेव साठि हजार सेना सूं स्वकीय स्वामी रा सिविर रै छबीनां रो चक्र चलायो।—वं.भा.
छबीलादार-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
छबीलो-वि० [सं० छविल] १ सुंदर, मनोहर, सजाधजा, बनाठना।
उ०—सील सजीलो रूप रसीलो छैल छबीलो छावै। नील जळज तव छटा निराळी, लख-लख कांम लजावै।—गी.रां.

(स्त्री० छवीली) २ शौकीन। उ०—ग्रथ कंवरी रै पत्री सिद्ध स्त्री लग्न री लड़ी, जीव री जड़ी, सजीली, फवीली, लजीली, छवीली, रमकीली, लंकीली, कमकीली, छकीली, लटकीली, चकीली, चटकीली, वत्तीम्लछणी, चौसट कळा विचछणी, केळरसक्यारी, प्रांणप्यारी, जिण सूं मांहरौ निज नेह, दुरम भांत री छजे देह।

(र. हमीर)

छवू-सं०पु०—एक प्रकार का सुगंधित पुष्प।

छवोल-सं०पु०—१ देखो 'छाव' (मह०, रू.भे) २ देखो 'छावली' (मह०, रू.भे.)

छवोलड़ी—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू.भे.) २ देखो 'छावली' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

छवोलड़ौ-सं०पु०—१ देखा 'छाव' (ग्रल्पा०-रू.भे.) २ देखो 'छावली' (मह०, रू.भे.)

छवोलि—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू.भे.) २ देखो 'छावली' (रू.भे.)

छवोलियौ-सं०पु०—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू.भे.) २ देखो 'छावली' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

छवोली—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०-रू.भे.) २ देखो 'छावली' (रू.भे.)

छवोलौ, छवोल्यौ—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू.भे.) २ देखो 'छावली' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

छव्वीस—देखो 'छाईस' (रू.भे.)

छव्वीसमौं-वि०—छव्वीसवां।

छव्वीसे'क-वि०—छव्वीस के लगभग।

छव्वीसौ-सं०पु०—२६वां वर्ष।

छव्वौ-सं०पु०—टोकरा। उ०—काल कोई तौ कैवतौ हो कै एक जणौ भुजियां री छब्बौ ले जावतौ हौ जकौ मऊ खोस लियौ।

—वरसगांठ

छभट्ठिय-सं०पु०—हाथी का गंड-स्थल। उ०—चवै मद पूर छभट्ठिय राह, मनौ वरसै घन भद्दव माह।—ला.रा.

छभा—देखो 'सभा' (रू.भे.) (ग्र मा.)

उ०—१ मभि छभा राज मंभारि, नव उछव इम नर नारि।—सू.प्र.

उ०—२ दरियाव का पूर, छभा का दरसाव। पोसत की वाड़ी, फुलवाद का वणाव।—सू.प्र.

छमंक-सं०स्त्री०—पायलों की ध्वनि विशेष, झनकार।

छमंटा-सं०स्त्री०—ग्राग की लपट। उ०—रोमंच ग्रंग घोम रूप ब्रह्म तेज में वणै। जटास छमंटा जड़ागि ग्राग नेत्र ऊफणै।—सू.प्र.

छम-सं०स्त्री० (ग्रनु०) घुंघरू वजने ग्रथवा वर्षा होने से उत्पन्न छम-छम की ध्वनि।

वि० [सं० क्षम] समर्थ, वलवान। उ०—उमादत्त चहुवांण छत्र धारियौ संभर छम। परणी गोहिल पूंज सुता ललितापुर संक्रम।

—वं.भा.

छमकणौ, छमकबौ-क्रि० ग्र०स०—१ गहनों की झंकार होना, ध्वनि करना, छमकना. २ घुंघुरू ग्रादि को हिला हिला कर छम-छम की ध्वनि करना. ३ कड़कड़ाते घी या तेल में हींग, मीर्च, जीरा, राई, लहसुन ग्रादि मिला कर दाल, कढ़ी ग्रादि में डालना, छौंकना, छौंका लगाना, वघारना. ४ कड़कड़ाते घी या तेल में भूनने के लिए कच्ची सब्जी डालना।

छमकणहार, हारौ (हारी), छमकणियौ—वि०।

छमकवाड़णौ, छमकवाड़बौ, छमकवाणौ, छमकवाबौ, छमकवावणौ, छमकवावबौ—प्रे०रू०।

छमकाड़णौ, छमकाड़बौ, छमकाणौ, छमकाबौ, छमकावणौ, छमकाववौ—क्रि०स०।

छमकिग्रोड़ौ, छमकियोड़ौ, छमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छमकीजणौ, छमकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

छमकाणौ, छमकाबौ-क्रि०स० ('छमकणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ छमकने का कार्य दूसरे से कराना, छमकाना. २ छौंकने का कार्य दूसरे से कराना, छौंकाना।

छमकाणहार, हारौ (हारी), छमकाणियौ—वि०।

छमकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छमकाईजणौ, छमकाईजबौ—कर्म वा०।

छमकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ छमकाया हुग्रा. २ छौंकाया हुग्रा, वघार लगवाया हुग्रा। (स्त्री० छमकायोड़ी)

छमकारणौ, छमकारबौ—देखो 'छमकाणौ' (रू.भे.) उ०—राईतां मिरीतां खाटां खारां मीठां गळयां तीखां तमतमां तळयां वघारचां छमकारचां पुंगारचां।—भोजनविच्छित्ति

छमकावणौ, छमकावबौ—देखो 'छमकाणौ' (रू.भे.) उ०—तदनंतर मुंग वडी, उड़द वडी, छमका वडी, पलेह वडी, सउतली वडी, मांहितु चीर, छमकावी डोडी, खाईयां टळटळतां टींडरां, भलि वाल हुलि।

—विविध व०

छमकावणहार, हारौ (हारी), छमकावणियौ—वि०।

छमकाविग्रोड़ौ, छमकावियोड़ौ, छमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छमकावीजणौ, छमकावीजबौ—कर्म वा०।

छमकावियोड़ौ—देखो 'छमकायोड़ौ' (स्त्री० छमकावियोड़ी)

छमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—छमका हुग्रा, छौंका हुग्रा।

(स्त्री०—छमकियोड़ी)

छमकौ-सं०पु०—१ वघार, तड़का, छौंका. २ नूपुर या पैरों के ग्राभूपण की ध्वनि। उ०—वांका नैणां री भोक नांखती पायल रै ठमकै सूं, घूघरै रै घमकै सूं, विछियां रै छमकै सूं, रमझोळ करती, ग्रंगूठा मोड़ती, नखरा करती वाजारि चाली जाये छै।—रा.सा.सं.

छमच्छर-सं०पु० [सं० संवत्सर] संवत, सन्, साल, वर्ष।

रू०भे०—छमछर।

छमछम-सं०स्त्री० (ग्रनु०) १ घुंघुरु हिलाने व चलने से पैरों के ग्राभूपणों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, छमछमाहट. २ मजीरा।

क्रि०वि०—छमछम शब्द के साथ।

छमछमणौ, छमछमबो–क्रि०अ०—छमछम का शब्द होना।

उ०—कळकळतां फोसंभां, सुडहडती सांफळी, डसडसतां डोडिकां, छमछमती भाजी, चमचमतां चीभड़ां।—वि.व.

छमछमाणौ, छमछमावौ–क्रि०स०—१ छम-छम शब्द करना. २ छम-छम शब्द करते हुए चलना।

छमछर—देखो 'छमच्छर' (रू.भे.)

छमछरी–सं०स्त्री० [सं० संवत्सर+रा० प्र० ई] १ मृत्यु दिवस या दाग तिथि के पश्चात् आने वाला वार्षिक दिन. २ आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी तक कुछ कुछ अन्तर देकर किया जाने वाला व्रत (जैन)।

छमा—१ देखो 'क्षमा' (रू.भे.) २ देखो 'छमास' (रू.भे., ह.नां.,अ.मा.)

छमाई—देखो 'छमासी' (रू.भे.)

छमाछम–सं०स्त्री० (अनु०) गहने बजने या वर्षा होने से उत्पन्न छम-छम शब्द, छमछमाहट।

क्रि०वि०—छम-छम ध्वनि के साथ।

छमायौ–वि०—छः माह के गर्भ से उत्पन्न होने वाला।

क्रि०प्र०—जाणौ, पड़णौ, होणौ।

रू०भे०—छमासियौ।

छमास–सं०पु० [सं० पाण्मातुर अथवा षड्मातृक] १ स्वामी कार्तिकेय।

रू०भे०—छमा।

२ छः माह की अवधि, आधा वर्ष।

छमासियौ—देखो 'छमायौ' (रू.भे.)

छमासी, छमाही–सं०स्त्री० [सं० षड् मासी, षण् मासी] १ किसी मृतक की मृत्यु के उपरांत छठे मास में उसके संबंधियों द्वारा किया जाने वाला श्राद्ध।

वि०वि०—कहीं-कहीं यह छमासी का श्राद्ध अपनी सुविधा के अनुसार छ मास की अवधि के अन्दर कभी भी कर लिया जाता है।

वि०स्त्री० (पु० छमासियौ) १ छः माह के गर्भ काल से उत्पन्न होने वाली. छः मास सम्बन्धी (जो छः मास या अर्द्ध वर्ष के उपरांत हो)

छमुख–सं०पु० [सं० षट्+मुख] षडानन, कार्तिकेय।

छमौ–वि०—छठा।

छम्माछोळ–सं०पु०—उपद्रव, उत्पात।

कहा०—ढंढ वाळी छम्माछोळ है—निर्जन स्थान पर होने वाली प्रेत अथवा मायावी लीला।

छयल, छयलु, छयल्ल—देखो 'छैल' (रू.भे.) उ०—१ तठा उपरांति करिनै भोगिया भंमर लंजा छयल हुसनाक जुवांन निजरवाज बाजार मांहै ऊभा जोहां खाये छै।—रा.सा.सं. उ०—२ इसउ वचनु तव बोलइ, कांम गहिल्लिय नारि। छयलु छरालउ छावउ, छई कोइ नयर मभारि।—प्राचीन फागु संग्रह उ०—३ इसी छयली वणजारड़ी, निवसइ तीणइ देसि। वालंभु विणिजिहि चालियउ, मूकिय जोवन वेसि।—प्राचीन फागु संग्रह उ०—४ निजरां रा भड़ाका लागां थकां जुवांनां छयल्लां रा मन गरेदबाज करै छै।

—रा.सा.सं.

छयां–सं०स्त्री०—छाया।

छयांणवइ—देखो 'छिनू' (रू.भे.) उ०—छइ दरसण छयांणवइ, पाखंड का आधार।—वचनिका

छयांळी—देखो 'छियाळी' (रू.भे.)

छयांळी, छयाळौ—देखो 'छियाळीसो, छियाळौ' (रू.भे.)

छयासियौ—देखो 'छियासियौ' (रू.भे.)

छयासी—देखो 'छियासी' (रू.भे.)

छयासीमौं—देखो 'छियासीमौ' (रू.भे.)

छरंडी–सं०स्त्री०—होली जलने के बाद दूसरे दिन का उत्सव।

छर–सं०पु० [सं० क्षर] १ सिंह के अगले पैर का पंजा।

उ०—ओ सादूळो ऊछळै छर ऊछज कर छोह। गाजै जळहर गयण में, जाय अळहतै जोह।—बां.दा.

२ कलंक, दोष।

स्त्री० (अनु०) छर्रों या कणों के वेग के साथ निकलने की ध्वनि।

यौ०—छर-छर।

छरछर–सं०पु०यौ०—छर्रों या कणों का वेग से निकलने या दूसरी वस्तु पर गिरने से होने वाला शब्द।

छरछराणौ, छरछरावौ–क्रि०अ०—देखो 'चरचराणौ' (रू.भे.)

छरछराहट–सं०स्त्री०—छर्रों या कणों के वेग के साथ निकलने या अन्य वस्तु पर गिरने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि. २ देखो 'चरचराहट' (रू.भे.)

छरणी–सं०स्त्री०—बढ़ई का औजार विशेष।

छरदी–सं०स्त्री० [सं० छर्दि] १ वमन, कै (अमरत) २ देखो 'सरदी' (रू.भे.)

छरमर–सं०पु०—वर्षा होने से उत्पन्न शब्द, झरमर का शब्द।

छररौ–सं०पु०—१ कंकड़ व रेत कण का छोटा टुकड़ा. २ बंदूक में बारूद के साथ भर कर चलाने का लोहे या शीशे का छोटा कण. ३ पहाड़ों से प्राप्त होने वाली छोटी कंकरी जिसे सीमेंट में मिला कर फर्श बनाने के काम में लिया जाता है।

छरहरौ–वि०—दुबला, पतला।

छराप—देखो 'सराप' (रू.भे.)

छराळउ–वि०—मस्त। उ०—इसउ वचनु तव बोलइ, कांमगहिल्लिय नारि। छयलु छराळउ छावउ, छइ कोइ नयर मभारि?

—प्राचीन फागु-संग्रह

छराळौ–सं०पु०—१ सिंह का बच्चा. २ सिंह।

छरेरी—देखो 'छिरेंटी' (रू.भ.)

छरेळ–सं०पु०—१ सिंह. २ योद्धा, वीर।

छरौ–सं०पु०—१ सिंह का पंजा। उ०—छोह घणै ऊछज छरा, केहर फाड़ै डाच। ऐरावत कुळ ऊपरा, मीच मंडीजै नाच।—बां.दा.

२ कलंक, दोष. ३ हाथ । उ०—१ सूं सुरतांणि 'ईसरै' समहरि, लोह छरा गैतूळा लाइ । भुज पांणि उपाड़ै भाराथि, ब्रहमंड सांम्हा चाढै वाइ ।—ईसरदास मेड़तिया रौ गीत

उ०—२ छळि साहि तणां ग्राहि खाग छरां, धूंसै चढ़ि लीध बलक्क धरा ।—वचनिका

३ तलवार. ४ इजारबंद, नाड़ा. ५ देखो 'छड़ौ' (रू.भे.) ६ श्राक, सन श्रादि की छाल की हाथ से बँटी हुई रस्सी ।

छलंग-सं०स्त्री०—छलांग, फलांग ।

छळ-सं०पु० [सं० छल] १ वास्तविक रूप को छिपाने का भाव, कपट, धोखा, ठगपन । उ०—कंथ म राखौ कायरां, करै नजर जो कोड़ । दोयण दळ बींटो दियां, छळ कर जावै छोड़ ।—बां.दा.

क्रि०प्र०—करणौ, रचणौ ।

यौ०—छळकपट, छळछंड, छळछंद, छळबळ ।

२ युद्ध, रण । उ०—१ पण धारियौ बडौ पड़िहारां, 'श्रजन' दळां छळ श्रागळयारां ।—रा.रू.

उ०—२ तेज पुंज कमधज्ज सभा जम सज्भ भयंकर, श्रमर वंस श्रापांण जांण लंका छळ बंदर ।—रा.रू.

यौ०—छळभोम ।

३ वार, प्रहार । उ०—जुध जागिया भला जोधावत, तें दोय छळ तरवार तणा ।—राव बीका रौ गीत

[सं० शाड़ृ=श्लाघायाम्] ४ यश, कीर्ति । उ०—१ कुंजरदस दूण करण कव पातां, निय कुळ छळ श्राप तै नियाय । खिजियै श्रेक न दीना खांना, रीझियै दिया जंगळधर राय ।—सांवळ बीठू

उ०—२ पातल रा छळ जाग पतावत, श्ररसी रा छळ श्रागै । यळ जसरात जनमियौ 'श्रमरा', जमां रात नह जागै ।

—रांणा श्रमरसिंह रौ गीत

५ रक्षा, बचाव । उ०—पोह काज गऊ छळ भोम न पड़ियौ, श्रर धारां श्रावटियौ श्रंग । 'चांपौ' चंच ग्रीधण चढ़ियौ । नासा चर लेगी नीहंग ।—राव चांपा रौ गीत

६ कार्य, सेवा । उ०—१ साह दरगाह बूझियौ, भळै सकळ भरभार । 'केहर' ज्यूं पत छळ करै, समरै तिकां संसार ।—रा.रू.

उ०—२ 'चुतरौ' फतमल बोलिया, सकती पुरा सकज्ज । लजनधारै सांम छळ, त्यां रजवट्ट न लज्ज ।—रा.रू.

[सं० छद्] ७ भूषण, गहना । उ०—त्रै-विध प्रसिध श्रभिनमौ 'बीकौ', छावौ श्रावि जस वंस छळ । रोर गमै उहवाळि रीझियौ, खिझियौ गमै श्रकाळ खळ ।—रा.रू. ८ अवसर, मौका (पर्व) । उ०—मिळि भायां कियौ मतौ मा जायां, दळ बळ छळ श्रायां दुरित । गायां गयां जीवियां कुण गत, गायां लारां मुवां गत ।

—बदरीसिंघ नै श्रनोपसिंघ भाटी रौ गीत

९ मर्यादा, प्रतिष्ठा, मान । उ०—१ बहादुर कुळ छळां रखण सारंग बिया, केळपुर ऊधरां करां जग सिर किया ।

—रावत सारंगदेव द्वितीय (कांनोड़) रौ गीत

उ०—२ गोवरधन श्राजांन भुज, सांम सुजाव सगाह । रिणमालां छळ रक्खणा, जोधां करण निवाह ।—रा.रू. १० भेद, रहस्य ।

उ०—कै 'सोनागिर' कै 'दुरंग' कै खीची 'मुकनेस' । श्रै जांणै छळ सांम रौ, जिण थळ रहे नरेस ।—रा.रू. ११ बहादुरी, शौर्य, पराक्रम ।

उ०—घट सोचे डाढी कर घालै, 'सोनंग' 'दुरंग' तणौ छळ सालै ।

—रा.रू.

१२ गुस्सा, कोप, क्रोध । उ०—पंचमजारज इंद्र पर, क्यूं केसर डकरंत । इळ पाळग सिर श्राफळण, तूं छळ व्रथा धरंत ।—जैतदान बारहठ

वि०—१ श्याम, काला* (डि.को.) २ श्रेष्ठ ।

क्रि०वि०—लिये, वास्ते । उ०—करनोत धरा छळ खींवकन्न, महाराज 'श्रजन' छळ सुद्ध मन्न ।—रा.रू.

रू०भे०—छळ

छळकण-सं०स्त्री०—१ छलकने की क्रिया या भाव. २ उद्गार ।

छळकणौ, छळकबौ-क्रि०श्र० (श्रनु०) १ किसी तरल पदार्थ का पात्र के हिलने-डुलने के कारण से उछल कर बाहर श्राना, छलकना.

२ उमड़ना । उ०—पालणै हींडै नैना बाळ, माबड़ी हालरिये हुलराय । कंठ में छळकै नेह श्रपार, हिये रा हार हिलोळा खाय ।—सांभ

छळकणहार, हारौ (हारी), छळकणियौ—वि० ।

छळकाड़णौ, छळकाड़बौ, छळकाणौ, छळकाबौ, छळकावणौ, छळकावबौ—क्रि०स० ।

छळकिश्रोड़ौ, छळकियोड़ौ, छळक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छळकीजणौ, छळकीजबौ—भाव वा० ।

छळकाणौ, छळकाबौ-क्रि०स०—१ तरल पदार्थ को हिला-डुला कर पात्र में से बाहर उछालना, छलकाना. २ उमड़ाना ।

छळकाणहार, हारौ (हारी), छळकाणियौ—वि० ।

छळकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

छळकाईजणौ, छळकाईजबौ—कर्म वा० ।

छळकाड़णौ, छळकाड़बौ, छळकावणौ, छळकावबौ—रू०भे० ।

छळकणौ—श्रक० रू० ।

छळकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ छलकाया हुश्रा. २ उमड़ाया हुश्रा ।
(स्त्री० छळकायोड़ी)

छळकावणौ, छळकावबौ—देखो 'छळकाणौ' (रू.भे.)

छळकावणहार, हारौ (हारी), छळकावणियौ—वि० ।

छळकाविश्रोड़ौ, छळकावियोड़ौ, छळकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छळकावीजणौ, छळकावीजबौ—कर्म वा० ।

छळकणौ—श्रक० रू० ।

छळकावियोड़ौ—देखो 'छळकायोड़ौ' (स्त्री० छळकावियोड़ी)

छळकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ छलका हुश्रा. २ उमड़ा हुश्रा ।
(स्त्री० छळकियोड़ी)

छळकीजणौ, छळकीजबौ-क्रि० भाव वा०—१ छलका जाना. २ उमड़ा जाना. ३ चमका जाना ।

छळकीजणहार, हारौ (हारी), छळकीजणियौ—वि० ।
छळकीजिग्रोड़ौ, छळकीजियोड़ौ, छळकीज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
छळकणौ—ग्रक० रू० ।

छळकीजियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ छलका हुआ. २ उमड़ा हुआ । (स्त्री० छळकीजियोड़ी)

छलड़ौ—सं०पु०—१ सूत कातने के चरखे में लगाने का चमड़े या लकड़ी का बना एक उपकरण । चरखे के तकुये में डाला हुआ चमड़े का गोल चक्र. २ रेगिस्तान का एक जन्तु विशेष ।
वि०—छ: तह किया हुआ, छ: लड़ी किया हुआ (स्त्री० छलड़ी)

छळछंड, छळछंद—सं०पु०यौ०—छल, कपट, चालबाजी, धूर्तता, ठगपन ।

छळछंदौ—वि०—कपटी, छली, कपटपूर्ण व्यवहार करने वाला, धोखे-बाज, धूर्त ।
रू०भे०—छळ-छिद्री ।

छळछळाणौ, छळछळाबौ—क्रि०ग्र०—१ पानी को छल-छल शब्द करते हुए गिराना. २ नेत्रों का अश्रुपूर्ण होना ।

छळछळीउ—छिछला । उ०—पंडित डाहु विद्यावंत, नहीं छळछळीउ कहिवाइ संत । गरव न धरइ हईग्रा मांहि, सुंदर देखी तु प्रवाहि ।
—नल-दवदंती रास

छळछळौ—वि०—डबडबाया हुआ, अश्रुपूर्ण ।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।
मि०—जळजळौ, डबडबौ ।
२ लबालब, पूर्ण । उ०—छळछळां पत्र भरि जोगणी छपाई, छत्रधर धिनोजी धांधळां छात ।—गिरवरदांन सांदू

छळछिद्र—सं०पु०—मायावी अथवा प्रेत लीला । उ०—ताहरां वहू कह्यौ—हे हरमाळा ! अवार तूं जाय देख, ग्रो डेरौ छै कै छळछिद्र छै ।
२ कपट, छल । —पलक दरियाव री वात

छळछिद्री—देखो 'छळछंदौ' (रू.भे.)

छळण—सं०स्त्री०—किसी को छलने या धोखा देने का कार्य । कपट-व्यवहार ।

छळणी—देखो 'चळणी' (रू.भे.)
वि०स्त्री० (पु० छळणौ) छल-कपट करने वाली ।

छळणौ—वि०पु० (स्त्री० छळणी) कपट व्यवहार करने वाला, छल करने वाला ।

छळणौ, छळबौ—क्रि०स०—१ किसी को धोखा देना, किसी के साथ कपट का व्यवहार करना, भुलावा देना, ठगना । उ०—सुता जनक वप करि समताई । इम दखि सुतो छळण कजि ग्राई ।—सू.प्र.
२ मर्यादा उल्लंघन करना, सीमा के बाहर निकलना ।
उ०—गयराजां गुड ग्रहण, रहण पाखर हय राजां । पाजां छळि दळ प्रघण, सघण बरसाळ समाजां ।—वं.भा.
३ संहार करना, मारना । उ०—भुंड गज छळतौ सीह झांपा··· ।
—रां.रा.

४ लहरयुक्त होनो, लहलहाना । उ०—महलां तळ छळियौ महण, सागर जळ सरसाय । ग्रावै मिळ लंजा उठै, पणघट पर पणिहार ।
—सिवबगस पालावत

छळणहार, हारौ (हारी), छळणियौ—वि० ।
छळवाड़णौ, छळवाड़बौ, छळवाणौ, छळवाबौ, छळवावणौ, छळवावबौ, छळाड़णौ, छळाड़बौ, छळाणौ, छळाबौ, छळावणौ, छळावबौ ।
—प्रे०रू० ।
छळिग्रोड़ौ, छळियोड़ौ, छळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
छळीजणौ, छळीजबौ—कर्म वा० ।

छळदार—वि०—१ छलछद्म वाला, कपटी । उ०—छळदार होय छाती चढे, ग्रमलदार मुरदार री । ग्रौर तौ दार सब ग्रा मिळै, कमी एक छळदार री ।—ऊ.का.
२ कूटनीतिज्ञ ।

छळ-भोम—सं०स्त्री० यौ०—युद्ध-भूमि, समर-भूमि । उ०—पोतकां जगत छळभोम न पड़ियौ, ग्रवधारां ग्रावटियौ ग्रंग । 'चांपौ' चंच ग्रीधां रण चढियौ, नासाचर लेगौ नीहंग ।—राव चांपा राठौड़ री गीत

छळां—क्रि०वि०—लिये, वास्ते । उ०—माभी सूर ग्रणी कढ़ां सावळां ग्रखाड़ां मंड, धणी छळां ग्रोनाड़ नमाय खळां धींग । राहीगार धाड़ा धाड़ा सउजा सोभाग रीत, ग्रहाड़ा प्रवाड़ा जीत दूजा ग्रभैसींग ।
—फतहरांम ग्रासियो

छलांग—सं०स्त्री०—पैरों द्वारा उछल कर या कूद कर आगे बढ़ने का काम, कुदान, फलांग ।
क्रि०प्र० मारणी, लगाणी ।
मुहा०—छलांग लगाणी—आगे बढ़ना, ऊपर उठना, तरक्की करना ।

छलांगणौ, छलांगबौ—क्रि०ग्र० [सं० शल्] कूद कर आगे बढ़ना, चौकड़ी भरना, छलांग लगाना ।

छळाई—सं०स्त्री०—छलने का कार्य, धूर्तता, कपट, छल ।

छळावौ—सं०पु०—छल, कपट, धोखा ।
वि०—फुर्तीला ।

छलास—सं०स्त्री०—एक प्रकार की सादी अंगूठी जो धातु के तार के टुकड़े को मोड़ कर बनाई जाती है । उ०—समुद्रिका छलास छाप, सो जड़ाव संग रा । ग्रनेक ग्रौर जांणि ग्राय, रीझ रंग राग रा ।
—सू.प्र.

छळि—देखो 'छळ' (रू.भे.) उ०—१ घणा बखांणियौ सु तेण पौरिस घणौ । तेजमलि रहै छळि इसौ 'किसनै' तणौ ।—हा.भा.
उ०—२ सीसोदिया दुरंग छळि 'ईसर', धड़ पड़ तूटि खेलि खग-धौड़ । विढ़ पतिसाहि घड़ा 'वीराउत', रुद्र थांनिक पहुंतौ राठौड़ ।—ईसरदास मेड़तिया री गीत

छळियौ—वि० [सं० छलिन्] १ छल करने वाला, धोखेबाज, कपटी ।
उ०—पूछंतां मुळकाय कह्या थें बोल सयांणी । छळिया ! पेख्यौ तुझ विलमणौ नार विरांणी ।—मेघ.

२ चरखे के तकुये में लगाया जाने वाला चमड़े का बना एक उपकरण ।

छळी—वि०—छल करने वाला, कपटी । उ०—ढेढ़ नांम सुण पाछा ढळिया, बाट आवता उण हिज वळिया । टाळां अठी उठी नहिं टळिया, छळी 'रांमले' पाछा छळिया ।—ऊ.का.

छळु—देखो 'छळ' (रू.भे.) उ०—सीसु सिखंडी तणउं तांमु छेदीउ छळु साधीउ, पाप पराभव नइ प्रवेसि गति मागु विराधीउ ।—पं.पं.च.

छळौ—सं०पु०—१ घोड़े, गधे या भैंस का पेशाब, २ बकरा । उ०—आप डावौ अनै गिणै काला अवर, खांमलौ कमाई करै खोटी । चराया छळा जिम पांन गिणिया चरै, मरण री न जांणै खोड़ मोटी ।

—ओपौ आढ़ौ

छलौ—सं०पु०—१ एक प्रकार का रेगिस्तान का जानवर विशेष ।
उ०—मोगरै री वेल केवड़ै रै तेल सूं केस सुथरौ कीजै छै, दांतरा, छला रा, चंदण रा, चखड़ी रा कांगसिया सूं केस सुवारजै छै ।

—रा.सा.स.

२ अंगुली में पहनने का गहना, मुंदरी, छल्ला ।
अल्पा०—छलड़ौ (रू.भे.) ।

छल्लेदार—वि०—जिसमें मंडलाकार चिन्ह या घेरे बने हों ।

छल्लौ—१ देखो 'छल्लौ' (रू.भे.) २ रेशम या तार लपेट कर बनाये जाने वाले नैचे की बंदिश में गोल चिन्ह. ३ सगाई में बेटी के पिता द्वारा लड़के के पिता को १ से ५ तक रुपये और ४ टके देने का रिवाज (दाधीच ब्राह्मण मा. म.)

छव—सं०पु०—६ की संख्या । उ०—रावळ पण आपरौ साथ हजार छव करनै गयौ ।—नैणसी
सं०स्त्री०—छवि, शोभा, सुंदरता ।
वि०—छः । उ०—सीसोदियौ जगमाल रांणा उदैसिंघ रौ दत्तांणी कांम आयौ जण १६ सूं, लुगायां छव सती हुई ।—बां.दा. ख्यात
कहा०—छव दांत अर मूंडौ पोलौ—छः दांत और मुंह खोखला । किसी अपराध या गलती के जाहिर हो जाने या पोल खुलने पर जब मुंह फक हो जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

छवकाळ—देखो 'छबकाळ' (रू.भे.)

छवगाळ, छवगाळौ—देखो 'छौगाळौ' (मह० रू.भे.) उ०—छौगौ सिर सोनहरी छवगाळ, भळकत सूरजरूप भलाळ । ववै खळ लेत नटां जिम वंस, हुई घट फूटत छूटत हंस ।—सू.प्र.

छवडउ—देखो 'छोडौ' (रू.भे.) उ०—जइ रूंखां मारू हुई, छवडउ पड़ियउ तास । तइ हुंती चदउ कियइ, लइ रचियउ आकास ।

—ढो.मा.

छवणौ—देखो 'छवणौ' (रू.भे.)

छवणौ, छववौ—क्रि०अ० [सं० छुप=स्पर्शे] १ छूना, स्पर्श करना.
२ छाना, आच्छादित करना ।
छवणहार, हारौ (हारी), छवणियौ—वि० ।

छवाड़णौ, छवाड़वौ, छवाणौ, छवावौ, छवावणौ, छवाववौ—प्रे०रू० ।
छविओड़ौ, छवियोड़ौ, छव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
छवीजणौ, छवीजवौ—भाव वा०,कर्म वा० ।

छववरण, छववरन—सं०पु० [सं० षट् वर्ण] याचक वृत्ति करने वाली जातियां का समूह विशेष ।
वि०वि०—देखो 'खटवरण' ।

छवरौ—सं०पु०—वृक्ष, पेड़ । उ०—ताहरां माता साढू पाछी घिरी । आगै देखै तौ छवरै हेठै पालणौ राखियौ तौ सूं सीहणी आय चूंघावण लागी ।—देवजी बगड़ावत री वात

छवारौ—सं०पु०—खजूर का फल ।

छवाई—सं०स्त्री०—छाने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी ।

छवाणौ, छवावौ—क्रि०स०—('छाणौ' क्रि०का० प्रे०रू०) छाने का काम दूसरे से कराना । उ०—करूं रघुपतिजी कौ आरितौ, मोतियन चौक पुराया । 'पदम' भणै प्रणवै पाय लागै, विन खंभै गिगन छवाया ।

—रुकमणी मंगळ

छवायोड़ौ—भू०का०कृ०—छवाया हुआ, आच्छादित कराया हुआ ।
(स्त्री० छवायोड़ी)

छवारौ—देखो 'छुआरौ' (रू.भे.)

छवावणौ, छावबौ—देखो 'छवाणौ' (रू.भे.)

छवि—सं०स्त्री०—१ चर्म, चमड़ी (डिं.को) २ देखो 'छवि' (रू.भे.)

छवित्तांण—सं०पु० [सं० छवित्राण] १ शरीररक्षक वस्त्र, कंवज आदि (जैन) २ चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म (जैन)

छविह—देखो 'छव्विह' (रू.भे., जैन) उ०—सो गुरु सुगुरु जु छविह जीव अप्पण सम जांणइ । सो गुरु सुगुरु जु सच्चरूव सिद्धंत वखांणइ ।—ऐ.जै.का.सं.

छवी—देखो 'छवि' (रू.भे.)

छवीस—देखो 'छव्वीस' (रू.भे.) उ०—रस उल्लाल तिथ तेर मत, छवीस सम पद स्यांम । स्यांमक रस दूहा सहित, मुण तै छप्पय नांम ।—र.ज.प्र.

छवैयौ—सं०पु०—छप्पर आदि छाने का काम करने वाला, छाने वाला ।

छवौ—सं०पु० १ भूमि का वह भाग जहां घास, अनाज आदि कुछ भी पैदा न किया जा सके, बंजर भूमि, ऊसर ।
[सं० शावक] बच्चा । उ०—छवा नटका ज्यूंही कूद अंबर छुवै, विहूं थटका करां पूर झटका ववै ।—र.रू.

छव्विह—वि० [सं० षड्विध] छः प्रकार का (जैन)
रू०भे०—छविह ।

छह——देखो 'छ' (रू.भे.) । उ०—सुवार हुया कूच हुयौ । पातिसाहि डेरा सेखांणै पट्टणि पड़िया । होली हुंता आगै छह दिहाड़ा हुंता ।

—द. वि.

छहड़ौ—सं०पु०—कलह, झगड़ा, विवाद । उ०—बादसाह रौ जीव जोग

छै जो कठै ही बात जाहरात में आई तो मैं सूं छहड़ी जे करसूं, आगै तो कजिया हमेसां करै छै।

—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

छहतरो–वि०—छियंतरवां।

सं०पु०—छियंतर का साल या वर्ष।

छहत्तर, छहत्तरि—देखो 'छियंतर' (रू.भे.)

छहरंग–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

छहलो–वि०—अन्तिम, आखिरी। उ०—धाऊं चरणां ध्यांन, वळवंत रो चित यूं वदै। सेवग रो सतरांम, अनदाता छहलो अवै।

—महाराजा वळवंतसिंह रतळांम

छहवन—देखो 'छववरण' (रू.भे.)

छहोतर, छहोतरि—देखो 'चहोतर' (रू.भे.)

छहोतरो—देखो 'चहोतरो' (रू.भे.)। उ०—समत छहोतरै सतर में, मती ऊपनी 'हमीर' मन। कीधी पूरी नांममाळिका, दीपमाळिका तेण दिन।—ह.नां.

छहोड़णो, छहोड़बो—देखो 'चहोड़णो' (रू.भे.) उ०—मन गहि पवन पलटि पहिरावै, आछा अमल छहोड़ै। जन हरिदास मांन ममता तजि, यूं मेवासा तोड़ै।—ह.पु.वा.

छां–क्रि०अ० [सं० अस्] १ सत्तार्थक क्रिया 'होना' के राजस्थानी के वर्तमान रूप 'छै' का बहुवचन 'हैं'। उ०—मांणस हवां त मुख चवां, म्हे छां कूंझड़ियांह। पिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दै पंखड़ियांह।

ढो.मा.

२ देखो 'छाया' (रू.भे.). उ०—दिन ढळियो उठे एकण रोही मांही रूंखां री छां थी उणरै तळै खांणो दांणो कर घोड़ा नुं गुड़ उड़दावो दे'र चढिया।—कुंवरसी सांखला री वारता

छांग–सं०स्त्री० [सं० छाग] १ बकरियों, भेड़ों तथा गायों का समूह, झुंड। उ०—तरै मुखड़ै गायां रा छांग मांहे टोवड़ा दोय मोटा जातीला सांड रा था।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

२ वृक्ष की कटी हुई टहनी। उ०—खेजड़ला री छांग ठूंठ भेळा कर राखै, ढूंढ़ लगावै ढिग, जिग भाभो कर नांखै—दसदेव

छांगड़ो–वि०—काटने वाला, संहार करने वाला। उ०—भळक्कै सांगड़ा केमुराड़ा धकै भूतरासा, यरंदा छांगड़ा राहरुत का सा ऊप। ऊटीया अखाड़ै चेला खांगड़ा अैधूत रा सा, रूठीया रांगड़ा जज्जदूत का सा रूप।

—महादांन महड़ू

छांगणो, छांगबो–क्रि०स० [सं० छजि या छद्] १ कुल्हाड़ी से किसी वृक्ष की बढ़ी हुई टहनियों को काट कर छोटा करना, छांगना, काटना, छांटना। २ मारना, संहार करना, काटना। उ०—मद लेतां भाखै मती, भोळी चाबुक भांत। छकियो लाखां छांगसी, खाती डाहळ खांत।

—वी.स.

छांगणहार, हारो (हारी), छांगणियो—वि०।

छंगवाड़णो, छंगवाड़बो, छंगवाणो, छंगवावो, छंगवावणो, छंगवावबो, छांगाड़णो, छांगाड़बो, छांगाणो, छांगावो, छांगावणो, छांगावबो—प्रे०रू०।

छांगिओड़ो, छांगियोड़ो, छांग्योड़ो—भू०का०कृ०।

छांगीजणो, छांगीजबो—कर्म वा०।

छंगणो, छंगबो—अक० रू०।

छांगाणो, छांगावो–क्रि०स० ('छांगणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ वृक्ष की टहनियां कटाना, छंटाना, छंगाना. २ संहार कराना, मरवाना, कटाना।

छांगाणहार, हारो (हारी), छांगाणियो—वि०।

छांगायोड़ो—भू०का०कृ०।

छांगाईजणो, छांगाईजबो—कर्म वा०।

छांगायोड़ो–भू०का०कृ०—१ छंगाया हुआ, कटाया हुआ, छंटाया हुआ. २ संहार कराया हुआ (स्त्री० छांगायोड़ी)

छांगार–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

छांगावणो, छांगावबो—देखो 'छांगाणो' (रू.भे.)।

छांगावणहार, हारो (हारी), छांगावणियो—वि०।

छांगाविओड़ो, छांगावियोड़ो, छांगाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

छांगावीजणो, छांगावीजबो— कर्म वा०।

छांगावियोड़ो—देखो 'छांगायोड़ो' (स्त्री० छांगावियोड़ी)

छांगियोड़ो–भू०का०कृ०—१ छांगा हुआ, काटा हुआ, छांटा हुआ (वृक्ष) २ संहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ। (स्त्री० छांगियोड़ी)

छांगी, छांगीर—देखो 'छांहगीर' (रू.भे.)।

छांगो–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

छांछळी–सं०स्त्री०—बड़ी व भयंकर तोप।

छांट–सं०स्त्री०—१ छांटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढंग. २ अलग की हुई बेकार व अनुपयोगी वस्तु. ३ वर्षा की बूंद, छींटा। उ०—१ कातिक की छांट बुरी, बाणियां की नाट बुरी, भायां की आंट बुरी, राजा की डांट बुरी।—अज्ञात

२ छींटा। उ०—मन जांणै पीवूं पै-मिसरी, छाछ सुवरणी मिळै न छांट। वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा आंट।

—ओपो आढ़ो

अल्पा०—छांटड़ली, छांटड़ी।

छांटड़ली, छांटड़ी—देखो 'छांट' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—छिण छिण सोहे छांटड़ल्यां री छोळ, सूरज किरणां सरसर ऊतरै —लो.गी.

छांटणी–सं०स्त्री०—१ बीज बोने की क्रिया जिसमें बीजों को हाथ में लेकर भूमि पर बिखेरते हैं. २ देखो 'छंटणी' (रू.भे.)।

छांटणो, छांटबो–क्रि०स०—१ किसी पदार्थ के किसी अंश को पृथक करना, किसी वस्तु को विशेष आकार देने के लिए काटना, कतरना, छिन्न करना. २ अनाज को साफ करने व भूसी अलग करने के उद्देश्य से कूटना व फटकना. ३ वस्तुओं के समूह में से बेकार व

निकम्मी वस्तुओं को अलग करना, छांटना. ४ किसी बढ़े हुए भाग को काट कर छोटा या संक्षिप्त करना. ५ (पानी आदि के) छींटे डालना, छींटे मारना। उ०—छांटी पांणी कुमकुमइं, वीझणा वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री आगळि विळळाइ।—ढो.मा.
६ छिड़काव करना. ७ शेखी बघारना, गढ़ गढ़ कर बातें करना।
छांटणहार, हारौ (हारी), छांटणियौ—वि०।
छंटवाड़णौ, छंटवाड़वौ, छंटवाणौ, छंटवावौ, छंटवावणौ, छंटवाववौ, छांटाड़णौ, छांटाड़वौ, छांटाणौ, छांटावौ, छांटावणौ, छांटाववौ—प्रे०रू०।
छांटिओड़ौ, छांटियोड़ौ, छांट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छांटीजणौ, छांटीजवौ—कर्म वा०।
छंटणौ, छंटवौ—अक० रू०।

छांटाणौ, छांटावौ—क्रि०स० ('छंटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छांटने का कार्य दूसरे से कराना, छंटवाना।
छांटणहार, हारौ (हारी), छांटणियौ—वि०।
छांटायोड़ौ—भू०का०कृ०।
छांटाईजणौ, छांटाईजवौ—कर्म वा०।

छांटायोड़ौ—भू०का०कृ०—छंटाया हुआ, छांटने का कार्य कराया हुआ। (स्त्री० छांटायोड़ी)

छांटावणौ, छांटाववौ—देखो 'छांटाणौ'।
छांटावणहार, हारौ (हारी), छांटावणियौ—वि०।
छांटाविओड़ौ, छांटावियोड़ौ, छांटाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छांटावीजणौ, छांटावीजवौ—कर्म वा०।

छांटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ छंटा हुआ, काटा हुआ, छंटनी क्रिया किया हुआ। (स्त्री० छांटियोड़ी)

छांटौ—सं०पु०—१ जल कण, जल बिंदु, (किसी द्रव पदार्थ का) छींटा।
उ०—मोडा एक बहुत व्हैं महिला, ज्यूं भैंसिन में सोटा। दे छांटा नारी परबोधे, खसम बतावे खोटा।—ऊ.का.
मुहा०—१ छांटौ देणौ—धोखा देना, फुसलाना, ताना कसना
२ छांटौ लेणौ—परहेज रखना, छुआछूत का भाव रखना।
२ पड़ी हुई बूंद का चिन्ह. ३ छोटा दाग।

छांडणौ, छांडवौ—देखो 'छोडणौ' (रू.भे.) उ०—१ थळ मथ्थइ ऊजासड़उ, थे इण केहइ रंग। धण लीजइ प्री मारिजइ, छांडि विडांणउ संग।—ढो.मा.
उ०—२ राजा! रीत न छांडिजै, समवड़ करौ सनेह। समवड़ सूं सुख पायजै, नीचां केहो नेह।—जसमां ओडणी री वात
उ०—३ वांणी हर वीसार कर, वंचै आंन कुवांण। नार छांड पति आंपणी, जार विलग्गी जांण।—ह.र.
उ०—४ सू परवार छांडगौ 'सुरजन', वढ़े 'पतौ' रहियौ वर वीर। नीर दुरंग चढ़ियौ नागद्रहां, नाड़ूळां ऊतरियौ नीर।
—रावत पत्ता आमेट रौ गीत
उ०—५ जोय रणथंभ चित्रगढ़ जंपै, दळ आयां सर बोल दियौ। 'सुरजन' कळ छांड सांचरियौ, कळह 'पतै' मो रेस कियौ।
—रावत पत्ता आमेट रौ गीत
उ०—६ ब्रह्मादिक इंद्रादिक सरीखा, असुर मेल्है वांण। चक्र सरिसु चक्र मांगूं, छांडियौ पग ठांण।—रुषमणी मंगळ

छांडियोड़ौ—देखो 'छोडियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छांडियोड़ी)

छांण—सं०स्त्री०—१ चतुराई, होशियारी, दक्षता. २ विवेचना, जांचपड़ताल, अनुसन्धान. ३ छानने की क्रिया या भाव. ४ गोबर।
उ०—तेज सांड ताडूकतां, छांण करचौ गउ छोण। समर इस्या बाजै सुहड़, कायर बाजै कोण—रेवतसिंह भाटी

छांणणी—देखो 'चळणी' (रू.भे.) उ०—नित असल त्याग सीखै नकल, छाज न व्है व्है छांणणी। कुलखणां मांय मोटी कसर, आदत खोटी आंणणी।—ऊ.का.

छांणणौ—सं०पु०—बाजरी, अनाज आदि छानने के लिए लोहे की जाली का बना उपकरण।

छांणणौ, छांणवौ—क्रि०स०—१ किसी चूर्ण या द्रव पदार्थ को किसी चलनी या महीन कपड़े में डाल कर इस प्रकार हिलाना कि उसका कूड़ा-करकट या मोटा अंश पृथक रह जाय. २ मिली-जुली वस्तुओं को एक दूसरे से अलग करना. ३ जांच करना, पड़ताल करना.
४ देखभाल करना, ढूंढ़ना, अनुसंधान करना. ५ किसी वस्तु को छेद कर आर-पार निकालना।
छांणणहार, हारौ (हारी), छांणणियौ—वि०।
छणाड़णौ, छंणाड़वौ, छंणाणौ, छंणावौ, छंणावणौ, छंणाववौ, छांणाड़णौ, छांणाड़वौ, छांणाणौ, छांणावौ, छांणावणौ, छांणाववौ—प्रे०रू०।
छांणिओड़ौ, छांणियोड़ौ, छांण्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छांणीजणौ, छांणीजवौ—कर्म वा०।
छणणौ—अक० रू०।

छांणत—सं०स्त्री०—१ कलंक, दोष. २ असह्यबात, चुभने वाली बात।
उ०—छत्रपतियां लागी नंह छांणत, गढ़पतियां घर परी गुमी। बळ नंह कियौ बापड़ा बीतां, जोतां जोतां गई जमी।—बां.दा.

छांणबीण—सं०स्त्री०—१ जांच-पड़ताल, अनुसंधान, शोध. २ देखभाल।

छांणरौ—देखो 'छणियारौ' (रू.भे.)

छांणौ—सं०पु० [सं० छगण] सूखा गोबर, कंडा, उपला।
उ०—छांणौ घुखाइ नै कह्यौ म्हारा साथी नीकळिया, कह्योजी एही जाइ।—चौबोली
मुहा०—१ छांणा चुगतौ करणौ—कंडे बीनने के काबिल बना देना, निर्धन बना देना, निकम्मा बना देना, पागल बना देना।
कहा०—२ छांणा नै जावै नै मिठाई रौ भातौ ले जावै—कंडे बीनने जावे और मिठाई की दोपहरी साथ ले जावे। निम्न कोटि का कार्य करना और उसके लिये भी खर्च अधिक करना।

छांन—१ देखो 'छांण' (रू.भे.)
सं० स्त्री० [सं० छन्न] २ कोई बात गुप्त रखने का भाव।
३ कच्चे मकानों को आच्छादित करने के लिये उन पर लगाई जाने वाली छाजन जो घास-फूस की होती है, घासफूस की छत।
४ घास-फूस से आच्छादित कच्चा मकान।
उ०—टेक छींपा तणी देख दुख टाळियौ, छांन बंधवाळियौ नकौ छांना।
—भगतमाळ

अल्पा०—छांनड़ी।
मह०—छांनड़।
५ गुप्त रूप से रक्षित धन।

छांनउ—देखो 'छांनौ' (रू.भे.)
उ०—दाखी डाहिम आपणी, रे रंजि मुझ मनमोर।
छयलपणइं छांनउ रह्यु, रे हीयडउं करी कठोर॥
—विद्याविलास पवाडउ

छांनके, छांनकै—क्रि०वि०—गुप्त रूप से। उ०— महमद रै ईदां तणी, मेळौ मंडवांणी। कथ तीजणियां छांनकै, जगमाल कंहांणी।
—वी.मा.

छांनड़—देखो 'छांन' (मह०)
छांनड़ी—देखो 'छांन' (अल्पा० रू.भे.)
छांनवण, छांनवांण—सं०स्त्री०—परिवार के सदस्यों से छिपा कर संग्रहित किया हुआ धन।
छांनू—वि० [सं०छन्न] १ गुप्त, छिपा हुआ. २ चुपचाप, खामोश।
छांनै—क्रि०वि०—गुप्त रूप से, चुपचाप।
उ०—जुवारसिंघ नै छांनै सी थें दीज्यौ खबर सुणाय।
—डूंगजी जवारजी री पड़

कहा०—छांनै बुलाय नै ऊंट पै चढ़ आया—चुपके से आने के लिये कहा परन्तु ऊंट की सवारी कर आये। गलत साधन स्वीकार करने से अभीष्ट फल प्राप्त नहीं होता।

छांनैछुरकै, छांनैमांनै, छांनैसीक—क्रि०वि०—चुपचाप, गुपचुप, गुप्त रूप से।
छांनौ—वि०पु० [सं०छन्न] (स्त्री० छांनी) १ गुप्त, छिपा हुआ, अप्रकट।
उ०—१ छांनौ 'अजन' जितै छत्रपत्ती, धारै ऊभौ लाज धरत्ती।
— रा.रू.

उ०—२ ए डेरै आया सो बात छांनी नहीं रही।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात

कहा०—१ छांनै करवा हूं घणी चौड़ै आवै—गुप्त रूप से छिपाई जाने वाली बात अधिक प्रकट में आती है। २ छांनौ कांम छोराये करावौ हो ते वो पोड़े घणौ करहें—गोपनीय कार्य यदि बालक से कराया जाय तो वह अधिक प्रकट करेगा।
२ चुप। ज्यूं—टाबर छांनौ नी रै'।
यौ०—छांनौमांनौ।
क्रि०वि०—गुप्त रूप से। उ०—कह्यौ तूं पाछै छांनौ थकौ जा देख आव, कठै जाय आवै छै?—सोजत रै मंडळ री वात

छांनौमांनौ—वि०यौ० (स्त्री० छांनीमांनी) चुपचाप, गुप्त। उ०—तरै औ ठाकुर बोलियौ छांनामांना रहिज्यौ, रावजी सांभळसी।
—प्रतापमल देवड़ा री वात

छांमोदरी—वि० [सं० क्षामोदरी] छोटे पेट वाली।
छांय—देखो 'छाया' (रू.भे.)
उ०—१ वगत वटाऊ राह, बांह दे दुखड़ा टाळै। भत-वारण छिण पलक, ओकळी छांय उनाळै।—दसदेव
उ०—२ ऊभी रायज आंगणे, चंपे केरी छांय।
आंगळियां री मूंदड़ी, आवण लागी बांय॥—र.रा.

छांयड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा० रू.भे.)
छांया—देखो 'छाया' (रू.भे.)
छांरणी—देखो 'चाळणी' (रू.भे.)
छांव—देखो 'छाया' (रू.भे.)
उ०—घूमते भूमते आ बैठियौ हरियै अमवां री छांव।—लो.गी.
छांवड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा० रू.भे.)
छांवणी—देखो 'छावणी' (रू.भे.)
उ०—दगौ धारियौ डूंग सूं सोवै पाकड़े छांवणी दोळा, लोह लाट लंगरी अमाप फौजां ले'र।—डूंगजी री गीत
छांवळ—१ देखो 'छाया' (मह० रू.भे.)
उ०—विखौ न लगती वार वळै सुख छांवळ आवै।
पहियै ज्यूं दिन मांन उतरता चढ़ता जावै॥—मेघ.
२ परछाई, प्रतिच्छाया।
छांवळी—१ देखो 'छाया' (अल्पा० रू.भे.)
उ०—बांवळिया कतरा वीघां में थांरौ पेड़, बांवळिया कतरा वीघां में थांरी छांवळी।—लो.गी.
२ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो खंजरी के आकार से मिलता-जुलता होता है। ऐसे वाद्य पर गाया जाने वाला गीत विशेष।
छांह—देखो 'छाया' (रू.भे.)
उ०—१ भटियळ ऊभी छाजडयं री छांह।—लो.गी.
उ०—२ विहसे तदि सुरजन वदी, बूंदी ही तव बांह। बावर सुत वांधे वळै, छत्रहेठ दै छांह।—वं.भा.
यौ०—छत्रछांह।
२ दया, कृपा। उ०—जु मंछो जळ विन मरे, जळ मन जांणै नाह। तुं पिउ कौ जिय अति कठिण, हूं चाहूं पीय छांह।—ढो.मा.
अल्पा०—छांहड़ी, छांहरी।
छांहगीर—सं०पु०—१ राजछत्र। उ०—छजे सीस छांहगीर, करे अस वाग करंगां। रांवण ऊपर'रांम, जाए घड़ियाळ स वग्गां।—सू.प्र.
२ छाता, बड़ी छतरी।
छांहड़—देखो 'छाया' (मह०, रू.भे.)
छांहड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—बांधूं बड़ री छाहड़ी, नीरूं नागर वेल। डांभ संभाळूं हाथ सूं, चोपड़ सूं चंपेल।—ढो.मा.

छांहड़ौ—सं०पु०—छोटा कंटीला पौधा।

छांहरी—देखो 'छाया' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—संग कियां सांपणी डसै, आय अंधारे खाय। (जन हरिदास) सूक बिरछ की छांहरी, कहौ मुक्ति क्यों जाय।—ह.पु.वा.

छांही—देखो 'छाया' (रू.भे.)

छा-सं०स्त्री०—१ क्रान्ति. २ छाया. ३ ढक्कण. ४ रक्षक. ५ रक्षा (एका०) ६ देखो 'छाछ' (रू.भे.)।

कहा०—१ छा नै आई नै घर री धणियांणी बणगी--छाछ मांगने तो आई और घर की मालकिन बन कर बैठ गई। याचक के रूप में आकर स्वामित्व ग्रहण कर लेने पर कही जाने वाली कहावत.

२ छा नै गई जरै पाडियौ मर गियौ—छाछ मांगने गई तो पाडे का मरने का बहाना बता दिया। मांगने पर कोई व्यक्ति किसी वस्तु को न देने के प्रयोजन से बहाना बता देता है तब उसके प्रति यह कहावत कही जाती है. ३ छा नै जाय नै लारे कूलड़ियौ छिपावै है—छाछ या मट्ठा जैसी साधारण वस्तु मांगने के लिए तो चल दी परंतु छाछ लाने का पात्र छिपाने का प्रयत्न करती है। साधारण वस्तु मांगने के लिए उद्यत होने पर शर्म या लज्जा करना व्यर्थ है.

४ छा ही घालणी नै पगै ही लागणौ—छाछ भी डालनी और चरण भी छूना। घर से वस्तु आदि भी देना और फिर उसके अधीन भी रहना यह दुहरा कष्ट नहीं उठाया जाता. ५ मांगियोड़ी छा नै उणमें ही पांणी—मांग कर लाया हुआ मट्ठा और उसमें भी पानी। बड़ी याचना और मिन्नत के बाद जब बेकार या खराब वस्तु प्राप्त होती है तब कही जाने वाली कहावत।

७ नेत्र का एक रोग जिसमें आंख की पुतली पर सफेद झिल्ली का आवरण आ जाता है. ८ चिन्ता, दुःख आदि के कारण चेहरे पर आंखों के नीचे पड़ने वाले कुछ श्यामल दाग।

क्रि०अ० [सं० अस्] राजस्थानी के वर्तमानकालिक रूप 'छै' का भूतकाल 'था'।

छांअ—देखो 'छाया' (रू.भे.) उ०—नट ज्यौं नाचता कुलचता अकुलणी रै नैण ज्यौं ऊछाछळा, आपरी छाआं सूं डरपता बाज पंखी ज्यौं ऊडांण झांपता, जांणै सूरज रा रथ असमांन रै फेर लागिनै रहिआ छै।—रा.सा.सं.

छाअण-सं०स्त्री०—१ साग में दी जाने वाली खटाई. २ कच्चे मकानों की घास-फूस की छत, छाजन।

छाई—देखो 'छाईस' (रू.भे.)

छाईजणौ, छाईजबौ–क्रि०कर्म वा०—छाया जाना, आच्छादित किया जाना। उ०—आगमि सिसुपाळ मंडिजै ऊछव, नीसांण पड़ती निहस। पट मंडप छाईजै कुंदण पुरि, कुंदण में बाझै कळस।—वेलि.

छाईस-वि० [सं० षड्‌विंशति, प्रा० छव्वीस] बीस से छः अधिक, बीस और छः का योग। उ०—भमर अखिर छाईस भण, चव लघु गुरु बाईस। यक गुर घट वे लघु बधै, सो सो नांम कवीस।—र.ज.प्र.

सं०पु०—२६ की संख्या।

छाईसमौं–वि०—छब्बीसवां।

छाईसे'क–वि०—२६ के लगभग।

छाईसौ—देखो 'छब्बीसौ' (रू.भे.)

छाओड़ी—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू.भे.)

छाओड़ौ–सं०पु०—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू.भे.)

छाक–सं०स्त्री०—१ नशा, मस्ती, मादकता। उ०—सज्जण मिळिया सज्जणां, तन मन नयण ठरंत। अणपीयइ पांणग ज्यूं, नयणे छाक चढ़ंत।—ढो.मा.

२ शराब पीने का प्याला अथवा इस प्याले में समाने वाली शराब की मात्रा। उ०—दे भैंसा बळदांन छाक मदधार छकाई। चंडी-चंडी ऊचरै फतै झंडी फहराई।—मे.म.

क्रि०प्र०—देणी, लेणी।

३ खेत में किसान के लिए ले जाया जाने वाला भोजन, पाथेय.

४ दोपहर, मध्यान्ह। उ०—सात सहेली खेलण आयी म्हारा आंगण मांय। छाक भई माय करी रसोई दीजो थाळ लगाय।—लो.गी.

५ डलिया। उ०—इस वजै खटरितु की क्रीला जल्ले गुलावूं की छाक। तिसके देखे ते होत रितराज मुस्ताक।—सू.प्र.

वि०—१ मस्त, उन्मत्त। उ०—छाक बंबाळ अपछरां छायळ, अरज कीध 'पदमै' अजरायळ।—सू.प्र.

२ लबालब, पूर्ण। उ०—१ फोटी मूंडौ फाड़ नाड़ कर लेवै नीची। छिली रहै जळ छाक मिळी आंख्यां अधमीची।—ऊ.का.

उ०—२ पुहव तांम पूछियौ करमसियोत कमधज। उदैसींघ बोलियौ छाक पौरस बळ ऊछज।—सू.प्र.

छाकटौ–वि० [सं० साकट्] १ दुश्चरित्र, बदमाश, लुच्चा.

२ चलता-पुरजा, चतुर, चंचल. ३ कृपण, कंजूस. ४ गुरुरहित, दुष्ट, पाजी, कृतघ्नी।

छाकणौ, छाकबौ–क्रि०अ०—१ अघाना, खा पी कर तृप्त होना।

उ०—१ कोपियै छाकियै चहर भड़ अहर करि, फुरळतै पिसण घड़ फेरवी अफिर फिरि।—हा.झा.

उ०—२ छाक पियै जिण पेट छुडायौ, भारी पांणी जन्म भंडायौ। —ऊ.का.

२ शराब आदि नशा लेकर मस्त होना। उ०—इसड़ी ही थकौ मुंहडे मारि मारि करतौ ऊठै अर पड़ै। बळ ऊठै ज्यूं छाकियै री परै। बीजौ ही लोह आकरौ पड़ियौ।—द.वि.

३ ललचाना। उ०—माल मुलक हैगौ घणां, छत्रछांह मन छाक। कै मारचा कै मारसी, काळ करत है ताक।—ह.पु.वा.

छाकणहार, हारौ (हारी), छाकणियौ—वि०।

छकवाड़णौ, छकवाड़बौ, छकवाणौ, छकवाबौ, छकवावणौ, छकवावबौ —प्रे०रू

छकाड़णौ, छकाड़बौ, छकाणौ, छकाबौ, छकावणौ, छकावबौ —क्रि०स०

छाकिग्रोड़ो, छाकियोड़ो, छाक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
छाकीजणो, छाकीजवो—भाव वा० ।
छकणो, छकवो—रू०भे० ।

छाकदार-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

छाकां-सं०स्त्री०—मध्यान्ह का समय, दुपहर ।

छाकियोड़ो-भू०का०कृ०—अघाया हुग्रा, खा पी कर तृप्त हुवा हुग्रा, मस्त ।

छाकी-सं०पु०—उन्मत्त, मस्त, मदपूर्ण । उ०—मोह सराव खराव है. छत ऊमत छाकी ।—केसोदास गाडण

छाकोटो—वि०—१ नशे में उन्मत्त, मदोन्मत्त ।
उ० अतरै में कितरा ग्रेक ठाकुर बोलिया, रावजी ग्राज छाकोटै रहै ग्रहड़ा छै ।—प्रतापमल देवड़ा री वात
२ देखो 'छकोटो' (रू.भे.)

छाग, छागड़, छागड़ो-सं०पु०—[सं०छाग+रा०प्र०ड़] वकरा (डिं.को.)
उ०—१ खाग प्रहार छाग हुड खंडत, मुंड रुंड लोहित झड़ मंडत । पांन रुधिर करि लहत त्रिपत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती ।
—मे.म.
उ०—२ छऊं भैंन छोटी दहूं ग्रोड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै । खड़ी लांगड़ो वीर वीराधि खेतू, करै रागड़ां छागड़ां राह केतू ।
—मे.म.

छागमुख-सं०पु०—१ कार्तिकेय का वकरे के समान छठा मुख ।
२ कार्तिकेय का एक ग्रनुचर ।

छागर-सं०स्त्री० [सं० छागल] बकरी, ग्रजा ।

छागरत, छागरथ-सं०पु० [सं० छागरथ] ग्रग्नि ।—डिं.को.

छागळ-सं०पु० [सं० छागल] १ वकरा (स्त्री० छागळी) । २ वकरे के चमड़े से वना जल-पात्र । उ०—साव लोह पाखर नइ चांमर, घणी घूघरी घमकइ । पांणी तणी ढळकती छागळ, नीचां फूमत भूंकइ ।
—का.दे.प्र.
मि०—दीवड़ी ।
३ सफर ग्रादि के समय साथ में लिया जाने वाला जलपात्र जो जिक धातु का बना होता है ।
मि०—वादळो ।
४ पायल, नूपुर ।

छागळि-सं०स्त्री०—१ वकरी. २ यात्रा में जल साथ रखने के लिये वकरे के चमड़े, धातु ग्रादि से वना जल-पात्र । उ०—तासु पासि छागळि जळि भरी, ठाकुर तणी द्रस्टि वे ठरी । देखी भाट दियो दीरघाय, रेवंत थी ऊतरियो राय ॥—ढो.मा.

छागळियो-सं०पु०—१ जल पिलाने वाला जलधारी । उ०—ग्रर कुंवर स्री दळपतजी नूं तिस लागी सु गंगाजळ ग्ररोगण रै वास्तै लोक मांहै छागळियै नै देखण लागा ।—द.वि.
२ देखो 'छागळो' (ग्रल्पा० रू.भे.)

छागळी—देखो 'छागळि' (रू.भे.)

उ०—पूछियो कुंवरजी किणरी छागळी छै । ताहरां तिण कहियो जु प्रियीदीप री छागळी छै ।—द.वि.

छागळो-सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) [सं० छाग+रा०प्र०ळो] २ यात्रा में जल साथ रखने के लिए वकरे के चमड़े या धातु ग्रादि का वना जल-पात्र । उ०—तरै लखै कह्यो—राव मांनूं नहीं थांहरो कह्यो । तरै सारणेसर चांवड री कोस पीयो । लखो छागळा री पांणी लायो ।—राव लाखै री वात
ग्रल्पा०—छागळियो ।

छागी-सं०स्त्री० [सं० छाग+रा०प्र०ई.] वकरी ।

छा'ड़ी—देखो 'छाछ' (ग्रल्पा० रू.भे.)

छाड़ो-सं०पु०—१ देखो 'छाछ' (ग्रल्पा० रू.भे.)
२ देखो 'छाज' (ग्रल्पा० रू.भे.)

छाछ-सं०स्त्री० [सं० छच्छिका] १ मथा हुग्रा व मक्खन निकाला हुग्रा दही का पतला घोल, मट्ठा । उ०—मन जांणै पीवूं पै-मिसरी, छाछ सुवरणी मिळै न छांट । वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा ग्रांट ।—ग्रोपो ग्राढ़ो
पर्या०—उदिश्वित, काळसेय, तक्र, मथिति, मही ।
कहा०—१ छाछ छीतरी वेटी ईतरी—छितरी हुई 'छाछ' ग्रर्थात् ग्रधिक पतली छाछ ग्रौर लाड-प्यार से इतराई हुई पुत्री का सुधरना कठिन होता है. २ छाछ नै वेटी मांगवा री लाज नी—छाछ ग्रौर लड़के के सम्वन्ध के लिए किसी सजातीय लड़की मांगना कोई लज्जाजनक वात नहीं (प्रथा) ३ पतळी छाछ खटे नहिं पांणी—पतली छाछ में पानी नहीं चल सकता । निर्धन व्यक्ति को ग्रपने ऊपर ग्राया हुग्रा साधारण व्यय का वोझ भी ग्रसह्य होता है ।
छोटे दायरे ग्रौर संकीर्ण विचारों के व्यक्ति में सहनशीलता वहुत कम होती है. ४ रावड़ी नैं खाटी छाछ सूं खाणी—निम्न श्रेणी की वस्तु के साथ निम्नतर श्रेणी की वस्तु का संयोग हो जाता है तव यह कहावत कही जाती है ।
२ चाच देश । उ०—छाछ कवांण खुदंग सर, समसेरां ईरांन । ग्रांणै ग्रस ऐराक सूं, थटण घणो घन थांन ।—वां.दा.
रू०भे०—छा, छाछि, छास, छासि, छाह ।
ग्रल्पा०—छाग्रोड़ी, छाग्रोड़ो, छा'ड़ी, छा'ड़ो, छाछड़ली, छाछड़लो ।
मह०—छाछड़ ।

छाछड़-सं०पु०—देखो 'छाछ' (मह० रू.भे.)

छाछड़ली—देखो 'छाछ' (ग्रल्पा० रू.भे.)

छाछड़लो-सं०पु०—देखो 'छाछ' (ग्रल्पा० रू.भे.)
उ०—दूधड़ला नै पीवा ग्रो राव माल घर री डावड़ी, हां रे छाछड़ला रा किस्या रे सवाद । दासड़ली रो जायो ग्रो राव माल घोड़ै चढ़ै, कँवर भटियांणी रो चरवादार ।—लो.गी.

छाछठ—देखो 'छासट' (रू.भे.)

छाछठमो—देखो 'छासठमो' (रू.भे.)

छाछठो—देखो 'छासठो' (रू.भे.)

छाछण-सं०पु०—साग-सब्जी में दी जाने वाली खटाई ।

छाछरो-वि०—ठिगना, वौना, नाटा ।

सं०पु०—मस्ती में आकर गाय या वैल का पूंछ ऊंचा करके कूदने की क्रिया।

छाछि—देखो 'छाछ' (रू.भे.)

छाछी—सं०स्त्री०—मामड़ की पुत्री, आवड़ देवी की वहिन (एक देवी)

छाछेतौ—वि०—छाछ सम्बन्धी, छाछयुक्त। उ०—वाळक भर वागळी ल्यावै हरि वाड़ियां लूंट कर। छाछेता रायता ढोकळ किसत फोगलै चूंट कर।—दसदेव

छाछ्यौ—सं०पु०—एक प्रकार का रोग जिससे जीरे की फसल नष्ट हो जाती है।

छाज—सं०पु० [सं० छाद] सींक, तीलियां आदि का वना अनाज फटकने का उपकरण, सूप, आजकल लोहे की चद्दर का भी बनाया जाता है। उ०—१ तूं ऊपर माळियै जायनै फूस कचरो बुहार, छाज भरनै राजा रा माथा ऊपर नाखदे।—पंचदंडी री वारता।

उ०—२ आधौ रहग्यौ ऊखळी, आधौ रहग्यौ छाज। सांगर लट्टे घण गई (अव) मधरौ मधरौ गाज।—अज्ञात

कहा०—१ छाज घाल चालणी घालणौ—सूप में फटक कर चलनी में छानना अर्थात् खूब तंग करना, दिक करना. २ छाज बोलै नै छावड़ी, तूं क्यां बोलै छालणी, थारै अठोतर सौ वेभ—छाज बोलता है न छवड़ी, चलनी तू क्यों बोलती है तेरे तो एक सौ आठ छिद्र हैं। कई समझदार व्यक्तियों के बीच जब अनेक अवगुणों वाला व्यक्ति वढ़-वढ़ कर वोलता है तो उसकी जवान बंद करने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली कहावत।

अल्पा०—छा'ड़ौ, छाजड़ौ, छाजलियौ, छाजलौ, छाल्लौ।

मह०—छाजड़।

२ छप्पर, छाजन. ३ गाड़ी व वग्गी में कोचवान के पैर आगे रखने के लिए छज्जे की भांति आगे निकला हुआ भाग।

छाजइयौ—१ देखो 'छज्जौ' (अल्पा०, रू.भे.) उ०—ऊभी रै वीरा, छाजइयै री छांह, देवर मोसौ बोलियौ जे, करती ए भावज, वीरां रौ गुमांन।—लो.गी.

२ देखो 'छाज' (अल्पा०, रू.भे)

छाजड़—१ देखो 'छाज' (मह०, रू.भे.) २ देखो 'छज्जौ' (मह०, रू.भे.)

छाजड़कन्नौ—वि०—वड़े कान वाला, जिसके कान सूप के समान बड़े हों (हाथी के लिए प्रयुक्त)

छाजड़ौ—देखो 'छाज' (अल्पा०, रू.भे.)

छाजण—सं०स्त्री० [सं० छादन] १ छान, छप्पर. २ छाने का ढंग, छान लगाने का ढंग. ३ शोभित होने का भाव।

छाजणौ, छाजवौ—क्रि०अ०—१ शोभा देना, फवना। उ०—छक मस्तांक रूप अति छाजै। लख दुति सची उरवसी लाजै।—सू प्र.

मुहा०—मोटौ वोल रांम नै छाजै—यश की महत्वपूर्ण वातें या गुण ईश्वर को ही शोभित होते हैं अर्थात् मनुष्य के गुणवान होने पर भी उसे अपनी वड़ाई अपने ही मुंह से नहीं करनी चाहिए।

क्रि०स०—२ छप्पर छाना, घास-फूस की छत बांधना, आच्छादित करना।

छाजणहार, हारौ (हारी), छाजणियौ—वि०।

छाजिओड़ौ, छाजियोड़ौ, छाज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छाजीजणौ, छाजीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

छाजन—देखो 'छाजण' (रू.भे.)

उ०—कहै दास 'सगरांम' साध के परवाह कांही। छाजन भोजन नीर घणौ हरि इच्छा मांही।—सगरांम

छाजरसि, छाजरसु—सं०पु०—एक प्रकार का घास। उ०—१ कस्तूरी नुं काज किम काजळि कीजइ, किम सुवरणवांछा छाजरसि छीजइ इंद्रनीलमणि काजि किम काच लीजइ।—वि.व.

उ०—२ मेरुकइ कडणि त्रिणु कान्तलीला कलइ, सुवरणालंकारि, मिळिउ छाजरसुं सुवरण तणी छाया पांमइ।—वि.व.

छाजलियौ—१ देखो 'छाज' (अल्पा०, रू.भे.), २ देखो 'छाजौ' (अल्पा०, रू.भे.)

छाजली—सं०स्त्री०—डलिया, छवड़ी।

छाजलौ—देखो 'छाज' (अल्पा०, रू.भे.)

कहा०—भरियै गाडै कांई छाजलै रौ वोझ—वोझ से लदे गाडे पर सूप और अधिक रख दिया जाय तो उसका क्या वोझ। धनिक जो अधिक व्यय करने में समर्थ है उसके लिये कुछ साधारण व्यय और करना कोई विशेष महत्व की वात नहीं।

छाजारी—सं०स्त्री०—घास विशेष या लोहे के चद्दर की वनी टट्टी जो रहट द्वारा निकाले गये पानी के गिरने के पात्र के उस ओर लगाई जाती है जिधर वैलों के घूमने का चक्र होता है।

छाजिया—सं०पु०—किसी वृद्ध की मृत्यु पर रिश्तेदारों की स्त्रियों द्वारा विलाप करते हुए गाये जाने वाले शोकसूचक गीत। (मि. पल्लो, (३)

छाजेड़ी—देखो 'छजेड़ी' (रू.भे.)

छाजौ—सं०पु०—१ छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के वाहर निकला रहता है। उ०—तव स्री क्रिसणजी पवन चाहै छै। धौळहर कै छाजै आय ऊभा हुआ छै।—वेलि.

२ किसी दरवाजे या खिड़की आदि के ऊपर लगी हुई पत्थर की वह पट्टी जो दीवार के वाहर निकली रहती है। ३ धूप के वचाव के लिये टोपी या टोप के आगे किनारे का वाहर निकला हुआ भाग। ४ सर्प का फन।

रू०भे०—छजौ, छज्जौ।

छाट—सं०स्त्री०—१ आपत्ति, संकट, उचाट। उ०—नागा फिरै निराट, लोहड़ां री सांकळ लगै। छाती मिटै न छाट, माया कांमण मोतिया। —रायसिंह सांदू

२ छत से पाटित जल-कुण्ड (टांका) के ऊपर की पाटित छत का नीचे का भाग (जैन)

३ चट्टान, शिला (जैन)

रू०भे०—छाटण।

छाटक-सं०पु०—प्रहार, चोट। उ०—असि घावरिण तो पीव पर, वारी वार अनेक। रण झाटकतां कंत रै, लगै न छाटक एक।—वी.स.

छाटको-सं०पु०—१ प्रहार, चोट. २ देखो 'छाकटौ' (रू.भे.)

छाटण—देखो 'छाट' (रू.भे.)—जैन

छाटी-सं०स्त्री०—१ बकरी के बालों से बना हुआ एक प्रकार का थैला।

छाड-सं०स्त्री०—१ वह स्थान जहां वर्षा के जल के एकत्रित हो जाने के कारण हरा घास खूब उत्पन्न हो।
[सं० छर्दिः, छर्दिन्] २ वमन, कै, उल्टी।
३ कुए के किनारे का वह स्थान जहां मनुष्य खड़ा होकर मोट खाली करता है।
रू०भे०—चाड।

छाडणौ, छाडबौ-क्रि०स० [सं० छर्दनम्] १ कै करना, वमन करना २ छोडना, त्यागना. उ०—हर मत छाडै रै हिया, लिया चहै जो लाह। दिल साचै तेड़ो दियां, नैड़ो लिछमीनाह।—र.ज.प्र.
३ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोह करना।
छाडणहार, हारौ (हारी), छाडणियौ—वि०।
छाडाड़णौ, छाडाड़बौ, छाडाणौ, छाडाबौ, छाडावणौ, छाडावबौ प्रे०रू०।
छाडिओड़ौ, छाडियोड़ौ, छाडयोड़ौ—भू०का०कृ०।
छाडीजणौ, छाडीजबौ—कर्म वा०।

छाडांणौ-सं०पु०—१ राज-सत्ता के विरुद्ध विद्रोह या उपद्रव करने का भाव। २ प्रजा का कुपित होकर देश त्यागने का भाव या क्रिया।

छाडाड़णौ, छाडाड़बौ-क्रि०स०—('छाडणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ छुड़ाना, छुड़वाना। उ०—वाह दे राव दळ ठाह छाडाड़िया, क्राह घाते किया ताह कांनै।—महेस बारहठ
२ राज-सत्ता के विरुद्ध करवाना।

छाडाळ-सं०पु०—वह ऊंट जिसका इडर झुका हुआ हो। देखो 'इडर'. ऊंट का एक दोष।

छाटाळो-सं०पु०—भाला, नेजा।

छाडि-सं०स्त्री०—कंदरा, गुफा। उ०—भिड़ै भाजै नहीं देस पिण भोगवै, परवते गिरे नहीं छाडि पैठौ।—सोहिल भोजक

छाडियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कै किया हुआ. २ क्रोध किया हुआ, कुपित. ३ छोड़ा हुआ. ४ विद्रोह किया हुआ। (स्त्री० छाडियोड़ी)

छाडी-सं०स्त्री०—लकड़ी या पत्थर की बनी नाली जो रहट द्वारा निकाले गये पानी को आगे बहाने के लिये उस पात्र के किनारे पर लगाई जाती है जिसमें घड़िया से पानी गिरता है।

छाडोणौ, छाडोणौ—देखो 'छाडांणौ' (रू.भे.)
उ०—तद इणरै अरु देवड़ां रै बणी नहीं तिण ऊपर देवड़ा छाडोणौ कर नीसरिया।—द.दा.

छाडौ—देखो 'चाडौ' (रू.भे.)

छाणौ, चावौ-क्रि०अ०स०—१ फैलना, पसरना, विछ जाना।
उ०—१ छळै मेह ज्यौं खेह आकास छाई, दिपै चचळा सेल धारा दिखाई।—वं.भा.
उ०—२ जेहल तो दिस विदिस जस, भळहळ छायो भाळ। पूनमपत रो पसरियो, जांणै किरणां जाळ।—बां.दा.
२ व्याप्त होना। उ०—अंग छागी असळाख, लखां मारयां मुख लागी।—ऊ.का.
३ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना। उ०—जोबन छाई धण भली र तारां छाई रात।—अज्ञात
४ निवास करना, बसना, रहना। उ०—अंखियां क्रिस्ण मिळण की प्यासी, आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हांसी।
—मीरां
५ छिपना। उ०—छिपा कंदळी में मुनीरांण छायो, उठै सोवनी म्रिग मारीच आयो —सू.प्र.
६ शोभित होना। उ०—कुच नारंगी फळ जसा, सुंदर सुघट सिवाय। वांहां गज की सूंड सी, चूड़ा सूं रहि छाय।
—कुंवरसी सांखला री वारता
७ आच्छादित होना, ढका जाना। उ०—१ छायो गयण रंभ रथ छाजै, विखमी पांख पांखड़ी वाजै।—सू.प्र. उ०—२ लागै साद सुहांमणउ, नस भर कुंभड़ियांह। जळ पीइणिए छाइयउ, कहउ त पूगळ जांह।—ढो.मा.
क्रि०स०—८ आवृत करना, आच्छादित करना, ढकना।
९ पानी, धूप व वर्षा आदि से बचने के लिये कोई वस्तु तानना, बिछाना. १० बिछाना, फैलाना।
छाणहार, हारौ (हारी), छाणियौ—वि०।
छवाड़णौ, छवाड़बौ, छवाणौ, छवाबौ, छवावणौ, छवावबौ—प्रे०रू०।
छायोड़ौ—भू०का०कृ०।
छाईजणौ, छाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
छवणौ, छवबौ—अक०रू०।

छात—१ देखो 'छत्र' (२, ३, रू.भे.) उ०—१ कमगजां छात जिग वात क्रत, लख विख्यात संकळप लियौ। रिखि वयण आद वासिस्ट ग्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ।—रा.रू. उ०—२ छक बाथ नोख जोवांण छात। बधि तेम कीजिये नोक वात।—सू.प्र.
२ देखो 'छत' (१, २, रू.भे.)
सं०पु०—३ समूह। उ०—सीता वरि जनक पण सांचव, सुपह किया अपसोसे। छाता खळां उतोळे छौळां, भ्राता तूझ भरोसे।
—र.रू.
४ राज्य। उ०—गढ़ तूं जिसो सिघ रायां गुर, गढ़ सिरखो रिव तौं यह गात। पांम्यो दुरंग दुरंग सम छत्रपत, छत्रपत पांम दुरंग सम छात।—द.दा.
[सं० क्षत] ५ घाव, क्षत।
वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि, सिरमौर। उ०—अवतारां छात नमो अव-धेसर, सझ तोवाळा प्रात समै। चरणां नहीं नमायो चाचर, नर वे अवरां चरणां नमै।—र.रू.

छातपत, छातपति, छातपती—सं०पु० [सं० छत्रपति] राजा, नृप, बादशाह। उ०—१ उजेणी खेत सुण बात अखियात, श्रां छातपत बिया ग्रहमेव छाडै। दुरत गत दिखण गुजरात रा दळां सूं, मुरधरानाथ भाराथ मांडै।—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

उ०—२ छातपति हेक ग्रम्मली छत्त। गिरमेर प्रमांणइ तास गत्त।

—रा.ज.सी.

छात-रंगी—जबरदस्त, शक्तिशाली।

उ०—जंगी रिसालां हलंतां प्रळै, सांमंद हिलोळां जेहा, छात-रंगी हसम्मां भळतां काळ चोट। जोर दीधौ फिरंगी लिखायौ कौलनांमौ जठै, आप-रंगी चूंडा'तै मेवाड़ राखी ओट।

—राघोदास सांदू

छातर—देखो 'छत्र' (रू.भे.) उ०—प्रथी कुमया मया तणी पूगी परख नरांपत ऊनथां घणा नाथै। आलमां साह सिर छातर ऊथोळिया, मेलिया गरीबां तणै माथै।—महाराजा अजीतसिंह (जोधपुर) रौ गीत

छातरको—सं०पु०—छिलका।

छातरणौ, छातरबौ—क्रि०अ०स०—१ जलमग्न होना या करना, डूबना, डुबाना। उ०—सबदी लग कोड़ मजाद रायसिंघ, गहवंत रैणायर वडगात। ऊपर लहर सवाई अपतै, छिळतै छातरिया अन छात।

—दुरसौ आढ़ौ

२ फैलना, पसरना, फैलाना, पसराना।

छातरियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ डूबा हुआ, डुबाया हुआ. २ फैला हुआ, पसराया हुआ (स्त्री० छातरियोड़ी)

छातिया, छाती—सं०स्त्री०—१ पेट और गर्दन के बीच का सम्मुख का भाग, सीना, वक्षस्थल। उ०—कहउरी संदेस खरा गुरु आवतिया, तिण वेळा उळसी मेरी छातिया।—ऐ.जै. का सं.

वि०वि०—छाती की पसलियां पीछे की ओर रीढ़ और आगे अस्थिदंड से जुड़ी रहती हैं। इसके अन्दर के कोठे में फुफ्फुस व हृदय रहता है।

पर्या०—उर, उरस, उराट, कोड, छाती, बकस, वच्छा, भुजग्रंतर, मनघर।

मुहा०—१ छाती उमड़णी—किसी की याद से बेचैन होना। प्रेम या करुणा से गद्गद् होना. २ छाती कूटणी—हाय-हाय करना, अधिक विलाप करना. शोक या दुःख के आवेग में छाती पर हाथ पटकना. ३ छाती खूंदणी—निरन्तर तंग करना. ४ छाती खोलणी—हिम्मत रखना, दिलेर होना। हृदय में कोई छल-कपट नहीं रखना। निष्कपट होना. ५ छाती चढ़णौ—कष्ट देने के लिये तैयार रहना। किसी काम आदि के लिये हर समय कहते रहना. ६ छाती चेपणी—देखो 'छाती लगाणी'. ७ छाती छलणी होणी—अनेक कष्टों से अत्यंत दुखी होना, बहुत आघात सहना, हृदय विदीर्ण होना. ८ छाती छोलणी—कष्ट पहुंचा कर तंग करना, आघात पहुंचाना. ९ छाती ठंडी होणी—इच्छित कार्य पूरा होना, संतोष होना, हृदय शीतल होना. १० छाती ठारणी—अनुकूल कार्य कर संतोष पहुंचाना. ११ छाती ठोकणी—हिम्मत करना, दृढ़ता के साथ कहना. १२ छाती तपाणी—अथक परिश्रम करना. १३ छाती निकाळणी—अकड़ कर चलना, गर्व करना. १४ छाती पर फिरणी—हर समय याद आना, तंग करने के लिये बार-बार आना. १५ छाती पर सवार होणौ—काम कराने के लिये सिर पर सवार होना। तंग करने के लिये सदैव सामने रहना. १६ छाती पीटणी—देखो 'छाती कूटणी'. १७ छाती फाटणी—दुःख से हृदय व्यथित होना, भयभीत होना, डरना। जी जलना, डाह होना. १८ छाती फुलाणी—अकड़ कर चलना, गर्व दिखाना, इतरा कर चलना. १९ छाती फूलणी—प्रसन्न होना, खुश होना, गर्वित होना. २० छाती बळणी—दुःख होना, मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या या क्रोध से चित्त संतप्त होना, डाह होना, जलन होना. २१ छाती भरीजणी—प्रेम या दया से गद्गद् हो जाना, प्रेम उमड़ आना, स्तनों में दूध भर आना. २२ छाती माथलौ भाटौ—ऐसी वस्तु जिसके कारण सदैव चिंता बनी रहती हो. २३ छाती माथै झेलणौ—स्वयं दुःख सहना, आपत्ति को अपने ऊपर लेना. २४ छाती माथै भाटौ मेलणौ—चुपचाप दुःख या हानि सहन कर लेना. २५ छाती माथै मूंग दळणा—अधिक कष्ट पहुंचाना, किसी के सामने ही उसकी बुराई या हानि करना. २६ छाती में राध गेरणी—अधिक कष्ट देना, विघ्न डालना, भारी चिंता पैदा करना. २७ छाती रा किंवाड़ खोलणा—हृदय के अंधकार को दूर करना। हृदय की बात स्पष्ट कहना, मन में कुछ गुप्त न रखना. २८ छाती रा छोडा लेणा—देखो 'छाती छोलणी'. २९ छाती रौ जम—निरन्तर दुःख देने वाली वस्तु या कष्टदायक व्यक्ति. ३० छाती लगाणौ—बहुत प्यार करना। अपना बना कर रखना। ३१ छाती सूं छाती मिळाणी—बराबरी करना, मुकाबले के लिये दृढ़ता से सामने खड़े होना।

कहा०—छाती साटै बाटी—हिम्मत आदि से कार्य करने पर ही जीविका प्राप्त होती रहती है। साहस रखने पर सारे काम सफल होते रहते हैं।

यौ०—छातीकूटौ, छातीछोलौ, छातीफल्लौ, छातीसधरौ।

२ हृदय, कलेजा, मन, जी, चित्त।

मुहा०—१ छाती उमडणी—प्रेम या करुणा के आवेग से हृदय गद्गद होना. २ छाती छलणी होणी—कष्ट या अपमान से हृदय का अत्यन्त व्यथित होना. ३ छाती ठंडी होणी—प्रसन्न चित्त होना। हृदय शीतल होना। मन का इच्छित कार्य पूर्ण होना. ४ छाती धड़कणी—भय या आशंका से हृदय कंपित होना, कलेजा धक-धक करना. ५ छाती पत्थर री होणी—शोक या दुःख सहने के लिये हृदय को कड़ा करना। दिल को मजबूत बनाना. ६ छाती फाटणी—हृदय विदीर्ण होना, अधिक भय या अत्यंत शोक का

समाचार सुन हृदय का अत्यंत व्याकुल होना। अधिक मानसिक पीड़ा होना. ७ छाती भरीजणी—अगाध स्नेह, अत्यधिक प्रेम या असीम करुणा से हृदय का परिपूर्ण होना। हृदय गद्गद होना. ८ छाती में पीड़ा होणी—देखो 'छाती छकणी होणी'।

२ स्तन, कुच।

मुहा०—१ छाती ऊठणी—लड़कियों का युवावस्था में प्रवेश करना। युवावस्था में स्त्रियों के स्तन उभरना. २ छाती देणी—बच्चे के मुंह में स्तन देना, दूध पिलाना. ३ छाती भरीजणी—स्तन में दूध भर आना, बच्चे के प्रति वात्सल्य उमड़ आना. ४ छाती मसळणी—स्तन दबाना, काम के लिये प्रेरित करना (संभोग का एक अंग)।

४ हिम्मत, साहस, दृढ़ता।

मुहा०—छाती करणी—किसी कार्य के करने के लिये हिम्मत करना।

रू०भे०—छति, छती, छत्ति, छत्ती।

छातीकूटो-सं०पु०यौ०—१ व्यर्थ की शिरपच्ची, मगजमारी. २ कलह, लड़ाई. ३ अरुचिकर कार्य जो किसी दबाव से करना पड़ता है. ४ छाती पीटने का भाव, हाय-हाय।

वि०—छाती या सीना पीटने वाला।

छातीछोलो-वि०पु०यौ० (स्त्री. छातीछोली) दुःखदायी, कष्ट देने वाला, पीड़ा पहुँचाने वाला, निरन्तर तंग करने वाला। उ०—छातीछोला छोड़दे, ओछा बोला एह। अब तो ढोला चेति उर, गोला खावै गेह।—ऊ.का.

छातीभलो-वि०पु०यौ०—साहसी, हिम्मत रखने वाला। (स्त्री. छातीभली)

छातीपीटो—देखो 'छातीकूटो' (रू.भे.)

छातीबंद-सं०पु०—घोड़े का एक रोग विशेष (शा.हो.)

छातो-सं०पु० [सं० छत्र, प्रा० छत्त] १ लोहे बांस आदि की पतली सलाकाओं पर कपड़ा चढ़ा कर बनाया हुआ आच्छादन जिसे मनुष्य धूप वर्षा आदि से बचने के लिये उपयोग में लेते हैं, छाता।

रू०भे०—छतो।

अल्पा०—छतड़ी, छतड़ो, छतरड़ी, छतरड़ो, छतरी, छतल्लो।

२ हल्के किस्म का देशी शराब. ३ झुंड, समूह. ४ मधुमक्खी का छत्ता।

छात्र-सं०पु० [सं०] १ विद्यार्थी, शिष्य. २ राजा, छत्रपति।

उ०—१ चूंडा वीरम सळख साख तेरह अजुआळा, छाडा तीडा छात्र हुआ कमधज्ज हयाळा।—वचनिका

उ०—२ छात्र त्रिहलोक रै छेड़िया छेहड़ा, त्रीकमो परणियो संत तारे।—पीरदांन लाळस

छात्रपत, छात्रपति-सं०पु० [सं० छत्रपति] राजा, नृप।

उ०—१ जोगेस्वर मकज मंदर वसु, वदन सुकळीण ससहर विराजै, परा सुळतांण तो नीसरै जोधपुर, छात्रपत जोधपुर तूं हीज छाजै।—मालो सांदू

उ०—२ किता कोट सैलोट चढ चोट अकबर किया, छात्रपति गया सहि देस छंडे।—सोहिल भोजग

छात्रवति-सं०स्त्री० [सं० छात्रवृति] किसी विद्यार्थी को विद्याभ्यास के लिये सहायता में दिया जाने वाला धन।

छात्रालय-सं०पु० [सं०] वह स्थान जहां विद्यार्थियों के निवास का प्रबन्ध हो।

छाद—देखो 'छाड' (रू.भे.)

छादण-सं०पु० [सं० छादन] आच्छादित करने का कार्य या सामग्री।

छादणी-सं०स्त्री० [सं० छर्दि] कै, वमन (अमरत)।

छादणो, छादबो-क्रि०स०—१ आच्छादित करना, ढकना. उ०—अति कळमळं प्रांण आपांणं, जळ अवाह छादियो जांणं।—रा.रू.

२ वमन करना, कै करना।

छादन-सं०पु०—वस्त्र, कपड़ा। उ०—केतां छादन कुंकमी रण मोद रंगाया, केतां अच्छरि चाहिके सिरमोर बनाया।—वं.भा.

छादियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ढका हुआ, आच्छादित. २ वमन किया हुआ, कै किया हुआ। (स्त्री० छादियोड़ी)

छाप-सं०स्त्री०—१ किसी सांचे या ठप्पे आदि को रंग से पोत कर किसी वस्तु पर दबा कर बनाया हुआ चिन्ह, खुदे या उभरे हुए ठप्पे का निशान।

क्रि०प्र०—मांडणी, लगाणी।

२ मुहर का चिन्ह, मुद्रा।

क्रि०प्र०—पड़णी, मंडणी, मांडणी, लगाणी।

३ वैष्णवों द्वारा अपने अंगों पर गर्म धातु से अंकित कराये जाने वाले शंख, चक्र आदि के चिन्ह. ४ अन्न राशि पर राख का चूर्ण डाल कर बनाया हुआ संकेत-चिन्ह. ५ गेय गीतों में गीतकार का नाम।

क्रि०प्र०—लगाणी।

६ चित्र, तसवीर।

क्रि०प्र०—कोरणी, बणाणी, भरणी, मांडणी।

छापणो, छापबो-क्रि०स०—१ छापना, चिन्हित करना. २ मुद्रित करना, प्रकाशित करना. २ झड़बेरी के सूखे कांटों को गुच्छे के रूप में एक दूसरे पर लगाना, जमाना। उ०—कोड करायां करै भरणी पालो भारी, ऊंटां ढेरां होय छापवै वाड़ां सारी।—दसदेव

छापणहार, हारो (हारी), छापणियो—वि०।

छपवाड़णो, छपवाड़बो, छपवाणो, छपवाबो, छपवावणो, छपवावबो, छपाड़णो, छपाड़बो, छपाणो, छपाबो, छपावणो, छपावबो—प्रे०रू०।

छापिओड़ो, छापियोड़ो, छाप्योड़ो—भू०का०कृ०।

छापीजणो, छापीजबो—कर्म वा०।

छपणो, छपबो—अक० रू०।

छापर, छापरि-सं०स्त्री०—१ पहाड़ी, डूंगरी. २ पथरीली भूमि। (मि. तालर) ३ ऊसर भूमि. ४ रणक्षेत्र, रणभूमि. ५ समतल भूमि, खुला मैदान। उ०—सीहणि हेको सींह जणि, छापरि मंडै आळि। दूध विटाळण कापुरस; वैहळा जणै सियाळि।—हा.भा.

छापरो-वि०—१ ठिगना, बौना, नाटे कद का. २ फैला हुआ, छितराया

हुआ। उ०—सरव कुलक्षण, पीत केस, घूयड जिम चीपड़ी नासिका, मारजार जिम पीळी आंखि, उंदर जिम लघु करण्ण, मुख कंदराकार, गावड़ा दांत, मोटउ पेट, दूबळी जांघ, छापरा पग, टापरा कांन।
—वरण्यवस्तु वरणनपद्धति

छापाखांनौ—सं०पु०—वह स्थान जहां पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें आदि छपने का कार्य होता हो, मुद्रणालय।
रू०भे०—छपाखांनौ।

छापि—सं०पु०—पानी, जल (ना.डि.को.)

छापियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ मुद्रित किया हुआ. २ अंकित किया हुआ. ३ प्रकाशित किया हुआ. ४ कंटीली सूखी झाड़ियों को जमाया हुआ। (स्त्री० छापियोड़ी)

छापौ—सं०पु० १ देखो 'छाप' (रू.भे.) २ पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें आदि छापने का यंत्र. ३ रात्रि में असावधान व्यक्ति या शत्रु सेना पर अचानक किया जाने वाला आक्रमण, धावा।
क्रि०प्र०—डालणौ, मारणौ।
४ झड़बेरी के पत्तों का ढेर. ५ ठप्पे या मुहर से दबा कर डाला हुआ चिन्ह। उ०—छाप रोस जरी री सरसतां छजि, तारा घर ऊगां किर नभ तजि।—सू.प्र.

छाब—सं०स्त्री० [सं० छविल] बांस की छबड़ी, टोकरी, डलिया।
उ०—तठा उपरांयत माळा फूलां री छाबां आंण हाजर कीजै छै।
—रा.सा.सं.
रू०भे०—छाव।
अल्पा०—छबड़ली, छबड़लौ, छबड़ि, छबड़ियौ, छबड़ी, छबड़ौ, छबड़्यौ, छबलड़ी, छबलड़ौ, छबलि, छबलियौ, छबली, छबलौ, छबल्यौ, छबोलड़ी, छबोलड़ौ, छबोलि, छबोलियौ, छबोलि, छबोलौ, छबोल्यौ, छाबड़ली, छाबड़लौ, छाबड़ि, छाबड़ियौ, छाबड़ी, छाबड़ौ, छाबड़्यौ, छाबलड़ी, छाबलड़ौ, छाबलि, छाबलियौ, छाबली, छाबलौ, छाबल्यौ, छाबोलड़ी, छाबोलड़ौ, छाबोलि, छाबोलियौ, छाबोली, छाबोलौ, छाबोल्यौ, छावड़ौ, छावळी।
मह०—छबड़, छबल, छबोल, छाबक, छाबड़, छावड़, छाबल, छाबोल।

छाबक—सं०स्त्री०—१ छिपकली (डि.को.) २ देखो 'छाब' (मह. रू.भे.)

छाबड़—देखो 'छाब' (मह. रू.भे.) उ०—कळपै अकबर काय, गुण पूंगीधर गोडिया। मिणधर छाबड़ मांय, पड़ै न रांण 'प्रतापसी'।
—दुरसौ आढ़ौ

छाबड़ली—देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.)

छाबड़लौ—सं०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.)

छाबड़ि—देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.)

छाबड़ियौ—सं०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.)

छाबड़ी—देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) उ०—१ हरिया वांसां री छाबड़ी रे, मांय चंपेली री फूल।—लो.गी.

छाबड़ौ, छाबड़्यौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) उ०—जा रे भंवरा विराज कर, बोहळं वाजारे। उरं न ढूकं छाबड़ं, अेह दिन चीतारे।—र.रा.
२ कुंकुम रखने का काष्ठ का बना पात्र।
उ०—१ नमौ वीतरागाय, ऊपेलई मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मंडप नीपाइउ, पोइणिने पांनि छाइउ, कंकू ना छाबड़ा, मोती ना चउक।
—विव
उ०—२ सभा मांहि रांवणकाच ढाळिउ, कुंकम तणां छाबड़ा दीधा कस्तूरिकाना स्तबक पड़िया।—सभा सिंगार

छाबल— १ देखो 'छाब' (मह. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (मह. रू.भे.)

छाबलड़ी—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबलड़ौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबलि—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (रू.भे.)

छाबलियौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबली—सं०स्त्री०—१ खंजरी से मिलता-जुलता एक वाद्य विशेष या इस पर गाया जाने वाला गीत।
रू०भे०—छबलि, छबली, छबोलि, छबोली, छाबलि, छावली, छाबोलि, छाबोली, छावळी।
अल्पा०—छबलड़ी, छबलड़ौ, छबलियौ, छबलौ, छबल्यौ, छबोलड़ी, छबोलड़ौ, छबोलियौ, छबोलौ, छबोल्यौ, छाबलड़ी, छाबलड़ौ, छाबलियौ, छाबलौ, छाबल्यौ, छाबोलड़ी, छाबोलड़ौ, छाबोलियौ, छाबोलौ, छाबोल्यौ।
मह०—छबल, छबोल, छाबल, छाबोल।
२ देखो छाब' (अल्पा. रू.भे.)

छाबलौ, छाबल्यौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबोल—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (मह. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (मह. रू.भे.)

छाबोलड़ी—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबोलड़ौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबोलि—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (रू.भे.)

छाबोलियौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाबोली—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (रू.भे.)

छाबोलौ, छाबोल्यौ—सं०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा. रू.भे.) २ देखो 'छाबली' (अल्पा. रू.भे.)

छाय—१ देखो 'छाया' (रू.भे.) उ०—पग पग पांणी पालरी, बादळियां री छाय । परदेसां तू चाल रे, जित म्हारे आलीजे भंवर रो मुकांम ।—लो.गी.

२ चोट आदि के कारण आंख की पुतली पर छाने वाली सफेदी (रू.भे.) ।

३ एक प्रकार की गाय जिसका रंग लाल सफेद होता है ।

छायल–वि०—१ बहादुर, वीर, जबरदस्त । उ०—भड़ां काचां कहै, बांनाई भावसां, डायलां आगळै रहै डरती तो जसा छायलां 'सीह' 'गोयळ' तणा, धणां अजरायळां तणी धरती ।—बद्रीदास खिड़ियो

२ शौकीन, रसिक । उ०—छाक बंबाळ अपछरा छायल, अरज कीध 'पदमैं' अजरायळ ।—सू.प्र.

छायांक–सं०पु० [सं०] चन्द्रमा, चांद (डि.को.)

छाया–सं०स्त्री०—१ प्रकाश या किरणों के मार्ग में किसी व्यवधान के कारण उसके आगे होने वाला प्रकाश का अभाव या इसके कारण उत्पन्न होने वाला कुछ हल्का अंधकार या कालिमा ।

मुहा०—फिरती छांया देखणी—जिधर लाभ की आशा हो उधर झुक जाना ।

२ वह स्थान जहां किसी आड या व्यवधान के कारण सूर्य, चन्द्रमा, दीपक या अन्य कोई आलोकप्रद वस्तु का प्रकाश न पड़ता हो ।

३ उस वस्तु की कालिमापूर्ण आकृति जो प्रकाश को कुछ दूरी तक रोकने से बनती है. ४ प्रतिकृति, अनुहार, तद्रूप वस्तु. ५ जल, दर्पण आदि में दिखाई दी जाने वाली आकृति, प्रतिबिम्ब, अक्स. ६ अनुकरण, नकल. ७ किसी देव विशेष की उपस्थिति का शरीर में अनुभव होकर तदनुसार अंग संचालित होने और मुंह की ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, भूतप्रेत का प्रभाव ।

क्रि०प्र०—आणी, जाणी ।

८ सूर्य की एक पत्नी का नाम ।

यौ० छाया-पुत्र.

९ शरण, रक्षा, सुरक्षा ।

क्रि०प्र०—देणी, राखणी ।

१० कांति, दीप्ति, चमक, झलक. ११ चिंता, दुःख आदि के कारण चेहरे पर आंखों के नीचे पड़ने वाले कुछ श्यामल दाग, धब्बे. १२ आर्या या गाहा छंद का भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिला कर २३ लघु १७ दीर्घ वर्ण सहित ५७ मात्रा हों (ल.पिं.)

रू०भे०—छांय, छांया, छांव, छांह, छांही, छाअ, छाय, छाह, छिया, छींया।

अल्पा०—छांयड़ी, छांवड़ी, छांवळी, छांहड़ी, छांहरी, छावळी, छियाड़ी, छियाळियो, छियाळो, छींयाड़ी, छींयाळो ।

मह०—छांवळ, छांहड़, छाहड़ ।

छायाजंत्र–सं०पु० [सं० छायायंत्र] छाया के आधार पर समयसूचक यंत्र, धूप घड़ी ।

छायाटोडी–सं०स्त्री०—एक राग विशेष ।

छायापथ–सं०पु० [सं०] १ आकाश गंगा । २ आकाश ।

छायापुत्र–सं०पु०—शनिश्चर । उ०—रांवण भ्रात जेण रौ राजा, रंग तिकण सूं रेलै । छायापुत्र सहोदर छाकै, छोह न ता पर ठेलै ।—र.रू.

छायापुरस–सं०पु० [सं० छायापुरुष] आकाश की ओर बहुत देर तक स्थिर दृष्टि से देखते रहने की साधना से दिखाई दी जाने वाली मनुष्य की छाया रूप आकृति (हठयोग) ।

छायामांन, छायावाळ–सं०पु० [सं० छायामान] चंद्रमा, चांद । (डि.को)

छायोड़ो–भू०का०कृ०—१ छाया हुआ, आच्छादित. २ फैला हुआ, पसरा हुआ. ३ फैलाया हुआ (स्त्री० छायोड़ी)

छारंडी–सं०स्त्री०—होली का दूसरा दिन । इस दिन मनाया जाने वाला उत्सव ।

क्रि०प्र०—खेलणी, रमणी ।

छार–सं०पु० [सं० क्षार] १ क्षार. २ राख, भस्म । उ०—१ या मन की रीति है, जहां तहां चलि जाय । कबहुक लोटे छार में, कबहुक मलि मलि न्हाय ।—ह.पु.वा. उ०—२ जबर-जबर जोधार, सहसबाहु सिसुपाळ सम । छिन में हुय गया छार, चिन्ह रह्यो नहिं चकरिया ।

—मोहनलाल साह

छारोळी—देखो 'चाळोरी' (रू.भे.)

छाळ—१ देखो 'छाळी' (मह० रू.भे.) उ०—एवाळ कहण लागो मारू तो माहरा साथ मांह छै । कालै म्हारी छाळ चारती हुंती ।—ढो.मा.

२ छलांग । उ०—खोखा खावै ऊंट उबांणा गूंजै गाळां, खोखा छींकल खाय छेकता जंगळ छाळां ।—दसदेव

३ देखो 'चाळ' (२ रू.भे.)

छाल–सं०स्त्री० [सं० छल्लि, छल्ली] १ वृक्ष के तने, शाखा आदि के ऊपर का छिलका, वल्कल ।

पर्या०—चोच, छाल, वलकल ।

२ छिलका. ३ चर्म, त्वचा । उ०—उरमाळ मुंडनि छाल म्रिग की खाल केसरि जूसणं । वपु भस्म लेप स्मसांन राजित व्याळ पांणि विभूसणं ।—ला.रा.

४ वमन, कै । उ०—ओथि राघवदास सजोह पहरियो हुतौ अर अफीण खाधौ हुतौ, ताहरां तळछर ऊपर छाल विहुं हुई ।—द.वि.

छाळकी—देखो 'छाळी' (अल्पा० रू.भे.)

छाळको—देखो 'छाळो' (२, अल्पा० रू.भे.)

छालणो–सं०पु०—बड़ी छलनी ।

छालणो, छालबो–क्रि०स०—१ छानना. २ छीलना, साफ करना । उ०—खळ वटियां री खरड़ छुरी सूं छालण लागै । पोतो पड़ियो रहै अगाड़ी मूंडा आगै ।—ऊ.का.

३ इतना भरना कि वस्तु पात्र में नहीं समाने के कारण गिरने लग जाय, परिपूर्ण करना, भरना । उ०—छोटी दीवड़ियां काखां तळ छालै । मोटी लोटड़ियां दाखां जळ मालै ।—ऊ.का.

छालणहार, हारौ (हारी), छालणियौ—वि० ।

छालिश्रोड़ौ, छालियोड़ौ, छाल्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
छालीजणौ, छालीजबौ—कर्म वा० ।

छालि–सं०स्त्री०—छाल, वल्कल ।

छाळी–सं०स्त्री० [सं० छागली] बकरी । उ०—पहिरण श्रोढ़ण कंबळां, साठे पुरसे नीर । श्रांपण लोक उभांखरा, गाडर छाळी खीर ।
—ढो.मा.

कहा०—१ छाळी नूं चरनार नै चीता नूं वेहनार—बकरी के चरने का स्थान है वही चीते के बैठने का स्थान है । भक्ष्य और भक्षक का एक ही स्थान पर होना कठिन होता है. २ छाळी पकड़ियो ना'र नै जे छोडै तो खाय—बकरी ने शेर को पकड़ तो लिया परंतु अब छोड़ती है तो वह उसे ही खा जाता है । सब तरह से कठिन या मुश्किल होना. ३ छाळी बाळी श्रौर भैंस बूढ़ाळी—दूध के लिये बकरी जवान श्रौर भैंस प्रौढ़ श्रच्छी होती है. ४ छाळी रा कांन एवाळां श्राधीन—बकरियां गडरिये के श्राधीन रहती हैं । परवस पड़े व्यक्ति की श्रपनी कोई स्वतंत्रता नहीं रहती. ५ छाळी रोवै जीव नै कसाई रोवै मांस नै—बकरी तो श्रपना प्राण बचाने की सोचती है श्रौर कसाई श्रपनी जीविका हेतु उसके मांस की सोचता है । संसार में सब कोई श्रपना-श्रपना स्वार्थ ही देखते हैं. ६ म्हारी म्हारी छाळियां नै दही दूधौ पाऊं, ना'रियौ श्रावै तो सोटा री घमकाऊं—केवल श्रपने ही व्यक्तियों की स्वार्थ-सिद्धि में निरन्तर सहयोग देने वाले के प्रति कही जाने वाली कहावत ।

श्रल्पा०—छाळकी ।
मह०—छाळ ।

छाळीना'र, छाळीना'रियौ–सं०पु०—कुत्ते की जाति का एक जंगली हिंसक पशु जो कद में कुत्ते से कुछ बड़ा होता है श्रौर कुत्ते, बकरी, बछड़े श्रादि का शिकार करता है ।

छाळौ–सं०पु०—१ शरीर के किसी स्थान पर जलने, रगड़ खाने या किसी श्रन्य कारण से चमड़ी का उभरा हुश्रा तल जिसके भीतर एक प्रकार का चेप या पानी भरा रहता है, फफोला । उ०—हाथाळी छाळा पड़्या, चीर निचोइ निचोइ ।—ढो.मा.
[सं० छगलः, छागल] २ बकरा (डिं.को.)
श्रल्पा०—छाळकौ ।

छाल्लौ—देखो 'छाज' (श्रल्पा० रू.भे.) उ०—म्हारौ मीठौ लागै खीचड़ौ, म्हारौ चोखौ लागै खीचड़ौ । ऊखळ घाल्यौ बाजरौ, म्हैं छाल्लै घाली दाळ ।—लो.गी.

छाव—१ देखो छावौ (मह० रू.भे.) उ०—सूरौ दाटक सिहळी, छळ हुंत मारै छाव । पिव पतळौ पैनाग पर, घालै चौड़ै घाव ।
देखो 'छाव' (रू.भे.) —रेवतसिंह भाटी

छावउ–स०पु० [सं० शावकः] (स्त्री० छावी) १ युवक । उ०—१ इसउ वचनु तव बोलइ, कांमगल्लिय नारि । छयलु छरालउ छावउ, छइ कोइ नयर मझारि ?—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ पदमिनी कमळ करइ विकास, नवयोवन स्त्री करइ विलास । मिळि सिवे छावी लहूश्रडी, प्रिय विण न रहइ एकइ घड़ी ।—प्राचीन फागु-संग्रह
२ देखो 'छावौ' (रू.भे.)

छावड़ी–सं०स्त्री०—१ पतली-पतली छः रस्सियों की बनी एक मोटी व मजबूत रस्सी जो ऊंट के मुंह पर बांधने के लिये बनाई जाती है.
२ देखो 'छाव' (मह० रू.भे.)
सं०पु०—३ बालक, बच्चा । उ०—मेटणौ भीड़ भूंजि गयंद री मोटियां, छावड़ बळ हतै कळाइयां छोटियां ।—हा.झा.

छावड़ी—देखो 'छाव' (श्रल्पा० रू.भे.)

छावड़ौ—१ देखो 'छाव' (श्रल्पा० रू.भे.)
२ देखो 'छावौ' (श्रल्पा० रू.भे.) (स्त्री० छावड़ी)
उ०—१ सीहां हुंदा छावड़ा, घसै समुख खग धार । वाहै लज रा वीटिया, सीस गयंदा सार ।—प्रतापसींघ म्होकमसींघ री वात
उ०—२ नमौ नरनाह हथवाह 'पदमा' निडर, बोट श्ररि थाट श्रसुरां सवांही । साहियां खड़ग 'करणेस' रा छावड़ा, मालियौ भलौ श्रंनखास मांही ।—द.दा.

छावणी–सं०स्त्री०—फौज के रहने का स्थान, डेरा, पड़ाव ।
उ०—बरसात लागी श्रर उबै मेड़तौ झाल बैठिया, बाहरै नीसरता सो सारा कांम श्राइया, तिणसूं सोजत पधार श्राप छावणी कीजे ।—मारवाड़ रा श्रमरावां री वारता

छावणौ, छावबौ—देखो 'छाणौ' (रू.भे.) उ०—१ छहू रिति जिन्हूं के तट परि ब्रह्मग्यांनी सिध मुनिराज छावै । मांन सरोवर के भौळै भूल श्रनेक लीलंग श्रावै ।—सू.प्र. उ०—२ नवा दिहाड़ा नव रुतां, नव तरुणी सौं नेह । नवा तिण घर छावियौ, बरसौ श्रधका मेह ।
—र.रा.

छावणहार, हारौ (हारी), छावणियौ—वि० ।
छवाड़णौ, छवाड़बौ छवाणौ, छवाबौ, छवावणौ, छवावबौ—प्रे०रू० ।
छाविश्रोड़ौ, छावियोड़ौ, छाव्योड़ौ भू०का०कृ० ।
छावीजणौ, छावीजबौ—कर्म वा० ।

छावनौ–सं०पु०—५६ वां वर्ष । उ०—परणीजण पाधारियौ, 'जेसांणौ' श्रगजीत' । छट्ट ऊजळी छावनै, पख श्रासाढ़ सप्रीत ।—रा.रू.

छावळी—१ देखो 'छावली' (रू.भे.) २ देखो 'छाव' (श्रल्पा० रू.भे.)
३ देखो 'छाया' (रू.भे.) उ०—बावळिया कतरा बीघां री थारी पेड़, बावळिया कतरा बीघां में थारी छावळी ।—लो.गी.

छावीस–वि०—देखो 'छब्बीस' । उ०—सहस बिनव सौ रूप सुभ, वळि छावीस वताइ । दीसै मोतीदांन रै, प्रकट जगण चत्र पाइ ।
—ल.पिं.

छावौ–सं०पु० [सं० शावकः] १ बच्चा । उ०—ठणै भद्र मंद स्रिगा बंस ठावा, छटा फैल हालै किनां सैल छावा ।—वं.भा.
२ पुत्र, लड़का । उ०—१ श्रो तौ गहरौ गहरौ विरमांजी रौ छावौ

बालम रसिया महरो जी फूल गुलाब रो ।—लो.गी.

रू०भे०—छावड ।

अल्पा०—छावड़ी ।

मह०—छाव ।

वि० (स्त्री० छावी) प्रसिद्ध, विख्यात । उ०—ऐरापति जस तिलक अग्गी दळ मतवाळी, छावी मद मोकळ । दळ सिंगार गजघंट बहादर, मद मेदिनी विकट गज भम्मर ।—रा.रू.

रू०भे०—चावौ ।

छास—देखो 'छाछ' (रू.भे.)

छासट–वि० [सं० षट्षष्टि, प्रा० छासट्ठि] साठ से छः अधिक, साठ और छः का योग, छियासठ ।

सं०पु०—६६ की संख्या ।

छासटमौं–वि०—६६वां ।

छासटे'क–वि०—छियासठ के लगभग ।

छासटौ–सं०पु०—६६ वां वर्ष ।

छासठ—देखो 'छासट' (रू.भे.)

छासठमौं—देखो 'छासटमौं' (रू.भे.)

छासठि–वि०—छियासठ । उ०—भणि तेरह सौ छासठि भेद । विगति मात्र सोळह अ् वेद ।—ल.पिं.

छासठे'क—देखो 'छासटे'क' (रू.भे.)

छासठौ–सं०पु०—६६ वां वर्ष ।

छासि—देखो 'छाछ' (रू.भे.)

छाह—१ देखो 'छाछ' (रू.भे.) २ देखो 'छाया' (रू.भे.)

उ०—जन हरिदास गोविंद भजो, और सबै सुख थाक । माल मुलक हैं गै घणां, छत्र छाह मन छाक ।—ह.पु.वा.

छाहड–सं०पु०—१ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति. २ देखो 'छाया' (मह० रू.भे.)

छाहड़ी, छाहणी—देखो 'छाया' (अल्पा. रू.भे.) उ०—१ जन हरिदास अंतरि अगह, दीपग एक अनूप । जोति उजाळै खोलिये, जहां छाहड़ी न धूप ।—ह.पु.वा.

उ०—२ दुख भीनी पंजर हुई, धांन नूं भावई तिज्या सरि न्हांण । छाहणी धूप नूं आळगई, कवियक भूंपड़ा होइ मसांण ।—वी दे.

छाहली–सं०स्त्री०—एक राग विशेष (संगीत)

छिकाणौ, छिकाबौ–क्रि०स० ('छींकणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छींकने की क्रिया कराना ।

छिकाणहार, हारौ (हारी), छिकाणियौ—वि० ।

छिकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

छिकाईजणौ, छिकाईजबौ—कर्म वा० ।

छिकाड़णौ, छिकाड़बौ, छिकावणौ, छिकावबौ—रू०भे० ।

छींकणौ—अक० रू० ।

छिकायोड़ौ–भू०का०कृ०—छींकने की क्रिया कराया हुआ ।

(स्त्री० छिकायोड़ी)

छिगास—देखो छंगास' (रू.भे.) उ०—गायां नै गिरमास ठिकांणौ चोड़ै ठायौ, सूवै सूतक सुधौ, तळै छिगास बिसायौ ।—दसदेव

छिछ–सं०पु०—देखो 'छींछ' (रू.भे.) उ०—घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति । पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हंस नीसरै सति ।—वेलि.

रू०भे०—छिछ ।

छिदगारौ—देखो 'छंदगारौ' (रू.भे.) उ०—नहीं मोती माळा नहि न छक हाला सुचि नहीं, नहि नारी प्यारी वचन छिदगारी रुचि नहीं ।—ऊ.का.

(स्त्री० छिदगारी)

छिया—देखो 'छाया' (रू.भे.)

छियाड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा. रू.भे.)

छियाळियौ–सं०पु०—देखो 'छाया' (अल्पा. रू.भे.)

छियाळी, छियाळीस–वि० [सं० षट्चत्वारिंशत्, प्रा० छैंहैतालीस] चालीस से छः अधिक, चालीस और छः का योग ।

सं०पु०—४६ की संख्या ।

रू०भे०—छयाळी ।

छियाळीसमौं–वि०—४६ वां ।

छियाळीसे'क–वि०—छियालीस के लगभग ।

छियाळीसौ–सं०पु०—छियालीसवां वर्ष ।

रू०भे०—छींयाळीसौ ।

छियाळौ–सं०पु०—१ छियालीसवां वर्ष. २ देखो 'छाया' (अल्पा. रू.भे.)

रू०भे०—छयांळौ, छयाळौ, छींयाळौ ।

छियासियौ–सं०पु०—८६ का वर्ष ।

रू०भे०—छयासियौ ।

छियासी–वि० [सं० षडशीति, प्रा० छासीइ] अस्सी और छः का योग, अस्सी से छः अधिक ।

सं०पु०—८६ की संख्या ।

रू०भे०—छयासी ।

छियासीक–वि०—छियालीस के लगभग ।

छियासीमौं–वि०—छियासीवां ।

रू०भे०—छयासीमौं ।

छियौ—देखो 'चियौ' (रू.भे.)

छिवरी–सं०स्त्री०—देखो 'छिवरौ' (अल्पा. रू.भे.)

छिवरौ–सं०पु०—घने पत्तों युक्त किसी वृक्ष की टहनी ।

छिहत्तर—देखो 'छिहतर' (रू.भे.)

छि–सं०स्त्री०—१ मर्यादा. २ नींव ।

सं०पु०—३ कुम्हार. ४ शिकारी. ५ कुठार. ६ समय. ७ देवता (एका०)

अव्य०—तिरस्कार, अरुचि या घृणासूचक शब्द ।

छिअंतर—देखो 'छियंतर' (रू.भे.)

छिअंतरमौं—देखो 'छियंतरमौं' (रू.भे.)

छिअंतरौ—देखो 'छियंतरौ' (रू.भे.)

छिकणी–सं०स्त्री० [सं० छिक्कनी] तने के सहारे ऊपर न उठ कर केवल जमीन पर ही फैलने वाली घास।

छिकणौ–वि०—जो छिकता हो, छिकने वाला (कागज)

छिकणौ, छिकबौ—१ देखो 'छकणौ' (रू.भे.) उ०—१ बीजो तौ साथ सगळोई छीकियौ, ढोलाजी, पिण छिकण लागा मांगणहार दी वउ मांगणहार लारै गावती थकी कहण लागी।—ढो.मा.

उ०—२ भरमल री मां राणै रै दोय चार दाव ज्यादा देय दीन्हा सौ राणोजी छिक परवस हुआ।—कुंवरसी सांखला री वारता

छिकणहार, हारौ (हारी), छिकणियौ—वि०।

छिकाड़णौ, छिकाड़बौ, छिकाणौ, छिकाबौ, छिकावणौ, छिकावबौ—क्रि०स०।

छिकिग्रोड़ौ, छिकियोड़ौ, छिक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छिकीजणौ, छिकीजबौ—क्रि० भाव वा०।

छिकमल–सं०स्त्री०—पृथ्वी (डि.नां.मा.)

छिकरौ, छिक्कर–सं०पु० [सं० छिक्कर] एक प्रकार का मृग जो अपनी तेज गति के लिये प्रसिद्ध है।

छिकी–सं०स्त्री०—१ विवाह अवसर पर पाणि-ग्रहण के दिन कन्या को घोड़े पर बिठा कर जलूस के रूप में वर के यहां और तत्पश्चात वर को वधू के घर ले जाने की प्रथा (पुष्करणा ब्राह्मण) २ यज्ञोपवीत संस्कार के दिन यज्ञोपवीत लेने वाले को जलूस के साथ घुमाने की प्रथा (पुष्करणा ब्राह्मण) ३ देखो 'छिग्गी' (रू.भे.)

छिग्गी–सं०स्त्री०—कमजोरी की अवस्था में होने वाला पसीना।

छिड़कणौ, छिड़कबौ–क्रि०स०—पानी या किसी द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे गिरें। उ०—घोलख धोयां आसरां में, मांड मांडणा मोवणा। राजी रैवण परसंग्यां सिर, छिड़क छांटणा सोवणा।—दसदेव

२ न्योछावर करना।

छिड़कणहार, हारौ (हारी), छिड़कणियौ—वि०।

छिड़कवाड़णौ, छिड़कवाड़बौ, छिड़कवाणौ, छिड़कवाबौ, छिड़कवावणौ, छिड़कवावबौ, छिड़काड़णौ, छिड़काड़बौ, छिड़काणौ, छिड़काबौ, छिड़कावणौ, छिड़कावबौ—प्रे.रू.।

छिड़किग्रोड़ौ, छिड़कियोड़ौ, छिड़क्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छिड़कीजणौ, छिड़कीजबौ—कर्म वा०।

छिड़काई–सं०स्त्री०—छिड़कने का कार्य करने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी।

छिड़काणौ, छिड़काबौ–क्रि०स० ('छिड़कणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छिड़कने का कार्य कराना।

छिड़काणहार, हारौ (हारी), छिड़काणियौ—वि०।

छिड़कायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छिड़काईजणौ, छिड़काईजबौ—कर्म वा०।

छिड़कायोड़ौ–भू०का०कृ०—छिड़कवाया हुआ, छींटे गिराया हुआ। (स्त्री० छिड़कायोड़ी)

छिड़काव–सं०पु०—पानी या अन्य द्रव पदार्थ छिटकने की क्रिया। उ०—सहचरी चतुर सबोह, मिळ रचत उच्छव मोह। वर करत ओक वणाव, करि कुंमकुंमां छिड़काव।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

छिड़कावणौ, छिड़कावबौ—देखो 'छिड़काणौ' (रू.भे.) उ०—पंखें सम सज्जन कोई पावै, हेत प्रीत सोइ पवन हलावै। छिमा गुलाब नीर छिड़कावै, पितुवंट छाया कोइक पावै।—ऊ.का.

छिड़कावणहार, हारौ (हारी), छिड़कावणियौ—वि०।

छिड़काविग्रोड़ौ, छिड़कावियोड़ौ, छिड़काव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छिड़कावीजणौ, छिड़कावीजबौ—कर्म वा०।

छिड़कियोड़ौ–भू०का०कृ०—छींटे के रूप में डाला हुआ, छिड़का हुआ। (स्त्री० छिड़कियोड़ी)

छिड़णौ, छिड़बौ–क्रि०अ०—आरंभ होना, शुरू होना, चल पड़ना।

छिड़णहार, हारौ (हारी), छिड़णियौ—वि०।

छिड़वाड़णौ, छिड़वाड़बौ, छिड़वाणौ, छिड़वाबौ, छिड़वावणौ, छिड़वावबौ छिड़ाड़णौ, छिड़ाड़बौ, छिड़ाणौ, छिड़ाबौ, छिड़ावणौ, छिड़ावबौ—प्रे.रू.।

छिड़िग्रोड़ौ, छिड़ियोड़ौ, छिड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छिड़ीजणौ, छिड़ीजबौ—भाव वा०।

छेड़णौ, छेड़बौ—क्रि० स०।

छिड़ाणौ, छिड़ाबौ–क्रि०स०—१ ('छिड़णौ' क्रि.का.प्रे.रू.) आरंभ कराना, शुरू कराना. २ तंग कराना।

छिड़ाणहार, हारौ (हारी), छिड़ाणियौ—वि०।

छिड़ाड़णौ, छिड़ाड़बौ, छिड़ावणौ, छिड़ावबौ—रू०भे०।

छिड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छिड़ाईजणौ, छिड़ाईजबौ—कर्म वा०।

छिड़णौ, छिड़बौ—अक० रू०।

छिड़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ आरंभ कराया हुआ, शुरू कराया हुआ. २ तंग किया हुआ, छेड़ा हुआ। (स्त्री० छिड़ायोड़ी)

छिड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—आरंभ हुआ हुआ। (स्त्री० छिड़ियोड़ी)

छिछ—देखो 'छींछ' (रू.भे.)

छिछकारी, छिछकी–सं०स्त्री०—१ जोश दिलाने या उकसाने का भाव. २ उकसाने या प्रेरित करने के प्रयोजन से मुंह से निकाली जाने वाली ध्वनि विशेष।

छिछड़ौ–सं०पु०—१ मांस का अनुपयोगी टुकड़ा या तुच्छ टुकड़ा. २ पशुओं की अंतड़ी में होने वाली मल की थैली।

छिछलौ, छिछिलौ–वि०—जो गहरा न हो, छिछला, उथला।

छिछोर—देखो 'छिछोरौ', (मह.रू.भे.)

छिछोरपन, छिछोरपणो-सं०पु०—१ बचपन, बालसुलभ चपलता. २ ओछापन, क्षुद्रता।

छिछोरो-वि०पु० (स्त्री० छिछोरी) हीन भाव वाला, क्षुद्र, ओछा।

छिजाणो, छिजाबो-क्रि०स०—१ छीजने या नष्ट होने देना, किसी वस्तु को ऐसा करना कि वह छीज जाय. २ कुढ़ाना, चिढ़ाना. ३ चिंतित करना. ४ चूर्ण करना।

छिजाणहार, हारो (हारी), छिजाणियो—वि०।

छिजायोड़ो—भू०का०कृ०।

छिजाईजणो, छिजाईजबो—कर्म वा०।

छिजाड़णो, छिजाड़बो, छिजावणो, छिजावबो—रू०भे०।

छीजणो—अक० रू०।

छिजायोड़ो-भू०का०कृ०—छीजने या नष्ट होने दिया हुआ या किया हुआ। (स्त्री० छिजायोड़ी)

छिटक-सं०स्त्री०—१ जल्दी, शीघ्रता. २ पालकी के ओहार का दरवाजे के सामने का भाग।

छिटकणी—देखो 'चिटकणी' (रू.भे.)

छिटकणो, छिटकबो-क्रि०अ०—१ किसी वस्तु का वेग के साथ अलग हो जाना. २ इधर-उधर गिर कर फैलना, चारों ओर बिखरना, छितराना. ३ दूर दूर रहना, अलग अलग फिरना. ४ वश में से निकल जाना. ५ देखो 'छिड़कणो' (रू.भे.)

छिटकणहार, हारो (हारी), छिटकणियो—वि०।

छिटकवाड़णो, छिटकवाड़बो, छिटकवाणो, छिटकवाबो, छिटकवावणो, छिटकवावबो—प्रे.रू.।

छिटकाड़णो, छिटकाड़बो, छिटकाणो, छिटकाबो, छिटकावणो, छिटकावबो—क्रि०स०।

छिटकिओड़ो, छिटकियोड़ो, छिटक्योड़ो—भू०का०कृ०।

छिटकीजणो, छिटकीजबो—भाव वा०।

छिटका-क्रि०वि०—शीघ्रता के साथ। उ०—समजं किउं न अर्ज समजाऊं, भूल मती हव भाया। दौड़ै ऊमर छिटका देती, छित जिउं वादळ छाया।—ओपो आढ़ो

छिटकाणो, छिटकाबो-क्रि०स०—१ किसी वस्तु को दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना. २ बलपूर्वक झटका देकर छुड़ाना. ३ चारों ओर बिखेरना. ४ दूर हटाना. ५ साथ छोड़ना।

उ०—सुरगां सरीखो पीवर छोडयो, आयी आयी थांरे लार। ये छिटकाय मनैं सासरै काडयो, पूरवलो कासू वैर, म्हारा काळा रे कागा, एक सनेसो रे पिव नै जाय कहो।—लो.गी.

६ देखो 'छिड़काणो' (रू.भे.)

छिटकाणहार, हारो (हारी), छिटकाणियो—वि०।

छिटकाड़णो, छिटकाड़बो, छिटकावणो, छिटकावबो—क्रि०स०।

छिटकायोड़ो—भू०का०कृ०।

छिटकाईजणो, छिटकाईजबो—कर्म वा०।

छिटकणो, छिटकबो—अक० रू०।

छिटकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ झटके से छुड़ाया हुआ. २ बलपूर्वक अलग किया हुआ. ३ चारों ओर बिखेरा हुआ. ४ दूर हटाया हुआ. ५ साथ छोड़ा हुआ। (स्त्री० छिटकायोड़ी)

छिटकावणो, छिटकावबो—देखो 'छिटकाणो' (रू.भे.) उ०—गरमी होवै गात जदे वेदां घर जावै, ओखद मूंडे आंण छैल लाळां छिटकावै।
—ऊ.का.

छिटकावियोड़ो—देखो 'छिटकायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० छिटकावियोड़ी)

छिटकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ वेग के साथ अलग हुआ हुआ. २ इधर-उधर गिर कर फैला हुआ, चारों ओर बिखरा हुआ, छितराया हुआ. ३ दूर दूर रहा हुआ, अलग अलग फिरा हुआ. ४ वश में से निकला हुआ. ५ देखो 'छिड़कियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० छिटकियोड़ी)

छिटको-सं०पु०—१ किसी द्रव पदार्थ की बूंद, छींटा।

क्रि०प्र०—उछळणो, उछाळणो, देणो।

२ झटका, धक्का, आघात।

क्रि०प्र०—देणो।

३ किसी जीव-जन्तु के काटने की क्रिया।

क्रि०प्र०—देणो।

४ वह स्थान जहां किसी जन्तु विशेष ने काटा हो।

क्रि०प्र०—वळणो।

रू०भे०—छिणको।

छिण-सं०पु० [सं० क्षण] क्षण, पल। उ०—१ कूरंमी धिनि जांणिया, दिन रजनी तिथ वार। एकूकी छिण ऊपरा, वारै रतन अपार।
—रा.रू.

उ०—छिण में पीड़ छंटाय हाड टूटोड़ा सांधै।—दसदेव

रू०भे०—छिणि।

छिणको-सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) २ देखो 'छिटको' (रू.भे.) ३ देखो 'छिणगो' (रू.भे.)

छिणगटी—देखो 'छीणोटगी' (रू.भे.)

छिणगारो-वि०पु० (स्त्री० छिणगारी) शौकीन, रसिक, छैला, नखरे-बाज। उ०—तोरण आय तुरंग नचाया, आप बनूं छिणगारो।
—समांन बाई

छिणगो-सं०पु० [सं० शृंग] १ साफे का वह सिरा जो शिर से पीठ तक लटकता है। सिरा या छोर. २ तुर्रा. ३ घास विशेष की बाल।

रू०भे०—छोगो।

छिणछिणा-वि०—छितराये हुए, छिछले (बादल)

छिणमिण-स०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—छिणियां तो छिणमिण चलै, सपक हथोड़ा साथ। एक घड़ी में काट्या लोटियै, बंधवां पूरा साठ।—डूंगजी जवारजी री पड़

छिणवो-सं०पु०—९६ का वर्ष।

छिंणाई—देखो 'छ'णाई' (रू.भे.)

छिंणि—देखो 'छिण' (रू.भे.)

छिणियै–क्रि०वि० [सं० क्षण] क्षण भर। उ०—निराउध कियौ तदि सोनांनांमी, केस उतारि विरूप कियौ। छिणियै जीवि जु जीव छंडियौ, हरि हरिणाखी पेखि हियौ।—वेलि.

छिणी—देखो 'छीणी' (रू.भे.) उ०—इतणी बात सुणी जद लोटचै, तन मन लागी लाय। छिणी-हथोड़ा लेय लोटियौ, पड़चौ कड़कड़ी खाय।—डूंगजी ज्वारजी री पड़

छिणु—देखो 'छिन्नू' (रू.भे.)

छिणुऔ, छिणुवौ—देखो 'छिनुऔ' (रू.भे.)

छित–सं०स्त्री० [सं० क्षिति] पृथ्वी, धरा। उ०—१ आती ओलण नैं अंवक दक आयौ। छाती छोलण नैं छपनौ छित छायौ।—ऊ.का.

उ०—२ उपवन सघण वहार अनूठी, छित हरियाळी छायी। अंग मरोड़ लूंम तरुवर रै, लूंम लता लहरायी।—लो.गी.

रू०भे०—छिता, छिती।

छितनायक, छितपती–सं०पु०—नृप, राजा। उ०—१ छाडा घर तीडौ छितनायक। सवळां घायक प्रजा सहायक।—रा.रू.

उ०—२ किरण ऊगती भती सरीर वत परस कळा, छितपती दूसरां तणौ छोगौ। वखत ऋमत छाती वणायौ विधाता, जस रती भीम जोधांण जोगौ।

—राठौड़ महाराजा भीमसिंह (जोधपुर) री गीत

छितरणौ, छितरवौ—देखो 'छितराणौ' (रू.भे.)

छितर-बितर–वि०—देखो 'तितर-बितर' (रू.भे.)

छितराणौ, छितरावौ–क्रि०अ०स०—१ छोटे कणों या खंडों में बिखर कर इधर-उधर फैलना। बिना क्रम के इधर-उधर बिखरना। २ खंडों या कणों को गिरा कर इधर-उधर फैलाना। वस्तुओं को बिना क्रम से इधर-उधर बिखराना. ३ सटी हुई वस्तुओं को अलग-अलग करना। दूर-दूर करना।

छितराणहार हारौ (हारी), छितराणियौ—वि०।

छितराड़णौ, छितराड़वौ, छितरावणौ, छितराववौ—रू०भे०।

छितरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छितराईजणौ, छितराईजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

छितरायोड़ौ–भू०का०कृ०—छितराया हुआ, फैला हुआ, फैलाया हुआ, बिखराया हुआ। (स्त्री० छितरायोड़ी)

छितरूह—देखो 'छितिरूह' (रू.भे.)

छिता—देखो 'छित' (रू.भे.) उ०—उडै तुरंग तें रजो समग्ग धावती अटै। छकै छकांन छावती छिता बिछावती छटै।—ऊ.का.

छितिकंत–सं०पु० [सं० क्षितिकांत] राजा, नृप।

छितिरुह–सं०पु० [सं० क्षिति रुह] वृक्ष, पेड़ (डि.को.)

छिती–वि०—१ श्वेत. २ कृष्ण* (डि.को.)

३ देखो 'छित' (रू.भे.)

छितीस–सं०पु० [सं० क्षितीश] राजा, नृप (डि.को.)

छित्रसोता–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

छिदणौ छिदवौ–क्रि०अ० [सं० छिद्र] १ छेद युक्त होना, विधना. २ घायल होना, क्षतपूर्ण होना।

छिदणहार, हारौ (हारी), छिदणियौ—वि०।

छिदवाड़णौ, छिदवाड़वौ, छिदवाणौ, छिदवावौ, छिदवावणौ, छिदवाववौ, छिदाड़णौ, छिदाड़वौ, छिदाणौ, छिदावौ, छिदावणौ, छिदाववौ—प्रे०रू०।

छिदिओड़ौ, छिदियोड़ौ, छिदचोड़ौ—भू०का०कृ०।

छिदीजणौ, छिदीजवौ—भाव वा०।

छेदणौ, छेदवौ—क्रि०स०।

छिंदर–सं०पु० [सं० छिद्र] देखो 'छिद्र' (रू.भे.) उ०— ओगण सहकर एकठा, विदर वणाया वेह। ज्यां मझ कांदा छोत जिम, छिदरां री नह छेह।—बां.दा.

छिदराळौ–वि०पु० (स्त्री० छिदराळी) १ पाखंडी, ढोंगी. २ दोषी, अवगुणी. ३ सूराख वाला, छेद वाला।

छिदाणौ, छिदावौ–क्रि०स० ('छिदणौ' क्रि० का प्रे०रू०) छेदने का कार्य दूसरे से कराना।

छिदाणहार, हारौ (हारी), छिदाणियौ—वि०।

छिदाड़णौ, छिदाड़वौ, छिदावणौ, छिदाववौ—रू०भे०।

छिदायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छिदाईजणौ, छिदाईजवौ—कर्म वा०।

छिदणौ—अक० रू०।

छिदायोड़ौ–भू०का०कृ०—छेदने का काम कराया हुआ, भेदाया हुआ। (स्त्री० छिदायोड़ी)

छिदावणौ, छिदाववौ—देखो 'छिदाणौ' (रू.भे.)

छिदियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छिदा हुआ, भिदा हुआ, विधा हुआ. २ घाव लगा हुआ। (स्त्री० छिदियोड़ी)

छिद्र–सं०पु० [सं०] १ छेद, सूराख. २ दोष, अवगुण. ३ पाखंड, आडम्बर. ४ त्रुटि, गलती।

छिद्रघंटिका–सं०स्त्री० [सं० क्षुद्र घंटिका] करधनी, घंटिका, क्षुद्रघंटिका (अ.मा.)

छिद्रदरसी–वि० [सं० छिद्रदर्शिन्] दूसरों के अवगुण या दोष देखन वाला, दोषदर्शी।

छिद्रावळी–सं०स्त्री०—घंटिका, करधनी, क्षुद्रघंटिका (अ.मा.)

छिद्री–सं०पु०—एक प्रकार का वाण (अ.मा.)

छिन—देखो 'क्षण' (रू.भे.) उ०—छिन छिन वाट हेरता छाया, होय कळळ घोड़ा हींसाया, अणचिरया वैरी अणभाया, ऊठौ पीव पांहुणा आया।—वरजू बाई

छिनक–वि०—थोड़ा, कम, अल्प।

छिनकी, छिनकीक–स्त्री०वि०—१ तुच्छ, थोड़ी, कम २ क्षणिक।

उ०—करती कुंज विहार बनां री शोभा निरखी, करता छिनको जेज बंधना बादल बरखी।—मेघ.

रू०भे०—छिनविचोक, छिनकियो, छिनकोक, छिनको।

छिनगारो-वि०पु० (स्त्री० छिनगारी) १ शौकीन, छैलछबीला, रसिक।

उ०—१ भी छिनगारो म्हारो गोरड़ी छळ कर लियो तैं बुलाय, सोदागर मरदां रा नखरा।—लो.गी.

उ०—२ नगारा बाई तोड़्या बड़ रा पांन, देवरियो छिनगारो तोड़ी नाटली।—लो.गी.

२ शृंगारयुक्त, रूपवान।

छिनणो, छिनबो-क्रि०अ०—हरण होना, छीन लिया जाना।

छिनणहार, हारो (हारी), छिनणियो—वि०।

छिनवाड़णो, छिनवाड़बो, छिनवाणो, छिनवाबो, छिनवावणो, छिनवावबो, छिनाड़णो, छिनाड़बो, छिनाणो, छिनाबो, छिनावणो, छिनावबो—प्रे०रू०।

छिनिओड़ो, छिनियोड़ो, छिन्योड़ो—भू०का०कृ०।

छिनीजणो, छिनीजबो—भाव वा०।

छीनणो, छीनबो—सक०रू०

छिनदा-सं०स्त्री० [सं० क्षणदा] रात्रि, निशा, रात।

उ०—दिन छिनदा अहिमति उर आंनत, प्रथम जुद्ध की रीति पिछानत।—ला.रा.

छिनबो—देखो 'छिनुंओ' (रू.भे.)

छिनाणो, छिनाबो-क्रि०स० ('छिनणो' क्रि० का प्रे०रू०) छीनने का काम दूसरे से कराना, छिनवाना।

छिनाणहार, हारो (हारी), छिनाणियो—वि०।

छिनाड़णो, छिनाड़बो, छिनावणो, छिनावबो—रू०भे०।

छिनायोड़ो—भू०का०कृ०।

छिनाईजणो, छिनाईजबो—कर्म वा०।

छिनणो—अक०रू०।

छिनाळ-वि०स्त्री०—कुलटा, कुलक्षणी, व्यभिचारिणी, पर-पुरुष-गामिनी। उ०—प्रिसण ज्यौं मुख वांको कीआं थकां कनाअण मिळी आंजर सूं छिनाळ मुख वांको करि रही।—रा.सा.सं.

छिनि—देखो 'छिण' (रू.भे.) उ०—पलक-पलक मोहि जुग से बीतें, छिनि छिनि बिरह जरावै हो।—मीरां

छिनुंओ, छिनुंवो-सं०पु०—९६वां वर्ष।

रू०भे०—छिनबो।

छिनूं-वि० [सं० षण्णवतिः, प्रा० छण्णउइ] नव्वे से छः अधिक, नव्वे और छः का योग, छियानवे।

सं०पु०—छियानवे की संख्या।

छिनूंमों-वि०—९६वां।

छिनू—देखो 'छिनुं' (रू.भे.)

छिनेक-क्रि०वि०—क्षण भर। उ०—मेहां री म्हारै लग रही चाव, छिनेक चालो परवा भांण।—लो.गी.

छिन्न-वि० [सं०] १ काटा हुआ. २ निश्चित, निर्धारित. ३ खंडित। (जैन)

छिन्नगय-वि० [सं० छिन्न ग्रन्थ] स्नेहरहित (जैन)

सं०पु०—साधु, त्यागी (जैन)

छिन्नछेयणइय-सं०पु० [सं० छिन्नछेनयिक] प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा रहित मानने वाला मत, नय विशेष (जैन)

छिन्नद्धांणंतर-वि० [सं० छिन्नाध्वान्तर] जहां गाँव नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता, मार्ग विशेष (जैन)

छिन्नभिन्न-वि० [सं०] १ खंडित, टूटा-फूटा, जीर्णशीर्ण, नष्टभ्रष्ट।

२ तितर-बितर, अस्त-व्यस्त।

छिन्नरुह-वि० [सं०] काट कर बोने पर पैदा होने वाली वनस्पति (जैन)

छिन्नसोय-वि० [सं० छिन्न शोक] जिसने शोक का छेदन कर दिया हो। (जैन)

छिन्नाळ-सं०पु०—१ हलकी जाति का घोड़ा या बैल (जैन)

२ देखो 'छिनाळ' (रू.भे.)

छिन्नू—देखो 'छनूं' (रू.भे.)

छिपकली-सं०स्त्री०—गोह या गोधा जाति का एक बित्ते के लगभग लंबा जंतु जो पेट जमीन से सटा कर पंजों के बल चलता है। वह प्रायः मकान की दीवारों पर दिखाई देता है।

पर्या०—गरोळी, छावक, छिपकली, पल्ली, बिसमर, बिसमरी, मुसली।

छिपणो छिपबो-क्रि०अ०—१ ऐसी स्थिति में होना जहां से दिखाई न पड़े। किसी की ओट में होना, छिपना। उ०—कै भागा अजमेर नूं, रिम दळ राह विराह। कै जिदिया 'किरतेस' रै कै पुर घर घर मांह।—रा.रू.

२ अदृश्य होना, दिखाई न देना। उ०—छता हुआ किमि रहिसी छिपिया, घट मांही उजवाळ घणो। कोमळ पग कांनां मां कुंडळ, तोवह दरसण तुझ तणो।—पीरदांन लाळस

३ जो प्रकट न हो, गुप्त। उ०—पण वो पातसा अवरंगजेब जिण सूं छिपै नहीं किण ही रै मन रो फरेब।

—प्रतापसींघ म्होकमसींघ री वात

छिपणहार, हारो (हारी), छिपणियो—वि०।

छिपवाड़णो, छिपवाड़बो, छिपवाणो, छिपवाबो, छिपवावणो, छिपवावबो—प्रे०रू०।

छिपाड़णो, छिपाड़बो, छिपाणो, छिपाबो, छिपावणो, छिपावबो—क्रि०स०।

छिपिओड़ो, छिपियोड़ो, छिप्योड़ो—भू०का०कृ०।

छिपीजणो, छिपीजबो—क्रि०भाव वा०।

छिपलो-सं०पु०—मुंह छिपाने या गुप्त रहने का भाव।

मुहा०—छिपलो खाणो—कार्य से मुंह छिपाना, छिप कर रहना।

छिपा-सं०स्त्री० [सं० क्षपा] १ रात्रि, निशा। उ०—छिपा तणै वळि आत्रम छूटो, तारो जांण गयण सूं टूटो।—रा.रू.

२ तम्बू, खेमा ।

वि०—घना, सघन । उ०—छिपा कंदळी में मुनीराण छायौ । उठै सोवनी म्रिग मारीच आयौ ।—सू.प्र.

छिपाकर–सं०पु०[सं० क्षपाकर] चन्द्रमा (नां.मा.)

छिपाड़णौ, छिपाड़बौ—देखो 'छिपाणौ' (रू.भे.)

उ०—आगळि पित मात रमंती अंगणि, कांम विरांम छिपाड़ण काज ।—वेलि.

छिपाड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—छिपाया हुआ (स्त्री० छिपाड़ियोड़ी)

छिपाणौ, छिपाबौ–क्रि०स०—१ छिपाना, किसी की ओट में करना. २ अदृश्य करना. ३ प्रकट न करना, गुप्त रखना ।

छिपाणहार, हारौ (हारी), छिपाणियौ—वि० ।

छिपाड़णौ, छिपाड़बौ, छिपावणौ, छिपावबौ—रू०भे० ।

छिपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

छिपाईजणौ, छिपाईजबौ—कर्म वा० ।

छिपणौ, छिपबौ—अक० रू० ।

छिपायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छिपाया हुआ. २ अदृश्य किया हुआ. ३ गुप्त रखा हुआ । (स्त्री० छिपायोड़ी)

छिपाव–सं०पु०—१ छिपाने या गुप्त रखने का भाव । किसी से कुछ प्रकट न करने का भाव, दुराव. ३ भेद, रहस्य, गुप्तता ।

छिपावणौ, छिपावबौ—देखो 'छिपाणौ' (रू.भे.) ।

छिपावणहार, हारौ (हारी), छिपावणियौ—वि० ।

छिपाविओड़ौ, छिपावियोड़ौ, छिपाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छिपावीजणौ, छिपावीजबौ—कर्म वा० ।

छिपावियोड़ौ—देखो 'छिपायोड़ौ' । (स्त्री० छिपावियोड़ी)

छिपासत्र, छिपासत्रु–सं०पु० [सं० क्षपा शत्रु] सूर्य, दिनकर ।

उ०—थिरा आवड़ा नांम विख्यात थायौ । छिपासत्रु सो तेमड़े छत्र छायौ ।—मे.म.

छिपियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छिपा हुआ. २ अदृश्य. ३ अप्रकट, गुप्त । (स्त्री० छिपियोड़ी)

छिब—देखो 'छवि' (रू.भे.) उ०—१ तन घणस्यांम तराजं तड़िता, छिब भांत पीत पीतंबर ।—र.ज.प्र.

उ०—२ पीलू पीयुस सने ऊजळी छिब उणियारै, जांणै वर्ण अंगूर झळक हरियाळी सारै ।—दसदेव

छिबछिबौ–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

छिबणौ—देखो 'छबणौ' (रू.भे.)

छिबणौ, छिबबौ—१ देखो 'छवणौ, छवबौ' (रू.भे.) ।

उ०—गयणाग सीस छिबते गरूर, सभ फते आवियौ वियौ सूर ।
—वि.सं.

२ शोभा देना, कांति देना ।

छिबणहार, हारौ (हारी), छिबणियौ—वि० ।

छिबिओड़ौ, छिबियोड़ौ, छिब्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छिबदार–वि०—छवियुक्त, शोभा देने वाला, सुंदरता बढ़ाने वाला, कांतियुक्त ।

छिबवंत–वि०—सुन्दर, कान्तियुक्त । उ०—छिबवंत उदंत दिगंत छये, भल संत महंत अनंत भये ।—ऊ.का.

छिबि, छिबी—१ देखो 'छवि' (रू.भे.) उ०—गंदाल सहर गढ़ कोट बाजार पौळि पगार बाग बावड़ी वगीचा कूआ सरवरां री वड़ां पींपळां री छिबि सहर री पाखती विराजिनै रही छै ।—रा.सा.सं.

२ [अ० तस्वीह] जपमाला, माला ।

उ०—महाराज बिच रहमांण, करि सौंस छिबी कुरांण । तदि घरे दिल परतीत, इम बोलियौ 'अगजीत' ।—सू.प्र.

वि०—तेज, तीक्ष्ण । उ०—ताहरां नाडी रै बीच जाइ नै वेलिया कहीयौ इण सगळां मांडा रै छिबि कटारी थै मारौ ।—चौबोली

छिम–सं०स्त्री०—१ आंख के अन्दर अकस्मात हलकी चोट लगने से आंख में होने वाला दर्द या विकार । २ देखो 'क्षमा' (रू.भे.)

छिमता–सं०स्त्री० [सं० क्षमता] १ सहनशक्ति, सहिष्णुता. २ सामर्थ्य, क्षमता ।

छिमा—देखो 'क्षमा' (रू.भे.) उ०—१ दांन की विधांन छिमां ध्यांन मैं छायौ, मति रांम विसरि जाहु नांम कांन मैं कह्यौ ।—ऊ.का.

उ०—२ तदि न्रप पग वंदि मुनि तणा, क्रोवज छिमा कराय । साथ दिया लछमण सहित, रछ्या कंजि रघुराय ।—सू.प्र.

छियंतर–वि० [सं० षट्सप्तति:, प्रा० छासत्तरि] सत्तर और छ: का योग ।

सं०पु०—छियत्तर की संख्या ।

छियंतरमौं–वि०—७६ वां ।

छियंतरेक–वि०—छिहत्तर के लगभग ।

छियंतरौ–सं०पु०—७६ वां वर्ष ।

छियां—देखो 'छाया' (रू.भे.)

छियाळीस—देखो 'छियाळीस' (रू.भे.)

छियासियौ—देखो 'छियासियौ' (रू.भे.)

छियासी—देखो 'छियासी' (रू.भे.)

छियासीक—देखो 'छियासीक' (रू.भे.)

छियासीमौं—देखो 'छियासीमौं' (रू.भे.)

छिरंगौ–सं०पु०—१ किसी वस्तु का ऊपरी या शिरे का भाग. १ शिखर या चोटी का ऊपरी छोर. ३ घास विशेष की बाल ।

छिरमिर—देखो 'झिरमिर' (रू.भे.) उ०—सरदी री रात, छिरमिर-छिरमिर छांटयां पड़ै ।—वरसगांठ

छिररौ—१ देखो 'छररौ' (रू.भे.) २ गाय या भैंस आदि का पतला गोवर ।

छिरेंटी–सं०स्त्री०—एक प्रकार की लता, पाताल गरुड़ । इसके पत्तों से पानी जम जाता है । वैद्यक में यह मधुर, वीर्यवर्द्धक तथा पित्तदाह और विषनाशक मानी जाती है ।

छिरेवौ–सं०पु०—बीस वर्ष की आयु में हाथी के प्रथम बार टपकने वाला मद ।

छिळक, छिलक—सं०स्त्री०—हलका क्रोध, साधारण गुस्सा, आपे से बाहर होने का भाव।

छिळकणो, छिळकबो—देखो 'छळकणो' (रू.भे.)

छिळकणहार, हारो (हारी), छिळकणियो—वि०।

छिळकावणो, छिळकाड़णो, छिळकाड़बो, छिळकाणो, छिळकाबो, छिळकावबो—प्रे०रू०।

छिळकियोड़ो, छिळकियोड़ो, छिळक्योड़ो—भू०का०कृ०।

छिळकीजणो, छिळकीजबो—भाव वा०।

छिळकाणो, छिळकाबो—देखो 'छळकाणो' (रू.भे.)

छिळकाणहार, हारो (हारी), छिळकाणियो—वि०।

छिळकायोड़ो—भू०का०कृ०।

छिळकाईजणो, छिळकाईजबो—कर्म वा०।

छिळकणो—अक० रू०।

छिळकाड़णो, छिळकाड़बो, छिळकावणो, छिळकावबो—रू०भे०।

छिळकायोड़ो—देखो 'छळकायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० छिळकायोड़ी)

छिळकारो-सं०पु०—१ सूर्यास्त होने के पूर्व का समय. २ हलका प्रकाश।

छिळकावणो, छिळकावबो—देखो 'छळकाणो' (रू.भे.)

छिळको-सं०पु०—१ किसी फल, कंद या अन्य किसी वस्तु की ऊपरी छिल्ली जो छीलने, तोड़ने आदि से सहज ही अलग हो जाता है। फलों की त्वचा या ऊपरी आवरण।

वि०वि०—'छाल' और 'छिलका' में अंतर होता है। छाल पेड़ों के तने, शाखायें और टहनियों के ऊपरी आवरण को कहते हैं और छिलका, फल या इसी प्रकार की वस्तु का ऊपरी आवरण होता है।

क्रि०प्र०—उतारणो, छोलणो. २ हलका प्रकाश।

छिलणो, छिलबो-क्रि०अ०—१ छिलकना, उमड़ना। उ०—छूटी आसारां कासारां छिलती, पड़ती परनाळां पहुवी पिलपिलती।
—ऊ.का.

२ मर्यादा वाहर होना, अपना छेह देना। उ०—१ पूरो सुख हमरोटपुर, लोक न जांणै डंड। छोळां जळ लांवो छिलै, वड़ लागा ब्रहमंड।
—बां.दा.

उ०—२ पदम हिलै क छिलै दध पाजा, राजाहूंत सांमुहो राजा।
—सू.प्र.

मुहा०—नाकां छिलणो—मर्यादा के बाहर होना, सीमा वाहर जाना, चरम सीमा पर पहुंचना।

३ इस प्रकार कटना कि ऊपरी आवरण पृथक हो जाय, छिलना. ४ रगड़ आदि से चमड़ी का कुछ भाग कट कर अलग होना. ५ गले के अन्दर खरखराहट अथवा खुजली सी होना. ६ पूर्ण भर जाना। उ०—फीटो मूंडो फाड़ नाड़ कर लेवै नीची, छिली रहै जळ छाक मिळी आंख्यां अधमीची।—ऊ.का.

७ विस्तार पाना, फैलना, छाना। उ०—धुळ धूंम छिले घण भाळ विभीषण, राघव हूंत उतारियो जी। दसकंठ करै सद होम हुवां हद, मंद मरै नह मारियो जी।—र.रू.

छिलणहार, हारो (हारी), छिलणियो—वि०।

छिलवाड़णो, छिलवाड़बो, छिलवाणो, छिलवाबो, छिलवावणो, छिलवावबो, छिलाड़णो, छिलाड़बो, छिलाणो, छिलाबो, छिलावणो, छिलावबो—प्रे०रू०।

छिलिग्रोड़ो, छिलियोड़ो, छिल्योड़ो—भू०का०कृ०।

छिलीजणो, छिलीजबो—भाव वा०।

छिलर—देखो 'छीलर' (रू.भे.)

छिलरियो—देखो 'छीलर' (अल्पा. रू.भे.)

छिलियोड़ो-भू०का०कृ०—१ छिलका हुआ, उमड़ा हुआ. २ मर्यादा बाहर हुआ हुआ, अपना छेह दिया हुआ. ३ इस प्रकार कटा हुआ कि ऊपरी आवरण अलग हो गया हो. ४ रगड़ आदि से छिला हुआ. ५ (गले के अन्दर) खरखराहट वना हुआ. ६ पूर्ण भरा गया हुआ. ७ विस्तार पाया हुआ, फैला हुआ। (स्त्री० छिलियोड़ी)

छिलिहिंडा-सं०स्त्री०—मैदानों में नदी के कछारों पर होने वाली एक छोटी बेल। इसमें बहुत छोटे-छोटे फल गुच्छों में लगते हैं जो पकने पर काले हो जाते हैं। औषधियों में यह प्रयुक्त होती है।

छिलोड़ी-सं०स्त्री०—पैर के तलवे में होने वाला फफोला (शेखावाटी)

छिल्लणो, छिल्लबो—देखो 'छिलणो' (रू.भे.) उ०—फौहारूं की पंकति जल चादरूं का उफांण। जळ चादरूं की धरहर मानूं छिल्लै महिरांण।—सू.प्र.

छिल्लरु—देखो 'छीलर' (रू.भे.) उ०—किहां सायर किहां छिल्लरु, किहां केसरि किहां साल। किहां कायर किहां वर सुहड़, किहां वण किहां सुर साल।—विद्याविलास पवाडउ

छिल्लियोड़ो—देखो 'छिलियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० छिल्लियोड़ी)

छिल्लो-सं०पु०—बकरा।

छिव—देखो 'छिव' (रू.भे.) उ०—इम सात सहू भड़ ओपवियै, देखे छिव टाळोय काळ दियै।—गो.रू.

छिवणो—देखो 'छिवणो' (रू.भे.) उ०—आवियो 'करण' असवांन छिवतो, अफर दिल्ली दीवांण मझ डांण देतो।—द.दा.

छिवारो-सं०पु०—छुआरा, खारक।

छिहंतर—देखो 'छियंतर' (रू.भे.) उ०—कहण सुणण हय चढ़ क्रमण, साहंस धरण समझ्झ। 'पता' छिहंतर वरस पण, हेकण न को हरज्ज।—जैतदांन वारहठ

सं०पु०—७६ की संख्या।

छिहंतरमों-वि०—७६वां।

छिहंतरे'क-वि०—७६ के लगभग।

छिहंतरो-सं०पु०—७६ का वर्ष।

छींक-सं०स्त्री० [सं० छिक्का] नाक की झिल्ली में चुनचुनाहट होने के कारण नाक और मुंह से वेग के साथ निकलने वाली वायु का झोंका या स्फोट या इससे उत्पन्न होने वाली ध्वनि। हिंदुओं में किसी काम के आरंभ में छींक का होना अशुभ माना जाता है।

क्रि०प्र०—आणी, आवणी, करणी, खाणी।

छींकणौ, छींकबौ-क्रि०अ०—नाक और मुंह से वेग के साथ वायु निकलना जिससे ध्वनि होती है।

छींकल, छींकलौ-सं०पु० (स्त्री० छींकली) हरिण, मृग। उ०—खोखा खावै ऊंट उवाणां गूंजै गाळां, खोखा छींकल खाय छेकता जंगळ छाळां।—दसदेव

वि० (स्त्री० छींकली) छींक करने वाला।

छींकाखाई-सं०स्त्री०—वह जड़ी जिसे सूंघने से छींक आती हो।

छींकी-सं०स्त्री०—१ शीत काल में मस्ती में आये हुए ऊंट के मुंह पर बांधी जाने वाली कटोरे के आकार की एक प्रकार की जाली जो प्रायः लोहे के पतले तार या रस्सियों की बनाई जाती है जिससे वह मस्ती में किसी को काट न सके. २ देखो 'छींकौ' (अल्पा., रू.भे.)

छींकीजणौ, छींकीजबौ-भाव वा०—१ छींका जाना. २ ऊंट का एक रोग या दोष विशेष से ग्रसित हुआ जाना जिसमें उसके गोशे ऊपर चढ़ जाते हैं और वह कमजोर हो जाता है।

छींकौ-सं०पु० [सं० शिक्यम्] १ रस्सियां, तीलियां या तारों का बना हुआ जालीदार गोल या चौकोर पात्र जो छत आदि में लटकाया जाता है। इसमें प्रायः खाने-पीने की वस्तुयें रखी जाती हैं।

उ०—दूध दही की बयारी फोड़ी, माटौ फोड्यौ गह छींकौ।
—मीरां

मुहा०—छींकौ टूटणौ—अनायास कोई लाभ होना।

२ बैलों के मुंह में पहनाया जाने वाला रस्सी का बुना हुआ जाल जिससे वे चलते समय खड़ी फसल में या खलिहान में खाने के लिये इधर-उधर मुंह न मार सकें। जाला, मुसका. ३ रस्सियों का बना झूलने वाला पुल, झूला। उ०—परभात रा जलाल ऊठ छींके सूं उतर कर डेरै आयौ।—जलाल बूबना री बात

५ बांस की पतली फटियों से बुन कर बनाया हुआ जालीदार टोकरा।

छींछ-सं०स्त्री०—तेज धारा। उ०—१ घणां घड़ां थै ऊंची छींछ उछळै छै।—वेलि.

उ०—२ जठै रत छींछ गजां सिर जाय। लगी किर पाहड़ ऊपर लाय।—सू.प्र.

छींट-सं०स्त्री० [सं० क्षिप्त, प्रा० छित्त] १ जल अथवा किसी द्रव पदार्थ की बूंद, जल-कण. २ किसी द्रव पदार्थ या जल की बूंद का पड़ा दाग या चिन्ह. ३ विभिन्न रंगों से बेल-बूंटे व डिजाइन आदि छाप कर बनाया हुआ कपड़ा या कागज. ४ टुकड़ा, भाग, खण्ड।

उ०—१ इतरै तौ आंण भेळिया सो लोग सारौ छींट छींट हुइ गयौ।—डाढ़ाळा सूर री बात उ०—२ नैण पटक दूं ताळ में छींट-छींट हुय जाय। मैं तनै नैणां कद कह्यौ, मन पहली मिळ जाय।—र.रा.

मुहा०—१ छींट-छींट करणौ—अलग-अलग करना, तितर-बितर होना. २ छींट-छींट होणौ—खंड-खंड होना, छिन्न-भिन्न होना।

छींटणौ, छींटबौ-क्रि०अ०स०—१ (गाय भैंस आदि पशुओं को विरेचन देने पर) पतला गोबर करना. २ दस्त लगना, पतले मल का पाखाना आना. ३ द्रव कणों को इधर-उधर गिराना, फैलाना।

छींटौ—देखो 'छांटौ' (रू.भे.) उ०—पार्वती री हठ देख कैळासनाथ आप उणरै छींटा दीन्हा सो दोनूं जी ऊठिया।—जलाल बूबना री बात

मुहा०—१ छींटा डाळणा—व्यंग करना, चुभती बात कहना.

२ छींटा नांकणौ—आक्षेप करना, व्यंग में कहना।

३ गाय, भैंस आदि द्वारा किया गया पतला गोबर।

४ पतला मल या पाखाना।

छींण—देखो 'चींण' (रू.भे.)

छींतरी—१ देखो 'छीतरी' (क्षेत्रीय)

सं०स्त्री०—टूटी-फूटी डलिया।

कहा०—छाया तौ छींतरी की ही आछी—छाया तो टूटी-फूटी डलिया की भी अच्छी लगती है (छाया की तारीफ)।

छींपा, छींपौ-१ देखो 'छीपा' (रू.भे.)

छींपौ—सं०पु०—१ कपड़ों की रंगाई या छपाई आदि का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति. २ देखो 'छीपौ' (रू.भे.)

छींभड़ौ-सं०पु०—१ किसी गाय के बछड़े या भैंस के बच्चे के नाक में डाला जाने वाला धातु या लकड़ी का अर्द्धचंद्राकार के रूप में बना उपकरण जिसके कारण वह अपनी माता का स्तनपान नहीं कर सकता. २ देखो 'चींभड़ौ' (रू.भे.)

छींया, छींयाड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा., रू.भे.)

छींयाळीस—देखो 'छियाळीस' (रू.भे.)

छींयाळीसौ—देखो 'छियाळीसौ' (रू.भे.)

छींयाळौ—देखो 'छियाळौ' (रू.भे.)

छी-अव्य० [सं० छी:] १ तिरस्कार या घृणासूचक शब्द। उ०—छळ सूं बाजी हारचौ, छी छी छैला छेहड़ली।—ऊ.का.

२ धोबियों द्वारा घाट पर कपड़े धोते समय किया जाने वाला शब्द।

मुहा०—छी छी करणौ—घृणा या अरुचि प्रकट करना।

सं०स्त्री० [रा०] १ बच्चे का पाखाना, टट्टी. ३ कटि-मेखला. ४ जीव. ५ मद. ६ सार. ७ कांति. ८ छछूंदरी (एका०)।

क्रि०अ०—राजस्थानी के 'छै' का भूतकाल 'छा' का स्त्री० 'थी'।

उ०—जंगळ में चरै छी सो अण्याई भोटी आई।—शि.वं.

छीकण-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

छीकणी-सं०स्त्री० [सं० छिक्किका] एक प्रकार का क्षुप जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है, नकछिकनी, छिकनी (उ.र.)

छीकिया-सं०स्त्री०—ढोलियों की एक शाखा विशेष (मा.म.)

छीछड़ौ—देखो 'छिछड़ौ' (रू.भे.)

छीछालेदर-सं०स्त्री०—नाश, दुर्गति, दुर्दशा।
 क्रि०प्र०—करणी, होणी।

छीछी-वि०—गंदी, नापाक, अपवित्र।
 अव्य०—मवेशियों को पानी पिलाने के लिये उच्चरित किया जाने वाला शब्द।
 सं०स्त्री०—पाखाना, मल।

छीज-सं०स्त्री०—१ कमी, हानि, घाटा. २ चिढ़ने का भाव, कुढ़न।

छीजण—देखो 'छीजत' (रू.भे.)

छीजणौ, छीजबौ-क्रि०अ० [सं० क्षीप्-हिंसायाम्] १ क्षीण होना, कम होना, घटना, ह्रास होना। उ०—१ जे कज हे किव रांम जपीजै, जांग करंजुळ आयुस छीजै।—र.ज.प्र.
 उ०—२ पांणी में पाखांण भीजै पण छीजै नहीं, मूरख आगै ग्यांन रीझै पण बूझै नहीं।—अज्ञात
 २ डाह करना, कुढ़ना, दुखी होना। उ०—रंग राग बाग अंगराग सूं न रीजै, पातिसाह महमदसाह चिंता में छीजै।—रा.रू.
 ३ भयभीत होना, डरना। उ०—१ चरणंके भड़ चिहुर छीजि कातर छगणंके।—वं.भा.
 उ०—२ छक लख अधिक कार्चा मन छीजै, गज सूरां रीझां गरज। बीजा 'जसा' अखै वारंगना, आलीजा मांनी अरज।
 —जोरावरसिंह गहलोत री गीत
 ४ चिंतित होना, मन ही मन में घुलना. ५ चूर्ण होना।
 उ०—गिर छीजै खुरताळ पहवि थळ सिखर पलट्टि।—रा.रू.
 छीजणहार, हारौ (हारी), छीजणियौ—वि०।
 छीजवाड़णौ, छीजवाड़बौ, छीजवाणौ, छीजवाबौ, छीजवावणौ, छीजवावबौ—प्रे०रू०।
 छीजाड़णौ छीजाड़बौ, छीजाणौ, छीजाबौ, छीजावणौ, छीजावबौ —क्रि०स०।
 छीजिओड़ौ, छीजियोड़ौ, छीज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
 छीजीजणौ, छीजीजबौ—भाव वा०।

छीजत-सं०स्त्री० [सं० क्षीप] १ कमी होने का भाव. २ कमी, ह्रास. ३ कुढ़न, डाह. ४ चिंता, घुटन।
 रू०भे०—छीजण।

छीजाणौ, छीजाबौ-क्रि०स०—१ क्षीण करना, ह्रास करना. २ घटाना. ३ कुढ़ाना, डाह कराना. ४ चिंता करवाना. ५ भयभीत करना, डराना. ६ चूर्ण कराना।
 छीजाणहार, हारौ (हारी), छीजाणियौ—वि०।
 छीजाड़णौ, छीजाड़बौ, छीजावणौ, छीजावबौ—रू०भे०।
 छीजायोड़ौ भू०का०कृ०।
 छीजाईजणौ, छीजाईजबौ—कर्म वा०।
 छीजणौ, छीजाबौ—अक० रू०।

छीजायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ क्षीण कराया हुआ, ह्रास कराया हुआ. २ कुढ़ाया हुआ. ३ चिंता करवाया हुआ. ४ भयभीत किया हुआ. ५ चूर्ण करा हुआ। (स्त्री० छीजायोड़ी)

छीजावणौ, छीजावबौ—देखो 'छीजाणौ' (रू.भे.)
 छीजावणहार, हारौ (हारी), छीजावणियौ—वि०।
 छीजाविओड़ौ, छीजावियोड़ौ, छीजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
 छीजावीजणौ, छीजावीजबौ—कर्म वा०।
 छीजाड़णौ, छीजाड़बौ—रू०भे०।

छीजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ क्षीण हुआ हुआ, घटा हुआ, ह्रास हुआ हुआ. २ कुढ़ा हुआ, डाह किया हुआ. ३ चिंता किया हुआ. ४ डरा हुआ. ५ चूर्ण हुआ हुआ। (स्त्री० छीजियोड़ी)

छीजौ-वि०—१ डाह करने वाला. २ क्रोध करने वाला।

छीटकौ—देखो 'छांटौ' (अल्पा. रू.भे.)

छीडरियौ-सं०पु०—छोटा व छिछला ताल, छोटी तलैया।

छीण-वि० [सं० क्षीण] १ क्षीण, कृश, दुर्बल।
 देखो 'चीण' (रू.भे.)

छीणतन-वि० [सं० क्षीण+तनु] दुबले-पतले शरीर वाला, कृश गात।

छीणी-सं०स्त्री०—किसी धातु की मोटी चद्दर या मोटे टुकड़े को काटने या पत्थर को घड़ने का फौलाद का बना औजार। उ०—वैरी रो मोटी पा'ड़ आंछी पूंजी रूपी छीणी सूं टूटै तौ कीकर टूटै।
 —वरस गांठ
 रू०भे०—छिणी।

छीणै-क्रि०वि०—टूटने से, कटने से। उ०—कुमकुमै मंजण करि धोत वसत धरि, चिहुरे जळ लागौ चुवण। छीणै जांणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूल गुण।—वेलि.

छीणोटगी-सं०स्त्री०—छोटी जूं।

छीणौ-वि० [सं० छिन्न] १ क्षीण, दुर्बल, कृश गात।
 २ टूटा हुआ। उ०—हूं बळिहारी साथियां, भाजे नह गइयाह। छीणा मोतीहार जिम, पासै ही पड़ियाह।—हा.झा.
 सं०पु०—१ पत्थर आदि को तोड़ने का फौलाद का बना बड़ा औजार. २ रंग विशेष का घोड़ा।

छीतर-सं०स्त्री०—पथरीली भूमि, पहाड़ी भूमि। उ०—उहै थांम अपार जळं अंबारत जागा। तकै मंडोवर तणा लोक जा छीतर लागा।
 —अज्ञात
 वि० [सं० छित्वर] कपटी, धूर्त (अ मा.)

छीतरी-सं०स्त्री०—१ वह मट्ठा जिसमें अधिक पानी मिला दिया हो, पतली छाछ (मि० झिण) २ छोटे-छोटे लहरदार श्वेत बादल खंड जो वर्षा-सूचक माने जाते हैं।
 वि०—छिछली, बिखरी हुई, छितराई हुई।

छीत-स्वामी-सं०पु०—अष्टछापभक्तों में से एक जो वल्लभाचार्य के शिष्य थे।

छीदगत-सं०स्त्री०—कपट, चाल, धूर्तता।

छीदरियौ, छीदरौ—वि० (स्त्री० छीदरी) १ ऐसा तरल पदार्थ जो गाढ़ा न हो, जिसमें अधिक पानी मिला हो। उ०—छीदरी छासि पांणी न खमई, पातळी छाया केतलउ आलम गमई।—सभाश्रिंगार
२ पतला, छिछला. ३ ऐसा पदार्थ जो बनावट में गाढ़ा न हो, जिसमें बहुत छेद हों, जिसके तंतु दूर दूर हों. ४ वह जो कुछ कुछ स्थान के फासले पर हो, जो घना न हो, विरल।
रू०भे०—छीदौ।
अल्पा०—छीदरियौ।

छीदौ—देखो 'छीदरौ' (रू.भे.) (स्त्री० छीदी)
उ०—लोहयां री धकरोळ बादरां चलै छै, जको जांणजै कै पहाड़ां उपरांथी गेरू रा खाळ ऊतरै छै, छीदा छीदा, आछा आछा कमणेतां रा हाथ सूं तीर सरणकै छै।—प्रतापसींघ म्होकमसींघ री वात
मुहा०—छीदा पड़णौ—फुसला जाना, भुलावे में आना, गर्व करना, इतराना।

छीद्र—देखो 'छिद्र' (रू.भे.)

छीन—देखो 'क्षीण' (रू.भे.) उ०—कटि सुं छीन केहरी प्रवीन पायका नहीं, विनीत वांनि वीनसी नवीन नायका नहीं।—ऊ.का.

छीनणौ, छीनबौ—क्रि०स०—१ किसी दूसरे की वस्तु पर बलात् अधिकार कर लेना, छीन लेना, अनुचित रूप से कब्जा करना. २ काटना, खंड-खंड करना।
छीनणहार, हारौ (हारी), छीननियौ—वि०।
छीनवाड़णौ, छीनवाड़बौ, छीनवाणौ, छीनवाबौ, छीनवावणौ, छीनवावबौ, छीनाड़णौ, छीनाड़बौ, छीनाणौ, छीनाबौ, छीनावणौ, छीनावबौ—प्रे०रू०।
छीनिग्रोड़ौ, छीनियोड़ौ, छीन्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छीनीजणौ, छीनीजबौ—कर्म वा०।

छीनवौ-सं०पु०—छियानवे का वर्ष। उ०—अठारै छीनवै बरस असुरां अगै, पहव ऊत.रियां विप्र पातां। अवरकी घाता सुविचार टाळी असी, जाय नह वात, जुग चार जातां।—तिलोकजी बारहठ

छीनाखसोटी, छीनाझपटी—सं०स्त्री०—जबरदस्ती या बलात् किसी से कोई वस्तु ले लेने की क्रिया।

छीनाणौ, छीनाबौ—क्रि०स० ('छीनणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छीनने का कार्य किसी अन्य से कराना. २ खंड खंड कराना, कटाना।
छीनाणहार, हारौ (हारी), छीनाणियौ—वि०।
छीनायोड़ौ—भू०का०कृ०।
छीनाईजणौ, छीनाईजबौ—कर्म वा०।

छीनायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ छीनाया हुआ। (स्त्री० छीनायोड़ी) २ कटाया हुआ।

छीनावणौ, छीनावबौ—देखो 'छीनाणौ' (रू.भे.)
छीनावणहार, हारौ (हारी), छीनावणियौ—वि०।
छीनाविग्रोड़ौ, छीनावियोड़ौ, छीनाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छीनावीजणौ, छीनावीजबौ—कर्म वा०।

छीनावियोड़ौ—देखो 'छीनायोड़ौ' (रू.भे.)

छीनियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ जबरदस्ती या झाड़-झपट कर किसी वस्तु को अधिकार में किया हुआ. २ काटा हुआ, खंड खंड किया हुआ। (स्त्री० छीनियोड़ी)

छीनौ—वि०—खिन्न, दुखी। उ०—मालपुरा सरखा गढ़ मारे, रांणै पर हुंस दीध रिण। भोग संजोग नहीं रस भीनो, 'औरंग' छीनौ रोग इण।—महारांणा राजसिंह बड़ा री गीत

छीप—सं०स्त्री० [सं० क्षिप्र] शीघ्रता, जल्दी। उ०—लागो अग कमंध रै, फोड़ै ढाल खतंग। छीप करै दळ दुज्जणां, जीप खड़ौ रण जंग।—रा.रू.
वि०—तेज, जल्द।

छीपा, छीपी—सं०स्त्री०—१ कपड़ों को छापने व रंगने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष. २ कपड़ा सीने का व्यवसाय करने वाली एक जाति. ३ गुजराती नटों की एक शाखा।

छीपौ—सं०पु०—'छीपा' जाति का व्यक्ति।

छीव—सं०स्त्री०—छवि, शोभा छटा।

छीवरी—सं०स्त्री०—१ वृक्षों के खोखले हिस्से में रहने वाला उल्लू की जाति का एक पक्षी विशेष जिसके बोलने पर लोग शकुनों पर विचार करते हैं।
रू०भे०—चीवरी।
२ अधिक पानी मिला हुआ मट्ठा, पतली छाछ. ३ वर्षासूचक माने जाने वाले छोटे-छोटे लहरदार श्वेत बादल।
मि०—छीतरी।

छीय—सं०पु० [सं० क्षुत] छींक (जैन)
रू०भे०—छुग्र।

छीया—सं०स्त्री० [सं० क्षुता] छींक (जैन)

छीर—सं०पु० [सं० क्षीर] दूध। उ०—सरीर संस्कार सार नीर छीर सें सनै, विध्वंस वैरि वंस कौ प्रसंसनीय तें बनै।—ऊ.का.
यौ०—छीर-समुद्र, छीर-सागर।

छीरज—सं०पु० [सं० क्षीरज] १ दधि, दही. २ चंद्रमा. ३ कमल. ४ शंख (डि.को.)

छीरजा—सं०स्त्री० [सं० क्षीरजा] लक्ष्मी (डि.को.)

छीरप—सं०पु० [सं० क्षीरप] बच्चा, शिशु (डि.को.)

छीरल—सं०पु० [सं० क्षीरल] एक प्रकार का सर्प विशेष (जैन)

छीरविराळी—सं०स्त्री० [सं० क्षीरविराली] एक प्रकार की वनस्पति विशेष।

छीरावरालिया—सं०स्त्री० [सं० क्षीरविदारिक] एक प्रकार का कन्द विशेष (जैन)

छीर-समुद्र, छीर-सागर—सं०पु०यौ० [सं० क्षीर-समुद्र, क्षीर-सागर] क्षीर सागर। उ०—अम्रित के समुद्र तैसें लहरू के प्रवाह छाजै।-

जिनरा मन हेरी में छार-समुद्र का सुमर भाजे ।—सू.प्र.

छीरोदतनया-संस्त्री० सं० [सं० क्षीर+उदधि:+जा] लक्ष्मी (डि.को.)

छीलणो, छीलबो-क्रि०स०—१ किसी वस्तु का छिलका या छाल उतारना, वस्तु पर लगी छाल या आवरण को काट कर अलग करना। छीलना. २ ऊपर लगी हुई या जमी हुई वस्तु को खुरच कर अलग करना. ३ काटना, नष्ट-भ्रष्ट करना।

छीलणहार, हारो (हारी), छीलणियो—वि०।

छीलवाड़णो, छीलवाड़बो, छीलवाणो, छीलवाबो, छीलवावणो, छीलवावबो, छिलाड़णो, छीलाड़बो. छीलाणो, छीलाबो, छीलावणो, छीलावबो—प्रे०रू०।

छीलिग्रोड़ो, छीलियोड़ो, छीलयोड़ो—भू०का०कृ०।

छीलीजणो, छीलीजबो—कर्म वा०।

छिलणो, छिलबो—अक०रू०।

छीलर-संपु० [सं० छिल्लर] १ छिछले पानी का गड्ढा, तलैया।
उ०—१ ज्यांनै जाय मकव कोई जाचरा, छीलर जेम देखावै छेह।
नेह प्रभा निवरा नह धारै, नारां हूंत वधारे नेह।
—अज्ञात

उ०—२ गरवा हुवो हरि गुरा गावो, छीलर जेम न दाखो छेह।
आज क काल करंतां 'ओपा', विहड़ा गया सु ताळी देह॥
—ओपो आढ़ो

२ छोटा तालाव। उ०—१ स्री रांम चरण चित राचियो, जन दूजो है नहिं आवै दाय। जो मन सरोवर में रम्यो, जद हंसो हे छीलर किम जाय।—गी.रां.

उ०—२ हंसा आ पारवखड़ी, छीलर जळ न पियंत। कै पावासर पीवणा, कै तिरसाहि मरंत।—र.रा.

उ०—३ हंसा सरवर ना तजै, जे जळ थोड़ा होय। छीलर छीलर भटकतां, भलां न कहसी कोय।—अज्ञात ३ छिछला पानी

रू०भे०—चीलर, छिलर, छिल्लर।

अल्पा०—छिलरियो, छीलरियो।

छीलरियउ—देखो 'छीलर' (रू.भे.) उ०—करहा पांणी खंच पिउ, आसा घरणा सहेसि। छीलरियउ ढूकिसि नहीं, भरिया केथि लहेसी।
—ढो.मा.

छीलरियो—देखो 'छीलर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डेडरिया तज दै छीलरियै री आस।—अज्ञात

छीलियोड़ो-भू०का०कृ०—छीला हुआ, छिलका या छाल आदि पृथक किया हुआ, काटा हुआ। (स्त्री० छीलियोड़ी)

छीलो-संपु०—पलाश का वृक्ष, ढाक (क्षेत्रीय)

छीव-वि०—मस्त, उन्मत्त (डि.को.)

छीवोल्लग्र-संपु०—१ निंदार्थक मुख विकार विशेष (जैन)
२ विकूणित मुख (जैन)

छुंच्छैठी-संस्त्री०—रुई धुनते समय होने वाली ध्वनि।

छुं छुई-संस्त्री०—केवांच का पेड़, कपिकच्छु (जैन)

छुंछुमुसय-संपु०—उत्कण्ठा, उत्सुकता (जैन)

छुइ-वि० अधिक, ज्यादा (जैन)

छु-संस्त्री०—१ मशक. २ जुगुप्सा. ३ तृष्णा (एका०)
अव्य०—कुत्ते आदि को शिकार या किसी अन्य प्राणी का पीछा करने के लिये उत्प्रेरित करने का शब्द।

छुअ—देखो 'छीव' (रू.भे.)

छुआछूत-संस्त्री०—अछूत को छूने की क्रिया या भाव। अस्पश्य स्पर्श. २ स्पृश्य अस्पृश्य का विचार। अस्पृश्यता।
रू०भे०—छुवाछूत।

छुआणो, छुआबो—देखो छुवाणो' (रू.भे.)
छुआणहार, हारो (हारी), छुआणियो—वि०।
छुआयोड़ो—भू०का०कृ०।
छुआईजणो, छुआईजबो—कर्म वा०।

छुआयोड़ो—देखो 'छुवायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० छुआयोड़ी)

छुइमुई-संस्त्री०—एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां स्पर्श मात्र से बंद हो जाती हैं और सींकें लटक जाती हैं। लज्जावंती।

छुई-संस्त्री०—बक, पंक्ति, बलाका (जैन)

छुक्कारण-संपु० [सं० धिक्कारण] धिक्कारना, निंदा (जैन)

छुच्छ-वि० [सं० तुच्छ] क्षुद्र, तुच्छ (जैन)

छुच्छम-वि० [सं० सूक्ष्म] सूक्ष्म, थोड़ा, अल्प, न्यून।
उ०—१ नहीं तो नार पुरख सनेह, नहीं तो दीरघ छुच्छम नेह।
—ह.र.

उ०—२ अरु दिल्ली में पातसाह हुमायुं थो सू भाज नीसरियो नै हरायत गयो छुच्छम साथ सूं।—द.दा.
रू०भे०—छुछम।

छुच्छुकार, छुच्छुक्कार-संपु० [सं० छुच्छुकार, छुच्छु+कृ] 'छु छु' शब्द कर के शिकार या किसी प्राणी के पीछे कुत्ते को लगाने का भाव।
रू.भे.—छु! (जैन)

छुछम—देखो 'छुच्छम' (रू.भे.)

छुटकारो-संपु०—१ किसी बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति, रिहाई। उ०—जूंवां सिर में जुळै जुळै डाढ़ी में जूंवां। जूंवां कपड़ां जुळै मिळै छुटकारो मूंवां।—ऊ.का.
२ किसी बाधा, आपत्ति, चिंता आदि से रक्षा. ३ किसी कार्य-भार से मुक्त होने का भाव।

छुटणो, छुटबो—देखो 'छूटणो' (रू.भे.) उ०—घम्म घम्मंतइ घूघरइ, पग सोने री पाळ। मारू चाली मंदिरे, जांणि छुटो छंछाळ।
—ढो.मा.

छुटभई, छुटभाई-संपु०—१ छोटा भाई. २ पद या मान-मर्यादा में वंश का छोटा व्यक्ति (राजपूत)

छुटाणो, छुटाबो-क्रि०स० ('छूटणो' क्रिया का प्रे०रू०) छुड़ाना, मुक्त कराना।

छुटाणहार, हारौ (हारी), छुटाणियौ—वि०।
छुटायोड़ौ—भू०का०कृ०।
छुटाईजणौ, छुटाईजबौ—कर्म वा०।

छुटायोड़ौ-भू०का०कृ०—छुड़ाया हुआ (स्त्री० छुटायोड़ी)

छुटियौ-सं०पु०—१ लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला राजस्थानी लोक गीत. २ गेंद खेलने का बल्ला. ३ हाथ में रखने की मोटी छड़ी।

छुटौ—देखो 'छुट्टौ' (रू.भे.) (स्त्री० छुटी)। उ०—बोली बीणा हंस गत, पग वाजंती पाळ। रायजादी घर अंगणइ, छुटे पटे छंछाळ।—ढो.मा.

छुट्ट-वि० [सं० छुटित] १ बन्धनमुक्त, छुटा हुआ. २ छोटा, लघु। (जैन)

छुट्टण-सं०पु० [सं० छोटन] छुटकारा, मुक्ति (जैन)

छुट्टणौ, छुट्टबौ—देखो 'छूटणौ' (रू.भे.) उ०—मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समंद। वळ छुट्टा भड़ कायरां, टेख प्रगट्टा दुंद।—रा.रू.

छुट्ट-वि०—फेंका हुआ (जैन)

छुट्टियोड़ौ—देखो 'छुटियोड़ौ' (स्त्री० छुट्टियोड़ी)

छुट्टी-सं०स्त्री०—१ छुटकारा, निस्तार, मुक्ति. २ अवकाश, फुरसत. ३ किसी कार्यालय के बंद रहने का दिन।
क्रि०प्र०—करणी, राखणी, होणी।
४ अनुमति (जाने की)।
क्रि०प्र०—देणी, मांगणी, होणी।

छुट्टौ-वि० (स्त्री० छुट्टी) १ बंधन आदि से मुक्त, उन्मुक्त, खुला. २ अकेला, एकाकी. ३ बिना किसी माल-असबाब के।
रू०भे०—छूटौ, छूट्टौ।
मि०—छड़ौ।

छुडणौ, छुडबौ—छूटना, मुक्त होना। उ०—दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकुडिणि। नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रौढ़ा करसणि पंगुरिणि।—वेलि.
छुडणहार, हारौ (हारी), छुडणियौ वि०।
छुडवाड़णौ, छुडवाड़बौ, छुडवाणौ, छुडवावौ, छुडवावणौ, छुडवाववौ, छुडाड़णौ, छुडाड़बौ, छुडाणौ, छुडावौ, छुडावणौ, छुडाववौ—प्रे०रू०।
छुडिओड़ौ, छुडियोड़ौ, छुडचोड़ौ—भू०का०कृ०।
छुडीजणौ, छुडीजबौ—भाव वा०।
छोडणौ, छोडबौ—सक०रू०।

छुडाई-सं०स्त्री०—छोड़ने या छुड़ाने की क्रिया या इसके लिये लिया जाने वाला धन।

छुडाणौ, छुडावौ-क्रि०स० ('छुडणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ बंधी, फंसी, उलझी वस्तु को बंधन से मुक्त कराना। किसी पकड़ से अलग कराना। उ०—बंब सुणार्या वींद नूं, पैसंतौ घर पाय। चंचळ सांम्है चालियौ, अंचळ वंध छुडाय।—वी.स.
२ किसी के अधिकार से किसी वस्तु, धन, जायदाद आदि को अलग कराना. ३ किसी वस्तु आदि पर लगा हुआ दाग या चिन्ह मिटाना. ४ काम या धंधे से पृथक कराना, दूर हटाना. ५ किसी प्रवृत्ति का त्याग कराना।
छुडाणहार, हारौ (हारी), छुडाणियौ—वि०।
छुडाड़णौ, छुडाड़बौ, छुडावणौ, छुडाववौ—रू०भे०।
छुडायोड़ौ—कर्म वा०।
छुडणौ, छुडबौ—अक०रू०।

छुडायोड़ौ-भू०का०कृ०—मुक्त किया हुआ, अलग किया हुआ, छुड़ाया हुआ। (स्त्री० छुडायोड़ी)

छुडावणौ, छुडाववौ—देखो 'छुडाणौ' (रू.भे.) उ०—घरा छुडावण धांधलां, मन कीन मरंदे। हय वड़ दोय हजार सूं, जिंदराव हलंदे।
—पा.प्र.

छुडावणहार, हारौ (हारी), छुडावणियौ—वि०।
छुडाविओड़ौ, छुडावियोड़ौ, छुडाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छुडावीजणौ, छुडावीजबौ—कर्म वा०।
छुडणौ—अक०रू०।

छुडावियोड़ौ—देखो 'छुडायोड़ौ' (स्त्री० छुडावियोड़ी)

छुडियवर-सं०पु० [सं० छुटिकवर] आभरण विशेष (जैन)

छुड्डु-वि०—शीघ्र, तुरन्त (जैन)

छुड्ड-वि० [सं० क्षुद्र] क्षुद्र, तुच्छ, लघु (जैन)

छुड्डिया-सं०स्त्री० [सं० क्षुद्रिका] आभरण विशेष (जैन)

छुणगौ—देखो 'छिणगौ' (रू.भे.)

छुद्र-वि० [सं० क्षुद्र] १ ओछा, नीच, दुष्ट. २ निष्ठुर. ३ उद्दण्ड. ४ गरीब. ५ कंजूस।

छुद्रघंट, छुद्रघंटा, छुद्रघंटिका-सं०स्त्री० [सं० क्षुद्रघंटिका या क्षुद्राघंटिका] करधनी, मेखला। उ०—१ छजं चित्रं कटीस छीण, छुद्रघंट छाजयं। सकौ ग्रहं संसिघ रासि, एक साथि आजयं।—सू.प्र.
उ०—२ छुद्रघंटा बिछियां का छूटै छणछणाव। ज्यों हंसे बच्चां की बांणी का वणाव।—रा.सा.सं.
उ०—३ पुनरपि पधरावी कन्है प्रांणपति, सहित लाज भय प्रीति सा। मुगत केस त्रूटि मुगतावळि कास छूटी छुद्रघंटिका। —वेलि.

छुद्रा-सं० स्त्री० दाख, किशमिश (अ. मा.)

छुध, छुधा—देखो 'क्षुधा' (रू.भे.) उ०—भोजन लाया थाळ भर, कर पकवांन नवीन। तऊ छुधा भाजै नहीं, परस्यां विना प्रवीण।
—प्रवीण सागर

छुनणौ, छुनबौ—देखो 'छूनणौ'। उ०—१ मांस छुन-छुन पासै कीजै छै।—रा.सा.सं. उ०—२ मैदे रा मांडा कीजै छै। ते मैं घणी नांन्हौ छुनियौ मांस मंदी आंच कढाई में तळै छै।—रा.सा.सं.

छुन्न-वि० [सं० क्षुण्ण] १ चूर-चूर किया हुआ, चूर्णित (जैन)
२ अभ्यास किया हुआ, अभ्यस्त (जैन) ३ नाश किया हुआ, विनाशित (जैन)
सं०पु०—नपुंसक (जैन)

छुपणौ, छुपबौ—देखो 'छिपणौ' (रू.भे.) उ०—आवन मोरी गलियन में गिरधारी। मैं तो छुप गई लाज की मारी।—मीरां

छुपणहार, हारौ (हारी), छुपणियौ—वि०।

छुपवाड़णौ, छुपवाड़बौ, छुपवाणौ, छुपवाबौ, छुपवावणौ, छुपवावबौ—प्रे०रू०।

छुपाड़णौ, छुपाड़बौ, छुपाणौ, छुपाबौ, छुपावणौ, छुपावबौ—क्रि०स०।

छुपिग्रोड़ौ, छुपियोड़ौ, छुप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छुपीजणौ, छुपीजबौ—भाव वा०।

छुपाणौ, छुपाबौ—देखो 'छिपाणौ' (रू.भे.)

छुपाणहार, हारौ (हारी), छुपाणियौ—वि०।

छुपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छुपाईजणौ, छुपाईजबौ—कर्म वा०।

छुपणौ, छुपबौ—अक०रू०।

छुपाड़णौ, छुपाड़बौ, छुपावणौ, छुपावबौ—रू०भे०।

छुपायोड़ौ—देखो 'छिपायोड़ौ' (स्त्री० छुपायोड़ी)

छुपावणौ, छुपावबौ—देखो 'छिपाणौ' (रू.भे.)

छुपियोड़ौ—देखो 'छिपियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छुपियोड़ी)

छुबरणौ, छुबरबौ—क्रि०स०—टुकड़े-टुकड़े करना, काटना, छीलना।

उ०—मीठां मधुरां गळिग्रां चोपड़ां काचां, पाकां छोल्यां छुबरचां वघारियां अणवघारियां।—जिमणवार-परिधांन विधि

छुम—सं०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—मोर मुकट पीतांबर सोहे, छुमछुम बाजत मुरली।—मीरां

छुयायार—वि० [सं० क्षुताचार] जिसके आचार में कमी हो (जैन)

छुरंगौ—देखो 'छिरणौ' (रू.भे.)

छुर—सं०पु०—१ नापित का अस्त्र, छुरा (जैन) २ पशु का नख (जैन) ३ वृक्ष विशेष. ४ गोखरू (जैन) ५ बांण, शर, तीर (जैन) ६ तृण विशेष (जैन) ७ देखो 'छुरौ' (मह, रू.भे.)

छुरघर छुरघरय—स०पु० [सं० क्षुरगृह, क्षुरगृहक] नापित का छुरा वगैरा रखने की थैली (जैन)

छुरमड्डि—सं०पु०—नापित, हज्जाम (जैन)

छुरि, छुरिग्रा, छुरिका, छुरिगा, छुरिया, छुरी, छुरीका—सं०स्त्री० [सं० क्षुरिका, क्षुरी] काटने व चीरने-फाड़ने का एक छोटा लोहे का धार युक्त हथियार जो एक बेंट में लगा रहता है। यह नित्य प्रति व्यवहार में आने वाली वस्तुओं को छीलने, काटने आदि के काम आती है (जैन) उ०—१ पोतो पड़ियो रहै अगाड़ी मूंढ़ै आगै। खळ वटियां री खरड़ छुरी सूं छोलण लागै।—ऊ.का.

उ०—२ अर वडाहरा प्रस्थांन रा समय रै पूरब ही आपरा अंग-अंग में छुरीका रा छत लगाय समस्त स्वादु द्रव्य मिळाय।—वं.भा.

मुहा०—१ छुरी चलाणी—छुरी से लड़ाई करना, किसी पर छुरी का वार करना. २ छुरी फेरणी—किसी का अनिष्ट करना, वध करना. ३ छुरी रै धार देणी—किसी का अनिष्ट करने की तैयारी करना।

छुरौ—सं०पु० [सं० क्षुरः, छुरः] १ बेंट में लगा लम्बा लोहे का एक धारदार हथियार जो प्रायः किसी पर आक्रमण करने के काम आता है। उ०—१ वूडावत वैठोह छाती, पर अहियां छुरौ। भल स्वत जग जेठोह, जायल राव जगाड़ियो।—पा.प्र. उ०—२ जकड़ि छुरा खंजरा, कसे वह साज बंदूकां। ढळक अलीबध ढाल, अरण मुख वणिक अचूकां।—सू.प्र.

२ (नाई का) उस्तरा।

रू०भे०—छूरौ।

अल्पा०—छुरी।

मह०—छुर।

छुळकणौ, छुळकबौ—क्रि०अ०—थोड़ा-थोड़ा कर मूतना।

छुळकियोड़ौ—भू०का०कृ०—थोड़ा-थोड़ा कर पेशाब किया हुआ। (स्त्री० छुळकियोड़ी)

छुळकी—स०स्त्री०—थोड़ा-थोड़ा कर पेशाब करने की क्रिया।

छुळयो-छांटचौ—वि०यौ०—कूट-पीट कर या फटकार कर साफ किया हुआ।

छुलणौ, छुलबौ—देखो 'छिलणौ' (रू.भे.)

छुलणहार, हारौ (हारी), छुलणियौ—वि०।

छुलवाड़णौ, छुलवाड़बौ, छुलवाणौ, छुलवाबौ, छुलवावणौ, छुलवावबौ, छुलाड़णौ, छुलाड़बौ, छुलाणौ, छुलाबौ, छुलावणौ, छुलावबौ—प्रे०रू०।

छुलिग्रोड़ौ, छुलियोड़ौ, छुल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छुलीजणौ, छुलीजबौ—भाव वा०।

छोलणौ, छोलबौ—सक०रू०।

छुलाणौ, छुलाबौ—क्रि०स० ('छुलणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छीलने का कार्य किसी अन्य से कराना।

छुलायोड़ौ—भू०का०कृ०—छिलाया हुआ। (स्त्री० छुलायोड़ी)

छुलावणौ, छुलावबौ—देखो 'छुलाणौ'।

छुलियोड़ौ—देखो 'छिलियोड़ौ'। (स्त्री० छुलियोड़ी)

छुवाछूत—देखो 'छुआछूत' (रू.भ.)

छुवाणौ, छुवाबौ—क्रि०स०—स्पर्श कराना, छुआना।

छुवाणहार, हारौ (हारी), छुवाणियौ—वि०।

छुवायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छुवावीजणौ, छुवावीजबौ—कर्म वा०।

छुआणौ, छुआबौ—रू०भे०।

छुवायोड़ौ—भू०का०कृ०—स्पर्श कराया हुआ, छुआया हुआ। (स्त्री० छुवायोड़ी)

रू०भे०—छुआयोड़ौ।

छुहांरौ—देखो 'छुहारौ' (रू.भे.) उ०—राधा, बाईजी थांनै जिंदवा रा भात, गिरी ए छुहांरा बाईजी थांरै मुख भरां।—लो.गी.

छुहा-सं०स्त्री० [सं० सुधा] १ अमृत, पीयूष (जैन) २ चूना (जैन) ३ देखो 'क्षुधा' (रू.भे., जैन)

छुहाइअ, छुहाइय, छुहाउल-वि० [सं० क्षुधित, क्षुधाकुल] बुभुक्षित, भूखा (जैन)

छुहाकम्मंत-सं०पु० [सं० क्षुधाकर्मन्ति] ब्राह्मणों के रसोई करने का स्थान। क्षुधा-परिकर्म (जैन)

छुहापरिसह-सं०पु० [सं० क्षुधापरिषह] क्षुधा सहन करने की शक्ति। (जैन)

छुहारौ-सं०पु०—एक प्रकार के खजूर वृक्ष का फल जो खाने में अधिक मीठा होता है। खारिक, पिंड खजूर। उ०—फळ कंदळी स्रीय स्वादे ग्रफारा। छये स्रेय बादाम पिस्ता छुहारा।—रा.रू.

छुहाळु-वि० [सं० क्षुधालु] भूखा, बुभुक्षित (जैन)

छुहावेयणिज्ज-सं०पु० [सं० क्षुधावेदनीय] ऐसा कर्म जिससे भूख लगे। (जैन)

छुहिअ, छुहिय-वि० [सं० क्षुधित] बुभुक्षित, भूखा (जैन)

छूं-क्रि०अ०—राजस्थानी के वर्तमान-कालिक क्रिया 'छै' का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप 'हूं'। उ०—जै कदाचित हूं हाथ पकड़ियौ तौ हूं तौ अेकलौ छूं ग्रर ऐ घणा छै।—पलक दरियाव री वात

छूंकण-सं०पु०—छौंका, तड़का, बघार।

छूंकणौ, छूंकबौ—देखो 'छमकणौ' (रू.भे.) उ०—भावजड़ी म्हारी चाटू रोड़ें, मायड़ मारै फूंक। मांड कचोळी जीजी बैठी, घाल खीचड़ी छूंक।—लो.गी.

छूंकियोड़ौ—देखो 'छमकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० छूंकियोड़ी)

छूंछ-सं०स्त्री०—हृदय की उमंग, हृदय के भाव या आवेश।
उ०—प्रसणां करवा पाधरा, घट री काढ़ण छूंछ। क्रोधीला 'खुसियाळ' री, मिळै भुंहारां मूंछ।—अज्ञात
देखो 'चूंच' (रू.भे.)

छूंत, छूंतक, छूंतकौ, छूंतरौ-सं०पु०—छिलका।
उ०—१ गुठली गिटणौ जोग जांणौ छूंतक चूसणा चापड़ा। किसत खावै जठै जंमेरी बोर ग्रमर है बापड़ा।—दसदेव
उ०—२ लड़णा नै लगि जावै ललिक, तौ पड़णा न देवै पूंतरा। नित नारि गैल रोवै निलज, छैल मती पी छूंतरा।—ऊ.का.
रू०भे०—छूत।
ग्रल्पा०—छूंतक, छूंतकौ, छूंतरौ, छूतक, छूतकौ, छूतरौ।

छूरियौ-सं०पु०—फूल ग्रादि को एकत्रित कर किया गया गोल ढेर या समूह (शेखावाटी)

छूरौ-सं०पु०—पलाश या ढाक का वृक्ष (ग्रलवर)

छू-सं०पु०(ग्रनु०)—१ थाट. २ शब्द. ३ गज. ४ खुदा, ईश्वर. ५ मंत्र पढ़ कर फूंक मारने की क्रिया.
ग्रव्य—६ कुत्ते को भगाने या किसी पर झपटने के लिये प्रेरित करते समय उच्चरित किया जाने वाला शब्द।

छूछौ-वि० [सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ] रिक्त, खाली।

छूट-सं०स्त्री०—१ छूटने का भाव, छुटकारा, मुक्ति।
क्रि०प्र०—दैणी, पाणी, मिळणी।
२ ग्रवकाश, फुरसत. ३ दंपत्ति का परस्पर संबंध त्याग, तलाक, विच्छेद.
यौ०—छूटपल्लौ, छूटापौ।
४ स्वतंत्रता, स्वच्छंदता, ग्राजादी. ५ वह घन या रुपया ग्रथवा ग्रनाज जो महाजन या जमींदार द्वारा स्वेच्छा से ग्रासामी के हक में छोड़ दिया जाता हो।
क्रि०प्र०—करणी, दैणी।
६ खुला या विस्तृत स्थान. ७ वह भूमि जो किसी कारणवश नहीं जोती गई हो. ८ वह भूमि जिसकी उर्वरा शक्ति बढ़ाने हेतु कुछ वर्षों के लिये छोड़ दी गई हो, परती. ९ किसी कार्य या उसके किसी ग्रंग को भूल से न करने का भाव।
क्रि०प्र०—रै'णी।

छूटक-वि०—१ फेंका हुग्रा। उ०—छेछी कर छूटक बाद छड़ाळ, भलौ थरकंत पटाभर भाळ।—मे.म.
सं०पु०—२ गद्य रचना के वे पद या शब्द जो पिंगल मतानुसार न हो कर स्वतंत्र रूप से सुन्दरता के लिये रखे गये हों (र.ज.प्र.)
३ मुक्तक काव्य।

छूटणौ, छूटबौ-क्रि०ग्र० [सं० त्रुट, छुट] १ किसी वस्तु का ग्रपने बंधन, उलझन, पकड़ व लगाव से दूर होना, लगाव में न रहना, संलग्न न रहना। उ०—पुनरपि पघरावी कन्है प्रांणपति, सहित लाज भय प्रीति सा। मुगतकेस त्रूटी मुगतावळि, कस छूटी छुद्रघंटिका।—वेलि.
मुहा०—१ देह छूटणौ—मृत्यु होना. २ साहस छूटणौ—हिम्मत न रहना।
२ किसी दाग या चिन्ह का दूर होना, मिटना।
३ बंधनमुक्त होना, रिहाई होना, छुटकारा होना। उ०—ग्ररधे-उरध उरध मिळ ग्ररधे, हेकमेक होय जावै। छन में गुरु क्रिपा सूं छूटै, ग्रावागवण उठावै।—ऊ.का.
४ किसी ग्रभ्यास एवं प्रवृत्ति का बंद होना, ज्यूं म्हारी कसरत छूटतां ही म्हारौ डील पड़ गियौ. ५ बचना। उ०—भीमु भीरु इम कीचक कूटइ, तेह ग्रागळि न कोई छूटइ।—विराट परव
६ शेष रहना, बाकी बचना. ७ भूल से किसी कार्य या उसके ग्रंग को न किया जाना। ८ किसी कार्य से पृथक होना, दूर होना—ज्यूं म्हारौ लेख ग्रधूरौ छूट गयौ क्यूंकि परीक्षा रौ समै पूरौ होवण री घंटी बाजगी. ९ प्रस्थान करना, रवाना होना, चल पड़ना। १० किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ग्रपने से दूर पड़ जाना, बिछुड़ना। उ०—ग्राभ फटै घर ऊससै, कटै बगतरां कोर। सिर तूटै धड़ तड़फड़ै, जद छूटै जाळोर।—महाराजा मांनसिंह
११ दूरी तक मार करने वाले ग्रस्त्र का चल पड़ना. १२ किसी

वस्तु या पदार्थ का वेग के साथ निकलना—ज्यूं मोही री धार छूटगी. १३ स्खलित होना। १४ किसी वस्तु आदि में से रस रस कर पानी या ऐसा ही कोई तरल पदार्थ निकलना. १५ भूल या प्रमाद से किसी वस्तु का अपने स्थान पर प्रयुक्त न होना, रखा न जाना, लिया न जाना. १६ रोजी या जीविका बंद होना, जीविका का आधार न रह जाना. १७ प्रसव पीड़ा से मुक्त होना, प्रसव होना। उ०—म्हारै दिन दिण पूरा हुवा छै। दिन १५ तथा २० रांणी छूटी, बेटो जायो।—नैणसी

१८ घोड़े का शरीर छोड़ना, मरना। उ०—तिण नूं सगतसींह जी मार रांणा जी नै हेलो पाड कयो—घोड़ो तीनां पगां है। तद देत जीण उतारतां ही घोडो छूटो। रांणी जी महा विलाप कियो।—वी.स.टी.

छूटणहार, हारो (हारी), छूटणियो—वि०।

छुटवाड़णो, छुटवाड़बो, छुटवाणो, छुटवाबो, छुटवावणो, छुटवाववो, छुटाड़णो, छुटाड़बो, छुटाणो, छुटाबो, छुटावणो, छुटाववो—प्रे०रू०।

छूटिग्रोड़ो, छूटियोड़ो, छूटयोड़ो—भू०का०कृ०।

छूटीजणो, छूटीजवो—भाव वा०।

छोडणो, छोडबो—सक० रू०।

छूटपल्लो, छूटापो—सं०पु०—१ दंपत्ति द्वारा परस्पर सम्बन्ध-विच्छेद, तलाक. २ बंधन-मुक्ति।

छूटियोड़ी-भू०का०कृ०—प्रसव पीड़ा से मुक्त हुई हुई।

छूटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बन्धन, उलझन, पकड़ या लगाव से दूर हुआ हुआ. २ मिटा हुआ, दूर हुआ हुआ (दाग, चिन्ह आदि का) ३ छुटकारा पाया हुआ, रिहा हुआ हुआ. ४ किसी अभ्यास एवं प्रवृत्ति का बंद हुआ हुआ. ५ बचा हुआ. ६ शेष रहा हुआ, बाकी बचा हुआ. ७ भूल से किसी कार्य या उसके अंग को नहीं किया गया हुआ. ८ प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुआ हुआ. ९ किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का अपने से दूर हुआ हुआ, बिछुड़ा हुआ. १० छूटा हुआ, चला हुआ (दूरी से मार करने वाले अस्त्र का) ११ वेग के साथ निकाला हुआ. १२ स्खलित हुआ हुआ. १३ रस-रस कर निकला हुआ (पानी या ऐसा ही कोई तरल पदार्थ) १४ भूल या प्रमाद से किसी वस्तु का अपने स्थान पर प्रयुक्त नहीं हुआ हुआ, रखा नहीं गया हुआ, लिया नहीं गया हुआ. १५ बन्द हुआ हुआ (रोजी या जीविका का) १६ शरीर छोड़ा हुआ, मरा हुआ (घोड़ा) (स्त्री० छूटियोड़ी)

छूटी—देखो 'छुट्टी' (रू.भे.)

छूटो, छूट्टो—देखो 'छुट्टो' (रू.भे.)

छूणो, छूबो—क्रि०अ० [सं० छुप, प्रा०छुत्र] १ एक वस्तु को दूसरी वस्तु के इतने निकट करना कि दोनों के कुछ अंश परस्पर मिल जायें। छूना, स्पर्श होना. २ किसी वस्तु के अंग को अपने किसी अंग से लगाना, सटाना, स्पर्श करना, संसर्ग में लाना, हाथ लगा कर छूना. ३ दान के लिये किसी वस्तु को छूना. ४ प्रतिस्पर्धा में किसी को छूना, बराबर आना. ५ थोड़ा व्यवहार में लाना, बहुत कम काम में लाना. ६ हलके-हलके मारना।

छूणहार, हारो (हारी), छूणियो—वि०।

छूग्रोड़ो—भू०का०कृ०।

छूईजणो, छूईजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

छूत-सं०स्त्री०—१ छूने का भाव, स्पर्श, संसर्ग।

२ अस्पश्य का स्पर्श करने से लगने वाला अशौच. ३ अपवित्र वस्तु को छूने का दोष.

यौ०—छूआछूत, छूतछात।

४ भूतप्रेत आदि का प्रभाव. ५ देखो 'छूंत' (रू.भे.)

छूतको, छूतरो—देखो 'छूंत' (अल्पा. रू.भे.)

छूनणो, छूनबो-क्रि० स०—मांस को पकाने के लिये काट कर छोटे टुकड़ों में करना। उ०—नान्हो छून देगचां में घातजे छै।
—रा.सा.सं.

छूनणहार, हारो (हारी), छूनणियो—वि०।

छूनवाड़णो, छूनवाड़बो, छूनवाणो, छूनवाबो, छूनवावणो छूनवावबो, छूनाड़णो, छूनाड़बो, छूनाणो, छूनाबो, छूनावणो, छूनावबो
—प्रे०रू०।

छूनिग्रोड़ो, छूनियोड़ो, छून्योड़ो—भू०का०कृ०।

छूनीजणो, छूनीजवो—भाव वा०।

छूनो—बढ़िया, श्रेष्ठ। उ०—धकी वेस माता ताता सुभावां सलोचा धुना, पड़ै टल्लां कोट चुनास चेजां पाखांण, धूपधार असो चौड़ै जुना हूत मोह धारै, करग्गां दीवांण छूना ऊवारै केकांण।—महादांन महडू

छूमंतर-सं०पु०—१ एकाएक गुप्त होने या करने का भाव. २ जादू-टोना।

छूयोड़ो-भू०का०कृ०—स्पर्श किया हुआ, छुआ हुआ (स्त्री० छूयोड़ी)।

छूर-सं०स्त्री०—बौछार, छूट। उ०—वरखा छूर गोळियां वाळै, वणियो मेघ जांण वरसाळै।—रा.रू.

छूरो—देखो 'छुरो' (रू.भे.) उ०—अठी रांम रा सुभड़ नै सुभड़ रांवण उठी, लंक रै जोरावर खेत लड़वा। तीर सेलां छूरां झीक तरवारियां, वाजिया विनै ही रंभ वरवा।—र.रू.

छूवणो, छूवबो—देखो 'छूणो' (रू.भे.) उ०—अरज एक ऊचरण, चरण छूवण हूं चाऊं। पाऊं करण पसाव, समर न करण समझाऊं।
—मे.म.

छूवियोड़ो—देखो 'छूयोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० छूवियोड़ी)

छे-सं०स्त्री०—१ ऊपर. २ फांसी. ३ इंद्रियां. ४ वेणी. ५ वसुधा. ६ सियार (एका०)

छें-देखो—छेह (रू.भे.)

अव्य०—गाय, भैंस आदि को पानी पिलाने के लिये उच्चरित किया जाने वाला सांकेतिक शब्द।

छेग्रोवट्ठावण, छेग्रोवट्ठावणिय-सं०पु० [सं० छेदोपस्थान, छेदोपस्थापनीय] बड़ी दीक्षा (जैन), संयम विशेष (जैन)

रू०भे०—छेदोवट्टावरा, छेदोवट्टावणिय ।

छेक-वि०—१ छेदने वाला. २ कसकने वाला, दर्द करने वाला ।

उ०—दोरी लागै दोयणां, छक तारो उर छेक । सैणां मन सोरी रहै, पदवी डोरी पेख ।—जुगतीदांन देथो

३ चतुर ।

सं०पु०—१ छिद्र, सूराख । उ०—सुहिणा तोहि मराविसूं, हियइ दिराऊं छेक । जद सोऊं तद दोई जण, जद जागूं तद हेक ।—ढो.मा.

मह०—छेकड़ ।

अल्पा०—छेकड़लो, छेकड़ो, छेकलो ।

२ छेकानुप्रास नामक शब्दालंकार ।

छेकड़—देखो 'छेक' (मह., रू.भे. २) उ०—तरै दासी ऊंची जाय किंवाड़ी री छेकड़ मांहि मूंढो घालि नै कह्यो, चावड़ीजी कंवरजी नै जगाय उरा मेलो ।—जगदेव पंवार री वात

क्रि०वि०—१ अंत में, आखिर में । उ०—नित-नित थांरी-म्हांरी हिड़क्यां रै हाथ लगांवतै-लगांवतै छेकड़ एक जागा पाढ़ो ढूको ।

२ एक ओर, एक तरफ । —वरसगांठ

वि०—अन्त का, आखिर का ।

छेकड़ती-क्रि०वि०—अन्त में ।

छेकड़लो-वि०पु० (स्त्री० छेकड़ली) अंत का, अंतिम, आखिरी ।

उ०—१ वा ढेंकी छेकड़लीवार निरासा भरी निजर कैई नै देखण सारू पसारी पण ओझाजी री डिच-डिच विर्यै नै वठै ज्यादा पग ठांमण को दिया नी ।—वरसगांठ

उ०—२ (निसासा नाख'र) आयगी ऊंची ? अवकलै तो लदियोड़ै ऊंठ ऊपर छेकड़लो तिणखो ई समझै ।—वरसगांठ

देखो 'छेक' १ (अल्पा., रू.भे.)

छेकड़ो—देखो 'छेक' (अल्पा.) उ०—भींवें मन मांहे जांण्यो वावड़ी मांहे किसूं करै छै । यौं जांण वरंडो रा छेकड़ा मांहे जोवै ।

——जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

छेकणो, छेकबो-क्रि०स०—१ छेद करना, सूराख करना ।

उ०—साम्रव नह छोडूंह, तोडूं हूं जड़ ताह री । मूं खंजर मोडूंह, काळज फीफर छेक कर ।—पा.प्र.

२ काटना, चीरा देना. ३ (लिखने में) किसी शब्द या वाक्य को काटना. ४ शत्रु-दल को चीरते हुए आरपार निकालना ।

उ०—पड़ै विकट घकै चांपा सुदि पुळ गया, भड़ां थट छेक अड़वा सळूभो । तोल खग टेक नह छंडै 'मोहकम' तणो, एकलो ठोर भुज लड़ण ऊभो ।—मोतीरांम आसियो

५ पार करना, आर-पार जाना । उ०—खोखा खावै ऊंट, उवांणै गूंजै गाळां । खोखा छींकल खाय, छेकता जंगळ छाळा ।—दसदेव

६ आगे बढ़ना । उ०—कूदणा कछी छेकै कुरंग । तसा सब तुरंगां हूं तुरंग ।—सू.प्र.

छेकणहार, हारो (हारी), छेकणियो—वि० ।

छेकवाड़णो, छेकवाड़बो, छेकवाणो, छेकवाबो, छेकवावणो, छेकवावबो, छेकाड़णो, छेकाड़बो, छेकाणो, छेकाबो, छेकावणो, छेकावबो—प्रे०रू०

छेकिओड़ो, छेकियोड़ो, छेक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

छेकीजणो, छेकीजबो—कर्म वा० ।

छिकणो, छिकबो—अक० रू० ।

छेकरणो, छेकरबो-क्रि०स०—१ छेद करना. २ चीरना या फाड़ना. ३ दौड़ में आगे बढ़ना ।

छेकरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ चीरा-फाड़ा हुआ. २ छेद किया हुआ. ३ दौड़ में आगे बढ़ा हुआ । (स्त्री० छेकरियोड़ी)

छेकलो—देखो 'छेक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मिन्नी पडूतर दियो—ओ काच भींत में छेकला रै उनमांन व्है । थें उणरै मांकर जोवो तो सांमो साफ तस्वीर दीखै ।—वांणी

कहा०—खावै जकी हांडी में ही छेकलो करै—जिस हांडी में खाता है उसी में छेद करता है अर्थात् उपकार करने वाले का अपकार करता है ।

छेकाछेकी-सं०स्त्री०—छेकने की क्रिया का भाव ।

उ०—नरम ठौर नरम भयो गरम ठौर भयो गरम, सरम न सुहाई सून्य छद्म छेकाछेकी तें । राज नुकसांन थांन प्रांन देन भयो राजी, आंन ते जमाई आछी आह एकाएकी तें ।—ऊ.का.

छेकानुप्रास-सं०पु० [सं०] अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।

छेकापह्नुति-सं०स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें दूसरे के अनुमान का खंडन किया जाय ।

छेकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ छेद किया हुआ. २ काट-छांट किया हुआ। (स्त्री० छेकियोड़ी)

छेकोक्ति-सं०स्त्री०—वह लोकोक्ति जिसके अर्थ की ध्वनि अन्य भी निकले ।

छेको-वि०—शीघ्र, त्वरायुक्त, उतावला ।

छेड़-सं०स्त्री०—१ किसी को छू कर या खोद खाद कर तंग करने की क्रिया. २ व्यंग उपहास आदि के द्वारा किसी को तंग करने या चिढ़ाने की क्रिया, हंसी, ठठोली, दिल्लगी ।

क्रि०प्र०—करणी ।

यौ०—छेड़खांनी, छेड़छाड़ ।

३ झगड़ा, टंटा, विरोध ।

क्रि०प्र०—करणी, लेणी, होणी ।

मुहा०—छेड़ लेणी—झगड़ा मोल लेना, टंटा-फिसाद करना ।

४ किसी वाद्य को बजाने या स्वर निकालने के अभिप्राय से उसे छूने की क्रिया. ५ सामूहिक वृहद भोज. ६ मृत्योपरांत द्वादशे पर किये जाने वाले भोज पर सम्मिलित होने वाले आमंत्रित व्यक्ति ।

रू०भे०—छेड़।

छेड़णी, छेड़बौ–क्रि०स०—१ छू कर या खोद-खाद कर तंग करना, छेड़ना. २ व्यंग या उपहास द्वारा किसी को चिढ़ाना, ठठोली करना. ३ छूना, खोदना-खादना. कोंचना. ४ उत्तेजित करने या चिढ़ाने के लिये किसी के विरुद्ध कोई कार्य या क्रिया करना. ५ कोई बात या कार्य प्रारम्भ करना, शुरू करना. ६ ध्वनि उत्पन्न करने के उद्देश्य से किसी वाद्य यंत्र को छूना, बजाने के लिये बाजे के हाथ लगाना. ७ मजाक या संसर्ग के लिये ऐसी क्रिया करना जिससे मीठी सिहरन या गुदगुदी उत्पन्न हो, कामोद्दीपन करना। उ०—एठै वरस दिन ताईं पुन्य कर कुंवर री वरसी कर पाछै थारै ढोलियै श्राईस, इतरै मनै छेड़ै मती।—चौबोली

८ नश्तर से फोड़ा चीरना. ९ छेद करना, सूराख करना।

छेड़णहार, हारौ (हारी), छेड़णियौ—वि०।

छेड़वाड़णौ, छेड़वाड़बौ, छेड़वाणौ, छेड़वाबौ, छेड़वावणौ, छेड़वावबौ, छेड़ाड़णौ, छेड़ाड़बौ, छेड़ाणौ, छेड़ाबौ, छेड़ावणौ, छेड़ावबौ—प्रे०रू०।

छेड़िश्रोड़ौ, छेड़ियोड़ौ, छेड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

छेड़ीजणौ, छेड़ीजबौ—कर्म वा०।

छिड़णौ, छिड़बौ—अक० रू०।

छेड़लियौ—देखो 'छेड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

छेड़लौ–वि०—आखिरी, अन्तिम, सब से अन्त का। उ०—करणी पड़सी न्याय छेड़लौ, माटी थनै बोलणौ पड़सी।—चेत मांनखा

देखो 'छेड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

छेड़ाछेड़ी–सं०पु०—पति-पत्नी के वस्त्रों के छोर को परस्पर बांधने की क्रिया का भाव, वर के वस्त्र का वधू के आंचल के साथ किया जाने वाला गठबंधन, गठजोड़, गठ-बंधन।

छेड़योड़ौ–भू०का०कृ०—१ छेड़ा हुआ. २ खोद-खाद कर तंग किया हुआ. ३ चिढ़ाया हुआ. ४ आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ. ५ भड़काया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ६ (ध्वनि उत्पन्न करने के उद्देश्य से बाजे आदि को) छुआ हुआ. ७ कामोद्दीपन किया हुआ. ८ चीरा हुआ (नश्तर से फोड़ा आदि) ९ छेद किया हुआ।

(स्त्री० छेड़ियोड़ी)

छेड़ियौ–सं०पु०—१ रहट की माल का अंतिम छोर. २ स्त्रियों द्वारा गले में धारण किया जाने वाला एक आभूषण विशेष. ३ जुलाहों का एक लोहे का ओजार जो लगभग एक गज लम्बा होता है जिसे ताना लगाते समय भूमि में गाड़ देते हैं और उससे ताने की रस्सी बांध दी जाती है, ये संख्या में एक साथ दो लगाये जाते हैं. ४ चरखे में तकुए पर लपेटी जाने वाली कुकड़ी को पीछे खिसकने से रोकने के लिये पीछे लगाया जाने वाला चमड़े का बना छल्ला. ५ देखो 'छेड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

छेड़ै, छेड़ै–क्रि०वि०—१ किनारे पर, छोर पर, एक ओर, एक तरफ, दूर। उ०—अरु आदमी तरवारां बाय मा'राज नूं छेड़ै किया तो हेठै जादूराय मुवौ लाधौ।—द.दा.

२ बाद में, पश्चात। उ०—थो मा नै तौ हीमत बंधावतौ ई हो के एक बरस छेड़ै हूं नौकरी लाग आऊंला पछै थांनै क्यों पापड़ वड़ी सूं माथौ लगावणौ पड़ैला।—वरसगांठ

रू०भे०—छेरै, छेरै।

छेड़ौ–सं०पु०—१ छोर, किनारा. २ हद, सीमा. ३ घूंघट, आंचल (डि.को.) ४ अंत, समाप्ति. ५ भैंस या भैंसे के चमड़े की रस्सी जिससे गाड़ी के पहिये जकड़े जाते हैं। ६ गठजोड़, गठबंधन।

रू०भे०—छेवड़ौ, छेहड़ौ, छेहरौ।

अल्पा०—छेड़लियौ, छेड़लौ, छेड़ियौ।

छेछलापणौ–सं०पु०—छिछलापन, संकीर्णता, क्षुद्रता, ओछापन।

छेजारौ—देखो 'चेजारौ' (रू.भे.)

छेजे-आणौ–क्रि०अ०यौ०—बकरी का ऋतुमति होना।

छेजौ–सं०पु०—जीव-जन्तुओं का खाद्य पदार्थ।

क्रि०प्र०—करणौ, ढूंढणौ।

छेज्ज–वि० [सं० छेद्य] १ छेदने लायक, वेधने योग्य (जैन) २ जो खंडित किया जा सके (जैन)

सं०पु०—छेद, विच्छेद (जैन)।

छेटी–सं०स्त्री० [सं० छिति:] फासला, दूरी, अन्तर। उ०—देवौ नी सुंदर गोरी हंस हंस सीख, साईनां सिधाया छेटी में म्हे पड़चा जी म्हांरी नार।—लो.गी.

क्रि०प्र०—करणी, पड़णी, राखणी, होणी।

मुहा०—जीभ रै नै ताळवै विचै छेटी पड़णी—आतंक या भय के प्रभाव से जबान बंद होना, बोलने में असमर्थ होना।

छेणी—देखो 'छिणी' (रू.भे.)

छेतर–सं०स्त्री०—१ पथरीली भूमि. २ श्मशान भूमि, मरघट।

छेतरण–सं०पु०—छल, कपट (अ.मा., ह.नां.)

छेतरणौ, छेतरबौ–क्रि०स०—१ छलना, धोखा देना, ठगना।

उ०—१ जद जागूं तद एकली, जद सोऊं तद बेल। सोहणा थें मने छेतरी, बीजी तीजी हेल।—ढो.मा.

उ०—२ मृतलोक मांह वगड़ावत बुरी चाल चालै। इयांनै सजा दीजै। ताहरां बीड़ौ फेरियौ। ताहरां माताजी बीड़ौ झालियौ। हूं इयांनै छेतरीस पिण ईयांरौ वैर कुण लेसी।—देवजी वगड़ावत री वात

२ संहार करना, मारना।

३ ढूंढ़ना, तलाश करना।

छेतरणहार, हारौ (हारी), छेतरणियौ—वि०।

छेतरिओड़ौ, छेतरियोड़ौ, छेतरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

छेतरीजणौ, छेतरीजबौ—कर्म वा०।

छेतरियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छला हुआ, ठगा हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ तलाश किया हुआ, ढूंढ़ा हुआ।

(स्त्री० छेतरियोड़ी)

छेतरी–वि०—छली, कपटी। उ०—छतरी हूँ किम छेतरी, एथे आय अड़ंत। बत बळे म्हारी बीकरयां, उर दळ तोर उडंत।
—रेवतसिंह भाटी

छेताळीस–वि०—देखो 'सैंतालीस' (रू.भे.)
सं०पु०—सैंतालीस की संख्या।

छेती– देखो 'छेटी' (रू.भे.) उ०—पण हथणी हाथी सूं डरती नजीक आवै नहीं, हाथ तीन री छेती रही।—द.दा.
क्रि०प्र०—करणी, पड़णी, राखणी, होणी।

छेत्त–सं०पु० [सं० क्षेत्र] १ कृषि-भूमि, खेत (जैन) २ जमीन, भूमि (जैन)
३ आकाश (जैन) ४ गांव, नगर, देश आदि स्थान (जैन)
५ स्त्री, पत्नी (जैन)

छेत्तार–वि० [सं० छेतृ] जो छेदन करता हो, जो काटता हो (जैन)

छेद–सं०पु० [सं० छिद्र] १ किसी वस्तु के फटने या उसमें सुई, कांटा आदि तीक्ष्ण वस्तु के आर-पार चुभने से होने वाला खाली स्थान। किसी वस्तु में वह शून्य या खाली स्थान जिसमें हो कर कोई वस्तु इस पार से उस पार निकल सके। सूराख, छिद्र।
क्रि०प्र०—करणी, पाड़णी, होणी।
२ वह खाली स्थान जो किसी वस्तु या भूमि में कुछ दूर तक खोदने, काटने आदि से पड़ा हो। बिल, विवर. ३ ऐब, दोष, अवगुण।
क्रि०प्र०—ढूंढ़णी, देखणी, मिळणी।
[सं०] ४ छेदन, काटने का काम. ५ नाश, ध्वंश. ६ खंड, टुकड़ा. (जैन) ७ छः जैन आगम ग्रंथ।

छेदक–वि०—छेदने, काटने या नाश करने वाला।

छेदणौ, छेदबौ–क्रि०स० [सं० छिदिर्] १ किसी वस्तु में नुकीली या तेज वस्तु से आर-पार छेद करना। छिद्रयुक्त करना, बेधना. २ क्षत लगाना, नुकीले हथियार से घाव लगाना. ३ संहार करना, मारना। उ०—छेदे ग्राह तुरत छोडवियो, अनंत जुगां जुग भगत उधार।
—ह.नां.
४ काटना। उ०—१ विचै आवतां बंधवां बांह वाळै। रटै रांम वांणां जती छेदि राळै।—सू.प्र. उ०—२ रांमण बांण रांम छेदे रण, राघव वाहै छेदे रण।—रांमरासौ
५ नाश करना, छिन्न करना। उ०—द्रुम सात विभेदण क्रमगत छेदण तैं जस कह भव सिंधुतर, सुत स्त्री कौसल्या तार अहल्या, करुणा निध सो याद कर।—र.ज.प्र.
छेदणहार, हारौ (हारी) छेदणियौ—वि०।
छेदवाड़णौ, छेदवाड़बौ, छेदवाणौ, छेदवाबौ, छेदवावणौ, छेदवावबौ, छेदाड़णौ, छेदाड़बौ, छेदाणौ, छेदाबौ, छेदावणौ, छेदावबौ—प्रे०रू०।
छेदिग्रोड़ौ, छेदियोड़ौ, छेदयोड़ौ—भू०का०कृ०।
छेदीजणौ, छेदीजबौ—कर्म वा०।
छिदणौ, छिदबौ—अक०रू०।

छेदन–सं०पु० [सं०] १ सुइ, कांटा, हथियार आदि को आर-पार चुभाने की क्रिया या भाव. २ नाश, ध्वंश।

छेदनी–सं०स्त्री०—पांचवीं त्वचा का नाम (अमरत)

छेदाणौ, छेदाबौ–क्रि०स० ('छेदणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छेदने का कार्य अन्य से कराना।

छेदायोड़ौ–भू०का०कृ०— छेदने का कार्य अन्य से कराया हुआ।
(स्त्री० छेदायोड़ी)

छेदावणौ, छेदावबौ—देखो 'छेदाणौ' (रू.भे.)

छेदावियोड़ौ—देखो 'छेदायोड़ौ' (रू.भे.)

छेदित–वि०—खण्डित (जैन)

छेदियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छिद्र किया हुआ. २ काटा हुआ।
३ छिन्न किया हुआ. ४ क्षत लगा हुआ, घाव लगा हुआ. ५ संहार किया हुआ, मारा हुआ। (स्त्री० छेदियोड़ी)

छेदोवट्ठावण, छेदोवट्ठावणिय—देखो 'छेग्रोवट्ठावण, छेग्रोवट्ठावणिय'। (रू.भे., जैन)

छेवास—देखो 'चेवास' (रू.भे.)

छेवासी—देखो 'चेवासी' (रू.भे.)

छेम–सं०पु० [सं० क्षेम] क्षेम, सुरक्षा, कुशल-मंगल।
वि०—शुभ, कल्याणकारी। उ०—धिन्न जोधांण ईडर धरा वूहड़ां, छात निकळंक कमधेस बळ छेम। नीरधर साहसां मीर 'तखतेस' नंद, हीरकण साह तौ 'पतौ' नृप हेम।—किसोरदांन बारहठ

छेमकरी–सं०स्त्री० [सं० क्षेमकरी] १ सफेद चील. २ सफेद चिड़िया।

छेय–वि० [सं० छेक] अवसर का जानकार, कुशल, होशियार। (जैन)
सं०पु० [सं० छेद] १ प्रायश्चित्त विशेष। (जैन)
२ विच्छेद। (जैन)

छेयग–वि० [सं० छेदक] १ छेद करने वाला, काटने वाला।—(जैन.)

छेयण–सं०पु० [सं० छेदन] १ विना शस्त्र के काटने की क्रिया। (जैन)
२ कर्म की स्थिति का घात करना। (जैन)
३ विनाश, नुकसान। (जैन) ४ खंड, टुकड़ा। (जैन) ५ कमी, न्यूनता। (जैन) ६ शस्त्र, हथियार। (जैन) ७ निश्चयात्मक वचन। (जैन) ८ सूक्ष्म अवयव। (जैन)

छेयणग, छेयणय–सं०पु० [सं० छेदनक] १ चमड़े को छेदने का औजार। (जैन)

छेयायरिय–सं०पु० [सं० छेकाचार्य] शिल्पाचार्य। (जैन)

छेयारिह–सं०पु० [सं० छेदार्ह] प्रायश्चित्त विशेष। (जैन)

छेरु–सं०पु०—१ काष्ठ का वह टुकड़ा जो गाड़ी के पहियों के मुख्य अवयव 'पाटल' को जोड़ता है। २ एक प्रकार का टोकरा।

छेरविरालिया–सं०स्त्री० [सं० क्षीरविरालिका] वनस्पति विशेष। (जैन)

छेरे—देखो 'छेड़े' (रू.भे.)

छेरौ—१ देखो 'छेड़ौ' (रू.भे.)
२ ऊंट का पतला पाखाना।

छेल—सं०पु० (स्त्री० छेली) बकरा, छाग, अज (जैन)
छेलर—सं०पु०—बिना चरवाहे के जंगल में स्वेच्छा से चरने वाला पशु।
छेलग—सं०पु० (स्त्री० छेलिया, छेली) बकरा, अज, छाग (जैन)
छेलण—वि०—सीमा उल्लंघन करने वाला, मर्यादा छोड़ने वाला।
छेलणौ, छेलबौ—क्रि०अ०—१ मर्यादा बाहर होना, उमड़ कर सीमा उलांघना। उ०—नहं सूतौ वात सुमंत्रा नंदण! छोह अनाहक छेले। वे गिय गोध हिमैं मह आवै, लंगर फौजां ले ले।—र.रू.
क्रि०स०—२ छल करना. ३ परिपूर्ण करना, भरना, पाटना।
उ०—विमारंग आचम राठोड़ वाळा, मही छेलिवा ऊमड़े मेघमाळा।
—रा.रू.

छेलणहार, हारौ (हारी), छेलणियौ—वि०।
छेलवाड़णौ, छेलवाड़बौ, छेलवाणौ, छेलवाबौ, छेलवावणौ, छेलवावबौ, छेलाड़णौ, छेलाड़बौ, छेलाणौ, छेलाबौ, छेलावणौ, छेलावबौ—प्रे०रू०
छेलिग्रोड़ौ, छेलियोड़ौ, छेल्योड़ौ—भू०का०कृ०।
छेलीजणौ, छेलीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

छेलिग्र, छेलिय—स०पु०—१ नाक से आने वाली छींक (जैन)
२ अव्यक्त ध्वनि-विशेष, चीत्कार (जैन)
छेलिया—स०स्त्री०—वकरी, अजा (जैन)
छेलियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हद के बाहर गया हुआ, मर्यादा छोड़ा हुआ। २ छल किया हुआ। ३ परिपूर्ण किया हुआ, भरा हुआ, पाटा हुआ। (स्त्री०—छेलियोड़ी)।
छेळी—सं०स्त्री०—वकरी।
छेलौ, छेल्हौ—वि०पु० (स्त्री० छेली, छेल्ही) अंतिम, आखिरी।
उ०—१ धरणीतळ व्याकुळ छेलौ सिर धुणियौ।
सरणागत वच्छल हेलौ नह सुणियौ॥
लिछमी वर छांनं-कांनूं ले लीनूं।
दीननबंधू हुय दीनन दुख दीनूं॥—ऊ.का.
उ०—२ पाटरा घरां मांहे राव सुरतांण रहै छै नै छेला घरां में जगमाल आय रह्यौ छै।—नैणसी
उ०—३ इतरी उतावळ कांण री है। अमल गाळियोड़ौ है सो छेली वखत रौ लेलौ पछै जुद्ध करसां, जमी अठैइज है, कठैई जावै नहीं।
—वी.स.टी.

उ०—४ भोळा प्रांणी रांम भज, तूं तज झोड़ तमांम।
दीहा छेल्है देख रे, केसव हूंता कांम॥—र.ज.प्र.
रू०भे०—छेल्हौ, छेहलउ, छेहलौ।
छेवड़ौ—देखो 'छेड़ौ' (रू.भे.)—अमरत
छेवट—क्रि०वि०—अंत में, आखिरी समय में। उ०—छकिया नैण रूप रस पीकर, छेवट में छिटकाय मती। सांवरिया अवध सिधाय मती, म्हांरा मनड़ा रौ मोद मिटाय मती।—गी.रां.
छेवटी—सं०स्त्री०—घोड़े का चारजामा विशेष, जीन (डि.को.)
छेवट्ट, छेवट्ठ—सं०पु० [सं० सेवार्त्त, छेदवृत्त] शरीर रचना विशेष जिसमें यों ही हड्डियां आपस में जुड़ी हों (जैन)
छेवट्ठसंघयण—सं०पु० [सं० सेवार्त्त संहनन] छः प्रकार की शरीर-रचना में अंतिम शरीर-रचना जो मात्र अस्थि-पंजर ही होती है।
छेवट्ठसंघयणि—वि० [सं० सेवार्त्त संहननिन्] छः प्रकार की शरीर रचना में अंतिम शरीर रचना वाला, केवल कृश हड्डी वाला।
छेह, छेहउ—सं०पु० [सं० छेद] १ अंत, समाप्ति। उ०—सुण राजा जसमल कहै, अेह न दाखौ छेह। अकल विहूण्यां ओडण्यां, तांह सूं केहा नेह।—जसमल ओडणी री वात
क्रि०प्र०—देणौ, लैणौ।
२ छोर, किनारा, सीमा, हद। उ०—साइधण हल्लण सांभळइ, ऊभी आंगण छेह। काजळ जळ भेळा करी, नांखी नाख भरेह।
—ढो.मा.

३ विश्वासघात, धोखा। उ०—निरगुण नीसत नीठर, इम मूकी नर को जाइ। प्रीत मांडि छेह दीधु, ग्रीवन दोहेळउं थाइ।
—नळ-दवदंती रास

४ थाह, गहराई। उ०—नागा नवली नेह, जिण तिण सूं कीजै नहीं। लीजै परायौ छेह, आप तणौ दीजै नहीं।—र.रा.
मुहा०—छेह लैणौ—थाह लेना, भेद लेना, गंभीरता की परीक्षा करना।
५ हानि, नुकसान। उ०—संयोग तउ वियोग, जिहां लाभ तिहां छेहउ रूसणउ तिहां तूसणउ।—वि.व.
सं०स्त्री० [सं० क्षार] ६ धूलि, खेह, राख।
वि०—१ खंडित २ कम, न्यून।
क्रि०वि—१ ओर, तरफ। उ०—विहु छेह बांणावळी, सर पुडंग सलळी। अणी अणी अतुळी, खग खग्गा खळी।—अ. वचनिका
२ अंत में, आखिर में।
रू०भे०—छे', छेहउ, छेहि, छेहि।
छेहड़लौ—वि० (स्त्री० छेहड़ली) अंतिम, आखिरी। उ०—थांन विनां थें यूंही गमाई, ऊमर अेहड़ली। छळ सूं बाजी हारचौ छी छी छेला छेहड़ली।—ऊ.का.
छेहड़ौ—देखो 'छेड़ौ' (रू.भे.) उ०—१ बतावण आंचळ रंग मजीठ, बंधाणौ छेहड़ै काळौ रंग।—सांझ
उ०—२ अढार भार बनस्पती भुकनै रही छै, तळाव रै छेहड़ां कुंवळ फूल नै रहचा छै।—रा.सा.स.
मुहा०—छेहड़ै आणौ—क्रोध या घबराहट की अंतिम अवस्था में पहुंचना।
उ०—३ पछै उण सांखुली नै सिणगार कर नै चौरी मांहै पधारिया, हथळेवौ जुड़ायौ छै, छेहड़ौ बांधियौ, ब्रांह्मण वेद भणै छै।
—लाली मेवाड़ी री वात
छेहलउ, छेहलौ—देखो 'छेलौ' (रू.भे.) उ०—१ चरचै आज वेण वणी छेहला, वड़वा कज भींच कसौ वेहला।—पा.प्र.

उ०—२ हरि पूजौ होइ बाहुड़ौ हुई गोरी सूं छेहली भेंट ।—वी.दे.
(स्त्री० छेहली)

छौंहि, छेहि—देखो 'छेह' (रू.भे.) उ०—१ लखि कळ सोळह छेहि लुघ, करिया घड़ी कविंद । पाये एकरिण ए परठि, समझे कुंग्रर सुरिंद ।
—ल.पिं

उ०—२ जीभइं जव छोलइ, बोलती छउड ऊतारइ, चालती भुइं फोड़ती, नव धायां तेर पाडइ, वलि वाघी कउडी ग्राहणइं, कुहणी छौंहि खात्र पाडइ ।— व.स.

उ०—३ धूमकेत कुडी ग्राहणइ, कुहणी छौंहि खात्र पाडइ, टुंटि छेहि गांठि वोलइ ।—वि.व

छेहु—देखो 'छेह' (रू.भे.) उ०—जंमण मरण ति ग्रांणइं छेहु जिहिं चित्ति एक वसइ जिण नाह ।—चिहुगति चउपई

छेंइया—देखो 'छाया' (रू.भे.)

छेताळीस—देखो 'सैंताळीस' (रू.भे.) उ०—सहस वीस इक ग्राठसौ, छेताळीस पछांणि । इता रूप पनरह ग्रखर, जुगुत लुघू गुर जांणि ।
—ल.पिं.

छै-क्रि०ग्र० [सं० ग्रस] राजस्थानी क्रि० 'होणौ' का वर्तमानकालिक एक वचन रूप 'है'। उ०—घणा नींदाळवां नींद वारौ घणी, तूंग नहं छै भली हींस घोड़ा तणी ।—हा.झा.

देखो 'क्षय' (रू.भे.)

सं०पु० [रा०] १ देव लोक. २ मदपात्र. ३ तीक्ष्ण वस्तु. ४ सेना (एका०)

वि०—छ: ।

छैणी—देखो 'चीणा' (रू.भे.)

छैंताळीस—देखो 'सैंताळीस' (रू.भे.) उ०—ताइ सातमौं छैंताळीस, वदिग्रा रूप वरणबा बीस ।—ल.पिं

छैती—देखो 'छेटी' (रू.भे.) उ०—जु घणी छैती हुंती विहुं कटकां सु घोड़े तेज चालते नैड़ी कीधा ।—वेलि.टी.

छैवास—देखो 'साबास' (रू.भे.) उ०—पाल दये पग दावटै, ऊतरता ऐवास । स्त्री मुख फुरमावै वचन, सोडी नै छैवास ।—पा.प्र.

छैवासी—देखो 'साबासी' (रू.भे.)

छैमासौ, छैमाहियौ-वि०—छ: मास का, छ: मास सम्बन्धी ।

उ०—तिणसूं चौदह हजार ग्रसवार ग्रेका मोजूद पास रहै नै लाख एक रिपिया छैमाहिया देवौ ।—जलाल बूबना री वात

छैर-सं०पु०—भाले की तरह किया जाने वाला तलवार का प्रहार ।

उ०—सूरजमल ऊभौ छै तितरै पूरणमल ऊभौ छैर वाह्यौ सु सूरजमल री साथळ लागौ ।—नैणसी. (रू०भे०—छेर)

छैल—१ देखो 'छैलौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ छछवी छैलण छूट छकी छिव छोळ मैं ।—र. हमीर उ०—२ तिके इण भांत वणिया थका छैल नजर ग्रावै छै ।—प्रतापसींघ म्होकमसींघ री वात

यौ०—छैलकड़ी, छैल-छबीलौ, छैल-भंवर ।

सं०पु०—२ बकरा । उ०—तिकां ग्रग्ग हेरंब कै छैल तूटै, छकाया सुरा री धरै खेल छूटै ।—वं.भा.

छैलकड़ी-सं०स्त्री०यौ०—कान का एक ग्राभूषण जो कान के मध्य में पहना जाता है ।

छैलछबीलौ-सं०पु०यौ० (स्त्री० छैलछबीली) सजाधजा युवापुरुष, शौकीन व रसिक व्यक्ति । उ०—कातण वाळी छैलछबीलो, बैठी पीढ़ौ ढाळ । महीं-महीं पूणी कातै, लांबी काढ़ै तार ।—लो.गी.

छैलभंवर-सं०पु०—१ रंगीला या रसिक व्यक्ति, बनाठना, बनाव-शृंगार को पसन्द करने वाला पुरुष । उ०—जद मेह-ग्रंधारी रातां में, तूटोड़ी ढांणी चंवती ही । तौ मारू रा रंग मैं'लां में, दारू री मैफिल जमती ही । जद वां ऊनाळू लूग्रां में, करसे री काया बळती ही, तौ छैलभंवर रै चौवारै, चौपड़ री जाजम ढळती ही ।
—चेत मांनखा

२ वह बच्चा या युवक जिसके परदादा जीवित हों ।

छैलौ-सं०पु० (स्त्री० छैलण, छैली) १ बना-ठना युवा पुरुष, सुन्दर व्यक्ति. २ वह बालक या युवक जिसके प्रपिता जीवित हों ।

वि०—१ प्यारा, वल्लभ (पति) उ०—कांई करूं थांरै तेल नै म्हारै ग्रालोजे विना, छैलौ म्हारी जोड़ रौ उदियापुर माल्है रे ।
—लो.गी.

२ बांका, शौकीन, रंगीला, रसिक । उ०—ईंढ़ी कवडाळी माथै पर ग्रोडी, छैली ग्रलकावळ मुखड़ै पर छोडी ।—ऊ.का.

यौ०—छैलौ-बिलालौ ।

मह०—छैल ।

छोंकणौ, छोंकवौ—देखो 'छौंकणौ' (रू.भे.) उ०—दही रायतै छोंक मोकळी निमझर देवै । ललचावै सुरराज, भाज लबलबको लेवै ।
—दसदेव

छोंकियोड़ौ—देखो 'छौंकियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छोंकियोड़ी)

छोंत, छोंतकौ, छोंतरौ—देखो 'छोत' २ (रू.भे.)

उ०—ग्रोगण सह कर एकठा, विदर वणाया वेह । ज्यां मझ कांदा छोंत जिम, छिदरां रौ नहिं छेह ।—वां.दा.

छोंती-सं०स्त्री०—छिलके का टुकड़ा, छिलका । उ०—तिकै तरवार रा वटका दो चार व्है पिण सींगरी छोंती ही उतरै नहीं ।
—वीरमदे सोनगरा री वात

छो-सं०पु०—१ क्रोध. २ जोश. ३ पवन. ४ मृग. ५ शृंगार. ६ भय. ७ रोर (नरक) (एका०)

छोग्र-सं०पु० [सं० छोद] छिलका (जैन)

छोइ-सं०पु०—क्रोध, गुस्सा । उ०—दुहूं कै जुरे छोइ ते नैन छक्के, खरी लाट लग्गी मनू लोह पक्के ।—ला.रा.

छोई-सं०स्त्री०—छाछ, मट्ठा, तक्र ।

छोकरड़ौ, छोकरौ—देखो 'छोरौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—१ छांणा तौ चुगती छोकरी, घर की ए कुसळ बताव । सौदागर मंहदी राचणी ।—लो.गी. उ०—२ देखां बाहर

तुरक्या हूं स्यानूं जाय गंगाजू जे वदूरी हाथ पड़ै तौ छोकरड़ी नूं करा दिगदां।—साह रामदत्त री वारता

(स्त्री०—छोकरड़ी, छोकरी)

छोंग-सं०पु०—शोक, कष्ट, दुःख। उ०—जुलम न करणौ जीवतां, छिन लग हरणौ छोग। नर वजणौ डरणौ नहीं, जुध में मरणौ जोग। —जुगतीदान देथौ

छोंगाळ, छोंगाळौ—देखो 'छोगाळ, छोगाळौ' (रू.भे.)।

छोंगौ—देखो 'छोगौ' (रू.भे.) उ०—झुकनी माळ झलेव'क तुररा ढारिया। सहरा छोंगा लूंब झुलाला नांखिया। —महादान महड़ू

छोंड़णौ, छोंड़बौ—देखो 'छोडणौ, छोडबौ' (रू.भे.)

छोंड़ियोड़ौ—देखो 'छोडियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छोडियोड़ी)

छोंटौ—देखो 'छोटौ' (अल्पा., रू.भे.) (स्त्री० छोंटी)

छोछोनीव-सं०पु०—नीम की जाति का वृक्ष विशेष।

छोछौ-वि०पु० (स्त्री० छोछी) १ सार रहित. २ व्यर्थ, निष्फल। उ०—अहनिस भज तूं आव संसार ओछो। छ-दरस यम आखै जे विना सब्ब छोछो।—र.ज.प्र.

छोट-सं०स्त्री०—१ छोटापन, लघुता (विलो० मोट)
२ देखो 'छोटौ' (मह. रू.भे.)

छोटकड़ौ, छोटकलौ, छोटकियौ, छोटकौ, छोटक्यौ, छोटड़ियौ, छोटोड़ौ—देखो 'छोटौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ वडबोरां रा बोर जूनोड़ा जांम, फळ है। छोटकिया छिव जोर सरस ज्यूं इमीजळ है।—दसदेव
उ०—२ मेरौ वडलौ भतीजौ वांधै भूरटी, मेरौ छोटक्यौ बांधै गाय, धोळी दूभणी।—लो.गी. उ०—३ कांय खेलता खूब हरखता वाळ हठीला, चढ़ता पड़ता प्रेम छोटका छैल-छवीला।
—दसदेव

(स्त्री०—छोटी, छोटकड़ी, छोटकली, छोटकी, छोटड़ी छोटोड़ी)

छोटाई-सं०स्त्री०—१ लघुता, छोटापन. २ ओछापन, नीचता।

छोटीतीज-सं०स्त्री०—श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया (पर्व विशेष)
वि०वि०—यह पर्व विशेषतया कुंवारी कन्याओं का होता है जिसमें वे नवीन वस्त्र धारण कर उल्लसित मन से झूला झूलती हैं। इस दिन अनेक जातियों में सगाई की हुई कुंवारी लड़कियों को उनके ससुर के घर से नये वस्त्र भी प्राप्त होते हैं।

छोटी माता-सं०स्त्री०—हल्की शीतला, चेचक रोग जिसमें छोटे-छोटे व छितराये हुए दाने निकलते हैं।

छोटोड़ौ—देखो 'छोटौ' (अल्पा. रू.भे) (स्त्री० छोटोड़ी)
उ०—१ चाकरड़ी रे माड़ वांरै छोटोड़ै वीरै जी नै मेल, राय आयौ रे चौमासौ, रे म्हांजा गाढ़ा मारू घर वसौ।—लो.गी.
उ०—२ छोटोड़ी छोंटां रौ वरसै मेह वालाजी, भरिया नाडा नाडिया ऐ पिणिहारी ऐलो।—लो.गी. (स्त्री० छोटोड़ी)

छोटोसांणोर-सं०पु०—डिंगल साहित्य का एक प्रमुख गीत (छंद) जिसके प्रथम चरण में १९ मात्रा, विषम चरणों में १६ मात्रायें और सम चरणों में अगर अन्त में गुरु हो तो १४ और ह्रस्व हो तो १५ मात्रायें होती हैं।

छोटौ-वि० (स्त्री० छोटी) १ आकार या डीलडौल में लघु या न्यून हो। उ०—नाउं छोटौ मोटौ कछोटौ मोक्ष नहीं, विकट जटा मुकुटि मोक्ष नहीं।—वि.व.
कहा०—१ छोटे कुवे घणौ खवावै—छोटे छोटे कौर लेने से अधिक खाने में आता है। थोड़ा थोड़ा मुनाफा लेने से अधिक लाभ होता है। २ छोटौ जितौ ही खोटौ—छोटे के प्रति व्यंगोक्ति।
३ जो आयु में कम हो, अल्पायु।
कहा०—१ छोटौ वछियौ गधे रौ ही चोखौ—छोटा बच्चा गधे का भी सुन्दर होता है। छोटे बच्चे सभी सुंदर होते हैं. उनके प्रति प्रत्येक का प्रेम होता है. २ छोटै सूं मोटौ होवै—कोई एकाएक बड़ा नहीं होता धीरे-धीरे सभी बढ़ते हैं. ३ जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो।
कहा०—छोटे मुंढे वडी वात—अपनी योग्यता से अधिक बातें करना।
४ जिसका महत्व कम हो।
कहा०—छोटी चाकरी मांये सुख नी मळवानौ—छोटी सेवा या नोकरी में सुख प्राप्त नहीं हो सकता, बड़ा या ऊंची श्रेणी का कार्य करने से ही सुख की प्राप्ति संभव होती है।
५ जो उदार, शिष्ट या गंभीर न हो।
अल्पा०—छोटकड़ौ, छोटकलौ, छोटकियौ, छोटकौ, छोटक्यौ, छोटड़ियौ, छोटोड़ौ।
मह०—छोट।

छोड, छोडण-सं०पु०—त्याग, छुटकारा, तलाक।

छोडणौ, छोडबौ-क्रि०स०—१ किसी जीव या व्यक्ति आदि को बंधन से मुक्त करना, छुटकारा देना, छोड़ना। उ०—दळै तें वार किता दहकंध, वांध्यौ दधि देवां छोडण बंध।—ह.र.
२ अपराध का दंड न देना, छोडना, मुआफ करना, क्षमा करना.
३ किसी चिपकी हुई, पकड़ी हुई या बंधी हुई वस्तु को अलग करना। उ०—मतवाळा दळ आविया, छोडीजै गळवांह। आभत्रिभागां ढंकियौ, छोणी पाखर छांह।—वी.स.
४ प्राप्त नही करना, अंगीकार नहीं करना, स्वीकार नहीं करना.
५ धन या धान की छूट देना, लगान की छूट देना. ६ त्यागना, परित्याग करना। उ०—इसा राजपूत केसरिया करियोड़ा हीज वैठा है तिके माथौ पाछौ लाण देवै नहीं, उरौ हीज लेवै अरथात इसा घर पर जीवण री आस छोड नै जाणौ।—वी.स.टी.
७ साथ न लेना, किसी स्थान पर पीछे रहने देना। उ०—जळ वळ जांमी वावल छोड्यौ, रातादेई छोडी माय, भावजां रौ रे छोड्यौ जाभौ झूमखौ, कांन कँवर सा छोड्या वीर।—लो.गी.
८ किसी दूर तक जाने वाले या मार करने वाले अस्त्र को चलाना या फेंकना. ९ प्रस्थान कराना, गमन कराना, चलाना, ज्यूं सांमनो करण सारू फौज रा सिपाही छोडिया. १० हाथ में लिये हुए कार्य

को स्थगित करना, कार्य बंद करना, कार्य से अलग होना। ११ किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु से आगे बढ़ आना. १२ किसी रोग या व्याधि का दूर होना. १३ वेग से निकलने वाली वस्तु को चलाना, ज्यूं रेलियां नै पावरा सारू बंदा री पांणी छोडियौ. १४ शेष रखना, बचाना, बाकी रखना. १५ लिखावट में कोई अक्षर या वाक्य भूलना. १६ किसी कार्य या उसके अंग को भूल से न करना, भूल या विस्मृति से किसी वस्तु को कहीं से न लेना, न रखना या न प्रयुक्त करना. १७ ऊपर से किसी वस्तु को गिराना या डालना।

छोडणहार, हारौ (हारी), छोडणियौ—वि०।

छोडवाड़णौ, छोडवाड़बौ, छोडवाणौ, छोडवाबौ, छोडवावणौ, छोडवावबौ, छोडाड़णौ, छोडाड़बौ, छोडाणौ, छोडाबौ, छोडावणौ, छोडावबौ—प्रे०रू०।

छोडिग्रोड़ौ, छोडियोड़ौ, छोड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छोडीजणौ, छोडीजबौ—कर्म वा०।

छोडवणौ, छोडवबौ—रू०भे०।

छुड़णौ, छुडबौ—अक० रू०।

छोडवण–वि०—छुटकारा दिलाने वाला, मुक्ति दिलाने वाला।

उ०—'ईसरौ' कहै असरण-सरण, विहण कंस संभळ वयण। जग जाड विखै जांमण मरण, छोड छोड गज छोडवण।—ह.र.

छोडवणौ, छोडवबौ—देखो 'छोडणौ' (रू.भे.) उ०—छेदै ग्राह तुरत छोडवियौ, अनंत जुगां जुग भगत उधार।—ह.नां.

छोडवाणौ, छोडवाबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू.भे.)

छोडाड़णौ, छोडाड़बौ—देखो 'छुडाणौ' (रू.भे.) उ०—नरनाह पतसाह छोडाड़ सकियौ नहीं, समांमी कमंध जोय निमांमी सिंध।

—द.दा.

छोडाड़ियोड़ौ—देखो 'छुडायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छोडाड़ियोड़ी)

छोडाणौ, छोडाबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू.भे.)

छोडायोड़ौ—देखो 'छुडायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छोडायोड़ी)

छोडावणौ, छोडावबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू.भे.) उ०—रुखमीई रूड़ां भावीयइं, छोडावियै जो आजि। कर बंध कापी ग्रास आपौ, भीम नी वहुं लाज।—रुपमणी मंगळ

छोडावियोड़ौ—देखो 'छुडायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० छोडावियोड़ी)

छोडिग्र, छोडिय–वि० [सं० छोटित] १ बन्धनमुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ (जैन)

[सं० स्फोटित] २ फोड़ा हुआ, विदारित (जैन) ३ राई आदि से बघारा हुआ (जैन)

छोडियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ मुक्त किया हुआ, छुटकारा दिया हुआ, छोड़ा हुआ. २ (किसी अपराध का) दण्ड नहीं दिया हुआ, क्षमा किया हुआ. ३ (किसी चिपकी हुई, बंधी हुई या पकड़ी हुई वस्तु को) अलग किया हुआ. ४ स्वीकार नहीं किया हुआ. ५ धन, धान या लगान की छूट दिया हुआ. ६ परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ. ७ किसी स्थान पर पीछे रखा हुआ, साथ नहीं लिया हुआ. ८. (किसी दूर तक जाने वाले या मार करने वाले अस्त्र को) चलाया हुआ, फेंका हुआ. ९ प्रस्थान कराया हुआ, गमन कराया हुआ, चलाया हुआ. १० (हाथ में लिये हुए कार्य को) स्थगित किया हुआ, बंद किया हुआ, कार्य से अलग हुआ हुआ. ११ किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु से आगे बढ़ आया हुआ. १२ रोग से मुक्ति पाया हुआ. १३ (बांध का पानी आदि) छोड़ा हुआ. १४ शेष रखा हुआ, बचाया हुआ, बाकी रखा हुआ. १५ (लिखावट में) कोई अक्षर या वाक्य भूला हुआ. १७ (भूल या विस्मृति से) किसी कार्य को नहीं किया हुआ, किसी वस्तु को कहीं से नहीं लिया हुआ, नहीं रखा हुआ, नहीं प्रयुक्त किया हुआ. १७ (ऊपर से किसी वस्तु को) गिराया हुआ, डाला हुआ। (स्त्री० छोडियोड़ी)

छोण–सं०पु० [सं० सूनु] (स्त्री० छोणी) पुत्र, लड़का, बच्चा।

उ०—तेज सांड ताडूकतां, छांण करचां गउ छोण। समर इस्यां बाजै सुहड़, कायर बाजै कोण।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—छौन।

छोणी–सं०स्त्री० [सं० क्षोणी] पृथ्वी, धरती। उ०—१ मतवाळा दळ आविया, छोडीजै गळबांह। आभ त्रिभागां ढंकियौ, छोणी पाखर छांह।—वी.स.

उ०—२ अंत असाड दयानंद आयौ, छोणी ग्यांन घुमड़ घण छायौ।

—ऊ.का.

रू०भे०—छोनिय, छोनी।

छोत–सं०पु०—१ छिलका, छाल। उ०—मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख। केळा छोत विसेख जाय, विदुर घर जीम्हिया।

—र.ज.प्र.

रू०भे०—छोंत, छोत, छौत, छचोत।

अल्पा०—छोंतकौ, छोंतरौ, छोतकौ, छोतरौ, छौंतकौ, छौंतरौ, छौतकौ, छौतरौ।

सं०स्त्री० [रा०] २ किसी रजस्वला या क्रूर नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के सम्पर्क के कारण होने वाली विकृति अथवा लालिमा जो कष्टप्रद होती है। अशौच दोष।

३ देखो 'छूत' (रू.भे.) उ०—खळ प्रवळ पाड़ पड़ियौ खळै जस प्रकास राखै जरू। तज छोत मरण उपजण तणी, मिळै जोत 'भीमंगरू'।—रा.रू.

छोतकौ, छोतरौ—देखो 'छोत' १ (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ठाकुर कह्यौ—रीड़ौ आवै है, मोनूं उटांणौ, वैठौ करौ, छोतरा भेवौ, वागौ पहिर वैठौ। अमल करण लागा। तरै रीड़ौ आयौ।—प्रतापमल देवड़ा री वात

छोती—देखो 'छोंती' (रू.भे.) उ०—भैंसौ रातवां खावै तिणरी किणी ही सूं सींग री छोती करणी नीं वै।—वीरमदे सोनगरा री वात

छोनिय, छोनी—देखो 'छोणी' (रू.भे.) उ०—१ छंडौ छोनिय राव री

इम नाम उनाया । दुनकर नम्मति होय वरौ सब दंड उगाया ।
—वं.भा.

उ०—२ नका नूं बांह छोणावाळो नै जुध री तयारी करावो । देना-वाळो पारस नो निशाणां (भालां) छायो छै नै छोनी (धरती) पाकर-पोड़ां रै पाखरां सूं छायो छै ।—वी.स.टी.

यौ०—छोनीतळ छोनी-मंडळ ।

छोनीतळ—सं०पु० [सं० क्षोणीतल] पृथ्वीतल, पाताल ।

उ०—जंग पत्तानां चारिकै कमि तंग मिळाया । घोर घमंकी पक्खरां छोनीतळ छाया ।—वं.भा.

छोनीमंडळ—सं०पु०यौ० [सं० क्षोणीमंडल] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—तरुणी रस तंदळ तरुणापण तायौ । छोनीमंडळ में करुणारस छायौ ।—ऊ.का.

मि०—भूमंडळ ।

छोनो—सं०पु० [सं० सूनु] बेटा, पुत्र ।

छोपड़ास—देखो 'चोपड़ास' (रू.भे.)

छोभ—सं०पु०—खल, दुर्जन, पिशुन (जैन)

वि० [सं० क्षोभ्य] क्षोभणीय, क्षोभ-योग्य (जैन)

छोभ—सं०पु० [सं० क्षोभ] १ क्षोभ, दुःख, चित्त की विचलता ।

उ०—केसरीसिंघ रांमसिंघ सबळसिंघ के जाए । रांमबांण से अचूक रोद्र छोभ पाए ।—रा.रू.

[सं० क्षोभ्य] २ दीन, निस्सहाय (जैन) ३ कलंक, दोषारोपण । (जैन)

४ बन्दन विशेष (जैन) ५ आघात (जैन)

छोभणो, छोभबो—क्रि०अ०—दुखी होना, क्षोभ करना, चित्त का विच-लित होना ।

छोयेलो—सं०पु०—लड़का, बेटा ? उ०—माळी को ऊठियो छोयेलो वें तो मोळी है जांबी । सी सिजूर म्हांरे रंगै बनड़े रा सेवरा ।—लो.गी.

छोर—सं०पु०—१ किसी वस्तु की लम्बाई समाप्त होने का स्थान, वस्तु का आयत के विस्तार की सीमा, किनारा ।

यौ०—ओर-छोर ।

२ किनारे पर का सूक्ष्म भाग, कोर, नोंक ।

छोरड़ो—देखो 'छोरो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—अढ़ार भार वनस्पति फूलपगर भरइं, धन्वंतरि वइदकं करइं, जीवग्रिति छोरड़ां रमाडइ ।—व.स.

स्त्री०—छोरड़ी ।

छोरणी—सं०स्त्री०—आटा, भूसा, अनाज आदि छानने का कपड़ा, जाली या धातु का बना छेददार खंजरीनुमा उपकरण ।

छोरवेड़—सं०स्त्री०—परिवार के छोटे-बड़े बाल-बच्चों का समूह । परिवार के बाल सदस्य ।

छोरांतर—सं०पु०—छोटे-छोटे बाल-बच्चे ।

छोरारोळ—सं०स्त्री०—बचपन की सी खिलवाड़, नादानी, बचपन ।

उ०—छोरारोळां में छपनै रस रळिया । पहुमीं नवरस नस दस हो दिस पुळिया ।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—करणी, मांडणी ।

छोरियो, छोरींटो—देखो 'छोरो' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—सांझ सांढ टोरड़ा ढुळकै, घर आवै तज धोरिया । छाळै बुगाळ ठांण छोटघा, चुगै बोरिया छोरिया ।—दसदेव

छोरु, छोरुं, छोरू, छोरो—सं०पु० [सं० शोकहर] (स्त्री० छोरी) १ पुत्र, लड़का । उ०—१ एक तो लांबो रोसणो कोई मतां करो अर दूजो परायो छोरु कोई खोळै मतां लेवो ।—ऊमादे भटियांणी री वात

उ०—२ तरै जोतसियै कह्यो, हमार वेळा बुरी वहे छै, ग्रै दोय घड़ी टळै पछै छोरू हुवै सो महाराज प्रथीपत हुवै ।—नैणसी

२ बालक । उ०—१ ब्रह्मा पुरोहित पुणउं करइ भ्रिगरीखि आचमन दिई जीमूत रिखि छोरु खेलावइ ।—सभा सिंगार

उ०—२ कुंवरसी कही हूं तो आपरो छोरू छूं जद याद फरमायस्यो तद ही हाजर आय होयस्यूं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ छोरू छत्रपतियां तणा, दोळा सेय दुबाह । न्रिप सगाह दीठो 'अजै', साह तणी दरगाह ।—रा.रू.

उ०—४ छपनै छोरा विधि कीनी कुळटाई, उलटा पलटी कर दुनियां उलटाई ।—ऊ.का.

मुहा०—छोरां री खेल—बालकों के खेल के समान, बहुत सुगम कार्य, सहज कार्य ।

कहा०—छोरा-छोरयां ही घर वसै तो बाबो बूढी क्यूं लावै—बच्चों द्वारा किसी महत्वपूर्ण कार्य करने का प्रयास करना व्यर्थ है । उम्र और अनुभव की श्रेष्ठता और महत्व होता ही है ।

३ संतान, औलाद । उ०—१ जद साह आपरी वहू तीरैं सीख मांगवा गयो नै कही—देख तूं भला घर री छोरू है नै हूं दखण जाऊं छूं जणी यी तूं पाग री सरम राखजै ।—वंधी वुहारी री वात

उ०—२ तारां कागद मेलिया नै कहायो 'कूंपा वीरमदे रै छोरू नही है ।'—द.दा.

कहा०—मोटी छोरू घरै भली—बड़े घर वालों की सन्तान अपने घर पर ही भली रहती है, उनका निभाव अन्यत्र कठिन होता है, बड़ी लड़की का अपने ससुराल में रहना ही अच्छा है ।

४ दास ।

रू०भे०—छोरु, छोरूं, छोरू, छोहरू, छोहरो ।

अल्पा०—छोकरड़ो, छोकरो, छोंड़ो, छोरड़ो, छोरियो, छोरींटो, छोंलो ।

छोळ—देखो 'छौळ' (रू.भे.) उ०—१ हाथ्यां मवताहळ गंग हिलोळ, छिलै सवार सरस्वति छोळ ।—मे.म.

उ०—२ पोळ प्रवाह करै पग पूजन, वडा अथाह छोळ द्रव वेग । सिधुर सात दोय दस सांसण, नागद्रहै दीधा इम नेग ।

—महारांणा हम्मीर री गीत

छोल-सं०स्त्री०—अंग का वह भाग जहां खरोंच लगी हो या छुल गया हो।
क्रि०प्र०—आणी, उतरणी, लागणी।

छोलणी-सं०स्त्री०—देखो 'छोलणौ' (अल्पा. रू.भे.)

छोलणौ-सं०पु०—हथियारों का जंग खुरचने का औजार विशेष।
अल्पा०—छोलणी।

छोलणौ, छोलबौ-क्रि०स०—धारदार औजार से किसी वस्तु की ऊपरी सतह को दूर करना, छीलना। उ०—१ सत्तम प्रहरं दिवस कै, घण जु वाडियां जाइ। आंणी द्राख विजोरियां, घण छोलइ प्रिउ खाइ। —ढो.मा.

उ०—२ आती ओलण नै अंबक दक आयौ, छाती छोलण नै छपनौ छित छायौ।—ऊ.का.

छोलणहार, हारौ (हारी), छोलणियौ—वि०।

छोलवाड़णौ, छोलवाड़बौ, छोलवाणौ, छोलवाबौ, छोलवावणौ, छोलवावबौ, छोलाड़णौ, छोलाड़बौ, छोलाणौ, छोलाबौ, छोलावणौ, छोलावबौ—प्रे०रू०।

छोलिओड़ौ, छोलियोड़ौ, छोल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छोलीजणौ, छोलीजबौ—कर्म वा०।

छुलणौ, छुलबौ—अक०रू०।

छोलदारी-सं०स्त्री०—छोटा तंबू, शिविर लगाने का मोटे वस्त्र का आच्छादन।

छोलियोड़ौ-भू०का०कृ०—छीला हुआ (स्त्री० छोलियोड़ी)

छोलौ-सं०पु० (वहु व० छोला) चने का कच्चा हरा फल।

छो'ल्लौ—देखो 'छोरौ' (अल्पा., रू.भे.) (स्त्री० छो'ल्ली)

छोह-सं०पु० [सं० क्षोभ] १ क्रोध, गुस्सा। उ०—नंह भूली बात सुमंत्रा नंदण, छोह अनाहक छेल्है। वे सिय सोध हिमैं भड़ आवैं, लंगर फौजां लेले।—र.रू.

२ जोश, उत्साह। उ०—चढ़िया छोह बहादुरां, जड़िया जरद जवांन। रुड़िया त्रंबक राड़ रा, अड़िया भुज असमांन।
प्रतापसींघ म्होकममींघ री वात

उ०—२ तिण वार तोलि खग मूंछ तांणि। असपति हूं कहियौ छोह आंणि।—सू.प्र.

३ गर्व, अभिमान. ४ प्रेम।

सं०स्त्री०—५ ओट, आड़, पर्दा। उ०—आगै विमर रै मुंहडै पातिसाह भींत चुणाइ नै छोह दिराय लई।—सयणी री वात

६ वरछी नामक भाले की नोंक। उ०—छनंकिय तीर वरच्छनि छोह, ननंकिय बोह विलंवनि कोह।—ला.रा.

७ दरवाजा वंद करने के निमित्त लगाई जाने वाली पत्थर की शिला। [सं० शोभ:] ८ कांति, दीप्ति। उ०—तिके कुळ सूर हुवा तिण वार, जिके व्रद पात कहै जिण वार। वडौ खळ थाट हणै गज बोह, छतीसह वंस चढ़ावण छोह।—सू.प्र.

छोहणौ, छोहबौ-क्रि०स०—द्रव पदार्थ को पीना, सांस के साथ होंठों से खींचना, चूसना।

छोहणहार, हारौ (हारी), छोहणियौ—वि०।

छोहिओड़ौ, छोहियोड़ौ, छोहचोड़ौ—भू०का०कृ०।

छोहीजणौ, छोहीजबौ—कर्म वा०।

छोहरू, छोहरौ—देखो 'छोरौ' (रू.भे.) उ०—तब बोली चंपावती, साल्ह कुंवर री मात। रे बाजारण छोहरी, कांइ खेलाड़इ घाति। (स्त्री० छोहरी) —ढो.मा.

छोहियोड़ौ-भू०का०कृ०—(द्रव पदार्थ को) सांस के द्वारा खींचा हुआ, पीया हुआ, चूसा हुआ। (स्त्री० छोहियोड़ी)

छोहियौ-वि०—१ अभिमानी, घमंडी। उ०—खंगड़ै किया खड़ाक, सींगाळै सुरतांण सूं। छोहियां उतरी छाक, मीरां मिलकां ऊमरा। —नैणसी

२ क्रोध करने वाला, क्रोधीला. ३ कांतिवान, दीप्तिवान।

छौंक-सं०पु०—वघार, तड़का।

छौंकणौ, छौंकबौ-क्रि०स०—शाक में वघार देना, तड़का देना।

छौंकणहार, हारौ (हारी), छौंकणियौ—वि०।

छौंकवाड़णौ, छौंकवाड़बौ, छौंकवाणौ, छौंकवाबौ, छौंकवावणौ, छौंकवावबौ, छौंकाड़णौ, छौंकाड़बौ, छौंकाणौ, छौंकाबौ, छौंकावणौ, छौंकावबौ—प्रे०रू०।

छौंकिओड़ौ, छौंकियोड़ौ, छौंक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

छौंकीजणौ, छौंकीजबौ—कर्म वा०।

छौंकयोड़ौ-भू०का०कृ०—तड़का दिया हुआ, वघारा हुआ। (स्त्री० छौंकियोड़ी)

छौंत—देखो 'छोत' (रू.भे.)

छौंतकौ, छौंतरौ—देखो 'छोत' (अल्पा., रू.भे.)

छौ-सं०पु०—१ केतकी. २ विरक्ति. ३ दुकूल. ४ पर्वत. ५ वानर (एका०)

क्रि०अ०—राजस्थानी की सत्तार्थक क्रिया 'होणौ' के मध्यम पुरुष व अन्य पुरुष के एकवचन व वहुवचन के वर्तमान काल तथा भूतकाल का रूप, हो, था, ज्यूं—कठीनै सिधावौ छौ। थे सब जणां क्यूं जावौ छौ। मैं उठी हो'र जावं छौ। किसन उठी हो'र जावं छौ।

उ०—पछै महाराज नूं पण चौंकस खवर पड़ गई—जे नवाव रै मन इसौ दगौ छौ।—पदमसिंघ री वात

छौं'-अव्य०—१ जो हो, चाहे जो हो, कुछ परवाह नहीं. २ खैर, भला, अच्छा, अस्तु।

छौगाळ, छौगाळ-वि० [सं० शृंग+आलुच्] श्रेष्ठ, शिरोमणि।
उ०—भुपाळ हायाळ छौगाळ भाखौ, लीलंग नादंग भेदंग 'लाखौ'। —ल.पि.

२ वीर, योद्धा, वहादुर। उ०—चमराळां हुई असंख चाळ, छौगाळ छिलइ करिमाळ काळ।—रा.ज.सी.

३ रसिक, विलासी, शौकीन । उ०—आगां गी जा नै ऊजळी, नवे नगर रा नेह । जा नै गजब जांम नै, छोगाळो न दे छेह ।—जेठवा

सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) २ वह बंधा हुआ साफा जिसके पीछे उसका एक सिरा लटकता हो. ३ वह व्यक्ति जिसके इस प्रकार का साफा बंधा हो ।

रू०भे०—छवगाळो, छोगाळो ।

मह०—छवगाळ, छोगाळ, छोगाळ ।

छोगो-सं०पु० [सं० शृंग] १ सिर पर बांधे जाने वाले साफे या मुकुट पर सुन्दरता के लिये लगाया जाने वाला तुर्रा । उ०—उदगम-सुमना पुमपलता, अत पुनपति के कहीजे प्रिवित । सो रिणछोड़ तणे सिर छोगो, ईस निजरि भरीजे अम्रिति ।—ह.नां.

मुहा०—छोगो लागणो—सिरमौर होना, श्रेष्ठ होना ।

२ साफा या पगड़ी का छोर जो साफा धारण करते समय पीछे लटकता है या सिर पर तुर्रे के समान खड़ा रहता है ।

उ०—छोगा पाघ जवाहर छाजै, रवि सिर किर साजोति विराजै । —सू.प्र.

३ घोड़े के कानों के मध्य में लगाया जाने वाला तुर्रा ।

उ०—के रजत साज जंवहर कनक, छोगा मोत्रीयाळ छजि । आंगे अनेक हाजर इसा, कमंध होण असवार कजि ।—सू.प्र.

४ गुच्छा ।

वि०—श्रेष्ठ, प्रधान, शिरोमणि । उ०—बावन दुरंग बंके विविध, सब क्षिति छोगो छत्रपति । 'बखतेस' तनय बनराव न्रिप, करत राज अलवर न्रिपति ।—ला.रा.

रू०भे०—छोगी ।

छोड़-स०स्त्री०—१ स्त्रियों का गर्भाशय या बच्चादानी सम्बन्धी रोग विशेष जिसमें १५ दिन तक स्त्री के योनि मार्ग से रक्त गिरता है, फिर ११ दिन तक रक्त गुल्म जैसी ग्रंथी बनती रहती है ।

२ देखो 'छोडो' (मह. रू.भे.)

छोड, छोडण, छोडियो, छोडो-सं०पु०—१ पेड़ के तने या शाखा आदि का ऊपरी छिलका ।

क्रि०प्र०—उखेलणो, उतारणो ।

२ नाक से निकलने वाला सूखा मल जो पपड़ी की तरह जम जाता है ।

क्रि०प्र०—उखेलणो, उतारणो ।

अल्पा०—छोडियो ।

मह०—छोड़, छोड, छोडण ।

छोत—देखो 'छोत' (रू.भे.) उ०—पल तो कर हाकल मांड पगं, विण छोत मिटै नह सूर वगं ।—पा प्र.

छोतको, छोतरो—देखो 'छोत' (अल्पा. रू.भे.)

छोतो-सं०पु० (बहु व० छोता) गेहूं, बाजरी के भूसे के बड़े बड़े टुकड़े ।

छोन—देखो 'छोण' (रू.भे.) उ०—छुटी अलक्क नाग छोन, सोभ एम साज ही । रथंस जाणि चंद्र रासि, रूप में विराज ही ।—सू.प्र.

छोरावो—(?)

उ०—तठै आलमगीर पूछियो, भाई साहब, पातसाहूं के छोरावा में वेग्रदबी करैं जिसका क्या हवाल करणा —द.दा.

छोळ-सं०स्त्री०—१ तरंग, लहर, हिलोर (ह.नां.)

उ०—पंख हमाऊ कळव्रक्ष पारस, छोळ समंद सुरियंद छभा । औरां नै नां तणी ओपमा, यां ओपम ताहरी 'अभा' ।—सांवळदास कवियो

क्रि०प्र०—आवणी, ऊठणी, वैठणी ।

२ बौछार । उ०—१ पवन सीतळ मंद वाजै है, नो घण मेह री सघण छोळां परनाळां पड़ती जिकै जमी नीठ खमै है ।—र. हमीर

उ०—२ छिण छिण सोहै छांटड़ल्यां री छोळ, सूरज किरणां सर सर ऊतरै ।—लो.गी.

क्रि०प्र०—लागणी ।

३ उमंग, उत्साह । उ०—छोळ में चंडिका हूरां बारंगां विमांण छायो, केही बिना रुंडकां मचायो खोण कीच ।—डूंगजी रो गीत

क्रि०प्र०—आणी ।

४ क्रीड़ा । उ०—छोडा छोड करंता छोळां, नांमै सीस नरेस नूं । लंघे रात अणंद अलेखै, सो सुख नहीं सुरेस नूं । —र.रू.

क्रि०प्र०—करणी ।

५ हर्ष, खुशी । उ०—हींडां जाणो सहल सांवण तीजां सिवराती, बागां जाणो सहल छोळ उपजै त्रिय छाती ।—अरजुणजी बारहठ

क्रि०प्र०—आणी ।

६ धारा, प्रवाह । उ०—१ तहां सुभड़ कविराजूं सहित आय विराजे छत्रधारी, परूसवारे की ऊरड़ ठांभ ठांभ सैं लगी । चंडी भोग अनाजूं के गंजूं पर रोगनूं की छोळ वगी ।—सू.प्र.

उ०—२ जड़े इम काढ़त सेल जरूर, पड़ै रत छोळ चढ़ै दिन पूर । —सू.प्र.

क्रि०प्र०—छूटणी ।

७ जोश ।

रू०भे०—छोळ, छोळि ।

छोळांनाथ-सं०पु०—१ समुद्र. २ दानी व्यक्ति, दातार ।

छोळि—देखो 'छोळ' (रू.भे)

छचाळी—१ देखो 'छाळी' (रू.भे.) २ देखो 'छियाळीस' (रू.भे.)

छचाळी ना'रियो—देखो 'छाळी ना'र' (अल्पा. रू.भे!)

छचाळो—देखो 'छियाळो' (रू.भे.) उ०—मांणक-सदू महप हर माता, सती देवड़ी सूरज साख । पनरै संमत पोह वद पांचम, पोहती परब छचाळै पाख ।—द.दा.

छचासट—देखो 'छासठ' (रू.भे.)

छचासटो—देखो 'छासठो' (रू.भे.)

छचासी—देखो 'छियासी' (रू.भे.)

छचोत—देखो 'छोत' (रू.भे.)

ज—देवनागरी व राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का तीसरा अक्षर। यह अल्प-प्राण है, इसका उच्चारण तालु है।

जं-क्रि०वि० [सं० यत्] क्योंकि, कारण कि (जैन)

जंऊड़ौ—१ देखो 'जाऊड़ौ' (रू.भे.) २ देखो 'जुग्रौ' २ (अल्पा., रू.भे.)

जंकसन-सं०पु० [अं०] जहाँ दो या दो से अधिक रास्ते या रेल मार्ग मिलते हों।

जंकिंचि-अव्य० [सं० यत्किंचित्] जो कुछ (जैन)

जंखेरौ-सं०पु०—१ वायु का क्षणिक तेज झोंका. २ घर की साधारण सम्पत्ति का समूह।

जंग-सं०स्त्री० [फा०] १ लड़ाई, युद्ध। उ०—जोग में धुनी चढ़ छोह जंग। उनमनी मुद्रा निरवोह अंग।—वि.सं.

[फा० जंग] २ लोहे का मुरचा (अ.मा.)

जंगग्रावर-सं०पु०—योद्धा (डिं.को.)

जंगकालौ-वि०पु०यौ० (स्त्री० जंगकाली) युद्धोन्मत्त।

जंगड़ी-सं०स्त्री०—१ घुटने तक पहनने का वस्त्र, जाँघिया. २ गाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति अथवा इस जाति की स्त्री. ३ गायिका।

जंगचाळ-सं०पु०—१ युद्ध में ले जाया जाने वाला घोड़ा।

उ०—पमंग ग्रोघवाळ जंगचाळ सीस पाखरां। दुरी लगाजे जींदराव भोम दाव दोळियां।—पा.प्र.

२ योद्धा, वीर।

जंगजूट-सं०पु० [फा० जंगजू] शूरवीर, योद्धा (डिं.को.)

जंगम-वि० [सं०] १ चलने फिरने वाला, चलता-फिरता।

उ०—पणिहारी पटळ दळ वरण चंपक दळ, कळस सीस करि कर कमळ। तीरथि तीरथि जंगम तीरथ, विमळ व्रांह्मण जळ विमळ।

—वेलि.

२ जो एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाया जा सके, चल।

उ०—देह जिकण वातां ऐ दोई, तिके सदाई तीखा। बीजा जड जंगम वसुधारा, सारा जीव सरीखा।—र.रू.

सं०पु०—१ सिर पर जटा रखने एवं कोपीन पहनने वाले एक प्रकार के विरक्त संन्यासी। उ०— ऊग्यौ डूंख अफीम, नीम रौ रूंख निरोगी। वसती होड़ हकीम, नीमड़ौ जंगम जोगी।—दसदेव

२ घोड़ा। उ०—जिसौ नूर नरपती इसो सांमंत सूर नर। जव जैसोई जंगमां सोभि तैसेइ मद सिंधुर!—रा.रू.

३ छप्पय छंद का ३२वाँ भेद जिसमें ३६ गुरु ७४ लघु से ११३ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं (र.ज.प्र.)।

जंगमकाय-सं०पु०यौ०—द्वीन्द्रिय ग्रादि प्राणी, त्रस जीव (जैन)

जंगमविस-सं०पु० [यौ०सं० जंगमविष] एक प्रकार का विष (ग्रमरत)

जंगमांण—देखो 'जंगम' २ (रू.भे.) उ०—लगी नर है तिल हेक लगांण, जरद्द मरद्द कटे जंगमांण।—सू.प्र.

जंगरी-वि० [फा० जंग+रा०प्र०री] योद्धा, वीर।

जंगळ-सं०पु० [सं० जंगल] १ वन, अरण्य। उ०—नारायण रौ नांम ज्यां, नंह लीधौ निरणांह। वां जमवारौ वोळियौ, ज्यूं जंगळ हिरणांह।

—ह.र.

मुहा०—१ जंगळ जाणौ—पाखाना फिरना, टट्टी जाना।

२ जंगळ में मंगळ होणौ—निर्जन स्थान में चहल-पहल होना।

३ जल-शून्य भूमि, रेगिस्तान. ३ घोड़ा (डिं.को.)

४ देखो 'जंगळधर' (रू.भे.)

जंगळधर, जंगळधरा-सं०स्त्री०—जांगलू देश, बीकानेर राज्य।

रू०भे०—जंगळ।

जंगळराय-सं०पु०—१ बीकानेर का राजा।

सं०स्त्री०—२ श्री करणीदेवी का एक नाम।

उ०—प्रस्नोत्तर चरचा मत पींगळ, भूखण सवद ग्ररथ वस भाय। बांकैदास जांणिया विध विध, राज ग्रनुग्रह जंगळराय।

—बां.दा.

जंगळवै-वि०—जांगलू देश बीकानेर का।

जंगळायत-सं०पु० [सं० जंगला+ग्रायत] वन-रक्षा का सरकारी विभाग।

जंगळी-वि०—जंगल का, जंगल संबंधी। उ०—सुणीजै ऊखांणौ पुरांणौ सयांणी। रुकी जे नहीं जंगळी पट्टरांणी।—ना.द.

२ जो घरेलू या पालतू न हो. ३ मूर्ख, बेवकूफ. ४ ग्रसभ्य।

सं०पु०—१ घोड़ा (डिं.को.) २ जाति विशेष का घोड़ा (वं.भा.)

जंगसारधारण-सं०पु०—वीर, योद्धा (डिं.को.)

जंगाळ-सं०पु०—१ एक प्रकार का लाल रंग जो सोहाग-बिन्दी लगाने के काम ग्राता है। गहरा लाल रंग। उ०—लसै ग्राळ जंगाळ सिंदूर सूंडा। इळा में घसै धाव रा पाव ऊंडा।—वं.भा.

२ घोड़ा. ३ सेना का दक्षिण भाग। उ०—सो पदमसिंहजी सत्रुसाळ रतनोत हरवळ किया। चंदोल जंगाळ वंगाळ वणाय नै कूच कियौ सो गनीम ग्राय हरवळ नूं राड़ खाधी।—पदमसिंह री वात

४ युद्ध में बजाया जाने वाला नगाड़ा। उ०—गड़वकै जंगाळां नाळां कुंडाळा भगांकै गोण।—सारंगदेव कानोड़ रौ गीत

रू०भे०—जंघाळ।

जंगाळी-वि०—गहरे लाल रंग का। उ०—सुरख जंगाळी सांवळी सांवळी, जी कुण करण जंजाळ। चौथी जर री चमकती, भळकै बिंदली भाल।—लो.गी.

रू०भे०—जंघाळी।

सं०पु०—लाल रंग।

जंगिय-सं०पु० [सं० जाङ्गमिक] जंगम जीवों के रोम का बना हुग्रा कपड़ा (जैन)

वि०—जंगम सम्बन्धी (जैन)

जंगी-वि० [फा०] १ लड़ाई से संबंध रखने वाला, युद्धसंबंधी।

उ०—वजे त्रंब जंगी गड़े नाळ वग्गी, लजावंत जंगी दुहूं दीठ लग्गी।

—रा.रू.

२ फौजी, सैनिक. ३ बड़ा, दीर्घकाय। उ०—जंगी हुवद जड़ियां जगजाळा, पाग हुवा गयंद पगगाळा।—सू.प्र.

४ मजबूत. ५ वीर, योद्धा, लड़ाका। उ०—पवन नंद परचंड जोम दाखण लड़ जंगी, प्रजर अमर अणभंग बजर आयुध बजरंगी।
—र.रू.

यौ०—जंगीगार, जंगीराग, जंगीलाट, जंगीलाठ, जंगी हरड़े।

जंगीगार—सं०पु०यौ०—एक विशेष प्रकार का बाण या तीर (अ.मा.)

जंगीराग—सं०पु०यौ०—युद्ध का राग, सिंधुराग। उ०—पंलै कवाडी निकळा बाडा, जंगी राग घोरै पोळ। महा जोम आपरंगी, 'लीक' सोडा मोड़।—बा.दा.

जंगीलाट, जंगीलाठ—सं०पु०यौ०—फौज का सबसे बड़ा अफसर। उ०—वादोदरां माथै गगांधीस ज्यूं काढ़वा केवा, लागो फेड़ै बाढ़वा हजारां जंगी लाठ।—गिरवरदांन कवियो

जंगी हरड़ै—सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार की हर्र, काली हड़ (अमरत)

जंगू—देखो 'जंग' (रू.भे.) उ०—लख लहण सवालख विड्वण का विरद बुलावै, वडे जंगू विरद बोल लोहबांहूं को जोम चढ़ि लड़ावै।
—सू.प्र.

जंगेज—सं०स्त्री० [सं० यज्ञज] अग्नि (अ.मा.)

जंगेव—सं०पु०—१ जंग का उत्सुक व्यक्ति. २ युद्ध, जंग।
उ०—जोवा रंगां वारंगां विरुणा नाद सांमाजतौ, जटी धू अजोणी नाद साभतौ जंगेव। बाजता विढोणां नाद वाजियौ रांणेस बावौ, गुणां नाद अग्राजतौ गाजियौ गंगेव।—हुकमीचंद खिड़ियौ

जंगोळ—सं०पु० [सं० जाङ्गुलु] १ विष उतारने की चिकित्सा विशेष (जैन)
२ आयुर्वेद का एक अंग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है (जैन)

जंघ—देखो 'जंघा' (रू.भे.) उ०—१ नितंबणी जंघ सुकरभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रुख। जुग्रळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखांणै विदुख।—वेलि.
उ०—२ जंघ सुपत्तळ करि कुंग्रळ, भीणी लंब प्रलंब। ढोला एही मारुई, जांणिक कणयर कंब।—ढो.मा.

जंघस्यळ—सं०पु०—१ जंघास्थल। उ०—जंघस्यळ किसौ छै, जिसौ करभ।—वेलि.टी.
[यौ० फा० जंग+स्थल] २ युद्ध का मैदान।

जंघा—सं०स्त्री० [सं०] १ जांघ, रान।
२ पिंडली। उ०—जंघा पवित्र करिस हूं जटधर, नृत करतौ आगळ नाटेसर।—ह.र.
रू०भे०—जंघ।

जंघाचारण—सं०पु० [सं० जङ्घाचारण] तप विशेष से सिद्धि प्राप्त, शक्ति वाला चारण मुनि (जैन)

जंघात्र—सं०पु०—जंघा पर धारण करने का कवच। उ०—सबाहुत्र उरत्र जंघात्र संगी, चहै वंस चील्हा रहै एक रंगी।—वं.भा.

जंघाळ—वि०—तेज चलने वाला, वेग से चलने वाला। उ०—लंकाळ नड़े चाल जंघाळ लेलै, हली राजड़ा ज्यौं प्रथीराज हेलै।—मे.म.
सं०पु०—देखो 'जंगाळ' (रू.भे.) उ०—लाजवरद सील सुपेद, जंघाळ जुगत व्रत। रचि ग्रमास नवरंग, करे मधि चित्र देव कृत।
—रा.रू.

जंघालस—सं०पु० [फा० जंगार] १ तांबे का कसाव, तूतिया. २ एक रग जो तांबे का कसाव है।

जंघाळी—देखो 'जंगाळी' (रू.भे.) उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी, जळ जुत ठोडी पर टिमकी जघाळी।—ऊ.का.

जंघावरत—सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा (शा.हो.)

जंचणौ, जंचबौ—देखो 'जचणौ' (रू.भे.) उ०—भीज्योड़ा कपड़ां री वेढ़गी पोसाक में वो चोर व्है ज्यूं ईज जंचतौ हौ।—रातवासौ

जंचा—वि०—जांचा हुआ, परीक्षित, अचूक।

जचाणौ, जंचाबौ—देखो 'जचाणौ, जचाबौ' (रू.भे.)

जंचायोड़ौ—देखो 'जचायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जचायोड़ी)

जंचावणौ, जंचावबौ—देखो 'जचाणौ' (रू.भे.)
जंचावणहार, हारौ (हारी), जंचावणियौ—वि०।
जचाविग्रोड़ौ, जंचावियोड़ौ, जंचाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जंचावीजणौ, जंचावीजबौ—कर्म वा०।
जंचणौ, जंचबौ—अक० रू०।

जंचियोड़ौ—देखो 'जचियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जंचियोड़ी)

जंज—सं०पु० [सं० यजन] संन्यासी, फकीर।

जजण—सं०पु० [सं० यजन] यज्ञ। उ०—ऊठियौ तिणवार वडौ उतौवळ सूरजसिंघ सहंस वळभ। कोप नळ काळ भुजाळ कमंधज, दोमजि जंजण सत्रुदळ।—गु.रु.वं.

जंजर—ताला उ०—जंजर जड़िया जांह, आघे जा अे उर महे। कूंची कोण करांह, जड़िये जाते जेठवा।—जेठवा
२ एक शस्त्र विशेष (सू.प्र.)

जंजळ—वि० [सं० जर्जर] जर्जर, जीर्ण, पुराना, कमजोर, बेकाम।

जंजाळ—सं०पु०—१ झंझट, बखेड़ा, प्रपंच। उ०—मिळण नै आया दिन सूं रात, पिघळता ढळिया सांम्ही ढाळ। रह्यौ न दिन दिन रात न रात, बिचाळे सांझ बणी जंजाळ।—सांझ
२ बंधन, फंसाव, उलझन। उ०—१ वंदण स्री गुरुदेव कूं, जिण काटे जंजाळ। मूझ सुणाया मै'र कर, गुण थारा गोपाळ।
—भगतमाळ
उ०—२ म्हारा होसी कद नयण निहाल, म्हारा कटसी कद जीव रा जंजाळ।—मी.रां.
मुहा०—जंजाळ में पड़णौ (फंसणौ)—चक्कर में पड़ना, किसी उलझन में फंसना।
३ स्वप्न, सपना। उ०—१ आसा लुध्धी हूं न मुइय, सज्जन जंजाळेह, मारू सेकइ हथ्थड़ा, भीणे अंगारेह।—ढो.मा.

उ०—२ सूती ए गौरांदे रंग भर मैल में, सूतोड़ी नै आयौ ए जंजाळ, सपना में म्हारा भंवर मिळ्या छै आज।—लो.गी.

सं०स्त्री०—४ एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक। उ०—फरहरै चींद वहरक सपूर, गुरजां जंजाळ तोपां गरूर।—रांमदांन लाळस

५ बड़े मुंह वाली एक प्रकार की तोप। उ०—गज गाडां जंबूरां जंजाळां दागी गोम गाज, दळां आडा अच्छरां अच्छरां लागी दीठ, जाडा थंडां ऊपरै जोसेल आग जागी जठै, रोसेल गुराड़ां ह्राडां वागी खागां रीठ।—दुरगादत्त वारहठ

वि०—असत्य, झूठा। उ०—माया जाळ जंजाळ है, जग गोरखधंधा।—केसोदास गाडण

जंजाळियौ, जंजाळी–वि०—१ उपद्रवी, फसादी. २ प्रपंच करने वाला, प्रपंची।

३ देखो 'जंजाळ' (अल्पा०, रू.भे.)

जंजीर, जंजीरा–सं०स्त्री० [फा०] १ शृंखला, सांकल। उ०—आया सोही जावसी, राजा रंक फकीर। कोई सिंघासण बैठ, कोई पांव लगी जंजीर।—अज्ञात

२ किवाड़ की कुंडी. ३ किसी वस्त्र कपड़े आदि के जंजीरनुमा गूंथे हुए किनारे. ४ जंजीरनुमा कोई वस्तु।

रू०भे०—जंजर, जंजीर, जंझर।

जंजीरेदार–वि०यौ० [फा०] १ जंजीर की तरह सिलाई किया हुआ. २ जंजीरनुमा, जो जंजीर की तरह मालूम पड़े।

जंजीरौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का मंत्र विशेष. २ बडी व मोटी जंजीर।

रू०भे०—जंझीरौ।

जंझर—देखो 'जंजीर' (रू.भे.) उ०—समरथ टाळी ईस्वरी, कर हूंत क्रपा कर। किलमां ग्रहिया राव नै, जड़िया पग जंझर।

—जुंझारसिंह मेड़तियौ

जंझरी–सं०स्त्री०—एक प्रकार का बाजा विशेष।

जंझीरौ—देखो 'जंजीरौ' (रू.भे.)

जंझेड़णौ, जंझेड़बौ–क्रि०स०—झकझोरना।

जंझेड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—झकझोरा हुआ (स्त्री० जंझेड़ियोड़ी)

जंझौ–वि० [सं० योद्धा] योद्धा, बहादुर, वीर।

जंडे–सं०स्त्री०—जैसलमेर राज्य की वह भूमि जहाँ पहले जंडे भाटियों का अधिकार था।(बां.दा.ख्यात)

जंत–सं०पु०—१ बैलगाड़ी के पहिये से लगी पैंजनी के अगले सिरे को बाँधने के काम में आने वाली एक प्रकार की रस्सी।

वि०वि०—यह प्रायः भैंस, गाय आदि के पूंछ के बालों को मिला कर सूत की बनी होती है। बालों के संयोग से इसकी मजबूती बढ़ जाती है।

[सं० यंत्र] २ यंत्र, कल. ३ बख्तर की कड़ी।

उ०—जिके सूरवीर दमंगळ ऊगड़ा विनां दुचता रहै ओर जुद्ध में बगतर री जंत (कड़ियां) जड़ै नहीं, उघाड़ी छाती लड़ै।—वी.स.टी.

४ वशीकरण आदि के लिये प्रयोग में लिया जाने वाला यंत्र, तांत्रिक (जैन)

[सं० यंतृ] ५ दंड देने या शासन करने वाला व्यक्ति. ६ छोटी जाति वाला।

[सं० जंतु] ७ जन्म लेने वाला जीव, प्राणी।

यौ०—जीवजंत, जीवजंतु।

[सं० यंत्री] ८ कुछ अधिक मोटे तारों को खींचने का लोहे का एक औजार जो स्वर्णकार काम में लिया करते हैं।

[रा०] ९ जूता।

जंतपिल्लणकम्म, जंतपीलणकम्म–सं०पु०यौ० [सं० यंत्रपीड़न कर्म] यंत्र द्वारा तिल, ईख आदि पेलने का धंधा या व्यवसाय (जैन)

जंतर—१ देखो 'जंत्र'। उ०—१ जंतर मंतर जादू टोना, माधुरी मूरति बसिके।—मीरां उ०—२ जतन करौ जंतर लिख बांधो, ओखद लाऊं घंसिके।—मीरां उ०—३ वीणां जंतर तार, थें छेड़्या उण राग रा। गुण नै झुरू गंवार, जात न झींकूं जेठवा।—जेठवा

सं०पु०—२ ताला। उ०—जंतर जर हरणूं अभ्यंतर जड़ियौ। पीतम प्यारी नै परहरणूं पड़ियौ।—ऊ.का.

जंतरड़ी, जंतरपट्टी—देखो 'जंतरी' १ (अल्पा., रू.भे.)

मुहा०—जंतरड़ी में काढ़णौ—देखो 'जंतरी में काढ़णौ।'

जंतर-मंतर–सं०पु० [सं० यंत्र-मंत्र] १ जादू-टोना, टोना-टोटका।

२ ज्योतिषियों के नक्षत्र एवं उनकी गति आदि का निरीक्षण करने का स्थान।

जंतरणौ, जंतरबौ–क्रि०स०—सजा देना, मारना, पीटना।

रू०भे०—जंतरावणौ, जंतराववौ, जंत्राणौ, जंत्रावौ, जंत्रावणौ, जंत्राववौ।

जंतरायोड़ौ–भू०का०कृ०—सजा दिया हुआ, मारा हुआ, पीटा हुआ। (स्त्री० जंतरायोड़ी)

रू०भे०—जंतरावियोड़ौ, जंत्रायोड़ौ, जंत्रावियोड़ौ।

जंतरावणौ, जंतराववौ—देखो 'जंतराणौ, जंतरावौ' (रू.भे.)

जंतरावियोड़ौ—देखो 'जंतरायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जंतरावियोड़ी)

जंतरी–सं०स्त्री० [सं० यन्त्रिः संकोचे] १ स्वर्णकारों या तारकशों का तारों को पतला करने का धातु की पट्टी का छेददार एक औजार।

मुहा०—जंतरी में काढ़णौ— बहुत कष्ट देना।

रू०भे०—जंत्रणी, जंत्री।

अल्पा०—जंतरड़ी, जंतरपट्टी, जंती, जंतौ, जंत्रड़ी।

२ तिथि-पत्र, पत्रा. [सं० यंत्री] ३ बाजा बजाने वाला।

वि०—जादू-टोना करने वाला, जादूगर।

जंतुफळ–सं०पु० [सं० जंतुफल] गूलर, उदुंबर, ऊमर।

जंतौ–सं०पु० [सं० यंत्र] १ यंत्र, कला. २ देखो 'जंतरी'।

(अल्पा., रू.भे.)

जंत्र-सं०पु० [सं० यंत्र] १ यंत्र, कल. २ तांत्रिक यंत्र।
[illegible]—जंतर-मंतर, जंत्र-मंत्र।
३ चांदी सोने या तांबे का बना ताबीज जिसके भीतर तांत्रिक या टोने की वस्तु रहती है। ताबीज। उ०—सी दिनरो ना फूलां में मढाई [illegible] जंत्र मादळिया में तथा चोकी [illegible]।—[illegible].
४ बाजा, वाद्य। उ०—जुगती च्यार जुग च्यार जंत्र, ग्रस्ट च्यार [illegible]। [illegible] नादर मधुर, विध रस गीत वखाण।—सू.प्र.
५ वीणा। उ०—जुग [illegible] कवेस वेस मुनि जंत्र वजायो। [illegible] कवेस [illegible] मुनि [illegible] ग्रणायो।—ला.रा.
६ तोप, बंदूकादि ग्रस्त्र. ७ ग्रस्त्र विद्या। उ०—गिणां साथि ग्राये [illegible]। भणै जंत्र चाळीस संग्राम भूपं—सू प्र.
८ जंत्रणी।
रू०भे०—जंतर, जंत्रक।
जंत्रक-देखो 'जंत्र' (रू.भे.) उ०—रेवंत चढिया रोदराव, वज जंत्रक भेरी। माग न लाधै भांण रथ, रज ग्रंबर घेरी।—द.दा.
जंत्रधर, जंत्रधार, जंत्रपांणी-सं०पु०यौ०—वीणा को धारण करने वाला, नारद। उ०—हड़ हड़ तांम जंत्रधर हसिया। लड़तां सात सहंस भड़ लसिया।—सू.प्र. उ०—२ गिले जंत्रधार काळी सिधी वज्र-तालो गूटै, मार जाळी तूटै गिध फूटै स्रोण सोर। 'जालमो' ग्रतूटै खेध दुर्ग थेट लागी जूटै, वांणासां विछूटै घाट छूटै नथी वीर।
—हुकमीचंद खिड़ियो
उ०—३ मुनि जंत्रपांणी ग्रसोमं वजायो। ललक्कारि भैरू किल-क्कारि ग्रायो।—ला.रा.
जंत्रमंत्र-सं०पु०यौ०—जादू, टोना।
जंत्रणी-सं०स्त्री०—१ यंत्र की क्रिया को जानने वाली या बनाने वाली. २ देखो 'जंतरी' (रू.भे.)
जंत्रबांण-सं०पु०यौ०—एक प्रकार का ग्रस्त्र विशेष (ला.रा.)
जंत्ररडी—देखो 'जंतरी' (ग्रल्पा., रू.भे.)
जंत्रतार-सं०पु०यौ०—१ तार वाले वाद्य. २ सारंगी।
जंत्रांणि-सं०स्त्री० [सं० यंत्र] १ जंतर-मंतर. २ यंत्र, कला. ३ तांत्रिक यंत्र।
जंत्राणी, जंत्रायो—देखो 'जंतराणी' (रू.भे.)
जंत्रायोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'जंतरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० जंत्रायोड़ी)
जंत्रावणो, जंत्रावबो—देखो 'जंतराणो' (रू.भे.)
जंत्रावियोड़ो—देखो 'जंतरायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जंत्रावियोड़ी)
जंत्रि, जंत्री-सं०पु० [सं० यंत्रिन्] १ वीणा ग्रादि तार वाले वाद्य बजाने वाला व्यक्ति, यथा—नारद ग्रादि। उ०—तप्त जंत्र जंत्री तालिया, दरगाह पह गिरवांणिया।—र.रू.
२ तंत्र-मंत्र जानने वाला, तांत्रिक। उ०—वरधमांन नंद इंद्र 'ग्रग-जीत' का मंत्री। सरब सावधांन जैसे थांन-थांन जंत्री।—रा.रू.
सं०स्त्री०—३ देखो 'जंतरी' (रू.भे.)
जंद-सं०पु०—१ भूत, प्रेत, पिशाच ग्रादि।
[फा० जद] २ पारसियों का धार्मिक ग्रंथ. ३ वह भाषा जिसमें पारसियों का धार्मिक ग्रंथ 'जंद ग्रवस्था' लिखा गया है।
जंप-सं०पु०—१ नक्कारे की ग्रावाज. २ चैन, शान्ति।
उ०—जंप जीव नहीं ग्रावती जांणी, जोवण जावणहार जण। वहु विलखी दीछड़ती वाळा, वाळ सँघाती वाळपण।—वेलि.
जंपग, जंपय-वि० [सं० जल्पक] बोलने वाला (जैन)
जंपणी, जंपबी-क्रि०स०ग्र० [स० जपन] १ किसी वाक्य या वाक्यांश को बराबर लगातार धीरे-धीरे देर तक कहना या दुहराना, जपना।
उ०—जेण रांम उज्जळ सुजस, जंपे सकळ जिहांन।—र.ज.प्र.
२ कहना। उ०—१ साहां राव ग्रह मेल्हियो 'सांगै', नियम न जोवै नहीं नियाव। ग्रमर उकेकल करो एकरां, बोहो नांमी जपै वळराव।
—महाराणा संग्रामसिंह रो गीत
उ०—२ रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवा सामरथीक कुण। जाइ जांणिया तिसा मैं जंपिया, गोविंद रांणी तणा गुण।
—वेलि.
३ नक्कारे का बजना. ४ झँपना, हलकी नींद ग्राना।
जंपणहार, हारौ (हारी), जपणियो— वि०।
जंपिग्रोड़ो, जंपियोड़ो, जंप्योड़ो—भू०का०कृ०।
जंपीजणो, जंपीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।
जंपती-सं०पु० [सं०] पति-पत्नी, दम्पती।
जंपांण-सं०पु० [सं० जम्पान] एक प्रकार का वाहन, पालकी विशेष (जैन)
जंपिर-वि० [सं० जल्पिन्] बोलने वाला (जैन)
जंफ-सं०पु०—युद्ध। उ०—जांगळू राउ ऊपरइ जंफ, सतळज्ज लंघि सुलितांण संफ।—रा.ज.सी.
जंफीरौ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
जंबक—देखो 'जंबुक' (रू.भे.) उ०—जंबक सबद नचीत कर, डर कर तूं मत भाज। सादूळो खीजै सुणै, जळहर हंदो गाज।—बां.दा.
जंबवइ-सं०स्त्री० [सं० जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक राणी (जैन)
जंबाळ-सं०पु० [सं० जंबाल] १ कीचड़, पंक. २ जरायु (जैन)
जंबाळणी, जंबाळनि-सं०स्त्री० [सं० जंबालिनी] नदी (ग्र.मा.)
रू०भे०—जंभाळणी, जंबाळिनी।
जंबियौ—देखो 'जंभियो' (रू.भे.)
जंबीर-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का नीबू। उ०—सदाफळ जंबीर नारंगी, बील फळ उणिहार।—रुकमणी मंगळ
रू०भे०—जंबू।
जंबीरीनींबू-सं०पु०यौ० [सं० जंबीर] एक प्रकार का खट्टा व बड़ा नीबू।
रू०भे०—जंबेरी, जंबेरी नींबू, जंभीरी नींबू, जंभेरी, जंम्मेरी।
जंबु—१ देखो 'जंबुक' (रू.भे.) २ देखो 'जंबुद्वीप' (जैन)
३ देखो 'जंबुस्वांमी' (जैन)

जंवुग्रद्वीप, जंवुग्रहदीप—देखो 'जंवुद्वीप' (रू.भे.)
उ०—सोहिया प्रवाड़ा सिंघ सीस । जंवुग्रहदीप जग्गी जगीस ।
—रा.ज.सी.

जंवुक–सं०पु० [सं० जम्बुका] १ बड़ा जामुन. २ एक प्रकार का फूल । ३ सियार, शृगाल, गीदड़ । उ०—जिरा वन भूल न जावता, गेंद गवय गिड़राज । तिरा वन जंवुक ताखड़ा, ऊवम मंडै आज ।—बी.स.
रू०भे०—जंवु, जंवुय, जंवू ।

जंवुखंड, जंवुदीव, जंवुद्दीप, जंवुद्वीप–सं०पु० [सं० जम्बूद्वीप] पुराणों के अनुसार सात बड़े-बड़े द्वीपों में से एक द्वीप । उ०—१ पहिलुं जंवुदीव वखांरगउ, जोग्रण लाख प्रमांरग । भरहखंड तसु भीतरि जांरगउं, नाना विह गुरग ठांरग ।—विद्याविलास पवाड़उ
रू०भे०—जंवुग्रद्वीप, जंवुग्रहदीप, जंवूदीप, जंवूद्वीप ।

जंवुद्दीवपन्नति–सं०स्त्री० [सं० जंवुद्वीपप्रज्ञप्ति] इस नाम का पांचवां उपांग सूत्र (जैन)

जंवुमत्त–सं०पु० [सं० जंवुमत्] जांववांन नाम का एक रीछ (रांककथा)

जंवुमति–सं०स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम ।

जंवुमाळी–सं०पु० [सं० जंवुमालिन्] एक राक्षस का नाम ।

जंवुय—देखो 'जंवुक' (रू.भे.) उ०—जिम ग्रंतर गोइक दुद्धि ग्रंतरु मरिग सुरमरिग, जिम ग्रंतरु सुरतरु पळास जिम जंवुय केसरि ।
—ऐ.जै. का.सं.

जंवुसुदंसणा–सं०स्त्री० [सं० जंवुसुदर्शना] जंवुद्वीप में होने वाला एक वृक्ष विशेष, जिसके काररग द्वीप का नाम जंवूद्वीप हुग्रा (जैन)

जंवुस्वामी–सं०पु०—एक जैन स्थविर का नाम ।
रू०भे०—जंवूस्वांमि ।

जंवू–सं०पु० [सं०] १ देखो 'जंवुक' (रू.भे.) २ देखो 'जंवीर' (रू.भे.)
उ०—धवै धामरग खइर खीररगी, पास पाडल लींव । ग्रंव जंवू ग्रांबिली करंगचि, कंद्दवट्ट कांव ।—रुकमरगी मंगळ
३ जंवू वृक्ष के ग्राकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ (जैन)

जंवूणद, जंवूणय–सं०पु० [सं० जाम्बूनद] सोना, स्वर्ण (जैन)

जंवूदीप, जंवूदीव, जंवूद्वीप—१ देखो 'जंवुद्वीप' (रू.भे.)
उ०—१ जंवूदीप में जांम एकौ जिकारौ । दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारौ ।—मे.म. उ०—२ जंवूद्वीप मंइ च्यार, महा विदेह मभार । धातकी पुस्कर जेथि, ग्राठ-ग्राठ ग्ररिहंत तेथि ।
—स.कु.
२ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा (शा.हो.)

जंवूनदी–सं०स्त्री०—जवुद्वीप की एक नदी (पौराणिक) ।

जंवूपीढ़, जंवूपेढ़–सं०पु० [सं० जंवूपीठ] एक प्रदेश का नाम (जैन)

जंवूफळ–सं०पु०—१ जामुन. २ एक सामुद्रिक चिन्ह ।
उ०—भुज प्रलंव ग्राजांन, कमळ ग्राकृति पद कोमळ । जव ग्रंवुज ध्वज कळस, मीन ग्रंकुस जंवूफळ ।—रा.रू.

जंवूफळकालिया–सं०स्त्री० [सं० जम्बूफलकालिका] जामुन की बनी काले रंग की मदिरा विशेष (जैन)

जंवूय—देखो 'जंवुक' (रू.भे., जैन)

जंवूर, जंवूरक–सं०पु० [फा०] प्रायः ऊंटों पर लादी जाने वाली एक प्रकार की छोटी तोप । उ०—वूर पड़ि जंवूर विहुं घड़, भूरज वीछड़ि पड़ै खड़भड़ । विढ़रग घरि ग्रड़ सुहड़ समवड़, वड़वड़ै पिंड चार ।—रा.रू.

जंवूरची–सं०पु० [फा०] जवूर नामक तोप को चलाने वाला ।

जंवूरनाळ, जंवूरनाळी–सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार की तोप ।
उ०—गज नाळ्यां, सुतर नाळ्यां, जंवूरा नाळ्यां, रांमचंगी हथनाळ्यां रा चरगरगाट वाजै छै ।—रा.सा.सं.

जंवूरी–सं०स्त्री०—१ पतले-पतले तारों को पकड़ कर खींचने का लोहे का एक छोटा ग्रोजार. २ एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

जंवूरौ–सं०पु० [फा० जंवूर] १ पतले-पतले तारों को पकड़ कर खींचने का लोहे का एक बड़ा ग्रोजार. २ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
३ देखो 'जंवूर' (रू.भे.) उ०—गंज गाडां जंवूरां जंजाळां दागी गोम गांन, दळां ग्राडां ग्रछरां ग्रछरां लागी दीठ । जाडा थंडां ऊपरै जोसेल ग्राग जागी जठै, रोसेल गुराड़ां हाडां वागी खगां रीठ ।
—दुरगादत्त वारहठ
४ वारग का फल । उ०—घोड़ा भड़ घमसांरग पाखरां वगतर पूरा, चौधारा चमकंत जवर खग ढाल जंवूरा ।—वगसीरांम प्रोहित री वात
५ किसी वाजीगर के साथ रह कर खेल दिखाने वाला लड़का.
६ ढीलेढाले कपड़े पहिने हुए प्यारा वच्चा ।
ग्रल्पा०—जंवूरिग्रौ ।

जंवूस्वांमि—देखो 'जंवुस्वांमी' (रू.भे.) उ०—लव्धि गौतमस्वांमि तरगी, प्रतिवोध जंवूस्वांमि तरगउ ।—व.स.

जंवेरी, जंवेरी नींवू—देखो 'जंवीरी नींवू' (रू.भे.)

जंभ–सं०पु० [सं०] १ जंवीरी नींवू. २ प्रह्लाद के तीन पुत्रों में से एक. ३ डाढ़, चौभड़. ४ एक दैत्य जो महिषासुर का पिता था एवं इंद्र द्वारा मारा गया था । उ०—रिमां खेसै लागौ दीखै इंद्र ज्यूं जंभ पै रूठौ । ग्राहंसी भारायां ऊठी हूणूं ज्यूं ग्रोपाळ ।
—गुलावसिंह महडू

जंभणी–सं०स्त्री० [सं० जृम्भरगी] एक प्रकार की विद्या (जैन)

जंभ-भेदी, जंभराति–सं०पु० [सं० जंभाराति] जंभ नामक दैत्य का संहार करने वाला, इंद्र (नां.मा., ह.नां.)

जंभा–सं०स्त्री० [सं० जम्भा] जम्भाई, उवासी (जैन)

जंभाग्राइ, जंभाई–सं०स्त्री० [सं० जृम्भा, जृम्भिका] निद्रा या ग्रालस्य ग्रादि के काररग मुंह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया, उवासी ।
उ०—ग्रंग विस्फोटता कीयौ । जंभाई ग्राई, पाछे वयौं थोड़ा-थोड़ा चाल्या, गति दिखाई ।—वेलि.
रू०भे०—जंभात ।

जमाणो, जमाणी-वि०स्त्री० —जंभाई का रोगवाला, उंमाना ।
उ०— [illegible] री मानी जंभाणी, आवा गोदामें आनी जंभाती ।
—ऊ.का.

जमात— देखो 'जमाई' (रू.भे.) उ०—बड़े प्रात नी मान मंजीर बागे, [illegible] जंभात जमात जागे ।—मे.म.

जभारात, जभारानि, जंभारि-सं०पु०यौ० [सं० जम्भाराति, जंभारि] जंभ नामक दैत्य का शत्रु, इन्द्र (अ.मा., नां.मा.)

जभाळणी—देखो 'जवाळणी'—रू.भे. (ह.नां.)

जंभासुरमारण-सं०पु०यौ०—जंभासुर नामक दैत्य का संहार करने वाला, इन्द्र (डि.को.)

जंभियग्राम-सं०पु० [सं० जृम्भिकग्राम] बंगाल में पार्श्वनाथ पहाड़ी के पास माना हुआ एक ग्राम जिसके पास महावीर स्वामी को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था (जैन)

जंभियो-सं०पु०—एक प्रकार का कटारनुमा सीधा छुरा ।
रू०भे०— जबियो ।

जंभीरी नींबू जभेरी—देखो 'जंबीरी नींबू' (रू.भे.)

जम—देखो 'जन्म' (रू.भे.) उ०—दुल्लह लाधउ माणस जंम अनी निगमइ जिणवर धंम्रु ।—चिहुंगति चउपई

जमजाळ-वि०—यमराज को भी पीछे हटा सकने की सामर्थ्य रखने वाला, महावीर, बहुत बलवान । उ०—माफी 'मेघ' हरो मछराळ हूं नलन मल्ल हाथाळ । जैत्रवाद्री जंमजाळ केवियां रो काळ सूरधीर गणगाळ ।—ल.पि. २ देखो 'जमजाळ' (रू.भे.)

जंमण—देखो 'जन्म' (रू.भे.) उ०—जंमण मरण ति आंणइ छेहु । [illegible] निति एक थमड जिणनाह । -चिहुंगति चउपई

जंमले-वि० [अ० जुम्लः] सब, कुल, समस्त ।

जंमाई—देखो 'जंवाई' (रू.भे.)

जंम्भेरी—देखो 'जंबेरी' (रू.भे.) उ०—केळां री घड़ां आय रही छै । जंम्भेरी, नींबू, नारंगी आय रहिया छै ।—डाढ़ाळा सूर री वात

जंवर-सं०पु० [अ० जौहर] १ तलवार या किसी अन्य धारदार हथियार पर के सूक्ष्म धारियों के समान दिखाई पड़ने वाले चिन्ह जिनसे लोहे की उत्तमता प्रकट होती है. २ देखो 'जौहर' (रू.भे.)
उ०—१ रावळ दूदा री वैरां बीजो तो सगळी ही गढ़ ऊपर जंवर कर बळी । एक लखां सांगळियांणी री बेटी सींवसर थी सु पातसाह सीवसर गनै आयो, तरै इण दूदा री वैर कह्यो—दूदा रो माथो आंण दै तो हूं बळूं ।—नैणसी
उ०—२ चित्तोड़ भिळियो जद साढ़े तीन सै लुगायां रो जंवर हुवो ।
—बां.दा. ख्यात

जंवरी-सं०पु०—१ जौहरी. २ देखो 'जौहर' (रू.भे.) ।

जंवहर, जवहार-सं०पु०—जवाहरात । उ०—१ माह तांम समसेर, जड़त जंवहरा जनंवर ।—सू.प्र. उ०—२ जमदढ़ खग जंवहार अधिक रीझै जनदावै । दिया जीत दळथंभ इता गिणतां नह आवै ।—सू.प्र.

जंवहरी—देखो 'जौहरी' (रू.भे.) उ०—नरुका जंवहरी जोधांण का नाथ ।—सू.प्र.

जंवाइ, जंवाई-सं०पु० [सं० जामातृ] १ दामाद, जामाता ।
उ०—१ आवै मोठ सवार रा, गावै वढिया खीर । बाई कहै जिण बैंन रा, वर्गा जंवाई वीर ।—ऊ.का. उ०—२ सुसरोजी बुलावै, जी जंवाई जी, सासू बुलावै जी, थांरा छोटा साळा कर रह्या थारो चाव ।—लो.गी.
अल्पा०—जंवाईड़ो ।
२ एक मारवाड़ी लोकगीत का नाम ।
रू०भे०—जंमाई, जमाई ।

जंवाड़ो—देखो 'जुग्रो' २ (अल्पा., रू.भे)

जंवार-सं०पु० [सं० युग-धार] नमस्कार, अभिवादन । उ०—सारा ज मिळ सरदार, जव किया आप जंवार । बाहदर मिळै कर मांन, इम लगय भुज असमांन ।—पे.रू.

जंवारा-सं०पु० [सं० यवहार] (बहु व०) विभिन्न पर्वों उत्सवों, व्रतों आदि के अवसर पर प्रायः स्त्रियों द्वारा मिट्टी के छोटे से कुंडे में बोये गये गेहूं या जौ के बढ़े हुए अंकुर, इन्हें पवित्र माना जाता है । उ०—ऊंचे मगरे एजी म्हारा हरिया जंवारा लुळिया जवारा, नीचे मिरगा जव चरै, मिरगा घेरौ नी ब्रह्माजी रा ईसर जी घेरो नी वन रा मिरगला ।
रू०भे० जवारा, जुहारा । —लो.गी.

जंवारी—देखो 'जवारी' (रू.भे)

जंवारु-सं०पु०—जवाहरात । उ० तं कांई मागीइ जीणइं कुणह पूठि न लागीइ, तं कांई घडीइ जीणइं जंवारु जडीइ ।—व.स.

जंवाळिनी—देखो 'जंवाळनि' (रू.भे.) (ना.डि.को.)

जहंगम-सं०पु० [सं० अजिह्मग] तीर, बाण (डि.को.)

जंही—वि०—जैसा, समान । उ०—हंस जंही हालंदियां, धाटेचियां तियांह, कनकलता कठियांणियां, जोड़ै नहीं जियांह ।—वां.दा.

ज-सं०पु०—१ जन्म. २ जीव. ३ विजय. ४ योगी. ५ मृत्युंजय. ६ पिता. ७ विष्णु. ८ विष. ९ तेज (एका०)
सं०स्त्री०—१० जड़, मूल (एका०) ११ छंदशास्त्र में तीन अक्षरों का एक गण, जगण ।
प्रत्यय [सं जन्] उत्पन्न, जात ।
अव्यय० निश्चयार्थकसूचक 'ही' । उ०—१ वावहिया तूं चोर, थारी चांच कटाविसूं । राति ज दीन्ही लोर, मइं जांण्यउ प्री आवियउ ।
—ढो.मा.
उ०—२ तद राजा कह्यो—साहजी पार का वेटा थांरै कन्है रह सकै ज नहीं ।—पलक दरियाव री वात
सर्व०—१ जिस । उ०—मीरखांन चाकर रह्यो, ज- दन भूप के सत्य । त-दन वध्यो बट बीजलां, कहमू आगम कत्थ ।—ला.रा.
२ उस । उ०—विच साह दलां डेरा वरणे, तेज पुंज आयो त दिन । उतरियो गयंद हूंता 'अभो', जळ चढियो मुरधर ज दिन ।—सू.प्र.

जइ—क्रि०वि०—१ जहां। उ०—वाळू ढोला देसड़उ, जइं पांणी कूंवेण। कूं कूं-वरणा हथ्थड़ा नहीं जु घाढा जेण।—ढो.मा.

[सं० यदि] २ जो, यदि। उ०—सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ। खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ। —ढो.मा.

[सं० यदा] ३ जब (जैन)

सं०पु० [सं० यति] १ जितेन्द्रिय, सन्यासी, साधु (जैन) २ छंद-शास्त्र में कविता का विश्राम-स्थान, यति (जैन)

वि० [सं० जयिन्] जीतने वाला, विजयी।

रू०भे०—जई।

जइजइकार—देखो 'जैजैकार' (रू.भे.) उ०—नवइ लाख वांन मूकाव्यां, वरत्यउ जइजइकार। धन्य धन्य राउळ कांन्हडदे, क्रिसण तणउ अवतार। —कां.दे.प्र.

जइण—सं०पु० [सं० जैन] जिनदेव का भक्त (जैन)

वि०—१ जिनदेव से सम्बन्ध रखने वाला, जिन भगवान का (जैन)

[सं० जयिन्] २ जीतने वाला (जैन)

[सं० जविन्] ३ वेग वाला, वेगयुक्त (जैन)

जइणा—वि०—जितना। उ०—सो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ। गुणवंत सुगुरु भो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ। —ऐ.जै.का.सं.

जइत—सं०स्त्री० [सं० जिति] जय, विजय, फतह। उ०—तिम करइ जइत तुड़िमल्ल तोइ, कमरा कमंध भाजइ न कोइ।—रा.ज.सी.

जइतखंभ—सं०पु०—विजय-स्तम्भ।

वि०—विजय करने वाला। उ०—वाहरि साहि झाड़, साहि विभाड़ वळियां साहि कंधि कुदाळ, सबळ साहि मांन-मरदन, निवळ साहि थापनाचारज, संग्रांम साहि····, रिण भाजणा साहि जइत-खंभ सुरितांण दूसरउ अलावदीन, किसइ अेक आरंभिक-पारंभि आइ टिक्यउ छइ।—अ. वचनिका

जइतणौ, जइतबौ—देखो 'जीतणौ, जीतबौ' (रू.भे.)

जइतवादी—वि०—देखो 'जैतवादी' (रू.भे.) उ०—धवळ हस्ती मेरु सरिखु अनोपम गुणवंत (ए), सुभट सइनु जइतवादी साहसीक बळवंत ए।—नल-दवदंती रास

जइतवार—वि०—जीतने वाला।

जइतेल—सं०पु०—मालती का तेल। उ०—धूपेल चांपेल मोगरेल करणेल जइतेल एवं विधि तेलिइं चोळा भीजाइ।—व.स.

जइय—सं०पु० [सं० जीव] जीव, प्राणी। उ०—ताहरी इच्छा दीध तैं, जइयां आदि जनम्म। तइयां हूंतां अम्ह तण, केसव किसा करम्म। —ह.र.

जइलच्छि—सं०स्त्री०—विजयलक्ष्मी। उ०—मंत्रि इण परि मंत्रि इण परि वरीय जइलच्छि जय जय रव वेहू वलीअ देस माहि तसु आंण वरतीअ सीमाडा सवि मिळीय भेटि लेई आवइं आणंदीअ। —विद्याविलास पवाडउ

जइवंत—वि०—विजयी। उ०—हिव आपण नइ आवइ खोडि, वेगि मसाहणी घोड़ां छोडि। साल्हउ सोभउ अति बळवंत, लखणउ सेभटउ अति जइवंत।—कां.दे.प्र.

सं०स्त्री०—एक देवी का नाम (विद्याविलास पवाडउ)

जइसर—सं०पु० [सं० यतीश्वर] यतीश्वर। उ०—भाव (ठ) भंजण कप्प रुक्ख 'जिन पद्म' मुणीसर, सव सिद्धि वुद्धि समिद्धि रिद्धि 'जिणलद्धि' जइसर।—ऐ.जै.का.सं.

जइसौ—वि०पु० [स्त्री० जइसी] जैसी। उ०—जैसइ ऊजळ कमळ ऊपरि जइसी पांणी की वूंद होय।—वेलि.टी.

जई—वि०—विजयी, जीतने वाला।

सं०स्त्री०—१ काठ के दो सींगों वाला किसानों का एक औजार जिसे वे कंटीले पदार्थ हटाने व ठीक करने के उपयोग में लेते हैं. २ एक प्रकार का शस्त्र। उ०—बीफरैल गुसैल कदेई तोल न आव बीजां केई दातड़ेल जई गुड़ाया कंठीर।—महकरण मइयारियौ

सर्व०—१ जिस। उ०—निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण। सगळे दोख विवरजित साहौ, हूँतौ जई हुऔ हरण।—वेलि.

२ उस। उ०—अपच्छर सूर जोड़ै हिज आय, जई रथ वैठि वसै स्रगि जाय।—सू.प्र.

क्रि०वि०—जब। उ०—आंणे सुर असुर नाग नेत्रै नहिं, राखियौ जई मंदर रई। महण मथे मूं लीध महमहण, तुम्हां किणै सीखव्या तई। —वेलि.

देखो 'जइ' (रू.भे.)

जईणौ, जईबौ—देखो 'जाणौ' (रू.भे.)

जईन—देखो 'जैन' (रू.भे.)। उ०—जईन सास्त्र आंण जांणै ध्यांन ग्यांन धारता।—सू.प्र.

जईफ—वि० [अ०] वृद्ध, बुड्ढा। उ०—सोराब फकीर कहावै, कागदां में फकीर लिखीजै है, जईफ है, कड़प करावै नहीं।—बां.दा.ख्यात

जईफी—सं०स्त्री० [अ०] बुढ़ापा, वृदावस्था।

जईमैण—सं०पु० [सं० मदनजयी] महादेव। उ०—चसे नैण ज्यूं रैण जूपी चरागां, जईमैण रा नैण ज्यूं क्रोध जागा। —हिंगळाजदांन कवियौ

जउं, जउ—अव्य० [सं० यत्] जो, यदि, अगर, कि (उ.र.)

उ०—जउ आवसइ पातसाह वळी, तउ आवरजन करि सूं भली। जउ गठि नावइ करीय परांण, तु सूयर भक्ष करइ सुरतांण।—कां.दे.प्र.

क्रि०वि०—ज्यों। उ०—वेढ़ कीध पड़ियार, निहसि कट्टारउ दुहुं करि। राइ न ग्रहउ नरसिंघ गळइ, गळहथ जउं गइवरि। —अ. वचनिका

सर्व० [सं० यः] जो। उ०—रथगजास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ।—विराट पर्व

सं०पु० [सं० जतु] लाख।

रू०भे०—जऊ।

जउण — देखो 'जौण' (रू.भे.) उ०—जठे पावा दुज नगीर, जापी जउण [illegible] । [illegible]

जउणा-सं०स्त्री० [सं० यमुना] यमुना नदी (उ.र.)

जउणानद-सं०पु० [सं० यमराज] यमराज (उ.र.)

जउवेद-सं०पु० [सं० यजुर्वेद] यजुर्वेद (जैन)

जउहर, जउहरि — देखो 'जौहर' (रू.भे.) उ०—१ जउहर मांहि [illegible] पहिला थी गहि पाछिली पग ग्रेकि [illegible] ।—प्र. वचनिका

उ०—२ [illegible] सर्कांहि ग्रामोतिक पर पांगुउ, जउहरि ग्रागउ [illegible] ।—प्र. वचनिका

जऊ—देखो 'जउं, जउ' (रू.भे.) उ०—चीतारंती चुगतियां, कुंभी [illegible] । [illegible] तउ पलट, जऊ न मेल्हहियांह ।—ढो.मा.

जऊड़ो—१ देखो 'जाऊड़ो' (रू.भे.) २ देखो 'जुग्री' २ (अल्पा., रू.भे.)

जक-सं०स्त्री० [सं० यकृत = यक] १ चैन, ग्राराम, शान्ति ।

उ०—नभे मोती जागी नगन धुन लागी जक नहीं । स्वयंभू ध्याऊं मैं परमपद पाऊं सक नहीं ।—ऊ.का.

२ विश्राम । उ०—पहर चउत्थे पौढियो, गिणतो फौज गरीब । दोय घड़ी जक जीभ नूं, वैरी ग्रांगा नकीब ।—वी.स.

[सं० यक्ष] ३ यक्ष. ४ कंजूस व्यक्ति ।

रू०भे०—जगक ।

जकड़-सं०स्त्री०—कस कर बांधने या जकड़ने का भाव ।

जकड़णो, जकड़बो-क्रि०स०—१ कस कर बांधना ।

उ०—प्रचंड लोह पाखरां, चोळवोळां चख चोळां । जंगी हवद जकड़िया, नवा सळकिया कपोळां ।—सू.प्र.

क्रि०ग्र०—२ अकड़ जाने के कारण अंगों का हिलने-डुलने के लायक न रहना ।

जकड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ जकड़ा हुआ. २ अकड़ा हुआ । (स्त्री० जकड़ियोड़ी)

जकण-सर्व०—जिस ।

जकणो, जकबो-क्रि०ग्र०—१ चैन पड़ना । उ०—सातूं ही सांमंत खास बाग नूं तोड़ि गजां रा गोळ में जावता जकिया ।—वं.भा.

[ग्र० जक + रा०प्र०णो] २ लज्जित होना ।

उ०—कांने कुंडळ दाड़ीमा । पहिरी पटोली जीगइ जकी कूं-कूं भरिये कचोळडी । बावन-सेज ग्रदीरठे जाई ।—वी.दे.

जकसेस-सं०पु० [सं० जक्षेन्द्र] ऊंट । उ०—रेसम्म सांमळ रंग जकसेस घुघर जंग । पळ पंच दस षव पाय, जोजन्न ऊपरि जाय ।—सू.प्र.

जका-सर्व०—जो । उ०—करहा कहि कामूं करां, जो ए हुई जकाह । नरवर-केरा मांगुग्रां, काई कंहियां जाह ।—ढो.मा.

जकात-सं०स्त्री० [ग्र०] १ दान, खैरात ।

वि०वि०—वार्षिक ग्राय का चालीसवां अंश जो दान पुण्य में व्यय करना प्रत्येक मुसलमान का परम कर्तव्य कहा गया है (धार्मिक)

२ चुंगी, महसूल ।

जकाती-सं०पु०—चुंगी वसूल करने वाला व्यक्ति ।

जकार-सं०पु०—१ 'ज' ग्रक्षर । २ 'जगण' का एक नाम (छंदशास्त्र)

जकियो, जकीयो-सं०पु०—वृत्तान्त, हाल । उ०—मूरखो पाधरो मुंहतै कन्है गयो । मुंहतै नूं कह्यो सारो जकीयो ।—चौबोली

जको-सर्व० (स्त्री० जका, जकी) १ जो. २ वह, उस ।

उ०—१ रांगी सांम्ही ग्राय मुजरो कियो । सु जके दिन रांणी सवाई कीवी थी ।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ को मन वंछित केम, जाव भड़ां दीजे जको । इम सुणि कहियो एम, सकां भड़ां महाराज सूं ।—सू.प्र.

जक्क—देखो 'जक' (रू.भे.) उ०—गन धांम धूम सरसेल मार, पड़ ग्रास ग्रास ग्राठूं पुकार । दिन लाख घटै हैंवर दरक्क, जवनांन पड़ै निस दिवस जक्क ।—रा.रू.

जक्ख—देखो 'जक्ष' (रू.भे.) उ०—१ नव नाथ चोरासी सिद्ध ग्रनेक पंखी पळचर ग्रीध चौसठि जोगणि बावन वीर जक्ख किन्नर गण गंध्रप सहित रिखि नारद ग्राया ।—वचनिका

उ०—२ ऊमर इम बरस नव ग्राई । सुता जक्खि जद कथा सुणाई ।—सू.प्र.

जक्खकद्दम-सं०पु० [सं० यक्षकर्दम] १ इस नाम के दो वनिये (जैन)

२ इस नाम का एक समुद्र ग्रौर उसमें स्थित द्वीप (जैन)

जक्खग्गह-सं०पु० [सं० यक्षग्रह] यक्ष कृत उपद्रव (जैन)

जक्खणायग—देखो 'जक्षनायक' (रू.भे., जैन)

जक्खदिन्ना-सं०स्त्री० [सं० यक्षदत्ता] २२वां तीर्थंकर की मुख्य साध्वी का नाम (जैन)

जक्खभद्द-सं०पु० [सं० यक्षभद्र] यक्ष द्वीप का ग्रधिपति देवता (जैन)

जक्खा-सं०स्त्री० [सं० यक्षी] स्थूलिभद्र की बहिन (जैन)

जक्खादित्त, जक्खालित्तय-सं०पु० [सं० यक्षादीप्तक] किसी एक दिशा में थोड़े थोड़े ग्रन्तर पर बिजली के जैसी चमक का देखा जाना, भूत-पिशाच वगैरह की माया (जैन)

जक्खिद-सं०पु० [सं० यक्षेन्द्र] १ यक्षों का इन्द्र (जैन) २ ग्रमरनाथजी के यक्ष का नाम (जैन)

जक्खि, जक्खी—१ देखो 'जक्ष' (रू.भे.)

सं०स्त्री० [सं० याक्षी] २ एक प्रकार की लिपि (जैन)

जक्खोद-सं०पु० [सं० यक्षोद] एक समुद्र का नाम (जैन)

जक्त—देखो 'जगत' (रू.भे.)

जक्ष-सं०पु० [सं० यक्ष] (स्त्री० जक्षणी) देवताग्रों का एक भेद जो कुबेर के ग्राधीन है ग्रौर निधियों की रक्षा करता है ।

उ०—सुक मंनकादिक तेड़ो जक्ष, किन्नर नैं कहावें रे । देव दांणव सहु तेड़ो रे, मंडप भीतर ग्रावो रे ।—रुकमणी मंगळ

रू०भे०—जक्ख, जक्खि, जख, जखण, जखरा, जख्खु, जच्छ ।

यौ०—जक्षनायक, जक्षपत, जक्षपति, जक्षपुर, जक्षपुरी, जक्षरात, जक्षसपुर, जक्षसलोक, जक्षाधिप, जखनायक, जखराज, जखराट, जखरात, जखलोक, जखसनायक, जखसपुर, जखांराज, जखाधप, जखाधिप, जखाधी, जखाधीस, जखाराज, जखेंद्र, जखेसर, जख्यंप्रति।

जक्षनायक–सं०पु०यौ० [सं० यक्ष+नायक] यक्षपति, कुवेर।

रू०भे०—जखनायक, जक्खणायग, जखसनायक।

जक्षपत, जक्षपति–सं०पु०यौ० [सं० यक्ष+पति] यक्षराज, कुवेर।

जक्षपुर, जक्षपुरी [सं० यक्षपुरी] कुवेर की नगरी, यक्षों की पुरी, अलकापुरी।

रू०भे०—जक्षसपुर, जखसपुर।

जक्षरात–सं०स्त्री०यौ० [सं० यक्ष+रात्रि] कार्तिक मास की पूर्णिमा जो यक्षों की रात्रि मानी जाती है।

रू०भे०—जखरात।

जक्षस–सं०पु० [सं० यक्षप] यक्षपति, कुवेर।

जक्षलोक–सं०पु० [सं०] यक्षपुर।

जक्षसपुर—देखो 'जक्षपुर' (रू.भे.)

जक्षसलोक–सं०पु०यौ० [सं० यक्ष+लोक] वह लोक जिसमें यक्षों का निवास माना गया है।

रू०भे०—जखलोक।

जक्षाधिप–सं०पु० [सं० यक्षाधिप] यक्षों का अधिपति कुवेर।

रू०भे०—जखाधप, जखाधिप।

जक्षेस–सं०पु० [सं० यक्षेश] कुवेर। उ०—जक्षेस वारिईस की सुरेस नेस प्री जिसा, 'अभौ' त्रिलोक में अचंभ भोग भोगवै इसा।—रा.रू.

जख—१ देखो 'जक्ष' (रू.भे.) उ०—गावै सुर नर नागर पुर, किन्नर राखस जख ऋगवत थारी ईसवर, लखी न जात अलख।—गजउद्धार

२ देवता (अ.मा.)

जखचेर–सं०पु० [सं० यक्षेश्वर] कुवेर (अ.मा., नां.मा.)

जखण–सं०पु० [सं० जक्षणम्] १ आहार, खाना (डिं.को.)

२ देखो 'जक्ष' (रू.भे.)

रू०भे०—जखन।

जखणी–सं०स्त्री० [सं० यक्षिणी] १ यक्ष की पत्नी. २ दुर्गा की एक अनुचरी का नाम।

जखन—देखो 'जखण' (रू.भे.) उ०—नरां सुर जखन दांनव नाग।
—रा.रा.

जखनायक—देखो 'जक्षनायक' (रू.भे.)

जखम–सं०पु० [फा० जख्म] १ शरीर में आघात, अस्त्र आदि के लगने के कारण होने वाला क्षत, घाव।

मुहा०—१ जखम खाणौ—घायल होना. २ जखम ताजौ होणौ—भूली हुई विपत्ति या वात फिर से याद आ जाना. ३ जखम देणौ—चोट पहुंचाना. ४ जखम माथै लूण भुरकाणौ (छिड़कणौ) कष्ट में और कष्ट देना।

२ सदमा।

जखमाइल, जखमायल–वि० [फा० जख्म+रा०प्र० आइल, आयल] आहत, घायल, जख्मी। उ०—१ रांम तूं संभाळे छै सो पग जखमाइल हुइ गयौ तीसूं ऊभौ नहीं हुवौ जावै।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ तौ भूंडण कही आज फौज करारी, पण कजियौ आछौ कियौ छै और काल रौ डील जखमायल छै तिणसूं विसेस लड़ सकी नहीं।—डाढ़ाळा सूर री वात

जखमी–वि० [फा० जख्मी] जिसे जख्म लगा हुआ हो, घायल।

उ०—सारी फौज रौ लोग जखमी हुवौ।—पदमसिंह री वात

जखराज, जखराट–सं०पु०यौ० [सं० यक्षराज] यक्षराज, कुवेर (अ.मा., नां मा.)

जखरात—देखो 'जक्षरात' (रू.भे.)

जखरौ–सं०पु०—सिंध का एक राजा समा गोत्र का यादव, इसका पूरा वंश वाद में मुसलमान हो गया जो आजकल पाकिस्तान में वसते हैं। उ०—जेहौ, जलौ, दादरौ, जखरौ, सोनग ओढ़ौ भाग सकाज। लालौ हैम काछवौ लाखौ, इळ पर अमर जिकै नर आज।—गोरधन खीची

जखलोक—देखो जक्षसलोक' (रू.भे.)

जखस—देखो 'जक्ष' (रू.भे.)

जखसनायक—देखो 'जक्षनायक' (रू.भे.)

जखसपुर—देखो 'जक्षपुर' (रू.भे.)

जखांणी–सं०स्त्री०—१ यक्ष कन्या. २ यक्ष पत्नी, यक्षिणी।

जखांराज–सं०पु० [सं० यक्षराज] कुवेर। उ०—रूपसींग तणा खत्रीवाट रा उजाळा राह, करै ठाळा मंसलां आठ रा उग्र काज। आप वाळा देण आगे पाट रा हुकमी आज, राळ काडै कपाट रा ताळा जखांराज।—जवांन जी आढ़ौ

रू०भे०—जखाराज।

जखाधप, जखाधिप—देखो 'जक्षाधिप' (रू.भे.)

जखाधी, जखाधीस–सं०पु०यौ० [सं० यक्षाधीश] कुवेर (ह.नां.मा)

जखाराज—देखो 'जखांराज' (रू.भे.)

जखि, जखी–सं०स्त्री० [सं० यक्षी] १ यक्षिणी। उ०—वनि इक समे रमै तिण वेळा, मिळ जखि सुता कुसुम हित मेळा।—सू.प्र.

२ कुवेर की स्त्री।

सं०पु०—३ यक्ष।

जखीर, जखीरौ–सं०पु० [अ० जखीरः] एक सी चीजों का संग्रह, ढेर, राशि, खजाना। उ०—१ तोप दगी दहुं ओर ते झर सोर उपट्टं, लुट्टं माल जखीर दे नर हैमर कट्टं।—ला.रा.

उ०—२ किल्ला में पाया ओर जेता जखीर, सावकही खंडपुर नै कीनां वहीर।—शि.वं.

रू०भे०—जखेरौ।

जखेंद्र–सं०पु०यौ० [सं० यक्षेन्द्र] कुवेर।

जखेरौ—देखो 'जखीरौ' (रू.भे.) उ०—१ करनाळ सुण तुरत हाडा आया सो हाथी घोड़ा तंवू सारौ जखेरौ कुंवर री नजर कियौ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ रूप तप मद्दोमा जगी ऊपरै गुमानी मैं (न) जनेरी ले जाता।—रसराज री रार

जग्गेसर जग्गेसुर, जग्गेस्वर—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञेश्वर] कुबेर।

जग्गणी—देखो 'जगणी' (रू.भे.) उ०—देवी जग्गणी भग्गणी देव बांणी।—देवि.

जग्गु—देखो 'जग' (रू.भे.)

जग्यप्रीति—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञप्रीति] शिव (डि.नां.मा.)

जगंनाथ—देखो 'जगनाथ' (रू.भे.) उ०—धन ! धन ! देव ! देव ! जगनाथ ! पदम नाभा रतनाक्रीत ग्रांग।—वी.दे.

जग—सं०पु० [सं० जगत्] १ संसार, जगत, दुनिया। उ०—सेवंति नवै प्रति नवा नवे मृग, जग नां मिसि वासी जगती। हसमिणि रमण तणा जु सरद रितु, मुगति रासि निसि दिन भगति।—वेलि.

२ सांसारिक लोग।

मुहा०—१ जग हंसाई करणी—ऐसा काम करना जिससे संसार में हंसी हो. २ जग हंसाई कराणी—संसार में हंसी कराना. ३ जग हंसाई होणी—संसार में हंसी होना।

यौ०—जगकरण, जगकरता, जगकरम, जगचख, जगजणणी, जगजा'र, जगजीवण, जगजेठ, जगदीप, जगधणी, जगधर, जगनायक, जगनेरलेप, जगनैण, जगन्नथ, जगपत, जगपाळक, जगपावन, जगपुरस, जगप्रांण, जगबंद, जगबदक, जगबांधव, जग-भल, जगभाळण, जगभावण, जगभामक, जगमण, जगमनमोहणी, जगमाय, जगमूरती, जगमोहण, जगरंजण, जगरांणी, जगवंदण, जगवलभा, जगवासग, जगसत्रु, जगसांई, जगसाखी, जगसेव, जगहथपथ, जगहरता।

[सं० यज्ञ] ३ देखो 'जिग' (रू.भे., डि.को.)

उ०—दिहू रघु लखमण पुत्र बुलाय, सभे जग विस्वामित्र सहाय।
—ह.र.

यौ०—जगकरम, जगकाळ, जगकुंड, जगपात्र, जगफळ, जगबाहु, जगभाग, जगभूमि, जगमंडळ, जगवाराह, जगवीरय, जगसाधन, जगसाळा, जगसास्त्र, जगसील, जगसूकर, जगसेन।

४ प्रज्वलित होने का भाव।

रू०भे०—जगि, जगौ, जगु, जगू, जग्ग।

जगई—सं०स्त्री० [सं० जगती] पृथ्वी (जैन)

जगईस—सं०पु० [सं० जगदीश] जगदीश, ईश्वर, परमेश्वर।

जगकरण, जगकरता—सं०पु०यौ० [सं० जग+कर्त्ता] १ सृष्टिकर्त्ता, ईश्वर। (नां.मा.)

उ०—१ अमरपति जगकरण देव नर हर अलख। चतुरभुज भजि चलण नांमि घण कमळि नख।—पि.प्र.

उ०—२ कविराजा नूं मंद कवि, अकस करै अविचार। अव जगकरता सूं अकस, करसी घट करतार।—बां.दा.

२ ब्रह्मा, विधि।

जगकरम—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञ+कर्म] १ यज्ञ का काम.
[सं० जगत कर्म] २ सांसारिक कार्य।

जगकळपंत—सं०पु०—१ संहार. २ युगान्त, प्रलय-काल।

उ०—जगकळपंत तणी पर जसवंत, फेग लहर कहर फरियौ। लोह धार मैंगाग लागतां, 'ग्रोरंग' धु जिम ऊबरियौ।—महेसदास आढ़ौ

जगकारण—सं०पु०—ईश्वर (नां.मा.)

जगकाळ—सं०पु० [सं० यज्ञकाल] १ यज्ञ करने का निश्चित समय.
२ पूर्णमासी।

जगकुंड—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञकुंड] हवन की वेदी, यज्ञकुंड।

जगगुर, जगगुरू—देखो 'जगदगुरू' (रू.भे.) उ०—हरीखीय उग्रसेन बेटीय भेटीयउ धर अवरोध। जगगुरु अमीय समांणिय वांणीय जनप्रतिबोध।—नेमिनाथ फागु

जगघण—सं०पु० [सं० यज्ञघ्न] यज्ञ का विध्वंसक, राक्षसादि।

जगचख, जगचक्ष, जगचक्षु, जगचख, जगचल्ल, जगचख्य, जगच्चक्षु, जगच्चख—सं०पु०यौ० [सं० जगच्चक्षु] सूर्य।

उ०—१ असवार मुखप सतेज इसौ। जगचख अनै सपतास जिसौ।
—सू.प्र.

उ०—२ असतूती छंद मोतीदांम, वी मोहर हंस कहै नरनाथ।
निमो जगचक्ष प्रतक्ष सुनात, नीमादि वसै सविचार ब्रहम।
—सूरज स्तुति

उ०—३ जळै चंद्र सिलो थाई जगचख, रेणायर सांसतौ रहै। जयमाल उत जाइ छांडे जुध, वेणी जळ उपरांठ वहै।
—रांमदास राठौड़ मेड़तिया रो गीत

उ०—४ पोसाक जवहर पूर, जगचख्य जोति जहूर।—सू प्र.

उ०—५ जगच्चख भाळत कोतुक जुद्ध। माळा कज संकर ढाळत मुद्ध।—मे.म.

रू०भे०—जगतचख।

जगजगाणौ, जगजगावौ—क्रि०अ०स०—१ जगमग करना, जगमगाना।
२ प्रज्वलित करना, जगाना।

जगजगायोड़ौ—भू०का०कृ०—जगमगाया हुआ (स्त्री० जगजगायोड़ी)

जगजणणी—सं०स्त्री०यौ०—१ जगत की माता, पार्वती (ह नां.मा.)
२ देवी, दुर्गा। उ०—महर करी मेहाई आई, खैंचो डोरी तांण। मो कांनी मत जा जगजणणी, क्रपा करो जन जांण।
—राघवदास भादो

जगजांमी—सं०पु०—जगत के पिता, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—जिण विलोकि कहियो जगजांमी। सिव छै सुखी सिवा तो स्यांमी।—सू प्र.

जगजा'र—वि०पु० (यौ० जग+जाहिर) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात।

उ०—१ गिवांणय रीढ़ बजाय सुसार, जिका वह खाग सिरे जगजा'र।—पे.रू.

उ०—२ प्रसध नांम इवकार जगजा'रे मांटीपणौ, अतुळ दातार कीरत उजाळा। भलम वातां चिहुं वेस अगियां भमर, वाह रे कंवर अववेस वाळा।—र.रू.

जगजीत—वि०यौ०—संसार को विजय करने वाला, विजयी।
उ०—१ जिका वह तेग इसी जगजीत, रखी रयमाल भुजां वड़रीत।
—पे.रू.
उ०—२ जगजीत परी मांणं जिको जांणं न को जिहांन में। रणवास मैहल सूना रहै, आप रहै उद्यांन में।—पा.प्र.

जगजीव—सं०पु० [सं० जगज्जीव, जगज्जीह्व] शंकर, सदाशिव (अ.मा.)

जगजीवण, जगजीवन—सं०पु०यौ० [सं० जगज्जीवन] १ संसार को जीवन देने वाला—यथा बादल, जल आदि (अ.मा., ना.डि.को.)
२ ईश्वर, विष्णु।

जगजेठ, जगजेठी—स०पु० [सं० जगत्+ज्येष्ठ] १ ईश्वर। उ०—गजे रिम केतां गरब, धार सरब व्रद घेठ। दे कोड़ां दुजवर दरब, जीत परब जगजेठ।—र.ज.प्र.
२ ब्रह्मा. ३ योद्धा, शूरवीर। उ०—१ बहादर जीवण री रण वोह, 'लखौ' खळ थाट विभाड़त लोह। निजोड़ वीजळ मूगळ नेठ, जुरावर जोग तणौ जगजेठ।—सू.प्र.
उ०—२ जाडा थंडा जुड़े जगजेठी, चाडापुरी भणं इक चाव। गळिया पीयण गुणां रा गाडा, अलवलिया लाडा रथ आव।—महादांन महडू
४ राजा। उ०—जुड़े जिया दखणाद जगजेठ रांण जगा, धोकवा पीर पतसाह धायौ। ताहरै ताप चीतोड़ री राज तज, ऐवड़े फेर अजमेर आयौ।—महारांणा वडा जगतसिंह रौ गीत
५ पहलवान। उ०—यम तड़फड़तां अड़ै वाहि जमदाढ़ वहाड़ै, डाव घाव डोरियां जांणि जगजेठ अखाड़ै।—सू.प्र.
रू०भे०—जगज्जेठ।

जगजोनि—सं०पु० [सं० जगत्+योनि] ब्रह्मा।

जगज्जेठ—देखो 'जगजेठ' (रू.भे.) उ०—इंद्री पंच जीपै महासूर एहा, जगज्जेठ जोधा हणम्मांन जेहा।—वचनिका

जगझंप—सं०पु० [सं०] प्राचीन काल में युद्ध में बजाया जाने वाला चमड़े का मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।

जगढाल—सं०पु०—जगत का रक्षक। उ०—ज्यां दीहां सिवराज सुत, रांणौ रायांमाल। ज्यां दीहां जोवण जिसौ, उमरांणौ जगढाल।
—बां.दा.

जगण—सं०पु० [सं०] १ छंद शास्त्र में तीन अक्षरों का एक गण जिसके वीच में गुरु तथा आसपास के अक्षर लघु होते हैं।ISI
२ जलन, दाह।

जगणी—सं०स्त्री०—अग्नि (ह.नां.मा.)

जगणौ, जगवौ—देखो 'जागणौ, जागवौ' (रू.भे.) उ०—१ तठा उपरायंत दारू रा घड़ा मंगायजै छै, सू दारू किण भांत रौ छै? अरैराक रौ वेराक, संदली रौ कंदली, फूल रौ अतर वाती बफै धुंवांधोर तिवारा रौ काढ़ियौ, बोदी वाड़ में नांखियां जग उठै।—रा.सा.सं.
उ०—२ ऊंची ऊंची मेड़ी झरोखा जी च्यार, झवर-झवर दिवलौ जगै जी राज।—लो.गी.

जगत—सं०पु० [सं० जगत्] १ संसार, दुनिया.
यौ०—जगतअंबा, जगतउपाता, जगतगुर, जगतचख, जगतठांम, जगतनाथ, जगतपति, जगतपिता, जगतप्रांण, जगतभेदण, जगतमावीत्र, जगतमोहणी, जगतरोपण, जगतसाधार, जगतसेठ, जगत्पति, जगत्माता, जगत्मोहिनी, जगत्त्राता, जगत्साक्षी।
२ वायु. ३ महादेव।
रू०भे०—जक्त, जगत, जगद।

जगतअंबा—सं०स्त्री०यौ० [सं० जगदंबा] देवी, महाशक्ति, जगजननी।

जगतउपाता—सं०पु०यौ० [सं० जगदुत्पादयिता] ब्रह्मा (डि.को.)

जगतगुर, जगतगुरू—देखो 'जगदगुरू' (रू.भे.) उ०—१ निरधारां आधार जगतगुर, तुम विन होय अकाज।—मीरां
उ०—२ सबळा विरद वहण सूजावत, अबळा बळी अचळ ऊवेळ। जंगळ जपै राज जंगळवै, जगतगुरू पहिलौ जग छेळ।
—महाराजा करणसिंह रौ गीत

जगतचख—देखो 'जगचख' (रू.भे.) उ०—जैत भूप 'जैत' री हार 'कमरा' री हांसी। अड़ पोसी मुंडमाळ, जगतचख कौतुक जोसी।
—मे.म.

जगतठांम—सं०पु०यौ०—ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु। उ०—विमळ आणंद लिखमीवर, जगतठांम जगसांमि। जगत रोपणं जगरंजणं, जगवंदण जगजेठ।—पीरदांन लाळस

जगतण—सं०स्त्री०—१ सांसारिक स्त्री. २ वेश्या, पतुरिया।
उ०—जगतण कूं भगतण कहै, कहै चोर कूं साह। चाकर कूं ठाकर कहै, तीनूं राह कुराह।—अज्ञात

जगतनाथ—देखो 'जगन्नाथ' (रू.भे.)

जगतपत, जगतपति—सं०पु०यौ० [सं० जगदपति] जगत के पति, ईश्वर।
उ०—ऊठिया जगतपति अंतरजांमी, दूरंतरी आवतौ देखि। करि वंदण आतिथ ध्रम कीधौ, वेदे कहियौ तेणि विसेखि।—वेलि.
रू०भे०—जगत्पति, जगपत, जगपत्त, जगपत्ती।

जगतपिता—सं०पु०यौ०—ब्रह्मा (नां.मा.)

जगतप्रांण—सं०स्त्री०यौ० [सं० जगत प्रांण] वायु, हवा (ह.नां.)

जगतभेदण—सं०पु०यौ० [सं० जगत भेदन] १ शिव, महादेव. २ विष्णु, ईश्वर। उ०—जगतभेदण, जगतभंजण, जगदीस जयौ तूं मूळ जग। जगतधिणी तूं जोरवर, जग मांहि मरै जीवै जगत।—पीरदांन लाळस

जगतमावीत्र—सं०पु०यौ० [सं० जगन्मातपितरौ] राजा (डि.नां.मा.)

जगतमोहणी—सं०स्त्री०यौ०—महामाया, दुर्गा।

जगतरण—सं०पु०यौ० [सं० जगत्तारण या जगत्त्राण] जग को तारने वाला, ईश्वर।

जगतरोपण—सं०पु० [सं० जगद्रोपण] विष्णु, ईश्वर। उ०—विमळ आणंद लिखिमीवर, जगत ठांम जग सांमि। जगतरोपणं जगरंजणं, जगवंदणं जगजेठ।—पीरदांन लाळस

जगतसाखी—सं०पु०यौ० [सं० जगत्साक्षी] १ ईश्वर. २ सूर्य।

जगतसाधार—सं०पु०यौ०—जगत की रक्षा करने वाला, ईश्वर।

जगत्सेठ—सं०पु०यौ० [सं० जगत्+श्रेष्ठिन्] १ बहुत बड़ा धनी महाजन. २ प्राचीन समय में राजाओं या बादशाहों द्वारा किसी धनी व्यक्ति को दी जाने वाली उपाधि. ३ यह उपाधिप्राप्त व्यक्ति।

जगतारण—सं०पु०—परमेश्वर, ईश्वर (ह.नां.)

जगति—सं०स्त्री०—१ द्वारिका। उ०—दिन लगन सु नेड़ो दूरि द्वारिका, सो पहुँचवा किसी भति। साझ सोचि कुंदणपुरि सूतो, जागियो परभाते जगति। वेलि

२ देखो 'जगती' (रू.भे.) उ०—बीजापुरो सैन बीतो वजाऐ जेआई राजा, जीतो-जीतो महाराजा वदीतो जगति।—दूदो वीठू

जगतिलक—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

जगती—सं०स्त्री० [सं०] १ संसार, भुवन। उ०—गु मानुखी लीला को संग्रह तरि अर जगती रै विखै बसीया।—वेलि.टी.

२ पृथ्वी (ह.नां., नां.मा.) उ०—जगती पर साख भरै जिणरा, कर दीध मंजीराय कुंदण रा।—पा.प्र.

३ जंबुद्वीप का कोट (जैन)

रू०भे०—जगति, जगत्ति, जगत्ती।

यौ०—जगतीतळ।

जगतीतळ—सं०पु०यौ० [सं० जगती+तल] पृथ्वी, भूमि।

जगतेस—सं०पु० [सं० जगदीश] संसार के स्वामी, ईश्वर।

जगतेसुर—सं०पु० [सं० जगदीश्वर] महादेव, शिव (अ.मा.) ईश्वर, विष्णु।

जगत्ति, जगत्ती—देखो 'जगती' (रू.भे.) उ०—पुराणी प्रब्भु वंचाणी पत्ति, जगत्पति तूं ही सव्व जगत्ति।—ह.र.

जगत्पति—देखो 'जगतपति' (रू.भे.)

जगत्माता—सं०स्त्री०—दुर्गा।

जगत्मोहिनी—सं०स्त्री० [सं० जगन्मोहिनी] महामाया, दुर्गा।

जगत्र—देखो 'जगत' (रू.भे.) उ०—१ समस्त नर जगत्र वैसानर परसतो रहियो—वेलि. टी. उ०—२ बधियो जिमि इंद्र समंद्र वरै, कुळि भांगा बखांण जगत्र करै।—ल.पिं.

जगत्राता—सं०पु०यौ० [सं० जगत्त्राता] १ संसार की रक्षा करने वाला, ईश्वर. २ प्रजा की रक्षा करने वाला, राजा।

उ०—दीनन के दाता जगत्राता जसवंत जैसे, विमळ विधाता सब बातन विसेस के।—ऊ.का.

३ यज्ञ की रक्षा करने वाला. ४ पंडित।

जगत्साक्षी—सं०पु० [सं०] सूर्य।

जगदंब, जगदंबा, जगदंबि, जगदंबिका, जगदंबी, जगदंभा—सं०स्त्री० [सं० जगदंबा] देवी, दुर्गा, पार्वती आदि (डिं.को.) उ०—१ सुणिया साद सतेज, आई आगळ आवतां। जगदंब, अब वर्यो जेज, करी इती तैं करनला।—अज्ञात

उ०—२ घणी जगदंबि घकै घमसांण, बूडो कवि दाखि सकै न बखांण।—मे.म. उ०—३ चौसट अववांन तणी चतुराई, बोलण माहराजां विरद। खूबी मिळी धारणा ख्यातां, जगदंभा तो क्रपा जद।—बां.दा.

जगद—देखो 'जगत' (रू.भे.) उ०—वड जगद विसतारै निधि मेधा तुभ्योनमः।—रा.रा.

यौ०—जगदगुर, जगदगौरी, जगदजोणी, जगदाधार, जगदाधिप, जगदानंद।

जगदगुर, जगदगुरु, जगदगुरू—सं०पु० (यौ० जगद्गुरु) १ परमेश्वर. २ शिव. ३ पूज्य एवं अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति. ४ शंकराचार्य की गद्दी के महंत की उपाधि. ५ ब्राह्मण।

रू०भे०—जगगुर, जगगुरु, जगगुरू, जगतगुर, जगतगुरू।

जगदगौरी—सं०स्त्री०यौ० [सं० जगद्गौरी] १ दुर्गा देवी. २ मनसा देवी।

जगदजोणी—सं०पु० [सं० जगद्योनि] १ शिव. २ विष्णु।

सं०स्त्री०—३ पृथ्वी।

जगदत्त—सं०पु० [सं० यज्ञदत्तक] यज्ञ के प्रसाद स्वरूप जन्म लेने वाला पुत्र।

जगदातार—सं०पु०यौ० [सं० जगद्दातार] १ महादानी, दानवीर।

उ०—अनवी नरां नवां नवासी, अवतार लियो ऊदांपती, जगदातार जवांनसी।—अज्ञात

२ ईश्वर, परमेश्वर।

जगदाधार—सं०पु०यौ० [सं०] परमेश्वर. २ वायु (नां.मा.)

जगदाधिप—सं०पु०यौ० [सं०] विष्णु का एक नाम।

जगदानंद—सं०पु० [सं०] १ परमेश्वर, ईश्वर. २ श्रीकृष्ण। उ०—विख विसहर डंसीणो, गारूड़ी स्रीगोविंद। अति अंग भाजइ लहर, वाजइ जीवीई जगदानंद।—रुकमणी मंगळ

जगदिवलो, जगदीप—सं०पु०यौ० [सं० जगद्दीप] १ सूर्य्य (डिं.को.)

उ०—रात रै काळै डूंगर लार, हसै है रूपाळो परभात। पळकती जगदिवलै री जोत, मुळकती मिनख पणै री जात।—सांझ

२ शिव. ३ परमेश्वर।

रू०भे०—जगद्दीप।

जगदीस, जगदीसर, जगदीसवर, जगदीस्वर, जगदीस्वरू—सं०पु० [सं० जगदीश, जगदीश्वर] १ परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा (ह.नां., नां.मा.)

उ०—१ लीध ओट प्रहळाद, पिता तद कोप प्रगासै। जिणरै हित जगदीस, भांज खंब नरहर भासै।—र.रू.

उ०—२ जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यांन। करमबंध-निकरम-करण, भव भंजण भगवांन।—ह.र.

उ०—३ हा हा जगदीस्वर भैड़ी पुळ हेरी, गाफल दुनिया पर ऐड़ी पुळ गेरी।—ऊ.का.

उ०—४ इणि परिइं जगदीस्वरू ध्याइयइ स्तवन नइं मिसि उलग लाइयइ।—अर्बुदाचल वीनती

२ श्रीकृष्ण। उ०—१ लीलाधरण ग्रहे मांनुखी लीला, जगवासग वसिया जगति। पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतो अनिरुध ऊखा-पति।—वेलि.

उ०—२ रमतां जगदीसर तणी रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहे।—वेलि.
३ विष्णु (डि.को.) ४ शिव, महादेव।
रू०भे०—जगादीस।

जगदीस्वरी—सं०स्त्री० [सं० जगदीश्वरी] भगवती, देवी, दुर्गा।

जगद्दीप—देखो 'जगदीप' (रू.भे.)

जगद्धाता—सं०पु० [सं० जगद्धातृ] १ ब्रह्मा. २ विष्णु।

जगद्धात्री—सं०स्त्री० [सं०] १ दुर्गा की एक मूर्ति. २ सरस्वती।

जगध—सं०पु० [सं० जग्धि, जग्धिः] भोजन (ह.नां.)

जगधणी—सं०पु०यौ०—ईश्वर, परमेश्वर। उ०—वांमण देव गुरुड़ खग वाहण, धरणी धरण जगधणी। प्रांमै कमण पार परमेसर, त्रीकम वडिम तूंझ तणी।—पिं प्र.

जगधर, जगधार—सं०पु०—जगत को धारण करने वाला, शेषनाग, ईश्वर। उ०—भै पड़ सह सत्र हर भजै, भमंग तजै सिर भार। जगधर गिर डोलै 'जमू', तूं तोले तरवार।—पदमसिंह आढ़ो

जगन—देखो 'जिगन' (रू.भे.) (डि.को.) उ०—१ जेहा केहा ज्याग, हैवर राखोड़ा हुवै। ताजी दीजै त्याग, जस लीजै सोई जगन।—बां.दा.
उ०—२ जोवै जां ग्रिहि ग्रिहि जगन जागवै, जगनि जगनि कीजै तप जाप। मारगि मारगि अंब मौरिया, अंबि अंबि कोकिल आलाप।—वेलि.
उ०—३ झीण गंठजोड़ पट बांध कर झालियौ, जठै वर वींदणी हेत जोड़ी। चारणां तणौ वित धाड़ नै चालियौ, घालियौ जगन में विघन घोड़ी।—गिरवरदांन सांदू

जगनक—सं०पु०—परमार के दरबार का एक प्रसिद्ध कवि।

जगनराय—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञि (द्विज) राज] चंद्रमा (डि.को.)

जगनांमी—वि०—विख्यात, प्रसिद्ध।

जगनात—देखो 'जगन्नाथ' (रू.भे.)

जगनाती—सं०पु०—१ एक बनावट विशेष का छोटा जल-पात्र (शेखावाटी) २ एक प्रकार का कपड़ा।

जगनाथ—१ देखो 'जगन्नाथ' (रू.भे.) २ श्रीकृष्ण (अ.मा.)

जगनायक—सं०पु०यौ०—१ परमेश्वर, ईश्वर. २ विष्णु (डि.को.)

जगनाह—देखो 'जगन्नाथ' (रू.भे.)। उ०—गाढ़उं वीहुंउं छउं जगनाह, क्रमि कूटी नइ कीधउ गाह।—चिहुंगति चउपई

जगनेरलेप—सं०पु०यौ० [सं० जगन्निर्लेप] विष्णु (ह.नां.)

जगनैण—सं०पु० [सं० जगन्नयन] सूर्य (डि.को.)

जगन्नाथ—सं०पु० [सं०] १ संसार के स्वामी, परमेश्वर. २ विष्णु. ३ उड़ीसा के अंतर्गत पुरी नामक स्थान में स्थित विष्णु की एक मूर्ति।
रू०भे०—जगंनाथ, जगनात, जगनाथ।

जगनृप—सं०पु०यौ० [सं० जगन्नृप] परमेश्वर। उ०—नांम नाव चढ़ियौ हूं जगनृप, रखे हवै डोलूं रांवण रिप।—ह.र.

जगपत, जगपति, जगपत्त, जगपत्ती—देखो 'जगतपति' (रू.भे.)
उ०—१ जनकसुता मनरंजण जगपत, भंजण खेळ रांवण भाराथ।—र.ज.प्र.
उ०—२ कळिया गाडा काढ़तौ, दे कांधौ वड दोर। हव धवळौ बूढ़ौ हुवौ, जगपत सूं की जोर।—बां.दा.
उ०—३ अकबर समुद्र पर आवियौ, साह सहूंसा आठ सिर। जीपणौ पांण जगपत्त रै, और मांण सोई अथिर।—रा.रू.

जगपात्र—सं०पु०यौ०—यज्ञपात्र।

जगपाळ, जगपाळक—सं०पु०यौ० [सं० जगत् पालक] १ जगतका पालन करने वाला, ईश्वर. २ राजा, नृप।

जगपावन—सं०स्त्री०यौ०—गंगा, भागीरथी (ह.नां., अ.मा.)

जगपुड़—सं०स्त्री०—पृथ्वी, जमीन। उ०—जगपुड़ 'जगा' पाखरां जंगम, रमहर माथै घात रहै। रुकमां जोख जोखियां रांणा, पड़िया जोखै दिली पहै।—महाराणा जगतसिंह री गीत

जगपुरस—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञ पुरुष] विष्णु।

जगप्रांण—सं०पु०यौ० [सं० जगत्+प्राण] वायु, हवा (डि.को.)

जगफळ—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञफल] यज्ञ का फल।

जगफळदाता—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञ फलदातृ] विष्णु।

जगबंद—वि०यौ० [सं० जग+वंद्य] जिसकी जगत् वंदना करे, विश्ववंद्य।

जगबंदक—सं०पु०यौ०—चंद्रमा (नां.मा.)

जगबंधव, जगबंधु, जगबांधव—सं०पु०यौ० [सं० जगत्+बंधु] ईश्वर, परमात्मा। उ०—सम्मेत सिखर समरीजइ, अजित प्रमुख तीर्थंकर वीस। सुकळ ध्यांन धरि सिव पहुंचता, जगबंधव जगगुरू जगदीस।—स.कु.

जगबाहु—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञबाहु] आग, अग्नि (डि.को.)

जग-भल—वि०यौ०—१ वह जिसकी संसार में कीर्ति हो (बां.दा.) २ वह जो यशस्वी हो. ३ वह जो संसार का कल्याण चाहता हो (बां.दा.)

जगभाग—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञ भाग] यज्ञ का एक भाग।

जगभाळण—सं०पु०यौ—आंख (ना.डि.को.)

जगभावण, जगभावन—सं०पु०यौ०—ईश्वर, परमात्मा। उ०—भाव भगत करतौ जगभावन। पतित सरीर करिस मम पावन।—ह.र.

जगभासक—सं०पु०यौ०—१ प्रकाश (नां.मा.) २ सूर्य।

जगभूमि—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञ भूमि] वह स्थान जहां यज्ञ किया जाता हो।

जगमंडळ—सं०पु०यौ० [सं० यज्ञमंडल] यज्ञमंडल।

जगमग—वि०—जो जगमगाता हो, प्रकाशित, चमकीला। उ०—१ महि प्रगटि रास विलास मंगळ, अमळ रेण अकास ए। सोभंति रिख गण चंद्र सोभा, किरण जगमग कास ए।—रा.रू.
उ०—२ पिंड पिंड दस दस सिर परठि सिर सिर छत्रधारे। जगमग हीर जड़ाव जोति आदित आभारे।—सू.प्र.
रू०भे०—जगामग, जगामगि।

जगमगणौ, जगमगबौ—क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना, दमकना।

उ०—१ जगमगत हीरक जोत, धनि नौनि दंति उदोत ।—रा.रू.

उ०—२ नगु नील नगन मनि रम दमांग । जगमगत घटा मनि मटा जांग ।—सू.प्र.

२ प्रकाशित होना । उ०—निमल नीज जिग थार, जैत' सूरति हर अणी । मुग निरन संजोग, ज्याळ जांणै जगमगी ।—मे.म.

जगमगाट-सं०स्त्री०—जगमगाने का भाव, चमक, चमचमाहट ।

उ०—छवासा रहळन भळहळै पधारां, जगमगाट जाळियां । काच चांनण निरतारै, गनि गोख सोहियां ।—बगतो बिड़ियो

रू०भे०—जगमगाहट ।

जगमगाणी, जगमगाबौ-क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना, दमकना, प्रकाशित होना. २ चमकाना, झलकाना, दमकाना, प्रकाशित करना ।

जगमगायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, झलका हुआ, दमका हुआ. २ प्रकाशित किया हुआ, चमकाया हुआ (स्त्री० जगमगायोड़ी)

जगमगाहट—देखो 'जगमगाट' (रू.भे.)

जगमण—देखो 'जगमिणि' (रू.भे.) उ०—ग्ररथ दीव ग्ररक नूं जयो जगमण तम-जारण ।—भगवांनजी रतनू

जगमनमोहणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० जगत्-मनमोहिनी] जमीन (ग्र.मा.)

जगमहिरांण-सं०पु०—एक प्रकार का शुभ लक्षणों का घोड़ा (शा.हो.)

जगमाय-सं०स्त्री०यौ० [सं० जगन्मातृ] जगत की माता, देवी, शक्ति, दुर्गा । उ०—तनि दरसांणी सीतळा, जुगरांणी जगमाय । सरम ग्रही देवा सुरां, मुख कज धरम सहाय ।—रा.रू.

जगमालोत-सं०पु०—राठौड़ों की एक उपशाखा जो राठौड़ राव रिड़मलजी के पुत्र जगमाल के वंशज हैं, इस शाखा का व्यक्ति ।

जगमिणि-सं०पु०यौ० [सं० जगद्मणि] सूर्य ।

उ०—महपति धरमवंभ कुळ जगमिणि । तीरथराज राज दीधौ तिणि ।—सू.प्र.

जगमूरति-सं०पु०यौ० [सं० जगन्मूर्ति] १ ईश्वर (नां.मा.) २ विष्णु ।

जगमोहण, जगमोहन-सं०पु०यौ० [सं० जगन्मोहन] १ ईश्वर ।

उ०—बदरी टीकम परस बुध, जगमोहण जैकार । घणदाता ग्राणंद-घण, स्रीपति सब ग्राधार ।—ह.र.

२ विष्णु. ३ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) ४ एक प्रकार का बढ़िया शराब ।

जगय-सं०पु० [सं० यकृत] कलेजा (जैन)

जगरंजण-सं०पु०यौ० [सं० जगद्रंजन] ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—विमळ ग्राणंद लिखिमीवर, जगतठांम जगसांमि । जगत रोपण, जगरंजण, जगवंदण जगजेठ ।—पीरदांन लाळस

जगर-सं०पु० [फा० जिगर] १ कलेजा, यकृत ।

उ०—समहर वर भर बाहदर ग्रसमर, कटै वैर हर भर कुरख । जगर खून ग्रावटै ग्रीया जां, सर चौसट ऊछटै सुरख ।

—कविराजा करणीदांन

२ चित्त, मन. ३ साहस, हिम्मत. ४ गूदा, सार. ५ ग्रग्नि, ग्राग । [सं० ६ कवच । (डि.को.)

जगरांणी-सं०स्त्री०यौ० [सं० जगद्+राज्ञी] १ संसार की स्वामिनी—देवी, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी ग्रादि । उ०—म्हूं चित री मूढ़ हूं पण हे वांणी सरस्वती देवी तूं जगरांणी जगत री मालक है सो म्हारी सरम राखजै ।—बी.स.टी.

[राे० जगत+रानी] २ जगत की स्त्री, वेश्या, पतुरिया ।

जगराज-सं०पु० [सं० यज्ञिराज ?] १ चंद्रमा का एक नाम. २ ऋषि, तपस्वी (ग्र.मा.)

जगराय-सं०पु०—जगतराज, ईश्वर, शिव ।

जगराया-सं०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुरगा । उ०—माया रूपी मेह रै, ग्राया घर ऊदोत । कहवाया करनी कळू, जगराया निज जोत ।

—ग्रज्ञात

जगरै-सं०पु०—(घोड़ी का) ऋतुमति होना ।

क्रि०प्र०—ग्राणौ, होणौ ।

जगरौ-सं०पु०—१ शीघ्र जल उठने वाले पदार्थो (यथा-सूखे कांटे, घास ग्रादि) का जलाने के उद्देश्य से लाया हुग्रा महीन चूरा. २ जलती हुई ग्रग्नि ।

जगलिंग-सं०पु०यौ० [सं० यज्ञलिंग] कृष्ण का एक नाम ।

जगळ, जगळांण-सं०स्त्री०—कोल्हू में ग्रधकचरे किये हुए तिल । (मि० कचर, ३)

जगवंदण-सं०पु०यौ० [सं० जगद्वंदन] ईश्वर (नां.मा.)

उ०—विमळ ग्राणंद लिखिमीवर, जगतठांम जगसांमि । जगतरोपण जगरंजण, जगवंदण जगजेठ ।—पीरदांन लाळस

जगवलक-सं०पु० [सं० वज्ञवल्क] याज्ञवल्क्य नामक एक प्राचीन ऋषि के पिता का नाम ।

जगवलभा-सं०पु०यौ० [सं० जगद्+वल्लभा] वेश्या (ग्र.मा.)

जगवाणी, जगवाबौ-क्रि०स० ('जगणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ सोते हुए को उठवाना, निद्रा में विघ्न डलवाना. २ जागरण करवाना ।

उ०—ढोला म्हारी देवर-जेठांणी बुलावौ । म्हारै महलां छठी जगवावौ ।—लो.गी.

३ उत्साह दिलाना ।

जगवायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जगवाया हुग्रा. २ जागरण कराया हुग्रा. ३ उत्साह दिलाया हुग्रा (स्त्री० जगवायोड़ी)

जगवाराह-सं०पु० [सं० यज्ञवराह] विष्णु का एक नाम ।

जगवासग-सं०पु०यौ०—जगत को बसाने वाला, ईश्वर ।

उ०—लीलाधण ग्रहे मांनुखी लीला, जगवासग वसिया जगति ।

—वेलि.

जगवीरय-सं०पु०यौ० [सं० यज्ञवीर्य] विष्णु का एक नाम ।

जगवेल-सं०स्त्री०—सोमलता ।

जगसंतोख-सं०स्त्री०यौ०—नदी (ग्र.मा.)

जगसत्रु-सं०पु०यौ० [सं० यज्ञशत्रु या जगत्+शत्रु] राक्षस ।

जगसव्वदंसी–वि॰ [सं॰ जगत्सर्वदर्शी:] समस्त जगत को देखने वाला (जैन)

जगसांई, जगसांमि, जगसांमी–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ जगत्स्वामी] संसार का स्वामी, ईश्वर। उ॰— विमळ आणंद लिखिमीवर, जगतठांम जगसांमि।—पीरदांन लाळस

जगसाखी–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ जगत्साक्षी] सूर्य (डिं.को.)

जगसाधन–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ यज्ञसाधन] विष्णु का एक नाम।

जगसाधार–वि॰—जगत की रक्षा करने वाला।

उ॰—धिन धिन मां करणी जगसाधार, पावै कुण नांमां गिणै पार।—रांमदांन लाळस

ईश्वर।

जगसाळा–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ यज्ञशाला] यज्ञशाला, यज्ञमंडप।

[सं॰ जगत्+श्यालक:] वेश्या का भाई।

जगसास्त्र–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ यज्ञशास्त्र] वह शास्त्र जिसमें यज्ञ करने का विधान हो।

जगसील–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ यज्ञशील] वह जो यज्ञ करता हो।

जगसूकर–सं॰पु॰ [सं॰ यज्ञशूकर] विष्णु।

जगसेन–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ यज्ञसेन] विष्णु का एक नाम।

जगसेव–सं॰पु॰यौ॰—शिव, महादेव (अ.मा.)

जगस्वांमी–सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ जगत्स्वामी] १ ईश्वर. २ विष्णु।

जगह—देखो 'जगा' (रू.भे.)

जगहत्थ, जगहथ–सं॰पु॰—१ दिग्विजय करने की क्रिया। उ॰—१ तरु ताळ पत्र ऊंचा तड़ि तरळा, सरळा पसरंता सरगि। वैठे पाटि वसंत बंधिया, जगहथ किरि ऊपरी जगि।—वेलि.

उ॰—२ जगहत्थ जगतसिर जळहळै, दस दिगपाळ दहक्कवै। 'महिमाल' छहां जिहां सातमौं, चौथै पहौरै चक्कवै।—सू.प्र.

जगहथपत्र—सं॰पु॰यौ॰ [स॰ जगद्हस्तपत्र] दिग्विजय का घोषणा-पत्र, दिग्विजय का चुनौती पत्र।

जगहरता–सं॰पु॰यौ॰—ईश्वर (नां. मा.)

जगहेत–सं॰पु॰—ब्रह्मा (नां. मा.)

जगहोता–सं॰पु॰ [स॰ यज्ञहोतृ] यज्ञ के समय देवताओं को आह्वान करने वाला।

जगा–सं॰स्त्री॰ फा॰ जायगाह] १ स्थान, स्थल। उ॰—तौ सलावत खां कही-जो वादसाह रा हुकम ईं तरह का ही जे है तौ और कैसी जगा मेलें।—राठौड़ अमरसिंह री वात

मुहा॰—जगा-जगा—सव स्थानों पर, सर्वत्र, थोड़ी-थोड़ी दूर, वहुत से स्थानों पर।

२ पद, ओहदा. ३ स्थिति. ४ मौका, अवसर ५ मकान।

रू॰भे॰—जगह, जघा, जागा जायगा।

जगाइणौ, जगाइबौ—देखो 'जगाणौ' (रू.भे.)

जगाचख—देखो जगचख' (रू.भे.)

उ॰—चत्र जांग विनीत उदोत जगाचख। सजि रीझ विदा किय तीस छहै सख।—सू.प्र.

जगाजोत, जगाजोति–सं॰स्त्री॰—जगमगाहट। उ॰—१ जगाजोत आदीत री जोत ओपै। उभै हीर चांमीर में खंग ओपै।—सू.प्र.

उ॰—२ फौजां ऊपरां ऊजळां भालां रा डंबर भळळाट करि जगाजोति जागी।—वचनिका

जगाणौ, जगावौ–क्रि॰स॰—१ नींद से उठाना।

कहा॰—ऊंगियोडौ (सूतौ) ह्वै तौ जगावै पण ओ तौ जागतौ घोराजै—सोते हुए को जगाना तो सहज है किन्तु जो सोने का वहाना करता है उसे किस प्रकार से जगाया जाय। जानवूझ कर किसी कार्य को करने वाले को उस कार्य से विरत या विमुख करना कठिन होता है।

२ होश दिलाना. ३ फिर से ठीक स्थिति में लाना. ४ प्रज्वलित करना। उ॰—कांमनी जु स्त्री तहां जु दीपक जगाया छै।—वेलि.टी.

५ किसी कार्य के लिये उत्तेजित करना या तैयार करना।

उ॰—कोयल लाज करंत जगावै कांम नै रीझावै अदभुत आतमांरांम नै।—बां. दा.

६ किसी विशेष देव, सिद्ध आदि के निमित्त रात्रि-जागरण कराना।

जगाणहार, हारौ (हारी), जगाणियौ—वि॰।

जगायोड़ौ—भू॰का॰कृ॰।

जगाईजणौ, जगाईजवौ—कर्म वा॰।

जगणौ, जगवौ—अक॰रू॰।

जगाड़णौ, जगाड़वौ, जगावणौ, जगाववौ—रू॰भे॰।

जगात–सं॰स्त्री॰ [अ॰ ज़कात] १ पुण्य हेतु दिया जाने वाला धन, खैरात. २ कर, महसूल। उ॰—पातसाहजी फुरमाया—च्यार लाख रुपया लगाय सूरत दोळौ कोट करावणौ, एक वरस री जगात वोपारियां नूं माफ कीवी।—नापा सांखला री वारता

रू॰भे॰—जकात।

जगातमा–सं॰पु॰ [सं॰ यज्ञात्मा] विष्णु।

जगाती—देखो 'जकाती' (रू.भे.)

जगादीस—देखो 'जगदीस' (रू.भे.) उ॰—सही सेस लाखं मणां धारि सोधा। जगादीस राघौ सकौ देव जोधा।—सू.प्र.

जगामग, जगामगि—देखो 'जगमग' (रू.भे.) उ॰—वणि हीर जगामगि अस्टवळी। महले किर दीपक माळ मिळी।—रा.रू.

जगायोड़ौ—१ जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ. २ प्रज्वलित किया हुआ. ३ होश दिलाया हुआ. ४ फिर से ठीक स्थिति में लाया हुआ ५ किसी कार्य के लिये उत्तेजित किया हुआ या तैयार किया हुआ. ६ (किसी विशेष देव, सिद्ध आदि के निमित्त) रात्रि जागरण कराया हुआ।

(स्त्री॰ जगायोड़ी)

रू॰भे॰—जगावियोड़ौ।

जगार, जगारि, जगारी–सं॰पु॰ [सं॰ यज्ञारि अथवा जगद्+अरि] राक्षस।

जगावणौ, जगावबौ—देखो 'जगाणौ' (रू.भे.) उ०—तिण जंग वागां रंग मराजन री दीठो दखी, जिण रंग इणडौ जोस जाणे भभंग जगावियौ ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात

जगावणहार, हारौ (हारी), जगावणियौ—वि० ।

जगावियोड़ौ, जगाविवोड़ौ, जगाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जगावीजणौ, जगावीजबौ—कर्म वा० ।

जगणौ, जगबौ—प्रक०रू० ।

जगाड़णौ, जगाड़बौ—रू०भे० ।

जगावियोड़ौ—देखो 'जगायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जगावियोड़ी)

जगि–सं०पु० [सं० यज्ञि] १ यज्ञ करने वाला. २ देखो 'जग' (रू.भे.) उ०—गज रूप चड़ण श्रंग रहण असंभ गति, पुहप कमळ देसोत पगि । जिम जगदीसर पूजतौ जैमल, जैमल तिम पूजिजै जगि ।—राठौड़ जैमल वीरमदेवोत री गीत

३ देखो 'जिग' (रू.भे.)

जगियोड़ौ—देखो 'जागियोड़ौ' (रू.भे.)

जगी—देखो 'जगि' (रू.भे.)

जगीस–सं०स्त्री०—१ इच्छा, अभिलाषा । उ०—१ जेठे तणी जगीस, मन हूंते मेली नहीं । वाल्हा मिळणू व्हीस, जोड़ी तौ संग जेठवा ।—जेठवा

उ०—२ लिखी फुरमांण पठावत सबही, घन करमचंद्र मंत्रीस । 'समयसुंदर' प्रभु परम क्रिपा करि, पूरत मनहि जगीस ।—ऐ.जै. का.सं.

२ जिज्ञासा. ३ कीर्ति, यश । उ०—चउंडराउ दिय ऊधूल चाउ, राउत्त आपहे आप राउ । सोहिया प्रवाड़ा सिघ सीस, जंबूअहदीप जग्गी जगीस ।—रा.ज.सी.

सं०पु०—३ युद्ध । उ०—सीस घरणि चौ गळै माळ सझि 'सिघ' तणौ विढ़ियौ स जगीस । संकर-घरणि देखि तिण संकी, संकर लियै रखै मो सीस ।—जसवतसिंह सोनगरा री गीत

[रा० जग=सं० जगत+ईश] ईश्वर ।

रू०भे०—जगीसौ, जग्गीस ।

जगीसौ—देखो 'जगीस' (रू.भे.) उ०—प्रह उगमते प्रणमिपे, विहरमांन जिन वीसौ जी । नांमे नवनिधि सपजे, पूरे मनह जगीसौ जी ।—स.कु.

जगु, जगू—देखो 'जग' (रू.भे.) उ०—भूयवलि भंजई रिउभड़िवाओ, दांणि जगु ऊरिणु करए ।—पं.पं.च.

जगेसर, जगेसुर, जगेस्वर–सं०पु०यौ० [सं० यज्ञेश्वर] विष्णु ।

जग्ग— देखो 'जग' (रू.भे.) उ०—जांगळ अरु सरणाइ घाति जग्ग । खिति मिति नदी साहइ खड़ग्ग ।—वचनिका

जग्गीस—देखो 'जगीस' (रू.भे.) उ०—कोटां कूंटां कमसीसां, जुड़ै न चांदो जग्गीसां । जे जुड़सी चांदो जग्गीसां, कोट न कूट न कमसीसां ।—चांदा वीरमदेवोतरी गीत

जग्य, जग्यन—देखो 'जिग' (रू.भे.) उ०—१ आगे देखउ तौहि अहि अहि विसै जग्य होय छै । जग्य-जग्य रै विसै तप जाप होइ छै ।—वेलि.टी.

उ०—२ जिम करूं वीरभद्र दक्ष जग्यन, कनर-पांगा किलमांण रौ । इम 'अभा' हूंत मिसलती अरज, रटै 'पतौ' महिरांण रौ ।—सू.प्र.

जग्यासेनी–सं०स्त्री० [सं० याज्ञसेनी] द्रौपदी (अ.मा.)

जग्योपवीत–सं०पु० [सं० यज्ञोपवीत] यज्ञोपवीत, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ ।

उ०—ऐसी विध पंडतराज चातुरय कळा प्रवीण त्रिलोकूं का प्रवंध अनेक विध विमळ वांणी सै उच्चरै जिनूंसै रीझ स्री महाराज कनक जग्योपवीत चढाया ।—सू.प्र.

जघन्य–वि० [सं०] १ अंतिम. २ नीच, निकृष्ट. ३ गर्हित ।

जघन्यभ–सं०पु० [सं०] छः नक्षत्र—आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा ।

जघा—देखो 'जगह' (रू.भे.)

जड़ग–वि० [सं० जड़+अंग] मूर्ख, असभ्य । उ०—जड़ंग नीचा गमै, ऊधरै भगत जण ।—पीरदांन लाळस

जड़–सं०स्त्री० [सं० जड] १ वृक्षों, पौधों आदि का भूमि के भीतर रहने वाला भाग, मूल । उ०—विसरियां विसर जस बीज बीजिजै, खारी हाळाहळा खळांह । त्रूटै कंध मूळ जड़ त्रूटै, हळधर कां वाहतां हळांह ।—वेलि.

२ नींव, बुनियाद ।

मुहा०— १ जड़ उखाड़णी—हानि या बुराई कर के किसी की स्थिति बिगाड़ना । समूल नष्ट कर देना । जड़ खोदणी—देखो 'जड उखाड़णी'. ३ जड़ जमणी—जड़ या बुनियाद का मजबूत होना. ४ जड़ जमाणी—बुनियाद मजबूत करना. ५ जड़ ढीली करणी—देखो 'जड़ उखाड़णी'. ६ जड़ पकड़णी—जमना, अच्छी तरह जम जाना, अंकुरित होना, मजबूत होना ।

यौ०—जड़ामूळ ।

३ शीत, सर्दी. ४ देखो 'जड' (रू.भे.)

जड़कणौ, जड़कबौ–क्रि०स०—प्रहार करना, मारना ।

उ०—उचजी कुंभथळ थाप जड़की उरड़, तुरत कर एक सूं बजी ताळी । करी मुख रदन काळीदमण काढ़िया, मही मूळी कढ़ी जांण माळी ।—वां. दा.

जड़कियोड़ौ–भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ, मारा हुआ ।

(स्त्री० जड़कियोड़ी)

रू०भे०—जड़क्कियोड़ौ ।

जड़वकणौ, जड़वकबौ—देखो 'जड़कणौ' (रू.भे.)

उ०—१ चंगी फौजां वलूंवै बड़वकै डाड फुणी चील, उमगे जोगणी कांचां घड़वकै उरेव । हैजमां कड़वकै बीज जंगी हौदां रंगी हाडै, जड़वकै फरंगी सीस वरंगी जनेव ।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ जड़क्कत सेल भिदै जरदाळ । कड़क्कत कंध वहै किरमाळ ।—सू.प्र.

जड़विकयोड़ौ—देखो 'जड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० जड़विकयोड़ी)

जड़ड़णौ, जड़ड़बौ, जड़णौ, जड़बौ—क्रि०स० [सं० जटन] १ कपाट बंद करना। उ०—१ इतरै बीजी तरवार वाही सो वाढ़ नांखियौ। उठै सूं भोळी में घाल, बाहर मांगस था, उहांरे म्होंडा आंगा नांखियौ। खिड़की जड़ लीवी।—अमरसिंह राठौड़ री बात।

उ०—२ पछै राव रा सारा मांगस उगा घर में घालिया। राव आडौ ताळौ जड़ियौ। ऊपर महोर छाप दिवी।—बां. दा. ख्यात

२ प्रहार करना। उ०—१ निद्रा वसि पोह निरखि, पिलंग बंध कसे अपारां। 'जड़ी' विखम जमदाढ़, एक साथे ज अठारां।—सू.प्र.

३ कवच आदि पहन कर अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होना।

उ०—पहली इसड़ा वचन रा बांगा लगाया जिगा थी एक सौ पचीस तोपां साथ दे'र रगा री सांमग्री सूं सिलह में जड़िया वीर बरात में विदा कीधा।—वं. भा.

४ एक चीज को दूसरी चीज में ठोंक कर बैठाना। ५ एक चीज को दूसरी चीज में पच्चीकारी कर के बैठाना। उ०—राजमहलूं के अड़ाव अरस सेती अड़ै। मनू धवळागिर विसकरमा जड़ाव सूं जड़ै—र.रू.

६ चुगली या शिकायत के रूप में किसी के विरुद्ध किसी से कुछ कहना, कान भरना। ७ जमाना, स्थिर करना।

उ०—१ पड़ै अमावड़ द्रोह छत्रधर फरंग पालटे, आंटधर क्रोध भुज गयगा अड़िया। सोध अंगरेज हिंदवांगा आया सरव, जोध सिर सेस रै कदम जड़िया।—मोतीरांम आसियौ

८ प्रविष्ठ होना, घुसना, पैठना। उ०—साजन सिळी सनेह की, खटक रही दिल मांय। नीकाळी निकळै नहीं जड़हि कळेजा मांय।
—र. रा.

९ मजबूती से बांधना या कसना। उ०—१ जमदाढ़ वांमै अंग भीड़ जड़ी। सुज ऊपर पेटीय सांवरड़ी।—गो.रू.

उ०—२ सेखाराव नूं मुलतांगा सपाहां, जड़ियौ सांकळ जाळी। पाछौ जिको आंगियौ पूंगळ, देवी थं दाढ़ाळी।—बां.दा.

१० संश्लिष्ट होना, जड़ा जाना, गड्डमड्ड होना।

जड़णहार, हारौ (हारी), जड़णियौ वि०।

जड़वाड़णौ, जड़वाड़बौ, जड़वाणौ जड़वाबौ, जड़वावणौ, जड़वावबौ, जड़ाड़णौ, जड़ाड़बौ, जड़ाणौ, जड़ावौ, जड़ावणौ, जड़ावबौ—प्रे.रू.।

जड़िओड़ौ, जड़ियोड़ौ, जड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जड़ीजणौ, जड़ीजबौ,—कर्म वा०।

जड़त-सं०स्त्री०—एक चीज को दूसरी चीज में पच्चीकारी कर के बैठाने का कार्य, पच्चीकारी। उ०—साह तांम समसेर, जड़त जवहरां जमधर। मुलक वधारे समपि हेम तोड़ा गज हैमर।—सू.प्र.

जड़वंद-वि०—जड़सहित, समूल।

जड़ाउ, जड़ाऊ-वि० [सं० जटित] जड़ा हुआ, पच्चीकारी किया हुआ, जटित। उ०—१ असी कोस चाळीस भाळी उंचाळी। जड़ाऊ नगां सोवनी लंक जाळी।—सू.प्र.

उ०—२ दरगाह आया, जद पातसाह भारी सरपाव मोती दिया। रांगा नूं सिरपेच जड़ाऊ भेज्यौ।—बां. दा. ख्यात

जड़ाकढ़-वि०—समूल नाश करने वाला।

जड़ाग-सं०पु०—१ आभूषण। उ०—१ लख वरीस नरेसुर 'लाखौ' रीत प्रवीत खत्रीध्रम राखै, भारत आगि वजाग महाभड़ जोध जड़ाग वडा छळ जागै।—ल.पि.

उ०—२ जोध जड़ाग अभनमौ 'जैतौ', सदा चलै आपरै सुभाय। लखदत दीयै भांजणौ लाखां, खेड़ेचौ वावळी खुदाय।
—तेजसी खिड़ियौ

२ पुत्र, बेटा। उ०—सेना थाट काकौ 'कन्ह' पंग रौ बछाय सूतौ। ज्यूं सरेवसज्जा सूतौ 'गंग' री 'जड़ाग'।—हुकमीचंद खिड़ियौ

४ घोड़ा (ना.डि.को.)

रू०भे०—जड़ागि।

जड़ाणौ, जड़ाबौ-क्रि०स० ('जड़णौ' क्रिया का प्रे०रू०) जड़ने का कार्य कराना।

जड़ाव-सं०पु०—१ जड़ने का कार्य या भाव। उ०—१ पिंड पिंड दस-दस सिर परठि, सिर-सिर छत्रधारे। जगमग हीर जड़ाव जोति, आदित आभारे।—सू.प्र. उ०—२ वाग वेस सोहांमणां, भुखण मोती माळ। कनक कचोळा जड़ाव रा, सुंदर सोवन थाळ।—ढो.मा.

रू०भे०—जड़ावट।

२ शिर के बालों का जूड़ा।

जड़ावट—देखो 'जड़ाव' (१)

जड़ावणौ, जड़ावबौ—देखो 'जड़ाणौ (रू.भे.) उ०—पोत रा 'सेवा' रा जंगी घुरावै सतारा वार, धावै खळां खतारा भूदंडां धाड़ धाड़। अबीह भतारा डंका आवै सदा आठवाटां, कंपनी जड़ावै किलकत्ता रा किंवाड़।—डूंगजी जवारजी री गीत

जड़ावियोड़ौ—देखो जड़ायोड़ौ।
(स्त्री० जड़ावियोड़ी)

जड़ित-वि०—जड़ा हुआ, जटित। उ०—आया बाहिर एम, बैसि गजां मेघाडंवरां। चगथा वे ढुळते चमर, हीर जड़ित छत्र हेम।
—वचनिका

जड़िया-सं०स्त्री०—नग जड़ने एवं पच्चीकारी का कार्य करने वाली स्वर्णकारों की एक जाति।

जड़ियाळ-वि०—वह जिससे प्रहार किया जाय। उ०—जोम छक, हरख जड़ियाळ भंजै गजां, जेगा तक वजर पड़ियाळ जांगां। जहर री छाक कड़ियाळ तौ रगा जुवां, 'पेम' हर असौ छड़ियाळ पांगां।
—जोवसिंह राठौड़ री गीत

जड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ वन्द किया हुआ. २ प्रहार किया हुआ. ३ सुसज्जित. ४ ठोंक कर बैठाया हुआ. ५ पच्चीकारी कर के बैठाया

हुआ. ६ किसी के विरुद्ध कुड़की या हिरासत किया हुआ, काम लगा हुआ. ७ जमाया हुआ, स्थिर किया हुआ. ८ मजबूती से बांधा हुआ, कसा हुआ. ९ प्रविष्ट हुवा हुआ, घुसा हुआ, पैठा हुआ। १० सन्निविष्ट हुवा हुआ, मिला हुआ, गडुमडु हुवा हुआ।
(स्त्री० जड़ियोड़ी)

जड़ियो-सं०पु०—जड़ाई का कार्य करने वाला व्यक्ति, वह जो पच्चीकारी करे।

जड़ी-सं०स्त्री०—ऐसा पौधा या कोई वनस्पति जिसकी जड़ औषधि के लिये काम में लाई जाय।
यौ०—जड़ी-बूटी।

जड़ैल-वि०—जड़ने का कार्य किया हुआ, जटित।

जड़ो-सं०पु०—वह बैल, ऊंट आदि पशु जो समुचित रूप से शिक्षित न किया गया हो।

जचणो, जचबो-क्रि०अ०—१ जांच में पूरा उतरना, ठीक मालूम होना, उचित या अच्छा प्रतीत होना. २ जुड़ना, ठीक बैठना।
उ०—साळ्यां हंदो साथ, अरज करै छै आपनै। हथळेवा रो हाथ, जचियो पण रचियो नहीं।—रांमनाथ कवियो
३ ऐसा बैठना कि ढीला-ढाला या तंग न हो, ठीक बैठना।
उ०—हुवो हुकम लख चित हरख, जचिया सिलह जड़ाव। रावळ पिंडी रजमटां, पड़िया जाय पड़ाव।—जुगतीदांन देथो
४ देखा भाला जाना, जांचा जाना. ५ प्रतीत होना, निश्चय होना, मन में बैठना. ६ शोभित होना, फबना।
जचणहार, हारौ (हारी), जचणियो—वि०।
जचवाड़णो, जचवाड़बो, जचवाणो, जचवाबो, जचवावणो, जचवावबो, जचाड़णो, जचाड़बो, जचाणो, जचाबो, जचावणो, जचावबो—प्रे०रू०।
जचिओड़ो, जचियोड़ो, जच्योड़ो—भू०का०कृ०।
जचीजणो, जचीजबो—भाव वा०।
जंचणो, जंचबो, जच्चणो, जच्चबो—रू०भे०।

जचा—देखो 'जच्चा' (रू.भे.) उ०—सो सीयाळा में राजकुमारी रो जनम हुवो है जिणसूं जचा रै तापण नै तपणी लाया है।—वी.स.टी.

जचाड़णो, जचाड़बो—देखो 'जचाणो, जचाबो' (रू.भे.)
जचाड़णहार, हारौ (हारी), जचाड़णियो—वि०।
जचाड़िओड़ो, जचाड़ियोड़ो, जचाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
जचाड़ीजणो, जचाड़ीजबो—कर्म वा०।

जचाड़ियोड़ो—देखो 'जचायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जचाड़ियोड़ी)

जचाणो, जचाबो-क्रि०स० ('जचणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ जांच में पूरा उतारना, ठीक मालूम कराना, उचित या अच्छा प्रतीत कराना. २ जुड़ाना, ठीक बैठाना, जोड़ना. ३ ऐसा बैठाना कि ढीला-ढाला या तंग न हो. ४ देख-भाल कराना, जंचाना. ५ प्रतीत कराना, निश्चय कराना, मन में बैठाना. ६ शोभित कराना, फबाना।
जचाणहार, हारौ (हारी), जचाणियो—वि०।
जचायोड़ो—भू०का०कृ०।
जचाईजणो, जचाईजबो—कर्म वा०।
जचणो, जचबो—अक०रू०।
जंचाणो, जंचाबो, जचाड़णो, जचाड़बो, जचावणो, जचावबो—रू०भे०।

जचायोड़ो-भू०का०कृ०—१ जांच में पूरा उतारा हुआ, ठीक मालूम कराया हुआ, उचित या अच्छा प्रतीत कराया हुआ. २ जुड़ाया हुआ, ठीक बैठाया हुआ, जोड़ा हुआ. ४ ऐसा बैठाया हुआ कि ढीला-ढाला या तंग न हो. ४ देख-भाल कराया हुआ, जँचाया हुआ. ५ प्रतीत कराया हुआ, निश्चय कराया हुआ, मन में बैठाया हुआ. ६ शोभित किया हुआ, जँचाया हुआ। (स्त्री० जचायोड़ी)
रू०भे०—जंचायोड़ो, जचाड़ियोड़ो, जचावियोड़ो।

जचावणो, जचावबो—देखो 'जंचावणो, जंचावबो' (रू.भे.)
जचावणहार, हारौ (हारी), जचावणियो—वि०।
जचाविओड़ो, जचावियोड़ो, जचाव्योड़ो—भू०का०कृ०
जचावीजणो, जचावीजबो—कर्म वा०।

जचावियोड़ो—देखो 'जचायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री०-जचावियोड़ी)

जचियोड़ो-भू०का०कृ०—१ जांच में पूरा उतरा हुआ, ठीक मालूम हुवा हुआ, उचित या अच्छा प्रतीत हुवा हुआ। २ जुड़ा हुआ। ३ ऐसा बैठा हुआ कि ढीला-ढाला या तंग न हो। ४ जांचा गया हुआ, जँचा हुआ, देखा-भाला हुवा। ५ प्रतीत हुवा हुआ, निश्चय हुवा हुआ, मन में बैठा हुआ। ६ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ।
(स्त्री० जचियोड़ी)

जच्च-वि० [सं० जात्य] १ स्वाभाविक. २ प्रधान, श्रेष्ठ. ३ सजातीय (जैन)

जच्चण्णिय-वि० [सं० जात्यान्वित] कुल में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ जाति का (जैन)

जच्चणो, जच्चबो—देखो 'जचणो, जचबो' (रू.भे.)

जच्चा-सं०स्त्री० [फा० जच्चा] प्रसूता स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो। उ०—रे म्हांरे उतर दिखण री, ए जच्चा पींपळी। हे म्हांरे पूरब नमी-नमी डाळ रे, हे म्हांनै घणो ए सुहावै जच्चा पींपळी।
—लो. गी.
रू०भे०—जचा।

जच्चाग्रां-सं०स्त्री०—एक प्रकार के मांगलिक गीत जो पुत्र-जन्मोत्सव के अवसर पर स्त्रियां गाती हैं।
(मि०—जसाग्रां)

जच्चियोड़ो—देखो 'जचियड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जच्चियोड़ी)।

जच्छ-सं०पु० [सं० यक्ष] १ देखो 'जक्ष' (रू.भे.) २ कुबेर. ३ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम (डिं.को.)

जज-सं०पु० [ग्रं०] १ न्यायाधीश, न्याय करने के लिये नियुक्त बड़ा अधिकारी।

[रा०] २ सख्त या कठोर बंधन. ३ यज्ञ (ग.मो.)

जजक–सं०स्त्री०—१ हिचक, हिचकिचाहट. २ चौंकने का भाव ।
उ०—वाळवाळी तिलक साझ कर बनाती, ओपियो लहर छक खळक आखां । साकुरां धमक पोडां धमक सांवळे, लगी ओजक जजक अजक लाखां ।—सूरतसिंह री गीत

जजकणौ, जजकबौ–क्रि०अ०—१ हिचकना, झिझकना ।
२ चौंकना । उ०—सुण वाळा इक रैण पौढ़ती कंठ लगाणी । जागी जजकां नैण विळखतां नीर भरांणी ।—मेघ.
रू०भे०—जझकणौ, जझकबौ ।

जजकियोड़ौ–वि०—१ हिचका हुआ, झिझका हुआ. २ चौंका हुआ ।
(स्त्री० जजकियोड़ी)

जजट्ठळ देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.) उ०—तोड़े दळ मुग्गळ खाग तरास, जजट्ठळ जेम लिये जसवास ।—सू.प्र.

जजण–सं०पु० [सं० यजन] यज्ञ । उ०—इळा राज करि एम, 'माल' स्रगि वसे महाबळ । जीत समर दन जजण, अमर रहीयौ जस उज्झळ ।
—सू.प्र.

जजणौ, जजबौ–क्रि०स०—१ दान देना, उदारता करना. २ यज्ञ करना ।

जजमणौ, जजमबौ [सं० यजमान] शान्ति प्राप्त करना ।

जजमाण, जजमांन–सं०पु० [सं० यजमान] १ वह जो यज्ञ करता हो, दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणों से यज्ञ पूजन आदि धार्मिक कृत्य आदि कराने वाला व्रती, यष्टा ।
उ०—हंसा था सो उड गया, कागा भया दिवांन । जा बांमण घर आपणे, सिंघ केरा जजमांन ।—अज्ञात
२ ब्राह्मणों को दान देने वाला ।
रू०भे०—जजिमान, जुजमांण, जुजमांन ।

जजमांनता, जजमांनी–सं०स्त्री०—१ यजमान का भाव या धर्म.
२ यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति. ३ खातिरदारी. ४ वह गांव या नगर जहां किसी विशेष पुरोहित के यजमान लोग रहते हों ।

जजमाणौ, जजमाबौ–क्रि०स० [सं० यजमानन] क्रोध शांत कराना, धैर्य दिलाना । उ०—वागढाल करीजे, मांहै थांहरौ चोर छै तौ अबै जाय कठै ही नहीं । इसी भांत गूजरो जजमाय घोड़ा सूं उतारिया ।
—राव रिणमल री वात

जजमायोड़ौ–भू०का०कृ०—क्रोध शांत किया हुआ, धैर्य दिलाया हुआ ।
(स्त्री० जजमायोड़ी)

जजमावणौ, जजमावबौ—देखो 'जजमाणौ' (रू.भे.)

जजमावियोड़ौ—देखो 'जजमायोड़ौ (रू.भे.) (स्त्री० जजमावियोड़ी)

जजरंग–सं०पु०—१ यमराज. २ वज्र ।
वि०—भयंकर । उ०—जजरंग घाट तूटै जरद, झाट पड़ै झड़ ओझड़ां । दळ खोद वणै हूंकळ दिली, घोंकळ कीधी धूहड़ां ।
—सू.प्र.

जजर–सं०पु०—१ यमराज । उ०—राव वड़ उरड़ दीसै जजर रूप रा । पांण केवांण धारै कमण ऊपरा ।—पदमसिंह आढ़ौ
२ वज्र । उ०—वंकि पटां फुल हथां, सोरि खिलकार कुसत्री । तस कसीस लेजमां, जजर गत्ती जाजत्री ।—सू.प्र.
वि०—भयंकर । उ०—छोडै भूप दास खळ छोडै । जजर निहाव वजरचै जोडै ।—सू.प्र.
[सं० जर्जर] २ घावों से परिपूर्ण, क्षत-विक्षित । उ०—इक पड़ै मुड़ै मुड़ लड़ै आय । घड़ियाल गजर जिम जजरु घाय ।—रा.रू.
३ वृद्ध, बूढ़ा. ४ जीर्ण-शीर्ण, पुराना, जर्जर ।
रू०भे०—जज्जर, जञ्र, ।

जजराग–वि०—१ भयंकर, डरावना. २ क्रुद्ध ।
सं०पु०—१ यमराज. २ वज्र ।

जजराट–सं०पु० [सं० जज=युध+राट्] १ यमराज.
उ०—अेकौ नीसरै जठी साव जस को ओद्रकै, तेण री धकौ जजराट जेहौ । वधारै तुरी गढ़ जकौ भुरा विना, आंगमे न को भूपाळ एहौ ।
—जसजी आढ़ौ
रू०भे०—जज्राट, जुजराट ।

जजात, जजाति, जजाती–सं०पु० [सं० ययाति] १ यादववंशी राजा ययाति (नैणसी)
वि०वि०—ये नहुष के पुत्र थे, इनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था ।

जजायळ–सं०स्त्री०—एक प्रकार की लम्बी ऊंटों पर लाद कर चलाई जाने वाली बन्दूक । उ०—असवार हजार दोय जजायळां हजार एक ऊंट पांच सौ बीस ऊंटां ऊपर बांण और बाजार रौ लोग मोदीखांनौ पेसखांनौ कारखांनौ सारा लेय वहिर हुवा ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
रू०भे०—जुजायळ ।

जजार, जजाळ, जजाळौ–सं०स्त्री०—एक प्रकार की बड़ी, लम्बी एवं भारी बंदूक । उ०—दुझाळां वलाळां झाळां अचाळां दखणी दळां, रूक भालां जजाळां गैढाळां मातौ रीठ ।—पहाड़ खां आढ़ौ

जजिमांन—देखो 'जजमांन' (रू.भे.)

जजियौ–सं०पु० [अ०] अन्य धर्मावलंबियों पर मुसलमानी काल में लगने वाला एक प्रकार का कर ।
रू०भे०—जेजियौ ।

जजी–सं०पु०—यज्ञ (ग.मो.)

जजुवेद, जजुरवेद–सं०पु० [सं० यजुर्वेद] चार वेदों में से दूसरा वेद, यजुर्वेद (डि.को)

जजुरवेदी–सं०पु०—यजुर्वेद का ज्ञाता ।

जजुव्वेय–सं०पु० [सं० यजुर्वेद] यजुर्वेद (जैन)

जजेसर, जजेस्वर–सं०पु० [सं० यक्षेश्वर] कुबेर (अ.मा. नां.मा.)

जजोनी–सं०पु० [सं० योनिज] १ योनि से जन्म लेने वाला, योनिज ।
उ०—हास मुधर कुंडळ हींडोळता, जोगाभ्यास जजोनी । अण तसवीर रावळी ऊपर, वारूं पीर अजोनी ।—महाराजा मांनसिंह

जज्जर—देखो 'जजर' (रू.भे.) उ०—आया हूसनअली मजरायळ, जाजुलमांन मयंदर जज्जर।—सू.प्र.

जज्जरित्त–वि० [सं० जर्जरित्त] जीर्ण, पुराना (जैन)

जज्जीव–सं०पु० [सं० यावज्जीव] जीवमात्र, प्राणीमात्र।

जज्ज, जज्जक—देखो 'जजर' (रू.भे.) उ०—१ भळकै के मुराड़ा चकै भूनगा ना, बरंदां छांगड़ा गाह हत काना ऊप। ओठिया अखाड़ै चेला नांगड़ा ऐ भूतरा ना, रुद्दिया गांगड़ा जज्ज दूत का सारूप।

—महादांन महडू

उ०—२ कार्ढो वळा मी मंगळा प्रळै समदां ऊमळी किना, राळां धू अन्ठी जज्ज गै-थंडां खागास। तरग्गां बिछूटी तूटी माथ पत्ते काळा नीम, बीर 'चूंडा' वाळी ज्वाळा बीजळां बागास।—तेजराम आसियौ

जज्जजीव–सं०पु०—जीवों का यमराज, सिंह (डिं.को.)

रू०भे०—जीवजज्ज।

जज्जर–सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की छोटी बंकदू. २ देखो 'जजर' (रू.भे.)

जज्जराट—देखो 'जजराट' (रू.भे.) (डिं.को.)

जझकणौ, जझकबौ—देखो 'जजकणौ, जजकबौ' (रू.भे.)

उ०—१ जझक अहराव फुण हूत झाळां अजर, क्रोधवंत जटाधर नेत केहो।—रावत अजीतसिंह सांरगदेवोत रो गीत

उ०—२ जझकै नहीं भयांणक जांणे, पनंग जिको अहियां नृप पांणे।

—सू.प्र.

जट—१ देखो 'जटा' (रू.भे.) उ०—जट आड बंध सेली जड़ाव, आवधां वीर संजत अड़ाव।—वि.सं.

२ देखो 'जाट' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—३ बकरी व ऊंट के बाल. ४ नारियल की ऊपरी जटा।

जटगंग–सं०पु०यौ० [सं० गंगाजट] शिव, महादेव। उ०—उडै गति गेंद नरां उतमंग। गहै झट कंज करां जटगंग।—मे.म.

जटजूट–सं०पु०यौ०—जटा का समूह। उ०—नग नायक चा नाह, बिच जटजूट बसावियौ। पावन गंग प्रवाह, प्राणी तूं कद परसही।—बां.दा.

जटधर, जटधरण, जटधार, जटधारी–सं०पु० [सं० जटाधर, जटाधारी] १ शिव, महादेव। उ०—१ जंघा पवित्र करिस हूं जटधर, नृत करतौ आगळ नाटेसर।—ह.र.

उ०—२ व्रत जनक राख सीतावरण, धांनुख भंजण जटधरण। मुण 'किसन' सुजस रघुबंस मण, सीतापत असरण सरण।—र.ज.प्र.

उ०—३ अन पांन फूल छोडूं उदक, धरूं ध्यांन जटधार रो। मण देह मिळै मोनूं अभंग, जे सेरनींग 'सरदार' रो।—पहाड़ खां आढ़ो

उ०—४ 'दीपावत' 'फतमाल' एम बोलै अग्रकारी, सझि खग सत्र रथ भीम, पूजूं जटधारी।—सू.प्र.

२ सन्यासी, फकीर। उ०—जटधारी धारी जोगोई, कविताधारी कंथाधार। मारग दस मेवाड़ नरेसुर, वहै तुहाळै वड दातार।

—महाराणा हम्मीर रो गीत

जटपंख–सं०पु०—वह सांप जिसके सिर पर जटा हो तथा पर हों।

उ०—विरदां पूंगी राग वस, मांनै मंत्र समोद। प्रथी सीर धाव। पड़ै जटपंख नाहा जोद।—कविराजा करणीदांन

जटल—देखो 'जटिल' (रू.भे.)

जटवाड़–सं०पु०—१ जाटों का समूह या झुंड।

[रा० जाट+सं० पाटक] २ वह स्थान जहां जाट अधिक संख्या में निवास करते हों. ३ जाटों का प्रान्त, जाटों का राज्य।

उ०—अणी जटवाड़ वीरां तणी आकळै, विचख तीरां तणी मची वरखा। हुसम अंगरेज री आठ वाटां हुई, पूर पाटां हुई रुधर परखा।

—कविराजा बांकीदास

जटसंकरी–सं०स्त्री० [सं० जटा शंकरी] गंगा (अ.मा.)

जटा–सं०स्त्री० [सं०] १ उलझे हुए शिर के बड़े बड़े तथा अति घने बाल। उ०—सीस जटा पोथी गहै, सेत वसन गळ मांय। जोगी जगम है नहीं, बांमण पंडत नांय।—अज्ञात

२ एक में उलझे हुए बहुत से रेशे आदि।

रू०भे०—जट, जट्ट, जट्टा।

जटाई—देखो 'जटायु' (रू.भे.)

जटाचीर–सं०पु० [सं०] महादेव, शिव।

जटाजूट–सं०पु० [सं०] १ बहुत बड़ी जटायें. २ शिवजी की जटा।

जटाधर, जटाधार–सं०पु० [सं० जटाधर] शिव, महादेव। उ०—अयो कंस ऊपर केसव एम, जाळंधर सीस जटाधर जेम।—सू.प्र.

२ एक भैरव का नाम।

जटाधारी–सं०पु० [सं०] १ शिव, महादेव २ वह योगी या संन्यासी जिसकी जटायें बड़ी-बड़ी एवं लम्बी हों।

जटामाळी–सं०पु० [सं०] शिव, महादेव।

जटामासी–सं०स्त्री०—हिमालय में प्रायः १७००० फुट तक की ऊंचाई पर पाई जाने वाली एक वनस्पति की सुगंधित जड़।

जटाय—देखो 'जटायु' (रू.भे.) उ०—जोए खर दूखर रो घर जाय, जांणै गति प्रांमी आज जटाय।—पीरदांन लाळस

जटायत–सं०पु०—शिव, महादेव।

जटायु–सं०पु० [सं० जटायुः] रामायण में वर्णित एक प्रसिद्ध गिद्ध।

रू०भे०—जटाई. जटाय, जट्टाय।

जटायुज–सं०पु०—घोड़ा, अश्व (डिं.नां.मा.)

जटाळ–सं०पु० [सं० जटाल] १ शिव, महादेव। उ०—रवताळ रौदाळ रोसाळ महारिण, झाळ खंडाल आलाळ करै। झिलमाळ कंधाळ कराळ पड़ै भड़ि, धू मझि माळ जटाळ धरै।—सू.प्र.

२ जटाधारी व्यक्ति। उ०—१ कहजै दिगपाळ जटाळ कणा। मुदरा लय जोगिय आप मणा।—पा.प्र.

उ०—२ गै घटाळ जटाळ वैताळ गजै। विकराळ त्रंबाळ ववाळ वजै।—गो.रू.

३ उनचास क्षेत्रपालों के अंतर्गत २४वां क्षेत्रपाल. ४ वट वृक्ष, बरगद।

वि०—जटाधारी।

जटाळि, जटाळी—सं०स्त्री० [सं० जटाल] जटा का समूह। उ०—नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐंचते निभे। अगीन मुच्छ-मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते अभें।—ऊ का.

वि०—वह जिसके जटा हो, जटाधारी।

जटाळो—सं०पु० [सं० जटिल:] १ शेर, सिंह. २ शिव, महादेव. ३ देखो 'जटाळ' (रू.भे.)

जटासुर—सं०पु०—एक राक्षस (महाभारत) उ०—गोवद्धन कर लेण कौ, जिम कन्ह कसाया। जांणि जटासुर जंग पै, भुज भीम बजाया। —वं.भा.

जटि—१ देखो 'जटा' (रू.भे.)

सं०पु० [सं० जटी:] २ शिव, महादेव. ३ गुलर का वृक्ष।

जटित—वि० [सं०] जड़ा हुआ। उ०—हट अटा हेम नग जटित हीर। धज कोटि-कोटि ऊपर सधीर।—सू.प्र.

जटियळ—सं०पु०—महादेव, शिव। उ०—महा जटियळ अगुट भेख वक्रत मयंक अलंकृत सेख मेचक उथाळी। किरणपत प्रभा परभातरा समोकर, तेज पुंज नाथ रा तणी ताळी।—भीम सीसोदिया री गीत

वि०—वह जिसके शिर पर जटा हो, जटाधारी।

जटिया—सं०स्त्री०—१ कुम्हारों की एक शाखा जो बकरियों की व ऊँटों के बालों की बुनाई का काम करते हैं. २ एक प्रकार की राजस्थानी अछूत जाति जो चमड़ा साफ करने या रंगने का व्यवसाय करती है।

जटियाळ—देखो 'जटा' (मह., रू.भे.) उ०—जटियाळ छुटाळ परै पत्र जोगणि, पै जिम खाळ रत्ताळ पड़ै।—सू.प्र.

वि०—वह जिसके जटा हो, जटाधारी. ३ देखो 'जटियळ' (रू.भे.)

जटियो—सं०पु० (स्त्री० जटणी) जटिया जाति का व्यक्ति।

जटिल—वि० [सं०] १ जो आसानी से सुलझ न सके, दुरूह. २ क्रूर, दुष्ट. ३ उलझन डालने वाला।

सं०पु० [सं० जटिल:] १ सिंह. २ ब्रह्मचारी. ३ शिव, महादेव. ४ फकीर। उ०—भग जटिल सीस लिय संग स्वांन, कर स्यांम पात्र वजित उपांन।—ला.रा.

रू०भे०—जटल।

जटिला—सं०स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मचारिणी. २ गौतम वंश की एक ऋषि कन्या।

जटी—वि०—वह जिसके जटा हो, जटाधारी। उ०—जटी वीरभद्र घणा जगाया। आठ हजार इसा भड़ आया।—सू प्र.

सं०पु० [सं० जटि] शिव, महादेव (डिं.को.) उ०—जटी भूत प्रेत लिये लैर लग्यो, हठी वीरभद्रं तमासै उमग्यो।—ला.रा.

२ वह संन्यासी या तपस्वी जिसके सिर पर जटा हो. ३ वट वृक्ष (ह.नां. नां.मा.)

क्रि०वि०—जहाँ (रू.भे. जठी)।

उ०—मेचां सु समर मांडतै 'मोकळ', तद खाग वागी जटी तटी।
ढहिया रेण लाखां घड़ ढगळां, मुगळां पांमी नहीं मटी।
—रांणा लखमसिंह री गीत

रू०भे०—जट्टि, जट्टी, जट्ठी।

जटीधू—सं०पु० [सं० धूर्जटि] शिव, महादेव। उ०—जोवा रंगां बारंगां विरुणानाद सांमाजतो। जटीधू अजोणी नाद साभतो जंगेव।
—हुकमीचंद खिड़ियो

जटेत, जटेल, जटेस, जटेसर, जटेस्वर, जटैत, जटैल—सं०पु० [सं० जटिल:, जटा+ईश्वर] १ (जटाधारी) सिंह।

उ०—१ खूटा भंडा हबोळा हैथंडां भू वेहरी खुरां, सूर ढंकां खेहरी भू मंजं नसा तेम। रोळा काज तेहरी थटेत आया राजा माथ, जटेत केहरी दोळा फीलां टोळ जेम।—चांवंडदांन महड़ू

उ०—२ हलां करोलां तवल्लां वाज घेरियौ गिरंद हींदु, जगायौ अणी दुजांणौ अखाड़ै जटैत।—फतेसिंह महड़ू

२ वीर, योद्धा। उ०—गैण ऊचीसवा भांण खंचायौ थटैल ग्रीधां, बंकारू जटैल पाठ बंचायौ वीरांण। ऊजटैल पटा काळी नचायौ चंमंड-आळी, पटैळ वरुथां मारू मचायौ पीठांण।—महादांन महड़ू

३ शिव, महादेव।

वि०—वह जिसके सिर पर जटा हो, जटाधारी।

जट्ट—१ देखो 'जाट' (रू.भे.) २ देखो 'जटा' (रू.भे.)

जट्टा—देखो 'जटा' (रू.भे.)

जट्टाय—देखो 'जटायु' (रू.भे.) उ०—समाचार पूछे कहे भेद साहै, मिळै हंस जट्टाय वैकुंठ मांहै।—सू.प्र.

जट्टि, जट्टी, जट्ठी—देखो 'जाट' (रू.भे.) उ०—मारू आवी चउहड़इ, गांधी केरइ हट्टि। हट्ट लूसायउ वांणीयइ, वळद गमाया जट्टि।
—ढो.मा.

२ देखो 'जटी' (रू.भे.)

जठर—सं०पु० [सं०] उदर, पेट। उ०—अनंग जु कांम तेंका अंग महादेव जुदा जुदा कीया था, सु जेका जठर कहतां पेट कै विखै वसिनै जुड़िया।—वेलि.टी.

यौ०—जठरागनी, जठराग्नि, जठरानळ, जठागनि।

रू०भे०—जठरि।

मह०—जठराळ।

वि०—१ वृद्ध, बूढ़ा. २ निष्ठुर। उ०—अपहड़ अथग अरेह, जिको विनड़ियौ वधंतो। कुवचन मुख काढ़ता, जिको सुवचन जांणंतो। अेक घडी आंतरो, दोरम सोहि दाखंतो जिको जीव जीवतो, नको अंतर राखंतो। आफेई माल लेता उरो, कदे न चख भंखा किया। 'सेरसा' मरण फूटो नहीं, हूं लांणत जठर हिया।—पहाड़खां आढ़ो

जठरागनी, जठराग्नि—सं०स्त्री० [सं० जठराग्नि] उदर की अन्न पचने की गरमी या अग्नि, पेट की आग।

जठरानळ—सं०स्त्री०यौ०—जठराग्नि।

जठराळ—देखो 'जठर' (मह०, रू.भे.) उ०—दयाळ क्रपाळ संभाळ करे, जिळ भाळ कराळ विचाळ रखै। जठराळ उवाळ खुधाळ मरे, नभ नाभिन भाळ रसाळ भखै।—करुणासागर

जठरि—देखो 'जठर' (रू.भे.) उ०—पवनरि निणि प्रीति पसरि मन पवनरि, हाट भाट मोहिया हरि। अंग अनंग गया आपांणा, जुड़िया जिणि वनिया जठरि।—वेलि.

जठा-क्रि०वि०—जहां।

उ०—श्री उठाय फकत पगायो। जठा पछै नृप सिद्ध जगायो।

—सू.प्र.

जठागनि—देखो 'जठरागनि' (रू.भे.) उ०—कइ खाय सिराय पचाय जठागनि, दाय महाय सवाय मरै।—करुणासागर

जठी-क्रि०वि०—१ जिस तरफ, जिस ओर. २ जहां, जिधर।

उ०—रामदास हर रामशरण रै, वाड़ै गोधा वड़िया है। जठी तठी नै कर कर जुरड़ा, खिलखावण खड़भड़िया है।—ऊ.का.

जठै, जठै-क्रि०वि०—जहां। उ०—जोरावर तपियां जठै, भूपत आदव भांण। गांजे तूं सो देवगिर, गूजरवै सुरतांण।—बां.दा.

मुहा०—१ जठै तठै होणौ—कहीं कहीं होना, बहुत कम जगह पर होना, हर जगह या चारों ओर होना. २ जठै रौ तठै रै' जाणौ—जरा भी टस से मस न होना, उन्नति न करना, न उभरना, कार्यवाही न होना।

कहा०—१ जठै पड़ै मूसळ वठै खेमकुसळ—जहां मूसल गिरता है वहां क्षेम-कुशल रहती है, जहां कोई शक्तिशाली या समर्थ व्यक्ति पहुंचता है वहीं उसे सफलता मिलती है. २ जठै सेर वठै सवा सेर, जठै सौ वठै सवा सौ—इस संसार में कायर, वीर, निर्बल, बलवान, दुष्ट, सज्जन आदि सभी प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं।

जडंबा-सं०स्त्री०—चौसठ योगिनियों में से एक योगिनी। उ०—देवी जम्मघंटा वदीजे जडंबा। देवी साकणी डाकणी रूढ़ सव्वा।—देवि

जड-वि० [सं०] १ जिसमें चेतनता न हो, अचेतन। उ०—देह जिकण वातां ए दोई, तिकै सदाई तीखा। बीजा जड जंगम वसुधारा, सारा जीव सरीखा।—र.रू.

२ चेष्टाहीन, जिसकी इंद्रियों की शक्ति मारी गई हो, स्तब्ध. ३ मंद बुद्धि, नासमझ, मूर्ख। उ०—मुणै जाय हरि मेले मोनूं, जड तोनूं आगूंच जताऊं। सीस नमाय सिया ले साथे, वत्तसी जदां उपाव बताऊं।

—र.रू.

४ गूंगा, मूक. ५ बहरा. ६ अनजान, अनभिज्ञ. ७ जिसके मन में मोह हो. ८ झूठा (अ.मा.) ९ जटा (उ.र.)

रू०भे०—जट्ट, जड्ड।

जडचर-सं०पु० [सं० जडश्चर] उनपचास क्षेत्रपालों में से एक।

जडटोप-सं०पु०—शिरस्त्राण, युद्ध में पहनने का लोहे का टोप, झिलमटोप।

जडणौ, जडबौ-क्रि०स०—१ टिड्डी दल का घनीभूत होना. २ अधिक होना. घना होना. ३ मोटा होना।

जडता-सं०स्त्री०—[सं० जड + रा०प्र०ता] १ अचेतनता. २ स्तब्धता. ३ मूर्खता, नासमझी. ४ गूंगापन. ५ बहरापन

जडधर, जडधार, जडधारी-सं०पु० [सं० जटाधर, जटाधारी] १ शिव, महादेव। उ०—तुं जडधार तणौ वळ जाणै। तुं महराज तणौ घर मांणै।—पी.ग्र.

स्त्री० [रा०] २ कटारी, कृपाण।

जडभरत, जडभरतरी-सं०पु०—एक प्राचीन पौराणिक राजा।

वि०वि०—परम विद्वान तथा शास्त्रज्ञ होते हुए भी ये सांसारिक वासनाओं से पीछा न छुड़ा सके थे। वानप्रस्थ होने पर भी सद्यःजात एक मृगशावक को पाल कर उससे अत्यन्त स्नेह किया। अंत में ईश्वर के स्थान में उसी का ध्यान करते हुए मरे जिसके फलस्वरूप पशु योनि में उत्पन्न हुए। चौरासी योनियां भोगते हुए पुनः मनुष्य योनि में आये किन्तु फिर भी इनकी जडता नहीं गई जिसके कारण ये जड भरत नाम से प्रसिद्ध हुये। परम विद्वान होते हुए भी इन्हें लोग मूर्ख समझते थे और केवल भोजन देकर इनसे खूब काम लेते थे। एक बार राजा सौवीर ने इन्हें पालकी ढोने में लगाना चाहा। इसी अपमान से इन्हें आत्मज्ञान हुआ। पालकी ढोना इन्होंने अस्वीकार किया जिससे इनके ऊपर मार पड़ी। किन्तु फिर भी ये टस से मस न हुए। अंत में राजा सौवीर ने इन्हें पहिचाना और क्षमा मांगते हुए इनसे ज्ञानोपदेश प्राप्त किया। भरत ने ज्ञानोद्रेक द्वारा मोक्ष प्राप्त किया।

जडळक, जडलक, जडळग, जडलग-सं०स्त्री०—१ तलवार (ह.नां.)

उ०—सत्र सारत समथा सब कोई, जडळग वह गई सग जिनोई।

—रा.रू.

२ कटार। उ०—तई सुपहां घड़ा मोड़ माहव तणा, ल्हसै अर किता रहिया होण लोग। जडळगां पांण 'मांना' हरा तो जसा, भरै कमळां जियां ऊजळा भोग।—रावत सारंगदेव कांनोड़ रौ गीत

रू०भे०—जडळग्ग, जडलग्ग।

जडळगधी-सं०स्त्री०—छुरी (डि.को.)

जडळग्ग, जडलग्ग—देखो 'जडळग' (रू.भे.) उ०—जडळग्ग प्रलग्ग अळग्ग भलै। मगथग्ग वळै पग डग्ग मिळै।—पा.प्र.

जडा-सं०स्त्री० [सं० जटा] जटा (जैन)

जडागि—देखो 'जडाग' (रू.भे.) उ०—काळै मरण मनोरथ कीधा, लाज मरण भारथ भुजि लीधा। आप तणै डेरे फिरि आयो, जोध जडागि मिळै गिर जायो।—वचनिका

जडाधर, जडाधार, जडाधारी-सं०पु० [सं० जटाधरः, जटाधारिन्] १ जटाधारी व्यक्ति. २ शिव, महादेव। उ०—१ वेद च्यारइ अनै ब्रह्म वाखांणियो। जडाधर सरीखै प्रमेसर जांणियो।—पी.ग्र.

उ०—२ केवी मुहर पूठि सुर-कांमिणि, जडाधार पासे व्योम जोगिणि। मोहिया सुर अंतरीख गयण मिणि, राइजादौ सोहियौ महारिणि।

—राठौड़ गोकुळ सुजांनसिहोत ईसरोत रौ गीत

जडाळी-सं०स्त्री०—कटारी, कृपाण। उ०—गढपतिए घणा किया गढ रोहा, परगह ले जूझिया पह। जिम कीधौ 'अमरेस' जडाळी, किणहि न कीधौ इम कळह।—केसोदास गाडण

जडि-संस्त्री० [सं० जटिका] जटी, जटिका।
संपु० [सं० जटिन्] १ जटाधारी तपस्वी (जैन) २ महादेव (जैन)
वि०—जटाधारी, जटायुक्त (जैन)
रू०भे०—जडी।

जडियाइलग, जडियाल-संपु० [सं० जटितालक, जटाल] ८८ ग्रहों में से एक ग्रह (जैन)

जडिल-वि० [सं० जटिल] जटाधारी, जटावाला (जैन)
संपु०—१ राहु (जैन) २ केसरीसिंह (जैन) ३ जटाधारी तपस्वी (जैन)

जडियल-संपु० [सं० जटिलक] राहु ग्रह का एक नाम (जैन)

जडी—देखो 'जडि' (रू.भे., उ.र.)

जडुल-संपु० [सं० जटिल] एक प्रकार का सर्प विशेष जिसके शिर पर जटा होती है (जैन)

जडौ—देखो 'जाडौ' (रू.भे.)। उ०—१ जडौ रूप तूंना ग्रणावंत जेहौ, कुहाडो त्रणा ऊपरे मात्र केहौ।—ना.द.
उ०—२ आडा दळ टक्कर हुंत उडाय। जडा दळ वीच कियौ जुध जाय।—सू.प्र.
उ०—३ थावर जंगम सुखम थूळ, छीदा भी जडा।
—केसोदास गाडण
२ जड़, मूर्ख। उ०—१ न भजै रघुनंद दयासमंदं, जे मतमंद जांण जडा। गुण राघव गाणै 'किसन' कहाणै, विच प्रथमांणै भाग वडा।
—र.ज.प्र.
रू०भे०—जड्डौ।

जड्ड-संपु०—१ हाथी (जैन) २ देखो 'जड' (रू.भे.)

जड्डौ—देखो 'जाडौ' (रू भे.)

जण-संपु० [सं० जन] (स्त्री० जणी) १ लोक, लोग।
उ०—वलि रितराइ पसाइ वेसन्नर, जण भुरड़िती रहै जगि।
—वेलि.
२ प्रजा, रय्यत. ३ अनुयायी, दास. ४ भुंड, समूह।
उ०—राजा परजा गुणिय-जण, कविजण पंडित पात। सगळां मन ऊछब हुग्रउ, वूठै तौ वरसात।—ढो.मा.
५ व्यक्ति। उ०—१ सुहिणा तोहि मराविसूं, हियइ दिराऊँ छेक। जद सोऊ तद दोइ जण, जद जागूं तद हेक।—ढो.मा.
उ०—२ राज कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ। माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पंथ जिकोइ।—ढो.मा.
मुहा०—जण-जण, जणां-जणां—प्रत्येक व्यक्ति।
६ भक्त।
[सं० जन्म] ७ जन्म, उत्पत्ति. ८ संतान, औलाद।
मुहा०—जण खळणौ—संतान का मूर्ख रहना, संतान का पथभ्रष्ट होना।
[सं० जन] ९ सात लोकों में से एक लोक, जनलोक।
१० एक राक्षस का नाम।
रू०भे०—जन।
वि०—१ उत्पादक, उत्पन्न करने वाला. २ सज्जन।
उ०—पिण पंथ वीर जूजुग्रा पधारचा, पुरि भेळा मिळि कियौ प्रवेस। जण दूजण सहि लागा जोवण, नर नारी नागरिक नरेस।
—वेलि.
सर्व०—जिस। उ०—१ चमत्कार जण हुवौ सचेळी। भांण हुवौ जांणै जळ भेळी।—सू.प्र. उ०—२ जण तण ग्रागळ जोय, पड़ियां काज न पालटै। लागे सैणां लोय, मिसरी सरखौ मोतिया।
—रायसिंह सांदू
क्रिवि०—जब।
रू०भे०—जणौ, जन।

जणग्र-संपु० [सं० जनक] पिता (जैन)

जणइ-संस्त्री० [सं० जनिका] उत्पन्न करने वाली, जन्म देने वाली (जैन)

जणइउ-संपु० [सं० जणयितृ] जनक, पिता (जैन)

जणाईत्तर, जणइत्तु-वि० [सं० जनयितृ] उत्पन्न करने वाला, उत्पादक (जैन)

जणक-संपु०—जन्म (ह.नां.) २ देखो 'जनक' (रू.भे., जैन)

जणजण, जणज्जण-संपु०यौ०—प्रत्येक व्यक्ति।
उ०—१ विसतरी कत्थ जणजण वदन, ग्ररि मति घणां अभावियौ। एसा जवांन लीधां ग्रडर, खांन मुदप्फर ग्रावियौ।—रा.रू.
उ०—२ विथा भुव भार फणप्फण व्याळ। कणक्कण फौज जणज्जण काळ।—मे.म.

जणण-संपु० [सं० जनन] १ जन्म, उत्पत्ति (ह.नां.) २ वंश. ३ संतान।
रू०भे०—जनन।

जणणि, जणणी-विस्त्री० [सं० जननी] संतान उत्पन्न करने वाली, प्रसव करने वाली।
संस्त्री० [सं० जननी] माता। उ०—१ जणणि तिलक कीधउं वीर नूं नांम लीधउं।—विराट पर्व उ०—२ पातसाह ग्रकबर ग्रापरी जणणी नूं कांध दियौ।—बां दा. ख्यात
उ०—३ वहू कन्हां जणणी इक वार, ग्रारीसउ मांग्यउ तिणि वार।
—ढो.मा.
रू०भे० —जननी, जनूनी।

जणणौ, जणवौ-क्रिस०—१ संतान उत्पन्न करना, प्रसव करना, जन्म देना। उ०—१ जे विण पदम रांणियां जणियौ, भाई पिता तिके सव भणियौ।—सू.प्र. उ०—२ माई एहा पूत जण, जेहा रांण प्रताप। ग्रकवर सूतौ ग्रोधकै, जांण सिरांणै साप।
—प्रथ्वीराज राठौड़
२ जानना। उ०—जंप जीव नहिं ग्रावतौ जांणै, जोवण जावणहार जण। वहु विलखी वीछड़ती वाळा, वाळ संघाती वाळपण।—वेलि.

जणणहार, हारौ (हारी), जणणियौ— वि०।

जणवाड़णौ, जणवाड़बौ, जणवाणौ, जणवाबौ, जणवावणौ, जणवावबौ, जणाड़णौ, जणाड़बौ, जणाणौ, जणाबौ, जणावणौ, जणावबौ— प्रे०रू०।

जणिग्रोड़ौ, जणियोड़ौ, जण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जणीजणौ, जणीजबौ—कर्म वा०।

जणपय–सं०पु० [सं० जनपद] देस (जैन)

रू०भे०—जणवय।

जणय–सं०पु० [सं० जनक] पिता (जैन)

जणवइ–सं०पु० [सं० जनपति] प्रजा का मुखिया, राजा।

उ०—ग्राइसु विहुरह दीधउं राइ, दह दिसि जणवइ जोवा धाइ।
—पं.पं.च.

जणवय—देखो 'जणपय' (रू.भे., जैन)

वि० [सं० जानपद] देश में उत्पन्न, देश निवासी (जैन)

जणवयकल्लाणिग्रा–स०स्त्री० [सं० जनपदकल्याणिका] चक्रवर्ती की रानी।

जणवा–सं०स्त्री०—सीरवी नामक एक काश्तकार कौम का भेद या शाखा।

जणवौ–सं०पु०—१ जन्म देने का कार्य. २ जणवा जाति का व्यक्ति।

जणां–क्रि०वि०—जब। उ०—१ जणां खीमसी बीठू नूं बुलाय के कही जे कुंवर जाय समझाय जे थारै विवाह तौ वगा हो हुग्रा।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ दिल मति धारौ देर, पधारौ पांवणा। समझूं जणां सनेह, ग्रचांणक ग्रावणा।—सिववक्स पानावत

सं०पु०—जन, लोग।

जणाड़णौ, जणाड़बौ, जणाणौ, जणाबौ–क्रि०स०—१ जन्म दिलवाना, प्रसव कराना. २ बतलाना, प्रकट करना, जतलाना।

उ०—१ ग्रर कोई नैमित्तिक महा ग्रंधकार में निसीथ रै समय दक्षिण दिसा रै द्वार जाय जिकै बडा जतन रै साथ गढ मांहिला नूं जणाया।—वं.भा.

उ०—२ सु तरै देवीजी सूं इंछना करी, मो ग्रागै ग्रा फौज भाजै तौ हूं तुरंत देवीजी नै म्हारौ माथौ चाढूं। मन मांहै इंछना की। बात किणही नूं जणाई नहीं।—नैणसी

जणाणहार, हारौ (हारी), जणाणियौ— वि०।

जणायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जणाईजणौ, जणाईजबौ—कर्म वा०।

जणाड़णौ, जणाड़बौ, जणाणौ, जणाबौ—रू०भे०।

जणायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ प्रसव कराया हुग्रा. २ बतलाया हुग्रा, जताया हुग्रा (स्त्री० जणायोड़ी)

जणाव–सं०पु०—जानकारी, ज्ञान। उ०—पीछै इण बात रौ जणाव नसै गोसै नूं रावसिवजी नूं हुवौ।—द.दा.

जणावणौ, जणावबौ—देखो 'जणाणौ, जणाबौ' (रू.भे.)

उ०—माल उडावै ग्रावै मस्ती, तन पर लावै तमारषां। जद वेवां सूं हेत जणावै, सेजा रमै सिकारषां।—ऊ.का.

जणावियोड़ौ—देखो 'जणायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जणावियोड़ी)

जणि—१ देखो 'जणी' (रू.भे.) उ०—रति मदन वदन हुइ होण रस, रसि उज्जळि पावस धरणि। नव-नव विलास नरपत्ति रा, ज्यों हुलास हरि गोपि जणि।—रा.रू.

सं०स्त्री० [सं० जनि] २ माता। उ०—धणि सस जणि थण-धण वलय, हणै सुहड़ कर हांम। चौरंग में चंदहास रो, विरध होय बदनांम।—रेवतसिंह भाटी

जणिय–वि० [सं० जनित] उत्पन्न हुवा हुग्रा (जैन)

जणियांणी–स०स्त्री०—प्रजनन करने वाली, स्त्री, ग्रौरत।

जणिया–सं०स्त्री० [सं० यामिनी] रात्रि (ग्र.मा.)

जणियार–सं०पु०—१ जगत का पिता, राजा।

उ०—खळ खेंगरण वडा ब्रिद खाटण, वैरां सूं चाळवण विरोध। सोमि सनाह दुवाहा सांमंत, जगि जणियार कळोधर 'जोध'।
—राठौड़ सुजाणसिंह ग्रासकरणोत री गीत

वि० (स्त्री० जणियारी) उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला।

उ०—जुध जणियार ग्रभनमा 'जैता', सुकव करै वाखांण सह। तौ तो भुज भार चित्रगढ तेहा, कौ कव रथ चौ भार कह।
—चत्रभुज बारहठ

जणियारी–सं०स्त्री०—जन्मदातृ, माता। उ०—गोरी पणियारी तेजो तन गाजै। लारै धोरी रै जणियारी लाजै।—ऊ.का.

जणियोड़ौ–भू०का०कृ०—जन्म दिया हुग्रा, प्रसव किया हुग्रा। (स्त्री० जणियोड़ी)

जणियौ–सं०पु० [सं० जात] बेटा, पुत्र, लड़का। उ०—सुण मरियौ सुत एकलो, सासू प्रभणै धार। मो जणियौ कायर थियौ, बेटी वळण निवार।—वी.स.

जणी–सं०स्त्री० [सं० जनी] नारी, महिला (जैन)

सर्व०—१ जिस। उ०—इसड़ै टोटै हूं सखी, वारी बार ग्रनंत। पोत जणी में मोतियां, चूड़ो मैंगळ दंत।—वी.स.

२ उस। उ०—पाई फतै रोळै पाव ढूंढाड़ दराया पाछा, डांण ग्रायै वहाई न भूलो घाव डाव। ऊग्रांवरे 'पत्ता' मार भालां धरा ग्रापणाई, सुथाळा जणी नूं पाछी वढाई सुजाव।
—राजरांणा माधोसिंह झाला री गीत

क्रि०वि०—जब भी, जब।

रू०भे०—जणि।

जणीता, जणीती–सं०स्त्री०—जन्मदात्री, माता, जननी।

जणीतौ–सं०पु० (स्त्री० जणीता, जणीती) जन्म देने वाला, पिता।

जणुम्मि–सं०स्त्री० [सं० जनोर्मि] मनुष्यों की तरंग के समान पंक्ति। (जैन)

जणे—देखो 'जणै' (रू.भे.)

जणेता-सं०स्त्री०—जन्मदात्री, माता। उ०—देवी कोप रै रूप में काळ जेता, देवी क्रिया रै रूप माता जणेता।—देवि.

जणै-क्रि०वि०—जब। रू०भे०—जणे।

जणौ-सं०पु० [सं० जनक] १ पिता। उ०—पख दुहूं नूमळ सासरौ पीहर, जेठ 'अमर' 'सत्रसाल' जणौ। रांणी पांणी धरम राखियौ, ताणौ हिंदुसथांन तणौ।—जममांदे हाडी री गीत

२ देखो 'जण' (१,५) उ०—आवासि उतारि जोड़ि कर ऊभा, जण-जण आगै जणौ-जणौ। रांम किसन आया राजा रै, तौ कौ अचिरज मनुहार तणौ।—वेलि.

यौ०—जणोजण।

जण्ण-सं०पु० [सं० यज्ञ] १ यज्ञ (जैन) २ इष्टदेव की पूजा (जैन)

जण्णइ-वि० [सं० यज्ञिन्] यज्ञ करने वाला (जैन)

जण्णइज्ज-सं०पु० [सं० यज्ञीय] उत्तराध्ययन सूत्र के २५ वें अध्ययन का नाम (जैन)

वि०—यज्ञ सम्बन्धी (जैन)

जण्णजाइ-सं०पु० [सं० यज्ञयाजिन्] यज्ञ करने वाला (जैन)

जण्णदत्त-सं०पु० [सं० यज्ञदत्त] इस नाम का एक साधु (जैन)

जण्णवाड-सं०पु० [सं० यज्ञवाटः] यज्ञ करने का एक स्थान (जैन)

जण्णोवईय-सं०पु० [सं० यज्ञोपवीत] यज्ञोपवीत (जैन)

रू०भे०—जन्नोवाईय।

जण्हं-अव्य०—जहां, जिस लिये (जैन)

जण्हवी-सं०स्त्री० [सं० जाह्नवी] गंगा, भागीरथी (जैन)

जतंद्र, जतंद्रीयौ—सं०पु० यौ० [सं० जितेन्द्रिय] १ देखो 'जितेंद्रिय' (रू.भे.)।

उ०—१ क्रम ऊसस तांम जतंद्र कहै। वळ हाथ अमां तुझ हंस वहै।
—पा.प्र.

उ०—२ नागेस पनंगां सिरै जतंद्रीयौ वायनंद, चवां गोरखेस जोगारंभां सिरै चींत। उदघां खीरोद सिरै जुवां गुड़ाकेस ओपै, ओपै खाग त्याग सिरै उदां रौ आदीत।
—नींबाज ठाकुर सांवतसिंह रौ गीत

जत-सं०पु० [सं० यतित्व] १ जितेन्द्रिय होने का भाव।

उ०—सांगी सत हीणा है जत हीणा मत हीणा मांगंदा है।—ऊ.का.

२ शील धर्म, सतीत्व। उ०—नित नार निहार अपार निसा, जत खोवण जार हजार जिसा।—ऊ.का.

३ जन्म. ४ एक मुसलमान कौम।

जतधार-सं०पु०—हनुमान। उ०—जतधार जावौ करै कावौ खवर ल्यावौ खोद। धर धाख धावै जठै जावै हर अभावै हेरनै।—र.रू.

वि०—जितेन्द्रिय।

जतन-सं०पु० [सं० यत्न] १ साधन। उ०—चाकरी वाळा रै घोड़ौ चावै। कपड़ा चावै। हथियार चावै। चाकर चावै। खरची चावै। इतरौ थां नखे जतन नहिं।—पंचमार री वात

२ उपाय, तरकीब।

मुहा०—जतनां दही जमणौ—यत्न से ही दही जमता है। बुद्धिमानी से ही कार्य अच्छा होता है।

३ प्रयत्न, कोशिश। उ०—गावण म्हारा गीत परणी जतन करंती, ओढण मैलौ चीर गोद में वीण धरंती। ईखे मिंत पयोद आंखड़ी नीर भरंतां, भूली राग सुवाळ जतन सूं तार लुवंतां।—मेघ.

४ रक्षा, हिफाजत। उ०—१ क्रपण जतन धन रौ करै, कायर जीव जतन्न। सूर जतन उण रौ करै, जिण रौ खाधौ अन्न।
—वां.दा.

उ०—२ सू चंडौळी रा सिरदार जसवंतसिंहजी पछाड़ी हुरमखांनै रै जतन सारू हुता।—द.दा.

५ प्रबंध, व्यवस्था। उ०—अबार तौ इणां नै डेरा दिरावौ, खाणा-दांणा रा जतन करावौ।—रीसालू री वात

६ आदर-सत्कार। उ०—जठै जुमाई उजींण रौ परधांन है। जणी नै मास एक सूधी गांम मांहै राख्या भली भांत सौं जतन करे नै डायचौ दे अर सीख दीवी।—गांम रा धणी री वात

७ प्रमाण, पुष्टि। उ०—अनि सुकवि कोइक पूछै अभास, किण अरथ नांम सूरिज प्रकास। जिण जतन काजि साचौ जबाब, संजुगत अरथ दाखूं सताब।—सू.प्र.

क्रि०वि०—लिए।

रू०भे०—जतनि, जतनी, जतनेत, जतन्न।

जतनां-क्रि०वि०—लिये। उ०—ऐ कूंपा साथे अहंकारी, धणी तणा जतनां व्रतधारी।—रा.रू.

जतनि, जतनी—देखो 'जतन' (रू.भे.) उ०—जोध सहरी गढ जतनि सदृढ़ जादव पण सच्चै। सूर पणै समरत्थ रीत अनि पंथ न रच्चै।
—रा.रू.

वि०—यत्न करने वाला, चतुर, चालाक।

जतनेत, जतन्न—देखो 'जतन' (रू.भे.) उ०—१ अकबर रै बेटा तणी, हुरमां सहित जतन्न। भरम निवेड़े आपिया, तेड़े 'खींव करन्न'।
—रा.रू.

उ०—२ जस गाडां भरियौ जुड़ै, जग सो करौ जतन्न। औ आभरणां आभरण, रतनां सिरै 'रतन्न'।—वां.दा.

उ०—३ दिय सहंस तावीन, दीध महाराज पायदळ। उभै सहँस उमराव, बंधव जतनेत सहँसवळ।—सू.प्र.

जतराव-सं०पु०—जितेन्द्रिय व्यक्ति यथा—लक्ष्मण, हनुमान, पावू राठौड़ आदि। उ०—जतराव महा सिध पंथ जुओ। हाय आज भालाळ त्रिकाळ हुओ।—पा.प्र.

जतरै-क्रि०वि०—जब तक, जितने में। उ०—धूंम सुणै चख आग धकतरै। जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै।—र.ज.प्र.

रू०भे०—जतलौ।

जतरौ- (बहु० जतरा) देखो 'जितरौ' (रू.भे.)

उ०—जतरौ मुख आखी जवन, वात बणाय-बणाय। सह झूठा मीठा वयण, दीठा न आया दाय।—रा.रू.

(स्त्री० जतरी)

जतळाणो, जतळावौ—देखो 'जताणौ' (रू.भे.)

उ०—१ बिहंगी हिरणी-सी फिरणी बिजकाती। मुखड़ो मुसकाती जोरो जतळाती।—ऊ.का. उ०—२ भंवर-नाभि निरखाय वहंती मन भरमावै। प्रगट अंगां प्रीत भांम कद कह जतळावै।—मेघ.

जतळायोड़ो—देखो 'जतायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जतळायोड़ी)

जतळावणो, जतळावबौ—देखो 'जताणौ' (रू.भे.)

जतलो (बहु० जतला) देखो 'जितरौ' (रू.भे.) (स्त्री० जतली)

जताणो, जतावौ—क्रि०स०—१ जताना, ज्ञात कराना, बतलाना।

उ०—१ मुर्गे जाय हरि मेले मोनूं, जड तोनूं आगूंच जताऊं। सीस नमाय सिया ले साथै, यचमो जदां उपाव बताऊं।—र.रू.

उ०—२ सो पती रा सूरवीरपणा री आंनै जतायौ के भागलां री घर नहीं सूरवीरां री छै सो अठा जाय नहीं सकसी नीकळणी मुसकल होवसी।—वी.स.टी.

२ आगाह करना।

रू०भे०—जतळाणो, जतळावौ, जतावणो, जताववौ।

जतायोड़ो—भू०का०कृ०—१ जताया हुआ, बतलाया हुआ. २ आगाह किया हुआ (स्त्री० जतायोड़ी)

रू०भे०—जतावियोडो।

जतालो—वि० [सं० यतवान] १ साहसी. २ ब्रह्मचारी।

जताव—सं०पु०—१ असर, प्रभाव. २ प्रकट होने का भाव।

उ०—तरै देवराज कह्यो 'भली वात' पिण आदमी पाछा मेलिया, कहाड़ियो-'म्हांरै मांथै वैर छै, हूं फलांणा दिन रै साहा ऊपर आईस, घणो जताव राज किणही नूं मत करो'।—नैणसी

रू०भे०—जतावो।

जतावणो, जतावबौ—देखो 'जताणौ' (रू.भे.) उ०—पती मरण री सोक नहीं करणी सती होवणी जतावै है।—वी.स.टी.

जतावियोड़ो—देखो 'जतायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जतावियोड़ी)

जतावो—देखो 'जताव' (रू.भे.)

जतिंद्र—देखो 'जितेंद्रिय' (रू.भे.) उ०—विधना अंक मेटण को वरणै, पह वळ जतिंद्र जको परणै।—पा.प्र.

जति—देखो 'जती' (रू.भे.) उ०—लांगो हणमंत पराक्रम लेखि, दियै नह हार जति वप देखि।—सू.प्र.

जतिईस—सं०पु० [सं० यतीश] १ यती. २ हनुमान।

जति चांद्रायण—सं०पु०—एक प्रकार का व्रत जिसका विधान यतियों के लिये है।

जती—सं०पु० [सं० यति] १ जितेन्द्रिय व्यक्ति। उ०—१ साध सरावै सो सती, जती जोखता जांण। रज्जब सांचे सूर को, वैरी करै वखांण।—रज्जबदास

उ०—२ हलै हेक राई न को सम्म होतां, जती जीव चालै न ज्यूं वांम जोतां।—सू.प्र.

२ श्वेताम्बर जैन साधु। उ०—आ परत जिणमें बात कुसळचंद जती री बणायोड़ी छै।—ढो.मा.

३ योगी. ४ हनुमान (नां.मा.) उ०—जटी आक ओकबो सिधेस को भोखबो जंगां। जती को मोखबो नगां लंका सीस भाल।—हुकमीचंद खिड़ियो

५ लक्ष्मण (नां.मा.) उ०—एही रांम दाखे जती वैण एहा, दनां तांम पाई महादिव्य देहा। सू.प्र.

६ संन्यासी. ७ ऋषि. ८ ब्रह्मा का एक पुत्र. ९ नहुष का एक पुत्र. १० ब्रह्मचारी. ११ छप्पय का एक भेद जिसमें ५ गुरु और १४२ लघु मात्रायें होती हैं।

[सं० यती] १२ छंदों में लय ठीक रखने के लिये थोड़ा विश्राम. १३ रोक, रुकावट. १४ मनोविकार।

अव्य० [सं० यदि] यदि, अगर (जैन)

रू०भे०—जति।

जतीवाह—सं०पु०—गरुड (नां डि.को.)

जतीव्रती—वि० [सं० यतव्रती] ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करन वाला, जितेन्द्रिय। उ०—जटाधारी जोगधारी अभूत अनाद जोगी, पांणो नमो सींगी नाद पूरता प्रकास। जतीव्रती सिधनाथ आदेस करंता जठै, सिधेस रमंता जठै सहसा सुहास।—महाराजा मांनसिंह

जतु—सं०पु०—१ वृक्ष का गोंद. २ शिलाजीत. ३ लाख, लाक्षा।

जतेंद्र—देखो 'जितेंद्रिय' (रू.भे.) उ०—कहीस ओपमा अनोप धीजिती कविंद्र की। महा सु सूरवीर की जनेत है जतेंद्र की।—पा.प्र.

जतेक—वि०—जितने।

जतै, जतै—क्रि०वि०—जब तक। उ०—भालां तणो पांणगो भारी, 'कुंभ' कळोधर जतै कियो। तण अपहार वेवलां तोड़े, गोरी सेन अचेत गियो।—उडणा प्रथ्वीराज रो गीत

जत्त—सं०पु० [सं० यत्त] देखो 'जत' (रू.भे.)। उ०—सीता छांडै सत्त, जत्त लिछमण सूं जावै। महाजोध हणमंत कळा वळहीण कहावै।—चौथो वीठू

जत्ता—सं०स्त्री० [सं० यात्रा] प्रयाण, यात्रा (जैन)

जत्ताभयअ, जत्ताभयग—सं०पु० [सं० यात्राभतक] यात्रा में साथ रहने वाले नौकर (जैन)

जत्तासिद्ध—सं०पु० [सं० यात्रासिद्ध] बारह बार समुद्र की यात्रा कर के सकुशल लौट आने वाला व्यक्ति (जैन)

जत्तिय—वि० [सं० यावत्] जितना (जैन)

जत्ती—देखो 'जती' (रू.भे.) उ०—ईस अणवर ब्रह्म अत्ती, जांन साथै कोड़ जत्ती।—पी.ग्र.

जत्ती—अव्य० [सं० यतस्] जहां (जैन)

जत्ते—क्रि०वि०—जब तक।

जत्य, जत्यो—सं०पु० [सं० यूथ] झुंड, समूह, गिरोह। उ०—मिळ वीर मेळा प्रेत वेळा खेत खेळा नच्चए। जिदराव सत्थं 'पाल' मत्थं संचए।—पा.प्र.

मुहा०—१ जत्थै जुतणौ—पक्ष करना, तरफ होना. २ जत्थै बोलणौ—देखो 'जत्थै जुतणौ'।

क्रि०वि० [सं० यत्र] जहां (जैन) उ०—धम्म सुधम्म पहांण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ, धम्म सुधम्म पहांण जत्थ नहु कूड़ भणिज्जइ।
—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—जथौ।

जत्र–क्रि०वि० [सं० यत्र] जहां, जहां पर।

उ०—१ जिण सुतण 'ग्रनेरण' हुवौ जत्र। तिण सुतण 'व्रदनर' 'विरुप' तत्र।—सू.प्र.

उ०—२ कणियर तरु करणि सेवंती कूजा, जाली सोवन गुलाल जत्र। किरि परिवार सकळ पहिरायौ, वरणि वरणि ईए वसत्र।—वेलि.

यौ०—जत्र-तत्र।

सं०पु०—नाश, संहार। उ०—जिकै छत्र गजगत्त जत्र त्यां हुये ग्रलग्गा। जिकै काळ लंकाळ लुळै लुळ पाये लग्गा।—नैणसी

यौ०—जत्रकत्र।

जत्रकत्र–सं०पु०—नाश, संहार। उ०—ग्रातपत्र खोस ग्रारूढ़ कीधौ उठै, जत्रकत्र कियौ खळ जगत जांणी। तैं जणणी उवारचौ पड़चौ कस्ट तत्र-तत्र, रह पखू 'जैत' रै राजरांणी।—वालावख्स वारहठ

जत्रांकत्रां—देखो 'जत्र-कत्र' (रू.भे.)

उ०—कोस दोय दंताळा दकूळ भूळ जत्रांकत्रां। पत्रां तूळ कीधौ वत्रां वधूळ पटैल।—हुकमीचंद खिड़ियौ

जथा–ग्रव्य० [सं० यथा] जिस प्रकार, जैसे, ज्यों।

सं०स्त्री०—१ डिंगल-गीतों में प्रयुक्त होने वाला ग्रलंकार विशेष, एक प्रकार का शब्दालंकार. २ डिंगल-गीत रचना के नियम विशेष। ये कुल २५ हैं—ग्रंत, ग्रजोगजोग, ग्रनूप, ग्रहिगत, ग्राद, इधक, एकरंगीभ्रांति, ग्यांन, जोगग्रजोग, निस्चयांतभ्रांति, न्यून, परस्पर-माळागुण, मुगट, मुगताग्रह, मुगतग्रहवंध, वरण, वितीरेक, विधानीक, संकळ, सम, सर, सरळगत, सिर, सीलसम, सुद्ध।

३ मंडली, समूह. ४ पूंजी, संपत्ति. ५ सत्य, सच्चाई (ग्र.मा.)

कहा०—१ जथा नांम तथा गुण–जैसा नाम वैसा ही गुण, नाम के समान ही गुण होना। २ जथा राजा तथा प्रजा–जैसा स्वामी वैसा सेवक।

जथाक्रम–क्रि०वि०यौ०— [सं० यथाक्रम] क्रमशः, तरतीववार (ग्र.मा.)

जथाजथ–ग्रव्य० [सं० यथातथ्य] ज्यों का त्यों, यथातथ्य (ह.नां.)

जथाजात–वि० [सं० यथाजात] १ मंद बुद्धि, मूर्ख (ग्र.मा., ह.नां.) २ सुस्त, काहिल।

जथाजोग, जथाजोग्य–ग्रव्य० [सं० यथायोग्य] यथोचित, यथायोग्य, उपयुक्त। उ०—दई न रचतौ विध दुनी, सच 'प्रताप' सांमंत। जथाजोग जच जीह कौ, कवि की कवत कहंत।—जैतदांन वारहठ

जथातथ, जथातथि–ग्रव्य० [सं० यथातथ्य] ज्यों का त्यों, जैसा हो वैसा ही।

वि०यौ० [सं० यथातथ्य] सत्य। उ०—इण रीति मीसण विजय सूर री वचन सुणि वाटी री ग्रनुचर पाछौ जाइ जथातथ वात कही।
—वं.भा.

जथानियम–ग्रव्य०—यथानियम, नियमानुसार।

सं०पु०—डिंगल गीतों की जथाग्रों से संबंधित नियम।

जथान्याय–ग्रव्य०—न्याय के ग्रनुसार, यथान्याय।

जथारत, जथारथ–ग्रव्य०यौ०—यथातथ्य, ज्यों का त्यों।

वि०—यथार्थ, ठीक, उचित।

जथारथता–सं०स्त्री०यौ० [सं० यथार्थता] यथार्थता, सच्चाई, सत्यता।

जथारुचि, जथारुची–ग्रव्य०यौ० [सं० यथारुचि] रुचि के ग्रनुसार, यथारुचि, इच्छानुसार।

जथालाभ–वि०यौ० [सं० यथालाभ] जो कुछ मिले उसी पर निर्भर।

जथाविधि–ग्रव्य० [सं० यथाविधि] विधि के ग्रनुसार, विधिपूर्वक।

उ०—पधरावि त्रिया वांमै प्रभणावै, वाच परसपर जथाविधि। लाधी वेळा मांगी लाधी, निगम पाठ के नवे निधि।—वेलि.

जथासंभव–ग्रव्य०यौ०—[सं० यथासंभव] जहाँ तक हो सके, यथासंभव।

जथासकती, जथासक्ति, जथासगती–ग्रव्य०यौ० [सं० यथाशक्ति] जितना हो सके, सामर्थ्य के ग्रनुसार, भरसक।

जथासमै–ग्रव्य०यौ० [सं० यथा समय] ठीक समय पर, यथा समय।

जथास्थान–ग्रव्य०यौ० [सं० यथासमय] ठीक स्थान पर, यथास्थान।

जथौ—देखो 'जत्थौ' (रू.भे.) उ०—ग्रोड वोलाया। सहर-सहर रा ग्रोड ग्रावै छै। गुजरात रा ग्रोड ग्राया। पाल्हौ ग्रोड गुजरात री दौ सौ ग्रादमियां रै जथै सूं ग्रायौ।—जसमा ग्रोडणी री वात

जद–क्रि०वि० [सं० यदा]१ जव। उ०—जद जागूं तद एकली, जद सोऊं तद वेल। सोहणा थे मने छेतरी, वीजी तीजी हेल।—ढो.मा.

मुहा०—१ जदकद—जव कभी. २ जद तद—देखो 'जद कद'. ३ जद तद—हर समय।

रू०भे०—जदा, जदे, जदेक, जदै, जद्दं, जद्द, जद्दै।

२ देखो 'जादव' (रू.भे.) उ०—ग्रवत्तरि दसवारं भार भूंमि उतारं। कुळ जद सिणगारं देव ग्राणंदकारं।—पिं.प्र.

जदपत–सं०पु०यौ० [सं० यादवपति] श्रीकृष्ण (पिं.प्र.)

जदपि, जदपी–क्रि०वि० [सं० यद्यपि] यद्यपि, ग्रगरचे।

उ०—सुं ग्रांख्यां नैं देखिवा की त्रिपति होय नहीं। जदपि मन नै त्रिपति हुई छै।—वेलि.

जदरथ—देखो 'जयद्रथ' (रू.भे.)। उ०—जदरथ सलव वुलवुल जिसा दईत किता ही दोटिया।—पी.ग्र.

जदरांण–सं०पु०यौ० [सं० यदुराज] श्रीकृष्ण।

जदवंस—देखो 'जदुवंस' (रू.भे.) उ०—जदवंस उजाळ भुजाळ महा गुण जांण। तप तेज दिनंकर जेम तपै तुडि तांण।—ल.पिं.

जदा—देखो 'जद' (रू.भे.)

जदि, जदी–क्रि०वि० [सं० यदि] जब। उ०—१ जळ क्रीड़ा नृप पदम रमै जदि। तन पदमणि उदती देखे तदि।—सू.प्र.
उ०—२ जदी भोम्यं पूछी, कहै थांरी जात कांई अर कठै रहो। जदी यो बोल्यो कहै, फलांणी जायगा रहूं अर फलांणी म्हारी जात।—पंचमार री वात

जदीक–क्रि०वि०—जब भी, जब।

जदु–सं०पु० [सं० यदु] १ देवयानि के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का सब से बड़ा पुत्र। श्रीकृष्ण इन्हीं के वंश में हुए थे. २ यदुवंश. ३ श्रीकृष्ण।
रू०भे०—जदू।

जदुकुळ–सं०पु० [सं० यदुकुल] यदुवंशी महाराज यदु से उत्पन्न संतान।

जदुणंदण, जदुनंदण–सं०पु० [सं० यदुनंदन] श्रीकृष्ण (जैन)

जदुनाथ–सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

जदुपत, जदुपति–सं०पु०यौ० [सं० यदुपति] श्रीकृष्ण।
उ०—१ वसु साधार आधार खट ही वरन, जीव जण वारवै कूट जातां। आथ भरतार अणपार जदुपत उमंग, वार तण ही करी परार वातां।—रावळ अमरसिंह रो गीत
उ०—२ विधिजा सारद वीनवूं, सादर करो पसाव। पावाड़ो पनगां सिरे, जदुपति कीनो जाय।—ना.द.

जदुपाळ–सं०पु० [सं० यदुपाल] श्रीकृष्ण।

जदुपुर–सं०पु० [सं० यदुपुर] यदुराजा का नगर, मथुरा।

जदुवंसी—देखो 'जदुवंसी' (रू.भे.)

जदुरांम–सं०पु०यौ० [सं० यदु+राम] यदुवंश के राम, बलराम।

जदुराई, जदुराज, जदुराय–सं०पु० [सं० यदुराज] श्रीकृष्ण।

जदुवंस–सं०पु०—राजा यदु का वंश।
उ०—उण वार रांम जदुवंस इंद। सरदंत जांण राका समंद।
—रा.रू.
रू०भे०—जदवंस, जदूवंस।

जदुवंसी–सं०पु० [सं० यदुवंशी] १ यदुवंश में उत्पन्न व्यक्ति. २ श्रीकृष्ण (ह.नां)
रू०भे०—जदुवंसी, जदूवंसि, जदूवंसी।

जदुवर–सं०पु०यौ० [सं० यदुवर] श्रीकृष्ण।

जदुवीर–सं०पु० [सं० यदुवीर] श्रीकृष्ण।
रू०भे०—जदूवीर।

जदू—देखो 'जदु' (रू.भे.)

जदूणी–क्रि०वि०—जब से। उ०—जळी जदूणी केतकी, जळया न उणहि संग। प्रीत विगोवै भंवरा, भसमि चढ़ावै अंग।—र.रा.

जदूवस—देखो 'जदुवंस' (रू.भे.)

जदूवंसि, जदूवंसी—देखो 'जदुवंसी' (रू.भे.) उ०—सिरै भांति सारी कळा अधिकारी करमी कहावै। जदूवंसि जांमो सिधावंत सांमो नवै खंडि नांमो अनंमी नमावै।—ल.पि.

जदूवीर—देखो 'जदुवीर' (रू.भे.)

जदे, जदेक, जदै, जद्दं—देखो 'जद' (रू.भे.) उ०—१ सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै। जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै।—रा.रू.
उ०—२ जिकै वार बोले वडा पात जद्दं। वडा वंस वाखांण हद्दं विहद्दं।—सू.प्र.

जद्द–वि० [फा० ज्यादा] १ अधिक, ज्यादा. [सं० योद्धा] २ प्रचंड, बलवान।
क्रि०वि०—देखो 'जदपि' (रू.भे.)

जद्दपि—देखो 'जद्यपि' (रू.भे.)

जद्दव—देखो 'जादव' रू.भे.) उ०—पंडव पत्थ सहाय, क्रिस्न आयो जिमि जद्दव। क्रिसि सूके तें मेघ, मनहु धायो धुर भद्दव।—ला.रा.

जद्दांणी–वि०—यादव वंश का, यादव वंश संबंधी।
सं०पु०—यादव वंश का पुरुष।
रू०भे०—जद्दोणी।

जद्दापि, जद्दिप—देखो 'जद्यपि' (रू.भे.)

जद्दुरांण–सं०पु०यौ० [सं यदुराज] यादवराज, श्रीकृष्ण।

जद्दै—देखो 'जद' (रू.भे.) उ०—मदोमत्त हाथी हुवै हीण मद्दै, जिसो रैणका पुत्र दीसंत जद्दै।—सू.प्र.

जद्दोणी—देखो 'जद्दांणी' (रू.भे.) उ०—जल्लह सुता जद्दोणी, रूमा आंणी जिण रांणी।—वं.भा.

जद्यपि–क्रि०वि० [सं० यद्यपि] यद्यपि, अगरचे। उ०—अति प्रेरित रूप आंखियां अत्रिपत, माहव जद्यपि त्रिपत मन। वार वार तिम करै विलोकन, धण मुख जेही रंक धन।—वेलि.
रू०भे०—जद्दपि, जद्दापि, जद्दिप।

जधा—देखो 'जहा' (रू.भे.) (जैन)

जनकेस–सं०पु०—राजा जनक। उ०—दसा एम राजा जनकेस देखै। प्रतंग्या धरी आप सो वात पेखै।—सू.प्र.

जनंगम–सं०पु० [सं०] भंगी, चांडाल।

जन—देखो 'जण' (रू.भे.)। उ०—असमझ समझ अखीजं तो पण, हरिनांम ग्रवत जन तारत। जिम परसत अजांण दगधत, तन समथ्य दावानळ।—र.ज.प्र.

जनअ–सं०पु० [सं० जनक] पिता (जैन)
रू०भे०—जनय।

जनक–सं०पु० [सं०] १ जन्मदाता, पिता। उ०—हर रिख दस सिर विजय हित, धर निज कर सर धनक। पढ़त 'किसन' कवि सरण पय, नय रघुवर जग जनक।—र.ज.प्र.
२ उत्पादक. ३ अपने अध्यात्म तथा तत्वज्ञान के लिए प्रसिद्ध एक विख्यात पौराणिक राजा, जो राजा निमि के पुत्र थे। इन्होंने ही मिथिलापुरी बसाई। इनके कारण ही बाद के राजवंश की उपाधि जनक हो गई। इनकी सत्ताइसवीं पीढ़ी में सीरध्वज जनक उत्पन्न हुए जिनकी कन्या सीता थी जो श्री रामचन्द्र को ब्याही गई थी।
रू०भे०—जनंकेस, जनवक, जन्नक।

जनकता-सं०स्त्री०—उत्पन्न करने का भाव या शक्ति।
जनकनंदिणी-सं०स्त्री० [सं० जनकनंदिनी] सीता।
जनकपुर-सं०पु० [सं०] मिथिला प्रदेश की एक प्राचीन राजधानी।
जनकमहेस-सं०पु०यौ० [सं० जनक+महेश] ब्रह्मा (ह.नां.)
जनक-राय-सं०पु० [सं० जनकराज] राजा जनक। उ०—जनकराय घर सीता जनमी दिन दिन रूप सवाय।—रुकमणी मंगळ
जनकांणी-सं०स्त्री०—सीता, जानकी।
वि०—१ जनक के वंश का. २ जनक संबंधी।
जनक्क—देखो 'जनक' (रू.भे.)
जनखो-सं०पु० [फा० जनकः] वह हिजड़ा (नपुंसक) जो मुसलमान धर्म को मानने वाला हो।
वि०वि०—देखो 'हिजड़ो'।
जनघर-सं०पु० [सं० जनगृह] १ मंडप. २ विश्रामस्थल।
जनचक्षु, जनचख-सं०पु०यौ० [सं० जनचक्षु] १ सूर्य. २ मनु।
जनचरचा-सं०पु०यौ० [सं० जनचर्चा] लोकवाद, लोकचर्चा।
जनता-सं०स्त्री० [सं०] १ जनन का भाव. २ जन-समूह. ३ प्रजा।
जनन—देखो 'जणण' (रू.भे.)। उ०—नाहर रै सप्तम तनय, निडर थयो निरवांण। निरवांण ही जिण रो जनन, बाजै विदित बखांण। —वं.भा.
जननी—देखो 'जणणी' (ह.नां.) उ०—धवळ न अटकै धुर वहै, कासूं पांणी कीच। इणरी जननी तारही, वैतरणी रै बीच।—बां.दा.
जननेंद्रिय-सं०पु०—प्राणियों को उत्पन्न करने की इन्द्रिय, योनि।
जनपद-सं०पु०—१ देश. २ जनता, प्रजा।
जनपदनी-सं०पु०—देश (अ.मा.)
जनपाळ-सं०पु० [सं० जनपाल] मनुष्यों का पोषण करने वाला, राजा।
जनमंतर, जनमंतरि-सं०पु० [सं० जन्मान्तर] दूसरा जन्म।
उ०—१ बाधा जीव सूं बंधणी जनमंतर खोया। —केसोदास गाडण
उ०—२ ले जनमंतर कळह लग, वस भावी वळ वेड। कहै सुणावो सह कथा, म्हांनै धुरसूं मांड।—पा.प्र.
उ०—३ पदमनाभ पंडित भणइ, जनमंतरि जे रीति। जाति हुई जूजूई, पूठि न छांडइ प्रीति।—कां.दे.प्र.
जनमंद, जनमंध-सं०पु० [सं० जन्मांध] जो जनम से अंधा हो, जन्मांध।
उ०—हेक चारण जनमंद हो वसुधा विकांणी, निरधन जांचण नीकळ्यो रजपूतां ढांणी।—पा.प्र.
रू०भे०—जनमांध, जन्मांध।
जनम-सं०पु० [सं० जन्म] १ उत्पत्ति, पैदाइश। उ०—१ जिण दीध जनम जगि मुखि दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणी तिणि तणी कीरतन, स्रम कीधा विणु केम सरै।—वेलि.
उ०—२ पेख अजै रिणछोड पद, लियो जनम क्रम लाभ। छवि निरखे रिणछोड री, अरक कोड़ सम आभ।—रा.रू.
पर्या०—अवतार, उतपत, उतपति, उतपन, उदभव, उपजण, उपत, जगस्त्रजत, जण, जणक, जणण, जणी, जनुख, जिणि, पैदा, प्रजणण, प्रभव, भव, संभव, संस्रत।
क्रि०प्र०—दैणो, लैणो, होणो।
मुहा०—जनम लेणो—उत्पन्न होना, पैदा होना।
कहा०—१ जनम रा मंगता नांव दातारांम—गुण के अनुसार नाम न होने पर. २ जनम रा साथी है करम रा साथी कोयनी—मां-बाप जन्म के साथी हैं पर भाग्य के साथी नहीं, भाग्य का फल तो स्वयं को ही भोगना पड़ता है. ३ जनम रो दुखियारो नांम सदासुख—गुण के अनुसार नाम न होने पर।
यौ०—जनमआठम, जनमकुंडळी, जनमगांठ, जनमघूंटी, जनमतंत्र, जनमदिन, जनमधरती, जनमपत्री, जनमभूमि, जनमभोम, जनममरण, जनमरोगी, जनमसंघाती, जनमांध, जनमाठम, जनमास्ठमी।
विलो०—मरण।
२ अस्तित्व प्राप्त करने का भाव, आविर्भाव. ३ जिन्दगी, जीवन।
उ०—इण अवसर मत आळसै, ईसर आखै एम। प्रांणी हररस प्रांमियां, जनम सफळ थयै जेम।—ह.र.
मुहा०—१ जनम-जनम—सदा, नित्य. २ जनम विगड़णो—वेधर्म होना, धर्म नष्ट होना।
४ जन्म कुंडली का वह लग्न जिसमें कुंडली वाले का जन्म हुआ हो। (फलित ज्योतिष)
रू०भे०—जंम, जंमण, जनम्म, जन्म, जम्म, जलम।
जनमआठम-सं०स्त्री०यौ० [सं० जनमाष्ठमी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्ठमी, इस रात्रि को श्रीकृष्ण का जन्म होना माना जाता है।
रू०भे०—जनमाठम, जन्मअस्टमी, जन्मास्ठमी।
जनमगांठ-सं०स्त्री०यौ० [सं० जन्म+ग्रंथि] जन्मदिन। उ०—जनमगांठ जिण दीह गीत छत्रपतियां जोड़ै। आध घड़ी भर अन्न रोज ऊपड़ै रसोड़ै।—अरजुनजी बारहठ
पर्या०—बरसगांठ।
जनमघूटी-सं०स्त्री०यौ० [सं० जन्मघुटिका] बच्चों के जनमते समय दो-तीन वर्ष तक दी जाने वाली घूंटी जिसमें निम्न लिखित पदार्थ होते हैं—सनाय, कालानमक, दानामेथी, वायविड़ंग, हर्रे की छाल, बहेड़ा की छाल, अजवाइन, जोहर्रे, अमलतास का गिर, बाय फूंबा, गुलाब की पंखुड़ियां, गुड़ आदि।
जनमणो, जनमबो-क्रि०अ०—जन्म लेना, उत्पन्न होना। उ०—वनि नयरि घराघरि तरि तरि सरवरि, पुरुख नारि नासिका पथि। वसंत जनमियो दैण वधाई, रमै वास चढ़ि पवन रथि।—वेलि.
रू०भे०—जनम्मणो, जनम्मबो, जन्मणो, जन्मबो।
जनमतंत्र-सं०पु०यौ० [सं० जन्मतंत्र] जन्मपत्री। उ०—दासी ने दोय जात्र दिया, सघरी मन धारै। जनमतंत्र सुण जाव रही, आगम परवारै।—अरजुणजी बारहठ

जनमदिन—सं०पु० [सं० जन्मदिन] किसी वर्ष में आने वाली वह तिथि जिस दिन जन्म हुआ हो, जन्मतिथि ।
जनमधरती—सं०स्त्री० [सं० जन्म+धरित्री] जन्मभूमि, मातृ-भूमि ।
जनमपत्र, जनमपत्री, जनमपुत्र—देखो 'जन्मपत्री' (रू.भे.)
उ०—माह ज मोहरत मोंधियो, मुगत हरख मनाह । जनमपुत्र में जोतगियां, दीनो नांम 'पनाह' ।—पना वीरमदे री वात
जनमभोम—देखो 'जन्मभूमि' (रू.भे.) उ०—ढूंग उघाड़ै ढगळ मूंछ मुख घूरट मुंडावै । जनमभोम में जाय भीख ले जनम मंडावै ।
—ऊ.का.
जनममरणमेटण—सं०पु०यौ०—ईश्वर, परमात्मा ।
जनमसंघाती—सं०पु०यौ० [सं० जन्मसंघाती] जन्म से या जन्म भर साथ-साथ रहने वाला ।
जनमांत—सं०पु० [सं० जन्मांत] १ जीवन, जिन्दगी. २ जन्मजन्मान्तर, दूसरा जन्म । उ०—अब गरब कियो अमलांन में, तन देखेला तोमना । जनमांत फेर जासी नहीं, बुरा करम री वासना ।—ऊ.का.
रू०भे०—जन्मांत ।
जनमांतर—देखो 'जनमंतर' (रू.भे.)
जनमांध—देखो 'जनमंद' (रू.भे.)
जनमाठम—देखो 'जनमआठम' (रू.भे.) उ०—निस दिन जनमाठम आठम गम नांही, माधव जनम्यो कै मरयो जग मांही ।—ऊ.का.
जनमाणो, जनमावो—क्रि०स०—प्रसव कराना ।
रू०भे०—जन्माणो, जन्मावो ।
जनमायोड़ो—भू०का०कृ०—प्रसव कराया हुआ (स्त्री० जनमायोड़ी)
जनमियोड़ो—भू०का०कृ०—जन्मा हुआ (स्त्री० जनमियोड़ी)
जनमेज, जनमेजय, जनमेजे—सं०पु० [सं० जन्मेजय] १ एक महान पौराणिक राजा जो अर्जुन के प्रपौत्र एवं परीक्षित के पुत्र थे, इनके पिता तक्षक नामक सर्प से मारे गये अतएव सर्पों का नाश करने के लिये इन्होंने एक महान सर्प यज्ञ किया जिसमें समस्त सर्प और नाग मंत्राहूत होकर यज्ञाग्नि में भस्म हो गये । उ०—१ वदि सूंडि घणा रत होद विचि, उडि पड़ै पड़ि ऊछळै । जनमेज जाग जांणे भुजंग, अगनि कुंड मझि आकुळै ।—सू.प्र.
उ०—२ उड़ पड़ै पोगरा वरति आंण, जनमेज जाग रा नाग जांण ।
—वि.सं.
उ०—३ वैसंपा एम ओचरे, जनमेजे स्रवणे धरे । विस्तरे वांणीइ, गुण पांडव तणा रे ।—नलाख्यांन
२ नीप के वंशज एक कुलघातक राजा. ३ राजा कुरु और वाहिनी के पुत्र एक चंद्रवंशी राजा. ४ राजा कुरु के पुत्र, इनकी माता कौशल्या तथा स्त्री अनंता थी । इनके पुत्र का नाम 'प्राचीन्वस' था । ५ अविक्षित् के वंशज एक चंद्रवंशी राजा. ६ एक नाग विशेष. ७ विष्णु ।
जनमोजनम—अव्य०—जन्म-जन्म तक, जन्मजन्मान्तर ।
जनम्म—देखो 'जनम' (रू.भे.) । उ०—ताहरी इच्छा दीध तें, जइयां आदि जनम्म । तइयां हूंतां अम्ह तणा, केसव किसा करम्म ।—ह.र.
जनम्मणो, जनम्मवो—देखो 'जनमणो' (रू.भे.)
उ०—मही बीता दस मास, जांम नृप कूंवर जनंम्मे । वधाउवां जिण वार, 'अजं' बहु दरब उनंमे ।—सू.प्र.
जनयंती, जनयंत्री—सं०स्त्री० [सं० जनयित्री] माता, जननी (ह.ना.)
जनय—देखो 'जनअ' (रू.भे.) (जैन)
जनयता—सं०पु० [सं० जनयिता] पिता (ह.नां.)
रू०भे०—जनयिता ।
जनया—सं०स्त्री० [सं० जन्या] रात्रि (ह.नां.)
जनयिता—देखो 'जनयता' (रू.भे.)
जनरल—सं०पु० [अं०] फौज का बड़ा अफसर । उ०—फिरंग जनां री फौज में, पातल प्रथी प्रसिद्ध । करनल व्हैणो है कठण, हुवणो जनरल हद्द ।—जुगतीदांन देथो
रू०भे०—जनराल, जनरेल ।
वि०—साधारण ।
जनरव—सं०पु० [सं०] १ जनश्रुति. २ लोकनिंदा. ३ घोर, कोलाहल ।
जनराल, जनरेल—देखो 'जनरल' (रू.भे.) । उ०—अलीमन सूर रौ वंस कीधो असत, रेस टीपू विजे अंवट रुड़िया । लाट जनराल जरनेल करनैल लख, जाट रै किलै जमजाळ जुड़िया ।—बां.दा.
जनलोक—सं०पु०—सात लोकों में से पाँचवाँ लोक ।
जनवअ—सं०पु० [सं० जनपद] देश, राष्ट्र (जैन)
जनवरी—सं०स्त्री० [अं०] अंग्रेजी साल का प्रथम मास ।
जनवास—सं०पु० [सं०] १ सर्वसाधारण के रहने या टिकने का स्थान. २ सभा. ३ देखो 'जानीवासो' (रू.भे.) उ०—करचाव हुता जनवास ऋमै । मझरात लगो झड़ आसव मैं ।—पा.प्र.
जनवासी—सं०पु० [सं०] १ अन्तःपुर के रहने वाले. २ नगर निवासी । उ०—आछा-आछा जनवासी व्हैगा वनवासी । उठगा उगलांणा पाछा कद आसी ।—ऊ.का.
जनवासो—देखो 'जांनीवासो' (रू.भे.)
जनसंख्या—सं०स्त्री० [सं०] किसी स्थान के निवासियों की संख्या ।
जनस—सं०पु० [अ० जिन्स] देखो 'जिनस' (रू.भे.)
उ०—१ जोइयां पास हुतो दस जनसां, उण दन दाखै सकोयर । हेकण घाव अंजसियो हसियो, कमधज वटका वीस कर ।
—गोगादे राठौड़ री गीत
उ०—२ रूपै री बाजोट, पाळो, कळस और ही सारी जनस थांहरां नजर में राखजे ।—कुंवरसी सांखला री वारता
जनस्रुति, जनस्रुती—सं०स्त्री०यौ० [सं० जनश्रुति] १ अफवाह, लोकोपवाद. २ किवदंती । उ०—गती रती न ग्यांन की गदा विग्यांन की गमी । स्रुती परी करी सदा स्रुती जनस्रुती समी ।—ऊ.का.

जनहरण–सं०पु० [सं०] एक दंडक वृत्त का नाम। इस वृत्त के प्रत्येक चरण में तीस लघु और एक गुरु होता है।

जनां–सर्व०—जिस। उ०—जनां हुंदा कोटवाळ. जेरै जमरांणा।
—केसोदास गाडण

जनांनखांनौ–सं०पु० [फा० जनान:+खान:] भवन का स्त्रियों के रहने का अंदर का भाग, रनिवास।

जनांनीडोढ़ी, जनांनीडयोढ़ी–सं०स्त्री० [फा०जनान:+रा०प्र०ई+ड्योढ़ी] १ रनिवास का मुख्य द्वार. २ रनिवास, जनाना महल।

जनांनौ–वि० [फा० जनान:] १ नामर्द, नपुंसक. २ निर्बल, डरपोक. ३ स्त्रियों के समान वेश-भूषा या हाव-भाव वाला।

स०स्त्री०—१ स्त्री, औरत।

सं०पु०—२ राजा द्वारा अपनी रानियों को महल में एकत्रित कर के दरबार लगाना।

उ०—अर राजा मेंहलां में पधारचा, मांहै जनांनौ कीधौ। सारी राण्यां बुलाई।—साहूकार री वात

क्रि०प्र०—करणौ।

मुहा०—जनांनौ करणौ—पर्दा करना।

जनाख, जनाखि–सं०पु० [फा० जनख या जनख-दाँ] ठोडी, चिबुक।

उ०—१ सूरज की वीरक वरन साख, जुलमी की चीरत हम जनाख।
—ऊ.का.

उ०—२ द्रुम आखि जनाखि जडाव दिपै, छबि तेण लखै अनि ओप छिपै।—रा.रू.

जनाजौ–सं०पु० [अ० जनाज:] १ शव. २ मृतक की अरथी।

उ०—यवन रै चाळीस हाथ कपड़ौ चाहीजै म्रतक सरीर में, जनाजौ कहै म्रतक रथी नूं यवन।—बां.दा. ख्यात

जनाद–सं०पु०—देश (अ.मा.)

जनाब–सं०पु० [अ०] अपने से बड़ों के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला आदरसूचक शब्द, महाशय, महोदय।

यौ०—जनावआली।

जनारजन, जनारदन–सं०पु० [सं० जनार्दन] १ विष्णु. २ श्रीकृष्ण।

उ०—एहिज परि थई भीरि कजि, आयां धनंजय अनै सुयोधन। मासे मगसिर भलउ जु मिळियौ, जागिया मींट जनारजन।—वेलि.

३ ईस्वर (नां.मा.) उ०—जगदाता जनारदन, गिरधारी गुण गेह। व्रजपत रोटी बांटणौ, मोटी नींद म देह।—बां.दा.

जनावर—देखो 'जांनवर' (रू.भे.) उ०—तद कुंवर पांच पातळ परिसाय नै दोय पातळ आप रांणी जीमै अर तीन्ह पातळ छै सु पंखी जनावरां नै घातै।—चौबोली

जनि–अव्य०—निषेधार्थक सूचक शब्द 'नहीं'। उ०—क्रम बंध पाप जावै कटे, उर परम्म धरतां अगा। ऐतौ प्रताप हरि जाप रौ, जाप ज जनि भूलै 'जगा'।—ज.खि.

रू०भे०—जनी।

जनित्री–सं०स्त्री० [सं० जनित्रि] माता, मा, जननी।

सं०पु० [सं० जनितृ] पिता।

जनी–सं०स्त्री० [सं० जनि] १ माता, जननी।

उ०—बाळकपणै के कै विनोद कर बार-बार विहस वधायौ, मन जनक जनी को तैं। सिसुता में चरम खडग सैंधव सुहाये सदा, सहज दिखायौ सोख फनी ज्यूं मनी को तैं।—ऊ.का.

२ दासी, सेविका।

३ देखो 'जनि' (रू.भे.)

जनीयित–सं०पु० [सं० जनयितृ] पिता।

जनु–अव्य०—मानों। उ०—सांभळिया 'अवरंग' सा, कर धांम घखांणा। कै सीतापत आय सिर, जनु रांवण रांणा।—द.दा.

जनुख–सं०पु० [सं० जनुस्] जन्म, उत्पत्ति (अ.मा.)

जनुवी–सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जनून–सं०पु० [अ०] पागलपन, उन्माद।

जनूनी—देखो 'जणणी' (रू.भे.) उ०—नारी गांठियौ सूंठ दूजी न खायौ। जनूनी तुंही हेक हेकौ ज जायौ।—ना.द.

जनूमणी–सं०पु०—श्याम या लाल और चिकना शरीर का वह भाग जो जन्म के साथ ही हो (अमरत)

जनेंद्र–सं०पु० [सं० जनेन्द्र] राजा, नृप।

जनेऊ–सं०स्त्री० [सं० यज्ञोपवीतम्] १ यज्ञोपवीत के स्थान पर धारण करने का सोने का जंजीरनुमा एक प्रकार का आभूषण।

उ०—ढोलोजी नै पिण कड़ा मोती जनेऊ किलंगी अमोलख वसतां दीधी—ढो.मा.

२ यज्ञोपवीत।

पर्या०—उपवीत, जग्यसूत, पवित्र, ब्रहमसूत।

३ यज्ञोपवीत का संस्कार. ४ यज्ञोपवीत पहनने के स्थान पर होने वाला रक्त-विकार संबंधी रोग विशेष।

रू०भे०—जनोई।

जनेऊउतार, जनेऊकट, जनेऊवढ़, जनेऊवाढ़, जनेऊवढ़–सं०पु०—शस्त्र या तलवार का वह प्रहार जो कंधे के एक छोर से कमर के दूसरे छोर तक (जैसे जनेऊ बांधी जाती है ठीक वैसे ही) काट देता है।

उ०—धरा जरदैत पड़ै खग धार। उडै भ्रड़ फाड़ जनेऊ-उतार।
—सू.प्र.

मि०—उपवीत-उतार।

जनेत–सं०स्त्री० [सं० जनयित्री अथवा जनित्रि] १ माता।

उ०—कहीस ओपमा अनोप धी जिती कविंद्र की। महा सु सूरवीर की जनेत है जितेंद्र की।—पा.प्र.

[सं० जन्य+रा०प्र० एत] २ बरात।

सं०पु० [सं० जनयितृ अथवा जनेतृ] ३ पिता।

रू०भे०—जनेता, जनेती।

जनेता–सं०स्त्री० [सं० जनयित्री, सं० जनित्रि] माता। उ०—१ साह उग्राहणी नांम आछा सुणै, तरिंद रै जेम तूं दळद तोड़ै। मुणै कव 'खेतसी' मदद तण माहरै, जनेता ताहरै न को जोड़ै।—खेतसी वारहठ

उ०—२ वह महिनी नव वार्ट मफळादे भोज की रांना ग्रनळ की जनेता ।—ग्र. वचनिका

जनेती–सं०पु० [सं० जन्य+रा०प्र० एती] बराती ।

उ०—१ जमाति जाति बजि घंब गजर, जीघ जनेती उद्धव जिम । न्ह लियग् पम हल्ले गजग्, तोरग् बांदग् वींद तिम । —सू.प्र.

उ०—२ हाथां का हथियार ले लिया, साथा को सांमांन : जांन बगाय'र चढ्या ग्रागरै, हर राखै लो मांन । रात-रात वै चलै जनेती, दिन ऊग्यां टम जाय । ग्रागरै के तीन कोस पर, डेरा दिया लगाय ।

—डूंगजी जवारजी री पड़

जनेव–सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार (डि.को.)

उ०—उठी विलंद दळ ग्रसुर, वांधि मुगरवां जनेवां । पेस कवज खंजरां, जकड़ वगिया रगजेवां ।—सू.प्र.

जनेसर, जनेस्वर–सं०पु० [सं० जनेश्वर या जिनेश्वर] १ जितेन्द्रिय. २ विष्णु. ३ बुद्ध. ४ सूर्य. ५ कुबेर (ह.नां.) ६ जिनेश्वर, जिनवर । उ०—ग्रवै वसुधा विन व्याज विचित्र। महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र ।—ऊ.का.

जनोई—१ देखो 'जनेऊ' (रू.भे.)

जनौ–सं०पु०—तलवार की मूठ को पकड़ने के स्थान पर का मध्य का गोलाई में उभरा हुग्रा भाग जो हाथ की हथेली के मध्य में रहता है।

जन्न–सं०पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ (जैन)

जन्नक—देखो 'जनक' (रू.भे.) उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक सूर, ग्ररज्जुग उद्धव ग्रो ग्रकरूर ।—ह.र.

जन्नट्ठी–सं०पु० [सं० यज्ञार्थी] यज्ञ की इच्छा रखने वाला (जैन)

जन्नत–सं०स्त्री० [ग्र०] स्वर्ग । उ०—मुहमद मुवां पछै छटै महीनै खातून जन्नत हुई ।—बां.दा ख्यात

जन्नवाइ–सं०पु० [सं० यज्ञवादिन्] १ यज्ञ की स्थापना करने वाला । (जैन) २ यज्ञ का कथन करने वाला, यज्ञवादी (जैन)

जन्नवाड–सं०पु० [सं० यज्ञवाट] यज्ञवाट (जैन)

जन्नसिट्ठ–सं०पु० [सं० श्रेष्ठ-यज्ञ] ग्राध्यात्मिक यज्ञ (जैन)

जन्नारजन—देखो 'जनारजन' (रू.भे.) उ०—जुग सकळ मांहि देखे 'जगा', लाभ धरम समरग् लिया । जोतीसरूप जन्नारजन, दिल महिल्ल दीपग दिया ।—ज.खि.

जन्नोवईय—देखो 'जग्णोवईय' (रू.भे.)

जन्म—देखो 'जनम' (रू.भे.)

जन्मग्रस्टमी—देखो 'जनमग्राठम' (रू.भे.)

जन्मकील–सं०पु०यौ० [सं०] जन्म मरग् को मिटाने वाला, विष्णु ।

जन्मकुंडळी–सं०स्त्री० [सं० जन्म कुण्डली] फलित ज्योतिष के ग्रनुसार वह चक्र जिसके द्वारा किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले ।

जन्मक्रत–सं०पु०यौ० [सं० जन्मकृत] जन्म देने वाला, माता-पिता ।

जन्मग्रहण–सं०पु० [सं०] उत्पत्ति ।

जन्मणी, जन्मबौ—देखो 'जनमणी, जनमबौ' (रू.भे.)

जन्मतिथि–सं०स्त्री० [सं०] जन्मदिन, वर्षगांठ ।

जन्मनक्षत्र, जन्मनखत्र–सं०पु० [सं० जन्मनक्षत्र] जन्म के समय का नक्षत्र ।

जन्मप, जन्मपति–सं०पु० [सं०] १ कुंडली में जन्मराशि का स्वामी. २ जन्मलग्न का स्वामी ।

जन्मपत्र–सं०पु०—१ देखो 'जन्मपत्री' (रू.भे.) २ पूर्ण विस्तृत विवरग् ।

जन्मपत्री–सं०स्त्री० [सं०] वह पत्र जिस पर किसी के उत्पत्ति के समय ग्रहों की स्थिति, उनकी दशा ग्रादि का तथा शुभाशुभ फल का वर्णन हो (फलित ज्योतिष)

रू०भे०—जनमपत्र, जनमपत्री, जनमपुत्र, जन्मपत्र ।

जन्मप्रहार–सं०पु०यौ०—संसार में बार-बार जन्म-मरग्, ग्रावागमन ।

उ०—ग्राखै कवि 'ईसर' तेज ग्रंबार, प्रभूजी टाळो जन्मप्रहार ।—ह.र.

जन्मभ–सं०पु० [सं०] जन्म लेने के समय का नक्षत्र, राशि ग्रथवा लग्न । (ज्योतिष)

जन्मभूमि, जन्मभोम–सं०स्त्री०यौ० [सं० जन्मभूमि] जन्मस्थान, जहां जन्म लिया हो ।

रू०भे०—जनमभूमि, जनमभोम ।

जन्मरासि–सं०स्त्री०यौ० [सं० जन्मराशि] किसी के उत्पन्न होने के समय चंद्रमा उदय होने का लग्न ।

जन्मविधवा–सं०पु०यौ० [सं०] जो बचपन में ही विधवा हो गई हो, बालविधवा ।

जन्मस्थान–सं०पु०यौ० [सं०जन्म स्थान] १ जन्मभूमि. २ कुंडली में वह स्थान जिसमें जन्म के समय के ग्रह रहते हों ।

जन्मांत—देखो 'जनमांत' (रू.भे.)

जन्मांतर–सं०पु० [सं०] दूसरा जन्म, पूर्वजन्म । उ०—काळराज ही ग्रवै तौ ग्रापरो लोभायोड़ो है सो वेगाहीज मारसी तौ पापी रिग् तीरथ में हीज धारा तीरथ करै नी जो जन्मांतर रा प्राचंत कटै ।

—वी.स.टी.

जन्मांध—देखो 'जनमंद' (रू.भे.)

जन्माणौ, जन्मावौ—देखो 'जनमाणौ' (रू.भे.)

जन्मायोड़ो—देखो 'जनमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जन्मायोड़ी)

जन्माधिप–सं०पु०यौ० [सं०] १ शिव का एक नाम. २ जन्म लग्न का स्वामी. ३ जन्म राशि का स्वामी ।

जन्मास्टमी—देखो 'जनमग्राठम' (रू.भे.) उ०—जाळ झाळियां मंच, जचावां उछब सावां । जन्मास्टमी परव, सिंहासग् मढ्ढ़ सजावां ।

—दसदेव

जन्मेय—देखो 'जनमेजय' (रू.भे.)

जन्मेस–सं०पु० [सं० जन्मेश] जन्मराशि का स्वामी ।

जन्मोत्सव–सं०पु०यौ० [सं०] किसी के जन्म के ग्रवसर पर या जन्म को स्मरग् के लिये मनाया जाने वाला उत्सव ।

जन्य–सं०पु० [सं०] १ साधारग् मनुष्य. २ राष्ट्र. ३ पुत्र. ४ पिता. ५ बराती. ६ जन्म ।

जन्ह—देखो 'जह्नु' (रू.भे.) उ०—जन्ह नरिंदह केरी धूय। गंगा नामि रइसमरूय।—पं.पं.च.

जन्हवी–सं०स्त्री० [सं० जाह्नवी] जन्हु ऋषि से उत्पन्न, गंगा।

जप–सं०पु० [सं०] १ किसी मंत्र, श्लोक या शब्द का बार-बार धीरे-धीरे उच्चारण करते हुए पाठ करना या संध्या-पूजा आदि में मंत्रों का पाठ करना। उ०—कि जोग जाग जप तप तीरथ कि, व्रत कि दांनासम वरणा। मुख कहि क्रिसन रुखमिणि मंगळ, कांई रे मन कळपसि क्रिपणा।—वेलि.

यौ०—जप-तप।

२ सेवा (अ.मा.)

रू०भे०—जप्प।

जप-जाप—देखो 'जप-तप' (रू.भे.)

जपणी–सं०स्त्री० [सं० जप+रा.प्र.णी] १ जप करने के काम आने वाली माला। उ०—अपणी सरधा खोय अभागी, सपणी आदत सोग। तपणी पर बैठे तावड़िये, जपणी फेरण जोग।—ऊ.का.

२ वह थैली जिसमें माला रख कर जप किया जाय।

जपणौ, जपबौ–क्रि०स० [सं० जप] १ मंत्र-पाठ करना, मंत्रों को बार-बार व धीरे-धीरे उच्चारण करना, जप करना। उ०—आलीणौ हर नांम, जांण अजांण जपै जो जीहा। सासतर वेद पुरांण, सरव मही तत् अक्खर सारम्।—ह.र.

२ कथना, कहना। उ०—जपियौ सिध जिण विध जुध जीता। वधै वंस खैरोद वदीता।—सू.प्र.

३ पढ़ना, जपना। उ०—चतुर विधि वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखद मंत्र तंत्र सुवि। काया कजि उपचार करंतां, हुवै सु वेलि जपंति हुवि।—वेलि.

जपणहार, हारौ (हारी), जपणियौ—वि०।

जपवाड़णौ, जपवाड़बौ, जपवाणौ, जपवावौ, जपवावणौ, जपवावबौ, जपाड़णौ, जपाड़बौ, जपाणौ, जपावौ, जपावणौ, जपावबौ—प्रे०रू०।

जपिओड़ौ, जपियोड़ौ, जप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जपीजणौ, जपीजबौ—कर्म वा०।

जपत—१ देखो 'जब्त' (रू.भे.)

२ प्रबंध, व्यवस्था, इंतजाम। उ०—जद नोसेरसाह जवांन हुवौ, आग्या करण लागियौ, 'बापरौ' देस जपत में आंणियौ।—नी.प्र.

जपतप–सं०पु०यौ० [सं०] पूजा-पाठ, संध्या-पूजा।

जपता–सं०स्त्री०—सिर के उलझे हुए लम्बे-लम्बे बाल, जटा।

जपती—देखो 'जब्ती' (रू.भे.)

जपमाळा–सं०स्त्री०यौ० [सं० जपमाला] जप करने की माला।

जपमाळी–सं०स्त्री० [सं० जपमालिका] जपमाला।

जपा–सं०स्त्री० [सं०] १ सदा गुलाब का फूल या पौधा, अड़हुल (अ.मा.)

उ०—फवै ललाइ बिंबफळ, परतख अधर प्रवाळ। जपा कुसुम जोड़ै जियां, भाखै सहियां भाळ।—बां.दा.

जपाणौ, जपावौ–क्रि०स० ('जपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) जप कराना, जप करने को प्रेरित करना।

जपायोड़ौ–भू०का०कृ०—जप कराया हुआ (स्त्री० जपायोड़ी)

जपियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ मंत्र पाठ किया हुआ, जप किया हुआ। २ कहा हुआ, कथा हुआ. ३ पढ़ा हुआ, जपा हुआ। (स्त्री० जपियोड़ी)

जपियौ, जपी–सं०पु० [सं० जप] जप करने वाला, वह जो जप करता हो (अ.मा.)

उ०—म्हारै रे बीस जपिया अपामारजन नूं बैसाणिया। —कुंवरसी सांखला री वारता

जप्त—देखो 'जब्त' (रू.भे.)

जप्ती—देखो 'जब्ती' (रू.भे.)

जप्प—देखो 'जप' (रू.भे.)

जफरतकिया–सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जब–क्रि०वि०—१ जिस समय।

रू०भे—जब्ब।

२ देखो 'जव' (रू.भे.)

जबक–सं०पु०—चोट। उ०—सो तीनूं तूंड सूं उलाट दीन्हौ सो उवौ राव समेत परै पड़ियौ। राव रै साथळ रै जबरी जबक आई और डाढ़ाळौ निसर गयौ।—डाढ़ाळा सूर री वात

जबड़ौ–देखो 'जबाड़ौ' (रू.भे.)

जबत–देखो 'जब्त' (रू.भे.)

जबती—देखो 'जब्ती' (रू.भे.)

जबरंग–वि०—जबरदस्त।

जबर–वि० [अ० ज़बर] १ बलवान, शक्तिशाली, शूरवीर। उ०—सो बादसाह औरंगजेब सारखौ महादिवांण पण जयसिंघ इसौ जबर।

२ क्रूर, जुल्मी। —आंमेर रा धणी री वारता

कहा०—१ जबर नै पूगै खबर–जबरदस्त अथवा जुल्मी के जुल्मों को धैर्य्यपूर्वक सह लेना ही ठीक है। क्योंकि एक दिन निर्बल की हाय से जुल्मी नष्ट हो जायगा। २ जबरां रा पग माथै ऊपर–बलवानों के पैर शिर पर अर्थात् समर्थ की आज्ञा शिरोधार्य। ३ जबरौ मार'र रोवण को देनी–जबरदस्त मारता है और रोने भी नहीं देता, अत्याचारी एवं क्रूर के प्रति।

३ प्रबल। उ०—१ खबर राख कुसमै समै, कांसूं षबर करीस। खिण खिण ले जग री खबर, जबर सगत जगदीस।—बां.दा.

उ०—२ जबर विरोधी अगन जळ, ले निज का लूहार। जबर विरोधी मंत्रियां, सुपह काज लै सार।—अज्ञात

४. तीव्र, अधिक।

रू०भे०—जब्बर।

जबरई—देखो 'जबराई' (रू.भे.)

जबरजंगनाळी–सं०स्त्री०—एक प्रकार की तोप। उ०—जबर-जंग नाळयां रा निहा ऊपड़िनै रहिया छै।—रा.सा.सं.

जवरण, ज्वरणां–क्रि०वि० [अ० जब्रन्] जवरदस्ती, बलात् । उ०—चौवळ ग्राह तंत गत नरणां । जकड़ छोवण संन जवरणां । —र.ज.प्र.

जवरदस्त–वि० [अ०+फा०] १ शक्तिशाली. २ क्रूर, जुल्मी. ३ प्रबल । रू०भे०—जवर।

जवरदस्ती–सं०स्त्री० [अ+फा] १ ज्यादती, अन्याय, अत्याचार।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

२ प्रबलता ।

क्रि०वि०—बलात्, बलपूर्वक ।

जवरन–क्रि०वि० [अ० जब्रन] बलात्, बलपूर्वक । उ०—तद आदमी एक टावो मेल गढ़ में कहायो—वादसाह जवरन सूं म्हांनूं आंख्यां अदीठ कीन्हा छै ।—जलाल बूबना री बात

रू०भे०—जव्ररण, जवरणां ।

जवराई–सं०स्त्री० [अ० जब्र+रा०प्र०आई] १ ज्यादती, सख्ती ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

२ जवरदस्ती ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

रू०भे०—जवरई ।

जवरायल, जवरायेल–वि० [अ० जब्र+रा०प्र० आयल, आयेल] शक्तिशाली, पराक्रमी, जवरदस्ती । उ०—१ जवरायल जोधार छाक मन मछर छाया । अलवेलियां असवार आजै पीछोलै आया ।
—वगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—२ जवरायेल स्यंघ जेम भभका सोर का, जवरायेल कर खीज भुजंगम जोर का ।—वगसीरांम प्रोहित री बात

रू०भे०—जवरेल, जवरैल ।

जवरी–सं०स्त्री०—ज्यादती, अन्याय । उ०—१ जे रौ किंही रौ मुनसव ओछौ करै सो खांनजहां होवणै न देवै जवरी कर कराय देवै ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ पण ओ तौ रिसालौ खास छै, सगळौ लोग इणरै तावै छै ओर मैं ही इहां रै तावै सो सदा सूं जवरी करता रहै छै ।
—जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

२ अनुचित वात, कष्टदायक कार्य ।

वि०स्त्री०—देखो 'जवरौ' (रू.भे.) (पु०)

क्रि०वि०—बलात्, जवरदस्ती ।

जवरेल, जवरैल—देखो 'जवरायल' (रू.भे.)

जवरोड़ौ, जवरौ–वि०पु० [अ० ज़ब्र] (स्त्री० जवरोड़ी, जवरी) १ शक्तिशाली, वलवान, प्रबल, वली । उ०—१ लोभ लाय में लाख गुण, जवरोड़ा जळ जाय । कनक दांन रा कीच में, के ओगण कळ जाय ।
—ऊ.का.

उ०—२ सो इण भांति महाराज जयसिंह वडो जवरौ थौ ।
—महाराज जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

२ क्रूर, जुल्मी. ३ प्रचंड । उ०—रजपूतां परज लोग सूं भली पर पाळी । डील निपट जवरौ हुतौ ।—नैणसी

४ अधिक, ज्यादा. ५ बढ़िया, श्रेष्ठ, अच्छा ।

उ०—भूमरदे रंग रौ लट्ठा रौ घाघरौ मर खादी री मांखी भांत ओरणी उणनै जवरी फवती ।—रातवासौ

६ महान्, वड़ा । उ०—सो महाराज जयसिंहजी वडौ राजा थौ । वादसाह रा घणा ही जवरा कांम सुधारिया ।
—महाराज जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

अल्पा०—जवरोड़ौ ।

जवळ–सं०पु० [अ० जवल] पहाड़, पर्वत । उ०—तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूखड़ौ । विसन सलीमुख वाग, जरा वरक ऊतर जवळ । —वां.दा.

जवह—देखो 'जिवह' (रू.भे.)

जवां, जवांन–सं०स्त्री० [फा० ज़्वान] १ जिह्वा, जीभ ।

उ०—१ करारा वचन खारा जवां काढतो, वरारा कोट भरतो गयण धाय । धुरा तैं कीया चाळा विग्रह धरा रा । 'हरा' रा देख मांहरा हमैं हाय ।—पहाड़खां आढ़ौ

उ०—२ जे निज कहै जवांन, हीरा लेख समांन है । पीपळ साटी पांन, पळटै ज्यां न 'प्रतापसी' ।—जैतदांन वारहठ

क्रि०प्र०—करणी, खोलणी, चलणी, चलाणी, रोकणी ।

मुहा०—१ जवांन खींचणी–जीभ को वाहर खींच लेने या उखाड़ लेने की धमकी देना, धृष्टतापूर्ण या अनुचित कार्य के लिये कठोर दंड देना । २ जवांन खुलणी–मुंह से शब्द निकालने या वोलने की हिम्मत पड़ना, कुछ कहा जाना । वच्चे का वोलना शुरू होना । ३ जवांन खोलणी–मुंह से कुछ वात कहना, वोलना, मांगना । ४ जवांन घिसणी–कहते-कहते थक जाना । ५ जवांन चलाणी–विशेषत: जल्दी-जल्दी वोलना, अनुचित शब्द का उच्चारण करना । वाचाल होना । ६ जवांन चालणी–अनुचित शब्द निकालना, मुंह से शब्द निकालना । ७ जवांन निकाळणी–थोड़ा भी वोलना, धमकी देना । ८ जवांन पकड़णी–वोलने न देना, कहने के लिये मना करना, वात पकड़ना । ९ जवांन वंद करणी–चुप होना, वोलने से रोकना, विवाद में हराना । १० जवांन वंद होणी–मुंह से शब्द न निकालना, गुमसुम होना, विवाद में हार जाना, वोलने का साहस न होना । ११ जवांन विगड़णी–मुंह से अपशब्द निकालने का अभ्यास होना । १२ जवांन माथै होणी–हरदम याद रहना, स्मरण रहना । १३ जवांन मुंडा में राखणी–चुप रहना, मौन धारण करना । १४ जवांन में लगांम देणी–सोच-समझ कर वोलना, चुप रहनो । १५ जवांन में लगांम नी होणी–अनुचित वातें कहने का अभ्यास होना, वोलने में उचित-अनुचित का ख्याल न होना, अनर्गल प्रलाप करना । १६ जवांन रुकणी–वोलना वंद होना, मरने के करीव होना । १७ जवांन रै लगांम लगणी–देखो 'जवांन रुकणी'। १८ जवांन रै लगांम लगाणी—देखो 'जवांन रोकणी' । १९ जवांन रोकणी–चुप करना, चुप होना । २० जवांन लड़ाणी–सवाल-जवाव करना, आदर योग्य व्यक्ति से तर्क-वितर्क

करना। २१ जवांन संभाळणी–मुंह से अनुचित शब्द न निकलने देना, सोच-समझ कर बोलना. २२ जवांन सूं निकळणी–न चाहने पर भी कह देना, कहना। २३ जवांन सूं निकाळणी–कहना, उच्चारण करना, बोलना। २४ जवांन हिलाणी–कुछ भी बोल देना, थोड़ी सी सिफारिश करना, बोलने का प्रयत्न करना, विरोध करना। २५ वदजवांनी–अनुचित और अशिष्ट वात।

यौ०—जवांनदराजी।

अल्पा०—जवांनड़ी।

२ मुंह से निकला हुआ शब्द, वात, बोल, वचन।

मुहा०—१ जवांन वदलणी–कही हुई वात से फिर जाना। २ जवांन रौ धणी होणौ–वात का पक्का होना।

कहा०—जवांन है के साटी रौ पान है-जवान है या पुनर्नवा का पत्ता है? कही हुई वात से फिर जाने पर।

३ प्रतिज्ञा, वायदा।

मुहा०—१ जवांन देणी–प्रतिज्ञा करना, वायदा करना। २ जवांन हारणी–वचन से विमुख होना, वायदे से हट जाना।

कहा०—जवांन हारी जिकै जनम हार्यौ–जो प्रतिज्ञा से टल गया उसने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया। वायदे का पालन न करने वाले की निंदा।

रू०भे०—जुवांन, जुवांण, जुवांन।

जवांनी–वि० [फा० जवान+रा०प्र०ई] जो केवल ज्वान से कहा जाय, मौखिक।

मुहा०—जवांनी जमा-खरच करणौ—कुछ काम न करना। सिर्फ कहना।

रू०भे०—जुवांनी, जुवांणी, जुवांनी।

जवाड़ौ–सं०पु० [सं० जंभ] मुंह के दोनों ओर की वे हड्डियां जिनमें दाढ़ें रहती हैं। उ०—सू हाथी री सूंड कट, दांतूसळ दोनूं कट वीचलौ जवाड़ौ कटियौ।—द.दा.

रू०भे०—जवड़ौ।

जवाव–सं०पु० [अ० ज़वाव] १ किसी प्रश्न के वदले दिया गया समाधान, उत्तर।

क्रि०प्र०—दैणौ, पाणौ, मांगणौ, मिळणौ, लिखणौ।

मुहा०—१ जवाव-तलव करणौ—कैफियत मांगना, किसी वात या घटना का कारण पूछना. २ जवाव दैणौ—धृष्टतापूर्वक उत्तर देना, निषेधात्मक उत्तर देना. ३ जवाव मिळणौ—निषेधात्मक उत्तर मिलना।

यौ०—जवावतलव, जवावदावौ, जवावदेह, जवावसवाल।

विलो०—सवाल।

२ कार्य रूप में दिया गया उत्तर, वदला. ३ मुकावले की चीज, जोड़. ४ नौकरी छूटने की आज्ञा।

रू०भे०—जवाव, जवावू, जुवाव।

जवाव-तलव–वि०यौ० [फा० ज़वावतलव] किसी कार्य के लिये मांगा गया समाधानकारक उत्तर।

जवावदावौ–सं०पु०यौ० [अ० ज़वावदावा] वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में अदालत के अन्दर प्रतिवादी द्वारा लिख कर दिया गया प्रत्युत्तर।

जवावदेह–वि० [अ० ज़वाव+फा० देह] जिस पर जिम्मेदारी हो, जिम्मेदार, उत्तरदायी।

जवावदेही–सं०स्त्री० [अ० ज़वाव+फा० देही] जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व।

जवावसवाल–सं०पु०यौ० [अ० ज़वाव+सवाल] वादविवाद, प्रश्नोत्तर।

जवावी–वि० [फा० ज़वावी] १ जिसका जवाव देना हो। २ जवाव संबंधी। उ०—आसतखांन दिवांण, सुणै निज दूत सितावी। साह दिसा डाक सूं, जवन मेलिया **जवावी**।—रा.रू.

जवावूं—देखो 'जवाव' (रू.भे.)

उ०—जैतावत मंडणसी गोवरधन साथै। जवावू न लेखे आवै निवावूं सौं वाथै।—रा.रू.

जवुफळ–सं०पु०—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा (शा.हो.)

जवून—देखो 'जव्वू' (रू.भे.)

उ०—सादूळौ वन साहिवौ, खाटै पग-पग खून। कायरड़ा इण कांम नूं, जंवक कहै **जवून**।—वां.दा.

जवेह–सं०पु० [अ० ज़वीहः] वह पशु जो नियमानुसार जवह किया जाय। उ०—फेर दिल्ली दाखिल होय. मुरादसाह नूं पकड़, तखत वैठांण पछै **जवेह** करायौ—पदमसिंह री वात

जवोड़, जवोड़ौ–सं०पु०—प्रहार, चोट।

उ०—जोड़ाळां मुहि दियण जवोड़ां, रांम सिहाइ हुअउ राठोड़ां।
—रा.ज.सी.

जव्त–सं०पु० [अ०] १ दंडस्वरूप किसी की सम्पत्ति का हरण।

२ किसी वस्तु को वलात अपने अधिकार में लेने का भाव।

३ सहनशीलता। उ०—एक तौ सियासत उमराव चाकर दरगाह रां री ओर जव्त राखण रीत इणारी।—नी.प्र.

रू०भे०—जपत, जप्त, जवत।

जव्ती–सं०स्त्री० [अ० ज़व्त+रा०प्र०ई] ज़व्त होने की क्रिया।

रू०भे०—जपती, जप्ती, जवती।

जव्व—देखो 'जव' (रू.भे.)

जव्वर—देखो 'जवर' (रू.भे.)

उ०—जेळै कई **जव्वर** वव्वर जोर, दिखावत वायु वरव्वर दोर।
—मे.म.

जव्वू–वि० [फा०] वुरा, खराव, निकृष्ट। उ०—उस विरयां मुलतांन खां मूंछां कर घल्ले। ऐंचि कवादे टंक तोलि **जव्वू** कहिं वुल्ले।
—ला.रा.

रू०भे०—जवून।

जव्रन—देखो 'जवरन' (रू.भे.)

जभै—देखो 'जिवह' (रू.भे.) उ०—कहायौ छै—इणानै **जभै** मत करज्यौ

नै दगारी स्टका सूं मारि नै हमारा चाकरां नै सीख दीजो।
—वीरमदे सोनगरा री वात

जमंद-सं०पु०—जामुन के रंग का घोड़ा। उ०—ज्रिनहर आवनूंगी जमंद। कुम्हरी हरी सैली समंद।—सू.प्र.

जमंधर—देखो 'जमधर' (रू.भे.) उ०—होय लथब्बड़ आहुड़ै घड़ जड़ै जमंधर।—सू.प्र.

जम-सं०पु० [सं० यम] १ एक साथ पैदा होने वाले बच्चों का जोड़ा, यमज (अ.मा.)
२ दक्षिण दिशा के दिक्पाल और मृत्यु के देवता (पौराणिक)
३ मन व इंद्रिय का निग्रह। उ०—अर जम नियम आसण प्राणायाम—वं.भा.
४ चित्त को धर्म की ओर झुके रहने के लिये कर्मों का साधन।
५ कौआ. ६ शनिश्चर (अ.मा.)
७ विष्णु. ८ वायु. ९ जमराज (नां.मा.)
उ०—भोळै परम जम भूप रै, पिंड जांणै अहि पांखिया। विण सुरस बंध भवणी विखम, अघकंध उपड़ांखिया।—सू.प्र.
अल्पा०—जमड़ो।
वि०—अंधा।
उ०—थांहरै बेटे खरळां री नारियळ झालियौ छै, उवा छोकरी आंखियां सूं जम छै।—कुंवरसी सांखला री वारता
क्रि०वि०—जैसे। उ०—जेठ रा भांण सम असह वरकांण जम। मांण दुजरांण असहांण मारै।—र.ज.प्र.

जमक-सं०पु० [सं० यमक] १ यमक अलंकार, एक प्रकार का शब्दालंकार।
२ प्रत्येक चरण में पांच लघु वर्ण का एक वृत्त (पिं.प्र., र.ज.प्र.)
रू०भे०—जमग।

जमकाइय-सं०पु० [सं० यमकायिक] यमराज (जैन)

जमकात, जमकातर-सं०पु०—१ भँवर. २ यम का खांडा. ३ एक प्रकार की छोटी तलवार।

जमग-सं०पु० [सं० यमक] १ देव कुरु. २ उत्तर कुरु-क्षेत्र में स्थित एक पर्वत का नाम. ३ इस पर्वतवासी देवता का नाम. ४ एक पक्षी विशेष।
४ देखो 'जमक' (रू.भे.)

जमघंट-सं०पु० [सं० यमघंट] १ यमराज का घंटा (ग.मो.)
२ दीपावली का दूसरा रोज।
३ देखो 'जमघंटजोग' (रू.भे.)

जमघंटजोग, जमघटयोग—स०पु० [यमघंट योग] दिन व रात्रि के साथ रहने वाला मुहूर्त शास्त्र का एक अशुभ योग विशेष जो क्रमशः रविवार को मघा नक्षत्र, सोमवार को विशाखा नक्षत्र, मंगलवार को आर्द्रा नक्षत्र, बुधवार को मूल नक्षत्र, गुरुवार को कृतिका नक्षत्र, शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र और शनिवार को हस्त नक्षत्र होता है इस योग में जन्म लेने वाला बालक जीवित नहीं रहता है और यदि जीवित रह जाय तो माता-पिता और कुटुम्ब के लिये अनिष्टकारक सिद्ध होता है। (फलित ज्योतिष)
रू०भे०—जमघंट।

जमघट, जमघट्ट—सं०पु०—मनुष्यों की भीड़।

जमड़ो—देखो 'जमी' (अल्पा. रू.भे.) उ०—जमड़ो नाजोगांह, दळतोही नांही दवै। जावै नह जोगांह, रजपूती बाघी रसा।—उदयराज उज्ज्वल

जमचक्र-सं०पु० [सं० यमचक्र] यमराज का शस्त्र।

जमज-सं०पु० [सं० यमज] एक साथ उत्पन्न दो बच्चों का जोड़ा।

जमजनक-सं०पु०यौ० [स० यमजनक] सूर्य (डि.को.)

जमजग्य-सं०पु०यौ० [स० यमयज्ञ] अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच यम—संयम रूप यज्ञ, भाव यज्ञ (जैन)

जमजाळ-सं०पु०यौ०—१ यमराज का फंदा, यमपाश। उ०—आकास रसातळ दिस असट, पारावार समंद्र पथ। जमजाळ दुसह जावै जहां, आंणो ग्रह मेरे अरथ।—रा.रू.
२ वीर, योद्धा। उ०—जमजाळ कड़ी जरदाळ जड़ै। उतवंग' र गावळ वोम अड़ै।—गो.रू.
३ एक प्रकार की छोटी तोप या बंदूक। उ०—१ राखौ करै तयारियां, जंगां जमजाळा। सुणि भाटी भड़ ऊससै, जेसांण उजाळा।
—सू.प्र.
उ०—२ 'जसै' धखि क्रोध धरै जमजाळ, तठै खिज काठिय खाग उताळ।—सू.प्र.
वि०—यमराज के समान जाज्वल्यमान। उ०—१ कूंपारांग 'पदम्म' सम 'जैत' सुतन जमजाळ। खळ भांजण आया खड़ै, फिर भूला लंकाळ।—रा.रू.
उ०—२ वे भाई विरदाळ, औरंगसाहि मुराद वे। हैवै पति भेळा हुवा, जुध मंडण जमजाळ।—वचनिका
रू०भे०—जमझाळ।

जमझमा-सं०स्त्री०—तार वाद्यों के वजाने की एक क्रिया विशेष जो प्रायः सितार और वीणा में काम आती है।

जमझाळ—देखो 'जमजाळ' (रू.भे.) उ०—जोधाहरो जोधारण जूटो, जवनां ऊलटतां जमझाळ। पीळा खाळ हुत पालटतां, राव राठोड़ पीयो रछपाळ।—राव वीरमदेव री गीत

जमडंड, जमडंडो—सं०पु०—१ यमराज द्वारा दिया गया दंड, यमयातना। उ०—ते आळै ही हर तणा, जे नर नांम लियंत। सै जमडंडा परहरै. राघव सरण रहंत।—ह.र.
२ यमराज के हाथ में रहने वाला डंडा।
रू०भे०—जमदंड।

जमडड, जमडढ, जमडढ़ा, जमडड्ढ़, जमडढ्ढ़-सं०स्त्री० [सं० यमदंष्ट्रा] कृपाण, कटार। उ०—१ तेज घट अमीरां नरां वदळी तरह, छळी खत्रवट तरख हींदवांछात। कमवजां धणी चंडी भुजां कळकळी, हलचली दली जमडंड दियो हात।—कविराजा करणीदान

उ०—२ जमडड्ढां तरवारियां, सेल्ह बंदूकां सत्थ। आगे धूप उखेविया, पाछे झाली हत्थ।—रा.रू.

रू०भे०—जमडाड, जमडाढ़, जमदढ़, जमदड्ढ, जमदड्ढा, जमदाड, जमदाढ़, जमदाढ़क, जमदाढ़ी।

जमडांण, जमडांणी—सं०पु० [सं० यम+दान+रा०प्र०ई] यमदूत।

उ०—नारायण नांम सूं, प्रांणी वांणी पोय। जमडांणी लागै नहीं, हांणी मूळ न होय।—ह.र.

जमडाड, जमडाढ—देखो 'जमडड' (रू.भे.)

उ०—करण घाव पर काळजै, जीभ प्रतख जमडाढ़। जाझी हूंता जीभ सूं, कड़वौ वैण न काढ़।—बां.दा.

जमडाढ़ाळ—वि०—योद्धा, यमराज के समान विकट वीर। उ०—डाकी जमडाढाळ, बे बे तरगस बंधिया। तुरकी रहवाळां तुरक, चढ़िआ चांमरियाळ।—वचनिका

जमण, जमणा—देखो 'जमना' (रू.भे.)

उ०—मिळियै तट ऊपटि विथुरी पिळिया, घण धर धाराधर घणी। केस जमण गंग कुसुम करंबित, वेणी किरि त्रिवेणी वणी।—वेलि.

जमणिका—सं०स्त्री० [सं० यवनिका] कनात, पर्दा। उ०—ओपै वेद जमणिका आगै, ज्वाळ अमळ वेदी मधि जागै। मधुपरकादि सरस रस माधुर, संसकार परखै देवासुर।—रा.रू.

जमणिया—सं०स्त्री० [सं० जमनिका] साधुओं का एक उपकरण विशेष (जैन)

जमणौ, जमबौ—क्रि०अ०—१ ठंडक अथवा समय के कारण किसी द्रव पदार्थ का गाढा हो जाना। किसी तरल पदार्थ का ठोस होना।

२ एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर दृढतापूर्वक बैठना।

मुहा०—१ निजर जमणी—दृष्टि का स्थिर होकर किसी ओर लगना। किसी वस्तु पर नजर का अधिक देर ठहरना। २ मन में बात जमणी—हृदय पर किसी बात का भली भांति अंकित होना। मन पर किसी बात का पूरा प्रभाव पड़ना। ३ रंग जमणौ—प्रभाव दृढ़ होना, पूरा अधिकार होना।

४ एकत्र होना, जमा होना, ज्यूं—सभा जमणी, दूध माथै मळाई जमणी। ५ अच्छी चोट पड़ना, ज्यूं थप्पड़ जमणी। ६ हाथ से किये जाने वाले किसी कार्य का पूरा-पूरा अभ्यास होना, ज्यूं—लिखण में हाथ जमणौ। ६ मनुष्यों के समुदाय एवं जमघट के सामने किसी कार्य का इतनी उत्तमता से होना कि उसका पूरा प्रभाव पड़े, ज्यूं—खेल जमणौ, गाणौ जमणौ, तमासौ जमणौ। ७ किसी कार्य का अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से संचालित होना।

उ०—तठा पछै वरिहाहां सूं दावौ मांगण री मन में राखै, सु घणौ साथ राखियौ। घणा घोड़ा पायगाह किया, वडी राजवट जमती गई।—नैणसी

मुहा०—ठाठियौ जमणौ—किसी कार्य का भली प्रकार प्रभावपूर्ण ढंग से चलना। ८ किसी संस्था, कार्यालय या व्यवसाय का चल निकलना, ज्यूं—दूकान जमणी, स्कूल जमणी। ६ घोड़े का ठुमक-ठुमक कर चलना।

जमणहार, हारौ (हारी), जमणियौ—वि०।

जमवाड़णौ, जमवाड़बौ, जमवाणौ, जमवाबौ, जमवावणौ, जमवाववौ —प्रे०रू०

जमाड़णौ, जमाड़बौ, जमाणौ, जमावौ, जमावणौ, जमाववौ। —क्रि०स०

जमिओड़ौ, जमियोड़ौ, जम्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जमीजणौ, जमीजबौ—भाव वा०।

जमतात—सं०पु० [सं० यमतात] सूर्य (नां.मा.)

जमदंत—सं०पु० [सं० यमदंत] यम की डाढ, कराल-गाल।

जमदग, जमदगन, जमदगनी, जमदग्गन, जमदग्गि, जमदग्नि—सं०पु० [सं० यमदग्नि] ऋचीक के पुत्र एक प्रसिद्ध महर्षि जिनका ऋग्वेद में कई बार उल्लेख हुआ है। परशुरामजी इनके पुत्र थे।

जमदंड—देखो 'जमडंड' (रू.भे.)

जमदग्गिपुत्त—सं०पु० [सं० यमदग्निपुत्र] परशुराम (जैन)

जमदढ, जमदड्ढ, जमदड्ढा—१ देखो 'जमडड' (रू.भे.)

उ०—१ लड़ पड़ै फूट छड़ छाक लोह, छड़ पकड़ जड़ै जमदढ़ छछोह। —वि.सं.

उ०—२ अक्खै सेख ततारखां, उर सहनां जमदड्ढ़। मरणै से डरणा कहा, लड़णा 'जावै' गढ्ढ।—ला.रा.

२ यम की दाढ़। उ०—२ अध्रम खळ ओळंबं, अक्रम कोटे आळू-जिस। जमदड्ढा मझ पड़िस, खोड़ माया खोसाड़िस।—ज.खि.

जमदळ—सं०पु० [सं० यम+दल] यमराज के सैनिक, यमदूत।

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, विछटचौ बिखमी वार। कीधी नारायण कही, पुत्तर हेत पुकार।—ह.र.

जमदाड, जमदाढ, जमदाढ़क, जमदाढी—देखो 'जमडड' (रू.भे.)

उ० —१ मिळिया असपति हूंत 'अभैमल', असपति कुरब किया अ(प)रंपर। व्रवि सिरपाव तुरी गज व्रविया, खग जमदाढ जड़ित नग खंजर।—सू.प्र.

उ०—२ तुटी खग रोद घड़ा परतीख। सही जमदाढ़क झाळ सरीख। —सू.प्र.

जमदास—सं०पु०यौ० [सं० यमदास] यमदूत।

जमदिस, जमदिसा—सं०स्त्री० [सं० यमदिशा] दक्षिण दिशा जिधर यम का निवास माना जाता है।

जमदूत—सं०पु० [सं० यमदूत] यमराज के अनुचर, यमदूत। उ०—मन में फेर धणी री माळा, पकड़ै नैंह जमदूत पलौ। मिळै नहीं वकणा सूं माया, भाया कम बोलणौ भलौ।—बां.दा.

जमदेवकाइय—सं०पु० [सं० यमदेवकायिक] यमदेवता की एक जाति (जन)

जमदेवता—सं०पु०यौ० [सं० यम+देवता] १ यमदेवता. २ भरणी नक्षत्र जिसके देवता यम हैं।

जमद्दड़, जमद्दाड़—देखो 'जमदड' (रू.भे.) उ०—१ जमद्दड़ लाग कसै जमरांण। दला मल सावळ रोळवि पांण।—सू.प्र.

उ०—२ कसै हाथळां टोप मोजा कगळ। जमद्दाड़ वांमे जिकै लाग हल्ल।—वचनिका

जमद्वार—सं०पु० [सं० यमद्वार] यमराज का द्वार। उ०—करि प्रमत्तांनो ले चले, दस सिरि जमद्वारे। कूदि चडे दहकंधर, चित हित चोवारे।—सू प्र.

जमधर—सं०पु०—जमदाढ़ नामक कटारी के समान आगे से मुड़ा हुआ व नुकिला एक हथियार। उ०—हाथी सिरोपाव सिरपेच किलंगी समसेर जमधर बक्स विदा किया।—गौड़ गोपाळदास री वारता

रू०भे०—जमघर।

जमन—१ देखो 'जमना' (रू.भे.)। उ०—रांम भजन सूं भाव भेद कोइ विरला जांणे। गंग जमन मधि बैसि पांच पायक परितांणे।

—ह पु.वा.

२ यवन।

जमनखतर—सं०पु०यौ० [सं० यम+नक्षत्र] भरणी नामक नक्षत्र जिसका देवता यम है।

जमनभ्रात—सं०पु०यौ० [सं० यमुनाभ्रातृ] यमराज (अ.मा.)

जमना—सं०स्त्री० [सं० यमुना] १ संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की पुत्री जो बाद में संज्ञा को सूर्य द्वारा मिले हुए शाप के कारण नदी हो गई थी. २ उत्तर भारत की एक बड़ी नदी जो हिमालय से निकल कर प्रयाग के निकट गंगा में मिलती है।

पर्या०—काळंद्री, कीळा, क्रस्णा, जमभगनी, जमा यमि, रवजा, सूरजसुता, सूरिजिजा।

रू०भे०—जमण, जमणा, जमनि, जमनी, जमन्ना, जमुण, जमुणा, जमुना, जम्मण, जम्मणा, जम्मना, जम्मन्ना, जम्मुना।

३ दुर्गा।

जमनाभिद—देखो 'जमुनाभेदी' (रू.भे.)

जमनायण—सं०पु० [सं० यवन+रा.प्र. अयण] मुसलमान, म्लेच्छ।

उ०—धाधळ धारां ऊतरै, मोटी राड़ 'मुकन्न'। जूटो दळ जमनायणां, तूटी खागां तन्न।—रा.रू.

जमनाळू—सं०पु०—राठौड़ राव सीहा के वंश की एक उपशाखा।

जमनाह—सं०पु०यौ० [सं० यम+नाथ] यमराज।

जमनि, जमनी—१ देखो 'जमना' (रू.भे.) उ०—गंग-जमनि मधि मुकतिफळ, सतगुरु दिया बताय। मन लोभी लालच पड्या, तो सुख में रया समाय।—ह.पु.वा.

[यमन देश से] २ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर विशेष जिसकी गणना रत्नों में की जाती है (यह यमन देश से आता है)

जमनोतरी—सं०स्त्री० [सं० यमनोत्तरी] हिमालय में गढ़वाल के पास का एक पर्वत जहां से यमुना निकलती है।

जमन्ना—देखो 'जमना' (रू.भे.)

जमपास—सं०पु० [सं० यमपाश] यमराज का पाश, मृत्युबंधन।

जमपिता—सं०पु० [सं० यमपिता] सूर्य (अ.मा.)

जमपुर—सं०पु० [सं० यमपुर] १ यमलोक. २ नरक।

रू०भे०—जमपुरी।

जमपुरस्यांम—सं०पु०यौ० [सं० यमपुर स्वामी] यमराज (अ.मा.)

जमपुरी—देखो 'जमपुर' (रू.भे.)

जमप्पभ—सं०पु० [सं० यमप्रभ] यमदेवता का इस नाम का 'उत्पात' पर्वत (जैन)

जमबाहण—सं०पु०यौ० [सं० यम+वाहन] यम का वाहन, महिष, भैंसा। (डि.को.)

जमबीज—सं०स्त्री०यौ० [सं० यमद्वितीया] १ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की दूज, यमद्वितीया. २ कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया।

जमभगनी—सं०पु०यौ० [सं० यम+भगिनी] यमुना।

जमया—सं०स्त्री० [सं० यमया] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का नक्षत्र योग।

जमर—देखो 'जोहर' (रू.भे.)

जमरथ—सं०पु० [सं० यमरथ] भैंसा (डि.को.)

जमरांण, जमरांणो, जमराउ, जमराज—सं०पु० [सं० यमराज] १ मृत्यु-देवता यमराज, काल। उ०—१ आहेड़े जमरांण डांण मंडे दीहाड़ी। सर क्रम बध संधिवा चाप आवरदा चाड़ी।—ज.खि.

उ०—२ वनस्पति फुलपगर भरइं जमराउ, भइंसा रूपि पांणी वहइ।

—व.स.

पर्याय०—अंत, अंतक, अघडंडी, करमिख्यण, काळ, कालिंद्री-सोदर, कीनास, क्रतांत, क्रिताअंत, जच्छ, जज्राट, जम, जमनभ्रात, जमपुरस्यांम, जमुनानुज, डंडभ्रत, दंडधर, दवखण, धरमराज, धरमी, धिस्टदंड, धूमोरण, प्रांणहर, पितरपती, प्रेतपती, प्रेतराज, विस्वकसंहर, भव, महिखधुज, मारतंडसुत, मीच, मुंदर, म्रतकर, म्रतु, रवसुत, संक्रती, संजमनीपत, सउरी, सतक्रती, समण, समवरती, साधदेव, सीरण, सुमन, सूरसुत, हर, हरी।

रू०भे०—जमराव, जमरो, जम्मरांण।

२ भृगु ऋषि। उ०—१ महि मंडळ 'पदम' पै ओपिया मंडळी ओळगू अंतरै जिमी असमांण। रिख तणा ओण पाहार जेहीं रिदै, जवन जगदीस चै 'दलो' जमरांण।

—महाराजा दलपतसिंह रामसिंघोत रो गीत

३ योद्धा, वीर। उ०—जठै किरमाळ भठां जमरांण। भिडै गहलोतत थंभै रथ भांण।—सू.प्र.

जमराजपिता—सं०पु०यौ० [सं० यमराज+पिता]—सूर्य।

जमराव—देखो 'जमराज' (रू.भे.) उ०—कोपियां सिर घालण घाव कत्ती, भड़ धार चढ जमराव भत्ती।—गो.रू.

जमरूद—सं०पु०—एक प्रकार का लंबोतरा फल।

जमरूप-सं०पु०—कटार।

जमरौ—देखो 'जमरांण' (रू.भे.) उ०—चउरासी देव छ डउं देइं, छ रितु पुस्प पूरइं जमरा पांणी वहइ, सात समुद्र मांजणउं करइं। —व.स.

जमल, जमलउ-वि० [सं० यमल] १ युग्म, जोड़ा. २ दूसरा (अनेका.) उ०—मौहर लुघू दीरघ जमल, पायै ए परिग्रांण। सकौ कविंदां सांभळो, ससिछंदा सिहनांण।—पिं.प्र.

३ साथ। उ०—केतलाइ सुद्धा चारित्रियांनी अवग्यांनइं काजिइं जमलउ बाह्य क्रियाडंबर मांडइं।—षष्टिशतक प्रकरण

जमलजूयल-सं०पु०यौ० [सं० यमलयुगल] बराबर की जोड़ (जैन)।

जमलज्जुणभंजग-सं०पु० [सं० यमलार्जुनभंजक] श्रीकृष्ण का एक नाम। (जैन)

जमलपय-सं०पु० [सं० यमलपद] आठ-आठ का एक जत्था (जैन)

जमलां-क्रि०वि० [सं० यमल] एक साथ। उ०—हेलयां जई हरि जमलां रहियां। सरव समाचार संकेत कहियां।—प्राचीन फागु संग्रह

जमला-सं०स्त्री० [सं० यमला] एक प्रकार का हिक्का (हिचकी) रोग। (अमरत)

जमलारजुण-सं०पु०यौ० [सं० यमलार्जुन] गोकुल में स्थित दो अर्जुन वृक्ष जो पहले कुबेर के नलकूवर और मणिग्रीव नामक पुत्र थे, किन्तु नारद के शाप से ये वृक्ष हो गये थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।

जमलि, जमली, जमलु-वि० [सं० यमल] साथ, शामिल।

उ०—१ तिणइ दिवसि वेढि मांडिसइ, वीरमदेव प्रांण छाडिसइ। मस्तक तणउ अम्हारु नाह, जमली रही करावसु दाह।—कां.दे.प्र.

उ०—२ वेगलु हुइ ते न वीसरइ, जमलु मनथिउ न जाय। ते तुम्हनि सदा सांभरि, भगतिनु एह उपाय। —प्राचीन फागु संग्रह

जमलोइय-सं०पु० [सं० यमलौकिक] परमाधामी वगैरह यमलोक वासी देवता (जैन)

जमलोक-सं०पु०यौ० [सं० यमलोक] १ वह लोक जहां मरने के उपरांत मनुष्य जाते हैं, यमपुरी. २ नरक।

जमवांन -वि० युवा, जवान।

जमवार-सं०पु० [सं० यम+वेला] १ मृत्यु समय, अवसान काल। उ०—वसु आधार साधार खट ही वरन, जीप जमवार वैकुंठ जातां। आथ वरतार भुज दार दोहूंवै उमंग, वार जिण कही कव पार वातां। —जैसळमेर रै रावळ हरराज री गीत

२ जीवन। [सं० जन्म+वेला] उ०— कवसळ सुता राजकुमार, अवखी वखत सुजन अधार। सुसबद कियो तिण मत विसार, जिता जिके नर जमवार।—र.ज.प्र.

जमवारउ, जमवारौ—देखो 'जमारौ' (रू.भे.)

उ०—१ तो विन घड़ी न जाय, जमवारौ किम जावसी। बिलखतड़ी वीहाय, जोगण करग्यौ जेठवा।—जेठवा

उ०—२ नारायण री नांम ज्यां, नंह लीधौ निरणांह। वां जमवांरौ वोळियौ, ज्यूं जंगळ हिरणांह।—ह.र.

सं०पु०—२ यौवन। उ०—भणिज्यौ भांछळियाह, संदेसौ सयणी तणौ। जीवन जमवाराइ, रिध मांडे रहिस्यै नहीं। —सयणी री वात

३ मृत्युसमय, अवसानकाल।

जमवाहण-सं०पु०यौ० [सं० यम+वाहन] भैंसा (डि.को.)।

जमस-सं०पु०—यमराज। उ०—हड़हड़ै वीर वैताळ वागौ हकौ, घड़हड़ै आतसां पड़ै सहदां धकौ। जमस कम खाय खगधार वहतां जकौ, सरागत जोधपुर तणा वागै सकौ।—किसनौ आढ़ौ

जमसाद-सं०पु० [सं० यम+साद:] प्रिय की मृत्यु पर की जाने वाली करुणाभरी पुकार, रुदन। उ०—१ सुरमुख करै सनांन पंथ सुरपुर रै हाली, दियौ नहीं जमसाद खावंद संग कियौ 'खुसाळी'। —अरजुणजी बारहठ

उ०—२ प्रांणनाथ प्रांणांत देख जमसाद न दीन्हौ। —भगवांनजी रतनू

जमहंता-सं०स्त्री० [सं० यमहंतृ] काल का नाश करने वाला।

जमहनक-सं०पु०—वह घोड़ा जिसके पैर श्वेत हों और शरीर काला हो (अशुभ)—शा.हो.

जमहर—१ देखो 'जौहर' (रू.भे.)

उ०—१ गोहिल पिण तद जोर था। दिन चार सारीखी वेढ़ हुई। पछै गोहिलै जमहर करनै मैदांन आय वेढ़ हुई, तळाव वहवनसर रै आगोर तठै घणा गोहिल कांम आया; घणा तुरक कांम आया नै घोड़ा पाळा गया।—नैणसी

उ०—२ जइतलदे भावलदे ऊमादे, नइ कमलादे रांणी। जमहर तणी करइ सजाई, वात हीया मांहि आंणी।—कां.दे.प्र.

सं०पु० [सं० जन्म+हर] २ यमराज (नां.मा.)

सं०स्त्री०—३ चिता। उ०—अमरांणी लागै अबै, जणणी खारी जैर। राख हूंऊ जमहर चढ़ूं, जावूं खामंद लैर।—पा.प्र.

जमहार-सं०पु०—जवाहिरात। उ०—जमदढ़ खग जमहार, गज सिर फाड़ तुरंग (जै) धर गुज्जर।—सू.प्र.

जमांनत-सं०स्त्री० [अ० जमानत] वह उत्तरदायित्व जो कोई मनुष्य अपराधी को न्यायालय में उपस्थित होने अथवा किसी कर्जदार के कर्ज अदा करने या ऐसे ही किसी कार्य के लिये ले। जामिनी

जमांनतनांमौ-सं०पु०यौ० [अ० जमानत+फा० नामा] जमानत के प्रमाण-स्वरूप लिखा जाने वाला प्रमाण-पत्र।

जमांनती-सं०पु० [अ० जमानत + रा०प्र०ई] जमानत देने वाला, जामिन।

जमांनावाज, जमांनासाज-वि०यौ० [अ० ज़मान:+फा०बाज़,+साज] लोगों का रंग-ढग देख कर व्यवहार करने वाला, अपने स्वार्थ एवं मतलब के लिये समय-समय पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार करने वाला, दुनियासाज।

जमांनासाजी-संस्त्री० [अ० जमान:+फा० साज+रा०प्र०ई] अपने स्वार्थसाधन के लिए दूसरों को प्रसन्न रखने का कार्य।

जमांनो-संपु० [अ० जमान:] १ समय, काल, वक्त।

मुहा०—१ जमांना री-बहुत पुराना। २ जमांनो देखणो-खूब अनुभव होना।

२ फसल की अवस्था या पैदावार।

मुहा०—१ जमांनो पैड़णो (बैठणो)-फसल का मारा जाना, दुष्काल होना। जमांनो होणो-अच्छी फसल होना, सुकाल होना।

३ संसार, दुनिया।

मुहा०—जमांनो देखणो-खूब अनुभवी होना, दुनियां देखा हुआ होना।

यौ०—जमांनावाज, जमांनासाज, जमांनासाजी।

४ वर्ष, साल। उ०—प्रगट जमांनै पैमठै, लागो सांवण मास। पत नवकोटी पेखतां, असुरां छूटी आस।—रा.रू.

जमांरात—देखो 'जुमेरात' (रू.भे.)

उ०—'पातल' रा छळ जाग 'पतावत', 'अरसी' रा छळ आगैं। यळ जस रात जनमियो 'अमरा', जमांरात नह जागैं।

—महारांणा अमरसिंह री गीत

जमा-वि० [अ०] १ एकत्र, इकट्ठा।

मुहा०—कुल जमा-सब मिला कर, कुल, सब।

२ अमानत के तौर पर किसी के खाते में रक्खा गया।

संस्त्री० [अ०] १ मूलधन, पूंजी।

२ रुपया, धन।

मुहा०—जमा मारणी-अनुचित रूप से किसी का धन हस्तगत करना। बेईमानी से किसी का धन हजम कर जाना।

३ मालगुजारी, लगान।

यौ०—जमाबंदी।

४ योग, जोड़ (गणित)

५ वही या हिसाब-खाते आदि का वह भाग जिधर आए हुए धन या माल का विवरण दिया जाता हो।

यौ०—जमा-खरच।

[सं० यमुना] ६ यमुना (अ.मा., ह.नां.मा.)

[सं० याम्या] ७ दक्षिण दिशा (जैन)

८ यम लोकपाल की राजधानी (जैन)

संपु० [सं० यम] ९ यमराज। उ०—सठ मंडळ सोता हुवै, वक्ता कुकवि वणंत। भूंकण लागो भूंकवा, जांण जमा दीपंत।

—बां.दा.

जमाअत—देखो 'जमात' (रू.भे.)

जमाइ, जमाई-संपु० [सं० जामातृ] १ दामाद, जामाता।

उ०—१ केई जमाइ केई साळा, इसा पांती बैठा राजवी ढीचाळा।

—व.स.

उ०—२ वेग सिकंदर वचन सिवाई, जवन इनायत तणो जमाई।

—रा.रू.

रू०भे०—जम्माइ, जम्माई।

पर्या०—जंवाई, जामाता, दुखतरपत, दुहितापति, धीप, धीपत, पतदुत्तर।

२ इस नाम से गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक गीत।

३ जमाने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी।

जमाखरच-संपु०यौ० [फा०] आय और व्यय।

जमाखातर, जमाखातरी, जमाखातिर-संस्त्री० [अ० खातिरजमा] इतमिनान, खातिरजमा, तसल्ली। उ०—१ अठ दरबार कांनली तो थे जमाखातरी राखज्यो।—द.दा. उ०—२ हरदत्त कही था किसी लेखै री बात छै। थे जमाखातिर राखज्यो। जैसी अन्न खाय वैसी बुद्धी ऊपजै।—साह रांमदास री बात

रू०भे०—जमैंखातर, जमैंखातरी, जमैखातर।

जमाज-संपु० [सं० यमाद अथवा सं० यम+अज] ऊँट।

उ०—जरवफत भूल जमाज, सकळात मुखमल साज। सीसम्म कूंचिय सांम, करि दंत वेलिय कांम।—सू.प्र.

रू०भे०—जमाद।

जमाणो, जमावौ-क्रि०स०—१ ठंडक अथवा किसी अन्य तरीके से किसी द्रव पदार्थ को गाढा करना, किसी तरल पदार्थ को ठोस करना.

२ एक वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर दृढ़तापूर्वक बैठाना।

मुहा०—१ निजर जमाणी—दृष्टि को स्थिर कर के किसी ओर लगाना। किसी वस्तु पर नजर को अधिक देर ठहराना. २ मन में बात जमाणी—हृदय पर किसी बात को भली भाँति अंकित करना। मन पर किसी बात का पूरा प्रभाव डालना. ३ रंग जमाणो—प्रभाव दृढ़ करना, पूरा अधिकार करना।

३ एकत्र करना, इकट्ठा करना, —ज्यूं सभा जमाणी।

४ अच्छी चोट देना, प्रहार करना। उ०—तद खाड़ैती उणरै खांचने ढूंढ़ माथै डंडो जमायो।—वांणी

५ हाथ से संपन्न होने वाले किसी कार्य का अभ्यास करना, ज्यूं—लिखण में हाथ जमाणो। ६ बहुत से आदमियों के सामने किसी कार्य को उत्तमतापूर्वक करना, ज्यूं—खेल जमाणो, गाणो जमाणो, तमासो जमाणो। ७ किसी कार्य को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से करना, उत्तमतापूर्वक करना।

मुहा०—ठाठियो जमाणो—किसी कार्य को भली प्रकार प्रभावपूर्ण ढंग से करना।

८ किसी संस्था, कार्यालय या व्यवस्था को उत्तमतापूर्वक चलाना. ९ घोड़े को ठुमक-ठुमक कर चलाना. १० खाना, भक्षण करना, ज्यूं—खीर जमाणी। ११ प्रयोग करना, सेवन करना।

जमाणहार, हारो (हारी), जमाणियो—वि०।

जमायोड़ो—भू०का०कृ०।

जमाईजणो, जमाईजवो—कर्म वा०।

जमणो, जमवो—अक०रू०।

जनाड़णौ, जमाड़बौ, जमावणौ, जमावबौ—रू०भे० ।

जमात-सं०स्त्री० [अ० जमाअत] १ बहुत से आदमियों का गिरोह, जत्था । उ०—गाडियां ऊपरै भार भराई । वेलदार अर कहाड़ी वरदार जिकां री जमात दस हजार । जिके वनकटी करै अर मोरचा वणावै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ सेना, फौज । उ०—गई पुकारां जोधपुर, कूक गई अजमेर । सुणी इनायत असत खां, वणी जमात जु फेर ।—रा.रू.

३ संन्यासियों या साधुओं की मंडली । उ०—जिकौ धोकवा काज जावै जमातां । अपा पाप थावै वजै सिद्ध आतां ।—मे.म.

४ कक्षा, दर्जा ।

रू०भे०—जमातिय, जमायत, जम्मात ।

जमातदार—देखो 'जमादार' (रू.भे.) उ०—१ बादसाह रै पठांण वाकरखां चाकर रोकड़ हजार ड्योढ़ रौ असवारी रौ जमातदार सो वाद पायां नूं महिना नव हुवा ।—ठाकुर जैतसी री वारता

उ०—२ नबाब नूं औौर उण जमातदार नूं वातां सूं इतवार बंधायौ ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

जमातात-सं०पु० [सं० यमुना+तात] सूर्य्य (नां.मा.)

जमाति-सं०पु० [सं० जामातृ] १ जँवाई, दामाद ।

२ देखो 'जमात' (रू.भे.)

उ०—१ जरै उठाही सूं पीठवै भुवारौ भवन छोडि कोइक औघड़ अतीतां री जमाति रै साथ वेड़ी रै बळ खाडि लांघि ।—वं.भा.

उ०—२ जठै भड़ 'तेज' हणूंमत जाति । जुड़ै हरनाथ करूर जमाति ।—सू.प्र.

जमातिय—१ देखो 'जमात' (रू.भे.) २ देखो 'जमाती' (रू.भे.)।

उ०—जमातिय जोध जमातिय जांन, वजै सुर सिंधव राग विधांन ।—सू.प्र.

जमाती-वि०—जमात में रहने वाला ।

जमाद—देखो 'जमाज' (रू.भे.) (अ.मा.)

जमादार-सं०पु० [अ० जमाऽ+फा० दार] १ कुछ सिपाहियों या पहरेदारों का प्रधान । २ पुलिस का बड़ा सिपाही. ३ पहरेदार ।

रू०भे०—जमातदार ।

जमादारी-सं०स्त्री० [अ० जमाऽ+फा० दार+रा०प्र०ई] जमादार का पद या कार्य ।

जमापासां-सं०पु०यौ०—वही आदि का वह हिस्सा या कोष्ठक जिधर आये हुए व जमा होने वाले धन का विवरण लिखा जाता हो ।

जमा-पिता-सं०पु० [सं० यमुनापिता] सूर्य, भानु (अ.मा.)

जमाबंदी-सं०स्त्री०—१ कुछ व्यक्तियों की सम्मिलित रकम जो किसी एक व्यक्ति के पास जमा हो ।

२ पटवारी का एक कागज जिस पर आसामियों के नाम व लगान की रकम लिखी जाती है ।

जमाभेदण—देखो 'जमुनाभेदी' (रू.भे.) (नां.मा.)

जमामरद-सं०पु० [फा० जवांमर्द] वीर, बहादुर । उ०—पीछे मा'राज कांम आया तिण री पातसाहजी सूं औरंगाबाद मैं मालम हुई । तठै वडौ अपसोस कियौ अरु फुरमायौ कै वडा सचा निमकहलालिया था, अब मेरी पातसाही मैं ऐसा जमा-मरद बाकी रया नी कोई ।—द.दा.

रू०भे०—जमैमरद ।

जमायत—देखो 'जमात' (रू.भे.)

उ०—१ सौ ऊंठ बड़ा जमायत का तवेले में रहै ।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

उ०—२ इतने में आंण कूक घाली सो जमायतां उतावळ सूं चढी ।—कुंवरसी सांखला री वारता

जमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (ठंडक अथवा किसी अन्य तरीके से किसी द्रव पदार्थ को) गाढ़ा किया हुआ, ठोस किया हुआ, जमाया हुआ ।

२ (एक वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर) दृढ़तापूर्वक बैठाया हुआ ।

३ एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ।

४ चोट दिया हुआ, प्रहार किया हुआ ।

५ हाथ से सम्पन्न होने वाले किसी कार्य का अभ्यास किया हुआ ।

६ बहुत से आदमियों के सामने किसी कार्य को उत्तमतापूर्वक किया हुआ ।

७ किसी कार्य को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से किया हुआ, उत्तमतापूर्वक किया हुआ ।

८ किसी संस्था, कार्यालय या व्यवसाय को उत्तमतापूर्वक चलाया हुआ ।

९ घोड़े को ठुमक-ठुमक कर चलाया हुआ ।

१० भक्षण किया हुआ, खाया हुआ, सेवन किया हुआ, प्रयोग किया हुआ ।

(स्त्री० जमायोड़ी)

जमार, जमारइ, जमारउ—देखो 'जमारौ' (रू.भे.)

उ०—१ नहीं तो जांण-पिछांण जमार । नहीं तो साख सबंध संसार ।—ह.र.

उ०—२ झूरमझूरा करइ विमासइ, हवइ जमारइ आंणइ । जउ कान्हडदे नहीं छोडावइ, रह्या सही तुरकांणइ ।—का.दे.प्र.

उ०—३ घणाइ देवदेवता आराधी जमारउ सघळउ मिथ्यात्वनां सइ करीनइ मूआइ जि ।—षष्टिशतक प्रकरण

जमारात—देखो 'जुमेरात' (रू.भे.)

जमारि-सं०पु० [सं० यमारि] विष्णु ।

जमारीक-सं०पु०—जीवनधारी, प्राणी । उ०—हूं तौ निपट ऊंडौ, सांधणौ जमारीक भेळा रहण रौ प्यार करण मतू छूं ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

जमारौ-सं०पु० [सं०जन्म+कार, प्रा० जम्मआर अथवा जन्मवारक]

१ जीवन, जिन्दगी । उ०—१ जोवन दरब न खट्टिया, ज्यां परदेसां जाय । गमिया यूंहीं दीहड़ा, अहिल जमारौ जाय ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—२ जन जाय जमारो जीना री, नृत संभर मावत सीता री।
दिन नूं 'किसना' जगवंदण री नहचो रम कौसळनंदण री।

—र.ज.प्र.

२ आयु। उ०—जारो करतां जाय जमारो, फिर न विचारो धात।
बुधि थांरी री है बळिहारी, 'ऊमर' म्हारो आत।—ऊ.का.

३ जन्म। उ०—जद साहमी ऊठी कुंवरी, ततखिण आडो पगीयड़
धर्यो। बोनड़ बात कूंवरी घणी बीती छइ जमारा तणी।—कां.दे प्र.

रू०भे०—जमवारउ, जमवारो, जमार, जमारड़, जमारउ, जम्मारो।

जमालगोटी, जमालघोटी–सं०पु० [सं० जयपाल+गोटो] एक पौधे का बीज जो अत्यन्त रेचक होता है। २ दन्ती नामक पेड़ या फल।

जमालि–सं०पु० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजकुमार का नाम जो महावीर स्वामी के दामाद थे। इन्होंने महावीर स्वामी से ही प्रथम दीक्षा ली और बाद में एक नया पंथ चलाया (जैन)।

जमाव–सं०पु०—१ जमाने की क्रिया या भाव।

२ हुकूमत कायम करने का भाव, शासन जमाने का भाव।
उ०—पीछे भाई बीदेजी नूं द्रोणपुर पड़गनै सूबो अनायत कियो नै धरती मैं वडो जमाव कियो, अरु फतै कर कवरजी स्री वीकोजी बीकानेर पधारिया।—द.दा.

३ गोष्ठि (अफीम ?) उ०—अबै लाल कंवर अमलां रा जमाव मांडिया, गळियो गुलसरो, छूटो, अमल कियो।—जगदेव पंवार री वात

४ जमघट, भीड़। उ०—जोवत जोख जमाव, घणा नृत भेद घणी।
क्रीड़ति जांणि किसन्न, ब्रंदावन रास वणी।—सू.प्र.

५ दूध को जमाने के उद्देश्य से उसमें डाला जाने वाला खट्टा पदार्थ। मि० जांमण, (४)

६ उदर का विकार विशेष। (मि० चैठ, ३)

७ डेरा, पड़ाव।

रू०भे०—जमावट।

अल्पा०—जमावड़ो।

जमावड़ो—देखो 'जमाव' (अल्पा., रू.भे.) उ०—हरेक सभा-सोसाइटी तथा साहित्यिक जमावड़े में वं'रो लंबर सगळां सूं आगै रै'तो।

—वरसगांठ

जमावट—देखो 'जमाव' (रू.भे.)

जमावणियो–सं०पु०—दूध जमाने का मिट्टी का पात्र विशेष।

उ०—दवणा ठीवा दीप, तांवणी वहळ बिलोवण। धावण जमांवणियां, परातां पोळी पोवण।—दसदेव

जमावणी–वि० (स्त्री० जवावणी) जमाने वाला, दृढ़ करने वाला।

उ०—गनीम गइड़ गव्वतीय गव्भ को गमावणी। जहांन आंन मांन जोर सोर ते जमावणी।—ऊ.का.

जमावणो, जमाववो—देखो 'जमाणो, जमावो' (रू.भे.)

उ०—इस उज्जै तुम इहां, जग कर अमल जमावो। अवरन आवै इहां, आप पतिसाह कहावो।—सू.प्र.

जमावियोड़ो—देखो 'जमायोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जमावियोड़ी)

जमियत—देखो 'जमीयत' (रू.भे.) उ०—सो क्रिया यह जैसाह, रत्त नाख दहुवै राह। कम उतन जमियत काज, इह दाव में है आज।

—सू.प्र.

जमियोड़ो–भू०का०कृ०—१ (ठंडक अथवा किसी अन्य उपाय से किसी द्रव पदार्थ का) गाढ़ा हुवा हुआ, ठोस हुवा हुआ. २ एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर बैठा हुआ. ३ एकत्र हुवा हुआ, जमा हुवा हुआ. ४ अच्छी चोट पड़ा हुआ. ५ हाथ से किये जाने वाले किसी कार्य का पूरा-पूरा अभ्यास हुवा हुआ. ६ (मनुष्यों के समुदाय एवं जमघट के सामने किसी कार्य का) उत्तमता से हुवा हुआ. ७ (किसी कार्य का प्रभावपूर्ण ढंग से) संचालित हुवा हुआ. ८ (किसी संस्था या कार्यालय का) व्यवसाय चला हुआ. ९ ठुमक-ठुमक कर चला हुआ (घोड़ा) (स्त्री० जमियोड़ी)

जमीं—देखो 'जमीन' (रू.भे., नां.मा., डिं.को.)

जमींदार—देखो 'जमीदार' (रू.भे.) उ०—जमींदार हुय जमीं करजदारी में कळगी। ईजतदार अंधार गरजदारी में गळगी।—ऊ.का.

जमींरत—देखो 'जमीरत' (रू.भे.)

जमी–सं०स्त्री० [सं० यमी] १ यमुना नदी. २ देखो 'जमीन' (रू.भे., डिं.नां.मा.)

जमीकंद–सं०पु०यौ० [फा० ज़मीन+सं० कंद] सब शाकों में श्रेष्ठ माना जाने वाला एक प्रकार का कंद, सूरन।

जमीक, जमीकरवत–सं०पु०—ऊँट (ना.डिं.को.)

जमीत—देखो 'जमीयत' (रू.भे.) उ०—१ आवियो कमध अजीत, जुध काज साज जमीत। करि अवस देस कमंध, महि मेल दळ अनिमंध।—रा.रू. उ०—२ पातसाह रा डेरा हसंम रखत तखलूआं हूंता सु आंणि थांणे दाखिलो कीआ छै। अजमेर रा थांणा री जमीत कीजै छै।—रा.सा.सं.

जमीथंभ–सं०पु०यौ० [फा० जमीन+सं० स्तंभ] १ योद्धा, वीर.
२ राजा।

जमीदार–सं०पु० [फा० जमीदार] जमीन का मालिक, भूमि का स्वामी।

उ०—अवरकै तो छोडिया छै। जमीदारां की साख सूं हर अवरकै चूकस्यो तो मारहीज नांखस्युं।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रू०भे०—जमींदार।

जमीदारी–सं०स्त्री० [फा० ज़मीदारी] १ किसी जमीदार की जमीन.
२ जमीदार का हक।

जमीदोज, जमीदोट–वि० [फा० ज़मींदोज] जो तोड़-फोड़ कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो, नाश, ध्वंस।

जमीन–सं०स्त्री० [फा० ज़मीन] १ पृथ्वी, भूमि, धरती. २ पृथ्वी की ऊपरी सतह।

मुहा०—१ जमीन आसमान एक करणो—किसी कार्य के लिये बहुत

अधिक परिश्रम करना. २ जमीन आसमांन री फरक होणौ—बहुत अधिक फर्क होना. ३ जमीन चाटणी—नीचा देखना, इस प्रकार गिर पड़ना कि जमीन के साथ मुँह लग जाय. ४ जमीन पड़ियौ आसमांन चाटणौ—जमीन पर रह कर आसमान की बातें करना, बढ़-बढ़ कर बातें मारना, बहुत महत्वपूर्ण एवं कठिन कार्य करना. ५ जमीन माथै पग ही नी धरणौ—बहुत अभिमान करना, बहुत इतराना. ६ जमीन माथै पग ही न पड़णौ—बहुत गर्व होना. ७ जमीन में गड (समा) जाणौ—बहुत लज्जित होना. ८ पगां नीचै सूं जमीन खिसकणी—होस हवास जाता रहना, सन्नाटे में आना।

३ कपड़े, कागज आदि की ऊपरी सतह।

रू०भे०—जमीं, जमी, जम्मी।

जमी भरतार—सं०पु०यौ० [फा० ज़मीन+भर्तृ] राजा, पृथ्वीपति।

उ०—मुखां आंनूप मन मोह करणी माहा, यळा तरणी मुगध रूप रस अंत। रमा भरतार करतार कायम रहौ, **जमी भरतार** दातार जसवंत।—हुकमीचंद खिड़ियौ

जमीयत, जमीरत—सं०स्त्री० [अ०जमईयत] सेना, फौज।

उ०—१ पछै देवै आपरा भाईबंध तेड़नै ठोड वसी राखी। आपरी **जमीयत** राखी। धरती रस पड़ी।—नैणसी

उ०—२ **जमीरत** टूटियां पछै कोई आगै ही आरे न करसी और अठै हळखड़ हुय जासी।—गौड़ गोपाळदास री वारता

रू०भे०—जमियत, जमींरत, जमीत।

जमी-रौ-करोत—सं०पु०यौ०—ऊँट। उ०—जोजनां उनाळै घड़ी अड़ै आसमांन जातौ, जोयां घणा मोद मांनै सराहे जीहांन। **जमीरौ-करोत** जांगु पंछी हाल छेकै जिसौ, दुजा 'वाघ' जूंग ऐहौ तूं ही दै सुदांन।—अज्ञात

जमुण, जमुणा, जमुना—देखो 'जमना' (रू.भे.)

उ०—कबरी किरि गुंथित कुसुम करंबित, **जमुण** फेण पांवन्न जग। उतमंग किरि अंबर आधौ अधि, मांग समारि कुंआर मग।—वेलि.

जमुनानुज—सं०पु० [सं० यमुनानुज] यमुना का छोटा भाई, यमराज। (डि.को.)

जमुनाभेदी—सं०पु० [सं० यमुनाभेदी] श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम जिन्होंने हल से भेद कर यमुना के दो भेद किये।

(मि०—भेदजमा)

रू०भे०—जमनाभिद, जमाभेदण।

जमुर, जमुरक—सं०पु० [फा० जंबूरक] घोड़े या ऊँट पर रक्खी जाने वाली एक प्रकार की छोटी तोप। उ०—तुपक्कनि तोप **जमूर** जुलाल, परघ्घन सूल गदा भिंदिपाळ।—ला.रा.

रू०भे०—जमूरक, जमूरौ।

जमुरौ—सं०पु० [फा० जंबूर] घोड़ों के नाखून काटने का एक नालबंदी का औजार।

जमूरक, जमूरौ—देखो 'जमुरक' (रू.भे.)

जमैंखातर, जमैंखातरी—देखो 'जमाखातिर' (रू.भे.)

उ०—तरै कारीगर कह्यौ 'ऐ बीच थर हूसी' तरै राजा रै **जमैंखातरी** हुई।—नैणसी

जमेरात—देखो 'जुमेरात' (रू.भे.)

जमेरी—१ देखो 'जंवेरी' (रू.भे.)

२ मिश्री।

जमै—सं०स्त्री० [अ० जम्अ] १ धन, द्रव्य। उ०—और मतौ निस ऊपजै, ऊगै अवर प्रकार। जग हूंता लीजै **जमै**, समै विचार बिचार।
—रा.रू.

२ आय, आमद ?

उ०—बीजै दिन आजमखांन नवौनगर लूटियौ। पछै जांमवात कर मेळ कियौ। घोड़ा १० री **जमै** आगै की, सु वरसावरस द्यै।—नैणसी

जमैखातर—देखो 'जमाखातिर' (रू.भे.)

उ०—तरै जगमाल कह्यौ—**जमैखातर** राखौ, इणां नूं तोत कर मारस्यां।—नैणसी

जमैमरद—देखो 'जमामरद' (रू.भे.)

उ०—तोई झगड़ै री आसंग हुई नहीं। दळपत वडौ **जमैमरद** बाहादर देख्यौ।—द.दा.

जमौ—सं०पु०—महात्मा रामदेव तँवर के भजन व कीर्तन के हेतु किया जाने वाला जागरण।

रू०भे०—जम्मौ, जुम्मौ।

यौ०—जमो-जागण, जमो-जागरण।

जम्मंतर—देखो 'जनमंतर' (रू.भे., जैन)

जम्म—१ देखो 'जम' (रू.भे.)

उ०—१ पखालां भरै **जम्म** भैंसौ सम्राजै। सुरां राव सिक्को छिड़क्काव साजै।—सू.प्र.

उ०—२ अतरी वात कुण आंगमइ, कउण **जम्म** सरिसउ जुड़इ। बालावत वड दळ विकळ, कउण आंगिण बळि ऊहड़इ।—अ. वचनिका

२ देखो 'जंम' (रू.भे., जैन)

जम्मघंटा—सं०स्त्री०—१ चौसठ योगिनियों में से एक योगिनी।

उ०—देवी **जम्मघंटा** वदीजे जडंवा, देवी साकणी डाकणी रुद्र सव्वा
—देवि.

२ देखो 'जमघंट जोग' (रू.भे.)

जम्मण—१ देखो 'जमना' (रू.भे.)

उ०—दिल्ली साह विरत्ते, रणअगाघ **जम्मण** उपकंठे। 'रैणायर' रण मंडे, गौ दीवांण रांम खळ खंडे।—रा.रू.

जम्मणचरिय—सं०पु० [सं० जन्मचरित्र] जन्मचरित्र, जीवन-चरित्र। (जैन)

जम्मणभवण—सं०पु० [सं० जन्मभवन] प्रसूतिघर (जैन)

जम्मणा—देखो 'जमना' (रू.भे.) (जैन)

सं०पु० [सं० जन्म] २ जन्म, उत्पत्ति (जैन)

जम्मणी-सं०स्त्री०—देवी, शक्ति । उ०—देवी जम्मणी मत्त ग्राहूति जवाळा, देवी वाहनी मत्र नीला विमाळा ।—देवि.

जम्मदूती-सं०स्त्री०यौ० [सं० यम+दूती] यमदूती, दुर्गा, कालिका । उ०—देवी रागम धोमदे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्मदूती । —देवि.

जम्मना, जम्मन्ना—देखो 'जमना' (रू.भे.)

उ०—देवी सरसती जम्मनां सगी सिद्धा, देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा ।—देवि.

जम्मभूमि-सं०स्त्री० [सं० जन्मभूमि] जन्मभूमि, मातृभूमि (जैन)

जम्मरांण—देखो 'जमराज' (रू.भे.)

जम्मा-सं०स्त्री० [सं० याम्या] दक्षिण दिशा ।

जम्माइ, जम्माई—देखो 'जमाई' (रू.भे.)

उ०—'पेमा' परणाईह, डर हूंता सह जग दखै । 'जींदो' जम्माईह, जमरांणै हूंता जबर ।—पा प्र.

जम्मात—देखो 'जमात' (रू.भे.)

उ०—१ ग्ररवुदां तणा जम्मात ईस, सरदा जिम ग्रांणै घणा सीस । —वि.सं.

उ०—२ घटै सांमंद्रां हाथियां पाळी थाई । उभै जम्म री जांणि जम्मात ग्राई ।—सू.प्र.

जम्मारो—देखो 'जमारो' (रू.भे.)

उ०—जेठा घड़ी न जाय, जम्मारौ किम जावसी । विलखतड़ी वीहाय, जोगण करगौ जेठवा ।—जेठवा

जम्मी—देखो 'जमीन' (रू.भे.)

उ०—सातम निसा सरब्ब, 'ग्रभै' निस दिन ग्रसटम्मी । ग्रमासमां घण उडै, ज्वाळ गोळां नभ जम्मी ।—सू प्र.

जम्मुना—देखो 'जमुना' (रू.भे.)

उ०—लिया मार सिगार गोचार लीला, करै ग्राज रौ जम्मुना ग्रट्ट कीला ।—ना.द.

जम्मु—देखो 'जंम' (रू.भे.)

उ०—नवरस देसण वांणि, सवणंजळि जे नर पियहि । मणुय जम्मु संसारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ।—ऐ.जै.का.स.

जम्मो—देखो 'जमो' (रू.भे.)

जयंत-सं०पु० [सं०] १ एक रुद्र. २ इंद्र के एक पुत्र का नाम (ग्र.मा.) ३ संगीत में ध्रुवक जाति का एक ताल. ४ स्कंद, कार्त्तिकेय. ५ ग्रक्रूर के पिता का नाम. ६ विराट के यहां ग्रज्ञातवास करते समय भीम का नाम (महाभारत). ७ दशरथ का एक मंत्री. ८ एक पहाड़ी, जयंति का पर्वत. ९ यात्रा का एक योग (फलित ज्योतिष) १० जम्बुद्वीप के मुख्य चार द्वारों में से पश्चिम दिशा का द्वार (जैन) ११ एक जैन मुनि जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे (जैन) १२ एक देव विमान विशेष (जैन) १३ रुचक पर्वत का एक शिखर (जन) ।

जयंतपत्र-सं०पु०—ग्रश्वमेधीय घोड़े के ललाट पर बांधा जाने वाला जय-पत्र ।

जयंता-सं०स्त्री०—ध्वजा, पताका ।

जयती-सं०स्त्री० [सं०] १ विजय करने वाली, विजयिनी. २ ध्वजा, पताका. ३ दुर्गा. ४ पार्वती. ५ किसी महान पुरुष की जन्मतिथि पर किया जाने वाला उत्सव. ६ ज्योतिष का एक योग. ७ जन्माष्टमी. ८ जम्बुद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक कुमारी (जैन) ९ भगवान महावीर की एक उपासिका (जैन) १० सातवें जिनदेव की माता का नाम (जैन) ११ भगवान महावीर के ग्राठवें गणधर की माता का नाम (जैन) १२ प्रत्येक पक्ष की पन्द्रह रात्रियों में से नवमी रात्रि का नाम । (जैन)

जय-सं०स्त्री० [सं०] १ किसी विवाद ग्रथवा युद्ध में विपक्ष की हार, विरोधियों पर प्राप्त विजय, जीत ।

वि०वि०—विजय के ग्रतिरिक्त इस शब्द का प्रयोग देवताग्रों या महात्माग्रों की ग्रभिवंदना सूचित करने के लिए भी होता है, यथा—जयइकलिंगजी, जयचांमुंडा री, जयचारभुजा री, जयवापूजी, जयमाताजी, जयरांमजी, जयरांमदेवजी, जयश्रीजी री आदि ।

सं०पु०—२ बृहस्पति के प्रोष्ठ पद नामक छठे युग का तीसरा वर्ष (ज्योतिष) ३ महाभारत ग्रंथ का नाम. ४ विराट के यहां ग्रज्ञातवास में निवास करते हुए युधिष्ठिर का एक नाम. ५ विश्वामित्र का एक पुत्र. ६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र. ७ दक्षिण की ग्रोर दरवाजे वाला मकान. ८ सूर्य. ९ इंद्र । १० ग्रर्जुन (ग्र.मा.) ११ छप्पय छंद का एक भेद. १२ संसार (जैन)

[सं० यत्न] १३ यत्न, कोशिश (जैन)

जयकंकण-सं०पु० [सं०] प्राचीन काल में वीर पुरुषों को युद्ध में विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में प्रदान किया जाने वाला सोने का कङ्कण ।

जयकरणसत्र-सं०पु०—वीर ग्रर्जुन (ग्र.मा.)

जयकार, जयकारो-सं०पु०—१ जयध्वनि, जय-जय की ध्वनि ।

उ०—१ वहैल वीरमदेव नूं मारि तिणारौ तुरंग चांमुंड चढियौ, ग्रर बैताळ वीरां जठी-तठी जयकार पढ़ियौ ।—वं.भा.

उ०—२ नव लोकांतिक देवता, जस जंपै जयकारौ जी ।—स.कु.

२ देखो 'जैजैकार' (रू.भे.)

जयगोपाळ-सं०पु०यौ०—ग्रापस में किया जाने वाला एक-दूसरे का ग्रभिवादन ।

जयघोस-सं०पु० [सं० जयघोष] १ एक मुनि का नाम (जैन) २ जयध्वनि (जैन)

जयजयकार, जयजयकारु, जयज्जयकार—देखो 'जै-जैकार' (रू.भे.)

उ०—१ मारी मलेच्छ पडंतउ दीठउ, वतइ वखांणिउ खांनि । जयजयकार हूउ सरग पुरि, वइसी गयउ विमांनि ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ ग्रसुर विणासी किउ उपगारु । इंद्रि लोकि हूउ जय-

जयकार।—पं.पं.च. उ०—३ सत्रां महिपति करंत संघार धडां पग दे खग वाहत धार। करे नृप वीर जयज्जयकार हुकां करि जांणि रमै होळियार।—सू.प्र.

जयण–सं०पु० [सं० यजन] १ याग, पूजा (जैन) २ अभयदान (जैन)
[सं० जयन] ३ जीत, विजय (जैन)
[सं० यतन] ४ प्राणी की रक्षा (जैन) ५ यत्न, उद्योग (जैन)
वि० [सं० जवन] १ वेग वाला, वेग युक्त (जैन)
[सं० जयन] २ जीतने वाला (जैन)

जयणट्ठ–क्रि०वि० [सं० यतनार्थं] जीव-रक्षार्थ।

जयणा–सं०स्त्री० [सं० यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश. २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (जैन) ३ किसी जीव को दुःख न हो इस प्रकार प्रकृति करने का ख्याल (जैन)

जयणावरणिज्ज–सं०पु० [सं० यत्नावरणीय] जहाँ पर प्रयत्न या उद्यम में विघ्न पड़े इस प्रकार के कर्म की एक प्रकृति (जैन)

जयत–सं०स्त्री०—१ 'जय हो' की ध्वनि, जयध्वनि. २ जय, विजय।

जयतवादी—देखो 'जैतवादी' (रू.भे.)

जयतसिरी—देखो 'जयस्री' (रू.भे.) उ०—तेज पुंज जिम से भंइरवी, जुग प्रधांन गुरु पेखउ भवि सबहि ठउर वरी जयतसिरी।
—ऐ.जै. का.सं.

जयती–सं०स्त्री० [सं० जयन्ति] ध्वजा, पताका (ह.नां.)

जयद्दह, जयद्रत्थ, जयद्रथ, जयद्रथि, जयद्रथु, जयद्रथ्थ–सं०पु० [सं० जयद्रथ] दुर्योधन का बहनोई तथा सिंधु देश का एक राजा जो महाभारत के युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया था।
उ०—१ सकुनि दुसासणु जयद्रथु पुत्रु। गरूउ भूरिस्रवा भगदत्तु।
— पं.पं.च
उ०—२ किधौ इभ कुंभ वकोदर हत्थ, किधौ जयद्रथ्थहि पै पण पत्थ।
रू०भे०—जदरथ। —ला.रा.

जयध्वज–सं०पु० [सं०] जय पताका, जयंती।

जयनी–सं०स्त्री० [सं०] इंद्र की कन्या।

जयनेर–सं०पु०—जयपुर नगर (वं.भा.)

जयपत्तु—देखो 'जयपत्र' (रू.भे.)
उ०—अत्थाणु पहुविरायह तणउ। जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ।
—ऐ.जै.का.सं.

जयपत्र–सं०पु० [सं०] १ पराजय के प्रमाण में पराजित पुरुष द्वारा विजयी को लिखा जाने वाला पत्र। २ अश्वमेध यज्ञ में छोड़े गये घोड़े के ललाट पर बंधो पत्र।
रू०भे०—जयपत्तु।

जयपाळ–सं०पु० [सं० जयपाल] १ जमालगोटा. २ विष्णु. ३ राजा।

जयप्रिय–सं०पु० [सं०] ताल के प्रमुख साठ भेदों में से एक भेद।

जयमंगळ–सं०पु० [सं० जयमंगल] १ राजा का वह हाथी जिस पर वह विजय प्राप्त करने के बाद बैठ कर निकले। २ ताल के साठ भेदों में से एक भेद। ३ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा जिसके हृदय, खुर, मुख, अंडकोश और पूंछ सफेद हो (शा.हो.)

जयमल्लार–[सं०] सं०पु०—संपूर्ण जाति का एक राग।

जयमाताजी–सं०स्त्री०यौ०—शाक्त लोगों द्वारा एक दूसरे को किया जाने वाला अभिवादन।

जयमाळ, जयमाळा–सं०स्त्री०यौ० [सं० जयमाला] १ विजयी पुरुष को पहनाई जाने वाली माला। २ स्वयंवर में कन्या द्वारा वरे हुए पुरुष के गले में डाली जाने वाली माला।

जयरांमजी–सं०स्त्री०—हिन्दुओं में एक दूसरे को परस्पर किया जाने वाला अभिवादन।

जयलक्ष्मी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रू.भे.)

जयवंत–वि० [सं० जयवत्] विजयी।
सं०पु०—राठौड़ वंश की १३ प्रमुख शाखाओं में से एक (सू.प्र.)

जयसंधि–सं०पु० [सं० जयसन्धि] पुंडरीक राजा के मंत्री का नाम (जैन)

जयसद्द–सं०पु० [सं० जयशब्द] विजयसूचक ध्वनि।

जयस्तंभ–सं०पु० [सं०] अपनी विजय के स्मारकस्वरूप किसी राजा द्वारा बनवाया जाने वाला स्तंभ।

जयस्री–सं०स्त्री० [सं० जयश्री] १ विजयलक्ष्मी, विजय. २ संध्या समय गाई जाने वाली एक रागिनी (संगीत) ३ ताल के साठ भेदों में से एक।
रू०भे०—जयतसिरी।

जयहाथ–सं०पु० [सं० जयहस्त] अर्जुन (अ.मा.)

जयहार–सं०पु०—विजयमाला।

जया–सं०स्त्री० [सं०] १ दुर्गा. २ पार्वती. ३ हरी दूब. ४ हरड़ (नां.मा., अ.मा.) ५ दुर्गा की एक सहचरी. ६ ध्वजा, पताका. ७ किसी पक्ष की तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (ज्योतिष) ८ सोलह मातृकाओं में से एक. ९ माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी. १० भांग. ११ यमुना नदी (एका.) १२ बारहवां तीर्थंकर वासुपुज्य की माता का नाम (जैन). १३ चौथे चक्रवर्ती की मुख्य स्त्री (जैन). १४ एक प्रकार की मिठाई (जैन)
वि०—विजय दिलाने वाली।
क्रि०वि० [सं० यदा] जब, जिस वक्त। (जैन)

जयादित्य–सं०पु० [सं०] कश्मीर का एक प्राचीन राजा।

जयानीक–सं०पु० [सं०] १ द्रुपद राजा का एक पुत्र।
२ राजा विराट का एक भाई।

जयार–सर्व०—जिनका।
क्रि०वि०—१ जब। उ०—जोधांणै 'अजण' नूं, थाट वगसण कथ थापै। 'जैसाह' नूं जयार, उतन आंबेर न आपै।—सू.प्र.
२ तक, पर्यन्त। उ०—अति घरै धक अणभंग जोधार मंडण जंग। जोजनां तीन जयार, वणि हले दळ विसतार।—सू.प्र.

जयारमयार–सं०पु० [सं० जकारमकार] जकार मकार रूप अपशब्द (जैन)

जयावती सं०स्त्री० [सं०] १ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम। २ एक रागिनी (संगीत)

जयी-सं०पु० [सं० ययी] १ शिव. २ घोड़ा. ३ मार्ग, रास्ता।

जयु-सं०पु० [सं० ययु] अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

जयेत-सं०पु० [सं०] षाडव जाति की एक राग का नाम (संगीत)

जयेतगौरी-सं०स्त्री० यौ० [सं०] जयेत और गौरी के मेल से बनने वाली एक संकर रागिनी (संगीत)

जयोड़ौ—देखो 'जायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जयोड़ी)

जयौ-सं०पु०—'जय हो !' का अभिवादन। उ०—श्रीनिध आगमसारं, वारिज नयणां च ज्यांनकी वल्लभ। अखिल जगत आधारं, सारगधरण जयौ अवधेस।—र.रू.

जरंत-सं०पु०—महिष, भैंसा।—डि.को.

जरंद-सं०पु०—१ प्रहार. २ प्रहार या गिरने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

जरंदौ-वि०—हजम करने वाला।

सं०पु०—१ एक ध्वनि विशेष. २ दुमाला।

उ०—कह्यौ-घर-घर भीख मतां मांगे। एकै ठाकुर कन्हां सवा-सवा क्रोड़ रा जरंदा ले आवै, तौ तो-नूं वरूं।—सयणी री वात

३ उपभोग करने का भाव।

जर-सं०स्त्री०—१ चम्मच के आकार का किन्तु चम्मच से अधिक गहरा व बड़ा छेददार छानने का एक उपकरण।

अल्पा०—जरियौ।

[फा०] २ धन, दौलत, संपत्ति। उ०—जंतर जर हरणूं अभ्यंतर जड़ियौ। पीतम प्यारी नै परहरणूं पड़ियौ।—ऊ.का.

[सं० जरा] ३ वृद्धावस्था।

[सं० जरायु] ४ वह झिल्ली जिसमें गर्भस्थ बालक रहता और पुष्ट होता है। आंवल।

सं०पु० [सं०] ५ सोना, स्वर्ण। उ०—१ सुरख जंगाळी सांवळी, सांवळी जीकूं करण जंजाळ। चौथी जर री चमकती, भळकै बिंदली भाळ।—अज्ञात उ०—२ जर तार चिगां साइवांन जास। परगटे जांण वहु रवि प्रकास।—सू.प्र.

६ लोहे का मुरचा (अलवर)

[सं० ज्वर] ७ बुखार (जैन)

जरई-सं०स्त्री०—अंकुर निकले हुए धान आदि के बीज।

जरक-सं०स्त्री०—१ मोच, चोट, खरोंच, घाव आदि. २ प्रहार या प्रहार की ध्वनि। उ०—१ जमी पुड़ थरहरै उडै रुकां जरक, देख क्रपणां थरक पीठ दीधी।—रावत गुलाबसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—२ संफळै लड़ै भड़ असुर सुर, जड़ै सेल खागां जरक। कौतक्क जेण देखै कळह, ऊभौ रथ थांभै अरक।—सू.प्र.

३ देखो 'जरख' (रू.भे.) ४ सोने के टुकड़े, स्वर्ण-खंड।

उ०—३ अंतक तक भड़ भचक इक-इक, पड़ि जरक मुद गरक पासक।—सू.प्र.

रू०भे०—जरक्क।

(अल्पा.)—जरकौ

जरकणौ, जरकबौ-क्रि०अ०—१ गिरना। उ०—धकै जीह चुकै कंध कायरां ओद्रकै धोक, जरकै बरकै जमी धरकै जंजीर। रणंकै वरणी भेर धधकै ऐराक राग, हूचकै गनीमां हुत दूसरौ हमीर।

—पहाड़खां आढ़ौ

जरकस, जरकसिया, जरकसी, जरकसौ, जरकस्स-वि०—(वह वस्त्र) जिस पर सोने के तार वगैरह लगे हुए हों।

उ०—१ अदभुत लसै छब गवर अंग, पदमणि कोमळ चंपक प्रसंग। ढुलड्यां रमै संग सखी हूल, दमकंत अंग जरकस दकूल।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ इसौ ही पीलसोतां रौ चांदणौ इसी ही जरकसिया पोसाक।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ तुरी च्यार पोसाक जरकसी रकमां जवाहरात री जड़ाऊ आंण मेल्ही।—महाराजा जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

उ०—३ साहब नौबत सुद्रब, वसन जरकस्स जवाहर। रतन जड़त सिरपेच, माळ मुगताहळ सुंदर।—रा.रू.

जरकाणौ, जरकाबौ-क्रि०स०—१ मारना-पीटना. २ अधिक भोजन करना, अधिक खाना।

जरकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मारा पीटा हुआ. २ अधिक खाया हुआ। (स्त्री० जरकायोड़ी)

जरकावणौ, जरकावबौ—देखो 'जरकाणौ' (रू.भे.)

उ०—देख कांम हे जमदूतां सूं जूतां सूं जरकावै। अवधूतां रै सरणै आपद छूतां ही छुट जावै।—ऊ.का.

जरकावियोड़ौ-भू०का०कृ०—देखो 'जरकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जरकावियोड़ी)

जरकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गिरने से चोट खाया हुआ, गिरा हुआ. जोर से बोला हुआ (स्त्री० जरकियोड़ी)

जरकी-वि०—कायर, डरपोक।

जरकौ—देखो 'जरक' (अल्पा., रू.भे.)

जरक्क—देखो 'जरक' (रू.भे.) उ०—तरस लखौ 'पातल' तणौ, आयौ कमे अरक्क। भड़ां समेळा भाइयां, जवनां दिया जरक्क।—रा.रू.

जरख-सं०पु० [सं० जरक्ष] लकड़बग्घा। उ०—कुत्ते दीठौ करक जरख दिस खुर रुख खांची। ढोल पड़ियौ ढोर कागलां दीठी कांची।

—ऊ.का.

पर्या०—तरच्छु, डाकण-वाहण, अगडचण।

रू०भे०—जरख्ख।

जरखवाहणी-सं०स्त्री०—लकड़बग्घे की सवारी करने वाली डाकिनी, प्रेतनी, चुड़ैल आदि।

जरखेज-वि० [फा०] उपजाऊ, उर्वरा।

जरख्ख—देखो 'जरख' (रू.भे.)

जरग्ग–वि० [सं० जरत्क] १ जीर्ण, पुराना (जैन) २ देखो 'जरग्गव' (रू.भे.) (जैन)

जरग्गव–सं०पु० [सं० जरद्गव] १ लकड़बग्घा (जैन) २ बूढ़ा, बैल (जैन)

जरघर–सं०पु० [फा० ज़र+सं० गृह] स्वर्णकार, सुनार।

जरड़–सं०स्त्री० [अनु०] १ वस्त्र के फटने या चिरने की ध्वनि विशेष. २ देखो 'जरड़ौ' (मह., रू.भे.)

जरड़ौ–सं०पु०—छेद, सूराख।

जरजर–वि० [सं० जर्जर] १ जीर्ण. २ टूटा-फूटा, खंडित. ३ वृद्ध।

जरजराना–सं०स्त्री०यौ० [सं० जर्ज्जरानना] कार्तिकेय की एक अनुचरी मातृका का नाम।

जरजरित–वि० [सं० जर्ज्जरित] १ टूटा-फूटा, खण्डित. २ पुराना, जीर्ण।

जरजरी–सं०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण।

जरजीत–सं०पु० [सं० जराजित] कामदेव (अ.मा.)

जरठ, जरढ़–वि० [सं० जरठ] १ जीर्ण, पुराना. २ वृद्ध, बुड्ढा. ३ कर्कश. ४ कठिन।

जरण–सं०पु० [सं०] १ वृद्धावस्था, जरा।
[सं०] २ दस तरह के ग्रहणों में से एक. ३ सहिष्णुता. ४ चन्द्रमा (डि.को.)
वि०—१ हजम करने वाला, पचाने वाला. २ वृद्ध।

जरणा–सं०स्त्री० [सं०] १ सहनशक्ति, सहनशीलता, क्षमा। उ०—केहिक होवै तौ सुकीरिति करिया। जरणा रै वातां सह जरिया।—पी.ग्र.
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
२ वृद्धावस्था

जरणी–सं०स्त्री०—१ वृद्धा. २ देवी, दुर्गा. ३ माता।
उ०—बांधोड़ी कमरां ओ भाभोसा मत खोलो, लाजै म्हारी **जरणी** री दूध ए।—लो.गी.

जरणेल, जरणैल—देखो 'जनरल' (रू.भे.) उ०—अंगरेज येम **जरणैल** साव, आयो अचंक रुद्धयो नवाव।—ला.रा.

जरणौ, जरबौ–क्रि०स०—१ हजम होना, पचना। उ०—१ गुठा जीमता गटक, अंब नहिं भावै वांनै। राव अरोगतां रटक, जरै नह सीरौ ज्यांनै।—जुगतीदांन देथौ
उ०—२ दास मीरां साच प्रगटचो, उदै भये अंकूर। जहर प्याला अमी जरिया, प्रगट पीना पूर।—भगतमाळ
उ०—३ कहे रण-धीर भग जाय पात खरकाते, उदर गंभीर बात तनक जरै नहीं।—र.रू.
२ सहन होना। उ०—१ तिणसूं घरै किसै मूंढै जावूं, म्हारी परणी लहुड़ा भाई री अंतेवर कहावे, तिणसूं ओ सबद मोनैं जरै नहीं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
उ०—२ जरणा रख धेस प्रता। जरतौ फिट ग्रीधड़ मात लियां फिरतौ।—पा.प्र.
३ जलना, भस्म होना। उ०—जीतै रण पं'ला जर, सुरपुर वसण समीह। किम सेवा वणसी कहौ, दासी विण चउ दीह।—वं.भा.
४ लोहे के मुरचा (जंग) लगना। उ०—खेड़ी री जरियोड़ी कर में खाग, फाटोड़ी मखमल रा दळ में फस रही।—किसोरसिंह वारहठ
५ (हिन्दुवानी फल का) परिपक्व होना।
६ संहार करना। उ०—जे सुध हरणाकुस नूं जरियौ, धड़ नाहर मांनव चौधरियौ।—र.ज.प्र.

जरत–वि० [सं० जरत्] १ पुराना, प्राचीन. २ वृद्ध। उ०—सुजि जळ पियै **जरत** विण सूरति। मगर पचीस हुवै दिव मूरति।—सू.प्र.

जरतार–वि० [फा०] जरी का काम किया हुआ, सलमे-सितारे का काम किया हुआ। उ०—१ **जरतार** बुकांनिय बंध जड़ी। चख सोनहरी छकड़ाळ चड़ी।—पा.प्र.
उ०—२ मौजां कड़ां मूंदड़ां गजां गांमां तोखारां। पंच ठांम अंबरां जरी जांमां **जरतारां**।—रा.रू.

जरताव—देखो 'जरतार'। (रू.भे.)
उ०—नक्केल सुरंग नराट, पचरंग डोरिय पाट। तक्खी स रंग महताव, **जरताव** पंख जुगाव।—सू.प्र.

जरद–सं०पु०—१ कवच। उ०—१ जजरंग घाट तूटै **जरद**, झाट पड़ै झड़ औझड़ां। दळ खोद बढ़ै हूंकळ दिली, धोकळ कीधौ धूहड़ां।—सू.प्र.
उ०—२ फोड़इ पक्खर **जरद** अणीसर तीरइ तीर पडंति। नासंतां एक नर मारीजइ परदळ इम विनडति।—विद्याविलास पवाड़उ
रू०भे०—जरदाउळि, जरदाळ, जरदाळि, जरदाळौ, जरद्द।
२ पीला रंग। उ०—सुण भंवरा भंवरी कहै, **जरद** पीठ पर क्यूंह। बरछी लाग्यां प्रेम री, हळदी लागी ज्यूंह।—र.रा.
वि०—पीला। उ०—केसर कौ रंग **जरद** है, चूने कौ रंग सेत। दोनूं मिळ लाली करै, ऐसौ राखौ हेत।—अज्ञात
रू०भे०—जरद्द।

जरदगव–सं०पु० [सं० जरद्गव] १ एक वीथि जिसमें विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र हैं (ज्योतिष) २ देखो 'जरग्गव' (रू.भे.)

जरदपोस, जरदबंध–सं०पु०यौ० [रा० जरद+फा० पोस, रा० जरद+सं० बंध] कवचधारी योद्धा। उ०—१ अै कहै 'सूर' दारण इता, **जरदपोस** सेलां जड़ां। वरियांम मुहर सिर विलंद हूं, रमां डंडेहड़ रूकड़ां।—सू.प्र.
उ०—२ भूप चंदोल ठहै भारांथै। सोळ हजार **जरदबंध** साथै।—सू.प्र.

जरदाउळि, जरदाळ, जरदाळि–सं०पु०—१ कवच। उ०—१ राठउड़ां हाथे रिम्मराह, संघरइ मोर सहिता सनाह। **जरदाउळि** फूटइ सेल जीह, अरि उरे अणी ठेलइ अवीह—रा.ज.सी.
उ०—२ **जरदाळ** होवै दोय टूक जिता। कवि 'मोड' वखांणत हाथ किता।—पा.प्र.

२ कवचधारी योद्धा । उ०—१ वहै मग साबद्ध तांत विनांण । कढै जरदांण जुवांण केकांण ।—सू.प्र.

उ०—२ जरदाळ तुरंग वणाव जुम्रो । हय मोर परै असवार हुवौ ।
—पा.प्र.

वि०—तम्बाकू का व्यसनी ।

रू०भे०—जरदाळी, जरद्दाळ ।

जरदाळू–सं०पु०—१ खूबानी नामक मेवा. २ देखो 'जरदाळी' (रू.भे.)

जरदाळी—देखो 'जरदाळ' (रू.भे.) उ०—१ कांमणियां तणै तांणियै कसणै, मोहै दूजां तणा मण, 'राजड़' रांण रहै रळियावत, कसियां जरदाळै कसण ।—जोगीदास कवियौ

उ०—२ बिहुं कूरमां साथ विरदाळा । जोध हजार वीस जरदाळा ।
—सू प्र.

जरदी–सं०स्त्री०—१ पीलापन । उ०—हरदी जरदी ना तजै, खट रस तजै न आंम । असली गुण कूं ना तजै, गुण कूं तजै गुलांम ।
—अज्ञात

२ अंडे के भीतर का पीला भाग ।

जरदुस्त–सं०पु० [फा०] पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता जो ईसा से ६०० वर्ष पूर्व फारस में हुआ था ।

जरदैत–सं०पु०—कवचधारी योद्धा । उ०—१ घण घाय घुटै, जरदैत जुटै । रिण रीठ वगै, खिर धार खगै ।—रा.रू.

उ०—२ जुध सिर कर ग्रहि ग्रहि जरदैतां । वह गज धुजां सूर विरदैतां ।—सू.प्र.

रू०भे०—जरदौत ।

जरदोज–सं०पु० [फा०] कपड़ों पर कलावत्तू या सलमे आदि का काम करने वाला ।

जरदोजी–सं०पु० [फा०] एक प्रकार की दस्तकारी जो कपड़ों पर सुनहले कलावत्तू या सलमे आदि से की जाती है ।

जरदौ–सं०पु० [फा० जरदा] १ चावलों का बनाया हुआ एक प्रकार का व्यंजन. २ चावलों में हल्दी डाल कर मांस के साथ पकाया जाने वाला एक व्यंजन. ३ खाने की सुगंधित सुरती जो विशेष क्रिया से बनाई जाती है. ४ पत्तेदार तम्बाकू ।

[रा०] ५ कवच (मि. जरद) ६ पीले रंग का एक विशेष घोड़ा (शा.हो.) ।

जरदौत—देखो 'जरदैत' (रू.भे.) उ०—दुवै दुवै फट हुवै जरदौत, कासि करि तापस लेत करौत ।—सू.प्र.

जरद्द—देखो 'जरद' (रू.भे.) उ०—१ छकड़ी जरद्द सउ अंगि छाइ, रोपियउ टोप सिरि जइत राइ ।—रा.ज.सी.

उ०—२ चढ़या खांन दोरा वरच्छी घुमावै, फुलै अंग ये तौ जरद्दं न मावै ।—ला.रा.

जरद्दाळ—देखो 'जरदाळ' (रू.भे.) उ०—जोवारां तोखारा व्है दवा सूं भेळा जरद्दाळां । दवा सूं कराळा नाद वाजिया दुजीह, कड़े चढ़े भड़ां फौजां दवा सूं देठाळां कीधा । ग्रामां सांमां फीलां झंडा फाबिया ग्रबीह ।—चावंडदांन महडू

जनरल—१ देखो 'जरनल' (रू.भे.) २ मासिक पत्र ।

जरब–सं०स्त्री० [अ० जर्ब] १ आघात, चोट. २ जंगल, वन ।

उ०—रुवां में वडा रौ इसी पुळ में जनम हुम्रो जे जरब में आग लागै, वनस्पती जळै ।—डाढ़ाळा सूर री वात

३ तबले, मृदंग आदि पर थाप ।

[रा०] ४ जूता ।

जरबफत, जरबफ्त–सं०पु० [फा० ज़रबफ़्त] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसकी बुनावट में कलाबत्तू देकर कुछ बेल-बूंटे बनाये जाते हैं, सोने-चांदी के तारों से बुना कपड़ा । उ०—जरबफत झूल जमाज सकळात मुखमल साज । सीसम्म कूंचिय सांम, करि दंत वेलिय कांम ।
—सू.प्र.

जरबाफ–सं०पु० [फा० ज़रबाफ] १ सोने के तारों से सलमे आदि का कार्य करने वाला. २ वह कपड़ा जिस पर जरबफ्त का काम बना हो । उ०—गाजी वहादर ताजक नीलक तार, जरबाफ, वादले, आसावरी, विलाती, हजारी, कपड़ै रा पहरणहार ।—रा.सा.सं.

जरबाफी–सं०पु० [फा० ज़रबाफी] जिस पर जरबाफ का काम किया हुआ हो ।

जरबै–क्रि०वि०—बलात्, जबरदस्ती । उ०—टणका-टणका तरु जरबे टुरि जावै, दुरब्बा गुरब्बा गुण गरबै दुर जावै ।—ऊ.का.

जरबौ–सं०पु०—जूती, उपानह । उ०—गुरु गुंगा गेला गुरू, गुरु गिंडकां रा मैल । रूंम-रूंम में यूं रमै ज्यूं, जरबां में तेल ।—ऊ.का.

जरमन–सं०स्त्री०—जर्मनी देश की भाषा या वहां का निवासी ।

वि०—जरमन देश का ।

जरमन सिलवर–सं०स्त्री०यौ० [अं०] जस्ते, तांबे और निकल के संयोग से बनने वाली एक चमकीली व सफेद धातु ।

जरमनी–सं०स्त्री० [अं०] यूरोप का एक प्रसिद्ध देश ।

जरमी–सं०स्त्री०—जमीन, धरती । उ०—भायां वंस कासूं तौ जरमी को लोभ दायौ । सारौ देसवास्यां भी अर्च नूं जोरि पायौ ।—शि.वं.

जरय–सं०पु० [सं० जरक] पहली नरक के मेरु से दक्षिण तरफ का एक नरक वास (जैन)

जरयमज्झ–सं०पु० [सं० जरकमध्य] पहली नरक के उत्तर दिशा की तरफ का एक नरक वास (जैन)

जरयावत्त–सं०पु० [सं० जरकावर्त] पहली नरक के पश्चिम दिशा की ओर का एक बड़ा नरक वास (जैन)

जरयावसिट्ठ–सं०पु० [सं० जरकावशिष्ट] पहली नरक के दक्षिण दिशा की ओर का एक बड़ा नरक वास (जैन)

जररार–वि० [अ० जर्रार] बहादुर, वीर ।

जररारी–सं०स्त्री० [अ० जर्रार+रा०प्र०ई] बहादुरी ।

जरराही–सं०स्त्री० [अ० जर्राही] शल्य चिकित्सा ।

रू०भे०—जराह ।

जररी—सं०पु० [अ० जर्राह] चीर-फाड़ करने वाला चिकित्सक, शल्य चिकित्सक ।

जरस—सं०पु० [सं० जरक्ष] एक प्रकार का जंगली पशु, लकड़बग्घा ।

जरसी—सं०स्त्री०—जाड़े में पहनने का एक प्रकार का वस्त्र ।

जरहजीण—सं०पु०—एक प्रकार का कवच । उ०—राउत चडिया सनाह लीधा, किस्या किस्या सनाह । जरहजीण जीवरणसाल जीवरखी अंगरखी करांगी वज्रांगी लोहवद्धलुडि । समस्त सनाह लीधा ।
—कां.दे.प्र.

जरहर—सं०पु० [सं० जलधर] बादल, वर्षा ।

जरां—क्रि०वि०—जब । उ०—जिण वखत मेंल पड़सी जरां, कौडी रै नह कांम रौ । तन चाख लगी मेटौ तिका, राख भरोसौ रांम रौ ।
—ऊ.का.

जरा—क्रि०वि० [अ०] थोड़ा, कम ।

वि० [सं० जरायुज] १ गर्भ से उत्पन्न होने वाले ।

उ०—अंडज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज, माया सब तूझ म भूजब मुझ्झ ।
—ह.र.

सं०स्त्री० [सं०] वृद्धावस्था, बुढापा ।

उ०—१ तरै रावळ मन मांहि जांणियौ जु जरा तौ नैड़ी आई, यूंही मर जाईजसी, किणीक सूल नांम रहै तिका बात कीजै ।—नैणसी

उ०—२ तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूंखड़ौ । विसन सली-मुख बाग, जरा बरक ऊतर जवळ ।—बां.दा.

जराउअ, जराउज, जराउय, जराउया—देखो 'जरायुज' (रू.भे., जैन)

जराक—वि०—जरा सा, थोड़ा सा ।

सं०पु०—प्रहार । उ०—अराक जराक कराक अथाह, समोभ्रम 'भोज' लड़ै 'गजसाह' ।—सू.प्र.

जराकौ—सं०पु०—१ भय, आतंक । उ०—इळ ईरांन मकै लग वाकौ । जवनां सुण उर पड़ै जराकौ ।—रा.रू.

२ चोट, मार, प्रहार, धक्का ।

जराग्रस्त—वि०यौ० [सं०] वृद्ध, बुड्ढा ।

जराजर—सं०स्त्री०—१ शीघ्रता व अधिक वेग के साथ प्रहार होने का भाव । [अनु०] २ लाठी प्रहार की ध्वनि ।

जरादूत—सं०पु० [सं०] वृद्धावस्था का सूचक श्वेत बाल ।

उ०—दुखां रौ डेरियौ बीकानेरियौ दिनां रौ दादौ, दीठां सीस ढेरियौ हेरियौ जरादूत । भूटै लोब लाग बनौ हेरियौ बखाक झंड, पीढी सात माथै पांणी फेरियौ कपूत ।—उदैभांण बारहठ

जरापाखर—वि०—१ मजबूत, दृढ़. २ सन्नद्ध, कटिबद्ध ।

जराभीर, जराभीरु—सं०पु०यौ० [सं० जराभीरु] कामदेव (ह.नां.)

जरायु—सं०पु० [सं०] १ वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है और पुष्ट होता है, आंवल. २ गर्भाशय. ३ जटायु ।

जरायुज—सं०पु० [सं०] आंवल की झिल्ली में लिपटा हुआ माता के गर्भ से उत्पन्न होने वाला पिंडज ।

रू०भे०—जराउअ, जराउज, जराउय, जरउया ।

जरारहित—सं०पु०—देवता (डि.नां.मा.)

जरासंद, जरासंध—सं०पु० [सं० जरासंध] मगध देश का एक प्राचीन राजा जो बृहद्रथ का पुत्र था ।

वि०वि०—बृहद्रथ ने पुत्र प्राप्ति के लिये चंड कौशिक की आराधना की जिसने एक फल देकर राजा से कहा कि इसे रानी को खिला दो । राजा के दो रानियाँ थीं, अत: फल को बीचोंबीच से काट कर उन्होंने एक-एक टुकड़ा रानियों को दे दिया । समय पर दोनों रानियों के आधा-आधा पुत्र हुआ । राजा ने उन्हें फेंकवा दिया किन्तु श्मशान निवासनी 'जरा' नाम की राक्षसी ने दोनों को जोड़ (संधि) दिया । इसलिए उसका नाम जरासंध पड़ा । कालान्तर में यह एक महान योद्धा हुआ । कृष्ण के संकेत पर भीम ने जरासंध के शरीर की संधि तोड़ कर उसे मार डाला ।

रू०भे०—जरसंद, जरासंधि, जरासंधौ, जरासिंधु, जुरसंध, जुरसिंध, जुरासंद, जुरासंध, जुरासिंधी, जुरासींद ।

जरासंधखय—सं०पु०यौ० [सं०.जरासंध+क्षय] भीम (अ.मा.)

जरासंधि, जरासंधौ, जरासिंध, जरासिंधु—सं०पु० [सं० जरासंध]

देखो 'जरासंध' (रू.भे.) उ०—जरासिंध नउ आविउ दूउ काळकुमरु जंई लग्गइ मूउं । वणिजारा नी वात सांभळी जरासिंधु आवइ तुम्ह भणी ।—पं.पं.च.

जरासुत, जरासेन—सं०पु०यौ० [सं०] जरासंध का एक नाम ।

जराह—देखो 'जरराही' (रू.भे.)

जरि—वि० [सं० जरिन्] जरायुक्त, वृद्ध, अतिवृद्ध (ईश्वर)

उ०—नमौ ज्ञांताकारी अमर अघहारी हरि नमौ । नमौ क्षांताकारी अजर जरहारी जरि नमौ ।—ऊ.का.

[सं० ज्वरिन्] २ बुखार से पीड़ित, ज्वर वाला (जैन)

जरिअ—वि० [सं० ज्वरित] बुखार वाला, ज्वरित (जैन)

जरिउ—वि० [सं० जीर्णः] पुराना (उ.र.)

जरियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हजम हुवा हुआ, पचा हुआ. २ सहन हुवा हुआ. ३ जला हुआ. ४ लोहे के मुरचा लगा हुआ. ५ संहार किया हुआ । (स्त्री०जरियोड़ी)

जरियौ—सं०पु०—१ देखो 'जर' (१) (अल्पा०, रू.भे.)

[अ० ज़रिया] २ लगाव, संबंध, जरिया । उ०—उगणीसवीं सदी रै पैलां मिनख सूं मिनख रा कंठ नै आपरा साचेला रूप में बोली रै सेंदरूप अळगी करण री जुगत नी वणी ही तद फगत लिखावट रा आखरां रै जरियै उणरी कंठ सगळा देस में घूमतौ फिरतौ ।—वांणी

जरींद, जरींदौ—सं०पु०—१ प्रहार या प्रहार से उत्पन्न होने वाली ध्वनि । उ०—खहुंड जूथ वळ वंड सजे झुंड भड़ ततखारा, जवन थंड वहुंड खागां जरींदा । सीह रा सांकळां जेम नव साहसा, ओपियौ कंठ जोधांण 'ईदा' ।—इन्द्रसिंह रौ गीत

जरी-संस्त्री० [फा० ज़री] १ बादले से बुना जाने वाला ताश नामक कपड़ा। उ०—सुराकां अबाकां ततंमाल लावै, मनी चीज प्रिथी जिके मन भावै। जरी बाफ नीलंक जांमा जड़ावै, बपे अन्न अनेक धारां बणावै।—वचनिका

२ सोने के तारों आदि से बुना हुआ काम। उ०—जरी जवाहर जगमगै, दिल में दर्शा दिखाय। बादळ मांहली बीजळी, उतरी भूं में आग।—अज्ञात

जरीको-संपु०—टक्कर, चोट, आघात। उ०—खेड़ेचो दरकूच खड़ि, आयो गढ उज्जेण। पातिसाह सूं पावरै, लोह जरीका लेण।

—वचनिका

जरीब-संस्त्री० [फा० ज़रीब] भूमि मापने की एक माप जो करीब-करीब ६० गज की होती है। कुछ लोग इसे ५५ गज के माप की मानते हैं।

जरीबकस-संपु० [फा० जरीबकश] भूमि मापने के समय जरीब खींचने का कार्य करने वाला व्यक्ति।

जरीवांनो, जरीमांनो, जरीयांनो—देखो 'जुरमांनो' (रू.भे.)

जरु, जरू-संपु०—काबू, वश, इख्तियार। उ०—समर जीपै सबळ वडा खाटै सुजस, जिको जो जिहीं कुळवाट जोवै। सूर सुदतार झूंझारसिंघ (तो जिसा), हुवै क्रित इसा ताइ जरू होवै।

—राठौड़ जुझारसिंह री गीत

क्रिवि०—१ जब।

२ अवश्य, जरूर। उ०—१ 'जगो' जैपर गयो जीकी वात सुणज्यो जरु, हसै वोही नारियां कीद हासी। आपरा कुसळ पूछै पिया आपनै, उदैपुर गया सो कदै आसी।—जगतसिंह री गीत

वि०—१ मजबूत, दृढ़, अटल। उ०—१ 'जगड़' सुत 'अमर-सुत' नांम राखण जरु, सरू जस बोलिवा सूर साखी। ढूक जाडां थंडां भूक खळ ढाहिया, रूक रजपूत-वट भली राखी।—जगो सांदू

उ०—२ मुख इतां घणी छळ मारवां, मुहर अणी वध मेलिया। जुध करण जैत नांमो जरु, भड़ां अमांमा भेळिया।—रा.रू.

२ जबरदस्त, प्रबल। उ०—अड़े 'लखधीर' तणो 'अमरेस', जरू खग झाट हणै जवनेस।—सू.प्र.

जरूर-क्रिवि० [अ० जरूर] निस्संदेह, अवश्य। उ०—जिकां लखि बावन वीर जरूर, देव्यां जस गावत धावत दूर।—मे.मा.

जरूरत-संस्त्री० [अ० ज़रूरत] आवश्यकता, प्रयोजन।

जरूरी-वि० [फा० ज़रूरी] जिसकी जरूरत हो, आवश्यक।

उ०—कागद राव सेखा पै जरूरी मांड दीनूं। घोड़ा का मंगावा को तगादो वहोत कीनूं।—शि.वं.

जरूला-संस्त्री० [सं० जरुला] चार इन्द्रियधारी जीवों की एक जाति (जैन)

जरेटणो—देखो 'जेटणो' (रू.भे.)

जरै—क्रिवि०—जब। उ०—जरै आ जांण पौगंड अवस्था में ही कुमार प्रथ्वीराज पिता सूं अरज करि।—वं.भा.

जरोवणीय-संपु० [सं० जरोपनीत] वृद्धावस्था वाला पुरुष (जैन)

जरो—देखो 'जर' (१) २ भय, डर।

जळंदर, जळंधर-संपु० [सं० जलंधर] १ शिव की कोपाग्नि से समुद्र से उत्पन्न एक पौराणिक राक्षस. २ नाथ संप्रदाय का एक सिद्ध।

उ०—अचळ जळंधर ध्यांन उर, कर गजधनि सुकज्ज। मीठा साचा वयण मुख, 'लाडू' लोयण लज्ज।—बां.दा.

३ जालोर नगर। उ०—रचै धर गूजर आरण रोस। जळंधर नीर चढावत जोस।—सू.प्र.

[सं० जलोदर] ४ एक प्रकार का रोग जिसमें पेट आगे फूल आता है तथा पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्रित हो जाता है।

उ०—करण अदीठ मिटै कंठमाळा, जांनी डेरू मिटै जिकै। कास जळंदर भगंदर कासी, तूझ नांम सूं मिटै तिकै।—कला रो गीत

रू०भे०—जळंधरी, जळंधरो।

जळंधरा-संस्त्री०—कुम्हारों की एक शाखा।

जळंधरी-१ देखो 'जळंधर' (रू.भे.)

संपु०—२ एक वृक्ष। उ०—मोजूद हाथियां ऊपर सब आदमी भला भला तीरंदाज घणी जळंधरी धांमण रा कांमठा, सुही रा तीर।

—डाढाळा सूर री वात

जळंधरीपाव-संपु० [सं० जलंधरपाद] नाथ संप्रदाय के एक प्रसिद्ध सिद्ध।

रू०भे०—जळंध्रीपाव।

जळंधरो—देखो 'जळंधर' (रू.भे.)

जळंध्रीपाव—देखो 'जळंधरीपाव' (रू.भे.)

जळंनिद्ध-संपु० [सं० जलनिधि] समुद्र। उ०—'अभो' चालियो आसुरां सीस ऐसो। जळंनिद्ध उच्छेदियां बंध जैसो।—रा.रू.

जळंवळ-संस्त्री०—नदी।

जळ-संपु० [सं० जल] १ पानी, जल।

मुहा०—जळ देणो—देखो 'पांणी देणो'।

यौ०—जळ-क्रीड़ा, जळब्रिक्ष। २ पूर्वाषाढा नक्षत्र (नां.मा.)

३ ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली में चौथा स्थान।

[सं० ज्वल] ४ कोप, क्रोध, गुस्सा। उ०—ग्रीध हळवळ समर गळळ पळ मळणरां, असळ सल वळोवळ कळळ हुकळंतरां। कळ विकळ सवळ दळ भळळ सावळ करां, यळापत कीध जळ कसा खळ ऊपरां।

—महादांन महडू

[सं० ज्वल] ५ कान्ति, प्रभा, दीप्ति। उ०—आसकरन्न 'पिराग' तण, पड़ियो खाग बजाड़। सुतन सजीपै भोज सम, जळ भाटीपै चाड़।—रा.रू.

६ वीरत्व, वीरता। उ०—जोय कढचो लड़ सुवण-जळ, बहु भरियो जळ आत। जळ मांगै खग जात औ, जळ आदै जळ जात।

—रेवतसिंह भाटी

जळग्राधीन–सं०पु०—इन्द्र (ग्र मा.)

जळग्रासय–सं०पु० [सं० जलाशय] जलाशय ।

जलइय–सं०पु० [सं० जलकित] जलकान्त इन्द्र के एक लोकपाल का नाम (जैन) ।

जळग्रोक–सं०स्त्री० [सं० जल+ग्रोक] पानी में रहने वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर से चिपक कर उनका रक्त चूसता है ।

जळकंत–सं०पु० [सं० जलकान्त] १ मणि विशेष (जैन) २ उदधि कुमार नामक देव जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (जैन) ३ जलकान्त इन्द्र का लोकपाल (जैन) ४ इन्द्र विशेष (जैन) ।

जळकंतार–सं०पु० [सं० जलकांत] वरुण (नां.मा., ग्र.मा.)

जळकणौ, जळकवौ—देखो 'झळकणौ, झळकवौ' (रू.भे.)
उ०—देहरि दंड कळस ग्रांमल सारा सोना तणा जळकइ ।—व.स.

जळकांत–सं०पु० [सं० जलकान्त] वरुण (डिं.को.)

जळकांतार–सं०पु० [सं० जलकांतार] वरुण (डिं.को.)

जळकाक, जळकाग–सं०पु० [सं० जलकाक] जल में रहने वाला एक पक्षी जो कौए के समान काले रंग का तथा बतख के ग्राकार का होता है । यह प्राय: जल में गोता लगा कर मछली ग्रादि को खा जाता है । जलकौग्रा ।

जळकार–सं०पु०यौ०—बादल, मेघ, घन (डिं.को.)

जलकारी–सं०उ०लिं० [सं० जलकारिन्] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (जैन)

जळकिट्ट–सं०पु० [सं० जलकिट्ट] पानी का मैल, काई ग्रादि (जैन)

जळकीड़ा, जळकीडा, जळकीला–सं०पु०यौ—१ श्रीकृष्ण ।
२ देखो 'जळक्रीड़ा' (रू.भे.)

जळकुंभी–सं०स्त्री० [सं० जलकुंभी] कुंभी नामक वनस्पति जो जलाशयों के पानी के ऊपर प्राय: हरे या पीले रंग की फैली हुई होती है, काई (ग्रमरत)

जळकूंडियौ, जळकूंडौ–सं०पु०—चंद्रमा के चारों ग्रोर यदा-कदा दिखाई पड़ने वाला प्रकाश का घेरा जो वर्षासूचक माना जाता है ।
विलो०—वायकुंडियौ, वायकूंडौ ।

जळकेतु–सं०पु०यौ० [सं० जलकेतु] पश्चिम दिशा में उदय होने वाला एक प्रकार का पुच्छल तारा ।

जळकौग्रा–सं०पु०—देखो 'जलकाक' (रू.भे.)

जळक्कणौ,जळक्कवौ—देखो 'झळक्कणौ, झळक्कवौ' (रू.भे.)
उ०—खळक्कै सिलै पाखरां राड़ि खंगि । जळक्कै विचै धोम सी दीठ जंगी ।—सू.प्र.

जळक्रीड़–सं०पु०—१ ईश्वर. २ श्रीकृष्ण (नां.मा.)

जळक्रीड़ा–सं०स्त्री०—जलाशय में की जाने वाली क्रीड़ा, जल-विहार ।
रू०भे०—जळकीड़ा, जळकीडा, जळकीला ।

जळखड़िया–सं०स्त्री०—राठौड़ों की प्रमुख १३ शाखाग्रों में से एक ।
(बां.दा. ख्यात)

जळखांनौ–सं०पु० [सं० जल+फा०खान:] पीने का जल रखने का स्थान ।
मि०—पळींडौ ।

जळखार–सं०पु०—समुद्र । उ०—रुघ तपत बांण सधार, खळ भळै जिम जळखार ।—सू.प्र.

जळखेड़ा, जळखेड़िया—देखो 'जळखड़िया' (रू.भे.)

जळख्यात–सं०पु०—नाविक, केवट (ग्र.मा.)

जळगंग–सं०स्त्री०—गंगा नदी (ग्र.मा.)

जळगार–सं०पु० [सं० जलागार] जलाशय, तालाब ।

जळगौ–सं०पु०—ग्रग्नि (ह.नां.)

जळग्रभ–सं०पु० [सं० जल+गर्भ] बादल, मेघ । उ०—काळी काळी घटा करि । ऊनळा बादळ । वाउ सों डोलता उवै ग्रागै । स्रावण का मेह धारां वरसण लागा । दिसा-दिसा हुता जु जळग्रभ गळि पड़ै छै ।
—वेलि.टी.

जळघड़ियौ–सं०पु० [सं० जल+घट+रा०प्र० इयौ] वैष्णव सम्प्रदाय में विष्णु की पूजा के लिये जल लाने वाला व्यक्ति ।

जळघड़ी–सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार का कटोरीनुमा बरतन जिसमें एक छोटा छिद्र होता है । इसे पानी में छोड़ दिया जाता है । निश्चित समय के बाद उसमें पानी भर जाने के कारण वह डूब जाता है । इससे समय का पता लग जाता है । (प्राचीन)

जळघरिय–वि० [सं० जलगृहिक] पानी की व्यवस्था करने वाला, पानी पिलाने वाला (जैन)

जळचर–सं०पु०यौ० [सं० जलचर] जल में रहने तथा उसमें विचरण करने वाले प्राणी, जलजंतु । उ०—पूर तोय परिखा चहूं पासी, मगर मीन जळचर सुखरासी ।—ला.रा.
रू०भे०—जळचारी ।

जळचरी–सं०स्त्री०यौ० [सं० जलचरी] मछली ।

जळचारण–सं०पु० [सं० जलचारण] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी ग्रलौकिक शक्ति रखने वाला मुनि (जैन)

जळचारिया–सं०स्त्री० [सं० जलचारिका] चार इन्द्रियधारी एक जाति का जीव (जैन)

जळचारी–सं०पु० [सं० जल चारिन्] देखो 'जळचर' (रू.भे.)

जळछत्र–सं०पु०यौ०—कमल (ग्र.मा.)

जळजंत्र–सं०पु०यौ० [सं० जल+यंत्र] फौव्वारा । उ०—पात गदा दै पुट्ठली फटकार फबाया । घाय हुव्वकै रंग के जळजंत्र चलाया ।
—वं.भा.

जळज–सं०पु० [सं० जलज] १ कमल (नां.मा.) उ०—जळज प्रभू पद जांण, दै सुगंध निरवांण पद । मो मन भंवर प्रमांण, रात दिवस विलम्यौ रहै ।—र.रू. उ०—२ डंळ सिर भांग 'विजा' हर ग्रोपै, नाथ क्रपा प्रभता नूमळ । जळज गुणिंद हरख मय जाभा, खूटे रिख वळ छोड खळ ।—महाराजा मांनसिंह री गीत
२ मोती (नां.मा.) उ०—ग्रस पांखां ग्रावर 'ग्रजबावत', बावर जुध ग्रावध विखम । ढुंढ़ाहड़ा सतोल जळज ढिग, जे खळ भखिया सुचळ जम ।—प्रिथ्वीसिंह हाडा रौ गीत

३ शंख (टि.को.) उ०—नयण कंज सम निपट, सुभग आंगुण हिमकर सम। जप सम ग्रीवह जळज, तवत सम हीर दसण तिम।
— र.ज.प्र.

४ चंद्रमा. ५ वरुण (अ.मा.)

वि०—शीतल (टि.को.)

जळचख-सं०पु० [सं० जलज+चक्षु] ईश्वर।

जळजनम-सं०पु० [सं० जल+जन्म] कमल (ह.नां.मा., अ.मा.)

जळजवर-सं०पु० [सं० जल+वर] वरुण (अ.मा.)

जळजळाकार-सं०पु०—जहां सर्वत्र जल ही जल हो।

उ०—प्रथम जळजळाकार हुतौ। तिहां निरंजन निराकार वड पात मांहि पोढिया हुता।—द.वि.

जळजळित-वि० [सं० जाज्वल्यमान] देदीप्यमान (जैन)

जळजळौ-वि० (स्त्री० जळजळी) अश्रुपूर्ण, डबडबाया हुआ, सजल नेत्र, ज्यूं—टाबर री आंख्यां जळजळी व्हैगी।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

जळजहर-सं०पु० [सं० जलज+हर] १ हंस (नां.मा.)

[सं० जलधर] २ बादल, मेघ (ना.डि.को.)

जळजांन-सं०पु० [सं० जलयान] जहाज। उ०—मसक समांन कान्ह कूं मारचौ। उदनवांन जळजांन उवारचौ।—मे.म.

जळजात-सं०पु० [सं० जलजात] १ कमल। उ०—जोय वंक जळजात ज्यौं, संजुत संत असंत। वड़वानळ कड़वा वचन, जळ भलपण जांणंत।
२ जोंक। —बां.दा.

जळजात-व्यूह-सं०पु—कमल के आकार का सेना का एक व्यूह विशेष।

उ०—तिण भांति री समंद व्यूह सेन्यां कीआं चाली आवै छै। कांही जळजात-व्यूह सेन्या कीधी छै।—रा.सा.सं.

जळजाळ-सं०पु०यौ० [सं० जलजाल] मेघमाल, बादल, घनघटा।

उ०—जळजाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। आधौ फरै मेघ ऊभसता, महाराज राजै महल।—वेलि.

जळजासन-सं०पु०यौ० [सं० जलजासनः] कमल पर आसन जमाने वाला ब्रह्मा।

जळजीव, जळजीवि-सं०पु० [सं० जल+जीव] जल में पनपने वाला जीव। उ०—गुरि सरिसा जळि तरइं द्रोण चलणु जळजीवि लिद्धऊ। कूंयर परीक्षा तणइ मिसिं गुरिहिं कूड पोकारु किद्धऊ।—पं.पं.च.

जळजुत-वि०—कान्तियुक्त, दीप्तिमान। उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी। जळजुत ठोडी पर टिमकी जंघाळी।—ऊ.का.

जळजेता-सं०पु० [सं० जलजित] वरुण (अ.मा.)

जळजैत-सं०स्त्री०—१ कान्ति, शोभा।

सं०पु०—२ यश।

जळजोग-सं०पु०यौ०—वर्षा का योग (ज्योतिष)

जळझूलणी-सं०स्त्री०यौ०—भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

वि०वि०—इस दिन विष्णु की मूर्ति को सिंहासन पर (रेवाड़ी में) बैठा कर किसी जलाशय पर ले जाया जाता है, जहां पर उन्हें जल से स्नान करा कर ऋतुफल का भोग रखा जाता है।

जळठांण-सं०पु० [सं० जळस्थान] १ जलाशय (जैन) २ जल रखने का स्थान (जैन)

मि०—'पळींडौ'।

जळडमरमध्य-सं०पु०यौ०—दो बड़े समुद्रों को मिलाने वाला जल का वह तंग रास्ता जो किन्हीं दो भूमि खंडों के बीच में से होकर गया हो।

जळण-सं०स्त्री० [सं० ज्वलन] १ दाह, जलन। उ०—रासो लाज विभू ! विनती की। जीव की जळण हरौ सब ही की।—गी.रां.

२ अग्नि (ना.डि.को.) उ०—१ पारथिया क्रिपण वयण दिसि पवणै, विण अंबह वाळिया वण। लागै माघि लोक प्रति लागौ, जळ दाहक सीतळ जळण।—वेलि.

उ०—२ ओम गोम विच दीसै अवगत, जळ में प्राजळतौ जळण।
—प्रथ्वीराज राठौड़

३ गर्मी, उष्णता, ताप। उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरड़ भड़ अण पार ए। मिटि जळण धरणि विनोद मांनव, भूरि सर जळ भार ए।—रा.रू.

४ ईर्ष्या, डाह. ५ क्रोध, गुस्सा (जैन) ६ अग्निकुमार देवता (जैन)।

जळणौ, जळबौ-क्रि०अ० [सं० ज्वलनम्] १ अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में होना, दग्ध होना, भस्म होना।

उ०—जउहर महि जळिवाह इसइ तेज पइसइ अनळ। पहिला थी राहि पाछिली पग एक पड़ खइ नाह।—अ. वचनिका

२ बहुत गरमी या आंच के कारण किसी पदार्थ का कोयले या भाप के रूप में हो जाना. ३ झुलसना. ४ बहुत अधिक ईर्ष्या, डाह या द्वेष के कारण कुढना। उ०—इम देखि अमल जळिया असह, धरा लियै इम धारियौ। जुध करण न हूं आसंग जदि, विग्रह चूक विचारियौ।—सू.प्र.

५ कोप करना, क्रुद्ध होना। उ०—वदन्न वणै कंघ वांके विनांणै, जळै गारडू छेड़ियौ नाग जांणै।—र.रू.

जळतंग, जळतरंग-सं०पु० [सं० जलतरंग] १ धातु की बहुत सी कटोरियों को एक क्रम से रख कर बजाया जाने वाला बाजा।

[रा०] २ फरशी के ऊपर लगा हुवा सीधा और पोला वह भाग जिस पर तम्बाखू की भरी चिलम रखी जाती है।

जळतर-सं०पु० [सं० जल+तर] जहाज, नाव (अ.मा.)

जळतरण-सं०स्त्री०—७२ कलाओं में से एक कला (व.स.)

जळतवाई, जळताई-सं०स्त्री०—१ दीपक में तेल के कारण जमने वाला चिपचिपा मैल।

सं०पु०—गंदे स्वभाव का व्यक्ति।

जळतोरु-सं०स्त्री०—मछली।

जळद-सं०पु० [सं० जलद] १ मेघ, बादल। उ०—जोड़ जळद पटळ

दळ सांवळ, ऊजळ, घुरै नींसांण सोई घणघोर। प्रोळि प्रोळि तौरण परठीजै, मंडे किरि तंडव गिरि मोर ।—वेलि.

२ कपूर (अ.मा.)

वि०—जल देने वाला।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्द। उ०—फौज री कठी अणियां फिरै निजर देख नै धावजो सांभळी जिता कांनां सवद, जळद आय भुगतावजो ।—पे.रू.

रू०भे०—जळद्द ।

जळदकाळ-सं०पु० [सं० जलदकाल] वर्षाकाल ।

जळदतिताळौ-सं०पु०—वह साधारण तिताला ताल जिसकी गति साधारण से कुछ तेज हो ।

जळदाग-सं०पु०यौ० [सं० जल+रा० दाग] शव को पानी के बहाव में बहा देने की क्रिया ।

जलदि, जलदी—देखो जल्दी' (रू.भे.)

जळदुरग-सं०पु०यौ०—वह दुर्ग जो चारों ओर से नदी, झील आदि से सुरक्षित हो ।

जळदेव, जळदेवता-सं०पु [सं० जलदेव] १ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र. २ वरुण। [रा०] ३ एक मारवाड़ी लोकगीत ।

जळद्द—देखो 'जळद' (रू.भे.)

उ०—हरी केसरी वोळ कूं कूं हळद्दं। जठै मोतियां धार वूठै जळद्दं। —सू.प्र.

जळद्र-वि०—जल से भीगा हुवा ।

उ०—उस्णकाळ पहुंतउ, जिसी दावानळ तणी ज्वाळा तिसी लू वाइं, जिसउ बावन्न पळ तणउ गोध मिउ हुइ तिसिउ आदित्य तपइ, जिसी आसड तणी वेळू तिसी भूमिका धगधगइ, मस्तक तणउ प्रस्वेद पांह्ली ऊतरइ, धरमि जीवलोक गळगळइ, स्रीमंत तणां चउवारां झळहळइं, जळद्रां सरीरि लगाडीइं, गुलाव तणा अभ्यंग कीजइं, बावन्ना स्रीखंड घसीयइ, चउदिसीयइं वीजणा फिरइं, द्राक्षा आवली-पांन कीजइं, कळमसालि तणा सीधउरा करंवा कीजइं, अच्छां कापड़ा पहरियइं, लू आहण्यां पांणी पीजइं ।—व.स.

जळद्रव्य-सं०पु०यौ० [सं० जलद्रव्य] जल से उत्पन्न होने वाले मुक्ता, शंख आदि द्रव्य ।

जळध-सं०पु० [सं० जलधि] समुद्र (अ.मा.)

उ०—विध रा रछक दीन रा बंधव, सिव रा ध्यांन निगम रा सार। जस रा जळध अंतर रा जांमी, भांमी तौ सिय रा भरतार ।—र.रू.

जळधआधीन-सं०पु०यौ०—इन्द्र (अ.मा.)

जळधर-सं०पु० [सं० जलधर] १ बादल (नां.मा.)

उ०—वरसात भर घर परम सुख वणि, उमड़ि जळधर आवही। घण घोर सोर मयोर रस घण, घटा घण घहरावही ।—रा.रू.

२ समुद्र। उ०—१ जिण कीध वट पट निपट जळधर, अद्रतार ऊभेखजै ।—र.ज.प्र.

उ०—२ कहि जिण वार 'अभैमल' केहो। जळधर वांध लियौ लंक जेहो ।—सू.प्र.

रू०भे०—जळाधर ।

जळधरकेदारा-सं०पु०—एक संकर राग (संगीत)

जळधरण-सं०पु० [सं० जल+धरण] बादल, मेघ (ह.नां.मा., अ.मा.)

जळधरमाळा-सं०स्त्री०यौ० [सं० जलधरमाला] घनघटा, मेघमाला ।

जळधरियौ-सं०पु०—मेघ, बादल ।

जळधरी-सं०स्त्री०—धातु या पत्थर का बना अर्घा जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है ।

जळधार-सं०स्त्री० [सं० जळधारा] १ नदी (अ.मा.)

[रा०] २ कटारी, तलवार आदि शस्त्र जिनकी बाढ उज्वल हो । उ०—जळधार पेस कवजां जड़ंत। पोटलां मार गुरजां पड़ंत ।—वि.सं.

जळधारा-सं०स्त्री० [सं० जलधारा] १ पानी का प्रवाह. २ नदी. ३ वह तपस्या जिसमें तपस्या करने वाले पर निरन्तर पानी की धारा डाली जाती रहती हो ।

जळधारी-वि० [सं०जलधारी] पानी को धारण करने वाला ।

सं०पु०—१ बादल, मेघ. २ इंद्र (ना.डिं.को.) ३ जल पिलाने वाला व्यक्ति (जैन)

जळधाव-सं०पु०—समुद्र (अ.मा.)

जळधि-सं०पु० [सं० जलधि] समुद्र। उ०—हर अकरण करण सरण असरण हरी, तरण अतर भव जळधि तिको ।—र.ज.प्र.

जळधिगा-सं०स्त्री० [सं० जलधिगा] १ नदी (डिं.को.) २ लक्ष्मी.

जळधिज-सं०पु० [सं० जलधिज] चंद्रमा ।

जळधिया-सं०स्त्री० [सं० जलधिगा] १ नदी, सरिता ।

[सं० जलधि+रा०धी] २ लक्ष्मी ।

जळधेनु—सं०स्त्री० [सं० जलधेनु] एक कल्पित धेनु जिसकी कल्पना जल के घड़े में दान के लिये की जाती है (पौराणिक)

जळनध-सं०पु०यौ० [सं० जलनिधि] समुद्र ।

जळनवास-सं०पु०यौ० [सं० जलनिवास] किसी जलाशय के अन्दर बना हुआ भवन। उ०—करै चाव हरिया गरां मौर कळकां करै, चलै नद नीर दरियाव चाळा। पातवां पाव आसां तणा पीयाला, आव जळनवासा 'भीम' आळा ।—चिमनजी आढ़ौ

जळनायिका-सं०स्त्री०—राजा महाराजाओं तथा धनवान व्यक्तियों के स्नानागार व जल-क्रीड़ा में साथ रहने वाली स्त्री; जल-योषिता ।

उ०—प्रेमांधल सांत दांत जितेंद्रिय जितक्रोध परित्यक्त परिवाद लब्ध साधुवाद सतीजनभाल तिलकानुकारिणी, एवं विध जळनायिका । —व.स.

जळनिध—देखो 'जलनिधि' (रू.भे.)

उ०—हिले संप हैथाट, चले वांना बहरंगी। इळ जळनिध उलटै, बड़वानळ संगी ।—रा.रू.

जळनिधराज-सं०पु०यौ० [सं० जलनिधिराज] महासागर ।

जळनिधि, जळनिधी-सं०पु० [सं० जलनिधि] समुद्र (डिं.नां.मा.)

उ०—वरसत दड़ड़ नड़ अनड़ वाजिया, सघण गाजियौ गुहिर सदि। जळनिधि ही सांमाइ नहीं जळ, जळवाळा न समाइ जळदि ।—वेलि.

रू०भे०—जळनिध ।

जळनिधि–सं०पु० [सं० जलनिधि] समुद्र

जळनीम–सं०स्त्री०—प्रायः जलाशयों के निकट दलदली भूमि में होने वाली एक प्रकार की नीलिमा जो कड़ुई होती है ।

जळनीवाण–सं०पु० [सं० जलनिपान] पाताल (डि.नां.मा.)

जळपखंद, जळपखंदण–सं०पु० [सं० जलप्रस्कंद] पानी में डूब मरने की एक क्रिया विशेष (जैन)

जळपणौ, जळपवौ–क्रि०अ० [सं० जल्प्] १ बोलना, कहना ।

उ०—सेना चालि, सेग हालि, माहाले महिपति मलपता । 'नारि वरसूं प्रीति करसूं, मोद धरसूं' जळपता ।—नलाख्यांन

जळपत, जळपति, जळपती–सं०पु० [सं० जल+पति] १ समुद्र (अ.मा.) २ वरुण (डि.को., ना.डि.को.)

उ०—विसन ब्रह्म सिव अरक वखांणौ, जळपति ससि दिस मारुत जांणौ ।—रा.रू.

जळपथ–सं०पु०यौ० [सं० जलपथ] १ वह नाली या नहर जिसमें पानी बहता हो. २ समुद्री-मार्ग ।

जळपरवा–सं०स्त्री०—ईशान कोण की वायु (शेखावाटी)

जळपराव्धी–क्रि०वि०यौ० [सं० अब्धि+जल+पार] समुद्रपर्यन्त ।

जळपवेस–सं०पु० [सं० जलप्रवेश] जल में डूबने की एक क्रिया (जैन)

रू०भे०—जळप्पवेस ।

जळपांन–सं०पु० [सं० जल+पान] थोड़ा व हलका भोजन, नाश्ता, कलेवा ।

जळपियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बोला हुआ, कहा हुआ. २ प्रलाप किया हुआ (स्त्री० जळपियोड़ी)

जळपू–सं०पु०—१ अभ्रक, भोडल । २ घटिया दर्जे का वरक ।

उ०—धूजता हाथां सूं पेटी ऊंधी करनै सगळी चीज दरी माथै विखेरदी—सिगरेटां रा चिळकता जळपू, भांत-भांत री छापां, भांत-भांत रा गुळगुचिया, काच रा केई टुकड़ा ।

रू०भे०—जळफू । —वांगी

जळप्पभ–सं०पु० [सं० जलप्रभ] १ जलकान्त तथा जलप्रभ इन्द्र के चौथे लोकपाल का नाम (जैन) २ उत्तर की तरफ से उदधि कुमार जाति के भवनपति देवता का इन्द्र (जैन)

रू०भे०—जळप्पह ।

जळप्पवेस—देखो 'जळपवेस' (रू.भे., जैन)

जळप्पह—देखो 'जळप्पभ' (रू.भे., जैन)

जळप्रवाह–सं०पु०यौ० [सं० जलप्रवाह] १ पानी का प्रवाह. २ बहाव में किसी वस्तु या शव को बहा देने की क्रिया या भाव ।

जळप्रिय–सं०पु० [सं० जलप्रिय] १ मछली (डि.को.) २ चातक, पपीहा ।

जळफळ–सं०पु०—बांस (ह.नां.)

जळफू—देखो 'जळपू' (रू.भे.)

जळवंध–वि०—कान्ति व दीप्ति युक्त । उ०—दुय गिरि चंदण अढार, वरै जळवंध मोताहळ । सेर एक सोव्रन, पंच रूपक झाळाहळ ।

—नैणसी

जळवटी—देखो 'जळवट' (रू.भे.) उ०—तूझ तुरंगां दांन रा, हिमगिर तळहटियांह । गावै गीत तुरंग मुख, जळरख जळवटियांह ।—बां.दा.

जळवळजांमी–सं०पु०—इंद्र । उ०—भल नूंती रे म्हारो जळवळजांमी बाप, रातादेई म्हारी मांय ने जे ।—लो.गी.

जळवाळक–सं०पु० [सं० जलबालक] विंध्याचल पर्वत ।

जळबाळा, जळबाळिका–सं०स्त्री०यौ० [सं० जलबालिका] बिजली, विद्युत । उ०—वरसतै दड़ड़ नड़ अनड़ बाजिया, सघण गाजियौ गुहिर सदि । जळनिधि ही सामाइ नहीं जळ, जळबाळा न समाइ जळदि ।—वेलि.

जळविडाळ–सं०पु०यौ० [सं० जलविडाल] ऊदबिलाव ।

जळवेंत–सं०पु० [सं० जलवेत्र] लता के आकार का एक प्रकार का बेंत का पेड़ जो जलाशयों के निकट होता है ।

जळबोळ–सं०पु०—१ संहार, नाश । उ०—जळ······नांखेय सोम जळा । कुळ जींद करूं जळबोळ कळा ।—पा.प्र.

२ देखो 'जळावोळ' (रू.भे.) उ०—प्रळैकाळ जळबोळ पतसाह दळ पसरिया, सार भुज सजे जुधभार सारू । इनि गिरां नरां अविलोप होवतां अकळ, मेर डिगियौ नहीं राव मारू ।

—राठौड़ वल्लू गोपाळदासोत चांपावत री गीत

उ०—२ जिण समै साह जगड़ु जिहाज, दरियाव बीच खेड़े दराज । जळबोळ महा सांमद्र जोर, घण वेळ जंत्र आवरत घोर ।

—रांमदांन लाळस

वि०—क्रोधपूर्ण । उ०—त्यै पांतरै वडौ छत्र पड़ियौ, वोटण गढां अथग जळबोळ ।—नैणसी

जळभंगरौ—देखो 'जळभांगरौ' (रू.भे.)

जळभांगरौ–सं०पु०—जलभंगरा नामक औषधि में प्रयोग होने वाली वनस्पति जो जलाशयों के तटों पर ही होती है (अमरत)

जळमंड, जळमंडण, जळमंडळ–सं०पु०—बादल (अ.मा., ना.डि.को.)

जळमंडूक–सं०पु०यौ० [सं० जलमंडूक] एक प्रकार का बाजा (प्राचीन)

जलम–सं०पु०—१ देखो 'जुलम' (रू.भे.)

२ देखो 'जनम' (रू.भे.)

जलमअाठम—देखो 'जनमआठम' (रू.भे.)

जळमई–वि०—जलयुक्त, जलपूर्ण । उ०—प्रिथी समस्त जळमई होय रही थी ।—वेलि.टी.

जलमणौ, जलमवौ—देखो 'जनमणौ, जनमवौ' (रू.भे.)

उ०—जलमिया घरती लाखां लाल, कोड रै हालरियै हुलराय । गिणिया वधै वेल री जात, अणगिण खोळा में रह जाय ।—सांझ

जलमणहार, हारौ (हारी), जलमणियौ—वि० ।

जलमाड़णौ, जलमाड़वौ, जलमाणौ, जलमावौ, जलमावणौ,

जलमावर्वो—प्रे०रू० ।

जलमिग्रोड़ौ, जलमियोड़ौ, जलम्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जलमीजणौ, जलमीजबौ—भाव वा० ।

जलमपतरी—देखो 'जनमपतरी' (रू.भे.)

जलमभोम—देखो 'जनमभोम' (रू.भे.)

जळमांणस, जळमांणसियौ—देखो 'जळमांनुस' (रू.भे.)

जलमांतर—देखो 'जनमांतर' (रू.भे.)

जळमांनुस-सं०पु०—एक कल्पित जलजंतु जिसका आधा भाग मनुष्य के समान तथा आधा भाग (नाभि के नीचे का) मछली के समान होता है ।

रू०भे०—जळमांणस ।

अल्पा०—जळमांणसियौ ।

जलमाणौ, जलमावौ—देखो 'जनमाणौ' (रू.भे.)

जळमात्रका-सं०स्त्री०यौ० [सं० जलमातृका] जल में रहने वाली सात देवियां—मत्सी, कूर्मी, वराही, दर्दुरी, मकरी, जलूका, जंतुका ।

जळमारग-सं०पु०—समुद्री रास्ता ।

जळमाळ, जळमाळयिण, जळमाळा-सं०स्त्री० [सं० जलमाला] नदी (अ.मा., ह.नां.) उ०—बादळ काळा बरसिया, अत **जळमाला** आंण । कांम लगौ चाळा करण, मतवाळा रंग मांण ।—बां.दा.

जलमावणौ, जलमावबौ—देखो 'जनमाणौ' (रू.भे.)

जलमावणहार, हारौ (हारी), जलमावणियौ—वि० ।

जलमाविग्रोड़ौ, जलमावियोड़ौ, जलमाविब्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जलमावीजणौ, जलमावीजबौ—कर्म वा० ।

जलमणौ, जलमवौ—अक०रू० ।

जलमावियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रसव कराया हुआ ।

(स्त्री० जलमावियोड़ी)

जलमासटमी—देखो 'जनमासटमी' (रू.भे.)

जळमित्त-सं०पु० [सं० जलमित्र] दूध, पय, दुग्ध ।

जळमुक, जळमुच-सं०पु० [सं० जलमुक्] मेघ, घन, बादल (नां.मा.)

रू०भे०—जळमूक ।

जळमुरगाई—एक प्रकार की छोटी बतख ।

जळमूक-सं०पु०—देखो 'जळमुक' (रू.भे.)

जळय-सं०पु० [सं० जलद] १ मेघ, बादल (जैन)

[सं० जलज] २ कमल (जैन)

जळयर, जळयरी-सं०उ०लिं० [सं० जलचर, जलचरी] १ जल में रहने वाले पचेन्द्रिय जीव (जैन). २ मछली ।

जळयांन-सं०पु० [सं० जलयान] जल में काम आने वाला यान, नाव, जहाज आदि ।

जळयात्रा-सं०स्त्री०यौ० [सं० जलयात्रा] १ पवित्र जल लाने के लिये की जाने वाली यात्रा. २ देवोत्थापिनी एकादशी के दिन उदयपुर में होने वाला एक उत्सव. ३ ज्येष्ठ की पूर्णिमा को होने वाला वैष्णवों का एक उत्सव ।

जळयाळ-सं०पु०—जलागार, समुद्र ।

जळरअ-सं०पु० [सं० जलरत] जलकान्त तथा जलप्रभ इन्द्र के लोकपाल का नाम (जैन)

जळरक्ख-सं०पु० [सं० जलराक्षस] राक्षसों का पांचवां भेद (जैन)

जळरख-सं०पु०—यक्ष । उ०—तूझ तुरंगां दांन रा, हिमगिर तळहटियांह । गावै गीत तुरंग मुख, **जळरख** जळ बटियांह ।—बां.दा.

जळरक्षक-सं०पु०यौ० [सं० जलरक्षक] वरुण (अ.मा.)

जळरमण, जळरमणि, जळरमणी-सं०स्त्री० [सं० जलरमणी] १ बिजली (अ.मा., ह.नां.) २ जळक्रीड़ा (जैन) ।

जळरांण, जळराइ, जळराट-सं०पु० [सं० जलराट्] समुद्र (अ.मा.)

उ०—रायां राउ उपरि असुरि राइ, **जळराइ** जांणि मेल्ही अजाइ ।
—रा.ज.सी.

जळरास, जळरासि, जळरासी-सं०पु० [सं० जलराशि] १ कर्क, मकर, कुंभ और मीन राशियां (ज्योतिष) २ समुद्र (अ.मा.)

उ०—ज्यां लंघन **जळरासि** कौ, हणुमा हुळसाया ।—वं.भा.

जळरिप-सं०पु०—वायु, पवन (ह.नां., अ.मा.)

जळरुट, जळरुत-सं०पु० [सं० जळरुहः] कमल (ह.नां, अ.मा.)

जळरुह-सं०पु० [सं० जलरुहः] कमल (ह.नां.)

जळरूट-सं०पु० [सं० जलरुहः] कमल (अ.मा.)

जळरूप, जळरूव-सं०पु० [सं० जलरूपः] १ उदधि कुमार के इन्द्र जलकान्त के तीसरे लोकपाल का नाम (जैन) २ मगर, घड़ियाल ।

जळळ-वि०—१ अतिक्रोधी. २ भयंकर । उ०—कहर झड़ै चकमक चखां चांपिया नाग कळ, अरि चडै कांपिया गिरां ओखा । 'अजन' रा ठेट हुं अलल जुध ऊपरै, गढ़ पड़ै फेट हूं **जळळ** गोख ।
—रावत अरजुनसिंह चूंडावत रौ गीत

सं०पु०—१ दंड, सजा. २ युद्ध, संग्राम ।

जळवट-सं०पु०—१ समुद्र । उ०—**जळवट** थळवट चिहुँ दिसी, तणी वस्त विदेसी आवइ घणी । वीसा दसा विगति विस्तरी, एक स्रावक एक माहेसरी ।—कां.दे.प्र

२ जलमार्ग. ३ वह स्थान जो चारों ओर जल से घिरा हुआ हो. टापू ।

रू०भे०—जळवटी, जळवटी, जळवट्ट ।

जळवटराय-सं०पु०यौ०—विष्णु । उ०—जीव रे जेज म कर तिल जवड़ी, माठा आखर दळिद चा मेट । मुगत दियण **जळवटराय** मिळियौ । भुगत दियण थळवट राव भेट ।—ईसरदास बारहठ

जळवटी, जळवट्ट—देखो 'जळवट' (रू.भे.) उ०—ताहरां कह्यौ—थे मोनूं कोई द्रव्यवंत बावड़ौ । ताहरां कह्यौ—मूगळ भोजराज-रौ **जळवटी** पातिसाह, ओथ द्रव्य छै, उवै रै कोड़ ग्यांन छै, तोनूं देसी, ओथ जाह ।—सयणी री वात

जळवळजांमी—देखो जळ वळ जांमी (रू.भे.) उ०—जोड़ौ खुदा दै,

ओ हां ओ म्हारा जळवळजांमी वाद, आई रे गांवड़िये री तीजां, वाई झोलसी ।—लो.गी.

जळवह, जळवहण–सं०पु० [सं० जलवाह] मेघ, बादल (ना.डि.को.)

जळवा–सं०स्त्री०—नवप्रसूता स्त्री का सूतिका-गृह से बाहर निकलने पर सर्वप्रथम किसी जलाशय पर जल-पूजन की क्रिया ।

उ०—एक वर्ग देरी ए म्हारी मिरगा नैणी जळवा पूजती ।—लो.गी.

यौ०—जळवा-पूजन ।

जळवाणो, जळवावौ–क्रि०स० ('जळणौ' क्रि० का प्रे०रू०) जलाने का काम दूसरे से कराना ।

जळवाणहार, हारौ (हारी), जळवाणियौ—वि० ।

जळवायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

जळवाईजणौ, जळवाईजवौ—कर्म वा० ।

जळणौ, जळवौ—अक०रू० ।

जळवासी–सं०पु० [सं० जलवासिन्] जल के अन्दर रहने वाले तापस की एक जाति (जैन)

जलवाह–सं०पु० [सं० जलवाह] बादल (डि.को.)

जळविभू–सं०पु० [सं० जल+विभू] वरुण (अ.मा.)

जळविसुव–सं०पु०यौ० [सं० जलविषुव] तुला संक्रान्ति, ज्योतिष का एक योग ।

जळवेत–सं०स्त्री० [सं० जलवेतस] जल के अंदर होने वाला लता के आकार का एक वृक्ष ।

जळवैक्रत–सं०पु०यौ० [सं० जलवैकृत] किसी जलाशय के पानी में आकस्मिक विकार या अदभुत बातों का दिखाई पड़ना ।

जळव्याघ्र–सं०पु०यौ० [सं० जलव्याघ्र] एक जंतु जो बड़ा क्रूर और हिंसक होता है, यह सील की जाति का होता है ।

जळव्याळ–सं०पु० [सं० जलव्याल] १ जलगर्द, पानी का सांप. २ मेंढ़क ।

जळव्रक्ष, जळव्रिक्ष–सं०पु०यौ० [सं० जलवृक्ष] जल में उत्पन्न होने वाले पौधे, वृक्ष आदि जैसे—कमल, सिंघोड़ा, शेवाल आदि ।

जळसंव्रत–सं०पु०—वरुण (डि.को.)

जळसपणी–सं०स्त्री० [सं० जलसर्पिणी] जोंक ।

जळसमुद्र–सं०पु० [सं० जलसमुद्र] सात समुद्रों में से एक समुद्र । (पौराणिक)

जळसळजांमी–सं०पु०—इन्द्र । उ०—कोयल ए! आज म्हारे जळसळजांमी जोइ जे, कोयल ए, जांमी म्हारे भर मादरवा री महेस, वाई री तौ सरवरजांमी सोह भरे ।—लो.गी.

रू०भे०—जळवळजांमी ।

जळसांई–सं०पु० [सं० जलस्वामी] १ ईश्वर (नां.मा.) २ विष्णु (ह.नां.)

जळसीप–सं०स्त्री० [सं० जलशुक्ति] वह सीप जिसमें मोती होता है ।

जळसीर–सं०स्त्री०—जमीन (अ.मा.)

जळसुत–सं०पु०यौ० [सं० जल+सुत] कमल ।

जळसूग–सं०पु० [सं० जलसूक] जलकान्त इन्द्र के दूसरे लोकपाल का नाम (जैन)

जळसोयवाइ–सं०पु० [सं० जलशौचवादिन्] पानी से शुद्धि मानने वाले तापस की एक जाति (जैन)

जळसौ–सं०पु० [अ० जलसा] आनंद या उत्सव मनाने का कार्य जिसके लिये बहुत से मनुष्य इकट्ठे होते हों ।

जळस्तभिनी–सं०स्त्री०—एक प्रकार की विद्या (व.स.)

जळस्राव–सं०पु० [सं० जलश्राव] सूर्य, भानु । उ०—निमो जळ सोख निमो जळस्राव, निमो भव भांण निमो ग्रह राव ।—सूरज स्तुति

जळहट्ठ–सं०पु०—मोती, मुक्ता । उ०—तें सौ लाख समापिया, रावळ लालच छट्ठ । सांसण सीचांणा जिसा, जेथ हुवै जळहट्ठ ।—बां.दा.

जळहर–सं०पु० [स० जलधर] १ बादल, मेघ (ना.डि.को.)

उ०—जंबक सबद नचींत कर, डर कर तूं मत भाज । सादूळो खीजै सुणे, जळहर हंदी गाज ।—बां.दा.

यौ०—जळहरजांमी ।

रू०भे०—जळवळ ।

२ इंद्र । उ०—१ मेघाडमर छतर घर मसतक, मही लग गमै खळा चां मूळ । जळहर गरज करै जोधपुरी, सत्र आफळै मरै सादूळ । —देवराज रतनू

उ०—२ राज करै रिमराह, खगट पिंगळ प्रथवीपति । प्रतपै जसु प्रताप, दांन जळहर जिम दीपति ।—ढो.मा.

३ सरोवर, तालाव । उ०—सुंदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ । चंद मुळक्कयउ जळ हंस्यउ, जळहर कंपी पाळ ।—ढो.मा.

यौ० [सं० जल+हर] ४ सूर्य. ५ वायु, पवन ।

जळहरजांमी–सं०पु०यौ० [सं० जलधर+रा० जांमी] इंद्र ।

रू०भे०—जळवळजांमी, जळवळसांमी, जळसळजांमी ।

जळहरी—१ देखो 'जलेरी' (रू.भे.) उ०—त्यै कौं जु सेन्या वेरि रही छ सु किसी देखिजै छै, जैसी चंद्रमा कै पासि जळहरी ।—वेलि.टी.

२ वह धातु या पत्थर का अर्घा जिसमें शिवलिंग की स्थापना की जाय ।

[सं० जलधर] ३ बादल ।

रू०भे०—जळहळी ।

जळहळ–सं०स्त्री०—चमक, रोशनी ।

जळहळणौ, जळहळवौ–क्रि०अ०—चमकना, झलकना । उ०—चौधारां लाल लाल खग चौरंग, वयंडां ओरवै वाज । फौजां कहर तमर भर फाड़ै, रव जम जळहळियौ जसराज ।—चावंडदांन बारहठ

जळहळणहार, हारौ (हारी), जळहळणियौ—वि० ।

जळहळिओड़ौ, जळहळियोड़ौ, जळहळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जळहळीजणौ, जळहळीजवौ—भाव वा० ।

जळहळी–वि—आग बबूला । उ०—जांमवंत क्रुध भळ जळहळी,

सुवखेण मयंदह सतवळी ।—सू.प्र.

जळहस्ती–सं०पु० [सं०] छ: से आठ गज तक लम्बा सील की जाति का एक जल जंतु ।

जळहि–सं०पु० [सं० जलधि] समुद्र (जैन)

जळांजळी–सं०पु० [सं० जलांजलि] पानी से भरी अंजुलि ।

जळांतक–सं०पु० [सं० जलांतक] सात समुद्र में से एक समुद्र (पौराणिक)

जळांधीस—देखो 'जळाधीस' (रू.भे.)

जळा–सं०स्त्री०—१ फौज, सेना । उ०—१ कोपै कवर करूर, जळा भड़ मेले 'जगो' । जोइयां वेध जरूर, आयो 'वीरम' ऊपरे ।—गो.रू.
उ०—२ रात दिन मांमला किया सजको रहे, दोयणां जळा भंज इळा डाटी । दूठ कुळ किसव री अजब दूजा 'दला', पढ़तो कुण गजब वीरांण पाटी ।—उम्मेदसिंह सीसोदिया रौ गीत
२ अपार संपत्ति, धन, द्रव्य, लक्ष्मी, माया. ३ बड़ी आपत्ति. ४ फैला हुआ सामान. ५ आभा, कान्ति ।

जळाकांक्ष–सं०पु० [सं० जलकांक्ष] (स्त्री० जळाकांक्षिणी) हाथी ।

जळाकार–सं०पु० [सं० जल+आकार] जहां सर्वत्र ही जल हो ।
मि०—जळजळाकार ।

जळाणौ, जळाबौ–क्रि०स० [सं० ज्वलन] १ अंगारे या अग्नि के सहयोग से किसी वस्तु को अंगारे या लपट के रूप में कर देना ।
उ०—ज्वाळ घणां खळ उरां जळाई । तितै लीध धर मांन तळाई ।
—सू.प्र.
२ अधिक गरमी पहुंचा कर किसी वस्तु को काली बना देना या झुलसाना ।
३ किसी के मन में डाह, ईर्ष्या, कुढ़न आदि पैदा करना ।
जळाणहार, हारौ (हारी), जळाणियौ—वि० ।
जळायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
जळाईजणौ, जळाईजबौ—कर्म वा० ।
जळणौ, जळबौ—अक०रू० ।
जळाड़णौ, जळाड़बौ, जळावणौ, जळावबौ—रू०भे० ।

जलाद—देखो 'जल्लाद' (रू.भे.)

जळाधर—देखो 'जळधर' (रू.भे.) उ०—उपै खग टूक लोही मझि एम । जळाधर बीच कळाधर जेम ।—सू.प्र.

जळाधार–सं०पु०—समुद्र । उ०—भुजा वीस सीसं दसं मूझ भाई । खितां दुंग लंका जळाधार खाई ।—सू.प्र.

जळाधिदैवत–सं०पु०यौ० [सं० जलधिदैवत] १ वरुण. २ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र ।

जळाधिप–सं०पु० [सं० जलाधिप] १ वरुण. २ संवत्सर में जल का अधिपति ग्रह (फलित ज्योतिष)

जळाधीस–सं०पु० [सं० जलधीश] १ समुद्र. २ वरुण ।

जळाबोळ–वि०—१ भयंकर, विकट । उ०—१ बंबीडंडा रोड़ चंडा होड़ हाक डाक बागा, सतारौ चीतोड़-बागा जळाबोळ सार ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ
उ०—२ जळाबोळ कळजुग, महा दूतर भवसागर । मोह लोभ जळ मांझि, हुवा गरकाव किता नर ।—ज.खि.
२ जलप्लावित । उ०—इम 'सूर' जीत दूजौ अभंग, आरंभ दळ हालै इसौ । ऊझळै छौळ पौरस उझळि, जळाबोळ सांमंद जिसौ ।
—सू.प्र.
३ वैभवपूर्ण, ऐश्वर्यपूर्ण । उ०—खट-त्रीस वंस राजकुळी सिरोमणि सूरजवंसी राजांन मारवाड़ि रा नव कोट री ठकुराई जळाबोळ राज-पदवी भोगवै ।—रा.सा.सं.
४ पूर्ण रूप से रंगा हुआ, रंग की चमक युक्त ।
उ०—हळाबोळ चतुरंग जळाबोळ केसरियां । हाकां खंभायकां डोह ऊच्छव डंवरियां ।—सू.प्र.
५ क्रोधपूर्ण ।
सं०पु०—समुद्र । उ०—१ चढ़ि चढ़ि गज भिड़जां नयण चोळ । बहं हलै प्रघळ दळ जळाबोळ ।—सू.प्र.
उ०—२ जळाबोळ संसार सिर जोर जग जांणगर, ग्राह पतसाह 'औरंग' करै गाज । धरा सिर राखियौ 'करण' हिंदू धरम, राखियौ जेम व्रजराज गजराज ।—ठाकरसी सिंढायच
रू०भे०—जळबोळ ।

जळाभिसेयकढ़िणगाय–सं०पु० [सं० जलाभिषेककठिनगात्र] वानप्रस्थ तापस की एक जाति जिसका शरीर पानी के बारबार सींचने से कठिन हो गया हो (जैन)

जलायत—देखो 'जिलायत' (रू.भे.)

जळायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ (अंगारे या अग्नि के सहयोग से किसी वस्तु को) अंगारे या लपट के रूप में किया हुआ ।
२ (अधिक गर्मी पहुंचा कर किसी पदार्थ को) काला बनाया हुआ, झुलसाया हुआ ।
३ (किसी के मन में) डाह, ईर्ष्या, कुढ़न आदि पैदा किया हुआ ।
(स्त्री० जळायोड़ी) ।

जलाल–सं०पु०—१ प्रियतम, (पति) । उ०—१ आप नहीं जो आवस्यौ, 'हीरां' कवण हवाल । महिला पदमण मांणज्यौ, जोड़ी तणा जलाल ।
—बगसीरांम प्रोहित री वात
उ०—२ जलाजी मारू, म्हे तौ थांरा डेरा निरखण आई हो मिरगानैणी रा जलाल ।—लो.गी.
२ जलाल गाहांणी नामक व्यक्ति जो बड़ा उदार था एवं जिसके नाम का 'जलो' लोकगीत राजस्थानी में गाया जाता है ।
वि० [अ०] १ प्रकाशमान । उ०—म्हारी नजर तौ माथै पड़ै, म्हारा जलाल महल रौ तूं थंभ है ।—बां.दा. ख्यात
२ तेजस्वी, कान्तिमान । उ०—केसवदास आदमी वडौ संचियार थौ, जलाल थौ, मरद मोटियार थौ ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
अल्पा०—जलालियौ, जलाल्यौ ।

जलालियौ-सं०पु०—१ दरवाजे के बीच में लगाया जाने वाला पत्थर जिससे कपाट अन्दर की ओर खुल सकते हैं किन्तु बाहर की ओर नहीं जा सकते ।

२ जबरदस्त, बलवान व्यक्ति । उ०—पड़ता आसमांन कूं झेलै । मेहर का प्राक्रम, सोर का भभका, वाराह का जोर, जलालिया का धका, काळी का रुळन, सती का नारेळ ।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

३ देखो 'जलाल' (अल्पा., रू.भे.)

४ देखो 'जलालौ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—जलाल्यौ ।

जलालोक-सं०पु० [सं० जलालुक] जोंक ।

जलालौ-वि०—जबरदस्त, दृढ़, मजबूत । उ०—१ फाटौ लोह धरा आव सुरेस री वज्र फाटौ, पेखे भूप जावौ फाटौ जलालौ पहाड़ । फेरूं कप्र तरु हीरौ अठारा ठौड़ सूं फाटौ, घणो जातां म्हारौ हीयौ न फाटौ विकार ।—सरूपदास दादूपंथी

उ०—२ जलाला चाढ़ जुधवेर भांजण जबर, यळा आळा लियण विरद अगता । हैजमां तोड़ चहुंवांण भाला हथां, विसाला तपो जुग कोड़ 'वगता' ।—रांमलाल आढो

अल्पा०—जलालियौ, जलाल्यौ ।

जलाल्यौ—१ देखो 'जलाल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'जलालियौ' (रू.भे.)

उ०—१ प्रपा कूप नेंड़ो न वेंड़ो पयांणो । जलाल्या तणो फेटवो थेट जाणो ।—मे.म.

उ०—२ सेरां के झुंड, बळ के वितुंड, हूरां के हार, दिल के उदार'। काळी के चक्र, जलाल्या की टक्कर ।—ला.रा.

३ देखो 'जलालौ' (अल्पा., रू.भे.)

जळावण-वि०—जलाने वाला, भस्म करने वाला ।

उ०—नमो कपिळेसुर दिस्ट करूर, नमो सुत सग्र जळावण सूर ।
—ह.र.

जळावणौ, जळाववौ—देखो 'जळाणौ' (रू.भे.)

उ०—जळ वड़वानळ जिकौ जळावै । ऊन्हौ तिकौ सदमंदचे आवै ।
—सू.प्र.

जळावियोड़ौ—देखो 'जळायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जळावियोड़ी)

जळासय-सं०पु० [सं० जलाशय] वह स्थान जहां अधिक मात्रा में पानी इकट्ठा रहता हो । उ०—सूरय आपण पइ थापड, जगत्र संतापइ । जे जीव थळ चरइ, तेहि जळासय अनुसरइ ।—मुरकलानुप्रास

जळासयसोसण-सं०पु० [सं० जलाशयशोषण] जलाशय, तालाब आदि सोखते श्रावक के सातवें व्रत का अतिचार रूप, पन्द्रहवां कर्मदान में चौदहवां कर्मदान. (जैन)

जळाहळ-सं०स्त्री०—१ चमक, दमक । उ०—१ भेळा गेहणा सूं जड़ाव जड़ियो छै । सोभा सूरजं री किरण री जळाहळ लाग रही छै ।
—रीसालू री वात

उ०—२ कंठसरी वहु क्रांति मिळी मुकताहळां । हिंदुळ नोसरहार, जळूस जळाहळां ।—वां.दा.

[सं० जलधर] २ समुद्र ।

वि०—१ देदीप्यमान । उ०—सुत्र चहन प्रथी मज जिता धरिया सकळ, भांण तप जळाहळ मुजस भावै । इता गुण तूज में 'वगतसी' 'अजावत', अंगोटो देखतां निजर आवै ।—महाराजा वगतसिंह रो गीत

२ प्रज्वलित ।

जळि—देखो 'जळ' (रू.भे.) उ०—पांखे पांणी थाहरइ, जळि काजळ गहिळाइ । सयणां-तणां संदेसड़ा, मुख वचने कहिवाइ ।—ढो.मा.

जळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में बना हुआ, दग्ध हुवा हुआ, भस्म. २ झुलसा हुआ.

३ (बहुत गर्मी या आंच के कारण किसी पदार्थ का) कोयले या भाप के रूप में बना हुआ. ४ ईर्ष्या, डाह या द्वेष के कारण कुढ़ा हुआ.

५ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ । (स्त्री० जळियोड़ी)

जळियोतन-वि०—१ जो सहनशील न हो तथा जिसे शीघ्र क्रोध आता हो. २ ईर्ष्यालु ।

जळजंपियौ, जळियोजामळियौ-क्रि०वि०—१ यथास्थान. २ शान्त, चुप।

जलिर-वि० [सं० ज्वलिर] जलने के स्वभाव वाला (जैन)

जळिहर-सं०पु० [सं० जलधर] बादल ।

जलील-वि० [अ० ज़लील] १ तुच्छ, बेक़दर. २ जिसने नीचा देखा हो, अपमानित ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

जलूक, जलूग, जलूगा, जलूया-सं०स्त्री० [सं० जलुका, जलूका] देखो—'जळोक' (उ.र. जैन)

जळूस-सं०पु० [अ० जुलूस] १ बहुत से लोगों का एकत्रित होकर (प्रायः किसी सवारी के साथ) आनन्द या उत्सव हेतु किसी विशिष्ट स्थान पर जाना अथवा नगर की परिक्रमा करना. २ समूह ।

उ०—अलक डोरा तिल चड़सवौ, निरमळ चिबुक निवांण । सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण । प्रेम बाग पहचांण निरंतर पाळही, ग्रीवा कंबू कपोत गरब्बां गाळही । कंठसरी वहु क्रांति मिळी मुकता हळांह, हिंदुळ नौसरहार जळूस जळांह ।—वां.दा.

जळूसी-वि०— जलूस से संबंधित ।

सं०पु०—१ जलूस में सम्मिलित व्यक्ति ।

सं०स्त्री०—२ शान-शौकत ।

जळेंद्र-सं०पु०यौ० [सं० जलेंद्र] १ वरुण. २ महासागर ।

जळेचर—देखो 'जळचर' (रू.भे.)

जळेव, जलेव-सं०स्त्री० [अ०] १ हाजरी । उ०—असचढ़चौ राजा अभी, कव चाढ़ै करिराज । पोहर हेक जलेव में, मोहर हले महाराज ।
—अज्ञात

२ तैनात, मुकर्रर । उ०—स्त्री जी समेदसिंघजी देसूरी सैल करण पधारता जद भमरा वा कीपलां री कावड़ां जलेव वैती गांव रा डावड़ा मांगता ज्यांनै कीपला भमरा दिरीजता ।—वां.दा. ख्यात

सं०पु०—३ राजा की सवारी के इर्द गिर्द लगाया जाने वाला बड़ा और मोटा रस्सा जिसके कारण जन-समूह राजा की सवारी से दूर रहे. ४ इस रस्से को पकड़ने वाला राजा का सेवक. ५ आवृत्त, घेरा।

जलेवचौक-सं०पु०यौ०—राजा के महल के पास का वह चौक जिसमें फौज या दूसरी सवारी का लवाजमा खड़ा रहता है।

जलेवदार-सं०पु०यौ०—राजा का समीपवर्ती सेवक। उ०—१ करि कटक नै राव चढ़ियौ। ज्यूं कोसे च्यार पांच गांम रह्यौ ताहरां जलेवदार मेल्हियौ।—वात नांन्है वाघेलै री

जळेबिय, जळेबी-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की कुंडलाकार मिठाई जो खमीर उठाये हुए पतले मैदे से बनाई जाती है।
उ०—पकवांन जळेबिय पावन को, गहरी धुनि रागनि गावन को।
२ गोल घेरा, कुंडली। —ऊ.का.

जळेरिय, जळेरी-सं०स्त्री०— १ सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर यदा-कदा होने वाला प्रकाश का वह घेरा जो वर्षा के आगमन का सूचक माना जाता है।
[सं० जलधरी] २ वह छोटा कुंड जिसमें शिवमूर्ति पर चढ़ाया गया जल एकत्रित होकर बहता है. ३ लुहार का लोहा गरम कर के पानी में बुझाने का एक बरतन।
[सं० जलधरी] ४ शिव लिंग के ऊपर टांगा जाने वाला मिट्टी का घड़ा।
रू०भे०—जळहरी।

जलेला-सं०स्त्री० [सं० जलेला] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

जळेस, जळेसर, जळेस्वर-सं०पु० [सं० जलेश, जलेश्वर] १ वरुण (अ.मा.)
२ समुद्र. ३ इंद्र (अ.मा.)

जळोक, जळोका-सं०स्त्री० [सं० जलुका] प्राय: जलाशयों अथवा उनके किनारे रहने वाला कीड़ा जो प्राणियों के शरीर से चिपक कर खून चूसता है। जोंक।
रू०भे०—जळौक, जळौका।

जळोटिया—देखो जाळोटिया (रू.भे.)

जळोदर-सं०पु० [सं० जलोदर] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी का पेट आगे की ओर फूल आता है और नाभि के नीचे पेट की तह में पानी भर जाता है।

जलौ-सं०पु०—१ जलाल गहांणी नामक व्यक्ति जो बड़ा उदार था. २ इसके नाम पर गाया जाने वाला राजस्थानी का एक प्रसिद्ध लोक-गीत. ३ जन्तु विशेष. जोंक, जलिका।
रू०भे०—जल्लौ।

जळौक, जळौका—देखो 'जळोक' (रू.भे.)

जल्द-क्रि०वि० [अ० जल्द] शीघ्र, चटपट, अविलम्ब।

जल्दबाज-वि०यौ० [अ० जल्द+फा० बाज] उतावला।

जल्दी-सं०स्त्री० [अ०] शीघ्रता, फुरती।
रू०भे०—जलदि, जलदी।

जल्प, जल्पण-सं०पु० [सं० जल्प, जल्पन] १ कथन. २ प्रलाप, बकवाद।

जल्पणौ, जल्पबौ—देखो 'जळपणौ' (रू.भे.)
उ०—अनंत आप हैं अनल्प आदि अंत अल्प में। व्रितांत जल्पनू व्रिथा, तुला न कोटि कल्प में।—ऊ.का.

जल्पियोड़ौ-भू०का०कृ०—देखो 'जळपियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० जल्पियोड़ी)

जल्फूकार-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जल्लं, जल्ल-सं०पु०—प्रस्वेद, शरीर का मैल (जैन)

जल्लाद-सं०पु० [अ०] १ हत्या करने वाला. २ प्राणदंड दिये गये अभियुक्त के प्राण लेने वाला।
रू०भे०—जलाद।

जल्लाल-सं०पु० [अ० जलाल] आतंक, प्रभाव।
उ०—जल्लाल जुल्म इजहार जाव, होयगी कयामत में हिसाब।
—ऊ.का.

जल्लौ—देखो 'जलौ' (रू.भे.)

जल्लौसहि-सं०स्त्री० [सं० जल्लौषधि] एक प्रकार की आध्यात्मिक शक्ति जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग का नाश होता है।
उ०—आमोसहि विप्पोसहि खेलोसहि जल्लोसहि सव्वोसहिलब्धि, वैक्रियलब्धि, पुलाकलब्धि, तेजोलेस्यालब्धि......।—व.स.

जवंन—देखो 'जवन' (रू.भे.) उ०—जालिम जोध जुआंण जवंनां जीपणौ। घांसाहर दळ पासि कव्है पोरिस घणौ।—ल.पि.

जव-सं०पु० [सं०] १ वेग, तेजी। उ०—जिसौ नूर नरपती इसौ सांमंत सूर नर। जव जैसोइ जंगमां सोभि तैसैइ मद सिंधुर।—रा.रू.
[सं० यव] २ एक प्रकार का अनाज जो प्राय: समस्त उष्ण तथा समप्रकृतिस्थ स्थानों में होता है। इसका पौधा बिल्कुल गेहूँ का सा होता है। जौ. ३ अंगुल का आठवां भाग (जैन) ४ कन्या को पहनाई जाने वाली एक प्रकार की चोली (जैन) ५ इस नाम का एक मनुष्य (जैन) ६ उँगली में होने वाली जौ के आकार की एक रेखा, एक सामुद्रिक चिन्ह (शुभ)
क्रि०वि०—शीघ्र (ह.नां.)
देखो 'जव' (रू.भे.)

जवख-सं०पु०—भूत, प्रेत, जिंद ?
उ०—जवन री कन्या नूं जवख लागी हुतौ सो नारायण भट्ट काढ़ दियौ।—वां.दा. ख्यात

जवखार-सं०पु० [सं० यवाक्षार] देखो 'जवाखार' (अमरत)

जवगुडायलौ-सं०पु०—आभूषणों पर खुदाई करने का एक औजार (स्वर्णकार)

जवड़ौ-वि० (स्त्री० जवड़ी) १ जैसा, तुल्य, समान. २ जितना।
उ०—जीव रै जेज म कर तिल जवड़ी, माठा आखर दळिद चा मेट।
—ईसरदास बारहठ
क्रि०वि०—जिस मात्रा में।

जवज्जव-संपु० [अनु०] [illegible], [illegible]। उ०—जवज्जव कीन संगाह [illegible]। निसनिस कीध निवेह गज्जन।—सू.प्र.

जवण-संपु० [सं० जव+रा०प्र०ण] वेग, शीघ्र गति (जैन)
 [सं० यापन] निर्वाह, गुजारा (जैन)
 [सं० यवन] म्लेच्छ, यवन।

जवण-दीव-संपु० [सं० यवन-द्वीप] वह द्वीप जहां यवन अधिक निवास करते हों (जैन)

जवणपुर—देखो 'जवनपुर' (रू.भे.) उ०—नगळउ ही संसार आइ जि [illegible] आणिपउ। जवण-पुरउ ज्यउं-ज्यउं करइ तिह सउ कळा कमार।—अ. वचनिका

जवणांण—देखो 'जवनांण' (रू.भे.)

जवणा-संस्त्री० [सं० यापना] १ शरीर-निर्वाह (जैन), जीवन-निर्वाह (जैन)
 २ संयम का निभाव (जैन)

जवणाणिया-संस्त्री० [सं० यवनानिका] एक प्रकार की लिपि (जैन)

जवणाळिया-संस्त्री० [सं० यवनालिका] कन्या को पहनाई जाने वाली एक प्रकार की चोली (जैन)

जवणि—देखो 'जमना' (रू.भे.) उ०—खेलइ खेलत रायकुमर अंतेउरि जुत्तु। गंग जवणि नय अंतराळि, कुळगिरि संपत्ता।
—प्राचीन फागु संग्रह

जवणिज्ज-वि० [सं० यापनीय] १ समय गुजारना (जैन) २ इन्द्रिय और मन को जीतना (जैन)

जवणिया-संस्त्री० [सं० यवनिका] कनात, पर्दा (जैन)

जवणी-संस्त्री० [सं० यवन+रा०प्र०ई] यवन स्त्री (जैन)

जवदोस-संपु०यौ० [सं० यवदोष] रत्नों में पड़ने वाली जव के आकार की रेखा जिससे रत्न दूषित माना जाता है।

जवन-संपु० [सं० यवन] १ यवन, मुसलमान।
 उ०—नूरतन रीझंतां भीजतां सैलगुर, पहां अन दीजतां कदम पाछै। दांत चढतां जवन सीस पछटी दुजड़, तांत सावण ज्युंहीं गई ताछै।
—गोरधन बोगसो
 २ राक्षस, दैत्य (अ.मा.)
 [सं० जवन] ३ घोड़ा. ४ वेग. ५ पवन (अ.मा.)
 वि० [सं०] वेगवान, वेगयुक्त, तेज।
 रू०भे०—जवंन, जवन्न, जवन्निय।
 मह०—जवनेस।

जवनणी-संस्त्री०—यवन स्त्री।
 वि०—यवनकी। उ०—जवनणी तणी घड़ पूगड़ी जीव लै। होड नरपणा हमस छोड हाली।—प्रथीराज राठौड़

जवनपत, जवनपति-संपु०यौ० [सं० यवनपति] बादशाह।'
 उ०—१ कटठ कांटळ कटक रोस चांमास कर, जवनपत हींदवां छात जूटा। अभंग जसराज सर कणंगर ऊपरा, खाग वादळ वरस वार गूटा।—अजबसिंघ बारहठ उ०—२ जवनपति परताप भांण ग्रीखम जिसौ। आगि कहतां साळां वदन दाफै इसौ।—सू.प्र.
 रू०भे०—जवनांपत, जवनांपति।

जवनपुर-संपु०यौ० [सं० यवनपुर] दिल्ली। उ०—आयौ जवनपुर जग टकौ आगरै, समहर सग सप्रांणौ।—नैणसी
 रू०भे०—जवणपुर।

जवनांण-संपु० [सं० यवन+रा०प्र० आंण] यवन, मुसलमान।
 उ०—१ जवनांण दळे बीजूजळे देख भले कुळ देस रो।—रा.रू.
 उ०—२ उठै वृथ पळ अंग, जूथ ढाहे जवनांणां।—सू.प्र.
 रू०भे०—जवणांण।

जवनांपत, जवनांपति, जवनांपती—देखो 'जवनपत' (रू.भे.)
 उ०—चक्रवत कमंध चिलै भ्रूह चाडै, निपट निमाड़ै जेम नमै। जवनांपती असल तूजी जिम, खांचो तिम खांचियो खमै।
—तेजो खिड़ियो

जवनाचारज-संपु०यौ० [सं० यवनाचार्य] यवन वंश का एक ज्योतिषाचार्य जिसका उल्लेख ज्योतिष ग्रंथों में आया है।

जवनाळ-संपु० [सं० यवनाल] १ जुआर का पौधा. २ ज्वार नामक अन्न. ३ सूखने पर पशुओं को खिलाये जाने वाले जौ के डंठल।

जवनासव, जवनासु-संपु० [सं० यवनाश्व] मिथिला देश के एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा का नाम जिसके पुत्र का नाम बहुलाश्व था (सू.प्र.)

जवनिका-संस्त्री० [सं० यवनिका] नाटक का परदा।
 उ०—प्रगटै मधु कोक संगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि। निज मंत्र पढे पात्र रितु नांखी, पहुपंजळि वणराय परि।—वेलि.
 रू०भे०—जवनी।

जवनिस्ट-संपु०यौ० [सं० यवनिष्ठ] मुसलमान। उ०—अज्ज धरम रच्छक इतै रु जवनिस्ट उतै। घाट हळदी रण अमावै भट भालां की।—बालावक्स बारहठ

जवनी—देखो 'जवनिका' (रू.भे.)

जवनेंद्र-संपु० [सं० यवनेंद्र] बादशाह। उ०—सेहरसाह (सेरसाह) जवन पूरब में जवनेंद्र हुवौ जिणरा आतंक सूं कासी सूनी हुई।
—बां.दा. ख्यात

जवनेस-संपु० [सं० यवनेश] १ बादशाह। उ०—करि बळ दूणौ कोपियौ, जिको दुसह जवनेस। सुरजन हू कहियौ सजै, अब मारौ मुत एस।—वं.भा.
 २ देखो 'जवन' (महत्व, रू.भे.) उ०—खहे जमक्रन्न तणौ 'खड़गेस', जिको खग झाट ढहे जवनेस।—सू.प्र.

जवन्न—देखो 'जवन' (रू.भे.) उ०—१ अखई थंभ अकास कूं, माधवदास मुतन्न। कोड़ जवन्नां भंजणौ, बंधव जोड़ 'विसन्न'।—रा.रू.

जवन्निय-वि०—यवन की। उ०—२ जवन्निय सेन प्रळै किर ज्याळ। घमंघम पक्खर गुग्घरमाळ।—रा.रू.

जवफळ-संपु० [सं० यवफल] १ बांस (ह.नां.) २ इन्द्र जौ (नां.मा.)

जवबिंदू–सं०पु०यौ० [सं० यवबिंदु] वह हीरा जिसमें बिंदु सहित यव रेखा हो (दोष)

जवमज्भचंदपडिमा, जव-मज्भा–सं०स्त्री० [सं० यवमध्यचन्द्रप्रतिमा, यव-मध्या] एक प्रकार का कठिन व्रत विशेष जिसके अनुसार शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा के दिन त्रिकाल स्नानादि से निवृत होकर केवल एक ग्रास आहार लेकर क्रमशः एक एक ग्रास नित्य प्रति बढ़ा कर पूर्णिमा के दिन पन्द्रह ग्रास आहार लेवे। पुनः कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से नित्य प्रति एक-एक ग्रास घटाता हुआ अमावस्या के दिन निराहार रह कर व्रत को पूर्ण करे (जैन)
(मि०—चांद्रायण)

जवर—१ देखो 'जवाहिरात' (रू.भे.) २ देखो 'जौहर' (रू.भे.) ३ देखो जौहरी' (रू.भे.)

जवरदार–सं०पु०—जवाहरखाने का अफसर। उ०—वीस रिपिया खरची रा दिया, फेर देवीदास कह्यौ—आळै री कूंची जवरदार मोहण कन्है छै सो मांग लीजौ।—पलक दरियाव री वात

जवरारौ—देखो 'जमराज' (रू.भे.) उ०—तितरै गूजरी बाहर बाहर कर उठी, जवरारौ लीधौ, कुळ री खांपण मो गरीवणी री जीवारी गंवाय जाय रे, जाय हो चाचा मेरा, म्हारी घोड़ी हेकण नै बाढी, बीजी घोड़ी ले गयौ, किथी जाऊं।—राव रिणमल री वात

जवरी–सं०पु०—जौहरी।
कहा०—हीरै री पारख जवरी जोवै—हीरे की परीक्षा जौहरी ही कर सकता है। गुणी की कद्र विद्वान ही करते हैं।

जवरौ भौंरौ–सं०पु०—यमद्वितीया।

जवलि–क्रि०वि० [सं० यमल] एक साथ, शामिल। उ०—अरे कमळहि कुमुंदिहि सोहिया मांनस जवलि तळाय। अरे सीयळा कोंमळा सुरहिया वायइं दक्खिण वाय।—प्राचीन फागु-संग्रह

जववारय–सं०पु० [सं० यववारक] जव के अंकुर, जवारा।

जवलियौ—देखो 'भाउल्यौ' (रू.भे.)
(बहु व० जवलिया) २ स्त्रियों की कलाई का आभूषण।

जववेदी–सं०पु०—इंद्र (ना.डिं.को.)

जवस–सं०पु० [सं० यवस] १ घास, तृण (जैन) २ गेहूँ वगैरह धान्य (जैन)

जवसट, जवस्ट–सं०पु० [सं० यविष्ट] १ छोटा भाई (अ.मा., ह.नां.मा.) २ देखो 'जविस्ट' (रू भे.)

जवहर–सं०पु०—जवाहिरात। उ०—जर जवहर घर जोरुवां, लूंटांणी सम लाज। मेछां नीमड़ियौ विभौ, सुण चडियौ महाराज।—रा.रू.

जवहरड़ी, जवहरड़े–सं०स्त्री०— छोटी हरड़े।

जवहरी–सं०पु०—१ जौहरी। उ०—फडीया दोसी नइ जवहरी, नांमि नेस्ति कांमइ करी।—कां.दे.प्र.
२ जवाहिरात।

जवहार–सं०पु०—१ जवाहरात. २ अभिवादन।

जवांई–सं०पु० [सं० जामातृ] १ दामाद, जामाता। उ०—रतनसेन सुण नै जय करण नूं कहाड़ियौ सु चोर छै, सो थांहरौ जवांई छै।
—पंचदंडी री वारता
२ जमाने की क्रिया, जमावट।

जवांण, जवांन–वि० [फा० जवान = सं० युवानः] युवा, तरुण।
उ०—रांम नांम गाव रे, पायं कंज धाव रे। जांनकीस जांण रे, वेस तूं जवांण रे।—र.ज.प्र.
सं०पु०—१ मनुष्य, पुरुष. २ वीर पुरुष, योद्धा. ३ सिपाही. [सं० यवन] ४ म्लेच्छ, मुसलमान। उ०—२ जठै कोप काळोप मारू जवांणं। महाराज थंभे भुजा आसमांणं।—रा.रू.
रू०भे०—जुआंण, जुआंन, जुवांन, जुवांण, जुवांन, जूवांण, जूवांन।

जवांनपण, जवांनपणौ–सं०पु०—जवानी, युवावस्था। उ०—ए अखीयात कीध 'आसावत', रोदां सूं तेवड़ै रिण। वप वदियौ वरधापण वधतां, पोरस मछर जवांनपण।—दुरगादास री गीत

जवांनियवेस–सं०स्त्री० [सं० युवा + वयस् अथवा फा० जवान + सं० वयस्] युवावस्था। उ०—विढै रिण वीच जवांनियवेस। तठै हरनाथ तणौ 'सगतेस'।—सू.प्र.

जवांनी–सं०स्त्री० [फा० जवानी] तरुणाई, यौवन। उ०—भरी जवांनी पइसौ पल्लै। रांम चलावै तौ मारग चल्लै।—अज्ञात
मुहा०—१ चढ़ती जवांनी—यौवन के आगमन का समय. २ जवांनी उतरणी—बुढापा आना. ३ जवांनी ऊठणी—जवानी आना. ४ जवांनी चढ़णी—यौवन आना, युवावस्था आना, जवानी की मस्ती आना. ५ जवांनी ढळणी—देखो 'जवांनी उतरणी'।
कहा०—जवांनी ना देखे रात ना देखे दा'ड़ौ—यौवन न रात देखता है और न दिन। जवानी अंधी होती है।
रू०भे०—जुआंणी, जुआंनी, जुवांनी, जुवांणी, जुवांनी।

जवांमरद–वि० [फा० जवांमर्द] बहादुर, शूरवीर।
सं०पु०—सिपाही।

जवांमरदी–सं०स्त्री० [फा० जवांमर्दी] वीरता, बहादुरी।

जवांहर–सं०पु०—जवाहिरात, रत्न। उ०—जड़ियौ तिलक जवांहरां, जांणै दीपक जोत। वालम चीत पतंग विधि, हित सूं आसक होत।
—बां.दा.

जवा–स०स्त्री० (सं० जया) १ हड़ हर (ह.नां.)
[सं० जपा] २ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जवाई–सं०स्त्री०—१ जाने की क्रिया या भाव. २ एक रंग विशेष. ३ मारवाड़ की एक नदी का नाम।

जवाखार–सं०पु०यौ० [सं० यवक्षार] जौ के क्षार से बनने वाला एक प्रकार का पाचक नमक (अमरत)
रू०भे०—जवखार।

जवाद–सं०पु०—घोड़ा।

जवादिकस्तूरी—सं०स्त्री०यौ० [अ० जुब्बाद+सं० कस्तूरी] गंध मार्जार से निकाला जाने वाला एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, गोरामार।

जवादु—सं०पु०—योद्धा, वीर। उ०—जंपा वीर विना कदाहु सनमां रण मां साथा सूर, जवादु जग री जीत अग्गाणा जरूर। आहू दंदी साग वाला भागा नहै तार मोडो, पठाणां सूं दाहूंदो बाग बहादूर।
—दाहूंदी सायां री गीत

जवाधि—सं०पु०—एक प्रकार का पुष्प।

जवाधिक—सं०पु० [सं०] बहुत तेज दौड़ने वाला घोड़ा।

जवाद—देखो 'जवाब' (रू.भे.)

जवाबतलब—देखो 'जवाबतलब' (रू.भे.)

जवाबदावो—देखो 'जवाबदावो' (रू.भे.)

जवाबदेह—देखो 'जवाबदेह' (रू.भे.)

जवाबदेही—देखो 'जवाबदेही' (रू.भे.)

जवाबसवाल—देखो 'जवाबसवाल' (रू.भे.)

जवाबी—देखो 'जवाबी' (रू.भे.)

जवार—१ देखो 'जुहार' (रू.भे.) उ०—१ कहजे यूं बूढा कमंध नै, जे हात हूंत जवार। गोळ घरा नागोर रा, संग लाविया सिरदार।
—पा.प्र.

उ०—२ थारी महंदी पर वारूं पन्ना जवार। पेमरस महंदी राचणी।
—लो.गी.

२ एक धान्य विशेष, ज्वार, जुआर। उ०—एक नमायां तुंड अति, उर लगि चिबुक अनोप। बण कांकणस जवार विधि, पांन कलंगी ओप।—रा.रू.

रू०भे०—जुआर, जुवार, जुहार, जूआर, जूवार, ज्वार।

जवारखांनो—देखो 'जवाहरखांनो' (रू.भे.)

जवारड़ा (बहु व०) देखो 'जुहार' (१, अल्पा. रू.भे.)

जवारड़ो—देखो 'जुहार' (२,३, अल्पा. रू.भे.)

जवारमल—सं०पु०—राजस्थानी का एक लोकगीत।

जवारा—देखो 'जंवारा' (रू.भे.)

जवारात—देखो 'जवाहिरात' (रू.भे.)

जवारी—सं०स्त्री०—१ विवाहादि अवसर पर अपने दामाद या बरातियों को दिया जाने वाला नकद रुपया या कपड़े आदि में दी जाने वाली भेंट।

२ दूल्हे द्वारा किया जाने वाला अभिवादन तथा अभिवादन करने पर दूल्हे को दिया जाने वाला रुपया या भेंट।

क्रि०प्र०—करणी, देणी, लेणी।

३ देखो 'जुआरी' (रू.भे.)

रू०भे०—जंवारी, जुआरी, जुवारी, जुहार, जुहारी।

जवाल—सं०पु० [अ०] १ जंजाळ, आफत। उ०—तो तूं खजानां रै ऊपर भरोसो मत कर क्यूं माल मारग जवाल जांणे रा में छै।
—नी.प्र.

२ अवनति, घटाव।

जवाळाजीह—सं०स्त्री०यौ० [सं० ज्वाला जिह्वा] अग्नि (डि.को.)

जवाळामुखी—देखो 'ज्वाळामुखी' (रू.भे.)

जवाळी—सं०स्त्री०—वधू के गले में विवाह के समय डाला जाने वाला हार जिसमें छुहारे, खोपरे पिरोये जाते हैं और उन पर वरक लगे रहते हैं (कायस्थ)

जवास, जवासी—देखो 'जवासो' (रू.भे.) उ०—जिण दिन लीली जळै जवासी, मांडै राड़ सांप री मासी। बादळ रहै रात रा बासी, यूं जांणो चौकस मेह आसी।—वरसा विज्ञान

जवासीर—सं०पु० [फा० जावशीर] कुछ पीले रंग का तथा बहुत पतला एक प्रकार का गंधाबिरोजा।

जवासो सं०पु० [सं० यवासक, प्रा० जवासअ] १ एक कंटीला पौधा जिसकी पत्तियां करौंदे की पत्तियों के समान होती हैं. २ एक प्रकार का घास जो वर्षा ऋतु में वर्षा के कारण जल कर भस्म हो जाता है।

रू०भे०—जंवास, जवासी।

जवाहड़—सं०स्त्री०—छोटी हर्रे, छोटी हरीतकी।

जवाहर—देखो 'जवाहिरात' (रू.भे.) उ०—घणां मोतियां री माळा नैं जवाहरां रा जाळ उर ऊपर रुळ रया छै। मांहोमांह गुलाब छिड़कीजै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

जवाहरखांनो—सं०पु० [अ० जवाहर+फा० खांनः] वह घर वा स्थान जहां जवाहिरात रक्खे जाते हों।

रू०भे०—जवारखांनो।

जवाहरात, जवाहिर, जवाहिरात—सं०पु० [अ० जवाहरात] रत्न, मणि आदि का बहुवचन जवाहिरात। उ०—एक हिस्से मांहीं नकदी और जवाहरात, एक हिस्से में हाथी घोड़ा तीन, हिस्से मवेशी गाय भैंस रथ पालकी लेवो।—गोड़ गोपाळदास री वारता

रू०भे०—जवारात, जवाहर, जव्वाहर।

जवाहरी—१ देखो 'जोहरी' (रू.भे.) उ०—जंवाहर परक्ख जांत के जवाहरी करै।—सू.प्र. २ देखो 'जवारी' (रू.भे.)

जवि—वि० [सं० जविन्] वेग वाला (जैन)

जविण—वि० [सं० जविन] १ वेग युक्त (जैन) २ चंचल (जैन)

जविस्ट—सं०पु० [सं० यविष्ट] अग्नि, आग (डि.को.)

वि०—छोटा, कनिष्ठ।

जवेरी—सं०पु० [फा० जौहरी] जौहरी।

जवौ—सं०पु०—१ शुभ रंग का घोड़ा. २ एक प्रकार का कीड़ा जो प्रायः खाद मिश्रित मिट्टी में पाया जाता है, पशुओं या मनुष्यों के चिपक कर यह उनका खून चूसा करता है।

रू०भे०—जुओ।

जव्वाहर—देखो 'जवाहिर' (रू.भे.) उ०—करै दांन हित कंत तरै दुज दीन निरंतर। किता चीर मंजीर हीर मांणक जव्वाहर।
—रा.रू.

जसंसी–वि० [सं० यजस्विन्] यश वाला (जैन)

जस–सं०पु० [सं० यश] १ सुख्याति, कीर्ति, प्रशंसा, बड़ाई।

उ०—पड़िया जुध प्रथमी जस पावै। कनिया हतण अजोग्य कहावै।

—सू.प्र.

पर्या०—असतूत, असतूती, उदाहरण, कीरति, ख्यात, गुणावली, प्रिसिधि, प्रताप, प्रसध, वखांण, वरण, वयण, वाच, विरुद, साधुवाद, सवद, समगिनां, सिलोक, सुजस, सुपारस, सुसवद, सोभाग।

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष (क.कु.बो.) सर्व०—जिस।

उ०—अमर वड तेतीस कोड जस नांम जपंदे।—केसोदास गाडण

वि०—जैसा। उ०—संपजे जस जस सूर री, मह कुण दे तस मांण। जंग जीव कै भोकिया, भूपत हुवौ न भांण।—रेवतसिंह भाटी

जसकर, जसकरण–वि०—१ यशगान करने वाला।

उ०—पीळ प्रवाह वाह हिंदूपत, रटै सुजस दोय राह रसा। 'विजमल' हरा अनेक वणाया, जसकर भारी भूप जसा।

—महाराजा मांनसिंह री गीत

२ ऋषभदेव स्वामी के ४२ वें पुत्र का नाम (जैन)

जसकळस–सं०पु० [सं० यशकलश] वह घोड़ा जिसके तीन पैर श्वेत हों, सिर में तिलक हो और वक्षस्थल में भौंरी (चक्र) हो (शा.हो.)

जसकित्ति–सं०स्त्री० [सं० यशकीर्ति] यश, कीर्ति (जैन)

जसखाटक–वि०—यशस्वी।

जसगाथ–सं०स्त्री०—यशगाथा, यशवर्णन। उ०—महामत महण जसगाथ मुनि वाळमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधौ। इधक अनुराग कर पुरख निरजर अही, लोड त्रिय भाग कर वांट लीधौ।

—र.रू.

जसग्राहग–वि०यौ० [सं० यशग्राहक] यशस्वी। उ०—जांण प्रवीण विजौ जस-ग्राहग, करणीगर सहु विधि कियौ। क्रम कायरां लखण क्रपणां रा, सु तौ न जांणै सरवहियौ।—ईसरदास बारहठ

जस-घोस–सं०पु० [सं० यशघोष] ऐरावत क्षेत्र के भावी तृतीय तीर्थंकर का नाम (जैन)

जसचंद–सं०पु० [सं० यशचंद्र] एक जैन गणी का नाम (जैन)

जसड़ौ–वि०—जैसा। उ०—जसड़ौ हुतौ देग वट जाहर, तेग वगां भ्रत कियौ तसौ।—उम्मेदसिंह सीसोदिया री गीत

देखो 'जस' (अल्पा., रू.भे.)

जसजोड़ौ–वि०—१ यशस्वी. २ उदार।

सं०पु०—कवि।

जसडाक, जसढोल–सं०पु०—यशवाद्य। उ०—वाळपणै में वाजिया, जेहल रा जसढोल। न कूं वसावै क्रिपण नर, वूढ़ा ही जस वोल।

—वां.दा.

जसत–सं०पु० [सं० यपद] एक धातु, जस्ता।

रू०भे०—जसद, जसोद।

जसतलक–सं०पु० [सं० यशतिलक] वह घोड़ा जिसके चारों पैर घुटने के नीचे सफेद रंग के हों और ललाट में सफेद तिलक हो (शा.हो.)

जसतांण–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

जसथांनी–सं०पु०—मुसलमानों की एक जाति।

जसथूळ–वि० [सं० यश+स्थूल] यशस्वी।

जसद—देखो 'जसत' (रू.भे.)

जसधण–सं०पु० [सं० यशोधन] एक राजा का नाम (जैन)

जसधर–वि० [सं० यशधर] यश को धारण करने वाला।

उ०—राजथंभ मंत्रियां, राज रच्छिक उमरावां। राजद्वार बहु कुरव, राज जसधर कविरावां।—सू.प्र.

सं०पु०—पक्ष के पांचवें दिन का नाम (जैन)

जसनांमौ–सं०पु० [सं० यश+नामः] यश, यश की प्रसिद्धि।

जसब–सं०पु० [अ० यशव] एक प्रकार का हरे रंग का पत्थर।

जसबर–वि० [सं० यश+वर] यशस्वी। उ०—जे दातार जमीन पर, जुग च्यार जिकर का। सूरधीर सच्चा मरद, बच्चा जसबर का।

- दुरगादत्त बारहठ

जसभद्द–सं०पु० [सं० यशोभद्र] १ शय्यम्भव सूरि के एक शिष्य का नाम (जैन)

२ इस नाम के एक आचार्य का नाम जो आर्य सम्भूत विजय के शिष्य थे (जैन) ३ पक्ष के पन्द्रह दिनों में से चौथे दिन का नाम (जैन)

४ यशोभद्र से निकले हुए एक कुल का नाम (जैन) ५ इस नाम का श्री पार्श्वनाथ का एक गणधर (जैन)

जसमंगळ–सं०पु० [सं० यश+मंगल] वह घोड़ा जिसके मस्तक, ललाट और कंठ पर भौंरी (चक्र) हो (शा.हो.)

जसमंत–सं०पु० [सं० यशोमत] इस नाम के एक कुलकर (जैन)

वि०—यशस्वी, कीर्ति वाला (जैन)

जसमां–सं०स्त्री०—एक ओड जाति की पतिपरायणा स्त्री जिसका आख्यान राजस्थान के अंतर्गत 'रातीजोगो' के गीतों में गाया जाता है।

जसमाळ–सं०स्त्री० [सं० यशमाला] १ यशमाला। उ०—पुन फळ ग्रहे-ग्रहे फळ पोरस, 'माल' तणौ पहरे जसमाळ। करी कैलपुर कळह नवी कथ, घड़ियौ जगन घड़े घांटाळ।—महारांणा सांगा री गीत

२ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २२ मात्रा होती हैं।

जसर—देखो 'जूसर' (रू.भे.)

जसरथ—देखो 'दशरथ' (रू.भे.)

जसराज–सं०पु० [सं० यशराज] एक प्रकार का घोड़ा (शा हो.)

जसरुघवंसी–सं०पु० [सं० यश रघुवंशी] लक्ष्मणजी का एक नाम (नां.मा.)

जसलद्ध, जसलुद्ध–वि० [सं० यशोलुब्ध] यशलोभी, यशलोलुप।

उ०—प्रतिहार बुद्धपाळ री, सुता प्रभा गुण सुद्ध। सोमेस्वर परणी सुमति, ललित रूप जसलुद्ध।—वं.भा.

जसवई–सं०स्त्री० [सं० यशोमति] १ दूसरे सगर चक्रवर्ती की माता का

नाम (जैन) २ श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी की पुत्री की पुत्री का नाम (जैन) ३ तृतीया, अष्टमी एवं त्रयोदशी तिथियों की रात्रि
रू०भे०—जसवती। (जैन)

जसवणी-वि०—यशस्वी। उ०—पाटण मूळराज ली, जसवणी हुतो, कह्यो 'इतरी पीढ़ी आंपणा घर सूं पाटण रो राज नहीं जाय।'—नैणसी

जसवती—देखो 'जसवई' (रू.भे., जैन)

जसवांन-वि० [सं० यशवान] यशस्वी।

जसवा, जसवाउ-सं०पु० [सं० यशोवाद] यश, कीर्ति।
उ०—१ राज्याभिसेक पुत्र सिक्षा, वत्स ! प्रजा सुखि पाळेवी, अन्याय वाट टाळेवी, भलउ न्याय आदरिवौ, जसवा उपारजेवउ।
—व.स.
उ०—२ केवलिवयणु जु सच्चु किउ। तिहूं भुयणि जसवाउ लिद्धउ।
—पं.पं.च.

जसवाय-सं०पु० [सं० यशोवाद] धन्यवाद (जैन)

जसवास, जसव्वास-सं०पु०[सं० यशोवाद+रा.प्र.स] १ यश।
उ०—औसर नरपुर उद्धरे, वैकुंठ कीधा वास। राजा 'रैणाइर' तणौ, जुगि अविचळ जसवास।—वचनिका
२ लखपत पिंगळ के अनुसार एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो सगण, एक नगण, लघु एवं गुरु होते हैं।

जर्सास्स-वि० [सं० यशस्विन्] यशवान, यशस्वी (जैन)

जसहड़-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जसहर-सं०पु० [सं० यशोधर] १ जम्बूद्वीप के भारत खण्ड में होने वाला सोलहवां तीर्थंकर (जैन) २ पक्ष के पन्द्रह दिनों में से पांचवां दिवस (जैन)
सं०स्त्री०—३ दक्षिण रुचक पर्वत के ऊपर की आठ दिशा कुमारियों में से चौथी दिशा कुमारी (जैन) ४ पक्ष की पन्द्रह रात्रियों में से चौथी रात्रि का नाम (जैन) ५ जम्बू सुदर्शना नामक वृक्ष (जैन)
वि०—यशस्वी, यशवान (जैन)

जसा-वि०—जैसा। उ०—सावास छै, वड़ी रजपूती राखी। जसा पुरसां रा थे लड़का था विसी हीज कीवी।—सूरे खींवै री वात
सं०स्त्री० [सं० यशा] १ कौशाम्बी के रईस काश्यप की स्त्री और कपिल की माता (जैन) २ भृगु पुरोहित की स्त्री (जैन)

जसाग्रां-सं०स्त्री०—पुत्र जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला मांगलिक गीत, सोहर।
रू०भे०—जसाया।

जसाई-सं०पु०—यश का बाजा, नगाड़ा। उ०—'रामै' तणा जसाई रड़िया।—द.दा.

जसाया—देखो 'जसाग्रां' (रू.भे.)

जसियौ-वि०—जैसा। उ०—कैंवर अबीढ़ो कामली, जसियौ औरंगजेब। आंण मिळ्या सो ऊबरया, राजा झालि रकेब।—शि.वं.

जसी-वि०—१ जैसी। उ०—उच्चरी तुररी कुररी जसी। सुभट ना सवि रोम ज उद्धसी।—विराट पर्व
२ यशस्वी।

जसीलौ-वि० [सं० यश+रा०प्र० इलौ] यशप्रिय, यशलोलुप।

जसु-सं०पु०—यश। उ०—गयणे दुंदुहि द्रमद्रमीय सुरवरि जसु गाईउ।—पं.पं.च.
सर्व०—जिसकी। उ०—प्रभणै पित मात पूत मत पांतरि, सुर नर नाग करै जसु सेव। लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव।—वेलि.

जसुदा—देखो 'जसोदा' (रू.भे.) उ०—गिरावै घृत गोरस भरी गागरां, पूत जसुदा तणौ राह पाड़े।—वां.दा.

जसुमती-सं०स्त्री० [सं० यशुमती] यशोदा।

जसूदा—देखो 'जसोदा' (रू.भे.)

जसै-क्रि०वि०—जैसे।
वि०- जैसा।

जसोड़-सं०पु०—भाटी वंश के क्षत्रियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जसोचंद—देखो 'जसचंद' (रू.भे., जैन)

जसोडाटी-सं०स्त्री०—जैसलमेर राज्यान्तर्गत जसोड़ भाटियों के राज्य की भूमि।

जसोद—देखो 'जसत' (रू.भे., अ.मा.)

जसोदा-सं०पु० [सं० यशोदा] व्रज में माता के रूप से कृष्ण का पालन करने वाली नंद की स्त्री।
रू०भे०—जसुदा, जसूदा, जसोमत, जसोमति, जसोमती, जस्सुदा।

जसोदानंद-सं०पु० [सं० यशोदानंद] श्रीकृष्ण।

जसोधण, जसोधन-वि० [सं० यशोधन] यशस्वी। उ०—हुवा जसोधन पुरस जे, इळ वडमत अवदात। ज्यांरी कहीं पुरांण में, व्यास तपोधन वात।—वां.दा.
सं०पु०—इस नाम का एक राजा (जैन)

जसोधर-सं०पु० [सं० यशोधर] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
वि०—यशस्वी।

जसोधरा-सं०स्त्री० [सं० यशोधरा] १ गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता. २ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिशा कुमारी (जैन) ३ पन्द्रह रात्रियों में से चौथी रात्रि का नाम (जैन)

जसोनांम-सं०पु० [सं० यशोनामन्] नाम कर्म की एक प्रकृति जिसके उदय से जीव यश प्राप्त करता है (जैन)

जसोमत, जसोमति, जसोमती—देखो 'जसोदा' (रू.भे.)
उ०—१ वार वाहां की आठ मासां वळण, नह की वळण जसोमत नंद।—वां.दा. उ०—२ महा अदभूत जवै उपमांण। जसोमति पूत नचै फण जांण।—मे.म.

जसोमाधव–सं०पु० [सं० यशोमाधव] विष्णु ।

जसोया–सं०स्त्री० [सं० यशोदा] १ महावीर स्वामी की स्त्री का नाम । (जैन)
२ देखो 'जसोदा' (रू.भे.) (जैन)

जसोल–वि०—जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला ।
उ०—डाक तवल मुरसलां, हाक इतमांम जसोलां । वंधी गोळ वाजुवां, हुवै रंगराग हरोळा ।—सू.प्र. उ०—२ हुय मुजरौ रावतां, हौय हाका पड़सद्दां । हाक जसोलां हुई, निहस त्रंबागळ सद्दां । —सू.प्र.

जसोलिया–सं०स्त्री०—राठौड़ राव मल्लिनाथ के पुत्र मंडलीक के वंशज, राठौड़ों की एक उपशाखा ।

जसोवई—देखो 'जसवई' (रू.भे.)

जसोहर–सं०पु० [सं० यशोधर] १ भरत क्षेत्र के गत चौवीसी के सोलहवें तीर्थंकर का नाम (जैन) २ आने वाली चौवीसी के भरत क्षेत्र के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम (जैन)

जसोहरा–सं०स्त्री० [सं० यशोधरा] दक्षिण दिशा के रुचक पर्वत पर की आठ दिशाकुमारियों में से चौथी दिशाकुमारी (जैन)

जसौ–वि०—जैसा । उ०—१ आप पौढ़िया था सो हूं तो म्हारै मन री खुसी सूं जसौ दरसाव देखियौ वसौ कहियौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ ऊगां विण सूर केहवौ अंवर, दीपक पाख जसौ दुवार । पावस वना जहेवा प्रथमी, सांगा विण जेही संसार ।
—महारांणा संग्रांमसिंह वडा री गीत

जस्त, जस्तौ–सं०पु० [सं० यषद] कुछ कालापन लिये एक सफेद धातु जिसमें गंधक का अंश बहुत होता है ।

जस्यौ—देखो 'जैसौ' (रू.भे.)

जस्सुदा—देखो 'जसोदा' (रू.भे.) उ०—दैवी जस्सुदा रूप कांनं दुलारै, देवी कांन रै रूप तूं कंस मारै ।—देवि

जहंगम–सं०पु० [सं० जिह्मग] तीर, वांण । उ०—ओडव चाप ऊठियौ नरियंद, जहंगम वायौ खांच जुवौ ।—नवलदांन जी लाळस

जहं, जह–अव्य० [सं० यथा] १ जिस जगह, जहां ।
उ०—जह मह विवाह लाडां जुड़ण हाडां घर गहमह हुई ।—वं.भा.
२ जिस प्रकार, जैसे ।

जहक्कम–क्रि०वि० [सं० यथाक्रम] क्रमानुसार, तरतीववार (जैन)
रू०भे०—जहाक्कम ।

जहक्खाय–सं०पु० [सं० यथाख्यात] १ कसाय रहित यथाख्यात नाम का पांचवां चरित्र (जैन) २ निर्दोष चरित्र, परिपूर्ण संयम (जैन)

जहड़ौ–वि० [स्त्री० जहड़ी] जैसा । उ०—१ भरमल अहड़ी कांमणी, जहड़ौ चंद प्रकास । काया ले घर कूं चल्या, रह्यौ जीव वीं पास ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ निरमळ चित ज्यूं नीर गंभीरां छांह सुहावै । कुमदां जहड़ी जेथ माछळी ऊजळ धावै ।—मेघ.

जहट्ठिय–क्रि०वि० [सं० यथास्थित] यथास्थित (जैन)

जहण–सं०पु० [सं० जघन] कमर के नीचे का भाग, जांघ (जैन)

जहणिज्ज–वि०—त्यागने योग्य, हेय (जैन)

जहण्ण, जहण्णि–वि० [सं० जघन्य] १ निकृष्ट, हीन, अधम, नीच (जैन), [सं० जघन्यक] २ कम से कम, थोड़े से थोड़ा (जैन)
रू०भे०—जहन्न ।

जहतह–अव्य० [सं० यथातथा] जैसे-तैसे (जैन)

जहत्थ–वि० [सं० यथार्थ] यथार्थ (जैन)

जहत्स्वारथा–सं०स्त्री० [सं० जहत्स्वार्था] लक्षणा का एक भेद जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को परित्याग कर अभिप्रेत अर्थ को प्रकट करता है ।

जहद–सं०स्त्री० [अ०] प्रयत्न, उद्योग । उ०—जद जहद सो महनत परिस्रम कठिनाई सरीर सूं सो मोटा वादसाहां प्रथ्वी जीतणहारां रा स्वभाव छै ।—नी.प्र.

जहदजहल्लक्षणा–सं०स्त्री० [सं०] लक्षणा का एक भेद जिसमें वोलने वाले को शब्द के वाच्यार्थ से निकलने वाले कई एक भावों में कुछ को छोड़ कर केवल किसी एक का ही ग्रहण करना अभिलषित होता है ।

जहन–सं०पु० [अ० जिह्न] १ मस्तिष्क. २ स्मरणशक्ति. ३ बुद्धि, दिमाग ।

जहनि–सं०पु० [फा० जहान] जहान, संसार । उ०—चित अंत तपतां चौसठे वीत गयौ वरसात । जहनि पवनां अंत जिम, छिळियौ जेवनां छात ।—रा.रू

जहनू–सं०पु० [सं० जह्नु] १ विष्णु. २ एक राजर्षि जिन्होंने भगीरथ द्वारा गंगा लाते समय उसे पी लिया था, किन्तु भगीरथ द्वारा प्रार्थना करने पर उसे कान से निकाल दिया (पौराणिक)
रू०भे०—जन्ह, जन्हु ।

जहनूतनया–सं०स्त्री०यौ० [सं० जह्नुतनया] गंगा नदी ।

जहन्न—देखो 'जहण्ण' (रू.भे.)

जहन्नुम–सं०पु० [अ०] नरक, दोजख ।

जहर—१ देखो 'जै'र' (रू.भे.) उ०—कर छुटी वांण चिल्लै कवांण । वोलिया जहर अहंकार वांण ।—वि.सं.
२ आठवीं वार उलटा कर निकाला हुआ शराव (रा.सा.सं.)

जहरजर–सं०पु० [फा० जह्र+सं० जू] महादेव, शंकर, शिव (डिं.को.)

जहरधर, जहरधार–सं०पु० [फा० जह्र+सं० धारी] १ सर्प ।
उ०—जहरधर सुनर निरजर नगर जोवतां, वहर तप हेक दिल गहर वीजौ । वंवहर सूर गुर 'अमर' तण वेखतां, तुलै नह वरावर भूप तीजौ ।—महारांणा संग्रांमसिंह (दूजा) रौ गीत
२ शेषनाग । उ०—वजि ध्रीह नगारौ जेण वारौ वर अंवर थरहर जहरधार ।—सू.प्र.

जहरनवी—देखो 'जहांनवी' (रू.भे.)

जहरवाद–संपु० [फा०] एक प्रकार का रक्त विकार के कारण उत्पन्न होने वाला रोग जिसके कारण शरीर के किसी अंग में विषाक्त फोड़ा हो जाता है। यह मनुष्यों के अतिरिक्त घोड़ों, बैलों और हाथियों को भी होता है (शा.हो.)

जहरवायु–संपु०गो० [फा० जह्र+सं० वात] घोड़ों का एक रोग विशेष जिसके फलस्वरूप उनके पैर और पेट पर सूजन आ जाती है। (शा.हो.)

जहराळ–संपु० [फा० जह्र+रा०प्र० आळ] शेषनाग। उ०—रजभांखो किरणाळ, कमळ जहराळ लटक्कै। चोळ भाळ चापड़ै, कमंध रवदाळ कटक्कै।—सू.प्र.

जहरी, जहरीलो–वि० [फा० जह्र+रा०प्र०ई, इलो] जिसमें विष हो, विषाक्त।

जहवंत–वि०पु० [सं० यशवंत] यशस्वी।

उ०—वेहा लिख खोटा वरण, रेहा हीन रहंत। पात अछेहा धन लहै, जेहा धन जहवंत।—वां.दा.

जहसत्ति–अव्य० [सं० यथाशक्ति] शक्ति के अनुसार, यथाशक्ति (जैन)

रू०भे०—जहासत्ति।

जहां–अव्य० [सं० यत्र, पा० यत्थ, प्रा० जह] जिस जगह, जिस स्थान पर।

संपु० [फा० जहान] संसार, जगत, दुनिया।

जहांण, जहांन–संपु० [फा० जहान] संसार, जगत, दुनिया।

उ०—गहरी लाली देख कर, फूल गुमांन भयाह। कितरा बाग जहांन में, लग-लग सूख गयाह।—अज्ञात

रू०भे०—जीहांण, जीहांन।

जहांनमी, जहांनवी, जहांननेवी, जहांन्नवी–संस्त्री० [सं० जाह्नवी] जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा नदी। उ०—१ कोड़वै तेतीस देव वीसासो सारण काज, माहाराज तेज धुधारण आसमांण। नरां लोक तारणा पै जारणा जहांननेवी, देवी जै कारणा रूपी चारणा दीवांण।

—हुकमीचंद खिड़ियो

उ०—२ ज्यां हुंदा क्रत जोय, दोजग नहं वासो दियो। ते न्हावै तुय तोय, जोत समावै जहांनमी।—वां.दा.

उ०—३ संभु ग्यांन में गहीर मैं प्रमाद भाग पायो संतां, जहांनवी नीर रो क सांपड़वो जन। डोरो व्रज कुंज रो समीर रो क आज दीठो, वीरमदे हेळ मैं हमीर रो वदन।—सायबो सुरतांणियो

रू०भे०—जह्नवी।

जहांपनाह–संपु० [फा०] संसार का रक्षक। रू. भे. जांपनाह

जहा–अव्य० [सं० यथा] जिस प्रकार, जैसे, यथा (जैन)

जहाकम—देखो 'जहक्कम' (रू.भे., जैन)

जहाच्छंद–वि० [सं० यथाच्छन्द] स्वच्छन्द (जैन)

जहाज—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)

जहाजाय, जहाजायत्ति–वि० [सं० यथाजात, यथाजातेति] १ जैसा जन्मा वैसा, नग्न (जैन) २ जड़, मूर्ख।

जहाजी–वि० [अ०] जहाज से संबंधित।

संपु०—१ एक प्रकार का अच्छा लोह जिसकी तलवार बनाई जाती है. २ एक प्रकार की तलवार।

जहाजेट्ठ–अव्य० [सं० यथाज्येष्ठ] बड़ाई के क्रम से (जैन)

जहाजोग–अव्य० [सं० यथायोग्य] यथायोग्य (जैन)

जहाठांण–अव्य० [सं० यथास्थान] यथास्थान (जैन)

जहातच्च–वि० [सं० यथातथ्य] यथातथ्य, वास्तविक, सत्य (जैन)

जहातह–संपु० [सं० यथातथ्य] १ सूयगडांग सूत्र का तेहरवां अध्ययन (जैन)

२ वास्तविकता, सत्यता (जैन)

जहानाय–अव्य० [सं० यथान्याय] न्याय के अनुसार, यथोचित (जैन)

जहापवट्टकरण–संपु० [सं० यथाप्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम विशेष (जैन)

जहाफुड–वि० [सं यथास्फुट] स्पष्ट (जैन)

जहाभूत, जहाभूय–वि० [सं० यथाभूत] सच्चा, वास्तविक (जैन)

जहार–वि० [अ० जाहिर] १ जाहिर, प्रकट, विहित. २ प्रकाशित।

जहालत–संस्त्री० [अ०] मूर्खता, अज्ञानता।

जहावाइ, जहावाई–वि० [सं० यथावादिन्] सत्य कहने वाला, सत्य बोलने वाला (जैन)

जहासत्ति—देखो 'जहसत्ति' (रू.भे.)

जहासुयं–अव्य० [सं० यथाश्रुतम्] जैसा सुना (जैन)

जहासुह–अव्य० [सं० यथासुख] यथासुख (जैन)

जहिं, जहि—देखो 'जहीं, जही' (रू.भे., जैन)

सर्व०—जिस। उ०—भला भूमिका तणा प्रदेस, सोभा तणा निवेस, जहि दीठे जाइं मन ना क्लेस।—व.स.

जहिच्छ, जहिच्छा–अव्य० [सं० यथेच्छ, यथेच्छा] यथेच्छा (जैन)

जहिच्छिय–अव्य० [सं० यथेच्छित] इच्छा के अनुसार (जैन)

जहिट्ठिल—देखो 'जुधिस्टर' (रू.भे.) (जैन)

जहियइ–क्रिवि०—यदा, जब (उ.र.)

जहीं, जही–वि०—जैसी। उ०—कर ग्रहीयां 'भीम' ग्रथी सिर कमधज, निकळंक अंक सुधा-निवास। वधते तेज सह कोई वांदे, वाला चंद जही वांणास।—महाराजा भीमसिंह रो गीत

अव्य०—१ जैसे। उ०—जवनां भड़ पुंज पलाल जही। मिळिया किर मारुत चक्र मही।—रा.रू.

२ जहां. ३ ज्योंही, जब।

जहीइं–क्रिवि०—जब, यदा (उ.र.)

जहीन–वि० [अ० ज़हीन] समझदार, धारणाशक्ति वाला।

जहीफ–देखो 'जईफ' (रू.भे.)

जहीफी–देखो 'जईफी' (रू.भे.)

जहुट्ठिलो—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.) (जैन)

जहूरी-सं०पु०—जौहरी। उ०—के जहूरी कविराज, नग मांरास परखै नहीं। काच क्रिपरा वेकाज, रुळिया सेवै राजिया।—किरपाराम

जहूर-सं०पु० [फा० जुहूर] प्रगट, जाहिर होने का भाव, प्रकाशन।
उ०—१ जगमग करि दरगह नग जहूर। पुर करे चित्र ओछाड़ पूर।
—सू.प्र.
उ०—२ तिकरा रौ सीखियां भेद नावै तुरत। सूरत परा पेखियां पड़े सांसै। विधग घराजांरा रा मांरा छोडे वहै, वांरा रा जहूरां तराँ वांसै।—नवलजी लाळस
सं०स्त्री०—२ कान्ति, आभा। उ०—कंवर पिरा लपेटां में पाट छबी थी सु रतना नूं दीवी, दोनां जिसौ जहूर तिसी ही सहूर, परसपर सारीसी ही सोभा नै सारीसौ ही देखरा रौ लागौ लोभ।—र. हमीर
वि०—प्रकाशमान। उ०—जाहर मही जहूर सुजस जिरा, महपत नूर सूरकुळ मंडरा।—र.ज.प्र.

जहेज-सं०पु० [अ० जहेज] दहेज।

जहेट्ठ-क्रि०वि० [सं० यथेष्ठ] यथेष्ट (जैन)

जहेव-अव्य० [सं० यथैव] इच्छानुकूल (जैन)

जहोइय, जहोचिय, जहोच्चिय-वि० [सं० यथोचित] जैसा चाहिए वैसा, मुनासिब, ठीक, यथोचित (जैन)

जहोवइट्ठ [सं० यथोपदिष्ट] यथा उपदेश (जैन)

जन्हवी-सं०स्त्री० [सं० जाह्नवी] गंगा (जैन)

जन्हु—देखो 'जह्नू' (रू.भे.)

जन्हुसप्तमी-सं०स्त्री०यौ० [सं०] वैशाख मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी, गंगा-सप्तमी (इसी दिन जह्नु ऋषि ने गंगा का पान किया था।)

जन्हरदारइरांणीगोळियौ-सं०पु०—एक प्रकार की तलवार।

जन्हरदारमालवाळी-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जन्हार—देखो 'जुहार' (रू.भे.) उ०—आवियौ कमंध एसि, वोम लागि जेरा वार। जोम हूंत कीध जोध, जाय साह हूं जन्हार।
—सू.प्र.

जां-सर्व०—१ जिन। उ०—दीनां आज तांई दांम जां का तौ दिरावौ, घोड़ा चायजै तौ कारवांनां मा' लिरावौ।—शि.वं.
उ०—२ तोकतां बारा स्रवरणां तरणां, अग्र भाग दोनों अड़्या। जां पीठ जोध सावळ दुजड़, चाप बांरा ले-ले चड़्या।—मे.म.
२ उन। उ०—१ सुरातां ही सारौ साथ चढ़ियौ। जां दिनां रा खोखर सो कहरणी में नहीं आवै।—सूरे खींवे री वात
उ०—२ खंडचा अनेक आक्रिति खळां, जोति हेक वप जूजवा। जां मध्य राज राजेस्वरी, हिंगळाज परगट हुवा।—मे.म.
३ जिस। उ०—भावसिंघ सबळ का मांडरा सवाई, ओछाह सी लागै जां कू साह की लड़ाई।—रा.रू.
क्रि०वि० [सं० यावत्] १ जब। उ०—सज्जरा अळगा तां लगइ, जां लग नयरो दिट्ठ। जब नयरणां हूं बीछुड़े, तब उर मंझ पइट्ठ।
—ढो.मा.
२ जब तक। उ०—रोहे 'पातल' रांरा, जां तसलीम न आदरै। हिंदू मुस्सलमांरा, एक नहीं तां दोय है।—सूरायच टापरचौ
३ जहाँ। उ०—१ जोवै जां ग्रिह-ग्रिह जगन जागवै, जगनि-जगनि कीजै तप जाप। मारगि-मारगि अंब मौरिया, अंबि-अंबि कोकिल आलाप।—वेलि. उ०—२ उत्तर आज स उत्तरउ, सही पड़ेसी सीह। वालंभ घरि किम छांडियइ, जां नित चंगा दीह।—ढो.मा.
वि०—जितना।

जांई-सं०पु० [सं० जामातृ] दामाद, जामाता।

जांउ-क्रि०वि०—जब। उ०—जांउ जागइ तांउ मांगइ, जांउ जोयराउं तांउ भोयराउं।—व.स.
सर्व०—जो।

जांग-सं०पु०—१ घोड़ों की एक जाति. २ देखो 'जंघा' (रू.भे.)

जांगड़—देखो 'जांगड़ौ' (मह., रू.भे.)
उ०—भाभी जांगड़ आपरा, छिपै न लाखां गांन। सूने घर सींधू थिया, आंपां रा मिजमांन।—वी.स.

जांगड़ा-सं०स्त्री०—१ भाट जाति की एक शाखा विशेष (मा.म.)
२ नाइयों की एक शाखा (मा.म.) ३ ढोलियों की एक शाखा.
४ वीररस पूर्ण एक राग. ५ शेखावाटी में रहने वाली जाति विशेष जिसके व्यक्ति बढ़ई का या आभूषरा बनाने का काम करते हैं।
रू०भे०—जांघड़ा।

जांगड़िया—देखो 'जांगड़ा' (अल्पा., रू.भे.)

जांगड़ियौ-सं०पु०—१ जांगड़िया शाखा का व्यक्ति.
२ देखो 'जांगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ घराी गोठां कररो लागिया। जांगड़िया गाणे लागिया।—सूरे खींवे री वात
३ एक राग विशेष में गाया जाने वाला दोहा छंद विशेष।

जांगड़ौ-सं०पु०—१ ढोली, दमामी। उ०—जांगिया ठोर सिंधू गवै जांगड़ा, लड़रा रगा खांगड़ा वीर हळकै। भर तरा जठै पीधा अमल भांगड़ा, जो मरद रांगड़ापराौ झळकै।—माधोसिंह सक्तावत री गीत
२ वीररस पूर्ण एक राग। उ०—आया लाट रा खलीता वांचतांई घकै लाय ऊभौ, धरै हाथ मूंछां छाय ऊभौ क्रोध धींग। आपरे भरोसे राग जांगड़ौ दिराय ऊभौ, साय ऊभौ जनेवां खांगड़ौ मांनसिंह।
— नवलजी लाळस
वि०—जबरदस्त, महान। उ०—जाळ जांगड़ौ रूंख, सघन गायड़-मल गाढ़ौ। वील सरेसां वडौ, खजूरां सिरसौ डाढ़ौ।—दसदेव
अल्पा०—जांगड़ियौ।
मह०—जांगड़, जांघड़।

जांगड़ौ सांणीर-सं०पु०—डिंगल के अरटिया गीत (छंद) का एक भेद विशेष जिसमें नगरा अनिवार्य है।

जांगळ-सं०पु० [सं०] १ तीतर. २ सौराष्ट्र। उ०—मगधमंडळ अंग वंग कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसह, पंचाळ जांगळ (सुराष्ट्र) विदेह संडिल्ल मलय।—व.स.
३ जल के अभाव वाला देश. ४ देखो 'जांगळू' (रू.भे.)

जांगळग्री—देखो 'जांगळवौ' (रू.भे.)

जांगळया, जांगळवै—सं०पु०यौ० [सं० जंगल] जांगलू देश (बीकानेर)
उ०—गोहलां बावरियां गह गंजे, गजे जेठवा कावा गाव। जूनंगढ़ गढ़पत जांगळवै, सांफै चक्रवत 'कला सुजाव।'—द.दा.

जांगळवौ, जांगळू—सं०पु०—जांगलू देश, बीकानेर।
उ०—१ पूनाहरौ सुवौ दळि पलटै, दीपावै जांगळवौ देस। सुर-गिर सथिर कार वध सायर, सूरिज सतप भार भल सेस।
—सांखला महेस कल्यांणमलोत री गीत
उ०—२ इतरी वात करतां खींवसी सांखलौ जांगळू राज करै छै। तिण री बेटी उमा सांखुली मारवणि री अवतार।
—लाली मेवाड़ी री वात
वि०वि०—वस्तुतः 'जांगलू' बीकानेर के एक भाग का नाम है जहां गर्मी खूब पड़ती है एवं जलाभाव रहता है, किन्तु कालान्तर में पूरे बीकानेर को ही 'जांगलू' कहा जाने लगा।
रू०भे०—जांगळग्री, जांगेळू।

जांगळूराय—सं०स्त्री०—१ श्री करणीदेवी।
सं०पु०—२ 'जांगलू' देश बीकानेर का अधिपति।

जांगळूवौ—वि०—जांगलू देश का, जांगलू देश संबंधी।

जांगळौ—वि०—योद्धा, वीर। उ०—नेत दस सहंस वाळा गळै नांगळा, जनेवां झळां भांजण खळां जांगळा। वळोवळ नांम सांभळ दुझर वांगळां, पंथ वहता हुवै किता अग पांगळा।—बद्रीदास खिड़ियौ

जांगियौ—देखो 'जांघियौ' (रू.भे.)

जांगी—सं०पु०—१ नगाड़ा (डि.को.)
उ०—वीरा रस जांगी गिरवागा। लोळा पुंज सिखर सिर लागा।
—रा.रू.
२ ढोली, दमांमी।
वि०—देखो 'जंगी' (रू.भे.)

जांगी हरड़े—सं०पु०—बड़ी हड़ (अमरत)

जांगेळू—देखो 'जांगळू' (रू.भे.)

जांगेस—सं०पु०—युद्ध का राग, सिंधुराग।

जांघ—देखो 'जंघा' (रू.भे.) उ०—राव री जांघ तौ बच गई पण घोड़ै री काळजौ बूकड़ा ग्रांतड़ा ग्रोझड़ा काढ जावतौ निसरियौ।
—डाढ़ाळा सूर री वात

जांघड़—देखो 'जांगड़ौ' (मह., रू.भे.)

जांघड़ा—देखो 'जांगड़ा' (रू.भे.)

जांघियौ—सं०पु०—१ कमर में पहनने का पाजामे की तरह का एक कपड़ा जिसकी मोहरियां घुटने के ऊपर ही रहती हैं। यह प्रायः शरीर से चिपका रहता है. २ मालखंभ की एक कसरत।
रू०भे०—जांगियौ।

जांच—सं०स्त्री०—जांचने की क्रिया या भाव, परख, निरीक्षण, देखभाल, परीक्षण।
यौ०—जांच-पड़ताल।

जांचणौ, जांचबौ—क्रि०स०—१ जांचना, परख करना. २ अनुसंधान या परीक्षण करना. ३ मांगना।
जांचणहार, हारौ (हारी), जांचणियौ—वि०।
जांचिग्रोड़ौ, जांचियोड़ौ, जांच्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जांचीजणौ, जांचीजबौ—कर्म वा०।

जांचियोड़ौ—भू०का०कृ० परीक्षण या निरीक्षण किया हुआ, जांचा हुआ (स्त्री० जांचियोड़ी)

जांजर—देखो 'जांझर' (रू.भे.)

जांजरू—सं०पु०—१ जहरीला कीड़ा, बिच्छू. २ देखो 'जांझर' (रू.भे.)

जांजळी—सं०स्त्री०—वर्षा ऋतु में वर्षा होने के बाद का वह सूखा निकलने वाला समय जब तक कि पुनः वर्षा न हो। कृषि के लिये यह समय हानिकारक माना जाता है।
रू०भे०—जांझळी।

जांजा—देखो 'जांदा' (रू.भे.)

जांझ—सं०स्त्री० [सं० जंझा] १ वर्षा के समय चलने वाली तेज ठंडी वायु. २ शमी वृक्ष की सूखी फली (क्षेत्रीय) ३ देखो 'जांझर'। (रू.भे.)

जांझर—सं०पु०—स्त्रियों के पैरों का छम-छम की ध्वनि करने वाला एक आभूषण, पैंजनी। उ०—धिन घण छकि जाती छाती लख छाती। जांझर झणकाती जाती मदमाती।—ऊ.का.
रू०भें०—जांजर, जांजरू, जांझ।
अल्पा०—जांझरियौ।

जांझरकौ—सं०पु०—पौ फटने का समय, ब्राह्म मुहूर्त्त।
उ०—एक दिन सारौ परवार लियां डाढ़ाळौ नै भूंडण सोय रह्या छै। इतरै जांझरकै री वखत री ठाडी पवन ग्राई।
—डाढ़ाळा सूर री वात

जांझरियाळ, जांझरीयाळ—सं०स्त्री०—'जांझर' नामक ग्राभूषण धारण करने वाली देवी, शक्ति।

जांझळी—देखो 'जांजळी'। उ०—ललकत जांझलियां वाजण नै लागी, भूखां मरतोड़ी खळकत पड़ भागी।—ऊ.का.

जांझी—वि०—बहुत सी, अधिक।

जांट—सं०पु०—शमी वृक्ष (शेखावाटी)

जांणग, जांणगी—वि० [सं० ज्ञायक] १ जानकार, विज्ञ। उ०—'दलौ' सकज दईवांण, घण जांणग ग्रायौ घरै।—गो.रू.
२ चतुर।

जांण—ग्रव्य०—उत्प्रेक्षा अलंकार का वाचक शब्द, मानों, जैसे।
उ०—१ वपु नील वसन मभि इम वखांण। जगमगत घटा मभि छटा जांण।—सु.प्र. उ०—२ अधुरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। सो संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फवंत।—वां.दा.

सं०स्त्री० [सं० ज्ञान] १ ज्ञान, जानकारी। उ०—वरिहांहां मारण नूं हजार दाव प्रपंच करै। सु जिसड़ो साथ करै तिसड़ी जांण उठै पड़ै।—नैणसी

२ जान-पहिचान, परिचय. ३ जानने की क्रिया या भाव।

उ०—तुंही ज सज्जण मित्त तूं, प्रीतम तूं परिवांण। हियड़इ भीतरि तूं वसइ, भावइं जांण म जांण।—ढो.मा.

[सं० यान] ४ सवारी (जैन) ५ यमुना नदी।

वि० [सं० ज्ञाता] जानने वाला, विज्ञ। उ०—जद वंस उजाळ भुजाळ महा गुण जांण। तप तेज दिनंकर जेम तपै तुडि-तांण।

—ल.पि.

जांणई—सं०स्त्री० [सं० जानकी] सीता (जैन)

रू०भे०—जांणगी।

जांणक—वि०—जानने वाला, जानकार।

अव्य०—मानों, जानों, जैसे। उ०—१ नाक नवल्ली नारि रै, नकवेसर घण नूर। मोती अहियां चांच मझ, जांणक कीर जरूर।

—वां.दा.

उ०—२ हिये लगाया रांम नै न्रप नेह कियौ। मुनिवर नैं सूंप्या रांम जांणक हृदय दियौ।—गी.रां.

रू०भे०—जांणिक।

जांणकार—वि० [सं० ज्ञायक] १ जानकार, अभिज्ञ। उ०—बादसाह भला स्वभाव री रीत रौ जांणकार चाहिजै।—नी.प्र.

२ चतुर। उ०—धरती पछिमी सूर धीर भगतांवछळ जास भीर। जिहड़ौ गहड़ जेत्रवार कुंअरां तिलिक जांणकार।—ल.पि.

रू०भे०—जांणीकार।

जांणकारी—सं०स्त्री०—१ परिचय. २ ज्ञान। उ०—परंपरा रै पगां विना नवौ ग्यांन निबळौ, अपंग, वेजांन। आगै री निरमांण लारली जांणकारी माथै। लारलै ग्यांन विना आगै री निरमांण नामुमकिन।

—वांणी

३ अभिज्ञता. ४ निपुणता।

जांणग, जांणगर—वि० [सं० ज्ञायक] जानकार, विज्ञ, जानने वाला।

उ०—कळहंस जांणगर मोर निरत कर, पवन ताळधर ताळपत्र। आरि तंति सर भमर उपंगी, तीवट उघट चकोर तत्र।—वेलि.

रू०भे०—जांणागर, जांणीगर।

जांणगी—देखो 'जांणइ' (रू.भे., जैन)

जांणण—सं०पु० [सं० ज्ञान] 'जानना' क्रिया का भाव, ज्ञान (जैन)

जांणणा—सं०स्त्री० [सं० ज्ञान] जिससे वस्तुओं का निर्णय हो, ज्ञान।

जांणणौ, जांणबौ—क्रि०स० [सं० ज्ञा, ज्ञानम्] १ परिचय, ज्ञान अथवा पूरी जानकारी प्राप्त करना। उ०—पनरह दिन हूं जागती, प्री सूं प्रेम करंत। एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जांणि निचंत।—ढो.मा.

मुहा०—१ जांणतौ अणजांण बणणौ (होणौ)—किसी बात के विषय में जानकारी रखते हुए भी किसी को चिढ़ाने, धोखा देने या अपना मतलब निकालने के लिये अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना. २ जांण-वूझ नै करणौ—समझ कर करना, अनजाने में न करना. ३...तौ मैं जांणू—तो मैं समझूं कि बड़ा भारी काम किया अथवा अनहोनी बात हो गई। तो मैं समझूं कि बात ठीक है। ज्यूं—अगर थूं दो दिन में औ कांम करलै तौ मैं जांणू. ४...तौ म्हैं नहीं जांणू—तो मैं जिम्मेदार नहीं, तो मेरा दोष नहीं।

कहा०—जांणै जिण नै तांणै—परिचित व्यक्ति को ही कोई काम निकालने के लिए तंग किया जाता है।

यौ०—जाणतौ-वूझतौ।

२ समझना। उ०—१ भूली सारस सद्दड़इ, जांणइ करहउ थाय। धाई धाई थळ चढी, पग्गे दाधी माय।—ढो.मा.

उ०—२ इसौ जवाब करतां समांन तुरंत ही वेग जांणियौ जु म्हारी अदव पड़ै इसड़ै कांपियौ।—द.वि.

३ सूचना पाना।

जांणणहार, हारौ (हारी), जांणणियौ—वि०।

जांणाड़णौ, जांणाड़बौ, जांणाणौ, जांणाबौ, जांणावणौ, जांणावबौ

—प्रे०रू०।

जांणिओड़ौ, जांणियोड़ौ, जांण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जांणीजणौ, जांणीजबौ—कर्म वा०।

रू०भे०—जांणीणौ, जांणीबौ।

जांणपण, जांणपणु, जांणपणौ—सं०पु० [सं०ज्ञान+त्वन] ज्ञान, जानकारी।

उ०—१ जांणपण घणौ पित मात रौ जांणीयें। अधिपती मेल आहीर घर आंणीयें।—रुखमणी हरण

उ०—२ द्रव्य तणउ ए महिमा जांणि। जांणपणुं एह नुं म वखांणि।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—३ प्रज रज रखपाळ सुयण मिळ पह वह जांणपणौ। तंढ मल तुडि तांण कुंअर गुर देसल राउ तणौ।—ल.पि.

जांणपिछांण—सं०स्त्री०—जान-पहिचान, परिचय। उ०—नहीं तू दीह नहीं तू रात, नहीं तू भ्रात नहीं तू जात। नहीं तो जांण-पिछांण जमार, नहीं तो साख सबंध संसार।—ह.र.

जांणप्पवर—सं०पु० [सं० यान-प्रवर] उत्तम रथ, श्रेष्ठ रथ (जैन)

जांणय—वि० [सं० ज्ञायक] जानकार, समझदार, बुद्धिमान (जैन)

जांणया—सं०स्त्री० [सं० ज्ञान] ज्ञान, समझ (जैन)

जांणरह—सं०पु० [सं० यानरथ] एक प्रकार का रथ (जैन)

जांणवणौ, जांणवबौ—क्रि०स०—जान लेना। उ०—दिन दिन भोळौ दीसतौ, सदा गरीबी सूत। काकी कुंजर काटतां, जांणवियौ जेठूत।

—वी स.

जांणवय—वि० [सं० जानपद] देश में उत्पन्न, देश सम्बन्धी (जैन)

जांणसाला—सं०स्त्री० [सं० यानशाला] वाहन रखने का स्थान (जैन)

जांणागर—देखो 'जांणगर' (रू.भे.)

जांणाणौ, जांणाबौ, जांणावणौ, जांणावबौ—क्रि०स० ('जांणणौ' क्रिया का

प्रे०रू०) १ जानकारी देना, जतलाना। उ०—वीरमदे पत घरम सवायो। जोस भुजे दूणो जांणायो।—रा.रू.

२ सूचना देना।

जांणावियोड़ो-भू०का०कृ०—जानकारी दिया हुआ, जतलाया हुआ। (स्त्री० जांणावियोड़ी)

जांणि-अव्य०—मानों। उ०—कुमकुमै मंजण करि धोत वसत धरि, चिहुरे जळ लागो चुवण। छीणे जांणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूळ गुण।—वेलि.

सर्व०—जिस।

जांणिक—देखो 'जांणक' (रू.भे.) उ०—१ एक दंतउ मुख झळमळइ, जांणिक रोहणीउ तप्पई सूर।—वी.दे.

उ०—२ उडै ग्रहि अंत ग्रिभां असमांण, पलो हिक झालत जोगणि पांण। उभी हुय जांणिक गोख अटारि, उडावत गूडिय राजकुमारी। —सू.प्र.

जांणियार-वि०—विज्ञ, जानकार।

जांणी-अव्य०—मानों, जैसे।

जांणीकार—देखो 'जांणकार' (रू.भे.)

जांणीगर—देखो 'जांणगर' (रू.भे.) उ०—खट भाखा रो जांणीगर। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

जांणीजै-अव्य०—मानों।

जांणीणो, जांणीवौ—देखो 'जांणणो' (रू.भे.) उ०—कणयाचळ जगि जांणीइ, ठांम तणउं जावालि। तहीं लगइ जगि जाळहुर, जण जंपइ इणि कालि।—कां.दे.प्र.

जांणीतो-वि०—१ प्रसिद्ध। उ०—भाटी भीमजी इण चौकळा रो जांणीतो। खांनदांनी आदमी हो। पल्लो खाली होवतां थकां ई घर ग्वाड़ी वाळो रजपूत हो।—रातवासो

२ जानकार।

जांणीवांण-वि०—१ जानकार, ज्ञाता. २ परिचित।

जांणु-वि० [सं० ज्ञायक] जानने वाला (जैन)

सं०पु० [सं० जानु] घुटना (जैन)

जांणे-अव्य०—मानों। उ०—कमळापति तणी कहेवा कीरति आदर करै जु आदरी। जांणे वाद मांडियो जीपण, वागहीण वागेसरी। —वेलि.

मुहा०—जांणे चिड़ियां में ढळ पड़ियो—मानों चिड़ियों के बीच में ढेला आ गिरा; उसके प्रति जिसके कारण एकत्रित समूह बिखर जाय।

रू०भे०—जांणं, जांने, जांनै।

जांणेऊ, जांणेतो-वि०—१ जानकार, वाकिफ। उ०—आप कमर बांध तयार हुवा तद न जांणेता था तिकां अरज कीवी! —ठाकुर जैतसी री वारता

२ देखो 'जांणीतो' १ (रू.भे.)

जांणै—देखो 'जांणे' (रू.भे.) उ०—यूं दळां हूंत जांणै खड़ग ऊकठी, वादळां हूंत जांणै कढ़ी वीज।—हुकमीचंद खिड़ियो

जांण्हई-सं०स्त्री० [सं०जाह्नवी] गंगा (जैन)

जांत-सं०पु०—खाट, चारपाई। उ०—एक खांत अनई दीठउ गादलउ जांत, एक निद्राळ अनइ पाथरिउ पल्यंक विसाळ।—व.स.

जांदा-सं०स्त्री०—इच्छा, अभिलाषा, लालसा, लाले।

उ०—जादा जीवण रा पड़िया जिय जांदा। मांगण खावण डर नर पड़िया मांदा।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—पड़णा।

रू०भे०—जांजा।

वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग सदा बहु वचन में होता है।

जांन-सं०स्त्री० [सं० जन्य:] १ वरात, वर-यात्रा।

उ०—जिकै वार स्रीराम री जांन जोई। कहै ओपमा पार पावै न कोई।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—आणी, चढ़णी, जाणी, जीमणी, देणी।

कहा०—१ जांन घणी आई तो मांडो थाको—अधिक वरात आने पर वधू पक्ष के लोग भी सत्कार करते-करते तंग आ जाते हैं। अधिक खर्चा आदमी को थका देता है। अति सर्वत्र वर्जयेत. २ जांन में मांझी कुण—वरात में मुखिया कौन? बूझ-बुझक्कड़ के प्रति, किसी समूह एवं दल के मुख्य व्यक्ति के प्रति। मि०—'बींद रो काको कुण?' ३ जूता वाळा किसा जांन गिया है—सजा देने वाले कौनसे वरात में गये हुए हैं? अपराध करने वाले को सजा देने वाले भी वहीं मिल जाते हैं।

अल्पा०—जांनड़ली, जांनड़ी, जांनणलो।

मह०—जांनड़, जांनेस।

[फा० जान] २ प्राणी, जीव।

मि०—जीव।

३ वल, सामर्थ्य।

जांनउत्र-सं०स्त्री० [सं० जन्य:+यात्रा अथवा यज्ञ+यात्रा] वरात।

उ०—अभिनव ए चालिय जांनउत्र, 'अंबडु' तणइ वीवाहि। अप्पुणु ए घम्मह चक्कवइ, हूयउ जांनह मांहि।—ऐ.जै. का.सं.

रू०भे०—जांनत्र, जांनुत्र।

जांनकी-सं०स्त्री० [सं० जानकी] श्रीराम की पत्नी एवं सीरध्वज जनक की पुत्री, सीता (रामकथा)

जांनकीजीवन-सं०पु० [सं० जानकी जीवन] श्री रामचंद्र।

जांनकीनाथ-सं०पु०यौ० [सं० जानकीनाथ] सीतापति, श्रीरामचंद्र।

जांनकीमंगळ-सं०पु० [सं० जानकी मंगल] तुलसीदास का वनाया हुआ राम के विवाह से संबंधित वर्णन का एक ग्रंथ।

जांनकीरमण, जांनकीरवण-सं०पु०यौ० [सं० जानकीरमण] जानकी के पति, श्रीरामचंद्र।

जांनकीस-सं०पु०यौ० [सं० जानकी+ईश] श्रीरामचंद्र। उ०—राम नांम गाव रे, पाय कंज धाव रे। जांनकीस जांण रे, वेस तूं जवांण रे। —र.ज.प्र.

जांनड़—देखो 'जांन' (मह., रू.भे.)

जांनड़ली, जांनड़ो—देखो 'जांन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—केसरियौ लुळ-लुळ पाछौ जी जोवै, जांणू म्हारी जांनड़ली म्हारा भाभोसा पधारै, भाभोसा पधारै नै घोड़लिया सिणगारै ।
—लो.गी.

जांनणी-संस्त्री०—१ बरातिन. २ देखो 'जांन' (अल्पा० रू.भे.)

जांनत्र—देखो 'जांनउत्र' (रू.भे.) उ०—अरे माधवी मनि हरसियउ भणइ, जांनत्र वेगु चलेहि । अरे सिवदिवी प्रमुह दस मातुर, भत्तिहि मउड बंधेहि ।—प्राचीन फागु संग्रह

जांनदार-वि०यौ० [फा० जानदार] जिसमें प्राण हो, सजीव ।
संपु०—जानवर, प्राणी ।

जांनपदी-संस्त्री० [सं० जानपदी] एक अप्सरा जिसका वर्णन महाभारत के आदि पर्व में आया है ।

जांनपात्र-संपु०यौ० [सं० यानपात्र] नाव, नौका (ह.नां.)

जांनमाज-संस्त्री० [फा० जानमाज] नमाज पढ़ने का फर्श ।

जांनराय-संपु०—चांपावत राठौड़ों के आराध्यदेव, विष्णु ।

जांनवर-संपु० [फा० जानवर] १ प्राणी, जीवधारी. २ पशु, हैवान ।
वि०—मूर्ख, बेवकूफ ।
रू०भे०—जनावर, जिनावर ।

जांनसीन-संपु० [फा० जानशीन] उत्तराधिकारी ।

जांनावासउ-संपु० [सं० यज्ञावासक] विवाह के अवसर पर कन्या के नातेदार आदि के ठहरने का स्थान जहाँ विवाह का मंडप आदि रचाया जाता है (उ.र.)
मि०—मांडो ।

जांनि, जांनिड़ौ, जांनियौ, जांनी, जांनीड़ौ-संपु० [सं० जन्यः] बराती ।
उ०—सभै आवळाभूल जांनि सुरंगा । चढ़ै दासरत्थं बजै राग चंगा ।—सू.प्र.
कहा०—बींद रै लाळां पड़ै तौ जांनी बापड़ा कंई करै—जब मुख्य व्यक्ति ही अशक्त और निर्बल हो तो उसके सहायक उसकी सहायता कैसे कर सकते हैं ? अशक्त एवं निर्बल व्यक्ति के प्रति ।
रू०भे०—जांनि ।
यौ०—जांनीवासौ ।
अल्पा०—जांनिड़ौ, जांनियौ, जांनीड़ौ, जांन्यौ ।
वि० [फा० जानी] जान से संबंधित ।
मुहा०—जांनी दुस्मण—वह शत्रु जो प्राण लेने को तत्पर हो ।

जांनीवासउ, जांनीवासौ-संपु० [सं० जन्यः+आवासक या जन्यावासक] वर और बरात के ठहरने का या ठहराने का स्थान, जनवासा (उ.र.)
उ०—१ धार नगरी आयौ बीसळराव, जांनीवासउ दीयौ तिणि ठांव ।—वी.दे. उ०—२ राजलोक पिण गोखां चढ़ि-चढ़ि नै जोवै छै । इण जुगत करि नै तोरण वंदायौ छै । वांद नै जांनीवासै पधारिया ।—लाली मेवाड़ी री वात
उ०—३ तठै चंवरियां मांहीं पचीस सिरदार मारिया, नै जांनीवासै साथ उतरियौ उणनूं अमल पांणियां मांहे काई वलाई दी सु वे छकिया तरै कूट मारिया ।—नैणसी
रू०भे०—जनवास, जनवासौ ।

जांनु—१ देखो 'जांन्हौ' (रू.भे.)
[सं० जानु] २ जांघ और पिंडली के मध्य का भाग. ३ जांघ ।
रू०भे०—जांनू ।

जांनुकीकंत-संपु०यौ० [सं० जानकी+कांत] श्रीरामचंद्र (र.ज.प्र.)

जांनुत्र—देखो 'जांनउत्र' (रू.भे.)

जांनुविजांनु-संपु०यौ० [सं० जानुविजानु] तलवार के बत्तीस हाथों में से एक हाथ ।

जांनू-सर्व०—उनको ।
संपु०—देखो 'जांनु' (रू.भे.)

जांने—देखो 'जांणे' (रू.भे.)

जांनेती-संपु० [सं० जन्यः+रा० प्र० एती, जन्यः+यात्री]
(स्त्री० जांनेतण)
बराती । उ०—आपां तौ जांनेती बणल्यां, बीन बणै भोपाळ । दोय जणां जांगड़िया बण कै, सिंधू द्यौ अरसाल ।—डूंगजी जवारजी री पड़

जांनेलौ-संपु०—एक प्रकार का घास ।

जांनेस—देखो 'जांन' (मह., रू.भे.) उ०—अवद्धेस राजेस जांनेस आया । विदेहेस साम्हेस आंणे वधाया ।—सू.प्र.

जांनेसुरी-संस्त्री०—दुर्गा, महामाया । उ०—देवी मात जांनेसुरी व्रन्न मेहा । देवी देव चांमुंड संख्याति देहा ।—देवि.

जांनै—देखो 'जांणे' (रू.भे.)

जांनोई—देखो 'जनोई' (रू.भे.)

जांनोटण-संपु० [सं० जन्योत्थान] बरात के रवाने होने के पूर्व वर पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोजन ।

जांनौ—देखो 'जांन्हौ' (रू.भे.)

जांन्यौ—देखो 'जांनी' (अल्पा. रू.भे.)

जांन्हक-संपु०—घोड़े का एक रोग (शा.हो.)

जांन्हवी-संस्त्री० [सं० जाह्नवी] गंगा, भागीरथी ।

जांन्हौ-संपु० [सं० जानु] दाहिने घुटने में होने वाला एक प्रकार का वात रोग जो क्रोष्टुवात से मिलता-जुलता होता है ।
रू०भे०—जांनु, जांनौ, जांमू ।

जांपनाह—देखो' जहांपनाह' (रू.भे.)

जांबक-संपु० [सं० जंबुक] सियार, गीदड़ । उ०—डावी भैरव चहक वांम घूघू घोरारव । है नाहर सावडू वांम जांबक बोले तव ।
—पा.प्र.

जांबफळ-संपु०—अमरूद नामक फल ।
रू०भे०—जांमफळ ।

जांबवत—देखो 'जांबवांन' (रू.भे.)

जांबवती–सं०स्त्री० [सं० जाम्बवती] श्री कृष्ण की एक पत्नी जो जांबवान की कन्या थी।
रू०भे०—जांमवती।

जांबवांन–सं०पु० [सं० जाम्बवान्] ब्रह्मा का पुत्र और सुग्रीव का मंत्री जो राम की ओर से रावण के विरुद्ध युद्ध में लड़ा था। कहा जाता है कि यह रीछ था। श्रीकृष्ण ने इसकी कन्या के साथ विवाह किया था।
रू०भे०—जांबवत, जांबुवत, जांमंत, जांमंति, जांमत, जांमति, जांमवंत, जांमवत, जांमूत।

जांबवि–सं०पु० [सं० जांबवि] वज्र।

जांबुमाळी–सं०पु० [सं० जांम्बुमाली] हनुमानजी द्वारा अशोक वाटिका उजाड़ते समय मारा जाने वाला प्रहस्त नामक राक्षस का एक पुत्र। (रांमकथा)

जांबुवत—देखो 'जांबवांन' (रू.भे.)

जांबू–सं०पु० [सं०] १ जामुन. २ रक्त-विकार अथवा मच्छर आदि के काटने से शरीर पर पड़ने वाले चकत्ते. ३ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा (शा.हो.)

जांबूणय—देखो 'जांबूनद' (रू.भे.) (जैन)

जांबूदीप—देखो 'जंबुदीप' (रू.भे.)
उ०—निज सुखरूख सेव करावी नांही, दाखै धन धन जांबूदीप।
—वां.दा.

जांबूनद–सं०पु०यौ० [सं० जाम्बूनद] १ स्वर्ण, सोना (ह.नां.)
२ धतूरा (अ.मा.)
रू०भे०—जांबूणय।

जांबूफळ–सं०पु० [सं० जाम्बू फल] जामुन।
वि०—काला, श्याम॥ (डिं.को.)

जांबौ, जांभौ–सं०पु०—विश्नोई संप्रदाय का प्रवर्तक एक सिद्ध पुरुष।
वि०वि०—इनका जन्म पीपासर ग्राम में संवत १५०८ के भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था। ये लोट के पुत्र थे। कहा जाता है कि ये जन्म से गूंगे थे किन्तु श्री गोरखनाथजी के दर्शन से इनकी जवान खुल गई। विश्नोई जाति में इनका पूजन किया जाता है।

जांमंग–सं०पु०—देखो 'जांमकी' (मह०रू०भे०)
उ०—करि वंदूक पायकां, ज्वाळ धिकता जांमंगां। पांति जजर पेड़िया, भांति छेड़िया भुजंगां।—सू.प्र.

जांमंगी—देखो 'जामकी' रू.भे.

जांमंत, जांमंति—देखो 'जांबवांन' (रू.भे.)
उ०—लगै वेण जांमंत रौ सीख लागै। उठै आविया वालि रा नंद आगै।—सू.प्र.

जांम–सं०पु० [फा० जाम] १ प्याला। उ०—१ कोमळ राता पातळा, अधर जिकां रा ईख। अभिलाखै पीवण अमर, सुधा जांम ते सीख।
—वां.दा.

[सं० याम] २ क्षण भर का समय, पलक झपकने का समय।
उ०—१ अरहट कूप तमांम, ऊमर लग न हुए इती। जळहर एकी जांम, रेलै सब जग राजिया।—किरपारांम
उ०—२ जांम जांम में उच्चार रांम नांम।—र.ज.प्र.
३ प्रहर, घड़ी भर का समय। उ०—१ अंग अंग मभ ऊफणैं, जोवन आठूं जांम। त्यां हूंदी तसवीर रो, कलम हुवै नंह कांम।
—वां.दा.

उ०—२ घड़ी आठ वर्जदियां जांम हेको हो जाई।—केसोदास गाडण
[रा०] ४ पिता, जनक. ५ पुत्र, बच्चा।
उ०—कायर घर ऊढ़ा कहै, की धव जोड़ै कांम। कण कण संचै कीड़ियां, जोवै तीतर जांम।—वी.सं.
६ वस्त्र, कपड़ा। उ०—साह फतै सांभळै जांम गज भिड़ब जवाहर। तांम तेग नववत्रि, धूप समसेर जमंधर।—सू.प्र.
सं०स्त्री०—७ यादव वंश की एक शाखा. [सं० जामि] ८ पुत्री, कन्या।
उ०—विण मरियां विण जीतियां, धणी आवियां धांग। पग पग चूड़ी पाछटूं, जे रावत री जांम।—वी.स.
[सं० यामिः, यामी] ९ रात्रि, यामिनी।
वि०—दाहिना। उ०—त्रि सकत बांमे धेनु दुहंतां। जांमे करग तारवी ज्हाज।—चौथो बीठू
क्रि०वि० [सं० यावत्] जब। उ०—१ जुटा 'रतनागिर' 'ओरंग' जांम। वडा जम रूप विन्है वरिग्रांम।—वचनिका
उ०—२ जैचंद दळांवळ देखि जांम। तोलै खग बोलै एम तांम।
—सू प्र.

जांमकी–सं०स्त्री०—वंदूक छोड़ने का छोटा पलीता।
उ०—वोयदार री डावां छै। कसूमल सूत री लपेटी जांमकी छै।
—रा.सा.सं.

रू०भे०—जांमंग, जांमखी, जांमगिरी, जांमगी।

जांमकीदार–सं०पु०—एक प्रकार की वंदूक जो पलीता लगा कर छोड़ी जाय।
(मि० तोड़ादार)

जांमखी, जांमगिरी, जांमगी—देखो 'जांमकी' (रू.भे.)
उ०—चाकर कनै थी जिकण कनां जांमगी कळ रै लागी थी। अर भील री काळ री घड़ी आय बागी थी।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात

जांमघोस–सं०पु० [सं० यमघोष] मुर्गा।

जांमण–सं०स्त्री० [जामि=सती साध्वी स्त्री+रा.प्र.ण.] १ माता, जननी।
उ०—पूत महा दुख पाळियो, वय खोवण थण पाय, एम न जांण्यो आवही, जांमण दूध लजाय।—वी.स.
यौ०—जांमणजाई, जांमणजायो।
अल्पा०—जांमणड़ी।
२ जन्म। उ०—छूटा जांमण मरण सूं, भवसागर तिरियाह। मुंवा जूंभ जे रण मही, वे नर ऊवरियाह।—वां.दा.

[सं० जामि=लड़की=सन्तान+रा.प्र.ण] ३ संतान।

उ०—रजपूतां जांमण दुहुं रूड़ा, वप जां रइ नह कळू वसइ। सारां धार धंसइ सनमुख सुत, धार अंगारां सुता धंसइ।—रजपूतां री गीत

सं०पु०—४ दूध जमाने के निमित्त दूध में डाला जाने वाला खट्टा पदार्थ।

क्रि०प्र०—दैणौ।

५ गन्ने के खौलते हुए रस को गुड़ के रूप में जमाने हेतु राख आदि का डाला जाने वाला मिश्रण।

क्रि०प्र०—दैणौ।

६ एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलाने का भाव, मेल।

क्रि०प्र०—दैणौ।

७ जामुन। ८ देखो 'जांमणि' (रू.भे.) उ०—नहु जांमणहि पट्ठवरत्ति, रहु भमइ नभमणह। नहु विहारि वखांणु जत्त तुगी भरि समणह।—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—जांमन, जांवण।

जांमणजाई–सं०स्त्री० [सं० जामि+रा.प्र.ण+सं०जात+रा.प्र.ई] सहोदरा।

जांमणजायौ–सं०पु० [सं० जामि+रा.प्र.ण+सं०जात] सहोदर।

जांमणमरण, जांमणम्रत–सं०पु०यौ०—संसार का आवागमन, जन्म-मरण।

जांमणवाळी–सं०स्त्री०यौ०—माता, जननी। उ०—जद यूं बोल्यौ डूंगसिंघ, थें सुणज्यौ फिरंग्यां वात। फिटफिट थांरी जांमणवाळी, फिटफिट थांरौ वाप।—डूंगजी जवारजी री पड़

जांमणि, जांमणी–सं०स्त्री०—१ दूध जमाने का पात्र. [सं० जामि] २ माता, जननी [सं० यामिनी] ३ रात्रि, यामिनी (अ.मा.)

उ०—चंद विहूणी जांमणी जी कंत विहूणी नार।—गी.रां.

रू०भे०—जांवणी।

जांमणीचर–सं०पु०यौ [सं० यामिनीचर] निशाचर, असुर।

जांमणौ–सं०पु०—कन्या या वहिन के प्रसवोपरान्त ससुराल जाते समय दिया जाने वाला आभूषण, वस्त्रादि का उपहार।

रू०भे०—जांमतणौ। (मि० वाळूजौ)

जांमणौ, जांमबौ–क्रि०अ० [सं० जनि] जन्म लेना। उ०—१ लखां जोजनां जांमतें भांण लीधौ। किसूं जोजनां सौ तणौ सोच कीधौ।
—सू.प्र.

उ०—२ जांमियौ जेण घर जांमसी सहजां साहिव 'सेर' रै।
—पहाड़खां आढौ

जांमत—देखो 'जांववांन' (रू.भे.)

जांमतणौ—देखो 'जांमणौ' (रू.भे.)

जांमति—देखो 'जांववांन' (रू.भे.)

जांमदगनी–सं०पु० [सं० जामदग्न्य] परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि।

जांमदांनी–सं०स्त्री० [फा० जामः दानी] एक प्रकार का चमड़े का संदूक विशेष (मा.म.)

जांमदेवासुरां–सं०पु०यौ०—ब्रह्मा, विधि (डि को.)

जांमन—१ देखो 'जामिन' (रू.भे.) उ०—नभ चंद्र रु नीर नक्षत्र नहैं। जड़ भूचर खेचर जांमन हैं।—पा.प्र.

२ देखो 'जांमण' (रू.भे.) उ०—सुनिए धनुषधारी अरजी हमारी यह, मेट दीजै भय भारी जांमन मरन की।—र.रू.

जांमनी—देखो 'जांमिनी' (रू.भे.)

जांमनीस–सं०पु० [सं० यामनीश] चंद्रमा, राकेश (वं.भा.)

जांमनेमी–सं०पु०—इंद्र (डि.को.)

जांमन्न—देखो 'जांमिन' (रू.भे.)

जांमफळ–सं०पु०—१ देववृक्ष (अ.मा.) २ अमरूद नामक फल।

जांमयं–सं०स्त्री० [सं० यामिनी] रात्रि, निशा।

जांमळ–वि०—१ अतुल्य. २ मिला हुआ. ३ दोनों। उ०—'याल' 'पिराग' सांम सुखदाई, सोभा डयोढ़ी प्रीत सवाई। भूप द्वार 'असक्रन्न, भंडारी, हेमराज जांमळ हितकारी।—रा.रू.

४ शामिल, साथ, सहित। उ०—'सूजौ' कंवर संग खळ साफण। तिण जांमळ रूपसी न्रिभै तण।—रा.रू.

रू०भे०—जांवळि।

सं०पु० [सं० यामल] १ जोड़ा, युग्म. २ जन्म। उ०—जिण गजसिंघ पाट सिव जांमळ, बैठौ जसवंतसिंघ महावळ। वारौ न्रपत जिवं वरतायौ। सुरां धरम तहां लगै सवायौ।—रा.रू.

जांमळणौ, जांमळबौ–क्रि०अ०—१ मिलना २ शामिल होना, ऐक्यता करना।

जांमळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ मिला हुआ. २ शामिल हुवा हुआ, ऐक्यता किया हुआ।

जांववंत, जांमवत—देखो 'जांववांन' (रू.भे.)

जांमवती—१ देखो 'जांववती' (रू.भे.)

सं०स्त्री०—२ रात्रि, यामिनी।

जांमाइण–सं०पु०—यमराज। उ०—भारत मंडै भयांण जांण जांमाइण जेहा।—मालौ सांदू

जांमात, जांमाता–सं०पु० [सं० जामातृ] दामाद, जंवाई। उ०—आखै सकति हसै प्रति उत्तर। हूं जांमात आप घरि न्रपहर।—सू.प्र.

जांमि–सं०स्त्री० [सं० जामि] वहिन, भगिनी।

जांमिए–सं०पु०—योगी। उ०—निद्रावस जग एहु महा निसि, जांमिए कांमिए जागरण।—वेलि.

जांमिकपण–सं०पु० [सं० यामिकः+रा० प्र० पण] रक्षा करने का भाव, चौकीदारी। उ०—गरदाय सिविर दीधौ गरट, जांमिकपण लीधौ सजव।—वं.भा.

जांमित्र–सं०पु० [सं० जामित्र] किसी शुभ कर्म के काल के लग्न का सातवां स्थान।

जांमित्रवेध–सं०पु०यौ० [सं० जामित्रवेध] ज्योतिष का एक योग जिसमें कोई शुभ काम करने का निषेध है।

जांमिन–सं०पु० [अ० जामिन] जमानत करने वाला, जिम्मेदार।

रू०भे०—जांमन, जांमन्न।

जांमिनदार–सं०पु० [फा०] जमानत करने वाला।

जांमिनी—सं०स्त्री० [फा०] जमानत, जिम्मेवारी ।
[सं० यामिनी] रात्रि ।
रू०भे०—जांमनी ।
जांमिप—सं०पु० [सं० जामिप] बहिन का पति, बहनोई । उ०—तिण री एकसकार तदि, जांमिप घन वय जोर । रुपाजीवा रूप री, जिण तूणियौ अति तोर ।—वं.भा.
जांमिय, जांमी—सं०पु० [सं० जामातृ=प्रभू, स्वामी] (स्त्री० जांमण) १ पिता । उ०—जग अघ हरण सुरसुरी जांमी । राज तणां चरणां रघुरजा ।—र.ज.प्र.
२ स्वामी. ३ योगाभ्यासी, योगी ।
मि०—'जांमिए' ।
४ यमराज, यम ।
जांमीत—सं०पु० [सं० जामातृ] पिता ।
जांमुं, जांमु—क्रि०वि० [सं० यावत्] १ जब । उ०—अरजुनि जांमु दळ, निरदळं, राय तणु तां सूकउं गळ ।—पं.पं.च.
२ देखो 'जांन्हीं' (रू.भे.)
रू०भे०—जांमू ।
जांमुण—देखो 'जांमुन' (रू.भे.)
जांमुणी—सं०पु०—१ जामुन का वृक्ष ।
वि०—जामुन के रंग का ।
जांमुन—सं०पु० [सं० जंबु] १ गरम देशों में होने वाला एक सदाबहार वृक्ष । गरमियों में इसके बड़े-बड़े बेर के आकार के काले काले फल लगे होते हैं. २ इस वृक्ष का फल ।
रू०भे०—जांमुण, जांमून ।
जांमू—देखो 'जांमु' (रू.भे.)
जांमूत—देखो 'जांववांन' (रू.भे.) उ०—दहूं जेम जुट्टे मधु कीट दांनू, मनी हेत स्रीकस्न जांमूत मांनू ।—ला.रा.
जांमून—देखो 'जांमुन' (रू.भे.)
जांमेत—सं०पु०—योद्धा, बहादुर । उ०—मोह टाळा पुरा मरी जुध बांका जांमेत । घिर चमराळां घूमरां लाख दळां भ्रख लेत ।—पो.प्र.
जांमोपत्त—सं०पु०—सन्तानोत्पत्ति । उ०—मंभि समदां वींट घर, जळ सूं जांमोपत्त । किणहीं अवगुण कूंभड़ी, कुरळी मांभिम रत्त ।
—ढो.मा.

वि०—जन्मा हुआ ।
जांमौ—सं०पु० [फा० जाम:] १ एक प्रकार का चुननदार घेरदार पहनावा । उ०—जरदोजी जांमौ वण्या, पाटु सुथन पाइ । साहिब घरें पधारिया, सो गळ वळगुं जाई ।—व.स.
२ पुत्र, बेटा । उ०—सुण रावण वात सकामा नूं, मारीच बुलायौ मांमा नूं । जा तूं छळ दसरथ जांमा नूं, मिळ ल्यावां तिणसूं बांमा नूं ।—र.रू.
[सं० जन्म] ३ जन्म ।
उ०—१ भगत बीज पलटै नहीं, जे जुग जाय अनंत । ऊंच नीच घर जांमा लहे, तोई रहे संत का संत ।—संतवांणी
उ०—२ आगली असतरी सुण नै मेहल सूं उतर नै करवत लीन्हौ । करवत लेतां कह्यौ—इणहीज भरतार री असतरी होयज्यो । इतरो कहत पांण धरती पड़ी सो पड़तां गाय री हाड पगे लागौ । सो अलावदी पातसाह रै घरै जांमौ पायो ।—वीरमदे सोनगरा री वात
जांमौत—सं०पु० [सं० जामात] दामाद, जंवाई ।
जांम्य—वि० [सं० याम्य] १ यमराज सम्बन्धी, यमराज का.
२ दक्षिण का ।
सं० स्त्री० दक्षिण । उ०—सारी ओरंग साह सूं, दाखै दूत विगत्त । दुरग अकव्वर जांम्य दिस, गा पंखराव जुगत्त ।—रा.रू.
जांवण—देखो 'जांमण' (रू.भे)
जांवणी—देखो 'जांमणी' (रू.भे.)
जांवळणौ, जांवळवौ—क्रि०अ०—साथ होना, शामिल होना ।
उ०—'कमा' हरी 'गिरवर' रिण कालो, 'पीथलिआ' जांवळि प्रोचाळो ।
—वचनिका
जांवळि—देखो 'जांमळ' (रू.भे.) उ०—बेटी जांवळि वाप, 'रासो' 'रैणाइर' तणौ । गज 'केहर' रिण गाजियौ, तोड़ेवा खळ ताप ।
—वचनिका
जांवौ—सं०पु०—एक प्रकार का सरकारी कर ।
जांसारी—सं०स्त्री०—जूआ ।
जांह्नवी—सं०स्त्री० [सं० जाह्नवी] गंगा नदी । उ०—विसवामित्र रघुपति वदति, ए जगपावन जांह्नवी ।—रांमरासो
जा—सं०स्त्री०—माता, जननी. २ योनि. ३ फांसी (एका०)
वि०—१ उत्पन्न (एका०) ज्यूं०—गिरजा ।
२ वृद्ध. ३ चतुर (एका.)
सर्व० [सं० यद्] १ जो. २ जिस । उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ असेस । दहिसी गात जु विरहणी, जा का प्री परदेस ।
३ जिन । —ढो.मा.
जाअ—वि० [सं० जात:] उत्पन्न (जैन)
जाइ—वि० [सं० यायिन्] १ जाने वाला (जैन)
२ जितना । उ०—रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवां सांमरथीक कुण । जाइ जांणिया तिसा मैं जंपिया, गोविंद रांणी तणा गुण ।—वेलि.
सर्व०—जिस, जिन । उ०—१ दधि वीणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत । नासा अग्नि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत ।—वेलि.
उ०—२ क्रित करण अकरण अन्नथा करणां, सगळै ही श्रोकै ससमत्थ । हालिया जाइ लगाया हूंता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ ।—वेलि.
सं०स्त्री० [सं० जाति] १ जन्म, उत्पत्ति (जैन) । २ एक इन्द्रिय द्विइन्द्रिय आदि पांच जाति (जैन) । ३ मद्य विशेष (जैन) ।
४ देखो 'जाति' (रू.भे.) (जैन)

रू०भे०—जाई ।

जाइग्र—देखो 'जाइय' (रू.भे.) (जैन)

जाइग्राजीव–सं०पु० [सं० जात्याजीव] जाति को जान कर ग्राहार लेने वाला साधु (जैन) ।

जाइग्रासीविस–सं०पु० [सं० जात्याशीविप] जन्म से ही विषैला जन्तु (जैन) ।

जाइकम्म–सं०पु० [सं० जातिकर्मन्] देखो 'जातकरम' (रू.भे.) (जैन)

जाइगइ, जाइगा, जाइगाइ—देखो 'जगा' (रू.भे.)

उ०—१ मारू ग्राडि मांहि कटक पुहूतां, भली जाइगइ लीधी । महल मांहि वइसी नइ मोटे, मलकि मसूरति कीधी ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ पुस्तक्कि उडि भंडार विच, 'जेसलमेरन' कइ परी । 'ग्यांन-हरस' कहत तिस जाइगा, रक्खइ वहु चउसठ सुरी ।—ऐ.जै.का.सं.

जाइणी–सं०स्त्री० [सं० याकिनी] जैन ग्रंथकार श्री हरिभद्र सूरि की धर्म माता, एक जैन साध्वी (जैन)।

जाइतिग–सं०पु० [सं० जातित्रिक] पांच जाति, चार गति ग्रौर दो विहायोगति इस त्रिपुटी की ग्यारह प्रकृति का समुदाय (जैन)

जाइथेर–सं०पु० [सं० जातिस्थविर] साठ वर्ष से ग्रधिक ग्रायु वाला साधु (जैन) ।

जाइधम्मय–वि० [सं० जातिधर्मक] उत्पत्ति स्वभाव वाला (जैन) ।

जाइपह–सं०पु० [सं० जातिपथ] जन्मने ग्रौर मरने का मार्ग, संसार । (जैन) ।

जाइय–वि० [सं० याचित] मांगा हुग्रा (जैन)

रू०भे०—जाइग्र ।

जाइवंझा–सं०स्त्री [सं० जातिवंध्या] वह स्त्री जिसके सन्तान न हुई हो, जन्म-वांझ स्त्री (जैन) ।

जइफळ—देखो 'जायफळ' (रू.भे.) उ०—ताहरां पासै खड़ि ग्रर बीजै डेरै पधारिया । ग्रोथि ग्राथमण तेल ग्रर जाइफळ री मरदन कीधी ग्रर सेक कराड़ियौ ।—द.वि.

जाईदौ–वि० [फा० जाईद:] (स्त्री० जाईदी) जन्मा हुग्रा, उत्पन्न ।

जाई–सं०स्त्री० [सं० जाया, प्रा० जाइ] १ स्त्री । उ०—कहिन वहिन वाई कुण नई एह जाई । करिन मझ पसाई ताहरउ हउं जि भाई ।
—विराटपर्व

२ कन्या, पुत्री ।

सर्व०—१ उस । उ०—जाई सहर कै राजा री कुंवरी पंचकळी नै मिळयौ चंपे री कळी सूं तुलती ।—चौवोली

देखो 'जाइ' (रू.भे.)

जाईजणौ, जाईजवौ–क्रि०ग्र० ('जाणौ' क्रि० का भाव वा० रूप) जाया-जाना । उ०—सात समंदरां रै पार उतरीयौ छै । राजा मांनधाता दीठौ जाईजै केथ ताहरां एक मारिग दीठौ ।—चौवोली

जाउ–सं०पु० [सं० जायु] दवा, ग्रौपधि (जैन)

जाउया–सं०स्त्री० [सं० यातृका] पति के छोटे भाई की स्त्री, देवरानी (जैन)

जाकजमाळा–वि०—मोटा-ताजा, हृष्टपुष्ट । उ०—तिहां वैठा वत्रीस लक्षण पुरुस दुंदळा फुंदळा जाकजमाळा मुंछाळा, केई जमाई केई साळा ।—व.स.

जाऊड़ी–सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष जो वड़ा व छोटा दो प्रकार का होता है । यह प्राय: नदियों के किनारे ही होता है । इसकी टहनियां कलमें वनाने के काम में ग्राती थीं ।

रू०भे०—जंऊड़ी, जऊड़ी ।

जाकेड़ौ, जाकोड़ौ—देखो 'जाखोड़ौ' (रू.भे.)

जाखंत–सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष ग्रथवा उसका फल ।

जाखमांनि–सं०पु०—यक्ष । उ०—१ पगमांनि वांणही, ग्रांखि मांनि भरण, त्रिख मांनि फळ, जाखमांनि वळि ।—व.स.

जाखळ–सं०पु० [सं० यक्ष] १ यक्ष । उ०—जिम जिम मिथ्यात्वि वाहिउ जाखळ, सेखल नी पूजा करइ । तिम तिम ते घणउ घणेरडउ व्यापीइं ।—षष्टिशतक प्रकरण

२ देखो 'जाखी' (मह०, रू.भे.)

जाखांणपट्टी–सं०स्त्री०—वीकानेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन भूमि-भाग जहाँ पर वीदावत राठौड़ों का राज्य था ।

जाखी–वि०—१ दुष्ट, ग्राततायी. २ पापी ।

उ०—लीना सहैं जाखी । मार पाड माचतौ गयौ ग्रजरावळ डाकी ।
—पा.प्र.

सं०पु०—देव विशेष के निमित्त वलि किया जाने वाला वह वकरा जिसे खिला-पिला कर मोटा किया गया हो ।

३ ऊँट ।

मह०—जाखळ ।

जाखेड़ौ, जाखोड़ौ–सं०पु० [सं० जक्ष+इंद्र] ऊँट (ना.डिं.को.)

उ०—साथियां सजोड़ां घोड़ां जाखोड़ा साकतां साजी, लड़ालूंव हुग्रा देखे राजी लाखां लोक ।—मयारांम दरजी री वात

रू०भे०—जाकेड़ौ, जाकोड़ौ ।

जागंगी–सं०पु० [सं० यज्ञांग] १ उदुंबर वृक्ष. २ देखो 'जोगंगी'
(रू.भे.)

जाग–सं०पु० [सं० याग:] १ यज्ञ । उ०—किं जोग जाग जप तप तीरथ किं, व्रत किं दांनासम वरणा । मुख कहि क्रसन रुखमिणि मंगळ, कांई रे मन कळपासि क्रपणा ।—वेलि.

२ विवाह । उ०—महा मंडियौ जाग उज्जैण खागां मधै, रुदन विलखावती रही रोती । हेळवी 'ग्रमर' री हीय करती हरख, 'जसा' ग्रपछर रही वाट जोती ।—नरहरदास वारहठ

सं०स्त्री०—३ घोड़ी की योनि. ४ घोड़ी का ऋतुमती होने का भाव. ५ जागरण. ६ देखो 'जगा' (रू.भे.)

जागडउ–सं०पु०—एक देश का नाम । उ०—मांणिक्यदंडउ हस्ती, खुरसांणिउ घोडउ, मुरस्थळीनउं ऊंट, दंडाहिनउ वळद, भीमासननउं करपूर, जागडउ कुंकुम, काकतुंडउं ग्रगुरु ।—व.स.

जागण—देखो 'जागरण' । उ०—कंठी वांध पराई कांमण, लेवे कंठ

नगारै। मुळ मुळ लगन पगन लागरा री, जागण माय जगाई।
—ऊ.का.

सं०स्त्री०—अग्नि (ह.नां.)

जागणो—वि० (स्त्री० जागणी) जगने वाला। उ०—डाकणी पापणी सापणी, भांमणी भोगणी भेद दे रोगणी। जोगणी जागणी भूतणी लागणी, भूकरी सूकरी काकणी कूकरी।—ह.पु.वा.

जागणो, जागबो—क्रि०अ० [सं० जागरणम्] १ जाग्रत होना, नींद से उठना। उ०—घाली टापर वाग मुखि, भेजयउ राजदुआरि। करहइ किया टहूकड़ा, निद्रा जागी नारि।—ढो.मा.

कहा०—१ जागते नै जगावणो दो'रो है—जागते हुए को जगाना कठिन है। जान-बूझ कर सोये हुए व्यक्ति को जगाना मुश्किल है। जान-बूझ कर गलती करने वाले व्यक्ति को समझाना कठिन है. २ जागतो घुररावणो—जान-बूझ कर गलती करने वाले के प्रति।

२ विख्यात होना, फैलना, चमकना। उ०—लागी हर हूं ता लगन, जागी क्रीत जिकांह। वडभागी वै वांकला, त्यागी नांम तिकांह।
—वां.दा.

३ उत्तेजित होना. ४ अग्नि का प्रज्वलित होना. ५ जगमगाना. ६ उन्नति करना।

जागणहार, हारौ (हारी), जागणियो—वि०।

जगवाड़णो, जगवाड़बो, जगवाणो, जगवाबो, जगवावणो, जगवावबो, जगाड़णो, जगाड़बो, जगाणो, जगाबो, जगावणो, जगावबो—प्रे०रू०।

जागिओड़ो, जागियोड़ो, जाग्योड़ो—भू०का०कृ०।

जागीजणो, जागीजबो—भाव वा०।

जगणो, जगबो, जागवणो, जागवबो—रू०भे०।

जागतारण—सं०पु०यौ० [सं० यागत्रातृ] यज्ञ का उद्धार करने वाला। यथा—विष्णु, ईश्वर, श्रीराम।

जागती—सं०स्त्री०—देखो 'जगती' (रू.भे.)

जागतीकळा, जागतीजोत—१ किसी देवी या देवता का चमत्कार. २ दीपक।

वि०—प्रभावशाली।

जागदत्ती—सं०पु० [सं० याज्ञदत्ति] कुबेर।

जागवळिक—सं०पु० [सं० याज्ञवल्क्य] याज्ञवल्क्य।

जागर—सं०पु०—श्वान, कुत्ता (ह.नां.)

वि०—जागृत रहने वाला, निद्रा के अभाव वाला (जैन)

जागरण—सं०पु० [सं०] १ किसी पर्व, व्रत या धार्मिक उत्सव में विना नींद लिये भगवद् भजन करते हुए जाग कर सारी रात्रि विता देना. २ निद्रा का अभाव, जागने का भाव। उ०—राता तत चितारत चितारत, गिरि कंदरि विन्हे गए। निद्रावस जग एहु महा निसि, जांमिए कांमिए जागरण।—वेलि.

रू०भे०—जागण।

जागरवाळ—सं०पु०—पुरोहित ब्राह्मणों का एक भेद विशेष जो अपने को बाल ऋषि की संतान कहते हैं। ये सिंघल राठौड़ों के पुरोहित हैं (मा.म.)

जागरि—वि० [सं० जागृत] जागरण। उ०—घरि आवी इम चितवइ, अजे सोम बहु रात। धरम जागरि जागतां, प्रकटाणउ परभात।
—ऐ.जै. का.सं.

जागरिया—सं०स्त्री० [सं० जागर्या] १ चितवन. २ विचार (जैन)

जागरी—सं०पु० [सं०] एक जाति विशेष जिसकी कन्यायें प्रायः वेश्या-वृत्ति करती हैं (मा.म.)

जागरूक—सं०पु० [सं०] १ वह जो जाग्रत अवस्था में हो. २ चैतन्य, सावधान।

जागळ—सं०स्त्री०—एक प्रकार की बढ़िया मछली।

जागवणो, जागवबो—१ देखो 'जागणो, जागबो' (रू.भे.)

उ०—१ तोही जोध न जागवै मुदगर उडाया।—केसोदास गाडण

उ०—२ जोवै जां ग्रहि-ग्रहि जगन जागवै। जगनि-जगनि कीजै तप जाप।—वेलि.

देखो—२ 'जगाणो, जगाबो' (रू.भे.)

उ०—१ मोती-जड़ी ज हाथि, सुरह-सुगंधी वाटली। सूती मांझिम राति, जांणू ढोलूं जागवी।—ढो.मा.

उ०—२ सुरह सुगंधी वास, मोती कांने झुळकते। सूती मंदिर खास, जांणू ढोलइ जागवी।—ढो.मा.

जागवणहार, हारौ (हारी), जागवणियो—वि०।

जागविओड़ो, जागवियोड़ो, जागव्योड़ो—भू०का०कृ०।

जागवीजणो, जागवीजबो—भाव वा०।

जागवलक—सं०पु० [सं० याज्ञवल्क्य] याज्ञवल्क्य ऋषि।

जागवी—सं०स्त्री०—अग्नि (नां.मा.)

जागसेनी—सं०स्त्री० [सं० याज्ञसेनी] द्रौपदी।

जागा—सं०स्त्री—१ पंवार वंश की एक शाखा. २ वंशावलि लिखने वाले भाटों की एक शाखा (मा.म.)

३ देखो 'जगा' (रू.भे.)

जागात—सं०स्त्री०—देखो 'जकात' (रू.भे.)

उ०—कुंवर महाराज सूं अरज कीवी—नायक आछी जागात भरी, भली भांति वसतां नजर कीवी, हुकम हुवै तो सिरपाव दीजै।
—पलक दरियाव री वात

जागार—सं०पु०—पंवार वंश की एक शाखा अथवा इस शाखा का व्यक्ति।

जागियोड़ो—भू०का०कृ० [सं० जागरित] १ जाग्रत हुआ हुआ, नींद से उठा हुआ. २ विख्यात हुवा हुआ, फैला हुआ, चमका हुआ. ३ उत्तेजित हुवा हुआ. ४ (अग्नि का) प्रज्वलित हुवा हुआ। ५ जगमगाया हुआ. ६ उन्नति किया हुआ।

(स्त्री० जागियोड़ी)

रू०भे०—जगियोड़ो।

जागीदार—देखो 'जागीरदार' (रू.भे.)

जागीर-सं०स्त्री० [फा०] राजा या शासक आदि की ओर से किसी व्यक्ति विशेप को उसकी सेवाओं के उपलक्ष में दिया गया एक या एक से अधिक गांव ।

जागीरदार-सं०पु०यौ० [फा०] किसी जागीर का स्वामी ।

जागीरी-सं०स्त्री० [फा० जागीर+रा.प्र.ई] १ जागीरदार के अधिकार की भूमि ।

२ जागीरदार होने का भाव ।

वि०—जागीर का, जागीर से संबंधित ।

जागेवी-सं०स्त्री० [सं० जागृवि] अग्नि (ह.नां.मा)

जागेसर, जागेस्वर-सं०पु० [सं० योगीश्वर] महादेव, शिव (नां.मा.)

जाग्णं-सं०पु०—घोड़ी के ऋतुमती होने का भाव ।

क्रि०प्र०—आणी, होणी ।

जाग्या-सं०स्त्री०—देखो 'जगा' (रू.भे.)

जाग्रण—देखो 'जागरण' (रू.भे.)

उ०—वाल जती पतिवरता वेवै । सपत निसा जाग्रण करि सेवै ।
—सू.प्र.

जाग्रत-वि० १ जो जग रहा हो ।

सं०स्त्री० [० जाग्रत] वह अवस्था जिसमें सव वातों का परिज्ञान हो । उ०—पांच तत्व गुण तीन, धात तहां सात समोई । जाग्रत सुपन सुखोपति, पांच ग्यांन यंद्री पचीस प्रक्रित लोई ।—ह.पु.वा.

जाग्रति-सं०स्त्री०—जाग्रतावस्था ।

जाग्रवी-सं०स्त्री० [सं० जागृवि] अग्नि (ह.नां.)

जाड़—देखो 'जाड़ी' (रू.भे.)

उ०—'जेहो' सिंहां जाड़, ऊवेड़ै ऊनड़ हरो । चारण माथै चाड, रूपग सुण सुण राखिया ।—वां.दा.

जाड़िया-सं०स्त्री०—ढोली जाति की एक शाखा (मा.म.)

जाड़ियौ—देखो 'जाड़ी' (अल्पा. रू.भे.)

जाड़ी-सं०स्त्री०—१ दाढ़ी के वालों को ठीक जमाये रखने के हेतु दाढ़ी पर वांधी जाने वाली कपड़े की पट्टी ।

मि०—वुकांनी ।

२ जवाड़ा । उ०—म्हारा रूंगता ऊभा व्हैग्या अर म्हूं म्हारी पथारी सूं च्यार छः हाथ आघौ जाय पड़्यो । अणूती सरदी में वाजै ज्यूं म्हारी जाड़ी वाजगी अर दांत किट···किट···किट वोलण लाग्या ।
—रातवासौ

जाड़ौ-सं०पु०—१ शीत, सरदी. २ जवाड़ा ।

उ०—प्रसण मार रख संत सहीपण, राघव जीपण राड़ा । निज हेकल धापियो न दीसै, जे खळ पीसै जाड़ा ।—र.ज.प्र.

यौ०—जाड़ा-तोड़ ।

३ समूह । उ०—नकटां री नहिं न्याति, विलग वोळां री नह वाड़ौ । वूचां रौ नहिं वास, ज्यूं न गूंगां रौ जाड़ौ ।—ऊ.का.

अल्पा०—जाड़ियौ ।

जाचक, जाचग, जाचण-वि० [सं० याचक] याचक, मांगने वाला (ह.नां.)

पर्या०—अरथी, ईहण, जग-आसगर, जाचण, नीपग, भिखक, मगतौ, मनरख, मांगण, मारगण ।

रू०भे०—जाचिग ।

जाचणौ, जाचवौ-क्रि०स० [सं० याचनम्] १ मांगना, याचना करना ।

उ०—कौसिक रिख जग काज रे, जाचिया स्री रघुराज रे । सुज विदा दसरथ साज रे, मेल्हिया स्री महाराज रे ।—र.रू.

२ देखो 'जांचणौ' (रू.भे.)

उ०—भेजिये प्रथम वांभणोनां वी भणी । वीजीये वार गयौ जाचवा वंभणी ।—रुखमणी हरण

जाचणहार, हारौ (हारी), जाचणियौ—वि० ।

जचवाड़णौ, जचवाड़वौ, जचवाणौ, जचवावौ, जचवावणौ, जचवाववौ—प्रे०रू० ।

जाचिओड़ौ, जाचियोड़ौ, जाच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जाचीजणौ, जाचीजवौ—भाव वा० ।

जाचा-सं०स्त्री०—जच्चा । उ०—हूं वळिहारी राणियां, सांचा गरभ सिखाय । जाचां हूंदै तापणै, हरखै धी द्रग लाय ।—वी.स.

जाचिग—देखो 'जाचक' (रू.भे.)

उ०—वावन हजार घोड़ा जाचिगां नूं दिया ।—नैणसी

जाचेल-सं०पु०—तिल्ली का तेल ।

जाज-सं०स्त्री०—थोड़ी देर, क्षण भर का समय ।

जा'ज-सं०स्त्री०—समुद्र में चलने वाली वड़ी नाव, जहाज ।

उ०—साजन तुम दरियाव हौ, मैं औगण की जा'ज । अवकी पार लगायदे, कर पकड़े की लाज ।—र.रा.

पर्या०—जहाज, जिहाज, पोत, वहित्र, महनाव ।

मुहा०—१ जा'ज रौ कागलौ होणौ—ऐसा होना जिसे एक ही आश्रय हो अतः घूम फिर कर वहीं आना पड़े. २ जा'ज रौ पंखेरू होणौ—देखो 'जा'ज रौ कागलौ होणौ' ।

रू०भे०—जहाज, जिहाज, जा'झ ।

जाजड़ा-सं०स्त्री०—राव सीहा के वंश में राठौड़ों की एक उपशाखा ।

जाजत्री-सं०स्त्री०—शस्त्र विशेष ।

उ०—वंकि पटां फुलहथां, 'सोरि' खिलकार कुसुत्री । तस कसीस लेजमां, जजर गत्री जाजत्री ।—सू.प्र.

जाजम-सं०स्त्री० [फा०] १ वेल-वूटे आदि छपी हुई अथवा रंगीन एक प्रकार की मोटी चादर जो फर्श पर विछाने के काम आती है ।

उ०—ढोलोजी उमर री पाखती जाजम ऊपरै जाय वैठा ।—ढो.मा.

मुहा०—१ जाजम उलटणी (पलटणी) १ किसी प्रवन्ध को नष्ट-भ्रष्ट करना । व्यवस्था वदल देना । २ जाजम जमणी—किसी कार्य का अच्छे ढंग से प्रवन्ध होना, सुव्यवस्था होना ।

२ गलीचा, कालीन।
रू०भे०—जाजिम।
जाजमलार–सं०पु० [तु० जाजामलार] संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत)
जाजमात्र, जाजमाट, जाजमाठ–वि०—कम, थोड़ा।
जाजरउ–वि० [सं० जर्जर:] वृद्ध, बूढ़ा, जीर्ण, कमजोर (उ.र.)
जाजरणौ, जाजरबौ–क्रि०स० [सं० जृ वयो हाने] १ संहार करना, मारना। उ०—दड़वतौ गुरिज गुरिज भुज आहवि, सत्र घड जाजरतौ सनड। अकबर साहि ईखियौ 'ईसर', गढ़ ऊपर चालतौ गढ़।—ईसरदास मेड़तिया रौ गीत
जाजरियोड़ौ–भू०का०कृ० [सं० जाजरित:] संहार किया हुआ, मारा हुआ। (स्त्री०—जाजरियोड़ी)
जाजरौ–वि० [सं० जर्जर, प्रा० जज्जर] जो बहुत ही जीर्ण हो, जर्जर।
उ०—माथउं धवळउं देह जाजरी। वांकउ वांसउ झवइं लालरी।
—चिहुंगति चउपई
जाजरू–सं०पु० [फा० जा+अ० जरूर] १ शौचालय। उ०—इतरै मांहीं बादसाह नूं जाजरू री जरूरत हुई तद एक छोकरी नूं कही—लोटियौ मेलह।—महाराजा जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता (मि० 'तारत')।
२ कुएं की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना, शौचकूप।
वि०वि०—यह जमीन के नीचे खोदा हुआ एक प्रकार का गहरा गड्ढा होता है जिसका ऊपरी भाग ढका रहता है, केवल एक छिद्र बना रहता है जिस पर बैठ कर मल त्याग करते हैं। आधुनिक समय में इस गड्ढे का तल पृथ्वी तल पर ही होता है। मकान के बाहर की ओर इस गड्ढे से संबंधित एक खिड़की रहती है जिसमें से मेहतर आकर मल उठा ले जाता है।
(मि० 'संडास')।
जाजळ–सं०पु०—जल का बड़ा बर्तन जिसमें स्नान करने का पानी गर्म किया जाता है (रा.सा.सं.)
जाजळमांन, जाजळमांनू—देखो 'जाजुळमांन' (रू.भे.)
उ०—१ जाजळमांन भयंकर जोसां। पाडूं बह खळ बगतर-पोसां।
—सू.प्र.
उ०—२ ओळखियौ तौ केही नहीं पण फकीर जाजळमांन सो तपस्या वाळौ मांणस छांनौ न रहै।—नी.प्र.
जाजळी–वि० [सं० जाज्वली] भयंकर, जबरदस्त।
उ०—जाजळी फौज मुगळी सजोर, कर दिल्ली सिली दस्तूर कोर। इम हले खेत सनमुख असाध। विख नदी उज्जळी हूंत बाध।
—वि.सं.
जाजामलार–सं०पु० [तु०] संपूर्ण जाति का एक राग (संगीत)
जाजिम—देखो 'जाजम' (रू.भे.)
जाजी–वि०स्त्री०—देखो 'जाजौ' (रू.भे.)
सं०पु० [सं० याजि] यज्ञ करने वाला।
जाजीव–अव्य० [सं० यावज्जीवनम्] जीवनपर्यन्त (जैन)
जाजुळ–वि०—भयंकर, जबरदस्त। उ०—धूंम सुणै चख आग धकतरै। जाजुळ ग्राह जागियौ जतरै।—र.ज.प्र.
२ क्रुद्ध, कोपित। उ०—जाजुळ दुजराज करण जुध जाडौ, तस कुठार दगतायळ। राह वरात ईख अजरायळ, आय'र ऊभौ आडौ।
—र.रू.
३ जाज्वल्यमान, तेजस्वी। उ०—१ ऊससै लड़ण इंद्रजीत हूं, जाजुळ भड़ अगजीत रा।—सू.प्र. उ०—२ विचि तिमिर घोर गोळा वहै, जाजुळ मंगळ जोति रा। अम्ह सम्हां जांणि लागा उडण, सिखर मुकति साजोति रा।—सू.प्र.
रू०भे०—जाजुळि, जाजुळी।
जाजुळमांन–वि० [सं० जाज्वल्यमान] तेजस्वी, तेजवान।
उ०—१ उण ग्रह अग्र तन कनक अरोगी। जाजुळमांन तपै इक जोगी।—सू.प्र. उ०—२ आया हसन अली अजरायळ, जाजुळमांन भयंकर जज्जर।—सू.प्र.
रू०भे०—जाजळमांन, जाजुळमांनौ।
जाजुळि—देखो 'जाजुळ' (रू.भे.) उ०—१ छूटै प्रांण पाव नह छूटै। जाजुळि एम दहूं दळ जूटै।—सू.प्र.
उ०—२ जाजुळि वरुथ्थां रोहा भड़ंगी अरोहा जच्चे। वडंगी अरोहा खचै आसमांन वीच।—हुकमीचंद खिड़ियौ
जाजौ–वि० (स्त्री० जाजी) १ बहुत, अधिक। उ०—रांमा पीर ऊवी रूणेचा रै मांहि, मांगूं पूत रतनां री जोड़। कुळ में वहुवां री जाजी झूलरी।—लो.गी.
२ सघन, घना।
रू०भे०—जाझौ।
जा'झ—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)
सं०स्त्री०—बैलगाड़ी पर लगाने की टट्टी (किसनगढ़)
उ०—हेली! जग में जतन हुंत, हांण न लेस हुवंत। जाझी गाड़ी पर जच्यां, खांन न भरचौ खिरंत।—रेवतसिंह भाटी
जाझी–वि०स्त्री०—देखो 'जाझौ' (रू.भे.) उ०—१ वडा बोलतौ बोल, वातां घणी वणातौ, जोम छक जणातौ ठसक जाझी। 'सदा' री अग्राजै 'सेर' ऊभौ समर, मुदायत 'हरा' रा आव माझी।
—पहाड़खां आढ़ौ
उ०—२ केसर तौ रळायौ जाझा नीर में, जाझी नीर में, जी म्हारा राज।—लो.गी.
जाझेरा–वि० (स्त्री० जाझेरी) अधिक। उ०—घणी ज्वार हुवै सखरी साख हुवै छै, ताहरां कण नेपत गोहूं मण २००००० तथा ३००००० जाझेरा हुवै छै।—नैणसी
जाझौ—देखो 'जाजौ' (रू.भे.) उ०—१ कोई भावजड़चां त चमक्यौ जाझौ झूमखौ ए मोरी सइयां।—लो.गी.
उ०—२ खड़गौ झाझे भार खित, वापू का रे बोल। नहीं उचित करणौ नरां, धवळा हंदौ मोल।—बां.दा.

(स्त्री० जाभी)

जाट-सं०पु० (स्त्री० जाटण, जाटणी) पंजाव, सिंध, राजपूताने और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में फैली हुई भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति या इस जाति का व्यक्ति।

कहा०—जाट जठै ही थाट—जहां जाट अधिक वसते हैं वहां ठाठ होता है। अधिकतर जाट कृषि कार्य करते हैं अतः उस गांव के लोग प्रायः संपन्न होते हैं।

रू०भे०—जट, जट्ट, जट्टि, जट्टी, जट्ठी, जाटव, जाटू।

जाटव—देखो 'जाट' (रू.भे.)

जाटावांभी-सं०पु०—चमारों की एक शाखा। इनकी स्त्रियों का पहनावा जाटों की स्त्रियों के पहनावे से मिलता-जुलता होता है। ये प्रायः कपड़े वुनने का कार्य करते हैं।

जाटाळिका-सं०स्त्री० [सं० जाटालिका] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

जाटू—देखो 'जाट' (रू.भे.) उ०—सारां सूं आगाउ यां पाठांणां जंग जूटा। जाटू लोग सारा जूटता ही भागि छूटा।—शि.वं.

जाटोड़ा-सं०स्त्री०—तंवर वंश के राजपूतों की एक शाखा जो रामदेवजी की पूजा किया करते हैं।

जाठर-वि० [सं०] पेट का, गर्भज। उ०—सहचौ भलां ही जट्टणी, जाय अरिस्ट अरिस्ट। जिहं जाठर रविमल्ल भौ, आंमेरन को इस्ट।—वं.भा.

जाठरागनी—देखो 'जठराग्नि' (रू.भे.)

जाड-सं०स्त्री०—१ शक्ति, सामर्थ्य. २ मोटापा। उ०—भरे चूंड चाडां जहे जाड भीड़े, वहू हाथ री वाथ सूं नाथ वीड़े।—ना.द.

३ मूर्खता। उ०—जगपति तूं सिगळां रौ जांमी, भगतवछळ सह जनां भांमी। भगति समापि समापि भलेरी, जाड अविधा घात जळेरी।—पी.ग्र.

४ जड़ता. ५ कठोरता. ६ झुंड, समूह. ७ एक देश का नाम। उ०—कीर कास्मीर द्रविड गउड जाड लाड लांगळ जांगळ।—व.स.

वि०—१ जड़। उ०—ईसरौ कहै असरण-सरण, विहण-कंस संभळ वयण। जग जाड विखै जांमण मरण, छोड छोड गज छोडवण।—ह.र.

२ देखो 'जाडौ' (रू.भे.)

अव्य०—चाहे। उ०—ओ महरात जाड गढ़ आवै, पिण मुहकम क्रम जांण न पावै।—रा.रू.

जाडउ-सं०स्त्री० [सं० जाडच] १ मूर्खता, जड़ता (उ.र.) २ सुस्ती, अकर्मण्यता (उ.र.)

जाडा-सं०स्त्री०—यादव वंश की एक शाखा, जाड़ेचा।

जाडायतो-सं०स्त्री०—जवरदस्ती, वलात्।

जाडियौ—देखो 'जाडौ' (अल्पा. रू.भे.)

जाडीजणौ, जाडीजवौ-क्रि०अ०—१ घनीभूत होना। उ०—सुणतां इतरी वात कुसळ मो भांमण जांणौ, खळक वकै जो खोट वेम उर कदै न आणौ। सूखे नेह विजोग प्रीत री रीत न सांची, जाडीजे इण जोग हांम उर रंगत रांची।—मेघ.

२ अधिक होना।

जाडेचा-सं०स्त्री०—यादव वंश की एक शाखा।

रू०भे०—जाडेज, जाडैचा, जाडैज, जाडैजा।

जाडेचौ-सं०पु०—यादव वंश की जाडेचा शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—जाडेज, जाडैज, जाडैजौ।

जाडेज—१ देखो 'जाडेचा' (रू.भे.) २ देखो 'जाडेचौ' (रू.भे.)

जाडैचा—देखो 'जाडेचा' (रू.भे.)

जाडैज—देखो 'जाडेज' (रू.भे.)

जाडैजा—देखो 'जाडेचा' (रू.भे.)

जाडैजौ—देखो 'जाडेचौ' (रू.भे.)

जाडौ-वि०—१ हृष्ट-पुष्ट, मोटा। उ०—कळिया गाडा काढ ही, जाडा कंध जियांह। रहै नचीता सागड़ी, ज्यां कळ जोत दियांह।—वां.दा.

यौ०—जाडौ-मातौ।

विलो०—पतळौ।

२ अधिक, वहुत. ३ ठोस. ४ दृढ़, मजवूत। उ०—तद सांखलै नापै कंवरजी स्री वीकेजी नूं कयौ, 'गोरौजी आपरै सागै हालसी अरु थांरौ राज जाडौ वधसी।—द.दा.

५ घना। उ०—१ वेटौ रावळ सवळ रौ, 'राजोधर' तिण वार। अस जाडां विच आंरियौ, झल्ले खग्ग दुधार।—रा.रू.

उ०—२ जमदळ आय फिरैलौ जाडौ, आडौ कोय न आवै। रे दिन जावै रे दिन जावै, लाहौ लीजिये।—र.ज.प्र.

कहा०—जाडा जका सदा रा ही जवरा—जो संगठित हैं वे सदा ही वलवान होते हैं। मिलजुल कर रहने में वल होता है, एकता में वल है।

६ जिसके सूत मोटे व आपस में खूव मिले हों (कपड़ा), गाढ़ा, मोटा।

सं०पु०—१ यादव वंश की जाड़ेचा शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—जडौ, जड्डौ।

अल्पा०—जाडियौ।

जाणौ, जावौ [सं० या] १ देखो 'जावणौ' (रू.भे.)

क्रि०स० [सं० जनि] २ उत्पन्न करना, जन्म देना। उ०—ताहरां पंडित कहचौ वघड़ावतां रै भोज रै वेटौ जायौ।—देवजी वगड़ावत री वात

मुहा०—जाती रा टांमक—अयोग्य व्यक्ति।

जाणहार, हारौ (हारी) जाणियौ—वि०।

गयोड़ौ, जायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जाईजणौ, जाईजवौ—भाव वा०।

जावणौ, जाववौ—रू०भे०।

जात-वि०—उत्पन्न, जन्मा हुआ. २ कुलीन।
सं०पु० [सं०] १ जीव, प्राणी।
सं०स्त्री० [सं० यात्रा] २ मनौती, अभिष्टपूर्ति पर किसी देवता की पूजा का संकल्प, मिन्नत। उ०—सेत्रू जो पिरण गोहिलां रै छै। पानीतांणै मियो गोहिल छै, तिको जात करण श्रावै छै।—नैणसी
३ विवाहोपरांत वर-वधू का देव-स्थानों पर देव तुष्ठ-यार्थ जाना और नैवेद्य आदि चढ़ाना।
क्रि०प्र०—करणी, देणी।
४ यात्रा, तीर्थ यात्रा। उ०—१ जात करण जगदीस री, ईस नवै परकार। चैत मास पख चांदणै, 'अजन' थयो असवार।—रा.रू.
उ०—२ अकब्बर पातिसाह ख्वाजा री जात आयो थो तरै मिळिया।
—राव चंद्रसेन री वात
५ देखो 'जाति' (रू.भे.)
मुहा०—जात जणाणी, जात जताणी—जाति-स्वभाव प्रकट करना।
अल्पा०—जातड़ली, जातड़ी।

जातक-सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष का एक भेद. २ एक प्रकार की बौद्ध कथायें. ३ बच्चा।

जातकभरण-देखो 'जातिका भरण' (रू.भे.) (सू.प्र.)

जातकम्म, जातकरम, जातक्रंमयं-सं०पु० [सं० जातकर्म्म] बालक के जन्म के समय होने वाला हिन्दुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार। उ०—वसिस्ठ आदि ब्रह्मयं करंत जातक्रंमयं। हलद्द कुंकुमं हरी, करंत छोह केसरी।—सू प्र.
रू०भे०—जातिकरम।

जातड़ली, जातड़ी—देखो 'जात' (अल्पा. रू.भे.)
उ०—कहा तुमारो नांम जु कहियै, कहा तुमारी जातड़ली।
भगत बिड़द मेरो नांम जु कहियै, जादो हमारी जातड़ली।
—मीरां

जातणा-सं०स्त्री० [सं० यातना] यातना, पीड़ा (जैन)
रू०भे०—जातना।

जातणौ, जातबौ-क्रि०स० [सं० यात्राकरण या यात्रण] पूजन करना।
उ०—जातण आवै थारै कुळवहू, गोद भड़ूला जी पूत।—लो.गी.

जातधांन-सं०पु० [सं० यातुधान] राक्षस (नां.मा.)

जातना —देखो 'जातणा' (रू.भे.)

जातपांत-सं०स्त्री०यौ०—जाति-बिरादरी।
रू०भे०—जातिपांति।

जातवेद, जातवेध-सं०स्त्री० [सं० जात वेदस्] अग्नि (डि.को., नां.मा.)

जातरा-सं०स्त्री० [सं० यात्रा] १ यात्रा। उ०—जन्मभूमि में करै जातरा, पाप प्रबळ पिळ जावै। पुन्न पाछला होवै पूरा, आ मन में जद आवै।—ऊ.का.
२ तीर्थाटन।
रू०भे०—जात्र, जात्रा।

जातरी-सं०पु० [सं० यात्री] १ यात्रा करने वाला यात्री, पथिक. २ तीर्थाटन करने वाला। उ०—जिकां दाकलै जातरी पोढ़ जावै। गुसाई रहै जागता राग गावै।—मे.म.
रू०भे०—जातरु, जात्री।
अल्पा०—जातीड़ो।

जातरु-सं०पु०—१ गाड़ी में लगाया जाने वाला लकड़ी का डंडा जो बोझा ढोने के निमित्त माकड़े में सीधा खड़ा किया जाता है। ऐसे चार डंडे लगाये जाते हैं।
रू०भे०—जातू।
२ देखो 'जातरी' (मा.म.)
रू०भे०—जातरु।

जातरूप, जातरूपक-सं०पु० [सं०] १ धतूरा. २ स्वर्ण (ह.नां., अ.मा.)
३ चांदी (अ.मा., ह.नां.)

जातरूव-सं०पु० [सं० जातरूप] देखो 'जातरूप' (जैन)

जातविरुद्ध-सं०पु०—डिंगल गीतों के अन्तर्गत एक प्रकार का दोष।
वि०वि०—जिस राजस्थानी गीत के प्रत्येक द्वाले में अन्य गीतों के मात्रा, वर्ण आदि के नियमानुसार चरण या पंक्ति प्रयोग की गई हो, वहां ऐसा दोष माना जाता है।

जातवेद-सं०स्त्री० [सं० जातवेदस्] अग्नि (ह.नां.मा.)

जातशिखंडी-सं०पु० [सं० शिखंडी जात] बृहस्पति (अ.मा.)

जातासंख-वि०—मूर्ख, बेवकूफ।

जाति-सं०स्त्री० [सं० जातिः] १ हिन्दू समाज में कर्मानुसार किया गया मनुष्यों का विभाग। बाद में यह जन्मानुसार ही माना जाने लगा। वंश-परंपरा, निवास-स्थान या व्यवसाय से भी कुछ उपविभाग बन गये. २ गुण, धर्म, आकृति के आधार पर किया गया विभाग. ३ वंश, कुल. ४ सामान्य नैयायियों के मत के अनुसार एक प्रकार का व्यापक धर्म. ५ जन्म, उत्पत्ति. ६ चमेली का फूल या पौधा (उ.र.)
७ मालती का फूल या पौधा।
रू०भे०—जाई, जात, जाती।

जातिकम्म—देखो 'जातिकरम' (रू.भे., जैन)

जातिकरम—देखो 'जातकरम' (रू.भे.)

जातिकाभरण-सं०पु०—ज्योतिष का एक ग्रन्थ। उ०—दहू ग्रहां जोड़ि फळ किसूं दाखि। सुजि कहूं जातिकाभरण साखि।—सू.प्र.

जातिधरम-सं०पु०यौ० [सं० जातिधर्म] जाति या वर्ण का धर्म, जातिगत कर्त्तव्य।

जातिपांति—देखो 'जातपांत' (रू.भे.)

जातिफळ-सं०पु० [सं० जातिफल] जायफल।
रू०भे०—जातीफळ।

जातिब्राह्मण-सं०पु०यौ० [सं०] जो केवल जन्म से ब्राह्मण हो किन्तु ब्राह्मण के कर्मो का जिसे ध्यान न हो।

जातिसंकर-सं०पु०यौ० [सं०] वर्णसंकर, दोगला।

जाती—देखो 'जाति' (रू.भे.) उ०—करि इक वीड़ी वळे वांम करि, कीर सु तसु जाती क्रीडंति ।—वेलि.

जातीड़ौ—देखो 'जातरी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—दसमें रे चिणावूं धरमी रे देवरौ, चवदस जातीड़ौ जाय श्रो ।—लो.गी.

जातिफळ—देखो 'जातिफळ' (रू.भे.)

जातीयता-सं०स्त्री०—जाति का भाव, जातीत्व ।

जातीलौ-वि०—जाति का अथवा जाति संबंधी ।

जातिसमर, जातीस्मर-वि०—पूर्व जन्म का ज्ञान रखने वाला ।

उ०—इस्यु सुणि पूरभव देखइ जातिसमर नरिंदो ।

—विद्याविलास पवाडउ

सं०स्त्री०—पूर्व जन्म की स्मृति ।

जातुधांन-सं०पु० [सं० यातुधान] राक्षस, असुर । उ०—गोड़ा जातधांन की ग्रीवा रा हणू उमा हरे ।—र.ज.प्र.

रू०भे०—जात्रधांन ।

जातू—देखो 'जातरू' (१) उ०—दुजवड तीजा दरसातू लें दोड़ै । खावै जातू खळ मारग सूं मोड़ै ।—क.का.

मुहा०—जातू खाणौ—डंडे खाना, मार खाना ।

जात्र—देखो 'जातरा' (रू.भे.) उ०—सुख धांम नांम परखै सकळ, हित सुदांमा विस्रांम हरि । नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि ।—रा.रू.

जात्रणि-सं०स्त्री० [सं० यात्रिणी] यात्रा करने वाली स्त्री ।

उ०—देखिउ जात्रणि खेलिय, मेलिय मनि नवकारि । पास भगति अधिकेरिय, फेरिय मनह मझारि ।—प्राचीन फागु संग्रह

जात्रधांन—देखो 'जातुधांन' (रू.भे., अ.मा.)

जात्ररू—देखो 'जातरू' (रू.भे.)

जात्रा—देखो 'जातरा' (रू.भे.) उ०—कुळ देवां जात्रा करण, मात दरस्सण कज्जि । अरज हुई 'अजमाल' सूं, मांनी भूप समज्जि ।

—रा.रू.

जात्रावाळ-सं०पु० [सं० यात्रावाल] तीर्थ में यात्रियों को देव-दर्शन कराने वाला पंडा ।

जात्रिगु, जात्री—देखो 'जातरी' (रू.भे.) उ०—जात्रिगु जणु चालंत, छाह अति घणु हरिसेई । सूआ सालहि मोर सुवदु सुणि मणि विहसेई ।—प्राचीन फागु संग्रह

जाद-सं०पु० [सं० यादः] पानी (अ.मा.)

जादपत, जादपति-सं०पु० [सं० यादःपति] १ समुद्र (डि.नां.मा.)

उ०—मह राखण मुरजाद, जादपत पव्वै तारजह ।—र.ज.प्र.

[सं० यादवपति] २ श्रीकृष्ण ।

जादम—देखो 'जादव' (रू.भे.)

जादमण-सं०स्त्री०—यादव वंश की कन्या ।

उ०—जादमण आद करि भेट भणिया जठै । आपरा अठै परताप आछा ।—मे.म.

रू०भे०—जादवी ।

जादम्म—देखो 'जादव' (रू.भे.) उ०—जूना भंडा जियार, कहै इण भांत हकीकत । माति आदि जादम्म, मात अनि अठै खगां व्रत ।

—सू.प्र.

जादर-सं०पु०—एक प्रकार का सफेद रेशमी कपड़ा ।

उ०—करयले कंकण मणि झमकारू, जादर फालीय पहिरण ए ।

—पं.पं.च.

जादरियौ-सं०पु० [सं० जातहरित] गेहूँ या चने के कच्चे दानों की शक्कर के साथ बनी लपसी के समान का एक व्यञ्जन विशेष ।

जादव-सं०पु० [सं० यादव] १ यदु के वंशज. २ श्रीकृष्ण ।

उ०—वाहण गुरुड संयल पंखीपति, जादव करई जगीस । सुरनर पंनग मांहे मोटा, ईस्वर नउ वर ईस ।—रुकमणी मंगळ

वि०—यदु संबंधी ।

रू०भे०—जद, जद्दव, जादम, जादव्व, जादम्म, जायव ।

अल्पा०—जादवौ ।

जादवपत, जादवपति-सं०पु०यौ० [सं० यादवपति] यादवपति, श्रीकृष्ण ।

जादवराइ, जादवराई, जादवराऊ, जादवराज, जादवराजा, जादवराव-सं०पु० [सं० यादव+राट्] श्रीकृष्ण (अ.मा.)

उ०—१ देस उड़ीसइ गम करूं । जाई जुहारूं जादवराई ।—वी.दे.

उ०—२ पहीरांमणी रै अणावी, तेड़ी नइं जादवराउ ए ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—३ श्रीकम अरज करां छां तूना, मोटी अकल समाप मुना । जादवराव निमो जर जूना, वैकंठ ना राखै वेखूना ।—पी.ग्र.

जादववंसउजाळ-सं०पु०यौ० [सं० यादव वंश उज्ज्वाल] श्रीकृष्ण (अ.मा)

जादवांपत, जादवांपती—देखो 'जादवपति' (रू.भे.)

उ०—पथीक जाय मथुरा कही, जादवांपती नूं आपरा मिळण कूं वात उरली ।—वां.दा.

जादवी—देखो जादमण' (रू.भे.)

जादवेंद्र-सं०पु० [सं० यादवेन्द्र] श्रीकृष्ण । उ०—एक मतौ हो या कारच कई तांई, जहाँ जादवेंद्र स्त्रीकृष्ण छै ।—वेलि.टी.

जादवौ—देखो 'जादव' (अल्पा., रू.भे.)

जादव्व—देखो 'जादव' (रू.भे.) उ०—जपै जंग कोटि छपन्न जादव्व, वंदै सुखदेव जिसा वैस्नव्व ।—ह.र.

जादस-सं०स्त्री० [सं० यादस्] १ मछली (अ.मा., ह.नां.)

२ जलजंतु ।

जादसपत, जादसपति, जादसपती-सं०पु०यौ० [सं० यादःपति] १ वरुण. २ समुद्र (डि.को.)

जादा-वि० [अ० ज़ियादः] अधिक, बहुत । उ०—हातमताई हरख सूं, पोखंतो पहियांह । अमर नांम उणरो अजै, की जादा कहियांह ।

—वां.दा.

जादु-सं०पु० [सं० यादस्] जल, पानी ।

जादुनाथ–सं०पु० [सं० यादवनाथ] यदुनाथ, श्रीकृष्ण ।
जादुपत, जादुपति–सं०पु० [सं०] यादवपति १ श्रीकृष्ण । उ०—स्री जादुपति नैं वीनवा जी, स्रीपति अलख अभेव ।—रुकमणी मंगळ
सं० [यादस्+पति] २ समुद्र, सागर ।
जादुरांज–सं०पु० [सं० यादवराज] यादवपति, श्रीकृष्ण ।
जादू–सं०पु० [फा०] १ आश्चर्यजनक, अलौकिक या अमानवीय कार्य या इंद्रजाल ।
क्रि०प्र०—करणौ, चलणौ, होणौ ।
२ दर्शकों की बुद्धि या दृष्टि को धोखा देकर किया जाने वाला खेल. ३ दूसरे को मोहित करने की शक्ति. ४ यादव वंश का क्षत्रिय ।
उ०—हव जादू जसवस हुवौ, जग जाहर जेहल्ल । चारण चाहै ज्यूं करै, भाळै भारहमल्ल ।—बां.दा.
जादूगर–सं०पु० [फा०] जादू के खेल करने वाला ।
जादूगरी–सं०स्त्री०—१ जादूगर का कार्य. २ जादू करने की क्रिया ।
जादूनजर–सं०पु० [फा०] जिसमें दूसरों को मोहित करने की शक्ति हो ।
जादौ–वि० [फा० जादः = सं० जात] उत्पन्न ।
(स्त्री० जादी) यह प्राय: यौगिक शब्दों के अन्त में प्रयुक्त होकर उत्पन्न का अर्थ देता है, ज्यूं–शाहजादौ, हरांमजादौ ।
सं०पु० [सं० यादव] यदु के वंशज, यादव । उ०—कहा तुमारौ नांम जु कहियै, कहा तुमारी जातड़ली । भगत बिड़द मेरौ नांम जु कहियै, जादौ हमारी जातड़ली ।—मीरां
जादौराय–सं०पु० [सं० यादवराज] यादवपति, श्रीकृष्ण ।
जाप–सं०पु० [सं०] किसी मंत्र या स्तोत्र का बार-बार मन में किया जाने वाला उच्चारण । उ०—समुद्र के क्रंत सनांन, रुद्र जाप रच्चयं । खटं सक्रम्म बांटि खाइ, आप बांट अच्चयं ।—सू.प्र.
२ देखो 'जप' (रू.भे.)
जापक–सं०पु० [सं०] जप करने वाला ।
जापजप–सं०पु०यौ० [सं०] जप-तप ।
जापणौ, जापवौ—देखो 'जपणौ, जपवौ' (रू.भे.)
उ०—जस जापै रे जस जापै, ते संत हरे त्रिण तापै ।—र.ज.प्र.
जापत–सं०स्त्री० [अ० ज़ियाफत] १ भोज, दावत. २ प्रबन्ध, इंतजाम ।
जापताई–सं०स्त्री० देखो 'जापतौ' (रू.भे.) उ०—आपरा जतनां नूं मांणस ५०१ जवांन गुरज भलाय नै पाळा हाथी री च्यारूं तरफ राखीया । बीजा ही आपरा असवार था सु नेड़ा राखीया । घणी जापताई कीवी ।—राव मालदेव री वात
रू०भे०—जाबताई ।
जापतौ–सं०पु० [अ० ज़ाबितः] (बहु व० 'जापता') १ इंतजाम, प्रबंध । उ०—कोई मीणौ भील दौड़तौ जिकां नूं सूधा किया बधे लगाया सो इसो जापतौ कियौ तींसूं कठै ही लूट कोस चोरी रौ नांम न रहियौ ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता
२ रक्षा, हिफाजत । उ०—जदी राजा कोटवाळ नै बुलायौ । कहै सेर री जापता राख । अर खबर करौ किसा चोर छै ।
—पंचमार री वात
३ कानूनी न्याय. ४ कानून ।
रू०भे०—जाबतौ, जाब्तौ ।
जापांन–सं०स्त्री०—ऐशिया में चीन के पूर्व में उत्तर की ओर स्थित एक द्वीप समूह ।
जापांनी–सं०पु०—१ जापान देश का व्यक्ति ।
सं०स्त्री०—२ जापान देश की भाषा ।
वि०—जापान संबंधी, जापान का ।
जापाघर–सं०पु०—सूतिका-गृह ।
जापायती–वि०—प्रसूता ।
जापी–सं०पु० [सं० जापिन्] जप करने वाला व्यक्ति ।
जापूनौ–सं०पु०—वह बैल जो शकट, हल आदि में जोतते ही बैठ जाय, अशक्त, निर्बल ।
वि०—निकम्मा ।
जापैलेदिन, जापैलैदिन–सं०पु०—वर्तमान समय से गत या आने वाला पांचवां या छठा दिन ।
जापौ–सं०पु०—प्रसव ।
जाप्य–सं०पु० [सं० याप्य] १ वह रोग जो साध्य न हो किन्तु चिकित्सा करने से ठीक हो सकता हो ।
२ ऐसा रोग जो ठीक न हो परन्तु उचित पथ्य एवं उचित औषधियों के प्रभाव से कुछ समय तक शरीर को जीवित रखा जा सके । (अमरत)
जाफ–सं०स्त्री० [अ० ज़ोफ़] बेहोशी, मूर्च्छा ।
मि०—तमाळ, गस ।
जाफत–सं०स्त्री० [अ० जियाफत] १ भोज, दावत. २ अतिथिपूजा मेहमानदारी. ३ देखो जावत (रू.भे.)
जाफरां, जाफरांन–सं०स्त्री० [अ० जाफरान] १ केसर (अ.मा.)
२ फूल, पुष्प (अ.मा.)
जाफरांनी–वि०—केसर के समान रंग वाला, केसरिया ।
जाफरांनी तांब–सं०पु०—पीलापन लिये हुए एक प्रकार का उत्तम तांबा जो सोने व चांदी में मिश्रण के काम में लिया जाता है ।
जाफरी–सं०स्त्री० [अ० जाफरान] केसर । उ०—स्वच्छ कपोळ महेळियां, मभ छबि न कूं मिणांह । पात समर सोनी किया, जर जाफरी तणांह ।
—बां.दा.
जाब–सं०पु०—१ हिसाब । उ०—जिसै अरज हुई के करमचंद हाजर है । तद तेजसी लालै सांखलै नूं कही, जो हूं गांवां रौ जाब काढूं तारां थे लोह कीजयौ ।—द.दा.
२ उत्तर, जवाब । उ०—१ दई दैत्य जांणै इसौ जाब दीवौ । कळा त्रिघ रौ भेख मारीच कीवौ ।—सू.प्र.
उ०—२ 'केंसू' कौ सुखा कौ बैर आपां काढ़ लीनूं । अब तौ यां नबावां नै ठिकांणां जाब दीनूं ।—शि.वं.

३ प्रश्न, सवाल। उ०—सु गावंता-गावता आधी रात गई जद कंवरजी रै तौ व्याळू नै रसोड़ै बुलाया जद ढाढ़ीयां नै सीख दीवी जाव पूछीयौ कोई नहीं ढाढ़ीयां सायै खवास बुनीयादी आगळौ छै।
—ढो.मा.

४ आज्ञा, आदेश।

रू.भे.—जाव।

जावक–वि०—१ समस्त, सब। उ०—खड़ियां नीचै वड़ खूटोड़ा, लिपै चिपै लुक सीलड़ी। तळै हरचौ भांग रौ ऊगै, जावक सूकी झीलड़ी।
—दसदेव

२ मूर्ख। उ०—रोम रोम मैं रम रियौ, देख अखंड दईव। चोरी जिणसूं नह चलै, जावक भोळा जीव।— र.ज.प्र.

क्रि०वि०—कतई, बिलकुल। उ०—कोई चरचा करतां बुद्धी तौ जावक काची देखी अनै लोक कहै स्वांमीजी इणनै समझावौ।
—भि.द्र.

जावड़ौ—देखो 'जवाड़ौ' (रू.भे.)

उ०—फगत पनरै दिनां में ईज मेथकी भूंडी दीखण लागगी। आंख्यां धसगी, जावड़ा बैठग्या अर हाडका निकळ गया।—रातवासौ

जाव, ज्वाव–क्रि०वि० [फा० जा-ब-जा] १ स्थान-स्थान, जगह-जगह।

उ०—मंडि जाव ज्वाव मतंग, संग असम सरवर संग।—सू.प्र.

२ यदा-कदा।

जावताई—देखो 'जापताई' (रू.भे.)

उ०—आज हिरण आयौ नहीं, तिण री खबर करणे जावूं छूं। थे जावताई करज्यौ।—वात रीसालू री

जावतौ - (बहु व० जावता) देखो 'जापतौ' (रू.भे.)

उ०—१ प्रोहित उठै जाय पहुंचियौ, डेरौ दिरायौ, वडौ जावतौ कियौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तावड़ बैठ तिग, तिग तिरै रमां सिकारां रावतौ। ऊतरै अमल वस व्है नहीं, जूंवां रौ ई जावतौ।—ऊ.का.

जावर–वि०पु० [सं० जर्जर] वृद्ध, बुड्ढा।

जावसाल–सं०पु०यौ०—जबाव-सवाल, प्रश्नोत्तर। उ०—ए गढ़ ऊपर गया। राव सूजैजी रा भला हजूरी मुसद्दी आया। त्यांसूं जावसाल हुवा।—द.दा.

जावाड़ौ—देखो 'जवाड़ौ' (रू.भे.)

जावाळ–सं०पु० [सं० जावाल] सत्यकाम नामक एक ऋषि (उपनिषद)

जावाळि–सं०पु० [सं० जावालि] कश्यप वंशी एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु और मंत्री थे।

जाव्तौ—देखो 'जापतौ' (रू.भे.)

जामात–सं०पु० [सं० जामातृ] दामाद। उ०—१ वाजा वाज्या हरख ना, गुंज्या गुहिर निसांण। जामाता आगम सुणी, मांड्या वहु मंडाण।
—ढो.मा.

उ०—२ सोहै सकाजं, जांनंक राजं। जामात जोई, संभार सोई।
—र.ज.प्र.

जाय–सं०स्त्री० [सं० यूथिका] १ सफेद जूही की लता अथवा इसका फूल। उ०—चंपा, मरवा, मोगरा, जुही, जाय केतकी छै।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—जाय हुइ वेटउ, तउ आवइ लोक भेटउ: कीजइ वधांमणउं, सकल लोक आणंदणउं।—(व.स.)

२ देखो जाया (रू.भे.)

सं०पु० [सं० याग] ३ यज्ञ (जैन) ४ देखो 'जायौ' (रू.भे.)

जायउ–वि० [सं० जात] जन्मा हुआ।

जायक–सं०स्त्री०—१ जुही नामक पौधा. २ लवंग (अ.मा.)

जायकम्म–सं०पु० [सं० जातकर्मन्] प्रसूतिकर्म (जैन)

जायकेदार–वि० [अ०] स्वादिष्ट, मजेदार।

जायकौ–सं०पु० [अ० जायका] खाने का स्वाद, लज्जत।

जायग–सं०पु० [सं० याजक] यज्ञ करने वाला (जैन)

जायगा—देखो 'जगा' (रू.भे.) उ०—१ गोली आय रजपूत नूं कहियौ नै जायगां वताई, तौ जायगां डेरौ कियौ।

उ०—२ ताहरां राजा कहै—रे दरबारी, राजा तौ राजा री जायगां छै। हूं तौ झागड़ू छूं।—पलक दरियाव री वात

उ०—३ वांसै खेह दीठां जायगा सूं खिसवारी आखड़ी।—रा.सा.सं.

जायघण–सं०पु० [सं० जायाघ्न] ज्योतिष का एक योग जिसके अंतर्गत जन्मकुंडली में लग्न से सातवें स्थान पर मंगल या राहु ग्रह रहता है। (अशुभ)

जायज–वि० [अ० जायज] नियमानुसार, उचित, ठीक, वाजिब।

जायण–सं०स्त्री० [सं० यातन] १ पीड़ा, कष्ट।

[सं० याचन] २ याचना, प्रार्थना (जैन)

जायणया–सं०स्त्री० [सं० याचना] १ याचना, भिक्षा (जैन)

२ प्रार्थना (जैन)

जायणा–सं०स्त्री० [सं० याचना] १ याचना, भिक्षा (जैन)

[सं० यातना] २ कष्ट, पीड़ा (जैन)

जायणापरिसह–सं०पु० [सं० याचनापरिषह] एक प्रकार का परिषह। (जैन)

जायतेय–सं०स्त्री० [सं० जाततेजस्] अग्नि, आग (जैन)

रू०भे०—जायवेय।

जायद–वि० [फा० ज़ायद] अधिक, ज्यादा।

जायदाद–सं०स्त्री० [फा०] किसी के अधिकार की संपत्ति।

जायदादगैरमनकूला–सं०स्त्री० [फा०] अचल संपत्ति।

जायदाद जोजियत–सं०स्त्री०यौ० [फा० जायदाद जोजियत] स्त्री के अधिकार की संपत्ति, स्त्री-धन।

जायदाद मकफूला–सं०स्त्री०यौ० [फा० जायदाद+अ० मकफूला] रेहन या बंधक रक्खी हुई संपत्ति।

जायदाद मनकूला–सं०स्त्री०यौ० [फा०] चल संपत्ति।

जायदाद मुतनाजिआ–सं०स्त्री०यौ० [फा०] विवादग्रस्त संपत्ति।

जायदाद सौहरी–सं०स्त्री०यौ० [फा० जायदाद शौहरी] पति से प्राप्त स्त्री की संपत्ति।

जायनमाज-संस्त्री०यौ० [फा० जायनमाज़] वह वस्त्र जिस पर बैठ कर मुसलमान नमाज पढ़ता है।

जायपत्री-संस्त्री०यौ० [सं० जातिपत्री] एक प्रकार का सुगंधित छिलका जो जायफल के ऊपर से उतारा जाता है (अमरत)

उ०—लवंग, जायफळ, जायपत्री, पाकां नागर वेल ना पांन।—व.स.

जायफळ-संपु० [सं० जातिफल] अखरोट से कुछ छोटा एक प्रकार का सुगंधित फल जिसका व्यवहार औषधि में होता है।

रू०भे०—जाइफळ।

जायरूप-संपु० [सं० जातरूप] सोना (जैन)

जायल-संपु०—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जायलियो-संपु०—चौहान वंश की जायल शाखा का क्षत्रिय। (अल्पा. रू.भे.)

जायव—देखो 'जादव' (रू.भे., जैन)

जायवेय—देखो 'जायतेय' (रू.भे., जैन)

जाया-संस्त्री० [सं०] १ स्त्री, महिला। उ०—अर जवन जातीय जाया आपरै उचित न हूंती तो भी पातसाह री पुत्री जांणि स्वकीय साहस नूं सफळ होण रो अवसर दीधो।—वं.भा.

२ जन्मकुंडली में लग्न से सातवां योग।

[सं० यात्रा] ३ यात्रा. ४ शरीर-निर्वाह (जैन)

जायाइ, जायाई-संपु० [सं० यायाजिन्] यज्ञकर्ता, याजक।

जायाजीव-संपु०यौ० [सं०] अपनी स्त्री के द्वारा जीविका उपार्जित करने वाला व्यक्ति।

जायी-संपु० [सं० जायिन्] संगीत का एक ताल।

जायोड़ौ-भू०का०कृ० [सं० जात+रा.प्र.ड़ौ] १ जन्मा हुआ।

उ०—ताहरां साह कह्यौ—घरे जायोड़ौ छै। इणरी दाई मौजूद छै।
—पलक दरियाव री वात

२ जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ। उ०—आडी ओखळियां खायोड़ा आधा। लाडां-कोडां में जायोड़ा लाधा।—ऊ.का.

(स्त्री०—जायोड़ी)

रू०भे०—जयोड़ौ।

जायौ-वि० (सं० जातः 'जांणौ' क्रिया का भूतकालिक रूप) १ उत्पन्न किया, जन्म दिया. २ उत्पन्न हुआ, जन्म लिया।

उ०—वैरसी वाघावत पेट हूता सु मुंहतो सुगणो इणरी मा नूं ले नै अजमेर गयो। उठै गयां पछै वैरसो वेगो ही जायो।—नैणसी

कहा०—१ जाया जींका पूत नै कात्या जींका सूत—जिसने जन्म दिया उसी का पुत्र व जिसने काता उसी का सूत है। गोद लिये या दूसरों के लड़के काम नहीं आते। अवसर पड़ने पर घर का उत्पन्न लड़का ही काम आता है. २ जाया जेड़ा ही परणाय देवौ—मूर्ख व्यक्ति के प्रति. ३ जाया नै वाया होतां कांई जेज—उत्पन्न संतान तथा अंकुरित पौधे बड़े होते देर नहीं लगाते। उत्पन्न होने के बाद पुत्र शीघ्र बड़ा होने लगता है।

संपु० [सं० जात] (स्त्री०—जाई, जायी) १ पुत्र, लड़का।

उ०—जोड़ै 'करन' 'मुकन' चौ जायो। ओ वल करन, करण कळ आयो।—रा.रू.

२ बच्चा। उ०—इण खारच री बीचली भाग गूंगलां री कांकड़ आजै जठै धवळा दिन रा ई मिनख तो कांई चिड़ी रौ जायौ ई नहीं मिळै।—रातवासौ

जारंग-वि०—हजम करने वाला। उ०—जहर विखम जारंग भुजां धारंग भुजंगम। भाल तेज भारंग जरा हारंग लसे जम।—सू.प्र.

जार-संपु० [सं०] (स्त्री० जारणी) १ पराई स्त्री से अनुचित संबंध रखने वाला, यार। व्यभिचारी। उ०—वांणी हर वीसार कर, बंचै आंन कु-वांण। नार छांड पति आपणी, जार विलग्गी जांण।
—ह.र.

रू०भे०—जारौ।

अल्पा०—जारटौ।

[लै० सीजर] २ रूस के सम्राट की उपाधि

(रा०) ३ ध्वंश, संहार। उ०—जुध जार दस सिर कुंभ जेहा, सकळ कांम सुधार।—र.ज.प्र.

(मि० जारणौ, ३)

जारकरम-संपु०यौ० [सं० जारकर्म्म] व्यभिचार।

जारज-संपु० [सं०] उपपति या यार से उत्पन्न किसी स्त्री की संतान।

जारजजोग, जारजयोग-संपु०यौ० [सं० जारजयोग] फलित ज्योतिष के अनुसार बालक के जन्मकाल मे वार, तिथि व नक्षत्र के मेल से होने वाला एक योग विशेष जिसमें जन्म लिया हुआ बालक अपने औरस पिता का पुत्र नहीं माना जाता है।

वि०वि०—बालक के जन्मकाल में लग्न या चन्द्र अथवा सूर्ययुक्त चन्द्र अथवा अन्य पापग्रह सहित सूर्ययुक्त चंद्र पर गुरु की दृष्टि न हो तो जारज योग होता है। भद्रा (द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी) तिथि में रवि, मंगल या शनिवार को त्रिपाद (विशाखा, पुनर्वसु या पूर्वा भाद्रपद) नक्षत्र में से कोई एक नक्षत्र हो तो भी जारज योग होता है। मतान्तर से, (१) उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त कृत्तिका, मृगशिरा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा नक्षत्रों में; (२) द्वितीया तिथि, रविवार और स्वाति नक्षत्र; (३) सप्तमी तिथि, बुधवार और रेवती नक्षत्र, (४) द्वादशी तिथि शनि या रविवार और धनिष्ठा नक्षत्र; (५) अष्टमी तिथि रविवार और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र; (६) चतुर्थी तिथि गुरुवार और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र; (७) चतुर्दशी तिथि, मंगलवार और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में भी जारज योग होता है। उपरोक्त अवस्थाओं में कुछ अपवाद भी हैं जिनकी उपस्थिति में जारज योग होने पर भी वह बालक जारज नहीं माना जाता।

रू०भे०—जारज जोग।

जारटौ—देखो 'जार' (अल्पा. रू.भे.)

(स्त्री०—जारटी)।

जारठ-वि०—वृद्ध।

जारण–सं०पु० [सं०] १ जलाने या भस्म करने का भाव ।
२ पारे का ग्यारहवां संस्कार ।
जारणी—देखो 'जारिणी' (रू.भे.)
जारणौ–वि० (स्त्री० जारणी) १ मारने वाला, नाश करने वाला ।
उ०—जुध दुसह दससिर जारणौ, मह कूंभ सा खळ मारणौ । धनु-वांण धारण पांण धजवंध, जत्रर जोम जिहाज ।—र.ज.प्र.
२ हजम करने वाला, पचाने वाला ।
जारणौ, जारबौ–क्रि०स० [सं० जॄ] १ हजम करना, पचाना. २ जलाना ।
उ०—यह तन जारौं मसि करूं, धुंग्रा जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय वद्दळ होइ करि, मरसि बुझावइ ग्रग्गि ।—ढो.मा.
३ मारना, संहार करना । उ०—१ पोहौ घर मूंछां पांण, पूतारै परगह पोहव । जारण खळां जवांण, सक 'गोगौ' मांगै सवण ।
—गो.रू.
उ०—२ मीर धरा पीर सांम्है धकै मारिया, जारिया जवन थट जुड़ै जेता ।—बालावक्ष बारहठ, गजूकी
४ सहन करना । उ०—वडा वंस री रीत राजा विचारै । जिकै वासतै व्रह्म तो वैण जारै ।—सू.प्र.
५ शांत करना ।
जारणहार, हारौ (हारी), जारणियौ—वि० ।
जरवाड़णौ, जरवाड़बौ, जरवाणौ, जरवाबौ जरवावणौ, जरवाववौ,
—प्रे०रू० ।
जारिग्रोड़ौ, जारियोड़ौ, जारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
जारीजणौ, जारीजबौ—कर्म वा० ।
जरणौ, जरबौ—ग्रक रू० ।
जारवणौ, जारवबौ—रू०भे० ।
जारत, जारता–सं०स्त्री० [ग्र० जियारत] तीर्थयात्रा ।
उ०—१ इण भांत सारां नूं सीख सलाह दे बहिर हुवौ सो पहलां तौ ग्रजमेर गयौ सो पहलां तौ खाजैजी री जारत कीवी, देग कबूल कीवी।
—सूरे खींवे री वात
उ०—२ बचै ज्यांन जो हिन्दु ग्रागे हमारी, करैं जारत पीर ख्वाजे तुम्हारी ।—ला.रा.
क्रि०प्र०—करणी, देणी ।
रू०भे०—जारित, ज्यारत ।
जारदवी–सं०स्त्री० [सं०] ज्योतिष में मध्यमार्ग की एक वीथी ।
जारया–सं०स्त्री०—मांगणियार जाति का एक भेद विशेष (मा.म.)
जारवणौ, जारवबौ—देखो 'जारणौ' (रू.भे.)
जारां–क्रि०वि०—जब । उ०—जळ ग्रजवूं तूटै गढ़ जारां। घोम लोपि जूटै खगधारां ।—सू.प्र.
रू०भे०—जरां ।
जारिणी–सं०स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री, व्यभिचारिणी ।
रू०भे०—जारणी ।
जारित–सं०पु०—देखो 'जारत' (रू.भे.)
जारसि–वि० [सं० यादृश] जैसे (जैन)
जारी–वि० [ग्र०] १ बहता हुग्रा, चलता हुग्रा ।
क्रि०प्र०—करणौ, रखणौ, होणौ ।
मुहा०—जारी करणौ—ग्रारंभ करना, भेजना ।
सं० स्त्री० [सं० जार+रा.प्र.ई] १ पर स्त्री गमन, व्यभिचार ।
उ०—चोरी करसी चोर, जार करसी नित जारी । हिंसा हिंसावांन, जुवा रमसी जूवारी ।—ऊ.का.
यौ०—चोरी-जारी ।
२ देखो 'झारी' (रू.भे.)
उ०—ढळकते हाते, सोना नी जारी साथै पहली दीधां हाथ घोवण ।
—व.स.
जारू—देखो 'जार' (१) उ०—मगतां का महोला, कंगालूं का कोट। हींजड़ां का हाफज, जारू का जोट ।—दुरगादत्त बारहठ
जारोवकस–सं०पु० [फा० जारूबकश] झाडू लगाने वाला भंगी ।
जालंग–सं०पु०—बकरी के बालों से बुना एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो प्रायः बैलगाड़ी या छकड़े पर घास ग्रादि ढोने के काम लिया जाता है।
जाळंवर, जाळंद्र, जाळंधर—देखो 'जळंधर' (रू.भे.)
उ०—१ ग्रेक जाळंधर ऊपरै, भूतेस रिसांणा । कीया कटकां 'केहरी', ग्रागळ ग्रापांणा ।—द.दा.
उ०—२ इसा ग्रणपार लियां दळ लार । जाळंधर जाय चौके गढ़ चाय ।—सू.प्र.
२ एक देश का नाम । उ०—कामरू ग्रोडियण जाळंधर सिंधु ग्रारब वंगाळ ।—व.स.
जाळंधरा–सं०स्त्री०—एक देवी का नाम । उ०—जासु पय पणमए सासणा देवि, देवि जाळंधरा रंजिवि ए ।—ऐ.जै.का.सं.
जाळंधरी, जाळंधरीविद्या–सं०स्त्री०—१ माया, इंद्रजाल ।
सं०पु०—२ इस विद्या को मानने या जानने वाला ।
जाळंधरीनाथ, जाळंध्री—देखो 'जळंधरनाथ' (रू.भे.)
जाळ–सं०स्त्री० १ एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल हरा एवं पकने पर पीला, लाल, गुलाबी, सिंदूरिया होता है । यह दो प्रकार का होता है—खारा व मीठा । इसके फल को पीलू कहते हैं ।
रू०भे०—जाळि ।
२ एक प्रकार की बड़ी बन्दूक. ३ ज्वाला ।
उ०—क्षण एक निंदइ, क्षण एक वूजइ, तसु चंदन तावइ, म्रिणाळ-नाळ जाळ मेल्हइं, चंद्रयोत्सना ज्वळइं, चंद्रोपळ वळइ ।—व.स.
सं०पु० [सं० जाल] ४ चिड़ियों या पक्षियों को पकड़ने के लिये पतली रस्सियों या तारों का बना पट ।
क्रि०प्र०—खींचणी, नांखणौ, फेंकणौ, वणाणौ ।

५ किसी को फंसाने के लिये की जाने वाली युक्ति, किसी को धोखा देने या ठगने के लिये की जाने वाली फरेबपूर्ण कार्यवाही, षड्यंत्र, छल। उ०—जाळ नाथौ सहिजादे, हाल गज तूं हाहि। मानड़ा दळ तणा मंडण, मांडि पग रिए मांहि।—जैतौ महियारियौ
क्रि०प्र०—करणौ, नाखणौ, फैलाणौ, बिछाणौ, रचणौ, होणौ।

मुहा०—१ जाळ में फंसणौ—चंगुल में आना. २ जाल में फंसाणौ—धोखे में लाना। मुहा०—२ जाळ फेंकणौ—किसी को फंसाने या चंगुल में लाने के लिए कोई युक्ति लगाना। किसी काम के लिये कोई उपाय करना। ३ जाळ बिछाणौ—किसी को वश में करने के लिये षड्यंत्र या उपाय करना। भरमार होना।
यौ०—जाळ-जपाळ, जाळ-फरेब।
६ मकड़ी का जाला. ७ झुंड. ८ इंद्रजाल, जादू. ९ माया-बंधन, सांसारिक प्रपंच। उ०—पोतां रै बेटा थिया, घर में वधियौ जाळ। अब तौ छोडौ भागणौ, कंत लुभायौ काळ।—वी.स.
क्रि०प्र०—वधणौ, होणौ।
यौ०—जाळ-जंजाळ, माया-जाळ।
१० जन्म मरण का बंधन, कर्मबंधन।
उ०—जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ थावै देह। भाग हुवै तौ भागवत, सांभळजै सवणेह।—ह.र.
११ झरोखा. १२ मोतियों का गुच्छा. १३ मछली पकड़ने का यंत्र. १४ पाखंड।
मुहा०—जाळ फैलाणौ—किसी को अपने वश में करने का आडंबर करना. १५ आंख की पुतली के ऊपर आने वाली वह झिल्ली जिससे दिखना बंद हो जाय. १६ समूह, राशि (ह.नां.मा.)
उ०—१ जळ जाळ माळ विमाळ नभ जुत उरड़ झड़ अणपार ए। मिटि जळण धरणि विनोद मानव भूरि सर जळ भार ए।—रा.रू.
उ०—२ भेळी तें कीधौ भलौ, जळहर औ जळ जाळ। धुन मुधरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।—बां.दा.
१७ प्याज के कंद के परत के भीतर की महीन झिल्ली. १८ नींबू के वृक्ष की जड़ में होने वाला रोग विशेष जिसके कारण नींबू फलता नहीं है. १९ चासणी या वगार की परिपक्व अवस्था का लक्षण।
क्रि०प्र०—बंधणौ।
रू०भे०—जाळौ।

जाळउर-सं०पु० [सं० ज्वालापुर] जालोर नगर का नाम (प्राचीन)
उ०—रूपइ सलूणड़ी, सवे साहेलड़ी, वेलड़ी रहीअ रा निहालती ए। टोडडे आवीय, आंसूड़ा रोहावीय, जाळउर परवत वधावीउ ए।
—कां.दे.प्र.

जाळक-वि०—जलाने वाला।

जाळकार-वि०—जाल रचने वाला, षड्यंत्रकारी।
सं०पु०—मकड़ी (डि.को.)।

जाळकिरच-सं०स्त्री०—वह परतला मिली पेटी जिसके साथ तलवार भी लगी हो।

जाळकोसी-सं०स्त्री०—पदार्थ विशेष में बना हुआ छोटे-छोटे छेदों का समूह। उ०—चूडीयां गादी प्रमुख नानाविध चउरस चउकीवट, ऊंची आडणी जाळकोसी कुंडळी ना प्रयोग पूरा हुआ (व.स.)

जालग-सं०पु० [सं० जालक] द्विइन्द्रिय जीव विशेष (जैन)

जाळजीवी-सं०पु०यौ० [सं० जालजीवी] मछुआ, धीवर।

जाळण-सं०स्त्री० [सं० ज्वलन] अग्नि (अ.मा., ना.डि.को.)
वि०—जलाने वाला। उ०—जयौ दांण(व) वंस जाळण, विदेही वाळण।—पी.ग्रं.

जाळणौ-सं०पु०—झरोखा, जालीदार झरोखा। उ०—ठाडी किरण मयंक जाळणै झिळमिळ करती। मिळै मीट उणमोद, वळै दुख विरह झुळसती।—मेघ.

जाळणौ, जाळबौ-क्रि०स०—देखो 'जळाणौ, जळाबौ' (रू.भे.)
उ०—१ सच्च पियारा सांइयां, सांई सच्च सिवाय। सच्चां अगन न जाळही, सच्चां सरप न खाय।—ह.र.
उ०—२ सातल सोम हमीर कन्ह जिम जउहर जाळिय।
—अ० वचनिका

जाळदार-वि०—१ जिसके अन्दर जाल की तरह पास-पास छिद्र हों. २ कपटी, धूर्त. ३ पाखंडी, ढोंगी. ४ धोखेबाज।

जाळापादेवी-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम।

जाळप्राया-सं०पु० [सं० जालप्राया] कवच।

जालम, जालमी-वि० [अ० जालिम] १ झूठा (अ.मा.)
उ०—खाली तिको न खोय, जोय वहतौ जग जालम। खड़िया त्यांरी खवर, मिळै नंह कीधी मालम।—र.रू.
२ योद्धा, जबरदस्त, वीर। उ०—नाहर के थाहर, लोह की लाट, जंगू के जालम, जम की सी झाट।—ला.रा.
३ क्रूर, निर्दयी, अत्याचारी। उ०—बांदे वाट घाट पण बांदे, जालम किया पिसणां जेर। आपौ डंड न हुऔ आगळियां, मांटी-पणौ न लूटा मेर।—रावत संग्रामसिंह चूंडावत री गीत
कहा०—जालम गुजर जाय, जुलम रह जाय—जालिम मर जाता है पर जुलम रह जाता है—अत्याचारी व्यक्ति मर भले ही जाय किन्तु उसके अत्याचारों की कहानी बाद में भी कई वर्षों तक चलती है।
रू०भे०—जालिम।

जाळव-सं०पु० [सं० जालव] एक दैत्य जिसको बलरामजी ने मारा था (पौराणिक)

जालवउणौ, जालवउबौ—देखो 'झालणौ, झालबौ'। (रू.भे.)
उ०—जउ देखीइं पुच्छनउं आस्फाळवउं तउ कउण कहइं हूं एहरइं जाळवउं, रक्तोत्पळ कमळनी परिइं सुकुमाळ ताळउं।—व.स.

जाळवणौ, जाळवबौ-क्रि०स० [सं०] १ जलाना।
उ०—तारइक खाय डूंगर जाळवइए, वहतउ व्यांन प्रवाह।
—ऐ.जै. का.सं.

२ सुरक्षित रखना, सम्भालना। उ०—१ रूपि न रीजए मोहि न भीजए, दोहिली जाळवीजइ अपार।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ राय रह्यु जई भवन मुझारि, देखि नळ, नवि देखि नारि। दासी कारजि आवि जाय, रळी जाळवि तिहां नळराय।—नलाख्यान

जाळवियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जलाया हुआ. २ सुरक्षित रखा हुआ, सम्भाला हुआ (स्त्री० जाळवियोड़ी)

जाळसाज–सं०पु० [अ० जअ़ल+फा० साज] दूसरों को धोखा देने के लिये झूठी कार्यवाही करने वाला।

जाळसाजी–सं०स्त्री० [अ० जअ़ल+साज+रा.प्र.ई] दगाबाजी, धोखा, फरेब। उ०—जैपुर में रिकाटि साहब भादुर न्याय छांणी। सीकरि सापरा की जाळसाजी नै पिछांणी।—शि.वं.

जाळहरउ, जाळहुर, जाळहुरि–सं०पु०—जालोर नगर का एक प्राचीन नाम। उ०—१ जाळहुरउ जगि जांणीइ, सांमतसीसुत जेउ। तास तणा गुण वरणवूं, कीरति कान्हड़देउ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ कणयाचळ जगि जांणीइ, तांम तणउं जावालि। तहीं लगइ जगि जाळहुर, जण जंपइ इणि कालि।—कां.दे.प्र.

उ०—३ जई प्रधांनि जाळहुरि कांन्हड, कटकस्वरूप जणाव्यउं। पाटण थिकउ देव सोमईउ, ढीली भणी चलाव्यउ।—कां.दे.प्र.

जाला–सं०स्त्री० [सं० ज्वाला] १ अग्नि की लपट, ज्वाला (जैन)

२ अग्नि (जैन)

जालाउ–सं०पु० [सं० जालायुष्] एक प्रकार का द्वइन्द्रिय जीव (जैन)

जाळाकार–सं०स्त्री० [सं० जालकार] मकड़ी।

जाळानळ–सं०स्त्री० [सं० ज्वालानल] अग्नि (ना.डिं.को)

जाळाहळ–सं०पु० [सं० ज्वालन] १ ज्वाला, अग्नि. २ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.) ३ जलाशय, तालाब। उ०—'जगपत' रांण तणां जाळाहळ, जगत कथै जस जुवौ-जुवौ। हैवंर रणियर अधर हालतौ, हव सरवर आधार हुवौ।—श्री महारांणा राजसिंह (वडा) रौ गीत

जाळि—देखो 'जाळ' (१) उ०—करहा देस सुहांमणउ, जे मूं सासर वाड़ि। आंब सरीखउ आक गिणि, जाळि करीरां झाड़ि। ढो.मा.

जाळिअळ—देखो 'जाळिगळ' रू.भे. (ह.नां.)

जाळिक–सं०पु० [सं० जालिक] १ मछुआ, केवट. २ जाल बुनने वाला. ३ जाल में फँसाने वाला. ४ बाजीगर. ५ मकड़ी।

जाळिका–सं०स्त्री०—१ जाली. २ फंदा. ३ समूह. ४ मकड़ी. ५ कपट, छल. ६ एक जाति विशेष।

जाळिधर–सं०पु०—जालोर नगर का एक नाम (रा.स.स. ख्व.)

जालिम—देखो 'जालम' (रू.भे.) उ०—जळमूंक सजळ बीजळ जिसी, घकै खाग खेटक घरी। कर जोड़ जुलम जालिम कथा, कमधमोड़ मालिम करी।—मे.म.

जालिय–सं०पु० [सं० जालिकः] गले में पहनने का एक प्रकार का आभूषण। उ०—नव भवनेहि ऊमाहिय नाहिय कुमरि सिकालि। सिर वरि सोवन वालिय जालिय तिलक निलाड़ि।—नेमिनाथ फागु

जाळियळ–सं०स्त्री०—अग्नि, आग (अ.मा., ह.नां.मा.)

रू०भे०—जाळिअळ, जाळीयळ।

जाळिया–सं०पु० (बहु. व.) जाल वृक्ष के फल, पीलू।

जाळियौ–वि०—जालसाज, फरेबी।

सं०पु०—जाल नामक वृक्ष का फल विशेष (अल्प. रू.भे.)

जाळी–सं०स्त्री० [सं० जालिका] १ वह वस्तु जिसमें छोटे-छोटे छिद्र बहुत पास-पास बने हुए हों। उ०—१ ऊंवा मंदिर चौखणा, ऊंचा घणुं आवास। अजब झरोखां जाळियां, सीस्यां सूंधावास।—ढो.मा.

उ०—२ जड़ी हीर पन्नां नगां हेम जाळी। सर्फ चित्र कारीगरां चित्रसाळी।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—काटणी, पड़णी, बणाणी।

यौ०—जाळीदार।

२ कसीदे का एक प्रकार का काम।

क्रि०प्र०—काडणी, निकाळणी, बणाणी, भरणी।

३ छोटे-छोटे छिद्र वाला एक प्रकार का कपड़ा. ४ झरोखा, गवाक्ष। उ०—जाळी मंगि चढ़ि चढ़ि पंथी जोवै। भुवणि सुतन मन तसु मिळित।—वेलि.

५ जालीनुमा एक प्रकार का कवच। उ०—सजे ओपरा टोप सोभा सिघाळी, जिके भीड़ियां दंस नागोद जाळी।—वं.भा.

६ रस्सी, जेवड़ी या लोह के तारों द्वारा बुना गोल पात्र के आकार का एक उपकरण जो प्रायः काटने से रोकने के लिए मस्ती में आए ऊंट के मुंह पर अथवा चरने से रोकने के लिए बैल के मुंह पर बांधते हैं।

७ लट्टू को घुमाने के लिए लट्टू पर लपेटी जाने वाली सूत की रस्सी।

८ तड़का (बघार) या मिश्री, शक्कर, गुड़ आदि की चाशनी के परिपक्व होने वाली अवस्था का लक्षण।

क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।

वि० [अ० जअ़ल] १ कपटी, फरेबी। उ०—सूंक तें सिफारस तें हाजरी खुसांमद तें, जाळी जाळ डाल थाके झिल्यौ नाह झाल्यौ तूं।—ऊ.का.

२ झूठा, नकली।

जाळीका–सं०स्त्री० [सं० जालिका] १ एक प्रकार का कवच।

(मि० जाळी ५)

२ जाली।

जाळीदार–वि०—जिसमें जाली बनी हुई हो।

जाळीवंद, जाळीवंध–सं०पु०—डिंगल गीतों में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का चित्रकाव्य।

वि०—जालीदार।

जाळीयळ—देखो 'जाळियळ' (रू.भे.)

जाळोटिया—देखो 'जाळिया' (रू.भे.)

जाळोटूंट–सं०पु०—फोग वृक्ष का रोग विशेष जो वर्षा सूचक माना

जाता है। उ०—जै कदास कुबाव पड़ै तो, हांयां वांसण छूटजै। जाळोदूंड में' ना राड़ै, भाग मल्ल रा फूटजै।—दसदेव

जाळोदुनालो-सं०पु०यौ०—एक मारवाड़ी लोकगीत।

जाळोवळि-सं०स्त्री०—अग्नि, आग। उ०—केमर कयिन्न सांभळि नमि, वाउनि कि वन्नि लागउ वहृनि। वीकाहर राजा ए वखांण, जाळोवळि गीतड त्रित जांण।—रा.ज.सी.

जाळो-सं०पु० [सं० जाल] १ मकड़ी द्वारा बुना जाने वाला बहुत पतले-पतले तारों का जाल।

२ आंख का एक रोग जिसके कारण पुतली के ऊपर एक सफेद परदा सा पड़ जाता है. ३ अंधेरा। उ०—जीभड़ल्यां सूकै इमी, आंख्यां झाळो आय। वीछड़ै जद वाखोटिया, करज्यो जाय सहाय।—लू.

४ सूत या अन्य धागों द्वारा बना हुआ जाल. ५ टोकरे में व्यवस्थित रूप से जमाये जाने वाले उपलों या कंडों का ढेर।

६ देखो 'जाळ' (रू.भे.)

जाळयो—देखो 'जळंधर' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—इंद्र नमो जाळंधर आगै, जाळयो इंद्र पछाड़ी जोय। नमियां लाज नहीं नागद्रहां, तुड 'मालवत' मुख चढ़ै तोय।

—महाराणा सांगा री गीत

जाल्हुर-सं०स्त्री०—जालोर नगर का एक नाम (वव.)

उ०—लाघउं सुपन राय तिणि वारि, ब्रांह्मण देखी करीउ जुहार। पूछइ राय कवण तुं नर, विप्रवेखि हुं गढ़ जाल्हुर।—कां.दे.प्र.

जावंत-वि० [सं० यावन्त:] जितने (जैन)

जावंत्री—देखो 'जावत्री' (रू.भे.)

जाव-सं०पु०—१ वह भूमि जहां कुये के पानी द्वारा सिंचाई की जाती हो. २ मेंहदी। उ०—निवेदन चंद धजाबंध नांम, सुणूं अब 'इंद' सको सगरांम। लिया खग खप्पर गेंद गुलाल, खळां घट घावक जाव पखाळ।—मे.म.

३ देखो 'जाव' (रू.भे.)

उ०—नै परधानै नाळेर ल्याया सो इणने कांई जाव देउं, सो राजा समस्त मन में वीचारीयो।—रीसालू री वात

क्रि०वि० [सं० यावत्] जब तक (जैन)

जावई-सं०स्त्री० [सं० जातिपत्री] १ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

२ एक प्रकार का कन्द (जैन)

३ देखो 'जावत्री' (रू.भे.)

जावक-सं०पु० [सं० यावक] लाह से बना पैरों में लगाने का लाल रंग, महावर।

उ०—१ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पांव। निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाव।—बां.दा.

उ०—२ जुधि नेत्र भड़ां रंग जावक रा। प्रजळै झळ जांणिक पावक रा।—सू.प्र.

जावजीव, जावज्जीव-अव्य० [सं० यावज्जीव] जीवन पर्यन्त (जैन)

उ०—बाकरा मारवा रा जावजीव पचखांण कराया।—भि.द्र.

जावण-सं०पु० [सं० यापन] निर्वाह (जैन)

जावणो, जावबो-क्रि०अ० [सं० या, यानम्] १ प्रस्थान करना, गमन करना, जगह छोड़ कर हटना।

मुहा०—१ कोई बात माथै जावणो—किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना, किसी बात को ठीक मानना, ज्यूं—वींरी वातां माथै जा नै पढणो छोड दियो तो फेल होई। २ जा पड़णो—किसी स्थान पर अकस्मात जा पहुंचना ज्यूं—लड़ाई में वींरै माथै सो जणा जा पड़िया नै चूरो-चूरो कर नांखियो। ३ जा वैठणो—किसी स्थान पर जाकर निवास करना ज्यूं—म्हारो कई, मैं तो कठैई जा वैठू तो दो रोटी मिळ जाई। ४ जावण दो—क्षमा करो, त्याग दो, चर्चा छोड़ो।

कहा०—१ जावते चोर री लंगोट ही भली—जहां कुछ भी मिलने की आशा न हो, वहां कुछ मिलना ही अच्छा। २ जावो कलकत्तै सूं आगै, करम छांवळी सागै—कहीं चले जाओ, भाग्य साथ जाता है। ३ जावो लाख रहिजो साख—चाहे लाखों रुपये चले जाय, साख न जानी चाहिए। ४ जिण गांव नहीं जावणो उणरो मारग ही क्यूं पूछणो—जिस गांव जाना ही नहीं, उसका रास्ता ही क्यूं पूछना। जो काम करना ही नहीं, उसके विषय में पूछताछ व्यर्थ है।

वि०वि०—प्राय: सब क्रियाओं के साथ इस क्रिया का प्रयोग संयोजक क्रिया के रूप में होकर पूर्णता आदि का बोध कराता है।

२ दूर होना, अलग होना। उ०—हे सखिए परदेस प्री, तनह न 'जावइ' ताप। बाबहियउ आसाढ़ जिम, विरहणि करइ विलाप।

—ढो.मा.

३ अधिकार से निकलना, हाथ से दूर होना, हानि होना।

मुहा०—१ कई जावै? क्या हानि होती है? क्या व्यय होता है? क्या लगता है? ज्यूं—अगर थूं नहीं पढ़ै तो फेल होई, म्हा'रो कई जावै? २ कोई बात सूं ही जावणो—किसी बात से वंचित रहना, इतना करने के भी अधिकारी नहीं हैं क्या? ज्यूं—थूं म्हा'रै साथै इतरी दुसमणी राखै तो कई मैं कैंवण सूं ही गयो?

४ चोरी होना, गायब होना. ५ व्यतीत होना, गुजरना।

ज्यूं—दो महीना गया पण वो हाल नी आयो।

कहा०—जावै सो दिन आवै नहीं—जो दिन जाता है वह वापस नहीं लौटता। गया समय वापस नहीं आता।

६ नष्ट होना, विगड़ना।

मुहा०—गयो-बीतो—निकृष्ट, निकम्मा।

७ मरना. ज्यूं उणरा दो वेटा गया परा. ८ बहना, जारी होना ज्यूं—आंख सुं पांणी जावै।

रू०भे०—जाणो, जावो।

जावत-अव्य०—जब तक, यावत्।

जावतीअ-वि० [सं० यावत्] जितना (जैन)

जावती, जावत्री–सं०स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका (जैन)
रू०भे०—जावंत्री ।

जावनी–सं०स्त्री०—यवन भाषा । उ०—महाराज बहादुरसिंघजी फुरमावता—गाजूदीन खां सरीखौ सहूरदार जावनी भासा में प्रवीण दीठौ नहीं ।—बां.दा.ख्यात

जावंत–क्रि०वि० [सं० यावन्त] जितने (जैन)

जावरौ–वि०—१ जीर्ण. २ वृद्ध (जैन)

जावय–वि० [सं० यापक] १ व्यतीत करने वाला (जैन)
[सं० जापक] २ राग-द्वेष को जीतने वाला (जैन)
सं०पु० [सं० यावक] अलता, लाख का रंग (जैन)

जावाळि–सं०स्त्री०—अग्नि (कां.दे.प्र.)

जावेल–सं०पु० [सं० जात्यतैलम्] चमेली का तेल (उ.र.)

जावौ–सं०पु०—एक प्रकार की औषधि जो पशुओं की मंदाग्नि मिटाने के काम आती है (शा.हो.)

जास–क्रि०वि०—जिससे । उ०—अजंपा जाप री अविल आस, जाड भ्रम अविद्या टळै जास ।—पी.ग्रं.
सर्व०—१ जिस । उ०—मांण दुजोयण मालदे, जिण वाधौ जगहत्थ । भारत भिड़िया जास भड़, साहू हूंत समरत्थ ।—बां.दा.
२ जिन । उ०—कवण देस तइं आविया, किहां तुम्हारउ वास । कुण ढोलउ कुण मारुवी, राति मल्हाया जास ।—ढो.मा.
सं०पु० [सं० जाष] १ एक प्रकार का पिशाच (जैन)
२ समूह । उ०—दास दास लीला विलास, निगुण अभवास निवारण । अव प्रास निसचरां नास इळा अघ जास उतारण ।—पी.ग्रं.
३ देखो 'ज्यास' (रू.भे.)

जासती–वि०—अधिक ।
सं०स्त्री०—१ अत्याचार, ज्यादती । उ०—आवतां फरंगी समै जासती वणी रै एळा, रहे तेण वेळा 'चूंडौ' धणी रै हरोळ ।
—कमजी दधवाड़ियौ

जासु, जासूं–सर्व०—१ जिस । उ०—अनुज ए उचित अग्रज इम आखै, दुसट सासना भली दई । वहिनि जासु पासै वैसारी, भलौ कांम किउ भला भई ।—वेलि.

जासूस–सं०पु० [अ०] गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने वाला, भेदिया, गुप्तचर । उ०—मूगळी घड़ा आवइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस । मुहरखे आवि कहियउ मुहाह, असपत्ति सेन आवइ अथाह ।—रा.ज.सी.

जासूसी–सं०स्त्री० [अ० जासूस+रा०प्र०ई] गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने का कार्य, जासूस का कार्य ।

जाह–सं०स्त्री० [सं० ज्या] प्रत्यञ्चा, धनुष की डोरी ।
उ०—ऊससे घणौ उछाह, चाप वांण धरे चाह । वांम हाथ लीध वाह, जीमणौ कसीस जाह ।—र.रू.

सर्व०—जिस । उ०—तिहि चेडाहि विहउं नमओ, सुमुणिय परम उछाह । हियडउ जिण विहिक्कु पर, अनुसुद्धउ गुण जाह ।
—ऐ.जै.का.सं.
वि०—संकोच करने वाला, संकोची ।

जाहनपना—देखो 'जहांपनाह' (रू.भे.) उ०—कथ सुणै वंछित मन कहै 'किसन' तेग 'खुरम' बल तांस नूं । पाधरै खेत जाहनपनां साभूं 'गोयंददास' नूं ।—सू.प्र.

जाहनवी, जाहनेवी–सं०स्त्री० [सं० जाह्नवी] गंगा नदी (अ.मा.)

जाहर—देखो 'जाहिर' (रू०भे०) उ०—तम्माकू में तुरत धरम धन होवै हांणी । खाणौ बडौ खराब वात जाहर जग जांणी ।
—ऊ.का.

जाहरत—देखो 'जाहरात' (रू.भे.) उ०—जो कठै ही बात जाहरत में आई तौ मैं सूं छहड़ौ जे करसै आगै तौ कजिया हमेसां करै छै ।
—महाराजा जयसिंह आंमेर रै धणी री वारता

जाहरनवी—देखो 'जाहनवी' (रू.भे., अ.मा.)

जाहरां—१ देखो 'जाहिरा' (रू.भे.) उ०—साह आगळ कहै ऊवरां साहरां, कमंध री हकीकत जाहरां कीध ।—करणीदांन कवियौ
क्रि०वि०—२ जब । उ०—देखि नै जाहरां अमावस री राति आई ।
—चौबोली

जाहरात—देखो जाहिर (रू.भे.) उ०—इसी तौ चाकर नूं ही न जांणजै जो म्हारी वात कठै जाहरात में आवै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
रू०भे०—जाहरत ।

जाहरी–सं०स्त्री०—प्रसिद्धि ।

जाहरू—देखो 'जाहिर' (रू.भे.) उ०—जाहरू वात मन री सरव जांणगर, देख व्रद माहरू मदत देगी ।—बालाबख्स बारहठ

जाहिर–वि० [अ०] १ प्रकट, विदित । उ०—१ सो जगनाथजी परसि झाड़खंड रै मारग होय दक्षिण जाय फौज में जाहिर हुवां परनाळै फौज थी ।—महाराजा जयसिंह आंमेर रै धणी री वारत
उ०—२ कवि पंडित जाहिर करै, मोटां रौ जसवास । छोटां रा जस री हुवै, पहियां हूंत प्रकास ।—बां.दा.
२ मशहूर, प्रसिद्ध ।
रू०भे०—जाहरू ।
यौ०—जगजाहिर ।

जाहिरा–क्रि०वि०—प्रत्यक्ष में, प्रकट में ।
रू०भे०—जाहरां ।

जाहिल–वि० [अ०] १ मूर्ख, बेवकूफ. २ अज्ञानी, अनाड़ी. ३ असभ्य ।

जाही–सं०स्त्री० [स० जाति] चमेली की जाति का एक सुगंधित फूल, जूही ।

जिं–सर्व०—जिस । उ०—कवि कहै छै । जिं मुनै उपायौ । जे परमेस्वर सुगुणां की निधि छै ।—वेलि.टी.

जिंद–सं०पु० [अ० जिन] १ प्रेत । उ०—वांसै हाथ दिया नै कह्यौ—

काळै वागै, काळी टोपी, वैहल रै काळा मोळी, काळा बळद जोत-रियां, जिदा रै रूप कियां सांम्हा मिळसी ।—नैणसी

[फा० जिन्द:] २ प्राण, जीव । उ०—के गाडै के जंगळि जाळै, पूठा वैसै ग्राय वे । जन हरिदास कहै विणजारिया, भी जिद अकेला जाय वे ।—ह.पु.वा.

३ शरीर । उ०—जुदा हुग्रै जिद जीव, ग्रिग खग ग्रामूझै मरै । मारगि वहते मांडिग्रो, दांणव प्रळै दईव ।—वचनिका

रू०भे०—जिदु, जिदो ।

अल्पा०—जिदड़ी ।

जिदगांणी, जिदगी-सं०स्त्री० [फा० जिंदगानी, जिंदगी] १ जीवन ।

उ०—१ गिणजै सद ज्यांरी जिदगांणी, उभै विरद धरियां अखत । प्रारंभै दौलत पुन पांणां, पुणें सुवांणां सीतपत ।—र.रू.

उ०—२ ए सब भूठा रूयाल है जिम वादीगर का । टुक जिंदगी रै वासतै परपंच···का । —दुरगादत्त वारहठ

मुहा०—जिंदगी सूं हाथ धोणा—मरना, जीने से निराश होना ।

२ आयु, जीवन काल ।

मुहा०—जिंदगी रा दिन पूरा करणा—मरणासन्न होना, कष्ट से दिन विताना ।

जिदड़ी-सं०स्त्री० [ग्र० जिन+रा०प्र०ड़ी] १ फूहड़ स्त्री, अयोग्य स्त्री.

२ देखो 'जिदगांणी' (अल्पा., रू.भे.)

३ काया, शरीर ।

उ०—कहै दास सगरांम जितै साजी है जिदड़ी । करौ भजन दिन रात काचरी है या सिदड़ी ।—सगरांमदास

जिदवां री भात-सं०पु०यौ०—दामाद को परोसे जाने वाले चावल ?

उ०—राधा वाईजी, थां नै जिदवां रा भात, गिरी ए छुहारां वाईजी थांरै मुख भरां ।—लो.गी.

रू०भे०—जिनवा री भात ।

जिदु—देखो 'जिद' (रू.भे.)

जिंदो-वि० [फा० जिन्द:] जीवित, जीता हुग्रा ।

सं०पु०—मुल्ला । उ०—ठांम-ठांम पुर ग्रांम, कांम हरि धांम अकाजां । पंडित मंदा पड़े, करै जिंदा ग्रावाजां ।—रा.रू.

२ देखो 'जिद' (रू.भे.)

जिभ्राळो-सं०पु०—जंभासुर नामक राक्षस जो इंद्र द्वारा मारा गया था । उ०—प्रळै काळ चाळहे लागा जिभ्राळा पुरिंद ।

—हुकमीचंद खिड़ियो

जिस-सं०स्त्री० [फा०] १ सामग्री, सामान. २ देखो 'जिनस' (रू.भे.)

रू०भे०—जिनिस ।

जिसवार-सं०पु० [फा०] पटवारियों के पास रखा जाने वाला वह कागज जिस पर अपने हल्के में बोये जाने वाले अनाज की विगत रखते हैं ।

रू०भे०—जिनिसवार ।

जिह-सर्व०—१ जो. २ जिस । उ०—जिह घड़ी नै घणूं वांछता था घणां दिन लगै । सु घड़ी ग्रांण मिळी ।—वेलि.टी.

जिही—जैसे ।

जि-सर्व०—१ जो, जिस । उ०—राजा कउ जण पाटवइ, ढोलइ निरति म होइ । माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पंथ जि कोइ ।

२ उस । —ढो.मा.

अव्य०—१ पादपूरक व अवधारण सूचक अव्यय ।

उ०—सीखावि सखी राखी ग्राखै नु जि, रांणी पूछै रुखमणी ।—वेलि.

२ निश्चयार्थक सूचक, ही । उ०—सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि । हिव पळ पळ चढ़ती जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि ।—वेलि.

जिग्रंती-सं०स्त्री० [सं० जीवंती] एक प्रकार की लता (जैन)

जिग्र-सं०पु० [सं० जीव] जीव, प्राणी (जैन)

वि० [सं० जित] जीतने वाला (जैन)

जिग्रट्ठांण-सं०पु० [सं० जीवस्थान] १ जीव का स्थान भेद (जैन)

२ सूक्ष्म ऐकेन्द्रियादि जीवों के चौदह भेद (जैन)

जिग्रसत्तु-सं०पु० [सं० जितशत्रु] १ महावीर स्वामी के समय में मिथिला नगरी का एक राजा (जैन) २ भगवान अजीतनाथ के पिता (जैन)

जिग्रां-सर्व०—१ जो. २ जिन । उ०—उर ढाल सारीख चौड़ा ग्रलल्ला, भिड़ज्जां वाहू वे पक्ख भल्ला । पुड़च्छी जिग्रां तोछ पै कंध पूरा, संग्रांमं विखै हाम पूरंत सूरा ।—वचनिका

जिग्राग—देखो 'जाग' (रू.भे.)

जिग्रार-क्रि०वि०—जब । उ०—हड़ाहड़ रिखि हुए हर हार, जयज्जय जोगणि किद्ध जिग्रार । महारिणि पीठै सूर मसत्त, दिगंबर जांणि अखाड़ै दत्त ।—वचनिका

जिग्रारी-सं०पु० [सं० जितारि] १ भगवान सम्भवनाथ के पिता (जैन)

२ देखो 'जीवारी' (रू.भे.)

जिइंदिय-वि० [सं० जितेन्द्रिय] इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला, जितेन्द्रिय (जैन)

जिउं-अव्य०—ज्यों, जैसे । उ०—उवकंवी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस लुब्ध । ऊंची चढ़ि चात्र'गी जिउं, मागि निहाळइ मुध्ध ।—ढो.मा.

रू०भे०—जीउ, जीऊं ।

जिउ-सं०पु० [सं० जीव] जीव, प्राण । उ०—बावहिया निलं-पंखिया, मगरिज काळी रेह । मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह ।—ढो.मा.

जिए-सर्व०—जिस । उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, वीजा सहू अकयथ्थ । जिए चड्या दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हंथ्थ ।—ढो.मा.

जिकण-सर्व०—१ जिस । उ०—तिण मारी ताड़का, जिकण रिख मख रखवाळ । हण सुबाहु मारीच, पैज खित्रवट धर्म पाळ ।

—र.ज.प्र.

२ उस ।

जिकर—देखो 'जिक्र' (रू.भे.)

उ०—जे दातार जमीन पर जुग च्यार जिकर का। सूर धीर सच्चा मरद वच्चा जसवर का।—दुरगादत्त बारहठ

जिकां, जिका–सर्व० ('जिको' का बहु०) १ जिन। उ०—१ ज्यां घर जेहलियाह, है तहं चीतरिया हुता। दत है जिकां दियाह, मांडीजै जे चीत मझ।—वां.दा.

उ०—२ आवी सब रत आंमळी, त्रिया करइ सिणगार। जिकां हिंया न फाटही, दूर गयां भरतार।—ढो.मा.

२ उन। उ०—भड़ां जिकां हूं भांमणै, केहा करूं वखांण। पड़िये सिर धड़ नह पड़ै, कर वाहै केवांण।—वां.दा.

जिकिर, जिक्र–सं०पु० [अ० जिक्र] बातचीत, प्रसंग।

रू०भे०—जिकर।

जिके, जिकै–सर्व०—१ वे। उ०—१ जिके सूर ढीला जरद, ऊवड़ही आरांण। मूंछ अणी भूहां मिळै, मुंहगी राखै मांण।—वां.दा.

उ०—१ घर आंगण मांहे घणा, त्रासै पड़िया ताव। जुध आंगण सोहै जिके, वालम वास वसाव।—वां.दा.

२ उस। उ०—वनवासी विसन विणियौ जिकै, अै संसार जणियौ। गोहि आगिलै जनमि गिणियौ, भूघरी भणियौ।—पी.ग्रं.

जिको–सर्व० [सं० यः+कोऽपि] (स्त्री० जिका, जिकी) १ वह।

उ०—गुड़ियां ढाहै मंद गज, ताता चाल तुरंग। सांकड़ भीड़ी सुरंग है, जिको कहीजै जंग।—वां.दा.

२ उस। उ०—वेच धवळ आवत्तड़ो, कांनां लाग कहंत। जिको मित मत जांणजै, केवी जांणे कंत।—वां.दा.

३ जो। उ० १—अति उतिम भुजन अई श्री अई, रोम रोम ऊपरि रहै। जीवतौ मुगिति देखै जिको, साधू सुख अजपा सहै।—पी.ग्रं.

उ०—२ सांभळि अनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वंछति वर। हरिगुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिणि वंदे गवरि हर।—वेलि.

जिखयांणी–सं०स्त्री०—यक्षिणी। उ०—इम दिन त्रती सु सारिख आंणी। जिम स्रब्र कियो कहै जिखयांणी।—सू.प्र.

जिख्य—देखो 'जक्ष' (रू.भे.)

जिगंन, जिग, जिगन, जिगनि, जिगन्न–सं०पु० [सं यज्ञ] १ यज्ञ (नां.मा.)

उ०—१ जिगंन ज्वाळ होम जाप अहुतं प्रतं अपै।—सू.प्र.

उ०—२ एकूकी अभसाह री, गोठां उठै गरत्थ। प्रगट इतै घन और पह, सो जिग करै समत्थ।—रा.रू. उ०—३ जिग कोसिक रख जेण, असुर मारीच उडायौ। मार सुवाह मदंध, प्रगट रघुवर जय पायौ।—र.ज.प्र. उ०—४ दसरत्थ विभै इम नजर दीध। कांमना पुत्र धरि जिगन कीध।—सू.प्र. उ०—५ वढ़ै तदि आप तणौ निज वाज। सझै असमेध जिगन्न समाज।—सू.प्र.

पर्या०—अधवर, ईसपति, क्रतु, घ्रिति, जगन, जाग, तंत्र, तोम, धूरज, मख, मन्यु, वितान, संसतन, सतोम, सत्र, सपततंतू, सव, होम।

२ विवाह. ३ किसी मांगलिक अवसर पर किया जाने वाला विशाल सम्मेलन जिसमें अधिक संख्या में लोगों की उपस्थिति होती है और विशेष खर्चा लगा कर भोज का आयोजन किया जाता है। ४ यज्ञाग्नि।

रू०भे०—जग, जग्य, जिगि, जिगिन, जिग्ग।

जिगर–सं०पु० [फा०] १ कलेजा, यकृत. २ दिल, चित्त, मन।

मुहा०—जिगर रौ टुकड़ौ—अत्यन्त प्यारा।

जिगरी–वि० [फा०] अत्यन्त प्रिय, दिली।

रू०भे०—जिगिर।

यौ०—जिगरी दोस्त।

जिगदासपत–सं०पु० [सं० यज्ञाशिपति] इंद्र (अ.मा.)

जिगसाळ–सं०स्त्री०यौ० [सं० यज्ञशाला] यज्ञशाला।

जिगांन–सं०पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ। उ०—दळा अग्नि भोमि जिकै क्रम दीध। कई असमेध जिगांनसु कीध।—सू.प्र.

जिगि, जिगिन—देखो 'जिग' (रू.भे., ह.नां.) उ०—विसवामित्रि कारणै, प्रभु चिड़ियौ जिगि पाळणै। जां मारै तां मुगति, आज ताड़का उधारण।—पी.ग्रं.

जिगिर—देखो 'जिगर' (रू.भे.)

जिग्ग—देखो 'जिग' (रू.भे.) उ०—पीर जठै पूजता पवित्र सुर जठै पुजाया। तंवा कटती तठै जिग्ग वह होम जगाया।—सू.प्र.

जिग्यास, जिग्यासा–सं०स्त्री० [सं० जिज्ञासा] जानने की उत्सुकता, जिज्ञासा। उ०—१ जन हरिदास जी क्रत कियौ, सुणि उधरै जिग्यास। जोयां कूं हिरदै धरै, तिनकी पुरवै आस।—ह.पु.वा.

उ०—२ वधे भक्ति स्रद्धा भवत नर स्परधा प्रति वधे। वसे वो जिग्यासा अगम गम आसा व्रति वधे।—ऊ.का.

जिग्यासु, जिग्यासू–वि० [सं० जिज्ञासु] जानने का इच्छुक, उत्सुक।

उ०—१ ठंतोड़ा आंसू फिरता फांसूं, जिग्यासु जोवंदा है।—ऊ.का.

उ०—२ घर जिग्यासू दस दिस धावै। अग त्रसणा गुरु लख मुरझावै।—ऊ.का.

जिच्चमांण–वि० [सं० जीयमानः] हारता हुआ (जैन)

जिजक—देखो 'जजक' (रू.भे.)

जिजमांन—देखो 'जजमांन' (रू.भे.)

जिट्ठ–वि० [सं० ज्येष्ठ] १ बड़ा (जैन) २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ (जैन)

जिट्ठा–सं०स्त्री० [सं० ज्येष्ठा] १ बड़ी बहन (जैन) २ पति के बड़े भाई की स्त्री (जैन) ३ भगवान महावीर की पुत्री. ४ भगवान महावीर की बहिन. ५ ज्येष्ठा नक्षत्र (जैन)

जिट्ठामूळ–सं०पु० [सं० ज्येष्ठामूल] जिस मास की पूर्णिमा को ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र के साथ चन्द्रमा योग मिले वह महीना, ज्येष्ठ मास (जैन)

जिठांणी–सं०स्त्री०—पति के बड़े भाई की पत्नी।

जिडौ–वि०—जितना।

जिणंद, जिणंदक, जिणंदराय, जिणंदू–सं०पु० [सं० जिनेंद्र जिनराज] जैनियों के तीर्थङ्कर, जिन भगवान, अर्हन्। उ०—१ समयसुंदर तेरे जिणंद, प्रणमति चरणारविंद।—स.कु.

उ०—२ हित जांण्यो हो स्री सांति जिणंदक, तूं साहिब छइ माहरउ। समय सुंदर हो कहै वेकर जोड़क, हूं सेवक छुं ताहरउ।—स.कु.

उ०—३ समय सुंदर ध्याय, साचो इक तुं सखाय। सुविधि जिणंद-नाय, मुगति दातार तू।—स.कु.

उ०—४ नाभिरायां कुळचंद ग्रादि जिणंद, मरुदेवी नंदन विस्वगुरो। —स.कु.

जिण-सर्व०—१ जिन। उ०—राति जु सारस कुरळिया, गुंजी रहे सब ताळ। जिणकी जोड़ी बीछड़ी, तिणका कवण हवाल।—ढो.मा.

२ जिस। उ०—चढ़ै वैकूंठ विमांण चलाय। परी ऊधरी जिण संगति पाय।—सू.प्र.

वि०—जीतने वाला (जैन)

सं०पु०—१ संतान।

[सं० जिन] २ राग-द्वेष को सर्वथा जीतने वाला तीर्थकर (जैन)

३ चौदह पूर्व ग्रन्थों को जानने वाला (जैन)

४ जैन साधु विशेष, जिनकल्पी मुनी (जैन)

५ ग्रवधि ज्ञान ग्रादि ग्रतिन्द्रिय ज्ञान वाला (जैन)

६ जन, भक्त। उ०—कोहिक जिण भेटिसै पाउ थारा किसन। —पी.ग्रं.

जिणकप्पि—देखो 'जिनकल्पी' (रू.भे.)

जिणकप्पिय-सं०पु० [सं० जिनकल्पिक] जिनकल्पी साधु, उत्कृष्ट ग्राचार वाला साधु (जैन)

जिणक्खाय-वि० [सं० जिनाख्यात] जिनेन्द्र का कहा हुग्रा (जैन)

जिणगी-क्रि०वि०—जिस जगह, जिस तरफ। उ०—कींकर नहीं घबराऊं ? जिणगी जाऊं उणगी लोग पल्ला खांचै है।—वरसगांठ

जिणचंद-सं०पु० [सं० जिनचंद्र] जिनदेव, ग्रर्हन् देव।

उ०—१ चंद्रानन जिणचंद, दरसण दीठां ग्राणंद।—स.कु.

उ०—२ ऋषभानन जिणचंद, सी वीरसेना नंद। कीरत्तिराय कुंयरु ए सिंह ग्रंक सुंदरु ए।—स.कु.

रू०भे०—जिनचंद।

२ स्व-नामख्यात जैन ग्राचार्य विशेष।

जिणणी—देखो 'जणणी' (रू.भे.)

जिणणौ, जिणवौ—देखो 'जणणौ' (रू.भे.)

उ०—जे जाया रण भंजणा, इण सूं भली ग्रहूत। जिणज्यो रजपूतांणिया, 'पातल' जिसा सपूत।—जैतदांन वारहठ

जिणदत्त-सं०पु० [सं० जिनदत्त] चम्पा नगरी निवासी एक सार्थवाहन का नाम (जैन)

जिणदिट्ठ-वि० [सं० जिनदृष्ट:] जिनेन्द्र द्वारा ग्रनुभूत (जैन)

जिणदेव-सं०पु० [सं० जिनदेव] जैन तीर्थंकर। उ०—राग रु द्वेस जीते जिणदेव, सोउ देव सुख कउ कारक हुइ।—स.कु.

जिणदेसिग्र, जिणदेसिय-वि० [सं० जिनदेशित:] जिन प्रतिपादित ग्रर्थात् जिनेन्द्र का प्रतिपादन किया हुग्रा (जैन)

जिणधम्म-सं०पु० [सं० जिनधर्म] जैन धर्म (जैन)

जिणपडिमा-सं०स्त्री० [सं० जिनप्रतिमा] १ ग्रर्हन्देव की मूर्ति (जैन)

२ वृषभ, वर्द्धमान, चन्द्रानन ग्रौर वारिसेन नाम से पहिचानी जाने वाली शाश्वती प्रतिमा (जैन)

जिणभद्द-सं०पु० [सं० जिनभद्र] एक ग्रंथकार, जैन ग्राचार्य (जैन)

जिणमग्ग-सं०पु० [सं० जिनमार्ग] जिनेन्द्र का मार्ग ग्रर्थात् जैन मार्ग (जैन)

जिणमय-सं०पु० [सं० जिनमत] श्री तीर्थंकर का मार्ग, जैन दर्शन (जैन)

जिणवय-सं०पु०—जिनपति, जिनवर। उ०—जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंद नम्मिजइ। जिणवय जिणेसर जिणप्रबोह जिणचंद थुणिज्जइ।—ऐ.जै.का.सं.

जिणवयण-सं०पु० [सं० जिनवचन] जिन भगवान के वचन, जिनवाणी (जैन)

जिणवर, जिणवरु-सं०पु० [सं० जिनवर] जिनदेव, ग्रर्हन्तदेव।

उ०—१ कूग्रा वावि सरोवर घणा, विवहारिया नी कोई मणा। तिण नयरी स्रेणिक नर नाह, जिणवर ग्रांण धरै उच्छाह।—स्रीपाळ रास

उ०—२ रूउ पिम्मु ता वांण मयण ता दरिसहि थणुहरु। नम (व) फणि मंडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु।—ऐ.जै.का.सं.

जिणहर, जिणहरइ, जिणहरु-सं०पु० [सं० जिनगृह, प्रा० जिणहर] जैन मंदिर। उ०—१ फळ लेई ढोया जिणहरइ, कुळग्राचार लघुवग परिण करइ। बीजइ दिनि कहइ, हूं ग्रांणिस्युं, तुम्हे रहउ वइठा ध्यानिस्यउं।—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ संघाहिव धरणिंद, काराविग्रो ग्राणंदि। चउमुख जिणहरु ए, त्रिहु भूमिइं मणहरु ए।—प्राचीन फागु संग्रह

जिणिंद, जिणिंदु, जिणिंदौ-सं०पु० [सं० जिनेन्द्र] जैनों के तीर्थङ्कर, जिन, ग्रर्हन्। उ०—१ जिणिंद गुण गनि मन मोह्यु, समयसुंदर प्रभु ध्यांने मन मोह्यु।—स.कु.

उ०—२ नम फणि 'पास' जिणिंदु गढ़िउ ग्रञलि जु दिट्ठउ। —ऐ.जै.का.सं.

उ०—३ विमळहि ठवियउ पाव पाव निकंदो, तई छइ सांमिद रिस जिणिंदो।—ग्राबूरास

जिणि-सर्व०—जिस।

वि०—जिस। उ०—जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ। उग्रां लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ।—ढो.मा.

रू०भे०—जिण।

जिणिग्रार-वि०—प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—मेच्छाळां सिर मार, देतौ पह ग्रागै दळां। कैलपुरौ भारथि 'किसन', जाउ गौ जिणिग्रार।

सं०स्त्री०—माता, जननी। —वचनिका

जिणिउ—देखो 'जिन' (रू.भे.)

जिणिणि, जिणिती-सं०स्त्री० [सं० जननी, जनयित्री] माता।

जिणु—देखो 'जिन' (रू.भे.) उ०—वरतीय देसि ग्रमारि नासिक ए, जाईउ जिणु नमइं ए।—पं.पं.च.

जिणुत्तम—देखो 'जिणोत्तम' (रू.भे.)

जिणेसर, जिणेसरू, जिणेसरौ–सं०पु० [सं० जिनेश्वर] १ जिनदेव, अर्हंन-देव, तीर्थंकर। उ०—१ साचउरउ वरधमांन जिणेसर, प्रणमंता पूरइ मन आस।—स.कु. उ०—२ इय खट् कल्यांणक नांम आंणी, वरद्धमांन जिणेसरौ।—स.कु.

२ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रंथकार।

जिणोत्तम–सं०पु० [सं० जिनोत्तम] जैन तीर्थंकर।

रू०भे०—जिगुत्तम।

जिणोवइट्ठ–सं०पु० [सं० जिनोपदिष्ट] जिन भगवान द्वारा प्रतिपादित (जैन)

जिण्ण–वि० [सं० जीर्ण] १ जीर्ण, प्राचीन, पुराना (जैन) २ वृद्ध, बुड्ढ़ा (जैन) ३ देखो 'जिन' (रू.भे.)

रू०भे०—जिन्न।

जिण्णकुमारी–सं०स्त्री० [सं० जीर्णकुमारी] वृद्धा स्त्री (जैन)

जिण्णास–सं०स्त्री० [सं० जिज्ञासा] जानने की उत्सुकता, जिज्ञासा (जैन)

जित–क्रि०वि०—जहाँ। उ०—जिण सुणि रुदन दया मनि जांणी। आस्रम रिख माया जित आंणी।—सू.प्र.

वि०—१ जल्दी स्मरण में आने वाला (जैन) २ जीतने वाला (जैन)

जितइंद्रिय, जितइंद्री—देखो 'जितेंद्रिय' (रू.भे.)

उ०—महि सुइ खट मास प्रात जळ मंजे, आप अपरस अरु जितइंद्री। प्राणै वेलि पढंतां नितप्रति, त्री वंछित वर वंछित त्री।—वेलि.

जितणा–वि०—जितना। उ०—जितणा, ए गोरी, वड-पीपळ रा ए पांन, इतणै दिनां में आसी सायबौ।—लो.गी.

जिततित–क्रि०वि०—जहाँ-तहाँ, यत्र-तत्र। उ०—जिततित करंका वांड ग्रध मसांण।—अ. वचनिका

जितरै–क्रि०वि०—१ जब तक। उ०—झांझरकी हुवां साह रै वेटै री वहू कांम काज करण लागी तरै देवीदास उण घर में कांम काज करै छै।—पलक दरियाव री वात

२ इतने में।

जितरौ–वि०पु० (स्त्री० जितरी) १ जिस मात्रा में, जितना। उ०—सारा एक तरह मनगरा था सो जितरौ साथ हुतौ तितरौ जे हुवै और उणसूं कजियौ करां जणां तौ खवर पड़ जाय।

—सूरे खींवे री वात

२ जिस परिमाण का। उ०—और बाळक जितरौ वरस दिन मांहे वधै तितरै रुकमणीजी एक महीना मांहे वधै।—वेलि.टी.

रू०भे०—जतरौ, जतलो, जितलौ।

जितलौ—देखो 'जितरौ' (रू.भे.) (स्त्री० जितली)

जिताणौ, जितावौ—देखो 'जीताणौ, जीतावौ' (रू.भे.)

जितायोड़ौ–भू०का०कृ०—जीतने में समर्थ किया हुआ। (स्त्री० जितायोड़ी)

जितिंदिय, जितिंद्रिय—देखो 'जितेंद्रिय' (रू.भे., जैन)

उ०—तपु ताप तपेरू अतिंद्रिय ह्वै, जपु जाप जपेरू जितिंद्रय ह्वै।

—ऊ.का.

जितूं—देखो 'जितौ' (रू.भे.) उ०—जितूं करवा तणौ सोच न कियौ जितौ, इंद्र भरवा तणौ कियौ आलोच।

—महारांणा राजसिंह (वडा) रौ गीत

जितेंद्रि, जितेंद्रिय, जितेंद्री–वि० [सं० जितेंद्रिय] १ जिसकी इंद्रियां उसके वश में हों, संयमी. २ समवृत्ति वाला, शांत।

रू०भे०—जतंद्र, जतंद्रीयौ, जतिंद्र, जतेंद्र, जितइंद्रिय, जितइंद्री, जितिंदिय, जितिंद्रिय।

जिते, जितै—क्रि०वि०—जब तक। उ०—जग माझिल थारौ जिते, पांणी गंग प्रवीत। अमरां मुख वांणी इतै, गावै सह ऐ गीत।

—वां.दा.

उ०—२ सवा पहर राजा हरि सेवै, दूजौ जितै अरज न देवै।

—सू.प्र.

उ०—३ जितै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर रहिया सुर थांण। आंगळ ही 'अवरंग' सूं, पड़ियौ नह पाखांण।—वां.दा.

जितौ, जितौक, जित्तौ–वि० (स्त्री० जिती, जितीक, जित्ती) जितना।

उ०—१ परिवार सहे हुवै त्रपती। जुगणी चवसठ सगति जिती।

—सू.प्र.

उ०—२ जिकै वार तेजोमई थाट जाडौ। उभै वीस कोसां जितौ कीध आडौ।—सू.प्र.

उ०—३ लाखीणौ संदेस सुणै धण चौळ करंती। ले सुख मिळण जितोक सैण-धव वोल सुणंती।—मेघ.

उ०—४ पछै बीसवौ वरस लागसी। तो जित्ती-ई सगाई-री चेस्टा तौ करणी जोयीजै, व्याव पांच-छै महीनां पछै कर देसां।—वरसगांठ

कहा०—१ जित्तौ गुड़ घालसी उत्तौ ही मीठौ होसी—जितना अधिक गुड़ डाला जायगा उतना ही मीठा होगा। जितना अधिक पैसा देकर काम करवाया जायगा उतना ही अच्छा होगा। २ जितौ वारै जितौ मांय—जितना वाहर है उतना ही भीतर है। चालाक व धूरत के प्रति।

जिद, जिद्–सं०स्त्री० [अ० ज़िद] १ वैर, शत्रुता।

सं०उ० लिं०—२ हठ, दुराग्रह।

मुहा०—जिद चढ़णी, जिद पकड़णी—हठ करना।

जिद्दी–वि० [फा० ज़िद्दी] जिद करने वाला, हठी, दुराग्रही।

जिन–सं०पु० [सं०] १ सूर्य. २ बुद्ध. ३ जैनों के तीर्थङ्कर. ४ अर्जुन. [अ०] ५ भूत-प्रेत।

अव्य०—निषेधसूचक, मत। उ०—संदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउं हीया फूटि। पारेवा का झूल जिउं, पड़िनइं आंगणि त्रूटि।—ढो.मा.

सर्व०—'जिस' का वहु वचन।

रू०भे०—जिणिउ, जिणु, जिण्ण, जिन्न, जिन्नां, जिन्हं।

जिनक—देखो 'जनक' (रू.भ.)

उ०—भगतवछळ दसरथ रौ भगवांनं। गयो जिनक सां मिळण केवळ-गियानं।—पी.ग्रं.

जिनकल्पी-सं०पु० [सं० जिनकल्पिन्] उत्कृष्ट आचार वाला साधु (जैन)
उ०—अंतौ जिनकल्पी अल्पी अणगारा। थीवरकल्पी जन नांखै सुधकारा।—ऊ.का.
रू०भे०—जिणकल्पी।

जिनचंद—देखो 'जिणचंद' (रू.भे.)
उ०—चिहुंनांम जिनचंद तणुं त्रिभुवन सकळ सुहामणा।—स.कु.

जिनपति, जिनपाळ-सं०पु०—जैनों के तीर्थंकर, जिन।
उ०—पांचमउ चक्रवरती सोळमउ जिनपति, साधत री खट खंड भरत री।—स.कु.

जिनमंदिर-सं०पु०—जैन मंदिर। उ०—सिवांणा री खेड़ौ पहलां पोरवाळां वसायौ। मुसलमांनां रा वास में सोनांणा रा पत्थर रौ जिनमंदिर नै आथूणी भाखरी हेटै सिवांणा रौ सिंदूरियौ पत्थर जिण रचित पारसनाथ रौ मंदिर, जुमलै दोनूं जिनमंदिर सिवांणै।
—बां.दा. ख्यात

जिनमत-सं०पु०यौ० [सं०] श्री तीर्थंकर का मत, जैन दर्शन।
उ०—कोई कहै मा भूंडी कीधी, निज कन्या नै सीख न दीधी। केई पाठक अवगुण काढ़े, जिनमत नै केई दूखण चाढ़ै।—स्रीपाळ रास

जिनराइ, जिनराज, जिनराजौ, जिनराय, जिनरायौ, जिनरिस, जिनरिसी, जिनवर, जिनवरु, जिनवरौ-सं०पु० [सं० जिनराज, जिन ऋषि, जिनवर]—जैनों के तीर्थंकर, जिन।
उ०—१ मास खमण नइ पारणइ जी पूछइ स्री जिनराज।—स.कु.
उ०—२ आज मनोरथ सवि फळचा, जउ भेटचा स्री जिनराजौ रे।
—स.कु.
उ०—३ हां रे रिखभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे।—स.कु.
उ०—४ साठ लाख वरसां लगी, पाली सगळी आयौ जी। सप्तमी वदि आखाड़ नी, सिद्ध थया जिनरायौ जी।—स.कु.
उ०—५ जीव जपि जपि जपि जिनवर अंतरयांमी।—स.कु.
उ०—६ इण अवसर स्री जिनवरु जी आव्या नगर उद्यांन।—स.कु.
उ०—७ अह ऊठि नित प्रणमुं पाय प्रभु ना, सीमंधर युगमंध रौ। बाहू सुबाहू सुजात स्वयंप्रभ, स्री रिखभांनन जिनवरौ।—स.कु.

जिनवा री भात—देखो 'जिणवा रौ भात' (रू.भे.)
उ०—म्हारी पीवरिये री बाटड़यां, बाया जिनवा रा भात।—लो.गी.

जिनस-सं०स्त्री० [अ० जिन्स] १ वह वस्तु जो खाने के लिये बनाई गई हो, भोज्य पदार्थ। उ०—वज जंत्र बगे जद नीठ जगे, इतरी जिनसां किय आंण अगे। सतमेख सदं, अज सेंम अदं, मिसटांन मदं, अण अन्न हृदं। जिण रंच कलेवौ कीध जदं।—र.रू.
२ चित्र, नक्शा। उ०—तरै राजा रै मन आई 'जु एक इसड़ौ देहुरौ कराऊं, जिसड़ौ म्रतयुलोक मांहै अचंभौ हुवै' सु हमैं देस रा सूत्रधार तेड़ीजे छै, कारीगर देहुरा री जिनस मांड दिखावै छै।
—नैणसी

सं०पु०—३ प्रकार, तरह, किस्म। उ०—तिका बिछेरी दौड़ती-दौड़ती 'मेलै'-रै घोड़ै हूं आगै हुई। नै वळी। अपूठी बिछेरी आयी। आइ अर वळै आघी बिछेरी जावै वळै अपूठी आवै। बार दोइ बिछेरी इयुं जिनस आयी।—उदै उगमणावत री वात
४ वस्तु, चीज। उ०—डांभ री राछ एकै जिनस री घड़ायो।
—द.वि.
५ देखो 'जिंस' (रू.भे.)
रू०भे०—जनस, जिनिस।

जिना-सं०पु० [अ० ज़िना] व्यभिचार।

जिनाकार-वि० [फा०] व्यभिचारी।

जिनाकारी-सं०स्त्री० [फा०] व्यभिचार।

जिनावर—देखो 'जांनवर' (रू.भे.)
उ०—पिण भय छै जिनावर घणा छै।—सयणी री वात

जिनिखि—देखो 'जनक' (रू.भे.)
उ०—कहै जिनिखि किसोरी सकति सजोरी चरिति निमौ ईता है चोरी।—पी.ग्रं.

जिनिस—१ देखो 'जिनस' (रू.भे.)
२ देखो 'जिंस' (रू.भे.)

जिनिसवार—देखो 'जिंसवार' (रू.भे.)

जिनेता—देखो 'जनेत' (रू.भे.)
उ०—करम अनै अकरम किसन, भ्रिनि नै चिति नै भ्रोख। बाप जिनेता बाहिरौ, मोख नहीं तुं मोख।—पी.ग्रं.

जिनेसर, जिनेसरराय, जिनेसरु, जिनेस्वर [सं० जिनेश्वर, जिनेश्वरराज] देखो 'जिणेसर' (रू.भे.) उ०—१ अस्टापद गिरि सांत जनेसर समय सुंदर पाय प्रणमत री।—सं.कु.
उ०—२ खरतर वसही वांदियइ रे, स्री सांति जिनेसरराय रे।
—स.कु.
उ०—३ जगगुरु नेमे जिनेसरु, सेना मात मल्हारौ जी। जीवयस नृप नंद नौ, सूरज अंक उदारौ जी।—स.कु.
उ०—४ क्रतारथ जिनेस्वर सुद्धमति सिवकर, स्यंदन संप्रति चौवीसे तीरथंकर।—स.कु.

जिनोई—देखो 'जनेऊ' (रू.भे.) उ०—सत्र सारत समधा सब कोई, जड़लग वह गई संग जिनोई।—रा.रू.

जिन्न-वि० [सं० जीर्ण] १ जीर्ण, पुराना (जैन) २ देखो 'जिण्ण'। (रू.भे.)
३ देखो 'जिन' (रू.भे.)

जिन्नां—देखो 'जिन' (रू.भे.) उ०—सांई तू वड्डा धणी, तुझ न वड्डा कोय। तू जिन्नां सिर हाथ दै, से जग वड्डा होय।—ह.र.

जिन्नावर-सं०पु० [फा० जानवर = हैवान] १ हिंसक जानवर।
उ०—देसपति उवारइ का दईव, जीवासणि भागी लेय जीव। मेदनी केहि मूसल्लमांण, जिन्नावर चिड़ियां पड़िय जांण।—रा.ज.सी.
२ देखो 'जांनवर' (रू.भे.)

जिन्ह—देखो 'जिन' (रू.भे.) उ०—जिन्हां जीतव जीतिया, जे रघुवर-नित जाप जपंदे।—र.ज.प्र.

जिवह, जिवा–सं०स्त्री० [अ० जिबह] गला काट कर प्राण लेने की क्रिया। उ०—अन्याय करै छै सो आप नूं जिवा करै छै।—नी.प्र.
रू०भे०—जवह, जभै, जिभै।
जिब्भ, जिब्भा—देखो 'जीभ' (रू.भे., ह.नां.) (जैन)
जिब्भादंत–वि० [सं० दान्तजिह्व] जिह्वा का दमन करने वाला (जैन)
जिब्भिदिय–सं०पु० [सं० जिह्वेन्द्रिय] जिह्वा, रसना, जीभ (जैन)
जिब्भिआ–सं०स्त्री० [सं० जिह्विका] १ पानी निकलने की परनाल (जैन)
२ देखो 'जीभ' (रू.भे.) (जैन)
जिभै—देखो 'जिवह' (रू.भे.) उ०—पीछै तखत पर औरंग मुराद वगस नूं वैठायौ अरु कुरान री सौगन उतारियौ। तथा दूजै दिन मुराद कूं जिभै करवायौ।—द.दा.
जिभ्या—देखो 'जीभ' (रू.भे.) उ०—स्रवणा राच्या नाद सूं, नैणा राच्या रूप। जिभ्या राची स्वाद सूं, दादू एक अनूप।—दादूवांणी
जिभ्याप–सं०पु० [सं० जिह्वाप] कुत्ता, स्वान (अ.मा.)
जिम–अव्य० [सं० यिव] १ जिस प्रकार, जैसे।
उ०—जमदढ़ खंजर अम्होसम्ह जड़िया। लूथ-बथां जेठी जिम लड़िया।—सू.प्र.
२ देखो 'जम' (रू.भे.) उ०—रोसि चडिआ राउत भ्रूभइं जिम जेहा विकराळ।—विद्याविलास पावाडउ
जिमण—देखो 'जीमण' (रू.भे.) उ०—हल करो सार ही जिमण विहला हुसी। पाछली रात रै पोहर हर परणसी।—रुखमणी हरण
जिमणउ—देखो 'जीमणौ' (रू.भे. उ.र.) उ०—छाया तउ आतप, उंचउं तउ नीचउं, जिमणउं तउ डावउं, अम्रित तउ विस।—व.स.
जिमणवार, जिमणार—देखो 'जीमणवार' (रू.भे.)
उ०—१ जिमणवार लिखीइ छइ।—व.स. उ०—२ जगत करै जिमणार, स्वारथ रै ऊपर सको। पुन री फळ अणपार, रोटी नह दै राजिया।—किरपारांम
जिमणुं—देखो 'जीमणौ' (रू.भे., उ.र.)
जिमणौ, जिमबौ—देखो 'जीमणौ, जीमबौ' (रू.भे.)
जिमतिम–क्रि०वि०—जैसे-तैसे।
जिमनार—देखो 'जिमणार' (रू.भे.)
जिमाड़णौ, जिमाड़बौ, जिमाणौ, जिमाबौ, जिमावणौ, जिमावबौ—देखो 'जीमाड़णौ, जीमाड़बौ' (रू.भे.) उ०—१ जिमाड़े जिके भावता भाग जांणी. परूसे जसोदा जमी चक्रपांणी।—ना.द.
उ०—२ जीमण सिखरण भाथ जिमावै। मेवा नूंत अनेक मिळावै।—सू.प्र.
जिमि—देखो 'जिम' (रू.भे.) उ०—हंस जिमि प्रथम पायै हलांण दूजै केहरि जिमि भरै डांण।—ल.पि.
जिमियोड़ौ—देखो 'जीमियोड़ौ' (रू.भे.)
जिमि–सं०स्त्री०—जमीन, भूमि।
जिमु—देखो 'जिम' (रू.भे.) उ०—वात सुणी पाछउ वळइ, जां नवि देखइ गंग। चउवीस (वांस) रहइ, जिमु रइहीणु (अणंगु)।—पं.पं.च.
जिम्महग–सं०पु० [सं० अजिह्मग] तीर, वांण (डि.को.)
जिम्मावार, जिम्मेदार—देखो 'जिम्मेवार' (रू.भे.)
जिम्मेदारी–सं०स्त्री०—उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
रू०भे०—जिम्मेवारी।
जिम्मेवार–सं०पु० [अ० जिम्मेवार] उत्तरदाता, जवाबदेह।
रू०भे०—जिम्मावार, जिम्मेदार।
जिम्मेवारी—देखो 'जिम्मेदारी' (रू.भे.)
जिम्मौ–सं०पु० [अ० जिम:] १ उत्तरदायित्व, जुम्मा।
मुहा०—१ जिम्मै करणौ—भार सौंपना। २ जिम्मे नांखणौ—उत्तरदायित्व देना। ३ जिम्मे निकळणौ—ऋणी होना। ४ जिम्मे निकाळणौ—किसी के यहां ऋण बतलाना।
२ देखो 'जम्मौ' (रू.भे.)
जिम्हंग, जिम्हग–सं०पु० [सं० जिह्मग] सर्प, सांप (ह.नां.) उ०—साह सुजा गंजे समर, सामंतां'र सलेम। मदविण पाछौ मेल्हियौ, जिम्हग रदविण जेम।—वं.भा.
जियंतग, जियंतय–सं०पु० [सं० जीवान्तक] एक प्रकार की वनस्पति (जैन)
जियंती–सं०स्त्री० [सं० जीवंती] एक प्रकार की लता, वेल (जैन)
जिय–सं०पु० [सं० जीव] १ जीव, प्राण। उ०—निरगुण नाथ नमौ जियनाथ, सर्वगत देव नमौ ससिमाथ।—ह.र.
२ प्राणी (जैन)
३ हृदय, मन, दिल. ४ ध्वन्यात्मक शब्द।
अल्पा०—जियड़ौ, जियरौ।
सं०स्त्री० [सं० जित] ५ जीत, विजय (जैन)
जियसत्तु, जियसत्तू–सं०पु० [सं० जितशत्रु] अजीतनाथ स्वामी के पिता का नाम (जैन)
वि०—जीतने वाला (जैन)
जियसेण–सं०पु० [सं० जितसेन] भरत क्षेत्र के तृतीय कुलकर का नाम (जैन)
जियां–क्रि०वि०—जिस प्रकार, जैसे। उ०—सत्री हेक साथै जियां रूप साजै। लखै रूप कांमंगना दिव्य लाजै।—सू.प्र.
सर्व०—जिन। उ०—१ उपर जियां धनूंख उणिहारै। भमर वंक पंकति भंवहारै।—सू.प्र.
उ०—२ कळिया गाडा काढ़ही, जाडा कंध जियांह। रहै नचीतो सागड़ी, ज्यां कळ जोत दियांह।—बां.दा.
जियांन–क्रि०वि०—१ जैसे
२ देखो 'जहांन' (रू.भ.)
जियाग–सं०पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ, हवन।
जियादती–सं०स्त्री०—देखो 'ज्यादती' (रू.भे)

उ०—२ किरी रज्जा रावत रोह मांडी। जाइ जिसिइ अरजन ट्रेठि छांटी।—विराटपर्व

रू०भे०—जिसउ।

अल्पा०—जिसड़ो, जिहड़ो, जिहेड़ो।

जिस्नु, जिस्नू—वि० [सं० जिष्णु] जीतने वाला, विजयी।

उ०—निरगुण अणविद्या हाई जग जिस्नू। विद्या वीसरिगो सदगुण वस विस्नू।—ऊ.का.

२ देखो 'जिसन' (रू.भे.)

जिस्तौ—देखो—'जस्तौ' (रू.भे.)

जिस्यांन—वि०—जैसा।

क्रि०वि०—जैसे।

जिस्यूं—क्रि०वि०—जैसे।

जिस्यौ—देखो 'जिसौ' (रू.भे.)

उ०—आगइ कुरुखेत्रइ घाउ जिस्या, हींदू तुरक भिडइ रणि तिस्या।
—कां.दे.प्र.

जिहं—सर्व०—जिस।

जिह—देखो 'जीभ' (रू.भे.)

उ०—तो पद अविधांन प्रवाड़ा सूरत, अरविंद इडग तंत इधकार। नांमै रटै सांभळै निरखै, मसतक जिहं स्तुत नयण मुरार।—र.रू.

जिहग—सं०पु० [सं० जिह्मग] १ सर्प (अ.मा.)

[सं० अजिह्मग] तीर, बाण।

जिहड़ो—देखो 'जिसौ' (अल्पा. रू.भे.)

जिहां—क्रि०वि०—जहां, जिस जगह। उ०—भड भिडि जयलच्छि जिहां वरी। दिसि दिखाडि न लिइं जिम कइच्छरी।—पं.पं.च.

सर्व०—जिन। उ०—जिहां मांहि जोधां हणूंमांन जेहा। दइ मुद्का जेण नूं मेघदेहा।—सू.प्र.

जिहांन—देखो 'जहांन' (रू.भे.)

उ०—'विलंद' नै 'अभै' तद कर विचार, चौथै दिन लिखिया समाचार। जाहरां तेग तूं सब जिहांन, खोटड़ अमीर सिर विलंद खांन।
—वि.सं.

जिहांनी—वि०—१ संसारी, जहान से संबंधित।

२ देखो 'जहांन' (रू.भे.)

जिहाज—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)

उ०—सतव्रत सुत हरिचंद सत जिहाज। रोहितास चंद सुत महाराज।
—सू.प्र.

जिहाद—सं०पु० [अ०] मुसलमानों द्वारा अपने धर्म प्रचार के लिये दूसरे धर्मावलंबियों के साथ किया जाने वाला युद्ध। धर्म के लिये युद्ध।

जिहालत—सं०स्त्री० [अ० जहालत] मूर्खता, अज्ञानता।

जिहि, जिहि—सर्व०—जिस। उ०—सो रांम 'किसन' किव समर समरि। जिहिं विजय जिगन करि सियहिं वरि।—र.ज.प्र.

क्रि०वि०—जैसे।

वि०—जैसा। उ०—जांणतौ जिको बंधव जिहि, दांन जेण लखां दिया। 'सेरसा' मरण फूटो नहीं, है लांणत लठर हिया।
—पहाड़लां आढ़ो

जिहेड़ो—देखो 'जिसौ' (अल्पा. रू.भे.)

जिह्मग, जिह्मग—वि० [सं० जिह्मग] धीमा, मंदगति।

सं०पु०—टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, सर्प (ह.नां., अ.मा.)

उ०—उस वरि यौं 'दोले' नवाब पुरजा सुनि पाया। जहर भरे जिह्मग जिम घन रोसण छाया।—ला.रा.

जिह्मगति—सं०पु०—सांप, सर्प।

जिह्वांण—देखो 'जीभ' (रू.भे.)

उ०—जउ देखिइं पुच्छनउं आस्फाचळउं तउ कउण कहइं हूं एहरइं जालवउं, रक्तोत्पल कमळनी परिइं सुकुमाळ ताळउं, प्रकट जिह्वांणउं भग्न।—व.स.

जिह्वामूळ—सं०पु० [सं० जिह्वामूल] जीभ का पिछला स्थान जहां से वह जुड़ी रहती है।

जिह्वामूळी, जिह्वामूळीय—वि० [सं० जिव्हामूलीय] जो जिव्हा के मूल से संबंध रक्खे।

जिह्वाळिह—सं०पु० [सं० जिह्वालिह] कुत्ता, श्वान।

जिह्वास्तंभ—सं०पु० [सं०] एक प्रकार की वात व्याधि (अमरत)

जीं—सर्व०—जिस। उ०—विसील नांम एक नगरी, जीं मांहीं नंद राजा राज करै।—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—जी।

जींका—सं०स्त्री०—१ ईंट व खपरैल आदि को घिस कर बनाया हुआ महीनतम चूर्ण।

अल्पा०—जींकाळी, जीकाळी।

सं०पु० (बहु व०) २ नन्ही-नन्ही बूंदें।

जींकाळी—देखो 'जींका' (१) (अल्पा., रू.भे.)

जींगड़ौ—सं०पु० (स्त्री० जींगड़ी) छोटा बछड़ा (मेवात)

जींजणियाळ—सं०स्त्री०—देवी, शक्ति।

उ०—मण धार निभै मण हेक मणौ। तुल बंधव जींजणियाळ तणौ।—पा.प्र.

जींजणी—सं०स्त्री०—एक प्रकार की कँटीली झाड़ी जिसके फूल गुलाबी रंग के होते हैं।

जींजो—सं०पु० (बहु व० जींजा) १ कांसी, पीतल धातुओं से बना हुआ एक वाद्य जो संख्या में दो होते हैं।

वि०वि०—दोनों हाथों में एक-एक लेकर संगीत के साथ ताल देने के लिए इन्हें आपस में टकरा कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

२ एक प्रकार की कंटीली झाड़ी का फूल. ३ एक प्रकार का कांटीला वृक्ष जिसकी पतली टहनियों की छाल से रहट की माल बनाई जाती है।

रू०भे०—जींझो।

महु०—जींझ ।

जींझ—देखो 'जींजो' (मह., रू.भे.) उ०—झाड़खियां झुक जींझ, नीमड़ा करै निछावळ । हरी कीरतन हुवै, फरासां त्रिण सुर सावळ । —दसदेव

जींझौ—देखो 'जींजो' (रू.भे.)

जींण—सं०स्त्री० [सं० हयसंनाह, प्रा० जयगाम्] १ घोड़े का कवच । उ०—जोड जींण भड भीखण भाळा । वीर ना सयर केसरयाळां । —विराटपर्व

२ देखो 'जीण' (रू.भे.)

जींमण—देखो 'जीमण' (रू.भे.)

जींमणी— (स्त्री० जीमणी) देखो 'जीमणौ' (रू.भे.)

जींमणौ, जींमबौ—देखो 'जीमणौ, जीमबौ' (रू.भे.)

जींवणौ— (स्त्री० जींवणी) देखो 'जीमणौ' (रू.भे.)

उ०—डावी न फरूकै देख कर जळै आंख मम जींवणी । साथियां कठै तू सीखियौ पीव तमाखू पींवणी ।—ऊ.का.

जींहांन—देखो 'जहांण, जहांन' (रू.भे.) उ०—माथै सत्रां खांपां घावै गवांवै जिहांन माथै, दसूं दसा सोभाग छवायौ वीरदांण । जींहांन जांणियौ जोम छते नाहरेस जायौ, अजंठी ऊठायौ आयौ आपै ही आथांण ।—कमजी दधवाड़ियौ

जींहू—देखो 'जीहू' (रू.भे.)

जी—सं०पु०—१ पिता. २ पितामह ।

[सं० जीव] ३ प्राण, जीव, आत्मा । उ०—लागी जिणरै लाय, उणरो जी जांणै असल । ओरां रै किम आय, चित में वौ दुख 'चकरिया' ।—मोहनराज साह

मुहा०—जी जेवड़ी एक होणी—भारी कष्ट उठाना ।

[सं० आज्यं] घृत, घी ।

अव्य० [सं० जित्, प्रा० जिव] १ एक आदरसूचक शब्द जो नाम या गोत्र के आगे लगाया जाता है अथवा किसी वड़े के सम्बोधन के उत्तर में अथवा वाक्य को समझते हुए या वाक्य को पुन: कहलाने के लिए, संक्षिप्त प्रति-सम्बोधन के रूप में प्रयुक्त होता है ।

२ एक संयोजक शब्द, कि । उ०—ताहरां कूंची राजा नुं दी । कह्यौ जी कोठार मतां खोलियौ ।—चौबोली

देखो 'जीं' (रू.भे.)

जीअ—देखो 'जीव' (रू.भे., जैन)

जीउ, जीऊं—१ देखो 'जिउं' (रू.भे.) २ देखो 'जीव' (रू.भे.)

उ०—लहु वंधवि···दुन्नि वार तुह जीउ उगारीउ ।—प.पं.च.

जीकार, जीकारौ—सं०पु०—किसी के नाम या गोत्र के आगे सम्मान-सूचक 'जी' लगाने का भाव, आदरसूचक शब्द ।

उ०—जीकारो अम्रित ज्युंहीं, भावै जग नूं भाळ । है रेकारौ आक पय, गरळ वरावर गाळ ।—वां.दा.

(विलो०—तूंकारौ)

जीकाळी—देखो 'जींका' (१) (अल्पा., रू.भे.)

जीखेस—सं०पु० [सं० ऋषभेष] शिवजी का वैल, नंदिकेश्वर, नंदी ।

उ०—वर्णं जांन सोभा छभा देववाळी, सुरांनाथ चै साथिवाळै सिघाळी । यथा व्रिंद नाखत्र के चंद्र साथै, कना सोभियौ सिभु जीखेस माथै ।—रा.रू.

जीजा, जीजासा—देखो 'जीजोसा' (रू.भे.)

उ०—कुसळ मंडप थारै ताऊ चाचा छाया, थारा नांना मांमा छाया, थारा बीर भतीजा छाया, थारा जीजा फूफा छाया ।—लो.गी.

जीजी—सं०स्त्री०—वड़ी वहिन ।

जीजोसा—सं०पु०—वड़ी वहिन का पति । वहनोई ।

रू०भे०—जीजा, जीजासा ।

जीण—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा. २ जीवन, जिन्दगी, प्राण । उ०—सरसति सांमणी तूं जग जीण । हंस चढ़ी लटकावै वीण ।—वी.दे.

३ घोड़े का चारजामा । उ०—कप्पड़, जीण, कमांण-गुण, भीजइ सव हथियार । इण रुति साहिव ना चलइ, चालइ तिके गिमार । —ढो.मा.

यौ०—जीण-पोस ।

४ देखो 'जीण-माता' (रू.भे.)

वि० [सं० जीर्ण:] १ वृद्ध. २ जर्जर, पुराना. ३ महीन, वारीक ।

सर्व०—जिस (उ.र.)

रू०भे०—जींण, जीन ।

जीणगर—सं०पु०—मोचियों का एक भेद जो घोड़ों का चारजामा वनाने का कार्य या व्यवसाय करते हैं (मा.म.)

जीणमाता—सं०स्त्री०—एक देवी का नाम ।

वि०वि०—जयपुर राज्य के अन्तर्गत सीकर जिला के ग्राम खोसा से ३ कोस दक्षिण की ओर पहाड़ी के निम्न भाग में जीनमाता का स्थान एक सिद्धपीठ के रूप में प्रसिद्ध है । वर्ष में दो वार नवरात्रों में यहाँ मेले लगते हैं । यात्रियों के ठहरने के लिये अनेक धर्मशालाएँ हैं । देवी की प्रतिमा अष्टभुजी है । वहाँ घी व तेल के दो अखंड दीपक जलते हैं । भोपों के लोकगीतों के आधार पर जीन और हर्ष दो भाई वहिन थे । भाई विवाहित और वहिन अविवाहित । भाभी के ताने से व्यथित होकर दुर्गा की साधना द्वारा दुर्गा के रूप में परिणित होकर पूजार्ह वन गई और भाई भैरव की उपासना द्वारा भैरव रूप हो गया । हर्षनाथ भैरव और जीणमाता दोनों देव-देवी के रूप में सम्पूजित हैं । यहाँ मंदिर के स्तंभों पर अनेकों अभिलेख हैं, जिनमें संवत् ११६२ का जिसमें मोहिल के पुत्र हठड़ द्वारा मंदिर वनाये जाने का उल्लेख है । संवत् ११९६ व १२३० का अल्हण द्वारा सभामंडप वनाये जाने का उल्लेख है ! संवत् १५३५ को जो अभिलेख है जिसमें मंदिर के जीर्णोद्धार का उल्लेख है । इसे स्व० ठा० श्री किशोरसिंहजी ने चौहान कुलोत्पन्न माना है ।

जीण-पोस—सं०पु०यौ० [फा० जीन-पोश] घोड़े की जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा जो प्राय: कशीदेदार भी होता है ।

उ०—घोड़ो ऊभो चौकड़ो चावै छै। कंवर चंवेली बिद्रां मांहि। जीण-पोस बिछाय बैठा छै।—जगदेव पंवार री वात

जीण-सवारी-सं०स्त्री०यौ०—घोड़े पर चारजामा रख कर चढ़ने का कार्य।

जीण-साज-सं०पु० [फा० ज़ीनसाज] जीन बनाने वाला।

जीणसाल, जीणसालियौ-सं०पु० एक प्रकार का कवच।

उ०—१ जादव जांन करइ अति ओपम, छपंन कोड़ि कुळसाख। टाटर टोप जरद जीणसाला, साठि भरी साह्रि लाख।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ घड़ां ऊपरि ऊजळी धारां तरवारयां चमकण लागी, सु माही मांनो बीजळी चमकण लागी छै अठै काळा जीणसालिया का डीलइ है वादळ। घड़ां ऊपरि तलवारि चमकै छै सुइ है वीजुळी।

—वेलि.टी.

अल्पा०—जीणसालियौ, जीनसालियौ।

जीणी-सर्व०—जिस। उ०—धन माता जीणी जनमिया, जांणिक भेटयौ त्रिभुवन राई।—वी.दे.

जीणौ, जीबौ—देखो 'जीवणौ, जीववौ' (रू.भे.)

उ०—जुग-जुग जीणौ तोई खप्पणौ है।—सांईदीन

जीत-सं०स्त्री० [सं० जितिः वैदिक जीति] १ युद्ध या समर में शत्रु के विरुद्ध सफलता, जय, विजय. २ किसी ऐसे कार्य में सफलता जिसमें दो या अधिक विपक्षी हों. ३ लाभ, फायदा।

जीतणौ-वि०—जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

उ०—खगां जीतणा धाव में दाव खेल्है, मलगे तड़ां मांकड़ां पीठ मेल्है।—वं.भा.

जीतणौ, जीतवौ-क्रि०स० [सं० जि] १ युद्ध या समर में शत्रु के विरुद्ध विजय प्राप्त करना, जीतना। उ०—१ दावसी घणा बांका दुरंग, जीतसी घजें नृप घणा जंग।—वि.सं. उ०—२ जग जीतण हारौ हे दीखणमें ही डावड़ौ, सिव चाप चढ़ायो हे राख्यो पण रावळो।

—गी.रां.

२ दो या अधिक विरुद्ध पक्ष रहते कार्य में सफलता प्राप्त करना, ज्यूं—मुकदमौ जीतणौ, खेल जीतणौ।

जीतणहार, हारौ (हारी), जीतणियौ—वि०।

जीतवाड़णौ, जीतवाड़बौ, जीतवाणौ, जीतवावौ, जीतवावणौ, जीतवावबौ, जीताड़णौ, जीताड़बौ, जीताणौ, जीतावौ, जीतावणौ, जीतावबौ—प्रे०रू०।

जीतिओड़ौ, जीतियोड़ौ, जीत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जीतीजणौ, जीतीजबौ—कर्म वा०।

जइतणौ, जइतबौ—रू०भे०।

जीतब-सं०पु० [सं० जीवीतव्यं] जीवन, जिंदगी।

उ०—१ जिन्हां जीतब जीतिया जे रघुवर नित जीह जपंदे।

—र.ज.प्र.

उ०—२ किणी नै सरप खाधौ। गारडू झाड़ौ देई बचायौ। जद उ पगां लागे बोल्यौ, इतरा दिन तो जीतब माइतां रौ दियौ हु'तो अनै अबै आज सूं जीतब आप रौ दियौ।—भि.द्र.

रू०भे०—जीतव।

जीतरणताळ-सं०पु०यौ० [सं० रणतालजित] तलवार, खड्ग (अ.मा.)

जीतव—देखो 'जीतब' (रू.भे.) उ०—अेकलौ जाय अतीत, जतो काय अेकलौ जासी, घण विवनी रौ धणी, गरढ जासी अभवासी। त्रिया विण जासी तुरक, न तो कय जासी नाजर। लूटण दुख विध लखत, वांम रह जाय जकां वर। पोसाख हीण मोसा खमण, जीतव अग हूं जावसी। अेकलौ नांज जावै अली, रूपनगर रौ राजवी।

—अरजुणजी वारहठ

जीताड़णौ, जीताड़बौ—देखो 'जीताणौ, जीतावौ' (रू.भे.)

उ०—क्रपा अभिलाखियौ 'जैत' भिड़ियौ कटक, तुरत कर दाखियौ जोर तारां, समर जीताड़ियौ सूर चंद साखियौ, वीकपुर राखियौ कई वारां।—खेतसी वारहठ

जीताड़णहार, हारौ (ह री), जीताड़णियौ—वि०।

जीताड़िओड़ौ, जीताड़ियोड़ौ, जीताड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जीताड़ीजणौ, जीताड़ीजबौ—कर्म वा०।

जीताणौ, जीतावौ, जीतावणौ, जीतावबौ—रू०भे०

जीताड़ियोड़ौ—देखो 'जीतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जीताड़ियोड़ी)

जीताणौ, जीतावौ-क्रि०स०('जीतणौ' क्रि० का प्रे०रू०) १ जीतने के लिये प्रेरित करना, विजय करवाना. २ किसी विरुद्ध पक्षों को होड़ में सफलता प्राप्त कराना। ज्यूं—मुकदमे में जिताणौ या खेल में जीताणौ।

जीताणहार, हारौ (हारी), जीताणियौ—वि०।

जीतायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जीताईजणौ, जीताईजबौ—कर्म वा०।

जिताणौ, जीतावौ, जीताड़णौ, जीताड़बौ, जीतावणौ, जीतावबौ—रू०भे०।

जीतायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जीतने के लिये प्रेरित किया हुआ, जिताया हुआ. २ किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त कराया हुआ।

(स्त्री० जीतायोड़ी)

जीतावणौ, जीतावबौ—देखो 'जीताणौ, जीतावौ' (रू.भे.)

जीतावणहार, हारौ (हारी), जीतावणियौ—वि०।

जीताविओड़ौ, जीतावियोड़ौ, जीताव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जीतावीजणौ, जीतावीजबौ—कर्म वा०।

जीताड़णौ, जीताड़बौ, जीताणौ, जीतावौ—रू०भे०।

जीतावियोड़ौ—देखो 'जीतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जीतावियोड़ी)

जीति—देखो 'जीती' (रू.भे.)

जीतियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ शत्रु के विरुद्ध विजय प्राप्त किया हुआ. २ किसी पक्ष के विरुद्ध सफलता प्राप्त किया हुआ।
(स्त्री० जीतियोड़ी)

जीती—सं०स्त्री० [सं० जितिः] जीत, विजय। उ०—१ जिण समय राठौड़ चंद्रहास चलावण में कुमीं न कीधी, परंतु महा पापां रा करणहार तौ स्त्री परमेस्वर रा प्रपंच में जीती हूं न जावै।
—वं.भा.

उ०—२ अस लेगौ अणदाग, पाघ लेगौ अणनांमी। गौ आडा गवड़ाय, जिकौ वहतौ धुर वांमी। नवरोजै नह गयौ, न गौ आतसां नवल्ली। न गौ झरोखां हेठ, जेथ दुनियांण दहल्ली। गहलोत रांण जीती गयौ, दसण मूंद रसणा डसी। नीसास मूक भरिया नयण, तो म्रत 'साह' प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

क्रि०प्र०—जाणौ।

रू०भे०—जीति।

जीतौ—देखो 'जीवतौ' (रू.भे.)

जीन—देखो 'जीण' (रू.भे.)

जीनत—सं०स्त्री०—तैयारी। उ०—१ हमैं हीरानंद रतनां नूं लिखमीदास नूं बीदा दीवी, ओभ्रणा री घणी जीनत कीवां।—र.हमीर

जीनसाल, जीनसालियौ—देखो 'जीणसाल' (रू.भे.)

उ०—१ हाथी १५ किंवाड़ भांजण नूं आगै किया छै नै मूळराज प्रोळ री हाटां मांहै जीनसाल पैहर मांणस हजार दोय सूं रह्यौ छै।
—नैणसी

उ०—२ तरै वेढ री वेळा हाजीखांन आपरा घणा जतन कीया। जीनसाल पहर नै हाथी ऊपर लोह री कोठी हुवै छै तिण मांहै वैठौ।—राव मालदेव री वात

उ०—३ पछै साहारै दिन वारै सौ १२०० असवार जीनसालिया करि ऊपर ढीला वागा पैहर केसरिया करनै वारै वींदां रै साथै वारै जांन कर नै एकण समचै वारां ही प्रोळि मांही पैठा।—नैणसी

जीनोई—देखो 'जनेऊ' (रू.भे.) उ०—रांमसिंह कल्यांणमलोत जांणियौ—राव मारीयौ, लोही जैतसी रै वैर रै आंटै चाटियौ। पछै जीनोई वखतर उतार नीसरियौ।—राव चंद्रसेन री वात

जीप—सं०स्त्री०—जीत, विजय। उ०—अर जुद्ध मांहै जीप पण लाखैजी री हुवै तौ वेदल क्युं रहै छै।—नैणसी

जीपणौ, जीपबौ—क्रि०स० [सं० जित, प्रा० जित्त, अप० जिप्प] जीतना, विजय प्राप्त करना। उ०—कमळापति तणी कहेवा कीरति, आदर करै जु आदरी। जांणै वाद मांडियौ जीपण, वाग हीण वागेसरी।
—वेलि.

जीपणहार, हारौ (हारी), जीपणियौ—वि०।

जीवाड़णौ, जीपाड़बौ, जीपाणौ, जीपावौ, जीपावणौ, जीपाववौ—प्रे०रू०।

जीपिओड़ौ, जीपियोड़ौ, जीप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जीपल—वि०—जीतने वाला, विजेता।

जीपा—सं०स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

जीपियोड़ौ—भू०का०कृ०—जीता हुआ, विजेता।
(स्त्री० जीपियोड़ी)

जीव, जीवी—सं०स्त्री० [सं० जिह्वा+रा.प्र.ई] १ देखो 'जीभ' (रू.भे.) २ जिह्वा का मैल उतारने का चांदी या ताम्र का बना उपकरण. ३ वढ़ई का औजार विशेष।

रू०भे०—जीभी।

जीभ—सं०स्त्री० [सं० जिह्वा] १ मुख में स्थित लम्बे व चिपटे मांस पिण्ड के आकार की वह इन्द्रिय जिससे खाद्य पदार्थों का रस; स्वाद, भौतिक अवस्था का अनुभव एवं शब्दों का उच्चारण किया जाता है। जवान, जिह्वा, रसना।

पर्या०—जवांन, जिभ्या, जीहा, बोलणी, रटण, रसंगना, रसग, रसजांणण, रसण(न), रसना, रसमाता, लालकी, लोला, वकता (वगता), वाचा, वाया।

मुहा०—१ जीभ अटकणी—निरुत्तर होना, बोलते बंद होना। मरणासन्न समय कण्ठावरोध होना, बोलने में असमर्थ होना. २ जीभ आणी—वाचाल होना. ३ जीभ ऊपर सरसती वसणी—विद्वान होना. ४ जीभ कतरणी ज्यूं—अधिक वाचाल के प्रति। तर्कयुक्त दूसरे की वात खण्डन करने वाले के प्रति. ५ जीभ कम करणी—कम बोलना, जिह्वा पर संयम रखना. ६ जीभ कम होणी—कम बोलना, चुप होना. ७ जीभ काढ़णी—असमर्थता प्रकट करना, सामर्थ्यहीन होना. ८ जीभ कावू करणी—जवान पर संयम रखना, भय या आतंक से बोलना बंद करना. ९ जीभ कावू राखणी—जिह्वा पर संयम रखना, मितभाषी होना. १० जीभ खींचणी—देखो 'जवांन खींचणी'. ११ जीभ खीलणी—बोलना बंद करना, आतंक या रौब से बोलने में असमर्थ करना. १२ जीभ खुलणी—देखो 'जवांन खुलणी'. १३ जीभ खोलणी—देखो 'जवांन खोलणी'. १४ जीभ घिसणी—देखो 'जवांन घिसणी'. १५ जीभ चलणी—वाचाल होना. १६ जीभ चलाणी—देखो 'जवांन चलाणी'. १७ जीभ चालणी—देखो 'जवांन चालणी'. १८ जीभ चिपणी—निरुत्तर होना, मूक होना. १९ जीभ डळाडळा होणा—पदार्थ विशेष के खाने से जिह्वा का फट जाना. २० जीभ ताळवै छेटी करणी—भय या आतंक से बोलना बंद करना, बोलने से रोकना. २१ जीभ ताळवै छेटी पड़णी—भय या आतंक से बोलना बंद होना. २२ जीभ नै कैर रौ कांटौ—अमांगलिक संदेश देने पर प्रयोग किया जाता है. २३ जीभ नै गुड़—कोई मांगलिक खबर देने पर प्रयोग किया जाता है. २४ जीभ रै ताळौ लगाणौ—बोलना बंद करना, चुप करना. २५ जीभ रै ताळौ लागणौ—बोलना बंद होना, चुप होना. २६ जीभ निकळणी—असमर्थ होना. २७ जीभ निकाळणी—असमर्थता प्रकट करना,

बोलने में असमर्थ करना. २८ जीभ पकड़णी—देखो 'जबांन पकड़णी'. २९ जीभ फेरणी—देखो 'जीभ हिलाणी'. ३० जीभ बंद करणी—देखो 'जबांन बंद करणी'. ३१ जीभ बंद कर देणी—देखो 'जबांन बंद करणी'. ३२ जीभ बंद होणी—देखो 'जबांन बंद होणी'. ३३ जीभ भारी पड़णी—कठिनता से बोला जाना, बोलने में असमर्थ होना. ३४ जीभ माथै जोर होणो—बोलने में समर्थ, बोलने में पटु, अधिक वाचाल होना. ३५ जीभ माथै देणी, (देणो)—स्वाद लेना, चखना. ३६ जीभ माथै सरसती वसणी—देखो 'जीभ ऊपर सरसती वसणी'. ३७ जीभ माथै होणी—देखो 'जबांन माथै होणी'. ३८ जीभ में जोर होणी—देखो 'जीभ माथै जोर होणी'. ३९ जीभ रुकणी—देखो 'जबांन रुकणी'. ४० जीभ रोकणी—देखो 'जबांन रोकणी'. ४१ जीभ वतावणी—कविता पाठ करना, कंठस्थ कविता सुनाना, नवीन कविता रच कर सुनाना. ४२ जीभ संभाळणी—देखो 'जबांन संभाळणी.' ४३ जीभ रुकणी—प्यासा होना, भय से बोला न जाना, मरणासन्न काल में वाक शक्ति कमजोर होना. ४४ जीभ हिलाणी—जिह्वा हिला कर संकेत करना. ४५ दांतां विचली जीभ—दोनों ओर से संकट में होना. ४६ होठां माथै जीभ फेरणी—हतोत्साह होना, निराश होना ।

२ कलम की नोंक ।

रू०भे०—जिब्भ, जिब्भा, जिब्भिआ, जिभ्या, जिह, जिव्हांण, जीव, जीवी, जीभि, जीभी, जीह, जीहा ।

अल्पा०—जीवड़ली, जीवड़ी, जीभड़ली, जीभ ।

मह०—जीवड़, जीभड़ ।

जीभड़ली—देखो 'जीभ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ एक जीभड़ली जस दइयौ विनायक लाडले की मायनैं, वा तौ मीठी सी बोलैं निंव कर चालैं जस रैं'वैं परवार में ।—लो.गी. उ०—२ कागा दिळं वधाइयां, तूं पिव मेळै मुज्झ । काढूं मुख थी जीभड़ी, भोजन देस्यूं तुज्झ ।

—ढो.मा.

जीभप—सं०पु०—कुत्ता, श्वान (ह.नां.)

जीभि, जीभी—देखो 'जीव्री' (रू.भे.)

जीमण—सं०पु० [सं० जेमनम्] १ घी, पानी, मैंदे के साथ गुड़ अथवा शक्कर के संयोग से आग पर पका कर बनाया हुआ खाद्य मिष्ठान्न । उ०—घुरवा घरणी लग लोढा ले धावैं । जीमण जीमण नैं मोडा जिम जावैं ।—ऊ.का. उ०—२ जीमणूं के गंज एते दरसावैं जिसकी ओट जीमणहार नजर न आवैं ।—सू.प्र.

२ बहुत से लोगों को एक साथ खिलाया जाने वाला खाना, जेमनार, भोज. ३ खाना, भोज । उ०—एक साहो थापियो । पछै वे परणीजण आया, सु जीमण मांहे दारू में धतूरो घात नैं पायो, सु सारा बेसुध किया ।—नैणसी

रू०भे०—जिमण, जींमण, जीम्हण ।

यौ०—जीमण-चूठण, जीमण-जूठण ।

जीमण-वार—सं०स्त्री०—भोज, रसोइ, ज्योनार ।

उ०—छट्ठै प्रहरै दिवस के, हुई ज जीमणवार । मन चावळ तन लापसी, नैंण ज घी की धार ।—ढो.मा.

रू०भे०—जिमणवार, जिमणार, जिमनार ।

जीमणियाळ—वि०—दक्षिण पार्श्व का दाहिना ।

उ०—'माल' घणी अर' जैत' मुसायव, 'कूंप' करण दीवांण कहै । वेपड़ 'अखा' सदा धुर वांमैं, वळ रा जीमणियाळ वहै ।

—जैताजी कूंपाजी रौ गीत

जीमणो—वि० (स्त्री० जीमणी) दक्षिण पार्श्व का, दाहिना ।

उ०—१ तरै वीच आप ऊभो रयो नैं साथ अढाई सौ प्रोळरुसा डावी कांनी नैं अढाई सौ जीमणी वाजू ऊभा राखिया ।—नैणसी

उ०—२ चाल्या चउरास्या न लावी छइ बार, आडी आयज्यो इंधण हार । होज्यौ देवी जीमणी ।—वी.दे.

सं०पु०—दाहिना हाथ, दक्षिण हाथ ।

रू०भे०—जिमणउ, जिमणु, जींमणो, जींवणो, जीवणो ।

जीमणो, जीमवौ—क्रि०स० [सं० जिम्] भोजन करना, खाना खाना ।

उ०—१ भयण अंभ भोजन भूख जीमियां न भज्जै ।—चौथ वीठू

कहा०—जीम्यां पछै चळू—भोजन करने के पश्चात हाथ प्रक्षालन नहीं होता है, अर्थात् अवसर निकल जाने के बाद कुछ नहीं हो सकता ।

जीमणहार, हारौ (हारी), जीमणियौ—वि० ।

जीमवाड़णो, जीमवाड़वौ, जीमवाणो, जीमवावौ, जीमवावणो, जीमवाववौ, जीमाड़णो, जीमाड़वौ, जीमाणो, जीमावौ, जीमावणो, जीमाववौ—प्रे०रू० ।

जीमिओड़ौ, जीमियोड़ौ, जीम्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जीमीजणौ, जीमीजवौ—कर्म वा० ।

जिमणौ, जिमवौ, जीम्हणौ, जीम्हवौ—रू०भे० ।

जीमना—सं०स्त्री०—यमुना, रवि-तनया (जैन)

जीमाड़णो, जीमाड़वौ—क्रि०प० ('जीमणो' क्रिया का प्रे० रू०) भोजन करवाना, खिलाना । उ०—१ ताहरां चारण दूही लै नैं हालियौ । विचै मारग में एक गांव चारण घरै उतरियौ । ताहरां राति जीमाड़ियौ

—फोफाणंद री बात

उ०—२ मोटौ रांमसिहजी तेड़ि अर आप कन्है जीमाड़ियौ ।

—द. वि.

जीमाड़णहार, हारौ (हारी), जीमाड़णियौ—वि० ।

जीमाड़िओड़ौ, जीमाड़ियोड़ौ, जीमाड़योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जीमाड़ीजणौ, जीमाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

जिमाड़णौ, जिमाड़वौ, जिमाणौ, जिमावौ, जिमावणौ, जिमाववौ, जीमाणौ, जीमावौ, जीमावणौ, जीमाववौ—रू०भे० ।

जीमाड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—भोजन कराया हुआ।
(स्त्री० जीमाड़ियोड़ी)

जीमाणौ, जीमावौ—देखो 'जीमाड़णौ, जीमाड़वौ' (रू.भे.)
जीमाणहार, हारौ (हारी), जीमाणियौ—वि०।
जीमायोड़ौ—भू०का०कृ०।
जीमाईजणौ, जीमाईजवौ—कर्म वा०।

जीमायोड़ौ—देखो 'जीमाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० जीमायोड़ी)

जीमावणौ, जीमाववौ—देखो 'जीमाड़णौ जीमाड़वौ' (रू.भे.)
जीमावणहार, हारौ (हारी), जीमावणियौ—वि०।
जीमाविश्रोड़ौ, जीमावियोड़ौ, जीमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जीमावीजणौ, जीमावीजवौ—कर्म वा०।

जीमावियोड़ौ— देखो 'जीमाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० जीमावियोड़ी)

जीमियोड़ौ–भू०का०कृ०—भोजन किया हुआ। (स्त्री० जीमियोड़ी)

जीमूत–सं०पु० [सं०] १ बादल, मेघ (ना.डि.को.)
२ एक ऋषि का नाम (महाभारत) ३ एक मल्ल का नाम जो विराट की सभा में रहता था और भीम द्वारा मारा गया था। (महाभारत)
४ शाल्मली द्वीप के एक देश का नाम (जैन)

जीमूतरिखि–सं०पु०—एक ऋषि का नाम। उ०—इंद्र माळी, व्रह्मा परोहित भ्रिगिरीटि रिखि अचमन करवाइ। जीमूतरिखि छोरू खेलावइ, कांमदेव कटारउं बांधइ।—व.स.
रू०भे०—जीवरि(खि)ति।

जीमूतवाहण, जीमूतवाहन–सं०पु० [सं० जीमूत–वाहन] १ शालिवाहन राजा का पुत्र। २ इन्द्र, देवराज। उ०—ऐस्वरच सुरेंद्र एकू अनेक रूप नरेंद्र, सत्यवाचां हरिस्चंद्र, निरभय भीम, आपन्न जीमूतवाहन वागदेवीविलास कास्मीर।—व.स.
रू०भे०—जीवाहन।

जीम्हण—देखो 'जीमण' (रू.भे.) उ०—पड़ पकवांन प्रवाड़ा प्रमरथ, साहां सेन करै बोह संग। मंदा कटक महारस मसळै, जीम्हण रांण कियौ रणजंग।—महारांणा खेता रौ गीत

जीम्हणौ, जीम्हवौ— देखो 'जीमणौ, जीमवौ' (रू भे.)
उ०—१ मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख। केळा छोंत विसेख, जाय विदुर घर जीम्हिया।—र.ज.प्र.
उ०—२ तीसूं उवौ टावर रात-दिन राजूखां कन्है रहै, भेळौ जीम्है, दरबार में खोळै मांहीं सूतौ रहै।— सूरे खीवे कांधळोत री वात

जीम्हियोड़ौ—देखो 'जीमियोड़ौ' (रू.भे.)

जीय—१ देखो 'जीव' (रू.भे.) २ परम्परा से चला हुआ व्यवहार, प्रथा (जैन) ३ कर्त्तव्य (जैन) ४ व्यवस्था (जैन)

जीयकप्प–सं०पु० [सं० जीतकल्प] परम्परा से चला हुआ आचार (जैन)

जीयकप्पीय–वि०यौ० [सं० जीतकल्पिक] परम्परा से चले हुए आचार वाला (जैन)

जीय-निंदा–वि०यौ०—१ वह जो पापी की निंदा नहीं कर के पाप की निन्दा करे (जैन) २ वह जो निंदकों की परवाह न करे (जैन)
३ वह जो स्वल्प निद्रा लेवे (जैन)

जीय-परिखह, जीय-परिसह–वि०यौ०—उपसर्ग, भूख, प्यास आदि २२ परिसहों को जीतने वाला (जैन)

जीय-मांण–वि०यौ०— वह जो विनय से मान को पराजित करे (जैन)

जीयमाय–वि०यौ०—वह जो सरलता से माया को पराजित करे (जैन)

जीयलोह–वि०यौ०—वह जो संतोष से लोभ को पराजित करे (जैन)

जीयै–सर्व०—जिस। उ०—१ जीयै घड़ी उदैराव री जन्म हुवौ तीयै घड़ी प्रोळि रा कांगरा गिड पड़्या।—देवजी वगड़ावत री वात
उ०—२ मांचौ वळै किवाड़ां नुं लगाइ नै जीयै मारिग आयौ हुतौ तीयै ही मारिग अपूठौ उतरियौ।—चौबोली

जीर—देखो 'जीरौ' (मह०, रू०भे०)

जीरय–सं०पु० [सं० जीरक] १ देखो 'जीरौ' (रू.भे.)
२ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जीरउ, जीरक—देखो 'जीरौ' (रू.भे.) (उ.र.)

जीरण–वि० [सं० जीर्ण] १ जर्जर, बुड्ढा। उ०—प्रतिदिन मोळा पड़ भिन-भिन पद पूजै। धोळा नीरण बिन जीरण जिम धूजै।—ऊ.का.
२ फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण। उ०—सठ-सनेह, जीरण वसन, जतन करंतां जाय। चतर-प्रीत, रेसम-लछा, घुळत-घुळत घुळ जाय।
—अज्ञात
३ टूटा-फूटा, पुराना. ४ कमजोर।

जीरण-ज्वर–सं०पु० [सं० जीर्ण-ज्वर] पुराना बुखार।

जीरणता–सं०स्त्री०—पुरानापन, बुढ़ापा।

जीरणा–सं०स्त्री०—चार गुरुवर्ण का वृत्त विशेष (र.ज.प्र.)

जीरणोद्धार–सं०पु० [सं० जीर्णोद्धार] टूटी-फूटी या जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं का पुनः सुधार, मरम्मत। उ०—जुमलै सवा लाख जिन-मंदिर कराया राजा संप्रति। नवासी हजार जिन-मंदिर रौ जीरणोद्धार करायौ
—वां.दा.ख्यात

जीरवणा–सं०स्त्री०—१ धैर्य। उ०—कही सैंवास, घन थारी माता पिता सो इतरी तैं वात री जीरवणा राखी पण कही नहीं।
वंधी बुहारी री वात
क्रि०प्र०—राखणी, होणी।
२ देखो 'जरणा' (रू.भे.)

जीरवणौ, जीरववौ–सं०पु०—हजम करना। उ०—दईत राज कुण दलै पखै नरसिंघ नरेसुर, काळकूट जीरवै न कौ पाखै भूतेसर।
—अलूनाथ

जीरवियोड़ौ-भू०का०कृ०—हजम किया हुआ।
(स्त्री० जीरवियोड़ी)

जीरह—देखो 'जिरह' (रू.भे.) उ०—जांन तणी साजति करउ। जीरह रंगावळी पहरज्यो टोप।—बी.दे.

जीरांण—सं०पु० [सं० ज्वलनस्थान] मरघट, श्मशान। उ०—कमध जोगेस आदेस सह जग करै, दीव आसीस कर रीस दूणी। घाल आयो तूं होज वैरियां तणै घर, धुकै घमसांण जीरांण धूणी।

—महेसदास कूंपावत रो गीत

वि० [सं० जीर्ण] जीर्ण, जर्जर।

जीरय—सं०पु० [सं० जीरुक] एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जीरौ—सं०पु० [सं० जीरक] १ दो हाथ ऊंचा एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखा कर मसाले के काम में लेते हैं। जीरा।

रू०भे०—जीरउ, जीरक।

मह०—जीर।

२ लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत।

जील—सं०स्त्री०—सारंगी के मुख्य दो तारों के नीचे कसे हुए तार जो संख्या में कुल १७ होते हैं।

जीवंजीवक, जीवंजीवग—सं०पु० [सं० जीवज्जीवक] १ देखो 'जीवंजीव' (२) (रू.भे., जैन) २ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जीवंजीव—सं०पु० [सं० जीवजीव] १ एक प्रकार का वृक्ष. २ चकोर पक्षी. ३ जीव का आधार, आत्म पराक्रम (जैन) ४ जीवन (जैन)

जीवंती—सं०स्त्री०—१ संजीवनी (अ.मा.) २ हरड़ं, हरीतकी। (नां.मा., ह.नां.)

३ एक लता जिसकी टहनियां औषधि के काम आती हैं (अमरत)

जीवंदौ—वि०—जो जिंदा हो। सजीव हो। जीवित।

उ०—मरियंदा जीवाड़ ही जीवंदा मारै।—केसोदास गाडण

जीव—सं०पु० [सं०] १ प्राणियों का चेतन तत्व, जीवात्मा, आत्मा।

मुहा०—१ जीव कळपणौ—आत्मा का दुखी होना। इच्छा के प्रतिकूल अथवा अनुचित कार्य होने से आत्मा को क्षोभ होना. २ जीव कळपाणौ—जी को कष्ट पहुँचाना। अनुचित कार्य कर के अथवा किसी की इच्छा के प्रतिकूल कार्य कर के आत्मा को कष्ट पहुँचाना. ३ जीव खटकणौ—जी खटकना। किसी संदेह के कारण आत्मा का बेचैन रहना. ४ जीव खटकाणौ—जीव खटकाना। किसी का आत्मा को बेचैन करना. ५ जीव ठंडौ राखणौ—जी ठंडा रखना, शान्त रहना, धैर्य रखना. ६ जीव ठंडौ होणौ—जी ठंडा होना। आत्मा को शान्ति मिलना. ७ जीव तपणौ—जी तपना। आत्मा का कष्ट पाना। क्रोधित होना. ८ जीव तपाणौ—जी तपाना। किसी कार्य की सिद्धि के लिये साधना करना। आत्मा को कष्ट देना। किसी की आत्मा को कष्ट पहुँचाना। क्रोधित होना। किसी को क्रोधित करना. ९ जीव पांणी-पांणी होणौ—जी पानी-पानी होना। बहुत कष्ट सहन करना। चित्त कोमल होना। दयार्द्र होना. १० जीव बळणौ—जी जलना। आत्मा का कुढ़ना। दुखी होना। क्रोधित होना। किसी से ईर्ष्या करना. ११ जीव बाळणौ—जी जलाना। आत्मा को दुखी करना। कुढ़ाना। क्रोधित करना। ईर्ष्या करना. १२ जीव भरीजणौ—जी भरना। आत्मा का सन्तुष्ट होना. १३ जीव में जीव आणौ—जी में जी आना। आत्मा का चिंता रहित होना। चैन आना। आत्मा का सुख पाना. १४ जीव मोटौ करणौ—जी बड़ा करना। दुखी नहीं होना। धैर्य धारण करना।

कहा०—जीव दोरौ है तौ सोरौ कंई है—यदि आत्मा ही दुखी है तो सुख क्या है। सुख के सभी साधन होते हुए भी यदि आत्मा दुखी है तो वह सुखी नहीं अर्थात् आत्मा की सन्तुष्टि ही सुख है।

यौ०—जीवात्मा।

२ जीवन तत्व। प्राण। जान। उ०—जन हरिदास या जीव कै, दुख सुख चालै साथि। अब या चीरी क्यूं मिटै, ता दिन आई हाथि। —ह.पु.वा.

मुहा०—१ जीव अच्छौ होणौ—जी अच्छा होना। रोग आदि की बेचैनी या पीड़ा नहीं होना। स्वस्थ होना। नीरोग होना. २ जीव अटकणौ—देखो 'जीव रुकणौ'. ३ जीव आणौ—जी आना। आराम मिलना। विश्राम मिलना। चैन आना. ४ जीव ऊं(सूं) खेलणौ—जी से खेलना। जान खो बैठना। मरना. ५ जीव ऊँचौ चढ़णौ—भयभीत होना। जी घबराना। सदमा पहुँचना. ६ जीव कांपणौ—जी कांपना। भय के कारण दुखी होना। किसी आशंका से थर्राना. ७ जीव काडणौ—जी निकालना। प्राणविहीन कर देना. ८ जीव खपाणौ—जी खपाना। किसी कार्य में बहुत दिलचस्पी लेना। अत्यंत कष्ट उठाना। प्राण देना। परेशान होना. ९ जीव गमाणौ—जी गुमाना। प्राणों की बाजी लगाना। प्राण खोना. १० जीव गोटौ खाणौ—जी चकराना। जी में घबराहट पैदा होना. ११ जीव घबराणौ—जी घबराना। जी में उद्वेग उत्पन्न होना। दुखी होना. १२ जीव छूटणौ—जी छूटना। पीछा छूटना। दम तोड़ना। प्राण निकल जाना. १३ जीव छोडणौ—जी छोड़ना। प्राण देना। मर जाना. १४ जीव जांन लड़ाणौ—जी जान लड़ाना। पूर्ण रूप से दिलचस्पी लेना। मन लगाना। जुट जाना। प्राणों की बाजी लगाना. १५ जीव जाणौ—जी निकलना। प्राण निकलना। जिन्दा हो जाना। सजीव हो जाना. १६ जीव तोड़णौ—जी तोड़ना। दम तोड़ना। प्राण निकलना. १७ जीव दांन—जी दान। प्राण दान। प्राणों की रक्षा। १८ जीव देणौ—जी देना। प्राण छोड़ना। अपने प्राणों से भी बढ़ कर प्रिय समझना. १९ जीव दोरौ होणौ (व्हैणौ) जी कष्ट पाना। जी घबराना. २० जीव धड़कणौ—भय के कारण थर्राना। मन में डरना। आशंकित होना। जी धड़कना. २१ जीव धड़का खाणौ—कलेजा धक-धक करना। भय के कारण हृदय का धड़कना. २२ जीव धक-धक करणौ—देखो 'जीव धड़का खाणौ'. २३ जीव धक धक होणौ—किसी भय के कारण सशंकित होना, डर के कारण मन का अस्थिर होना. २४ जीव धै'लणौ—भयभीत होना, आतंकित होना, एकाएक घबराना. २५ जीव धै'लाणौ—

अचानक भयभीत करना, आतंकित करना. २६ जीव धँ'लीजणौ—देखो 'जीव धँ'लणौ' २७ जीव निकळणौ—प्राण निकलना, मृत्यु होना, व्याकुल होना, भयभीत होना. २८ जीव निकाळणौ—मार डालना, प्राणहीन कर देना, भयभीत करना. २९ जीव नीसरणौ—देखो 'जीव निकळणौ'. ३० जीव नैं जीव जांणणौ—प्राण को प्राण समझना, इतना परिश्रम करना कि जिससे हानि न हो अतः उस समय कहा जाता है 'जीव नैं जीव जांणणौ चाहिजै' अर्थात् इतना परिश्रम नहीं करना चाहिए जिससे जी को अत्यधिक कष्ट पहुँचे.
३१ जीव नैं मारणौ—मार डालना, समाप्त कर देना.
३२ जीव पड़णौ—सजीव होना, प्राण का संचार होना.
३३ जीव फेरी दैणौ—जी घबराना, जी मचलना, चक्कर आना, सूझ विहीन होना. ३४ जीव वावड़णौ—मृत प्रायः में प्राण का संचार होना, किसी अनहोनी से बचना. ३५ जीव बिखरणौ—व्याकुल होना, बेहोश होना, जी का कष्ट पाना, विह्वल होना.
३६ जीव मचळणौ—मन उचाट होना, जी में ऐसी स्थिति होना कि वमन हो जाय, व्याकुल होना, आकुल होना. ३७ जीव मचळाणौ—आकुल करना, उत्तेजित करना, घबराहट पैदा करना. ३८ जीव माथै आय नैं पड़णौ—ऐसे भारी संकट में फँस जाना कि पीछा छुड़ाना कठिन हो जाय। प्राण पर आ बनना. ३९ जीव माथै खेलणौ—प्राणों की बाजी लगाना, प्राण जाने की परवाह न करना. ४० जीव मारणौ—किसी प्राणी को प्राणहीन करना. ४१ जीव में जीव घालणौ—जी में जी डालना। मरे हुए को जीवित करना। किसी कार्य को करने के लिए उत्प्रेरित करना। ४२ जीव रखौ—शरीर या प्राण को सुरक्षित रखने का कार्य या ऐसा कोई पदार्थ जिसके सहारे से शरीर की सुरक्षा हो. ४३ जीव राखणौ—प्राण बचाना, प्राणों की सुरक्षा रखना. ४४ जीव री जड़ी (जीव-जड़ी)—प्राण का आधार, जी से ज्यादा प्यारा. ४५ जीव री जेवड़ी करणी—अत्यधिक परिश्रम करना, इतना परिश्रम करना कि शरीर को बहुत कष्ट पहुँचे. ४६ जीव री पड़णी—देखो 'जीव माथै आय नैं पड़णौ'. ४७ जीव री लागणी—प्राण बचाना भी दुष्कर होना, भयंकर कष्ट आना. ४८ जीव रुकणौ—मरणासन्न व्यक्ति का इच्छित कार्य अथवा इच्छा की पूर्ति न होने के कारण प्राण तुरन्त न निकलना, प्राण अटकना. ४९ जीव रुखाळणौ—प्राण की रक्षा करना, जी को किसी आपत्ति अथवा कष्ट से टालना. ५० जीव रैं'णौ—प्राण बचना, जिन्दा रहना. ५१ जीव रौ—जी का, प्यारा, वल्लभ (स्त्री० जीव री) ५२ जीव रौ काचौ—जी का डरपोक, कायर, डरने वाला, प्राण की अत्यधिक परवाह करने वाला, कृपण. ५३ जीव रौ चोदू—देखो 'जीव रौ काचौ'.
५४ जीव रौ जूर (जौ'र) करणौ—शरीर को अत्यधिक कष्ट पहुँचाना, अत्यधिक परिश्रम के कारण जी को दुखी करना.
५५ जीव रौ जू'र (जौ'र) होणौ—अधिक कार्य करने से पीड़ा होना. ५६ जीव रौ ताऊ—तेज मिजाज का, शीघ्र क्रोधित होने वाला, शीघ्र तड़कने वाला. ५७ जीव रौ दातार (उदार)—प्राण की परवाह नहीं करने वाला, वीर, बहादुर. ५८ जीव रौ पांणी करणौ—अत्यधिक परिश्रम करना. ५९ जीव रौ लागू—जी के पीछे पड़ा हुआ, प्राण लेने वाला, कष्ट देने वाला. ६० जीव रौ हांणू—जी को हानि पहुँचाने वाला, प्राण को कष्ट देने वाला, अत्यधिक परिश्रम कर के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाला. ६१ जीव लड़ाणौ—जी लड़ाना, अत्यधिक परिश्रम करना, जी जान से योग देना, पूरा ध्यान देने वाला. ६२ जीव लारै पड़णौ—जी के पीछे पड़ना, पीछा नहीं छोड़ना, तंग करना, कष्ट देना.
६३ जीव लेनै न्हाटणौ—जी लेकर भागना, प्राण बचाने के लिए भागना, कायरता प्रकट करना. ६४ जीव लैणौ—जी लेना, प्राण हरना, मार डालना. ६५ जीव लोटणौ—देखो 'जीव वावड़णौ'.
६६ जीव वाळौ—जी वाला, जानदार, साहसी, हिम्मत वाला, उदार.
६७ जीव वालो लागणौ—जी प्यारा लगना, प्राण का मोह होना.
६८ जीव सूं (ऊं) जाणौ—जी से जाना, जान खो बैठना, प्राण-विहीन होना, मरना. ६९ जीव सूं बणणी—देखो 'जीव माथै आय नैं पड़णौ'.
७० जीव सोरौ होणौ (ह्वैणौ)—रोग आदि की पीड़ा या बेचैनी न रहना। चैन पडना। आराम होना. ७१ जीव हवा होणौ (ह्वैणौ)—मृत्यु होना। प्राण निकल जाना. ७२ जीव हाथ में राखणौ, जीव हाथ में लैणौ—प्राण की परवाह न करना। जी का मोह न रखना। प्राण देने के लिए प्रस्तुत हो जाना। प्राण की बाजी लगाने के लिये तैयार हो जाना. ७३ जीव होमणौ—जी होमना। बलिदान हो जाना। प्राण या स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए कार्य करना.
यौ०—जीवजनावर, जीवजानवर, जीवतसंभ, जीवतसिंभ, जीवतासंभ, जीवतोसंभ, जीवतोसंभू, जीवदांन, जीवदांनु, जीवधन, जीवपति, जीवबंधू, जीवमात्रका, जीवरखी, जीवरखौ, जीवसंभ, जीवहत्या, जीवहिंसा, जीवाधार।
३ जीवधारी। इंद्रिय विशिष्ट शरीर। प्राणी। जैसे—मनुष्य, पशु-पक्षी आदि।
मुहा०—१ जीव नैं जीव जांणणौ—जी को जी जानना। प्राणी को प्राणी समझना। किसी को अधिक कष्ट नहीं देना। एक सा वर्ताव करना. २ जीव नैं मारणौ—जी को मारना। प्राणी को मारना। बहुत कष्ट देना. ३ जीव रौ जीव लागू, जीव रौ जीव हांणू—प्राणी प्राणी के पीछे पड़ता है। एक प्राणी दूसरे को मारता है। एक प्राणी का गुजारा दूसरे प्राणी को खा कर होता है जो उससे छोटा या कमजोर होता है। प्राणी प्राणी को हानि पहुँचाता है।
यौ०—जीवधारी, जीवभासा, जीवलोक, जीवजूण, जीवजोण, जीवांजूण, जीवाजूण।
४ मन, दिल, तबियत, चित्त, हृदय।

मुहा०—१ जीव आणो—जी में आना। मन में बसना। किसी के प्रति स्नेह होना। किसी पर मन चलना. २ जीव उकताणो—बहुत समय तक एक ही दशा में रहने से परिवर्तन के लिये चित्त का व्यग्र होना। मन का न लगना. ३ जीव उखड़णो—देखो 'जीव उकताणो'. ४ जीव उड जाणो (उडणो)—देखो 'जीव उकताणो'. ५ जीव उचकणो—मन हटना। चित्त न लगना. ६ जीव उचटना—मन में उचाट पैदा होना। चित्त विक्षिप्त होना. ७ जीव उठाणो—मन हटाना। चित्त फेर लेना। विरक्त होना। जी उठाना. ८ जीव उलट जाणो—चित्त चंचल होना। होश-हवास जाता रहना। मन फिर जाना। चित्त विरक्त होना. ९ जीव ऊठणो—मन हट जाना। मन न लगना। विरक्त हो जाना. १० जीव ओचारणो—मति पलट होना। धोका देना. ११ जीव करणो—जी करना। मन चलना। इच्छा होना। लालायित होना. १२ जीव खपाणो—जी तोड़ कर किसी कार्य में लगना। जी खपाना। खूब मन लगा कर कार्य करना. १३ जीव खराब करणो—जी खराब करना। मन पर काबू नहीं पाना। मन चंचल करना. १४ जीव खराब होणो—मन का वश में नहीं रहना। अनुपयुक्त या अनुचित इच्छा होना। मन का स्थिर नहीं रहना।

१५ जीव (खट्टो) खाटो करणो—मन हटा देना, चित्त विरक्त कर देना, घृणा उत्पन्न कर देना. १६ जीव (खट्टो) खाटो पड़णो—
१७ जीव (खट्टो) खाटो होणो—अनुराग न रहना, घृणा होना, मन फिर जाना, चित्त हट जाना. १८ जीव खुलणो—डर नहीं रहना, संकोच दूर होना, धड़क न रहना, किसी कार्य को करने में हिचक न रहना. १९ जीव खोटो—कपटी दिल का, धोखा देने वाला.
२० जीव खोटो करणो—कपट करना, मन विचलित करना.

२१ जीव खोटो होणो—मति पलटना, मन में कपट आना.

२२ जीव खोल नै—जी खोल कर, बिना किसी डर के, बिना किसी हिचक या संकोच के, अपनी ओर से किसी प्रकार की कमी किये बिना, मनमाना, यथेष्ट. २३ जीव गोता खाणो—विचलित होना। डांवाडोल होना. २४ जीव घबरांणो—जी घबराना, मन का दुखी होना, कष्ट पाना, मन में व्यग्र होना, मन स्वस्थ नहीं रहना, जी ऊबना. २५ जीव घालणो—स्नेह करना, मन लगाना, तल्लीन होना, प्राण डालना, जीवित करना, जी डालना. २६ जीव चलणो—मन मोहित होना, इच्छा होना, जी चाहना. २७ जीव चलाणो—चाह करना, इच्छा करना, मन दौड़ाना, लालायित होना. हौसला बढ़ाना, हिम्मत बँधाना. २८ जीव चालणो—देखो 'जीव चलणो'. २९ जीव चुराणो—किसी कार्य अथवा बात से बचने के लिए बहाना बनाना, हीला-हवाली करना, जी चुराना. ३० जीव छिपाणो—किसी कार्य अथवा बात से बचने के लिए अपने आपको छुपा लेना, इधर-उधर हो जाना, देखो 'जी चुराणो'. ३१ जीव छोटो करणो—कंजूसी करना, उदारता छोड़ना, चित्त उदास करना, उत्साह कम करना. ३२ जी जांन ऊं लगाणो—तल्लीन होकर लगना, पूर्ण ध्यान लगाना, मन से प्रवृत्त होना. ३३ जीव जांन लड़ाणो—ध्यान लगाना, जुट जाना, दत्तचित्त होना. ३४ जीव जोग—विश्वासपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके. ३५ जीव झेलणो—सब्र पकड़ना, धैर्य रखना. ३६ जीव टूटणो—विरक्ति होना, उदासीनता होना, उमंग या हौसला न रहना. ३७ जीव टेकणो—मन लगाना, किसी कार्य में दिलचस्पी लेना. ३८ जीव ठा माथै रै'णो—मन स्थिर रहना, डांवाडोल न होना. ३९ जीव डूबणो—चित्त व्याकुल होना, कुछ भय सा प्रतीत होना, बेचैनी होना, घबराहट होना, मूर्छा आना, बेहोशी होना, लीन होना, तल्लीन होना.
४० जीव ढाईजणो—जी बैठ जाना, जी अधीर होना, घबरा जाना, व्याकुल होना, विलाप करना, रुदन करना, कुछ भय सा प्रतीत होना.
४१ जीव ढोळणो—स्नेह करना, प्रेम करना, बहुत प्यार करना.
४२ जीव तरसणो—किसी इच्छा की पूर्ति न होने से दुःख होना, अधीर होना, कष्ट पाना, लालायित होना. ४३ जीव तरसाणो—किसी वस्तु के लिये लालायित करना, अधीर करना, कष्ट देना. ४४ जीव दूखणो—हृदय को कष्ट पहुँचना, चित्त दुखी होना. ४५ जीव दुखाणो—हृदय को कष्ट देना, चित्त को व्यग्र करना. ४६ जीव दोरो करणो—इच्छा की पूर्ति नहीं होने के कारण चिंतित होना, किसी के अनुचित व्यवहार के कारण दुखी होना. ४७ जीव दोरो होणो—मन में घुटन होना, ऊबना.

४८ जीव दौड़णो—मन चलना, चित्त का चंचल होना, किसी समस्या के हल के लिए जी का व्यग्र होना, लालसा होना, जी दौड़ना। ४९ जीव नै नहीं भावणो (लागणो)—जी को अच्छा नहीं लगना, मन हट जाना. ५० जीव नैनो करणो—देखो 'जीव छोटो करणो'.
५१ जीव पिघळणो—हृदय द्रवित होना, दया आना, दयार्द्र होना, प्रेम से हृदय का द्रवित होना, मन में स्नेह का संचार होना.

५२ जीव पीतळणो—हृदय का (किसी पर) अनुरक्त होना, मन मोहित होना, विचार बदलना, मति पलट जाना, मन में कपट का संचार होना. ५३ जीव फाटणो—पहले का सा प्रेम-भाव न रहना, मन से निकल जाना, उदासीन हो जाना (किसी की ओर से) विरक्त हो जाना; भयभीत होना, डरना. ५४ जीव फिर जाणो—मति पलट जाना, हृदय में कपट उत्पन्न हो जाना. ५५ जीव फिरणो—देखो 'जीव फिरजाणो' चक्कर आना, जी घबराना.

५६ जीव फीको पड़णो—मन चिंतित होना, उदासीन होना; अरुचि होना; मन में ग्लानि आना; जी नहीं लगना।

५७ जीव बिगड़णो—मति पलटना। इच्छुक होना। क्रोधित होना। घबराना। बेचैन होना। विचलित होना. ५८ जीव बिगाड़णो—(हड़पने के लिये) मति पलटना। (खाने के लिये) इच्छुक करना या इच्छुक होना। क्रोधित करना। घबराना। बेचैन करना। ५९ जीव बैलणो—किसी विषय में चित्त का आनन्दपूर्वक लीन होना। किसी

कार्य में लग जाने से चित्त को शांति मिलना. ६० जीव वैलाणौ—अपनी इच्छानुसार किसी कार्य में लग कर मन को प्रसन्न करना। मनोरंजन करना। दुःख या चिंता की बात छोड़ कर मन को किसी ओर प्रवृत्त करना. ६१ जीव वैलीजणौ—देखो 'जीव वैलणौ'. ६२ जीव भरीजणौ (भरणौ)—मन अघाना। संतुष्ट होना। आनन्द और संतोष होना। मन मानना। यथेष्ट। मनमाना। इतमीनान करना। विश्वास करना। चित्त गद्गद् होना। करुणा का वेग उमड़ पड़ना। आँसू छलछला जाना। चित्त के किसी आकस्मिक आवेग से मन व्यग्र होना. ६३ जीव मर जाणौ. ६४ जीव मरणौ—उदासीन होना। निराश होना। हृदय का उत्साह समाप्त होना। मन में उमंग न रहना. ६५ जीव मारणौ—चित्त की उमंग शान्त करना। जी का उत्साह समाप्त करना. ६६ जीव मिळणौ—एक दूसरे के मन का विचार आपस में मिलना। एक मनुष्य के भावों का दूसरे मनुष्य के भावों के अनुकूल होना। मन पटना। स्नेह होना. ६७ जीव मिळाणौ—मेल कराना। एक दूसरे के विचारों का परस्पर समन्वय कराना। प्रेम कराना। मिलाना. ६८ जीव में आणौ—इरादा होना। जी चाहना। इच्छा करना. ६९ जीव में चुभणौ—चित्त में खटकना। अप्रिय लगना। हृदय पर अंकित होना. ७० जीव में जीव घालणौ—किसी के विचारों को अपने अनुकूल करना. ७१ जीव में धारणौ—निश्चय करना। संकल्प करना. ७२ जीव में बैठणौ—चित्त में स्थान कर लेना. ७३ जीव में राखणौ—मन में रखना। मन में बसोना। ध्यान रखना। निरन्तर याद रखना। स्मृति में रखना. ७४ जीव मोटौ करणौ—सहनशील होना। उदार होना. ७५ जीव राखणौ—किसी का मन रखना, किसी की इच्छा पूरी करना, किसी को प्रसन्न करना, संतुष्ट करना. ७६ जीव री काडणौ—मन की इच्छा पूरी करना; अपने हृदय की उमंग पूरी करना, किसी को भला-बुरा कह कर अपने उद्वेग को शान्त करना, प्रतिशोध लेना, जी की निकालना. ७७ जीव री जीव में रैणी—मन की मन में रहना, इच्छा पूरी नहीं होना, सोचे हुए कार्य का पूरा नहीं होना. ७८ जीव रैणौ—जी का नियंत्रण में रहना, जी का वश में रहना, जी पर काबू पाना ७९ जीव रौ काचौ, ८० जीव रौ चोदू—जी का संकुचित, कृपण, कंजूस. ८१ जीव रौ ताव काडणौ—मन के शोक, दुख, क्रोध आदि के कारण बक-झक करना. ८२ जीव रौ दलाल—जी का उदार; जो संकुचित दिल का न हो. ८३ जीव रौ दातार—जी खोल कर देने वाला, जी का उदार, जिसका हृदय संकुचित न हो. ८४ जीव रौ पोचौ—देखो 'जीव रौ काचौ'. ८५ जीव रौ बोझ हळकौ करणौ—मन में निरन्तर बनी रहने वाली चिंता को दूर करना, बेचैनी हटाना. ८६ जीव रौ बोझ हळकौ होणौ—ऐसी स्थिति या बात का दूर होना जिसकी चिंता लगातार रहती हो, खटका मिटना. ८७ जीव रौ बोदौ—देखो 'जीव रौ काचौ'। देखो 'जीव रौ मैलौ'. ८८ जीव रौ मैलौ—संकुचित भावों का, बुरे विचारों वाला, कृपण, कंजूस.

८९ जीव लगाणौ—जी लगाना; किसी कार्य में मन का प्रवृत्त होना, किसी कार्य को करने में लीन होना, किसी से स्नेह करना, प्रेम करना. ९० जीव लड़ाणौ—सारा ध्यान केन्द्रित करना, पूरा ध्यान लगाना, प्राण जाने की परवाह न करना. ९१ जीव ललचावणौ—जी ललचाना, किसी चीज को पाने के लिए लालायित होना, तरसना, किसी के जी को लालायित करना, आकृष्ट करना.
९२ जीव लागणौ—मन का किसी विषय में लीन होना, चित्त का प्रेमासक्त होना, चित्त का प्रवृत्त होना, मन का तल्लीन होना.
९३ जीव लुभाणौ—मन मोहित करना। चित्त का आकृष्ट होना। जी लुभाना. ९४ जीव लूटणौ—मन मोहित करना। चित्त चुराना। मन आकृष्ट करना. ९५ जीव वधणौ—किसी के प्रति आस्था बढ़ना। किसी के प्रति अधिक मोह होना। साहस करना। हिम्मत करना. ९६ जीव वधाणौ—उत्साह दिलाना। हिम्मत कराना। किसी के प्रति आस्था बढ़ाना। किसी के प्रति मोह करना. ९७ जीव सूं—मन लगा कर। ध्यान दे कर। पूर्ण रूप से दत्तचित्त हो कर ९८ जीव सूं उतर जाणौ—मन में स्थान न रहना। मन से निकल जाना। मन का हट जाना। उदासीन हो जाना (किसी के प्रति) ९९ जीव सूं जीव मिळणौ—मन से मन मिलना। मैत्री व्यवहार होना। परस्पर प्रीति होना. १०० जीव हट जाणौ—देखो 'जीव सूं उतर जाणौ'. १०१ जीव हलाणौ—जी चलाना। मन चलाना। इच्छा करना. १०२ जीव हवा हो जाणौ—चित्त व्याकुल होना। डर के कारण चित्त का स्थिर न रहना. १०३ जीव हाथ में राखणौ—किसी को खुश रखने के लिये उसके भाव को अपने प्रति अच्छा रखना। मन को वश में रखना। हर समय चौकन्ना रहना. १०४ जीव हारणौ—निराश होना। हतोत्साहित होना। १०५ जीव हालणौ—मन चलना। जी चलना। इच्छा होना। मोहित होना. १०६ जीव हिलणौ—किसी वस्तु का चस्का लग जाने पर मन का बार-बार उसी ओर प्रेरित होना. १०७ जीव हिलणौ—चित्त का भय के कारण विह्वल होना। भयभीत होना। डाँवाडोल होना. १०८ दबिये जीव—किसी के दबाव के कारण मन के भावों का प्रकट न होना। दबे रहना। इच्छाओं की पूर्ति न कर सकना. १०९ नैनौ जीव करणौ—देखो 'जीव छोटौ करणौ'. ११० साचा जीव सूं—मन लगा कर। सच्चे दिल से। तल्लीन हो कर। मन में किसी प्रकार का कष्ट नहीं रख कर।
यौ०—जीव-जोग।
५ वह स्थान जहाँ पर चोट लगने से मृत्यु होने की आशंका रहती है। शरीरस्थ मर्म स्थान।
मुहा०—जीव री लागणी—मर्मस्थान पर प्रहार होना। चोट लगना। ६ बृहस्पति। सुर-गुरु (अ.मा.) ७ खाट के मध्य की उन सूतलियों का समूह जिनके आधार पर खाट की बुनाई की जाती है. ८ नौ तत्वों में से प्रथम तत्व (जैन) ९ सात द्रव्यों में से एक द्रव्य (जैन)

१० बल, पराक्रम (जैन)

रू०भे०—जिव, जीग्र, जीउ, जीऊं, जीवण, जीय ।

अल्पा०—जिवड़ौ, जीवड़लौ, जीवड़ौ ।

जीवक—सं०पु० [सं०] १ एक प्रकार का पौधा या जड़ी जो अष्टवर्ग के अन्तर्गत माना जाता है (अमरत) २ प्राण धारण करने वाला. ३ जीव । प्राण. ४ सेवक. ५ सूदखोर ।

जीवका—सं०स्त्री० [सं० जीविका] जीवन निर्वाह करने का साधन । उपाय । वृत्ति । रोजी । उ०—सीहा के कुळ संभव सदीव । जीवका हेत हसि देत जीव ।—ऊ.का.

रू०भे०—जीविका ।

जीवकाय—सं०पु० [सं०] जीवलोक, जीवराशि (जैन)

जीवग्गाह—वि० [सं० जीवग्राह] जीवित को पकड़ने वाला (जैन)

जीवड़लौ, जीवड़ौ—देखो 'जीव' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ मनड़ा में ई थेई वसौ रे राज । मीठा मारू रे कागदियौ हाथां में रे, जीवड़लौ वातां में रे मोरा राज ।—लो.गी.

उ०—२ जीव चा सबद सुण जीवड़ा, महियळ जळ थळ मंभळी । अलेख पुरुस अपरम परम, जळहर सद्द सु संभळी ।—ह.र.

जीवजज्ञ—देखो 'जज्ञजीव' (रू.भे., अ.मा.)

जीवजनावर, जीवजांनवर—सं०पु०यौ०—जीव-जन्तु ।

जीवजूण—देखो 'जीवाजूण' (रू.भे.) उ०—चौरासी लाख जीवजूण पांणी बुदबुदा ।—केसोदास गाडण

जीवजोग—सं०पु०यौ० [सं० जीवयोग्य] वह व्यक्ति जिसका स्वयं का भरोसा हो । विश्वास-पात्र । उ०—इण भांत सूं उमरावां घणाई वरजिया, पिण रीस रै वसै राजा वाद चढ़ियौ थकौ काळौ घोड़ौ, काळौ सिरपाव ले नै आपरा जीवजोग रा आदमियां नै साथै मेलिया ।

—रीसालू री वात

जीवट्ठांण—सं०पु० [सं० जीवस्थान] जीव-स्थान, गुण-स्थान (जैन)

जीवण—सं०पु० [सं० जीवन] १ वह अवस्था जिसमें प्राणी अपनी इन्द्रियों द्वारा चेतन व्यापार करते हैं । जन्म और मृत्यु के बीच की अवधि । जिन्दा रहने की दशा । जिन्दगी । उ०—१ सुणी सुद्धि मैं बालंम-तणी, विरह विथा तिणि छेइ मुझ घणी । जीवण पखइ जमारउ जाइ, भाजइ दुख जै मेळउ थाय ।—ढो.मा.

उ०—२ जितरा-जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा अस्वमेघ ज्याग का फळ लीजइ । इणि विधि जीवण वेढ़िजइ, तउ सूरज-मंडळ भेदिजई ।

—अ. वचनिका

उ०—३ हित लेगौ हाथांह, जीवण रौ सुख जेठवा ।—जेठवा

क्रि०प्र०—काढ़णौ, बिताणौ ।

२ प्राण रहने का भाव । जीने का भाव या व्यापार । जीवित रहने का भाव । प्राण धारण । उ०—तो हुंता ढोलो कहै, कूड़ी गल मा करय । हवै तौ जीवण एकठा, मरतौ मारू सत्य ।—ढो.मा.

३ जिसके सहारे जिन्दा रहा जाय । प्राण का अवलम्बन । उ०—वासुदेव परब्रह्म, परम-आतम परमेस्वर । अखिल-ईस अणपार जगत जीवण जोगेस्वर ।—ह.र.

४ देखो 'जीव' (रू.भे.) उ०—जे जीवण जिन्हां-तणां, तन ही मांहि वसंत । धारइ दूध पयोहरे, बाळक किम काढ़ंत ।—ढो.मा.

५ पानी । जल । उ०—१ जीवण दाता बादळघां, थांसू जीवण पाय । भल लूआं बाजै किती, मुरधर सहसी लाय ।—लू

उ०—२ फूकण नव कोटी झंडा फरहरिया । घर-घर जाती रा टांमक घरहरिया । खाली जळ घरथी जळधर जळ खूटौ । ततखिण जीवण बिण जगजीवण तूटौ ।—ऊ.का.

६ वह जिसके प्रति बहुत स्नेह हो, परम प्रिय, प्यारा. ७ जीविका, धंधा, वृत्ति. ८ हड्डी के भीतर का गूदा । मज्जा. ९ संजीवनी. १० घी या मक्खन. ११ बेटा, पुत्र. १२ परमेश्वर. १३ पवन, वायु (डि.को.)

रू०भे०—जीवन, जीवनि ।

जीवणमाता—देखो 'जीणमाता' (रू.भे.)

जीवणसाल—देखो 'जीणसाल' (रू.भे.) उ०—राउत चडीया । सनाह लीधा । किस्या-किस्या सनाह । जरहजीण । जीवणसाल । जीवरखी । अंगरखी । करांग । वज्रांगी । लोहवद्धलुडि । समस्त संनाह लीधा । सज्जीभूत हूआ ।—कां.दे.प्र.

जीवणिकाय—सं०पु० [सं० जीव-निकाय] जीवराशि (जैन)

जीवणिज्ज—वि० [सं० जीवनीय] जीने योग्य, जीवनीय (जैन)

जीवणी—१ देखो 'जीवनी' (रू.भे.)

वि०स्त्री०—दाँयें पार्श्व की । दाहिनी ।

जीवणौ—देखो 'जीमणौ' (रू.भे.) (स्त्री० जीवणी)

वि०—२ जीने वाला ।

जीवणौ, जीवबौ—क्रि०अ० [सं० जीवनम्] १ जिंदा रहना । सजीव रहना । न मरना । उ०—पति संग जळां ग्रहि लाज पण तजां पास कुळ जुग तणौ । व्रत भंग हुए वर बीछड़े जिकां अजीवत जीवणौ ।

—रा.रू.

मुहा०—१ जीवणौ जैड़ै सीवणौ—जीवन भर किसी कार्य में लगे रहना । २ जीवणौ भारी होणौ, जीवणौ मुस्कल होणौ—जीना दूभर होना, जीने का सुख-चैन चला जाना, जीना कष्टमय होना. ३ जीवतां—जीवन रहते हुए, बने रहते, जीवित अवस्था में, न मरने तक, उपस्थिति में, ज्यूं—म्हारै जीवतां औ घर नहीं बिक सकै । ४ जीवता रौ'—(एक आशीर्वाद जो बड़ों की ओर से छोटों द्वारा पांव छूने, प्रणाम आदि करने पर दिया जाता है ।) चिरजीवी हो । आयुष्यमान हो, जिन्द रहो. ५ जीवती माखी गिटणी—जान-बूझ कर अनुचित कार्य करना, धोखा देना, सरासर बेईमानी करना. ६ जीवतौ जागतौ—पूर्ण रूप से तत्पर, भला-चंगा, सजीव और सचेत, जिन्दा और तत्पर. ७ जीवतौ लोही—जिंदा दिल । २ जीवन का समय व्यतीत करना, जिंदगी काटना । उ०—१ ऊन-

मियउ उत्तर दिसइं, मेंड़ी ऊपर मेह। ते विरहिणी किम जीवसै, ज्यांरा दूर सनेह।—ढो.मा.

उ०—२ ढोला ढीली हर किया, मूंक्या मनह विसारि। संदेसउ नह पाठवइ, जीवां किसइ अधारि।—ढो.मा.

जीवणहार, हारौ (हारी), जीवणियौ—वि०।

जिवाड़णौ, जिवाड़बौ, जिवाणौ, जिवाबौ, जिवावणौ, जिवावबौ—क्रि०स०।

जीविप्रोड़ौ, जीवियोड़ौ, जीव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जीवीजणौ, जीवीजबौ—भाव वा०।

जिवणौ, जिववौ—अक० रू०।

जीणौ, जीवौ—रू०भे०।

जीवत—वि० [सं० जीवित] जीवित, जिंदा।

जीव-तत्त—सं०पु० [सं० जीवतत्व] जीवतत्व, चेतन पदार्थ (जैन)

जीवतव्य—सं०पु०—जीवन, जिंदगी। उ०—जीवतव्य नी आस्या टळी ए पांणी नहीं पीजइ पळी। रांणी वात विमासी घणी, लिख्या लेख कांन्हडदे भणी।—कां.दे.प्र.

जीवतसंभ, जीवतसिंभ, जीवतांसंभ, जीवतांसिभ—सं०पु०यौ० [सं० जीवित+शंभु] युद्ध में घावों से क्षत्-विक्षत् होकर जीवित बचने वाला योद्धा, जीवित ही युद्ध में वीरत्व प्राप्त करने वाला वीर।

उ०—१ जीवतसिंभ जोध जैत्रहथ जुधि, सारे अरि भांजाण सुज। पूर्ज तिणि देसोत वड़ा पह, भलां मनोहर तूझ भुज।

—राठौड़ मनोहरदास रौ गीत

उ०—२ चखाड़ै कुंत चखतां घणी चापड़ै, रौद घड़ पछाड़ै अचळ राखी। जीवतसिंभ महाराज वणियौ 'जसौ', समर चा करै रवि-चंद साखी।—महाराजा जसवंतसिंह गजसिंघोत रौ गीत

रू०भे०— जीवतसिंभ, जीवतौसंभ, जीवतौसंभू, जीवसंभ।

जीवतौ—वि० [सं० जीवित] (स्त्री० जीवती) जो जिंदा हो, सजीव, प्राणयुक्त, जीवित। उ०—कर जोड़ अरज कांमणि कहै, हाय हमैं हूं हारगी। भरतार मती भुगताय रे, निलज जीवतौ ई नारगी।

—ऊ.का.

रू०भे०—जीतौ।

जीवतौसंभ, जीवतौसंभू—देखो 'जीवतसंभ' (रू.भे.) उ०—अथमियौ भांण मधुकर हरा ऊपरा, घोम दुहुवां इसौ वाद घिखियौ। वरै तूं केम रंभ उचारै विधाता, लेख मैं जीवतौसंभ लिखियौ।

—राजा सत्रुसाल (रतलांम) रौ गीत

जीवत्थिकाय—सं०पु० [सं० जीवास्तिकाय] १ चैतन्य उपयोग लक्षण वाला छः द्रव्यों में से एक द्रव्य (जैन) २ जीव समूह (जैन) ३ कर्म के करने तथा कर्म के फल को भोगने वाला (जैन) ४ सम्यक् ज्ञानादि के वश से कर्म समूह का नाश करने वाला (जैन)

जीवदव्व—सं०पु० [सं० जीवद्रव्य] छः द्रव्यों में से एक, जीव द्रव्य (जैन)

जीवद—सं०पु० [सं०] १ जीवन देने वाला. २ शत्रु. ३ वैद्य।

जीवदांन, जीवदांनु—सं०पु०यौ० [सं० जीवदान] १ प्राण रक्षा, (जिसकी मृत्यु होना निश्चित हो, उसकी प्राण रक्षा). २ अपने अधीन या वश में आए हुए किसी अपराधी या शत्रु (जिसको मारना आवश्यक हो) की प्राण रक्षा, न मारने या छोड़ देने का कार्य, प्राणदान।

उ०—वगु विणासी वगु विणासी भीमु आवेइ, वद्धावइ जणु सयलु जीवदांनु तइ देव दिद्धउ केवलिवयणु जु सच्चु किउ त्रिहुं भुयणि जसवाउ लिद्धउ।—पं.पं.च.

जीवधन—सं०पु०यौ० [सं०] जीवों या पशुओं के रूप में संपत्ति।

वि०—परम-प्रिय, प्यारा।

जीवधारी—सं०पु०यौ० [सं०] चेतन प्राणी, जीवित देह, जानवर।

जीवन—सं०पु० [सं०] १ रक्त, खून, रुधिर (अ.मा.)

२ देखो 'जीवण' (रू.भे.)। उ०—१ ढाढ़ी हेक संदेसड़ौ, जीवन लग पहुंचाय। तन वन उत्तर वाळिया, दिखणी वाजौ आय।

—ढो.मा.

उ०—२ मसत महीनौ आवियौ, आवियौ रे जला, अब तो खवर म्हांरी लेय। तो बिन घड़ियन आवड़ै रे, छैला, जीवन उतै इत देह।—लो.गी.

यौ०—जीवनचरित्र, जीवनधन, जीवनबूटी, जीवनव्रतांत, जीवनव्रत्ति, जीवनीय।

जीवनचरित, जीवनचरित्र—सं०पु०यौ [सं० जीवन चरित्र] १ किसी की जिंदगी का हाल, जीवन वृत्तांत. २ वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन का हाल हो।

जीवनद—सं०पु०—१ कमठ (अ.मा.). २ बादल, मेघ।

जीवनधन—सं०पु०यौ० [सं०] १ वह वस्तु या व्यक्ति जो जीवन में परम प्रिय हो, जिंदगी का सर्वस्व. २ प्राणाधार, प्राणप्रिय।

जीवनबूटी—सं०स्त्री०यौ०—संजीवनी।

जीवनवतंत, जीवनव्रत्त, जीवनव्रतांत—सं०पु०यौ० [सं० जीवनवृत्त, जीवन-वृत्तांत] किसी के जीवन का वृत्तांत, जीवनी।

जीवनव्रत्ति—सं०स्त्री०यौ० [सं० जीवनवृत्ति] जीविका, रोजी।

जीवना—सं०स्त्री०—हिम्मत, साहस। उ०—अद्वैस और ऐश्वरीय जीवना जरचौ करै, मान्या करै मंतव्य की करतव्य कौ करचौ करै।

—ऊ.का.

जीवनि—देखो 'जीवण' (रू.भे.)। उ०—१ या वड़ विथा रांम भल जांणै, विरह वसै तन मांही। जन हरिदास हरि महलि पधारौ, कै अब जीवनि नांही।—ह.पु.वा.

उ०—२ दादू दुखिया तब लगै, जब लग नांम न लेहि। तब ही पावन परमसुख, मरी जीवनि येहि।—दादू

जीवनी—सं०स्त्री० [सं० जीवन+रा०प्र०ई] जीवनचरित, जीवन वृत्तान्त.

रू०भे०—जीवणी।

जीवनीय—सं०पु० [सं०] १ दूध. २ पानी।

जीवनीयगण—सं०पु०यौ० [सं०] बलकारक औषधियों का एक वर्ग। (वैद्यक)

जीवन्मुक्त-वि० [सं०] जो सांसारिक मायाजाल से मुक्त हो।

जीवपएसिय—अन्तिम प्रदेश में ही जीव की स्थिति को मानने वाले तिष्य गुप्त आचार्य के मत का अनुयायी (जैन)

जीवपति-सं०पु० [सं०] धर्मराज।

जीवबंधु-सं०पु० [सं०] जीवबंधु, बंधुजीव, बंधूक (अ.मा.)

जीवभासा-सं०स्त्री०यौ० [सं०जीवभाषा]—जन्तुओं की बोली (भाषा)।
उ०—ताहरां कीड़ी कह्यौ—म्हारै पाहुणा आया छै, ले जावण दे मोनुं। इसी वात सांभळि नैं राजाभोज हंसीयौ। राजा जीवभासा सरव जांणतौ।—चौबोली

जीवमाअका-सं०स्त्री०यौ० [सं० जीवमातृका] वे सात देवियां जो माता के समान जीवों का पालन करती हैं—कुमारी, धनदा, नंदा, विमला, मंगला, बला और पद्मा।

जीवरखी-सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार का कवच या सनाह।
उ०—राउत चढिया, सनाह लीधा, किस्या किस्या सनाह, जरहजीण, जीवणसाल, जीवरखी, अंगरखी, करांगी, वज्रांगी, लोहबद्ध लुडि, समस्त संनाह लीधा, सज्जीभूत हूआ।—कां.दे.प्र.

जीवरखौ-सं०पु०यौ०—१ बड़े किले की रक्षा के लिए उसके चारों ओर बने छोटे-छोटे किलों में से एक, छोटा किला। उ०—१ भड़ भुरजां नूं भाळजे, जीवरखा कद जोय। जे जंग जुड़ जीवन रखे, जीवरखा व्है जोय।—रेवतसिंह भाटी
उ०—२ रिणमालोत कहै रिण रूघां, अचड़ तियागी बोल इसौ। जूहविहार किसौ जीवरखौ, केहर रूघां साथ किसौ।—द.दा.
२ जीवन रक्षा का उपाय. ३ प्राण की रक्षा करने वाला, प्राण-रक्षक. ४ एक प्रकार का कवच या सनाह।

जीवरि(खि)ति—देखो 'जीमूतरिखि' (रू.भे.)। उ०—बुध सोनउं कसइ, अढ़ार भार वनस्पति फूलपगर भरइं, धन्वंतरि वइदउं करइं, जिवरि(खि)ति छोरडां रमाडइ, केतु भांमणडां भमाडइ, गौरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ, नारद ढेरउं करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भंडारउ करइं, इसिउ रांवण नरेस्वर।—व.स.

जीवलोक-सं०पु०यौ० [सं०] मृत्युलोक, भूलोक।

जीवसंभ—देखो 'जीवतसंभ' (रू.भे.)। उ०—मेदपाटां तणी नीर राखियौ दूसरा 'मधा' सांमध्रमा तणी वेल रहाड़ी सकत्त। सोहिया विरद मोटा 'जेसाह' जीवसंभ, पाई फतै जीत जंग रहाई प्रभत्त।
—दांनौ बोगसौ

जीवसम, जीवसमौ-वि०—जीव के समान, परमप्रिय, प्यारा।

जीवहत्या, जीवहिंसा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] १ वह दोष जो प्राणियों की हत्या करने से लगता है. २ किसी प्राणी का वध।

जीवांजूण—देखो 'जीवाजूण' (रू.भे.)

जीवांण-सं०पु० [सं०जीव-प्राण] जलाशय, तालाब (ह.नां.)

जीवांणुसासण-सं०पु० [सं० जीवानुशासन] १ जीव की शिक्षा समझ (जैन)
२ इस नाम का एक ग्रन्थ (जैन)

जीवांतक-सं०पु०यौ० [सं०] प्राणियों का वध करने वाला, व्याध।

जीवा-सं०स्त्री० [सं०] १ संजीवनी (अ.मा.). २ पृथ्वी. ३ जीवन. ४ धनुष की डोरी।

जीवाउणौ, जीवाउबौ—देखो 'जिवाणौ, जिवाबौ' (रू.भे.)
उ०—तद फूलमती विचारी औ कुंवर रो ब्राह्मण आसै तौ उवै पासै संजीवन विद्या छै सु जीवाउसी।—चौबोली

जीवाड़णौ-वि०—जीवित रखने वाला, जीवित करने वाला।
उ०—जाहर जग जीवाड़णौ, मांनै दोयण मेह। किणसूं राखै केहरी, संणाचार सनेह।—बां.दा.

जीवाड़णौ, जीवाड़बौ—देखो 'जिवाणौ, जिवाबौ' (रू.भे.)
उ०—१ जीवाड़ी जैदेव की, अत नार मुरारे। तीलोके घर भ्रत्त हुय, सब काज सुधारे।—भगतमाळ उ०—२ पण साबास छै मोटी ठकुरांणी नूं जे थांनू राजी राखिया, म्हांनू सगळां नूं जीवाड़िया।
—कुंवरसी सांखला री वारता
जीवाड़णहार, हारौ (हारी), जीवाड़णियौ—वि०।
जीवाड़िओड़ौ, जीवाड़ियोड़ौ, जीवाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जीवाड़ीजणौ, जीवाड़ीजबौ—कर्म वा०।
जीवाणौ, जीवाबौ, जीवावणौ, जीवावबौ—रू०भे०।
जीवणौ, जीवबौ—अक० रू०।

जीवाड़ियोड़ौ—देखो 'जिवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० जीवाड़ियोड़ी)

जीवाजीव-सं०पु० [सं०] १ जीव और अजीव पदार्थ. २ जीव अजीव के समझने का उत्तराध्यन का ३६वां अध्ययन।

जीवाजूण, जीवाजोण-सं०पु०यौ० [सं० जीवयोनि] जीवयोनि, प्राणीमात्र।
रू०भे०—जीवजूण, जीवांजूण।

जीवाणौ, जीवाबौ—देखो 'जिवाणौ, जिवाबौ' (रू.भे.)
जीवाणहार, हारौ (हारी), जीवाणियौ—वि०।
जीवायोड़ौ—भू०का०कृ०।
जीवाईजणौ, जीवाईजबौ—कर्म वा०।
जीवणौ, जीवबौ—अक० रू०।
जीवाड़णौ, जीवाड़बौ, जीवावणौ, जीवावबौ—रू०भे०।

जीवात्मा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] जीवों की देह में चेतना का व्यापार करने वाला कारण स्वरूप पदार्थ, आत्मा, जीव।

जीवाद-सं०पु०—जीव-जन्तु, प्राणी।

जीवाधार-सं०पु०यौ०—प्राण का आधार, वल्लभ, प्यारा।

जीवापोतौ-सं०पु० [सं० पुत्रजीवकः] पुत्रजीव वृक्ष, पुत्रजीवक (उ.र.)

जीवायोड़ौ—देखो 'जिवायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जीवायोड़ी)

जीवाभिगम—१२९ उत्कालिक सूत्रों में से जिवाभिगम नाम का सूत्र (जैन)
उ०—जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखिवउ, ए सहु अरथ विचारौ जी। सांभळतां भणतां सुख संपदा, हीयडइ हरख अपारौ जी।—स.कु.
२ जीव की समझ, जीव का ज्ञान (जैन)

जीवारी-सं०स्त्री० [सं० जीव] १ जीवन का साधन, जीविका, रोजी।
उ०—१ तितरं गूजरी बाहर-बाहर कर उठी, जवारा रौ लीधौ, कुळ रौ खांपरण, मो गरीबणी री जीवारी गंवाय जाय रे जाय हो चाचा मेरा, म्हारी घोड़ी हेकरण नै बाढ़ी, बीजी घोड़ी ले गयौ, किथी जाऊं।—राव रिणमल री वात उ०—२ दिन रात्री आटी दौड़ावै, दौड़चां विनां न पावै दाद। आलम तणी जीवारी आटौ, आटा लार वंदगी आद।—खूमांणजी खिड़ियौ
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
२ जीवन, प्राण।
रू०भे०—जियारी, जिवारी, जीवारी।

जीवाळू, जीवाळौ-वि० [सं० जीव+रा०प्र० आळ] १ साहसी, हिम्मत वाला, जानदार. २ तेज चलने वाला (ऊंट, मनुष्य, आदि)

जीवावणौ, जीवावबौ—देखो 'जिवाणौ, जिवावौ' (रू.भे.)
उ०—वापौ धवळा ! दाख वळ, तूं जीवावणहार। मो घर रा गाडा तणी, तो खांधै भर भार।—बां.दा.
जीवावणहार, हारौ (हारी), जीवावणियौ—वि०।
जीवाविप्रोड़ौ, जीवावियोड़ौ, जीवाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जीवावीजणौ, जीवावीजवौ—कर्म वा०।
जीवाड़णौ, जीवाड़बौ, जीवाणौ, जीवाबौ—रू०भे०।
जीवणौ, जीववौ—अक० रू०।

जीवावियोड़ौ—देखो 'जिवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० जीवावियोड़ी)

जीवाहन—देखो 'जीमूतवाहण' (रू.भे.) उ०—अन्न काय हरचंद अन्न कज ग (क) हर कहंता। काय समर दधीच काय जीवाहन जंता।
—नैणसी

जीवि—देखो 'जीवी' (रू.भे.) उ०—निराउध कियौ तदि सोनानांमी, केस उतारि विरूप कियौ। छिणियै जीवि जु जीव छंडियौ, हरि हरिणाखी पेखि हियौ।—वेलि.

जीविका—देखो 'जीवका' (रू.भे.)

जीवित-सं०पु०—जीवन, प्राणधारण। उ०—लिखमीवर हरख निगरभर लागी, आयु रयणि त्रूटंति इम। क्रीड़ाप्रिय पोकार किरीटी, जीवित प्रिय घड़ियाल जिम।—वेलि.
वि०सं०—चेतन अवस्था में, जीता हुआ, जिंदा।

जीवितेस-सं०पु०यौ० [सं० जीवितेश] १ सूर्य. २ इंद्र. ३ यम. ४ देह की इड़ा और पिंगला नाड़ी. ५ प्राणों से भी अधिक प्यारा, प्राणनाथ।

जीवियंत-सं०पु०—जीवन का अन्त, जीवितान्त (जैन)

जीविय-सं०पु० [सं० जीवित] १ जीवन, जिंदगी (जैन)
वि०—जो जिंदा हो, जो सजीव हो (जैन)

जीवियट्ठ-क्रि०वि०—जीवन के वास्ते, जीवन के लिये, जीवतार्थ (जैन)

जीविया-सं०स्त्री० [सं० जीविका] आजीविका, जीवनवृत्ति (जैन)

जीवी-वि० [सं० जीविन्] जीने वाला।
सं०पु०—प्राणधारक, प्राणी, जीव (जैन)। उ०—तात ! जो आवु नळ धणी मूं जीवी छइ काज रे। काजनइ आज ज दूत ज मोकळु ए।—नळ-दवदंती रास

जीवेस-सं०पु० [सं० जीवेश] ईश्वर, परमात्मा।

जीवोपाधि-सं०स्त्री० [सं०] जीव की तीन अवस्थायें—स्वप्न, जाग्रत और सुषुप्ति।

जीसा-सं०पु० [सं० जित्, प्रा० जिव = सम्मानसूचक अव्यय शब्द + फा० साहिब = बड़ा] बालकों द्वारा पिता या ताऊ को पुकारा जाने वाला शब्द।

जीह—देखो 'जीभ' (रू.भे.) (ह.नां.) (अ.मा.)। उ०—जपै हरि नांम अहोनिस जीह, संसार तिकां न सतावै सीह।—ह.र.
सर्व०—जिस।
क्रि०वि०—जैसे।

जीहड़ा-सं०स्त्री०—घोड़े की एक जाति (व.स.)

जीहणौ—देखो 'जीमणौ' (रू.भे.)

जीहमग-सं०पु० [सं० जिह्मग] सर्प, नाग (ह.नां.)

जीहांण, जीहांन—देखो 'जहांण, जहांन' (रू.भे.)

जीहा—देखो 'जीभ' (रू.भे.) (ह.नां.)। उ०—थे सिध्धावउ सिध करउ, बहु-गुणवंता नाह। सा जीहा सत खंड हुइ, जेण कहीजइ जाह।—ढो.मा.

जीहाज—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)

जीहाळ-सं०पु० [सं० जीव+रा०प्र० आळ] १ भेड़ बकरी रखने वालों से हर वर्ष कर के रूप में लिया जाने वाला बकरा. २ बकरा
(जैसलमेर)

जीहिंदिय-सं०स्त्री० [सं० जिह्वेन्द्रिय] जीभ, रसेन्द्रिय (जैन)

जीहुं, जीहूं-क्रि०वि०—जैसे। उ०—हुती येटू क्रपा मोपै जीहुं ही तें जणाइ हातां, जुगां जातां जावै नहीं वातां क्रीत जोड़। सुब्रदी अनोप मारू चिरंजी हजार सालां रीज रा वीलाला राजा अगंजी राठौड़।
— जसकरण खिड़ियौ
रू०भे०—जींहू।

जीहैं-सर्व०—जो, जिस।

जीहौ-क्रि०वि०—जैसा। उ०—रथ जो हुवौ जांणवै राखव, सुरां गुर राठोड़ स ओध। कियौ कदन सुर नवसैहसैं, जुजठळ जीहौ अभनमै 'जोध'।—किसनौ सिंढ़ायच

जुं-क्रि०वि०—जैसे, जिस भांति। उ०—जुं मंछी जळ विन मरे, जळ मन जांणै नांह। तुं पिउ की जिय अति कठिण, हुं चाहुं पिय छांह।—ढो.मा.
रू०भे०—देखो 'जूं'।

जुंआड़ौ—देखो 'जुऔ' (अल्पा., रू.भे.)

जुंग—१ देखो 'जंग' (रू.भे.)
२ देखो 'जूंग' (रू.भे.) उ०—१ मौहरी डोरी रेसमी, नौखी चंदण नकेल। रूपाळक फण नाग रंग, बाळक जुंग वकेल।—सू.प्र.

उ०—२ नड़ंग लाख तुंग-तुंग संग जुंग हल्लये। चड़े कि वेल आकुळ समुद्र मेळ चल्लयें।—रा.रू.

जुंगड़ौ, जुंगलौ—देखो 'जूंग' (अल्पा., रू.भे.)

जुंगु—देखो 'जंग' (रू.भे.)   उ०—जुंगुं के जैतवार।—सू.प्र.

जुंगौ—देखो 'जूंग' 'अल्पा., रू.भे.)

जुंजण-सं०पु० [सं० योजन] युक्त करना, जोड़ना (जैन)

जुंजाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.)

जुंजार—देखो 'जूंजार' (रू.भे.)

जुंजवांण-सं०पु० [सं० युद्धवान] जूझने वाला वीर, सुभट।

जुंझाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.) उ०—जंगां जांगी वजे जुंझाऊ, पनंग सीस धूणै जेम, अभंगां वांनैत अंगां जोस में अमाप। धारै खागां उनागां उमंगां आप रंगां धायौ, पमंगा ऊपड़ी वागां ऊ आयौ प्रताप।
—रावत प्रतापसिंह चूंडावत आंमेट रौ गीत

जुंझार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)

जुंटौ-सं०पु०—१ आहते के रूप में खड़ी की हुई पत्थर की पट्टी, (ऐसी कई पट्टियां मिला कर अहाता बनाया जाता है)

क्रि०प्र०—उखेलणौ, रोपणौ।

२ ऊपर से छितराया हुआ छोटा पौधा।

क्रि०प्र०—उखेलणौ।

जुंवाड़ौ—देखो 'जुग्रौ' (अल्पा., रू.भे.)

जुंवारी—१ देखो 'जवारी' (रू.भे.)

उ०—भैरूंसिंघ नै भली विचारी, भलौ निभायौ मेळ। आछी करी जुंवारी मेरी, भलौ दियौ नारेळ।—डूंगजी जवारजी री पड़

२ देखो 'जुग्रारी' (रू.भे.)

जुंही-क्रि०वि०—जैसे। उ०—जुग्राळा ठेल घणौ घाव वूठौ जम्मराव जुंही। वड़िग आववां राव केफां बपरूत।
—रावत रतनसिंह चूंडावत रौ गीत

जु—देखो 'जो' (रू.भे., उ.र.)

उ०—१ स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु, तवति तारू कवण जु समुद्र तरै। पंखी कवण गयण लगि पहुँचै, कवण रंक करि मेरु करै।—वेलि.

अव्य०—१ एक संयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है; कि। उ०—१ ताहरां पातिसाहजी कहियौ जु म्हारै किये तौ मारचौ न जाइ।—द.वि. उ०—२ आपरा परधांन मेल्हि नै कहाड़ियौ जु मोनै सरणै राखौ तौ थां कन्है आऊं—द.वि.

२ पादपूरक अव्यय। उ०—सत्तम प्रहरै दिवस कै, घण जु वाड़ियां जाइ। आंणै द्राख-विजोरियां, घण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो.मा.

३ अवधारणासूचक अव्यय।

जुअ-सं०पु० [सं० युग] १ काल विशेष (जैन)

२ देखो 'जुग्रौ' (रू.भे.)। उ०—कुळ देवी आगळि छोडि अंचळ जुअ नौ आचार। रुखमणी रांम रमंतडां कुण जीपस्यइ कुण हार।
—रुकमणी मंगळ

वि० [सं० युत] युक्त, सहित (जैन)

जुअजुआ—देखो 'जुआ' (रू.भे.)

जुअति, जुअती—देखो 'जुवती' (रू.भे.) (अ.मा.)

जुअन्न-सं०पु० [सं० यवन] मुसलमान, यवन। उ०—जळै आप रै रोस असा जुअन्नं। त्रिणा मात्र जांणै धणी कांमि तन्नं।—वचनिका

जुअळ, जुअळइं, जुअळि-सं०पु० [सं० युगल] वे जो एक साथ दो हों, जोड़ा, युग्म। उ०—१ नकुल अनइ सहदेवु भड़ी जुअळइ जाया वेउ। प्रभु चंद्रप्रभु थापियउ नासिका कूंती देउ।—पं.पं.च.

उ०—२ नितंवणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रुख। जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणै वाखांणै विदुख।—वेलि.

२ देखो 'जुयळ' (रू.भे.) उ०—हिम जे जड़ित हीर जुअळे मोजा जंजीर।—गुं.रू.बं.

जुआंण—देखो जवांन' (रू.भे.)। उ०—१ भालिमि कुळ भांण मन महिरांण जस रस जांण जुआंण। तंढ़ मल तुडि तांण विमळ वखांणि सूरति नांण समांण।—ल.पि.

उ०—२ वीरम भुज बळ गंगदा, सिंह ऊदा सुरतांण। धाटेचा आया धरै, जंगी सबळ जुआंण।—पा.प्र.

रू०भे०—जुआंन।

जुआंणी—देखो 'जवानी' (रू.भे.)

जुआंन—देखो 'जुआंण' (रू.भे.)। उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिके छोगाळा छयल छबीला जुआंन हूसनांइक फूलां रा छोगा नाखीआं थकां फूलां रा चौसर पेहरियां थकां।
—रा.सा.सं.

जुआंनी—देखो 'जवांनी' (रू.भे.)

जुआ-वि०—पृथक (उ.र.)

यौ०—जुअजुआ।

जुआड़ौ-सं०पु०—१ जेठा नक्षत्र।

उ०—जेठ जुआड़ौ। २ देखो 'जुग्रौ' (२) (अल्पा., रू.भे.)

जुआजुई—देखो 'जुवाजुवी' (रू.भे.) उ०—आसालूध अजेपुर आवी, जुग सहू जोवति जुआजुई। लसियौ हाजन प्रोढ़ौ लाडौ, अकबर फौज सचींत हुई।—राठौड़ रतनसिंघ ऊदावत री वेलि

जुआजुऔ-वि०यौ०—पृथक-पृथक, अलग-अलग। उ०—रमि रस अकस सत्ति गति रतनै, जंग खग अंग जुआजुऔ। खंडविहंड हुऔ खेड़ेचौ, हुवइ घड़ा लयलीन हुवौ।—राठौड़ रतनसिंघ ऊदावत री वेलि

जुआठौ, जुआडौ—देखो 'जुग्रौ' (२) (अल्पा., रू.भे.)

जुआर—१ देखो 'जुहार' (रू.भे.) २ देखो 'जवार' (२) (रू.भे.)

३ देखो 'जुआरी' (रू.भे.) उ०—या सारां में सार एक पापां री पूरी। लंपट चोर जुआर जणै गळकट गड़सूरी।—सगरांम

रू०भे०—जूआर।

जुआरभाटौ—देखो 'जवार-भाटौ' (रू.भे.)

जुआरी-सं०पु० [सं० द्यूतकारक:] १ जूआ खेलने वाला (उ.र.)
२ देखो 'जवारी' (रू.भे.)
[सं० युगन्धर, युगन्धरी] ३ बैल, वृषभ (उ.र.)
रू०भे०—जवारी, जुवारी, जुआर, जुवार, जुवारी, जुहारी, जूआर, जूआरी, जूवारी।

जुआळा—देखो 'ज्वाळा' (रू.भे.) उ०—रीझ गज बीज दांवै दहू राह रै, जगै उर दाह रै मठां जुआळा। ऊपड़ै ताहरै करां एहा उडंड, वाह रे वाह 'सौभाग' वाळा।—महादांन महडू

जुआळौ-वि०—जवान, युवा? उ०—सुरंगां रड़क्कै नाळा रै जाहरां सूंडांडंडां, घाव मंडे खेचरां नहट्टां दाव घंत। जुआळा ठेल घणै घाव वूठो जम्मराव जूंही, वड़िग आवधां राव केफां बपख्त।
—रावत रतनसिंह चूंडावत सिसोदिया रौ गीत

जुई-वि० (पु० जुओ) अलग, भिन्न, जुदा। उ०—जुड़सी कद घेनांय फेर जुई। हव काछ अमां वोह दूर हुई।—पा.प्र.
१ देखो 'जुही' (रू.भे.) २ देखो 'जुओ' (१) (रू.भे.)
सं०स्त्री० [सं० द्युति] ३ शोभा (जैन)
[सं०] ४ ज्योति (जैन)
रू०भे०—जूई।

जुओजुआ-वि०यौ०—पृथक-पृथक, भिन्न-भिन्न।

जुऔ-सं०पु० [सं० द्यूत] १ वह खेल जिसमें पराजित व्यक्ति से विजयी व्यक्ति कुछ धन लेता है, द्यूत। उ०—समदरै ऊपरा पांनी वड़रै सूझै। जोरावर दईत सांभळी रिमियौ जुऔ।—पी.ग्रं.
क्रि०प्र०—खेलणौ, रमणौ।
अल्पा०—जूवटउ, जुवटूं, जूवटूं।
[सं० युग, प्रा० जुअ] २ बैलों के कंधों पर रखा जाने वाला लकड़ी का बना उपकरण जब वे छकड़ा, गाड़ी, हल आदि में जोते जाते हैं।
रू०भे०—जुग।
अल्पा०—जंऊड़ौ, जँवाड़ौ, जऊड़ौ, जुंआड़ौ, जुंवाड़ौ, जुआठौ, जुआडौ, जुवाड़ौ, जूंअड़ौ, जूंआड़ौ, जूंवाड़ौ, जूअड़ौ, जूआड़ौ, जूवाड़ौ।
३ देखो 'जुवौ' (रू.भे.) ४ देखो 'जुवाजूवी' (रू.भे.)
वि० (स्त्री० जुई) पृथक, जुदा, अलग। उ०—जतराव महा सिघ पंथ जुऔ। हाय आज भालाळ त्रिकाळ हुऔ।—पा.प्र.
रू०भे०—जुवौ, जूं, जू, जूअ, जूउं, जूऔ, जूवौ।

जुकत, जुकती-सं०स्त्री० [सं० युक्ति] १ उपाय, तरकीब, युक्ति।
उ०—आरीत सदा इण वंस उदार, वाकरे सत्रु नहि करय वार। अब करौ वेग इक आ उपाय, 'विसनेस' जुकत दीनी वताय।—पे.रू.
उ०—जुकती उकती जेण, दाय आई ज्यौं दीधी। काली गैली काव्य, करी सो मालिम कीधी।—मे.म.
२ देखो 'जुगत' (रू.भे.)
रू०भे०—जुक्त, जुक्ति, जुक्ती, जुगति, जुगती।

जुकांम-सं०पु० [अ० जुकाम] एक बीमारी जिसमें शरीर में श्लेष्मा पैदा हो जाने के कारण नाक और मुँह से श्लेष्मा निकलती है, सिर भारी रहता है व दर्द करता है तथा ज्वरांश रहता है, सरदी।
क्रि०प्र०—पकणौ, होणौ।
रू०भे०—जुखांम।

जुक्त—देखो 'जुकत, जुकती' (रू.भे.)
वि०—जुड़ा हुआ, मिला हुआ।

जुक्ति, जुक्ती—देखो 'जुकत, जुकती' (रू.भे.) उ०—तेणि पातिसाहि आयां सांतरि कुण सहइ? कुणइ सहिजइ? कुण की जुक्ती? कुण की प्राप्ती? कुण की माइ वियांणी, जु सांमउ रहइ अणी पांणी?
—अ. वचनिका

जुखांम—देखो 'जुकांम' (रू.भे.) उ०—तकै लपक चोटां तरफ, जी नहि चहै जुखांम। जांण करै 'पातल' जिसा, मरणा घकै मुकांम।
—जुगतीदांन देथौ

जुगंत—देखो 'जुग अंत' (रू.भे.)

जुगंतर-सं०पु० [सं० युगान्तर] १ परिमाण विशेष: २ चार हाथ जमीन (जैन)

जुग-सं०पु० [सं० युग] १ संसार, दुनिया। उ०—१ स्री नारायण संभरां, इण कारण हरि अज्ज। जिण दिन औ जुग छंडहां, तिण दिन तोसूं कज्ज।—ह.र. उ०—२ जुग में मिळणा अजब है मिळ विछड़ौ मत कोय। विछड़ियां मिळणा दुलभ है, रांम करै जदां होय।—अज्ञात
२ पाँच वर्ष तक वृहस्पति के एक ही राशि में स्थित रहने का एक काल. ३ समय, काल। उ०—खाफर घड़ सु साहे खांडौ, राव चाड कनवजे राव। रिणि चढ़ि अचळ मेर द्रू रतनौ, जुग जासी पिण नांम न जाय।—राठौड़ रतनसिंघ ऊदावत री वेलि
४ पौराणिक काल गणना के अनुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये संख्या में चार माने जाते हैं। यथा—सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग।
उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वक्ति व्रह्मसू, नरवर हँस देहनायक।—वेलि.
उ०—२ आगै जोम पराक्रम इसड़ौ। जुग द्वापुरि जोधां मझि जिसड़ौ।—सू.प्र.
मुहा०—जुग-जुग—लम्बे समय तक, वहुत दिनों तक, अनंत काल तक।
५ यजुर्वेद। उ०—रुघ जुग वेद निसींघ है सारव, काटकड़ी वाजै केवांण। लोडति घड़ा रतनसी लाडौ। जुवि हथळेवै जुड़ै जुवांण।
—राठौड़ रतनसिंघ ऊदावत री वेलि
६ एक साथ दो वस्तुएँ, युग्म, जोड़ा। उ०—१ मसतग पवित्र करिस मधुसूदन। वंदे तूझ चरण जुग-वंदन।—ह.र.
उ०—२ साझ आअणेस छतीस। तनि लछण सुभ जुग-तीस।
—सू.प्र.

७ चार की संख्या (डि.को.) ८ वाद्य विशेष (व.स.)

९ देखो 'जुग्गो' (२) (जैन)

वि०—एक और एक का योग, दो।

रू०भे०—जुगि, जुग्ग।

जुगग्रंत–सं०पु० [सं० युगान्त] प्रलयकाल।

रू०भे०—जुगंत, जुगांत, जुगांतक।

जुगग्रंसक–सं०पु० [सं० युगांश, युगांशक] वर्ष, साल (डि.को.)

वि०—युग का विभाजक।

जुगणी—देखो 'जोगणी' (रू.भे.) उ०—परिवार सहै हुवै ग्रपती, जुगणी चवसठ सगति जिती।—सू.प्र.

जुगत–सं०स्त्री०—[सं० युक्ति] १ व्यवस्था, प्रबन्ध। उ०—इण तरै किसनूं री कांम तो पार लंघियो। चंदू री मां खनै टापरी ही जिको ग्रटांणं राखर व्यांव री जुगत बैठायी।—वरसगांठ

२ कौशल, चातुरी। उ०—१ भरियो-भरियो भणै, प्रथम ग्रारंभ पहिचांणो। झाड़ो-झाड़ो जपै, जुगत ग्राखर में जांणो।—ऊ.का.

उ०—२ विविध वणाय-वणाय, जुगत घणी रचियो जगत। कोधी खुसत न काय, रुपिया सरसी, राजिया।—किरपारांम

३ देखो 'जुकत, जुकती' (रू.भे.) उ०—उण दिन ले पदमणि सिघ ग्रांणी। वात कही जिम जुगत वखांणी—सू.प्र.

४ प्रकार, तरह, भांति। उ०—जांणे इंद्रजी घटा करि नै धरती ऊपर पधारिया छै। इण जुगत सों जांन पधारिया छै।

—लाली मेवाड़ी री वात

५ देखो 'जगत' (रू.भे.) ६ तर्क, दलील।

वि०—उचित, ठीक, वाजिव। उ०—इण बाळक री मूंहडी वारै वरस तांई देखणी जुगत नहीं छै।—रिसाळू री वात

जुगति, जुगती–सं०स्त्री० [सं० युक्ति] १ विधि, ढंग।

उ०—१ स्रीखंड पंक कुमकुमी सलिल सरि, दळि मुगता ग्राहरण दुति। जळ क्रीड़ा क्रीड़ंति जगतपति, जेठ मासि एही जुगति।—वेलि.

२ मेल। उ०—सिव-सगती, सम जुगती। सिव हारयउ, जीत्यउ सगती।—ग्र. वचनिका

३ देखो 'जुकत-जुकती' (रू.भे.) उ०—१ सरसती कंठि स्री ग्रिहि मुखि सोभा, भावी मुगति तिकरि भुगति। उवरि ग्यांन हरि भगति ग्रातमा, जपै वेलि त्यां ए जुगति।—वेलि.

उ०—२ च्यार प्रकार की जुगति सात रूपकूं के विधांन। पंच प्रकार की उगति ग्रस्टा विधांन।—सू.प्र. उ०—३ चोरां जुगती कुगती कीनी, भोग भोगणें घण मुख भीनी।—ऊ.का.

४ देखो 'जुगत' (रू.भे.)

जुगनी–सं०स्त्री०—विष्णु मूर्ति का सिर का ग्राभूषण।

जुगनू–सं०पु०—एक प्रकार का कीड़ा जो गुबरैला की जाति का होता है ग्रौर उसका पीछे का भाग ग्राग की तरह चमकता है, खद्योत।

जुगपति, जुगपती–सं०पु०[सं० युग=मिथुन+पति]—चन्द्रमा (ग्र.मा)

जुगपवरु–सं०पु० [सं० युगप्रवर] युगप्रवर। उ०—उयहि जांम जलु रहइ गयणि जांम मह दिणेसरु। तांम पयासिउ सूरि धंमु जुगपवरु जिणेसरु।—ऐ.जै.का.सं.

जुगपहांणु–सं०पु० [सं० युगप्रधान] युगप्रधान। उ०—जुगपहांणु जिण पदम सूरे, नांम ठविउ सुपविता ग्रांणंदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति।—ऐ.जै.का.सं.

जुगपसा–सं०स्त्री० [सं० जुगुप्सा] निंदा, बुराई, घृणा।

जुगबाहु–सं०पु० [सं० युग-बाहु] नवां तीर्थंकर के तीसरे पूर्व भव का नाम (जैन)

वि०—ग्राजानबाहु (जैन)

जुगमंधर–सं०पु०– विदेह के वर्ष (देश) में उत्पन्न एक जिन देव।

उ०—स्री जुगमंधर करुणा सागर, विरहमांण जिणिंद जी। सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमांणंद जी।—स-कु.

जुगम–सं०पु० [सं० युग्म] १ एक साथ दो, जोड़ा, दो।

उ०—१ ररौ ममु जुगम ग्रै ग्रंक बाकी रह्या, प्रसिद्ध तिणसूं करै लिया पियारा। जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमैं, सुर ग्रसुर नाग नर नमैं सारा।—र.रू. उ०—२ निज ग्राठ जोग ग्रभ्यास ग्रहनिस सधै सुर घर जुगम रवि सस।—र.ज.प्र.

जुगमित्त– [सं० युगमात्र] क्षेत्र से चार हाथ प्रमाण देखने वाला (जैन)

जुगरांणी–सं०स्त्री० [सं०युग+राट्] १ युग में रानी रूप, संसार की स्वामिनी, देवी, शक्ति।

उ०—तनि दरसांणी सीतळा, जुगरांणी जगमाय। सरम ग्रही देवा-सुरां, सुख कज धरम सहाय।—रा.रू.

२ नगरवधू, वेश्या।

जुगराज–सं०पु० [सं० युवराज] वह पुत्र जो राज्य का ग्रधिकारी हो। राजा का बड़ा लड़का, युवराज।

उ०—वरसिंघदे धरमातमा हुवो, मथुराजी में स्री केसोरायजी रो देहरो करायो। पातसाह री चाकरी ग्रखंड कीवी नै मुवां पछै टीके जुगराज बैठो सु बैठां पछै केई दिन तो घणो ही तपियो।—नैणसी

जुगळ–वि० [सं० युगल] जो एक साथ दो हो, दोनों, दो (ग्रनेका)

उ०—१ व्रिति कांन सतीखण ग्रणिय वंक। किर कलम जुगळ नभ फरत ग्रंक।—रा.रू. उ०—२ जाया धांधळ रा जुगळ, धाया सुरपुर धांम। नह राया म्रित लोक में, कर जुध ग्राया कांम।

—पा.प्र.

सं०पु०—१ जोड़ा, युग्म. २ देखो 'जुयळ' (रू.भे.)

रू०भे०—जुगाळ।

जुगळियो–सं०पु० [सं० युगलिन्] वह मनुष्य जिसके ४०९६ बाल ग्राज-कल के मनुष्यों के एक बाल के बराबर हों (जैन)

जुगळी–सं०स्त्री० [सं० युगल+रा.प्र.ई] १ मित्र-मंडली. २ जोड़ा, युगल. ३ समूह, झुंड।

जुगवं, जुगव–ग्रव्य० [सं० युगपत्] एक ही साथ, एक समय में (जैन)

जुगवर–वि० [सं० युगवर] युग में श्रेष्ठ, उत्तम।
उ०—सिरि वद्धमांण तित्थे जुगवर, सोहम्म सांमि वंसंमि। सुविहिय चूडामणि मुणिगणी, खरतर गुरुणै थुणस्सांमि।—ऐ.जै.का.सं.
जुगवराज—देखो 'जुगराज' (रू.भे.) उ०—अमदावाद रै सूबै मुराद कूं मेल दीनौ। अै थेट पूगा तद पातसाहजी द्वारा साह नूं जुगवराज दियौ।—द.दा.
जुगांत—देखो 'जुगअंत' (रू.भे.)
जुगांतक–सं०पु० [सं० युगांतक] १ ४९ क्षेत्रपालों में से ४२वां क्षेत्रपाल. २ देखो 'जुगअंत' (रू.भे.)
जुगांतर–सं०पु० [सं० युगांतर] दूसरा समय या जमाना, दूसरा युग।
जुगांवाळी–सं०स्त्री०—अनादि काल से बाल्यावस्था में रहने वाली, देवी, शक्ति, दुर्गा। उ०—आभा नळै नूर छाजै नवी ना मयंक वाळी, छीनालंक वाळी वाजै घंटकाछुद्राळ। जुगांवाळी देहारीपै बेहारी अनंजा जयौ, मेहारी तनंजा जयौ घंटाळी मुद्राळ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
जुगाड़–सं०पु०—व्यवस्था। उ०—१ पाड़-पाड़ोसी कोई पल्लो-ई नहीं छीपै। कनै फूटी कौडी रौ जुगाड़ नहीं।—वरसगांठ
उ०—२ ब्याव रै सागै-सागै, किसनू रै रोटी-पांणी रौ जुगाड़ अर सदा री वास्ता कर दियौ।—वरसगांठ
जुगात–सं०स्त्री०—श्राद्ध पक्ष के अंतर्गत आने वाली चतुर्दशी जिस दिन शस्त्र आदि से मरे हुए का श्राद्ध होता है।
जुगाद–सं०पु०—युग का प्रारम्भ, युगारम्भ। उ०—तूं आद जुगाद आद तूझ हूंता मंडांणी।—केसोदास गाडण
जुगादि, जुगादी, जुगादु–वि० [सं० युगादि] १ सृष्टि का आरंभ, अनादि, अति प्राचीन। उ०—दैणौ मरणौ रीत जुगादु, खत्रियां आदु विरद खरौ। गुर सूरां हूंतां हर मांगै, कमध सीस वगसीस करौ।
—महेसदास कूंपावत रौ गीत
क्रि०वि०—२ परंपरा से।
सं०स्त्री० [सं० युगाद्या] वह तिथि जिससे युग का आरंभ माना जाता है—१ वैशाख शुक्ला तृतीया—सतयुग का आरम्भ.
२ कार्तिक शुक्ला नवमी—त्रेतायुग का आरंभ. ३ भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी—द्वापर का आरम्भ. ४ पूस की अमावस्या—कलियुग का आरंभ।
जुगाळ—१ देखो 'जुगळ' (रू.भे.) उ०—मिळै सद मध्य जमूर जुगाळ। किलक्कत जुग्गनि जांनि कराळ। —ला.रा. २ देखो 'जुगाळी' (रू.भे.)
जुगाळणौ, जुगाळबौ–क्रि०अ० [सं० उद्गिलन = उगलना] घोड़े की जाति के जानवरों को छोड़ कर दूसरे घास खाने वाले मवेशी तथा अन्य पशुओं द्वारा निगले हुए चारे को थोड़ा-थोड़ा कर के गले से निकाल मुंह में लेकर फिर से धीरे-धीरे चवाना, पागुर करना।
जुगाळी–सं०स्त्री० [सं० उद्गाली] घोड़े की जाति के जानवरों को छोड़ कर दूसरे घास खाने वाले मवेशी तथा अन्य पशुओं द्वारा निगले हुए चारे को थोड़ा-थोड़ा कर के गले से निकाल मुंह में लेकर फिर से धीरे-धीरे चवाने की क्रिया, रोमंथ, पागुर।

जुगि—देखो 'जुग' (रू.भे.)
जुगिण—देखो 'जोगणी' (रू.भे.) उ०—मिळि अंत्रावळ सीमाळ, कमळ फूलं फळ कम्मळ। हरखि भरै पिणहार, जुगिण पत्र घड़ा रुधर जळ।—सू.प्र.
जुगेस–सं०पु०यौ० [सं० युगेस] संसार का स्वामी, ईश्वर।
जुगोजुग–सं०पु०—प्रतियुग, युगयुग। उ०—किता तैं फेरा जीत किलंग। जुगोजुग कीध दइत्तां जंग।—ह.र.
जुग्ग—देखो 'जुग' (रू.भे.) उ०—हंसा विड़द विचार लै, चुगै त मोती चुग्ग। नींतर करणा लंघणा, जीणौ कितेक जुग्ग।—र.रा.
जुग्गनि, जुग्गनी, जुग्गिनि—देखो 'जोगणी' (रू.भे.)
उ०—१ किलविकय जुग्गनि सद्द कराळ, खळविकय भूमि किते रुहिराळ।—ला.रा. उ०—२ अति मोद जग्गिनी उल्लसै। हर देवि नारद त्यौं हसै।—वं.भा.
जुग्गदि—देखो 'जुगादि' (रू.भे.) उ०—वर केता बौळिया, कळह केता इक नारी। पुरख न परणी किणिह, आद जुग्गादि कुंआरी।—गु.रु.वं.
जुड़, जुड़ण, जुड़णि–सं०उ०लि०—युद्ध, संग्राम। उ०—१ अवध विच असवारगी वंदे फिरंगांणी। सेल तणा कर वार सह जुड़ खेलण जांणी।
—पाबूदांन आसियौ
उ०—२ आयौ द्रूणाड़ै असुर, पेखे राठवड़ांह। जोवहरां मंडी जुड़ण, पाछे ऊरवड़ांह।—रा.रू. उ०—३ ढाहेवा गजढाल जसवंत छळ मातै जुड़णि। पाटोधर पड़ि ऊपड़ै समहरि रायांसाल।—वचनिका
जुड़णौ, जुड़बौ–क्रि०अ०—१ होना। उ०—जांणतौ सगपण जुड़ै, समकुळ बळ अनुसार। सुता जनक जे हीण सव, दो भी अधिक उदार।—वं.भा.
२ टक्कर लेना, भिड़ना। उ०—१ दळवळां जुड़तां, नगारा वाजिया। जांण कई परभात, गहरी सुर गाजिया।
—महाराजा पदमसिंह री वात
उ०—२ वीर नृपत दत खाग वदीतौ। जुड़ियौ जिता तिता जुध जीतौ।—सू.प्र.
३ प्राप्त होना, उपलब्ध होना। उ०—१ जद सगळा कही महरबांन जिकां नूं गाय भैंस कदै जुड़ी नहीं तिकां रै आपरा प्रताप सूं एक-एक दोय-दोय घोड़ा-घोड़ी छै।—ठाकुर जैतसी री वात
उ०—२ चित सूं आगम चितवै, आ मजबूत उपाध। वक्र जुड़ै न वंछियौ। इण कारण व्है आध।—वां.दा.
उ०—३ जठै इसा जोवार दुसमण तिका मैं म्हारा नायक नै जै जुड़ी अरथात फतै मिळी है।—वी.स.टी.
४ शामिल होना, भाग लेना, मिलना। उ०—पुहु रावत 'धनौ' पराक्रम 'पीथल', घण वळ पौरस दाख घणा। भड़तै समर भांजिया भाला, तें जुड़ दळ दखणियां तणा।
—रावत प्रिथ्वीसिंह चूंडावत आमेट रौ गीत
५ भीड़ लगना, गरदी होना। उ०—जाडा धनवाळा सिंघू तट जुड़िया। गाडा तनपाळा गुज्जर घर गुड़िया।—ऊ.का.

६ एकत्रित होना, इकट्ठा होना। उ०—जस गाडां भरियो जुड़ै, जग मों करै जतन। स्रो आभरणां आभरण, रतनां सिरै रतन।

—बां.दा.

७ जमा होना, जुटना, एकत्रित होना। उ०—परणी रै बगैर तांम्हो नहीं देखै, अजोग कांम देखण सूं आंख ढांपै तो भली बातां, दौलत नैं फतै री जुड़ै।—नी.प्र.

८ बहुत से सदस्यों का एक स्थान पर सभा के रूप में एकत्रित होना। उ०—१ आगै मूगळ भोजराज री दरबार जुड़ियो छो।

—सयणी री वात

उ०—२ तरै आ वात दीवांण ही कबूल करी। दीवांण जुड़ियौ तरै कंवर रतनसी नूं रांणै गांगै कह्यौ।—नैणसी

९ दो वस्तुओं का आपस में संबद्ध होना, संश्लिष्ट होना, जुड़ना। उ०—काळी करै बधावणी, सतियां आयौ साथ। हयळेवै जुड़ियौ जिको, हमें न छूटै हाथ।—बी.स.

१० दो वस्तुओं का आपस में इस प्रकार सटना कि उनके बीच दूरी या स्थान न रहे, जुड़ना. ११ आलिंगन होना, छाती से लगना, चिमटना, लिपटना, गुथना। उ०—अंदर ऊठै आग, विछड़ंतै तो वल्लहा। मन ज सूधै माग, जुड़ियां ठरसी जेठवा।—जेठवा

१२ किसी कार्य में जुट जाना, लग जाना, संलग्न होना, तत्पर होना। १३ एक मत होना, अभिसंधित होना (करना)। १४ गाड़ी आदि में बैलों का जुतना।

क्रि०अ०स०—१५ बंद होना, बंद करना। उ०—१ जुलम ग्रह मांहि रे जकड़ जादम जुड़ै, ले कवण असन्न जळ तणी लेखौ।

—बालावक्स बारहठ, गजूकी

उ०—२ अबुल फाजर आ खबर सुणी जद डरियौ, सो कोट जुड़ बैठियो।—नी.प्र.

१६ युद्ध करना, संग्राम करना। उ०—१ कियौ जुड़ै 'भूवड़ै' कूरम, जड़ सार वप जुवौ-जुवौ। कीमत लाख फतावत कहतां, हमैं रतन कौड़ीक हुवौ।—रांमो आसियो

उ०—२ हरी बहोलां मैं हुवौ, चाढ़ण जळ चहुवांण। जिण दि दहिया जुड़ै, पावक दाव प्रमांण।—वं.भा.

१७ संभोग करना, मैथुन करना. १८ धारण करना, पहिनना। उ०—जुड़ै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठां पंचमुख। वाघ न क्यूं परगह वोळावै, रावत वळियौ तेण रुख।—द.दा.

जुड़णहार, हारौ (हारी), जुड़णियौ—वि०।

जुड़वाड़णौ, जुड़वाड़बौ, जुड़वाणौ, जुड़वाबौ, जुड़वावणौ, जुड़वावबौ, जुड़ाड़णौ, जुड़ाड़बौ, जुड़ाणौ, जुड़ाबौ, जुड़ावणौ, जुड़ावबौ—प्रे०रू०।

जुड़िओड़ौ, जुड़ियोड़ौ, जुड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

जुड़ीजणौ, जुड़ीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

जुड़वाई—देखो 'जोड़ाई' (रू.भे.)

जुड़वाणौ, जुड़वाबौ—देखो 'जोड़ाणौ' (रू.भे.)

जुड़वायोड़ौ—देखो 'जोड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जुड़वायोड़ी)

जुड़वौ-वि०—एक के साथ मिला एक, युग्म। उ०—झिरमिर जुड़वां पांन, रूंख मैंदी रंग भीनौ। दीनौ दीनानाथ, देस में नेह नगीनौ।

—दसदेव

जुड़ाई—देखो 'जोड़ाई' (रू.भे.)

जुड़ाणौ, जुड़ाबौ—देखो 'जोड़ाणौ' (रू.भे.) उ०—पछै ऊमा सांखुली नैं सिणगार करै नैं चौरी मांहे पधारिया। हथळेवौ जुड़ायौ छै।

—लाली मेवाड़ी री वात

जुड़ाणहार, हारौ (हारी), जुड़ाणियौ—वि०।

जुड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जुड़ाईजणौ, जुड़ाईजबौ—कर्म वा०।

जुड़णौ, जुड़बौ—अक रू०।

जुड़ायोड़ौ—देखो 'जोड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

जुड़ावणौ, जुड़ावबौ—देखो 'जोड़ाणौ' (रू.भे.)

जुड़ावियोड़ौ—देखो 'जोड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

जुड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ हुवा हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, भिड़ा हुआ. ३ प्राप्त हुवा हुआ. ४ शामिल हुवा हुआ, भाग लिया हुआ, मिला हुआ. ५ जमघट लगा हुआ. ६ एकत्रित हुवा हुआ. ७ जमा हुवा हुआ, जुटा हुआ, एकत्रित. ८ सभा के रूप में सदस्यों का दरबार लगा हुआ. ९ परस्पर जुड़ा हुआ, सम्बद्ध, संश्लिष्ट. १० परस्पर सटा हुआ, पास आया हुआ, जुड़ा हुआ. ११ आलिंगन हुवा हुआ, छाती से लगा हुआ, चिमटा हुआ, लिपटा हुआ, गुथा हुआ. १२ किसी कार्य में जुटा हुआ, लगा हुआ. १३ एक मत हुवा हुआ, अभिसंधित. १४ गाड़ी आदि में बैलों का जुता हुआ. १५ बंद किया हुआ. १६ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. १७ संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ. १८ धारण किया हुआ, पहिना हुआ।

(स्त्री० जुड़ियोड़ी)

जुज—१ देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—खग वधियौ विखौ बीया सांवतसी, भुज कुण ओडै जुज भर। दांणव देव लड़ै वीरम दे, अमरापुर तेड़ै अमर।—दुरसौ आढौ

सं०पु०—२ कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह।

यौ०—जुजबंदी।

सं०स्त्री०—शतरंज के खेल में चाल द्वारा मोहरों को जमाने का वह ढंग जिसमें एक मोहरे का जोर दूसरे पर लगा रहता है जिससे विपक्ष के खिलाड़ी द्वारा कोई मोहरा मारा नहीं जा सकता।

क्रि०प्र०—बांधणी।

जुजटळ, जुजठर, जुजठळ, जुजठळराओ जुजठिर, जुजठिळ, जुजठिल्ल, जुजथर, जुजथिर—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.)

उ०—१ कहै अनावत सकत जुड़ं, जिम भूप जुजटळ। कहै 'दलौ मुकंद' रौ, हिचूं अोर असि हरवळ। —सू.प्र.

उ०—२ चांपावत भगवांनदास जुजठळ का अवतार। भूठ सूं परामुख साच सूं प्यार।—रा.रू. उ०—३ जग रा रूप वाच रा जुजठिल, इळ रा थंभ कुळ रा अजुआळ। दुख रा हिरण देव रा हिरसण, पनरा प्रवित छ ब्रंन रा पाळ।—ल.पिं.

उ०—४ राजा जुजठळराअौ धारण मन ध्रू-खत्र ध्रमांणै, पाळण पैज प्रतग्या दुरजोधनौ केहरी मांण।—गु.रु.वं.

उ०—५ वांण पत्थ वळि भीम जिसौ अहंकार हिरांमण, जिसौ वाच जुजठिल्ल जिसौ मांगहो द्रोणोण।—गु.रु.वं.

उ०—६ जकण मग जनक वळ प्रथु जुजथर जसा, संक्रमे जकण मग करन सुधा। तजे जग मांझ अदतार रहिया तकां, आंणिया जकां जगमांझ ऊदा।—गुलजी आढ़ौ

उ०—७ जोवै ज्यां धर राज, मुवां सुरराज मिळै मन। किसन थकां हिज कियौ, जूंझ जुजथिर दरजोधन।—सू.प्र.

जुजबंदी–सं०स्त्री०—किताबों की सिलाई का एक ढंग जिसमें आठ-आठ या सोलह-सोलह पन्नों को एक साथ अलग-अलग सिया जाता है।

जुजमांण, जुजमांन—देखो 'जजमांण' (रू.भे.)

उ०—मुहंगा करण हरण दुख मौजां, दैणा द्रव वारण असदांन। दो नजरां अेहौ कत देखां, जगपत हर जेहौ जुजमांन।—जादूरांम आढ़ौ

जुजर—देखो 'जजुरवेद' (रू.भे., अ.मा.)

जुजरवौ–सं०पु०—तोपनुमा एक अस्त्र जो तोप से छोटा होता है। इसे प्रायः ऊँट की पीठ पर बांध कर छोड़ा जाता है।

उ०—केइ आय भड़ कोठार, वारूद लावत वार। सब लेत ससत्र संभाळ, दिढ़ जुजरवा दूनाळ।—पे.रू.

रू०भे०—जुजुरवौ, जुज्रवौ।

जुजराट—देखो 'जजराट' (रू.भे.) उ०—मरदघाट जुजराट लोह लाठ वेढ़ीसणा, खळां समराथ खग झाट खाधा। आठ कम साठ चवसाठ घूमै उठै, मेर गिर चाढ़ लोह लाट 'माधा'।

—माधोसिंह सक्तावत विजयपुर रौ गीत

जुजवळ, जुजवौ–वि० जुदा, अलग, पृथक।

उ०—१ ईसा मांही राजा अचळेसुर सांम्हा आय हाथ जोड़ि जुजवा प्रणांम कर बोलता हुवा राजा कहत है।—अ. वचनिका

उ०—२ नाटिक करै जुजवा रे देवल वेघे विस्तार।—जयवांणी

जुजसटळ, जुजस्टळ, जुजस्ठळ—देखो 'जुधिस्टर' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—जुजस्टळ का सा ज्याग कुमेर का भंडार। इत्यादिक साक पतूं का अंत न पार।—सू.प्र.

जुजांण–सं०पु०—युद्ध। उ०—प्रवाड़ां पोढ़ां ऊपरि पांण। जड़ाले जैवंत जोध जुजांण।—रा.ज. रासौ

जुजायळ—देखो 'जजायळ' (रू.भे.)

जुजायळचौ–सं०पु०—जजायल नामक बंदूकधारी। उ०—कुंवरसी कही 'आंपणी फौज री दोय अणी करौ सो पाखती बरोबर जाय लागौ। जुजायळचियां नूं मुंह आगै दिया वांण बरदार जुजाळचियां रै पीठ पाछै राखिया कठठ कठठ सांम्हां गया, गोळी री बाहरै मार में आइया।—कुंवरसी सांखला री वारता

जुजार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)

जुजिठळ, जुजिठिल, जुजिठिळि, जुजिस्टल, जुजिस्तर, जुजीठळ, जुजीस्टर, जुजीस्टळ, जुजुठळ, जुजुठल्ल—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—१ अकबर हर जुजिठळ अजन। कमंध दुजोण करन्न।

—वचनिका

उ०—२ जुजिठिळ भीम अरिजण जिसा. जण जीता अरि जेरिया। भीखम द्रोण दुरजोध भ्रिगि, खोहिण अढ़ारे खेरिया।

—पीरदांन लाळस

उ०—३ अलाजोध जुजिठिलि हरीचंद जांनी। अला माहरै जीवि आ वात मांनी।—पीरदांन लाळस

उ०—४ वाच का जुजिस्तर साच का विधांन। सत का हरचंद द्रोण सा मांन।—सू.प्र.

उ०—५ वाच री जुजीस्टर माहवीर, गंगेव काछ री अत गंहीर।

—पे.रू.

उ०—६ आचार री करण, भीम री सेल, साच री जुजीस्टळ।

—पन्ना वीरमदे री वात

उ०—७ जुजुठळ हरचंद जेहवौ ऋण भोज कहाई।

—पावूदांन आसियौ

उ०—८ करन द्रोण भीखम्म जिसा भूरी भगदंतह। धन रिद्ध धन रज्ज वाच जुजुठल्ल निभ्रंतह।—गु.रू.वं.

जुजुधांन–सं०पु० [सं० युयुधान] १ इन्द्र, क्षत्रिय. २ सात्यकी का एक नाम जो महाभारत में पांडवों की अोर से लड़ा था।

जुजुरबौ—देखो 'जुजरवौ' (रू.भे.) उ०—लामै मूंडां की रै हंकाई तोप दिल्ली रै बादस्या, अोछै पलां री रे जुजरबा रैखळा।

—लो.गी.

जुज्जुर, जुज, जुज्जर—देखो 'जजुरवेद' (रू.भे.)

उ०—१ रुघ जुज्जुर सांमअथर वणयं जपयं।—गु.रू.वं.

उ०—२ रुघव्य जुज्ज सांम-वेद आमना अथव्वणं।—गु.रू.वं.

रू०भे०—जुजर, जुझ।

जुज्झ—देखो 'जुध' (रू.भे.)

जुज्झण–वि० [सं० योधन] जूझने वाला, युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर।

उ०—अय मांहि वंस मज्झिम तणा, तुळसी रक्खणिया तिके। कुळ सलाउत्त सल रा कहै, जण-जण रण जुज्झण जिके।—वं.भा.

जुज्झणौ, जुज्झबौ—देखो 'जूंझणौ, जूंझबौ' (रू.भे., जैन)

जुज्झाइजुज्झ–सं०पु० [सं० युद्धातियुद्ध] द्वन्दयुद्ध (जैन)

जुज्झार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.) उ०—जिकण झकट में जुज्झार होय एक अयुत तीन हजार सेनां रै साथ अजमेर रा अनीक में सामंतां री दसक खेत पड़ियौ।—वं.भा.

जुजवो—देखो 'जुजबो' (रू.भे.) उ०—रीठ तोपां वंदूकां जुजवा नाळां दै गोळां, वर्के नंगी कव-जग रुद्र-पिया रा वान्नांग। मारवा पात री तरह तिया रा भूगियां मार्ने, 'जुजळ'न' आगो हाथां लियां रै केवांग।—सूरजमल मीसण

जुजराट—देखो 'उजराट' (रू.भे.) उ०—अघियामणा पाट री गुलाली रहे लोग आळो, डरां सान्नो केरां फतै स्यात री अघित। रोसंगी जलाली नवां पाट री वग्रेर राळो. प्रथीनाथ वाळो भालो जुज्राट री पूत।—महाराज बळवंतसिंह रतलाम री गीत

जुझ—देखो जुध' (रू.भे.) उ०—झालै भार जुझ री झालै, सीस अपांणी गरव नहीं। रांणा वडै ऊवरै रांणा, रवि रयणां ज्यां वात रही।—राजरांणा अज्जा झाला, सादड़ी री गीत

जुझक—सं०स्त्री०—स्फूर्ति, फुर्ती। उ०—इण विध कंवर री हिलियो अंग रत सूं धोटियो जांणै कुंकम री रंग, रतना रा मुख री मोड़ भूंहां री मरोड़ नाक री चटण, नांही री पटण, नाचती दीठ, वळ पड़ती पीठ, हाथां री जुझक, अंगां री उझक, तिण समै री सीकरण कहै मंत्र वसीकरण जेही।—र. हमीर

जुझाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.) उ०—१ वहै हैमरां सोख जांणै विवांणं। जुझाऊ घटा भाद्रवा जेम जांणै।—सू.प्र.

उ०—२ खा सांगरियां साग हुवै किरसांण कमाऊ। खा सांगरियां साग वणै है वीर जुझाऊ।—दसदेव

जुझार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)

जुझु—देखो 'जजुरवेद' (रू.भे.) उ०—रघुंस सांम जुझु अयू च्यार वेद के चवै।—सू.प्र.

जुट—सं०स्त्री०—१ एक साथ बंधी, लगी या जुड़ी हुई दो वस्तु। जोड़ी, गुट, समूह, मंडली. ३ अति मेल वाले दो मनुष्य. ४ जोड़ का आदमी या वस्तु।

जुटणौ, जुटबौ—देखो 'जूटणौ' (रू.भे.) उ०—१ जुटा रतनागिर ओरंग जांम। वडा जम रूप बिन्है वरिआंम।—वचनिका

उ०—२ छत्रपती इता मिळि जुटत छत्र। तिल मुसटि पड़त नह भोमि तत्र।—सू.प्र. उ०—३ जुटै वागि रावत नृप जोळा। रोळा हेक मांहि दो रोळा।—सू.प्र.

जुटाड़णौ, जुटाड़बौ—देखो 'जुटाणौ' (रू.भे.)

जुटाड़ियोड़ौ—देखो 'जुटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुटाड़ियोड़ी)

जुटाणौ, जुटाबौ—क्रि०स०—१ किसी कार्य में रत करना, संलग्न करना, लगाना. २ दो या दो से अधिक वस्तुओं को आपस में इस प्रकार जोड़ना कि वे किसी आघात, झटके अथवा युक्ति के विना अलग नहीं हो सकें. ३ दो या दो से अधिक वस्तुओं को परस्पर इस प्रकार भिड़ाना कि उनके बीच में रिक्त स्थान नहीं रहे, सटाना। ४ भिड़ाना. ५ युद्ध कराना. ६ आलिंगन कराना, लिपटाना. ७ संभोग कराना. ८ शामिल करना, वातचीत कराना, मिलाना। ९ भीड़ लगाना, गरदी करना. १० एकत्रित करना, इकट्ठा करना. ११ जमा करना, जुटाना. १२ किसी कार्य के करने का प्रवन्ध करना. १३ एक मत करना, अभिसंधि करना. १४ प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

जुटाणहार, हारौ (हारी), जुटाणियौ—वि०।

जुटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जुटाईजणौ, जुटाईजबौ—कर्म वा०।

जुटाड़णौ, जुटाड़बौ, जुटावणौ, जुटावबौ—रू०भे०।

जुटायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ किसी कार्य में रत किया हुआ, संलग्न किया हुआ, लगाया हुआ. २ सम्बद्ध किया हुआ, संश्लिष्ट किया हुआ, जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ. ३ परस्पर सटाया हुआ. ४ भिड़ाया हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ६ आलिंगन किया हुआ, लिपटाया हुआ. ७ संभोग किया हुआ. ८ वातचीत कराया हुआ, शामिल किया हुआ, मिलाया हुआ. ९ भीड़ लगाया हुआ, गरदी किया हुआ. १० एकत्रित किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ११ जमा किया हुआ, जुटाया हुआ. १२ किसी कार्य के करने का प्रवन्ध किया हुआ. १३ एक मत किया हुआ, अभिसंधित. १४ प्राप्त किया हुआ, उपलब्ध किया हुआ। (स्त्री० जुटायोड़ी)

जुटाळ, जुटाळौ—सं०पु०—युद्ध में जूझने वाला, भिड़ने वाला, योद्धा, वीर। उ०—वे जुटाळा जोध तेगां चाळा नराताळा वागा, क्रोध-ज्वाळा माळा जागा करीटी कुरिंद।—हुकमीचंद खिड़ियौ

जुटावणौ, जुटावबौ—देखो 'जुटाणौ' (रू.भे.)

जुटावणहार, हारौ (हारी), जुटावणियौ—वि०।

जुटाविओड़ौ, जुटावियोड़ौ, जुटाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जुटावीजणौ, जुटावीजबौ—कर्म वा०।

जुटावियोड़ौ—देखो 'जुटायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुटावियोड़ी)

जुटौ—सं०स्त्री०—बैलों की जोड़ी। उ०—सुन के निप के उर कोप बढ़्यो, मघवा मनु दांनव सीस चढ़्यो। ठकुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय संमिल सोरन की।—ला.रा.

रू०भे०—जुट्टि, जुट्टी।

जुटैत—वि०—टक्कर लेने वाला, भिड़ने वाला, योद्धा, वीर।

उ०—हगांमा सुपेखे हंस मोहता वारंगां हुरां, दोमजां दुरदां घड़ा डोहता दवांन। वछूटां सांकळां सरु खूटिया सोहता वागा, जूटिया जुटैत नागा मोहता जवांन।—महादांन महडू

जुट्टि, जुट्टी—देखो 'जुटी' (रू.भे.) उ०—हकी सव तोपन जुट्टि लगाय। धुनी लववांन पताकनि छाय।—ला.रा.

जुठौ—देखो 'झूठौ' (रू.भे.) उ०—भिलै ठगारा भूधरा, साव गरीब सुधार। मतिहीणा मुंठा मिनिख, जुठा देव जुहार।—पी.ग्रं.

जुडीसल—वि० [अं० जुडीशल] न्याय सम्बन्धी।

जुत—वि० [सं० युक्त] १ युक्त, सहित। उ०—१ खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी। जळ जुत ठोही पर टिमकी जंवाळी।—ऊ.का.

उ०—२ निरखंत अग वह नैण, वप कनक कोकल वैण। हरखंत मुख जुत हास, आणंद चंद उजास।—सू.प्र.

२ साथ, संयुक्त। उ०—जिकौ सिकार गयौ सुभड़ां जुत। सोभावती पंवार तणौ सुत।—सू.प्र.

रू०भे०—जुती, जूत।

जुतणौ, जुतबौ–क्रि०अ० [सं० युज अथवा युजिर = योगे] १ बैल, घोड़े आदि का किसी वाहन या हल आदि में जुतना, लगना. २ कार्य में संलग्न होना. ३ सहायता के लिये प्रस्तुत होना, साथ देना. ४ लड़ाई में लगना. ५ भूमि का जोता जाना।

जुतणहार, हारौ (हारी), जुतणियौ—वि०।

जुतवाड़णौ, जुतवाड़बौ, जुताणौ, जुताबौ, जुतावणौ, जुतावबौ, जुताड़णौ, जुताड़बौ, जुताणौ, जुताबौ, जुतावणौ, जुतावबौ —प्रे.रू.।

जुतिओड़ौ, जुतियोड़ौ, जुत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जुतीजणौ, जुतीजबौ—भाव वा०।

जूतणौ, जूतबौ—रू०भे०।

जुतवेध–सं०पु० [सं० युतवेध] एक योग का नाम जो चन्द्रमा के पापग्रह से सातवें स्थान पर होने से होता है या चन्द्रमा के पापग्रह के साथ होने पर होता है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे योग के समय विवाहादि शुभ कर्मों का निषेध है।

जुतवाणौ, जुतवाबौ—देखो 'जोताणौ' (रू.भे.)

जुताई—देखो 'जोताई' (रू.भे.)

जुताड़णौ, जुताड़बौ—देखो 'जोताणौ' (रू.भे.)

जुताड़णहार, हारौ (हारी), जुताड़णियौ—वि०।

जुताड़िओड़ौ, जुताड़ियोड़ौ, जुताड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जुताड़ीजणौ, जुताड़ीजबौ—कर्म वा०।

जुतणौ, जुतबौ—अक रू०।

जुताणौ, जुताबौ, जुतावणौ, जुतावबौ—रू०भे०।

जुताड़ियोड़ौ—देखो 'जोतायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुताड़ियोड़ी)

जुताणौ, जुताबौ—देखो 'जोताणौ' (रू.भे.)

जुताणहार, हारौ (हारी), जुताणियौ—वि०।

जुतायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जुताईजणौ, जुताईजबौ—कर्म वा०।

जुतणौ, जुतबौ—अक० रू०।

जुताड़णौ, जुताड़बौ, जुतावणौ, जुतावबौ—रू०भे०।

जुतायोड़ौ—देखो 'जोतायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुतायोड़ी)

जुतावणौ, जुतावबौ—देखो 'जोताणौ' (रू.भे.)

जुतावणहार, हारौ (हारी), जुतावणियौ—वि०।

जुताविओड़ौ, जुतावियोड़ौ, जुताव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जुतावीजणौ, जुतावीजबौ—कर्म वा०।

जुतणौ, जुतबौ—अक रू०।

जुताड़णौ, जुताड़बौ, जुताणौ, जुताबौ—रू०भे०।

जुतावियोड़ौ—देखो 'जोतायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुतावियोड़ी)

जुति—देखो 'जुत' (रू.भे.) उ०—अनु संजुति लोकेस, कना रवि हूँत प्रजापति। कै रघुवीर कुंवार, लियां अवधेस प्रभा जुति।—रा.रू.

सं०स्त्री० [सं० द्युति] कान्ति, आभा (जैन)

जुत्त–वि० [सं० युक्त] जोड़ा हुआ (जैन) २ देखो 'जुत' (रू.भे.)

जुत्तसेण, जुत्तिसेण–सं०पु० [सं० युक्तिषेण] जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र का आठवां तीर्थंकर। उ०—जुत्तसेण तीरथंकर सेती मोहि रह्या मन मोरा रे। मालति सुं मधुकर जिम मोह्या, मेघ घटा जिम मोरा रे।—स.कु.

जुत्थ, जुथ, जुथ्थ—देखो 'जूथ' (रू.भे.) उ०—१ सरां राज माथै जरा अंक सारै। तरां-पत्र जेही गिरां जुत्थ तारै।—सू.प्र.

उ०—२ वह नारी नर जुथ वेह आवंत लोक अछेह। स्रंगार विध विध साज कमधज्ज दरसण काज।—सू.प्र.

उ०—३ जपै जय साकणि डाकणि जुथ्थ। रचै कई खेल खुडैल वरुथ्थ।—मे.म.

जुथप–सं०पु० [सं० यूथप] यूथपति, दलनायक। उ०—रछ्यक आये गवर के जुथप जुथ जवांन। नर नारी घणथट नरख, चल छोडा चौगांन।—बगसीराम प्रोहित री बात

जुद—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—तेरासै संमत वरस इकतीसै जवन हींदवां हुवौ जुद। रांणै बात अबीढ़ी राखी तेरा पीढ़ी जुड़ी तद।—महाराणा श्री गढ़लक्ष्मणसिंह री गीत

जुदाई, जुदायगी–सं०स्त्री० [फा० जुदाई] १ एक दूसरे से अलग होने का भाव, वियोग, विछोह। उ०—जालम राज जुदायगी, सही न जावै सूल। लाख चवाई लोक री, कीनी सीस कबूल।—अज्ञात

२ पृथक होने का भाव, पृथकता। उ०—१ हिम्मत बडापणै सूं मेळ राखै छै इणरै मांहोमांहै जुदाई मुस्कल छै।—नी.प्र.

उ०—२ रसराज तन कौ विरह नहीं जाऊं, नहीं है जुदाई दिलन की।—महाराजा मांनसिंह, जोधपुर

जुदासिध–सं०पु० [सं० युद्धसिद्ध] बलदेव (ह.नां.)

जुदौ–वि० [फा० जुदा] (स्त्री० जुदी) १ पृथक, अलग, भिन्न।

उ०—१ न खमै ताप हजार नर, जुदौ जुदौ डर जाग। केहर गड़ड़ै क्रोध कर, गाजै गिर गयणाग।—बां.दा.

उ०—२ पित हूँ जुदौ राज घर पाऊं। ज्वाळामुखी कंगुड़ै जाऊं।—सू.प्र.

उ०—३ अर जिण री पहूप कुमार देवसिंह भी इसड़ा पिता रा प्रताप मैं जुदौ ही नांम काढ़ण रै काज पराई पुहवी लेण रा वीररस मैं रंगियौ।—वं.भा.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ अतिरिक्त, अलावा। उ०—१ खरड़ री धरती सारी रा धणी केल्हण हुआ पण पड़िहार अजेस इणां गांवां मांही छ। आ खरड़ विकूंपुर सूं जुदी जैसळमेर वांसै जुदी चाकरी करै।—नैणसी

जुद्द—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—हे सखी ! सूता पर जुद्ध में म्हारा कंत नूं दस दस बीसां ग्रादमी ग्राय नै लड़ण वासतै लूंबिया तिकां नै उठतै ही कंत भजाय दीधा ।—वी.स.टी.

जुद्दत—वि०—युद्ध में प्रवृत्त ।

जुद्दस—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—पाता हर पड़ जुद्दस प्रमांण । रिण रहिया हत भट ग्रासमांण ।—शि.सु.रू.

जुद्दस्थिर—देखो 'जुधिस्टर' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

जुद्धाइजुद्ध—सं०पु० [सं० युद्धातियुद्ध] भयंकर युद्ध, दारुण युद्ध (जैन)

जुध—सं०पु० [सं० युद्ध] संग्राम, युद्ध, लड़ाई, रण, जंग (ह.नां.)

उ०—'ऊमेद' खेत रहियौ ग्रभंग, 'जैसोह' पड़चौ रण करे जंग । 'कीरतेस' खित रिहियौ सक्रोध, जुध 'ईसरेस' पड़ खेत जोध ।

—शि.सु रू.

पर्या०—अनीक (ग्रनीकम्), ग्रभ्यागम, ग्रभ्यामरद, ग्रभ्यास, ग्ररपाळ, ग्रवदीक, ग्राकारीठ, ग्राजि, ग्रायोधन, ग्रारण, ग्राहव, ग्राहुड, ग्रासकंदन, कंदन, कजियौ, कळह, कळि, खळसाळ, जंग, जन्यवत, जुद्ध, झगड़ौ, ताई-प्रयात, तेग-झाट, दमगळ, दुंद, धकचाळ, धमगजर, धमजगर, प्रघात, प्रधन, प्रव, प्रहरण, पीठांण, विग्रह, वेध, भारत, महाहवि, महाहव्य, म्रध, रण, राड़, रीठ, रोळौ, लड़ाई, विग्रह, वेढ, संखि, संगर, संग्रांम, संजुग, संजुत, संपरायक, संप्रहार, संसफोट, समर, समित, समीक, समुदाय, सारझकोळा, हीचण, हूचक ।

क्रि०प्र०—करणौ, चेतणौ, छिड़णौ, छेड़णौ, ठणणौ, ठांणणौ, वढ़णौ, मंडणौ, मचणौ, मचाणौ, मांडणौ, माचणौ, होणौ ।

रू०भे०—जुड़, जुज, जुज्झ, जुझ, जुद, जुध, जुधि, जुध्धस, जूंज, जूंझ, जूज, जूझ, जूह ।

यौ०—जुधजय, जुधवंध, जुधवाहु, जुधराव, जुधविद्या ।

जुधजय—सं०पु०यौ०—हाथ (ग्र.मा.)

जुधवंध—सं०पु०यौ०—युद्ध के नियमों को जानने वाला, योद्धा ।

उ०—कमधजां ग्राज माहेस कौ, कहिजै ग्रौ दूजौ करन । जुधवंध खित्री ग्रम जांणगर, राजि वळै बूझौ 'रतन' ।—वचनिका

जुधवाहु—सं०पु०यौ० [सं० वाहु+युद्ध] वाहुयुद्ध, मल्लयुद्ध ।

जुधराव—सं०पु०यौ० [सं० युद्ध+राट] योद्धा, वीर ।

उ०—जुधराव वकारत जूंझ झला । वरियांम चढ़ौ वैहला-वैहला ।

—पा.प्र.

जुधविद्या—सं०स्त्री० [सं० युद्धविद्या] युद्धविद्या ।

जुधसठर, जुधस्टर—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.)

उ०—कांमीक वने रहै ते वासे, सायै छै वहु लोक । ग्ररजुन ग्यांनी राए जुधस्टर, ग्रांणै छै वहु सोक ।—नलाख्यांन

जुधांण—देखो 'जोधांण' (रू.भे.) उ०—पर त्रिया खोस द्रव लेत पांण, दुज वाळ गाय हत ग्राप पांण । पाप इण नीत वरत न प्रमांण, जो सह किम सकह नाथ जुधांण ।—शि.सु.रू.

जुधाजित—सं०पु० [सं० युधाजित] केकयराज के पुत्र ग्रौर भरत के मामा ।

जुधि—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—सत उकति जेण पंडित प्रमांण । जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जांण ।—रा.रू.

जुधिठिल, जुधिस्टर, जुधिस्ठर, जुधिस्थिर—सं०पु० [सं० युधिष्ठिर] पांच पांडवों में सबसे बड़े का नाम, माता कुंती ने धर्म से इन्हें प्राप्त किया । ग्रपनी सत्यता के कारण ये धर्मराज के नाम से विदित हैं ।

उ०—१ ग्रत प्रव माइ विन्है तौ मिळिया, कहिजै ज्यां वखांण किसा । दुरजोधन जिसड़ा दूसासण, जुधिठिल ग्ररिजण भीम जिसा ।

—गोरधन बोगसौ

उ०—२ ग्रभमांनव जुध भीमेण इसा, सतवादि जुधिस्टर द्रोण जिसा । रिण काज उता ग्रह चाळकरा, धजवंध उठावसु मेर धरा ।

—शि.सु रू.

उ०—३ ग्रमरावत ग्रजवसिंध ग्रमर बोल काजै । जुध ग्राए जुधिस्ठिर वंधव सा राजै ।—रा रू.

पर्या०—ग्रजमीढ़, ग्रजातसत्र, कंक, कउतेय, कुंतीसुत, कुरुईस, कौंतेय, जजठळ, जेठळ, धरमपूत, नवयराज, पंडवतिलक, पंडवेस, पंडीस, पंडुसुत, पांडव, पांडवेय, वयग्रभीत, सतवाची, सत्यग्ररी, सिलियार ।

रू०भे०—जजट्ठळ, जहुट्ठिलौ, जुजटळ, जुजट्ठळ, जुजठर, जुजठळ, जुजठळाराग्रौ, जुजठिर, जुजठिळ, जुजठिल्ल, जुजथर, जुजथिर, जुजसटळ, जुजठिळ, जुजस्टळ, जुजिठळ, जुजिटिळ, जुजिठिलि, जुजिस्टल, जुजिस्तर, जुजीठळ, जुजीस्टर, जुजीस्टळ, जुजुठळ, जुजुठल्ल, जुधस्थिर, जुधसठर, जुधस्टर, जुहिठिर, जुहिट्ठिर, जुहिट्ठल, जुहिट्ठिल्ल, जुहिठळ, जुहिठल्ल, जूठिलु, जूठिलौ, जूठिल्लु ।

जुध्धस—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—इक पोहर रच जुध्धस ग्ररोड़, महवीर दीध रण ग्रसर मोड़ । जिण वार 'सिवा' रा सुभट जंग, ग्रणपार सूर घायल ग्रभंग ।—शि.सु.रू.

जुन—सं०स्त्री०—झूल ।

उ०—झटकै री मारियोड़ी सांकर रौ जांनवर सेखावत न खावै । सूर न खावै । नगारा रै झालरी नीली राखै, ऊंट री जुन नीली राखै । नीला निसांण राखै, सेख बुरहान री दवा सूं मोकळजी रै 'सेखौ' हुवौ जिणसूं ।—वां.दा. ख्यात

जुनाळी—वि०—प्राचीन, पुरानी । उ०—जागी जुनाळी तोपखांनां वाळी जुझाऊ नीवसैं जंगी, ताळी प्रेत काळी खुलै कपाळी तांडीस । वांध ग्राळी ग्रावतां पैल रै हलै ग्रबीह री, पातळा सीह री वागी कराळी पांडीस ।—जवांनजी ग्राढ़ौ

जुनीक्रपीठ—सं०स्त्री० [सं० क्रूपीटयोनि] ग्रग्नि, ग्राग (ना.डि.को.)

जुनीगुजरात—सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार ।

जुनौ, जुन्न, जुन्नौ—देखो 'जूनौ' (रू.भे.) उ०—जुन्नौ भांजि कोमंड तैं भ्रूप जीता । सुरां मोड़ वागौ जतां व्याहि सीता ।—सू.प्र. (स्त्री० जुनी, जुन्नी)

जुन्हा, जुन्हाई–सं०स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्हा] १ ज्योत्सना, चांदनी (जैन) उ०—फुंकार ग्रहेस, हरी चंदरा पयोध फेरा, माहेम त्रिनेरा इंद्र जुन्हाई समाथ। गिरवांरा सहाई मनोज धेनु ग्यांनगोभा, नाराज वरोस सोभा इसी प्रथीनाथ।—र.रू.
२ रोशनी, प्रकाश।

जुपणौ, जुपवौ–क्रि०ग्र०—१ दीपक का प्रज्वलित होना।
उ०—दूजो वधावो भंवरजी रो सै'र मैं, म्हारै वैठ्या महाजरा लोग। हाटचां तो हाटचां जी दिवला जुप रहचा, ग्रगराौ वधावो भंवरजी री पोळ में।—लो.गी.
२ बैल, घोड़े आदि का किसी वाहन या हल आदि में जुतना, लगना।
उ०—१ इतरै में सांवरा ग्राइयो, मेह वरसिया, तळाव भरीजिया, हळ सारा जुपिया।—भाटी सुंदरदास ढीकूपुरी री वारता
उ०—२ तठा परै नदी छै। नदी परै जोड छै। कसवे सोजत हळ २०१ दरवार हासलीक वरसाळू जुपै छै।—सोजत रै मंडळ री वात
३ जत्थे लगना।
जुपणहार, हारौ (हारी), जुपणियौ—वि०।
जुपवाड़णौ, जुपवाड़वौ, जुपवाणौ, जुपवावौ, जुपवावणौ, जुपवाववौ, जुपाड़णौ, जुपाड़वौ, जुपाणौ, जुपावौ, जुपावणौ, जुपाववौ —प्रे०रू०।
जुपिग्रोड़ौ, जुपियोड़ौ, जुप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जुपीजणौ, जुपीजवौ—भाव वा०।
जूपणौ, जूपवौ—रू०भे०।

जुपाणौ, जुपावौ–क्रि०स० ('जुपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ दीपक को प्रज्वलित कराना. २ बैल, घोड़े आदि को किसी वाहन या हल आदि में जुतवाना, लगवाना। उ०—१ बीराती सुणै रथ-जुपाये वैलिया, संहसफरा सैलिया जदन सारा। टैलिया बीर सुत वाजता टांमकां, लाख नव फैलिया व्यूह लारा—खेतसी वारहठ
उ०—२ लासी वाई गवरां नै वैलड़ली जुपाय म्हारा मोरला सांवरा लहरचौ रे।—लो.गी.
जुपाणहार, हारौ (हारी), जुपाणियौ—वि०।
जुपायोड़ौ—भू०का०कृ०।
जुपाईजणौ, जुपाईजवौ—कर्म वा०।
जुपणौ, जुपवौ—ग्रक रू०।
जुपाड़णौ, जुपाड़वौ, जुपावणौ, जुपाववौ—रू०भे०।

जुपायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ (बैल, घोड़े आदि का किसी वाहन या हल में) जुताया हुग्रा, लगाया हुग्रा. २ (दीपक) प्रज्वलित किया हुग्रा। (स्त्री० जुपायोड़ी)

जुपावणौ, जुपाववौ—देखो 'जुपाणौ' (रू.भे.)
जुपावणहार, हारौ (हारी), जुपावणियौ—वि०।
जुपाड़णौ, जुपाड़वौ—रू०भे०।
जुपाविग्रोड़ौ, जुपावियोड़ौ, जुपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
जुपावीजणौ, जुपावीजवौ—कर्म वा०।

जुपावियोड़ौ—देखो 'जुपायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुपावियोड़ी)

जुबली–सं०स्त्री० [ग्रं० योवल] स्मारक महोत्सव, वड़ा जलसा, जश्न।

जुबांन—१ देखो 'जबांन' (रू.भे.) उ०—जुबांन सैं सवाल सबूं कूं सुणाया।—सू.प्र.
२ देखो 'जवांन' (रू.भे.)

जुबांनी—१ देखो 'जबांनी' (रू.भे.) २ देखो 'जवांनी' (रू.भे.)

जुब्बन—देखो 'जोबन' (रू.भे.) उ०—न मरी सु प्रवळ सबसों नियति, दिन कितांक ग्रंतर दिया। सह बिप्र वळै बिजसे सफळ, कांम वयस जुब्बन किया।—वं.भा.

जुमलै–सं०पु०—कुल योग (ग्रमरत)

जुमल्लां–वि०—एक साथ। उ०—जादम भांरा पठांरा जुमल्लां। सैद रहीम सेख सादुल्लां।—सू.प्र.
रू०भे०—जूमलो।

जुमामसजिद–सं०स्त्री०—शुक्रवार को इकट्ठे होकर एक साथ नमाज़ पढ़ने की मसजिद।

जुमलि–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

जुमेरात–सं०स्त्री०—वृहस्पतिवार।
रू०भे०—जमांरात, जमारात, जमेरात।

जुमैं–क्रि०वि० [ग्र० जिम्म:] ग्रधिकार में, उत्तरदायित्व में, ग्राधीन। उ०—ररी मम्मु जुगम ग्रै अंक बाकी रहचा, प्रसिध तिरासूं करै लिया प्यारा। जेरा परभाव निध सिधादिक सो जुमैं, सुर ग्रसुर नाग नर नमैं सारा।—र.रू.

जुमौ, जुम्मौ–सं०पु०—१ शुक्रवार. २ देखो 'जमौ' (रू.भे.)
३ देखो 'जिम्मौ' (रू.भे.)

जुय–सं०पु० [सं० युग] पांच वर्ष का समय विभाग (जैन)

जुयळ–सं०पु० [सं० युगल] १ चररा, पैर। उ०—जैतां तरणी रीत ग्रजवाळी, खागां मुहे पाड़िया खळ। जे 'राजोत' ईढ़रां जातां, जड़िया वासग सर जुयळ।—तेजसी खिड़ियौ
२ वस्त्र (जैन). ३ देखो 'जुगळ' (रू.भे.)
वि०—पृथक, भिन्न, ग्रलग।
रू०भे०—जुग्रळ, जुवळ, जूग्रळ।

जुर–सं०पु० [सं० ज्वर] शरीर की स्वाभाविकता से ग्रधिक ताप या गरमी की ग्रवस्था जिससे ग्रस्वस्थता प्रकट हो, बुखार। उ०—हरि जिरासूं दांणव हररा, जिकरा विखम जुर जाय। विरह मिटावरा वल्लभा, उर ग्रब दीजै ग्राय।—र. हमीर
रू०भे०—ज्वर।

जुरक्क–सं०स्त्री०—प्रहार। उ०—विजक्क वळक्क जुरक्क जरक्क। सेलक्क धमक्क मचक्क सहक्क।—सू.प्र.

जुरड़ौ–सं०पु०—कांटों से बने ग्रहाते में कांटों को कुचल कर बनाया हुग्रा रास्ता। उ०—रांमदास हररांमदास रै, वाड़ै गोवा वढ़िया

है। जठी नठी नूं कर कर जुरड़ा, खिलसावग खड़भड़िया है ।

—ऊ.का.

जुरजोधन—देखो 'दुरयोधन' (रू.भे.)

जुरट–वि०—हृष्ट-पुष्ट, मजबूत ।

जुरणो, जुरबो—देखो 'जुड़णो, जुड़बो' (रू.भे.) उ०—काळंजर घेरणो नवनाग अमदार मिळ, सूर सकबंधी जुर मूवां आप वक्र में। चितावर घेरणो सुलतांन हूं अलावदीन, बारा वरस जुध कळकांत भयो दळ में।—महाराजा रायसिंह री गीत

जुरणहार, हारो (हारी), जुरणियो—वि० ।

जुरिओड़ो, जुरियोड़ो, जुरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

जुरीजणो, जुरीजबो—कर्म वा० ।

जुरती–सं०स्त्री०—आवश्यकता, जरूरत । उ०—जुरती नहि आवन जावन की, फुरती नहि रांड फसावन की। परवाह न पाट पटंवर की, अघ चाह सु कंवर अंबर की।—ऊ.का.

जुरम–सं०पु० [अ० जुर्म] अपराध, कसूर ।

क्रि०प्र०—आणो, करणो, लागणो, होणो ।

जुरमपेसा–सं०पु० [अ० जरायम-पेशा] चोरी, डाके आदि से अपनी जीविका चलाने वाले लोग ।

जुरमांनो–सं०पु० [फा० जुर्मानः] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े, अर्थ-दंड, धन-दंड ।

रू०भे०—जरीवांनो, जरीमांनो, जरीवांनो ।

जुररो–सं०पु० [अ० जर्राह] १ चीर-फाड़ करने वाला हकीम, अस्त्र-चिकित्सक, वैद्य. २ एक प्रकार का पक्षी जिसे छोटे छोटे पक्षियों की शिकार करने की शिक्षा दी जाती थी । उ०—१ नगारै डंको वागो छै। मीर सिकारां नै हुकम हुवो छै। बाज, जुररा, वहरी, सिकरा, लगड, चिपक, तुरमती साथ लीजै छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ हमैं तीतरां ऊपर बाज छूटै छै। कारवांनकां ऊपर जुररा छूटै छै। तिलारां ऊपर वासा छूटै छै। लवां ऊपर सिकरा छूटै छै। वटेरां ऊपर तुरमती छूटै छै। बोवड़ां ऊपर चिपक छूटै छै। कुरजां ऊपर लगड छूटै छै। कुलंगां ऊपर कुही छूटै छै। इण भांत देसोत राजेसर सिकार खेलै छै।—रा.सा.सं.

जुरसंध, जुरसिंध—देखो 'जरासंध' (रू.भे.)।

जुरा–सं०स्त्री० [सं० जरा] १ वृद्धा अवस्था, बुढ़ापा ।

उ०—आहेड़े जमरांण डांण मंडे दीहाड़ी, सर क्रम वंध संधिया चाप आवरदा चाडी। मोह वास मंडवै विघन सड़वा विसतारै, कर हाका हाकंत जुरा कुत्ती हलकारै। चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति निजर काळ देखै नयण। म्रिग जीव सरण मारीजतो, राख-राख रावा-रमण।—ज.खि. उ०—२ भै छाडो निरभै भजो, गुणां रहित गोपाळ। अगम ठौर आणंद सदा, जुरा जनम नहि काळ।—ह.पु.वा.

२ मृत्यु, मौत, अवसानकाल। उ०—१ जोग विचारी जुरा हम जीति, अगम वस्त सो पाई। निरभै भया निरंतरि मेळा, उलटी ताळी लाई।—ह.पु.वा. उ०—२ वाघउत ऊचरै, सुणो खट-तीस वंस, जुरा आगळि रहै वदूं जाहीं। भोज वीकम तणी सुजस सारै भुयण, नरां तिण वार रा मंडप नाहीं।—राव गांगो

रू०भे०—जरा ।

जुराधीस–सं०पु० [सं० जराधीश] कामदेव (अ.मा.)

जुराफ—देखो 'जिराफ' (रू.भे.). उ०—मन भावै उदमाद मुखा हुन गाफ री। विरछ विलूंबी वेल क जुगत जुराफ री।—र. हमीर

जुरारी–सं०पु० [सं० ज्वर+अरि] १ तापों का नाश करने वाला, ज्वरारि, ईश्वर। उ०—अला तूझ उवारण जयो जगदीस जुरारी, नरहर गुरु हरनाथ निमो निकळंक निजारी।—पी.ग्रं.

[सं० जरा+अरि] २ सदैव युवा रहने वाला, ईश्वर ।

जुराळ–वि०—१ गहरा. २ बहुत ।

जुरासंद, जुरासंध, जुरासिंधि, जुरासीद—देखो 'जरासंध' (रू.भे.)

उ०—१ मछकंद सरिस दीन्हीं मुगति, काळ तणो सिरि क्रोधियो। जुरासंध इसो सवळो जवन, लिखमीवर नां लोधियो।—पी.ग्रं.

उ०—२ जाळंदर जुरासीद दसकंद जांणता, कित ही गया न जांणू कोय। चवरी हण मोटै मैंगळ चड, लाडा गरब न कीजै लोय।

—ओपो आढ़ो

जुरियोड़ो–भू०का०कृ०—युद्ध किया हुआ, भिन्न, जुदा ।

(स्त्री० जुरियोड़ी)

जुळ–वि०—पृथक, अलग, भिन्न, जुदा ।

उ०—कळ हेवा चूक कूंभक्रन रांणा, जगत तणां गुर दुरंग जुळ। काढ़्यां अचरज किसो कटारी, काढ़्या जिण पेंतीस कुळ।

— महारांणा कुंभा री गीत

जुळकणो, जुळकबो–क्रि०अ०—टकटकी लगा कर देखना ।

उ०—अनै त्यागवाळी वेठी जुळक जुळक जोवै।—भि.द्र.

जुळख–वि०—व्याकुल। उ०—क्रिसीकारी बोवैं सिटल घर सोवै सुख करैं। जवैं बाळैं रोवैं जुळख मुख जोवैं दुख दरैं।—ऊ.का.

जुळगो–सं०पु०—जलाशय के आसपास का रक्षित घास का मैदान।

उ०—घोड़ियां-घोड़ा जुळगा मांहे दांवणा दे नै छोडज्यो।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

जुळणो, जुळबो–क्रि०अ०—१ मंद गति से चलना, विचरना ।

उ०—१ जूंवां सिर में जुळै, जुळै डाढ़ी में जूंवां। जूंवां कपड़ां जुळै, मिळै छुटकारो मूंवां।—ऊ.का. उ०—२ छायां तांणी छांन, झूंपड़ी वरखा वरखै। जोड़ जिनावर जुळै, जियारी फोगां परखै।—दसदेव

२ गमन करना, जाना। उ०—जांणी जीवण नै जिण तिण मिस जुळिया। पांणी पीवण नै पूरब दिस पुळिया।—ऊ.का.

३ संयोग होना, मिलना। उ०—कोपियो कांन डऊं सुण कराळ। जिम घीरत सींचियो जुळ ज्वाळ।—रांमदांन लाळस

४ प्रज्वलित होना ।

५ स्पर्श होना ।

जुळणहार, हारौ (हारी), जुळणियौ—वि० ।

जुळवाड़णौ, जुळवाड़बौ, जुळवाणौ, जुळवावौ, जुळवावणौ, जुळवावबौ—प्रे०रू० ।

जुळाड़णौ, जुळाड़बौ, जुळाणौ, जुळावौ, जुळावणौ, जुळावबौ—क्रि०स० ।

जुळिश्रोड़ौ, जुळियोड़ौ, जुळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

जुळीजणौ, जुळीजबौ—भाव वा० ।

जुलफ—सं०स्त्री० [फा० जुल्फ] पीछे या गालों पर लटकने वाली लम्बे बालों की लट । उ०—१ मौसर भमर अहर परवाळक । विहुंवै जुलफ जांण अहि वाळक ।—सू.प्र. उ०—२ हित सूं आसक होत, होत भली छवि भाळ री । जुलफ वंधे मन मीन, वणी रुख जाळ री । रू०भे०—जुलुफ । —वां.दा.

जुलफकार—सं०स्त्री० [अ० जुल्फिकार] हजरत अली की तलवार का नाम । उ०—जुलफकार कर मेलियै, आवै जो अभिरांम । किलमांयण आगै कदे, छोडूं नह संग्रांम ।—पा.प्र.

जुलम—सं०पु० [अ० जुल्म] १ अत्याचार । उ०—१ बोलौ धीमा वालहा, हीयै चुवै छै हार । जी इतरौ अब तौ जुलम, करौ न राजकंवार ।—र. हमीर उ०—२ विण जुध कारज वाघ रै, दूजी नावै दाय । एक अनेकां ऊपरा, जुलम करेवा जाय ।—वां.दा.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

२ अन्याय अनीति ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

रू०भे०—जलम, जुलमांणी, जुलमांणौ, जुलुम ।

जुलमांणौ—वि० [स्त्री० जुलमांणी] १ जुलम या अत्याचार करने वाला, अन्यायी, अत्याचारी । उ०—जिन्हां तज जुलमांणी एक सराहियां —र.ज.प्र.

२ देखो 'जुलम' (रू.भे.) उ०—जालिम खुरम करे जुलमांणौ । भोम पड़ै नव खंड भगांणौ—गु.रू.व.

जुलमी—वि० [अ० जुल्मी] जुल्म या अत्याचार करने वाला ।

उ०—सूरज की वीरत वरन साख । जुलमी की चीरत हम जनाख । —ऊ.का.

कहा०—जुलमी रौ खेल गरीब री मौत—अत्याचारी का तो मनोरंजन (खेल) होता है और गरीब की जान चली जाती है तर्थात् शक्तिशालियों या धनियों के ऐशो-आराम में निर्बल (गरीब) मारे जाते हैं ।

जुलाई—सं०स्त्री०—अंग्रेजी तिथि-पत्र के अनुसार सातवां महिना । यह ३१ दिन का होता है ।

जुळाणौ, जुळाबौ—क्रि०अ०स०—१ स्पर्श कराना, फेरना, सहलाना ।

उ०—आगै कनखळ सैल हिमाळै उतरी धरणी, सागर-पूतां सरग पुगावण गंगा सरणी । भौंह चढ़ंतां अंब हंसण मिस भाग उड़ाती, करां-तरंगां चंद जटा-हर हाथ जुळाती ।—मेघ.

२ मंद गति से चलाना, विचराना. ३ गमन कराना, भेजना. ४ संयोग कराना, मिलाना. ५ प्रज्वलित कराना ।

जुलाव—सं०पु० [अ० जुल्लाब, फा० जुलाब] १ दस्त लगने वाली दवा ।

क्रि०प्र०—देणौ, लागणौ, लेणौ ।

२ दस्त, रेचन ।

क्रि०प्र०—लागणौ ।

रू०भे०—जुल्लाव ।

जुळायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्पर्श कराया हुआ, फेरा हुआ, सहलाया हुआ. २ मंद गति से चलाया हुआ, विचराया हुआ. ३ गमन कराया हुआ, भेजा हुआ. ४ संयोग कराया हुआ, मिलाया हुआ. ५ प्रज्वलित किया हुआ ।

(स्त्री० जुळायोड़ी)

जुलाल—सं०स्त्री०—एक प्रकार की बड़ी बंदूक । उ०—तुपक्कनि तोप जमूर जुलाल । परध्घन सूल गदा भिंदिपाळ ।—ला.रा.

जुलावा—देखो 'जुलाहा' (रू.भे.)

जुलावौ—देखो 'जुलाहौ' (रू.भे.)

जुलाहा—सं०स्त्री०—कपड़े बुनने का व्यवसाय करने वाली एक जाति । इस जाति के लोग मुसलमान होते हैं ।

रू०भे०—जुलावा, जुल्लावा, जुल्लाहा ।

जुलाहौ—वि० [फा० जौलाह] कपड़ा बुनने वाला, तंतुकार ।

पर्या०—जुलावौ, तंतुवाय, वणकर ।

रू०भे०—जुलावौ, जुल्लावौ, जुल्लाहौ ।

जुळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ मंद गति से चला हुआ, विचरा हुआ. २ गया हुआ, गमन किया हुआ. ३ संयोग किया हुआ, मिला हुआ. ४ प्रज्वलित हुवा हुआ. ५ स्पर्श हुवा हुआ ।

(स्त्री० जुळियोड़ी)

जुलुफ—देखो 'जुलफ' (रू.भे.)

जुलुम—देखो 'जुलम' (रू.भे.)

जुळूस—सं०पु० [अ० जुलूस] १ उत्सव और समारोह की यात्रा ।

क्रि०प्र०—काडणौ, निकाळणौ ।

२ किसी उत्सव का समारोह ।

क्रि०प्र०—होणौ ।

जुल्फ—देखो 'जुलफ' (रू.भे.)

जुल्म [अ०] देखो 'जुलम' (रू.भे.)

जुल्लाव—देखो 'जुलाव' (रू.भे.)

जुल्लावा—देखो 'जुलाहा' (रू.भे.)

जुल्लावौ—देखो 'जुलाहौ' (रू.भे.)

जुल्लाहा—देखो 'जुलाहा' (रू.भे.)

जुल्लाहौ—देखो 'जुलाहौ' (रू.भे.)

जुवंगव—सं०पु० [सं० युवगव] तरुण बैल (जैन)

जुव-वि० [सं० युवन्] तरुण, जवान (जैन)

जुवइ—देखो 'जुवती' (रू.भे., जैन)

जुवक-वि०पु० [सं० युवक] (स्त्री० जुवती) युवक, तरुण।

सं०पु०—जवान आदमी, तरुण पुरुष।

जुवणौ, जुववौ —देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू.भे.)

जुवति, जुवती-सं०स्त्री० [सं० युवती, पु० जुवक] युवती, तरुणी, प्राप्त यौवना (स्त्री०) उ०—जिण विध कवि मुख सूं जिलै, वयती व्है वरणांह। जुवती तन हूंता जिलह, इण विध आभरणांह।—बां.दा.

सं०स्त्री०—जवान स्त्री (ह.नां., अ.मा.) उ०—जसवंत जुवति जे जहहि जीव, दहनोदय दहही प्रथक पीव। नस्चित पतिव्रत लोक नेम, प्रत्येक करहि परलोक प्रेम।—ऊ.का.

रू०भे०—जुअति, जुअती, जुवइ, जूवती।

जुवनासव-सं०पु० [सं० युवनाश्व] मानधाता का पिता तथा प्रसेनजित का पुत्र एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। (सू.प्र.)

जुवर—देखो 'जुर' (रू.भे.) उ०—जांन्हूं डैरू जोय बिगत दुख भेद बतावौ। आधासीसी आंखि जुवर कुण सूळ जतावौ।—ऊ.का.

जुवरज्ज-सं०पु० [सं० यौवराज्य] १ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तब तक का राज्य (जैन) २ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जब तक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तब तक का राज्य। (जैन)

३ युवराजपन (जैन) ४ देखो 'जुवराज' (रू.भे.)

जुवराज, जुवराजकुमार, जुवराय-सं०पु० [सं० युवराज] १ राजा का ज्येष्ठ पुत्र जिसे भविष्य में राज्य मिलने वाला हो, पाटवी कुमार। उ०—दिल अंतर एह विचारी दसरथ, धर पदवी जुवराज सधीर। सो देणी विसवाहीवीसै, राज जोग दीसै रघुवीर।—र.रू.

२ राजा का वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।

उ०—१ चढ़े वखतेस असां जुध चाह। मनो जुवराज लंकां जुध माह।—शि.सु.रू. उ०—२ राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महा-मंडलेस्वर, सामंत लघुसामंत तलवर...।—व.स.

रू०भे०—जुगराज, जुगवराज, जुवरज्ज।

जुवळ-सं०पु०—१ बैलों की गरदन पर जोतने के लिये रखा जाने वाला जुआ। उ०—निज तेज सरति चत्र जुवळ नाळि। भव कमळ जंत्रि सूची कि भाळि।—रा.रू.

२ युगल, दो। उ०—रुहिर रळतळ, प्रछड़ पड़ अचळ। जुवळ अणियळ जुड़ै करिवा जंत।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ देखो 'जुयळ' (रू.भे.) उ०—१ सुणी वात रांणां सुरतांणां, जुवळ सेस चे सीस सजड़। पंच मुख हुतौ अनै पाखरियौ, 'अमरौ' अनै चढ़ियौ अनड़।—नीमाज ठा. अमरसिंह री गीत

उ०—२ कुळां छतीसां सरम 'कलावत', कर खग ग्रह दाखतै कळ। आगमनां हयवाहां अगळ, जम ही दै विमुहा जुवळ।—अज्ञात

जुवलिय-वि० [सं० युगलित] १ युग्म रूप से स्थित (जैन) २ युग्म-युक्त (जैन)

जुवांण—१ देखो 'जवांन' (रू.भे.) उ०—१ कसीसत बांण जुवांण कवांण बिहूं बळ छूटत फूटत बांण।—सू.प्र.

उ०—२ ढोलउ-मारू पउढ़िया, रस मइं चतुर-सुजांण। च्यारे दिसि चउकी फिरइ, सोहड़ भूप जुवांण।—ढो.मा.

२ देखो 'जवांन' (रू.भे.)

वि०—दूसरा।

जुवांणी-सं०स्त्री०—कुलाँच, छलाँग. २ देखो 'जवांनी' (रू.भे.)

३ देखो 'जवांनी' (रू.भे.)

जुवांन —देखो 'जवांन' (रू.भे.) उ०—१ मारग मांहीं एक जुवांन ब्राह्मणी अपणा भरतार नूं साथै लियां मिळी।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ अहरे अहर लगाइ तने तन मेळिया। (परिहां) जांणि क गांघी-हाट जुवांने भेळिया।—ढो.मा.

२ देखो 'जवांन' (रू.भे.)

जुवांनी—१ देखो 'जवांनी' (रू.भे.) २ देखो 'जवांनी' (रू.भे.)

जुवाजुवी—देखो 'जूवाजूवी' (रू.भे.)

जुवाड़ौ—देखो 'जुओ' (२) (अल्पा० रू.भे.) उ०—पीनणी अर पळूंड ऊंखळी किरूं किवाड़ा। ऊभी कील ऊखाड़, भेरणा जबर जुवाड़ा। —दसदेव

जुवाव—देखो 'जवाव' (रू.भे.) उ०—आगै बाजार रै सिरै गया जद लोग फेर पूछी उहां नूं पण ओ ही जुवाब दियौ। —गौड़ गोपाळदास री वारता

जुवार—१ देखो 'जुआरी' (रू.भे.) उ०—वेस्या नेह जुआर धन, काती अंबर छार। पाछल पोर अऊत घर, जात न लागै वार। —अज्ञात

२ देखो 'जवार' (२) (रू.भे.) ३ देखो 'जुहार' (रू.भे.)

जुवारड़ा—देखो 'जुहार' (१) (अल्पा. रू.भे.)

जुवारड़ौ—देखो 'जुहार' (२, ३) (अल्पा. रू.भे.)

जुवारी—१ देखो 'जुआरी' (रू.भे.) ऊ०—जुवारो घर रिद्ध कस, माकड़ कंठै हार। गहली माथै वेवड़ी, कुसळ हूं केती वार। —पंचदंडी री वारता

२ देखो 'जवारी' (रू.भे.)

जुवाळ—देखो 'ज्वाळा' (रू.भे.)

जुवियोड़ौ—देखो 'जोवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जुवियोड़ी)

जुवौ—देखो 'जुओ' (रू.भे.) उ०—१ चोरी करसी चोर, जार करसी नित जारी। हिंसा हिंसावांन, जुवा रमसी जुवारी।—ऊ.का.

उ०—२ रमै तूं रांम जुवा घरि रंग। तुं ही ज समंद तुं ही ज तरंग।—ह.र.

उ०—३ थयौ हिव हेक जुवौ किम थाय। मिळेगौ नीर गंगोदक मांय।—ह.र.

उ०—४ जुवा खेल जीता हयोहत्थ जूटा । खुभै छेहड़ा तेहड़ा तांम खूटा ।—सू.प्र.

जुव्वण, जुव्वणि, जुव्वन—देखो 'जोवन' (रू.भे.) उ०—१ गंगनांमि गंगेउ भरणीजइ क्रमि क्रमि जुव्वणि, तिणि पसरीजइ वीज तणी ससि रेह जिम ।—पं.पं.च.

उ०—२ मुंज भणइ मुणाळवइ, जुव्वन गयां न भूरि । जइ सक्कर सय खंड किय, तोइ स मीठी चूरि ।—अज्ञात

जुसिअ, जुसिय–वि० [सं० जुष्ट] प्रसन्न (जैन)

जुसोई-सं०स्त्री० [सं० योष = युप = सेवायाम] आज्ञा (ह.नां.)

जुहर—देखो 'जोहर' (रू.भे.) उ०—तेरमैं दिन जुहर कर रांणी लखमसी रतनसी कांम आया ।—नैणसी

जुहरणौ, जुहरवौ—देखो 'जुहारणौ, जुहारवौ' (रू.भे.)

जुहरियोड़ौ—देखो 'जुहारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जुहरियोड़ी)

जुहल–सं०पु०—युद्ध ।

जुहविडार–वि०—१ सेना का संहार करने वाला ।

जुहार–सं०पु० [सं० युगधार] १ अभिवादन, नमस्कार ।

उ०—१ ईखं तूझ कमळ ऊदावत, जनम तणौ गौ पाप जुवौ । हेकण वार ऊजळा हींदू, हर सूं जांण जुहार हुवौ ।

—महारांणा प्रताप री गीत

उ०—२ ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणगार अपार । आस्यां तउ मिळस्यां वळै, नरवर कोट जुहार ।—ढो.मा.

उ०—३ उठै भीमी री भाई विठू तिण नूं भीमू कहियौ—जो अचळदास जी थांनूं जुहार कहियौ छै ।

—लाली मेवाड़ी री वात

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, कहणौ, कहाणौ, दैणौ, लैणौ, होणौ ।

अल्पा०—जवारड़ा, जुवारड़ा, जुहारड़ा, जुहारा, जुहारौ, ज्वारड़ा, ज्वारड़िया ।

२ जवाहिरात, हीरा-पन्ना । उ०—१ लसणिया नील झळक्क, दुति वंस गोमीदक्क । चत्र असी जाति उचार, जिण वार लूटि जुहार ।

—सू.प्र.

उ०—२ धुगधुगी सोव्रन धार । जिण वीच जड़त जुहार ।—सू.प्र.

३ जौहरी । उ०—ताहरां कुंवर कह्यौ—डबी कीमत कराया सूंपौ । ताहरां डबी खोली । जुहार बुलाय कीमत कराई ।

—पलक दरियाव री वात

अल्पा०—जवारड़ौ, जुवारड़ौ, जुहारड़ौ, जुहारौ, ज्वारड़ौ, ज्वारड़ियौ

४ आराध्य देव को चढ़ाया जाने वाला प्रसाद, देव प्रसाद, नैवेद्य ।

उ०—आडी छड़ी न आपवै, आवौ वरण अढ़ार । आयस क्यूं वैठा अठै, जीमौ जाय जुहार ।—पा.प्र.

क्रि०प्र०—करणौ, चढ़ाणौ, जीमणौ, दैणौ, लेणौ ।

५ ईश्वर या किसी देवी-देवता के प्रति विनय और समर्पण का भाव प्रकट करने वाला कार्य, अर्चना, अर्चा, पूजा । उ०—आसोज रै दसराहे नूं जुहार करणै नूं आवां तद सारां नूं भेळा कर कहौ गांव में हळ लार टका घाल लेयस्यां ।

—भाटी सुंदरदास वीकूपुरी री वारता

क्रि०प्र०—करणौ ।

६ किसी देवता की विशेष रूप से पूजा करने की प्रतिज्ञा या संकल्प, मनौती, मानता, मन्नत । उ०—अवकै सांवरियै राजी-खुसी राख्या तौ भादवा में जरूर रांमदे वावा रै जावणौ है । ठेट छिनुआ में कमठा माथै म्हूं कांम करतौ जद एकर मरतौ-मरतौ वच्यौ हौ । जद री ई जुहार वोल्योड़ौ है जो हालतांई वाकी ईज है । भली करजौ रूणेचा रा राव म्हे तौ खड़ मांणसिया हां ।—रातवासौ

क्रि०प्र०—करणौ, वोलणौ ।

७ वह योद्धा जो परोपकार करता हुआ वीर गति को प्राप्त हो और वाद में जनता द्वारा पूजा जाय । उ०—सूअै पड़ियार ईंदा रा वेटा गोपाळ नै मारियौ । गोपाळसर गांव जठै गोपाळ ईंदा रौ देवळ है । जाभोरी जुहार कहावै ।—वां०दा०ख्यात

क्रि०प्र०—कहाणौ, मांनणौ, होणौ ।

८ देखो 'जवारौ' (रू.भे.) उ०—ताहरां राजा वीरभद्र कांमदार परधांन नै वुलाय नै फुरमायौ—दायजौ तैयार कियौ छै सो अव ले आव । वीस हाथी, पचीस घोड़ा, लाख दोय रौ गहणौ, जुहार लाख एक रौ, इतरौ ही कपड़ौ दियौ ।—पलक दरियाव री वात

क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, लैणौ ।

९ देखो 'जवार' (२) (रू.भे.)

रू०भे०—जंवार, जह्वार, जवार, जुआर, जुवार, जुहारी, जूआर, जोहार ।

जुहारड़ा—(वहु०) देखो 'जुहार' (१) (अल्पा. रू.भे.)

उ०—पसु लासूवा पिल पड़ै सै, रवै न टोडा टारड़ा । छड़ी वूंघरां मिस लुळ करां, नित घर भोंर जुहारड़ा ।—दसदेव

जुहारड़ौ—देखो 'जुहार' (२, ३) (अल्पा. रू.भे.)

जुहारणौ, जुहारवौ–क्रि०स०—१ अभिवादन करना, नमस्कार करना ।

उ०—उभै चख मही रै अगन भटकै अजर, गाज घण जुही रै वाज घूसां गजर । खोटहड़ कही रै अदन ऊभौ खजर, नहीं रे जुहारण जिसौ आवै नजर ।—वदरीदास खिड़ियौ

२ पूजा करना, अर्चना करना । उ०—प्रणम्मै पग्ग परम्म प्रवीत, गायत्री गौरि सावित्री सीत । जुहारै पग्ग जिसा जयदेव, सेवग्ग अनेक करै पग सेव ।—ह.र.

३ प्रसाद चढ़ाना । उ०—देव जुहारण देहरइ चाली, सहिय ससभांणी साथी री माई ।—स.कु.

४ मन्नत करना, मनौती मनाना ।

जुहारणहार, हारौ (हारी), जुहारणियौ—वि० ।

जुहारिओड़ौ, जुहारियोड़ौ, जुहारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

जुहारीजणो, जुहारीजबो—कर्म वा० ।

जुहारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अभिवादन किया हुआ, नमस्कार किया हुआ. २ पूजा किया हुआ, अर्चना किया हुआ. ३ प्रसाद चढ़ाया हुआ. ४ मनत किया हुआ, मनोती मनाया हुआ ।

(स्त्री० जुहारियोड़ी)

जुहारा—१ देखो 'जंवारा' (रू.भे.) २ देखो 'जुहार' (१)

(अल्पा० रू.भे.)

जुहारि, जुहारी—१ देखो 'जवारी' (रू.भे.) उ०—तद पांच पांच मुहरां चार चार रुपिया चार चार नारियळ सारी सासुवां जुहारी देय आसीस दीवी ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'जुहार' (अल्पा० रू.भे.)

जुहारो—देखो 'जुहार' (अल्पा० रू.भे.)

जुहिट्ठिर, जुहिट्ठिल, जुहिट्ठिल्ल, जुहिठळ, जुहिठल्ल—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.) (जैन)

उ०—१ वळभद्र पहिळाद वभीखरण 'रतनो' रुखमांगद अमरेस। मांझी हुवौ भीच कुळ मंडरण, सहकारी जुहिठळ सारीस।

—दूदो

उ०—२ देवी गदा रै रूप भुजभीम साई, देवी साच रै रूप जुहिट्ठल्ल ध्याई ।—देवि.

जुही-सं०स्त्री० [सं० यूथिका, प्रा० जूहिया] सफेद सुगंधित फूलों वाला एक छोटा किन्तु बहुत घना पौधा या झाड़ या इसका पुष्प । इस पौधे की पत्तियां छोटी तथा ऊपर नीचे से नुकीली होती हैं (अ.मा.)

उ०—चंपा, मरवा, मोगरा, जुही जाये केतकी छै ।

बगसीरांम प्रोहित री वात

(रू०भे०—जुई, जूहिय, जूही)

जूं-सं०स्त्री० [सं० यूका] (बहु व० जूंआं, जूंवां) एक प्रकार का छोटा स्वेदज कीड़ा जो जीवों के बालों में पलता है । इस जाति का चीलर नामक कीड़ा मनुष्य के कपड़ों में पड़ता है । उ०— जूंवां सिर में जुळै, जुळै डाढ़ी में जूंवां । जूंवां कपड़ां जुळै, मिळै छुटकारौ मूंवां ।

—ऊ.का.

क्रि०प्र०—काढ़णी, निकाळणी, पड़णी ।

२ देखो 'जुवौ' (रू.भे.)

जूंअड़ी—देखो 'जुग्रो' (२) (अल्पा० रू.भे.)

जूंअरौ-सं०पु०—पशुओं के चरने का मैदान ।

जूंआड़ी—देखो 'जुग्रो' (२) (अल्पा० रू.भे.)

जूंग, जूंगड़ो जूंगलो, जूंगो-सं०पु० [सं० जांङ्गिक] ऊँट (अ.मा.)

उ०—१ वहंती इनी पंथि ओपं वहीरं, नदी हेम थी ले चली जांणि नीरं । कतारां कटट्टं चलै जूंग काळा, वहै वादळा जांणि भाद्रव्व-वाळा ।—वचनिका

उ०—२ चसळकै जेम लावां चड़स, जिकै अपारां जूंगलां । कज भार सारवांनां कठठ, अहियां नुवतां गूंगलां ।—वखतौ खिड़ियौ

रू०भे०—जुंग ।

अल्पा०—जुंगड़ौ, जुंगलौ, जुंगौ, जूंगड़ौ, जूंगलौ, जूंगौ ।

जूंज—देखो 'जुव' (रू.भे.)

जूंजणौ, जूंजबौ—देखो 'जूंझणौ, जूंझबौ' (रू.भे.)

उ०— पोळियां में बैठोडा भाभोसा वरजिया, मत जाओ कंवर झगड़ा री लार (ए), भोमियाजी झगड़ै जूंजिया ।—लो.गी.

जूंजळ—देखो 'जूंझळ' (रू.भे.)

जूंजळी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का घास विशेष जिसके झाड़ू बनाये जाते हैं ।

जूंजळी-सं०पु०—गोबर और मल आदि खाने और इकट्ठा करने वाला एक काले रंग का कीड़ा । यह गोबर की गोलियां लुढ़काता पाया जाता है, गुबरैला । (शेखावाटी)

जूंजाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.)

जूंजार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)

जूंजियोड़ो—देखो 'जूंझियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० जूंजियोड़ी)

जूजुग्रो, जूंजुवौ, जूंजूग्रो, जूंजूवौ—देखो 'जूजुग्रो' (रू.भे.)

स्त्री०—जूंजुइ, जूंजुई, जूंजुवी, जूंजूइ, जूंजूई, जूंजूवी ।

जूंझ—देखो 'जुव' (रू.भे.) उ० १ जोवै ज्यां घर राज, गुवां सुर-राज मिळै मन । किसन थकां हिज कियौ, जूंझ जुजथिर दरजोधन ।

—सू.प्र.

ऊ०—२ जसराज हरा कर फतह जूंझ । तखत री लाज मरजाद तूझ ।

—वि.सं.

जूंझणौ, जूंझबौ-क्रि०अ० [सं० युध] युद्ध करना । उ०—१ जद तद सूझै जूंझणौ, वाघ न लागा वीर । इणरै जात सुभाव औ, सोहै समै सरीर ।—बां.दा.

उ०—२ वीर पुरस री स्त्री आपरा पती नै जूंझतौ देख कहै छै ।

—वी.स.टी.

जूंझणहार, हारौ (हारी), जूंझणियौ—वि० ।

जूंझवाड़णौ, जूंझवाड़वौ, जूंझावणौ, जूंझावौ, जूंझवावणौ, जूंझवा-वबौ, जूंझाड़णौ, जूंझाड़वौ, जूंझाणौ, जूंझावौ, जूंझावणौ, जूंझाववौ

—प्रे०रू० ।

जूझिग्रोड़ो, जूझियोड़ो, जूझ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

जूझीजणौ, जूझीजबौ—भाव वा० ।

जूजणौ, जूजबौ, जूजणौ, जूजबौ, जूझणौ, जूंझबौ—रू०भे० ।

जूंझमंड, जूंझमल्ल-वि०—योद्धा, वीर, सुभट । उ०—जवर भुजां डंड जूंझमल, रंग है कण रढ़रांण । पव ऊजळ नरपाळ में, पिंड पोरस अप्रमांण ।—पा.प्र.

जूंझळ, जूंझळाट-सं०स्त्री०—झुंझलाहट । उ०—मोवन-नै मन-ई मन घणी-ई जूंझळ आई पण जोर कांई चालै ।—वरसगांठ

क्रि०प्र०—आणी ।

जूंझाऊ–वि० [सं० यौद्धिक] १ युद्ध सम्बन्धी, युद्ध का।
उ०—कोई वीर स्त्री ढोलण नूं कहै छै घाड़ौ हुवौ तथा दुसमणां वित्त लीधौ उण वेळा ढोली बाहर री ढोल जूंझाऊ अने खातो घणौ लियौ।—वी.स.टी.
२ वीररसपूर्ण।
रू०भे०–जुंजाऊ, जुंझाऊ, जुजाऊ, जुझाऊ, जूंजाऊ, जूंझाऊ।

जूंझार–वि० [सं० युद्धकार] १ परोपकार के लिये युद्ध कर के वीरगति पाने वाला जो बाद में पूजा जाता है। उ०—थांरा भाभोसा कागद म्हेलियौ। सोवन हळियौ हाकण घरे आवौ ओ जूंझारजी, झगड़ै किण विध जूंजिया।—लो.गी.
२ युद्ध में वीर गति पाने वाला। उ०—प्राजळ चख वेगम अंसुपात, जमना जळ काजळ वहन जात। उण धार त्रिवेणी तीर आय, जूंझार हुवै सो मुगत पाय।—वि.सं.
३ शक्तिशाली, बलवान।
कहा०—जाडा जकैई जूंझार—जो संख्या में अधिक होते हैं वे ही शक्तिशाली होते हैं।
रू०भे०–जुंजार, जुंझार, जुजार, जुज्झार, जुझार, जूंजार, जूज्झार, जूंझार।

जूंझियोड़ौ–भू०का०कृ०—युद्ध किया हुआ।
(स्त्री० जूंझियोड़ी)

जूंट—देखो 'जूट' (रू.भे.) उ०—१ तेल सिंदूर से चरचि धमळूं के जूंट जोय। टल्लूं सूं दोवड़ै गजपीठ होय।—सू.प्र.
उ०—२ अबै पातिसाहजी घोड़ी लाख दोय लीयौ नै गढ़ रौ घणौ गाढ़ सुणियौ। जरै वडी वडी नाळ सौ जूट जुटै, तिसी सईकड़ां बंध लीनी।—वीरमदे सोनगरा री वात

जूंठौ–सं०पु०—१ बाजरा ज्वार आदि के पौधों का वह भाग जो फसल काट लेने पर जमीन में गड़ा रहता है. २ इस अवशेष का जड़ सहित उखड़ा हुआ भाग।
क्रि०प्र०—खींचणौ।

जूंण–सं०स्त्री०– [सं० योनि] १ जन्म, योनि। उ०—देखी जूंणां दोय, नार पुरख भेळा निपट। कहसी वातां कोय, जोग तणी जी जेठवा।
—जेठवा
क्रि०प्र०—आणी, लेणी।
२ जीवन, जिन्दगी। उ०—ज्यूं ओ तौ कुत्ते आळी जूंण पूरी करै है।
क्रि०प्र०—विताणी।
३ देह, शरीर। उ०—वीकर जासी माजनौ नै देवै गदां री जूंण। मांरां में टावयां पड़ै नै ऊपर लदसी लूण।—सगरांम
क्रि०प्र०—मिळणी।

जूंण–सं०पु० [रा०] कच्चे मकान की छाजन में रस्सी से दिये जाने वाले बंध। उ०—रावटी पुरांणी हो गई जे हां जी कोई टपकण लाग्या जूंण।—लो.गी.
रू०भे०—जोन, जोनि, जोनी।
४ शक्ति बढ़ाने के लिये ऊँट को खिलाया जाने वाला मांस।
क्रि०प्र०—देणौ।
५ ऊँट के पैरों का ऊपरी भाग. ६ ऊँट के बैठने का ढंग.
७ खाट के मध्य की उन सूतलियों का समूह जिनके आधार पर खाट की बुनाई की जाती है (शेखावाटी) (मि० 'जीव' ७)
८ मरुस्थल में पैदा होने वाला 'खींप' नामक पौधा.
वि०वि०—देखो 'खींप'।
९ इस पौधे से बट कर तैयार की हुई रस्सी. ११ घास के पुआल बाँधने का उसी घास का बंधन।
रू०भे०–जूण, जूरिणम।

जूंन—देखो 'जूंण' (रू.भे.) उ०—सगपण करतौ थाकौ तूं रड़वड़ियौ संसार रे, एक एक की जूंन में तूं ऊपनौ अनंत वार।—जयवांणी

जूंनौ–वि० [सं० जीर्ण] (स्त्री० जूंनी) पुरानी, जीर्ण, प्राचीन, जर्जर।
उ०—जंगळ जंगळ में जूनी जणियांणीं। धोळा धोरां री धूनी धिणियांणी।—ऊ.का.

जूंबरिक–सं०पु० [अ० जंबूरक] छोटी तोप। उ०—भाख सत्रां खट-तीस भाखीजै, घर पुड़ घाय निहाइ ध्रुवै। भीरोहर कर भाठ जूंबरिक, हुळ हाथळ जिहि भगति हुवै।—दूदौ

जूंवाड़ौ—देखो 'जुओ' (२) (अल्पा. रू.भे.)

जूंसर, जूंसरू, जूंसहरी, जूंसारी—देखो 'जूसर' (१) (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—जूंसहरी भ्रूह नयण त्रिग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र। वाळी किरि वांकिया विराजै, चंद रथी ताटंक चक्र।—वेलि.

जूंहर—देखो 'जौहर' (रू.भे.) उ०—तिलक छपर गुहिलोत कै घरि जूंहर हूया छै, सीहोरि राळू कै घरि जूंहर हूया छै, सातल-सोम कै घरि जूंहर हूया छै, हठ के राजा हमीर के घरि जूंहर हूया छै, राजा कांन्हड़ दे के घरि जूंहर हूया छै।—अ० वचनिका

जू–सं०पु०—१ भगवान के भक्त, हरिजन. २ मित्र. ३ राक्षस.
४ आकाश. ५ वायु. ६ सांप, नाग (एका.)
७ देखो 'जुओ' (रू.भे.) उ०—१ निरंतर नळ जू रमइ, हारइ लख कोडि रे। व्यसन किमइ मेल्हइ नहीं, मोटी लागी खोडि रे।
—नळ-दवदंती रास
उ०—२ जळा बोळ घड़ी बीस वाजता अढ़ंगा जूझ, जू जू अंगा छंगा हुवै दुमंगा डाळ जेम।—हुकमीचंद खिड़ियौ
८ देखो 'जूवाजूई' (रू.भे.) उ०—वाहै हाय हुवै हयवाहां, आंक अणी सिर फूटे अंगि। बींदणी बींद विन्हैं समवादे, जू रमिया सारे रिण जंगि।—दूदौ
वि०—१ जीर्ण, पुराना (एका.)
क्रि०वि०—१ शीघ्र, जल्दी (एका.) २ जो कि। उ०—कुण की जुक्ती, कुण की प्राप्ति ? कुण की माइ वियांणी, जू सांमउ रहइ अणी पांणी।—अ. वचनिका

नर्व०—जो। उ०—महिखासुर जू माइ मर, जइ महिखासुर मरइ। मुर छुटइ सुर-राट, वार तुहारी वीस-हति।—अ. वचनिका

जूअ—देखो 'जूवो' (रू.भे.) उ०—जूअ रमइ वेहू जणा, पासा ढाळइ तेह रे। नळ हारइ कूबर जीपइ, दैवह योग गृह रे।

—नळ-दवदंती रास

जूअड़ो—देखो 'जूओ' २ (अल्पा., रू.भे.)

जूअळ—सं०पु०—१ कदम, डग, पैंड। उ०—रिणमाल जोध उण वाररां, बळ अणमाप भुअस्वळां। वाधियो प्रांण वहमंड नूं, जांणक बावन जूअळां।—रा.रू.

२ देखो 'जुयळ' (रू.भे.)

जूआड़ो—देखो 'जूओ' २ (अल्पा., रू.भे.)

जूआर—देखो 'जुआर' (रू.भे.) उ०—प्रवाड़ै अगंजी राजकँवार, पातिसाहां अभैसाह जैत जूआर।—रा.रू.

जूआरड, जूआरत, जूआरी—देखो 'जुआरी' (रू.भे., उ.र.)

उ०—१ जूआरत मोहि जांण नृप, करहु दया तुम आज। करी प्रसन्न देवी तुम्हीं, सार देहु मम काज।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ भरतार हींडइ कुव्यसनइ, नारी लजवाइ रे। आंगुळीइ देखाडणउं, जूआरी कहिवाइ रे।—नळ-दवदंती रास

जूई—१ देखो 'जुई' (रू.भे.) उ०—पछै प्रांण छूटा। ताहरां सीरख समेत दागिया। काढ़े तो हाड संकळि एक-एक जूई जूई हुवै तिण वास्तै सीरख समेत दागिया।—द.वि.

२ देखो 'जुही' (रू.भे.)

जूउं—देखो 'जुओ' (रू.भे.) उ०—मनुस्य चींतवइ कांम जूउं, हुइ जूई परि रे। चींतविउं कांई कांम न हुइ, जांणेज्यो खराखरि ए।

—नळ-दवदंती रास

जूउ—वि० [सं० युतः] १ सहित, साथ (उ.र.) २ सम्पन्न (उ.र.)

जूओ—१ देखो 'जुओ' (रू.भे.) उ०—१ तरै दीवांण नै रावजी तो भेळा बैठा नै पंवार सारूं जूओ थाळ दीधो।

—राव रिणमल री वात

उ०—२ जूअै सो कीधी जिका, कही न जावै काय। नळ पांडव सिरखां नृपति, मूक्या हार मनाय।—पी.ग्रं.

२ हंस (अ.मा.)

जूड़णौ, जूड़बौ—१ देखो 'जुड़णौ, जुड़बौ' (रू.भे.)

उ०—तुली ढाल रूड़ी घली काळ ओपां। अली जोट जूड़ी हली ज्वाळ तोपां।—वं.भा.

२ बांधना, बंधन में डालना।

जूड़ाजूड़—वि०—घना वृक्ष।

जूड़ियौ—सं०पु०—बैलों के पांव बांधने का बकरी या ऊँट के बालों का बना रस्सा।

जूड़ियोड़ो—देखो 'जुड़ियोड़ो'। (स्त्री० जूड़ियोड़ी)

जूड़ी—सं०स्त्री०—तम्बाकू के पत्तों या टहनियों का बंधा छोटा पुआल।

जूड़ो—सं०पु०—१ बालों को लपेट कर शिर पर लगाई जाने वाली गाँठ। उ०—१ दांत रा, छळां रा, चंदण रा, चखड़ी रा, कांगसियां सूं केस सुंवारजै छै। केसां रा जूड़ा बांधजै छै। ऊपरा मखहूल रा डोरा बांधजै छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ जठै प्रतपियो प्रगट जो, हर अवतार हमीर। नीसरतो जूड़ा महीं, नित निरझर नद नीर।—वां.दा.

२ शामिल बंधे हुए दो पशु. ३ पशुओं के पैर बांधने की रस्सी.

४ देखो 'जुओ' २ (अल्पा., रू.भे.) उ०—कैंणां आखड़िया जूड़ा दै कांधै। वैंणा बळघां रै राखड़ियां बांधै।—ऊ.का.

५ देखो 'जोड़ो' (रू.भे.)

जूज—देखो 'जुध' (रू.भे.)

जूजओ, जूजवौ—देखो 'जूजुओ' (रू.भे.) उ०—१ चांपा ऊपर चूक, ऊदा कदै न आदरै। रंगिया धनियै रूक, जिण जिण माथै जूजवा।

—धनजी, भीमजी रा दूहा

उ०—२ खंडया अनेक आकिति खळां, जोति हेक वप जूजवा। जां मध्य राज राजेस्य री, हिंगळाज परगट हुवा।—मे.म.

उ०—३ वेल्हतो गजां हैथाट लागां अटळ, रीठ वागां खगां दुवै राहां। जोध जसराज पूगो भलो जूजवो, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां।

—राठौड़ महाराजा जसवंतसिंघ गजसिंघोत री गीत

जूजाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.)

जूजार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)

जूजिआर, जूजियार, जूजीयार—सं०पु० [सं० युद्धकार] योद्धा, बहादुर।

जूजुओ, जूजुवौ, जूजूउं, जूजूओ, जूजूयौ, जूजूवौ—वि० [सं० युत+अयुत = युतायुत, प्रा० जुआजुअ] (स्त्री० जूजुइ, जूजुई, जूजुवी, जूजूइ, जूजूई, जूजूवी) पृथक, भिन्न, दूर, अलग, जुदा।

उ०—१ सुभवार म्हूरत जोग दिन, तत अभीच साधै तरां। जूजुआ सिरै वाझै जितां, हुआ जीण सिर हैमरां।—रा.रू.

उ०—२ औद्रक्कै आगरो हुई दिल्ली हलचल्ले। जाट वाट जूजुवा देस वैराट दहल्ले।—रा.रू.

उ०—३ सौ दूहा तेईस सुज, नांम सहत निरधार। जोड़ देखाळं जूजूवा, सुणो रांम जस सार।—र.ज.प्र.

उ०—४ सांधिइ सांधि जूजुई कीधी, थर पाडेवा लागा। ऊपरि विका हाथीया घोड़ा, घण तणै घाए भागा।—कां.दे.प्र.

उ०—५ इम विलवंती व्याहणउं हवउं। महिता जोउं गिउ जूजूउं।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—६ मलिक तणा जूजूआ मरातब, मांहि भला झूझार। दळ जोयंतां दीस आथम्यउ, तुहि न आवइ पार।—कां.दे.प्र.

उ०—७ वस्त्र वव्या री नारी मेहेली ऊतारी अति नेहो। थायां जूजूयां, अति दुख पांम्यां राजा रांणी वेह।—नळाख्यांन

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

रू०भे०—जूंजुओ, जूंजुवो, जूंजूओ, जूंजूवो, जूजओ, जूजवो।

जूझ—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—सावळां तणी दे झीक आखाढ़-सिंघ,

दुरित तै मेछदळ भांजि दाय । वप तणी टाळ कीधी नहीं 'वैरड़ै', काळ री चाळ ग्रहि जूझ कीयौ ।

—कछवाहौ वैरसल खंगारोत री गीत

जूभणौ, जूभबौ—देखो 'जूंभणौ, जूंभबौ' (रू.भे.)

उ०—सती वळै जूझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज । दाता माया ऊघमैं, नांम उवारण काज ।—बां.दा.

जूभाऊ—देखो 'जूंभाऊ' (रू.भे.)

जूभार—देखो 'जूंभार' (रू.भे.) उ०—वडौ ठाकुर हुवौ । वडौ दातार, वडौ जूभार, वडौ मांणस. जबादि जळहर ।—नैणसी

जूभियोड़ौ—देखो 'जूंभियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जूभियोड़ी)

जूट–सं०पु० [सं०] १ समूह । उ०—रूंखां रा जूट रांमचंद री वांनरी सेन्या ज्यौं रीछां री जमात सा निजरे आवै छै ।—रा.सा.सं.

२ समुदाय, झुंड. ३ पटसन का कपड़ा, पटसन ।

सं०स्त्री०—४ बैलों की जोड़ी । उ०—१ अर गढ़ तोड़वा का सारा ही सामांन साथ लीधा । वडी-वडी तोपां घणां जूटा स्री (थी) खीची हालै । जिकां रै पाछै मस्त हाथी टला देण नूं चालै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ आसीस नेक कहि कहि अदाव, सिर पातसाह बगसै सिताब । लाखां दे तोपां जूट लार, कुंजर अस बगसै खग कटार ।

—वि.सं.

५ एक साथ दो, यग्म, जोड़ी । उ०—हले टिलां हाथियां, जूट हम्मलां हजारां । सभै चाढ़ि बळ सबळ, इसी नाळियां अपारां ।

—सू.प्र.

रू०भे० — जूंट ।

जूटणौ, जूटबौ–क्रि०अ०—१ भिड़ना, युद्ध होना, जूझना ।

उ०—ओरंग 'जसौ' अगाहि, जूटा सूरिज राहु ज्यूं । ग्रहण अंधारौ गैंग्रहण, मेछ किओ रिण माहि ।—वचनिका

२ संलग्न होना, रत होना, लगना । उ०—कपि पकड़ौ पकड़ौ कहै. राकस हलकारै । जूटा हुकम प्रगांण, जोध कपि हू अधिकारै ।

—सू.प्र.

३ आलिंगन होना, लिपटना. ४ प्राप्त होना, उपलब्ध होना.

५ सम्बद्ध होना, संश्लिष्ट होना, जुड़ना. ६ परस्पर सटना, स्पर्श होना, छूना, भिड़ना । उ०—छछोहै आव गहर फौंहारा छूटै । जमी से मेघ जांणि आसमांन से जूटै ।—सू.प्र.

७ भीड़ लगना, गरदी होना. ८ एकत्रित होना, इकट्ठा होना ।

९ जमा होना, जुटना. १० (किसी कार्य के करने का) प्रबन्ध होना.

११ एक मत होना, अभिसंधित होना ।

जूटणहार, हारौ (हारी), जूटणियौ—वि० ।

जूटवाड़णौ, जूटवाड़बौ, जूटवाणौ, जूटवाबौ, जूटवावणौ, जूटवावबौ—प्रे०रू० ।

जूटाड़णौ, जूटाड़बौ, जूटाणौ, जूटाबौ, जूटावणौ, जूटावबौ—क्रि०स० ।

जूटिओड़ौ, जूटियोड़ौ, जूटयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

जूटीजणौ, जूटीजबौ—भाव वा० ।

जूंटणौ, जूंटबौ—रू०भे० ।

जूटियोड़ौ, जूटोड़ौ—१ भिड़ा हुआ, जूझा हुआ, युद्ध किया हुआ.

२ संलग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ३ लिपटा हुआ, आलिंगन हुवा हुआ. ४ प्राप्त हुवा हुआ, उपलब्ध हुवा हुआ. ५ सम्बद्ध हुवा हुआ, संश्लिष्ट हुवा हुआ. ६ परस्पर छूआ हुआ. ७ भीड़ लगा हुआ. ८ एकत्रित हुवा हुआ. ९ जमा हुवा हुआ ।

१० प्रबन्ध हुवा हुआ. ११ एक मत हुवा हुआ, अभिसंधित ।

(स्त्री० जूटियोड़ी, जूटोड़ी ।

जूठउ—देखो 'जूठौ' (रू.भे.) उ०—जूठउ अनइ जूआरी साथि ।

—व.स.

जूठन–सं०स्त्री०—१ वह पदार्थ जिसे किसी ने खा कर या मुँह लगा कर छोड़ दिया हो. २ एक दो वार व्यवहार में लाया हुआ ।

जूठलौ, जूठिलु, जूठिलौ, जूठिल्लु—१ देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.)

उ०—१ सासू वहूय न चालइ पाउ, ऊभउ न रहइ जूठिलु राउ । माडी बोलइ सांभळि भीम, केती भुइं वयरी नी सीम ।—पं.पं.च.

उ०—२ एतलं ए पंडु नरिंदौ जूठिलौ पाटि प्रतिठिउ ए बंधवि विजयु करेवि राय सवेवसि प्रांणीया ए ।—पं.पं.च.

उ०—३ दूअवयणि दूअवयणि राउ जुठिल्लु । गिरि गंधमायण गिया इंदकीलु तसु सिहरु दिठ्ठऊ ।—पं.पं.च.

२ देखो 'जूठौ' (रू.भे.) (स्त्री० जूठिली)

जूठौ–वि० [सं० जुप्, जुष्ठ = सेवित:] (स्त्री० जूठी) १ वह पदार्थ जो किसी के खाने के बाद पीछे बचा हो, जिसमें किसी ने खाने के लिये मुँह लगाया हो. २ जिसका स्पर्श मुँह अथवा किसी जूठे पदार्थ से हुआ हो. ३ जिसे किसी ने व्यवहार में ला कर या भोग कर के अपवित्र कर दिया हो. ४ देखो 'झूठौ' (रू.भे.)

उ०— १ नळ ना तेजरूपियु सूरय, यसरूपी ससि देखी । ब्रह्मा साचा जूठा जूइ, अंतरगति ऊवेखी ।—नळाख्यांन

उ०—२ ऊखरली खाट अनइं डाभइं वणी, सासू जूठी नणंद घणी ।

—व.स.

उ०—३ आगै वहुजी सीसोदणजी बैठा था उठै आय बैठी, तरै वहुजी उणरी निजर जूठी दीठी, तरै कह्यौ थे राव कनै जावौ ।

—राव चंद्रसेण री वात

अल्पा०—जूठलौ, जूठिलु, जूठिलौ, जूठिल्लु ।

जूण, जूणिम—देखो 'जूंण' (रू.भे.) उ०—१ दरसण हुवा न देव, भेव विहूणा भटकिया । सूना मिंदर सेव, जूण गमाई जेठवा ।

—जेठवा

उ०—२ घणा घर जोवै ज्यां री वाट, मनां में चींतै वे परभात । खेत घर बिच में बीती जूण, ऊगतै दिनड़ै व्हैगी रात ।—सांझ

उ०—३ रोटी रटणी रांमजी मोटी, आळस म करि आवछै छोटी ।

मन चौरासी जूनिम लोटी, मोटा देह छूटसी खोटी ।—ह.पु.वा.

जूत, जूतड़—१ देखो 'जूतौ' (मह., रू.भे.)

मुहा०—१ जूतंफाग ग्राणो, जूतंफाग होणो—परस्पर जूतों से पिटना, लड़ना. २ जूत उडणा, जूत खाणा—जूतों की मार खाना । तिरस्कृत होना । ऊँचा नीचा सुनना । व्यर्थ पैसे खर्च हो जाना, घाटा होना । ज्यूं–गांव जाय नै फजूल पचा रिपियां रो जूत खाय नै ग्रायो । ३ जूत देणा—जूता मारना । किसी के व्यर्थ खर्च करवा देना । नुकसान करवा देना. ४ जूत पड़णा—व्यर्थ खर्च हो जाना । घाटा होना । हानि होना । जूतों की मार पड़ना । मुँहतोड़ उत्तर मिलना. ५ जूत बरसणा—देखो 'जूत पड़णा'. ७, ८ जूत मारणा, जूत मेलणा—देखो 'जूत देणा'. ९ जूत लागणा—देखो 'जूत पड़णा ।'

२ देखो 'जुत' (रू.भे.) उ०—ग्रमूत रीस पूत साह जूत दाह ग्रंग मैं । हले ग्रभंग रूप माग घू लगं निहंग मैं ।—रा.रू.

जूतणो, जूतबो—देखो 'जुतणो, जुतबो' (रू.भे.)

उ०—१ जूंसहरी ग्रूह नयण म्रिग जूता, विसहर रासि कि ग्रलक वक्र । वाळी किरि वाँकिया विराजे, चंद रथी ताटंक चक्र ।—वेलि.

उ०—२ दस जूता दस जूतणा, दस पाखती बहंत । हेकण धवळा बायरा, खैंचाताण करंत ।—वां.दा. उ०—३ सोई पुरस सुलच्छणो, सोई ज पूत सपूत । सोइज कुळ रो सेहरो, ताँडै जस रथ जूत ।—वां.दा.

जूताखोर–वि०—१ निर्लज्ज, बेहया. २ जो जूतों से पिटता हो, जूतों की मार खाने वाला ।

जूतियोड़ौ—देखो 'जुतियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० 'जूतियोड़ी')

जूती–सं०स्त्री०—देखो 'जूतौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)

मुहा०—१ जिण री जूती उण रो ई सिर—जिसकी जूती उसी का शिर—स्वयं की वस्तु ग्रौर स्वयं को ही हानि ग्रर्थात् पूर्ण रूप से उत्तरदायित्व. २ जूतियां उठांणी—नीच कार्य करना । दासत्व करना । सेवा करना. ३ जूतियां काख में घालणी—जूतियां बगल में दबा कर भागना । धीरे से चलता बनना. ४ जूतियां खाणी—ग्रपमान सहना । जूतियों से पिटना । भली-बुरी बातें सुनना.

५ जूतियां गांठणी—जूतियों की मरम्मत करना । चमार का कार्य करना । ग्रत्यन्त निकृष्ट धंधा करना. ६ जूती जकै रो ई सिर—देखो—'जिण री जूती उण रो ई सिर ।' ७ जूती जै'ड़ो तेल—जैसी जूती वैसा तेल ग्रर्थात् नीच का सम्बन्ध नीच से ही होता है । ८ जूती री तळी होणी, जूती रै बराबर—जूती के समान । बहुत तुच्छ । नाचीज. ९ जूती सूं पग कटणो (बढ़णो)—जूती से पांव कटना, ग्रपनों से ही हानि पहुँचना ।

जूतोड़ देखो 'जूतौ' (महत्व. रू.भे.)

मुहा०—१ जूतोड़ उडणा. २ जूतोड़ पड़णा—देखो 'जूत पड़णा'

जूतौ–सं०पु० [सं० युक्त, प्रा० जुत] पाँव की सुरक्षा के लिए दोनों पैरों में पहना जाने वाला चमड़े ग्रादि का बना हुग्रा थैली के ग्राकार का ढांचा, उपानह, पादत्राण ।

मुहा०—१ जूतां ग्राळा, जूतां वाळा—जूतों वाले, समर्थ, शक्तिशाली, बलवान. २ जूत चलणा -जूते चलना, जूतों से लड़ना. ३ जूता चाटणा—चापलूसी करना, खुशामद करना. ४ जूता जडणा—जूतों से मारना, जूतों का प्रहार करना. ५ जूता लगाणा—देखो 'जूत मारणा' ।

ग्रल्पा०–जूती ।

मह०–जूत, जूतड़, जूतोड ।

वि०—युक्त, साथ, सहित, एक साथ, शामिल ।

जूयंग–सं०पु० [सं० यूथ ग्रथवा यूथांग] १ यूथ, झुण्ड, समूह. २ यूथ का एक ग्रंग या समूह ।

जूथ–स०पु० [सं० यूथ] १ समूह, यूथ, झुंड, समुदाय (ग्र.मा., डिं.को.)

उ०—१ जपत भंवर गुंजार गुलाबां जूथ मैं, लता फूल लपटात तरोवर लूथ मैं ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ ग्रधिक दसदिस पंक ग्रातुर, धरा पर इम धाय । जोय ग्रीखम सुजळ जांणिक, जूथ म्रिग वन जाय ।—सू.प्र.

२ दल, सेना । उ०—१ गयंद मांन रै मुहर ऊभौ हुतौ दुरद गत, सिलहपोसां तणा जूथ साथै । तद वही रूक ग्रणचूक 'पातल' तणी, मुगळ बहलोलखां तणैं माथै ।—गोरधन बोगसौ

उ०—२ पवंग जूथ पक्खरां ग्रंग बगतरां ग्रसल्ली । मगि दुझाल हल्लिया ढाल जेहा पुर दिल्ली ।—रा.रू.

रू०भे०—जुत्थ, जुथ, जुथ्थ, जूह ।

जूथका–सं०स्त्री० [सं० यूथिका] सोनजुही (ग्र.मा.)

रू०भे०—जूथिका ।

जूथनाथ–सं०पु० [सं० यूथनाथ] यूथपति, सेनापति ।

रू०भे०–जूहनाह ।

जूथप–सं०पु० [सं० यूथप] १ समूह (ग्र.मा.) २ सेनापति ।

जूथपत, जूथपति, जूथपती–सं०पु० [सं० यूथपति] सेनापति ।

जूथपाळ–सं०पु० [सं० यूथपाल] यूथपति, दलनायक, सेनापति ।

जूथार–सं०पु०—हाथी । उ०—राजा सिंघ चीतगढ़ रांणा । वर माळा लेवा जिण वार । पदमण महल तलाक पड़ंतां, जग चै नयण दिया जूथार ।—राजा स्री रायसिंघ रो गीत

जूथिका—देखो 'जूथका' (रू.भे.)

जूनउं—देखो 'जूनौ' (रू.भे.) उ०—जइ भागउं तौ वाराहउं, जइ थाकउं तौ पारकरउ घोडउ । जइ ठालउ तोड़ कपूर तणउ दाबडउ, जइ जूनउं तोइ पाटू, जइ सूकी तोइ वउलसिरी ।—व.स.

जूनियर–वि० [ग्रं०] जो क्रम में पीछे हो, छोटा ।

जूनूं—देखो 'जूनौ' (रू.भे.) उ०—ग्रति घणुहु जूनुं एहु, तूय सांमि सबळुं देहु, इम भणी रहिउ भीमु, सो धनुसु नांमइ कीमु ।—पं.पं.च.

(स्त्री० जूनी)

जूनेजा-सं०स्त्री०—सिंधी मुसलमानों की एक शाखा विशेष।

जूनोड़ौ, जूनौ-वि० [सं० जीर्ण] (स्त्री० जूनोड़ी, जूनी) १ पुराना, प्राचीन, पुरातन। उ०—१ और ही उमराव जूनी वारता के जांणणहार। विचारै उचारै पूछे समै को विचार।—रा.रू.

उ०—२ वडवोरां रा वोर, जूनोड़ा जांमफळ है। छोटकिया छिबजोर सरस ज्यूं ईमीजळ है।—दसदेव

२ जीर्ण, टूटा-फूटा, जर्जर। उ०—देखो माटी रंग न छोडै, खेड़ां जूनी ठीकरी। डीकरी कुंभारी कोरी, कदै कोयलां लीकरी।—दसदेव

३ बुड्ढ़ा, वृद्ध। उ०—रांम मिळण कद होसी ओ म्हारा जूना जोसी. हरिजी मिळण कद.होसी ओ।—मीरां

रू०भे०—जुनौ, जुन्नौ।

अल्पा०—जूनोड़ौ।

जूनौ-देव-सं०पु०—महादेव, शिव। उ०—जुग पार पखै गा मूझ जोवतां, राजि कन्है रहती दिन राति। आज स हार बिचै ओपावै, जूनादेव नवी आ जाति।—ठाकुरसी जगनाथोत सांमोर

जूप-सं०पु० [सं० यूप] वह स्थान जहाँ बलि दिया जाने वाला पशु बांधा जाय।

जूपणौ-वि० (स्त्री० जूपणी) १ जुतने वाला. २ प्रज्वलित होने वाला।

जूपणौ, जूपबौ—१ देखो 'जुपणौ, जुपबौ' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां कह्यौ—हळ हूं जूपीस।—देपाळ दे री वात

उ०—२ काळो धवळ कहाय नह, धोळो धवळ कहाय। जो काळो धुर जूपणौ, लावा लखण न जाय।—बां.दा.

उ०—३ चसै नैंण ज्यूं रैंण जूपी चरागां, जईमैंण रा नैंण ज्यूं क्रोध जागां।—म्रिगया म्रिगेंद्र

२ साथ जुतना, किसी दल के साथ लगना। उ०—जूपे मत मोटां नी जोड़ै, छोकरवाद री रांमत छोड़ै।—ध.व.ग्र.

जूपणहार, हारौ (हारी), जूपणियौ—वि०।

जूपिओड़ौ, जूपियोड़ौ, जूप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जूपीजणौ, जूपीजबौ—भाव वा०।

जूपियोड़ौ—देखो 'जुपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जूपियोड़ी)

जूबळ—देखो 'जूवळ' (रू.भे.) उ०—डगंस बेड़ियां डहै, जंभीर भार जूबळां। करंत खून काळकीट, सुंड नाव सांमळां।—सू.प्र.

उ०—२ कठठे हठी पाकेटूं की कतार। सो कैसे वगलूं के उरळे गिर सिखरूं से थूंभा। जूबळूं के घाट देवळूं के थांभा।—सू.प्र.

जूमलौ—देखो 'जुमलै' (रू.भे.)

जूय-सं०पु० [सं० यूप] १ यज्ञ-स्तम्भ (जैन) २ पुरुष के हाथ या पैर का सामुद्रिक चिन्ह विशेष (जैन) ३ देखो 'जूवा' (रू.भे.) (जैन)

जूयट्ठइ-सं०पु० [सं० द्यूत] जुआ, द्यूत। उ०—नळ दवदंती नीसरचा, जूयट्ठइ हारयउ देस नळ राजा, वन मांहि राति वासउ वस्य, सूता भूमि प्रदेस नळ राजा।—स.कु.

जूयळ—देखो 'जुयळ' (रू.भे.) उ०—माल संभ्रम रहचे मीर वचा, कर पै जूयळ खंड किया। अनळ भरेण वाजती आठी, हरण भुयंगम दिये हिया।—उडणा प्रथीराज री गीत

जूया-वि०—१ देखो 'जूवा' (रू.भे.) उ०—केई मुया गया पणि केई, केई जूया रहइ परदेस। पासि रहइ ते पीड़ न जांणइं, कहियइ घणउ तउ थायइ किलेस।—स.कु.

[सं० यूका] जू, यूका (जैन)

जूर—देखो 'हजूर' (रू.भे.)

उ०—लघू दास हूं रांम रै जूर लेवौ। कहै वैर जांणै नहीं सीत केवौ।—सू.प्र.

जूरी—देखो 'जोरावरी' (रू.भे.) उ०—स्या माटिइ वाहला ! तूंअ रीसांणु ? हूं ते नारी तोरी रे। तइ छेहु भलु मझनइ आपिउ, धणी कीधी तइ जूरी रे।—नळ-दवदंती रास

जूल-सं०पु०—१ एक प्रकार का बड़ा विशेष बनावट का कपड़ा जो घास व अनाज आदि बाँधने के काम में आता है. २ ऊँट व घोड़े के चारजामे के नीचे सजावट के रूप में लगाया जाने वाला कपड़ा विशेष।

उ०—तहदार गादियां धरे तांम। जग जोतिम दाखल जूल जांम।

मि०—पड़छियौ। —सू.प्र.

जूलसाई-सं०स्त्री०—सामग्री। उ०—आगै कुंवरजी आदमियां नै देख नै सारी जूलसाई देखी।—रीसालू री वात

जूव-सं०पु० [सं० यूप] यज्ञस्तम्भ (जैन)

जूवटउ, जूवटुं, जूवटूं [सं० द्यूत-वृत्तकम्, प्रा० जूअउट्टअं, अप० जूअउट्टउं] द्यूत, जूआ ('जूऔ' का अल्पा., रू.भे.). उ०—१ कूडिहिं ए दीजइं मांन वयरिहिं मांडइ जूवटउ ए।—पं.पं.च.

उ०—२ यूद्ध कि वली जूवटूं परठीनि लेज्यौ राज। बुहि तां सरसि सहि निस्चि तह्यारूं काज।—नळाख्यांन

जूवण, जूवणु, जूवणू—देखो 'जोवन' (रू.भे.) उ०—विरहि विरागीय वण मझारि जाईउ मणि झायइ 'लवणिम जूवणु रूपरेह तां आलिंहि जाइ'।—पं.पं.च.

जूवताई-सं०स्त्री० [सं० युवती] १ युवती। उ०—सुपन वात तदि कहै सुणाई। विध बाळा त्रपुर जूवताई।—सू.प्र.

२ युवापन, यौवन।

जूवती—देखो 'जुवती' (रू.भे.)

उ०—भई भगवांन रै वात मन भावती, जोवियौ स्रीकिसन सांमहौ जूवती।—रुखमणी हरण

जूवळ-सं०पु० [सं० युगल] चरण, पैर। उ०—इम पतसाह सुणै अकुलायौ। महि जांणै जूवळ तळ आयौ।—रा.रू.

रू०भे०—जूबळ।

जूवांण, जूवांन—देखो 'जवांन' (रू.भे.) उ०—ढाळ लहै चमर गहै,

गज मिळे मरद्दां । गरै विगुदा केहरी, जूवांन जरद्दां ।—द.दा.

जूवा–वि० [सं० युवा] १ युवा, जवान । उ०—देवी बाळ जूवा त्रियं वेस वाळी । देवी दिव्व रंगवाट वीमां भुजाळी ।—देवि.

२ पृथक, अलग. ३ भिन्न ।

जूवाजूवी–सं०स्त्री०—विवाह के बाद वर-वधू द्वारा जुआ खेलने की एक प्रकार की रस्म ।

वि०—पृथक-पृथक, अलग-अलग ।

रू०भे०—जुआजूई, जुओ, जुवाजुवी, जुवो, जू, जूवो ।

जूवाड़ो—देखो 'जुओ' २ (अल्पा., रू.भे.)

जूवारी—देखो 'जुआरी' (रू.भे.) उ०—१ चोरी करसी चोर जार करसी नित जारी । हिंसा हिंसावांन जुवा रमसी जूवारी ।—ऊ.का.

उ०—२ चवदस रांम चरन नहिं छांडो । जूवारी ज्यूं तन मन मांडो ।—ह पु.वा.

जूवो—देखो 'जुओ' (रू.भे.) उ०—जळ में कंवळ परणि नीर भेदे नहीं, जगत में भक्त यूं रहे जूवा । जन हरिदास हरि समद में बूंद कबीर जन, समद में बूंद मिळिए एक हूवा ।—ह.पु.वा.

जूसण, जूसणो–सं०पु० [सं० युष = सेवायाम् अथवा फा० जोशन] १ कवच । उ०—१ फेरा लेतै फिर अफिर, फेरी घड़ अणफेर । 'सीह' तणी हरधवळ सुत, गहमाती गहडेर । गहड़ घड़-कांमणी करै पांणी ग्रहण । करगि खग वाहतौ जुवा जूसण कसण । कोपियं छाकियं चहर भड़ अहर करि । फुरळतै विसण घड़ फेरवी अफर फिरि ।—हा.झा.

वि०—लिपटा हुआ, चिपका हुआ ।

उ०—२ जंगमां पखर जड़िया सुपह जूसण, वरण जुध वार घड़ कुआरी वंद । खग झड़ां ओझड़ा वाहि ढाहण खळां, होय हरवळ दळां सुतन 'हरियंद' ।—राव धायभाई नगराज गूजर रो गीत

उ०—३ वजंत घाव जूसणे निहाव उठ्ठवेणियं । संग्रांम पंड कैरवै कि खंड बांण सेणियं ।—रा.रू.

उ०—उरमाळ मुंडनि छाल भ्रिग की खाल केसरि जूसणं । वपु भस्म लेप स्समांन राजित व्याळ पांणि विभूसणं ।—ला.रा.

रू०भे०—जूसांण ।

जूसणा–सं०स्त्री०—सेवा (जैन)

जूसर–सं०पु० [सं० युग+सर] १ बैलों की गर्दन पर रखा जाने वाला जुआ । उ०—जूसरां धवळ अप्रमांण जव, की विमांण पवमांण कथ । सुलतांण मुगळ माथै सज्या, राजथांण बीकांण रथ ।—मे.म.

रू०भे०—जूंसर, जूंसरु, जूंसहरी, जूंसारी ।

२ कवच । उ०—जड़ आवध जूसर पाथ जिसा । दळ खड़ै खत्री उतराद दिसा ।—गो. रू.

जूसरणो–क्रि०स०—कवच धारण करना । उ०—जूसरिया जवरैल, साथ सतवीसां सावळा—पा.प्र.

जूसांण—देखो 'जूसण' (रू.भे.)

जूह—१ देखो 'जूथ' (रू.भे.) उ०—१ रिणमालोत कहै रिण रूधां, अचड़ तियागी बोल इसो । जूह विडार किसो जीव-रखो, केहर रूधां साथ किसो ।—द.दा.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति वडा जूह गयंदां गजराजां नूं गडां चरखीआं मारि, पोतारि, नीठ वैसांणीआ छै ।—रा.सा.सं.

उ०—३ कजाकरिण डाकरिण काढ़ि कळेज । जिमावत साकरिण जूह अजेज ।—मे.म.

२ देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—निरवहइ व्रत्ति रोजा निवाज, वंवळी बाळ के तवलबाज । जव्वा पलीत मूगुल्ल जूह. सारवक जांणि बोलइ समूह ।—रा.ज.सी.

जूहणो, जूहबो–क्रि०स०—युद्ध करना, जूझना । उ०—जूं जोवन जूहै सखी । मूरिख लोक नूं जांणइ संसार ।—वी.दे.

जूहनाह—देखो 'जूथनाथ' (रू.भे.)

जूहर—देखो 'जौहर' (रू.भे.) उ०—तद पताई रावळ नूं खबर हुयी जू गढ़ पळटयौ तद पताई रावळ भीतर रांणियां नूं अर बीजै ही जनांने नूं कह्यौ—जू थे जूहर करौ ।—पताई रावळ री वात

जूहवइ–सं०पु० [सं० यूथपति] यूथपति (जैन)

जूहार—देखो 'जुहार' (रू.भे.) उ०—१ उदयचंदनय कियउ जूहार, परणावउ रिणधवळ कुमार ।—ढो.मा.

उ०—२ कुंआरां विन्हे आइ जूहार कीधा, लगे प्रीत छाती पीता भीड़ि लीधा ।—सू.प्र.

जूहारी—१ देखो 'जुआरी' (रू.भे.) उ०—गजबंघा जोधांण गढि, दसराहो पूजेय । जूहारी दीपमाळिका, होळी फाग रमेय ।—गु.रू.बं.

२ देखो 'जवारी' (रू.भे.)

जूहाहिवई–सं०पु०—१ यूथाधिपति (गो वर्ग का स्वामी) (जैन)

२ देखो 'जूहवई' (रू.भे.)

जूहिय, जूहिया—देखो 'जुही' (रू.भे.) उ०—जगडइ ए जासक जूहिय यूं हियडउ निरधार । देखउं केवडी केवडी जेवडी करवत धारि ।

—नेमिनाथ फागु

जूहियोड़ो–भू०का०कृ०—युद्ध किया हुआ, जूंभा हुआ ।

(स्त्री० जूहियोड़ी)

जूही—देखो 'जुही' (रू.भे., अ.मा.) उ०—दाडिमि बीजउंरी लीवूइ, मधूर परिमळ फूली जूही । सदा फफळ वांये मन उल्हसइ, वाइ तरुअर भइं वसइ ।—प्राचीन फागु संग्रह

जेंळेबी—देखो 'जळेबी' (रू.भे.) उ०—पातळी सेव प्रीसी, उत्तरतां घेवर, तळया गुंद, कुंडळाक्रित जेंळेबी, सीरा लापसी ।—व.स.

जे–सं०पु०—१ बेटा. २ समूह. ३ सिंह (एका.)

सं०स्त्री०—४ मकान में सामान रखने के लिये लगाई जाने वाली पत्थर की पट्टी जो दीवार में लगाई जाती है ।

क्रि०वि० [सं० यदि, प्रा० जइ, अप० जे ?] १ यदि, अगर, जो ।

उ०—१ रसणां रटे तौ रांम रट, आमय लगै न अंग । जे सुख चाहै जीव रौ, (तौ) सुमिर-सुमिर स्रीरंग ।—ह.र.

उ०—२. जे रावजी थांनै सरणै राखै छै तौ हूं थांनूं तेड़ावूं छूं ।

—द.वि.

२ एक संयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है; कि।
उ०—१ पण सावास छै मोटी ठकुरांणी नूं जे थांनूं राजी राखिया, म्हांनूं सगळां नूं जीवाड़िया।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ इण भांति प्रेम सेती कागद लिख नै वडारण सूं कही जे इतर लगाय पछै खांम कर थैली रै मांहीं घाल और प्रोहित नूं दे देय।—कुंवरसी सांखला री वारता
३ क्योंकि। उ०—और घड़ास्यां पहिया पाचरा जी और वंटास्यां रेसम डोर ओ क वरसै वरसोदण होळी पांवणी जे।—लो.गी.
सर्व०—१ वह, वे, जो। उ०—१ इसो ही कोई आंपणी परघै रै मांहीं छै जे इण घोड़ी नै लेय आवै।—सूरे खींवे कांधळोत री वात
उ०—२ गाहै गजरांजां गुड़ां, रुहिर मचावै कीच। ज्यांरै नवग्रह पाधरा, जे वंका रण वीच।—बां.दा. उ०—३ छूटा जांमण मरण सूं, भव सागर तिरियाह। मुंवा जूंझ जे रण मही, वे नर ऊबरियाह।—बां.दा.
२ जिस। उ०—१ उज्जळ-दंता घोटड़ा, करहड़ चढ़ियउ जाहि। तइं घर मुंघ कि नेहवी, जे कारणि सी खाहि।—ढो.मा.
उ०—२ जे सुत हुवौ संधि हत दूजण। मरखण संधि सुतण कुळ मंडण।—सू.प्र.
रू०भे०—जेह, जैं, जै।

जेई—देखो 'जेळी' (रू.भे.)

जेउ—सर्व०—जिस। उ०—नरक पात ठवेलइ जेउ, मोटि संकट छोडिउ तेउ। मूरति पांच एक लिग थी, छठी तास जमलि को नथी।—कां.दे.प्र.

जेखल—सं०पु० [सं० ज्यास्खल] सुअर।

जेखाधीस—सं०पु० [सं० यक्षाधीश] कुबेर (नां.मा.)

जेड़—देखो 'जेहड़' (रू.भे.)

जेड़ा—सं०स्त्री०—ढोलियों की एक शाखा विशेष (मा.म.)

जेज—सं०स्त्री०—१ नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय, विलम्ब, देरी। उ०—१ मरै न्याय सांभळ रे मूरख, सह तौ वाळा लखण समूचां। थां म्रित हिमैं जेज नह थावै, कंठठ खड़ी आवै दरकूचां।—र.रू.
उ०—२ तठै 'सवळेस' समोभ्रम 'तेज', जुड़ै खगझाट करै नह जेज।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—करणी, लागणी, होणी।
२ समय, वक्त।
ज्यूं-उठै थां ज्यादा जेज मती लगाजो, थोड़ी जेज लगाजो।
उ०—करती कुंज विहार वनां री कांमण निरखौ, करता छिनकी जेज वैवता वादळ वरखौ। रेवा नद रळकीज पड़ी है विन्ध्य पठारां, जांणै रेख वभूत कुरीजी नै सिणगारां।—मेघ.
क्रि०प्र०—करणी, लागणी।
रू०भे०—जेझ, जैज।

जेजळमेर—देखो 'जैसळमेर' (रू.भे.) उ०—जेजळमेर सूं रांणी गंगाजी साथै राखेचा करमसी रूपसीयोत वीकानेर आया।—द.दा.

जेजियौ—देखो 'जजियौ' (रू.भे.) उ०—तरै उण लुगाई कह्यौ, कंवरजी! मां रो घड़ो कांई फोड़ियो? इसड़ा तरवारिया छौ तो मेवाड़ जेजियौ लागै छै सु परौ छोडावौ।—नैणसी

जेजैकार—देखो 'जैजैकार' (रू.भे.)

जेझ—देखो 'जेज' (रू.भे.) उ०—व्रत धारियां न जेझ विचारी। सुणतां पांण हुई असवारी।—रा.रू.

जेट—सं०स्त्री०—१ तह पर तह किया हुआ ऊंचा ढेर, राशि, समूह।
उ०—वीजोड़ी वीजोड़ी, ओ मा, रमबा नै जाय, वायी नै दीनी सासू पोवणी। पोयी पोयी, ओ मा, जेट दो जेट, पछली पोयी बाळू री वाटियौ।—लो.गी.
२ देखो 'जेठ' (रू.भे.)

जेटणौ, जेटबौ—क्रि०स०—१ तह पर तह लगा कर ढेर करना.
२ खूब खाना।
जेटणहार, हारौ (हारी), जेटणियौ—वि०।
जेटवाड़णौ, जेटवाड़बौ, जेटवाणौ, जेटवाबौ, जेटवावणौ, जेटवावबौ, जेटाड़णौ, जेटाड़बौ, जेटाणौ, जेटाबौ, जेटावणौ, जेटावबौ—प्रे०रू०।
जेटिओड़ौ, जेटियोड़ौ, जेटयोड़ौ—भू०का०कृ०।
जेटीजणौ, जेटीजबौ—कर्म वा०।

जेटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ तह पर तह लगा कर ढेर किया हुआ, समूह बनाया हुआ. २ खूब खाया हुआ।
(स्त्री० जेटियोड़ी)

जेटौ—सं०पु०—समूह, ढेर।

जेट्ठ—देखो 'जेठ' (रू.भे.) (जैन)

जेट्ठा—सं०स्त्री० [सं० ज्येष्ठा] बड़ी बहन (जैन)

जेट्ठामूळ—सं०पु० [सं० ज्येष्ठा मूल] ज्येष्ठ मास, जेठ महीनो (जैन)

जेट्ठा-मूळ मास—सं०पु०यौ० [सं० ज्येष्ठा मूल मास] ज्येष्ठ मास (जैन)

जेट्ठा-मूळी—सं०स्त्री० यौ० [सं० जेष्ठा-मूली] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा (जैन)

जेठ—वि० [सं० ज्येष्ठ] बड़ा, ज्येष्ठ।
सं०पु० (स्त्री० जिठांणी, जेठांणी) १ पति का बड़ा भाई।
उ०—वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ तीचउ देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देरांणी हसइ, नणंद नरनरावइ, सासु कांम करावइ।—व.स.
२ हिन्दी वर्ष का तीसरा मास, ज्येष्ठ (डि.को.)
उ०—महमूद माह सूरज प्रमांण। जेठ रौ अरक अभमाल जांण।—वि.सं.
३ ज्येष्ठा नक्षत्र।
अल्पा०—जेठड़ौ, जेठूड़ौ।
मह०—जेठल।

जेठड़ौ—देखो 'जेठ' (अल्पा. रू.भे.)

जेठल-वि० [सं० ज्येष्ठ] १ ज्येष्ठ भ्राता, बड़ा भाई (डि.को.) २ देखो 'जेठ' (मह०, रू.भे.)
जेठवा-सं०स्त्री०—१ एक प्राचीन राजपूत वंश जो अपने को हनुमान का वंशज बतलाते हैं. २ परिहार वंश की एक शाखा।
रू०भे०-जेठुग्रा।
जेठांणी-सं०स्त्री० [सं० ज्येष्ठ+रा०प्र० आंणी] पति के बड़े भाई की स्त्री।
रू०भे०-जिठांणी।
जेठा-सं०पु०—देखो 'जेस्ठा' (रू.भे.)
जेठाई-सं०स्त्री०—१ बड़ाई, बड़प्पन. २ ज्येष्ठता. ३ बड़े भाई का वंशज।
जेठि, जेठिय, जेठी-वि० [सं० ज्येष्ठिन्] बड़ा, ज्येष्ठ। उ०—१ इसी विध जेठिय जोम अताळ। कणंठिय तास लई कळचाळ।—सू.प्र.
उ०—२ कणगठी जांणे भिड़त काळ। जिण जेठी छूटी जगत जाळ।—पा.प्र.
उ०—३ भेजे इम अरियां भंवर, जेठी कंवर जनेस। बंसी हूं चढ़ियो वळे, घन चय देण घनेस।—वं.भा.
सं०पु०—१ ज्येष्ठ भ्राता, बड़ा भाई (अ.मा., डि.को.)
उ०—सुज भ्रात जेठी सेस रा। दइवांण वंस दिनेस रा।—र.ज.प्र.
२ पहलवान, मल्ल। उ०—१ जमदढ़ खंजर अम्हींसम्ह जड़िया। लूथवथां जेठी जिम लड़िया।—स.प्र.
उ०—२ कोई भाखइ, कोई लखइ, सूखडी खाइ पीउ साथि, जेठी मळपा मालाखाढ़इ, कोई जूइ बाथोबाथि।—प्राचीन फागु संग्रह
वि०—ज्येष्ठ मास सम्बन्धी, ज्येष्ठ मास की।
रू०भे०-जेठीय।
जेठीपाथ, जेठीपाराथ-सं०पु०—[सं० ज्येष्ठ=बड़ा+पार्थ] १ अर्जुन का बड़ा भाई युधिष्ठिर. २ अर्जुन का बड़ा भाई भीम (डि.को.)
जेठीमधु—[सं० यष्टि मधु] मुलैठी।
उ०—जेठीमधु विना दांतण करवा री आखडी —रा.सा.सं.
जेठीय—देखो 'जेठी' (रू.भे.)
जेठुग्रा—देखो 'जेठवा' (रू.भे.) उ०—वाला वाजा अनइ जेठुग्रा, चूडासमा मेलावइ। असपतिसेन समुद्र ऊलटियां, ऊपरि चांपी आवइ।
—कां.दे.प्र.
जेठुए-सं०पु०—जेठवा शाखा का क्षत्रिय। उ०—जेठुए खेमे जोर, कुण तेण चंपै कोर। जिण पेख जवन सजोस, सुज गयो तजि गढ़ सोस।
—रा.रू.
जेठुतो—देखो 'जेठूतो' (रू.भे.)
(स्त्री० जेठुती)
जेठूड़ो—देखो 'जेठ' (अल्पा., रू.भे.)
जेठूत, जेठूतरो—देखो 'जेठूतो' (रू.भे.) उ०—जेठूत री स्त्री आपरै सासू री देरांणी नै कहै—हे काकी जी साह !—वी.स.टी.
(स्त्री० जेठूती, जेठूतरी)
जेठूतो, जेठूत्रो-सं०पु० [प्रा० जेट्ठ+पुत्त=अप० जेठ+उत] (स्त्री० जेठूती, जेठूत्री) पति के बड़े भाई का पुत्र।
रू०भे०-जेठुतो, जेठूत, जेठूतरो, जेठूत्रो।
जेठै-क्रि०वि०—जहां।
जेठो-वि० [सं० ज्येष्ठ] (स्त्री० जेठी) ज्येष्ठ, बड़ा। उ०—१ गांगे रैणवायळी थांन बेटा पांच जाया। जेठा स्यांमसींहजी रैणवायळि में रहाया।—शि.वं.
उ०—२ अै सुत पुंज तेरह अग्रकारी। धरमवंभ जेठो छत्रधारी।
—सू.प्र.
जेण, जेण, जेणि-सर्व० [सं० यः, येन] १ जिस, जिसने, जिससे।
उ०—१ वाजां दळ दहुंवै जेण वार। ऐसा किया हाजर तयार।
—सू.प्र.
उ०—२ उठै बाग असोक रूंखां अथाहै। महामाय सीता वसै जेण मांहै।—सू.प्र.
उ०—३ परदेसां श्री आवयउ, मोती आंण्या जेण। घण कर कंवळां भालिया, हसि करि नांख्या केण।—ढो.मा.
उ०—४ थे सिच्चावउ सिध करउ, बहु-गुणवंता नाह। सा जीहा सतखंड हुइ, जेण कहीजइ जाह।—ढो.मा.
उ०—५ जेणि जई नळ राजा ज्याच्यु, ते बीजी वार नवि मागि। अनेक्य यग्य करी घन खरचूं, तोहि रिधि न भागि।—नळाख्यांन
उ०—६ आरंभ मैं कियो जेणि उपायो, गावण गुणनिधि हूं निगुण। करि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि.
क्रि०वि०—१ जहां। उ०—चाल सखी तिण मंदिरइं, सज्जण रहियउ जेंण। कोइक मीठउ बोलड़इ, लागो होसइ तेंण।—ढो.मा.
२ देखो 'जैन' (रू.भे.)
जेत—देखो 'जेथ' (रू.भे.)
जेतळइं, जेतलइं, जेतळइ, जेतलइ, जेतळई, जेतलई-क्रि०वि०—जब तक। उ०—१ जेतलइं छेदिवा लागउ सीस। तेतलइं तूठी भारती ए।—विद्याविलासपवाडउ,
उ०—२ सखी नयण तब नींद्रइं घुळइ, मारू तणी आंखि नवि मिळइ। मध्यराति वउळी जेतळइ, ऊमादे चितइ तेतळइ।—ढो.मा.
वि०—जितना।
जेतलउ-वि०—जितना। उ०—जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी, जिवड़ा तेतलउ हुयइ पछताप रे।—स.कु.
जेतलुं, जेतलूं, जेतलो-वि० (स्त्री० जेतली) जितना (उ.र.)
उ०—१ पुरुसारथ समथ पराक्रम पीथल, ध्रूहड़ धन तैं खत्र-धरम। दिन जेतला प्रवाड़ा दीपै, वरिस जिता तेती वडम।
—प्रिथीराज भारमलोत री गीत
उ०—२ जेतलाइं वन तेतलाइं चंदन, जेतलाइं सर तेतलाइं कमळसर, जेतलाइं आगर तेतलाइं वयरागर, जेतलाइं हस्ति तेतलाइं गंध

हस्ति, जेतलाइं जन तेतलाइं सज्जन।—व.स.

जेति—देखो 'जेथि' (रू.भे.)

जेतिय-वि०स्त्री० (पु० जेतौ) जितनी।

उ०—जांउ जागइ तांउ मागइ, जांउ जोयणउं तांउ भोयणउं, जेतिय राति तेतउं जागर।—व.स.

जेती—१ देखो 'जेथी' (रू.भे.)

वि०स्त्री०—२ देखो 'जेतौ'

जेते, जेतै-क्रि०वि०—१ जब तक।

उ०—१ प्रांण गांठ जेते पुखत, इण तन मांझळ एह। क्यावर तेते नांम कर, दांम गांठ मत देह।—वां.दा.

उ०—२ मिळै 'जैसाह' उमराव खांनां मिळै, आय सुत 'कुसल' पह मिळै एतै। कहै जग थाय नह अचड़ इण विध कही, जाय न नांम रवि चंद जेतै।—सू.प्र.

वि०—२ देखो 'जेथे' (रू.भे.)

जेतौ-वि० (स्त्री० जेती, बहु व० जेता) देखो 'जितौ' (रू.भे.)

उ०—१ तेता मारू मांहि गुण, जेता तारा अभ्भ। उच्चळचित्ता साजणा, कहि क्यउं दाखउं सभ्भ।—ढो.मा.

उ०—२ जेती जउ मन मांहि, पंजर जइ तेती पुळइ। मनि वइराग न थाइ, वालंभ वीछुड़ियां तणी।—ढो.मा.

उ०—३ दाता धन जेतौ दियै, जस तेतौ घर पीठ। जेतौ गुळ लै थाळियां, तेतौ जीमण मीठ।—वां.दा.

उ०—४ धवळ सरीखौ धवळ है, की कीजै कैवार। जेतौ भार भळावियै, तेतौ खंचणहार।—वां.दा.

जेत्राई—देखो 'जैत्राई' (रू.भे.) उ०—जोड़ सिवौ बंधव जेत्राई। भूप तणा जतनां बे भाई।—रा.रू.

जेथ, जेथि, जेथी, जेथे, जेथै-क्रि०वि० [सं० यत्र, पा० यत्थ, प्रा० जह] जिस जगह, जिस स्थान पर, स्थानसूचक शब्द, जहां।

उ०—१ आय जेथ प्रसन्न हुवै, वधै घटै नह व्रत्त। प्रभु राखै उण पांखड़ी, सदा अमीणौ सत्त।—वां.दा.

उ०—२ आपड़ियौ मो जेथ अरि, तजिया ससतर तेथ। लागा धंधै लेण रै, आयौ कुसळै एथ।—वां.दा.

उ०—३ जेथी तेथी पेखिये, तू बेजा तांणा।—केसोदास गाडण

उ०—४ जांमी अघ भांन सुरसरी जेथी, ध्यांन मुनीसां धायौ। बरणै वेद यसा नग राघव, आं सरणै हूं आयौ। केसव रावळौ निज दास कहायौ।—र.ज.प्र.

उ०—५ जळ जेथे जगदीस, भाखै जग भागीरथी। सो हुवै पहुमीं सीस, तो जळ सूं निरमळ तुरत।—वां.दा.

रू०भे०-जेत, जेति, जेती, जेते, जेतै, जेथै।

जेब-सं०स्त्री० [अ०] पहनने के सिले हुए कपड़ों में लगी छोटी थैली जिसमें रुपया, रूमाल, कागज आदि रखे जाते हैं।

क्रि०प्र०—कतरणी, काटणी, लगणी, लगाणी।

मुहा०—१ जेब करणी—धारण करना। अधिकार में करना।

२ जेब गरम होणी—पैसा मिलना। अनायास पैसा प्राप्त होना।

३ जेब गरम करणी—घूस लेना, घूस देना।

यौ०—जेबकट, जेबखरच, जेबघड़ी।

सं०स्त्री० [फा० ज़ेब] शोभा, सौन्दर्य। उ०—वीरबळ मारांणौं जद पातसाह अकबर कसमीर हुता। खांन खां गुजरात में हुता। खांनखां नूं खत इनायत कियौ अकबर जिणमें लिखियौ—म्हारी सभा नूं नजर लागी जिणसूं म्हारी सभा री जेब वीरबळ मारांणौ।

—वां.दा.ख्यात

जेबकट-सं०पु०यौ० [अ० जेब+रा० काटणौ] चोरी से लोगों की जेब काट कर रुपया चुराने वाला, जेबकतरा।

जेबखरच-सं०पु०यौ० [अ० जेब+फा० खर्च] निज के खर्च करने का वह धन जिसका हिसाब पूछने का किसी को अधिकार न हो किन्तु वह प्रायः भोजन, वस्त्र आदि के व्यय से भिन्न होता है।

क्रि०प्र०—काटणौ, देणौ, बांधणौ, मिळणौ, राखणौ, लेणौ।

जेबघड़ी सं०स्त्री०यौ० [अ० जेब+घड़ी] जेब में रखने की छोटी घड़ी।

जेबि, जेबी-वि०—१ अच्छा लगने वाला, सुन्दर। उ०—दुहुं दळां सावळ दुगम, ओप अणियाळा। जेबि कवांण कीजियै, दुहुं दळ दुगमाळा।—सू.प्र.

२ जो जेब में रखी जा सके, छोटी।

जेम-क्रि०वि० [सं० येव=यथा] १ जिस प्रकार, जैसे।

उ०—१ लहै ग्यांन राजां वडां रीति लीधी। क्रिया वेद मांहै कही जेम कीधी।—सू.प्र.

उ०—२ गरवा हुवौ हरी-गुण गावौ, छीलर जेम म दाखौ छेह। आज'र काल करंतां 'ओपा', दिहड़ा गया सु ताळी देह।—ओपौ आढ़ौ

२ ज्यों, ज्योंहि। उ०—१ निसचरां जेम दूजा नरेस। सुणि दवे सूंम कायर जिकेस।—सू.प्र.

उ०—२ विळकुळियौ वदन जेम वाकारची, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, बे-लखि अणी मूठि द्रिठि बंधि।—वेलि.

वि०—समान, तुल्य। उ०—१ पिंडि नख सिख लगि ग्रहणे पहिरिए, महि मूं बांणी वेलि मई। जग गळि लागी रहै असै जिमि, सहै न दूखण जेम सई।—वेलि.

उ०—२ फौज घटा खग दांमणी, बूंद लगइ सर जेम।—लो.गी.

जेमण—देखो 'जीमण' (रू.भे., जैन) उ०—मिट्ठा वे मेवा तै कुं देवा आउ इकट्ठे जेमण जेमां।—स.कु.

जेमिणि-सं०पु०—देखो 'जैमिनी' (रू.भे., जैन)

जेयार-वि० [सं० जेतृ] जीतने वाला (जैन)

जेर-वि० [फा०] १ परास्त, पराजित। उ०—१ पांच विषय सूं इंद्रिय पांचुं, जीत करौ मन जेर। मोज भरी मन वाळी मात्रा, फौज मुक्त री फेर।—ऊ.का. उ०—२ 'फतमाल' 'रूप' 'जैता' अफेर।

जोधहर 'भीम' अरि करण जेर ।—रा.रू.

२ जो बहुत तंग किया जाय, जो बहुत दिक किया जाय ।

उ०—१ दगो धारियो 'डूंग' सूं सोवं पाकड़ै छावणी दीठा, लोह लाट लंगरी ग्रमाप फोजां लेर । लालां मुखां ग्राठां सोवा ऊपरै सोभाग लीधी, जोम ग्रंगी सीह नै ग्रागरै कीधो जेर ।—डूंगजी री गीत

उ०—२ 'ऊदै' 'राजड़' 'जगपती' 'जोधहर' सिवदांन । जोवांणे ग्रजमेर विच, कीधो जेर जिहांन ।—रा.रू

क्रि०वि०—वश में, अधिकार में, क़ब्जे में । उ०—१ ईत तणी नह भीत ग्रगंजी, मांन दुजा मन मेर । ग्रासेटां मजबूत ग्रडाकी, जीत किया खळ जेर ।—र.रू.

उ०—२ मंडियो मेर ग्रडिग मेवाड़ो, जुड़ै दुरंग ग्रिहुं कीधा जेर । ग्रो जुध वैर हणू जिम ग्राखां, मुतन सुद्रसण पाखर सेर ।

—रावत घासीरांम सक्तावत री गीत

क्रि०प्र०—करणी ।

सं०स्त्री०—वह झिल्ली जिसमें गर्भ का बच्चा रहता है और पुष्ट होता है ।

जेरणी, जेरबौ—क्रि०स०—१ बन्धन में डालना । उ०—कांम गयंद चींटि फिरि घेरचा, पकड़ि सील सांकळ सूं जेरचा ।—ह.पु.वा.

२ वश में करना, ग्राधीन करना । उ०—निखमीवर लोधियौ, लखण देवता न लाधा । पांडव वाल्हा पांच, मया तो नां बह माधा । प्रबळ चीर पूरिया, परम पेखियौ पंचाळी । पांडव दाखे प्रभू, वेगि ग्राया वनमाळी । जुजिठिळ भीम ग्ररिजण जिसा, जिणा जीता ग्ररि जेरिया । भीस्म द्रोण दुरजोध भ्रिगि, खोहिण ग्रठारै खेरिया ।—पी.ग्रं.

जेरियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ बन्धन में डाला हुग्रा. २ वश में किया हुग्रा । (स्त्री० जेरियोड़ी)

जेरदस्त—वि०—ग्रधीन, तावै । उ०—नै लोक जेरदस्त इण रा हुकमी छै ।—नी.प्र.

जेरपाई—सं०स्त्री० [फ़ा०] स्त्रियों के पैर की जूती, स्लीपर ।

जेरबंद, जेरबंध—सं०पु० [फ़ा० जेरबंद] घोड़े की गर्दन के नीचे ग्रगले पैरों तक शोभा के लिये बांधा जाने वाला कपड़े या चमड़े का बन्धन जो मोहरी ग्रौर तंग में फँसाया जाता है, तस्मा ।

उ०—१ बंध जोट दीध कसि जेरबंध । सभि पेस बंध कमसार संध ।—सू.प्र. उ०—२ कसंता बिजैमंड कोदंड कंधां । वणावै ग्रिया बरर जेरबंधां ।—वं.भा.

जेरबाद—सं०पु०—घोड़े का एक रोग विशेष (शा.हो.)

जेरबार—वि० [फ़ा०] १ ग्रापत्ति से दबा हुग्रा, तंग, दुखी. २ क्षतिग्रस्त ।

जेरबारी—सं०स्त्री० [फ़ा०] १ किसी नुकसान के कारण दुखी होने की क्रिया, तंगी. २ बेचैनी, परेशानी ।

जेरांणौ—सं०पु०—मृत व्यक्ति की मृत्यु के बाद स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला एक प्रकार का शोकसूचक गीत ।

जेराजेर—सं०पु०—१ हाकी का खेल. २ देखो 'जेर' (रू.भे.)

जेरीबिरियां—सं०पु०—एक प्रकार का पकाया हुग्रा मांस ।

उ०—कलिया पुलाव बिरंज दुप्याजा जेरीबिरियां ग्रखनीं चसताळा भांति-भांति के मजे ।—सू.प्र.

जेळ—सं०स्त्री० [ग्रं.] १ कैद ।

क्रि०प्र०—काटणी, भोगणी, होणी ।

२ राज्य द्वारा दंडित ग्रपराधियों को कुछ निश्चित समय तक दण्ड-स्वरूप रखने का बंद स्थान, बंदीग्रह, कारागार ।

क्रि०प्र०—करणी, काटणी, देणी, भोगणी, होणी ।

३ खेल के मैदान की सीमा, ग्रंतिम छोर, लक्ष्य-स्थान. ३ एक प्रकार का खेल । उ०—जिण तरै दड़ियां रा रमणा में जेळ एक खेल री नांम है सो उण खेल में ग्रादमियां रा दोय दळ होवै है नै दोही दळां रै थापियोडी एक-एक दोनूं धकै हद होवै है ।—वी.स.टी.

जेळखांनौ—सं०पु० [ग्रं० जेल+फ़ा० खाना] बंदीगृह, कारागार ।

जेलड़—सं०पु०—स्त्रियों का एक ग्राभूषण । उ०—ग्यांन ग्रंगूठी कांन जुगति का भूठणा । जेलड़ सील संतोख नरत का घूघरा ।—मीरां

जेळणौ, जेळबौ—क्रि०स०—भेजना । उ०—सुण सेस सिया चो सोधा नूं, जेळै दिस च्यारूं जोधा नूं ।—र.रू.

२ बराबर करना । उ०—जेळै कइ जब्बर बब्बर जोर । दिखावत वायु बरब्बर दोर ।—मे.म.

जेळदड़ी—सं०स्त्री०—हॉकी की तरह का एक प्रकार का देशी खेल ।

जेलर—सं०पु० [ग्रं०] बंदीगृह का ग्रफसर ।

जेळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ भेजा हुग्रा. २ बराबर किया हुग्रा । (स्त्री० जेळियोड़ी)

जेळियौ—सं०पु०—१ हॉकी खेलने के बल्ले के ग्राकार का ग्रागे से मुड़ा हुग्रा गेंद खेलने का डंडा. २ खेल में सीमा-स्थान का रक्षक, गोल-कीपर ।

यौ०—जेळियौ-दोटौ ।

जेळियौ-दोटौ—सं०पु०यौ०—हॉकी की तरह गेंद के देशी खेल में गेंद के लगाई जाने वाली वह चोट जिससे गेंद लक्ष्य-स्थान (गोल) के भीतर से पार हो जाय ।

जेळी—सं०स्त्री०—एक लम्बे लट्ठ के ग्रागे दो नुकीले डंडे लगा हुग्रा कांटे, कंटीली भाड़ियां ग्रादि हटाने का उपकरण जिसे किसान, चरवाहे ग्रादि प्रायः ग्रपने पास रखते हैं । उ०—हाथ ज कसियौ, कांधे जेळी, सिर घर चाली जो जुवारमल को पालणूं ।—लो.गी.

मि०—वेई ।

रू०भे०—जेई, जेंई, जैळी ।

ग्रल्पा०—जेयलो ।

जेवड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'जेवड़ौ' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—रावतजी सलामत ग्रो भीलड़ो हरांमखोर, प्रथी री चोर, काळ री खादो, मौत री जेवड़ी रो बाधो, ग्रो ग्रावै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

वि०स्त्री० [सं० यावत्] जैसी। उ०—जिनसागर सूरि नी महिमा जेवड़ी रे, समयसुंदर कहइ एवड़ी रे।—स.कु.

रू०भे०—जेवडी।

जेवड़ौ—सं०पु०—१ रस्सा। उ०—च्यारूं सखी गंध मसांण सिद्ध वड़ जाय पैठी नागरा जेवड़ा कर च्यारूं ही सिद्ध वड़ हींचै छै।

—पंचदंडी री वारता

अल्पा०—जेवडी।

२ विवाह के समय तोरण द्वार पर सासू द्वारा अपने आँचल का दामाद के गले में बंधन डाल कर अन्दर खींचने की प्रथा।

वि० [सं० यावत्] १ जैसा. २ जितना।

(स्त्री० जेवड़ी)

रू०भे०—जेवडउ, जेवडौ।

जेवडउ—१ देखो 'जेवड़ौ' (रू.भे.) (उ.र.) २ जितना।

उ०—जेवडउ अंतर मेरु अनइ सरसिव, जेवडउ अंतर। माम अनइं परिभव, जेवडउ अंतर लोह अनई कांचन।—व.स.

जेवडी—देखो 'जेवड़ी' (रू.भे.) उ०—जगडइ ए जासक जूहिय, मूं हियडउ निरधार। देखउं केवडी केवडी, जेवडी करवत धार।

—नेमिनाथ फागु

जेवडौ—देखो 'जेवड़ौ' (रू.भे.)

जेवर—सं०पु० [फ़ा० ज़ेवर] आभूषण, गहना, अलंकार।

रू०भे०—जेहिर।

जेवरळौ—वि० [सं० जीव विरल] जो केवल कहीं-कहीं पाया जाय, जो अधिकता से न मिले, दुर्लभ, विरल। उ०—प्रीत उतारण पार, जेवरळा लाधै जगत। हेतू वर्ण हजार, मतळव अपणै मोतिया।

—रायसिंह सांदू

रू०भे०—जोवरलौ।

जेवली—सं०पु०—एक लम्बे डंडे के आगे दो नुकीले डंडे लगा हुआ कांटे, कंटीली झाड़ियां आदि हटाने का उपकरण (अल्पा०)

उ०—झाल गळा निज जेवलै, डंडां सिर डोटाय। करसौ अत क्रम-वीर हूं, वध हुंत देस बचाय।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—जाउल्यौ, जेवाल्यौ।

जेवहौ—वि० (स्त्री० जेवही) जैसा। उ०—अकळि हरि एवहौ, जिकरिण कुण जेवहौ। गुमर अरि गंजणौ, भगत दुख भंजणौ।—पि.प्र.

रू०भे०—जेवहौ, जेवौ।

जेवां—क्रि०वि०—जैसे। उ०—दिवै दांन रतनां तणौ सरिसि देवां। जरू दुख दै दांणवां राह जेवां।—पी.ग्रं.

जेवाल्यौ—देखो 'जेवलौ' (अल्प० रू.भे.)

जेवीराव—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

जेवौ—वि० (स्त्री० जेवी) जैसा।

जेस—सं०पु०—बारहवीं बार उलटा कर बनाया हुआ शराब।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति दारू री पांणीगौ मंडिओ छै। सो किण भांति री दारू। उलटै री पलटै, पलटै री अराक, अराक री वैराक वैराक री संदळी, संदळी री कंदळी, कंदळी री कहर, कहर री जहर, जहर री कटाव, कटाव री नेस, नेस री जेस, जेस री मोद, मोद री कमोद, कमोद······।—रा.सा.सं.

जेसट, जेसठ—देखो 'ज्येस्ठ' (रू.भे., ह.नां.)

जेसटाश्रम, जेसठाश्रम—देखो 'जेस्टाश्रम' (रू.भे.)

जेसांण, जेसांणौ—देखो 'जैसांण' (रू.भे.) उ०—सुणि भाटी भड़ ऊससै, जेसांण उजाळा।—सू.प्र.

जेसा—देखो 'जैसा' (रू.भे.)

जेसौ—सर्व०—१ जिस। उ०—फुलांणौ राजा री बेटी छूं। इयै भांत निसरियौ छूं। जेसा तरह नीसरिया सो वात मांड हर कही।

—चौबोली

२ जेसा शाखा का भाटी राजपूत. ३ देखो 'जैसौ' (रू.भे.)

जेस्टसुर—देखो 'जेस्ठसुर' (रू.भे.)

जेस्टा—देखो जेस्ठा' (रू.भे.)

जेस्टाश्रम—सं०पु० [सं० ज्येष्ठाश्रम] श्रेष्ठ आश्रम, उत्तमाश्रम, गृहस्था-श्रम। उ०—दुरभिख नकटासण किणनै नह दीधौ, नकटै नकटा-पण क्रपणासय कीधौ। मिळगा धूळी ज्यूं जेस्टाश्रम जूनां, साले सूळी ज्यूं स्रेस्टाश्रम सूनां।—ऊ.का.

रू०भे०—जेसटाश्रम, जेसठाश्रम, ज्येस्ठाश्रम।

जेस्टी, जेस्टौ—वि० [सं० ज्येष्ठ] बड़ा, ज्येष्ठ। उ०—नमौ स्रिस्टा त्वस्टा अगम उतक्रस्टा अह नमौ। नमौ स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमौ।—ऊ.का.

जेस्ठसुर—सं०पु० [सं० ज्येष्ठ-सुर] ब्रह्मा (डि.नां.मा.)

रू०भे०—जेस्टसुर।

जेस्ठा—सं०स्त्री० [सं० ज्येष्ठा] सत्ताइस नक्षत्रों में से अठारहवां नक्षत्र।

रू०भे०—जेस्टा।

जेह—सं०स्त्री० [फ़ा० ज़िह=चिल्ला] १ कमान की डोरी के मध्य का वह भाग जहाँ पर तीर रखा जाता है और आँख तक खींच कर छोड़ा जाता है। लक्ष्य-स्थान इसी की सीध में रहता है।

उ०—जिका सणणंकि भणंकिय जेह। सुवा भड़ भुम्मि हुवा धड़ सेह।—मे.म.

क्रि०वि०—१ जैसा. २ देखो 'जे' (रू.भे.)

उ०—जैन धरम (समो नहिं कोई) मोटौ जग मांहि, जेह थी जाये दुख रे।—स्रीपाळ रास

जेहड़—सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—जेड़, जेहर।

जेहड़ि, जेहड़ी—क्रि०वि०—जैसे ही, ज्यों ही। उ०—देहली वसति हरि जेहड़ि दीठी, आणँद कौ ऊपनौ अमाप। तिण आपही किरायौ आदर, ऊभा करि रोमां सूं आप।—वेलि.

वि०स्त्री०—जैसी। उ०—जहर पियाले जेहड़ी, इण कुण मंडे

भाग। मदि काळै मुन अंगुळी, वाळै फिर विनवास।—रा.रू.

जेहड़ौ—देखो 'जे'हो' (रू.भे.) उ०—१ जसै फते जेहड़ा, घड़ा थंभण पतसाही। जोड़ै गिरधार रा, हरि सम च्यारूं भाई।—रा.रू.

उ०—२ पित मोहिरि 'गजण' प्रचंड, जग चग जेहड़ौ तपवंत लड़ै गनेज, धरिजग एहड़ौ।—सू.प्र.

(स्त्री० जेहड़ि, जेहड़ी)

जेहनउं, जेहनउ—वि०—जिसका (उ.र.) उ०—मनहूं मोह्युं रे माहरूं, गुरु ऊपरि गुणराग। जिनसागर सूरि गुरु भला, साचउ जेहनउ सोभाग।—स.कु.

जेहर—सं०स्त्री०—१ पैर में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

उ०—कल कदमूं के लंगर भारी कनक की हूंस। जवाहर के जेहर दीपमाळा की रूंस।—र.रू.

रू०भे०—जेहरि, जेहरी।

२ देखो 'जेहड़' (रू.भे., बां.दा.ख्यात)

जेहरांन—सं०पु०—जेवरात, जेवर, आभूषण, गहना।

उ०—सुरंग रंग भोमि में तरंग है न तांन की। ढमंक ढोलकी न त्यूं घमंक घुग्घरांन की। छमंक बिच्छवांन की दमंक ना दरीन की। झमंक जेहरांन की चमंक नां चुरीन की।—ऊ.का.

जेहरि, जेहरी—देखो 'जेहर' १ (रू.भे.) उ०—जेहरि घूघरमाळ पगां भुणकै जियां। कुंजै बारिज पुंड्र बचा कळहंसियां।—बां.दा.

वि०स्त्री०—जैसी। उ०—कुळ री वार में भड़ां भली अछेह री कीधी, दीधी भाट जंगां ज्यों केहरी गजां दोट। गाढ़ै गत्तै खाग दंडां भुदंडां जेहरी कीधी, चाळागारां खेलियौ तेहरी की सी चोट।

—डूंगजी रौ गीत

जेहरौ, जेहवउ, जेहवौ-वि० (स्त्री० जेहरी, जेहवी) जैसा।

उ०—१ बावन चंदन अंगई परिमळ बूरत तपई निसंभ। उर जेहवउ दीसइ उरवंसी रूप विसेखइ रंभ।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ लखण बतीसे मारुवी, निधि चंद्रमा निलाट। काया कूंकूं जेहवी, कटि केहरि सै घाट।—ढो.मा.

उ०—३ रांगा रणथंभ तणाह जउहर जउहर जेहवा। कीधा भोजा-कइ कंवरि वधता बीस गुणाह।—अ. वचनिका

जेहांण, जेहांन—देखो 'जहांण, जहांन' (रू.भे.) उ०—थापै सोजत थांन, पांणां वागै छात्रपती। जांणै सरब जेहांन, आरोपौ भारी उठै।

—पा.प्र.

जेहा—१ देखो 'जैसा' (रू.भे.) सं०स्त्री० [सं० जिह्वा] २ जीभ।

उ०—ताता दोय घोरी जोतरिया, भंवर उजळ दोहूं पाख भलाह। वाजै जेहा पाटली विध विध, इण रा खेड़ू आप अलाह।—ओपौ आढ़ौ

जेहाज—देखो 'जा'ज' (रू.भे.) (ह.नां.)

उ०—माया जळ अति विमळ, तास कोइ पार न पावै। लहर लोभ ऊठत, मन्न जेहाज चलावै।—ज.खि.

जेंहि, जेहि—देखो 'जेही' (रू.भे.) (उ.र.)

जेहिर—देखो 'जेवर' (रू.भे.)

जेहिल—सं०पु० [सं०] वशिष्ठ गोत्रोत्पन्न आर्यनाग का शिष्य, थिवर मुनि (जैन)

जेही—सर्व०—जिस। उ०—१ ताहरां नायण राजा पास खरची ले नै आदमी दस वीस ले नै एक डूंडो कराय नै नदी नदी चाली। तठै जेही सहर मांहे नदी आवै सहर मांह जाय साहूकार रा घर देखै। बेरां रा गहणा वेस पहरीया तेठै देखै तद पाछी आय डूंडै वैसै, आघी चालै। इयै भांत केही सहर दीठा।—चौबोली

उ०—२ महि मंडळ पदम पै ओपिया मंडळी, ओळग्र अंतरै जिमी असमांण। रिख तणा ओण पाहार जेही रिदै, जवर जगदीस चै 'दलो' जम-रांण।—राठौड़ महाराजा दळपतसिंह रायसिंघोत रौ गीत

क्रि०वि०—जैसे, ज्यों। उ०—हंसा गति तणौ आतुर थ्या हरि सूं, वाधाऊआ जेही वहे। सूंधावास अनै नेउर सद, क्रमि आगै आगमन कहे।—वेलि.

वि०स्त्री०—देखो 'जेहौ' (रू.भे.) उ०—पर मन-रंजन कारणइ, भरम म दाखिस कोइ। जेही दीठी मारुवी, तेही आखै मोइ।

—ढो.मा.

जेहु—वि०—जैसा। उ०—साहेली हे जिणचंद सूरि कह्युं जेहु तुं, साहेली हे सांमल सिरदार। साहेली हे तेह वचन तिमहिज थयुं, साहेली हे पुज्य थया पटधार।—स.कु.

जेहौ—वि० (स्त्री० जेही) १ जैसा। उ०—१ जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नांही अज्ज। माथि त्रिसूळउ नाक सळ, कोइ विणट्ठा कज्ज।

—ढो.मा.

२ समान, तुल्य, सदृश। उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठां जिम रच्चणां, दई सु सज्जण मेळि।—ढो.मा.

उ०—२ कहि जिण सुतण वीर नृप केहौ। जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ।—सू.प्र.

३ जिस रूप-रंग, आकृति या गुण का, जिस प्रकार का।

उ०—ऊमर दीठी मारुई, डींभू जेही लक्कि। जांणै हर-सिरि फूलड़ा, डाकै चढ़ी डहक्कि।—ढो.मा.

सं०पु०—भाटी वंश की जैसा शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—जैहौ।

जें—देखो 'जे' (रू.भे.) उ०—१ श्री लिखमी अवतार सरब लिखमी सारीखौ। जें जायौ जगत नां अनंत इहड़ी विधि ईखौ।—पी.ग्रं.

उ०—२ जें चढ़ सूत्यौ नणद बाई रौ वीर, गीत कुण्यां घर गावै, जी राज।—लो.गी.

जेंगड़ो—सं०पु०—बछड़ा (मेवात)

जेंट—सं०पु०—१ शमी वृक्ष (रू.भे. जांट)

२ देखो 'जेट' (रू.भे. जंट)

जै—सं०पु०—१ बृहस्पति. २ पुष्य नक्षत्र. ३ सूर्य. ४ ब्रह्मा. ५ पतंगा. ६ अग्नि (एका.) ७ देखो 'जय' (रू.भे.)

उ०—प्रबळ सुर असुर जिण लगाया पागड़े, जिको खळ चापड़े खेत जारां। पाड़ियो रांम दसकंठ पीठांण में, सबद जै जै हुवा लोक सारां।
—र.रू.

मुहा०—जै मनाणी—मंगल कामना करना, विजय की कामना करना, समृद्धि चाहना। २ जै हो—पूज्य और ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद के उपलक्ष में कहा जाने वाला शब्द।

८ देखो 'जे' (रू.भे.) उ०—१ जै डर न होइ जांणां जनक प्रणत काल्हि लागूं पगां। सो जै न होइ दीजै सहज सुत अपजस असंगां सगां।—वं.भा. उ०—२ कंवरी सूरज कंवर, 'अजन' ध्रम रचे अपंपर। जै नांनो 'अमरेस', धरा जेसांण छतरधर।—रा.रू.

उ०—३ साधां गिरि राया जै महमाया, सातां दीपां मां छाया।
—पी.ग्रं.

उ०—४ जाइग्रो सरब संसार जै बिसन कहीजै सीलवंत। जम तणो ग्रंत कंत ज्यांनखी ग्रनंत नमो फेरा ग्रनंत।—पी.ग्रं.

उ०—५ जै जीतौ अजमेर घड़ी मांही घण चक्कह। जै लीयो जाळोर भिड़ै पट्टांण कटक्कह।—गु.रू.बं.

जंई—देखो 'जेळी' (रू.भे.)

जैकरी—सं०स्त्री० [सं० जयकरी] तीन चौकल एक लघु ग्रंत गुरु कुल १५ मात्राओं का मात्रिक छंद विशेष, चौपई छंद का एक भेद।

जैकार—देखो 'जयकार' (रू.भे.) उ०—हुवा नगारां सद्द हुए तड़भड़ नर इंदां। 'ग्रभो' हुवो ग्रसवार हुवौ जैकार कविंदां।—रा.रू.

जैकारणौ, जैकारवौ—क्रि०स०—जय ध्वनि करना, जयजयकार करना।
उ०—घर ग्रंबर रज धोम ग्रंधारै। जोगणि चंडी वीर जैकारै।
—सू.प्र.

जैकारियोड़ो—भू०का०कृ०—जयध्वनि किया हुग्रा।
(स्त्री० जयकारियोड़ी)

जैंड़े—क्रि०वि०—१ जब तक। ज्यूं-यूं रोटी जीमलै जैंड़े हूं इणसूं बातां करूं, पछै दोनूं चालसां।
२ तब तक। ज्यूं-यूं उठी हो'र आवैला जैंड़े तो हूं ठेट पूगसूं।

जैंड़ो—वि० (स्त्री० जैंड़ी) जैसा। उ०—जठै झाड़ियां खंड खोखंड जैंड़ी। नगां पुंजरी मंजरी रूप नैंड़ी।—मे.म.

जैचंद—सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या व्यक्ति (बां.दा.ख्यात)

जैज—देखो 'जेज' (रू.भे.) उ०—बयन एम उच्चरै, गमन पल जैज न कीजै। सिलह तोप बारूद, जुद्ध संजत सब लीजै।—ला.रा.

जैजयं—सं०स्त्री०—जय-जय, जयकार। उ०—डहंत केळि डांळयं, उपंति वंद्रवाळयं। वहंत दुंदभं वयं, जपंत देव जैजयं।—सू.प्र.

जैजैकार—सं०स्त्री०—विजय अथवा मंगल कामना की आनन्दमय ध्वनि, जयध्वनि, जयघोष, जयजयकार। उ०—१ जैजैकार भयो त्रिभवन में, ब्रह्मा निस दिन ध्यावै। नंदकंवर गिरधर वर को जस, भगत 'पदमयो' गावै।—रुकमणी मंगळ उ०—२ जगडू जग जीवाड़ियो, भांजै भैभैकार। कीधो जैजैकार ग्रन, बागो राय सधार।—बां.दा.

उ०—३ वसुधा सब फूलै फळै, प्रथ्वि अनंत अपार। गगन गरज जळ थळ भरै, दादू जैजैकार।—दादू-वांणी

जैजैवंती—सं०स्त्री० [सं० जय+जयवंती] भैरव राग की एक रागिनी जो सवेरे गाई जाती है।

जैट—देखो 'जैंट' (रू.भे.)

जैढक—सं०पु० [सं० जय+ढक] विजय और सफलता के उपलक्ष में बजाया जाने वाला ढोल, जयढ़क।

जैत—सं०स्त्री० [सं० जैत्र] १ विजय, जीत। उ०—भुज भिड़ज रूप सपतास भांति, कवि तेण लखण गुण वरण क्रांति। सतं उकति जेण पंडित प्रमांण, जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जांण।—रा.रू.
यौ०—जैतखंभ।
२ देखो 'जैता' (रू.भे.) ३ देखो 'जैतो' (रू.भे.)

जैतकारी—सं०पु० [सं० जैत्र+कारी] विजयी। उ०—ऐसै ही जोधांण तैसै वगीचे, मंडोवर के बीच निवास जहां स्री महाराज के खड़ग जैतकारी काळै गोरे महावीरू भैरू का वास।—सू.प्र.

जैतखंभ—सं०पु०यौ० [सं० जैत्र+स्कम्भ:] विजय-स्मारक स्तम्भ, जय-स्तम्भ, विजयस्तम्भ। उ०—जैतहथा जैतहरा, जैतखंभ जुधवार। तैसो ई मंडण वीक तण, खळ खंडण खगधार।—रा.रू.
वि०—कभी नहीं हारने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।
उ०—ग्रई ग्ररोड़ा रांण झाला ग्रचळ ग्रखाड़ा। जैतखंभ ग्रमोड़ा खळां जारै। रायहर ग्रजोड़ा केम तो सूं रहै। थाय खोड़ा हरण नांम थारै।—जालमसिंह झाला (कोटा) रो गीत

जैतपत्र—सं०पु०—जीत की सनद।

जैतमाल, जैतमालोत—सं०पु०—राठोड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जैतरती—वि० [सं० जैत्र+रति] शक्तिशाली, बलवान।

जैतळ—देखो 'जैता' (रू.भे.)

जैतवंत, जैतवांन—वि०—जीतने वाला, विजयी।
उ०—भारत पारथ जैतवंत, राव वीक वरांण। हूं उजवाळूं ऊजळा पर वर ग्रापांण।—द दा.

जैतवादी—वि० [सं० जैत्र+वादी] जीतने वाला, विजयी।
उ०—उडणो प्रथीराज, निपट झाळपूळा हुवो। तोडो नै जाळोर एक दिन रै वीच मारिया, तरै ग्रा वात पातसाह सुणी, तरै उडणो प्रथीराज कहांणो ग्रसंख प्रवाडे, जैतवादी रांणो रायमल जीवतां ही मूग्रो।—नैणसी
रू०भे०—जइतवादी, जयतवादी।

जैतवार—वि० [सं० जैत्र+वार] विजयी। उ०—१ दीन के सहाय द्विज गऊ के दास। जंगू के जैतवार ग्रजांनबाह। ऐसे भड़ ग्राय विराजै महाराज की दरगाह।—नैणसी उ०—२ झखां खंजरीटां त्रिगां, संबर हतक सरांह। जैतवार ज्यांरा नयण, सरोरुहां सुथरांह।
—बां.दा.

उ०—३ पछै सं० १६६३ नवैरा रै पटै ऊपर आसोप रो पटो। पातसाही मांहे हैट रो जैतवार हुवो।—नैणसी

रू०भे०—जैतवार।

जैतमी-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (बां.दा.ख्यात)

जैतश्री-सं०स्त्री० [सं० जयश्री] एक रागिनी (संगीत)

जैतहस्त, जैतहथ, जैतहथो-वि० [सं० जैत्र+हस्त] विजय जिसके हाथ में हो, विजयी। उ०—१ सेन मेल सिवपुरी, फौज घेरै धांनोहर। जैतहस्थ कळिमस्थ साथि भाटी रिण घोयर।—गु.रू.बं.

उ०—२ जैत कळोधर जैतहथ, मंडण गोवरधन्न।—रा.रू.

उ०—३ जैतहथा जैताहरा, जैतखंभ जुधवार। तैसोई मंडण वीक तण, गढ खंडण खग धार।—रा.रू.

रू०भे०—जैत्रहथ, जैत्रहथो, जैयहथ, जैयहथो।

जैतां-सं०स्त्री०—एक पतिव्रता राजपूत रमणी जिसका आख्यान राजस्थान के अन्तर्गत 'रातिजोगा' के गीतों में अवश्य गाया जाता है।

रू०भे०—जैतळ।

जैता-सं०स्त्री०—राठौड़ों की एक शाखा, जैतावत।

जैताई-वि०—[सं० जैत्र:+रा०प्र०ई] विजयी। उ०—जैसावत सुरतो जैताई, सांम तणै छळि रांम सवाई। भांण तणै साहिबो भुजाळो, चक्रवति दळां खळां कळि-चाळो।—रा.रू.

वि०—जितने।

जैतार-वि० [सं० जैत्र:] जीत कर उद्धार करने वाला, जीतने वाला, विजयी। उ०—आजांन भुज वळ अंग रो, जैतार दससिर जंग रो। —र.ज.प्र.

जैतारणियो-सं०पु०—१ राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति, सींधल राठौड़ (बां.दा.ख्यात) २ मारवाड़ के अन्तर्गत जैतारण कस्बे का निवासी।

जैतावत-सं०पु० [सं० जैत+पुत्र] राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जैतावार—देखो 'जैतवार' (रू.भे.)

जैतुग-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (बां.दा.ख्यात)

जैतून-सं०पु० [अ०] अरब, शाम और यूरोप के दक्षिणी भागों में सर्वत्र मिलने वाला एक सदाबहार वृक्ष। इसके फल और बीज दोनों काम आते हैं। इसके बीजों का तेल औषधि में काम आता है।

जैतो-सं०पु०—राठौड़ों की जैतावत शाखा का राजपूत।

जैत्र-सं०स्त्री० [सं० जैत्रं] जय, विजय। उ०— प्रहसमि गुरुजी पत्तणि अविया, वाज्या जैत्र निसांण। ठांम-ठांम ना संघ मिळया घणा, आपै दांन सुजांण।—ऐ.जै.का.सं.

जैत्रवादी, जैत्रवार-वि० [सं० जैत्रं+वादिन्, जैत्रं+वार] विजयी। उ०—१ मांझी मेघ हरो मछराळ हूं, तल्ल मल्ल हाथाळ। जैत्रवादी जंमजाळ केवियां रो काळ सूरवीर सप्पखाळ।—ल.पि.

उ०—२ धरती पछिमी सूरधीर, भगतां-वछल जास भीर। जिहड़ो गहड़ जैत्रवार, कुंअरां तिलिक जांणकार।—ल.पि.

जैत्रसाद-सं०पु० [सं० जैत्रं+शब्द] विजय का शब्द।

जैत्रहथ, जैत्रहथो—देखो 'जैतहथ, जैतहथो' (रू.भे.)

उ०—वडा ही वडा आचार दीपै विसवि, वहै सबळां खळां सेति वागै। जगहथै बंधिये गजण रो जैत्रहथ, जगहथां बंध गया विरद जागै।—अमरसिंह राठौड़ रो गीत

जैत्राई-सं०स्त्री० [सं० जैत्रं+रा.प्र.आई] जीत, विजय, जय।

वि० [सं०जैत्र:+रा.प्र.ई] विजयी। उ०—विजपाळो चाळै विरदाई, जोगीदास तणो जैत्राई।—रा.रू.

वि०—जितने ही।

रू०भे०—जैताई।

जैयहथ, जैयहथो—देखो 'जैतहथ, जैतहथो' (रू.भे.)

उ०—कर कर क्रांमतीजी खोपै जैयहथ जस खंभ। नागर नोवती जी घर घर घुरत द्वार असंभ।—रा.रू.

जैये—देखो 'जैय' (रू.भे.)

जैदरथ, जैदरथी, जैदरथ्थी—देखो 'जयद्रथ' (रू.भे.)

उ०—जैदरथी माथो जुई, अई झुकाओ आंण। आयो 'मैंदर' ऊपरै, पावू इण परमांण।—पा.प्र.

जैदेव-सं०पु० [सं० जयदेव] गौड़ के महाराज लक्ष्मणसेन की राजसभा में रहने वाले एक प्रसिद्ध वैष्णव कवि जो संस्कृत के प्रसिद्ध काव्य 'गीत गोविंद' के रचयिता थे। इनका जन्म आज से प्राय: आठ-नौ सौ वर्ष पहले बंगाल के वर्तमान वीरभूम जिले के अंतर्गत केंदुविल्व नामक ग्राम में हुआ था।—(पी.ग्रं.)

जैद्रथ—देखो 'जयद्रथ' (रू.भे.)

जैन-सं०पु० [सं०] १ भारत का एक प्रसिद्ध संप्रदाय जिसका अहिंसा परम धर्म माना जाता है. २ इस धर्म का अनुयायी, जैनी।

रू०भे०—ज्यांन।

जैनगर, जैनेर—देखो 'जयनेर' (रू.भे.) उ०—नरपति रहियो जैनगर, परम रिदै धर प्रीत। रीधो भूप विलास रस, कीध्रो चैत वितीत। —रा.रू.

जैपरियो-वि०—जयपुर से सम्बन्धित, जयपुर का।

सं०पु०—जयपुर निवासी।

रू०भे०—जैपुरियो, जैपुरी।

जैपाळ-सं०पु०—१ पँवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात) २ अजयपाळ नामक औषधि।

जैपुर-सं०पु०—राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर जो राजस्थान की राजधानी है।

जैपुरियो, जैपुरी—देखो 'जैपरियो' (रू.भे.)

जैपैलेदिन-सं०पु०—वर्तमान समय से गत या आने वाला पांचवां या छठा दिन।

जैवो–वि०—जैसा।

जैमंगळ—देखो 'जयमंगळ' (रू.भे.)

जैमती–सं०स्त्री० [सं० जयमती] १ यह बुवाल के राजा ईहड़देव चालुक्य की पुत्री थी। इसका विवाह भगाय के राणा वृद्ध राजा वाघराज पड़िहार से हुआ था। यह अत्यंत दुश्चरित्रा थी।

वि०वि०—बाघ के चौवीस पुत्रों की वीरता के प्रभाव से वृद्ध राजा ने वघड़ावतों के साथ भ्रातृ भाव स्थापित कर लिया था। वघड़ावतों में एक भोज भी था जिसने इतना धन लुटाया कि चारों ओर उसकी कीर्ति फैल गई थी। जयमती अपने पति को वृद्ध एवं भोज को सुन्दर एवं युवा देख कर उन्हें पति रूप में ग्रहण करने के विचार से भोज के पास संदेश भेजा। भोज ने उचित मौका देख कर वाघराज की अनुपस्थिति में डाका डाल कर जयमती को उड़ा लिया। इस पर वाघराज ने एक बड़ी सेना लेकर भोज पर चढ़ाई कर दी। इधर जयमती भी भोज से शीघ्र ऊब गई और मन ही मन पछताने लगी। अतः उसने भोज एवं उसके भाइयों को मरवाने के उद्देश्य से वाघराज से लड़ने को खूब प्रोत्साहित किया। सब भाई एक-एक कर के वाघराज की सेना द्वारा मार डाले गये। इसी दुश्चरित्र एवं कपट भाव के कारण जयमती को कालान्तर में अत्यन्त हेय दृष्टि से देखा जाने लगा और इसी के आधार पर आज भी दुश्चरित्रा स्त्री को दुत्कारते समय जा ए रांड जैमती! या जा ए रांड जैमती, भोजा खपावणी! कह कर फटकारा जाता है।

२ दुश्चरित्रा स्त्री।

जैमाळ, जैमाळा–सं०स्त्री० [सं० जयमाला] विजय के उपलक्ष में पहनाई जाने वाली माला।

जैमिनि, जैमीनी–सं०पु० [सं० जैमिनि] व्यासजी के मुख्य चार शिष्यों में एक। ये पूर्व मीमांसा के प्रवर्त्तक थे (ऊ.का.)

जैयली—देखो 'जेळी' (अल्पा., रू.भे.)

जैयो–सं०पु०—१ एक प्रकार का कीड़ा जो प्रायः पशुओं के पैरों तथा दूध देने वाले पशुओं के स्तनों में पड़ जाता है जिससे जख्म हो जाते हैं। वर्षा के पानी से यह शीघ्र मिट जाता है।

रू०भे०—जइयो।

२ देखो 'जवौ' (रू.भे.)

जैं'र–सं०पु० [फा० ज़ह्र] वह पदार्थ जिसके शरीर में पहुंचने से मृत्यु हो जाय या कोई अंग रोगग्रस्त हो जाय, विष, जहर। उ०—पूठै पई उठावै पोठां, खोस तंदुळ भूठा फळ खाय। दार खड़ग कर सार दिखावै, जैं'र पीयौ आणंद उपजाय।—भगतमाळ

पर्या०—काळकूट, कुटक, गर, गरळ, गाळ, जहर, तीखण, वखम, विरसन, मार, मारण, रस, रससार, विख, संसार, हळाहळ, हाळाहळ।

मुहा०—१ जैं'र उगळणौ—किसी के विरुद्ध द्वेषपूर्ण बात कहना। मर्म की बात कहना। जली-कटी सुनाना. २ जैं'र खाणौ—दुःख, ईर्ष्या, लज्जा किसी बात या आदमी के कारण ग्लानि से आत्म-हत्या पर उतारू होना. ३ जैं'र दैणौ—किसी के प्राण हरने के निमित्त जहर खिला देना. ४ जैं'र री गांठ, जैं'र री पोटळी—वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो। खराबी पैदा करने वाला, लड़ाई का मूल. ५ जैं'र रौ कांई थोड़ौ—विष का क्या कम। विष तो कम भी भयंकर ही होता है। दुष्ट का क्या छोटा. ६ जैं'र रौ घूंट स्वाद रहित या अत्यधिक कड़ुआ, जो खाने योग्य नहीं हो. ७ जैं'र रौ घूंट पीणौ—किसी अप्रिय या अनुचित बात को देख कर मन में उठने वाले आवेश को दबाये रखना। क्रोध प्रकट नहीं करना। मि०—गम खाणी।

८ जैं'र रौ बुझायोड़ौ—वह जो बहुत अधिक उत्पात् या अनिष्ट करता हो। विषाक्त किया हुआ तेज धार वाला हथियार. ९ जैं'र सूं जैंर डटणौ—जहर से जहर दबता है। दुष्ट के साथ दुष्टता का ही बर्ताव करने से वह दबता है। दुष्ट के साथ यदि नरमी का वर्ताव किया जायगा तो वह अपनी दुष्टता अधिक दिखायेगा।

२ अत्यधिक अनुचित या अप्रिय कार्य, जो बहुत ही नागवार हो।

मुहा०—१ जैं'र करणौ—असह्य कर देना। अप्रिय बना देना.
२ जैं'र मिळाणौ—किसी बात का असह्य या अप्रिय कर देना.
३ जैं'र लागणौ—चित्त को बहुत खराब प्रतीत होना, बहुत अप्रिय लगना। नागवार महसूस होना।

रू०भे०—जैंहर।

जैं'रबाद—देखो 'जहरबाद' (रू.भे.)

जैं'रवाय—देखो 'जहरवायु' (रू.भे.)

जैं'रमो'रौ–सं०पु० [फा० जहरमुहरा] १ काले रंग का एक प्रकार का पत्थर जो सर्पादि का विष शरीर से खींचने की कथित शक्ति रखता है. २ हरे रंग का एक प्रकार का पत्थर जो औषध रूप से प्रयोग किया जाता है। जहरमोहरा

रू०भे०—जैं'रीमो'रौ।

जैं'रवाय—देखो 'जहरवायु' (रू.भे.)

जैं'री–वि० [फा० ज़ह्र+रा.प्र.ई] विषयुक्त, विषैला, जहरी।

उ०—सुख सूं सूती थी परिजा सुखियारी, दुसटी आतां ही करदी दुखियारी। जग में ऊसरियौ खापरियौ जैं'री। वाल्हा बीछोडण वापरियौ वैरी।—ऊ.का.

रू०भे०—जैहरी।

जैं'रीमो'रौ—देखो 'जैं'रमो'रौ' (रू.भे.)

जैरीलौ—देखो 'जैं'री' (अल्पा., रू.भे.)

जैळी—देखो 'जेळी' (रू.भे.)

जैवंत–सं०पु०—राठौड़ों की मुख्य तेरह शाखाओं में से एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

वि०—जीतने वाला, विजयी। उ०—दिग्रंण दांन मांन दातार अमर नांम दार ऊदार। सगह सूर धीर सांमंत, विगळ जोतिवंत जैवंत।—ल.पिं.

जैसड़ो, जैसो—देखो 'जेहड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जैसड़ी, जैसी)

जैसळ-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
वि०—जैसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी।

जैसळगर—देखो 'जैसलमेर' (रू.भे.)

जैसळगरो—देखो 'जैसलमेरो' (रू.भे.)

जैसळगिर—देखो 'जैसलमेर' (रू.भे.) उ०—तोड़ै खगि तुरकांण, रिण पड़ि ऊजड़ियो 'रचो'। भाटी भला भवाड़िया, जैसळगिर जोधांण।

जैसळगिरो—देखो 'जैसलमेरो' (रू.भे.) उ०—'गोइंद' पेखि जैसळगिरो, बाघ बीसमो बीरवर। रिण वार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगां जिम भागा कुंअर।—गु.रू.बं.

जैसळमेर-सं०पु० [सं० जयसल+नगर] जयसल नामक भाटी वंश के राजा ने विक्रमी संवत् १२१२ श्रावण शुक्ला १२ को किले की नींव डाली और उसके पास एक नगर बसाया जिसका नाम जैसलमेर पड़ा और इसी नगर के कारण समूचे राज्य का नाम जैसलमेर पड़ा।
रू०भे०—जेजळमेर, जैसलगर, जैसलगिर, जेसांण, जेसांणो, जैसांण, जैसांणो।

जैसळमेरो-वि०—जैसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी।
उ०—सिंभूनाथ कह्यो सो वेरां, भला हुवै तेरा अणभंग। मिळियो माल सुमेरां माफिक, यो जैसळमेरो उतमंग।
—दुरजनसाळ भाटी री गीत
रू०भे०—जैसलगरो, जैसलगिरो।

जैसांण, जैसांणो—देखो 'जैसलमेर' (रू.भे.) उ०—१ जैसांण लूटियो दे जुहार, बीकांण लूटियो पांच वार। रूपांण भरै डंड खिमे रेस, नागांण करै सेवा नरेस।—वि.सं.
उ०—२ माड-धर बीचमें महोछिव मंडांण, दांन सूं अदेवां हिया दहतां। 'चूंड' हर अनड़ जैसांण चंवरी चढ़ै, बीदगां चढ़ाया गजां वहतां।—द.दा.
उ०—३ गढ़ जैसांणै बीकपुर, कै सीरोही पार। जग मैं भूपत थांन रो, बुध अनुमांन विचार।—रा.रू.

जैसा-सं०स्त्री०—भाटी वंश की एक शाखा।
रू०भे०—जेसा, जेहा, जैहा।

जैसो-वि० (स्त्री० जैसी) जैसा। उ०—अर जोधपुर जैसो राज वडेरां री बांधियो पातसाही खालसै रहतो दीसै है।—द.दा.
सं०पु०—भाटी वंश की जैसा शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०—जेसो।

जैसो-रांणो-सं०पु०—एक मारवाड़ी लोकगीत।

जैहर—१ देखो 'जै'र' (रू.भे.) (अ.मा.)
सं०पु०—२ सांप (अ.मा.)

जैहरी—देखो 'जै'री' (रू.भे.)

जैहा—देखो 'जैसा' (रू.भे.)

जैहो—देखो 'जेहो' (रू.भे.)

जों-वि०—ज्यों, समान।

जोंईडी-सं०स्त्री०—यूका का बच्चा।

जोंज, जोंट-सं०पु०—शमी वृक्ष या इसका पका फलीनुमा फल।
(रू.भे. जांट) (मि० खोखो)

जो-सं०पु०—जौ।
सर्व० [सं० यः] वह सम्बन्ध वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई संज्ञा के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाय।
क्रि०वि [सं० यतः, प्रा० जओ, अप० जओ] यदि, अगर।
उ०—१ वळिबंधण मूफ स्याळ सिंघ बळि, प्रासै जो बीजौ परणै। कपिल धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी करि चांडाळ तणो।—वेलि.
उ०—२ आज आगन्या आपो जो, मुहने हस्तनापोर जाऊं धाई। गदा तणे प्रहार, मारूं साथे सोए भाई।—नळाख्यांन
रू०भे०—जु।

जोअ—देखो 'जोग' (जैन)

जोअण—देखो 'जोजन' (रू.भे.) उ०—सिंधु परइ सत जोअणे, खिवियां बीजळियांह। सुरहउ लोद्र महक्कियां, भीनी ठोवड़ियांह।—ढो.मा.

जोअणो, जोअवो—देखो 'जोवणो, जोववो' (रू.भे.)

जोइ-सं०स्त्री० [सं० ज्योतिः] १ अग्नि (जैन) २ ज्योति, प्रकाश। (जैन)
[सं० जोपित्] ३ स्त्री, महिला. ४ देखो 'जो' (रू.भे.)
उ०—जोइ जळद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, धुरै नीसांण सोइ घण-घोर। प्रोळि-प्रोळि तोरण परठीजै, मंडै किरि तंडव गिरि मोर।
—वेलि.
रू०भे०—जोई।

जोइजणो, जोइजवो-क्रि०अ०—आवश्यक होना, जरूरी होना।
उ०—पातसाह सीख दी तरै राठोड़ प्रिथीराज नुं महेसजी मिळिया ही नहीं जांणियो खेरवो दियो जोइजसी।—राव चंद्रसेन री वात

जोइजै—देखो 'जोईजै' (रू.भे.)

जोइठांण-सं०पु० [सं० ज्योतिः स्थान] अग्नि-स्थान, अग्नि-कुण्ड (जैन)
रू०भे०—जोईठांण।

जोइण-सं०स्त्री०—१ जोशी की स्त्री. २ देखो 'जोजन' (रू.भे.)
उ०—१ काछी करह वियूंभिया, घड़ियउ जोइण जाइ। हरणाखी जउ हसि कहइ, आंखिसि एथि विसाइ।—ढो.मा.
उ०—२ लांबउ पिहुतउ इक लख जोइण नै विस्तार।—ध.व.ग्रं.
रू०भे०—जोइन।

जोइणि, जोइणी—देखो 'जोगणी' (रू.भे.) उ०—उज्जेणि वक्कु जोइणि तणउं, जिणि पडि वोहउ भांग वलि। जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरवि, हुयउ न होइ सइ इत्थु कलि।—ऐ.जै.का.सं.

जोइणो, जोइवो-क्रि०स०—देखो 'जोवणो, जोववो' (रू.भे.)
उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिनामति गढ़ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै। जांणै आकास लोग गिलण नूं दांत

किया छै · ऊंची निजरि करि जोइजै तौ माथा री मुगट खड़हड़ै ।
—रा.सा.सं.

जोइन—देखो 'जोइग' (रू.भे.) उ०—आंखि निमांणी क्या करइ, कउवा लवइ निलज्ज । सउ जोइन साहिब वसइ, सो किम आवइ अज्ज ।—ढो.मा.

जोइय-वि० [सं० योजित] जोता हुआ (जैन)

जोइयइ—देखो 'जोइजै' (रू.भे., जैन) उ०—कल्प व्रक्ष समउ प्रभु कहियइ, जो जोइयइ ते जाचउ ।—स.कु.

जोइयणौ, जोइयबौ—देखो 'जोवणौ जोवबौ' (रू.भे.)
उ०—झावकि पइठी झालि, सुंदरि कांइ न सळसळइ । वोलइ नहीं ज वाळ, घण धंधूणी जोइयउ ।—ढो.मा.

जोइयांणी-सं०स्त्री०—जोइया वंश की कन्या । उ०—राजा प्रथीराज चहुंवांण री वैर सुहबदे जोइयांणी रूसणै बाप रै घरै हुती ।—नैणसी

जोइया-सं०स्त्री०—प्राचीन काल की एक क्षत्रिय जाति या वंश विशेष जो उत्तर पश्चिम भारत में रहती थी । इसका उल्लेख पांणिनी ने भी अपनी व्याकरण में किया है । उ०—वीरमजी जोइयां सूं झगड़ौ कर कांम आया जोइयावाटी में ।—बां.दा.ख्यात
रू०भे०—जोइया ।

जोइयावाटी, जोइयावार-सं०स्त्री०—सतलज नदी व वहावलपुर के समीप राजस्थान के जोहियावंशी क्षत्रियों का निवास-स्थान ।
उ०—वीरमजी जोइयां सूं झगड़ौ कर कांम आया जोइयावाटी में ।
—बां.दा.ख्यात

जोइयोड़ौ—देखो 'जोवियाड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जोइयोड़ी)

जोइसंग-सं०पु० [सं० ज्योतिषांग] ज्योतिषांग (जैन)

जोइसंगविउ-सं०पु० [सं० ज्योतिः शास्त्रांग विद्] ज्योतिषांग के वेत्ता, ज्ञाता (जैन)

जोइस-सं०पु० [सं० ज्योतिष्क] १ ज्योतिषी (जैन) २ ज्योतिषीदेव जो इस पृथ्वी से ७९० योजन ऊपर की ओर रहते हैं (जैन)

जोइसम-वि० [सं० ज्योतिः सम] अग्नि के समान (जैन)

जोइसवंत-वि०—ज्योतिषवान । उ०—जोइसवंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वळि जेहोजी । पाय कमळ तेह ना नित प्रणमियइ, सोवन वरण सुदेहोजी ।—स.कु.

जोइसालय-सं०पु० [सं० ज्योतिषालय] ज्योतिषी-देवों का आलय (जैन)

जोइसी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) उ०—त्रिकाळदरस्सी जोइसी, कहै एम आगम कहा । असमांन उपद्रह थाइसै, उठी आग पांणी महा ।
—गु.रू.बं.

जोई—देखो 'जोड़' (रू.भे.)

जोईजणौ, जोईजबौ-क्रि०अ०—जरूरत पड़ना, आवश्यक होना ।
उ०—सिवांणी राजाजी हीज तोड़ियौ हुतौ परिण मुंहतौ 'पतौ' मुंहतै नूं ऊपरि जिका वस्तु जोईजती सु पहुचाड़तौ तिण वास्तै गांव टूटौ नहीं ।—द.वि.

जोईजै-अव्य०—उचित है, उपयुक्त है, मुनासिब है, चाहिए ।
उ०—१ तरै रांणकदे कह्यौ, माता ! अबै थेट आज दिन ऊगतां पहली जाळोर पोहतौ जोईजै ।—वीरमदे सोनगरा री वात
उ०—२ इतरै कांठळ ऊठी एकै पाखती, कागल्या नांखती, दीठौ जोईजै घटा रौ वणाव, इसौ ही तिणमैं इंद्र धनुख रौ तणाव ।
—र. हमीर
रू०भे०—जोइजै, जोयजै, जोयीजै ।

जोईठांण—देखो 'जोइठांण' (रू.भे., जैन)

जोईया—देखो 'जोइया' (रू.भे.)

जोईसी-सं०पु० [सं० ज्योतिषी] ज्योतिषी । उ०—१ सूदन कहै रूड़ा जोईसी । बाचइ पतड़ौ बोलइ छइ सांच ।—बी.दे.
उ०—२ घड़ि मंडि घड़ियाल जोइ जोतक जोईसी ।—गु.रू.बं.

जोक— देखो 'जळोक' (रू.भे.)

जोकर—देखो 'जोखर' (रू.भे.)

जोकिणी—देखो 'जोगणी' (रू.भे.)

जोख-सं०स्त्री० [सं० योषा] १ स्त्री, महिला । उ०—जोवत जोख जमाव, घणूं नूत भेद घणैं । क्रीड़ति जांणि किसन्न, व्रंदावन रास वणै ।—सू.प्र.
२ देखो 'जळोक' (रू.भे.) उ०—(थे) राजवियां री धीह, (म्हे) पांणी मां'ला काछवा । जोख न तातौ जीह, पर घर वासौ नी लियां ।—रसराज
३ इच्छा, अभिलाषा, ख्वाहिश । उ०—जणां खीवसीजी वीठू नूं बुलाय कै कही जे कुंवर जाय समझाय जे थारै विवाह तौ घणा ही हुवा फेर ही जोख छै तौ सखरी जायगां देख एक दोय और कर लैं ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
४ रुचि. ५ शौक ।
[सं० युष = सेवायां] ६ खुशी, मौज, आनन्द, हर्ष ।
उ०—१ नवलापुरी पुरी इंद्र नोखां । जोए बाग नदी जळ जोखां ।
—सू.प्र.
उ०—२ जोधार चढ़ै बहु वळै जाय । पोह तेज देख सो लगय पाय । नीसांण घोख कर अमल नोख । जोधांण करै आथांण जोख ।—वि.स.
उ०—३ आखेट भेळा रमै अधपत, जोख सूं दिन जाय । गायणी जांघड़ गावतां इण, रीत गोखां आय ।—पा.प्र.
७ वैभव, ऐश्वर्य. ८ (तोलने) जोखने का कार्य या भाव. ९ वजन, तोल. १० तोलने का बाट. ११ दावत. १२ क्रीड़ा (कांम-किलोल)
उ०—मन हुय खुसी सुरगपुर मोल्ही, जोखां की निस दीह जठै । सोळंखणी सती हुय स्रग में, आई खांमद कनै उठै ।
—महेसदास कूंपावत रौ गीत
सं०पु०—१३ जेवर । उ०—जगपुड़ जगा पाखरां जंगम, रमहर माथै घात रहै । रुकमां जोख जोखियां रांणा, पड़िया जोखै दिली पहै ।—महारांणा स्री जगतसिंह (वडा) रौ गीत

१४ भय. डर। उ०—दूज्दा देव पवांण सिद्ध-गण सांमा मिळसी, बांगा भीसम जोख विचरता दूर विचरसी। नमजो चवळ हेत हिये में पादर पांणो। रंतीदे भूकंत जिगन री कीरत जांणो।—मेघ.

रू०भे०—जख्म, जोख।

जोखणो, जोखबो—क्रि०स०—१ वजन करना, तोलना।

उ०—१ बांणिये टकै री गुळ जोख्यो।—वांणी

उ०—२ जगगुर 'जगा' पागरां जंगम, रमहर मार्थे घात रहै। दकमां जोख जोखियां रांणा, पड़िया जोखे दिली पहै।

—महारांणा श्री जगतसिंह (बडा) री गीत

२ भयभीत करना, आतंकित करना। उ०—वारण घड़ हेक तणी वधूसै, वारण हेके ले विमळ वमळ। जोखिया भला रांण जग जेठी, दहू पतसाहां तणा बळ।—महारांणा सांगा री गीत

जोखणहार, हारो (हारी), जोखणियो—वि०।

जोखवाड़णो, जोखवाड़बो, जोखवाणो, जोखवाबो, जोखवावणो, जोखवावबो, जोखाड़णो, जोखाड़बो, जोखाणो, जोखाबो, जोखावणो, जोखावबो—प्रे०रू०।

जोखिम्रोड़ो, जोखियोड़ो, जोख्योड़ो—भू०का०कृ०।

जोखीजणो, जोखीजबो—कर्म वा०।

जोखत, जोखता—सं०स्त्री० [सं० योषित्, योषिता] १ औरत, स्त्री। उ०—तुरियै भव तारिया, छांन छींपै घर छाई। जोखता जैदेव री, जगत जांणै जीवाई।—ग्रलूनाथ

२ वेश्या, गणिका। उ०—साध सराहै सो सती, जती जोखता जांण। रज्जब सच्चै सूर का, वैरी करत बखांण।—रज्जब

जोखम—सं०स्त्री०—१ वह मूल्यवान पदार्थ या धन-दौलत जिसके कारण चोर-डाकुओं द्वारा भारी विपत्ति आने की सम्भावना हो।

मुहा०—१ जोखम उठाणी, जोखम सहणी—ऐसा कार्य जिसमें भारी नुकसान या खतरे की आशंका हो. २ जोखम में पड़णो—किसी आपत्ति में फँसना। संकट में उलझ जाना।

२ आपत्ति, संकट। उ०—१ अरजण वांण जिसो आखाड़ै, गज खग झाड़ै गीत गवाड़ै। 'अखो' 'रिदावत' रावत एहो, जोखम विरियां भीखम जेहो।—रा.रू. उ०—२ हरखीयो रिख मन मांह आणंद हुओ। जीव जांमण मरण कीध जोखम जुओ।—रुकमणी हरण

३ खतरा, भय, डर। उ०—१ तद मां भीतर बुलाय कही बेटा इण घर विवाह क्यूं करो जिण में जीव नूं जोखम हुवै सो क्यूं करै।

—कूंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ खावै जहर अमल पण खावै, करक मसांणां मढ़ी करै। जीवै नर जतरै नह जोखम, मरण तणै दिन अवस मरै।—अज्ञात

४ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। उ०—लाखां नै हजारां तणी रे! जोखम लेले तो मोल। तेहिज निरधन हो गया रे। प्रांणी फिरता डावाडोल।—जयवांणी

जोखमणो, जोखमबो—क्रि०अ०—वीर गति को प्राप्त होना, मृत्यु को प्राप्त होना, मरना। उ०—भिड़िया तिकै मुंवा काइ भमिया। जट लोहांण खत्री जोखमिया। जुड़ि गज खेत पड़ै बोह जिसड़ा। इकसठ समर जीविया इसड़ा।—सू.प्र.

जोखमिणो, जोखमिबो—क्रि०अ०—१ टूटना. २ भागना. ३ मरना।

जोखमियोड़ो—भू०का०कृ०—१ मरा हुआ. २ टूटा हुआ. ३ भागा हुआ। (स्त्री० जोखमियोड़ी)

जोखमी—वि० वह पदार्थ जिसके कारण किसी आपत्ति के आने की सम्भावना हो।

जोखसोख—सं०पु०—१ वैभव, ऐश्वर्य. २ धन-दौलत. ३ विषय-विलास।

जोखहारी, जोखर—सं०पु०—१ आमोद-प्रमोद का कार्य करने वाला.

२ अपनी वेश-भूषा और विशेष बनावट से दूसरों को हँसाने वाला.

३ योद्धा। उ०—क़ायर जमि जोखर कड़क, लाभ जुड़घां बिण लेह। अज रीमां थाव र अहर, टिक कतरा टाळेह।—रेवतसिंह भाटी

४ हानि पहुँचाने वाला, शत्रु।

रू०भे०—जोकर, जोखाहर।

जोखा—सं०स्त्री० [सं० योषा] स्त्री, नारी, महिला (ह.नां., अ.मा.)

जोखाई—सं०स्त्री०—तोलने जोखने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

जोखारा—सं०स्त्री०—चूसने वाली स्त्री, वेश्या।

जोखाहर—देखो 'जोखहारी' (रू.भे.)

जोखित, जोखिता—देखो 'जोखत, जोखता' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा.)

जोखिया—सं०पु० (ब.व.) आनन्द, मौज। उ०—हमैं थे बैठा जोखिया करो।—जलाल बूबना री बात

जोखियोड़ो—भू०का०कृ०—१ वजन किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, आतंकित किया हुआ। (स्त्री० जोखियोड़ी)

जोखो—सं०पु०—१ हानि, क्षति। उ०—१ जोखो दांतां तणो न जांणै। दांतां भिडणांणा देसोत।—द.दा.

उ०—२ अर कारी की सु ईम चींतवि अर की हुती जु जीव रै जोखै लग अटकळी हुती, का घर बार हुंती रहै। पणि केसवराय जे मारै नहीं तौ किम ही ज मारीजै नहीं।—द.वि.

२ खतरा, भय। उ०—कुहाड़ा मार जिहाज वटका करै, धरि सारां घरै मेट धोखो। करां खग तोल मुख बोल कहियो 'करण', जितै ऊभो डरै नहीं जोखो।—द.दा.

क्रि०प्र०—आणो, पड़णो।

३ जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व। उ०—दूद-कुळ-आभरण धुहड़हर दाखवै, धीर मंड डरै मत करै धोखो। प्रिथी पर माहरो सीस पड़ियां पछै, जांणजै ताहरै सीस जोखो।

—राठौड़ जैमल वीरमदेवोत री गीत

क्रि०प्र०—होणो।

४ क्षत, पीड़ा। उ०—पछै आंख्यां कची पड़ गई, ओखध घणो कीधो तिण सूं आंख्यां में जोखो थयो।—भि.द्र.

५ कष्ट, दुःख, संताप। उ०—हाय रे हाय फूटो हियो, जतन न दीसै

जेण रौ। मर जाय जदे जोखौ मिटै, श्रौ घोकौ है ऐण रौ।—ऊ.का.

६ वह धन जिसके पास रहने से चोर डाकुओं द्वारा लूटने का भय रहे, वह वस्तु जिसको शत्रु लेने के लिये उत्सुक या कटिवद्ध हों।

उ०—'सोनग' धोकौ संभरै, सुण जोखौ निज साथ। दाह मिटी राजी थयौ, श्रौरंग साह समाथ।—रा.रू.

क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ।

७ श्रमानत। उ०—पहलौ दुख हाथ में होकौ। दूजौ दुख परायौ जोखौ।—श्रज्ञात

८ श्राशंका। उ०—हाथी-हाथ फारगती करी, कुण जोखौ राखै? मूंडै-मूंड कह्यौ—'गायां तौ ऊछरगी नै पोठा लारै छोडगी।—वांणी

क्रि०प्र०—पड़णौ, राखणौ।

९ श्रापत्ति, विपदा, संकट। उ०—रोळौ देख टळौ मत रावत, दुजड़ां भड़ां भिकोळौ देह। जतन कियां उपजै तन जोखौ, लै लै कियां न डाकण लेह।

मुहा०—१ जोखै में पड़णौ— किसी श्रापत्ति में फँसना, विपदा में पड़ना. २ जोखौ मोल लैणौ—जान-बूझ कर या मूर्खता के कारण किसी संकट में फंस जाना।

१० हिसाव, लेखा।

क्रि०प्र०—करणौ।

११ धन-दौलत, माल-मिल्कियत।

जोगंगी–सं०पु० [सं० योगांगी] योगाभ्यास का पूर्ण जानकार।

रू०भे०—जागंगी।

जोगंद, जोगंद्र–सं०पु० [सं० योगेन्द्र] १ देखो 'जोगेन्द्र' (रू.भे.)

उ०—पाळ री पीठ जोगंद्र पीर। वींटियौ सांवळां हूंत वीर।—पा.प्र.

जोगंधर–सं०पु० [सं० योगंधर] शत्रु के चलाये हुए अस्त्र से अपना बचाव करने की एक युक्ति।

जोग–सं०पु० [सं० योग] १ अवसर, मौका। उ०—पिता ताहरौ माहरौ साच पायौ। इसौ पावसी तूंज श्रौ जोग श्रायौ।—सू.प्र.

२ समय, वक्त। उ०—पोळ खुलण रौ दीखै नांही जोग ऐ, जी वौ भँवरजी वौ, कोई पोळचां में सूत्यौ पूत कलाळ, ए जी म्हारा राज।
—लो.गी.

३ शिव, महादेव (डि.नां.मा.) ४ चन्द्रमा, चांद (श्र.मा.)

५ गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़. ६ संयोग, मेल-मिलाप. ७ उपाय, युक्ति. ८ श्रौषधि, दवा. ९ शुभ काल, अच्छा समय. १० ध्यान, तप, वैराग्य। उ०—वदै इम ईसर सव्व-वियाप, जुवौ जिण थाय अजप्पा-जाप। अजप्पा-जाप तणौ तूं ईस, अजप्पा तोरा जोग अधीस।—ह.र.

११ मुक्ति या मोक्ष का उपाय, जीवात्मा का परमात्मा में जाकर मिलने का उपाय।

१२ प्रेम। उ०—देखी जूंणां दोय, नार पुरख भेळा निपट। कहसी वातां कोय, जोग तणी जी जेठवा।—जेठवा

१३ योगाभ्यास, योग साधना। उ०—पदमासण श्रासण जोग पूर, क्रोध में हुतासण तप करूर। जोग में धुनी चढ़ छोह जंग, उनमनी मुद्रा निरवोह अंग।—वि.सं.

१४ चित्त को एकाग्र कर के ईश्वर में लीन करने का एक विधान जो छः दर्शनों में से एक है. '१५ दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त को केवल एक ही वस्तु में स्थिर रखना, मन को इधर-उधर भटकने या चंचल होने से रोकना।

उ०—पदमासण श्रासण जोग पूर, क्रोध में हुतासण तप करूर। जोग में धुनी चढ़ छोह जंग, उनमनी मुद्रा निरवोह अंग।—वि.सं.

यौ०—जोगश्रठंग, जोगश्रधीस, जोगधाता, जोगनिधांन, जोगपंथ, जोगपति, जोगपारंगत, जोगपीठ, जोगवळ, जोगभ्रस्ट।

१६ संगति. १७ धोखा, छल. १८ धन-दौलत. १९ सांम, दाम, दंड, भेद के चारों उपाय. २० वशीकरण का उपाय. २१ लाभ, फायदा. २२ सुभीता. २३ भजन करने की विधि. २४ सम्बन्ध. २५ ताड-घात. २६ लेख, प्रारब्ध। उ०—भाग लिख्योड़ा भोग, भला बुरा सब भोगणा। झूठा हुवै न जोग, चतुराणण रा चकरिया।
—मोहनराज साह

२७ सन्यास। उ०—मगसिर मासि गांमातरै, मगसिर हुवा लोग। हुं पिण छोडी मगसिर नीं. हिवै लेस्युं जोग।—ध.व.ग्रं.

मुहा०—१ जोग उतारणौ—सन्यास छोड़ कर गृहस्थ जीवन अपनाना. २ जोग लेणौ—सन्यास लेना।

[सं० युजिर = योगे] २८ श्राज्ञा (ह.नां.) २९ सूर्य श्रौर चन्द्र के राशि, श्रंश, कला श्रौर विकला के योग के तेरह श्रंश बीस कला के प्रत्येक विभाग के काल का मान जो सूर्य श्रौर चन्द्र की गति-भेद के कारण कम से कम बीस घंटे श्रौर अधिक से अधिक पच्चीस घंटे का होता है, यही पंचांग के पांच श्रंगों में से चतुर्थ श्रंग है। इसके सत्ताइस भेद होते हैं—१ विषकुम्भ, २ प्रीति, ३ श्रायुष्मान्, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतिपात, १८ वरियाण, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति।

३० फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि, वार श्रौर नक्षत्र के सम्बन्ध से बनने वाला समय विशेष जो चार प्रकार का होता है—(क) तिथि व वार सम्बन्धी—इसके पांच भेद होते हैं—१ सिद्धिदा तिथि, २ दग्ध योग, ३ मृतदा तिथि, ४ कर्कच श्रौर ५ हुताशण।

(ख) वार व नक्षत्र सम्बन्धी—इसके अठाइस भेद होते हैं—१ श्रानन्द, २ कालदण्ड, ३ धुम्राक्ष, ४ प्रजापति, ५ सौम्य, ६ ध्वांक्ष, ७ ध्वज, ८ श्रीवत्स, ९ वज्र, १० मुद्गर, ११ छत्र, १२ मित्र, १३ मानस, १४ पद्म, १५ लुम्बेक, १६ उत्पात, १७ मृत्यु, १८ काण, १९ सिद्धि, २० शुभ, २१ अमृत, २२ मूसल,

२३ गद, २४ मातंग, २५ राक्षस, २६ चर, २७ स्थिर और २८ वर्द्धमान।

इनके अतिरिक्त निम्न ६ भेद और हैं—१ अमृतसिद्धि, २ सर्वार्थ सिद्धि, ३ दग्ध, ४ यमघंट, ५ यमदंष्ट्रा और ६ वज्रमूसला।

(ग) तिथि व नक्षत्र सम्बन्धी—इसके तीन भेद होते हैं— १ कालमुखी, २ ज्वालामुखी और ३ तिथि नक्षत्र दोष।

(घ) तिथि, वार व नक्षत्र सम्बन्धी—इसके चार भेद होते हैं— १ राज योग, २ कुमार योग, ३ स्थिर योग और ४ हलाहल, (विष योग)।

सं०स्त्री० [सं० योगिनी] ३१ पँवारवंशोत्पन्न एक देवी।

वि०—१ योग्य, काबिल, लायक। उ०—जीव दांन देवहु इन्हें, मरण जोग ये नांहि। संकर भोळानाथ मैं, करूं विनय तुम पांहि। —जलाल बूबना री वात

२ उचित, योग्य। उ०—सू मोयलां वदळे तैं म्हां ऊपर तरवार बांधी, सु आ वात तनै जोग नहीं।—द.दा.

रू०भे०—जोगि।

जोग-ग्रठंग—देखो 'ग्रस्टांग जोग' (रू.भे.) उ०—कोटिक जोग-ग्रठंग सधौ, अरु कोटि तपौ तप नेम घराबर। ये 'किसना' सुपने न कहूं, यक स्री रघुनायक नांम बराबर।—र.ज.प्र.

जोगग्रधीस-सं०पु० [सं० योग+अधीश] योगाधीश, ब्रह्मा।

उ०—उदोत-तपोनिध ग्रंगुण-ईस, अजीत-जरा-ग्रत जोग-ग्रधीस। विसम्र बिमोह-विसव्व बिग्यांन, रती-पति-तात प्रकत्त-राजांन।—ह.र.

जोगखेम-सं०पु० [सं० योगक्षेम] अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा (जैन)

जोगजोगी-सं०पु० [सं० योगयोगिन्] योगासन पर बैठा हुआ योगी।

जोगटी—देखो 'जोगणी' (अल्पा., रू.भे.)

जोगड़ौ, जोगटौ—देखो 'जोगी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जटाजूट जोगी जबर है, जूनौ जिणरौ जोगड़ौ। इळा पिंगळा जड़ांपियांळां, भल मरु फरजन फोगड़ौ।—दसदेव

उ०—२ जटा कनफटा जोगटा, खाखी पर-धन खावणा। मरुधर में कोढ़ां मिनख, करसा एक कमावणा।—ऊ.का.

उ०—३ दुख थारै 'पेमा' उरै, मन रो भ्रम मोटोह। जांण्यो तोनूं जोगटा, 'बूडा' रो बेटोह।—पा.प्र.

(स्त्री० जोगडी, जोगटी)

जोगण—१ देखो 'जोगणी' (रू.भे., हिं.को.) उ०—१ जमला मैं जोगण भई, पैरै म्रग की खाल। बन बन सारो ढूंढ़ियो, फरत जमाल जमाल।—रसराज उ०—२ वीर नाच रहिया छै। जोगण डाक बजावै छै। खप्पर भरै छै।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

उ०—३ घर अंबर रज डंबर अंधारां। जोगण करि चवसठि जैकारां।—सू.प्र. उ०—४ यो गहणौ यो वेस अब, कीजै धारण कंत। हूं जोगण किण कांम री, चूड़ा खरच मिटंत।—वी.स.

उ०—५ भूरै रे भ्रिगनैणी भूलर, मेह तणी परि मोरां। जोगण पीठ दियां सहजादी, घूमरि ऊपरि घोरां।—अमरसिंह राठौड़ री गीत

२ ज्वार की फसल का एक रोग विशेष जिससे ज्वार के भुट्टों पर जटा के समान बाल वाला पदार्थ निकलता है और दानों के स्थान पर राख निकलती है।

जोगणपुर, जोगणपुरी-सं०स्त्री० [सं० योगिनीपुर, पुरी] दिल्ली का नाम।

उ०—१ तांतळिया तुरंगम खड़ खग लीना, जुड़वा रथ जोगणपुर जाय। असपत राव तणा दळ आया, तिलोकसी न वीसरै ताय। —नैणसी

उ०—२ जोगणपुर लाहोर थटो, भक्खर मुळतांणाह।—गु.रू.बं.

उ०—३ जोगणपुरी मयण तण जोवण। वर प्रापत गहि पूरत वेस। परणें जिकी चढ़ी तें परणण। नव खंड हिंदू तुरक नरेस। —राठौड़ रतनसिंह ऊदावत री वेलि

उ०—४ धुकै आरांण असमांण नीसांण धुबै, ढहे मोहतांण मुगळांण ढेरी। जोड़ियां पांण सज डांण जोगणपुरी, फौज दखणांण पछमांण फेरी।—जोगीदास चांपावत री गीत

रू०भे०—जोगणिपुर, जोगणीनगर, जोगणीनग्गर, जोगणीपीठ, जोगणीपुर, जोगिणपुर, जोगिणिपुर, जोगिणीपीठ, जोगिणीपीठि, जोगिणीपुर।

अल्पा०—जोगणपुरी, जोगिणीपुरी।

जोगणपुरौ-सं०पु०—१ बादशाह। उ०—महादुरग अजमेर, सूर जीतौ रिण चाचर। जळियो जोगणपुरौ, वाइ जांणें वैसन्नर।—गु.रू.बं.

२ दिल्ली का निवासी. ३ मुसलमान, यवन।

उ०—१ गाजै बांण आरहट गोळां, धोळै दन साबळां धमोड़। गोपाळोत ऊपरै गुड़िया, जोगणपुरां तणा गळजोड़। —वीठळ गोपाळदासोत री गीत

उ०—२ पेखण कळह कमंध परणावण, लिखिया रुद्र नारद लगन। जोगणपुरा मांडही जांनी, जोगणपुर मंडियो जगन।—किसनो आढ़ो

४ चौहान राजपूत. ५ देखो 'जोगणपुर' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—जोगिणपुरौ, जोगिणीपुरौ।

जोगणि—देखो 'जोगणी' (रू.भे.)

जोगणिपुर—देखो 'जोगणपुर' (रू.भे.) उ०—केक दीह मझि कमंध, 'अभो' जोगणिपुर आए। दळ वगसी र दिवांण, जाय अरजां गुजराए।—सू.प्र.

जोगणिपुरी—देखो 'जोगणपुरी' (रू.भे.) उ०—फुरमास सुपारिस मोकळी, दिढ़ राजा दळ थंभ तूं। जागीर दीध जोगणिपुरै, कणियागिर साचोर सूं।—गु.रू.वं.

जोगणी-सं०स्त्री० [सं० योगिनी] १ देवी, शक्ति, योगमाया।

उ०—१ देवी माळणी जोगणी मत्त मेघा, देवी वेधणी सूर असुरां उवेघा। देवी कांमही लोचना हांम कामां, देवी वासनी मेर माहेस वांमा।—देवि. उ०—२ हरो अभिलाख कव अमर री हमरकै,

जोगणी वीसरो मती जाता। कदम दे दास रो नेस पावन करो, मूझ सिर धरो घणियाप माता।—खेतसी बारहठ

२ रणचण्डी। उ०—१ हरिखि हुइ जोगणी तांम नारद हसै, कांइमै त्रिधारो खडग कड़ियां कसै।—पी.ग्रं.

उ०—२ भाभा नांमी चकर सीस लागा भड़ण। पतर भर जोगणी रगत लागी पियण।—रुखमणी हरण

३ विधवा। उ०—कीधी घर घर जोगणी, दीधी नर नर दाह। जोवन गो आई जरा, की अब नाह सनाह।—बी.स.

४ सन्यासिनी. ५ तपस्विनी, योगाभ्यासिनी. ६ भिखारिन. ७ जोगी जाति की स्त्री. ८ पार्वती. ९ देखो 'जोगणपुर' (रू.भे.)

१० आठ विशिष्ट देवियां जो निम्न हैं—१ कात्यायणी [सं०कात्यायनी] २ काळरात्री [सं० कालरात्रि], ३ कूस्मांडा, [सं० कुष्मांडा] ४ चडिका, ५ चंद्रघंटा, ६ महागौरी, ७ सकंदमाता [सं० स्कंदमाता], ८ सैलपुत्री [सं० शैलपुत्री]।

११ ज्योतिष शास्त्रानुसार आठ देवियां जो निम्न हैं—१ इंद्रांणी, २ कौमारी, ३ चामुंडा (चंडिका), ४ नारायणी (वैष्णवी) ५ ब्रह्माणी (ब्राह्मी) ६ महालछमी (महालक्ष्मी), ७ माहेस्वरी (माहेशी) ८ वाराही।

१२ तिथि विशेष में किसी विशेष दिशा में स्थित योगनी।

उ०—१ तद राव गांगजी कहायो, 'ठीक छै।' नै सेखैजी कहायो 'सवारै लड़ाई करसां।' तारां गांगैजी नूं कयो, 'राज, जोगणी सांमी है सवारै।' तद सांगैजी वा जैतसीजी जांसी नूं बुलायो नै कयो, 'सवारै जोगणी कांई वाहण छै?' तद सारांई काक जांण कयो, 'काक तीरां आगै भाज जासी।'—द.दा.

उ०—२ दिसासूळ दाहनो पूठ जोगणी पुणीजै। डावो दिन मांनियो चंद सनमुखी सुणीजै।—पा.प्र.

१३ रणप्रिय चौसठ योगिनियां—

१ अंबिका (अम्बिका), २ अग्नि ज्वाळा (अग्नि ज्वाला), ३ अपरणा (अपर्णा), ४ ऐंद्री, ५ कात्यायणी (कात्यायनी) ६ काळरात्री (कालरात्रि) ७ कौमारी ८ कौसिकी (कौशिकी) ९ क्रिस्णपिंगळा (कृष्णपिङ्गला) १० गौरी ११ घोररूपा १२ चंडघंटा १३ चामुंडा (चामुण्डा) १४ जोगणी (योगिनी) १५ जळोदरी (जलोदरी) १६ डाकणी (डाकिनी) १७ तपस्वणी (तपस्विनी) १८ तुस्टी (तुष्टि) १९ त्रिदसेस्वरी (त्रिदशेश्वरी) २० दुरगा (दुर्गा) २१ ध्रति (धृति) २२ नारसिंही २३ नारायणी (नारायणी) २४ पारवती (पार्वती) २५ पुस्टी (पुष्टि) २६ ब्रह्मवादणी (ब्रह्मवादिनी) २७ ब्रह्मांणी (ब्रह्माणी) २८ भद्रकाळी (भद्रकाली) २९ भीमा ३० भ्रांमरी (भ्रामरी) ३१ महातपा ३२ महादेवी ३३ महाबळा (महाबला) ३४ महाविद्या ३५ महासस्ठी (महाषष्ठी) ३६ माहेस्वरी (माहेश्वरी) ३७ महोदरी ३८ मातृका (मात्रिका) ३९ मुगतकेसी (मुक्तकेशी) ४० मेघस्वना ४१ मेधा ४२ रगतदंतका (रक्तदन्तिका) ४३ रुद्रांणी (रुद्राणी) ४४ रौद्रमुखी ४५ लक्ष्मी ४६ लज्जा ४७ लाकणी (लाकिनी) ४८ वाराही ४९ विद्या ५० विसालाखी (विशालाक्षी) ५१ विस्णुप्रिया (विष्णुप्रिया) ५२ विस्णुमाया (विष्णुमाया) ५३ वैस्णवी (वैष्णवी) ५४ सरव मंगळा (सर्वमङ्गला) ५५ सरस्वती ५६ सहस्राखी (सहस्राक्षी) ५७ सकंभरी (शाकम्भरी) ५८ साकणी (शाकिनी) ५९ सावित्री ६० सिवदूती (शिवदूती) ६१ स्म्रति (स्मृति) ६२ स्तुति ६३ हाकणी (हाकिनी) ६४ हारणी (हारिणी)

मतान्तर से—

१ अंबिका २ अपरणा (अपर्णा) ३ इंद्रांणी (इन्द्राणी) ४ उग्रचंडा ५ उमा ६ कपाळणी (कपालिनी) ७ कात्यायनी ८ काळरात्री (कालरात्रि) ९ काळका (कालिका) १० काळी (काली) ११ कुसमांडा (कुष्माण्डा) १२ कौमारी १३ कौसिकी (कौशिकी) १४ खमा (क्षमा) १५ खेमंकरी (क्षेमकरी) १६ घोररूपा १७ चंडघंटा १८ चंडनायका (चण्डनायका) १९ चंडवती २० चंडा २१ चंडिका २२ चंडी २३ चंडोग्रा २४ चामुंडा (चामुण्डा) २५ जयंती २६ जया २७ तारा २८ दुरगा (दुर्गा) २९ धात्री ३० नारसिंही ३१ प्रियंकरी ३२ ब्रह्मांणी (ब्रह्माणी) ३३ भद्रकाळी (भद्रकाली) ३४ भयंकरी ३५ भ्रांमरी (भ्रामरी) ३६ भीमा ३७ मनोन्मथणी (मनोन्मथिनी) ३८ महाकाळी (महाकाली) ३९ महागौरी ४० महानिद्रा ४१ महामोहा ४२ महोदरी ४३ माहेस्वरी (माहेश्वरी) ४४ मेधा ४५ रुद्रांणी (रुद्राणी) ४६ रौद्री ४७ वळप्रमथणी (वलप्रमथिनी) ४७ वळविकारणी (वलविकारिणी) ४९ वाराही ५० विजया ५१ वैस्णवी (वैष्णवी) ५२ सकंदमाता (स्कंदमाता) ५३ सरवमंगळा (सर्वमङ्गला) ५४ सरव भूतदायणी (सर्व भूतदायिनी) ५५ सांकरी (शाङ्करी) ५६ सांता (शान्ता) ५७ साकंभरी (शाकम्भरी) ५८ सिवदूती (शिवदूती) ५९ सिवा (शिवा) ६० सैलपुत्री (शैलपुत्री) ६१ स्वधा ६२ स्वाहा ६३ ६४

१४ देखो 'जोगण' (रू.भे.)

रू०भे०—जुगणी, जुग्गनी, जुग्गिनी, जुइणि, जोइणी, जोकणी, जोगणि।

अल्पा०–जोगटी।

जोगणीनगर, जोगणीनग्गर, जोगणीपीठ, जोगणीपुर—देखो 'जोगणपुर' (रू.भे.)

उ०—१ 'अभमल' ऊभळ दळां सभि आयो। नर सिणगार जोगणीनगर।—सू.प्र.

उ०—२ निज जोगणीपुर नाह, सुजि पड़ै दौला साह।—सू.प्र.

जोगणेस—सं०पु० [सं० योगिनीश] दिल्लीपति, बादशाह।

उ०—आकळे पुकार एह, जोगणेस द्वार जाइ। सांभळे स पातिसाह, आंम-खास कीध आइ।—सू.प्र.

जोगतंत-सं०पु० [सं० योगतंत्र] योगत्व, योग रहस्य । उ०—क्रिसण [illegible] का [illegible] देवण [illegible] । कांमिनी कहइ कांम प्रायो । [illegible] प्रादो प्रोर जिंदई विरोधी न था त्यांह लो [illegible] [illegible] । वेद का अरथी था, त्यांह कह्यो मूरत-[illegible] [illegible] । योगीस्वरां जांण्यो जोगतंत यो ही ।—वेलि. टी.
रू०भे०—जोगतन, जोगतन्त ।

जोगत-सं०स्त्री० [सं० योगतत्व] योगविद्या । उ०—इतरी विद्या हूं [illegible] हूं—प्रगम निगम, जोगत मुगत, गुरमंद, कायाकळप ।
—पंचदंडी री वारता

जोगतन, जोगतन—देखो 'जोगतंत' (रू.भे.)
उ०—कांमिनि कहि कांम, काळ कहि केवी, नारायण कहि अवर नर । देवारव दम कहै वेदवंत, जोगतत्त जोगेसर ।—वेलि.

जोगता-सं०स्त्री०—योग्यता । उ०—सीळवंती नै हो जोगता, धरम-पर्ने ब्रह माग ।—वि. चं. कुस

जोगती-वि०—योग्य । उ०—स्रीपत री बेटी तूं परण, वे कह्यो हूं [illegible] ह्वो म्हारै जोगती बात नहीं ।—पंचदंडी री वारता

जोगतीजोत—देखो 'जागतीजोत' (रू.भे.)

जोगदोस-सं०पु० [सं० योगदोष] पैर के ऊपर लेप करने से जो सिद्धि होती है उससे आहार आदि लेना (जैन)

जोगधाता-सं०पु० [सं० योग+धाता] महादेव, शिव । उ०—देवी सावित्री रूप ब्रम्मा मोहांणी, देवी ब्रम्म रै रूप तूं निगम वांणी । देवी गोरजा रूप तूं रुद्र राता, देवी रुद्र रै रूप तूं जोगधाता ।—देवि.

जोगनंद्रा, जोगनिद्रा-सं०स्त्री० [सं० योगनिद्रा] १ योगनिद्रा.
२ निर्विकल्प समाधि. ३ युगान्त में विष्णु की नींद. ४ निद्रा के कारण आने वाली झपकी. ५ देवी, दुर्गा, शक्ति । उ०—१ देवी आद अनाद ओंकार वांणी, देवी हेक हुंकार ह्रींकार जांणी । देवी आप ही आपां उपाया, देवी जोगनिंद्रा भवं तीन जाया ।—देवि.
उ०—२ भवांनी नमो दच्छ लोकेस छोनी । भवांनी नमो जोगनिद्रा अजोनी ।—मे.म.

जोगनिद्राळु, जोगनिद्राळु-सं०पु० [सं० योगनिद्रालु] प्रलय के समय योग निद्रा लेने वाले भगवान विष्णु ।

जोगनिधांन-सं०पु०—योगनिधान, योग का खजाना, योगपरिपूर्ण, योगस्थान । उ०—नमो अनंत नित्य अम्रत निधात, वडा कवि-इंद ब्रह्म विख्यात । नमो गुरु नारद ब्रह्म-गिनांन, नारायण जोगिय जोग-निधांन ।—ह.र.

जोगपंथ-सं०पु० [सं० योग पथ:] योगियों द्वारा अवलम्बन की जाने वाली राह, योग का रास्ता ।

जोगपत, जोगपति, जोगपती-सं०पु० [सं० योगपति] १ महादेव, शिव.
२ विष्णु ।

जोग-परिणांम-सं०पु० [सं० योगपरिणाम] जीव के परिणाम का एक प्रकार (जैन)

जोग-परिव्वाइया-सं०स्त्री० [सं० योगपरिव्राजिका] समाधि वाली परि-व्राजिका सन्यासिनी (जैन)

जोगपारंग, जोगपारंगत-सं०पु० [सं० योगपारंग] शिव ।
वि०—जो योग में प्रवीण हो, पूर्ण योगी ।

जोगपीट-सं०पु० [सं० योगपीठ:] देवताओं का योगासन ।

जोगबळ-सं०पु० [सं० योगबल] योग की साधना से प्राप्त होने वाली शक्ति, योगबल, तपोबल ।

जोगभ्रस्ट-वि० [सं० योगभ्रष्ट] चित्त विक्षेप या अन्य कारणों से जिसकी योग-साधना पूरी नहीं हुई हो, जो योगमार्ग से गिर गया हो ।

जोगमाता-सं०स्त्री० [सं० योगमातृ] देवी, शक्ति, दुर्गा ।

जोगमाय, जोगमाया-सं०स्त्री० [सं० योगमातृ] १ दुर्गा, महामाया, योगमाया, देवी, शक्ति । उ०—महारुद्र डेरू वजै जोगमाया । इसा थाट ले तीर सामंद्र आया ।—सू.प्र.
२ दिल्ली नगर । उ०—दिल्ली सहर जोगमाया जिसके दरम्यांन बावन वीर चौसठ जोगणी का वास ।—सू.प्र.
३ [सं० योगमाया] यसोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या जिसको कंस ने मारा था. ४ विष्णु की माया, भगवती ।
५ पारवती (डि.को.) ६ श्री करनी देवी ।
उ०—धावतां जंगळधर हूंत मोटा धणी, 'जैत' कज पधारया जोग-माया ।—वालावख्स बारहठ

जोगमुद्रा-सं०स्त्री० [सं० योगमुद्रा] हाथ की उंगलियों को परस्पर अन्तरित कर के संपुट बना कर तथा कोहनियों का भाग उदर के समीप स्थित कर के वंदना पाठ का उच्चारण करते समय शरीर के पांच अंग २ घुठना २ हाथ और मस्तक नमाने की क्रिया या ढंग । (जैन)

जोगरंभ—देखो 'जोगारंभ' (रू.भे.) उ०—नऊं नाथ ले साथि, मेर चढ़ि आसण धारया । जोगरंभ विण जोग, भोग विण भोग विचारया ।
—ह.पु.वा.

जोगरांणी-सं०स्त्री० [सं० योगराज्ञी] पार्वती, देवी, शक्ति, दुर्गा, रणचंडी ।
उ०—१ रमै काळो अताळो-हालरै जमै जोगरांणी, भड़ां रोस जा लोपै अचाळ रै भारात । वाह रे अणी रा छैल कोयणां लालरै वाळा, हुआ थेट जाता गेढ़ाल रै माथै हात ।—जवांनजी आढ़ौ
उ०—२ रूकां वेग झालरा वू हालरा दे जोगरांणी, धुरै राग काळ रा वडांणी वंब घोर । असा वीर ख्याल रा मंडांणी आप ताप. उठै, तठै रिमां सालरा 'सदांणी' वाळो तोर ।—फतहरांम आसियो

जोगराज-सं०पु० [सं० योगराज] महादेव, शिव ।

जोगराजगुगळ, जोगराजगूगळ—देखो 'योगराजगुग्गुल' (रू.भे., अमरत)

जोगराया-सं०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुर्गा ।

जोगल-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

जोगवं-वि० [सं० योगवान्] योग वाला, स्वाध्यायी (जैन)

जोगवंत–वि० [सं० योगवत्] १ शुभ प्रवृत्ति वाला योगी, सन्यासी (जैन)

जोगवट–सं०पु०—योगाभ्यास, योग ।

जोगवटउ–सं०पु० [सं० योगपट्ट] प्राचीनकालीन एक प्रकार का पहनावा जो पीठ को ढक कर कमर में बांधा जाता था और जिससे घुटनों तक का अंग ढका रहता था (उ.र.)

जोगवांण, जोगवाई–सं०स्त्री०—१ वैभव, सम्पत्ति, धन-दौलत.
२ योग्यता. ३ स्थिति, ढंग । ज्यूं—थे उठै सगपण करौ तौ हौ पण घर री जोगवाई कैड़ीक है ?
४ अवसर, मौका । उ०—वनसपती में काळ अनंतौ रे, आप भाख गया भगवंतौ । इम भमियौ आदि अनादि रे, नरभव **जोगवाई** लाधी ।
—जयवांणी
४ अवसर प्राप्त होने का भाव. ६ व्यवस्था, प्रबंध ।
उ०—जद मोहनगढ़ में गोचरी फिरतां एकरण घरे गोचरी गया । पूछ्यौ आहार पांणी री **जोगवाई** है ।—भि.द्र.

जोगवासिसट, जोगवासिस्ट—देखो 'योगवासिस्ठ' (रू.भे.)

जोगविसोही–सं०स्त्री० [सं० योगविशुद्धी] योग की शुद्धी (जैन)

जोगसंथा–सं०स्त्री० [सं० योगश्रन्था] योगमंत्र, योग शिक्षा (जैन)

जोगसकति, जोगसकती, जोगसक्ति, जोगसक्ती, जोगसगति, जोगसगती–सं०स्त्री० [सं० योग शक्ति] योग के द्वारा प्राप्त होने वाली शक्ति, योगबल, तपोवल ।

जोगसच्च–सं०पु० [सं० योगसत्य] सच्चा योग (जैन)

जोगसमाउत्त–वि० [सं० योग समायुक्तः] योगों से युक्त (जैन)

जोगसर—देखो 'जोगेसर' (रू.भे.)

जोगसाधन–स०पु० [सं० योगसाधन] योग साधन, तपस्या ।
रू०भे०–जोगसाहण ।

जोगसास्त्र—देखो 'योगसास्त्र' (रू.भे.)

जोगसाहण—देखो 'जोगसाधन' (रू.भे) (जैन)

जोगसिधी—देखो 'योगसिधी' (रू.भे.)

जोगांण–सं०पु० [सं० योग+रा.प्र. आंण] महादेव, शिव (डिं.नां.मा.)

जोगांतराय—देखो 'योगांतराय' (रू.भे.)

जोगांतिक–सं०पु० [सं० योगान्तिक] बुध ग्रह की चाल विशेष ।

जोगांगि–सं०स्त्री० [सं० योगाग्नि] योगाग्नि । उ०—संवत् १५९५ चैत सुद ९ ब्रहस्पतवार स्रीकरणीजी **जोगाग्नि** सूं परमधांम पधारिया ।
—द.दा.

जोगागम—देखो 'योगागम' (रू.भे.)

जोगाणंद–सं०पु० [सं० योगानन्द] योग में ही आनन्द प्राप्त करने वाला, महादेव, शिव । उ०—गोपाळ भगत्त-निवारण अब्भ, परम्म अम्रत्त परम्म सु प्रब्भ । सदा अप्रमाद **जोगाणंद** सिद्ध, नहीं तूं बाळ युवा नहि ब्रद्ध ।—ह.र.

जोगानळ–सं०स्त्री० [सं० योगानल] योगानल, योगाग्नि ।

जोगाभास, जोगाभ्यास—देखो 'योगाभ्यास' (रू.भे.)
उ०—अरणोदै हुऔ सु इहि **जोगाभ्यास** हुऔ ।—वेलि.टी.

जोगाभ्यासी—देखो 'योगाभ्यासी' (रू.भे.)

जोगारंब, जोगारंभ, जोगारम–सं०पु० [सं० योग+आरम्भ] १ योग की क्रिया या साधना, योगाभ्यास । उ०—१ तापस अनेक तट मुनि तपेस । **जोगारंभ** अजपा जप जपेस ।—सू.प्र.
उ०—२ नागेस पनंगां सिरै जतंद्रीयौ वायनंद चवां गोरखेस **जोगारंभा** सिरै चीत । उदधां खीरोद सिरै जुधां गुड़ाकेस ओपै, ओपै खाग त्याग सिरै 'ऊदां' री आदीत ।—नींबाज ठाकुर सांवतसिंह रौ गीत
उ०—३ **जोगारंभ** का मूळ हैं, हरि अवगती अपरंपार । सुखसागर समरथ धणी, सबका सिरजणहार ।—ह.पु.वा.
२ योग । उ०—नंदी गण जेम तुरंग निहंग । **जोगरंभ** आठ सझै रिण जंग ।—सू.प्र.

जोगारूढ़—देखो 'योगारूढ़' (रू.भे.)

जोगावत–सं०पु०—राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जोगासन—देखो 'योगासन' (रू.भे.)

जोगिंद, जोगिंद्र–सं०पु० [सं० योगीन्द्र] बड़ा योगी, तपस्वी, महायोगी ।
उ०—१ नमो जप तप्प किता **जोगिंद**, राजा स्री रांम नमौ राजंद ।
—ह.र.
उ०—२ भूप बहु रूप तस रूप लीधें भया । जांण राजिंद्र **जोगिंद्र** मनें रया ।—रुखमणी हरण
२ महादेव, शिव । उ०—भिल्ले नरिंद खट तीस जात । **जोगिंद्र** जांण ठिल्ले जमात ।—वि.सं.
३ श्रीकृष्ण ।
वि०—संयमी ।
रू०भे०—जोगींद्र, जोगैंद्र, जोग्येंद्र, जोग्येंद्रौ ।

जोगि–वि०—१ योग्य । उ०—रिख कहै सुणि रांम, जोअण **जोगि** जनक जग ।—रांमरासौ
२ देखो 'जोग' (रू.भे.) उ०—चंद्रई ग्यारमौ देव है । तीसरौ चंद्र छइ खोडीला **जोगि** ।—वी दे.

जोगिणपुर—देखो 'जोगणपुर' (रू.भे.) उ०—जिण **जोगिणपुर** संग्रह्यौ, सार्थे व्राहिम ग्राह । तैसौ करणाजण तणौ, रेढ़ मंडै रिम राह ।
—रा.ज. रासौ

जोगिणपुरौ—देखो 'जोगणपुरौ' (रू.भे.) उ०—मेलै **जोगिणपुरौ** महा-दळ, केळपुरौ ऊखेल करै ।—महाराणा प्रतापसिंह रौ गीत

जोगिणि, जोगिणी—देखो 'जोगणी' (रू.भे.) उ०—१ कठठी वे घटा करै काळाहणि, समुहे आंमहौ सांमुहै । **जोगिणि** आवी आडंग जांणे, वरसे रत वेपुड़ी वहै ।—वेलि. उ०—२ केवी मुहर पूठि सुर-कांमिणि, जडाधार पासे व्योम **जोगिणि** । मोहिया सुर अंतरीख गयण-मिणि, राइजादौ सोहियौ महारिणि ।
—राठौड़ गोकुळ सुजांनसिंहोत ईसरोत रौ गीत
उ०—३ रिण अंगणि तेणि रुहिर रळतळिया, घणा हाथ हूं पड़ै

[illegible] । [illegible] तरि नालै जोगिणी तणा।
—वेलि.

जोगिणीपीठ, जोगिणीपीठि, जोगिणीपुर—सं०पु० [सं० योगिनी-पीठः योगिनी-पुर] देखो 'जोगणपुर' (रू.भे.)

उ०—जोगिणीपीठि नीरद कुंईय, ताड़िया नाळि करवड़ करेय। नागरद गेलि 'दूदउ' पनारि, सुंडाळ लिया गिरियउ संघारि।
—रा.ज.सी.

जोगिणीपुरो देखो 'जोगणपुरो' (रू.भे.) उ०—हथियार मीर साथी हजार, वनिगह बहुत कोठी बजार। जोगिणीपुरा जे जंग जीत, दिगि वडी नगर वडा दईत।—रा.ज.सी.

जोगिय—देखो 'जोगी' (रू.भे.) उ०—नमो अनंत नित्य अम्रत निगाम, वडा कवि-इंद्र ब्रहम्म विख्यात। नमो गुरु नारद ब्रह्म-गिनांन, नारायण जोगिय जोग निधांन।—ह.र.

जोगिया—सं०स्त्री०—संगीत की एक रागिनी विशेष (मीरां)

जोगिया-भाटघा—सं०पु०—पक्षी विशेष, इसका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है।

जोगियौ—वि०—१ जोगी सम्बन्धी, जोगी का. २ गेरू के रंग में रंगा हुआ, गैरिक. ३ मटमैलापन लिए हुए लाल रंग, गेरू के रंग का. ४ देखो 'जोगी' अल्पा० (रू.भे.) उ०—जोगिया जी आज्यौ जी इण देस। नैणज देखूं नाथ नै धाइ करूं आदेस।—मीरां

जोगींद्र—देखो 'जोगिंद' (रू.भे.) उ०—१ निराकार निरंजन निरुपम, ज्योतिरूप निरंतंत जी। तेरा सरूप तूं ही प्रभु जांगइ, के जोगींद्र लहंत जी।—स.कु.

उ०—२ इणि वेळा कोई जोगींद्र, आयउ तिहां करतउ आणंद। यंत्र जंत्र जांगइ अनि घणा, ओखध नागा पीणा-तणा।
—ढो.मा.

जोगी—सं०पु० [सं० योगिन्] (स्त्री० जोगण, जोगणी) १ वह जो सांसारिक भोग-विलासों से सम्बन्ध नहीं रखे। वह जिनका न तो किसी के प्रति अनुराग हो और न विराग हो, सुख व दुःखों को समान समझने वाला, आत्मज्ञानी, जितेन्द्रिय। उ०—ज्योतिखी वैद पोरांणिग जोगी, संगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तौ अरथ कहि।—वेलि.

२ योगाभ्यास द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वाला, वह जो योग करता हो, योगी। उ०—देवी जखणी भखणी देव जोगी, देवी नूमळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जांनेसुरी अन्न मेहा, देवी देव चामुंड संहारति देहा।—देवि.

३ महादेव, शिव। उ०—जळाथोळ प्रळै कोह वागी वीरां हाक जेतो, पच्चां आसवारां चितां सचां कटां धार। छाजै करै उवरै किलक्कां नैह हाक लेतौ, जोगी फिरै डेरू डाक देतौ जठाधार—नंदी सांदू

४ ईश्वर। उ०—जोगी आद जुगाद ही दीहंदा डडा।
—केसोदास गाडण

५ मदारी।

६ नाथ सम्प्रदाय का एक भेद जो अपना सम्बन्ध कनीपाव (कृष्ण पाद) से जोड़ते हैं। इस सम्प्रदाय के कई लोग मेहनत मजदूरी कर के पेट भरते हैं जैसे ईंधन के लिये लकड़ियां फाड़ना, पत्थर की चकियां बना कर बेचना आदि तथा कई भिक्षा मांगते हैं। कई संपेरे होते हैं जो पूंगी बजा कर और सांप का तमाशा दिखा कर जीवन निर्वाह करते हैं।

वि०—योग्य।

रू०भे०—जोगिय।

अल्पा०—जोगटी, जोगियौ, जोगीड़ौ, जोगोटी।

मह०—जोगींद्र, जोगीस, जोगीस्वर, जोगेंद्र, जोगेस, जोगेसर।

जोगीकुंड—देखो 'योगीकुंड' (रू.भे.)

जोगीड़ौ—देखो 'जोगी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जोगीड़ै नूं मार कर, धांनूं करूं दिवांण। जे अहड़ी नाहीं करूं, तौ परमेस्वर री आंण।
—नापा सांखला री वारता

जोगीनाथ—देखो 'योगीनाथ' (रू.भे.)

जोगीराज—देखो 'योगीराज' (रू.भे.)

जोगीस, जोगीसर, जोगीस्वर, जोगेंद्र, जोगेस, जोगेसर—सं०पु० [सं० योगीश, योगीश्वर, योगेन्द्र, योगेश, योगेश्वर] महादेव, शिव।

उ०—१ समरेस होम जोगेस सुत, सेव पेस कवि साधिये। गावण नरेस 'अभमाल' गुण, श्री गणेस आराधिये।—सू.प्र.

उ०—२ यूं कमवज धरै धू अंबर। ज्यूं गंगा मेलै जोगेसर।—रा.रू.

उ०—३ जोगीसर नेमीसर सिव सुख विलसै सार। स्री धरमसिंह पहै ध्यांन धरचां सुख है स्रीकार।—ध.व.ग्रं.

उ०—४ दत उकती मत मती, जती जोगेसर। गणपती छत्ती गुणां, प्रभती जग ऊपर।—जूझारसिंह मेड़तियौ

२ योगेश्वर, श्रीकृष्ण. ३ याज्ञवल्क्य मुनि का नाम. ४ योगियों के स्वामी. ५ बहुत बड़ा योगी, महायोगी, योगीश्वर।

उ०—१ अहोनिस कागा भुसुंड आराध, पढ़ै तौ नांम सदा प्रहळाद। जपै सुकदेव जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह.र.

उ०—२ इम सूरो पति धरम इरादा, जोगेसरां सिधां हूँ जादा। लड़ै नचित लोह नह लागै, जिको सूर तपसो सम जागै।—सू.प्र.

उ०—३ रूप रेख वहु रंग, ध्यांन जोगेसर ध्यावै। अमर कोड़ तेतीस, प्रभु तौ पार न पावै।—ह.र.

६ योग के द्वारा सिद्धि प्राप्त किया हुआ योगी, बड़ा सिद्ध.

७ सन्यासी. ८ देखो 'जोगी' (मह.रू.भे.)

रू०भे०—जोगेसवर, जोगेसुर, जोगेस्वर।

जोगेसरी—देखो 'योगेस्वरी' (रू.भे.)

जोगेसवर, जोगसुर, जोगेस्वर—देखो 'जोगेसर' (रू.भे.)

उ०—१ वडा जोगेसवर सकज मंदर वसु, वदन सुकळीण समहर

विराजै। परा सुलतांण तौ नीसरै जोधपुर, छात्रपत जोधपुर तु हीज छाजै।—दुरसौ आढ़ौ

उ०—२ कांमिणि कहि कांम, काळ कहि केवी। नारायण कहि अवर नर। वेदारथ इम कहै वेदवंत, जोगतत्त जोगेसवर।—वेलि.

उ०—३ सुणे हास्य विध कहै नरेसुर। गनिका ग्रहे आसण जोगेसुर। —सू.प्र.

उ०—४ प्यारी! जोगेसुर जिण नै भजे। तूं तौ हाथ लग्यौ हरि क्यूं तजै। मत नाव डवोवै लाय किनारै, मांनो हे म्हारी भांमणी। —मी.रां.

उ०—५ रहणी मैं जोगेस्वर, वहणी मैं जगदीस। ग्रहणी मैं सिव नेत्र, सहणी मैं अहीस।—रा.रू.

उ०—६ वासुदेव परब्रहम, परम-आतम परमेस्वर। अखिल-ईस अणपार, जगत-जीवण जोगेस्वर।—ह.र.

उ०—७ एक तूझ आदेस, जगत-पति तूझ जोगेस्वर। निरबिकार आदेस, नेति आदेस नरेसर।—ह.र.

उ०—८ जैसे जोगेस्वरां कै माया का पटळ दूरि वै छै तैसें ही तौ रात्रि दूरी हुई छै।—वेलि.

जोगेस्वरी—देखो 'योगेस्वरी' (रू.भे.)

जोगेंद्र—देखो 'जोगिंद्र' (रू.भे.) उ०—पारजीत जोगेंद्र थयौ गोरख अविनासी। पारजीत खट जती नाथ नव सिद्ध चौरासी।—पा.प्र.

जोगोटौ—देखो 'जोगी' (अल्पा. रू.भे.)

जोगोड़ौ—देखो 'जोगौ' (अल्पा. रू.भे.)

जोगौ—वि० [सं० योग्य] १ योग्य लायक, काबिल। उ०—१ दांतीवाड़ौ वसी नूं दियौ थौ। जेसोजी परधांनां मैं पूछीजण जोगा था। संमत १६४६ लाहोर में रांम कह्यौ।—नैणसी

उ०—२ पण सातमारजी एक तौ थां जोगौ तौ कांम नहीं है। पण एक सिंघ नित सहर मांहै उजाड़ करै छै। जणी है मारणौ। —पंचमार री वात

२ उपयुक्त, ठीक. ३ उचित. ४ अधिकारी. ५ माननीय।

अल्पा०—जोगोड़ौ।

जोग्ग—देखो 'जोग' (रू.भे.) (जैन)

जोग्गया—सं०स्त्री० [सं० योग्यता] योग्यता (जैन)

जोग्य—देखो 'योग्य' (रू.भे.) उ०—१ आप भौळा जांणता हा अर आ जांणता हा श्री गरीबपणा रा सूत लक्षण है पण हाथियां री फौज नै काट नै आपरौ जोग्य पणौ जणायौ छै।—वी.स.टी.

उ०—२ तठै प्रथीराजजी मालम करी, जो हजरत आप सूं बेमुख है, सू सजावर करणे जोग्य है अरु हमारा भाई है पण गिरफदार होणें का नहीं।—द.दा.

जोग्यअजोग्यजथा—सं०स्त्री० [सं० योग्यायोग्य यथा] योग्य पदार्थ व योग्य गुण का अयोग्य पदार्थ व अयोग्य गुण के साथ प्रयोग करने को वर्णन की काव्य में अपनाई जाने की रीति विशेष।

जोग्याभास, जोग्याभ्यास—सं०पु० [सं० योगाभ्यास] योगाभ्यास।

जोग्येंद्र, जोग्येंद्रौ—देखो 'जोगिंद्र' (रू.भे.) उ०—राज्येंद्रौ जोग्येंद्रौ संगी सांमरथ नेह एकंगी। लेखै सेव सुहित्तं, आसंगौ नइव लेखंती। —रा.रू.

जोड़—वि० [सं० युज्] समान, तुल्य, बराबर। उ०—१ दसै दिस मांहि पौहौ जोड़ न हुवै दुवै। हाक जिण आंण सुणि हिरण खोड़ा हुवै। —सू.प्र.

उ०—२ तेरहमौ सुत पुंज तवीजै। बळ दव खग जिण जोड़ न बीजै।—सू.प्र.

सं०स्त्री०—१ युग्म, जोड़ा। उ०—वग्गी खग धारां वारूंवारां, वार करारां वेहारां। धड़ तूटै सारां अंग अपारां, जोड़ करारां जूझारां।—रा.रू.

३ समूह, मंडळी, टोली। उ०—रायधणां विचै हालां रै क्युं पांच दस इधकेरा था। दस मांणसां री जोड़ इधकी थी।—नैणसी

३ काव्य रचना। उ०—तवें दोस पखतूट, जोड़ पतळी अरु जालम। बहरौ सो सुभ वयण, मुडै अणसुभ ह्वै मालम।—र.रू.

५ गणित में संख्याओं को जोड़ने की क्रिया. ६ गणित में कई संख्याओं के जोड़ने से निकलने वाला योग-फल।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ, लगाणौ।

७ दो या दो से अधिक टुकड़ों को आपस में जोड़ने से पड़ने वाला चिन्ह. ८ वह स्थान जहाँ दो या दो से अधिक पदार्थ या टुकड़े जुड़े हों या मिले हों. ९ किसी वस्तु में जोड़ा जाने वाला टुकड़ा या भाग. १० शरीर के दो अवयवों का संधि-स्थान।

मुहा०—जोड़ उखलणौ—किसी अवयव का संधि-स्थान से हट जाना। ११ समानता, बराबरी। उ०—'पाहड़' हरा अवर कुण पूगै, 'जुगतहरा' हासल री जोड़। रस आई जांणी रजवाड़ां, रजवट री खेती राठौड़।—बरजूबाई

१२ एक तरह की तथा साथ-साथ काम आने वाली दो वस्तुएँ.

१३ स्त्रियों के पांवों में पहनने के कुछ आभूषण. १४ जोड़ने की क्रिया या भाव. १५ एक ही समान कार्य करने वाले या एक दूसरे का पूरक कार्य करने वाले दो प्राणी। उ०—'रूपमल' घोड़ असवार 'उम्मेद' हर, अरांनी जोड़ वागां अताळी। न दीठी अवर घड़ मोड़ भड़ निरखियां, असी तड़ जोड़ भड़ भिड़ज वाळी। —चांवंडदांन महड़ू

१६ देखो 'जोड' (रू.भे.)

जोड़ग—सं०पु०—१ रचना करने वाला, बनाने वाला, रचयिता।

उ०—औयण मत चौवीस होय जिण रोळा आखत। भल कवि जोड़ग छंद मांझ राघौ जस भाखत।—र.ज.प्र.

२ कवि। उ०—जोडगां ब्रहास ब्रवै राव रौ सुजाव. ३ समान शक्ति या वैभव वाला। उ०—सौ सौ सलांम जोड़ग सझै। नरिंद तठै अनमी नमै।—सू.प्र.

४ संग्रह करने वाला।

रू०भे०—जोड़गर।

जोड़गर—देखो 'जोड़ग' (रू.भे.) उ०—गहै धमदास घाहेन निस दिन रम्म, जोड़गर नैन नाहेन जेहा। बाद ही बाद बकवंद तै दगाजन, पान किन करै कुण राम सेहा।—ब्रह्मदास दादूपंथी

वि०—ध्यानगी का। उ०—गहै 'धमसाण' छक 'किसन' 'माहव' 'नरसा', मोर पट तुरक 'मकतेण' नड़िया। मदामंद वगां राग अनै दन मासुरां, जोड़गर टाकरां नगां जड़िया।—चांपावतां री गीत

जोड़न—सं०स्त्री०—१ जोड़ने या संचित करने की क्रिया. २ योग, जोड़।

जोड़णौ, जोड़बौ—क्रि०स० [सं० जुट बंधने] १ दो वस्तुओं को किसी प्रकार से एक करना, मिलाना. २ किसी टूटी हुई वस्तु के टुकड़ों को जोड़ कर एक करना, मिलाना। उ०—रण करि फतै त्र्यंबक डंड रोड़ै। जोए कुंदर सीस धड़ जोड़ै।—सू.प्र.

३ समूह रूप में इकट्ठा करना। उ०—थंभ जंगां थोम थाट जोड़तौ रातंगां घाट। तोड़तौ मातंगां थाट रोड़तौ त्रांबाट।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

४ संग्रह करना, एकत्रित करना, जमा करना।

उ०—जिकां भला धन जोड़ियौ, ऊधमियौ निज आच। कीरत पोहरै करन रै, बीदग ऊठै वाच।—बां.दा.

५ रचना करना, रचना, कविता करना। उ०—१ आसै डाभी री अर्गं, बारठ आसै बात। जगजांणी जोड़ी जकां, पढ़ै अजै लग पात।

—दरजी मयारांम री वात

उ०—२ सो दूहा तेईस मुज, नांम सहत निरधार। जोड़ देखाऊं जुजुवा, सुणौ रांम जसनार।—र.ज.प्र. उ०—३ दादू पद जोड़ै साखी कहै, विषय न छाडै जीव। पांणी घाल विलोइये, क्यों कर निकसै घीव।—दादू बांणी

६ किसी वस्तु, सामग्री या द्रव्य को क्रम से रखना। यथा-स्थान स्थापित करना. ७ कई संख्याओं का योगफल निकालना. ८ प्रार्थना, विनय, स्तुति और अभिवादन के समय हाथों के पंजों को परस्पर सटाना, हाथ जोड़ना। उ०—कर बे पवित्र करिस साझणकर, जोड़ै तो आगळी जगत गुर। पवित्र संभा वे करिस एण पर, अंक दिखाड़ संत चक्र ऊपर।—ह.र.

९ संयुक्त करना, संश्लिष्ट करना, सम्बद्ध करना।

उ०—कुंवरसी हथळेवौ जोड़ियौ तरै भरमल नूं आंखे सूझण लागी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

१० बनाना, रचना। उ०—हिवै वीजी कन्या तणौ, जोड़ेवा वीवाह है। तेड़ावी सिव भूति नै, इम भाखै नरनाह।—श्रीपाळ रास

११ जोतना। उ०—बाई का दादोजी चाल्या रथ जोड़, बाई रथ थांम लियौ। बाई ए, मांगण होय सो मांग, ए रथ म्हांरौ हांकण द्यौ—लो.गी.

१२ सभा के रूप में एकत्रित करना। उ०—एथ बीजाणंद जाइ पहुतौ। आगै परधांन दरबार जोड़ियै बैठौ छौ। इयै जाइ आसीस दीधी।—सयणी री वात

१३ दीपक जलाना. १४ सम्बन्ध स्थापित करना। उ०—अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हमसे करी क्यूं पहेली। वहु दिन बीते अजहुं नहीं आये, लग रही ताळा वेली।—मीरां

१५ अनुरक्त करना, लीन करना। उ०—मद मच्छर छोडी जी, जिन सूं मन जोड़ी।—ध.व.ग्रं.

जोड़णहार, हारौ (हारी), जोड़णियौ—वि०।

जोड़ाड़णौ, जोड़ाड़बौ, जोड़ाणौ, जोड़ाबौ, जोड़ावणौ, जोड़ावबौ

प्रे०रू०।

जोड़िओड़ौ, जोड़ियोड़ौ, जोड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जोड़ीजणौ, जोड़ीजबौ—कर्म वा०।

जुड़णौ, जुड़बौ—अक० रू०।

जोड़ली—देखो 'जोड़ी' (अल्पा. रू.भे.) उ०—गुरु आचारज जोड़ली, 'ईडरगढ़' चउमासि। राय 'कल्यांणई' राखीया, पहुँचाड़ी मन आसि।

—ऐ.जै. का.सं.

वि०—१ पास की, समीप की. २ बराबर की।

जोड़लौ—वि० (स्त्री० जोड़ली) १ एक ही समय में एक ही गर्भ से उत्पन्न दो बच्चे, यमज. २ पास का, साथ का. ३ बराबरी का, साथ का. ४ देखो 'जोड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

जोड़वा—सं०स्त्री०—रवी की फसल की अंतिम जुतवाई, जिसके पश्चात् गेहूँ बोते हैं।

जोड़वाई—देखो 'जोड़ाई' (रू.भे.)

जोड़वाणौ, जोड़वाबौ—देखो 'जोड़ाणौ, जोड़ाबौ' (रू.भे.)

जोड़वाळ, जोड़वाळौ—वि०—बराबर का, जोड़ का, समान।

उ०—हाका लिया केहरी गुमांन वाळा वगां हाका, रारियां भभका क्रोध डका बंबी रोड़। गजां काळा मोड़ वाळा रखै तूं दूसरा, 'गजा' जोड़वाळा पौहां रिमां रोड़ जाडी जोड़।

—गोपाळदास दधवाड़ियौ

जोड़ा—सं०स्त्री०—१ मिरासियों की एक शाखा (मा.म.)

२ सारंगी में सबसे पहले के मुख्य दो तार।

जोड़ाअत, जोड़ाइत—देखो 'जोड़ायत' (रू.भे.) उ०—पढ़ पढ़ ठीक सीख पड़वा मां, कड़वा वचनां दगध करै। जीमै घी गेहूँ जोड़ाइत, मां तोड़ायत भूख मरै।—हिंगळाजदांन कवियौ

जोड़ाई—सं०स्त्री०—१ दीवार में पत्थर या ईंटों के टुकड़े रख कर उन्हें चूने आदि से जोड़ने की क्रिया. २ दो या दो से अधिक वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया या भाव. ३ जोड़ने की मजदूरी।

रू०भे०—जुड़वाई, जुड़ाई, जोड़वाई।

जोड़ाऊ—वि०—संग्रहकर्त्ता, जोड़ने वाला, जमा करने वाला।

उ०—आप तौ संकर उणियार, पारवती जोवै वाट। पधारौ हीरां पनां रा जोड़ाऊ, ऊभी सज सणगार।—लो.गी.

जोड़ागुण—सं०पु०—काव्यकार, कवि। उ०—जावां कठै क्रमण जीवाड़ै, एकोई ऊदम फरै नह आज। जोड़ागुण फरियाद जपै छै, पातां तणी लुपै छै पाज।—पोकरण ठाकुर सवाईसिंह री गीत

जोड़ाजोड़ी—क्रि०वि०—जोड़े के रूप में, आसपास, निकट।
सं०पु०—पतिपत्नी का जोड़ा, दम्पती।

जोड़ाणौ, जोड़ावौ—क्रि०स० ('जोड़णौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ दो वस्तुओं को किसी प्रकार एक कराना. २ किसी टूटी हुई वस्तु के टुकड़ों को जुड़वा कर एक कराना. ३ समूह रूप में इकट्ठा कराना. ४ संग्रह कराना, एकत्रित कराना, जमा कराना. ५ रचना कराना, कविता कराना. ६ किसी वस्तु, सामग्री या द्रव्य को क्रम से रखाना, यथा-स्थान स्थापित कराना. ७ कई संख्याओं का योगफल निकलाना. ८ प्रार्थना, विनय, स्तुति और अभिवादन के समय हाथों के पंजों को परस्पर सटवाना, हाथ जोड़ाना. ९ संयुक्त कराना, संश्लिष्ट कराना, सम्बद्ध कराना. १० बनवाना, रचाना. ११ जोताना. १२ सभा के रूप में एकत्रित कराना. १३ दीपक जलवाना. १४ सम्बन्ध स्थापित कराना।
जोड़ाणहार, हारौ (हारी), जोड़ाणियौ—वि०।
जोड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
जोड़ाईजणौ, जोड़ाईजबौ—कर्म वा०।
जुड़वाणौ, जुड़वाबौ, जुड़ाणौ, जुड़ावौ, जुड़ावणौ, जुड़ावबौ, जोड़वाणौ, जोड़वाबौ, जोड़ावणौ, जोड़ावबौ—रू०भे०।

जोड़ायत—सं०स्त्री०—सहधर्मिणी, पत्नी, अर्धांगिनी।
उ०—इसड़ौ वचन सुणि विरोध री क्रोध विसारि विजयसूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढव्रण रै काज रीढ़क रै समीप आप री पीठ फाड़ि नेत्र मूढ़ मूरछित बाळक नूं काढ़ि नणद रै हाथ दीधौ।—वं.भा.
वि०—जोड़ का, तुल्य, बराबर। उ०—पावू रा पाराधिया, अणियां रा भंमराह। सींहां खाडू सांवळा, जोड़ायत जमराह।—पा.प्र.
रू०भे०—जोड़अत, जोड़ाइत।

जोड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दो वस्तुओं को किसी प्रकार एक कराया हुआ. २ किसी टूटी हुई वस्तु के टुकड़ों को जुड़वा कर एक कराया हुआ. ३ समूह रूप में इकट्ठा कराया हुआ. ४ संग्रह कराया हुआ, एकत्रित कराया हुआ, जमा कराया हुआ. ५ रचना कराया हुआ, कविता कराया हुआ. ६ किसी वस्तु, सामग्री या द्रव्य को क्रम से रखाया हुआ, यथास्थान स्थापित कराया हुआ. ७ कई संख्याओं का योगफल निकलवाया हुआ ८ प्रार्थना, विनय, स्तुति और अभिवादन के समय हाथों के पंजों को परस्पर सटवाया हुआ। हाथ जोड़ाया हुआ. ९ संयुक्त कराया हुआ, संश्लिष्ट कराया हुआ, सम्बद्ध कराया हुआ. १० बनवाया हुआ, रचाया हुआ. ११ जोताया हुआ. १२ सभा के रूप में एकत्रित कराया हुआ. १३ दीपक जलवाया हुआ. १४ सम्बन्ध स्थापित कराया हुआ।
(स्त्री० जोड़ायोड़ी)
रू०भे०—जुड़वायोड़ौ, जुड़ायोड़ौ, जुड़ावियोड़ौ, जोड़ावियोड़ौ।

जोड़ाळ, जोड़ाळौ—सं०पु०—१ मुसलमान, यवन (?)
उ०—१ जोड़ाळ मिळइ जमदूत जोघ, काइरा कपीमुक्खी सक्रोध। कुवस्र केवि काळा किरिट्ठ, गड़दनी गोळ गांजा गिरिट्ठ।—रा.ज.सी.
उ०—२ 'अमर' अनइ 'पीथल्ल' अचागळ, वरविय राइमल्ल अतुळीवळ जोड़ाळां मुहि दियण जवोड़ां, रांम सिहाइ हुअउ राठौड़ां।
वि०—जोड़ी का, बराबर का, समान।

जोड़ावणौ, जोड़ावबौ—देखो 'जोड़ाणौ, जोड़ावौ' (रू.भे.)
उ०—जोय खेत्र सिर धड़ जोड़ावौ। इण पत्र छिवे कुंवर ऊठावौ।
—सू.प्र.

जोड़ावियोड़ौ—देखो 'जोड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

जोड़ावौ—सं०पु०—जोड़ा, युग्म। उ०—जांघ जोड़ावौ नूं नीरखियौ। रंग-भरि रयण नूं माडीयौ खेल। देव सतावौ राजा तुं फिरई। घीव वीसाही तु जीमौ छइ तेल।—वी.दे.

जोड़ियाळ—वि०—जोड़ी का, बराबर का।

जोड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दो वस्तुओं को किसी प्रकार से एक किया हुआ, मिलाया हुआ. २ किसी टूटी हुई वस्तु के टुकड़ों को जोड़ कर एक किया हुआ, मिलाया हुआ. ३ समूह रूप में इकट्ठा किया हुआ. ४ संग्रह किया हुआ, एकत्रित किया हुआ, जमा किया हुआ. ५ रचा हुआ, रचना किया हुआ, कविता किया हुआ. ६ किसी वस्तु, सामग्री या द्रव्य को क्रम से रखा हुआ। यथा स्थान स्थापित किया हुआ. ७ कई संख्याओं का योगफल निकाला हुआ. ८ प्रार्थना, विनय, स्तुति और अभिवादन के समय हाथों के पंजों को परस्पर सटाया हुआ, हाथ जोड़ा हुआ. ९ संयुक्त किया हुआ, संश्लिष्ट किया हुआ, सम्बद्ध किया हुआ. १० बनाया हुआ, रचा हुआ. ११ जोता हुआ. १२ सभा के रूप में एकत्रित किया हुआ. १३ दीपक जलाया हुआ. १४ सम्बन्ध स्थापित किया हुआ।
(स्त्री० जोड़ियोड़ी)

जोड़ी—सं०स्त्री०—१ ऐसे दो पदार्थ जो परस्पर समान हो, जैसे किवाड़ों की जोड़ी, तस्वीरों की जोड़ी. २ एक ही समान कार्य करने वाले या एक दूसरे का पूरक कार्य करने वाले दो प्राणी।
यौ०—जोड़ीदार, जोड़ीवाळ, जोड़ीवाळौ।
३ स्त्री और पुरुष जैसे पति-पत्नी की जोड़ी. ४ नर और मादा. ५ दो घोड़ों या बैलों की जोड़ी. ६ दोनों जूते, जूतों का जोड़ा।
ज्यूं—ऊनाळौ आयौ पग घणा बळै जिकौ आज बजार सूं एक जोड़ी लावणी है। उ०—सू चरणा पहर जोड़ी पगां घातजै छै। सू जोड़ी किण भांत री छै? लाहौर री पिसोरी घणौ बनात मुखमल री लपेटी थकी, घणौ कलाबूत सूं गूंथी थकी, पैहरजै छै।—रा.सा.सं.
७ जूती (अ.मा.) उ०—तरै जोड़ी मांहे जळ लीधौ, उजळाई कर नै पाछौ आयौ, रांम रांम कियौ।—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात
८ मँजीरा, ताल।

रू०भे०—जोड़ीवाळ, जोड़ीवाळो ।

६ समान धर्म या गुण आदि वाला । वह जो बराबरी का हो ।

अल्पा०—जोड़लो ।

जोड़ीक-वि०—१ बराबर का, समान, तुल्य ।

उ०—पोयण चंगा आंग ज्यूं, जळ गंगा जोड़ीक । देसांणै मढ़ देनिया, काबा नग कोड़ीक ।—चौधो बीठू

२ संग्रह करने वाला. ३ रचने वाला ।

जोड़ीगर-सं०पु०— मोचियों का एक भेद जो केवल जूते ही बनाते हैं ।

जोड़ीदार-सं०पु०—१ समान कार्य करने वालों में से एक. २ साथ कार्य करने वालों में से एक. ३ पति-पत्नी में से एक. ४ वह व्यक्ति जो केवल झांझ और मंजीरा बजाने का ही कार्य करे. ५ समान आयु वाला, समवयस्क, जोड़ का ।

रू०भे०—जोड़ीवाळ, जोड़ीवाळो ।

जोड़ी री बैठक-सं०स्त्री०—मुगदरों की जोड़ी पर हाथ टेक कर की जाने वाली बैठक (व्यायाम)

जोड़ी रौ-वि०—समान आयु का, बराबर का, समवयस्क ।

उ०—जांनी तौ अपणा जोड़ी रा ल्याज्योजी, पातर थे भल ल्याज्योजी बना ।—लो.गी.

जोड़ी रौ जालम-सं०पु०—पति (?) । उ०—हे आयौ परदेसी सूवटौ हे, बागां मांयलो सूवटौ, म्हैं तौ रमती सहेल्यां रै साथ, जोड़ी रौ जालम ले चाल्यौ ।—लो.गी.

जोड़ीवाळ, जोड़ीवाळौ—देखो 'जोड़ीदार' (रू.भे.)

उ०—जोटीवाळ जकै जळ जीवै, पसरै चहु पासां सुख पाय । कीरत बना न चाखूं कोई, कारण अण रहियौ कुमळाय ।

—रुघनाथ भाऊसिंघोत रौ गीत

जोड़ै-वि०—बराबर, समान, तुल्य । उ०—१ जोधांणौ वगड़ी बिहुं जोड़ै, 'जोध' 'अखा' बेहूं भड़ जोड़ । दीना पटा भोगवै दूजा, रावां रा सारा राठौड़ ।—अज्ञात उ०—२ फबै ललाई बिंब फळ, परतख अधर प्रवाळ । जपा कुसम जोड़ै जियां, भाखै सहियां भाळ ।—बां.दा.

उ०—३ अति ऊंचा तिय रै उरज, वणिया बिसवा बीस । जोड़ै लागै जगत में, गिर गज कुंभ गिरीस ।—बां दा.

क्रि०वि०—समीप, निकट, पास । उ०—१ अपच्छर नूर जोड़ै हिज आय । जई रथ बैठि बसै सुगि जाय ।—सू.प्र.

उ०—२ पछै सिंघजी रा समाचार सुण्या ऊ तौ राली ओढ़ नै धरटी रै जोड़ै सूतौ ।—भि.द्र.

जोड़ौ-सं०पु० [सं० जुड़ = बंधने] १ दो समान वस्तुएं । एक ही प्रकार की दो वस्तुएं । ज्यूं-धोती जोड़ो, जूतियां रौ जोड़ौ ।

उ०—तद रांणी बीजी मोजड़ी पग सूं चलाय पहाड़ की गुफा मांहै राखी । आप पांणी ले घरै आई अर मोजड़ियौ बीजो जोड़ौ करायौ ।

—चौबोली

२ वे दो वस्तुएं जो एक दूसरे की पूरक हों । उ०—जोखंगी स्री-नाथ हाथां अनोखौ वणायौ जोड़ौ, जुगां कोड़ां आसवार घोड़ौ चिरंजीव ।—रांमकरण महडू

३ समानता, बराबरी, तुल्य । उ०—तिहूं लोकां महीं जोड़ 'सांगा' तणी, हेक रिव दुवौ जटधर अरोड़ौ । निलज नवरोज मेल्है तिकै नारियां, जिकै छत्रधारियां किसौ जोड़ौ ।—कविराजा करणीदांन

४ पांव में पहनने की जूते की जोड़ी । उ०—प्रथीराज आय ढोलियै सूतौ, परभात हुवौ, सु गूदळराव रै पगां रौ जोड़ौ उठै रह्यौ सु प्रथीराज दीठौ ।—नैणसी

५ स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, वर-वधू, दम्पती ।

उ०—१ ढोलणी नै चौवारै चढ़ाय, ढोलौ मारूणी दोन्यूं पोढ़सी । खातीड़ा रे असल गंवार, जोड़ौ जोरावर ढोल्यौ सांकड़ौ ।—लो.गी.

उ०—२ सो भी आततायिनूं उबारि बापरौ बचावणहार वाढ़ियौ तौ भी अद्वितीय वार हुवा सुणि किताक कवि लोकां तिकण रा ही प्रहार रौ प्रकरखण भणियौ । जूड़ा, जोड़ा, परयंक, पेखणी, पात्र, पुंज, कटि, करवाल पुहवी में पैठौ तौ भी मंतु बिहूणा जनक रौ मित्र मारण में म्हांरौ तौ मन आघात रौ उत्करस न मांनै ।—वं.भा.

६ नर और मादा (या इन दोनों में से एक) ७ पुनर्वसु नक्षत्र का एक नाम (पुरुष, प्रकृति)

मुहा०—महा जोड़ां कटै न घोड़ां—माघ महिने की रात्रि का ज्ञान पुनर्वसु नक्षत्र से होता है जो बहुत लम्बी होती है ।

वि०वि०—देखो 'नक्षत्र' ।

८ वे दो घंटियां जो हाथी की झूल के दोनों ओर बांधी जाती हैं.

९ देखो 'जोडौ' (रू.भे.) उ०—मोटी-मोटी छांटां ओसरियौ अे बदळी ओसरियौ । कोई जोड़ा ठेलम-ठेल सुरंगी रुत आई म्हारै देस ।

रू०भे०—जूड़ौ । —लो.गी.

अल्पा०—जोड़लो ।

जोज-सं०पु०—चाकर, सेवक (अ.मा.)

जोजण—देखो 'जोजन' (रू.भे.) उ०—साकुर खड़ै पक्खर सेरि । फौजां वहै जोजण फेरि ।—गु.रू.बं.

जोजदांन-स०पु०—एक प्रकार की पेटी या बक्स (?)

उ०—इतरै एक चितेरा 'रूपा' री बेटी हीरा आई, तिण जोजदांन खोल तसवीरां दिखाई । तिण में एक तसबीर इण रै मन मांनी, आ बार बार देखै उण कांनी ।—र. हमीर

जोजन-सं०पु० [सं० योजन] १ दूरी की एक माप जो चार कोस की होती है, योजन । मतान्तर से यह दो कोस अथवा आठ कोस की भी होती है । जैनियों के अनुसार एक योजन में १०,००० कोस होते हैं । उ०—१ अरसी सुत कीरत दन ऊगै, परसण घण जोजन पारंभ । अेक खंड की हुई अमावड़, अन खंडां मावणी असंभ ।

—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंह

उ०—२ दसां जोजनां डांग गै नांम दाखे । यता हूंत दूणां गवाखेस आखै ।—सू.प्र.

२ संयोग, मिलान, मेल ।

रू०भे०—जोग्रण, जोइण, जोइन, जोजण, जोयण ।

जोजनगंधा—देखो 'योजनगंधा' (रू.भे.) उ०—ग्रातत घोर ग्रंधार में, सोर घोर मार्चे सघण । धोम रिख जांणि धूहर रचै, जोजनगंधा रित रमण ।—गु.रू.वं.

जोजनगंधाजात—सं०पु० [सं० योजन गन्धा जात] वेदव्यास ।

जोजनि, जोजन्न—देखो 'जोजन' (रू.भे.) उ०—१ विदूरत्थ पच्चास जोजन्न वांणी । इळा साठ जोजन्न दुव्राधि ग्रांणी ।—सू.प्र.

उ०—२ पल पंच दस धव पाय । जोजन्न ऊपरि जाय ।—सू.प्र.

जोजरी—सं०स्त्री०—१ मारवाड़ की लूनी नदी की एक सहायक नदी ।

२ शरीर को जीर्ण करने वाली वृद्धावस्था ?

उ०—ग्ररजण भीम जिसा ग्रालीजा, रोसे वेदल थाया रंग ।

जारै तौ विण कवण जोजरी, नव पण जिसा ग्रमोलक नग ।

—ग्रोपौ ग्राढ़ौ

वि०स्त्री०—खोखली ।

जोजरू—सं०पु०—वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का पौधा । इसके पुष्प लाल ग्रौर सफेद होते हैं ।

जोजरौ—वि० [सं० जर्जर] (स्त्री० जोजरी) १ वह जो भीतर से कठोर न हो, दाब पड़ने से नीचे धस जाय, पुलपुला, पोला ।

उ०—रांण रा घोड़ा कनै वहण वाळा चोपदार दोनूं हाथां नूं जोर करी ग्रजीतसिंघजी रै माथै सोना री छड़ी रा टुकड़ा किया, ग्रजीतसिंघजी रौ माथौ ऊपर सूं जोजरौ हुवौ ।—बां.दा.ख्यात

२ दरार पड़ा हुग्रा (वर्तन या भांडा) ज्यूं—छोरै हांडी नै पटक नै तेड़ ग्रणाय दी, इण सूं हांडी जोजरी वोलै है.

३ वह जो भर्राये हुये कंठ से वोलता हो ।

उ०—गहमाता खोलिया, रतां लोयणां क्रमेळां । वठठ पूर धारता, कठठ जोजरा कंठाळां । धर कपोळ ऊधरा, फीण नांखता ग्रफारां । हुवा त्रगंट हींडिया, प्रग चीखल पूगरां ।—वखतौ खिड़ियौ

४ शिथिल. ५ वृद्ध । उ०—देही हेली थांरी जोजरी, पांडु रहेला रे केस । जोवन चटकां दियां जाय छै, तूं राख धरम नी रेस ।

—जयवांणी

जोजा—सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।

जोजिया—सं०पु० [सं० यौधिक] योद्धाग्रों की नकल (एक खेल—ढूंढ़ाड़)

रू०भे०—जोज्या ।

जोजे, जोजै—सं०स्त्री० [ग्र० जोज] पत्नी, जोरू ।

उ०—फूली वाई जोजे रांम किसन ।

जोजौ—सं०पु०—चौहान वंश का एक व्यक्ति ।

जोज्या—देखो 'जोजिया' (रू.भे.)

जोट—सं०पु० [सं० योटक: ?] जोड़ा, युग्म । उ०—१ वोही गोळा वारूद, भार हूं सकट भरीजै । जुड़ि जुड़ि वैलां जोट, कोट वाहर काढ़ीजै ।

—मे.म.

उ०—२ तुली ढाल रूड़ी घली काळ ग्रोपां । ग्रली जोट जूड़ी हली ज्वाळ तोपां ।—वं.भा.

उ०—३ सूरजदेव प्रसन्न होय कुंडळ री जोट ग्रर सुवरंण मणि दे विदा हुवा ।—सिंघासण वत्तीसी

३ समूह, ढेर, राशि. ४ दम्पत्ती. ५ भैंसा ।

वि०—१ वलवान, हृष्ट-पुष्ट. २ दो ।

जोटे—ग्रव्य०—शामिल ।

जोटौ—सं०पु०—१ मोट (चरस) के खाली होने से चलने वाला तेज जल-प्रवाह । उ०—वायरै रा ठंडा झोला सांमी छाती झेलजै । पै'लो जोटौ ग्रावै है पांणतिया खोडौ घेरजै ।—चेत मांनखा

२ रोक, वंध. ३ रुकावट ।

जोड—सं०पु०—१ घास का रक्षित मैदान । उ०—पछै सींधल 'जेसै' रा वेत लिया । नींवी सोजत रै जोड सिकार रमतौ थौ, पछै उठै वाहरू ग्रायौ ।—राव जोधा रै वेटां री वात

२ एक प्रकार का सरकारी लगान. ३ छोटा तालाव, पोखर.

४ प्रान्त विशेष । उ०—जायोड़ा जोड रा, थाठ पाटां थायोड़ा । दिल ग्रायोड़ा दाय, तिका सोन्नण तायोड़ा ।—मे.म.

रू०भे०—जोड़, जोहड़ ।

ग्रल्पा०—जोडलियौ, जोडलौ ।

जोडझाल—सं०स्त्री०—एक प्रकार का घास की गाड़ी के रूप में लिया जाने वाला लगान विशेष ।

जोडदरी—सं०स्त्री०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र ग्रापइ; गुडीग्रां सणीग्रां कस्तूरीग्रां प्रतापीग्रां कुसंभीग्रां मोलीग्रां मांडवी ग्रामीणीग्रां वाटलीग्रां जलोदरीग्रां मगीग्रां जोडदरीग्रां प्रागीग्रां चुकडीग्रां ।—व.स.

जोडलियौ, जोडलौ—देखो 'जोड' (ग्रल्पा. रू.भे.)

उ०—१ कोई वै-मैं खुदावौ पग-पग कूवा जोडलिया ।

—पावूजी रा पवाड़ा

उ०—२ भरिया जोडला मारै छै हवोळा ।—पावूजी रा पवाड़ा

जोडवाळ, जोडवाळौ—सं०पु०—घास के सुरक्षित मैदान की रक्षा करने वाला ।

जोडियौ, जोडौ—देखो 'जोड' (ग्रल्पा. रू.भे.) (ग्र.मा.)

उ०—१ पांन खड़वयां जावतां, कोसां छाळौ छाळ । वै सागी सुध वायरा, ग्राया जोडां पाळ ।—लू

उ०—२ जीव तिसाया जावतां, जोडा हुया ग्रधीर । डाळ डाळ हिवड़ौ हुयौ, चाली चीरां चीर ।—लू

जोण—सं०स्त्री०—देखो 'जूण' (रू.भे.)

उ०—घर घर तन ग्रसी चियार, लख जोणां धपांणा । खिण खिण ग्राव संसार, वुद वुद ज्यूं खपाणां ।—र.ज.प्र.

जोणग्र—सं०पु० [सं० यौनक] उत्तर भरत का एक देश (जैन)

जोणग-सं०पु०—एक प्राचीन देश का नाम (?)।

उ०—सगवग गवनग सवर बब्बरनाय चिलाय तुरंड गुंड उडगुड पक्कण मुक्कण कुड्डक्क तोमल सिहल दमिल अज्जल विल्लल पारस गन नउस हारोममोसहिम (?) रोम मरुग पल्लव मालव वहलिय मउलिय जोणग चीणा हूण मरहट्टय कोकय डुंविलय कुलखय खरमुख तुरगमुहा सिदमुन हयकरण्ण गजकरण्ण प्रभिति अनार्यदेस मनुस्य।
—व.स.

जोणि, जोणि—१ देखो 'योनि' (रू.भे.)

२ पन्नवणा सूत्र के नवां पद का नाम (जैन)

३ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र (जैन)

जोणिपद-सं०पु० [सं० योनिपद] पन्नवणा सूत्र का एक पद (जैन)

जोणिय-वि०—जन्म लेने वाले प्राणी।

जोणिविहांण-सं०पु० [सं० योनिविधान] उत्पत्ति शास्त्र (जैन)

जोणिसूल-सं०पु०यौ० [सं० योनिशूल] योनि का एक रोग (जैन)

जोणींद-सं०पु० [सं० योगेन्द्र] १ श्रीकृष्ण. २ महादेव।

जोणी, जोवी, जो'णो जो'वो—१ देखो 'जोवणी, जोववौ' (रू.भे.)

उ०—१ मो आदमी इहां रा कांम आया छै। पण पड़ियोड़ा सांम्हां जोयो नहीं।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

उ०—२ जिकै वार स्रीरांम री जांन जोई। कहै ओपमा पार पावै न कोई।—सू.प्र.

उ०—३ ईगानूं दे अंकड़े कत्थे न करंदा। जित्थे जित्थे जोइये तिथि दरसदा।—सू.प्र.

उ०—४ ऊनी रही चड़ेहि, जोई दिसि जातां-तणी। ऊभी हाथ मलेहि, विलखी हुई वल्लहा।—ढो.मा.

उ०—५ धोय धोय तन चख जळ धारां, रोय रोय नर नारी। जोय जोय थाका जगजांमी, कोय न लागी कारी।—ऊ.का.

उ०—६ सपना में ओ मारुजी दीपक जो देख्यो। कुंवळां री केळ रळावणी जो।—लो.गी.

उ०—७ आंख्यां उणियारोह, निपट नहीं न्यारो हुवै। प्रीतम मो प्यारोह, जोती फिरूं रे जेठवा।—जेठवा

उ०—८ तेल सिंदूर से चरचि घमळू के जूंट जोय। टल्लूं सूं दोवड़े गजपीठ होय।—सू.प्र.

जोत-सं०स्त्री० [सं० ज्योतिस्] १ प्रकाश, उजाला, ज्योति।

उ०—१ अनंग अंस वरतै चक्र आगें, जिण री जोत तिमर उडि जाएं। वज्र देवळ त्रण हाथ वणावै, जिण मझि धरि वज्र सिला जड़ावै।
—सू.प्र.

उ०—२ जगाजोत आदीत री जोत ओपै, उभै हीर चांमीर में स्रंग ओपै। स्त्रिया देख दाखै प्रभू काज मारो त्रिगो नीख रूपी ग्रही काय मारो।—सू.प्र.

उ०—३ नहीं तो जोत नहीं तो जांण। नहीं तो पिंड नहीं तो प्रांण। नहीं तो सार नहीं तो सुद्धि। नही तो खोट नहीं तो बुद्धि।—ह.र.

उ०—४ घर मंडळ पर दीप में, हद घर घर क्रय होत। कीरतवर जेहो कुंवर, जाड़ेचां घर जोत।—बां.दा.

उ०—५ मन, प्रवीण, कुंदन मुहर, प्रेम प्रगासै जोत। विरह-अगिन ज्यूं-ज्यूं तपै, त्यूं-त्यूं कीमत होत।—अज्ञात

उ०—६ हुओ जोखंत कांकळै ओत-प्रोत जोत हूंतो, जोत हूंतां रही नको भंतका जुहार। सरै छहां मही पुरी सातमी तंतका सार, अंत समै लहो पुरी अंतका उदार।—बद्रीदास खिड़ियो

२ दीपशिखा, लौ। उ०—प्रति पोळि झूळ सप्रीत, गावंति सुंदर गीत। जगमगत दीपक जोत, अति जोति पंति उद्योत।—रा.रू.

३ अग्निशिखा, लपट. ४ अग्नि, आग. ५ दीपक (अ.मा.)

६ दीपक में प्रयुक्त होने वाली बत्ती. ७ देवी या देवता के आगे या उनके निमित्त जलाया जाने वाला घी का दीपक. ८ आंख। (ह.नां.) ९ दृष्टि, नजर. १० किरण (अ.मा.) ११ तारा (अ.मा.) १२ कान्ति, दीप्ति, द्युति।

उ०—जवाहरं परक्ख जोत, के जवाहरी करै। अनोप रंग तोल आब, संग ढंग संभरै। घरं घरं सघन्न, भ्रंन फूल पै झलं। तरं तरं करंत तांम-क्रील वांणि कोकिलं।—सू.प्र.

१३ संगीत में अष्ट ताल का एक भेद. १४ घी नारियल आदि के संयोग से किसी देवी या देवता के सन्मुख या उनके नाम पर प्रज्वलित की जाने वाली अग्निशिखा जो यज्ञ का ही एक रूप होती है।

सं०पु०—१५ सूर्य (ह.नां.)

१६ नक्षत्र। उ०—रव आथमतां पदम घटै रुच, मिळै उड निस जोत मुख। कमंध प्रताप' सुखी निस दिन किव, दोयण दाझै उघट दुख।—महाराजा मांनसिंह जोधपुर रौ गीत

१७ विष्णु. १८ ईश्वर, परमेश्वर, परब्रह्म। उ०—स्यांम धरम पतिव्रत अति साधइ, अंग आरांण आसंगइ आग। सुजि मिळि जाय जोत हूंतां सुग, लोहां झड़ां लाकड़ां लाग।—अज्ञात

१९ परब्रह्म (मोक्ष, मुक्ति)

उ०—'सूज्यां' जहीं अभनमो 'सूजो', कळहण गजां कळेगो। घड़ धज-वड़ां मिळेगो धारां, मनसा जोत मिळेगो।
—राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया रौ गीत

रू०भे०—जोति, जोती, ज्योत।

सं०पु० [सं० योत्र या योक्त, प्रा० जोत्तर] २० वह चमड़े की पट्टी या तस्मा या रस्सी जो घोड़े बैल आदि जोते जाने वाले जानवरों के गले के नीचे से होती हुई उस वस्तु में बांध दी जाती है जिसमें जानवर जोते जाते हैं।

उ०—कठै तो पड़ियो मायड़ गाडूलो, कठै म्हारा धोळा रा जोत।
—लो.गी.

रू०भे०—जोतर, जोतरु, जोतरू, जोत्र।

अल्पा०—जोतरियो, जोतरी।

वि०—सुन्दर (अ.मा.)

जोतक—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.)

जोतकी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) उ०—पढ़ंत जोतकी पुरांण, तार-केस के तवं। रघुंस सांग जुम ग्रथ, च्यार वेद के चवं।—सू.प्र.

जोतख—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.) उ०—यह तिलक कीध कुंकम सु पांणि। मोतियां अक्षत चाढ़े प्रमांणि। जस जोतख द्विज्ज लिखंत जंत्र। मुख पढ़त महा द्विज वेद मंत्र।—सू.प्र.

जोतखी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) उ०—करणौ डहरियौ मां रै पेट थौ, दिन पूरा हुवा, तरै करण री मां कस्टी, तरै जोतखियं कह्यौ—'हमार वेळा वुरी वहै छै, ग्रै दोय घड़ी टळै, पछै छोरू हुवै तौ महाराज प्रथीपत हुवै।'—नैणसी

जोतग—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.) उ०—ओपियौ छत्र जगमग उदार, चौसरा चमर उजळंग चार। प्रत जोतग सासत्र सुभ-प्रमांण, अभि-लेक दीध द्विजराज आंण।—सू.प्र.

जोतगी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.)

जोतणौ, जोतबौ—क्रि०स०—१ घोड़े, बैल आदि जोते जाने वाले जान-वरों को रथ, गाड़ी, कोल्हू, चरसे आदि के आगे बाँधना।

ज्यूं—बळद जोतणा।

२ गाड़ी रथ आदि में जोते जाने वाले जानवरों को बांध कर चलाने के लिये तैयार करना। ज्यूं—गाड़ी जोतणी।

उ०—वयूं नह धवळौ जोतियौ, तै सागड़ी गिवार। काढ़ै जीभ किलोहड़ा, खंध न भालै भार।—वां दा.

३ भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये हल द्वारा खोदना. ४ किसी को बलपूर्वक किसी कार्य में लगाना।

जोतणहार, हारौ (हारी), जोतणियौ—वि०।

जोतवाड़णौ, जोतवाड़बौ, जोतवाणौ, जोतवावौ, जोतवावणौ, जोत-वावबौ, जोताड़णौ, जोताड़बौ, जोताणौ, जोतावौ, जोतावणौ, जोतावबौ—प्रे०रू०।

जोतिग्रोड़ौ, जोतियोड़ौ, ज़ोत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जोतीजणौ, जोतीजबौ—कर्म वा०।

जुतणौ, जुतबौ— अक० रू०।

जोतरणौ, जोतरबौ, जोत्रणौ, जोत्रबौ—रू०भे०।

जोत-बळ—सं०पु० [सं० ज्योतिर्बल] पानी (ना.डिं.को.)

जोतर—देखो 'जोत' २० (रू.भे.)

जोतरणौ, जोतरबौ—देखो 'जोतणौ, जोतबौ' (रू.भे.)

उ०—१ वेग करी नइं बिलंब न कीज्यो, रांमइ रथ जोतरिया। हरि जोसी हाकेवा बइट्ठा, स्त्री वेगइं संचरिया।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ असवार १०० नैं राजडीयौ खवास नाई साथै दे नैं बाईजी रौ रथ जोतरियौ सो जाळोर सूं कोस ४० पोहता।

—वीरमदे सोनगरा री वात

जोतरणहार, हारौ (हारी), जोतरणियौ—वि०।

जोतराड़णौ, जोतराड़बौ, जोतराणौ, जोतरावौ, जोतरावणौ, जोतरावबौ—प्रे०रू०।

जोतरिग्रोड़ौ, जोतरियोड़ौ, जोतरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

जोतरीजणौ, जोतरीजबौ—कर्म वा०।

जोतरियोड़ौ—देखो 'जोतियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० जोतरियोड़ी)

जोतरियौ—देखो 'जोत' २० (अल्पा. रू.भे.)

वि०—जोतने योग्य (खेत)

जोतरु, जोतरू—देखो 'जोत' २० (रू.भे.)

वि०—जोतने योग्य, बोने योग्य (भूमि)

जोतरौ—सं०पु० (बहु व० जोतरा) १ खेत जोतने के पश्चात् सुन्दरता के लिये हल से पड़ी हुई सीधी रेखाओं के विपरीत हल द्वारा दोनों ओर खींची हुई कुछ आडी रेखाएँ।

२ देखो 'जोत' २० (अल्पा. रू.भे.)

रू०भे०—जोतौ।

जोतलिंग—सं०पु०—ज्योतिलिंग, शिव। उ०—सोरठ माहि देव के पाटण सोमइयौ महादेव वडौ जोतलिंग हुतौ, तिकौ संमत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाड़ियौ।—नैणसी

रू०भे०—जोतिलिंग।

जोतलौ—सं०पु०—कृषक, किसान। (अल्पा. रू.भे.)

जोतवंत—वि०—ज्योतिर्युक्त, ज्योतिवान। उ०—१ पौसाक ऊँच जव-हर अपार। करि जोतवंत भूखण प्रकार।—सू.प्र.

उ०—२ जोतवंत कसि मोड़ जवाहर। असमर तौलि छिबै सिर अमर।—सू.प्र.

रू०भे०—जोतिवंत, जोतीवंत, जोतीवंती।

सं०पु०—घृत, घी (ह.नां.)

जोतसरुप, जोतसरूपी—देखो 'जोतस्वरूप' (रू.भे.)

उ०—१ जोतसरूपी जीव जीव तौ जोत समांणी।

—केसोदास गाडण

जोत-सिघाळ—सं०पु०—ज्योति को बढ़ाने वाला, ईश्वर।

उ०—नमौ बहुदेवां छोडण बंध, नमौ कतु काळ तणा दहकंध। नमौ प्रहळाद तणा प्रतिपाळ, नमौ ससि-सूरज जोत-सिघाळ।—ह.र.

जोतसि—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.)

उ०—घण घमण जेम नववति घुरे, त्रिय प्रफुलति गावै तठै। चत्र-लख सुजांण जोतसि चतुर, जनमपत्री वरती जठै।—सू.प्र.

जोतसिखा—देखो 'जोतिसिखा' (रू.भे.)

जोतसी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.)

उ०—माप का विहाई सा प्रताप का निदांन। मारतंड आगे जिसी जोतसी जिहांन।—रा.रू.

जोतसुभ्र—सं०पु०—वज्र (अ.मा.)

जोतस्वरूप—सं०पु० [सं० ज्योतिस्वरूप] १ ईश्वर, परमात्मा (ह.नां.)
२ श्रीकृष्ण. ३ विष्णु. ४ सूर्य।

रू०भे०—जोतसरूप, जोतसरूपी, जोतिसरूप, जोतिसरूपी, जोतीसरूप, जोतीसरूपी, ज्योतिस्वरूप।

जोताई—सं०स्त्री—जोतने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

रू०भे०—जुताई।

जोताड़णौ, जोताड़बौ—देखो 'जोताणौ, जोताबौ' (रू.भे.)

जोताड़णहार, हारौ (हारी), जोताड़णियौ—वि०।

जोताड़िप्रोड़ौ, जोताड़ियोड़ौ, जोताड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जोताड़ीजणौ, जोताड़ीजबौ—कर्म वा०।

जोताड़ियोड़ौ—देखो 'जोतायोड़ौ' (रू.भे.)

स्त्री०—जोताड़ियोड़ी।

जोताणौ, जोताबौ—क्रि०स० ('जोतणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ घोड़े, बैल आदि को रथ, गाड़ी, कोल्हू आदि में बंधाना. २ घोड़े, बैल आदि से चलने वाली गाड़ी, हल आदि में जानवर जोत कर चलने के लिये तैयार कराना। ज्यूं—रथ जोताणौ. ३ भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये हल द्वारा खुदवाना. ४ किसी को बलपूर्वक किसी कार्य में लगवाना।

जोताणहार, हारौ (हारी), जोताणियौ—वि०।

जोतायोड़ौ—भू०का०कृ०।

जोताईजणौ, जोताईजबौ।—कर्म वा०।

जोताड़णौ, जोताड़बौ, जोतावणौ, जोतावबौ, जोत्राड़णौ, जोत्राड़बौ, जोत्राणौ, जोत्राबौ, जोत्रावणौ, जोत्रावबौ—रू०भे०।

जोतात—सं०स्त्री०—खेत की मिट्टी की ऊपरी तह (कुम्हार)

जोतायोड़ौ—भू०का०कृ०—(घोड़े, बैल आदि को रथ, गाड़ी, हल आदि में) बंधाया हुआ २ (रथ, हल, कोल्हू आदि में जानवर जोत कर) चलने के लिये तैयार किया हुआ. ३ (भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये) हल द्वारा खुदवाया हुआ. ४ (किसी को बलपूर्वक) किसी कार्य में लगवाया हुआ। (स्त्री० जोतायोड़ी)

जोतावणौ, जोतावबौ—देखो 'जोताणौ, जोताबौ' (रू.भे.)

जोतावणहार, हारौ (हारी), जोतावणियौ—वि०।

जोताविप्रोड़ौ, जोतावियोड़ौ, जोताव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जोतावीजणौ, जोतावीजबौ—कर्म वा०।

जोतावियोड़ौ—देखो 'जोतायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जोतावियोड़ी)

जोति—देखो 'जोत' (रू.भे.) (ह.नां., नां.मा.)

उ०—१ विप्र ग्रहण मोखयण रमण आरांण विचि, मारकौ माझियां बचं मिळियौ। खळां करि खंगरण अंत साखी अरण, भांजि जांमण-मरण जोति भिळियौ।

—राठौड़ रांमदान मेड़तिया (चांदावत) रौ गीत

उ०—२ पिंड पिंड दस दस सिर परठि सिर सिर छत्र धारै, जगमग हीर जड़ाव जोति आदित आभारै।—सू.प्र.

जोतिक—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.) उ०—घड़ी मंडि घड़ियाळ। जोइ जोतिक जोइसी।—गु.रू.बं.

जोतिकसास्त्र—सं०पु०यौ० [सं० ज्योतिष शास्त्र] ज्योतिष शास्त्र।

उ०—आयुरवेद धनुरवेद सांमवेद अथरविणवेद विद्या अलंकार छंद जोतिकसास्त्र नाद वीणा पुस्तक।—व.व.

जोतिकी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) उ०—वियास भट्ट के महंत जोतिकी ब्रहांमणं।—गु.रू.बं.

जोतिख—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.) उ०—जु लगन नीकौ देखि देउ जोतिख ग्रंथ देखि विचार कहौ।—वेलि.टी.

जोतिखी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) उ०—विध राहु करकरौ फळ वखांणि। जोतिखी ग्रंथ रौ पंथ जांणि।—सू.प्र.

जोतिग—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.)

जोतिगी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) उ०—समस्त जोतिगी बुलाया वसुदेव देवकी मुंहडा आंगण बुलाय बूझ्या।—वेलि.टी.

जोतिप्रकास, जोतिप्रकासी—सं०पु० [सं० ज्योतिप्रकाश] ईश्वर (नां.मा.)

रू०भे०—ज्योतिप्रकासी।

जोतियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ (घोड़े, बैल आदि का रथ आदि में) बंधा हुआ, जुता हुआ. २ (गाड़ी, हल, कोल्हू आदि में जोते जाने वाले जानवरों को बांध कर) चलने के लिये तैयार किया हुआ. ३ (भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये) हल द्वारा खोदा हुआ. ४ (किसी को बलपूर्वक) किसी कार्य में लगाया हुआ।

(स्त्री० जोतियोड़ी)

जोतिलिंग—देखो 'जोतलिंग' (रू.भे.)

जोतिवंत—देखो 'जोतवंत' (रू.भे.) उ०—दिअंण दांन मांन दातार, अमर नांम-दार ऊदार। सगह सूर धीर सांमंत, विमळ जोतिवंत जैवंत।—ल.पि.

जोतिव्रक्ष, जोतिव्रिक्ष—सं०पु०यौ० [सं० ज्योतिवृक्ष] एक प्रकार का वृक्ष जो रात्रि में सूर्य के समान प्रकाश करता है (जैन)

जोतिस—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.) उ०—१ जोतिस सगुन विहूं विध जांणै। पोह ज्यां वरजै लेख प्रमांणै।—सू.प्र.

उ०—२ मुख जोतिस काजं, कवि ग्रहराजं जांन सुभाजं खगराजं।

—र.ज.प्र.

उ०—३ त्रिकाळग्य तत जांण वांणि जोतिस ततवेता। आचारिज रिख उग्र जिके इकखज गुण जेता।—रा.रू.

जोतिसप्रकासी—देखो 'जोतिप्रकासी' (रू.भे.)

जोतिसरूप, जोतिसरूपी—देखो 'जोतस्वरूप' (रू.भे., ह.नां.)

उ०—परखि हो परखि प्रीतम पाय, निरखि हो निरखि घट मांहि नाय। रांमचंद नमो हो नमो रूप, पिंड पिंड मांहि जोतिसरूप।

—पी.ग्रं.

उ०—२ दहूं गुणां सूं न्यारा रहै। सो जोतिसरूवी दरसण लहै।

—ह.पु.वा.

जोतिसिखा—सं०पु० [सं० ज्योतिशिखा] दीपक (ह.नां.)

रू०भे०—जोतसिखा।

जोतिसिय—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे., जैन)

जोतिसिह-सं०पु० [सं० ज्योतिशिख] एक प्रकार का कल्प वृक्ष (जैन)

जोतिसी—देखो 'ज्योतिसो' (रू.भे.) उ०—अनेक पिंडत, जोतिसी, सिद्ध, मंत्री, तंत्री, कवीस्वर, वेदपाठी आय बैठिया छै।
—सिंघासण बत्तीसी

जोती—देखो 'जोत' (रू.भे.)

जोतीवंत, जोतीवंती—देखो 'जोतवंत' (रू.भे.) उ०—जगपीलसोत गिरदां जरी, जोतीवंत कपूर जळि। अगरेल चिराकां जोति अति, कळा जोति झळहळ कमळि।—सू.प्र.

जोतीसरूप, जोतीसरूपी—देखो 'जोतस्वरूप' (रू.भे.)
उ०—जुग सकळ मांहि देखं 'जगा', लाभ धरम समरण लिया। जोतीसरूप जन्नारजन, दिल महिल्ल दीपग दिया।—ज.खि.

जोतौ (बहु व० जोता) देखो 'जोतरौ' (रू.भे.)
मुहा०—जोता देणा—काम समाप्त करना (व्यंग)

जोत्रणो, जोत्रबो—देखो 'जोतणो, जोतबो' (रू.भे.)

जोत्राड़णो, जोत्राड़बो—देखो 'जोताणो, जोताबो' (रू.भे.)
उ०—ताहरां मुंहतं रं पालियं राजि पगे लागण नं पधारिया। कहाड़ि मेल्हियो जु राजि वहिल जोत्राड़ि अर आवं, पधारि अर मिळिया।—द. वि.

जोत्राड़ियोड़ो—देखो 'जोतायोड़ो' (रू.भे.)
स्त्री०—जोत्राड़ियोड़ी।

जोत्राणो, जोत्राबो—देखो 'जोताणो, जोताबो' (रू.भे.)

जोत्रायोड़ो—देखो 'जोतायोड़ो' (रू.भे.)
स्त्री०—जोत्रायोड़ी।

जोत्रावणो, जोत्राववो—देखो 'जोताणो, जोताबो' (रू.भे.)

जोत्रावियोड़ो—देखो 'जोतायोड़ो' (रू.भे.)
स्त्री०—जोत्रावियोड़ी।

जोत्रियोड़ो—देखो 'जोतियोड़ो' (रू.भे.)
स्त्री०—जोत्रियोड़ी।

जोत्र—देखो 'जोत' २० (रू.भे.) (उ.र.)

जोत्सणा, जोत्सना—देखो 'ज्योत्सना' (रू.भे.)

जोदा—देखो 'जोधा' (रू.भे.)

जोदौ—देखो 'जोधौ' (रू.भे.)

जोद्धार—देखो 'जोधार' (रू.भे.)
उ०—इण वासतं स्यांम धरमपाळ जुद्ध में मरजो और सत्रुआं नं मारजो कोई एक जोद्धार जुद्ध करतां सत्रुआं नं कहे छं।
—वी.स.टी.

जोध-सं०पु० [सं० योधः] १ योद्धा, शूरवीर, सुभट, वीर (डि.नां.मा.)
उ०—१ आइस्यं जाइ साथि सु चढ़ि चढ़ि आया, तुरी लाग ले ताकि तिम। सिलह मांहि गरकाब संपेखो, जोध मुकुर प्रतिबिंब जिम।
—वेलि

उ०—२ धड़ ऊपर सिर धारियो, जोध भलो जगदेव। काट कंकाळी अप्पियो, कीधो देव अदेव।—बां.दा.
यौ०—जोधगुर, जोधगुरू, जोधविद्या।
२ बेटा, पुत्र (अ.मा.)
उ०—दूसासेण माथ रौ कतांत रोध घायो दूठ, जेठो पाराथ रौ, किनां 'भारात' रौ जोध।—हुकमीचंद खिड़ियो
३ भैरव. ४ देखो 'जोधौ' २ (रू.भे.) ५ देखो 'जोधा' (रू.भे.)
वि०—जवान, युवा। उ०—चवदं बरस री पिया, परणिया जी कोई, हो गइ जोध, हो गइ जोध-जवांन, हांजी ओ ढोला जोध-जवांन, अब घर आवो, गोरी रा वालमा हो जी।—लो.गी.
यौ०—जोध-जवांण, जोध-जवांन, जोध-जुआंण, जोध-जुआंन।

जोधगुर, जोधगुरू-सं०पु०यौ० [सं० योधः+गुरु] १ मंत्री (डि.नां.मा.) २ महावीर।

जोधजवांण, जोधजवांन-वि०यौ०—१ पूर्ण युवा। उ०—चवदं बरस री, पिया, परणिया जी कोइ, हो गई जोध, हो गइ जोध-जवांन, हांजी ओ ढोला जोध-जवांन, अब घर आवो, गोरी रा वालमा हो जी।
—लो.गी.
२ शक्तिशाली, बलवान।
रू०भे०—जोध-जुआंण, जोध-जुआंन।

जोध-जुंझार-सं०पु०— एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

जोध-जुआंण, जोध-जुआंन, जोध-जुवांन—देखो 'जोध-जवांन' (रू.भे.)
उ०—१ वडा वडा संख बाजिया, घणा कटक घमसांण। काळिगो नं केसवो, जूटा जोध-जुआंण।—पी. ग्रं.
उ०—२ परण चाल्या छा भंवरजी गोरड़ी जी, हांजी ढोला, हो गइ जोध-जुवांन।—लो.गी.

जोधण-सं०पु० [सं० योधनम्] १ लड़ाई, युद्ध।
[सं० योधिनम्] २ योद्धा, शूरवीर, सिपाही।

जोधपुरी-वि०स्त्री०—जोधपुर की, जोधपुर सम्बन्धी।
सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जोधपुरो-वि०पु०—जोधपुर का, जोधपुर सम्बन्धी।
सं०पु०—राठौड़ राजपूत।
उ०—घण दोळा कटक लूंब घैसाहर, आया खड़ वाहर असह। जोधपुरो रहियो जग जाहर, थहियो नाहर जेम थह।
—महादांन महडू
रू०भे०—जोधांपुरो।

जोधविद्या-सं०स्त्री०यौ०—अस्त्र-शस्त्रों की विद्या, युद्ध कौशल।

जोधांण-सं०पु०—जोधपुर नगर का एक नाम। उ०—१ सज 'जुगतो' वणसुर 'पीथलो' हरियंद' सांदू। बारहठ भैरूदांन दन 'ऊमो' 'वन' नांदू। 'इंदो' 'कुसळो' 'मेघ' मायारांमो रतनू 'रंग'। एक पनो आसियो 'नवल' लाळस कवियो 'नग'। गाडणां 'भोप' खिड़िया उभं 'केहर' 'साहब' कारणां। जोधांण किलं लीधो सुजस, चवड़ं एता चारणां।
— महाराजा मांनसिंह जोधपुर

उ०—जोधांण नग्र राजत 'विजेस', सुज विमो देस लाजत सुरेस। मद छकै द्वार घूमैं मतंग, रित छहूं पटाभ्रर सांम रंग।—शि.सु.रू.

जोधाणा-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जोधाणो, जोधानेर-सं०पु०—जोधपुर नगर। उ०—१ चंग बीकांणै वाजै, चंग जोधांणै वाजै, कोई वाजै-वाजै चंग अजमेर, ए रंगीलो चंग बाजणू।—लो.गी. उ०—२ जला रे, सहरां मांयलो सहर भलो जोधांणो रे, म्हारी जोड़ी रा जला, पिया पारी रा जला। —लो.गी.

जोधा-सं०स्त्री०—राव जोधा के वंशज, राठौड़ों की एक उपशाखा।
रू०भे०—जोदा, जोध।

जोधापुरी—देखो 'जोधपुरी' (रू.भे.) उ०—दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरी। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मंडोवरी। —रा.रू.

जोधारंभ-सं०पु०—युद्ध, संग्राम।

जोधार,जोधाळो-सं०पु० [सं० योद्धा+आलुच्] योद्धा, शूरवीर (डि.नां मा.)
उ०—१ प्रळै साधवा फूटियो सिव वारध के लोप पाजां, करी धू पटंत हकै छूटियो कोधार। काळै पाख महा वेग तूटियो नखत्र किना, 'जालमो' उताळै रोस जूटियो जोधार।—हुकमीचंद खिड़ियो
उ०—२ कीजै रंग रोळा, भाभा मेहल्या सोना रूपा ना कचोळा। किसी नहीं कुरस, तिहां बइठा बत्रीसलक्षणा पुरस। फांदाळा, फुंदाळा, दुंदाळा, भाकभमाळा, सुंहाळा, आंखि मणीआळा, केसपास काळा, केई जमाई, केई साळा, केई जोधाळा, चालती हालणी भाळा, इस्या पांति वइठा वाळगोपाळा।—व.स.

जोधो-सं०पु०—१ योद्धा, सुभट, वीर (डि.नां.मा.)
उ०—उवरै संकर सकति अरोधा। जाजुळमांन महा भड़ जोधा। —सू.प्र.
२ जोधा उपशाखा का राठौड़। उ०—मह जोधां सलखां रिड़मालां, कमधां कुळ ऊजळो कियो।—हठीसींग री गीत
रू०भे०—जोदो, जोध।

जोन—देखो 'जूण' १, २, ३ (रू.भे.)

जोनकपीट-सं०स्त्री० [सं० कूपीट योनि] अग्नि (डि.को.)

जोनळ-सं०स्त्री०—ज्वार।

जोनि, जोनी—देखो 'जूंण' १, २, ३ (रू.भे.) उ०—१ रोम तणी रुघनाथ पार सिव सकति न प्रामैं। नरहर रै नाम मैं जोनि ब्रह्मा विप्र जामैं।—पी.ग्रं. उ०—२ आदेस करूं उण पुरस नैं, जो जोनी संकट हरै। आदेस अहो निस अलख नैं, कर जोड़े 'ईसर' करै।—ह.र.

जोनिकंद-सं०पु०—योनि का एक रोग। (अमरत)

जोनै-जिसको ? उ०—अव्वनी तणी भार ले कंध आयो। जोनै नागणी दे हुतो घन जायो।—ना.द.

जोन्ह—देखो 'जूंण' (रू.भे.)

जोपणी- ?
उ०—माळीए माळीए हीर हाटक मणी। जाळीए जाळीए नगर री जोपणी।—रुखमणी हरण

जोपणो, जोपबो-क्रि०अ०—१ जोश में आना।
२ उत्साहित होना. ३ शोभित होना। उ०—१ आभूसण नर नारि इसी बिध वोपिया। जांण क सुरपुर लोक इधक छवि जोपिया।—वगसीरांम प्रोहित री वात
उ०—२ जरद जोसण कडो टोप हाथळ जड़ी। जोपतो राग में लोहमी मोजड़ी।—रुखमणी हरण
उ०—३ जोपती भावती जीण-साला जडे। भालड़े बांधीये नेत भूल भडे।—रुखमणी हरण
४ देखो 'जोतणो, जोतबो' (रू.भे.)
उ०—१ असि धुर जोपि तेज ऊडांणै। अगळि संहस रहकळा आंणै। —सू.प्र.
उ०—२ तो नापो कही—थे ही गाडा जोप उरा आवो घोड़ा पाहरा छै।—नापा सांखला री वारता
जोपणहार, हारो (हारी), जोपणियो—वि०।
जोपिओड़ो, जोपियोड़ो, जोप्योड़ो—भू०का०कृ०।
जोपिजणो, जोपिजबो—भाव वा०, कर्म वा०।
जोपियोड़ो-भू०का०कृ०—१ जोश में आया हुआ. २ उत्साहित हुवा हुआ. ३ शोभित हुवा हुआ. ४ देखो 'जोतियोड़ो' (रू.भे.)
स्त्री०—जोपियोड़ी।

जोपै-अव्य० [सं० यद्यपि] यदि, अगर, अगरचे, यद्यपि।

जोबण—देखो 'जोबन' (रू.भे.)
उ०—पही भमंता जइ मिळइ, तउ प्री आखै भाय। जोबण वंधण तोड़सइ, वंधण घातउ आय।—ढो.मा.

जोबणेरी-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम।

जोबन-सं०पु० [सं० यौवन] युवा होने का भाव, जवानी, तारुण्य।
उ०—१ पावस आयउ साहिवा, बोलण लागा मोर। कंता तूं घरि आव नवि, जोबन कीधउ जोर।—ढो.मा.
उ०—२ छक छोह रूप जोबनां छाकां। पुहपां तणी वणी पोसाकां। —सू.प्र.
मुह०—१ जोबन आणो—युवावस्था आना, जवानी आना.
२ जोबन ऊठणो—यौवन उभरना, जवानी आना. ३ जोबन उतरणो—जवानी समाप्त होना. ४ जोबन गमाणो—यौवन खोना। देखो 'जोबन ढळणो'. ५ जोबन गाळणो—युवावस्था व्यतीत करना, यौवन गुजारना. ६ जोबन चंवणो—देखो 'जोबन टपकणो'। ७ जोबन चढ़णो—युवावस्था आना, जवानी भरना ८ जोबन छलकणो—यौवन छलकना, जवानी आना. ९ जोबन छाणो—युवा होना, पूर्ण जवान होना. १० जोबन जाणो—युवावस्था का चला जाना। वृद्ध होना।

देखो 'जोवन ढळणौ'। ११ जोवन टपकणौ—यौवन टपकना, यौवन का आभास होना. १२ जोवन ढळणौ—युवावस्था से वृद्धावस्था की ओर बढ़ना, जवानी उतरना. १३ जोवन फाटणौ—जवानी में उन्मत्त होना, जवानी छा जाना. १४ जोवन फूटणौ—देखो 'जोवन छळकणौ'. १५ जोवन लूटणौ—(किसी तरुणी के) तारुण्य का आनन्द लेना।

२ बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था के मध्य की सुन्दरता, रूप, तरुणाई।

उ०—अंग अंग मभ्फ-ऊफणै, जोवन आठौं जांम। त्यां हूवी तसबीर री, कलम हुवै नह कांम।—वां.दा.

रू०भे०—जुव्वन, जुव्वण, जुव्वणि, जुव्वन, जूवण, जूवणु, जोबण, जोवण, जोवन्न, जोव्वण, जोवन, जौबन, जौवन।

अल्पा०—जोवनियौ, जोवनियौ।

जोबनवत-वि० [सं० यौवनवान्] यौवनयुक्त, यौवनपूर्ण, युवा, जवान।

उ०—दउढ़ वरस री मारुवी, त्रिहुं वरसांरिउ कंत। उणरउ जोवन वहि गयउ, तूं किउं जोबनवंत।—ढो.मा.

रू०भे०—जोबनवंत।

जोबनियौ—देखो 'जोबन' (अल्पा० रू.भे.)

उ०—२ कांनां केसां लोयणां, दरसण नै दांतांह। अेतां में बिखौ पड़्यौ, (इक) जोवनियौ जातांह।—रसराज

उ०—२ पिव परदेसां छा रह्यौ, गया परी नै भूल। जोबनियौ ढळ जावसी, थांरी है दौलत में धूळ।—लो.गी.

जोबरळौ-वि० (स्त्री० जोबरळी) देखो 'जेवरळौ' (रू.भे.)

उ०—अजकणां टावर तारां काज, करै जोबन जोबरळौ घात। बुढ़ापौ रहग्यौ धूणौ आय, भली आ दिन लाग्यां री बात।—सांझ

जोबराज-सं०पु० [सं० यौवराज] १ युवराज का पद।

उ०—रचे अंगदेस दियौ जोबराज। क्रिपानाथ छाये गुफा देव काजं।—सू.प्र.

२ युवराज होने का भाव. ३ युवराज।

जोमंग, जोमंगी-वि०—जोशीला।

उ०—जोमंगी भंडीस ज्याग आयौ ज्यूं चंडीस जायौ, राजपत्री आयौ ज्यूं थंडीस वाळे रेस। ओडंडीस कसीसतौ लांगड़ो कपीस आयौ, कोडंडीस कसीसतौ आयौ गुडाकेस।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ योद्धा।

रू०भे०—जोमअंगी।

जोमंड-वि०—बलवान, शक्तिशाली।

उ०—रातौ भूम्फ विलम बच रोडै, जबर इसौ कुण जोमंड। मो ऊभां संकर चौ कोमंड, तांण भीच किण तोड़ै।—र.रू.

जोमंडौ—देखो 'जोमंड' (रू.भे.)

जोम-सं०पु० [अ० ज़ोम] १ जोश। उ०—१ 'आलम' सा उत्तर धरा, भिसत गयौ निज भोम। सारै जाया साह रा, जुध आया जम जोम।—रा.रू.

उ०—२ फबि अंगि सिलह जोम ऊफणिया। वीस मयंद आरोहक वणिया।—सू.प्र.

२ बल, शक्ति। उ०—१ नाहरखांन गुमांन सूं, साहां जोम सुणाय। मरज करै डेरां गयौ, सूतौ काळ जगाय।—रा.रू.

उ०—२ खसै दंत देवां दुवां पांण खूटा। तरै भूप दूजा तणा जोम तूटा।—सू.प्र.

३ मस्ती, मदोन्मत्तता। उ०—विणै मोचड़ी हीर मोती विचित्र, पदं मोह लीनै किधूं हंस पुत्र। म(ग)ती जोबना की चलै मंद मंदं, गहीरं चल्यौ जोम छाक्यौ गयंदं।—बगसीरांम प्रोहित री वात

४ आवेश। उ०—चख मिळ बिहूं हुवौ चख-चड़बौ। जोम अथाग जाग उर जुड़बौ।—र.ज.प्र.

५ गर्व, अभिमान। उ०—१ सो बाकारतां ही भीलड़ौ भो पर-मालां रौ खाणहार। उधारा आंटां रौ लेणहार। देस देस रा आंटा खेटा जारियां बैठौ थौ सो जोम रौ मारियौ रै रावत रै अभियावणै रूप होय सांमौ हीज आयौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ म्हांरी धरती मांहे दौड़्यौ। अर गढ़ री जोम होवै तौ फेर सांमांन करौ। म्हारी फौज आवै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

६ उत्साह, उमंग।

जोमअंगी—देखो 'जोमंगी' (रू.भे.)

उ०—दगौ धारियौ 'डूंग' सूं सोवै पाकड़ै छांवणी दौळा, लोह-लाट लंगरी अमाप फौजां लेर। लाखां मुखां आठों सोवा ऊपरै सोभाग लीधौ, जोमअंगी सींह नै आगरै कीधौ जेर।—डूंगजी री गीत

जोमधराज-वि०—जोशपूर्ण। उ०—सजो सब हैवर पाखर साज। धरा थंभ सुभट जोमधराज।—पे.रू.

जोमायत, जोमायतौ-वि०—जोशपूर्ण। उ०—बांध कमर फरसी भाल ए, कास्ट पै आयौ चाल ए, घणौ जोमायतौ होय ए, कास्ट ना खंड कीधा दोय ए।—जयवांणी

जोय-सं०स्त्री० [सं० जाया] १ पत्नी, जोरू। उ०—सम्मन, ऐसी प्रीत कर, ज्यौं हिंदू की जोय। जीतां जो तौ संग रहै, मरयां पै सत्ती होय।—सम्मन

२ देखो 'जोग' (रू.भे.) (जैन)

जोयजै—देखो 'जोईजै' (रू.भे.)

उ०—तठा उपरांयंत सीरो-पूड़ी वणै छै। सोहितै सारू देवजीभि जोयजै छै। विरंजै सारू चोखा मंगायजै छै।—रा.सा.सं.

जोयण-सं०पु०—१ आंख, नेत्र। उ०—वीरांण सद्द सुणिया विहद्द, नीसांण तूर मणहद्द नद्द। जोयणां सरीरां जोत जाग, लोयणां पार रा ध्यांन लाग।—वि.सं.

२ देखो 'जोजन' (रू.भे.)

उ०—१ सुहिणा, हूं तइ ढाहवी, तो नइ दहियउ अग्गि। सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि।—ढो.मा.

उ०—३ मेवाड़ धन्न दहड़ धनसार, कोल बपरइ धाराधार। जोवण एक पड़ी नइ जाइ, हारइ नहीं न धारा धाइ।—ढो.मा.

३ [illegible] (?) उ०—सरसति सामणि सूं जग जोण। हृत घड़ी मउहारै बोण। वरि समह्री ममरी ममइ। कामनोरी हृत मइणे माइ। तो नूठी वर प्राविमइ। पाय धरासी जोपन जोइ। —वी.दे.

जोवनु—देखो 'जोवन' (रू.भे.) उ०—गंग तरंगह मघइ पोवणु। [illegible] वारह जोवनु। पाग हरा धागुरोध बहूप। पइठा [illegible] रूप।—पं.प.च.

जोवनो, जोवबो—देखो 'जोवणो, जोवबो' (रू.भे.)

उ०—हार तोड़तो, कनक मोड़तो, प्राभरण भाजतो, वस्त्र गांजतो, [illegible] फोड़तो, मायउ फोड़तो, वक्षस्थळ ताड़तो, कुंतळ [illegible] रोवतो, त्रिवळीतळि लोटतो, एकज्जळ वास्पजळि कंचक सींचतो, दीन बोलतो, सखीजन अपमानतो, पुन-पुन रोवतो, अपरा-पर दिगमंडळ जोवतो, पांणीपरहितमत्स्य जिम घोळतो।—व.स.

जोवळ-सं०स्त्री०—१ दृष्टि, निगाह, नजर। २ देखो 'जुवळ' (रू.भे.)

जोवसी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.)

जोवाव, जोवावाटो—देखो 'जोवावटी' (रू.भे.)

जोवीजै—देखो 'जोईजै' (रू.भे.) उ०—ताहरां रावजी कह्यौ—'दूदा' 'देखो' नीवळ मारियो जोवीजै।—दूदै जोधावत री वात

जोविनो, जोविवो—देखो 'जोवणो, जोवबो' (रू.भे.)

जोवियोड़ो—देखो 'जोवियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० जोवियोड़ी)

जोर-सं०पु० [फा० जोर] १ शक्ति, बल। उ०—१ दौलत सूं दौलत बधै, दौलत ध्यावै दोर। जस होवै सब जगत में, जोबन ध्यावै जोर। —अज्ञात

उ०—२ प्रोळगै राम ज प्रायो प्राप। विसै रघां पंच सकै नंह व्याप। रटै तो नाम कटै दुख रोर। जराऽऽमय पाप न लागै जोर। —ह र.

क्रि०प्र०—प्रजमाणो, लगाणो।

मुहा०—१ जोर करणो—ताकत लगाना, प्रयत्न करना, बल का प्रयोग करना. २ जोर टूटणो—बल का क्षीण होना, प्रभाव कम होना, निराश होना ३ जोर डालणो—बोझा देना, देखो 'जोर देणो'. ४ जोर देणो—ताकत लगाना। बोझा लादना। दबाव डालना। किसी बात को बहुत आवश्यक या महत्व की बतलाना. ५ जोर दे नै कै'णो—किसी बात को बहुत या दृढ़ता से कहना. ६ जोर मारणो—ताकत लगाना, बहुत प्रयत्न करना. ७ जोर लगाणो—देखो 'जोर मारणो'।

यौ०—जोर-जुलम।

२ अधिकार, वश, काबू।

ज्यूं-बरादरी रै वेटै माथै हमैं मांनाणो जोर नी चालै।

क्रि०प्र०—चलणो, चलाणो, जताणो, होणो।

मुहा०—१ जोर डालणो—किसी पर अधिकार जतलाते हुए विशेष आग्रह करना। दबाव डालना. २ जोर दे नै कै'णो—देखो 'जोर डालणो'. ३ जोर देणो—देखो 'जोर डालणो'।

३ मेहनत, परिश्रम, दबाव। ज्यूं-सूता सूता पढ़ण सूं आंख्यां माथै जोर पड़ै। ४ तेजी, प्रबलता। ज्यूं-ताव री जोर। उ०—संभ घोर अंधकार कळिराज छायो असत, जोर सत कियो अवछन गवन जास।—उमेदसिंह सिसोदिया रो गीत

मुहा०—१ जोर करणो—तेजी दिखलाना, प्रबलता दिखलाना. २ जोर पकड़णो—तीव्र होना, तेज होना, प्रबल होना. ३ जोर मारणो—देखो 'जोर करणो'. ४ जोर में आणो—अनायास ही प्रबल हो जाना। अनायास ही उन्नति की ओर बढना।

५ आवेश, वेग। ज्यूं-मगरे में बरसात होणे सूं नदी री जोर वधियो है। ६ आसरा, सहारा, भरोसा। ज्यूं-१ थे किण रै जोर माथै राजा सूं अड़िया हो. २ थे किण रै जोर माथै कूदो हो।

वि०—प्रबल, तेज। उ०—खीची दिन दिन वधता गया, तद वडी ठाकुराई, पातसाह अकबर री पातसाही तांइ तो निपट जोर साहिबी थी।—नैणसी

यौ०—जोर-सोर।

जोरजट-सं०पु०—एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

उ०—जरी, रेसम नै जोरजट रो घेम सो लाग्योड़ो।—रातवासो

जोरजुलम-सं०पु०यौ०—अत्याचार, ज्यादती।

जोर-तळब-सं०पु०यौ०—आसानी से आज्ञा न मानने वाला।

उ०—तद पूनियां रै थांणायत अरज कीवी, परगनो नयो दबियो छै, लोग जोर-तळब छै, तिणसूं कासूं आग्या। तद महाराज फरमाई तू कहै तिण माफक पीठ राखां तद उण अरज कीवी इतरी आसांमी राखजे।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

जोरदार [फा० जोरदार] शक्तिशाली, बलवान।

जोरवंत, जोरव्वर, जोरवांन—देखो 'जोरावर' (रू.भे.)

उ०—१ 'जगो' अवसांणो जोरवंत। सुत 'सांम' खेत गाजो अरंत। —रा.रू.

उ०—२ जुदवार मंडे पतसाह जोरवर, ताता मढ़ां उतारण ताप। बाप लड़ै हलकारै वेटो, लड़ै ऊससै बाप।—अज्ञात

उ०—३ अठी रांम रा सुभड़ नै सुभड़ रांवण उठी, लंक रै जोरवर खेत लड़वा। तीर सेलां छुरां झोक तरवारियां, वाजिया विनै ही रंभ वरवा।—र.रू. उ०—४ कीरतसिंघ, उमेदसिंघ, पाली रा चांपावत रा भांणेज सेखावत सिवसिंघ रा कंवर बड़ा जोरवांन ज्यां नूं सिव-सिंघ मराया समरथसिंघ रै हाथ।—बां.दा.ख्यात

जोरया-सं०स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

जोरसिंह-सं०पु०—एक मारवाड़ी लोक गीत।

जोरसोर-सं०पु०यौ० [फा० जोर-शोर] बहुत अधिक प्रबलता या प्रचण्डता।

जोरा—सं०स्त्री०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा (बां.दा.ख्यात)

जोराई—देखो 'जोरावरी' (रू.भे.)

जोराजोरी—सं०स्त्री०यौ०—जबरदस्ती । उ०—सांम तेरी देखी रे आज जोराजोरी, किण सूरत तारी ऋिपता घोखं, नाहक छतियां मरोड़ी । —लो.गी.

क्रि०वि०—बलपूर्वक । उ०—लागो रे थांसूं नेह पनाजी म्हारो अब जोराजोरी तो निभावो सांवळड़ा थांरी लेर म्हारो ।—लो.गी.

जोरावर—वि० [फा०जोर+आवर] बलवान, ताकतवर, बली, शक्तिशाली, जबरदस्त । उ०—१ जोरावर तपियो जठै, भूपत जादव भांण । गांजै तूं सो देवगिर, गूजरवै सुरतांण ।—बां.दा.

उ०—२ ढोलणी नै चौवारे चढ़ाय ढोलो मारूणी दोनूं पोढ़सी, खातीड़ा रे असल गंवार, जोड़ी जोरावर ढोल्यो सांकड़ो ।—लो.गी.

रू०भे०—जोरवंत, जोरवर, जोरवांन ।

जोरावरी—सं०स्त्री० [फा० जोर+आवरी] १ जबरदस्ती, जबरन । उ०—१ जदी तींनीं असतरचां जाय नै ठाकुर थी कयो सो इणी हीज जोरावरी कथा बंचाई है ।—गांम रा धणी री वातं

उ—२ आप रहण आरांण, केव्यां चीतविया करण । जोरावरी जवांण, दुभ्रूळ धमळ लीधो 'दलै' ।—गो.रू.

२ शक्ति, बल, जोर । उ०—बीजे दिन कुंवरी जोरावरी कर वेश्या रै घर सूं बाहर नीसरी ।—पंचदंडी री वारता

३ बलात्कार. ४ अत्याचार, अन्याय ।

क्रि०वि०—बल से, शक्ति से । उ०—तेजराव रावळ चाचगदे रो बेटो । तिण रावळ लखणसेण रा बेटा पुनपाळ कना जैसळमेर जोरावरी लियो ।—नैणसी

रू०भे०—जूरी, जोराई, जोरी ।

जोरावळ—वि०—देखो 'जोरावर' (रू.भे)

जोरावार—वि०—१ देखो 'जोरावर' (रू.भे.) उ०—माझी बरारा बीटिया झोक घरा रा सिंगार मारू, रोळै वैर अकारा वैडाक घरा रा रीठ । जोरावार मता रा 'पता' रा खांगीबंध जोध, नीधसै 'अभा' रा जांगी तो भुजा नत्रीठ ।—पहाड़खां आढ़ो

२ वीर, सुभट । उ०—जोरावार कदै इंद्र अखाड़ै आवसी जांण, लगावसो कदै खळां ताळवै लगांम । रीझै वळोवळी कदै कसुंबो पावसी राजा, हळोवळी भड़ां कदै धावसी हगांम ।

—रतलांम महाराजा बळवंतसिंह री गीत

जोरिंगण—सं०पु०—जुगनू ।

जोरी—देखो 'जोरावरी' (रू.भे.)

यौ०—जोरी-जपती, जोरी-दावो ।

जोरी-जपती—सं०स्त्री०यौ०—१ हुज्जत, आनाकानी, बकवास, झौड़, लड़ाई । उ०—जोरी-जपती करै मोड तो, धरो कैद कै मांय । च्यार सिपाही आगै होग्या, च्यार सिपाही लार ।—डूंगजी जवारजी री पड़

२ जबरदस्ती, अत्याचार, जुल्म । उ०—हुकम चलै छै अंगरेजां को जोरीजपती नांय । यो अंगरेजी राज है, स थें जो ल्यावोला ठाय ।

—डूंगजी जवारजी री पड़

जोरी-दावो—सं०पु०यौ०—जबरदस्ती, जबरन । उ०—आ ठौड़ पाहुवं री कहावै । कदीम तो जैसळमेर वासै आ ठौड़ हुती । पछै बीकानेर रा धणियां जोरीदावै महाराजाजी स्री सूरसिंघजी दबाय नै हापासर बीकानेर वांसै घातियो ।—नैणसी

जोरू—सं०स्त्री०—पत्नी, स्त्री । उ०—१ दिलासा करि अर पूछियो । 'भोपति' के कितनी जोरू छै । कितने हेक दिने छै ।—द.वि.

उ०—२ जर जवहर घर जोरवां, लूटांणी सम लाज । मेछां नीमड़ियो विभो, सुण चढ़ियो महाराज ।—रा.रू.

जोरौ—सं०पु०—१ जवानी ।

क्रि०प्र०—चढ़णो ।

२ देखो 'जोर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कहै जम जोरा भंजिये, कहां काळ को दंड । कहां मीच को मारिये, कहां जरा सतखंड ।—दादू बांणी

३ जुल्म । उ०—तेहनो सबळो जगमांही जोरो, पडै जास भड त्रिभुवन सोरो ।—प्राचीन फागु संग्रह

जोल—सं०पु० [सं० युगल] पैर । उ०—जोल खंभ देवळां कमठ ईडर कठठंता । घण भरतां जळ घाट माट जैही कठठंता ।—सू.प्र.

जोलहा—सं०पु०—जुलाहा ।

जोलू—सं०स्त्री०—राठौड़ों की एक उपशाखा ।

जोवंत—वि०—ज्योतिवान, कान्तिवान ।

जोवण—१ देखो 'जोवन' (रू.भे.) उ०—१ जंप जीव नहीं आवतो जांणै, जोवण जावणहार जण । बहु विलखी वीछड़ती बाळा, बाळ संघाती बाळपण ।—वेलि. उ०—२ वधिया तनि सरवरि वेस वधंती, जोवण तणी तणो जळ जोर । कांमणि करग सु वांण कांम रा, दोइ सु वरुण तणा किरी डोर ।—वेलि.

सं०स्त्री०—२ तलाश करने या ढूंढ़ने का भाव ।

३ देखने का भाव ।

वि०—१ तलाश करने या ढूंढ़ने वाला. २ देखने वाला ।

जोवणो, जोवबो—क्रि०स०—१ तलाश करना, ढूंढ़ना ।

उ०—१ वळै उणा नूं कह्यो—'थारै मन मांहे कूं भरम रहै छै तो थे म्हारा घर जावो' । उणां फिर फिर सारा वसती रा डावड़ा जोया ।

—नैणसी

उ०—२ उणनूं एक दिन पूरै सूं सिकार पधारिया था सो थोहरां री झळ थी तींमे सूअर जोवण नै सोग सारो खिड गयो । जोवतो फिरै छै ।

—महाराजा पदमसिंह री वात

२ देखना । उ०—१ इण जुगत सों जांन पधारिया छै । जांगळू रा लोक ऊंचा चढ चढ नै जोवै छै । राज लोक विण गोखां चढ़ि चढ़ि नै जोवै छै ।—लालो मेवाड़ी री वात

उ०—२ मुख जोवइ दीवा धरी, पाछउ करइ पलाह । मारू दीठी

लाल [illegible] —ढो.मा.

३ राह देखना, इन्तजार करना. ४ प्रज्वलित करना, जलाना। (दीपक)

५ देखो 'जोवणो, जोवबो' (रू.भे.)

जोवणहार, हारो (हारी), जोवणियो—वि०।

जोवाड़णो, जोवाड़बो, जोवाणो, जोवाबो, जोवावणो, जोवावबो—प्रे०रू०।

जोवियोड़ो, जोवियोड़ो, जोव्योड़ो—भू०का०कृ०।

जोवीजणो, जोवीजबो—कर्म वा०।

जुवणो, जुवबो, जोग्रणो, जोग्रबो, जोइणो, जोइबो, जोइयणो, जोइयबो, जोणो, जोबो, जोयणो, जोयबो, जोहणो, जोहबो—रू०भे०।

जोवन—देखो 'जोबन' (रू.भे.) उ०—१ पयी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पहुंचाइ। जोवन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढ़इ थाइ। —ढो.मा.

उ०—२ दउड़ बरस री मारवी, तिहुं बरसांरिउ कंत। उणरउ जोवन वधि गयउ, तूं किउं जोवनवंत।—ढो.मा.

जोवनवंत—देखो 'जोबनवंत' (रू.भे.) (स्त्री०जोवनवंती)

जोवनराय—देखो 'जोबन' (मह.,रू.भे.)

उ०—धानी मांटया रूसणा, नैणां दीसै नांय। दांत बतीसूं खिर गया, गया जद जोबन राय।—अज्ञात

जोवनियो—देखो 'जोबन' (अल्पा.,रू.भे.) उ०—ढोलाजी रै बाळियां मांहे दरणावियां, ढोलाजी रै भर जोवनियां मांय, ढोलाजी रै कागदियां नो टोटो, ढोलाजी रै मूं माहणी भर जोवनियां माइ। —लो.गी.

जोवन्न—देखो 'जोबन' (रू.भे.) उ०—तिलां तेल पोहप फुलेल उजेनित सागर। अगनी काठ, जोवन्न घट, मगवट्ट सु कायर।—ह र.

जोवरळो—देखो 'जेवरळो' (रू.भे.) उ०—तो जिसड़ा त्यागीह, भगवत रा हाना भगत। ईसर अनुरागीह, जोवरळा लाधै 'जसा'। —उदैराज ऊजळ

जोवराज—देखो 'युवराज' (रू.भे.)

जोवाड़णो, जोवाड़बो—क्रि०स० ('जोवणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ दिखलाना, जताना, बतलाना। उ०—१ म्हैं तो प्रासीपणो किटो नहीं करां, जु प्रासिदा दां सु प्रासीपणो करी जोवाड़िस्यां। —द.वि.

उ०—२ वीरत वीर घनैं समवदनी, पुणें 'गुज' उत साच पचांण। मार मरो पर पुरसां मुंहड़ो, जोवाड़ै ताय लाछण जांण। —तेजसी खिड़ियो

उ०—३ पछै भलो मोहरत जोवाड़ कूंभै नूं प्रोहित नाळेर दियो। —नैणसी

२ तलाश कराना, ढूंढाना. ३ इन्तजार कराना, राह दिखाना. ४ प्रज्वलित कराना, जलाना (दीपक) ५ देखो 'जोताणो, जोताबो'। (रू.भे.)

जोवाड़णहार, हारो (हारी), जोवाड़णियो—वि०।

जोवाड़िग्रोड़ो, जोवाड़ियोड़ो, जोवाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

जोवाड़ीजणो, जोवाड़ीजबो—कर्म वा०।

जोयाणो, जोवाबो, जोवावणो, जोवावबो—रू०भे०।

जोवाड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ दिखलाया हुआ, जताया हुआ, बतलाया हुआ. २ तलाश कराया हुआ, ढूंढ़ाया हुआ. ३ इन्तजार कराया हुआ. ४ प्रज्वलित कराया हुआ (दीपक). ५ देखो 'जोतायोड़ो' (स्त्री०जोवाड़ियोड़ी) (रू.भे.)

जोवाणो, जोवाबो—देखो 'जोवाड़णो, जोवाड़बो' (रू.भे.)

जोवाणहार, हारो (हारी), जोवाणियो—वि०।

जोवायोड़ो—भू०का०कृ०।

जोवाईजणो, जोवाईजबो—कर्म वा०।

जोवायोड़ो—देखो 'जोवावियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जोवायोड़ी)

जोवावणो, जोवावबो—देखो 'जोवाड़णो, जोवाड़बो' (रू.भे.)

जोवावणहार, हारो (हारी), जोवावणियो—वि०।

जोवाविग्रोड़ो, जोवावियोड़ो, जोवाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

जोवावीजणो, जोवावीजबो—कर्म वा०।

जोवावीजणो—देखो 'जोवाड़ियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० जोवावियोड़ी)

जोवियोड़ो—भू०का०कृ०—१ तलाश किया हुआ. ढूंढ़ा हुआ. २ देखा हुआ तका हुआ. ३ इन्तजार किया हुआ, राह देखा हुआ. ४ प्रज्वलित किया हुआ, जलाया हुआ (दीपक) ५ देखो 'जोतियोड़ो'। (स्त्री० जोवियोड़ी) (रू.भे.)

जोव्वण, जोव्वन—देखो 'जोबन' (रू.भे., जैन) उ०—जिम जळ तिम जोव्वण तणा, पंच दिहाड़ा प्रांण। सेव्या रिण सूकीजसइ, जांण कहुं छुउं जांण।—माधवानळ कांमकंदळा प्रबंध

जोव्वाणिया—सं०स्त्री० [सं० योवनिका] युवावस्था (जैन)

जोसंगी—सं०पु०—शूरवीर, योद्धा।

जोस—सं०पु० [फा० जोश] १ चित्त की वह वृत्ति जिसमें आवेश हो, मनोवेग, आवेश। उ०—दे दुवां महा खोड़ेस दांन। मारव लगा भुज आसमांन। चोगणा अमल दूणा चढ़ाय। ओवियां सो गुणा जोस आय।—वि.सं.

क्रि०प्र०—आणो, उतरणो, ऊठणो, खाणो, चढ़णो, मिटणो।

२ उफान, उबाल. ३ उत्साह, उमंग. ४ रक्त, खून (अ.मा.) रू०भे०—जोह।

जोसण—सं०स्त्री०—१ ज्योतिसी की स्त्री, ब्राह्मणी।

उ०—हाथ करां रे कूं कूं वाटको रे आछो, जोसण होय होय जाय। आलीजो रे जोवसां म्हारा राज।— लो.गी.

सं०पु० [फा० जोशन] २ जिरह-बख्तर, कवच।

उ०—रिणवट पात्र खत्रीवट 'रतनं', धाए मनावै मीर घड़ाइ। लोहांखियै तोड़िया लाडै, कांचु जोसण कसण कड़ाह।

रू०भे०—जोसन। —ऊदावत रतनसिंघ री वेलि

जोसण-सं०स्त्री० [सं० जोषण] १ प्रीति (जैन) २ सेवा (जैन)

जोसणियौ-वि० [फा० जोशन+रा०प्र०इयौ] जिसके कवच पहना हुआ हो, कवचधारी। उ०—सु ओ रजपूत जोसणियौ हुतौ अर रांमसिंघजी उघाड़ै घट हुंता, ऊपरा घाव लागा।—द.वि.

जसन—देखो 'जोसण' (रू.भे.)

जोसा, जोसिआ, जोसित, जोसिता-सं०स्त्री० [सं० जोषा, जोषित] औरत, स्त्री (जैन)

उ०—गोढ़ थळ गोडा पहुवी पोढ़ण नै। गाभौ गळती निस ओभौ ओढ़ण नै। जोसित दत्तात्रिय गोरख जिम जोता। त्यागी तीरथंकर संकर सम सोता।—ऊ.का.

जोसियौ, जोसी-सं०पु० [सं० ज्योतिषी] १ ज्योतिषी, गणक।

उ०—१ जपै जनम गुण पूरण जोसी। सुर पूजा हुव थई समोसी।
—रा.रू.

उ०—२ हालौ विनायक, आपां जोसी रै हालां, चोखा-सा लगन लिखासां हे, म्हांरौ विड़द विनायक।—लो.गी.

ब्राह्मण। उ०—मारवाड़ रौ माल मुफत में खावै मोडा, सेवक जोसी सैंग गरीवां दै नित गोडा।—ऊ.का.

अल्पा०—जोसियौ, जोसीड़ौ, जोसीलौ।

जोसीड़ौ—देखो 'जोसी' (अल्पा; रू०भे०) उ०—१ पांन सुपारी घणा रे हाथ, जोसीड़ा नै बूझण राजीड़ा री वण गयी। कहौ ना, कहौ ना, जोसी ओ, पगड़े री वात, कद घर आसी गौरी रौ सायबौ।—लो.गी.
उ०—२ जा ए छोरी जोसीड़ा नै ल्याय ए बुलाय, किता ए दिनां सूं आवै रांणौ काछवौ।—लो.गी.

जोसीलौ-वि०—१ जोश से भरा हुआ. २ वह जिसे शीघ्र जोश आवे.
रू०भे०—जोसेल।

३ देखो 'जोसी' (अल्पा.,रू०भे०)

जोसेल—देखो 'जोसीलौ' (रू.भे.) उ०—१ पांण रौ भीम रोसेल 'पेम', जोसेल मांण दरजोण जेम।—पे.रू. उ०—२ रूठी दळां केवियां के, खूटो सांकळां सूं सेर, उलवकापात रौ तारौ तूटौ आसमांण। जोसेल कंवारी घड़ा, छैळ केळ माथै छूटौ, खंडाळां निराळां एम, दूसरो 'खूमांण'।—वुधसिंह सिढ़ायच

जोह-सं०पु० [सं० योधः] १ योद्धा, सुभट (जैन) उ०—जिसा अरव वै सोहणा पव्व (पर्व) जांणै। तिसा जोह आरोहणां मूंछ तांणै।
—वं.भा.

२ देखो 'जोस' (रू.भे.) उ०—ओ सादूळौ ऊछळै, छर ऊछज कर छोह। गाजै जळहर गयण में, जाय अळह तै जोह।—वां.दा.

सं०स्त्री०—३ झूमने की क्रिया या भाव, झूम। उ०—तठा उपरांति फरि नै भोगिया भंवर लंजा छयल हुसनाक जुवांन निजरवाज वाजार मांहे ऊभा जोहां खाए छै।—रा.सा.सं.

जोहट्ठण-सं०पु० [सं० योधस्थान] युद्ध के समय का शरीरविन्यास, अंग-रचना विशेष (जैन)

जोहड़—देखो 'जोड़' (रू.भे.) उ०—वीकानेर रा जोहड़ री घोड़ियां हमेसा जंगळ में चरै हिरणियां ज्यूं।—वां.दा.ख्यात

जोहण-सं०पु० [सं० योधिन्] योद्धा, वीर। उ०—मोसर जगत जिकां जस मेचां, हुवौ प्रथित इण कुळ नृप मोहण। जाड़ेचा हणिया जिण जोहण, सव सरखेल तणा सरखेलां।—वं.भा.

जोहणौ, जोहबौ—देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू.भे.)

जोहर—१ देखो 'जोहर' (रू.भे.) उ०—समीयांणै सोम 'सातळ' के हो घर जोहर हुवा, जैसलमेर 'दूदा' के घर जोहर हुवा।—अ. वचनिका
२ देखो 'जवाहिर' (रू.भे.) उ०—१ पाटधणी छत्रपति जोधपुरा, घाट निराट घड़ाया। ऊजळ वरण कुंदण मुख ऊपरां, जोहर 'अमर' जड़ाया।—राठोड़ अमरसिंह बादनवाड़ा अजमेर री गीत
उ०—२ इण भांति तूं जी, हलका ज्यौं लचकती, रतनाळा लोचनां, अणिआळा काजळ सारिजे छै। जोहर कांचूं जड़ीजे छै।—रा.सा.सं.

जोहरी—देखो 'जोहरी' (रू.भे.) उ०—जोहरी परखै जिण विध जुहार। दस चार परख विद्या उदार।—वि.सं.

जोहल्ल-सं०पु०—मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम ऽ।ऽ (डिं.को.)

जोहार—१ देखो 'जुहार' (रू.भे.)
[सं० योधकार] २ युद्ध करने वाला, योद्धा (जैन)

जोहि-सं०पु० [सं० योधिन्] योद्धा (जैन)

जोहिया—देखो 'जोइया' (रू.भे.)

जोहियोड़ौ—देखो 'जोवियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जोहियोड़ी)

जौंबत, जौंवतौ-सं०स्त्री० [फा० नौबत] नगाड़ा, नौबत। उ०—सुणी खबर सुरतांण, सकौ सोचिया सिपाही। जवनपती कर जाय, आप जौंवतां बजाई।—रा.रू.
रू०भे०—जौवंत, जौवंतौ।

जौंहरी—देखो 'जौहरी' (रू.भे.) उ०—अंधे हीरा परखिया, कीया कौड़ी मोल। दादू साधू जौंहरी, हीरे मोल न तोल।—दादूवांणी

जौ—देखो 'जो' (रू.भे.) उ०—विवरण जौ वेलि रसिक रस वंछौ, करौ करणि तौ मूझ कथ। पूरे इते सूझ प्रामिस्यौ पूरौ, इम्रै ओछे ओछौ अरथ।—वेलि

जौक-सं०पु०—१ सच, सत्य (अ.मा.) २ देखो 'जळोक' (रू.भे.)

जौख—देखो 'जोख' (रू.भे.) उ०—१ राजा रो कांम सगळौ विचित्र कुंवर करे। राजा कनकरथ महल में वैठौ जौखां करे।
—पलक दरियाव री वारता
उ०—२ निज पौसाक सु केसरि नौखां। जवहर अतर त्रिगंमद जौखां।—सू.प्र. उ०—३ नौख न जौख करै नव रोजै, जौख न मूखण धरै जवाहर। दसकत करै न मिळै दिवांणां, अरजी फरज मतालब ऊपर।—सू.प्र. उ०—४ अरोगण री अरज कीवी जे जिण ही वस्तु सूं जौख हुवै सो ही तइयार करावां।
—कुंवरसी सांखला री वारता

जौड़-सं०पु०—कवच ? उ०—जड़लांग फरी खड़वड़इ जौड़। पटहोहां वाजिय पूरि पौड़।—रा.ज.सी.

जोबनो-सं०स्त्री०—जो चोर वनों का निवास (मेवात)

जोरा-सं०स्त्री० [सं० जोरः] पत्नी, जोरू।

जोतुक-सं०पु० [सं० यौतुक] दहेज, यौतुक।

जोधिक-सं०पु० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

जोवन, जोवनी—देखो 'जोबन, जोबनौ' (रू.भे.)

जोबन—देखो 'जोवन' (रू.भे.)

जो'र—देखो 'जोहर' (रू.भे.)

जोळा-वि०—साफ, शुद्ध। उ०—छुटै वाणि रावत निप जोळा। रोळा हेक माहि दो रोळा। सू.प्र.

जोवन—देखो 'जोबन' (रू.भे.)

उ०—सैसव रहतां बाळक अवस्था। तें मांहे थकउ बाळक जांणै सूतौ बराबरि छै। जोवन आवै तब जांणै जागयौ।—वेलि.टी.

जोहर-सं०पु०—१ जवाहिरात, रत्न।

उ०—घायल की गत घायल जांण्यां, हिवड़ो अगण संजोय। जोहर की गत जोहरी जांणै, क्या जांण्यां जिण खोय।—मीरां

२ तलवार के अच्छे लोहे के प्रमाण स्वरूप उस पर बनी हुई सूक्ष्म धारियां।

मुहा०—तलवार रो जोहर देखाणो—रण-कुशलता का परिचय देना। बहादुरी से लड़ना।

३ विशेषता, खूबी, गुण।

मुहा०—जोहर देखाणो—विशेषता दिखाना, गुण प्रकट करना।

[सं० जीव+हर] ४ राजपूतों की युद्ध के समय की एक प्रथा—जब उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि शत्रु गढ में प्रवेश कर जायगा तब वे तो केसरिया बाना पहन कर मरने के लिये शत्रु से भिड़ जाते थे और उनकी स्त्रियां गढ़ में ही चिता बना कर जिन्दी ही आग में जल जाती थीं ताकि शत्रु उन्हें नहीं पा सके।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

५ स्त्रियों के जलने के लिये दुर्ग में बनाई गई चिता।

६ आततायी (शासक) के विरुद्ध अन्याय के प्रतिकार के रूप में किसी के जल मरने की क्रिया।

रू०भे०—जंवर, जंवरी, जउहर, जउहरि, जमर, जमहर, जवहर, जूहर, जोहर, जो'र, ज्योहर।

जोहरि, जोहरी-सं०पु० [फा० जौहरी] १ हीरे, जवाहिरात आदि बेचने वाला, रत्नविक्रेता। उ०—थांनी समझदार हुवै तौ जाय पाछौ पटक आवै कोई वडै जोहरि रौ घर फोड़ियौ होसी, उवौ कद भूल सै।

—साह रांमदत्त रौ वारता

२ हीरे-पन्नों की जांच करने वाला, रत्नपरीक्षक।

उ०—१ जोहरि की गत जोहरि जांणै, कै जिण जोहर होय। एरी मैं तो प्रेम दिवांणी मेरो दरद न जांणै कोय।—मीरां

उ०—२ जेम जवाहर जोहरी, पारख करै प्रमांण। तेम निजर 'दरजाद' री, पुरखा खरो पिछांण।—जैतदांन बारहठ

३ गुण का आदर करने वाला, कदरदान, गुणग्राहक।

४ गुण-दोष की पहिचान करने वाला, परखैया, जंचवैया।

रू०भे०—जंवरी, जोहरी।

जोहारि—१ देखो 'जवारी' (रू.भे.) २ देखो 'जुहार' (रू.भे.)

उ०—पंचमै प्रहरै दीह रै, सायधण विधै बुहारि। रिमझिम रिमझिम हुइ रही, हुइ धण-री जोहारि।—ढो.मा.

ज्झांण-सं०पु०—ध्यान (जैन)

ज्यउं—देखो 'जिउं' (रू.भे.)

उ०—सदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जांणइ कोइ। ज्यूं घणि आखइ नयण भरि, ज्यउं जइ आखइ सोइ।—ढो.मा.

ज्यउं, ज्यउ, ज्यऊ—देखो 'जिउं' (रू.भे.)

उ०—१ ज्यूं ए डूंगर संमुहा, त्यूं जइ सज्जण हुंति। चंपावाड़ी भमर ज्यउं, नयण लगाइ रहंति।—ढो.मा.

उ०—२ या तौ छइ भाव नी आस ज्यउं जांणउं त्यउं मरउ आस-पास।—अ. वचनिका

उ०—३ जळ मंहि वसइ कमोदणी, चंदउ वसइ अगासि। ज्यउ ज्यां ही कइ मनि वसइ, सउ त्यांही कइ पासि।—ढो.मा.

ज्यां—देखो 'ज्या' (रू.भे.)

सर्व०—जिन, जिन्होंने, जिनके, जिनको। उ०—१ नारायण रो नांम ज्यां, नहं लीधो निरणांह। वां जमवारौ वोळियौ, ज्यूं जंगळ हिरणांह।—ह.र.

उ०—२ सुमति नहीं ज्यां स्यांन, खांत ज्यां नहीं पाप खय।

—र. ज. प्र.

उ०—३ ज्यां घर धवळ सनाथ तूं, व्है वै नोज अनाथ। धळ ऊतरियौ तूझ वळ, गाडौ भरियौ आथ।—बां.दा.

उ०—४ कळिया गाडा काढ ही, जाडा खंध जियांह। रहै नचीतौ सागड़ी, ज्यां कळ जोत दियांह।—बां.दा.

उ०—५ ऊनमियउ उत्तर दिसइं, मेड़ी ऊपर मेह। ते विरहिणि किम जीवसे, ज्यांर दूर सनेह।—ढो.मा.

उ०—६ कापुरसां फिट, कायरां, जीवण लालच ज्यांह। अरि देखै आरांण मैं, त्रिण मुख मांझल त्यांह।—बां.दा.

क्रि०वि०—जब, जब तक। उ०—१ कवि 'जगा' राखि द्रिढ़ जीव करि, मिटै.न लेख करम्म रौ। अह दीह सवै ही पद्धरै, ज्यां परमेसर पद्धरौ।—ज.खि.

उ०—२ पोही इसड़ी पर जाव जीवसी ज्यां जुड़सी नहीं।—सू.प्र.

ज्यांन-सं०पु० [फा० जियान] १ हानि, नुकसान। उ०—१ खांन रै मांणसां री बडौ ज्यांन आयौ। कांमूं मांणस था त्यांरी तळौ टूटौ।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

उ०—२ इसड़ो मेह जे घड़ी घड़ी वरसै अर गड़ा अर गड़ा इसड़ा होज पड़ंत तौ लसकर रौ ज्यांन घणौ ही करंत।—द.वि.

२ देखो 'जैन' (रू.भे.)

उ०—घणा महाजन गढ़ ऊपर वस्ता, ज्यांन रा देह रा घणा गढ़ ऊपर छै।—नैणसी

३ देखो 'जांन' (रू.भे.)

उ०—१ फिरै पांन साहरा, किता व्है ज्यांन थरत्थर। फिरै पांन साहरा, किता निजरां न धरै कर।—सू.प्र.

उ०—२ तौ डाढ़ाळौ कही मैं राव नूं इसा हाथ दिखाया नहीं जो थांरो पाछो करै। मैं घणी ज्यांन दीवी छै और कदाचित पाछो करै, वडै चोल्हर रै माथै तिणी मेल्ह जायजे।—डाढ़ाळा सूर री वात

४ देखो 'जांण' (रू.भे.)

ज्यांनकी, ज्यांनखी—देखो 'जांनकी' (रू.भे.)

उ०—पगां री रैण सां ऊधरै पाहणा, प्रभू भीलां तणी सीम मां प्रांहणा। ज्यांनखी निमो लखमण तरगस जड़ै, चक्रधर सही चित्र-कोट ऊपरि चढ़ै।—पी.ग्रं.

ज्या-सं०स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी (डिं.नां.मा.)

२ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

रू०भे०—ज्यां।

ज्याग—१ देखो 'जाग' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ पंड कोपियौ किनां धार पण। वीरभद्र दिख ज्याग विधूंसण।—रा.रू.

उ०—२ मांडियौ ज्याग कमधां घरै मांढ़ही, लिखत वर सुबर ईसवर लिखायौ। कथन सुण द्वारका हूंत आयौ किसन, उदैपुर हूंत इम 'रांण' आयौ।—कमौ नाई

सं०पु०—२ वड़ा भोज।

क्रि०प्र०—करणौ।

ज्याद—देखो 'ज्यादा' (रू.भे.)

उ० तिको वारलां नूं तौ कठा तक दीजै दाद। पण मांहिलां री भी रजपूती हद सूं ज्याद। जिकै इण गजब नूं चाह नै पांहुणां करै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

ज्यादती-सं०स्त्री० [अ० जियादती] १ प्रचुरता, बहुतायत, अधिकता। २ अत्याचार. ३ अन्याय।

रू०भे०—जियादती, ज्यासती।

ज्यादा-वि० [अ० जियाद:] बहुत अधिक।

रू०भे०—जियादा।

ज्यार-क्रि०वि०—१ जब। उ०—तूं क्यूं गणपत नांम लै, जोतै धवळौ ज्यार। गणपत हंदा वाप रौ, धवळ उठावै भार।—बां.दा.

२ देखो 'जार' (रू.भे.)

ज्यारत, ज्यारता—देखो 'जारत, जारता' (रू.भे.)

उ०—रेलत कूंच रौ नांम लुणावड़ा कनै वीरपुर वसती है। जठै हाजी मोहमद दरियाई री वडो दरगा है। हजारां ज्यारत नूं आवै है।—बां.दा ख्यात

ज्यारां-क्रि०वि०—जब। उ०—१ जळनिध तीर आविया ज्यारां, करण प्रताप कहै हलकारां।—सू.प्र.

उ०—२ रिण रांमाइण जिसो रचावां, लड़े मरां चंद नांम लिखावां 'जसवंत' अेम बोलियौ ज्यारां, तण 'माहेस' अरज की त्यारां।

—वचनिका

ज्यास-सं०पु० [सं० जयाश] १ विश्वास, भरोसा। उ०—आप विचार उपाये, होवणहार वात पर हत्थे। आसा वार न पारं, विधि तिण ज्यास थयौ परवस्से।—रा.रू.

२ आशा। उ०—उर निस्वास प्रमुक्के, भग्गौ ज्यास चीत सांभ्रंमं। यौं चिंता उद्वेगौ, लग्गौ अग्ग वंस धासांणं।—रा.रू.

३ विश्राम, शान्ति।

४ धीरज, धैर्य। उ०—माग मुरद्धर देस री, लियौ उरद्धर ज्यास। घाट अनेकन संचरै, एक प्रभू री आस।—रा.रू.

५ गरमास।

क्रि०प्र०—आणौ।

रू०भे०—जास, जियास।

ज्यासती—देखो 'जासती' (रू.भे.)

उ०—आसती ठिकांणै आंणै नासती हटावै आचां, ज्यासती क्रीत री वातां वखांणै जिहांन। दुवार यासती वाळा ईड में न आवै दाखां, सासती सुचाळा रीतां राजावां समांन।—जसकरण

ज्यूं, ज्यूं-क्रि०वि०—देखो 'जिउं' (रू.भे.) उ०—१ किण रोइ रह्यौ न हटकियौ, निज हट कियौ निभाव। वळै ज्यूंइ वळियौ नहीं, बाळा पणैइ सभाव।—जैतदांन वारहठ। उ०—२ ज्यूं राखै ज्यूं रहे, जहां निरमै तहीं जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै।—ह.र. उ०—३ सयणां पांखी प्रेम की, तइं अब पहिरी तात। नयण कुरंगउ ज्यूं वहइ, लगइ दीह नइं रात।

—ढो.मा.

उ०—४ ज्यूं ज्यूं लालच खार जळ, सेवै दुरमत संग। 'बांका' अत त्यूं-त्यूं बधै, त्रसना तणी तरंग।—बां.दा. उ०—५ हलै हेक राई न को स्रम्म होतां। जती जीव चालै न ज्यूं बांम जोतां।—सू.प्र.

ज्येस्ट, ज्येस्ठ-सं०पु० [सं० ज्येष्ठ] १ बड़ा भाई. २ देखो 'जेठ' (रू.भे.)

रू०भे०—जेसट, जेसठ।

ज्येस्ठता-सं०स्त्री० [सं० ज्येष्ठता] बड़ाई, श्रेष्ठता।

ज्येस्ठा-सं०स्त्री० [सं० ज्येष्ठा] १ मध्यमा अंगुली. २ समुद्र-मंथन पर लक्ष्मी के पहले निकलने वाली लक्ष्मीदेवी (पद्मपुराण) ३ २८ वां नक्षत्र. ४ गङ्गा नदी का एक नाम।

वि०स्त्री०—बड़ी।

ज्येस्ठास्त्रम—देखो 'जेस्टास्त्रम' (रू.भे.)

ज्येस्ठिकासण, ज्येस्ठिकासन-सं०पु० [सं० ज्येष्ठकासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमें दोनों हाथों को सिर की तरफ लम्बायमान कर के और दोनों पैरों को लंबे कर के मुख को आकाश की तरफ रख कर सीधा सोया जाता है। इसका दूसरा नाम यष्टिकासन या दण्डासन भी है।

ज्येष्ठाश्रमी-सं०पु० [सं० ज्येष्ठाश्रमिन्] गृहस्थी।

ज्यौं, ज्यों-सर्व०—जिस, जो। उ०—१ दीठे मांहस प्रत्यक्षकाळ, ज्यों कर त्यों कर दादू टाळ।—दादू बांणी

उ०—२ हम थे हुवा न होइगा, ना हम करते जोग। ज्यों हरि भावै त्यों करै, दादू कहै सब लोग।—दादूबांणी

ज्योत—देखो 'जोत' (रू.भे.) उ०—बिहू बध बाजू तणा नंग बाहे। नग्गो नंग हीरा तणी ज्योत मांहे।—ना.द.

ज्योतसी-सं०पु० [सं० ज्योतिषी] १ तारा (ह.ना.) २ नक्षत्र।
३ देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.)

ज्योति—देखो 'जोत' (रू.भे.) उ०—काछ कनक अरु कामणी, परहर इनका संग। दादू सब जग जळ मुवा, ज्यों दीपक ज्योति पतंग।
—दादूबांणी

ज्योतिक, ज्योतिख—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे.)

ज्योतिखी, ज्योतिति, ज्योतिखी—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.)
उ०—ज्योतिती तेड़े राव सुजांण। पूछै जिण पंडित वेद पुरांण।
—रामरासो

ज्योतिधारी-वि०—द्युतिवंत। उ०—नै दूजो रांणी सोळंखणी, तिका दुहागण, तिण रै कंवरी री नांम जगदेव दीधौ। सांवळै रंग विण ज्योतिधारी।—जगदेव पंवार री वात

ज्योतिर्लिंग-सं०पु० [सं० ज्योतिर्लिंग] १ शिव, महादेव।
उ०—तरै हारीत रिखि महादेवजी री ध्यांन कीयौ, उग्र स्तुत करी, तिण थी पहाड़ प्रिथ्वी फाड़ नै ज्योतिर्लिंग स्री एकलिंगजी प्रगट हुवा।—नैंणसी
२ भारत में शिव के प्रधान स्थानों पर स्थित बारह लिंग।

ज्योतिरविद्या-सं०स्त्री० [सं० ज्योतिर्विद्या] ज्योतिष विद्या।

ज्योतिरूप-सं०पु० [सं० ज्योतिस्वरूप] परब्रह्म, परमात्मा।
उ०—निराकार निरंजन निरुपम, ज्योतिरूप निरखंत जी। तेरा सरूप तुं ही प्रभु जांणइ, के जोगींद्र लहंत जी।—स.कु.

ज्योतिस-सं०पु० [सं० ज्योतिष] अंतरिक्ष में ग्रहों, नक्षत्रों आदि की परस्पर दूरी, गति, परिणाम आदि के निश्चय का ज्ञान।
रू०भे०—जोतक, जोतख, जोतग, जोतिक, जोतिख, जोतिस, ज्योतिक, ज्योतिख।

ज्योतिसी-सं०पु० [सं० ज्योतिषिन्] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, ज्योतिषी। उ०—ज्योतिसी वैद पौरांणिक जोगी, संगीती तारकीक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तो अरथ कहि।
—वेलि

पर्या०—गणक, जोतकी, ज्योतिग्य, दैवग्य, मूरत जांणणहार।
२ एक ब्राह्मण से उत्पन्न दाकोत नामक जाति।
रू०भे०—जोतकी, जोतखी, जोतगी, जोतसि, जोतसी, जोतिकी, जोतिखी, जोतिगी, जोयसी, जोसी, ज्योतिकी, ज्योतिखि, ज्योतिखी।

ज्योतिस्पथ-सं०पु० [सं० ज्योतिष्पथ] आकाश, व्योम।

ज्योतिस्पुंज-सं०पु० [सं० ज्योतिष्पुंज] नक्षत्रों का समूह।

ज्योतिस्वरूप—देखो 'ज्योतिरूप' (रू.भे.)
उ०—दादू जरै सु ज्योतिस्वरूप है, जरै सु तेज अनंत। जरै सु झिलमिल नूर है, जरै सु पुंज रहंत।—दादू बांणी

ज्योत्सना-सं०स्त्री० [सं०] चन्द्रमा का प्रकाश, चांदनी।
उ०—स्निग्ध ज्योत्सना पथिक वर्ग, मन मखमल मखतूल पर। गोद बहर्ण करै विचारो, रूई रेसम मळ पर।—दसदेव
रू०भे०—जोतसणा, जोतसना।

ज्योहर—देखो 'जोहर' (रू.भे.)

ज्यौं-क्रि०वि०—जैसे। उ०—१ छूटा ज्यौं विछूटै भुजे सेल छूटै। खगे अंग तूटै मनोमग्ग खूटै।—रा.रू. उ०—२ रह के पहल ज्यौं सगू पर चढ़ाइ रोळै। छूटे हूंस पड़े जांणै मंजीठ बोळै।—सू.प्र.

ज्रिभित-सं०पु०—शृंगार में एक आसन का नाम।

ज्रिभाळी-सं०पु०—पर्वत। उ०—खीरोद संभाळा देत देव द्रोण नाणा खागां। प्रळैकाळ चाळहै लागा ज्रिभाळा पुरिंद।—हुकमीचंद खिड़ियो

ज्वर-सं०पु० [सं०] १ शरीर की स्वाभाविकता से अधिक ताप या गरमी की अवस्था जिससे अस्वस्थता प्रकट हो, बुखार।
उ०—१ कृपणां जस भावै कठै, विधि विमुखां नूं वेद। 'बांका' भोजन नंह रुचै, ज्यांरै वप ज्वर खेद।—बां.दा.
उ०—२ संवत् १७०१ रा पोस सुद ७ महाराज स्री जसवंतसिंघजी रै ज्वर निपट जोर कियो।—बां.दा.ख्यात
रू०भे०—जुर।
२ एक प्रकार का रत्न। उ०—पद्म राग १, पुष्प राग २, मरकतिमणि ३, करकेतन ४, वज्र ५, वैदुरभ ६, चंद्रकांत ७, सूरयकांत ८, जळकांत ९, नील १०, महानील ११, इंद्रजीत १२, रागकर १३, विभाकर १४, ज्वर १५' इति रत्न जाति।—व.स.

ज्वळत-वि० [सं० ज्वलंत] जलता हुआ, दीप्त, प्रकाशमान्।

ज्वळणौ, ज्वळबौ—देखो 'जळणौ, जळबौ' (रू.भे.)

ज्वांई—देखो 'जमाई' (रू.भे.) उ०—तद आदमियां कयो, जो अली री ज्वांई आयो है जिणनूं गीत गावै है।—द.दा.

ज्वांन—देखो 'जवांन' (रू.भे.) उ०—१ कोई वडकंवार ज्वांन इणनूं छाती सूं भींच सुवै तो उण आग री तपत सूं ओ सावधान हुवै।
—नैंणसी

उ०—२ जहां तहां गोपाळ, गोय सब में गोपाळक। नहीं जोर नहिं ज्वांन, नहीं बूढ़ा नहि बाळक।—ह.पु.वा.

ज्वाप—देखो 'जाप' (रू.भे.) उ०—जिगंन ज्वाळ होम ज्वार, अहुतां अतं अपै। करंत पारथी अनेक, जोग इंद्र के जपै।—सू.प्र.

ज्वाब—देखो 'जवाब' (रू.भे.) उ०—१ जग पवन विना तर पत्र ज्यौ, थिरि जुवांन पण थप्पियौ। उरि तावि साहि सही असपति री, पाछौ ज्वाब न अप्पियौ।—रा.रू.
उ०—२ वरि चित खिमा दोस मत धारो। आप हसण चो ज्वाब उचारो।—सू.प्र.

ज्वाब-ज्वाब–क्रि०वि० [फा० जा-ब-जा] स्थान-स्थान, जहाँ-तहाँ।
उ०—लाहानूर मुसैद अंजील की चोपसमी गिलमूं की विछायत करै। ज्वाब-ज्वाब के ऊपर सवज हमरंग वर मतंगे धरै।—सू.प्र.

ज्वार–सं०पु०—१ समुद्र के जल की लहर का उठाव, तरंग का चढ़ाव जो सूर्य और चंद्र के आकर्षण से होता है।
यो०—ज्वार-भाटो।
२ देखो 'जंवार' २ (रू.भे.) उ०—सामंत विछोहै अंग सार, दोय जेम करै करवत दार। पड़ सीस विनां लोटै पठांण, फिर ज्वार सिरै ढूका ऋसांण।—रा रू.
३ देखो 'जुहार' (रू.भे.)

ज्वारड़ा, ज्वारड़िया—देखो 'जुहार' १ (अल्पा०, रू.भे.)

ज्वारड़ियो, ज्वारड़ो—१ देखो 'जुहार' २, ३ (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'ज्वार' २ (अल्पा०, रू.भे.)

ज्वार-भाटो–सं०पु०—निश्चित समय पर किसी विशेष स्थान पर सूर्य व चन्द्र की आकर्षण शक्ति के कारण समुद्र के जल का उतार तथा चढ़ाव।
रू०भे०—जुआरभाटो।

ज्वाळ–सं०स्त्री० [सं० ज्वाल] १ अग्निशिखा, लौ, लपट।
उ०—१ लड़तां अंग लोह छछोह लगै। जगि जांणिक ज्वाळ अहूति जगै।—सू.प्र.
उ०—२ दहुवळां तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखो। रवि प्रळै काज जांणै रसम, ज्वाळ झाळ ज्वाळामुखो।—सू.प्र.
उ०—३ लगतां फागण लूरां लागी, अड़े द्रोण अरु द्रुपद अभागी। वीरां खाग परस्पर वागी, जिण सूं ज्वाळ लड़ण री लागी।
—ऊ.का.
२ क्रोध, क्रोधाग्नि।
उ०—१ जैसिंघ हितू जळ थाळ ज्यौं, थया चळच्चळकाळ लखि। आंवेर हाल विण गण इसो, सेख ज्वाळ संदां परखि।—रा.रू.
उ०—३ लखे राकसी वंधवां ज्वाळ लागी, भरे नैण लंका गई लाज भागी। उभे भेख संन्यासियां दिठा अखूंता, हुई वात सारी कहीं रांण हूंता।—सू.प्र.
रू०भे०—ज्वाळा।

ज्वाळका–सं०स्त्री० [सं० ज्वालिका] १ ज्वाळाग्नि. २ क्रोधाग्नि।

ज्वाळजीह–सं०स्त्री० [सं० ज्वाळजिह्व] अग्नि (अ.मा.)

ज्वाळ-ज्वाळा–सं०स्त्री० [सं० ज्वाला-ज्वाला] १ अग्नि. २ आग की लपट. ३ ज्वालामुखो. ४ दुर्गा का एक रूप।

ज्वाळनळ—देखो 'ज्वाळानळ' (रू.भे.)

ज्वाळमयाळ–सं०स्त्री०—१ ज्वाला. २ बिजली।

ज्वाळमाळा–सं०स्त्री०—अग्नि, आग।

ज्वाळमाळी–सं०पु० [सं० ज्वालमालिन्] सूर्य्य (डि.को.)

ज्वाळा–सं०स्त्री० [सं० ज्वाला] १ ताप, जलन. २ विष आदि की गर्मी का प्रभाव. ३ एक देवी. ४ देखो 'ज्वाळ' (रू.भे.)
उ०—१ ज्वाळा होमं आहूति सींची सजग्गी। लखै वेद वांणी बधे वाद लग्गी।—सू.प्र.
उ०—२ देवी जम्मणी मख्ख आहूति ज्वाळा। देवी वाहनी मंत्र लीला विसाळा।—देवि.
रू०भे०—जुआळा, जुवाळ।

ज्वाळाकार–वि० [सं० ज्वालाकार] अग्निमय।

ज्वाळाजीह—देखो 'ज्वाळजीह' (रू.भे.)

ज्वाळादेवी–सं०स्त्री० [सं० ज्वालादेवी] शारदापीठ में स्थित एक देवी।

ज्वाळानळ–सं०स्त्री० [सं० ज्वालानल] अग्नि की लपट, ज्वाला।
उ०—ज्वाळानळ जाळण काळ-जवन्न, कियो मुचकुंद हुकम्म किसन्न।
—ह.र.
रू०भे०—ज्वाळनळ।

ज्वाळामाळिणी, ज्वाळामाळिनी–सं०स्त्री० [सं० ज्वालामालिनी] तंत्र के अनुसार एक देवी का नाम।

ज्वाळामुख–सं०पु० [सं० ज्वालामुख] १ सुदर्शन चक्र (नां.मा.)
२ देखो 'ज्वालामुखी' (रू.भे.)

ज्वाळामुखी–सं०पु० [सं० ज्वालामुखी] १ वह पर्वत जिसके शिखर से अथवा शिखर के आसपास से धुआँ, राख तथा पिघले हुए पदार्थ समय समय पर अथवा बराबर निकला करते हैं।
२ शारदापीठ में स्थित एक देवी, ज्वालादेवी।
उ०—जवर ठठ्ठ के ऊपर भयांणख नाळ अतिभार। किलकिला काळिका ज्वाळामुखी का अवतार।—सू.प्र.
३ फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्र सम्बन्धी द्वितीय योग।
रू०भे०—ज्वाळामुखी।

ज्वाळामुखी-जोग–सं०पु० [सं० ज्वालामुखी योग] एक प्रकार का अशुभ योग जिसमें जन्मे हुए बालक का जन्म अमांगलिक समझा जाता है. (फलित ज्योतिष)
वि०वि०—प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी नक्षत्र, अष्टमी को कृतिका नक्षत्र, नवमी को रोहिणी नक्षत्र और दशमी को अश्लेषा नक्षत्र। ये पाँच नक्षत्र ज्वालामुखी माने जाते हैं।

ज्वाळिका–सं०स्त्री० [सं० ज्वालिका] १ ज्वालामुखी. २ अग्नि, आग. ३ एक जड़ी विशेष (अमरत)

ज्हांनूं—देखो 'जांन्हो' (रू.भे.)

ज्हाज—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)
उ०—साह री ज्हाज उळझी अथग-सिंधु में, कठै अवलंब नहं रह्यो क्यूं ही। थंभ नै फाड़ प्रह्ळाद हरि थंभियो, उवारची मंत्र मैं अब यूं ही।—वालावख्स बारहठ

ज्होड—देखो 'जोड' (रू.भे.)

झ

झ—देवनागरी व राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है। यह महाप्राण, सघोष और स्पर्श-संघर्षी व्यंजन है।

झं-सं०पु० [अनु०] धातु खण्डों के परस्पर टकराने का शब्द।

झउड़ो—१ देखो 'जुडो' २ (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'जावड़ो' (रू.भे.)

झंक-सं०स्त्री०—सन्ताप, जलन। उ०—कूबरनइ मनि झंक पईठ, जा पगंभम पासनरय दीठ।—नळ-दवदंती रास

झंकण, झंकन-सं०पु०—समुदाय, झुण्ड। उ०—चटका मटका लटका चुगली, बन अंतर भाव छटा चुगली। अनुरंजन खंजन अंजन में, झलके लपके प्रिय झंकन में।—ऊ.का.

झंकणो, झंकबो—देखो 'झंखणो, झंखबो' (रू.भे.)
उ०—कंवळ जिकण पुळ कंवर री, सुरत झंकण फिर सार। झंके मूंडे फिर आ झंके, सिलगावण रे लार।—केहर प्रकास

झंकार-सं०स्त्री० [सं०] १ धातु खण्ड से निकला हुआ झनझनाहट का शब्द, झनकार। उ०—सुणीजै अलंकार झंकार सूतां। हुवै नीद विशेष ताकीद हूंतां।—मे म.
२ भ्रमर, झींगुर आदि के बोलने की ध्वनि। उ०—रितिराज प्रगटीयो छै। वसंत आयो छै। भमर, मधुकर झंकार करी रहिया छै।—रा.सा.सं.
३ झनझनाहट होने का भाव।
रू०भे०—झणक, झणंकार, झणकार, झनकार, झमकार, झमकाळ।

झंकारणो, झंकारबो-क्रि०स० (अनु०) [सं० झंकार] १ झनझनाहट अथवा झनझन का शब्द उत्पन्न करना।
क्रि०अ०—२ झनझन शब्द होना।
झंकारणहार, हारो (हारी), झंकारणियो—वि०।
झंकारियोड़ो, झंकारियोड़ो, झंकारयोड़ो—भू०का०कृ०।
झंकारीजणो, झंकारीजबो—भाव वा०।
झणकाड़णो, झणकाड़बो, झणकाणो, झणकाबो, झणकारणो, झणकारबो, झणकावणो, झणकावबो—रू०भे०।

झंकारतन-सं०पु०—स्त्रियों के पैर में पहनने का एक गहना, नूपुर। (अ.मा.)

झंकारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झनझन का शब्द किया हुआ।
२ झनझन शब्द हुवा हुआ।
(स्त्री० झंकारियोड़ी)

झंकारी-सं०पु०—भौंरा, मधुप (अ.मा., ह.ना., ना.मा.)।

झंखाड़, झंखाड़ो-सं०पु०—झड़ी हुई पत्तियों वाला पेड़, सूखा पेड़।
उ०—फागुण वाय वागा रे, पांन झड़िवा लागा रे। निकळ गया डाळा रे, नहीं फळ रसाळा रे। अति काळा झंकाळा हो, बाग असोभतो रे।—जयवांणी

झंकि-सं०पु०—एक वाद्य विशेष। उ०—अदंग ढोल मंगळी, रबाब तार सार ली। वजंति वेरिवेरियं, भणंकि झंकि भेरियं।—रा.रू.

झंको-वि०—१ धूलि-कणों, बादलों, कुहरे आदि से आच्छादित, धुंधला दिन। उ०—'जीवो' हाल्यो जदी, दीह झंको दरसांणो। 'जीवो' हाल्यो जदी, विरंग धूहड़ वरसांणो।—अरजुनजी बारहठ
३ नीरस, शोकसूचक. खिन्न, दुखी।
रू०भे०—झंखो।

झकोळणो, झंकोळबो—१ देखो 'झंकोरणो, झंकोरबो' (रू.भे.)
२ देखो 'झकोळणो, झकोळबो' (रू.भे.)

झंकोळियोड़ो—१ देखो 'झकोरियोड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'झकोळियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० झकोळियोड़ी)

झंख-सं०पु०—१ मंद या धूमिल दिखाई देने का भाव।
उ०—घगस नाळ रज घोम झलळ तप झंख कमळ झळ। घर घर-सळ घरघरण, उतन दिस हलै 'अभैमल'।—सू.प्र.
२ दीपशिखा पर पतंगों के गिरने का भाव. ३ मोहित या प्रेमासक्त होने का भाव।

झंखड़—देखो 'झंखग' (रू.भे.)

झंखणो, झंखबो-क्रि०अ०—१ झलकना, चमकना।
उ०—आदीता हू ऊजळो, मारवणी-मुख-ब्रन्न। झीणा कप्पड़ पहिरणइ, जाणि झंखइ सोव्रन्न।—ढो.मा.
२ झलक दिखाई देना, झलक पड़ना. ३ दुखी या तंग हो कर पछताना, कुढ़ना, झींखना। उ०—सब सुख मांही काळ के, मांड्या माया जाळ। दादू गोर मसांण में, झंखै स्वरग पयाळ।—दादूवांणी
४ चौंकना। उ०—आज नीरालइ सीय पड्यौ, प्यारि पहूर मांही नू मिळी अंखि। उछइ पांणी ज्युं माछळी, जिव जागुं तिव उठुलुं झंखि।—वी.दे.
५ देखना। उ०—सूरिज तणइ वंसि हुं आज, वडा पुरुख नि नांगुं लाज। गोल्हण तुं मनि झंखिसि आल, हिव लाजइ माहरुं मुहसाल।—कां.दे.प्र.
६ धूमिल होना, धुंधला होना। उ०—रणवणीया सवि संख तूर अंबरु आकपीउ। हय गयवर खुरि खणीय रेणु ऊडीउ जगु झंखीउ।—पं.पं.च.

७ लज्जित होना, शर्माना। उ०—मपणाई सांभरि 'ग्रभै', 'ग्रजन' वर्णं ग्रजमेर। उर झंखांणा ग्रासुरां, जांण दवांणा मेर।
—रा.रू.

झंखियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झलका हुग्रा, चमका हुग्रा. २ झलक दिखाई दिया हुग्रा. ३ दुखी या तंग होकर पछताया हुग्रा, कुढ़ा हुग्रा, झींखा हुग्रा. ४ चौंका हुग्रा. ५. देखा हुग्रा. ६ धुंधला हुवा हुग्रा, घूमिल. ७ लज्जित हुवा हुग्रा।

स्त्री०—झंखियोड़ी।

झंखर, झंखरो, झंखाड़-सं०पु०—१ सूखा वृक्ष या पौधा, झड़े हुए पत्तों वाला वृक्ष या पौधा। उ०—१ नैरंति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै घण पयोधर। झोले वाइ किया तरु झंखर, लवळी दहन कि लू लहर।—वेलि.

उ०—२ झड पत्र वधूलांय दोट जुवा। हुव झंखर खंखर रूंख हुवा।
—पा.प्र.

उ०—३ थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ। गुणे सुगंधी मारवी, महकी सहु वणराइ।—ढो.मा.

यौ०—झंखड़, झाड़।

२ वृद्ध, वूढ़ा। उ०—झूरी पणि झंखर थई, वनिता करइ विलाप। करडइ कूटइ ग्रावटइ, सिधि न लेखइ ग्राप।—माधवानळ कामकंदळा

२ कांटेदार घनी झाड़ी या पौधा।

रू०भे०—झंखड़।

झंखेरी-सं०पु०—१ वर्षा के पूर्व ग्राने वाली ग्रांधी. २ वातचक्र. ३ घर का साधारण सामान, गृहस्थी का मामूली सामान।

झंखो—देखो 'झंको' (रू.भे.) उ०—१ ग्रपहड ग्रथग ग्ररेह, जिको विनड़ियो वधंतो। कुवचन मुख काढ़ता, जिको सुवचन जांणंतो। ग्रेक घड़ी ग्रांतरै, दोरम सोहि दाखंतो। जिको जीव जीवतो, न को ग्रंतर राखंतो। ग्राफेई माल लेता उरो, कदे न चख झंखा कीया। 'सेरसाह' मरण फूटो नहीं, है लांणत जठर हीया।—पहाड़खां ग्राढ़ो

उ०—२ टोळ सबै टळब करै, मन मैं भई उदास। हथणियर झंखो देख कर, नांखत है नीसास।—गजउद्धार

उ०—३ पूरव देस नरेसर भंणीयो, वर कीजइ सिसिपाळ। बाळ त्रिष मति एक ज भंणीइं, तात म झंखो ग्राल।—रुखमणी-मंगळ

झंग—१ देखो 'जंग' (रू.भे.) उ०—कुफजे के मन में, मीयां मुसलमांन। दादू पेया झंग में, वीसारे रहमांन।—दादू बांणी

२ देखो 'झगर' (रू.भे.) उ०—हेकण झंग न मावसी, दोय सींह वकंदे। हेकण म्यांन न मावही, दोय खाग खिवंदे।—वीरमांयण

झंगर-सं०पु०—घने वृक्षों का समूह, झाड़ी। उ०—१ ग्रनड़ लोप तर झंगर ग्रथाग। लड़ण दुरंग वरियावर लाग।—सू.प्र.

उ०—२ रनां वनां तर-झंगरां, गढ़ां मढ़ां सुण गल्ल। ज्यां होवो ज्यां ग्रावज्यो, (मा) कियां साद करनल्ल।—चौथ बीठू

उ०—३ इण भांत रा वन झगरां मांहे हरिण, सूग्रर, सांबर, रोज, [illegible] झंगरां मांहे वसै छै।—[illegible]

२ वन, जंगल। उ०—[illegible] जतु ग्रनड़ [illegible]। [illegible] पोढ़णे जंद जुड़िया।—[illegible]

रू०भे०—झंगरी, [illegible]।

झंगरी-सं०स्त्री०—१ [illegible]। उ०—[illegible] वावरै, तीर मुंजां बळ तांण। [illegible] ग्रांण।—पा.प्र.

२ देखो 'झंगर' (रू.भे.)

झंगार, झंगी—देखो 'झंगर' (रू.भे.) उ०—१ [illegible] राजांन सिलांमति सिकारी ठोड़ पहाड़ां [illegible] मिळि नै रहिग्रा छै।—रा.सा.सं. उ०—२ [illegible] झाड़ ऊगा था, तिणां री घणी झंगी हुय रही थी, [illegible] फूस बाळ दिया।—नैणसी उ०—३ ताहरां [illegible] देखै तो झंगी मांहे ग्रसवार उतरिया छै।—कूंगरै बलोच री बात

उ०—४ जठै घणा जाळ, घणा खेजड़, सूरज दीसै नहीं, [illegible] तेथ गया।—नैणसी

२ जंगली जाति। उ०—एतो मणा थोरी ने भीलो रे, चोर [illegible] उघाड़ डीलो रे। वावरी कोळी झंगी मेवसिया रे, ग्राहेड़ी मांस रा रसिया रे।—जयवांणी

झंगीव-सं०पु० [सं० भङ्गव:] ४९ क्षेत्रफलों में से २५ वां क्षेत्रपाल।

झंगो-सं०पु०—छाछ-मट्ठा (जैसलमेर)

झंघर—देखो 'झंगर' (रू.भे.)

झंङूलो—देखो 'झड़ूलो' (रू.भे.)

झंजीर—देखो 'जंजीर' (रू.भे.) उ०—मूझ सरीर सखि चोरइ चोर, लोह संकळ समांन झंजीर। रयणि जोवनिमांजरि महिमही, नीसासे करी काया मिइं दही।—प्राचीन फागु संग्रह

झंझ-सं०पु०—१ सर्प, नाग। उ०—सुर नर झंझ करै सहु सेव।
—ग्रंगीपुरांण

२ भाटी वंश की एक शाखा जो प्राय: मुसलमान हो गये हैं।

३ देखो 'झांझ' (रू.भे.) उ०—रमाराव रा वंदिया पाव राजा, वजे चाव दूणो घणै घाय वाजा। सुरे झल्लरी कंवु सा ग्रंब सोहै, वजे झंझ भेरी नफेरी विमोहै।—रा.रू.

झंझट-स०पु० (ग्रनु०) व्यर्थ का झगड़ा, बखेड़ा। उ०—कत्तार भार भर कठठिया, करै गाज झंझट करै। हालिया जांणि सांमंद्र हूं, भाद्रव वादळ जळ भरै।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

मुहा०—१ झंझट में पड़णी—व्यर्थ के झगड़े में फंसना, टंटे में पड़ना. २ झंझट में फंसणी—ग्रापत्ति में फंसना। देखो 'झंझट में पड़णी।'

रू०भे०—झंझारो।

झंझर, झंझरा—देखो 'झांझर' (रू.भे.) उ०—१ झणणाट नाद नुपर [illegible]। रंग हूर रचां ढंकियौ परक, मंडि [illegible]।—सू.प्र. उ०—२ त्रिकं सोत जाता पहूं मोमि [illegible]। [illegible] झंझरा पीर पाहुं।—सू.प्र.

उ०—३ [illegible] झंझरा, [illegible]। [illegible] घोमछरा, बबकरा [illegible]।—सू.प्र.

झंझरी-वि०—१ छीना, जर्जरीभूत। उ०—ठही चोट दे झंझरी कोट [illegible]। [illegible] पे झट्टरै झट्ट [illegible]।—वं.भा.

२ देखो 'झांझर' (रू.भे.) ३ देखो 'झांझरी' (रू.भे.)

झंझाक—देखो 'झाक' (रू.भे.) उ०—सुधार सस्त्र अस्त्र के जुधार जागे नहीं। नवी विहान सान पै झंझाक लागते नहीं।—ऊ.का.

झंझा—देखो 'झांझ' (रू.भे.)

झंझारो—देखो 'झंझट' (रू.भे.) उ०—ईसो हो झंझारो मइ झंसीयो। जो हूं माहीणइ जाणतो साच। हठि कर जातो राखतो। जब जागुं जीव पड़ी गयो दाह।—बी.दे.

झंझावत, झंझावात, झंझावानू—देखो 'झांझ' (रू.भे.)

उ०—झंझावान झपट लपट जळ भंवर लागो।—भगवानजी रतनू

झंझेड़णो, झंझेड़बो-क्रि०स०—झटका देकर हिलाना, झकझोरना।

उ०—रण पे हूंता पाद, साहिब जसवंत सारिसा। झालो झंझेड़ गयो, पाहं रहियो पाद।—नैणसी

झंझेड़णहार, हारो (हारी), झंझेड़णियो—वि०।

झंझेड़वाड़णो, झंझेड़वाड़बो, झंझेड़वाणो, झंझेड़वाबो, झंझेड़वावणो, झंझेड़वावबो, झंझेड़ाड़णो, झंझेड़ाड़बो, झंझेड़ाणो, झंझेड़ाबो, झंझेड़ावणो, झंझेड़ावबो—प्रे०रू०।

झंझेड़ियोड़ो, झंझेड़ियोड़ो, झंझेड़योड़ो—भू०का०कृ०।

झंझेड़ीजणो, झंझेड़ीजबो—कर्म वा०।

झंझेरणो, झंझेरबो, झंझोड़णो, झंझोड़बो, झंझोरणो, झंझोरबो।

—रू०भे०।

झंझेड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ।

स्त्री०—झंझेड़ियोड़ी।

झंझेरणो, झंझेरबो—देखो 'झंझेड़णो, झंझेड़बो' (रू.भे.)

झंझेरणहार, हारो (हारी), झंझेरणियो—वि०।

झंझेरियोड़ो, झंझेरियोड़ो, झंझेरयोड़ो—भू०का०कृ०।

झंझेरीजणो, झंझेरीजबो—कर्म वा०।

झंझेरियोड़ो—देखो 'झंझेड़ियोड़ो' (रू.भे.)

स्त्री०—झंझेरियोड़ी।

झंझोड़णो, झंझोड़बो—देखो 'झंझेड़णो, झंझेड़बो' (रू.भे.)

झंझोड़णहार, हारो (हारी), झंझोड़णियो—वि०।

झंझोड़ियोड़ो, झंझोड़ियोड़ो, झंझोड़योड़ो—भू०का०कृ०।

झंझोड़ीजणो, झंझोड़ीजबो—कर्म वा०।

झंझोड़ियोड़ो—देखो 'झंझेड़ियोड़ो' (रू.भे.)

स्त्री०—झंझोड़ियोड़ी।

झंझोरणो, झंझोरबो—देखो 'झंझेड़णो, झंझेड़बो' (रू.भे.)

उ०—दिगंता लौं दोरै मचल मन मोरै मुदमुदो। विदातो झंझोरै विसय विस बोरै बुदबुदो।—ऊ.का.

झंझोरणहार, हारो (हारी), झंझोरणियो—वि०।

झंझोरियोड़ो, झंझोरियोड़ो, झंझोरयोड़ो—भू०का०कृ०।

झंझोरीजणो, झंझोरीजबो—कर्म वा०।

झंझोरियोड़ो—देखो 'झंझेड़ियोड़ो (रू.भे.)

स्त्री०—झंझोरियोड़ी।

झंड—१ देखो 'झुंड' (रू.भे.)

उ०—१ चंदू की अंधेरी बोलसरू के थंड। रतिराज के असवत्थ आसापालव के झंड।—सू.प्र.

उ०—२ झपेट देत झंड के बह्यंड व्यापते नहीं। छलंग देत छोनि है मलंग मानते नहीं।—ऊ.का.

२ देखो 'झंडो' (मह., रू.भे.)

उ०—चत्रवाह साहि दोड़ राह चढ़ि, सझि फौजां दोवें समथ। विधि झंड थंड मंडे वडा, करिवा भारथ एम कथ।—वचनिका

झंडाळ—देखो 'झंडो' (मह., रू.भे.)

उ०—झल्ल झलाणै कुंड पै झंडाळ झुकाया।—वं.भा.

झंडियो—देखो 'झंडो' (अल्पा., रू.भे.)

झंडी-सं०स्त्री०—देखो 'झंडो' अल्पा., रू.भे.)

उ०—दै भैंसों बळदांन, छाक मदधार छकाई। चंडी चंडी ऊचरै, फतै झंडी फहराई।—मे.म.

झंडीदार-वि०—१ जिसके हाथ में झण्डी हो, झंडी वाला।

२ जिसमें झंडी लगी हो।

झंडूलो—देखो 'झडूलो' (रू.भे.)

झंडो-सं०पु०—लकड़ी या धातु की डंडी में ऊपर की ओर लगा हुआ तिकोने या चौकोर वस्त्र का टुकड़ा जो प्राय: कई रंगों से रंगा हुआ तथा चित्रमय या चिन्हयुक्त होता है। इसका व्यवहार किसी राष्ट्र का संकेत करने, किसी स्थान पर अमुक राजसत्ता के होने का संकेत करने, चिन्ह प्रकट करने, संकेत करने, उत्सव आदि सूचित करने अथवा इसी प्रकार के अन्य कामों के लिये होता है, पताका, ध्वजा, निशान।

उ०—फूंकण नवकोटी झंडा फरहरिया। घर घर जातीरा-टांमक घरहरिया। खाली जळ घरथी जळधर जळ खूटो। ततखिण जीवण विण जगजीवण तूटो।—ऊ.का.

मुहा०—१ झंडो खड़ो करणो—किसी राज्य या किले पर अपना अधिकार कर के झंडा फहराना। अधिकार करना। प्रभाव जमाना। फौज आदि को एकत्रित करने के लिये झंडा गाड़ कर संकेत करना। शान-शौकत दिखाना। आडम्बर करना।

२ झंडो गाडणो—देखो 'झंडो खड़ो करणो'।

३ झंडी झुकाणी—झण्डा फहराना। झण्डा गिराना। किसी शोक को सूचित करने पर झण्डा गिराना। संध्या समय झण्डा गिराना।

अल्पा०—झंडियौ, झंडी।

मह०—झंड, झंडाळ।

झन्नीकार—सं०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—घम घमक होत घेर, झन्नीकार झंझरं। जसौल कांम फौज जांणि, यंत्र तमांम ऊचरं। —सू.प्र.

झंप—देखो 'झंपा' (रू.भे.)

उ०—१ जठे नदी रा जळ सूं पुद्‌गळ पवित्र करि कोई सिद्ध रा दीधा मंत्र रा जाप पूरवक तप्त तैल रा कटाह में बडाह राजा झंप लीधी। —वं.भा.

उ०—२ वणाधिप झंप भरी उण वार। भुजग न झालि सक्यौ भुव भार।—मे.म.

उ०—३ जुरा झंप जोबन खिसै, घटै ज नवळौ नेह। एक दिहाड़ै सज्जणा, जम करसी जुध श्रेह।—रसराज

झंपटाळ—देखो 'झंपताळ' (रू.भे.)

झंपणी, झंपबौ—क्रि०अ०—१ (दीपक आदि की ज्योति का) अस्थिर रहना, झिलमिलाना। उ०—बाली देवादे पदमण प्यारी लागी सा झंपे रे दीवौ मेलां उजियार।—लो.गी.

२ (आग का) बुझना। उ०—सांम्हो सीह किसो गजमाळ, झंपइ दव जिम वरसाकाळ। —कां.दे.प्र.

३ छलांग भरना, कूदना। उ०—ओपम दुती मलैगिर आंणै। जळ झंपियौ हणूं कपि जांणै।—सू.प्र.

४ एकदम टूट पड़ना, झपटना। उ०—दादू रहणि कबीर की, कठिन विखम यहु चाल। अधर एक सौं मिळ रह्या, जहां न झंपै काळ।—दादू वांणी

५ पकड़ना। उ०—नट नट्टा ज्यूं निपट झिलै वळ झंपतौ। वण जोधौ असवार चौळ फण चंपतौ।—किसोरदान बारहठ

६ निद्रा के कारण आंखों की पलकें मिलना, झपकना। ७ लज्जित होना, झेंपना।

झंपणहार, हारौ (हारी), झंपणियौ—वि०।

झंपवाड़णौ, झंपवाड़बौ, झंपवाणौ, झंपवाबौ, झंपवावणौ, झंपवावबौ—प्रे०रू०।

झंपाड़णौ, झंपाड़बौ, झंपाणौ, झंपाबौ, झंपावणौ, झंपावबौ—क्रि०स०।

झंपिओड़ौ, झंपियोड़ौ, झंप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झंपाड़ीजणौ, झंपाड़ीजबौ—भाव वा०।

झंपताळ—सं०पु०—१४ मात्रा का एक मात्रिक छंद विशेष जिसके अंत में गुरु होता है (र.ज.प्र.)

रू०भे०—झंपटाळ, झफटाळ, झपताळ।

झंपा—सं०स्त्री० [सं०] १ कूदान, छलांग। उ०— पूरब री तरह तप्त तैल रा कटाह में वार-वार झंपा ले'र भद्रकाळी नूं प्रसन्न करि। —वं.भा.

२ गिरते समय किसी को पकड़ने का भाव।

रू०भे०—झंप, झंफ।

झंपाड़णौ, झंपाड़बौ—देखो 'झंपाणौ, झंपाबौ' (रू.भे.)

झंपाड़णहार, हारौ (हारी), झंपाड़णियौ—वि०।

झंपाड़िओड़ौ, झंपाड़ियोड़ौ, झंपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झंपाड़ीजणौ, झंपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

झंपाड़ियोड़ौ—देखो 'झंपायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० झंपाड़ियोड़ी)

झंपाणौ, झंपाबौ—क्रि०स० ('झंपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ छलांग भरना, कुदाना। उ०—आगै आवतां एक खाळ बारह हाथ को चोड़ौ घणौ ऊंडौ आडै आयौ जठै कुमार 'दूदो' तौ सहज में सांवळिया नै झंपाइ खाळ रै वार आइ भालो ऊबाइ सांम्हौ खड़ौ रहियौ।—वं.भा.

२ (आग) बुझाना. ३. (ज्योति को) अस्थिर करना. ४ झपटाना, छिनवाना. ५ पकड़ाना. ६ निद्रालू करना. ७ लज्जित करना, झेंपाना।

झंपाणहार, हारौ (हारी), झंपाणियौ—वि०।

झंपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

झंपाईजणौ, झंपाईजबौ—कर्म वा०।

झंपणौ, झंपबौ—अक०रू०।

झंपाड़णौ, झंपाड़बौ, झंपावणौ, झंपावबौ—रू०भे०।

झंपायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ छलांग भराया हुआ, कूदाया हुआ।

२ (आग) बुझाया हुआ. ३ अस्थिर किया हुआ. ४ झपटाया हुआ, छिनाया हुआ. ५ पकड़ाया हुआ. ६ निद्रालू किया हुआ. ७ लज्जित किया हुआ, झेंपाया हुआ (स्त्री० झंपायोड़ी)

झंपावणौ, झंपावबौ—देखो 'झंपाणौ, झंपाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ फागुण मासि वसंत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाचरि कइ मिस खेलती, होळी झंपावेसि।—ढो.मा.

उ०—२ भीमु न दीसइ वलतउ किमइ। तउ झंपावइ अरजुनु तिमइ। —पं.पं.च.

झंपावणहार, हारौ (हारी), झंपावणियौ—वि०।

झंपाविओड़ौ, झंपावियोड़ौ, झंपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झंपावीजणौ, झंपावीजबौ—कर्म वा०।

झंपावियोड़ौ—देखो 'झंपायोड़ौ' (रू.भे.)

स्त्री०—झंपावियोड़ी।

झंपियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ अस्थिर रहा हुआ, झिलमिलाया हुआ।

२ बुझा हुआ. ३ छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ. ४ झपटा हुआ। ५ पकड़ा हुआ. ६ निद्रालू हुवा हुआ, झपका हुआ. ७ झेंपा हुआ, लज्जित।

स्त्री०—झंपियोड़ी।

झंपौ—देखो 'झांपौ' (रू.भे.)

उ०—झूम जिम वहै झड़ झूल गुरजां तड़छ, झूल चवसठ लगी लेण झगा। झूझ झमरावता फिरै बावन सुभट, स्याम वाघूळ विच जांण झगा।—बालाबक्स बारहठ, गजूकी।

झझ—देखो 'झंझा' (रू.भे)

उ०—मन्नू माब होनं गुरधो कुंभ रीतो, भई झंफ सांखो परघो जांनि पीतो।—ला रा.

झंझताळ—देखो 'झांझताळ' (रू.भे.)

झंफणो, झंफबो—देखो 'झंपणो, झंपबो' (रू.भे.)

उ०—चढ़ि किलै एम झंफै 'अचळ', विच दळ 'सूर' विहारियां। तिण वार मिळे हिंदू तुरक, वहै रीठ तरवारियां।—सू.प्र.

झंफियोड़ो - देखो 'झंपियोड़ो' (रू.भे.)

स्त्री०—झंफियोड़ी।

झंब-सं०स्त्री०—१ पेड़ की शाखा, टहनी।

२ गुच्छा, समूह। उ०—सुरां झंब रूपी तरां अंब सोभै, लखै पारिजाति तजै मार लोभै। प्रभा संप चंपे कळी जाळ पेखै। लजै भोण संजीवनी द्रोण लेखै।—रा.रू.

३ आश्रय, सहारा। उ०—नारंगी संसार नीम, अंबर कर अंबह। करणा सुभ करतूत, काल हर कदमां झंबह।—र.ज.प्र.

४ शरण, पनाह।

झंभ-सं०स्त्री०—दीपक की बत्ती।

उ०—करहा, संबो बोल भरि, पवनां ज्यूं वहि जाह। झंभ वळंतइ दीवलइ, घण जागंती जांह।—ढो.मा.

झंबरो-सं०पु०—१ पत्तियोंयुक्त वृक्ष की टहनी।

२ वृक्ष की टहनियों का गुच्छा. ३ शरीर का मैल उतारने का एक उपकरण।

रू०भे०—झमरो।

झ-सं०पु०—१ मैथुन. २ हाथ. ३ मछली, मच्छ. ४ ग्राम. ५ निदान. ६. नाश. ७ वर्षायुक्त तेज आंधी, झंझावात. ८ वृहस्पति. ९ दैत्यराज. १० ध्वनि (एका.)

झइवर-सं०पु० [सं० धीवर] धीवर, मल्लाह।

झउड़ो—१ देखो 'जुधो' २ (अल्पा. रू.भे.)

२ देखो 'जाउड़ो' (रू.भे) (अ.मा.)

झक—१ देखो 'झवक' (रू.भे.)

२ सनक, धुन, तरंग।

झकक-सं०स्त्री०—प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया।

झककेतु, झककेतू-सं०पु० [सं० झषकेतु] कामदेव, अनंग (हि.को.)

रू०भे०—झखकेत, झसकेतु, झसकेतू।

झकड़-सं०पु०—१ वर्षा के पहले आने वाली तेज आंधी।

२ तूफान, आंधी. ३ लू।

रू०भे०—झपकड़।

झकड़ो-वि०—१ रहस्यमय ?

उ०—जलाल कानां देय कर, सुण हम बातड़ियांह। झकड़ी बातां बूझ कर, रमजी रातड़ियांह।—जलाल बूबना री बात

२ दूध दुहने का बर्तन।

झकड़ो-सं०पु०—जुम्रा।

झकझक-सं०स्त्री० (अनु०) व्यर्थ की बकवास।

झकझकाहट-सं०स्त्री०—जगमगाहट, द्योत, चमक।

झकझेलणो, झकझेलबो—देखो 'झकझोरणो, झकझोरबो' (रू.भे.)

झकझेलियोड़ो—देखो 'झकझोरियोड़ो' (रू.भे)

स्त्री०—झकझेलियोड़ी।

झकझोर-सं०पु०—१ इधर-उधर हिलने का भाव।

उ०—सखी, म्हारो कानूड़ो कळेजे की कोर। मोर मुगट पीतांबर सोहै, कुंडळ की झकझोर।—मीरां

२ झोंका, झटका।

वि०—जो बहुत तेज हो, जो झोंकेदार हो। उ०—थांरो सेवा में तो मोद घन घन मानूं रे। यहै उरमियां झकझोर आज म्हूं जांणू रे। —लो.गी.

रू०भे०—झकझोळ।

झकझोरणो, झकझोरबो-क्रि०स०—किसी वस्तु या प्राणी को पकड़ कर खूब जोर से अथवा झटका देकर हिलाना। उ०—१ प्रिय प्रिय पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर। इस मास सावन दिल दिढ़ावन, सजन मानि निहोर।—वि.कु.

उ०—२ कुंजविहारी राधा गोरी, नवनिकुंज में खेलैं होरी। भरि भरि अरगजा लई कमोरी, छिरकत झकझोरी झकझोरी।—मीरां

झकझोरणहार, हारो (हारी), झकझोरणियो—वि०।

झकझोरिग्रोड़ो, झकझोरियोड़ो, झकझोरयोड़ो—भू०का०कृ०।

झकझोरीजणो, झकझोरीजबो—कर्म वा०।

झकझेलणो, झकझेलबो, झकझोळणो, झकझोळबो—रू०भे०।

झकझोरियोड़ो-भू०का०कृ०—हिलाया हुआ, झटका दिया हुआ।

स्त्री०—झकझोरियोड़ी।

झकझोरो-सं०पु०—झोंका, झटका।

झकझोळ-सं०पु०—१ लाल रंग या रक्त में भीगने का भाव।

२ देखो 'झकझोर' (रू.भे.)

उ०—इण परि सांभळि बोल, पदमणि प्रेमइ बांधियो जी। आलिम मन झकझोळ कीधो, बादळ वाय करै जी।—प.च.चो.

३ क्रीड़ा। उ०—मांन सरोवर हंसलउ रे, जेम करइ झकझोळ। तिम साहिब सूं मन मिळयउ रे, करइ सदा कल्लोळ।—वि.कु.

वि०—क्रोध या जोश से परिपूर्ण।

झकझोळणो, झकझोळबो—देखो 'झकझोरणो झकझोरबो' (रू.भे.)

उ०—मेघ मरोड़ै डाळ पवन आंधी झकझोळै। दावो देवं दाग, वैर गिरमी मिस घोळै।—दसदेव

उ०—२ एक जिसी छिव चांद सूरज री, पयो लेत विसरांम। फूली

सांझ रसराज चमेली, सुगंध पवन में झकझोळी अलवेली ।—लो.गी.
उ०—३ सेलां झकझोळियो अरियां समंद ।—दुर्गादास

झकझोळियोड़ौ—देखो 'झकझोरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झकझोळियोड़ी)

झकट-सं०पु० [सं०] मारकाट, युद्ध । उ०—जिकण झकट में जुज्झार होय एक अयुत तीन हजार सेना रै साथ अजमेर रा अनीक में सामंतां रो दसक खेत पड़ियो ।—वं.भा.

झकणौ, झकवौ-क्रि०अ०—१ व्यर्थ की वकझक करना. २ क्रोध में अनुचित वकना ।
झकणहार, हारौ (हारी), झकणियौ—वि० ।
झकवाड़णौ, झकवाड़वौ, झकवाणौ, झकवावौ, झकवावणौ, झकवाववौ, झकाड़णौ, झकाड़वौ, झकाणौ, झकावौ, झकावणौ, झकाववौ —प्रे०रू० ।
झकिओड़ौ, झकियोड़ौ, झक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झकीजणौ, झकीजवौ—भाव वा० ।

झकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ व्यर्थ की वक-झक किया हुआ. २ क्रोध में अनुचित वका हुआ ।
(स्त्री०—झकियोड़ी)

झकवोळ-वि०—पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में भिगोने या तर करने का भाव, लथ-पथ, तरावोर, तर-वतर । उ०—पातळा सिहि चख चोळ वांणी पढै, केविया गोळ रण धकै ठहरै कठै । अलल झकवोळ तंवर झरसी उठै, सेल झकवोळ करसी रगत सांमठै ।
—वद्रीदास खिड़ियौ

झकवोळणौ, झकवोळवौ-क्रि०स०—पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में भिगो कर तरवतर करना या सरावोर करना ।
उ०—अंग झकवोळ रुधर हुय आऊं । कायम जीवत-सिभ कहाऊं ।
—सू.प्र.
झकवोळणहार, हारौ (हारी), झकवोळणियौ—वि० ।
झकवोळिओड़ौ, झकवोळियोड़ौ, झकवोळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झकवोळीजणौ, झकवोळीजवौ—कर्म वा० ।

झकवोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—किसी तरल पदार्थ में तरवतर किया हुआ, सरावोर किया हुआ ।
(स्त्री०—झकवोळियोड़ी)

झकइ—देखो 'झक्कइ' (रू.भे.)

झकाझक-वि० (अनु०) खूव स्वच्छ एवं चमकीला, उज्ज्वल ।

झकाणौ, झकावौ-क्रि०स०—अग्नि सुलगाना, आग जलाना ।
झकाणहार, हारौ (हारी), झकाणियौ—वि० ।
झकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झकाईजणौ, झकाईजवौ—कर्म वा० ।

झकायोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रज्वलित किया हुआ ।
(स्त्री०—झकायोड़ी)

झकाळ-उभ०लि०—वकवाद, वक-झक । उ०—मन तौ खिण पिण वस नहीं, म्हारौ, झाझौ वचन झकाळ । काय चपलता कहियै केतली, जासी किम भव जाळ ।—ध.व.ग्रं.
रू०भे०—झखाळ ।

झकी-सं०स्त्री०—१ लड़खड़ाने की क्रिया या भाव, झौंका खाने की क्रिया । उ०—झझक्यौ घड़ धूंणव खाय झकी । तद गोडीय भूम प्रझंक टकी ।—पा.प्र.
२ देखो 'झक्की' (रू.भे.)

झकोड़ी-सं०स्त्री०—पश्चात्ताप ।
उ०—रे जीव तैं धन दोहरौ पायौ, माथै ढोय ढोय ओडी रे । चोर राजा न्याति लेजासी, तव मन में करै झकोड़ी रे ।—जयवांणी

झकोर-सं०पु० (अनु०) वायु का झौंका, हवा की हिलोरें ।

झकोरणौ, झकोरवौ—देखो 'झकोळणौ, झकोळवौ' (रू.भे.)
झकोरणहार, हारौ (हारी), झकोरणियौ—वि० ।
झकोरिओड़ौ झकोरियोड़ौ, झकोरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झकोरीजणौ, झकोरीजवौ—भाव वा० ।

झकोरियोड़ौ—देखो 'झकोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री०—झकोरियोड़ी)

झकोळ—१ देखो 'झकोर' (रू.भे.)
उ०—चलै सर वेधि सिले घट चोळ । झिणै पट झांणि समीर झकोळ ।—सू.प्र.
२ युद्ध । रमि झकोळ विचाळै 'रतनौ', आतम भव सतियां अंगूठ । झूलर झळहळते झूंझारै । कूंत-हथौ पोहतौ वैकूंठ ।—दूदौ
३ उत्सव, जलसा ।
४ देखो 'झकोळौ' (मह. रू.भे.)
५ क्रीड़ा, केलि । उ०—पार-विहूणा पंखिया, राजहंस ना रोळ । ऊँचा नीचा ऊडता, झाझा करइ झकोळ ।—मा.कां.प्र.

झकोळणौ, झकोळवौ-क्रि०स०—१ मुलम्मा या गिलट चढ़ाना ।
उ०—तठा उपरांयत कटारचां रा कमरवांधा छूटै छै, सू कटारी किण भांत री छै ? विरांणपुर री, रांमपुरा री, वूंदी री, राजासाही, ओडां री अडाई, भोगळी री, कोतांखांनी, पाडाजीभी, घणै सोने में झकोळी थकी, नव नगां राछां सूं भरी थकी ।—रा.सा.सं.
२ पानी या अन्य तरल पदार्थ को इधर-उधर चारों ओर खूव हिलाना, विलोडित करना । उ०—१ गायडमल री सजना तौ या न्हावै समंद झोकळकै ।—लो.गी.
उ०—२ नाजुक अंग निराट, सुचंगी नारियां । पांणी घड़ा झकोळ, भरै पणिहारियां ।—महादांन महडू
३ वायु का झौंका मारना । उ०—१ जुथां विहराय गजां परि जाय, वहै जिम लाय झकोळिय वाय ।—सू.प्र.
उ०—२ वाउ का झकोळया, आंवा का मंजर गिरि गिरि पड़ै छै ।
—वेलि.टी.

४ स्नान करना, नहाना। उ०—दासी लागी झकोळ पांणी सूं अंग ऐ सोवनी नूं दीधी।—बीरमदे सोनगरा री बात

५ धोया करना, ६ नाना। उ०—तीन झकोळे गोरियां, सुगुनां री सरवर मांहि तीरां हींदणां, तीज मर्डे तिण वार।

—महादान महडू

झकोळणहार, हारो (हारी) झकोळणियो—वि०।

झकोळवाड़णो, झकोळवाड़बो, झकोळवाणो, झकोळवाबो, झकोळवावणो, झकोळवावबो, झकोळाड़णो, झकोळाड़बो, झकोळाणो, झकोळाबो झकोळावणो, झकोळावबो—प्रे०रू०।

झकोळियोड़ो, झकोळियोड़ो, झकोळ्योड़ो—भू०का०कृ०।

झकोळीजणो, झकोळीजबो—कर्म वा०।

झकोळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ मुलम्मा या गिलट चढ़ाया हुआ.
२ निर्मित किया हुआ. ३ वायु का झोंका मारा हुआ.
४ प्रक्षालन किया हुआ, धोया हुआ. ५ स्नान कराया हुआ.
६ नहाया हुआ। (स्त्री० झकोळियोड़ी)

झकोळो-सं०स्त्री०—१ झकोलना क्रिया या भाव. २ स्नान।

झकोळो-सं०पु०—१ जल की तरंग या हिलोर। उ०—१ उरै गजराज देख नदी रै कांठै ग्रह ऊपरै पाचसै हाथी रै हलकै लोआं मोडी खर नजरै रहिया छै। पांणी री छोळां रा झकोळा खावता गज कीला बगिनै रहिया छै।—रा.गा.मं.

२ आघात, टक्कर। उ०—भेलै नदियां तणा झकोळा, कीड़ी री काया किसो।—ओपो आढ़ो

३ अस्थिरता का भाव। उ०—ऊंचा नीचा महल पिया का, हमसे चढ़्या न जाय। पिया दूर पंथ म्हारो झीणो, सुरत झकोळा खाय।

—मीरां

झक्क-वि०—खूब स्वच्छ और चमकदार, झकाझक, चमकीला।

झक्कड़—देखो 'झकड़' (रू.भे.)

झक्की-वि०—१ बहुत बकझक करने वाला, व्यर्थ का बकझक करने वाला. २ वह जिसे झक सवार हो, वह जो अपनी धुन में किसी की परवाह न करता हो।

रू०भे०— झकी, झखी।

झख-सं०पु०—१ वन, जंगल (नां.मा.)

सं०स्त्री० [सं० झष] २ मच्छी, मत्स्य, मीन (अ.मा.)

उ०— झखां मंजगीटां अगां, मंथर हतक सराह। जैतवार ज्यांरा जतन, मगरमच्छां सुथराह।—बां.दा.

३ सं०स्त्री०— झींखने का भाव या क्रिया।

मुहा०—१ झख मारणो (मारणी) व्यर्थ का प्रलाप या बकझक करना, व्यर्थ में समय नष्ट करना, विवशतावश झींखना।

३ देखो 'झक' (रू.भे.)

झखकेत, झखकेतु—देखो 'झखकेतू' (रू.भे.)

उ०—जग झखकेतू छैटियो, महळ निकारां मूळ। लाग खणंका नह लाग्या, धणी अनागे धूळ।—रेवतसिंह भाटी

झखझूर-सं०पु० (अनु०) चूर-चूर, नाश, ध्वंस।

झखणो, झखबो-क्रि०अ० [सं० झष्] इच्छा करना, आकांक्षा करना।

(उ.र.)

उ०—झखइ लांखइ लावर आकुलउ। विरहि विह्वल वातर वाउलउ।

—वि.प.

झख-ध्वज-सं०पु० [सं० झषध्वज] कामदेव। उ०—झखध्वज भूपति दोयण भूल। मलोयण लोयण रूप असूळ।—मे.म.

झखनिकेत-सं०पु० [सं० झषनिकेत] १ समुद्र. २ जलाशय।

झख-बोळ—देखो 'झक-बोळ' (रू.भे.)

झख-बधक-सं०पु०यौ० [सं० झषबधक] मछली पकड़ने का यंत्र विशेष

(अ.मा.)

झखाळ—देखो 'झकाळ' (रू.भे.)

झखी-सं०स्त्री—१ देखो 'झख' २ (रू.भे.)

२ देखो 'झकी' (रू.भे.)

झखोरणो, झखोरबो-क्रि०स०—१ देखो 'झखझोरणो, झखझोरबो'

(रू.भे.)

२ देखो 'झकोळणो, झकोळबो' (रू.भे.)

झखोरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ देखो 'झकझोरियोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'झकझोळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झखझोरियोड़ी)

झगड़णो, झगड़बो-क्रि०अ० [सं० झकट] १ झगड़ा करना, लड़ाई करना. २ विवाद करना, तकरार करना।

झगड़णहार, हारो (हारी), झगड़णियो—वि०।

झगड़ाड़णो, झगड़ाड़बो, झगड़ाणो, झगड़ाबो, झगड़ावणो, झगड़ावबो

—प्रे०रू०।

झगड़िओड़ो झगड़ियोड़ो, झगड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

झगड़ीजणो, झगड़ीजबो—भाव वा०।

झागड़णो, झागड़बो—रू०भे०।

झगड़ालू-वि० [सं० झकट+आलुच्] झगड़ा-टंटा करने वाला, लड़ाई करने वाला, कलहप्रिय।

झगड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झगड़ा किया हुआ, लड़ाई किया हुआ।
२ विवाद किया हुआ, तकरार किया हुआ।
(स्त्री० झगड़ियोड़ी)

झगड़ी, झगड़ेल—देखो 'झगड़ालू' (रू.भे.)

झगड़ो-सं०पु० [सं० झकट] १ दो व्यक्तियों का परस्पर आवेशपूर्ण वाद-विवाद, लड़ाई, टंटा. २ युद्ध (डिं.को.)

उ०—१ प्रथम 'अभैपति' पूछियो, भूप कणांठी आत। अब झगड़ो कीजै किमूं, बखतसिंघ वडगात।—सू.प्र.

उ०—२ मांयली तोपां तो छूटै आडावळो धूजै ओ, आउवा रा नाथ तो सुगाळी पूजै ओ, झगड़ो आदरियो। हां ओ झगड़ो आदरियो, आउवो झगड़ा नें बांको ओ'क झगड़ो आदरियो।—लो.गी.

क्रि०प्र०—उठाणो, करणो, डाळणो, तोड़णो, फैलाणो, मचाणो, मिटणो, मेटणो, लगणो, लगाणो, समेटणो ।

रू०भे०—भागड़ो ।

यो०—झगड़ो-झांटो, झगड़ो-टंटो ।

झगझग, झगझगा'ट झगझगाहट—सं०स्त्री० (अनु०) १ प्रज्वलित होने की क्रिया, प्रकाशित होने की क्रिया । उ०—झगझग ऊठै हिया में झाळां, दगदग द्रग जळ डारै । मग मग लखै आवतो मारू, पग पग प्रजा पुकारै ।—ऊ.का.

२ तंग मुंह के पात्र में से द्रव पदार्थ के निकलने की ध्वनि ।

उ०—सैं होळी नै ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ । बोतल तो झगझग करै, कोइ प्याला करै पुकार ।—डूंगजी जवारजी री पड़

झगझगणो, झगझगबो—क्रि०अ०—प्रकाशित होना, प्रज्वलित होना ।

उ०—मस्तक पाळ बंधी माटी की, मुनिवर समता रस भरिया । झगझगता खयर ना खीरा, मुनिवर नैं सिर धरिया ।—जय-वांणी

झगझगियोड़ो—भू०का०कृ०—प्रकाशित, प्रज्वलित हुवा हुआ ।

(स्त्री० झगझगियोड़ी)

झगणो, झगबो—१ देखो 'जगणो, जगबो' (रू.भे.)

उ०—उरड़ मेछ आविया, मुरड़ि जंगळधर माथै । झगि तोड़ा दव झड़ै, खड़ै घोडा जव खाथै ।—मे.म.

२ मथना, विलोड़ित करना ।

झगमग, झगमगि—देखो 'जगमग' (रू.भे.)

उ०—१ कंज सर भर समुख कोमळ कांन झगमग हरि कुंडळ ।

—र.ज.प्र.

उ०—२ मणि मोतिण हीर जड़ी, तेजइ हो अंगि झगमगि थाय ।

—स.कु.

झगमगणो, झगमगबो—देखो 'जगमगणो, जगमगबो' (रू.भे.)

उ०—झिलै जीवोक्ष्योति झगमगत ज्योति झिळमिळै ।—ऊ.का.

झगरो—सं०पु०—अग्नि प्रज्वलित करने हेतु घास-फूस या सूखे झाड़-झंखर कांटे आदि का ढेर ।

झगलो—देखो 'झगो' (अल्पा. रू.भे.)

झगामग—देखो 'जगमग' (रू.भे.)

उ०—किलंगी सिर सोभा कमळ, पना हीर सिर पेच । कुसी पहर मोती कड़ा, झुकती माळ झलेव । झुकती माळ झलेव क तुररा टांकियां, लटकण छोगा लूंब दुसाला नांखियां । कळह झगामग गहणो जोत क सावरो, जांणै कछियो कांन क मुगट जड़ाव रो ।

—महादांन महड़ू

झगिया—सं०पु० (बहु व०) झाग, फेन (अल्पा.)

झगो—सं०पु०—१ छोटा बच्चा ।

२ एक प्रकार का पहिनने का वस्त्र ।

झघाट—वि० [सं० झकट] १ योद्धालु, लड़ाका । उ०—सुजात संस्थान, हिमगिरि तटायमांन, इसउ त्रिखभ पराक्रमि करी झघाट, वाटली मोटी संमिलित तीन्ही जेहनी दाढ़ ।—व.स.

वि०—महान, जबरदस्त ।

झड़—सं०पु०—१ समूह । उ०—जै पाय जंग आयो अभंग, जळनिध-राज पर बंधि पाज । झड़ अनड़ झाड़ आंणै उपाड़, दळ मिळै दूठ रिण भिड़ै रूठ ।—र.रू.

२ देखो 'झड़ी' (मह. रू.भे.)

उ०—१ चोटियाळी कूदै चौसंठि चाचरि, धू ढळियै ऊकसै धड़ । अनंत अनै सिसुपाळ ओझड़ै, झड़ मातो मांडियो झड़ ।—वेलि.

उ०—२ सांवण तो आयो, सैयां, मैं सुण्यो, आयो आयो जेठ असाढ़, मेहां झड़ मांडियो ।—लो.गी.

उ०—३ गाजै घण सुण गावणो, प्याला भर मद पाव । झूलै रेसम रंग झड़, झोटा दे'र झुलाव ।—बा.दा.

उ०—४ जाएवा लागां सिर खंड, पड़वा लागी खांडा तणी झड़, वाजवा लागी सुभट तणी कोटकडि, नाचेवा लागां धड़कबंध ।

—व.स.

क्रि०अ०—लागणो ।

यौ०—झड़छीकल, झड़झंकड़, झड़झांकड़, झड़झांकळ, झड़झांको ।

सं०स्त्री०—३ छंद या पद्य की पंक्ति, चरण ।

उ०—कवता में वैण सगाई एक कवता री रीत है जिण तरै कै कवत, दोहो, गीत हरेक जात रो डिंगल रो छंद तिकण मैं हरेक झड़ रो पहलो आखर सो झड़ रा अंत मैं छूटता आखर सूं पहला एक आखर रे तथा दोय वा तीन रै पैला लावणो पड़ै ।—वी.स.टी.

झड़उलट—सं०पु०—'कुंडळियो' छंद का एक भेद ।

वि०वि०—देखो 'कुंडळियो'

रू०भे०—झडउलट ।

झड़क—सं०स्त्री०—झटका । उ०—आंम्ही सांम्ही खांची अर फेरी फेर खैंच कर मूंठ नूं झड़क दीन्ही सो कमांण टूट गई ।

—ठाकुर जैतसी री वात

झड़कणो, झड़कबो—क्रि०स०—१ झटका देकर अलग करना ।

२ तिरस्कारपूर्वक विगड़ कर कोई वात कहना, डांटना, फटकारना ।

उ०—तरै जलाल जांणी—ओ तो पीहर री छै तींसूं झड़क देसां ।

—जलाल बूबना री वात

३ देखो 'झड़णो, झड़बो' (रू.भे.)

झड़कणहार, हारो (हारी), झड़कणियो—वि० ।

झड़कवाड़णो, झड़कवाड़बो, झड़कवाणो, झड़कवाबो, झड़कवावणो, झड़कवावबो, झड़काड़णो, झड़काड़बो, झड़काणो, झड़काबो, झड़कावणो, झड़कावबो—प्रे०रू० ।

झड़किओड़ो, झड़कियोड़ो, झड़कयोड़ो—भू०का०कृ० ।

झड़कीजणो, झड़कीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

झड़काड़णो, झड़काड़बो—देखो 'झड़कणो, झड़कबो' (रू.भे.)

झड़काड़ियोड़ो—देखो 'झड़कियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झड़काड़ियोड़ी)

झड़काणौ, झड़काबौ—देखो 'झड़कणौ, झड़कबौ' १,२ (रू.भे.)
उ०— मोहरियां [illegible], पतैरी डेरा'र पालै। तीजै दिन झड़काय, [illegible] भर मे हाणी।—दसदेव

झड़काणोड़ौ—देखो 'झड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झड़काणोड़ी)

झड़कारणौ, झड़कारबौ—देखो 'झड़कणौ, झड़कबौ' (रू.भे.)

झड़कारियोड़ौ—देखो 'झड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झड़कारियोड़ी)

झड़कियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ झटका देकर अलग किया हुआ।
२ डांटा हुआ, फटकारा हुआ।

झड़कायोड़ौ—देखो 'झड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झड़कायोड़ी)

झड़कावणौ, झड़कावबौ—देखो 'झड़कणौ, झड़कबौ' (रू.भे.)

झड़काविवोड़ौ—देखो 'झड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झड़काविवोड़ी)

झड़कियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ झटका देकर अलग किया हुआ. २ डांटा हुआ, फटकारा हुआ।
(स्त्री० झड़कियोड़ी)

झड़क्कणौ, झड़क्कबौ—देखो 'झड़कणौ, झड़कबौ' (रू.भे.)
उ०— देखतां अेहवौ जंग धड़क्कै आगरौ दिल्ली, वंबी जैत माग रा रहक्कै बारंबार। झड़क्कै खाग रा वाढ़ भड़क्कै कायरां झुंड, हमल्लां नाग रा माथा रड़क्कै हजार।—सूरजमल मीसण

झड़क्कियोड़ौ—देखो 'झड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झड़क्कियोड़ी)

झड़क्कौ—सं०पु०—१ प्रहार। उ०—झड़क्का खग्गां वाजै सेल रा धमोड़ा भाट, रड़क्का गुरजां गाजै धमोड़ा रढ़ंत। आवधां वैरियां वाळा माथा रा चटक्का उडै, बटक्का 'चैन' रा काच सीसी ज्यूं वढ़ंत।
—सूरजमल मीसण
२ प्रहार की ध्वनि।

झड़ज्झड़—सं०स्त्री०—शस्त्रों का प्रहार या प्रहार की ध्वनि।
उ०—१ मुड़ै 'उग्रसेण' तणौ 'फतमाल'। लुहां खळकट करै गंज 'लाल'। भिड़ै भभकै रण क्रोध धियाग। खड़क्खड़ ढाल झड़ज्झड़ खाग।
—सू.प्र.
उ०—२ झवज्झड़ भिज्झड़ भड़ असंध, कटै कर कोपर काळिज कंध। भड़ां धड़ भंजि हुअै बिबि भग्ग, खड़क्खड़ ढल्ल झड़ज्झड़ खग्ग।
-वचनिका
रू०भे०—'झड़झड़' (रू.भे.)

झड़-झांखड़, झड़-झांखळ, झड़-झांखौ—सं०पु०यौ०—छोटी २ बूंदों की निरंतर होने वाली वर्षा, हलकी वर्षा। उ०—जाळ जांगड़ी-रूंख, मधन मायड़मन गाढ़ौ। बोर सरेसां वडौ, खजूरां सिरसौ डाढ़ौ। खर मोरड़िया मांय, गोहिरा सांप गजब रा। झड़झांखड़ जड़ जाय, उरगियां वडै अजब रा।—दसदेव

झड़झड़—देखो 'झड़ज्झड़' (रू.भे.)

झड़ड़ाट—सं०स्त्री०—१ शस्त्र-प्रहार की ध्वनि विशेष. २ ध्वनि विशेष।

झड़णौ, झड़बौ—क्रि०अ०—१ अपने स्थान से अलग होना, टूट कर अलग होना, गिरना। उ०—१ जठै जादवराय रा संबंधी, भाता जादव देव रा किवांण करि चाळुक्यराज रा गज रौ सुंडादंड वाहित्य देस सूं विछूटि झड़ियौ।—वं.भा.
उ०—२ झड़ती आभै बीज, कड़कड़ती झेलै कवण। कुण अड़ ठहर मकीज, चढ़ती खीज 'प्रताप' चख।—जैतदांन बारहठ
उ०—३ बीजळि दुति दंड मोतिए वरिखा, झालरिए लागा झड़ण। छत्रे आकास एम ओछायौ, घण आयौ किरि वरण घण।—वेलि.
उ०—४ हर घड़ियौ हित सूं निज हाथां, जड़ियौ गढ़ जोधांणै। झळझळाट करतौ नग झड़ियौ, पड़ियौ लंब पयांणै।—ऊ.का.
२ किसी वस्तु से उसके छोटे-छोटे अंशों का टूट-टूट कर गिरना, कण या बूंद के रूप में गिरना। उ०—१ हुवै निहाव घाव भड़ हाकां। आगि झड़ै पड़तां ऐराकां। किलम हजार पांच अनि कटिया। अली-हुसेन खगां आछटिया।—सू.प्र.
उ०—२ अंग में आय निस दिन अड़ै, झड़ै नहीं मळ झाड़ियौ। जगदीस पाक कीनौ जिकौ, बिलळां नाक बिगाड़ियौ।—ऊ.का.
३ ढह पड़ना, गिरना। उ०—अेहा वयण दाखवै 'ईसर', मांझी वंस तणा कुळ मौड़। झड़सी महलां तणा झरोखा, रहसी गीत कहै राठोड़।—ईसरदास राठोड़
४ टपकना। उ०—नाग रा झाग पीवै निलज, झांक आग चख में झड़ै। अंगरेज मुलक दाबण अड़ै, ऐ जूवां सूं आथड़ै।—ऊ.का.
५ प्रहार होना, वार होना। उ०—१ सिंह री वार होतां ही इण रा कुंभी रै कळावै चांमुंडराज री चंद्रहास झड़ियौ।—वं.भा.
उ०—२ पातल री वग ऊपड़ी, अजड झड़ी मझ घाट। बडी बडी वप वीर री, घड़ी वीर रस घाट।—किसोरदांन बारहठ
उ०—३ अर इण ऊपरै घणी तरवारियां री गंज वोह झड़ै छै।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात
६ टूटना। उ०—म्होकमसिंघ गढ़ देखतां ही उड पड़सी। अर इण रै माथै घणी अमांमी सीरोहियां री फूलधारां री वाढ़ झड़सी।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
७ कट कर गिरना, कटना। उ०—१ अर दो ही वीरां आप आप री स्वांमी धरम ऊजळौ दिखायौ। दो ही सांमंतां रा सस्त्रां रा संपातां सौं दो ही तुरंगां रा सीस झड़िया।—वं.भा.
उ०—२ प्रतापसिंघ तौ साहणसिंगार रै सीस चद्रहास रौ प्रहार कियौ, तिणसूं दो ही दंतां समेत सुंडादंड झड़ि पड़ियौ।—वं.भा.
उ०—३ मंडियौ महाजुध मेड़तै, रिण अरियां दे रेस। तन झड़ियौ तरवारियां, मुड़ियौ नहीं 'महेस'।—महेसदास कूंपावत रौ दूहौ
उ०—४ भिलम टोप सूधौ सिर झड़ियौ। पटझरहूं चूड़ामणि पड़ियौ।

करि जय घसे नगर मझि लसकर। अटके नह भिळियो वरियावर।
—सू.प्र.

८ वीर गति को प्राप्त होना, रणक्षेत्र में काम आना।
उ०—१ इण रीति केही जवनां रा प्रांण देह रूप कारा-सदन रा वंदीवांन छुडाय साहवुद्दीन री सभा में टूक टूक होय झड़ियो।—वं.भा.
उ०—२ रीझल वुध करणावत रावत, घण अवीढ़ा सबद घड़ै। ओझड़ झटां टळै नह अड़ता, झड़ता फिरै सौं नह झड़ै।—अज्ञात
९ मृत्यु होना, मरना. १० वीर्य स्खलित होना. ११ चेचक के रोग से मुक्ति पाना. १२ दुर्वल होना, कृश होना। ज्यूं—हमैं वूढ़ापा में म्हारी डील झड़ गियौ है। सेठजी री तूंद झड़ गई है। १३ कम होना. १४ मिटना। उ०—कह दे कुण ऐंडौ जग मांय, करै जो परभातां री सांझ। दिनां री सूरज हुंदी जोत, झड़ै क्यूं रातड़ली री झांझ।—सांझ
१५ निर्धन होना, कंगाल होना।
झड़णहार, हारौ (हारी), झड़णियौ—वि०।
झड़वाड़णौ, झड़वाड़बौ, झड़वाणौ, झड़वावौ, झड़वावणौ, झड़वाववौ, झड़ाड़णौ, झड़ाड़वौ, झड़ाणौ, झड़ावौ, झड़ावणौ, झड़ाववौ
—प्रे०रू०।

झड़िओड़ौ, झड़ियोड़ौ, झड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झड़ीजणौ, झड़ीजवौ—भाव वा०।

झड़प-सं०स्त्री० (अनु०) १ छत में लगाया जाने वाला कपड़े का बना हुआ पंखा जिसे गर्मियों में हवा के लिये डोरी से खींच कर हिलाया जाता है. २ परस्पर की मुठभेड़, लड़ाई, झगड़ा. ३ विवाद, तकरार. ४ गलफदार खिड़की के अन्दर की ओर वाजू का पत्थर. ५ लकड़ी को शीघ्र घिसने का एक ओजार. ६ झपटने या पकड़ने की क्रिया या भाव। उ०—१ सांमेरी संसार मैं, कूड़ा विणज कियाह। झड़प मारी हंस नै, कागा हाथ लियाह।—र.रा.
उ०—२ छळ मारू वाधे बळ छीजै। लीजै झड़प किता लूटीजै।
—रा.रू.
७ टक्कर, झपट। उ०—आतस कौ भभकौ, चक्री की चाल, चपला कौ चमंकौ, छाती की ढाल। सींचांणां की झड़प, हींडै की लूंब, खगराज का वचा, खेतु में खूब।—दरजी मयारांम री वात
८ हवा डालने की क्रिया या भाव. ९ अचानक ही कहीं से धन-दौलत की प्राप्ति होना।
मुहा०—झड़प सजणी—अकस्मात धन की प्राप्ति होना।
१० आग की लौ, लपट।
रू०भे०—झड़फ।

झड़पणौ, झड़पवौ—क्रि०अ०स० (अनु०) १ स्थान से अलग होना, गिरना, टूटना। उ०—जोवन नै जवार, काचा थकांज मांणिये। झड़पे जासी झार, वाकी रहसी पींछरा।—र.रा.
२ द्रुत गति से भागना. ३ आक्रमण करना, हमला करना. ४ लड़ना, झगड़ना, उलझ पड़ना. ५ वीच में ही पकड़ लेना, झपट लेना। ज्यूं—उण दड़ी फेंकी नै म्हैं झड़पी।
६ छीनना। उ०—१ वडाई करै नर बोल म्हैं वोलियौ, भवस विण किणी सूं देह भागै। लेख री कटारी प्रांण झड़पै लियौ, लोह री कटारी पछै लागै।—ओपौ आढौ
उ०—२ व्रिज वैरां रा विसन, चीर झड़पै व्रख वसियौ। ऊंयां नां तूठौ अनंत, हुओ मन मांही हंसियौ।—पी.ग्रं.
७ हवा करना. ८ काटना, मारना, संहार करना।
उ०—वड रावत जिकै वडा ग्रह वेढ़क, झड़पै अरियण खड़ग झड़। आया जु हार कूंअर गुरु आगळि, भड़ कमधज लख अवर भड़।
—गु.रू.वं.
९ आघात पहुँचाना, टक्कर मारना. १० द्रुत गति से भगाना, दौड़ाना। ज्यूं—घोड़ां नै सांतरा झड़पिया। मोटरड़ी नै ऐड़ी झड़पी कै दिन थकै पहुँच गिया।
११ झटके से गिराना, झटकना। ज्यूं—कपड़ै नै थाप देनै धोवणौ चाइजै झड़पणै सूं कपड़ो वेगौ फाटै।
१२ कावू में करना, अधिकार में करना, पकड़ना।
उ०—मतौ इण मारवा तणौ केसव कीयौ। लावड़ौ जांण सींचांण झड़पे लीयौ।—रुखमणी हरण
झड़पणहार, हारौ (हारी), झड़पणियौ—वि०।
झड़पवाणौ, झड़पवावौ, झड़पवावणौ, झड़पवाववौ
झड़पाड़णौ, झड़पाड़वौ, झड़पाणौ, झड़पावौ, झड़पावणौ, झड़पाववौ
—प्रे०रू०
झड़पिओड़ौ, झड़पियोड़ौ, झड़प्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झड़पीजणौ, झड़पीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

झड़पा-झड़पी—सं०स्त्री० (अनु०) १ गुत्थमगुत्था, हाथापाई।
२ छीनाझपटी।

झड़पियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्थान से अलग हुवा हुआ. २ द्रुत गति से भागा हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ.
४ लड़ा हुआ, झगड़ा हुआ, उलझा हुआ. ५ वीच में ही पकड़ा हुआ, झपटा हुआ. ६ छीना हुआ. ७ हवा डाला हुआ. ८ काटा हुआ, मारा हुआ, संहार किया हुआ. ९ आघात पहुँचाया हुआ, टक्कर मारा हुआ. १० द्रुत गति से भगाया हुआ, दौड़ाया हुआ.
११ झटके से गिराया हुआ, झटका हुआ. १२ कावू में किया हुआ, अधिकार में किया हुआ, पकड़ा हुआ।
स्त्री०—झड़पियोड़ी।

झड़पौ—सं०पु०—जैसे-तैसे प्राप्त करने की क्रिया या भाव।
वि०—जैसे-तैसे प्राप्त करने वाला, छीना-झपटी करने वाला।

झड़फ—देखो 'झड़प' (रू.भे.)

झड़फड़—देखो 'झड़ाफड़' (रू.भे.)
उ०—तड़ भड़ घड़ आथड़ै गैतूळां। झड़ फड़ ग्रीध उरड़ रंभ झूलां।
—सू.प्र.

झड़फड़णौ, झड़फड़बौ–१ रोग विशेष के कारण निर्बल होना ।
  २ देखो 'झड़फड़ाणौ, झड़फड़ाबौ' ४ (रू.भे.)

झड़फड़ाणौ, झड़फड़ाबौ–क्रि०स०—१ पीटना. २ कष्ट देना, तकलीफ देना. ३ छीनना, लूटना. ४ पक्षियों द्वारा परों का फड़फड़ाना । उ०—[illegible] गिरैबाज कबूतर री नांई गिरह खाता [illegible] पंखियां ज्यूं झड़फड़ाता [illegible] नूं धरती पड़ता पहली [illegible] दटाग्दिा [illegible] छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

  रू०भे०—झड़फड़णौ, झड़फड़बौ ।

झड़फड़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पीटा हुवा. २ कष्ट दिया हुआ, तकलीफ दिया हुवा. ३ छीना हुवा, लूटा हुवा.
  ४ (परों को) फड़फड़ाया हुवा ।
  (स्त्री० झड़फड़ायोड़ी)

झड़फड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ रोग विशेष के कारण निर्बल हुवा हुआ।
  २ देखो 'झड़फड़ायोड़ौ' ४ (रू.भे.)

झड़फणौ, झड़फबौ—देखो 'झड़पणौ, झड़पबौ' (रू.भे.)
  उ०—१ [illegible] बहु [illegible], पाड्यां दोरिय पांण । झळहळत साज झळूस, झड़फिया 'पेमें' झळूस ।—सू.प्र.
  उ०—२ [illegible] घरि नीगु, मळे हायळ दुसमालां । फिरंग साज झड़फियौ, पेंच छोडियां अपाळां ।—सू.प्र.
  उ०—३ 'हांमावत' एको हारवसी, दळ-ग्रर दाख दहण खग दाहि । कुंजर कोड़ मिळे जो कारी, सीह झड़फतो सकै न साहि ।
—नैणसी

झड़फियोड़ौ—देखो 'झड़पियोड़ौ' (रू.भे.)
  (स्त्री० झड़फियोड़ी)

झड़फकणौ, झड़फकबौ—देखो 'झड़पणौ, झड़पबौ' (रू.भे.)
  उ०—गड़पंत बीजूजळां हाम मोहा बड़पफै सूर, सांसहार झड़पफै पड़फै नदी नंभ । ग्रीधणी हड़पफै पळां सांमळी हड़पफै गूद, रुंड केई झड़फै पड़पफै वरा रंभ ।—बद्रीदांन खिड़ियौ

झड़फिकयोड़ौ—देखो 'झड़पियोड़ौ' (रू.भे.)
  (स्त्री० 'झड़फिकयोड़ी')

झड़बांण—देखो 'झड़वांण' (रू.भे.)
  उ०—कोट तोप कमधजां, जिकै तोपं जमरांणां । कोट लोप रहकळां तोह मोर्चे झड़वांणां ।—सू.प्र.

झड़बेरी—देखो 'झाड़बोरड़ी' (रू.भे.)

झड़बोर—देखो 'झाड़बोर' (रू.भे.)

झड़मुगट–सं०पु०—सुद्ध सांणोर गीत के अन्तर्गत उसके आदि और अंत में यमकालंकार होने से बनने वाला छंद विशेष ।
  रू०भे०—झड़मुगट ।

झड़लपत, झड़लुपत–सं०पु०—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जो पालवणी गीत का एक भेद होता है । इसके प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पदों के तुकांत मिलाये जाते हैं । इसे नेत्रपालवणी भी कहते हैं ।
  रू०भे०—झड़लपत, झड़लुपत ।

झड़लौ—देखो 'झड़ूलौ' (रू.भे.)
  उ०—बिचलै बीरै के गोद झड़ला री जात, वारी घण वारी श्रो हुंजा, गठजोड़ै से श्रो जात उपारसी जी, म्हारा राज ।—लो.गी.

झड़वांण–सं०स्त्री०—एक प्रकार की तोप ।
  उ०—कुहक बांण झड़वांण भयंकर । श्रोसर इंद्र जांणि ग्रज ऊपर ।
—सू.प्र.
  रू०भे०—झड़-बांण ।

झड़वांणी–सं०स्त्री० [रा०झड़+सं० पानीयं] वर्षा की झड़ी ।

झड़वायौ–वि०—वर्षा सम्बन्धी ।

झड़हड़णौ, झड़हड़बौ—देखो 'झड़णौ, झड़बौ' (रू.भे.)
  उ०—१ श्राग झड़हड़ै डूंडै रमै रण श्रांगणै, नाग फण नमैं करै सस्त्र नागा । कठा लग कवादी व्यूह रचना करै, लठावन तणा भड़ लड़ण लागा ।—कविराजा बांकीदास
  उ०—२ जिण दिट्ठइं श्राणंदु चडइ ग्रइ रहसु चउग्गुणु । जिण दिट्ठइं झड़हडइ पाउ तणु निम्मल हुइ पुणु ।—ऐ.जै.का.सं.

झड़हड़ियोड़ौ—देखो 'झड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
  (स्त्री० झड़हड़ियोड़ी)

झड़ाकौ–सं०पु०—१ तिरछी चितवन, कटाक्ष ।
  उ०—पायल रै ठमकै सूं, घूघरै रै घमकै सूं, बिछियां रै छमकै सूं रमझोळ करती, ग्रंगूठा मोड़ती, नखरा करती बाजारि चाली जाय छै । निजरां रा झड़ाका लागां थकां जुवांनां छयल्लां रा मन गरेदबाज करै छै ।—रा.सा.सं.
  २ मुठभेड़, लड़ाई, झड़प ।

झड़ाझड़–क्रि०वि० (ग्रनु०) लगातार, बिना रुके । उ०—पासै सर ग्रावतां पालै, भळकंते निज भालै । नयणे निपट निजीक निहाळै, घाव झड़ाझड़ घालै ।—वि.कु.

झड़ाझड़ी–सं०स्त्री०—झड़ने या झरने की क्रिया या भाव ।
  क्रि०वि०—लगातार, बिना रुके ।

झड़ापड़, झड़ापड़ि, झड़ाफड़, झड़ाफड़ि–सं०स्त्री० (ग्रनु०) १ पक्षियों द्वारा उनके परों से की जाने वाली ग्रावाज, फड़फड़ाहट या फड़फड़ाने की क्रिया । उ०—१ हाकां वीर कळह पुन हड़हड़ । रिण चांमंड घण घेर रची । पळचर नहराळां पंखाळां । माचि झड़ापड़ि झाट मची ।—दूदौ
  उ०—२ हडोई ऊपर चीलका कागला झड़ाफड़ करनै रह्या छै । तिका कागलां नूं मलूकजादा कुंवर गिलोलां री चोटां कर रह्या छै ।
—रा.सा.सं.
  २ छीना-झपटी. ३ फिसाद, टंटा ।

झड़ाळ—देखो 'झड़ी' (मह. रू.भे.)
  उ०—उजेणि ग्रकाळ झड़ाळ ग्रछेह, मंडै घण जांणि कि बारह मेह ।
—वचनिका

झड़ियाळ-सं०पु०—युद्ध में वीर गति पाने वाला, योद्धा, वीर, बहादुर।
उ०—लड़ पड़ै फूट छड़ छाक लोह, छड़ पकड़ जड़ै जमदढ़ छछोह।
झड़ियाळ वाढ़ खग धजर झाट, वड़ियाल फजर गढ़ लंक घाट।
—वि.सं.

झड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ अपने स्थान से अलग हुवा हुआ, टूट कर अलग हुवा हुआ, गिरा हुआ. २ (किसी वस्तु से उसके छोटे-छोटे अंशों का) टूट-टूट कर गिरा हुआ, कण या बूंद के रूप में गिरा हुआ। ३ ढहा हुआ, गिरा हुआ. ४ टपका हुआ. ५ प्रहार हुवा हुआ। वार हुवा हुआ. ६ टूटा हुआ. ७ कट कर गिरा हुआ, कटा हुआ. ८ वीर गति को प्राप्त हुवा हुआ, रणक्षेत्र में काम आया हुआ. ९ मरा हुआ, मृत. १० वीर्य स्खलित हुवा हुआ. ११ चेचक के रोग से मुक्ति पाया हुआ. १२ दुर्बल हुवा हुआ, कृश हुवा हुआ. १३ कम हुवा हुआ. १४ मिटा हुआ. १५ निर्धन हुवा हुआ। (स्त्री०—झड़ियोड़ी)

झड़ी-सं०स्त्री० [सं० झटि] १ लगातार होने वाली वर्षा।
उ०—१ पण सांवरियै फेरू किरपा करी अर सांवण उतरतां-उतरतां सात दिन री झड़ी लागगी। करसां रा वळतोड़ा मन पाछा हरचा व्हैग्या।—रातवासौ
उ०—२ चारूं दिसा बीजळी चमकै, इंदर झड़ी लगाई। पीव ही पीव पुकार पपीहे, नेह लता सरसायी।—लो.गी.
उ०—३ आंसूं नैणां उळझ कर, मेह झड़ी मच जाय। पाती लिखतां पीव नैं, जळ छाती भर जाय।—र.रा.
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी।
२ छोटी-छोटी बूंदों की वर्षा।
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी।
३ बूंद या कण के रूप में बराबर गिरने की क्रिया, लगातार झड़ने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी।
४ बिना रुके लगातार बहुत सी बातें कहते जाने या चीजें रखते जाने की क्रिया।
क्रि०प्र०—बांधणी, लगाणी।
५ लगातार शस्त्रों का प्रहार करने या होने की क्रिया।
क्रि०प्र०—बंधणी, बांधणी, लगणी, लगाणी, लागणी।
६ लगातार कविता उच्चारण करने की क्रिया।
क्रि०प्र०—बांधणी, लगाणी।
मह०—झड़, झडाळ।
७ डिंगल का एक गीत छंद विशेष।

झड़ुथळ, झड़ूथळ-सं०पु०—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं और अन्त में गुरु होता है। द्वाले के अर्द्ध भाग से तुक की पुनरावृत्ति होती है तथा पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध बन जाता है। इसमें लाटानुप्रास अलंकार होता है और मतान्तर से इसे घड़उथल भी कहते हैं।
रू०भे०—झड़ुथळ, झड़ोथळ, झड़ूथळ, झडोथळ।

झड़ूलौ-सं०पु० [सं० चूडा, चूडाल] १ बच्चे के सिर के वे बाल जो उसके जन्म के पश्चात् मुंडाये नहीं गये हों. २ मुंडन संस्कार के पहले का बालक, वह बालक जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों।
उ०—जातण आवै थांरै कुळवह, गोद झड़ूला जी पूत। बाबा बजरंगी री बंगळी हद बण्यौ।—लो.गी.
रू०भे०—झंडूलौ, झंडूलौ, झड़लौ, झड़ूलौ, झड़ोलौ, झडलौ, झडूलौ, झडोलौ।
३ देखो 'झाड़ोलौ' (रू.भे.)

झड़ोथळ—देखो 'झड़ूथळ' (रू.भे)

झड़ोफड़-सं०पु०—१ परस्पर चिमटने की क्रिया या भाव, गुत्थागुत्थी।
उ०—हिरणी माथा ढळ गई, किरती गई उलत्थ। नारी नरां सनाहियां, पड़ै झड़ोफड़ हत्थ।—अज्ञात
२ देखो झड़ाझड़ (रू.भे.)

झड़ोलौ—देखो 'झड़ूलौ' (रू.भे.)

झझक—देखो 'झिझक' (रू.भे.)

झझकणौ, झझकवौ—देखो 'झिझकणौ, झिझकवौ' (रू.भे.)
उ०—झझक्यौ धड़ धूंणव खाय झकी। तद गोडीय भूम प्रझंक टकी।—पा.प्र.
झझकणहार, हारौ (हारी), झझकणियौ—वि०।
झझकवाड़णौ, झझकवाड़वौ, झझकवाणौ, झझकवावौ, झझकवावणौ, झझकवाववौ—प्रे०रू०।
झझकाड़णौ, झझकाड़वौ, झझकाणौ, झझकावौ, झझकावणौ, झझकाववौ—क्रि०सं०
झझकिओड़ौ, झझकियोड़ौ, झझक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झझकीजणौ, झझकीजवौ—भाव वा०।

झझकाड़णौ, झझकाड़वौ—देखो 'झिझकाणौ, झिझकावौ (रू.भे.)
झझकाड़णहार, हारौ (हारी), झझकाड़णियौ—वि०।
झझकाड़िओड़ौ, झझकाड़ियोड़ौ, झझकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झझकाड़ीजणौ, झझकाड़ीजवौ—कर्म वा०।

झझकाड़ियोड़ौ—देखो 'झिझकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० झझकाड़ियोड़ी)

झझकाणौ, झझकावौ—देखो 'झिझकाणौ, झिझकावौ' (रू.भे.)
झझकाणहार, हारौ (हारी), झझकाणियौ—वि०।
झझकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
झझकाईजणौ, झझकाईजवौ—कर्म वा०।

झझकायोड़ौ—देखो 'झिझकायोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० झझकायोड़ी)

झझकार—देखो 'झिझकार' (रू.भे.)

झझकारणौ, झझकारवौ—देखो 'झिझकाणौ 'झिझकावौ' (रू.भे.)
झझकारणहार, हारौ (हारी), झझकारणियौ—वि०।
झझकारिओड़ौ, झझकारियोड़ौ, झझकार्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झझकारीजणौ, झझकारीजवौ—कर्म वा०।
झझकारियोड़ौ—देखो झिझकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झझकारियोड़ी)

झझकाणो, झझकाबो—देखो 'झिझकाणो, झिझकाबो' (रू.भे.)
 झझकावणहार, हारो (हारी), झझकावणियो—वि०
 झझकायोड़ो, झझकावियोड़ो, झझकाव्योड़ो—भू०का०कृ०
 झझकाईजणो, झझकाईजबो—कर्म वा०
झझकायोड़ो—देखो 'झिझकायोड़ो' (रू.भे.)
 (स्त्री० झझकायोड़ी)
झझकियोड़ो—देखो 'झिझकियोड़ो' (रू.भे.)
 (स्त्री० झझकियोड़ी)
झझकणो, झझकबो—देखो 'झिझकणो, झिझकबो' (रू.भे.)
 उ०—झझकत नारंद देव झुकंत । हुवै दम तूक मुनेस हुमंत ।
 —सू.प्र.
 झझकणहार, हारो (हारी), झझकणियो—वि० ।
 झझकियोड़ो, झझकियोड़ो, झझक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
 झझकीजणो, झझकीजबो—कर्म वा० ।
झझकियोड़ो—देखो 'झिझकियोड़ो' (रू.भे.)
 (स्त्री० झझकियोड़ी)
झझणणो, झझणबो—देखो 'झिझकणो, झिझकबो' (रू.भे.)
 उ०—हूं थांनै हंस हंस पूछां बात हुंगांमी ढोला रे, भंवरियो छैलो म्हारै झझणिह्र गयो हो राज ।—लो.गी.
झझणियोड़ो—देखो 'झिझणियोड़ो' (रू.भे.)
 (स्त्री० झझणियोड़ी)
झझणण-सं०स्त्री० (अनु०) १ वीणा वाद्य की ध्वनि ।
 उ०—भणणुणि-भणणुणि झझणण वीण । निनिगुणि ज्यों गणि आउज जीण ।—बिहारीदास पवाड़ो
 २ झनझन शब्द, झनकार ।
झझारी-सं०पु०—आभूषणों पर खुदाई के कार्य के अन्तर्गत फव्वारे बनाने का एक औजार (स्वर्णकार)
झझियो, झझो-सं०पु०—१ वर्णमाला का 'झ' अक्षर ।
 उ०—झझो कहै हितहांस, भभो तन व्याध जगाव । —र.रू.
 अल्पा०—झझियो
झट-क्रि०वि० [सं० झटिति] १ उसी समय, तत्काल, तत्क्षण, फौरन, तुरन्त । उ०—हर अकरण करण मरण असरण हरी, तरण अतर भव जळधि निको । कट वट अघ दुघट विकट्ट थट अणघट, झट झट रट रट 'किसन' जिको । --र.ज.प्र.
 मुहा०—झट से—शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से ।
 यौ०—झटपट ।
 सं०स्त्री०—१ देखो 'झाट' (रू.भे.)
 उ०—१ असुरां पट 'देव' झलोत अड़ै । लोहड़ां झट 'सूरिजमाल' लड़ै । 'अखदेस' गुजाव लड़ै उरड़ै । जबनां 'सगतेस' छड़ाळ जड़ै ।
 —सू.प्र.
 उ०—२ घणा मछ पाटि पड़ै घमसांण । वरै विहुवे रंभ बैसि विमांण । पिता जिम राग झटां सत पाय । क्रिया सुगि वास मुजस्स कहाय ।—सू.प्र.
 २ वेग (अ.मा.)
 रू०भे०—झटत, झटति, झटती, झट्ट ।
झटक-सं०स्त्री०—झटका देने की क्रिया, झटकने की क्रिया या भाव ।
 उ०—हाथ झटक झिझिकार हंस, नाथ न लेऊं नांम जी । भव भांड उमै भरतार सूं, रांड भली श्रो रांमजी ।—ऊ.का.
 क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, तत्क्षण, तत्काल ।
 उ०—१ वहती सीत भाळिया बांदर, झटक उतार राळिया भांभर । कहियो एह संदेसो कीजो, दीजो रे प्रभु नूं सुद दीजो ।—र.रू.
 उ०—२ डूंगर-केरा वाहळा, ओछां-केरा नेह । वहता वहइ उतावळा, झटक दिखावइ छेह ।—ढो.मा.
झटकइ, झटकई--देखो 'झटकै' (रू.भे.) उ०—मूरख मरण न श्रंगमइ, उत्तरतइ नीर । पांणी पाखिइ माछिळी, झटकइ तजइ सरीर ।
 —मा.का.प्र.
झटकणो, झटकबो-क्रि०स०—१ झटका देकर अलग करना.
 २ गिराना । उ०—सटक भूखण झटक भूवा, दिया तन का डार । चालो सखी नंद के दरबार, जोवां सखी स्यांम राज कंवार ।
 —समांनबाई
 ३ किसी चीज को पकड़ कर इस प्रकार हिलाना कि उससे लगी या सटी अन्य कोई वस्तु छूट कर अलग हो जाय. ४ झटका देना. ५ चालाकी या जबरदस्ती से किसी चीज को लेना. ६ झाड़ना, बुहारना. ७ फटकारना, घुड़कना. ८ मंत्रादि से भूत प्रेत का प्रभाव हटाना ।
 क्रि०अ०—९ किसी रोग आदि के कारण कृश हो जाना, दुर्बल हो जाना. १० इधर-उधर हिलना, लुढ़कना, डांवाडोल होना ।
 उ०—झणके झालरियो झूमरिया झटकै । लूंमीं भींगां री खूंणी तळ लटकै ।—ऊ.का.
 झटकणहार, हारो (हारी), झटकणियो—वि० ।
 झटकवाड़णो, झटकवाड़बो, झटकवाणो, झटकवाबो, झटकावणो, झटकावबो, झटकाड़णो, झटकाड़बो, झटकाणो, झटकाबो, झटकावणो, झटकावबो—प्रे०रू० ।
 झटकिग्रोड़ो, झटकियोड़ो, झटकयोड़ो—भू०का०कृ० ।
 झटकीजणो, झटकीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।
 झाटकणो, झाटकबो—रू०भे० ।
झटकारणो, झटकारबो—देखो 'झटकणो, झटकबो' (रू.भे.)
 उ०—सगळा रूंख उपाड़ कर, धरती झटकारचा ।—केसोदास गाडण
झटकारियोड़ो—देखो 'झटकियोड़ो' (रू.भे.)
 (स्त्री०—झटकारियोड़ी)
झटकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झटका देकर अलग किया हुआ.
 २ गिराया हुआ. ३ झकझोर कर अलग किया हुआ. ४ झटका

दिया हुआ. ५ (किसी वस्तु को) चालाकी से लिया हुआ, ऐंठा हुआ. ६ बुहारा हुआ, झाड़ा हुआ. ७ फटकारा हुआ, घुड़का हुआ. ८ मंत्रादि से भूत प्रेत के प्रभाव को हटाया हुआ. ९ किसी रोग आदि के कारण कृश हुवा हुआ, दुर्बल हुवा हुआ. १० इधर-उधर हिला डुला हुआ, अस्थिर।
(स्त्री० झटकियोड़ी)।

झटकै-क्रि०वि० [सं० झटिति] १ तत्काल, तत्क्षण, शीघ्र (उ.र.)
उ०—१ आस्वालंव गवालंव आल्यो। झटकै गयो सीतळा झाल्यो।
—ऊ.का.

उ०—२ वना म्हैं थांनै फूटरमल यूं कह्यो। झटकै नैं सरवरियै मत जाय वना।—लो.गी.
रू०भे०—झटकड़, झटकई झटक्कै।

झटको-सं०पु०—१ झटकने की क्रिया, धक्का।
उ०—पण रंभा एक जोर री झटको दियो अर खट्ट करतां हाथ छुडाय दियो।—रातवासो
क्रि०प्र०—खाणी देणी, मारणी, लगणी, लगाणी।
२ प्रतिघात, आघात। उ०—इसी तरवार खुरसांण चढ़ाय तयार कर दीघी है सो रिण में दुसमणां ऊपरै झाटकतां हाथ रै नांम भर झटको हचको नहीं आवै।—वी.स.टी.
क्रि०प्र०—आणी, खाणी, पड़णी, होणी।
३ चोट, आघात। उ०—झाड़ंती झटकांह, घट वटकां करती घणां। 'मथुरी' भारथि मल्हपियो, कावी विचि कटकांह।—वचनिका
४ पशु वध का वह प्रकार जिसमें पशु को तलवार के एक ही प्रहार में काट डाला जाय। उ०—दिल्ली मेलिया नै कहायो छै, इण नै जभै मत करज्यो नै इण नै झटका सूं मारि नै हमारा चाकरां नै सीख देज्यो॥ देखां तुमारै सिपाई कैसे हैं।—वीरमदे सोनगरा री वात
क्रि०प्र०—करणी,
यौ०—झटका रो मांस।
५ तलवार का प्रहार। उ०—अेक दिन तोला रै तिलोकसी झटका री दीवी, तोला रो माथो कटीज दूर पड़ियो।—बां.दा.ख्यात
६ प्रहार। उ०—जिण पर अमरसिंघजी नूं रीस आयी सू काढ़ तरवार वाघेला सरदार नूं झटको वायो सू माथो खिर पड़ियो।
—द.दा.

क्रि०प्र०—करणी, झेलणी, मारणी, वा'णी, होणी।
७ वार, आघात, प्रहार। उ०—यूं खहि नै राव वीजो कांनी जोयो, तरै लाडक राव नूं पाछा सूं झटको वाह्यो।—नैणसी
क्रि०प्र०—करणी, झेलणी, वा'णी, होणी।
८ आपत्ति, शोक आदि का सदमा, धक्का।
क्रि०प्र०—पहुंचणी, लागणी।
९ कुश्ती का एक पेच. १० इधर-उधर झोंका खाने की क्रिया, चपेट देने की क्रिया। उ०—झाळ झाझी झटका करइ, जिम जांणे दव-दाह। हूं हरणी हवडां वळूं, सार करिसि न नाह।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—झटक्को।

झटक्कणी, झटक्कवी—देखो 'झटकणी, झटकवी' (रू.भे.)
झटक्कियोड़ी—देखो 'झटकियोड़ी' (रू.भे.) (स्त्री० झटक्कियोड़ी)
झटक्कै—देखो 'झटकै' (रू.भे.)
झटक्को—देखो 'झटको' (रू.भे.) उ०—वीर झटक्कै वज्जिया, वे रण-धीर दुवाह। अंग वटक्कै उड्डतां, सेन अटक्कै साह।—रा.रू.
झटझ्झट—देखो 'झट' (रू.भे.) उ०—कुसी रिखराज करै झणकार, घजांबंध पत्र भरै रत्र धार। झटझ्झट खेतल देत झलाय, पूठी पत्र लेत गटग्गट पाय।—मे.म.
झटत, झटति, झटत्ती—देखो 'झट' (रू.भे., ह.नां.)
झट-धार—देखो 'जट-धार' (रू.भे.) उ०—उरड़ भड़ सुभट थट 'मांन' सुत ऊपरां, खगां झट घाघरट रमै खेळा। उभै खट सुवर वट निकट देखे अछर, अगुट वट जोवै झटधार भेळा।
—रावत माहसिंह सारंगदेवोत कांनोड़ री गीत
झटपंख-सं०पु०—गरुड़ पक्षी।
झटपट-क्रि०वि०यौ०—तुरन्त ही, तत्काल, फौरन, उसी समय, तत्क्षण।
उ०—१ ऐ झटपट बांधी पागड़ी रुण-झुणियो लै, ऐ दौड़चा वागां जाय जाजो मरवो लै। लीली तोड़ी कांमड़ी रुण-झुणियो लै। सड़काई दोय नै चार जाजो मरवो लै।—लो.गी.
उ०—२ जिण हर सरजत नर जनम, सुजदी रसण समाथ। कर झटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ।—र.ज.प्र.
झटपटी-क्रि०वि०—अति शीघ्र, फौरन, जल्दी।
उ०—रटी सब सेस प्रेळाद नारद रिखां, ध्रु रटी मटी जम त्रास धाखा। जीवड़ा चटपटी राख रसणा जके, भाख झटपटी हर नांम भाखा।—जसजी आढ़ौ
सं०स्त्री०—शीघ्रता की क्रिया या भाव, शीघ्रता, जल्दी।
रू०भे०—झटपटो।
झटपटो-सं०पु०—१ ऐसा समय जब कुछ अंधेरा और कुछ उजाला हो, झुकमुख. २ देखो 'झटपटी' (रू.भे.)
उ०—लटपटा पेच सिर कंठ मोती लड़ां, खटपटा मिजाजी पांन खावै। पगां कंचन पहर दिखावै पटपटा, जुध वखत झटपटा भाग जावै।—उदैभांण वारहठ
झटसार-सं०स्त्री०यौ०—तलवार (डि.नां.मा.)
झटा-सं०स्त्री०—प्रहार, झपट।
झटाको-सं०पु०—१ दो प्राणियों की परस्पर होने वाली लड़ाई, तकरार।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
२ परस्पर की बहस।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
झटाछ-क्रि०वि० [सं० झटिति] शीघ्र, झटपट।

झ[illegible]—देखो 'झड़[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—१ [illegible] के टकराने का शब्द ।

उ०—[illegible] । [illegible] झड़ाक्ड़ लाग रही छै ।

—[illegible] सूर री वात

[illegible] 'झड़ाट' ।

झड़ाप[illegible]—[illegible], शीघ्र । उ०—नागड़ा उजड़ मेवासियां लटावत, [illegible] झड़ा [illegible] । रमै जग झड़ावत तो जहीं 'हमीरा', [illegible] दरा मांगै ।

—रावत हमीरसिंह चूंडावत (भदेसर) री गीत

झड़ारी-सं०पु०—प्रहार, चोट ।

झड़ित—देखो 'जड़ित' (रू.भे.)

उ०—[illegible] कोटि कोटि दम सरजु तीर । नग झटित भरत पट हेम [illegible] ।—सू.प्र.

झड़ीत-क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी ।

झड़ोझड़—देखो 'झड़ाझड़'

उ०—झड़ोझड़ [illegible] भुज [illegible] जठै, बीसहत हाल संग बीर [illegible] । [illegible] मुकटंद भड़ सीस आदोफरां, मिळै दळ सबळ करण सीस 'मामा' ।—मेघराज आढ़ौ

झट्ट—देखो १ 'झाट' (रू.भे.)

उ०—सामनी गजजळ सेवदंत, गांणी मुवांणि नइ लाजवंत । सोहिली भीमि बांता सुभट्ट, सुभार दियइ करिमाळ झट्ट ।—रा.ज.सी.

उ०—२ रिण आगै राजांन रै, जग वाहतौ विकट्ट । कवि 'किसनौ' [illegible] देखियां, झट पड़ियो जग झट्ट ।—रा.रू.

देखो २ 'झट' (रू.भे.)

झटाक, झटाक-क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण, तुरन्त, तत्काल ।

ज्यूं—झटाक देखां रो वो उठै आय ऊभो रह्यो जणै सगळा डर गया ।

झटाळौ-वि०—१ भयंकर । उ०—झटाळौ मंगळा झळां सरसी जका, [illegible] धुर पड़ा भसमी दळां धाड़ । ऊपरै दावी बुगल परा जाय ऊतर्यां, वहर सुनाळजो काळजो वाढ़ ।—प्रतापसिंघ ऊदावत री गीत

२ [illegible]ने वालौ ।

झटउलट—देखो 'झड़उलट' (रू.भे.)

झटमुगट—देखो 'झड़मुगट' (रू.भे.)

झटलपत, झटलुपत—देखो 'झड़लपत, झड़लुपत' (रू.भे.)

झटलौ—देखो 'झड़ूलौ' (रू.भे.)

झटूथळ, झटूथळ—देखो 'झड़ूथळ, झड़ूथळ' (रू.भे.)

झटूलौ—देखो 'झड़ूलौ' (रू.भे.)

झटोथळ—देखो 'झड़ोथळ' (रू.भे.)

झटोलौ—देखो 'झड़ोलौ' (रू.भे.)

झणंक—देखो 'झणक' (रू.भे.)

उ०—झणंक नूपुरान झीण, श्रोप तास एहड़ा । बदंत तोतलीस बांणि, वाणि दुम जेहड़ा ।—सू.प्र.

झणंकणौ, झणंकबौ—देखो 'झणकणौ, झणकबौ' (रू.भे.)

उ०—'कूंभा' हरै नड़ै राळ कीधा, मेतळवै नह तास मुणै । पवन झणंकै सब रस परसै, सबां सगहस नांम सुणै ।—उडणा प्रथीराज री गीत

झणंकियोड़ौ—देखो 'झणकियोड़ौ' (रू.भे.)

झणका, झणंकार-सं०स्त्री०—१ वीणा. २ देखो 'झंकार' (रू.भे)

उ०—मुख (रा) मंडळ जोति सोभा विमोह, सुधासागरं पूरणं चंद मोहं । फबै स्वासक (का) वासनां कंज फूलै, झणंकार मत्तंगणं भ्रंग भूलै ।—सगतीरांम प्रोहित री वात

झणंकौ, झण-सं०पु० (अनु०) १ वह शब्द जो धातु खण्ड के टकराने से उत्पन्न हो. २ झनझन की ध्वनि झंकार ।

३ वीणा का बोल । दों दों दों दप मप द्राग्डिडिक दमके म्रिदंग । झण रण रण भें भें भाभरि झमकित झंग ।—ध व.ग्रं.

अल्पा०—झणंको, झणको, झणक्को ।

झणउ—देखो 'उभणौ' (रू.भे)

उ०—बीजइ दिनि ते छांनउ रहिउ, कुमरि हलांणउ किणि नवि लहिउ । एक लाख नउ छइ तु (?उ) झणउ, ते मंडाविउ कुमरी-तणउ—ढो.मा.

झणक-सं०स्त्री० (अनु०) १ धातु आदि के परस्पर टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, झन झन का शब्द । ज्यूं—जुद भूमि में सस्त्रां री झणक उड रही ही ।

२ झंकार, मधुर ध्वनि । उ०—१ करधणियां री झणक सांभ नित नाच करंतां । थाकी कवळी बांह रतन-जुत चंवर ढुळंतां । नरतकियां नख पाय मेह री पहली बूंदां । लांबा भंवर कटाछ नांखती प्रीत विलूंदां ।—मेघ.

उ०—२ सह रांचै जन सादियां, मत बहरौ कर मांन । कीड़ी पग नेवर झणक, भणक सुणै भगवांन ।—र.ज.प्र.

उ०—३ रंग पायलड़ां रणक, मिळी झणक मंजीर । चंगा चसमां री चमक, सांवण भमक सरीर ।—अज्ञात

मुहा०—झणक होणी—पूर्ण स्वस्थ होना ।

३ भींगुर, भिल्ली आदि छोटे जानवरों की ध्वनि ।

रू०भे०—झणंक, झणक्क, झणणंक, झनंक झनक, झननंक ।

झणकण-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

झणकणौ, झणकबौ-क्रि०अ० (अनु०) १ झनकार का शब्द होना, ध्वनि निकलना । उ०—१ खणंकत धार झणकंत खाग, रणंकत गुंड दुवंड कराग । भिड़ै भुज 'चंप' हरा अणभंग, सग्रा निरलंग भुजां घड़ संग ।—ग.रू.

उ०—२ दिनड़ौ ढळतां देख, सोग में भालर झणकै । ग्रेवड़ रगतौ चरगाहे, टेढ़ी सी ठुळकै ।—सक्तिदांन कवियौ

२ भींगुर, भिल्लियों आदि छोटे जानवरों का बोलना, ध्वनि करना ।

उ०—मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, भिल्लीगन झणकसी, भमरा भणकसी ।—दरजी मयारांम री वात

झणकणहार, हारौ (हारी), झणकणियौ—वि० ।
झणकवाड़णौ, झणकवाड़वौ, झणकवाणौ, झणकवाबौ, झणकवावणौ, झणकवाववौ—प्रे०रू० ।
झणकाड़णौ, झणकाड़वौ, झणकाणौ, झणकाबौ, झणकावणौ, झणकाववौ—क्रि०स० ।
झणकिओड़ौ, झणकियोड़ौ, झणक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणकीजणौ, झणकीजवौ—भाव वा० ।
झणंकणौ, झणंकवौ, झणक्कणौ, झणक्कबौ—रू०भे० ।

झणकवात-सं०स्त्री०—घोड़े का एक रोग विशेष जिसमें वह अपने पैर को झटका देकर चलता है ।

झणकाड़णौ, झणकाड़वौ—देखो 'झंकारणौ, झंकारवौ' (रू.भे.)
झणकाड़णहार, हारौ (हारी), झणकाड़णियौ—वि० ।
झणकाड़िओड़ौ, झणकाड़ियोड़ौ, झणकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणकाड़ीजणौ. झणकाड़ीजवौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

झणकाड़ियोड़ौ—देखो 'झंकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणकाड़ियोड़ी)

झणकाणौ, झणकाबौ—देखो 'झंकारणौ, झंकारबौ' (रू.भे.)
उ०—हेरै हरियाळी भूतळ हरखाती । गहरी ऊंचै गळ हरियाळी गाती । घिन धण छकि जाती छाती लख छाती । जांझर झणकाती जाती मदमाती ।—ऊ.का.
झणकाणहार, हारौ (हारी), झणकाणियौ— वि० ।
झणकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणकाईजणौ, झणकाईजबौ—कर्म वा० ।

झणकायोड़ौ—देखो 'झंकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणकायोड़ी)

झणकार—देखो 'झंकार' (रू.भे.) उ०—१ सोरठ गढ़ सूं ऊतरी, पायल रै झणकार । धूजै गढ़ रा कांगरा. धूजै गढ़ गिरनार ।
—र.रा.
उ०—२ केसरि-चंदण चरचीजै छै । अगर ऊखेवीजै छै । पंचसबदा वाजि रहिया छै । झालरियां झणकार हुइ नै रहिया छै ।—रा.सा.सं.
उ०—३ नगारा संख आरती धूंप, धुंम्रे नै झांपै है झंणकार । टुळकिया श्रेवड़ धोरै ओट, सुणीजै किलकारी उण पार ।—सांझ

झणकारणौ, झणकारबौ—देखो 'झंकारणौ, झंकारबौ' (रू.भे.)
उ०—पावां रा वाजै बिछिया या पायलड़ी झणकारै ए, हूं घूमर लेती ख्याल में ।—लो.गी.
झणकारणहार, हारौ (हारी), झणकारणियौ—वि० ।
झणकारिओड़ौ, झणकारियोड़ौ, झणकारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणकारीजणौ, झणकारीजबौ—कर्म वा० ।

झणकारियोड़ौ—देखो 'झंकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणकारियोड़ी)

झणकारौ—देखो 'झंकार' (रू.भे.)

झणकावणौ, झणकावबौ—देखो 'झंकारणौ, झंकारबौ' (रू.भे.)
झणकावणहार, हारौ (हारी), झणकावणियौ—वि० ।
झणकाविओड़ौ, झणकावियोड़ौ, झणकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणकावीजणौ, झणकावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

झणकावियोड़ौ —देखो 'झंकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणकावियोड़ी)

झणकियोड़ौ-भू०का०कृ०—झनकार का शब्द हुवा हुआ, ध्वनि निकला हुआ. २ (झींगुर, झिल्लियों आदि छोटे जानवरों का) बोला हुआ, ध्वनि किया हुआ ।
(स्त्री० झणकियोड़ी)

झणकौ—देखो 'झणंकौ' (रू.भे.)

झणक्क—देखो 'झणक' (रू.भे.) उ०—कसणक्क झणक्क वड़क्क कड़ा । गिडवक्क थड़क्क दड़क्क पुड़ा ।—पा.प्र.

झणक्कणौ, झणक्कवौ-क्रि०स०—१ स्मरण करना, याद करना ।
उ०—चढ़ती कंठळि वीज चमक्कै । झड़ माचंते सुकवि झणक्कै । ऊनड़हरा इंद्र ऊवक्कै । गुणियण मोकळ सिंहड़ गहक्कै ।
—आसौ बारहठ
२ देखो 'झणकणौ, झणकवौ' (रू.भे.)
झणक्कणहार, हारौ (हारी), झणक्कणियौ—वि० ।
झणक्किओड़ौ, झणक्कियोड़ौ, झणक्कयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणक्कीजणौ, झणक्कीजबौ—भाव वा० ।

झणक्कियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ याद आया हुआ, स्मरण किया हुआ । २ देखो 'झणकियोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झणक्कियोड़ी ।

झणक्कौ—देखो 'झणंकौ' (रू.भे.)

झणझण-सं०स्त्री० (अनु०) झन झन का शब्द, झनझनाहट, झंकार ।
उ०—१ झणझण झणक रही छै पायल, मत मत बोल पियारा जी रा ।
—लो.गी.
रू०भे०—झणझ्झण, झणहण ।

झणझणौ, झणझणबौ—देखो 'झणकणौ, झणकवौ' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—झांझर पग झणझणै, त्यूं बिछियां रौ तेज । किंकण रणके कमर री, ससि वदनी री सेज ।—र. हमीर
झणझणणहार, हारौ (हारी) झणझणणियौ—वि० ।
झणझणाड़णौ, झणझणाड़बौ, झणझणाणौ, झणझणाबौ, झणझणावणौ, झणझणाववौ—क्रि०स० ।
झणझणिओड़ौ, झणझणियोड़ौ, झणझण्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणझणीजणौ, झणझणीजवौ—भाव वा० ।

झणझणाड़णौ, झणझणाड़वौ—देखो 'झंकारणौ, झंकारवौ' (रू.भे.)
झणझणाड़णहार, हारौ (हारी), झणझणाड़णियौ—वि० ।
झणझणाड़िओड़ौ, झणझणाड़ियोड़ौ, झणझणाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणझणाईजणौ, झणझणाईजबौ—कर्म वा० ।

झणझणाईयोड़ौ—देखो 'झंणणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणझणाईयोड़ी)
झणझणाट—देखो 'झणझणाहट' (रू.भे.)
झणझणणौ, झणझणबौ—देखो 'झणणणौ, झणणबौ' (रू.भे.)
झणझणणहार, हारौ (हारी), झणझणणियौ—वि० ।
झणझणियोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणझणाईजणौ, झणझणाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
झणझणियोड़ौ—देखो 'झणणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणझणियोड़ी)
झणझणावणौ, झणझणावबौ—देखो 'झणकारणौ, झंकारबौ' (रू.भे.)
झणझणावणहार, हारौ (हारी), झणझणावणियौ—वि० ।
झणझणावियोड़ौ, झणझणावियोड़ौ, झणझणाव्योड़ौ—भू०का०कृ०
झणझणावीजणौ, झणझणावीजबौ ।—भाव वा०, कर्म वा० ।
झणझणावियोड़ौ—देखो 'झंकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणझणावियोड़ी)
झणझणाहट-सं०स्त्री० (अनु०) १ झन झन शब्द होने की क्रिया या भाव, झंकार, झनझन ।
२ देखो 'झरणा'ट (रू.भे.)
रू०भे०—झणझणा'ट, झणणाहट ।
झणझणौ—१ देखो 'झणझण' (रू.भे.)
२ देखो 'झणझणाहट' (रू.भे.)
झणणझण—देखो 'झणझण' (रू.भे.)
उ०—झणणर रूप भुजां जुध भार । हणै खळ भूप भणै वळिहार । झणणाण भेटन भेटन राग, रिमेस्वर वीण झणझ्झण राग ।
—मे.म.
झणणंक—देखो 'झणक' (रू.भे.)
झणणकणौ, झणणकबौ—देखो 'झणकणौ, झणकबौ' (रू.भे.)
उ०—झणणकै गुरजांण राग धारां खणणंकै । रणणंकै रणराग झणण पाखर झणणंकै ।—वं.भा.
झणणंकणहार, हारौ (हारी), झणणंकणियौ—वि० ।
झणणंकियोड़ौ, झणणंकियोड़ौ, झणणंक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झणणंकीजणौ, झणणंकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
झणणंकियोड़ौ—देखो 'झणकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झणणंकियोड़ी)
झणण-सं०स्त्री० (अनु०) धातु आदि के परस्पर टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, झनझन शब्द, झंकार । उ०—आंण पाखर झणण झणणै नाखिया, गोळ गुज वड़छिया रचण राड़ा । कर मछर घाड़वी सिन्धु लिम वडछिया, छड़निया 'चूंड' रज भुजां धाड़ा ।
—रावत हमीरसिंह चूंडावत (भदेसर) रौ गीत
झणणा'ट, झणणाहट—देखो 'झणझणाहट' (रू.भे.)
उ०—१ झणणाट नाद नूपर झंकर, सुर वाजंत्र संतोसमौं । रंभ हूर रां हरिनी उरस, मदि अहमंद वाबीनमौं ।—सू.प्र.
उ०—२ रणणाहट पाखरां, नाद झणणाहट नेवर । पट जेवर पहराय, किया सिणगार कलेवर ।—मे.म.
उ०—३ घर अंबर झम घोम, घटा डंबर रज घुम्मट । हाक वीर है हींस, भूल नेवर झणणाहट ।—सू.प्र.
झणहण—देखो 'झणझण' (रू.भे.) उ०—देवतूं के मन भूलते डोलते हैं । अदंगूं के परन घौलकूं के टिकोर । सुरवीणूं के झणहण तंवरूं के घोर ।—सू.प्र.
झणाट, झणाहट, झण्णाट, झण्णाहट—देखो 'झरणा'ट' (रू.भे.)
झण्णाटौ—देखो 'झरणाट' (अल्पा., रू.भे.)
झनंक, झनक—देखो 'झणक' (रू.भे.)
झनकार—देखो 'झंकार' (रू.भे.)
झननंक—देखो 'झणक' (रू.भे.)
झप-सं०स्त्री०—१ (हवा अथवा किसी खराबी के कारण दीपक, लालटेन आदि की) लौ का इधर-उधर झौंका खाने की क्रिया ।
यौ०—झपझप, झपाझप, झपोझप ।
२ देखो 'झब' (रू.भे.)
यौ०—झपझप, झपाझप, झपोझप ।
झपक—१ देखो 'झब, झबक' (रू.भे.) उ०—डील खांघड़ौ दुलड़ झपक खांघड़ौ झुकावै । दोस खांघड़ौ दिवै रोध खांघड़ौ रुकावै ।—ऊ.का.
यौ०—झपक-झपक ।
२ देखो 'झपकी' (रू.भे.)
झपक-झपक—देखो 'झब-झब' ।
झपकणौ, झपकबौ-क्रि०अ०—१ निद्रित होना, नींद लेना, झपकी लेना, ऊंघना. २ पलकों का परस्पर मिलना, पलक गिरना. ३ शरमिंदा होना, झेंपना. ४ अचानक हमला करना, झपटना. ५ चौंकना. ६ डरना, सहम जाना ।
झपकाणौ, झपकावौ-क्रि०स०—पलकों को बार-बार बन्द करना, बार-बार पलकें गिराना ।
झपकायोड़ौ-भू०का०कृ०—बार बार पलकों को बन्द किया हुआ, पलकें गिराया हुआ ।
(स्त्री०—झपकायोड़ी)
झपकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ निद्रित हुवा हुआ, ऊँघा हुवा. २ पलकें गिराया हुआ, पलकें मिलाया हुआ. ३ शरमिंदा हुवा हुआ, झेंपा हुआ. ४ अचानक हमला किया हुआ, झपटा हुआ. ४ चौंका हुआ. ६ डरा हुआ, सहमा हुआ ।
(स्त्री० झपकियोड़ी)
झपकी-सं०स्त्री०—१ हलकी निद्रा, ऊँघ । उ०—रात रा सरणाटा में जिण वेळा सगळी दुनियां सुख री नींद में मीठी मीठी झपकियां लेवै उण वेळा इण मकांन में रोवण री आवाजां आवै ।—रातवासौ
क्रि०प्र०—आणी, लेणी ।
२ पलकों के परस्पर मिलने की क्रिया, आंख झपकने की क्रिया ।

३ लज्जा, शर्म, झेंप ।
४ देखो 'झपट' (रू.भे.)
रू०भे०—झपक, झबकी ।

झपकै–क्रि०वि०—शीघ्रता से, तेजी से ।
उ०—ग्रायो ग्रायो, मां पीवरिये रौ ग्रे काग, वो झपकै लेग्यौ मा भांडियौ जे । भागी दौड़ी मां कागलिये री ग्रे लार, कांटौ लाग्यौ मां कैर को जे ।—लो.गी.

झपझप—देखो 'झब-झब' (रू.भे.)

झपट–सं०स्त्री०—१ झपटने की क्रिया या भाव, चपेट ।
मुहा०—झपट में ग्राणौ—वार में ग्रा जाना, ग्रापत्ति में फँसना, किसी के चक्कर में ग्राना ।
२ ग्राक्रमण करने की क्रिया, हमला करने की क्रिया ।
उ०— रोस उपट्टां रौंझटां, वही थटां वथारे । कोड़ि ग्रसुर झपटां करै, ग्रंगद एकारे ।—सू.प्र.
३ हलकी चोट, प्रहार ।
मुहा०—झपट लागणी—सम्पर्क में ग्राना, किसी की नीति का ग्रनुसरण करना ।
४ खरोंच. ५ छीनने की क्रिया या भाव, ६ टक्कर, ग्राघात, धक्का. ७ चँवर का झोंका या संचालन । उ०—चढ़ि एण विध चक्रवत्ति, तदि वाजियोस तखत्ति । चौसर चमर सचार, वणि झपट वारंवार ।—सू.प्र.
८ परस्पर की लडाई, मुठभेड़, झगड़ा-विवाद, तकरार. १० हवा डालने की क्रिया या भाव. ११ तेज चलने या भागने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—देणी ।
रू०भे०—झड़प, झपकी, झपटी, झपट्ट, झपेट ।

झपटणौ, झपटबौ–क्रि०ग्र०स०—१ झौंके के साथ किसी ग्रोर वेग से बढ़ना । उ०—झपटी नहीं ग्रांख झबकाई, लेगी नह लपकाई नै । लख लांणंत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह ग्राई नै ।—ऊ.का.
२ फाड़ने या ग्राक्रमण करने के लिये टूट पड़ना, हमला करना ।
उ०—छुरा वाळी मूरत म्हारी कांनी झपटी पर म्हैं तौ पेली वार में ईज उणरौ छुरौ हाथ सू नखाय दियौ ग्रर नीचै ई पटक दियौ ।
—रातवासौ
२ द्रुतगति से भागना. ४ उलझ पड़ना, लड़ना, झगड़ना.
५ पकड़ना । उ०—ग्रोर वां रांणियां री वलिहारी भ्रूण (गरभ) में हीज वां बाळकां नै कांई तरै सिखावण देवै है सो दाई रा हाथ री नाळौ काटण री छुरी नै साव (जनमतौ) हीज बाळक झपटै ।
—वी.स.टी.
६ छीनना. ७ बीच में ही पकड़ लेना, गिरने से पहले ही पकड़ लेना. ८ हवा करना. ९ ग्राघात पहुँचाना, टक्कर मारना । १० द्रुतगति से भगाना, दौड़ाना । उ०—लख ग्रहणां वप लपटजौ, राज ग्रपटजो रीज । दारू ग्रासौ दपटजौ, तुरां झपटजौ तीज ।
—दरज़ी मयारांम री वात
११ काटना, मारना, संहार करना. १२ प्रहार करना, चोट लगाना ।
रू०भे०—झड़पणौ, झड़पबौ ।
झपटणहार, हारौ (हारी), झपटणियौ—वि० ।
झपटवाड़णौ, झपटवाड़बौ, झपटवाणौ, झपटवाबौ, झपटवावणौ, झपटवावबौ, झपटाड़णौ, झपटाड़बौ, झपटाणौ, झपटाबौ, झपटावणौ, झपटावबौ—प्रे०रू० ।
झपटिग्रोड़ौ, झपटियोड़ौ, झपट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झपटीजणौ, झपटीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

झपटाड़णौ, झपटाड़बौ—देखो 'झपटाणौ, झपटावौ' (रू.भे.)
झपटाड़णहार, हारौ (हारी), झपटाड़णियौ—वि० ।
झपटाड़िग्रोड़ौ, झपटाड़ियोड़ौ, झपटाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झपटाड़ीजणौ, झपटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

झपटाड़ियोड़ौ—देखो 'झपटायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झपटाड़ियोड़ी)

झपटाणौ, झपटाबौ–क्रि०स०—१ द्रुतगति से भगाना, दौड़ाना ('झपटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) २ झौंके के साथ किसी ग्रोर वेग से बढ़ाना, बढ़ने के लिए प्रवृत्त करना. ३ हमला करवाना, ग्राक्रमण करवाना. ४ परस्पर झगड़ा करवाना. ५ काबू में करवाना, पकड़वाना. ६ छिनवाना. ७ गिरने से पहले ही पकड़वा देना, झपटने में समर्थ करवाना. ८ हवा करवाना. ९ टक्कर लगवाना. १० चोट लगवाना, प्रहार करवाना. ११ संहार करवाना, मरवाना. १२ द्रुत गति से भगवाना ।
झपटाणहार, हारौ (हारी), झपटाणियौ—वि० ।
झपटायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झपटाईजणौ, झपटाईजबौ—कर्म वा० ।
झपटाड़णौ, झपटाड़बौ, झपटावणौ, झपटावबौ—रू०भे० ।

झपटायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ द्रुत गति से भगाया हुग्रा, दौड़ाया हुग्रा. २ किसी ग्रोर वेग से बढ़ने के लिये प्रवृत्त किया हुग्रा. ३ हमला करवाया हुग्रा, ग्राक्रमण करवाया हुग्रा. ४ परस्पर झगड़ा करवाया हुग्रा. ५ पकड़वाया हुग्रा, काबू में करवाया हुग्रा. ६ छिनवाया हुग्रा. ७ बीच में से ही झपटने में समर्थ किया हुग्रा. ८ हवा करवाया हुग्रा. ९ टक्कर लगवाया हुग्रा. १० चोट लगवाया हुग्रा, प्रहार कराया हुग्रा. ११ संहार करवाया हुग्रा, मरवाया हुग्रा. १२ द्रुत गति से भगवाया हुग्रा ।
(स्त्री० झपटायोड़ी)

झपटावणौ, झपटावबौ—देखो 'झपटाणौ, झपटाबौ' (रू.भे.)
झपटावणहार, हारौ (हारी), झपटावणियौ—वि० ।

झपाविश्रोड़ौ, झपावियोड़ौ, झपाव्योड़ौ -भू०का०कृ० ।
झपावीजणौ, झपावीजवौ—कर्म वा० ।
झपावियोड़ौ—देखो 'झंपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री झपावियोड़ी)
झपियोड़ौ—देखो 'झंपियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झपियोड़ी)
झपीड़-सं०पु०—१ प्रहार, चोट ।
२ झपट, चपेट ।
झपेट—देखो 'झपट' (रू.भे)
उ०—१ सूंडनाग सांमळा, झोक आंमळा झपेटां । दांतूसळ ऊजळां, लगी पीतळां लपेटां ।—सू.प्र.
उ०—२ दुहूँ ओर लखत प्रछन्न दूत, दुव दळ नकीब आरव अभूत । झंडन झपेट मच्चत दुओर, सिंधुव अलाप दुवदिस सजोर ।—वं.भा.
उ०—३ झपेट देत झंड के ब्रह्मंड व्यापते नहीं। छलंग देत छोनि है मलंग मांनते नहीं ।—ऊ.का.
झपेटणौ, झपेटवौ—देखो 'झपटणौ, झपटवौ' (रू.भे.)
उ०—'माधावत' 'रांमसि' लोह मराट, झपेटत मीर थटां खग झाट । रामोभ्रम 'मांडण' दारुण सूर, 'हठी' खळ मीर वरावत हूर ।—सू.प्र.
झपेटणहार, हारौ (हारी), झपेटणियौ—वि० ।
झपेटिश्रोड़ौ, झपेटियोड़ौ, झपेटचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झपेटीजणौ, झपेटीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
झपेटियोड़ौ—देखो 'झपटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झपेटियोड़ी) ।
झपेटौ—देखो 'झपटौ' (रू.भे.)
झपोझप—देखो 'झबझब' (रू.भे.)
झप्पांन—देखो 'झपांन' (रू.भे.)
झफसमुद्र-सं०पु० [सं० झंपा+समुद्र] हनुमान (नां.मा.)
झब, झबक-सं०पु०—१ समय का वह भाग जो एक माना जाय, मरतबा, दफा, बार। उ०—ढोलउ हल्लांणउ करइ, धण हल्लिवा न देह। झबझब झूंबइ पागड़इ, डबडब नयण भरेह ।—ढो.मा.
मुहा०—झबझब, झबक-झबक, पुन: पुन:, बार बार ।
२ रह रह कर प्रकाश के घटने-बढ़ने की क्रिया, ज्योति की अस्थिरता, झिलमिलाहट । उ०—घिर-घिर घूमर रमती, रुकती थमती, बीज चमकती, झब-झब पळका करती, भंवती आवै विरखा वींनणी ।
—चेत मांनखा
यौ०—झब-झब, झबक-झबक ।
क्रि०वि०—शीघ्र, तुरन्त । ज्यं—वा झब देती री आई नै टावर नै कड़ियां लियौ । उ०—वडी तौ आया जी ल्होड़ी के प्यारा पांवणा, आडी तौ मेलां, जी वडी जी, थांनै आडणी, झबक परोसांगा थाळ ।
—लो.गी.
रू०भे०—झप, झपक, झवक, झवर, झम ।
झबकइ-क्रि०वि०—शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से ।
उ०—काति करि बीजइ घरि, अेक करि साहइ वेणि । पूजारु पासि हूतु, झबकइ झालिउ तेणि ।—मा.कां.प्र.
झबक-झबक—देखो 'झब-झब' (रू.भे.)
झबकणौ, झबकवौ-क्रि०अ०—१ कौंधना, चमकना ।
उ०—वीजळियां झबकै 'जसा', काळी कांठळि मांहि । आव सनेही साहिबा, जोवन रा दिन जाहि ।—जसराज
२ दृष्टिगोचर होना, झलकना । उ०—काया झबकइ कनक जिम, सुंदर केहे सुख्ख । तेह सुरंगा किम हुवइ, जिण वेहा वहु दख्ख ।
—ढो.मा.
३ झिलमिलाना (दीपक का) उ०—अेक कहइ, अे माधवु, अछइ अरीसा-मांहि । झबकइ झळ झाझी करइ, सकउं न साही बांहि ।
—मा.कां.प्र.
४ देखो 'झपकणौ' झपकवौ' (रू.भे.)
झबकणहार, हारौ (हारी), झबकणियौ—वि० ।
झबकवाड़णौ, झबकवाड़वौ, झबकवाणौ, झबकवावौ, झबकवावणौ, झबकवाववौ, झबकाड़णौ, झबकाड़वौ, झबकाणौ, झबकावौ, झबकावणौ, झबकाववौ—प्रे०रू० ।
झबकिश्रोड़ौ, झबकियोड़ौ, झबक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झबकीजणौ, झबकीजवौ—भाव वा० ।
झबक्कणौ झबक्कवौ, झबझबणौ, झबझबवौ, झबूकणौ, झबूकवौ, झावूकणौ, झावूकवौ—(रू.भे)
झबकाड़णौ, झबकाड़वौ—देखो 'झबकाणौ, झबकावौ' (रू.भे.)
झबकाड़णहार, हारौ (हारी), झबकाड़णियौ—वि० ।
झबकाड़िश्रोड़ौ, झबकाड़ियोड़ौ झबकाड़चोड़ौ— भू०का०कृ ।
झबकाड़ीजणौ, झबकाड़ीजवौ—कर्म वा० ।
झबकाड़ियोड़ौ—देखो 'झबकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झबकाड़ियोड़ी)
झबकाणौ, झबकावौ-क्रि०स०—१ दमकाना, चमकाना. २ दृष्टिगोचर करना, झलकाना. ३ देखो 'झपकाणौ, झपकावौ' (रू.भे.)
उ०—झपटी नहीं आंख झबकाई, लेगी नह लपकाई नैं। लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नैं ।—ऊ.का.
झबकाणहार, हारौ (हारी), झबकाणियौ—वि० ।
झबकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झबकाईजणौ, झबकाईजवौ—कर्म वा० ।
झबकाड़णौ, झबकाड़वौ, झबकावणौ, झबकाववौ—रू.भे.
झबकायोड़ौ—देखो 'झपकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झबकायोड़ी)
झबकावणौ, झबकाववौ—देखो 'झबकाणौ, झबकावौ' (रू.भे.)
झबकावणहार, हारौ (हारी), झबकावणियौ—वि० ।
झबकाविश्रोड़ौ, झबकावियोड़ौ, झबकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झबक्कीजणौ, झबक्कीजबौ—भाव वा०।

झबक्कियोड़ौ—देखो 'झबकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झबक्कियोड़ी)

झबगणौ—देखो 'झबकणौ' (रू.भे.) उ०—कंवर मना नूं कही दगानूं जो [illegible] नगारा [illegible] कर फेट पड़ती [illegible] झबगारा सूं जांण लीया।—र. हमीर

झबगियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, दमका हुआ. २ दृष्टिगोचर हुआ हुआ, झलका हुआ. ३ झिलमिलाया हुआ.

४ देखो 'झबकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झबगियोड़ी)

झबगौ—देखो 'झबकौ' (रू.भे.)

[illegible]—सं०पु०—एक साथ ही किसी वस्तु का दृष्टिगोचर हो कर ओझल हो जाने की क्रिया या भाव, अकस्मात या क्षण मात्र के लिये दिखाई देकर ओझल हो जाने की क्रिया या भाव, झांकी।

उ०—१ [illegible] सवगांणा मीर, गींगणि थका विछूटइ तीर। [illegible] मांहो मरहट्ट, बीज तणी परि झबका करइ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ [illegible] रे, उपद्रव लगा है अनेक। बीजळ झबका नी परे रे, जळ-परपोटो तेम।—जयवांणी

उ०—३ तद भरमल ध्यांन कर दीठो जे झबको किणरो छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ चमक-दमक. ३ प्रकाश, झलक।

रू०भे०—[illegible], झबरकौ, झबळकौ, झबूकु, झबूकौ।

अल्पा०—झबुकड़ौ।

[illegible], [illegible]—देखो 'झबकणौ, झबकबौ' (रू.भे.)

उ०—आवौ पावस आज री, गयण झबकै बीज। विरही मन मांहे 'जसा', तिण तिण आवै रीज।—जसराज

[illegible]—देखो 'झबकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० [illegible])

झब-झब—सं०स्त्री०यौ०—१ किसी अस्थिर या हिलती-डुलती वस्तु के बार-बार दृष्टिगोचर होने की क्रिया या भाव. २ रह-रह कर निकलने वाली आभा, चमक, दमक।

क्रि०वि०—रह-रह कर निकलने वाली ज्योति के साथ।

उ०—झब-झब तेजइ झबकता उग जिम रवि जळधर पूठि।—स.कु.

रू०भे०—[illegible], [illegible], झपाझप, झपोझप, झबक-झबक, [illegible], झबाझब, झमझम, झमाझम।

झबझबणौ, झबझबबौ—देखो 'झबकणौ, झबकबौ' (रू.भे.)

उ०—१ सांवणां हाथ [illegible], वहलीक जांण रोकी वनास। [illegible], तारका झबझबै इणह तेम।—वि.सं.

उ०—२ [illegible] तरह वाज तोपां धड़ड़, केसरां सोक झड़ किलम [illegible]। [illegible] झोकड़ पड़ां, अणी छड़ झबझबै [illegible]।—[illegible]

झबझबणहार, हारौ (हारी), झबझबणियौ—वि०।

झबझबियोड़ौ, झबझबियोड़ौ, झबझब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झबझबीजणौ, झबझबीजबौ—भाव वा०।

झबझबाहट—सं०स्त्री०—१ झिलमिलाहट, टिमटिमाहट.

२ चमक-दमक।

झबझबियोड़ौ—देखो 'झबकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झबझबियोड़ी)

झबर—देखो 'झब' (रू.भे.) उ०—ऊंची-ऊंची मेड़ी, झरोखा जी च्यार, झबर-झबर दिवलौ जगै, जी राज।—लो.गी.

यौ०—झबर-झबर।

झबरक—सं०स्त्री०—१ झिलमिलाहट, टिमटिमाहट. २ चमक।

वि०—चमकता हुआ, प्रकाशित। उ०—कसतूरी मरदन कियौ, झबरक दीवलै गहरी वाट, सा धन पांन संवारिया, जाई बैठी घन ग्रीव की खाट।—बी.दे.

रू०भे०—झबरख।

झबरकणौ, झबरकबौ—क्रि०अ०—१ इधर-उधर हिलना, झूमना।

उ०—ढूंढ़त ढूंढ़त नगरी जी ढूंढ़ी कोई, घर तौ बतावौ लाडलै रै बाप री। ऊंची सी मेड़ी, लाल किंवाड़ी, केळ झबरकै लाडलै रे बारणै।
—लो.गी.

२ देखो 'झबकणौ, झबकबौ' (रू.भे.)

झबरकणहार, हारौ (हारी), झबरकणियौ—वि०।

झबरकिओड़ौ, झबरकियोड़ौ, झबरक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झबरकीजणौ, झबरकीजबौ—भाव वा०।

झबरखणौ, झबरखबौ, झबरणौ झबरबौ, झबूकणौ, झबूकबौ—
—रू०भे०।

झबरकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हिला-डुला हुआ, झूमा हुआ.

२ देखो 'झबकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झबकियोड़ी)

झबरकौ—सं०पु०—१ प्रहार करने पर आर-पार निकलने वाली शस्त्र की नोंक।

क्रि०प्र०—निकळणौ।

२ देखो 'झबकौ' (रू.भे.)

रू०भे०—झबरखौ।

झबरख—देखो 'झबरक' (रू.भे.)

उ०—पहली तौ पेड़ी जी ढमादे रांणी पग धरयौ, झबरख दिवलौ हाथ।—लो.गी.

झबरखणौ, झबरखबौ—देखो 'झबरकणौ, झबरकबौ' (रू.भे.)

उ०—१ यौ ही छै ओठी, राजाजी रौ महल, केळ झबरखै रे ओठीड़ा, राजाजी रे बारणै।—लो.गी.

उ०—२ कोई किलंगी तौ झबरखै राज रै सीस पर, ओ मोरी सइयां।
—लो.गी.

झवरखणहार, हारौ (हारी), झवरखणियौ—वि० ।
झवरखिग्रोड़ौ, झवरखियोड़ौ, झवरख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झवरखीजणौ, झवरखीजवौ—भाव वा० ।
झवरखियोड़ौ—देखो 'झवरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री०—झवरखियोड़ी)
झवरखौ—देखो 'झवरकौ' (रू.भे.)
झवर-झवर—देखो 'झव-झव' (रू.भे.)
झवरणौ, झवरवौ—देखो 'झवरकणौ, झवरकवौ' (रू.भे.)
झवरियोड़ौ—देखो 'झवरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री०—झवरिगोड़ी)
झवळक—सं०स्त्री०—१ चमकने की क्रिया या भाव. २ जल आदि के विलोड़ित होने की क्रिया या विलोड़ित होने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि. ३ हिलने-डुलने या झिलमिलाने की क्रिया या भाव ।
यौ०—झवळक-झवळक ।
रू०भे०—झवळको, झिवळ, झिवळक ।
झवळकणौ, झवळकवौ—क्रि०अ०—१ देदीप्यमान होना, चमकना ।
उ०—तीजे के रांम सा' मांगूं श्रो, पीर सा' मांगूं श्रो पूतड़लां री जोड़, झवळक आवै कुळ-वहुवां ।—लो.गी.
२ जल आदि का विलोड़ित होना अथवा विलोड़ित होकर ध्वनि करना. ३ सीमा से वाहर होना, छलकना, उछलना. ४ हिलना-डुलना, ५ झिलमिलाना ।
क्रि०स०—६ देखो 'झवोळणौ, झवोळवौ' । ज्यूं—इतरा कपड़ा तौ इण छोटीसीक वाल्टी में नहीं झवळकीजै ।
झवळकणहार, हारौ (हारी) झवळकणियौ—वि० ।
झवळकवाड़णौ, झवळकवाड़वौ, झवळकवाणौ, झवळकवावौ, झवळकवावणौ, झवळकवाववौ, झवळकाड़णौ, झवळकाड़वौ, झवळकाणौ, झवळकावौ, झवळकावणौ, झवळकाववौ—प्रे०रू० ।
झवळकिग्रोड़ौ, झवळकियोड़ौ, झवळक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झवळकीजणौ, झवळकीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
झिवळकणौ, झिवळकवौ, झिवळणौ, झिवळवौ—रू०भे० ।
झवळकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ देदीप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ. २ विलोड़ित हुवा हुआ (जल आदि का) ३ (विलोड़ित होकर) ध्वनि किया हुआ. ४ छलका हुआ. ५ हिला-डुला हुआ. ६ झिलमिलाया हुआ. ७ धोया हुआ ।
(स्त्री० झवळकियोड़ी)
झवळकौ—सं०पु०—१ चमक, दमक, प्रकाश । उ०—वै भळको सिव तिलक, झवळको मोर को । काजळ को कुण घाट क पळको कोर को ।—महादांन महडू
२ स्नान करने अथवा डुवकी लगाने की क्रिया या भाव (अल्पा.)
क्रि०प्र०—लैणौ ।
३ देखो 'झवकौ' (रू.भे.) ४ देखो 'झवळक' (रू.भे.)
रू०भे०—झवोळौ, झवोळौ ।
झवाक—क्रि०वि०—शीघ्र, तुरन्त ।
झवाकौ—सं०पु०—१ आवाज, ध्वनि. २ प्रकाश, चमक ।
झवाझव—देखो 'झवझव (रू.भे.)'
झवा-झारी—सं०स्त्री०—एक प्रकार का दीपक ।
उ०—आंमी जी सांमी ढोलिया ढळावौ ढोला जेरे वीच राखां झवाझारी रे । प्रीतम प्यारी रा साहिवा सेजां नै पधारौ रे ।—लो.गी.
झवूकड़ौ—देखो 'झवकौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वीज न देख चहड्डियां, प्री परदेस गयांह । आपण लीय झवूकड़ा, गळि लागी सहरांह ।—ढो.मा.
झवू—सं०पु०—ऊँट के चमड़े से बना हुआ एक प्रकार का वर्तन. २ ताश के खेल में काले पान का इक्का ।
झवूकड़ौ—देखो 'झवकौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ जउ तूं साहिव नावियउ, सांवण पहली तीज । वीजळ-तणइ झवूकड़इ, मूंध मरेसी खीज ।—ढो.मा. उ०—२ ऊंचउ मंदिर अति घणउ, आवि सुहावा कंत । वीजळि लियइ झवूकड़ा, सिहरां गळि लागंत ।—ढो.मा.
झवूकणौ, झवूकवौ—क्रि०अ०—१ अटकना, लटकना ।
उ०—१ कितरा पंछीड़ा मग मांय, वटाऊ वण रह्या भरतार । झवूकै अधविच भौंर कंवळ, अधूरा कांमणियां सिणगार ।—सांझ
२ देखो 'झवकणौ, झवकवौ' (रू.भे.) उ०—१ वीरा रस रत्त वळब्वळ वीर, भयातुर पत्त चळद्दळ भीर । खळां दळ कंस विघूसण खीज, वीजूजळ जांण झवूकत वीज ।—मे.म.
उ०—२ दिवलौ झवूकण लागौ राळी रुपया जी, थाळी ठवूकण लागी राळी रुपया जी ।—लो.गी. उ०—३ सिरदार वनाजी सेवरियै झवूकै श्रो आवा वीजळी । उमराव वनाजी सोनौ थे लाइजो हे लंका गढ़ देस रौ ।—लो.गी.
३ देखो 'झवरकणौ, झवरकवौ' (रू.भे.)
उ०—सूरज सांमी कलाळी री पोळ श्रो कोडीला, कोई केळ झवूकै कलाळी रै वारणै हो राज ।—लो.गी.
झवूकणहार, हारौ (हारी), झवूकणियौ—वि० ।
झवूकवाड़णौ, झवूकवाड़वौ, झवूकवाणौ, झवूकवावौ, झवूकवावणौ, झवूकवाववौ—प्रे०रू० ।
झवूकाड़णौ, झवूकाड़वौ, झवूकाणौ, झवूकावौ, झवूकावणौ, झवूकाववौ—क्रि०स० ।
झवूकिग्रोड़ौ, झवूकियोड़ौ, झवूक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झवूकीजणौ, झवूकीजवौ—भाव वा० ।
झवूकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ अटका हुआ, लटका हुआ. २ देखो 'झवकियोड़ौ' (रू.भे.) ३ देखो 'झवरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झवूकियोड़ी)
झवूकु, झवूकौ—देखो 'झवकौ' (रू.भे.) उ०—संसार असार, दुख नु भंडार, जिसिउं पीप(ळ) नूं पांन, जिस्यु गजेंद्र नु कांन, जिस्यु वीज नु

[illegible] [illegible] पाणी [illegible] [illegible], जिणु बड़बोला री जीभ नु [illegible], जिण [illegible] नु [illegible], जिणु [illegible] नु [illegible], जिणि मनार [illegible] [illegible] ।—[illegible].

झबोळ—सं०पु० —[illegible] या [illegible] करने समय शरीर को [illegible] से [illegible] [illegible] । उ०—[illegible] झबोळ मार स्नान कियो नू सरीर [illegible] नू [illegible] री [illegible] नीनर में [illegible] री जोत मिळ गई ।—द.दा.

झबोळणो, झबोळबो-क्रि०स०—किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ में [illegible], तरबतर करना । उ०—१ तेहना पंजार [illegible], [illegible] री [illegible], [illegible] [illegible] माहि झबोळी ।—व.स.

उ०—२ पाणी [illegible] री माहि झबोळी, [illegible] मारी फळगइ जाइ, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पाइ ।—व.स.

झबोळणहार, हारो (हारी), झबोळणियो—वि० ।

झबोळवाड़णो, झबोळवाड़बो, झबोळवाणो, झबोळवाबो, झबोळवावणो झबोळवावबो, झबोळाड़णो, झबोळाड़बो, झबोळाणो, झबोळाबो, झबोळावणो, झबोळावबो—प्रे०रू० ।

झबोळियोड़ो, झबोळियोड़ो, झबोळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झबोळीजणो, झबोळीजबो—कर्म वा० ।

झबळकणो, झबळकबो, झिबळकणो, झिबळकबो, झिबळणो, झिबळबो—रू०भे० ।

झबोळियोड़ो-भू०का०कृ०—किसी तरल पदार्थ में झकझोरा हुआ, तरबतर किया हुआ ।

(स्त्री० झबोळियोड़ी)

झबोळो-सं०पु०—१ बाधा, विघ्न ।

क्रि०प्र०—पड़णो ।

२ कोई बड़ा काम ।

३ देखो 'झबळको' (रू.भे.)

रू०भे०—झबोळ, झबोळो, झमोळो ।

झबो-सं०पु०—१ स्त्रियों के वक्षस्थल को ढकने का एक वस्त्र ।

२ हल द्वारा अनाज बोने के उपकरण में बांस के पोले डंडे पर लगा हुआ भाग जो कीप या चिलम के आकार का होता है. ३ बच्चों के पहनने का एक वस्त्र. ४ चमक, प्रकाश ।

५ देखो 'झाबो' (रू.भे.)

रू०भे०—झब्बो ।

झबोळो—देखो 'झबोळो' (रू.भे.)

झब्ब झब्बे-

उ०—देवी थम्मरे डुंगरे रम्म थम्मे, देवी धूंबड़े लींबड़े घम्म घम्मे । देवी झंगरे नाचरे झब झब्बे, देवी अंबरे अंतरीखे अलंबे ।—देवि.

झब्बो-सं०पु०—१ गुच्छा । उ०—सीस छ्यांनी छांट, झूमखो मोत्यां झब्बो । पहाक घमकै मेघ, घड़ी दो फोगड़ फतवो ।—दमदेव

२ देखो 'झबो' (रू.भे.)

झंक—देखो 'झमक' (रू.भे.)

उ०—दमंक विच्छुवांन की दमंक ना दरीन की । झमंक जेहरांन की नमंक नां नुरीन की ।—ऊ.का.

झमंकणो, झमंकबो—देखो 'झमकणो, झमकबो' (रू.भे.)

उ०—घमकै जड़ी पाखरां थाट घोड़ां, झमंकै झड़ी पाखरां आगि झोड़ां ।—वं.भा.

झमंकणहार, हारो (हारी), झमंकणियो—वि० ।

झमंकियोड़ो, झमंकियोड़ो, झमंक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झमकीजणो, झमंकीजबो—भाव वा० ।

झमंकियोड़ो—देखो 'झमकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झमंकियोड़ी)

झम-सं०स्त्री० (अनु०) १ घुंघरू आदि से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

यौ०—झमझम ।

२ देखो 'झब' (रू.भे.)

उ०—झम झम झूमां पागड़ै, इतनी महर म्हांसू कीजो रे आलीजा विछोहो मत दीजो ।—लो.गी.

झमक-सं०स्त्री० (अनु०) १ ध्वनि विशेष, झनकार ।

उ०—१ नागण आठी मरुण नख, कनअक पात कपोळ । ठणणण नूपुर पग ठमक, रमक झमक रमझोळ ।—पा.प्र.

उ०—२ ताळू की झमक झंझरू के झणकार । कांम के घुघर जैसे जंत्र के तार—सू.प्र.

यौ०—झमक-झमक ।

२ चमक, प्रकाश । उ०—अणवट घड़ियो मेड़तै, जड़ियो जैसळमेर । पै'र सवागण नीसरी, झमक पड़ी अजमेर ।—लो.गी.

३ नखरे की चाल, ठसक । उ०—रंग पायलड़ी रणक, मिळी झणक मंजीर । चंगा चसमां री चमक, सांवण झमक सरीर ।

—र.रा.

४ यमकालंकार । उ०—सोळह मत्ता वरण दस, पद पद झमक गुरंत । 'किसन' सुजस पढ़ स्री किसन, अड़ियल गीत अखंत ।

—र.ज.प्र.

५ मजाक, दिल्लगी ।

रू०भे०—झमंक ।

झमक-झमक-सं०स्त्री०यौ० (अनु०) ध्वनि विशेष, छमक-छमक ।

झमकणो, झमकबो-क्रि०अ० (अनु०) १ आभूषण आदि से ध्वनि होना, झनकार का शब्द होना, झनकना । उ०—१ नित ही नाटक नव नवा हो, दों दों दमकै म्रिदंग । झमकित झाझरि झालरी हो, मोहत मन मुख चंग ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ पछि पैंक झमकत पाय, रिझवंत नटवर राय । 'अभसाह' गज असवार, अति ओप रूप अपार ।—रा.रू.

उ०—३ झण-झण झमक रही छै पायल । मत मत बोल पियारी रा जी ।—लो.गी.

२ शस्त्रों का टकरा कर ध्वनि करना, खनकना. ३ आभा निकलना,

प्रकाशित होना, चमकना, दमकना। उ०—झमंकती तन री झळक, भूखण विव भरियांह। कुण कोई कांमणियां कहै, परतख ही परियांह। —र. हमीर

४ शीतला रोग का विकृत होना।

झमकणहार, हारौ (हारी), झमकणियौ—वि०।

झमकवाड़णौ, झमकवाड़बौ, झमकवाणौ, झमकवाबौ, झमकवावणौ, झमकवाववौ—प्रे०रू०।

झमकाड़णौ, झमकाड़बौ, झमकाणौ, झमकाबौ, झमकावणौ, झमकाववौ—क्रि०स०।

झमकिओड़ौ, झमकियोड़ौ, झमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झमकीजणौ, झमकीजबौ—भाव वा०।

झमंकणौ, झमंकबौ—रू०भे०।

झमकतेज, झमकराव-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

झमकाड़णौ, झमकाड़बौ—देखो 'झमकाणौ, झमकाबौ' (रू.भे.)

झमकाड़णहार, हारौ (हारी), झमकाड़णियौ—वि०।

झमकाड़िओड़ौ, झमकाड़ियोड़ौ, झमकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झमकाड़ीजणौ, झमकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

झमकाड़ियोड़ौ—देखो 'झमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झमकाड़ियोड़ी)

झमकाणौ, झमकाबौ-क्रि०स०—१ ध्वनि करना, झनकार करना, झनकाना. २ शस्त्रों को टकरा कर ध्वनि करना, शस्त्र चमकाना, खनकाना. ३ प्रकाशित करना, चमकाना, दमकाना।

झमकाणहार, हारौ (हारी) झमकाणियौ—वि०।

झमकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

झमकाईजणौ, झमकाईजबौ—कर्म वा०।

झमकणौ, झमकबौ—अक०रू०।

झमकाड़णौ, झमकाड़बौ, झमकाणौ, झमकाबौ—रू०भे०।

झमकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ, झनकार किया हुआ, झनकाया हुआ. २ शस्त्र खनकाया हुआ. ३ प्रकाशित किया हुआ, चमकाया हुआ।

(स्त्री० झमकायोड़ी)

झमकार, झमकारु—१ देखो 'झंकार' (रू.भे.)

उ०—१ सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार, कंठी कनकमय पदकड़ी, महाविगन्यांनि जड़ी।—व.स.

उ०—२ वलहियां रा घूघरां, जंगां रौ झमकार हुय नै रह्यौ छै। —रा.सा.सं.

उ०—३ करयले कंकण मणि झमकारु जादर फालीय पहिरण ए। अहर तंबोळीय द्रूपदी वाळ पाए नेउर रणझुणइं ए।—पं.पं.च.

सं०पु०—२ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

झमकावणौ, झमकाववौ—देखो 'झमकाणौ, झमकाबौ' (रू.भे.)

झमकावणहार, हारौ (हारी), झमकावणियौ—वि०।

झमकाविओड़ौ, झमकावियोड़ौ, झमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झमकावीजणौ, झमकावीजबौ—कर्म वा०।

झमकावियोड़ौ—देखो 'झमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झमकावियोड़ी)

झमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—विकृति-प्राप्त शीतला रोग।

झमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झनका हुआ, ध्वनित. २ खनका हुआ. ३ चमका हुआ, दमका हुआ, प्रकाशित।

(स्त्री० झमकियोड़ी)

झमकीलौ-वि० (स्त्री० झमकीली) ठसक एवं नखरे से चलने वाला, मस्त, छबीला। उ०—अथ कंवरी रै पत्री सिद्ध स्री लग्न री लड़ी, जीव री जड़ी, सजीली, फबीली, लजीली, छबीली, रमकीली, लंकीली, झमकीली, छकीली, लटकीली, चकीली, चटकीली, बतीस लछणी, चौसट कळा विच वणी, केळरस क्यारी, प्रांण प्यारी, जिण सूं मांहरौ निज नेह, दुरस भांत रा छर्ज देह।—र. हमीर

झमकै-क्रि०वि०—शीघ्रता से, जल्दी से। उ०—कंवरियौ हे सुसराजी रौ जोध (ए), झमकै नै तोरण वांदियौ। तोरणियौ है तारां छाई रात, झमकै नै तोरण वांदियौ।—लो.गी.

झमकौ-सं०पु० (अनु०) १ झम-झम की ध्वनि का भाव. २ देखो 'झूमकौ' (रू.भे.)

झमझम-सं०स्त्री०यौ० (अनु०) १ घुंघरुओं आदि के बजने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, छमछम. २ देखो 'झबझब' (रू.भे.)

क्रि०वि०—झमझम शब्द के साथ।

रू०भे०—झमाझम।

झमझमा'ट-सं०स्त्री० (अनु०) १ घुंघरुओं आदि की ध्वनि, छमछमाहट, झमझम शब्द होने की क्रिया या भाव. २ एक प्रकार का घोड़ा। (शा.हो.)

रू०भे०—झमझमाहट।

झमझमाणौ, झमझमाबौ-क्रि०अ०स०—१ झमझम की ध्वनि करना या कराना. २ चमकना या चमकाना।

झमझमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झमझम की ध्वनि किया हुआ या कराया हुआ. २ चमका हुआ या चमकाया हुआ।

(स्त्री० झमझमायोड़ी)

झमझमाहट—देखो 'झमझमा'ट' (रू.भे.)

झमझमौ-सं०पु०—एक प्रकार का वाद्य ? उ०—जुध खत्री जाट अग्राज झमझमासा, वाज छड़ वांण घमघमासा वीर। विछुटै कड़ा वरमा रुधर विमासा, गंग गरधर खड़ा तमासागीर।—हुकमीचंद खिड़ियौ

झमर-सं०पु०—बालों का गुच्छा, बालों का समूह या गुच्छा (?)। उ०—ओछ पड़छ रवि अंग, चंमर झमर सुर चंम्मर। केकी ग्रीव कसस्सि तिकर लंक कव्वूतर।—सू.प्र.

झमरतळी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—घनवेलि कमळवेलि कपूरवेलि सेलां पटुली खमरतळी भवरतळी चेउली मह्य साळू चारसा।—व०स०

[illegible]—१ [illegible] का [illegible] उतारना.

२ [illegible] (रू.भे.)

[illegible] (अनु०) किसी [illegible] या [illegible] पर एकाएक आघात [illegible] ध्वनि ।

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

२ देखो '[illegible]' (रू.भे.)

[illegible]—१ [illegible] छंद विशेष जिसमें दोहा छंद के [illegible] और फिर [illegible] छंद रख कर सिंहावलोकन रीति [illegible] । उ०—[illegible] पर पंद्रागणां, घरै उजाळो धार । [illegible] झमाळ [illegible], [illegible] मंद विचार ।—र.रू.

झमाल, झमालि—[illegible]—१ [illegible]-जाल । उ०—१ सुवरणमय [illegible] झमाल, [illegible] नी [illegible] देखिइ, दही माहि' [illegible] ।—व.स.

उ०—२ [illegible] माळि, [illegible] कालि, सुवरणमइ थाळि, [illegible] झमालि, [illegible], परीसइं फळहुलि ।—व.स.

२ [illegible] । उ०—[illegible]कुंजर हाथीया तणइ कुंभस्थळि चडिउ, [illegible] तणी [illegible], मंडळीक तणइ परिवारि, पताका, [illegible], [illegible] तणइ [illegible], सीकरि तणइ झमालि, सुखासण [illegible] ।—व.स.

३ मच्छर के समान डंक मारने वाला पतंगा विशेष ।

उ०—[illegible] सीयाळ, मातंग नई जेम मसा झमाल । [illegible] वाण छूटइ, [illegible] मांहिइं सर सीध्र फूटइ ।

—वि.प.

झमेल—१ [illegible] । उ०—सकत्यां लावौ साथ में, झाझा [illegible] झमेल । [illegible] ईंदर कँवरि, खुड़द रचावौ खेल ।—मे म.

२ देखो 'झमेलौ' (मह. रू.भे.)

झमेलियौ—वि०—१ बखेड़ा डालने वाला, झगड़ालू ।

२ देखो 'झमेलौ' (अल्पा. रू.भे.)

झमेलौ, झमोलौ—सं०पु०—१ झगड़ा, टंटा, बखेड़ा ।

क्रि०प्र०—होणौ ।

मुहा०—झमेले में पड़णौ (फंसणौ) झगड़े-टंटे में फँसना ।

२ [illegible] कार्य, झंझट ।

मुहा०—१ झमेलै में पड़णौ—किसी कठिन कार्य को हाथ में लेना, झंझट में फँसना । २ झमेलै में फंसणौ—किसी कठिन कार्य को करने में परेशान होना । ३ झमेलौ पड़णौ—किसी कार्य के होने में बाधा आना, विघ्न पड़ना ।

अल्पा०—झमेलियौ ।

मह०—झमेल ।

झम्मरिया—सं०स्त्री०—१ चौहान वंश की एक शाखा ।

२ देखो 'झम्मरौ' (अल्पा. रू.भे.)

झम्मरियौ—सं०पु०—१ चौहान वंश की झम्मरिया शाखा का व्यक्ति ।

झर—सं०स्त्री०—किसी पदार्थ के रिसने, चूने, टपकने या गिरने की क्रिया या भाव । उ०—उणनैं घोड़ौ चेतौ आयौ अर आंख्यां में सूं झर झर कर नैं आंसूड़ा झरण लाग्या । —रातवासौ

रू०भे०—झरर ।

यौ०—झर-झर ।

झरझरकंतौ, झरझरकंथौ—सं०पु०—१ फटा वस्त्र. २ गुदड़ा.

झरड़क—सं०स्त्री—१ शस्त्र का प्रहार. २ शस्त्र का प्रहार करने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि । उ०—पड़ि पेसकबज खरड़क अपार । करड़क खाग झरड़क कटार ।—सू.प्र.

३ दधि-मन्थन-घोष. ४ रगड़ या खरोंच लगने की क्रिया या भाव ।

क्रि०प्र०—आणी, लागणी ।

झरड़कणौ, झरड़कबौ—क्रि०अ०—१ रगड़ लगना. २ खरोंच लगना. उ०—वितंड खेंग ठरड़कै मिळै करड़कै कबांणां । कंगल गात झरड़कै, पार खरड़कै सरांणां ।—बखतौ खिड़ियौ

३ फटना ।

क्रि०स०—४ प्रहार करना. ५ प्रहार कर के ध्वनि उत्पन्न करना ।

झरड़क-मरड़क—देखो 'झरड़-मरड़' (रू.भे.)

झरड़कियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ रगड़ लगा हुआ. २ खरोंच लगा हुआ. ३ फटा हुआ. ४ प्रहार किया हुआ. ५ प्रहार द्वारा ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री० झरड़कियोड़ी)

झरड़कौ—सं०पु०—१ रगड़ लगा हुआ स्थान, रगड़. २ खरोंच. ३ (वस्त्र आदि के) फटने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि. ४ दधि-मन्थन-घोष । उ०—विलोणा तणा झरड़का ऊपजइं ।—व.स.

५ प्रहार करने की क्रिया या भाव, झटका. ६ प्रहार करने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

झरड़णौ, झरड़बौ—क्रि०स०—१ नाखून आदि से (शरीर को) नोंचना । उ०—पड़ियो असुर ऊपरा पड़िओ, कोपिओ कोपिओ निमो कंठीर । झाझै त्रिसळ दंत झरड़ियौ, वाडियो मांस भरथ रै वीर ।—पी.ग्रं.

२ गर्भस्थ बच्चे को निकालने के लिये पेट को चीरना, विदीर्ण करना ।

झरड़मरड़—सं०स्त्री०—दधि-मन्थन-घोष ।

रू०भे०—झरड़क-मरड़क ।

झरणा'ट—सं०स्त्री० (अनु०) १ एक प्रकार की सनसनाहट या पीड़ा जो हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में मुड़े रहने या दबे रहने के कारण होती है, झुनझुनी. २ बिच्छू आदि जन्तुओं के काटने से होने वाली अवस्था. ३ किसी धातु (विशेषतः कांस्यादि) पर प्रहार, आघात या टक्कर लगने से उसमें से निरन्तर निकलने वाली ध्वनि. ४ घुंघरू आदि का शब्द, झनझन का शब्द, झंकार ।

रू०भे०—झणझणाहट, झणणाट, झणणाहट, झणाट, झणाहट, झण्णाट, झण्णाहट, झरणाहट ।

अल्पा०—झण्णाटौ, झरणा'टौ ।
झरणाटौ-सं०पु०—देखो 'झरणा'ट' (अल्पा. रू.भे.)
उ०—हाथी तौ आवै दौलजी घूमता रे, झीणी-झीणी उडै रे गुलाल।
जोड़ी रा दौलजी छोड म्हारी आंगळी, झरणाटै चढ़णी रे ।—लो.गी.
झरणाहट—देखो 'झरणा'ट (रू.भे.)
झरणि, झरणौ-सं०पु० [सं० क्षरण] जल का वह प्रभाव जो ऊपर से गिरता हो, चश्मा, प्रपात। उ०—१ तोय झरणि छंटि ऊघसत मळय तरि, अति पराग रज धूसर अंग । मधु मद स्रवति मंद गति मल्हपति, मदोनमत्त मारुत मातंग ।—वेलि.
उ०—२ संप सु झरणां गया सुकाई, लोक लीक सुभ रीत लुकाई । झव्य अमंगळ अंव झुकाई, कोचर कंठ कुसंप कुकाई ।—ऊ.का.
उ०—३ छावयौ रहै चहुं रितु मरत महा मतवाळ। हाथी झरणा जिम झरतौ मद असराळ ।—ध.व.ग्रं.
उ०—४ मोर शिखर ऊँचा मिळै, नाचै हुआ निहाल । पिक ठहकै झरणा पड़े, हरिये डूंगर हाल ।—बां.दा.
वि०—(स्त्री० झरणी) १ जिसमें से कोई पदार्थ झरता हो.
२ जो झरता हो, झरने वाला. ३ वह जिसमें सहन-शक्ति का अभाव हो, असहिष्णु। उ०—१ जरणा जोगी जुग जुग जीवै, झरणा मर मर जाइ। दादू जोगी गुरुमुखी, सहजैं रहै समाइ ।
—दादू बांणी
उ०—२ जरणा जोगी जग रहै, झरणा परळै होइ । दादू जोगी गुरु-मुखी, सहज समाना सोइ ।—दादू बांणी
झरणौ, झरबौ-क्रि०अ० [सं० क्षरण] १ किसी तरल पदार्थ का ऊँचे स्थान से गिरना। उ०—१ झपकी लेतां भेर झुंड लाळां झर जावै। जाय सभा में जठै मौत बिन ही मर जावै ।—ऊ.का.
उ०—२ आदित्य रसोइ तपइ, चंद्रमा घड़ी घड़ी अम्रित झरइ, यम पांणी वहइ ।—व.स.
२ किसी तरल पदार्थ का चूना, टपकना, स्रवना ।
उ०—१ धरां रूप लंबी करां धूप धारै, नरां एक एकौ हजारां निवारै। झरंता पटा डांण पव्वे झरी ज्यूं, करंता अटां प्रांण भेकै हरी ज्यूं।
—वं.भा.
उ०—२ सुन्दर नख मुख, सुललित वेणी। जांणै भूली म्रिग थी ऐणी, चंचळ नयने जळ झरि ।—नळाख्यांन
३ किसी पदार्थ का ऊपर से झड़ना, गिरना।
उ०—१ सिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, संकर ध्यांन धरे री। कहत 'समांन' कंवर दसरथ रा, फूल अकास झरे री ।—समांन बाई
उ०—२ अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रंग लाय। मारू पक्का अंब ज्यूं, झरइ ज लग्गे वाय।—ढो.मा.
४ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिरना। उ०—रज-रज हुऔ 'जगौ' झरियौ रज, भिळवा मुगत जांणियौ भेव। समहर भ्रगट लियण दस सहसै, दस सौ करग वधाया देव ।—पत्ता चूंडावत (आमेट) रौ-गीत
५ वरसना। उ०—१ जिण रुति वहु पावस झरइ, बाबहियउ बोलंत। तिण रुति साहिब वल्लहा, को मंदिर मेल्हंत ।—ढो.मा.
उ०—२ झळहळै बीज अंवर झरै। डुकळ मोर कळहर दखै।
—पहाड़ खां आढ़ौ
६ वीर्य स्खलित होना।
झरणहार, हारौ (हारी), झरणियौ—वि०।
झरवाड़णौ, झरवाड़बौ, झरवाणौ, झरवाबौ, झरवावणौ, झरवावबौ, झराड़णौ, झराड़बौ, झराणौ, झराबौ, झरावणौ, झरावबौ
—प्रे०रू०
झरिओडौ, झरियोड़ौ, झरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
झरीजणौ, झरीजबौ—भाव वा०।
झिरणौ, झिरबौ—रू०भे०।
झरपट-सं०स्त्री०—१ हलका घाव, साधारण चोट, खरोंच।
उ०—तरवार कंवरजी नूं वाही सू वगतर कट नै खंवै रै झरपट सी लागी ।—द.दा.
क्रि०प्र०—लागणी।
२ रगड़।
क्रि०प्र०—आणी।
३ झपट, चपेट।
झरमर—देखो 'झिरमिर' (रू.भे.) उ०—कुवज्या नै जादू डारा री, जिन मोहे स्यांम हमारा। झरमर झरमर मेहा बरसै, झुक आये बादळ कारा ।—मीरां
झरर—देखो 'झर' (रू.भे.)
यौ०—झरर-झरर।
झरहरणौ, झरहरबौ—१ देखो 'झरणौ' (रू.भे.)
उ०—आभा झरहरै वीजां आभास करै।—रा.सा.सं.
२ बूंद-बूंद गिरना, टपकना।
झराड़ै-
उ०—पुळै पगवट्ट उजाड़ पहाड़, दहुं दिसि केइ कराड़ दराड़। झराड़ झांगी रा झाड़ झुकेव, दियै सुख वंछित रिखभदेव।
—ध.व.ग्रं.
झरयोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (किसी तरल पदार्थ का) ऊँचे स्थान से गिरा हुआ. २ (किसी तरल पदार्थ का) चूआ हुआ, टपका हुआ, स्रवित. ३ (किसी पदार्थ का ऊपर से) झड़ा हुआ, गिरा हुआ. ४ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिरा हुआ. ५ वरसा हुआ. ६ वीर्य स्खलित हुवा हुआ।
(स्त्री० झरियोड़ी)
झरी-सं०स्त्री०—१ वड़ा कड़ाह चढ़ाने के निमित्त भूमि खोद कर बनाया हुआ वड़ा चूल्हा. २ दीवार में पड़ी हुई दरार. ३ झरना, चश्मा। उ०—धरां रूप लंबी करां धूप धारै, नरां एक एकौ हजारां निवारै। झरंता पटां डांण पव्वे झरी ज्यूं, करंता घटां प्रांण भेकै हरी ज्यूं ।—वं.भा.

४ एक प्रकार का ज्वर (शेखावाटी) ५ एक प्रकार का बच्चों का रोग जिसमें मोतीझरा के समान ही छोटी-छोटी फुन्सियां होती हैं।
(शेखावाटी)

६ देखो 'झड़ी' (रू.भे.)

रू०भे०—झिरी।

झरंकौ, झरखौ देखो 'झरोखौ' (रू.भे.) उ०—हरी हो हरी हरी धेन हांकै, झरखै चढ़ी नंद कूंमार झांकै। ग्रहो रांणियां अव्वला मूळ दावै, भगव्वान नैं धेन गोपी भळावै।—ना.दे.

झरोख, झरोखड़ो, झरोखो—सं०पु०—दीवार में बनी हुई वह सुन्दर खिड़की जिसके द्वारा हवा और रोशनी आने के साथ उसमें खड़े होने अथवा बैठने का स्थान भी हो जिससे बाहर का दृश्य आसानी से देखा जा सके, गवाक्ष, मोखा, गोखा।

उ०—१ ऊंची ऊंची मेड़ी झरोखा चार, भइल्या रे खाती का बेटा बाजोटयो।—लो.गी. उ०—२ इतरै स्रावण सुदी बीज री आधी गयां एक सिकारी आइयो, आय झरोखै नीचै हाकल करी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—झरूंकौ, झरूंखौ, झरोखय, झरोखौ।

अल्पा०—झरोकड़ो, झरोखड़ो, झरोखियो।

मह०—झरोक, झरोख।

झरोख—देखो 'झरोखो' (मह., रू.भे.) उ०—सरोख सात गोखतैं झरोख झांकनी नहीं। निकूप चौक चांदनी निकोम नाखनी नहीं।
—ऊ.का.

झरोखड़ो—देखो 'झरोखो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सीत संवारै सोणा दियै, मेड़ी मोल झरोखड़ा। भूप हरचंद री सी हेली, धन गए सारै गोखड़ा।—दसदेव

झरोखौ—देखो 'झरोखो' (रू.भे.) उ०—१ दंती हींडोळै झरोखां हेटै, लूंभाळा झाटका देता।—माधोसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—कंवर मारियो मारियो, इसो सबद अपछरा झरोखै बैठी सुणियो।—वीरमदे सोनगरा री वात

झलंब—सं०स्त्री०—१ चमक, आभा, कान्ति। उ०—सूर सुरसांण ऊपर झलंब सुधारी, वसू कुरखेत प्रथमांण वांदै। जाजळीमांण जमरांण बीधी जिका, वियो 'पदमेस' केवांण वांदै।—जवांनजी आढ़ौ

२ देखो 'झिलम' (रू.भे.)

उ०—हद सोभा हो चढ़ 'मांन' हर, झलंबां कड़ी कड़ी रण भूल। साधा भरी चमू खळ खागां, मंत्र जड़ी न लागो मूळ।
—रावत प्रतापसिंघ चूंडावत (आमेट) रो गीत

वि०—१ आभायुक्त, चमकयुक्त, चमकीला। उ०—१ बैठी जोवै बाट दळकरै बेसरांह, किया झलंब पवसाख कसूंबल केसरांह।
—महादांन महडू

झळ—सं०स्त्री०—१ झाड़ी, झंगी। उ०—उणनूं एक दिन पूरे सूं सिकार पधारिया था सो घोहरां री झळ थी तीमें सूग्रर जोवण नै लोग सारो खिड गयो।—पदमसिंघ री वात

२ आग की लपट, अग्नि-शिखा। उ०—१ ज्वाळ झळ जेम अस गांव भरि जाळवा, खाग जुध जहर हूं कहर खारो। करण भय सचीतो न्याय ओरंग कहै, 'सिंघ' बळ नचीतो देस सारो।—द.दा.

उ०—२ जड़ि ठांम ठांम थांणा जबर, बैठा मुगळ महाबळी। आसुरां सुरां प्रजळी अगनि, छोह ग्रोह झळ ऊछळी।—सू.प्र.

उ०—३ ग्रहि खग त्रिग दम हुंस झळूझै, सुणै न सबद गात नह सूझै। दहूं दळां बळि हुवै दिखाई, रंजक झळां गोळां रुसनाई।—सू.प्र.

३ गरमी, ताप, दाह। उ०—१ तन तरवर फळ लगिया, दोइ नारंग संपूर। सूकण लागा विरह झळ, सींचणहारा दूर।—र रा.

उ०—२ लूआं झळ उठ आवती, कांनो में कह जाय। मतना पंथी नीसरे, म्हारै मारग आय।—धू

उ०—३ पेंडो देखता केई जु घणू तेज उतावळा आवता देख्या। तब पेट मांहै झळ ऊठी। जु ए उतावळा आवै छै।—वेलि टी.

यौ०—झळ-झळ।

४ अग्नि, ज्वाला, आग। उ०—१ धरा गगन झळ ऊगळै, लद लद लूआं आय।—लू

उ०—२ झंझावात झपट लपट झळ अंबर लागी।
—भगवांनजी रतनू

५ उग्र कामना, उत्कट इच्छा। उ०—देखतां पथिक उतामळा दीठा, झांखांणा उगि उठी झळ। नीळ डाळ करि देखि नीलांणा, कुसमथळी वासी कमळ।—वेलि.

६ कान्ति, दीप्ति। उ०—कोकिल मोर सुवा जिण कांनन, अगनि सरूप वांणि झळ आंनन।—सू.प्र.

७ चमक, दमक. ८ खुजली, ज्यूं—घास में सूवण सूं म्हारै सारै डील में झळ हालण ढूकगी।

क्रि०प्र०—ऊठणी, हालणी।

रू०भे०—झळी।

९ स्त्री में पैदा होने वाली संभोग की इच्छा, रति-इच्छा, चुल।

मुहा०— झळ भांगणी (भंगाणी) रति इच्छा को पूरी करना (कराना)

१० मृगशिरा नक्षत्र का उदय-स्थान, पूर्व दिशा (शकुन)

११ उष्ण वायु (शेखावाटी)

झल—सं०स्त्री०—पकड़ने की क्रिया या भाव।

वि०—१ पूर्ण।

यौ०—झलोझल।

२ धारण करने वाला. ३ पकड़ने वाला।

झळक—सं०स्त्री० [सं० ज्वलत्] १ आभा, प्रभा, द्युति, चमक, दमक, प्रकाश। उ०—झमकंत तन री झळक, भूखण विच भरियांह। कुण कोई कांमणियां कहै, परतख ही परियांह।—र. हमीर

२ प्रतिबिम्ब। उ०—पीलू पीयुस सनै, ऊजळी छवि उणियारै। जांणै वर्ण अंगूर, झळक हरियाळी सारै।—दसदेव

२ ग्राभास, तरंग, उमंग। उ०—ग्रेक घर का घोड़ा मुफ्त में गमाया, रीभ का ग्रेक धेला भी न ग्राया, इस वासते दिल में रीभ की झळक ग्राई ग्रौर यह दवावेत मैंने भी वणाई।—दुरगादत्त वारहठ

झळकणौ–वि० (स्त्री० झळकणी) ग्राभा देने वाला, चमकीला।
उ०—मोर मुगट पीतांवर सोहां, कुंडळ झळकणा हीर। मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, क्रीड़्या संग वळवीर।—मीरां

झळकणौ, झळकवौ–क्रि०ग्र०—१ ग्राभा देना, चमकना, प्रकाशित होना।
उ०—१ मोर मुकुट पीतांवर सोहै, कुंडळ झळकै कांनां। सांवरी सुरत पर तिलक विराजै, तिस सौं लगे मोरे प्रांना।—मीरां
उ०—२ भिदि वज्र सिखर चक्कर इम भळकै। भीण वदळ गांभळ रवि झळकै।—सू.प्र.
उ०—३ तळाव री पाळ पांणी री तीर पूगा तिंतरै पैली कांनी साथ ग्रावतां री वरछी झळकी सु दीठी।—नैणसी
उ०—४ सिर ऊपर मुकट सुहामणौ हौ, कुंडळ दोनूं कांन। भिगमिग तेजे झळकता हौ, सूरिज तेज समांन।—ध.व.ग्रं.
२ स्फुटित होना, हल्का दिखाई पड़ना, झलकना।
उ०—कल्प द्रुम ए धरम निहाळि, द्रढ़ समकितु मूळ गिउं पायाळि। वार व्रत डाळि पसरि जोइ, तप नी कूपळ झळकइं सोइ।
—चिहुंगति चौपइ
३ दृष्टिगोचर होना, दीखना। उ०—ग्रठी रण धरि थूव चढ़नै पाछौ जोयौ जु खंगार ना'यौ। ग्रागै देखै तौ सांमौ साथ झळकियौ।
—नैणसी
४ ग्राभास होना। उ०—पासौ ढुळै है, हाथ लुळै है. ढीली नथ ढळकै है, प्रेम री भांई जाहर झळकै है।—र. हमीर
५ कुछ कुछ प्रगट होना. ६ प्रतिविंव पड़ना, प्रतिविंवित होना।
उ० दंतूसळ मुखि दिनकर झळकै, उर मणि फणि मणिहार।
—रुकमणी मंगळ
७ शोभा देना. ८ क्रोधित होना, क्रोध करना, ग्रापे से वाहर होना. ९ सीमा के वाहर होना, छलकना (पानी ग्रादि का)।
उ०—मरकट पं वाजीगर नाचै, सव निरंतरि वाघा। पूरा वासण कदे न झळकै, जे झळकै तौ ग्राधा।—ह.पु.वा.
१० हिलना-डुलना। उ०—जिसड़ै ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीत तिसड़ै ही मूरच्छा ग्राइ पड़िया। तिसड़ै गोवळजी संवाह्या। पेट री वाखर सहु झळकतौ दीठौ। देखि ग्रर मूरच्छा ग्राई।—द.वि.
झळकणहार, हारौ (हारी), झळकणियौ—वि०।
झळकवाड़णौ, झळकवाड़वौ, झळकवाणौ, झळकवावौ, झळकवावणौ, झळकवाववौ—प्रे०रू०।
झळकाड़णौ, झळकाड़वौ, झळकाणौ, झळकावौ, झळकावणौ, झळकाववौ—क्रि०स०।
झळकिग्रोड़ौ, झळकियोड़ौ, झळक्योड़ौ।—भू०का०कृ०।
झळकीजणौ, झळकीजवौ—भाव वा०।
झळक्कणौ, झळक्कवौ, झल्लकणौ, झल्लकवौ, झिळकणौ, झिळकवौ
—रू०भे०।

झळकाड़णौ, झळकाड़वौ—देखो 'झळकाणौ, झळकावौ' (रू.भे.)
झळकाड़णहार, हारौ (हारी), झळकाड़णियौ—वि०।
झळकाड़िग्रोड़ौ, झळकाड़ियोड़ौ, झळकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झळकाड़ीजणौ, झळकाड़ीजवौ—कर्म वा०।
झळकणौ, झळकवौ—ग्रक० रू०।

झळकाड़ियोड़ौ—देखो 'झळकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झळकाड़ियोड़ी)

झळकाणौ, झळकावौ–क्रि०स०—१ द्युतिवान वनाना, प्रकाशित करना, चमकाना. २ स्फुटित करना, ग्रंकुरित करना, झलकाना. ३ दृष्टिगोचर करना, दिखाना। ४ ग्राभास कराना. ५ कुछ-कुछ प्रकट कराना।
ज्यूं—ऐंड़ा दौड़ाया कै चं'रै माथै पसीनौ झळकाय दियौ।
६ प्रतिविंव डालना, प्रतिविंवित करना. ७ शोभित करना. ८ ग्रापे से वाहर करना, छलकाना. ९ सीमा से वाहर करना, क्रोध कराना. ९ सीमा से वाहर करना, छलकाना. १० हिलाना-डुलाना।
झळकाणहार, हारौ (हारी), झळकाणियौ—वि०।
झळकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
झळकाईजणौ, झळकाईजवौ—कर्म वा०।
झळकणौ, झळकवौ—ग्रक० रू०।
झळकाड़णौ, झळकाड़वौ, झळकावणौ, झळकाववौ, झिळकाड़णौ, झिळकाड़वौ, झिळकाणौ, झिळकावौ, झिळकावणौ, झिळकाववौ
—रू०भे०।

झळकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चमकदार वनाया हुग्रा, प्रकाशित किया हुग्रा. २ स्फुटित किया हुग्रा, ग्रंकुरित किया हुग्रा, झलकाया हुग्रा. ३ दृष्टिगोचर किया हुग्रा, दिखाया हुग्रा. ४ ग्राभास कराया हुग्रा. ५ कुछ-कुछ प्रकट किया हुग्रा. ६ प्रतिविंव डाला हुग्रा, प्रतिविंवित किया हुग्रा. ७ शोभित किया हुग्रा. ८ ग्रापे से वाहर किया हुग्रा, क्रोधित किया हुग्रा, क्रोध कराया हुग्रा. ९ सीमा से वाहर किया हुग्रा, छलकाया हुग्रा. १० हिलाया-डुलाया हुग्रा।
(स्त्री० झळकायोड़ी)

झळकारौ–वि० (स्त्री० झळकारी) जगमगाता हुग्रा, चमकदार, द्युतियुक्त, चमक-दमक युक्त। उ०—दहूं हात मेंदी दियां, कियां झलंव पवसाक। मोती झळकारी मही, नथ झळकारी नाक।
—महादांन महडू
सं०पु०—देखो 'झळकौ' (रू.भे.)

झळकावणौ, झळकाववौ—देखो 'झळकाणौ, झळकावौ' (रू.भे.)
झळकावणहार, हारौ (हारी), झळकावणियौ—वि०।

झळकाविम्रोड़ी, झळकावियोड़ी, झळकाय्योड़ी—भू०का०कृ० ।

झळकाईजणी, झळकाईजबो—कर्म वा० ।

झळकणो, झळकबो—अक० रू० ।

झळकावियोड़ी—देखो 'झळकायोड़ी' (रू.भे.)

(स्त्री० झळकावियोड़ी)

झळकियोड़ी-भू०का०कृ०—१ आभा दिया हुआ, चमका हुआ, प्रकाशित हुवा हुआ. २ स्फुटित हुवा हुआ, हल्का दिखाई दिया हुआ, झलका हुआ ३ दृष्टिगोचर हुवा हुआ, दिखा हुआ. ४ आभास हुवा हुआ. ५ कुछ कुछ प्रकट हुवा हुआ. ६ प्रतिबिंब पड़ा हुआ, प्रतिबिंबित हुवा हुआ. ७ शोभा दिया हुआ. ८ क्रोध किया हुआ, क्रोधित हुवा हुआ, आपे से बाहर हुवा हुआ. ९ सीमा से बाहर हुवा हुआ, छलका हुआ. १० हिला-डुला हुआ ।

(स्त्री० झळकियोड़ी)

झळको-सं०पु०—१ चमक, दमक । उ०—ऊँची नीची सरवरिया री पाळ, (जठै) हजारी मोती नीपजै । मोती सोहै सोढीं रांणी रै नथ, झळका वाळी मोती अध सोहै ।—लो.गी.

२ आकृति का-आभास, प्रतिबिंब ।

मुहा०—झळको पड़णो—चमक दिखाई देना । किसी वस्तु के होने का आभास मालूम होना, क्षण मात्र के लिये दिखाई देना ।

रू०भे०—झळकारो, झळवको, झिळको ।

झळवकणो, झळवकबो— देखो 'झळकणो, झळकबो' (रू.भे.)

झळवकणहार, हारो (हारी), झळवकणियो—वि० ।

झळविकम्रोड़ो, झळविकयोड़ो, झळवकचोड़ो—भू०का०कृ० ।

झळवकीजणो, झळवकीजबो—भाव वा० ।

झळविकयोड़ो—देखो 'झळकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झळविकयोड़ी)

झळवको-सं०पु०—१ लपट । उ०—दूखण दीधै दुरजणां, ओपै कवित अमल्ल । नृप झळवकै लागतै, आवै स्वाद अवल्ल ।—ध.व.ग्रं.

२ देखो 'झळको' (रू.भे.)

झळजीहा-सं०स्त्री० [सं० ज्वाला+जिह्व] अग्नि, आग (डि.को.)

झळझळणो, झळझळबो—क्रि०अ०—जगमगाना, चमकना ।

उ०—किरण जोस झळकळै, रूपक झळझळै प्रगटां । अरुण रूप आखियां, दखी करवा दहवटां ।—बखतो खिड़ियो

झळझळा'ट-सं०स्त्री०—जगमगाहट, चमक, दमक ।

उ०—हर घड़ियो हित सूं निज हाथां, जड़ियो गढ़ जोधांणं । झळ-झळा'ट करतो नग झड़ियो, पड़ियो लेख पर्यांणं ।—ऊ.का.

रू०भे०—झळझळाहट, झळळा'ट, झळळाहट ।

झळझळाणो, झळझळाबो—देखो 'झळझळणो, झळझळबो' (रू.भे.)

झळझळायोड़ो—देखो 'झळझळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झळझळायोड़ी)

झळझळाहट—देखो 'झळझळा'ट' (रू.भे.)

झळझळियोड़ो-भू०का०कृ०—जगमगाया हुआ, चमका हुआ ।

(स्त्री० झळझळियोड़ी)

झळझांखळ सं०स्त्री०—[सं० चलद्ध्वांक्षम्] उड़ती हुई बात, अविश्व-सनीय बात (उ.र.)

झळझ्झळि-सं०स्त्री०—आग, अग्नि । उ०—झळझ्झळि झाळि दियो करिमाळ ।—वं.सी. रासो

झळण—देखो 'झल्लण' (रू.भे.)

झळणो, झळबो—क्रि०अ०—झुलसना, मुरझाना ।

उ०—धमस नाळ रज धोम, झळळ तप भंख कमळ झळ । घर घरसळ घरघरण, उतन दिस हलै 'अभैमल' ।—सू.प्र.

२ दग्ध होना, जलना. ३ चौंकना । उ०—हुवंता झळै ओभळै आप छाया । जिके अंबु अप्पित के वायु जाया ।—वं.भा.

४ भस्म होना, जलना ।

झळणहार हारो (हारी), झळणियो—वि० ।

झळिओड़ो, झळियोड़ो, झळयोड़ो—भू०का०कृ० ।

झळीजणो, झळीजबो—भाव वा० ।

झलणो, झलबो—१ सहन करना । उ०—अरु डावी दूणी में कंवर सी वीकैजी मोयलां ऊपर घोड़ा उठाय नांखिया, सू उठै वडो भगड़ो हुवो नै मोयलां सूं धको झलियो नहीं ।—द.दा.

२ फैलना । उ०—झोला सुगध चहूं दिस झलिया । अतर गुलाव समद्र उभळिया ।—सू.प्र.

३ पकड़ जाना, पकड़ में आना । उ०—गहि पांन एम कहियो अगंज, झट खग वाहे बाहू झलूं । मोकळूं पकड़ि मदफर मिलक, मुदफर रो सिर मोकळूं ।—सू.प्र.

४ शोभित होना । उ०—बिहुं झलिया झड़तां खग बूर । 'पिथा' हर सूर दतां अद पूर ।—सू.प्र.

झलणहार, हारो (हारी), झलणियो—वि० ।

झलिओड़ो, झलियोड़ो, झल्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झलीजणो, झलीजबो—भाव वा० ।

झिलणो, झिलबो—रू०भे० ।

झळदकार-वि०—ज्वालामय ।

उ०—ऊगो झांखो अरक, दिसा झांखी दरसांणी । भाखा पंथ भयांण, जांण कल्पंत कहांणी । गिर परवत वन विख, अचळ चळ चाल अखंडै । उलकापात अछंट, पड़ै कोरण टह मंडै । तिण समै कैळास सहर तणी, झळदकार पठ झंखियां । प्रागवड़ सिवराज पड़े, मंद भाग कव पंखियां ।—साहबो सुरतांणियो

झळपट-सं०स्त्री०—आग की लपट, लौ, आंच । उ०—उड रीठ गोळा नाळ झळपट ऊपड़ै । धड़ पड़ै अपहड़ घाट घरपुड़ धड़हड़ै ।—सू.प्र.

झलम—देखो 'झिलम' (रू.भे.) उ०—१ सणणंकै खुरसांण खागधारां खणणंकै । रणणंकै रणराग झलम पाखर भणणंकै ।—वं.भा.

उ०—२ झलमां सिर बीजळ झड़ै, ताता खड़ै तुरंग । तिण वेळा 'पातल' तणी, जरमन सहै न जंग ।—किसोरदांन बारहठ

उ०—३ वीर अवसांण केवांण उजवक वहे, रांण हयवाह दुय राह रटियौ। कट झलम सीस वगतर वरंग अंग कटै, कटै पाखर सुरंग तुरंग कटियौ।—गोरधन बोगसौ

उ०—४ झलै टोप सिर झलम, राग मौजां कर हाथळ। आवध कसि करि अमल, झलै सावळ झाळाहळ।—सू.प्र.

यौ०—झलमटोप।

झलमटोप—देखो 'झिलमटोप' (रू.भे.)

झळमळ-सं०स्त्री०—अंधकार में मंद-मंद झिलमिलाने की क्रिया, चमक-दमक। उ०—१ विधु झळमळ मणिवासं, निप त्रिपुरारि तुभ्यौ नमः।—रांमरासौ

उ०—२ वीजळियां झळमळ कियौ रे, कांई आभा आभा में एक। म्हूँ कद मिळूंला वालमा, थांसू लांवी बांह.......।—लो.गी.

झळमळणौ, झळमळवौ-क्रि०अ०—जगमगाना, चमकना।

उ०—१ वीजळियां झळमळेह, आभै आभै दोय। कदी मिळूंली साहिवा, कसन कंचुकी खोय।—ढो.मा.

उ०—२ एक दंत झळमळइ जांणिक रोहणीउ तप्पइ सूर।—वी.दे.

झळमळाणौ, झळमळावौ-क्रि०अ०—१ चमचमाना, जगमगाना. २ निकलते हुए प्रकाश या लौ का हिलना, डोलना. ३ अस्थिर ज्योति निकलना।

झळमळायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमचमाया हुआ जगमगाया हुआ. २ झिलमिलाया हुआ (प्रकाश, ज्योति) ३ अस्थिर निकलती हुई (ज्योति)।

(स्त्री०—झळमळायोड़ी)

झळमळियोड़ौ-भू०का०कृ०—चमका हुआ, जगमगाया हुआ।

(स्त्री०—झळमळियोड़ी)

झळमाळा-सं०स्त्री०—अग्नि (डिं.को.)

झलर-सं०पु०—एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दले हुए अनाज को पका कर छाछ के मिश्रण से बनाया जाता है।

मि०—करवौ।

झळळ-सं०स्त्री०—१ जगमगाने या चमचमाने की क्रिया या भाव, चमक, दमक। उ०—१ ऊजळ जस कज नाथ तणा यम, सांवळ वादळ जसा सझ। सांकळ खळळ, झळळ दांतूसळ, मैंगळ दै मारगां मझ।—हरीदास संडायच

उ०—२ समंद विलंद दळ सवळ, अथग आवियौ 'अभैमल'। उण वेळा सुर असुर, झळळ लोहा भिड़ ऊजळ।—सू.प्र.

२ अग्नि की लपट उठने की क्रिया या भाव। उ०—झळळ द्रग झाळ अत काळ पावक झपट, अत विकट लपट 'लम' रसण ओपै। नहर उर वीहरवा काज आयौ निपट, कपट खळ सीस नरसिंग कोपै।—ब्रह्मदास दादूपंथी

३ अग्नि की लपट। उ०—करण होम केवियां झळळ रवि घोम झळाहळ।—सू.प्र.

सं०पु०—४ सूर्य। उ०—धमस नाळ रजधोम, झळळ तप झंख कमळ झल। घर थरसळ थर घरण, उतन दिस हलै अभैमल।—सू.प्र.

वि०—देदीप्यमान, चमकयुक्त। उ०—जोम विखम दीजतौ, भीम मुख रंग भळाहळ। करण होम केवियां, झळळ रवि धोम झळाहळ।—सू.प्र.

झळळा'ट झळळाहट—देखो 'झळझळा'ट' (रू.भे.)

झळसौ—देखो 'जळसौ' (रू.भे.)

झळहर-सं०पु०—डिंगल के वेलिया सांणोर छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ३४ लघु १५ गुरु कुल ६४ मात्राएँ तथा इसी क्रम से अन्य द्वालों में ३४ लघु १४ गुरु कुल ६२ मात्राएँ हों।—पिं. प्र.

झळहळ-सं०स्त्री०—१ अग्नि, आग। उ०—पूळा वळती मझि पड़ै, झळहळ अत झाळा। इम विकराळा ऊफणै, पड़ि क्रोध प्रजाला।—सू.प्र.

२ कान्ति, दीप्ति. ३ चमक, दमक।

वि०—१ देदीप्यमान, चमकयुक्त। उ०—१ कांन जड़ाऊ कांमरा, कुंडळ धारण कीन्ह। झळहळ तारा झूमका, दुहुँ पाखां ससि दीन्ह।—बां.दा.

उ०—२ झळहळ पाखर सिलह अत्र झालै। हय असवार दोय लख हालै। सीहां तेज पराक्रम सहसै। बरकंदाज दोय लख वहसै।—सू.प्र.

२ तेजस्वी। उ०—सझि दळ झळहळ सकळ, गयंद चढ़ियौ गह धारै। हळावोळ दळ हलै, वाजि दुंदुभ जिण वारै।—सू.प्र.

३ प्रज्वलित, धधकता हुआ।

झळहळणौ, झळहळवौ-क्रि०अ० [सं० झलज्झला] १ देदीप्यमान होना, चमकना, प्रकाश करना। उ०—१ राजसी अंग पोसाक रूप। झळहळत जोत रवि जेम भूप।—सू.प्र। उ०—२ सीसि कचुंवरि कुसुमह खूंपु, कांनि कनेउर झळहळइं ए।—पं.पं.च.

उ०—३ रमि झकोळ विचाळै 'रतनौ'। आतमभव सतियां अंगूठ। झूलर झळहळतै झूंझारै। कूंतहथौ पौहतौ वैकूंठ।—दूदौ

उ०—४ किरण झाल झळहळै अंब अवर ओहासै। सपत दीप सारीख वदन उद्योत विकासै। नव मेक छत्रछाया निजर, रन अढ्ढारह विळकुळै। पह सिंघ प्रतप्पे सिवपुरी, जोतबिंब जिम झळहळै।—नैणसी

२ (बिजली का) कौंधना, चमकना। उ०—१ झळहळै वीज अंबर भरै। दुकळ मोर कळहळ दखै।—पहाड़खां आढ़ौ

उ०—२ बयार गाहीइं, निसि घोर, नाचइं मोर, चिहुं दिसि वीज झळहळइ, पंखीया कुडहडइ, विणसती वमू छत्रीइं।—व.स.

३ फहरना। उ०—परदळ मिळइं, सुभट किलकलइं, नीसांणि घाय वळइ, चिंघ झळहळइं, त्रिखत खटकइं।—व.स.

४ जाज्वल्यमान होना। उ०—झालाघोम तेज झळहळियौ। अगन सरूप पतंग ऊछळियौ।—सू.प्र.

५ प्रकाशित होना। उ०—अजै सूर झळहळै, अजै प्राजळै हुतासण।

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।—[illegible] नाई

६ [illegible] । उ०—[illegible] वडी [illegible] घणां । झळकत [illegible] सोना [illegible] । तारा तणा किरण सूं मिळइ । कोसीसे दीवा [illegible] ।—हा.दे.प्र.

७ शोभित होना । उ०—[illegible] मिळियां कवां मनोरथ पूरण, रिम [illegible] । पैजां पाळ उजाळण परियां, दळ यागळ [illegible] ।—राठौड़ दयाळदास नूरजमालोत चांपावत रो गीत

८ मर्यादा से बाहर होना, उमड़ना । उ०—साळवयो मेर समुद्र झळहळियो, कहि डोलतो महि भारी ।—रुकमणी मंगळ

९ प्रज्वलित होना, धधकना ।

झळहळणहार, हारो (हारी), झळहळणियो—वि० ।

झळहळावणो, झळहळाड़बो, झळहाळणो, झळहळावो, झळहळावणो, झळहळाववो—क्रि०स० ।

झळहळिओड़ो, झळहळियोड़ो, झळहळयोड़ो—भू०का०कृ० ।

झळहळीजणो, झळहळीजबो—भाव वा० ।

झळहळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ देदीप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ, प्रकाश किया हुआ. २ कौंधा हुआ, चमका हुआ. ३ फहरा हुआ. ४ जाज्वल्यमान हुवा हुआ. ५ प्रकाशित हुवा हुआ. ६ जगमगाया हुआ. ७ शोभित हुवा हुआ. ८ मर्यादा से बाहर हुवा हुआ, उमड़ा हुआ. ९ प्रज्वलित हुवा हुआ, धधका हुआ ।
(स्त्री० झळहळियोड़ी)

झळा-सं०स्त्री०—अग्नि । उ०—वढ़ि वाहत साग झळा वरणी । तदि [illegible] नई चंद्रभाग तणो ।—सू.प्र.

झलाड़णो, झलाड़बो—देखो 'झलाणो, झलावो' (रू.भे.)

उ०—पोथि राघवदास रा आदमी खोसा खूंदी करता हुता, सु कुंवर नीं दळपतजी झलाड़िया । झलाई अर गांव मांहे सेजड़ी हुती तिण सेती त्यारे बांधा मुहकम ।—द.वि.

झलाड़ियोड़ो—देखो 'झलायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झलाड़ियोड़ी)

झळाझळ—देखो 'झळाहळ' (रू.भे.)

झळाझळो-वि०—चमकदार, चमकीला ।

झलाणो, झलावो-क्रि०स०—१ लौटाना । उ०—काळ रो विधेयकरम [illegible] पाछा ही चलाया । अर विखम दुग्ग ओगट घाट रैं कारण आगरा घोडा सिपाह पाछा ही झलाया ।—वं.भा.

२ पकड़ाना । उ०—१ तद साहजादै ऊपर सूं तरवार झलाई सो [illegible] गोड़ आय पहुंचो ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

उ०—२ ताहरां देवीदास ही लोटी झलाई ।—पलक दरियाव री वात
('झलणो' क्रिया का प्रे०रू०) ३ देखो 'झलणो, झलवो' ।

झलाड़णो, झलाड़बो, झलावणो, झलाववो—रू०भे० ।

झळाबोळ-वि०—१ जाज्वल्यमान, तपा हुआ ।

उ०—उठ दळां झळाबोळां अनेक । ओळां जिम गोळां रीठ एक ।
—वि.सं.

२ आग-बबूला, कुपित. ३ देदीप्यमान, जाज्वल्यमान, चमकदार, जगमगाता हुआ ।

उ०—घेरचो नंद री ठोह अहि कोट एहा । झळाबोळ जांणै झळा सोळ जेहा । नळी वाटती सांमुही झाळ नाखी, प्रभू अंग लागी जांणै फूल पांखी ।—ना.द.

झळामळ-सं०स्त्री०—१ चमक, दमक । उ०—बरसै पापी मेह झळामळ बीजको । लीजो भोलो देर महोलो तीजको ।—महादांन महडू

२ एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

वि०—चमक-दमक वाला, चमकीला ।

झळामळआरती-सं०स्त्री०—दूल्हे के तोरणद्वार पर आने पर सास द्वारा कई दीपकों को थाल में सजा कर की जाने वाली आरती या परछन । उ०—आवियो 'कलो' तोरण उठी, अठी झळामळ आरती । उतारै प्रेत ठीकर इसी, चित फाटा तिण वार ती ।
—अरजुणजी बारहठ

झळामळा-सं०स्त्री०—सघनतायुक्त कांति, दीप्ति.

उ० जिसउ कल्पतरु कळा तिसी किसिउं करइ करीर झळामळा, जो अहि करूं बहुत भाव तोइ किम हुइ गुरुआं तणु प्रभाव ।—व.स.

झलायोड़ो-भू०का०कृ०—१ लौटाया हुआ. ('झलियोड़ो' का प्रे.रू.)

२ देखो 'झलियोड़ो' ।

(स्त्री० झलायोड़ी)

झलार-वि०—पकड़ने वाला । उ०—वधे छक पौरस दूजिय वार । झड़ै नर तूजिय वाग झलार ।—सू.प्र.

झळाळ-वि०—चमकयुक्त, तेज । उ०—भेरै वाढ़ झळाळ, काळ जमदढ़ केवांणां । तूटै दमंग अताळ, झाळ छूटै खुरसांणां ।—सू.प्र.

झलाळो-वि०—धारण करने वाला, ग्रहण करने वाला ।

उ०—चांदे ढेबै सारखा भुज आभ झलाळा । बसिया मैंणा लोधिया भीला भुरजाळा ।—पा.प्र.

झलावणो, झलाववो—देखो 'झलाणो, झलावो' (रू.भे.)

उ०—संपड़ाय बाहर आंण, वाग स्यांमी नूं झलावणं लागियो—जे थें वाग झालै रहो तो हूं सांपडूं ।—सूरे खींवै कांधळोत री वात

झलावियोड़ो—देखो 'झलायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झलावियोड़ी)

झळास-सं०स्त्री०—१ ज्वाला, आग. २ आग की लपट ।

झळाहळ-सं०स्त्री०—१ अग्नि, आग । उ०—१ रोस झळाहळ रूप, जोस ग्रीखम रवि जोहै । तुरंग भड़ां तेड़ता, दूत च्यारूं दिसि दोहै ।
—मे.म.

उ०—२ झळाहळ रूप झळाहळ भाय । जुड़ै खळ आय तिहां उडि जाय ।—सू.प्र.

२ आग की लपट, अग्नि-शिखा ।

३ कांति, दीप्ति । उ०—तपत झळाहळ अतुळ, पिंड झळाहळ पौरिस । अति प्रकास ऊजळो, जगत रज्जास वंधे जस ।—सू.प्र.

वि०—१ तेजस्वी। उ०—अकळ भूल आवळा, भिलै गजबंध झळाहळ। पित अंजसे भूपाळ, 'सूर' झळहळ दळ सब्बळ।—सू.प्र.

२ अत्यधिक तेज। उ०—महण जोड़ मीढ़जै, नीर खारौ हळाहळ। सरभर आखां सूर, तपै ग्रीखम झळाहळ।—पहाड़खां आढ़ौ

३ भयंकर। उ०—चख चोळ झळाहळ रीस चडी। भूंह ऊपर मोसर जाय भिड़ी।—सू.प्र.

४ चमकयुक्त, दमकयुक्त, देदीप्यमान। उ०—सळळ संकळ मद खळळ, मसत घूमत मदग्गळ। मेघ डमर नीसांण, मही मुरतवां झळाहळ।

—सू.प्र.

५ चमचमाता हुआ। उ०—झळाहळ वीजळ मंगळ झाळ। कमंधज वाहत खाग कराळ।—सू.प्र.

रू०भे०—झळाझळ, झाळहळ, झाळाहळ।

झळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झुलसा हुआ, मुरझाया हुआ. २ दग्ध हुवा हुआ, जला हुआ. ३ भस्म हुवा हुआ, जला हुआ।

(स्त्री० झळियोड़ी)

झलियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ सहन किया हुआ. २ फैला हुआ. ३ पकड़ में आया हुआ, पकड़ा गया हुआ. ४ शोभित हुवा हुआ।

(स्त्री० झलियोड़ी)

रू०भे०—झिलियोड़ौ।

झळी—देखो 'झळ' (रू.भे.)

झलू-वि०—१ उत्तरदायित्व लेने वाला। उ०—१ अम्हांना मौज दीन्ही इसी, दूजौ कुण हुइसै झलू। पीरदास सरिसि तूठौ प्रभू, चौरासी कीधी चलू।—पी.ग्रं.

उ०—२ घड लाकड़ हुवै टळै हंस धुआ, झाळ हुओ रणताळ झलू। बळगी खाग अभाग वैरियां, वळती आग व्रजाग 'वलू'।

—केसोदास गाडण

झळूस-वि०—चमकयुक्त दमकयुक्त। उ०—अतरां डमरां उडुतां, मढ़ विप ग्रेहणां माय। पंड झळूस पोसाक कर, अपछर ऊभी आय।

—पा.प्र.

सं०पु०—१ समूह। उ०—तुरी झळूस साझ तांम, घाव देत धारकं। उडांण पंखराज एम, पांण में अपारकं।—सू.प्र.

२ देखो 'जळूस' (रू.भे.) उ०—१ सह जांन पधारिय सैण सगै, यम दाख वधाइय दार अगै। मंड साझ झळूस तमांम मिळै, चढ़िया अस सांभळ सांमै हलै।—पा.प्र. उ०—२ जस कज करै झळूस वाज गजराज वडाळा। पह दे पीठ अफेर गह रघुनाथ सिघाळा।

—र.ज.प्र.

झळूसौ—देखो 'जळसौ' (रू.भे.)

झलेव-वि०—कांतियुक्त ?

उ०—झुकती माळ झलेव क तुररा टांकियां। लटकण छोगा लूंब दुसाला नांखियां।—महादांन महडू

झळोळझ—देखो 'झाळोझाळ' (रू.भे.)

झलोझल-वि०—पूर्ण। उ०—झलोझल आंधीक रात व्हैला के वेरणांट करतोड़ी एक भाठी वारी में आय'र लाग्यो।—रातवासौ

रू०भे०—झिलोझिल।

झलौ-वि०—धारण करने वाला। उ०—झाटकै खळ पोरस व्रंद झलौ। दुजड़ां 'मुकंदावत' सूर 'दलौ'।—सू.प्र.

झल्ल-सं०पु०—रोकने या थामने की क्रिया का भाव।

उ०—खेल वीरता खेलणा, अस ठेलणा अप्पल। 'पतौ' हुवै भल जास पख, झुकती ले नभ झल्ल।—जैतदांन बारहठ

झल्लकणौ, झल्लकबौ—देखो 'झळकणौ, झळकबौ' (रू.भे.)

उ०—जरं सब पीतळ तें सम दंत बसी हिमके मनु भोंन बसंत। हयं सफ सारन की खुरतार, खनंकित पाहन अग्गि उंपार।

—ला.रा.

झल्लकियोड़ौ—देखो 'झळकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झल्लकियोड़ी)

झल्लण-वि०—१ झेलने वाला, धारण करने वाला। उ०—'सकत' 'सेर' मन मेर, वेर दुम्भर भर झल्लण। भुज आजांन प्रमांण, पांणं असहां खग पल्लण।—रा.रू.

रू०भे०—झलण।

झल्लणौ-वि०—१ धारण करने वाला।

उ०—वंस वखांणै झल्लणौ, चहुवांणै चुतरेस। रत्तौ साहां जंग कज, जांण विरत्तौ सेस।—रा.रू.

२ उत्तरदायित्व लेने वाला।

उ०—झूंझ झूंझार भड राजसी झल्लणौ। एक अवनाड़ सींगाळ अवखल्लणौ।—हा.झा.

३ चमकने वाला, चमक युक्त।

झल्लणौ, झल्लबौ—१ देखो 'झलणौ, झलबौ' (रू.भे.)

उ०—१ अपच्छं उमाही, वरंमाळ वाही। झड़ै घाव झल्लै, हुवै हंस हल्लै।—सू.प्र.

उ०—२ झल्लण तारक बिंब फूलड़ा जेथ मंडांणा। ऊजळ महलां माथ सायधण यक्ष मिलांणा।—मेघ.

२ शोभित होना, शोभा देना।

उ०—वारली तोपां रा गोळा धूड़गढ़ में लागै ओ। मांयली तोपां रा गोळा तंबू तोड़ै ओ, झल्लै आउवो। हे ओ झल्लै आउवो, आउवो धरती री थांबो (दावो) ओ, झल्लै आउवो।—लो.गी.

झल्लरि, झल्लरी-सं०स्त्री० [सं० झल्लरी] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—१ भंभा मउंग मद्दल कडंव झल्लरि हुडुक्क कंसाला। काहुल तिलिमा वंसी संखौ पणवौ य बारसमौ।—व.स.

उ०—२ वीणा मरदंग ताळ स्रीमंडळ, झणहण संद्रक झल्लरी।

—गु.रू.बं.

२ हाथी के गले में पहनाई जाने वाली घुंघरुओं की माला।

रू०भे०—झल्लिय।

उ०—३ ऊगी झांकी अरक दिसा झांकी दरसांणी, भाखां पंथ भयांण जांण कळपंत कहांणी।—साहबौ सुरतांणियौ

झांकौ—देखो 'झांखौ' (रू.भे.) उ०—ऊगौ झांकौ अरक दिसा झांकी दरसांणी, भाखा पंथ भयांण जांण कळपंत कहांणी।
—साहबौ सुरतांणियौ

झांखड़, झांखड़ी-संस्त्री०—तेज आंधी, झंझावात।

झांखणी—देखो 'झांखी' (रू.भे.)

झांखणौ-वि०—उदासीन, म्लान। उ०—घुड़ला रुधिर झिकोळिया, ढीला हुआ सनाह। रावतियाँ मुख झांखणाँ, सहीक मिळियौ नाह। नाह मिळियौ सही विरंग रंग नीसरै। क्रमंताँ प्रथी सिर जेज नहँ को करै।—हा.झा.

झांखणौ, झांखबौ-क्रि०स०अ०—१ किसी ओट से या इधर-उधर से देखना, झांकना। उ०—१ चौमासै में मंडै, हुलस खेतां हळ वावै। कांम करै किरसांण, खड़ा वरसा नै चावै। तेल कांन में घाल, मेघ सांमौ ना झांखै। आंमण-दूमण लोग, आसंगौ आसंग नांखै।
—दसदेव

उ०—२ सूतळ नाथा सर नासां सणकारी। फुरणी दूंधातां रासां फणकारी। झूसर धायां गळ आवढ़ कढ़ झांखै। नम नम सावढ़ नै नायां कण नांखै।—ऊ.का.

२ लुक-छिप कर देखना. ३ झलकना, दिखाई देना।

उ०—१ मारुवणी मुंह-वंन्न, आदित्ताहूं उज्जळी। सोइ झांखउ सोवंन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ।—ढो.मा.

उ०—२ हांजी राज अंग-अंग झांखै हो, हांजी म्हारा सोजतिया सिरदार भंवरजी अंग अंग झांखै हो।—लो.गी.

४ कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना, दुखी होना, पछताना।

उ०—देखतां पथिक उतामळा दीठा, झांखांणा उरि उठी झळ। नील डाळ करि देखि नीलांणा, कुससथळी वासी कमळ।—वेलि.

झांखणहार, हारौ (हारी), झांखणियौ—वि०।

झंखवाड़णौ, झंखवाड़बौ, झंखवाणौ, झंखवाबौ, झंखवावणौ, झंखवावबौ, झंखाड़णौ, झंखाड़बौ, झंखाणौ, झंखाबौ, झंखावणौ झंखाववौ, झांखाड़णौ, झांखाड़बौ, झांखाणौ, झांखाबौ, झांखावणौ, झांखावबौ—प्रे०रू०।

झांखिओड़ौ, झांखियोड़ौ, झांख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झांखीजणौ, झांखीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

झांकणौ, झांकबौ, झाकणौ, झाकबौ, झाखणौ, झाखबौ—रू०भे०।

झांखळ-संपु०—प्रातःकाल किया जाने वाला अल्पाहार, नाश्ता।

उ०—गहकै आरंग पुर सारंग सुर गावै। वांणिक दीठांई नीठां वणि आवै। झूलर झांखळ बिन खांखळ दिन ढंक्यौ। हींडै हींडण विन हींडै हिय हंक्यौ।—ऊ.का.

झांखियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ इधर-उधर से झांका हुआ, दिखा हुआ. २ लुक-छिप कर देखा हुआ. ३ झलका हुआ, दिखाई दिया हुआ. ४ उदास हुवा हुआ, म्लान हुवा हुआ. ५ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुवा, सूखा हुआ, दुखी हुवा हुआ, पछताया हुआ।
(स्त्री० झांखियोड़ी)

झांखी-संस्त्री०—१ झरोखा, गवाक्ष। उ०—बादशाह इण कजियै में हैरांन हुओ झांखी सूं बैठौ देखै छै।—नी.प्र.

२ झांकने या देखने की क्रिया, दर्शन, अवलोकन। उ०—पिया की पाई जिण झांकी करणा कुछ रह्या नहिं बाकी।—सुखरामदास

३ झलक, आभास।

क्रि०प्र०—पड़णी।

४ झंझावात, आंधी. ५ मंद प्रकाश. ६ एक देवी का नाम।

वि०—१ उदास, खिन्न. २ धुंधली, मैली।

रू०भे०—झांकणी, झांकी, झांखणी।

झांखौ-संपु०—मंद ज्योति, धीमा प्रकाश। उ०—दीवा पाछिली राति इसौ झांखौ दीसै छै।—वेलि.टी.

२ मंद दिखाई देने की क्रिया या भाव. ३ झलक, झांईं, आभास।

उ०—प्रात समय स्रावक सुणी, पासे आव्या जांम। यवन कहे झांखौ थई, ले जाउ निज धांम।—ऐ.जै.का.सं.

क्रि०प्र०—पड़णौ।

४ दर्शन, अवलोकन. ५ नेत्र की मंद रोशनी।

रू०भे०—झांकौ, झाकौ।

वि०—मंद मंद प्रकाशयुक्त, धुंधला, अस्पष्ट।

उ०—१ पड़ताळां पाताळ वहतां तुरी वजाड़िआ। उडी रजी छायौ अरस, किअ झांखौ किरणाळ।—वचनिका

उ०—२ रज झांखौ किरणाळ कमळ जहराळ लटक्कै। चोळ भाळ चापड़ै, कमंध रवदाळ कटक्कै।—सू.प्र.

रू०भे०—झांकौ।

झांगरा-संस्त्री०—पड़िहार वंश की एक शाखा।

झांगरिया-संपु० (बहु व०) झींगुर।

झांगी-संस्त्री०

उ०—पुळै पगवट्ट उजाड़ पहाड़, दहूं दिसि केइ कराड़ दराड़। झराड़ झांगी रा झाड़ झुकेव, दियै वंछित रिखभदेव।—ध.व.ग्रं.

झांझ-संस्त्री—१ वीज (अनाज) वोने के पश्चात् का वह समय जव तक कि पुनः वर्षा नहीं हो। यह समय कृषि के लिये हानिकारक समझा जाता है. २ तेज हवा, झंझावात. ३ वर्षा के वाद की शीतल वायु।

रू०भे०—झंझ, झंझांन, झंझा, झंझावत, झंझावात, झंझावातू।

४ एक प्रकार का कांस्य वाद्य। उ०—वाज्यां झांझ म्रिदंग मुरळिया वाज्यां कर इकतारी। आयां वसंत पिया घर नारी, म्हारी पीड़ा भारी।—मीरां

५ स्त्रियों के पैरों में धारण करने का आभूषण, पैंजनी।

रू०भे०—झंझ, झंझांन, झांझळी, झांझी।

६ छड़ी। उ०—झगड़ा झांटा झांझ झझी सहु वाते झूठी। पहिली ते हूं पछै, एह किम न्याय अपूठी।—ध.व.ग्रं.

झांफ—१ देखो 'जाफ' (रू.भे.)
२ देखो 'झांप' (रू.भे)
उ०—सू मोर ज्यूं तंडव करै छै, निकुळी ज्यूं अंग मांजै छै, अग ज्यूं उलहसै छै, भागा काळा मांकड़ां ज्यूं झांफा मरै छै।—रा.सा.सं.
झांफ-भैरव—देखो 'भैरव-झांफ' (रू.भे.)
उ०—गढ़ रेहूं गिरनार, गहूं मुनव्रत्त निरंतर। करूं झांफ भैरव, चढ़े गिरवर ग्राधंघर।—पहाड़खां ग्राढ़ौ
झांफरौ—वि०—घुंघरूदार (बालों वाला)
उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलांमति कावली कूतरा, लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा, लोलमी, लालमी जीभ रा, वळिमैं पूंछ रा, लापड़ै कांन रा, दाड़मी दंत रा, सिंघ रा हथ रा, केहरी कंध रा, झांफ रै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांत रा कूतरा।—रा.सा.सं.
रू०भे०—झांपरौ।
झांफौ—देखो 'झांपौ' (रू.भे.)
झांव—सं०स्त्री०—१ वृक्ष की टहनी या शाखा।
उ०—१ दोय-दोय साधण्यां चढि हींडा चलावै छै। जिके ग्रांव की झांव तोड़ि-तोड़ि लावै छै।—पना वीरमदे री वात
उ०—२ मरणाळी गरणावै काच ईसता ग्रती री माया, छाया ठाली वती री पौरसां पावै छीज। झांवां पारजती री कदाच वैळी जावै झाली, रैणा दूदांपती री न जावै खाली रीझ।—दुरगादत्त बारहठ
झांवरौ—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)
झांवु—देखो 'जांवू' (रू.भे.)
झांमड़ी—देखो 'झांव' (ग्रल्पा. रू.भे.)
झांमरझोळ, झांमरझोळौ—उलझन, इन्द्रजाल। उ०—पुटियां टोळ पंचोळ, चोळ चंगे चित ग्राळां। झांमरझोळ तमोळ, मोळ मन मकड़ी जाळां।—दसदेव
झांमलउ [सं० ध्यामलम्] १ तेज प्रकाश. २ देखो 'झांवळौ' (रू.भे.)(उ.र.)
झांवड़ी—सं०स्त्री०—१ एक साथ उगने वाले कई वृक्षों का समूह।
२ वृक्ष, पेड़।
रू०भे०—झांसड़ी।
झांवळी—सं०स्त्री०—१ ग्रांख की कनखी. २ झलक।
झांवळौ—सं०पु०—[सं० ध्याम] कमजोरी ग्रथवा ग्रांखों की मन्द ज्योति के कारण नेत्रों के सामने ग्राने वाला ग्रंधकार। उ०—ग्रेक झुरियां पड़ियोड़ी ग्रदंत डोकरी तिणरा हेम जिसा धोळा केस। ग्रांख्यां में झांवळा।—वांणी
झांस—सं०स्त्री०—झाड़ी, गुल्म। उ०—संध्या पड़तां कोस चाळीसां जाय एकण कैर री झांस कन्है नांख पाछा घिरिया।
—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता
झांसड़ी—देखो 'झांस' (ग्रल्पा., रू.भे.)
झांसणौ, झांसबौ—क्रि०स०—१ झांसा देना, ठगना. २ धोखा देना. ३ किसी स्त्री को व्यभिचार के लिये प्रवृत्त करना।
झांसणहार, हारौ (हारी), झांसणियौ—वि०।
झांसिग्रोड़ौ, झांसियोड़ौ, झांस्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झांसीजणौ, झांसीजबौ—कर्म वा०।
झांसाबाज—देखो 'झांसेबाज' (रू.भे.)
झांसियोड़ी—भू०का०कृ०—व्यभिचार के लिए प्रवृत्त की हुई स्त्री।
झांसियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ झांसा दिया हुग्रा, ठगा हुग्रा. २ धोखा दिया हुग्रा।
(स्त्री० झांसियोड़ी)
झांसियौ, झांसू—देखो 'झांसेबाज'।
झांसुरौ—देखो 'जुग्रौ' २ (ग्रल्पा., रू.भे.)
झांसेबाज—वि०यौ०—१ झूठा वायदा करने वाला. २ झूठी बड़ाई करने वाला. ३ झूठ बोल कर ठगने वाला, ठग।
रू०भे०—झांसाबाज, झांसियौ, झांसू।
झांसौ—सं०पु० [सं० ग्रध्यास] ग्रपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये किसी को बहकाने की क्रिया, छल, बुत्ता।
क्रि०प्र०—देणौ।
मुहा०—१ झांसे में ग्रांणौ—धोखे में ग्राना. २ झांसौ देणौ—झूठा वायदा देना, धोखा देना।
झा—सं०पु० [सं० उपाध्याय, प्रा० उज्झाग्रो] १ मैथिली ब्राह्मणों की एक उपाधि. २ मैथुन. ३ मुर्गा. ४ मत्स्य. ५ झरना. ६ पानी, जल (एका०)
झाउलियौ, झाउलौ, झाउल्यौ—सं०पु०—१ एक रेगिस्तानी जन्तु विशेष जिस पर छोटे-छोटे कांटे होते हैं। यह ग्रपने शरीर को सिकोड़ कर गेंद के ग्राकार का बना लेता है जिससे इसके शरीर के चारों ग्रोर कांटे ही दिखाई देते हैं। (शेखावाटी)
२ देखो 'झाग्रोलियौ' (रू.भे.)
रू०भे०—झावलौ।
झाऊ—सं०पु०—एक प्रकार का छोटा झाड़ (पेड़) विशष।
वि०—मूर्ख, नासमझ।
रू०भे०—झावू।
यौ०—झाऊ-चूहौ।
झाग्रोलियौ, झाग्रोलौ—सं०पु०—मिट्टी का बना एक बड़ा पात्र जो ग्रनाज, दूध ग्रौर दही ग्रादि रखने के काम ग्राता है।
उ०—इतेई में तौ रंग उडचोड़ौ, मैली मैली पागड़ी, हजामत वधियोड़ी, खांधे पर एक पुरांणौ मैलौ'र जागा जागा फाटियोड़ौ गमछौ जिकै ऊपर झाग्रोलियौ धरियोड़ौ, एक हाथ में जाडौ गेडियौ, गोडा साइनौ मैलौ पंछियौ ग्रर पगां में जाडा जूत हरदास 'ग्रायोई-ग्रायोई' कै'तौ ग्राय धमकतौ। झाग्रोलियै ऊपर एक पीतळ री थाळी।
—मुरलीधर व्यास
रू०भे०—झाउलियौ, झाउलौ, झाउल्यौ, झावलियौ, झावोलियौ, झावोलौ।

झागड-सं०पु० (अनु०) ऊपर के बोल से सम्बन्धित वाद्य का बोल विशेष । उ०—झागड दिगि दिगि सिरि वल्लरी-भुणण भुणण पाउ नेउरी। दों दों छंदिहिं तिविळ रसाळ घुणणं घुणणं घुग्घुर घमकार ।—विद्याविलास पवाडउ

रू०भे०—झागड़ ।

झागनाग-सं०पु०—अफीम । उ०—झागनाग झारिया, कई ऊमळै कचोळा। घण केसर घोळिया, होद लेवै हीलोळा ।—मे.म.

मि०—अहि-फेण ।

झागला-सं०पु० (बहु व०) १ फेन, झाग (शेखावाटी)

२ बहते पानी में उठने वाले बुदबुदे (शेखावाटी)

झागूंड, झागूड-सं०पु०—देखो 'झाग' (मह. रू.भे.)

उ०—१ नौहत्थी झोक झागूड झल्लेस । कड़े छंट चसळकते नेस ।
—सू.प्र.

उ०—२ रव्वारां थप्पले, घग्घ पाकेट भयंकर। नेसां चसळक नयण, झाळ झागूंडां नीझर ।—सू.प्र.

उ०—३ जमै गूगळां घोघ दोनूं जवाड़ै । कवि जांणि झागूंड लूंणी कराड़ै ।—रा.रू.

झाड़-सं०पु० [सं० झाटः] १ प्रायः कांटों वाला वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियां जड़ या जमीन के बहुत पास से निकल कर चारों ओर खूब छितरा जाय । उ०—१ वटपाड़ां धरपाड़ां वाळी, आभ जड़ां नांखै ऊपाड़। कोय न गांज सकै कनियांणी, झींझणियाळ तुहळा झाड़ ।—वां.दा. उ०—२ सूकी सुदरांणी झाड़ां रै सारै। लाधी विदरांणी बाड़ां रै लारै । सदव्रत करतोड़ी वरणास्रम सेवा । काढ़ै मरतोड़ी रेवा तट केवा ।—ऊ.का.

२ वृक्ष, पेड़ । उ०—जै पाय जंग आयौ अभंग, जळनिधघराज पर वंधि पाज । झड़ अनड़ झाड़ आंणे उपाड़, दळ मिळै दूठ, रिण भिड़ै रूठ ।—र.रू.

मुहा०—१ झाड़-झाड़ करणौ—तितर-बितर करना, अलग-अलग करना. २ झाड़-झाड़ होणौ—तितर-बितर होना, अलग-अलग होना. ३ झाड़ै जाणौ—शौचार्थ जंगल में जाना ।

३ झाड़ के आकार का छत में लटकाने का एक प्रकार का बड़ा रोशनी का सामान ।

यौ०—झाड़-फांणूस, झाड-फांनूस ।

४ पौधे के समान छूटने वाली एक प्रकार की आतिशबाजी ।

५ दस अंगुल चौड़ा और वीस अंगुल लंबा छीपियों का एक प्रकार का छापा ६ 'बायांसा' नामक लोक-देवियों की उपस्थिति का शरीर में अनुभव कर के तदनुसार अंग संचालित करने, मुंह से ध्वनि निकालने, वरदान देने अथवा शाप देने वाला ।

मि०—भोपौ।

७ जुलाब, रेचन ।

अल्पा०—झाड़कियौ, झाड़कौ, झाड़क्यौ, झाड़खियौ, झाड़खौ, झाड़ख्यौ ।

८ वध, हत्या, पछाड़, झटका. ९ 'झाड़णौ' क्रिया या क्रिया का भाव । १० विवाह तथा विशेष अवसरों पर प्रायः स्त्रियों के शृंगार के निमित्त उनके भाल पर रंग-बिरंगी बिन्दियों द्वारा बनाया जाने वाला वृक्ष, पत्ते आदि के आकार का चिन्ह ।

उ०—भीभळिया नैणां में अणियाळौ काजळ सारियां, सोनै रा झाड़ निजाड़ रै ऊपर दीना । कुरजां रौ टोळौ सहेल्यां रौ हबोळौ ।
—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—झाड ।

यौ०—झाड़-पूंछ, झाड़-फूंक ।

वि०—१ तमाम, सम्पूर्ण. २ बिल्कुल ।

झाड़कियौ, झाड़कौ, झाड़क्यौ [सं०झाटक, झट, संघाते+घञ् = झाटक = झाडक] देखो 'झाड़' (१ से ७ तक) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ सोयगा मारग आंख्यां मींच, झाड़कां लूंबै झीणौ वाव । सांझ रौ रोही में रणवास, खेजड़ा ऊभा दे दे घाव ।—सांझ

उ०—२ वांघळौ विकट सादूळ वाहण वणै, डांखियौ सीस समतूळ डाळै । अरोहै मूळ दुस्टां तणां उखाड़ण, झाड़क्या रुखाळण सूळ झालै ।—मे.म.

मुहा०—झाड़कां माथै बैठणौ—पितृ-तर्पण, गया, श्राद्ध आदि संस्कारों के अभाव में पूर्व पुरुषों का पक्षियों के रूप में वृक्षों पर बैठे रहने का माना जाने वाला अंध विश्वास ।

झाड़खंड-सं०पु०—वह वन जिसमें कांटेदार झाड़ हों, जंगल, वन ।

झाड़खियौ, झाड़खौ, झाड़ख्यौ—देखो 'झाड़' (१ से ७ तक)
(अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ करी आखरी त्यार, ओकळी सोवण सुख भर। मिरग चौकड़ी भूल, फोकड़ी लेवै दिन भर। झाड़खियां री सरण, सुधारै वन में काया। अगड़ी लियां अडीक, भगत छिनगारौ छायां ।—दसदेव

उ०—२ 'जोतसीजी ! थे क्यूं झाड़खियै नैं दुख देवौ हौ ।—वरसगांठ

उ०—३ जाळ झाड़खौ नीम, पधारचा है परदेसां। वेस ओपरौ छोड, ओपरौ वणां विदेसां ।—दसदेव

उ०—४ जुईयै वाघलै डाकिण खाधै महांनु कह्यौ जे झाड़खै दोळा फेरा ल्यौ तौ थांनु हींडण देऊं ।—देवजी बगड़ावतां री वात

झाड़-झंखाड़-सं०पु०यौ०—१ कांटेदार झाड़ियों का समूह.

२ वन, जंगल जहां घने वृक्ष व झाड़ हों ।

झाड़-झंगी-सं०पु०यौ०—वृक्षों या छोटे-बड़े पौधों का समूह, झाड़ी ।

उ०—तिण समै रावळ केल्हण खाली ठौड़ देख नैं आसणीकोट सूं विक्रूपुर आयौ नै अठै रह्यौ। कोट मांहिला झाड़-झंगी वाळ दिया, तिके अजेस वळिया ठूंठ दीसै छै ।—नैणसी

झाड़ण-सं०पु०—साफ करने या पोंछने का उपकरण या कपड़ा.

२ वह कूड़ा-करकट या पदार्थ जो झाड़ने या साफ करने से प्राप्त हो ।

रू०भे०—झाड़न ।

झाड़णौ, झाड़बौ-क्रि०स०—१ प्रहार करना, वार करना ।

किसी रोग या प्रेत-बाधा आदि को दूर किया हुआ, मंत्रोपचार किया हुआ, फूंका हुआ। ९ डांटा हुआ, फटकारा हुआ। १० गिराया हुआ, ढहाया हुआ। ११ बूंद-बूंद या कण-कण के रूप में गिराया हुआ, टपकाया हुआ। १२ तोड़ा हुआ। १३ कम किया हुआ। १४ मिटाया हुआ। १५ निर्धन किया हुआ, कंगाल किया हुआ। १६ बंधन-मुक्त किया हुआ।
(स्त्री० झाड़ियोड़ी)

झाड़ी-सं०स्त्री०—पेड़-पौधों का समूह, बहुत से वृक्षों अथवा झाड़ों का समूह, झुरमुट। उ०—१ कठै वजै वडवोर, कठै झाड़ी मोटोड़ी। कठै बोरटी नांव, वणी देवां री छोड़ी।—दसदेव
उ०—२ कोट मांहै कुवो १ मीठो पांणी। हळवद री पाखती झाड़ी थोड़ी, मैदांन छै।—नैणसी
२ छोटा झाड़ या पौधा। ३ सूअर के बालों की कूंची। ४ देखो 'झाड़ीगर' (रू.भे.)

झाड़ीगर-सं०पु०—मंत्रोपचार करने वाला।
रू०भे०—झाड़ी, झाड़ीदार।

झाड़ीदार-वि०—१ झाड़ी की तरह का, कंटीला, कांटेदार। २ देखो 'झाड़ीगर' (रू.भे.)

झाड़ीबोर—देखो 'झाड़बोर' (रू.भे.)
उ०—साजन इसा न चाहिग्रे, जैसा झाड़ी-बोर। ऊपर लाली प्रेम की, हिरदा मांय कठोर।—अज्ञात

झाड़ू-सं०पु०—जमीन व फर्श आदि साफ करने के लिये लंबी सींकों के समूह का बना उपकरण, बोहरी, झाड़न।
उ०—जळहर जांमी बावी मांगां, रातादेई माय। कांन्हकंवर सो वीरो मांगां, राई सी भोजाई। सांवळियो बहनोई मांगां, सोदरा बहन मांगां। हांडा धोवण फूंफी मांगां, झाड़ू देवण भूवा।—लो.गी.
क्रि०प्र०—दैणौ, फिरणौ, फेरणौ, मारणौ।

झाड़ूकसी, झाड़ूदार—देखो 'झाड़ूबरदार'

झाड़ूडुमौ—देखो 'झाड़पूंछौ' (रू.भे.)

झाड़ूबरदार, झाड़ूवाळौ-सं०पु०—झाड़ू देने वाला, मेहतर।

झाड़ोलौ-सं०पु०—पांवों में पहनने के चमड़े का मोजा जिसे किसान कांटा, जीवजंतु आदि से पांव की रक्षा के लिये पहनते हैं।
रू०भे०—झड़ूलौ। ये सख्या में दो होते हैं।

झाड़ौ-सं०पु०—मंत्रोपचार, झाड़फूंक। उ०—१ किण ही नै सरप खाधौ। गारडू झाड़ौ देइ वचायौ।—भि.द्र.
उ०—२ व्यंतर नीचौ पद पायौ रे, लागै लुगायां नै जायौ। देई मंत्र नै झाड़ा रे, गैलायां करै पवाड़ा।—जयवांणी
उ०—३ कर कर वाड़ा कपट रा, धाड़ा पाड़ण धांम। दिल चोरण झाड़ा दियै, भाड़ा वाळी भांम।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—दैणौ।
मुहा०—झाड़ा दैणा—मंत्रोपचार करना, फुसलाना।

यौ०—झाड़ौ-झपटौ, झाड़ौ-झपाटौ।
२ पाखाना, मल, टट्टी। उ०—तीन दिनां लग ताक जिकै झाड़ै नहं जावै। जावै तौ ही जुलम ऊठ वेगा नहं ग्रावै।—ऊ.का.
३ सफाई करने का कार्य।

झाड़ौ-झपटौ, झाड़ौ-झपाटौ-सं०पु०यौ०—मंत्रोपचार, झाड़-फूंक।
उ०—झाड़ा झपाटा मत करौ, मत करौ छकायां री घात। च्यारू ई जाप जपौ भला, मोटी दिवाळी नी रात।—जयवांणी

झाज—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)

झाजौ—देखो 'झाझौ' (रू.भे.)

झाझ—देखो 'जा'ज' (रू.भे.)
उ०—हरि मंदिर मां निरत करावां, घूघरचा घमकास्यां। स्याम नांम रा झाझ चलास्यां, भोसागर तर जास्यां।—मीरां

झाझउ—देखो 'झाझौ' (रू.भे.)
उ०—जोजन घडीयइ झाझउ थाय, लोहां भरइ न थाका थाइ। दीवइ मारगि जेसळ वहइ, वाट घाट सगळी विधि लहइ।—ढो.मा.

झाझुं—देखो 'जाझौ' (रू.भे.)

झाझेरड़ौ—देखो 'झाझौ' (ग्रल्पा. रू.भे.)
उ०—१ सातवीस झाझेरड़ा, इम पूछइवा छइ बहु बोल। ते सुधी परि सरद हौ, भव भ्रांमक कांइ (ग) वाग्रो निटोळ कि।
—ऐ.जै.का.सं.
उ०—२ चार मास झाझेरड़ा ए, रह्या 'विमल गिर' पास। नव्वांणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी ग्रास।—ऐ.जै.का.सं.

झाझौ-वि० (स्त्री० झाझी) १ ज्यादा, अधिक।
उ०—१ फौजां तौ वाटी करी, स घोड़ां नै दीनी दाळ। झाझा पड़िया पांतिया, कोई लग्या खुसी का थाळ।
—डूंगजी जवारजी री पड़
उ०—२ ग्रति घण ऊनिमि ग्रावियउ, झाझी रिठि झड़वाइ। वग ही भला त वप्पड़ा, धरणि न मुक्कइ पाइ।—ढो.मा.
उ०—३ झाझै मळ मूत्र झरै, ग्रंग तणा सह ग्रंस। तौ पिण खावा तरसिया, मांणस पापी मंस।—ध.व.ग्रं. उ०—४ म्हांनै रे मारू कसूंवै री झाझौ चाव, राय थे सिधावौ रे ईडरगढ़ री चाकरी।
—लो.गी
२ गहरा। उ०—जां लगि तेह नइ तूं प्रिय पासि, तां लगि प्रीतम चडे ग्रहासि। झाझी निद्रा व्यापइ ग्रंगि, तिण वेळ प्रिय चडचउ पवंगि।—ढो.मा.
३ तेज। उ०—१ भीकै झाझी झाळ, काळ चाळ झटकै 'कमौ'। भटकै क्रोध भुजाळ, खटकै उर खूंदाळमौ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ पड़ियौ ग्रसुर ऊपरा पड़ियौ, कोपिग्रै ग्रोपिग्रौ निमौ कंठीर। झाझै त्रिसळै दैत झरड़ियौ, वड़ियौ मांस भरथ रै वीर।—पी.ग्रं.
४ बढ़िया, सुन्दर। उ०—१ भल नूंती रे म्हांरी जांमण-जाग्री

अल्पा०—झाटी।

झाटकणौ, झाटकबौ–क्रि०स०—१ गर्द आदि दूर करना, साफ करना। उ०- झाटकि रुमालां गिरद झाड़ि। पै छोळ कीध जिम घण पहाड़ि।—सू.प्र.

२ गर्द आदि दूर करने के लिये किसी वस्तु को झटका देना, फटकारना, झटकारना. ३ एक वस्तु पर चिपकी हुई या लगी हुई दूसरी वस्तु को हटाना, अलग करना, पृथक करना, दूर करना।

४ प्रहार करना, वार करना। उ०—थारै पीव रै हाथां री बलिहारी, वारणा लेऊं इसी तरवार खुरसांण चढ़ाय तयार कर दीधी है सो रिण में दुसमणां ऊपर झाटकतां हाथ रै नांम भर झटको हचको नहीं आवै।—वी.स.टी.

५ मारना, पीटना. ६ फटकारना, डांटना।

उ०—अै थेट पूगा तद पातसाह जी द्वारासाह नूं जुगवराज दियौ। पीछे महीनै एक सूं इण एक अनीत करी। तिण माथै साजिहांनजी इणनूं झाटकियौ। तद द्वारासाह वाप कूं कैद कर दिया।—द.दा.

७ घोड़ा दौड़ाना। ८ वेग से खींचना। उ०—या सुणतां ही लोह छक होय पड़ियै थकै ही मलफ लै'र चाळुक्य हमीर कैमास री कांख में चंपिया आपरा स्वांमी नूं झाटकियौ।—वं०भा०

९ आहरण करना। उ०—भूखा केहरी री केहर खीजिया नागराज री मणी माडांणी झाटकि लेंण री वळ होय तौ म्हारा प्रस्थांन री राह रोकण री सलाह छै।—वं०भा०

१० देखो—'झटकणौ, झटकबौ' (रू.भे.)

झाटकणहार, हारौ (हारी), **झाटकणियौ**—वि०।

झाटकिओड़ौ, झाटकियोड़ौ, झाटक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झाटकीजणौ, झाटकीजबौ—कर्म वा०।

झाटकपट–सं०पु०—राजपूताने के प्रतिष्ठित सरदारों को राजदरबार से मिलने वाली ताजीम।

झाटकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ गर्द आदि दूर किया हुआ, साफ किया हुआ. २ गर्द आदि दूर करने के लिये किसी वस्तु को झटका दिया हुआ, फटकारा हुआ, झटकारा हुआ. ३ किसी एक वस्तु पर चिपकी हुई या लगी हुई दूसरी वस्तु को हटाया हुआ, अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ, दूर किया हुआ. ४ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ. ५ मारा हुआ, पीटा हुआ. ६ फटकारा हुआ, डांटा हुआ. ७ घोड़ा दौड़ाया हुआ. ८ वेग से खींचा हुआ. ९ आहरण किया हुआ. १० देखो 'झटकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झाटकियोड़ी)

झाटकौ–सं०पु०—१ चँवर डुलाने की क्रिया या भाव।

उ०—हुवै चम्मरां झाटका जोति हुवै। सदा ऊतरै आरती सांझ सूवै। तकै भादवी माह ऊपांत तिरथी। पड़ै मायरै पाय प्रिथीप प्रिथ्वी।—मे.म.

२ प्रहार, चोट, वार। उ०—लोहां करंतौ झाटका फणां कंवारी घड़ा रौ लाडी, आडौ जोधांण सूं खेंचियौ वहै अंट। जंगी साल हिंदवांण रौ आवगौ जींनै, आउवौ खायगौ फिरंगांण रौ अजंट।

—सूरजमल्ल मीसण

झाटक्क—देखो 'झाटक' (रू.भे.)

उ०—खेंगक्क उचक्क खाटक्क खगक्क। काटक्क कटक्क झाटक्क झटक्क।—सू.प्र.

झाटक्कणौ, झाटक्कबौ—देखो 'झाटकणौ, झाटकबौ' (रू.भे.)

उ०—दुरंग वडाई दाखवै, झाटक्कै कोसीस। 'अचळ' लड़ेवा ऊठियौ, अंबर लागौ सीस—अ. वचनिका

झाटक्कियोड़ौ—देखो 'झाटकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झाटक्कियोड़ी)

झाटझड़ी–सं०स्त्री०—शस्त्रों के प्रहारों से होने वाली ध्वनि।

उ०—लोहां रा वोह सेलां रा घमंका लीजै। खांडां री खाटखड़ि झाटझड़ि डंडाहड़ि खेलीजै।—वचनिका

झाटणौ, झाटबौ–क्रि०स०—१ संहार करना, मारना।

उ०—झाळ सां वाळिया किलंग ना झाटिया। काळ रै काळि काळींग ना काटिया।—पी.ग्रं.

२ सांप का डसना।

३ देखो 'झाटकणौ, झाटकबौ' (रू.भे.)

उ०—बंगाळक झाटत खाग अबीह। सभे जुध दारुण ठाकुरसीह।

—सू.प्र.

झाटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ।

२ सांप का डसा हुआ।

३ देखो 'झाटकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झाटियोड़ी)

झाटी–सं०स्त्री०—१ कांटेदार वृक्ष की टहनी. २ कांटेदार वृक्ष।

३ देखो 'झाटकणौ' (अल्पा. रू.भे.)

४ जिद्द, हठ।

मुहा०—झाटी भिलाणी—हठ करने के लिये प्रेरित करना, दुराग्रह करने के लिये प्रेरित करना।

५ कष्ट, दुःख, आपत्ति. ६ कँटीली झाड़ियों की टहनियों को जमा कर बनाया हुआ फाटक।

मह०—झाटौ।

झाटौ–सं०पु०—देखो 'झाटी' (मह. रू.भे.)

झाड—देखो 'झाड़' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—ताल तमालीय तणच्छ घण, तिहां तुळसी नइ ताड। तज तंडिळ नइं तिलवडी, ताळीसांनां झाड।—मा.कां.प्र.

झात्कारि, झात्कारी–सं०स्त्री० (अनु०) झल्लरी नामक वाद्य की ध्वनि।

उ०—सीकरी तणउ झमाल, अलंबा तणी डमाल, भेरि तणं भांकारि, झल्लरी तणं झात्कारि, संख तणं ओंकारइ, तिविळ तणं दोंकारि, मादळ तणं धोंकारि, ढोल तणं ढमढ़िमाट, पटह तणं गुमगुमाटि, रणतुर तणं रणरणाटि।—व.स.

४ टुकड़े-टुकड़े कर के गिराया हुआ. ५ बरसाया हुआ.
६ वीर्य स्खलित किया हुआ. ७ छिड़का हुआ. ८ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ ।
(स्त्री० झारियोड़ी)

झारी-सं०स्त्री०—१ टोंटी लगा हुआ लुटिया की तरह का एक प्रकार का लम्बोतरा पात्र। उ०—१ हां रे वाला साथीड़ां नै लोटो दिवाय। जैंवाग्री नै झारी सोने की, जी म्हारा राज ।—लो.गी.
उ०—दूजी तो पैंड़ी जी उमादे रांणी पग धरचो, दांतण झारी जी हाथ ।—लो.गी.
उ०—३ सोनगरी आपरी छोकरी नूं कह्यो—'झारी तळाव थी भर ल्याव।' तरै छोकरी झारी भर ल्याई ।—नैणसी
२ चम्मच के आकार का किन्तु चम्मच से कुछ बड़ा तथा आगे से छितराया हुआ छेददार उपकरण ।

झारीबरदार-सं०पु०—पानी का बर्तन रखने वाला ।
उ०—दूदो सुरजणोत चांपावत जैसिंघ भैरूंदासोत रौ दोहितो। राव सुरजन रै कंवर दूदो वडै डील वडो रजपूत हुतो। उणनूं उणरा झारीबरदार बिरांमण जिणरै हाथ कंवर भोज सुरजणोत जहर दिरायो। दूदा रै बेटो नरहरदास ।—बां.दा. ख्यात

झारोळी-सं०स्त्री०—वर्षा की धारा। उ०—बीजळियां झारोळियां, चमकि डरावै मोहि। आवि घरै सज्जण 'जसा', हूँ बळिहारी तोहि।
—जसराज

झारौ-स०पु०—१ एक प्रकार का लकुटि के आकार का लम्बोतरा जल-पात्र जिसके आगे टोंटी लगी रहती है। उ०—१ तठा उपरांयत पाळा झारा चळू करण रै पगां मंगायजै छै, चळू कीजै छै।
—रा.सा.सं.
उ०—२ इतरौ कहि ब्रहदभांण झारौ ले नै संकळप घालियो ।
—पलक दरियाव री वात
उ०—३ महँदी तो सींचण धण गयी, सोनै रो झारौ जी हाथ, सोदागर महँदी राचणी ।—लो.गी.
२ प्रातःकाल का भोजन और नाश्ता. ३ लंबी डंडी वाली करछी या चम्मच जिसका अगला भाग छोटे तवे का सा होता है और जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद होते हैं ।
४ महीन-महीन छेद का कलछे के आकार का किन्तु छिछला उपकरण जिससे प्राय: घी, दूध आदि छाने जाते हैं. ५ किसी द्रव पदार्थ की धारा जो प्राय: किसी रोग, सूजन या घाव आदि के अच्छा होने के लिये डाली जाती है ।
क्रि०प्र०—देणो ।
६ (?)
उ०—पछै कितरे हेक दिने जसवंतजी बोराड़ वसिया। पछै मेरां नूं निपट दबाया। सु चांग रो धणी जसवंतजी रा हीड़ा करतो। नै जसवंतजी रै राठोड़ मांनो करमसोत चाकर थो सु पातळो काळजो थो। सु उण आगै जसवंतजी कह्यो—राठोड़ मांना ! आंपै चांग रा धणी नूं मारां। हूं चोट करण नै जाइस। तरै हाथ झारौ देइस। तरै हूं लोह वाहूं छूं, थे पिण लोह वाहज्यो।—राव मालदे री वात

झाळ—सं०स्त्री० [सं० ज्वाला] १ अग्नि, ज्वाला ।
उ०—१ स्वारथिया स्वारथ्थ में, कछु सरमावै नाय। चैन घड़ी पुळ ना पड़ै, झाळ उठै हिय मांय। हिय में ऊठै झाळ, निपट अंधा ह्वै जावै। कूड़-कपट रै हाथ, सभी ससतर अपणावै। गरज मिटै जद पलट दै, आंख पलक रै मांय। स्वारथिया स्वारथ्थ में, कछु सरमावै नाय ।—अज्ञात
उ०—२ साझे द्रढ़ आसण इस्ट अराधण, पैठो जाय पताळ में जी। दिल पंच इंद्री दम घोम सखी, धम झोखै आहुत झाळ में जी ।
—र.रू.
२ अग्नि की लपट, अग्नि-शिखा। उ०—१ मेह को ममीलो, बादळां की बीज, होळी की झाळ, सांवण की तीज ।
—दरजी मयारांम री वात
उ०—२ दादू माया फोड़े नैन दो, रांम न सूझै काळ। साधु पुकारै मेर चढ़, देख अग्नि की झाळ ।—दादू वांणी
क्रि०प्र०—ऊठणी ।
३ लौ, अग्नि-शिखा। उ०—अचपळो दिनड़ो होसी रात, चांनणी होसी घोर अंधार। कोड री इण मिटवा री वेळ, सांझ रै दिवलै ह्वैगी झाळ ।—सांझ
४ क्रोधाग्नि, क्रोध। उ०—१ तरै लालजी नां कासींद जाय कागळ दिया। प्रधांन रौ लिखियो। समाचार सांभळिया। तद पगां री झाळ माथै ऊठी तरै तळवटा आवण लागा ।—लाली मेवाड़ी री वात
५ सूर्य-किरण, रश्मि। उ०—झवकुंत कूंत किरणाळ झाळ, निसि जांण नवइ नाखत्र माळ ।—रा.जै. पावड़ी
६ प्रसंग करने की कामना, कामेच्छा, चुल ।
उ०—सखी-वयण सुंदरि सुण्या, उठी मदन की झाळ। सुंदरि नूं सज्जण-विरह, ऊपन्नउ तत्काळ ।—ढो.मा.
क्रि०प्र०—ऊठणी।
७ चरपराहट, तीखापन. ८ देखो 'झाळण' (रू.भे.)
९ देखो 'झळ' (रू.भे.)

झाल-सं०स्त्री०—१ स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का कर्णाभूषण ।
उ०—१ सारंग वांणी सरिस बोलई, नहीं तोलई कोई। करणेनि सोवन झाल झत्रकइ, अवसि रंभा होई ।—रुकमणी मंगळ
उ०—२ सरळ तरळ अति कोमळ, गोरिय चंपकवांनि। दंत वइरा-गर दीपइ, झाल झळापइ कांनि ।—प्राचीन फागु संग्रह
२ बैलगाड़ी पर भूसा आदि भरने के लिये लगाई जाने वाली खींप, कपास की टहनियों की अथवा बकरी के बालों से बुनी हुई चौड़ी व लम्बी पट्टी. ३ ऐसी दो पट्टियों के बीच गाड़ी में भरा हुआ भूसा.
४ ऐसी दो पट्टियों के बीच गाड़ी में भूसा आदि भरने का एक नाप विशेष ।

[illegible] झालड़, [illegible] ।

२ [illegible] का भाव. ६ एक प्रकार का बड़ा जल-पात्र ([illegible])

[illegible]—[illegible] ।

झालड़—१ देखो 'झाल' (२, ३, ४) (मह., रू.भे.)

२ देखो 'झालर' (रू.भे.) ३ देखो 'झालरी' (रू.भे.)

झाळण—सं०स्त्री०—धातु की वस्तुओं को जोड़ने के लिये लगाया जाने वाला टांका ।

झालन—सं०स्त्री०—१ अनाज ढोते समय गाड़ी पर बिछाया जाने वाला कपड़ा. २ पकड़ने की क्रिया या भाव. ३ देखो 'झाल' । (२, ३, ४) मह., रू.भे.)

झाळणी, झाळबौ—क्रि०स०—१ धातु की बनी वस्तु में टांका देकर जोड़ लगाना. २ भस्म करना, जलाना ।

झाळणहार, हारौ (हारी), झाळणियौ—वि० ।

झाळिग्रोड़ौ, झाळियोड़ौ, झाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

झाळणौ, झळबौ—कर्म वा० ।

झालणौ, झालबौ—क्रि०स०—१ पकड़ना । उ०—ऊमर साल्ह उतारियउ, मन मोटइ मनुहारि । पग सूं ही पग कूंटियउ, मुहरी झाली नारि ।—ढो.मा. उ०—२ नदियां सुत तासु सुता रौ नायक, जिण नूं थाटौ झालै । जळसुत मीत तासु-सुत जिण नूं, घात कदै नंह घालै । —र.रू.

उ०—३ धार एरंत देहुरौ जड़ नै कंवळ पूजा करणी मांडी । तरै देवतां हाथ झालियौ, कह्यौ—म्हे थांरी सेवा-पूजा सौं राजी हुवा । —नैणसी

२ सहन करना । उ०—१ कजियौ गोलरां सूं करस्यां । गोलर धावां रौ धक्कौ झालै सो कुण ।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

उ०—२ तौ दस मास न झाल्यौ भार मुझ मातजी । तैं भाखीज्यै धाय धरम निज में कजी ।—प.च.चौ.

३ स्वीकार करना । उ०—१ कीधौ चोप विसायतां, किता इजारौ कीध । सेनाई झाली चाकरी, दूण इजाफा दीध ।—रा.रू.

उ०—२ हूं सोनूं सराप देयस्यूं, सो झाल ।

—डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—३ थां रा नाळेर पाछा मेलो मती । तारां नाळेर झालिया ।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

४ धारण करना । उ०—१ जिणि दीहे तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ । तांह दिहां री गोरड़ी, पड़तउ झालइ ग्राभ ।—सू.प्र.

उ०—२ झळहळ पमर सिलह ग्रग झालै । हय असवार दोय लख हालै ।—सू.प्र.

५ ग्रहण करना । उ०—गुरउपदेस न झालइं, परमतत्व न हालइं ।

—व.स.

६ मान करना, लेना । उ०—परदेसां प्री ग्राविघउ, मोती ग्रांण्या जेण । मगु कर-तोळां झालिया, हसि करि नांखिया केण ।—ढो.मा.

७ रोकना, थामना । उ०—१ जिण दीहे तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ । तांह दिहां री गोरड़ी, पड़तउ झालइ ग्राभ ।—ढो.मा.

उ०—२ सावळ पकड़े सूर, तुरां चढ़िया जग तेहा । पड़तो ग्राभ प्रचंड, ग्रडर झालै भुज एहा ।—सू.प्र.

८ उत्तरदायित्व लेना । उ०—कहै साहि सुण सांमंत, बादळ कीयौ तैं उपगार । जीवी दांन दीधौ सुजस, लीधौ झालि गढ़ रौ भार ।

—प.च.चौ.

झालणहार, हारौ (हारी), झालणियौ—वि० ।

झालिग्रोड़ौ, झालियोड़ौ, झाल्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झालीजणौ, झालीजबौ—कर्म वा० ।

झलणौ, झलबौ—अक० रू० ।

झेलणौ, झेलबौ—रू०भे० ।

झाळपूळौ—वि०पो०—१ अत्यन्त क्रोधित, बहुत कुपित, आग-बबूला । उ०—१ देख ताप सावै दुनी, ग्राप पराक्रम ग्रास । रोस झाळपूळा रहै, सादूळा स्याबास ।—बां.दा.

उ०—२ ग्रगां देख सुंडाळ झंडा दकूळां । ग्रळै काळ रूपी हुवौ झाळपूळां । करै पूछ ग्राछोट गुंजार कीधी । लड़ेवा ग्रड़ै ग्राभ झप लीधी ।

—हिंगळाजदांन कवियौ

३ तेजस्वी, तेजवान । उ०—उडणौ प्रथीराज, निपट झाळपूळा हुवौ । तोडौ नै जाळोर एक दिन रै बीच मारिया, तरै ग्रा वात पातसाह सुणी, तरै उडणौ प्रथीराज कहांणौ, ग्रसंख प्रवाड़ै जैतवादी रांणौ रायमल जीवतां ही मूग्रौ ।—नैणसी

झाळबंबाळ—वि०यौ०—अत्यन्त क्रोधी ।

झालर—सं०स्त्री० [सं० झल्लरी] १ पूजा के समय बजाया जाने वाला घड़ियाल । उ०—१ ग्रबर जाग्या देग्री-देवता, धरती जाग्यौ वासग नाग, झालर तौ वाजी राजा रांम की ।—लो.गी.

उ०—२ ग्रह माथै रांग ग्राभ लग ऊंचौ, नव खंडे जस झालर नाद । रोप्या भला रायपुर रांणा, पड़ै न सासणतणा प्रसाद ।

—दुरसौ ग्राढ़ौ

उ०—३ तिमर रो जोर हटण लागौ, दीपक रो पिण तेज घटण लागौ, चिड़ियां चहकण लागी, झालरां ठहकण लागी, इण भांत पचड़ो हुण लागो जठै प्रेम प्रीत रो झगड़ो हुण लागो ।—र. हमीर

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष । उ०—छत्र धरातइ, चमर वींजातइ, नफेरी, सरणाइ, वरगां, ढोल, झालर, डुंडि, दमामां, दड़दड़ी, ग्रिदंग, नीसांण प्रमुख वाजित्र वाजइ, तेणइ ग्राकास गाजइ ।

—व.स.

३ एक मारवाड़ी लोक गीत. ४ जल-पात्र विशेष ।

उ०—जगां एक खासा गुलांम मुल्तांन ग्ररब रौ झालर पांणी री लेय बादसाह रै पसवाड़ै पहोंचियौ ।—नी.प्र.

रू०भे०—झालरी, झालिर ।

महु०—झालड़ ।
अल्पा०—झालरियो ।
५ देखो 'झालरी' (१) (मह. रू.भे.)
उ०—कंचरण खंभ मंडति कीन वरणण छविकरां, झळहळ क्रतपूर झळूस मुगता झालरां । अद्भुत वितांनां आरंभ मोल अपंपरा, जोड़ै डमर डेरां जोग भाद्रव जळधरां ।—वां.दा.
६ देखो 'झालरी' (मह. रू.भे.)
यौ०—झालर-वाव, झालर-वाव ।
७ देखो 'झाल' (मह. रू.भे.)
वि०—मूर्ख, पागल ।
झालरड़ी—देखो 'झालरी' (अल्पा., रू.भे.)
झालरदार—देखो 'झालरीदार' (रू.भे.)
झालरबाव, झालरवाव–सं०स्त्री०यौ० [रा० झालर+सं० वापिका] देखो 'झालरी' (१) उ०—वाड़ी रा वड़ रळियांमणा ए, सियळी वड़ री जी छाय । नागादड़ी नाडे भरी ए झिलती झालरबाव ।
—लो.गी.
झालरियो–सं०पु०—१ फेनयुक्त छाछ. २ पुराना कपड़ा.
३ झल्लरीदार ।
उ०—ऊंचली मेड़ी झालरिया किंवाड़, चालै(नी) गडपतियां चौपड़ खेलसां ।—लो.गी.
४ देखो 'झालर' (अल्पा., रू.भे.) ५ देखो 'झालरी' (अल्पा., रू.भे.)
६ देखो 'झालरी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ईंढ़ी कवडाळी माथै पर ओडी, छैली अलकावळ मुखड़ै पर छोडी । झणकै झालरियौ झूमरिया झटकै, लूंमीं भींगां री खूंणी तळ लटकै ।—ऊ.का.
झालरी–सं०स्त्री०—१ किसी वस्तु के किनारे पर शोभा के लिये लटकने वाला या लगाया जाने वाला हाशिया ।
उ०—१ वीजळि दुति दंड मोतिए वरिखा, झालरिए लागा झड़ण । छत्र अकास एम ओछायौ, घण आयौ किरि वरण घण ।—वेलि.
उ०—२ नगारा रै झालरी नीली राखै, ऊंटां री जूण नीली राखै ।
—वां.दा. ख्यात
२ देखो 'झालरो' (अल्पा., रू.भे.)
अल्पा०—झालरड़ी ।
महु०—झालड़, झालर, झालिर ।
३ देखो 'झालर' (रू.भे.) उ०—१ भेरी मादळ झालर रे, सुरणाई संख भेरी । इत्यादिक वाजित्र घुरै रे, पड़ै नगारां री घोरो ।
—जयवांणी
उ०—२ देहरा मांहे कथा कीरतन नाठक पड़िनै रहिग्रा छै । धूप-दीप कीजै छै । आरती उतारीजै छै, केसर-चंदण चरचीजै छै । अगर उखेवीजै छै । पंच सवदां वाजि रहिया छै । झालरियां झण-कार हुइनै रहिया छै ।—रा.सा.सं.
झालरीदार–वि०—जिसमें झल्लरी लगी हो ।
रू०भे०—झालरदार ।
झाळहळ—देखो 'झळाहळ' (रू.भे.) उ०—जगत नमै झाळहळ सु तो काठ नै जळावै ।—पहाड़खां आढ़ो
झालरो–सं०पु०—१ कूप से चौड़ा तथा तालाब से गहरा वह जलाशय जिसके भीतर आने-जाने के लिये चारों ओर सीढ़ियाँ बनी हुई हों.
२ स्त्रियों (प्राय: जाटनियों) के गले में पहिनने का हारनुमा चांदी या सोने का एक जेवर विशेष. ३ घोड़े के कंठ का आभूषण ।
उ०—करै हालरा कालरा नाद कंठां । ग्रथीला मणि झालरा लूम गंठां ।—वं.भा.
अल्पा०—झालरियौ ।
महु०—झालर ।
झाळांमुख–सं०पु०—भाला (ना.डिं.को.)
रू०भे०—झाळामुख ।
झाळा—देखो 'झाळ' (रू.भे.) उ०—१ केस पास काळा, केई जमाई, केई साळा, केई जोधाळा, चालती हालती झाळा, इस्या पांति वइठा वाळगोपाळा ।—व.स. उ०—२ कारतूस घन युद्ध कर सुम्मा लग थग्गे । एक पलीती काळिका दहूं ओरनि दग्गे । रिंजक प्याला सोर ही झाळा जगमग्गे । यारो परळै काळदी ज्वाळानळ जग्गे ।—ला.रा.
उ०—३ झाळा धोम तेज झळहळियौ, अगन सरूप पतंग ऊछळियौ । जभके नहीं भयांणक जांणै, पतंग जिको ग्रहियौ नृप पांणै ।—सू.प्र.
उ०—४ नारसिंघ नीछटै, अरण नहराद इतां उद्र । काळ झाळ कळकळै, रोस विकराळ जड़ा रुद्र ।—सू.प्र.
झाला–सं०स्त्री०—१ संगीत व तार वाद्यों में एक स्वर के साथ दूसरे स्वर को बजाने को झाला कहते हैं । इसे तीव्र लय में ही बजाया जाता है. २ राजपूतों के छत्तीस वंशों में से एक वंश ।
झाळामुख—देखो 'झाळांमुख' (रू.भे.)
झालाळो–वि०—१ वह वस्तु (आभूषण आदि) जिसके नीचे झल्लरी लगी हो । उ०—झूंटणिया झूंटणिया, गोरी कांग्री विलखै, मेह विना धरती तरसै, मेहड़ो हूवण दै, झूटणियां घड़ाऊं झालाळा मेहड़ो हूवण दै ।—लो.गी.
२ संकेत करने वाला ।
झाळाहळ—देखो 'झळाहळ' (रू.भे.) उ०—१ पंग राज प्रमांण प्रगट चढ़ियो 'अभपत्ती' । सह जांणियो संसार राज झाळाहळ रत्ती ।—सू.प्र.
उ०—२ दुय गिरि चंदण अढ़ार, वरै जळवंव मोताहळ । सेर एक सोव्रन्न, पंच रूपक झाळाहळ ।—नैणसी
उ०—३ खुटहड़ गज जिम विखम भरै पौरस झाळाहळ । पय रकेव धरि पमंग हरख चढ़ियो झाळाहळ ।—सू.प्र.
झाळि—देखो 'झाळ' (रू.भे.) उ०—झावकि पइसी झाळि, सुंदरि कांइ न सळसळइ । वोलइ नहीं ज वाळ, घण धंधूणी जोइयउ ।
—ढो.मा.
झालि—देखो 'झाल' (रू.भे.) उ०—१ झालि झळामळ नागला, नाग

नाना दर्ं गालि, देखि हूं ओपम तिहां सीय ? हांसीय जीपए चालि।
—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ मिगमदवासित वेणि काळी, झालि कांनि बनी कनक-नाळी। मोहीइ निरमळुं नाकि मोती, आरसी करि ग्रही रूप जोती।
—प्राचीन फागु संग्रह

झाळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ धातु की वस्तु में टांका देकर जोड़ लगाया हुआ. २ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ।
(स्त्री० झाळियोड़ी)

झालियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पकड़ा हुआ. २ सहन किया हुआ. ३ स्वीकार किया हुआ. ४ धारण किया हुआ. ५ ग्रहण किया हुआ. ६ प्राप्त किया हुआ, लिया हुआ. ७ रोका हुआ, थामा हुआ. ८ उत्तरदायित्व लिया हुआ।
(स्त्री० झालियोड़ी)

झालियो-सं०पु० (बहु व० झालिया) बैल गाड़ी के ऊपर लगाये जाने वाले काष्ट के डंडे जिनके द्वारा कोई भी सामान गाड़ी में आसानी से भरा जा सके।

झालिर—देखो 'झालर' (रू.भे.) उ०—मांहि तास सोभै हरि मूरति, झालिर तरा हुम्रै झणकार।—ह.नां.

झाळी—देखो 'झाळ' (रू.भे.) उ०—१ असी कोस चाळीस झाळी उंचाळी। जड़ाऊ नगां सोवनी लंक जाळी।—सू.प्र.

उ०—२ भिगे जांणि सांमंद्र री हेक झाळी। अनै दूसरी तीसरी नैण ज्याळी।—सू.प्र.

झाळोझाळ—सं०स्त्री०—१ क्रोधाग्नि।
उ०—हाजरिया री वात सुण नै ठाकर रै झाळोझाळ लागगी। एक भांवणकी री इतरी हिम्मत के म्हारा कणवारिया नै इज मारण नै···।—रातवासो
२ कलहाग्नि. ३ पूर्ण रूपेण आग का प्रज्वलित होने का भाव या क्रिया।
रू०भे०—झळोभळ, झाळोझाळ।

झालो-सं०पु०—संकेत, इशारा। उ०—१ सांगरियां सह पाकियां, लूआं री लपटांह। खोखा लाग्या खिरण नै, दे झाला हिरणांह।—लू
उ०—२ अद्दर झाला दिये, लड़ै परला लेवंता। किरवार धार जोधार कटि, उड अकास पाछो पड़ै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—३ दारू रो प्यालो भलो, दुपट्टै रा झालो। मरवण तो पतळी भली, माह मतवाळो।—लो.गी.

उ०—४ आ रमकोली सूरती, चित देखण री चाव। अलवेलो वालो सखी, झालो द घर लाव।—अज्ञात

झावलियो, झावल्यो—देखो 'झाग्रोलियो, झाग्रोलो' (रू.भे.)

झावी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के पहनने का एक आभूपण।
उ०—चूड़ो थारो चिलके, झावी थारी झबकै।—लो.गी.

झावू—देखो 'झाऊ' (रू.भे.)

झावोलियो, झावोलो—देखो 'झाग्रोलियो, झाग्रोलो' (रू.भे.)

झावो-सं०पु०—१ एक जड़ विशेष जो नदी के किनारे मिलती है (अमरत)
२ एक प्रकार का मिट्टी का पात्र जो मिठाई परोसने के काम आता है। (शेखावाटी)

झिंगर, झिंगार-सं०स्त्री०—१ वृक्षों की लताओं का झुरमुट, घनी झाड़ी।
उ०—१ कह पय सोवन कडो, लियां पग सोवन लंगर। वसै दिवस जिदरो जठै जाडा तर झिंगर।—पा.प्र.
२ देखो—'झिंगोर' (रू.भे.)
उ०—जळ थळ थळ जळ हुइ रहेउ, बोलइ मोर झिंगार। सांवण दूभर हे सखी, किहां मुझ प्रांण आधार।—लो.गी.

झिंगोर-सं०पु०—१ प्रायः खेतों, मैदानों और अंधेरे स्थानों में पाया जाने वाला एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो कई रंगों का होता है। यह तेज आवाज में झींझीं की ध्वनि निकालता है जो बरसात में अधिक सुनाई देती है, झींगुर, झिल्ली. २ झींगुर या झिल्ली की आवाज।
उ०—गहरी गहकै है, डेडरा डहकै है, मोरां री सोर, झिल्ली री झिंगोर, वळै बोलै चातक, विरही जनां का घातक।—र हमीर
३ मस्ती में झूमने अथवा किलोल करने का भाव, मस्ती।
उ०—१ जठै राज हंसां कळ हंसां री केळ है, बतक सर घिरट हंजा तरै है, सारसां रा टोळा झिंगोर करै है, छोटा मीन जिकै एक-एक रै लारै धावै है।—र. हमीर
उ०—२ दादरा डरराट करै छै, मोरिया झिंगोर खायनै रह्या छै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
उ०—३ भंवरा ऊपर गुंजार कर रहिया छै। सारसां बोल रही छै। मयूर झिंगोर करै छै।—डाढ़ाळा सूर री वात
रू०भे०—झिंगोर, झिगोर, झींगर, झींगोर, झींगोर, झीगोर, झीगोर।

झिंगोरणो, झिंगोरबो-क्रि०स०—मस्ती को अभिव्यक्त करना।
उ०—१ डूंगरिया हरिया हुया, वणे झिंगोरचा मोर। इणि रिति तीनइ नीसरइ, जाचक, चाकर, चोर।—ढो.मा.
उ०—२ पपइया, तूं बोल रे, जित म्हांरे आलीजै भंवर री मुकांम। सांवण आयो सायवा, वने झिंगोरत मोर, काळिगड़ी कू कू करै, करत कोयलड़ी सोर।—लो.गी.

झिगोर—देखो 'झिंगोर' (रू.भे.)

झिंझोटी-सं०स्त्री०—सम्पूर्ण जाति की सब शुद्ध स्वरों वाली एक रागिनी (संगीत)

झिंडो—देखो 'झंडो' (रू.भे.) उ०—तीर वहै छै। जिसै दखणी झिंडै तांई आय वागा।—द.दा.

झिकाड़णो, झिकाड़बो—देखो 'झंकाणो, झंकाबो' (रू.भे.)
झिकाड़णहार, हारो (हारी), झिकाड़णियो—वि०।

झिकाड़िग्रोड़ो, झिकाड़ियोड़ो, झिकाड़चोड़ो—भू०का०कृ० ।
झिकाड़ीजणो, झिकाड़ीजवो—कर्म वा० ।
झकाड़ियोड़ो—देखो 'झंकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिकाड़ियोड़ी)
झिकाणो, झिकावो—देखो 'झंकाणो, झंकावो' (रू.भे.)
झिकाणहार, हारो (हारी), झिकाणियो—वि० ।
झिकायोड़ो—भू०का०कृ० ।
झिकाईजणो, झिकाईजवो—कर्म वा० ।
झिकायोड़ो—देखो 'झंकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिकायोड़ी)
झिकाळ—देखो 'झकाळ' (रू.भे.) उ०—झूठी मत करो झिकाळ ।
—जयवांणी
झिकावणो, झिकाववो—देखो 'झंकाणो, झंकावो' (रू.भे.)
उ०—कोहर पांणी काढ़िजे, कोळाहळ कोकाय । ढोले करह झिकावियो, कोहर पुंहता आय ।—ढो.मा.
झिकावणहार, हारो (हारी), झिकावणियो—वि० ।
झिकाविग्रोड़ो, झिकावियोड़ो, झिकाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झिकावीजणो, झिकावीजवो—कर्म वा० ।
झिकावियोड़ो—देखो 'झंकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिकावियोड़ी)
झिकोळणो, झिकोळवो—देखो 'झकोळणो, झकोळवो' (रू.भे.)
उ०—घुड़ला रुधिर झिकोळिया, ढीला हुआ सनाह । रावतियां मुख भांखरां, सहीक मिळियो नाह ।—हा.झा.
झिकोळणहार, हारो (हारी), झिकोळणियो—वि० ।
झिकोळिग्रोड़ो, झिकोळियोड़ो, झिकोळचोड़ो—भू०का०कृ० ।
झिकोळीजणो, झिकोळीजवो—कर्म वा० ।
झिकोळियोड़ो—देखो 'झकोळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिकोळियोड़ी)
झिखणो, झिखवो—क्रि०अ०—१ प्रकाशित होना । उ०—भाभड़ा तणै उरि भाभ नांमो झिखै, वडो जांण निरखिसै दुलंभ दरिसण विखै ।
—पी.ग्रं
२ शोभा देना । उ०— तिलक बीच बिंदी झिखनै रही छै ।
—रा.सा.सं.
३ क्रोधित होना, कुपित होना. ४ टिमटिमाना, चमकना.
उ०—करै घात बोलै पारसी, बगतर तवा झिखै जांणै आरसी ।
५ बक-झक करना, बकना ।
झिखणहार, हारो (हारी), झिखणियो—वि० ।
झिखिग्रोड़ो, झिखियोड़ो, झिख्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झिखीजणो, झिखीजवो— भाव वा० ।
झिखियोड़ो—भू०का०कृ०—१ प्रकाशित हुवा हुआ. २ शोभा दिया हुआ. ३ टिमटिमाया हुआ, चमका हुआ. ४ बकझक किया हुआ, बका हुआ. ५ क्रोधित हुवा हुआ, कुपित ।
(स्त्री० झिखियोड़ी)
—अ. वचनिका
झिगझिग, झिगझिगा'ट, झिगझिगाहट—सं०स्त्री०—१ चमक-दमक, चमचमाहट, जगमगाहट । उ०—जठै आगरा खीरा बुझनै राख रह गई है उठै भलांई मन री चाह पूरण करिजै । प्रयोजन जिण धरती रा धणी खीरा होवै जैड़ा झिगझिगाट करता है ।
—वी.स.टी.
२ व्यर्थ की बकवाद, बक-झक । उ०—१ मनजी माराज गोमुखी में हाथ घाल्यां बैठा जप करता हा अर सागे-सागे खंघी सूं झिगझिग ई करता जावता हा ।—वरसगांठ
क्रि०प्र०—करणी ।
झिगणो, झिगवो—क्रि०अ०स०—१ प्रकाशित होना, जगमगाना, चमकना, दमकना । उ०—आ तो किसा नगर सूं आई है भांग, रंग भर दिवलो झिग रह्यो । आ तो नवानगर सूं आई है भांग, रंग भर दिवलो झिग रह्यो ।—लो.गी.
२ (दही, मट्ठा आदि द्रव पदार्थ) विलोड़ित करना, मथना.
३ किसी वस्तु पर एकाएक ऐसी मार या दाव पहुँचना जिससे वह बहुत दब जाय और विकृत हो जाय, कुचलना, मसलना ।
झिगणहार, हारो (हारी), झिगणियो—वि० ।
झिगवाड़णो, झिगवाड़बो, झिगवाणो, झिगवावो, झिगवावणो, झिगवाववो, झिगाड़णो, झिगाड़बो, झिगाणो, झिगावो, झिगावणो, झिगाववो—प्रे०रू० ।
झिगिग्रोड़ो, झिगियोड़ो, झिग्योड़ो—भू०का०कृ०
झिगीजणो, झिगीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।
झिगमिग—देखो 'झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट' (रू.भे.)
उ०—सिर ऊपर मुकट सुहामणो हो, कुंडळ दोनूं कांन । झिगमि(ग) तेजे झळकता हो, सूरिज तेज समांन ।—ध.व.ग्रं.
झिगमिगणो, झिगमिगवो—क्रि०अ०—१ जगमगाना, चमकना, दमकना. २ मंद-मंद प्रकाशित होना, झिलमिलाना ।
झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट—सं०स्त्री०—जगमगाहट, चमचमाहट ।
उ०—आयो है अब देस बना जिनकपुरी, झिगमिगा'ट हेम थाळ मोतियां भरी, जिनक नार वार वार आरती करी ।—समांनबाई
रू०भे०—झिगमिग, झिगामिग ।
झिगमिगियोड़ो—भू०का०कृ०—१ जगमगाया हुआ, चमका हुआ.
२ मंद मंद प्रकाशित हुवा हुआ, झिलमिलाया हुआ ।
(स्त्री० झिगमिगियोड़ी)
झिगामिग—देखो 'झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट' (रू.भे.)
उ०—जिणेसर बिंब झिगामिग ज्योति, अहोरति आठूं जांम उदोत । बिजोडी देहरी बावन वेव, दीयै सुख वंछित रिखभदेव ।—ध.व.ग्रं.
झिगियोड़ो—भू०का०कृ०—१ जगमगाया हुआ, प्रकाशित ।

२ (दही, मट्ठा आदि द्रव पदार्थ) विलोड़ित किया हुआ, मथा हुआ.
३ घुलना हुआ, मगना हुआ।
(स्त्री० झिगियोड़ी)

झिगोर—देखो 'झिगोर' (रू.भे.)
उ०—यो दूहो जलाल सुरण नै बोलियो—रे माळी, के कहै छै ?
माळी कह्यौ—महरबांन मोर बैठया झिगोर करै छै तिणनूं कहूं छूं ।
—जलाल बूबना री वात

झिड़कणौ, झिड़कबौ-क्रि०स०—उपेक्षा के भाव से अथवा तिरस्कार-पूर्वक बिगड़ कर कोई बात कहना ।
झिड़कणहार, हारौ (हारी), झिड़कणियौ—वि० ।
झिड़कवाड़णौ, झिड़कवाड़बौ, झिड़कवाणौ, झिड़कवाबौ, झिड़क-वावणौ, झिड़कवावबौ, झिड़काड़णौ, झिड़काड़बौ, झिड़काणौ, झिड़-काबौ, झिड़कावणौ, झिड़कावबौ—प्रे०रू० ।
झिड़किग्रोड़ौ, झिड़कियोड़ौ, झिड़क्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिड़कीजणौ, झिड़कीजबौ—कर्म वा० ।

झिड़कियोड़ौ-भू०का०कृ०—अवज्ञा अथवा तिरस्कारपूर्वक बिगड़ कर कोई बात कहा हुआ, झिड़का हुआ ।
(स्त्री० झिड़कियोड़ी)

झिड़की-सं०स्त्री०—१ बिगड़ कर अथवा झिड़क कर कही हुई बात, डांट, फटकार । उ०—रमेस पैलांई सूं अमूजियोड़ौ बैठौ हो । तड़क'र बोलियौ—थां-नै थां-री-ई पड़ी है, बीजौ कोई मरो'र जीवौ। म्हारौ तौ देवाळौ पिटीज रयौ है अर थांरी फरमास आगै-ई खड़ी है। कमळा-री मा झिड़की सै' को सकी नी। आंख्यां मांय-सूं आंसू नाखती बोली—दो पूर तौ म्हे-ई मांगां, गैणा-गांठा, तीरथ-वरत तौ थां-रा भर पाया ।—वरसगांठ

झिझक-सं०स्त्री०—१ किसी प्रकार की भय की आशंका से सहसा चमकने अथवा रुकने की क्रिया, झझकने की क्रिया या भाव ।
मुहा०—१ झिझक भागणी-भय का नष्ट होना । झझक दूर होना ।
२ झिझक मांगणी-भय या झझक का निवारण करना, भय दूर करना ।
२ झिड़क कर अथवा कुछ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव ।
३ कभी-कभी होने वाली सनक, रह-रह कर होने वाला पागलपन, हल्का दौरा ।
रू०भे०—जजक, जभक, झझक ।

झिझकणौ, झिझकबौ-क्रि०अ०—१ भय की आशंका से सहसा डर कर चमकना, भड़कना, ठिठकना, बिदकना ।
उ०—चमकत बीज अचांणचक, झिझकत उठत जगात । हीरां डर-पत महल मैं, थरर थरर थररात ।—बगसीरांम प्रोहित री वात
२ क्रोधित होना, कुपित होना, खिजलाना, झुंझलाना ।
३ सहसा चौंक पड़ना ।
झिझकणहार, हारौ (हारी), झिझकणियौ—वि० ।
झिझकवाड़णौ, झिझकवाड़बौ, झिझकवाणौ, झिझकवाबौ, झिझक-वावणौ, झिझकवावबौ—प्रे०रू० ।
झिझकाड़णौ, झिझकाड़बौ, झिझकाणौ, झिझकाबौ, झिझकावणौ, झिझकावबौ—क्रि०स० ।
झिझकिग्रोड़ौ, झिझकियोड़ौ, झिझक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिझकीजणौ, झिझकीजबौ—भाव वा० ।
जजकणौ जजकबौ, जभकणौ, जभकबौ, झझकणौ, झझकबौ, झझक्कणौ, झझक्कबौ—रू०भे० ।

झिझकाड़णौ, झिझकाड़बौ—देखो 'झिझकाणौ, झिझकाबौ' (रू.भे.)
झिझकाड़णहार, हारौ (हारी), झिझकाड़णियौ—वि० ।
झिझकाड़िग्रोड़ौ, झिझकाड़ियोड़ौ, झिझकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिझकाड़ीजणौ, झिझकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

झिझकाड़ियोड़ौ—देखो 'झझकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झिझकाड़ियोड़ी)

झिझकाणौ, झिझकाबौ-क्रि०स०—१ चमकाना, भड़काना, ठिठकाना, बिदकाना. २ क्रोधित करना, खिजाना. ३ सहसा चौंका देना।
झिझकाणहार, हारौ (हारी), झिझकाणियौ—वि० ।
झिझकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिझकाईजणौ, झिझकाईजबौ—कर्म वा० ।
झझकाड़णौ, झझकाड़बौ, झझकाणौ, झझकाबौ, झझकावणौ, झझ-कावबौ, झिझकाड़णौ, झिझकाड़बौ, झिझकावणौ, झिझकावबौ
—रू०भे० ।
झझकणौ, झझकबौ, झिझकणौ, झिझकबौ—अक० रू० ।

झिझकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ, भड़काया हुआ, ठिठकाया हुआ, बिदकाया हुआ. २ क्रोधित किया हुआ, खिजाया हुआ.
३ चौंकाया हुआ ।
(स्त्री० झिझकायोड़ी)

झिझकार—देखो 'झिझिकार' (रू०भे०)

झिझकारणौ, झिझकारबौ-क्रि०स०—१ किसी को दुत्कारना, दुरदुराना.
२ डांटना, डपटना, फटकारना. ३ अभिमान करना, अपने से आगे किसी को नहीं गिनना, अपने सामने दूसरे को हीन समझना.
४ चौंकाना या भड़काना ।
झिझकारणहार हारौ (हारी), झिझकारणियौ—वि० ।
झिझकारिग्रोड़ौ, झिझकारियोड़ौ, झिझकार्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिझकारीजणौ, झिझकारीजबौ—कर्म वा० ।
झिझिकारणौ, झिझिकारबौ—रू०भे० ।

झिझकारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दुत्कारा हुआ, दुरदुराया हुआ ।
२ डांटा हुआ, फटकारा हुआ. ३ अभिमान किया हुआ, अहंकारी.
४ चौंकाया हुआ, भड़काया हुआ ।
(स्त्री० झिझकारियोड़ी)

झिझकावणौ, झिझकावबौ—देखो 'झिझकाणौ, झिझकाबौ' (रू.भे.)

झिझकावणहार, हारौ (हारी), झिझकावणियौ—वि० ।
झिझकाविश्रोड़ौ, झिझकावियोड़ौ, झिझकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिझकावीजणौ, झिझकावीजवौ—कर्म वा० ।

झिझकावियोड़ौ—देखो 'झिझकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झिझकावियोड़ी)

झिझकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, भड़का हुआ, ठिठका हुआ, विदका हुआ. २ क्रोधित हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ, खिजला हुआ, झुंझलाया हुआ. ३ चौंका हुआ ।
(स्त्री० झिझकियोड़ी)

झिझिकार–सं०स्त्री०—१ डाँटने या फटकारने की क्रिया या भाव ।
२ दुत्कारने या दुरदुराने की क्रिया या भाव । उ०—हाथ झटक झिझिकार हँस, नाथ म लेऊँ नांम जी । भव भांड इसै भरतार सूं, राँड भली श्रो रांमजी ।—ऊ.का.
३ चौंकाने या भड़काने की क्रिया या भाव. ४ अभिमान, घमण्ड।
रू०भे०—झझकार, झिझकार ।

झिझिकारणौ, झिझिकारवौ—देखो 'झिझकारणौ, झिझकारवौ' (रू.भे.)
झिझिकारणहार, हारौ (हारी), झिझिकारणियौ—वि० ।
झिझिकारिश्रोड़ौ, झिझिकारियोड़ौ, झिझिकारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिझिकारीजणौ, झिझिकारीजवौ—कर्म वा० ।
झिझिकारियोड़ौ—देखो 'झिझकारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झिझिकारियोड़ी)

झिझिम–सं०स्त्री० (अनु०) ऊपर के बोल से सम्बन्धित वाद्य का बोल विशेष । उ०—रिमि झिमि रिमि झिमि झिझिम कंसाळ, कररि कररि करि घट पट ताळ । भरर भरर सिरि भेरिश्र साद, पायडीउ श्रालवीउ नाद ।—विद्याविलास पवाडउ

झिझोटी–सं०स्त्री०—एक राग विशेष (मीरां)

झिण–सं०पु०—१ दलिया या अन्य इसी प्रकार के खाद्य को दूध, पानी आदि के संयोग से बनाया हुआ पतला व्यञ्जन ।
२ पतला मट्ठा, छाछ । उ०—विलळी वातां री वांणी वघरावै । पतळी झिण में पांणी पधरावै ।—ऊ.का.

झिणकार–सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का वर्तन विशेष ?
उ०—मदनौ कुंवरजी रा हुकम पखौ ही ज भूंजाई रा चरू, थाळी, भूंजाई री झिणकार, घोड़ौ चहुवांण रांमदास री पेस री, परणिया तदि पेसकस कियौ हुतौ, बीजौ ही भूंजाई रौ समदाव सह मदनौ ले गयौ ।—द.वि.
२ झंकार ।

झिणकारणौ, झिणकारवौ–क्रि०अ०—ध्वनि करना ।
उ०—ऐलड़ी चंपेलड़ी, आभा मांयली वीजळी, म्हांरा वाळक वनजी, झीण पड़ै झणकारियां तोरण वांदियौ ।—लो.गी.

झिणकारियोड़ौ–भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ ।
(स्त्री० झिणकारियोड़ी)

झिणौ—देखो 'झीणौ' (रू.भे.) उ०—चलै सर वेधि सिलै घट चोळ । झिणै पट जांणि समीर झकोळ ।—सू.प्र.
(स्त्री० झिणी)

झिवझिव—देखो 'झव-झव' (रू.भे.) उ०—तेज करइ झिवझिव, फटिक रतन बिंव, मांडचौ है······दिगंवर धांम में । समयसुंदर इम तीरथ कहइ उत्तम, चंद्रप्रभ भेटचौ हम, चंदवारि गांम में ।—स.कु.

झिवळ, झिवळक—देखो 'झवळक' (रू.भे.)

झिवळकणौ, झिवळकवौ—१ देखो 'झवळकणौ, झवळकवौ' (रू.भे.)
२ देखो 'झवोळणौ, झवोळवौ' (रू.भे.)
झिवळकणहार, हारौ (हारी), झिवळकणियौ—वि० ।
झिवळकिश्रोड़ौ, झिवळकियोड़ौ, झिवळक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिवळकीजणौ, झिवळकीजवौ—कर्म वा० ।

झिवळकियोड़ौ—१ देखो 'झवळकियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'झवोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झिवळकियोड़ी)

झिवळणौ, झिवळवौ—१ देखो 'झवळकणौ, झवळकवौ' (रू.भे.)
२ देखो 'झवोळणौ, झवोळवौ' (रू.भे.)
झिवळणहार, हारौ (हारी), झिवळणियौ—वि० ।
झिवळिश्रोड़ौ, झिवळियोड़ौ, झिवळचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिवळीजणौ, झिवळीजवौ—कर्म वा० ।

झिवळियोड़ौ—१ देखो 'झवळकियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'झवोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झिवळियोड़ी)

झिमझिम–सं०स्त्री०—आभूषणों की ध्वनि ।
उ०—धुनि ग्रदंग धुधकटस, धुकट धुधुकटस धुकट धुर । झणण-णणण जंत्र झणकि, प्रगट झिमझिम धुनि नूपर ।—सू.प्र.

झिरझिरौ–वि० [सं० जीर्ण] गला हुआ, जीर्ण (कपड़ा)

झिरणौ, झिरवौ—देखो 'झरणौ, झरवौ' (रू.भे.)
उ०—इणि वचनइ रिखि उह्लसिउ, हीयडइ हरख न माइ । गदगद जळ नयणां झिरइ, कारण कहिउं न जाइ ।—कां.मा.प्र.
झिरणहार, हारौ (हारी), झिरणियौ—वि० ।
झिरिश्रोड़ौ, झिरियोड़ौ, झिरचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिरीजणौ, झिरीजवौ—कर्म वा० ।

झिरमट, झिरमटियौ–सं०पु०—१ वालिकाओं द्वारा नृत्य के रूप में खेला जाने वाला एक प्रकार का खेल ।
उ०—म्हां गिरधर रंग राती, सैयां म्हां । पचरंग चोळा पहरचा सखी म्हां झिरमट खेलण जाती ।—मीरां
२ वृक्षों का समूह, कुंज । उ०—पचरंग चोळा पहरचा सखी म्हां, झिरमट खेलण जाती । वां झिरमट मां मिळयौ सांवरौ, देख्यां तन मन राती ।—मीरां
३ एक लोक गीत का नाम. ४ एक प्रकार की घास विशेष ।

अल्पा०—झिरमटियो।

झिरमटियो—देखो 'झिरमट' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—थोड़ी पाणी में फूलां री झोळी झिरमटियो अक लै। श्रो कुण गोरी श्रे रैणदियै बागां झिरमटियो अक लै। श्रो कुण खेलै श्रे ऊघाड़ै सीसां झिरमटियो अक लै।—लो.गी.

झिरमिर-संस्त्री०—महीन-महीन बूंदों के रूप में धीरे-धीरे वर्षा होने की क्रिया या इस प्रकार वर्षा होने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—झिरमिर झिरमिर मेहुड़ो वरसै, वादळियो घररावै श्रे। जेठजी तो म्हारा कूजा काटै, परण्यो हळियो वावै श्रे।—लो.गी.

रू०भे०—छिरमिर, झरमर

झिरियोड़ो—देखो 'झरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झिरियोड़ी)

झिरी—देखो 'झरी' (रू.भे.)

झिलंब—देखो 'झिलम' (रू.भे.) उ०—चिलते झिलंब श्रायुध चढ़ाय। असवार हुश्रो गजपीठ श्राय। गहकिया ग्रीध टोळा गरूर। अहकिया सब ऐराक तूर।—वि.स.

झिल-वि०—परिपूर्ण, पूर्ण। उ०—चडियो रे कोडीलो मारू श्रायोड़ी झिल रात, श्रायो म्हारी गोरां दे रै पास, कुरजां ए घूं म्हांनै भंवर मिळायो ए।—लो.गी.

झिळकणो, झिळकवो—देखो 'झळकणो, झळकवो' (रू.भे.)

उ०—१ धोरां दिस ढळांख, धूप धांमो सोनलियो, झिळकै झोळ धुवांस, चांदणी रूपै रळियो। प्रक्रिति सुख उपभोग, करण ईमीरी श्रागर। सो सालां सिग करै, श्रमर श्रोसाथ नटनागर।—दसदेव

उ०—२ ठांणै पुरां केतला ठाकर, भूटां लक रहिया झिळक। 'सेवा' वाग कंवळ सोवियो, तूं मांणक मुरधर तिलक।

—सिवनाथसिंघ रो गीत

झिळकणहार, हारो (हारी), झिळकणियो—वि०।

झिळकवाड़णो, झिळकवाड़वो, झिळकवाणो, झिळकवावो, झिळकवावणो, झिळकवाववो—प्रे०रू०।

झिळकाड़णो, झिळकाड़वो, झिळकाणो, झिळकावो, झिळकावणो, झिळकाववो—क्रि०स०।

झिळकिश्रोड़ो, झिळकियोड़ो, झिळक्योड़ो—भू०का०कृ०।

झिळकीजणो, झिळकीजवो—भाव वा०।

झिळकाड़णो, झिळकाड़वो—देखो 'झळकाणो, झळकावो' (रू.भे.)

झिळकाड़णहार, हारो (हारी), झिळकाड़णियो—वि०।

झिळकाड़िश्रोड़ो, झिळकाड़ियोड़ो, झिळकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

झिळकाड़ीजणो, झिळकाड़ीजवो—कर्म वा०।

झिळकणो, झिळकवो—अक० रू०।

झिळकाड़ियोड़ो —देखो 'झळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झिळकाड़ियोड़ी)

झिळकाणो, झिळकावो—देखो 'झळकाणो, झळकावो' (रू.भे.)

झिळकाणहार, हारो (हारी), झिळकाणियो—वि०।

झिळकायोड़ो—भू०का०कृ०।

झिळकाईजणो, झिळकाईजवो—कर्म वा०।

झिळकणो, झिळकवो—अक० रू०।

झिळकायोड़ो—देखो 'झळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झिळकायोड़ी)

झिळकावणो, झिळकाववो—देखो 'झळकाणो, झळकावो' (रू.भे.)

झिळकावणहार, हारो (हारी), झिळकावणियो—वि०।

झिळकाविश्रोड़ो, झिळकावियोड़ो, झिळकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

झिळकावीजणो, झिळकावीजवो—कर्म वा०।

झिळकणो, झिळकवो—अक०रू०।

झिळकावियोड़ो—देखो 'झळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झिळकावियोड़ी)

झिळकियोड़ो—देखो 'झळकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झिळकियोड़ी)

झिळको—देखो 'झळको' (रू.भे.)

उ०—हेली रा नैण निजर भर निरखो। सिय वर वींद बण्यो जोवा सिरखो। केसरिया पाग कसूंबल जांमो। तुररा किलंगी रो झिळको।

—समांनबाई

झिलणो, झिलवो-क्रि०अ०—१ देदीप्यमान होना, चमकना, दमकना।

उ०—विखम तबल वाजिया, डंका सिंधव दहुंवै दळ। साकति पमंगा सझे, झिले पाखर झाळाहळ।—सू.प्र.

२ ऐश्वर्य प्रकट करना, तपना। उ०—अकळ भूळ श्रावळा, झिलै 'गजबंध' भळाहळ। पित अंजसै भूपाळ, 'सूर' झळहळ दळ सव्वळ।

—सू.प्र.

३ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना। उ०—वाड़ी रा वड़ रळियामणा ए, सियळी वड़ री जी छाव। नागादड़ी नाडै भरी ए, झिलती झालरवाव।—लो.गी.

४ शोभा देना, शोभित होना। उ०—पणिहारचां परवार, जाय सरवर जळ ल्यावण। झूलरियै झणकार, लसकरां लैं'रो गावण। मधुर मोवणी राग, रीझवै श्राभो राजा। झीणी छांटां झिलै, सीळवै साळू गाजा।—दसदेव उ०—२ चुड़लो जोवन झिल रह्यो।

—स्त्री पाळरास

५ समृद्ध होना, वैभवयुक्त होना। उ०—वावेली ए घोय घोय किया रे विणाव, मनड़ो ऊमायो झिलतै सासरै।—लो.गी.

६ देखो 'झलणो, झलवो' (रू.भे.)

उ०—प्रथम दुतिय चवथै पढै, मोहरा वहिस मिळंत। रह अमेळ पद तीसरो, जो भड़लुपत झिलंत।—र.रू.

८ मस्त होना। उ०—झिलै वीर भैरवा भार किलकिलै भवांनी। गिरै तुरां ऊपरा खगां वाढ़िया खवांनी।—वखतो खिड़ियो

उ०—२ सह्यो परीसो थोड़ी वार, करमां रो कियो अपहार। सुकोमळ साध अविचळ सुखमां झिल रह्या ए।—जयवांणी

झिलणहार, हारो (हारी), झिलणियो—वि० ।
झिलवाड़णो, झिलवाड़वो, झिलवाणो, झिलवावो, झिलवावणो, झिलवाववो—प्रे०रू० ।
झिलाड़णो, झिलाड़वो, झिलाणो, झिलावो, झिलावणो, झिलाववो —क्रि०स० ।
झिलिग्रोड़ो, झिलियोड़ो, झिल्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झिलीजणो, झिलीजवो—भाव वा० ।
झलणो, झलवो, झिल्लणो, झिल्लवो—रू०भे० ।

झिलम-सं०पु०—युद्ध के समय शिर पर धारण करने का लोहे या कुछ दूसरी धातुओं के मिश्रण से बना टोप, शिरत्राण ।
उ०—१ भूसण आभूखण झिलै, पूसण झिलम प्रकास । जुग्रळ निमासी जरमनी, 'पातल' चंद्रप्रहास ।—किसोरदान बारहठ
उ०—२ चित्तौड़ ऊपर अकबर रै झिलम रै गोळा री फेट लागी । —बां.दा.ख्यात
उ०—पमंग भांग पसाव, पमंग पखरैतां पाड़ै। मुगळां खगि 'अभमाल' झिलम सहिता सिर झाड़ै ।—सू.प्र.
रू०भे०—झलंब, झलम, झिलंब ।
यौ०—झिलमटोप ।

झिलमटोप-यौ०—देखो 'झिलम' ।
उ०—झिलमटोप सूधो सिर झड़ियो। पटझर हूँ चूड़ामणि पड़ियो । —सू.प्र.
रू०भे०—झलमटोप ।

झिळमिळ-सं०स्त्री०—१ अस्थिर ज्योति, झिलमिलाहट ।
उ०—१ यहु सब माया मिरग जळ, झूठा झिळमिळ होइ । दादू चिळका देख कर, सत कर जांणा सोइ ।—दादू बांणी
उ०—२ दादू जरै सु ज्योति स्वरूप है, जरै सु तेज अनंत । जरै सु झिळमिळ नूर है, जरै सु पुंज रहंत ।—दादू बांणी
२ टिमटिमाहट ।
उ०—सूरज नहीं तहँ सूरज देखे, चंद नहीं तहँ चंदा । तारे नहीं तहँ झिळमिळ देख्या, दादू अति आनंदा ।—दादू बांणी
३ चमक-दमक. ४ युद्ध में पहिनने का लोहे का कवच ।
वि०—रह रह कर चमकने वाला ।
रू०भे०—झिळमिल, झिळोमिळ ।

झिळमिळाणो, झिळमिळावो-क्रि०अ०स०—१ प्रकाश का हिलना, ज्योति का अस्थिर होना. २ रह रह कर चमकना. ३ हिलाना, कंपाना ।

झिळमिळायोड़ो-भू०का०कृ०—१ अस्थिर हुवा हुआ (प्रकाश, ज्योति) २ रह रह कर चमका हुआ. ३ हिलाया हुआ, कंपाया हुआ ।
(स्त्री० झिळमिळायोड़ी)

झिळमिळाहट-सं०स्त्री०—झिलमिलाने की क्रिया या भाव ।

झिळमिल्ल—देखो 'झिळमिळ' ।
उ०—झड़ै खग घाट लोहां झिळमिल्ल। तेगा मुंह घाट हुवो तिलतिल्ल —सू.प्र.

झिलम्म—देखो 'झिलम' (रू.भे.)
उ०—झड़ै खग आतस रूप झिलम्म। कटै विहरार अपार किलम्म । —सू.प्र.

झिलाड़णो, झिलाड़वो—देखो 'झिलाणो, झिलावो' (रू.भे.)
झिलाड़णहार, हारो (हारी), झिलाड़णियो—वि० ।
झिलाड़िग्रोड़ो, झिलाड़ियोड़ो, झिलाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झिलाड़ीजणो, झिलाड़ीजवो—कर्म वा० ।

झिलाड़ियोड़ो—देखो 'झिलायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिलाड़ियोड़ी)

झिलाणो, झिलावो-क्रि०स०—१ स्नान करना. २ मग्न करना, लीन करना. ३ देखो, 'झेलाणो, झलावो' (रू.भे.)
उ०—इसड़ी सम्मत करि काळ रा खेचियां प्रेत पति री पुरी रा पाहुणां होइ हुकम रै प्रमांण तत्काळ ही लेख करि झिलाइ दीधो । —वं.भा.
('झिलणो' क्रिया का प्रे०रू०) ४ देखो 'झिलणो, झिलवो'
('झेलणो' क्रिया का प्रे०रू०) ५ देखो 'झेलणो, झेलवो'
उ०—झेलूं लोह अनेक झिलाऊँ । अरुण होय मुजरा कजि आऊं । रैवंत सहित होय रातंबर । करूं सिलांम रंगियै किरमर ।—सू.प्र.
झिलाणहार, हारो (हारी), झिलाणियो—वि० ।
झिलायोड़ो—भू०का०कृ० ।
झिलाईजणो, झिलाईजवो—कर्म वा० ।
झिलणो, झिलवो, —अक० रू० ।
झिलाड़णो, झिलाड़वो, झिलावणो, झिलाववो—रू०भे० ।

झिलायोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्नान कराया हुआ. २ मग्न किया हुआ, लीन किया हुआ. ३ देखो 'झलायोड़ो' (रू.भे.)
('झिलियोड़ो' का प्रे०रू०) ४ देखो 'झिलियोड़ो'
('झेलियोड़ो' का प्रे०रू०) ५ देखो 'झेलियोड़ो'
(स्त्री० झिलायोड़ी)
झिलावणो, झिलाववो—देखो 'झिलाणो, झिलावो' (रू.भे.)
उ०—ए मिळतांई अैंठ झूंठ परसाद झिलावै, कुळ में घालै कळह माजनो धूड़ मिळावै ।—ऊ.का.
झिलावणहार, हारो (हारी) झिलावणियो—वि० ।
झिलाविग्रोड़ो, झिलावियोड़ो, झिलाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झिलावीजणो, झिलावीजवो—कर्म वा० ।

झिलावियोड़ो—देखो 'झिलायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिलावियोड़ी)

झिळिमिळि-सं०स्त्री—१ मंद-मंद वर्षा होने की क्रिया या ध्वनि ।
उ०—सुन सुधारस पीजिये, पति प्रांण अधारा । झिळिमिळि झिळिमिळि होत है, वरिखा नहो धारा ।—ह.पु.वा.
२ देखो 'झिळमिळ' (रू.भे.)

झिलियोड़ो-भू०का०कृ०—१ देदीप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ, दमका

हुआ. २ [illegible] किया हुआ, तपा हुआ. ३ परिपूर्ण हुवा हुआ, पूर्ण हुवा हुआ. ४ शोभित हुवा हुआ. ५ समृद्ध, वैभवयुक्त हुवा हुआ. ६ मस्त हुवा हुआ ।
७ देखो 'झमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिमियोड़ी)

झिमी—देखो 'झिल्ली' (रू.भे.)
उ०—मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलीगन झणकसी, भमरा भणणसी ।—दरजी मयाराम री वात

झिमोझिम—देखो 'झमोझम' (रू.भे.)

झिळोमिळ—देखो 'झिळमिळ' (रू.भे.)
उ०—इसो गमइयो वण रह्यो छै । वरखा मंड नै रही छै । विजळी झिळोमिळ कर नै रही छै, वादळां झड़ लायो छै ।—रा.सा.सं.

झिलोळो-सं०पु०—हिलोर, तरंग, लहर ।
उ०—जोटो सुदा दे ओ, हां ओ म्हारा जळवळ जांमी वाप । आई रे सांवणिया री तीजां, वाई झीलसी । खुदो ओ खुदायो ओ, हां ओ वाई थारो भरघो ओ झिलोळा खाय, झीलण वाळी वाई गवरां सासरे ।
—लो.गी.
क्रि०प्र०—ऊठणो, खाणो ।

झिल्लणो, झिल्लवो—देखो 'झिलणो, झिलवो' (रू.भे.)
उ०—वरण कजि अपछरा वाट जोवै खड़ी । ज्यां भड़ां तणी झिल्लै उरसां झूंपड़ी ।—हा.झा.

झिल्लियोड़ो—देखो 'झिलियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झिलियोड़ी)

झिल्ली-सं०स्त्री० [सं०] १ किसी वस्तु के ऊपर की वह पतली तह जो पारदर्शक अथवा अल्प पारदर्शक होती है. २ आंख का जाला. ३ बहुत पतला छिलका. ४ झींगुर । उ०—और ही भूळा रा भूळा ठमझम करता फूलवाग नूं आवें है, लहरिया गावें है, गहरो गहकें है, डेडरा डहकें है, मोरां रो सोर, झिल्ली री झिंगोर, वळे बोले चातक, विरही जनां का घातक ।—र. हमीर
रू०भे०—झिली ।

झिल्लीदार-वि०—जिसके ऊपर बहुत पतली तह लगी हो ।

झींक—देखो 'झीक' (रू.भे.) उ०—१ वरसात में भलेई सारी रात मेह झींक दो, पण मांयनै छांट ई नहीं पड़ै । मांय नै सूतोड़ा तो परभातै वारै आवै जरै ईज ठा, पड़ै कै रात रा वरसात हुई ही ।
—रातवासो
उ०—२ वाजिया रोसेल वंका, घमै आवध धार धंका । असतरां धेदै असंका, भिड़ै लंका भूर । झींक अंगा हुवै झंका, अयी माचै रुवर पंका । कहर घापै ग्रीध कंका, प्रवळ संका पूर ।—र.रू.

झींकणो—देखो 'झीकणो, झीकवो' (रू.भे.)

झींकणो, झींकवो—देखो 'झीकणो, झीकवो' (रू.भे.)
उ०—वीणा जंत्तर तार, थें छेड़्या उण राग रा । गुण नै रोऊं गंवार, जात न झींकूं जेठवा ।—जेठवा
झींकणहार, हारो (हारी), झींकणियो—वि० ।
झींकिओड़ो, झींकियोड़ो, झींक्योड़ो —भू०का०कृ० ।
झींकीजणो, झींकीजवो—कर्म वा० ।

झींकरो-सं०पु०—कूए को गहरा करने के हेतु काटा हुआ पत्थर ।
रू०भे०—झीकरो ।

झींका—देखो 'जींका' (रू.भे.)

झींकियोड़ो—देखो 'झीकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झींकियोड़ी)

झींखणो—देखो 'झीकणो' (रू.भे.)

झींखणो, झींखवो—देखो 'झीकणो, झीकवो' (रू.भे.)
झींखणहार, हारो (हारी), झींखणियो—वि० ।
झींखिओड़ो, झींखियोड़ो, झींख्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झींखीजणो, झींखीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

झींखा—देखो 'जींका' (रू.भे.)

झींखाळो—देखो 'जींका' (रू.भे.)

झींखियोड़ो—देखो 'झीकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झींखियोड़ी)

झींगड़ि, झींगड़ी-सं०स्त्री०—१ नौबत की ध्वनि. २ किसी वस्तु पर (नौबत आदि पर) ध्वन्यार्थ किया जाने वाला किसी दूसरी वस्तु (डंके आदि) का प्रहार या इस प्रहार से उत्पन्न ध्वनि ।
उ०—१ पाखती अरटां री झींगड़ि चींगड़ि पड़ि नै रही छै ।
—रा.सा.सं.
उ०—२ नौबत रा टकोरा लागै छै । नौबत झींगड़ी पड़ि नै रही छै ।—रा.सा.सं.

झींगर-सं०पु० [सं० धीवर] १ प्राय: मछली पकड़ने और वेचने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, धीवर ।
उ०—वाही रांण प्रतापसी, वगतर में वरछीह । जांणक झींगर जाळ में, मुंह काढ़यो मच्छीह ।—पृथ्वीराज राठौड़
२ देखो 'झिंगोर' (रू.भे.)

झींगरनिसांणी-सं०स्त्री०—वह 'निसांणी छंद' जिसमें प्रथम १८ मात्रायें फिर १४ मात्रायें और तुकांत में मगण (SSS) हो ।

झींगोर, झींगौर—देखो 'झिंगोर' (रू.भे.) उ०—फेर केळि रै गिरदवाइ मांहे सारसां रा टोळा झींगोर करि नै रहिआ छै ।—रा.सा.सं.

झींझणियाळ, झींझळियाळ—देखो 'जींजणियाळ' (रू.भे.)
उ०—वटपाड़ां घरपाड़ां वाळी, आभ जड़ां नाखै ऊपाड़ । कोय न गांज सकै किनियांणी, झींझणियाळ तुहाळा झाड़ ।
—कविराजा वांकीदास

झींझो-सं०पु०—१ पहाड़ों में उत्पन्न होने वाला एक वृक्ष विशेष । (बहु व० झींझा) २ देखो 'जींजो' (रू.भे.)

झींट—देखो 'झींत, झींथ' (रू.भे.)

झींटझींटाळो-वि० (अनु०) (स्त्री० झींटझींटाळी) घने वालों वाला ।

उ०—फोगल पछै घिटाळ, जंगळां झींटझिटाळी । सूरज ऊगण वेळ, फड़मलां छवी निराळी ।—दसदेव

झींण—देखो 'झीणौ' (मह., रू.भे.)

झींणउ, झींणौ—देखो 'झीणौ' (रू.भे.) उ०—१ गायां गोसाळां गूंदा गळगळती, ढाळा द्रग ढळती वूंदां वळवळतां । डाई डेडर सी घाई घुर धीणें, झींणी झेडर झुर गाई सुर झीणें ।—ऊ.का.

उ०—२ वैरी नथडी रौ मोती उतर नहिं जाय, झींणौ झींणौ रै वायरिया, झोलौ सह्यौ न जाय ।—चेत मांनखा

(स्त्री० झींणी)

झींणोड़ी, झींणोड़ौ—देखो 'झीणौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० झींणोड़ी, झींणोड़ी)

झींत, झींथ-सं०स्त्री०—१ कपड़े में अनाज भर कर उसके चारों कोनों को पकड़ कर पीठ पर लाद कर ले जाने वाली खुली गठरी.

२ कपड़े का बनाया हुआ वह झोला जिसमें कपड़े के एक ओर के दोनों छोरों को मिला कर गाँठ लगा कर गरदन में डाल ली जाती है और दूसरी ओर के दोनों छोर पृथक-पृथक दोनों हाथों में रहते हैं ।

रू०भे०—झींट ।

झींपरौ, झींफरौ-वि० (स्त्री० झींपरी, झींफरी) जिसके शरीर पर बहुत बड़े-बड़े बाल हों, घने बालों वाला ।

झींवर-सं०पु० [सं० धीवर] मछली पकड़ने और बेचने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति । उ०—१ धोय नीर उडप पग धरजे, रज सिल उठी किसू बनदार । उज्जळ उदक धुवाया ओयण, लंघे पार सरिता भ्रिदु लोयण, प्रभु झींवर कीधौ भव पार ।—र.रू.

उ०—२ अगम तहां पहुंता नहीं, गुण इंद्री प्रतिपाळ । गुरु झींवर वर सिख माछळी, तकि तकि मेल्हे जाळ ।—ह.पु.वा.

झीक-सं०स्त्री०—१ झींखने की क्रिया या भाव. २ शस्त्र प्रहार ।

उ०—१ चींघ फरक्कं झंडां प्रचंडां कोडंडां भणंकै चिला, माळ रुंडां काज संडां खेड़िया महेस । खंडां झीक देते सूंडाडंडां धू झेरिया काथा, जाडा थंडां ओरिया वितुंडां 'जालमेस' ।

—जालमसिंघ चांपावत री गीत

उ०—वहे गोळां हुळां कूंत झटकां वहे, अनत रुधर वहे नीक अझड़ां । घणूं घमसांण दळ हीक चाड़े घणां, दियै 'सारंग' तणौ झीक दुजड़ां ।—वसरांम रावळ

३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि. ४ ध्वंस, संहार ।

उ०—राजा करि हाक खित्री ध्रम राहि, मघाउत खेंग घरै रिण माहि । हिलोळै फौज चढ़ावै हीक, भिंडा गज वाजि हुअै भड़ झीक ।—वचनिका

५ युद्ध । उ०—अरावां तणौ असवाव अपणावियौ, भट किलकता तणौ भागौ । अाड रोपी वज्र'द्र झीक वागौ असंभ, 'लीक' टोप पटक पंथ लागौ ।—कविराजा बांकीदास

६ वर्षा की झड़ी ।

रू०भे०—झींक ।

मि०—रीठ ।

झीकणौ-सं०पु०—१ दुःख का वर्णन, दुखड़ा रोना. २ झींखने की क्रिया या भाव ।

रू०भे०—झींकणौ, झींखणौ, झीखणौ ।

झीकणौ, झीकबौ-क्रि०अ०स०—१ लालायित होना, इच्छा करना, तरसना । उ०—नानग सरवर भरियौ नीकौ, झुकै लोग पीवण दे झीकौ । ठगवाजी गादी रौ ठीकौ, फेर सिखां कर दीनौ फीकौ ।

—ऊ.का.

२ दुखी हो कर पछताना. ३ खीजना. ४ कुढ़ना. ५ अपने दुःख का हाल सुनाना, दुखड़ा रोना. ६ शस्त्र प्रहार करना.

७ युद्ध करना ।

झीकणहार, हारौ (हारी), झीकणियौ—वि० ।

झीकवाड़णौ, झीकवाड़बौ, झीकवाणौ, झीकवाबौ, झीकवावणौ, झीकवावबौ—प्रे०रू० ।

झीकाड़णौ, झीकाड़बौ, झीकाणौ, झीकाबौ, झीकावणौ, झीकावबौ

—क्रि०स० ।

झीकिओड़ौ, झीकियोड़ौ, झीक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झीकीजणौ, झीकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

झींकणौ, झींकबौ, झींखणौ, झींखबौ, झीखणौ, झीखबौ—रू०भे० ।

झीकरौ—देखो 'झींकरौ' (रू.भे.)

झीकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लालायित हुवा हुआ, इच्छा किया हुवा, तरसा हुआ. २ दुखी हो कर पछताया हुआ. ३ खीजा हुआ.

४ कुढ़ा हुआ. ५ अपने दुःख का हाल सुनाया हुआ, दुखड़ा रोया हुआ. ६ शस्त्र प्रहार किया हुआ. ७ युद्ध किया हुआ ।

(स्त्री० झीकियोड़ी)

झीकोळणौ, झीकोळबौ -देखो 'झकोळणौ, झकोळबौ' (रू.भे.)

उ०—आई तेरी मां की जाई भैनड़ी जी राज ! ओ वीरा रोय रोय नूं क समद झीकोळ । वीरा ऊपर चढ़ हेलौ दियौ जी राज ! ये वाई रूसड़ी नणद जाणं धोय ।—लो.गी.

झीकोळणहार, हारौ (हारी), झीकोळणियौ—वि० ।

झीकोळिओड़ौ, झीकोळियोड़ौ, झीकोळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

झीकोळीजणौ, झीकोळीजबौ—कर्म वा० ।

झीकोळियोड़ौ—देखो 'झकोळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झीकोळियोड़ी)

झीख—देखो 'झीक' (रू.भे.)

उ०—तरै राठौड़ां तौ टाळौ कियौ । तरै घोड़ां री खुरी कराय नै मुगळां री फौज मांहे घोड़ौ नांखियौ, ऊपर लोह री घणी झीख पड़ी ।—राव मालदे री वात

झीखणौ—देखो 'झीकणौ' (रू.भे.)

झीखणौ, झीखबौ—देखो 'झीकणौ, झीकबौ' (रू.भे.)

झीणनहार, हारो (हारी), झीणणियो—वि० ।
झीणियोड़ो, झीणियोड़ो, झीण्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झीणीजणो, झीणीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

झीना—देखो 'झीका' (रू.भे.)
उ०—झीना झीनाळं, पोसाळं पढ़ियो नहीं । ऊमो ग्राफाळेह, हळिया सूं मायो हमं ।—ग्रज्ञात

झीनाळणो, झीनाळबो—क्रि०स०—१ खपरैलों को परस्पर रगड़ कर महीनतम चूर्ण बनाना । उ०—झीना झीनाळं, पोसाळं पढ़ियो नहीं । ऊमो ग्राफाळेह, हळिया सूं मायो हमं ।—ग्रज्ञात
२ मकेदे से पुती हुई पढ़ने की तख्ती पर खपरैल को परस्पर घिस कर बनाया हुआ महीनतम चूर्ण छितराना ।

झीनाळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ खपरैलों से महीनतम चूर्ण बनाया हुआ. २ पढ़ने की लकड़े की तख्ती पर खपरैलों का महीनतम चूर्ण डाला हुआ, (छितराया हुआ)
(स्त्री० झीनाळियोड़ी)

झीनियोड़ो—देखो 'झीकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झीनियोड़ी)

झीगोर, झीगोर—देखो 'झिंगोर' (रू.भे.)

झीण—सं०स्त्री०—[सं० ध्वनि] १ ध्वनि, ग्रावाज । उ०—झणंक नूपुरास झीण, ग्रोपतास एहड़ा । वदंत तोतळीस वांणि, जांणि पुत्र जेहड़ा ।—सू.प्र.
२ देखो 'जीण' (रू.भे.)
उ०—रंग रंग री पोसाखां इनायत करै छै नै माता घोड़ा उडणा ताजी ऊपर झीण करावं छै ।—पना वीरमदे री वात
३ देखो 'झीणो' (मह. रू.भे.)
उ०—१ भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै, झीण वदळ मांझळ रवि झळकै । ईस सिला वज्र दूर करावै । उणहिज तरह लियण नृप ग्रावै ।—सू.प्र.
उ०—२ विविधि वजंत्री वीण वजावै, सुघड़ झीण सुर सार । वोळी कहै वीण हूं वंचक, हीण वजावण हार ।—ऊ.का.

झीणउ—देखो 'झीणो' (रू.भे.) (उ.र.)

झीणोड़ो—देखो 'झीणो' (ग्रल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० झीणोड़ी)

झीणो—वि० [सं० क्षीण] (स्त्री० झीणी) १ जो मोटाई ग्रौर घेरे में इतना कम हो कि छूने से हाथ में क्षीण ग्राभास हो, महीन, पतला । उ०—तिन हिक ग्रमख कपाट सतूटै । छेदै तास गयण मग छूटै । झीणै तंत जिम नाद झणंकै । भमर गुंजारउ भवद भणंकै ।—सू.प्र.
२ तह के ग्राकार की वह वस्तु जिसका दल मोटा न हो, (जो प्रायः पारदर्शक ग्रथवा ग्रन्द-पारदर्शक होता है), पतला, हलका ।
उ०—१ ग्रादीता हूं ऊजळो, मारवणी-मुख-ब्रन्न । झीणा कप्पड़ पहिरणइ, जांणी झंखइ सोव्रन्न ।—ढो.मा.
उ०—२ सुंदर सखुळीणी झीणी साड़ी में, जुलफां सपणी जिम ग्रपणी ग्राड़ी में । सूनी ढांणी में सेठांणी सोती, रैं'गी विणियांणी पांणी नैं रोती ।—ऊ.का.
३ मधुर, सुरीला । उ०—१ गोरियां उंच्यो माथै बोझ, गीतड़ा गावै झीणी राग । गोद में झुरै हठीला बाळ, रमै जद खांखळ नैणां फाग ।—सांझ
उ०—२ घापूड़ी नै झैंपावण नै उण री साथणियां एक तरकीब सोची ग्रर सार्थै गावती-गावती एकदम चुप रैयगी । एकली घापू री ईज झीणी सुर गूंज ऊठ्यो ।—रातवासो
उ०—३ वाह रे वाह! क्या झीणो कंठ है, सुण नै कळी-काळी खिलगी ।—रातवासो
उ०—४ गायां गोसाळां गूंदां गळगळती । ढाळां द्रग ढळती वूंदां वळ-वळती । डाई डेडरसी धाई धुर धीणें । झीणी झेडर झुर गाई सुर झीणें ।—ऊ.का.
४ जो सुनने में कर्कश, वेगयुक्त, तीव्र ग्रथवा ग्रप्रिय न हो, मृदु ।
उ०—तठा उपरांत करि नै राजान सिलांमति: सिकार पाखती जिनावर चालिग्रा जाग्रै छै । सेत सूग्रा, सवज सूग्रा, सारां, मैनां, कोइल, तीतुर, कागा-कउग्रा, सेत काग, सेत कवूतर, उडण गिरहबाज, लख जातिरा पंखी, भांति भांति री झीणी भाखा बोलता, पढ़ता कठ-पिंजरै घातिग्रा वहै छै ।—रा.सा.सं.
५ जिसकी देह का घेरा कम हो, जिसके शरीर के इधर-उधर का विस्तार कम हो, जो स्थूल या मोटा न हो, छरहरा ।
उ०—जंघ सुपत्तळ, करि कुंग्रळ, झीणी लंब-प्रलंब । ढोला एही मारुई, जांणि क कणियर-कंब ।—ढो.मा.
६ कृश, पतला (कमर) उ०—१ चमकै हींड मचोळतां, लचकै झीणी लंक । तन दमकै दांमणी तिहीं, मुखड़ो जांण मयंक ।
—र. हमीर
उ०—२ झीणी मध्यप्रदेस कटि, पीन प्रचंड नितंव । कनक वरण चढ़ती कळा, नाभि कुंड प्रतिविंव ।—वैताळ पच्चीसी
७ सुकुमार, सुकोमल, लचीला । उ०—ढोला, सायधण मांण नै, झीणी पासळियांह । कइ लाभै हर पूजियां, हेमाळै गळियांह ।
—ढो.मा.
८ जो छूने में कड़ा न हो, कोमल, मुलायम, नरम, मृदुल ।
उ०—जांघां गरभ ज केळको, पींडी पुहरीयांह । गिरिया गोळ सुपारिगां, झीणी मांस ळियांह ।—कुंवरसी सांखला री वारता
९ जो धधकता हुग्रा न हो, मंद, क्षीण ।
उ०—ग्रासालुध्धी हूं न मुइय, सज्जन-जंजाळेइ । मारू सेकइ हथ्थड़ा, झीणै ग्रंगारेइ ।—ढो.मा.
१० मंद, धीमा, हलका । (प्रकाश)
११ छितराया हुग्रा, क्षीण । उ०—घम्मघमंतइ घाघरइ, उळटयउ जांण गयंद । मारू चाली मंदिरे, झीणै वादळ चंद ।—ढो.मा.
१२ जो वेग युक्त न हो, मंद-मंद । उ०—कर ठाली प्याल्यां सवै,

फूलां पुरसी जेम। झीणी मसती झूमती, वहकी लूग्रां केम।—लू
१३ जो स्थूल या अधिक भारी न हो, वजन में हल्का। उ०—झीणी गाडी रा झीणा बैलिया, झीणी घूघरमाळ। जिण पर चढ़ आयौ पांचियौ, लारै घोड़ां री घमसांण।—लो.गी.
१४ जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। उ०—कोई चूनड़ तौ साळूड़ा, झीणा सळ भरचा ए, मोरी सइयां।—लो.गी.
१५ जो विना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ में न आए, जिसे समझने के लिये सूक्ष्म बुद्धि आवश्यक हो। उ०—ज्यूं जीव खवायां में पाप ते पिण थें न जांणो तौ पडिमांधारी नें अव्रत सेवायां पाप थांरै किम वैसे। आ चरचा तौ घणी झीणी है।—भि.द्र.
१६ दुर्गम, कठिन। अदर दीपक नें ओळखौ आदू हंसां री ठौड़, भांय थोड़ी नैं झीणौ पंथ। पांचेला विरला कोय।—संतवांणी
१७ सँकरा, तंग। उ०—ऊँचा नीचा महल माळिया, हमसे चढ़चा न जाय। पिया दूर पंथ म्हारौ झीणौ, सूरत झकोळा खाय।—मीरां
१८ जिसमें सूक्ष्म बुद्धि न पहुँचे, बुद्धि से बाहर, न जानने योग्य, दुर्बोध, अगम्य, (जो केवल आभासित हो)। उ०—वै तौ सुखम झीणा भारी, कोण लखै गत थारी। सतगरु से गम पाई, दरियावां लहर समाई।—श्री हरिरामजी महाराज
१९ बहुत ही छोटा, सूक्ष्म उ०—पणिहारयां परवार जाय, सरवर जळ ल्यावण। झूलरियै झणकार, लसकरां लै'रौ गावण। मधुर मोवणी राग, रीझवै आभौ राजा। झीणी छांटां झिलै, सीळवै साळू गाजा।—दसदेव
२० जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हों।
उ०—बाई ए मन मैं धीरज राख, वीरो दीसै म्हनै आवतो। बाई ए झीणी झीणी उडै है गुलाल, धोळां रा जांजण वाजिया।—लो.गी.
उ०—२ ढोल वळाव्यउ हे सखी, झीणी ऊडइ खेह। हियड़उ वादळ छाइयउ, नयण टबूकइ मेह।—ढो.मा.
२१ वह जिसमें प्रचंडता व उग्रता न हो. २२ धुंधला. २३ जिसमें जलांश अधिक हो, अधिक तरल।
विलो०—गाढ़ौ।
२४ आगे से छितराया हुआ, फैला हुआ (घूंघट)।
उ०—१ भंवरजी हथायां बैठा हेलौ कीकर पाड़ू ओ, ए झीणी काढ़ूं घूंघटियौ सनकारी देऊं ओ, क घर में आवौ तौ। हां रे घर में आवौ तौ, मनड़ै री वातां थांनै कैऊं ओ, क घर में आवौ तौ।—लो.गी.
उ०—२ झीणै घूंघटियै मोतीड़ा पोवती, मैं'ला बैठी वीरोसा री वाटां जोवती, क वीरौ आवै तौ।—लो.गी.
उ०—३ तिरछा कटाक्ष रा नेतर झमकै छै, झीणा घूंघटा में जड़ाव री टीक्यां चपळा सी चमकै छै।—पनां वीरमदे री वात
वि०वि०—घूंघट का वह ढंग जिसमें घूंघट निकालने वाली स्त्री अपने आस-पास चारों ओर देख सकती है और अगर दूसरा भी चाहे तो उस स्त्री के मुंह की झांकी देख सकता है? क्योंकि घूंघट मुंह के ऊपर सीधा न होकर इधर-उधर कंधों तक छितराया हुआ या फैला हुआ होता है।
सं०पु०—महीन वस्त्र। उ०—हां ए राज गोरी झीणौ ही ओढ़ौ हो, हां ए गोरी झीणौ ओढ़ौ हो, म्हारी सदा रे सवागण सुंदर नार, मांनेतण गोरी, झीणौ ओढ़ौ हो।—लो.गी.
रू०भे०—झींणउ, झींणौ, झीणउ।
अल्पा०—झींणोड़ौ, झींणौड़ौ, झीणोड़ौ, झीणौड़ौ।
मह०—झींण, झीण।

झीणौड़ौ—देखो 'झीणौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डीगोड़ा डूंगर धोरां मांझ, वरसतौ झीणौड़ौ विसरांम। जिकण में भींजै वा इकलांण, विराजी सांयत वण जजमांन।—सांझ
(स्त्री० झीणौड़ी)

झीणीमोरियौ—सं०पु०—लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक-गीत।

झीयरौ—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

झीनातिझीन—वि०—अत्यन्त बारीक, महीन से महीन।
उ०—सूक्ष्म सरीर, व्याक्रति वहीर। झीनातिझीन, चित विदित चीन।—ऊ.का.

झीमर—सं०पु० [सं० धीवर] १ कहार जाति का एक भेद २ मछली पकड़ने और वेचने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

झीरा-लूणवासियौ घोळ, झीरा-लूणवासीयौ घोळ—सं०पु०—जीरे के संयोग से बना नमकीन पेय पदार्थ। उ०—करंबा आंणिया रंग रोळ, झीरा-लूणवासियौ घोळ, दहीवड़ा वणाविया घोळ, नाखियौ राई तणौ झोळ।—व.स.

झीरोकौ—देखो 'झरोकौ' (रू.भे.)

झीरोख—देखो 'झरोकौ' (मह., रू.भे.) उ०—जावै सुख पावै जठै, झुकिया गोख झीरोख। काच जड़ै तगता किता, सरस चित्रांमां सोख।
—महादांन महड़ू

झीरोखौ—देखो 'झरोकौ' (रू.भे.)

झीरोहर—सं०पु०—चूर-चूर। उ०—भाख सत्रां खटतीस भाखीजै। घरपुड़ घाय निहाइ ध्रुवै। झीरोहर कर झांट जूंवरिक। हुळ हाथळ जिहिं भगति हुवै।—दूदौ

झील—सं०स्त्री०—१ चारों ओर जमीन से घिरा हुआ बहुत बड़ा जलाशय, ताल, सर।
अल्पा०—झीलड़ी।
सं०पु०—२ एक छोटा पौधा विशेष जिसकी रहट की माल बनाई जाती है और दांतुन करने के काम में भी लिया जाता है।
अल्पा०—झीलड़ी।

झीलड़ी, झीलड़ौ—देखो 'झील' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मारदां नींचै बड़ गुटोड़ा, लिपै चिपै लुक सीलड़ी। तळै हरचो मांगरी ऊगै, जायक मूकी झीलड़ी।—दसदेव

झीलणौ, झीलबौ-क्रि०अ०—१ स्नान करना, नहाना।
उ०—ढोला, हूं तुझ वाहिरी, झीलण गइय तळाइ। ऊजळ काळा नाग जिउं, लहिरी ले ले खाइ।—ढो.मा.
२ मग्न होना, लीन होना। उ०—दोय मुनी अणसण उच्चरइ जी, झीलइ ध्यांन मझार।—स.कु.
रू०भे०—'झूलणौ, झूलबौ'।
झीलणहार, हारौ (हारी), झीलणियौ—वि०।
झीलवाड़णौ, झीलवाड़बौ, झीलवाणौ, झीलवाबौ, झीलवावणौ, झीलवावबौ—प्रे०रू०।
झीलाड़णौ, झीलाड़बौ, झीलाणौ, झीलाबौ, झीलावणौ, झीलावबौ—क्रि०स०।
झीलिग्रोड़ौ, झीलियोड़ौ, झील्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झीलीजणौ, झीलीजबौ—भाव वा०।

झीलाड़णौ, झीलाड़बौ—देखो 'झीलाणौ, झीलाबौ' (रू.भे.)
झीलाड़णहार, हारौ (हारी), झीलाड़णियौ—वि०।
झीलाड़िग्रोड़ौ, झीलाड़ियोड़ौ, झीलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झीलाड़ीजणौ, झीलाड़ीजबौ—कर्म वा०।
झीलणौ, झीलबौ—अक०रू०।

झीलाड़ियोड़ौ—देखो 'झीलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झीलाड़ियोड़ी)

झीलाणौ, झीलाबौ-क्रि०स०—स्नान कराना, नहलाना।
झीलाणहार, हारौ (हारी), झीलाणियौ—वि०।
झीलायोड़ौ—भू०का०कृ०।
झीलाईजणौ, झीलाईजबौ—भाव वा०।
झीलणौ, झीलबौ—अक०रू०।
झीलाड़णौ, झीलाड़बौ, झीलावणौ, झीलावबौ—रू०भे०।

झीलायोड़ौ-भू०का०कृ०—स्नान कराया हुग्रा।
(स्त्री० झीलायोड़ी)

झीलावणौ, झीलावबौ—देखो 'झीलाणौ, झीलाबौ' (रू.भे.)
झीलावणहार, हारौ (हारी), झीलावणियौ—वि०।
झीलाविग्रोड़ौ, झीलावियोड़ौ, झीलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झीलावीजणौ, झीलावीजबौ—कर्म वा०।
झीलणौ, झीलबौ—अक० रू०।

झीलावियोड़ौ—देखो 'झीलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झीलावियोड़ी)

झीलियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्नान किया हुग्रा, नहाया हुग्रा।
२ मग्न, लीन।
(स्त्री० झीलियोड़ी)

झीवर-सं०पु० [सं० धीवर] मछली पकड़ने तथा बेचने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, मछुग्रा। उ०—१ नदी जळनील सुफील निसांण, उभेळत छीलर ढील न ग्रांण। वगत्तर झीवर जाळ वहंत, ग्रावै नेंह माळ-रगत्तर ग्रंत।—मे.म.
उ०—२ सिल उघरती सारि, नाठौ झीवर नाव ले। महिमा चलण मुरारि, देखे दसरथ रावउत।—प्रिथ्वीराज राठौड़

झुंकार-सं०स्त्री०—ध्वनि, हुंकार।

झुंजार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)
उ०—राव रांमा रै वडौ वेटौ करण थौ नै छोटौ वेटौ कलौ थौ, सु करण ही निपट लायक थौ। दातार, झुंजार वडौ रजपूत थौ।
—राव चंद्रसेन री वात

झुंझळाणौ, झुंझळावौ-क्रि०अ०—दुख ग्रौर क्रोध के कारण बहकना, चिड़चिड़ाना, खिजलाना।

झुंझळायोड़ौ-भू०का०कृ०—चिड़चिड़ाया हुग्रा, खिजलाया हुग्रा।
(स्त्री० झुंझळायोड़ी)

झुंझाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.)
उ०—ऊनै खंडपुर का ईस ऊनै राव राजा। वागा फौजें किल्ला में झुंझाऊ वीर वाजा।—शि.वं.

झुंझार, झुंझारि—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)
उ०—१ झुकै धर हैमर सूर झुंझार। भमै किर साख तिडां दळ भार।
—सू.प्र.
उ०—२ दळ-थंभ तुझ दुवारि झुंझारि धवळ तणा। घणां विरदां लहण ग्राविया ग्ररि घणा।—हा.झा.

झुंड-सं०पु०—प्राणियों का समुदाय, गिरोह। उ०—मंड घमंड जुध थंड विहंड रुंड मुंड। झुंड भ्रकुंड चंड त्रिपत ग्रध्र भुंड।—सू प्र.
रू०भे०—झंड।

झुंणकार—देखो 'झंकार' (रू.भे.)
उ०—मंगळ गावै कांमनी, पंच सवद तणतुं झुंणकार। मेघ्राडंबर छत्र सिर दियउ, ग्राज सफळ राजा जनम संसार।—वी.दे.

झुंपड़ी—देखो 'झूंपड़ी' (रू.भे.)
उ०—झड़ी पड़ी झुंपड़ी, किया दर उंदर कोळै। गंधीला गूदड़ा, खाट पिण वंधण खोलै।—ध.व.ग्रं.

झुंव—देखो 'झंव' (रू.भे.)
उ०—लुळि लुंव झुंव कदंब होवत, ग्रंब के चिहुं फेर। तरु डार धुजत मधुर कूजत, कोकिला तिहि वेर।—वि.कु.

झुंवणौ, झुंवबौ—देखो 'झूंवणौ, झूंवबौ' (रू.भे.)
उ०—हस्ती थे लाइजो कजळी देस रौ, हस्तियां रै हलक पधारजो रे तोरै ग्रावजो, जिसड़ौ सांवणिया रौ मेह लुंव्या झुंव्या ग्रावजो।
—लो.गी.

झुंवाड़णौ, झुंवाड़बौ—देखो 'झूंवाणौ, झूंवाबौ' (रू.भे.)

उ०—कमंध अगंजी विमन्ने कहियौ, वड दाता कीरत चौ वींद। वाक तुम्राळी करंडी वाळी, काळी झुंवाड़ कासींद।—ओपौ आढ़ौ

झुंवाड़ियोड़ौ—देखो 'झूंवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुंवाड़ियोड़ी)

झुंवाणौ, झुंवावौ—देखो 'झूंवाणौ, झूंवावौ' (रू.भे.)

झुंवायोड़ौ—देखो 'झूंवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुंवायोडी)

झुंवावणौ, झुंवाववौ—देखो 'झूंवाणौ, झूंवावौ' (रू.भे.)

झुंवावियोड़ौ—देखो 'झूंवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुंवावियोड़ी)

झुंविखौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा. रू.भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति उवै चतुरंगी रायजादी क्रितीयां रौ झुंविखौ मोतीम्रां री लड़ी हुवै तिणि भांति री ऊजळी गोरंगीम्रां।—रा.सा.सं.

झुम्राफ—देखो 'जाफ' (रू.भे.)

झुकणौ, झुकवौ—क्रि०अ० [सं० युज्] १ किसी खड़ी वस्तु का नीचे की ओर लटकना, निहुरना, नवना। उ०—मरद गरद हुय जाय, देख घूंघट को ओलौ। झुक पीछोळा तीर, दीयै पणियारचां झोलौ।

—महादांन महड़ू

२ किसी पदार्थ का एक ओर या दोनों ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति में प्रवृत्त होना, लंबमान होना। उ०—चांदडलौ भँवरजी गयौ गढ़ गिरनार, ओजी रसीला भँवरजी, कोई किरत्यां झुक आई गढ़ रै कांगरै, हो राज।—लो.गी.

३ किसी खड़े या सीधे पदार्थ का किसी ओर प्रवृत्त होना.

४ मजबूर होना, हारना। उ०—मा रै जीव नै एक गिरै सी व्हैगी। रोज बंदूकां अर तलवारां वाळी कांणी कठा सूं लावणी। मा बोली वेटा, दिन रा कांणी कै'वां तौ मारग वैवता बटाउड़ा मारग भूल जावै। जवाब में वेटौ गळगळौ व्हैग्यौ, आंख्यां डब डब व्हैगी, मा नै झुकणौ पड़चौ।—रातवासौ

५ प्रवृत्त होना, मुखातिब होना, रजू होना।

उ०—नागग सरवर भरियौ नीकौ, झुकै लोग पीवण दे झीकौ। ठगवाजी गादी रौ ठीकौ, फेर सिखां कर दीनौ फीकौ।—ऊ.का.

६ तल्लीन होना, दत्तचित्त होना, लगना।

उ०—कमधांण केकांण उडांण कळा। झुकिया घमसांण उफांण झळा।—सू.प्र.

७ ढीला होना, शिथिल होना। उ०—कविता टुक सुण सुख अधिक, स्त्री मुख हुकम सहंत। पै जस अस वग झुक 'पता', रुक पग नीठ रहंत।

—जैतदांन बारहठ

८ आच्छादित होना, फैलना। उ०—झुकै घर हैमर सूर झुंझार। भमै किर साख तिडां दळ भार।—सू.प्र.

९ पूर्ण रूप से तैयारी पर होना, सज-धज पर होना, ऐसी अवस्था में होना कि उसकी तैयारी प्रतीत हो (जैसे घटा का ऐसी अवस्था में होना कि वह वरसने ही वाली हो)

उ०—भादू वरखा झुक रही, घटा चढ़ी नभ जोर। कोयल कूक सुणावती, बोलै दादुर मोर।—लो.गी.

१० (मेघ या घन-घटा का) मंडराना। उ०—झड़ लागौ वादळ झुकै, ऊठै हुवै असवार। पोसाकां इक रंग पहर, सांईणा सिरदार।

—महादांन महड़ू

११ (समृद्धि या विशालता युक्त) शोभित होना।

ज्यूं—१ सहर में सेठां री बड़ी-वड़ी हवेलियां झुक्योड़ी छै।

ज्यूं—२ जवांनां रै मौंळिया सागेड़ा झुक्योड़ा छै।

१२ दबना. १३ व्यापक होना, चारों ओर फैलना।

उ०—अर नदियां पूर वहै छै। रात अंघारी झुक रही छै।

—पनां वीरमदे री वात

१४ सघनता युक्त होना, हरा-भरा होना (वृक्ष, फसल आदि)

१५ अभिमान या उग्रता छोड़ना, विनम्र होना, विनीत होना.

१६ मोहित होना. १७ दबना, नीचे झुकना।

झुकणहार, हारौ (हारी), झुकणियौ—वि०।

झुकवाड़णौ, झुकवाड़वौ, झुकवाणौ, झुकवावौ, झुकवावणौ, झुकवाववौ—प्रे०रू०।

झुकाड़णौ, झुकाड़वौ, झुकाणौ, झुकावौ, झुकावणौ, झुकाववौ—क्रि०स०।

झुकीजणौ, झुकीजवौ—भाव वा०।

झुकवाई—सं०स्त्री०—झुकने या झुकाने की क्रिया का भाव या इस कार्य की मजदूरी।

रू०भे०—झुकाई।

झुकाई—देखो 'झुकवाई' (रू.भे.)

झुकाड़णौ, झुकाड़वौ—देखो 'झुकाणौ, झुकावौ' (रू.भे.)

झुकाड़णहार, हारौ (हारी), झुकाड़णियौ—वि०।

झुकाड़िम्रोड़ौ, झुकाड़ियोड़ौ, झुकाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

झुकाड़ीजणौ, झुकाड़ीजवौ—कर्म वा०।

झुकणौ, झुकवौ—अक०रू०।

झुकाड़ियोड़ौ—देखो 'झुकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुकाड़ियोड़ी)

झुकाणौ, झुकावौ—क्रि०स०—१ किसी खड़ी वस्तु को नीचे की ओर लटकाना, नवाना, निहुराना. २ मजबूर करना, हराना।

उ०—रागिया रुदन छंद बोहौ रचातौ, झुकातौ वागिया जवां झूटौ। उसासां धड़स नंद आगिया उडातौ, जागिया जिंद जिम आंण जूटौ।

—भैरूंदांन बारहठ

३ प्रवृत करना, मुखातिब करना, रजू करना. ४ तल्लीन करना, लीन करना, दत्तचित्त करना, लगाना। उ०—दूजा गज रौ पौगर अरिसिंह री पाघ पर आयौ। जांणै पूंग्यां रा पुंज पर नागराज भोग

झुकायो ।—वं.भा.

५ ढीला करना, शिथिल करना. ६ किसी पदार्थ को एक ओर या दोनों ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति में प्रवृत्त करना. लंबमान करना. ७ आच्छादित करना, फैलाना. ८ पूर्ण रूप से तैयारी पर करना, सजधज करना । उ०—कंचन कोटि महल मालिया झुकाऊं रे । माळिया में सूवा मोतीड़ा बंधाऊं रे ।—मीरां

९ किसी के ऊपर घुमाना, मंडल बांध कर चारों ओर घुमाना. १० (समृद्धि या विशालतायुक्त) शोभित करना. ११ दबाना, नीचे झुकाना. १२ व्यापक करना, चारों ओर फैलाना. १३ सघनतायुक्त करना, हराभरा करना (वृक्ष, फसलादि). १४ अभिमान या उग्रता छुड़ाना, विनम्र करना, विनीत करना. १५ मोहित करना.

झुकाणहार, हारौ (हारी), झुकाणियौ—वि० ।

झुकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

झुकाईजणौ, झुकाईजबौ—कर्म वा० ।

झुकणौ, झुकबौ—अक०रू० ।

झुकाड़णौ, झुकाड़बौ, झुकावणौ, झुकावबौ—रू०भे० ।

झुकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी खड़ी वस्तु को नीचे की ओर लटकाया हुआ. २ मजबूर किया हुआ, हराया हुआ. ३ प्रवृत्त किया हुआ, मुखातिब किया हुआ, रजू किया हुआ. ४ तल्लीन किया हुआ, लीन किया हुआ, दत्तचित्त किया हुआ, लगाया हुआ.

५ ढीला किया हुआ, शिथिल किया हुआ. ६ किसी पदार्थ को एक ओर या दोनों ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति में प्रवृत्त किया हुआ, लंबमान किया हुआ. ७ आच्छादित किया हुआ, फैलाया हुआ. ८ पूर्ण रूप से तैयारी पर किया हुआ, सजा धजा हुआ. ९ किसी के ऊपर घुमाया हुआ, मंडल बांध कर चारों ओर घुमाया हुआ. १० (समृद्धि या विशालता युक्त) शोभित किया हुआ.

११ दबाया हुआ, नमाया हुआ. १२ व्यापक किया हुआ, चारों ओर फैलाया हुआ. १३ सघनता युक्त किया हुआ, हराभरा किया हुआ (वृक्ष, फसल आदि). १४ अभिमान या उग्रता छुड़ाया किया हुआ, विनम्र किया हुआ. १५ मोहित किया हुआ ।

(स्त्री० झुकायोड़ी)

झुकाव-सं०पु०—१ किसी ओर झुकने, प्रवृत्त होने या लटकने की क्रिया। २ किसी ओर मन के आकृष्ट होने या लगने की क्रिया. ३ वह भाग जो किसी ओर झुक गया हो ।

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, देणौ, होणौ ।

४ ढाल, उतार ।

विलो०—चढ़ाव ।

झुकावट-सं०स्त्री०—१ झुकने की क्रिया या भाव ।

२ इच्छा, चाह, प्रवृत्ति ।

झुकावणौ, झुकावबौ—देखो 'झुकाणौ, झुकाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ सीस झुकावै अे राजा पातस्या ।—लो.गी.

उ०—२ तौ भी तत्काळ ही ऊठि वाहण विहूणौ भी नाक री नारियां रा झुंड झुकावतौ निसंक जूटियौ ।—वं.भा.

उ०—३ मेर मीणां नै सिकस्त लेतां ही पाछै सूं प्रतिहार नाहर राज पखरैतां रा भार सूं प्रिथ्वी रा पुड़ झुकावतौ बडै वेग आयौ ।

—वं.भा.

झुकावणहार, हारौ (हारी), झुकावणियौ—वि० ।

झुकाविओड़ौ, झुकावियोड़ौ, झुकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झुकावीजणौ, झुकावीजबौ—कर्म वा० ।

झुकणौ, झुकबौ—अक रू० ।

झुकावियोड़ौ—देखो 'झुकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुकावियोड़ी)

झुकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी खड़ी वस्तु का नीचे की ओर लटका हुआ, निहुरा हुआ, नवा हुआ. २ मजबूर हुवा हुआ, हारा हुआ. ३ प्रवृत्त हुवा हुआ, मुखातिब हुवा हुआ, रजू हुवा हुआ. ४ तल्लीन हुवा हुआ, दत्तचित्त हुवा हुआ, रजू हुवा हुआ. ५ ढीला हुवा हुआ, शिथिल हुवा हुआ. ६ कोई पदार्थ एक ओर या दोनों ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति में प्रवृत्त हुवा हुआ, लंबमान हुवा हुआ. ७ आच्छादित हुवा हुआ, फैला हुआ. ८ पूर्ण रूप से तैयारी पर हुवा हुआ, सज धज हुवा हुआ. ९ मंडराया हुआ. १० (समृद्धि या विशालतायुक्त), शोभित हुवा हुआ. ११ दबा हुआ. १२ व्यापक हुवा हुआ, चारों ओर फैला हुआ. १३ सघनतायुक्त हुवा हुआ, हरा भरा हुवा हुआ (वृक्ष, फसल आदि). १४ कोई खड़ा या सीधा पदार्थ किसी ओर झुका हुआ, प्रवृत्त हुवा हुआ. १५ अभिमान या उग्रता छोड़ा हुआ, विनम्र हुवा हुआ, विनीत हुवा हुआ. १६ मोहित हुवा हुआ. १७ दबा हुआ, नीचे झुका हुआ ।

(स्त्री० झुकियोड़ी)

झुकेड़ौ-सं०पु०—धक्का । उ०—दादू मरबौ एक जुवार, अमर झुकेड़ै मारिये । तो तरिये संसार, आतमा कारज सारिये ।—दादू वांणी

झुक्कणौ, झुक्कबौ—देखो 'झुकणौ, झुकबौ' (रू.भे.)

उ०—अवाहै खड़ग्गं झड़ै हत्थ पग्गं, लहै जांण आरा धर काठ लग्गं। मुड़ै सालळै सालळै पै मुड़क्कै, झड़ां ओझड़ां सांड ज्यौं मांड झुक्कै ।

—रा.रू.

झुक्कियोड़ौ—देखो 'झुकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुक्कियोड़ी)

झुखण-सं०पु०—झड़बेरी आदि के कांटों का समूह ।

झुज्झ—देखो 'जुध' (रू.भे.)

झुज्झमल, झुज्झमल्ल-सं०पु० [सं० युद्धमल्ल] वीर, योद्धा ।

उ०—भुयांणं कवांणं जुआंणं सभल्लं, मिळै मीरजादा इसा झुज्झमल्लं । विन्है फौज फौजां धणी चत्रवाहं, सझै सार आवद्ध लीधां सनाहं ।—वचनिका

झुझणौ, झुझबौ—देखो 'जूंझणौ, जूंझबौ' (रू.भे.)

उ०—क्रिपरा पुरिखि केतउं दीजइ, गरदभ केतउ वूझइ, कातर केतुं झुझइ, वांझि गाय केतइं दुझइ ।—व.स.

झुझियोड़ौ—देखो 'जूंझियोड़ौ' (रू.भे.)

झुझु—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—वेटउ रुड़ु करंतउ जांगी, ताखणि आवी गंगारांणी । वेउ पखि झुझु करंतां राखइ, नियप्रिय आगळि नंदगु दाखइ ।—पं.पं.च.

झुटपटियौ—देखो 'झुंटपटी' (अल्पा., रू.भे.)

झुटपटी—देखो 'झुटपुटी' (रू.भे.)

झुटपटौ—देखो 'झुटपुटौ' (रू.भे.)

झुटपुटियौ—देखो 'झुटपुटौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—भंवरां झुटपुटियै री वेळ, खुलै वा अंधारै री आंख। वेल पड़ लचकांणी लख जाय, लजाळू सिरकै पल्लो नांख।—सांझ

झुटपुटी-सं०स्त्री०—ऐसा अंधेरा समय जब किसी वस्तु को देखने अथवा किसी व्यक्ति व वस्तु को पहचानने में कठिनता हो।

रू०भे०—झुटपटी ।

झुटपुटौ-सं०पु०—प्रातः अथवा सन्ध्या का वह समय जब न तो पूर्ण रूप से अंधेरा हो और न प्रकाश, ऐसा समय जिसमें किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को पहिचानना कठिन हो ।

रू०भे०—झुटपटौ ।

अल्पा०—झुटपटियौ, झुटपुटियौ ।

झुटाळक-वि०—उत्पादी, उपद्रवी ।

झुठाई-सं०स्त्री०—१ असत्यता। उ०—झूठा विप्र सास्त्र सब झूठा, झूठा जगत झुठाई। कोप विवस्था करम-कांड री, एकण साथ उड़ाई ।—ऊ.का.

२ शरारत, बदमाशी, उत्पात ।

झुठामूठी—देखो 'झूठमूठ' (रू.भे.)

झुणकणौ, झुणकबौ—देखो 'झणकणौ, झणकबौ' (रू.भे.)

उ०—जेहरि घूघर माळ पगां झुणकै जियां, कुंजै वारिज पुंड्र वचा कळहंसियां ।—बां.दा.

झुणकाणौ, झुणकाबौ—देखो 'झणकाणौ, झणकाबौ' (रू.भे.)

झुणकायोड़ौ—देखो 'झणकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुणकायोड़ी)

झुणकारणौ, झुणकारबौ-क्रि०अ०स०—१ (रूई आदि धुनते समय) ध्वनि उत्पन्न होना. २ देखो 'झणकणौ, झणकबौ' (रू.भे.)

३ (रूई आदि) धुनना. ४ देखो 'झणकाणौ, झणकाबौ' (रू.भे.)

झुणकारणहार, हारौ (हारी), झुणकारणियौ—वि० ।

झुणकारिओड़ौ, झुणकारियोड़ौ, झुणकार्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झुणकारीजणौ, झुणकारीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

झुणकारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ध्वनि उत्पन्न हुवा हुआ, ध्वनित. २ देखो 'झणकियोड़ौ' (रू.भे.) ३ धुना हुआ. ४ देखो 'झुणकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुणकावियोड़ी)

झुणकियोड़ौ—देखो 'झणकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुणकियोड़ी)

झुणझुण-सं०पु०—नूपुर आदि के बजने से उत्पन्न झुन-झुन शब्द ।

झुणि-सं०स्त्री० [सं० ध्वनि] आवाज, ध्वनि ।

उ०—१ भाजिवा लागा धनुरदंड, वाजिवा लागी खांडा तणी झुणि, सुभट तणी कड-कड वाजिवा लागी ।—व.स.

उ०—२ साच वचन ऊगाढ़ीआ, काढ़ियां निज मुख सीम। नेउर झुणि पग लागतां, लाग लाख्यां लहइं कीम ।

—प्राचीन फागु संग्रह

झुबझुब-सं०पु०—१ स्त्रियों की भुजाओं पर धारण करने का आभूषण विशेष. २ देखो 'झबझब' (रू.भे.)

झुबौ-सं०स्त्री०—प्रायः पिछड़ी हुई जातियों की स्त्रियों के काम में धारण करने का एक आभूषण विशेष ।

झुमाड़णौ, झुमाड़बौ—देखो 'झुमाणौ, झुमाबौ' (रू.भे.)

झुमाड़णहार, हारौ (हारी), झुमाड़णियौ—वि० ।

झुमाड़िओड़ौ, झुमाड़ियोड़ौ, झुमाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झुमाड़ीजणौ, झुमाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

झूमणौ, झूमबौ—अक० रू० ।

झुमाड़ियोड़ौ—देखो 'झुमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुमाड़ियोड़ी)

झुमाणौ झुमाबौ-क्रि०स० ('झूमणौ' क्रिया का प्रे०रू०) झूमने में प्रवृत्त करना ।

झुमाणहार, हारौ (हारी), झुमाणियौ—वि० ।

झुमायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

झुमाईजणौ, झुमाईजबौ—कर्म वा० ।

झूमणौ, झूमबौ—अक० रू० ।

झुमाड़णौ, झुमाड़बौ, झुमावणौ, झुमावबौ—रू०भे० ।

झुमायोड़ौ-भू०का०कृ०—झूमने में प्रवृत्त किया हुआ ।

(स्त्री० झुमायोड़ी)

झुमावणौ, झुमावबौ—देखो 'झुमाणौ, झुमाबौ' (रू.भे.)

झुमावणहार, हारौ (हारी), झुमावणियौ—वि० ।

झुमाविओड़ौ, झुमावियोड़ौ, झुमाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

झुमावीजणौ, झुमावीजबौ—कर्म वा० ।

झूमणौ, झूमबौ—अक० रू० ।

झुमावियोड़ौ—देखो 'झुमायोड़ौ' (रू.भे.)

झुरंट-सं०स्त्री०—नखक्षत, खरोंच ।

झुरंडणौ, झुरंडबौ—देखो 'झुरड़णौ, झुरड़बौ' (रू.भे.)

झुरंडियोड़ौ—देखो 'झुरड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झुरंडियोड़ी)

झुरकण-सं०स्त्री०—१ कांटों का समूह (झड़बेरी आदि के)

२ ईंधन के काम आने वाली सूखी हुई पतली-पतली व छोटी-छोटी कांटेदार टहनियां या टहनियों का समूह ।

झुरको-सं०पु०—ऊंट की चाल विशेष । उ०—बटाऊ बैठा आड तिलांग, ऊंठड़ा मारग झुरकै जाय । सुणीजै फुरणी मूरी ढोल, मोद न मूमल-मन माय ।—सांझ

झुरटियो-सं०पु०—नखक्षत, खरोंच (अल्पा.)

झुरड़णो, झुरड़बो क्रि०स०—१ नाखूनों से खुजली मिटाने के लिये हाथ को बार-बार शरीर पर फेरना. २ खरोंचना, कुरेदना. ३ वृक्ष की टहनी को हाथ में पकड़ कर उसके पत्ते सूंत लेना, हाथ की रगड़ से पत्तियां दूर करना. ४ किसी को तंग करना, कष्ट पहुँचाना ।

झुरड़णहार, हारो (हारी), झुरड़णियो—वि० ।

झुरड़िओड़ो, झुरड़ियोड़ो, झुरड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुरड़ीजणो, झुरड़ीजबो—कर्म वा० ।

झुरड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नाखूनों से खुजली मिटाने के लिये हाथ को बार-बार शरीर पर फेरा हुआ. २ खरोंचा हुआ, कुरेदा हुआ. ३ हाथ की रगड़ से टहनी की पत्तियां दूर किया हुआ. ४ किसी को तंग किया हुआ, कष्ट पहुँचाया हुआ ।

(स्त्री० झुरड़ियोड़ी)

झुरणी—देखो 'झुरनी' (रू.भे.)

झुरणो-सं०पु०—वियोगजनित दुःख, विलाप, रुदन ।

उ०—इमड़ा तो झुरणा ये जीण सगती झुरती, गई गई कोस दोय च्यार ।—लो.गी.

झुरणो, झुरबो-क्रि०अ०स०—१ बहुत दुखी होना, शोक करना ।

उ०—१ झुरै इम रंगरेजणी, कूड़ा ठाकुर काय । वसन सती घण रंगतां, दीधी आस छुड़ाय ।—वी.स.

उ०—२ मारू जातां चाकरी, करग्या कोल करार । सांवण सुरंगी तीज नै, आवांगा घर-नार । सांवण सुरंगो वीतग्यो, गयी रे सुहेली तीज, पिव विन झुर झुर मैं मरूं, उभळै म्हारो हीव ।—लो.गी.

२ बेचैन होना, विकल होना । उ०—जिणि दीहै पाळउ पड़इ, टापर तुरी सहाइ । तिणि रिति बूढ़ी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ ।

—ढो.मा.

३ बिलखना, सुबकना । उ०—इहि जोड़ा उणिहार, जणणी फिर जाया नहीं । निकमी नाजुक नार, झुरती रैंगी जेठवा ।—जेठवा

४ रुदन करना, विलाप करना, प्रलाप करना ।

उ०—१ निरखै मिळै झुरै रघुनायक, सुण सुण वायक सारा । जोवा अमर विया जड़ जंगम, व्याकुळ हुआ विचारा ।—र.रू.

उ०—२ पड़ी चाकरी चूक घणी जद घणी रिसायो । झुरती कांमण छोड रांमगिरि यक्ष सिधायो । जनक सुता रै स्नांन जेय रो निरमळ पांणी । गहरी बिरछां-छांह जाय न कदै बखांणी ।—मेघ.

उ०—३ झुरै म्रिगनयणी झुरै, मेह तणी रुत मोरां । जोगण पूठ दियां सायजादी, घूमर ऊपर धोरां ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

५ कलपना, आंसू बहाना ।

६ रोग, अधिक परिश्रम या बहुत अधिक चिन्ता के कारण कृश होना, दुर्बल होना, घुलना । उ०—१ छुटुं सहेली साहिवो, छाय रह्यो परदेस । झुर-झुर नै पींजर हुई, बाळा जोबन वेस ।—र.रा.

उ०—२ ईयै गोरबंधियै रै कारणै म्हैं तो झुर-झुर पींजर हूं गई रे, म्हारो गोरबंध लूंबाळो ।—लो.गी.

७ झूमना, लटकना । उ०—सांवण आयो, सायबां, वेलां झुर रहि वाड़ । चातक झुर रह्यो मेघ नै, पिव नै झुर रहि नार ।—लो.गी.

८ याद करना, स्मरण करना । उ०—१ झुरसी निरधन नूवळ हजारां, रीझां दियण सिरै दोय राह । पड़तै 'पदम' कमंध पटोधर, पाड़ लियो दिखण्यां पतसाह ।—महाराजा पदमसिंह रो गीत

उ०—२ वीणा जंतर तार, थैं छेड़्या उण राग रा । गुण नै झुरूं गंवार, जात न झींकूं जेठवा ।—जेठवा

उ०—३ ना घर आवै पीवजी, बीत गई बरसात । अगहन झुरै कांमणी, जाडो जहर लखात ।—लो.गी.

झुरणहार, हारो (हारी), झुरणियो—वि० ।

झुरवाड़णो, झुरवाड़बो, झुरवाणो, झुरवाबो, झुरवावणो, झुरवावबो, झुराड़णो, झुराड़बो, झुराणो, झुराबो, झुरावणो, झुरावबो

—प्रे०रू० ।

झुरिओड़ो, झुरियोड़ो, झुर्‌योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुरीजणो, झुरीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

झूरणो, झूरबो—रू०भे० ।

झुरनी-सं०स्त्री०—१ प्रायः किशोरावस्था के बालकों द्वारा वृक्ष की टहनियों से झूम-झूम कर पृथ्वी पर आने व बार-बार चढ़ कर खेला जाने वाला एक खेल. २ इस खेल में प्रयोग किया जाने वाला लकड़ी का एक डंडा ।

क्रि०प्र०—आणी, खेलणी, देणी, रमणी ।

रू०भे०—झुरणी ।

झुरमट—देखो 'झुरमुट' (रू.भे.)

झुरमटियो—देखो 'झुरमुट' (अल्पा., रू.भे.)

झुरमुट-सं०पु०—१ झाड़, पत्ते, लताओं अथवा वृक्षों का ऐसा समूह जिससे कोई स्थान ढक जाय किन्तु नीचे या बीच में कुछ स्थान रिक्त रहे. २ झुंड, समूह (मा.म.). ३ चादर या अन्य किसी वस्त्र से शरीर को चारों ओर से ढक या छिपा लेने की क्रिया ।

रू०भे०—झुरमट ।

अल्पा०—झुरमटियो, झुरमुटियो ।

झुरमुटियो—देखो 'झुरमुट' (अल्पा. रू.भे.)

झुररी-सं०स्त्री०—किसी वस्तु पर पड़ने वाली सिकुड़न, सिलवट, शिकन ।

झुररो-सं०पु०—नेत्रों के आंसू ।

उ०—थारी धीव जंवाग्रीड़ा ले जासी, थारे नैणां में रहसी झुररी रे। ढाळया ढळ कर चाले ढेलणी, मळया मळ कर चाले मोरड़ी।—लो.गी.

ाड़णो, झुराड़बो—देखो 'झुराणो, झुराबो' (रू.भे.)

झुराड़णहार, हारो (हारी), झुराड़णियो—वि०।

झुराड़िग्रोड़ो, झुराड़ियोड़ो, झुराड़योड़ो—भू०का०कृ०।

झुराड़ीजणो, झुराड़ीजबो—कर्म वा०।

झुरणो, झुरबो—ग्रक०रू०।

ाड़ियोड़ो—देखो 'झुरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुराड़ियोड़ी)

राणो, झुराबो—क्रि०स०—१ बहुत दुखी करना. २ वेचैन करना, विकल करना. ३ सुबकाना, बिलखाना. ४ विलाप कराना, रुदन कराना, प्रलाप कराना. ५ ग्रांसू बहाना, कलपाना।

उ०—मारवणी मन मोहियो, मनह न मेलो न जाय। जिम जिम हियड़ै सांभरै, तिम तिम नयण झुराय।—ढो.मा.

६ कृश करना, दुर्बल करना, घुलाना. ७ याद कराना, स्मरण कराना. ८ लटकाना.

झुराणहार, हारो (हारी), झुराणियो—वि०।

झुरायोड़ो—भू०का०कृ०।

झुराईजणो, झुराईजबो—कर्म वा०।

झुरणो, झुरबो—ग्रक०रू०।

झुराड़णो, झुराड़बो, झुरावणो, झुराववो—रू०भे०।

ुरापो—सं०पु०—१ वियोगजनित दुःख का प्रलाप. २ वियोगजनित दुःख का रुदन. ३ प्रिय के वियोग में गाया जाने वाला लोक गीत विशेष।

क्रि०प्र०—करणो, गाणो, होणो।

रू०भे०—झुरावो, झूरापो, झूरावो, झेरापो, झेरावो।

झुरायोड़ो—भू०का०कृ०—१ बहुत दुखी किया हुग्रा. २ वेचैन किया हुग्रा, विकल किया हुग्रा. ३ सुबकाया हुग्रा, बिलखाया हुग्रा. ४ विलाप किया हुग्रा रुदन किया हुग्रा, प्रलाप किया हुग्रा. ५ ग्रांसू वहाया हुग्रा, कलपाया हुग्रा. ६ कृश किया हुग्रा, दुर्बल किया हुग्रा, घुलाया हुग्रा. ७ याद कराया हुग्रा, स्मरण कराया हुग्रा. ८ लटकाया हुग्रा।

(स्त्री० झुरायोड़ी)

झुरावणो, झुराववो—देखो 'झुराणो, झुराबो' (रू.भे.)

झुरावणहार, हारो (हारी), झुरावणियो—वि०।

झुराविग्रोड़ो, झुरावियोड़ो, झुराव्योड़ो—भू०का०कृ०।

झुरावीजणो, झुरावीजबो—कर्म वा०।

झुरणो, झूरबो—ग्रक० रू०।

झुरावियोड़ो—देखो 'झुरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुरावियोड़ी)

झुरावो—देखो 'झुरापो' (रू.भे.)

झुरियोड़ो—भू०का०कृ०—१ बहुत दुखी हुवा हुग्रा, शोक किया हुग्रा. २ वेचैन हुवा हुग्रा, विकल हुवा हुग्रा. ३ बिलखा हुग्रा, सुबका हुग्रा. ४ रुदन किया हुग्रा, विलाप किया हुग्रा, प्रलाप किया हुग्रा. ५ कलपा हुग्रा, ग्रांसू बहा हुग्रा. ६ कृश हुवा हुग्रा, दुर्बल हुवा हुग्रा, घुला हुग्रा. ७ झूमा हुग्रा, लटका हुग्रा. ८ याद किया हुग्रा, स्मरण किया हुग्रा।

(स्त्री० झुरियोड़ी)

झुळक—सं०स्त्री०—रोने की ग्रवस्था में ग्रांसू ढलकाने की क्रिया।

उ०—झुळक झुळक माता रोवती, कुंवर सांमो रही जोय। ए सुरती जाया थाहरी ए, ग्रंबर फूल ज्यूं होय।—जयवाणी

झुळकणो, झुळकबो—क्रि०ग्र०—जगमगाना, झलमलाना, चमकना।

उ०—सुरह सुगंधी वास, मोती कांनै झुळकते। सूती मंदिर खास, जांणू ढोलइ जागवी।—ढो.मा.

झुळकणहार, हारो (हारी), झुळकणियो—वि०।

झुळकाड़णो, झुळकाड़बो, झुळकाणो, झुळकाबो, झुळकावणो, झुळकाववो—क्रि०स०।

झुळकिग्रोड़ो, झुळकियोड़ो, झुळक्योड़ो—भू०का०कृ०।

झुळकीजणो, झुळकीजबो—भाव वा०।

झुळकियोड़ो—भू०का०कृ०—जगमगाया हुग्रा, झलमलाया हुग्रा, चमका हुग्रा।

(स्त्री० झुळकियोड़ी)

झुलणो, झुलबो—देखो 'झूलणो, झूलबो' (रू.भे.)

उ०—हर ग्रोपमां तेण रिख हासां। पवन झुलै किर फुलै पळासां।

—सू.प्र.

झुलर—देखो 'झूलर' (रू.भे.)

झुलराणो, झुलराबो—क्रि०स०—झूला देना, झुलाना, हिंडोला देना।

उ०—माथां धोतां नीर-मळ झुलरायौ झोळी, हालरियै हुलरावियौ, हींडोळ हिंचोळी। वळि रमियो ग्रठ दस वरस तुं वाळक टोळी, परणायौ तुं नइ पछै दयिता हुइ दोळी।—ध.व.ग्रं.

झुलरायोड़ो—भू०का०कृ०—झूला दिया हुग्रा, झुलाया हुग्रा, हिंडोला दिया हुग्रा।

(स्त्री० झुलरायोड़ी)

झुळसणो, झुळसबो—क्रि०ग्र०—१ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल का इतना गर्म होना कि काला पड़ जाय. २ किसी ग्रंग का ग्रधिक ताप के कारण लाल होना. ३ कुम्हलाना. ४ ग्रध जला होना।

क्रि०स०—५ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को इतना गरम करना कि काला पड़ जाय. ६ ग्रधिक ताप दे कर लाल करना. ७ ग्रध जला करना।

झुळसणहार, हारो (हारी), झुळसणियो—वि०।

झुळसवाड़णो, झुळसवाड़बो, झुळसवाणो, झुळसवाबो, झुळसवावणो, झुळसवाववो—प्रे०रू०।

झुळसाड़णो, झुळसाड़वो, झुळसाणो, झुळसावो, झुळसवावणो, झुळसाववो—क्रि०स० ।

झुळसियोड़ो, झुळगियोड़ो, झुळस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुळसीजणो, झुळसीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

झुळसाड़णो, झुळसाड़वो—देखो 'झुळसाणो, झुळसावो' (रू.भे.)

झुळसाड़णहार, हारो (हारी), झुळसाड़णियो—वि० ।

झुळसाड़िग्रोड़ो, झुळसाड़ियोड़ो, झुळसाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुळसाड़ीजणो, झुळसाड़ीजवो—कर्म वा० ।

झुळसणो, झुळसवो—अक०रू० ।

झुळसाड़ियोड़ो—देखो 'झुळसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुळसाड़ियोड़ी)

झुळसाणो, झुळसावो-क्रि०स०—१ अधिक गरमी से अवजला करना. २ अधिक ताप दे कर लाल करना. ३ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को इतना गरम करना कि काला पड़ जाय ।

झुळसाणहार, हारो (हारी), झुळसाणियो—वि० ।

झुळसायोड़ो—भू०का०कृ० ।

झुळसाईजणो, झुळसाईजवो—कर्म वा० ।

झुळसणो, झुळसवो—अक० रू० ।

झुळसाड़णो, झुळसाड़वो, झुळसावणो, झुळसाववो, झूंसाड़णो, झूंसाड़वो, झूंसाणो, झूंसावो, झूंसावणो, झूंसाववो—रू०भे० ।

झुळसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ अधिक गर्मी से अवजला किया हुआ. २ अधिक ताप दे कर लाल किया हुआ. ३ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को अधिक गरमी से काला बनाया हुआ ।

(स्त्री० झुळसायोड़ी)

झुळसावणो, झुळसाववो—देखो 'झुळसाणो, झुळसावो' (रू.भे.)

झुळसावणहार, हारो (हारी), झुळसावणियो—वि० ।

झुळसाविग्रोड़ो, झुळसावियोड़ो, झुळसाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुळसावीजणो, झुळसावीजवो—कर्म वा० ।

झुळसणो, झुळसवो—अक०रू० ।

झुळसावियोड़ो—देखो 'झुळसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुळसावियोड़ी)

झुळसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ (किसी पदार्थ का ऊपरी भाग या तल) गर्म हो कर काला पड़ा हुआ. २ (किसी अंग का) अधिक ताप के कारण लाल हुवा हुआ. ३ कुम्हलाया हुआ. ४ अधजला हुवा हुआ. ५ अधिक गर्मी से अवजला किया हुआ. ६ अधिक ताप दे कर लाल किया हुआ. ७ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को अधिक गर्मी से काला बनाया हुआ ।

(स्त्री० झुळसियोड़ी)

झुलाड़णो, झुलाड़वो—देखो 'झुलाणो, झुलावो' (रू.भे.)

झुलाड़णहार, हारो (हारी), झुलाड़णियो—वि० ।

झुलाड़िग्रोड़ो, झुलाड़ियोड़ो, झुलाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुलाड़ीजणो, झुलाड़ीजवो—कर्म वा० ।

झूलणो, झूलवो—अक०रू० ।

झुलाड़ियोड़ो—देखो 'झुलायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुलाड़ियोड़ी)

झुलाणो, झुलावो-क्रि०स०—१ स्नान कराना, नहलाना. २ किसी वस्तु को अधर अवस्था में रख कर, टांग कर अथवा लटका कर हिलाना, झोंका देना. ३ भरोसे पर रखना, अनिर्णीत अवस्था में रखना ।

मुहा०—झूलतो राखणो—किसी को किसी कार्य के लिये झूठा वायदा करना, बार-बार फिराना, निश्चित उत्तर नहीं देना ।

४ झूले में बैठा कर झूला देना, हिंडोला देना. ५ झुमाना, डोलाना. ६ मोहित करना. ७ जल में विचरण कराना. ८ अग्निकुण्ड के पास बैठा कर तपस्या कराना ।

झुलाणहार, हारो (हारी), झुलाणियो—वि० ।

झुलायोड़ो—भू०का०कृ० ।

झुलाईजणो, झुलाईजवो—कर्म वा० ।

झूलणो, झूलवो—अक०रू० ।

झुलाड़णो, झुलाड़वो, झुलावणो, झुलाववो—रू०भे० ।

झुलायोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्नान कराया हुआ, नहलाया हुआ । २ अधर में टांगी हुई वस्तु को हिलाया हुआ, झोंक दिया हुआ. ३ झूले में बैठा कर झुलाया हुआ, हिंडोला दिया हुआ. ४ झुमाया हुआ, डोलाया हुआ. ५ भरोसे पर रखा हुआ, अनिर्णीत अवस्था में रखा हुआ. ६ मोहित किया हुआ. ७ जल में विचरण कराया हुआ. ८ अग्निकुण्ड के पास बैठा कर तपस्या कराया हुआ।

(स्त्री० झुलायोड़ी)

झुलावणो, झुलाववो—देखो 'झुलाणो, झुलावो' (रू.भे.)

झुलाणहार, हारो (हारी), झुलाणियो—वि० ।

झुलाविग्रोड़ो, झुलावियोड़ो, झुलाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

झुलावीजणो, झुलावीजवो—कर्म वा० ।

झूलणो, झूलवो—अक०रू० ।

झुलावियोड़ो—देखो 'झुलायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुलावियोड़ी)

झुलियोड़ो—देखो 'झूलियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुलियोड़ी)

झुल्ल, झुल्लो-वि०—वृद्ध, बुड्ढा । उ०—चढ़ै सिंध के भाव नगरी मुसल्ले । करां ले कमट्ठे वयं केक झुल्ले ।—ला.रा.

झुवाफ—देखो 'जाफ' (रू.भे.)

उ०—अंवा सिर मूदत कूदत एम, तजै गिरि स्रिग प्लवंगम तेम । थावै गज कायल खाय सथाप, झुकै घट घायल आय झुवाफ ।—मेम.

झुसांण—देखो 'भूसांण' (रू.भे.) उ०—झुसांण-झींका झींक हुंत, रंघड़ दे दे रेस । पिसणां पहुड़ा पिछ पगां, घर आयो गमरेस ।

—रेवतसिंह भाटी

झूंझ—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—नखत परमांण वाखांण वाघौ नरै। आवगौ झंझ रौ भार भुजि आपरै।—हा.झा.

झूंझणौ, झूंझवौ—देखो 'जूंझणौ, जूंझवौ' (रू.भे.)

उ०—देव दांणव झूंझिया रिव धूंधळ छाया।—केसोदास गाडण

झूंझळ—सं०स्त्री०—१ दुःख और क्रोध मिश्रित खिजलाहट।

उ०—आ झंझळ वणि अति खिजण, किसा गुना पर कीन। रहा सदाई राज रै, हुकम हुकम आधीन।—पनां वीरमदे री वात

२ देखो 'जांजळी' (रू.भे.) उ०—साठीकां पर नंह चाल्यौ, लूआं रौ जद दाव। झूंझळ में सह सोसिया, वेरचां कुंड तळाव।—लू

झूंझाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.)

झूंझार, झूंझारि—देखो 'जूंझार' (रू.भे.) उ०—१ तिणि वेळा उजेणि वीर खेत रा झूंझार राउ राठौड़ जोधा रिणमल वोलिग्रा।

—वचनिका

उ०—२ थई वळिहारि झूंझारि रोळण थटां। सेन रायसिंघ रा सांमठा सुभटां।—हा.झा.

झूंझियोड़ौ—देखो 'जूंझियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झूंझियोड़ी)

झूंझौ—सं०पु० [सं० योद्धा] १ योद्धा, वीर। उ०—रिमां मांण मूकै नहीं वै रण गौ वढ़तांह। घण झूंझौ रण भोम ही, चढ़ियां चाखड़ियांह।—हा.झा.

२ देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—हाथ आवाहतौ सिंधु रागां थियां। सहै झूंझा थयां वळि 'जसा' रा साथियां।—हा.झा.

झूंट—देखो 'झूठ' (रू.भे.)

झूंटण—१ देखो 'झूंटणौ' (मह. रू.भे.)

२ देखो 'झूटण' (रू भे.)

झूंटणियौ—देखो 'झूंटणौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—झूंटणिया झूंटणिया, गोरी, कांई विलखै, मेह विना धरती तरसै। मेहड़ौ हूवण दै, झूंटणिया घड़ावूं झालाळा, मेहड़ौ हुवण दै।

—लो.गी.

झूंटणौ—सं०पु० (वहु व० झूंटणा) स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

(मा.म.)

उ०—१ वांका लोयणां में अणियाळौ ठांस सजै छै। जड़ाव री लड़ी दांवणी झूंटणा झूंवरा अलोक वण रह्या छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ कोई कांनां-केरा हाल्या वाळी झूंटणा, ए मोरी सइयां।

—लो.गी.

रू०भे०—झूंठणौ, झूटणौ, झूठणौ।

अल्पा०—झूंटणियौ, झूंठणियौ, झूटणियौ, झूठणियौ।

मह०—झूंटण, झूंठण, झूटण, झूठण।

झूंट-सांच—सं०पु०यौ०—सत्यासत्य, झूठ और सच।

झूंटि—सं०स्त्री०—किसी वस्तु को अचानक शीघ्रता से झपटने की चेष्टा, अचानक शीघ्रतापूर्वक हमला करने का प्रयास।

उ०—झूंटि घरी घूंवड घाइ ताडइ आक्रंदती द्रूपदि वूंब पाडइ। धाए धरानायक राखि राखि, ए पापीया नइं फळ दाखि दाखि।

—विराटपर्व

झूंटिणौ, झूंटिवौ—क्रि०स०—किसी वस्तु को अचानक शीघ्रतापूर्वक झपटने अथवा उस पर हमला करने की चेष्टा करना, अचानक शीघ्रता से आक्रमण करना। उ०—झूंटि झूंविय महीतळि रोळी, काढ़िवा वसन कीध हीयाळी। अंतराळि थई राक्षिसि राखी, तीणइ हूई हिव होग्रत चाखी।—विराटपर्व

झूंटियोड़ौ—भू०का०कृ०—अचानक शीघ्रतापूर्वक झपटने अथवा हमला करने का प्रयास किया हुआ।

झूंठ—सं०पु०—१ जूठन, उच्छिष्ट। उ०—अे मिळतांई ऐंठ झूंठ परसाद झिलावै। कुळ मैं घालै कळह माजनौ धूड़ मिळावै।—ऊ.का.

२ देखो 'झूठ' (रू.भे.)

झूंठण—१ देखो 'झूंटणौ' (रू.भे.) २ देखो 'झूटण' (रू.भे.)

झूंठणियौ—देखो 'झूंटणौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूंठणौ—देखो 'झूंटणौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूंठौ—देखो 'झूठौ' (रू.भे.) उ०—१ हे गुलांम वैद्य नूं कह मैं झूंठौ होय। पछताऊं छूं कोल तोड़ियां री तोवा करूं छूं।—नी.प्र.

उ०—२ जे वैद्य कहै छै ऊ खरौ झूठौ छै, कहै जिकौ पाळण नहीं करै।—नी.प्र.

उ०—३ जद वादसाह कही वायदौ आपरौ क्योंकर झूंठौ कर सकूं छूं।—नी.प्र.

उ०—४ तरै इणां ठाकुरां नूं बुरहांन पूछियौ कह्यौ—थे कठी नूं पधारौ छौ ? तरै इणां ठाकुरां झूंठौ मिस कर नै कह्यौ—तेजसीजी कछवाहौ परणीजण जाय छै।—राव मालदे री वात

झूंथरा—सं०पु० (वहु व०) घने वाल (शेखावाटी)

झूंथरियौ, झूंथरौ—वि०—घने वालों वाला (शेखावाटी)

झूंप—देखो 'झूंपड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—ऊंचा ऊंचेरा वळी, परठि पाघड़ी खूंप। दीसइ जाणइ दूवळां, वसवा केरां झूंप।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'झूंपौ' (मह., रू.भे.)

झूंपकी—सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ी' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'झूंपौ'। (अल्पा., रू.भे.)

झूंपकौ—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'झूंपौ'। (अल्पा., रू.भे.)

झूंपड़—१ देखो 'झूंपड़ौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'झूंपौ' (मह., रू.भे.)

झूंपड़कौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूंपड़कौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा. रू.भे.)

झूंपड़ली—सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूंपड़लौ, झूंपड़ियौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूंपड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मोटा रावजी हो रावजी, नहीं रे महलां रौ म्हांनै कोड, झूंपड़ी भली हो म्हारा भील री, विलिया भला हो म्हारै भील रा।—लो.गी.

झूंपड़ो—सं०पु०—प्राय: गांवों, जंगलों आदि स्थानों में मिट्टी की छोटी-छोटी दीवारें उठा कर तथा ऊपर घास-फूस छा कर बनाया हुआ घर, कुटिया, पर्णशाला। उ०—मुग्धि करहा, ढोलउ कहइ, साची माने जोइ। अगर जेहा झूंपड़ा, तउ आसंगै मोइ।—ढो.मा.

उ०—ढोर-डांगर, थोड़ो घणो गैंणो-गांठो राछ-पीछ अर दोन्यूं झूंपड़ा जिकां नै रणछोड़ै रात-दिन एक कर नै बडी मुस्कल सूं बणाया हा, नगळाई सेठां रा व्हैग्या।—रातवासो

रू०भे०—झूंपो, झूंफड़ो, झूंफो, झूपड़ो, झूपो, झूफड़ो, झूफो।

अल्पा०—झूंपकी, झूंपको, झूंपड़की, झूंपड़को, झूंपड़ली, झूंपड़लो, झूंपड़ियो, झूंपड़ी, झूंपली, झूंपलो, झूंपियो, झूंपी, झूंफकी, झूंफको, झूंफड़की, झूंफड़को, झूंफड़ली, झूंफड़लो, झूंफड़ियो, झूंफड़ी, झूंफली, झूंफलो, झूंफियो, झूंफी, झूपकी, झूपको, झूपड़की, झुपड़को झूपड़ली, झूपड़लो, झूपड़ियो, झूपड़ी, झूपली, झूपलो, झूपियो, झूपी, झूपकी, झूफको, झूफड़की, झूफड़को, झूफड़ली, झूफड़लो, झूफड़ियो, झूफड़ी, झूफली, झूफलो, झूफियो, झूफी।

मह०—झूंप, झूंपड़, झूंफ, झूंफड़, झूप, झूपड़, झूफ, झूफड़, झूफल।

झूंपली—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंपलो, झूंपियो—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंपी-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की मकान की लाग या कर जो जागीरदार बिना पट्टे किये हुए मकान निवासियों से वर्ष में एक बार लेता था।

रू०भे०—झूंफी, झूपी।

२ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.) ३ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंपो-सं०पु०—१ 'ढाणी' से बडी और गांव से छोटी बस्ती जिसमें प्राय: पक्का मकान एक भी नहीं होता है, केवल झोंपड़ियां ही बनी हुई होती हैं और उसमें प्राय: एक ही जाति के लोग रहते हैं।

ज्यूं०—मैणां रो झूंपो, बागरियां रो झूंपो, रैवारियां रो झूंपो आदि।

२ देखो 'झूंपो' (१) (रू.भे.)

रू०भे०—झूंफो, झूपो, झूफो।

अल्पा०—झूंपकी, झूंपको, झूंपली, झूंपलो, झूंपियो, झूंपी, झूंफकी, झूंफको, झूंफली, झूंफलो, झूंफियो, झूंफी, झूपकी, झूपको, झूपली, झूपियो, झूपी, झूफकी, झूफको, झूफली, झूफलो, झूफियो, झूफी।

मह०—झूंप, झूंपड़, झूंफ, झूंफड़, झूप, झूपड़, झूफ, झूफड़।

३ देखो 'झूंपड़ो' (रू.भे.)

झूंफ—१ देखो 'झूंपड़ो' (मह., रू.भे.) २ देखो 'झूंपो' (मह., रू.भे.)

झूंफकी-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफको—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफड़—१ देखो 'झूंपड़ो' (मह. रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (मह., रू.भे.)

झूंफड़की-सं०स्त्री०—देखो 'झूंफड़' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफड़को—देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफड़लो, झूंफड़ियो—देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफड़ो—देखो 'झूंपड़ो' (रू.भे.)

झूंफली-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफलो, झूंफियो—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंफी-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'झूंपी' (रू.भे.)

झूंफो—१ देखो 'झूंपड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'झूंपो' (रू.भे.)

झूंब-सं०पु०—१ 'झूंबणो' क्रिया का भाव। उ०—इतरो कहि कटारी री पड़दड़ी मांहि सूं मोहर च्यार काढ़ि छांनी-सी हाथ मांहे दीनी नै कह्यो, बाई, रजपूत छूं तो थारो अवसांण कदेही भूलूं नहीं, पिण अबै काई सला दो नै कहो, म्है किसी भांति सूराचंद सूं झूंब करां।

—जैतसी ऊदावत री वात

२ देखो 'झूंबो' (मह. रू.भे.)

उ०—कपूर गरभ केळी का जूथ केळूं की झूंब। स्रीफळ विदांम और नींबू के लूंब।—सू.प्र.

रू०भे०—झूब।

झूंबक—देखो 'झूंबो' (मह. रू.भे.) उ०—सखी मोतियां रा लूंबक झूंबक, किस्तूरी श्रो राजा बांनरमाळ वधावो जी म्हारै आवियो।

—लो.गी.

झूंबकड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबकड़ो, झूंबकियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबकी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबको—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एडी पींडी ऊमदा, तक एण तरारां। जांणै करती झूंबको, तगमगियां तारां।

—दरजी मयारांम री वात

झूंबख—देखो 'झूंबो' (मह., रू.भे.)

झूंबखड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबखड़ो, झूंबखियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबखी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबखो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—हांम कांम लोचनी

आभै री वीज, भादुवै री, आकास री परी, मोतियां सरी। झत्यां री झूंमखी पून्यू रै चंद सो मुख। थाको हंस, असील वंस।
—रा.सा.सं.

झूंवड़—देखो 'झूंबी' (मह., रू.भे.)
झूंवड़की-सं०स्त्री—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंवड़को—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंवड़णी, झूंवड़बी—देखो 'झूंवणी, झूंवबी' (रू.भे.)
झूंवड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंवड़लो—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंवड़ियोड़ो—देखो 'झूंबियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० 'झूंवड़ियोड़ी')
झूंवड़ियो—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंवड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंवड़ो—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंबणी, झूंबबी-क्रि०अ०स०—१ अंकवार भरना, लपटना।
उ०—तिसं भींवा री नै माता री निजर मिळी नै माता ओळख्यो। तरै डोकरी आंख्यां गळगळी करि नै गळै झूंबी नै कह्यौ, घन दिन आज रो, घणां दिनां रो बीछड़ियो पुत्र मिळयो।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
२ युद्ध करना, भिड़ना। उ०—१. प्रिसणां साथ कासळी पड़ियो। आंगम लखां दुग्री आखड़ियो। निस गळती झूंबियो नत्रीठो। रूक तणो मच आकारीठो।—रा.रू.
उ०—२ चेतो उठा दौड़ियो सु कुंवरजी रै कटक मैं वींदावतां नूं अर मदनै नूं खबरि दीन्ही। जे रांमसिंघजी नूं झूंबिस्यो तो आ वेळा नहीं लहो।—द.वि.
३ धावा करना, झपटना। उ०—एक दिन राजा आरोगतौ हुतो और रांणी जी मांख्यां उडावता हुता। गछगरी रो आंगणो थो, तितरै एक कीड़ी चावळ ले हाली हुती तितरै बीजी आइ खोसण नुं झूंबी।—चौबोली
४ लूटना। उ०—१ तद पातसाही भांगेसुर सोजत रो सवळो थांणो थो तिण नूं झूंबण रो विचार कियो।—राव मालदे री वात
उ०—२ स्यांमदास भगवांनदासोत, करमसेन रै वास, पंवार झूंबिया तठै कांम आयो।—नैणसी
उ०—३ तठै गांव जाय झूंबियो तठै वेढ़ हुई।—नैणसी
५ लटकना। उ०—ढोलउ हल्लाणउ करइ, धण हल्लिवा न देह। झब झब झूंबइ पागड़इ, डब डब नयण भरेह।—ढो.मा.
६ (मस्ती में) हाथापाई करना। उ०—२ म्हैं नै ढोलो झूंबिया, लूंगे-लवकड़ियेह। म्हांनै प्रिउजी मारिया, चंपा रै कळियेह।—ढो.मा.
उ०—२ म्हैं नै ढोलो झूंबिया, म्हांनूं आवी रीस। चोवा केरै कूंपलै, ढोळी साहिब सीस।—ढो.मा.
७ जीव-जंतुओं अथवा पशुओं का काटना.
८ देखो 'झूमणी, झूमबी' (रू.भे.)
झूंबणहार, हारौ (हारी), झूंबणियौ—वि०।
झूंबवाड़णी, झूंबवाड़बी, झूंबवाणी, झूंबवाबी, झूंबवावणी, झूंबवावबी—प्रे०रू०।
झूंबाड़णी, झूंबाड़बी, झूंबाणी, झूंबाबी, झूंबावणी, झूंबावबी—क्रि०स०।
झूंबिओड़ो, झूंबियोड़ो, झूंब्योड़ो—भू०का०कृ०।
झूंबीजणी, झूंबीजबी—भाव वा०, कर्म वा०।
झूंवणी, झूंवबी, झूंबड़णी, झूंबड़बी, झूंबणी, झूंबबी—रू०भे०।
झूंबर—देखो 'झूंबरो' (मह., रू.भे.)
झूंबरी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबरो' (अल्पा., रू.भे.)
झूंबरो-सं०पु० (बहु व० झूंबरा) एक प्रकार का कर्णाभूषण।
उ०—हींगळू री बंदी दीजै छै। वांका लोयणां में अणियाळो ठांस सजै छै। जड़ाव री लड़ी दांवणी झूंटणा, झूंबरा अलोक वण रह्या छै।—रा.सा.सं.
झूंबल—देखो 'झूंबी' (मह., रू.भे.)
झूंबलड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंबलड़ो, झूंबालियो—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंबली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंबलो—देखो 'झूंबी' (अल्पा., रू.भे.)
झूंबाड़णी, झूंबाड़बी—देखो 'झूंबाणी, झूंबाबी' (रू.भे.)
झूंबाड़णहार, हारौ (हारी), झूंबाणियौ—वि०।
झूंबाड़िओड़ो, झूंबाड़ियोड़ो, झूंबाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
झूंबाड़ीजणी, झूंबाड़ीजबी—कर्म वा०।
झूंबणी, झूंबबी—अक० रू०।
झूंबाड़ियोड़ो—देखो 'झूंबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंबाड़ियोड़ी)
झूंबाणी, झूंबाबी-क्रि०स०—१ अंकवार भराना, लिपटाना. २ युद्ध कराना, भिड़ाना. ३ धावा कराना, झपटाना. ४ लुटाना. ५ लटकाना. ६ (मस्ती में) छीना-झपटी कराना. ७ जीव-जंतुओं अथवा पशुओं आदि से कटाना। उ०—जीवै पंथिया तोय, नाग झूंबाऊं, इसड़ी मन में आई। 'भगवत' मरण तणी कथ भूंडी, स्रवणां मूझ सुणाई।—ओपो आढ़ो
८ देखो झुमाणी, झुमावी' (रू.भे.)
झूंबाणहार, हारौ (हारी), झूंबाणियौ—वि०।
झूंबायोड़ो—भू०का०कृ०।
झूंबाईजणी, झूंबाईजबी—कर्म वा०।
झूंबणी, झूंबबी—अक० रू०।
झुंबाड़णी, झुंबाड़बी, झुंबाणी, झुंबाबी, झुंबावणी, झुंबावबी, झूंबाड़णी, झूंबाड़बी, झूंबावणी, झूंबावबी—रू०भे०।
झूंबायोड़ो-भू०का०कृ०—१. अंकवार भराया हुआ, लिपटाया हुआ।

२ युद्ध कराया हुआ, भिड़ाया हुआ. ३ धावा कराया हुआ, झपटाया हुआ. ४ लुटाया हुआ. ५ लटकाया हुआ. ६ (मस्ती में) हाथापाई कराया हुआ. ७ जीव-जंतुओं अथवा पशुओं आदि से कटाया हुआ. ८ देखो 'झूमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंबायोड़ी)

झूंबावणो, झूंबावबो—देखो 'झूंबाणो, झूंबाबो' (रू.भे.)
झूंबावणहार, हारो (हारी), झूंबावणियो—वि० ।
झूंबाविओड़ो, झूंबावियोड़ो, झूंबाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झूंबावीजणो, झूंबावीजबो—कर्म वा० ।
झूंबणो, झूंबबो—अक० रू० ।

झूंबावियोड़ो—देखो 'झूंबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंबावियोड़ी)

झूंबियोड़ो—भू०का०कृ०—१ अंकवार भरा हुआ, लपटा हुआ. २ युद्ध किया हुआ, भिड़ा हुआ. ३ धावा किया हुआ. ४ लूटा हुआ. ५ लटका हुआ. ६ (मस्ती में) हाथापाई किया हुआ. ७ जीव-जतुओं अथवा पशुओं का काटा हुआ. ८ देखो 'झूमायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंबियोड़ी)

झूंबियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंबो, झू'बो—सं०पु०—१ छोटी-छोटी वस्तुओं का समूह जो एक में लगी या बंधी हुई हों. २ कई फलों, फूलों या पत्तों आदि का समूह जो एक में लगे या बंधे हों, गुच्छा. ३ समूह, टोली. ४ पौधा ।
उ०—खेत में वडबोरड़ियां आयोड़ी, गहर डम्मर व्हियोड़ी, जांणै वडला ऊभा । फळसा आगली बोरड़ी रै नीचै एक छः सात वरस रो टाबर रम रह्यो । टाबर एक बाजरी रा झूंबा नै पाळ राख्यो सो उणरै च्यारूंमेर पाळी बणा'र रोज उण नै पांणी पावै ।
—रातवासी

रू०भे०—झूमो, झूबकु, झूमो ।
अल्पा०—झुंबिखो, झूंबकड़ी, झूंबकड़ो, झूंबकियो, झूंबको, झूंबखड़ी, झूंबखड़ो, झूंबखियो, झूंबखी, झूंबखो, झूंबड़की, झूंबड़को, झूंबड़ली, झूंबड़लो, झूंबड़ियो, झूंबड़ी, झूंबड़ो, झूंबलड़ी, झूंबलड़ो, झूंबलियो, झूंबली, झूंबलो, झूंबियो, झूंबी, झूंमकड़ी, झूंमकड़ो, झूंमकियो, झूंमको, झूंमखड़ी, झूंमखड़ो, झूंमखियो, झूंमखी, झूंमखो, झूंमड़की, झूंमड़को, झूंमड़ली, झूंमड़लो, झूंमड़ियो, झूंमड़ी, झूंमड़ो, झूंमलड़ी, झूंमलड़ो, झूंमलियो, झूंमलो, झूंमियो, झूंमी, झूबको, झूमकड़ी, झूमकड़ो, झूमकियो, झूमको, झूमखड़ी, झूमखड़ो, झूमखियो, झूमखी, झूमखो, झूमड़ी, झूमड़ो, झूमलड़ी, झूमलड़ो, झूमलियो, झूमली, झूमलो, झूमियो, झूमी ।
मह०—झूंब, झूंबक, झूंबख, झूंबड, झूंबल, झूंम, झूंमक, झूंमख, झूंमड़, झूंमल, झूम, झूमक, झूमख, झूमड़, झूमल ।

झूंम, झूंमक—देखो 'झूंबो' (मह., रू.भे.)

झूंमकड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमकड़ो, झूंमकियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमकी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमको—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—गोरी हबोळो गांव सूं वहो नीसरिया वारि । किरत्यां सो झूंमको, वेहद हरख वधारि ।
—पनां वीरमदे री वात

झूंमख—देखो 'झूंबो' (मह., रू.भे.)

झूंमखड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमखड़ो, झूंमखियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमखी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमखो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमड—देखो 'झूंबो' (मह., रू.भे.)

झूंमड़की—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमड़को—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमड़ली—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमड़लो, झूंमड़ियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमड़ी—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमड़ो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमणो, झूंमबो—देखो 'झूमणो, झूमबो' (रू.भे.)

झूंमर—देखो 'झूमर' (रू.भे.) उ०—कमरां करै कटाछ, झणक झुक झुकती झूंमर । किरत्यां को झूमको, अंग चंपा रंग केसर ।
—महादांन महडू

झूंमल—देखो 'झूंबो' (मह., रू.भे.)

झूंमलड़ी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमलड़ो, झूंमलियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमली—सं०स्त्री० —देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमलो, झूंमियो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमियोड़ो—देखो 'झूमियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंमियोड़ी)

झूंमी—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

झूंमो—देखो 'झूंबो' (रू.भे.)

झूंसणो, झूंसबो—देखो 'झुळसणो, झुळसबो' (रू.भे.)
झूंसणहार, हारो, (हारी), झूंसणियो—वि० ।
झूंसवाड़णो, झूंसवाड़बो, झूंसवाणो, झूंसवाबो, झूंसावणो, झूंसावबो—प्रे०रू० ।
झूंसाड़णो, झूंसाड़बो, झूंसाणो, झूंसाबो, झूंसावणो, झूंसावबो—क्रि०स० ।
झूंसिओड़ो, झूंसियोड़ो, झूंस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झूंसीजणो, झूंसीजबो—भाव वा०, कर्म वा०

झूंसर, झूंसरौ-सं०पु०—गाड़ी या हल जोतते समय बैलों की गरदन पर रखा जाने वाला जुआ। उ०—रथ हळकौ घणौ वाजणौ, वळै चार पैंडां रौ जांग रे लाला। हळवा कास्ट नौ झूंसरौ, वळै चौड़ा पैंडा जोत रे लाला।—जयवांणी

झूंसाड़णौ, झूंसाड़वौ—देखो 'झुळसाणौ, झुळसावौ' (रू.भे.)
झूंसाड़णहार, हारौ (हारी), झूंसाड़णियौ—वि०।
झूंसाड़िओड़ौ, झूंसाड़ियोड़ौ, झूंसाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झूंसाड़ीजणौ, झूंसाड़ीजवौ—कर्म वा०।
झूंसणौ, झूंसवौ—अक० रू०।

झूंसाड़ियोड़ौ—देखो 'झुळसायोड़ौ'।
(स्त्री० झूंसाड़ियोड़ी)

झूंसाणौ, झूंसावौ—देखो 'झुळसाणौ, झुळसावौ' (रू.भे.)
झूंसाणहार, हारौ (हारी), झूंसाणियौ—वि०।
झूंसायोड़ौ—भू०का०कृ०।
झूंसाईजणौ, झूंसाईजवौ—कर्म वा०।
झूंसणौ, झूंसवौ—अक० रू०।

झूंसायोड़ौ—देखो 'झुळसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंसायोड़ी)

झूंसारी-सं०स्त्री०—गाड़ी या हल जोतते समय बैलों की गरदन पर रखा जाने वाला जुआ।

झूंसावणौ, झूंसाववौ—देखो 'झुळसाणौ, झुळसावौ' (रू.भे.)
झूंसाणहार, हारौ, (हारी), झूंसावणियौ—वि०।
झूंसाविओड़ौ, झूंसावियोड़ौ, झूंसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झूंसावीजणौ, झूंसावीजवौ—कर्म वा०।
झूंसणौ, झूंसवौ—अक० रू०।

झूंसावियोड़ौ—देखो 'झुळसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंसावियोड़ी)

झूंसियोड़ौ—देखो 'झुळसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झूंसियोड़ी)

झूकणौ, झूकवौ—देखो 'झुकणौ, झुकवौ' (रू.भे.)
उ०—भेदै मंडळ सूर वहु भांणा, वर वहु चाढ़ै परी विमांणा। झूकै वकै वहौ गळि झालै। भेदै खंजर पहरि उर भालै।—सू.प्र.
झूकणहार, हारौ (हारी), झूकणियौ—वि०।
झूकिओड़ौ, झूकियोड़ौ, झूक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झूकीजणौ, झूकीजवौ—कर्म वा०।

झूकियोड़ौ—देखो 'झुकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झूकियोड़ी)

झूड़-सं०पु०—१ झाड़ने की क्रिया या भाव.
उ०—कांमी कूड़ प्रपंच घणा कर, झूड़ करै तन झेर। ऊ साध्वी दिस धूड़ उडाय'र, फूड़ वतावै फेर।—ऊ.का.

झूड़णौ, झूड़वौ-क्रि०स०—१ एकत्रित करना, बटोरना।
उ०—रही हुती मन रांचि, मन लाये मूकी गयौ। केथौ कीजे कांचि, मोती झूड़ै (जो) मेहउत।—जेठवा
२ काटना। उ०—रीसियै 'जसै 'भड़ रिमां घड़ रोळियां। झूड़ि अस असमरां रुधिर झकवोळियां।—हा.झा.
३ पीटना।
झूड़णहार, हारौ (हारी), झूड़णियौ—वि०।
झूड़वाड़णौ, झूड़वाड़वौ, झूड़वाणौ, झूड़वावौ, झूड़वावणौ, झूड़वाववौ, झूड़ाड़णौ, झूड़ाड़वौ, झूड़ाणौ, झूड़ावौ, झूड़ावणौ, झूड़ाववौ—प्रे०रू०।
झूड़िओड़ौ, झूड़ियोड़ौ, झूड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झूड़ीजणौ, झूड़ीजवौ—कर्म वा०।
झूडणौ, झूडवौ—रू०भे०।

झूड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ एकत्रित किया हुआ, बटोरा हुआ. २ काटा हुआ. ३ पीटा हुआ।
(स्त्री० झूड़ियोड़ी)

झूड़ौ-सं०स्त्री०—१ ऊँट की तंग के साथ गुच्छेदार लटकने वाला सूत या ऊन का बना एक उपकरण, फूंदा. २ पालने के ऊपर बंधा हुआ रंगीन चिथड़ों का बना खिलौना. ३ समूह।
रू०भे०—झूडौ।

झूज्झ, झूझ—देखो 'जुध' (रू.भे.) उ०—१ ते तुम केरी आंण न मांनइ, मागइ छइ वळी झूज्झ रे। जे कहिउं वळी स्वांमी तुम नइ, कहिता थाउं अमूझ रे।—नळ-दवदंती रास
उ०—२ झालियां सार मौसर झले, झूझ भार भुज झालियौ। भूपाळ 'जैत' उणहीज भुज, हय कंध थापलि हालियौ।—मे.म.
उ०—३ दादू रहते पहते रांम जन, तिन भी मांडया झूझ। सांचा मुंह मोड़ै नहीं, अरथ इता ही वूझ।—दादू वांणी

झूझणौ, झूझवौ—देखो 'जूंझणौ, जूंझवौ' (रू.भे.)
उ०—१ परा वीर दादौ जियै आप एकाधपति, धरा रखपाळ झूझै अघायौ। ऊनगै असि मरे घरै छिन्नतौ अरसि, आव रे सांमध्रमि 'रांम' आयौ।—राठौड़ रांमदास मेड़तिया रौ गीत
उ०—२ सूरा झूझै खेत में, सांई सन्मुख काइ। सूरै को सांई मिळै, तव दादू काळ न खाइ।—दादू वांणी
उ०—३ दादू पाखर पहर कर, सव को झूझण जाइ। अंग उघाड़ै सूरवां, चोट मुंह···खाइ।—दादू वांणी

झूझवारौ-सं०पु०—युद्ध, लड़ाई।

झूझाऊ—देखो 'जूंझाऊ' (रू.भे.) उ०—इणि भांति सूं तीन पौहर दळ जूटा। खैंग नर हाथी खूटा चौथा पौहर लागा। झूझाऊ वागा।
—वचनिका

झूझाड़णौ, झूझाड़वौ—देखो 'झूझाणौ, झूझावौ' (रू.भे.)
उ०—ए पंचास सहस मूंगळा, असी सहस सींघी भड भला। एका-एकइ झूझाड़ज्यौ, मारीनइ प्रांणइ पाड़ज्यौ।—कां.दे.प्र.

झूझाड़णहार, हारो (हारी), झूझाड़णियो—वि० ।
झूझाड़िग्रोड़ो, झूझाड़ियोड़ो, झूझाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
झूझाड़ीजणो, झूझाड़ीजवो—कर्म वा० ।
झूझणो, झूझवो—ग्रक०रू० ।

झूझाड़ियोड़ो—देखो 'झूझायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूझाड़ियोड़ी)

झूझाणो, झूझावो—क्रि०स० ('झूझणो' क्रिया का प्रे०रू०) युद्ध कराना, लड़ाना ।
झूझाणहार, हारो (हारी), झूझाणियो—वि० ।
झूझायोड़ो—भू०का०कृ० ।
झूझाईजणो, झूझाईजवो—कर्म वा० ।
झूझणो झूझवो—ग्रक० रू० ।
झूझाड़णो, झूझाड़वो, झूझावणो, झूझाववो—रू०भे० ।

झूझायोड़ो—भू०का०कृ०—युद्ध कराया हुग्रा, लड़ाया हुग्रा ।
(स्त्री० झूझायोड़ी)

झूझार—देखो 'जूंझार' (रू.भे.)
उ०—झूझार ग्रागइ ग्रतिहि वदीतु । ग्रनइ ग्रह्मारु ग्रति ग्रोळखीतु ।
—विराटपर्व

झूझारी—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

झूझावणो, झूझाववो—देखो 'झूझाणो, झूझावो' (रू.भे.)
झूझावणहार, हारो (हारी), झूझावणियो—वि० ।
झूझाविग्रोड़ो, झूझावियोड़ो, झूझाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झूझावीजणो, झूझावीजवो—कर्म वा० ।
झूझणो, झूझवो—ग्रक० रू० ।

झूझावियोड़ो—देखो 'झूझायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झूझावियोड़ी)

झूझि—देखो 'जुध' (रू.भे.)
उ०—जिहां गुरुग्रा तिहां गाजणउं कुलीन तिहां लांछण, भांणइ भउ झूझि क्षयु ।—व.स.

झूझु—देखो 'जुध' (रू.भे.)
उ०—जिहां गुरुवत्तण तिहां गाजणउं जिहां कुलीन तिहां लांछनउं जिहां भांणउं तिहां भउ जिहां झूझु तिहां खय ।—व.स.

झूझो—वि० [सं० योद्धा] लड़ाई करने वाला, लड़ाकू, योद्धा, वीर ।
उ०—रिमां मांण मूकै, नहीं वै रण गो वढ़तांह । घण झूझौ रण-भोम ही, चढ़ियां चाखड़ियांह । चडै रण चाखड़ी सांमहो चालियो । झूझतै भलो रायसिंघ तें झालियो । तास वरणागियै दीठि मन हरणो । मलफियो सांमहो कळह वेढ़ीमणो ।—हा.झा.

झूट—देखो 'झूठ' (रू.भे.)

झूटण—उम० लिं०—१ उच्छिष्ट, ऐंठा ।
२ देखो 'झूंटणो' (मह. रू.भे.)

झूटणियो—देखो 'झूंटणो' (ग्रल्पा. रू.भे.)

झूटणो—देखो 'झूंटणो' (रू.भे.)
उ०—कांनां नै घड़िया लाय, भंवर म्हारै कांनां रै घड़िया लाय । होजी म्हारा झूटणा हीरै जड़ाय, भंवर म्हांनै खेलण दो गिणगोर ।
—लो.गी.

झूटो—देखो 'झूठो' (रू.भे.)

झूठ—सं०पु० [सं० द्यूतस्थ, प्रा० जूग्रट्ठ] (वि० झूठो) १ वास्तविक स्थिति के विपरीत कथन, ग्रसत्य । उ०—क्रम-क्रम ढोला पंथ कर, ढांण म चूकै ढाळ । ग्रा मारू बीजी महल, ग्राखइ झूठ एवाळ ।—ढो.मा.
क्रि०प्र०—कैणो, बोलणो ।
यौ०—झूठ-मूठ, झूठ-साच ।
२ क्रोध, कोप. ३ उत्पात, शैतानी. ४ चंचलता ।
[सं० जुष, जुष्ठ = सेवित: ग्रथवा उच्छिष्ट] ५ उच्छिष्ट, ऐंठन ।
रू०भे०—झूंट, झूंठ, झूट ।

झूठण—१ देखो 'झूंटणो' (मह. रू.भे.)
उ०—लेता यूं विसरांम सींचता कळी चमेली । वरस फुहारा वाग वाहणी तीर सकेली । मगसी झूठण-लूंब कपोळां नीर लुवंती, तिण भांमणियां छांह करो जे फूल विणंती ।—मेघ.
२ देखो 'झूटण' (रू.भे.)

झूठणियो—देखो 'झूंटणो' (ग्रल्पा. रू.भे.)

झूठणो—देखो 'झूंटणो' (रू.भे.)
उ०—स्यांन ग्रगूठी कांन, जुगति का झूठणा । जेलड़ सील संतोख, नरत का घूघरा ।—मीरां

झूठमी—वि०—क्रोध युक्त, क्रोध वाली । उ०—मुखमली पसम रा, कलीसी कांन रा, झूठमी द्रेठ रा, कूकड़ा कंध रा ।—रा.सा.सं.

झूठमूठ, झूठमूठी—क्रि०वि०यौ०—विना किसी वास्तविक ग्राधार के, व्यर्थ ही । उ०—झूठी-मूठी जांन वणा लो, झूठो जांन रो बीन । चुग चुग करलां कूंचो मांडो, चुग चुग घुड़लां जीण ।
—डूंगजी जवारजी री पढ़

झूठिय—देखो 'झूठो' (रू.भे.)
उ०—दुरवेस गयो पतसाह दिसी, उड मूठिय झूठिय वात इसी । सुणतां कमधां दळ मांन सही, रस वाघ थयो निस ग्राध रही ।
—रा.रू.

झूठो—वि० [सं० द्यूतस्थ, प्रा० जूग्रट्ठ] (स्त्री० झूठी) १ ग्रसत्यवादी, ग्रसत्य भाषी । उ०—पारतियां में रुपयो रोकड़ो, ग्रोर मंगावो वाला चूंनड़ी । झूठा भूवा वाई झूठ न बोल, चार टकां रो वाई री ग्रारत्यो ।
—लो.गी.
२ जो सत्य न हो, जो झूठ हो. ३ जो दिखावे मात्र के लिये हो, जो ग्रसली न हो, नकली. ४ जवरदस्त, वलवान ।
उ०—वीरां हाक नगारा वाजै, गिर गोळां पड़सादै गाजै । ग्रणी मिळै ग्ररि मुड़ै ग्रफूठा, झगड़ै कमंध तणा दळ झूठा ।—रा.रू.

५ प्राण लेने वाला, रक्तपायी, खूंख्वार । उ०—काळ वाळी चरखी असाध झूठी नाग किना, रूठी जिसौ झूठौ खत्री घरबं उरां रीस। एक मूठी महारथी वाई कराळ तो आगि, सायिकां अरोड़ टूटी आध रती सीस ।—बद्रीदांन खिड़ियौ

६ क्रोधयुक्त, क्रोध वाला, क्रोधी. ७ उत्पात करने वाला, चंचल. ८ शैतानी करने वाला. ९ देखो 'जूठौ' (१, २, ३,) (रू.भे.)

१० देखो 'झूठ' (रू.भे.)

रू०भे०—जुठौ, जूठौ, झूंठौ, झूटौ ।

झूडणौ, झूडबौ—देखो 'झूड़णौ, झूड़बौ' (रू.भे.)

उ०—रे रे बादळ क्रोधी कूड । सगळी लसकर मेल्यौ झूड ।

—प.च.चौ.

झूडियोड़ौ—देखो 'झूड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झूडियोड़ी)

झूडौ-सं०पु०—१ समूह । उ०—काळ रा जुधां घण वोल दूजा 'किसन'। झेड़ खग वाढ़ रिम डोळ झूडा। वीरवर भुजां नभ तोल पाछौ वळै, चोळ रंग कियां समसेर चूडा ।—मेघराज आढ़ौ

२ देखो 'झूड़ौ' (रू.भे.)

झूथ—देखो 'जूथ' (रू.भे.) उ०—माझळि झूथ मतंग घण, मद मोख खोख घूमंता ।—रांमरासौ

झूप—१ देखो 'झूंपड़ौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (मह., रू.भे.)

झूपकी-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपकौ—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपड़—१ देखो 'झूंपड़ौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (मह., रू.भे.)

झूपड़की-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपड़कौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू भे.)

झूपड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपड़लौ, झूपड़ियौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—लखमण सूनी झूपड़ी हिया भर आया ।—केसोदास गाडण

झूपड़ौ—देखो 'झूंपड़ौ' (रू.भे.)

झूपली-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपलौ, झूपियौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपी-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'झूंपड़ौ'। (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूपौ-सं०पु०—ढेर ? । उ०—तद राणियां कह्यौ—म्हे ही रजपूताणियां छां, म्हे ऊंचियां चढ़स्यां, अर नीचै लकड़ियां री झूपौ करौ, ज्यूं ज्यूं थे कांम आस्यौ त्यूं त्यूं म्हे कूद-कूद पड़स्यां ।

—पताई रावळ री वात

२ देखो 'झूंपौ' (रू.भे.)

झूफ—१ देखो 'झूंपड़ौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (मह., रू.भे.)

झूफकी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफकौ—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफड़—१ देखो 'झूंपड़ौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (मह., रू.भे.)

झूफड़की-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफड़कौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफड़लौ, झूफड़ियौ—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफड़ौ—देखो 'झूंपड़ौ' (रू.भे.)

झूफली-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफलौ, झूफियौ—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूफी-सं०स्त्री०—१ देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूंपौ' (अल्पा., रू.भे.) ३ देखो 'झूंपी' (रू.भे.)

झूफौ—१ देखो 'झूंपड़ौ' (रू.भे.) २ देखो 'झूंपौ' (रू.भे.)

झूब—देखो 'झूंब' (रू.भे.)

झूबकु—देखो 'झूंबौ' (रू.भे.)

झूबकौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मोती तणा झूबका झमाल, सेत्रंजी पाथरी चुसाळ ।—नळ-दवदंती रास

झूबणौ, झूबबौ—देखो 'झूंबणौ, झूंबबौ' (रू.भे.)

उ०—माथउं धवळउं देह जाजरी, वांकउ वांसउ झूबइं लालरी । घर हूतउ नवि क्याहइं जाइ, सघळा कुटुंब ऊभीठउ थाइ ।

—चिहुंगति चउपई

झूबियोड़ौ—देखो 'झूंबियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झूबियोड़ी)

झूम-सं०स्त्री०—१ झूमने की क्रिया या भाव ।

२ गायन विशेष ?

उ०—सो रावजी कांम आइया तिण वखत ऊपर पण वहदौ हुवौ, गढ़ी रात री अर सहनाय मांहि झूम गायौ ।—नापै सांखलै री वारता

३ देखो 'झूंबौ' (मह. रू.भे.)

झूमर-सं०स्त्री०—१ स्त्रियों द्वारा वृत्ताकार रूप में लोक नृत्य करते समय गाया जाने वाला गीत। उ०—आंखि आंजि सिर गूथत [illegible], झूमर गावत पंचरंग जोरी। मीरां प्रभू रस सिंधु झकोरी, [illegible] गिरधर नवल किशोरी।—मीरां

२ देखो 'झूंबौ' (मह., रू.भे.) उ०—सुरख डांडियां रै ऊपरै घूघरा रा झूमर, [illegible] रा नांम आयो, मीमनिंद जांण्यो।
—पनां वीरमदे री वात

झूमरड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमरड़ौ, झूमरियौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमरली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमरौ—देखो 'झूंबौ' (१,२,३) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ माळाजी नै बैठांण कंवाड़ ताळो जो दीधो। कूंचियां रो झूमरौ थारै वांदरवाळ में कीधो।—केहर प्रकास

उ०—२ कांम जड़ाऊ कांमरा, कुंडळ धारण कीन्ह। भळहळ तारा झूमरा, दुहु पानां सगि दीन्ह।—बां.दा.

उ०—३ वां सहेल्यां में हीरां पराग रूपी मन मोहै, किरत्यां को झूमरो तारा मंडळ की सोभा, आफू की बयारी, पोसाख मन लोभा।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—४ कमरां करै कटाछ, झणक झुक झुकती झूमर। किरत्यां रो झूमरौ, अंग चंपा रंग केसर।—महादांन महडू

झूमग—देखो 'झूंबौ' (मह., रू.भे.)

झूमगड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमगड़ौ, झूमगियौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमगी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमगौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ आंगण खेलै कांन्ह कंवरिया वीर, भौजायां रा म्हारै जाझा झूमका जी, म्हारा राज, बाबोसा री कोटड़ियां में राज।—लो.गी.

उ०—२ सात सैयां रै झूमखै, राधा न्हावण चाली, ओ रांम। आडा किसनजी फिर गया, थांनै जांण न देस्यां, ओ रांम।—लो.गी.

झूमड़—देखो 'झूंबौ' (मह., रू.भे.)

झूमड़ली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमड़लौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमड़ली—सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमड़लौ, झूमड़ियौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमड़ी-सं०स्त्री० देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमड़ौ—देखो 'झूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

झूमनूं, झूमन, झूमणौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का कर्णाभूषण।

उ०—१ [illegible] नगोदर नइ झूमणूं, घणु सणगार हव केहु भणूं। हाथि हाथुळि करि मूद्रड़ी, मांणिक मोती हारै जड़ी।
—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ [illegible] एकाउळि हार। सरिसु मोती तणु हार, झूमणा तणु [illegible], [illegible] पदकड़ी।—व.स.

२ गुच्छा, झूमका। उ०—मोटा महल अनइ माळिया, छोह पंक काचै ढाळिया। गउख अपूर व चंदण-तणा, रतन-जड़ित मोती झूमणा।—ढो.मा.

झूमणौ, झूमबौ—क्रि०अ०—झोंका खाना।

उ०—झूलै झूलै झूमती, तीजण सांवण तीज। तरू बादळ छाया तळै, भेळी अवकै बीज।—लो.गी.

२ किसी जीव का अपने शिर, धड़, हाथ, पैर आदि को प्राय: बहुत अधिक प्रसन्नता, मस्ती, नशे या नींद के कारण आगे-पीछे, ऊपर-नीचे या इधर-उधर हिलाना, लहराना।

उ०—१ हालै जिण अगर घूमता हस्ती, ताता गयण झूमता तुरंग। पैदल प्रवळ रथां हद पंगी, चतुरंगी अत फौज सुचंग।—र.रू.

उ०—२ पवन सांझ-वनी रंग राच्यो, झूमतौ आवै मुधरी चाल। पोढ़ती नागण जगा कपोळ, तोड़दै धण धीरज री पाळ।—सांझ

३ आधार पर खड़े किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या सिरे का बार-बार ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, इधर-उधर हिलना, झोंके खाना।

उ०—पवन री ठंडी लै'रां आवती अर खेतां में ऊभोड़ा गेहूँ चिणा मस्ती में झूमण लाग जावता।—रातवासौ

४ लटकना, लूमना। उ०—झम झम झूमां पागड़ै, इतनी महर म्हां सूं कीजो। अरै आलीजा विछोहो मत दीजो।—लो.गी.

५ किसी ऊँचे स्थान से पदार्थ को लेने के लिये लटकने या लूमने का ऐसा प्रयास करना जिसमें न तो पूर्ण रूप से लटका जाय और न पूर्ण रूप से पैरों पर ही आधारित रहा जाय।

उ०—साथण्यां तो फूल चूववा नै झूमी छै, अर सोना की सी केळ पनां ऊभी छै।—पनां वीरमदे री वात

झूमणहार, हारौ (हारी), झूमणियौ—वि०।

झूमवाड़णौ, झूमवाड़बौ, झूमवाणौ, झूमवाबौ, झूमवावणौ, झूमवावबौ, झूमाड़णौ, झूमाड़बौ, झूमाणौ, झूमाबौ, झूमावणौ, झूमावबौ
—प्रे०रू०।

झूमिओड़ौ, झूमियोड़ौ, झूम्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झूमीजणौ, झूमीजबौ—कर्म वा०।

झूंवणौ, झूंवबौ, झूंमणौ, झूंमबौ—रू०भे०।

झूमर-सं०स्त्री०—१ प्राय: स्त्रियों द्वारा एक साथ मिल कर इस प्रकार घूम-घूम कर नाचना कि उनके कारण एक गोल घेरा सा बन जाय. २ इस नृत्य के साथ गाया जाने वाला लोक गीत. ३ संगीत में एक ताल. ४ काठ के एक गोल टुकड़े में छोटी-छोटी गोलियां लटकने वाला एक खिलौना जो प्राय: बच्चे के पालने के बांधा जाता है।

५ स्त्रियों के शिर पर धारण करने का एक आभूषण।

रू०भे०—झूंमर।

अल्पा०—झूमरियौ, झूमरी, झूमर।

६ देखो 'झूमरी' (मह., रू.भे.) ७ देखो 'झूंबौ' (मह., रू.भे.)

८ देखो 'झूमरौ' (मह., रू.भे.) ९ देखो 'झूमरदे' (रू.भे.)

झूमरकाळी-सं०स्त्री०—एक प्रकार की गाय विशेष ।

उ०—झखड़ खसता ग्रच्छ दवानळ दपटां झाळं । झूमरकाळी सुराधेण रा पूंछ दझाळं । वपरातौ ठाडोळ तूठजे वार खेगाळां । दुखियां मेटण दुक्ख विड़द घण संपत वाळां ।—मेघ.

झूमरदे-सं०स्त्री०—हरापन लिये हुए एक प्रकार का रंग विशेष या इस रंग में रंगा कपड़ा विशेष जिसका घघरा बनाया जाता है ।

उ०—नथ री काळी डोरौ सदा तण्योड़ी रैंवतौ ग्रर काजळ री कूंपली चांदी री सांकळी में पोयोड़ी डावा खांधा पर सूं छाती पर हरदम लटकती रैंवती । झूमरदे रंग री लट्ठा री घाघरौ ग्रर खादी री मांखी भांत ग्रोरणी उरानै जवरी फवती ।—रातवासौ

झूमरियौ—१ देखो 'झूमर' (ग्रल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूमरी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—ईंढी कवडाळी मार्थ पर ग्रोडी । छैली ग्रलकावळ मुखड़ै पर छोडी । झणकै झालरियौ झूमरिया झटकै । लूंमी भींगां री खूंणी तळ लटकै ।—ऊ.का.

३ देखो 'झूमरौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमरी-सं०स्त्री०—१ स्त्रियों के कान में पहनने का ग्राभूषण ।

वि०वि०—यह दो प्रकार का होता है—

१ स्त्रियों के कान के ग्राभूषण 'टोंटी' के नीचे लटकने वाला लटकन. २ वह लटकन जो कान के नीचे के भाग में ही लटकाया जाता है । इसमें 'टोंटी' नहीं होती है ।

२ हाथी के कान में पहनाया जाने वाला ग्राभूषण. ३ रंगरेज, चमार, धोबी ग्रादि के काम ग्राने वाला एक प्रकार का गोल डंडा जो ग्रागे से मोटा तथा पकड़ने के स्थान पर पतला होता है ।

ग्रल्पा०—झूमरियौ, झूमरी ।

मह०—झूमर ।

४ देखो 'झूमर' (ग्रल्पा., रू.भे.) ५ देखो 'झूमरौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमरौ-सं०पु०—१ बहुत बड़ा व भारी लोहे का हथौड़ा. २ सड़क या फर्श ग्रादि जमाने के लिये कंकड़ ग्रादि कूटने का लोहे का बना उपकरण जिसके प्राय: बांस का लम्बा दस्ता लगा रहता है ।

ग्रल्पा०—झूमरियौ, झूमरी ।

मह०—झूमर ।

३ देखो 'झूमर' (ग्रल्पा., रू.भे.) ४ देखो 'झूमरी' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमल—देखो 'झूंबौ' (मह., रू.भे.)

झूमलड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमलड़ौ, झूमलियौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमली-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमलौ, झूमियौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमी-सं०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमौ—देखो 'झूंबौ' (रू.भे.)

झूरंटियौ-सं०पु०—नख-क्षत, खरोंच (ग्रल्पा.).

झूर (झूरड़ियौ)-सं०स्त्री०—१ किसी पदार्थ का महीन चूर्ण, किसी पदार्थ के छोटे-छोटे टुकड़े. २ सूखी कंटीली झाड़ियों का महीनतम चूर्ण जो प्राय: ग्राग जलाने के काम में लिया जाता है ।

उ०—चरखा, पीढ़ा, सांगवा भल, पेई पिलांण पाचरा । हलव भरिया कड़ाव हालै, ग्रोग झूर री ग्रांच रा ।—दसदेव

३ समूह, झुण्ड । उ०—खनंकिय सायक धार करूर, झनंकिय झांझर रंभनि झूर । छनंकिय तीर वरच्छनि छोह, ननंकिय बोह विलंबनि लोह ।—ला.रा.

यौ०—झूर-झूर ।

ग्रल्पा०—झूरड़ियौ, झुरियौ, झूरौ ।

झूरणौ, झूरबौ—देखो 'झुरणौ, झुरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ विरहनि रोवै रात दिन, झूरै मन ही मांहि । दादू ग्रवसर चल गया, प्रीतम पाये नांहि ।—दादू वांणी

उ०—२ सुण सुण वीरा धाड़वी, ग्रालय देखौ ग्रोर । घर री खूणै झूरसी, चख मग ग्रातां चोर ।—वी.स.

उ०—३ गोरी तौ बैठी रे झूरै मेड़ियां, स्यांम समंदां जी पार । काळा रे कागा एक सनेसौ, पिव नै जाय कहौ ।—लो.गी.

झूरमझूर, झूरमझूरौ-सं०पु०—१ किसी वस्तु का महीनतम चूर्ण. २ नाश, ध्वंश । उ०—झूरमझूरा करइ विमासइ, हवइ जमारइ ग्रांणइ । जउ कान्हडदे नहीं छोडावइ, रह्या सही तुरकांणइ ।

झूरापौ, झूरावौ—देखो 'झुरापौ' (रू.भे.)

झूरियोड़ौ—देखो 'झुरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झूरियोड़ी)

झूरियौ-सं०पु०—देखो 'झूर' (ग्रल्पा. रू.भे.)

झूरी-सं०स्त्री०—वह खाई जो किसी मकान या खेत के चारों ग्रोर खोदी जावै (शेखावाटी)

झूरौ-सं०पु०—देखो 'झूर' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—किवाड़ तोड़ दिया, ठीकर फोड़ दिया ग्रर पेटियां री झूरौ-झूरौ कर नांख्यौ ।—रातवासौ

यौ०—झूरौ-झूरौ ।

झूळ-सं०पु०—१ झुण्ड, यूथ, समूह ।

उ०—१ बणी दहुं काळ तणी तसवीर, गणी नँह जाय घणी हमगीर । सझ्या खग खप्पर चक्र ग्रसूळ, झल्या कर डैरव भैरव झूळ ।

—मे.म.

उ०—२ सुवन 'सौन' 'सादूळ', झूळ वनचरां विचाळै । जिसौ चंद जग वंद, वीज रख व्रिद समाळै । वाज नंद वळवंड, झुण्ड लावां ग्राभासै । कनां वीच वादळां, कळा सूरज परकासै । ग्रसपति निरख ग्रचरज्जियौ, रूप परख कुळ राह मैं । ग्रादीत जोत प्रतपै 'ग्रभौ', दिपै एम दरगाह में ।

—रा.रू.

उ०—३ तूल जिम उडै खळथूळ गुरजां तड़च्छ, झूळ चवसठ लगी लेण

झंपा। मूछ नमकावता फिरै बावन सुभट, स्यांम वाघूळ बिच जांण संपा।—बालावस्स बारहठ

उ०—४ नखि आवत पदमणि झूळ संग। उरवसी सची रति लजत अंग।—सू.प्र.

उ०—५ राव रिणमल अठै धिणलै सोजत कनै रहै। गांव री ठकुराई, पाखती घणा रजपूतां रा झूळ रहै।—राव रिणमल री वात

उ०—६ साह सूं गयौ अनमी थको सूर-सुत, राय सतियां तणौ झूळ रमियो। विरद बांकम तणा स्रोकमळ वांधियो, वीर बांकम सुरां-लोक वसियो।—महाराजा करणसिंह रो गीत

२ सेना, फौज, दल। उ०—किलम्मेस वाळा उठी झूळ काळा। अठी आवळा-झूळ भूपाळ वाळा।—सू.प्र.

झूल-सं०स्त्री०—१ पाखर, कवच। उ०—गजबोल चित्रह गात, सिर इंद्र धनुख सुभात। जरकसी के जरतार, पिंड झूल फूल अपार।

—सू.प्र.

२ शीत, घाम, वर्षा आदि से वचाने तथा शोभा के लिये चौपायों पर डाला जाने वाला चौकोर कपड़ा।

उ०—१ रेसम री रास, सींगां पीतळ री खोळी। वनाती झूलां घातियां रहकळां इकां खड़सलां जूता छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ घर अंवर क्रम घोम, घटा डंवर रज घुम्मट। हाक वीर है हींस झूल नेवर झणणाहट।—सू.प्र.

अल्पा०—झूलकियो, झूलकी, झूलको, झूलड़की, झूलड़ियो, झूलड़ी, झूळड़ो, झूलो।

मह०—झूलड़।

झूळकियो—देखो 'झूळी' (अल्पा., रू.भे.)

झूलकियो-सं०पु०—देखो 'झूल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूलो' (अल्पा., रू.भे.)

झूलकी—देखो 'झून' (अल्पा., रू.भे.)

झूळकी—देखो 'झूळी' (अल्पा., रू.भे.)

झूलको-सं०पु०—१ देखो 'झूल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूलो' (अल्पा.. रू.भे.)

झूलड़—देखो 'झूल' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'झूलो' (मह., रू.भे.)

झूलड़को, झूलड़ियो-सं०पु०—१ देखो 'झूल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'झूलो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पीळी कीधी पाघड़ी, झूलड़िए रंग-रोळ।—मा.कां.प्र.

झूलड़ी—देखो 'झूल' (अल्पा., रू.भे.)

झूलड़ो-सं०पु०—१ देखो 'झूलो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—झाझी वांहि झूलड़ां, झगा झगझगइ मांहि। फळ सटी आंनी फांटि विचि, कोहलूंजाइ किहांइ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'झूल' (अल्पा., रू.भे.)

झूलण-सं०पु०—१ ऊंट का एक अवगुण (जो ऊंट झूमता रहे)

२ स्नान।

झूलणा-सं०स्त्री०—१ ३७ मात्राओं का मात्रिक छंद (र.ज.प्र.)

८ यगण का २४ वर्ण और ४० मात्रा का छंद विशेष।

-(रूप दीप पिंगळ)

२४ अक्षर का वर्णिक छंद विशेष जिसके अन्त में यगण हो।

२ देखो 'झूलणा इग्यारस' (रू.भे.)

झूलणा इग्यारस-सं०स्त्री०यौ०—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी या इस दिन मनाया जाने वाला उत्सव। इस दिन देव-मूर्ति को किसी सरोवर, नदी आदि में झुलाया जाता है।

झूलणो-वि० (स्त्री० झूलणी) १ विचरण करने वाली।

उ०—ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमांण चढ़ी। हरिजी सूं बांध्यो हेत, वैकुंठ में झूलणी।—मीरां

२ देखो 'झूलो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ छोटी सी वनी का लंवा लंबा केस, करै ए वावाजी सूं वीणती जी राज। वावाजी म्हांनै द्यो परणाय, म्हारै जोड़ा की गई ओ साथण सासरिये जी राज। राजल झूठी ए वाई झूठ न वोल, थारै जोड़ा की झूलै झूलणै जी राज।—लो.गी.

झूलणो, झूलवौ-क्रि०अ०—१ हिंडोले लेना, झूले खाना, झूलना।

उ०—१ जरणी का रै जाया, एकै पालणियै दोन्यूं झूलिया।

—लो.गी.

उ०—२ काढ़ी घर खोदै मुळकंती। झूलै कनक तणै झूलंती।

—सू.प्र.

२ हिलना, डोलना. ३ लटक कर वार-वार इधर-उधर हिलना, लटकना. उ०—अधर दुती आक्रती जंत्र वजवती जुगत्ती, रूपवती रंजती माळ झूलतो मुकत्ती।—सू.प्र.

४ झूमना, हिलना, लटकना।

उ०—फबै मोगरो सेवती जाय फूली, भ्रंगी पंति सेवंति झूली अभूली। लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा.रू.

५ किसी कार्य के होने की आशा में लम्बे अर्से तक अथवा वहुत समय तक पड़े रहना, भरोसे पर रहना, अनिर्णीत अवस्था में रहना।

६ मोहित होना। उ०—तुझ गुण पंकति वाड़ी फूली। मुझ मन भमर रह्यउ तिहां झूली।—वि.कु.

७ स्नान करना, नहाना। उ०—१ अमलियां मनहारां कर देणै नूं लागिया, पछै तळाव में झूलण नूं वड़िया।

—भाटी सुंदरदास वीकूपुरी री वात

उ०—२ आगै देखै तो नीवो सिवाळोत सातवीसी सांईनां रा साथ सूं झूलै छै।—वीरमदे सोनिगरा री वात

८ (जलचरों आदि का) जल में विचरण करना।

उ०—अनेक होद, सरोवर, दादरे, मीन जळ झूलै छै।

—वगसीरांम प्रोहित री वात

९ अग्निकुण्ड के पास वैठ कर तपस्या करना, तप करना, तपना।

उ०—गोदड़ कांनफाड़ जोगी जंगम सोफी संन्यासी अविधूत पंचाग-

निरा झूलणहार ग्रलमसत फकीर जिके संसार नूं भागा थका फिरै।
—रा.सा.सं.

१० (भौंरों का ध्वनि करते हुए) मँडराना।

११ देखो 'झीलणौ, झीलवौ' (रू.भे.)

झूलणहार, हारौ (हारी), झूलणियौ—वि०।

झूलवाड़णौ, झूलवाड़वौ, झूलवाणौ, झूलवावौ, झूलवावणौ, झूलवाववौ—प्रे०रू०।

झूलाड़णौ, झूलाड़वौ, झूलाणौ, झूलावौ, झूलावणौ, झूलाववौ—क्रि०स०।

झूलिग्रोड़ौ, झूलियोड़ौ, झूल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झूलीजणौ, झूलीजवौ—भाव वा०।

झुलणौ, झुलवौ—रू०भे०।

झूलर—देखो 'झूलरौ' (मह., रू भे.)

उ०—झाझे झूलर झीलतां, पैठौ कुंवर विचित्र। ग्रजहु न ग्रायौ ग्रापणौ, मन मांनीतौ मित्र।—पलक दरियाव री वात

झूलरउ—देखो 'झूलरौ' (रू.भे.)

उ०—वाळूं, बाबा, देसड़उ, जहां पांणी सेवार। ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लैंकार।—ढो.मा.

झूलरियौ—वि०—१ झुण्ड या समूह के साथ रहने वाला। उ०—मां को जायौ वीर भलौ, म्हांसूं ऊभौ ही मिळ जाय। मिळौ रे वीरा, झूलरिया वीरा, मिळौ रे बांह पसार।—लो.गी.

२ देखो 'झूलरौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—पणिहारचां परवार, जाय सरवरं जळ ल्यावण। झूलरियै झणकार, लसकरां लै'री गावण।—दसदेव

झूलरौ—सं०पु०—समूह, झुण्ड, यूथ, टोली।

उ०—१ तीज का उछाह सूं चित्त ज्यां का छाजै छै, जठै रिमझोळां का झरणाट वाजै छै। हींडोळा लुहरां गावै छै, झूलरा का झूलरा बाग में ग्रावै छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—सात सहेलियां रै झूलरै, पणिहारी ए लो। हिळमिळ गई रे ताळाव, वाला जी ग्रो।—लो.गी.

रू०भे०—झूलरउ।

ग्रल्पा०—झूलरियौ।

मह०—झूलर।

झूला—सं०स्त्री०—पृथ्वी, धरती (ना.डि.को.)

झूलाळ—वि०—१ हिंडोले खाने वाला, झूलने वाला. २ हिलने-डोलने वाला. ३ लटकने वाला. ४ झूमने वाला. ५ भरोसे पर रहने वाला, ग्रनिर्णीत ग्रवस्था में रहने वाला. ६ मोहित होने वाला. ७ स्नान करने वाला, नहाने वाला. ८ जल में विचरण करने वाला. ९ ग्रग्निकुण्ड के पास बैठ कर तपस्या करने वाला, तप करने वाला. १० मँडराने वाला (भौंरा ग्रादि) ११ कवचधारी, योद्धा।

उ०—१ गठजोड़ ग्रछर झूलाळ गंठ। कदमां ग्रंत्राळ वरमाळ कंठ।
—वि.सं.

उ०—२ गजराजूं की हळवळ। वाज राजूं की कळहळ। नाळूं का निहाव, सावळूं का सिळाव। त्रंबागळूं के डाके। जसोल्लूं के हाके। झूलाळूं की झळहळ। पैदलूं की हळवळ।—सू.प्र.

१३ मग्न होने वाला, लीन होने वाला. १४ देखो 'झूलौ'।
(मह., रू.भे.)

ग्रल्पा०—झूलाळौ।

झूलाळौ—देखो 'झूलाळ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—१ चाढ़ां दहूं दळ चाढ़वै, झळहळ झूलाळा। खुरसांणां दहूं दळ खिवै, बीजळ वाढ़ाळां।—सू.प्र.

उ०—२ झूलाळा कीया झाड़ि-झाड़ि। मोटा ग्रह मोखी मारुग्राड़ि।
—रा.ज.सी.

उ०—३ झूलाळां खग झाड़ि, बेटां विहुं सहितौ 'वलू'। खिति पड़ियौ मोटौ खित्री, ग्राधौ दळ ऊडाड़ि।—वचनिका

झूलि—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का झूलानुमा पलंग।

२ देखो 'झूल' (रू.भे.)

झूलियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हिंडोले लिया हुग्रा, झूले खाया हुग्रा, झूला हुग्रा. २ हिला हुग्रा, डोला हुग्रा. ३ लटक कर हिला हुग्रा, लटका हुग्रा. ४ झूमा हुग्रा, हिला हुग्रा. ५ भरोसे पर रहा हुग्रा, ग्रनिर्णीत ग्रवस्था में रहा हुग्रा. ६ मोहित हुवा हुग्रा. ७ स्नान किया हुग्रा, नहाया हुग्रा. ८ (जलचरों ग्रादि का) जल में विचरण किया हुग्रा. ९ ग्रग्निकुण्ड के पास बैठ कर तपस्या किया हुग्रा, तपा हुग्रा. १० (भौंरों ग्रादि का) मँडराया हुग्रा.

११ देखो 'झीलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झूलियोड़ी)

झूळौ—सं०पु०—१ एक साथ बहुत से ग्रस्त्र-शस्त्रों को समूह के रूप में सीधा खड़ा करने का ढंग। उ०—१ कंवर वीरमदे ग्राय ऊतरिया। वड़ां री छाया घोड़ां री वागां लगाइजै छै। कमरियां खुलाइजै छै। बन्दूकां ग्रर वरछियां रा झूळा दीजै छै।
—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ तठा उपरायंत देसोत राजांन ग्रापरा टोळी मजल रा जुवांन लियां विराजमांन हुवा छै। कमरां खोलजै छै। वरछी रा झूळा कीजै छै।—रा.सा.सं.

२ सूखने के लिये पृथक-पृथक रखे गये घास के गट्ठर. ३ समूह, यूथ, झुण्ड, टोला। उ०—ग्रोर ही झूळा रा झूळा लमझम करता फूल वाग नू ग्रावै है, लहरिया गावै है।—र. हमीर

४ जटाजूट। उ०—माथै केसां रौ झूळौ रहै नै ऊपरां लपेटौ वांधै। वागौ, चिळकता बगतर पैरै।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

५ एक प्रकार का पहनने का वस्त्र विशेष।

ग्रल्पा०—झूळकियो, झूळकौ।

झूलो—सं०पु०—१ हिंडोला, पालना। उ०—१ काढ़ी घर खोदे मुळकंती। झूलै कनक तणै झूलंती। ग्रांणी झूला सहित उठाए।

परतह भंगी प्रचंभ नृप पाए ।—सू.प्र.

उ०—२ मोवन झूले वांनो झूलें, झोटे झोटे वोलो यूं । उतणी वार हिंनावे दिरवर्यां में तोय जितरा झोटा द्यूं ।—लो.गी.

उ०—३ गयां गयां वगीचां रै मांय, झूलै तो लागा झूलवाजी राज ।
—लो.गी.

उ०—४ झूलै झूलै झूमती, तीजण सांवण तीज । तरु वादळ छायां तळं, भेळी प्रवके वीज ।—लो.गी.

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, लेणी ।

२ रस्सियों अथवा तारों से बनाया हुआ पुल । ज्यू०—लिछमण झूलो ।

क्रि०प्र०—बांधणी ।

३ वर्षा ऋतु में श्रावण शुक्ला तृतीया से पूर्णिमा तक होने वाला एक प्रकार का उत्सव जिसमें श्रीकृष्ण या श्री रामचन्द्र की मूर्तियों को झूले में झुलाते हैं. ४ श्रावण मास में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

क्रि०प्र०—गाणो ।

अल्पा०—झूलकियो, झूलको, झूलड़को, झूलड़ियो, झूलड़ो, झूलणो ।

मह०—झूलड़ ।

५ देखो 'झूल' (अल्पा., रू.भे.)

झूयवो—देखो 'झूंबो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गूहली दीधी, मोती तणा झूवखा ढंवाव्या, मांहि पद्मराग पटल लंवाव्या ।—व.स.

झूस, झूसण—सं०पु०—१ कवच, वख्तर । उ०—१ चढ़ै खळ हीक तुरी उर चोट । काळाहळ झूस हुवै वज्र कोट ।—सू.प्र.

उ०—२ सांवळां भीच घणियां भंवर, काळरूप झूसण कियां । काळवी 'पाल' आगै क्रमै, लगा पूठ वेनां लियां ।—पा.प्र.

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति असवारां री वाग ऊपाड़ी, किलकिला ज्यों ऊपाड़ि ऊपाड़ि नांखीजै छै । झूसणां ऊपरै वरछी चमकिनै रही छै । रांमण गांजा सेलां रा धमोड़ा पड़िनै रहीआ छै ।—रा.सा.सं.

२ तलवार, खड्ग. ३ गाड़ी, हल आदि जोतते समय वैलों के कंधे पर रखा जाने वाला जुआ । उ०—वांहळिया वळ छंडियो, कंध झूसण इनकार । पिंड 'पातल' यूरोप रो, है धुर खंचणहार ।
—किसोरदांन वारहठ

रू०भे०—झूसांण ।

झूसणो, झूसवो—क्रि०स०—अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित करना, कवच आदि पहनाना । उ०—पमंगां धाती पाखरां, झूसणियां जोधार । काळी निस आवा कठठ, लीधां लंगर लार ।—वी.मा.

झूसर, झूसरी, झूसरो—सं०पु०—१ हल, गाड़ी आदि जोतने के लिये वैलों के कंधे पर रखा जाने वाला लकड़ी का वना जुआ ।

उ०—झूसर भार न झल्लही, गोधां गावड़ियांह । इम जस भार न ऊपड़ै, मोलां मावड़ियांह ।—वां.दा.

उ०—२ कव सुत रवी वरद ललकारा, तपण कलोड़ा घरै न तांड । अद झूसरी 'अडस' नृप वाळा, मूछाळा वेगड़ भुज मांड ।—अज्ञात

२ तलवार, खड्ग । उ०—झालै भुजडंड झूसरी, मार झुंड यर मांण । भांज रांम कोडंड भव, प्रचंड खित्रीवट पांण ।—र.ज.प्र.

झूसांण—देखो 'झूसण' (रू.भे.) उ०—छायो धूम्रै अयास धमंकां सोर भंकां छूट, घोर तोपां अमंखां चरेल पंखां घांण । कसीस अढ़ार टंकां ऊघड़ी परीर कंकां, झड़ी वीर वंकां सीस असंकां झूसांण ।
—दुरगादत्त वारहठ

झूसिय—वि० [सं० जूपित] युक्त, सहित (जैन)

झें झें—अव्य० (अनु०) झनझन का शब्द, ध्वनि, झंकार ।

उ०—थेइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि वजाय । झें झें झझरिय लाय, रणण रणण नेउरि । सुरियांम सुर करि प्रणांम, मांगति अव मुक्तिधांम । समयसुंदर सुजस नांम, जय जय जय सांमरी ।
—स.कु.

झे—सं०पु०—१ रांम. २ लक्ष्मण. ३ चमार. ४ वन. ५ शशि-मण्डल ।

सं०स्त्री०—६ मर्यादा. ७ अग्नि (एका.)

झें—अव्य०—गाय, भैंस व वैल को पानी पिलाने के लिये उच्चारित किया जाने वाला शब्द ।

रू०भे०—छें' ।

झेड़णो, झेड़वो—क्रि०स०—१ प्राप्त करना । उ०—ग्यांन समंद गुण गाइ च्यार मुगितै हू चेडै । ग्यांन तत गुण गाइ सात तरगां फळ झेड़ै ।—पी.ग्रं.

२ देखो 'झाड़णो, झाड़वो' (रू.भे.) उ०—झोटा वकर झेड़िया खळकै रत खाळै । कीनी रिध मोटै कड़ाव भाद्रवै विचाळै ।—पा.प्र.

झेड़णहार, हारो (हारी), झेड़णियो—वि० ।

झेडाड़णो, झेड़ाड़वो, झेड़ाणो, झेड़ावो, झेड़ावणो, झेड़ाववो—प्रे०रू० ।

झेड़िओड़ो, झेड़ियोड़ो, झेड़चोड़ो—भू०का०कृ० ।

झेड़ीजणो, झेड़ीजवो—कर्म वा० ।

झड़णो, झड़वो—अक०रू० ।

झेरणो, झेरवो—रू०भे० ।

झेड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ प्राप्त किया हुआ.

२ देखो 'झाड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० झेड़ियोड़ी)

झेडर—सं०स्त्री०—एक मारवाड़ी लोकगीत । उ०—गायां गोसाळां गूदां गळगळती । ढाळा द्रग ढळती वूंदां वळवळती । डाई डेडरसी धाई धुर धीणें । झीणी झेडर झुर गाई सुर झीणें ।—ऊ.का.

झेर—सं०स्त्री०—१ नींद का झोंका, हल्की नींद ।

उ०—१ ऊंठां पर वैठचा सेठां री पागड़ियां विखरण लागती अर झेरां लेवती सेठांण्यां रा काळजा अचांणक ऊंचा चढ़ जावता ।
—रातवासो

२ देखो 'जेर' (रू.भे.) उ०—कामी कूड़ प्रपंच घणा कर, भूड़ करै तन झेर। ऊ साध्वी दिस धूड़ उडायर, फूड़ वतावै फेर।—ऊ.का.
यौ०—झेर-झेर।
३ झरना, चश्मा (मेवाड़)

झेरण—देखो 'झेरणौ' (मह., रू.भे.)

झेरणियौ—देखो 'झेरणौ' (अल्पा., रू.भे.)

झेरणू—देखो 'झेरणौ' (रू.भे.)

झेरणौ—सं०पु०—१ मथने का उपकरण, मथदण्ड, मथानी।
उ०—रतनां सारू तद मंद्राचळ पहाड़ री मथांणी (झेरणा जैड़ी) करी ही—तिण सह दरियाव नै मथियौ, इण तरै म्हारौ पती रण रतनाकर डोहै छै।—वी.स.टी.
२ एक प्रकार का घास विशेष।
रू०भे०—झेरणू।
अल्पा०—झेरणियौ।
मह०—झेरण।

झेरणौ, झेरबौ—क्रि०स०—१ काटना, मारना।
उ०—१ खंडां झीक देतै सूंडाडंडां घू झेरिया कायां। जाडा थंडां ओरिया वितुंडां 'जालमेस'।—जालमसिंह चांपावत री गीत
उ०—२ चांपा हरौ सांमहो जे आवतौ चौड़ै, जीवतौ न जावतौ नांखतौ खागां झेर। जोध 'सबळेस' रौ पावतौ फतै जाडा थंडां, खाय जातौ अमीरां देतौ सायवी विखेर।—नवलजी लाळस
२ तंग करना, दिक करना, कष्ट देना। ३ देखो 'जेरणौ, जेरबौ'। (रू.भे.)
४ देखो 'झेड़णौ, झेड़बौ' (रू.भे.) उ०—भळका सवारि अण्यां काडीजै छै। फूलधारां रा वाड झेरीजै छै।—पनां वीरमदे री वात
झेरणहार, हारौ (हारी), झेरणियौ—वि०।
झेरवाड़णौ, झेरवाड़बौ, झेरवाणौ, झेरवाबौ, झेरवावणौ, झेरवावबौ, झेराड़णौ, झेराड़बौ, झेराणौ, झेराबौ झेरावणौ, झेरावबौ—प्रे०रू०।
झेरिओड़ौ, झेरियोड़ौ, झेरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
झेरीजणौ, झेरीजबौ—कर्म वा०।
झेरवणौ, झेरवबौ—रू०भे०।

झेरवणौ, झेरवबौ—देखो 'झेरणौ, झेरबौ' (रू.भे.)
उ०—हाथळै झेरवी कड़तलां हाथियां। सहै भुभा थया वळि 'जसा' रा साथियां।—हा.झा.

झेरवियोड़ौ—देखो 'झेरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झेरवियोड़ी)

झेरापौ, झेराबौ—देखो 'झुरापौ' (रू.भे.)

झेरियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, मारा हुआ। २ तंग किया हुआ, दिक किया हुआ, कष्ट दिया हुआ। ३ देखो 'जेरियोड़ौ' (रू.भे.) ४ देखो 'झेड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झेरियोड़ी)

झेल, झेलण—सं०स्त्री०—१ खुले दरवाजों या झरोखों के कमानदार पत्थरों के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर. २ झेलने की क्रिया या भाव।

झेलणौ, झेलबौ—क्रि०स०—१ वन्धन में डालना।
उ०—थे खांडी हूं ढाल हंगांमी ढोला रे। हेकै नै रोसीलै दोय झेलिया हो राज।—लो.गी.
२ सहारा देना, आश्रय देना। उ०—आभ-विमूहां मांणसां, है घर झेलणहार। धरणीधर धर छंडियां, अच्छै तूं आधार।—ह.र.
३ देखो 'झालणौ, झालबौ' (रू.भे.) उ०—१ वूडंती दरियाव विच, झ्याज लई भुज झेल। देवी सो भुज इंद्र रै, माथै दीजै मेल। जी मेहाई थांरै वाईसा री करीजै उवेल।—मे.म.
उ०—२ झेली-झेली सुंदर गोरी घोड़ै री लगांम, आंसूं तौ रळकाया कायर मोर ज्यूं, जी म्हारा राज।—लो.गी.
उ०—३ गजघड़ां रा गाहणहार, काली रा कळस, सिवकासी जावणहार, डिगता आसमांन रा झेलणहार, अवसांण रा खेलणहार।—पनां वीरमदे री वात
उ०—४ या सुणतां ही अणिलपुर रौ अधीस सेना रा संभार सूं मही रै मचोळा देतौ गजनवी रौ वेग झेलण रै काज जवनेस रौ राह रोकि सोझति सहर आडो आय पड़ियौ।—वं.भा.
उ०—५ म्हारौ हेलौ, म्हारौ हेलौ, सरवव्यापी झेलौ, जगत रा जांमी! देवां-दळ सरणै आयौ।—गी.रां.
उ०—६ पावस री सघन छौळां पड़ै छै जकौ जमीन झेलै छै।—पनां वीरमदे री वात
उ०—७ पहला तौ वार वैरी नै कहै थूं वाह लै सो वैरी रौ सस्त्र सरीर माथै झेल नै पाछो आप वावै सो एक ही वार में अंसु उतार अंसु खवां सूं उतार नीची आवै तरवार जिनोई उतार वहै छै।—वी.स.टी.
उ०—८ अरि परदेसां साझणौ, अंतर पणौ अपार। विण चांपां विण भाटियां, भुज कुण झेलै भार।—रा.रू.
उ०—९ अकळ कळा एक आरंभ रचियौ, सकळ कळा में खेलै। उपजै खपै आपरै करमां, हरि पाप पुण्य नहीं झेलै।—स्री हरीरांमजी महाराज
उ०—१० जुगत अरध भक्ष त्रिखा जतावै। अधर झेल पुक्कर अंचवावै।—सू.प्र.
उ०—११ सरवणां री ओर ओपमा न वणसी, सीप मांनूं स्वाति वूंद झेली छै।—पनां वीरमदे री वात
झेलणहार, हारौ (हारी), झेलणियौ—वि०।
झेलवाड़णौ, झेलवाड़बौ, झेलवाणौ, झेलवाबौ, झेलवावणौ, झेलवावबौ, झेलाड़णौ, झेलाड़बौ, झेलाणौ, झेलाबौ, झेलावणौ, झेलावबौ—प्रे०रू०।
झेलिओड़ौ, झेलियोड़ौ, झेल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झेलीजणो, झेलीजवो—कर्म वा० ।
मलणो, मलवो, भिलणो, भिलवो—अक०रू० ।
झेलणो झेलवो—सं०पु०—१ कुए से पानी निकालने का वह मोट जिसे मनुष्य हाथ से पकड़ कर खाली करता है ।
रू०भे०—झेलो ।
२ ऐसे मोट द्वारा सिंचाई किया जाने वाला कुआ ।
वि०—वह जो हाथ से पकड़ा जाय ।
झेलाजोड़, झेलाजोड़ी—सं०स्त्री०यौ०—कान का आभूषण ।
झेलू—वि०—१ उत्तरदायित्व लेने वाला । उ०—जोवनिया रा झेलू ह्वो तो, मंडियोड़ो घर मांगूं श्रो । अघविच में छिटकावो जिणरो, कौल मांगूं श्रो, क लिख दो कागदियो ।—लो.गी.
२ रक्षक. ३ मदद करने वाला, सहायक ।
झेलो—सं०पु० (बहु व० झेला) १ कान का आभूषण, कर्ण-भूषण ।
यौ०—झेला-जोड़, झेला-जोड़ी ।
२ स्त्रियों के ललाट के ऊपर शिर पर धारण करने का एक आभूषण ।
३ हाथी की गर्दन पर लगाई जाने वाली घंटियों की माला.
४ सहारा, मदद । उ०—असरण दीन दुखित ऊपर रो । थू धारण झेलो गिरधर रो ।—र.ज.प्र.
५ कुये पर लगाया हुआ पत्थर जिस पर खडे होकर व्यक्ति पानी का मोट खाली करता है. ६ मकान के प्रधान द्वार के अगाड़ी का अहाता (चहार दीवारी का स्थान). ७ एक लकड़ी जो ताने के तारों को ठीक करने के लिये करघे के ऊपर लगी रहती है ।
८ वह स्थान जहां पर जल भरे चरस के बाहर आने पर लाव से जुड़ी कीली निकालते हैं ।
झैं—अव्य०—देखो 'झैं' (रू.भे.)
झेंकणो, झेंकवो—क्रि०स०—ऊंट को बैठने के लिये प्रेरित करना, ऊंट को बैठाना । उ०—१ उठी नै धाड़ैतियां चांवटा रै बीच ऊंठ झेंकया, चांतरै पर जाजम ढाळी, कपड़ै री दुकांन फोड़'र मोठड़ा भुकाया, खंवै नवा खेस राळया अर सब सूं पै'ली सुनार री दुकांन लूट'र मोहरत कियो ।—रातवासो
उ०—२ ढोलाजी करहलो थांव्यो रे झेंक्यो रेतूड़ रै मांय । काढ्यो डावा पग रो ताकळो कांई पूगो छिन रै मांय ।—लो.गी.
झेंकणहार, हारो (हारी), झेंकणियो—वि० ।
झेंकवाड़णो, झेंकवाड़वो, झेंकवाणो, झेंकवावो, झेंकवावणो, झेंकवाववो, झेंकाड़णो, झेंकाड़वो, झेंकाणो, झेंकावो, झेंकावणो, झेंकाववो—प्रे०रू० ।
झेंकिओड़ो, झेंकियोड़ो, झेंक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झेंकीजणो, झेंकीजवो—कर्म वा० ।
झिकणो, झिकवो—अक०रू० ।
झेंकवणो, झेंकववो, झेंकणो, झेंकवो, झेंकवणो, झेंकववो—रू०भे० ।
झेंकवणो, झेंकववो—देखो 'झेंकणो, झेंकवो' (रू.भे.)
उ०—पटाळा हठाळा महागात पूरां, सुरंगा सगाहा सकोपा सनूरां । सलीतां कन्हैं झेंकवै प्रांण साहै, लियां हाथ लट्ठी समा सेल ठाहै ।
—रा.रू.
झेंकवियोड़ो—देखो 'झेंकियोड़ो' (रू.भे.)
झेंकाड़णो, झेंकाड़वो—देखो 'झेंकाणो, झेंकावो' (रू.भे.)
झेंकाड़णहार, हारो (हारी), झेंकाड़णियो—वि० ।
झेंकाड़िओड़ो, झेंकाड़ियोड़ो, झेंकाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
झेंकाड़ीजणो, झेंकाड़ीजवो—कर्म वा० ।
झिकणो, झिकवो—अक० रू० ।
झेंकाड़ियोड़ो—देखो 'झेंकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झेंकाड़ियोड़ी)
झेंकाणो, झेंकावो—क्रि०स० (झेंकणो क्रिया का प्रे०रू०) १ ऊंट को बैठाना, ऊंट को बैठाने के लिये प्रेरित करना. २ ऊंट को बैठाने का कार्य किसी दूसरे से कराना ।
झेंकाणहार, हारो (हारी), झेंकाणियो—वि० ।
झेंकायोड़ो —कर्म वा० ।
झिकणो, झिकवो—अक०रू० ।
झिकाड़णो, झिकाड़वो, झिकाणो, झिकावो, झिकावणो, झिकाववो, झेंकाड़णो, झेंकाड़वो, झेंकारणो, झेंकारवो, झेंकावणो, झेंकाववो, झेंकाड़णो, झेंकाड़वो, झेंकाणो, झेंकावो, झेंकारणो, झेंकारवो, झेंकावणो, झेंकाववो—रू०भे० ।
झेंकायोड़ो—भू०का०कृ०—१ (ऊंट को) बैठाया हुआ, बैठाने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ ऊंट को बैठाने का कार्य किसी दूसरे से कराया हुआ ।
स्त्री०—झेंकायोड़ी ।
झेंकारणो, झेंकारवो—देखो 'झेंकाणो, झेंकावो' (रू.भे.)
उ०—कह्यो ऊभा रह्यां तो सभै कोयनी, थांरै कांम छै तो ऊंट झेंकारू छूं ।—ढो.मा.
झेंकारियोड़ो—देखो 'झेंकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झेंकायोड़ी)
झेंकावणो, झेंकाववो—देखो 'झेंकाणो, झेंकावो' (रू.भे.)
झेंकावणहार, हारो (हारी), झेंकावणियो—वि० ।
झेंकावविओड़ो, झेंकावियोड़ो, झेंकाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झेंकावीजणो, झेंकावीजवो—कर्म वा० ।
झिकणो, झिकवो—अक०रू० ।
झेंकावियोड़ो—देखो 'झेंकायोड़ो' (रू.भे.)
स्त्री०—झेंकावियोड़ी ।
झेंकियोड़ो—भू०का०कृ०—ऊंट को बैठने के लिये प्रेरित किया हुआ, (ऊंट को) बैठाया हुआ । (स्त्री० झेंकियोड़ी)
झेंपणो, झेंपवो—क्रि०अ०—लज्जित होना, शर्माना । उ०—भूंडण खादी घड़-घड़ी, गिरिया भाला तीर । देख पराक्रम झेंपिया, चकित रह्या सै वीर ।—डाढ़ाळा सूर री वात

झेंपणहार, हारौ (हारी), झेंपणियौ—वि० ।
झेंपवाड़णौ झेंपवाड़वौ, झेंपवाणौ, झेंपवावौ, झेंपवावणौ, झेंपवाववौ —प्रे०रू० ।
झेंपाड़णौ, झेंपाड़वौ, झेंपाणौ, झेंपावौ, झेंपावणौ, झेंपाववौ—क्रि०स०
झेंपिम्रोड़ौ, झेंपियोड़ौ, झेंप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झेंपीजणौ, झेंपीजवौ—भाव वा० ।
झेपणौ, झेपवौ—रू०भे० ।

झेंपाड़णौ, झेंपाड़वौ—देखो 'झेंपणौ, झेंपावौ' (रू.भे.)
झेंपाड़णहार, हारौ (हारी), झेंपाड़णियौ—वि० ।
झेंपाड़िम्रोड़ौ, झेंपाड़ियोड़ौ, झेंपाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झेंपाड़ीजणौ, झेंपाड़ीजवौ—कर्म वा० ।
झेंपणौ, झेंपवौ—अक०रू० ।

झेंपाड़ियोड़ौ—देखो 'झेंपायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झेंपाड़ियोड़ी ।

झेंपाणौ, झेंपावौ–क्रि०स०—लज्जित करना ।
झेंपाणहार, हारौ (हारी), झेंपाणियौ—वि० ।
झेंपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झेंपाईजणौ, झेंपाईजवौ—कर्म वा० ।
झेंपणौ, झेंपवौ—अक०रू० ।
झेंपाड़णौ, झेंपाड़वौ, झेंपावणौ, झेंपाववौ, झेपाड़णौ, झेपाड़वौ, झेपाणौ, झेपावौ, झेपावणौ, झेपाववौ—रू०भे० ।

झेंपायोड़ौ—लज्जित किया हुआ । (स्त्री० झेंपायोड़ी)

झेंपावणौ, झेंपाववौ—देखो 'झेंपाणौ, झेंपावौ' (रू.भे.)
उ०—धापूड़ी नै झेंपावण नै उणरी साथणियां एक तरकीब सोची अर साथै गावती-गावती एकदम चुप रैयगी । एकली धापू री ईज झीणौ सुर गूंज ऊठ्यौ ।—रातवासौ
झेंपावणहार, हारौ (हारी), झेंपावणियौ—वि० ।
झेंपाविम्रोड़ौ, झेंपावियोड़ौ, झेंपाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झेंपावीजणौ, झेंपावीजवौ—कर्म वा० ।
झेंपणौ, झेंपवौ—अक० रू० ।

झेंपावियोड़ौ—देखो 'झेंपायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झेंपावियोड़ी ।

झेंपियोड़ौ–भू०का०कृ०—लज्जित हुवा हुआ, शरमाया हुआ ।
स्त्री०—झेंपियोड़ी ।

झै–सं०पु०—१ ब्रहस्पति. २ गुरु. ३ नाक, नासिका. ४ मैथुन. ५ स्वर्ग. ६ कृत्तिका. ७ आत्मा (एका.)
अव्य०—ऊंट को बैठाने के लिये बोला जाने वाला सांकेतिक शब्द (एका.)

झैकणौ, झैकवौ—देखो 'झैंकणौ, झैंकवौ' (रू.भे.)
उ०—घाली टापर वाग मुखि, झैक्यउ राजदुआरि । करहइ किया टहूकड़ा, निद्रा जागी नारि ।—ढो.मा.

झैकवणौ, झैकववौ—देखो 'झैंकणौ, झैंकवौ' (रू.भे.)

झैकवियोड़ौ—देखो 'झैंकियोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैकवियोड़ी ।

झैकाड़णौ, झैकाड़वौ—देखो 'झैंकाणौ, झैंकावौ' (रू.भे.)

झैकाड़ियोड़ौ—देखो 'झैंकायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैकाड़ियोड़ी ।

झैकाणौ, झैकावौ—देखो 'झैंकाणौ झैंकावौ' (रू.भे.)

झैकायोड़ौ—देखो 'झैंकायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैकायोड़ी ।

झैकारणौ, झैकारवौ—देखो 'झैंकाणौ, झैंकावौ' (रू.भे.)
उ०—तोडांह चेड नुखतां तणा रा, राज दवारै झैकारियां ।
—वखतौ खिड़ियौ

झैकारियोड़ौ—देखो 'झैंकायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैकारियोड़ी ।

झैकावणौ, झैकाववौ—देखो 'झैंकाणौ, झैंकावौ' (रू.भे.)

झैकावियोड़ौ—देखो 'झैंकायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैकावियोड़ी ।

झैकियोड़ौ—देखो 'झैंकियोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैकियोड़ी ।

झैपणौ, झैपवौ—देखो 'झैंपणौ, झैंपवौ' (रू.भे.)

झैपाड़णौ, झैपाड़वौ—देखो 'झैंपाणौ, झैंपावौ' (रू.भे.)

झैपाड़ियोड़ौ— देखो 'झैंपायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैपाड़ियोड़ी ।

झैपाणौ, झैपावौ—देखो 'झैंपाणौ, झैंपावौ' (रू.भे.)

झैपायोड़ौ—देखो 'झैंपायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैपायोड़ी ।

झैपावणौ, झैपाववौ—देखो 'झैंपाणौ, झैंपावौ' (रू.भे.)

झैपावियोड़ौ—देखो 'झैंपायोड़ौ' (रू.भे.)
स्त्री०—झैपावियोड़ी ।

झैपियोड़ौ—देखो 'झैंपियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० झैपियोड़ी)

झैं'र—देखो 'जैंर' (रू.भे.)
उ०—जैपुरनाथ जैसा धांम वेटा तीन जाया । प्याला झैं'र पाया । एक वेटा नैं मराया ।—शि.वं.

झोंक—देखो 'झोक' (रू.भे.)

झोंकणौ, झोंकवौ—देखो 'झोकणौ, झोकवौ' (रू.भे.)

झोंकौ—देखो 'झोकौ' (रू.भे.)

झोंपड़ी–सं०स्त्री०—देखो 'झूंपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

झोंपड़ौ—देखो 'झूंपड़ौ' (रू.भे.)

झोक–सं०पु०—१ ऊंटों के बैठने का वाड़ा ।
उ०—१ झोक भरी छै म्हारी टोडियां जे, जे मैं म्हारौ गल्लेवाळौ टोड, ओक वरसैं वरसोदण होळी पांवणी जे ।—लो.गी.

उ०—२ भोक मांय म्हांरा ऊंट अरळावै, गोरयां मांय गाय'रां भैंस, इतना भोजूं मत पड़ियै म्हांरै देस में ।—लो.गी.

उ०—३ हिवै जखड़ै रैबारी नै तेड़ पूछियो, घणी फरवी, चलाक सांढ हुवै तिका बताय । तरै रैबारी कह्यो, महाराजा, रावळै भोक नव छै, तिण में अकाळगारी तिणरी नानी बनास पांणी पीवती नै नागरवेली री पनवाड़ी चर नै घरै आवती । तरै जखड़ै उण सांढ नै मारणी मांटी । तिका मास एक मांहे सभाई । तिका कोस पचास जाय नै एकै टांण पाछी आवै ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

२ उतनी भूमि जो एक ऊंट के बैठने से घिर जाय ।

उ०—नवहत्थी भोक रा, मसत फीफरा भरारा । वगलां उरळी विहूं, वगलि नीकळै छिकारा ।—सू.प्र.

३ मादा ऊंट के बच्चा देने अर्थात् प्रसव करने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—देणी ।

४ जोश, उत्साह, साहस । उ०—कढ़िया खग सावळ भोक कियां । लगिया सिर अंबर वाग लियां ।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—आंणी, करणी ।

सं०स्त्री०—५ तराजू के किसी पलड़े का नीचे होने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—होणी ।

६ भुकाव, प्रवृत्ति. ७ 'भुकणी' क्रिया का भाव.

८ तिरछी चितवन, कटाक्ष । उ०—चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहणहार, सोळै सिंगार ठवियां थकां, फूलां रा चौसर पैहरियां थकां, टोय अणियाळां काजळ ठांसियां थकां, वांका नैणां री भोक नांखती पायल रै ठमकै सूं, घूघरै रै घमकै सूं, विछियां रै छमकै सूं, रमभोळ करती, अंगूठा मोड़ती, नखरा करती वाजारि चाली जाय छै ।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—नांखणी, देणी, फैंकणी ।

९ तरंग, लहर ।

१० इधर से उधर हिलने-डुलने या भुकने की क्रिया ।

ज्यूं—नसै री भोक, नींद री भोक ।

अव्य०—प्रशंसा सूचक शब्द, वाह, शाबाश ।

उ०—१ वर्द अंगदेस हुवा जोध वंका । लंगा भोक रे भोक प्राजाळ लंका ।—सू.प्र.

उ०—२ काळा भोक लागै मेद पाटका कंवाड़ ।

—माधोसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ प्रथम नेह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर भोक लागै । रायकंवरी वरी जेण वागै रसिक, वरी घड़ कंवारी तेण वागै ।—वां.दा.

११ शोभा । उ०—नवौ जन्म ले कुंड कंडीर न्हावै । महा सुद्ध ह्वै मुद्ध मांनूं नमावै । लखै सूळ सिंदूर री भोक लेतौ । सज्यो मात स्त्री हाथ श्री नोक सेतौ ।—मे.म.

भोकड़ी-सं०स्त्री०—भूम, मस्ती । उ०—वडा दातारां सिरदारां खंभाइची मांहे दूहा गाईजै छै । जस जांगड़ा गवाड़ीजै छै । ढाढीआं री जोड़ी गजराज पटाभर ज्यों भोकड़ी खाइ नै रही छै ।—रा.सा.सं.

२ नींद का भोंका, भपकी । उ०—करी आखरी त्यार भोकळी सोवण सुख भर । मिरग चौकड़ी भूल, भोकड़ी लेवै दिन भर ।

—दसदेव

भोकणी, भोकवौ-क्रि०स०—१ प्रहार करना, वार करना ।

उ०—जटी आक भोकवौ सधेस कौ भोकवौ जंगां, जती कौ मोकवौ नंगां लंका सीस भाल । कळसां कोकवौ काळ तोकवौ तुरी कौ कना । छौळां नाथ संभरी कौ भोकवौ छड़ाळ ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ किसी वस्तु को एक बारगी ही भटके के साथ आगे की ओर फेंकना, फेंक कर छोड़ना, सामने की ओर वेग से फेंकना ।

३ जोशपूर्वक आगे की ओर बढ़ाना । उ०—'अभमाल' क्रोध देवै अताळ । महमंद-साह दिये मुक्तमाळ । पत हुकम मदपफरखांन पेल । भोकिया थाट भुज भार भेल ।—वि.सं.

४ जबरदस्ती आगे की ओर करना, ढकेलना, ठेलना. ५ प्रवृत्त करना । उ०—१ स्रोण छौळां रा कीच माचसी, बावन वीर आखाड़ नाचसी । काथा खड़ै छै । सहुड़ा भोकसी, खळां रा अमख सूं पळचरां नै पोखसी ।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ ऊगती मौसरां अडर, सिंघ करण अभावत । कवरां गुर इम कहै वरण मुख अरण वधावत । अणी फूल ऊपरा, भोकि ऊडंड भळाहळ । सभूं राड़ सांधणी, वाहि सावळ वीजूजळ ।—सू.प्र.

६ बहुत अधिक खर्च करना, अंधाधुंध व्यय करना । ज्यूं०—छोरै री पढ़ाई में घणाई रिपिया भोकिया । ७ आहुति देना । उ०—धुवै राग सिंधुवां, गजै नाळियां त्रंबागळ । मेळा भड़ गहमहै, वहै गोळा वींभाभळ । ठहै दवानळ ठठर, भोकि पिंड सांमी भाळां । खोभ गिरंद खोहरां, लिया मोरचा लकाळां ।—सू.प्र.

८ आपत्ति में डालना, बुरी जगह भेजना या ढकेलना । ज्यूं०—थे तो थांरी छोरी नै कसाइयां रै घर में भोक दी । ९ खींचना ।

उ०—ताहरां हेकै रजपूत नूं भुवाळां हूं भालि भोकि करि नीचो नांखियो ।—द.वि.

१० डालना । उ०—अर जिकण रै बदळै ऊकळता कड़ाह रा तेल में आपरो ही कलेवर भोकि दीधौ ।—वं.भा.

११ अत्यधिक कार्य देना, बहुत श्रम करने के लिये जोत देना, बहुत कार्य लादना । ज्यूं०—१ औ सगळौ कांम करण रै सारूं थै नित म्हनै ईज क्यूं भोक दिया करौ. ज्यूं०—२ औ सगळौ कांम म्हारै माथै ईज क्यूं भोक दियौ ।

१२ बन्दूक छोड़ने के लिये बन्दूक की कल गिराना या बन्दूक छोड़ना । उ०—करै वंदूकां तीर वंध, दे सूवा दोय वार । फूल मार कर पाधरी, भोकै कळ जोधार ।—पनां वीरमदे री वात

१३ देखो 'भैंकणी, भैंकवौ' (रू.भे.) उ०—मिळि रींछ रूप

अधियांमणा, जकस जिहाजां जिम जिसा। झोकिया सिंधु नुखतां झटंकि, अंधकंध राकस इसा।—सू.प्र.

झोकणहार, हारौ (हारी), झोकणियौ—वि०।

झोकवाड़णौ, झोकवाड़बौ, झोकवाणौ, झोकवावौ, झोकवावणौ, झोकवाववौ, झोकाड़णौ, झोकाड़बौ, झोकाणौ, झोकावौ, झोकावणौ, झोकाववौ—प्रे०रू०।

झोकिग्रोड़ौ, झोकियोड़ौ, झोक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झोकीजणौ, झोकीजवौ—कर्म वा०।

झुकणौ, झुकवौ—अक०रू०।

झोंकणौ, झोंकवौ, झोखणौ, झोखवौ—रू०भे०।

झोका—अव्य०—एक प्रशंसासूचक शब्द, शावाश, वाह।

उ०—१ आपांण दिखायौ भलौ झोका वखतेस आळा, 'आपा' नै घपायौ रोळां छकायौ अपार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ खेद ग्रह पूंज विमुहा खड़ै झोट खग। झाट खग थाट यर भंज झोका।—र.ज.प्र.

रू०भे०—झोखा।

झोकाइत, झोकाई, झोकाऊ—वि०—१ वीर, वहादुर।

उ०—१ नींवौ सैवाळोत। साख राठौड़। धिणला री धणी। लाखां री लोड़ाऊ। रुळियां री जोड। रांका री माळवौ। अधणियां री धणी। पर भोम पंचायण। सयणां री सेहरौ। दुसमणां री नाटसाल। वडौ झोकाइत।—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—२ हिवै पाटण थी ४० कोस ऊपरै कागलौ वळोच रहै। तिकौ बडौ झोकाई। गांव ४० री धणी।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—३ तरै एकण चाकर कह्यौ—साखि राठौड़, नींबौ सिवाळौत, लाखां री लोड़ाऊ, बडौ झोकाऊ, सैणां सेहुरौ, दुसमणां री साल, जातां-मरतां री साथी, लाखां री लहरी।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

२ लुटेरा, डाकू। उ०—परवतसर चौरासी मारोठ री दाळ आवै ओर च्यारू पासां री माल खायजै। वडा झोकाई। दिल्ली सूं उरै-उरै मुलक री धाड़ौ हमेसां करै।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

रू०भे०—झोकायत, झोखाइत, झोखाई, झोखाऊ, झोखायत।

झोकाड़णौ, झोकाड़बौ—देखो 'झोकाणौ, झोकावौ' (रू.भे.)

झोकाड़णहार, हारौ (हारी), झोकाड़णियौ—वि०।

झोकाड़िग्रोड़ौ, झोकाड़ियोड़ौ, झोकाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

झोकाड़ीजणौ, झोकाड़ीजवौ—कर्म वा०।

झुकणौ, झुकवौ—अक०रू०।

झोकाड़ियोड़ौ—देखो 'झोकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झोकाड़ियोड़ी)

झोकाणौ, झोकावौ—क्रि०स० ('झोकणौ' क्रिया का प्रे०रू०) झोंकने का कार्य दूसरे से कराना।

झोकाणहार, हारौ (हारी), झोकाणियौ—वि०।

झोकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

झोकाईजणौ, झोकाईजवौ—कर्म वा०।

झुकणौ, झुकवौ—अक०रू०।

झोकाड़णौ, झोकाड़वौ, झोकावणौ, झोकाववौ, झोखाड़णौ, झोखाड़वौ, झोखाणौ, झोखावौ, झोखावणौ, झोखाववौ—रू०भे०।

झोकायोड़ौ—भू०का०कृ०—झोंकने का कार्य दूसरे से कराया हुआ।

(स्त्री० झोकायोड़ी)

झोकायत, झोकायती—देखो 'झोकाइत' (रू.भे.)

उ०—१ सीस वह भुजां तोकायतां सावळां, रखां रोकायतां अरक रीझ। राळिया भड़ज धक नयण रोखायतां, बीच झोकायतां 'रयण' वीज।—रांमकरण महड़ू

उ०—२ वंब इळा ठोर बागा हकां वीरबर, खळ थटां कितां खागां रदन खेर। थया मद हीण अर हरां थोकायती, जग अचळ किया झोकायती जेर।—साहपुरै राजा अमरसिंह री गीत

झोकावणौ, झोकाववौ—देखो 'झोकाणौ, झोकावौ' (रू.भे.)

झोकावणहार, हारौ (हारी), झोकावणियौ—वि०।

झोकाविग्रोड़ौ, झोकावियोड़ौ, झोकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

झोकावीजणौ, झोकावीजवौ—कर्म वा०।

झुकणौ, झुकवौ—अक०रू०।

झोकावियोड़ौ—देखो 'झोकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झोकावियोड़ी)

झोकि—देखो 'झोका'। उ०—जग्दाळ घण पखराळ जुड़ि, विहंड खाळ नारंग वहै। हद करां इसौ जुध विहद हूँ, करां झोकि सूरिज कहै।—सू.प्र.

झोकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ।

२ किसी वस्तु को एक वारगी ही झटके के साथ आगे की ओर फेंका हुआ, फेंक कर छोड़ा हुआ, सामने की ओर वेग से फेंका हुआ।

३ जोशपूर्वक आगे की ओर वढ़ाया हुआ। ४ जवरदस्ती आगे की ओर किया हुआ, ढकेला हुआ, ठेला हुआ। ५ प्रवृत्त किया हुआ।

६ वहुत अधिक खर्च किया हुआ, अंधाधुंध व्यय किया हुआ।

७ आहुति दिया हुआ। ८ आपत्ति में डाला हुआ, बुरी जगह भेजा हुआ या ढकेला हुआ। ९ डाला हुआ। १० खींचा हुआ।

११ अत्यधिक कार्य दिया हुआ, वहुत श्रम करने के लिये जोता हुआ, वहुत कार्य लादा हुआ। १२ वन्दूक छोड़ने के लिये वन्दूक की कल गिराया हुआ या वन्दूक छोड़ा हुआ। १३ देखो 'झैंकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झोकियोड़ी)

झोकौ—सं०पु०—१ झपट्टा, रेला, धक्का।

क्रि०प्र०—आणौ, लागणौ।

२ झटका, आघात।

क्रि०प्र०—आणौ, लागणौ।

३ हवा का प्रवाह, झकोरा।

क्रि०प्र०—खाणौ, आणौ, लागणौ।

४ इधर-उधर हिलने-डुलने या झुकने की क्रिया।

उ०—महमद लटका पड़ण में, कह किन झोका खाय। तन-घट में दिया गगन, भरत हिलाय-हिलाय।—अज्ञात

मुहा०—१ झोका आणा—निद्रा के कारण झपकियां आना.

२ झोका खाणा—नशे में इधर-उधर झुकना, डांवाडोल होना, किसी आघात या वेग के कारण इधर-उधर झुकना।

५ लहर, तरंग।

क्रि०प्र०—आणौ।

रू०भे०—झोखौ।

झोख—देखो 'झोक' (रू.भे.) उ०—सुपातां पाळ-गर जोग पारथ समर, केवियां गाळ-गर वंस रा दिनंकर। वसू साधार झोख लागै क्रीतवर, अभंग पारथ अत इळा राजो 'अमर'।—विसनदास बारहठ

झोखणौ, झोखबौ—१ देखो 'झेंकणौ, झेंकबौ' (रू.भे.)

उ०—मजबूत थूंभ डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा। झोखिया सिघु नुखतां झटकि, अंघ कघ राकस इसा।—सू.प्र.

२ देखो 'झोकणौ, झोकबौ' (रू.भे.) उ०—साजै द्रढ़ आसण इस्ट अराधण, पैठो जाय पताळ में जी। दिल पंच इंद्री दम घोम सखी, घम झोखै आहुत झाळ में जी।—र.रू.

झोखा—देखो 'झोका' (रू.भे.)

झोखाइत, झोखाई, झोखाऊ—देखो 'झोकाइत' (रू.भे.)

झोखाड़णौ, झोखाड़बौ—देखो 'झोकाणौ, झोकाबौ' (रू.भे.)

झोखाड़ियोड़ौ—देखो 'झोकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झोखाड़ियोड़ी)

झोखाणौ, झोखाबौ—देखो 'झोकाणौ, झोकाबौ' (रू.भे.)

झोखायोड़ौ—देखो 'झोकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झोखायोड़ी)

झोखायत, झोखायती—देखो 'झोकाइत' (रू.भे.)

झोखावणौ, झोखावबौ—देखो 'झोकाणौ, झोकाबौ' (रू.भे.)

झोखावियोड़ौ—देखो 'झोकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झोखावियोड़ी)

झोखियोड़ौ—देखो 'झोकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० झोखियोड़ी)

झोखौ—देखो 'झोकौ' (रू.भे.)

झोड़-सं०पु०—१ टक्कर, आघात। उ०—घमंकै जड़ी पाखरां थाट घोड़ां। झमंकै झड़ी पाखरां आगि झोड़ां।—वं.भा.

२ देखो 'झौड़' (रू.भे.)

झोट—१ देखो 'झोटी' (मह., रू.भे.) उ०—१ घिरत घला द्यूं ए भूरी झोट री।—लो.गी.

उ०—२ उवा झोट छोड देवौ।—कुंवरसी सांखलै री वारता

२ देखो 'झोटौ' (मह., रू.भे.)

झोटींग देखो 'झोट' (मह., रू.भे.)

झोटी-सं०स्त्री०—युवा भैंस। उ०—दूध पीवण नैं जोसी झोटी दिराऊं रे, धांन भराऊं थारी कोठी रे, म्हारा जूना जोसी, रांम मिळण कद होसी रे।—मीरां

मह०—झोट।

झोटौ-सं०पु०—१ झूले को इधर-उधर हिलाने के लिये दिया जाने वाला धक्का, झोंका। उ०—१ सोवन झूलै बांनो झूलै, झोटै-झोटै बोली थूं। उतणी वार हिलायै पिरथी, मैं तोय जितणा झोटा द्यूं।
—लो.गी.

उ०—२ गाजै घण सुण गावणौ, प्याला भर मद पाव। झूलै रेसम रंग झड़, झोटा दे'र झुलाव।—बां.दा.

क्रि०प्र०—देणौ।

२ किसी अधर लटकी हुई वस्तु को हिलाने-डुलाने के लिये दिया जाने वाला धक्का, झोंका। उ०—सू उण ही बादळां सूं घोड़ा रा लाळिया छांटजै छै। फेर बादळा खंखोळ उण हीज तळाव रै पांणी सूं छांण भरजै छै। उण हीज वड़ां, पीपळां री साखां सूं टांगजै छै। झोटा दीजै छै। पवन खुवाय पांणी ठंडौ कीजै छै।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—देणौ।

३ इधर से उधर झूमने, झुकने या हिलने-डुलने की क्रिया।

उ०—१ लुळि लुळि लपाक झोटा लिवै, ऊंचा नीचा आवता। नमि नमि नाक अमली निलज, जमीं लगावै जावता।—ऊ.का.

उ०—२ इण भांत रा रजपूतां नै अमल सिरदार आपरा हाथां करावै छै। घणै चोज सूं मन लियां मनहारां कीजै छै। दिल हाथ लीजै छै। अमलां गहतंत हुवा छै। मातै हाथी ज्यूं झोटा खाय रह्या छै।—रा.सा.सं.

वि०वि०—यह क्रिया प्रायः मस्ती, नशे अथवा नींद आदि आने के कारण होती है।

क्रि०प्र०—खाणौ, लैणौ।

(स्त्री० झोटी) ४ भैंसा, महिषा। उ०—मोडा एक बहुत ह्वै गहिला, ज्यूं भैंसिन में झोटा। दे छांटा नारी परवोधै, खसम बतावै खोटा।—ऊ.का.

मह०—झोट।

वि०—हृष्ट-पुष्ट।

झोतिखिक, झोतिसिक—देखो 'ज्योतिसी' (रू.भे.) (व.स.)

झोबा-झोब-वि०यौ०—पसीने में तरबतर। उ०—कुत्तै झपटी मारी। अेक छोरी डर'र चीख मारी। सरीर झोबा-झोब हुयग्यो। आंखिया सूं आंसू पडण लागा।—वरसगांठ

झोर-सं०पु०—१ समूह, झुण्ड। उ०—कपोळां रै मदगंध करि न भौंरां रा झोर पड़ नै रहिया छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'झोरौ' (मह., रू.भे.)

३ देखो 'झौरौ' (मह., रू.भे.)

झोरावो, झोरावौ—देखो 'झुरापो' (रू.भे.)

झोरो-सं०पु०—१ गुच्छा। उ०—रसे माधुरै पी जंभीरी विजोरा। झुकै साख फूलां फळां भारि झोरा।—रा.रू.

मह०—झोर।

२ देखो 'झोरौ (रू.भे.)

झोळ-सं०पु०—धातुओं पर चढ़ाया जाने वाला मुलम्मा।

उ०—१ रूपा री म्हारी वणी ए वाटकी, सोनां के रौ झोळ चढ़ायौ, कहौ तो सहेल्यां आपां वागां में चालां, वागां में हींडो ए घलायौ। —लो.गी.

उ०—२ अनै इणरै मांहै तौ तांबौ अनै ऊपर रूपा री झोळ तिण सूं ए खोटौ।—भि.द्र.

२ तरकारी आदि का शोरवा, शाक का द्रव पदार्थ. ३ वह घोल जो अन्न के आटे में मसाले आदि मिला कर पकाया जाता है जैसे कढ़ी। ४ परदा, ओट. ५ हाथी का झूलते हुए चलने का एक ऐब।

६ देखो 'झोळौ' (रू.भे.)

झोल-सं०स्त्री०—१ किसी वस्तु के तनाव का कहीं से झुक जाने या बीच से मुड़ जाने का भाव।

क्रि०प्र०—काडणौ, दैणौ, निकाळणौ, पड़णौ, होणौ।

२ तनाव या कसाव के शिथिल होने का भाव, तने हुए कपड़े आदि का कहीं से लटक जाने या झोली की तरह हो जाने का भाव।

क्रि०प्र०—दैणौ, पड़णौ।

३ । उ०—आप तौ जाय द्वारका छायै, हमकौ पड़ गये झोल। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, पिछले जनम को कौल।—मीरां

४ देखो 'झोलौ' (मह., रू.भे.)

उ०—डेरां मांहि मिळै 'जैसाह' आय। वैसंदर जांणिक झोल वाय। —सू.प्र.

झोळउ—देखो 'झोळौ' (रू.भे.)

उ०—करुणा कीलइ लेपीउ ए, ग्यांन निरूपम नीर। झोळउ समरस भरची ए।—ऐ.जै.का.सं.

झोळका—देखो 'झोळी' (रू.भे.)

झोळणौ-सं०पु०—प्राय: यात्रा में सामान आदि डालने के लिये साथ रखा जाने वाला कपड़े का बना हुआ बड़ा थैला या झोला जो कंधे पर लटकाया जाता है।

वि०वि०—इसमें कपड़े के दोनों छोरों को सीं कर थैलियों के आकार का बना लिया जाता है तथा बीच के हिस्से को कंधे से लटकाने पर दोनों थैलियां आगे पीछे लटक जाती हैं।

झोळणौ, झोळवौ-क्रि०स०—हिलाना-डुलाना, झकझोरना, मथना।

उ०—सो घणी काळपी मिसरी रा भेळ सूं घणी एळची नै मिरचां रै भेळ बौह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गंगोदक पांणी सूं ऊजळै गळणै झोळि झोळि झारीजै छै।—रा.सा.सं.

झोलणौ-सं०पु०—एक प्रकार का दीपक विशेष जो प्राय: लोहे का बना हुआ होता है।

झोळदार-वि०—१ जिसमें शोरवा या रसा हो. २ जिस पर मुलम्मा चढ़ा हुआ हो।

झोलदार-वि०—जिसके बीच में झुकाव या मोड़ हो. २ जो ढीला-ढाला हो।

झोळायत-सं०पु०—गोद लिया हुआ लड़का, दत्तक पुत्र।

झोळि-सं०स्त्री०—तलहटी ?

उ०—अथास्तोदय, अस्तमइं अंसुमाळिमंडळ, विघट्टइं चक्रवाकचक्रवाळ, उच्छळइं बहुल बहुल तिमिररिछोळि, सयाळ पक्षिकुळ अपसरइ परवत झोलि, अलंकरइं तरुणि ओलि, प्रज्वलइं मंदिरोदरि मंगळप्रदीपमाळिका, उन्मीळइं गगनांतराळि तारिका, उल्लसइं चंद्रमंडळालोक, ज्योत्स्नाधवळथाइ जीवलोक।—व.स.

झोळियां-सं०स्त्री०—अंक, गोद। उ०—राजा री कुमरि नळराजा मांगै छै, कंवर आपरी झोळियां घाल्यौ छै।—ढो.मा.

क्रि०प्र०—घलाणौ, घालणौ, दैणौ, लैणौ।

वि०वि०—यह केवल गोद लेने के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।

रू०भे०—झोळ्यां।

झोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—हिलाया-डुलाया हुआ, झकझोरा हुआ, मथा हुआ।

झोळियौ-सं०पु०—१ पानी डाल कर अथवा मथ कर पतला बनाया हुआ दही. २ बच्चे को झुलाने का पालना. ३ बच्चे को झुलाने के लिये कपड़े की बनाई हुई झोली।

झोळी-सं०स्त्री०—१ प्राय: चौकोर कपड़े के चारों छोरों को मिला कर लटकाने से बनने वाला गोलनुमा आकार जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। इसमें कपड़े के किनारे पर छोरों के मध्य से छोरों की ओर कुछ दूर तक सी भी देते हैं। उ०—झोळी मा'ला झाड़ रोट गिंडकां नै राळौ। दौ जूतां री दोय करौ मोडां री काळौ।—ऊ.का.

यौ०—झोळी-झंडौ, झोळी-डंडौ।

२ किसी लम्बे और चौड़े वस्त्र के एक ओर के दोनों छोरों को कमर में बांध दिया जाता है और दूसरी ओर के दोनों छोरों को शामिल कर पीठ पर से होते हुए, कंधे के ऊपर से लाते हुए आगे कमर में बंधे हुए छोरों से अटका दिया जाता है। इस प्रकार अटकाने से पीठ पर एक बड़ा थैला बन जाता है।

वि०वि०—यह थैला बाजरा और ज्वार की बालें काटते समय ही उपयोग में लाया जाता है और एक-एक बाल काट कर इस थैले में डालते जाते हैं।

३ ।

उ०—झड़ी सरम फूलां री झोळी। हुयगी परम धरम री होळी।

४ ।

उ०—झोली झालरि झींपहु, झंभू झाझइ मुरि। झखमख झरहर झरंडीआ, झापट झाझा घुरि।—मा.कां.प्र.

५ घायलों को ले जाने के लिये प्रयोग किया जाने वाला झोलीनुमा उपकरण।

उ०—१ नूरमली ग्रहली दसा, गो गिर लग्गे हार। झोळी डोळी घायलां, ले वेली वे पार।—रा.रू.

उ०—२ मांडयो मुकंद रो देस अजाद दुभल्ल। झोळी वीस घतावियां पड़िया तीस मुगळ।—रा.रू.

६ बच्चों के झुलाने का पालना. ७ कपड़े का बनाया हुआ वह झूला जिसमें बच्चे को सुला कर झुलाया जाता है। उ०—मायां धोतां नीरमळा झुलरायो झोळी हालरि हुलरावियो हींडोळ हिंचोळी।

—घ.व.ग्रं.

८ अंक, गोद।

रू० भे०—झोळका।

झोळी-झंडो, झोळी-डंडो—सं०पु०यौ०—प्राय: भिक्षुओं अथवा साधुओं द्वारा अपने पास रखी जाने वाली झोली तथा डंडा।

झोळो—सं०पु०—१ किसी कपड़े के चारों छोरों को मिलाने से बनाने वाली गठरी। उ०—इसो कहि झोळो मांडि, सरब भेळी करि गांठ बांधी।—पलक दरियाव री वात

२ बड़ा थैला. ३ किसी वस्तु का ढीला-ढाला आवरण. ४ पहनने का ढीला-ढाला वस्त्र, चोला। इसे प्राय: साधु पहनते हैं. ५ गोद, अंक (ढूंढाड़)।

रू०भे०—झोळउ।

मह०—झोळ।

झोलो—सं०पु०—१ वायु-प्रवाह का आघात, वायु-प्रवाह की टक्कर, झोंका। उ०—१ फौहारू की पंकति जळ-चादरू का उफांण। जळचादरू की घरहर मांनूं छिल्लै महिरांण। खीखंडूं का डंबर समीर सैं झोला खावै। मलियागिर के भोळैं भूलि पंखेसर मिणधर भुजंग आवै।—सू.प्र.

उ०—२ वायरै रा ठंडा झोला सांमी छाती झेलजै। पैलो जोटो आवै है पांणतिया खोडो घेरजै।—चेत मांनखा

क्रि०प्र०—खाणो, झेलणो।

मुहा०—झोला खाणो—अनिर्णीत अवस्था में रहना, बिना सहारे अथवा बिना मंजिल के जाने भटकना।

२ वायु-प्रवाह। उ०—फळ-फूलूं के भार भरी अढ़ार भार, ठांम-ठांम के ऊपर मोरू का तंडव भौंरू का गुंजार। ठांम-ठांम सेती रतिराज के नकीब कोकिला बोलैं, सीतळ मंद सुगंध तीन प्रकार के झोलै।—सू.प्र.

३ प्रवाह। उ०—अबै जलाल बूबना सूं सीख कीवी। तरै झरोखा सूं रेसम रै लच्छां नूं उतरियो, सो सूंघै भीनो थकियो, अंतर रा झोला पड़तां, दोय लाख रो मोतियां रो हार गळै में पहरियां थकां महल नूं आवै छै, सो येभो व तनोमनो सगळां नूं सुवास रो झोलो पवन सूं आयो। बारह मोहर तोळा रो इतर जलाल लगातो, तिण री सुवास रा झोला पड़ण लाग्या। तद सारां ही कही—खसबू रा झोला आवै छै, सो देखो तो सही जलाल आवै छै।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ सांचा कुळ चकोर चंदा झोलै बहि जासी। ब्रज नारी री बीणती रै (वाला) रांम मिळै मिळ जासी।—मीरां

उ०—३ नित तंडिव नाचणी, निझरि वाढणी नीहाळै। रंग साज रेळियां अंतर झोला आइजै। अली नाभ ऊपरै, राग भौंरा छाइजै।

—पनां वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—आणो, झलणो, पड़णो।

४ तरंग, हिलोर। उ०—तिको तळाव किण भांत रो छै। राती वरडी रो। पांडरो नीर। पवन रो मारियो, फीण आछंटतो थको झोला खाय रह्यो छै।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—खाणो।

५ हिलने-डुलने या झूमने की क्रिया या भाव।

उ०—आभा झळपट अंग क चंदै चीरियां, दरियाई धुज देह घरै डग धीरियां। लटकण झोला लेह कवेसर वंकियां। भरियां भूखण भार लचकत लंकियां।—र. हमीर

उ०—२ गाढ़ा वीसां री घड़ाई नथ लुळ लुळ जाय। तीसां री पोवाई नथ डचोढ़ा झोला खाय।—लो.गी.

उ०—३ गहरो फूल गुलाब रो, झुक झुक झोला खाय। ना माळी रै नीपजै, ना राजा रै जाय।—अज्ञात

क्रि०प्र०—खाणो, लेणो।

६ जल को विलोड़ित करने की क्रिया या भाव। उ०—मरद गरद हुय जाय देख घूंघट को ओलो। झुक पीछोळा तीर दियै पणियारघां झोलो।—महादांन महड़ू

क्रि०प्र०—देणो।

७ वात रोग विशेष। उ०—का तो रांणै नूं झोलै मारियो, का रांणै री बुद्धि भ्रस्ट हुई।—नापै सांखलै री वारता

क्रि०प्र०—मारणो।

८ आश्विन मास में सप्तर्षि के अस्त होने के स्थान से चलने वाला वायु जो फसल को हानि पहुँचाता है। उ०—१ नैरंति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै धण पयोधर। झोलै वाइ किया तरु झंखर, लवळी दहन कि लू लहर।—वेलि.

उ०—२ भूख भांगण अर तिर छिजण, थाकां रै आवै वेल। थनै झोलो मती लागजो, म्हारी मतीरा री वेल।—लो.गी.

वि०वि०—यही वायु श्रावण मास में 'सूरियो' तथा माघ मास में 'दावो' कहलाता है।

९ आपत्ति, संकट। उ०—सेर सेर सोनो पीरती, मोत्यां मरती भारा कोइक झोलो आइयो, घर घर री पणियार।—अज्ञात

क्रि०प्र०—लागणो, वाजणो।

१० पीड़ा, दुःख। उ०—हमै मयारांम नै जसां रंगराग मांणै छै,

जकां नैं इंद्र भी वखांणे छे। रंग-राग री घोरो लागो छै, विरह रो झोलो भागो छै।—दरजी मयाराम री वात

क्रि०प्र०—भागणो।

११ विक्षेप, बाधा। उ०—पूरव जनम की मैं हूं गोपिका, अधविच पड़ गयो झोलो रे। जगत वदीती तुम करो मोहन, अब क्यूं बजाऊं ढोलो रे।—मीरां

क्रि०प्र० —डालणो, नांखणो, पड़णो, होणो।

१२ शोभित होने का भाव। उ०—जिस वखत सिर सोभा के हरवळ का मोती पाघ के जवाहर के ऊपर तारीफ सूं झोला खावै, जिसका जवाब इस वजे कहता है जो आलम के विच इस भूपति की जोड़ और भूपति कोई नहीं आवै।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—खाणो।

१३ चितवन, दृष्टि।

उ०—सांई टेढ़ी अंखियां, वैरी खलक तमांम। टुकियक झोलो महर री, लाखां करै सलांम।—अज्ञात

१४ (रोग विशेष का) आक्रमण, झपट। उ०—१ मातांजी पूजो सीतळा, ठंडो झोलो देसी माता सीतळा।—लो.गी.

उ०—२ म्हारा सुसरोजी ऊंवा राज री अरजां में, वांरा कंवरां नै ठंडो झोलो दीजै, माता सीतळा।—लो.गी.

उ०—३ पछै उठा थी छाडियो। को दिन सींधले जाय कवळै रह्यो। सांन रो झोलो हुवो।—नैणसी

उ०—४ किसतूरी खवास नै पनां सूं मिळायो, जठै देखतांई तड़ाछ खाय इसो पड़ियो जांणे सीतंग रो झोलो आयो।—पनां वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—आणो देणो, लागणो, होणो।

१५ उलझन, फंदा। उ०—जीवड़ा नांख दिया इण झोलै, ठहर सकै नहि ठाई। सतगुरु बिन गोता बहु खावै, भरम न भागै भाई।
—स्री हरिरांमजी महाराज

क्रि०प्र०—नांखणो।

१६ प्रभाव, असर। उ०—सांधू झोलो संवद रो, नर नैं झोलो नार। दीपक झोलो पवन रो, किस विघ उतरै पार।—संतवांणी

क्रि०प्र०—लागणो।

झोळयां—देखो 'झोळियां' (रू.भे.)

झोवरी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

झोवौ-सं०पु०—एक प्रकार का मिट्टी का वर्तन। उ०—घट घड़कलिया माट, मंगळिया मटकी हांडा। झोवा कुंज कुंडाळ, कढ़ावणी ढकण खांडा।—दमदेव

झौंक-सं०स्त्री०—१ ध्वनि, आवाज। उ०—झरां झंगरां वजि पावक झौंक। सरां वजि तीड परां जिम सौंक।—सू.प्र.

२ देखो 'झोक' (रू.भे.)

झौंप-सं०स्त्री०—१ शमी वृक्ष की कोमल टहनियों से बना 'भुरट' की वालों को झाड़ने का उपकरण।

झौक—देखो 'झोक' (रू.भे.) उ०—१ धंन धंन हरि चाप निखंग धरी, धर सील संधर क्रत ऊंच करी। करतार करां जग झौक जपै, जय क्रती जिकै खळ पाप खपै।—र.ज.प्र.

उ०—२ गरुड़ध्वज रिम मांण-गोळा, वैर वाहर सीत वाळा। करां झौक अनूप काळा, रूप भूपां रांम।—र.ज.प्र.

उ०—३ नोहरथी झौक झागूंड झल्लेस। कड़े छंट चसळकते नेस।
—सू.प्र.

झौका—देखो 'झोका' (रू.भे.) उ०—थूरण रिण दैतां थोका, लाज रक्खण संत लोका। रांम रिण दसमाथ रोका, करां झौका करां झौका।—र.ज.प्र.

झौड़-सं०पु०—१ प्रपंच। उ०—भोळा प्रांणी रांम भज, तूं तज झौड़ तमांम। दीहा छेल्है देख रे, कैसो हूं ता कांम।—र.ज.प्र.

२ टंटा, कलह। उ०—१ दांम दांम विसार निकांम झौड़ व्है उदांम। नरां जांम जांम में उचार रांम रांम।—र.ज.प्र.

यौ०—झौड़-झपाड़, झौड़-झपोड़।

झौड़-झपाड़, झौड़-झपोड़-सं०पु०यौ०—टंटा-फिसाद, झगड़ा-टंटा।

झौडौ-सं०पु०—विवरण, हाल, वृत्तान्त।

झौर—देखो 'झौरौ' (रू.भे.)

झौरापौ, झौरावौ—देखो 'झुरापौ' (रू.भे.)

झौरौ-सं०पु०—खुजलाहट, खुजली।

क्रि०प्र०—हालणो, होणो।

रू०भे०—झोरौ।

मह०—झोर, झौर।

झ्यंकारतन-सं०पु०—स्त्रियों के पैरों में पहनने का आभूषण (अ.मा.)

झ्याझ—देखो 'जांच' (रू.भे.)

झ्रंग-सं०पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—दों दों दों दपं मप द्राग्डिदिक दमकै त्रिदंग। झण रण रण भें भें भाझरि झमकित झ्रंग।—घ.व.ग्रं.

ट

ट—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला में ग्यारहवां व्यञ्जन जो टवर्ग का प्रथम वर्ण है। वह मूर्धन्य-स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग किञ्चित् मुड़ कर कठोर तालु को स्पर्श करता है। यह अघोष-अल्पप्राण है।

टं-सं०पु० [सं० टम्] १ अंकुश. २ पुत्र।
सं०स्त्री०—३ अग्नि. ४ पृथ्वी. ५ भौंहें (एका.)
वि०—गंभीर. २ वीर (एका.)

टंक-सं०पु० [सं० टकि—बंधने+घञ] १ भोजन का समय।
उ०—परजापतियां न परजा नें पाळै। टुकड़ै टुकड़ै नें टीवें टंक टाळै।—ऊ.का.
मुहा०—टंक टाळणो—जैसा-तैसा भोजन कर के समय गुजारना।
यौ०—टंक-टाळो।
२ तलवार का अग्र भाग (जैन)
[सं० टंक] ३ सिक्का (जैन) ४ एक ओर से टूटा हुआ पर्वत (जैन) ५ औषधियां तोलने के लिए काम आने वाला एक तोल (अमरत) ६ एक तोल जो चार माशे का होता है परन्तु कई इसको केवल तीन माशे का ही मानते हैं। ७ पत्थर घड़ने की टांकी, छेनी. ८ सम्पूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)
९ तलवार। उ०—१ उसं विरयों मुलतांन खां मूंछां कर घल्ले। अंचि कवादे टंक तोलि जव्वू कहि बुल्ले।—ला.रा.
उ०—२ संकन हिय रख समरण री, वेध वजा है वंक। पंक भीरु पग भव पुणे, टक-टक तोल्यां टंक।—रेवतसिंह भाटी
१० सुहागा. ११ म्यान. १२ टकसाल में सिक्के बनाने के लिए धातु को तोलने का नियत मान. १३ धनुष के कोंडी की शक्ति को आंकने के लिए प्रत्यंचा पर लटकाया जाने वाला तोल।
वि०वि०—धनुष की शक्ति को आंकने के लिए उसे लटका कर उसकी प्रत्यंचा में एक टंक जो लगभग ४½ सेर वजन के बराबर का वजन होता था, बांध कर लटकाया जाता था। इस वजन से यदि धनुष की कोंडी में खिचाव आ जाता था तो वह टंकी कहलाता था। इसी प्रकार अधिकाधिक बल से चलाये जाने वाले धनुषों की कोंडी में विशेष शक्ति के प्रयोग से ही खिचाव हो सकता था। ऐसे धनुष अठारह टंकी, इक्कीस एवं तीस टंकी आदि कहलाते थे अर्थात् इनकी कोंडी के खिचाव के लिए १८ टंक या २१ टंक के वजन के बराबर शक्ति का प्रयोग करना पड़ता था। राजस्थानी में ३६ टंकी धनुषों का विवरण मिलता है।
रू०भे०—टंकउ, टंकी, टंको।
यौ०—अठार-टंक, अढ़ार-टंक, इक्कीस-टंक, तीस-टंक, छत्तीस-टंक, टंक-परीक्षा, टंक-साळ।

टंक-अठार, टंक-अढ़ार—देखो 'अढ़ारटंकी'। उ०—१ दुइ दुइ तरकुस पासि जुवांणां। दुइ दुइ टंक-अठार कवांणा।—गु.रू.बं.
उ०—२ कसीसत टंक-अढ़ार कबांण, परी अह रूप ग्रवै सिरपांण।
—सू.प्र.

टंकउ—देखो 'टंक' (रू.भे.)

टंकण-सं०स्त्री०—१ सुहागा. २ घोड़े की एक जाति विशेष (शा.हो.)
रू०भे०—टंगण।

टंकणो—देखो 'टांकणो'। उ०—दुसमणूं कूं दाह साजणूं के मन भाए। तिस वखत होसनायकूं चाक चढ़ाय टंकणे बणवाए।—सू.प्र.

टंकपरीक्षा-सं०स्त्री०यौ०—७२ कलाओं में से एक (व.स.)

टंकणो, टंकवो—देखो 'टंगणो, टंगबो' (रू.भे.)
उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी। जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंघाळी।—ऊ.का.

टंकर—देखो 'टंकार' (रू.भे.)
उ०—सरण असरण अदण साभण। टंकर वण किय वजण दिन तिण।—सू.प्र.

टंकसाळ-सं०स्त्री०यौ०—१ वह स्थान जहां धनुष-विद्या सीखी जाती हो (व.स.) २ देखो 'टकसाळ' (रू.भे.)
उ०—जेसंघ नाणां खटिया, टंक-साळ बुहारी। खीची दस दिन वास गये, खरळां पिण चारी।—द.दा.

टंकसाळी—देखो 'टकसाळी' (रू.भे.) उ०—सवद जिहाज वंण टंकसाळी, तरि तरि सुकवि गया तिण ताळी। महण संसार तरणि वनमाळी, जोड़िस हुई तुंवाड़ां जाळी।—रुकमणी हरण

टंकाई-सं०स्त्री०—१ टांकने की क्रिया. २ टांकने का पारिश्रमिक।

टंकाअळि, टंकाउळि—देखो 'टंकावळी' (रू.भे.)
उ०—रतनजड़ित कंचुक कस, खंचित कुच दोइ सार। एकाउळि मुगताउळि, टंकाउळि गळि हार।—प्राचीन फागु संग्रह

टंकाडिलो-वि०—बहुमूल्य, कीमती। उ०—अरजन जू घन लियो सनाह। गली पैहरई टंकाडिल हार।—बी.दे.

टंकार-सं०स्त्री०—१ धनुष की प्रत्यंचा की ध्वनि।
उ०—१ वार हजार वंगाळ, विलंद तिण वार वकारे। करि कवांण टंकार, घाव सांमा पग धारे।—सू.प्र.
उ०—२ खुले हास नारंदां तमासा भांण रथां खंचे, तड़च्छै सतारा दळां हाकले तुरंग। टंकारां धांनखां वजे सत्रां घड़ां करे टूका, दूजे 'मांन' लीधो सकां गंजूह दुरंग।
—राव सवाई केसवदास परमार री गीत
२ कसे हुए तार आदि पर उंगली मारने से उत्पन्न टन-टन शब्द।
रू०भे०—टंकारव, टंकारव।

टंकारणौ, टंकारबौ—क्रि०स०—१ गिनना. २ मानना, समझना. ३ आघात से ध्वनि करना।

टंकारव—देखो 'टंकार' (रू.भे.) उ०—गोड़ीरव गैमरां, जह वहतां तळ जोड़ां। घंटारव पक्खरां हुय हींसारव घोड़ां। टौवांरव टिगटिगै, गोम गैणारव गज्जै। गुंजारव भेरियां, धनक टंकारव वज्जै।
—गु.रू.बं.

टंकारौ—सं०पु०—देखो 'टंकार' (रू.भे.)
उ०—१ चाढ़ची धनुस कियौ टंकारौ। सब्द सुण्यौ स्रीक्रसण मुरारी।
जयवांणी

टंकावळ, टंकावळि, टंकावळी—वि० [सं० टंका+आवळी] बहुमूल्य, बेश कीमती। उ०—१ दंत जिसा दाड़म-कुळी, सीस फूल सिणगार। कांनै कुंडळ झळहळइ, कंठ टंकावळ हार।—ढो.मा.
उ०—२ दीसए रवि जिस्यु राखड़ी, राखड़ी सोहए सार। कंठि ठवइं टंकावळि, एकावळि वळी हार।—प्राचीन फागु संग्रह
रू०भे०—टंकाउळि, टंकाउळी।

टंकारियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ गिना हुआ. २ माना हुआ, समझा हुआ. ३ आघात से ध्वनि किया हुआ।
(स्त्री० टंकारियोड़ी)

टंकियोड़ौ—देखो 'टंगियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टंकियोड़ी)

टंकी—सं०स्त्री०—१ पानी भरने का लोहे का बड़ा बर्तन. २ पानी भरने का वह कुंड जो दीवार उठा कर बनाया जाता है. ३ धनुष।
यौ०—अढ़ार-टंकी, इक्कीस-टंकी, तीस-टंकी, छत्तीस-टंकी।

टंकरणौ—देखो 'टखणौ' (रू.भे.) (अमरत)

टंकेत—वि०—खगधारी, कृपाणधारी। उ०—टका छीन ले टंचरा, टाट पींज टंकेत। कीड़चां संचे जेम कण, लख भख तीतर लेत।
—रेवतसिह भाटी

टंकोर—सं०स्त्री०—१ ध्वनि, आवाज। उ०—घोड़ा बांधै घूघरां, तोड़ां दए टंकोर। नाळां लए कळाइयां, लड़वा कज लंकोर।—पा.प्र.
२ देखो 'टंकोर' (मह., रू.भे.)

टंकोरियौ—देखो 'टंकोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

टंकोरी—सं०स्त्री०—देखो 'टंकोरौ' (अल्पा., रू.भे.)

टंकोरौ—सं०पु०—१ देव मंदिरों में पूजा के समय बजाया जाने वाला मिश्रित धातुओं से बना हुआ एक वाद्य विशेष।
वि०वि०—यह दो प्रकार का होता है। एक चपटा व गोल आकार का होता है जिसे पूजा के वक्त हाथ में लटका कर प्राय: लकड़ी के हथौड़े से बजाया जाता है। दूसरा मंदिर की छत में लटका रहता है जिसे दर्शनार्थी लोगों द्वारा आते-जाते समय तथा पूजा के समय बजाया जाता है. २ पशुओं के समूह में (विशेष कर गायों के) किसी एक मुख्य पशु के गले में लटकाया जाने वाला घंटा। इसकी बनावट देव मंदिरों की छत में लटकाये जाने वाले घंटे से मिलती-जुलती होती है। ३ हाथी की झूल के बांधा जाने वाला घंटा। यह हाथी की झूल के दोनों ओर झूल के पट्टे से लटकाये जाते हैं।
रू०भे०—टकोरौ, टिकोरौ, टोकरौ।
अल्पा०—टंकोरियौ, टंकोरी, टिकोरियौ, टिकोरी, टोकरियौ, टोकरी।
मह०—टंकोर, टकोर, टिकोर, टोकर।

टंकौ—१ देखो 'टंक' (रू.भे.)
उ०—ब्राह्मण नइ नळइ आपीउं सोवन टंका लाख। आगता स्वागति घणी, मीठा बोलु द्राख।—नळ-दवदंती रास
२ देखो 'टकौ' (रू.भे. प्राचीन) (उ.र.)

टंग—देखो 'टांग' (मह., रू.भे.)

टंगड़ी—देखो 'टांग' (अल्पा., रू.भे.)

टंगण—देखो 'टंकण' (रू.भे.)

टंगणौ, टंगबौ—क्रि०अ०—टंगना, लटकना।
टंगणहार, हारौ (हारी), टंगणियौ—वि०।
टंगिओड़ौ, टंगियोड़ौ, टंग्योड़ौ—भू०का०कृ०।
टंगीजणौ, टंगीजबौ—भाव वा०।
टंकणौ, टंकबौ—रू०भे०।

टंग-पांणी—सं०पु० [सं० टङ्कपाणि] ४६ क्षेत्रपालों में से २७ वां क्षेत्रपाल

टंगलौ—वि०—जो पैरों से चलने में असमर्थ हो।

टंगियोड़ौ—भू०का०कृ०—टंगा हुआ, लटका हुआ।
(स्त्री० टंगियोड़ी)

टंच—वि०—१ तैयार, प्रस्तुत।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
२ कृपण, कंजूस। उ०—टका छीणाले टंच रा, टाट पींज टंकेत। कीड़चां संचे जेम कण, लख भख तीतर लेत।—रेवतसिंह भाटी

टंचणौ, टंचबौ—क्रि०अ०—'टांचणौ' क्रिया का अकर्मक रूप।

टंचर—सं०पु०—शीश, शिर (अल्पा.)
उ०—मालम नहीं, आ कांई रीत चाल पड़ी? एक तौ घर रौ जीव जावै, बीजौ खरचै-सूं टंचर पाखती में कूटीजै।—वरसगांठ

टंट, टंटी—सं०स्त्री०—घुटने से नीचे का भाग।
मुहा०—टंटियां भिड़णी, टंटियां लड़णी—कमजोरी के कारण चलते समय पैरों का आपस में टकराना।

टंटेर—सं०पु०—मरे पशु का अस्थि-पंजर।

टंटोळणौ, टंटोळबौ—क्रि०स०—ढूंढ़ना, खोजना।
उ०—१ किरड़ा कर रिमझोळ, डोळ डाळ्यां रंग घोळै। ऊंदरियां री ओळ, कोळ बिल जड़ां टंटोळै।—दसदेव
उ०—२ सबद कहत रसना अटकत, नटत घटत नहिं घाट। लटकि लटकि लुटि लुटि उठत, तकत टंटोळत खाट।—ह.पु.वा.
२ थाह लेना. ३ परखना, आजमाना।
टंटोळणहार, हारौ (हारी), टंटोळणियौ—वि०।
टंटोळणौ, टंटोळबौ—सं०रू०।
टंटोळावणौ, टंटोळावबौ—प्रे०रू०।

टंटोड़ियोड़ो, टंटोड़ियोड़ो, टंटोड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
टंटोड़ीजणो, टंटोड़ीजबो—कर्म वा० ।
टंटोड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ टूटा हुआ. २ याद लिया हुआ. ३ परखा हुआ, आजमाया हुआ ।
(स्त्री० टंटोड़ियोड़ी)
टंटो-सं०पु०—उपद्रव, कलह, झगड़ा, तकरार, लड़ाई ।
क्रि०प्र०—करणो ।
मुहा०—टंटो गाडो करणो—झगड़ा उत्पन्न करना ।
यो०—झगड़ो-टंटो ।
टंडीरो, टंडेरो-सं०पु०—घरेलू सामान (शेखावाटी)
टंपणो, टंपबो-क्रि०अ०—छलांग भरना, कूदना ।
टंपायोड़ी-सं०स्त्री०—बच्चों का खेल विशेष (शेखावाटी)
टंपाड़णो, टपाड़बो—देखो 'टंपाणो, टंपावो' (रू.भे.)
टंपाड़ियोड़ो—देखो 'टंपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० टंपाड़ियोड़ी)
टंपाणो, टंपावो-क्रि०स० ('टंपणो' क्रिया का प्रे०रू०) छलांग भराना, कुदाना ।
टंपाड़णो, टंपाड़बो, टंपावणो, टंपावबो—रू०भे० ।
टंपायोड़ो-भू०का०कृ०—छलांग भराया हुआ, कुदाया हुआ ।
(स्त्री० टंपायोड़ी)
टंपावणो, टंपावबो—देखो 'टंपाणो, टंपावो' (रू.भे.)
उ०—सेसनाग फण कुण कंपावइ, सीस मूं कवण अस्व टंपावइ ।
—विराटपर्व
टंपावियोड़ो—देखो 'टंपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० टंपावियोड़ी)
टंपियोड़ो-भू०का०कृ०—छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ ।
(स्त्री० टंपियोड़ी)
टंमको-सं०पु०—१ ध्वनि. २ शब्द, आवाज. ३ नगाड़ा. ४ चमक, हलका प्रकाश ।
ट-सं०पु०—१ मोढा. २ देवदार. ३ पीपल. ४ चांदी (एका.)
टओबो-सं०पु०—पेंदा, तल ? उ०—तठै कूंभो तिसियो आयो नै कह्यो—डोकरी, दूध पांणी पाय । तरै गूजरी कह्यो—कूंभा बेटा ! मांहे चालि, टओबा को दूध छै ।—राव रिणमल री वात
टक-सं०स्त्री०—१ ताक लगा कर बिना पलक बंद किये निरंतर देखने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी ।
मुहा०—टक टक देखणो—निरंतर देखना. २ टक लगाणी—प्रतीक्षा करना, ध्यान से किसी वस्तु को देखते रहना ।
रू०भे०—टुक ।
२ तक, पर्यन्त । उ०—सीस जकण री सोभियो, नाळेर नेहारां । पलकां सिर सूं ऊतरी, टक एडी तारां ।—दरजी मयाराम री वात
३ स्थिति । उ०—दूजा कुछ मांगै नहीं, हमको दे दीदार । तू है तब-लग एक टक, दादू के दिलदार ।—दादू बांणी
४ देखो 'टंक' । उ०—स्वांमी जी पूछ्यो थांरा मुनि आहार करै कै नहीं, करै जब त्यां कहै एक टक करै ।—भि.द्र.
५ क्षण, पलक ।
यो०—टकअेक, टकेक ।
६ देखो 'ठक' (रू.भे.)
टकअेक, टकेक-क्रि०वि०—पलक भर, अनिमिष दृष्टि ।
उ०—जद भांमण टकएक झरोखै मींट समप्पै । काठी करतो बीज गाज मिस मेघ पयंपै ।—मेघ.
टकटकणो, टकटकबो, टकटकाणो, टकटकावो—क्रि०स० (अनु०) १ स्थिर दृष्टि से देखना, एकटक ताकना. २ टक-टक शब्द उत्पन्न करना ।
रू०भे०—टकटक्कणो, टकटक्कबो ।
टकटकी-सं०स्त्री० (अनु०) ऐसी स्थिर दृष्टि जिसमें बहुत देर तक पलकें नहीं गिरें ।
क्रि०प्र०—लगणी, लगाणी ।
रू०भे०—टकटक्की, टिकटिकी ।
टकटक्कणो, टकटक्कबो—देखो 'टकटकणो, टकटकबो' (रू.भ.)
टकटक्की—देखो 'टकटकी' (रू.भे.)
टकटक्कौ-वि०—चकित, स्तंभित ।
टकणो, टकबो—देखो 'टिकणो, टिकबो' (रू.भे.)
उ०—अर जे बळात्कार सूं पुत्री रो पांणिग्रहण वणै तो विक्रम रा वंस रो रजपूतपणो न टकियो ।—वं.भा.
टकतंत्री-सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन तार वाद्य जो सितार के ढंग का होता था ।
टकर—देखो 'टक्कर' (रू.भे.) उ०—टकर दियै भड़ त्यां 'पता', फिकर न जावै फेर । कर ऊंचो नह कर सकै, हव तो धक्के हेर ।
—जैतदांन बारहठ
टकरणो, टकरबो-क्रि०अ०—टकरा जाना ।
टकराणो, टकरावो-क्रि०अ०—१ वेग से भिड़ना, धक्का या ठोकर लेना, टकराना. २ कार्य सिद्धि के हेतु मारा-मारा फिरना ।
मुहा०—माथो टकराणो—किसी के पैरों पर सिर लगा कर अनुनय-विनय करना । किसी कार्य-सिद्धि के हेतु घोर परिश्रम करना अथवा प्रयत्न करना, परेशान होना ।
क्रि०स०—३ मिलान करना, जांच करना ।
टकराणहार, हारो (हारी), टकराणियो—वि० ।
टकरवाड़णो, टकरवाड़बो, टकरवाणो, टकरवावो, टकरवावणो, टकर-वावबो—प्रे०रू० ।
टकरायोड़ो—भू०का०कृ० ।
टकराईजणो, टकराईजबो—कर्म वा० ।
टकरीजणो, टकरीजबो—भाव वा० ।

टकराड़णौ, टकराड़बौ, टकरावणौ, टकराववौ—रू०भे०।

टकरायोड़ो–भू०का०कृ०—१ वेग से भिड़ा हुआ, धक्का या ठोकर खाया हुआ, टकराया हुआ. २ कार्य सिद्धि के हेतु मारा-मारा फिरा हुआ. ३ मिलान किया हुआ, जांच किया हुआ।

(स्त्री० टकरायोड़ी)

टकरावणौ, टकराववौ—देखो 'टकराणौ, टकरावौ' (रू.भे.)

टकरावियोड़ो–भू०का०कृ०—देखो 'टकरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० टकरावियोड़ी)

टकरियोड़ो–भू०का०कृ०—टकरा गया हुआ।

(स्त्री० टकरियोड़ी)

टकसाळ–सं०स्त्री०—१ वह स्थान जहां सिक्के बनाये या ढाले जाते हैं।

मुहा०—१ टकसाळ चढ़णी–प्रवीण होना, कुशल होना, निर्लज्ज होना, नीच होना, बदमाश होना, सिक्के या धातु खंड को आजमाना, परखना. २ टकसाळ रौ खोटौ–जन्म से ही नीच, बुरा. ३ टकसाळ रौ पक्कौ–दक्ष, प्रवीण, होशियार. ४ टांगां विचै टकसाळ होणी—कुलटा का पैसे के लिए व्यभिचार करना।

रू०भे०—टंकसाळ।

टकसाळी, टकसाळीक–वि०—१ जो टकसाल में बना हो, खरा, अच्छा। २ सर्व सम्मत, प्रामाणिक, जांच किया हुआ।

मुहा०—१ टकसाळी वात करणी—सही बात करना जो सबको मान्य हो, जंची तुली बात करना. २ टकसाळी बोली–दोष रहित भाषा, व्यावहारिक भाषा, शिष्ट भाषा, सर्व सम्मत भाषा. ३ पठित वैरागी (साधु)। उ०—पूरव में पढ़ै वैरागी टकसाळी कहावै, अपढ़ै अड़बंगी कहावै।—बां.दा.ख्यात

सं०पु०—टकसाल का कर्मचारी, अधिकारी अथवा अध्यक्ष।

रू०भे०—टंकसाळी।

टकांणी–सं०स्त्री०—गाड़ी की दोनों बाहुओं की ओर निकला हुआ गुटका जो चक्र के ऊपर रहने वाले डंडों को रोकता है।

रू०भे०—टाकांणी।

टकाणी, टकावौ—देखो 'टिकाणी, टिकावौ' (रू.भे.)

टकायोड़ो—देखो 'टिकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० टकायोड़ी)

टकार–सं०पु०—'ट' अक्षर।

टकावळ—देखो 'टंकावळ' (रू.भे.)

उ०—हार टकावळ हींडळै, उण मोल अपारां। हीया सनेहा हेतका, अमीयांण ठैयारां।—दरजी मयाराम री वात

टकियाई, टकियांरी–सं०स्त्री०—वह स्त्री जो टके-टके के लिए व्यभिचार कराती हो, टकहाई।

टकियारौ–सं०पु०—अत्यधिक लालची, नीच, धन-लोलुप, शूद्र।

टकियोड़ो—देखो 'टिकियोड़ो' (रू.भे.)

टकोर–सं०स्त्री०—१ टकोरे पर लगने वाली डंके की चोट या इससे उत्पन्न ध्वनि. २ धनुष की प्रत्यंचा खींच कर छोड़ने से उत्पन्न शब्द।

टकोरौ—देखो 'टंकोरौ' (रू.भे.)

उ०—हुंकारव कर नाळ टकोरां लाग चपेटां, रुड़ त्रवाट ओग्राज लियै गजराज लपेटां।—साहबौ सुरतांणियौ

टकौ–सं०पु०—१ दो पैसों के बराबर का तांबे का बना एक सिक्का, अधन्ना, दो पैसे।

मुहा०—१ टका वाळौ—रुपये पैसे वाला, धनी. २ टका करणा—धन प्राप्त करना, धन कमाना, किसी वस्तु को बेच कर रुपये प्राप्त कर लेना, टैक्स वसूल करना. ३ टका खरचणा धन खर्च करना, रुपया-पैसा व्यय करना. ४ टका घड़णा—धनोपार्जन करना. ५ टका टका रा पाजी—किंचित स्वार्थ के लिए तुच्छ कार्य करने वाले. ६ टका होणा—धनी, रुपये-पैसे वाला. ७ टकै जेड़ौ मूंडौ करणौ—खिसिया जाना, लज्जित होना. ८ टकै पांवडा भरणा—अत्यधिक लालची होना. ९ टकै टकै री नैत (न्यूत) होणी—मेल-जोल नहीं रहना. १० टकै री ईजत—अप्रतिष्ठित, कम इज्जत, मान-प्रतिष्ठा रहित. ११ टकै री जबांन—जिसकी बात का कोई विश्वास न हो. १२ टकै रौ करणौ—तुच्छ बना देना, नगण्य कर देना. १३ टकै रौ होणौ—तुच्छ हो जाना, नगण्य बन जाना. १४ टकौ नी होणौ—निर्धन होना. १५ टकौ मां-बाप—सब कुछ पैसा ही, पैसे को महत्व. १६ टकौ हंसै, टकौ करै—सब रुपये की माया।

कहा०—टकै आळी री झूंझणियौ वाजसी—पैसे वाली का बच्चा ही खिलौने से खेलेगा, पैसे वाले का कार्य ही सफल होता है। २ टकै बींद, मौ'र जांनी—दूल्हे का मूल्य टके के समान किन्तु बराती का मोहर के समान। शादियों के समय जब अधिक बरातें निकलती हैं तो बरातियों की कमी पड़ने पर कहा जाता है अर्थात् समय आने पर नगण्य वस्तु गण्य से अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है. ३ टकै री हांडी फूटी, गंडक री जात पिछांणी—टके की हांडी तो टूट गई किन्तु कुत्ते की पहिचान हो गई। एक बार धोखा खाने पर भविष्य में सावधान हो जाना. ४ टकै री नेतियार नै थांम हेठै झाड़ै जाऊं—बहुत साधारण आदमी और पवित्र स्थान पर शौच जाना चाहे अर्थात् बहुत साधारण व्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने की अनधिकार चेष्टा के प्रति व्यंग्योक्ति. ५ टकौ दाई लेगी नै कूंडौ फोड़गी—जन्म के वक्त पैसे तो दाई ले गई और कूंडा फोड़ गई, गुणहीन व्यक्ति के लिए. ६ टकौ लाग्यौ न पातड़ो, घर में भू दड़कदे आ पड़ी—दुल्हन वाले धनवान होने से दूल्हे के पिता को बिना कुछ व्यय किये ही वधू मिल गई अर्थात् दूसरों के बल से कार्य बना लेना. ७ दमड़ी री डोकरी नै टकौ सिर मुंडाई रौ—पैसे के मूल्य की वृद्धा और शिर मुंडाई के दो पैसे अर्थात् तुच्छ वस्तु पर अधिक व्यय करना. ८ पईसै री भाजी नै टकै रौ वघार—एक पैसे की सब्जी में दो पैसे का वघार अर्थात् तुच्छ वस्तु पर अधिक खर्च।

मि०—'दमड़ी री डोकरी नै टको सिर मुंडाई रो' ।

६ बींद मरो बींदणी मरो बांमण रो टको सरो—शादी करवाने के पश्चात् भले ही दूल्हा या दुलहिन मर जाओ किन्तु ब्राह्मण ने तो अपने पैसे प्राप्त कर ही लिये अर्थात् भविष्य में कार्य बिगड़ जाने की परवाह नहीं करते हुए वर्तमान में अपनी स्वार्थ-सिद्धि करने की चेष्टा।

यौ०—पईसौ-टकौ।

२ दो बालाशाही पैसों के बराबर की एक तोल।

मुहा०—टकै भर—टके के बराबर की तोल जो दो बालाशाही पैसों के बराबर होती है।

३ कर, टैक्स। उ०—१ तद रावजी कूंच कियौ सो छोटी सी मजल करै, कठै ही मुकाम करता जावै, सारै देस रै सिर टका करता जावै।—नापै सांखलै री वारता

उ०—२ सो परगना रो ही टकौ मांगै, चाकरी जे करावै सो इण भांत तौ टूटता जावां छां।—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—३ लोक रै माथै टकौ कियौ दिन पंद्रह लखेरै में रहियौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—टंकौ।

टक्कदेस—सं०पु० [सं० टक्कदेश] एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो चिनाब और व्यास के बीच में था।

टक्कर—सं०स्त्री०—१ दो वस्तुओं का वेग के साथ आपस में भिड़ जाने का आघात। किसी वस्तु से वेग से आती हुई दूसरी वस्तु का भिड़ जाने का धक्का, ठोकर। उ०—आडा दळ टक्कर हूंत उडाय। जडा दळ बीच कियौ जुध जाय।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, लागणी, लेणी।

मुहा०—१ टक्कर खाणी—इधर-उधर भटकते फिरना, लोहा लेना. २ टक्कर देणी—मुकाबिला करना, समानता दिखाना. ३ टक्कर रो—बराबरी का, समान।

२ घाटा, नुकसान, धक्का, हानि।

मुहा०—१ टक्कर झेलणी—घाटा सहन करना, नुकसान उठाना. २ टक्कर लागणी—नुकसान पहुँचना, घाटा आना।

रू०भे०—टकर, टाकर।

टक्कूणी, टखणी—सं०पु०—एड़ी के ऊपर उठी हुई हड्डी की ग्रंथि, (गांठ), पादग्रंथि, पैर का गट्टा।

पर्या०—गिरियौ, गुलफ, घुट, टक्कूणी।

रू०भे०—टंकूरणौ।

टग—सं०स्त्री०—वह टुकड़ा या खंड जो किसी वस्तु को ऊंचा रखने के लिए या रोकने के लिए या सहारे के निमित्त लगाया जाता हो।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

मुहा०—१ टग करणी—खिल्ली उड़ना, व्यंग्य कसना. २ टग लगाणी—सहारा देना (विशेष तौर से लड़ाने-भिड़ाने के कार्यों में)।

रू०भे०—टग्ग।

टगटग—क्रि०वि०—मन्द गति से, धीमी चाल से।

उ०—टगटग मैं'लां जी क चनणा ऊतरी जी, कोई गई गई रामूड़ा री हाट, ढावयौ तौ फळसौ खोल दे हो जी।—लो.गी.

टगटगणौ, टगटगबौ—क्रि०स०—स्थिर दृष्टि से देखना, ताकना, टकटकाना। उ०—घर सूं उमगै दाव घड़, अब मगै अविचार। पग लगै फाटक पछै, निज टगटगै निहार।—चैतदांन बारहठ

रू०भे०—टगटगाणौ, टगटगाबौ।

टगटगाट, टगटगाटौ—सं०पु०—(गिलहरी की) ध्वनि विशेष।

कहा०—टीली रा टगटगाटा कुण सुणै।

टगटगाणौ, टगटगाबौ—देखो 'टगटगणौ, टगटगबौ' (रू.भे.)

टगटगी, टगटग्गी—सं०स्त्री० (अनु०) स्थिर दृष्टि जिसमें बहुत देर तक पलकें न गिरें, आश्चर्यपूर्वक देखने का भाव, अनिमेष दृष्टि, टकटकी।

उ०—१ रिमां पाड़ै भगी तगी वागां रमै, दुझल मांझल लगीं चूंप दावां। धज विलंद देख सूमां चढ़ी धगधगी, ठगठगी टगटगी लगी ठावां।—वखतौ खिड़ियौ

उ०—२ ऊभा दास खिजमती आगी। ताव वितावं लखै टगटग्गी।
—रा.रू.

क्रि०प्र०—बंधणी, बांधणी, लागणी।

टगण—सं०पु०—छंद शास्त्र में छः मात्राओं का मात्रिक गण। इसके कुल १३ भेद होते हैं।

टगमग—सं०स्त्री०—विशेष प्रकार से देखने की क्रिया या भाव।

उ०—एतला देख अचिरज हुवै, रोमंचै सुर नर सवै। सुप्रसाद कीध जैसिंघ ते, टगमग चाहै चक्खवै।—नैणसी

टगै—सं०पु०—घोड़े या घोड़ी की अपनी चाल से चलते-चलते अचानक रुक जाने की क्रिया।

क्रि०प्र०—आणौ, होणौ।

टगौ—सं०पु०—विशेष अवसर, समय।

क्रि०प्र०—आणौ, होणौ।

टग्ग—देखो 'टग' (रू.भे.) उ०—भाटा, तूं सभागियौ, पीछोला री टग्ग। गुललंजा पांणी भरै, ऊपर दे-दे पग्ग।—महादांन महड़ू

टचटच—सं०स्त्री०—बड़े बूढ़ों के सम्मुख स्त्रियों द्वारा संकेत स्वरूप किया जाने वाला शब्द, चुपके से इशारा करने का शब्द।

टचरकौ—सं०पु०—कहा-सुनी, झगड़ा, टंटा, लड़ाई।

टच्च—क्रि०वि०—झट, तुरंत, शीघ्र। उ०—खीरां मेली खीचड़ी नै टीलौ आयौ टच्च।

देखो 'खीचड़ी' (कहा० २)

टटपूंजियौ—वि०यौ०—कम पूंजी वाला, तुच्छ, निकम्मा, साधारण।

उ०—'कांई कैवै है घरां-रा गूदड़ा? माईत मूरख हा कांई? इयां टटपूंजियां-में-ईज अक्कल घणी?'—वरसगांठ

टटियौ—देखो 'टट्टू' (अल्पा., रू.भे.)

टटोळणौ, टटोळबौ—देखो 'टंटोळणौ, टंटोळबौ' (रू.भे.)

टटोळियोड़ौ—देखो 'टंटोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टटोळियोड़ी)

टट्टी-सं०स्त्री०—१ पाखाना, शौच ।
क्रि०प्र०—जाणौ ।
मुहा०—टट्टी समझणौ—तुच्छ समझना ।
२ पाखाना जाने का स्थान. ३ देखो 'टाटी' (रू.भे.)
उ०—लोभी लपक गोळ कप लेवण, चक्कर अस्व चलावै। वाटर जंप उलंघ वावरो, केइक टट्टी कुदावै ।—ऊ.का.

टट्टू-सं०पु०—१ छोटे कद का घोड़ा जो वोझा ढोने में मजवूत होता है. २ शिश्न ।

टट्टौ-सं०पु०—'ट' अक्षर ।
अल्पा०—टटियौ ।

टडियौ—देखो 'टड्डौ' (अल्पा., रू.भे.)

टडौ—देखो 'टड्डौ' (रू.भे.)

टड्डणौ, टड्डबौ—देखो 'ताड़ूकणौ, ताड़ूकबौ' (रू.भे.)

टड्डियोड़ौ—देखो 'ताड़ूकियोड़ौ' (रू.भे.)

टड्डौ-सं०पु०—सोने या काच का वना हुआ एक आभूषण जिसे स्त्रियां भुजा पर धारण करती हैं ।
रू०भे०—टडौ
अल्पा०—टडियौ ।

टणंकार—देखो 'टणकार' (रू.भे.)

टणंकारौ-सं०पु०—ध्वनि विशेष, आवाज ।

टण-सं०स्त्री०—१ घण्टा वजने की ध्वनि या शब्द।
मुहा०—टणटण गोपाळ। देखो—'ठणठण गोपाळ'।
२ देखो 'टणौ' (मह., रू.भे.)

टणकचंद, टणकचंदजी, टणकसींग, टणकसींघ-वि०—वलवान, जवरदस्त, मान-मर्यादा वाला ।

टणकां-री-टग-वि०यौ०—वलवानों का सहारा, शक्तिशाली, सामर्थ्यवान। मि०—टग ।

टणकाई-सं०स्त्री०—वल, शक्ति, सामर्थ्य ।
क्रि०प्र०—करणी, देखणी, राखणी ।

टणकार-सं०स्त्री०—धातु पर आघात पहुँचने से उत्पन्न ध्वनि, आवाज।
उ०—अळगा उडै खंख रा गोट, टोकरां टणमणती टणकार। खुड़कै गायां हुंदा लांठ, सुणाजै वंसी री झणकार ।—सांझ
रू०भे०—टणंकार ।

टणकेल, टणकैल—देखो 'टणकौ' (मह., रू.भे.)

टणकौ-सं०पु० (वहु व० टणका) स्त्रियों के पैरों में धारण करने का चांदी का वना एक आभूषण ।
वि०पु०—(स्त्री० टणकी) १ जवरदस्त, वलवान, शक्तिशाली ।
उ०—१ अमल गळियोड़ौ है सो छैली वखत री ले लौ पछै जुद्ध करसां, जमी अठै इज है कठै ई जावै नहीं, टणका होसी वै अपणाय लेसी ।—वी.स.टी.
उ०—२ रावजी कही सिंघु टणकौ छै तूं धीरज करै जितरै म्हे आवां। —नापै सांखलै री वारता
२ खूव लम्वा-चौड़ा, अधिक विस्तार का ।
उ०—टणका टणका तरु जरवै टुरि जावै। दुरव्वां गुरव्वा गुण गरवै दुर जावै ।—ऊ.का.
३ दीर्घ, महान्, विशाल। ज्यूं—उदैपुर रौ जयसमंद वड़ौ टणकौ है।
मह०—टणकेल, टणकैल ।

टणटणाणौ, टणटणावौ-क्रि०स०—किसी धातु खण्ड पर आघात कर के टनटन की ध्वनि अथवा शब्द उत्पन्न करना, टनटनाना।

टणणंक-सं०स्त्री०—एक ध्वनि विशेष, धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने से उत्पन्न ध्वनि ।

टणणंकणौ, टणणंकवौ-क्रि०अ०—घंटों व नगाड़ों की ध्वनि होना, टनटन वजना। उ०—चणणंकै भड़ चिहुर छीजि कातर छणणंकै। टणणंकै टामंक भ्रमर फीलां भणणंकै ।—वं.भा.

टणमण-सं०स्त्री०—१ लटकने वाली छोटी घंटी की ध्वनि, यह प्रायः पशुओं के गले में लटकाई जाती है। उ०—१ वाजै टणमण टोकरियां रै चांपो चारै गोरी। पावण लायौ पीच डांगरा वाटां जोवै थारी ।—चेतमांनखा
उ०—२ हळ थळ वाखळ में वळवळ थळ हेरै। टणमण टोकरिया वळधां गळ टेरै ।—ऊ.का.

टणमणणौ, टणमणवौ-क्रि०अ०—टकोरे या घंटे की ध्वनि होना ।
उ०—अळगा उडै खंख रा गोट, टोकरां टणमणती टणकार। खुड़कै गायां हुंदा लांठ, सुणाजै वंसी री झणकार ।—सांझ

टणियौ—देखो 'टणौ' (अल्पा., रू.भे.)

टणौ-सं०पु०—स्त्री की योनि के दोनों किनारों के वीच उभरा हुआ मांस का टुकड़ा ।
रू०भे०—टैणौ ।
अल्पा०—टणियौ, टुणियौ ।
मह०—टण ।

टप-सं०स्त्री०—१ वूंद के टपकने का शब्द। उ०—१ टपटप टपकै नैण दिरघड़ला हिवड़ौ भर भर आवै। म्हारा राजींडा री पल पल ओळूं आवै ।—लो.गी.
उ०—२ चमचम चमकै वीजळी, टपटप वरसे मेह। घर भादू विलखत तजो, भलौ निभायौ नेह ।—लो.गी.
मुहा०—टप देती रौ—झट से, फुर्ती से ।
२ पानी रखने का नांद के आकार का खुला वर्तन. ३ तांगे के ऊपर का मोटे कपड़े का वना हुआ ओहार या सायवान जो आवश्यकतानुसार चढ़ाया व गिराया जा सकता है।
क्रि०प्र०—गिराणी, चढ़ाणी, चाढ़णी ।
४ छोटी झोंपड़ी। उ०—तंवू तौ भीजै घरमी टप चूवै, भीजै सोळा सिणगार ओ ।—लो.गी.

रू०भे०—टिप ।

टपक-सं०स्त्री०—१ बूंद-बूंद टपकने या गिरने का भाव.

२ शीघ्र, जल्दी ।

यौ०—टपक-टपक ।

टपकणो, टपकबो-क्रि०अ०—१ तरल पदार्थ का बूंद-बूंद गिरना ।

उ०—१ छपर पुराणो भंवरजी पड़ गयो जी कोई टपकण लाग्या एजी ए जूण, अब घर आवो आसा थांरी लग रही जी ।—लो.गी.

उ०—२ टपटप टपकै नैण दोरघड़ा, हिवड़ो भर-भर आवै । म्हारा राजीड़ा री पल-पल ओळूं आवै ।—लो.गी.

२ फल का पक कर अपने आप पेड़ से गिरना ।

मुहा०—टपकणी, टपक पड़णी—अनायास आ जाना, अचानक उपस्थित हो जाना ।

३ किसी भाव का प्रतीत होना, आभास पाना, झलकना ।

टपकणहार, हारो (हारी), टपकणियो—वि० ।

टपकवाड़णो, टपकवाड़बो, टपकवाणो, टपकवाबो, टपकवावणो, टपकवावबो—प्रे०रू० ।

टपकाड़णो, टपकाड़बो, टपकाणो, टपकाबो, टपकावणो, टपकावबो—क्रि०स० ।

टपकिग्रोड़ो, टपकियोड़ो, टपक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

टपकीजणो, टपकीजबो—भाव वा० ।

टपकलो—देखो 'टपको' (रू.भे.)

टपकाड़णो, टपकाड़बो—देखो 'टपकाणो, टपकाबो' (रू.भे.)

टपकाड़ियोड़ो—देखो 'टपकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० टपकाड़ियोड़ी)

टपकाणो, टपकाबो-क्रि०स०—बूंद-बूंद गिराना ।

टपकाणहार, हारो (हारी), टपकाणियो—वि० ।

टपकवाड़णो, टपकवाड़बो, टपकवाणो, टपकवाबो, टपकवावणो, टपकवावबो—प्रे०रू० ।

टपकायोड़ो—भू०का०कृ० ।

टपकाईजणो, टपकाईजबो—कर्म वा० ।

टपकणो, टपकबो—अक०रू० ।

टपकाड़णो, टपकाड़बो, टपकावणो, टपकावबो—रू०भे० ।

टपकायोड़ो-भू०का०कृ०—टपकाया हुआ, गिराया हुआ ।

(स्त्री० टपकायोड़ी)

टपकार-सं०स्त्री०—किसी सुंदर प्राणी या वस्तु पर पड़ कर उसे खराब कर देने वाला दृष्टि का कल्पित प्रभाव, नजर ।

क्रि०प्र०—लागणी, होणी ।

रू०भे०—टुंकार ।

टपकावणो, टपकावबो—देखो 'टपकाणो, टपकाबो' (रू.भे.)

टपकावियोड़ो—देखो 'टपकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० टपकावियोड़ी)

टपकियोड़ो-भू०का०कृ०—टपका हुआ, गिरा हुआ ।

(स्त्री० टपकियोड़ी)

टपको-सं०पु०—१ टपकने वाली बूंद, छींटा । उ०—इणरै लोटै मांही थी पांणी रा टपका पड़ता ।—भि.द्र.

२ टपकी हुई वस्तु ।

रू०भे०—टपो, टप्पो, टबकू, टिपको, टिबको, टुबको, टोपो ।

टपटप—देखो 'टिपटिप' (रू.भे.)

टपटपणो, टपटपबो—देखो 'टपकणो, टपकबो' (रू.भे.)

उ०—विरखां ! टपटपीग्रांह, विण बादळ विछुटीग्रां, ग्रांखे ग्राभ थयांह, नेह तुम्हारे साहिबा ।—ढो.मा.

टपर—देखो 'टपरी' (मह., रू.भे.)

टपरियो—देखो 'टपरी' (अल्पा., रू.भे.)

टपरी-सं०स्त्री०—१ घास-फूस का बना झोंपड़ा । उ०—ग्रै महल-माळिग्रा थारै, थारी बरोबरी म्हे करां स कोग्री, टूटी टपरी म्हारै ।—लो.गी.

२ छप्पर, छांन ।

अल्पा०—टपरियो, टपरो ।

मह०—टपर, टप्पर ।

टपरो-सं०पु०—देखो 'टपरी' (अल्पा., (रू.भे.)

टपली-सं०स्त्री०—१ छोटा खाट. २ सिर, टाट (अल्पा.)

टपसियो, टपसो-सं०पु०—छोटी झोंपड़ी (अल्पा.)

टपाक-क्रि०वि०—जल्दी, झट, शीघ्र ।

मुहा०—टपाक देती रो—अचानक, अनायास ।

टपाटप-सं०स्त्री०—१ निरंतर आघात पहुँचाने से उत्पन्न ध्वनि ।

२ बूंद-बूंद गिरने या टपकने का भाव ।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी ।

टपूकड़ो-सं०पु०—१ किसी तरल पदार्थ की बूंद ।

उ०—सातमैं पाताळ वासंग नागरै माथै टपूकड़ा खाइ नै रहिग्रा छै ।—रा.सा.सं.

२ सिंह, शेर (मेवाड़)

टपो—१ देखो 'टिप्पो' (रू.भे.) २ देखो 'टपको' (रू.भे.)

उ०—गवीजै लूहरां टपा भावन गहर, विरह-जन विरह छीजै वरांण । दुबारां छाक पीजै 'ग्ररस' दूसरा, रैणवां दिरीजै दरस रांण ।—चिमनजी ग्राढ़ो

टप्प-सं०स्त्री०—१ शीघ्र, जल्दी । उ०—खीरां मेली खीचड़ी नै टीलो ग्रायो टप्प ।

टप्पर-सं०पु०—देखो 'टपरी' (मह., रू.भे.)

टप्पो—१ देखो 'टिप्पो' (रू.भे.) २ देखो 'टिपको' (रू.भे.)

टब-सं०स्त्री०—१ नांद के आकार का पानी रखने का एक प्रकार का खुला बरतन. २ उपाय, तरकीब । उ०—म्हे घणी इज खप कीवी, पिण कांई टब लागी नहीं ।—भि.द्र.

क्रि०प्र०—लागणी ।

टबकड़ौ—देखो 'टबूकौ' (अल्पा., रू.भे.)

टबकियौ–सं०पु०—१ छोटी डलिया. २ मिट्टी का छोटा वर्तन ।

टबकु, टबकौ—देखो 'टपकौ' (रू.भे.) उ०—१ जिस्यु वीज नुं झबूकु, पोहणिनिइं पांणी तणउ टबकु ।—व.स.

उ०—२ सु उण कूंपा माहि था टबकौ ? छण नै पड़ियौ, तिकौ देवराज री कटारी रै लागौ, सु लोह री थी सु सोना री हुई ।—नैणसी

अल्पा०—टबरकौ ।

टबक्क–सं०पु०—शब्द, ध्वनि, रव । उ०—दादुर-मोर टबक्क घण, वीजळड़ी तरवारि । सूती सेजइं एकली, हइ हइ दइव म मारि ।
—ढो.मा.

टबक्कड़ौ—देखो 'टबूकौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तंती ताल टबक्कड़ा, मद्दल वंस विसाळ । निरति करइ नव राग मां, मांडी मस्तक थाळ ।
—मा.कां.प.

टबरकौ—देखो 'टबकौ' (अल्पा., रू.भे.)

टबारौ–सं०पु०—जीवनयापन, गुजारा, गृह कार्य, काम, ढंग, व्यवस्था
क्रि०प्र०—करणौ, चलाणौ (हालणौ) ।

टबूकणौ, टबूकवौ—देखो 'टपकणौ, टपकवौ' (रू.भे.)

उ०—ढोल वळाव्यउ हे सखी, झीणी उडुइ खेह । हियड़उ बादळ छाइयउ, नयण टबूकइ मेह ।—ढो.मा.

टबूकौ, टबूक्कौ–सं०पु०—१ संगीत की ध्वनि ।

उ०—१ अेक सुस्वर मुखि आलवइ, राग तणा रस जेह । मधुरि-मधुरि करि चालवइ, तंति टबूका तेह ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ सेजि समारांसि सुंदरी, वापी मांहि विसाळ । झणि आई जळ यंत्रणी, तंति टबूक्का ताल ।—मा.कां.प्र.

२ बूंद ।

अल्पा०—टबकड़ौ, टबक्कड़ौ ।

टब्बर–सं०पु० [सं० तर्पर:] कुटुंब, परिवार ।

टब्बा–सं०स्त्री०—राजस्थानी भाषा में संक्षिप्त भाषानुवाद का नाम ।

टमंकणौ, टमंकवौ—१ देखो 'टमकणौ, टमकवौ' (रू.भे.) (जैन)

उ०—मचे जंग वेसंग हिंदू मुगळ्ळ । त्रहक्कै नफेरी टमंकै तवल्लं ।
—रा.रू.

२ देखो 'तमकणौ, तमकवौ' (रू.भे.)

उ०—मसां हणी छोडा विसाहण, टमक कीधौ ताल । सिसिपाळ वोलइ नहीं, तोलइ डगमग्या दिगपाळ ।—रुकमणी मंगळ

टमकणौ, टमकवौ–क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना, प्रकट होना, मालूम होना । उ०—पीथल धोळा टमकियां, वहुली लागी खोड़ । पूरै जोवन पदमणी, ऊभी मुक्ख मरोड़ ।—प्रिथ्वीराज राठौड़

२ जाड़ा चमकना, सर्दी आना । उ०—हेमतरा वरफ ऊपड़िग्रा, टाढ़ौ टमकियौ, प्राळौ पड़ण लागौ ।—रा.सा.सं.

३ नगारे आदि का ध्वनि करना. ४ कम्पायमान होना, कांपना (आंख आदि का)

टमकाड़णौ, टमकाड़वौ—देखो 'टमकाणौ, टमकावौ' (रू.भे.)

टमकाड़ियोड़ौ—देखो 'टमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टमकाड़ियोड़ी)

टमकाणौ, टमकावौ–क्रि०स०—१ चमकाना, झलकाना. २ प्रकट करना, मालूम करना. ३ नगारे आदि की ध्वनि करना. ४ कम्पायमान करना, कंपित करना (आंख आदि का)

टमकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ, झलकाया हुआ. २ प्रकट किया हुआ, मालूम किया हुआ. ३ ध्वनित किया हुआ. ४ कंपित किया हुआ ।
(स्त्री० टमकायोड़ी)

टमकार—देखो 'टमकारौ' (रू.भे.)

उ०—भेरी भुंगळ भरहरइ, करइ भाट जयकार । तूर तिविल वाजां सुणइ, तंति तणा टमकार ।—मा.कां.प्र.

टमकारणौ, टमकारबौ—देखो 'टमकाणौ, टमकावौ' (रू.भे.)

टमकारियोड़ौ—देखो 'टमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टमकारियोड़ी)

टमकारौ–सं०पु०—१ घंटे या घड़ियाल के वजने का शब्द, ध्वनि ।

उ०—दळ दस. देस तणा मिळि चाल्या, घड़ियालइं टमकारौ । सळवयौ मेर समुद्र झळहळीयौ, अहि डोल्यौ महि भारौ ।
—रुकमणी मंगळ

रू०भे०—टमकार ।

२ देखो 'टमोरौ' (रू.भे.)

टमकावणौ, टमकाववौ—देखो 'टमकाणौ, टमकावौ' (रू.भे.)

टमकावियोड़ौ—देखो 'टमकायोड़ौ' (रू.भे.)

टमकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, झलका हुआ, प्रकट. २ ध्वनि किया हुआ, ध्वनित. ३ कंपित, कंपायमान हुवा हुआ ।
(स्त्री० टमकियोड़ी)

टमकीलौ–वि० (स्त्री० टमकीली) वनावटी साज-श्रृंगार किया हुआ, नखरा किया हुआ ।

टमकौ–सं०पु० (वि० टमकीलौ) वनावटी साज-श्रृंगार, नखरा ।

टमचरौ–सं०पु०—मस्तक, शिर, खोपड़ी (अल्पा.)

टमटम–सं०पु० (अनु०) १ वड़े-वड़े पहियों वाली एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी जिसमें केवल एक घोड़ा ही जोता जाता है. २ ध्वनि विशेष ।

टमटमाणौ, टमटमावौ—देखो 'टिमटिमाणौ, टिमटिमावौ' (रू.भे.)

टमरकटूं–सं०पु० (अनु०) फाख्ता नामक पक्षी के बोलने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि । उ०—वादळवाई री दिन । मघरौ मघरौ आथूण वायरौ चालै । खेजड़ी परां वैठी कमेड़ी वोली—'टमरकटूं' ।

टमरियौ–सं०पु०—वृक्ष विशेष । उ०—वीयौ टमरियौ व्रंदावन वासी, वणराय भार अढ़ार संख्या, त्रिस्णुवांणी एह, जेतुलुं जाण्युं तेतलुं वखांण्यउं, भणइं पदम विसेख ।—रुकमणी मंगळ

टमरु–सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र । उ०—नीलुहुरां जरजरी मलवारी लाछरी अघोतरी अमरी । गंगापारी मोतीचूरि टमरु मसरु रत्नकंवळ छाइल ।—व.स.

टमाटर-सं०पु०—एक प्रकार का पौधा व उसका फल जो पकने पर गहरे लाल रंग का होता है और स्वाद में कुछ खट्टा होता है ।

टमोरौ-सं०पु०—आंख मटकाने की क्रिया या भाव, इशारा ।

क्रि०प्र०—देणौ ।

रू०भे०—टमकारौ ।

टर-सं०स्त्री०—१ अप्रिय शब्द, कटु वाक्य, बक-झक ।

मुहा०—टरटर करणी—व्यर्थ का बक-झक करना ।

कहा०—अठै टर वठै टर, तेरै खातर छोड़दूं घर—इस स्थान पर टर टर करता है, उस स्थान पर टर टर करता है तो क्या तेरे लिए घर त्याग दूं अर्थात् व्यर्थ बक-झक से परेशान होने पर कही जाती है ।

यौ०—टर टर ।

२ देखो 'डर' (४) (रू.भे.)

यौ०—टर टर ।

३ ऐंठ से भरी बात, अकड़, घमंड ।

क्रि०प्र०—राखणी ।

मुहा०—टर राखणी—घमंड रखना, गर्व रखना ।

४ महत्व रहित बात, तुच्छ बात ।

टरकणौ, टरकबौ—क्रि०अ०—खिसकना, टल जाना, टरकना ।

टरकणहार, हारौ (हारी), टरकणियौ—वि० ।

टरकवाणौ, टरकवावौ—प्रे०रू० ।

टरकाड़णौ, टरकाड़बौ, टरकाणौ, टरकाबौ, टरकावणौ, टरकावबौ—क्रि०स० ।

टरकिग्रोड़ौ, टरकियोड़ौ, टरक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

टरकीजणौ, टरकीजबौ—भाव वा० ।

टळकणौ, टळकबौ, टळक्कणौ, टळक्कबौ—रू०भे० ।

टरकाड़णौ, टरकाड़बौ—देखो 'टरकाणौ, टरकाबौ' (रू.भे.)

टरकाड़ियोड़ौ—देखो 'टरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टरकाड़ियोड़ी)

टरकाणौ, टरकाबौ—क्रि०स०—कार्यार्थ आये हुए का कार्य पूरा किये बिना ही किसी बहाने द्वारा वापिस भेज देना, टाल देना ।

मुहा०—टरका देणौ—किसी कार्य से आये हुए का कार्य किये बिना ही बहाने से उसे चलता कर देना ।

टरकाणहार, हारौ (हारी), टरकाणियौ—वि० ।

टरकवाड़णौ, टरकवाड़बौ, टरकवाणौ, टरकवाबौ, टरकवावणौ, टरकवावबौ—प्रे०रू० ।

टरकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

टरकाईजणौ, टरकाईजबौ—कर्म वा० ।

टरकणौ, टरकबौ—अक०रू० ।

टरकाड़णौ, टरकाड़बौ, टरकावणौ, टरकावबौ—रू०भे० ।

टरकायोड़ौ—भू०का०कृ०—खिसकाया हुआ, टरकाया हुआ, टाला हुआ ।

(स्त्री० टरकायोड़ी)

टरकावणौ, टरकावबौ—देखो 'टरकाणौ' (रू.भे.)

टरकावियोड़ौ—देखो 'टरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टरकावियोड़ी)

टरकियोड़ौ-भू०का०कृ०—खिसका हुआ, टरका हुआ ।

(स्त्री० टरकियोड़ी)

टरड़-सं०स्त्री०—१ घमंड, ऐंठ. २ भेड़.

टरड़कौ-सं०पु०—१ क्रोध करने का भाव, नाराज होने का भाव ।

क्रि०प्र०—करणौ, मारणौ ।

२ दर्द से कराहने का भाव, पीड़ा के कारण स्वयमेव निकलने वाली आवाज ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

३ घोड़े की एक दौड़. ४ अधो वायु निकलने से उत्पन्न शब्द ।

क्रि०प्र०—करणौ, घरणौ, मेलणौ ।

रू०भे०—डरड़कौ ।

टरड़पंच-वि०—बिना नियुक्त किये या बिना आग्रह किये ही पंच बनने वाला ।

टरटराणौ, टरटराबौ, टरराणौ, टरराबौ-क्रि०अ० (अनु०) १ मेंढ़क का बोलना. २ टर टर करना, बक बक करना ।

टळकणौ, टळकबौ—देखो 'टळक्कणौ, टळक्कबौ' (रू.भे.)

उ०—वीर गाला झळकइं तेतइ कायर ना मन टळकइं ।—व.स.

टळकाणौ, टळकाबौ-क्रि०स०—१ कंपायमान करना, डिगाना.

२ देखो 'टरकाणौ, टरकाबौ' (रू.भे.)

टळकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपायमान किया हुआ, डिगाया हुआ ।

२ देखो 'टरकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टळकायोड़ी)

टळकियोड़ौ—देखो 'टळक्कियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टळकियोड़ी)

टळक्कणौ, टळक्कबौ-क्रि०अ०—१ कंपायमान होना, डिगना ।

उ०—खंड पूंगळ खळभळै कोट मरवटां टळक्कै । देरावर डिगमगै लसेवरि हा ही संकै ।—नैणसी

२ देखो 'टरकणौ, टरकबौ' (रू.भे.) ३ स्थान से दूर होना, लुढ़कना, खिसकना । उ०—संख मुखिइं जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जंपु । टोळ टळक्कइ रैवत दैवत मनि आकंपु ।—नेमिनाथ फागु

टळक्कियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कंपित, विचलित ।

२ देखो 'टरकियोड़ौ' (रू.भे.) ३ स्थान से दूर हुवा हुआ, लुढ़का हुआ ।

(स्त्री० टळक्कियोड़ी)

टळटळणौ, टळटळबौ, टळटूळणौ, टळटूळबौ-क्रि०अ०—खिसकना, डिगना, हिलना-डुलना, कंपायमान होना । उ०—१ नव नाथ न मेलै वासना, टिकियौ मेरज टळटळै । सेवगां तणा मेहा सदू, साद न करनी संभळै ।—चौथौ वीठू

उ०—२ कसमस्सै कोरंभ, सेस नागिंद्र सळस्सळि। सात समंद्र गिर ग्राठ, तांम धर मेरु टळट्टळि।—वचनिका

उ०—३ त्रहत्रहते त्रंबक तरो त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउं।—व.स.

टळणौ, टळवौ—क्रि०ग्र० [सं० टल] १ स्थान से ग्रलग होना, खिसकना, हटना। उ०—टळै ढील लागां घरणां फील टल्लां। हठै नौठि पाइक्क हल्ला हमल्लां।—वं.भा.

मुहा०—वात सूं टळणौ—प्रतिज्ञा पूरी नहीं करना, कही हुई वात के ग्रनुसार कार्य न करना।

१ पृथक होना, ग्रलग होना। उ०—तीन वेळा उपाड़ उपाड़ खंगार रै साथ में नांखिया, साहिब नूं झटकौ वाह्यौ सु टोप लाग टळियौ।
—नैरासी

३ दूर होना, निवारण होना, मिटना। उ०—१ वसइं जे जिनमंदिरि, सीयळइ। विहु परे तीहं तापु सही टळइ।—ग्रर्बुदाचळवीनती

उ०—२ विन भुगत्यां न टळंत।—जयवांणी

उ०—३ दंवइं लिखिउं ते नवि टळइ, वाडव रहिउ विचारि। धीर घरीघर ग्रडितु, हईडा ! हवइ म हारि।—मा.कां.प्र.

४ मर्यादा से हटना, कर्त्तव्य से विमुख होना।

उ०—टळै नह 'रांम' खत्रीवट टेक। उडावत लोह ग्रमीर ग्रनेक।
—सू.प्र.

५ कांपना, थर्राना, डोलना. ६ स्थिरता छोड़ना, ग्रस्थिर होना।

उ०—मेर टळइ मरजाद, जाय नव खंड रसातळह। सेस भार जु तजइ चलइ रविचंद दिखणाध।—प.प.चौ.

७ दूर होना, ग्रापत्ति टलना। उ०—जोवन गयौ स भल हुई, सिर री टळी वलाय। जरां जरां री रूसणी, ग्रौ दुख सह्यौ न जाय।
—ग्रज्ञात

उ०—२ देवी वैश सूरथ्थ रा दीह वळिया, देवी तवन तोरा किया सोक टळिया।—देवि.

८ नाश होना, मिटना, क्षय होना। उ०—इसा पग तूझ तरा ऊदार, सेवतां पाप टळै संसार।—ह.र.

९ वचना, सुरक्षित होना। उ०—चिलमियां करण चिल चाह सूं, टळणहार नहिं टाळणा। ग्रमलियां तणां सिधांत ए, वळै जठा तक वाळणा।—ऊ.का.

१० व्यतीत होना, समाप्त होना। उ०—चाली परवा पून, वादळी गळ गई। मिरियां मिरियां घाल सगी, वा मौसम तौ टळ गई।
—लो.गी.

११ ग्रनुपस्थित होना, चलना, हटना। ज्यूं—कांम री वगत तौ थूं ग्रठूं रोज टळ जावै है. १२ स्थगित होना, ग्रागे स्थिर होना।

उ०—कह्यौ, मोहरत री वेळा टळी जाय छे, प्रोळ खोलौ, सेजवाळा वारणै ऊभा छै।—नैरासी

१३ उलंघित होना, न माना जाना। ज्यूं—राजाजी रौ हुकम टळै नी. १४ ऊँट का रोग विशेष से पीड़ित होना. १५ गाय, भैंस व वकरी का दूध देना वन्द होना।

टळणहार, हारौ (हारी), टळणियौ,—वि०।

टळवाड़णौ, टळवाड़वौ, टळवाणौ, टळवावौ, टळवावणौ, टळवाववौ, टळाड़णौ, टळाड़वौ, टळाणौ, टळावौ, टळावणौ, टळाववौ—प्रे०रू०।

टळिग्रोड़ौ, टळियोड़ौ, टळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

टळीजणौ, टळीजवौ—भाव वा०।

टलन—सं०स्त्री०—ग्राघात, टक्कर। उ०—पिली गज टलन तोप प्रचंड। झिली जनु मीच वची मिळ झुंड।—ला.रा.

टळवळणौ, टळवळवौ—क्रि०ग्र०—१ हिलना-डुलना, ग्रस्थिर होना, ग्रचल न रहना. २ छटपटाना, तड़फना। उ०—१ माता देवी टळवळइ जी, माछलड़ी विनुं नीर। नारी सगळी पाय पड़ी जी, मत छंडौ साहस धीर।—स.कु.

उ०—२ जिम-जिम जाव जांमिनी, ग्रावि ऊखा काळि। तिम-तिम तरुणी टळवळइ, मछि पड़ि जिम जालि।—मा.कां.प्र.

३ परेशान होना, वेचैन होना, व्याकुल होना। उ०—ग्राघेरु जईनि चींतवि, लोचन माहारूं डांबूं लवि। जोऊं रही हसि टळवळी, पुनरपि ग्राव्यु पाछु वळी।—नळाख्यांन

४ लालायित होना, इच्छुक होना। उ०—मुंहडइ घाल्यां तरत गळइ, घणुं स्युं ? स्वरग ना देव देवी पणि खावानइ टळवळइ।
—व.स.

टळवळा'ट—सं०स्त्री०—१ वेचैन, घवराहट. २ हिलने-डुलने की क्रिया, धीरे-धीरे रेंगने की क्रिया।

टळवळाड़णौ, टळवळाड़वौ—देखो 'टळवळाणौ, टळवळावौ' (रू.भे.)

टळवळाड़ियोड़ौ—देखो 'टळवळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टळवळाड़ियोड़ी)

टळवळाणौ, टळवळावौ—क्रि०स०—कंपायमान करना, हिलाना, डुलाना।

टळवळायोड़ौ—भू०का०कृ०—कंपायमान किया हुग्रा, हिलाया हुग्रा।
(स्त्री० टळवळायोड़ी)

टळवळावणौ, टळवळाववौ—देखो 'टळवळाणौ, टळवळावौ' (रू.भे.)
उ०—वरंडा पाड़तउ, मांणस मारतउ, राउत रसाड़तउ, ग्रटाळ टळवळावइ, हाटु हळवळावइ।—व.स.

टळवळावियोड़ौ—देखो 'टळवळायोड़ौ' (रू.भे.)

टळवळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ हिला-डुला हुग्रा, ग्रस्थिर. २ छटपटाया हुग्रा, तड़फड़ाया हुग्रा. ३ परेशान हुवा हुग्रा, वेचैन, व्याकुल. ४ लालायित हुवा हुग्रा, इच्छुक हुवा हुग्रा।
(स्त्री० टळवळियोड़ी)

टळवाड़णौ, टळवाड़वौ—क्रि०स०—खींच कर निकालना ?
उ०—एकि ग्रंगि वाई, ऊपरि गुल रेखलाई, जिसा ग्रम्रत तणां, पुणि टळवाड़इ घणां रूप्पोज्वळ, काविलउ घाट।—व.स.

टळियोड़ौ—भू०का०कृ०—वह गाय, भैंस या वकरी जिसने दूध देना वन्द कर दिया हो।

टळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ खिसका हुआ, हटा हुआ. २ अलग, स्थिति से पृथक. ३ निवारण हुवा हुआ. ४ कर्तव्य से हटा हुआ. ५ आपत्ति टला हुआ, निकट नहीं रहा हुआ. ६ कांपा हुआ, थर्राया हुआ. ७ मिटा हुआ. ८ स्थिरता छोड़ा हुआ, अस्थिर हुवा हुआ. ९ बचा हुआ, सुरक्षित बना हुआ. १० जो व्यतीत हो गया हो, समाप्त. ११ अनुपस्थित बना हुआ, हटा हुआ, चला हुआ. १२ स्थगित रहा हुआ, आगे स्थिर रहा हुआ. १३ न माना हुआ, उल्लंघित. १४ रोग विशेष से पीड़ित ऊंट।
(स्त्री० टळियोड़ी)

टलौ, टल्लौ-सं०पु०—धक्का, टक्कर। उ०—१ टळि गयौ परौ जमराउ वाळौ टलौ।—पीरदांन लाळस
उ०—२ रिणखेत रै विखै रंगिग्रै वांणासि मतवाळा ज्यूं घूमतां थकां हाथियां सूं टल्ला खाइस्यां।—वचनिका
उ०—३ टळै ढील लागां घणां फील टल्लां। हठै नीठि पाइक्क हल्लां हमल्लां।—वं.भा.
मुहा०—टल्लौ देणौ—टक्कर देना, आगे खिसका देना, उकसाना, प्रेरित करना।

टवरग-सं०पु० [सं० टवर्ग] ट ठ ड ढ ण—इन पांच वर्णों का समूह।

टवाळी-सं०स्त्री०—१ खेत की फसल की रखवाली. २ चौकीदारी, रखवाली।
रू०भे०—टोवाळी।

टवौ-सं०पु०—भाले का अग्र भाग।

टस-सं०स्त्री०—भारी वस्तु के खिसकने का शब्द, टसकने का शब्द।
मुहा०—टस सूं मस नी होणौ—जरा सा भी नहीं खिसकना, किसी बात का बिल्कुल प्रभाव न पड़ना।

टसक-सं०स्त्री० (वि० टसकीलौ) १ गर्व, अभिमान, दर्प।
उ०—कीजै कुण मीड न पूगै कोई, धरपत भूटी टसक धरै। तो जिम 'भीम' दीयै तांबापत्रां, कवी अजाची भलां करै।—किसनौ आढ़ौ
क्रि०प्र०—राखणी।
कहा०—टसक री टारड़ी नै गारा मंइ धच—घमंड से सिर ऊँचा कर के चलने वाला निर्बल व्यक्ति कीचड़ आने पर फँस जाता है अर्थात् अभिमानी का सिर नीचे झुकता ही है।
२ नखरा, बनावटी साज-शृंगार. ३ शेखी, गल्ल.
रू०भे०—टसकाई।
अल्पा०—टसकौ।
४ ठहर-ठहर कर उठने वाला दर्द, टीस, कसक।

टसकणौ, टसकबौ-क्रि०अ०—१ दर्दभरी आवाज करना, करहाना. २ खिसकना, हिलना. ३ मल त्यागते वक्त विबंध के कारण आवाज करना।
टसकणहार, हारौ (हारी), टसकणियौ—वि०।
टसकवाड़णौ, टसकवाड़बौ, टसकवाणौ, टसकवाबौ, टसकवावणौ, टसकवावबौ—प्रे०रू०।
टसकाड़णौ, टसकाड़बौ, टसकाणौ, टसकाबौ, टसकावणौ, टसकावबौ—क्रि०स०।
टसकिग्रोड़ौ, टसकियोड़ौ, टसक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
टसकीजणौ, टसकीजबौ—भाव वा०।

टसकाई—देखो 'टसक' (रू.भे.)

टसकिग्रोड़ौ-भू०का०कृ०—१ दर्दभरी आवाज किया हुआ, करहाया हुआ. २ खिसका हुआ, हिला हुआ।
(स्त्री० टसकियोड़ी)

टसकीलौ-वि० (स्त्री० टसकीली) १ अभिमानी, घमंडी. २ बनावटी साज-शृंगार करने वाला, नखरा करने वाला. ३ शेखी मारने वाला. ४ जिसके टीस उठती हो, जो दर्द के कारण टसकता हो।

टसकौ—देखो 'टसक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एकीका की डील को जी, टसकौ कदे न जाय।—जयवांणी

टसर-सं०पु० [सं० तसर, त्रसर] एक प्रकार का कड़ा व मोटा कपड़ा।

टसरियौ, टसरीग्रौ, टसरीयौ, टसरयौ-सं०पु०—१ ऊँट की एक चाल विशेष. २ काष्ट, हाथीदांत अथवा धातु का बना अफीम रखने का पात्र।
मि०—हूंडियौ।
३ एक प्रकार का वस्त्र (व.स.).
रू०भे०—टैरियौ, टहरियौ।

टहकणौ, टहकबौ-क्रि०अ०—१ टिटहरी या कोयल का बोलना।
उ०—ऊपर कुंर्जा, सारसां गहकनै रही छै। डेडरा डहकनै रह्या छै। टीटोड़ी टहकनै रही छै।—रा.सा.सं.
२ रह रह कर दर्द करना, टीस मारना. ३ आघात या झटके के कारण किसी पदार्थ का ध्वनि करना।

टहकाणौ, टहकाबौ-क्रि०स०—१ जांचने के हेतु बजाना. २ ध्वनि करना।

टहकौ-सं०पु०—नगारे अथवा ढोलक आदि वाद्य पर प्रहार करने से उत्पन्न ध्वनि। उ०—थोंगऊग थोंऊग तत्ता धत्ता धत्ता थंग थंग टहका गहकां करै भेळा खेळा टोळी। खे खट्ट वि नट्ट नट्ट जालिम तालिम खांनां झाझा देसलाणी आगै राग रा झकोळ।—ल.पिं.
क्रि०प्र०—देणौ।

टहटह-सं०स्त्री०—१ खिलखिला कर हँसने की ध्वनि।
क्रि०प्र०—करणी।
२ अट्टहास। उ०—कतियांणी क्रह क्रह नारद डह डह हेका टहटह वीर हसै।—गु.रू.बं.
३ ध्वनि विशेष।
रू०भे०—टहटहाट, टहट्टह।

टहटहणौ, टहटहबौ-क्रि०अ०—१ किसी वाद्य का ध्वनि करना, नगारा बजना। उ०—पंथी हेक संदेसड़ौ, बावल नै कहियाह। जायां

थाळ न वज्जिया, टांमक टहटहियाह ।—सती चरित्र

२ खिलखिला कर हँसना ।

टहटहाट, टहट्टह—देखो 'टहटह' (रू.भे.)

उ०—टहट्टह रंभ ग्रहग्गह वीर । मिळै रणताळि कमध्धज मीर ।

—राजरासौ

टहणी—देखो 'टैंणी' (रू.भे.)

टहरकौ—देखो 'टैंरकौ' (रू.भे.)

टहरियौ—देखो 'टैंरियौ' (रू.भे.)

टहल-सं०स्त्री०—१ सेवा, खिदमत, चाकरी ।

उ०—रांणी स्री जसराज री, मात वधायौ मौड़ । दोनूं महल हजूर मैं, राज टहल राठौड़ ।—रा.रू.

क्रि०प्र०—करणी ।

रू०भे०—टैंल

यौ०—टहल-बंदगी ।

सं०पु०—२ सोलंकी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

टहलणौ, टहलबौ—देखो 'टैंलणौ, टैंलबौ' (रू.भे.)

टहलदार-वि०—टहल करने वाला, खिदमत करने वाला ।

रू०भे०—टैंलदार ।

टहलियोड़ौ—देखो 'टैंलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टहलियोड़ी)

टहिटी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य । उ०—टींडुरी नइं टींडसी, टहिटी टोकरि टूंट । टवकांवन्नी टाउरी, टोकरि टोळां ऊंट ।

—मा.कां.प्र.

टहुकड़ौ—१ देखो 'टहुकौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कोयल दीयै टहुकड़ा, पपइयौ करै पुकार । पांणी परनाळां पड़ै, धर अंबर इक धार ।—महादांन महड़ू

२ देखो 'टहूकड़ौ' (१) (रू.भे.)

टहुकणौ, टहुकबौ-क्रि०अ०—१ कोयल, मोर आदि पक्षियों का आवाज करना, बोलना ।

उ०—काळी कोयलि आंब बइठीं टहुकइ ।—स.कु.

२ ध्वनि करना. ३ तेज आवाज करना ।

टहूकणौ, टहूकबौ—रू०भे० ।

टहुकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (कोयल, मोर आदि पक्षियों का) आवाज किया हुआ, बोला हुआ. २ ध्वनिमय हुवा हुआ, ध्वनि किया हुआ, ध्वनित. ३ तेज आवाज किया हुआ ।

(स्त्री० टहुकियोड़ी)

टहुकौ-सं०पु०—१ मोर, कोयल आदि पक्षियों की आवाज ।

उ०—सूखा हुआ जु अंबुआ, (ज्यांरी) वासा गई वळेह । कोयलड़ी टहुका दहै, अगळू़णे ज गुणेह ।—लो.गी.

क्रि०प्र०—देणौ ।

रू०भे०—टहूकौ ।

अल्पा०—टहुकड़ौ, टहूकड़ौ ।

२ आवाज देने का भाव ।

क्रि०प्र०—देणौ ।

३ कोई चुभती बात, ताना, व्यंग्य ।

टहूकड़ौ-सं०पु०—१ ऊंट का बोलना । उ०—घाली टापर वाग मुखि, भेंक्यउ राज दुआरि । करहइ किया टहूकड़ा, निद्रा जागी नारि ।

—ढो.मा.

रू०भे०—टहुकड़ौ ।

२ देखो 'टहुकौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ बागां बागां बावड़्यां, फुलवादां चहुं फेर । कोयल करै टहूकड़ा, अइयौ धर आंबेर ।—अज्ञात

उ०—२ कोयल करइ टहूकड़ा म्हांकी सहिय ।—स.कु.

टहूकणौ, टहूकबौ—देखो 'टहुकणौ, टहुकबौ' (रू.भे.)

उ०—कोइल कुरळइ अंब की डाळ । मोर टहूकइ सीखर थी ।

—वी.दे.

टहूकियोड़ौ—देखो 'टहुकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टहूकियोड़ी)

टहूकौ—देखो 'टहुकौ' (रू.भे.)

टहोलौ—देखो 'ठोलौ' (रू.भे.)

टांक-सं०स्त्री०—१ धनुष । उ०—टकरोत टांक सज झिलम टोप । कर सिलह आप सब भरय कोप ।—पे.रू.

२ देखो 'टंक' (६) (रू.भे.)

उ०—वींझौ पूछै सोरठी, प्रीत किता मण होय । लागतड़ी लाखां मणां, तूटी टांक न होय ।—वींझा सोरठ री वात

३ देखो 'टंक' (१३)

उ०—सवासेर रौ भालौ अेक तीर इसड़ौ राखै छै, अेक कवांण दस टांक रै चिलै इसड़ी कमांण राखै छै, कोई पंखी ही फिरण पावै नहीं ।—वात सयणी चारणी री

४ देखो 'टाकी' (रू.भे.)

टांकड़ौ—देखो 'टांकणौ' (रू.भे.)

उ०—ए क्रोध व्यापण रा टांकड़ा ।—जयवांणी

टांकणी-सं०स्त्री०—देखो 'टकांणी' (रू.भे.)

रू०भे०—टिकांणी ।

टांकणौ-सं०पु०—१ घरेलू होने वाला शुभाशुभ अवसर, अवसर विशेष, कोई विशेष दिन, मुहूर्त ।

मुहा०—टांकणौ साजणौ—अवसर पर पहुँच जाना ।

२ समय. ३ स्त्री के रजस्वला होने का भाव ।

क्रि०प्र०—आणौ ।

४ पत्थर गढ़ने का औजार विशेष । उ०—गढ़ गिरूउ जिसउ कैळास, पुण्यवंतनउ ऊपरि वास । जिसउ त्रिकूट टांकणे घडिउ, सपत धात कोसीसें जडिउ ।—कां.दे.प्र.

४ ऊपर लटकाया हुआ मांस । उ०—भीमा मना नै मवर लागी नः पाद टांकणी नै हांडीयां फोड़ बहीर हुवा ।—वीं.स.टी.

रू०भे०—टंकणौ, टांकड़ौ, टांकलउ, टांकलौ, टांगणौ ।

टांकणौ, टांकबौ-क्रि०स०—१ किसी वस्तु को दीवार में लगी कील या खूंटी में अटकाना, लटकाना. २ सिलाई करना, सीना. ३ बटन या मोती आदि को किसी वस्तु पर इस प्रकार चिपकाना ताकि वह निकल न सके ।

टांकणहार, हारौ (हारी), टांकणियौ—वि० ।

टांकवाड़णौ, टांकवाड़बौ, टांकवाणौ, टांकवाबौ, टांकवावणौ, टांकवावबौ, टांकाड़णौ, टांकाड़बौ, टांकाणौ, टांकाबौ, टांकावणौ, टांकावबौ—प्रे०रू० ।

टांकिग्रोड़ौ, टांकियोड़ौ, टांक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

टांकीजणौ, टांकीजबौ—कर्म वा० ।

टंकणौ, टंकबौ—अक०रू० ।

टांगणौ, टांगबौ—रू०भे० ।

टांकमौ-वि०—लटकाया हुआ, टांका हुआ । उ०—मंडै रिणवट मेलवै, कांटा काढणहार । कन सिर उपरा टांकमौ, आंटा लेय उधार ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

टांकरौ-सं०पु०—एक तोले का वजन ।

टांकल-वि०—कुपुत्र ।

टांकलउ, टांकलौ—१ देखो 'टांकणी' (३) (रू.भे.)
२ देखो 'टंक' (रू.भे.) (उ.र.)

टांकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लटकाया हुआ. २ सिला हुआ.
३ चिपका हुआ (बटन, मोती आदि)
(स्त्री० टांकियोड़ी)

टांकी-सं०स्त्री०—१ लोहे का बना पत्थर गढ़ने का ग्रौजार ।
उ०—अपण संतोस करै नहीं, सो मण जांणै सेर । कर टांकी ले काट हीं, सुपना मांही सुमेर ।—बां.दा.
पर्या०—चीरणी, छैणी, पत्थरफाड़ी ।
मुहा०—टांकी बाजणी—इमारत बनने सम्बन्धी कार्य का चलता रहना ।
२ देखो 'टाकी' (रू.भे.)
३ सोना, चांदी, जवाहिरात ग्रादि तोलने का छोटा तराजू ।

टांकीबंद-सं०पु०—इमारत में लगे पत्थर के टुकड़ों या ग्रामने-सामने की कीलों की मजबूत जुड़ाई ।
वि०—वह मकान जिसमें पत्थर के टुकड़ों या ग्रामने-सामने की कीलों की मजबूत जुड़ाई की हुई हो ।

टांकोली-सं०स्त्री०—पुनर्वसु नक्षत्र का एक नाम ।

टांकौ-सं०पु० [सं० टकि-बंधने] १ भूमि खोद कर ग्रथवा बाहिर दीवार उठा कर दीर्घकाल तक पानी इकट्ठा रखने हेतु बनाया हुग्रा जलकुण्ड । उ०—तिसोता जिसौ नीर गंभीर टांकौ, विलूंमै विचै जाळ भुज्जाळ बांकौ । जिका कोट नूं देवता हाथ जोड़ै चहूं, कूंट रै बीच वैकूंट चौड़ै ।—मे.म.
२ सोने या चांदी के ग्राभूषणों में डाला जाने वाला विजातीय द्रव्य, जोड़. ३ चोर के पद-चिन्हों को खोजने निमित्त चक्कर लगाने का भाव. ४ सिलाई का पृथक-पृथक ग्रंश, सीवन ।
क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ ।
५ शरीर पर लगे घाव या कटे हुए स्थान की सिलाई ।
क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ ।
रू०भे०—टेकौ ।
६ भोमियों (राजपूतों) से भूमि सम्बन्धी लिया जाने वाला कर विशेष (मेवाड़)
वि०वि०—देखो 'भोमियौ' ।

टांग-सं०स्त्री० [सं० टंका, टंगा] शरीर का निचला भाग जिससे प्राणी चलते-फिरते हैं । इनकी संख्या भिन्न-भिन्न प्राणियों में भिन्न भिन्न होती है । मनुष्य की जांघ से एड़ी तक का ग्रंग ।
मुहा०—१ टांग ग्रड़ाणी—व्यर्थ दखल देना, उलझन या बाधा पैदा करना, बिना ज्ञान के विचार प्रकट करना. २ टांग ऊपर देणी—पराजित करना, हरा देना. ३ टांग ऊपर राखणी—ग्रपनी बात रखना, ग्रपने विचारों को प्राथमिकता देना. ४ टांग नीचूं निकळणी—हार मानना, पराजित होना. ५ टांग फसाणी—देखो 'टांग ग्रड़ाणी'. ६ टांग बराबर—बहुत छोटा, तुच्छ. ७ टांगां तोड़णी—बहुत प्रयत्न करना, दण्ड देना. ८ टांगां रह जांणी—बहुत ग्रधिक थक जाना. ९ टांगां री पिणियारी गाणी—देखो 'टांगां रह जांणी.' १० टांगां री वळ काडणी—पैरों के बल पर बहुत ग्रधिक दौड़-धूप करना, किसी को इधर-उधर भगाना या भटकाना. ११ टांगां लैणी (उठाणी)—संभोग करने हेतु स्त्री की टांगें उठाना ।
१ रहट में कूए के भीतर की ग्रोर लगाई हुई लकड़ी जो माला को ठीक स्थान पर रखती है ।
ग्रल्पा०—टंगड़ी, टांगड़ी, टांगड़ौ ।
मह०—टंग ।

टांगड़ी-सं०पु०—देखो 'टांग' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—मगर पचीसी मांय डोकरौ बणगौ डाकी, डांगड़ियां नित डिगै थिगै टांगड़ियां थाकी ।
—ऊ.का

टांगड़ौ-सं०पु०—देखो 'टांग' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—१ टांगड़ौ फेर लागै टळै, पड़ै खिसकनै पागड़ौ । नागड़ौ तोई देखौ निलज, ग्रमल न छोड़ै ग्रावड़ौ ।—ऊ.का.
उ०—२ ऊपर सूं एक जमाई लात पेट पर सो हाजरसिंह घड़ांम करता धरती पर ग्रर टांगड़ा ऊपर ।—रातवासौ

टांगण—देखो 'टांघण' (रू.भे.)

टांगणौ—देखो 'टांकणी' (रू.भे.)

टांगणौ, टांगबौ—देखो 'टांकणौ, टांकबौ' (रू.भे.)

टांगर-सं०स्त्री०—भैंस (शेखावाटी) (ग्रल्पा.)

टांगरियो, टांगरो–सं०पु०—फेरी लगा कर सौदा बेचने वाला व्यापारी।

टांगा-टोळी—देखो 'टींगा-टोळी' (रू.भे.)

टांगियोड़ौ—देखो 'टांकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टांगियोड़ी)

टांघण–सं०पु०—प्रदेश विशेष का घोड़ा ।
उ०—सू घोड़ा कुण जातरा छै, कुण रंग भांतरा छै ?—अराकी, आरबी, तुरकी, ताजी, खंधारी, सिकारपुरी, घाटी, काछी, माळवी, पूरबी, टांघण, पहाड़ी, चिन्हाई और ही अनेक जात रा घोड़ा तयार कीजै छै।—रा.सा.सं.
रू०भे०—टांगण ।

टांच—देखो 'टूंच' (रू.भे.)

टांचणौ, टांचबौ–क्रि०स०—१ चक्की के पाटों को टांकी आदि से खुरदरा कर के अनाज पीसने योग्य बनाना. २ धोखे से किसी की वस्तु हड़प लेना ।
३ चंचु से प्रहार करना (पक्षियों द्वारा) ४ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना।
टांचणहार, हारौ (हारी), टांचणियौ—वि० ।
टांचवाड़णौ, टांचवाडबौ, टांचवाणौ, टांचवाबौ, टांचवावणौ, टांचवावबौ, टांचाड़णौ, टांचाड़बौ, टांचाणौ, टांचाबौ, टांचावणौ, टांचावबौ—प्रे०रू० ।
टांचिओड़ौ, टांचियोड़ौ, टांच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
टांचीजणौ, टांचीजबौ—कर्म वा० ।
टंचणौ, टंचबौ—अक०रू० ।
टूंचणौ, टूंचबौ—रू०भे० ।

टांचियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ टांकी आदि से खुरदरा कर के पीसने योग्य बनाया हुआ (चक्की का पाट) ३ धोके से हड़पी हुई वस्तु. ३ चंचु से प्रहार किया हुआ. ४ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० टांचियोड़ी)

टांची, टांजी–सं०स्त्री०—आमदनी का धंधा, रोजी।

टांट–सं०स्त्री०—पैर, टांग ।
वि०—१ दुबला-पतला. २ अशक्त. ३ अयोग्य।
अल्पा०—टांटळियौ, टांटियौ ।

टांटणौ–सं०पु०—मांस (अल्पा.)

टांटळ–सं०पु०—एक राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति (नैणसी)

टांटळियौ–सं०पु०—देखो 'टांट' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पट भाला वड़ पिंड धर, निरखे दुरद न्हाय। पीव टांटळियौ पीठ दे, भालां वीह भगाय।—रेवतसिंह भाटी

टांटियौ–सं०पु०—१ पाट और पलंग के पायों को मजबूती से जकड़ने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की शलाख. २ बर नामक डंक मारने वाला पतंग. ३ मुंह मुड़ा हुआ व्यक्ति, जिसका मुंह टेढ़ा हो।
वि०—दुबला-पतला, अशक्त।

टांटौ, टांटौ–वि०—हाथ-पैरों से लाचार, अपाहिज ।

टांड–सं०स्त्री०—१ मकान में सामान रखने के लिए दीवार के समानान्तर लगाया जाने वाला लम्बोतरा पत्थर. २ मकान के बीच का शहतीर। उ०—हरि डाळियां चयन, पांन समूह कर ऊपर। टेर आसरां टांड, ऊबरां डांसरियां डर।—दसदेव
३ देखो 'टांडौ' (मह., रू.भे.) ४ खेत की रखवाली के लिए बनाया गया मचान. ५ शोभा (नळ-दवदंती रास)

टांडणौ, टांडबौ—देखो 'टाडूकणौ, टाडूकबौ' (रू.भे.)
उ०—अटकै खार घर वेध डगिया असत, सार फाटै गयण मेळ सांधौ। धणी दाखै धमळ टांड कज इळा धुर, 'केहरी' तणा हव मांड कांधौ।—रावत अरजुनसिंह चूंडावत री गीत

टांडी–वि० [सं० तुण्डकम्] शोभायुक्त, सौभाग्ययुक्त।
उ०—किसीइ वातिइ नवि आडी, ए दुख कहूं जु हुइ मांडी। फूल विना नवि सोभइ वाडी, पति विना न हुइ नारी टांडी।
—नळ-दवदंती रास

टांडौ–सं०पु०—१ अंगारा, अग्नि-कण. २ बैलों का समूह जो प्राय: बनजारे रखते हैं। उ०—भोळी मौ पिव भाळजै, अरांण अड़ची उदंड। गुर टांडै जण गुणत्यां, मह पड़िया रुंड मुंड।
—रेवतसिंह भाटी
मि०—वाळद ।
३ गांव के बाहर का वह स्थान जहां मृत पशुओं का चर्म निकाला जाता है (किसनगढ़) उ०—लथपथ सोणित लोथड़ा, पड़िया रण अणपार। जण ढांडा टांडा जचै, चमड़ो लियां चमार।
—रेवतसिंह भाटी
मह०—टांड ।
अल्पा०—टांडियौ ।

टांणू, टांणौ–सं०पु०—१ विशेष समय जिसमें बहुत अधिक धन खर्च होता है (विवाह आदि पर) उ०—अदता टांणा ऊपरै, नांणौ खरचै नांहि। हाथ घसै निरधन हुआं, मांखी ज्यौं जग मांहि।—बां.दा.
३ विशेष खुशी का दिन, उत्सव का दिन, त्यौहार. ३ समय, वक्त। उ०—पछै कितराहेक दिनै राठौड़ तेजसी रांणा उदयसिंघ रै वास वसियौ। तिण टांणै राठौड़ प्रिथीराज जैतावत मेड़तै कांम आया।
—रावत मालदे री वात
४ अवसर, मौका। उ०—१ ऐसौ काळ जोरावर जांणी, मन में समता आंणौ रे। ऐसी सीख दै रिखि 'जयमलजी', पायौ नर भव टांणौ रे।—जयवांणी
उ०—२ क्षमा करी सुख लो खरौ, आछौ मिळियौ टांणौ रे।
—जयवांणी

टांनर-टूनर— देखो 'टांमण-टूमण' (रू.भे.) उ०—चारण आ जांणै मंत्र चाव, वळ टांनर-टूनर जंत्र भाव।—रांमदांन लाळस

टांपी–सं०स्त्री०—१ छोटा समी वृक्ष, छोटा वृक्ष. २ झोंपड़ी।

टांमक, टांमर—सं०पु०—नगाड़ा । उ०—१ चमगंकै भड़ चिहुर छीजि नागर नागगंकै । हंगुगंकै टांमंक भ्रमर फौलां मणगंकै ।—वं.भा.
उ०—२ म्रु ऊंठ किग भांतरा छै? थाप वी तळां रा...............
नगनुगिया पटा रा, कोरदै कांन रा, टांमक सै मावै रा, लोकवै नाक रा, नजिदै होठ रा ।—रा.सा.सं.

टांमरी—सं०स्त्री०—टोकर (शेखावटी)

टांमण-टांमण, टांमण-टूमण—सं०पु०यौ०—वशीकरण मंत्र, जादू, टोना ।
उ०—टांमण-कांमण टोटका, कर देखो सै कोय । छुंदे चालै पीव रै, मावै ज्यां वस होय ।—अज्ञात
रू०भे०—टांमर-टूमर, टूमर-टांमण ।

टांमेर—सं०पु०—१ एक प्राचीन राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति ।

टांय टांय—सं०स्त्री० [अनु०] १ कर्कश आवाज, अप्रिय शब्द ।
२ बक-झक, बकवाद ।
क्रि०प्र०—करणी ।
मुहा०—टांय टांय फिस—कार्यारंभ तो बड़ी तत्परता से करना किन्तु अन्त में शिथिल पड़ जाना अथवा कुछ नहीं होना ।
३ टिट्टिभ पक्षी के बोलने की आवाज ।

टांस—वि०—तृप्त । उ०—१ जद म्हैं मोड़ी, माय मोरी, खेळ नै ग्रे, वै तो पां पाणी भर टांस, जद म्हारो मन माय मोरी हरखियो ।—लो.गी.
उ०—२ खाय रोट जद टांस हो गया, दीना पलग ढळाय । कुरड़ कुरड़ हुक्को ठळ्ळावै, गूदड़ दिया पकड़ाय ।—लो.गी.

टांसणो—वि०—मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली, बलवान ।
रू०भे०—ठांसणो ।

टांसणौ, टांसबौ—देखो 'ठांसणौ, ठांसबौ' (रू.भे.)

टांसियोड़ौ—देखो 'ठांसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टांसियोड़ी)

टा—सं०स्त्री०—१ बड़वानल. २ मच्छी.
सं०पु०—३ देवता. ४ वस्त्र. ५ तोता. ६ भजन. ७ सिद्ध. ८ यश (एका.)

टाइम—सं०स्त्री० [अं०] समय, वक्त ।

टाक—सं०पु०—१ नागवंश की एक क्षत्रिय शाखा या इस शाखा का क्षत्रिय
२ चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
[सं० टक्क] ३ सिंधु और व्यास नदियों के बीच का प्रदेश (नळ-दवदंती रास)
उ०—टोकर टींटूं टींबरू, टाहुलिग्रा नइं टोट । टहि टटिवंटरिण टहिकला, टाक टपाली सोट ।—मा.कां.प्र.

टाकर—सं०स्त्री०—१ टक्कर, झपट । उ०—कांन-कटा कांगा कधर, ऊपरि टम सुं थाइ । टाकर मारी टीलूड, मेहलइ मयण सीदाइ ।
—मा.कां.प्र.
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी, देणी ।
२ घाव, चोट । उ०—१ वणक खतारा कांम नै, ओ दरसावै खैर । नाई नूं दीधी मुहर, वाळग टाकर वैर ।—बां.दा.
उ०—२ नाहर सर टाकर कुण न्हांखै, चालै कुण वांक रजम चाह । रांण 'सरूप' आंण रा आखर, मेटै कुण ठाकर जग मांह ।
—जसजी महियारियो
३ जख्म ठीक होने पर ऊपर आने वाला कड़ा भाग, खरूंट ।
क्रि०प्र०—आणी, उखेलणी ।
४ किसी पदार्थ से निरन्तर रगड़ खाने के कारण शरीर पर होने वाली कठोर गांठ जो सुन्न हो जाती है. ५ धूलि, रेणु ।
उ०—साकर टाकर सम गिणै जी, रांम गिणो धातु पाखांण ।
—जयवांणी

टाकरु—सं०पु०—विलोचिस्तान के एक प्रदेश के छोटे कद के ऊंटों की एक जाति विशेष या इस जाति का ऊंट ।

टाकरौ—सं०पु०—१ ऊसर भूमि (शेखावाटी)
२ आस-पास की जमीन से ऊंचा उठा हुआ भू-भाग (शेखावाटी)

टाकसिया—सं०स्त्री०—परिहार वंश की एक शाखा ।

टाकांणी—देखो 'टकांणी' (रू.भे.)

टाकी—सं०स्त्री०—१ जख्म, घाव, क्षत. २ तरबूज, खरबूजे आदि पर छोटा सा चौखूंटा कटाव जिससे उसके अंदर से कच्चा पक्का या सड़ा हुआ होने का मालूम पड़ता है (शेखावाटी)
रू०भे०—टांकी ।

टाचकणौ, टाचकबौ—क्रि०अ०—१ आक्रमण करना, हमला करना.
२ आक्रमण करने के लिए उद्यत होना. ३ उछल कर आना, उछलना ।
मुहा०—टाचक नै आणौ—उछल कर आना, जोश या क्रोध से उछल कर आना ।

टाचकियोड़ौ—भू०का०कृ०—आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ ।
(स्त्री० टाचकियोड़ी)

टाचरकौ—सं०पु०—विशेष अवसर, समय ।

टाचरणौ, टाचरबौ—क्रि०स०—दूर करना, पृथक करना ।

टाचरियोड़ौ—भू०का०कृ०—दूर किया हुआ, पृथक किया हुआ ।
(स्त्री० टाचरियोड़ी)

टाचरौ—सं०पु०—शिर, मस्तक ।
वि०—शक्तिशाली (किशनगढ)

टाट—सं०स्त्री०—१ बकरी, अजा ।
उ०—समझ तमाकू सूगली, कुत्तो न खावै काग । ऊँट टाट खावै न आ, अपणो जांण अभाग ।—ऊ.का.
अल्पा०—टाटो ।
२ खोपड़ी, कपाल, शिर । उ०—१ कंथा तूं कांई करै, हाय तमाखू हेत । टका एक री टाट में, दिन ऊगांई देत ।—ऊ.का.
उ०—२ मूंड मुडायां तीन गुण, मिटी टाट की खाज । बाबा बाज्या जगत में, मिळ्यो पेट भर नाज ।—अज्ञात
मुहा०—१ टाट गंजी करणी—देखो 'टाट रा बाळ उडाणा ।'

२ टाट गंजी होणी—देखो 'टाट रा वाळ उडणा'।

३ टाट में खाज हालणी—मार खाने की इच्छा करना, ऐसा कार्य करना जिसमें मार खानी पड़े; सजा पाने का कार्य करना. ४ टाट में खाणी—मस्तक पर आघात होना, बहुत व्यय होना, अनावश्यक व्यय हो जाना, धोखा खाना, नुकसान उठाना. ५ टाट रा वाळ उडणा—खूब मार पड़ना, पास में कुछ नहीं रहना, बीमारी के कारण शिर के वाल झड़ जाना. ६ टाट रा वाळ उडाणा—मारते-मारते सिर में वाल न रहने देना, खूब पीटना ।

कहा०—टाट जींकै ठाट—जिसके सिर पर वाल नहीं होते अर्थात् टाट होती है उसका ठाट रहता है, गंजापन घनवान होने का चिन्ह माना जाता है ।

यौ०—घन-टाट ।

३ सिर का एक रोग जिसमें वाल उड़ जाते हैं, कई लोगों के इस रोग में फुंसियां भी हो जाती हैं. ४ सन या पटुए का बना हुआ मोटा कपड़ा ।

वि०—१ डरपोक, कायर. २ मूर्ख, अयोग्य ।

उ०—रांम भजन बिन खोदिया, अकल विहूणी टाट। खट सासां की एक पल, घड़ी एक पल साठ।—सगरांमदास

टाटर-सं०स्त्री०—घोड़े की झूल । उ०—१ **टाटर** पाखर संजति कियौ राव. धार नगरी राजा परणवा जाइ ।—बी.दे.

उ०—२ जादव जांन करइ अति ओपम, छपंन कोड़ि कुछ साख । टाटर टोप जरद जीणसाला, सांढ़ि भरी साट्टी लाख ।

—रुक्मणी मंगळ

टाटलौ, टाटियौ-वि०पु० (स्त्री० टाटली) जिसके शिर में टाट हो, जिसके शिर के वाल उड़ गये हों, गंजा (अल्पा.)

उ०—आभौ सफाचट **टाटिया** रा माथा ह्वै जिसौ ।—रातवासौ

टाटी-सं०स्त्री०—१ बांस की फट्टियां आदि को जोड़ कर बनाई हुई आड़, रक्षा के लिए बनाया हुआ ढांचा. २ पत्थर की वह टाट्टी जो छज्जे, रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है ।

रू०भे०—टट्टी ।

टाटौ-सं०पु०—१ ठंडी हवा के लिए खस, कांटे आदि की बनाई जाने वाली टट्टी । उ०—खस रा **टाटा** घेरियां, अूंडां ओरां जाय । भागी मिनख न भेटिया, लूआं विरथां लाय ।—लू

२ बकरा, बकरी ।

रू०भे०—टेटौ ।

३ देखो 'टाटी' (१ मह.,रू.भे.) उ०—वाडै फोग खेतड़ा काढ़ै, सींवां वाड़ वणावता । टापी **टाटां** टेर वातीं, फळसां छांन छवावता ।

—दसदेव

टाड-सं०पु०—आभूषण विशेष (शेखावाटी)

टाडूकणौ, टाडूकबौ—देखो 'ताडूकणौ, ताडूकबौ' (रू.भे.)

टाडूकियोड़ौ—देखो 'ताडूकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ताडूकियोड़ी)

टाढ़ौ—देखो 'ठाडौ' (रू.भे.) उ०—१ हेमत रा वरफ ऊपड़िया, **टाढ़ौ** टमकियौ, पाळौ पड़ण लागौ ।—रा.सा.सं.

उ०—२ तुम्हे करउ **टाढ़ौ** छांह रे ।—स.कु.

(स्त्री० टाढ़ी)

टाप-सं०स्त्री०—१ घोड़े की टांग का सबसे नीचे का हिस्सा, नीचे का नाखून, सुम, पादतल. २ घोड़े के पैर के नीचे के भाग (पादतल) का जमीन पर बना चिन्ह. ३ घोड़े के पैरों का जमीन पर पड़ने का शब्द. ४ घोड़े के अगले पैर का प्रहार, आघात ।

उ०—धणी रौ रुंड सीस विनां रौ घड़ जुद्ध करतौ हौ नैं पड़ियौ नहीं हौ. उण पैली थूं वैरियां रा झुंड नैं **टापां** सूं मार चिगद टूक-टूक होय धणी कबंध हुवौ लड़तां धणी रा घड़ पहली पड़ियौ ।—वी.स.टी.

५ छांन, छप्पर । उ०—सूका केळा काट **टाप** घर गायां भैंसां, खेत झूंपड़ी लेत स्रमित आणंद संदेसां ।—दसदेव

६ खस, कांटे आदि की बनाई टट्टी जिसको पानी से भिगोने पर ठंडी हवा आती है ।

टापटीप—देखो 'टीपटाप' (रू.भे.)

टापदार-वि०—टाप के आकार का, टाप सम्बन्धी ।

टापर-सं०स्त्री० —१ घोड़े की झूल. २ घोड़े की जीण का एक उपकरण जो काठी के नीचे लगाया जाता है. ३ पशुओं की सर्दी से रक्षा करने हेतु ओढ़ाने का एक मोटा वस्त्र । उ०—जिणि दीहे पाळउ पड़इ, **टापर** तुरी सहाइ । तिणि रिति वूढ़ी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ ।—ढो.मा.

४ देखो 'टापौ' (मह., रू.भे.)

टापरणौ, टापरबौ—देखो 'टंपरणौ, टंपबौ' (रू.भे.)

टापरियोड़ौ—देखो 'टंपियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टापरियोड़ी)

टापरियौ—देखो 'टापरौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—कठै सूं भाइपै वाळा जीमसी । जमा-जंत में तौ अेक **टापरियौ** है जिकौ भलांई अडांणै धर दौ ।—वरसगांठ

टापरी-सं०स्त्री०—देखो 'टापरौ' (अल्पा., रू.भे.)

कहा०—टपकण लागी टापरी, भीजण लागी खाट—वर्षा से गरीब की झोंपड़ी में पानी टपकने लगा जिससे खाट भी भीगने लगी अर्थात् निर्धनता में दुःखों की वृद्धि होती जाती है ।

टापरौ-सं०पु०—१ घास-फूस का मकान, कच्चा मकान, झोंपड़ा ।

उ०—ओर वीकेजी कौ उमेदसर कोट मांडियौ, चेजौ हुवै छै, लोग **टापरा** वांधिया ।—नाप सांखले री वारता

मुहा०—टोटा रौ टापरौ है—निर्धन, कंगाल, दरिद्र ।

अल्पा०—टापरियौ, टापरी ।

मह०—टापर ।

वि०— छोटा और आगे की ओर मुड़ा हुआ (कान)

उ०—पग छापरौ, कांन **टापरौ**, आंखि उंडि, निलाड़ि मूडि ।—व.स.

रू०भे०—टापौ, टेपौ ।

टापी-सं०स्त्री०—१ पतली, सीधी तथा कोमल लकड़ी जो बाति (देखो 'बाती') के काम में आती है। उ०—बाड़ै फोग गेनड़ा काढै, सींवां [illegible] । टापी टाटा टेर बातों, फळसा छांन छवावता।
—दसदेव

२ खेत में बना छप्पर या झोंपड़ी।

टापू-सं०पु०—चारों ओर जल से घिरा हुआ भू-खण्ड, द्वीप।

टापो-सं०पु०—१ टक्कर, आघात।

मुहा०—टापा मारणा—टक्करें खाना, व्यर्थ घूमना, आवारा घूमना, ऐसा घूमना जिससे कोई फल नहीं निकले. २ देखो टापरो (रू.भे.)

टाबर-सं०पु० [सं० तर्पं तृप्ति (प्रसन्नतां) राति ददाति तर्परः, प्रा० टप्पर, टब्बर, टाबर] बालक, लड़का। उ०—कूवो व्है तो डाक लूं, समंद न टाप्यो जाय। टाबर व्है तो रासलूं, जोबन(न) राख्यो जाय।
—लो.गी.

मुहा०—१ टाबर रूळणा—बच्चों का अनाथ होना. २ टाबर री आंख में घाल्यो ही नहीं खटकणो (रड़कणो)—सयाना बालक जिसका आचरण किसी को नहीं अखरे।

कहा०—१ टाबरां घर बसतो व्है तो बाबो बूढ़ी क्यूं लावै—मां के न होने पर घर का कार्य-भार यदि बालक सम्भाल ले तो पिता को दूसरी पत्नी लाने की क्या आवश्यकता होती अर्थात् यदि नौसिखियों से काम चलता होता तो अनुभवी लोगों को कौन पूछता. २ टाबरां री टोळी बुरी, घर में नार बोळी बुरी—घर में बहुत ज्यादा सन्तान होना ठीक नहीं, इसी प्रकार घर में बधिर स्त्री का होना भी अच्छा नहीं होता है।

यौ०—टाबर-छोरू, टाबर-टींगर, टाबर-टीकर, टाबर-टूबर, टाबर-टोळी, टाबर-दार, टाबरीदार।

अल्पा०—टाबरियो।

टाबर-टींगर-सं०पु०यौ०—बाल-बच्चे। उ०—लारै फुर'र देखियो तो आगै लुगायां, टाबर-टींगर, मिनख, सै मिळा'र कोई १५ जणा ऊभा।
—वरसगांठ

रू०भे०—टींगर-टोळी।

टाबरदार—देखो 'टाबरीदार' (रू.भे.)

टाबरपण-सं०पु०—१ बाल्यावस्था, बचपन। उ०—झमकू अर भीमजी टाबरपण में घणा सागै रम्या हा।—रातवासो

२ बच्चा होने का भाव, बाल्यावस्था का गुण।

टाबरियो—देखो 'टाबर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—घोड़ा रोवै घास नै, टाबरिया रोवै दांणा नै। बुरजां में ठुकराण्यां रोवै, जांमण जाया नै, हां रै रोळो वापरियो, क देस में अंगरेज आयो रे, क रोळो वापरियो।—लो.गी.

टाबरीदार-वि०—अधिक सन्तान वाला, जिसके अधिक बच्चे हों।

टार-उभ०लिं० [सं० टारः] दुबला-पतला घोड़ा या घोड़ी, साधारण घोड़ा या घोड़ी। उ०—अबै हूंसी कद सूरज अस्त, मिळ कद पिव सूं होसूं मस्त। महनत मोटी टोटी टार, पगां पांगळो हांकणहार।
—र. हमीर

कहा०—१ टार मारियां केकांण कांपै—दुबले-पतले घोड़े को पीटने से पास में खड़ा जबरदस्त घोड़ा भी भयभीत हो जाता है अर्थात् निर्बल को अपनी शक्ति से दबा कर शक्तिशाली को भी भयभीत किया जा सकता है।

टारड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'टार' (अल्पा., रू.भे.)

टारड़ो-सं०पु०—देखो 'टार' (अल्पा., रू.भे.)

टाळ-सं०स्त्री०—१ बालों के बीच की वह रेखा जो शिर के बालों को दोनों ओर विभक्त करती है, मांग।

उ०—नथ रै मोती लाल गुलाल, टाळ में सूती रेख सिंदूर। जगावै ओळूं हीयै अलख, आंखडी आंसूड़ा भरपूर।—सांझ

क्रि०प्र०—काडणी, निकाळणी।

२ गहराई। उ०—असा रांण 'राजेस' कमठांण कीधा अकळ, कोड़ जुगां लग नह जाय कळिया। पाळ जोय 'हेम' रा गरव गळिया पहल, टाळ जोय समद रा गरभ टळिया।—जोगीदास कंवारियो

३ बैल के गले में बांधी जाने वाली छोटी घंटी।

उ०—झीणी-झीणी रे बीरा उडै छै खेह, बादळ दीसे धूंधळा जे, बळदां री, रे बीरा, बाजी छै टाळ, गाड चरखता म्हे सुण्या जे।
—लो.गी.

४ पृथक करने की क्रिया या भाव।

यौ०—टाळ-टूळ, टाळ-मटूळ, टाळ-मटोळ।

क्रि०वि०—१ बिना, रहित। ज्यूं—थारै टाळ म्हारो कांम को चलै नी. २ सिवाय, अतिरिक्त। ज्यूं—इणरै टाळ बीजा सैंग चोखा है।

टाल-सं०स्त्री०—१ जलाने की लकड़ी बेचने की बड़ी दुकान.

२ बूढ़ी गाय।

टाळउ—देखो 'टाळो' (रू.भे.)

उ०—तूं तउ मोसूं रइई निराळउ, माया गाळउ। इम टाळउ किम कीजइ रे लो।—वि.कु.

टाळको—देखो 'टाळमो' (रू.भे.)

(स्त्री० टाळकी)

टाळटूळ—देखो 'टाळमटूळ' (रू.भे.)

क्रि०प्र०—करणी।

टाळणो, टाळबो-क्रि०स०—पृथक करना, अलग करना।

उ०—रावळ रै भाई हरधवळ असवार १००० टाळ नै पेलां ऊपर तूट पड़ियो।—नैणसी

२ दूर करना, निवारण करना। उ०—पीड़ंति हेमंत सिसिर रितु पहिलो, दुख टाळयो वसंत हित दाखि। व्याए वेली तणी तरुवरां, साखां विसतरियां वैसाखि।—वेलि.

३ मिटाना, दूर करना, नाश करना। उ०—१ ऊगारि अबळा स्वांमि सबळा, कांन्ह टाळि कळंक। केतला रिण भाजस्यइं, केसरी नर वर संख।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ जिणेसर सांसी टाळै एम ।—जयवांणी

४ बचाना, छिपाना । उ०—लोकां हुंती पगि बीहतै, लोक री नदर टाळि अर गोवळजी कुंवरजी सेती अरज की ।—द.वि.

५ रक्षा करना, सुरक्षित करना, बचाना ।

उ०—१ ताहरां इयूं गोव्ळजी कहियौ थे रांमसिंघजी रौ मरण टाळौ आज रौ काकौ काढ़ौ—द.वि.

उ०—२ चिलमिया करण चित चाह सूं, टळणहार नहि टाळणा । अमलियां तणां सिधांत ए, वळै जठा तक वाळणा ।—ऊ.का.

६ चुनना, छांटना. ७ किसी कार्य को नियत समय पर न कर के आगे का समय निश्चित कर देना । ज्यूं—वै तौ व्याव टाळ दियौ पण थे कद करौ ।

८ उल्लंघन करना, नहीं मानना । ज्यूं—वै म्हारौ कं'णौ नहीं टाळसी ।

९ अनुपस्थित करना, दूर करना । ज्यूं—इण नीच नै अबै अठूं टाळ देणौ चाइजै ।

टाळणहार, हारौ (हारी), टाळणियौ—वि० ।

टळवाड़णौ, टळवाड़बौ, टळवाणौ, टळवावौ, टळवावणौ, टळवावबौ, टळाड़णौ, टळाड़बौ, टळाणौ, टळाबौ, टळावणौ, टळावबौ, टाळाड़णौ, टाळाड़बौ, टाळाणौ, टाळाबौ, टाळावणौ, टाळावबौ—प्रे०रू० ।

टाळिओड़ौ, टाळियोड़ौ, टाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

टाळीजणौ, टाळीजबौ—कर्म वा० ।

टळणौ, टळबौ—अक०रू० ।

टाळमटूळ, टाळमटोळ–सं०स्त्री०—हीला-हवाला, बहाना ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

रू०भे०—टाळटूल, टाळाटोळी ।

टाळमौ–वि० (स्त्री० टाळमी) चुनिंदा ।

रू०भे०—टाळकौ, टाळवौ, टाळिमौ ।

टाळवौ–वि० (स्त्री० टाळवी) १ दूर करने वाला, मिटाने वाला, निवारण करने वाला, टालने वाला । उ०—सांवळा रहै साथै सदा, कहूं चढ़ण नै काळवी । यण रीत म्हनै कीजै अमर, आप ग्रहूं दुख टाळवी ।—पा.प्र.

देखो 'टाळमौ' (रू.भे.)

टाळाटोळी—देखो 'टाळमटोळ' (रू.भे.) उ०—तरै सुहवदे नूं प्रथीराज कह्यौ—'ओ जूतौ किणरौ छै ? अठै कुण मरद आवै छै ? तरै सुहवदे वेळा दोय च्यार तौ टाळाटोळी री कही, तरै प्रथीराज री आंख भूठी देखी ।—नैणसी

टाळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पृथक कि[...]

२ आपत्ति टाला हुआ, दुख दूर कि[...] किया हुआ, नाश किया हुआ. ४ [...]

५ रक्षा किया हुआ, सुरक्षित किया [...] हुआ. ७ आगे स्थिर किया हुआ [...] किया हुआ, नहीं माना हुआ. ९ [...] किया हुआ ।

(स्त्री० टाळियोड़ी)

टाळौ–सं०स्त्री०—१ पशुओं के गले में [...]

२ देखो 'टाळौ' (१) (अल्पा., रू.भे[...]

टाली–सं०स्त्री०—१ गिलहरी (मेवाड़) [...]

टाळौ–सं०पु०—१ वृक्ष के तने से नि[...] शाखा ।

अल्पा०—टाळी ।

२ निवारण करने की क्रिया या भा[...] टाळौ करै । नाथ वार दोय तीन कह[...]

यौ०—आंख-टाळौ ।

३ व्यतीत करने की क्रिया या भाव [...] खांण कियां । दन टाळांय सोळह पौ[...]

४ बहाना करने की क्रिया या भाव । [...] वाघजी कह्यौ—भरमल मोनूं दीजै । [...] दीठौ—वाघै रयां रजपूतांण्यां ओळभ[...] ताहरां आसै भरमल दीन्हौ ।—ऊमा[...]

५ रुकावट या बचाव करने की क्रिय[...] उ०—दळ गयंद टाळा दियै, वाघ त[...] हियै, गहन 'पतौ' गजगाह ।—किसो[...]

६ दूर रहने या बचने की क्रिया या [...] बलाय, जिकां सूं जम ही टाळौ दे [...]

रू०भे०—टाळउ ।

टालौ–सं०पु०—१ वृद्ध या निर्बल बैल. [...] ईंधन या घास का गट्ठर ।

टावळ–सं०स्त्री०—घोड़ी ।

टावटेवौ–सं०पु० (अनु०) विशेष अवस[...]

टावौ–सं०पु०—१ विशेष अवसर. २[...]

टाहुली–सं०स्त्री०—टहल करने वाली, [...] टाहली । चोवा चंदन अंग सहाई ।—[...]

५ दुम्ती. ६ सत्ता (मुस्ना.)

वि०—१ सिद्दी, २ बहुत।

टिकड़ियो—देखो 'टिकड़' (रू.भे.) (शेखावाटी)

टिकड़ी-सं०स्त्री०—१ हुक्के की चिलम के कंकड़ पर तम्बाकू के नीचे रखी जाने वाली मिट्टी की बनी गोल व चपटी वस्तु (अमरत)
२ छोटी गोलाकार व चपटी वस्तु।
रू०भे०— टिकली, टीकड़ी।

टिकड़ो-सं०पु०—१ आभूषण विशेष. २ देखो 'टिकड़ी' (मह., रू.भे.)
रू०भे०—टिकलो।

टिकट—देखो 'टिगट' (रू.भे.)

टिकटिक-सं०स्त्री० (अनु०) घड़ी के बोलने का शब्द।

टिकटिकी—देखो 'टकटकी' (रू.भे.)

टिकणी, टिकबो-क्रि०अ०—१ निवास करना, रहना, बसना।
उ०—थां अठै टिको, जोग आवै तो जायगा लेवो जे भावै तो नकदी लेवो।—गौड़ गोपाळदास री वारता
२ ठहरना, रहना। उ०—कन्हीरांम रांमसिहोत कूंपावत नूं अभैसिहजी मेड़तै बगतसिहजी कन्हैं मेलियो। महीना दोय टिक वातां कर मेड़तो छुड़ाइयो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
३ बना रहना, स्थाई रहना। ज्यूं—औ नवो कुंड तो किताक दिन टीकै। ४ आधार पर स्थिर होना, सहारे पर रहना। ज्यूं—हेटो पड़तां ही म्हारा हाथ टिक गया। ५ थमना, रुकना।
उ०—किणीई रेबारियां रै वाड़ां री सरण लीवी, किणीई भीलां रा झूंपा संभाळिया तो कोई रा पग ठेठ खेतां री बाजरियां में जावता टिकिया।—रातवासो
६ जमना, ठहरना। उ०—मिळतो मंगण नूं कहै, मुदो करूं मालूम। मारग लागो मत टिको, हाजर नाजर सूंम।—बां.दा.
७ किसी घुली हुई वस्तु का पैंदे में जमना. ८ (अपनी) स्थिति बनाये रखना। ज्यूं—वीर रै सांम्ही कायर नहीं टिक सकै।

टिकणहार, हारो (हारी), टिकणियो—वि०।

टिकवाड़णो, टिकवाड़बो, टिकवाणो, टिकवाबो, टिकवावणो, टिकवावबो—प्रे०रू०।

टिकाड़णो, टिकाड़बो, टिकाणो, टिकाबो, टिकावणो, टिकावबो —क्रि०स०।

टिकिओड़ो, टिकियोड़ो, टिक्योड़ो—भू०का०कृ०।

टिकीजणो, टिकीजबो—भाव वा०।

टकणो, टिकबो, टिगणो, टिगबो—रू०भे०।

टिकलो—देखो 'टिकड़ी' (रू.भे.)

टिकलो—देखो 'टिकड़ो' (रू.भे.)

टिकांणी—देखो 'टकांणी' (रू.भे.)

टिकाई-सं०स्त्री०—१ टिकाने की मजदूरी या वेतन।
२ देखो 'टीकायत' (रू.भे.)

टिकाउ, टिकाऊ-वि०—कई दिनों तक काम देने वाला, मजबूत, दृढ़, टिकने वाला।

टिकाणो, टिकाबो-क्रि०स०—१ ठहराना. उ०—वीरमजी भीमराजजी नूं मेड़तै नींठ टिकाया, पछै साखत रा घोड़ा चार और बागा देय विदा किया।—ठाकर जैतसिंह री वारता
२ थामना. ३ रोकना. ४ निवास कराना, रखना, बसाना।
५ सहारे पर रखना, आधार पर रखना. ६ मारना, पीटना.
७ स्थिति पर कायम रखना।

टिकाणहार, हारो (हारी), टिकाणियो—वि०।

टिकायोड़ो—भू०का०कृ०।

टिकाईजणो, टिकाईजबो—कर्म वा०।

टिकणो, टिकबो —अक० रू०।

टिकाणो, टिकाबो, टिकाड़णो, टिकाड़बो, टिकावणो, टिकावबो —प्रे०रू०।

टिकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ ठहराया हुआ, रोका हुआ. २ मारा हुआ, पीटा हुआ. ३ निवास कराया हुआ, बसाया हुआ, रखा हुआ.
४ सहारे पर रखा हुआ, जमाया हुआ. ५ थामा हुआ. ६ रोका हुआ. ७ स्थिति पर कायम रखा हुआ।
(स्त्री० टिकायोड़ी)

टिकाव-सं०पु०—१ धैर्य. २ यात्रियों के ठहरने का स्थान, पड़ाव.
३ स्थायित्व, ठहराव. ४ छूने की क्रिया या भाव, स्पर्श करने की क्रिया या भाव।

टिकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ बसा हुआ, निवास किया हुआ, रहा हुआ.
२ ठहरा हुआ, रहा हुआ. ३ स्थाई रहा हुआ. ४ आधार पर स्थिर हुवा हुआ. ५ थमा हुआ. ६ रुका हुआ. ७ पैंदे में जमा हुवा हुआ. ८ स्थिति बनाया हुआ।
(स्त्री० टिकियोड़ी)

टिकैत—देखो 'टीकायत' (रू.भे.)

टिकोर-सं०पु०—१ (ढोलक, मृदंग आदि) वाद्य की ध्वनि।
उ०—देवतुं के मन भूलतें डोलतें हैं, म्रंदंगूं के परन और ढोलकूं के टिकोर और सुरवीणूं के झणहण और तंबूरन की घोर।—सू.प्र.
२ देखो 'टंकोरी' (मह., रू.भे.)

टिकोरियो—देखो 'टंकोरी' (अल्पा., रू.भे.)

टिकोरी-सं०स्त्री०—बढ़ई के आरे को तेज करने का एक औजार।
२ देखो 'टंकोरी' (अल्पा., रू.भे.)

टिकोरो—देखो 'टंकोरो' (रू.भे.)

टिक्कड़-सं०पु०—मोटी रोटी (मह.)
उ०—घर में मांमी दमोदम हो। मांमी-भांणजो हाथै-ई टिक्कड़ पोवता जणै भोजन मिळतो।—बरसगांठ
अल्प०—टिकड़ियो।

टिगट—सं०पु० [अं० टिकट] १ वह प्रमाण-पत्र जो किसी प्रकार का कर, किराया, महसूल आदि के भुगतान के रूप में प्राप्त किया जाय. २ कोई काम करने या प्रवेश व प्रस्थान के लिए अधिकार-पत्र ।

वि०वि०—कई स्थानों पर यह कागज के अतिरिक्त धातु का भी बनाया जाता है ।

रू०भे०—टिकट, टिगस ।

टिगटी—सं०स्त्री०—जल आदि का पात्र रखने की तिपाई (शेखावाटी)

टिगणौ, टिगवौ—देखो 'टिकणौ, टिकवौ' (रू.भे.)

उ०—जो कूं ललो-पतो कीजै तो टिग सगीजै ।—नैणसी

टिगस—देखो 'टिगट' (रू.भे.)

उ०—चौधरी दौड़तां भागतां टिगस कराय नै गाडी तो पकड़ली पण डिब्बा में गरमी इसी ही कै उणरो दम घुटण लागग्यो ।
—रातवासौ

टिचकारणौ, टिचकारवौ—देखो 'टुचकारणौ, टुचकारवौ' (रू.भे.)

टिचकारी—सं०स्त्री०—देखो 'टिचकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ठाकर जोर सूं खैंखारी कियौ अर ऊंठां नै टिचकारी दीवी।
—रातवासौ

उ०—२ तद गांव चौधरी टिचकारी देवतौ तिपड़ा री गोळ नाळ सांम्ही इसारो कर'र कह्यौ—'गजब रा घर कर दिया, मोटी खोड़ राखदी ?'—वांणी

टिचकारौ—सं०पु०—१ पशुओं को हांकने का शब्द ।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ ।

२ इनकार करने के लए किया जाने वाला शब्द ।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ ।

३ घूंघट निकालने वाली अथवा पर्दानशीन औरत के संकेत का शब्द

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ ।

४ विस्मित हो कर किया जाने वाला शब्द ।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ ।

अल्पा०—टिचकारी ।

टिचटिच—सं०स्त्री०—१ ध्वनि विशेष ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

२ पशुओं को हांकने की, इनकार करने की, पर्दानशीन औरत के संकेत करने की तथा विस्मित होने पर मुंह से निकलने वाली ध्वनि ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

टिटिभ, टिटिहौ, टिट्टिभ—देखो 'टींटोड़ी' (रू.भे., डिं.को.)

टिड्डी—देखो 'तीड' (रू.भे., शेखावाटी)

टिणण—सं०स्त्री०—चिंता । उ०—मियांजी दूबळा क्यूं कै सातां घरां री टिणण है ।—अज्ञात

टिप—देखो 'टप' (रू.भे.)

टिपकौ—देखो 'टपकौ' (रू.भे.)

टिपटिप—सं०स्त्री०—१ बूंद-बूंद गिरने या टपकने की क्रिया. २ ध्वनि विशेष ।

रू०भे०—टपटप ।

टिपण, टिपणी—सं०स्त्री०—वह विवरण जिससे किसी प्रसंग या वाक्य का अर्थ मालूम हो, टीका ।

रू०भे०—टिप्पण, टिप्पणी, टीपणी ।

टिपली—सं०स्त्री०—देखो 'टिपलौ' (अल्पा., रू.भे.)

टिपलौ—सं०पु०—मस्तक, शिर ।

क्रि०प्र०—कूटणौ, घड़णौ ।

अल्पा०—टिपली ।

टिपस—उ०लि०—उपाय, युक्ति । उ०—टिपस करै लेवा टका, नहीं मन मांहै नेह । राग करै इण सूं रखै, गणिका अवगुण गेह ।—ध.व.ग्रं.

क्रि०प्र०—करणौ, जमाणौ, बैठणौ, भिड़ाणौ, लागणौ ।

रू०भे०—टिप्पस ।

टिपूड़ौ—वि०पु० (स्त्री० टिपूड़ी) छोटे बच्चों के लिये प्रयोग किया जाने वाला (प्यार सूचक) शब्द ।

टिपौ—सं०पु०—१ गायन । उ०—कळावतां कळावां कनै आपरा कीया ख्याल टिपा गवावै है —र. हमीर

२ देखो 'टिप्पौ' (रू.भे.)

टिप्पण, टिप्पणी—देखो 'टिपणी' (रू.भे.)

टिप्पस—देखो 'टिपस' (रू.भे.)

टिप्पौ—सं०पु०—१ उछल-उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच में टिकान, फेंकी हुई वस्तु का जाते हुए बीच-बीच में भूमि का स्पर्श ।

क्रि०प्र०—खाणौ, देणौ ।

मुहा०—१ टिप्पा खाणा—आवारा घूमना, बेकार फिरना, भरे हुए जलाशय में उठने वाली लहरों का तट से टकराना. २ टिप्पा देणा—मस्ती में झूमते हुए फिरना ।

२ एक रागिनी विशेष ।

मुहा०—टिप्पा देणौ—मधुर ध्वनि में गायन करना ।

३ संकेत मात्र ।

मुहा०—टिप्पौ धरणौ, नांकणौ—याद आने के लिये थोड़ा सा लिख लेना, संकेत देना ।

४ बूंद, कतरा. ५ इधर से उधर झुकने या हिलने-डोलने की क्रिया, झोंका । उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति दारू री तूंगां लागी सू ओछाछिआ घणे ठंडे पांणी सूं छांटि-छांटि नै वड़ां री साखां सूं नांगळी थकी झूलै छै । पवन री हवा सूं टिप्पा खाइनै रही छै ।—रा.सा.सं.

रू०भे०—टपौ, टप्पौ, टिपौ ।

टिवकौ—देखो 'टपकौ' (रू.भे.)

टिमकी—सं०स्त्री०—बिन्दी । उ०—खोळा टंगियोड़ा गळ में खूंगाळी । जळजुत ठोडी पर टिमकी जंघाळी ।—ऊ.का.

टिमची—सं०स्त्री०—तिपाई ।

रू०भे०—टिवची ।

टिमटिमाणौ, टिमटिमाबौ-क्रि०अ०—रह रह कर चमकना, मन्द-मन्द प्रकाश देना, झिलमिलाना ।
टमटमाणौ, टमटमाबौ (रू.भे.)

टिरड़—देखो 'टरड़' (रू.भे.)

टिरड़ौ-वि०—१ घमंडी, अभिमानी. २ सिनकी ।
संज्ञास्त्री०—घमंड, अभिमान । उ०—गळ झाति सिरड़ी मन में सिरै, सिरै न टिरड़ी कुमांगसां ।—ऊ.का.

टिरणौ, टिरबौ-क्रि०अ०—ऊंचे आधार से नीचे की ओर अधर में रहना, लटकना ।

टिरयोड़ौ, टिरियोड़ौ-भू०का०कृ०—लटका हुआ ।
(स्त्री० टिरयोड़ी, टिरियोड़ी)

टिलायत—देखो 'टीलायत' । उ०—गिरा भ्रात उभै राड़ एक गिरं । सिरा हुत टिलायत राव करं ।—चिमनजी कवियौ

टिलौ, टिल्लौ-सं०पु०—धक्का, टक्कर, आघात ।
उ०—१ हुते टिलां हाथियां, जूट हुम्मलां हजारां । सझे चाढ़ि वळ सबळ, हमी नाळियां अपारां ।—सू.प्र.
उ०—२ करे पाव टिल्ला पछै सूर कोधौ । दिसा लंक आकास में हांक दीधौ ।—सू.प्र.
मुहा०—टिल्ला देणा—उकसाना, प्रेरित करना ।
रू०भे०—ठिलौ, ठिल्लौ ।

टिवचौ—देखो 'टिमचौ' (रू.भे.) उ०—खांड रा कापा भेळा कर वेकी कर राखी, मैदो, मिरत सारो काढ़ तयार कर राखियो, टिवची, पळगां सरब तयार कर गुमासता च्यार-पांच था तिकां नै कही सारी मग्यरा करी छै ।—राजाभोज अर खाफरै चोर री वात

टींगण—देखो 'टेंगणौ' (मह., रू.भे.)

टींगणियौ—देखो 'टेंगणौ' (अल्पा., रू.भे.)

टींगणौ—देखो 'टेंगणौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टींगणी)

टींगणौ, टींगबौ-क्रि०अ०—किसी पदार्थ की प्राप्ति के लिए तकना, लालायित होना, दीन होना ।
टींवणौ, टींवबौ, टीवणौ, टीवबौ, टूंगणौ, टूंगबौ—रू०भे० ।

टींगर-उ०वि०—बाल-बच्चे ।
यौ०—टाबर-टींगर, टींगर-टोळी ।
अल्पा०—टींगरियौ ।

टींगर-टोळी—देखो 'टाबर-टींगर' (रू.भे.) उ०— टींगर-टोळी ले चट-पट चला टोळी । चहुंघां चींचणमी दुवधा घट दोळी ।—ऊ.का.

टींगरियौ—देखो 'टींगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डांडा तांमाडै केरड़िया टींकै । रोटा मांगी नै टींगरिया रींकै ।—ऊ.का.

टींगा-टोळी-सं०स्त्री०यौ०—१ हाथ-पांव पकड़ कर जबरन ले जाने की क्रिया ।
वि०वि०—इसमें किसी मनुष्य या बच्चे को जबरन ले जाने के लिए एक व्यक्ति उसके हाथ व दूसरा पैर पकड़ता है, फिर उसे उठा कर ले जाया जाता है ।
क्रि०प्र०—करणी ।
२ खींचातान ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
रू०भे०—टांगा-टोळी, ठींगा-ठोळी ।

टींगाणौ, टींगाबौ-क्रि०स०—लालायित करना, तकाना ।
रू०भे०—टींवाणौ, टींवावौ, टीवाणौ, टीवावौ, टूंगाणौ, टूंगाबौ ।

टींगायोड़ौ-भू०का०कृ०—लालायित किया हुआ ।
(स्त्री० टींगायोड़ी)

टींगियोड़ौ-भू०का०कृ०—लालायित हुवा हुआ, तका हुआ ।
(स्त्री० टींगियोड़ी)

टींच-सं०स्त्री०—लड़ाई, युद्ध । उ०—अबै अठै जसवंतजी सवार रा हीज सेवा पूजा कर जीम कर नै जीनसाल पहर नै घाटा रै मुहंडै आवै । उठी या पातसाही फौज चढ़ नै आवै । अठै पोहर ३ टींच हुवै ।
—राव मालदे री वात

टींचणौ-सं०पु०—पशु के पिछले पैर का संधिस्थान ।
अल्पा०—टींचणी ।

टींचियौ—देखो 'टोचियौ' (रू.भे.)

टींट-सं०स्त्री०— पक्षी का विष्ठा, बींट ।

टींटोळी, टींटोड़ी, टींटोहड़ी-सं०स्त्री० [सं० टिट्टिभः] जल के निकट रहने वाली बड़ी चिड़िया, टिटहरी ।
रू०भे०—टिटिभ, टिटिड़ी, टिटिभ, टींटोळी, टीटोड़ी, टीटभ, टीटीं, टीटूड़ी ।

टींडरौ—देखो 'टींडसी' ।
उ०—तदनंतर मुंग वडी, उडद वडी, छमका वडी, पलेह वडी, साउंतली वडी, माहिन नुं चीर छमकावी, डोडी खाइयां टळटळतां टींडरां भली वालहुलि ।—व.स.

टींडसी-सं०स्त्री०—१ टिंड नामक एक लता व उसके लगने वाला फल जिसकी तरकारी बनती है । उ०—नारेळां बरगी गुड़ैक टींडस्यूं रांमूड़ो अब राजी हुं गयो ।—लो.गी.
रू०भे०—टींडी ।
मह०—टींडसौ, टींडौ ।

टींडसौ—देखो 'टींडसी' (मह. रू.भे.) उ०—मीठा हुवै मतीर, खूब खाटोड़ा फोगां । काचर काकड़ियां, टींडसा सागां जोगां ।—दसदेव

टींडी—देखो 'टींडसी' (रू.भे.)

टींडू-सं०पु०—काले रंग का वृक्ष विशेष, इसके पत्तों से बीड़ियां बनती हैं ।

टींडौ—देखो 'टींडसी' (मह., रू.भे.)

टींप—देखो 'टीप' (रू.भे.)

टींवरू—देखो 'टींमरू' (रू.भे.) उ०—टोकर टींटू टींवरू, टाहुलीआ

नइं टोट। टहि टटिवंटणि टहिकला, टाक टपाली सोट।—मा.कां.प्र.

टींवणौ, टींववौ—देखो 'टींगणौ, 'टींगवौ' (रू.भे.)

टींवाणौ, टींवावौ—देखो 'टींगाणौ, टींगावौ' (रू.भे.)

टींवायोड़ौ—देखो 'टींगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टींवायोड़ी)

टींवियोड़ौ—देखो 'टींगियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टींवियोड़ी)

टी-सं०पु०—१ आकाश. २ बादल. ३ पर्वत.

सं०स्त्री०—४ पृथ्वी. ५ गर्दन. ६ हानि।

टीकड़ी—१ देखो 'टिकड़ी' (रू.भे.) २ देखो 'ठीकरी' (रू.भे.)

टीकणौ, टीकवौ-क्रि०स०—तिलक करना।

टीकम, टीकमौ-सं०पु० [सं० त्रिविक्रम] १ वामनावतार। उ०—बदरी टीकम परस बुध, जगमोहण जैकार। घण दाता आणंदघण, स्रीपति सब आधार।—ह.र.

२ विष्णु। उ०—टीकमादेस अनंत सिध तारण, उदाहरण अेळा असमांन।—अज्ञात

३ श्रीकृष्ण। उ०—सतवार जरासंध आगळ स्रीरंग, विमहा टीकम दीध वग। मेलि घात मारे मधुसूदन, असुर घात नांखे अळग।—जमणजी सोदो

टीकर-सं०पु०—बबूल का वृक्ष (तोरावाटी, मेवात)

टीकली-फमेड़ी-वि०यौ०—१ मुख्या, प्रमुख व्यक्ति. २ दक्ष, प्रवीण, हर्फनमौला।

क्रि०प्र०—होणौ।

टीकलौ-वि०पु० (स्त्री० टीकली) १ वह बैल जिसके सिर पर टीका हो। (अशुभ)

२ वह पशु जिसके शिर में सफेद चिन्ह हो. ३ जिसके सिर पर तिलक किया हुआ हो, तिलकधारी।

टीका-सं०स्त्री०—वह व्याख्या, ग्रंथ या वाक्य जो किसी पद, ग्रंथ या वाक्य का अर्थ स्पष्ट करे।

क्रि०प्र०—करणी।

मुहा०—टीका टिप्पणी करणी—आलोचना करना।

यौ०—टीका-टिप्पणी।

टीकाइत, टीकाइस, टीकाई—देखो 'टीकायत' (रू.भे.)

उ०—१ तरै मेहराज कह्यौ—राव रांणगदे री बेटी टीकाइत सादो ...मांहिलां रै दिनां दोय नै परणीजसी।—नैणसी

उ०—२ रावळ केल्हण, रावळ केहर रौ वडौ बेटौ टीकाइत हुतौ, लाछां देवड़ी रै पेट रौ।—नैणसी

उ०—३ राजा भगवांनदास भारमल रौ, आंबेर टीकाई, वडौ ठाकुर हुवौ।—नैणसी

उ०—४ रांणौ पतौ टीकाई।—नैणसी

टीकाकार-सं०पु०—टीका करने वाला, व्याख्याकार।

टीका-दौड़-सं०स्त्री०यौ०—नये राजा के गद्दीनशीन होते ही विपक्षी देश पर हमला करने की एक रस्म।

वि०वि०—राजा गद्दीनशीन होकर किसी दुश्मन के शहर या इलाके को लूटे। अगर कोई वड़ा दुश्मन उस वक्त न हो तो मेवाड़ के महाराणा अपने ही देश के भील, मेर आदि के ग्रामों पर इस रीति को पूरा करते थे।

टीकायत-सं०पु०—१ राज्याधिकारी. पट्टाधिकारी, राजा का उत्तराधिकारी, टिकैत। उ०—मंडोवर गढ़ राव चूंडोजी राज करै। तिणरै १४ कंवर, तिण में राजपाट टीकायत राव रिणमलजी।

—राव रिणमल री वात

२ ज्येष्ठ पुत्र. ३ किसी महंत या मठ का उत्तराधिकारी, पट्ट शिष्य. ४ तिलकधारी. ५ मुखिया, प्रधान, नायक, नेता।

उ०—बारै न्हांखो कूंचियां तुड़ावौ ताळा रे, झगड़ौ आदरियौ, वा वा' झगड़ौ आदरियौ टोळी रै टीकायत माथै रै, झगड़ौ आदरियौ।

—लो.गी.

रू०भे०—टिकाई, टिकैत, टीकाइत, टीकाइस, टीकाई, टीकाळ, टीकैत, टीकोइत।

टीकाळ—१ देखो 'टिकायत' (रू.भे.) उ०—स्रंग लोक सीस सुचंग आदेस तोवह अंग। परमेस पाव पताळ कहि किसन घर टीकाळ।

—पीरदांन लाळस

२ वह जिसके भाल में तिलक हो।

टीकियोड़ौ-भू०का०कृ०—तिलक किया हुआ।

(स्त्री० टीकियोड़ी)

टीकी-सं०स्त्री०—१ गोल बिन्दु, बिंदी, बेंदी. २ ललाट पर लगाया जाने वाला छोटा गोल टीका।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

यौ०—टीकी-टमकौ।

३ वह भैंस या गाय जिसके ललाट पर सफेद गोल बिंदु या तिलक हो. ४ लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत.

५ स्त्रियों के ललाट पर धारण करने का एक आभूषण विशेष।

उ०—बादळा में बीजळी रौ भळकौ ज्यूं गूंगट में टीकी को पळकौ

—पनां वीरमदे री वात

टीकैत, टीकोइत—देखो 'टीकायत' (रू.भे.)

टीकौ-सं०पु०—१ शृंगार या साम्प्रदायिक संकेत के लिए ललाट व शरीर के अन्य अंगों पर गीले चंदन, केशर, रोली, मिट्टी आदि से बनाया हुआ चिन्ह, तिलक। उ०—१ सहु नारि तणै सिर टीकौ।

—स्रीपाळ रास

उ०—२ तोरण आयां करै आरती टीकौ काढ़ नै सासू खांचै नाकौ रे।—जयवांणी

क्रि०प्र०—काढ़णौ, लगाणौ।

मुहा०—१ टीको काढ़णौ, टीको लगाणौ—बहुत खर्च करवाना, व्यर्थ खर्च कराना, धोखा दे कर खर्च करवाना। २ टीको लागणौ—कलंक लगना, धब्बा लगना।

२ विवाह से पूर्व मंगनी करते समय कन्या पक्ष वालों की ओर से वर पक्ष वालों को दी जाने वाली नकदी, जेवर, पशु आदि।

उ०—कुंवर विजयसिंहजी पण आ सामल हुवा, वडी जांन बणाय जयसळमेर जाय डेरा किया, उठै रावळजी री टीको आइयो।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

क्रि०प्र०—दैणौ, भेजणौ, मेलणौ, लैणौ।

३ राजसिंहासन, गद्दी। उ०—१ वांसै कान्हो निवळो सो ठाकुर हुवो तरै सतै चूंडावत कान्है कन्हां टीको उरो लियो।

—राव रिणमल री वात

उ०—२ वणवीर रै कंवर दो हुवा, वडा कंवर रो नांम कांनड़दे। छोटो रांणगदे। टीकै कांनड़देजी सोवनगीर राज करै छै।

—वीरमदे सोनीगरा री वात

उ०—३ राजा मोखरो कांम आयो। पछै मोखरा री बेटो बहवन टीकै बैठो।—नैणसी

मुहा०—टीकै बैठणौ—राजगद्दी पर बैठना, राज्य-सिंहासनारूढ़ होना।

४ राज तिलक। उ०—राव जैतसिंघ युद्ध करि वैकूंठ सिधायो। राव कल्यांणमलजी नूं ठकुरीयासर ग्रांम टीको हुयो पर विखो हुओ।

—द. वि.

५ ललाट का मध्य भाग (जहां तिलक लगाते हैं) ६ प्रजा या साहूकारों द्वारा राजा या जमींदार को दी जाने वाली भेंट।

७ स्त्रियों के मस्तक पर धारण करने का एक स्वर्णाभूषण।

क्रि०प्र०—गूंथाणौ, घड़ाणौ, बांधणौ, लगाणौ।

८ पुरुषों की पगड़ी के साथ लगाया जाने वाला एक आभूषण विशेष ९ घोड़े का ललाट जहां भांवरी या चिन्ह होता है. १० चिकित्सा करने की युक्ति जिसमें बीमारी विशेष से बचने के लिए सुइयों द्वारा शरीर में औषध पहुँचाई जाती है। ज्यूं हैजे री टीको, चेचक री टीको, प्लेग री टीको।

क्रि०प्र०—दैणौ, लगाणौ।

११ मृत्यु के बारहवें दिन सम्बन्धियों या मित्रों द्वारा दिया जाने वाला रुपया।

१२ राजा, अधिपति। उ०—रांणो ईसरदास, ऊमरकोट टीको छो। पछै संमत १७१० रावळ सबळसिंघ इणनूं परो काढ़ नै जैसिंघ नूं टीकै बैसांणियो।—नैणसी

टीचियौ-सं०पु०—१ चोट लगने से होने वाला घाव या चिन्ह।

क्रि०प्र०—दैणौ, लगणौ, लगाणौ।

मुहा०—टीचियौ दैणौ—कटु शब्द बोलना, व्यंग्य कसना।

२ वह चिन्ह जो घाव मिलने के पश्चात् बना रहता है।

रू०भे०—टींचियौ।

टीटण-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का छोटा जानवर (शेखावाटी)

टीटभ, टीटीं, टीटूड़ी, टीटोड़ी—देखो 'टींटोड़ी' (रू.भे.)

उ०—थियो सदय सुण निज थुई, टीटभ हूंत क्रसांन। उणरा बाळ उबारिया, महामंत्र जस मांन।—बां.दा.

मुहा०—टीटूड़ी समद उळीचणौ—तुच्छ या छोटे द्वारा बहुत बड़ा कार्य करने का साहस करना।

मि०—'ठीकरी घड़ो फोड़णौ'।

टीड-–देखो 'तीड' (रू.भे.)

टीडी-सं०स्त्री०—देखो 'तीड' (रू.भे.)

टीडी-भळको-सं०पु०यो०—स्त्रियों के भाल पर लगाया जाने वाला अर्द्ध-चन्द्राकार आकृति का एक स्वर्ण आभूषण, इसमें नगीने जड़े रहते हैं।

मि०—सिवतिलक।

टीडूर, टीडूरौ-सं०पु०—टींडसी।

उ०—मोगरी उढवी कइरां कंकोड़ां कारेलां रायकारेलां तोरईआं सीघोडा सेलरां राइआं टीडूरां सड़सड़ती डोडी, कळकळता कसुंभा।

—व.स.

टीन-सं०स्त्री० (अं० टिन) १ रांगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर. २ इस प्रकार की चद्दर का बर्तन।

टीप-सं०स्त्री०—१ दीवार के दो पत्थरों की संधिस्थान में लगाई जाने वाली पतली चूने या सीमेंट की लकीर या लेप।

क्रि०प्र०—करणी।

२ पतला चूना या सीमेंट जो दीवार के पत्थरों की जोड़ पर मजबूती के लिए लगाया जाता है।

यौ०—टीप-टाप।

३ चूने की गच कूटने का कार्य, पिटाई. ४ गाने का ऊँचा स्वर, तान (संगीत)

क्रि०प्र०—दैणी, लगणी, लगाणी।

५ वह धन जो किसी कार्य को करने या जारी रखने के लिए लोगों अथवा सदस्यों से लिया जाय, चंदा।

६ चंदा देने वालों के नाम का सूची-पत्र. ७ स्मरण के लिए जल्दी-जल्दी लिखने की क्रिया. ८ (खर्चे आदि का) ब्योरा, आंकड़ा।

उ०—आप साहू दारू की भटी कढ़ाई छै, लाख रुपियां की टीप चढ़ाई छै, लाख लाख लागा छै, मुसाला जिका तो अरोगै दोय प्याला

—दरजी मयाराम री वात

९ संगीत में वह स्वर जिस पर गायक स्वर की खोज में जाते हैं।

१० वाद्य की ध्वनि, आवाज। उ०—जवन्निय सेन प्रठै किर ज्वाळ, घमंघम पक्खर गुग्घरमाळ। टमंकि तवल्ल नफेरिय टीप, भूंभाउ अब्बक वाज सजीप।—रा.रू.

वि०—अत्यधिक ठंडा। उ०—पण ओरी में ई वा छांट सूं गिरियां-

गिरियां तक पांणी भरीजग्यौ। सांमनै सूं ठंडौ-टीप वायरौ आवतौ हो।—रातवासौ

यौ०—ठंडौ-टीप।

टीप-टाप—सं०स्त्री० (अनु०) ठाटवाट, सजावट, दिखावट।

रू०भे०—टाप-टीप, टीम-टाम।

टीपणी—१ देखो 'टिपणी' (रू.भे.) २ किसी कार्य को करने या जारी रखने के लिये लोगों से अथवा सदस्यों से लिया जाने वाला धन, चंदा. ३ चंदे का सूची-पत्र।

टीपणौ—सं०पु० [सं० टिप्पनकम्] मास, वार, तिथि आदि जानने की पुस्तक, पंचांग। उ०—सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर। मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढ़ै मुख नूर।—वां.दा.

टीपणौ, टीपबौ—क्रि०स०—टांकना, अंकित करना, लिख लेना, टीपना।

टीपर—देखो 'टीपरौ' (मह., रू.भे.)

टीपरियौ—देखो 'टीपरौ' (अल्पा., रू.भे.)

टीपरी—सं०स्त्री०—देखो 'टीपरौ' (अल्पा., रू.भे.)

टीपरौ—सं०पु०—घी, तेल, दूध आदि तरल पदार्थ निकालने तथा नापने के लिए बना हुआ धातु का एक कटोरीनुमा बरतन जिसको पकड़ने के लिए लम्बी डंडीनुमा शलाख लगी रहती है।

अल्पा०—टीपरियौ, टीपरी।

मह०—टीपर।

टीपाटीप—वि०—१ पूर्ण भरा हुआ, परिपूर्ण. २ शौकीन।

टीपौ—सं०पु०—बूंद, कतरा।

टीब—देखो 'टीबौ' (मह.) उ०—पावस हुयां व्यतीत, टिकै ना टीब ठिकांणै। द्रुत-गत भागा दौड, हेड रमवा हळ मांणै।—दसदेव

टीबड़ी—देखो 'टीबौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ भूरा-भूरा भाखर भूलै, टीवड़ियां सूं रौळ।—लो.गी.

उ०—२ चांद किरण रात्यूं रमी, कोरां टीवड़ियां।—लू

उ०—३ टीबी ओलै टीवड़ी अे, ज्यां रह मवसी का पूत। वारी, म्हारा गूगा, भल रही वो।—लो.गी.

टीवर, टीवरण—सं०स्त्री०—श्याम रंग के तने वाला एक मध्य आकार का वृक्ष जिसकी पत्तियों की बीड़ियां बनती हैं। इसके फलों में बड़े-बड़े बीज निकलते हैं, यह दो प्रकार का होता है—कड़ुए फल वाला तथा मीठे फल वाला। इसके फल स्वादिष्ट होते हैं।

अल्पा०—टीवरियौ, टीवरू, टीवरौ।

मह०—टीवर।

टीवरणी—सं०स्त्री०—लगभग दो-तीन फुट लम्बा एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां औषध के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

टीवरू—सं०पु०—१ टीवरण का फल. २ देखो 'टीवरण'। (अल्पा., रू.भे.)

टीवरौ—सं०पु०—१ फूटा हुआ मिट्टी का जल-पात्र. २ देखो 'टीवरण'। (अल्पा., रू.भे.)

टीबी—सं०स्त्री०—१ क्षय रोग. २ देखो 'टीबौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पग पग टीबौ मारगां, रोकै आंडी आय। पाछा फेरै पंथिया, जांणै हेत दिखाय।—लू

३ देश का नाम (व.स.)

टीबौ—सं०पु०—१ बालू का ढेर, रेत का ढेर। उ०—१ टीबै तौ ओलै, अे लाडो बेटी, टीवड़ी, ज्यां तळ हाळीड़ै री खेत, बावल नैं कहियौ अे, हाळी नैं बेटी क्यूं दई ?—लो.गी.

उ०—२ टीबां बरसौ डैरियां वरसौ, हो चितरंग ताळ विछायौ बादळी। जेठ उतरियौ असाढ़ उतरियौ, हो सांवण उतरियौ जाय बादळी।—लो.गी.

२ रेगिस्तानी, पहाड़ी।

अल्पा०—टीवड़ियौ, टीवड़ी, टीवड़ौ।

मह०—टीब।

टीम—सं०स्त्री० [अं०] खेलने वालों का दल।

टीमक—सं०स्त्री०—रात्रि में खरगोश की शिकार करने के हेतु काम में ली जाने वाली कावड़ (मेवाड़)

वि०वि०—कावड़ के अगले पलड़े में लालटेन रख कर उसके पीछे कागज का ठप्पा लगा दिया जाता है ताकि प्रकाश आगे ही पड़े पीछे नहीं पड़े और उसके पिछले पलड़े में पत्थर रख दिया जाता है ताकि सन्तुलन हो जाय। एक आदमी कावड़ वाले आदमी के पीछे लेकर चलता है। जब अगले पलड़े की लालटेन के प्रकाश में खर दिखाई देता है तो उस पर बन्दूक चलाई जाती है।

टीमटाम—देखो 'टीप-टाप' (रू.भे.)

टीमरुऔ—सं०पु०—लकड़बग्घा। उ०—भूखौ तिसियौ भटकियौ, जो सिंह-सुत जोधार। टीमरुआं री टांटळयां, फोजां फाड़णहार।

—रेवतसिंह भाटी

टीमल—सं०पु०—कृत्य, काम (व्यंग्य) ? उ०—पण हाल पितरी मेळौ अर बारह महीना-रा टीमल तौ बाकी-ई पड़िया है।—वरसगांठ

टीला—सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा।

टीली—सं०स्त्री०—१ बिन्दी, तिलक. २ एक प्रकार का आभूषण (व.स.) ३ गिलहरी।

अल्पा०—टीलोड़ी।

टीलुं, टीलू—देखो 'टीलौ' (रू.भे.) उ०—विवेक सोवन टीलुं तपतपे, साचौ साचौ वचन तंबोळ रे। संतोख काजळ नयणे भरयां, जीवदया कुंकुम घोळ रे।—स.कु.

कहा०—टीलू तकदीर वाळा नै थाय—भाग्यशाली को ही तिलक होता है।

टीलोड़ी—देखो 'टीली' (अल्पा., रू.भे.)

टीलौ—सं०पु०—१ ढेर. २ बालू का ऊंचा ढेर। ३ राजतिलक। उ०—वाळक थकै लियौ अतुळीवळ, महपत न को

प्रताप मगो। महित जोधपुर मूर मण्डोवर, टीलो राव मालदे तणो।
—महाराजा जसवंतसिंघ प्रथम जोधपुर री गीत

४ सामने जा कर अगवानी करने का भाव. ५ तिलक, टीका।

उ०—पीळो तिलक वैसणी परगट, रच सुद्रणी स्यांम टीलो रट।
—र.ज.प्र.

५ एक प्रकार का आभूषण (व.स.)

रू०भे०—टीलुं, टीलू।

टीवणो, टीववो—देखो 'टींगणो, टींगवो' (रू.भे.)

उ०—परजापतियां नह परजा नैं पाळै। टुकड़े टुकड़े नैं टीवै टंक टाळै।—ऊ.का.

टीवाणो, टीवावो—देखो 'टींगाणो, टींगावो' (रू.भे.)

टीवायोड़ो—देखो 'टींगायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० टीवायोड़ी)

टीवियोड़ो—देखो 'टींगियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० टीवियोड़ी)

टीस-सं०स्त्री० (देश०) १ ठहर-ठहर कर उठने वाला दर्द, चुभती हुई पीड़ा, कसक।

क्रि०प्र०—चालणी, मारणी, हालणी।

२ अत्यधिक पीड़ा के कारण मुंह से निकलने वाली दर्दभरी ध्वनि।

उ०—१ पूत मोर जद बट पड़ियो, चौरंग पाड़ी चीस। बहु अधकी हर खर वळी, टुक यक करी न टीस।—रेवतसिंह भाटी

उ०—२ चित हुत सूई चबड़कै, टसकै पाड़ै टीस। रज वांकी वा तो रहै, पळ झड़ियां पांडीस।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०प्र०—ऊठणी, करणी, निकाळणी।

टीसणो, टीसवो—क्रि०अ०—१ पीड़ा होना, ठहर-ठहर कर दर्द होना, कसकना. २ बहुत पीड़ा के कारण मुंह से दर्दभरी आवाज निकालना।

टीसियोड़ो—भू०का०कृ०—१ रह-रह कर उठने वाले दर्द के कारण पीड़ित हुवा हुआ. २ दर्दभरी ध्वनि निकाला हुआ।

(स्त्री० टीसियोड़ी)

टीसी-सं०स्त्री०—१ ऊपर का सिरा, शिखर. २ टहनी।

उ०—सो किण भांति रा वाकरा जिके कड़कती सांध रा, बड़कती नळी रा, भाहरे साद रा, मादळिए पेट रा, माड़ि वोर काचर रा, बरड़णहार, घणं कूंभट नैं वावळी री टीसीग्रां रा चाड़णहार।
—रा.सा.सं.

३ (नाक का) अग्र भाग। उ०—देह री विदेह होय गयो पण नाक री टीसी सूं ओळख लियो।—पलक दरियाव री वात

टुंकार—देखो 'टपकार' (रू.भे.)

टुंगरी, टुंगारी-वि०—बात-बात पर नाराज होने वाला, तुनक-मिजाजी।

मुहा०—टुंगारी और भिखारी—बात बात पर नाराज होने वाला, हीन या असमर्थ व्यक्ति के प्रति व्यंग्य।

टुंटी—

उ०—बोलती छुटइ ऊतारइ, पाहण फाडइ, बगाई करतां कंठ ओडइ, जीभइ जब छोलइ, केसि वांधी ज्वर नी वहिन, धूमकेत कुडी आहणइ कुहणी छेहि खात्र पाडइ, टुंटि छेहि गांठि बोलइ, आंखि हूं तउं काजळ हरइ।—व.स.

टुंटो—देखो 'टूंटो' (रू.भे.) उ०—टुंटो हुंतो टाभिजुं, बाघो भूख मरूंह। जावूं ढोलाजी रै सासरै, तो नागरवेलि चरूंह।—ढो.मा.

टुंडी-सं०स्त्री० [सं० तुण्ड] १ ठोडी. २ नाभि।

रू०भे०—डुंडी।

टु-सं०पु०—१ हाथ. २ सुहागा. ३ मुर्गा. ४ मुकुट. ५ चोटी. ६ सुदर्शन चक्र (एका.)

टुक-वि०—किंचित्, थोड़ा, तनिक, जरा। उ०—कठै ही टुक वात सुणं तो तुरत आप जाय राजी कर दस्तो मेट आवै छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०वि०—१ किंचित सा, जरा सा. २ क्षण भर, पलक भर।

उ०—मूवे पीड़ पुकारतां, वैद्य न मिळिया आइ। दादू थोड़ी बात थी, जे टुक दरस दिखाइ।—दादू बांणी

३ देखो 'टक' (रू.भे.)

मुहा०—टुक टुक देखणो—देखो 'टक-टक देखणो'।

यौ०—टुक-टुक।

४ देखो 'टूक' (रू.भे.) उ०—मुवां पछह बोम न मांन्यो, ऊभां पगां न दीदी अेक। चवतां खुरां घैन घर चाली, टुक-टुक ऊपर पग टेक।—ईसरदास मोयल रो गीत

सं०स्त्री०—५ कंचुकी का वह भाग जो स्तन की चूंची के ठीक ऊपर रहता है। यह कंचुकी के कपड़े के रंग से भिन्न रंग का भी होता है और आगे से नुकीला होता है।

रू०भे०—टुग।

यौ०—टुक-टुक।

टुकड़-वि०—१ मोटा, दृढ़, मजबूत (कपड़ा) २ देखो 'टुकड़ो'।
(मह., रू.भे.)

रू०भे०—टुक्कड़।

टुकड़गदाई-सं०स्त्री०—टुकड़ा (रोटी) मांगने या भीख मांगने का कार्य.

टुकड़गदो-सं०पु०—१ केवल अपनी उदर-पूर्ति का ध्यान रखने वाला, दूसरे के टुकड़े (रोटी) पर आराम करने वाला. २ रिश्वतखोर, टुकड़ैल. ३ भिखारी।

टुकड़तोड़-सं०पु०—दूसरों के टुकड़े (रोटी) पर पलने वाला व्यक्ति।

टुकड़ियो—देखो 'टुकड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

टुकड़ी-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का करघे से बुना मोटा कपड़ा विशेष

उ०—वीझणां सूं वायेरा लीजै छ। सू किण भांत रा वीझणा छै? लाहोर रा कियोड़ा छै, रूपै री डांडी जरी सूं मढ़ी, टुकड़ी री झालरी
—रा.सा.सं.

२. मांस रखने का बर्तन। उ०—तठा उपरायंत हिरण खुलै छै सू

जाणै धोवी रै घर कपड़ा मोकळा किया छै। मांस उतार उतार टुकड़ियां में घातजै छै।—रा.सा.सं.

३ सेना का खण्ड, दल।

यौ०—फौजी-टुकड़ी।

४ देखो 'टुकड़ौ' (३) (अल्पा., रू.भे.)

टुकडेल, टुकड़ैल–वि०—१ घर घर रोटी मांग कर खाने वाला भिखारी, मंगता. २ घूंसखोर, रिश्वतखोर।

टुकड़ौ–सं०पु० [सं० स्तोक = थोड़ा] १ वह हिस्सा या भाग जो किसी वस्तु से टूट कर अलग हुआ हो, खण्ड। ज्यूं—पत्थर रौ टुकड़ौ, कागज या रोटी रौ टुकड़ौ।

मुहा०—टुकड़ा टुकड़ा करणा—चूर चूर करना।

२ चिन्ह आदि के द्वारा विभक्त अंश। ज्यूं—खेत रौ टुकड़ौ।

३ रोटी का तोड़ा हुआ भाग, कौर, ग्रास। उ०—१ परजापतियां नह परजा नै पाळै। टुकड़ै टुकड़ै नै टीवै टंक-टाळै।—ऊ.का.

उ०—२ डिगती डोकरियां डोकरिया डोलै। बाबा टुकड़ौ दौ हावा कर वोलै।—ऊ.का.

मुहा०—१ टुकड़ा तोड़णा—जीवन निर्वाह करना, किसी प्रकार जीविका चलाना. २ टुकड़ा देणा—रोटी देना, भिक्षुक को भिक्षा देना, आश्रित को रोटी देना. ३ टुकड़ा मांगणा—भिक्षावृत्ति करना, रोटी मांगना. ४ टुकड़ौ नांकणौ—(कुत्ते को) रोटी देना अर्थात् घूंस देना, रिश्वत देना. ५ टुकड़ां पर पळणौ—पराश्रित रहना, दूसरों की कमाई पर निर्वाह करना।

कहा०—टुकड़ा दे दे बछड़ा पाळ्या, सींग हुआ जद मारण चाल्या—खिला खिला कर बछड़ों का पालण-पोषण किया किन्तु जब वे बड़े हुए तो पालने वाले ही को मारने लगे अर्थात् नमकहराम आश्रितों के प्रति उक्ति।

अल्पा०—टुकड़ी।

मह०—टुकड़, टुक्कड़, टूक, टूकड़।

टुकरी–सं०स्त्री०—रोटी।

टुकियक–क्रि०वि०—१ थोड़ा सा, लेश मात्र, तनिक।

उ०—खुस खाणा है खीचड़ी, मांहै टुकियक लूंण। मांस पराया खाय के, गळा कटावै कूंण।—अज्ञात

२ क्षण, निमिष मात्र। उ०—सांई देढ़ी अंखियां, वैरी खलक तमांम। टुकियक झोलौ महर कौ, लवखूं करै सलांम।—अज्ञात

टुकिया—देखो 'टुक' (५) (रू.भे.)

उ०—सिधायौ सूरज धरती छोड, देख्यौ सैलांणी में सांझ। करै आथूंण घणी अंधेर, लुकावै पीळा टुकिया मांझ।—सांझ

टुक्कड़—देखो 'टुकड़' (रू.भे.)

टुग—देखो 'टुक' (रू.भे.) उ०—धीवड़ियां घर बाळापण धीर, उगेरै 'वीरौ' ऊंची राग। जोवतां टुग टुग तारौ अेक, सरावै धरती रा सोभाग।—सांझ

मुहा०—टुग टुग देखणौ—देखो 'टुक टुक देखणौ'।

यौ०—टुग-टुग।

टुगर–सं०स्त्री०—स्थिर दृष्टि से देखने की क्रिया, एकटक देखने की क्रिया।

टुचकार–सं०स्त्री०—पशुओं को हांकने के लिए मुंह से की जाने वाली टचटच की ध्वनि विशेष। उ०—विणजारां रा ऋखभ ज्यूं, टोळ्या दे टुचकार।—किसोरसिंह बारहठ

टुचकारणौ, टुचकारबौ–क्रि०स०—मुंह से टिच टिच शब्द करते हुए पशुओं को चलने के लिए प्रेरित करना, हांकना।

टिचकारणौ, टिचकारबौ—रू.भे.।

टुचकारियोड़ौ–भू०का०कृ०—पशु को चलने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री० टुचकारियोड़ी)

टुचकौ, टुचियौ–वि०—१ छोटे कद का, छोटा।

मि०—ठींगणौ।

२ तुच्छ, साधारण।

टुच्चापण–सं०पु०—धूर्तता, नीचता। उ०—अर वो सोचण लागौ—गरीब बाळक सांमा ऊभा रोटी रै टुकड़ै नै तरसै अर म्हे वांनै चिगाय माल उडावां। हिरदै री कित्ती गिरावट अर सभाव-रौ कित्तौ टुच्चापण है।—वरसगांठ

टुच्चौ–वि०—चालाक, नीच, धूर्त, कपटी, ओछा।

मि०—लुच्चौ।

टुटरक–

उ०—सो आप आगा नूं पधारजै, तमासौ जोयजै है, कांहु दोय गडकड़ा टुटरक सो लियां बैठिया छै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

टुटरूंटूं–सं०स्त्री० (अनु०) पेंडकी या फाख्ता नामक पक्षी की बोली।

मि०—गटरगूं।

टुडी—देखो 'टुंडी' (रू.भे.)

टुणटुणाट, टुणटुणाटौ–सं०पु०—१ बकझक, बकवाद। उ०—तौ कांई हूं खायगी! कांय रौ टुणटुणाटौ लगायौ है?—वरसगांठ

२ टुन टुन की ध्वनि।

रू०भे०—टुरणाट, टुरणाटौ।

टुणटुणी–सं०स्त्री०—वाद्य विशेष। उ०—फेर ले आया गैनाओ-री लटकौ! कुण गरीवां री मदद करै है! सैंग ऊपरली टुणटुणी वजावै है।—वरसगांठ

टुणियौ—देखो 'टणौ' (अल्पा., रू.भे.)

टुनौ—देखो 'टोनौ' (रू.भे.)

टुवकियौ–सं०पु०—१ मिट्टी का छोटा जल-पात्र. २ छोटी डलिया टोकरी।

टुवकौ—देखो 'टवकौ' (रू.भे.)

दुरस-सं०स्त्री०—१ इच्छा के प्रतिकूल कार्य होने पर उठने वाला अप्रसन्न मनोवेग।
मि०प्र०—घावणो।
दुरणाट, दुरणाटो—देखो 'दुरणदुरणाट' (रू.भे.)
दुरणी-वि०—१ तुनक-मिजाजी. २ बात-बात पर बिगड़ने वाला।
दुरणो, दुरबो-क्रि०अ०—१ किसी पदार्थ की प्राप्ति के लिए लालायित होना, तरना। उ०—ईंठा पर कूकर ज्यूं त्यागे दुररया।—अज्ञात
२ गिरना, ध्वस्त होना। उ०—टणका टणका तरु जग्वै दुरि जावै, दुरव्या गुरव्या गुण गरवै दुर जावै।—ऊ.का.
३ खिसकना, चलता बनना, जाना। उ०—कांम करतां करतां छव बजी। मजूरां आपरा सस्तर पाती सांभणा सरू किया। डोकरी मूंढो मचकोळतो बोली—ऊंह! हणी ई दुरण लागग्या।
—वरसगांठ
दुराणी, दुराबो-क्रि०अ०—१ लालायित करना, तकाना. २ गिराना, ध्वस्त करना. ३ खिसकाना, चलता बनाना।
दुरायोड़ो-भू०का०कृ०—१ लालायित किया हुआ, तकाया हुआ. २ ध्वस्त किया हुआ, गिराया हुआ. ३ खिसकाया हुआ।
(स्त्री० दुरायोड़ी)
दुरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ तका हुआ. २ गिरा हुआ, ध्वस्त. ३ खिसका हुआ।
(स्त्री० दुरियोड़ी)
टुळ-वि०—पृथक, अलग, विलग।
टुळकणो, टुळकबो-क्रि०अ०—१ मंद मंद गति से चलना, खिसकना। उ०—नगारा संख आरती धूंप, धुंअ नै झांपं है झणकार। टुळकिया अेवड़ धोरैं ओट, मुणीजै किलकारी उण पार।—सांझ
२ इधर-उधर घूमना, फिरना। उ०—दिन में बेळा दोय जगत में मरै'र जीवै। बिगड़ जावै बांणि टुळक अमलां नै टीवै।—ऊ.का.
२ टपकना, छलकना। उ०—रांमलै री भूवा टुळक-टुळक आंसू नांकण लागी।—वरसगांठ
दुळकाणी, दुळकाबो-क्रि०स०—मंद गति से चलाना, खिसकाना. २ इधर-उधर घुमाना, फिराना, घिराना. ३ टपकाना, छलकाना।
दुळकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ चलाया हुआ, खिसकाया हुआ. २ फिराया हुआ, घुमाया हुआ. ३ टपकाया हुआ, छलकाया हुआ।
(स्त्री० दुळकायोड़ी)
दुळकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ चला हुआ, खिसका हुआ. २ घूमा हुआ, फिरा हुआ. ३ टपका हुआ, छलका हुआ।
(स्त्री० दुळकियोड़ी)
दुळणो, दुळबो-क्रि०अ०—१ (चित्त का) चलित होना, अस्थिर करना. २ देखो 'टुळकणो, दुळकबो' (रू.भे.)
दुळाणो, दुळाबो-क्रि०स०—(चित्त को) चलित करना, अस्थिर होना. २ देखो 'टुळकाणो' (१) (रू.भे.)
टुळायोड़ो-भू०का०कृ०—१ चलित किया हुआ, अस्थिर किया हुआ. २ देखो 'टुळकायोड़ो' (रू.भे.)
टुळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ चलित बना हुआ, अस्थिर. २ देखो 'दुळकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० टुळियोड़ी)
टुसी—देखो 'ठुसी' (रू.भे.)
टूं-सं०पु०—ध्वनि विशेष।
टूंक-स०पु०—पर्वत की चोटी, शिखर। उ०—बाबहिया मोर कोयलां बोलै, मद आयो गिर हेक मन्नो। टूंकां गळ कांठळ लपटांणी, वणियो अरबद नवल बनो।—नवलजी लाळस
रू०भे०—टूक।
अल्पा०—टूंकली।
टूंकको-सं०पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा (शा.हो.)
टूकली—१ देखो 'टूंक' (अल्पा., रू.भे.) २ छोटी पहाड़ी।
(शेखावाटी)
टूंकलो—देखो 'टूंक' (अल्पा. रू.भे.)
टूंकियो, टूंक्यो-सं०पु०—१ वह ऊँचा स्थान जिस पर बैठ कर समीपवर्ती भू-भाग पर निगरानी का कार्य किया जा सके। उ०—एक जणो बंदूक ले'र टूंकियै बैठचो।—रातवासो
२ वह व्यक्ति जो किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर निकटवर्ती भू-भाग की निगरानी या चौकन्ना हो कर देख-रेख करता है। उ०—उठी नै टूंकियै बंदूक संभाळी अर अठी नै तरवार चमकी पळाक करती।
—रातवासो
३ किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर समीपवर्ती भू-भाग की चौकन्ना हो कर निगरानी रखने का कार्य या इस कार्य के बदले में दिया जाने वाला पारिश्रमिक. ४ भालू, रीछ (मेवाड़)
रू०भे०—टूकियो, टूकीयो, टूक्यो।
टूगणो, टूंगबो—देखो 'टींगणो, टींगबो' (रू.भे.)
टूंगाणो, टूंगाबो—देखो 'टींगाणो, टींगाबो' (रू.भे.)
टूंगाटोड़ो—देखो 'टींगायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० टूंगायोड़ी)
टूंगियोड़ो—देखो 'टींगियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० टूंगियोड़ी)
टूंच-सं०स्त्री० [सं० त्रोटि] १ चोंच।
मुहा०—टूंच घालणी, टूंच देणी—बनते हुए कार्य में विक्षेप डालना।
२ नोंक, अनी. ३ देखो 'टूंचको' (मह., रू.भे.)
रू०भे०—टांच।
टूंचको-सं०पु०—१ किसी वस्तु पर निकला हुआ या उभरा हुआ तीक्ष्ण भाग. २ छोटा काष्ठ-खण्ड. ३ पत्ते या फलादि का वह उपरि भाग जो वृक्ष या लता से सटा हुआ हो।
रू०भे०—टोचको।

महृ०—टूंच।
टूंचणौ, टूंचबौ—देखो 'टांचणौ, टांचबौ' (रू.भे.)
टूंचरी—सं०स्त्री०—हथौड़े के समान एक औजार जिसका आगे का भाग नुकीला होता है।
टूंचरौ—सं०पु०—देखो 'टूंचकौ' (रू.भे.)
टूंचियोड़ौ—देखो 'टांचियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टूंचियोड़ी)
टूंट—सं०स्त्री०—१ वात रोग से हाथ पैरों में पड़ने वाली मोड़. २ एहसान, आभार. ३ मारवाड़ में होने वाले फोग नामक वृक्ष का एक रोग विशेष। उ०—जे कदास कुवाव पड़ै तौ, हाथां बासण छूटजै। जाळी टूंट में ना काढै, भाग मरू रा फूटजै।—दसदेव
टूंटउ—देखो 'टूंटौ' (रू.भे.) उ०—सस्त्र स्रमरहित केतउं घाव वंचइ, दुरबळ केतउं माचइ टूंटउ केतउं लांखड, सत्पुरख केतउं भखइ?—व.स.
४ नकल।
मि०—टूंटियौ (१)
टूंटियौ—सं०पु—१ बारात जाने के पश्चात् दूल्हे के घर पर औरतों द्वारा आपस में रचा जाने वाला नकली विवाह. २ एक प्रकार का बुखार. ३ देखो 'टूंटौ' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—ठूंठियौ।
टूंटी—सं०स्त्री० [सं० त्रोटि] १ पानी निकालने के लिए धातु की बनी मुड़ी हुई नली विशेष जिसे आवश्यकतानुसार खोली व बन्द की जा सकती है। वह पानी की नली के एक छोर पर कसी जाती है.
२ बरतन के लगी हुई वह नली जिसके द्वारा द्रव पदार्थ उड़ेला जाता है।
टूंटौ, टूंटचौ—वि० (स्त्री० टूंटी) १ हाथों से अशक्त या कटे हुए हाथ वाला व्यक्ति। उ०—लूला टूंटा फेरत डोळा।—जयवांणी
रू०भे०—टुंटौ।
यौ०—टूंटौ-पांगळौ।
अल्पा०—टूंटियौ, टूंटचौ।
२ देखो 'टूंटियौ' (१, २) (रू.भे.)
टूंड—सं०स्त्री० [सं० तुण्डम्] सुअर के मुँह का अग्र भाग, थूथन।
उ०—आडा फिरिया खाग उनागां, डंडाळां बागी डकर। आधा हूं उड़ता भड़ आवै, टूंड तणी लागी टकर।—महादांन महड़ू
टूंडाळ, टूंडाहळ—सं०पु० [सं० तुण्डम्+आलच्] सुअर, वराह (डिं.को.)
टूंडी—सं०स्त्री०—१ वह ढलवां मार्ग जिस पर कुए से पानी खींचते समय बैल चलते हैं. २ देखो 'टूंडाळ' (रू.भे.)
टूंडौ—सं०पु०—पेंदा, तल।
टूंणौ—देखो 'टांणौ'।
टूंपणौ, टूंपबौ—क्रि०स०—१ गला घोटना. २ गर्दन में रस्सी आदि डाल कर इस प्रकार कसना कि मृत्यु हो जाय, फांसी देना. ३ किसी कार्य को कराने के लिए बाध्य करना।

टूंपियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ गला घोटा हुआ. २ फांसी दिया हुआ. ३ बाध्य किया हुआ।
(स्त्री० टूंपियोड़ी)
टूंपियौ—सं०पु०—कंठ का आभूषण विशेष।
टूंपौ—सं०पु०—हाथों या रस्सी से फांसी देने की क्रिया।
उ०—आपरै ऊं. ऊं री आवाज सूं साफ मालम होवती ही के कोई आपरै टूंपौ देय रह्यौ है।—रातवासौ
रू०भे०—टूपौ।
टूंम—सं०स्त्री०—१ आभूषण, गहना. २ मजाक, हँसी, नकल।
रू०भे०—टूम।
टू—सं०पु०—१ वाहन. २ गणेश. ३ डर, भय. ४ भार, बोझा।
[सं०स्त्री०] ५ दौड़. ६ मारवाड़. ७ छाया (एका.)
टूक—सं०पु० [सं० स्तोक] १ खण्ड, टुकड़ा। उ०—टूकै नह गढ़ टूकड़ा, अकबर रा उमराव। करै वीर गढ़ रा कवच, दोय टूक इक घाव।—बां.दा.
महृ०—टूकड़।
२ देखो 'टूंक' (रू.भे.)। उ०—१ टूकै टूकै केतकी, झरणै झरण जाय। अरबुद की छिब देखतां, और न आवै दाय।—अज्ञात
उ०—२ वनस्पती पाखर बणी, वणिया टूक विहद्द। परा विछूटै नीझरण, आयौ मद अरबुद्द।—अज्ञात
३ देखो 'टुकड़ौ' (३) (मह. रू.भे.)
उ०—१ नागजी मालपूवै री टूक रे, वैरी जीम्या अड़ियो नै ताळवै ओ नागजी।—लो.गी.
उ०—२ चूल्हा आगै टाबर रोवै, टूक नाही वासी एक। छपना ओजूं मत पड़चौ म्हारै देस।—लो.गी.
टूकड़—१ देखो 'टुकड़ौ' (मह. रू.भे.)
२ देखो 'टूक' (१) (मह.)
उ०—तिल तिल हुइ टूकड़, वेलै तुरभड़, मच्छक तड़फड़ तुच्छ जळै।—गु.रू.बं.
टूकियौ, टूकीयौ, टूक्यौ—सं०पु०—१ जोर से पुकारने के लिए किया जाने वाला शब्द. २ देखो 'टूंकियौ' (रू.भे.)
टूकू—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)
टूट—सं०स्त्री०—किसी वस्तु का वह भाग जो टूट कर अलग हो गया हो, खंड, टूटन।
टूटणौ, टूटबौ—क्रि०अ० [सं० त्रुट] झटके या दवाव के कारण किसी वस्तु का एक ही समय में दो या अधिक भागों में विभक्त हो जाना, खण्ड-खण्ड होना, टुकड़े-टुकड़े होना।
यौ०—टूटौ-फूटौ।
२ शरीर के किसी अंग का उखड़ जाना, जोड़ ढीला पड़ जाना अथवा बेकाम हो जाना. ३ निरन्तर चलते हुए क्रम का बन्द हो जाना। ज्यूं—मायं सैत री डोरी दे दौ धार टूटणी नहीं चाइजै।

मुहा०—पांणी टूटणौ—पानी के श्रोत का बंद हो जाना। कूए में पानी कम हो जाना।

४ किसी ओर तीव्र गति से जाना, झपटना, धावा करना, आक्रमण करना। उ०—कूआ सामां आवतां, डरै न अब रोळां। खेळयां में टूट्या पड़ै, काळा दिन धोळां।—लू

मुहा०—टूट पड़णौ—झपटना, आक्रमण करना।

५ मेळ न रहना, सम्बन्ध विच्छेद हो जाना. ६ कमजोर होना, क्षीण होना, दुर्बल होना. ७ दरिद्र होना, दीन होना, कंगाल होना। उ०—सो परगना री ही टको मांगै चाकरी जे करावै सो इण भांत तौ टूटता जावां छां।—गौड़ गोपाळदास री वारता

८ कम होना, घाटा पड़ना, हानि होना।

ज्यूं—मिरचां रा व्योपार में म्हारा ५००) रुपिया टूट गिया।

९ शरीर में आलस्य का अधिक होना, दर्द होना, पीड़ा होना।

मुहा०—डील टूटणौ—शरीर के अंग अंग में पीड़ा होना.

१०—क्षय होना। उ०—टूटतौ अमावस रौ जण्यौ।—जयवांणी

११ भंग होना, विक्षेप होना। उ०—उणारै लांबा कियोड़ा हाथ पर बळद करड़ी करड़ी जीभ फेरी अर उणरौ ध्यांन टूटौ।—रातवासौ

१२ अपने स्थान से अलग होना, दूर होना, स्थान भ्रष्ट होना। उ०—करै सरवरा काचड़ा ? स्याळ किसूकी सीह। कांधा सेथी टूट कर, जमीं पड़ी वा जीह।—वां.दा.

टूटणहार, हारौ (हारी), टूटणियौ—वि०।

टूटिओड़ौ, टूटियोड़ौ, टूटोड़ौ, टूटौ, टूटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

टूटियोड़ौ, टूटोड़ौ, टूटयोड़ौ, टूटौ—भू०का०कृ०—१ टूटा हुआ, खंडित, भग्न. २ शरीर का वह अंग जो बेकाम, उखड़ा हुआ अथवा जोड में से ढीला पड़ा हुआ हो. ३ निरन्तर चलता हुआ वह क्रम जो बन्द हो गया हो. ४ झपटा हुआ, धावा किया हुआ, आक्रमण किया हुआ. ५ विच्छेदित सम्बन्ध, टूटा हुआ मेल. ६ कमजोर बना हुआ, क्षीण, दुर्बल. ७ दरिद्र बना हुआ, दीन, कंगाल. ८ वह कार्य या व्यापार जिसमें हानि हुई हो, घाटा पड़ा हुआ. ९ आलस्य से पीड़ित बना हुआ. १० क्षय हुवा हुआ. ११ भंग हुवा हुआ, विक्षेप हुवा हुआ. १२ अपने स्थान से अलग हुवा हुआ, दूर हुवा हुआ, स्थान भ्रष्ट हुवा हुआ. १३ देखो 'तूटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टूटियोड़ी, टूटी टूटोड़ी)

टूटौ-फूटौ—वि०यौ०—टूटा-फूटा, भग्न, खंडित।

टूपौ—देखो 'टूंपौ' (रू.भे.)

टूम—देखो 'टूंम' (रू.भे.)

उ०—आप इनायत कीधी तिके पाया, पिण माईजी म्हांसूं घणी महरबांनी फुरमावै छै नै आप बाघेलजी रै महल पधारिया तरै सगळी टूमां (गैंणा) मंगावणी पड़सी।—जगदेव पंवार री वात

टूमणटांमण—देखो 'टांमण-टूमण' (रू.भे.)

टूर—सं०पु०—१ अधिक बच्चे (शेखावाटी) २ बहुत अधिक अफीम खाने वाला, अफीमची।

वि०—१ अतिवृद्ध. २ मूर्ख।

टूळियौ, टूळौ—सं०पु०—तनेदार करील का वृक्ष। उ०—तिण ऊपर घणा वड़ां पींपळां बोर अकायण नींव नाळेर आंबा आंवली सीसूं सरेस खेजड़ जाळ आसापाळौ, खिजूर गूंदी लेसूड़ौ केसूलौ खिरणी मोळसिरी फरवास रायसेण महुवा ढाक कुभरा कीकर टूळा झूकनै रह्या छै।—रा.सा.सं.

टूव्हणौ, टूंव्हबौ—देखो 'टींगणौ, टींगबौ' (रू.भे.)

उ०—खाट बळद हळ खोल्ह जाट री ढांणी जोवै, नासै टूव्है निलज खास अपणूं घर खोवै।—ऊ.का.

टूव्हियोड़ौ—देखो 'टींगियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० टूव्हियोड़ी)

टें—सं०स्त्री० (अनु०) १ तोते की बोली, तोते की आवाज. २ बकवाद, बकझक।

मुहा०—टें टें करणी—बकवाद करना, व्यर्थ बोलना।

यौ०—टें टें।

टेंकिका—सं०स्त्री० [सं०] ताल का एक मुख्य भेद।

टेंकी—सं०स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का नृत्य. २ शुद्ध राग का एक भेद।

टेंगण—सं०पु०—१ ऊंट (व्यंग्य) २ देखो 'टेंगण' (रू.भे.)

टेंट—सं०पु०—करील वृक्ष का फल (क्षेत्रीय)

वि० [अं० टाइट] मजबूत, जमा हुआ।

टेंटुओ, टेंटुवौ—सं०पु०—गर्दन के आगे उभरी हुई गांठ (कंठ), स्वरयंत्र।

रू०भे०—टेंटुओ, टेंटूवौ।

टेंलऔ, टेंलवौ—देखो 'टें'लवौ, टें'लियौ' (रू.भे.)

टे—सं०स्त्री०—१ स्त्री. २ पक्षी (एका.)

टेक—सं०स्त्री०—१ हठ, जिद्द। उ०—१ सो सुणतां ही भावी रै प्रमांण वारुणी रै वसीभूत हुवै समुद्रसिंघ विपरीत व्यवहार वतावण री टेक गही।—वं.भा.

उ०—२ आखू न कही मांनी न एक, कोप्यौ नवाब नंहि तजी टेक।—ला.रा.

मुहा०—टेक झेलणी, टेक पकड़णी—हठ पकड़ना, जिद्द पर अड़ा रहना।

२ प्रण, प्रतिज्ञा। उ०—१ आहुई वडौ राठौड़ विसरांमियां, तज गया दूसरा न सायत टेक। हसत नित वरीसण नकौ इळ रायहर, हसत बंध कवि नहीं जग मैं हेक।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

उ०—२ इण विध चिहुवै टेक उतारूं। असुर विलंद तदि जीव उवारूं।—सू.प्र. उ०—३ अकबर जिसा अनेक, आहव अड़ अनेक अरि। असली तजै न एक, पकड़ी टेक प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

मुहा०—टेक निभाणी—संकल्प से नहीं टलना, प्रण के अनुसार कार्य करना, प्रतिज्ञा पूरी करना।

३ मान, प्रतिष्ठा। उ०—कोई वीर पुरख नींद में सूतो हो—इतरै दुसमण ऊपर आय गया तिकां नै वीर री स्त्री कहै छै—रे नींद में सूतो देख इण आपरी टेक आंन रा निभावण वाळा नै थे मत छेड़ो, पुळ जावो।—वी.स.टी.

उ०—२ आपणे आपणे भेख की, सब कोई राखै टेक। निगम निसांणी एक है, गोळ दाज अनेक।—संतवांणी

उ०—३ जगपति कूंण थारी गति जांणै, अकळि तुहारी एक अनेक। जुध बाहिरो जगत सहि जीतो, तूं राखै भगतां री टेक।—पी.ग्रं.

मुहा०—१ टेक रै'णी—बात निभ जाना, इज्जत रह जाना.

२ टेक राखणी—बात को निभा लेना, लज्जा रख लेना।

५ गीत की वह प्रारम्भिक पंक्ति जो बार बार गाई जाती है, पद या टुकड़ा, स्थायी. ६ आश्रय, अवलम्ब।

टेकड़ो—देखो 'टेगड़ो' (रू.भे.)

टेकणौ, टेकबौ—क्रि०स०—तन्मय करना, मन लगाना, चित्त लगाना। उ०—थे सारां अठै वैठिया टको भरो, दुख पावो, राज तो छुटियो परगना ऊपर जीव टेकियो।—गौड़ गोपाळदास री वारता

२ स्थित करना, टिकाना, रखना। उ०—तिण समै सको देखै छै सरवहियो जेसो पातसाह ऊभो छो तठै नांखिया सु घोड़ै हाथी रै दांतूसळां पग टेकिया।—नैणसी

३ अन्दर डालना, पैठाना, घुसाना. ४ किसी पकड़ी हुई वस्तु को छोड़ देना, गिराना, डालना, फेंकना। ज्यूं—उणां रै समै में कबूतरां नै रोजीना की सवामण जवार टेकीजती।

५ एक वस्तु को दूसरी वस्तु में मिलाना, छोड़ना, डाल देना। ज्यूं—ओ घांची झूठ बोलै, इणरै दूध में जरूर पांणी टेकियोड़ो है, पाव घी टेकियोड़ो दाळ तो सवाद हुवै तो सवाद हुवैला इज।

६ किसी के जिम्मे छोड़ देना, थोपना, भार डाल देना. ज्यूं—थे तो थारै आळो कांम भी म्हारै माथै टेक दियो। इण कांम रो सँग खरचो म्हारै माथै टेक दियो. ७ लगाना, उपयोग करना. ज्यूं—इण व्योपार में पांच हजार री रकम टेकियोड़ी है।

८ थकान दूर करने अथवा श्रम से बचने के लिए किसी वस्तु के सहारे शरीर पर लदे हुए बोझ या भार को रखना या टिकाना.

९ सहारे आदि के लिए किसी अंग को टिकाना, ठहराना, रखना.

१० सहारे के लिए थामना, पकड़ना। ज्यूं—भाखर री चढ़ाव ऐ'ड़ो कोजो है कै हाथ टेक टेक'र चढ़णो पड़ियो।

उ०—निनांण करती उणरी मा आयगी अर कस्सी रै हिचकी टेक नै ऊभी हुवगी।—रातवासो

टेकणहार, हारो (हारी), टेकणियो—वि०।

टेकवाड़णो, टेकवाड़बो, टेकवाणो, टेकवाबो, टेकवावणो, टेकवावणो, टेकाड़णो, टेकाड़बो, टेकाणो, टेकाबो, टेकावणो, टेकावबो—प्रे०रू०।

टेकिग्रोड़ो, टेकियोड़ो, टेक्योड़ो—भू०का०कृ०।

टेकीजणो, टेकीजबो—कर्म वा०।

टिकणो, टिकबो—अक० रू०।

टेकर, टेकरी—सं०स्त्री०—छोटी पहाड़ी, टीला।

टेकलो—वि०—अपनी आन-मान पर मर मिटने वाला, अपना प्रण निभाने वाला। उ०—घर घर वैर बसाविया दिन दिन लूंबे धाड़। हेली मो धव टेकलो, जड़ै न धांम किवाड़।—वी.स.

टेकांण—सं०पु०—किसी गिरने वाली छत, धरन आदि को संभालने के लिए उसके नीचे खड़ी की जाने वाली लकड़ी।

टेकियोड़ो—भू०का०कृ०—१ मन लगाया हुआ, स्थित किया हुआ. २ टिका हुआ, रखा हुआ स्थित किया हुआ. ३ अन्दर डाला हुआ घुसा हुआ, पैठा हुआ. ४ पकड़ी हुई वस्तु को छोड़ दी गई हो, गिराई हुई, डाली हुई, फेंकी हुई. ५ दूसरी वस्तु में मिलाई हुई, छोड़ी हुई, डाली हुई. ६ किसी के जिम्मे छोड़ा हुआ, थोपा हुआ, भार डाला हुआ. ७ लगाया हुआ, उपयोग किया हुआ. ८ किसी वस्तु का सहारा लिया हुआ. ९ सहारे के लिए अंग का टिकाया हुआ, ठहराया हुआ, रखा हुआ. १० सहारे के लिए थमा हुआ, पकड़ा हुआ।

(स्त्री० टेकियोड़ी)

टेको—सं०पु०—१ वह बड़ा और मोटा रस्सा जो प्रायः गाड़ियों से सामान ढोने पर कसने के काम आता है। उ०—टेका कड़ियां बांध, ढोवतां घर पर आखी। फोगां हुंदी फसल, गरीबां गायक लाखी।

—दसदेव

२ देखो 'टांको' (४, ५) (रू.भे.)

३ देखो 'ठेको' (६) (रू.भे.)

उ०—प्रोहित की असवारी पीछोले आई। अलवेली नायका कै मन भाई। अलवेलिया असवार घोड़ा खिलावै छै, पांच पांच बरछी का टेका दिरावै छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात

४ आवेष्टन, बन्धन। उ०—रावजी फूल महल में पोढ़िया। जरै क्यूं आंख मिळी, घोर निकळी सुणी तरै रजपूतां आय नै रेसमी डोर थो आंटा लिया। गिरियां विचै नै गळा विचै एक सरीखा टेका लिया

—राव रिणमल री वात

टेगड़ियो, टेगड़ो—सं०पु० (स्त्री० टेगड़ी) कुत्ता, श्वान।

रू०भे०—टेकड़ो।

अल्पा०—टेगड़ियो।

टेटुवो—देखो 'टेंटुओ' (रू.भे.)

टेटूणी—सं०पु०—बर्तन विशेष (शेखावाटी)

टेटो—देखो 'टाटो' (२) (रू भे.)। उ०—टेटो कटतां ठाकरां, वजै केम वारूह। वा'रू रण री वाजियां, निकळै पग नारूह।

—रेवतसिंह भाटी

टेडो—वि० (स्त्री० टेडी) १ जो सीधा न हो, इधर-उधर झुका हुआ हो, जो लगातार एक ही ओर को न गया हो, वक्र, कुटिल।

मुहा०—टेढ़ी सुणाणी—देखो 'टेढ़ी सीधी सुणाणी'

२ टेढ़ी सीधी सुणाणी—भली-बुरी कहना, फटकारना, डांटना।

यौ०—टेढ़ो-मेढ़ो।

२ जो बिलकुल सीधा न हो गया हो, किसी एक ओर झुक गया हो अर्थात् आधार पर समकोण बनाता हुआ न गया हो, तिरछा.

३ जो मुश्किल, कठिन या पेचीदा हो, जो सरल न हो.

मुहा०—टेढ़ी खीर—दुष्कर कार्य, कठिन कार्य।

४ जो उद्दण्ड हो, गँवार हो, जो शिष्ट न हो, उग्र हो।

मुहा०—१ टेढ़ो पड़णो, टेढ़ो होणो—कठोरता लाना, क्रोधित हो जाना उग्र होना, अकड़ जाना।

२ टेढ़ो टेढ़ो हालणो—स्वभाव में कठोरता लाना, व्यवहार ठीक नहीं करना, अकड़ना, ऐंठना।

३ टेढ़ी बात—कटु वाक्य, व्यंग्यात्मक वाक्य, जो बात सीधी न हो।

रू०भे०—टेढ़ो।

टेढ़-सं०स्त्री०—१ वक्रता, तिरछापन, टेढ़ापन. २ गँवारपन, उजड्डपन, अकड़।

मि०—बांक।

टेढ़विडंगो, टेढ़वेढ़ंगो-वि०—बेढ़ंगा, बेडौल, टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़ाई-सं०स्त्री०—टेढ़ा होने का भाव, वक्रता।

टेढ़ापण-सं०पु०—टेढ़ा होने का भाव।

टेढ़ो—देखो 'टेढ़ो' (रू.भे.)। उ०—फैंटा छोगाळा खांधा सिर फाबै, टेढ़ा डोड़ा हूं डिगतो नभ ढाबै।—ऊ.का.

टेणो, टेवो-क्रि०स०—चूल्हे पर चढ़ाना।

उ०—बाबो ल्यायो मोठ बाजरी, मायड़ बेंठ'र छुळवयो। पाड़ोसण घर लूंण मंगायो, भरके हांडो टेयौ।—लो.गी.

टेपो-वि० (ब० व० टेपा) मिलन की आशा में मुड़ा हुआ (कान)

उ०—अणमणो करियां टेपा कांन, चोवटै ऊभो हेकल सांड।
—सांझ

टेभो-सं०पु०—सुअरनी का बच्चा, छोटा सूअर।

टेर-सं०स्त्री०—१ शब्द, आवाज (ह.नां.) २ बुलाने का ऊंचा स्वर. ३ गाने में ऊँचा स्वर।

क्रि०प्र०—लगाणी।

मि०—टेक (५)

४ पुकार, प्रार्थना, रट। उ०—पंचाळी वेर वधायो पल्लव, करतां टेर सिहाय करी।—र.ज.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, लगाणी।

मुहा०—टेर लगाणी—अनुनय-विनय करना, प्रार्थना करना।

टेरणो, टेरबो-क्रि०स०—१ पुकारना, प्रार्थना करना, रट लगाना।

उ०—पिया मोहि दरसण दीजै हो। बेर बेर मैं टेरहूं, अहे क्रिपा कीजै हो।—मीरां

२ ऊँचे स्वर से गाना, तान लगाना. ३ ऊँचे स्वर से बुलाना। ४ किसी वस्तु को दीवार में लगी कील या पेड़ की शाखा या किसी भी आधार से अधर में लटकाना। उ०—हळथळ बाखळ में बळ बळ थळ हेरै। टणमण टोकरिया बळधां गळ टेरै।
—ऊ.का.

टेरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ प्रार्थना किया हुआ, पुकारा हुआ, रट लगाया हुआ. २ ऊँचे स्वर में गाया हुआ, तान लगाया हुआ. ३ ऊँचे स्वर से बुलाया हुआ. ४ अधर में लटकाया हुआ।

(स्त्री० टेरियोड़ी)

टेरो-सं०पु०—किसी गाढ़े पेय पदार्थ अथवा ऐसे ही घोल की पड़ने वाली बूंद।

वि०—१ मूर्ख, अविवेकी।

उ०—ढीलो मूंडो मेलै ढेरा, टिकगा पांणी पीवण टेरा। डळां उठै कर दीघा डेरा, चाटै हिळगा चाटण चेरा।—ऊ.का.

[सं० टेर: बलिर केकरो इति रभसः] २ ऐंचाताना, भेंगा।

यौ०—बाडो-टेरो।

टेव-सं०स्त्री० [सं० स्थापयति, प्रा० ठवइ] १ आदत, बान।

उ०—रांमति नी छइ मू घणी टेव। गरुया संघ नी नितु करउं सेव।
—चिहुंगति चउपई

क्रि०प्र०—पड़णी।

मुहा०—टेव टाळणी—शौचादि से निवृत्त होना।

कहा०—टाट्या नी टाट जाय, टेव नी जाये—शिर का गंजापन दूर होने पर भी खुजलाने की आदत नहीं जाती है अर्थात् बुराई दूर होने पर भी बुरी आदतों का जाना सम्भव नहीं।

२ अभ्यास।

क्रि०प्र०—पड़णी।

३ प्रकृति, स्वभाव। उ०—कुमर परीक्षा जोइवा, आयो तिहां वन देव। रूप कियो वांनर तणो, तज पूरवली टेव।—वि.कु.

क्रि०प्र०—पड़णी।

रू०भे०—ठेव।

टेवकी-सं०स्त्री०—१ (एकमात्र) सहारा।

उ०—१ आ बात तैं कैयी जकी ठीक, पण छोरो-ई हुवै। छोरो घर-रो चांनणो, घर-री टेवकी हुवै।—वरसगांठ

उ०—२ तीनूं घरां-में वो अेक-ई तुरक-रो दांतण, घर-री जा'ज, घर-री टेवकी हो।—वरसगांठ

२ मदद, सहारा।

३ किसी कार्य के निमित्त उकसाने का भाव।

मुहा०—१ टेवकी देणा (रखणी)—प्रेरित करना, उकसाना।

२ टेवकी सरकाणी—देखो 'टेवकी देणी'।

४ द्वार पर के चौड़े पत्थर के नीचे लगाया जाने वाला पत्थर।

५ किसी पदार्थ विशेष के लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई जाने वाली वस्तु, सहारा ।
क्रि०प्र०—दैणी, लगाणी ।
रू०भे०—ठेवकी ।

टेवको–सं०पु०—सहारा । उ०—टेपरियो डांगड़ी रै टेवकै डिगतो डिगतो घरै पूग्यो अर रंभा नै भांवी मांचा में घाल नै घरै लेग्या ।
—रातवासो

टेवटियों, टेवटो–सं०पु०—१ स्त्रियों के गले में पहनने का आभूषण विशेष । उ०—१ ओ जी ओ मनै रांमूड़ा रो टेवटियो घड़ा दे, मोरी माय, लूंग्रर रमवा म्हैं जास्यूं ।—लो.गी.
उ०—२ तीजी सखी मेरी पहर टेवटो, नथली सूं रूप संवारचो । चौथी सखी मेरी चूनड़ ओढ़ी, गळै में मोतीड़ा रो हारो ।—लो.गी.
२ तीन परत या सांध का चौड़ा कपड़ा जो ओढ़ने या धोती की जगह पहनने के काम आता है ।
मुहा०—टेवटै जाणौ—शौचादि से निवृत होना ।

टेवौ–सं०पु० [सं० टिप्पन] जन्म लग्न व राशि लग्न (कुंडली) का वह पत्र जिसमें जातक के जन्म दिन की तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के साथ जन्म का समय (इष्ट) घटी पलों में अंकित रहता है जिसके आधार पर जन्म-पत्रिका बनाई जाती है ।

टेसण–सं०पु० [अं० स्टेशन] १ रेलगाड़ी के ठहरने का वह स्थान जहां यात्री चढ़ते-उतरते हैं, ठहरने का स्थान ।
रू०भे०—ठेसण, ठेहण ।

टेसू–सं०पु० [सं० किंसुक] पलाश या ढाक का फूल ।

टेंगण–सं०पु०—१ टट्टू. २ देखो 'टेंगणौ' (मह., रू.भे.)

टेंगणियौ—देखो 'टेंगणौ' (अल्पा., रू.भे.)

टेंगणौ–वि० (स्त्री० टेंगणी) छोटे कद का, ठिगना, नाटा, बौना ।
रू०भे०—टींगणौ, टेंगणौ, टेंणौ ।
अल्पा०—टींगणियौ, टेंगणियौ, टेंगणियौ ।
मह०—टींगण, टेंगण, टेंगण ।

टेंगार–सं०स्त्री० [वि० टेंगारो] मद, अहंकार, गर्व ।
उ०—क्यूं बूड़े रे बापड़ा, कर कर टेंगार ।—जयवांणी

टेंगारी–वि०—अहंकारी, अभिमानी ।

टेंटो–सं०पु०—वट वृक्ष तथा पीपल वृक्ष का फल.
२ ककड़ी का कच्चा फल ।

टै–सं०पु०—१ भाई का लड़का, भतीजा. २ आकाश, नभ. ३ धन, द्रव्य. ४ भोजन, भक्षण. ५ शत्रु, दुश्मन. ६ अंधा. ७ पुत्र का पुत्र, पौत्र (एका.)

टैकस, टैक्स–सं०पु० [अं०] कर ।

टैंगण—देखो 'टेंगणौ' (मह., रू.भे.)
उ०—अलल वचेरां ऊपरै, भूल न चढ़िया 'म्यार' थेटू रहिया थांहरै, टैंगण घोड़ा तरार ।—दरजी मयारांम री वात

टैंगणौ—देखो 'टेंगणौ' (रू.भे.)

टैंणियौ–सं०पु०—१ वर्तन विशेष (शेखावाटी)
२ देखो 'टेंगणौ' (अल्पा., रू.भे.)

टैं'णी–सं०स्त्री०—पेड़ के ऊपर की छोटी डाली, टहनी ।
रू०भे०—टहणी ।

टैं'णौ—१ देखो 'टणौ' (रू.भे.)
२ देखो 'टेंगणौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टैं'णी)

टैम–सं०स्त्री० [अं० टाइम] समय, वक्त । उ०—१ नहीं तार नहिं टैम है, नहीं वती में तेल । आ चालै मन रै मतै, मारवाड़ री रेल ।
उ०—२ जो कोई बम्बोई गयो व्हैला वो जांणतो व्हैला कै भूलेसर रोड पर किसीक भीड़ रैवै । जिण में फेर सुबै अर सांझ री टैम तो पछै पूछणौ ईज कांई ।—रातवासो
यौ०—टैमो-टैम ।

टैमो-टैम–क्रि०वि०—ठीक समय पर ।

टैरको–सं०पु०—१ किसी महत्वपूर्ण वात का संक्षिप्त संकेत ।
ज्यूं—उण खास वात पूरी तो कही कोनी, थोड़ो सो'क टैरको नांखियो
क्रि०प्र०—नाखणौ ।
२ नखरा, चमक-दमक ।
उ०—नीवड़ै नींबोळी पाकी, ढालू पाका कैर का । जोवनियो जातो रह्यो, तूं मत जाइजै टैरका ।—अज्ञात
क्रि०प्र०—करणौ, रखणौ ।
३ व्यंग्यात्मक वाक्य, कटु शब्द । ज्यूं—वो तो टैरका देतो ईज वोलै ।
क्रि०प्र०—दैणी, न्हांखणौ ।
४ घमंड, अभिमान, गर्व । ज्यूं—उणरी कांई वात, वो तो पूरो टैरको राखै ।
५ गुस्सा, कोप, क्रोध ।
रू०भे०—टहरको ।

टैरणौ—देखो 'अटेरणौ' (रू.भे.) (शेखावाटी)

टैं'रियौ—देखो 'टसरियौ' (रू.भे.)

टैं'ल—देखो 'टहल' (रू.भे.)
यौ०—टैं'ल-वंदगी ।

टैं'लणौ, टैं'लवौ–क्रि०अ०—वायु सेवन करना, घूमना, फिरना ।
रू०भे०—टहलणौ, टहलवौ ।

टैलदार—१ देखो 'टहलदार' (रू.भे.) २ कसाइयों का एक नाम ।
(मा.म.)

टैलवौ, टैलियौ–सं०पु०—टहलुआ, चाकर, नौकर, सेवक ।
रू०भे०—टैलग्रो, टैलवो ।

टैं'लियोड़ौ–भू०का०कृ०—वायु सेवन किया हुआ, घूमा हुआ ।
(स्त्री० टैं'लियोड़ी)

टॉक-सं०पु०—तलवार या भाले नीचे वाला नुकीला भाग।
टौ-सं०पु०—१ नारियल. २ लगन. ३ चपक. ४ चोटी. ५ दांत. ६ घुन (एका.)
टॉ—देखो 'टॉक' (रू.भे.)
टोक-सं०स्त्री०—रोकने अथवा मना करने की क्रिया या भाव।
यौ०—टोक-टाक, रोक-टोक।
टोकणी—देखो 'टोकणो' (अल्पा., रू.भे., शेखावाटी)
टोकणो-सं०पु०—धातु का बना बर्तन विशेष। उ०—१ एक गव गवंती नक झीणी, ऊपर सुरही बाछियां। टोकणां ए चरु ए तंबोळ दीन्या, कळस धेन सवाइयां।—लो.गी.
उ०—२ मांटा तो पोवां लवभवा जी, तींवण तीस बतीस। घीवर मरया टोकणां जी, जाळां पर कोजी खांड, रांणी सोरठी।—लो.गी.
अल्पा०—टोकणी।
टोकणौ, टोकबौ-क्रि०स०—मना करना, निषेध करना, रोकना।
टोकणहार, हारौ (हारी), टोकणियौ—वि०।
टोकवाड़णौ, टोकवाड़बौ, टोकवाणौ, टोकवाबौ, टोकवावणौ, टोकवावबौ, टोकाड़णौ, टोकाड़बौ, टोकाणौ, टोकाबौ, टोकावणौ, टोकावबौ—प्रे०रू०।
टोकिओड़ौ, टोकियोड़ौ, टोक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
टोकीजणौ, टोकीजबौ—कर्म वा०।
टोकर-स०पु०—१ आभूषण विशेष। उ०—भाट था त्यांनूं घोड़ा, ऊंट, कड़ा, मुरकी, टोकर दीन्हा।
—कुंवरसी सांखला री वारता
२ देखो 'टोकरो' (मह., रू.भे.) उ०—ताहरां रावळजी बाघ ऊदै नू बगसियो, ताहरां ऊदै लियो-नै गळ टोकर बांधि-नै छोडि दियो कह्यो जी बाघ म्हांरो छै।—ऊदै उगमणावत री वात
टोकरियौ—देखो 'टोकरो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—रूपा रो टोकरियो जांणे रे।—जयवांणी
टोकरी-सं०स्त्री०—१ वह थोड़ी सी जमीन जो किसी बड़े तालाब के पास स्थित हो. २ देखो 'टोकरो' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—टोपली।
टोकरौ-सं०पु०—१ बड़ी डलिया. २ देखो 'टंकोरो' (रू.भे.)
रू०भे०—टोपलो।
अल्पा०—टोकरियौ, टोकरी।
मह०—टोकर।
टोकळ, टोकळौ-सं०पु०—१ बड़ी जूं, यूका. २ किसी मनुष्य के प्रति व्यंग्य के रूप में कहा जाने वाला शब्द।
वि०—मूर्ख।
मह०—टोकळ।
टोकियोड़ौ-भू०का०कृ०—मना किया हुआ निषेध किया हुआ, रोका हुआ।
(स्त्री० टोकियोड़ी)
टोकी-सं०स्त्री०—शिखर, चोटी। उ०—१ काती भलै दांती फेरी, लासू बन रा वाडतां। भाड़ जुगत लादां लदावै, ढिगलां टोकी काड़तां।—दसदेव
उ०—२ सरब स्म्रति पुरांण, सुवांणी लांमी सूची। अड़ूड़ ऊजळ रूप, ऊघाड़ी टोकी ऊंची।—दसदेव
टोगड़—देखो 'टोगड़ौ' (मह., रू.भे.)
यौ०—टोघड़-टोळी।
टोगड़ियौ, टोगड़ौ-सं०पु० [सं० तोक = टोक] (स्त्री० टोगड़ी) १ गाय का बच्चा, बछड़ा।
मुहा०—टोगड़ा टाळणा, टोगड़िया टाळणा—साथ छोड़ देना, पृथक हो जाना।
२ मूर्ख, गँवार।
रू०भे०—टोघड़ौ।
अल्पा०—टोगड़ियौ, टोघड़ियौ।
मह०—टोगड़, टोघड़।
टोघड़—देखो 'टोगड़ौ' (रू.भे.) उ०—ढीली लांगां रा ढेरा ढळकाता। टोघड़ टुकड़ां रा खेरा खळकाता।—ऊ.का.
टोघड़ियौ—देखो 'टोगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)
टोघड़ौ—देखो 'टोगड़ौ' (रू.भे.) उ०—आदू तिवार में सुगन ओ, देख अमल बिन टोघड़ा। आ रसम फँमाई अमलियां, तार न सोचै टोघड़ा।—ऊ.का.
(स्त्री० टोघड़ी)
टोचकौ-सं०पु०—१ अंगुलियों को मोड़ कर प्रहार करने का भाव. २ व्यंग्य, टोंट. ३ सिर, मस्तक (अल्पा.) ४ देखो 'टूंचको'। (रू.भे.)
टोट-वि०—हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली। उ०—भेजी लिख जुध भिड़ण री, रांणी कनै रपोट। प्रबळ विचारी तैं 'पता' टकर लैण री टोट।
—जुगतीदांन देथौ
२ देखो 'टोटो' (मह., रू.भे.) उ०—परणाई पीळा पोतड़ां, मेली ऊभा कोट। एक सनेहीसा रा सायबा, कांई थारै कागदिया रा टोट। ओळूं घणी आवै रे म्हारा सैण, नींद नहीं आवै छै।—लो.गी.
टोटकाचारय-सं०पु०—शंकर स्वामी का एक शिष्य विशेष जिसने उत्तर में जोशी मठ की स्थापना की थी (मा.म.)
टोटकौ-सं०पु०—१ किसी बाधा या व्याधि आदि को दूर करने के लिए किया जाने वाला तंत्र-मंत्र का प्रयोग।
क्रि०प्र०—करणौ।
२ जादू, टोना। उ०—टांमण-टूमण टोटका, कर देखो सब कोय। छंदे चालै पीव कै, आपै ही बस होय।—अज्ञात
क्रि०प्र०—करणौ।
टोटलौ-सं०पु०—भुना हुआ चना। उ०—गवां-चिणां की घूघरड़ी,

रंधाय, चिरण का ऊपर टोटला जी, म्हारा राज ।—लो.गी.

[टो]टी-सं०स्त्री० [सं० त्रोटि] (बहु व० टोटियां) १ स्त्रियों के कान के नीचे के भाग में पहनने का आभूषण ।

यौ०—टोटी-झूमरा, टोटी-सांकळी ।

देखो 'टोट' (रू.भे.)

उ०—दुरद पगां दोटीह, तैं टोटी इण वखत मैं । मुरधर री मोटीह, खत्रवट 'पता' खताय दी ।—जुगतीदांन देथौ

[टो]टी-झूमर, टोटी झूमरी-सं०स्त्री०यौ०—स्त्रियों के कान के आभूषण टोटी के साथ लगाया जाने वाला लटकन ।

[टो]टी-सांकळी-सं०स्त्री०यौ०—स्त्रियों के कान का आभूषण ।

[टो]टौ-सं०पु० [सं० त्रोट] १ घाटा, हानि, नुकसान ।

उ०—थोड़ी उपेजी थी जिकौ राज ही मांही टोटौ आयौ ।

—राठौड़ राजसिंघ री वारता

क्रि०प्र०—उठाणौ, खाणौ, झेलणौ, पड़णौ, भुगतणौ, सैंणौ ।

२ अभाव, कमी । उ०—१ खोटै टोटै नग करिणयां बीखरगी । माहव मोटै दुख जाटणियां मरगी ।—ऊ.का.

उ०—२ कछु दोस नहीं कुवज्या नै, बीरी अपणा स्यांम खोटा । आप न आवै पतियां न भेजै, कागद का कांई टोटा ।—मीरां

क्रि०प्र०—आणौ, पड़णौ ।

कहा०—टोटा नी टापरी मांये रात-दा'ड़ा राड़—अभाव और कमी जिस घर में होती है वहां हर वक्त झगड़ा होता रहता है ।

३ एक प्रकार का वाद्य जो शहनाई ही की तरह का होता है ।

मह०—टोट ।

[टो]ड-सं०स्त्री०—१ युवा मादा ऊंट ।

सं०पु०—२ ऊंट (बीकानेर) । उ०—१ झोक भरी छै म्हांरी टोडियां जे, जे मैं म्हारौ गल्लै वाळी टोड, ओ क वरसं वरसोदण होळी पांमणी जे ।—लो.गी.

[टो]डकी, टोडड़ी-सं०स्त्री०—१ मादा ऊंट । उ०—डाक्या टोडा टोडड़ी, लोपी नदी बनास । आडो गैलो उलंगिया, जद धण छोडी आस ।

—लो.गी.

२ देखो 'टोडती' (रू.भे.)

[टो]डड़ौ—१ देखो 'टोडियौ' (रू.भे.) उ०—थ्रै हाथी घोड़ा थांरै, थांरी वरोबरी म्हे करां स कोई ऊंट टोडड़ा म्हांरै, गिरधारी हो लाल ।

—लो.गी.

२ देखो 'टोडौ' (अल्पा., रू.भे.) । उ०—वायस बइठउ टोडड़ै, ऊडाड़इ करि पांणि । 'माधव क्या हरि आवसी ? ग्रेम कहंती वांणि ।—मा.कां.प्र.

[टो]डती-सं०स्त्री०—ऊंट का मादा बच्चा । उ०—मेरौ देवरियौ चरावै सांड, करला गाजणा । टोडियौ चरावै, टोडती चरावै, वौ तौ ल्यावै-ल्यावै घरां अ्रै चराय, सांड्या गरजणा ।—लो.गी.

रू०भे०—टोडकी, टोडड़ी ।

टोडर-सं०पु०—१ हाथी. २ पुरुष के पैरों में धारण करने का गोल स्वर्णाभूषण जो राजा द्वारा मान या प्रतिष्ठा के लिये दिये जाते थे ।

टोडरमल, टोडरमल्ल, टोडरमाल—देखो 'तोडरमल' (रू.भे.)

टोडरौ-सं०पु०—स्त्रियों के पैरों में पहनने का आभूषण विशेष ।

उ०—१ विणजारा रै लोभी, लेज्या गळा केरौ हार, बावैं पग को लेज्या टोडरौ, विणजारा रे ।—लो.गी.

उ०—२ अेक सखी मेरी पहरी पायल, बिछियां रौ रमझोळ । दूजी सखी मेरी पहर टोडरौ, पिवजी नैं जाय दिखायौ ।—लो.गी.

टोडारू—देखो 'तोडारू' (रू.भे.)

टोडियौ-सं०पु०—ऊंट का बच्चा । उ०—मेरौ देवरियौ चरावै सांड, करला गाजणा । टोडिया चरावै टोडती चरावै, वौ तौ ल्यावै ल्यावै घरां अ्रै चराय, सांड्या गरजणा ।—लो.गी.

रू०भे०—टोडड़ौ, टोरड़ौ, तोडड़ौ ।

अल्पा०—टोरड़ियौ, तोडियौ ।

टोडी-सं०स्त्री०—१ संगीत की एक रागिनी विशेष (संगीत)

२ कुए के ऊपरी भाग में लम्बाई की ओर लगा हुआ पत्थर जो रहट की लाट के सिरे को टिकाये रहता है. ३ पत्थर का वह भाग जो कुए के अन्दर की ओर ऊपरी सतह पर कुए की चुनी हुई दीवार से कुछ बाहर निकला हुआ होता है जिस पर वह पात्र रखा जाता है. जिसमें रहट से निकला हुआ पानी गिर कर आगे नाली में जाता है. ४ देखो 'टोड' (१) (रू.भे.)

उ०—ऊंची-नीची सरवरिया री पाळ, जठै नैं मिळै टोडी टोडड़ा । साथीड़ां रै चढ़ण टोड, पाबू धणी रै चडण केसर काळका ।

—पाबूजी राठौड़ रौ गीत

टोडौ-सं०पु०—१ छज्जे के सहारे के लिए लगाया जाने वाला पत्थर । २ कच्चे मकान की चौड़ाई की दीवार का वह भाग जो टाट के सुभीते के लिए लंबाई की दीवार से त्रिकोण के आकार का अधिक ऊंचा किया जाता है और जिस पर वंडेर का छोर रखा रहता है । ये संख्या में दो होते हैं. ३ मकान के दरवाजे के बाहर आड़ लिए बनाई गई दीवार. ४ प्राय: घोड़े के मुख के आकार के काठ के करीब हाथ दो हाथ लंबे डंडे जो घर की दीवार के बाहर की ओर पंक्ति में बढी हुई छाजन के सहारा देने के लिये लगाए जाते हैं. ५ जमीन की सरहद बताने वाला पत्थर ।

टोणौ—देखो 'टोनौ' (रू.भे.)

टोणौ, टोवौ-क्रि०स०—१ आंखों में अंजन डालना, सँवारना ।

उ०—इंदु वदन गोखड़ां ऊभी, टोयां काजळ टीवी । गळती रात पुकारै गौरी, बावहिया ज्यूं बीवी ।—अमरसिंह राठौड़ रौ गीत

२ देखो 'टोहणौ, टोहवौ' (रू.भे.)

टोनौ-सं०पु०—कोई बाधा, व्याधि आदि दूर करने या मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त किया जाने वाला प्रयोग जो किसी अलौकिक या दैवी शक्ति पर विश्वास कर के किया जाता है । मंत्र-तंत्र का प्रयोग ।

उ०—हूं जळ भरने जात थी सजनी, कळस माथै धरयो । सांवरो सो किसोर मूरत, कछुर टोनो करयो ।—मीरां

क्रि०प्र०—करणौ, चलाणौ, मारणौ ।

रू०भे०—टुनो टोणो, टोनो ।

यौ०—जादू-टोनो ।

टोप-सं०पु० [सं० स्तुप् उच्छ्राये] १ युद्ध के समय शिर पर पहनने की लोहे की टोपी, शिरस्त्राण । उ०—तीन वेळा उपाड़-उपाड़ खंगार रै हाथ में नांखिया । साहिब नूं झटको वाह्यो सु टोप लाग टळियो ।
—नैणसी

पर्या०—उतवंग-पनाह, सिरत्राण, सीरसक ।

२ सिर पर धारण करने की कपड़े अथवा पशुओं की खाल से बनी टोपी. ३ शिर पर धारण करने की टोपी विशेष जिसको साधारणतया सरकारी अफसर अथवा अमीर लोग धूप से बचने के लिए पहनते हैं. ४ तरल पदार्थ की बूंद ।

५ देखो 'टोपी' (मह., रू.भे.)

६ देखो 'टोपी' (मह., रू.भे.)

टोपरउ-सं०पु० [सं० टोपरः] (उ.र.)

टोपरो-सं०पु०—फल विशेष ।

उ०—सदाफळ अम्रितफळ फाळसां सकरलींबु कमळ काकड़ी सींघोड़ा, टोपरा नां फटका, कुंकणां केळां ।—व.स.

टोपली-सं०स्त्री०—१ डलिया, टोकरी ।

२ देखो 'टोपी' (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'टोपाळी' (रू.भे.)

टोपलो-सं०पु०—१ बड़ी डलिया । २ देखो 'टोपी' (अल्पा., रू.भे.)

टोपसी—देखो 'टोपाळी' (रू.भे.)

उ०—आगरीयां में प्रतापजी कोठारी बोल्यो, स्वांमीनाथ ! आप जोड़ां किम तरै करो छो । जद स्वांमीजी एक टोपसी में सपेतो हुतो इतलै वायरो वाज्यो ।—भि.द्र.

टोपाळी-सं०स्त्री०—नारियल की गिरी के ऊपरी कठोर भाग का आधा हिस्सा । उ०—रावळी डांग हाथ में अर धणियां री ऊपर मैं'र पछै पूछणोई कांई । हाजरिया नैं आभो टोपाळी जितरो निजर आवतो ।
—रातवासो

वि०वि०—नारियल की जटा उतारने के पश्चात् कठोर भाग को गिरी निकालने के लिए तोड़ कर प्राय: दो भागों में विभक्त किया जाता है जो प्राय: कटोरी के आकार के होते हैं किन्तु नीचे से चपटे नहीं होते हैं । इन दो भागों में से एक में तो तीन छिद्र होते हैं किन्तु दूसरे भाग में छिद्र नहीं होने के कारण इससे किसी बड़े बर्तन में से वस्तु को निकालने अथवा कोई चीज उसमें रखने तथा अन्य कई कार्यो के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।

रू०भे०—टोपली, टोपसी ।

टोपिया-सं०स्त्री०—पगड़ी, टोपी (जैन)

टोपियो-सं०पु०—१ बर्तन विशेष (शेखावाटी) २ देखो 'टोपो' (अल्पा., रू.भे.)

टोपी-सं०स्त्री०—सिर ढांकने का आच्छादन, छोटा टोपा ।

क्रि०प्र०—उतारणी, पटकणी, पैंरणी, पैंराणी, फेंकणी, मेलणी, राखणी ।

मुहा०—१ टोपी उतारणी—बेइज्जत करना, कंगाल करना. २ टोपी पटकणी—बहुत प्रयत्न करना. ३ टोपी पहन लेना, सन्यास ले लेना. ४ टोपी पैंराणी—निर्धन कर देना, फकीर बना देना. ५ टोपी फेंकणी—उत्तरदायित्व छोड़ देना, जिम्मेवारी से दूर हो जाना. ६ टोपी राखणी—इज्जत रखना, प्रतिष्ठा रखना.

२ अनाज के ऊपर का छिलका ।

क्रि०प्र०—उतारणी ।

३ गोल आकार की कटोरीनुमा वस्तु, ढक्कन आदि ।

क्रि०प्र०—लगाणी ।

४ बंदूक छोड़ने के लिए धातु की बनी वस्तु, पटाखा ।

क्रि०प्र०—चडाणी, चाढ़णी ।

यौ०—टोपीदार ।

५ लिंग का अग्र भाग. ६ विष्णु मूर्ति का शिर का आभूषण.

अल्पा०—टोपली ।

मह०—टोप ।

टोपो-सं०पु०—१ छोटे बच्चों के शिर में पहनाने की टोपी विशेष ।

२ देखो 'टपको' (रू.भे.)

उ०—या सारां में सार छांण नै पीजै पांणी, गाढ़ो गरणो राख करै जळ में जीवांणी । टोपो ही ढोळै मती, धरती बिना विचार । करणी नै करतूत रो, क्यों न आवै पार ।—सगरांमदास

३ रहट के काष्ठ के मध्य स्थंभ के नीचे के भाग में लगा हुआ लोहे का टुकड़ा ।

४ देखो 'टोयो' (२) (रू.भे.)

वि०—खण्ड, टुकड़ा ।

टोय—आंख का वह छोर जो कनपटी की ओर होता है । उ०—फूलां रा चौस पैंहरियां थकां टोय अणियाळां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणां री झोख ।—रा.सा.सं.

२ देखो 'टोह' (रू.भे.)

उ०—ठिकांणा रा चुगलखोर इणी टोय में रैवता ।—वांणी

टोयोड़ो—भू०का०कृ०—१ (आंखों में अंजन आदि) डाला हुआ, सँवारा हुआ । २ देखो 'टोहियोड़ो' (रू.भे.)

टोयो-सं०पु०—स्त्री की योनि के दोनों किनारों के मध्य का उभरा हुआ मांस. २ लोहे की कील जो खैराद की लकड़ी के मध्य बाहर निकली रहती है ।

रू०भे०—टोपो ।

टोर-सं०स्त्री०—कटारी । उ०—पातसाह-परगह प्रघण, जमा सकै की जोर । धरजे धक धाराळ की, टरड़ निभावै टोर ।
—रेवतसिंह भाटी

टोरड़ियौ—देखो 'टोडियौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—म्हारा काकोजी चरावै टोरड़िया, म्हारा भाऊजी लावै छकियार ।—लो.गी.

टोरड़ौ—देखो 'टोडियौ' (रू.भे.)
उ०—सांड टोरड़चां टोड, कोड कर कांट किटाळी । लफलफ लेत बुगाळ, सूंत खेजड़लां डाळी ।—दसदेव
(स्त्री० टोरड़ी)

टोरणौ, टोरबौ—क्रि०स०—१ पद-चिन्हों को पहिचान कर चोर को ढूंढ़ने के निमित्त पीछा करना ।
२ देखो 'टोळणौ, टोळबौ' (रू.भे.)

टोराबाज—वि०—जो डींग हांकता हो, गप्पी, झूठा ।

टोरियोड़ौ—१ पद-चिन्हों को पहिचान कर चोर को ढूंढ़ने के लिये पीछा किया हुआ । २ देखो 'टोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० टोरियोड़ी)

टोरियौ, टोरौ—सं०पु०—१ असत्य बात, तथ्य रहित बात, डींग, गप्प ।
क्रि०प्र०—देणा, हांकणा ।
२ टक्कर, प्रहार (गेंद पर)
क्रि०प्र०—ठोकणौ, देणौ, मेलणौ ।
यौ०—टोराबाज ।
अल्पा०—टोरियौ ।

टोळ—सं०पु० [सं० प्रतोली, प्रा० टोल्ल] १ निवास-स्थान, घर ।
उ०—१ भला ठाकुर साथ करी, नवा गांम वासंति । डूंगर तणै नींझरणै तेणइ, तांणिया टोळ घसंति ।—नळ दवदंती रास
उ०—२ संख मुखिइं जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जंपु । टोळ टळक्कइ रैवत दैवत मनि आकंपु ।—नेमिनाथ फागु
उ०—३ भवि भवसउ ते बोलइ बोलइं गिरिसिर टोळ । सहजिइं परभव भेदन वेदन वदन विलोळ ।—नेमिनाथ फागु
२ सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
३ देखो 'टोळौ' (मह., रू.भे.)
उ०—१ टूटा मत रह टोळ सें, राव भीड़ के बीच । एक अकेले मिनख कूं, सूझै ऊंच न नीच ।—अज्ञात
उ०—२ कळपव्रछ री डाळ, पारस री टोळ, मेह री महर, दरियावां री छोळ ।—दरजी मयारांम री वात
उ०—३ बोल के कुबोल भगौ, टोळ तूं भयौ ।—ऊ.का.

टोळउ—देखो 'टोळौ' (रू.भे.)

टोळगइ—सं०स्त्री० [सं० टोलगति] तीड के समान कूदते-कूदते वंदना करने का बत्तीस दोषों में से पांचवां दोष (जैन)

टोळणौ, टोळबौ—क्रि०स०—चलने के लिए प्रेरित करना, हांकना (पशुओं को) उ०—पण एक दिन ईसड़ौ दईव संजोग हुवौ सो म्होकमसिंघ तौ हिरण री सिकार मूळ बैठौ थौ अर साथ रौ रजपूत हिरण टोळवा नै वन मांहि पैठौ थौ ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

टोळणहार, हारौ (हारी), टोळणियौ—वि० ।
टोळवाड़णौ, टोळवाड़बौ, टोळवाणौ, टोळवाबौ, टोळवावणौ, टोळवावबौ, टोळाड़णौ, टोळाड़बौ, टोळाणौ, टोळाबौ, टोळावणौ, टोळावबौ—प्रे०रू० ।
टोळिओड़ौ, टोळियोड़ौ, टोळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
टोळीजणौ, टोळीजबौ—कर्म वा० ।
टोरणौ, टोरबौ—रू०भे० ।

टोळाटाळ—सं०पु०—वह जैन साधु जो बदचलनी के कारण किसी दल से निष्कासित कर दिया गया हो ।

टोळाटोळ—सं०पु०यौ० (अनु०) भीड़-भड़क्का । उ०—नगर मांहि निरखइ सहू, हुउ हाल कल्लोळ । टळवा किहिं तिल को नहीं, जिहिं तिहिं टोळाटोळ ।—मा कां.प्र.

टोळियोड़ौ—भू०का०कृ०—चलने के लिए प्रेरित किया हुआ, हाँका हुआ ।
(स्त्री० टोळियोड़ी)

टोळी—सं०स्त्री०—१ समुदाय, झुण्ड, समूह, मंडली, जत्था, संघ, टुकड़ी।
उ०—१ तठा उपरायंत देसोत राजांन आपरा टोळी मजल रा जुवांन लियां विराजमांन हुवा छै ।—रा.सा.सं.
उ०—२ रातूं दे रोड़ा लूला खोड़ा दुखियारा दीसंदा है । झोळी झड़कावै पोळी पावै टोळी सूं टाळंदा है ।—ऊ.का.
२ पंक्ति, कतार । उ०—लागै घणी लुभावणी, टीबां री टोळीह । जांणक जोवण री प्रक्रति, घड़ री घड़ खोलीह ।—लू

टोळौ—सं०पु०—१ पशु विशेष का समूह (ऊँट, गाय, मादा ऊँट, हरिन)
२ समूह, झुण्ड । उ०—मऊ रा टोळा रा टोळा सहर कांनी भाग्या जा रह्या हा ।—रातवासौ
३ अनगढ़ बड़ा पत्थर । उ०—पांण मरकट हुलस गुरज रिम सिर पड़ै । झट कुलस हूंत गिर जांण टोळा झड़ै ।—र.रू.
४ घर (नळदवदंती रास)
वि०—मूर्ख, गँवार ।
रू०भे०—टोळउ ।
मह०—टोळ ।

टोवण—सं०स्त्री०—ऊँट की नाक में लगी काष्ट की लकड़ी पर लगा हुआ सूत का बना गोल घेरा (नाकी), जिसमें ऊँट को बाँधने या हाँकने के लिए रस्सी बाँधी जाती है ।

टोवा-रव—सं०पु०—ध्वनि, आवाज ? उ०—गोड़ीरव गैमरां जूह वहतां तळ जोड़ां । घंटारव पक्खरां हुय हिंसारव घोड़ां । टोवा-रव टिंगटिंग गोम गैणारव गज्जै । गुंजारव भेरियां घनंक टंकारव वज्जै ।
—गु.रू.बं.

टोवाळी—देखो 'टवाळी' (रू.भे.)

टोह—सं०स्त्री०—१ ध्यान, सजगता, तकन ।
क्रि०प्र०—राखणी, लगाणी ।
२ खोज, तलाश ।

क्रि०प्र०—मिळणी, राखणी, नगणी, नगाणी, लागणी, लैणो।

मुहा०—टोह में रैं'णो—खोज में रहना, तलाश में रहना।

३ खबर, पता।

क्रि०प्र०—मिळणी, राखणी, लगणी, लगाणी, लागणी, लैणो।

रू०भे०—टो', टोय।

टोह़णो, टोह़बो–क्रि०स०—१ दर्द के स्थान पर बार-बार सेक करना. २ दर्द के स्थान पर आक का दूध लगाना।

रू०भे०—टोणी, टोबो।

टोहियोड़ो–भू०का०कृ०—१ दर्द पर सेका हुआ. २ दर्द के स्थान पर आक का दूध लगाया हुआ।

(स्त्री० टोहियोड़ी)

टौंस–सं०स्त्री० [सं० तमसा] एक छोटी नदी जो अयोध्या के पश्चिम से निकल कर गंगा में मिलती है। इसी नाम की एक दूसरी नदी जो मैहर के पास कैमोरे के पहाड़ से निकल कर रीवां में होती हुई इलाहबाद और मिर्जापुर के बीच गंगा में मिलती है

टौ–सं०पु०—१ छत्र. २ बैल. ३ समुद्र. ४ पुरुष. ५ दावानल. ६ नीति (एका.)

टौनौ—देखो 'टोनौ' (रू.भे.) उ०—भ्रकुटि कुटिल चपळ नैण चितवन से टौना, खंजन अस मधुप मीन मोहे अगछौना।—मीरां

ट्ठिइयास–वि० [सं० स्थितिका] स्थिति वाली (जैन)

ठ

ठ—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला में बारहवां व्यञ्जन जो टवर्ग का दूसरा वर्ण है। यह मूर्धन्य-स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग किंचित् मुड़ कर कठोर-तालु को स्पर्श करता है। यह अघोष महाप्राण है।

ठं-सं०पु०—१ शरद. २ पानी. ३ मदिरा. ४ अमृत. ५ बसंत. ६ छिद्र (एका.)
वि०—निर्मल (एका.)

ठंठ-वि० [सं० स्थाणु] सूखा हुआ या शाखाओं कटा हुआ (पेड़), ठूठा।
रू०भे०—ठंठौ।

ठंठण—देखो 'ठण' (रू.भे.)
यौ०—ठंठणपाळ।

ठंठणपाळ-वि०यौ०—मूर्ख, गंवार। उ०—अक्षर भेद न जांणै मूढ़, चाल रह्यौ छै कुळ री रूढ़। ठोठ महारक ठंठणपाळ।—जयवांणी

ठंठाणौ, ठंठाबौ-क्रि०स०—१ दूसरे का माल हड़पना या अधिकार में करना. २ (वस्त्रादि) धारण करना (व्यंग्य के रूप में कहा जाता है)
ठैंठाणौ, ठैंठाबौ—रू०भे०।

ठंठायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ हड़प किया हुआ, अधिकार में किया हुआ. २ धारण किया हुआ।
(स्त्री० ठंठायोड़ी)

ठंठारी-सं०स्त्री०—जुकाम, ठंड, सर्दी। उ०—ठंठारी लग जाय, डील करड़ौ पड़ जावै। आवै अळगी ओग, ऊकळ ताव तपावै।—दसदेव

ठंठारू, ठंठारौ, ठंठारौ—देखो 'ठठारौ' (रू.भे.)
उ०—१ तंबोळी सुथार ठीक भैंसात ठंठारू।—घ.व.ग्रं.
उ०—२ रांघण भटियारा कठियारा रे, भरावा कसारा ठंठारा।
—जयवांणी

ठंठियौ-सं०पु०—सूखी लकड़ी, पेड़ी मात्र।

ठंठेरणौ, ठंठेरबौ-क्रि०स०—१ झटकना, हिलाना. २ मारना, प्रहार करना।
ठंठोरणौ, ठंठोरबौ, ठठेरणौ, ठठेरबौ, ठठोरणौ, ठठोरबौ, ठमठोरणौ, ठमठोरबौ—रू०भे०।

ठंठेरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झटकाया हुआ, हिलाया हुआ. २ मारा हुआ, प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० ठंठेरियोड़ी)

ठंठेरौ—देखो 'ठठारौ' (रू.भे.) उ०—पकै ठूंठियां ईंट, चूनौ, सुरखी हुळकी फूल घुट। ठंठेरा लुहार सारा, लोह चढ़ावै लाल चुट।
—दसदेव

ठंठौ—देखो 'ठंठ' (रू.भे.)

ठंठोरणौ, ठंठोरबौ—देखो 'ठंठेरणौ, ठंठेरबौ' (रू.भे.)

ठंठोरियोड़ौ—देखो 'ठंठेरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठंठोरियोड़ी)

ठंड-सं०स्त्री०—जाड़ा, शीत, सरदी।
क्रि०प्र०—पड़णी, लागणी, होणी।
मुहा०—१ ठंड पड़णी—सर्दी का फैलना, शीत बढ़ना।
२ ठंड लगणी, लागणी—जुकाम हो जाना, सर्दी लग जाना, ठंड का अनुभव होना।
रू०भे०—ठंढ।

ठंडक-सं०स्त्री०—१ शीतलता। उ०—उण नै आपरा सरीर पर ठंडक मालम हुई। वौ जाग्यौ तौ देख्यौ मेह बरसण लागग्यौ है।
—रातवासौ
२ मनोरथ की पूर्ति या मनचाही वस्तु की प्राप्ति से होने वाला संतोष।
क्रि०प्र०—पड़णी, वापरणी।
३ उष्णता की शान्ति, जलन या उष्णता की कमी, तरी।
क्रि०प्र०—आणी।
४ किसी महामारी, हलचल या उपद्रव की शान्ति।
क्रि०प्र०—पड़णी।
५ देखो 'ठंड' (रू.भे.)

ठंडकार-सं०पु०—ठंडा मौसम, शीतल, ठंडा।

ठंडाई-सं०स्त्री०—१ शरीर की उष्णता शान्त करने तथा तरी लाने का मसाला या दवा।
क्रि०प्र०—घोटणी, पीणी।
२ शीतलता।
रू०भे०—ठंढाई।

ठंडिल, ठंडिल्ल—देखो 'थंडिल' (रू.भे.)

ठंडी-सं०स्त्री०—१ शीतला. चेचक (शेखावाटी)
क्रि०प्र०—टमकणी, ढळणी, निकळणी।
२ देखो 'ठंड' (रू.भे.)
उ०—ठंडी सेज हरखावती, ठंडा वसन तमांम। पोस भई वेहोस में, घर ना सिर का स्यांम।—लो.गी.
रू०भे०—ठंढि।

ठंडोड़ौ—देखो 'ठंडौ' (अल्पा.)
(स्त्री० ठंडोड़ी)

ठंडोळ—देखो 'ठाडोळ' (रू.भे.)

ठंडौ-वि० [सं० स्तब्ध] (स्त्री० ठंडी) १ शीतल, सर्द। उ०—सियाळा में बारणा बंद कियां पछै जांणै गुफा में घुस्या अर ऊनाळा री जिकी ठंडी-ठंडी लैं'रां आवै कै बैठां-बैठां नै नींद आय जावै।—रातवासौ
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

मुहा०—१ ठंडै ठंडै—सूर्य की गर्मी बढ़ने से पहले, सवेरे, तड़के । अथवा सूर्य की गर्मी के घटने के बाद का समय, सायंकाल ।

२ ठंडो सांस भरणी, लेणी—मानसिक उद्वेग या दुःख के कारण जोर से सांस खींचना या सांस छोड़ना ।

यौ०—ठंडो-टीप, ठंडो-ठरियो, ठंडो-ताव, ठंडो-पो'र, ठंडो-मीठो, ठंडो-वासी, ठंडो-हेम ।

२ जो प्रज्वलित न हो, बुझा हुआ. ३ जिसमें आवेश न हो, जो क्रोध नहीं करता हो ।

मुहा०—१ ठंडी माटी रो—शान्त, गम्भीर, ढीला.

२ ठंडो करणो—क्रोध शान्त करना, ढाढ़स देना. ३ ठंडो-मीठो करणो—क्रोध शान्त करना, चुप करना ।

४ नामर्द नपुंसक. ५ जिसमें चंचलता, स्फूर्ति तथा उत्साह की कमी हो. ६ जो विरोध नहीं करे, इच्छा के प्रतिकूल कार्य होने पर भी हाथ पैर नहीं हिलाए, सुस्त, कमजोर ।

मुहा०—ठंडै ठंडै—बिना कुछ बोले, चुपचाप ।

७ मरा हुआ, प्राणरहित ।

मुहा०—१ ठंडो करणो—मार डालना, समाप्त कर देना. २ ठंडो पड़णो—समाप्त हो जाना, मर जाना, जोश समाप्त हो जाना.

३ ठंडो पाड़णो—देखो 'ठंडो करणो'

४ ठंडो राखणो—देखो 'ठंडो करणो'

५ ठंडो होणो—देखो 'ठंडो पड़णो'

सं०पु०—शीतला को प्रसन्न करने के लिये बनाया हुआ भोजन जिसे पहले दिन बना कर दूसरे दिन खाया जाता है ।

उ०—माताजी चमकिया देस में, ठंडो रांदो ओ, हालरिया री माय । —लो.गी.

रू०भे०—ठंढ़ो ।

ठंडो-ठरियो, ठंडो-वासी—वि०यौ० (स्त्री० ठंडी-ठरी, ठंडी-वासी) वह भोजन जो ताजा न हो, एक या एक से अधिक दिन पहले बना हुआ भोजन ।

रू०भे०—ठाडो-ठरियो, ठाढ़ो-ठरियो, ठाढ़ो-वासी ।

ठंडो-ताव—सं०पु०—शीत ज्वर ।

ठंडो-पो'र—सं०पु०यौ०—सूर्योदय के पश्चात् व सूर्यास्त से पूर्व का वह समय जब गर्मी अधिक नहीं । उ०—ठंडा-पो'र री टैम ही अर रंभा आपरा पोता प्रवीण कुमार रै साथै आटो लेजावण नै चक्की पर आई ।—रातवासो

ठंड़—देखो 'ठंड' (रू.भे.)

ठंढ़ाई—सं०स्त्री०—१ विश्राम । उ०—गूजरी कह्यो म्हे तो पेसतो दीसो न छै नै पेठो छै नै मांहे छै तो राजि देस रा धणियां आगै कठै जावै ? सढ़ो मोटो छै नै च्यारूंमेर सढ़ा दौळा उतरो, विराजो, ठंढ़ाई करो ।—राव रिणमल री बात

२ देखो 'ठंडाई' (रू.भे.)

ठंढ़ि—देखो 'ठंडी' (रू.भे.)

उ०—सूरजजी ठंढ़ि रा मारीआ उतर पंथ छोडी नै दक्षिण सांमां वहण लागा ।—रा.सा.सं.

ठंढ़ो—देखो 'ठंडो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठंढ़ी)

ठाढ़ो-ठरियो—देखो 'ठंडो-ठरियो' (रू.भे.)

ठंभणो, ठंभवो—देखो 'थमणो, थमवो' (रू.भे.)

ठंभाणो, ठंभावो—देखो 'थमाणो, थमावो' (रू.भे.)

ठंभायोड़ो—देखो 'थमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठंभायोड़ी)

ठंभियोड़ो—देखो 'थमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठंभियोड़ी)

ठ—सं०पु०—१ चन्द्रमा. २ बृहस्पति. ३ ज्ञानी. ४ महादेव. ५ श्रीकृष्ण. ६ वेग. ७ बादल, मेघ. ८ वाचाल (एका.)

ठइत—सं०पु० [सं० स्थापित] साधु के निमित्त पृथक रखा हुआ पदार्थ (जैन)

ठइय—वि० [सं० स्थगित] ढका हुआ (जैन)

ठउडणो, ठउडवो—क्रि०स०—अपमान करना । उ०—सुद्धचारित्रियां तेहहइं अपमांननइं काजिइं, तेहे ठउडवा इम करइं ।

—षष्टिशतक प्रकरण

ठक—सं०स्त्री०—वह शब्द जो एक वस्तु पर दूसरी वस्तु के आघात से होता है ।

रू०भे०—टक ।

ठकठकाणो, ठकठकावो—क्रि०स०—१ एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का प्रहार करना. २ ठक ठक शब्द उत्पन्न करना. ३ खटखटाना, ठोकना. ४ जांच के हेतु बजाना.

रू०भे०—ठपकाणो, ठपकावो, टपकारणो, ठपकारवो ।

ठकठकायोड़ो—भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु पर प्रहार किया हुआ. २ ठक ठक शब्द उत्पन्न किया हुआ. ३ खटखटाया हुआ, ठोंका हुआ. ४ जांच के हेतु बजाया हुआ ।

(स्त्री० ठकठकायोड़ी)

ठकठोळी—सं०स्त्री०—हँसी, मजाक, दिल्लगी । उ०—गरथ तणै गारव हुओ गहिलो विण होळी । नेट करै निवळ री ठेक हासी ठकठोळी ।

—ध.व.ग्रं.

ठकर—देखो 'ठाकर' (रू.भे.)

ठकरांणी—सं०स्त्री०—१ ठाकुर की पत्नी । उ०—काइमि री बारठ कहै, ठकरांणी अे ठीक।। साहिब राघव सारिखा, तूं सीता सारीख ।

—पी.ग्रं.

२ स्वामिनी, मालकिन ।

ठकराई—देखो 'ठकुराई' (रू.भे.)

उ०—राजाई कहीजै किनां पातसाही राम, ठगाई तुम्हारी निमो

ठकराई ठीक ।—पी.ग्रं.

ठकराहौ—देखो 'ठाकर' (रू.भे.)

उ०—ठाहर पग मांडौ ठकराहां, हुग्रा यौ सुण वाहर हकौ । मो ऊभां ग्रतरी छै मालम, 'सालम' धन ले जाय न सकौ ।

—ईसरदास मोयल री गीत

ठकांणौ—देखो 'ठिकांणौ' (रू.भे.)

उ०—गण सपत होइ गुरु ग्रंति गाह, ठकांणौ छठैं विप्र जगण ठाह ।

—ल.पिं.

ठकार—सं०पु०—'ठ' ग्रक्षर ।

ठकावळ—सं०स्त्री०—धक्का ।

ठकुर—देखो 'ठाकर' (रू.भे.)

ठकुर-सुहाती—सं०स्त्री०यौ०—केवल किसी को प्रसन्न करने हेतु कही जाने वाली बात, खुशामद ।

ठकुरांणी—देखो 'ठकरांणी' (रू.भे.)

उ०—दादू माया चेरी संत की, दासी उस दरबार । ठकुरांणी सब जगत की, तीनों लोक मंझार ।—दादू वांणी

ठकुराई—सं०स्त्री० [सं० ठक्कुर+रा०प्र०ई] १ शासन, हुकूमत ।

उ० —धरती थांहरैं घरै हुसी । ग्रर थांहरैं कुरसी दर कुरसी ठकुराई हुसी ।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणी, राखणी, होणी ।

२ राज्य । उ०—१ कछवाहां री राज थेटू पूरब में रोहितासगढ़ जठै । उठासूं नरवर वसिया । नरवर सूं दोसै ठकुराई बांधी । दोसा सूं ग्रांबेर । ग्रांबेर सूं जैपुर ।—बां.दा.ख्यात

उ०—२ ग्राज राव रै तौ ग्रोहिज माथै मौड़ छै । इण साथ मुवै राव री ठकुराई घणी पातळी पड़सी ।—राव मालदे री बात

क्रि०प्र०—करणी, बांधणी, होणी ।

३ स्वामित्व, अधिकार, कब्जा । उ०—राव रिणमल उठै धिणलै सोजत कनै रहै । गांव री ठकुराई पाखती घणा रजपूतां रा भूळ रहै ।

—राव रिणमल री वात

४ वड़प्पन की धाक, रोब, हुकूमत । ज्यूं—ग्रां रोज-रोज म्हांरै माथै ठकुराई जमावौ ग्रा वात ठीक नी है ।

क्रि०प्र०—जमाणी, राखणी ।

५ ग्रभिमान, घमण्ड, गर्व ।

क्रि०प्र०—करणी, जताणी, राखणी ।

रू०भे०—ठकराई, ठकुरात, ठकुरायत, ठाकराइ, ठाकरि, ठाकरी, ठाकुराई, ठाकुरी ।

ठकुरात, ठकुरायत—देखो 'ठकुराई' (रू.भे.) उ०—हाथां हळ हाकता, नार करती नेदांणी । निरस घरां सनमंध, कदै ठकुरात न जांणी ।

—ग्ररजुणजी वारहठ

ठकुरालौ—देखो 'ठाकर' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—ताहरां रजपूत वोलियौ—'जी वसती सोळ कियां री छै ।' कह्यौ—'ठकुराळा ! ग्रा वेटी किणरी छै ?' ताहरां ऊ रजपूत वोलियौ—'जी, ईयै रजपूत री डावड़ी छै ।'—नैणसी

ठकोरौ—सं०पु०—१ घंटी पर प्रहार करने से उत्पन्न शब्द. २ चोट, प्रहार । उ०—फजर के पहर गजर ठकोरा बगे । ठोड़-ठोड़ धवळ मंगळ होणै को लगे ।—रा.रू.

ठक्कुर—देखो 'ठाकर' (रू.भे.)

ठग—वि० [सं० ठक] (स्त्री० ठगण, ठगणी) छल ग्रौर धोखे से लूटने वाला, भुलावा देकर धन हरण करने वाला, धूर्त, छली ।

उ०—१ दगौ दियौ कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह । वाणिण जाया 'बांकला', कहै महाजन काह ।—बां.दा.

उ०—२ एक कहै ग्रवरंग, एह ग्रालोच ग्रकव्वर । एक कहै किम एक, एह ढिल्ली ठग ग्रासुर ।—रा.रू.

यौ०—ठग-बाजी, ठग-विद्या ।

ग्रल्पा०—ठगारौ, ठगोरौ, ठिगारौ ।

ठगठगतउ—वि०—स्तंभित । उ०—नसाजाळ व्यक्ता दीसइं, ग्रस्थिबंध ढीला ढळहळता, जिसा गांमटि ग्रजांणि सूत्रधारि ठगठगतउ साल संचउ मेळिउ जिसिउ, जिनप्रवचनालंकार ।—व.स.

ठगठगी—सं०स्त्री० (ग्रनु०) विस्मय से देखने की क्रिया या भाव ।

उ०—रिमां पाड़ै भंगी तगी वागां रमैं, दुभल माझल लगी चूंप दावां । धज विलंद देख सूमां चढ़ी धगधगी, ठगठगी टगटगी लगी ठावां ।—वखतौ खिड़ियौ

ठगठगौ—वि० (स्त्री० ठगठगी) चकित, डांवाडोल, ग्रस्थिर ।

उ०—मन भयै ठगठगा जांम-जांम । तद ग्राखै 'करनल' वचन तांम ।

—रामदांन लाळस

ठगण—सं०पु०—छंद शास्त्र में ५ मात्राग्रों का एक गण जिसके ग्राठ उपभेद होते हैं ।

ठगणी—सं०स्त्री०—१ ठगने की क्रिया. २ ठगने वाली स्त्री ।

क्रि०प्र०—करणी ।

ठगणौ—वि० (स्त्री० ठगणी) जो धूर्तता से द्रव्य हड़पता हो, जो छल करता हो ।

ठगणौ, ठगबौ—क्रि०स०—१ भुलावे में डाल कर धन हरण करना, धोखा देकर माल लूटना. २ दगा करना, धोखा देना. ३ माल वेचते समय उचित से अधिक मूल्य लेना, सौदा वेचने में वेईमानी करना ।

ठगणहार, हारौ (हारी), ठगणियौ—वि० ।

ठगवाड़णौ, ठगवाड़बौ, ठगवाणौ, ठगवाबौ, ठगवावणौ, ठगवावबौ, ठगाड़णौ, ठगाड़बौ, ठगाणौ, ठगाबौ, ठगावणौ, ठगावबौ—प्रे०रू० ।

ठगिग्रोड़ौ, ठगियोड़ौ, ठग्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ठगीजणौ, ठगीजबौ—कर्म वा० ।

ठगपणौ—सं०पु०—१ धूर्तता, छल, चालाकी. २ ठगने का कार्य या भाव ।

ठग-बाजी—सं०स्त्री०यौ०— १ धूर्तता, छल, चालाकी. २ ठगने का कार्य

या भाव। उ०—तोनग मरवर भरियौ नीकौ, भुकै लोग पीवण दे मोनौ। ठगवानी गादी रो ठौको, फेर सिमां कर दीनौ फीकौ।
—ऊ.का.

ठग-विद्या-स्त्री०यौ०—१ धूर्तता, छल, चालाकी. २ ठगने का कार्य या भाव।

ठगाई, ठगाई-सं०स्त्री०—१ धूर्तता, धोखेबाजी, छल।
उ०—गजाई कहीजै किनां पातसाही धारी रांम। ठगाई तुम्हारी लिमी ठगाई ठीक।—पी.ग्रं.
२ ठगना क्रिया का भाव।
क्रि०प्र०—करणी।

ठगाठगी-सं०स्त्री० (अनु०) धूर्तता, धोखेबाजी।
मि०—धोखा-धड़ी।

ठगारौ—देखो 'ठग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ म्यांन ठगारौ गोड़ियौ, नंकर करिसं सेव। बीठुल मांहि विराजियौ, दरसण दोरौ देव।
—पी.ग्रं
उ०—२ कूड़ा नेह कुटुंब सूं, सब साथ ठगारा।—केसोदास गाडण
(स्त्री० ठगारी)

ठगियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ धोखे से लूटा हुआ. २ दगा किया हुआ, धोखा किया हुआ. ३ उचित से अधिक मूल्य लिया हुआ।
(स्त्री० ठगियोड़ी)

ठगी-सं०स्त्री० [सं० ठक] १ धूर्तता, छल, चालाकी।
क्रि०प्र०—करणी।
२ ठगने की क्रिया या भाव, ठगने का कार्य। उ०—खेड़ापा सीथळ दोई खोटा, जाहर ठगी जमाई। ऊमरदांन गुरु कर आं नैं, गैला स्यांन गमाई।—ऊ.का.

ठगोरी-सं०स्त्री०—ठगों की विद्या।
वि०—धोखा देकर लूटने वाली ठगिन। उ०—दिन ऊनाळै बोभर भट्ठी, घोरां मोज प्रभात री। कासमीर री ठंड वखेरै, बाय ठगोरी रात री।—दमदेव
रू०भे०—ठगोसरी।

ठगोरौ—देखो 'ठग' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० ठगोरी)

ठगोसरी-वि०—१ ठगने वाला, कपटी, धूर्त।
२ देखो 'ठगोरी' (रू.भे.)

ठड़ड़, ठड़हड़-सं०स्त्री० (अनु०) १ घोड़े के नाक की ध्वनि।
उ०—१ रिख हड़ड़, ठड़ड़ अस, दड़ड़ रत, वड़वड़ अच्छर वाधांमणां। गड़गड़ अंबाट तड़तड़ प्रगट, उरड़ थाट अधियांमणा।
—वखतौ खिड़ियौ
उ०—२ अवंक गड़गड़ गड़ड़ गोम ठड़हड़ तुरां।—भाखसी लाळस
२ बन्दूक की आवाज।
रू०भे०—ठरड़।

ठ'ड़णौ, ठ'ड़बौ—देखो 'ठरड़णौ, ठरड़बौ' (रू.भे.)

ठ'ड़ियोड़ौ—देखो 'ठरड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठ'ड़ियोड़ी)

ठ'ड़ौ—देखो 'ठरड़ौ' (रू.भे.)

ठट-सं०पु० [सं० स्थाता] १ बहुत से लोगों का समूह, भीड़, गरदी।
२ एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओं का समूह।
मुहा०—ठट लागणौ—ढेर होना, भीड़ होना।
रू०भे०—ठट्ट।

ठटरी-सं०स्त्री०—अस्थि-पंजर, हड्डियों का ढांचा।

ठट्ट—देखो 'ठट' (रू.भे.)
उ०—तूं जा भूंडण रिवछडै, म्है जाऊं घण ठट्ट। मैं'लां रोवाऊं कांमणी, कै मांस बिकाऊं हट्ट।—लो.गी.

ठट्ठौ-सं०पु०—१ हँसी, मजाक, विनोद।
उ०—दोनूं सरदार भेळा बैठिया, ठट्ठौ मसखरी हांसी हो रही छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता
क्रि०प्र०—करणौ, मारणौ।
रू०भे०—ठट्ठौ।
यौ०—ठट्ठाबाज।
२ 'ठ' अक्षर।

ठठकणौ, ठठकबौ—देखो 'ठिठकणौ, ठिठकबौ' (रू.भे.)

ठठकार-सं०स्त्री०—१ डांट-डपट, दुत्कार।
क्रि०प्र०—देणी।
२ शाप, बददुआ।
क्रि०प्र०—देणी।
३ अत्यधिक शीत, सरदी।
क्रि०प्र०—पड़णी।
वि—पापी, दुष्ट। उ०—वडा हथियारा वरस, अई पापी अठताळा, तैं अठताळा तणा, अई चंडाळ सियाळा। तिकण सियाळा तणौ, माघ ठठकार महिनौ, तिण रै पख चांनणै, महा घोरारव कीनौ। तिण पख तिथ चवदस तणी, रात घटंतै छ घड़ी। 'सिवसाह' कमंध विसरांमियौ, धाह अचांणक ऊपड़ी।—साहिबौ सुरतांणियौ

ठठकारणौ, ठठकारबौ-क्रि०स०—१ फटकारना, दुत्कारना, धिक्कारना, तिरस्कार करना. २ शाप देना, बददुआ देना।

ठठकारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ।
२ शाप दिया हुआ।
(स्त्री० ठठकारियोड़ी)

ठठकियोड़ौ—देखो 'ठिठकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठठकियोड़ी)

ठठणौ, ठठबौ-क्रि०अ०—घुसना, प्रविष्ठ होना। उ०—दूजोड़ौ भरपूर वार निछरावळ करण वाळा पर हुऔ सो बरोबर बैठ्यौ होतौ तौ माथौ मूळा री कापी रै ज्यूं आधौ जाय पड़तौ पण इण पै'ला ईज

टूंकिया री गोळी पेटू में आय ठडी अर वांनै वैठणी पड़्यौ ।
—रातवासो

ठठर—वि०—सिकुड़ा हुआ ।

सं०स्त्री०—तलवार ।

उ०—राघै फिर पग रोपिया, एकै अड़पाई । राघै ऊपर रूक रस, वीरमदे वाही । करतै फिरतै कूदतै, ठठर तैं ठाही, ठांहै ठठर ठोर भुज, वाघै खां वाही ।—वी.मां.

ठठरणौ, ठठरबौ—देखो 'ठिठरणौ, ठिठरबौ' (रू.भे.)

ठठरियोड़ौ—भू०का०कृ०—देखो 'ठिठरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठठरियोड़ी)

ठठळणौ, ठठळबौ—क्रि०अ०—बेकार होना, अनुपयोगी होना ?

उ०—ठांम थिकां ठठल्या पछी, नागवेलि ना डींच । पांचय परि परि रडवडइ, दंत केस नख नीच ।—मा.कां.प्र.

ठठार—१ देखो 'ठठारा' (रू.भे.)

उ०—सोनी पारखि जवरीह गांधी दोसी नेस्ती कणसरा मणारी मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोलीया पटसुत्रीया माळी तंबोळी ।—व.स.

२ देखो 'ठठारौ' (मह., रू.भे.)

ठठारा—सं०स्त्री०—कांसी, पीतल आदि के वर्तन बनाने वाली एक जाति विशेष ।

रू०भे०—ठठार, ठांठर ।

ठठारौ—सं०पु० (स्त्री० ठठारण, ठठारी) कांसी, पीतल आदि के वर्तन बनाने का व्यवसाय करने वाली 'ठठारा' जाति का व्यक्ति, ठठेरा ।

रू०भे०—ठंठारू, ठंठारौ, ठंट्टारौ, ठंठेरौ, ठठार, ठठियार, ठठेरौ, ठांठर ।

ठठियार—देखो 'ठठारौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठठियारण, ठठियारी)

ठठियोड़ौ—भू०का०कृ०—प्रविष्ट हुवा हुआ, घुसा हुआ ।
(स्त्री० ठठियोड़ी)

ठठियौ—१ देखो 'ठठौ' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'ठाटौ' ।
(अल्पा., रू.भे.)

ठठुरी—सं०स्त्री०—तोप का ठाठा । उ०—सुन के नृप के उर कोप बढ्यौ, मघवा मनु दांणव सीस चढ्यौ । ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय संमिल सोरन की ।—ला.रा.

ठठेरणौ, ठठेरबौ—देखो 'ठंठेरणौ ठंठेरबौ' (रू.भे.)

ठठेरियोड़ौ—देखो 'ठंठेरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठठेरियोड़ी)

ठठेरौ—देखो 'ठठारौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठठेरी)

ठठोर—देखो 'ठट्ठोल' (रू.भे.) उ०—ठठोर सत्रु गोठ की जवांन गोठ लें जवै, बडी मठोठ में वहै, दु होठ दंत तें दवै ।—ऊ.का.

ठठोरणौ, ठठोरबौ—ठंठेरणौ, ठंठेरबौ' (रू.भे.)

ठठोरियोड़ौ—देखो 'ठंठेरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठठोरियोड़ी)

ठठोळ, ठठोळी—देखो 'ठट्ठोळ' (रू.भे.) उ०—सो कछोटियौ लोग ओछा अधका बोल बोलै, ठठोळियां करै ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

ठठौ—सं०पु०—'ठ' अक्षर । उ०—जिको न पूरौ जांणतौ, ठठौ मींडौ ठोठ ।—ध.व.ग्रं.

रू०भे०—ठट्ठौ, ठठौ, ठठ्ठौ ।

अल्पा०—ठठियौ, ठठ्ठियौ ।

२ देखो 'ठट्टौ' (रू.भे.)

ठट्टियौ—देखो 'ठठौ' (अल्पा., रू.भे.)

ठट्ठोळ, ठट्ठोळी—सं०स्त्री०—हँसी, मजाक, दिल्लगी ।

रू०भे०—ठठोर, ठठोळ, ठठोळी ।

ठट्ठौ—१ देखो 'ठठौ' (रू.भे.) २ देखो 'ठट्टौ' (रू.भे.)

ठढ्ढौ, ठढ्ढौ—वि०—खड़ा, स्थिर (वं.भा.)

ठणंक—देखो 'ठण' (रू.भे.)

ठणंकणौ, ठणंकबौ—क्रि०अ०—धातु के या चमड़े से मढ़े वाद्य की आघात पाकर ध्वनि करना, ठन-ठन शब्द होना, ठन-ठन की ध्वनि होना ।

उ०—रणंकै तिकां घोर रुड़ी रचाई । ठणंकै किनां झलरी ठोर ठाई ।
—वं.भा.

२ (तुरंत सतर्क होकर) किसी विचार का मस्तिष्क में आना.

३ रह-रह कर आघात पड़ने की सी पीड़ा होना. ४ भागना ।

उ०—कोकल परियां गांन घणंकिया, ग्रीवां भमर भणंकिया गाढ़ । वरही रूपण ठणंकिया चहुं वळ, विविध सुवास खणंकिया वाढ़ ।
—अभैराम महियारियौ

ठणकणौ, ठणकबौ, ठणणंकणौ, ठणणंकबौ, ठमंकणौ, ठमंकबौ, ठमकणौ, ठमकबौ—रू.भे. ।

ठणंकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ ठन-ठन शब्द से ध्वनित. २ (तुरंत सतर्क होकर किसी विचार का) मस्तिष्क में आया हुआ. ३ रह-रह कर आघात पड़ने के कारण बना हुआ पीड़ित. ४ भागा हुआ ।
(स्त्री० ठणंकियोड़ी)

ठण—सं०स्त्री० (अनु०) किसी धातु खण्ड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द, ध्वनि, आवाज । उ०—इत्तैइ में एक जणौ आगै वध'र आंसूं पूंछतौ बोलियौ—'कुंई पिंड में दया हुवै तो करौ नी गरीव भाई री मदद' आ कैवण-रै-सागै-ई ठण-ठण टका-पइसां-री विरखा होवण लागी ।—वरसगांठ

मुहा०—ठण-ठण गोपाळ—गोपाल की मूर्ति के आगे केवल ठन-ठन की ध्वनि करता हुआ घंटा ही बजता है क्योंकि प्रसाद आदि तो पुजारी खा जाते हैं अर्थात् वह स्थान जहां कुछ भी प्राप्ति की आशा न हो, निर्धन, कंगाल ।

रू०भे०—ठणंक, ठणक, ठमंक, ठमक ।

ठणक—१ देखो 'ठण' (रू.भे.) उ०—रिमझिम रिमझिम विछियां बाजै, ठणक-ठणक बाजै पायलड़ी।—लो.गी.

२ किसी वस्तु की मार से मढ़े वाद्य पर आघात पड़ने का शब्द।

रू०भे०—ठनक।

ठणकणौ, ठणकबौ—१ देखो 'ठणंकणौ, ठणंकबौ' (रू.भे.) २ ठिनकना। उ०—रोवत ठणकत धू माता कनै आयो। माता धू नै ले कंठ लगायो।—लो.गी.

ठणकाणौ, ठणकाबौ—क्रि०स०—१ धातु के या चमडे से मढ़े वाद्य से ध्वनि करना, ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना, ठन-ठन की ध्वनि करना।

ठणठणाणौ, ठणठणाबौ—रू०भे०।

ठणकायोड़ौ—भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, ठन-ठन शब्द किया हुआ। (स्त्री० ठणकायोड़ी)

ठणकार—सं०स्त्री० (अनु०) ठन-ठन की ध्वनि, धातु खंड के बजने की आवाज।

ठणकियोड़ौ—देखो 'ठणंकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठणकियोड़ी)

ठणको—सं०पु०—१ बल, शक्ति। उ०—बणावो आप वातां वडी, साप हुवै किम सींदरो। सनमंद थयो लांठो सदा, जांणां ठणको जींद रो।

—पा.प्र.

२ वैभव, ऐश्वर्य, ठाट-बाट. ३ खांसने से उत्पन्न शब्द. ४ किसी धातु खण्ड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द। रह-रह कर आघात पड़ने की सी पीड़ा. ५ रोने का भाव. ६ गर्व, घमण्ड।

रू०भे०—ठणाको, ठुणको।

ठणठणणौ, ठणठणबौ—क्रि०अ०—ध्वनि होना, आवाज होना।

ठणहठणणौ, ठणहठणबौ—रू०भे०।

ठणठणियोड़ौ—भू०का०कृ०—ध्वनित।

(स्त्री० ठणठणियोड़ी)

ठणठणाणौ, ठणठणाबौ—देखो 'ठणकाणौ, ठणकाबौ' (रू.भे.)

ठणठणायोड़ौ—देखो 'ठणकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठणठणायोड़ी)

ठणणंकणौ ठणणंकबौ—देखो 'ठणंकणौ, ठणंकबौ' (रू.भे.)

उ०—ठणणंकै घंट गदलां ठहै, गणणंकै पळचर गयण।—वं.भा.

ठणणंकियोड़ौ—देखो 'ठणकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठणणंकियोड़ी)

ठणण, ठणणणण, ठणणाहट—सं०स्त्री० (अनु०) ध्वनि विशेष।

उ०—१ ठमकती पाय घूघर ठणण, भणण संग करता भमर। चमकती बीज आवै चली, समर हूंत करवा समर।—र. हमीर

उ०—२ जाणी बादळा मांहै बीजड़िआं रा सिला ऊपड़िया पाखरां ऊपरै सारधांरा फूलधारां बाजी सु ठणणणण जांणै परभात री झालर ठणंकी।—रा.सा.सं.

उ०—३ कोतक हारां कळळ, अवर सुणजै नह आहट। सणणाहट चरखियां, वीर घंटा ठणणाहट।—सू.प्र.

रू०भे०—ठणहण।

ठणणौ, ठणबौ—क्रि०अ०—१ सज्जित होना, तयार होना।

उ०—ठणै भद्र मदां भ्रिगां वंस ठावा। छटा फैल हालै किनां सेल छावा।—वं.भा.

२ होना, रूप लेना। उ०—गज ठणियां घण ग्राह वाह जणियां वादाळक। तणियां करभ तिमीस चरम भणियां चउ चाळक।

—वं.भा.

३ निश्चित होना, पक्का होना, तय होना।

४ ठहरना, स्थिर होना।

ठणियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ सज्जित, तैयार. २ बना हुआ, रूप लिया हुआ. ३ निश्चित, तय. ४ ठहरा हुआ.

(स्त्री० ठणियोड़ी)

ठणहण—देखो 'ठणण' (रू.भे.)

उ०—वणहणतां अलकां भंवर, पायल ठणहण पाव। मिळ मिळ आई वाग में, विधविध किया वणाव।—पनां वीरमदे री वात

ठणहणणौ, ठणहणबौ—देखो 'ठणठणणौ, ठणठणबौ' (रू.भे.)

ठणहणियोड़ौ—देखो 'ठणठणियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठणहणियोड़ी)

ठणाको—देखो 'ठणको' (रू.भे.)

ठ'णौ, ठ'बौ—देखो 'ठहणौ, ठहबौ' (रू.भे.)

उ०—भांडां रा भाई हांडां हाई, रांडां में रोवंदा है। ठ'तोड़ा आंसू फिरता फांसू, जिग्यासू जोवंदा है।—ऊ.का.

ठयोड़ौ—देखो 'ठहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठयोड़ी)

ठपकाणौ, ठपकाबौ, ठपकारणौ, ठपकारबौ—देखो 'ठकठकाणौ, ठकठकाबौ' (रू.भे.)

ठपकायोड़ौ, ठपकारियोड़ौ—देखो 'ठकठकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठपकायोड़ी, ठपकारियोड़ी)

ठप्प—सं०पु०—एकाएक रुक जाना क्रिया का भाव।

वि० [सं० स्थाप्य] एक तरफ रख देने योग्य, स्थापन करने योग्य, लोक व्यवहार में अनुपयोगी (जैन)

ठप्पो—सं०पु०—१ पुस्तकों आदि की जिल्द बांधने में प्रयुक्त होने वाला मोटे कागज का टुकड़ा, मोटा कागज. २ देखो 'टप्पो' (रू.भे.)

३ किसी वस्तु पर बेल-बूंटे, अक्षर आदि उभारने या बनाने का सांचा।

क्रि०प्र०—लगाणौ।

४ कपड़ों आदि पर रंग, स्याही आदि से बेल-बूटे छापने का छापा।

५ सांचे से बनाया हुआ बेल-बूटा, छाप।

ठवक—सं०स्त्री०—देखो 'ठवको' (रू.भे.)

ठवको—सं०पु०—१ किसी प्रकार का दोष, कलंक।

क्रि०प्र०—आणौ, लागणौ।

ठरकेत—वि०—हस्ती रखने वाला। उ०—जमीं चाळागारियां, **ठरकेतां** वरकां। अपणी अपणी कर गया, सब हिंदू तुरकां।
—दुरगादत्त बारहठ

रू०भे०—ठरकैत।

ठरकेल—वि०—१ हीन, अयोग्य, मूर्ख. २ अशक्त, निर्बल। ३ निर्धन, कंगाल।

रू०भे०—ठरकैल।

मि०—गयोबीतौ।

ठरकैत—देखो 'ठरकेत' (रू.भे.)

ठरकैल—देखो 'ठरकेल' (रू.भे.)

ठरकौ—सं०पु०—बलिदान किये जाने वाले पशु को तलवार से काटने की क्रिया, झटका। उ०—खाजरू आए हाजर हुआ छै, रावतालां नूं कहिओ छै। ठाकरां खाजरूआं नै **ठरका** करौ।—रा.सा.सं.

२ वैभव, संपत्ति। ३ हैसियत, हस्ती। उ०—अठा तक कै खुद ठाकुर सा'ब ई बाईजी रा ब्याव में सेठां सूं तीन हजार रुपिया उधार लिया हा। इण तरह सूं गांम में ईंज नी पण सारा चौखळा में सेठां री **ठरकौ** जम्योड़ो हो।—रातवासौ

४ ठसक, गर्व, घमण्ड।

क्रि०प्र०—राखणौ।

५ चोट, प्रहार. ६ बल, शक्ति. ७ प्रतिष्ठा, गौरव।

ठरड़—सं०स्त्री०—१ ध्वनि विशेष। उ०—सात खंधक दिराई। पाखती रजपूत सौ डोढ़-सौ दोयसै बैसै। पोळां री जाबतो निपट घणी राखै। तिकै तंबाखू री **ठरड़ां** लागी रहै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

२ देखो 'ठड़ड़' (रू.भे.)

ठरड़णौ, ठरड़बौ—क्रि०स०—घसीटना, खींचना।

ठ'ड़णौ, ठ'ड़बौ—रू०भे०।

ठरड़ियौ—भू०का०कृ०—घसीटा हुआ, खींचा हुआ।
(स्त्री० ठरड़ियोड़ी)

ठरड़ौ—सं०पु०—१ पोकरण के आस-पास के भू-भाग का नाम।
उ०—भाटी केसोदास भारमलोत **ठरड़ै** पोकरण रै रहै।—नैणसी

२ एक प्रकार का शराब जो नीचे स्तर का होता है।

रू०भे०—ठ'ड़ौ।

ठरठिम—वि०—ऐंठनयुक्त। उ०—थोर गात्र **ठरठिम** कइ चालइ, सिरि सेवंत्र भार। गवरीय नंदन विघन विहंडण, दुख खंडण सुख-सार।—रुकमणी मंगळ

ठरणौ, ठरबौ—क्रि०अ०—१ शीतल होना, ठंडा पड़ना।
उ०—सज्जण मिळिया सज्जणां, तन मन नयण **ठरंत**। अणपीयइ पांणग ज्यूं, नयणे छाक चढंत।—ढो.मा.

२ सरदी से जकड़ना, ठिठुरना। उ०—२ रवि बैठौ कळसि थियौ पालट रितु, ठरे जु डहकियौ हेम ठंठ। ऊडण पंख समारि रहै अलि, कंठ समारि रहै कळकंठ।—वेलि.

२ क्रोध मिटना. ३ जोश समाप्त होना।

ठरणहार, हारौ (हारी), ठरणियौ—वि०।

ठरवाड़णौ, ठरवाड़बौ, ठरवाणौ, ठरवाबौ, ठरवावणौ, ठरवावबौ, ठराड़णौ, ठराड़बौ, ठराणौ, ठराबौ, ठरावणौ, ठरावबौ—प्रे०रू०।

ठरिओड़ौ, ठरियोड़ौ, ठरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

ठरीजणौ, ठरीजबौ—भाव वा०।

ठारणौ, ठारबौ—सक०रू०।

ठिरणौ, ठिरबौ—रू०भे०।

ठल—सं०स्त्री०—सेना, दल। उ०—मांधै हेळवी दखणी दळ मांहै, मुगळां **ठलां** मझारी। अरियां उअरि बिचै घसि आधी, कूंपलै चरै कटारी।—नाहरसिंह आसियौ

ठळक—सं०स्त्री०—बूंद-बूंद के रूप में आंसुओं के गिरने की क्रिया।
उ०—**ठळक ठळक** आंसू पड़ै, जांणै टूटचो मोत्यां री हारौ जी। कुंवर कनै माता आय नै, भाखै वचन उदारौ जी।—जयवांणी

ठळकणौ, ठळकबौ—क्रि०अ०—१ तरल पदार्थ का बूंद रूप में गिरना।
ज्यूं—आंसू ठळकणा। २ प्रहार होना।

ठळकाणौ, ठळकाबौ—क्रि०स०—१ तरल पदार्थ का बूंद रूप में गिराना. २ प्रहार करना।

ठळकायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ (तरल पदार्थ को बूंद में) गिराया हुआ। २ प्रहार किया हुआ, प्रहार हुवा हुआ।
(स्त्री० ठळकायोड़ी)

ठळकियोड़ौ—भू०का०कृ०—(तरल पदार्थ का) बूंद रूप में गिरा हुआ।
(स्त्री० ठळकियोड़ी)

ठळकौ—सं०पु०—ठेस, आघात। उ०—पहली सखी उठ यूं बोली, दोनूं फांक बराबर क्यूं। दूजी सखी उठ यूं बोली, काळा केस किनारे क्यूं। तीजी सखी उठ यूं बोली, बिच में काळी मणियौ क्यूं। चौथी सखी उठ यूं बोली, **ठळकौ** लागै पांणी क्यूं।

ठळणौ, ठळबौ—क्रि०अ०—'ठाळणौ' क्रिया का अकर्मक रूप।

ठळळाड़णौ, ठळळाड़बौ, ठळळाणौ, ठळळाबौ, ठळळावणौ, ठळळावबौ—क्रि०स०—हुक्का पी कर हुक्के को ध्वनिमान् करना।
उ०—खाय रोट जद टांस हो गया, दीना पलंग ढळाय। कुरड़-कुरड़ हुक्को **ठळळावै**, गूदड़ दिया पकड़ाय।—डूंगजी जवारजी री पड़

ठळोकड़ी—सं०स्त्री०—हँसी, मजाक, दिल्लगी।

ठलौ—वि०—खाली, रिक्त, रहित। उ०—पाव उघाड़ै सिर ढ़कै, कर दोउ **ठलै**।—केसोदास गाडण

रू०भे०—ठल्लौ।

ठल्ल—सं०स्त्री०—धकेलना क्रिया का भाव।
वि०—खाली, रिक्त।

ठल्लणौ, ठल्लबौ—क्रि०स०—१ ठूंसना, भरना। उ०—अंतकाळ पेटचा अरथ, आटो मिळै न अंत। बळिहारी वर-रंक पण, दर **ठल्लै** गजदंत।—रेवतसिंह भाटी

२ खाली करना, रिक्त करना ।

ठल्लो—देखो 'ठलो' (रू.भे.) उ०—नमणी, खमणी, बहुगुणी, सगुणी धनइ मियाइ । जे धण एही संपजइ, तउ जिन ठल्लउ जाइ ।—ढो.मा.

२ टक्कर, आघात ।

क्रि०प्र०—देणो, लगाणो ।

ठमणो, ठमवो–क्रि०अ०—१ चकित होना, दंग रहना ।

उ०—मुलक मिला छाया जठै सुंदर, पेख प्रभा ठम रहे पुरंदर ।
—र.रू.

२ देखो 'थमणो, थमवो' (रू.भे.)

ठमियोड़ो–भू०का०कृ०—१ चकित हुवा हुआ, अचंभित ।

२ देखो 'थमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठमियोड़ी)

ठमंक–सं०स्त्री०—१ चलते समय या नृत्य करते समय पैर रखने का ढंग विशेष । उ०—ठमंकां रंमंकां झंकां रंमंकां ठमंक ।—र.ज.प्र.

२ देखो 'ठण' (रू.भे.)

ठमंकणो, ठमंकवो—देखो 'ठमकणो, ठमकवो (रू.भे.)

ठमंकियोड़ो–भू०का०कृ०—देखो 'ठमकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठमंकियोड़ी)

ठमंको, ठमंक्को—देखो 'ठमको' (रू.भे.)

उ०—एरण ठमंक्को म्है सुण्यो रे, लोहा घड़ै लुहार । सूरां सारू सेलड़ा, भूंडण सारू भाल ।—लो.गी.

ठम–सं०स्त्री०—चलते समय डग या पैर रखने की क्रिया ।

उ०—ठम ठम पाय ठमकति घमकति घूघरि संग ।—घ.व.ग्रं.

ठमक–सं०स्त्री०—१ मंद और सुन्दर चाल या गति, चलने का हाव-भाव, चलने की ठसक, लचक । उ०—जतन सूं दिवलो आंचळ ओट, ठमक सूं लाई मेल्यो थांन । उजाळै झीणों झुकी पलक्क, भुंकांणो मनड़ै रो असमांन ।—सांझ

२ धातु खण्ड पर आघात पड़ने से अथवा टकराने से उत्पन्न ध्वनि । उ०—पायजेबां री घमक, पायलां री ठमक, झमकि फिरै छै । आप आप रा अवसांण माफक तेहरी करै छै ।
—पनां वीरमदे री वात

ठमकणो, ठमकवो–क्रि०अ०—१ डग रखना, पैर रखना, चलना, गतिमान होना । उ०—ठम ठम पाय ठमकति घमकति घूघरि संग ।
—घ.व.ग्रं.

२ किसी धातु खण्ड का ध्वनि करना । उ०—निरमळ नेह चंवर करि जनकं, गगन मंडळ में झालरि ठमकं ।—ह.पु.वा.

रू०भे०—ठमंकणो, ठमंकवो ।

ठमकाड़णो, ठमकाड़वो—देखो 'ठमकाणो, ठमकावो' (रू.भे.)

ठमकाड़ियोड़ो—देखो 'ठमकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठमकाड़ियोड़ी)

ठमकाणो, ठमकावो–क्रि०स०—गतिमान करना, चलाना ।

२ (किसी धातु खण्ड से) ध्वनि करना ।

ठमकाड़णो, ठमकाड़वो, ठमकावणो, ठमकाववो—रू०भे० ।

ठमकायोड़ो–भू०का०कृ०—१ गतिमान किया हुआ, चलाया हुआ ।

२ (किसी धातु खण्ड से) ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री० ठमकायोड़ी)

ठमकावणो, ठमकाववो—देखो 'ठमकाणो, ठमकावो' (रू.भे.)

उ०—तता तता थेई थेई पद ठमकावति, गावत मुख गुण व्रिंदा ।
—स.कु.

ठमकावियोड़ो—देखो 'ठमकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठमकावियोड़ी)

ठमकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ गतिमान हुवा हुआ, चला हुआ ।

२ ध्वनित ।

(स्त्री० ठमकियोड़ी)

ठमको–सं०पु०—१ धातु खण्ड से उत्पन्न ध्वनि, जेवर की आवाज, पायल का शब्द । उ०—अणियाळां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणां री झोक नांखती पायल रै ठमकै सूं, घूघरै रै घमकै सूं, विछियां रै छमकै सूं रमझोळ करती, अंगूठा मोड़ती, नखरा करती, बाजारि चाली जायं छै ।—रा.सा.सं.

२ चटक-मटक, नखरा । उ०—मिंदर वाळी पुजारण ठमकै सूं चालै रै, क ठमको छोड दै ।—लो.गी.

३ नृत्य करते हुए पैर के रखने का ढंग ।

रू०भे०—ठमंको, ठमंक्को ।

ठमठोरणो, ठमठोरवो—देखो 'ठंठेरणो, ठंठेरवो' (रू.भे.)

ठमठोरियोड़ो—देखो 'ठंठेरियोड़ो' (रू.भे.)

ठमणी—देखो 'ठवणी' (रू.भे.)

ठमणो, ठमवो—देखो 'थमणो, थमवो' (रू.भे.)

ठमाणो, ठमावो—देखो 'थमाणो, थमावो' (रू.भे.)

ठमायोड़ो—देखो 'थमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठमायोड़ी)

ठमियोड़ो—देखो 'थमियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठमियोड़ी)

ठयणो, ठयवो—देखो 'ठहणो, ठहवो' (रू.भे.)

यौ०—ठयो-ठायो ।

ठयियोड़ो—देखो 'ठहियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठहियोड़ी)

ठयो—१ देखो 'ठियो' (रू.भे.) २ देखो 'ठायो' (रू.भे.)

ठयो-ठायो–वि०यौ०—बना-बनाया, यथास्थान ।

ठरक–सं०स्त्री०—हानि, कमी ।

ठरकणो, ठरकवो–क्रि०अ०—१ होना । ज्यूं—एड़ो थारै घर में कांई ठरकै है । २ देखो 'टरकणो, टरकवो' (रू.भे.)

ठरकाणौ, ठरकावौ–क्रि०स०—मार-पीट करना, पीटना।

ठरकायोड़ौ–भू०का०कृ०—मार-पीट किया हुआ, पीटा हुआ।
(स्त्री० ठरकायोड़ी)

ठरकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ मूर्ख, गँवार, अयोग्य. २ हुवा हुआ।
३ देखो 'टरकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठरकियोड़ी)

ठवड़—देखो 'ठौड़' (रू.भे.)
उ०—ताहरां ओथि वेढ़ि हुई, परिण सवळ वेढ़ि हुई। अमरै रा आदमी ३० ठवड़ि रहिया।—द.वि.

ठवण–सं०पु० [सं० स्थापन्] स्थापन करना (जैन)

ठवणा—देखो 'थापना' (१, २, ३, ४, ५)

ठवणाकम, ठवणाकम्म—देखो 'थापनाकरम' (रू.भे.) (जैन)

ठवणापुरिस—देखो 'थापनापुरस' (रू.भे.)

ठवणायरिय, ठवणारी—देखो 'थापनाचारज' (रू.भे.) (जैन)

ठवणासच्च—देखो 'थापनासत्य' (रू.भे.) (जैन)

ठवणी–सं०स्त्री० [सं० स्थापनी, स्थापिका] १ न्यास रूप में रखा द्रव्य, न्यास (जैन) २ काठ का बना उपकरण जिस पर पुस्तक रख कर पढ़ी जा सके। उ०—वरतणा वारू वळिय कमळी, पांच झळमळि अति भली। थापना चारिज पांच ठवणी, मुंहपत्ती पुड़ पाटली।
—स.कु.
३ वह छोटा ढांचा जो प्राय: अंगुली के आकार की लगभग चार तीलियों को इस प्रकार खड़ा कर के बनाया जाता है कि बीच में से वह डमरू के आकार का बन जाय।
वि०वि०—तीलियों के मध्य में छेद होने से उन्हें परस्पर डोरी से बांध देते हैं और उसमें कुछ गुच्छे से लगे रहते हैं। ढांचे के ऊपर एक कपड़ा लगा रहता है, उस पर जैनियों के पांच स्थापनाचार्यों की असद्भूत स्थापना की जाती है जो पोटली के रूप में उस ढांचे पर रखी रहती है।

ठवणुछव–सं०पु०यौ०—स्थापनोत्सव। उ०—पय ठवणुछव जुगवरह, काराविसु बहु रंगि। तांम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंगि।—ऐ.जै.का.सं.

ठवणौ, ठवबौ–क्रि०अ०—१ रखना, टेकना।
उ०—पय ठव सूका पांनड़ा, मां बजाड़ मयमंत। खबरदार कै बेखबर, वन इण सीह वसंत।—बां.दा.
२ सुसज्जित होना, सजना। उ०—१ चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहणहार सोळै सिणगार ठवियां थकां फूलां रा घोस पैहरियां थकां।—रा.सा.सं.
३ स्थापित होना, रखना। उ०—वायस वीजउ नांम, ते आगळि लल्लउ ठवइ। जइ तूं हुई सुजांण, तउ तूं वहिलउ मोकळे।
—ढो.मा.
४ कहना, कथना। उ०—कड़ाजूड़ कर कोदंडड़ा धजवड़ा ले करग, ठवंती कड़कड़ा कथन ठावी। बांद वर छेहड़ा बांदवर बेहड़ा, अर घड़ा जोगड़ा वरण आवी।
—जोगीदास चांपावत रौ गीत

ठव्वणौ, ठव्वबौ—रू०भे०।

ठविय–सं०पु० [सं० स्थापित] साधु या साध्वी के लिये रखी हुई वस्तु (भोजन वगैरह) (जैन)

ठविया–सं०स्त्री० [सं० स्थापिता] आचार्य आदि को भोजन कराने में यदि कोई बाधा या व्याघात डाले तो उसका प्रायश्चित वर्तमान समय में न कर के भविष्य में करने के लिए निश्चित कर रखना।
(जैन)

ठवियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पैर रखा हुआ, टिका हुआ. २ सजा हुआ, सुसज्जित. ३ रखा हुआ, स्थापित. ४ कहा हुआ, सुशोभित।
(स्त्री० ठवियोड़ी)

ठव्वणौ, ठव्वबौ—देखो 'ठवणौ, ठवबौ' (रू.भे.)
उ०—आठम प्रहर संझा समै, धण ठव्वै सिणगार। पांन कजळ पाखर करै, फूलां को गळि हार।—ढो.मा.

ठव्वियोड़ौ—देखो 'ठवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठव्वियोड़ी)

ठस–वि०—१ जो अपने स्थान पर मजबूत हो, जो कठिनाई से हिलता-डुलता हो।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
२ कठोर, दृढ़, ठोस, कड़ा, मजबूत।
क्रि०प्र०—होणौ।
३ जिसमें भीतरी स्थान रिक्त न हो, भरा हुआ. ४ कंजूस, कृपण.
५ सुस्त, निष्क्रिय।
क्रि०प्र०—होणौ।
६ परिपूर्ण, पूर्ण। उ०—ठस घुण भरियौ ठाकरां!, लालौ पेटचौ लीध। घड़ लड़ धरा समाय धुव, घुण खायां गुण कीध।
—रेवतसिंह भाटी

ठसक–सं०स्त्री०—१ स्वाभिमान, आन, शान।
उ०—मोवन हौ वडौ ठसक वाळौ'र समझदार।—वरसगांठ
२ अहंकार, घमण्ड, गर्व, ऐंठ, अकड़।
उ०—१ वडा वोलतौ वोल, वातां घणी वणातौ। जोम छक जणातौ ठसक जाझी। 'सदा' री अग्राजै 'सेर' ऊभौ समर, मुदायत 'हरा' रा आव माझी।—पहाड़खां आढ़ौ
उ०—२ इसौ चाकरां नूं सुणाय नूं वडी ठसक राख नै कुंवरजी कनै आय नै वडी रीस कीधी।—रीसाळू री वात
३ नखरा, चटक-मटक।
क्रि०प्र०—राखणी।

४ ठेस, धक्का ।

क्रि०प्र०—लागणी ।

ठसकदार, ठसकालो, ठसकीलो–वि०—१ स्वाभिमानी, गौरवशाली ।

उ०—घड़ियो घाट सुघाट, नारायण निज कर निपुण । ठसकोला वां ठाट, जो किम मूर्नाजै 'जसा' ।—ज.का.

२ ऐंठीला, अभिमानी, गर्वीला ।

ठसको–सं०पु०—१ ठेस, ठोकर, धक्का ।

क्रि०प्र०—लगाणी, लागणी ।

२ शान ।

क्रि०प्र०—होणी ।

३ अहंकार, घमंड. ४ नखरा, चटक-मटक ।

क्रि०प्र०—राखणी ।

५ खांसी चलने की क्रिया या ध्वनि ।

क्रि०प्र०—हालणी ।

ठसणौ, ठसबौ–क्रि०अ० [सं० स्तब्ध] १ (तरल पदार्थों का) ठोस रूप लेना, जमना. २ गतिविहीन होना, ठहरना, रुकना ।

मुहा०—ठस होणौ—ठहर जाना, आगे नहीं बढ़ना, जम जाना ।

३ प्रविष्ठ होना, पैठना । उ०—सेठां वाळी वात रणछोड़ा रै हिया में ठसगी ।—रातवासौ

ठसाठस–क्रि०वि०—दबा-दबा कर भरा हुआ, ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ, खचाखच ।

ठसाणौ, ठसाबौ–क्रि०स०—१ ठोस रूप देना, जमाना. २ ठहराना, रोकना. ३ प्रविष्ठ करना, पैठाना ।

ठसायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ ठोस रूप दिया हुआ, जमाया हुआ. २ ठहराया हुआ, रोका हुआ. ३ प्रविष्ठ किया हुआ ।

(स्त्री० ठसायोड़ी)

ठसियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ ठोस रूप लिया हुआ, जमा हुआ. २ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ३ प्रविष्ठ ।

(स्त्री० ठसियोड़ी)

ठसौ, ठस्सौ–सं०पु०—विशेषता ?

उ०—तिण समै सरां में ज्यूं मांनसरोवर, तरां में ज्यूं कळपतरोवर, खगां में ज्यूं राजहंस, नगां में ज्यूं भोमग्रंस, नसां में ज्यूं नेह री नसौ, रसां में ज्यूं सिणगार रस रौ ठसौ ।—र.हमीर

२ अभिमान, गर्व. ३ अभिमान झलकाने की क्रिया, गर्वपूर्ण चेष्टा.

ठह–वि०—१ कटिबद्ध, तैयार, सज्जित । उ०—थिरा उबारण थांग जुनम जरमन्न रै । ऊभा ठह अखड़ैत आवार अवन्न रै ।

—किसोरदांन बारहठ

२ देखो 'ठं' (रू.भे.)

ठहक–सं०स्त्री०—१ नगारे पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द, नगारे की ध्वनि. २ नगारे को बजाने के हेतु किया जाने वाला प्रहार, आघात.

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी ।

३ स्तंभित होने का भाव ।

क्रि०प्र०—जाणी, रैणी ।

ठहकणौ, ठहकबौ–क्रि०अ०—१ ध्वनि होना, बजना. २ कोयल मोर आदि पक्षियों का बोलना । उ०—मोर सिखर ऊंचा मिळै, नाचै हुआ निहाल । पिक ठहकै झरणां पड़ै, हरिए डूंगर हाल ।—बां.दा.

३ नगारे की ध्वनि होना, नगारे का बजना ।

ठहक्कणौ, ठहक्कबौ—रू०भे० ।

ठहकाणौ, ठहकाबौ–क्रि०स०—१ ध्वनि करना, बजाना. २ किसी वस्तु की दृढ़ता ज्ञात करने के लिये उस पर हाथ से प्रहार करना, जांचना ।

मि०—ठकठकाणौ ।

ठहकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ ध्वनित किया हुआ, बजाया हुआ. २ जांचा हुआ, ज्ञात किया हुआ ।

(स्त्री० ठहकायोड़ी)

ठहकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बजा हुआ, ध्वनित (नगारा आदि) २ (कोयल, मोर आदि) बोला हुआ, आवाज किया हुआ ।

(स्त्री० ठहकियोड़ी)

ठहकौ—देखो 'ठंकौ' (रू.भे.)

ठहक्कणौ, ठहक्कबौ—देखो 'ठहकणौ, ठहकबौ' (रू.भे.)

उ०—ठहक्कै कड़ी कंकटां ठौर ठाई । डहक्कै भड़ां बंकड़ां घोर डाई ।

—वं.भा.

ठहक्काणौ, ठहक्काबौ—देखो 'ठहकाणौ, ठहकाबौ' (रू.भे.)

ठहक्कायोड़ौ—देखो 'ठहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठहक्कायोड़ी)

ठहक्कियोड़ौ–सं०पु०—देखो 'ठहकियोड़ौ' (रू.भे)

(स्त्री० ठहकियोड़ी)

ठहठहणौ, ठहठहबौ–क्रि०अ० (अनु०) १ उचित रूप से किसी कार्य का होना. २ युद्ध का होना. ३ होना ।

ठहठहाणौ, ठहठहाबौ–क्रि०स० (अनु०) १ उचित रूप से किसी कार्य को कराना. २ युद्ध कराना ।

ठहठहायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ कार्य किया हुआ. २ युद्ध कराया हुआ ।

(स्त्री० ठहठहायोड़ी)

ठहठहियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ उचित रूप से कार्य बना हुआ. २ युद्ध हुवा हुआ. ३ (हो चुका) हुवा हुआ ।

(स्त्री० ठहठहियोड़ी)

ठहणौ, ठहबौ–क्रि०अ०—१ निश्चित होना, तय होना ।

उ०—छतीस वंस मोक नै, दये न ग्रंभ दांम नै । ठहै न वात आ अठै, खड़ौ तुरंग ठांभ नै ।—पा.प.

२ उचित बैठना, तय होना । उ०—आभ लागां गोरा-दळां छोडियां न काढ़ै आगो, प्रथी सारी आपांण छोडियां वहै पांण । रोड़ियां नगारौ, ठहै नह मांनै टेकलौ राजा, जिकां सतोड़ियां वहै हेकलौ जोधांण ।—नवलजी लाळस

३ स्थिर होना, ठहरना। उ०—१ कहै धरा नूं किसूं रंक किण नांम जितूं कह। मंद भाग की मुणं ठहै तारा किण ठांमह।—र.ज.प्र.
उ०—२ ठहियौ ठौड़-ठौड़ खंभ ठोरे। रजवठ वहियौ इक रंग।
रतनसिंह कूंपावत री गीत
मुहा०—ठह-ठह नै बोलणौ—रुक-रुक कर हाव-भाव के साथ बोलना।
४ लगना (प्रहार, चोट)। उ०—ठही चोट दे मंझरी कोट ठांणै, छकी पांन जे अट्ट रै वट्ट छांणै।—वं.भा.
५ स्थापित होना, जमना। उ०—ठहियां तौ विण राज ठिकांणै। जगत मूंझ दिल उभळ न जांणै।—सू.प्र.
६ सुशोभित होना, शोभित होना। उ०—ठहिया भूखण सरब ठिकांणै। अहि सांकळि पुहपां अहिनांणै।—सू.प्र.
७ प्रहार होना, आघात पहुँचना। उ०—ठहै दवानळ ठठर, झोकि पिंड सांमी झाळां। खोभ गिरंद खोहरां, लिया मोरचा लंकाळां।
—सू.प्र.
८ नगारा बजना. ९ (तरल से) ठोस रूप में आना, जमना।
ठ'णौ, ठ'बौ, ठयणौ, ठयबौ—रू०भे०।
क्रि०स०—१० धारण करना। उ०—ठग नीत सनातन रीत ठहौ, कर भेट अतीत की देह कहौ।—ऊ.का.

ठहरणौ, ठहरबौ—क्रि०अ०—१ रुकना, ठहरना। उ०—जठै घणां रा कचरघांण मैं आपरा अनीक रा पदद्रव रा प्रवाह मैं पड़ियौ नबाब कासिमखांन समेत कुमार दारासाह भी ठहरण न पायौ।—वं.भा.
२ रहना, माना जाना। उ०—घणी खुसियाळी मैं राग रंग गोठां करीजै। थाप-उथाप रावजी री ठहरि सीसोदियां री गिणत कांई रही नहीं।—राव रिणमल री वात
३ साथ देना। उ०—कूकर लाय जळै नहीं, जुड़ै न कायर जंग। विदर नह ठहरै विपत में, संपत में हिज संग।—बां दा.
४ किसी स्थान पर टिकना, डेरा डालना, विश्राम करना।
ज्यूं—गाडी में ऊतरतांई म्हे तौ धरमसाळ में ठहरिया।
५ स्थिर रहना, किसी स्थान पर जमा रहना, टिका रहना।
ज्यूं—राजाजी री चाकरी इतरी अबकी कै चार दिन ही को ठहरिया नी।
६ बहने या गिरने से रुकना, टिका रहना, स्थित रहना. ७ बना रहना, नष्ट न होना। ज्यूं—कच्चौ रंग तौ ठहरै नी, धोवतां ही ऊतर जासी।
८ धैर्य धारण करना, स्थिर भाव रखना। ज्यूं—इयूं कांई डुळै, थोड़ी दूर तौ ठहर।
९ लगातार होने वाले कार्य का बंद होना। ज्यूं—हमैं मेह ठहर गियौ झट दौड़ जा।
१० पक्का होना तय होना, निश्चित होना।
मुहा०—१ भाव ठहरणौ, कीमत ठहरणी—मूल्य का निश्चित होना.
२ वात ठहरणी—किसी वात का तय होना, पक्का होना।
११ एकत्रित होना, जमा होना। उ०—ठाह-ठाह ठहरिया, कांम अति कांमगरा। मंडिया झड़ रूप में, ससत्र खटतीस समारा।
—सू.प्र.
ठहरणहार, हारौ (हारी), ठहरणियौ—वि०।
ठहरवाड़णौ, ठहरवाड़बौ, ठहरवाणौ, ठहरवाबौ, ठहरवावणौ, ठहरवावबौ—प्रे०रू०।
ठहराड़णौ, ठहराड़बौ, ठहराणौ, ठहराबौ, ठहरावणौ, ठहरावबौ—क्रि०स०।
ठहरिओड़ौ, ठहरियोड़ौ, ठहरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
ठहरीजणौ, ठहरीजबौ—भाव वा०।
ठ'रणौ, ठ'रबौ—रू०भे०।

ठहरांण—देखो 'ठहराव' (रू.भे.)

ठहराई—सं०स्त्री०—१ ठहराने या पक्का करने की क्रिया.
२ मजदूरी, पारिश्रमिक।
रू०भे०—ठ'राई।

ठहराणौ, ठहराबौ—क्रि०स०—१ रोकना, ठहराना। उ०—अर वाजी सूं उतारि वार-बार पट्टिसं चखावतां दिणयर नूं ठहरायौ दोय घड़ी।
—वं.भा.
२ स्थिर करना, पक्का करना, जमाना। उ०—१ जोई फुरै अरु होवे मनण, आगे वस्तु ठहरांणी। फुरण अरु अफुरण ये तौ सब, माया क्रत ही जांणी।—सुखरांमजी महाराज
उ०—२ नाहिं नाहिं करके है नाई, है है करके ठहराई।
—सुखरामजी महाराज
उ०—३ भय दिखाय कूंभेण, जीव घर द्रोह जणाये। करण चूक कमवज्ज, ठीक मसलति ठहराये।—सू.प्र.
३ तय करना, पक्का करना, निश्चित करना।
उ०—वसंतपंचमी करौ विमाहौ। सुध निरदोख वेद विध साहौ। इम ठहराय महल नृप आए। पदमणि तांम महासुख पाए।—सू.प्र.
४ किसी स्थान पर टिकाना, डेरा दिलाना, विश्राम कराना, ठहराना।
उ०—सिध दाखियौ झळाहळ सूरत, पौरस नृपत तूझ भरपूरत। राजा ज तूं अवस ठहरावै, अवै समैं विण हाथ न आवै।—सू.प्र.
५ धारण करना, मालूम करना, जान जाना, निश्चय करना।
उ०—ईख रूप मनि इम ठहराई, भरता एह अवर पित भाई।
—सू.प्र.
६ निरन्तर चलते हुए कार्य की गति बन्द करना. ७ गिरने या वहने से बचाना, टिका रखना, स्थित करना. ८ बना रखना, नष्ट नहीं करना। ज्यूं—आप कैवौ कै इण माथै रंग नी ठहरै पण मैं ठहराय दियौ।
९ धैर्य देना. १० एकत्रित करना, जमा करना।
ठहराणहार, हारौ (हारी), ठहराणियौ—वि०।

ठहरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

ठहराइजणौ, ठहराइजबौ—कर्म वा० ।

ठहरणौ, ठहरबौ—प्रक०रू० ।

ठहराड़णौ, ठहराड़बौ, ठहरावणौ, ठहरावबौ, ठ'राड़णौ, ठ'राड़बौ, ठ'राणौ, ठ'राबौ, ठ'रावणौ, ठ'रावबौ—रू०भे० ।

ठहरायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ रोका हुआ, ठहराया हुआ. २ स्थिर किया हुआ, पक्का किया हुआ, जमाया हुआ. ३ तय किया हुआ, निश्चित किया हुआ, पक्का किया हुआ. ४ टिकाया हुआ, डेरा दिलाया हुआ. ५ मालूम किया हुआ, धारण किया हुआ. ६ (निरन्तर चलते हुए) कार्य को बन्द किया हुआ. ७ गिरने से बचाया हुआ, टिकाया हुआ, स्थित किया हुआ. ८ नष्ट नहीं किया हुआ ।

(स्त्री० ठहरायोड़ी)

ठहराव—सं०पु०—१ ठहरना क्रिया का भाव, विश्राम । उ०—छत्रपत सुत 'गुमन' श्रवण वत छोळां, हेर वनां मद बीयां हटै । पोह जस 'मांन'-सरोवर पाखै, कव हंसां ठहराव कठै ।—रिवदांन महड़ू

२ निश्चय, निर्धारण । उ०—१ दूजै कोई बिगैर ठहराव मसलत रै कांम करै तौ सो भलौ भी होय तौ लोग मोसा दै ।—नी.प्र.

उ०—२ तद जालिमसिंह कही मोनूं माहिर न छै किण तरह ठहराव छै ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ विश्राम करने का स्थान, ठहरने की जगह । उ०—करि तहस-नहसां केक, असपत्ति सहर अनेक । महि साह सहरां मोड़, ठहराव सोवा ठोड़ ।—सू.प्र.

४ धैर्य, धीरज, शान्ति । उ०—जे क्रोध रै समय थांनूं माफी बकसण री अरज करै तौ प्रकृति ठहराव रै ऊपर आवै ।—नी.प्र.

५ छंद शास्त्र में यति, विश्राम । उ०—सो पिंडतराज स्री महाराज की कीरति प्रताप का वरणण का सिलोक पढ़ते हैं जिस सिलोकां का आदि प्रबंध अस्ट अखिरूं से लेकरि इकीस अक्षरूं लग पद बणावणी का ठहराव, च्यार पद हुवै ।—सू प्र.

रू०भे०—ठहरांण, ठै'रांण, ठै'राव ।

ठहरावणौ, ठहरावबौ—देखो 'ठहराणौ, ठहराबौ' (रू.भे.)

उ०—तीन पोहरूं का आफताफ राठौड़ूं पर रोसनाई ठहरावै । चौथै पहर की रोसनाई अब आलम पर आवै ।—सू.प्र.

ठहरावियोड़ौ—देखो 'ठहरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठहरावियोड़ी)

ठहरियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ. २ रहा हुआ, माना गया हुआ. ३ साथ दिया हुआ. ४ टिका हुआ, डेरा दिया हुआ, विश्राम किया हुआ. ५ स्थिर या स्थित रहा हुआ. ६ बहने या गिरने से रुका हुआ, टिका हुआ, जमा हुआ. ७ बना रहा हुआ. ८ धैर्य धारण किया हुआ, स्थिर भाव रखा हुआ. ९ (लगातार होने वाला कार्य) बन्द हुवा हुआ. १० निश्चित हुवा हुआ, पक्का, तय. ११ एकत्रित हुवा हुआ, जमा हुवा हुआ ।

(स्त्री० ठहरियोड़ी)

ठहाणौ, ठहाबौ—क्रि०स०—१ निश्चित करना, तय करना. २ उचित बैठाना, तय कराना, जमाना. ३ रोकना, ठहराना. ४ लगाना, मारना. ५ स्थापित करना, जमाना. ६ सुशोभित करना, शोभित करना. ७ प्रहार करना, आघात पहुँचाना. ८ नगारा बजाना, ध्वनि कराना. ९ (तरल से) ठोस रूप में करना, जमाना ।

ठहायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ निश्चित किया हुआ, तय किया हुआ. २ उचित बैठाया हुआ, तय कराया हुआ, जमाया हुआ. ३ रोका हुआ, ठहराया हुआ. ४ लगाया हुआ, मारा हुआ. ५ स्थापित किया हुआ, जमाया हुआ. ६ सुशोभित किया हुआ, शोभित किया हुआ. ७ प्रहार किया हुआ, आघात पहुँचाया हुआ. ८ (नगारा) बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ. ९ (तरल से) ठोस रूप में किया हुआ, जमाया हुआ ।

(स्त्री० ठहायोड़ी)

ठहियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ निश्चित बना हुआ, तय. २ उचित बैठा हुआ, तय. ३ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ४ लगा हुआ, (प्रहार, चोट) ५ जमा हुआ, स्थापित. ६ शोभायमान बना हुआ, शोभित. ७ आघात पहुँचा हुआ, प्रहारित. ८ (नगारा) बजा हुआ. ९ कटिबद्ध, तैयार. १० (तरल से) ठोस रूप में हुवा हुआ, जमा हुआ ।

(स्त्री० ठहियोड़ी)

ठहीक—सं०स्त्री०—१ प्रहार करने का भाव. २ ध्वनि, आवाज ।

ठहीड़णौ, ठहीड़बौ—क्रि०स०—१ पीटना, मारना. २ (नगारा) बजाना, ध्वनि करना ।

ठहोड़णौ, ठहोड़बौ—रू०भे० ।

ठहीड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पीटा हुआ. २ बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री० ठहीड़ियोड़ी)

ठहोड़ौ—सं०पु०—१ आवाज, ध्वनि. २ प्रहार, आघात, ठेस. ३ प्रहार से होने वाली ध्वनि ।

ठहोड़णौ, ठहोड़बौ—देखो 'ठहीड़णौ, ठहीड़बौ' (रू.भे.)

ठहोड़ियोड़ौ—देखो 'ठहीड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठहोड़ियोड़ी)

ठहोलौ—देखो 'ठो'लौ' (रू.भे.)

ठह्रौ—१ देखो 'ठायौ' (रू.भे.)

२ देखो 'ठियौ' (रू.भे.)

ठां'—सं०पु० [सं० स्था] १ स्थान, जगह । उ०—१ दंती वराह नाहर दनुज, सो तिण ठां' रह सावता । रे पुत्र घणी विध राखजो, जनक-सुता रा जावता ।—र.रू.

उ०—२ बांठां बांठां में ठां'ठां ठांठरिया । भूखा मरतोड़ा मरिया गुण भरिया ।—ऊ.का.

मुहा०—ठां'ठां—स्थान-स्थान, जगह-जगह।
२ घनीभूत झाड़ियों का स्थान। उ०—ठां'ठां ठरड़ाया सुख दुख किण सूझै। बिपदा वरड़ाया बिपदा कुण वूझै।—ऊ.का.
रू०भे०—ठांह।
ठांई—देखो 'ठाइ' (रू.भे.) उ०—खोड़ा उडण मुदफर फरी चहुं चकी ठांई ठांई।—ग्र०वचनिका
ठांउं, ठाऊं—देखो 'ठाउ' (रू.भे.) उ०—दादू उस गुरुदेव की, मैं बलिहारी जाउं। जहं ग्रासण ग्रमर ग्रलेख था, ले राखै उस ठांउं।
—दादू वांणी
ठांगर-सं०स्त्री०—वह गाय जो सुगमता से दूध नहीं दुहने दे।
कहा०—ठांगर कै हेज घणूं नापी'री कै तेज घणूं—ग्रासानी से दूध नहीं दुहने देने वाली गाय ग्रपने बछड़े के प्रति ग्रधिक स्नेह करती है ग्रौर जिस स्त्री के पीहर न हो वह ग्रधिक क्रोधित होती है। (व्यंग्य)
मि०—खांट।
ठांगळणौ, ठांगळबौ-क्रि०स०—१ मारना, पीटना. २ दण्ड देना, ग्राधीन करना। उ०—ठहक नगारां डंका दावायतां ठांगळै, ग्रोघ घोड़ां भड़ां मळै ग्रगळा। 'भीम' ऊनाळ वाळा तरण भळहळै, सीत परवत दोयण गळै सगळा।—जवांनजी ग्राढ़ौ
ठांगळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मारा हुग्रा, पीटा हुग्रा. २ दण्ड दिया हुग्रा, ग्राधीन किया हुग्रा।
(स्त्री० ठांगळियोड़ी)
ठांगळौ-सं०पु०-१ कैदी, वन्दी, उ०—ठह लंगर पाय दुसहां करण ठांगळा, रूक दोय ग्रांगळा वाढ़ रा है। बोलतां नांम थारै मयंद वांघळा, म्रिग हुवै पांगळा जंगळ मांहै।
—जालमसिंघ झाला री गीत
२ वश, कावू। उ०—ठहै पग जठी करणं रिमां ठांगळा, पांगळा पीठ फरणै जुधां पीच। तराजू नांगळा झुकै मिसलां तणा, वांगळा वेहु 'ऊदा' जिकां बीच।—जसजी ग्राढ़ौ
ठांठ, ठांठर-सं०स्त्री०—बच्चा नहीं देने वाली मादा मवेशी।
वि०—सूखा, नीरस।
रू०भे०—टांठी।
ठांठरणौ, ठांठरबौ-क्रि०ग्र०—सूखना, नीरस होना।
उ०—वांठां वांठां में ठांठां ठांठरिया। भूखां मरतोड़ा मरिया गुण भरिया।—ऊ.का.
ठांठराणौ, ठांठराबौ-क्रि०स०—नीरस करना, सुखाना।
ठांठरायोड़ौ-भू०का०कृ०—नीरस किया हुग्रा, सुखाया हुग्रा।
(स्त्री० ठांठरायोड़ी)
ठांठरियोड़ौ-भू०का०कृ०—नीरस हुवा हुग्रा, सूखा हुग्रा।
(स्त्री० ठांठरियोड़ी)
ठांठार—१ देखो 'ठठारा' (रू.भे.) उ०—माळी तंबोळी छींपा परीयट बंधारा तूनारा सोनारा ठांठार लोहार चमार सुई वालंघ कडीया सिलवट उड गांछा कोळी टाटिया वावर ढेढ़ डूंब।—व.स.
२ देखो 'ठटारौ' (रू.भे.)
ठांठी-सं०स्त्री०—बच्चा नहीं देने वाली ऊंटनी, वांझ ऊंटनी।
ठांठौ-वि०—जो तोल में कम हो। उ०—ठांठौ दौ किम ठाकरां, घांन घणी किण घेय। मूंड समापै मूळ में, घड़ वांढ़ी में देय।
—रेवतसिंह भाटी
ठांण, ठांणउ-सं०पु० [सं० स्थान] १ मवेशी को नियमित रूप से बांधने का स्थान। उ०—खूंटी नहीं है ताजणी, पड़वै नहीं पिलांण। सेजां नहीं सायवौ, ठांण नहीं केकांण।—लो.गी.
मुहा०—ठांण देणौ—घोड़ी का प्रसव या बच्चा देना।
२ मवेशी को चारा डालने का स्थान। उ०—ग्रोझाजी गाय नै टोरी, वा मचकी ठांण री हर करण लागी।—वरसगांठ
यौ०—ठांण-संणगार।
३ उत्पत्ति स्थान, जन्म-भूमि।
मुहा०—ठांण लजाणौ—किसी नीच कार्य से जन्म-भूमि की प्रतिष्ठा कम करना।
४ स्थान। उ०—ब्रह्मादिक इंद्रादिक सरीखा, ग्रसुर मेल्है वांण। चक्र सरि सुं चक्र भागुं, छांडियौ पग ठांण।—रुकमणी मंगळ
५ गति की निवृत्ति, स्थिति, ग्रवस्थान (जैन)
६ स्वरूप-प्राप्ति (जैन) ७ निवास, रहना (जैन)
८ कारण, लिए, निमित्त, हेतु (जैन) ९ ग्रासन (जैन)
१० प्रकार, भेद (जैन) ११ स्थान, पद, जगह (जैन)
यौ०—ठांण-पूर, ठांण-संणगार, ठांणा-पूर।
१२ धर्म, गुण (जैन) १३ ग्राश्रय, मकान, घर, वसति, ग्राधार (जैन)
१४ तृतीय जैन ग्रंग-ग्रंथ, 'ठाणांग' सूत्र (जैन)
१५ शरीर पर के ममत्व का त्याग, कायिक क्रिया का त्याग, ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता (जैन)
ग्रल्पा०—ठांणियौ।
ठांणगुण-सं०पु० [सं० स्थान गुण] ग्रधर्मास्तिकाय।
ठांणठिग्र-वि० [सं० स्थानस्थित] स्थानस्थित (जैन)
ठांणणौ, ठांणबौ-क्रि०स०—१ विचार करना, निश्चय करना।
उ०—जांणै सो राघौ जांणै, ठांणै सो राघौ ठांणै। जीवाई रावौ जैनूं, तो मारै केहौ तैनूं।—र.ज.प्र.
२ जर्जरित करना, ढीला करना। उ०—ठही चोट दे झंझरी कोट ठांणै, छकी पांन जे ग्रट्ट रै वट्ट छांणै।—वं.भा.
३ रखना, स्थापित करना। उ०—सत दुजवर ठांणी ग्रय कळ ग्रांणी, कहि घत्ता यकतीस कळ। रटजै मझ राघौ दुख ग्रघ दाघौ, फिरत न धारण पाय फळ।—र.ज.प्र.
४ करना। उ०—१ यौ संसार कुवधि रौ भांडौ, साध संगत ना

मावै रे। वां नागां जग री निंद्या ठांणी करम रा कुगत कुमांवां रे।
—मीरां

उ०—२ त्रिलखी मुणी रुकमणी रांणी की, प्यारी पतनी जांणी। 'दरसैरा' नेनी के कारन, दया प्रभूजी ठांणी।—रुकमणी मंगळ

५ दृढ़ संकल्प करना।

ठांणपंथी-सं०पु० [सं० स्थान+पथिन्] एक स्थान पर रहने वाला साधु (जैन)

ठांणपद-सं०पु० [सं० स्थानपद] प्रज्ञापना सूत्र के द्वितीय पद का नाम (जैन)

ठांणपूर-वि०यौ०—१ जो अपने स्थान पर शोभा देता हो, जगह की प्रतिष्ठा व मान-मर्यादा रखने वाला, प्रतिष्ठित, गम्भीर।

ठांणबंधु-सं०पु० [सं० ठाणबन्धु] ४९ क्षेत्रपालों में से २८ वां क्षेत्रपाल।

ठांणभट, ठांणभट्ट, ठांणभिस्ट-वि०यौ० [सं० स्थानभ्रष्ट] अपने स्थान से भ्रष्ट, अपनी जगह से च्युत (जैन)

ठांण मंडणगार-वि०यौ०—केवल स्थान पर शोभा देने वाला (व्यंग्य)

ठांणलक्खण-सं०पु०यौ० [सं० स्थिति लक्षण] ठहरने में सहायक होने का भाव (जैन)

ठांणांग-सं०पु० [सं० स्थानाङ्गम्] १ सूत्र का अध्ययन. २ एक सूत्र का नाम (जैन)

ठांणांण-देखो 'ठांण' (मह., रू.भे.)

उ०—हैं वमांण आरोहै सुरांण ठौड़ ठौड़ हातां, नीसांण वजांण सिधु कायरां नरम। धुवांण आतसां पूर ठांणांण लपटं धुग्रा, फटकां मंडांण केण ऊपरै कुरम।—पहाड़ खां आढ़ौ

ठांणा-सं०पु० (व०व०) व्यक्ति (जैन साधु)

ठांणाइय-वि० [सं० स्थानातिग] जो शरीर पर के ममत्व का त्याग करता हो, कायिक क्रिया का त्याग करने वाला, ध्यान के लिए शरीर को निश्चल करने वाला (जैन)

ठांणाग्रोठांण-वि०—स्थान का पलटा किया हो।

ठांणायंग-सं०पु०—एक सूत्र ग्रंथ का नाम। उ०—आठ बोल ठांणायंग कह्या, मायाविया होय कपटी रे।—जयवांणी

ठांणायय-सं०पु० [सं० स्थानायत] ऊँचा स्थान (जैन)

ठांणि-वि० [सं० स्थानिन्] स्थान युक्त, स्थान वाला (जैन)

ठांणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विचार किया हुआ, निश्चित किया हुआ. २ जर्जरित किया हुआ, ढीला किया हुआ. ३ रखा हुआ, स्थापित किया हुआ. ४ किया हुआ. ५ दृढ़ संकल्प किया हुआ।

(स्त्री० ठांणियोड़ी)

ठांणियौ-सं०पु०—घोड़े के बाँधने के स्थान की सफाई आदि करने वाला। उ०—मजूर रौ रूप धर नै घोड़ा कोहीधज रै ठांण द्रोब री पोट ले जाय नै सैंवौ हुवौ, पछै द्रोब री पोट फिटी करनै ठांणियौ हुय रयौ।—नैणसी

२ देखो 'ठांण' १, २ (अल्पा., रू.भे.)

ठांवणौ—देखो 'ठांमणौ' (रू.भे.)

ठांवणौ, ठांवबौ, ठांभणौ, ठांभबौ-क्रि०स०—१ किसी निरन्तर चलती हुई गति को बन्द कर देना। उ०—१ भारत मझि मिळै दूसरो भारथ, रथ ठांभियौ जोवण ग्रहराज। उमया ईस उभै आहुड़िया, किसनावती तणै सिर काज।—गोरधन बोगसौ

उ०—२ वागो निहाव अरावां गोळां रजी धू छायौ बोम, राड़ चाळौ लागो भांण ठांभियौ रहेस। मांमलै खेड़ते खागां आय लागो तांण मूंछां, मेड़ते भागळां साथे न भागो 'महेस'।
—महेसदास कूंपावत री गीत

२ रोकना, ठहरना। उ०—१ राजबाई री तळाई वासणपी नै जेसळमेर विच में छै सु तठै आया। सु उठै कोई कसवण हुवौ, तरै वयुं पग ठांभिया, उठै उतरिया।—नैणसी

उ०—२ रथ ठांभो रहमांण, मुणै अक्रूर मुरारी। करौ सिनांन किसन, भलो ऊजळ जळ भारी।—पी.ग्रं.

३ गिरते हुए को बचाना, गिरने या लुढकने से रोकना.

४ संभालना, मदद देना, सहायता देना। ज्यूं—काळ बरस में मर जाता पण राजाजी ठांभ लिया।

५ किसी कार्य की जिम्मेदारी लेना, कार्य का भार ग्रहण करना.

६ चौकसी में रखना, पहरे में रखना, बन्दी रखना।

ठांभणहार, हारौ (हारी), ठांभणियौ—वि०।

ठांभियोड़ौ—भू०का०कृ०।

ठांभीजणौ, ठांभीजबौ—कर्म वा०।

ठंभणौ, ठंभबौ—अक०रू०।

थांमणौ, थांमबौ—रू०भे०।

ठांभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ वह बन्द की हुई गति जो निरन्तर चलती थी. २ रोका हुआ, ठहराया हुआ. ३ गिरते हुए को बचाया हुआ, गिरने या लुढ़कने से बचाया हुआ. ४ सम्भाला हुआ, मदद दिया हुआ, सहायता दिया हुआ. ५ (किसी कार्य की) जिम्मेदारी लिया हुआ, भार ग्रहण किया हुआ. ६ चौकसी में रखा हुआ, पहरे में रखा हुआ, बन्दी रखा हुआ।

(स्त्री० ठांभियोड़ी)

ठांम-सं०पु० [सं० स्थाम अथवा सं० स्था+ण्यंत = स्थाप.—ठांम]

१ स्थान, जगह। उ०—कुंवरी पिंगळराय नी, मारुवणी तसु नांम। नरवरगढ़ ढोलइ भणी, परणी पुहकर ठांम।—ढो.मा.

यौ०—ठांमोठांम।

२ पात्र, बर्तन। उ०—उणही ठांम अरोग, भांजण री मन में भणै। आ तो वात अजोग, रांम न भावै राजिया।—किरपारांम

मुहा०—ठांम करणौ—यथास्थान रखना, ठिकाने लगाना।

३ मकान के भीतर बने हुए कमरे, कोठरी आदि।

रू०भे०—ठांय, ठांव।

अल्पा०—ठांमड़ौ, ठांवड़ौ।

ठांमड़ौ—देखो 'ठांम' (अल्पा., रू.भे.)

ठांमड़ी-सं०स्त्री०—लाव की गति को रोकने के लिये ववूल इत्यादि की पतली टहनियों को चीर कर बनाई गई रस्सी विशेष जो भूण के मध्य में लिपटी रहती है। सींचने वाला सिचारा उसे लाव अन्दर फेंकते वक्त हाथ में पकड़े रखता है।

रू०भे०—ठांवणी।

ठांमणौ, ठांमवौ—देखो 'ठांभणौ, ठांभवौ' (रू.भे.)

उ०—१ वेंजार रै रिण जाहरां आया कोस एक राजलवाड़ हुंता ताहरां सांमु ही भांक आई। ताहरां ओथि घोड़ा ठांमिया।

—द.वि.

उ०—२ काज सरणाइयां भूप सिर कावली, दुभल घन रावळी कठै दांई। बाप रिव ठांमियौ घड़ी दोय वाजतां, ताही सुत ठांमियौ पौहर तांई।—महाराजा मांनसिंह

ठांमियोड़ौ—देखो 'ठांभियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठांमियोड़ी)

ठांमी-वि०—स्थान पर रहने वाला।

क्रि०वि०—स्थान पर। उ०—भूला नै आंणै ठांमी।—जयवांणी

ठांमौ—देखो 'ठांम' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ओलै बैठी एकली, करै सगळाई कांमौ रे। राती रस भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठांमौ रे।

—ध.व.ग्रं.

ठांय—देखो 'ठांम' (रू.भे.) उ०—१ मुकंद म पैस पड़द्दा मांय। ठावौ मैं कीधो सरवह ठांय।—ह.र.

उ०—२ भंवरा कळो लपेटिया, कायर कांपै काय। जीवियै जुग मांणसां, मुवौ त मोटै ठांय।—जलाल बूबना री वात

ठांव—देखो 'ठांम' (रू.भे.) उ०—कुंवरसी कही तीज रै दिन आयसै तौ खरा पण कीं ठांव आऊं, इठै तौ औ रंग छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—भेळा पड़िया ठांव इ खड़वड़ै—बर्तनों को अगर पास-पास रखा जाय तो वे जरा-सी ठेस लगते ही आपस में टकरा कर आवाज करेंगे अर्थात् मनुष्यों के एक ही स्थान पर रहने से लड़ाई-टंटा होना स्वाभाविक है।

ठांवड़ौ—देखो 'ठांम' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक सेर का ठांवड़ा, क्योंही भरा न जाइ। भूख न भागी जीव की, दादू केता खाइ।—दादू वांणी

ठांसण-सं०स्त्री०—एक प्रकार की घास।

ठांसणी-सं०स्त्री०—सहारा।

ठांसणौ—देखो 'टांसणौ' (रू.भे.)

ठांसणौ, ठांसवौ-क्रि०स०—१ जोर देकर भरना, दबा कर प्रविष्ठ कराना, ठूंसना. २ खूब पेट भर कर खाना, कस कर खाना. ३ किसी का माल छीनना, अपने अधिकार में करना, हड़पना. ४ सँजोना। उ०—फूलां रा चौस पैहरियां थकां टोय अणियाळां काजळ ठांसिया थकां वांका नैणां री भोख।—रा.सा.सं.

टांसणौ, टांसवौ—रू०भे०।

ठांसियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जोर देकर भरा हुआ, ठूंसा हुआ. २ खूब पेट भर कर खाया हुआ. ३ किसी का माल छीना हुआ, हड़पा हुआ. ४ संजोया हुआ।

(स्त्री० ठांसियोड़ी)

ठांसौ-सं०पु०—१ फैला हुआ कैर का पेड़. २ धब्बा ?

उ०—अणीयाळां नैणां में काजळ की रेखा, अमरत रा ठांसा चंदा में पेखौ।—दरजी मयारांम री वात

ठांह—देखो 'ठां' (रू.भे.) उ०—मूझ बोल निर्पां मांह, ठीक आप रखे ठांह। आलमां कहे उमाह, वाह वाह वाह।—र.रू.

ठा-सं०पु०—१ शून्य. २ ऋषि।

सं०स्त्री०—३ पृथ्वी. ४ पीठ (एका.)

वि०—धनवान (एका.)

ठा'—देखो 'ठाह' (रू.भे.) उ०—१ बाप नै रोवतौ देख नै नैनौ ई मा री छाती में मूंडौ घाल नै रोवण लाग्यौ। उण नै ठा' नी पड़ी कै औ कांई रासौ है।—रातवासौ

उ०—२ समभ सूं वैण सूक्षम कैणा, माग विनां पग दैणा। हंसा एक पांख बिन उडिया, ठा' बिन किया ठिकांणा।

—हरिरांमजी महाराजा

ठाइ-सं०स्त्री०—जगह, स्थान। उ०—मारवणी मुख-ससि तणइ, कसतूरी महकाइ। पासइ पन्नग पीवणउ, विळकुळियउ तिणि ठाइ।

—ढो.मा.

रू०भे०—ठांइ, ठांईं, ठाई।

वि० [सं० स्थायिन्] स्थिर रहने वाला (जैन)

ठाई—देखो 'ठाइ' (रू.भे.) उ०—राजा भोज बोलइ तिणी ठाई। चिहुं खंड जोवज्यौ भूपती राय।—वी.दे.

ठाउ, ठाऊ-सं०पु०—स्थान, जगह। उ०—१ केडइ नकुळ अनइ सहदेउ, पांणी बूडा तेई वेउ। माइ मोकळावी पइठउ राउ, सविहुं हूउ एकु जु ठाउ।—पं.पं च.

उ०—२ पर प्रवेस नहीं, हाथी आंनउ ढोउ नहीं, पाखरयां रहण नहीं, सूयरा विसय नहीं, नीसरणी ठाउ नहीं, भेद संभावना नहीं।

—व.स.

उ०—३ अथ कस्टेन धनोपारजने केई हल खेड़ी सयर ठाउ फेंड़ी धन उपारजइं।—व.स.

रू०भे०—ठांउ, ठांऊ।

ठाओठा-क्रि०वि० (अनु०) उपयुक्त स्थान पर।

ठाओ—१ देखो 'ठावौ' (रू.भे.) २ देखो 'ठायौ' (रू.भे.)

ठाक-सं०स्त्री०—१ प्रतिज्ञा, प्रण, नियम. २ दरी आदि बुनते समय तागों को कसने के लिए ठोंकने की लकड़ी. ३ पीटने या मारने का भाव. ४ पत्थर का टुकड़ा।

ठाकणौ, ठाकवौ-क्रि०स०—पत्थर को सुडौल बनाना, पत्थर गढ़ना।

ठाकर–सं०पु० [सं० ठक्कुर] (स्त्री० ठकरांणी) १ किसी भू-भाग का नायक, अधिष्ठाता। उ०—रे सीहां राजेम, द्विज मिळ किए दिन दद दियो। इर मुजबड़ां अमेस, मन सूं ही ठाकर मोतिया।
—रायसिंह सांदू

२ गांव का मालिक, जमींदार। उ०—अमिट भड़ां वळ अंग में, कोठारां सांमान। सांमध्रमी ठाकर सको, दिए रंग दुनियांन।
—वां.दा.

मुहा०—ठाकरसुहाती कैंणी—दूसरों को प्रसन्न करने के लिए कही जाने वाली बात, खुशामदयुक्त बात।

३ स्वामी, मालिक। उ०—चिता में बुध परखिये, टोटै परस त्रियाह। सगा कुवेळां परखिये, ठाकर गुन्हा कियांह।—अज्ञात

४ क्षत्रियों की उपाधि. ५ प्रतिष्ठित व्यक्ति, माननीय व्यक्ति.

६ ईश्वर, भगवान, विष्णु।

यौ०—ठाकरदवारो, ठाकरद्वारो।

७ देव मूर्ति (विशेष कर विष्णु के अवतारों की मूर्ति) ८ भूमिपति.

९ नाई जाति की उपाधि (सम्मान)

रू०भे०—ठकर, ठकुर, ठक्कुर, ठाकुर।

अल्पा०—ठकराड़ो, ठकुराळो, ठाकरड़ो, ठाकरियो, ठाकरो, ठाकुरलो, ठुकराळो।

ठाकरड़ो—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—अमली ठाकरड़ा डेरां में आवै। मोटी घसकां घड़ मावा मटकावै।—ऊ.का.

ठाकरदवारो, ठाकरदुवारो–सं०पु०यौ०—देवालय, देवस्थान, विष्णु-मंदिर।

रू०भे०—ठाकुरदवारो, ठाकुरदुवारो, ठाकरद्वारो।

ठाकराई, ठाकरि—देखो 'ठकुराई' (रू.भे.) उ०—तीणिइ ठाकरि किस्यु कीजइं, जीणिइं पगि-पगि पांमीइ अपमांन।—व.स.

ठाकरियो—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)

ठाकरी—देखो 'ठकुराई' (रू.भे.)

ठाकरो—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)

ठाकियोड़ो–भू०का०कृ०—(पत्थर) सुडौल बनाया हुआ, गढ़ा हुआ। (स्त्री० ठाकियोड़ी)

ठाकुर– (स्त्री० ठकुरांणी, ठाकुरांणी, ठुकरांणी) देखो 'ठाकर' (रू.भे.)

उ०—१ राव गांगो जोधपुर वडो ठाकुर हुवो। वडो आखाड़सिंघ रजपूत हुवो।—राव जोधाजी रै बेटां री वात

उ०—२ ठाकुर ही रक्षा करे, और न किंहीं रै हाथ। हिंदू सब तूं जांणलै, रांम आंपणै साथ।
—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वात

उ०—३ रांम भणंतां रे! हिदा, कह केता गुण होय। ठाकुर मांनै जग नवैं, पिसण न गंजै कोय।—ह.र.

उ०—४ सहि ग्यांन जाव सनकादिकां, जण-जण सरिसो जुजुओ। सूर जेठ भीड़ पड़तां समो, हंस रूप ठाकुर हुवो।—पी.ग्रं.

यौ०—ठाकुरदवारो।

ठाकुरदवारो, ठाकुरदुवारो, ठाकुरद्वारो—देखो 'ठाकरदवारो' (रू.भे.)

उ०—झालां रो वांकानेर जठे कुबावतां रो ठाकुरदुवारो है।
—वां.दा.ख्यात

ठाकुरलो—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)

ठाकुराई, ठाकुरी—देखो 'ठकुराई' (रू.भे.) उ०—१ खेड़ गोहिलां री वडी ठाकुराई थी, राजा मोखरो धणी छै।—नैणसी

उ०—२ एक वात यूं सुणी, इणांरी ठाकुराई पैहली दिखण नूं अयंबक हुती।—नैणसी

ठागो–सं०पु०—१ आडंबर, ढोंग। उ०—नागो हूं नाचै नणक, मांग्यो सूंपै माल। अद्भुत ठागो जात इण, लागो लोभ कमाल।
—वां.दा.

२ कपट। उ०—जिनरिख जिनपाळ रै रैणा देवी तीन वाग तो वरज्या नहीं अनै दक्षिण नो वाग वरज्यो। झूठ बोली, सरप खावा रो भय बतायो। जांण्यो दक्षिण रो वाग जासी तो मोनै खोटी जांणस्यै। ठागा रो उघाड़ होय जासी। यूं जांण नै दक्षिण नो बाग वरज्यो।—भि.द्र.

३ धूर्तता, छल।

ठाड़ो–सं०पु०—स्थान, जगह। उ०—किण ठाडै रहे आवास काह, आदेस तुनै गरढ़ा अलाह।—पी.ग्रं.

ठाट–सं०पु०—१ सजावट, रचना, शृंगार। उ०—सांझ पड़ै दिन आंथवै रे जला, खातण लावै खाट। कांहि हे करूं थारी खाट नै, म्हारै मारूड़ै विनां किसो ठाट। जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर मालै रे।—लो.गी.

२ शान-शौकत। उ०—घड़ियो घाट सुघाट, नारायण निज कर निपुण। ठसकीला वो ठाट, जो किम भूलीजै 'जसा'।—ऊ.का.

३ तड़क-भड़क, आडम्बर, दिखावट, धूम-धाम. ४ आराम, चैन.

५ आयोजन, तैयारी।

यौ०—ठाट-बाट।

६ सितार का तार. ७ समूह, झुण्ड। उ०—खुलै कपाटूं विकट घाटूं पवन वाटूं थक्क ए। डुलै विराटूं सोक काटूं भक्त ठाटूं सक्क ए। खट मास मांई मिळै सांई अचळ पाई धांम ए।—करुणासागर

८ देखो 'थाट' (रू.भे.)

रू०भे०—ठाठ।

ठाट-बाट–सं०पु०यौ०—१ सजावट, शृंगार. २ तड़क-भड़क, आडम्बर।

क्रि०प्र०—राखणो।

ठाटियो—देखो 'ठाटो' (अल्पा., रू.भे.)

मुहा०—ठाटियो जमाणो—ढंग बैठना, कारो-बार जमना।

२ देखो 'थाठियो' (रू.भे.)

ठाटो–सं०पु०—१ बैलगाड़ी पर लगाया जाने वाला चौड़ा तख्ता जिस

पर बोझा आदि लादा जाता है. २ इस तख्ते पर समा सके उतना वजन या सामान।

रू०भे०—थाटो।

२ कागज की लुगदी का बना कूंडे की शक्ल का गहरा चौड़े मुँह का वर्तन।

वि०वि०—कागज, मेथी, मरवा के बीज, इमली के बीज आदि को पानी में भिगो कर गलाया जाता है। फिर इन्हें कूट कर लुगदी तैयार की जाती है। फिर मिट्टी के घड़े आदि को औंधा रख कर उस पर लुगदी फैला कर वर्तन का रूप दिया जाता है। इसको मुलतानी मिट्टी के घोल से पोत दिया जाता है जिससे इसका रंग सफेद हो जाता है और यह सुन्दर बन जाता है। सूखने पर यह वर्तन अनाज आदि डालने के लिये विभिन्न प्रकार से उपयोग किया जाता है। इस पर कई लोग रंग भी लगाते हैं ताकि उसकी सुन्दरता और बढ़ जाय।

रू०भे०—ठाठो।

अल्पा०—ठठियो, ठांटियो, ठाठड़ियो, ठाठड़ो, ठाठियो, ठाठोड़ो।

ठाठ—देखो 'ठाट' (रू.भे.) उ०—हुंडियां ज्यांरी हालती रे, रहता गहरा ठाठ। पाछला पुन्य पूरा हुवा रे प्रांणी, जब कोडचां मांगै हार।—जयवांणी

कहा०—ठाठ तिलक और मधरी बांणी, दगाबाज की यही निसांणी—जो ऊपर से बड़ा ठाट-बाट दिखाते हैं और मीठे बोलते हैं वे अवश्य धोखेबाज होते हैं।

ठाठड़ियो—देखो 'ठाटो' (अल्पा.)

ठाठड़ी-सं०स्त्री०—१ देखो 'ठाठो' (अल्पा., रू.भे.) २

उ०—जिकां रै पाछै मस्त हाथी टला देण नूं चालै। वांणांरा ऊंट ठाठड़्यां का थाट। जिकां मैं बडी छोटी केई घाट।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

ठाठर-सं०स्त्री०—हड्डियों का ढांचा, अस्थि-पंजर।

ठाठरणो, ठाठरबो—देखो 'ठिठरणो, ठिठरबो' (रू.भे.)

उ०—ठंड सवळी पड़ै हाथ पग ठाठरै, वायरो ऊपरां सवळ वाजै। माल साहिब तिकै मोज मांणै, भूखियइ लोक रा हाड भांगै।

—घ.व.ग्रं.

ठाठरियोड़ो—देखो 'ठिठरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठाठरियोड़ी)

ठाठियो—देखो 'थाटियो' (रू.भे.)

ठाठी-सं०स्त्री०—विघ्न, बाधा, आड़, रोक।

ठाठीड़ो—देखो 'ठाटो' (अल्पा., रू.भे.)

ठाठीया-सं०स्त्री०—राजस्थान की एक प्राचीन जाति विशेष।

उ०—भोई मेहर अनइ ठाठीया, चालइ काहर कमांणी। च्यारि सहस सायइ सांचरिया, वहइ पखाली पांणी।—कां.दे.प्र.

ठाठो-सं०पु०—१ ऊंट के चमड़े का बना तीर रखने का उपकरण।

उ०—दांत रा सुफाळा छै, सोन्है री हळ लिखी छै, नचमूठ रा तीर छै। इसा तीरां सूं ठाठा भरिया थका।—रा.सा.सं.

२ देखो 'ठाटो' (रू.भे.) ३ देखो 'थाटो' (रू.भे.)

ठाड-सं०स्त्री०—१ सीढ़ी या जीने में पैर रखने के पत्थर के नीचे या बीच में लगाया जाने वाला पत्थर।

२ 'सरदी' (रू.भे.) उ०—गाढ़ो ओढ़ो गूदड़ो, लाग जायला ठाड। खोटी होसी भजन सूं, इणै री ओही लाड।—संगरांमदास

रू०भे०—ठाढ़।

ठाडी-सं०स्त्री०—१ लम्बी लकड़ी का वह उपकरण जो रहट के घूमने वाले चक्र पर लगाया जाता है जो बैलों को अपने घेरे तक रहने में सहारा देता है अर्थात् उन्हें चक्र की ओर आने से रोकता है।

२ चूल्हे की राख, भस्म।

रू०भे०—ठेडी।

वि०स्त्री०—१ ठंडी, शीतल। उ०—पग-पग ऊपर जळ घणां, रूंखां री ठाडी छाया।—डाढ़ाळा सूर री वात

२ एक दिन पहले की बनी हुई, बासी. ३ खड़ी, ठहरी, सीधी।

उ०—एक तो म्हांनै हळियो दीज्यो, हाल दीज्यो ठाडी। दोय तो म्हांनै बैल्या दीज्यो, बिच में दीज्यो गाडी।—लो.गी.

रू०भे०—ठाड, ठाढ़, ठाढ़ी।

अल्पा०—ठाढ़ड़ली।

ठाडेळ—देखो 'ठाडोळ' (रू.भे.)

ठाडेळो—देखो 'ठाडोळो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—घाट में दूध री अदोळी लेलीजो, छाछ मत लीजो, ठाडेळो घणो है।—रातवासो

ठाडोळ-सं०स्त्री०—शीतलता। उ०—भली थूं सांझ सुखां री देण, दाझतै दिनड़ै री ठाडोळ। नींद री नणदल सपनां सेज, परणती सरग परी री खोळ।—सांझ

रू०भे०—ठंडोळ।

अल्पा०—ठाडेळो, ठाडोळो।

ठाडोळो—देखो 'ठाडोळ' (अल्पा., रू.भे.)

ठाडो-सं०पु०—१ प्राणी के किसी दर्द-स्थान पर चिकित्सार्थ लगाया जाने वाला गर्म की हुई धातु का चिन्ह, अग्नि-दाग क्रिया.

२ जाड़ा, सर्दी, ठंड।

वि० (स्त्री० ठाडी) १ ठंडा, शीतल। उ०—समदड़ी सूं जाळोर सोळै कोस पड़ै, इण वास्तै व्याळू कर नै तुरत पिलांण कर लिया हा ताकै दिनुगां पैली ठाडै-ठाडै पो'र जाळोर पूग्यां जा सकै।

—रातवासो

विलो०—ऊनो।

३ एक दिन पहले का बना हुआ, बासी (भोजन)

वि०पु०—बलवान, शक्तिशाली।

कहा०—१ 'ठाकरां ठाडा किसाक हो?' 'कै कमजोर का तो वैरी ही पड़चा हां'—पूछने पर कि ठाकुर साहब कितने शक्तिशाली हो तो ठाकुर साहब उत्तर देते हैं कि केवल कमजोरों के शत्रु हैं अर्थात् हम

उनमें शक्तिशाली हैं कि हमारा बल-प्रयोग केवल निर्बलों पर ही हो सकता है, सबलों पर नहीं।

मुहा०—२ 'बारहठजी, या लाठी कोई नै कोनी द्यो कै ?'

'ठाकरां, ठाडो मांगै कोनी अर माड़ै नै द्यूं कोनी।'—बारहठजी से पूछा गया कि क्या यह लाठी किसी को नहीं दोगे क्या ? इस पर उत्तर मिला सबल तो मांगता नहीं है और कायर को मैं देता नहीं अर्थात् मुझे यह लाठी देनी ही नहीं है क्योंकि निर्बल और कायरों के प्रति तो मेरी श्रद्धा नहीं और जो शक्तिशाली होगा वह मांगेगा नहीं।

विलो०—माड़ो।

४ खड़ा, ठहरा। उ०—१ क्षत्री दंडवत करि ठाडो हुवो।

—सिघासण बत्तीसी

उ०—२ म्हारो मोवन मुरळी वाळो रे, ठाडो जमुना री तीर।

—मीरां

५ गम्भीर (व्यक्ति) ६ सुस्त। उ०—छेवट चोधरण आय नै उणारो विचार तोड़यो आज यूं ठाडा होय नै कियां बैठा हो ? रोटी गाय नै लाटै चालण रो विचार कोयनी कांई ?—रातवासो

(स्त्री० ठाडी)

ठाडो-ठरियो—देखो 'ठंडो-ठरियो' (रू.भे.)

ठाडो-पो'र—देखो 'ठंडो-पो'र' (रू.भे.) उ०—समदड़ी सूं जाळोर सोळै कोस पड़ै, इण वास्तै व्याळू कर नै तुरत पिलांण कर लिया हा ताकै दिनुगां पै'लो-पै'ली ठाडै-ठाडै-पो'र जाळोर पूग्यो जा सकै।

—रातवासो

रू०भे०—टाढ़ो, ठाढ़ो।

ठाढ़—१ देखो 'ठाड' (रू.भे.) २ देखो 'ठाडी' (रू.भे.)

ठाढ़ड़लो—देखो 'ठाडो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पड़े ठाढ़ड़लो जोरावर श्रो राज, मरे रे वन रा मोरिया।—लो.गी.

ठाढ़ी—देखो 'ठाडी' (रू.भे.) उ०—१ ठाढ़ी नृतंत आय मुनि वन वित। रति अरु साथि कांम बहुवै रति।—सू.प्र.

ठाढ़ेसरी, ठाढ़ेस्वरी—सं०पु० [सं० स्तब्ध+ईश्वर+रा०प्र०ई] दिन रात निरंतर खड़ा रह कर तपस्या करने वाले एक प्रकार के सन्यासी।

उ०—मांहे जोगेसर पवन रा साभणहार त्रिकुटी रा चडावणहार धूम्रपांन रा करणहार उरधवाहू ठाढ़ेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास-मुनी।—रा.सा.सं.

ठाढ़ो—देखो 'ठाडो' (रू.भे.) उ०—कोड़ि थोक करतार हेम हुंता ठाढ़ो हरि। कोड़ि जम है किसन-किसन वाखांण इसो करि।

—पी ग्रं.

ठाढ़ो-ठरियो—देखो 'ठंडो-ठरियो' (रू.भे.)

ठा'णो, ठा'वो—क्रि०स०—१ करना। उ०—ठहक्कै कड़ी कंकटां ठोर ठाई। डहक्कै भड़ां वंकड़ां घोर डाई।—वं.भा.

२ निश्चित करना, तय करना. ३ ठहराना, रोकना. ४ लगाना (प्रहार, चोट, निशाना) ५ स्थापित करना, जमाना. ६ रखना।

७ सुशोभित करना, शोभित करना।

ठायोड़ो—भू०का०कृ०—१ किया हुआ. २ निश्चित किया हुआ, तय किया हुआ. ३ ठहराया हुआ, रोका हुआ. ४ लगाया हुआ. ५ स्थापित किया हुआ, जमाया हुआ. ६ रखा हुआ. ६ सुशोभित किया हुआ, शोभित किया हुआ।

(स्त्री० ठायोड़ी)

ठायो—सं०पु०—१ स्थान, जगह। उ०—१ गायां नै गिरमास, ठिकांणो चोड़ै ठायो। सूवै सूतक सुधी, तळै छिगास बिछायो।—दसदेव

उ०—२ चोधरण ई जागगी। जठै चूंतो उण ठाया पर कठैई भरणको कठैई थाळी नै कठैई कूंडियो मांड दियो।—रातवासो

२ देखो 'ठावो' (रू.भे.) उ०—लूंकड़ खावै बोरिया लिप, सुसिया सरणो ओट है। ठायां-ठायां टोपली अर बाकी रां लंगोट है।

—दसदेव

३ देखो 'ठियो' (रू.भे.)

रू०भे०—ठयो, ठहो, ठाहो, ठिओ, ठेयो।

ठार—सं०स्त्री०—१ ठौर, स्थान। उ०—हाथ कमंडळ भळमळई, ब्रांह्मण वेद भणइ भ्रूणकार। राति दिवस करि चालीयउ, पनरमइ दिवस पहुतो तिणि ठार।—बी.दे.

२ शीत, ठंड, सर्दी. ३ आराम (पीड़ा कम होने पर) शान्ति.

४ पता, इल्म, ठिकाना. उ०—पांख तणि हेमि सूं ताहरा भरासि भंडार ? सागर जळ केटलूं वाधि पड़तो साहि ठार।

—नळाख्यांन

रू०भे०—ठाहो।

५ देखो 'अठारह' (रू.भे.) उ०—ठार सोळ सोळह चवद, तुक प्रत मत्त चवसाठ। नीसांणी मगणांत निज, पैड़ो यण विध पाठ।

—र.ज.प्र.

ठारक—वि०—१ शीतल करने वाला, ठंडा करने वाला. २ संतोष देने वाला। उ०—धणां जीवां के ठारक बळी।—जयवांणी

ठारणो, ठारबो—क्रि०स०—१ ठंडा करना, शीतल करना।

उ०—पवन री हवा सूं टिप्पा खाईनै रही छै। कोरी गागर मांहे घाति-घाति ठारीजै छै।—रा.सा.सं.

मुहा०—ठार-ठार नै खाणो—अधिक गर्म भोजन को ठंडा कर कर के खाना चाहिये अर्थात् हर कार्य में धैर्य रखना नितान्त आवश्यक है।

२ निश्चय करना, तय करना। उ०—पीछै वेळोजी बीकानेर आय रावजी स्री बीकैजी सूं मालम करी। तद रावजी अमरावां सूं वा मुसदियां सूं सला' करी। अरु जोधपुर ऊपर फौज लेय पधारणी री ठारी।—द.दा.

३ बुझाना, शीतल करना। उ०—ठहे सांमंद्रां नीर में पूंछ ठारी। मिळै कूदि सांमंद्र सेना मझारी।—सू.प्र.

४ भट्टी जलाना (मांगलिक) उ०—कोकर काट मजूर, ठूंठियां भट्टी ठारै। पांणी-पांणी करै, पुणो पारै उणियारै।—दसदेव

ठारणहार, हारौ (हारी), ठारणियौ—वि०।
ठरवाड़णौ, ठरवाड़बौ, ठरवाणौ, ठरवाबौ, ठरवावणौ, ठरवावबौ, ठराड़णौ, ठराड़बौ, ठराणौ, ठराबौ, ठरावणौ, ठरावबौ—प्रे०रू०।
ठारिश्रोड़ौ, ठारियोड़ौ, ठारचोड़ौ—भू०का०कृ०।
ठारीजणौ, ठारीजबौ—कर्म वा०।
ठरणौ, ठरबौ—अक०रू०।

ठारा—देखो 'ठार' (५) (रू.भे.) उ०—ठारा से रनेए का वरस में जंग जूटा। मांढ़णी खेत फेरचौ कांमखांनी भागि छूटा।—शि.वं.

ठारियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ ठंडा किया हुआ, शीतल किया हुआ. २ निश्चय किया हुआ, तय किया हुआ. ३ बुझाया हुआ. ४ भट्टा जलाया हुआ।
(स्त्री० ठारियोड़ी)

ठारी—सं०स्त्री०—शीत, ठंडक, सर्दी।
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।

ठाळ—सं०स्त्री०—१ खोज, तलाश। उ०—सीहां विपत न संभवै, ठाली जाय न ठाळ। हाथळ सूं पल हेक में, सीहा हुवै सुगाळ।—बां.दा.
२ छलांग।

ठाल—सं०स्त्री०—१ रिक्तता, खालीपन।
क्रि०प्र०—पड़णी, रै'णी।
२ अभाव, कमी।
क्रि०प्र०—पड़णी, रै'णी, होणी।

ठालउ—देखो 'ठालौ' (रू.भे.) उ०—जइ भागउं तौ वाराहउं, जइ थाकउं तो पार करउ घोड़उ, जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दांबडउ।—व.स.

ठाळणौ, ठाळबौ—क्रि०स० [सं० ष्ठल+ण्यत=स्थालना=स्थापना=थापना=ठाळणौ] १ तलाश करना, खोज करना, ढूंढ़ना।
२ चुनना, छांटना (इंगित करना) उ०—रांणी तौ कळिजुग रौ रूप एहा अभिरूप अवनीस रौ तिरस्कार करि सुद्धांत रै आस्रित अनेक जन रहै जिकां में कोई दो ही लोक रौ खोवणहार ठाळियौ।—वं.भा.
३ निश्चित करना, तय करना।
४ देखना। उ०— तावीत हीयरा मांण अदातां जाबते ताळै, नेत्रां ठाळै वारू बार संभाळै निधांन।
—महाराज बळवंतसिंह रतलांम रौ गीत
ठाळणहार, हारौ (हारी), ठाळणियौ—वि०।
ठळवाड़णौ, ठळवाड़बौ, ठळवाणौ, ठळवाबौ, ठळवावणौ, ठळवावबौ, ठळाड़णौ, ठळाड़बौ, ठळाणौ, ठळाबौ, ठळावणौ, ठळावबौ—प्रे०रू०।
ठाळिश्रोड़ौ, ठाळियोड़ौ, ठाळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ठाळीजणौ, ठाळीजबौ—कर्म वा०।
ठळणौ, ठळबौ—अक०रू०।

ठालप(फ)—सं०स्त्री०—१ बेकार या निकम्मा रहने का भाव।
कहा०—ठालफ सूं वेगार भली—वेकाम बैठे रहने से तो बेगार करना ही अच्छा। मि०—'खाली बैठां विचै वेगार भली।'
२ रिक्तता, अभाव।

ठाळवरौ—वि०—चुनिन्दा। उ०—सीहौ रांणा प्रताप रौ भोपतसीहोत रांणा जगतसिंघ रौ मेलियौ पातसाहजी री हजूर रहतौ। वडो दातार वडो ठाळवरो सिरदार हुवौ। उणरै बेटा केसरीसिंघ।
—बां.दा.ख्यात

ठाळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ तलाश किया हुआ, खोजा हुआ, ढूंढ़ा हुआ. २ चुना हुआ. ३ निश्चित किया हुआ, तय किया हुआ. ४ देखा हुआ।
(स्त्री० ठाळियोड़ी)

ठाली—स्त्री०वि०—१ खाली, रिक्त। उ०—हाथां ठाली हालणौ, जाभी संपत जोड़। मौत सरीखौ मनख रै, खलक मही नहिं खोड़।
—बां.दा.
२ केवल, सिर्फ। उ०—पाळां पर रोप्या पङ्या, तगरा हिरणां हेत। पांणी लूआं चोसियौ, ठाली आली रेत।—लू
३ गर्भहीन मादा पशु (गाय, भैंस आदि) ४ बेकार, निकम्मा। उ०—कज न होय तउ कुछ करै, चूंप मिटावण चित्त। मह ठाली मूंडै मुदित, नायण पाडा नित्त।—रेवतसिंह भाटी
मुहा०—१ ठाली फिरणौ—बेकार घूमना, भटकना. २ ठाली दौड़णौ—परिश्रम करना किन्तु प्राप्ति कुछ नहीं।
५ निर्जन, एकान्त. ६ निष्फल।
उ०—सीहां विपत न संभवै, ठाली जाय न ठाळ। हाथळ सूं पल हेक में, सीहां हुवै सुगाळ।—बां.दा.

ठालु—देखो 'ठालौ' (रू.भे.) उ०—कुंभसुति ते आचमन कीधूं, कोटि वरस रहु ठालु। अनेकि कुंभि उळचतां, ए घरि नहीं सर चालु।
—नळाख्यांन

ठालूं-भूलौ, ठालू-भूलौ—देखो 'ठालौ-भूलौ' (रू.भे.)

ठालेड़—वि०—१ बेकार, निकम्मा. २ चोर, उच्चका।
सं०स्त्री०—१ वह मादा पशु जिसके पेट में गर्भ न हो।
२ रिक्तता, खालीपन।
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।

ठालौ—वि०पु० (स्त्री० ठाली) १ रिक्त, खाली, रहित।
मुहा०—ठालौ काडणौ—विना कुछ दिये चलता करना।
यौ०—ठालौ-भूलौ।
२ बेरोजगार, निकम्मा, बेकार।
मुहा०—१ ठालौ दौड़णौ—देखो 'ठाली दौड़णौ'.
२ ठालौ फिरणौ—देखो 'ठाली फिरणौ'।
३ निर्जन, एकान्त. ४ केवल, सिर्फ।
सं०पु०—१ सोने या चांदी की बनी देवताओं की मूर्ति. २ एक प्रकार का आभूषण विशेष।
रू०भे०—ठालउ।

ठालो-भूलो-वि०पु०—१ भाग्यहीन, हतभाग्य। उ०—ठाला-भूला ठोठ [illegible] साद्रा। पुरुष गया परवार व्यसन जद लागा [illegible]।—[illegible]

२ निकम्मा, बेकार, भटकने वाला।

मुहा०—ठाला-भूला बैठा बातें, ये बगर ठा'नी वात करै—जब निकम्मे और बखूठे होते हैं तो बिना ठौर-ठिकाने की बातें करने लगते हैं।

रू०भे०—ठालू-भूलो, ठालू-भूलो।

ठावय-सं०पु० [सं० स्थापक] पक्ष को स्थापित करने के लिए (जैन)

ठावणी—देखो 'ठावौ' (रू.भे.) उ०—विचित्रकुंवर री नगारची, गाजदार बैठा ठावणा उवां रा गुण गुण लजाय बैठा।

—पलक दरियाव री वात

ठावण-सं०स्त्री०—ठौर, जगह, स्थान (जैन)

ठावन—देखो 'थापण, थापन' (रू.भे., जैन)

ठावनया, ठावणा—देखो 'थापना' (रू.भे., जैन)

ठावणौ, ठाववौ-क्रि०स० [सं० स्था] १ स्थिर करना, रखना।

उ०—सोरा मेरी बाई ये, पैं'लां थे मेलो पाछो पांव। जांमण की ये जायी, पाछै तो दूसो ये एड़ो ठावसी।—लो.गी.

२ स्थापित करना. ३ बनाना. ४ करना. ५ समझना.

६ सुसज्जित करना, सजाना. ७ शोभायमान करना, शोभित करना. ८ निवास करना। उ०—कोसळ नगरी ए नळ आवीग्रा, उपवन मांही ते ठावीया। तिहां सघळू मेहलिउ मेल्हांण, नळराय नी वरतइ आंण।—नळ-दवदंती रास

ठावणहार, हारौ (हारी), ठावणियौ—वि०।

ठवाड़णौ, ठवाड़वौ, ठवाणौ, ठववावौ, ठववावणौ, ठववाववौ, ठवाणौ, ठवावौ, ठवावणौ, ठवाववौ—प्रे०रू०।

ठाविग्रोड़ौ, ठावियोड़ौ, ठाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ठावीजणौ, ठावीजवौ—कर्म वा०।

ठवणौ, ठववौ—अक०रू०।

ठावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्थिर किया हुआ, रखा हुआ. २ बनाया हुआ. ३ किया हुआ. ४ समझा हुआ. ५ सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ. ६ शोभायमान किया हुआ, शोभित किया हुआ.

७ निवास किया हुआ. ८ स्थापित किया हुआ.

(स्त्री० ठावियोड़ी)

ठावौ-वि० (स्त्री० ठावी) १ प्रतिष्ठित, माननीय।

उ०—१ पड़दै घालो पातरां, ठावी-ठावी ठोड़। परणी नै नह पेटियौ, देतो बुध गी दौड़।—वां.दा.

उ०—२ टीकम गांव रो खावतो-पीवतो ठावो आदमी गिणीजतो।

—रातवासो

२ विश्वासपात्र, विश्वसनीय। उ०—१ दिलमी आपरै ठावै साथ सूं भीतर जावणो ठहरायो जे जाफर नूं मारां।—नी.प्र.

उ०—२ तद दळकरण ठावा मांणस बुलावणै नूं मेल्हिया सो ऊवै मांणस आय कही—ठाकुर बुलावै छै।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

३ फैला हुआ, व्यापक। उ०—ठावौ सकळ सकळ री ठाकर, तूं चाकर चाकरां तणौ—भगतमाळ

४ प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—१ ठणै भद्र मंदां त्रिणां वंस ठावा। छटा फैल हालै किनां सैल छावा।—वं.भा.

५ महान्, बड़ा, जबरदस्त। उ०—१ जुडण जांवू दीपि जावौ, ठीक करिजो कळह ठावौ। आव आवौ आव आवौ, आलमां आवौ।—पी.ग्रं.

६ हाजिर, उपस्थित। उ०—१ मोड़ मुरधर तणौ खळां दळ मोड़तौ, दौड़ पतसाठ सूं करै दावौ, रोड़ रमतां थकां चोड रिम चूरितां, ठौड़ ही ठौड़ राठौड़ ठावौ।—ध.व.ग्रं.

७ योग्य। उ०—अला अहे चंद्रावळी बीज आवौ। अला ठाकुरां मेघड़ी पिरिण ठावौ।—पी.ग्रं.

८ सत्य, पक्का, निश्चित। उ०—म्हे कुंवरजी सूं मिळ बातां करि ठावा समांचार लाया छां, सहनांण लाया छां।

—पलक दरियाव री वात

९ प्रकट, जाहिर। उ०—आगै सहर मैं खाफरो चोर चोरी करतो, चोरी ठावी न हुवती।—राजा भोज अर खाफरे चोर री वात

मुहा०—१ ठावौ करणौ—प्रकट करना, जाहिर करना. २ ठावौ पड़णौ—पता लगना, मालूम होना. ३ ठावौ होणौ—प्रकट होना, जाहिर होना, प्रसिद्ध।

१० मुख्य, खास, अग्रगण्य उ०—१ ठावा उपमांण घटया उण ठौड़। कटया जदु जांणक छप्पन कोड़।—मे.म.

उ०—२ पाछा आया तरै वड वेहड़ां सूं वधाय वधावा, ठावा-ठावा आदमी तिकां रा नांम सूं गावीजण लागा।—बी.स.टी.

११ गंभीर, धैर्यवान. १२ समझदार, बुद्धिमान. १३ सुरक्षित।

रू०भे०—ठाग्रो, ठायो, ठाहो।

यौ०—ठावी-ठौड़।

ठाह-सं०स्त्री०—१ स्थान, जगह। उ०—१ दगौ दियौ कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह। वांणण जाया 'बांकला', कहै महाजन काह।

—वां.दा.

२ पता, ठिकाना। उ०—धांम नाथ न गांम धांम, कुछ ठांम न ठाह।—केसोदास गाडण

३ ध्यान, खबर, खोज, ज्ञान। उ०—अंबरि बारह रवि तपइ, दिसा प्रति दि दाह। सीतळ तुझ संभारवउ, अवर न अेकूं ठाह।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—ठा'।

ठाहणौ, ठाहवौ—देखो 'ठा'णौ, ठा'वौ' (रू.भे.)

ठाहर-सं०स्त्री० [सं० स्था] १ स्थान, जगह। उ०—मारि खळां 'रिणमाल', एक हुकमह घर आंणी। सीह गाय इक साथ, पियै इक ठाहर पांणी।—सू.प्र.

२ निवास-स्थान, डेरा।

सं०पु०—३ कदम, डग। उ०—डारण नाहर डांण ठवंतो ठाहरां। फुरळतो अरि फौज तसां घिन ताहरां।—किसोरदांन बारहठ

ठाहराणो, ठाहरावो—१ जमाना। उ०—जन हरिदास मनसा बसी, तहां वसे हरि नीर। कनक कटोरे ठाहरे, बाघणि वप का खीर।
—ह.पु.वा.

२ रोकना, ठहराना।

ठाहरियोड़ो—भू०का०कृ०—१ जमाया हुआ. २ रोका हुआ, ठहराया हुआ।

(स्त्री० ठाहरियोड़ी)

ठाहरूपक-सं०पु० [सं० स्था = रूपक] सात मात्राओं का मृदंग का एक ताल।

ठाहियोड़ो—देखो 'ठांयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठाहियोड़ी)

ठाहोकणो, ठाहोकबो—क्रि०स०—ठोंकना, पीटना, मारना।

उ०—हिवे हूं घरे न हुवो, तम्हरां 'हेमो' महेवे रे किंवाड़ घाव करेसी, प्रोळ आय ठाहोकसी।—नैणसी

ठाहोकियोड़ो—भू०का०कृ०—१ ठोका हुआ, मारा हुआ, पीटा हुआ।

(स्त्री० ठाहोकियोड़ी)

ठाहो—सं०पु०—१ पात्र। उ०—जीव की जड़ी, हीयो को हार, अमी को ठाहो, रूप को अवतार।—दरजी मयाराम री वात

२ देखो 'ठायो' (रू.भे.)

३ देखो 'ठियो' (रू.भे.)

ठिंगणो—देखो 'ठींगणो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठिंगणी)

ठिइकम्म-सं०पु० [सं० स्थिति कर्मन्] १ कर्म की स्थिति (जैन)

२ स्थिति कर्म, जन्म संस्कार (जैन)

ठिइकल्लाण-उभ० लि० [सं० स्थिति कल्याण] उत्कृष्ट स्थिति वाला (जैन)

ठिइक्खय-सं०पु० [सं० स्थितिक्षय] आयु का क्षय, मरण (जैन)

ठिइपय-सं०पु० [सं० स्थितिपद] प्रज्ञापन सूत्र के चतुर्थ पद का नाम (जैन)

ठिइबंध-सं०पु० [सं० स्थितिबन्ध] कर्मबन्ध की काल मर्यादा (जैन)

ठिइया-सं०स्त्री० [सं० स्थितिका] स्थिति (जैन)

ठिई-सं०स्त्री [सं० स्थिति] स्थिति (जैन)

ठियो—वि० [सं० स्थितः] १ ठहरा हुआ (जैन)

२ देखो 'ठायो' (रू.भे.)

३ देखो 'ठियो' (रू.भे.)

रू०भे०—ठिय।

ठिकदार—देखो 'ठेकेदार' (रू.भे.)

ठिकरी—देखो 'ठींकरी' (रू.भे.) उ०—जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाळा खावइ। कइ ठिकरी ना खाइ खंड, कइ खायइ भींत लवंड।—ऐ.जै.का.सं.

ठिकांणो—सं०पु० [सं० स्था] स्थान, जगह। उ०—१ ठहिया भूखण सरब ठिकांणे, अहि कांकळि पुहपां अहिनांणे।—सू.प्र.

उ०—२ सारी धरती प्रदिक्षणा दी। राजा नु सारा ठिकांणा बताया छै।—चौबोली

मुहा०—१ ठिकांणे आणो—उलझन में पड़े हुए का यथार्थता पर आना, वास्तविक बात पर आना।

२ ठिकांणे नी रै'णो—बुद्धि-विक्षिप्ति होना, अस्थिर रहना, अपने स्थान पर न रहना। ३ ठिकांणे पहुँचाणो, ठिकांणे मेलणो—उपयुक्त स्थान पर भेजना।

२ निवास-स्थान, ठहरने की जगह, पता, ठिकाना।

उ०—करिजे तूं कल्याण इसो मन में मति आंणे। ठांम चुकावे ठिवक ठहरसी किसे ठिकांणे।—ध.व.ग्रं.

मुहा०—१ ठिकांणा री वात—समझदारी की बात, पते की बात.

२ ठिकांणे नी रै'णो—स्थान पर नहीं टिकना।

३ ठिकांणे री वात—देखो 'ठिकांणा री वात'।

४ ठिकांणे लागणो—उचित स्थान पर पहुँचना, खर्च हो जाना।

५ ठिकांणे लगाणो—उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना, सुरक्षित स्थान पर ले जाना, खर्च कर देना। ६ ठिकांणो जोणो, ठिकांणो ढूंढ़णो—निवास-स्थान की तलाश करना, सम्बन्ध के लिए उपयुक्त लड़का या लड़की ढूंढ़ना। ७ ठिकांणो लागणो—खबर लगना, पता लगना।

३ प्रबंध, इन्तजाम, प्राप्ति का ढंग।

मुहा०—१ ठिकांणे लगाणो—काम धंधे पर लगाना।

२ ठिकांणो करणो—शादी विवाह के लिए सम्बन्ध निश्चित करना।

४ सहारा, आश्रय, अवलंब।

मुहा०—१ ठिकांणे लगाणो—काम धंधे पर लगाना, आश्रय दिलाना।

२ ठिकांणो करणो—प्राप्ति का स्थान तय करना, नौकरी पर लगना, आश्रय लेना. ३ ठिकांणो जोणो, ठिकांणो ढूंढ़णो—आश्रय ढूंढ़ना, नौकरी की तलाश करना।

५ भरोसा, यथार्थता, प्रमाण. ६ जिसकी कोई सीमा ही न हो, पारावार। ज्यूं—इण दरियाव री कांई ठिकांणो कोनी।

७ अंत, हद।

मुहा०—१ ठिकांणे पहुँचाणो, ठिकांणे मेलणो, ठिकांणे लगाणो—काम तमाम कर देना, समाप्त कर देना.

२ ठिकांणे लगणो—मृत्यु को प्राप्त होना, धाम सिधाना।

८ कुल, वंश, घराना।

मुहा०—१ ठिकांणा री टाबर—अच्छे कुल का व्यक्ति, कुलीन

स्त्री० ७ ठिकांणौ गोतणौ, ठिकांणौ ढूंढणौ—लड़के या लड़की के सम्बन्ध के लिए उपयुक्त कुल ढूंढना।
८ ठिकांणौ लजाणौ—कुल को लज्जित करना, मर्यादा छोड़ना।
ठि०—पु० (३)
१ किसी राज्य का वह भू-भाग जो किसी सामन्त या जागीरदार के अधीन हो। उ०—वावड़ी वाळा बाग में बाबलियै वाळो घेरो रे। म्हारे कोटा वाई नै अंगरेज मेलो रे क भावां सांभळजो। हां रे भावां सांभळजो रे ठाकर नै ठिकांणौ छूटे रे क भावां सांभळजो।
—लो.गी.
मुहा०—१ ठाकर सूं ठिकांणौ वाजणौ—यदि जागीरदार समझदार और बुद्धिमान हो तो उसकी जागीर की भी कद्र हो जाती है.
२ ठिकांणै ठाकर पूजीजणौ, ठिकांणै ठाकर वाजणौ—मनुष्य की कद्र उसके स्थान पर ही होती है। जागीर या वैभव के कारण ही व्यक्ति की कद्र होती है. ३ ठिकांणै रौ ठाकर—धन के पीछे अयोग्य की भी कद्र होती है। बहुत बड़ी जागीर का अयोग्य स्वामी भी ठाकुर कहलाता है। सम्पन्न घर का व्यक्ति।
४ ठिकांणौ धवेरणौ—किसी जागीर का बुद्धिमानी से संचालन करना, कोसी अयोग्य व्यक्ति का अपने वैभव को समाप्त कर देना.
५ ठिकांणौ केवटणौ—किसी बुद्धिमान व्यक्ति का अपने वैभव या जागीर का बुद्धिमानी के साथ संचालन करना।
६ ठिकांणौ लजाणौ—जागीर की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाना, जागीर को कलंकित करना, वंश में कलंक लगाना।
रू०भे०—ठकांणौ।

ठिकादार—देखो 'ठेकेदार' (रू.भे.)

ठिकौ—देखो 'ठेकौ' (रू.भे.)

ठिगारौ—देखो 'ठग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—कीधा खुवारी ठिकांण-धारी अगिया मुभावां कोते, छंदा दावा केही पंचहजारी छूलूंत। माया अभ्र छाया रूपी ठिगारी जिहांन मोयो बापो छत्रधारी मोयो न जावै बळूंत।—महाराजा बळवंतसिंह रतलांम रो गीत
(स्त्री० ठिगारी)

ठिठकणौ, ठिठकबौ—क्रि०अ० [सं०स्थिति+करण] १ चलते-चलते यकायक ठहर जाना. २ चकित होना, आश्चर्य में पड़ना।
ठठकणौ, ठठकबौ—रू०भे०।

ठिठकारणौ, ठिठकारबौ—क्रि०स०—धिक्कारना, फटकारना।

ठिठकारियोड़ौ—भू०का०कृ०—धिक्कारा हुआ, फटकारा हुआ।
(स्त्री० ठिठकारियोड़ी)

ठिठकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ यकायक ठहरा हुआ. २ आश्चर्य में पड़ा हुआ।
(स्त्री० ठिठकियोड़ी)

ठिठरणौ, ठिठरबौ—क्रि०अ० [सं० स्थित] अधिक सरदी के कारण ऐंठना या संकुचित होना, ठिठुरना।
ठठरणौ, ठठरबौ, ठाठरणौ, ठाठरबौ, ठिठुरणौ, ठिठुरबौ—रू०भे०।

ठिठरियोड़ौ—भू०का०कृ०—अधिक सरदी के कारण ऐंठा हुआ, संकुचित।
(स्त्री० ठिठरियोड़ी)

ठिठुरणौ, ठिठुरबौ—देखो 'ठिठरणौ, ठिठरबौ' (रू.भे.)

ठिठुरियोड़ौ—देखो 'ठिठरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठिठुरियोड़ी)

ठिठोराई—सं०स्त्री०—१ तंग करने की क्रिया या भाव. २ ढिठाई।
क्रि०प्र०—करणी।

ठिणकणौ, ठिणकबौ, ठिणगणणौ ठिणगणबौ, ठिणगणौ, ठिणगबौ—क्रि०अ० रुदन करना, रोना, बिलखना। उ०—रोवत ठिणगत बायी तुळछां घर नै बी आयी तो बाबोजी गोद बैठायी, हो रांम, भरण गयी जळ जमना को पांणी।—लो.गी.

ठिणकयोड़ौ, ठिणगणियोड़ौ, ठिणगियोड़ौ—भू०का०कृ०—रुदन किया हुआ, रोया हुआ, बिलखा हुआ।
(स्त्री० ठिणकियोड़ी, ठिणगणियोड़ी, ठिणगियोड़ी)

ठिमर—वि०—१ गंभीर, धैर्यवान. २ बुद्धिमान, समझदार।
रू०भे०—ठींमर, ठीमर।

ठिय—देखो 'ठिग्रौ' (रू.भे.)

ठियौ—सं०पु० (बहु व० ठिया) १ उन दो पत्थर खंडों में से एक पत्थर खंड जिन पर शौच जाते समय उकड़ू बैठने पर पैर टिके रहते हैं. २ चूल्हे के ऊपर उठे हुए वे भाग जिन पर भोजन, शाक आदि पकाने का बर्तन रखा जाता है. ३ वस्त्र विशेष (शेखावाटी) ४ स्थान, जगह।
रू०भे०—ठयौ, ठहौ, ठायौ, ठिग्रौ, ठींयौ, ठीयौ, ठीहौ, ठेयौ।

ठिरणौ, ठिरबौ—देखो 'ठरणौ, ठरबौ' (रू.भे.)

ठिरियोड़ौ—देखो 'ठरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ठिरियोड़ी)

ठिलणौ, ठिलबौ—क्रि०अ०—१ दूर होना, पीछे हटना। उ०—रिदै मांय वेस्या सुतो नांम राखी भिणै रांम सूवा सदा एम भाखी। ठिलै पाप सारा मिळै मोख ठांमू निमो रांम नांमू निमो रांम नांमू।
—भगतमाळ
२ गतिमान होना, चलना।

ठिल-ठिल—वि०यौ० (अनु०) बिलकुल ऊपर तक भरा हुआ, मुँह तक भरा हुआ, लबालब। उ०—भरियो-भरियो सजड़ तळाव, ठिल-ठिल भरगी, अम्मा, सुरता बावड़ी जी।—लो.गी.
रू०भे०—ठिलाठिल।
सं०स्त्री०—हँसने की क्रिया या ध्वनि।

ठिलाठिल—देखो 'ठिलठिल' (रू.भे.)

ठिलियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पीछे हटा हुआ. २ चला हुआ।
(स्त्री० ठिलियोड़ी)

ठिलौ, ठिल्लौ—देखो 'टिल्लौ' (रू.भे.) उ०—दंत रा ठिला ढाहिक

दुरंग । ऊधरां चाचरां भसम अंग ।—सू.प्र.

ठिवणौ, ठिवबौ–क्रि०अ०—चलना । उ०—रूक-हथ पेखि सौ हाथ जसराज रा । ठिवंतां पाव धीरा दियौ ठाकुरां ।—हा.भा.

ठिवियोड़ौ–भू०का०कृ०—चला हुआ ।
(स्त्री० ठिवियोड़ी)

ठींगणौ–वि०पु० (स्त्री० ठींगणी) दूसरों से अपेक्षाकृत कम ऊँचाई का, जिसका कद साधारण से कम हो, बौना, नाटा ।
रू०भे०—ठिंगणौ ।

ठींगळ, ठींगळियौ, ठींगळौ–सं०पु०—मिट्टी के टूटे हुए बर्तन का छोटा या बड़ा खंड, टूटा हुआ बर्तन (अल्पा.) उ०—१ सीघ्र खंधेड़ौ खोद, पीळती माटी लावौ । गोवर रै गुण घाल, ठींगळे घोळ सिजावौ ।
—दसदेव

उ०—२ पंछी जळ-पय पियै, ठींगळां ठंडौ कोरा । वासै वाड़ी विकै, दूध अर साग सिकोरां ।—दसदेव
रू०भे०—डींगळौ ।
अल्पा०—ठींगळियौ, डींगळियौ ।
मह०—ठींगळ, डींगळ ।

ठींगलौ—देखो 'धींगलौ' (रू.भे.)

ठींगा-ठोळी—देखो 'टींगाटोळी' (रू.भे.) उ०—कम पीछां कायरां ठहै, सट ठींगाठोळी । मैला घटा जवांन तठै जिण सूरां टोळी ।—पा.प्र.

ठींगौ–वि०पु० (स्त्री० ठींगी) १ जबरदस्त, शक्तिशाली । उ०—पद वनराव न पांमियौ, दुरद दिखाळै दांत । सीह थयौ वन साहिबौ, ठींगां री सकरांत ।—बां.दा.
२ धौंस, धमकी, डाट-डपट ।
कहा०—ठाडै कौ ठींगौ सिर पर—सबल की धौंस या डाट-डपट सिर पर अर्थात् शक्तिशाली की धमकी सहनी पड़ती है ।
मि०–'लांठा रौ हुकम माथा माथै ।'

ठींचौ–सं०पु० —मृतक के पीछे बारहवें दिन किया जाने वाला भोज
(शेखावाटी)

ठींडौ–सं०पु० —छेद, छिद्र ।

ठींभर, ठींमर—देखो 'ठिमर' (रू.भे.) उ०—दादौ तौ विछड़ियां मेलइ, दादौ ठींभर दुसमण ठेलइ हो ।—स.कु.

ठींयौ—देखो 'ठियौ' (रू.भे.)

ठी–सं स्त्री०—१ पौत्री. २ धुंध ।
सं०पु०—३ क्षय. ४ कुल. ५ कुटुंब. ६ कुटवाल (एका.)

ठीक–सं०स्त्री० [सं० स्थितक, प्रा० ठिअक्क] १ दृढ़ बात, निश्चय, ठिकाना । उ०—ठीक ठीक इण ठीक री, ठीक ठीक कद ठीक । तूं भूपत पौढ़ी तणा, कळब्रिछ वात किती क ।—रिवदांन महड़ू
यौ०—ठीक-ठाक ।
२ पता, इल्म, खबर, ज्ञान । उ०—आलम रूघौ मारवां, ठीक हुई सब ठौड़ । आलम आयौ साह पै, छोड़ दियौ चीतौड़ ।—रा.रू.
३ पक्का इन्तजाम, स्थिर प्रबंध । ज्यूं—पै'ली पेट पूजा री तौ कीं ठीक करलौ पछै चालण री वात व्हैसी ।
यौ०—ठीक-ठाक ।
वि०—१ प्रामाणिक, सच, यथार्थ. २ जिसमें किसी प्रकार की कमी या कसर न हो, अच्छा, दुरुस्त । ज्यूं—१ दीवाळी माथै म्हारौ मकांन ठीक कराणौ है । २ आ गाडी हमैं कांम को दै नी, ठीक करावौ ।
मुहा०—१ ठीक करणौ—कमी या कसर निकालना, दुरस्त करना.
२ ठीक कराणौ—अड़चन दूर करवाना, कसर निकलवाना.
३ ठीक होणौ—कसर रहित होना, स्वस्थ होना, दुरस्त होना ।
यौ०—ठीक-ठाक ।
३ अच्छा, योग्य, उचित । ज्यूं—औ मिनख इण कांम रै सारू ठीक है ।
मुहा०—ठीक लागणौ—प्रतिष्ठा बढ़ना, भला जान पड़ना ।
४ जो अशुद्ध न हो, सही, शुद्ध । ज्यूं—मुनीमजी अणपढ़ कोनी, वे हिसाब ठीक करियौ ।
५ जो ढीला या तंग न हो, जो अच्छी तरह बैठ जाय या जम जाय । ज्यूं—औ कोट म्हारै डील माथै ठीक बैठ गियौ ।
मुहा०—ठीक बैठणौ—किसी स्थान पर अच्छी तरह जमना या बैठना । अधिक कसा या ढीला न होना । व्यवस्थित होना ।
६ जो प्रकृति से सीधा हो, जो प्रतिकूल आचरण न करे, विनयी, नम्र, सीधा । ज्यूं—घणी वदमासी करी तौ मास्टरजी एक एक नै ठीक कर दैला ।
मुहा०—ठीक करणौ—दंड देना, राह पर लाना ।
७ जिसमें कुछ अन्तर न आवे, जो आकार या परिमाण में बराबर हो, जो निश्चित हो । ज्यूं—सगा सगा मिळ नै बात तै करी कै जांन ठीक मो'रत माथै आवणी चाइजै ।
मुहा०—ठीक उतरणौ—कम ज्यादा नहीं होना, बराबर होना, परिणाम में सही होना ।
८ तय किया हुआ, ठहराया हुआ, निश्चित, पक्का, स्थिर ।
ज्यूं—आपरै वेटा रै व्याव री बात ठीक होगी इणसूं म्हांनै घणी खुसी हुई ।
क्रि०अ०—करणौ, होणौ ।
यौ०—ठीक-ठाक ।
९ बढ़िया, श्रेष्ठ । उ०—आंणी मांणिक मोतीय ठीक, आंणीय वस्त्र पट्टउलडांए । जांणीय मुंहतानंदन एह सेत, सिणगार करावीउ ए ।—विद्याविलास पवाडउ
क्रि०वि०—१ पूर्ण रूप से, निश्चित रूप से । उ०—ठीक ठीक इण ठीक री, ठीक ठीक कद ठीक । तूं भूपत पौढ़ी तणा, कळब्रिछ वात किती क ।—रिवदांन महड़ू
२ उचित ढंग से, उचित रीति से । ज्यूं—औ आदमी ठीक चालणौ नी जांणै ।

मुहा०—ठीक देणौ—उचित रूप से देना, काम ज्यादा नहीं देना, ठीक परिमाण में देना।

ठीक-ठाक-संपु० (बहु०) १ पक्की बात, निश्चय। ज्यूं—पंचां सूं मिळ नै गांव री सफाई री बात ठीक-ठाक करणी।
क्रिप्र०—करणी, होणी।
२ ठौर-ठिकाना, जीविका का प्रबंध, आश्रय। ज्यूं—उणां रै तो नौकरी री ठीक-ठाक व्है गियौ।
क्रिप्र०—करणी, होणी।
३ आयोजन, प्रबंध, इन्तजाम। ज्यूं—टेसण सूं बारै निकळतां ही धरमसाळ में रैवण री ठीक-ठाक व्है गियौ।
क्रिप्र०—करणी, होणी।

ठीकड़ी—१ देखो 'ठीकरी' (रू.भे.) २ घूंघट निकालने वाली अथवा पर्दानशीन औरत के संकेत का शब्द। उ०—वडारण दांतण झारी लेय पाछी आई सो कुंवरजी पौढ़ रहिया छै तद बैठी ठीकड़ी दीवी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

ठीकर—देखो 'ठीकरौ' (मह., रू.भे.) उ०—थिरकस होय ठीकरा जोया, थिरकस ठीकर मांई। दे चसमा घट भीतर देख्या, दीस्या अमर गुसांई।—स्री हरिरांमजी महाराज
यौ०—ठालौ-ठीकर।

ठीकरियौ—देखो 'ठीकर' (अल्पा., रू.भे.)

ठीकरी-संस्त्री०—मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ भाग, टूटा खण्ड।
उ०—औ म्होकमसिंघ जीकुं हांसी में जहर चाखै छै। औ तो मोटा सिरदार छै। पण ठीकरी घड़ा नुं फोड़ न्हांखै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
मुहा०—१ ठीकरी जांणणौ—तुच्छ समझना, महत्व नहीं देना।
२ ठीकरी समझणौ—देखो 'ठीकरी जांणणौ'।
रू०भे०—ठिकरी, ठीकड़ी।

ठीकरौ-संपु०—१ मिट्टी के बरतन का टूटा भाग।
उ०—१ ठाकर कूंडा-ठीकरा खरा दीळा राखै। खूंणै में खैंखार पड़्या रै' ढिगला पाखै।—ऊ.का.
उ०—२ चुगली करतां चुगल रा, जग होटड़ा जुड़ंत। मळ नांखण जांणै मिळै, दोय ठीकरा दंत।—बां.दा.
अल्पा०—ठीकरी
२ तुच्छ वस्तु, निकम्मी चीज। उ०—गुण विन ठाकर ठीकरौ, गुण विन मीत गंवार। गुण विन चंदण लाकड़ी, गुण विन नार कुनार।—अज्ञात
३ बर्तन, पात्र (व्यंग्य)
मुहा०—१ ठीकरौ फूटणौ—कलंक प्रकट होना, भेद खुलना.
२ ठीकरौ फोड़णौ—कलंक प्रकट करना, भेद खोलना।
४ पुराना बरतन, टूटा-फूटा बरतन. ५ भीख मांगने का बरतन।
उ०—अंतर की गत किसकूं कहूं, सभी अभेदू सात। कर सिणगार वैराग विभूती, प्रेम ठीकरा हात।—स्री हरिरांमजी महाराज
६ ब्रह्माण्ड (संत वांणी) उ०—थिरकस होय ठीकरा जोया, थिरकस ठीकर मांई। दे चसमा घट भितर देख्या, दीस्या अमर गुसांई।—स्री हरिरांमजी महाराज
७ शरीर (व्यंग्य, साधु)
मि०—भांडौ (२)
रू०भे०—ठीवड़ौ, ठीवरौ।
अल्पा०—ठीकरियौ।
मह०—ठीकर।

ठीकिरी—देखो 'ठीकरी' (रू.भे.) उ०—ठीकिरी कारणि कोइ कांमितु कुंभु कुंतु फोड़इ।—व.स.

ठीठी-संस्त्री०—हँसने की क्रिया या ध्वनि।

ठीडी-वि०—खड़ा। उ०—कांई बांवळ कांव, माळव ठीडी मेड़तै। तिण अहिणै सै आंब, वीरम देय वढ़ाडिया।—ठाकुर जैतसी री वारता

ठीडौ-संपु० [सं० स्था] खबर, पता, ठिकाना (शेखावाटी)।

ठीणणौ, ठीणबौ-क्रिस०—उपालंभ देना, बुरा-भला कहना।
उ०—नरां न ठीणौ नारियां, ईखौ संगत एह। सूरां घर सूरी महल, कायर कायर गेह।—वी.स.

ठीणियोड़ौ—भूकाकृ०—उपालंभ दिया हुआ, बुरा-भला कहा हुआ। (स्त्री० ठीणियोड़ी)

ठीणौ-संपु० [सं० स्तब्ध] सरदी के कारण जमा हुआ (घी)।

ठीवड़ौ, ठीवरौ —देखो 'ठीकरौ' (रू.भे.)

ठीमर—देखो 'ठिमर' (रू.भे.)

ठीयौ, ठीहौ—देखो 'ठियौ' (रू.भे.) उ०—१ भूख लागी छै तीसूं अठै ही रोटी कर खावां, मोकळौ जळ, मोकळा छांणा, चोखा चूल्हा तीन तीन भाटां रा ठीया छै।—साह रांमदत्त री वारता
उ०—२ दही रौ रजबौ दीजै छै। तरगसां मांहां सीकां काढ़जै छै। वेवड़ा ठीहां चाढ़जै छै।—रा.सा.सं.

ठुंडी-संस्त्री०—सांप का मुंह।

ठु-संपु०—१ कदम. २ यमदूत।
संस्त्री०—३ मक्खी. ४ रज. ५ त्वचा (एका.)
वि०—१ रोगी. २ दरिद्री (एका.)

ठुकणौ, ठुकबौ-क्रिअ०—'ठोकणौ' क्रिया का अक० रू०।

ठुकरांणी—देखो 'ठकरांणी' (रू.भे.) उ०—घोड़ा रोवै घास नै, टाबरिया रोवै दांणां नै। बुरजां में ठुकरांण्यां रोवै, जांमण जाया नै क रोळौ वापरियौ। हां रे रोळौ वापरियौ रे, देस में अंगरेज आयौ रे क रोळौ वापरियौ।—लो.गी.

ठुकराणौ, ठुकराबौ-क्रिस०—१ पैर से ठोकर मारना. २ तिरस्कार कर के हटाना।

ठुकरायोड़ौ-भूकाकृ०—१ ठोकर मारा हुआ. २ तिरस्कार किया हुआ।

(स्त्री० ठुकरायोड़ी)

ठुकराळौ—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)

ठुणकाणौ, ठुणकावौ—क्रि०स०—उंगली से या किसी वस्तु से हलकी चोट पहुँचाना।

ठुणकायोड़ौ—भू०का०कृ०—हलकी चोट किया हुआ।
(स्त्री० ठुणकायोड़ी)

ठुणकौ—देखो 'ठणकौ' (रू.भे.) उ०—नीची जातां री ठुणकौ पण न्यारौ, ऊंची जातां री उडिग्यौ उणियारौ।—ऊ.का.

ठुण—१ देखो 'ठण' (रू.भे.)
२ बच्चों के ठहर ठहर कर रोने का शब्द।

ठुमक—सं०स्त्री०—उमंग से भरी या ठसक भरी (चाल)। बच्चों की तरह छोटे छोटे कदम भरते हुए और पैर पटकते हुए (चलना)।
उ०—ठुमक ठुमक री चाल।—जयवांणी।

ठुमकणौ, ठुमकवौ—क्रि०अ०—प्रायः बच्चों का जल्दी जल्दी छोटे छोटे कदम रख कर चलना, फुदकते हुए चलना।

ठुमकार—सं०स्त्री०—ठुमक के साथ चलने से उत्पन्न पैरों की ध्वनि।
उ०—लूंवत मांगै वांम चरण ठुमकार हळफतौ। झूंमत जाचै मुख-मदिरा मो बांण कळपतौ।—मेघ.

ठुमराई—सं०स्त्री०—मंद मंद गर्वपूर्ण चाल। उ०—चौमासौ लग आयौ अे घोड़ी, धीमां धीमां चाल वछेरी, ठुमराई सूं चाल।—लो.गी.

ठुमरी—सं०स्त्री०—एक प्रकार का गीत जो केवल एक ही स्थान और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।

ठुमरीझंझोटी—सं०स्त्री०—एक राग विशेष (मीरां)

ठुरणौ, ठुरबौ—'ठोरणौ' क्रिया का अक०रू०।

ठुरियौ—सं०पु०—ऊँट की चाल विशेष (शेखावाटी)

ठुळी—सं०स्त्री०—१ वह लाठी जो लंबाई में छोटी हो, डंडा।
उ०—तिकां ऊपर कुत्तां री डोर छूटी छै। वांठ-बोभा कूदै छै। घुचली खाय रह्या छै। ठुळी री, गोफण री, तीरां री चोटां हुय रही छै।—रा.सा.सं.
२ एक प्रकार का कमजोर कांटा।

ठुसकणौ, ठुसकवौ—क्रि०अ०—धीरे-धीरे सांस रोक-रोक कर रोना।

ठुसकियोड़ौ—भू०का०कृ०—रोया हुआ।
(स्त्री० ठुसकियोड़ी)

ठुसकी—सं०स्त्री०—१ धीरे-धीरे सांस रोक-रोक कर रोने से उत्पन्न शब्द. २ धीरे से अपानवायु निकालने की क्रिया जिससे ठुस शब्द उत्पन्न हो।

ठुसणौ, ठुसवौ—क्रि०अ०—१ दवा-दवा कर भरा जाना. २ कठिनाई से घुसना या पैठना।

ठुसियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दवा-दवा कर भरा हुआ. २ कठिनाई से घुसा हुआ या पैठा हुआ।
(स्त्री० ठुसियोड़ी)

ठुसी—सं०स्त्री०—स्त्रियों के गले में पहनने का एक आभूषण विशेष।
रू०भे०—ठुसी, ठूसी।

ठूंक—सं०स्त्री० [सं० तुंड] चोंच, चंचु। उ०—सु किण भांत री तरवार थेट सिरोही री, सांतरी, दांणादार, मिश्रांन घातियां बिन्रांगुळ वाढ़े भेरिश्रां-मिश्रांन सूं काढ़ि नै घास में नांखी हुअै तौ पांणी रै भोळै जिनावर ठूंक मारै।—रा.सा.सं.
रू०भे०—ठूंग।

ठूंग—सं०स्त्री०—१ शराब के साथ खाया जाने वाला चुर्वन.
२ देखो 'ठूंक' (रू.भे.)

ठूंगार—सं०स्त्री०—१ भंग के नशे की अवस्था में भूख को शान्त करने के लिये खाया जाने वाला स्वादिष्ट पदार्थ. २ छौंक, वघार।

ठूंठ—वि०—१ मूर्ख, गँवार।
मि०—टोळ (१)
२ देखो 'ठूंठौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ कोट मांहिला झाड़-झंगी बाळ दिया, तिकै अजेस बळिया ठूंठ दीसै छै।—नैणसी
उ०—२ ऊपर टीड रै चाटचोड़ी ठूंठ व्है जिसी खेजड़ी अर सांमनै बरवाद हुयोड़ौ उणरौ घर।—रातवासौ

ठूंठा—सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा

ठूंठियौ—सं०पु०—१ बैलगाड़ी के पहिये में आरे की भांति लगाया जाने वाला लकड़ी का उपकरण. २ देखो 'टूंटियौ' (रू.भे.)
३ देखो 'ठूंठौ' (अल्पा., रू.भे.)

ठूंठौ—सं०पु०—वह पेड़ जिसकी पत्तियां और डालियां काट डाली गई हों या सूख कर गिर गई हों।
रू०भे०—ठूंढौ।
अल्पा०—ठूंठियौ, ठूंढ़ियौ।
मह०—ठूंठ, ठूंढ।

ठूंढ—देखो 'ठूंठौ' (मह., रू.भे.) उ०—खेजड़लां री छांग, ठूंढ भेळा कर राखै। ठूंढ लगावै ढिग्ग, जिग्ग जाभौ कर नांखै।—दसदेव

ठूंढ़ियौ—देखो 'ठूंठौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ पकै ठूंढ़ियां ईंट, चूनौ, सुरखी हुळकी फूल घुट। ठंठेरा लुहारा सारा, लोह चढ़ावै लाल घुट।—दसदेव
उ०—२ कोकर काट मजूर, ठूंढ़ियौ भट्टी ठारै। पांणी पांणी करै, पुणौ पारै उणियारै।—दसदेव

ठूंढौ—देखो 'ठूंठौ' (रू.भे.)

ठूंसणौ, ठूंसवौ—क्रि०स०—१ दवा दवा कर भरना. २ जोर से घुसेड़ना या पैठाना. ३ अपेक्षाकृत अधिक खाना, खूब पेट भर कर खाना, कस कर खाना।
ठूंसणौ, ठूंसबौ, ठोसणौ, ठोसबौ—रू०भे०।

ठूंसियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दवा दवा कर भरा हुआ. २ जोर से घुसेड़ा हुआ या पैठा हुआ. ३ कस कर खाया हुआ।
(स्त्री० ठूंसियोड़ी)

ठूंसियौ—सं०पुं०—ऊँट का एक खास रोग जिसमें उसको खांसी होती है.

ठू-सं०पु०—१ विष्णु. २ वृक्ष. ३ प्रेम. ४ धैर्य. ५ धर्म.
सं०स्त्री०—६ लक्ष्मी (एका.)

ठूण—देखो 'ठूंठ' (रू.भे.) उ०—सू म्यांन मांहां काढ़ घास में मामरी नो पांणी रे सोकावै जनावर ठूण वाहै।—रा.सा.सं.

ठूमरी—सं०स्त्री०—देखो 'ठुमरी' (रू.भे.)
रू०भे०—ठुमरी।

ठूमरो-सं०पु०—मिश्र और बिलोचिस्तान के बीच की पहाड़ियों के बीच हिंगलाज देवी के मंदिर के आसपास के भू-भाग पर पाया जाने वाला पत्थर का कण जिसकी आकृति गेहूं, जौ और ज्वार के दाने के समान होती है।

वि०वि०—श्रद्धालु भक्त अपने बच्चों को शीतला से बचाने के लिए शीतला निकलने से पहले इनको पानी में डाल कर पिलाते हैं और इनकी माला बना कर पहनाते हैं।

ठूठ-सं०पु०—जड़ों सहित निकाली हुई मोटी लकड़ी। उ०—सूड़ फरंता वाढ़ां मूळ। जड़ियां हेतां ठूंठा ठूठ।—चेत मांनखा

वि०—१ अल्हड़, गंवार, मूर्ख. २ मजबूत।

ठूसणो, ठूसबो—देखो 'ठूंसणो, ठूंसबो' (रू.भे.)

ठूसियोड़ो—देखो 'ठूंसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ठूसियोड़ी)

ठूसी—देखो 'ठुसी' (रू.भे.)

ठेंप-सं०पु०—कठोर एवं समतल भूमि।

ठे-सं०पु०—१ वामन. २ शेष. ३ स्थान. ४ मन. ५ संक्षेप।
सं०स्त्री०—६ शिखा (एका.)

ठेक-सं०स्त्री०—१ मजाक, ठठोर, हंसी। उ०—जळ परियो देवै जितो, रयो न धांधळरोह। एक न आप उवारियो, क्यूं पत ठेक करोह।
—पा.प्र.

२ छलांग मारने की क्रिया या छलांग।

ठेकणो-वि० (स्त्री० ठेकणी) छलांग मारने वाला। उ०—पड़ै रूप पेखणा देखणा कठै बीजां पोहां, सोभा चत्रकारियां अलेखणा गुभांत। वागी ताळी छेकणा जे सु फीलां कंगुर वाळी, भागी डाळी ठेकणा लंगूर वाळी भांत।—जवांनजी आढ़ो

ठेकणो, ठेकबो-क्रि०स०—छलांग मारना, कूदना।

ठेकरी—देखो 'ठीकरी' (रू.भे.) (शेखावाटी)

ठेकदार—देखो 'ठेकेदार' (रू.भे.)

ठेकागाड़ी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी लगान।

ठेकादार—देखो 'ठेकेदार' (रू.भे.)

ठेकाळो-वि० (स्त्री० ठेकाळी) छलांग मारने वाला, कूदने वाला।

ठेकियोड़ो-भू०का०कृ०—छलांग मारा हुआ।
(स्त्री० ठेकियोड़ी)

ठेकी-सं०स्त्री०—छलांग।

ठेकेदार-सं०पु०यो०—१ किसी कार्य को करने का उत्तरदायित्व लेने वाला। उ०—कचेड़ी में दावो पेस हुयो अर न्याव रा ठेकेदारां उण रै नांम कुड़की रो हुकम निकाळ दियो।—रातवासो

२ मकान बनाने, सड़क बनाने या किसी अन्य कार्य को कुछ धन-राशि के बदले में पूरा करने का जिम्मा लेने वाला. ३ किसी आमदनी वाले स्थान के मालिक को निश्चित धन-राशि दे कर मुनाफे की आशा से उस स्थान की आमदनी लेने वाला, इजारेदार।

रू०भे०—ठिकदार, ठिकादार, ठेकदार, ठेकादार।

ठेको-सं०पु०—१ किसी कार्य को करने का उत्तरदायित्व. २ मकान बनाने, सड़क बनाने या किसी अन्य कार्य को कुछ धन-राशि के बदले में पूरा करने का दायित्व, जिम्मा।

क्रि०प्र०—देणो, लेणो।

३ किसी आमदनी देने वाली वस्तु अथवा स्थान के मालिक को समय-समय पर निश्चित धन-राशि दे कर मुनाफे की आशा से उस वस्तु अथवा स्थान की आमदनी लेने अथवा वसूल करने की क्रिया, इजारा।

क्रि०प्र०—देणो, लेणो।

यौ०—ठेकेदार।

४ तबले में बायां. ५ बांयें तबले पर ताल देने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणो, देणो।

६ छलांग।

मुहा०—ठेका देणा—भाग जाना, छोड़ जाना, गायब हो जाना, टल जाना।

रू०भे०—ठिको।

ठेगड़ो-सं०पु०—कुत्ता।

ठेगण-सं०स्त्री०—सहारा लेने या लगाने की लकड़ी।

उ०—मांचां रा पागलिया लियां, लांमी-लांम झड़ामड़ी। टावरिया गेडिया टाळै, बूढ़ा ठेगण कांमड़ी।—दसदेव

ठेचरी-सं०स्त्री०—मखौल, मजाक, हँसी। उ०—'ओपो' कहै अबै नह आचां, सेज सिधातां बाव सुरै। जस वातां लतिया नह जांणै, कवि पातां ठेचरी करै।—ओपो आढ़ो

ठेट, ठेठ-सं०पु०—१ सीमा, हद, छोर, पार, अंत।

उ०—१ एक तो नगारो धणियां रातंनाड़ै वाजै ओ, दूजोड़ो नगारो धणियां ठेट वाजै ओ क झगड़ो रोपियो।—लो.गी.

उ०—२ घोड़ा घालो वंरगड़ै, जद पूगोला ठेट। विचलै वासै रह गया, तो पड़सो किण रै पेट।—सगरांमदास

उ०—३ उणरो मन तो ठेठ जोधपुर रा बंगळा में भमतो हो।
—रातवासो

२ प्रारम्भ, शुरू। उ०—१ ठेट सूं रिवदास गुरू'र, हरि तणै रस भीनी। मीरां दासी आपरी, भव सूं पार कीनी।—मीरां

उ०—२ गोरो निछोर रंग, कैरी री फांक जिसी मोटी-मोटी आंख्यां, सूवा री चांच सी तीखी नाक अर ठेट कमर सूं नीचै तक लटकता

भूरा कंवळा केस ।—रातवासौ

...र, ठेठरियौ, ठेठरौ-सं०पु०—१ पुराना सूखा जूता जो सूख कर कठोर हो गया हो. । २ पशुओं के खुरों की कठोरता ।

उ०—सिर नहिं सिंगी संचरी, पगां न ठेठर बंध । दूध पिवंतै वाछड़ै, दियौ महा भड़ कंध ।—महाराजा मांनसिंह, जोधपुर

अल्पा०—ठेठरियौ ।

मह०—ठेठर ।

...ठी-सं०पु०—कान का मैल, कर्ण-मल ।

मुहा०—१ ठेठी आणी—ध्यान न देना, लापरवाही करना.

२ ठेठी काडणी—राह पर लाना, सीधा करना, दण्ड देना ।

...ठी-काढ़णियौ-सं०पु०यौ०—धातु का बना छोटी कलछीनुमा एक उपकरण जिससे कान का मैल निकाला जाता है ।

वि०—दण्ड देने वाला, राह पर लाने वाला, सीधा करने वाला ।

...ठी—देखो 'ठाडी' २ (रू.भे.) (शेखावाटी)

...-सं०स्त्री०—टक्कर, आघात । उ०—सो किण भांति तळाव जांणै दूसरौ मांनसरोवर रातौ सौ एके रड़ि रै माथै पांडरौ नींर पवन री मारिओ कराड़ै फीण आछटतौ ठेपां खाइनैं रहिओ छै ।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, लगाणी ।

रू०भे०—ठेब, ठेव ।

...ाड़-सं०स्त्री०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व.स.)

...ा—देखो 'ठेप' (रू.भे.) उ०—वरखा रितु लागी, विरहणी जागी, आभा झरहरै, बीजां आवास करै, नदी ठेबां खावै, समुद्रे न समावै ।
—रा.सा.सं.

...बौ देखो 'थेबौ' (रू.भे.)

...यौ—१ देखो 'ठायौ' (रू.भे.) २ देखो 'ठियौ' (रू.भे.)

...ठ—देखो 'ठेळौ' (मह., रू.भे.)

वि०—निर्भय, निडर, प्रभावशाली ।

मुहा०—ठेळ मारणी—डींग मारना, गप्प लगाना ।

...ल—धक्का, टक्कर, आघात । उ०—समासम पेल घमाधम सेल । अनातम आतम ठेल उठेल ।—रा.रू.

...लण-सं०स्त्री०—बैलगाड़ी में अग्र भाग के नीचे लगाया जाने वाला एक डंडा जो बैलों को चक्के से दूर रखता है ।

...णौ, ठेलवौ-क्रि०स० [सं० स्थलयति, प्रा० ठलइ] १ पीछे हटाना, दूर करना, खदेड़ना, धकेलना । उ०—१ जिके जिके ही अहंकार रै उफांण प्राकार रै कंगुरै गुरै होय गढ़ रा सिपाहां पाछा ठेलिया ।
—वं.भा.

उ०—२ घिर लोक चहूं बळ माग ग्रह्यौ । रिण चौक कमंधज ठेल रह्यौ ।—पा.प्र.

उ०—३ भीज रीझ झेली भली, पावस पांणी पैल । मतवाळा मनवार री, छाक म ठेलौ छैल ।—वां दा.

२ प्रहार से दूर करना, धक्का लगाना, ठेलना । उ०—म ठेल म ठेल पगां सूं मूझ । त्रिविक्रम राय दीनानाथ तूझ ।—ह.र.

३ टालना, दूर करना, आगे बढ़ाना । उ०—ताहरां औ लगन ठेलि अर कहाड़ियौ राजाजी नूं अर रांणीजी नूं—कुंवरजी री कारी अजै रूड़ां सांसां री नहीं हुई ।—द.वि.

४ झोंकना, डालना । उ०—खेल वीरता खेलणा, अस ठेलणा अपल्ल । तो हुवै भल जास पख, झुकतौ लै नभ झल्ल ।
—जैतदांन बारहठ

५ व्यतीत करना, गुजारना । उ०—करहा, इण कुळि गांमड़इ, किहां स नागरवेलि । करि कइरां ही पारणउ, अइ दिन यंही ठेलि ।
—ढो.मा.

६ पराजित करना, भगाना, खदेड़ना । उ०—मोखावी मंडोवर किना मेछ गहि, पींड गाहियौ वड़ै पजाय । जिण पतसाह ठेलिया जैतै, जैत स किम ठेलंतां जाय ।—सूजौ नगराजोत

७ उंडेलना, डालना । ज्यूं—विसनोइयां रै व्याव में गिया जिकौ थाळियां में अनाप-सनाप घी ठेल दियौ ।

८ मिटाना, नाश करना । उ०—संवर रूपी करौ ढांकणौ, ग्यांन रूपियौ तेल । आठूं ही करम परजाळ नैं, दौ रे अंधारौ ठेल ।
—जयवांणी

क्रि०अ०—भाग जाना, दौड़ जाना ।

ठेलणहार, हारौ (हारी), ठेलणियौ—वि० ।

ठेलवाड़णौ, ठेलवाड़वौ, ठेलवाणौ, ठेलवाबौ, ठेलवावणौ, ठेलवाववौ, ठेलाड़णौ, ठेलाड़वौ, ठेलाणौ, ठेलाबौ, ठेलावणौ, ठेलाववौ—प्रे०रू०

ठेलिओड़ौ, ठेलियोड़ौ, ठेल्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ठेलीजणौ, ठेलीजवौ—कर्म वा० ।

ठिलणौ, ठिलवौ—अक० रू० ।

ठेलमठेल, ठेलाठेल-सं०स्त्री०—१ बहुत से आदमियों का ऐसा समूह या भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों । धक्कमधक्का, रेलापेल ।

२ बहुत अधिक आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम । धकापेल ।

वि०—बहुत अधिक, परिपूर्ण, पूर्ण । उ०—१ मोटी मोटी छांटां ओसरचौ, ओ बदळी, ओसरचौ ओ बदळी, कोई जोड़ा ठेलमठेल, सुरंगी रुत आयी म्हारै देस, भली रुत आई म्हारै देस ।—लो.गी.

उ०—२ खेळ'र कोठा लाडा ठेलाठेल भराउं राज, ऐसा कांमण म्हारा राईवर नै सोहै राज ।—लो.गी.

ठेळियौ—देखो 'ठेळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ठेलियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पीछे हटाया हुआ, दूर किया हुआ, खदेड़ा हुआ, धकेला हुआ. २ प्रहार से दूर किया हुआ, धक्का लगाया हुआ, ठेला हुआ. ३ टाला हुआ, दूर किया हुआ, आगे बढ़ा हुआ. ४ झोंका हुआ, डाला हुआ. ५ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ. ६ पराजित किया हुआ, भगाया हुआ, खदेड़ा हुआ. ७ उंडेला हुआ, डाला हुआ ।

(स्त्री० ठेलियोड़ी)

ठेळी-सं०स्त्री०—देखो 'ठेळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ठेळौ-सं०पु०—१ कूड़े-करकट का ढेर।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ।

२ घास-फूस का ढेर।

क्रि०प्र०—करणौ, देणौ, लगाणौ।

मि०—कौंदू।

३ छोटी लाठी, डंडा।

अल्पा०—ठेळी।

४ डंडे से गिल्ली पर प्रहार करने की क्रिया।

क्रि०प्र०—ठोकणौ, देणौ, मारणौ, लगाणौ।

मुहा०—ठेळा मारणौ—देखो 'ठेळ मारणौ'।

अल्पा०—ठेळियौ।

मह०—ठेळ।

ठेलो-सं०पु०—१ आदमी द्वारा ठेल कर चलाने की एक प्रकार की सामानवाहक गाड़ी. २ एक बैल द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी। ३ झोंका। उ०—हींदोळि हरखइं चढ़ी, हींचरा लागी हेलि। उल्लाह अंबर भवनि, माधव दीठइ ठेलि।—मा.कां.प्र.

ठेव—१ देखो 'ठेप' (रू.भे.) २ देखो 'टेव' (रू.भे.)

ठेवकौ—देखो 'टेवकौ' (रू.भे.)

ठेस-सं०स्त्री०—चोट, आघात, धक्का। उ०—देखौ लागै नहि ठेस, वीणा टूट नहि जाय। होळै होळै रै बावरिया, झोलौ सह्यौ न जाय।—चेत मांनखा

क्रि०प्र०—देणी, लगणी, लगाणी।

ठेसण—देखो 'टेसण' (रू.भे.) उ०—ग्रे भोळी! थनै इतरोई ठा' कोयनी। बडी ठेसण ईज तौ गाडी बदळणी पड़ै।—रातवासौ

ठेह—देखो 'ठेस' (रू.भे.) उ०—पागै छोटौ पाक छै, लागै ठेह लगीस। मांचै जरा सूं मालकी, ग्रांचै वाजै ईस।

—दरजी मयाराम री वात

ठेहण—देखो 'टेसण' (रू.भे.)

ठैंठाणौ, ठैंठावौ—देखो 'ठंठाणौ, ठंठावौ' (२) (रू.भे.)

ज्यूं—कोठ ठैंठा नै कठी जावौ।

ठैंठायोड़ौ—देखो 'ठंठायोड़ौ' (२) (रू.भे.)

(स्त्री० ठैंठायोड़ी)

ठै-सं०पु०—१ शास्त्र. २ आकाश. ३ शिष्य (एका.)

वि०—मूर्ख (एका.)

ठै'-सं०पु०—शब्द, आवाज, ध्वनि। उ०—ग्रवळी गत संसार नी, धन लिछमी रै काज। हिचकारी करतां थकां, ठै ठै कूटै छाज।

—जयवांणी

रू०भे०—ठह।

ठैको, ठैग्रको-सं०पु०—१ किसी वस्तु का दूसरी पर आघात करने से उत्पन्न शब्द, आवाज, ध्वनि।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ डंके से नगारे पर चोट लगाने की क्रिया।

क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ।

३ हल्का प्रहार, चोट। उ०—ईसवर तौ नाक री डंडी रै ऊपर बैठो सै सो ग्रणहुती हुतांई झट ठैको देदै।—अज्ञात

क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ।

रू०भे०—ठहकौ।

ठै'रणौ, ठै'रबौ—देखो 'ठहरणौ, ठहरबौ' (रू.भे.)

उ०—हे सहेली पेख देख पार वैरियां रा झंडा एक खिण ही पती ग्रागै नहीं ठै'रिया सो भाग जावै है।—वी.स.टी.

ठैरांण—देखो 'ठहराव' (रू.भे.)

ठैराई—देखो 'ठहराई' (रू.भे.)

ठैराणौ, ठैरावौ—देखो 'ठहराणौ, ठहरावौ' (रू.भे.)

ठैरायोड़ौ—देखो 'ठहरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठै'रायोड़ी)

ठै'राव—देखो 'ठहराव' (रू.भे.)

ठै'रियोड़ौ—देखो 'ठहरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठैरियोड़ी)

ठैंहराणौ, ठैंहरावौ—देखो 'ठहराणौ, ठहरावौ' (रू.भे.)

ठैंहरायोड़ौ—देखो 'ठैंहरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठेहरायोड़ी)

ठो-सं०पु०—१ रक्त. २ शिर, मस्तक।

सं०स्त्री०—३ पीड़ा. ४ मूर्खता, गँवारपन (एका.)

ठोकणौ, ठोकबौ-क्रि०स०—१ प्रहार करना, चोट मारना, पीटना।

मुहा०—ठोक-ठोक नै लैणौ—मार-मार कर लेना अर्थात् किसी वस्तु को जबरन हासिल करना।

२ (दण्ड देने हेतु) लात, घूंसे, डंडे आदि से मारना, पीटना.

३ ऊपर से मार कर भीतर पैठाना, ऊपर से चोट लगा कर धँसाना, गाड़ना। ज्यूं—खीलियां ठोक नै तंबू तांण दियो।

४ हाथ से प्रहार कर के ध्वनि करना।

मुहा०—ठोक बजाय नै लैणौ—डंके की चोट पर हासिल करना, झगड़ कर प्राप्त करना, परीक्षा या जांच कर के लेना. ५ जड़ना लगाना, बांधना, बन्द करना। ज्यूं—सूंवार का किवाड़ ठोक नै बै०। हौ हमैं तौ बा'र नीकळौ नीतर हूँ बा'रै ताळौ ठोक देस्यूं।

६ किसी वस्तु से (डंडे या हाथ से) प्रहार कर के 'खट-खट' ध्वनि करना, खट-खटाना. ७ संभोग करना, मैथुन करना.

८ आहार करना, खाना। उ०—बा'रै मास सांड टोरड़ा, धपटवौ धापियै। ग्रेढ़ा-मेढ़ा ग्राडी र, भेड़ खजांनौ खापियै।—दस

मुहा०—१ माल ठोकणौ—द्रव्य हड़पना, किसी का धन गायब क देना, पकवान खाना।

२ रुपिया ठोकणा—रिश्वत लेना, रुपए हड़पना ।

ठोकणहार, (ठुकणहार), हारौ (हारी), ठोकणियौ (ठुकणियौ)—वि० ।

ठोकवाड़णौ, ठोकवाड़बौ, (ठुकवाड़णौ, ठुकवाड़बौ), ठोकवावणौ, ठोकवावबौ (ठुकवावणौ, ठुकवावबौ), ठोकाड़णौ, ठोकाड़बौ, (ठुकाड़णौ, ठुकाड़बौ), ठोकाणौ, ठोकाबौ (ठुकाणौ, ठुकाबौ), ठोकावणौ, ठोकावबौ (ठुकावणौ, ठुकावबौ)—प्रे०रू० ।

ठोकिग्रोड़ौ, ठोकियोड़ौ, ठोक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ठोकीजणौ, ठोकीजबौ (ठुकीजणौ, ठुकीजबौ)—कर्म वा० ।

ठुकणौ, ठुकबौ—अक० रू० ।

ठोकर—सं०स्त्री०—१ पैर में किसी कड़ी वस्तु के टकराने से लगने वाली चोट ।

क्रि०प्र०—ग्राणी, खाणी, लागणी ।

मुहा०—१ ठोकर उठाणी—दुःख सहन करना, हानि उठाना ।

२ ठोकर खाणी—रास्ते में पड़ी हुई किसी वस्तु या रुकावट के कारण पैर में चोट लगना, धोखा खाना, हानि सहन करना, नुकसान उठाना. ३ ठोकर लगणी (लागणी)—देखो 'ठोकर खाणी' ।

४ ठोकरां खाणी—प्रयोजन-सिद्धि या जीविका ग्रादि के लिए चारों ग्रोर घूमना, ग्रनुभव प्राप्त करना. ५ ठोकरां खातौ फिरणौ—इधर-उधर मारा मारा फिरना, हीन दशा में भटकना, दुर्दशाग्रस्त हो कर घूमना, कष्ट सहना, दुर्गति सहना ।

२ रास्ते में पड़ने वाला उभरा हुग्रा स्थान, उभरा पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुक कर चोट खाता है. ३ किसी गाड़ी ग्रादि को रोकने के लिए पहियों के पास लगाया जाने वाला पत्थर या उपकरण ।

क्रि०प्र०—लगाणी ।

४ वह तेज प्रहार जो पैर के ग्रगले भाग ग्रथवा जूते के ग्रगले भाग से मारा जाय, पैर के ग्रगले भाग से लगाया हुग्रा जोर का धक्का ।

क्रि०प्र०—दैणी, मारणी, लगाणी ।

मुहा०—१ ठोकर जड़णी—देखो 'ठोकर दैणी' ।

२ ठोकर दैणी—पंजे से प्रहार करना, तिरस्कार करना, ग्रवज्ञा करना, ठुकराना. ३ ठोकर मारणी—देखो 'ठोकर दैणी' ।

४ ठोकर लगाणी—देखो 'ठोकर दैणी' ५ ठोकरां में पड़ियौ रैणौ—ग्रपमानित हो कर रहना, वेइज्जत हो कर दिन काटना ।

४ तेज प्रहार, चोट, धक्का. ६ जूते का ग्रग्र भाग. ७ बैल द्वारा खींचा जाने वाला छोटा ठेला जिसमें एक सवारी बैठती हो.

८ कुश्ती का विशेष पेच. ९ ग्राभूषण विशेष (शेखावाटी)

रू०भे०—ठोहर ।

ठोकाक—वि०—खाने वाला, इच्छुक ।

कहा०—डळी रा ठोकाक—कुछ (द्रव्य या खाने की वस्तु ग्रादि) प्राप्त करने या खाने का इच्छुक ।

ठोकाबाटी—सं०स्त्री०—संभोग, मैथुन ।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी ।

ठोकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुग्रा, चोट मारा हुग्रा, पीटा हुग्रा. २ (दण्ड देने हेतु) लात, घूंसे, डंडे ग्रादि से मारा हुग्रा, पीटा हुग्रा. ३ ऊपर से मार कर भीतर पैठाया हुग्रा, ऊपर से चोट लगा कर भीतर धँसाया हुग्रा, गाड़ा हुग्रा. ४ हाथ से प्रहार कर के ध्वनि किया हुग्रा. ५ जड़ा हुग्रा, लगाया हुग्रा, बांधा हुग्रा, बन्द किया हुग्रा. ६ किसी वस्तु से (डंडे या हाथ) 'खट खट' की ध्वनि किया हुग्रा, खटखटाया हुग्रा. ७ संभोग किया हुग्रा, मैथुन किया हुग्रा. ८ ग्राहार किया हुग्रा, खाया हुग्रा ।

(स्त्री० ठोकियोड़ी)

ठोट, ठोठ—वि०—१ मूर्ख, गँवार । उ०—दादू ग्रादर भाव का, मीठा लागै मोठ । बिण ग्रादर व्यंजन बुरा, जीमण वाळा ठोठ ।

—दादू बांणी

२ ग्रपठित, ग्रशिक्षित. ३ ग्रनभिज्ञ, ग्रज्ञ । उ०—ठग कांमेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सैण । चोर न कीजै पाहरू, ब्रहसपती रा वैण ।—बां.दा.

ठोड़—देखो 'ठौड़' (रू.भे.) उ०—तहां ए दून्यां वरग विवर कहतां भुंहिरा निखात ठोड़ तहां जाइ रहवासि कीधा ।—वेलि.

ठोड—सं०पु०—बैलगाड़ी का ग्रग्र भाग ।

ठोडी—सं०स्त्री० [सं० तुंड] चेहरे में होंठ के नीचे का भाग, चिबुक, ठोड़ी, ठुड्डी । उ०—खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी । जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंघाळी ।—ऊ.का.

२ पशुग्रों के मुँह का ग्रग्र भाग । उ०—ठोडी ग्राली ठोड़ में, गोडी सांमी पाळ । ग्रब किण विध पाछी फिरै, किण बिध सांधै छाळ ।

—लू

३ सांप का मुँह । उ०—हाथी भी मिल्या घोड़ा भी मिल्या, रथ पायक नी कोड़ी रे । पिण परवस पड़ियां जोर न लागै, जिमी दवी सांप नी ठोडी रे ।—जयवांणी

ठोबरौ—सं०पु०—फूटा हुग्रा बर्तन ।

ठोर—सं०स्त्री०—१ प्रहार करने की क्रिया, प्रहार । उ०—ठहक्कै कड़ी कंकटां ठोर ठाई । डहक्कै भड़ां बंकड़ां घोर डाई ।—वं.भा.

२ ध्वनि, ग्रावाज. ३ धाक, रौब, ग्रातंक ।

क्रि०प्र०—जमाणी, पटकणी ।

४ देखो 'ठौड़' (रू.भे.)

सं०पु०—५ एक प्रकार का मिष्ठान्न । उ०—बांमण मांगै सीधौ नै बांमणी मांगै ठोर । बाइसा रौ वीरौ म्हारी नथड़ी रौ चोर ।

—लो.गी.

वि०—स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

रू०भे०—ठौर ।

यौ०—ठोरठोरां, ठोरमठोर, ठोर-ठोरां ।

मह०—ठोरड़ ।

ठोरड़—देखो 'ठोर' (मह., रू.भे.)

ठोरठोरां—देखो 'ठोरमठोर' (रू.भे.)

ठोरणो, ठोरबो—क्रि०स०—१ मारना, पीटना। उ०—डारण भुज डंडांह, ठावै मोके ठोरिया। झगमग नग झंडांह, पर खंडां पळके 'पता'।—जुगतीदांन देथो

२ ऊपर से चोट मार कर धँसाना, गाड़ना।

३ प्रहार करना, चोट मारना। उ०—जांगियां ठोर सिंधू गावै जांगड़ा, लड़ण रण खांगड़ा वीर हलकै। भेर तण जठै पीधा अमल भांगड़ा, जो मरद रांगड़ापणो झळकै।
—माधोसिंघ सक्तावत विजयपुर री गीत

ठोरणहार, हारो (हारी), ठोरणियो—वि०।

ठोरवाड़णो, ठोरवाड़बो, ठोरवाणो, ठोरवाबो, ठोरवावणो, ठोरवावबो, ठोराड़णो, ठोराड़बो, ठोराणो, ठोराबो, ठोरावणो, ठोरावबो—प्रे०रू०।

ठोरिग्रोड़ो, ठोरियोड़ो, ठोरयोड़ो—भू०का०कृ०।

ठोरीजणो, ठोरीजबो—कर्म वा०।

ठुरणो, ठुरबो—अक०रू०।

ठोर-पाखर—वि०—१ कटिबद्ध, तैयार. २ पूर्ण स्वस्थ, मजबूत।

ठोरमठोर—वि०—हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, मजबूत। उ०—ग्यांनी तन गोरा ठोरम-ठोरा, चादर में चिळकंदा है। है मदवा हाथी साथण साथी, खाती चाल चलंदा है।—ऊ.का.

रू०भे०—ठोर-ठोरां, ठोर-ठोरां।

ठोरियोड़ो—भू०का०कृ०—१ मारा हुआ, पीटा हुआ. २ ऊपर चोट मार कर धंसाया हुआ, ठोंका हुआ. ३ प्रहार किया हुआ, चोट मारा हुआ।

(स्त्री० ठोरियोड़ी)

ठोरियो—सं०पु० (बहु व० ठोरिया) स्त्रियों या पुरुषों के कान का आभूषण विशेष।

ठोरो—सं०पु०—लाठी, लकड़ी (शेखावाटी)

ठोळी—सं०स्त्री०—हँसी-मजाक। उ०—कुंवरसी आप अर बीठू पाखती एकला ठोळिया हंसियां करता वहे छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

ठोलो—सं०पु०—१ मुट्ठी बंद कर के मध्यमा या तर्जनी अंगुली को इस स्थिति में रखना जिससे उसका पीछे का जोड़ दूसरी अंगुलियों से कुछ आगे निकल आये या ऊपर उठ जाय। यह उठा हुआ भाग या इससे किया जाने वाला प्रहार। उ०—लूण चवीणो गुम गयो, लूम्यां री डोडी, नणदल ठोला देय, वारी ओ लूम्यां री डोडी।
—लो.गी.

क्रि०प्र०—ठोकणो, देणो, मारणो, मेलणो।

मुहा०—१ ठोला खमणा, ठोला खाणा—मातहत रहना, अधिकार में रहना, ताने सहन करना।

२ ठोला देणा—ताने मारना, व्यंग्य कसना।

रू०भे०—ठहोलो, ठोहोलो।

ठोवड़ो—देखो 'ठोड़' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सिंधु परइ सत जोग्रणे, खिवियां वीजळियांह। सुरहउ लोद्र महकियां, भीनी ठोवड़ियांह।
—ढो.मा.

ठोस—वि०—१ जिसके अणु आपस में सटे हुए हों, जो भीतर से खाली या खोखला न हो, जो कठोर हो. २ मजबूत, दृढ़।

ठोसणो, ठोसबो—देखो 'ठूंसणो, ठूंसबो' (रू.भे.) उ०—करकरीय ठोसी वांकुड़ी वींटळी विविध प्रकारि। मुद्रड़ी हीरे जड़ी नई, कनक कंकण सार।—रुकमणी मंगळ

ठोसियोड़ो—देखो 'ठूंसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठोसियोड़ी)

ठोसो—सं०पु०—१ मुट्ठी बंद कर के मध्यमा या तर्जनी अंगुली को इस स्थिति में रखना जिससे उसके पीछे का जोड़ उभर आए। यह उभरा हुआ जोड़ या इस उभरे हुए जोड़ से किया जाने वाला प्रहार।

मुहा०—१ ठोसा खमणा, ठोसा खाणा—देखो 'ठोला खमणा, ठोला खाणा' २ ठोसा देणा—देखो 'ठोला देणा'।

२ मुट्ठी के पीछे के तथा अंगुलियों के उभरे हुए जोड़।

ठोहोलो—देखो 'ठोलो' (रू.भे.)

ठौ—सं०पु०—१ गौतम ऋषि. २ समुद्र. ३ कुल-धर्म।

सं०स्त्री०—४ तरंग, लहर. ५ मर्यादा (एका.)

ठौड़—सं०स्त्री० [सं० स्थान] स्थान, जगह। उ०—१ अर धनवंत मनुस्य था त्यां प्रिथी का पुड़ विवरण करि ऊंडी ठोड़ां सवांरि।—वेलि.टी.

उ०—२ आंबां री आंवली कर नै बीजै दिन एक चेलो आसण री ठौड़ गाडियो नै बदवा दीनी, कह्यो मांहरी ठौड़ उपाड़ी छै त्यों नाथ करै तो थांहरी ठौड़ उखड़ज्यो।—नैणसी

मुहा०—१ ठौड़-कुठौड़—अनुपयुक्त स्थान पर, बुरी जगह, अच्छी जगह, बुरी जगह. २ ठौड़ ठौड़ सूं तोड़ देणो—मार मार कर हड्डी हड्डी तोड़ देना, बहुत ज्यादा मारना. ३ ठौड़ राखणो—मार डालना, काम तमाम कर देना. ४ ठौड़ रैणो—मारा जाना, काम आना, जहां का तहां रह जाना, पड़ा रहना, मर जाना।

रू०भे०—ठोड़, ठोर, ठौर।

यौ०—ठौड़-ठिकांणो, ठोड़ोठौड़।

अल्पा०—ठोवडो।

ठौड़ो-ठौड़—क्रि०वि०—उचित स्थान पर, उपयुक्त स्थान पर, यथा स्थान पर।

ठौर—१ देखो 'ठोर' (रू.भे.) उ०—हाथियां रा पाखर जूड़े, कळहळीया केकांण वै। हड़वड़ आग हींसता, वन दीस आयै दौर वै। एवाळीयो मारग चलै, वाजै नगारां ठौर वै।—रीसाळू री वारता

२ देखो 'ठौड़' (रू.भे.) उ०—साधु संगति अंतर पड़ै, तौ भागेग किस ठौर। प्रेम भक्ति भावै नहीं, यहू मन का मत और।
—दादू वांणी

ठौर-ठौरां—देखो 'ठोर-ठोरां' (रू.भे.)

ठौळ—सं०स्त्री०—हँसी-मजाक, दिल्लगी।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

ठौहर—देखो 'ठोकर' (रू.भे.)

ड

ड—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला में तेरहवां व्यञ्जन जो टवर्ग का तीसरा वर्ण है। यह मूर्धन्य-स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग किञ्चित मुड़ कर कठोर तालु को स्पर्श करता है। यह सघोष-अल्पप्राण है।

ड-सं०पु०—१ दांत. २ दूध. ३ जल. ४ मृत्यु।
सं०स्त्री०—५ आंख. ६ चमेली (एका.)

डंक-सं०पु० [सं० दंश] १ बिच्छू, भिड़ के पूँछ के पीछे का व मधुमक्खी व भौंरे के मुँह का जहरीला कांटा। उ०—१ बीजे तिहां डंक न दंड न दीजै, ग्रहणि मवरि तरु गांन गर। करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गंध मकरंद कर।—वेलि.

उ०—२ कड़पदार आंटाळी साफो अर बिच्छू रा डंक व्है जिसी मूछां लियां वो हरदम करड़ो लट्ठ बण्यो रैवतो।—रातवासो

क्रि०प्र०—मारणो, लगाणो, लागणो।

मुहा०—डंक लागणो—१ बिच्छू, भौंरे आदि का डंक मारना. २ सर्प का काटना।

२ नगाड़ा। उ०—नवकोट सुभट कुळवट निहार, संग्रांम अड़प नृप छळ संभार। हुई धीर सधीरां वीरहक्क, हर सकति डंक डमरू डहक्क।—रा.रू.

३ नगाड़े की ध्वनि। उ०— खगां उलंघां कर खिवै, चींत असंगां चाय। वागां सिंधू वीर डंक, लग्गा रावत आय।—रा.रू.

४ देखो 'डाको' (२) (मह. रू.भे.) उ०—विकट तोपां कठठ डंक त्रंबटा वगा, मह रजी आगळै भांण टळै मगा। लाखां भाखां विचित्र आंय दोळां लगा। जाय छै खत्रीध्रम राख दूजा 'जगा'।
—नीमाज ठाकुर अमरसिंघ रो गीत

५ नखक्षत। उ०—१ चख राता चोळ, काजळ छुआ कपोळ। छातियां ऊपर नखां रा डंक किना हियै उघड़िया भाला रा अंक।
—र. हमीर

उ०—२ नंद री नारी सूं दाखवै नित्तरा, अंक पयोधरां डंक दीयो घरा। मात बैठी अठै लाज आवै मुनां, चौहटै चाल ज्यूं कहूं ये राचना।—रुखमणी हरण

६ डंक मारा हुआ स्थान (बिच्छू, सांप आदि का) ७ सर्प का विषदंत। उ०—अंक छोड प्रोहित उठ्यो, प्यारी रही प्रजंक। हीरां मुरछित पर रही, डसी भुजंगम डंक।—बगसीरांम प्रोहित री वात

८ सांप के काटने की क्रिया, दंशन। उ०—मारवणी नै सचेत करि सदासिव पारवतीजी अलोप होय गया। मारवणी ढोलाजी नै पूछण लागी—लकड़ा भेळा करि चहि क्यूं कीनी ? तद ढोलोजी बोलिया—मारवणी, थे निरजीव हुय गया छा, पीवण सांप रा डंक सूं।—ढो.मा.

९ अनाज, लकड़ी आदि को खोखला कर देने वाला कीड़ा विशेष, घुन। मुहा०—डंक लागणो—अनाज, लकड़ी आदि का कीड़ा लग कर खोखला हो जाना। मनुष्य का किसी रोग विशेष के कारण दिन-प्रति दिन दुर्बल होना।

१० कलम की जीभ. ११ राजस्थान के प्रसिद्ध ज्योतिषी का नाम जिसने राजस्थानी में वर्षा विज्ञान का 'डंक भड्डळी पुराण' नामक ग्रंथ रचा है. १२ डंक ज्योतिष से चलने वाला वंश या इस वंश का व्यक्ति. १३ देखो 'डंकी' (१) (रू.भे.) वि०—अभिमुख ?

उ०—तूं पूरण रस प्रीउड़ा, हुं रसि हीणी रंकि। स्वांमि सुधा भरि हुं पिऊं, डगि-डगि ताहरइ डंकि।—मा.कां.प्र.

डंकणो, डंकबो-क्रि०स०अ०—१ सांप, बिच्छू, बर्र, मधुमक्खी, भौंरा आदि विषैले जीवों का दंशन करना, डंक मारना।

उ०—फुण कीधां खाग डंकतो फोजां, विस घोळतो गुसै वरियांम। काळो नाग छेड़ियो किलमां, जांणियां मंत्र विनां 'जगरांम'।
—नींवाज ठाकुर जगरांमसिंघजी रो गीत

२ अनाज, लकड़ी आदि में घुन लगना. ३ नगाड़ा बजना।

डंकणहार, हारो (हारी), डंकणियो—वि०।

डंकवाड़णो, डंकवाड़बो, डंकवाणो, डंकवाबो, डंकवावणो, डंकवावबो, डंकाड़णो, डंकाड़बो, डंकाणो, डंकाबो, डंकावणो, डंकावबो—प्रे०रू०

डंकिओड़ो, डंकियोड़ो, डंक्योड़ो—भू०का०कृ।

डंकीजणो, डंकीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

डंकदार-वि०—जिसके डंक हो।

डंकरणो, डंकरबो-क्रि०स०अ०—१ ध्वंस करना, नाश करना।
२ क्रोध प्रकट करना, क्रुद्ध होना।

डंकरियोड़ो—भू०का०कृ०—१ ध्वंस किया हुआ, नाश किया हुआ.
२ क्रोधित, क्रुद्ध।
(स्त्री० डंकरियोड़ी)

डंका री पछेवड़ी-सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार का वस्त्र जिसे प्रतिष्ठावान व्यक्ति अपनी पगड़ी के ऊपर बांधते थे (मेवाड़)

डंकि-वि०—१ संहारक, विध्वंसक। उ०—डंकि निसीथ रुक्ख चढ़ि डाकी अंतर दुरग गयो एकाकी।—वं.भा.
२ देखो 'डंकी' (रू.भे.)

डंकिणी—देखो 'डाकण' (रू.भे.)

डंकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ (बिच्छू, सांप, बर्र, मधुमक्खी, भौंरा आदि द्वारा) दंशन किया हुआ, डंक मारा हुआ. २ घुन लगा हुआ, खोखला किया हुआ (अनाज, लकड़ी आदि) ३ ध्वनित (नगाड़ा)
(स्त्री० डंकियोड़ी)

डंकी-सं०पु०—१ छोटा मच्छर। उ०—रात्रि प्रचुर आरोग्य परिमळ, सोयां पुळ सूं पावणी। सांप सळींटा बिच्छू कांटा, माछर डंकी न आवणी।—दसदेव
रू०भे०—डंक।

२ वीर, योद्धा।
वि०—संहारक, विध्वंसक।
रू०भे०—डंकि।
डंकीलो-वि०—जिसके डंक हो।
डंकोळी-सं०स्त्री०—१ ज्वार, बाजरी आदि अनाजों के पौधों का सूखा व पोला डंठल।
डंको-सं०पु० [सं० ढक्का] १ नगाड़ा। उ०—लोक जठै रंको नहीं, नंह संको पर थाट। सोढ़ां जस डंको घुरै, पाधर वंको घाट।
—बां.दा.
क्रि०प्र०—घुरणौ, बाजणौ।
मुहा०—१ डंका री चोट कैं'णौ—सब के सामने, खुल्लमखुल्ला कहना, डंका बजा कर, सबको सुना कर कहना. ३ डंका री चोट सूं—शक्ति से किसी कार्य को करना, जबरदस्ती करना.
३ डंको बजाणौ (घुराणौ)—घोषित करना, हल्ला कर के सब को सुनाना, मशहूर करना, सब पर प्रकट करना. ४ डंको बाजणौ (घुरणौ)—किसी का राज्य या शासन होना, किसी का प्रभाव होना।
रू०भे०—डाको।
२ देखो 'डाको' (२) (रू.भे.) उ०—दुरधर डंका दे वंका द्रढ़ धाया। उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया।—ऊ.का.
डंक्कणी—देखो 'डाकण' (रू.भे.) उ०—हरांमखोर चोर को कुहक्क दे हरावणी। कराळ कंठ कंकनीय डंक्कणी डरावणी।—ऊ.का.
डंग-सं०स्त्री०—१ दोहनी। उ०—करियै न पिसुन भायो कवहिं, कथन खलक यों करि कहै। 'राजेस' रांण इहि मंत तैं, दूध डंग दोहूं रहै।—राजविलास
२ देखो 'डांग' (मह., रू.भे.)
डंगर—देखो 'डांगर' (रू.भे.)
डंगी-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति
(बां.दा.ख्यात)
डंटकड़ो-सं०पु०—सोने या लाख का बना भुजा पर धारण किया जाने वाला एक आभूषण, टड्डा।
डंठळ-सं०पु०—छोटे पौधों की टहनी या शाखा।
रू०भे०—डांठळ।
डंड-सं०पु० [सं० दण्ड] १ किसी अपराध के बदले में अपराधी को पहुँचाई जाने वाली पीड़ा।
क्रि०प्र०—दैणौ, भुगतणौ।
२ किसी भूल-चूक अथवा अपराध के प्रतिकार में लिया जाने वाला द्रव्य, अर्थ-दण्ड, जुर्माना।
क्रि०प्र०—दैणौ, भरणौ, भुगतणौ, भोगणौ, लगाणौ, लैणौ।
३ देखो 'डंडो' (मह., रू.भे.) उ०—सखी अमीणो साहिबो, सूर धीर समरत्थ। जुध में बांमण डंड ज्यूं, हेली वाधै हत्थ।—बां.दा.
४ नगाड़ा बजाने का डंडा। उ०—रण करि फतै अवंक डंड रोहै। जोए कुंवर सीस धड़ जोड़ै।—सू.प्र.
५ एक प्रकार का व्यायाम जो हाथों व पैरों के पंजों के बल से जमीन पर औंधे हो कर किया जाता है। उ०—डंड सहत करि दुरत रवद काचा पळ रोळै। मण बारह मुदगरां त्रणां जेही ऊतोळै।
—सू.प्र.
क्रि०प्र०—काडणा, निकाळणा।
यौ०—डंड-पेल, डंड-बैठक।
६ डंडे के आकार की सेना की एक स्थिति।
यौ०—डंड-व्यूह।
७ देखो 'डंडोत' (रू.भे.) ८ डंडे के आकार की कोई वस्तु.
९ वह डंडा जिस पर ध्वजा बांधी जाती है।
यौ०—ध्वज-डंडा।
१० तराजू की डांडी।
यौ०—तुला-डंड।
११ इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रों में से एक जिनके नाम के कारण विंध्याचल से लेकर गोदावरी नदी के किनारे तक के वन का दंडकारण्य नाम पड़ा. १२ चौबीस मिनट का समय या साठ पल का काल।
डंडक—देखो 'दंडक' (रू.भे.)
डंडकार, डंडकारन-सं०पु० [सं० दंडकारण्य] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से ले कर गोदावरी नदी के किनारे तक फैला हुआ है।
डंडणौ, डंडबौ-क्रि०स०—१ किसी अपराध या भूल-चूक के प्रतिकार में पीड़ा पहुँचाना, सजा देना। उ०—सीरोही धर सहर, धोम अरवद धुजाया। दळे भांण देवड़ां लूटि, डंडि पाय लगाया।—सू.प्र.
२ अपराध या भूल-चूक के बदले में द्रव्य लेना, जुरमाना लेना। उ०—खाग झड़ रांण खुरसांण दळ जिण खंडे। डीडवांणा सहित सहर सांभरि डंडे।—सू.प्र.
डंडणहार, हारौ (हारी), डंडणियौ—वि०।
डंडवाड़णौ, डंडवाड़वौ, डंडवाणौ, डंडवावौ, डंडवावणौ, डंडवाववौ, डंडाड़णौ, डंडाड़वौ, डंडाणौ, डंडावौ, डंडावणौ, डंडाववौ—प्रे०रू०।
डंडिओड़ो, डंडियोड़ो, डंडयोड़ो—भू०का०कृ०।
डंडीजणौ, डंडीजवौ—कर्म वा०।
डांडणौ, डांडबौ—रू०भे०।
डंडध्रत-सं०पु० [सं० दंडभृत्] १ यमराज (अ.मा., नां.मा.)
२ कुम्हार, कुंभकार।
वि०—डंडा चलाने या घुमाने वाला, डंडा रखने वाला।
डंडवत—देखो 'डंडोत' (रू.भे.) उ०—व्रिजराज जुओ व्रिजवासियां, मोहण रा निरखो मता। कमाळी ब्रह्म डंडवत करै, देखण आया देवता।—पी.ग्रं.
डंडव्यूह-सं०पु०यौ० [सं० दण्डव्यूह] सेना की डंडे के आकार की स्थिति विशेष।

वि०वि०—अग्नि पुराण और मनुस्मृति के अनुसार सेना के इस व्यूह में सब से आगे बलाध्यक्ष, बीच में राजा, पीछे सेनापति, दोनों ओर हाथी, हाथियों के पास में घोड़े और घोड़ों की बगल में पैदल सिपाही रहते थे।

डंडव्रत—देखो 'डंडोत' (रू.भे.)

डंडाकार–वि०—१ निर्जन, शून्य। २ दण्ड के आकार का।
उ०—रोही तौ घणी डंडाकार।—जयवांणी

डंडाड़णौ, डंडाड़बौ—देखो 'डंडाणौ, डंडाबौ' (रू.भे.)

डंडाड़ियोड़ौ—देखो 'डडायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डंडाड़ियोड़ी)

डंडाणौ, डंडाबौ–क्रि०स० ['डंडणौ' क्रिया का प्रे०रू०] दंडित करवाना, दूसरे से दंड दिलवाना।
डंडाड़णौ, डंडाड़बौ, डंडावणौ, डंडावबौ—रू०भे०।

डंडायोड़ौ–भू०का०कृ०—दंडित करवाया हुआ, दूसरे से दंड दिलवाया हुआ।
(स्त्री० डंडायोड़ी)

डंडारोपण–सं०पु०यौ०—माघ शुक्ला पूर्णिमा को गाँव के चौहटे में प्राय: होली जलाने के स्थान पर रोपा जाने वाला डंडा।
वि०वि०—देखो 'रोपणी'।

डंडावणौ, डंडावबौ—देखो 'डंडाणौ, डंडाबौ' (रू.भे.)

डंडावियोड़ौ—देखो 'डंडायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डंडावियोड़ी)

डंडाळ–सं०पु०—१ वह शस्त्र जिसको पकड़ने के लिये डंडा लगाया जाता है, भालादि। उ०—डोहै रवदाळ झकोळि डंडाळ। कढ़ि खिज झाळ जिसी करमाळ। अड़ै चहुवै दळ मीर अथाग, खिवै 'अभमाल' चहूंवळ खाग।—सू.प्र.
२ देखो 'डंडोळौ' (मह., रू.भे., डि.को.)

डंडाळी–वि०—१ डंडे के जोर से कार्य करने वाला।

डंडाळौ–वि० [सं० दण्ड+आलुच्] १ डंडा रखने वाला, डंडाधारी. २ वह जिसके डंडा लगा हुआ हो. ३ देखो 'डंडोळौ' (रू.भे.)
उ०—आडा फिरिया खाग उनागां, डंडाळां वागी डकर। आघा हूं उडता भड़ आवै, टूंड तणी लागी टकर।—महादांन महड़ू
उ०— हलकारा आपता फिरै दौवड़ा किनारै। गम-गम घरहरै, नाद जैत रा डंडाळा।—वखतौ खिड़ियौ

डंडाहड़, डंडाहड़ि, डंडाहळ–सं०पु०—१ नगाड़ा, दुंदुभि (डि.को.)
उ०—१ रांण दिस हालिया ठांण आरांण रुख, कोह असमांण चढ़ भांण ढंका। गोम नेजा हलक राग सिंधु गहक, डहक डंडाहड़ां सीस डंका। —र.रू.
२ देखो 'डंडियौ' (रू.भे.)
उ०—लोहां रा वोह सेलां रा घमंका लीजै। खांडां री खाटखड़ि झाटझड़ि डंडाहड़ि खेलीजै।—वचनिका
रू०भे०—डंडीहड़, डंडेहड़, डंडैहड़, डंडोहड़, डांडहड़ि, डांडहड़ो।

डंडि–सं०पु० [सं० दण्डिन्] दण्डधारी (जैन)

डंडिअळ, डंडिअळि–सं०पु०—प्रत्येक चरण में १८, १४ पर यति वाला अंतिम वर्ण गुरु सहित ३२ मात्रा का छंद विशेष (पि.प्र.)

डंडि-खंड–सं०पु०यौ० [सं० दण्डिखण्ड] वह वस्त्र जो चिथड़ों को जोड़ कर बनाया गया हो।

डंडिया गेर–सं०स्त्री०यौ०—होली पर्व का वह नृत्य जो हाथों में पतले डंडे धारण कर के किया जाता है।
वि०वि०—इसमें बहुत से पुरुष जिनमें कुछ स्त्रियों के वेष में होते हैं तथा कहीं-कहीं वेश्याएँ भी इनके साथ होती हैं, मिल कर गोल घेरा बनाते हैं। प्रत्येक के दोनों हाथों में एक-एक पतला व खूबसूरत रंगीन डंडा होता है। घेरे के बीच में ढोल अथवा नगाड़ा बजाया जाता है। नगाड़े या ढोल की ताल पर पैर उठा कर और उसी ताल पर क्रमश: आगे व पीछे वाले नर्त्तक के डंडे से डंडा भिड़ा कर गोल घेरे में लगातार घूमा जाता है। ताल के साथ सब के डंडों के भिड़न्त की आवाज व पावों के घुंघरों की मधुर ध्वनि एक साथ होती रहती है।

डंडियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ सजा पाया हुआ, दण्डित. २ जुरमाना लिया हुआ, दण्डित।
(स्त्री० डंडियोड़ी)

डंडियौ–सं०पु०—१ होली के पर्व पर 'डंडिया-गेर' के उपयोग में लाया जाने वाला डंडा विशेष (अल्पा.) उ०—अगम निगम का ढोल वजत है, सतसंग चोक सजो री। डंडियौ सबद जोड़ संतन सूं, नाथ निव्रती नचौ री।—स्री जियारांमजी महाराज
वि०वि०—देखो 'डंडिया-गेर'।
रू०भे०—डंडाहड़, डंडाहड़ि, डंडाहळ, डंडीहड़, डंडेहड़, डंडैहड़, डंडोहड़, डांडहड़ि, डांडहड़ी, डांडियौ, डींडोळियौ, डीडियौ।
२ देखो 'डंडौ' (अल्पा., रू.भे.)

डंडी–सं०पु० [सं० दंडिन्] १ द्वारपाल, ड्योढ़ीदार.
२ देखो 'डांडी' (रू.भे.) उ०—घट के घमंडी के अफंडी ऊठ डंडी लागे, नीचे किये नीचों कौ अनीचे किये ऊंचों कौ।—ऊ.का.
३ सन्यासियों का एक भेद जो जटा नहीं बढ़ाते, शिर मुंडाते हैं और लकड़ी का एक दण्ड हाथ में रखते हैं. ४ दण्ड देने वाला, सजा देने वाला।

डंडीड़—देखो 'डंडौ' (मह., रू.भे.)

डंडीयौ—देखो 'डंडियौ' (रू.भे.) उ०—ऐसी विध खेलौ होरी! ज्या में चेतन पुरुस मिळौ री। गुरुमुख अंगी पहर गळा में, पतरी पाग वंधौ री। भाव-भगत का वांध अंगोछा, सनमुख डंडीयौ जोरी री।
—स्री हरिरांमजी महाराज

डंडीहड़—देखो 'डंडाहड़ि' (रू.भे.) उ०—खग हुय खड़ांखड़ किरी डंडीहड़, रिण भुइ रीहड़ रत्त रिड़ै। वीहारी वड़ी-वड़ी तूटै घड़ि-घड़ि, अणियां चडि-चडि अब्भ अड़ै।—गु.रू.वं.

डंडूकळी–सं०स्त्री०—काष्ठ का छोटा डंडा (सेखावाटी)
मि०—ठेळी।

टंडूर, डंडूळ–सं०पु०—१ वर्षा की वे बूंदें जो हवा के वेग से छितरा जाती हैं। उ०—१ चलत लोह उत्ताळ, सूळ सर गदा परिघ्घन। चलत सोर साबत, मनहु डंडूर बूंद घन।—ला.रा.
उ०—२ इतरै लाम वघूळौ ग्रावै, कहर कोघ डंडूळ कहावै। छित पर काम धुंघ नभ छावै, पात्र विवेक निजर नहिं पावै।—ऊ.का.
उ०—३ ग्रासाढ़ जांणि डंडूळ ग्रति समै गयण चढ़ियौ गैतूळ।
—रा.रू.
२ एक दैत्य का नाम। उ०—खंड डंडूळ सरीखा खाफर, वळै ग्रगासुर कंस वहि। कितरा दैत कूटिया केसव, कवियण दाखै साच कहि।—पी ग्रं.
३ वात-चक्र, ववंडर. ४ देखो 'डंडाळौ' (मह., रू.भे.)

डंडूळौ—१ देखो 'डंडाळौ' (रू.भे.) २ देखो 'डंडूर'।

डंडेहड़, डंडैहड़—१ देखो 'डंडाहड़ि' (रू.भे.) उ०—१ तिण भांत होळी रा खेल मांहे डंडैहड़ां री घाई लागै तिण भांत लागी।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ यां वग्गी तरवारियां, ज्यां डंडेहड़ फाग। ऊठंगौ सर गोळियां, फिर भड़ लग्गौ ग्राग।—रा.रू.
उ०—३ तरवारि कुबांणां तीरां रै, मातौ भड़ मीर हमीरां रै। गुरजां वोह वांणी गोळी रै, हुविया डंडेहड़ होळी रै।
रावत ग्रचळदास सक्तावत वानसी रौ गीत
उ०—४ ग्रै कहै 'सूर' दारण इता, जरद पोस सेलां जड़ां। वरियांम मुहर सिर विलंद हुं, रमां डंडेहड़ रूकड़ां।—सू.प्र.

डंडोक—१ देखो 'डंडो' (मह., रू.भे.) उ०—जिसड़ै राजाजी रै पाये लागा तिसड़ै राजाजी डंडोका सेति पूठि ऊपर मारण लागा ग्रापरै हाथ सेती, ताहरां रांणीजी स्री जसवंतदेजी ग्राडा हाथ दिया।
—द.वि.
२ देखो 'डंडोत' (रू.भे.)

डंडोत–उभ०लिं० [सं० दंडवत्] पृथ्वी पर डंडे के समान लेट कर किया हुग्रा प्रणाम, साष्टांग प्रणाम्। उ०—१ केवळ परकंमा दीजिये, केवळ डंडोतां होय। केवळ नित नेम कीजिये, केवळ सिमरण सोय।
—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ रिणवास पघारे सुर कज सारे ग्रंग ग्रपारे धांख घरै, परसे मां प्रीतां सीत सहीतां करां रीतां डंडोत करै।—र.रू.
रू०भे०—डंड, डंडवत, डंडव्रत।

डंडोतियो–वि०—दण्डवत करने वाला।

डंडोळ—देखो 'डंडोळौ' (रू.भे.)

डंडोळौ–सं०पु०—नगारा, दुंदुभि।
मुहा०—डंडोळौ पीटणौ (फिरणौ)—ढिंढ़ोरा पीटना, घोषणा करना।
रू०भे०—डंडाळौ, डंडूळौ।
मह०—डंडाळ, डंडूर, डंडूळ, डंडोळ।

डंडोहड़—देखो 'डंडाहड़' (रू.भे.) उ०—लोहां जांण लुहार का, घण घड़ाथै। जांण रमै रिण गेहरिया, डंडोहड़ हाथै।—वी.मा.

डंडो–सं०पु० [सं० दंड] १ लकड़ी या बांस का कुछ लम्बा टुकड़ा जो हाथ में छड़ी के रूप में रखा जाता है। उ०—वाघिया नै नीचै ग्रांगणै सुवाय नै एक मजबूत लट्ठ उणनै सूंप दियौ ग्रर म्हूं खुद ई एक मोटो छुरो ग्रर डंडो सिरांणै ले'र ऊपर सोयग्यौ।—रातवासो
२ वांस या लकड़ी का लम्बा टुकड़ा।
क्रि०प्र०—खाणौ, चलाणौ, मारणौ।
मुहा०—१ डंडा खाणा—डंडे की मार सहना। डंडो पटकणौ, डंडो वजाणौ—घमकी देना, डांट देना।
३ किसी स्थान को चारों ग्रोर से घेरने वाली कम ऊंची दीवार या ग्रहाता।
क्रि०प्र०—उठाणौ, खींचणौ।
मुहा०—डंडो खींचणौ—चहारदीवारी उठाना।
४ देखो 'डांडो' (रू.भे.)
ग्रल्पा०—डंडियो, डंडोकियो।
मह०—डंड, डंडीड़, डंडोक, डांड।

डंफर–सं०पु०—ग्राडंबर, बाह्य उपाङ्ग। उ०—डहक्यौ डंफर देख, वादळ थोथो नीर विन। हाथ न ग्राई हेक, जळ री बूंद न जेठवा।
—जैतदांन वारहठ

डंब–सं०पु०—ढोंग, ग्राडम्बर, पाखण्ड। उ०—घावै जाळंदरी पाव जोत रा घारणा घारै, वैरियां वतावै संज मौत रा बैताळ। जत्रां कत्रां सारा डंब तोत रा वलाय जावै, ताळै ग्रदोत रा राजा घुरावै त्रंबाळ।—चिमनजी ग्राढ़ो

डंबक-डील–सं०पु०—बेडौल शरीर। उ०—हुवौ वांगो, मुंगो नै गूंगो रे, करै डंबक-डील हुरदंगो रे।—जयवांणी

डंबक-डोळौ–वि०यौ०—उभरा हुग्रा। उ०—जीव ग्रांघौ हुवै करै बोळौ रे, ग्रांख में फूलौ डंबक-डोळौ रे।—जयवांणी

डंबणौ, डंबवौ–क्रि०ग्र०—लटकना।

डंबर–सं०पु० [सं०] १ वैभव, गौरव। उ०—व्रज भाखा मुरघर विमळ, ग्रादि करे उच्चार। देस-देस भाखा डंबर, वरणू करि विस्तार।
—सू प्र.
२ वादल, घटा। उ०—प्रभातां गह डंबरां, सांभां सीळा वाव। डंक कहै सुण भड्डळी, काळां तणा सभाव।—भड्डळी पुरांण
३ धूम्रां। उ०—सुगंध गंघसार एण सार मेघसार ए। सुवास ग्रंवरे लुवांन डंबरे निसार ए।—रा.रू.
४ सेना, दल। उ०—१ गजबंघ कमघ्घ निहट्टा, तव साह निवाज पळट्टा। दखणी गजवंघ विडारै, गौ 'ग्रंवर' डंबर हारै।—गु.रू.वं.
उ०—२ दखणीस डंबर खरळ सवकर, थेट मोगर थंड ए।—गु.रू.वं.
५ समूह, यूथ। उ०—१ उडी रज डंबर ग्रंबर गोम, विहंगम को पर वज्जिय व्योम।—ला.रा.

उ०—२ माग न लाधै भांण रथ, रज डंवर घेरी । माहै अग मूझै मरै, नह लभ्भै सेरी ।—द.दा.

मि०—गोट (६)

६ उमंग, जोश । उ०—प्रथम लाख समपियौ, कवी बारठ 'संकर' कर । 'लखपति' बारठ लाख, दीध दूजौ करि डंवर ।—सू.प्र.

७ वन, जंगल । उ०—राज सिवाग्रो सिध करी, वळि वहला मिळ-ज्योह । डूंगरजीवी जीवज्यौ, डंवर ज्युं फळज्योह ।—ढो.मा.

८ ध्वनि, आवाज । उ०—घुर-घुर आसाढ़ां अंवर घरहरियौ । घोरा डंवर में संवर-घर-हरियौ ।—ऊ.का.

९ प्रवाह । उ०—सखियां तणौ समाज ललित गहणा नीलंवर । किसतूरी केवड़ा डहक परमळ घणा डंवर ।

—वगसीरांम प्रोहित री वात

मि०—डोरौ, (११) घोरौ (३)

१० चकाचौंध । उ०—गज भिड़ज जरी जवहर गरक, दीप मुसालां डंवरां । उण वार चमर होतां 'अभौ' गज चढ़ियौ घारै गुमर ।

—सू.प्र.

११ सुगन्ध, महक । उ०—१ पहरि तास पौसाक, भळळ जवहर घर भूखण । अंवर गुलावां अतर, घणा करि डंवर विरद घण ।

—सू.प्र.

उ०—२ फौहारू की पंकति जळ-चादरू का उफांण । जळ-चादरू की घरहर मांनू छिल्लै महिरांण । खीखंडू का डंवर समीर सें झोला खावै । मळियागिर के भोळै भूलि पंखेसर मिणधर भुजंग आवै ।

मि०—डोरौ (११) —सू.प्र.

१२ शान-शौकत, ठाट-बाट. १३ लाली. १४ आच्छादन, तंवू ।

वि०—१ अश्रुपूर्ण, सजल । उ०—आंखड़ियां डंवर हुई, नयण गमाया रोय । से साजण परदेस मई, रह्या विडांणा होय ।—ढो.मा.

२ आच्छादित । उ०—तार गुल डंवर रूप मैं तारां । विहद सिंगार कीध जिण वारां । —सू.प्र.

३ लाल. ४ घना, गहरा । उ०—डीगा वड़ छाया डंवर, लूंवां जमी लगाय । ज्यां तळ केही राजवी, झोख रीझ कर जाय ।

—पनां वीरमदे री वात

५ तरवतर । उ०—सूरजमल 'डूंगा' सहत, केसरिया डंवर करै । कटकां सिघाळ 'सेरा' कमंध, घण देवाळ आजै घरै ।—पहाड़खां आढ़ौ

रू०भे०—डंमर, डमर, डमार, डम्मर, डांमर ।

डंवाड़णौ, डंवाड़वौ—देखो 'डंवावणौ, डंवाववौ' (रू.भे.)

डंवाड़ियोड़ौ—देखो 'डंवावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डंवाड़ियोड़ी)

डंवाणौ, डंवावौ—देखो 'डंवावणौ, डंवाववौ' (रू.भे.)

डंवायोड़ौ—देखो 'डंवावियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डंवायोड़ी)

डंवावणौ, डंवाववौ—क्रि०स०—लटकना । उ०—पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गूहली दीधी । मोती तणा झूवखा डंवाव्या, मांहि पद्मराग पटळ लंवाव्या ।—व.स.

डंवाड़णौ, डंवाड़वौ, डंवाणौ, डंवावौ—रू०भे० ।

डंवणौ, डंववौ—अक०रू० ।

डंवावियोड़ौ—भू०का०कृ०—लटकाया हुआ ।

(स्त्री० डंवावियोड़ी)

डंवियोड़ौ—भू०का०कृ०—लटका हुआ ।

(स्त्री० डंवियोड़ी)

डंभ—१ देखो 'डिंभ' (रू.भे.) (ह.नां. पाठान्तर)

२ देखो 'डांम' (रू.भे.) उ०—पांडु रोग सोफोदर सही, तीजौ रोग जळोदर लहि । च्यारे डंभ चिकित्सा जांणि, ज्युं कीजै त्युं कहुं वखांणि ।—ध.व.ग्रं.

डंभण—सं०पु० [सं० दम्भनं] पाखंड कर के दूसरे को ठगने वाला (जैन)

डंभणया, डंभणा—सं०स्त्री० [सं० दम्भना] १ ठगाई (जैन)

२ माया (जैन) ३ कपट, छल (जैन)

डंभरणौ, डंभरवौ—क्रि०अ०—आनन्द से फैलना, प्रफुल्ल होना, उमंग में आना ।

डंभरियोड़ौ—भू०का०कृ०—आनन्द से भरा हुआ, प्रफुल्लित ।

(स्त्री० डंभरियोड़ी)

डंमर—सं०पु०—१ जोश । उ०—कर डंमर गड़ वरड़ कर घड़ । लुड़त तड़फड़ जुटत लड़थड़ ।—सू.प्र.

२ ऐश्वर्य, वैभव, ठाट । उ०—डहकियौ साह देखे डंमर, घणूं भेद न लहै घणा । त्रण लाख दुसह भांजै तिसा, त्रण हजार 'गजवंध' तणा ।—सू.प्र.

३ देखो 'डंवर' (रू.भे.)

वि०—परिपूर्ण, पूर्ण, आच्छादित । उ०—दुति वौह सरु रूप में डंमर, मदन फौज नीसांण मनोहर ।—सू.प्र.

डंवांडोळ—देखो 'डांवाडोळ' (रू.भे.)

डंस—सं०पु० [सं० दंशं] १ काटने वाला वडा मच्छर, डांस.

२ ईर्ष्या, डाह ।

उ०—सोना नइ सुतार पणि, त्रागड वागड वंस । तेली तंबोळी वळी, दोखी उपरि डंस ।—मा.कां.प्र.

डंसण—सं०पु० [सं० दंशन] दंशना या काटना क्रिया ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

डंसणौ, डंसवौ—देखो 'डसणौ, डसवौ' (रू.भे.)

डंसियोड़ौ—देखो 'डसियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डंसियोड़ी)

ड—सं०पु०—१ महादेव. २ महादेव के गण. ३ डमरू. ४ अर्जुन. ५ ताड़ वृक्ष ।

सं०स्त्री०—६ वृद्धावस्था. ७ ध्वनि. ८ गाय (एका.)

डइयां—देखो 'डायां' (रू.भे.)

डउंडि, डउंडी—देखो 'डूंडी' (रू.भे.) उ०—१ नीसांण वाजि नरगा नफेरि, रउद्र गति डउंडि भरहरी भेरि। मल्ग्राड़ि सेन हालिया मसत्त, गाद्यर जांगि फाटा सपत्त।—रा.ज.सी.

उ०—२ डउंडी दमांम नीसांण नद्द, संप्रत्त जांणि घण मेघ सद्द।

—रा.ज.सी.

डक—सं०स्त्री०—१ नक्कारा बजने की ध्वनि। उ०—ठहक डक ग्रंब-ग्यां फायरां ठेलवा, क्रोध वक कठीनै नाग काळा। ग्राय रूकां रचक लीयं कुण ग्राहाड़ा, वगां रण भचक 'कुसिग्राळ' वाळा।—गुलजी ग्राढो

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—घाव डक त्रमक तोपां सबद गरहरं, दुजड़ भड़ उरड़ काडण दखूंदी। रोद छरहरी लागी करी ऊपरा, सैर रो सैर जीमगयो सूदो।—हरिसींघ री गीत

३ देखो 'डाको' (रू.भे.) ४ एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

रू०भे०—डडक्क, डग।

डकचूक—देखो 'डाकचूक' (रू.भे.) उ०—घक्क घक्क रुधक्क खळक धुग्रो। हक वक्क जिंदो डकचूक हुग्रो।—पा.प्र.

डकडक—सं०स्त्री० (ग्रनु०) १ हँसने की क्रिया या ध्वनि।

२ छोटे मुंह के पात्र से द्रव पदार्थ उड़ेलते समय होने वाली ध्वनि या ग्रावाज. ३ किसी पेय पदार्थ को तेजी से पीते समय होने वाली ध्वनि।

रू०भे०—डकडुक, डगडग।

डकडकणौ, डकडकबौ—क्रि०ग्र०—ध्वनि होना (हँसते समय, पात्र से द्रव पदार्थ उड़ेलते समय या पेय पदार्थ को तेजी से पीते समय)

उ०—१ टकडकै भैरवी बजावै रुद्र डाक।

—नींवाज ठाकुर सुरतांणसिंघ री गीत

उ०—२ धूपिया धकै चिटकां घिरत धकधकै, वारुणी डकडकै तरफ वांमी। वकवकै वीर जोगण छकै दोय वखत, भकभकै हुतासण हेत भांमी।—मे.म.

डकडक्कणौ, डकडक्कबौ, डखडखणौ, डखडखबौ—रू.भे.

डकडकि, डकडकी—सं०स्त्री०—१ कंपकंपी, थर्राहट। उ०—नांखै निसास नांम सुण, तावयां डकडकी थाय। ग्रजरे ग्रस्व उड़ावतां, ग्रर जिय ग्रंबर जाय।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०प्र०—ग्राणी, छूटणी।

२ हँसने की ध्वनि. ३ तंग मुंह के से पात्र से द्रव पदार्थ उड़ेलते समय होने वाली ध्वनि. ४ पेय पदार्थ को तेजी से पीते समय होने वाली ध्वनि या ग्रावाज।

रू०भे०—डगडगाटी, डगडगारी, डगडगि, डगडगी।

डकडक्कणौ, डकडक्कबौ—देखो 'डकडकणौ, डकडकबौ' (रू.भे.)

उ०—दोउ ग्रोर दुवाह यौं ग्रति वाह ग्रछक्कै। डेरां डाहल डिडिमी डकडक्कै।—वं.भा.

डकडुक—देखो 'डकडक' (रू.भे.) उ०—घकध्वक ग्रोण चंडी रत-धार। डकडुक पीवत लेत डकार।—सू.प्र.

डकणौ, डकबौ—'डाकणौ' क्रिया का ग्रक० रू०।

डकर—सं०स्त्री० [सं० डात्कारः] १ जोश, ग्रावेश। उ०—१ खत लिखिया दिस खांन डकर धारै वजराई। कहर गरीवां करण मकर छाडो मुगळाई।—सू.प्र.

उ०—२ डकर करै ग्रग्राजियो, चांमर सीस चढ़ाय। धेंधींगर करतो घसां, घसियो जळ में जाय।—गजउद्धार

२ ग्रातंकपूर्ण ग्रावाज। ३ जोशीली ग्रावाज. ४ वीर ध्वनि।

उ०—डरर डांफर डमर ग्रतर भरतो डकर, ग्रत मकर वयण कहतो ग्रबूभा। पाट रखवाळजै 'माल' हर पचाळै, दाख खगवाट रिड़माल दूजा।—पहाड़खां ग्राढ़ो

५ दहाड़. ६ धाक, भय, ग्रातंक, डांट।

मुहा०—१ डकर में राखणी—धाक रखना, रौब से काम लेना, डाँट ग्रौर दबाव में रखना. २ डकर देणी—डाँट देना; फटकारना.

७ धमकी. ८ ध्वनि, ग्रावाज। उ०—ग्राडा फिरिया खाग उनागां डंडाळां वागी डकर। ग्राघा हूं ऊडता भड़ ग्रावै, टूंड तणी लागी टकर।

—महादांन महड़ू

९ दबाव, रौब।

रू०भे०—डक्कर, डाकर, डाक्र।

डकरणौ, डकरबौ—देखो 'डाकरणौ, डाकरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ डायण चढ़ी जियां परि डकरै। वांणी विकट भयंकर वकरै।—सू.प्र.

उ०—२ कदमेस भड़ै रण लोह करै, विफरै होकरड़ै डकरै वकरै।

—सू.प्र.

डकराणौ, डकराबौ—क्रि०स० ('डकरणौ' क्रिया का प्रे०रू०) भयभीत करना, डराना, धाक जमाना। उ०—तरै उण लुगाई कह्यौ, 'कंवरजी! मांरी ग्रड़ी कांई फोड़ियो? इसड़ा तरवारिया छो तौ मेवाड़ जेजियौ लागै छै सु परो छोड़ावो।' तितरै पाखती ऊभा था तिणां उण नूं डकराई, कह्यौ 'तूं बोल मती।'—नैणसी

डकराणहार, हारौ (हारी), डकराणियौ—वि०।

डकरायोड़ो—भू०का०कृ०।

डकराईजणौ, डकराईजबौ—कर्म वा०।

डकरणौ, डकरबौ—ग्रक०रू०।

डकरवाड़णौ, डकरवाड़बौ, डकरवाणौ, डकरवाबौ, डकरवावणौ, डकरवावबौ, डकराड़णौ, डकराड़बौ, डकरावणौ, डकरावबौ—रू०भे०।

डकरायोड़ो—भू०का०कृ०—भयभीत किया हुग्रा।

(स्त्री० डकरायोड़ी)

डकरावणौ, डकरावबौ—देखो 'डकराणौ, डकराबौ' (रू.भे.)

उ०—डाकी डाकियां जिऊं चौड़ै डकरावै, ग्रांगमणी नह ग्रावै। कम-धज हेक तनै 'केहरिया', साची वात सुहावै।—पहाड़खां ग्राढ़ो

डकरावियोड़ो—देखो 'डकरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० डकरावियोड़ी)

डकरियोड़ो—देखो 'डाकरियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डकरियोड़ी)

डकरेल—वि०—बलवान, बहादुर।
सं०पु०—सिंह।

डकळ-डकळ—सं स्त्री० (अनु०) १ जल पीते समय गले से निकलने वाली ध्वनि विशेष। उ०—हां, तिस लागती जणी तींगळयोड़ी हांडी मांयली पांणी री मोटी लोटी भर'र ऊभाई डकळ-डकळ पी लेवता। —वांणी
२ हँसने की क्रिया या ध्वनि।
मि०—डकडक।

डकाणो, डकाबो—क्रि०स० ('डकणी' क्रिया का प्रे०रू०) छलांग भराना, फंदाना, कुदाना। उ०—प्रोहित इण प्रकार घोड़ो डकायौ हीरां का महल कै भरोखै नीचे आयौ।—बगसीरांम प्रोहित री वात
मुहा०—घोड़ी डकाणी—घोड़े द्वारा घोड़ी के गर्भाधान कराना।

डकायोड़ो—भू०का०कृ०—कुदाया हुआ।
(स्त्री० डकायोड़ी)

डकार—सं०स्त्री०—पेट की वायु का उद्गार जो कंठ द्वारा शब्द करता हुआ मुँह से बाहर निकल जाता है। उ०—धकघक स्रोण चंडी पत्र धार। डकडुक पीवत लेत डकार।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—आणी, खाणी, लैणी।
मुहा०—डकार भी नी लैंणी—किसी का द्रव्य लेकर न देना। कोई काम कर के न बताना।
अल्पा०—डडकारो।

डकारणो, डकारबो—क्रि०अ०स०—१ पेट से वायु का उद्गार निकलना, पेट की वायु को मुंह से निकालना, डकार लेना। २ किसी का द्रव्य ले लेना, हड़प लेना, हजम करना, पचाना।
मुहा०—डकार जाणी—किसी का द्रव्य हड़प लेना, हजम कर लेना, खा जाना।

डकारियोड़ो—भू०का०कृ०—१ डकार लिया हुआ। २ किसी का दृव्य हड़प किया हुआ।
(स्त्री० डकारियोड़ी)

डकावणो, डकावबो—देखो 'डकाणी, डकाबो' (रू.भे.)

डकावियोड़ो—देखो 'डकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डकावियोड़ी)

डकियोड़ो—भू०का०कृ०—छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ।
(स्त्री० डकियोड़ी)

डकैत—सं०पु०—जबरदस्ती माल छीनने वाला, लुटेरा।

डकैती—सं०स्त्री०—जबरदस्ती माल छीनने का काम, डाका मारने का काम, लूटमार।

डको—सं०पु०—१ वाद्य विशेष. २ देखो 'डाको' (रू.भे.)
उ०—फिरंगियां चहुं तरफां फिरै, काळ रूप अरबा चकां। काढ़िया खगां किलकां करै, डका ढोल तबलां डकां।—सू.प्र.

डक्क—देखो 'डक' (रू.भे.) उ०—१ दोळ ओर दुव्वाह यौं असि वाह अछक्कं। डेरां डाहल डिंडिमी डक्कां डकडक्कं।—वं.भा.
उ०—२ जहां तहं डाकिनी डिंडिम डक्क। जहां तहं धारन की धमचक्क।—वं.भा.

डक्कण, डक्कणी—सं०स्त्री०—१ कंपकंपी, थर्राहट।
क्रि०प्र०—आणी, छूटणी।
२ देखो 'डाकण' (रू.भे.)

डक्कर—सं०स्त्री०—१ छोटे बच्चों के खेलने का डंडा।
२ देखो 'डकर' (रू.भे.)

डक्का—सं०स्त्री० [सं०] शिव का वाद्य, डमरू।

डक्र—देखो 'डकर' (रू.भे.)
उ०—द्रीवछड़ द्रीवछड़ अक पग धरंती, कुळट नट-वटा ज्यूं मक्र करती। काळका-चक्र ज्यूं नावड़ी केवियां, भड़ां सिर काळमी डक्र भरती।—गिरवरदांन सांदू

डखडखणो, डखडखबो—देखो 'डकडकणी, डकडकबो' (रू.भे.)
उ०—चोळ वदन बहुवांण, मिलक अढ़ारै मारिया। सुजड़ी आयौ सोभड़ौ, डखडखती दीवांण।—नैणसी

डगंबर—देखो 'दिगंबर' (रू.भे.)

डग—सं०स्त्री०—१ हाथी के पिछले दोनों पैरों में बांधी जाने वाली रस्सी। उ०—डग बेड़ियां दुलद्दु, लगां चहुं वां पग लंगर। आकासी सारसी, करै अग्राज भयंकर।—सू.प्र.
वि०वि०—इस रस्सी को हाथी के पैरों में पहने हुए धातु के कड़ों से बांध देते हैं और रस्सी को वापिस उलट कर बंधी हुई रस्सी पर ही लपेट देते हैं जिससे हाथी चल तो सकता है अर्थात् वह डग भर सकता है किन्तु भागने में समर्थ नहीं हो सकता।
२ हथकड़ी। उ०—'सेखा' नै पकड़'र असुरां, डग बेड़ी भट डाळी। मेहाई वह सम्मळी, कुलफां पांव कढ़ाली।
—हिंगळाजदांन जागावत
यौ०—डग-वेड़ी।
३ पांव को एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर रखने के बीच की दूरी, उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े, पैंड।
क्रि०प्र०—दैणी, भरणी।
४ चलने में आगे की ओर पैर रखने का भाव, कदम, पैंड।
उ०—१ भीनें कांचळियै धम धम डग भरती। धसलां देतोड़ी धम-धम पग धरती।—ऊ.का.
उ०—२ अगम पंथ इण इसक रै, निमै ठाकरी नांहि। डग ग्वाळणियां डोलियौ, सुरपुर पत व्रिज मांहि।—र. हमीर
क्रि०प्र०—दैणी (दैणो), भरणी (भरणो)।
मुहा०—डग भरणी (भरणो)—चलने में आगे की ओर पैर रखना, कदम भरना।

५ पैर, पांव। उ०—डगां घीसता सांकळां सूत डोरा। घरा यूं खर्णै ज्यूं वर्णै खेत घोरा।—वं.भा.
रू०भे०—डगल, डग्ग।
६ देखो 'डक' (४) (रू.भे.)
डगड़—देखो 'डगरी' (मह., रू.भे.)
डगड़ो—देखो 'डगरौ' (रू.भे.)
डगडग—देखो 'डक-डक' (रू.भे.) उ०—बोतल तो डगडग करै, प्यालो करै पुकार।—डूंगजी जवारजी री पड़
डगडगाटी—देखो 'डकडकी' (रू.भे.)
डगडगाणौ, डगडगावौ–क्रि०अ०—इधर से उधर हिलना, डगमगाना।
डगडगायोड़ौ–भू०का०कृ०—डगमगाया हुआ।
(स्त्री० डगडगायोड़ी)
डगडगारी—देखो 'डकडकी' (रू.भे.)
डगडगारौ–सं०पु०—बक-झक, बकवाद।
कहा०—डोकरो मुवौ नै डगडगारौ मटग्यौ—वृद्ध की मृत्यु हुई और बक-झक मिटी।
डगडग, डगडगी–सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
रू०भे०—डुगडुगी।
२ इस वाद्य की ध्वनि. ३ देखो 'डकडकी' (रू.भे.)
उ०—अित्यू सीमा सी रावो विसमा सी। भीमा भावी सी भीमा निस भासी। तूहिन कंठीरव तन कुंजर तावै। डगडगि चढ़ियोड़ा मरिया डुसकावै।—ऊ.का.
डगडोलणौ, डगडोलवौ–क्रि०अ०—हिलना-डुलना, डगमगाना।
डगडोलियोड़ौ–भू०का०कृ०—डगमगाया हुआ।
(स्त्री० डगडोलियोड़ी)
डगणौ, डगवौ—देखो 'डिगणौ, डिगवौ' (रू.भे.)
उ०—ऊपाड़ै आवू जिती, पर निंदा री पोट। पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट।—बां.दा.
डगमगणौ, डगमगवौ–क्रि०अ०—१ स्थान छोड़ना, भयभीत होना।
उ०—मसांहरणी छोडा विसाहरण, टमक कीधो ताळ। सिसिपाळ बोलई, नहीं तोलई, डगमग्या दिगपाळ।—रुकमणी मंगळ
२ कंपायमान होना, थर्राना। उ०—तूं क्यूं ए मैड़ी वैरण डगमगी, थारी लगी ए धरम री नीम। एक दिन राजन खड़्या ए चिणावता।
—लो.गी.
३ हिलना-डुलना, डगमगाना, डांवाडोल होना।
उ०—छक छिव री छोळां छिली, पीली प्रेम दद्ध पाज। मगर उथेलै डगमगी, जांणक मदन जिहाज।—र. हमीर
डगमगा'ट–सं०पु०—कंपायमान होने का भाव, थर्राहट।
उ०—अर मन मांहे डरै छै जु महादेवजी कांयुं कहसी। सु इसो डगमगा'ट करै छै।—वेलि. टी.
रू०भे०—डिगमग, डिगमगा'ट, डिगमगाहट, डिगमिग, डिगमिगा'ट डिगमिगाहट।

डगमगाणौ, डगमगावौ–क्रि०अ०स०—१ इधर से उधर हिलना, डगमगाना, डोलना।
डिगमगणौ, डिगमगवौ, डिगमिगणौ, डिगमिगवौ—रू०भे०।
२ हिलाना-डुलाना, डोलाना।
डगमगावणौ, डगमगाववौ, डमगावणौ, डमगाववौ, डिगमगाणौ, डिगमगावौ, डिगमगावणौ, डिगमगाववौ, डिगमिगाणौ, डिगमिगावौ
—रू०भे०
डगमगायोड़ौ–भू०का०कृ०—डगमगाया हुआ।
(स्त्री० डगमगायोड़ी)
डगमगावणौ, डगमगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे.)
डगमगावियोड़ौ—देखो 'डगमगायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डगमगावियोड़ी)
डगमगियोड़ौ–भू०का०कृ०—हिला-डुला हुआ, डोला हुआ, डगमगाया हुआ।
(स्त्री० डगमगियोड़ी)
डगर–सं०पु०—१ पंथ, मार्ग, रास्ता। उ०—होय विरंगी नार, डगर बिच हे क्यूं खड़ी। कांई थारो पीहर दूर, कांई घरां सासू लड़ी।
—मीरां
२ चाकर, सेवक (ह.नां.)
अल्पा०—डगरियौ।
३ देखो 'डगरौ' (मह., रू.भे.)
डगरीयौ—देखो 'डगर' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'डगरौ' (अल्पा., रू.भे.)
डगरौ–सं०पु०—१ वृद्ध या दुर्बल ऊँट।
रू०भे०—डगळौ।
२ अघटित बड़ा पत्थर. (मि० टोळ, ३) ३ काष्ठ का चौकोर टुकड़ा.
४ एक प्रकार का मिट्टी का बना बड़ा बरतन (शेखावाटी)
रू०भे०—डगड़ौ, डगळौ।
मह०—डगड़।
अल्पा०—डगरियौ।
४ देखो 'डगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सांप गया सहनांण को, सब मिळ मारै लोक। दादू ऐसा देखिये, कुळ का डगरा फोक।
—दादू बांणी
डगळ–सं०पु०—१ शून्य। उ०—दीसै जंगळ डगळ, जेथ जळ वगळां चाढ़ै। अन्न हूंता गळ दियै, गळा हूंता गळ काढ़ै। मच्छ गळागळ मांहि, ग्वाळै व्है गळी दिखाळै। गळी डाळ फळ गजै, गजी डाळां फळ गाळै। न गळै असुर सुर नाग नर, आपण चै कुळ ऊधरै। अनंत रै हाथ मंगळ अमंगळ, कई भगळ विद्या करै।
—महात्मा अलूनाथ
२ देखो 'ढळी' (मह., रू.भे.) उ०—हाकाहाक हुई, कोहक माची, जांणे चिड़ियां डगळ पड़ि।—पनां वीरमदे री वात

वि०—निर्जन।

डगल—देखो 'डग' (३, ४, ५) (रू.भे.) उ०—ताहरां डगला गिणतु मूह्नि मेहेलि बीजि देस। पगलां लागु गिणवांनि तें मांनि बोल नरेस।—नळाख्यांन

डग-लग-सं०पु०यौ०— कंकड़, पत्थर (जैन)

डगळियौ—देखो 'ढळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डगली-सं०स्त्री०—रूई भरा हुआ बदन पर धारण करने का एक वस्त्र विशेष, अंग-रक्षिका। उ०—थरमी थिरवयौ रंग परि, डगली आवी दाय। ठाढ़ौ वाजै हो प्रिया, तो लीजै अंग लगाय।—व.स.

डगलूं-सं०पु०—देखो 'डगली'। उ०—वेउल थ्या डगलूं न दिइ, चिंतातुर नीपाय। लेई आवै लाख तूं, करवा अेह उपाय।
—मा.कां.प्र.

डगळौ—देखो 'ढळौ' (रू.भे.)

अल्पा०—डगळियौ।

मह०—डगळ।

मि०—डळौ।

२ देखो 'डगरौ' (रू.भे.)

डगलौ-सं०पु०—देखो 'डगली' (मह., रू.भे.) उ०—हीमाळउ हाली वळइ, हुई हाल कल्लोळ। डगला डोटी पहिरीइ, मुखि भरीइ तंबोळ।
—मा.कां.प्र.

डगाड़णौ, डगाड़बौ—देखो 'डिगाणौ, डिगाबौ' (रू.भे.)

डगाड़ियोड़ौ—देखो 'डिगायोड़ौ' (रू.भे.)

डगाणौ, डगाबौ—देखो 'डिगाणौ, डिगाबौ' (रू.भे.)

डगायोड़ौ—देखो 'डिगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डगायोड़ी)

डगावणौ, डगावबौ—देखो 'डिगाणौ, डिगाबौ' (रू.भे.)

डगावियोड़ौ—देखो 'डिगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डगावियोड़ी)

डगियोड़ौ—देखो 'डिगियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डगियोड़ी)

डगौ—देखो 'डागौ' (रू.भे.) उ०—मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूंपळ काढै। नेसावरिया डगा, घणेरा घुरड़ै वाढै।—दसदेव

डग्ग—देखो 'डग' (रू.भे.)

डचकण-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जो दिन भर अपना शिर हिलाता रहता है (अशुभ, शा.हो.)

डचकौ-सं०पु०—बलगम का लौंदा।

रू०भे०—डुचकौ

अल्पा०—डचियौ।

डचक्कणौ, डचक्कबौ-क्रि०स०—निगलना। उ०—नाच न चुक्कैं डकिनी ले डाच डचक्कैं।—वं.भा.

डचळ-डचळ-सं०स्त्री० (अनु०) जल्दी-जल्दी भोजन करने की क्रिया।

मि०—डकळ-डकळ।

डचली-सं०स्त्री०—१ कुत्ते का तेजी के साथ किसी खाद्य पदार्थ में जबरन मुंह मारने की क्रिया, झपटी।

क्रि०प्र०—मारणी।

२ शीघ्रता से भोजन करने का भाव।

क्रि०प्र०—मारणी।

डचाडच-सं०स्त्री० (अनु०) १ शीघ्रता से भोजन करने की क्रिया.

२ भोजन करते समय मुंह से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

डचियौ-सं०पु०—१ झपट कर भोजन ले जाने वाला कुत्ता.

२ देखो 'डाचौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—अमल उगावै अंग में, निपट घुळावै नैण। आंडां नैं बैठा अपत, डचिया घालै डैण।—ऊ.का.

३ देखो 'डचकौ' (अल्पा., रू.भे.)

वि०—१ शीघ्रता से भोजन करने वाला. २ क्षीण।

डटणौ, डटबौ-क्रि०अ०—१ रुकना, ठहरना, दबना।

उ०—आज जाडेरा डेरा डगरां मारूजी, मारचा-मारचा दादुर मोरंजी, थे समजौ थे समजौ जोड़ी विन जाडो न डटै मारूजी।—लो.गी.

२ जम कर खड़ा होना, दृढ़ रहना, टिकना, ठहरना, डटना।

३ भिड़ना, डटना।

मुहा०—१ डट नै खाणौ—अधिक भोजन करना. २ डटियौ रैणौ—जमा रहना, टिका रहना, न हटना, कठिनाई झेलने को प्रस्तुत रहना।

डटणहार, हारौ (हारी), डटणियौ—वि०।

डटवाड़णौ, डटवाड़बौ, डटवाणौ, डटवाबौ, डटवावणौ, डटवावबौ, डटाड़णौ, डटाड़बौ, डटाणौ, डटाबौ, डटावणौ, डटावबौ—प्रे०रू०।

डटिओड़ौ, डटियोड़ौ, डटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

डटीजणौ, डटीजबौ—भाव वा०।

डाटणौ, डाटबौ—सक०रू०।

डटाड़णौ, डटाड़बौ—देखो 'डटाणौ, डटाबौ' (रू.भे.)

डटाड़ियोड़ौ—देखो 'डटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डटाड़ियोड़ी)

डटाणौ, डटाबौ-क्रि०स०—१ जमाना, खड़ा करना. २ जोर से भिड़ाना, ठेलना. ३ सटाना, भिड़ाना।

डटाणहार, हारौ (हारी), डटाणियौ—वि०।

डटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

डटाईजणौ, डटाईजबौ—कर्म वा०।

डटणौ, डटबौ—अक०रू०।

डटाड़णौ, डटाड़बौ, डटावणौ, डटावबौ—रू०भे०।

डटायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जमाया हुआ, खड़ा किया हुआ.

२ भिड़ाया हुआ, ठेला हुआ. ३ सटाया हुआ, भिड़ाया हुआ।

(स्त्री० डटायोड़ी)

डटावणौ, डटावबौ—देखो 'डटाणौ, डटाबौ' (रू.भे.)

डटावियोड़ो—देखो 'डटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डटावियोड़ी)

डटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ, दबा हुआ. २ जमा हुआ, टिका हुआ, डटा हुआ, दृढ़. ३ भिड़ा हुआ, टटा हुआ।
(स्त्री० डटियोड़ी)

डटकारो—देखो 'डकार' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जासक पीवें योगणी, भरि-भरि पात्र रगत। डडकारा डाकणि करै, जिण दीठइ डरै जगत।—प.च.चौ.

डडियो—१ देखो 'दादो' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'डडो'। (अल्पा., रू.भे.)

डडो, डड्डो-सं०पु०—१ 'ड' अक्षर। २ देखो 'दादो' (रू.भे.) उ०—जोगी आद जुगाद ही दीहंदा डडा।—केसोदास गाडण
अल्पा०—डडियो, डलियो।

डड्ढ़, डढ़-वि० [सं० दग्ध] १ जला हुआ (जैन) २ देखो 'दादो'। (रू.भे.)
देखो 'डाड' (रू.भे.)

डढ़ियल-वि०—जिसके बड़ी डाढ़ी हो, डाढ़ीवाला।

डणडणणो, डणडणबो—खिलखिलाना, हँसना।

डणडणीयोड़ो-भू०का०कृ०—हँसा हुआ।
(स्त्री० डणडणियोड़ी)

डपटणो, डपटबो-क्रि०स०—१ कठोर स्वर में बोलना, डांटना. २ कपड़े या अन्य किसी चौड़ी वस्तु से पंखा झलना, हवा करना. ३ तेज दौड़ना।

डपोरसंख-सं०पु०—दिखने मे बड़े व अच्छे डील-डौल का किन्तु मूर्ख। रू०भे०—डफोळसंख, ढफोळसंख।

डप्फो-वि०—मूर्ख, गँवार। उ०—खप्फा होवै खलक पर, डप्फा डावां-डोल। नप्फा थारै है नहीं, गप्फा खावै गोल।—ऊ.का.

डफ-सं०पु० [अ० दफ] लकड़ी के बड़े घेरे पर चमड़ा मढ़ा हुआ एक वाद्य विशेष जो हाथ या लकड़ी से बजाया जाता है।
उ०—डफ खंजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै। पसतो अरबी पाड़, गजल कड़खा वह गावै।—सू.प्र.
अल्पा०—डफली।

डफणो, डफबो-क्रि०अ०—१ भौंचक्का होना, अचंभित होना. २ घबराना. ३ भूलना, चूकना।
डफणहार, हारो (हारी), डफणियो—वि०।
डफवाड़णो, डफवाड़बो, डफवाणो, डफवावो, डफवावणो, डफवावबो—प्रे०रू०।
डफाड़णो, डफाड़बो, डफाणो, डफावो, डफावणो, डफावबो—स०रू०
डफिश्रोड़ो, डफियोड़ो, डफ्योड़ो—भू०का०कृ०।
डफीजणो, डफीजबो—भाव वा०।
डफळणो, डफळबो—रू०भे०।

डफळणो डफळबो—देखो 'डफणो, डफबो' (रू.भे.)

डफळाड़णो, डफळाड़बो—देखो 'डफाणो, डफाबो' (रू.भे.)

डफळाड़ियोड़ो—देखो 'डफायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डफळाड़ियोड़ी)
डफळीजणो, डफळीजबो—रू०भे०।

डफळाणो, डफळाबो—देखो 'डफाणो, डफाबो' (रू.भे.)

डफळायोड़ो—देखो 'डफायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डफळायोड़ी)

डफळावणो, डफळावबो—देखो 'डफाणो, डफाबो' (रू.भे.)

डफळावियोड़ो-देखो 'डफायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डफळावियोड़ी)

डफळियोड़ो—देखो 'डफियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डफळियोड़ी)

डफली-सं०स्त्री०—देखो 'डफ' (अल्पा., रू.भे.)

डफांण, डफांन-सं०स्त्री०—आडंबर, ढोंग, पाखण्ड।
उ०—१ काहे रे नर करहु डफांण, अंतकाळ घर गोर मसांण।
—दादू वांणी
उ०—२ दादू मड़ा मसांण का, केता करै डफांन। म्रितक मुरदा गोर का, बहुत करै अभिमांन।—दादू बांणी
२ गर्व, अभिमान।

डफांणी-वि०—१ धूर्त, कपटी. २ पाखंडी, ढोंगी. ३ अभिमानी।

डफाड़णो, डफाड़बो—देखो 'डफाणो डफाबो' (रू.भे.)

डफाड़ियोड़ो—देखो 'डफायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डफाड़ियोड़ी)

डफाणो, डफाबो-क्रि०स०—१ भौंचक्का करना, अचंभित करना. २ डराना. ३ भुलाना, भटकाना, फटकारना।
डफाणहार, हारो (हारी), डफाणियो—वि०।
डफायोड़ो—भू०का०कृ०।
डफाईजणो, डफाईजबो—कर्म वा०।
डफणो, डफबो—अक० रू०।
डफळाड़णो, डफळाड़बो, डफळाणो, डफळावो, डफळावणो, डफळावबो, डफाड़णो, डफाड़बो, डफावणो, डफावबो—रू०भे०।

डफायोड़ो-भू०का०कृ०—१ भौंचक्का किया हुआ, अचंभित किया हुआ. २ डराया हुआ. ३ भुलाया हुआ, भटकाया हुआ, फटकारा हुआ।
(स्त्री० डफायोड़ी)

डफाली-सं०पु०—१ खंजरी बजाने वाला. २ एक मुसलमान जाति जो डफ, ताशे आदि का व्यवसाय करती है। इस जाति के लोग स्थान-स्थान पर इन वाद्यों को बजाते फिरते हैं।

डफावणो, डफावबो—देखो 'डफाणो, डफाबो' (रू.भे.)

डफावियोड़ौ—देखो 'डफायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डफावियोड़ी)
डफियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भौंचक्का, अचंभित. २ घबराया हुआ. ३ भूला हुआ, चूका हुआ।
(स्त्री० डफियोड़ी)
डफोळ-वि०—मूर्ख, नासमझ।
अल्पा०—डफोळियौ।
यौ०—डफोळसंख।
डफोळपण, डफोळपणौ-सं०पु०—मूर्खता, बेवकूफी, नासमझी।
डफोळसंख—देखो 'डपोरसंख' (रू.भे.)
डफोळियौ—देखो 'डफोळ' (अल्पा., रू.भे.)
डब-सं०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—लाखं फूलांणी भीणा सुर लेता, डीघा गाडीणां डबडब धुनि देता।—ऊ.का.
मुहा०—डबडब होणी—कार्य पूरा नहीं होना, असफल होना, निष्फल होना, पोल खुलना, सारहीनता प्रकट होना।
वि०—परिपूर्ण, पूर्ण (अश्रुपूर्ण, सजल) उ०—पिव बैसाखां हालियौ, सैणां सीख करेह। ऊभी भूरै गोरड़ी, डब-डब नैणां भरेह।—र.रा.
मुहा०—डब डब होणी—अश्रुपूर्ण होना, सजल होना (नयन)
यौ०—डब डब।
ड'ब-सं०पु०—एक प्रकार का घास।
डबक-सं०स्त्री०—१ देखो 'डबकौ' (१, २) (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'डबकौ' (३) (मह., रू.भे.) ३ देखो 'डुबकी' (रू.भे.)
डबकणौ, डबकबौ-क्रि०अ०—१ इधर-उधर जाना, फिरना।
उ०—ऊँचै मुख सूं ऊंट, चूंट चट लूंगां लवकै। गलर-गलर गटकाय, डोलती डागां डबकै।—दसदेव
२ पानी में पैठना, डूबना।
डबकणहार, हारौ (हारी), डबकणियौ—वि०।
डबकवाड़णौ, डबकवाड़बौ, डबकवाणौ, डबकवाबौ, डबकवावणौ, डबकवावबौ—प्रे०रू०।
डबकाड़णौ, डबकाड़बौ, डबकाणौ, डबकाबौ, डबकावणौ, डबकावबौ—स०रू०।
डबकिओड़ौ, डबकियोड़ौ, डबक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डबकीजणौ, डबकीजबौ—भाव वा०।
डबकाड़णौ, डबकाड़बौ—देखो 'डबकाणौ, डबकाबौ' (रू.भे.)
डबकाड़ियोड़ौ—देखो 'डबकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डबकाड़ियोड़ी)
डबकाणौ, डबकाबौ-क्रि०स०—१ इधर-उधर घुमाना, फिराना. २ पानी में पैठाना, डुबाना (पानी भरने के लिए)
डबकाणहार, हारौ (हारी), डबकाणियौ—वि०।
डबकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
डबकाईजणौ, डबकाईजबौ—कर्म वा०।
डबकणौ, डबकबौ—अक०रू०।
डबकाड़णौ, डबकाड़बौ, डबकावणौ, डबकावबौ—रू०भे०।
डबकावणौ, डबकावबौ—देखो 'डबकाणौ, डबकाबौ' (रू.भे.)
डबकावियोड़ौ—देखो 'डबकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डबकायोड़ी)
डबकियौ—देखो 'डबकौ' (अल्पा., रू.भे.)
डबकी—देखो 'डुबकी' (रू.भे.) उ०—सास अम्हारू सरप-परि, पईठउ पांणी मांहि। डबकी-डबकी देखीइ, वीसमवुं नहीं क्यांहि।—मा.कां.प्र.
डबकीड़—देखो 'डबकौ' (मह., रू.भे.)
डबकौ-सं०पु० [सं० दव एव दवकः 'दुदु उप तापे' अप्] १ डूबने का भाव।
क्रि०प्र०—लैणौ।
२ किसी तरल पदार्थ में किसी पदार्थ के गिरने से होने वाला शब्द।
क्रि०प्र०—बोलणौ, बाजणौ।
मुहा०—१ डबकौ ऊठणौ—देखो 'डबकौ पड़णौ'. २ डबकौ पड़णौ—अकस्मात् चिंता होना, सदमा पहुँचना. ३ डबकौ बाजणौ—ध्वनि होना अर्थात् सार्थक होना।
अल्पा०—डबक, डबक्क।
३ फूलों आदि की आकृति के छोटे या बड़े चिन्ह जो वस्त्रों पर सुन्दरता के लिये छापे जाते हैं।
रू०भे०—डभकौ।
अल्पा०—डबकियौ।
मह०—डबक, डबकीड़, डबक्क।
डबक्क—१ देखो 'डबक' (१, २) (अल्पा., रू.भे.)
उ०—कटै सिलहक्क कड़ा कसणक्क। भभक्क डबक्क स्रोणक्क भभक्क।—सू.प्र.
२ देखो 'डबकौ' (३) (मह., रू.भे.) ३ देखो 'डुबकी' (रू.भे.)
डबगर-सं०पु०—१ चमड़े को गला कर तेल, घी रखने के कुप्पे और तराजू के पलड़े बनाने का पेशा करने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति जिसमें हिन्दू व मुसलमान दोनों होते हैं। ये नक्कारे और मृदंग आदि भी मढ़ते हैं।
रू०भे०—डबगर।
डबड़ी-सं०स्त्री०—१ लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक-गीत. २ बच्चों द्वारा छोटी-छोटी डिबियाओं से खेला जाने वाला खेल. ३ सुडौल व सुन्दर घड़ा हुआ शिला-खंड जो मकान की दीवार को सुदृढ़ व सुन्दर बनाने के लिये लगाया जाता है।
यौ०—डबड़ी-बंध।
४ तरबूज आदि फलों की परीक्षा के लिये उसके ऊपर किया जाने वाला चौकोर या गोल कटाव जिससे उसके भीतर से सड़े-गले या कच्चे-पक्के होने का पता चले।

५. देखो 'डबौ' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—डबली, डाबड़ी, डाबली।

डबडबणो, डबडबबो–क्रि०अ०—१ अश्रु-पूर्ण होना, नेत्रों का सजल होना. २ जल से भरे हुए पात्र के हिलने से पानी का ध्वनि करना. ३ डमरू का ध्वनि करना, बजना।

डबडबाणो, डबडबावो–क्रि०स०अ०—१ डमरू बजाना.
२ देखो 'डबडबणो, डबडबबो' (रू.भे.) उ०—सोचतां सोचतां विये री आंखियां प्रेमास्नुवां सूं डबडबायीज जाती।—वरसगांठ

डबडबो–वि०—अश्रु-पूर्ण, सजल।
मि०—जळजळो।

डबर–सं०पु०—१ आडम्बर, तड़क-भड़क। उ०—डबर विरय घण डहकियां, डंडाहड़ डंकाह। रूड़ी रजवट जे रखिए, विग्रह ह्वौ वंकाह।—रेवतसिंह भाटी
२ गंभीर शब्द. ३ बड़ा ढोल. ४ तम्बू।

डबरो–सं०पु०—१ पात्र विशेष. २ पलाश के पत्तों का दोना।

डबल–वि० [अं०] दोहरा।

डबलियो—देखो 'डब्बौ' (अल्पा., रू.भे.)

डबली—देखो 'डबड़ी' (रू.भे.)

डबलो—देखो 'डब्बौ' (अल्पा., रू.भे.)

डबाक–सं०पु०—१ किसी वस्तु के अकस्मात गिरने या टपकने का भाव तथा उससे उत्पन्न ध्वनि. २ वमन होते समय मुंह की आकृति. ३ वमन, कै।

डबाडब—देखो 'डबोडब' (रू.भे.)

डबियो—देखो 'डब्बौ' (अल्पा., रू.भे.)

डबी–सं०स्त्री०—१ छोटा ढक्कनदार वर्तन, डिबिया।
उ०—१ नवी हुवोड़ा नीच डबी भर लेवै डाकी। वैठ सभा रै बीच करै मनवार कजाकी।—ऊ.का.
उ०—२ ताहरां कुंवर कह्यो—डबी कीमत कराय सूंपो। ताहरां डबी खोली। जुहार बुलाय कीमत कराई।—पलक दरियाव री वात
२ शीशी के ऊपर लगाने का धातु का बना हुआ ढक्कन।
अल्पा०—डबड़ी, डबली, डावड़ी, डावली।
रू०भे०—डब्बी, डाबी, डिबिया, डिबी, डिब्बी।
३ देखो 'डबौ' (अल्पा., रू.भे.)

डबोडब–वि०—पूर्ण भरा हुआ, लबालब।
रू०भे०—डबाडब।

डबोड़णो, डबोड़बो—देखो 'डुबाणो, डुबाबो' (रू.भे.)

डबोड़ियोड़ो—देखो 'डुबोयोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डबोड़ियोड़ी)

डबोणो, डबोबो—देखो 'डुबाणो, डुबाबो' (रू.भे.)
उ०—तरै सेख फरमायो सो नावां तोड़ पांणी में डबोय दीवी।
—नी. प्र.

डबोयोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डबोयोड़ी)

डबोवणो, डबोवबो—देखो 'डुबाणो, डुबाबो' (रू.भे.)
उ०—चौवळ ग्राह तंत गज चरणां। जकड़ डबोवण खंच जबरणां।
—र.ज.प्र.

डबोवियोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डबोवियोड़ी)

डबौ–सं०पु०—१ वह ढक्कनदार बरतन जिस पर ढक्कन जम कर बैठ जाय और हिलाने-डुलाने पर भीतर रखी हुई वस्तु नहीं गिरे, डिब्बा। उ०—जितरै साह री वहू घर में आयी। उवै आंण ओरो कही कांम खोलियो। संभाळै तो डबौ नहीं। देखै तो बीजो-ही डबौ नहीं।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात
२ रेलगाड़ी की एक गाड़ी जो अलग की जा सकती है. ३ बच्चों को निमोनिया के समान होने वाला एक रोग विशेष. ४ पानी में उठने वाला बुदबुदा. ५ फूल आदि वस्तुओं के चिन्ह जो सुन्दरता के लिए वस्त्रों पर छापे जाते हैं।
वि०—मूर्ख, गंवार, नासमझ। ज्यूं—ओ तो साव डब्बौ है।
रू०भे०—डब्बौ, डाबौ, डिबौ, डिब्बौ।
अल्पा०—डबलियो, डबलो, डबियो।

डब्बी—देखो 'डबी' (रू.भे.)

डब्बौ—देखो 'डबौ' (रू.भे.)

डब्भर—देखो 'डंबर' (रू.भे.)
उ०—गडि गडि गोळा नाळि, वीज खड़ड़ै किरि अंबर। अगन बांण ऊछळै, धोम वूंहा रव डब्भर।—गु.रू.वं.

डभकौ—देखो 'डबकौ' (रू.भे.) उ०—बाघो अठा सूं विदा हुवो हुंतो सु दुराहो ऊपर जावता चील्हा नजर पड़िया। तद बाघै रै मन में डभको पड़ियो ताहरां साथ नूं कहै छै थे चालो, हूं तो इयां चील्हां री खबरि ले आयीस।—ऊमादे भटयांणी री वात

डमंकणो, डमंकवो—देखो 'डमकणो, डमकवो' (रू.भे.)
उ०—जंड डैरू डमंकियां ग्रांवक त्रहकाया।—वं.भा.

डमंकियोड़ो—देखो 'डमकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डमंकियोड़ी)

डमंगळ—देखो 'दमंगळ' (रू.भे.) उ०—अलें थलें प्रगळै डरे, डूंगरे डमंगळ। गोड़ी रव गड़गड़े, मिळै रन मांभळ मंगळ।—पा.प्र.

डम–सं०स्त्री०—ध्वनि विशेष (डमरू आदि की)
रू०भे०—डिम।
यौ०—डम-डम।

डमकणो, डमकवो–क्रि०अ०—१ चमकना। उ०—वणक सहोदर पर त्रिया, वणक राय साधार। चोपग चिंतामण वणक, वे डमक्या वरवार।—वां.दा.
२ डमरू का बजना, ध्वनि करना।

...ी—वि०।

...ाणी, डमकवाबौ, डमकवावणौ,

..., डमकाणौ, डमकाबौ, डमकावणौ, डमकाववौ —क्रि०स०।

... डमकियोड़ौ, डमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

...णौ, डमकोजवौ—भाव वा०।

...कणौ, डमंकवौ—रू०भे०।

डमकलौ-सं०पु०—वाद्य विशेष ?। उ०—गाडी छोड वळदिया छोडया, घरां सुलखणी नारी। तेरै द्वारै वाजै डमकला, ल्या रोटी तरकारी।—लो.गी.

डमकाड़णौ, डमकाड़वौ—देखो 'डमकाणी, डमकावौ' (रू.भे.)

डमकाड़ियोड़ौ—देखो 'डमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डमकाड़ियोड़ी)

डमकाणौ, डमकावौ-क्रि०स०—१ चमकाना. २ डमरू वजाना, ध्वनि कराना।
डमकाणहार, हारौ (हारी) डमकाणियौ—वि०।
डमकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
डमकाईजणौ, डमकाईजवौ—कर्म वा०।
डमकणौ, डमकवौ—अक०रू०।
डमकाड़णौ, डमकाड़वौ, डमकावणौ, डमकाववौ—रू०भे०।

डमकायोड़ौ-भू०का०कृ—१ चमकाया हुआ. २ ध्वनित किया हुआ, वजाया हुआ (डमरू)
(स्त्री० डमकायोड़ी)

डमकावणौ, डमकाववौ—देखो 'डमकाणौ, डमकावौ' (रू.भे.)

डमकावियोड़ौ—देखो 'डमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डमकावियोड़ी)

डमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ. २ ध्वनित।
(स्त्री० डमकियोड़ी)

डमगावणौ, डमगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे.)

डमडम-सं०पु०—१ एक ध्वनि विशेष.
२ डमरू की ध्वनि।

डमडेर—देखो 'ढमढ़ेर' (रू.भे.)

डमडोल—देखो 'डांवाडोळ' (रू.भे.)
उ०—जिन सासन राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोळ। समझायउ स्री पातसाह, सदगुरु खाटयउ तइ सुवोल।—स.कु.

डमडोळणौ, डमडोळवौ-क्रि०अ०—१ चंचल होना।
उ०—मेघमुनि कांई डमडोळइ रे। इण जाति सह कौं स्रावक सांभळइ जी।—ऐ.जै.का.सं.
२ डांवाडोल होना।

डमर-सं०पु०—१ कोलतार. २ डमरू। उ०—चहकिया नहर घर चढ़े चाक। डहकिया डमर हर वाक डाक।—वि.सं.
३ उपद्रव। उ०—इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी। हुं चरण लागुं डर डमर वारी।—ऐ.जै.का.सं.
४ दो राज्यों अथवा दो राजकुमारों का परस्पर विरोध होने से पैदा होने वाला उपद्रव (जैन)
५ शानशौकत, आडम्बर, ठाट-बाट। उ०—१ चवि वडम बोल गयंदां चढे, चमर डमर कर चालिया। सिव विसन ब्रहम सुर जांणि स्रव, हेक साथ मिळि हालिया।—सू.प्र.
उ०—३ चहुं चढ़ै दुरदां चमर ढुळतां, डमर सजिया डांण। चळ वांध तोरण वैठ चंवरी, प्रगट जोड़ै पांण।—र.रू.
६ देखो 'डंवर' (रू.भे.) उ०—१ हुवी कूच 'चिमनेस' यूं अदव राखे हुकम, भड़ां कोचां किता प्रांण भागा। देख फौजां डमर दुरंग छोड़ दीधौ, जोधहर न छोडी दुरंग जागा।—लिखमीदांन वारहठ
उ०—२ तांम छौळ घ्रत तणी, वणै ऊपरां वहोतरि। छकै मसालां डमर तकै सौरंभां अम्मरि।—सू.प्र.
उ०—३ कंचण जवहर कांत विविध सिंगार वडाई। पौसाकां परमळ अतर डमरां छबि आई।—वां.दा.
उ०—४ केहर तणी कळाइयां, भणणाहट भमरांह। भीजी गज सिर भांजतां, मद सौरंभ डमरांह।—वां.दा.
उ०—५ इळा वेध घड़ मोड़ राठौड़ दखणी अड़ै, खड़ै लसकर डमर जोस-खाथै। पडंति वडा गढ़ लाग आंणी 'पतै', मुराड़ा भाड़ती आग माथै।—महाराजा प्रतापसिंघ (किसनगढ़) रौ गीत
उ०—६ चौगड़द धोम रज डमर चाक। विछटिया मेळा चक्र-वाक। —सू.प्र.
उ०—७ किरमर वाही करग सूं, पळकी इसै पर। जांणक चमकी वीजळी, कर-काळै डमर।—वी.मा.
उ०—८ हालिया थाट रज डमर होय। दळ जांगि हेक घर अंवर होय।—सू.प्र.

डमरु, डमरुअ, डमरुक, डमरुग, डमरुय—देखो 'डमरू' (रू.भे.) (जैन)

डमरू-सं०पु० [सं० डमरु] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
उ०—१ खांडा हत्थउ भैरवी रे, कर डमरू नै डाक। तिण अवसर प्रगटयौ तिहां, आव्यौ मारंतौ हाक।—स्रीपाळ रास
उ०—२ जे जिमणै श्री भैरव जिमणै श्री हाथ त्रिसूळ, डावै श्री भैरव डावै श्री डमरू डिगमिगै।—लो.गी.
वि०वि०—यह वाद्य वीच में से पतला होता है किन्तु दोनों तरफ सिरों की ओर वड़ा होता जाता है। यह गोल और लम्बा होता है और खोखला होता है। दोनों सिरों के घेरे चमड़े से मढे हुये होते हैं। इसके बीच में दोनों तरफ वरावर वढ़ी हुई डोरियां वंधी हुई होती हैं जिनके छोरों पर गोली या कौडी वंधी होती है। यह इतना छोटा होता है कि इसको एक हाथ से वीच में से पकड़ कर आसानी से हिलाया जा सकता है। वीच में से पकड़ कर जव इसको हिलाया जाता है तव दोनों कौड़ियां चमड़े पर पड़ती हैं जिससे शब्द होता है। यह

शिवजी का प्रिय वाद्य कहलाता है। मदारी लोग भी इसका प्रयोग करते हैं।

यौ०—डमरु-कर, डमरु-धरण, डमरु-नाथ।

२ बालक (अ.मा.) ३ बांए घुटने में होने वाला कोष्ट्र वात।

४ ऐसी वस्तु जो बीच में से पतली हो और दोनों ओर चौड़ी हो। डमरु के आकार की वस्तु।

रू०भे०—डड्ड, डमरुग्र, डमरुक, डमरुग, डमरुय, डम्मरू, डवँरू, डँरू।

यौ०—डमरु-जंत्र, डमरु-मध्य, जळडमरू-मध्य।

डमरुकर—सं०पु०यौ० [सं०] महादेव, शिव (अ.मा.)

डमरुजंत्र—सं०पु०यौ० [सं० डमरु+यंत्र] एक प्रकार का यंत्र जो अर्क निकालने तथा सिंगरफ का पारा, कपूर नौसादर आदि उड़ाने के काम आता है।

डमरु-धरण, डमरु-नाथ—सं०पु०यौ०—डमरू को धारण करने वाले शंकर, महादेव।

डमरुमध्य—सं०पु०यौ० [सं०] धरती के दो बड़े भागों को मिलाने वाला बीच का तंग या पतला भाग।

डमांमो—सं०पु०—वाद्य विशेष। उ०—काहळ तणी कोलहळि कांन कमकम्या, डूंडि डमांमा दुड़दड़ी, द्रमद्रमाटि भयंकर होइवा लागउ। —व.स.

डमार—देखो 'डंवर' (रू.भे.) उ०—गुलाल अबीरां री घमरोळ उठी, गुलस री डमार गैणाग छायौ।—पनां वीरमदे री वात

डम्मर—१ देखो 'डंवर' (रू.भे.) उ०—१ खेत में वडबोरड़ियां आयोड़ी गहर डम्मर व्हियोड़ी, जांणे वड़ला ऊभा।—रातवासो

उ०—२ दळ मेहळ ऊपड़ै, भमर रज डम्मर भ्रमै।—गु.रू.बं.

सं०पु०—२ डमरू। उ०—नाचे बावन वीर नृत, डह डह करि डम्मर।—सू.प्र.

डम्मरी—सं०स्त्री०—१ लड़ाई. २ प्रतिस्पर्धा।

वि०—१ बहुत, अत्यधिक. २ भयानक, विकट।

डम्मरु—देखो 'डमरु' (रू.भे.) उ०—जपइ तुहाळइ काळि, डहडहिण डम्मरु तणा। छाडे असुर सु आळि, तइ वा भारथि वीसहथि। —सिवदास गाडण

डम्माडम्मां—वि०—भयभीत, कम्पायमान। उ०—कहै कुरांण कतेब, उरह हुय डम्मांडम्मां। पैकवरां पुकारि, मिळै साजणां कुटम्मां। —सू.प्र.

डयोढ़ी—देखो 'डौडी' (रू.भे.)

डयोढ़ीदार—देखो 'डौडीदार' (रू.भे.)

डर—सं०पु० [सं० दरः] १ किसी अनिष्ट या हानि की आशंका से उत्पन्न होने वाला एक दुःखपूर्ण मनोवेग, भय, खौफ, त्रास (ह.नां.)

पर्या०—अंतक, आतंक, आसंक्या, उद्रक, चमक, त्राप, त्रास, दर, बी, बीहं, भय, भी, भीत, भीय, भै।

क्रि०प्र०—लागणौ, होणौ।

मुहा०—१ डर राखणौ—शंका रखना, भय रखना, बड़े-बूढ़ों का मान रखने के लिये उनके नियंत्रण में रहना, संकोच रखना.

२ डर री मारियौ—भय के कारण।

२ किसी अनिष्ट की आशंका। उ०—सबळ जळ सभिन्न सुगंध भेट सजि, डिगमिगी पाउ वाउ क्रोध डर। हालियौ मळयाचळ हूंत हिमाचळ, कांमदूत हर प्रसन कर।—वेलि.

यौ०—डरू-फरू।

३ ध्वनि विशेष। उ०—डबक डाळियां डुळै, डागड्या डर-डर सूंतै। ऊंची नीची तकै, लखै लुळ पूरी कूंतै।—दसदेव

४ मेंढ़क के बोलने की ध्वनि। उ०—डेडरिया करै (बोलै) डरां-डरां, खाली कोठा भरां-भरां।—अज्ञात

रू०भे०—टर।

यौ०—डर-डर, डरां-डरां।

वि०—सघन, गहरा, काला। उ०—दीह गयउ डर डंबरे, नीले नीझरणेहि। काळी जाया करहला, बोल्यउ किसे गुणेहि।—ढो.मा.

डरकण—वि०—कायर, डरपोक।

कहा०—डरकण रौ तौ रांम ही वेली कोयनी—कायर का साथ ईश्वर भी नहीं देता है अर्थात् भाग्य भी बहादुरों के ही पक्ष में होता है।

डरड़कौ—देखो 'टरड़कौ' (रू.भे.)

डरड़ौ—सं०पु०—बूढ़ा ऊँट। उ०—ऊणां ऊरणियां खरसणियां ओळै। डरड़ा नरड़ा विण अरड़ा दे टोळै।—ऊ.का.

डरणी—सं०स्त्री०—भय, त्रास। उ०—उतक्रस्टी रे लाल की जो करणी, तौ मिटै लाल जम की डरणी।—जयवांणी

डरणौ, डरबौ—क्रि०अ० [सं०दरः] १ किसी आपदा, अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना. २ सशंक होना, अंदेशा करना, आशंका करना। उ०—किमाड़ ही न जड़ै। आ सत्रू जांणलैला'क म्हांसूं डरतौ दरवाजौ जड़ै है।—वी.स.टी.

डरणहार, हारौ (हारी), डरणियौ—वि०।

डरवाड़णौ, डरवाड़बौ, डरवाणौ, डरवाबौ, डरवावणौ, डरवावबौ—प्रे०रू०।

डराड़णौ, डराड़बौ, डराणौ, डराबौ, डरावणौ, डरावबौ—स०रू०।

डरिओड़ौ, डरियोड़ौ, डरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

डरीजणौ, डरीजबौ—भाव वा०।

डरपणौ, डरपबौ—रू०भे०।

डरपणौ, डरपबौ—देखो 'डरणौ, डरबौ' (रू.भे.)

उ०—कंकण-कोरां नार-सुरां जे अंगन चौरै। फूटै मेघ फुंहार वगै जळ वेग नदी रै। गात मुहातां नीर हठीली लार म छोडै। कड़क धमंका मांड डरपती दड़कै दौड़ै।—मेघ.

डरपणहार, हारौ (हारी), डरपणियौ—वि०।

डरपाड़णौ, डरपाड़वौ, डरपाणौ, डरपावौ, डरपावणौ, डरपाववौ—क्रि०स०।

डरपिओड़ौ, डरपियोड़ौ, डरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डरपीजणौ, डरपीजवौ—भाव वा०।

डरपाड़णौ, डरपाड़वौ—देखो 'डराणौ, डरावौ' (रू.भे.)

डरपाड़ियोड़ौ—देखो 'डरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डरपाड़ियोड़ी)

डरपाणौ, डरपावौ—देखो 'डराणौ, डरावौ' (रू.भे.)

उ०—अति लहवउ तदि आप, डरपायउ डरपी करी। चांदउ ही चालइ नहीं, बेटौ अवछंडि बाप।—अ. वचनिका

डरपाणहार, हारौ (हारी), डरपाणियौ—वि०।

डरपायोड़ौ—भू०का०कृ०।

डरपाईजणौ, डरपाईजवौ—कर्म वा०।

डरपणौ, डरपवौ—अक०रू०।

डरपाड़णौ, डरपाड़वौ, डरपावणौ, डरपाववौ—रू०भे०।

डरपायोड़ौ—देखो 'डरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डरपायोड़ी)

डरपावणौ, डरपाववौ—देखो 'डराणौ, डरावौ (रू.भे.)

डरपावणहार, हारौ (हारी), डरपावणियौ—वि०।

डरपाविओड़ौ, डरपावियोड़ौ, डरपाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डरपावीजणौ, डरपावीजवौ—कर्म वा०।

डरपणौ, डरपवौ—अक० रू०।

डरपावियोड़ौ—देखो 'डरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डरपावियोड़ी)

डरपियोड़ौ—देखो 'डरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डरपियोड़ी)

डरपोक-वि०—जो बहुत डरता हो, कायर, भीरु। उ०—कोई वीर स्त्री नवी डरपोक स्त्री नै उपदेस देवै है।—वी.स.टी.

डरपोकपणौ-सं०पु०—कायरता, भीरुता।

डरमछ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जो शुभ माना जाता है।

वि०वि०—इसका रंग जामुन का सा होता है, ललाट पर सफेद तिलक होता है तथा चारों पैर सफेद होते हैं।

डरर-सं०स्त्री० (अनु०) १ जोशीली आवाज, जोशपूर्ण ध्वनि. यौ०—डरर-डांफर।

२ मेंढ़क के बोलने की ध्वनि।

डरर-डांफर-सं०स्त्री०यौ० (अनु०) जोशीली आवाज, जोशपूर्ण ध्वनि।

उ०—डरर-डांफर अतर कहर भरतौ डकर, अत मकर वयण कहतौ अजूंभा। पाट रिछपाळ जै 'माल' हर पुचाळ, दाख खत्रवाट रिड़माल दूजा।—पहाड़खां आढ़ौ

डररा'ट-सं०स्त्री०—१ ध्वनि विशेष. २ मेंढक की आवाज।

उ०—तिसै भाद्रवै री अंधारी रात, मेह वरसनै रह्यौ छै, दादरा डररा'ट करै छै।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ क्रोधपूर्ण ध्वनि।

डरांमणौ—देखो 'डरावणौ' (रू.भे.) उ०—हंस जेम ग्रीध पंकती हुई, दीसै घाट डरांमणौ। असुरांण विहंड कीधौ 'अभै', रिण समंद अध्रियांमणौ।—सू.प्र.

(स्त्री० डरांमणी)

डराड़णौ, डराड़वौ—देखो 'डराणौ, डरावौ' (रू.भे.)

डराड़ियोड़ौ—देखो 'डरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डराड़ियोड़ी)

डराणौ, डरावौ-क्रि०स०—भयभीत करना, डर दिखाना, डराना।

डराणहार, हारौ (हारी), डराणियौ—वि०।

डरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

डराईजणौ, डराईजवौ—कर्म वा०।

डरणौ, डरवौ—अक०रू०।

डरपाड़णौ, डरपाड़वौ, डरपाणौ, डरपावौ, डरपावणौ, डरपाववौ, डराड़णौ, डराड़वौ, डरावणौ, डराववौ, डारणौ, डारबौ—रू०भे०।

उ०—दुरवासा आयौ, आय डरायौ, चकर चलायौ, त्रिचळायौ।

—भगतमाळ

डरायोड़ौ-भू०का०कृ०—भयभीत किया हुआ, डराया हुआ।

(स्त्री० डरायोड़ी)

डरावणौ-वि०पु० (स्त्री० डरावणी) जिसको देखने से भय पैदा हो, भयभीत करने वाला, भयावह, डरावना, भयानक।

उ०—१ थोड़ी वधियो-ई हो कै कांई देखै है कै अेक जणौ जकै री आंख्यां लाल, मूंडौ डरावणौ, हाथ में सोटौ लियां, मूंडै सूं गाळ्यां रा गोळा छोडतौ, बार बार दांत पीस'र अेक लुगाई-नै मारण नै उचकै है।—वरसगांठ

उ०—विणजारी अे लोभण, खोटौ छै परदेसां रौ कांम, रात तौ अंधेरी लागै डरावणी, विणजारी अे।—लो.गी.

रू०भे०—डरांमणौ।

डरावणौ, डराववौ—देखो 'डराणौ, डरावौ' (रू.भे.)

उ०—इण घर री रांणियां सिघणियां छै। वै कंवर जिणै सो काळ जिसा छै। थे डरावणा चाहौ सौ डरै नहीं।—वी.स. टी.

डरावणहार, हारौ (हारी), डरावणियौ—वि०।

डराविओड़ौ, डरावियोड़ौ, डराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डरावीजणौ, डरावीजवौ—कर्म वा०।

डरणौ, डरवौ—अक० रू०।

डरावियोड़ौ—देखो 'डरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डरावियोड़ी)

डरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भयभीत, आतंकित. २ शंकित।

(स्त्री० डरियोड़ी)

डरूं-फरूं-वि० यौ०—घबराया हुआ, भयभीत, सशंकित।

उ०—हीरू लिखमी रौ हाथ झाल'र बारै आयौ। कांपते कांपते डरूं-फरूं हो'र डाकियै नै पूछियौ कांई है?—वरसगांठ

डळ—१ देखो 'डळौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'ढळौ' (मह., रू.भे.)

डळणौ, डळबौ–क्रि०अ०—१ गिरना, पड़ना.

२ देखो 'ढुळणौ, ढुळबौ' (रू.भे.)

डळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ, पड़ा हुआ।

२ देखो 'ढुळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डळियोड़ी)

डळियौ—१ देखो 'डळौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'ढळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डलियौ—देखो 'डडियौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'डलौ' (अल्पा., रू.भे.)

डळी–सं०स्त्री०—१ नमदे का बना गद्दीनुमा उपकरण जिसे घोड़े की पीठ पर रख कर ऊपर जीन या चारजामा कसा जाता है, अरकगीर.

२ देखो 'डळौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ जिम छोहि दीधी भीतिइं, सांमुही चूना नी डळी मूकी लांखीइ। अनइं त्या चूना नी सूकी डळी भीतिइं लागी पाछी पडइ। भीति मांही कांई न रहइं।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ मांणस मुरवरिया मांणक सम मूंगा। कोडी कोडी रा करिया सम सूंगा। डाढ़ी मूंछाळा डळियां में डुळिया। रळियां जायोड़ा गळियां में रुळिया।—ऊ.का.

डलेवर–सं०पु० [अं० ड्राइवर] रेल या मोटर को चलाने वाला।

डळौ–सं०पु०—१ खंडित भाग, खंड, ढोंका, टुकड़ा।

उ०—पातर हूंता प्रीत कर, आफू डळां अरोग। आखर पछताया अठे, लानत दे दे ल ग —बां.दा.

२ लौंदा, पिंड, लुगदा। उ०—१ खीच रा डळा खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा। नित मीच आंख वैठै निलज, भीच अमल भूपाळ रा।—ऊ.का.

उ०—२ डाक चमू वजाड़ै घपाड़ै गीधां गळां डळां। वीजूजळां भुजां वळां भाजै खळां वीह।—नीमाज ठाकुर सुरतांणसिंघ रौ गीत

अल्पा०—डळियौ, डळी।

मह०—डळ।

३ मूर्ख, गँवार। उ०—ढीलो मूंडो मेलै ढेरा, टिकगा पांणी पीवण टेरा। डळां उठै कर दीधा डेरा, चाटै हिळगा चाटण चेरा।—ऊ.का.

४ देखो 'ढळौ' (रू.भे.)

डल्खौ–सं०पु०—ऊंचे (लम्बे) पायों की चारपाई (शेखावाटी)

डवंरु—देखो 'डमरु' (रू.भे.)

डवगर—देखो 'डबगर' (रू.भे.) (व.स.)

डवोइणौ, डवोइबौ—देखो 'डुबोणौ, डुबोबौ' (रू.भे.)

उ०—जीमतो चीर जपै उमादे रांणी, डवोइयौ यो तौ राच्यौ छै चुरट मजीठ।—लो.गी.

डस–सं०स्त्री०—१ तराजू के पलड़े की डंडी (डांडी) के मध्य में बांधी जाने वाली रस्सी. २ एक विशेष प्रकार के ताले का अवयव।

अल्पा०—डसियौ।

३ डाह, ईर्ष्या।

क्रि०प्र०—करणी, झेलणी, पकड़णी, राखणी।

४ नेत्र में होने वाली लाल रेखा जो सुंदरता और वीरत्व की सूचक मानी जाती है. ५ नक्कारा।

उ०—डसां गड़ड़ ओगाज तोपां बखम वोयणां, दळां भक काज मह वेध दुखतौ। असंभ गजराज अघपती घड़ ऊपरा, वरूथौ मयंद अघराज वखतौ।—महाराजा बखतसिंघ रौ गीत

६ देखो 'डसी' (रू.भे.)

रू०भे०—डसी।

डसकौ—देखो 'डुसकौ' (रू.भे.) उ०—नगर लोक सहू ऊभा जोवै। करै कोलाहळ डसकै रोवै।—स्रीपाळ रास

डसण–सं०पु० [सं० दशन] १ दांत, दंत। उ०—१ अधरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। सो संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फवंत। —बां.दा.

उ०—२ नासिका सुक चंच सरिखी, मुगतफळ संजोति। अहिर विद्रम ओपमां, जेहां डसण हीरां जोति।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'डसणि, डसणी' (रू.भे.)

मह०—डसणेस।

डसणि, डसणी–सं०स्त्री०—कटार। उ०—किये साखी कमळ राइमल कळोधर, पट हथां डसणी करिमाळ पूजो। देसि परदेसि दळ सिंघां दीपै दळै, दळां रौ थंभ रिणिमाल दूजो।

—राठौड़ गोपाळदास (कांन्होत, रायमलोत) रौ गीत

रू०भे०—डसण।

डसणेस—देखो 'डसण' (मह., रू.भे.) उ०—फरस-पांणि फावेस उभै डसणेस अधक्कर। निलै अरध नखतेस मसत भणणेस मधुक्कर। —सू.प्र.

डसणौ डसबौ–क्रि०स० [सं० दंशन] १ (सांप आदि जहरीले कीड़ों का) काटना। उ०—१ सारंग वज्यौ रंग रच्यौ, उरे पसारयौ अंग। ऊभी थी लड़थड़ पड़ी, जांणै डसी भुजंग।—र.रा.

उ०—२ वाळूं जाळूं थारी जीभड़ी ए लंजा ओठी जी ए जो। डसजो थनै काळोड़ौ नाग, बाला जी ओ।—लो.गी.

२ काटना, चबाना। उ०—तिसड़ै एक रजपूत कसूंभी पीयौ हुतौ अर कुंवरजी मांनसिंघजी रै वास्तै आइ अर होठ डस. अर कटारी काढ़ि अर जिसड़ौ मांनसिंघजी नूं वाहणहारौ हुयौ।—

३ डंक मारना।

डसणहार, हारौ (हारी), डसणियौ—वि०।

डसवाड़णौ, डसवाड़बौ, डसवाणौ, डसवाबौ, डसवावणौ, डसवावबौ, डसाड़णौ, डसाड़बौ, डसाणौ, डसाबौ, डसावणौ, डसावबौ—प्रे०रू०।

डसिओड़ौ, डसियोड़ौ, डस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डसीजणौ, डसीजबौ—कर्म वा०।

डसा-सं०स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] दाढ़।
डसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ डसा हुआ. २ काटा हुआ. ३ डंक मारा हुआ।
(स्त्री० डसियोड़ी)
डसियो—देखो 'डस' (२) (अल्पा., रू.भे.)
डसी-सं०स्त्री०—१ कष्ट निवारणार्थ देवी-देवताओं के स्थानों पर, मंडप पर अथवा वहां के वृक्ष की टहनी पर अपने अंग के वस्त्रों में से फाड़ कर बांधा जाने वाला छोटा टुकड़ा, धज्जी।
क्रि०प्र०—बांधणी।
२ देखो 'डस' (२) (रू.भे.)
डहक-सं०स्त्री०—१ नक्कारे की ध्वनि, आवाज।
उ०—बहक भाजै असुर बंका, डहक बंबी सुणै डंका, तहक वाजै तूर। —र.रू.
रू०भे०—डहक्क।
२ आडम्बर. ३ कपट, छल. ४ देखो 'डहक्क' (रू.भे.)
डहकणौ, डहकबौ-क्रि०अ०—१ नक्कारे का ध्वनि करना, बजना।
उ०—रांण दिस हालया ठांण आरांण रुख, कोह असमांण चढ़ भांण ढंका। गोम नेजां हलक राग सिंधू गहक, डहक डंडाहड़ां सीस डंका।—र.रू.
२ (डमरू का) बजना, ध्वनि होना। उ०—डहकिया डमरू दांत-दांते डसै, खाग खागां सरिसि खांन खांना खसै।—पी.ग्रं.
३ भौंचक्का होना, हक्का-बक्का होना। उ०—डहकियौ साह देखे डंमर, घणूं भेद न लहै घणा। त्रण लाख दुसह भांजै तिसा, त्रण हजार 'गजबंध' तणा।—सू.प्र.
४ धोखा खाना, ठगा जाना। उ०—१ डहक्यौ डंफर देख, बादळ थोथौ नीर विन। हाथ न आई हेक, जळ री बूंद न जेठवा। —जैतदांन बारहठ
उ०—२ स्री दसरथ-दसरथ सुतन, पीथळ मूंज पंवार। कुण-कुण डहकांणा नहीं, बस चुगलां बापार।—बां.दा.
५ बहकना। उ०—डहक्योड़ा डोलै केई डोफा, गाफल जनम गमावै। राजी भेख मात्र नै राखै, सैजां ही सुख पावै।—ऊ.का.
६ हँसना। उ०—काळिका डहक डमरू भहाक। हर रिख मिळि जोगणी वीर हाक। —सू.प्र.
७ मेंढ़क का बोलना, मेंढ़क का ध्वनि करना।
उ०—ऊपर कुंजां, सारसां गहकनै रही छै। डेडरा डहकनै रह्या छै।—रा.सा.सं.
८ लहलहाना, हरा-भरा होना। उ०—रवि बैठौ कळसि थियौ पालट रितु, ठरे जु डहकियौ हेम ठंठ। ऊडण पंख समारि रहे अलि, कंठ समारि रहे कळकंठ।—वेलि.
९ खिलना, प्रफुल्लित होना। उ०—माचा ऊपर फूल एकै-एकै पांखती कुम्हळाया छै, बीजा सरव डहकै छै।—रायधण री वात
१० सुगंध फूटना, महकना। उ०—सखियां तणौ समाज ललित गहणा नीलंबर। किसतूरी केवड़ा डहक परमल घण डंबर।
—बगसीरांम प्रोहित री वात
११ सतर्क होना, चौंकन्ना होना. १२ पक्षियों का मस्ती में बोलना। उ०—भाखरां रा नाळा बोलनै रह्या छै। पांणी नाडा भरनै रह्या छै। चोटड़ियाळ डहकनै रही छै।—रा.सा.सं.
१३ मस्ती में चलना, राह छोड़ कर चलना। उ०—सारसी मेल्हइं मूंक्यां मांडइं असवार, उभडइं अणचींतव्या डहकइं अंकुसि लहकइं।
—व.स.
१४ उमंग में आना, उल्लसित होना. १५ रुक-रुक कर रोना, खुल कर न रोना, सिसकना।
डहकणहार, हारौ (हारी), डहकणियौ—वि०।
डहकवाड़णौ, डहकवाड़बौ, डहकवाणौ, डहकवावौ, डहकवावणौ, डहकवाववौ—प्रे०रू०।
डहकाड़णौ, डहकाड़बौ, डहकाणौ, डहकाबौ, डहकावणौ, डहकाववौ—स०रू०।
डहकिओड़ौ, डहकियोड़ौ, डहक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डहकीजणौ, डहकीजबौ—भाव वा०।
डहक्कणौ, डहक्कबौ, डहिकणौ, डहिकबौ, ड'कणौ, ड'कबौ—रू०भे०।
डहकाड़णौ, डहकाड़बौ—देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)
डहकाड़ियोड़ौ—देखो डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहकाड़ियोड़ी)
डहकाणौ-वि०—जो चमकाता हो, चमकाने वाला।
डहकाणौ, डहकाबौ-क्रि०स०—गुमराह करना, बहकाना।
उ०—दोयण मत खोटी दियै, बांका बिसवा बीस। डहकायौ दुरबोध दे, आदम नै इळबीस।—बां.दा.
२ भ्रम में डालना, सशंकित करना। उ०—क्यूं डहकावै मनड़ो मेरौ, क्यूं तरसावै जीव।—संतवांणी
३ (नक्कारा, डमरू आदि) बजाना, ध्वनि करना. ४ भौंचक्का करना, हक्का-बक्का करना. ५ धोखा देना, ठगना. ६ हँसाना. ७ हरा-भरा करना. ८ प्रफुल्लित करना, खिलाना. ९ सुगंध फैलाना, डहकाना. १० सतर्क करना, चौंकाना।
डहकणहार, हारौ (हारी), डहकणियौ—वि०।
डहकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
डहकाईजणौ, डहकाईजबौ—कर्म वा०।
डहकणौ, डहकबौ—अक० रू०।
डहकाड़णौ, डहकाड़बौ, डहकावणौ, डहकावबौ, डहक्काड़णौ, डहक्काड़बौ, डहक्काणौ, डहक्काबौ, डहक्कावणौ, डहक्काववौ, डै'काड़णौ, डै'काड़बौ, डै'काणौ, डै'काबौ, डै'कावणौ, डै'काववौ, डैहकाड़णौ, डैहकाड़बौ, डैहकाणौ. डैहकाबौ डैहकावणौ डैहकाववौ—रू०भे०।
डहकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गुमराह किया हुआ, बहकाया हुआ.

२ भ्रम में डाला हुआ, सशंकित किया हुआ. ३ बजाया हुआ, ध्वनित (नक्कारा, डमरू आदि) ४ भौंचक्का किया हुआ, हक्का-बक्का किया हुआ. ५ धोखा दिया हुआ, ठगाया हुआ.
६ हँसाया हुआ. ७ हरा-भरा किया हुआ. ८ प्रफुल्लित किया हुआ, खिलाया हुआ. ९ सुगंध फैलाया हुआ, डहकाया हुआ.
१० सतर्क किया हुआ, चौंकाया हुआ।
(स्त्री० डहकायोड़ी)

डहकावणौ, डहकावबौ—देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)
उ०—१ बाजी भरम दिखावा, बाजीगर डहकावा।—दादू बांणी
उ०—२ ये ता जिय में जांणत नांही, आई कहां चल जावै। आगे पीछे समझे नांही, मूरख यो डहकावै।—दादू बांणी
डहकावणहार, हारौ (हारी), डहकावणियौ—वि०।
डहकाविओड़ौ, डहकावियोड़ौ, डहकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डहकावीजणौ, डहकावीजबौ—कर्म वा०।
डहकणौ, डहकबौ—अक० रू०।

डहकावियोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहकावियोड़ी)

डहकियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ बजाया हुआ, ध्वनित (नक्कारा, डमरू आदि) २ भौंचक्का हुआ हुआ. ३ धोखा दिया हुआ, ठगा गया हुआ. ४ बहका हुआ. ५ हँसा हुआ. ६ बोला हुआ (मेंढ़क आदि) ७ लहलहाया हुआ, हरा-भरा. ७ खिला हुआ, प्रफुल्लित. ९ महकाया हुआ, सुगंधित. १० चौंका हुआ, सतर्क।
(स्त्री० डहकियोड़ी)

डहक्क—सं०स्त्री०—१ विकसित होने का भाव, प्रस्फुटन।
उ०—कसतूरी कड़ी केवड़ौ, मसकत जाय महक्क। मारू दाड़म-फूल जिम, दिन दिन नवी डहक्क।—ढो.मा.
२ देखो 'डहक' (रू.भे.)

डहक्कणौ, डहक्कबौ—१ बिलखना। उ०—सज्जणिया ववळाइ कइ, गउखे चढ़ी लहक्क। भरिया नयण कटोर ज्यउं, मुंघा हुई डहक्क।
—ढो.मा.
२ देखो 'डहकणौ, डहकबौ' (रू.भे.)
उ०—१ ठहक्कं कड़ी कंकटां ठोर ठाई, डहक्कं भड़ां वंकड़ां घोर डाई।—वं.भा.
उ०—२ ऊमर दीठी मारुई, डींभू जेही लंक्कि। जांणै हर-सिरि फूलड़ा, डाकै चढ़ी डहक्कि।—ढो.मा.
उ०—३ हुई धीर सधीरां वीर हक्क। हर सकति डंक डमरू डहक्क।—रा.रू.
देखो 'डहक' (रू.भे.)

डहक्काड़णौ, डहक्काड़बौ—देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)
डहक्काड़ियौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहक्काड़ियोड़ी)

डहक्काणौ, डहक्काबौ—देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)
डहक्कायोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहक्कायोड़ी)
डहक्कावणौ, डहक्कावबौ—देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)
डहक्कावियोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहकावियोड़ी)
डहक्कियोड़ौ—देखो 'डहकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहक्कियोड़ी)

डहचक्क—क्रि०वि०—लगातार, निरंतर ? । उ०—झळाहळ छूटत स्रोण भभक्क। ढळाहळ सीस उडै डहचक्क।—सू.प्र.

डहडह—सं०स्त्रीअनु०—हँसने की ध्वनि। उ०—कतियांणी क्रह-क्रह नारद डहडह हेके टह-टह वीर हसैं।—गु.रू.बं.

डहडहणौ, डहडहबौ—क्रि०अ०—१ प्रफुल्लित होना, खिलना।
उ०—डहडहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेव जाग। रवमुखी दावदी पुन पळास, नाफुरमा परगस आस-पास।
—मयारांम दरजी री वात
२ भयातुर होना, भयभीत होना। उ०—क्रूरमराज कुणउणिग्र नीसांणि घाइ वळइ, समरतूर आफळइ, सुभट-हृदयमनोरथ मालियइं, कातर डहडहइ, वीर गहगहइं, चिंध लहलहइं, मयगळ गुडया...।
—व.स.
३ प्रसन्न होना, हर्षित होना। उ०—बावन वीर नचण बहबहिया। डँरु जटी चंड डहडहिया।—सू.प्र.
४ डमरू आदि वाद्यों का बजना, ध्वनि करना।
उ०—सूर घाव सांस है, तूर अहअहे तयारां। डाक वीर डहडहै, 'जसै' मेलिया जयारां।—बखती खिड़ियौ
५ लहलहाना, हरा-भरा होना। उ०—यौं सज्जण सुख पूरिया, दूर गया सह दुक्ख। दळ नव पल्लव डहडहै, ज्यौं जळ पाया रुक्ख।
—रा.रू.
६ मेंढ़क का बोलना। उ०—मोर सोर मंडै, इंद्र धार न खंडै। दादुरा डहडहै, सांवण भादुवै री संधि कहै।—रा.सा.सं.
डहडहणहार, हारौ (हारी), डहडहणियौ—वि०।
डहडहाड़णौ, डहडहाड़बौ, डहडहाणौ, डहडहाबौ, डहडहावणौ, डह-डहावबौ—स०रू०।
डहडहिओड़ौ, डहडहियोड़ौ, डहडहयोड़ौ—भू०का०कृ०।
डहडहीजणौ, डहडहीजबौ—भाव वा०।
डहडुहणौ, डहडुहबौ—रू०भे०।

डहडहाट—देखो 'डँडा'ट' (रू.भे.)
डहडहाणौ, डहडहाबौ—देखो 'डहडहणौ' (रू.भे.)
डहडहायोड़ौ—देखो 'डहडहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहडहायोड़ी)
डहडहाव—सं०पु०—हरा-भरा होने का भाव, हरापन, ताजगी।
डहडहियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ खिला हुआ, प्रफुल्लित. २ भयभीत,

आतंकित. ३ हर्षित, प्रसन्न. ४ बजा हुआ, ध्वनित (डमरू आदि) ५ लहलहाया हुआ. ६ बोला हुआ (मेंढ़क आदि)
(स्त्री० डहडहियोड़ी)

डहडहौ–वि०—हरा-भरा, प्रफुल्लित, ताजगीयुक्त।

डहहुहणौ, डहहुहबौ—देखो 'डहडहणौ, डहडहबौ' (रू.भे.)
उ०—१ दम्मांम डहहुह तूर त्रहत्रह, गोळ गहम्मह गेंगुड़िय।
—गु.रू.बं.
उ०—२ डहहुह डाइणि डांमर सद्द। नहत्रह त्रीखौ सीधूं नद्द।
—रा.जै. रासौ

डहड्डियोड़ौ—देखो 'डहडहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहड्डहियोड़ी)

डहणौ, डहबौ-क्रि०स०—१ उठाये हुए रखना, सम्भाले हुए रखना।
उ०—१ डहतौ भुज गयण वयण कहतौ दिढ़, एकलगिड़ वहतौ अणमाव। भूरा सिंघ रजवट रा भाखर, आइयौ सुधमना अमराव।
—रतनसिंघ कूंपावत री गीत
उ०—२ डिगंतौ आभ कुण भुजां ऊपर डहै, खहै कुण जमदूतां वार खाटी। दूसरौ 'अमर' किण मरै धोळै दिवस, भवस दरियाव विच विना भाटी।—अमरसिंघ भाटी री गीत
२ स्थापित करना, रखना। उ०—दुय दुय सहँस बंदूक, सहति वगसरां सकाजां। तै दस दस भरि तोप, डहै बारह दरवाजां।—सू.प्र.
३ धारण करना। उ०—डहिया विरद वडा भुज डंडे। तीख करे मिथळापुर तंडे।—र.ज.प्र.
४ पहनना, धारण करना। उ०—डगंस वेड़ियां डहै, जंभीर भार जूवळां। करंत खून काळकीट, सुंड नाग सांमळां।—सू.प्र.
५ ग्रहण करना, पकड़ना, धारण करना। उ०—मारू कांम अडोल मन, सारू सांम धरम्म। डहौ खड़गां धूप कर, एवां गही सरम्म।
—रा.रू.
६ ध्वनि करना, बजाना (डमरू आदि वाद्यों को)। उ०—डहरू संकर डहै, करै जोगण किलकारां। रुड़ै सिंधुड़ौ राग, पड़ै सर सोक अपारां।—रा.रू.
७ आरूढ़ होना ? उ०—सुरांपत इंद्र नै कियौ गजराज सज, डुडंद नै जीण सपतास डहियौ। कुसळउत अनै भूरौ दुरंग बस कियौ, व्रखभधुज अनै कर त्रिपुर वहियौ।
—नींवाज ठाकुर अमरसिंघ री गीत
क्रि०अ०—८ शोभित होना। उ०—डहंत केलि डालयं, उपंति वंद्रवाळयं। वहंत दुंदभं वयं, जपंत देव जैजयं।—सू.प्र.
९ होना, बनना। उ०—परवतां ऊपर पंथ डहै। गिरि कंदर झंगर मोर गहै।—गु.रू.बं.
१० सुसज्जित होना, सजना। उ०—झळहळ रती भुजां भर झल्ले, हल्ले उतन नरेस 'जसाहर'। आयौ जोध दुरंग ऊमहियां, डहियां फौज गजां धज डंबर।—सू.प्र.
११ दुखी होना, संतप्त होना। उ०—डहती डूलीसी भूली ढंग ढांगै, मोटी आंख्यां री रोटी मुख मांगै। तोता बोता में रै'ता तुतळाता, वातां बीसरगा वै'ता वतळाता।—ऊ.का.
डहणहार, हारौ (हारी), डहणियौ—वि०।
डहवाड़णौ, डहवाड़बौ, डहवाणौ, डहवाबौ, डहवावणौ, डहवाववौ—प्रे०रू०।
डहाड़णौ, डहाड़बौ, डहाणौ, डहाबौ, डहावणौ, डहाववौ—स०रू०।
डहिओड़ौ, डहियोड़ौ, डह्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डहीजणौ, डहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

डहर—१ देखो 'डैरी' (रू.भे.) उ०—१ देवर चूंटचा दोय ऊमरा, थारी धण चूंटचौ सारौ डहर, सोदागर मंहदी राचणी।—लो.गी.
उ०—२ गिरवर डहर झंगर गाहि, पाधर किया पवंगां पाहि।
—गु.रू.बं.
सं०पु० (देश) २ बालक (जैन) ३ तरुण, युवक (जैन)
वि०—हलका, तुच्छ, छोटा।

डहरउ–सं०पु० [सं० दहरः] १ बच्चा, शिशु (उ.र.) २ जानवर का बच्चा (उ.र.) ३ छोटा भाई, अनुज (उ.र.) ४ चूहा (उ.र.)

डहरी–सं०स्त्री०—प्रेतिनी, भूतिनी, डायन। उ०—सियकोतर भैरव साकणियां, डहरी बहरी मिळ डाकणियां। गयणाग न मावत ग्रीधणियां, सुज भौम असी चत्र चारणियां।—पा.प्र.

डहरू—१ देखो 'डमरू' (रू.भे.) उ०—डहरू संकर डहै, करै जोगण किलकारां। रुड़ै सिंधुड़ौ राग, पड़ै सर सोक अपारां।—र.रू.
२ देखो 'डैरू' (रू.भे.)

डहरौ–सं०पु० [सं० दहरः] छोटा बच्चा, शिशु (जैन)

डहलणौ, डहलबौ, डहलाणौ, डहलाबौ–क्रि०अ०—हाथी का चिंघाड़ना।
उ०—असमांनक अज्झर धार असम्मर तूट तरोवर तुंग नरं, डहलाए दद्दर हींसै हैमर फूटि सरोवर फाळ फरं।—गु.रू.बं.

डहळौ–वि०—गंधला या मैला (पानी)। उ०—तूं न तांन सारखौ जिकौ जळ डहळौ पीवै। तूं न तांन सारखौ सुणै पन हर नह जीवै।
—द.दा

डहाड़णौ, डहाड़बौ—देखो 'डहाणौ, डहावौ' (रू.भे.)

डहाड़ियोड़ौ—देखो 'डहायोड़ौ' (रू.भे.)

डहाणौ, डहाबौ–क्रि०स०—१ शोभित करना. २ करना, बनाना.
३ सुसज्जित करना, सजाना. ४ दुखी करना, संतप्त करना.
५ देखो 'डहणौ, डहबौ' (रू.भे.)
डहाणहार, हारौ (हारी), डहाणियौ—वि०।
डहायोड़ौ—भू०का०कृ०।
डहाईजणौ, डहाईजबौ—कर्म वा०।
डहणौ, डहबौ—अक०रू०।
डहाड़णौ, डहाड़बौ, डहावणौ, डहाववौ—रू०भे०।

डहायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ शोभित किया हुआ. २ किया हुआ, बना

हुआ. ३ सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ. ४ दुखी किया हुआ, संतप्त किया हुआ. ५ देखो 'डहियोड़ी' (रू.भे.)
(स्त्री० डहायोड़ी)

डहाल-संस्त्री०—तलवार।

डहावणौ, डहावबौ—देखो 'डहाणौ, डहाबौ' (रू.भे.)
डहावणहार, हारौ (हारी), डहावणियौ—वि०।
डहाविग्रोड़ौ, डहावियोड़ौ, डहाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डहावीजणौ, डहावीजबौ—कर्म वा०।
डहणौ, डहबौ—अक०रू०।

डहावियोड़ौ—देखो 'डहायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहावियोड़ी)

डहिकणौ, डहिकबौ—देखो 'डहकणौ, डहकबौ' (रू.भे.)

डहिकियोड़ौ—देखो 'डहकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहिकियोड़ी)

डहिडहणौ, डहिडहबौ—देखो 'डहडहणौ, डहडहबौ' (रू.भे.) उ०—द्वादस मेघ नै दुबौ हुबौ, सू दुखियारी री आंख हुबौ। झड़ लागी, प्रथी री दळद्र भागो। दादुरा डहिडहै, सांवरा आवरा री सिध कहै।
—रा.सा.सं.

डहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उठाया हुआ, सम्भाला हुआ. २ स्थापित किया हुआ. ३ धारण किया हुआ. ४ पहना हुआ, धारण किया हुआ. ५ ग्रहण किया हुआ, पकड़ा हुआ. ६ ध्वनि किया हुआ, बजाया हुआ. ७ आरूढ़ हुवा हुआ. ८ शोभित. ९ बना हुआ. १० सुसज्जित. ११ दुखी, संतप्त।
(स्त्री० डहियोड़ी)

डहूकौ—देखो 'डुसकौ' (रू.भे.)

डहोळणौ, डहोळबौ—देखो 'डोळणौ, डोळबौ' (रू.भे.)
डहोळणहार, हारौ (हारी), डहोळणियौ—वि०।
डहोळवाड़णौ, डहोळवाड़बौ, डहोळवाणौ, डहोळवाबौ, डहोळवावणौ, डहोळवावबौ, डहोळाड़णौ, डहोळाड़बौ, डहोळाणौ, डहोळाबौ, डहोळावणौ, डहोळावबौ—प्रे०रू०।
डहोळिग्रोड़ौ, डहोळियोड़ौ, डहोळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डहोळीजणौ, डहोळीजबौ—कर्म वा०।

डहोळियोड़ौ—देखो 'डोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डहोळियोड़ी)

डहोळौ—१ भय, डर। उ०—पड़ै डहोळा छातियां, नजर पड़ंतां नाह। आवै आवै ऊचरै, ओडौ ह्रैर सिपाह।—वी.स.
२ आन्दोलन, उपद्रव। उ०—महा डहोळौ मेदनी, विसतरियौ तिण वार। साह तपस्या सगळौ, अकबर सेन अपार।—रा.रू.
३ खलबली, क्षोभ। उ०—सांमंद्र डहोळा ओद्रकां, जांण हिलोळां हल्लियौ। आलम मर्दां 'अजमल्ल' रां, थांण मथांणै घल्लियौ।
—रा.रू.

डहोलौ-संपु०—१ काष्ट का बड़ा चम्मच। उ०—१ सू वासण तयार कीजै छै, देगां चरू, कढ़ाई, कुड़छी, खुरपा, डहोला, झरहर, चालणी, थाळ, कटोरा, प्याला, ढकणी, लोटा, पाळा बाजोट और ही सब छकड़ां गाडां घातजै छै।—रा.सा.सं.
उ०—२ आगै सहर में एकै साह-रै विहा थौ, तै-रै महीनै-री तयारी करावै छै, भठी कढ़ाय कढ़ा, चरू, खुरपा, डहोला सारा वासण आंण हाजर किया।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

डहौ—देखो 'डूहौ' (रू.भे.) उ०—पाखती अरटां री झींगड़ि चींगरड़ि पड़िनै रही छै। डहा री खठाकौ लागिनै रहिग्रो छै। पाखती नाळि वभिनै रही छै।—रा.सा.सं.

डांक-संस्त्री०—१ सोने चांदी के गहनों में लगाया जाने वाला जोड़।
क्रि०प्र०—लगाणी (स्वर्णकार)
२ देखो 'डांखलौ' (मह., रू.भे.) (अमरत)
रू०भे०—डांख।

डांक-घोटी-संस्त्री०यौ०—सोने चांदी की चद्दर को चमकाने का एक मोटा जिसके दोनों ओर विशेष प्रकार का पत्थर लगा रहता है। (स्वर्णकार)

डांकळ—देखो 'डांखळौ' (मह., रू.भे.)

डांकळियौ—देखो 'डांखळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डांकळी-संस्त्री०—देखो 'डांखळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डांकळौ—देखो 'डांखळौ' (रू.भे.)

डांकियौ—देखो 'डांखियौ' (रू.भे.)

डांख—देखो 'डांखळौ' (मह., रू.भे.)

डांखणौ, डांखबौ—देखो 'डांखिणौ, डांखिबौ' (रू.भे.)

डांखरौ-वि०—धुंधला। उ०—आज न दीसै गोठ में, सज्जण थारौ दीह। तारौ दीसै डांखरौ, सेरी वधियौ सीह।
—जलाल-बूबना री वात

डांखळ—देखो 'डांखळौ' (मह., रू.भे.)

डांखळियौ—देखो 'डांखळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डांखळी-संस्त्री०—देखो 'डांखळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डांखळौ-संपु०—डंठल। उ०—आंख्यां में काजळ लियां घाघरा रा उछाळा देवती बोली—सेठां रा रुपिया चुकाय नै अबकै म्हनै चूड़ौ जरूर पैरावणौ पड़ैला। हाथां में चार-चार डांखळा लियां फिरूं, म्हनै तौ लाज ईज घणी आवै।—रातवासौ
रू०भे०—डांकळौ।
अल्पा०—डांकळियौ, डांकळी, डांखळियौ, डांखळी, डांवळी।
मह०—डांक, डांकळ, डांख, डांखळ।

डांखिणौ, डांखिबौ-क्रि०अ०—१ क्रोधित होना. २ आकाश में विचरण करना, उड़ना. ३ चोंच से कुरेदना।
डांखणौ, डांखबौ—रू०भे०।

डांखियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चोंच से कुरेदा हुआ. २ क्रोधित, कुपित.

३ आकाश में विचरण किया हुआ, उड़ा हुआ ।
(स्त्री० डांखियोड़ी)

डांखियो–सं०पु०—क्रोधित सिंह, भूखा सिंह (डि.को.)
उ०—१ असुर सरीख डांखिया आया । आगै जादम राड़ अघाया ।
—रा.रू.
उ०—२ वांघळो विकट सादूळ बाहरण वर्णां, डांखियौ सीस सम तूळ डालै । अरोहै मूळ दुस्टां तरणां उखाड़रण, भाड़क्या रुखाळण सूळ भालै ।—मे.म.
वि०—क्रोधित, कुपित ।
रू०भे०—डांकियौ ।

डांग–सं०स्त्री०—पांच या छः फुट लम्बे व मोटे बांस का मजबूत डंडा । लाठी । उ०—देव न मारै डांग सूं, देव कुवुद्धी देत ।—अज्ञात
मुहा०—डांग माथै (ऊपर) डेरो है—वह घुमक्कड़ जिसके पास अधिक सामान आदि न हो तथा किसी निश्चित स्थान पर ठहरने का प्रवन्ध न हो, वैभवहीन ।
२ खेत या ऐसी ही खुली भूमि के चारों ओर वना अहाता ।
अल्पा०—डांगड़की, डांगड़ी ।
मह०—डांगड़ ।

डांगड़की—देखो डांग (अल्पा., रू.भे.)

डांगड़ियौ–सं०पु०—सीरवी जाति की आराध्य देवी आईजी की पूजा करने वाला साधू (मा.म.)

डांगड़ी–सं०स्त्री०—१ बैलगाड़ी के ऊपर लगाये जाने वाले सीधे पाट को गाड़ी के अगले डंडों से मिलने वाली लकड़ी.
२ देखो 'डांग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—टेपरियो डांगड़ी रै टेवके डिगती-डिगती घरै पूग्यौ अर रंभा नै भांवी मांचा में घाल नै घरै लेग्या ।—रातवासौ
यौ०—डांगड़ी-रात ।

डांगड़ी-रात–सं०स्त्री०यौ०—वह रात्रि जिसमें तीर्थ-यात्रा से लौटने पर तीर्थ-यात्रा के उपलक्ष में हरि-कीर्तन किया जाता है ।
वि०वि०—हरिद्वार, वद्रिकाश्रम आदि तीर्थ-स्थानों से लौटते समय यात्री उस स्थान का जल व एक लाठी अपने साथ लेकर आता है । अपने निवास-स्थल पर एक निश्चित रात्रि को कीर्तन करने वालों के साथ जागरण करता है । जल और लाठी को कीर्तन के बीच में रख देता है । सवेरे ब्राह्मणों व साधु सन्तों को भोजन करा कर उस लाठी को दान के रूप में किसी साधु को दे देता है ।
क्रि०प्र०—जगावणी ।

डांगपटेलाई–सं०स्त्री०—डंडे का जोर, मारपीट (मा.म.)

डांगर–सं०पु० (पंजाबी-डंगर) पशु, चौपाया, मवेशी ।
उ०—अबै तौ कब्जौ नहीं कियौ तौ रही-सही घर-बकरी अर ढोर-डांगर ई हाथ मांयनै सूं जावता रैवेला ।—रातवासौ
वि०—मूर्ख, गँवार ।
रू०भे०—डंगर ।
अल्पा०—डांगरौ ।

डांगरजंत्र–सं०पु०—एक प्रकार की तोप । उ०—तरै कांगुरां सूं मतवाळां डांगरजंत्र छोड़िया सु घणा आदमी मारिया ।—नैणसी

डांगरु, डांगरू–वि०—वह जो घोषणा करता हो, घोषणा करने वाला ।
उ०—इसी वात सांभळी प्रधांने, वांन विगूचतां दीठां । कटक मांहि डांगरु फेराव्यउ, कथन कहाव्या मीठां ।—कां.दे.
२ देखो 'डांगर' (रू.भे.)

डांगरौ—देखो 'डांगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सारा सरदार आण भेळा हुआ तौ केसरीसिंह कहण लागियौ—जे मोटा ठाकुर छौ, डांगरां री वाद क्यूं ही नहीं छै, आंपां भाट मंगत नूं ही उठाय देवां छां ।—राठौड़ अमरसिंह री वात

डांगी–सं०पु०—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात) २ ढोली जाति की एक शाखा जो राठौड़ों से निकली हुई मानी जाती है या इस शाखा का व्यक्ति. ३ एक प्रकार का सर्प । उ०—डूबी डांगी डाहकलु भुंडउ नइं भुइं फोड वासिग कुळ की वेगलू अे को आंगळ ओड़—मा.कां.प्र.
४ एक प्रकार का मोटा ताजा हृष्टपुष्ठ लंगूर की जाति का बंदर विशेष जो अपनी टोली का मुखिया होता है ।
सं०स्त्री०—५ छोटी नाव. ६ गेहूं की वाल ।
वि०—हृष्टपुष्ठ (मि. लठ १)

डांगौ–सं०पु०—हसिया लगा हुआ लम्बा बांस जो टहनियां काटने के काम आता है ।
मि०—अंकुड़ौ ।

डांचौ–सं०पु०—ऊँचे पायों का पलंग ।
रू०भे०—डूंचौ, डंचौ ।

डांजी, डांभी–सं०स्त्री०—रेगिस्तान की ऐसी भूमि जहां लम्बे फासले तक आवादी, पेड़-पौधे, पानी आदि नहीं मिलता हो ।

डांटणौ, डांटबौ—देखो 'डाटणौ, डाटबौ' (रू.भे.)

डांटियोड़ौ—देखो 'डाटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डांटियोड़ी)

डांठळ—देखो डंठळ' (रू.भे.)

डांड–सं०पु०—१ नाव खेने का लंवा वल्ला, चप्पू ।
पर्या०—खेवरणी, खेवणी ।
२ सीधी लकड़ी, डंडा. ३ अंकुश का हत्था. ४ देखो 'डंडौ' ।
(मह., रू.भे.)
वि०—१ मूर्ख, गँवार. २ जवरदस्त ।

डांडणौ, डांडबौ—देखो 'डंडणौ, डंडबौ' (रू.भे.)
उ०—संवत १६५१ पोस मांहे जोधपुर पधारिया, पाट वैठा । दिन आठ रह्या । गुजरात पधारता देवड़ा डांडीया ।
—महाराजा सूरजसिंघजी रै राज री वात

डांडियोड़ौ—देखो 'डंडियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डांडियोड़ी)

डांडर—देखो 'डांडरी' (रू.भे.) उ०—राव री जांघ तो बच गई पण घोड़ै रौ काळजो बुकड़ा आंतड़ा ओझड़ा फाट काछ जावतो नीसरियो। घोड़ै री डांडर जाय धरती पड़ियो, त्यारूं पग चहल हुवा।—डाढ़ाळा सूर री वात

डांडहड़ि, डांडहड़ी—देखो 'डंडाहड़' (रू.भे.)

२ देखो 'डंडो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—वडिम वार वडुवार खत्रभार धरियै, विसवि डांडहडी सावळां खळां डोहै। सिंघ झूझार नरसिंघ रा सींधळी, सूरवट सुयणवट भुजै सोहै।

—राठौड़ जूझारसिंघ री गीत

डांडि—देखो 'डांडी' (रू.भे.)

डांडीयो—१ देखो 'डंडियो' (रू.भे.) उ०—१ भिड़े भीम अरजुण कुरु भारत, गेहर-डांडीयां रम कुळ गारत।—ऊ.का.

उ०—२ मोटियार चढ़ी छीनण में छछोहा फेरै अर डांडीयां री कड़ाकड़ हुवै तिण तरह तरवारियां री खड़ाखड़ हुइ रही छै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ देखो 'डांडो' (अल्पा., रू.भे.)

डांडी-सं०स्त्री० [सं० दण्डिका, प्रा० दंडिआ, डंडिआ, अप० दंडिअ, डंडिअ] १ पग-डंडी, मार्ग, रास्ता (अ.मा.)

उ०—डरै लोग वन डांडीयां, सूतै ही सादूळ। जे सूता ही जागता, सबळां माथा सूळ।—वां.दा.

मुहा०—डांडी पीटणी—एक ही बात को बार-बार दोहराना, बकझक करना, रूढ़िवादी होना।

मि०—लकीर पीटणी।

२ नाक का ऊपरी भाग।

कहा०—रांम नाक री डांडी रै ऊपर बैठो सूं सो अणहुती हुतांई झट ठैको दे दै—ईश्वर नाक के ऊपर बैठा है अर्थात् ईश्वर सदैव अपने साथ रहता है अतः हमारे द्वारा अनुचित कार्य या अत्याचार ते ही हमें दण्ड दे देता है।

३ तराजू की डंडी जिसमें रस्सियां बांध कर पलड़े लटकाये जाते हैं। उ०—दगो पालड़ा डांडियां, तोला मझ तणियांह। गुर सूं ही गुदरै नहीं, वणिक बेंत वणियांह।—बां.दा.

४ सीधी लकीर. ५ किसी उपकरण, आभूषण, औजार आदि के लगा हुआ वह भाग जो उसे पकड़ने के लिए हो अथवा जिससे वह किसी स्थान पर स्थिर हो सके। ज्यूं—बेसर री डांडी, जरियै री डांडी।

५ पालकी उठाने के डंडे। देखो 'डांडो' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—डंडी, डांडि।

मह०—डांडीड़, डांडो।

डांडीड़—१ देखो 'डांडो' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'डांडी' (मह., रू.भे.)

डांड-मीढ़—वि०—क्रोधी।

डांडो-सं०पु०—१ फाल्गुन मास के या होलिका के संकेत के निमित्त माघ मास की पूर्णिमा को जंगल से काट कर लाया हुआ वह वृक्ष जो गांव के चौहटे में प्रायः होली जलाने के स्थान पर रोपा जाता है। मि०—रोपणी (१)

२ औजार, कुल्हाड़ी आदि का हत्था, दस्ता।

३ कांवर या बहंगी का वह डंडा जिसे बोझा ले जाते समय कंधे पर रखा जाता है। उ०—कावड़ ते जूनी थई रै लाल, धुणादिक जीव खाय सुविचारी रे। तणियां छींको बोदो थयो रै लाल, डांडो सुळियो जाय सुविचारी रे।—जयवांणी

४ देखो 'डांडी' (मह., रू.भे.) उ०—बेसर डांडो वळ पड़ियो, औ किण री उपगार। रंग काथो चढ़ियो नखां, हिवड़ै गडियो हार।

—पनां वीरमदे री वात

५ देखो 'डंडो' (रू.भे.) उ०—हाथै डांडो झालियो जी, चालतो लड़थड़ै देह।—जयवांणी

अल्पा०—डांडियो, डांडी।

मह०—डांड, डांडीड़।

डांडवेड़—देखो 'ढांढ़वेड़' (रू.भे.)

डांढ़ो—देखो 'ढांढ़ो' (रू.भे.) उ०—डांढ़ा तांभाड़ै केरड़िया ढींकै। रोटी पांणी नै टींगरिया रींकै।—ऊ.का.

डांण-सं०पु० [सं० दान] १ चौपड़ आदि का खेल, दाव।

उ०—एक समै मीयां बुढ़ण महेचां रै परणियो छै। तिको उणरी नांम बाइ लाडु छै। उण सूं मीयां बुढ़ण चोपड़ रमै छै। सो बाई लाडु रै डांण पड़ै नहीं, तरै बाई पासो बावती कयो—पासा तोनै रांमदास वेरावती री आंण छै। पोबारा पड़िया तरै लाडु बाई री जीत हुई।—रा.सा.सं.

२ दाव। उ०—अना सुरति का खेल फकीरी, सहज समझ कर जांण। निराधार का खेल फकीरी, लगे न जम का डांण।

—श्री हरिरांमजी महाराज

३ कर, टैक्स। उ०—१ कूड़ा तोला मापला ए, ताकड़ी अंतर-कांण के। इण धन रै कारणै ए, भांजै राजा री डांण के।—जयवांणी

उ०—२ दधि पीतो हरि लेतो डांण।—ह.नां.

४ दण्ड, जुर्माना, सजा। उ०—त्यांन गरुआ गोविंद गोसांई दांणवां ऊपरा दिओ नी डांण।—पी.ग्रं.

५ सिंह, हाथी तथा ऊंट की गरदन से झरने वाला मद।

उ०—१ धाक हाक डाक धीह, धूंसां आभ धुजाड़ियो। गिरां गुंजाड़ियो, डांण सूक गौ गयंद। ओझाड़ियो ढाल हूंत, नाराज झाड़ियो आचां, मारू 'पतै' फतै पाय पाड़ियो मयंद।

—किसनगढ़ रा राजा प्रतापसिंघ रो गीत

उ०—२ वन माझल बघवाव सूं, दुरद विसूकै डांण। जेठ लुवां सूकंत जिम, निरजळ देख निवांण।—बां.दा.

६ सिंह, हाथी तथा ऊँट की गरदन से मद झरने का स्थान ।
उ०—मद पिसरण रौ किम मही, पिव आगळ रह पाय । मद झरता जिम मदगळां, सिंह लख डांण सुखाय ।—रेवतसिंह भाटी
७ गर्व, अभिमान । उ०—जुड़ै मुगळ जांणियौ, मारि नांखै पल मांहै । मांण डांण तजि मुगळ, लाज लंगरां तुहाड़ै ।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—करणौ, राखणौ, होणौ ।
यौ०—मांण-डांण ।
८ जोश । उ०—लोह लाठ गनीमां सूं तांणी मूंछां डांणै लागी । केवांणां ऊवांणै वागौ दूजौ 'भीम' क्रोध ।—प्रथीसिंघ रौ गीत
९ बहुत से मनुष्यों के समूह द्वारा धूमधाम की यात्रा, जलूस ।
उ०—चहुं चढ़ै दुरदां चमर ढुळतां, डमर सजिया डांण । चल बांध तोरण वैठ चंवरी, प्रगट जोड़ै पांण ।—र.रू.
१० मचान, मंच । उ०—आहेड़ै जमरांण डांण मंडै दीहाड़ी, सर क्रम बंध संधिया चाप आवरदा चाडी । मोहवास मंडवै विघन सड़वा विसतारै, कर हाका हाकंत जुरा कुत्ती हलकारै । चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति, निजर काळ देखै नयण । म्रिग जीव सरण मारीजतौ, राख राख राधा रमण ।—ज.खि.
११ खाता विभाग, मद. १२ समूह, दल । उ०—डांण ठेलै तूं मातंगां भड़ां डाचरा उवाड़ डाकी, मूंछां तांण पेलै तूं कंपनी गंजै माल । काट थांणौ रेलै तूं सयणां जमी जोस खायै, खसतौ खपांणां माथै झेलै 'खुसाळ' ।—सूरजमल मीसण
१३ मस्ती । उ०—१ पाछा आवतां राजा रा काका सारंगदेव रा वडा पुत्र प्रतापसिंह अरीसिंह दो ही सहोदर एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सायंकाळ रौ विधेयकरम करण पाळा ही चलाया अर विखम दुरग ओघट घाट रै कारण आपरा घोड़ा सिपाह पाछा ही झलाया । तिण समय साहणसिंगार नांम राजा रौ पाट हाथी डांण लागौ थकौ पैली तीर आपरा सजातीय नूं जळ पीवतौ देखि तिण ऊपर चालियौ अर ऊ भी वैतंड साहणसिंगार नूं आवतौ देखि सांम्हौ हालियौ ।
—वं.भा.
उ०—२ गिर डांणा लागौ घैघींगर, पवै मेर सूं ऊंचपणौ । उण रित में दीठां वण आवै, तद जेठी कयळास तणौ ।—नवलजी लाळस
उ०—३ वरसंतां सहरां वीटांणौ, नमख न हुअै नराळौ । डांणा आज लगौ डूंगरियौ, वनलौ कांठळ वाळौ ।—नवलजी लाळस
१४ उपाय, युक्ति, तरीका । उ०—कोई खुसामदी नहीं कांण ए, ए समझावण रा डांण ए ।—जयवांणी
१५ मौज, आराम, ऐश. १६ ऊँट की पीठ पर सवारी करने के लिए रखी जाने वाली साधारण गद्दी या बोरी ।
वि०वि०—इसमें पलांण या चारजामा नहीं कसा जाता है ।
सं०स्त्री०—१७ छलांग, कुदांन, फलांग, चौकड़ी ।
उ०—१ कवीलेह जे रचिया रेह कुदै, सजै डांण लंबा म्रिगां मांण सूदै ।—वं.भा.
उ०—अगसाखा ग्रसि अग पवन उडांण डांण झापंदा । पाली-हरि विलि पिगा दादुरिया नेव कुदंती ।—रांमरासौ
उ०—३ करै पाव टिल्ला पछै चूर कीधौ, दिसा लंक आकास में डांण दीधौ ।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—झांपणौ, धरणौ, मारणौ, लगाणौ ।
१८ डग, कदम । उ०—अड़ीखंभ डांण भरंता अछाया । अड़ै गैण सूं दंड के कंध आया ।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—भरणौ, मेलणौ, राखणौ ।
१९ सीमा, हद । उ०—डारण वर री डांण धरै, खळ सक्की की खाट । मूंडां-थळ श्री मंडणौ, देवळियां दहबाट ।—रेवतसिंघ भाटी
२० युद्धार्थ सेना की तैयारी, सज-धज । उ०—१ दखण ऊपरि मंडे डांण । खुरम किया दरकूच पयांण ।—गु.रू.बं.
उ०—२ आवू मत कर औरतौ, देखे फौजां डांण । जब लग ऊभौ 'पातड़ो', तब लग मूंछां तांण ।—अज्ञात
२१ पारी, बारी ।
वि०—१ तीव्र, तेज । उ०—पांच वरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधतै डांण । गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, वड़ वखती 'वीकांण' ।
—ऐ.जै.का.सं.
२ स्वस्थ, निरोग. ३ समान, तुल्य । उ०—डारण नाहर डांण ठवंतौ ठाहरां । फुरळंतौ अरि फौज तसां धिन ताहरां ।
—किसोरदांन बारहठ

डांणणौ, डांणबौ—क्रि०स०—ऊँट की पीठ पर सवारी करने के लिए साधारण बोरी या गद्दी कसना ।
डांणबळरोजगार—सं०पु०यौ०—एक प्रकार का सरकारी लगान ।
डांणहुलौ—वि०—वीर, योद्धा । उ०—सू किसा-अैक सरदार जुवांन छै ? पाकां पाकां वरियामां नूं, खींवरां नूं, डांणहुलां डाकियां नूं, करड़-दंतां नूं, लोह घड़ां लाह पर डाहलां नूं, लोली देतां, कटारी उगराइ खातां, पचासां बोळावियां आधै आध वाढ़ उतरियां, जियां रा पांच-पांच हजार दांम पाटा-बंधाई रा पाटैदार खाय चुका छै ।
—रा.सा.सं.
डांणियोडौ—भू०का०कृ०—साधारण बोरी या गद्दी कसा हुआ (ऊँट) (स्त्री० डांणियोड़ी)
डांणी—वि०—कर वसूल करने वाला, लगान वसूल करने वाला ।
उ०—१ दह दसि खड़ा जगाती डांणी, जम दरवारि जाय वौ प्रांणी । नाथ निरंजन अलख विनांणी, रांम भजन की गळी न जांणी ।
—ह.पु.वा.
उ०—२ वस्तु भरी परदेस नै रे, वेळा बिन लद जाय । दुरमत डांणी आगै खड़ो, लेसी माल लुटाय ।—स्री हरिरांमजी महाराज
डांणे—क्रि०वि०—आनन्द में ।
डांणौ—सं०पु०—१ रहट के उस किनारे पर की शिला जिधर से माल

पानी से भर कर आती है और जिसमें रहट को उल्टा घूमने से रोकने के लिए लगाया जाने वाला 'हूग्री' लगा रहता है. २ वृद्ध, बुड्ढा।
रू०भे०—दांनो।

टांफर-सं०स्त्री०—१ बाह्य ठाट-बाट, बाह्य आडम्बर. २ वातचक्र, आंधी. ३ शीतल वायु। उ०—डांफरा कहसी तूफ विखा, भणसी लूग्रां बावळां।—दुरगादास
रू०भे०—डंफर।

टांफी-सं०स्त्री०—शीतल वायु (शेखावाटी)

टांव—देखो 'डांम' (रू.भे.)

टांवणौ, डांववौ—देखो 'डांमणौ, डांमवौ' (रू.भे.)

डांवियोड़ौ—देखो 'डांमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डांवियोड़ी)

डांवियौ-सं०पु०—कांटेदार बड़ा वृक्ष विशेष जिसके लम्बे पत्ते आम से मिलते-जुलते होते हैं।

डांभ—देखो 'डांम' (रू.भे.) उ०—१ जैसे खोर भई पग ऊंठ कै, दीजै खरकै डांभ। ऊंठ रै पग रै पीड़ हुई नै गदो डांभियो।—वी.स.टी.
उ०—२ बांधउं वड़ री छांहड़ी, नीरूं नागरवेल। डांभ संभाळूं करहला, चौपड़ि सूं चंपेल।—ढो.मा.

डांभणौ, डांभवौ—देखो 'डांमणौ, डांमवौ' (रू.भे.)
उ०—१ जैसे खोर भई पग ऊंठ कै, दीजै खर कै डांभ। ऊंठ रै पग रै पीड़ हुई नै गधो डांभियो—कारण और कारज ऊंठ रै पग पीड़ कारण गदो डांभणौ।—वी.स.टी.

डांभियोड़ौ—देखो 'डांमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डांभियोड़ी)

डांम-सं०पु०—किसी तपी हुई धातु से मनुष्य या पशुओं के शरीर के रुग्ण स्थान पर लगाया जाने वाला दाग।
उ०—अकल सरीरां ऊपजै, दीधा लागै डांम।—अज्ञात
कहा०—कै रांम करै कै डांम करै—या तो राम ही कर सकता है या अग्नि-दग्ध से ही हो सकता है अर्थात् किसी रोग विशेष को या तो ईश्वर ही ठीक कर सकता है या अग्नि-दग्ध क्रिया से ही ठीक हो सकता है। अग्नि-दग्ध क्रिया की महत्ता।
२ अग्नि-दग्ध क्रिया से शरीर पर बनने वाला चिन्ह।
रू०भे०—डंभ, डांव, डांभ, डांव।

डांमड़ौ—१ मचान. २ देखो 'डांम' (अल्पा., रू.भे)

डांमणौ, डांमवौ-क्रि०स०—अग्नि-दग्ध करना, दाग लगाना, दागना।
डांमणहार, हारौ (हारी), डांमणियौ—वि०।
डांमवाड़णौ, डांमवाड़वौ, डांमवाणौ, डांमवावौ, डांमवावणौ, डांमवाववौ, डांमाड़णौ, डांमाड़वौ, डांमाणौ, डामावौ, डांमावणौ, डांमाववौ—प्रे०रू०।
डांमिग्रोड़ौ, डांमियोड़ौ, डांम्योड़ौ—भू०का०कृ०।
डांमीजणौ, डांमीजवौ—कर्म वा०।
डांवणौ, डांववौ, डांभणौ, डांभवौ, डांवणौ, डांववौ—रू०भे०।

डांमर-वि० [सं० डामर] भयानक, भयंकर। उ०—डहड्डह डाइणि डांमर सद्द। नहन्नह भीखो सीधू नद्द।—रा.ज. रासो
सं०पु०—१ कान्ति, चमक। उ०—दिसि-दिसि सीकिरि डांमर चांमर ढळइं सभावि, वाजइ तूर अनाहत नाह तणइ अनुभवि।
—नेमिनाथ फागु
२ ४९ क्षेत्रपालों में से २९वां क्षेत्रपाल. ३ एक प्रकार का तंत्र जो शिव-कथित माना जाता है तथा जिसके छः भेद किये गये हैं. ४ डमरू नामक वाद्य. ५ डमरू की ध्वनि. ६ देखो 'डंबर'। (रू.भे.)
७ कोलतार।

डांमरी-सं०स्त्री०—अंधेरा, धुंधलापन। उ०—साव दळइ चालिउ सुरतांण, वार सहस वाज्यां नीसांण। चाल्यां कटक दुदांमा करी, खेह तणी दीसइ डांमरी।—कां.दे.प्र.

डांमाडोळ—देखो 'डांवाडोळ' (रू.भे.)

डांमाड़णौ, डांमाड़वौ—देखो 'डांमाणौ, डांमावौ' (रू.भे.)

डांमाड़ियोड़ौ—देखो 'डांमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डांमायोड़ी)

डांमाणौ, डांमावौ-क्रि०स० ('डांमणौ' क्रिया का प्रे०रू०) अग्नि दग्ध करवाना, दाग दिलवाना।
डांमाणहार, हारौ (हारी), डांमाणियौ—वि०।
डांमायोड़ौ—भू०का०कृ०।
डांमाईजणौ, डांमाईजवौ—कर्म वा०।
डांमाड़णौ, डांमाड़वौ, डांमावणौ, डांमाववौ—रू०भे०।

डांमायोड़ौ-भू०का०कृ०—अग्नि दग्ध करवाया हुआ।
(स्त्री० डांमायोड़ी)

डांमावणौ, डांमाववौ—देखो 'डांमाणौ, डांमावौ' (रू.भे.)
डांमावणहार, हारौ (हारी), डांमावणियौ—वि०।
डांमीजणौ, डांमीजवौ—कर्म वा०।
डांमाविग्रोड़ौ, डांमावियोड़ौ, डांमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डांमावियोड़ौ—देखो 'डांमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डांमावियोड़ी)

डांमियोड़ौ-भू०का०कृ०—अग्नि दग्ध किया हुआ, दागा हुआ।
(स्त्री० डांमियोड़ी)

डांलवणौ, डांलववौ-क्रि०अ०—मेंढ़क का बोलना। उ०—भारतारिइ सूं भाद्रवइ मासि, हीडोळाटइ करइ नसि अंधारी, विजंळि खवइ, गमे गमे दादर डांलवइ।—प्राचीन फागु-संग्रह

डांव—देखो 'डांम' (रू.भे.)

डांवणौ, डांववौ—देखो 'डांमणौ' (रू.भे.)

डांवळी-सं०स्त्री०—देखो 'डांखळी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—करड़ी डांवळी री सू इण भांत री तमाकू सूं चिलमां भरीजै छै।—रा.सा.सं.

डांवांडोळ, डांवाडोळ–वि०—जो हिलता-डुलता हो, हिलता-डुलता हुआ, अस्थिर. २ चलचित्त, भ्रमित, विचलित।
उ०—१ दादू एक विस्वास विन, जियरा डांवांडोळ। निकट निधि दुख पाइये, चिंतामणी अमोल।—दादू वांणी
उ०—२ बाळपणं की प्रीत रमइयाजी, कदै नहिं आयौ थांरी तोल। दरसण विण मोहि जक न परत है, चित मेरौ डांवांडोळ।
—मीरां
रू०भे०—डँवांडोळ, डमडोळ, डांमाडोळ, डावांडोळ, डावाडोळ।
डांवियोड़ौ—देखो 'डांमियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डांवियोड़ी)
डांस, डांसर–सं०पु० [सं० दंश] १ बड़ा मच्छर (उ.र.)
उ०—तिहां डांस, मुंसा, मांकुण, जु प्रमुख न उपजइं।—व.स.
पर्या०—दंसक, माछर।
२ पशुओं को बहुत कष्ट देने वाली एक प्रकार की मक्खी या कीड़ा.
वि०—१ जबरदस्त. २ बहुश्रुत, वयोवृद्ध।
अल्पा०—डांसरियौ।
डांसरियौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का मध्यम आकार का पहाड़ी वृक्ष व उसका फल। इसका फल छोटा व गोल होता है। यह कच्ची अवस्था में खट्टा और पकी अवस्था में मीठा होता है। यह औषधियों के लिए अधिक प्रयुक्त होता है (शेखावाटी)
२ देखो 'डांसर' (अल्पा., रू.भे०) उ०—हरी डाळियां चयन, पांन समूह कर ऊपर। टेर आसरां टांड, ऊबरां डासरियां डर।—दसदेव
डा–सं०पु०—१ सूर्य. २ भूत. ३ समूह.
सं०स्त्री०—४ पृथ्वी. ५ उमा. ६ रमा. ७ डायन (एका.)
डा'—१ फसल की गुड़ाई अथवा कटाई के समय प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्रत्येक पारी में अपने लिए लिया हुआ कार्य भाग।
उ०—छोड छोड यूं कांई करै गेला। दिन ढळग्यौ है अर म्हारै निनांण री डा' अधूरी पड़ी है।—रातवासौ
२ देखो 'डाह' (रू.भे.)
डाइआळ—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे.)
डाइचउ, डाइचौ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.)
उ०—कनंक मइं तिहां वेह परठी, कीध लोक सार। प्रथम फेरइ डाइचौ दइ, राय अस्व अपार।—रुकमणी मंगळ
डाइण, डाइणि, डाइणी, डाइन—देखो 'डायण' (रू.भे.)
उ०—डहडुह डाइणि डांमर सद्द, नहन्नह त्रीखौ सीधू नद्द।
—रा.ज. रासौ
डाइयाळ–वि०—१ जो बांई ओर चलने के लिए ठीक हो या जो बांई ओर अधिक चलता है (बैल)
[सं० दक्ष+कार] २ बुद्धिमान, दक्ष, चतुर।
रू०भे०—डांइआळ, डाइयाळ, डाहीयार, डाहीयाळ, डावियाळ, डाहूआर।
डाइरेक्टर–सं०पु० [अं०] कार्य-संचालक।
डाइरेक्टरी–सं०स्त्री० [अं०] वह पुस्तक जिसमें किसी वस्तुओं, मनुष्यों या व्यवसायियों आदि की अक्षर-क्रमानुसार सूची हो।
डाई–सं०पु० [सं० डाकी] १ पिशाच, दुष्ट। उ०—ठहक्कै कड़ी कंकटां ठोर ठाई। डहक्कै भड़ां वंकड़ां घोर डाई।—वं.भा.
सं०स्त्री०—२ बच्चों के खेल में हारने वाले पर लगाया जाने वाला दोष या अपराध।
क्रि०प्र०—आणी, देणी।
वि०स्त्री० (पु० डायौ) सीधी-सादी, विनम्र। उ०—१ गायां गोसाळां गूंदां गळगळती। ढाळा द्रग ढळती बूंदां बळवळती। डाई डेढरसी धाई धुरधीणै। भींणी फेडर भुर गाई सुर भींणै।
—ऊ.का.
उ०—२ दूभर द्वीहायन त्रीहायन दोरी। सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी। इक नाहिं आक्रांता क्रान्तातुर आडी। डाइ अवतोका सोकाकुळ डाडी।—ऊ.का.
रू०भे०—डाही।
डाईचउ, डाईचौ, डाईजौ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.)
उ०—बीजलई फेरई डाईचउ देई, गज रथ सिणगार। त्रीजलइ फेरई डाईजौ देई, रतन कोडी भंडार।—रुकमणी मंगळ
डाउड़ौ—देखो 'डावड़ौ' (रू.भे.) उ०—त्रांबा री सिळाक हुवै तिण भांति रा बारा 'वारा' वरसां रा डाउड़ां रा कांन वींधीजै।—रा.सा.सं.
डाक–सं०स्त्री०—१ ध्वनि, आवाज। उ०—१ विखमी सुरां सिद्धवां डाक वागी। ब्रहमंड इक्कीस में डाक वागी।—सू.प्र.
उ०—२ गाज नगारां चिमक खग, बरसत बाजत डाक। घटा नहीं आ कांम री, आवै फौज लड़ाक।—र.रा.
२ वाद्यों की ध्वनि। उ०—दहूं वळ घोर त्रंबाग़ळ डाक। हुवै रिणताळ दहूं वळ हाक।—सू.प्र.
३ युद्ध का वाद्य। उ०—धाक पड़ै जिण अरि घरा, डाक बजै जिण दिन। चाक चढ़ै जिण छत्रवट, वे मसताक सु मन।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
४ विजयी होने पर विजयोल्लास में बजाया जाने वाला नगारा, दुंदुभि। उ०—इम वासर ऊगतां, डाक वागी दसदेसां। जुध जीता 'अगजीत', सुणै जवनेस नरेसां।—सू.प्र.
५ युद्धप्रिय देवताओं का युद्ध के समय हर्षित हो कर बजाया जाने वाला वाद्य। उ०—१ सूर घाव सांस है, तूर त्रहत्रहे तयारां। डाक वीर डहडहै, 'जसै' मेलिया जयारां।—वखतौ खिड़ियौ
उ०—२ हुय घड़घड़ाट घर व्योम-हाक। दस ही दिस वागी प्रेत डाक।—पा.प्र.
उ०—३ खांडा हत्थउ भैरवौ रे, कर डमरू नै डाक। तिण अवसर प्रगटचौ तिहां, आव्यौ मारतौ हाक।—सीपाळ रास
६ महादेव का डमरू। उ०—हुवै हाक-डाक वकी कायरां ऊवकै

हियो, डकडकै भैरवां वजावै रुद्र डाक।

—नीमाज ठाकुर सुरतांणसिंघ रौ गीत

७ उल्लू की आवाज (अशुभ) उ०—दिव स्याळ बोलण लगै, निपट निकट ही आय। घू घू डाक बजाय है, लगै भयानक ताय।

—गज उद्धार

८ तंग और लम्बा प्रदेश, लम्बा भू-भाग। उ०—आबू नैं सरणुवा रौ भाखर एक लगतो डाक छै।—नैंणसी

९ एक प्रकार का छोटा भाला जो मस्त हाथी को अपने स्थान पर लाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। उ०—जगरूप भयांणक जमाति जांणं, डाकदार नैं डाक के हुन्नर से आंणै।—सू.प्र.

१० छोटे भाले द्वारा हाथी के शरीर पर लगा हुआ क्षत, घाव।

११ डग, कदम।

क्रि०प्र०—दैणी, मारणी।

१२ लूट-खसोट करने वाली डाकुओं की टोली।

मि०—धाड़ (१)

१३ प्राचीन काल में राजा महाराजाओं तथा बादशाहों, नवाबों आदि द्वारा परस्पर के पत्र-व्यवहार का प्रबन्ध या क्रिया।

उ०—अहमंद सतार गढ़ वात ए, पमंग डाक खत पूजिया। तिण वार 'विलंद' साहू तणा, धड़क जीव उर धूजिया।—सू.प्र.

१४ प्राचीन काल में राज्य सत्ता द्वारा सरकारी अफसरों के पास भेजे जाने वाले पत्रों का प्रबंध या इस प्रकार के पत्र.

१५ वह सरकारी प्रबंध जिसके द्वारा जन-साधारण की चिट्ठी-पत्री एक स्थान से दूसरे स्थान पर आती व जाती हैं. १६ राज्य के उच्चाधिकारियों के लिए राज्य सत्ता की ओर से किया जाने वाला सवारी का ऐसा प्रबंध जिसके अनुसार रास्ते में प्रत्येक ठहराव पर जानवर, गाड़ी आदि बदले जाते थे (प्राचीन)

१७ दूरी, फासला। उ०—अरध उरध कूंडियै फेरचा, तारौ तार मिळांणा। हद बेहद की डाक डकाई, सब्द ही रूप दिवांणा।

—स्री हररांमजी महाराज

१८ हाथियों का हैजा रोग. १९ शिवजी के गणों आदि का समूह. २० देखो 'डाकौ' (रू.भे.) उ०—फिट रा 'बुड़ा' पुळ एण फुरै, घल डाक कूकाउअ डोल धुरै।—पा.प्र.

डाकखरच-सं०पु०—वह खर्च या व्यय जो किसी वस्तु को डाक द्वारा मंगाने में लगे।

डाकखांनौ-सं०पु०—वह सरकारी दफ्तर जहां पर विभिन्न स्थानों से चिट्ठियां व पार्सल आदि आते हैं और भेजे जाते हैं।

डाकगाडी-सं०स्त्री०—डाक ले जाने वाली तथा तेज चलने वाली वह रेलगाड़ी जो छोटे स्टेशनों पर नहीं ठहरती है।

डाकघर—देखो 'डाकखांनौ'।

डाकचूक-वि०—घबराया हुआ, डांवाडोल।

रू०भे०—डाकाचूक।

डाकटर-सं०पु० [अं० डॉक्टर] १ पाश्चात्य ढंग से चिकित्सा करने वाला. २ चिकित्सक, वैद्य, हकीम. ३ विद्वान, आचार्य।

रू०भे०—डाकदर, डागदर।

डाकटरी-सं०स्त्री० [अं० डॉक्टर + रा०प्र०ई] पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, छांटणी।

डाकडमाल-सं०स्त्री०—आडम्बर, दिखावा। उ०—आज कालिना रे कपटी थया, मांडी डाकडमाल। निज पर आतम ने धूतारता, एहवो न घरचो रे चाल।—ए.जै.का.सं.

डाकडमाली-सं०स्त्री०—एक प्रकार की लता व उसका फल ?

उ०—डंडाळी नइ डोडकी, डायणि डूंगरि वेलि। डीसामूळी डुंहकळी, डाकडमाली डोलि।—मा.कां.प्र.

डाकण, डाकणि, डाकणी-सं०स्त्री० [सं० डाकिनी] १ वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हैं, डायन।

उ०—१ इणनैं सहनता कहै—सो डाकी ठाकुर तौ सहनता कर रजपूतां रा माथा लेवै वा प्रांण लेवै नैं डाकण दीठ चलाय निजर सूं प्राण लै।—वी.स.टी.

उ०—२ साकणि डाकणि सकति, सकती चवसठी समोसरी।—सू.प्र.

उ०—३ सबद विचारि सहज घरि खेलै, नांव निरंतरि जागै। मनसा डाकणि मारंतौ मारै, तौ नगरी चोर न लागै।—ह.पु.वा.

पर्या०—आखरढायीआखणी, जरखवाहणी, डाकण, डाकणी, डायण, डायणी।

मुहा०—१ डाकण नैं किसौ माळवौ आं(दूर) है—डायन के लिये मालवा कोई दूर नहीं है अर्थात् समर्थ और प्रबल के लिए कोई कार्य मुश्किल नहीं होता है। २ डाकण नैं मासी कैं'र बतळावणी—डायन से मौसी कह कर बात करनी चाहिए अर्थात् दुष्ट को सम्मान अथवा प्रेम-व्यवहार से प्रसन्न रखना चाहिए। दुष्ट या अत्याचारी के लिए. ३ डाकण बेटा दै क लै—डायन बेटे देती है या लेती है। डायन बेटे देती नहीं है बल्कि जो होता है उसे भी ले लेती है अर्थात् अत्याचारी या दुष्ट से लाभ के स्थान पर हानि ही होती है।

कहा०—डाकण्यां रै ब्याव में नोतियार रौ गटकौ—डाइनें अपने यहां आमंत्रित व्यक्तियों पर ही प्रतिघात करती हैं। दुष्ट व्यक्ति स्वजनों को ही हानि पहुँचाता है।

२ प्रेतनी, राक्षसी, चुड़ैल। उ०—वीरे डाक वाया। विमांणे वोम छाया। साकणी डाकणी मिळि मंगळ गाया।—वचनिका

रू०भे०—डंकिनि, डाइण, डाइणि, डाइणी, डाइन, डक्कण, डक्कणी, डागणी, डायण, डायणि, डायणी, डायनि, डायनी।

डाकणियां-री-घोड़ौ-सं०पु०—लकड़बग्घा।

डाकणौ, डाकबौ-क्रि०स०—कूद कर पार करना, फांदना, लांघना।

उ०—कूवौ हुवै तौ डाक लूं समंद न डाक्यौ जाय। टावर हुवै तौ राखलूं, जोवन न राख्यौ जाय।—र.रू.

डाकणहार, हारी (हारी), डाकणियौ—वि० ।
डकवाड़णौ, डकवाड़बौ, डकवाणौ, डकवावौ, डकवावणौ, डकवाववौ, डकाड़णौ, डकाड़बौ, डकाणौ, डकाबौ, डकावणौ, डकावबौ—प्रे०रू०
डाकिग्रोड़ौ, डाकियोड़ौ, डाक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
डाकीजणौ, डाकीजबौ—कर्म वा० ।
डकणौ, डकबौ—ग्रक० रू० ।

डाकदर—देखो 'डाकटर' (रू.भे.)

डाकदार-सं०पु०—१ मस्त हाथी को राह पर लाने वाला ।
उ०—डिगाया डगां जे मगां डाकदारां । लगां चंड वैतंड यूं दंड लारां ।—वं.भा.
२ सरकारी चिट्ठियां ग्रादि ले जाने वाला कर्मचारी ।
उ०—दौड़िया साह दिस डाकदार । संझ्यां सु वरस ग्राडी सवार ।
—रा.रू.
३ चिट्ठीरसा, डाकिया, चिट्ठी बाँटने वाला ।

डाकघर—देखो 'डाकटर' (रू.भे.) उ०—खरौ मीठै सूं सरस है, भळै वतेरा पांनड़ा । देस विदेस दुवायां वणै, खुसी डाकघर खांनड़ा ।
—दसदेव

डाकवंगळौ-सं०पु० [ग्रं०] वह सरकारी निवास-स्थान जहाँ परदेसियों के लिए रुपए दे कर ठहरने की व्यवस्था हो ।

डाकमुंसी-सं०पु०—वह सरकारी कर्मचारी जिसकी जिम्मेदारी में डाकघर हो, पोस्टमास्टर ।

डाकमैं'सूल-सं०पु०—किसी वस्तु को डाक द्वारा भेजने व मंगाने में लगने वाला खर्च ।

डाकर—देखो 'डकर' (रू.भे.) उ०—१ भाकर कांठै वाग भडाळा, डाकर सुण मेवास डरै । ग्राद ग्राखर थारै 'ईंदा', भाकर वंका डंड भरै ।—मालावावड़ी रा ठाकर इंद्रसिंघ री गीत
उ०—२ तरै पातसाह कहण लागौ 'कांनड़दे तौ म्हांनूं सांमौ डाकर दिखावै छै नै पातसाह नूं तलाक छौ जु वीच गढ़ मेल विगर लीयां यूं ही ग्राघौ न जाय सु हूं जातौ हुतौ सु कानड़दे ग्रै वात कहाड़ै छै तौ हूं कर विगर जाळोर लिया हमै हूं ग्राघौ न जाऊं, मोनूं तलाक छै ।'—नैणसी

डाकरडोर-सं०पु०—भय, डर ।

डाकरणौ, डाकरबौ—क्रि०ग्र०—१ सिंह या सुग्रर की क्रोधपूर्ण गर्जना करना, दहाड़ना । उ०—१ डाकरतौ भरतौ डकर, घरतौ मकर सधीर । वीफरतौ वाकारियौ, करतौ खून कंठीर ।
—उदैपुर रांणा सरूपसिंघ री गीत
उ०—२ दळ फिरतौ देख दिसूं दिस दोळा, ग्रण डरतौ करतौ ग्रोछाह । डाकरतौ ग्रायौ थह डारण, वीफरतौ चरतौ वाराह ।
—महादांन महड़ू

क्रि०स०—२ डांटना, फटकारना ।

डाकरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गर्जना किया हुग्रा, दहाड़ा हुग्रा.
२ डांटा हुग्रा, फटकारा हुग्रा ।
(स्त्री० डाकरियोड़ी)

डाकली-सं०स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य । उ०—घम घमंत घूघरी, पाय नेउरी रणंभण । डम डमंत डाकली, ताळ ताळी वज्जे तण ।
—देवि.

डाकवेल-सं०स्त्री०—वह सीधी लकीर जो जमीन पर रस्सी या फीते ग्रादि की सहायता से मकान की नींव खोदने, वगीचे में क्यारियां वनाने ग्रादि कार्यों के लिये खींची जाती है ।

डाकापांचम-सं०स्त्री०—फाल्गुन कृष्ण पंचमी जिस दिन से होली का लोक-नृत्य (गेहर) खेलना प्रारम्भ होता है ।

डाकाबंध-वि०—जिसके यहाँ नक्कारे वजते रहते हों, वहादुर, योद्धा, वीर । उ०—डाकाबंध कमंध ग्रारक चसम डोरियां, गिरंद तारक रिछक समै गजगाह । 'सदा' रा जोध वेढ़ाक मारक सत्रां, ग्रभीडा पेच धारक निखंग राह ।—कविराजा करणीदांन

डाकिणी, डाकिनि, डाकिनी—देखो 'डाकण' (रू.भे.)
उ०—१ जठै वैताळां रा ग्रास्फाळ, डाकिणी गणां रा डमरू रा डाल्कार, फेरवियां रा फेत्कार, प्रेतां रा ग्रालाप···।—वं.भा.
उ०—२ लोही वूढनि लाल की, धारा धकधक्कै । के डाकिनि खप्पर भरै, के साकिनि छक्कै ।—वं.भा.

डाकियौ-सं०पु०—चिट्ठी बाँटने वाला कर्मचारी, चिट्ठीरसा ।

डाकी-वि० (स्त्री० डाकण) १ वहुत खाने वाला, पेटू ।
उ०—१ वाका फाटोड़ा थाका दम वाकी । डैळही चुळियोड़ा डुळियोडा डाकी । थिरता मन री नहिं तन री गति थाकी । फुरणा पर-धन री ग्रन री नहिं फाकी ।—ऊ.का.
उ०—२ नवी हुवोड़ा नीच डवी भर लेवै डाकी । वैठ सभा रै वीच करै मनवार कजाकी ।—ऊ.का.
२ महान् शक्तिशाली, प्रचंड, जवरदस्त, सवल । उ०—१ डाकी जम डाढ़ाळ, वे वे तरगस वंधिया । तुरकी रहवाळां तुरक, चढ़िग्रा चांमरिग्राळ ।—वचनिका
उ०—२ डांण ठेलै तूं मातंगां भड़ां डाचरा उवाड़ डाकी, मूछां तांण पैलै तूं कंपनी गंजै माल । काट थांणै रेलै तूं स्रयणां जमी जोस खायै, खसतौ खपांणां माथै भेलै 'खुसाळ' ।—सूरजमल मीसण
३ वीर, वहादुर । उ०—डाणां ग्रोक-ग्रोक जांगी जैत रा रुड़ाया डाकी ।—वं.भा.
४ ग्राततायी, दुष्ट. ५ नरभक्षी, ग्रसुर, राक्षस, दैत्य । उ०—सांम्हूं सीयाळो साकी सरसायौ । वाकी वचियां नै डाकी दरसायौ ।
—ऊ.का.
सं०स्त्री०—१ वृद्ध मादा ऊंट ।
सं०पु०—२ सोलंकी वंश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

मह०—डाकोड़ ।

डाकोड़—देखो 'डाकी' (मह., रू.भे.)

डाकू-सं०पु०—१ जबरदस्ती दूसरों का माल लूटने वाला, लुटेरा. २ अधिक खाने वाला, पेटू ।

डाकोत-सं०पु०—डंक ऋषि से उत्पन्न एक जाति विशेष जो शनिश्चर की पूजा करते हैं और शनिश्चर का दान भी लेते हैं। ये लोग ज्योतिष विद्या का कार्य भी करते हैं। (मा.मा.)

अल्पा०—डाकोतियौ ।

डाकोतियौ—देखो 'डाकोत' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—किसनू धणी-श्री भैरूंजी-रै परसाद सुखियौ, मावड़ियांजी-रै आखा भेजिया, डाकोतियै खनै गिरै-गोचर देखाया, छनीछरजी-रौ दांन कियौ पण आंख्यां-रा पट्ट मिळ-श्री गया ।—वरसगांठ

डाकोर-सं०पु०—१ एक तीर्थ स्थान का नाम. २ विष्णु भगवान, ठाकुर (गुजरात)

डाकौ-सं०पु०—१ धन, माल, असबाब आदि जबरदस्ती छीनने के लिये कुछ आदमियों का दल बांध किसी स्थान पर अचानक किया जाने वाला आक्रमण, धावा, बटमारी ।

मुहा०—१ डाकौ डाळणौ—जबरदस्ती माल छीनने के लिये धावा करना. २ डाकौ पड़णौ—लूट के लिये आक्रमण होना ।

३ डाकौ मारणौ—देखो 'डाकौ डाळणौ' ।

२ ढोल, नगाड़ा, डफ आदि बजाने का लकड़ी का बना डंडा ।

उ०—१ तूटा गज सिर करै त्रंबाका । दांतूसळां वजावै डाका ।

—सू.प्र.

उ०—२ जावतां ईज धाकल रा धड़ूका सार्थं ढोल रौ डाकौ रुकग्यौ, निछरावळां करता हाथ ऊंचा रा ऊंचा ईज रैग्या अर ऊंठ चीडता-चीडता बंद ह्वैग्या ।—रातवासौ

क्रि०प्र०—दैणौ ।

रू०भे०—डंकौ, डकौ ।

मह०—डंक ।

३ देखो 'डंकौ' (१) (रू.भे.) ४ देखो 'डागौ' (रू.भे.)

उ०—ऊमर दीठी मारुई, डींभू जेही लंकि । जांणे हर-सिरि फूलड़ा, डाके चढ़ी डहकि ।—ढो मा.

(स्त्री० डाकी)

५ आतंक, भय । उ०—पग-पग जम डाका पड़ै, वांका धार विवेक । हुतभुक विच जळ खाख ह्वै, उडणौ है दिन एक ।—वां.दा.

डाक्टर-सं०पु० [अं०] १ पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक. २ किसी विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त करने पर किसी विश्वविद्यालय द्वारा दी जाने वाली सर्वोच्च डिग्री प्राप्त व्यक्ति ।

रू०भे०—डाक्तर ।

डाक्टरी-सं०स्त्री०—१ चिकित्सक का कार्य ।

क्रि०प्र०—करणी ।

२ विश्वविद्यालय की डाक्टर की डिग्री ।

डाक्तर—देखो 'डाक्टर' (रू.भे.)

डाग-सं०स्त्री०—१ वृद्ध मादा ऊंट । उ०—ऊंचै मुख सूं ऊंट, चूंट चट लूंबां लवकै । गलर गलर गटकाय, डोलती डागां डबकै ।

—दसदेव

२ छोटी डाली, टहनी (जैन) ३ साग-भाजी, तरकारी (जैन)

डागड़—देखो 'डागौ' (मह., रू.भे.)

डागड़ियौ, डागड़ौ—देखो 'डागौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—डवक डाळियां डुळै, डागड़ा डरडर सूंतै । ऊंची नीची तकै लखै लुळ पूरी कूंतै ।—दसदेव

(स्त्री० डागड़ी)

डागणी—देखो 'डाकणी' (रू.भे.) (जैन)

डागळ-वि०—१ जो आकार में बड़ा हो (?)

उ०—कसूंबी रा डागळ डागळ पांन गूंथैला, ए म्हांरी माळण सेवरौ ।—लो.गी.

२ देखो 'डागळौ' (मह., रू.भे.)

डागळियौ—देखो 'डागळौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ऊठी बाईसा, डागळियै चढ़ जोय, कुणजी रै सिधाया कुणजी घर वसै, जी म्हांरा राज ।—लो.गी.

डागळी—देखो 'डागळौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—और सहेली म्हारी पीवर जाय, मनै य न आयौ कोश्री लेण नै जी राज । चढ़-चढ़ देखूं डागळी, कोई य न दीसै आवती जी राज ।—लो.गी.

डागळौ-सं०पु० [सं० दाघ+तल] मकान के ऊपर की खुली पाटन, छत ।

अल्पा०—डागळियौ, डागळी ।

मह०—डागळ ।

डागाळ-सं०पु०—एक प्रकार का भाला (डि.नां.मा.)

डागी-सं०स्त्री०—वृद्ध मादा ऊंट ।

डागौ-सं०पु० (स्त्री० डाग, डागी) वृद्ध ऊंट ।

रू०भे०—डगौ, डाकौ ।

अल्पा०—डागड़ियौ, डागड़ौ ।

मह०—डागड़ ।

डाच—देखो 'डाचौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ छोह घणै ऊछज छरा, केहर फाड़ै डाच । ऐरावत कुळ ऊपरा, मीच मंडीजै नाच ।—वां.दा.

उ०—२ लगै अंबर लायसौ के घाय टप्पकै । के वटके वटके करै झटके न झमवकै । नाच न चुक्कै डक्किनी लै डाच डचक्कै । ज्वाळ झरक्कै के जरी गज ढाळ ढरक्कै ।—वं.भा.

डाचकौ-सं०पु०—वमन के पूर्व की अवस्था, ओकाई, मिचली ।

क्रि०प्र०—आणौ, खाणौ ।

मुहा०—डाचकौ आणौ (खाणौ)—असमर्थता के कारण आनाकानी करना ।

रू०भे०—डूंचकौ, डूचकी ।

डाची-सं०स्त्री०—मादा ऊंट (जैसलमेर)

डाचौ-सं०पु०—१ मुख, मुँह (अवज्ञा) उ०—१ सिंघ सरीख संसार प्राणं डाचा मां पड़ियौ । नर किम कर निसरीस, जरू ले ताळौ जड़ियौ ।—पी.ग्रं.

उ०—२ मजबूत थूंभ डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा। भोखिया सिंधु.नुखतां भटकि, अंघकंध राकस इसा ।—सू.प्र.

२ बड़ा ग्रास. ३ वह स्थान जहां पर मुँह से काटा गया हो ।

अल्पा०—डचियौ ।

मह०—डाच ।

डाट-सं०स्त्री०—१ क्रोधपूर्वक कर्कश स्वर से कहा हुआ शब्द, घुड़की ।

क्रि०प्र०—जमाणी, बताणी ।

यौ०—डाट-डपट ।

२ दबाव, शासन ।

क्रि०प्र०—राखणी ।

मुहा०—१ डाट में राखणी—अधिकार में रखना, वश में रखना, शासन में रखना. २ डाट राखणी—प्रभाव रखना, अंकुश रखना, शासन या दबाव रखना ।

३ देखो 'डाटौ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—डाटी ।

डाटउ—देखो 'डाटौ' (रू.भे.) उ०—ससिहर रहि रे सांसतु, जळ घट्ट भींतरि लेय । सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसी डाटउ देय ।
—मा.कां.प्र.

डाटकिया-सं०स्त्री०—घोड़ों की एक जाति । उ०—घोटकजाति केहाड़ा नीलडा हरियाडा सेसहा हडराहा कोहांणा भरथांणा ताई तुरगी ऊघसिया नीघसिया डाटकिया डोटकिया खेलवि(या) मल्हाविया लडाविया पुलाविया तरळा छोटकरणा, एकरण्णा ।—व.स.

डाटकियौ—१ देखो 'डाटौ' (अल्पा., रू.भे.) २ डाटकिया जाति का घोड़ा ।

डाटड़—देखो 'डाटौ' (मह., रू.भे.)

डाटड़ियौ—देखो 'डाटौ' (अल्पा., रू.भे.)

डाटणौ, डाटबौ-क्रि०स०—१ डराने के लिये क्रोधपूर्वक कठोर स्वर से बोलना, फटकारना. २ गाड़ना । उ०—१ सूम नांम लैणौ सुतौ, मूंग पकावण वेर । अन दिन उण री आथ जूं, डाटौ भाठौ देर ।
—बां.दा.

उ०—२ ससिहर रहि रे सांसतु, जळ घट्ट भींतरि लेय। सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसी डाटउ देय ।—मा.कां.प्र.

३ बंद करना, ढकना. ४ छेद या मुंह बंद करना. ५ किसी वस्तु को भिड़ा कर ठेलना. ६ खूब पेट भर कर खाना, कस कर खाना. ७ (कपड़े या आभूषण आदि) ठाट से पहिनना ।

डाटणहार, हारौ (हारी), डाटणियौ—वि० ।

डाटिग्रोड़ौ, डाटियोड़ौ, डाटयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

डाटीजणौ, डाटीजबौ—कर्म वा० ।

डटणौ, डटबौ—अक०रू० ।

डाटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ डराने के लिये क्रोधपूर्वक कठोर स्वर से बोला हुआ, फटकारा हुआ. २ गाड़ा हुआ. ३ बंद किया हुआ, ढका हुआ. ४ छेद या मुँह बंद किया हुआ. ५ किसी वस्तु को भिड़ा कर ठेला हुआ. ६ खूब पेट भर कर खाया हुआ, कस कर खाया हुआ. ७ (कपड़े या आभूषण आदि) ठाट से पहना हुआ । (स्त्री० डाटियोड़ी)

डाटियौ—देखो 'डाटौ' (अल्पा., रू.भे.)

डाटी-सं०स्त्री०—देखो 'डाट' (अल्पा., रू.भे.)

डाटीड़—देखो 'डाटौ' (मह., रू.भे.)

डाटौ-सं०पु०—१ रंदे की लकड़ी. २ किसी छेद को रोकने या बन्द करने की वस्तु. ३ किसी बोतल आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु. ४ मस्तक । उ०—जो चौरंग चढ़ जोय कर, चमकै चँदहस चोट । रण में उण पर खळ रटक, दे डाटा में दोट ।
—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—डाटउ ।

अल्पा०—डाट, डाटकियौ, डाटड़ियौ, डाटियौ, डाटी ।

मह०—डाटड़, डाटीड़ ।

डाड-सं०स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] १ चौड़ा दांत जिससे चबाया जाता है ।

उ०—सोक री दसा नित मिटावण सेवगां, गुण घणा थोक री स्रवण गाडां । चाड ग्रहूं लोक री निसुंभसुंभ बाघ चड, डोकरी गहै खळ विकट डाडां ।—खेतसी बारहठ

पर्या०—डसा, जंभ, दाढ़ा ।

मुहा०—१ डाड मीठी होणी—कुछ मीठा खाने को प्राप्त होना, रिश्वत लेना. २ डाड में कांकरौ होणौ—देखो 'डाड हेटै कांकरौ आणौ'. ३ डाड रै लागणौ—दाढ़ के लगना, किञ्चित मात्र खाने को मिलना. ४ डाड हेटै कांकरौ आणौ—कार्य निकलवाने की गरज होना, गरज पड़ना. ५ डाड हेटै आणौ—देखो 'डाड रै लागणौ'. ६ डाडां कुळणी—किसी स्वादिष्ट पदार्थ को खाने की प्रबल इच्छा होना ।

रू०भे०—डड्ढ, डढ़, डाढ़, दाढ़ ।

यौ०—धरम-डाड ।

२ रहट का वह उपकरण जो रहट के चक्र के ऊपर दोनों ओर रहने वाले लट्ठों को लकड़ी या पत्थर के स्तम्भ के साथ मिलाये रखने के लिये लगाया जाता है ।

रू०भे०—डढ़, डाढ़, दाड, दाढ़ ।

अल्पा०—डाडड़ी, डाढ़ड़ी, दाढ़ड़ी ।

मह०—डाढ़ौ ।

३ रुदन करने की क्रिया या भाव, रुदन । उ०—डोकरियौ डाडां मार-मार नै रोयौ पण सुणै कुण ।—बांणी

रू०भे०—डाढ़ ।

अल्पा०—डाडड़ी, डाढ़ड़ी ।

डाडड़ी—देखो 'डाड' (अल्पा., रू.भे.)

डाडणौ, डाडबौ-क्रि०अ०—१ जोर से रोना, गला फाड़ कर रोना, दर्दनाक रुदन करना। उ०—दूभर हीहायन ग्रीहायन दोरी, सूभर चतुरच्छा गवराग्य मोरी। इक नहि आक्रांता क्रांतातुर आडी, डाई दवतांका मोकाकुळ डाडी।—ऊ.का.

२ चिल्लाना।

डाडणहार, हारौ (हारी), डाडणियौ—वि०।

डडवाड़णौ, डडवाड़बौ, डडवाणौ, डडवावौ, डडवावणौ, डड-वाववौ, डडाड़णौ, डडाड़बौ, डडाणौ, डडावौ, डडावणौ, डडाववौ—प्रे०रू०।

डाडिग्रोड़ौ, डाडियोड़ौ, डाड्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डाडीजणौ, डाडीजबौ—भाव वा०।

डाढ़णौ, डाढ़बौ, डिढ़ाणौ, डिढ़ावौ—रू०भे०।

डाडर-सं०पु०—१ वक्षस्थल, सीना। उ०—१ भड़ां धड़ डाडर घाव वंबार।—गो.रू.

उ०—२ फोड़ डाडर वजर पार फूटी।—कविराजा करणीदान.

२ पीठ. ३ मेंढक।

अल्पा०—डाडरौ।

डाडरौ—देखो 'डाडर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डाड रा वीह रा, स्रोण रा डाल्ह रा। गूंद रा मांस रा, ग्रंत रा व्है गरा।—सू.प्र.

डाडांणौ—देखो 'दादांणौ' (रू.भे.)

डाडागुरभाई—देखो 'दादागुरभाई' (रू.भे.)

डाडाळ—१ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'डाढ़ाळौ' (मह., रू.भे.)

३ वह प्राणी जिसके बड़ी-बड़ी दाढ़ें हों।

डाडाळी—देखो 'डाढ़ाळी' (रू.भे.) उ०—डाडाळी चवियौ वरद दैत, जुद जैत ताह री सदा जैत।—रांमदांन लाळस

डाडाळौ—देखो 'डाढ़ाळौ' (रू.भे.)

डाडिम—देखो 'दाड़म' (रू.भे.) उ०—खाईइ खांड बीजोरड़ी, डोल-हर डाडिम द्राख। लीजइ लाख लखेसरी, दीजइ डावी काख।

—मा.कां.प्र.

डाडियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जोर से रोया हुआ, गला फाड़ कर रोया हुआ, दर्दनाक रुदन किया हुआ. २ चिल्लाया हुआ।

(स्त्री० डाडियोड़ी)

डाडी—देखो 'डाढ़ी' (रू.भे.)

डाडौ—देखो 'दादौ' (रू.भे.) उ०—निरखियौ भीम सरखं भड़ें नारीयण, देवता देवतां तणौ डाडौ। विसन नर रइणि री वाह सूरति, लछि करतार लाडौ।—पी.ग्रं.

डाढ़—देखो 'डाड' (रू.भे.) उ०—१ मद भरया मोती भरइ, गाजइ जेम असाढ़। व्रक्ष ग्रमूळइ वन-तणा, डूंगर खणता डाढ़।

—मा.कां.प्र.

उ०—२ बड़कै डाढ़ वराह, कड़कै पीठ कमट्ठ री। धड़कै नाग घराह, वाघ चढ़ै जद वीसहथ।—रांमनाथ कवियौ

डाढ़ड़ी—देखो 'डाड' (अल्पा., रू.भे.)

डाढ़णौ, डाढ़बौ—देखो 'डाडणौ, डाडबौ' (रू.भे.)

डाढ़वाळ, डाढ़ाळ—१ देखो 'डाढ़ाळी' (मह., रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावण, कंपावण काळ विकराळ केवी। सु कर प्रतमाळ किरमाळ जुग सम्हणी, दिपै डाढ़ाळ घटियाळ देवी।—खेतसी वारहठ

२ देखो 'डाढ़ाळौ' (मह., रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ कइ रस्स डाढ़ाळ ढींचाळ उगाळण, होय अभै खळ खांण नरौ।—करुणासागर

उ०—२ खांगीवंध खळ गयंद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ। सीह लड़ाकी लड़ण सलूंभी, डाकी डह ऊभौ डाढ़ाळ।

—महाराजा मांनसिंघ रौ गीत

डाढ़ाळी-सं०स्त्री०—१ देवी, दुर्गा, शक्ति। उ०—वाढ़ाळी वहतांह, राढ़ाळी त्रंबक रुड़ै। साढ़ाळी सहतांह, डाढ़ाळी ऊपर करै।

—महाराजा वखतावरसिंघ (अलवर)

२ वह स्त्री जिसकी चिवुक पर दाढ़ी आ गई हो।

३ वह मादा प्राणी जिसके बड़ी बड़ी दाढ़ें हों।

रू०भे०—डाडाळी, डाडवाळी।

मह०—डाडाळ, डाढ़ाळ।

डाढ़ाळौ-सं०पु०—१ वराह अवतार। उ०—जे खळ जठी तठी जुध जीपण, हठी भीम कारज हड़मंत। वणियौ यळ राखण वरदाळा, डाढ़ाळा केसव चौ दंत।—किसनौ आढ़ौ

२ सूअर, शूकर। उ०—तिण ऊपर एकल डाढ़ाळौ तपस्या करै। अेक भूंडण तिण अरवद ऊपर तपस्या करै।

—डाढ़ाळा सूर री वात

३ सिंह, शेर. ४ वह प्राणी जिस के बड़ी बड़ी दाढ़ें हों.

५ मुसलमान, यवन।

वि०—जिसके बड़ी-बड़ी दाढ़ें हों, बड़े दांत वाला।

रू०भे०—डाडाळौ, दाढ़ाळौ।

मह०—डाडाळ, डाढ़ाळ, दाढ़ाळ।

डाढ़ी-सं०स्त्री०—१ ठुड्डी पर के बाल। उ०—१ डाढ़ी मूंछाळा डळियां में डुळिया। रळियां जायोड़ा गळियां में रुळिया।—ऊ.का.

उ०—२ वाचा साच न दक्खै वांणी, पै विसार मंगावै पांणी। घट सोचै डाढ़ी कर घालै, 'सोनंग' 'दुरंग' तणौ छळ सालै।—रा.रू.

यौ०—डाढ़ी-खूंटी।

२ चिवुक, ठुड्डी। उ०—हीरां की सी लड़ी बतीसौ सोवै छै, अधर ......मदन मन मोहै छै। डाढ़ी रा चौक में स्यांम बूंद विराजै छै, जांणै चंद्रमा रै सरीर हार राजै छै।—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—डाडी, दाढ़ी।

महृ०—डाढ़ौ ।
३ देखो 'ढाढ़ी' (रू.भे.)

डाढ़ेराव-वि०—वड़े-वड़े दांतों वाला (सिंह)
उ०—१ डाला मथा वरुथां डाकरै डाकी डाढ़ेराव, ग्रारांण लड़ाकी ग्राक वाकरै ग्ररेस । ग्रांण प्यालै सावात छाक रे भीमसिंघ ग्राळा, नौ हथेस चौड़े-धाड़ै वाकरै नरेस ।—जवांनजी ग्राढ़ौ
उ०—२ डाकी डाढ़ेरावगजां गनीमां भरंतौ डाचा ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

डाढ़ौ—देखो 'डाढ़' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'डाढ़ी' (मह., रू.भे.)
३ देखो 'दादौ' (रू.भे.)

डाढ़ाळी—देखो 'डाढ़ाळी' (रू.भे.) उ०—हरनि दुख सभि केहरी, डरणी न डाढ़ाळी । करणी तूंहि कांमही, करणी तूंहि काळी ।
—हिंगळाजदांन बारहठ

डात्कार-सं०पु०—डमरू की ध्वनि । उ०—जठै वेताळां रा ग्रास्फाळ, डाकिणीगणां रा डमरू रा डात्कार, फेरवियां रा फेत्कार, प्रेतां रा ग्रालाप, राक्षसां रा रास, कुणपां रा कपाळां रा कटकटाहट, चिता रा ग्रंगारां करि चित्रविचित्र बडो ग्रद्भुत चरित देखियौ ।—वं.भा.

डाफर—देखो 'डांफर' (रू.भे.)

डाफळ-वि०—छितराया हुग्रा, वड़ा । उ०—सांवण रौ महीनौ सो वाजरी निनांण ग्रायोड़ी । नीली कच, सांवळी भंवर, डाफळ पांनी । खेत जांणै ऊफण ग्रायोड़ो है ।—रातवासो

डाफा-सं०पु० (वहु व०) चक्कर ।
मुहा०—१ डाफा खाणा—चक्कर लगाना, भटकना ।
मुहा०—२ डाफाचूक होणौ—पथ से विचलित होना, मति भ्रष्ट होना ।

डाफी-सं०स्त्री०—मति, वुद्धि ।
मुहा०—डाफी चढ़णौ—वुद्धि का संतुलन खोना, भौंचक्का होना ।

डाव-सं०पु० [सं० दर्भ] १ प्रायः रेह मिली हुई ऊसर जमीन में पैदा होने वाली कुश की जाति का एक घास विशेष, एक प्रकार का कुश ।
रू०भे०—डाभ, दाभ ।
ग्रल्पा०—डावड़ौ, डाभड़ौ ।
सं०स्त्री०—२ वन्दूक में लगा चमड़े का वह तस्मा जिससे वंदूक कंधे पर लटकाई जा सकती है । उ०—दूसरी वीज रौ सळाव सीसूं पीळियै दुधै री लकड़ी रा कुंदा छै । रूपै री तारां रा कोकड़ी सीरम सपेतै रा वंध छै । वोयदार री डावां छै । कसूमल सूत री लपेटी जांमकी छै ।—रा.सा.सं.
ग्रल्पा०—डावड़ी ।
३ देखो 'दाव' (रू.भे.) उ०—हारि जीति कायासा डारचा, वाजी जीती डाव विचारचा । खेलणहार गया मुख गोय, ताका पला न पकड़ै कोय ।—ह.पु.वा.

डावउं, डावउ—देखो 'डावौ' (रू.भे.) (उ.र.)

डावड़ी—१ देखो 'डाव' (२) (ग्रल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'डवड़ी' (रू.भे.)

डावड़ौ-सं०पु०—१ रहट का वह घेरा जिस पर घड़ियां लगी हुई माल रहती है ग्रौर उसके घूमने के साथ माल भी घूमती है जिससे भरी हुई घड़ियां एक ग्रोर से ग्रा कर ऊपर खाली हो कर दूसरी ग्रोर कुए के भीतर चली जाती है ।
२ देखो 'डाव' (१) (ग्रल्पा., रू.भे.)

डावर-सं०पु०—१ ग्रांखों के वड़ी व सुन्दर होने का उपमा का शब्द ।
उ०—वावर वीखरिया ग्रोढ़णियै ग्राडै । डावर नयणां री टावर वय डाडै ।—ऊ.का.
यौ०—डावर-नैणी ।
२ छोटा तालाव, पोखर, गड्ढा । उ०—डोढ़ा कंधलोटा जूटण नै घुमड़ै । महिसी महिसी ज्यूं डावर में रमड़ै ।—ऊ.का.

डावरौ—देखो 'डाव' (१) (ग्रल्पा., रू.भे.) २ देखो 'डावड़ौ' (रू.भे.)
३ देखो 'डावर' (ग्रल्पा., रू.भे.) उ०—झीलस्यां री कांमना म्हांरै, डावरां कुण जावां री । गंगा जमना कांमना म्हारै, म्हां जावां दरियावां री ।—मीरां

डावली—देखो 'डवड़ी' (रू.भे.)

डावी-सं०पु०—१ राजपूतों में पँवार वंश के ग्रन्तर्गत एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
रू०भे०—डाभी ।
२ देखो 'डवी' (रू.भे.) उ०—चौथी तौ पैंडी दिवला पग घरो, पांनां डावी धण रे हाथ ।—लो.गी.
३ देखो 'डवौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

डावूं—देखो 'डावौ' (रू.भे.) उ०—ग्रावेरु जईनि चींतवि, 'लोचन मोहारू डावूं लवि । जोऊं रही हसि टळवळी', पुनरपि ग्राव्यु पाछु वळी ।—नळाख्यांन

डावौ—१ देखो 'डवौ' (रू.भे.) उ०—१ गोरी ग्रे, पेयां मेलौ म्हारौ फूल । डावां नै मेलौ म्हारी पातड़ी ।—लो.गी.
उ०—२ ग्राई ग्राई काछविया री जांन, सैयां म्हारी ए, ग्राई ग्राई काछविया री जांन, केसर नै किस्तूरी रा डावा खोलिया, जी म्हारा राज ।—लो.गी.
२ देखो 'डावौ' (रू.भे.) उ०—१ डावौ न फरुकै देख कर, जळ ग्रांख मम जींवणी । साथियां कठै तूं सीखियौ, पीव तमाखू पीवणी ।
—ऊ.का.
उ०—२ डावा जिमणा नह डगइ, चक्कु ग्रेक न चक्षु । ध्यांन धरी रहिया धीर सह, कांम कंदळा भिक्षु ।—मा.कां.प्र.
(स्त्री० डावी)

डाभ—देखो 'डाव' (रू.भे.) उ०—रीति नहीं रज रेत नी, नहीं गुरविणी ना गाभ। सीतासुत बीजू करिउ, प्रगट प्रतिस्टी डाभ।
—मा.कां.प्र.

डाभी—१ देखो 'डाबी' (१) (रू.भे.) उ०—१ जठै डाभी देवसींघ बोलियौ।—पनां वीरमदे री वात

डायचौ—देखो 'डायजौ' (रू.भे.) उ०—वांणातरां साह नै परणायो। जठै सारी विध विधांन कर नै सगां डायचौ दीधो।—साहूकार री वात

डायजावाळ-सं०उ०लि०—दहेज में दिया हुआ या दहेज में आया हुआ व्यक्ति।

डायजौ—देखो 'दायजौ' (रू.भे.) उ०—भोग मिळीजै किम जठै, नरां नारियां नास। यौ ही मायड़ डायजौ, दीजै सुवस वास।—वी.स.

डायण, डायणि, डायणी, डायनि, डायनी—१ देखो 'डाकण' (रू.भे.) उ०—१ डायण चढ़ी जियां परि डकरै। वांणी विकट भयंकर वकरै।—सू.प्र.

उ०—२ डाक हाक हूंकळ आडंबर, डह डायणी उडियांण डोह। वर कज चलि आवी विस कन्या, लखण बतीस छतीसे लोह।—दूदो

उ०—३ दादू जब जागै तब मारियै, वैरी जिय के साल। मनसा डायनि कांम रिपु, क्रोध महाबलि काळ।—दादू बांणी

२ एक प्रकार की लता या उसका फल।

उ०—डंडाळी नइ डोडकी, डायणि डूंगरि वेलि। डीसामूळी डूंहकळी, डाकडमाळी डोलि।—मा.कां.प्र.

डायरी-सं०स्त्री० [अं०] वह छोटी पुस्तिका जिसमें दिन भर के कार्य का संक्षिप्त विवरण या आवश्यक स्मरण हेतु कुछ बातें अंकित की जायें।

डायलौ—१ जबरदस्त, समर्थ। उ०—भड़ां काचां कहै बोलावै भायलां, डायलां आगळै रहै डरती। तो जसा छायलां सीह 'गोकळ' तणा, घणी अजरायलां तणी धरती।—बदरीदास खिड़ियौ

२ देखो 'डायौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० डायली)

डायां-सं०स्त्री० (बहु व०) (एक व० डई, डयी, डाई, डायी) दो लम्बे डंडे जो बैलगाड़ी को पृथ्वी से ऊपर रखने के लिए अग्र भाग में बांधे जाते हैं।

रू०भे०—डइयां।

डायीयाळ—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे.)

डायौ-वि० [सं० दक्ष] (स्त्री० डाई, डायी) १ चतुर, दक्ष, समझदार, प्रवीण। उ०—नेम धरौ न करौ नाकारौ, धन उद्यम मन मगज धरौ। चित डाया गहलां नै चहरै, कोई गहलां री होड करौ।
—अज्ञात

२ छंटा हुआ, धूर्त, चंट, चालाक।

३ सीधा, सरल।

रू०भे०—डावौ, डाहउ, डाहु, डाहौ।

अल्पा०—डायलौ, डाहलौ।

डार-सं०पु०—१ झुण्ड, समूह। उ०—१ गुंडां री नह घाट साट नह है सूमां री। चोखी मेळी चलै डार भेळी डूंमां री।—ऊ.का.

उ०—२ ताहरां फूलमती कही—राजा सिंह आयो छै। तद उठै कुंवरसिंह नुं मारियौ। तद बीजै दिन हाथियां री डार आयौ।
—चौबोली

उ०—३ इतरै बीच हिरणां रा डार आय नीसरै छै।—रा.सा.सं.

उ०—४ एक वडौ वराह डार समेत खुड़ियै रै उनवै में आवियौ छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ पंक्ति, अवली। उ०—सुणतां मुधरी गाज तणीजै नाग छतरियां, सुणतां सागै थोक हंस री उडै पंगतियां। कंवळ नाळ ले संग पयांणी पावासर नै, करसी थारो साथ सांतरी डारां कर नै।—मेघ.

अल्पा०—डारड़ियौ, डारड़ौ।

मह०—डारड़, डारौ।

डारड़—देखो 'डार' (मह., रू.भे.)

डारड़ियौ, डारड़ौ—देखो 'डार' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—आठ पौ'र एकलौ पौ'रै, ऊभ करै उपकारड़ां। माथ माथ आसंरौ देवै, डिगता पंछचां डारड़ां।—दसदेव

डारण-वि०—१ योद्धा, वीर। उ०—डारण नाहर डांण, ठवंतौ ठाहरां। फुरळंतौ अरि फौज तसां धिन ताहरां।
—किसोरदान बारहठ

उ०—२ दळ फिरती देख दिसूं दिस दोळा, अण डरतौ करतौ ओछाह। डाकरतौ आयौ थह डारण, बीफरतौ चरतौ वाराह।
—महादांन महड़ू

२ शक्तिशाली, बलवान, जबरदस्त। उ०—डेरा रोपया उत्तर दिस डारण। मन नहचै लंकेसुर मारण।—र.रू.

३ दीर्घकाय, प्रचंडकाय, भीमकाय।

अल्पा०—डारौ।

डारणौ, डारबौ—१ गिराना, पटकना, पछाड़ना। उ०—'पाल' री दळां रखपाळ बिरदा धपति, पह वडा भलां तै खाग पूजौ। डोलिया साथ पूठै सत्रां डारतौ, 'दलै' दहूं पेखियौ 'मयंक' दूजौ।
—राठौड़ दळपतसिंघ गोपाळदासोत चांपावत रौ गीत

२ देखो 'डराणौ' डराबौ' (रू.भे.) उ०—चूरइ रहवइ नरकरोडि दंतूसळि डारइ। अरजुन पाखइ पंड कटकु हणतुं कुणु वारइ।
—पं.पं.च.

डारपत, डारपती-सं०पु०—सूअर, शूकर (अ.मा.)

डारियोड़ौ—१ देखो 'डरायोड़ौ' (रू.भे.) २ गिराया हुआ।

(स्त्री० डारियोड़ी)

डारुण—देखो 'दारुण' (रू.भे.) उ०—पटै ऊपटै मद्द धारा पटाळं, खळक्कै गिरां मेर थी नीर खाळं। प्रळैकाळ छंछाळ छूटा पटाळं, क्रमै डारुणा कारणाभूत काळं।—वचनिका

डारौ-सं०पु०—१ सूअर. २ देखो 'डार' (मह., रू.भे.)
३ देखो 'डारण' (अल्पा., रू.भे.)

डाळ-सं०स्त्री०—१ तलवार की मूंठ के ऊपर का मुख्य भाग.
२ तलवार का फल। उ०—छछोहक वाहत झाल छड़ाळ। दुसारक डाळ पड़ै रवदाळ।—सू.प्र.
३ दरार, शिगाफ। उ०—डाळडाळ हिवड़ौ हुयौ, चाली चीरां चीर।—लू
४ दरवाजे के ऊपर लगाया जाने वाला ऐसा पत्थर जो दो पत्थरों की जोड़ से कमान की आकार का होता है. ५ स्त्रियों का कलाई पर चूड़ियों के ऊपर पहना जाने वाला आभूषण विशेष.
६ देखो 'डाळौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ कोई घड़लौ तौ मेल्यौ सरवरिये री पाळ पर, कोई ईंढ़ांणी तौ टांगी चंपलै री डाळ में। —लो.गी.
उ०—२ अजहुं तरु पुहप न पल्लव अंकुर, थोड़ डाळ गादरित थिया। जिम सिणगार अकीधै सोहति, प्री आगमि जांणियै प्रिया।—वेलि.

डाल—देखो 'डालौ' (मह., रू.भे.) उ०—आया आया भा भैंस्यां रा अे गवाळ, वै भी चावै मा पीसणौ जे। पीस्या पीस्या मां डाल दो डाल, अधमण पीस्यौ मां बाजरौ।—लो.गी.

डाळकियौ—देखो 'डाळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डालकियौ—देखो 'डालौ' (अल्पा., रू.भे.)

डाळकी-सं०स्त्री०—देखो 'डाळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डालकी-सं०स्त्री०—देखो 'डालौ' (अल्पा., रू.भे.)

डाळणौ, डाळबौ-क्रि०स०—१ किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के भीतर या ऊपर गिराना, प्रविष्ठ करना, घुसेड़ना. २ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैला कर रखना. ३ पहनाना।
उ०—सेखा नै पकड़'र असुरां, डग बेड़ी झट डाळी। मेहाई हूं सम्मळी, कुलफां पाव कढ़ाली।—बारहठ हिंगळाजदांन जागावत

डालाअंग-सं०पु०—केवट, मल्लाह (अ.मा.)

डालामथौ-सं०पु०यौ०—सिंह, शेर। उ०—घोड़ा सवार एहिज घणा, चांपर कर सागै चड़ण। मैं चढ़ूं पीठ डाला-मथै, ले हाला आई लड़ण।—मे.म.

डाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के भीतर या ऊपर गिराया हुआ, प्रविष्ठ कराया हुआ, मिलाया हुआ, घुसेड़ा हुआ. २ एक वस्तु को दूसरी पर फैला कर रखा हुआ.
३ पहनाया हुआ।
(स्त्री० डाळियोड़ी)

डाळियौ—देखो 'डाळौ' (अल्पा., रू.भे.)

डालियौ—देखो 'डालौ' (अल्पा., रू.भे.)

डाळि, डाळी—देखो 'डाळौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ना हूं सींची सज्जणे, ना वूठउ अग्गाळि। मो तळि ढोलउ वहि गयउ, करहउ बांध्यउ डाळि।—ढो.मा.

डाली—देखो 'डालौ' (अल्पा., रू.भे.)

डाळौ-सं०पु० [सं० दार:] वृक्ष के तने से निकलने वाला भाग, शाखा, डाल। उ०—अे थारा चावक जैंड़ा वचन कहै मतौ नहीं तौ औ दारू री छकियोड़ौ लाखां नै छांग न्हांकैला, खाती डाळा छांगै है जिण तरै।—वी.स.टी.
मुहा०—डाळौ झेलणौ, डाळौ लैणौ—संकट में फंसना, विपदा में पड़ना।
रू०भे०—डाहळौ।
अल्पा०—डाळकियौ, डाळकी, डाळियौ, डाळि, डाळी, डाहळी।
मह०—डाळ, डाहळ।

डालौ-सं०पु० [सं० डल्ल, डल्लकं] बांस की खपच्चियों आदि से बनाया हुआ बड़ा टोकरा, बड़ी डलिया।
अल्पा०—डालकियौ, डालकी, डालियौ, डाली।
मह०—डाल।

डाव-सं०पु०—१ नृत्य, नाच. २ देखो 'दाव' (रू.भे.)
उ०—१ दरिया यहु संसार है, तां में रांम नांम निज नाव। दादू ढील न कीजिये, यहु औसर यहु डाव।—दादू वांणी
उ०—२ यम तड़फड़ता अड़ै, वाहि जम दाढ़ वहाड़ै। डाव घाव डोरियां, जांणि जगजेठ अखाड़ै।—सू.प्र.
उ०—३ पुरख नारि मैं ते मती, नहिं पासा नहिं सारी। डाव नहीं चौपड़ि नहीं, नहीं जीति नहिं हारी।—ह.पु.वा.
उ०—४ जन हरिदास साचै मतै, रमै स साचा डाव। सूरवीर साचै मतै, साचा रोपै पाव।—ह.पु.वा.
उ०—५ देखे डाव पीठ दुसमण की, धीमी चाल धपावै। पूरै वेग करै जव पट्टी, लख ममरेज लगावै।—ऊ.का.

डावउं, डावउ—देखो 'डावौ' (रू.भे.) उ०—१ दिवस तु रात्रि, सुक्लपक्ष तु क्रिसणपक्ष, उद्योत तउ अंधकार, छाया तउ आतप, उंचउं तउ नीचउं, जिमणउं तउ डावउं, अम्रित तउ विख।—व.स.
उ०—२ डावउ करेवउ करकरइं, महा अपसूकन होज्यौ ए! भुवांळ।—वी.दे.

डावड़—देखो 'डावड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—गावड़ डावड़ का भावन गुण गाता। गायां गरभाती गोरी गरवाता।—ऊ.का.

डावड़ियौ—देखो 'डावड़ौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ओछा कुळ में ऊपना, दोभा डावड़ियाह। हवळै वोलै होट में, मूरख मावड़ियाह।
—बां.दा.

डावड़ी-सं०स्त्री०—पुत्री, बेटी। उ०—पायौ किण धनवंत पद, दांमै डावड़ियांह। कवियण किण पायौ कुरब, मांगै मावड़ियांह।
—बां.दा.
२ बालिका, कन्या. ३ दासी, सेविका। उ०—१ कोई वीर प्रकृति वाळी स्त्री कहै है—हे सखी, हूं सारी वातां रीस सहण वाळी हूं, म्हारी डावड़ी ही रीस में आय कुछ कहै तौ सह लेऊं सो सासू नणद

री तो सहूं ई सहूं ।—वी.स. टी.

उ०—२ छोकरियां डावड़ियां जाय जाय दौड़ दौड़ देय आवै छै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—डावरी ।

डावड़ो—सं०पु० (स्त्री० डावड़ी) १ बालक, लड़का ।

उ०—१ पंनां रै वहकावियां, पड़ै सयांणा हूल । डाकरण रै घर डावड़ा, भेजै जिकण म भूल ।—वी.स.

उ०—२ उणां फिर फिर सारा वस्ती रा डावड़ा जोया ।—नैणसी

२ पुत्र, आत्मज । उ०—दसरथ हंदा डावड़ा तेतीस छुडाया ।

—केसोदास गाडण

रू०भे०—डावरो ।

अल्पा०—डावड़को, डावड़ियो ।

मह०—डावड़ ।

डावरी—देखो 'डावड़ी' (रू.भे.)

डावरो—देखो 'डावड़ो' (रू.भे.) उ०— जग-जीतणहारो हे, दीखण में ही डावरो । सिव-चाप चढ़ायो हे, राख्यो पण रावरो ।

—गी.रां.

(स्त्री० डावरी)

डावलियो, डावलो—वि० (स्त्री० डावली) १ जिसका बायां पांव बायां हाथ अधिक तत्पर हो. २ देखो 'डावो' (अल्पा., रू.भे.)

डावांडोळ, डावाडोळ—देखो 'डांवाडोळ' (रू.भे.)

उ०—१ रोळ हूं डफोळ डावांडोळ मैं रह्यो । मांनखो अमोल गोळ-मोळ में गयो ।—ऊ.का.

उ०—२ खप्फा होवै खलक पर, डप्फा डावाडोळ । नप्फा थारै है नहीं, गप्फा खावै गोल ।—ऊ.का.

डावियाळ—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे.)

डावु, डावू—देखो 'डावो' (रू.भे.) उ०—१ डावी हंस डाळि गह-इगहीं, जिमणी भइरव भलइं गहइगही । खर डावू हुउ तीणी वारि, सुभ सकन ना करूं विचार ।—व.स.

उ०—२ डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा । डावा लाळी जिमणी मलाळी, तंदळ भरूं भांणं ।—व.स.

डावो—वि० (स्त्री० डावी) १ किसी मनुष्य या प्राणी के पूर्व दिशा की ओर मुंह कर के खड़े होने पर उसके शरीर के उस पार्श्व की ओर पड़ने वाला जो उत्तर की ओर हो, दाहिने का उल्टा, बायां, वाम ।

उ०—१ तठै इका री तरवार घोड़ा रै फर में पड़ी । आगलो डावो पग उठै हीज पड़ियो नै महारांणा नै ले घोड़ो चेटक अठारा कोस मेवाड़ रा भाखरां में पुगो ।—वी.स.टी.

उ०—२ डावा कर ऊपर टुसट, कर जीमणो करंत । सो लगाय मुख सांकतो, मावड़ियो कुचरंत ।—वां.दा.

मुहा०—डावा हाथ री खेल—जो बाएँ हाथ से किया जा सके, अत्यन्त सरल ।

२ प्रतिकूल, विरुद्ध. ३ उल्टा. ४ देखो 'डायो' (रू.भे.)

उ०—आप डावो अनै गिणै काला अवर, सांभळो कमाई करै खोटी । चराया छळा जिम पांन गिणिया चरै, मरण री न जांणै खोड़ मोटी ।—ओपो आढ़ो

सं०पु०—१ बायां हाथ. २ देखो 'दा'वो' (रू.भे.)

रू०भे०—डावउं, डावउ, डावउं, डावउ, डावु, डावू, डाहउ ।

अल्पा०—डावलियो, डावलो, डाहलो ।

डाह—सं०स्त्री० [सं० दाह] ईर्ष्या, द्वेष, जलन ।

रू०भे०—डा' ।

डाहउ—१ देखो 'डायो' (रू.भे.) उ०—उत्सूत्र बोलतउ जे संका नाणइं अनइ कुगरु रहइं सुगुरु करी मांनइ ते विदुख डाहउ हूंतउ ते पाप पुण्य करी मांनइ ।—षष्टिशतक प्रकरण

२ देखो 'डावो' (रू.भे.)

डाहणो, डाहबो—क्रि०स०—धारण करना, पहनना ।

उ०—बावन जुध जीतो बहस, पह कारण पतसाह । डारण कदे न डाहियो, निज तन 'गजन' सनाह ।—किसोरदांन बारहठ

डाहपण—देखो 'डाहापणो' (रू.भे.) उ०—हवडां पाछिलया भवनइं अग्यांन कस्टनइं प्रमांणि डाहपण चतुराइ आवी छइ ।

—षष्टिशतक प्रकरण

डाहर—सं०पु०—एक जाति विशेष । उ०—नर गौड़िया नैं गवारिया रे, ऐ तो वही भार पंवारिया रे, डबगर डूम डाहरने भरवा रे ।

—जयवांणी

डाहळ—सं०स्त्री०—१ वाद्य विशेष । उ०—दोऊ ओर दुवाह यो असि वाह अछक्कै । डेरां डाहळ डिंडिमी डक्को डकडक्कै ।—वं.भा.

२ देखो 'डाळो' (मह., रू.भे.) उ०—मद लेतां भाखै मती, भोळी चाबुक भांत । छकियो लाखां छांगसी, खातो डाहळ खांत ।—वी.स.

डाहल—सं०पु० [सं० दाह+आलुच् रा०प्र०+ल] १ शिशुपाल ।

उ०—१ विप्र तणा पय पूजी प्रणमीं, इम बोलइ स्रीमात । डाहल नइ दळ मंगळ गावइ, विश्णु तणी कहो वात ।—रुकमणी मंगळ

२ देश विशेष का नाम (व.स.)

३ देखो 'डाहलो' (मह., रू.भे.) उ०—येम नारि छुटवाय, मेछ अपने मग लग्गिय । मनु डाहल सिसपाळ, खोय धन को खळ भग्गिय ।

—ला.र.

डाहळो—देखो 'डाळो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मोटा पुरखां कही छै सरम धरम रै रोंखड़ा रै डाहळो छै ।—नी.प्र.

डाहलियो—१ देखो 'डाहलो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ सारंग स्यंग द्रिस्टि जिम कंपइ, तिम डाहलियो द्रिस्टिइं । नलणी नीर विना किम जीवइ, कुं हरि विना वीसेखइं ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ डाहलियो राजा सिसुपाळ । मन मांनै तो घालो वरमाळ ।

—जयवांणी

२ देखो 'डाहल' (अल्पा., रू.भे.)

डाहळी—देखो 'डाळी' (रू.भे.) उ०—ढ़ाक कुभरा कीकर टूळा भुक नै रह्या छै। डाहळां सूं डाहळा अड़नै रह्या छै।—रा.सा.सं.

डाहलौ-वि० (स्त्री० डाहली) १ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु.

२ देखो 'डायौ' (अल्पा., रू.भे.)

सं०पु० [सं० दाह+रा०प्र०लौ] १ शिशुपाल. २ देश विशेष का नाम. ३ देखो 'डायौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सू किसाग्रेक सरदार जुवांन छै ? पाकां पाकां वरियामां नूं, अजरायळां नूं, खींवरां नूं, डांण-हुलां डाकियां नूं, करड़दंतां नूं, लोह घड़ां लाह पर डाहलां नूं, लोली देता, कटारी उगराई खाता···।—रा.सा.सं.

अल्पा०—डाहलियौ।

मह०—डाहल।

डाहिणी-सं०स्त्री०—छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक।—व.व.

डाहिया-सं०स्त्री०—राजपूतों में सोलंकी वंश की एक शाखा।

डाहियौ-सं०पु०—राजपूतों में सोलंकी वंश की डाहिया शाखा का व्यक्ति।

डाही—देखो 'डाई' (रू.भे.) उ०—१ तरै चावड़ी कह्यौ, पर-पुरस रा मुंह देखूं नहीं। पिण तूं डाही समझवार छै, तिणसूं आवूं छूं।
—जगदेव पंवार री वात

उ०—तात न जांणि तिम तेड़ावूं परि प्रीऊनि वाही। तूं हि ·मन मांहां वात राखज्ये, माता छे अति डाही।—नळाख्यांन

डाहीयार—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे.) उ०—१ तेह भणी जिम वाळक तत्वातत्वविचार न जांणइं, हित अहित न जांणइ। तेह वाळकां ऊपरि डाहीयार लोक रीस न करइं।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ आलै वाळउ वाकु अहिठांणउ आंकु तीणइं वाळी, मांहि थूली टाली, घीइं मोई, डाहीयारइं जोई, एकल्ल पाट सारूयार घाट।
—व.स.

डाहीयाळ—देखो 'डाइयाल' (रू.भे.)

डाहु—देखो 'डायौ' (रू.भे.) उ०—१ प्रजा नइ सुखकारीउ, माइ पिता समांन। विचार चतुर डाहु भलु ए, दिइ यथोचित दांन।
—नळ-दवदंती रास

उ०—२ पंडित डाहु विद्यावंत, नहीं छळछळीउ कहिवाइ संत। गरव न धरइ हई आमांहि, सुंदर दीखीतु प्रवाही।—नळ-दवदंती रास

डाहुउ-सं०पु०—देश विशेष का नाम (व.स.)

डाहुल—देखो 'डाहल' (रू.भे.) उ०—आवै तूं आप लियौ अवतार, भड़ां भड़ भोमि उतारण भार। सोहै तूं डाहुल दंत सिघार, निमौ नरकासुर खोसण नारि।—पी.ग्रं.

अल्पा०—डाहुलियौ, डाहुलौ।

डाहुलियौ, डाहुलौ—देखो 'डाहलौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—तातै अति लोही तणां, वहिसै वाहिळिया। तिमि काळिगा त्रोड़िया, जिमि दळिया डाहुलिया।—पी.ग्रं.

डाहूआर—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे.) उ०—इसउ महाराज प्रजापाळवंत सलक्षण विचक्षण डाहूआर, अतिहि सुविचार, बहुत्तरि कळाकुसळ।
—व.स.

डाहेरौ—देखो 'डायौ' (रू.भे.) उ०—डोसे डाहेरे मिळी, कीधउ अस्यु विचार। गरभ धरइ नहिं गोरड़ी, सिउं समसिइ संसार।
—मा.कां.प्र.

डाहौ—देखो 'डायौ' (रू.भे.) उ०—१ तरै किणहेक डाहै मांणसै कह्यौ—'जु श्रै काळ पूंछिया धरती डूलता लेता आवै छै, इणां रै ना जाइजै।'—नैणसी

उ०—२ महुतउ वेग सभां आविउ, राजा रंगिइं बोलावीउ। डाहा भुलइं केती वार, तुह्म सरिखा नु किसिउ विचार।
—विद्याविळास पवाडउ

(स्त्री० डाही)

डिंगळ-सं०स्त्री०—राजस्थानी भाषा का एक नाम, मरु भाषा।

वि०वि०—देखो 'राजस्थांनी' (२)

डिंगळियौ, डिंगळयौ-सं०पु०—वह जो डिंगळ पढ़ा हुआ हो (अल्पा.)

उ०—डिंगळिया मिळियां करै, पिंगळ तणौ प्रकास। संसक्रत व्है कपट सज, पिंगळ पढ़ियां पास।—बां.दा.

रू०भे०—डींगळियौ।

डिंडिभ, डिंडिम, डिंडिमि, डिंडिमी-सं०पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—१ डेरां डिंडिम डाकिनी डफ डक्क वजाया।—वं.भा.

उ०—२ दोऊ ओर दुवाह यौं असि वाह अछक्कै। डेरां डाहल डिंडिमी डक्को डकडक्कै।—वं.भा.

डिंडीर-सं०पु०—फेन, झाग।

डिंब, डिंभ-सं०पु० [सं०] १ पुत्र, बेटा (ह.नां.)

उ०—१ डहक्कि मिच्छि जास डिंभ-डिंभ वांम संझरै। जिहांन आंन कांन जोध जंग आइ सो जुरै।—राजविलास

उ०—२ पिता मात मांमाळ पिण, बळ धक रौ बळवंत। डिम में डाकी डिंभ डट, दळ दे दुसहा दंत।—रेवतसिंह भाटी

२ युद्ध, लड़ाई। उ०—डहक्कि मिच्छि जास डिंभ-डिंभ वांम संझरै। जिहांन आंन कांन जोध जंग आइ सो जुरै।—राजविलास

रू०भे०—डिभ, डिम।

डिंभक-सं०पु०—१ बच्चा, शिशु। उ०—संतां मांनि मरोड़्यां मारै रे, डिंभक सा डाकण चुणि खाया। कोई म्रितक पड़्या पुकारै रे।
—ह.पु.वा.

डिंभककरास्त्र-सं०पु०—एक प्रकार का अस्त्र (व.स.)

डिकामाळी-सं०स्त्री०—मध्य भारत तथा दक्षिण में पाया जाने वाला एक प्रकार का पेड़।

डिगंवर, डिगंमर—देखो 'दिगंवर' (रू.भे.)

कहा०—डिगंमरां कै गांव में धोबी कौ के कांम—दिगम्बरों के गांव

में धोबी का क्या काम । जैनियों के दिगम्बर साधु नंगे रहते हैं अतः उनके गांव में धोबी का क्या काम ।

टिगणी, टिगवौ—क्रि०अ०—हिलना, डुलना । उ०—डिगै गेण अण-टोल, जोग तज बैसे संकर । हार कंठ सिणगार, भार छोडवै मिणं-धर ।—चौथ बिठू

२ जगह छोड़ना, हटना । उ०—उण मोसर मंद ऊगिया, सांवळि हुवा समाजि । मद्ध उथेल्या ज्या डिगी, जोवन तणी जिहाजि ।

पन्नां वीरमदे री वात

३ डगमगाना, हिलना-डुलना । उ०—१ डिगती डोकरियां डोक-रिया डोलै । बाबा टुकड़ो दो हाबा कर बोलै ।—ऊ.का.

उ०—२ मगर पचीसी मांय डोकरो वणगौ डाकी । डांगड़ियां निठ डिगै धिगै टांगड़ियां थाकी ।—ऊ.का.

४ नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना । उ०—ओछी अंगरखियां दुपटी छिब देती, गोढै वरड़ी जे पूरा गांमेती । फैंटा छोगाळा खांचा सिर फावै, टेढा डोढा व्है डिगतौ नभ ढावै ।—ऊ.का.

५ प्रण पर स्थिर न रहना, विचलित होना । उ०—१ इम करतां रंभ कोड़ इलाजा । रिख व्रत चित डिगियौ न राजा ।—सू.प्र.

उ०—२ डिगै न चित्त नाहीं डरै, फिरै न कह फुरमांण । करण चहे ज्यूंही करै, 'पातल' खरै प्रमांण ।—जैतदांन बारहठ

डिगणहार, हारौ (हारी), डिगणियौ—वि० ।

डिगवाड़णौ, डिगवाड़बौ, डिगवाणौ, डिगवाबौ, डिगवावणौ, डिगवा-ववौ—प्रे०रू० ।

डिगाड़णौ, डिगाड़बौ, डिगाणौ, डिगावौ, डिगावणौ, डिगाववौ —क्रि०स०

डिगिग्रोड़ौ, डिगियोड़ौ, डिग्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

डिगीजणौ, डिगीजवौ—भाव वा० ।

डगणौ, डगवौ—रू०भे० ।

टिगपाळ—देखो 'दिगपाळ' (रू.भे.) उ०—तत पांच गुण तीन कोम डिगपाळ कमाळी । सोम राह छिनि सूर केत त्रिसपति कोलाळी ।

—पी.ग्रं.

डिगमग—देखो 'डगमगा'ट' (रू.भे.)

डिगमगणौ, डिगमगवौ—देखो 'डगमगणौ, डगमगवौ' (रू.भे.)

उ०—डीगा वड़ डिगमगै, मऊ माळवै जाय ।—अज्ञात

डिगमिगा'ट—देखो 'डगमगाहट' (रू.भे.)

डिगमगाणौ, डिगमगावौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे.)

डिगमगायोड़ौ—देखो 'डगमगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगमगायोड़ी)

डिगमगावणौ, डिगमगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे.)

डिगमगावियोड़ौ—देखो 'डगमगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगमगावियोड़ी)

डिगमगियोड़ौ—देखो 'डगमगियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगमगियोड़ी)

डिगमिग—देखो 'डगमगा'ट' (रू.भे.) उ०—१ देरावर दादौ दीपतौ रे, डिगमिग कांई डमडोल रे जात्रीड़ा । परचा दादौ पूरवै रे, लो तीरथ कौ इण तोल रे जात्रीड़ा ।—स.कु.

उ०—२ सुजड़ां मुंहि संघर लड़िया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै । खागां पळ खंडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै ।

—गु.रू.बं.

डिगमिगणौ, डिगमिगवौ—देखो 'डगमगणौ, डगमगवौ' (रू.भे.)

उ०—१ सवळ जळ सभिन्न सुगंध भेट सजि, डिगमिग पाउ वाउ क्रोध डर । हालियौ मलयाचळ हूंत हिमाचळ, कांमदूत हर प्रसन्न कर ।—वेलि.

उ०—२ जे जिमणौ ओ भैरव, जिमणै ओ हाथ त्रिसूळ । डावै ओ भैरव, डावै ओ डमरू डिगमिगै ।—लो.गी.

डिगमिगा'ट—देखो 'डगमगा'ट' (रू.भे.)

डिगमिगाणौ, डिगमिगावौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे.)

डिगमिगायोड़ौ—देखो 'डगमगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगमिगायोड़ी)

डिगमिगावणौ, डिगमिगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे.)

डिगमिगावियोड़ौ—देखो 'डगमगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगमिगावियोड़ी)

डिगमिगाहट—देखो 'डगमगा'ट' (रू.भे.)

डिगमिगियोड़ौ—देखो 'डगमगियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगमिगियोड़ी)

डिगर-सं०पु० [सं० डिंगर] नौकर, चाकर, टहलुआ (ह.नां., अ.मा.)

डिगरी-सं०स्त्री० [अं० डिक्री] १ अदालत की वह आज्ञा जिसके द्वारा मुद्दई को कोई अधिकार प्राप्त होता है ।

क्रि०प्र०—आणी, करणी, देणी, पाणी, भेजणी, मिळणी, मेलणी, होणी ।

[अं० डेग्री] २ परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय द्वारा दी जाने वाली पदवी ।

क्रि०प्र०—मिळणी ।

यौ०—डिगरीदार ।

डिगळी-चूक-वि०यौ०—वह जिसकी नीयत स्थिर नहीं रहे ।

मि०—डेळी-चूक ।

डिगाड़णौ, डिगाड़वौ—देखो 'डिगाणौ, डिगावौ' (रू.भे.)

डिगाड़णहार, हारौ (हारी), डिगाड़णियौ—वि० ।

डिगाड़िग्रोड़ौ, डिगाड़ियोड़ौ, डिगाड़योड़ौ—भू०का०कृ० ।

डिगाड़ीजणौ, डिगाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

डिगणौ, डिगवौ—अक०रू० ।

डिगाड़ियोड़ौ—देखो 'डिगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगाड़ियोड़ी)

डिगाणौ, डिगावौ–क्रि०स०—विचलित करना, अटल न रहने देना, पथ-भ्रष्ट करना। उ०—१ सत माय उपाय डिगाय सती। पद गाय रिझाय छोडाय पती।—ऊ.का.

उ०—२ डिगायौ डिगूं नहीं, जो देव चलावै आंण।—जयवांणी

२ जगह छुड़ाना, हटाना. ३ हिलाना-डुलाना. ४ दूर करना, टालना. ५ नीचे की ओर प्रवृत्त करना, भुकाना।

डिगाणहार हारौ (हारी), डिगाणियौ—वि०।

डिगायोड़ौ—भू०का०कृ०।

डिगाईजणौ, डिगाईजवौ—कर्म वा०।

डिगणौ, डिगबौ—अक० रू०।

डगाड़णौ, डगाड़बौ, डगाणौ, डगावौ, डगावणौ, डगाववौ, डिगाड़णौ, डिगाड़बौ, डिगावणौ, डिगावबौ—रू०भे०।

डिगायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ विचलित किया हुआ. २ जगह छुड़ाया हुआ, हटाया हुआ. ३ हिलाया-डुलाया हुआ. ४ दूर किया हुआ, टाला हुआ. ५ नीचे की ओर प्रवृत्त किया हुआ, भुकाया हुआ।

(स्त्री० डिगायोड़ी)

डिगावणौ, डिगाववौ—देखो 'डिगाणौ, डिगावौ' (रू.भे.)

डिगावणहार, हारौ (हारी), डिगावणियौ—वि०।

डिगावियोड़ौ, डिगावियोड़ौ, डिगाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डिगावीजणौ, डिगावीजबौ—कर्म वा०।

डिगणौ, डिगबौ—अक० रू०।

डिगावियोड़ौ—देखो 'डिगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिगावियोड़ी)

डिगियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ हिला हुआ, टला हुआ. २ जगह छोड़ा हुआ, हटा हुआ. ३ हिला-डुला हुआ, डगमगाया हुआ. ४ नीचे की ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, भुका हुआ. ५ वात पर स्थिर न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ।

(स्त्री० डिगियोड़ी)

डिचकार—देखो 'टुचकार' (रू.भे.)

डिचकारणौ, डिचकारबौ—देखो 'टुचकारणौ, टुचकारबौ' (रू.भे.)

डिचकारी—देखो 'टिचकारी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ दूध दियौ जितै-तौ माथौ मारियो, नीरौ नांखियो। टळियां पछै दिनूंगै-सूं डिचकारी दे'र घर सूं बारै टोर देवता।—वरसगांठ

उ०—२ डिचकारी करता थकां।—जयवांणी

डिचकारौ—देखो 'टिचकारौ' (रू.भे.)

डिचडिच—देखो 'टिचटिच' (रू.भे.) उ०—गाय माडांणै टुरी। दीनता अर करुणा भरी भोळी द्रस्टि घर कांनी नांखी। पण फजूल वा ढैकी, छेकड़ली वार निरासा-भरी निजर कंई-नै देखण सारू पसारी, पण ओझाजी-री डिचडिच वियै नै वठै ज्यादा पग ठांमण को दिया नी।—वरसगांठ

डिढ—देखो 'द्रढ' (रू.भे.) उ०—म्हारौ तौ ओ डिढ विस्वास कै धरती माथै मिनख सूं वेसी कीं चीज कोनी।—वांणी

डिडाणौ, डिडावौ—देखो 'डाडणौ, डाडवौ' (रू.भे.)

उ०—भूरा रूं भुरड़ीजिया, लूआं वेरण लाय। चटका लागै चौगिरद, पड़ै डिडाय डिडाय।—लू.

डिडायोड़ौ—देखो 'डाडियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डिडायोड़ी)

डिपटी—१ देखो 'डयूटी' (रू.भे.) २ देखो 'डुपटी' (रू.भे.)

डिबलौ—देखो 'दिवलौ' (रू.भे.) उ०—जांनी म्हारा ले डिबलौ ले बात, बूढ़लै री सेजां घणा गई ओ म्हारा सांम।—लो.गी.

डिविड़ि, डिबिया—देखो 'डवी' (रू.भे.)

डिबौ—देखो 'डवौ' (रू.भे.)

डिब्बी—देखो 'डबी' (रू.भे.)

डिब्बौ—देखो 'डबौ' (रू.भे.) उ०—चौधरी दौड़तां भागतां टिगस कराय नै गाडी तौ पकड़ली पण डिब्बा में गरमी इसी ही के उणरौ दम घुटण लागग्यौ।—रातवासौ

डिभ—देखो 'डिंभ' (रू.भे.) (ह.नां.)

डिम—१ देखो 'डम' (रू.भे.) उ०—डिम डिम डमरू वाजता, साथै भूत वहु प्रेत। रुंड (तणी) माळा संकर रचै, सिलौ करै रिण खेत।—प.च.चौ.

यौ०—डिम-डिम।

२ देखो 'डिंभ' (रू.भे.) उ०—पिता मात मांमाळपिण, वळ घक रौ वळवंत। डिम में डाकी डिंभ डट, दळ दे दुसहां-दंत।
—रेवतसिंह भाटी

डिमर—देखो 'डमरू' (रू.भे.)

डिलि—देखो 'डील' (रू.भे.) उ०—साचउं कहितां सुंदरी, रखै आंणती रोस। डगळइ डगळइ दीसीइ, डिलि तुम्हारइ दोस।
—मा.कां.प्र.

डिल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—राघव कहइ तुम्ह मति डरउ, हुं करउं मंत्र मनि भाईयउ। सुळतांण तांम समझाइ करि, वाहुड़ि डिल्ली लाइयउ।—प.च.चौ.

डिल्लौ–सं०पु०—१ प्रत्येक चरण में १६ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में भगण होता है. २ एक वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं।

डींग–सं०स्त्री० [सं० डीन = उड़ान] खूब वढ़ा-चढ़ा कर कही हुई वात, झूठी वड़ाई की वात, शेखी, गप्प।

क्रि०प्र०—उडाणी, धरणी, मारणी, हांकणी।

डींगड़—१ देखो 'डींगौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'डींगरौ' (मह., रू.भे.)

डींगड़ियौ, डींगड़ौ—१ देखो 'डींगौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'डींगरौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० डींगड़ी)

डींगर—देखो 'डींगरौ' (मह., रू.भे.)

डींगरियौ—१ देखो 'डींगरौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'डींगौ' (अल्पा., रू.भे.)

डींगरौ–सं०पु०—एक ओर छेद की हुई वह लकड़ी जिसे शीघ्र काबू में

नहीं आने वाले चौपाये के गले में बांधी जाती है। यह जमीन तक लटकती रहती है और चौपाये के चलने पर उसके अगले पैरों पर लगती है जिससे वह अधिक तेजी से नहीं भाग सकता है। ठेंगुर।
अल्पा०—डींगड़ियौ, टींगड़ौ, डींगरड़ौ, डींगरियौ।
मह०—डींगड़, डींगर, डींगरड़।

टींगळ—१ देखो 'डिगळ' (रू.भे.) २ देखो 'ठींगळौ' (मह., रू.भे.)

टींगल—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

टींगळियौ—१ देखो 'डिगळियौ' (रू.भे.) २ देखो 'ठींगळौ'। (अल्पा., रू.भे.)

टींगलियौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डींगली)

टींगळौ—देखो 'ठींगळौ' (रू.भे.)

टींगलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डींगली)

डींगाड़, डींगार—देखो 'डीगाड़' (रू.भे.)

डींगोड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डींगोड़ियौ, डींगोड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डींगोड़ी)

डींगौ—देखो 'डीगौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डींगी)

डींघड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डींघड़ियौ, डींघड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डींघड़ी)

डींघल—देखो 'डीघौ' (मह., रू.भे.)

डींघलियौ, टींघलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डींघली)

टींघोड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डींघोड़ियौ, डींघोड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डींघोड़ी)

डींघौ—देखो 'डीगौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डींघी)

डींच—पत्ती या फल के ऊपर का वह भाग जो लता या वृक्ष से जुड़ा रहता है, डंठल। उ०—ठांम थिकां ठठल्यां पछी, नागवेलि ना डींच। पांचय परि परि रडवडइ, दंत केस नख नीच।—मा.कां.प्र.

डींडू—सं०पु०—जल में रहने वाला सांप।
रू०भे०—डीडू।

डींडोळियौ—देखो 'डंडियौ' (रू.भे.)

डींबु—देखो 'डीभौ, डीमौ' (रू.भे.)
उ०—तू दुख पांमी तेहवुं, जेहवी हूंती आस। दिन केते डींबु चढ़ी, वींभू हुउ विणास।—मा.कां.प्र.

डींभू—सं०पु०—भिड़ नामक कीड़ा, ततैया, वर्र।
उ०—१ डींभू लंक मराळि गय, पिक-सर एही वांणि। ढोला, एही मारुई, जेहा हंभ निवांणि।—ढो.मा.
उ०—२ ऊमर दीठी मारुई, डींभू जेही लंकिक। जांणे हर-सिरि फूलड़ा, डाकं चढ़ी डहकिक।—ढो.मा.
रू०भे०—डीभू।

डींया—सं०स्त्री० [सं० दृष्टि] नेत्र, नयन (जयपुर)

डी—सं०पु०—१ आसन. २ आमला. ३ आकाश. ४ समुद्र. ५ फेन, झाग।
सं०स्त्री० ६ हरीतकी. ७ जंजीर (एका.)

डीकर—१ देखो 'डीकरौ' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'डीकरी' (मह., रू.भे.)

डीकरड़ी—देखो 'डीकरी' (अल्पा., रू.भे.)

डीकरड़ौ, डीकरियौ—सं०पु०—१ देखो 'डीकरौ' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'डीकरी' (अल्पा., रू.भे.)

डीकरी—सं०स्त्री०—१ पुत्री, बेटी। उ०—१ राजा सूं कहाड़ी—म्हारै एक डीकरी नव बरस की सो पड़दी आडी करि बैठे।
—सिंघासण बत्तीसी
२ बालिका, लड़की। उ०—वा जाळोर रा प्रसिद्ध मुंहता परिवार री डीकरी अर समदड़ी रा प्रसिद्ध सेठ परिवार री बींदणी ही।
—रातवासौ
अल्पा०—डीकरड़ी, डीकरड़ौ, डीकरियौ।
मह०—डीकर।

डीकरौ—सं०पु० [सं० दीप्तिकरः] (स्त्री० डीकरी) १ पुत्र, बेटा।
उ०—भाभंजी री गवरांदे जावं रे वलाय, राय म्हारै रे सरीखा रे म्हारै भाभंजी रै डीकरा।—लो.गी.
२ बालक, लड़का। उ०—विना कीजतां ब्रह्म राजा बकारै। धरा तूज ही डीकरां ग्रब्ब धारै।—सू.प्र.
अल्पा०—डीकरड़ौ, डीकरियौ।
मह०—डीकर।

डीगड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डीगड़ियौ, डीगड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा. रू.भे.)
(स्त्री० डीगड़ी)

डीगल—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डीगलियौ, डीगलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डीगली)

डीगाड़, डीगार—सं०पु०—लकड़ी का वह डंडा जो रहट में कूए के ऊपर घूमने वाले घेरे (डावड़ौ) की पट्टी व लाठ में लगा रहता है। ये कुल ३२ होते हैं। जिस प्रकार साइकिल का पहिया ताड़ियों से सुरक्षित रहता है ठीक उसी प्रकार यह घेरा इन डंडों द्वारा सुरक्षित रहता है।
रू०भे०—डींगाड़, डींगार।

डीगोड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डीगड़ियौ, डीगोड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—घूंधा घोरा नांव कठै लाका लांमोड़ा। 'गाळा आडावळा गगण-चुंबी डीगोड़ा।—दसदेव
(स्त्री० डीगोड़ी)

डीगौ—वि० [सं० दीर्घ] (स्त्री० डीगी) ऊंचे कद का, लम्बे कद का।
रू०भे०—डींगौ, डींघौ, डीघौ।
अल्पा०रू०भे०—डींगड़ियौ, डींगड़ौ, डींगलियौ, डींगलौ, डींगोड़ियौ, डींगोड़ौ, डींघड़ियौ, डींघड़ौ, डींघलियौ, डींघलौ, डींघोड़ियौ, डींघोड़ौ, डीगड़ियौ, डीगड़ौ, डीगलियौ, डीगलौ, डीगोड़ियौ, डीगोड़ौ, डीघड़ियौ, डीघड़ौ, डीघलियौ, डीघलौ, डीघोड़ियौ, डीघोड़ौ।
मह०—डींगड़, डींगल, डींगोड़, डींघड़, डींघल, डींघोड़, डीगड़, डीगल, डीगोड़, डीघड़, डीघल, डीघोड़।

डीगोड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—डीगोड़ा डूंगर धोरां मांझ, बरसती झीणोड़ी विसरांम। जिकण में भींजै बा इकलांण, विराजी सांयत बण जजमांन।—सांझ

डीघड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डीघड़ियौ, डीघड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा. रू.भे.)
उ०—बांकड़ौ मरद हद गीत ब्रद बांकड़ा, मरद लहरीक वांकिम तणा मेच। 'सेर' थारै कमळ बणै सोभा मणा, पाघड़ै डीघड़ै बांकड़ा पेच।
—कविराजा करणीदांन

डीघल—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डीघलियौ, डीघलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डीघली)

डीघोड़—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे.)

डीघोड़ियौ, डीघोड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० डीघोड़ी)

डीघौ—देखो 'डीगौ' (रू.भे.) उ०—१ नाडा भरियोड़ा नैड़ा निजराता, गाडा गुड़काता पैड़ा रुड़पाता। लाखं फूलांणी झीणां सुर लेता, डीघा गाडीणां डब डब धुनि देता।—ऊ.का.
उ०—२ तारां तेजसी कयौ, 'ओ तौ खाटरौ है, नै करमचंद डीघौ है।'—द.दा.
(स्त्री० डीघी)

डीठ—देखो 'दीठ' (रू.भे.)

डीडियौ—देखो 'डंडियौ' (रू.भे.)

डीडूं, डीडू—देखो 'डींडू' (रू.भे.) उ०—हेंकड़ि कर अर हूंकरै, भौ की भुजंग न भाळ। डीडू ओ डरपावणौ, विख विण सकै न वाळ।
—रेवतसिंह भाटी

डीबसियौ—देखो 'ढीबसियौ' (रू.भे.)

डीबौ—देखो 'डबौ' (रू.भे.) उ०—व्याह बाहरां जाहि खाहि अरु विक्रत गावै। डीबौ मांही द्रस्टि एह सिद्ध रूप कहावै।—ह.पु.वा.

डीबौ—देखो 'डीभौ' (रू.भे.)

डीभू—देखो 'डींभू' (रू.भे.)

डीभौ, डीमौ—सं०पु०—किसी दुखद या अमांगलिक घटना के घटने के कारण होने वाला मानसिक आघात, सदमा।
उ०—मरतां नै जातां थकां, राखी न सके कोय। पिण जो भाखण काढ़ियौ, तो मन डीभौ होय।—जयवांणी
रू०भे०—डीबौ।

डीर—सं०पु०—कुछ विशिष्ट वृक्षों में फूलों व फलों के लगने से पहले उनके स्थान पर लगने वाला छोटे-छोटे दानों का समूह, बौर, मौर, मंजरी। उ०—नारद होय वहीर राति नगरी में आया, जैसे खेल बजार गौड़ आंबा सळगाया। होय सारंग वहीर डीर सूकै ज्यां तरवर, हंसा होय वहीर नीर सूकै ज्यां सरवर।—अरजुणजी बारहठ

डीरा—सं०स्त्री०—ढोलियों की एक शाखा विशेष।

डील—सं०पु०—१ शरीर, देह। उ०—देखां कह हाथ विहूणी डील। खपावण खाफर री खोड़ील।—पी.ग्रं.
मुहा०—डील में आणौ—किसी देव विशेष की उपस्थिति का शरीर में अनुभव करना।
२ व्यक्ति, मनुष्य। उ०—गोहिलां री वड़ी धोम राज, अर डाभी पण डीलां घणां सिरीखा परधांन, सु रीसांणा थकां छाड़ गया।
यौ०—डील-आंगौ, डील-डौळ, डीलवड़ी, डीलोडील।
३ योनी, भग।
रू०भे०—डीलि।

डील-आंगौ—सं०पु०यौ०—व्यापार, व्यवसाय अथवा कृषि के अन्तर्गत वह भाग जो किसी मनुष्य को केवल उसी के परिश्रम के बदले में मिलता है।
वि०वि०—किसी मनुष्य के पास यदि कृषि करने के लिये बैल अथवा अन्य साधन न हों, व्यापार करने के लिये पूंजी अथवा अन्य साधन न हों तो केवल उसके स्वयं की मेहनत के आधार पर निश्चित किया जाने वाला भाग।

डील-डौळ—सं०पु०यौ०—१ शरीर का आकार, ढांचा, आकृति।
२ शरीर की लम्बाई-चौड़ाई, देह-विस्तार।

डील-वड़ी—देखो 'हाड-वड़ी'।

डीलायती—वि०—१ शरीर सम्बन्धी, शरीर का।
उ०—सूरजमल सुजांणसिंघ रांणा अमरसिंघ री बेटी डीलायती पटे फूलियौ।—बां.दा.ख्यात
वि०स्त्री०—२ दीर्घकाय, भीमकाय।

डीलायतौ—वि०पु० (स्त्री० डीलायती) दीर्घकाय, भीमकाय।

डीलि—देखो 'डील' (रू.भे.)
उ०—चोरनउ······मूंकीनइ आपणइ डीलि पापि चोरी करइं। ते एवहा जांणिवा।—षष्टिशतक प्रकरण

डीली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)
उ०—आस्थांन आप जोगिन हुइ, विप्र पंथ आस्रम करयउ। आणंद

अंग ऊलट पलट्टइ, तब डोली गड़ संवरचउ ।—प.च.चौ.

डोलोडोल—सं०पु०—अंग-उपांग ।

डोवा-पांणत—सं०स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी कर ।

डोसामूळी—सं०स्त्री०—लता ?

उ०—डंडाळी नइ डोडकी, डायणि डूंगरि वेलि। डीसामूळी डुंहकळी, डाकटमाळी डोलि ।—मा.कां.प्र.

डुंगर—देखो 'डूंगर' (रू.भे.)

उ०—डुंगर सिरि दीवउ बळइ, हांडि गळइ ते कांय। वाजां विणसइ केणि परि ? उत्तर एक मुखांय ।—मा.कां.प्र.

डुंगरजीवी—वि०—जिसकी पर्वत के समान आयु हो, दीर्घायु, चिरंजीवी ।

उ०—राज सिवाओ सिध करी, वळि वहला मिळज्योह । डुंगरजीवी जीवज्यो, इंबर ज्युं फळज्योह ।—ढो.मा.

डुंगरि—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कइय आवूय डुंगरि जाइसिउं, रिसह नेमि तणा गुण गाइसिउं।

—अर्बुदाचलवीनती

डुंडि—देखो 'डूंडी' (रू.भे.)

उ०—नफेरी सरणाइ वरगां ढोल भालर डुंडि दमांमां दडदडी अदंग नीसांण प्रमुख वाजित्र वाजइ ।—व.स.

डुंब—देखो 'डूंम' (रू.भे.)

उ०—पीहर हंदी डुंबणी, राग अलापै तेण। ढोलो मारू ऊगरै, कहि समभावै वेण ।—ढो.मा.

(स्त्री० डुंबणी)

डुंबड़यौ, डुंबड़ौ—देखो 'डूंम' (रू.भे.)

उ०—पछै ऊमर-सूमरां विछायत कराई। मुंहडा आगै डुंबड़ा गावै छै ।—ढो.मा.

(स्त्री० डुंबड़ी)

डुंविलय—सं०पु०—एक अनार्य जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति ।

डुंहकली—सं०स्त्री०—लता ?

उ०—डंडाळी नइ डोडकी, डायणि डूंगरिवेलि। डीसामूळी डुंहकळी, डाकडमाळी डोलि ।—मा.कां.प्र.

डु—सं०पु०—१ रक्त. २ स्तम्भ. ३ समुद्र. ४ कवूतर.

सं०स्त्री०—५ पार्वती. ६ आंख. ७ शक्ति. ८ लता (एका.)

डुक—देखो 'डुकौ' (मह., रू.भे.)

डुकलियौ, डुकलौ—सं०पु०—टूटा-फूटा, जीर्ण-शीर्ण खाट ।

रू०भे०—डुखलौ ।

अल्पा०—डुकलियौ, डुखलियौ ।

डुकौ, डुक्कौ—सं०पु०—१ बंधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय, मुक्का ।

क्रि०प्र०—चेपणौ, ठोकणौ, देणौ, धरणौ, पड़णौ, मारणौ, लगाणौ, लागणौ ।

२ बंधी हुई मुट्ठी का प्रहार ।

डुखलियौ—देखो 'डुकलौ' (अल्पा., रू.भे.)

डुखलौ—देखो 'डुकलौ' (अल्प., रू.भे.)

डुगडुगाड़णौ, डुगडुगाड़बौ—देखो 'डुगडुगाणौ डुगडुगावौ' (रू.भे.)

डुगडुगाड़ियोड़ौ—देखो 'डुगडुगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डुगडुगाड़ियोड़ी)

डुगडुगाणौ, डुगडुगावौ—क्रि०स० (अनु०) डुगडुगी बजाना ।

डुगडुगाड़णौ, डुगडुगाड़बौ, डुगडुगावणौ, डुगडुगाववौ—रू०भे० ।

डुगडुगायोड़ौ—भू०का०कृ०—डुगडुगी बजाया हुआ ।

(स्त्री० डुगडुगायोड़ी)

डुगडुगावणौ, डुगडुगाववौ—देखो 'डुगडुगाणौ, डुगडुगावौ' (रू.भे.)

डुगडुगावियोड़ौ—देखो 'डुगडुगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डुगडुगावियोड़ी)

डुगडुगी—सं०स्त्री०—चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा, डौंगी, डुग्गी ।

मुहा०—डुगडुगी पीटणौ—चारों ओर घोषित करना, डौंडी पीट कर सब जगह प्रकट करना ।

रू०भे०—डुगी, डुवडुभी ।

डुगी—१ देखो 'डुगडुगी' (रू.भे.) २ देखो 'डूंगी' (रू.भे.)

डुड़ंद—देखो 'डुडंद, डुडमंद' (रू.भे.)

उ०—सुरांपत इंद्र नै कियौ गजराज सज, डुड़ंद नै जीण सपतास डहियौ ।—नीमाज ठाकुर अमरसिंघ री गीत

डुचकौ—देखो 'डचकौ' (रू.भे.)

डुडंद, डुडियंद—सं०पु०—सूर्य, भानु (डि.को.)

उ०—भारथ लखण सेस अह भायां, सुकवि द्रुति धारां सुकवियां डुडंद। लिछमीवर भगतां धू लायक, नायक जगत दासरथ नंद।

—र.ज.प्र.

डुपटी—सं०स्त्री०—देखो 'दुपटौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—राजा म्हौंडा ऊपर झीणी डुपटी ओढ़्यां छै ।—पंचदंडी री वारता

डुपटौ, डुपट्टौ—देखो 'दुपटौ' (रू.भे.)

डुबकी—सं०स्त्री०—पानी में गोता लगाने की क्रिया, डूबने की क्रिया, बुड़की, गोता। उ०—मतवाळा घूमत फिरै, गिणै नहिं रंक न राव। दिल दरियाव में डुबकी दीवी, होय गया आनंद उछाव।

स्री हरिरांमजी महाराज

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, मारणी, लगाणी, लेणी ।

रू०भे०—डबक, डबकी, डवक्क ।

डुबडुभी—देखो 'डुगडुगी' (रू.भे.) उ०—बाजा वाजइ डुबडुभी, परणवा चाल्यौ वीसळराव—वी.दे.

डुबाड़णौ, डुबाड़बौ—देखो 'डुबाणौ, डुबावौ' (रू.भे.)

डुबाड़णहार, हारौ (हारी), डुबाड़णियौ—वि० ।

डुबाड़िओड़ौ, डुबाड़ियोड़ौ, डुबाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

डुबाड़ीजणौ, डुबाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

डूबणौ, डूबबौ—अक०रू० ।

डुबाड़ियोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुबाड़ियोड़ी)

डुबाणौ, डुबाबौ–क्रि०स०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ के भीतर डालना, गोता देना, बोरना ।
मुहा०—१ घर डुबाणौ—घर को चौपट कर देना, सोच-समझ कर कार्य न करना, घर पर अधिकार न रहना. २ नांम डुबाणौ—जमी हुई प्रसिद्धि को खोना, अव्यवहारिक होना, कलंकित होना. ३ लुटिया डुबाणौ—प्रतिष्ठा नष्ट करना, महत्व खोना. ४ वंश डुबाणौ—कुल की प्रतिष्ठा खोना, मर्यादा नष्ट करना ।
डुबाणहार, हारौ (हारी), डुबाणियौ—वि० ।
डुबायोड़ो—भू०का०कृ० ।
डुबाईजणौ, डुबाईजबौ—कर्म वा० ।
डूबणौ, डूबबौ—अक०रू० ।
डबोड़णौ, डबोड़बौ, डबोणौ, डबोबौ, डबोवणौ, डबोवबौ डुबाड़णौ, डुबाड़बौ, डुबावणौ, डुबाववौ, डुबोड़णौ, डुबोड़बौ, डुबोणौ, डुबोबौ, डुबोवणौ, डुबोवबौ, डोवणौ, डोवबौ—रू०भे० ।

डुबायोड़ो–भू०का०कृ०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ के भीतर डाला हुआ, गोता दिया हुआ, बोरा हुआ ।
(स्त्री० डुबायोड़ी)

डुबावणौ, डुबाववौ—देखो 'डुबाणौ, डुबाबौ' (रू.भे.)
डुबावणहार, हारौ (हारी), डुबावणियौ—वि० ।
डुबाविप्रोड़ो, डुबावियोड़ो, डुबाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
डुबावीजणौ, डुबावीजबौ—कर्म वा० ।
डूबणौ, डूबबौ—अक०रू० ।

डुबावियोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुबावियोड़ी)

डुबोड़णौ, डुबोड़बौ—देखो 'डुबाणौ, डुबाबौ' (रू.भे.)

डुबोड़ियोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुबोड़ियोड़ी)

डुबोणौ, डुबोबौ—देखो 'डुबाणौ, डुबाबौ' (रू.भे.)

डुबोयोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुबोयोड़ी)

डुबोवणौ, डुबोवबौ—देखो 'डुबाणौ, डुबाबौ' (रू.भे.)

डुबोवियोड़ो—देखो 'डुबायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुबोवियोड़ी)

डुरफी–सं०स्त्री०—करुण या करुण-विप्रलंभ भाव का वह गीत जो विशेष प्रकार की करुण ध्वनि में गाया जाता है (जैसलमेर)

डुरगलियौ—देखो 'डुरगलौ' (अल्पा., रू.भे.)

डुरगली–सं०स्त्री०—देखो 'डुरगलौ' (अल्पा., रू.भे.)

डुरगलौ–सं०पु०—स्त्रियों के कान में पहनने का एक आभूषण विशेष ।
अल्पा०—डुरगलियौ, डुरगली ।

डुळणौ, डुळबौ–क्रि०स०—१ विचलित होना, चित्त अस्थिर होना ।
उ०—१ मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा । कोडी कोडी रा करिया सम सूंगा । डाढ़ी मूंछाळा डळियां में डुळिया, रळिया जायोड़ा गळियां में रुळिया ।—ऊ.का.
उ०—२ वाका फाटोड़ा थाका दम वाकी, डेळही चुळियोड़ा डुळियोड़ा डाकी । थिरता मन री नहिं तन री गति थाकी, फुरणा पर-धन री अन री नहिं फाकी ।—ऊ.का.
२ हिलना, डिगना, कंपायमान होना, विचलित होना ।
उ०—अर दाहिमा री तोत्र लागतां ही प्रामार री प्रांण कढ़ण पैठण पद्धति सूं डुळियौ ।—वं.भा.
डुळणहार, हारौ (हारी), डुळणियौ—वि० ।
डुळवाड़णौ, डुळवाड़बौ, डुळवाणौ, डुळवाबौ, डुळवावणौ, डुळवाववौ—प्रे०रू० ।
डुळाड़णौ, डुळाड़बौ, डुळाणौ, डुळाबौ, डुळावणौ, डुळाववौ—क्रि०स० ।
डुळिप्रोड़ो, डुळियोड़ो, डुळ्योड़ो ।—भू०का०कृ० ।
डुळीजणौ, डुळीजबौ—भाव वा० ।

डुलणौ, डुलबौ—देखो 'डोलणौ, डोलबौ' (रू.भे.)
डुलणहार, हारौ (हारी), डुलणियौ—वि० ।
डुलवाड़णौ, डुलवाड़बौ, डुलवाणौ, डुलवाबौ, डुलवावणौ, डुलवाववौ—प्रे०रू० ।
डुलाड़णौ, डुलाड़बौ, डुलाणौ, डुलाबौ, डुलावणौ, डुलाववौ—क्रि०स० ।
डुलिप्रोड़ो, डुलियोड़ो, डुल्योड़ो—भू०का०कृ० ।
डुलीजणौ, डुलीजबौ—भाव वा० ।

डुलहर—देखो 'डोलर' (रू.भे.) उ०—दंपति हूर अपच्छर सूर (वरि) बैठि विमांननि जात । मांनहु तीज दिन, डुलहर बैठि डुलात ।—ला.रा.

डुळाड़णौ, डुळाड़बौ—देखो 'डुळाणौ, डुळाबौ' (रू.भे.)
डुळाड़णहार, हारौ (हारी), डुळाड़णियौ—वि० ।
डुळाड़िप्रोड़ो, डुळाड़ियोड़ो, डुळाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
डुळाड़ीजणौ, डुळाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
डुळणौ, डुळबौ—अक०रू० ।

डुलाड़णौ, डुलाड़बौ—देखो 'डोलाणौ, डोलाबौ' (रू.भे.)

डुळाड़ियोड़ो—देखो 'डुळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुळाड़ियोड़ी)

डुलाड़ियोड़ो—देखो 'डोलायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुलाड़ियोड़ी)

डुळाणौ, डुळाबौ–क्रि०स०—१ विचलित करना, चित्त अस्थिर करना. २ कंपायमान करना, हिलाना, डिगाना ।
डुळाणहार, हारौ (हारी), डुळाणियौ—वि० ।
डुळायोड़ो—भू०का०कृ० ।

डुळाईजणौ, डुळाईजवौ—कर्म वा० ।
डुळणौ, डुळवौ—ग्रक०रू० ।
डुलाणौ, डुलावौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)
उ०—१ पवन डुलायो मेरु न डोलै । मोटा दीन वचन नवि बोलै ।
—सीपाळ रास
उ०—२ जठै आपरी अकंटक अमल जमाई नरेस भी बूंदी आइ विजय री सुजस सरवां समेत दिसा दिसा डुलायो ।—वं.भा.
डुळायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विचलित किया हुआ, चित्त को अस्थिर किया हुआ. २ कंपायमान किया हुआ, हिलाया हुआ, डिगाया हुआ ।
(स्त्री० डुळायोड़ी)
डुलायोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डोलायोड़ी)
डुळावणौ, डुळाववौ—देखो 'डुळाणौ, डुळावौ' (रू.भे.)
डुळावणहार, हारौ (हारी), डुळावणियौ—वि० ।
डुळाविग्रोड़ौ, डुळावियोड़ौ, डुळाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
डुळावीजणौ, डुळावीजवौ—कर्म वा० ।
डुळणौ, डुळवौ—ग्रक०रू० ।
डुलावणौ, डुलाववौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)
डुळावियोड़ौ—देखो 'डुळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डुळावियोड़ी)
डुलावियोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डुलावियोड़ी)
डुळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विचलित हुवा हुआ, चित्त अस्थिर हुवा हुआ. २ कंपायमान हुवा हुआ, हिला हुआ, डिगा हुआ ।
(स्त्री० डुळियोड़ी)
डुलियोड़ौ—देखो 'डोलियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डुलियोड़ी)
डुळियौ-वि०—जो विचलित हो, धैर्यहीन ।
डुलीसुत-सं०पु०—कछुआ (डि.को.)
डुसकणौ, डुसकवौ-क्रि०अ० (अनु०) १ भीतर ही भीतर रुक-रुक कर रोना, सिसक-सिसक कर रोना, खुल कर न रोना. २ मरने के निकट की अवस्था में होना, हिचकियां भरना ।
डुसकणहार, हारौ (हारी), डुसकणियौ—वि० ।
डुसकिग्रोड़ौ, डुसकियोड़ौ, डुसक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
डुसकीजणौ, डुसकीजवौ—भाव वा० ।
डुसकाणौ, डुसकावौ, डुसकावणौ, डुसकाववौ—रू०भे० ।
डुसकाणौ, डुसकावौ—देखो 'डुसकणौ, डुसकवौ' (रू.भे.)
उ०—मिळियां मनमेळू माती मुसकाती । डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती ।—ऊ.का.
डुसकाणहार, हारौ (हारी), डुसकाणियौ—वि० ।
डुसकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
डुसकाईजणौ, डुसकाईजवौ—भाव वा० ।
डुसकायोड़ौ—देखो 'डुसकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डुसकायोड़ी)
डुसकावणौ, डुसकाववौ—देखो 'डुसकणौ, डुसकवौ' (रू.भे.)
उ०—म्रित्यु सीमा सी रावी विसमा सी । भीमा भावी सी भीमा निस भासी । तूहिन कंठीरव तन कुंजर तावै । डगडगि चढ़ियोड़ा मरिया डुसकावै ।—ऊ.का.
डुसकावणहार, हारौ (हारी), डुसकावणियौ—वि० ।
डुसकावियोड़ौ—भू०का०कृ० ।
डुसकावीजणौ, डुसकावीजवौ—भाव वा० ।
डुसकावियोड़ौ, डुसकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भीतर ही भीतर रुक-रुक कर रोया हुआ, खुल कर न रोया हुआ. २ मरने के निकट हुवा हुआ, हिचकियां भरा हुआ ।
(स्त्री० डुसकावियोड़ी, डुसकियोड़ी)
डुसकौ-सं०पु० (अनु०) १ भीतर ही भीतर रुक-रुक कर रोने का शब्द, खुल कर न रोने का शब्द, सिसक, सिसकी । उ०—मिळिया मनमेळू माती मुसकाती । डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती । सासू सकुलीणी संतू सुर सांनी । ऊजळ दंती नैं उर में उर लीनी ।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—खाणौ, भरणौ, लैणौ ।
मुहा०—डुसकै चढ़णौ—लगातार रुक-रुक कर रोना ।
निकलती हुई सांस का शब्द ।
क्रि०प्र०—नांखणौ ।
३ रुकती हुई लंबी सांस भरने का शब्द ।
क्रि०प्र०—खाणौ, भरणौ, लैणौ ।
४ मृत्यु के निकट की अवस्था में मुंह से निकलने का शब्द, हिचकी ।
मुहा०—डुसकै चढ़णौ—मृत्यु के निकट होना, हिचकियां भरना ।
रू०भे०—डसकौ, डहूकौ ।
डुहळू—देखो 'डोळौ' (रू.भे.) उ०—जउ सूकी तुहइ बुलसिरी, जउ वींधी तुहइ मोतीसिरी । जउ डुहळू तुहइ गंगाजळ, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वांणी ।—नळ-दवदंती रास
डूंख-सं०पु०—१ (अनाज की फसल का) सूखा डंठल ।
२ सूखी जड़ । उ०—ऊग्यो डूंख अफीम, नीम रौ रूंख निरोगी । वसती होड हकीम, नीमड़ौ जंगम जोगी ।—दसदेव
अल्पा०—डूंकळियौ, डूंकळौ, डूंखळियौ, डूंखळौ, डूंगळौ ।
मह०—डूंखळ ।
डूंखळ—देखो 'डूंख' (मह., रू.भे.)
डूंखळियौ, डूंखळौ—देखो 'डूंख' (अल्पा. रू.भे.)
डूंगर-सं०पु० [सं० तुंग] पहाड़, पर्वत (अ.मा.) उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई । डूंगर बळती नैं देखै दुखदाई ।—ऊ.का.
मुहा०—१ एक ही डूंगर रा मोरिया होणौ—एक ही पहाड़ में विचरण करने वाले मोर होना, एक स्थान पर रहने वाले, वे जिन्हें

अपने निवास-स्थान की पूरी जानकारी हो, समान गुण वाले.

२ डूंगर माथै छाया करणी— पहाड़ पर छाया करना, बड़े आदमी की मदद करना (असम्भव)

रू०भे०—डुंगर।

अल्पा०— डुंगरि, डूंगरड़ी, डूंगरड़ौ, डूंगरियौ, डूंगरी।

डूंगरड़ी–सं०स्त्री०—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पदक प्रियु तउ हूं मोतिन माळा, हीरउ तउ हूं मूंदरड़ी रे बहिनी। चंद्र प्रियु तउ हूं रोहिणी थाऊं, चंदन मलय डूंगरड़ी रे बहिनी।—स.कु.

डूंगरड़ौ—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू.भे.)

डूंगरि–सं०स्त्री०—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू भे.) उ०—दळ सुरतांण जांण डूंगरि दव, कंपी धरा हुई प्रज लव क्रव। अह सुरतांण आवियउ अवथरि, 'करन' तणा ऊठिय गज केसरि।—रा.ज.सी.

डूंगरियौ—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डूंगरिया हरिया हुआ, वणै भिंगोरचा मोर। इणि रीति तीनइ नीसरइ, जाचक, चाकर, चोर।—ढो.मा.

डूंगरी–सं०स्त्री०—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डूंगर ओलै डूंगरी, ज्यां तळ हाळीड़ै रौ खेत। बावहिया हाळी नै वेटी क्यूं दीवी।
—लो.गी.

डूंगरौ—देखो 'डूंगर' (अल्पा., रू.भे.)

डूंगरेची–सं०स्त्री०—आवड़ देवी का एक नाम।

वि०वि०—देखो 'आवड़'।

डूंगरोत–सं०पु०—चौहान वंश की देवड़ा शाखा की उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

डूंगळौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का घास.

२ देखो 'डूंख' (अल्पा., रू.भे.)

डूंगी–वि०स्त्री—गहरी।

उ०—गुन्नौ तौ बगसो म्हांनै भूंरां की ये राणी, सेवग तौ पड़ियौ ये थारै बारणै। जीण जुग वाली ये! मोटा चिणवावूं ये मंदिर देवरा, डूंगी धरवावूं जां री नींव।—लो.गी.

डूंच—१ देखो 'डूंचकौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'डूंज' (रू.भे.)

डूंचकौ–सं०पु०—१ डंठल. २ देखो 'डाचकौ' (रू.भे.)

रू०भे०—डूचकौ।

अल्पा०—डूंचकियौ, डूंचियौ, डूचियौ।

मह०—डूंच, डूच।

डूंचणौ, डूंचबौ–क्रि०स०—१ ज्वार व बाजरे की खड़ी फसल की बाल तोड़ना (काटना)। २ काटना। उ०—सारा विडांणा हिव हुवा, जासी हमारा सीस वै। सीस घणां रा डूंचिया, अब आया मूझ चोर वै।—राजा रीसाळू री वात

२ इकट्ठा करना।

डूंचणहार, हारौ (हारी), डूंचणियौ—वि०।

डूंचवाड़णौ, डूंचवाड़बौ, डूंचवाणौ, डूंचवाबौ, डूंचवावणौ, डूंचवावबौ, डूंचाड़णौ, डूंचाड़बौ, डूंचाणौ, डूंचाबौ, डूंचावणौ, डूंचावबौ—प्रे०रू०

डूंचिओड़ौ, डूंचियोड़ौ, डूंच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डूंचीजणौ, डूंचीजबौ—कर्म वा०।

डूचणौ, डूचबौ—रू०भे०।

डूंचियोड़ौ–भू०का०कृ०—काटा हुआ।

(स्त्री० डूंचियोड़ी)

डूंचियौ—१ देखो 'डूंचौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—खूंटा खड़ा वळा डूंचिया, हालां सूं हळ ठाटिया। सिरधर अर सैंतीर साळां, खूड, भूण, थम, पाटिया।—दसदेव

२ देखो 'डूंचकौ' (रू.भे.)

डूंचीड़—देखो 'डूंचौ' (मह., रू.भे.)

डूंचौ–सं०पु०—१ खेत में बना हुआ मचान जिस पर बैठ कर खेत की रखवाली करते हैं या रात्रि में सोते हैं. २ देखो 'डांचौ' (रू.भे.)

३ देखो 'डूंजौ' (रू.भे.)

रू०भे०—डूचौ।

अल्पा०—डूंचियौ, डूचियौ।

मह०—डूंचीड़, डूचीड़।

डूंज–सं०पु०—१ तेज हवा, अंधड़, आंधी.

२ देखो 'डूंजौ' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—डूंच, डूच।

डूंजियौ, डूंजौ–सं०पु०—किसी वस्तु का मुंह बंद करने का उपकरण या वस्तु।

मुहा०—डूंजौ आणौ—रुकावट आना, अवरोध पड़ना।

रू०भे०—डूंचौ।

अल्पा०—डूंचियौ, डूजियौ।

मह०—डूंच, डूंज, डूज।

डूंड–सं०पु०—१ वायु के साथ यकायक उठने वाला धूम या धूलि-समूह। उ०—धूंवे को जद डूंड ऊपड़्यौ, कांप्यौ कंपनी साय। वांडै घोड़ै चढ़ कै आयौ, गुरजण कुत्ती लार।—डूंगजी जवारजी री पड़

२ वातचक्र, बगूला।

डूंडळी–सं०स्त्री०—१ विना सींग की गाय या भैंस (शेखावाटी)

२ देखो 'डूंडौ' (अल्पा., रू.भे.)

डूंडलौ—देखो 'डूंडौ' (अल्पा., रू.भे.)

डूंडि—देखो 'डूंडी (रू.भे.) उ०—काहल तणै कोलाहळि कांन कमकम्या, डूंडि डमांमा दुडदडी द्रमद्रमाटि भयंकर होइवा लागउ।
—व.स.

डूंडियौ—देखो 'डूंडौ' (अल्पा., रू.भे.)

डूंडी–सं०स्त्री०—१ नगारा।

मुहा०—डूंडी पीटणी—किसी वात का प्रचार करना, ढिंढोरा पीटना.

२ देखो 'डूंडौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तद ऐ अठे सूं ऊठ अर

नदी ग्राई। ग्राये उठै रजपूत डूंडी लीयां बैठा छै।—चौबोली
रू०भे०—डूंडि।

डूंडी—सं०पु०—१ नाव, नौका। उ०—१ तठै जेही सहर मांहे नदी ग्रावै, सहर मांह जाय साहूकार रा घर देखै, बैरां रा गहणा वेस पहरिया तेठे देखै तद पाछी ग्राय डूंडै बैसै, ग्राघी चालै।—चौबोली
२ वृद्ध भैंस।
ग्रल्पा०—डूंडली, डूंडलौ, डूंडि, डूंडियौ, डूंडी, डूगली।

डूंब—देखो 'डूम' (रू.भे.) उ०—चारण भट्टां बांभणां, वयण सुणावै सूंब। थें राजी सनमांन सूं, दीधे राचै डूंब।—बां.दा.
(स्त्री० डूंबण, डूंबणी)

डूंबड़ियौ, डूंबड़ौ—देखो 'डूम' (रू.भे.)
(स्त्री० डूंबड़ी)

डूंबांण—देखो 'डूबांण' (रू.भे.)

डूंबी—देखो 'डूमी' (रू.भे.) उ०—डूंबी डांगी डाहाकलु, भुंडड नइं भुंड फोड। वासिग कुळ थी वेगलु, अे को ग्रांगळ ग्रोड।—मा.कां.प्र.

डूंम—देखो 'डूम' (रू.भे.) उ०—इसै समय में दिन ऊगौ। घणौ हरख हुवौ। भक्ति हुवणै लागी। डूंम गावणै लागा। गाढ़ौ संतोस हुवौ। घणौ मेळ हुवौ।—चौबोली
(स्त्री० डूंमण, डूंमणी)

डूंमड़—देखो 'डूम' (मह., रू.भे.)

डूंमड़यौ, डूंमड़ौ—देखो 'डूम' (ग्रल्पा., रू.भे.)

डूंमी—देखो 'डूमी' (रू.भे.)

डूग्रौ—सं०पु०—रहट के गोल घेरे को जिस पर माल लगी रहती है पीछे घूमने से रोकने के लिये लगाया जाने वाला लकड़ी का बना उपकरण।
रू०भे०—डहौ।

डूकण—देखो 'डूकणौ' (मह, रू.भे.)

डूकणियौ—देखो 'डूकणौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

डूकणौ—सं०पु०—मनुष्य तथा पशुग्रों के कूल्हे के ऊपर की हड्डी जो रीढ़ की हड्डी से जुड़ी रहती है।
ग्रल्पा०—डूकणियौ।
मह०—डूकण।

डूकळ, डूकळियौ, डूकळौ—सं०पु०—१ खलिहान में ग्रनाज को भूसे से ग्रलग करते समय वह ग्रवशिष्ट भाग जिसमें भूसे के साथ ग्रनाज रह जाता है।
ग्रल्पा०—डूकळियौ।
मह०—डूकळ।

डूगलौ—सं०पु० [सं० दोल:, दोला, दोलिका] १ एक प्रकार की विशेष बनावट की पालकी जो राजा या सामन्त द्वारा किसी जागीरदार, प्रतिष्ठित व्यक्ति ग्रथवा किसी प्रतिष्ठित महिला को राज-दरबार या ग्रंत:पुर में बुलाने के लिये भेजी जाती थी (उदयपुर)
उ०—भींडर रा महाराज री मा बाई राजबाई जे मोटा पली तीने लीकां पातसाह री दीबी है। दसरावा रौ डूगलौ, गणगोरी रौ सिरपाव, बलांणौ घोड़ौ सलूंबर सूं भींडर-महाराज पावै।—बां.दा.ख्यात
२ देखो 'डूंडौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

डूचकौ—सं०पु०—१ पांचों ग्रंगुलियों को शामिल कर के मध्य की ग्रंगुली के उभरे हुए जोड़ से किया जाने वाला प्रहार या इस प्रकार का उभरा हुग्रा ग्रंगुलियों का जोड़। २ देखो 'डाचकौ' (रू.भे.) ३ देखो 'डूंचकौ' (रू.भे.)

डूचणौ, डूचबौ—देखो 'डूंचणौ, डूंचबौ' (रू.भे.)

डूचियोड़ौ—देखो 'डूंचियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डूचियोड़ी)

डूचियौ—१ देखो 'डूंचौ' (ग्रल्पा., रू.भे.) २ देखो 'डूंचकौ'। (ग्रल्पा., रू.भे.)

डूचोड़—देखो 'डूंचौ' (मह., रू.भे.)

डूचौ—देखो 'डूंचौ' (रू.भे.)

डूज—१ देखो 'डूंज' (रू.भे.) २ देखो 'डूंजौ' (रू.भे.)

डूजियौ—देखो 'डूंजौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

डूजौ—देखो 'डूंजौ' (रू.भे.)

डूटी—देखो 'डयूटी' (रू.भे)

डूब—देखो 'डूम' (रू.भे.) उ०—माळी तंबोळी छीपा परीयट बंधारा तूनारा सोनारा ठांठार लोहार चमार सुई वालंध कडीया सिलवट उड गांछा कोली टाटिया वावर ढेढ़ डूब।—व.स.
(स्त्री० डूबण, डूबणी)

डूबड़ियौ, डूबड़ौ—देखो 'डूम' (ग्रल्पा., रू.भे.)

डूबणौ, डूबबौ—क्रि०ग्र०—१ पानी या ग्रौर किसी तरल पदार्थ के भीतर समाना बूड़ना। उ०—१ उठै काबुल सूं ग्रावतां ग्रटक में डूब मुंवौ।—नैणसी
उ०—२ सात सहेल्यां रै झूलरै ग्रे पणिहारी ग्रे लो, पांणीड़ै नै चाली रै तळाव वाला जो। घड़ौ य न डूबै ताळ में ग्रे पणिहारी अे लो, ग्रींढ़ांणी तिर-तिर जाय वाला जो।—लो.गी.
मुहा०—१ चुळू भर पांणी में डूब मरणौ—चुल्लू भर पानी में डूब मरना, शरम के मारे मर जाना या मुँह न दिखाना. २ डूब जाणौ—डूब जाना, लुप्त हो जाना, मारा जाना. ३ डूबती नाव पार करणी—डूबती हुई नैया को पार लगाना, दुख या विपत्ति से बचाना. ४ डूबती नाव पार लागणी—डूबती हुई नैया का पार होना, कष्ट या विपत्ति से छुटकारा पाना. ५ डूबती नाव पार लगाणी—देखो 'डूबती नाव पार करणी।' ६ डूबतै नै तिणकै री सा'रौ होणौ—डूबते हुए को तिनके का सहारा होना, संकट में पड़े हुए निस्सहाय के लिये थोड़ी सहायता भी बहुत होना, निराश्रय के लिये थोड़ा ग्राश्रय भी बहुत होना. ७ डूबतै नै था' मिळणी—संकट में सहारा मिलना. ८ डूबतौ सिवाळां में हाथ घालै—डूबता हुवा बचने के लिये काई को भी पकड़ता है, संकट में पड़ा हुग्रा तुच्छ से तुच्छ वस्तु से भी सहारे की ग्राशा करता है. ९ तिरूं डूबूं होणौ—कभी तैरना कभी डूबना, उलझन में पड़ना, संकट में पड़ना।

२ विचार में मग्न होना, चिंतन में लीन होना। उ०—वोहत तिरंदा डूबही, डूबंदा तारै।—केसोदास गाडण

मुहा०—१ डूबणौ उतराणौ—डूबना उतराना, ख्यालों में खोना, विचारों में मग्न होना, किसी नतीजे पर पहुँचने के लिए सोचना, उलझन में पड़ना, घबराना.

२ तिरू डूबूं होणौ—देखो 'डूबणौ-उतराणौ'।

३ अच्छी तरह लगना, तन्मय होना, लिप्त होना, लीन होना।

उ०—१ कोई एक पुरुष पर स्त्री नौ लंपट। ते साधां कने पर स्त्री गमन नौ पाप सुणी नै त्याग किया। घणौ राजी होय साधां रा गुण गावै, आप मोनै डूबता नै तारचौ।—भि.द्र.

उ०—२ प्रांणी तूं डूबौ पुखत, मोह नदी रै मांहि। देव नदी में डूबियौ, नख पग हुंदौ नांहि।—वां.दा.

४ बुरे घर व्याहा जाना, ऐसे से सम्बन्ध होना जिससे उसे बहुत दुख पहुँचे. ५ बरबाद होना, बिगड़ना, नष्ट होना, सत्यानाश होना, चौपट होना। उ०—१ डूबगौ बात सब देस री, खूब असुभ गुण खाटियौ। पांन री ब्यांन घरियां पछै, सांसी गिणै न साटियौ।

—ऊ.का.

उ०—२ आ तीसरी आपत छै तिण सूं पासी खावौ नहीं तौ मारवाड़ डूबै छै।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

मुहा०—१ काळी धार डूबणौ—कालीद्रह में डूब जाना, सम्पूर्ण नष्ट हो जाना, बरबाद हो जाना. २ डूब जाणौ—डूब जाना, कुछ कर न सकना, क्षुब्ध होना, नष्ट होना, बरबाद होना।

३ नांम डूबणौ—प्रतिष्ठा नष्ट होना, मर्यादा बिगड़ना, वंश का नष्ट होना. ४ वंस डूबणौ—वंश डूबना, कुल का नष्ट होना, नामोनिशान मिटना।

६ किसी व्यवसाय में घाटा पड़ना या लगाया हुआ धन नष्ट होना, किसी को दिए हुए माल या पैसे का भुगतान न होना, दिया हुआ पैसा वसूल न होना।

मुहा०—१ करजै में डूबणौ— बहुत कर्जा हो जाना, दिवालिया हो जाना. २ डूबोड़ी आसांमी—दिवालिया, कर्जदार।

७ सूर्य व ग्रहों आदि का अस्त होना। उ०—आवै डूब कह्यौ अठै ग्रह थानक रनरोह। पड़ियौ घांधल पाटवी, डूबंते दिनरोह।—पा.प्र.

डूबणहार, हारौ (हारी), डूबणियौ—वि०।

डुबवाड़णौ, डुबवाड़वौ, डुबवाणौ, डुबवावौ, डुबवावणौ, डुबवाववौ—प्रे०रू०।

डुबाड़णौ, डुबाड़वौ, डुबाणौ, डुबावौ, डुबावणौ, डुबाववौ, डुबोड़णौ, डुबोड़वौ, डुबोणौ, डुबोवौ, डुबोवणौ, डुबोववौ—क्रि०स०।

डूबिओड़ौ, डूबियोड़ौ, डूबोड़ौ, डूब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डूबीजणौ, डूबीजवौ—भाव वा०।

डूबवणौ, डूबववौ—रू०भे।

डूबवणौ, डूबववौ—देखो 'डूबणौ, डूबवौ' (रू.भे.)

उ०—रयणायर पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव। रयणायर ते डूबवै, सूमां केरी नाव।—वां.दा.

डूबवियोड़ौ, डूबियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ के भीतर समाया हुआ, बूड़ा हुआ. २ विचार में मग्न हुवा हुआ, चिन्तन में लीन हुवा हुआ. ३ अच्छी तरह लगा हुआ, तन्मय हुवा हुआ, लिप्त हुवा हुआ. ४ बरबाद हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ, नष्ट हुवा हुआ, सत्यानाश हुवा हुआ, चौपट हुवा हुआ. ५ किसी व्यवसाय में घाटा पड़ा हुआ. सूर्य्य, ग्रहों आदि का अस्त हुवा हुआ. ७ बुरे घर व्याहा हुआ।

(स्त्री० डूबवियोड़ी, डूबियोड़ी)

डूबांण—सं०स्त्री०—१ नीची भूमि जहाँ वर्षा में जल एकत्रित हो जाता हो. २ गम्भीरता, गहराई. ३ डूबना क्रिया का भाव।

डूबी—देखो 'डूमी' (रू.भे.) उ०—गज डूबी चीतळ गोरावा, सुज काळा पंखाळा सेत। नव कुळ नाग म आंणै नैड़ा, नकुलाई टाळै नखतेत।—आसौ गाडण

डूबोड़ौ—देखो 'डूबियोड़ौ' (रू.भे.) उ०—सेठ ऊठ नै चाल्या गया, दिन निरोई चढ़ग्यौ, अळाव रा खीरा बुझ नै राख हुग्या पर रणछोड़ौ बैठोईज रह्यौ, बैठोईज रह्यौ—विचार में डूबोड़ौ।—रातबासौ

(स्त्री० डूबोड़ी)

डूम—सं०पु० [सं० डम] (स्त्री० डूमण, डूमणी) एक जाति जो मांगलिक अवसरों पर लोगों के यहां गाती बजाती है, ढाढ़ी, डोम, ढोली। उ०—जिण समय तीनसै घरां री बसती रा बूंदी ग्रांम में जिकण बापी बणाइ डूम नूं दीधी तिण कारण डूमड़ावाई कहीजै।—वं.भा.

मुहा०—१ डूम कीं जांणै तौ वखांणै—डोम कुछ जाने तो वर्णन करे, अज्ञानी के प्रति. २ डूमणी रै रोवण में ही राग—डोमनी के रोने पर भी राग निकलती है। किसी बात को स्वाभाविक ढंग पर कहते हुए भी उसमें किसी विशेष बात की ओर संकेत कर देने पर.

रू०भे०—डुंब, डूंब, डूंम, डूब, डूमल, डोम।

अल्पा०—डुंबड़ियौ, डुंबड़ौ, डूंबड़ियौ, डूंबड़ौ, डूंमड़ियौ, डूंमड़ौ, डूबड़ियौ, डूबड़ौ, डूमड़ियौ, डूमड़ौ, डूमल, डूमलियौ, डूमलौ, डोमड़ियौ, डोमड़ौ।

मह०—डूंमड़, डूमड़, डोमड़।

यौ०—डूम-डरड़ौ।

डूमड़—देखो 'डूम' (मह., रू.भे.)

(स्त्री० डूमड़ी)

डूमल, डूमलियौ, डूमलौ—देखो 'डूम' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—हुवौ जिण ठौर वडौ घमसांण, नठी तज डूमल वाज निसांण। हणै सत्र तीस दसां निज हाथ, पड़ै चवरासिय घाव निपात।—पा.प्र.

(स्त्री० डूमली)

डूमी—सं०पु०—गौर वर्ण का श्याम मुँह वाला भयंकर विषैला सर्प जो पीछे दौड़ कर मनुष्य को काटता है।

रू०भे०—डूंबी, डूंमी, ढूबी।

ढूर-सं०पु०—१ भुट्टों से बाजरा निकाल लेने के पश्चात् उनका अवशिष्ट पदार्थ जो बहुत हल्का होता है और पशुओं को खिलाया जाता है. २ देखो 'दूर' (रू.भे.) उ०—विचौं सभी डूर-कर, अंदर बिया न पाइ।—दादू वांणी

ढूरांण-सं०स्त्री०—परिहार वंश की एक शाखा।

ढूळ-सं०पु०—बड़ी हड्डी।

ढूल-सं०पु०—१ भ्रम, भ्रान्ति। उ०—पैलां रै बहकावियां, पड़ै सयांणा डूल। डाकण रै घर डावड़ा, भेजै जिकण म भूल।—वी.स.

सं०स्त्री०—२ भूमि पर लिया जाने वाला एक प्रकार का कर्ज।

वि०वि०—भूमि को गिरवी रख कर देनदार इस शर्त पर बिना ब्याज कर्ज देता था कि निश्चित अवधि के भीतर यदि भुगतान नहीं किया तो भूमि उसकी हो जायगी। (मारवाड़)

यौ०—डूल-रो-खत।

वि०—चलायमान, डोलता हुआ। उ०—पार पय ऊतरे अवव पत, पाजबंध चारसै कोस पैरा। ढूल असुरांड पड भूल सुध मांण हट, फिरै चित डूल जिम चाक फेरा।—र.रू.

ढूलणौ, ढूलबौ—देखो 'डोलणौ, डोलबौ' (रू.भे.)

उ०—१ डूलाया किण रा नहिं डूलां, फूलाया नहिं फूलां। भूलाया थारा म्है भूलां, भूलाया नहिं भूलां।—ऊ.का.

उ०—२ ढहती डूली सी भूली ढंग ढांगै। मोटी आंख्यां री रोटी मुख मांगै। तोता बोता मैं रै'ता तुतळाता। वातां वीसरगा वै'ता वतळाता।
—ऊ.का.

उ०—३ तरै किणहेक डाहे मांणस कह्यौ—जु औ काळपूंछिया घरती डूलता लेता आवै छै, इणां ना जाईजे।—नैणसी

उ०—४ पहिलइ पोहरै रैण कै, दिवला अंबर डूल। घण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चंपा रौ फूल।—ढो.मा.

डूलणहार, हारौ (हारी), डूलणियौ—वि०।

डूलवाड़णौ, डुलवाड़बौ, डुलवाणौ, डुलवावौ, डुलवावणौ, डुलवाववौ—प्रे०रू०।

डुलाड़णौ, डुलाड़बौ, डुलाणौ, डुलावौ, डूलावणौ, डूलाववौ—क्रि०स०।

ढूलिओड़ौ, ढूलियोड़ौ, डूल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डूलीजणौ, डूलीजवौ—भाव वा०।

डूलाड़णौ, डूलाड़बौ—देखो 'डोलणौ, डोलवौ' (रू.भे.)

डूलाड़णहार, हारौ (हारी), डूलाड़णियौ—वि०।

डूलाड़िओड़ौ, डूलाड़ियोड़ौ, डूलाड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

डूलाड़ीजणौ, डूलाड़ीजवौ—कर्म वा०।

डूलणौ, डुलवौ, डूलणौ, डूलवौ—अक०रू०।

ढूलाड़ियोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डूलाड़ियोड़ी)

ढूलाणौ, ढूलावौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)

उ०—डूलाया किण रा नहिं डूलां, फूलाया नहिं फूलां। भूलाया थारा म्हे भूलां, भूलाया नहिं भूलां।—ऊ.का.

डूलाणहार, हारौ (हारी), डूलाणियौ—वि०।

डूलायोड़ौ—भू०का०कृ०।

डूलाईजणौ, डूलाईजवौ—कर्म वा०।

डुलणौ, डुलवौ, डूलणौ, डूलवौ—अक०रू०।

डूलायोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डूलायोड़ी)

डूलावणौ, डूलाववौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)

डूलावणहार, हारौ (हारी), डूलावणियौ—वि०।

डूलाविओड़ौ, डूलावियोड़ौ, डूलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डुलावीजणौ, डूलावीजवौ—कर्म वा०।

डुलणौ, डुलवौ, डूलवौ, डूलवौ—अक०रू०।

डूलावियोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डूलावियोड़ी)

डे-सं०पु०—१ धर्मराज. २ धर्म. ३ मृग।

सं०स्त्री०—४ जिह्वा (एका.)

डेग—१ देखो 'देगड़ौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)

डेगड़—१ देखो 'देगड़ौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)

डेगड़ियौ—१ देखो 'देगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

डेगड़ी—१ देखो 'देगड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

डेगड़ौ—१ देखो 'देगड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'देगचौ' (रू.भे.)

डेगच—देखो 'देगचौ' (मह., रू.भे.)

डेगचियौ—देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

डेगची—देखो 'देगचौ' (अल्पा., रू.भे.)

डेगचौ—देखो 'देगचौ' (रू.भे.)

डेडक—देखो 'डेडरौ' (मह., रू.भे.)

डेडकड़ौ, डेडकियौ—देखो 'डेडरौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० डेडकड़ी, डेडकी)

डेडकौ—देखो 'डेडरौ' (रू.भे.) उ०—सल्य सहित हुवौ डेडकौ, आपणी वावी मझारो रे।—जयवांणी

डेडण-सं०स्त्री०—ढाढ़ी जाति की एक शाखा विशेष।

डेडर—देखो 'डेडरौ' (मह., रू.भे.) उ०—हरकण छाई दिस चिलकारौ हरियो। करसण करसणियां किलकारौ करियौ। झेलण हळ वेडर झळकी तन झांई। मरिया डेडर ज्यूं हरिया मन मांहीं।
—ऊ.का.

डेडरड़ौ, डेडरियौ—देखो 'डेडरौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पहुर हुवउ ज पधारियां, मो चाहंती चित्त। डेडरिया खिण मइ हुवइ, घण वूठइ सरजित्त।—ढो.मा.
(स्त्री० डेडरड़ी, डेडरी)
डेडरौ-सं०पु० [सं० दर्दुर] (स्त्री० डेडरी) मेंढ़क, दादुर।
उ०—१ क्रमगत पूछूं तो कने, गोविंद हूं ज गिंवार। नाड वसंती डेडरी, पुणं समंदां पार।—ह.र.
उ०—२ हंसा कहै रे डेडरा, सायर लिया न सद्द। ओछै जळ में रें'वियां, ओछी होवै बुद्ध।—र.रा.
मुहा०—१ डेडरै नैं जुकांम होणौ—मेंढ़क को जुकाम होना। अपनी हैसियत से ऊपर काम करने वाले के प्रति व्यंग्य.
२ डेडरै वाळौ दरियाव—मेंढ़क का समुद्र। अपने आपको बहुत अनुभवी समझने वाले अनुभवहीन के प्रति व्यंग्य।
२ मिट्टी के दीपक के आकार का बना एक खिलौना जिसे चमड़े की झिल्ली से मढ़ कर घोड़े के पूंछ के बाल द्वारा एक लकड़ी में बांध कर लड़के चारों ओर घुमा कर बजाते हैं जो मेंढ़क की आवाज करता है. ३ दोहा नामक छंद का एक भेद।
मि०—मंडूक (१)
रू०भे०—डेडकौ।
अल्पा०—डेडकड़ो, डेडकियौ, डेडरड़ौ, डेड रयौ।
मह०—डेडक, डेडर।
डेणकी-सं०स्त्री—घड़िया के टूटने पर बचा हुआ नीचे का भाग।
डेयरौ—देखो 'डेरौ' (रू.भे.) उ०—डेयरां लगि आविय जोड़ दहूं। सोढियां घण वींटिय ओड चहूं।—पा.प्र.
डेर-सं०स्त्री०—१ वाद्य विशेष। उ०—दोऊ ओर दुवाह यौं असि वाह अच्छक्कै। डेरां डाहल डिंडिमी डक्कां डकडक्कै।—वं.भा.
२ देखो 'डेरौ' (मह., रू.भे.)
डेरउ—देखो 'डेरौ' (रू.भे.) उ०—वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीध। साल्ह महल हूं ढूकड़ा, ढाढ़ी डेरउ लीध।—ढो.मा.
डेरकियौ—देखो 'डेरौ' (अल्पा., रू.भे.)
डेरड़—देखो 'डेरौ' (मह., रू.भे.)
डेरड़ौ, डेरियौ—देखो 'डेरौ' (अल्पा., रू.भे.)
डेरापंथी-वि०यौ०—सदा एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमते रहने वाला, खानाबदोश।
डेरौ-सं०पु०—१ धन, द्रव्य। उ०—आउवा में उत्तमोजी ईरांणी बोल्यौ, भीखणजी थे देवरा निखेधौ छौ पिण आगै तौ वडा वडा लखेसरी कोड़ेसरी त्यां देवळ कराया। जद स्वांमीजी बोल्या थांरा घरै पचास हजार रौ डेरौ थयां देवळ करावौ के नहीं। जव ते बोल्यौ—हूं करावूं।—भि.द्र.
२ रहने या ठहरने के लिए फैलाया हुआ सामान, टिकान का सामान।
क्रि०प्र०—ऊठाणौ, करणौ, दैणौ. समेटणौ, हटाणौ।
यौ०—डेरौ-डांडौ।
३ यात्रा में साथ रखा जाने वाला सामान। उ०—निरवळ चोरां डर वसियोड़ा नैड़ा। दुरवळ मोरां पर कसियोड़ा डेरा।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणौ, कसणौ, दैणौ।
यौ०—डेरौ-डांडौ।
४ किसी सामंत अथवा प्रतिष्ठित व्यक्ति की हवेली, निवास-स्थान। (बीकानेर)
उ०—ओर साथ नै तौ आप आप रा डेरां नै सीख दीनी ओर खिलवति का लोगां नै साथै लेवा की तजवीज किनी।
—पनां वीरमदे री वात
५ तंवू, शामियाना, खेमा, छोलदारी। उ०—अवै वादसाह चिंता करै। जे कांई बुद्धी उपाय सूं जलाल नूं मारणौ। सो उण साइत मजकूर करि कहियौ—वडौ डेरौ हमारै झरोखै साम्हौ खड़ौ करौ ओर तणाव ढीलौ राखौ। जिकौ आवसी सो डेरै तळा कर आवसी। सो जलाल आवै उस वखत तणाव छोड दीजै जे जलाल दव जायसी।
—जलाल वूवना री वात
क्रि०प्र०—करणौ, तांणणौ, दैणौ।
६ विश्राम-स्थल, ठहरने का स्थान। ज्यूं—चोखी जायगा में जांन रौ डेरौ दिरायौ।
क्रि०प्र०—करणौ, दिराणौ, दैणौ।
७ थोड़े समय के लिए टिकान, थोड़े दिन के लिए निवास, ठहराव।
उ०—वहतां दिन वीजइ पछइ, राति पड़ंती देखि। रोही मंझि डेरा किया, ऊजळ जळघर देखि।—ढो.मा.
८ छाया बनाया हुआ और साफ किया हुआ ठहरने का स्थान, टिकने का स्थान, कैंप।
वि०वि०—यह वह स्थान होता है जहां पर प्रायः घुमक्कड़ जाति विशेष के लोग ठहरते हैं। ज्यूं—अठै नटिया डेरौ दियौ है। गाडिया लुहारां कै डेरै सूं दातळो ल्यायौ छूं।
क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, पड़णौ, होणौ।
९ नाचने गाने वालों की मंडली, गोल, दल।
क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, पड़णौ, होणौ।
क्रि०प्र०—आणौ, जाणौ।
१० फौज का पड़ाव, छावनी। उ०—आलम्म तणा डेरां अमिट, यौं घेरौ पण अग्गळां। वीटियां रवद कमधां वणै. जांण अरव्वद वद्दळां।—रा.रू.
क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, पड़णौ, होणौ।
११ दल (मा.म.)
रू०भे०—डेयरौ, डेरउ।
अल्पा०—डेरकियौ, डेरड़ौ, डेरियौ।
मह०—डेर, डेरड़।
डेळ-वि०—१ पथभ्रष्ट। उ०—मन फेल न मावै सेल सुहावै, डेळ

चक्र गोलंदा है। गट चक्र न खोलै तक्र बितोलै, एक चक्र ओलंदा है।—ऊ.का.

२ मुख। उ०—सजै अणक री भणक सुण, डाढ़ाळी कद डेळ। पांग कूंत उठियां पहल, पिसणां नू दे पेल।—रेवतसिंह भाटी

३ देखो 'देहली' (मह., रू.भे.)

डेलटो—सं०पु०—नदियों द्वारा लाये गये कीचड़ या रेत से बनी हुई प्रायः तिकोने रूप की वह भूमि जो उनके मुहाने या संगम स्थान पर बहाव के धीमा होने के कारण धारा को कई शाखाओं में विभक्त करके बीच में उभर आती है।

डेळही, डेल्ही—देखो 'देहरी' (रू.भे.) उ०—वाका फाटोड़ा धाका दम थाकी। डेळही चुळियोड़ा ढुळियोड़ा डाकी। थिरता मन री नहिं तन री गति थाकी। फुरणा पर धन री अन री नहिं फाकी।—ऊ.का.

मुहा०—डेळी चुळियोड़ौ, डेळीचूक, डेळी चूकोड़ौ—स्थानभ्रष्ट, पथभ्रष्ट, ददनीयत।

डेहळ—देखो 'देहळी' (मह., रू.भे.)

डेहळी—देखो 'देहली' (उ.र.)

डेवणी, डेवबौ—देखो 'देबौ' (रू.भे.)

उ०—दह दिसि फूटा नीर निखूटा लेखा डेवण साळवै। दादूदास कहै वणिजारा, तू रता तरणी नाळवै।—दादू वांणी

डेंण—वि०—सठिया बुद्धि का, अतिवृद्ध, बूढ़ा।

उ०—अमल उगावै अंग में, निपट घुळावै नैण। आंडां नै वैठा अपत, टचिया घालै डैंण।—ऊ.का.

रू०भे०—डैण।

डैं—सं०पु०—१ वृक्ष. २ कान. ३ एक प्रकार का घास, कास। सं०स्त्री०—४ कोयल (एका.) वि०—सफेद (एका.)

डैं'कणौ, डैं'कबौ—देखो 'डहकणौ, डहकबौ' (रू.भे.)

डैं'काड़णौ, डैं'काड़बौ—देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)

डैंकाड़ियोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डैं'काड़ियोड़ी)

डैं'काणौ, डैं'काबौ—१ देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'डकाणौ, डकाबौ' (रू.भे.) उ०—जद हरयाळी वनड़ी तोरण आयो ओ, तोरण तुरी डैंकायो, ओ बाई जी म्हारा राजा, तोरण सहेल्यां सरायो, ओ बाई जी म्हारा राज।—लो.गी.

डैं'कायोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डैं'कायोड़ी)

डैं'कावणौ, डैं'काबबौ—१ देखो 'डहकाणौ, डहकाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'डकाणौ, डकाबौ' (रू.भे.)

उ०—वणी वधे वडबोर, खेजड़ां नै खणकावण। डीकरियाळै डाळ, मिचा डोळा डैं'कावण।—दसदेव

डैं'कावियोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डैं'कावियोड़ी)

डैं'कियोड़ौ—१ देखो 'डहकियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'डकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डैं'कियोड़ी)

डैंचौ—देखो 'डांचौ' (रू.भे.)

डैंड—देखो 'डोढ़' (रू.भे.)

डैंडाट—सं०पु०—हरापना, प्रफुल्लित, ताजगी (घास, फसल आदि)

उ०—तिल नै ग्वार नीला डैंडाट करतोड़ा जांणै आज ईज बरस नै गयो हुवै जिसा।—रातवासौ

रू०भे०—डहडहाट।

डैंडौ—देखो 'डोढ़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डैंडी)

डैंढ़—देखो 'डोढ़' (रू.भे.) उ०—सो ओठी दूजै दिन, दिन पहर डैंढ़ चढ़तां पाछा आया।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

डैंढ़ौ—देखो 'डोढ़' (रू.भे.)

(स्त्री० डैंढ़ी)

डैंण—देखो 'डैंण' (रू.भे.) उ०—गोपाळ रै एक तौ नोकरी नहीं, बीजी डैंण मांदी। घर में ऊंदरा थिड़चां करै।—वरसगांठ

डैंणकी—देखो 'डैंण' (अल्पा., रू.भे.)

डैपूटेसन—सं०पु० [अं०] जन-साधारण या किसी सभा संस्था की ओर से सरकार, राजा महाराजा या किसी अधिकारी के पास किसी विषय की प्रार्थना करने के लिए भेजी जाने वाली चुनिंदा लोगों की मण्डली। उ०—साची है! आंपां नै तौ ईतो-ईज करणौ जोयीजै कै कोई डैपूटेसन-वैपूटेसन आय जावै तौ ११), २१), ५१) घणां सूं घणा देय देणा।—वरसगांठ

डैर—१ देखो 'डेरी' (मह., रू.भे.) उ०—महंदी तौ वावण घणा गयी, सोनै रौ हळियौ जी हाथ, सोदागर महंदी राचणी। देवर वाया दोय ऊमरा, थारी घण वायौ सारौ डैर, सोदागर महंदी राचणी।—लो.गी.

२ देखो 'डैरौ' (मह., रू.भे.)

डैरडी—देखो 'डैरी' (अल्पा., रू.भे.)

डैरड़ौ—सं०पु०—देखो 'डैरौ' (अल्पा., रू.भे.)

डैरव—देखो 'डैरु' (रू.भे.) उ०—सझ्या खग खप्पर चक्र त्रसूळ। झल्या कर डैरव भैरव भूल।—मे.म.

डैरी—सं०स्त्री०—१ बालू रहित पीली, काली या चिकनी मिट्टी वाली समतल और कठोर भूमि जहां वर्षा के पानी का भराव होता है। यह कृषि के लिए बहुत उपयोगी होती है। उ०—डैरचां डैरचां बाजरो ये वदळी, टीवां टीवां मोठ मेवा मिसरी। सुरंगी रुत आयी म्हारा देस में, भले री रुत आयी म्हारा देस में।—लो.गी.

२ आस-पास के धरातल से कुछ नीची भूमि। उ०—रास रंगळी रचै चांदणी रातां चिळकै, विच विच डांडा विरख सीन री झूमख झिळकै। कर कर केळां माथ कसारी करती गावै, डूंगी डैरचां बोल राग में राग मिळावै।—दसदेव

३ देखो 'डैरौ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—डहर, डैरी।
अल्पा०—डैरड़ियौ, डैरड़ी, डैरड़ौ।

डेरीमाता–सं०स्त्री०—एक देवी, इसकी पूजा प्रायः गूजर लोग करते हैं।

डैरु, डैरूं, डैरू–सं०पु०—१ डमरू नामक वाद्य। उ०—१ जंगी डैरु डमंकिया त्रंबक त्रहकाया। ईरांनी भट उप्फने वपु सज्ज वनाया।
—वं.भा.

उ०—२ बावन वीर नचरण वहबहिया। डैरु जटी चंड डहडहिया।
—सू.प्र.

उ०—३ साता-दीप रास रमै सातूं, घूघरिया घमकांणी। वीरण म्रिदंग वजावै डैरूं, गावै अम्रित वांणी।—राघवदास भादौ

उ०—४ भुजां भांमणां कंकणां सज्ज कीधां। लसै सूळ डैरू खड़्‌ग्ग्खप्र लीधां।—मे.म.

२ बाएँ घुटने में होने वाला वात विकार का रोग विशेष जिससे घुटने में सूजन और पीड़ा होती है, बाएँ घुटने का क्रोष्टुशीर्ष।

उ०—गिरमी गिरमी में गिरवै गुड़ियोड़ा, जांन्है डैरूं ज्यूं गोडा जुड़ियोड़ा। कुलटा साची व्है ठुकरांणी कूड़ी, पड़दै पड़दायत रांणी सू रूड़ी।—ऊ.का.

३ मंत्र विशेष, जादू-टोना।
रू०भे०—डैरव।

डैरो–सं०पु०—धातु का बना गोल चौड़े मुँह का बड़ा बर्तन जिसके एक ओर लकड़ी का खड़ा डंडा लगा रहता है।
वि०वि०—बड़े भोज में खीर, दाल, कढ़ी आदि को कड़ाह में से निकालने के लिये इसका प्रयोग होता है।
अल्पा०—डैरी।
मह०—डैर।

डैळ—देखो 'डैंण' (रू.भे.) उ०—१ नख बधियोड़ा निपट सीत बधियोड़ी साथै। दुख बधियोड़ी डैळ मैल बधियोड़ी माथै।—ऊ.का.
उ०—२ मैलै ऊपरै माखियां, घणणाटा ले गैल। हैंकड़ कठी नै हालिया, डबी खळींगण डैळ।—ऊ.का.

डैळको–सं०पु०—१ किसी अमांगलिक या दुखद घटना के होने के कारण हृदय को लगने वाला धक्का, मानसिक आघात।
२ देखो 'डैळ' (अल्पा., रू.भे.)

डैलांण–सं०पु०—मुख्य द्वार के ऊपर की मंजिल पर बना हुआ बड़ा कमरा जिसके खिड़कियां और झरोखे होते हैं।

डैहकणौ, डैहकवौ—देखो 'डहकणौ, डहकवौ' (रू.भे.)

डैहकाड़णौ, डैहकाड़वौ—देखो 'डहकाणौ, डहकावौ' (रू.भे.)

डैहकाड़ियोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डैहकाड़ियोड़ी)

डैहकाणौ, डैहकावौ—देखो 'डहकाणौ, डहकावौ' (रू.भे.)

डैहकायोड़ौ—देखो 'डहकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डैहकायोड़ी)

डैहकावणौ, डैहकाववौ—देखो 'डहकाणौ, डहकावौ' (रू.भे.)

डैहकावियोड़ौ—देखो 'डहकावियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डैहकावियोड़ी)

डैहकियोड़ौ—देखो 'डहकियोड़ौ (रू.भे.)
(स्त्री० डैहकियोड़ी)

डैहरु—देखो 'डैरु' (रू.भे.)

डो–सं०स्त्री०—१ प्रौढ़ा।
सं०पु०—२ पाप।
वि०—१ पापी. २ मुग्ध (एका.)

डो'—देखो 'डोह' (रू.भे.)

डोग्रौ—देखो 'डोई' (मह., रू.भे.)

डोइलउ, डोइलियौ—देखो 'डोई' (अल्पा., रू.भे.)

डोइलौ–सं०पु०—१ बर्तन विशेष ?
उ०—कुघरणि महा कुहाडि सदा घरइ आटोप, बइठी भरतार दिइ निरोप। डोइला हेठै किंकिउ घरइ, मुहि सांह्यी चीवर बरइ···।
—व.स.
२ देखो 'डोई' (अल्पा., रू.भे.)

डोई–सं०स्त्री० [सं० दारुहस्तकः] काष्ट का बना चम्मच।
उ०—हांडी खांडी में डोई संग हालै। चख झख खंजन में धारोळा चालै।—ऊ.का.
अल्पा०—डोइलउ, डोइलियौ, डोइलौ, डोयलियौ, डोयली, डोयलौ, डोयौ।
मह०—डोग्रौ।

डोईलौ—देखो 'डोई' (अल्पा., रू.भे.)

डोक–सं०स्त्री०—१ घोड़े, गधे, सूअर आदि पशुओं का भूमि पर लोटने के कारण बना हुआ चिन्ह, लोट। उ०—वीं ठांव आय पहलां तो लोटिया, थकांण मिटाई, पाछै तुंड सूं जमी नरम कर थेह वणाई। इतरै वागवांन आयौ। पग दीठा जद पगां-पगां गयौ। देखै तो वाराह लोटिया छै तिणरी डोकां छै।—डाढ़ाळा सूर री वात
२ देखो 'डोकौ' (मह., रू.भे.)

डोकर—१ देखो 'डोकरी' (मह., रू.भे.) डाढ़ाळी डोकर थई, का तूं गई विदेस। खून विना क्यूं खोसजे, निज वीकां रा नेस।—अज्ञात
२ देखो 'डोकरौ' (मह., रू.भे.) उ०—खूणइ पडिउ खूंखू करइ, अजी स डोकर कहिग्रं मरइ।—चिहुंगति चउपई

डोकरड़ी—देखो 'डोकरी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—डिगती डिगती डोकरड़ी, पहुंती 'दला' पास। 'दला' चूक तो में दुभ्काल, न्हास सकै तो न्हास।—वी.मा.

डोकरड़ौ—देखो 'डोकरौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—कहै दास सगरांम अवध आई डोकरड़ा। जेज नहीं है हमैं भजन रा दै सोकरड़ा।
—सगरांमदास
(स्त्री० डोकरड़ी)

डोकरि—देखो 'डोकरी' (रू.भे.) उ०—डाही डोगी डोकरी, ते साहइ ठाम। हाथि न लागइ डीकरां, मोघइ मवळ् मांम।—मा.कां.प्र.

डोकरियो—देखो 'डोकरो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ईं धरती पर वो 'दुरंग' हुवो, जो मरदां नूं 'मोरंग' मुवो। अंगरेज आयो मालपुओ, जद डोकरयै परणीण कियो। आं नै बोदा कांटां वाळां ला। धरती री नूंग उजाळां ला।—भंवरलाल कछवाहा

(स्त्री० डोकरी)

डोकरी-सं०स्त्री०—वृद्ध स्त्री, बुड्ढी स्त्री। उ०—ईहां कांम नहीं छोकरी, प्रीनइ डोकरी।—व.स.

रू०भे०—डोकरि।

अल्पा०—डोकरड़ी।

मह०—डोकर।

डोकरू—देखो 'डोकरो' (रू.भे.)

डोकरो-सं०पु० [सं० डोलरकरः या दुष्कर, प्रा० डुक्कर] (स्त्री० डोकरी) वृद्ध पुरुष, बुड्ढा आदमी। उ०—मगर-पचीसी मांय डोकरो वणगो टाको। डांगड़ियां निठ डिगै थिगै टांगड़ियां थाको।—ऊ.का.

रू०भे०—डोकरू।

अल्पा०—डोकरड़ो, डोकरियो।

मह०—डोकर।

डोकी-सं०स्त्री०—देखो 'डोको' (अल्पा., रू.भे.)

डोको-सं०पु०—१ ज्वार, बाजरा आदि का सूखा पौधा, डंठल।

उ०—करहउ कूदइ मनि धकउ, पग राखीयउ जांण। ऊकरड़ी डोका चुगइ, प्रपस डंभायउ आंण।—ढो.मा.

मुहा०—१ डोका चराणा—डंठल खिलाना, मूर्ख बनाना, फुसलाना. २ डोको देणो—डंठल से संकेत करना, उकसाना, प्रेरित करना. ३ डोको लगाणो—देखो 'डोको देणो।'

२ प्रसव से पूर्व गाय व भैंस के स्तनों की अवस्था जिससे प्रसव देने के समय का भान होता है।

क्रि०प्र०—नांखणो, देणो।

डोटपुरकीय-सं०स्त्री०—घोड़े के चलने की एक विशेष गति।

डोगो-सं०पु०—एक प्रकार का तारवाद्य जिसका स्वर बड़ा ही मधुर और प्रिय होता है।

डोटकिया-सं०स्त्री०—घोड़ों की एक जाति विशेष (व.स.)।

डोटी-सं०स्त्री०—ओढ़ने का वस्त्र। उ०—डगला डोटी मोजड़ां, सीरख केरी सुडी। तप्तोदक नइं तापणा, घाती तेणइ थूडि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—टोवटी।

डोड-सं०पु० [सं० द्रोण+काक] १ एक प्रकार का बड़ा कौआ।

उ०—सगरांमा सांगी करै सतपुरखां की होड। वे हंसा मेहरांण का ये डूंगर का डोड।—सगरांमदास

यौ०—डोड-काग।

२ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बां.दा.ख्यात)

३ देखो 'डोडो' (मह., रू.भे.)

डोडकियो—देखो 'डोडो' (अल्पा., रू.भे.)

डोडकी-सं०स्त्री०—१ एक लता विशेष।

उ०—इंडाळी नइ डोडकी, डायणि डूंगरि वेलि। डीसामूळी डुंहकळी, डाकडमाळी डोलि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'डोडो' (अल्पा., रू.भे.)

डोडको—देखो 'डोडो' (अल्पा., रू.भे.)

डोडर-सं०स्त्री०—कमर, कटि।

डोडळ-सं०स्त्री०—सूजन, शोथ।

डोडळो—१ देखो 'डोळो' (रू.भे.) उ०—आंसू करि कुंचूक सिंचती डोडळा द्रस्टि मींचती।—व.स.

२ देखो 'डोडो' (अल्पा., रू.भे.)

३ सं०पु० देखो 'डोडळ' (अल्पा., रू.भे.)

डोडवाड़ो-सं०पु० [रा० डोड+सं० पाटकः] डोड वंश के क्षत्रियों का राज्य।

डोडा-सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा।

डोडिक, डोडीको—

उ०—तदनंतर मुग वडी, उडद वडी, छमका वडी, पलेह वडी, सउंतळी वड़ी, माहिनु चीर, छमकावी डोडी, खाईयां टळटळतां टींडरां, भली वालहुलि, कळकळतां कोसंभां, सुडहडती सांफळी, डसडसतां डोडिकां, छमछमती भाजी, चमचमतां चीभडां।—व.स.

डोडीया-सं०स्त्री०—एक राजपूत वंश।

डोडियो-सं०पु०—१ जैसलमेर राज्य में चलने वाला प्राचीन तांबे का सिक्का जो 'धींगलै' के समान ही था. २ डोडिया राजपूत वंश का व्यक्ति। उ०—इण वासतै कोई आसर किण ही तरै की रह गई होय तो फेर खेटी करै डोडिया।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ देखो 'डोडो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—आक तणा अक डोडिया, खावंतां खारा होय। ईसर देव नइ ते चडइ, मन मांनी वात जोय।

—स.कु.

डोडी-सं०स्त्री०—१ भुजा के चूड़े के नीचे पहिना जाने वाला आभूषण विशेष। उ०—कांनिइ उगनिउं झळहळइ, कोटिइ नवसर हार। मादळीआ डोडी भुजइ, गरसली कालीउं सार।—नळ-दवदंती रास

२ पुरुषों की भुजा पर धारण करने का आभूषण विशेष।

३ देखो 'डोडो' (अल्पा. रू.भे.)

डोडो-सं०पु०—१ (जुआर आदि का) भुट्टा, वाल।

उ०—गड़मच-गड़मच गाडी जावै, डोडो जवार को। गोरांवाओ बैठी जावै, डोडो जवार को।—लो.गी.

२ आक या मदार का फूल. ३ इलायची, खसखस, कपास आदि के दाने रहने का फल। उ०—१ कठै तो सुकाळ डोडा एळची रे, म्हारा लोटण करवा, कठै रे सुकाळ नागर वेल, एजी ओ मिरगानैणी रा ढोला।—लो.गी.

उ०—२ तिण मांहै गिरी, केसर, दाळचीणी, जावंत्री, जायफळ, इलायची, पांन, लूंग, डोडा, धतूरा रा बीज, मोहरी, मिसरी घाल नै काढ़ीजै छै।—राव रिणमल री वात

४ गोखरू तथा कांटी नामक घास का गोल फल जिसके कांटे लगे रहते हैं। यह लगभग चने जितना बड़ा होता है. ५ आँख का कोया।

अल्पा०—डो कियौ, डोडकी, डोडकौ, डोडलौ, डोडियौ, डोडी।

मह०—डोड।

६ बड़ा कौआ. ७ पँवारवंश की डोड शाखा का व्यक्ति।

डो'णौ, डो'बौ—देखो 'डोहणौ, डोहवौ' (रू.भे.)

डोपाई—देखो 'डोफाई' (रू.भे.)

डोपौ—देखो 'डोफौ' (रू.भे.)

डोफाई-सं०स्त्री०—मूर्खता, नासमझी। उ०—डोफाई सूं डूबणौ, खोटी संगत खूब। डूबौ सो तौ डूबगौ, कूक मती बेकूफ।—ऊ.का.

डोफौ-वि०—मूर्ख, नासमझ। उ०—डहडयोड़ा डोलै केई डोफा, गाफल जनम गमावै। राजी भेख मात्र नै राखै, स'जां ही सुख पावै।—ऊ.का.

डोब-सं०स्त्री०—१ गहराई, थाह। उ०—तिको तळाव किण भांत रौ छै। राती वरडी री। पांडरौ नीर। पवन मारियौ फीण आछंटतौ थकौ झोला खाय रह्यौ छै। लहरां लियै छै। अथग डोब छै। कड़ियां सुंवे पांणी में पैठां पगां रा नख झाखै छै।—रा.सा.सं.

२ डूबाने की क्रिया या भाव

क्रि०प्र०—देणौ।

३ डुबकी, गोता।

क्रि०प्र०—दैणी, लैणी।

४ नीची भूमि।

रू०भे०—डोव।

सं०पु०—५ सदमा।

क्रि०प्र०—ऊठणौ।

डोवणौ, डोबबौ—देखो 'डुवाणौ, डुवावौ' (रू.भे.)

उ०—मोटल सरखौ मारियौ, जिण सकज जमाई। 'देऊ' रौ घर डोबियौ इण हिज अनिआई।—वी.मा.

डोवणहार, हारौ (हारी), डोबणियौ—वि०।

डोबवाड़णौ, डोबवाड़बौ, डोबवाणौ, डोबवावबौ, डोबवाणौ, डोबवावबौ, डोबाड़णौ, डोबाड़बौ, डोबाणौ, डोबाबौ, डोबावणौ, डोबावबौ —प्रे०रू०।

डोबिओड़ौ, डोबियोड़ौ, डोब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डोबीजणौ, डोबीजबौ—कर्म वा०।

डूबणौ, डूबबौ—अक० रू०।

डोबरौ-सं०पु०—१ दरार पड़ा हुआ मिट्टी का वर्तन. २ फटा हुआ वांस. ३ दरार पड़े हुए मिट्टी के वर्तन या फटे हुए वांस को बजाने पर निकलने वाली ध्वनि विशेष।

क्रि०प्र०—बोलणौ, वाजणौ।

कहा०—डांग भागी तोई डोबरां जोगी परी है—लाठी टूटी किन्तु आवाज करने योग्य तो है ही, समय के फेर से सम्पन्न व्यक्ति निर्धन हो जाता है किन्तु फिर भी वह अन्य साधारण व्यक्तियों से तो अच्छा ही होता है।

डोबल-सं०पु०—१ खड्डा, गड्ढ़ा।

२ देखो 'डोबौ' (मह., रू.भे.)

डोबलियौ—देखो 'डोबौ' (अल्पा., रू.भे.)

डोबली-सं०स्त्री०—१ दीवार में किया जाने वाला वह छेद जो उसके सहारे लकड़ी को मजबूत कसने के लिए किया जाता है।

क्रि०प्र०—करणी।

२ वह लकड़ी जो पत्थर के गड्ढ़े या दीवार में लगाई जाती है।

क्रि०प्र०—देणी।

३ देखो 'डोबी' (रू.भे.)

डोबलौ—देखो 'डोबौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डोबली)

डोबियोड़ौ—देखो 'डुवायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डोबियोड़ी)

डोबियौ—देखो 'डोबौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डोबी)

डोबी-सं०स्त्री०—वृद्ध भैंस।

कहा०—दूध डोबी मांये नी है, दूध दोवा वाळी मांये है—दूध भैंस में नहीं होता अपितु निकालने वाली में होता है अर्थात् दुहने वाली की चतुरता दुधारू के पालन-पोषण में उसकी कुशलता आदि पर ही दूध की मात्रा निर्भर करती है।

रू०भे०—डोबली।

डोबौ-सं०पु० (स्त्री० डोबी) १ वृद्ध भैंसा, पाड़ा. २ वृद्ध भैंस।

उ०—डाटचा डोबा डांगरा, डोलै खेतां-डोळ। रणखेतां रजपूत किम, हाटचां दिया हडोळ।—रेवतसिंह भाटी

३ आँख। उ०—तरुणी वरुणी में नींझर झर-ताकी। थिग थिग अगनैणी पिकवैणी थाकी। पिंजर पासळियां भीतर पैठोड़ा, वोलै ओवाता डोबा वैठोड़ा।—ऊ.का.

४ देखो 'डोब' (रू.भे.)

डोम—देखो 'डूम' (रू.भे.)

डोमड़—देखो 'डूम' (मह., रू.भे.)

डोमड़ियौ—देखो 'डूम' (अल्पा., रू.भे.)

डोमड़ौ—देखो 'डूम' (अल्पा., रू.भे.)

डोयठौ-सं०पु० [सं० द्व्यु त्य, प्रा० दौठा] एक प्रकार की मिठाई।

डोयलियौ-सं०पु०—देखो 'डोई' (अल्पा., रू.भे.)

डोयली—देखो 'डोई' (अल्पा., रू.भे.)

डोयलौ, डोयौ-सं०पु०—देखो 'डोई' (अल्पा., रू.भे.)

डोंगोड़ी—देखो 'डोंगियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० डोंगोड़ी)

डोर—सं०स्त्री०—१ रस्सी, रज्जु। उ०—१ तालरियै तंबूड़ा ताणियां, डूंगरियै ल्हकाई रेसम डोर। घण गोरी ए अंबा लागणियै नैणां रो दीनो मिणिदार।—लो.गी.

उ०—२ रतन कुओ मुग सांकड़ो, लांबी लागै डोर। सींचतड़ा मैंदी गई, गयो कमर रो जोर।—लो.गी.

२ घोड़े की लगाम, बाग। उ०—घोड़ा री पूठ तखतां ऊपर बैठा छै। आंख्यां आटी कूल्है छै। सकळायत रा पटा, रूपै री भंवर कड़ी, रेसम री डोर।—रा.सा.सं.

मुहा०—१ डोर खांचणी—स्मरण कर के दूर से अपने पास बुलाना, पास बुलाने के लिये स्मरण करना. २ डोर ढीली छोडणी—डोरी शिथिल करना, अधिकार या शासन से मुक्त करना, निगरानी या चोकसी कम करना, ध्यान न देना. ३ डोर में राखणी—अधिकार में रखना, शासन में रखना, नियंत्रण में रखना।

३ पतंग की डोरी। उ०—१ जमडाडां जड़ै छै; बीजण्यां आंतां ले उडै छै। जिकै गुडी री सी डोर असमान नै चढ़ै छै।
—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ राजन गुडी उडावता, लंबी देता डोर। गुडी घर राजन नहीं, चले न मेरो जोर, ओ दिल ज्यांन म्हांनै एकवर दरस दिखाओ मेरी जांन।—लो.गी.

४ देखो 'डोरी' (अल्पा., रू.भे.)

डोरउ—देखो 'डोरो' (रू.भे.) उ०—परणावा चाल्यो बीसळराव, बाज्या ढोल नीसांणै घाव। डोरउ बांध्यउ पाटकौ, पाळिय परगह अंत न पार।—वी.दे.

डोरड़ाबंध-वि०यौ०—विवाह का कंकण बंधा हुआ।

उ०—सूरातन तेज जीतो समर, कोटां सिर नांमो कियो। डोरड़ा-बंध मुजरा दयण, इण विध पावू आवियो।—पा.प्र.

डोरड़ियौ—देखो 'डोरड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

डोरड़ी—देखो 'डोरी' (अल्पा., रू.भे.)

डोरड़ौ—देखो 'डोरो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ हाथां पगां कै बांधी डोरड़ा, सिर सोना को मोड़। कांनां घालो मामा-मुरकी, गळ में घालो गोय।—डूंगजी जवारजी री पड़

उ०—२ लाडा थारै डोरड़ै बीस गांठ हो।—नैणसी

उ०—३ बैठा रजपूत खावै छै। हेमो डोरड़ो गावै छै।—नैणसी

डोरवांस—सं०पु०—सारंगी के तांतों को मढतंग पर घोड़े के बालों से बांधने वाली वस्तु।

डोरांतर—सं०स्त्री० [सं० दोलांतर] वह झोली जिसमें बच्चे को सुला कर पीठ पर लादा जाता है। उ०—बळदां गाडांसळ पाडां पर बोरा, छोटा डोरांतर रोरांकुर छोरा। करणा दरसावै केता वर-कढ़िया, जूती फाटोड़ी बांधी जेवड़ियां।—ऊ.का.

डोराड़णौ, डोराड़बौ—देखो 'डोराणौ, डोराबौ' (रू.भे.)

डोराड़ियोड़ौ—देखो 'डोरायोड़ौ' (रू.भे.)

डोराणौ, डोराबौ—क्रि०स०—ऋतुमति घोड़ी से घोड़े का प्रसंग कराना।
डोराणहार, हारौ (हारी), डोराणियौ—वि०।
डोराईजणौ, डोराईजबौ—कर्म वा०।
डोराड़णौ, डोराड़बौ, डोरावणौ, डोरावबौ—रू०भे०।

डोरावंद-वि०यौ०—जिसके किसी सम्प्रदाय, देवता आदि के निमित्त डोरा बंधा हो (मा.म.)

डोरायोड़ौ-भू०का०कृ०—घोड़े से प्रसंग कराई हुई (ऋतुमति घोड़ी)

डोरावणौ, डोरावबौ—देखो 'डोराणौ, डोराबौ' (रू.भे.)

डोरावियोड़ौ—देखो 'डोरायोड़ौ' (रू.भे.)

डोरि—देखो 'डोरी' (रू.भे)

डोरियौ—सं०पु०—१ वह बड़ा और मोटा कपड़ा जो अनाज ढोते समय बैलगाड़ी पर लगाया जाता है. २ शामियाने बनाने में काम आने वाला मोटा कपड़ा, पाल. ३ जाजम या दरी की भांति बिछाने का एक प्रकार का मोटा कपड़ा. ४ एक प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र. ५ एक प्रकार का सूती मोटा कपड़ा जिसमें मोटे सूत की धारियां होती हैं. ६ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

उ०—तठा उपरांयत वागां रा चिहरबंद छूटै छै। सू किण भांत रा वागा छै? सिरीसाफ, भैरव चौतार, कसबी महमूदी, फूलगार अध-रससेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेब सासाहिबी तरै-तरै रै कपड़ै रा वागा छै, सू उतार-उतार उणहीज दरखतां री साखां ऊपर उरळा कीजै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—डोरचौ।

डोरी—सं०स्त्री० [सं० दोरः] १ रस्सी, रज्जु।

मुहा०—डोरी सूं पत्थर काटणौ—कूए से पानी निकालते समय डोरी जैसी नरम वस्तु की निरन्तर रगड़ से भी पत्थर की कठोर शिला कटने के कारण निशान हो जाते हैं अर्थात् निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर सफलता अवश्य मिलती है।

२ लगाम, बाग। उ०—१ यम तड़फड़तां अड़ै, बाहि जमदाढ़ वहाड़ै। डाव घाव डोरियां, जांणि जगजेठ अखाड़ै।—सू.प्र.

उ०—२ कसि सिरी गड़द निस संध कीध। डोरियां बांधि गजगाह दीध।—सू.प्र.

३ स्त्री-पुरुष के बदचलन होने पर उनके चरित्र को प्रकट करने के लिए फाल्गुन मास में गाया जाने वाला अश्लील गीत।

उ०—१ सरती सदनांमी चाहत नहि चोरी, डरती बदनांमी गावत नहि डोरी। चित भव भांडां री चरचा नहि चावै, लिपळी रांडां री अरचा नहि लावै।—ऊ.का.

उ०—२ हाथां हळ हाकता, नार करती नेदांणी। निरस घरा सन-मंध कदै, ठकुरात न जांणी। सायबी इसी होती सदा, दादा गवता डोरियां। मोहकमा कमंध मोटा मिनख, चित सूं ही छांनी चोरियां।
—अरजुणजी बारहठ

क्रि०प्र०—गाणौ।

४ आंख में दिखाई देने वाली लाल रेखा जो सौंदर्य व शौर्य-सूचक मानी जाती है। उ०—डाकाबंध कमंध आरक चसम डोरियां, गिरंद तारक रिछक समै गजगाह। 'सदारा' जोध वेढ़ाक मारक सत्रां, अभीड़ां पेच धारक निखंग वाह।—कविराजा करणीदान

५ नदी या नाले के किनारे बना हुआ वह कूआ जिसमें नदी या नाले में से पानी आता रहता है या नाली बना कर लाया जाता है, फिर उस कूए से सिंचाई होती है (मेवाड़, अजमेर) ६ दूरी को मापने का एक माप विशेष जो २० गट्ठे या ६० गज का होता था. ७ वह रस्सी जो राजा-महाराजा या बादशाहों की सवारी के आगे भीड़ को रोकने के लिए सिपाही रास्ते के दोनों ओर हद बांधने के निमित्त लेकर चलते थे (मेवाड़)

मि०—जळेव (३)

८ ध्यान, लगन। उ०—जमिया जोगी जोग कमावै, लगी निरंतर डोरी। हिंदू मुसळमांन सूं न्यारा, ऐसी उल्टी फोरी।

—स्री हरिरांमजी महाराज

मुहा०—डोरी लागणी—किसी के ध्यान में मग्न होना।

रू०भे०—डोरि।

अल्पा०—डोरड़ी।

मह०—डोर।

डोरीजणौ, डोरीजबौ-भाव वा०—घोड़ी का घोड़े के साथ संयोग होना, गर्भवती होना।

डोरीजियोड़ी-भू०का०कृ०—गर्भ धारण की हुई, गर्भवती (घोड़ी)

डोरौ-संपु० [सं० दोर:] १ रूई, रेशम, सन आदि को बट कर बनाया हुआ महीन और लम्बा तंतु जो चौड़ा और मोटा नहीं होता है, धागा, तागा, सूत्र। उ०—१ तिण ऊपरि कहाव मांडियौ रांमसिंघजी गाडा, ऊंट कुंवरजी कन्हां मंगाड़ि अर धरती महां डोरौ एक छोडियौ नहीं।—द.वि.

उ०—२ नथ रौ काळौ डोरौ सदा तण्योड़ौ रैवतौ।—रातवासौ

मुहा०—डोरौ-ई नहीं छोडणौ—कुछ भी शेष नहीं रखना, सब ले लेना।

२ स्त्रियों के शिर के बाल गूंथने के लिए उपयोग में लिया जाने वाला मोटा धागा। उ०—डोरा डिगमगता आठी खुल डुलती, तिरछी झांकणियां बरछी-सी तुलती। दुरबळ लाजाळू साळू में दीखै, भांमण भूखाळू ब्याळू बिन बीखै।—ऊ.का.

यौ०—आटी डोरा, आठी-डोरा।

३ पुरुषों के गले में धारण करने का सोने या चांदी का बना आभूषण। उ०—नणदल बाई रै गहणौ ई घड़ाय, ओ थां पर वारी रे हजा, देवरजी नखराळा रै डोरौ माठियां ओ राज।—लो.गी.

४ विवाह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कन्या पक्ष वालों की ओर से दिया जाने वाला धन, टीका।

क्रि०प्र०—आणौ, देणौ।

५ विवाह संबंध स्थापित करने के लिए लड़के के माता-पिता कन्या के तथा कन्या पक्ष वालों की ओर से लड़के के दायें हाथ की कलाई पर बांधा जाने वाला मांगलिक धागा।

उ०—इतरै तौ इण रा विहाव सारू सगपण सांधियौ। चित्रगढ़ रौ फूलांणी इंद्रभांण, जिण रा बेटा लिखमीदास रै डोरौ बांधियौ।

—र. हमीर

वि०वि०—कई जातियों में इस अवसर पर लड़के के माता-पिता कन्या के लिये कपड़े व मिठाई आदि ले जाते हैं और कन्या पक्ष वाले भी लड़के के माता-पिता को कपड़े आदि भेंट करते हैं तथा लड़के के लिये भी कपड़े, मिठाई, नारियल, मांगलिक धागा आदि भेजते हैं।

क्रि०प्र०—बांधणौ।

६ दूल्हा और दुल्हिन के विवाह के पूर्व हाथ व पांव में बांधा जाने वाला मांगलिक डोरा जिसमें लोहे की कड़ी, लाख, कपर्दिका, मरोड़ाफली तथा डोडा आदि बांधते हैं। उ०—हँस खोलत दुलहौ रांम सिया कर डोरौ री, सावित्री कमळा सिवा सचि सहित सुर भांम। आई अपणै धांम सूं, जुड़ी जनक रै धांम।—समांन बाई

क्रि०प्र०—बांधणौ।

७ विवाह के अवसर पर 'कांकण डोरा' बांधते व खोलते समय गाया जाने वाला राजस्थानी लोकगीत।

क्रि०प्र०—गाणौ।

८ रक्षार्थ अथवा कष्ट निवारणार्थ देव विशेष के नाम से अभिमंत्रित कर के बांधा जाने वाला धागा, सूत्र।

क्रि०प्र०—बांधणौ।

मि०—तांती (२)

यौ०—डोरड़ा-बंध, डोरी-डांडी, राखड़ी-डोरौ।

९ निश्चित परिमाण में कूए से पानी निकालने की जानकारी के लिये रहट के 'ऊबड़ियौ' के ऊपर लकड़ी की चरखी पर लपेटा जाने वाला सुनिश्चित लम्बाई का धागा।

वि०वि०—बैलों द्वारा 'ऊबड़ियौ' के घूमने के साथ उस पर लगी चरखी भी घूमती रहती है और पास की दूसरी धागे से भरी हुई चरखी जो घूमते हुए 'ऊबड़ियौ' पर न हो कर स्थिर लकड़ी पर लगी रहती है, उससे धागा खिंच कर घूमते हुए 'ऊबड़ियौ' के ऊपर लगी चरखी पर लिपटता रहता है। जब पूरा धागा लिपट जाता है तो वह उस समय तक एक निश्चित परिमाण में पानी निकल जाने का द्योतक होता है और एक पारी समाप्त हो जाती है। तत्पश्चात् दूसरी पारी के लिये चरखियों को बदल दिया जाता है अर्थात् 'ऊबड़ियौ' पर लगी चरखी जो भर जाती है उसे निकाल कर उसके स्थान पर स्थिर लकड़ी वाली चरखी लगा दी जाती है जो अब तक खाली हो चुकी होती है और भरी हुई चरखी को उसके स्थान पर लगा दिया जाता है। बदलने वाला भरी हुई चरखी के धागे के छोर को खाली चरखी

पर लौट देता है। इस समय बैल भी बदल दिये जाते हैं।

उ०—नाक फिरै ज्यूं चकरी वाजै, फिरै कालियौ डोरो। ओड़ पांणी करै पड़ल्यां, आगै हालै धोरी, रूपल रेत रे।—चेतमांनखा

क्रि०प्र०—उतरणौ, चढ़णौ।

१० धूलि-कणों अथवा धूम्र का वह लम्बोतरा महीन आकार जो भूमि से आकाश की ओर खूब ऊंचा बढ़ा हुआ दिखाई देता है।

उ०—१ आप रमणं'र मारग भाखरां नैं धुडां रै मारग चालिया छै। पांवां रा पोड़ां सूं जमी गूंज रही छै। खेह री डोरी आकास नैं जाय लागी छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ ऊपरां योहर रा आकरा कोयलां रा चिलमिया मेल्हजै छै। जांणी साहिजादै रा ताइत, बभूत लगायोड़ा जोगीसा छै। तिणां री हौंस मांगजै छै। मघरौ-मघरौ खांसजै छै। घरराटा हुय नै रह्या छै। जांणै आभौ मघरौ गाजै छै। धुंवै री डोरी लाग रह्यी छै सू जांणै आसाढ़ री खाली ओमां वहे छै।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—ऊठणौ, चढ़णौ, लागणौ।

११ प्रवाह (निरन्तर बहने वाली महक, सुगन्ध)।

उ०—ऊजळा बणाव किया ऊजळी चांदणी मिळि गई छै। सु आगली सखिग्रां नूं जावती लखै नहीं छै। लखाव नहीं पड़तौ छै। तिणि सौंधै रै डोरै लागी जाए छै।—रा.सा.सं.

मि०—झोली (३)

क्रि०प्र०—आणौ, ऊठणौ, छूटणौ।

१२ पिघले हुए घी आदि की पतली धारा जो शाकादि में डालते समय बंध जाती है। उ०—बकरां रा फीफर गरम पांणी सूं धोयजै छै। ललाई मिटायजै छै। पासै देगचां में रांधजै छै। घणौ घी वेसवारां मसालां सूं वणायजै छै। सीकां पासै वणै छै। आडा डोरा घी रा दीजै छै।—रा.सा.सं.

क्रि०प्र०—देणौ।

१३ शाकादि छौंकते समय डाला जाने वाला खट्टा पदार्थ. १४ आंख में दिखाई देने वाली महीन लाल नसें जो सुन्दरता व शौर्य की सूचक मानी जाती हैं। उ०—धाड़ैती गांव भांग रह्या है नै थे बाजरी में लुक रह्या हो! फिट रै नादारां थांनै! राजपूतां री आंख्यां में लाल डोरा तणग्या अर मूंछां रा बाल ऊभा ह्वैग्या। उणी वखत हाथ री दातर फेंक नै वै गांव कांनी रवांनै व्हैग्या।—रातवासौ

क्रि०प्र०—तणणौ।

१५ तलवार की धार. १६ प्रेम-सूत्र, स्नेह-बन्धन।

मुहा०—डोरी डाळणौ—प्रेम से अपनी ओर आकर्षित करना, प्रेम में फंसाना, प्रेम-पाश में बांधना।

१७ घी, तेल आदि निकालने अथवा दूध को कड़ाही आदि में हिलाने का लोहे का बना एक उपकरण जो कटोरीनुमा होता है और उसके ऊपर एक डांडी खड़े बल लगी होती है (शेखावाटी) १८ एक राजस्थानी लोक गीत. १९ चाशनी की परिपक्व अवस्था के समय जांच करने पर बनने वाला तंतु।

वि०वि०—चाशनी की परिपक्वता की जांच करने के लिये तर्जनी और अंगूठे के बीच कुछ चाशनी लेकर अंगूठे व अंगुली को परस्पर मिला कर जांच करते समय बनने वाला तंतु जो परिपक्व चाशनी के चेप के कारण बन जाता है।

रू०भे०—डोरउ, दोरौ।

अल्पा०—डोरड़ियौ, डोरड़ौ, दोरड़ौ।

मह०—डोर।

डोरौ-डांडौ-सं०पु०यौ०—किसी देव विशेष के नाम से अभिमंत्रित कर के, रक्षार्थ अथवा कष्टनिवारणार्थ बांधा जाने वाला धागा, सूत्र।

डोरचौ—देखो 'डोरियौ' (रू.भे.)

डोळ-सं०स्त्री०—१ पानी गंदा होने का भाव. २ पानी के भीतर का गंदलापन. ३ देखो 'डोळौ' (मह., रू.भे.)

४ गप्प, घसक (किसनगढ़)

५ देखो 'डौळ' (रू.भे.)

डोल—१ देखो 'डोली' (मह., रू.भे.) उ०—सरवर पांणी म्हैं गई रे, मोहन मांडी रोळ। म्हैं मोहन री कांई कियौ रे, मो पर भर भर कूडे डोल।—मीरां

२ देखो 'डोलौ' (मह., रू.भे.)

डोलकाजंत्र—देखो 'दोलाजंत्र' (रू.भे.) (अमरत)

डोलकी, डोलची—देखो 'डोली' (अल्पा., रू.भे.)

डोलण-सं०पु०—वह घोड़ा जो अपने स्थान पर बँधा शरीर हिलाता रहता हो (अशुभ)

डोळणौ, डोळबौ—१ देखो 'डोहळणौ, डोहळबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'डौळणौ, डौळबौ' (रू.भे.) उ०—पछटि घाव उडि पड़ै, पाव निरलंग पटाझर। देवळ कजि डोळियौ, खंभ जांणै कारीगर।
—सू.प्र.

डोळणहार, हारौ (हारी), डोळणियौ—वि०।

डोळवाड़णौ, डोळवाड़बौ, डोळवाणौ, डोळवावौ, डोळवावणौ, डोळवावबौ, डोळाड़णौ, डोळाड़बौ, डोळाणौ, डोळावौ, डोळावणौ, डोळावबौ—प्रे०रू०।

डोळिओड़ौ, डोळियोड़ौ, डोळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

डोळीजणौ, डोळीजबौ—कर्म वा०।

डहोळणौ, डहोळबौ—रू०भे०।

डोलणौ, डोलबौ-क्रि०अ० [सं० दोलयति, प्रा० डोलइ] १ (इधर-उधर) फिरना, चक्कर लगाना। उ०—१ स्यांम म्हांसूं ऐंडो डोलै हो। औरन सूं खेलै धमाळ, म्हांसूं मुख नहिं बोलै हो, स्यांम म्हांसूं ऐंडो डोलै हो। म्हारी गळियां ना फिरै, वांकै आंगन डोलै हो। म्हारी अंगुळी ना छुवै, वांकी बहियां मोरै हो।—मीरां

उ०—२ चौगिरद डोलिया फिरै पण अरावं आगै दाव कोई लागै नहीं।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ भ्रमण करना, घूमना। उ०—फेरी न फिरता मांग न खाता, निरभै भया पद लीना। इजगर इधर उधर नहिं डोलै, चून हरि वाकूं दीना।—स्री सुखरांमजी महाराज

३ भटकना। उ०—१ दादू सब घट मे गोविंद है, संग रहै हरि पास। कस्तूरी म्रिग में बसै, सूंघत डोलै घास।—दादू बांणी

उ०—२ वन वन डोलूं रैण दिन, धीरज धरै न लेस। पड़ पड़ ऊठूं धरण पर, दीजो मोय उपदेस।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ अगम पंथ इण इसक रै, निभै ठाकरी नांहि। डग ग्वाळणियां डोलियौ, मुर पुर पत व्रिज मांहि।—र. हमीर

४ झूलना. ५ विचरण करना। उ०—सिंह स्याळ पतंग कुंजर, सरप कीटी काग। मछ कछ होय जळां डोल्यौ, तोकूं अजहुं न आई लाज।—ह.पु.वा.

६ गतिमान होना, चलना। उ०—चाहत जोवन अधिक चित, मदन भई उन्मत्त। हीरां डोलत हंस गत, सुघड़ सहेली सथ्थ।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

७ चलायमान होना, हिलना, हटना। उ०—पवन डुलायो मेरु न डोलै। मोटा दीन वचन नवि बोलै—स्रीपाळ रास

८ कंपायमान होना, थर्राना। उ०—१ कळपांत ना नीरद नाद तोलइ। वाजित्र नादिइं गिरिराज डोलइ।—विराटपर्व

उ०—२ जळनिधि ना जळ ऊछळ्या रे, ऊधांण चढ़्या असमांन। वाहण लागा डोलिवा, जांणे चंचळ पीपळ पांन।—स्रीपाळ रास

९ डांवाडोल होना। उ०—१ सुगुरु जिणचंद सोभाग सखरी लियौ, चिहूं दिसै चंदनांमौ सवायौ। जैन सासन जिकै डोलतउ राखियौ, साखियौ जगत सगळइ कहायौ।—स.कु.

उ०—२ कितांईक कोस गया नाव दरियाव में डोलण लागी।
—बां.दा.ख्यात

१० विचलित होना। उ०—घाट ओघट वाट वेगम, काट करम कपाट खोलै। ज्यांरी सुघड़ सुरता नहिं डोलै, जिकै संत सुजांण हो।
—आसा भारती

११ अधीर होना। उ०—साथण्यां में सारो दिन खोयौ ए मिरगानैणी, थारै विन हिवड़ौ भरयौ डोलै।—लो.गी.

१२ भ्रम में पड़ना.

क्रि०स०—१३ देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)

उ०—ओरा तौ मांय धरमी ओवरी, औ रातौ पिलंग विछाय ओ। जठै गोगोजी धरमी पोढ़िया, मीडल डोलै छै वाव ओ।—लो.गी.

डोलणहार, हारौ (हारी), डोलणियौ—वि०।

डोलवाड़णौ, डोलवाड़वौ, डोलवाणौ, डोलवावौ, डोलवावणौ, डोलवाववौ—प्रे०रू०।

डोलाड़णौ, डोलाड़वौ, डोलाणौ, डोलावौ, डोलावणौ, डोलाववौ—क्रि०स०।

डोलिओड़ौ, डोलियोड़ौ, डोल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डोलीजणौ, डोलीजबौ—भाव वा०।

डुलणौ, डुलबौ, डूलणौ, डूलबौ—रू०भे०।

डोलमां, डोलमा—सं०पु० (बहु व०) महुड़ा के बीज जिनका तेल निकाला जाता है।

डोलर, डोलहर—सं०पु० [सं० दोल:] चक्कर के समान नीचे ऊपर घूमने वाला एक प्रकार का झूला जिसमें लोगों के बैठने के लिये चार पालने लगे रहते हैं। ये झूले प्राय: मेलों में लगते हैं। उ०—गीत झकोळै गोरियां, सुणतां लगै सु प्यार। हींडै डोलर हींडतां, तीज गळै तिण वार।—महादांन महड़ू

रू०भे०—डुलहर, डोलहर, डोल्लहर, डोल्हर।

यौ०—डोलरहींडो।

डोलाड़णौ, डोलाड़वौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)

डोलाड़णहार, हारौ (हारी), डोलाड़णियौ—वि०।

डोलाड़िओड़ौ, डोलाड़ियोड़ौ, डोलाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डोलाड़ीजणौ, डोलाड़ीजबौ—कर्म वा०।

डोलणौ, डोलबौ—अक०रू०।

डोलाड़ियोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डोलाड़ियोड़ी)

डोलाजंत्र—देखो 'दोलाजंत्र' (रू.भे.) (अमरत)

डोलाणौ, डोलावौ—क्रि०स०—१ चक्कर कटाना, फिराना. २ भ्रमण कराना, घुमाना. ३ भटकाना. ४ झुलाना. ५ विचरण कराना. ६ गतिमान करना, चलाना. ७ चलायमान करना, हिलाना, हटाना. ८ कंपायमान करना. ९ डांवाडोल करना. १० विचलित करना. ११ अधीर करना. १२ प्रसारित करना।

डोलाणहार, हारौ (हारी), डोलाणियौ—वि०।

डोलायोड़ौ—भू०का०कृ०।

डोलाईजणौ, डोलाईजबौ—कर्म वा०।

डोलणौ, डोलबौ—अक०रू०।

डुलाड़णौ, डुलाड़बौ, डुलाणौ, डुलावौ, डुलावणौ, डुलावबौ, डूलाड़णौ, डूलाड़बौ, डूलाणौ, डूलावौ, डूलावणौ, डूलावबौ, डोलाड़णौ, डोलाड़बौ, डोलावणौ, डोलावबौ—रू०भे०।

डोलायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चक्कर कटाया हुआ, फिराया हुआ. २ भ्रमण कराया हुआ, घुमाया हुआ. ३ भटकाया हुआ. ४ झुलाया हुआ. ५ विचलित किया हुआ. ६ गतिमान किया हुआ, चलाया हुआ. ७ चलायमान किया हुआ, हिलाया हुआ, हटाया हुआ. ८ कंपायमान किया हुआ. ९ डांवाडोल किया हुआ. १० विचरण कराया हुआ. ११ अधीर किया हुआ. १२ प्रसारित किया हुआ।

(स्त्री० डोलायोड़ी)

डोलावणौ, डोलाववौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू.भे.)

डोलावणहार, हारौ (हारी), डोलावणियौ—वि०।

डोलाविओड़ौ, डोलावियोड़ौ, डोलाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डोलावीजणौ, डोलावीजवौ—कर्म वा० ।
डोलणौ, डोलबौ—अक०रू० ।
डोलावियोड़ौ—देखो 'डोलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डोलावियोड़ी)
डोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ देखो 'डोहळियोड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'डोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डोळियोड़ी)
डोलियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (इधर-उधर) फिरा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. भ्रमण किया हुआ, घूमा हुआ. ३ भटका हुआ. भूला हुआ. ५ विचरण किया हुआ. ६ गतिमान हुवा हुआ, चला हुआ. ७ हिला हुवा, चलायमान हुवा हुआ, हटा हुआ.
८ कंपायमान हुवा हुआ, थर्राया हुआ. ९ डांवाडोल हुवा हुआ.
१० विचलित किया हुआ. ११ अधीर किया हुआ ।
(स्त्री० डोलियोड़ी)
डोळियौ—देखो 'डोहळियौ' (रू.भे.)
डोलियौ—देखो 'डोलौ' (अल्पा., रू.भे.)
डोळी-सं०स्त्री० [सं० दोला] १ कहारों द्वारा उठा कर ले जाई जाने वाली एक प्रकार की सवारी, पालकी । उ०—स्वजन वेवाहिया पूरइं भूरइं निगहिय नेह । लेई अचेत उपाडिय माडिय आंणीय गेहि । भूतळि भंमरभोलिय डोळिय जिम न चडंत । विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय ते वित्तांत ।—नेमिनाथ फागु
२ घायल या जख्मी को उठा कर ले जाने का एक उपकरण ।
उ०—१ वसंत रा केसू फूलै तिण भांत घणा घायां सूं छाया थका डोळियां झोळियां ऊपड़िया छै ।—रा.सा.सं.
उ०—२ सो घोड़ां रै जवां नूं जिका जावै तिका डोळी घालिया आवै ।
—डाढ़ाळा सूर री वात
३ दान में दी गई भूमि । उ०—इण सहर में अरहट रावळ कोई नहीं डोळियां रा अरहट च्यार तथा पांच हुसी ।
—सोजत रै मंडळ री वात
४ अहाते की छोटी दीवार (शेखावाटी) ५ २०० पन्नों की गड्डी ।
रू०भे०—डोहळी ।
डोली-सं०स्त्री० [सं० दोला, दोलिका] १ कुए से पानी खींचने का लोहे का बना बरतन. २ होली खेलते समय पानी उछालने का एक पात्र विशेष । उ०—१ होरी सतगुरु फाग रमायो, डोली सब्द ग्यांन की भर भर, अनुभव जळ वरसायो ।—श्री अचळरांमजी महाराज
उ०—२ गुलाल अबीरां री घमरोळ उठी, गुलस रो डमार गैणाग छायो, ख्याल रो भार दोन्यां ही तरफां आयो । डोल्यां रा धूवरा छणंकै छै, बाजूबंद री लूंमां बांहियां बीच खणंकै छै ।
—पनां वीरमदे री वात
३ देखो 'डोलौ' (अल्पा., रू.भे.)
अल्पा०—डोलकी, डोलची ।
मह०—डोल, डोलीड़ ।
डोलीड़—१ देखो 'डोली' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'डोलौ' (मह., रू.भे.)
डोळौ-सं०पु०—१ आंख का सफेद उभरा हुआ भाग, आंख का कोया ।
उ०—१ खोटी खोडी रा गोळा गळकाता, पीळी कोडी रा डोळा पळकाता । भमता भव सागर ममता मढ़ियोड़ी, केवळ नळियां री नळियां कढ़ियोड़ी ।—ऊ.का.
उ०—२ पग छापरौ, कांन टापरौ, आंख उंडि, निलाड़ि भूंडि, धमिया लोह गोळा, तिसिया वेउ डोळा, एवं विध वेताळ ।
—व.स.
२ नेत्र, नयन । उ०—मावड़ियौ वन मांझली, सो नह जाय सिकार । डोळा मिनकी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार ।—वां.दा.
३ मिट्टी की बनाई हुई दीवार (शेखावाटी)
[सं० दोल:] ४ विवाह करने की एक प्रथा विशेष जिसमें पिता द्वारा पुत्री को विवाह के लिए वर के घर भेज दी जाती थी । यह प्रथा मुसलमानी काल में आरम्भ हुई जो बाद में भी राजा महाराजाओं या शाही खानदानों में कई दिनों तक चलती रही ।
क्रि०प्र०—दैणौ ।
वि०—वह द्रव पदार्थ जो साफ नहीं हो, गंदा ।
रू०भे०—डुहळू ।
मह०—डोळ ।
डोलौ-सं०पु० [सं० दोल:] १ पानी भरने का पात्र. २ कुए में से पानी निकालने का पात्र. ३ कड़ाह में से खीर, दाल, कढ़ी आदि निकालने का उपकरण (बीकानेर)
(मि० डैरौ)
अल्पा०—डोलियौ डोली, डोल्यौ ।
मह०—डोल, डोलीड़ ।
डोल्यौ—देखो 'डोलौ' (अल्पा., रू.भे.)
डोल्लहार, डोल्हर—देखो 'डोलर' (रू.भे.) उ०—डोल्लहर रा पल्लड़ां रै प्रमांण ऊपरा ऊपरी लोथि लागण ढूकी ।—वं.भा.
डोव—देखो 'डोव' (रू.भे.)
डोवटी—देखो 'डोटी' (रू.भे.)
डोवणौ, डोववौ—देखो 'डोहणौ, डोहवौ' (रू.भे.)
उ०—हंजा तमीणौ हेत, सर सारोही डोवियौ । सर में पंखी ढेर, नहीं मुआ वै हंज रे ।—र.रा.
डोवणहार, हारौ (हारी), डोवणियौ—वि० ।
डोविओड़ौ, डोवियोड़ौ, डोव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
डोवीजणौ, डोवीजवौ—कर्म वा० ।
डोवियोड़ौ—देखो 'डोहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डोवियोड़ी)
डोसी-सं०स्त्री०—वृद्धा, बुड्ढी । उ०—डाही डोसी डोकरि, ते खाइ

वहू द्रांम। हाथि न लागइ हिंडतां, सोधइ सघळूं गांम।—मा.कां.प्र.

डोसो—सं०पु० (स्त्री० डोसी) १ वृद्ध, बुड्ढा। उ०—डोसै डाहेरे मिळी, कीधउ अस्यु विचार। गरभ धरइ नहिं गोरडी, सिउं समसिइ संसार?—मा.कां.प्र.

२ प्रतिष्ठित, बड़ा। उ०— तारां सोढ़ी बोली—हूवा साठी नै बुध नाठी। डोसा गढपतियां रा नाळेर पाछा मेल्हो मती।।
—वीरमदे सोनीगरा री वात

३ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

डोह—सं०पु०—१ मस्ती। उ०—इण भांत सूं गजराज मुंहड़ा आगै हीं डुलै छै। डोहां करता हमलाखाता वहै छै।—रा.सा.सं.

२ आनन्द, मजा। उ०—फतियौ फिरिसै फौज मां, मुंडा रै उरि माहि। डोहा करिसै दीनियौ, मुंसै रै घर मांहि।—पीग्रं.

क्रि०प्र०—लैणौ।

३ रसास्वादन।

क्रि०प्र०—लैणौ।

रू०भे०—डो'।

डोहणौ, डोहबौ—क्रि०स०—१ विलोड़ित करना, मथना।

उ०—१ श्री डोह्यौ कै वार मैं, भांत भांत कर भाय। सुण है प्यारी सुंदरी, तूं काहै पछताय।—गजउद्धार

उ०—२ सू ले तळाव में वड़जै छै। मांथै रा जूड़ा केसां रा छूटा छै। सू किसा नजर आवै जांणै काळा वासग तिरै छै। जळ डोहि रह्या छै जांणै रेवा नदी नै हाथी डोहळ रह्या छै।—रा.सा.सं.

२ संहार करना, नाश करना। उ०—१ कळि वाघी जैतमल कळो-धर, गज फौजां डोहण गहण। समहर भर ऊपरि नव सहसौ, ताइ ओडविजै भांण तण।—नरहरदास भांणोत चांपावत री गीत

उ०—२ समीभ्रम ऊद धुबै चंद्रहास। दळां खळ डोहंत मोहनदास।
—सू.प्र.

३ ध्वस्त करना। उ०—अर इळा आकास रै हारावळी रूप विघ्नकारी डूंगरां रा डोहणहार विघ्नविहिण परिरंभ में जुड़ण लागा।—वं.भा.

४ बरबाद करना, विगाड़ना, नाश करना। उ०—गिड़ सूर तौ वन वाड़ियां नै डोहै है अर ऊंडा ऊंडा पहाड़ी नदियां रा दहां नै गजराज डोह रहिया छै।—वी.स.टी.

५ गिराना। उ०—कइयइं माता कंठइ लागइं, कइयइं लोटइ माता आगइं। कइयइं घड़ा ना पांणी डोहणौ कइयइं हसि माता मन मोहइं।
—ऐ.जै.का.सं.

६ बार-बार ढूंढ़ना, घूम-घूम कर पता लगाना। ज्यूं—म्है थारै सारू सारी वन डोह लियौ पण थूं मिळियौ नहीं।

७ इस पार से उस पार जाना, लांघना, डाकना, नांघना।

उ०—मन सींचांणउ जइ हुवइ, पांखां हुवइ त प्रांण। जाइ मिळीजइ साजणां, डोहीजइ महिरांण।—ढो.मा.

डोहणहार, हारौ (हारी), डोहणियौ—वि०।

डोहवाड़णौ, डोहवाड़बौ, डोहवाणौ, डोहवाबौ, डोहवावणौ, डोह-वाववौ, डोहाड़णौ, डोहाड़बौ, डोहाणौ, डोहाबौ, डोहावणौ, डोहा-वबौ—प्रे०रू०।

डोहिओड़ौ, डोहियोड़ौ, डोह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डोहीजणौ, डोहीजबौ—कर्म वा०।

डो'णौ, डो'बौ, डोवणौ, डोवबौ, डोहळणौ, डोहळबौ—रू०भे०।

डोहलउ, डोहलऊ—देखो 'डोहलौ' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—गभु घरीऊ गभु घरीऊ देवि गंधारि। दुटुत्तणि डोहलउ कूड कळहि जण झुझि गज्जइ। पुरुखवेसि गइंवरि चडई सुहड जेम मनि समरु सज्जइ। गांनि रडंता बंदीयण पेखीउ हरिखु करेइ। सासु ससरा कुणवि सुं अहनिसि कळहु करेइ।—पं.पं.च.

डोहळणौ, डोहळबौ—क्रि०स० [सं० दोलयति] १ (पानी आदि) गंदा करना। उ०—सू लै तळाव में वड़जै छै। हासी-तमासौ कर रह्या छै, माथै रा जूड़ा केसां रा छूटा छै। सू किसा नजर आवै जांणै काळा वासग तिरै छै। जळ डोहि रह्या छै जांणै रेवा नदी नै हाथी डोहळ रह्या छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'डोहणौ, डोहबौ' (रू.भे.) उ०—डोहळै मीर घड़ा गज डंबर, वाजित्र नर हैमर कर वेस। आऊगति हिंदुआं ऊपरि, दस सहंसि नव सहंसउ देस।—दूदौ

डोहळणहार, हारौ (हारी), डोहळणियौ—वि०।

डोहळवाड़णौ, डोहळवाड़बौ, डोहळवाणौ, डोहळवाबौ, डोहळ-वावणौ, डोहळवाववौ, डोहळाड़णौ, डोहळाड़बौ, डोहळाणौ, डोह-ळाबौ, डोहळावणौ, डोहळावबौ—प्रे०रू०।

डोहळिओड़ौ, डोहळियोड़ौ, डोहळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डोहळीजणौ, डोहळीजबौ—कर्म वा०।

डोळणौ, डोळबौ—रू०भे०।

डोहळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ (पानी आदि) गंदा किया हुआ।

२ देखो 'डोहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डोहळियोड़ी)

डोहळियौ—सं०पु०—१ उदक से प्राप्त भूमि का स्वामी, माफी की छोटी जागीर प्राप्त व्यक्ति।

रू०भे०—डोळियौ।

डोहळी—देखो 'डोळी' (रू.भे.)

डोहलौ—सं०पु० [सं० दोहदम्, दोहदः] गर्भवती स्त्री की अभिलाषा, गर्भवती की रुचि (गर्भवती की अभिलाषा पूर्ण करना बहुत श्रेष्ठ समझा जाता है) उ०—१ इम डोहला पांमइ जेह, 'धरमसी' साह पूरइ तेह। उत्तम नर गरभइ आयउ, माता पिण आणंद पायउ।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ आस फळी माइड़ी मन मोरी, कूखइ कुमर निधांन रे। मनवंछित डोहलां सवि पूरइ, पांमइ अधिकउ मांन रे।—ऐ.जै.का.सं.

रू०भे०—डोहलड, डोहलड़।

डोहियोड़ो–भू०का०कृ०—१ विलोड़ित किया हुआ, मथा हुआ. २ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ. ३ ध्वस्त किया हुआ. ४ बरबाद किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, नाश किया हुआ. ५ गिराया हुआ. ६ बार-बार ढूंढ़ा हुआ, घूम-घूम कर पता लगाया हुआ. ७ इस पार से उस पार गया हुआ, लांघा हुआ, डाका हुआ, नांघा हुआ।

डोंढ़ो—देखो 'डांढ़ो' (रू.भे.) (अ.मा.)

डो–सं०पु०—१ नृसिंह अवतार. २ पति. ३ व्यभिचारी।

सं०स्त्री०—४ गाय (एका.)

डोड–वि० [सं० अध्यर्द्ध, प्रा० डिड्ढ] एक और आधा, डेढ़।

वि०वि०—दहाई की संख्या में बीस तथा दहाई से ऊपर की संख्याएँ जैसे सौ, हजार, लाख आदि के पहले जब इस शब्द का प्रयोग होता है तब उस संख्या को इकाई मान कर उसके आधे को जोड़ने का अभिप्राय होता है, जैसे—डोड बीसी = बीस और उसका आधा दस अर्थात् ३०, डोड सौ = सौ और उसका आधा पचास अर्थात् १५०, डोड हजार = हजार और उसका आधा पांच सौ अर्थात् १५००।

मुहा०—१ डोड चावळ री खीचड़ी न्यारी पकाणी— भिन्न मत प्रकट करना, अपनी राय अलग रखना. २ डोड चावळ री खीचड़ी पकाणी—अपने विचारों को सब से अलग रखना, अपनी अकेली राय सब से भिन्न रखना. ३ डोड दांत रो काळजो होणो—साहसी होना. ४ डोड कसणी, डोड मारणी—व्यंग कसना, ताना मारना, अपनी बड़ाई करना।

रू०भे०—डेड, डेढ़, डोढ़।

डोडवणो, डोडवबो–क्रि०स०—१ डेढ़ गुना करना, डेढ़ा करना. २ कपाट बन्द करना. ३ कार्य बन्द करना।

डोढ़वणो, डोढ़वबो, डयोडवणो, डयोडवबो, डयोढ़वणो, डयोढ़वबो—रू०भे०।

डोडहतो, डोडहत्थो, डोडहथो–सं०स्त्री०—तलवार।

उ०—१ सुमरण हरि रो दें सुरग, जता न जोव जतीह। बाट बतावण हथ वसै, हेली डोडहतीह।—रेवतसिंह भाटी

उ०—२ छत्रोहां भड़ालां पेखै आभै गिरवांण छायो, कत्तळी वार में आयो करंतो कुवाद। मांण भू लखायो सोवा पति रै आथांण मांहे, सेवांणी चखायो डोडहत्थो रो सवाद।—डूंगजी री गीत

डोडी–सं०स्त्री०—१ वह स्थान जहां से हो कर किसी घर के भीतर प्रवेश करते हैं, दरवाजा, फाटक, मुख्यद्वार. २ किसी मकान में घुसने पर सबसे पहले पड़ने वाली पोरी, वह कोठरी जो द्वार में घुसते ही होती है।

यो०—डोडी-दस्तूर, डोडी-पड़दो

३ 'जामे' की तरह का पहनने का एक वस्त्र जो 'जामे' से छोटा और लंबी 'अंगरखी' से बड़ा होता है। इसमें 'जामे' की तरह घेर भी होता है। यह राज-दरबार में पहनी जाती थी (मेवाड़)।

वि०स्त्री०—देखो 'डोडो'।

रू०भे०—डोढ़ी, डयोडी, डयोढ़ी।

डोडीदस्तूर–सं०पु०यो०—१ एक प्रकार का सरकारी लगान. २ नेग।

रू०भे०—डोढ़ीदस्तूर, डयोडीदस्तूर, डयोढ़ीदस्तूर।

डोडीदार, डोडीवांन–सं०पु०—१ द्वार पर रहने वाला सिपाही, पहरेदार, २ द्वारपाल, दरबान।

रू०भे०—डोढ़ीदार, डोढ़ीवांन, डयोडीदार, डयोडीवांन, डयोढ़ीदार, डयोढ़ीवांन।

डोडो–वि० (स्त्री० डोडी) १ किसी वस्तु का उससे आधा और अधिक, डेढ़गुना, डेढ़ा।

मुह०—डोडो करणो, डेढ़गुना करना—कपाट बन्द करना, कार्य बन्द करना।

२ कठिन, विकट. ३ तिरछा, टेढ़ा।

मुहा०—डोडो बोलणो—सीधे ढंग से बात नहीं करना, ताना मारना, कटु शब्द कहना।

सं०पु०—१ गाने में साधारण से कुछ ऊँचा स्वर. २ एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें क्रम के अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।

रू०भे०—डोढ़ो, डयोडो, डयोढ़ो।

डोढ़—देखो 'डोड' (रू.भे.)

डोढ़वणो, डोढ़वबो—देखो 'डोडवणो, डोडवबो' (रू.भे.)

डोढ़हती, डोढ़हत्थी, डोढ़हथी—देखो 'डोडहती' (रू.भे.)

डोढ़ी—देखो 'डोडी' (रू.भे.) उ०—डोढ़ी-पड़दो देखिये, सूमां घरै सिवाय। भीतर जम किंकर बिना, जीव मात्र नहँ जाय।—बां.दा.

यो०—डोढ़ी-पड़दो।

डोढ़ीदस्तूर—देखो 'डोडीदस्तूर' (रू भे.)

डोढ़ीदार, डोढ़ीवांन—देखो 'डोडीदार, डोडीवांन' (रू.भे.)

डोढ़ो—देखो 'डोडो' (रू.भे.) उ०—ओछी अंगरखियां दुपटी छिब देती, गोर्‌ढ बरड़ी जे पूरा गामेती। फैंटा छोगाळा खांधा सिर फावै, टेढ़ा डोढ़ा ह्वं डिगतो नभ ढावै।—ऊ.का.

(स्त्री० डोढ़ी)

डोर–सं०स्त्री०—१ सिंह की दहाड़. २ सिंह की गुर्राहट. ३ बाह्य ठाट, आडम्बर।

डौळ–सं०पु०—१ वैभव, ठाट, ऐश्वर्य।

२ व्यवस्था, प्रबन्ध, ढंग। उ०—१ दीसै वदन दयांमणो, डूवण जोगो डौळ। रहै हमेसां राज में, मावड़ियां री मोळ।—बां.दा.

उ०—२ चंदू रै घर रै खनै एक बाळ-सभा ही। रात नै वो बठै पढ़ण नै जातो परो, कारण घणी वेळा घर में तेल रो ई डौळ को हुतो नी।—वरसगांठ

३ दशा, स्वरूप, हालत। उ०—देखो विगड़ी देह डौळ वीगड़गो देखो। विगड़ गई सब बात लारलो लै कुण लेखो।—ऊ.का.

४ लंबे छेदों वाली एक छलनी विशेष जो प्रायः दालों का छिलका हटाने के काम आती है. ५ किसी वस्तु को गढ़ने या ठीक रूप देने का भाव. ६ किसी वस्तु विशेष से काठी के आकार की बनाई शक्ल जिसे ऊँट की पीठ पर काठी के स्थान पर रख कर बैठा जाता है।

क्रि०प्र०—करणी।

७ रंग-ढंग, तखमीना. ८ तरह, प्रकार. ९ युक्ति, उपाय।

यौ०—डौळ-डाळ, डौळ-दार।

डौळ-डाळ-सं०पु०—१ ढंग, व्यवस्था. २ उपाय, युक्ति. ३ प्रयत्न।

डौळणौ, डौळबौ-क्रि०स०—१ काट-छाँट कर सुन्दर बनाना, गढ़ना।
उ०—डौळते खगां यक सूत कीधां अडर, छौलते सकंजे सार चाढ़े। कबांण जिसा ह्वास असुर कावळी, क्रिया वाय बांण जिसा बंक काढ़े।—बां.दा.

२ स्वरूप देना, ढाँचा तैयार करना, आकृति में लाना।

३ ठीक करना, दुरुस्त करना।

डौळणहार, हारौ (हारी), डौळणियौ—वि०।

डौळवाड़णौ, डौळवाड़बौ, डौळवाणौ, डौळवाबौ, डौळवावणौ, डौळवावबौ, डौळाड़णौ, डौळाड़बौ, डौळाणौ, डौळाबौ, डौळावणौ, डौळावबौ—प्रे०रू०।

डौळिप्रोड़ौ, डौळियोड़ौ, डौळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

डौळीजणौ, डौळीजबौ—कर्म वा०।

डौळदार-वि०यौ०—सुन्दर, खूबसूरत, सुडौल।

डौळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ काट-छाँट कर सुन्दर बनाया हुआ, गढ़ा हुआ. २ स्वरूप दिया हुआ, ढाँचा तैयार किया हुआ, आकृति में लाया हुआ. ३ ठीक किया हुआ, दुरुस्त किया हुआ।

(स्त्री० डौळियोड़ी)

ड्यूटी-सं०स्त्री० [अं०] १ सुपुर्द किया हुआ कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

२ नौकरी का कार्य, चाकरी, सेवा।

क्रि०प्र०—करणी, देणी, लेणी, होणी।

३ चुंगी, महसूल।

क्रि०प्र०—लागणी।

४ कर्त्तव्य, धर्म।

क्रि०प्र०—होणी।

रू०भे०—डिपटी, डू'टी।

ड्यौड—देखो 'डौड' (रू.भे.)

ड्यौडवणौ, ड्यौडवबौ—देखो 'डौडवणौ, डौडवबौ' (रू.भे.)

ड्यौडहती, ड्यौडहत्थी, ड्यौडहथी—देखो 'डौडहती' (रू.भे.)

ड्यौडी—देखो 'डौडी' (रू.भे.)

ड्यौडी-दस्तूर—देखो 'डौडीदस्तूर' (रू.भे.)

ड्यौडीदार, ड्यौडीवांन—देखो 'डौडीदार, डौडीवांन' (रू.भे.)

ड्यौडौ—देखो 'डौडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ड्योडी)

ड्यौढ़—देखो 'डौड' (रू.भे.)

ड्यौढ़वणौ, ड्यौढ़वबौ—देखो 'डौडवणौ, डौडवबौ' (रू.भे.)

ड्यौढ़हती, ड्यौढ़हत्थी, ड्यौढ़हथी—देखो 'डौडहती' (रू.भे.)

ड्यौढ़ी—देखो 'डौडी' (रू.भे.)

ड्यौढ़ीदस्तूर—देखो 'डौडी-दस्तूर' (रू.भे.)

ड्यौढ़ीदार, ड्यौढ़ीवांन—देखो 'डौडीदार, डौडीवांन' (रू.भे.)

ड्यौढ़ौ—देखो 'डौडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ड्योढ़ी)

ढ

ढ—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला में चौदहवां व्यञ्जन जो टवर्ग का चौथा वर्ण है। यह मूर्धन्य-स्पर्श व्यंजन है। इसके उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग किंचित् मुड़ कर कठोर तालु को स्पर्श करता है। यह सघोष महाप्राण है।

ढंक-सं०पु०—१ एक प्रकार का पक्षी (जैन) २ कौआ (जैन)
३ कुम्हार जाति का एक जैन उपासक (जैन)
४ देखो 'ढाकणो' (मह., रू.भे.)

ढंकण-सं०पु०—१ चार इन्द्रियों वाले जीव की एक जाति (जैन)
२ देखो 'ढाकणो, (मह., रू.भे.)

ढंकणउ—देखो 'ढाकणो' (रू.भे.)

ढंकणियौ—देखो 'ढाकणो' (अल्पा., रू.भे.)

ढंकणी-सं०स्त्री०—१ देखो 'ढाकणो' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'ढाकणी' (रू.भे.)

ढंकणो—देखो 'ढाकणो' (रू.भे.)

ढकणौ, ढंकवौ—देखो 'ढाकणो, ढाकवौ' (रू.भे.)
उ०—१ गहके आरंगपुर सारंग सुर गावै, वांणिक दीठांई नीठां बणि आवै। भूलर भांखळ विन खांखळ दिन ढंक्यौ। हींडै हींडण विन हींडै हिय हंक्यौ।—ऊ.का.
उ०—२ अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रंग लाय। मारू पक्का अंब ज्यूं, झरइ ज लग्गे वाय।—ढो.मा.
उ०—३ ढंके जस जेती धरण, वडपण अंकेवार। इण वंकै 'पातल' अगै, सह संकै संसार।—जैतदांन बारहठ
ढंकणहार, हारौ (हारी), ढंकणियौ—वि०।
ढंकवाड़णौ, ढंकवाड़वौ, ढंकवाणौ, ढंकवावौ, ढंकवावणौ, ढंकवाववौ, ढंकाड़णौ, ढंकाड़वौ, ढंकाणौ, ढंकावौ, ढंकावणौ, ढंकाववौ—प्रे०रू०
ढंकिग्रोड़ौ, ढंकियोड़ौ, ढंक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ढकीजणौ, ढंकीजवौ—कर्म वा०।

ढंकियोड़ौ—देखो 'ढाकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढंकियोड़ी)

ढंकर-वि०—शून्य, निर्जन।
सं०स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य ? उ०—ढमड़मइ ढमड़मकार ढंकर, ढोल ढोळी जंगिया। सुरकरहि रणसरणाइ समुहरि, रसि समरंगिया।
—स्रीधर

ढंकुण-सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य (जैन)
२ खटमल (जैन)

ढंक्यो-वि०—१ ढका हुआ. २ अनुहावना, अप्रिय।

ढंखर, ढंखरौ-सं०पु०—वह वृक्ष जिसके पत्ते गिर गए हों, बिना पत्तों वाला वृक्ष।
वि०—१ उदासीन, खिन्न. २ असुहावना, बेढ़ंगा।
(मि० डांखरौ)

ढंग-सं०पु०—१ व्यवस्था, प्रबंध। उ०—रुळया खुळया रजपूत खिरांमण मिळगा खिटळा। वेस्य मिळ गया विकळ सूद्र कुळ रळगा सिटळा। चोड़ैधाड़ै चोर ढंग विन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नहीं किण जोग मिळ्या घर घर रा मेढ़ी।—ऊ.का.
मुहा०—ढंग करणौ—व्यवस्था करना, प्रबन्ध करना।
यौ०—ढंग-ढाळ, ढंग-ढाळौ, ढंगसर, ढंगौ-ढंग, रंग-ढंग।
२ पद्धति, प्रणाली, तरीका।
मुहा०—ढंग रौ—ढंग का होना, ठीक होना, व्यवहारिक होना, सुन्दर होना।
यौ०—ढंगसर, ढंगौ-ढंग।
३ वैभव, ऐश्वर्य. ४ उपाय, युक्ति।
मुहा०—ढंग निकाळणौ—ढंग निकालना, कोई रास्ता या युक्ति मालूम करना।
५ प्रकार, भांति, तरह, किस्म. ६ दशा, हाल।
उ०—१ तिसड़ै सैं विजै रोइ अर कहियौ—भोपतजी रौ इसड़ौ ढग हुऔ। भोपतजी वैकुंठ सिधाया।—द.वि.
उ०—२ डहती डूली-सी भूली ढंग ढांगै। मोटी आंख्यां री रोटी मुख मांगै। तोता बोता में रैंता तुतळाता, बातां बीसरगा वैंता वतळाता।—ऊ.का.
मुहा०—ढंग माथै लाणौ—ढंग पर लाना, अपने कार्य के योग्य बनाना।
यौ०—ढंग-ढ़ाळ, ढंग-ढ़ाळौ।
७ स्वरूप, बनावट, ढांचा। ज्यूं—आ पौळ दूजै ढंग री बणियोड़ी है।
८ लक्षण, आभास। ज्यूं—इण कांम रै होवण रौ ढंग को दीखै नी।
यौ०—ढंग-ढ़ाळ, ढंगढ़ाळौ, रंग-ढ़ंग।
९ चाल-ढ़ाल, आचरण। उ०—करहै असवारी कियां, सोना हरणी संग। उण ढोला ज्यूं आपरौ, ढोलो मांनै ढंग।—वां.दा.
मुहा०—ढंग बरतणौ—ढंग से चलना, अच्छा आचरण करना, व्यवहारिक होना, शिष्टाचार दिखाना, मितव्ययिता से काम चलाना।
यौ०—ढंग-ढ़ाळ, ढंग-ढ़ाळौ, ढंगसर, ढंगौ-ढ़ंग।

ढंग-उजाड़-सं०स्त्री०—घोड़े के दुम के नीचे की भँवरी (अशुभ)

ढंगढ़ाळ, ढंगढ़ाळौ-सं०पु०यौ०—१ व्यवस्था, प्रवन्ध. २ दशा, हालत. ३ लक्षण, आभास. ४ चाल-ढ़ाल, आचरण।

ढंगणौ, ढंगवौ-क्रि०स०—१ (अनाज आदि) निश्चित परिमाण के माप से मापना. २ तोलना।

ढंगसर-वि०यौ०—१ ठीक, अच्छा। उ०—मकांन वण्योड़ौ-ई ढंगसर

हो. २ क्रमशः. ३ सुचारु।
ढंगियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (अनाज आदि) निश्चित परिमाण के माप से मापा हुआ. २ तोला हुआ।
(स्त्री० ढंगियोड़ी)
ढंगी-वि०—१ खेल में हारा हुआ. २ प्रतियोगिता में पिछड़ जाने वाला।
संपु०—मेहतर, भंगी।
ढंगो-ढंग-वि०यौ०—१ उचित स्थान पर. २ व्यवस्थित।
ढंचौ—देखो 'ढूंचौ' (रू.भे.)
ढंढ़-संपु०—१ पुराना तालाव जो काश्त के काम आता हो।
२ कीचड़, पंक (जैन)
वि०—मूर्ख। उ०—अंगार तणी वेटी, दाहज्वर तणी वहिनि, साप माथइ सउथउ फाडइ, जिसी केवलिइं हालाहलि विखि जडी हुइ, इसी ढंढ़ स्त्री।—व.स.
ढंढ़ण-संपु०—१ एक ऋषि का नाम (जैन) ०—धन-धन स्त्री ढंढ़ण रिखि, नेमि प्रसंसयउ जेहौ जी। अलाभ परिसउ जिण सह्यउ, दुरवळ कीधी देहौ जी।—स.कु.
ढंढ़णौ, ढंढ़वौ—देखो 'ढूंढ़णौ, ढूंढ़वौ' (रू.भे.)
ढंढ़ाड़—देखो 'ढूंढ़ाड़' (रू.भे.)
ढंढ़ाळणौ, ढंढ़ाळवौ—देखो 'ढंढ़ोळणौ, ढंढ़ोळवौ' (रू.भे.)
ढंढ़ाळियोड़ौ—देखो 'ढंढ़ोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढंढ़ाळियोडी)
ढंढ़ाहर—देखो 'ढूंढ़ाड़' (रू.भे.)
ढंढ़ी—देखो 'ढांढ़ी' (रू.भे.)
ढंढ़ेर-संपु० (वहु व०) मरे हुए पशुओं की हड्डियां, अस्थि-पंजर।
ढंढ़ेरौ, ढंढ़ेरची-संपु०—डिंढ़ोरा पीटने वाला। उ०—नगर मध्य आया तिसे रे, ढंढ़ेरा नो ढोल। राजा वाजा सांभळी रे, वोलै एहवा वल रे।—प.च.चौ.
ढंढ़ेरणौ, ढंढ़ेरवौ—देखो 'ढंढ़ोळणौ, ढंढ़ोळवौ' (रू.भे.)
ढंढोरणहार, हारौ (हारी), ढंढ़ोरणियौ—वि०।
ढंढ़ोराड़णौ, ढंढ़ोराड़वौ, ढंढ़ोराणौ, ढंढ़ोरावौ, ढंढ़ोरावणौ, ढंढ़ोराववौ —प्रे०रू०।
ढंढ़ोरिओड़ौ, ढंढ़ोरियोड़ौ, ढंढ़ोरचोड़ौ—भू०का०कृ०।
ढंढ़ोरीजणौ, ढंढ़ोरीजवौ—कर्म वा०।
ढंढ़ोरियौ-संपु०—डिंढ़ोरा पीटने वाला, घोषणा करने वाला।
ढंढ़ोरियोड़ौ—देखो 'ढंढ़ोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढंढ़ोरियोड़ी)
ढंढ़ोरौ-संपु०—१ वह ढोल जिसे वजा वजा कर किसी वात की घोषणा की जाय।
मुहा०—ढंढ़ोरौ पीटणौ—ढोल वजा कर प्रचार करना, चारों ओर जताना।
२ वह घोषणा जो ढोल वजा कर की जाय। उ०—१ तद मोजड़ी राजा उवा देखनै ढंढ़ोरौ फेरियौ, कहियौ इयं मोजड़ी री जोड़ी पैदास करौ तौ जैनुं आधौ राज अर वेटी परणाऊं।—चौवोली
उ०—२ राजा ढंढ़ोरौ फेरियौ, प्रगट नांम म्हारौ लीजौ रे।
—जयवांणी
मुहा०—ढंढ़ोरौ फेरणौ—देखो 'ढंढ़ोरौ पीटणौ'।
रू०भे०—ढंडोळौ, ढंढ़ोळौ, ढिंढ़ोरौ।
ढंढ़ोळणौ-वि०—१ घुमाने वाला, फिराने वाला। उ०—भांजणौ त्रिवेधी घड़ा, भेळणौ भिड़ज भालै। ढाहणौ गयंदां खेती, ढंढ़ोळणौ ढाल। आगळी दळां अभंग जैतखंभ हुवौ जुधै, जोधाहरौ जगजेठ जोध जगमाल।—जगमाल राठौड़ रौ गीत
२ तलाश करने वाला, ढूंढ़ने वाला. ३ लूटने वाला. ४ संहार करने वाला, मारने वाला. ५ पीटने वाला. ६ नगारा, ढोल आदि वजाने वाला. ७ सहलाने वाला. ८ टटोलने वाला।
ढंढ़ोळणौ, ढंढ़ोळवौ-क्रि०स०—१ लूटना। उ०—१ कंध कुहाड़ी करि मिळै, तौ पाछी वळै कटक्क। नहीं गढ़ ढंढ़ोळस्यै, लेस्यै नगर झटक्क।—स्रीपाळ रास
उ०—२ दखणी दहवाटां किया, दौलतावाद डरिया। गज थाट कीध गहट्ट, ढंढ़ोळै हाट चौहट्ट।—गु.रू.वं.
उ०—३ वहलोल साहि सउं वोलि वोल, ढीली ढंढ़ोळि वावाड़ि ढोल। पुर फतै लाइ झींझणू पाइ, राखिया वांह दे रोपि राइ।
—रा.ज.सी.
उ०—४ विधूंस्यौ देस कियो सहि चक्कि, कमध्वज दीठा मेछ कटक्कि। महम्मद मारण मोटिम मल्ल, ढंढ़ोळण ढिल्लिउ एकम ढल्ल।—रा.ज. रासौ
२ संहार करना, मारना. ३ पीटना, मारना. ४ (नगारा, ढोल आदि) वजाना, पीटना.
५ घुमाना, फिराना (लाठी, ढाल आदि) ६ तलाश करना, ढूंढ़ना।
उ०—१ सोळंकी सारै मछर मारै, ढंढ़ोळै पहाड़। वाळीसा वोए फौजां ढोए, मलवट्टै मेवाड़।—गु.रू.वं.
उ०—२ ले पायै धानिया मेर, साखा कर-कर वाढ़ै। वळावंध ढंढ़ोळ 'कमौ', अळगा हू काढ़ै।—गु.रू.वं.
७ टटोलना, ढूंढ़ना। उ०—ढाढ़ी एक संदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण वळि कुइला भई, भसम ढंढ़ोळिसि जाइ।—ढो.मा.
८ सहलाना। उ०—प्रह फूटी दिसि पुंडरी, हणहणिया हय-थट्ट। ढोलइ धण ढंढ़ोळियउ, सीतळ सुंदर घट्ट।—ढो.मा.
ढंढ़ोळणहार, हारौ (हारी), ढंढ़ोळणियौ—वि०।
ढंढ़ोळवाड़णौ, ढंढ़ोळवाड़वौ, ढंढ़ोळवाणौ, ढंढ़ोळवावौ, ढंढ़ोळवावणौ, ढंढ़ोळवाववौ, ढंढ़ोळाड़णौ, ढंढ़ोळाड़वौ, ढंढ़ोळाणौ, ढंढ़ोळावौ, ढंढ़ो-ळावणौ, ढंढ़ोळाववौ—प्रे०रू०।
ढंढ़ोळिओड़ौ, ढंढ़ोळियोड़ौ, ढंढ़ोळ्योडौ—भू०का०कृ०।

ढंढोळणौ, ढंढोळबौ—कर्म वा०।

ढंढूळणौ, ढंढूळबौ, ढंढोरणौ, ढंढोरबौ, ढड़ाळणौ, ढड़ाळबौ, ढम-ढोळणौ, ढमढोळबौ—रू०भे०।

ढंढोळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ टूटा हुआ, छिना हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ पीटा हुआ, मारा हुआ. ४ (नगारा, ढोल आदि) बजाया हुआ, पीटा हुआ. ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ. ६ तलाश किया हुआ, ढूंढ़ा हुआ. ७ टटोला हुआ, ढूंढ़ा हुआ. ८ सहलाया हुआ।

(स्त्री० ढंढोळियोड़ी)

ढंढोळौ—देखो 'ढंढोरौ' (रू.भे.) उ०—रातां जागण री जंगळ में रोळौ। ढांणी ढांणी में फिरतौ ढंढोळौ। धुणता नर माथा चुणता घर धाड़ा। पाबू हरबू रा सुणता परवाड़ा।—ऊ.का.

ढंपणौ, ढंपबौ—क्रि०अ०—आच्छादित होना, ढक जाना।

उ०—सब सेन हल्लिय सत्थ, पाथोद लहर प्रभत्त। उड गिरद ढंपिय अक्क, चकचौंध हुय चहु चक्क।—केहरप्रकास

ढंपियोड़ो—भू०का०कृ०—आच्छादित हुवा हुआ, ढंक गया हुआ।

(स्त्री० ढंपियोड़ी)

ढंळक—सं०स्त्री०—सेना, फौज (वां.दा.)

ढ—सं०पु०—१ ढोल. २ भैरव. ३ यंत्र. ४ ढक्कन, ५ मृग. ६ दांत. ७ गधा. ८ स्वाद. ९ शब्द।

सं०स्त्री०—१० बिल्ली (एका.)

वि०—निर्गुण (एका.)

ढइंचाळ—देखो 'ढींचाळ' (रू.भे.) उ०—तळहटी आइ रोड़िय तवल्ल, ढइंचाळ पूठी ढळकती ढल्ल।—रा.ज.सी.

ढक—सं०पु० [सं० ढक्का] १ बड़ा ढोल। उ०—मधुर ध्वनि गाजइ रे अपार, सुभिक्षइ जय ढक वाजइ सार।—नळ-दवदंती रास

२ मूली नामक तरकारी (जैसलमेर)

रू०भे०—ढकी, ढकौ, ढक्क, ढक्कु।

३ देखो 'ढाकणौ' (मह., रू.भे.)

ढकचाळ, ढकचाळौ—देखो 'धकचाळ, धकचाळौ' (रू.भे.)

उ०—१ रांणी जाया च्यार हजार, सूर सबळ मोटा जूंझार। दोड़्या ले करवाळ, धूम मचायो मांडयो ढकचाळ।—प.च.चौ.

उ०—२ मची घन लूंबी कूह कराळ। चहौ ढिग होय रह्यौ ढकचाळ —राज विलास

ढकण—देखो 'ढाकणौ' (मह., रू.भे.)

ढकणउ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)

ढकणसरीर—सं०पु०—वस्त्र (अ.मा.)

ढकणि—देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढकणी—१ देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'ढाकणी' (रू.भे.) उ०—कोरौ कळस कुंभार, वणावै आखा लावै। व्यावां वेहां रोप, नेग विन नौरै पावै। खोपर ढकणी खिडा, वीर वनड़ौ वण ज्यावै। माटी मंगळकार, निरंतर काज सरावै।—दसदेव

ढकणौ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)

ढकणौ, ढकबौ—क्रि०अ०—१ आच्छादित होना, ढका जाना।

उ०—भड़ सोई वौ भरोसा दारतौ पहला पड़गौ नैं पछैं पाखती मालक धावां ढक मुरछा आय पड़ियौ।—वी.स.टी.

२ देखो 'ढाकणौ, ढाकबौ' (रू.भे.)

ढकणहार, हारौ (हारी), ढकणियौ—वि०।

ढकवाड़णौ, ढकवाड़बौ, ढकवाणौ, ढकवाबौ, ढकवावणौ, ढकवाववौ, ढकाड़णौ, ढकाड़बौ, ढकाणौ, ढकाबौ, ढकावणौ, ढकाववौ—प्रे०रू०

ढकिश्रोड़ौ, ढकियोड़ौ, ढक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढकीजणौ, ढकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

ढकवत्थुळ—सं०पु० [सं० ढकवास्तुल] एक प्रकार की हरी तरकारी (जैन)

ढकियोड़ो—भू०का०कृ०—१ आच्छादित हुवा हुआ, ढका गया हुआ.

२ देखो 'ढाकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढकियोड़ी)

ढकी—देखो 'ढक' (२) (रू.भे.)

ढकेलणौ, ढकेलबौ—देखो 'धकेलणौ, धकेलबौ' (रू.भे.)

ढकेलियोड़ो—देखो 'धकेलियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढकेलियोड़ी)

ढकोळौ—देखो 'ढळौ' (रू.भे.)

उ०—कोई खोदवानैं तौ मजूरी काज आता। गैंलागीर आता सौ ढकोळा नांखि जाता।—शि.वं.

ढकोसळौ—सं०पु० [सं० ढंग+सं० कौशल] मतलब साधने या धोखा देने के लिये किया जाने वाला आयोजन, आडम्बर, पाखण्ड।

क्रि०प्र०—करणौ, फैलाणौ।

यौ०—ढकोसळावाज।

ढकौ, ढक्क—देखो 'ढक' (रू.भे.) उ०—१ काहळ कळयळ ढक्क बूक त्र'बक नीसांणा। तउ मेल्हीउ भगदत्ति राइ गजु करीउ सढ़ांणा। —पं.पं.च.

उ०—२ त पइसारउ संघह कियउ, वज्जहि वज्जंतेहि। जिम रांमहि अवडा नयरि, ढक्क बुक्क पमुहेहि।—ऐ.जै.का.सं.

ढक्कण—देखो 'ढाकणौ' (मह., रू.भे.)

ढक्कणौ, ढक्कबौ—१ देखो 'ढकणौ, ढकबौ' (रू.भे.)

उ०—धाये बद्दळ धूम के, छाये छिति ढक्क।—वं.भा.

२ देखो 'ढाकणौ, ढाकबौ' (रू.भे.)

ढक्कारव—सं०पु०—४९ क्षेत्रपालों में से ३०वां क्षेत्रपाल।

ढविकयण—वि०—आच्छादित करने वाला। उ०—धर-अंवर-ढविकयण, वेद-ब्रह्मा-विसतारण। त्रिभुवन-तारण-तरण, सरण-असरण-साधारण।—ह.र.

ढक्कियोड़ौ—देखो 'ढाकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढक्कियोड़ी)

ढक्कु—देखो 'ढक' (रू.भे.) उ०—मधुर स्वरी करीउ गाजइं, जांणे सुभिक्ष भूपति आवतां जय ढक्कु वाजइं ।—व.स.

ढगण-सं०पु० [सं०] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है ।

ढगमगणौ, ढगमगवौ—देखो 'डगमगणौ, डगमगवौ' (रू.भे.)
उ०—मुड़ै माळवौ आज चीतोड़ मचकोड़तौ, छात री छां रणथंभ छायौ। ढेलड़ी ढगमगी कोट गढ़ धूजिया, आगरौ बीयै औ 'माल' आयौ ।—राव मालदेव रौ गीत

ढगमगियोड़ौ—देखो 'डगमगियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढगमगियोड़ी)

ढगळ—१ देखो 'ढळौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ ढूंग उघाड़ै ढगळ, मूंछ मुख घुरड़ मुंडावै । जन्मभूमि में जाय भीख ले जन्म भंडावै ।
—ऊ.का.

उ०—२ छह गज कळी कांगरा छाजा, पड़ियां ढगळ हुवै पाखांण । भाखै कमंध सुणौ भूपतियां, कीरत महल अमर कमठांण ।
—राव गांगौ

उ०—३ कांकड़ प्रबळ वाहणी काढ़ै, महपत सबळ घणा मल मांण । सत्रहर ढगळ करै सह सूधा, दळ चावार फेरै दईवांण ।
—वरजूबाई

ढगळणौ, ढगळबौ—क्रि०स०—प्रहार करना ।

ढगळियोड़ौ—भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ ।
(स्त्री० ढगळियोड़ी)

ढगली—देखो 'ढिगली' (रू.भे.)

ढगळौ—देखो 'ढळौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—लाज न लेखइ लोक नी, लाही रही निमेख । घर अंबर ढगळइ थसिह ? सिउं सळसळसिइ सेख ।—मा.कां.प्र.

ढगलौ—देखो 'ढिगलौ' (रू.भे.)

ढगास-सं०पु०—ढेर, राशि ।

ढचकौ—सं०पु०—१ खांसी चलने की क्रिया या भाव ।
२ देखो 'धचकौ' (रू.भे.)
रू०भे०—ढचरकौ ।

ढचरकौ-सं०पु०—१ लंगड़ा कर चलने की क्रिया या भाव.
२ चाल विशेष की क्रिया ।
उ०—मालदे दूसरा हूंत न धरै मगज, सरव तज वांक चख राख समळा । करंती नहीं पाड़ोसियां ढचरका, कमंध सूं लचरका लिये कमळा ।—
३ देखो 'ढचकौ' (रू.भे.)

ढचरी-सं०स्त्री०—प्रेतनी, डायन । उ०—ढिग आविय लार लियां ढचरी, कंकाळण चारण तूं कछरी ।—पा.प्र.
वि०—वृद्धा, बुड्ढी, असक्त ।

ढचरौ-वि० (स्त्री० ढचरी) वृद्ध, बुड्ढा, अशक्त ।
उ०—दत्ता सुराड़ा दोय, कीरत रा कीधा 'कमै' । हमै न ढचरौ होय, माग न झालै 'मूळसी' ।—अज्ञात
सं०पु०—ढंग, व्यवस्था ।

ढढाळणौ, ढढाळबौ—देखो 'ढंढोळणौ, ढंढोळबौ' (रू.भे.)

ढड्ढ, ढड्ढर-सं०पु० [सं० ढड्ढर] १ वक्षस्थल ।
उ०—केते होदन कंगुरां, खुरताळ खणक्कै । कंपि कळेजां कै कटै, कै ढड्ढर ढक्कै ।—वं.भा.
२ राहुदेव का नाम (जैन) ३ एक प्रकार की ध्वनि विशेष (जैन)

ढणणंक-सं०स्त्री०—एक ध्वनि विशेष ।

ढणहण-सं०स्त्री०—किसी पदार्थ के चूने, टपकने, रिसने या गिरने की क्रिया या भाव । उ०—तउ कुमर निच्छयं जणणि जांणेवि ढणहणं नयणि नीर झरंती ।—ऐ.जै.का.सं.

ढ'णौ, ढ'बौ—देखो 'ढहणौ, ढहबौ' (रू.भे.)
उ०—जत्र तत्र फबतौ 'जसौ', लियां खत्रवट लाज । छत्र हुतौ छत्र धारियां, अत्र ढयौ दिन आज ।—ऊ.का.

ढपणौ, ढपबौ-क्रि०स०—आच्छादित करना, ढकना ।
उ०—आप रहंदे अध अळग, पर छिद्रं निस दीह ढपंदे ।
ढप्पणौ, ढप्पबौ—रू०भे० । —केसोदास गाडण

ढपला-सं०पु० (बहु व०) १ ढोंग, आडम्बर, पाखण्ड ।
उ०—१ दुनिया नै ठागौ बतावण सारू अै झाड़ागर ढपला करै । अै तौ फगत रिपिया कमावण री अटकळां है ।—वांणी
उ०—२ रांणी मांडया ढपला नै सोगौ रे, माहरै व्हालां को पड़ै वियोगौ रे ।—जयवांणी
क्रि०प्र०—करणा ।
२ बहाना, हीला ।
क्रि०प्र०—करणा ।

ढपलागारौ, ढपलाळौ-वि० (स्त्री० ढपलागारी, ढपलाळी) १ ढोंग करने वाला, आडम्बर करने वाला. २ बहाना करने वाला ।
रू०भे०—ढफलागारौ, ढफलाळौ ।

ढपियोड़ौ-भू०का०कृ०—आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ ।
(स्त्री० ढपियोड़ी)

ढपोरसंख, ढपोळसंख—देखो 'डपोरसंख' (रू.भे.)

ढप्पणौ, ढप्पबौ—देखो 'ढपणौ, ढपबौ' (रू.भे.)

ढप्पियोड़ौ—देखो 'ढपियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढप्पियोड़ी)

ढफ-वि०—मूर्ख, नासमझ ।

ढफल-सं०पु०—पाखण्ड, आडम्बर ।

ढफलागारौ, ढफलाळौ—देखो 'ढपलागारौ, ढपलाळौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढफलागारी, ढफलाळी)

ढबंदौ-सं०पु०—किसी भारी वस्तु का ऊपर से पानी में गिरने के कारण होने वाला शब्द ।

क्रि०प्र०—करणौ, बोलणौ, होणौ।

ढब–सं०पु०—१ मौका, अवसर। उ०—पीछे उठा सूं कांनो बहीर हुवो। नू सांगानेर आयो। अर रतनसीजी लूणकरणोत सांगेजी रा गांमा ठिकांणे माजन रा तिणां नूं कयो, 'सांगेजी मूं म्हारो मुजरो करावो।' तद रतनसीजी सांगेजी सूं कांने री मुजरो करायो। सू हमें कांनो सदा सांगेजी खनें आवै। अर सांगेजी कांनें नूं नांनांणे री जांण अवरोसी राखियो नहीं। सू इण नूं आवै नूं दिन दोय हुवा है। पण ढब लागो नहीं, नें तीजें दिन औ कमर में कटारी घाल सांगेजी खनें गयो।—द.दा.

क्रि०प्र०—बैठणौ, लागणौ।

२ सहारा, मदद। उ०—१ ढबां खेती ढबां न्याव, ढबां व्है बूढ़ां री ब्याव।

उ०—२ ढब ढूंढ़त ढूंढ़ाड़।—अज्ञात

३ तरकीब, उपाय, युक्ति। उ०—जवाहर जो ढब सूं नित राय-जादां नें देखै। देखै ज्यों डेरै नावां-गावां-सूं उमेखै।—केहरप्रकास

४ ढंग, रीति, तौर। उ०—सफरी पकड़ण सांतरी, बैठो ढब बुगलांह। कथा बुरी करवा तणी, चोखी ढब बुगलाह।—बां.दा.

५ व्यवस्था, प्रबन्ध, इन्तजाम। उ०—ऊंट च्यार री बारूद, ऊंट दोय री सीसौ, लोहो बीकानेर सूं आपरै बळ ढब कर मंगाय लियो।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

६ मेल, मेल-जोल। ज्यूं—औ कांम म्हूं कराय देसूं, वौ म्हारै ढब री आदमी है।

क्रि०प्र०—करणौ, राखणौ, होणौ।

यौ०—ढबोढ़ब।

७ फाल्गुन मास में बजाया जाने वाला बकरी, भेड़, भेड़िया आदि के चमड़े से मढ़ा हुआ डफ।

रू०भे०—ढव।

ढबक–सं०स्त्री०—१ पानी में जल-पात्र डुबाने का भाव. २ पानी भरे जल-पात्र के हिलने से होने वाली ध्वनि. ३ पानी में किसी ठोस वस्तु के गिरने से होने वाला शब्द. ४ हल्की निद्रा, झपकी.
५ कलंक, दोष।

क्रि०वि०—झट, शीघ्र।

ढबकण–सं०स्त्री०—कूए के अन्दर पानी को समान सतह पर बताने वाला माप-दण्ड।

ढबणौ, ढबबौ–क्रि०अ०—रुकना, ठहरना, थमना।

उ०—१ इसड़ो वचन सुणि विरोध री क्रोध विसारि विजयसूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढबण रै काज रीढ़क रै समीप आपरी पीठ फाड़ि नेत्र मूंद मूरछित बाळक नूं काढ़ि नणद रै हाथ दीधौ।—वं.भा.

उ०—२ हूं आपनें बुलावण सारू पच हारी, मैंनत कर नें थाक गई, हूलसी वरण सारू वरमाळ ले केई वार हुलस चूकी, पण आप झगड़ो करता ढबौ नहीं।—बी.स.टी.

ढबणहार, हारौ (हारी), ढबणियौ—वि०।

ढबवाड़णौ, ढबवाड़बौ, ढबवाणौ, ढबवाबौ, ढबवावणौ, ढबवाववौ, ढबाड़णौ, ढबाड़बौ, ढबाणौ, ढबाबौ, ढबावणौ, ढबाववौ—प्रे०रू०।

ढबिओड़ौ, ढबियोड़ौ, ढब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढबीजणौ, ढबीजबौ—भाव वा०।

ढबियोड़ौ–भू०का०कृ०—रुका हुआ, ठहरा हुआ, थमा हुआ।
(स्त्री० ढबियोड़ी)

ढब–सं०पु०—१ तांबे का बना एक प्रकार का बड़ा और मोटा पैसा।
वि०वि०—मारवाड़ राज्य का तांबे का प्राचीन सिक्का विशेष जो महाराजा विजयसिंहजी के राज्य में प्रचलित हुआ था।

२ गुब्बारा।

रू०भे०—ढब्बू।

ढबूसाही—देखो 'ढबू' (१)

ढबूसौ–सं०पु०—हाथ को अर्द्धचन्द्राकार बना कर गर्दन पकड़ कर धक्का देने का भाव।

ढबोढ़ब–क्रि०वि०यौ०—१ ठीक ढंग से, उचित रीति से.
२ व्यवस्थित. ३ क्रमपूर्वक।
(मि० ढंगोढ़ंग)

ढब्बण, ढब्बन–सं०पु०—योद्धा (?)। उ०—ढब्बन भट भूमी बगत ढाल, करवाळ सत्रु काटन कराळ। स्वांमी संसद सुबरण समांन, जालमन कोह पै लोह जांन।—ऊ.का.

ढब्बू—देखो 'ढबू' (रू.भे.) उ०—सगळी चीजां दरी माथै बिखेरदी—सिगरेटां रा चिळकता जळपू, भांत-भांत री छापां, भांत-भांत रा गुळगुचिया······सीप रा बटण, रब्बड़ रा ढब्बू, चिड़ियां री रंग-रंगीली पांखां।—वांणी

ढभीड़—देखो 'धमीड़ौ' (मह., रू.भे.)

ढभीड़ौ—देखो 'धमीड़ौ' (रू.भे.)

ढमंक–सं०स्त्री०—वाद्य की ध्वनि।
रू०भे०—ढमक।

ढमंकणौ, ढमंकबौ—देखो 'ढमकणौ, ढमकबौ' (रू.भे.)
उ०—१ निमट्टौ 'जैत' घुरै नीसांण, खळभ्भळ होय दळां खुरसांण। महा मुहि खेत्र चढ़ै बिहु मल्ल, ढुलढ्ढुल ढोल ढमंकै ढल्ल।—रा.ज.रासो

उ०—२ ढमंकिय बाहर बाहर ढोल।—गो.रू.

ढमंकाड़णौ, ढमंकाड़बौ—देखो 'ढमकाणौ, ढमकाबौ' (रू.भे.)

ढमंकाड़ियोड़ौ—देखो 'ढमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढमंकाड़ियोड़ी)

ढमंकाणौ, ढमंकाबौ—देखो 'ढमकाणौ, ढमकाबौ' (रू.भे.)

ढमंकायोड़ौ—देखो 'ढमकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढमंकायोड़ी)

ढमंकारौ–सं०पु० (अनु०) नक्कारे की ध्वनि, ढोल की आवाज।

उ०—रूपगां हेड़ाऊ सारा सुपात पावसी रीझां, ढमकारां यंद्र गाज वजावसी ढोल। प्रथमी गावसी क्रीत थावसी समंदां पाजां, वारा वेजावसी थारा रंजावसी वोल।—महादांन महड़ू

रू०भे०—ढमकारौ।

ढमंकावणौ, ढमंकावबौ—देखो 'ढमकाणौ, ढमकावौ' (रू.भे.)

ढमंकावियोड़ौ—देखो 'ढमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमंकावियोड़ी)

ढमंकियोड़ौ—देखो 'ढमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमंकियोड़ी)

ढमंकौ—देखो 'ढमकौ' (रू.भे.)

ढमंक्कणौ ढमंक्कबौ—देखो 'ढमकणौ, ढमकबौ' (रू.भे.)

उ०—ढांणी रे ढांणी अखंडी व्है उच्छव, गाळ कसूंबौ रे ढोल ढमंक्कै। डंकै री चोट त्रंबाळ धमंक्कै, धरती रा किरसांण धमंकै। —चेतमांनखा

ढमंक्कियोड़ौ—देखो 'ढमक्कियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमंक्कियोड़ी)

ढम-सं०पु० (अनु०) नक्कारे, ढोल आदि की ध्वनि, आवाज।

उ०—विहुं दांळि ढमढम ढोल ढमकई, क्यां वाजिया रणतूर। गळी रात्रि प्रभाति अंवर, उदय ऊग्यौ सूर।—रुकमणी मंगळ

यौ०—ढमढम, ढमाढम।

ढमक-सं०स्त्री०—१ गति या चाल विशेष. २ देखो 'ढमंक' (रू.भे.)

ढमकणौ ढमकबौ-क्रि०अ०—(ढोल, नक्कारे आदि का) बजना, ध्वनि निकलना। उ०—१ साहस वसि सुरतांण दळ, समुहरि जिम दमकंत। तिम तिम ईडर सिहर वरि, ढोल गहिर ढमकंत।—श्रीधर

उ०—२ ढीली वात म ढाहि, पुण्य रौ कारज पड़तां। ढीली वात म ढाहि, न्याय सूधौ नीवड़तां। ढीली वात म ढाहि, वहुस सूं पड़ियौ बोलै, ढीली वात म ढाहि ढमकिया वाहर ढोलै। सहुकरै पूछि आगै सुजस, ढीली तठै न ढाहिजै। आवियै दाव औढमतां, कुळ धरमसीह कहाइजै।—धरमसीह

ढमकणहार, हारौ (हारी), ढमकणियौ—वि०।

ढमकवाड़णौ, ढमकवाड़बौ, ढमकवाणौ, ढमकवावौ, ढमकवाणौ, ढमकावबौ—प्रे०रू०।

ढमकाड़णौ, ढमकाड़बौ, ढमकाणौ, ढमकावौ, ढमकावणौ, ढमकावबौ—क्रि०स०।

ढमकिप्रोड़ौ, ढमकियोड़ौ, ढमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढमकीजणौ, ढमकीजबौ—भाव वा०।

ढमंकणौ, ढमंकवौ, ढमक्कणौ, ढमक्कबौ—रू०भे०।

ढमकाड़णौ, ढमकाड़बौ—देखो 'ढमकाणौ, ढमकावौ' (रू.भे.)

ढमकाड़णहार, हारौ (हारी), ढमकाड़णियौ—वि०।

ढमकाड़िप्रोड़ौ, ढमकाड़ियोड़ौ, ढमकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढमकाड़ीजणौ, ढमकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

ढमकणौ, ढमकबौ—अक०रू०।

ढमकाड़ियोड़ौ—देखो 'ढमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमकाड़ियोड़ी)

ढमकाणौ, ढमकाबौ-क्रि०स०—(नक्कारा, ढोल आदि) बजाना, ध्वनि करना।

ढमकाणहार, हारौ (हारी), ढमकाणियौ—वि०।

ढमकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

ढमकाईजणौ, ढमकाईजबौ—कर्म वा०।

ढमकणौ, ढमकबौ—अक०रू०।

ढमंकाड़णौ, ढमंकाड़बौ, ढमंकाणौ, ढमंकावौ, ढमंकावणौ, ढमंकावबौ, ढमकाड़णौ, ढमकाड़बौ, ढमकावणौ, ढमकावबौ—रू०भे०।

ढमकायोड़ौ-भू०का०कृ०—(नक्कारे, ढोल आदि) बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० ढमकायोड़ी)

ढमकारौ—देखो 'ढमंकारौ' (रू.भे.)

ढमकावणौ, ढमकावबौ—देखो 'ढमकाणौ, ढमकाबौ' (रू.भे.)

ढमकावणहार, हारौ (हारी), ढमकावणियौ—वि०।

ढमकाविप्रोड़ौ, ढमकावियोड़ौ, ढमकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढमकावीजणौ, ढमकावीजबौ—कर्म वा०।

ढमकणौ, ढमकबौ—अक०रू०।

ढमकावियोड़ौ—देखो 'ढमकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमकावियोड़ी)

ढमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—(नक्कारा, ढोल आदि) बजा हुआ, ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० ढमकियोड़ी)

ढमकौ-सं०पु० (अनु०) १ नक्कारे, ढोल आदि पर प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि। उ०—१ कूवौ पूज घर पाछी आई, फळसै बड़तां वोली यूं। फळसै में ढोलां रै ढमकै, आरतड़ी करवाये तूं।—लो.गी.

उ०—२ हसती थे भल लाज्यो, जी वनड़ा, घुड़ला थे भल ल्याव। करवा मारू देस का, ढोलां कै ढमकै आव।—लो.गी.

२ शोभा, चमक-दमक।

रू०भे०—ढमंकौ।

ढमक्कणौ, ढमक्कबौ—देखो 'ढमकणौ, ढमकबौ' (रू.भे.)

उ०—के त्रंवक वंवक वजै के ढोल ढमक्कै। के जंवुक मंडै कवल के कंक किलक्कै।—वं.भा.

ढमक्कियोड़ौ—देखो 'ढमकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमक्कियोड़ी)

ढमढ़मकार-सं०स्त्री० (अनु०) नक्कारे, ढोल आदि की ध्वनि।

उ०—ढमढ़मइ ढमढ़मकार ढंकर, ढोल ढोली जंगिया। सरकरहि रण सरणाइ समुहरि, सरस रसि समरंगिया।—श्रीधर

ढमढ़मणौ, ढमढ़मबौ-क्रि०अ०—ध्वनिमान होना, बजना।

उ०—१ ऊडी खेह थयूं अंधारूं, गयणि न सूझइ भांण। चाली दळ मुहुडासइ आव्यां, ढमढ़मिया नीसांण।—कां.दे.प्र.

उ०—२ आपइ अति बहुमांण, महिमुद सुरतांण, भूपति भुजप्रमांण रंजनि मणं। ढमढ़मइ ढोल नीसांण, पड़इ कायर प्रांण, सुहड़ युगति जांण चतुरपणं।—व.स.

ढमढ़मियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनिमान हुवा हुआ, बजा हुआ।
(स्त्री० ढमढ़मियोड़ी)

ढमढ़ेर-सं०पु०—१ वह भवन जहां कोई आबाद न हो, सूना घर।
उ०—लकड़ी थांरी रीढ़, लास रोमावळ लै'रां। ढिरसा मठ ढमढ़ेर, ईल जळ ऊंडा वेरां।—दसदेव
२ वह ढेर जो किसी वस्तु के गिरने से बन गया हो।
उ०—१ गढ़ पाड़ कियौ ढमढ़ेर। कांगरा बुरज नांख्या बिखेर।
—जयवांणी
उ०—२ कोट करि चोट उपाड़ि अळगौ करौ, बुरज गुरजां करि करौ हिवै भूक। ढाहि ढमढ़ेर गढ़ घेरि करि पाकड़ौ, करौ हिवै बंदि दिन अंध घूक।—प.च.चौ.

ढमढ़ोळणौ, ढमढ़ोळबौ—देखो 'ढंढ़ोळणौ, ढंढ़ोळबौ' (रू.भे.)

ढमढ़ोळियोड़ौ—देखो 'ढंढ़ोळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढमढ़ोळियोड़ी)

ढमाढ़म-सं०स्त्री०—ढोल आदि की ध्वनि।
क्रि०प्र०—करणी, लागणी, होणी।

ढयोड़ौ—देखो 'ढहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढयोड़ी)

ढर-सं०स्त्री० (अनु०) बकरी, भेड़ आदि को बुलाने की आवाज।
रू०भे०—ढरर।
यौ०—ढर-ढर।

ढरकणौ, ढरकबौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकबौ' (रू.भे.)
ढरकणहार, हारौ (हारी), ढरकणियौ—वि०।
ढरकवाड़णौ, ढरकवाड़बौ, ढरकावणौ, ढरकावबौ, ढरकवावणौ, ढरकवावबौ—प्रे०रू०।
ढरकाड़णौ, ढरकाड़बौ, ढरकाणौ, ढरकाबौ, ढरकावणौ, ढरकावबौ—
—क्रि०स०।
ढरकिओड़ौ, ढरकियोड़ौ, ढरक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ढरकीजणौ, ढरकीजबौ—भाव वा०।

ढरकाड़णौ, ढरकाड़बौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू.भे.)
ढरकाड़णहार, हारौ (हारी), ढरकाड़णियौ—वि०।
ढरकाड़िओड़ौ, ढरकाड़ियोड़ौ, ढरकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ढरकाड़ीजणौ, ढरकाड़ीजबौ—कर्म वा०।
ढरकणौ, ढरकबौ—अक०रू०।

ढरकाड़ियोड़ौ—देखो 'ढळकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढरकाड़ियोड़ी)

ढरकाणौ, ढरकाबौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू.भे.)
ढरकाणहार, हारौ (हारी), ढरकाणियौ—वि०।
ढरकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
ढरकाईजणौ, ढरकाईजबौ—कर्म वा०।
ढरकणौ, ढरकबौ—अक०रू०।

ढरकायोड़ौ—देखो 'ढळकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढरकायोड़ी)

ढरकावणौ, ढरकावबौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू.भे.)
ढरकावणहार, हारौ (हारी), ढरकावणियौ—वि०।
ढरकाविओड़ौ, ढरकावियोड़ौ, ढरकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ढरकावीजणौ, ढरकावीजबौ—कर्म वा०।
ढरकणौ, ढरकबौ—अक०रू०।

ढरकावियोड़ौ—देखो 'ढळकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढरकावियोड़ी)

ढरकियोड़ौ—देखो 'ढळकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढरकियोड़ी)

ढरक्कणौ, ढरक्कबौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकबौ' (रू.भे.)
उ०—कै बंदी बुल्लै बिरुद रसवीर उवक्कै। सूर ढरक्कै सम्मुही नभ हूर थरक्कै।—वं.भा.

ढरक्कियोड़ौ—देखो 'ढळकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढरक्कियोड़ी)

ढरड़कौ-सं०पु० (अनु०) ध्वनि विशेष।
क्रि०प्र०—ऊठणौ, करणौ, होणौ।

ढरड़ौ—देखो 'ढररौ' (रू.भे.)

ढरणौ, ढरबौ-क्रि०अ०—१ गिरना, लुढ़कना। उ०—गुण को न लेस ताको बडे गुणवांन कहै, दांनी कहत जाकै कौडी करतैं ढरै नहीं। कहै रणधीर भग जाय पात खड़का ते, उदर गंभीर बात तनक जरै नहीं।—र.रू.
२ देखो 'ढळणौ, ढळबौ' (रू.भे.)
ढरणहार, हारौ (हारी), ढरणियौ—वि०।
ढरवाड़णौ, ढरवाड़बौ, ढरवाणौ, ढरवाबौ, ढरवावणौ, ढरवावबौ, ढराड़णौ, ढराड़बौ, ढराणौ, ढराबौ, ढरावणौ, ढरावबौ—प्रे०रू०।
ढरिओड़ौ, ढरियोड़ौ, ढर्‌योड़ौ—भू०का०कृ०।
ढरीजणौ, ढरीजबौ—भाव वा०।

ढरर—देखो 'ढर' (रू.भे.)
यौ०—ढरर-ढरर।

ढररौ-सं०पु०—१ शैली, प्रणाली, तरीका, ढंग. २ पथ, मार्ग.
३ चाल-चलन, चरित्र, आचरण।
क्रि०प्र०—पड़णौ।
४ उपाय, युक्ति।
क्रि०प्र०—काढणौ।

रू०भे०—ढरड़ौ।

ढरियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ. २ देखो 'ढळियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० ढरियोड़ी)

ढळ–सं०पु०—१ पँवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति. २ वह नीची भूमि या पहाड़ी ढाल जो उसके स्वामी अथवा सरकार द्वारा रक्षित हो।

वि०वि०—इसमें से ग्राम लोग घास, लकड़ी आदि नहीं काट सकते तथा पशुओं को नहीं चरा सकते हैं।

रू०भे०—ढळ्ळ।

३ देखो 'ढळी' (मह., रू.भे.) (उ.र.) उ०—लूंबे खळ लागाह, दळ घेरे गढ़ दोळियां। भागल पड़ भागाह, चिड़ियां ढळ पड़ियौ 'चिमन'।—लिखमीदांन बारहठ

ढल–सं०स्त्री०—१ ढाल. २ देखो 'ढळ' (रू.भे.)

ढळकंतौ–सं०पु०—हाथी (ना.डि.को.)

ढळक–सं०स्त्री०—१ ढीला चलने की क्रिया या भाव. २ वह स्थान जो लगातार नीचा होता गया हो, ढाल, उतार. ३ लुढ़कने का भाव. ४ आंसू गिरने का भाव।

यौ०—ढळक-ढळक।

५ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव।

ढळकणौ, ढळकबौ–क्रि०अ०—१ इधर-उधर हिलना, हिलना-डुलना।

उ०—१ नाजिक अंग में नार, साथ फूलां भरि सारी। कडधज केहर लंक, भार गहणां कौ भारी। मंद हास मुळकतां, दांत चूंपां अति भळकै। वेसर भळकांदार, ढील नथ मोती ढळकै। सिणगार सारा सजै, वार गोर दूजी वणी। मूंदड़ो भळकि कर में इसो, जांण किरण सूरज तणी।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ पासो ढुळै है, हाथ लुळै है, ढीली नथ ढळकै है, प्रेम री भांई जाहर भळकै है।—र. हमीर

२ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ का आधार से नीचे की ओर गिरना. ३ लुढ़कना। उ०—१ मंड वच जेणि सेहुरा कांमण, कर गेवर मालै किरमाळ। ढूकी ढाल वेणि ढळकंती, तोरण जैतारण रिणताळ।—दूदौ

उ०—२ पारसीपोस आहीन पोस, रेवंत खेड़ि आया सरोस। तळहटी आइ रोड़िय तबल्ल, ढइंचाळ पूठि ढळकती ढल्ल।—रा.ज.सी.

उ०—३ हिंदुळता गै जूह हमल्लां। ढळकै काळी पीळी ढल्लां।
—गु.रू.बं.

उ०—४ बूढ़ा हूवा हो तेजा जेठजी, थांहरै सळ पड़िया गालै। कदै न आया पांहुणा, ए ढळकंती ढालै।—देवजी बगड़ावत री वात

४ झंडा फहरना, लहरना। उ०—हुई दळ हूकळ हालि हमल्ल। ढळक्कया नेजा आलव ढल्ल।—रा.ज. रासौ

५ आधार से नीचे की ओर सरकना, लुढ़कना. ६ चलते समय हाथों का इधर-उधर हिलना। उ०—१ खळकतइ चूडइं, भळकते कंकणि, ढळकतइ हाथि, सीति गंधोदकि हस्तोदकु दीधां।—व.स.

७ वृत्ताकार घूमना, चक्कर लगाता हुआ घूमना, फिरना. ८ मोटाई की ओर से दूसरी ओर क्रमशः पतला होता जाना।

उ०—चउरंगली पाली, जडी मूठि, सारऊ आर, त्रिहुउबंधि जलोई, वीछडी खेलीन, सली खीली, झळकती पाली, अणीयाळी धाराळी ढळकती धार, झळकती मूंठि इसी छुरी।—व.स.

ढळकणहार, हारौ (हारी), ढळकणियौ—वि०।

ढळकवाड़णौ, ढळकवाड़बौ, ढळकवाणौ, ढळकवाबौ, ढळकवावणौ, ढळकवावबौ—प्रे०रू०।

ढळकाड़णौ, ढळकाड़बौ, ढळकाणौ, ढळकाबौ, ढळकावणौ, ढळकावबौ—क्रि०स०।

ढळकिओड़ौ, ढळकियोड़ौ, ढळक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढळकीजणौ, ढळकीजबौ—भाव वा०।

ढरकणौ, ढरकबौ, ढरक्कणौ, ढरक्कबौ, ढळक्कणौ, ढळक्कबौ—
रू०भे०।

ढळकांणणौ, ढळकांणबौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू.भे.)

उ०—अकळ थाट आसमांन अर ऊपरै आंणियां। दुहरी कुंजरै ढाल ढळकांणियां। सिखर भुरजां चढी सखी साऊवांणियां। रायसिंघ सपेखै नंदगिर रांणियां।—महाराज रायसिंघ बीकानेर रौ गीत

ढळकांणियोड़ौ—देखो 'ढळकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढळकांणियोड़ी)

ढळकाड़णौ, ढळकाड़बौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू.भे.)

ढळकाड़णहार, हारौ (हारी), ढळकाड़णियौ—वि०।

ढळकाड़िओड़ौ, ढळकाड़ियोड़ौ, ढळकाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढळकाड़ीजणौ, ढळकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

ढळकणौ, ढळकबौ—अक०रू०।

ढळकाड़ियोड़ौ—देखो 'ढळकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढळकाड़ियोड़ी)

ढळकाणौ, ढळकाबौ–क्रि०स०—१ वृत्ताकार घुमाना, फिराना।

उ०—इत्यादिक मोथी आदित रा अळिया, थोथी थळवट रा थळिया वेथळिया। ढीली लांगां रा ढेरा ढळकाता, टोघड़ टुकड़ां रा खेरा खळकाता।—ऊ.का.

२ इधर-उधर हिलाना, हिलाना-डुलाना. ३ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को आधार से नीचे की ओर गिराना.

४ झंडा फहराना, लहराना. ५ आधार से नीचे की ओर सरकाना, लुढ़काना. उ०—औद्राव तणा घणा के अपाल। ढळकाय चाचरां भमर ढाल।—सू.प्र.

६ चलते समय हाथों को इधर-उधर हिलाना.

७ मोटाई की ओर से दूसरी ओर क्रमशः पतला या ढालू करते जाना।

ढळकाणहार, हारौ (हारी), ढळकाणियौ—वि०।

ढळकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

ढळकाईजणो, ढळकाईजबो—कर्म वा०।

ढळकणो, ढळकबो—अक०रू०।

ढरकाड़णो, ढरकाड़बो, ढरकाणो, ढरकाबो, ढरकावणो, ढरकावबो, ढळकाड़णो, ढळकाड़बो, ढळकावणो, ढळकावबो—रू०भे०।

ढळकायोड़ो–भू०का०कृ०—१ वृत्ताकार घुमाया हुआ, फिराया हुआ. २ इधर-उधर हिलाया हुआ. ३ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को आधार से नीचे की ओर गिराया हुआ.

४ झंडा फहराया हुआ, लहराया हुआ. ५ आधार से नीचे की ओर सरकाया हुआ, लुढ़काया हुआ. ६ चलते समय हाथों को इधर-उधर हिलाया हुआ. ७ मोटाई की ओर से दूसरी ओर क्रमशः पतला या ढालू किया हुआ।

(स्त्री० ढळकायोड़ी)

ढळकावणो, ढळकावबो—देखो 'ढळकाणो, ढळकाबो' (रू.भे.)

उ०—१ भटियल ऊभी छाजइये री छांह, हो आंसूड़ा ढळकावै कायर मोर ज्यूं।—लो.गी.

उ०—२ राजति अति एण पदाति कूंज रथ, हंस माळ बंधि लास हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय।—वेलि.

ढळकावणहार, हारो (हारी), ढळकावणियो—वि०।

ढळकाविओड़ो, ढळकावियोड़ो, ढळकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

ढळकावीजणो, ढळकावीजबो—कर्म वा०।

ढळकणो, ढळकबो—अक०रू०।

ढळकावियोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळकावियोड़ी)

ढळकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ इधर-उधर हिला हुआ, हिला-डुला हुआ. २ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ का आधार से नीचे की ओर गिरा हुआ. ३ झंडा फहरा हुआ, लहरा हुआ. ४ आधार से नीचे की ओर सरका हुआ, लुढ़का हुआ. ५ चलते समय हाथ का इधर-उधर हिला हुआ. ६ वृत्ताकार घूमा हुआ, फिरा हुआ. ७ मोटाई कीओर से दूसरी ओर पतला हुवा हुआ।

(स्त्री० ढळकियोड़ी)

ढळको–सं०पु०—नेत्रों का एक रोग विशेष (अमरत)

ढळक्कणो, ढळक्कबो—देखो 'ढळकणो, ढळकबो' (रू.भे.)

उ०—१ ढळक्कै गजां चम्मरां क्रीव ढालां। भळक्कै अणी भम्मरां श्रीछ भालां।—सू.प्र.

उ०—२ तुरकांन तलक्किय, हिंदु नलक्किय, हूर हलक्किय हेरि वरं। कर सेल भळक्किय, ढाल ढळक्किय, खाळ खळक्किय स्रोन भरं।
—ला.रा.

ढळक्कियोड़ो—देखो 'ढळकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळक्कियोड़ी)

ढळखणो, ढळखबो—देखो 'ढळकणो, ढळकबो' (रू.भे.)

उ०—ढाल खंवै ढळखती मूठ तरवार ग्रहो कर। कर दूजे रूमाल चकै काळमी डोर धर।—पा.प्र.

ढळखाड़णो, ढळखाड़बो—देखो 'ढळकाणो, ढळकाबो' (रू.भे.)

ढळखाड़ियोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळखाड़ियोड़ी)

ढळखाणो, ढळखाबो—देखो 'ढळकाणो, ढळकाबो' (रू.भे.)

ढळखायोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळखायोड़ी)

ढळखावणो, ढळखावबो—देखो 'ढळकाणो, ढळकाबो' (रू.भे.)

ढळखावियोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळखावियोड़ी)

ढळखियोड़ो—देखो 'ढळकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळखियोड़ी)

ढळणो, ढळबो–क्रि०अ० [सं० ध्वरित] १ पानी या किसी तरल पदार्थ का नीचे की ओर ढरक जाना, बहना, गिरना, सरक जाना।

उ०—मोडकी मगरी रो पांणी ढाळो ढाळ ढळियो रे। आवू थारै पा'ड़ां में अंग्रेज वड़ियो रे, क काळी टोपी रो। हां रे काळी टोपी रो रे, देस में छांवणियां नांखै रे, क काळी टोपी रो।—लो.गी.

२ गिरना, पड़ना। उ०—१ साईं दे दे सज्जना, रातइ इणि परि रून। उरि ऊपरि आंर ढळइ, जांणि प्रवाळी चूंन।—ढो.मा.

उ०—२ माघव वरसइ माहवठउं, सात सलिल एक ठाह। हूं धूजी घरणीइ ढळूं, दिइ हरणांखी! बाह।—मा.कां.प्र.

३ रखा जाना। ज्यूं—आखा ढळियोड़ा है।

४ बिछना (पलंग, जाजम आदि) ज्यूं—मांचा ढळियोड़ा है, जाजम ढळियोडी है।

५ डेरा दिया जाना, पड़ाव डाला जाना।

उ०—१ झीलाकर हिणकै ईला हुय आघा, लीला भगवत री लीला नहिं लाधा। ढाळां ढाळांतर सांतर ढळियोड़ा, वैठा नीरांतर आंतर वळियोड़ा।—ऊ.का.

उ०—२ पड़िया अस भड़ पाखती, घड़ न्यारा न्यारा। जांणक आय चौगांन में, ढळिया वणजारा।—वीरमायण

६ गमन करना, जाना। ज्यूं—फलांणो आदमी गांव सांमी ढळग्यो।

७ लौटना। उ०—ढेढ़ नांम सुण पाछा ढळिया, वाट आवता उणहिज वळिया। टाळां अठी उठी नहिं टळिया, छळी 'रांमजै' पाछा छळिया। ऊ.का.

८ ऊंट, घोड़े आदि का चरने के लिये छोड़ा जाना या चरने के लिये चल पड़ना। उ०—१ रेवारीड़ा सोजा मेरा बीर, रैण अंधारी करहा ढाळदै। गै'ली व्हैवड़ असल गिवार, करहा लद्योड़ा अब ना ढळै।
—लो.गी.

उ०—२ भूखा तिसिया थाकड़ा, राखीजै नेड़ाह। ढळिया हाथ न आवसी, गोगादे घोड़ाह।—गो.रू.

९ सूर्य, चन्द्रमा, तारों आदि का अस्त की ओर गमन करना ।

उ०—१ चांद चढ़चौ गिगनार, किरत्यां ढळ रहियां जी ढळ रहियां। अब वाई घरै पधार, माउजी मारैला जी मारैला। भाभोसा देला गाळ, वडोड़ौ वीरौ वरजैला जी वरजैला। मत दौ म्हारी वाई नै गाळ, म्हारी वाई परदेसण जी परदेसण। आ आज उडै परभात, तड़कै सासरै जी सासरै ।—लो.गी.

उ०—२ छोड छोड यूं कांई करै गै'ला ? दिन ढळग्यौ है अर म्हारै निनांण री डा' अधूरी पड़ी है ।—रातवासौ

उ०—३ ढळग्यौ दिनड़ौ जोतां वाट, वितांणौ आधौ सांवण मास । आयौ न लेवण मोटौ वीर, वनी जद नांख्या घणा निसास ।—सांझ

उ०—४ किरती माथै ढळ गई, हिरणी गई उलत्थ । सुवै नचींती गोरड़ी, उर माथै दे हत्थ ।—र.रा.

मुहा०—१ दिन ढळणौ—सूर्य का अस्ताचल की ओर गमन करना । २ दिन ढळियां—संध्या को, सायंकाल को ।

३ सूरज ढळणौ (चांद ढळणौ)—सूर्य या चन्द्रमा का अस्त की ओर जाना ।

१० व्यतीत होना, बीतना, गुजरना । उ०—१ पिव परदेसां छा रह्यौ, गया परी नै भूल । जोवनियौ ढळ जायसी, थारी है दौलत में धूळ ।—लो.गी.

उ०—२ जैसी ढळती छाया रे । राखै प्रीत सवाया रे ।—जयवांणी

उ०—३ चढ़चा भँवरजी ढळतोड़ी मांझल रात, सोयां नै कोसां पर सूरज ऊगियौ, हो म्हारा राज ।—लो.गी.

उ०—४ चढ़चौ रांणौ ढळती मांझल रात, दिनड़ौ उगायौ दूदाजी रै मेड़तै हो राज ।—मदनगोपाल

उ०—५ चौमासै में चंवरी चढनै, सांवण पूगी सासरै । भरै भादवै ढळी जवांनी, आधी रै'गी आस रै ।—चेतमांनखा

मुहा०—१ जवांनी ढळणी—युवावस्था से सनै-सनै वृद्धावस्था में प्रवेश होना। २ जोवन ढळणौ—देखो 'जवांनी ढळणी'

३ ढळता दिन—वृद्धावस्था । (मि० पड़ता दिन)

४ ढळती छाया—गुजरती हुई छाया । देखो 'ढळती-वळती छाया'। ५ ढळती जवांनी—प्रौढ़ावस्था । ६ ढळती रात—अर्ध रात्रि और उषा काल के बीच का समय । ७ ढळती-वळती छाया—छाया का चढ़ना-उतरना । हमेशा एक-सा समय नहीं रहना ।

८ ढळतौ दिन—तीसरा प्रहर, सायंकाल का समय ।

११ खैराद पर उतारा जाना, रूप दिया जाना । उ०—खातीड़ा, तू गोळ चंदण रौ रूंख, काठ घड लाज्यै रंग रौ ढोलियौ । आया-पाया रतन जड़ाव, ईसां ढळावौ जाभा हींगळू ।—लो.गी.

१२ किसी पिघले हुए, गले हुए या लेह के रूप की सामग्री का सांचे द्वारा रूप ग्रहण करना, ढाला जाना । उ०—विकसी भाता लै भतवारां वाली, चंगी चोधरण्यां सतवारां चाली । जोवन रायजादी सादी सिणगारी, नखसिख संचै में ढळियोड़ी नारी ।—ऊ.का.

मुहा०—सांचा में ढळणौ—सुन्दर रूप ग्रहण करना, सुडौल बनना ।

१३ रोग विशेष की प्रचण्डता का कम होना, रोग विशेष के प्रकोप की उग्रता का मिटना । ज्यूं—माता ढळणी, निकाळी ढळणी ।

१४ वीर गति को प्राप्त होना । उ०—जठै चांमुंडराज रा खड्ग आघात करि वाजी समेत गाजी नृसिंह आजी अंगण में खंड खंड होय ढळियौ ।—वं.भा.

१५ अवसान होना, मरना । उ०—छात ढळतै 'जसू' हुई नाका छिली, सांक तजि साह सूं करै साका । दाव पाका किया सुजस डाका दिया, जोध बांका करै नांव जाका ।—ध.व.ग्रं.

१६ कट कर गिरना, कटना । उ०—चोटियाळी कूदै चौसठि चाचरि, धू ढळिय ऊकसै धड़ । अनंत अनै सिसुपाळ ओझड़ै, झड़ मातौ मांडियौ झड़ ।—वेलि.

१७ प्रवृत्त होना, झुकना. १८ आकर्षित होना. १९ अनुकूल होना, रीझना. २० लुढ़कना. २१ देखो 'ढुळणौ. ढुळबौ' (रू.भे.)

उ०—१ मंत्री तहां मयण वसँत महीपति, सिला सिंघासण धर सधर। माथै अंब छत्र मंडांणा, चलि वाइ मंजरि ढळि चमर ।—वेलि.

उ०—२ सिर ऊपर चांमर छत्र ढळइ ।—स.कु.

२२ निगला जाना । ज्यूं—म्हारै तौ रोटी रौ कवौ ई को ढळै नी । पांणी रौ घूंट को ढळै नी ।

ढळणहार, हारौ, (हारी), ढळणियौ—वि० ।

ढळवाड़णौ, ढळवाड़बौ, ढळवाणौ, ढळवाबौ, ढळवावणौ, ढळवावबौ, ढळाड़णौ, ढळाड़बौ, ढळाणौ, ढळाबौ, ढळावणौ, ढळावबौ —प्रे०रू० ।

ढळिओड़ौ, ढळियोड़ौ, ढळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

ढळीजणौ, ढळीजबौ—भाव वा० ।

ढळपति-सं०पु०—दिल्लीपति बादशाह । उ०—मडु हुवा आयौ मुगळ, नाया ढळपति ढाल। पड़ियौ दिल्ली पोटणौ, गो रण तोड़ै गाळ । —नैणसी

रू०भे०—ढलीपत ।

ढळहळणौ, ढळहळबौ-क्रि०अ०—शिथिल होना ?

उ०—करुणा नउ निधि, वात्सल्य नउ समुद्र, नासाजाळ व्यक्तां दीसइं, अस्थिबंध ढीला ढळहळता, जिसा गांमटि अजांणि सूत्रधारि ठगठगतउ साल संचउ मेलिउ जिसिउ ।—व स.

ढळहळियोड़ौ-भू०का०कृ०—शिथिल हुवा हुआ ?

ढळांख, ढळांत-स०स्त्री०—ढालू स्थान, ढाल । उ०—धोरां ढिगे ढळांख, धूप धांमौ सोनळियौ । झिळकै झोळ धुवांख, चांदणी रूपै रळियौ । —दसदेव

ढळाई-सं०स्त्री०—१ ढालने की क्रिया या भाव ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

२ ढालने की मजदूरी ।

ढळावौ-सं०पु०—गिरती दशा, बुरा समय ।

ढळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर ढरक गया हुआ, बहा हुआ, गिरा हुआ, सरक गया हुआ. २ कट कर गिरा हुआ, कटा हुआ. ३ गिरा हुआ, पड़ा हुआ. ४ रखा गया हुआ. ५ बिछा हुआ (पलंग, जाजम आदि) ६ डेरा डला हुआ, पड़ाव डला हुआ. ७ गमन किया हुआ, गया हुआ. ८ लौटा हुआ. ९ ऊँट, घोड़े आदि का चरने के लिये छोड़ा गया हुआ, चरने के लिये निकल गया हुआ. १० सूर्य, चंद्रमा, तारों आदि का अस्त की ओर गमन किया हुआ. ११ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ, गुजरा हुआ. १२ खेंराद पर उतारा गया हुआ, रूप दिया हुआ. १३ किसी पिघले हुए, गले हुए या लेह के रूप की सामग्री का सांचे द्वारा रूप ग्रहण किया हुआ, ढाला गया हुआ. १४ किसी रोग विशेष के प्रचण्ड रूप का कम हुवा हुआ, रोग विशेष के उग्र रूप का मिटने की ओर गया हुआ. १५ वीरगति को प्राप्त हुवा हुआ. १६ अवसान प्राप्त हुवा हुआ, मरा हुआ. १७ प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ. १८ आकर्षित हुवा हुआ. १९ अनुकूल हुवा हुआ, रीझा हुआ. २० लुढ़का हुआ. २१ देखो 'ढुळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळियोड़ी)

ढळियो—१ देखो 'ढळो' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'ढाळियो' (रू.भे.)

ढलीपत—देखो 'ढलपति' (रू.भे.)

ढलैत, ढलैती-सं०पु०—ढाल बांधने वाला, योद्धा।

उ०—तिणसूं चौदह हजार असवार अेका मौजूद पास रहै नै लाख अेक रिपिया छैमाहिया देवो। तिण में सात हजार ढलैत राखूं नै हजार सात बरकमदाज रहै।—जलाल बूबना री वात

ढळो-सं०पु० [सं० ढलिः] ढेला।

वि०—मूर्ख, गँवार।

रू०भे०—डगळो, डळो, ढकोळो, ढगळो।

अल्पा०—ढळियो

मह०—डगळ, डळ, ढगळ, ढळ।

ढल्ल—१ देखो 'ढाल' (रू.भे.)। उ०—१ 'अखई' वालां आभरण, रिणमालां रिण ढल्ल। कीधा मेर प्रमांण चित, लीधां व्रत 'अजमल्ल'।—रा.रू.

उ०—२ रिण 'अचळ' जोड़ दळ ढल्ल रांम। जादम संग्रांम कज गिणत जांम। रिप जोर सोर प्रगट्टो दहन्न। कनवज्ज समर कज्ज किर अडर कन्न।—रा.रू.

उ०—३ हिडळ्ता गंजूह हमल्लां, ढळके काळी पीळी ढलां—गु रू.बं.

२ देखो 'ढोल' (रू.भे.) उ०—१ निहट्टो 'जैत' घुरै नीसांण, खळभ्भळ होय दळां खुरसांण। महामुहिं खेत्र चढ़ै विहु मल्ल, ढुळद्दुळ ढील ढमंके ढल्ल।—रा.ज. रासो

ढल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)

ढल्लीप-सं०पु० (रा० ढल्ली+सं०प) सम्राट।

उ०—कहो ग्रहफळ जद कह्या पित्य ढल्लीप प्रमांणे। कंवरपदो घण कह्यो, आयु कहि घण उपरांणे।—केहरप्रकास

ढल्लीस-सं०पु० [रा० ढल्ली+सं० ईश] बादशाह।

उ०—चाळीसो कर पातसाह पदवी नै ईं चहियो। जो बैठ तखत ढल्लीस सूं अमांनणो व्है रहियो।—केहरप्रकास

ढल्लो-वि० (स्त्री० ढल्ली) मुक्त।

क्रि०प्र०—करणो।

ढव—देखो 'ढव' (रू.भे.)

ढसणो, ढसबो-क्रि०अ०—१ ढहना, गिरना, पड़ना।

उ०—पाथर चूनो ढस पड़ै, सिरज्यां भुरज न सार। धूळ कोट नह ढसण दे, गोळां गिटणी गार।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'धसणो, धसबो' (रू.भे.)

ढसणहार, हारो (हारी), ढसणियो—वि०।

ढसवाड़णो, ढसवाड़बो, ढसवाणो, ढसवाबो, ढसवावणो, ढसवावबो—प्रे०रू०।

ढसाड़णो, ढसाड़बो, ढसाणो, ढसाबो, ढसावणो, ढसावबो—क्रि०स०।

ढसिओड़ो, ढसियोड़ो, ढस्योड़ो—भू०का०कृ०।

ढसीजणो, ढसीजबो—भाव वा०।

ढसाड़णो, ढसाड़बो—देखो 'ढसाणो, ढसाबो' (रू.भे.)

ढसाड़णहार, हारो (हारी), ढसाड़णियो—वि०।

ढसाड़िओड़ो, ढसाड़ियोड़ो, ढसाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

ढसाड़ीजणो, ढसाड़ीजबो—भाव वा०।

ढसणो, ढसबो—अक०रू०।

ढसाड़ियोड़ो—देखो 'ढसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढसाड़ियोड़ी)

ढसाणो, ढसाबो-क्रि०स०—१ ढहाना, गिराना.

२ देखो 'धसाणो, धसाबो' (रू.भे.)

ढसाणहार, हारो (हारी), ढसाणियो—वि०।

ढसायोड़ो—भू०का०कृ०।

ढसाईजणो, ढसाईजबो—कर्म वा०।

ढसणो, ढसबो—अक०रू०।

ढसाड़णो, ढसाड़बो, ढसावणो, ढसावबो—रू०भे०।

ढसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ ढहाया हुआ, गिराया हुआ।

२ देखो 'धसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढसायोड़ी)

ढसावणो, ढसावबो—देखो 'ढसाणो, ढसाबो' (रू.भे.)

ढसावणहार, हारो (हारी), ढसावणियो—वि०।

ढसाविओड़ो, ढसावियोड़ो, ढसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

ढसावीजणो, ढसावीजबो—कर्म वा०।

ढसणो, ढसबो—अक०रू०।

ढसावियोड़ो—देखो 'ढसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढसावियोड़ी)

ढसियोड़ो–भू०का०कृ०—१ ढहा हुआ, गिरा हुआ, पड़ा हुआ.
२ देखो 'धसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ढसियोड़ी)

ढहकणो, ढहकबो–क्रि०अ०—१ गिरना, पड़ना. २ धँसना, गड़ना।
ढहकणहार, हारो (हारी), ढहकणियो—वि०।
ढहकवाड़णो, ढहकवाड़बो, ढहकवाणो, ढहकवाबो, ढहकवावणो, ढहकवावबो—प्रे०रू०।
ढहकाड़णो, ढहकाड़बो, ढहकाणो, ढहकाबो, ढहकावणो, ढहकावबो—क्रि०स०।
ढहकिओड़ो, ढहकियोड़ो, ढहक्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकीजणो, ढहकीजबो—भाव वा०।

ढहकाड़णो, ढहकाड़बो—देखो 'ढहकाणो, ढहकाबो' (रू.भे.)
ढहकाड़णहार, हारो (हारी), ढहकाड़णियो—वि०।
ढहकाड़िओड़ो, ढहकाड़ियोड़ो, ढहकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकाड़ीजणो, ढहकाड़ीजबो—कर्म वा०।
ढहकणो, ढहकबो—अक०रू०।

ढहकाणो, ढहकाबो–क्रि०अ०—१ गिराना. २ धँसाना, गड़ाना।
ढहकाणहार, हारो (हारी), ढहकाणियो—वि०।
ढहकायोड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकाड़ीजणो, ढहकाड़ीजबो—कर्म वा०।
ढहकणो, ढहकबो—अक०रू०।
ढहकाड़णो, ढहकाड़बो, ढहकावणो, ढहकावबो—रू०भे०।

ढहकायोड़ो–भू०का०कृ०—१ गिराया हुआ. २ धँसाया हुआ, गड़ाया हुआ।
(स्त्री० ढहकायोड़ी)

ढहकावणो, ढहकावबो—देखो 'ढहकाणो, ढहकाबो' (रू.भे.)
ढहकावणहार, हारो (हारी), ढहकावणियो—वि०।
ढहकाविओड़ो, ढहकावियोड़ो, ढहकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकावीजणो, ढहकावीजबो—कर्म वा०।
ढहकणो, ढहकबो—अक०रू०।

ढहकावियोड़ो—देखो 'ढहकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ढहकावियोड़ी)

ढहकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ, पड़ा हुआ. २ धँसा हुआ, गड़ा हुआ।
(स्त्री० ढहकियोड़ी)

ढहढ़हणो, ढहढ़हबो—देखो 'ढहणो, ढहबो' (रू.भे.)
उ०—आदित्यकिरण निरुद्ध हुआं, हसमस हय दळे हेखारवि हरिण कन्हा हरिण त्रांठउ, उच्चैस्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमदिडिउ, दिग्गज ढहढ़ह्या, वूंब वाजी।—वं.स.

ढहढ़हियोड़ो—देखो 'ढहियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ढहढ़हियोड़ी)

ढहणो, ढहबो–क्रि०अ०—१ घर, दीवार आदि का गिर पड़ना, ध्वस्त होना। उ०—१ जेहल ताल खड़ीण ह्वै, तरवर लाकड़ होय। हरम ढहै ढूंढ़ा हुवै, जस अविकारी जोय।—बां.दा.
उ०—२ जाडी किलै सफील, मांय ज नर निवळा बसै। ढूंढ़ौ ढहतां ढील, रती न लागै राजिया।—किरपाराम
मुहा०—ढहियोड़ा घर बतावणा—ढहे हुए मकान दिखाना, निराशाजनक बातें करना।
२ गिरना, पड़ना। उ०—सूहप सीस गुंथाय कर, चंदै दिस मत जोय। कदैक चंदौ ढह पड़ै, रैण अंधारी होय।—र.रा.
३ अवसान होना, मरना. ४ नष्ट होना. ५ वीरगति को प्राप्त होना, धराशायी होना। उ०—१ खहै 'जसक्रन्न' तणी 'खड़गेस'। जिकै खग झाट ढहै जवनेस।—सू.प्र.
उ०—२ ढहै गयंद खळ ढहै प्रेत भख लहै ग्रीध पळ।—सू.प्र.
६ कटना। उ०—१ गुड़ै गज्ज पाहड़ टूंक ढहिया कूंभाथळ। वज्रपात करमाळ गुड़ि तूटै कंवू-थळ।—गु.रू.बं.
उ०—२ ढहै ढींचाळ रत खाळ खळकै धरा, जुड़ै धड़ पड़ै भड़ दड़ जड़ाळै। 'सता' विण अवर कुण साह सूं समवड़ै, पाधरै पैज मेदांन पाळै।—नैणसी
७ मिटना. ८ दूर होना. ९ दमन होना।
ढहणहार, हारो (हारी), ढहणियो—वि०।
ढहवाड़णो, ढहवाड़बो, ढहवाणो, ढहवाबो, ढहवावणो, ढहवावबो—प्रे०रू०।
ढहाड़णो, ढहाड़बो, ढहाणो, ढहाबो, ढहावणो, ढहावबो—क्रि०स०।
ढहिओड़ो, ढहियोड़ो, ढह्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहीजणो, ढहीजबो—भाव वा०।
ढ'णो, ढ'बो, ढै'णो, ढै'बो—रू०भे०।

ढहाड़णो, ढहाड़बो—देखो 'ढहाणो, ढहाबो' (रू.भे.)
उ०—सींधुरां ढहाड़ सूंवां दहाड़ विभाड़ सत्रां, धाव सिध्र बिरदाई प्रवाड़ा घरेस। तुरंगां कव्यंदां वांबराड़ भड़ां रांम ताखा, निखंगां रीझणा धाड़ जांनकी नरेस।—र.ज.प्र.
ढहाड़णहार, हारो (हारी), ढहाड़णियो—वि०।
ढहाड़िओड़ो, ढहाड़ियोड़ो, ढहाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहाड़ीजणो, ढहाड़ीजबो—कर्म वा०।
ढहणो, ढहबो—अक० रू०।

ढहाड़ियोड़ो—देखो 'ढहायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ढहाड़ियोड़ी)

ढहाणो, ढहाबो–क्रि०स० ('ढहणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ घर, दीवार आदि गिरवा देना, ध्वस्त करवा देना। उ०—अरु मिंदर रै लारै लारै महजीद कराई। सू अब तळक मौजूद है। अरु ब्रिंदावन वा गिरराज ऊपर मिंदर था सो ढहाय दीना।—द.दा.
२ गिरवाना. ३ मरवाना. ४ संहार करवाना. ५ नाश कर-

वाना. ६ धराशायी करवाना. ७ कटवाना. ८ मिटवाना. ९ दूर करवाना. १० कहलवाना ।

ढहायोड़ो—भू०का०कृ०—१ घर, दीवार आदि गिरवाया हुआ. २ गिरवाया हुआ, पटकाया हुआ. ३ मरवाया हुआ. ४ धराशायी कराया हुआ. ५ कटवाया हुआ ।
(स्त्री० ढहायोड़ी)

ढहावणौ, ढहावबौ—'ढहाणौ, ढहाबौ' (रू.भे.)
ढहावणहार, हारौ (हारी), ढहावणियौ—वि० ।
ढहाविप्रोड़ौ, ढहावियोड़ौ, ढहाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
ढहावीजणौ, ढहावीजबौ—कर्म वा० ।
ढहणौ, ढहबौ—अक० रू० ।

ढहावियोड़ौ—देखो 'ढहायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढहावियोड़ी)

ढहियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ घर, दीवार आदि गिरा हुआ, ध्वस्त हुवा हुआ. २ गिरा हुआ, पड़ा हुआ. ३ अवसान हुवा हुआ, मरा हुवा ४ वीर गति को प्राप्त हुवा हुआ, धराशायी हुवा हुआ. ५ कटा हुआ ।
(स्त्री० ढहियोड़ी)

ढांक—सं०स्त्री०—१ कलंक, धब्बा । उ०—देवळ मन में जांणियौ आज पावू मारीजसी अर हमैं भ्रलियौ पिण रय नहीं जद दूजी सगतां नै कह्यौ आपां माथै मोटी ढांक आसी ।—पा.प्र.
२ देखो 'ढाकणौ' (मह., रू.भे.)

ढांकण—देखो 'ढाकणौ' (मह., रू.भे.)
उ०—१ राखण कुळ मरजाद, अधपतियां ढांकण अडिग । आवै वर वर याद, भूलां किम भीमेण रा ।—अंबादांन रतनू
उ०—२ निज गुण ढांकण नेक नित, पर गुण गिण गावंत । अैसा जग में सुजण जण, विरळा ही पावंत ।—अज्ञात

ढांकणउ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)

ढांकणी—सं०स्त्री०—१ देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ढांकणी मैं ढोकळी, मेह वावौ मोकळौ ।—लो.गी.
२ देखो 'ढाकणी' (रू.भे.)

ढांकणियौ—देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढांकणौ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)
उ०—संवर रूपी करौ ढांकणौ, ग्यांन रूपियौ तेल । आठूं ही करम परजाळ नै, दौ रे अंधारौ ठेल ।—जयवांणी

ढांकणौ, ढांकबौ—देखो 'ढाकणौ, ढाकबौ' (रू.भे.)
उ०—१ कै किण सूं वातां करै, कै किण नै ल्यै तेड़ हो चित्ता । कै आंख्यां दोनूं ढांक दै, कै गरदन देवै फेर हो चित्ता ।—जयवांणी
उ०—२ आपणा दोख ढांकण नै काज, छोड देवै मरजादा लाज ।
—जयवांणी

उ०—३ रुकम साची कही, ढांकिया न रहै धरम । करम संभळावसी जेम छूटै करम ।—रुखमणी हरण
उ०—४ भूका पोसण हार यूं, ज्यूं जग कमळाकंत । नागां ढांकण-हार इम, जिम तरवरां वसंत ।—बां.दा.
उ०—५ रमणे रमण सिकार, सभै दळ पूर सकाजा । नौबति वाजा निहंसि, रजां ढांकै महराजा ।—सू.प्र.

ढांकियोड़ौ—भू०का०कृ०
देखो 'ढाकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढांकियोड़ी)

ढांग—सं०पु०—१ बाह्याडम्बर, पाखण्ड, ढकोसला ।
उ०—जागरणां जागै लाज न लागै, ढांगां ढिग ढूकंदा है । सुर भीण न साजै, बीण न वाजै, करमहीण कूकंदा है ।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणौ, रचणौ ।
२ कपट, छल ।

ढांगी—वि०—ढोंग रचने वाला, पाखण्डी. २ कपटी, छली, धूर्त ।

ढांगौ—वि० (स्त्री० ढांगी) आपत्तियुक्त, बुरा, खराब ।
उ०—ढहती ढूलीसी भूली ढंग ढांगै, मोटी आंख्यां री रोटी मुख मांगै । तोता बोता में रै'ता तुतळाता, वातां वीसरगा वै'ता वतळाता ।
—ऊ.का.

ढांच—सं०स्त्री०—१ पालना लटकाने का लकड़ी का बना उपकरण ।
२ देखो 'ढांचौ' (मह., रू.भे.)

ढांचियौ—देखो 'ढांचौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढांचौ—सं०पु०—१ लकड़ी का बना उपकरण विशेष जिसमें सामान भर कर पशुओं की पीठ पर लादा जाता है । उ०—१ वूंठां बीतोड़ा जांभरकै जाता, लादां विसनोई ऊंटां पर लाता । ढांचां खांचां सूं कळसा जळ ढारा, जोगी जांभै रा धुरता जसवारा ।—ऊ.का.
उ०—२ छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति, करमुक्त, यंत्रमुक्त, मुक्तामुक्त, दुस्फोट तरवारि अग्नि तेल लोहवद्ध लुडि एवंविध आयुद्ध विसेखी ढांचा भरियां ।—व.स.
२ ठठरी, पंजर. ३ किसी वस्तु के अंगों की स्थूल रूप से संयोजित वह समष्टि जो उसकी रचना की प्रारंभिक अवस्था होती है ।
अल्पा०—ढांचियौ ।
मह०—ढांच ।

ढांढ़—देखो 'ढांढ़ौ' (मह., रू.भे.)

ढांढ़की—देखो 'ढांढ़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढांढ़वाड़, ढांढ़वेड़—सं०स्त्री०—पशुधन, चौपाये पशु ।
रू०भे०—ढांढ़वेड़ ।

ढांढ़ापणौ—सं०पु०—पशुता । उ०—बोलौ, कांई इसी जूण पूरी करण रौ नांव ई 'जीवण' है ? इयै-नै मिनखापणौ कैवूं कन ढांढ़ापणौ ।
—वरसगांठ

ढांढ़ियौ—देखो 'ढांढ़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढांढी–संoस्त्रीo—१ बुड्ढी गाय. २ छोटी तलैया, पोखरा।
वि०—मूर्ख, गँवारन।
अल्पा०—ढांढ़की।
ढांढौ–सं०पु०—चौपाया पशु।
वि० (स्त्री० ढांढ़ी) मूर्ख, नासमझ। उ०—वात मांनली लपै वांढ़ां, नीत विगाड़ी निलजां नांढ़ां। मिळगी जोड़ी जांनां मांढ़ां, ढेढ़ कह्यौ ज्यूं सुणियौ ढांढ़ां।—ऊ.का.
रू०भे०—डांढौ।
अल्पा०—ढांढ़ियौ।
मह०—ढांढ़।
ढांण–सं०स्त्री०—१ ऊंट की चाल या गति विशेष। उ०—१ तरै जखड़ै उण सांढ़ नै सारणी मांडी। तिका मास एक मांहै सभाई। तिका कोस पचास जाय नै एकै ढांण पाछी आवै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
उ०—क्रम क्रम ढोला पंथ कर, ढांण म चूकै ढाळ। आ मारू बीजी महळ, आखइ भूठ एवाळ।—ढो.मा.
२ मार्ग, रास्ता. ३ नाश, संहार. ४ युद्ध, लड़ाई. ५ गढ़।
उ०—ढंढोळण ढिल्ली हैवै ढांण। संभोड़िम जेह वडा सुरतांण।
—रा.ज. रासौ
६ समूह. ७ ढंग, प्रकार, भांति. ८
उ०—बंदूक घोर उडै सोर भांण धूंवळौ रह्यौ। वाराह ऊठ खैंग पूठ भूपती ऊभौ ग्रह्यौ। भई न बाह रोक राह चाह चेत में रही। करोड़ प्रांण द्वार ढांण भांण मंडळी ग्रही।—पा.प्र.
९ ढेर। उ०—साकणी मढी हूंकार सींह, खोखरां वडां हींडै खवीह। ढळियाक गूंजुए रुधर ढांण, जोगंद्र कोयले घूंघ जांण।
—पा प्र.
१० प्रहार ? उ०—जुड़ै अर तंडळ रांण दूजा 'जगड़', ढाहण दळां बीजूजळां ढांण। अभंग रांण तणै नमख थजुआळियौ, पमंग आतां लियौ बीज पीठांण।—भाटी माहसिंह मोही रौ गीत
११ कूए पर बैल जोतने का स्थान. १२ स्थान, आवास।
उ०—ढांण सतपुर बसी छोड रजढांणियां, सूर प्रथमांणियां सुकव साखी। करै वन होम उमगांणियां कंथ कज, रांणियां वात अखियात राखी।—किसनौ आढ़ौ
ढांणी–सं०स्त्री० [सं० स्थान+रा०प्र०ई] १ एक या एक से अधिक कच्चे मकानों की वह बस्ती जो गांव से दूर खेत में बसी हुई होती है।
उ०—सुंदर सुकुलीणी भीणी साड़ी में, जुलफां सपणी जिम अपणी आड़ी में। सूनी ढांणी में सेठांणी सोती, रैंगी विणियांणी पांणी नै रोती।—ऊ.का.
२ वह भूमि जहां रेत के बहुत से टीवे हों (मालाणी)
ढांणौ–सं०पु०—१ वह स्थान जहां कूए से निकाला हुआ पानी खाली होता है. २ बहुत सी 'ढांणियां' का समूह, देखो 'ढांणी'।
३ डेरा, पड़ाव।
क्रि०प्र०—देणौ।
ढांप, ढांपण—देखो 'ढाकणौ' (मह., रू.भे.)
ढांपणउ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)
ढांपणियौ—देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)
ढांपणी–सं०स्त्री०—१ 'ढाकणी' (अल्पा. रू.भे.)
२ देखो—'ढाकणी' (रू.भे.)
ढांपणौ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)
ढांपणौ, ढांपबौ—देखो 'ढाकणौ, ढाकबौ' (रू.भे.)
उ०—१ जिकौ वादसाह गरीवां रा छिद्र ढांकै उणरा ऐब प्रभू ढांपै।—नी.प्र.
उ०—२ परणी रै वगैर सांम्हौ नहीं देखै, अजोग कांम देखण सूं आंख ढांपै।—नी.प्र.
ढांपणहार, हारौ (हारी), ढांपणियौ—वि०।
ढांपवाड़णौ, ढांपवाड़बौ, ढांपवाणौ, ढांपवाबौ, ढांपवावणौ, ढांपवावबौ, ढांपाड़णौ, ढांपाड़बौ, ढांपाणौ, ढांपाबौ, ढांपावणौ, ढांपावबौ
—प्रे०रू०
ढांपिओड़ौ, ढांपियोड़ौ, ढांप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ढांपीजणौ, ढांपीजबौ—कर्म वा०।
ढांपियोड़ौ—देखो 'ढाकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढांपियोड़ी)
ढांमक–सं०पु०—१ ढोल. २ नगारा. ३ ढोल, नगारे आदि का शब्द।
ढांहर–सं०पु०—कांटेदार वृक्ष या झाड़ी की शाखा या टहनी।
उ०—झलाइ अर गांवं मांहै खेजड़ी हुती तिण सेती च्यारे वांधा मुहकम तिण ऊपरि ढांहर वंधाड़िया। ढांहर बांधि अर पछै कुंवर स्त्री दळपतजी आपरै हाथ सरै मारिया।—द.वि.
ढा–सं०स्त्री०—१ सरस्वती, वाणी. २ नाभि. ३ गदा।
सं०पु०—४ ब्रह्मा. ५ सुमेरु पर्वत. ६ पलाश वृक्ष। (एका०)
ढाई–वि० [सं० अर्द्धद्वितीय, प्रा० अड्ढाइय] जो गिनती में दो से आधा अधिक हो। दो और आधा।
सं०पु०—बालकों द्वारा कौड़ियों से खेला जाने वाला एक प्रकार का खेल विशेष।
मुहा०—ढाई लागणी—अनुकूल अवसर मिलना।
ढाउ—देखो 'दाव' (रू.भे.)। उ०—जांणहार हुं इ तिहां अछउं मझ मनि लागउ ढाउ। तुम्ह साथिइं आवउं जउ तेडउ घणाउ करी सुपसाउ।
—विद्याविलास पवाडउ
ढाक–सं०पु०—१ पलाश का वृक्ष। उ०—ऊपर बरसात आई, तरै क्यूं ढाक-पळासिया रा आसरा किया छै।—नैणसी
२ कुम्हार का चाक।
मुहा०—ढाक चाढ़णौ—भौंचक्का करना, हक्का-बक्का करना।
३ कूल्हे की हड्डी।

मुहा०—ढाक चाढ़णी—कुश्ती का एक पेच विशेष जिसमें गिराने के लिये कूल्हे की हड्डी पर चढ़ाना।

४ ढोल। उ०—विसम ढाक स ढूकस ढमढ़मी, भरहरी भर भेरि बिहांमणि। उच्चरी तुररी कुररी जसी, सुभट ना सबि रोम ज टट्टसी।—विराटपर्व

५ रणचण्डी का वाद्य विशेष। उ०—वीर नाच रहिया छै, जोगण ढाक बजावै छै, खप्पर भरै छै।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

६ देखो 'ढाकणी' (मह., रू.भे.)

ढाकण—देखो 'ढाकणी' (मह., रू.भे.)

उ०—जगत री हुतौ ढाकण जिकौ, मांन मंडोवर मेलियौ।
—बुवजी ग्रासियौ

मुहा०—घर री ढाकण—घर की मर्यादा रखने वाला।

ढाकणउ—देखो 'ढाकणौ' (रू.भे.)

ढाकण-पूंछौ-सं०पु०यौ०—वह बैल जिसके पूंछ के सफेद बालों के ऊपर का भाग काले बालों वाला हो या काले बालों के ऊपर का भाग सफेद बालों वाला हो।—अशुभ

ढाकणियौ—देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढाकणी-सं०स्त्री०—१ मिट्टी का बना ढकने का उपकरण जिसके एक ओर बीच में पकड़ने के लिये उभरा हुआ भाग होता है।

मुहा०—ढाकणी में नाक डुबोणी—लज्जा के मारे मर जाना, शरम के मारे मुंह न दिखाना।

२ आच्छादन, ढकन।

उ०—अला एकरण ढाकणी, सब दुनियां ढाकी।—केसोदास गाडण

३ घुटने के जोड़ पर की गोल हड्डी, जांबील।

४ देखो 'ढाकणौ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—ढंकणी, ढकणी, ढांकणी, ढांपणी।

ढाकणौ-वि०—१ ढकने वाला. २ आच्छादित करने वाला. ३ छुपाने वाला. ४ बन्द करने वाला. ५ रक्षा करने वाला. ६ मर्यादा रखने वाला।

सं०पु०—किसी वर्तन का मुंह बंद करने के लिये लगाया जाने वाला आच्छादन, ढक्कन।

रू०भे०—ढंकणउ, ढंकणौ, ढकणउ, ढकणौ, ढांकणउ, ढांकणौ, ढांपणउ, ढांपणौ, ढाकणउ।

अल्पा०—ढंकणियौ, ढंकणी, ढकणियौ, ढकणी, ढांकणियौ, ढांकणी, ढांपणियौ, ढांपणी, ढाकणियौ, ढाकणी।

मह०—ढंक, ढंकण, ढक, ढकण, ढक्कण, ढांक, ढांकण, ढांप, ढांपण, ढाक, ढाकण।

ढाकणौ, ढाकबौ-क्रि०स०—१ (किसी वर्तन आदि पर) ढक्कन लगाना, बन्द करना।

२ (किसी छिद्र आदि को) रोकना, बन्द करना।

३ (कपाट, आंख, मुंह आदि) बन्द करना।

उ०—टग टग म्हलां जी क चनणा ऊतरी जी, कोई, गई गई रांमुड़ै री हाट, ढाक्यौ तौ फळसौ खोल दे जी।—लो.गी.

४ आच्छादित करना, ढकना. ५ छुपाना।

उ०—ऐ नेता लोग डूंगर बळती देखै, पगां बळती को देखै नी, खुदरा दोसण ढाकै, लोगां रा दोसण उघाड़ै।—वांणी

ढाकणहार, हारौ (हारी), ढाकणियौ—वि०।

ढकवाड़णौ, ढकवाड़बौ, ढकवाणौ, ढकवाबौ, ढकवावणौ, ढकवावबौ, ढकाड़णौ, ढकाड़बौ, ढकाणौ, ढकाबौ, ढकावणौ, ढकावबौ—प्रे०रू०

ढाकिओड़ौ, ढाकियोड़ौ, ढाक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढाकीजणौ, ढाकीजबौ—कर्म वा०।

ढंकणौ, ढंकबौ, ढकणौ, ढकबौ, ढांकणौ, ढांकबौ, ढांपणौ, ढांपबौ
—रू०भे०।

ढाकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ (किसी वर्तन आदि पर) ढक्कन लगाया हुआ, बन्द किया हुआ।

२ (किसी छिद्र आदि को) रोका हुआ, बन्द किया हुआ।

३ (कपाट, आंख, मुंह आदि) बन्द किया हुआ।

४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. ५ छुपाया हुआ।
(स्त्री० ढाकियोडी)

ढाग—१ देखो 'ढागौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'ढागी' (मह., रू.भे.)

३ देखो 'ढाक' (३) (रू.भे.)

ढागलियौ—देखो 'ढागौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढागली—देखो 'ढागी' (अल्पा., रू.भे.)

ढागलौ—देखो 'ढागौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढागियौ—देखो 'ढागौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढागी-सं०स्त्री०—१ वृद्ध गाय. २ वृद्ध मादा ऊंट।

अल्पा०—ढागली।

मह०—ढाग।

ढागीड़—१ देखो 'ढागौ' (मह., रू.भे.) २ देखो 'ढागी' (मह., रू.भे.)

ढागौ-सं०पु० (स्त्री० ढागी) १ वृद्ध बैल. २ वृद्ध ऊंट।

अल्पा०—ढागलियौ, ढागलौ, ढागियौ।

मह०—ढाग, ढागीड़।

ढाड—देखो 'डाड' (रू.भे.)

ढाडी—देखो 'ढाढ़ी (रू.भे.)

ढाडीड़—देखो 'ढाढ़ी' (मह., रू.भे.)

ढाडीड़ौ—देखो 'ढाढ़ी' (अल्पा., रू.भे.)

ढाढ़स-सं०पु० [सं० दृढ़, प्रा० डिढ़) धैर्य, सान्त्वना, धीरज।

उ०—गीध दास झड़पै घणा, झड़प परां हुंत जंग। ढस्यौ वर न ढाढ़स ढस्यौ, ढस्यौ न राजस ढंग।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०प्र०—देणौ, बंधाणौ, राखणौ, होणौ।

ढाढ़ौ-सं०पु० (स्त्री० ढाढ़ण) विवाह, जन्मोत्सव आदि मांगलिक अवसरों पर गायन करने वाली एक मुसलमान जाति या इस जाति का व्यक्ति। उ०—ढाढ़ी, एक संदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण

वळि कुइला भई, भसम ढंढोळिसि आइ ।—ढो.मा.
रू०भे०—ढाडी ।
अल्पा०—ढाडीड़ी, ढाढ़ीड़ ।
मह०—ढाडीड़, ढाढ़ीड़ ।

ढाढ़ीड़—देखो 'ढाढ़ी' (मह., रू.भे.)

ढाढ़ीड़ौ—देखो 'ढाढ़ी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ढाढ़ीड़ा तू धरम रौ है वीर, ढाढ़ी म्हारा ओ । म्हांनै रे वता दे रांणी काछवौ जी म्हारा राज ।—लो.गी.

ढा'णौ—देखो 'ढाहणौ' (रू.भे.)
उ०—किनियांणी वधती कळा, ढा'णी सत्रवां दूल । सिंह पलांणी सादुळी, तांणी हात त्रिसूळ ।—वालावख्श वारहठ
(स्त्री० ढा'णी)

ढा'णौ, ढा'वौ—देखो 'ढाहणौ, ढाहवौ' (रू.भे.)
उ०—१ द्रस्टा मिट्या द्रस्य नहिं पावै, द्रस्य मिट्या द्रस्टाजी । जो कोई मनकूं खंड्या चावौ, पांच विखै कूं ढाजी ।
—श्री हरीरांमजी महाराज
उ०—२ ऐसे भयाणंख एकळगिड़ बराह ढाए । ऐते में केतैक खिरगोस म्रिग सांमरू के जूथ आए ।—सू.प्र.
उ०—३ हूरम सायजादी ये हिंदू री छोड्यौ कोनी देव, दिलज्यांनी वेगम चुग चुग तौ ढाय ये मंदिर देवरा ।—लो.गी.

ढाव—सं०पु०—छोटी तलैया । उ०—आ रतनागर सागर थारै, थारी बरोबरी म्हे करां स, कोई ढाव भरचा है म्हारै, गिरधारी हो लाल ।—लो.गी.

ढावणौ, ढाववौ—क्रि०स०—१ ठहराना, रोकना ।
२ थामना, रोकना । उ०—ओछी अंगरख्यां दुपटी छिव देती, गोढ़ै वरड़ी जे पूरा गामेती । फेंटा छोगाळा खांधा सिर फावै, टेढ़ा डोढ़ावै डिगतौ नभ ढावै ।—ऊ.का.
३ निभाना, रखना । उ०—एक नारी रौ कांई ढावणौ, नारी होवै घर की सिणगार । नारी विना मंदिर किसौ, क्रस्णजी परण्या वत्तीस हजार ।—जयवांणी
४ सहारा देना, आश्रय देना । उ०—सुतन 'सांवत' मयंद सुणै थारा सवद, भड़ अरंद जिकै सुध गाढ़ भाजै । वांह छोडी जिकै गिरंद डकावसै, वांह ढावी जिकै नरंद वाजै ।
—नींबाज ठाकुर सवाईसिंह रौ गीत
५ पकड़ना । उ०—आरत स्रवण सुणी अणदा री, पड़तां कूप ज पाव । दंभी रूप तुरत हो धाई, ले मुख ढाबी लाव ।
—हिंगळाज दांन वारहठ
ढावणहार, हारौ (हारी), ढावणियौ—वि० ।
ढववाड़णौ, ढववाड़वौ, ढववाणौ, ढववावौ, ढववावणौ, ढववाववौ, ढवाड़णौ, ढवाड़बौ, ढवाणौ, ढवावौ, ढवावणौ, ढवाववौ—प्रे०रू० ।
ढाविओड़ौ, ढाबियोड़ौ, ढाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
ढावीजणौ, ढावीजवौ—कर्म वा० ।
ढवणौ, ढववौ—अक०रू० ।

ढावियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ ठहराया हुआ, रोका हुआ. २ थामा हुआ, रोका हुआ. ३ निभाया हुआ, रखा हुआ. ४ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ. ५ पकड़ा हुआ ।
(स्त्री० ढावियोड़ी)

ढावौ—सं०पु०—१ वह स्थान जहां पैसे देकर भोजन करने व ठहरने का प्रवन्ध होता है. २ पक्षियों आदि को पकड़ने का उपकरण.
३ चिथड़ों व कागजों आदि की लुग्दी से वनाया हुआ वर्तन ।
४ भैंस को पैर से वांधने की लोह की वनी सांकल विशेष (शेखावाटी)
५ रंगीन ओढ़नी के बीच में लगने वाली वड़ी छाप ।
उ०—पाली तौ जावौ तौ म्हारै पीळौ लाइजौ ओ क हरिया ढावां री ।—लो.गी.
६ अरावली पर्वत (?) उ०—वीजळियां खळभळियां, डावा-थी ढळियांह । काठी भीड़ वल्लहा, घण दीहे मिळियांह ।—जसराज

ढारौ—सं०पु०—घास-फूस रखने का कच्चा मकान (शेखावाटी)
वि०—मूर्ख ।

ढाळ—सं०स्त्री०—१ वह स्थान जो क्रमश: वरावर नीचा होता गया हो, उतार । उ०—क्रम-क्रम ढोला पंथ कर, ढांण म चूकै ढाळ । आ मारू वीजी महल, आखड़ भूठ एवाळ ।—ढो.मा.
२ संगीत में नाच, गाने और वाद्यों का मेल, लय, तर्ज ।
क्रि०प्र०—लैंणी ।
३ रीति, ढंग । उ०—कीता खेत कंबोज वाल्हीक कच्छी । उड़ै फाळ लै लै फिरै ढाळ अच्छी ।—वं.भा.
४ पड़ाव, डेरा ।
वि०—घटिया किस्म का, हल्का ।
क्रि०वि०—तरह, प्रकार, भांति । उ०—काळ वरस में भूखा धाया, हुयग्या एकण ढाळ । धोरां नै पूछै रूंखड़ला, लासां नै अगनी री भाळ ।—चेतमांनखा

ढाल—सं०स्त्री०—१ चमड़े, धातु, सिलहट के कपड़े आदि से वना हुआ थाली के आकार का गोल अस्त्र जो युद्ध के समय अस्त्र-शस्त्रों के प्रहारों को रोकने के काम में लिया जाता है ।
पर्या०—आडण, आवरण, खेटक, चरम, तुरस, सिपर ।
२ युद्ध के समय हाथी के ललाट पर वांधा जाने वाला एक उपकरण विशेष जिस पर तलवार, भाला, तीर, वन्दूक आदि का असर नहीं होता है ।
उ०—अर हजारां वैरियां नै वसुधा माथै विछाइ ढालां समेत कई गजराजां नूं ढाळिया ।—वं.भा.
३ वड़ा झंडा । उ०—तुली ढाल रूड़ी घली काळ ओपां । अली जोट जूड़ी हली ज्वाळ तोपां ।—वं.भा.
४ रक्षक । उ०—१ 'पतौ' 'जगा' रौ विरद पत, वीरम रौ 'जैमाल' । केळपुरौ कमधज दहूं, हुआ चीत गढ़ ढाल ।—वां.दा.

उ०—२ घणी स अग्र होत ढाल, जूटि घांमज्जग में। इसा वसंत के अपार, गाढ़ पूर नग्र में।—सू.प्र.

रू०भे०—ढल्ल, ढालि।

ढालगर-सं०पु०—ढाल नामक अस्त्र बनाने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति। (मा.म.)

ढालड़ियौ-सं०पु०—१ कागज, कपड़े आदि की लुग्दी से बना हुआ बरतन विशेष। २

उ०—कुळ करसण करै वरीसण कोडी, ढोक कनक मक ढालड़िया। 'अड़सी' संभ्रम ठोड सिचै इम, हम्म महादत हालड़िया।

—महारांणा हम्मीरसिंह रो गीत

ढालड़ी-सं०पु०—देखो 'ढाल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—विसर रा नगारा नाद वाजिया। आ वात सुणतां इसा डूला सीह ज्युं गाजिया। सिलैह भीड़िया। ढालड़ा खड़भड़िया।

—पनां वीरमदे री वात

ढाळणौ, ढाळबौ-क्रि०स० [सं० ध्वर्] १ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को गिराना, बहाना। उ०—१ विरमांजी नै घणी तरह सूं दोस लगाय नै आंख्यां सूं आंसू ढाळण हूकी।

—ठाकुर श्यामसिंह सिंघल

उ०—२ सात जनम आगइं सांमळिया, तिणि कारणि मन मोहइं। आंसू ढाळइ चिहुं दिसि न्हाळइ, गोख चढी दळ जोवइ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—३ एहवां वचन कहीनी, चांमणी नयणे ते ढाळि नीर। तुहि चित वाळि नहीं, कळियुगि वांध्यु वीर।—नळाख्यांन

२ अभिसिंचन करना। उ०—आंणी नव नव तीरथ तोय, कनक कुंभ भरइ सवि कोय। तिम वळि दूध तणा भ्रंगार, स्नांन भणी सुर झालइ सार। कनक कुंभ सुर ढाळइजस्यइ, हरि संसय ऊपन्नउ तस्यइ। अति लहुड़उ ए जिणवर वीर, किम सहस्यइ कळसा ना नीर।—स.कु.

मुहा०—१ तेल ढाळणौ—मन्नत की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये भैरव, हनुमान आदि देवताओं पर तेल का अभिसिंचन करना.

२ पांणी ढाळणौ—'वायांसा' (ऊपरलियां) लोक देवियों के प्रसन्नार्थं जल का अभिसिंचन करना। मृतक प्राणी के फूल (अस्थियों) पर जल का अभिसिंचन करना. ३ दारू ढाळणी (ढाळणौ)—देवी, दुर्गा, भैरव आदि देवताओं के प्रसन्नार्थं शराब का अभिसिंचन करना. ४ बोतल ढाळणी—देखो 'दारू ढाळणी'।

३ उँड़ेलना. ४ गिराना, पटकना. ५ रखना. ६ बिछाना (पलंग, जाजम, आसन आदि) उ०—१ मन जांणै वड़लौ हुवां, (ऊगां) वेणप री थळियांह। वींझो ढाळै ढोलियौ, वळती छांहड़ियांह।

—र.रा.

उ०—२ लाल लंगोटौ तिलक सिंदूर कौ, बैठा आसण ढाळ। बावा बजरंगी रौ दंगळो हद वण्यौ।—लो.गी.

७ डेरा डालना, पड़ाव डालना. ८ लौटाना, भेजना. ९ घोड़े, ऊँट, बैल आदि को चरने के लिये छोड़ना।

उ०—रैबारीड़ा सोजा मेरा वीर, रैण अंधारी करहा ढाळ दै। गैली वहुवड़ असल गिवार, करहा लद्योड़ा अब ना ढळै।—लो.गी.

उ०—इयै कह्यौ—म्हे आगलै सहर जाय बळद ढाळसां।

—विसनी वेलरच री वात

१० व्यतीत करना, बिताना, गुजारना. ११ खैराद पर उतारना, रूप देना. १२ किसी पिघले हुए पदार्थ या लुग्दी को सांचे में डाल कर किसी वस्तु की रचना करना। उ०—पेट मूमल री पीपळियै री पांन, कोई पसवाड़ा मूमल रा संचै ढाळिया।—लो.गी.

१३ अर्पण करना, चढ़ाना। उ०—एक वांम अंगुस्ठ आधारै, नव दिन रात रहै निरहारै। कमंघ मतौ सिर ढाळण कीधौ, दरसण सकति प्रतखि तदि दीधौ।—सू.प्र.

१४ दूर करना। उ०—ताहरां मेघै घाव कियौ, सो दूदै ढाल सूं ढाळि दियौ।—दूदै जोधावत री वात

१५ मारना, संहार करना, काटना। उ०—अर हजारां ही वैरियां नूं वसुधा माथै विछाय ढालां समेत केई गजराज ढाळिया।—वं.भा.

१६ आच्छादित करना, ढकना। उ०—ऊंचौ हाथ करै न, मुख दै पल्लौ ढाळ हो चित्ता।—जुयवांणी

१७ ओढ़ाना. १८ देखो 'ढोळणौ, ढोळबौ' (रू.भे.)

उ०—१ निछरावळि कीध नांखि नंजीख, मोताहळ ऊच्छाळ ए। राठोड़ां 'गजण' देव मैं राजा, चिहुं दिसि चम्मर ढाळ ए।—गु.रू.बं.

उ०—२ सेसनाग गजछत्र धरइ, गंगा यमुना चमर ढाळइ, ब्रिहस्पति घड़ि आलउं वायइ।—व.स.

१९ नीचे करना, झुकाना। उ०—मारग विण मिळिया साध सूं जावै मूंढौ ढाळ हो।—जयवांणी

२० निगलना। ज्यूं—कवौ ई को ढाळीजै नी। घूंट ई को ढाळीजै नी।

उ०—आगै भोपतजी समाधिया हुया हुता। काचौ पाकौ वारौ ढाळियौ हुतौ। पथ्य लियै हुंता। पथ्य गोवळजी आपरै हाथि आरोगाड़ता।

—द.वि.

२१ देखो 'ढळणौ, ढळबौ' १२ (रू.भे.)

ढाळणहार, हारौ (हारी), ढाळणियौ—वि०।

ढळवाड़णौ, ढळवाड़बौ, ढळवाणौ, ढळवाबौ, ढळवावणौ, ढळवावबौ, ढळाड़णौ, ढळाड़बौ, ढळाणौ, ढळाबौ, ढळावणौ, ढळावबौ—प्रे०रू०।

ढाळिओड़ौ, ढाळियोड़ौ, ढाळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढाळीजणौ, ढाळीजबौ—कर्म वा०।

ढळणौ, ढळबौ—अक रू०।

ढाळमौ, ढाळवौ—देखो 'ढळवौ, ढळमौ' (रू.भे.)

ढालाळ, ढालाळौ-सं०पु०—ढाल धारण करने वाला, ढलैत, योद्धा।

उ०—जाहर सारै जगत में, अजरैल भालाळा। मेवासी वांका मरद, थळ भोम विचाळा। चांदै ठेवै सारखा, जबरैल ढालाळा। मेवासै डूंगर महीं सोहड़ कळचाळा।—पा.प्र.

ढालि—देखो 'ढाल' (रू.भे.) उ०—राजति अति एण पदाति कंज रथ, हंसमाळ वंधि लास हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय।—वेलि.

ढाळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को गिराया हुआ, बहाया हुआ. २ अभिसिंचन किया हुआ. ३ उँडेला हुआ. ४ गिराया हुआ, पटका हुआ. ५ रखा हुआ. ६ बिछाया हुआ, (पलंग, जाजम, आसन आदि) ७ डेरा डाला हुआ, पड़ाव डाला हुआ. ८ लौटाया हुआ, भेजा हुआ. ९ घोड़े, ऊंट, बैल आदि को चरने के लिये छोड़ा हुआ. १० व्यतीत किया हुआ, बिताया हुआ, गुजारा हुआ. ११ खैराद पर उतारा हुआ, रूप दिया हुआ. १२ किसी पिघले हुए पदार्थ या लुग्दी को सांचे में डाल कर बनाया हुआ. १३ अर्पण किया हुआ, चढ़ाया हुआ. १४ दूर किया हुआ. १५ संहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ. १६ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. १७ ओढ़ाया हुआ. १८ देखो 'ढोळियोड़ौ' (रू.भे.)

१९ नीचे किया हुआ, झुकाया हुआ. २० देखो 'ढळियोड़ौ' १.३ (स्त्री० ढाळियोड़ी) (रू.भे.)

ढाळियौ-सं०पु०—१ ऊपर से लोहे की चद्दरों या घास-फूस से छाया हुआ प्रायः मकान के आगे का खुला भाग, छप्पर।

क्रि०प्र०—उतारणौ, करणौ।

२ सिंचाई के खेत का एक भाग. ३ छोटा ढालू घास।

रू०भे०—ढळियौ।

ढाळु, ढाळू-वि०—१ जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो, ढालदार, ढालू। उ०—संसारचक्र तणउ इण परि ढाळु चडतउ पडतउ वरतइ काळु, कल्पद्रुम मनवंछित होइ जुगळाधरम तिहां वरतइ सोइ।
—चिहुंगति चउपई

ढालू-सं०पु०—करील का पका हुआ फल।

ढालेत, ढालेती-सं०पु०—ढाल रखने वाला, ढलैत, योद्धा। उ०—आप भंमर असवार, ढालेती पैदल धकै। तेरह सथ तोखार, मणधारी आयो मिळण।—पा.प्र.

ढाळै-वि०—ठीक, अच्छा।

क्रि०वि०—तरह, प्रकार। उ०—आगै लांठा मांणसां सूं कजियौ छै, सो जांणौं किस ढाळै ऊतरै।—कुंवरसी सांखला री वारता

ढाळोढाळ-क्रि०वि०—ढाल की ओर।

उ०—मोडकी मगरी रौ पांणी ढाळोढाळ ढळियौ रे। आवू थारै पा'ड़ां में अंगरेज वड़ियौ रे. क काळी टोपी रौ। हां रे काळी टोपी रौ रे, देस में छांवणियां नांखै रे क काळी टोपी रौ।—लो.गी.

वि०—ठीक, उचित।

ढाळौ-सं०पु०—१ पड़ाव, डेरा। उ०—किय ढाळौ पूनागर कनै, आय खवर यण रैवियां। सौ तुरंग असी ओठा सहित, है वौळावौ खीचियां
—पा.प्र.

२ देखो 'ढाळियौ' (रू.भे.)

३ प्रकार, भांति, तरह। उ०—आपरै ढाळा रौ वौ सगळा चौखळा में एक ई हो।—वांणी

४ हालत, दशा. ५ शक्ल, रूप, आकृति. ६ ढंग।

उ०—थूं तौ कांई, म्हारी होळी माता गरभ री। थूं तौ देख गैवरियां रौ ढाळौ रे, ढाल्या ढळकर चाल्यौ ढेलणी, मोल्या मळक'र चालै मोरड़ी।—लो.गी.

ढावणौ, ढाववौ—देखो 'ढाहणौ, ढाहवौ' (रू.भे.) उ०—१ जोर सूं कई जणा भेळा-ई कूक ऊठिया—घर फूटै नै कारी कोयनी, घरभेदू ई लंका ढावै।—वरसगांठ

उ०—२ दिल्लीसर वादस्या फौजां तौ दीनी हंकवाय। हीलेड़ौ वादस्या ऊपर चढ़ आयो रे ढावण देवरा।—लो.गी.

ढावियोड़ौ—देखो 'ढाहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढावियोड़ी)

ढावौ-सं०पु०—तट, किनारा (नदी का) उ०—सारस केळ करै संजोड़ै, ऊंचा भमंग चढै तर ओड़ै। दिस पिछमांण वादळा दोड़ै, तद जळ नदियां ढावा तोड़ै।—वर्षा विज्ञान

रू०भे०—ढाहौ।

ढाहढह, ढाहढोह-सं०पु०—हाथी, गज (ना.डि.को.)

ढाहणौ-वि० (स्त्री० ढाहणी) १ मकान, दीवार आदि ध्वस्त करने वाला. २ गिराने वाला. ३ मारने वाला। उ०—भांजणौ त्रिवेधी घड़ा भेळणौ भिड़ज भाळै, ढाहणौ गयंदां खेति ढंढोळणौ ढाल। आगळी दळां अभंग जैतखंभ हुओ जुधै, 'जोधाहरौ' जगजेठ जोध जगमाल।—जगमाल राठौड़ रौ गीत

४ संहार करने वाला. ५ नाश करने वाला. ६ काटने वाला. ७ मिटाने वाला. ८ दूर करने वाला. ९ कहने वाला।

१० दमन करने वाला।

ढाहणौ, ढाहवौ-क्रि०स०—१ मकान, दीवार आदि गिराना, ध्वस्त करना। उ०—चकतौ अकवर चक्कवै, पतसाहां पतसाह। चतुरंगी फौजां चढ़ै, दिए दुरंगां ढाह।—बां.दा.

२ गिराना, पटकना। उ०—नदी किनारै आय रथी लात सूं ढाय नांखी।—पंचदंडी री वारता

३ मारना। उ०—सूअरां री सिकार मांणीजै छै। एकल ढाहीजै छै।—रा.सा.सं.

४ नष्ट करना, उजाड़ना. ५ संहार करना, मारना।

उ०—१ चख मुख अरुण सचोळ, विळकुळतौ वाकारतौ। धीव झड़ां घमरोळ, अरिदळ ढाहै हरिदउत।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ महावळ मुग्गळ ढाहि अमाप। पटाझर सेल जड़ै 'परताप'।
—सू.प्र.

६ मिटाना। उ०—दादू अरस खुदाय कर, अजरावर का थांन। दादू सो क्यूं ढाहिये, साहिव का नीसांण।—दादू वांणी

७ दूर करना. ८ कहना। उ०—ढीली बात म ढाहि, पुण्य रो कारज पड़तां। ढीली बात म ढाहि, न्याय सूधो नीवड़तां। ढीली बात म ढाहि, वहत सूं पड़ियो बोलै। ढीली बात म ढाहि, ढमकिए वाहर ढोलै। सहु करै पूछि आगै सूजस, ढीली तठै न ढाहिजै। आविवै दाव ओठंभतां, कुळ धरमसीह कहाइजै।

९ दमन करना। —ध.व.ग्रं.

१० देखो 'ढहणौ, ढहवौ' (रू.भे.) उ०—राजा अपूठो आयो, रांणी बैठी छै। इतरै राजा आयो। रांणी बात पूछी। राजा बात कही। रांणी धरि ढाहि पड़ी। सहेलियां मचेत की। विलाप करण लागी। राजा धीरज देण लागो। हूणहार मिटै नहीं।—चौबोली

ढाहणहार, हारौ (हारी), ढाहणियौ—वि०।

ढहवाड़णौ, ढहवाड़वौ, ढहवाणौ, ढहवावौ, ढहवावणौ, ढहवाववौ, ढहाड़णौ, ढहाड़वौ, ढहाणौ, ढहावौ, ढहावणौ, ढहाववौ—प्रे०रू०।

ढाहिश्रोड़ौ, ढाहियोड़ौ, ढाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढाहीजणौ, ढाहीजवौ—कर्म वा०।

ढहणौ, ढहवौ—अकं०रू०।

ढा'णौ, ढा'वौ, ढावणौ, ढाववौ, ढाहवणौ, ढाहववौ—रू०भे०।

ढाहवणौ, ढाहववौ—देखो 'ढाहणौ, ढाहवौ' (रू.भे.)

उ०—ढाहेवा गजढाल, जसवंत छळि मातै जुड़णि। पाटोधर पड़ि ऊपड़ै, समहरि रायांसाल।—वचनिका

ढाहवियोड़ौ—देखो 'ढाहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढाहवियोड़ी)

ढाहिक-वि०—१ मकान, दीवार आदि गिराने वाला, ध्वस्त करने वाला। उ०—दंत रा टिलां ढाहिक दुरंग, ऊधरा चाचरा मसत अंग।—सू.प्र.

२ गिराने वाला. ३ मारने वाला. ४ संहार करने वाला. ५ नष्ट करने वाला. ६ काटने वाला. ७ मिटाने वाला. ८ दूर करने वाला. ९ कहने वाला।

ढाहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ मकान, दीवार आदि गिराया हुआ, ध्वस्त किया हुआ. २ गिराया हुआ, पटका हुआ. ३ मारा हुआ. नष्ट किया हुआ, उजाड़ा हुआ. ५ संहार किया हुआ, मारा हुआ.

६ मिटाया हुआ. ७ दूर किया हुआ. ८ कहा हुआ.

९ दमन किया हुआ. १० देखो 'ढहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढाहियोड़ी)

ढाही-सं०स्त्री—गाय।

कहा०—ढाही नूं डोवी नीचे, डोवी नूं ढाही नीचे करवूं है—गाय का भैंस के नीचे और भैंस का गाय के नीचे करता है अर्थात् भैंस के लाभ से गाय का काम चलाना और गाय के लाभ से भैंस का काम चलाना। तात्पर्य यह है कि संसार में इधर का उधर और उधर का इधर करने से ही काम चलता है।

(मि०— ढांढ़ी)

ढाहौ-सं०पु० (स्त्री० ढाही) १ बैल।

कहा०—ढाहौ तौ हाकी न लेवौ, डोवी दोई न लेवौ—बैल को हल में जोत कर लेना चाहिये और भैंस को दुहने के बाद अर्थात् प्रत्येक वस्तु की जांच कर के लेना चाहिए।

२ देखो 'ढावौ' (रू.भे.) उ०—१ तद आप गोयंद मूळांणी नूं कही—गोयंद, आज रो लोह विगड़ियो तिणसूं तूं इण नदी रै ढाहै चढ़ देखवौ कर, गिणती कर, म्हारी कितरी हाथ वाह हुवै।

—पदमसिंह री वात

उ०—२ उठै माधोसिंहजी रो मेलियो सदासिव भट आइयो, च्यार हजार फौज लेय उठा रो कूंच कर नागलै डेरो कियो, जोधा सारा खारी रै ढाहै मिळिया।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

ढिक, ढिकण, ढिकुण-सं०पु०—१ पक्षी विशेष. २ खटमल।

ढिंढ़ोरणौ, ढिंढ़ोरवौ-क्रि०स०—तलाश करना, ढूंढना।

ढिंढ़ोरियोड़ौ-भू०का०कृ०—तलाश किया हुआ, ढूंढा हुआ।

(स्त्री० ढिंढ़ोरियोड़ी)

ढिंढ़ोरौ—देखो 'ढंढ़ोरौ' (रू.भे.) उ०—१ जो मैं ऐसी जांणती, प्रीत किये दुख होय। नगर ढिंढोरौ फेरती, प्रीत न कीजो कोय।

—मीरां

उ०—२ तरै बादसाह फरमाई जे इण देस मांहीं ढिंढ़ोरो फेरो। विगर फरयादी कोई माथै ऊपर लाल कपड़ो न पहरै।—नी.प्र.

ढि-सं०स्त्री०—१ पतंग. २ मोरनी. ३ निंदा. ४ गदा.

५ भूख.

सं०पु०—६ लिंग (एका.)

ढिकड़ियौ—देखो 'ढीकड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढिकोर-सं०स्त्री०—१ मिट्टी का पात्र विशेष ?

ढिग-क्रि०वि०—१ ओर, तरफ। उ०—मची घन लूंबी कूह कराळ, चहौ ढिग होय रह्यौ ढकचाळ।—राज विलास

२ निकट, पास। उ०—खोली खीलां री डेढां ढिग ढीली, पोली सेढां री लीलां विण पीळी।—ऊ.का.

३ देखो 'ढिगलौ' (मह., रू.भे.) उ०—तद और हाथी नाठ गया ताहरां कुंवर हाथी रो माथो चीर अर गजमोती काढ फूलमती रै मोंहडै आगळ ढिग कियो।—चौबोली

रू०भे०—ढिग्ग।

ढिगलियौ—देखो 'ढिगलौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढिगली-सं०स्त्री०—देखो 'ढिगलौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—एक बार भाड़ा री हुंकारो भरयां पछै ओ हेम री ढिगली नै ई ठोकर मार देवतो।—रातवासी

ढिगलौ-सं०पु०—ढेर, राशि, पुंज। उ०—केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलौ कीध। हंसां नग हर नूं तुचा, दांत किरातां दीध।

—बां.दा.

अल्पा०—ढिगलियौ, ढिगली।

मह०—ढिग, ढिगग ।

ढिगास-सं०पु०—ढेर, राशि । उ०—साह तणौ दळ पांच सौ, पड़िया अठी पचास । मेर 'नरो' सातां भड़ां, हुयगौ घड़ां ढिगास ।—रा.रू.

ढिग्ग—१ देखो 'ढिगलौ' (मह., रू.भे.) उ०—खेजड़लां री छांग, ठूंठ भेळा कर राखै । ढूंढ़ लगावै ढिग्ग, जिग्ग जाभो कर नांखै ।—दसदेव

२ देखो 'ढिग' (रू.भे.)

ढिरळणौ, ढिरळबौ-क्रि०स०—घसीटना, खींचना ।

ढिरळियोड़ौ-भू०का०कृ०—घसीटा हुआ, खींचा हुआ ।

(स्त्री० ढिरळियोड़ी)

ढिलड़ी—देखो 'दिल्ली' (अल्पा., रू.भे.)

ढिलाई-सं०स्त्री०—ढीला होने का भाव, शिथिलता, सुस्ती ।

ढिलाड़णौ, ढिलाड़बौ—देखो 'ढिलाणौ, ढिलावौ' (रू.भे.)

ढिलाड़ियोड़ौ—देखो 'ढिलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढिलाड़ियोड़ी)

ढिलाणौ, ढिलाबौ-क्रि०स० ('ढीलणौ' क्रिया का प्रे०रू०) ढीला करवाना, शिथिल करवाना ।

ढिलायोड़ौ-भू०का०कृ०—ढीला करवाया हुआ, शिथिल करवाया हुआ ।

(स्त्री० ढिलायोड़ी)

ढिलावणौ, ढिलावबौ—देखो 'ढिलाणौ, ढिलाबौ' (रू.भे.)

ढिलावियोड़ौ—देखो 'ढिलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढिलावियोड़ी)

ढिली—१ देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—लगन कळह ढिली विह लिखियौ, आलम घड़ देखै असमांन । वींदपणौ अजमेर विसारै, खिसियौ लसियौ हाजीखांन ।—दूदौ

२ मुक्त, छोड़ना क्रिया ।

३ देखो 'ढीली' (रू.भे.)

ढिलीवै-सं०पु० [सं० दिल्ली+पति] बादशाह । उ०—वंस छतीस वरंम गनीमां गाळणौ, आभाळौ अधपती भली द्रढ़ भाळणौ । जारज पंचम जोध ढिलीवै ढूकड़ौ, आठूं पहर अबीह खेड़ंचौ रहै खड़ौ ।
—किसोरदांन बारहठ

ढिलौ—१ छोड़ने का भाव, मुक्त । उ०—धर नारी घर घोड़ले, सब कीन्है ढिले ।—केसोदास गाडण

२ देखो 'ढीलौ' (रू.भे.)

ढिल्ल—देखो 'ढोल' (रू.भे.) उ०—आस पूरी हुण दास नी, करंदा हो काहै ढिल्ल ।—ध.व.ग्रं.

ढिल्लणौ, ढिल्लबौ—देखो 'ढीलणौ, ढीलबौ' (रू.भे.)

उ०—ढिल्ली पह आयै रांण अत ढिल्लियौ, तिण सूं कहै चित्रगढ़ तूझ । जैमल जोध कांम तो जेही, मारुआं राव म ढीलिस मूझ ।
—राव जयमल मेड़तिया री गीत

ढिल्लि—देखो 'ढोल' (रू.भे.) उ०—मेल्हिय प्रधांन कहियउ मुगुळ्ळि, धर साजि मुहर हू म करि ढिल्लि । छां छत्र सरिस म म जाहि छेहि, दस कोड़ि द्रव्व वीवाह देहि ।—रा.ज.सी.

ढिल्लिय—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—सुनि ठोर परी सद नद्दन के, परि ढिल्लिय सोर रवद्दन के ।—ला.रा.

ढिल्लियोड़ौ—देखो 'ढीलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढिल्लियोड़ी)

ढिल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—नर मोटौ सहिस्यै नहीं, राउ तणी कुण रेस । स्यौ ढिल्ली खुरसांण स्यौ, आठ पुहर अहं तेस ।
—रा.ज. रासौ

ढिल्लीउ—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)

ढिल्लीपह, ढिल्लीपत, ढिल्लीपती-सं०पु० [सं० दिल्ली+प्रभु, दिल्ली+पति] बादशाह । उ०—ढिल्लीपह आयै रांण अत ढिल्लियौ, तिण सूं कहै चित्रगढ़ तूझ । जैमल जोध वार तौ जेही, मारुआं राव म ढीलिस मूझ ।—राव जयमल मेड़तिया री गीत

ढिल्लौ-वि०पु० (स्त्री० ढिल्ली) शिथिल, ढीला ।

उ०—महमदसाहु तजै जो दिल्ली, तौ गुजरात करूं में ढिल्ली ।
—रा.रू.

ढिस्सौ-सं०पु०—मिट्टी का कठोर टीवा । उ०—१ लकड़ी थांरी रीठ, लास रोमावळ लै'रां । ढिस्सा मठ ढमढ़ेर, ईल जळ ऊंडा वेरां ।
—दसदेव

उ०—२ धूंधा धोरा नांव, कठै लाका लांमोड़ा । गाळा आडावळा, गगणचुंबी डीगोड़ा । टोकी भव्य सोपांन, सांतसम सीतळ टोळी । ढिस्सा दड़ा पड़ाळ, लुभांणी खीतिज खोळी ।—दसदेव

ढींक-सं०पु०—१ लाल मुंह वाला एक पक्षी विशेष जिसकी गरदन के नीचे थैली होती है ।

अल्पा०—ढींकड़ौ ।

२ मुष्ठि प्रहार । उ०—आठ ढींक गरदन मांही रे । दीजै वात कही सत तांही रे ।—स्री धर्मपरीक्षानो रास

रू०भे०—ढीक ।

(मि० धीक)

ढींकड़जी—देखो 'ढींकड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—कैणा में तौ ठाकर रौ वांटौ चौथौ हौ पण रोजीना री मांगी तांगी में कै आज फलांणजी रै मिरचां भेजणी, आज ढींकड़जी रै, आज फलांणजी रै ।—वांणी

ढींकड़ौ—१ देखो 'ढींक' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'ढीकड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढींकड़ी)

ढींकणौ-वि० (स्त्री० ढींकणी) रंभाने वाला ।

रू०भे०—ढीकणौ ।

ढींकणौ, ढींकबौ-क्रि०अ०—रंभाना । उ०—डांढ़ा तांपाड़ै केरड़िया ढींकै, रोटी पांणी नै टींगरिया रींकै ।—ऊ.का.

ढीकणौ, ढींकबौ—रू०भे० ।

ढींकली—देखो 'ढीकली' (रू.भे.) उ०—गढ़ कैळास जिम ऊंचउ, गरुई.पोळि । सघर कपाट लोहमय भोगळ, विजयहरी तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणि, ढींकली तणी परंपरा, खाई गढ़, पांणी गढ़ ।
—व.स.

ढींकाळी-सं०स्त्री०—लता विशेष। उ०—ढूंढ़वनी ढोक्ल फळी, ढींवर डाड़र डाढ़ि। ढींकाळी नई ढींचगी, आवइ खरिइ असाढ़ि।
—मा.कां.प्र.

ढींकियोड़ी-भू०का०कृ०—रम्भाया हुआ।
(स्त्री० ढींकियोड़ी)

ढींकुली—देखो 'ढीकली' (रू.भे.) उ०—विजाहरी तणी पद्धति, यंत्र तणी अंगि, ढींकुली तणी परंपरा।—व.स.

ढींकेळ-सं०स्त्री०—रहट के मध्य स्तम्भ को स्थिर रखने वाले ऊपर के दो बड़े डंडों को जोड़ने वाली कील।
रू०भे०—ढीकलो।

ढींगर—देखो 'ढींगळी' (मह., रू.भे.)

ढींगरियौ—देखो 'ढींगळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींगरी-सं०स्त्री०—देखो 'ढींगळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींगरौ—देखो 'ढींगळौ' (रू.भे.)

ढींगळ—देखो 'ढींगळौ' (मह., रू.भे.)

ढींगळियौ—देखो 'ढींगळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींगळी-सं०स्त्री०—देखो 'ढींगळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींगळौ-सं०पु०—१ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ बेडौल भाग जिसमें किसी वस्तु को रखा जा सकता है. २ देखो 'ढूलौ'।
उ०—माहोमाहि मांडइ करड, परिपरि खूंदइ खेजि। परि परिणावइ ढींगळां, गांन करंती गेलि।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—ढींगरौ, ढींगोळ।
अल्पा०—ढींगरियौ, ढींगरी, ढींगळियौ, ढींगळी, ढींगोळियौ, ढींगोळी
मह०—ढींगर, ढींगळ, ढींगोळ।

ढींगोळ—देखो 'ढींगळौ' (मह., रू.भे.)

ढींगोळियौ—देखो 'ढींगळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींगोळी-सं०स्त्री०—देखो 'ढींगळौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींगोळौ—देखो 'ढींगळौ' (रू.भे.)

ढींगौ-वि० (स्त्री० ढींगी) १ जबरदस्त. २ बड़ा।

ढींच-सं०पु०—१ तालाबों के किनारे रहने वाला पक्षी विशेष। २ कंक पक्षी. ३ कूप, कुआ. ४ पानी लाने के लिए काठ का बना हुआ उपकरण जो ऊंट, भैंसा आदि पर रखा जाता है. ५ हाथी।
उ०—भिड़ै भीच भल्ल, ढहै ढींच ढल्ल।—गु.रू.ब.
वि०—१ बड़े डीलडौल वाला. २ प्रभावशाली।
रू०भे०—ढीच।
अल्पा०—ढींचाळौ, ढीचाळौ।
मह०—ढींचाळ, ढीचाळ।

ढींचाळ—देखो 'ढींच' (मह., रू.भे.) उ०—१ ढळै ढींचाळ तणौ रण ढांणि। पड़ै ध्रू रेणु धिखै पीठांणि।—रा.ज. रासौ
उ०—२ कइ नर डाढ़ाळ ढींचाळ उगालण होय 'अभै खळ खांण नरो।—करुणा सागर

ढींचाळौ—देखो 'ढींच' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ढालां ढोलां अर ढींचाळां, जुड़ै न कमधज किरमाळां। जे जुड़सी कमधज किरमाळां, ढाल न ढोल न ढींचाळां।
—राठौड़ चांदा वीरमदेवोत मेड़तिया रो गीत
(स्त्री० ढीचाळी)

ढींब, ढींबड़—देखो 'ढीमड़ौ' (मह., रू.भे.) उ०—नागोर सूं धाय पुसकरजी स्नान करण नूं आयी जद महाराज अभैसिंघजी फुरमायौ तूं अजमेर आव, हूं तो आगै छाती रो ढीब भरांगो है सू हूं फोड़ूं। राजाधिराज रा भय सूं।—बां.दा. ख्यात

ढींबड़ियौ—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींबड़ी—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींबड़ौ—देखो 'ढीमड़ौ' (रू.भे.)

ढींम, ढींमड़—देखो 'ढीमड़ौ' (मह., रू.भे.)

ढींमड़ियौ—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींमड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढींमड़ौ—देखो 'ढीमड़ौ' (रू.भे.)

ढी-सं०पु०—१ बिल्व. २ ब्रह्मचर्य. ३ शिष्य. ४ गधा. ५ वृक्ष।
सं०स्त्री०—६ पृथ्वी. ७ मति, बुद्धि (एका.)

ढीक-सं०पु०—१ एक प्रकार का कीड़ा जो धान में लग जाता है, घुन. २ देखो 'ढेकली' (रू.भे.) उ०—कुल करसण करै बरीगण कोडी, ढीक कनक मभ ढालड़िया। 'अड़सी' संभ्रम ठोड़ सिचै द्रुम, हम्म महादत हालड़िया।—महाराणा हमीरसिंघ रो गीत
३ गरीब (रू.भे.) उ०—महाजन निमनि मोटी दया, रांक ढीक उपरि बहु मया।—ऐ.जै.का.सं.
४ देखो 'ढींक'। उ०—पाठक पंड्या बोल्या ततखिणे, ढीक पाटु ना प्रहार रे।—स्त्री धर्म परीक्षाना रास

ढीकड़जी—देखो 'ढीकड़ौ' (मह., रू.भे.)

ढीकड़ियौ—देखो 'ढीकड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीकड़ी—देखो 'ढीकली' (रू.भे.)
उ०—तोही जोध न जागवै मुदगर उडाया। जांण ज दीधी ढीकड़ी नीसांण घुराया।—केसोदास गाडण
वि०स्त्री०—अमुक, ढिमकी।

ढीकड़ौ-वि० (स्त्री० ढीकड़ी) अमुक, ढिमका।
रू०भे०—ढींकड़ौ।
अल्पा०—ढिकड़ियौ, ढीकड़ियौ।
मह०—ढींकड़जी।

ढीकणौ—देखो 'ढींकणौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढीकणी)

ढीकणौ, ढीकवौ—देखो 'ढींकणौ, ढींकवौ' (रू.भे.)

ढीकली-सं०स्त्री०—१ तोप के आकार का पत्थर फेंकने का प्राचीन

यंत्र । उ०—मोलहण साह बोलियौ—तीस वरस ईधण हूं पूरीस । भीमेंसाह कह्यौ—म्हारै इती गुळ है, अठारै वरस तांईं ढीकली गुळ रा हीज गोळा चलावौ ।—वां.दा.ख्यात

२ देखो 'ढेकली' (रू.भे.)

रू०भे०—ढींकली, ढींकुली, ढीकड़ी, ढीकुली ।

ढीकलौ—१ देखो 'ढीकेल' (रू.भे.)

२ देखो 'ढेकली' (रू.भे.)

ढीकुली—देखो 'ढीकली' (रू.भे.) उ०—यंत्र तणी स्रेणी, ढीकुली तणी परंपरा ।—व.स.

ढीकोळ-सं०पु०—युद्ध, संग्राम ।

ढीगाळ-वि० [सं० दीर्घाल] महान्, वड़ा । उ०—जेजळमेर सूं राणी गंगाजी सागै राखेचा करमसी रूपसीयोत वीकानेर आया । पीछै कंवर सूरसिंघजी रै पटै फळौधी छी । अरु गहणा जड़ाऊ निजर सूरसिंघजी रै किया । राखेचा भाटी केलण मैं मिळै छै । अरु गंगा राणी सागै ढीगाळ भेरूं आयौ । पीछै सं० १६५१ पौह सुद १२ नै गंगा राणीजी रै पेट सूरसिंघजी रौ जन्म हुवौ । इण हीज वरस १६५१ माघ सुद १५ राणी निरवांणजी रै किसनसिंघजी जन्मिया अरु वडौ उछव हुवौ ।—द.दा.

ढीगास, ढीगासौ-सं०पु०—समूह, ढेर ।

उ०—पड़ लंक जंग जासै, अत प्रकासै आवधां । ग्रीधां ढीगासै मांस ग्रासै, सुज हुलासै सूर ।—र.ज.प्र.

ढीच—देखो 'ढींच' (रू.भे.)

ढीचकनळियौ-सं०पु०—एक पक्षी विशेष ।

ढीचाळ—देखो 'ढींच' (मह., रू.भे.)

ढीचाळौ—देखो 'ढींच' (मह., रू.भे.) उ०—आगै मेली सोना नी थाळी, कीधा रंग-रोळा, झाजा मेलीया रूपासोना ना कचोळा, तिहां बैठा बत्रीस लक्षण पुरुस दुंदळा फुंदळा जाकजमाळा मुंछाळा, केई जमाई केई साळा, ईसा पांती बैठा राजवी ढीचाळा ।—व.स.

(स्त्री० ढीचाळी)

ढीठ—देखो 'ढीठौ' (मह., रू.भे.) उ०—१ नमौ ढीठ ढोटा चवै नाग नारी । हवै जोड तूं सुं हवै वाद हारी ।—ना.द.

उ०—२ सोतै बाळक आंन जगावै, ऐसौ ढीठ तेरौ कन्हैया । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हरि लागूं तोरै पैंया ।—मीरां

उ०—३ दादू नैन हमारे ढीठ हैं. नाळै नीर न जांहि । सूकै सरां सहेतवैं, करंक भये गळि मांहि ।—दादू बांणी

ढीठता-सं०स्त्री० [सं० धृष्टता] ढिठाई, धृष्टता ।

ढीठौ-वि० [सं० धृष्ट] (स्त्री० ढीठी) धृष्ट, निष्ठुर ।

मह०—ढीठ ।

ढीढ़ा-सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा ।

ढीढ़ौ-सं०पु० (स्त्री० ढीढ़ी) पँवार वंश की ढीढ़ा शाखा का व्यक्ति ।

ढीव, ढीवड़—देखो 'ढीमड़ौ' (मह., रू.भे.)

ढीवड़ियौ—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीवड़ी—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीवड़ौ—देखो 'ढीमड़ौ' (रू.भे.)

ढीवस—देखो 'ढीवसौ' (मह., रू.भे.)

ढीवसियौ—देखो 'ढीवसौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीवसौ-सं०पु०—मिट्टी का नन्हा दीपक (शेखावाटी) ।

रू०भे०—डीवस ।

अल्पा०—डीवसियौ, ढीवसियौ ।

मह०—ढीवस ।

ढीम—देखो 'ढीमड़ौ' (मह., रू.भे.)

ढीमकौ—देखो 'ढोलक' (अल्पा., रू.भे.)

ढीमड़—देखो 'ढीमड़ौ' (मह., रू.भे.)

ढीमड़िया-सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।

ढीमड़ियौ-सं०पु०—१ चौहान वंश की ढीमड़िया शाखा का व्यक्ति.

२ देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीमड़ी—देखो 'ढीमड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीमड़ौ-सं०पु० १ शरीर के किसी अंग पर उठने वाली गांठ, फोड़ा.

२ रहट, कूआ । उ०—एक सवार ढीमड़े वेरै आयौ । बांकली में आपरी घोड़ी पांणी पावै ।—वांणी

३ बालू का टीबा ।

वि०—मूर्ख, नासमझ ।

रू०भे०—ढींवड़ौ. ढींमड़ौ, ढीवड़ौ ।

अल्पा०—ढींवड़ियौ, ढींवड़ी, ढींमड़ियौ, ढींमड़ी, ढीवड़ियौ, ढीवड़ी, ढीमड़ियौ, ढीमड़ी ।

मह०—ढींव, ढींवड़, ढींम, ढींमड़, ढीव, ढीवड़, ढीम, ढीमड़ ।

ढीमर-सं०पु० [सं० धीवर] कहार जाति का वह व्यक्ति जो मछली पकड़ने का कार्य करता है (अ.मा.)

ढीर—देखो 'ढीरौ' (मह., रू.भे.)

ढीरकियौ, ढीरकी, ढीरकौ, ढीरड़ौ, ढीरियौ—देखो 'ढीरौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीरी-सं०स्त्री०—देखो 'ढीरौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढीरौ-सं०पु०—कांटेदार वृक्ष अथवा झाड़ी की टहनी, कांटेदार शाखा ।

मुहा०—१ ढीरौ फिरणौ—समूल नष्ट हो जाना, बरबाद हो जाना ।

२ ढीरौ फेरणौ—नष्ट कर देना, बरबाद कर देना ।

अल्पा०—ढीरकियौ, ढीरकी, ढीरकौ, ढीरड़ौ, ढीरियौ, ढीरी ।

मह०—ढीर ।

ढील-सं०स्त्री०—१ विलम्ब, देरी । उ०—१ म म करिसि ढील हिव हुए हेक मन, जाइ जादवां इंद्र जत्र । माहरै मुख हुंता ताहरै मुखि, पग वंदण करि देई पत्र ।—वेलि.

उ०—२ सुण ऐ वचन सनेह रा, कीनी ढील न काय । रंग भीनी नै राजवी, लीनी कंठ लगाय ।—पनां वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

२ समय। उ०—जाडी किलै सफील, मांय ज नर निवळा वसै। ढूंढ़ा ढहतां ढील, रती न लागै राजिया।—किरपाराम

३ अतत्परता, सुस्ती। उ०—मिळिया अनुकेत खुद्यावसु मारग, मांन महातम सेत मनो। सह रोटी बीज समेत संतांनां, ढील न लायो देत धनो।—भगतमाळ

क्रि०प्र०—लाणी।

४ बन्धन ढीला करने का भाव. ५ डोरी को खिंचाव की ओर छोड़ते रहने की क्रिया या भाव।

मुहा०—१ ढील छोडणी—देखो 'ढील दैणी'।

२ ढील दैणी—बन्धन से मुक्त करना। स्वच्छंदता देना, आजादी देना, मनमाना कार्य करने का अवसर देना, पतंग की डोरी को आगे की ओर बढ़ाना।

रू०भे०—ढिल्ल, ढिल्ली।

६ यूका, जूं।

वि०—जिसके ठहरे या बंधे हुए छोरों के बीच झोल हो।

उ०—बटाऊ बैठा आड-पिलांण, ऊंठड़ा मारग झुरकै जाय। सुणीजै फुरणी मूरी ढील, मोद मूंगल रूप सराय।—सांझ

ढीलउ—देखो 'ढीलो' (रू.भे.) उ०—स्रवणि तारस्फर झळकतां कुंडळ, ढीलउ घम्मिल्ल, मस्तकि समारित केसकळाप।—व.स.

ढीलड़ी—१ देखो 'दिल्ली' (अल्पा., रू.भे.) उ०—चाढ़ि घड़ वेहड़ां, वाढ़ि भड़ चौसरां, चाळि कळि काळि उजवाळि चीला। परब इसड़ै मुओ नाथ री मांडि पग, ढीलड़ी तणा पग हुआ ढीला।
—हाडा रावा सत्रसाळ गोपीनाथोत री गीत

२ देखो 'ढेलड़ी' (रू.भे.) ३ देखो 'ढील' (अल्पा., रू.भे.)

ढील-ढालो-सं०पु०—हाथी, गज (ना.डि.को)

ढीलणो, ढीलवौ-क्रि०स०—१ ढीला करना, बन्धनमुक्त करना.

२ डोरी आदि को आगे बढ़ाना. ३ छोड़ना, मुक्त करना।

उ०—अकबर आवत उदियासिघ, चवै ढीलो कीधो चित्तौड़। मोटा छात जोध हर मंडण, रखै मूझ ढीलै राठौड़।
—राव जयमल राठौड़ मेड़तिया (वदनोर) री गीत

ढिल्लणो, ढिल्लवो, ढीलवणो, ढीलववौ—रू०भे०।

ढीलवणो, ढीलववौ—देखो 'ढीलणो, ढीलवौ' (रू.भे.)

ढीलवियोड़ो—देखो 'ढीलियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढीलवियोड़ी)

ढीलिणो-वि० (स्त्री० ढीलिणी) दिल्ली में रहने वाला।

उ०—ढीलिणि मनु नागोरिय, गउरिय सोहग पूरि। जसु वर वदनि कळकिउ, पंकिउ चंदल दूरि।—प्राचीन फागु-संग्रह

ढीलिणो, ढीलिवौ—देखो 'ढीलणो, ढीलवो' (रू.भे.)

ढीलिपति, ढीलिपती-सं०पु० [सं० दिल्लीपति] बादशाह।

उ०—माहरा साथ रा हाथ हिवै देखज्यो, ढीलिपति रहै मति हिवै ढीलो।—प.च.चौ.

ढीलियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ढीला किया हुआ, बन्धनमुक्त किया हुआ. २ डोरी आदि को आगे बढ़ाया हुआ।

(स्त्री० ढीलियोड़ी)

ढीली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.) उ०—बहलोलसाहि सउं बोलि बोल, ढीली ढंढोळि वावाड़ि ढोल। पुरफते लाइ झीझणू पाइ, राखिया बांह दे रोपि राइ।—रा.ज.सी.

यौ०—ढीली-नयर, ढीली-नयरी।

वि०स्त्री०—१ आलसी, सुस्त. २ जो कस कर नहीं बंधी हुई हो।

उ०—ढीली लांगां रा ढेरा ढळकाता, टोपड़ टुकड़ां रा सेरा खळकाता।—ऊ.का.

मुहा०—ढीली धरणी—शिथिलता धारण करना, सुस्त पड़ना।

उ०—अदृढ़, शिथिल। उ०—ढीली वात म ढाहि, पुण्य रो कारज पड़तां। ढीली वात म ढाहि, न्याय सूधो नीवड़तां। ढीली वात म ढाहि, बहस सूं पड़ियो बोलै। ढीली वात म ढाहि, ढमकिए बाहर ढोलै। सहु करै पूछि आगै सुजस, ढीली तठै न ढाहिजै। आथियो दाव ओढंभतां, कुळ धरमसीह कहाइजै।—ध.व.ग्रं.

४ कमजोर, निर्बल. ५ जो एक स्थान पर ठहरी हुई न हो, अस्थिर।

उ०—पासी ढुळै है, हाथ लुळै है, ढीली नथ ढळकै है, प्रेम री झांई जाहर झळकै है।—र. हमीर

ढीलीपति, ढीलीपही, ढीलीराव-सं०पु० [सं० दिल्ली+पति, दिल्ली+राज] दिल्ली का अधीश्वर, बादशाह।

ढीलुं, ढीलूं—देखो 'ढीलो' (रू.भे.) उ०—१ रांधती सीधती खारु मउलुं करइ, दाधुं काचउं करइ, ढीलुं गीलुं करइ।—व.स.

ढीलो-वि० [सं० शिथिलकः] (स्त्री० ढीली) १ मंद, धीमा।

उ०—नीला कांय ढीलो वहै, देस पयांणो दूर। पंथ जोवै हुद पदमणी, पनां ज जोबन पूर।—पनां वीरमदे री वात

२ जिसके बंधे या ठहरे हुए छोरों के बीच झोल हो. ३ शिथिल।

उ०—हिवडा थांरो जाभो रे, वैराग छै ताजो रे। पायो धरम रसीलो रे, रखै पड़ि जाय ढीलो रे। मटक वैरागी हो राजिंद! होयज्यो मती रे।—जयवांणी

४ जो दृढ़ता से बंधा या लगा न हो, जो खूब कस कर पकड़ा गया न हो, जो भली प्रकार जमा या बैठा हुआ न हो।

उ०—हाथां रा हथफूल भाभी ढीला कोकर पड़गा ओ।—लो.गी.

५ कमजोर, निर्बल। उ०—दिलीपति ढीलो हुवो, पहुंचै कोइ न पांण। अचिरज आसंगी न सकै, बोलै एहवी वांण।—प.च.चौ.

६ जो खूब कस कर पकड़ा हुआ न हो। ज्यूं—गांठ ढीली पड़णी।

७ अतत्पर, सुस्त। उ०—१ माहरा साथरा हाथ हिवै देखज्यो, ढीलिपति रहै मति हिवै ढीलो। भाजतां लाज तुज काज आवै नाहिं, देखियो साहि मोटो अड़ीलो।—प.च.चौ.

उ०—घर कारज ढीला घणा, पर कारज समरत्थ। ज्यांनै सांई उबारसी, दे दे आडा हत्थ।—अज्ञात

८ जिसमें किसी वस्तु को डालने से बहुत सा स्थान इधर-उधर खाली छूटा हो। ज्यूं—कुरतौ ढीलौ होणौ, पगरखी ढीली होणी।
९ जो जकड़ा हुआ न हो, शिथिल। उ०—कर ढीलौ मेहिल्यु तव पंखी ऊडी'ग्यु आकास।—नळाख्यांन
१० प्रयत्न या संकल्प में शिथिल, जो अपने हठ पर अड़ा न रहे। ज्यूं—ढीला मत पड़जौ, घड़ी घड़ी वात याद अणावता रईजौ।
११ जो भली प्रकार जुड़ा हुआ न हो, असंलग्न। उ०—नसां जाळ व्यक्तां दीसइं, अस्थिबंध ढीला ढळहळता जिसा गांमटि अजांणि सूत्रधारि कास्ट।—व.स.
१२ जिसके क्रोध का वेग शान्त पड़ गया हो, नरम, शान्त। ज्यूं—ढीला पड़ग्या तौ लोग पग ही को टिकण देला नी।
मुहा०—१ ढीलौ मूंडी करणौ—कुछ प्राप्ति की आशा करना।
२ ढीलौ मूंडौ मेलणौ—देखो 'ढीलौ मूंडौ करणौ'।
१३ छोड़ना, मुक्त। उ०—१ चैत्र सुद १२ भोमराव रांम वळै हसनकुळी मुदफरखांन कटक ले आयौ। वैसाख वद २ री रात गांव ढीलौ कियौ।—राव चंद्रसेन री वात
उ०—२ अकबर आवत उदियासिंघ, चवै ढीलौ कीधौ चित्तौड़, मोटौ छात 'जोध' हर मंडण, रखै मूझ ढीलै राठौड़।
—राव जैमल मेड़तिया रौ गीत
१४ जिसमें काम का वेग न हो, नपुंसक. १५ जो एक स्थान पर ठहरा हुआ न हो, अस्थिर. १६ अदृढ़, शिथिल. १७ जो कड़ा न हो, जिसमें जलांश अधिक हो, गीला।
रू०भे०—ढिलौ, ढीलउ, ढीलुं, ढीलूं।
यौ०—ढीलौ-ढालौ।

ढोह, ढोहौ-सं०पु०[सं० दीर्घ] बड़ा टीबा, ढूह।

ढुंई—देखो 'ढुई' (रू.भे.)

ढुंढ़—१ देखो 'ढूंढ़' (रू.भे.) २ देखो 'ढूंढ़ौ' (मह., रू.भे.)
३ देखो 'ढूंढ़ियौ' (मह., रू.भे.)

ढुंढ़देस—देखो 'ढूंढ़ाड़'।

ढुंढ़राव-सं०पु०—सिंह, पंचानन (ना.डिं.को.)

ढुंढ़ा-सं०स्त्री०—१ हिरण्यकश्यपु की बहिन एक राक्षसी (पौराणिक)
२ देखो 'ढूंढाड़' (रू.भे.)

ढुंढ़ाड़, ढुंढ़ार, ढुंढ़ाहड़—देखो 'ढूंढ़ाड़' (रू.भे.)

ढुंढ़ि-सं०पु० [सं०] गणेश का एक नाम।

ढुंढ़ियौ—देखो 'ढूंढ़ियौ' (रू.भे.) उ०—सीख चौ लाख न हुवै समा, खोटि जड़ रा खुंढ़ीया। पारकी निंद करता प्रगट, धरमी किहां थी ढुंढिया।—ध.व.ग्रं.

ढुंढ़ौ—देखो 'ढूंढ़ौ' (रू.भे.) उ०—अपयस जीव उदेग मांन तौ नहीं छै मूढ़ा। सुणि भारथ धरमसीह, ढाहि गढ़ कीधा ढुंढ़ा।—ध.व.ग्रं.

ढु-सं०पु०—१ कर्म. २ दुष्ट. ३ हाथी. ४ सर्प. ५ सूर. ६ बन्दर (एका.)

ढुई-सं०स्त्री०—१ रीढ़ की हड्डी के नीचे का भाग जहां कूल्हे की हड्डियां मिलती हैं, त्रिकास्थि।
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।
मुहा०—ढुई टेकणी—हार मानना।
२ पीठ के नीचे का कूल्हों पर्यन्त भाग. ३ बाजरी के डंठलों का एक प्रकार का महीन चारा जो मवेशी को चराने के काम आता है।
रू०भे०—ढुंई, ढुही।

ढुऔ—देखो 'ढुवौ' (रू.भे.)

ढुकड़ौ—देखो 'ढूकड़ौ' (रू.भे.) उ०—एक ढुकड़ा जेवै गळा, ज्यो चित उछाह। ज्यो वसंता विहु आंगळा, लायण कनन दीठ।—ढो.मा.

ढुकाड़णौ, ढुकाड़बौ—देखो 'ढुकाणौ, ढुकावौ' (रू.भे.)

ढुकाड़ियोड़ौ—देखो 'ढुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढुकाड़ियोड़ी)

ढुकाणौ, ढुकाबौ-क्रि०स०—कार्य में प्रवृत्त करना, कार्य आरम्भ कराना, लगाना।
ढुकाणहार, हारौ (हारी), ढुकाणियौ—वि०।
ढुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
ढुकाईजणौ, ढुकाईजबौ—कर्म वा०।
ढूकणौ, ढूकबौ—अक० रू०।

ढुकायोड़ौ-भू०का०कृ०—कार्य में प्रवृत्त किया हुआ, कार्य आरम्भ कराया हुआ, लगाया हुआ।
(स्त्री० ढुकायोड़ी)

ढुकावणौ, ढुकावबौ—देखो 'ढुकाणौ, ढुकावौ' (रू.भे.)

ढुकावियोड़ौ—देखो 'ढुकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढुकावियोड़ी)

ढुक्कणौ, ढुक्कबौ—देखो 'ढूकणौ, ढूकबौ' (रू.भे.)
उ०—हुंकार नाद वन सिंह हुक्कि। ढूंढ़त भक्ष निसचार ढुक्कि।
—राजविलास

ढुक्कियोड़ौ—देखो 'ढूकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० ढुक्कियोड़ी)

ढुगली-सं०स्त्री०—देखो 'ढिगलौ' (अल्पा. रू.भे.)

ढुगलौ—देखो 'ढिगलौ' (रू.भे.)

ढुचकौ-सं०पु०—धीरे-धीरे दौड़ने की एक चाल।

ढुचरौ-वि० (स्त्री० ढुचरी) १ वृद्ध, बुड्ढ़ा. २ अशक्त, निर्बल।
सं०पु०—पत्नी का पिता, श्वसुर (अवज्ञा)

ढुरियौ-सं०पु०—ऊँट की चाल विशेष (शेखावाटी)

ढुळकणौ, ढुळकबौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकबौ' (रू.भे.)
उ०—दो आंसूड़ा ढुळकनै उणरी पेटी रा खजांना में जुड़ग्या।
—वांणी

ढुळकाणौ, ढुळकावौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकावौ' (रू.भे.)

ढुळकायोड़ौ—देखो 'ढळकायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढुळकायोड़ी)

ढुळकियोड़ी—देखो 'ढळकियोड़ी' (रू.भे.)

(स्त्री० ढुळकियोड़ी)

ढुळड़ी -देखो 'ढूली' (अल्पा., रू.भे.) उ०—अदभुत लसै छब गवर अंग, पदमणि कोमळ चंपक प्रसंग। ढुलड़यां रमै संग सखी ढूळ, दमकंत अंग जरकस दकूळ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

ढुळढुळ-सं०स्त्री०—युद्ध के बाजे की आवाज, ढोल की आवाज।

उ०—निहट्टो 'जैत' घुरै नीसांण, खळभ्भळ होइ दळां खुरसांण। महा मुहि खेत्र चढ़ै बिहु मल्ल, ढुळढ्ढुळ ढोल ढमंकै ढल्ल।

—रा.ज. रासौ

ढुळणौ, ढुळबौ-क्रि०अ०—१ गिर जाना, लुढ़क जाना, बह जाना।

उ०—१ घणा रत छूटत फुटत घाट, मजीठ जांणि ढुळै रंग माट।

—सू.प्र.

उ०—२ पाणी ढुळै है, हाथ लुळै है, ढीली नथ ढळकै है, प्रेम री झांई जाहर झळकै है।—र. हमीर

२ वीर गति को प्राप्त होना। उ०—१ क्रोध मुखी सारां मति कांमति, विसधारी निज लीध वर। ढुळियै 'रयण' ढोलियै ढोवै, लोह तणा वाजै लहर।—दूदौ

उ०—२ सवाहा जोध ढुळै स-सनाह। गुड़ै गज थाट हुवौ गजगाह।

—रा.ज. रासौ

३ अत्यधिक स्नेह के कारण द्रवित होना। उ०—सांम क्रपा कर सूर की, आंसूयांज उघारे। नरसीहा के हेत सूं, हूंडी सतकारे। प्रभु तैं माधव ऊपरां, ढुळ कांवळ ढारे, भळकै खांडा भवन के, पत राखी प्यारे।—भगतमाळ

४ कृपालु होना, अनुकूल होना, प्रसन्न होना. ५ झुकना, प्रवृत्त होना. ६ (चँवर का) लहर खाकर डोलना, इधर-उधर हिलना-डुलना। उ०—१ तांत तणेका जस हका, मद प्याला मतवाळ। पोळहरां चमरां ढुळै, ऊ 'भारांणी' भाळ।—वां.दा.

उ०—२ चम्मरां ढुळतेस चारै। तखत बैठो छत्र धारै।—सू.प्र.

ढुळणहार, हारौ (हारी), ढुळणियौ—वि०।

ढुळवाड़णौ, ढुळवाड़बौ, ढुळवाणौ, ढुळवाबौ, ढुळवावणौ, ढुळवाववौ, ढुळाड़णौ, ढुळाड़बौ, ढुळाणौ, ढुळावौ, ढुळावणौ, ढुळाववौ—

प्रे०रू०।

ढुळिओड़ो, ढुळियोड़ौ, ढुळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढुळीजणौ, ढुळीजबौ—भाव वा०।

ढळणौ, ढळबौ—रू०भे०।

ढुळवाई, ढुळाई—देखो 'ढोळाई' (रू.भे.)

ढुलार, ढुलारौ-सं०पु०—समूह, झुण्ड। उ०—झली मुसालां जोत सूं, अधरात दोफारां। भगतण, पातर, कंचणी, ढोलण ढुलारा।

—मयारांम दरजी री वात

ढुळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ, लुढ़का हुआ, बहा हुआ. २ वीर गति को प्राप्त हुवा हुआ. ३ अत्यधिक स्नेह के कारण द्रवित हुवा हुआ. ४ कृपालु हुवा हुआ, अनुकूल हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ. ५ प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ. ६ (चँवर का) लहर खा कर डोला हुआ, इधर-उधर हिला-डुला हुआ।

(स्त्री० ढुळियोड़ी)

ढुवारौ-सं०पु०—एक प्रकार का कीड़ा।

ढुवौ-सं०पु०—१ समूह, झुण्ड। उ०—अर अनेक वार दिल्ली रा साह जवनेस अलाउद्दीन रा फौजां रा बिखेरिया ढुवा।—वं.भा.

२ सेना, दल। उ०—जरै कंवर री पविकर नागौर आय सौ सासन प्रामारां दाहिमांनूं सुणाय रसरारा तंतुवां रै समांन एक मतै हुवौ, अर नागपुर री लज्जा कैमास नूं भळाय अणिहलपुर गजनवी रा अनीक में रतिवाह देण हांकियो—वणाय ढुवौ।'—वं.भा.

३ मिट्टी का ढेर. ४ पीठ के नीचे का भाग।

क्रि०प्र०—भांगणौ

मुहा०—ढुवा भांगणा—खूब पीटना।

५ आक्रमण, हमला।

रू०भे०—ढुओ, ढुहौ, ढूओ, ढूवौ, ढूहौ।

ढुही—देखो 'ढुई' (रू.भे.) उ०—तद अमरावां अरज कीवी जे बाहर नीसर राड़ करै नहीं, ढुही घसोय भींतां में बैठा छै, तिणसूं कूंच करीजै, मुलक में अमल कीजै।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

ढुहौ—देखो 'ढुवौ' (रू.भे.)

ढूकणौ—देखो 'ढूकणो' (रू.भे.)

ढूंग, ढूंगड़—देखो 'ढूंगौ' (मह., रू.भे.) उ०—ढूंग उघाड़ै ढगळ, मूंछ मुख घुरड़ मुंडावै। जन्मभूमि में जाय, भीख ले जन्म भंडावै।

—ऊ.का.

ढूंगरी-सं०स्त्री०—घास को विशेष ढंग से जमा कर बनाया हुआ छोटा ढेर।

ढूंगलियौ—देखो 'ढूंगौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंगलौ, ढूंगियौ—देखो 'ढूंगौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंगोड़—देखो 'ढूंगौ' (मह., रू.भे.)

ढूंगौ-सं०पु०—कमर के नीचे और जांघ के ऊपर गुदा के पास का मांसल भाग, चूतड़, कूल्हा।

मुहा०—१ ढूंगा कूदाणा—कूल्हे मटकाना. २ ढूंगां माथै ओढ़णौ—निर्लज्ज होना, बेशर्म होना. ३ ढूंगां रै एडियां लगाणी—भाग जाना, टल जाना, हट जाना, खिसक जाना।

अल्पा०—ढूंगलियौ, ढूंगलौ, ढूंगियौ।

मह०—ढूंग, ढूंगड़, ढूंगोड़।

ढूंचौ-सं०पु०—साढ़े चार का पहाड़ा।

ढूंड—१ देखो 'ढूंढ़' (रू.भे.) २ देखो 'ढूंढ़ियौ' (मह., रू.भे.)

३ देखो 'ढूंढ़ौ' (मह., रू.भे.)

ढूंडड़—१ देखो 'ढूंढ़ौ' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'ढूंढ़ियो' (मह., रू.भे.)

ढूंडड़ियो—१ देखो 'ढूंढ़ियो' (रू.भे.)
 २ देखो 'ढूंढ़ो' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंडियो—१ देखो 'ढूंढ़ियो' (रू.भे.)
 २ देखो 'ढूंढ़ो' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंडीड़—१ देखो 'ढूंढ़ियो' (मह., रू.भे.)
 २ देखो 'ढूंढ़ो' (मह., रू.भे.)

ढूंडो—देखो 'ढूंढ़ो' (रू.भे.)

ढूंढ़–सं०स्त्री०—१ खोजने की क्रिया या भाव, तलाश, खोज. २ अन्वेषण. ३ पीठ में कमर के नीचे का भाग, कूल्हों के पास तथा चूतड़ के ऊपर का भाग। उ०—तद खाड़ैती उणरी खांच नै ढूंढ़ माथै डंडो जमायो।—वांणी

मुहा०—ढूंढ़ घड़णा—पीटना।

४ बच्चे के जन्म के उपरान्त प्रथम होली पर किया जाने वाला संस्कार। उ०—चंग म्हांरी गै'री वाजै, खाल वाजै घेटा री। ढूंढ़ तौ करावौ थांरै मोवी वेटा री, म्हांनै खाजा दौ।—लो.गी.

वि०वि०—इस संस्कार के अवसर पर शिशु की जाति, मोहल्ले अथवा गांव के लोग फाल्गुन के गीत गाते हुए शिशु के घर पर आते हैं। शिशु का सम्बन्धी एक बड़ा बच्चा पाट पर शिशु को गोद में ले कर बैठ जाता है और आने वाले आदमियों में से दो आदमी एक लम्बी लाठी के दोनों छोरों को अपने हाथों में पकड़ कर शिशु के ऊपर उसे आडी स्थिति में रखते हैं। दूसरे आदमी जिनके हाथों में भी डंडे होते हैं, उस आड़ी लाठी पर डंडों से हल्के-हल्के प्रहार करते हैं जिससे तड़-तड़ की सम्मिलित ध्वनि निकलती रहती है। एक आदमी, जो उन सब में अगुआ होता है, रस्म के अनुसार कुछ कुल-प्रशंसक व आशीर्वादात्मक काव्य के चरण बोलता रहता है और दूसरे आदमी उसे दोहराते रहते हैं। इस क्रिया के पश्चात् उस घर का मालिक सब आगन्तुकों के अगुआ को भेंट स्वरूप अपनी स्थिति के अनुसार कुछ पैसे, गुड़, खाजे, मिष्ठान्न आदि देता है। कहीं-कहीं पर पर्दा रखने वाली जातियों में केवल ब्राह्मण ही घर में जा कर इस रस्म का दस्तूर करता है और दूसरे आदमी बाहर खड़े रहते हैं।

५ खोज। उ०—रंग राग ज्या घाट त्रिवेणी, गगन में घोर परो री। ढूंढ़ जाय निज मन री कीजै, फूल्या मुक्ति गहो री।
—स्री हरिरांमजी महाराज

६ जयपुर रियासत के अचरोल के पास की पहाड़ियों से निकलने वाली एक नदी।

रू०भे०—ढुंढ़, ढूंड।

७ देखो 'ढूंढ़ियो' (मह., रू.भे.)
८ देखो 'ढूंढ़ो' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंढ़ड़—१ देखो 'ढूंढ़ियो' (मह., रू.भे.)
 २ देखो 'ढूंढ़ो' (मह., रू.भे.)

ढूंढ़ड़ियो—१ देखो 'ढूंढ़ियो' (रू.भे.)
 २ देखो 'ढूंढ़ो' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंढ़णौ, ढूंढ़बौ–क्रि०स०—१ खोज करना, तलाश करना।
 उ०—गोकुळ ढूंढ़ ब्रिंदावन ढूंढ़यौ, ढूंढ़ी मथुरा कासी है। रैणी दिवस मछळी ज्यूं तळफां, तळफ तळफ जिवड़ो जासी है।—मीरां
 २ पीटना। ज्यूं—धणी अलफताई करी तौ ढूंढ़ नांखूला।
 ३ बच्चे के जन्म के उपरान्त प्रथम होली पर संस्कार विशेष की क्रिया करना।
 ढूंढ़णहार, हारौ (हारी), ढूंढ़णियौ—वि०।
 ढूंढ़वाड़णौ, ढूंढ़वाड़बौ, ढूंढ़वाणौ, ढूंढ़वाबौ, ढूंढ़वावणौ, ढूंढ़वाववौ, ढूंढ़वाणौ, ढूंढ़वाबौ, ढूंढ़ावणौ, ढूंढ़ाववौ—प्रे० रू०।
 ढूंढ़ाड़णौ, ढूंढ़ाड़बौ, ढूंढ़ाणौ, ढूंढ़ाबौ, ढूंढ़ावणौ, ढूंढ़ाववौ—क्रि०स०।
 ढूंढ़िओड़ौ, ढूंढ़ियोड़ौ, ढूंढ़योड़ौ—भू०का०कृ०।
 ढूंढ़ीजणौ, ढूंढ़ीजबौ—कर्म वा०।

ढूंढ़ला–सं०स्त्री० [सं० ढुंढा] ढुंढा नाम की एक राक्षसी।

ढूंढ़ा–सं०स्त्री०—पँवार वंश की एक शाखा।

ढूंढ़ाड़–सं०स्त्री०—भूतपूर्व आम्बेर या जयपुर राज्य का एक नाम।
 रू०भे०—ढंढ़ा, ढंढ़ाड़, ढुंडाड़, ढूंढ़ाड़, ढूंढ़ार, ढूंढाहड़।

ढूंढ़ाड़ी–वि०—'ढूंढ़ाड़' सम्बन्धी।
 सं०स्त्री०—१ राजस्थानी भाषा की पांच बोलियों में से एक बोली (डाइलेक्ट) जिसके अन्तर्गत तोरावाटी, जयपुरी, काठैड़ी, राजावाटी, अजमेरी, किशनगढ़ी, शाहपुरी एवं हाडौती उप-बोलियां सम्मिलित हैं। इसे मध्यपूर्वी राजस्थानी भी कहा जाता है।

ढूंढ़ाड़ौ–वि० (स्त्री० ढूंढ़ाड़ी) जयपुर राज्य का, जयपुर राज्य सम्बन्धी।
 सं०पु०—१ ढूंढ़ाड़ प्रदेश का पुरुष. २ कछवाह राजपूत।
 रू०भे०—ढूंढ़ाहड़ो।

ढूंढ़ाहड़—देखो 'ढूंढ़ाड़' (रू.भे.)

ढूंढ़ाहड़ो—देखो 'ढूंढ़ाड़ो' (रू.भे.)

ढूंढ़ाहर—देखो 'ढूंढ़ाड़' (रू.भे.) उ०—धर पद्धर को पातस्या, ढूंढ़ाहर की ढाल। आंन महीपत के मुकट, शत्रुन को नटसाल।—ला.रा.

ढूंढ़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ खोज किया हुआ, तलाश किया हुआ. २ पीटा हुआ. ३ (वह बच्चा) जिसके जन्म के उपरान्त प्रथम होली पर संस्कार विशेष हो चुका हो।

ढूंढ़ियो–सं०पु० (बहु व० ढूंढ़िया) १ बच्चे के जन्म के पश्चात् प्रथम होली पर 'ढूंढ़' नामक संस्कार करने वाला आदमी, जो शिशु की जाति, मोहल्ले अथवा गांव का होता है और गाता-वजाता घर पर आता है।
 २ देखो 'ढूंढ़ो' (अल्पा., रू.भे.)

ढूंढ़ी–सं०स्त्री०—मरे हुए पशु का अस्थि-पंजर।

ढूंढ़ो–सं०पु०—१ पुराना मकान। उ०—हिरण नै देख्यौ नहीं नै हिरण पातसाह रा डर सूं अळगो ढूंढ़ा में छिपियो, नै कुमरजी सोच करै।—रीसाळू री वात

२ बड़ा भवन (गढ़, किला) उ०—१ जाडी किलै सफील, मांय ज नर निवळा वसै। दूंढ़ो ढहतां ढील, रती न लागै राजिया।
—किरपारांम

उ०—२ अर मांह रावळा में जेसळमेरीजी संपाडो कर गादी ऊपर बिराजिया। केस माथा रा बटारण उरळा करै छै, गूंथण वास्तै। दूजो बटारण रै हाथ में तखतो छै। माथा नायण गूंथै छै, जेठ रो महीनो छै, ग्रीखम रितु छै। जिसै अेक वतूळियो आयो सू रेत मूं कपड़ा भरीज गया। तद कपड़ा भाडण नूं ऊठ खडा हुवा। रीस कर कहण लागा जो कोट रै धणी रै बेटी ई धणी हुसी विण बेटी नूं दूंढै रै धणी नै देणी। बीजा धणाई डुळता फिरै। लुगायां रै सिर में धूड़ घतावता फिरै। सू ठाकुरसी जी नूं कह्यो सू सुण नै चुप रह्या। वात नूं मन में राखी।—द.दा.

३ खण्डहर। उ०—'जेहल' ताळ खड़ीण व्है, तरवर लाकड़ होय। हरम ढहै दूंढ़ा हुवै, जस अविकारी जोय।—बां.दा

४ शरीर का पृष्ठ भाग, पीठ। उ०—सगरांमा कह ऊंट कूटसी चढ़-चढ़ दूंढ़ो। आंन देव रा दास, धणो दीसैला भूंडो।—सगरांमदास

५ पंवार वंश की दूंढ़ा शाखा का व्यक्ति।

अल्पा०—ढुंडियो, ढूंडड़ियो, ढूंडड़को, ढूंडियो, दूंढ़ड़ियो, ढूंढ़ियो।
मह०—ढूंड, ढूंडड़, ढूंढ़, ढूंढ़ड़।

दू-सं०पु०—१ सेतु. २ अधर्म. ३ शरीर।
सं०स्त्री०—४ हथिनी. ५ हरिताल।
वि०—स्थिर (एका.)

दूओ—देखो 'ढुवो' (रू.भे.)

ढूकड़ो-वि० [सं० ढौकति, प्रा० ढुक्क] (स्त्री० ढूकड़ी) समीप, निकट, पास। उ०—१ सेंवज जिण वरस इण गांव में पाकती मिनख निहाल व्हे जावता। अठी नै होळी ढूकड़ी आवती नै उठी नै खेतां में साख पाक नै तयार व्है जावती।—रातवासो

उ०—२ जिणवर आंण हियइ सिउं जड़ी। तीहं जीव मुगति छइ ढूकड़ी।—चिहुंगति चउपई

उ०—३ वंस छतीस वरंम गनोमां गाळणो। आभाळो अधपती भली द्रढ़ भाळणो। जारज पंचम जोध ढिलीवै ढूकड़ो। आठूं पहर अवीह खेड़ेचो रहै खड़ो।—किसोरदांन बारहठ

रू०भे०—ढूंकणो, ढूकड़उ, ढूकणो।

ढूकढ़ाक—वि०—कुछ नहीं। उ०—यही लो संभार आगै ढूकढ़ाक है।—स.कु.

ढूकणो—देखो 'ढूकड़ो' (रू.भे.)

ढूकणो, ढूकवो—क्रि०अ०—१ किसी कार्य में प्रवृत्त होना, तत्पर होना, लगना। उ०—अहर-रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि-व्रन्न। जांण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न।—ढो.मा.

२ झुकना। उ०—करहा, पांणी खंच पिउ, त्रासा घणा सहेसि। छीलरियउ ढूकिसि नहीं, भरिया केथि लहेसि।—ढो.मा.

३ सम्मिलित होना, साथ। उ०—जागरण जागै लाज न लागै, ढांगां ढिग ढूकंदा है। सुण भीण न सार्जै वीण न बाजै, करमहीण कूकंदा है।—ऊ.का.

४ पहुँचना। उ०—१ हाडोती हिळमिळ हुई, मेळ कियो मेवाड़। घर 'जसवंत' रै घुमड़ नै, ढूकी घर ढूंढ़ाड़।—ऊ.का.

उ०—२ मंड वच जेणि सेहुरा कांमण, कर गैवर मालै फिरमाळ। ढूकी ढाल वेणि ढळकंती, तोरण जैतारण रिणताळ।—दूवो

उ०—३ सो अभयसिहजी रो संचियो अरावो थो सो आंण लागियो सो नेड़ो ढूक सकै नहीं।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

५ प्रारम्भ होना, शुरू होना। उ०—हमैं कळजुग आयो नै कळजुग रो पवन लागेवा ढूको।—मयारांम दरजी री वात

ढूकणहार, हारो (हारी), ढूकणियो—वि०।
ढूकवाड़णो, ढूकवाड़बो, ढूकवाणो, ढूकवाबो, ढूकवावणो, ढूकवावबो, ढूकाड़णो, ढूकाड़बो, ढूकाणो, ढूकाबो, ढूकावणो, ढूकावबो—प्रे०रू०
ढूकिओड़ो, ढूकियोड़ो, ढूक्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढूकीजणो, ढूकीजबो—कर्म वा०।

ढूकवो-वि० (स्त्री० ढूकवी) समीप, निकट। उ०—हाकवै दिली दरियाव हीलोळती, ढूकवै साह अमराव ढाहै। आगरै सहर हडताल पड़िया अमर, मारवा राव दरियाव मांहै।—अमरसिंघ राठोड़ री गीत

ढूकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ किसी कार्य में प्रवृत्त हुवा हुआ, तत्पर हुवा हुआ. २ झुका हुआ. ३ सम्मिलित हुवा हुआ, साथ हुवा हुआ. ४ पहुँचा हुआ. ५ प्रारम्भ हुवा हुआ।
(स्त्री० ढूकियोड़ी)

ढूढ़ी-सं०स्त्री०—रीढ़ की हड्डी के नीचे का भाग जहां कूल्हे की हड्डियां मिलती हैं, त्रिकास्थि।

ढूब-सं०स्त्री०—१ पीठ का उभरा हुआ भाग, कूबड़. २ धातु के बरतनों में पड़ने वाली मोच जिससे या तो उसका कोई हिस्सा अंदर बैठा हो या बाहर उभरा हुआ हो. ३ देखो 'ढूबो' (मह., रू.भे.)
मह०—ढूबड़, ढूबल, ढुबोड़।

ढूबड़—१ देखो 'ढूब' (मह., रू.भे.) उ०—पूठ ढूबड़ कूबड़ो, मोटो माथो जास। दांत गदहड़ा सारिखा, तेहवा दांत उजास।
—खीपाळ रास

२ देखो 'ढूबो' (मह., रू.भे.)

ढूबड़ियो, ढूबड़ो—देखो 'ढूबो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—होय जावै वळै वै'रा नै बोळा, गूंगा मूगा बड़का बोला रे। लूला टूंटा फेरत डोला कूबड़ा ढूबड़ा भोळा रे।—जयवांणी

ढूबल—१ देखो 'ढूब' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'ढूबो' (मह., रू.भे.)

ढूबलियो, ढूबली—देखो 'ढूबो' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० ढूबली)

ढूबियो—देखो 'ढूबो' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० ढूवी)

ढूवीड़—१ देखो 'ढूव' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'ढूवौ' (मह., रू.भे.)

ढूवौ-सं०पु० (स्त्री० ढूवी) १ वह मनुष्य जिसके पीठ का भाग उभर गया हो. २ वह मनुष्य जिसकी पीठ झुक गई हो, कुवड़ा. ३ वह बरतन जिसके मोच पड़ी हो।

अल्पा०—ढूवड़ियौ, ढूवड़ौ, ढूवलियौ, ढूवलौ, ढूवियौ।

मह०—ढूव, ढूवड, ढूवल, ढूवील।

ढूमलियौ—देखो 'ढूमलौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढूमलौ-सं०पु०—कागज आदि को गला कर लुग्दी से बनाया हुआ बरतन विशेष।

अल्पा०—ढूमलियौ।

ढूळ, ढूल-सं०पु०—झुण्ड, समूह। उ०—१ माळां चढ़ ऊभा रखवाळ, दाकळ गोफणिया सूंसाय। उडै जद चिड़ियां ढूळ अलेख, अजकता आभै में गम जाय।—सांझ

उ०—२ किनियांणी वधती कळा, ढा'णी सत्रवां ढूळ। सिंह पलांणी सादुळौ, तांणी हाथ त्रिसूळ।—वालावक्स वारहठ

उ०—३ केसरिआ वणाव कीआं थकां आगै वखांणी तिण भांति री नाइका पात्रां रा ढूल चालिआ जायै छै।—रा.सा.सं.

अल्पा०—ढूळकियौ, ढूलकियौ, ढूळकौ, ढूलकौ।

ढूळकियौ, ढूलकियौ—देखो 'ढूळ, ढूल' (अल्पा., रू.भे.)

ढूलकी—देखो 'ढूली' (अल्पा., रू.भे.)

ढूळकौ—देखो 'ढूळ, ढूल' (अल्पा., रू.भे.)

ढूलकौ—१ देखो 'ढूळ, ढूल' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'ढूलौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढूलड़—१ देखो 'ढूली' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'ढूलौ' (मह., रू.भे.)

ढूलड़ी—देखो 'ढूली' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ अनि वरिस वधै ताइ मास वधै ए, वधै मास ताइ पहर वधंति। लखण वत्रीस वाळ लीला मैं, राजकुंअरि ढूलड़ी रमंति।—वेलि.

उ०—२ महीना मांहै वधै, तितरौ रुकमणीजी अेक पुहर मांहै वधै। लखण वत्रीस संयुक्त। वाळ लीला मांहै राजकुंआरि ढूलड़ियां रमै छइ।—वेलि.टी.

ढूलड़की—देखो 'ढूली' (अल्पा., रू.भे.)

ढूलड़कौ—देखो 'ढूलौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढूलड़ौ—देखो 'ढूलौ' (मह., रू.भे.)

ढूली-सं०स्त्री०—१ गुडिया. २ देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)

उ०—सांतळ सोम हुत भगनी सुत, पह घेरिया जकां ढूली पत। वचिया कागद खेड विहांणै, छै संगटरौ सिवियांणै।—पा.प्र.

अल्पा०—ढुलड़ी, ढूलकी, ढूलड़की, ढूलड़ी।

मह०—ढूलड़।

ढूलौ-सं०पु० [सं० दुर्लभ] गुड्डा। उ०—१ नैणां रा सौगन करै, भै मांनै सुण भूत। रांमत ढूलां री रमै, रांडोली रा पूत।—वां.दा.

उ०—२ मावड़िया तन मैण रा, मिटै कदै नह मांद। मावड़िया ढूला मरद, चूल्हा हुंदा नांद।—वां.दा.

अल्पा०—ढूलकौ, ढूलड़कौ, ढूलड़ियौ, ढूलड़ौ।

मह०—ढूलड़।

ढूवौ—देखो 'ढुवौ' (रू.भे.)

ढूसर-सं०पु०—वनियों की एक जाति या इस जाति का वनिया।

ढूह, ढूहौ-सं०पु०—१ ढेर, टीला. २ देखो 'ढुवौ' (रू.भे.)

ढेंकली—देखो 'ढेकली' (रू.भे.)

ढेंकौ'-सं०स्त्री०—मादा मोर के वोलने की आवाज।

ढेंचाळ—देखो 'ढैंचाळ' (रू.भे.) उ०—झूंझार लड़ै खग पड़ै झाल। ढेंचाळ मुड़ै हिय हुड़ै ढाल।—पा.प्र.

ढे-सं०पु०—१ मन. २ मृग. ३ गढ़. ४ चर्म।

सं०स्त्री०—५ हींग (एका.)

ढेक, ढेकड़, ढेकल—देखो 'ढेकौ' (मह., रू.भे.)

ढेकलियौ—देखो 'ढेकौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढेकली-सं०स्त्री०—एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से सिंचाई के लिये कुए से पानी निकाला जाता है।

वि०वि०—इसमें एक ऊँची खड़ी लकड़ी पर जो नीचे से भूमि में गड़ी रहती है, उसके ऊपर के छोर पर एक आड़ी लकड़ी बीचोबीच से इस प्रकार लगाई जाती है कि उसके दोनों छोर नीचे ऊपर हो सकें। इस आड़ी लकड़ी के एक छोर पर पत्थर बांध दिया जाता है या मिट्टी थोप दी जाती है तथा दूसरे छोर पर जो कुए के ठीक ऊपर होता है, रस्सी द्वारा डोल बांध दिया जाता है। कुए की ओर वाले छोर को नीचे करने पर डोल कुए में जाकर भर जाता है। दूसरे छोर पर पत्थर आदि का वजन लगा रहता है जो आसानी से नीचा हो जाता है। उसके नीचा होते ही डोल वाला छोर ऊपर हो जाता है और डोल कुए से बाहर निकल जाता है।

रू०भे०—ढीक, ढेंकली।

ढेकियौ—देखो 'ढेकौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढेकीड़—देखो 'ढेकौ' (मह., रू.भे.)

ढेकौ-सं०पु०—१ कूल्हा, चूतड़।

अल्पा०—ढेकलियौ, ढेकियौ।

मह०—ढेक, ढेकड़, ढेकल, ढेकीड़।

ढेखळ-सं०पु०—पँवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

ढेटौ-वि०—धृष्ट, ढीठ।

ढेडभींग, ढेडभींगी, ढेडलभींगी—देखो 'ढेढ़भींगी' (रू.भे.)

ढेढ़-सं०पु० (स्त्री० ढेढ़ण, ढेढ़णी) १ चमार। उ०—रंगरेज छींपां नै लोहारौ रे, माळी दरजी नै सूथारौ। भट भाट भोपां नै भरड़ा रे, गुरुवा ढेढ़ां रा गुरड़ा।—जयवांणी

२ कौग्रा।

वि०—मूर्ख, नासमझ। उ०—काग पढ़ायो पींजरै, पढ़ग्यो च्यारू वेद। समझायो समझै नहीं, रह्यो ढेढ़-रो-ढेढ़।—सगरांमदास

रू०भे०—ढेढ़स।

ढेड़भींग, ढेढ़भींगी, ढेढ़लभींगी-सं०स्त्री० [सं० भृंग] टिड्डी के आकार का एक उड़ने वाला कीड़ा जिसकी गर्दन पर अर्द्ध चन्द्राकार आसमानी रंग का चमकीला कठोर पदार्थ होता है, भृंग विशेष।

रू०भे०—ढेडर्भीग, ढेडभींगी, ढेडलभींगी।

ढेढ़वाड़-सं०स्त्री०—१ चमारों का समूह. २ देखो 'ढेढ़वाडो'

ढेढ़वाड़ो-सं०पु० [रा० ढेढ़+सं० पाटकः=मोहल्ला] १ चमारों का मोहल्ला, चमारों के रहने का स्थान. २ वह घृणित स्थान जहां हड्डियां, मांस आदि बिखरा हुआ हो।

ढेढ़स—देखो 'ढेढ़' (रू.भे.) उ०—चौडैंधाड़ैं चोर, ढंग विन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नहीं किण जोग, मिळया घर घर रा मेढ़ी।—ऊ.का.

ढेढ़ियानट-सं०पु०—चमारों को नट क्रिया दिखाने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

ढेढ़ी—देखो 'ढेढ़' (रू.भे.) उ०—चौड़ैवाड़ै चोर, ढंग विन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नहीं किण जोग, मिळया घर घर रा मेढ़ी।—ऊ.का.

ढेण-सं०स्त्री०—१ सख्त भूमि, कठोर जमीन. २ समतल भूमि।

ढेणियालग, ढेणियालिया-सं०पु० [सं० ढेणिकालक, ढेणिकालिका] पक्षी विशेष (जैन)

ढेपाळो-वि० (स्त्री० ढेपाळी) तहयुक्त, तहवाला। उ०—पंच धार लापसी कंसार, घांन रसोई भाव अढ़ार। अति ऊजळां ढेपाळां दही, भंजाई ए राउळ लही।—कां.दे.प्र.

ढेपो-सं०पु०—१ किसी जमने वाले पदार्थ का जमा हुआ खंड, जमा हुआ ढोंका. २ गोबर से बना हुआ वह बड़ा उपला (कंडा) जिसमें मिट्टी की मात्रा अधिक हो।

वि०—१ मूर्ख, नासमझ. २ आलसी, सुस्त।

ढेव, ढेवड़, ढेवर—देखो 'ढेवो' (मह., रू.भे.)

ढेवरियो—देखो 'ढेवो' (अल्पा., रू भे.)

(स्त्री० ढेवरी)

ढेवरी-सं०स्त्री०—१ तरबूज, खरबूजे आदि पर से कटा हुआ छोटा गोळ या चौकोर टुकड़ा जो उसके सड़े-गले या अच्छे-बुरे का मालूम करने के लिए काट कर अलग किया जाता है और जांच के बाद वहीं पर वापिस लग सकता है।

मि०—टाकी (२)

२ दीवार में खूंटी आदि लगाने के लिए पत्थर को काट कर उसमें लगाया जाने वाला काष्ठ का टुकड़ा जिसमें खूंटी लगती है. ३ लकड़ी को गढ़ कर या काट कर बनाया हुआ टुकड़ा जो किसी छेद को रोकने के लिए काम आता है जैसे नल के 'ढेवरी' लगाने से पानी का आना बन्द हो जाता है. ४ धातु, पत्थर या काष्ठ का बना चौकोर या गोल टुकड़ा जो देशी किवाड़ों की चूल के नीचे गड़ा या लगा रहता है और उस पर किवाड़ घूमता है।

वि०—बड़े पेट वाली।

ढेवरो—देखो 'ढेवो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढेवरी)

ढेवल—देखो 'ढेवो' (मह., रू.भे.)

ढेवलियो—देखो 'ढेवो' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० ढेवली)

ढेवलो—देखो 'ढेवो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढेवली)

ढेवियो—देखो 'ढेवो' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० ढेवी)

ढेवीड़—देखो 'ढेवो' (मह., रू.भे.)

ढेवो-वि० (स्त्री० ढेवी) बड़े पेट वाला।

रू०भे०—ढेवरो, ढेवलो।

अल्पा०—ढेवरियो, ढेवलियो, ढेवियो।

मह०—ढेव, ढेवड़, ढेवर, ढेवल, ढेवीड़।

ढेमकी—देखो 'ढोलक' (अल्पा., रू.भे.)

ढेर-सं०पु०—१ राशि, समूह।

अल्पा०—ढेरड़ो, ढेरी।

२ देखो 'ढेरो' (मह., रू.भे.)

ढेरड़ो—१ देखो 'ढेर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—आक नींबां तणो धाख अध केरड़ा। घिरिणि नीली हुई घांन रा ढेरड़ा।—पी.ग्रं.

२ देखो 'ढेरो' (अल्पा., रू.भे.)

ढेरण—देखो 'ढेरो' (मह., रू.भे.)

ढेरणियो—देखो 'ढेरो' (अल्पा., रू.भे.)

ढेरणो—देखो 'ढेरो' (रू.भे.)

ढेरणो, ढेरबो—देखो 'ढेरवणो, ढेरवबो' (रू.भे.)

मुहा०—१ कांन ढेरणा—ध्यान देना. २ मूंडो ढेरणो—लालायित होना, इच्छुक होना. ३ होट ढेरणा—देखो 'मूंडो ढेरणो'।

ढेरवणो, ढेरवबो-क्रि०स०—शिथिल करना, ढीला करना।

उ०—अळगी ही नेंड़ी की उखूवते, देठाळो हुओ दलां दुंह। बागां ढेरवियां बाहरूए, मारकुए फेरिया मुंह।—वेलि.

ढेरवाल—देखो 'ढोरवाल' (रू.भे.)

ढेरवियोड़ो, ढेरियोड़ो-भू०का०कृ०—शिथिल किया हुआ, ढीला किया हुआ।

(स्त्री० ढेरवियोड़ी, ढेरियोड़ी)

ढेरियो-सं०पु०—१ बच्चों के खेलने का डोरी बंधा हुआ छोटा पत्थर।

वि०वि०—इसे किसी पेड़, तारों आदि में अटकी हुई या उड़ती हुई पतंग को उतारने के लिये फेंका जाता है। इसके अतिरिक्त बच्चे एक दूसरे के ढेरिये की डोरी परस्पर लड़ाते हैं जिससे कमजोर डोरी

कट जाती है।

२ देखो 'ढेरी' (अल्पा., रू.भे.)

ढेरी-सं०स्त्री०—१ देखो 'ढेर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ढोळै दूधाळू गळियोड़ी गेरी। ढाळै ढळियोड़ी रतनां री ढेरी।—ऊ.का.

२ देखो 'ढेरौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढेरौ-सं०पु०—१ परस्पर एक दूसरी को बीचोंबीच से काटती हुई दो आड़ी लकड़ियों के बीच में एक खड़ी लकड़ी जोड़ कर बनाई हुई फिरकी जिससे सुतली, रस्सी आदि बट कर तैयार की जाती है।

उ०—१ खत्या खेसलिया भाखलिया खांधै, वेभड़ दांमोदर चांमोदर वांधै। मुखिया मनमोहण दोहण घर मेढ़ी, गोढ़ै ढेरौ ह्वै खूंणी में गेढ़ी।—ऊ.का.

उ०—२ ढीली लांगां रा ढेरा ढुळकाता। टोघड़ टुकड़ां रा खेरा खळकाता।—ऊ.का.

२ एक निश्चित मात्रा में फिरकी (ढेरौ) पर कात कर तैयार की हुई ऊन, सूत या रेशम का व्यवस्थित रूप से लपेटा हुआ अण्डाकार या गोल गुच्छा (कोया) जो फिरकी की आड़ी और खड़ी लकड़ियों को निकाल देने से अलग हो जाता है।

३ बड़ी यूका, जूं। ४ देखो—'ढेर' (१) (मह. रू.भे.)

वि०—मूर्ख, नासमझ। उ०—ढीलौ मूंडौ मेलै ढेरा. टिकगा पांणी पीवण टेरा। डळां उठै कर दीधा डेरा, चाटै हिळगा चाटण चेरा।
—ऊ.का.

रू०भे०—ढेरणौ।

अल्पा०—ढेरड़ौ, ढेरणियौ, ढेरियौ।

मह०—ढेर, ढेरण।

ढेल-सं०स्त्री०—मादा मोर, मोरनी। उ०—सखी चालउ हे करनी गज गेलि, ढेल तणी पर ढळकती। सखी म्हांका सद्गुरु मोहनवेलि, वांणि अमी रस उपदिसइ।—ऐ जै.का.सं.

ढेलड़ी-सं०स्त्री०—१ मादा मोर, मोरनी. २ देखो 'दिल्ली'।
(अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ ईखै ढेलडी नासपुर नासै, भटनेरौ भड़वायौ। कलमां कालव ग्रहणे कोटां, ईखै 'मोकळ' आयौ।

—महारांणा मोकळ रौ गीत

उ०—२ जूनी ढेलड़ी रै जंपै सायजादी, वांका जोध विलूंधा। औरंगसाह घरां किम आवै, राह 'दुरग्गै' रुंधा।—रघौ मुंहतौ

रू०भे०—ढेलणी।

यौ०—ढेलड़ी-पत।

ढेलणी—१ देखो 'ढेलड़ी' (रू.भे.) उ०—तूं तौ कांग्री, म्हांरी होळी माता, गरभरी, तूं तौ देख गेवरियां रौ ढाळौ रे। ढाळ्या ढळक'र चाल्यौ ढेलणी, मोल्या मळक'र चालै मोरड़ी।—लो.गी.

२ देखो 'दिल्ली' (अल्पा., रू.भे.)

यौ०—ढेलणी-पत।

ढेलू—देखो 'ढालू' (रू.भे.)

ढेलौ—देखो 'ढळौ' (रू.भे.)

ढेंक-सं०पु०—एक मांसाहारी पक्षी विशेष। उ०—एक वीर स्त्री पती जुद्ध में मारीजियोड़ी पड़ियौ छै तिण नै देख सखी नै कह रही छै—हे सखी! कंकांणी ढेंक री स्त्री पगां री मांस खावै तिण नै तौ कहै आ म्हारै पती रा चरण चांपै छै—वी.स.टी.

ढेंकणौ, ढेंकबौ-क्रि०अ०—१ रम्भाना। उ०—ओभाजी गाय नै टोरी। वा मचकी। ठांण री हर करण लागी। अबकी ओभाजी नैजरणै री मदद ली। गाय माडांणै टुरी। दीनता अर करुणाभरी भोळी द्रिस्ट घर कांनी नांखी। पण फजूल। वा ढेंकी, छेकड़ली वार निरासाभरी-निजर कैई-नै देखण सारू पसारी, पण ओभाजी-री डिच-डिच विये-नै वठै ज्यादा पग ठांमण को दिया नी।—वरसगांठ

२ मादा मोर का बोलना।

रू०भे०—'ढीकणौ, ढीकवौ'

ढेंकियोड़ी-भू०का०कृ०—१ रम्भाई हुई. २ बोली हुई (मोरनी)

ढेंचाळ, ढेंचाळौ-सं०पु०—हाथी, गज। उ०—है खुरै गाहंतो हेकां, बोलाड़ंतौ भड़ां बीजां, साहंतौ वाहंतौ सार गाहंतौ सरीक। ढाहंतौ काळां ढेंचाळा रौदाळां पौचाळौ राजा, वडा व्रद बीका वाळा वहै दूजौ बीक।—वीठू दूदौ सुरतांणोत

वि०—वड़ा, मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट। उ०—जिण वार वावन जाग यूं। अत हरख चौसठ आग यूं। तरवार चंद्र त्रिकाळ यूं। ढैह पड़चौ 'ढेंव' ढैंचाळ यूं।—पा.प्र.

(मि० ढींच, ढींचाळ)

ढैंभ—देखो 'ढोम' (रू.भे.)

ढैंरौ—देखो 'ढींरौ' (रू.भे.) उ०—कोड करायां करै, भरण नै पालौ भारी। ऊंटां ढैंरा ढोय, छापवै वाड़ां सारी। मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूंपल काढ़ै। नेसावरियां डगा, घणैरा घुरड़ै वाढै।—दसदेव

ढै-सं०पु०—मेघ, बादल. २ कामदेव।

सं०स्त्री०—३ दामिनी. ४ बक पंक्ति. ५ वीरबहूटी.

६ आशा (एका.)

ढैणौ, ढैबौ—देखो 'ढहणौ, ढहबौ' (रू.भे.)

ढैमक, ढैमकी, ढैमक, ढैमकी-सं०स्त्री०—ढोलक के आकार का चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रकार का वाद्य।

ढैयोड़ौ—देखो 'ढहियोड़ौ' (रू.भे.)

ढैर—देखो 'डेरौ' (१, २) (रू.भे.) उ०—गुरसल गावै गीत, कमेड़ी चंग वजावै। चिड़ी जिनावर वैठ, ढैर में मौज उडावै।—लो.गी.

ढैहणौ, ढैहबौ—देखो 'ढहणौ, ढहबौ' (रू.भे.) उ०—१ छळ सूं वळ दाख गढ़ी चढ़णौ। वरदायक रात थकां वढ़णौ। रण रोपय पाव खरौ रहणौ। ढळती निस 'पाल' खगां ढैहणौ।—पा.प्र

उ०—२ जिण वार वावन जाग यूं। अत हरख चौसठ आग यूं। तरवार चंद्र त्रिकाळ यूं। ढैह पड़चौ 'ढेंव' ढैंचाळ यूं।—पा.प्र.

ढो-सं०पु०—१ मुख. २ साधन. ३ धनवान. ४ प्रधान. ५ वाल (एका.)

ढोग्रो-सं०पु०—पत्थर जो 'ढीकलो' नामक यंत्र से शत्रु पर फेंका जाता है (?) उ०—तड डंवर धुतरणा रणतूर भैरू ग्रहै, सालळै रवदां पांच मवदां वहै। खेल री नीग्रसगा ढीकली रा ढोग्रा, सालकिया सवद सुण थाट ग्रांगण सोहा।—रुखमणी-हरण

ढोउ-सं०पु०—प्रहार, टक्कर, ग्राघात। उ०—गढ़ गरुउ ग्रनइ विसमो जीह तणो पाय पाताळि पइठउ, परवत नइ लिग वइठउ, उच्चस्तर पोळि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगळ, विजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणी, ढीकुली तणी परंपरा, जळ निभ्रित खाई तणउ दुरग, प्रवेश नहीं, हाथियां ढोउ नहीं, पाखरिया रहण नहीं, नीसरणी ठाउ नहीं, भेद संभव नहीं।—व.स.

ढोक—देखो 'धोक' (रू.भे.) उ०—तहां राजा मोसर देख ग्राप राजा हीज थो, ढोक करि नै क्षेत्रपाळजी रै पांव पड़ियो।
—पंचदंडी री वारता

ढोकणो, ढोकवो—देखो 'धोकणो, धोकवो' (मह., रू.भे.)

ढोकळ—देखो 'ढोकळो' (मह., रू.भे.) उ०—वाळक भर वागळी ल्यावै, हरी वाड़ियां लूट कर। छाछेता, रायता, ढोकळ, किसत फोगलै चूंट कर।—दसदेव

ढोकळियो—देखो 'ढोकळो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

ढोकळी-सं०स्त्री०—देखो 'ढोकळो' (ग्रल्पा., रू.भे.)

ढोकळो-सं०पु०—१ चना, गेहूं, वाजरी, मक्का ग्रादि के चून की बनी हुई मोटी ग्रौर गोल रोटी जो कचोरी के ग्राकार की होती है ग्रौर वरतन को वन्द करके वाष्प द्वारा पकाई जाती है।
उ०—एकण नै तुस ढोकळा जी, पूरा पेट न थाय। एकण रै रहे लाडवा जी, वैठा भांणां के मांय।—जयवांणी
२ बड़ी यूका, जूं. ३ डलिया, छवड़ी (ग्रलवर)
वि०—मूर्ख, नासमझ।
ग्रल्पा०—ढोकळियो, ढोकळी।
मह०—ढोकळ।

ढोकियोड़ो—देखो 'धोकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० ढोकियोड़ी)

ढोटी-सं०स्त्री०—पुत्री, लड़की।

ढोटो-सं०पु०—पुत्र, लड़का। उ०—कुवज्या दासी कंस राय की, वे नंदजी के ढोटा। मीरां के प्रभु गिरवर नागर, कुवज्या वडी हरि : – रां

ढोणो, ढोवो-क्रि०स० [सं० ढौक्, प्रा० ढ] १ भेंट धरना, चढ़ाना। उ०—१ सुणउ सिंह! जइ सउ हइ, थाळ कचोळा जाई जोइ। एहनइ घरि पहुचउ सहु कोइ, धनदत्तइं ग्रांण्या सव ढोइ।
—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—२ फळ लेई ढोया जिणहरइ, कुळ ग्राचार लघु वय पणि करइ। वीजइ दिनि कहइ हूं ग्रांणिस्युं, तुम्हे रहउ वइठा ध्यांनस्यउं।
—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—३ तप ऊजमणइ रजत पाळणउ, सोवन पूतळि चंग। मोदक थाळ देहरइ ढोइ, जिनवर स्नात्र सुचंग—स.कु.
२ वोझ लाद कर ले चलना. ३ चलाना। उ०—सूर वरेवा ग्रच्छरां, रिण ढोया रथ्थां। सारा सत्र-दळ सोखिया, सांमंद ग्रगसथ्थां।—द.दा.
४ प्रवृत्त करना। उ०—कोहरि कोळाहळ वहु सुणी, ढोलउ ग्रायो पांणी-भणी। सगळै तिणि सांम्हो जोइग्रो, ग्रांणि प्रवाहि करहो ढोइयो।—ढो.मा.
ढोवणो, ढोववो—रू०भे०।

ढोवलो, ढोवो-सं०पु०—घड़े या माटे का मिट्टी का बना ढक्कन।
(शेखावाटी)

ढोमनिया-सं०स्त्री०—गाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति।

ढोमनियो-सं०पु०—'ढोमनिया' जाति का व्यक्ति।

ढोयोड़ो-भू०का०कृ०—१ रजु किया हुग्रा, सहमत किया हुग्रा, प्रसन्न किया हुग्रा, तैयार किया हुग्रा. २ वोझ लेकर चला हुग्रा, वोझ लाद कर ले गया हुग्रा. ३ चलाया हुग्रा. ४ प्रवृत्त किया हुग्रा।
(स्त्री० ढोयोड़ी)

ढोर-सं०पु० [सं० धुर्य] पशु, मवेशी। उ०—किसी'क कुटेम ही। ठौड़-ठौड़ ढोर इतरा मरघा हा के गांवां रै वारै हाडकां रा ढिग लाग्योड़ा हा।—रातवासो
वि०—मूर्ख, गँवार। उ०—कहै दास सगरांम मिनख तू दीखै चोखो। कदेक तो कह रांम रात दिन होको होको। होको होको रात दिन, ग्रकल विहूणा ढोर। ग्रावै है नैड़ी ग्रवध, पड़सी नरक ग्रघोर। पड़सी नरक ग्रघोर म्हसै यो मारै धोको। कहै दास सगरांम मिनख तूं दीखै चोखो।—सगरांमदास
रू०भे०—ढोरु, ढोरू।

ढोरवाळ-सं०पु०—गाय, वैल, भैंस ग्रादि पशुग्रों के पूंछ के वाल।

ढोरी-सं०स्त्री०—धुन, लौ, लगन। उ०—दादू वाहै देखतां, ढिग ही ढोरी लाइ। पिव पिव करते सव गये, ग्रापा दे न दिखाइ।
—दादू वांणी

ढोरु, ढोरू—देखो 'ढोर' (रू.भे.)

ढोल-सं०पु० [सं० ढोल] लकड़ी या लोहे की चद्दर के वने वड़े गोल घेरे के दोनों ग्रोर चमड़ा मढ़ा हुग्रा वाद्य। उ०—कूवो पूज घर पाछी ग्राई, फळसै वड़तां वोली यूं। फळसै में ढोलां रै ढमकै, ग्रारतड़ी करवायै तूं।—लो.गी.
मुहा०—१ ढोल कूटणो—रूढ़ीवादी होना, वक-झक करना।
२ ढोल दिराणो—ढोल वजा कर एकत्र करना या सचेत करना।
३ ढोल पीटणो—देखो 'ढोल वजाणो'।
४ ढोल वजाणो—घोषणा करना, प्रकट करना।
५ ढोल में पोल—ढोल वोलता हुग्रा, वड़ा तथा सुदृढ़ दिखाई

देता है किन्तु उसमें पोल होती है अर्थात् अधिक बोलने वाले आदमियों की बातें पक्की नहीं हुआ करती हैं। ६ दूर रा ढोल सुहावणा—ढोल की ध्वनि दूरी से सुहावनी प्रतीत होती है किन्तु उसके निकट जाने पर विशेष आनन्द नहीं आता; बाह्याडम्बर दिखाने वालों के प्रति। ७ फूटी ढोल—निकम्मा, बेकार (व्यक्ति), मूर्ख।
यौ०—ढोल-ढमकी।
२ पानी रंग आदि रखने का बड़ा पात्र, ड्रम।
अल्पा०—ढोलड़ी, ढोलड़ौ, ढोलौ।
मह०—ढोलड़।

ढोलक-सं०स्त्री० [सं० ढोल:] लकड़ी के गोल, खोखले व लम्बोतरा घेरे के दोनों ओर चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य जो ढोल से छोटा होता है। उ०—वीणा ताल-म्रिदंग वाजि रह्यिा छै। वांसलि वाजि रही छै। ढोलकां वाजि रही छै। फाग गाइजै छै।—रा.सा.सं.
अल्पा०—ढोलकी, ढोलड़ी।

ढोलकियौ—१ देखो 'ढोल' (अल्पा. रू.भे.)
२ देखो 'ढोलियौ' (अल्पा. रू.भे.)

ढोलकी—देखो 'ढोलक' (अल्पा., रू.भे.)

ढोलड़—१ देखो 'ढोल' (मह., रू.भे.)
२ देखो 'ढोलियौ' (मह., रू.भे.)

ढोलड़की—देखो 'ढोलियौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढोलड़ी—१ देखो 'ढोल' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'ढोलक' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—हर नाचवा लागी वड़ी वड़ी। जिण भांत ढोलड़ी वागां नट नूं नच नची लागै। इण भांत इण वेळां रजपूतां री रजपूतवट जागै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
३ देखो 'ढोलियौ' (अल्पा. रू.भे.)

ढोलड़ौ—१ देखो 'ढोल' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ घर घोड़ी पिव अचपळौ, वैरी वाड़ां वास। नित उठ खुड़कै ढोलड़ा, न चुड़लै री आस।—लो.गी.
उ०—२ सोहड़ अस सकाज सदाई दळ सर्फ, भोमी चारै गांम के धाड़ै दौड़जै, लूंबै बाहर लार दिरीजै ढोलड़ा, एता दै किरतार फेर नहिं बोलणा।—अज्ञात
उ०—३ नाग निंदाळूया घरण द्रयं ढोलड़ौ। खड़हड़चौ जांण आकास रौ खोळडौ।—रुखमणी हरण

ढोलण-सं०स्त्री०—ढोली जाती की स्त्री।

ढोलणी-सं०स्त्री०—१ देखो 'ढोलियौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—आय पनां सेझ की त्यारी कराई। अगर चंनण री ढोलणी कसाई। सेजवंध भीड़ीजै छै।—पनां वीरमदे री वारता
२ ढोली जाति की स्त्री।

ढोळणौ, ढोळबौ-क्रि०स० [सं० दोलन] १ किसी पदार्थ को गिराना, ढरकाना, ढालना, बहाना। उ०—१ म्हैं नं ढोलौ भूंबिया, म्हांनूं आवी रीस। चोवा-केरै कूंपळै, ढोळी साहिब सीस।—ढो.मा.
उ०—२ मठ देवकुळ खडहडत पाडतउ, चतुस्पद दडवड द्रडवडतउ, घलहलघ्रित तैल भोजन ढोलतउ।—व.स.
उ०—३ सूयावड़ि दूखण घणा, वलि गरभ गळाया। जीवांणी ढोळया घड़ा, सील वरत भंजाया।—स.कु.
२ इधर-उधर हिलाना, डुलाना (चँवर, पंखा आदि)
उ०—१ हे जठै नै बहू सिणगार दे पोढिया ए। ए वांरी दासी ढोळै छै वाव, ये म्हांनै घणी ये सुहावै जच्चा पीपळी।—लो.गी.
उ०—२ चांदी को एक वाटको, जीं में बूरा भात। हुकम होय सिरकार को, दोन्यूं जीमां साथ, ओ सिरदार थांनै पंखा ढोळ जिमाऊं, म्हारा प्रांण! उमरावजी ओ रसिया।—लो.गी.
ढोळणहार, हारौ (हारी), ढोळणियौ—वि०।
ढुळवाड़णौ, ढुळवाड़बौ, ढुळवाणौ, ढुळवाबौ, ढुळवावणौ, ढुळवाववौ, ढुळाड़णौ, ढुळाड़बौ, ढुळाणौ, ढुळाबौ, ढुळावणौ, ढुळाववौ, ढोळाड़णौ, ढोळाड़बौ, ढोळाणौ, ढोळाबौ, ढोळावणौ, ढोळाववौ—प्रे०रू०।
ढोळिओड़ौ, ढोळियोड़ौ, ढोळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
ढोळीजणौ, ढोळीजबौ—कर्म वा०।
ढुळणौ, ढुळबौ—अक०रू०।

ढोलणौ—देखो 'ढोलौ' (अल्पा., रू.भे.)

ढोलर—चिड़िया के समान एक पक्षी विशेष जो बाजरी की खड़ी फसल को हानि पहुँचाता है।
अल्पा०—ढोलरियौ।

ढोलरहींडौ—देखो 'डोलरहींडौ' (रू.भे.)

ढोलरियौ—देखो 'ढोलर' (अल्पा., रू.भे.)

ढोळाई-सं०स्त्री०—१ ढोलने की क्रिया। २ ढोलने की मजदूरी।
रू०भे०—ढुळवाई, ढुळाई।

ढोलि—देखो 'ढोल' (रू.भे.) उ०—उरि करिय प्रजा जइतसी राउ, घेर करि चलिय दे ढोलि घाउ। भारत्थ जइतसी भळिय भार, लसकरी विलाया आप लार।—रा.ज.सी.

ढोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी पदार्थ को गिराया हुआ, ढरकाया हुआ, बहाया हुआ। २ इधर-उधर हिलाया हुआ, डुलाया हुआ।
(स्त्री० ढोळियोड़ी)

ढोलियौ-सं०पु०—वह चारपाई जो साधारण चारपाई से कुछ बड़ी और सुन्दर होती है, पलंग। उ०—१ ढोलणी नै चौवारै चढ़ाय, ढोलौ मारूणी दोनूं पोढ़सी। खातीड़ा रै असल गिवार, जोड़ौ जोरावर ढोलियौ संकड़ौ।—लो.गी.
उ०—२ आंमां जी सांम्हां ढोलिया ढळावां, ढोला जे रे बीच राखां झवा भारी रे, प्रीतम प्यारी रा साहिवा सेजां नै पधारौ रे।
—लो.गी
रू०भे०—ढोल्यौ।

अल्पा०—ढोलकियौ, ढोलड़की, ढोलड़ी, ढोलणी।

महद०—ढोलड़, ढोलीड़।

ढोली-सं०पु० [सं०ढोल:+रा.प्र.ई] ढोल बजाने और गाने-बजाने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

ढोलीड़—देखो 'ढोलियौ' (मह., रू.भे.)

ढोळौ—१ सफेदा।

उ०—थारी कुटका वरसाळै में, टळै ऊंटां मजूरड़ी। ढोळौ अर अगांळी देवण, मांडण खूब खजूरड़ी।—दसदेव

२ देखो 'ढोळौ' (रू.भे.)

ढोलौ-सं०पु०—१ रहट के मध्य स्तंभ को स्थिर रखने के लिये लगाये जाने वाले डंडे को मजबूत करने के लिये जमीन पर गड़े हुए पत्थरों के साथ लगाई जाने वाली लकड़ी।

[सं० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह] २ पति, खाविंद।

उ०—इकथंभियौ, ढोला महल चिणाय, च्यारूं दिसा में राखौ गोखड़ा, जी म्हारा राज। गोखं-गोखं दिवलौ संजोय, राजींदा ढोला, दियं रं चांनणियौ ढाळूं ढोलियौ, जी म्हारा राज।—लो.गी.

३ सड़क की पुल के नीचे बना हुआ मेहराबदार छेद (मोखा) जिसमें से पानी बहता है और सड़क को क्षति नहीं पहुँचती.

४ देखो 'ढोल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पूरब जनम की मैं हूं गोपिका, अधबिच पड़गयौ झोलौ रे। [illegible], अब क्यूं बजाऊं ढोलौ रे।—मीरां

६ बच्चा, बालक, लड़का. ७ सीमा का चिन्ह।

वि०—मूर्ख।

ढोल्यौ—देखो 'ढोलियौ' (रू.भे.) उ०—चंगौ महल ढोल्यौ चंगौ, चंगौ चतुर हद नाह। चंगी सेजां राजवणि, पीजै मद प्यालाह।

—पनां वीरमदे री वात

ढोवणौ, ढोवबौ-क्रि०स०—१ लाना। उ०—ढोवै रंभ रत्थं, वरै वींद तत्थं।—गु.रू.बं.

२ देखो 'ढोणौ, ढोबौ' (रू.भे.) उ०—टेका कड़ियां बांध, ढोवता घर पर आखी। फोगां हुंदी फसल, गरीबां गायक लाखी।—दसदेव

ढोवणहार, हारौ (हारी), ढोवणियौ—वि०।

ढोवाड़णौ, ढोवाड़बौ, ढोवाणौ, ढोवाबौ, ढोवावणौ, ढोवावबौ—प्रे०रू०।

ढोवियोड़ौ, ढोवियोड़ौ, ढोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढोवीजणौ, ढोवीजबौ—कर्म वा०।

ढोहणौ, ढोहबौ—रू०भे०।

ढोवाई-सं०स्त्री०—ढोने की मजदूरी।

ढोवियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ लाया हुआ. २ देखो 'ढोयोड़ौ' (रू.भे.)

ढोवौ-सं०पु०—१ आक्रमण, हमला, चढ़ाई। उ०—१ पछै गढ़ पाखर नै अमरकोट सूं ढोवौ हुवौ, गढ़ भेळियौ।—नैणसी

उ०—२ जिणसूं दूदै तिलोकसी गढ़ साझियौ नै सासता ढोवा हुवै छै।—नैणसी

उ०—३ तरै सगळै ठाकुरै प्रथीराजजी नूं कह्यौ—हिमै तौ आथमण हुवौ, सवारै ढोवौ करस्यां, तरै प्रथीराजजी साथ उरौ तेड़ियौ।

—राव मालदेव री वात

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ युद्ध, लड़ाई।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

३ युद्ध-स्थल, रण-क्षेत्र। उ०—क्रोध मुखी सारौ मति कांमति। विस धारी निज लीध वर। ढुळियै रयण ढोलियै ढोवै। लोह तणा वाजै लहर।—दूदौ

रू०भे०—ढोहौ।

ढोसरी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का घास विशेष।

ढोहणौ, ढोहबौ—१ देखो 'ढाहणौ, ढाहबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'ढोवणौ, ढोवबौ' (रू.भे.)

ढोहियोड़ौ—१ देखो 'ढाहियोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'ढोवियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढोहियोड़ी)

ढोहौ—देखो 'ढोवौ' (रू.भे.)

ढौ-सं०पु०—१ चंपक. २ देवता.

सं०स्त्री०—३ पंक्ति. ४ सुगंध. ५ पृथ्वी (एका.)

वि०—१ सज्जन. २ दुष्ट (एका.)

ढौळौ-सं०पु०—पशुओं का अधिक कमजोर हो जाने के कारण बैठने के बाद न उठ सकने का रोग, पशुओं की कमजोरी।

क्रि०प्र०—पड़णौ।

रू०भे०—ढोळौ।

ण

ण—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का पन्द्रहवां व्यञ्जन तथा ट वर्ग का पंचम वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण में आभ्यान्तर प्रयत्न स्पष्ट और सानुनासिक होते हैं। बाह्य प्रयत्न संवार, नाद, घोष और अल्प प्राण हैं। इसका संयोग मूर्द्धन्य वर्ण अन्तस्थ तथा 'म' और 'ह' के साथ होता है।

सं०पु०—१ कुआ. २ बंबूल. ३ प्रचण्ड शरीर.

सं०स्त्री०—४ विजय. ५ मेघा. ६ वक्रगति (एका.)

णगण-सं०पु० [सं०] दो मात्राओं का एक मात्रिक गण। इसके दो रूप होते हैं। यथा स्त्री (ऽ)—सिव (।।)

त

त—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का सोलहवां व्यंजन तथा तवर्ग का प्रथम अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है। इसके उच्चारण में विवाद श्वास और अघोष प्रयत्न लगते हैं।

तं—सं०पु०—१ पुण्यफल. २ युग. ३ सुर, देवता. ४ चरण. ५ भ्रमण (एका.)

सर्व [सं० तद्, प्रा० तं] वह, उस। उ०—जांणीउ राइं कुंतिचितु पंडु जु परिणावइ। लिहिउं जोसु निलाडि जांम तं संजु आवइ।—पं.पं.च.

तंइयासियौ—सं०पु०—८३ का वर्ष या साल।

रू०भे०—तैयांसीयौ।

तंइयासी—वि० [सं० अशीति. प्रा० तेयासीई, त्रेयासी, मा० तेयासी, अ० भं० त्रेयासी, रा० त्रैंयासी] अस्सी और तीन का योग के बराबर।

सं०पु०—८३ की संख्या।

रू०भे०—तंयासी, तयांसी, तैयांसी।

तंइयासीक—वि०—८३ के लगभग।

रू०भे०—तैयांसियेक।

तंइ—क्रि०वि० [सं० तंत्र] लिये, निमित्त।

सर्व० [सं० त्वम्] तूं, तुम। उ०—जउ तंइ रे देव दीधी हुंती पांखड़ी, तउ हूं ऊडी प्रभु जांत पासै।—स.कु.

तंउड़ौ—देखो 'तसतूंबौ' (रू.भे.)

तंग—सं०पु० [फा०] १ घोड़े की जीन अथवा ऊंट का पलान कसने का चमड़े का तस्मा, घोड़े की पेटी, कसन। उ०—चैत महीनौ चैन री, हुवा जो हालणहार, तंग खेंचौ तुरियां तणा, सांईंणा सिरदार।
—र.रा.

क्रि०प्र०—कसणौ खींचणौ, तांणणौ।

मुहा०—तंग कसणौ—तैयार होना, कटिबद्ध होना।

२ शरीर का कमर के नीचे या ऊपर का भाग।

उ०—निचलौ होठ जाडौ नै लटकतौ। ऊपरला दो दांत पड़ियोड़ा। खांधा थोड़ास मांय बैठोड़ा। धूंब री घेरौ सीना सूं लांठौ। निचलौ तंग हळकौ नै ऊपरलौ भारी।—वांणी

३ पशुओं के शरीर का पिछला हिस्सा।

वि०—१ दुखी, विकल, हैरान। उ०—अकबर जंग उफांण, तंग करण भंजे तुरक। रांणावत रिढ रांण, पांण तजै न प्रतापसी।
—दुरसौ आढ़ौ

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

मुहा०—१ तंग आणौ—(किसी से) तंग आना, दुखी हो जाना. २ तंग करणौ—दुखी करना, कष्ट देना, सताना. ३ तंग होणौ—देखो 'तंग आणौ'।

२ संकरा, संकुचित, चुस्त, छोटा।

क्रि०प्र०—पड़णौ, होणौ।

मुहा०—१ तंग पड़णौ—(वस्त्र आदि का) चुस्त होना, छोटा पड़ना, शरीर में तंग होना. २ तंग रहणौ—गरीब रहना, धनाभाव में कष्ट देखना. ३ तंग हाथ—अर्थाभाव, धन की कमी. ४ तंग होणौ—देखो 'तंग पड़णौ'।

३ अकड़ा हुआ, ऐंठा हुआ। उ०—कुवधी कदै न सूधरै सौ सुवधी के संग। मूंज भिजोवै गंग में, रहै तंग री तंग।—अज्ञात

तंगड़—देखो 'तांगड़' (रू.भे.) उ०—तद कही भली वात, चट बहिर हुआ, तंगड़ पूगिया आदमी लेय गया।—ठाकर जैतसी री वारता

तंगड़ी—सं०स्त्री०—१ गुजराती नटों द्वारा पहना जाने वाला कच्छा विशेष. २ जांघिया।

तंगाई, तंगी—सं०स्त्री० [फा० तंगी] १ तंग या संकरा होने का भाव, संकोच, संकीर्णता. २ निर्धनता, गरीबी, धनाभाव।

क्रि०प्र०—आवणी, भुगतणी।

मुहा०—तंगाई भुगतणी—गरीबी का कष्ट झेलना, धनाभाव होना।

कहा०—तंगी में कुण संगी—पास में जब पैसा नहीं होता तब कोई साथ नहीं देता। दरिद्रावस्था में कोई सहायक नहीं होता।

३ कमी, न्यूनता, अभाव. ४ तकलीफ, कष्ट, दुःख।

उ०—समज मन सदा धरम एक संगी, तेरै कबहुं न आवै तंगी।
—ऊ.का.

तंगोटी—सं०स्त्री०—छोटा तंबू, छोलदारी। उ०—१ हिरदांहु जरा अजब है, फेरि तहां मन आंणि। जन हरिदास तीसूं तखत, तहां तंगोटी तांणि।—ह.पु.वा.

उ०—२ दळ बादळ डेरा तंगोटी, फरहर नेजा धजा अति मोटी।
—स.कु.

तंजेब—सं०स्त्री० [फा०] उच्च-स्तर की महीन मलमल।

तंटर—सं०पु० [सं० तट] किनारा, कूल, तट। उ०—जोवन प्रेम प्रवाह जळ, अटक सकी नहिं आज। तंटर तर ज्यूं तूट नै, छूट पड़ी छै लाज।—अज्ञात

तंड—सं०पु०—तांडव नृत्य।

तंडण—सं०पु०—१ मंथन। उ०—तंडण कर कविता तणौ, घालूं चंडण घूब। भंडण जोगै भेख री, खंडण करणौ खूब।—ऊ.का.

२ नृत्य, नाच।

तंडणौ, तंडबौ—क्रि०अ०—१ नृत्य करना, नाचना।

उ०—हवै धत्त लोहित्त मेमत्त हाला। नसारा किसा सूळां निवाला। मधू-मास आसोज में रास मंडै। तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।
—मे.म.

२ उछल कूद करते हुए नृत्य करना, उद्धत नृत्य करना।

उ०—जंग नगारां जांण रव, आंण घगारां अंग। तंग लियंता तंडियौ, तोनै रंग तुरंग।—वी.स.

३ तांडव नृत्य। उ०—तंडै सिव जिण वेळ जपा ज्यूं आथण लाली, लेतौ सोवै मेघ, चांम गजहर रीझाळी।—मेघ.

४ बैल का जोश भरी आवाज करना, टांडना ।

उ०—धुर मूंतो मरियो धवळ, सकट हचक्का खाय । तिण रो बाळी बाछड़ो, तंडै गांव नगाय ।—वी.स.

तंडळ-सं०पु० [सं० तड या तंड] १ ध्वंस, संहार, नाश ।

उ०—आंप-आंप रा सत्री अवर बहू सूर अकारा । करि-करि तंडळ किनम वणी छळि तीरवि धारा ।—सू.प्र.

[सं० तण्डुल] २ चावल । उ०—छुदांमा के तंडळ सारे पावता कर प्यार । किसन सोवन पुरी कीनी सास भर संसार ।—भगतमाळ

[सं० तंट] ३ टुकड़ा, खण्ड, हिस्सा ।

तंडव—१ जोश भरी गर्जना, दहाड़ । उ०—१ कुंभेण रांण हणिया कलम, आजस उर डर उत्तरिय । तिण दीह द्वार संकर तणै, कांमधेनु तंडव करिय ।—लूंणकरण खिड़ियौ

उ०—२ उण गिरवर पै आय कै, केहर तंडव कीन । घणहर मांनु इंद्रघन, भादव जळधर मीन ।—वगसीरांम प्रोहित री वात

२ देखो 'तांडव' (रू.भे.) उ०—ऊनमियो उत्तर दिसा, गयण गरज्जै घोर । दह दिसि चमकै दांमिनी, मंडै तंडव मोर ।—ढो.मा.

तंडवि—देखो 'तांडव' (रू.भे.) उ०—कोकिल सोर मोर तंडवि क्रत, नटवर गांन संगीत करै नृत ।—सू.प्र.

तंडियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नृत्य किया हुआ, नाचा हुआ. २ उछल-कूद करते हुए नृत्य किया हुआ, उद्धत नृत्य किया हुआ. ३ तांडव नृत्य किया हुआ. ४ (बैल का) जोश भरी आवाज किया हुआ । (स्त्री० तंडियोड़ी)

तंडिळ-सं०पु०—एक वृक्ष विशेष । उ०—ताळ तमाळीय तणच्छ घण, तिहां तुळसी नइ ताड । तज तंडिळ नइं तिलवड़ी, ताळी सोना झाड़ ।
—मा.कां.प्र.

तंडीर, तंडीरव-सं०पु०—तरकस, तूणीर । उ०—१ जड़ि अंग सिलह सस्त्र अंग जकड़ै । कसै तंडीर कबांणां पकड़ै ।—सू.प्र.

उ०—२ चलि हंस कितां किलां तह चाली, खहतां हुवां तंडीरव खाली ।—सू.प्र.

तंडुळ-सं०पु० [सं० तंदुल] १ चावल, धान. २ खंड, टुकड़ा, भाग. ३ शरीर का कटा हुआ भाग. ४ तमाल-पत्र ।

तंडुळकुसुमावळीविकार-सं०पु० [सं० तंदुल कुसुमावली विकार] ६४ कलाओं में से एक ।

तंडेव—देखो 'तांडव' (रू.भे.) उ०—महाराग छंडेव-छंडेव व्है न दे न गूंड वजंडेव डम्मरु चंडेव हत्तीबीस । संडेव छंडेव मेख पांय बांण पाय साच, उमंडेव मंडेव तंडेव नाच ईस ।—बद्रीदास खिड़ियौ

तंड्मल-वि०—वीर, योद्धा । उ०—भालिमि कुळ भांण मन महिरांण जस रस जांण जुआंण । तंड्मल तुडितांण विमळ वखांणी सूरनांण समांण ।—ल.पि.

तंण—देखो 'तण' (रू.भे.) उ०—मथियो के फेरा महंण, भगते भरिया भूंक । तैं दोन्हीं वसदेव तंण, फेरा कितरा फूंक ।—पी.ग्रं.

तंणो—देखो 'तणो' (रू.भे.) उ०—पहळाद संभरियो आयो जगपति, चत्रभुज निमो भगत री चाड । वहनांमी रै दाढ़ तंणो बळ, हरिणख तंणो जांणिसै हाड ।—पी.ग्रं.

तंत-सं०पु० [सं० तत्व] १ सत्यता, असलियत ।

क्रि०प्र०—खोजणौ, ढूंढ़णौ, निकाळणौ ।

मुहा०—तंत निकाळणौ—असलियत मालूम करना ।

२ ओज, तेज, शक्ति । उ०—उद्दम आंगम आखड़ी, ताथ निडरता तंत । गाज मलफ एता गुणां, सींहां काज सरंत ।—बां.दा.

मुहा०—तंत नीरणौ (निकळणौ)—ओजहीन होना, शक्तिहीन हो जाना ।

यौ०—तंत वायरौ ।

३ मौका, अवसर । उ०—१ तकियां तौ इण तंत, चूकै उर अवरन चढ़ै । बांध लियो बुधवंत, चुंपाळी मो मन चपळ ।—र. हमीर

उ०—२ मनै तो देखि लीवी । पवन भी वैरी हुवौ । इसो तंत साझ्यो । हूं तो आज तांई कणी सांमो चोवी नहीं ।
—पनां वीरमदे री वात

मुहा०—तंत मिळणौ—मौका पड़ना, अवसर आना ।

४ समय, अवसर । उ०—तैं जेहा दीधा तुरी, म्रिग जोवण मलफंत । चढै जिकां अनपह चढ़ै, तोरण वारण तंत ।—बां.दा.

५ रहस्य, भेद । उ०—१ पीहर संदी डूंमणी, ऊंमर हुंदइ सथ्थ । मारवणी नूं तंत मइं, कहि समझावइ कथ्थ ।—ढो.मा.

उ०—२ परभाते पनां का जगावा कै वासतै साथण्यां आई । जिकै मुदै तंत समझी नहीं, सोणा की वात नै पाई ।
—पनां वीरमदे री वात

मुहा०—तंत निकाळणौ—रहस्य ढूंढ़ना, भेद ज्ञात करना ।

६ सार, तत्व, सारांश । उ०—पूरण-पुनीत सो रांम पद, विघन हरण त्रैलोक्य वर । परणांम सुकवि ईसर पुणै, तंत नांम भवसिंधु तर ।—ह.र.

मुहा०—तंत निकळणौ—सार अथवा तत्व ज्ञात करना ।

यौ०—तंतवायरौ ।

[सं० तत्व] ७ तत्व । उ०—तैं परठै पचीस तंत पंच भूतक प्रांणी ।
—केसोदास गाडण

८ तीव्रता, आतुरता ।

[सं० तंत्री] ९ सारंगी, सितार. १० तार ।

उ०—विकट अंत करि तंत वजांणी । इसड़ा कड़क तंबूरा आंणी ।
—सू.प्र.

११ तारवाद्य । उ०—तंत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह । भल वउळावी दोहड़ा, दई वळावण देह ।—ढो.मा.

१२ निश्चय । उ०—आंण न जागै आंखियां, तिण सिर दीधां तंत । पल-पल मुख पुळकावणौ, कायर ही उचकंत ।—बां.दा.

१३ देखो 'तंत्र' (रू.भे.)

तंतवायरौ–वि०यौ०—१ तत्वहीन, सारहीन, सारांशहीन. २ शक्तिहीन, तेजहीन।

तंतर—देखो 'तंत्र' (रू.भे.) उ०—खलवति करै न खिलवति खांनै, तसवी खांनै अजूं न तंतर। आलमीन रवील न उचारै, सर्फे न न्याव अदालित सध्धर।—सू.प्र.

तंतरी—देखो 'तंत्री' (रू.भे.)

तंतसपत–सं०पु० [सं० सप्ततंतु] यज्ञ (अ.मा.)

तंताळ–सं०पु० [सं० तंतुः, तंतुनः] जल में रहने वाले जंतु विशेष।
उ०—नभ ताळ तंताळ धराळ मिळै, त्रयलोक सुरप्पति विद्ध सही।
—करुणासागर

तंति–सं०पु० [सं० ततम्] १ तारवाद्य। उ०—तंति सुखिर घन सव्दीइ, पवन तणा पल्लोळ। माधव महिला सिउं करइ, क्रीड़ा रसि कल्लोळ।—मा.कां.प्र.
२ देखो 'तंत्री' (रू.भे.) उ०—भेरी भुंगळ भरहरइ, करइ भाट जयकार। तूर तिविल वाजा सुणइ, तंति तणा टमकार।
—मा.कां.प्र.

तंती—देखो 'तंत्री' (रू.भे.) उ०—विराजै मुखाधाय तंती वितंती, वदै आरती राग वांणी वणंती।—रा.रू.

तंतु–सं०पु० [सं०] १ सूत, तागा, डोरा, धागा. २ तांत.
३ देखो 'तांती' (रू.भे.) उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नवरस तंतु त्रिधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि.

तंतुण–सं०पु० [सं० तंतुणः] १ मत्स्य. २ मकड़ी का जाला।

तंतुल–सं०स्त्री०—कमल की नाल।

तंतुसप्त–सं०पु० [सं० सप्त तंतु] यज्ञ, होम (अ.मा.)

तंतूवाय–सं०पु० [सं० तंतुवाय] कपड़ा बुनने वाला, बुनकर, जुलाहा। (डिं.को.)

तंत्र–सं०पु० [सं०] १ तागा, डोरा, सूत. २ तांत. ३ मकड़ी का जाला. ४ सेना (डिं.को.) ५ वस्त्र. ६ चौसठ कलाओं के अंतर्गत एक कला (व.स.) ७ मंत्र, जादू, टोना। उ०—मणि मंत्र तंत्र बळ जंत्र अमंगळ, थळि जळि नभसि न कोइ छळंति। डाकिणि साकिणि भूत प्रेत डर, भाजै उपद्रव वेलि भणंति।—वेलि.
८ तार वाद्यों का तार। उ०—घूघरां तणा झणणाट हुय घमाघम, वेण रा तंत्र तरणाट वाजै। नकीबां बोल हरणाट हुय नोवतां, गयण धर सबद गरणाट गाजै।—खेतसी वारहठ
रू०भे०—तंत, तंतर।

तंत्रणी–सं०पु०—तंत्र शास्त्र का ज्ञाता अथवा रचयिता।

तंत्रनाळि–सं०स्त्री०—तोप। उ०—नीछंटिया गोळा तंत्रनाळि। पावक्क जांणि पइठउ पलाळि।—रा.ज.सी.

तंत्रवाद–सं०पु०—७२ कलाओं में से एक।

तंत्रवादी–वि०—जादू टोना जानने वाला (व.स.)

तंत्रिक—देखो 'तंत्री' (३) (रू.भे.)

तंत्री–सं०पु० [सं०] १ सारंगी, सितार आदि तार वाले वाद्य।
उ०—तणं तार सै तार वीणादि तंत्री, वणं बीस-वत्तीस भेरू वजंत्री। डफां मादळां नाद डैरू डमंकै, धरा व्योम पाताळ धूजै धमंकै।—मे.म.
२ तार के वाद्यों को वजाने वाला. ३ टोना, मंत्रादि करने वाला जादूगर।
रू०भे०—तंत्रिक।
४ तार-वाद्यों का तार. ५ तार. ६ तांत।
रू०भे०—तंतरी, तंति तंती।

तंदरा–सं०स्त्री० [सं० तंद्रा] १ तंद्रा, ऊंघ, हलकी नींद में आने वाली झपकी. २ हलकी मूर्छा।
रू०भे०—तंद्रा।

तंदळ—देखो 'तंदुल' (रू.भे.) उ०—डावा लाळी जिमणी मलाळी, तंदळ भरू भांण।—व.स.

तंदुख–सं०पु०—श्वान, कुत्ता (अ.मा.)

तंदुरस्ती–सं०स्त्री० [फा० तंदुरुस्ती] सुस्वास्थ्य, निरोग होने की दशा या उसका भाव।

तंदुळ–सं०पु० [सं० तण्डुलः] १ चावल। उ०—तैं मुख कमळ सदांमा तंदुळ, पाया बिलकुल भरे पुसी। बिदुर तणी भगती हित बाधा, खाधा केळा छोत खुसी।—र.ज.प्र.
रू०भे०—तंदळ।
२ मस्तक, शिर। उ०—धोम क्रोधानळां जाग वसुधा धमै, रांम जोधां खळां लाग आडै रमै। गयण मग गयंदां लाग तंदुळ गमै, भेद मंडळ मिहर जांण चीलां भमै।—र.रू.
अल्पा०—तंदुळियौ।

तंदुलवेयाली, तंदुलवेयालीसूत्र–सं०पु० [सं० तण्डुलवैकालिक सूत्र] जैन धर्म के एक सूत्र ग्रंथ का नाम। उ०—१ पंचम पयन्नो तंदुलवेयाली, ग्यारसै गाह भली तिहां भाळी।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ नीपनउ नयरि नादउद्रि वच्छरी ए चऊददहोत्तर ए। तंदुलवयालीसूत्र माफिला ए भव अम्हि ऊधरचा ए।—पं.पं.च.

तंदूर–सं०पु० [फा० तनूर] अंगीठी या भट्टी आदि की तरह का बना हुआ मिट्टी का गोल और ऊंचा पात्र जिसके नीचे आग सुलगा कर उसकी दीवारों को खूब तपा दिया जाता है। तपने के बाद इसमें मोटी-मोटी रोटियां चिपका देते हैं जो ताप से सिक कर तैयार हो जाती हैं।
रू०भे०—तनूर।

तंदूरौ–सं०पु०—१ वीणा के आकार का एक वाद्य विशेष जिसे प्रायः भजन कीर्तन करने वाले लोग वजाया करते हैं.
२ देखो 'तंबूर' (रू.भे.) उ०—अरक दुत सोम सम नमै लोयणां असम, धूम्रां तम तोम लग धूरां-धूरां। तठै सूर लड़ैता थटै घण तंदूरां, हरख सूरां निरख रंभ हूरां।—वां.दा.

रू०भे०—तनुगी ।

तंद्रा-सं०स्त्री० [सं०] १ एक रोग विशेष (अमरत)
२ देखो 'तंदरा' (रू.भे.)

तंनै [सं० तनय] १ संतान, पुत्र ।

तंपा-सं०स्त्री० [सं० तुम्प] सींगों वाली गाय (ह.नां.)

तंब-सं०पु०—१ बैल (अ.मा.) २ अभिमान, गर्व (ह.नां.)
३ देखो 'त्रंब' (रू.भे.) उ०—तंब तणी पय धार लेवतां, सगत वधारै पांण सिताब । तूंडी ठदध तणै डूबतां, गाडै सुत तारियो आब ।
—चौथ वीठू
४ देखो 'तांबौ' (रू.भे.) (जैन)

तंबक—देखो 'त्रंबक' (रू.भे.)

तंब-पत्र—देखो 'तांबापतर' (रू.भे.) उ०—विहद लीध जिणवार, रैण प्रथ भूप जही रस । जस ध्रम कजि जग जीत दियां तंबपत्र दवा-दस ।—सू.प्र.

तंबा-सं०स्त्री०—गाय (ह.नां.) उ०—पीर जठै पूजता पवित्र सुर जठै पूजाया, तंबा कटतो तठै, जिग बह होम जगाया ।—सू.प्र.
सं०पु० [फा० तंबान] चौड़ी मोहरी का पायजामा ।

तंबाकू, तंबाखू—देखो 'तमाकू'(रू.भे.)

तंबाळ—देखो 'त्रंबाळ' (रू.भे.) उ०—रूपमल वळोवळ जांण रणताळ रा, फौज दळ माल रा झंडा फरकै । वाजता सुणै तंबाळ 'वजपाळ' रा, धाळ रा नीर जिम दिली थरकै ।—महाराजा विजयसिंघ रौ गीत

तंबावळ—देखो 'तंबोळ' (रू.भे.)

तंबी-सं०स्त्री०—१ नगारा. २ भय ।

तंबू-सं०पु०—१ खेमा, डेरा, शिविर. २ शामियाना ।
क्रि०प्र०—खड़ो करणौ, खींचणौ, तांणणौ ।
मुहा०—तंबू तांणणौ—पड़ाव डालना ।

तंबूर, तंबूरौ-सं०पु० [फा० तंबूर] १ युद्ध में बजाया जाने वाला एक प्रकार का छोटा ढोल विशेष । उ०—१ वगै वीर ताळ जगै, ज्वाळ तोपां जेण वार, अहक्कै त्रंबाळ डंकां डहक्कै तंबूर ।
—बुधसिंघ सिढ़ायच
उ०—२ विकट अंत करि तंत वजांणै, इसड़ा कइक तंबूरा आंणै ।
—सू.प्र.
२ सितार या बीन की तरह का एक वाद्य जिसके बीच में दो लोहे के तार होते हैं और दोनों ओर दो तार पीतल के होते हैं, तानपुरा । उ०—ताल म्रदंग तंबूर, सुर वीणा वीणा धरि सुंदरि । हरखत नृपत हजूर, सर्फ सलांम अलाप कीध सुर ।—सू.प्र.
३ एक तार वाला एक वाद्य जिसके नीचे की ओर एक तूम्बा लगा रहता है ।
रू०भे०—तंदूरी, तमूरौ ।

तंबेड़ौ—देखो 'तांबेड़ौ' (रू.भे.)

तंबेरण, तंबेरम, तंबेरव, तंबोरम-सं०पु० [सं० स्तंबेरम] हाथी, गज (डि.को.)
उ०—तंबेरम कुंभ दुहायळ तत्य, आडा गिर मस्थक हत्य अगत्य । प्रहोहत होफर खोफ अपार, अधोफर आभ डरै असवार ।—मे.म.

तंबोळ-सं०पु०—१ मुंह में से निकलने वाले झाग या फेन ।
उ०—इण घोड़ां नै इतरी दौड़ किस रोज करी है, तिससे जलदी रखी है । जलाल रौ घोड़ो देखै तौ चौकड़ो चवै छै । तंबोळ पड़ै छै, काठा पसेवीजै छै ।—जलाल बूबना री वात
[सं० तांबूल] २ तांबुल, पांन बीड़ा । उ०—केसर घरचसी, काजळ घालसी, तंबोळ खवायसी ।—पंचदंडी री वारता
३ देखो 'तंबोळी' (मह., रू.भे.) ४ क्रोध ।
सं०स्त्री०—५ पुष्करणा ब्राह्मणों की 'बड़ी जान' और समधी की प्रशंसा के उद्देश्य से वर पक्ष की ओर से सुनाई जाने वाली कविता विशेष ।
वि०—१ लाल । उ०—'भैरव' रा सांभळ वचन, तन चढ़ रीस तंबोळ । विसटाळ पाछा वळै, चख घुवता मद चोळ ।—पे.रू.
२ अधिक, बहुत ।
रू०भे०—तंबावळ, तंबोळि, तंमोळ. तमोळ ।

तंबोळखांनौ-सं०पु०—तांबूल रखने का स्थान, वह स्थान जहां पान के बीड़े बनते हैं । उ०—उदैपुर आबदार खांनौ पाणेड़ौ कहावै । कपड़ा रौ कोठार निकारी ओरी कहावै । दवाखांना ओखध री ओरी कहावै । तंबोळखांना री ओरी बीड़ा वणै । सिलहखांना री ओरी ससतर रहै ।—बां.दा.ख्यात

तंबोळनित-सं०स्त्री०—नागर वेल ।

तंबोळि—देखो 'तंबोळ' (रू.भे.) उ०—मांनिनी मरकलडइ हसइ मुख भरिउ तंबोळि । तिणइ त्रितय भूयणपति, जांणइ घिणोठी चोळ ।—मा.कां.प्र.

तंबोळी-सं०पु० (स्त्री० तबोळण) १ पान का व्यवसाय करने वाली एक जाति अथवा इस जाति का व्यक्ति. २ पान बेचने वाला ।
रू०भे०—तमोरी, तमोळी ।
मह०—तंबोळ ।

तंमाकू—देखो 'तमाकू' (रू.भे.)

तंमारौ-सर्व०—तुम्हारा, तुम्हारे ।

तंमे-सर्व०—तुमको । उ०—सौ जोजने मेलिया, ढोलौ कुंअर तंमेह । कहुं गुण केही परहरी, वध दाखवुं अमेह ।—ढो.मा.

तंमोळ—देखो 'तंबोळ' (रू.भे.)

तंयाळीसेक-वि०—तेतालीस के लगभग ।
रू०भे०—तैयांळीसेक ।

तंयाळीस-वि० [सं० त्रिचत्वारिंशत्, प्रा० तेचत्तालीस, तेयालीस, अ०भ्रं० त्रयालीस, रा० तंयाळौ] चालीस और तीन का योग ।
रू०भे०—तयाळी, तयाळीस

तंयाळीसमौ, तंयाळीसवौ-वि०—तेतालीसवां ।

तंयाळीसौ, तंयाळौ-सं०पु०—४३ का वर्ष ।
रू०भे०—तयांळीसौ, तयाळीसौ, तयाळौ, तैयाळीसौ ।

तंयासी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)
तंयासीमौं–वि०—८३ वां।
तंयासीयौ–सं०पु०—८३ की संख्या का वर्ष।
तंवर–सं०पु०—१ एक राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति. २ सिलावट जाति की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.
रू०भे०—तुंअर, तुंवर, तूंअर, तोमर।
३ वह व्यक्ति या बालक जिसका प्रपितामह जीवित हो।
तंवरावटी–सं०स्त्री०—जयपुर राज्य का एक प्रदेश जहाँ तंवरों का राज्य था। यहाँ आज भी तंवरों की अधिक संख्या है।
रू०भे०—तंवरावाटी, तोरावटी, तोरावाटी।
तंवाई–सं०स्त्री०—१ मूर्च्छा, बेहोशी। २ हलचल, घबराहट, खलबली।
उ०—माचै खाग भाटां राचै तंवाई छ खंडां माथै, रत्रां आट पाटां नदी बहाई रोसाग। पाथ थाटां जंग रूपी कुबांणां नवाई पांणां, सत्राटां वेढ़ियौ थाटां सवाई 'सौभाग'।—सूरजमल मीसण
३ भय, आतंक।
तंवायफ—देखो 'तवायफ' (रू.भे.)
तंस–वि० [सं० त्र्यस्र] त्रिकोणाकार, त्रिकोण (जैन)
तंह–क्रि०वि०—वहां। उ०—जंह गिरवर तंह मोरिया, जंह सरवर तंह हंस। जंह 'बाघौ' तंह भारमल, जंह दारू तंह मंस।
—आसौ बारहठ
तंहीं–क्रि०वि०—उसी स्थान पर, वहीं।
त–सं०पु० [सं० तः] १ पुण्य. २ चोर. ३ झूठ. ४ गर्भ. ५ रत्न. ६ सुख. ७ तीर्थ. ८ पाप. ९ मोक्ष. १० चित्त, हृदय। ११ स्थान. १२ सगुन।
सं०स्त्री०—१३ नाव. १४ द्रुम. १५ आत्मा।
अव्य० [सं० ततः] १ उस दशा में, तब, तो।
उ०—१ मांणस हवां त मुख चवां, म्हे छां कूंझड़ियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पंखड़ियांह।—ढो.मा.
उ०—२ देस सुहावउ जळ सजळ, मीठा-बोला लोइ। मारू कांमण भुइं दखिण, जइ हरि दियइ त होइ।—ढो.मा.
[सं० तु] २ एक अव्यय जिसका व्यवहार यों ही पाद-पूर्ति अथवा किसी शब्द पर जोर देने के लिये किया जाता है।
उ०—१ अति घण ऊनिमि आवियउ, झाझी रिठि झड़वाइ। बग ही भला त बप्पड़ा, धरणि न मुक्कइ पाइ।—ढो.मा.
उ०—२ पगि-पगि पांणी पंथ सिर, ऊपरि अंबर छांह। पावस प्रगट्यउ पदमिणी, कहउ त पूगळ जांह।—ढो.मा.
सर्व० [सं० तुभ्यम्] १ 'तूं' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियां लगने के पहले प्राप्त होता है, तुझ। उ०—१ तद पंडू कहायौ 'हूं त नै ले जासूं'।—द.दा.
उ०—२ तीनां ही देव त नै, देवी आदर दीध। सरब सयांणां हेक मत, कहवत सांचौ कीध।—वां.दा.
२ तूं, तुम. ३ उस। उ०—विच साह दळां डेरा वणां, तेजपुंज आयौ त दिन। उत्तरियौ गयंद हूंता 'अभौ', जळ चाढै मरुधर ज दिन।—सू.प्र.
रू०भे०—थ।
तई, तइ–सर्व० [सं० त्वम्] १ तूं, तुम। उ०—१ सयणां पांखां प्रेम की, तइं अब पहिरी तात। नयण कुरंगउ ज्यूं बहइ, लगइ दीह नइं रात।—ढो.मा.
उ०—२ जे तइं दीठी मारवी, कहि सहिनांण प्रगट्ट। सांच कहै तूं दाखवइ, वहां ज पूगळ वट्ट।—ढो.मा.
उ०—३ ढोला, मारवणी मुई, तइं सारड़ी न लध्घ। दीवा-केरी वाटि जिम, खोड़ी-खोड़ी दध्ध।—ढो.मा.
[सं० तुभ्यम्] २ तुझ। उ०—१ अम्हां मन अचरिज भयउ, सखियां आखइ एम। तइं अणदिट्ठा सज्जणां, किउं करि लग्गा पेम।
—ढो.मा.
उ०—२ सुहिणा, हूं तइ दाहवी, तो नइ दहियउ अग्गि। सब जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि।—ढो.मा.
३ तेरे। उ०—उज्जळ-दंता घोटड़ा, करहइ चढियउ जाहि। तइं घर मुंध कि नेहवी, जे कारिणी सी खाहि।—ढो.मा.
[सं० तद्] ४ उस। उ०—जइ रूंखां मारू हुई, छवडउ पडियउ तास। तइं हुंती चंदउ कियइ, लइ रचियउ आकास।—ढो.मा.
प्रत्य०—१ करण और अपादान कारक का चिन्ह, तृतीया और पंचमी की विभक्ति, से। उ०—कवण देस तइं आविया, किहां तुम्हारउ वास। कुंण ढोलउ कुंण मारुवी, राति मल्हाया जास।
—ढो.मा.
२ देखो 'तई' (रू.भे.)
तइनात, तइनाथ—देखो 'तैनात' (रू.भे.) उ०—सो नकीब कहि गयौ—तुम नवाब रै काबुल कूं तइनाथ हौ सो तैयारी करौ।
—अमरसिंह राठौड़ री वात
तइय–वि० [सं० तृतीय] तीसरा (जैन)
सर्व०—उस, उन (जैन)
तइया–वि० स्त्री० [सं० तृतीया] तीसरी (जैन)
क्रि०वि० [सं० तदा] तब (जैन)
तइयार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—घोम नयण सिंधुरां जंगी हौदां नाखर जडि। तांम हुआ तइयार भीड़ सिलहां ससत्रां भड़ि।—सू.प्र.
तइयौ—देखो 'तीयौ' (रू.भे.)
तइसै–क्रि०वि०—वैसे।
तई–क्रि०वि०—तब, उस समय। उ०—आंणे सुर असुर नाग नेत्र नहि, राखियौ जई मंदर रई। महण मथे मूं लीध महमहण, तुम्हां किणै सीखव्या तई।—वेलि.
वि० [सं० आततायी] १ शत्रु, दुष्ट। उ०—मण धार नलै नह आप मणी. तइयां घर आंटोय बाप तणी।—पा.प्र.

२ देखो 'तई, तइ' (रू.भे.) उ०—प्रकास उजाव पंती व्रत पाय, तई रत नेग धमूकन एगु ।—सू.प्र.

तईनात—देखो 'तैनात' (रू.भे.) उ०—महतावां छींकादार मरु चोर मार जिकां पर आदमी तईनात ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तईनाती–सं०स्त्री० [अ० तअय्युन+रा. प्रा. ई] १ तैनाती, नियुक्ति. २ प्रबन्ध । उ०—जिकण अजीम साह नुं बंगाळा रो सोबो दे विदा कीधो जिण बंगाळा में साठ हजार पठांण रो फसाद ऊठियो तिकण नूं मार नांधो । तिकण री तईनाती में नाजर पातसाह कीधो ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तईयांनो—देखो 'तंट्यासी' (रू.भे.)

तईयार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—दिन ३५४ हुवा इसे समीये में पाछिलो पहर छै, जीमण तईयार हुवो छै ।—चौबोली

तउ, तउ–अव्य० [सं० ततः, प्रा० तओ, अप० तउ] पाद-पूरक अव्यय, तो । उ०—वायस वीजउ नांम, ते आगळि लललउ ठवइ । जइ तूं हुई सुजांण, तउ तूं वहिलउ मोकळै ।—ढो.मा.

क्रि०वि०—१ तो । उ०—जउ तंइ रे देव दीधी हुंती पांखड़ी, तउ हूं ऊडी प्रभु जांत पासे ।—स.कु.

२ तो भी । उ०—जइ सूकी तउ वउलसिरी, त्रूटी तउ मोतीसरी ।

—व.स.

३ यदि. ४ तब । उ०—राउ पहतउ सरगलोकि गंगेय कुमारि । तउ लघु बंधवु ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि ।—पं.पं.च.

वि० [सं० त्रीणि] तीन (जैन)

सर्व० [सं० त्वम्] तूं, तुम, आप । उ०—१ मइं ओळखी तउं हव अंगु साति । भाजउं जिसिइं कौरव सैन्य वाति ।—विराट पर्व

उ०—२ पदक प्रियु तउ हूं मोतिन माळा । हीरउ तउ हूं मूंदरड़ी रे वहिनी ।—स.कु.

तउणि, तउणी—देखो 'तपणी' (रू.भे.) उ०—घर घरणी पहती घर-बारि, चित पडिउ सबळ थाइ । ईवण तउणी तणीअ संपति, तिणि कारणि भमइ दीह नइ राति ।—चिहुंगति चउपई

तउय–स०पु० [सं० त्रपुअ] रांगा, कलई (जैन)

तउस सं०पु० [सं० त्रपुष] १ एक प्रकार की लता (जैन)

२ देखो 'तउसमिजगा' (रू.भे.)

तउसमिजगा, तउसमिजिया–सं०स्त्री० [सं० त्रपुषमिञ्जिका] एक प्रकार का तीन इन्द्रिय वाला जीव (जैन)

तऊ—देखो 'तउ' (रू.भे.) उ०—दादू जे साहिब मानैं नहीं, तऊ न छाडूं सेव । इहि अवलंबन जीजियै, साहिब अलख अभेव ।

—दादू वांणी

तकंजी–सं०स्त्री०—विष्णु मूर्ति के सिर का आभूषण ।

तक–सं०स्त्री०—१ तकने की क्रिया या भाव, टकटकी. २ शक्ल, सूरत । ज्यूं—इण री तो तक दीसै औ कांई कर सकै ।

३ प्रकृति, स्वभाव. ४ प्रकार, ढंग । उ०—वाळां वंधे वाछड़ा, तक घोड़ां नावै । बाळक तोई न वीसरै, घर रीत जणावै ।

—वीरमायण

(अनु०) ५ बकरों आदि को लड़ने हेतु उद्यत करने के लिए किया जाने वाला शब्द ।

अव्य० [सं० अंत+क] पर्यंत ।

क्रि०वि०—तरह, भांति । उ०—फौजें पहिलो गण करण, आंणि गुरु पय अंत । तवैं कवेसुर यण तक, ताळी रूपक तंत ।—वि प्र.

तकख—देखो 'तक्षक' (रू.भे.)

तकड़लग–वि०—तना हुआ, खींचा हुआ ।

तकड़ी—देखो 'ताकड़ी' (रू.भे.)

तकड़ो—देखो 'ताकडो' (रू.भे.)

तकण–वि०—तकने वाला ।

सर्व०—वह, उस ।

तकणो, तकबो–क्रि०स०—तकना, टकटकी लगाना, निहारना, देखना ।

उ०—१ सादूळो किण ही समै, लटियो लांघणियांह । तो पिण नह खावण तकै, हूतळ पर हरणियांह ।—बां.दा.

उ०—२ लगी गांव में लाय तकै डूम तिवारी । साध सराहै रातो निरथक व्है विधवा नारी ।—ऊ.का.

तकणहार, हारो (हारी), तकणियो—वि० ।

तकवाड़णो, तकवाड़बो, तकवाणो, तकवाबो, तकवावणो, तकवाववो, तकाड़णो, तकाड़बो, तकाणो, तकाबो, तकावणो, तकाववो—प्रे०रू० ।

तकिओड़ो, तकियोड़ो, तक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

तकीजणो, तकीजबो—भाव वा० ।

तक्कणो, तक्कबो, ताकणो, ताकबो—रू०भे० ।

तकत—देखो 'तख्त' (रू.भे.)

तकतूंबो–सं०पु०—१ विकृत कलिन्दा या हिन्दवाना. २ इन्द्रायण लता का फल ।

तकतो–स०पु०—तकुआ । उ०—चरखो तो लेलूं भंवरजी रांगलो जी, हां जी ढोला पीडो लाल गुलाल, तकतो तो लेल्यूं जी भंवरजी वीजळ-सार को जी ।—लो.गी.

तकदीर–सं०स्त्री० [अ० तक़दीर] भाग्य, प्रारब्ध, किस्मत ।

क्रि०प्र०—खुलणो, चमकणो, जागणो, फूटणो, बिगड़णो, लड़णो ।

मुहा०—१ तकदीर अजमावणो (अजमावणी)—किस्मत आज़माना, भाग्य की परीक्षा करना. २ तकदीर खुलणो—भाग्य चेतना. ३ तकदीर चमकणो—देखो 'तकदीर जागणो'. ४ तकदीर जागणो—भाग्योदय होना, भले दिन आना, भाग्य अच्छा होना. ५ तकदीर पलटणो—भाग्य का फिरना, बुरे दिन आना. ६ तकदीर पाधरो होणो—भाग्य सीधा होना, अच्छे दिन आना. ७ तकदीर फूटणो—बदकिस्मत होना, बुरे दिन आना. ८ तकदीर री बाजी—भाग्य का खेल, भाग्य के भरोसे. ९ तकदीर लड़णो—भाग्य से कार्य में सफलता मिलना, कार्य ठीक होना ।

रू०भे०—तगदीर।
यौ०—तकदीरधारी।
तकवीर-सं०स्त्री० [अ०] अल्हा हो अकवर, ईश्वर सव से बड़ा है। उ०—जीता मौज दीन दळ जीता, कंद करै तकवीर करद्द र। असपति फरकसेर तिए अवसर, वींद जुवांन हुवा दिल्लीवर।—सू.प्र.
तकमीनौ—देखो 'तखमीनौ' (रू.भे.)
तकमौ—देखो 'तुकमौ' (रू.भे.)
तकरार-सं०स्त्री० [अ०] १ वाद-विवाद, बहस, कही बात को बार-बार दोहराना। उ०—स्याहजादौ इण नुं तकरार कर कहै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
मुहा०—तकरार करणी—दलील करना, वहस करना।
२ शीघ्रता, जल्दबाजी।
मुहा०—तकरार करणी—शीघ्रता करना, जल्दी मचाना।
तकरीर-सं०स्त्री० [अ०] बातचीत, भाषण।
तकली-सं०स्त्री०—छोटा तकला, सूत कातने की टेंकुरी।
उ०—गुड्डी तेरी रंगरंगीली, तकली चक्करदार। चोखौ वण्यौ दमकड़ौ तेरौ, कूकड़ियं री लार। —लो.गी.
तकलीणौ-वि० (स्त्री० तकलीणी) १ सामान्य रूप अथवा सरलता से प्राप्त होने वाला। सुलभ। उ०—कई-कई मोती कीध, तकलीणा घर-घर तिके। अधको तोल अबींध, माधव घड़ियौ मोतिया।
—रायसिंह सांदू
२ दुर्वल, कृश।
तकलीफ, तकलीव-सं०स्त्री० [अ० तकल्लुफ़] १ कष्ट, दुःख।
क्रि०प्र०—उठाणी, करणी, झेलणी, देखणी, दैणी, पड़णी, होणी।
मुहा०—१ तकलीफ उठांणी—कष्ट झेलना. २ तकलीफ दैणी—कष्ट देना।
२ पीड़ा, वेदना।
क्रि०प्र०—होणी।
तकलौ, तकवौ—देखो 'ताकळौ' (रू.भे.) उ०—चरखौ तौ लेल्यूं भंवरजी रांगलौ जी, हांजी ढोला पीडौ लाल गुलाल। तकवौ तौ लेल्यूं भंवरजी वीजळसार कौ जी, ओजी म्हारी जोड़ी रा भरतार, पूणी मंगाल्यूं जी क बीकानेर री जी।—लो.गी.
तकसीम—सं०स्त्री० [अ०] वाँटने की क्रिया का भाव, वितरण, वंटाई।
तकसीर-सं०स्त्री० [अ०] १ अपराध, गुनाह, दोष।
उ०—ताहरां राजा पडवौ फेरियौ—जौ चोर म्हारै मुजरै आवै तौ चोरी री तकसीर माफ करूं।—राजाभोज अर खापरै चोर री वात
२ त्रुटि, गलती। उ०—आगै जो वण आगई, करहु माफ तकसीर। समय पाय सीतळ हुवै, नरपति सुणहु समीर।
—ठा० राजसिंह री वारता
रू०भे०—तगसीर, तगसीरी।
तकां—देखो 'तिकां' (रू.भे.) उ०—तकां ले वीयै देर हलौ न कीधौ वजाड़ तासा। उदां रा 'पता' रौ कोट दूसरौ आसेर।—वां.दा.
तकाई-सं०स्त्री०—१ तकने की क्रिया या भाव. २ ताकने के कार्य की मजदूरी।
तकाजौ-सं०पु० [अ० तकाज:] १ अपने अधिकार की वस्तु को मांगने का आग्रह. २ वचन दिए हुए कार्य के लिए आग्रहपूर्वक कहने की क्रिया या भाव। उ०—दो चार बार तकाजौ कियौ अर थोड़ा दिन बाद १०; १५ नोटिस लिख्या उणां भेळी एक नोटिस रणछोडा रै नांम रो ई चेप दियौ।—रातवासौ
क्रि०प्र०—करणौ।
रू०भे०—तकादौ, तगादौ।
तकात-अव्य०—तक, पर्यंत।
तकादौ—देखो 'तकाजौ' (रू.भे.) उ०—तकादौ भांत बताड़ै दांत सै तुड़ावेगौ तूं।—ऊ.का.
तकावी-सं०स्त्री० [अ० तक़ावी] सरकार की ओर से किसानों को कृषि संबंधी उपकरण खरीदने, कुआ खुदवाने तथा बीज, घास आदि के लिए ऋण के रूप में दिया जाने वाला धन जिसकी वसूली प्रायः किस्तों में होती है।
क्रि०प्र०—दैणी, मांगणी, लेणी।
रू०भे०—तकावी।
तकार-सं०पु०—१ छंद शास्त्र का तगण गण का एक नाम (पि.प्र.)
२ त अक्षर।
तकावी—देखो 'तकावी' (रू.भे.)
तकियाकलांम-सं०पु० [अ०] वह व्यर्थ का शब्द जो बात करने के दौरान में आदत के कारण अनेक आवृत्ति के साथ प्रयुक्त होता है। सखुन तकिया। उ०—बीच बीच में बात बात पर ठाकर रौ तकिया-कलांम 'समझ्या कै नी' चालतौ रैवतौ।—रातवासौ
तकियोड़ौ-भू०का०कृ०—तका हुआ, टकटकी लगाया हुआ, निहारा हुआ, देखा हुआ।
(स्त्री० तकियोड़ी)
तकियौ-सं०पु० [फा० तकिय:] कपड़े की वह थैली जिसमें रूई आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सुविधा के लिए सिर के नीचे रखते हैं, तकिया, उपधान, सिरहाना।
उ०—पडियौ तकियै सूं परा, आडो दियौ प्रजंक। मसलत आया मीरज्यां, अै ऊठिया असंक।—रा.रू.
पर्या०—उठंग, उपधांन, उपवर, उसीर, उसीस, गिंदुक, गिलम।
२ पत्थर की वह पट्टी जो छज्जे, रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है. ३ वह स्थान जहां मुसलमान फकीर रहता है.
उ०—आवियौ 'वखत' आखेट अलवर अधिप', जिकण कर हूंत निज कूंत जड़ियौ। घाव छक घूमतौ झूमतौ भूम घट, पीर तकिया निकट कौल पड़ियौ।—बालावक्स बारहठ
४ कब्र पर तकिये के आकार का लगाया जाने वाला पत्थर।
तकौ-सर्व०—वह, उस।

तक्क–सं०स्त्री०—१ तर्क। उ०—गुन तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा याग पत्तिद्द पर। पत्तिहरवि ग्रावि विहि पयड़ कइ, पुहवि पसंसिजइ सुदरसरि —प्रा.जैं.का.सं.

२ देखो 'तक' (रू.भे.) उ०—दीठां सूं पड़ती दहल, भूप बड़ा भैं-भरग, नर दुसरगो जाबो नहीं, तो काकै री तक्क।—पा.प्र.

तक्कड़-सं०स्त्री०—तकाजा, शीघ्रता, जल्दबाजी।

तक्करणौ, तक्कवौ—देखो 'तकणौ, तकवौ' (रू.भे.)

तक्कर-सं०पु० [सं० तस्कर] चोर (जैन)

तक्कियोड़ौ—देखो 'तकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तक्कियोड़ी)

तक्ख—देखो 'तक्षक' (रू.भे.) उ०—रमे पग-छांह मधुकर रिक्ख, तवै पग नाग सरीसा तक्ख।—ह.र.

२ देखो 'तारख' (रू.भे.)

तक्खण, तक्खणि-ग्रव्य० [सं० तत्क्षण] तत्काल, तत्क्षण।

उ०—पसरिउ परिमल मलइवाउ, दसदिसि पूरंतौ। मांणिणि कांमिणि मनह मांहि, तक्खणि चूरंतौ।—प्राचीन फागु संग्रह

रू०भे०—तक्षण, तिखण।

तक्र-सं०पु० [सं०] छाछ, मठा। उ०—प्रति भोजन क्रत पांन प्रफूलैं, तक्र मठा ग्रम्रित सम तूलैं।—सू.प्र.

तक्रमंड-सं०पु०—दही, दधि (ग्र.मा.)

तक्रसार-सं०पु० [सं०] मक्खन, नवनीत।

तक्रि—देखो 'तक्र' (रू.भे.) उ०—दुध जिसरणा किम तक्रि विलीजई।
—व.स.

तक्ष-सं०पु० [सं०] भरत का बड़ा पुत्र, रामचंद्रजी का भतीजा।

रू०भे०—तच्छ।

तक्षक-सं०पु० [सं०] १ ग्राठ नागों में एक जिसने राजा परीक्षित को काटा था. २ सर्प, नाग। उ०—ग्रो हुव वळे तक्षक हुय ग्रावै। पांग हूंत तो जांग न पावै।—सू.प्र.

३ एक ग्रनार्य जाति. ४ विश्वकर्मा, बढ़ई।

वि०—लाल, रक्तवर्ण। (डि.को.)

रू०भे०—तकख, तक्ख, तखिख, तखिक, तखो, तख्यक, ताखो, तगस, तगसि, तगस्सेस, तच्छक।

तक्षण-सं०पु० [सं०] १ बढ़ई का काम, ६४ कलाग्रों में से एक।

२ देखो 'तक्खण' (रू.भे.) उ०—विरचइ विपिनि विचक्षण तक्षण दस वि दसार। नव नव निरमळ भूखण दूखण रहिय स्नंगार।
—नेमिनाथ फागु

तक्षसिला-सं०स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगर जो भरत के पुत्र तक्ष के राज्य की राजधानी था। ग्रभी हाल ही में पंजाब में रावलपिंडी नगर के पास खोद कर इस नगर को निकाला गया है। यह प्रचलित है कि परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्प यज्ञ यहीं किया था।

रू०भे०—तखसली, तखिसिला।

तखंग, तखगी-सं०पु० [सं० तक्षक+ग्रंग रा. प्र. ई] १ शेषनाग (डि.को.)

२ तक्षक नाम का सर्प. ३ सर्प।

वि०—तीक्ष्ण, पैना, तेज।

तख-सं०पु०—१ ग्रधिक ग्रफीम खाने वाला, ग्रफीमची. २ मूर्ख।

तखक्र-सं०पु० [सं० तक्षं तनू (कृशी) करणं करोतीतिमल विभुजादिः महीध्रवत्] सुदर्शन चक्र (ग्र.मा.)

तखड़—देखो 'तखड़ौ' (मह., रू.भे.)

तखड़ोतुमड़ीका-सं०स्त्री०—गुजराती नटों की एक शाखा।

तखड़ौ-वि०—शीघ्रता करने वाला, तेज गति वाला।

मह०—तखड़।

तखण, तखणइ-सं०पु०—ग्रांखों का गर्म पानी से सिकताव करने का कार्य (ग्रमरत)

तखत-सं०पु० [फा० तख्त] १ सिंहासन, राजगद्दी। उ०—तखत विराज्या जांन रा, संत विराज्या खाट। केवळ कूबौ यूं कहै, दोनूं में कुण घाट।—कूबौ

मुहा०—१ तखत उलटणौ—राजपाट छीनना, राजा को गद्दी से हटा देना. २ तखत विराजणौ—सिंहासनारूढ़ होना, राज्य को संभालना।

२ चौकी, पाट, तख्त।

रू०भे०—तकत, तखति, तखत्त, तगत।

वि०—चकित, विस्मित, दंग। उ०—खरळां रौ सगळौ लोग देख कर तखत रहि गयौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

तखतखी-सं०पु०—इन्द्र (ह.नां.)

तखतताऊस-सं०पु० [फा० तख्त+ग्र० ताऊस] मुगल वंश के बादशाह शाहजहां का राजसिंहासन जो मोर के ग्राकार का था, मयूर सिंहासन।

तखतनसीन-वि०यौ० [फा० तख्तनशीन] राज्यासीन, सिंहासनारूढ़, राजगद्दी प्राप्त।

तखतपोस-सं०पु०यौ० [फा० तख्तपोश] तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर।

तखतबंदी-सं०स्त्री०यौ० [फा० तख्तबंदी] १ तख्तों से बनी हुई दीवार.

२ तख्तों से दीवार बनाने की क्रिया।

तखत-रबुल-ग्रालमीन-सं०पु०—मुसलमानों का एक तीर्थ-स्थान।
(बां.दा.ख्यात)

तखति—देखो 'तखत' (रू.भे.)

तखती-सं०स्त्री० [फा० तख्त] १ छोटा तख्ता. २ लकड़ी की चौकी.

३ विद्यार्थियों के लिखने की काठ की पट्टी. ४ कंठ का ग्राभूषण विशेष।

यौ०—तखतियां री कांठली।

तखतियां री कांठली-सं०पु०—स्त्रियों के कंठ का ग्राभूषण।

तखतौ-सं०पु०—१ लकड़ी का पाटा, पटा। लकड़ी का लम्बा-चौड़ा चौकोर टुकड़ा।

मुहा०—तखतौ उलटणौ (पलटणौ)—किसी प्रबन्ध को नष्ट-भ्रष्ट करना।

मि०—जाजम पलटणी।

२ खंड, टुकड़ा। उ०—१ तरै पिउसंधी रीस करि कमची री घोड़ा री कमर मांहै दीधी, तिकौ दोय तखता हुवा।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

उ०—२ इतरा में सूअर भूंडण तौ तरवारां सूं मार तखता किया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

३ दर्पण, आईना। उ०—केस माथा रा वडारण उरळा करै छै, गूंथण वास्तै। दूजी वडारण रै हाथ में तखतौ छै।—द.दा.

रू०भे०—तगतौ।

तखत्त—देखो 'तखत' (रू.भे.) उ०—रैंणा आया राठवड़, थापै रांण तखत्त। दोळा त्रीस हजार दळ, अकळ 'अजौ' नरपत्त।—रा.रू.

तखफीफ-सं०स्त्री० [अ० तख़्फ़ीफ़] अभाव, कमी, न्यूनता।

तखभख-सं०स्त्री०—सज-धज। उ०—सोर में पण रंजक। तिण भांत रजपूती री तीख रो तखभख। तिण री रजपूती री तीख।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तखमीनन—क्रि०वि० [अ० तख़मीनन्] अंदाज से, अनुमानतः।

तखमीनौ-सं०पु० [अ० तख़्मीना] अंदाजा, अनुमान।

रू०भे०—तकमीनो।

तखसली—देखो 'तक्षसिला' (रू.भे.)

तखिक—देखो 'तक्षक' (रू.भे.) उ०—भेख तखिक खीजिया भमंगा। दुरत रोस चख भड़ै दमंगा।—सू.प्र.

तखिणा—देखो 'तक्खण' (रू.भे.) उ०—तोय भूप पग धोयत तखिणा, दस दस मोहर समपै दखिणा।—सू.प्र.

तखिसला—देखो 'तक्षसिला' (रू.भे.) उ०—तखिसिला नगरी रिखम समोसरचा रे।—स.कु.

तखौ—देखो 'तक्षक' (रू.भे.) उ०—तखा भुजंग ज्यूं ही झल तेगां।
—सू.प्र.

तख्ख-सं०पु०—शस्त्र का पैनापन, तीखापन। उ०—देवी दधीची रूप तें हाड दीधौ, देवी हाड री तख्ख थैं वज्र कीधौ।—देवि.

तख्यक—देखो 'तक्षक' (रू.भे.)

तगग-सं०स्त्री० (अनु०) ऊंचा जाने की तीव्र गति, तेज गति।

उ०—कर ग्रेहत वाग केकी कला, तगग गई ऊंची तुरंग। हुल जांण व्योम पग हालियौ, समल कना तजियौ चरंग।—पा.प्र.

तगड़-सं०पु०—१ सोने या चांदी का पतला चद्दर।

सं०स्त्री०—२ अधिक चलने से या कार्य करने से होने वाली थकान.

३ तीव्र गति से चलने का भाव।

रू०भे०—तग्गड़।

तगड़णौ, तगड़बौ—क्रि०स०—हांकना, चलाना, दौड़ाना।

तगड़ियोड़ौ—भू०का०कृ—हांका हुआ, चलाया हुआ, दौड़ाया हुआ।
(स्त्री० तगड़ियोड़ी)

तगड़ौ—वि०—१ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। उ०—सुक्र निरोगता री रोगियां नै अन्याय रा दुखियां नै पूरण औखध देय तगड़ा करणा।—नी.प्र.

२ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा। उ०—माटी रै खावणं सूं रोग मिट गइयौ, बादसाह तगड़ौ हुवौ।—नी.प्र.

तगण-सं०पु० [सं०] दो गुरु और एक लघु का एक वर्णिक गण। ऽऽ।

तगत—देखो 'तखत' (रू.भे.) उ०—पातर थे भल लाज्यौ जी वना म्हारा, तगतां पर नाच कराय। वनड़ी वडे परवार की जी वना, म्हारा जोड़ी में महल पधार।—लो.गी.

तगतगई—सं०स्त्री०—स्त्रियों के कंठ का आभूषण विशेष

उ०—मांणिक बइठी मुद्रड़ी, करि नव ग्रहुं अनंत। कंठि जनोई तगतगई, ग्रंथि त्रिणि त्रय तंत।—मां.कां.प्र.

तगतगाणौ, तगतगाबौ—देखो 'तिगतिगाणौ, तिगतिगावौ' (रू.भे.)

तगतागु-सं०स्त्री०—सुन्दरता। उ०—रूपिइं कउतिग करति अ, धरति अ रंभ तगतागु। वसंत रितुराय खेलइं, गेलिइं गाती फागु।
—प्राचीन फागु संग्रह

तगतौ—देखो 'तखतौ' (रू.भे.)

तगदमा-सं०पु० [अ० तकद्दुम] अनुमान, अंदाज।

तगदीर—देखो 'तकदीर' (रू.भे.)

कहा०—तगदीर नै थीगलौ नी लागै—भाग्य के कारी नहीं लगाई जा सकती। भाग्यवादी लोग विधि के लेख को अपरिवर्तनशील मानते हैं।

तगमगणौ, तगमगबौ—क्रि०अ०—टिमटिमाना, चमकाना। उ०—एडी पींडी ऊमदा, तक एण तरारां। जांणै करती झूंबकौ, तगमगियौ तारां।
—मयाराम दरजी री वात

तगमगियोड़ौ—भू०का०कृ०—टिमटिमाया हुआ, चमका हुआ।
(स्त्री० तगमगियोड़ी)

तगमौ—देखो 'तुकमौ' (रू.भे.)

तगर-सं०पु० [सं०] १ सुगंधित लकड़ी वाला पेड़ जिसकी लकड़ी औषधि के काम में आती है। यह वृक्ष प्रायः काश्मीर व भूटान में नदियों के तट पर पाया जाता है। उ०—तिल तंदुल नइं ताड खर, तिगडा त्रिपुसी चंग। तिदुरग तंतणि तिम वळी, तगर तणा तिहां तुंग।—मा.कां.प्र.

तगरी—देखो 'तिगरी' (रू.भे.)

तगरौ-सं०पु०—मिट्टी के जल-पात्र के नीचे का अर्द्ध भाग जो जानवरों, पक्षियों आदि को पानी पिलाने के लिए काम में लिया जाता है।

उ०—पाळां पर रोप्या पड़िया, तगरा हिरणां हेत पांणी लूआं चोसियौ, ठाली आली रेत।—लू.

तगस—सं०पु०—१ अग्नि, आग। उ०—ऊपर सत्रां पड़तां इंधण, व्रत रत दरड़ै पुर घणौ। पोरस झाळ काळ पंडवेसां, तगस भटकियौ 'पाल' तणौ।—केसोदास गाडण

२ [सं० तार्क्ष्य] गरुड। उ०—उदैपुर सहर रो सुवप पख उभळै, छळै खग लहर रौ घाव छकरै। कैलपुर तगस रण मंत्र पढ़ कहर रौ, नाग खळ जहर रौ जोर न करै।—साहपुरै राजा अमरसिंघ रौ गीत

३ देखो 'तक्षक' (रू.भे.)

तगमणो, तगमबो-क्रि०प्र०—उड़ना (पक्षी) उ०—पळ भमती राती विच पंनग, तगमंती राता गिर तास ।—द.दा.

तगनि—१ देखो 'तक्षक' (रू.भे.) २ देखो 'तारख' (रू.भे.)

तगमियोड़ो–भू०का०कृ०—उड़ा हुआ ।
(स्त्री० तगमियोड़ी)

तगसीर, तगसीरो—देखो 'तकसीर' (रू.भे.) उ०—१ किव राजा नूं किसन नित, यम अक्खै अरदास । माफ करो तगसीर मो, देख रांम पय दास ।—र.ज.प्र.

उ०—२ कर विचार मन हूं कहूं, बरणण बुद्ध बणाय । तगसीरी छिमजो तका, 'किसन' कहै कविराय ।—र.ज.प्र.

तगस्सेस–देखो 'तक्षक' (रू.भे.) । उ०—तगस्सेस नागां सिरै जांणि तूटो । छछोहो जिसो रांम रो बांण छूटो ।—सू.प्र.

तगागीर–वि०—तकाजा अथवा आग्रह करने वाला, शीघ्रता करने वाला । उ०—काल अदीतवार नै आय'र दांम ले जायीजो । दोनूं तगादगीरां रस्तो नापियो ।—वरसगांठ

तगादो—देखो 'तकाजो' (रू.भे.) उ०—छव महीना वात री वात में बीत गया । रांमसा री सख्त तगादो आवण लागो ।—वरसगांठ

तगारी–सं०स्त्री०—१ चूना, गारा आदि ढोने का लोहे की चद्दर का बना तसला । लोहे के चद्दर की बनी डलिया ।

उ०—आटा री तगारी हाथ में लेवतां ईज वा बोली, 'आटो थोड़ो मई पीस्या करो हाजरजी' ।—रातवासो

तगी–सं०स्त्री०—सण आदि का रेशा ।

तगीर–सं०पु० [अ० तग़य्युर] १ निकलना क्रिया । उ०—गढ़ तोपन नें करि सफा, पुरतें करो तगीर । 'लावं' हिन्दू न रख्ख हूं, तो मैं दब्बल वजीर ।—ला.रा.

२ जब्त । उ०—दगताळो लागो वरस, चाळो सरस गहीर । सोभत हुई सुजांण नू, थई पठांण तगीर ।—रा.रू.

३ परिवर्तन, वदलने की क्रिया । उ०—तरां स्याहजादे उकीलां नै लिख तलास कर इणनूं तगीर करायो ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तगीरी–सं०स्त्री०—१ हेर-फेर, परिवर्तन. २ ।

उ०—अहमदपुर इवरांम लिखाई, आजम साह तगीरी पाई ।—रा.रू.

तगो–सं०पु०—१ ब्राह्मण के लिए अपमानसूचक शब्द (व्यंग)

२ सूत का धागा, डोरा (जैन)

तग्ग—देखो 'तागा' (रू.भे.) उ०—निरखी जोया नग्ग, (जि) मोल मुंहगा जांणती । उळझ्यो काचो तग्ग, जांण्यां पाछै जेठवा ।—जेठवा

तग्गड़—देखो 'तगड़' (रू.भे.)

तग्य, तग्यो–वि० [सं० तज्ञ] १ ज्ञानी, तत्त्वज्ञ ।

उ०—१ वातां दिसतारै वणै, सठ आगै सरवग्य । मून ग्रहे छांडे मच्छर, तीखो मिळियां तग्य ।—बां.दा.

उ०—२ अनुलोम प्रतिलोम न कोई, सरवातीत थितोरी । हे सुखरांम नोई निज चेतन, नहिं कोई अग्य तग्यो री ।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ दर्शन शास्त्र का ज्ञाता ।

तड़ंग–वि०—१ नंगा, वस्त्रहीन ।

यौ०—नागो-तड़ंग ।

२ लम्बा ।

यौ०—लांबो तड़ंग ।

३ झुंड, टोली । उ०—काछेला गांव उजाड़ कर, गया तड़ंगे दस दिसां । राज तप हीण लारै रह्या, 'आले' 'ऊदळदे' जिसा ।—पा.प्र.

तड़ंदो–सं०पु०—बेंत की चोट, प्रहार की ध्वनि ।

वि०—लम्ब, लम्बायमान ।

रू०भे०—तड़ींदो ।

तड़–सं०पु०—१ प्रातःकाल । उ०—भोरीलो तड़ भेळियो, खोसां कर अत खांति । दुरमत अंध न देखवै, मसतक आई मांत ।
—चिमनजी कवियो

२ वंश, कुल । उ०—अिह रावळ गहलोत भांण तड़ भीम हठी उग्रसेन महाभड़ ।—सू.प्र.

३ देखो 'तड़ो' (मह., रू.भे.)

४ बांस । उ०—खगां जीतणां घाव मैं, दाव खेल्है मलंगै तड़ां माकड़ां पीठ मेल्है ।—वं.भा.

५ वंश या कुल की शाखा । उ०—'अजो'बाल अवसता लेख दइवै गढ़ लीधो । घर छळ भड़ धूहड़ां कटक तड़ तड़ मिळ कीधो ।—सू.प्र.

६ सेना, फौज । उ०—तड़ लाग गयो संग माग तणै, सुध हीण अकब्बर राग सुणै । खड़ खेंग विकोस कमंध खड़ा, तिण ताळ भई दुघड़ा त्रिगड़ा ।—रा.रू.

७ दल, पार्टी ।

(अनु०) ८ आवाज, ध्वनि । उ०—१ वसुधा काळी री ताळी तड़ वागी, भिड़ियां सोनां री चिड़ियां पड भागी ।—ऊ.का.

उ०—२ ऊभो ऊंठ मींगणा करै, तड़ तड़ वाजै ताली ।—अज्ञात

उ०—३ रह्या न कोई राज, जुलम कियां सूं जगत में । तड़ तड़ तूटा ताज, चोखा-चोखा चकरिया ।—मोहनलाल साह

वि०—समान, तुल्य । उ०—रूपमल घोड़ असवार 'उम्मेद' हर, अरां नी जोड़ वागां अताळी । न दीठी अवर घड़मोड़ भड़ निरख्यां, असी तड़ जोड़ भड़ भिड़ज वाळी ।—चांवंडदांन महड़

तड़क–सं०स्त्री०—१ चमक, दमक ।

यौ०—तड़क-भड़क ।

२ फटने तथा विदीर्ण होने की क्रिया या भाव ('तड़' शब्द की ध्वनि के साथ) ३ दरार. ४ तालाव, सरोवर । उ०—मदतळ झांणां मसत, झरै झरणां गिर नीझर । अनचारा तजि अरध, पियै तड़कां नीरोवर ।—सू.प्र.

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी । उ०—नागजी, तड़क तड़क मत तोड़ रै वैरी, कतवारी रै तार जिउं, ओ नागजी ।—नागजी री वात

तड़कउ–सं०पु०—सूर्य की किरणों की तेजी, धूप की प्रखरता ।

उ०—वैसाख वारु मास, नहीं ताढ़ि तड़कउ तास। उंचि चढ़िग्रावास, वइसयइ केहनइं पास।—स.कु.

२ देखो 'तड़को' (रू.भे.)

तड़कण—वि०—१ फटने वाला, तड़कने वाला. २ चटकने वाला, दरार पड़ने वाला. ३ कुपित होने वाला, क्रोधित होने वाला।

तड़कणौ, तड़कबौ—क्रि०अ०—१ 'तड़' शब्द की ध्वनि के साथ फटना, फूटना या तड़कना। उ०—१ छपर पुरांणा पिया पड़ गया रे, कोई तड़कण लागा रे बांस।—लो.गी.

उ०—२ माता रै देवरै चुड़लो तड़क्यौ ए माय।—लो.गी.

२ क्रोध करना, कुपित होना। उ०—तौ थे तौ इयां नै तड़कतीं-ई रैवौ हौ। कदेई मिठास सूं कनै बेठाय'र सीख देवौ तौ कोनी।
—वरसगांठ

३ चमकना। उ०—तड़ातड़ी तोव करि गयण तड़कै तड़ित, महा झड़ झड़ि करि झूंझ भंग्यौ।—लो.गी.

४ देखो 'तरक्कणौ, तरक्कबौ' (रू.भे.)

तड़कणहार, हारौ (हारी), तड़कणियौ—वि०।

तड़काड़णौ, तड़काड़बौ, तड़काणौ, तड़काबौ, तड़कावणौ, तड़कावबौ
—प्रे०रू०।

तड़किग्रोड़ौ, तड़कियोड़ौ, तड़क्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तड़कीजणौ, तड़कीजबौ—भाव वा०।

तरक्कणौ, तरक्कबौ, तिड़कणौ, तिड़कबौ—रू०भे०।

तड़क-भड़क—सं०स्त्री०यौ०—चमक-दमक।

तड़कली—सं०स्त्री०—स्त्रियों का एक कर्ण-ग्राभूषण।

तड़कलौ—देखो 'तड़कौ' (ग्रल्पा. रू.भे.) उ०—१ मत दौ म्हारी बाई नै गाळ, म्हारी वाई परदेसणजी परदेसण। ग्रा ग्राज उडै परभात, तड़कलै उड ज्यासी जी उड ज्यासी।—लो.गी.

उ०—२ दैव ग्रटारू ग्रह्म प्रति, लिखि चुरासी मांहि। टळवळतां नितु तड़कलइ, क्षिणूं एक दाखी छांहि।—मा.कां.प्र.

तड़काऊ—देखो 'तड़कौ' (रू.भे.)

तड़कियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ फटा हुग्रा, चटका हुग्रा, २ क्रोध किया हुग्रा. ३ चमका हुग्रा. ४ देखो 'तरक्कियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तड़कियोड़ी)

तड़की—देखो 'तिड़की' (रू.भे.)

तड़कै—क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी। उ०—परिग्रह रे वस मांनवी ए, तिणां ऊपर लो तेह के। बाहला सज्जन भणी एं तड़कै तोड़ै नेह के।—जयवांणी

तड़कौ, तड़क्कौ—सं०पु०—१ प्रातःकाल, सवेरा। उ०—१ ग्राधी रात पहर कौ तड़कौ, सासू हेलौ मारियौ। भंवरजी लाजां मरगी ग्रो, मेरा तनकमिजाजी, सरमां मर गई ग्रो।—लो.गी.

उ०—२ तड़कै ग्रावेगी बरात, जेठ घोड़ै, सुसरौ पालकी, देवर चरवाजीदार।—लो.गी.

२ धूप, गरमी। उ०—वील रूंख तळि वैसि, टाळणौ मांड्यौ तड़कौ। तरु हुंती फळ तूटि, पड़्यौ सिर मांहै फड़कौ।—ध.व.ग्रं.

३ ग्रगले दिन का प्रात:।

तड़च्छ, तड़छ—सं०स्त्री०—१ तड़फड़ाहट, छटपटाहट।

उ०—गजां तूटै ग्रसुंडां गै ढाल फूटै सोर गंजां। जुटै भड़ां हजारां तड़च्छां खावै जोह।—सूरजमल मीसण

२ देखो 'तड़ाछ' (रू.भे.) उ०—तुटै माथा, खाय तड़छ फुटै कै फीफर, पड़ घावां रावत पड़ै होय घावां हैवर।—सगतीदांन खिड़ियौ

तड़छणौ, तड़छबौ—क्रि०ग्र०—१ तड़फना, छटपटाना, पीड़ा से व्याकुल होना। उ०—तड़छै मछी जिम तरह, पांणी पांणी ग्रोछा पर। जिण वेळा पाछा हुवै, कै काचा कायर।—सगतीदांन खिड़ियौ

२ मूर्च्छित होना।

क्रि०स०—३ संहार करना, काटना। उ०—तप 'मोहण' जै छक-'पूर' तणौ। तड़छै रवदां खगि 'सूर' तणौ।—सू.प्र.

तड़छणहार, हारौ (हारी), तड़छणियौ—वि०।

तड़छाड़णौ, तड़छाड़बौ तड़छाणौ, तड़छाबौ, तड़छावणौ, तड़छावबौ,
—प्रे०रू०।

तड़छ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तड़छीजणौ, तड़छीजबौ—भाव वा०।

तड़च्छणौ, तड़च्छबौ, —रू०भे०।

तड़छाणौ, तड़छाबौ—१ किसी को तड़फड़ाना, छटपटाना.

२ मूर्च्छित करना. ३ काटना, संहार करना।

तड़छायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ किसी को तड़फाया हुग्रा. २ मूर्च्छित किया हुग्रा. ३ काटा हुग्रा।

(स्त्री० तड़फायोड़ी)

तड़छियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ छटपटाया हुग्रा. २ मूर्च्छित हुवा हुग्रा. ३ संहार किया हुग्रा, काटा हुग्रा।

(स्त्री० तड़छियोड़ी)

तड़ण—वि०—'तड़' शब्द की ध्वनि के साथ फटने वाला या फूटने वाला, चटकने वाला, दरार पड़ने वाला।

सं०स्त्री०—दरार।

तड़णौ, तड़बौ—क्रि०ग्र०—१ 'तड़' शब्द की ध्वनि के साथ फटना, फूटना ग्रथवा चटकना। दरार पड़ना. २ क्रोध करना, कुपित होना.

३ पशु का पतला मल करना।

तड़णहार, हारौ (हारी), तड़णियौ—वि०।

तड़ाड़णौ, तड़ाड़बौ, तड़ाणौ, तड़ाबौ, तड़ावणौ, तड़ावबौ—प्रे०रू०।

तड़िग्रोड़ौ, तड़ियोड़ौ, तड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तड़ीजणौ, तड़ीजबौ—भाव वा०।

तड़कणौ, तड़कबौ, तिड़कणौ, तिड़कबौ, तिड़णौ, तिड़बौ—रू०भे०।

तड़त—सं०स्त्री० [सं० तड़िता] बिजली, दामिनी, विद्युत।

उ०—छकि हीरां मदन छकि, वण बुध सदन विसेख। चंद वदन मुळ-

चमक दमक, रदन तड़त की रेन ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

रू०भे०—तड़ता, तड़ित, तड़िता, तड़िताळ, तड़िति ।

तड़तड़णो, तड़तड़बो–क्रि०अ०—१ कष्ट पाना, व्याकुल होना. २ किसी तरल पदार्थ घी, तेल आदि का उबाल पर आना ।

तड़तड़तो–वि०—अति उष्ण, उष्ण । उ०—तड़तड़ते नांख्या तावड़े, गुड़्या घांन जिवार । तड़फड़ नड जीव ते मूआ, दया न रही लगार । —स.कु.

तड़तड़ाणो, तड़तड़ाबो–क्रि०स०अ०—१ किसी को कष्ट देना. २ तरल पदार्थ को उबलने की अवस्था पर लाना । गर्म करना. ३ तड़तड़ शब्द करना ।

तड़तड़ायोड़ो–भू०का०कृ०—१ किसी को कष्ट दिया हुआ. २ (तरल पदार्थ को) उबाला हुआ, गर्म किया हुआ. ३ तड़तड़ शब्द किया हुआ ।

(स्त्री० तड़तड़ायोड़ी)

तड़तड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—१ कष्ट पाया हुआ, व्याकुल हुवा हुआ. २ (किसी तरल पदार्थ घी, तेल आदि का) उबाल पर आया हुआ।

(स्त्री० तड़तड़ियोड़ी)

तड़ता—देखो 'तड़त' (रू.भे.) उ०—घणस्यांम सरूप अनूप घणो रे, तड़ता पळको पट पीत तणो रे ।—र.ज.प्र.

तड़तूंबो—देखो 'तसतूंबो' (रू.भे.) (अल्पा.)

तड़दादो–सं०पु०—प्रपितामह का पिता या वंश का पूर्वज ।

तड़प–सं०स्त्री०—१ तड़पने की क्रिया या भाव. २ यत्न, प्रयत्न ।

तड़पड़ा'ट–सं०स्त्री०—तड़पड़ाहट, छटपटाहट, व्याकुलता, अधीरता ।

रू०भे०—तड़फड़ा'ट ।

तड़पणो, तड़पबो—क्रि०अ०—देखो 'तड़फणो, तड़फबो' (रू.भे.)

उ०—ढोलो नदियां रो नीर । मरवण जळ मांयली माछली, रे लाल । सूकण लागो है नीर, तड़पण लागी है माछळी रे लाल ।—लो.गी.

तड़पफड़—देखो 'तड़फड़' (रू.भे.) उ०—वडपफर टूक हुए गज बाज। तड़पफड़ मच्छ जिहीं सिरताज ।—र. वचनिका

तड़पाणो, तड़पाबो —देखो 'तड़फावणो, तड़फावबो' (रू.भे.)

तड़पायोड़ो—देखो 'तड़फायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० तड़पायोड़ी)

तड़पियोड़ो—देखो 'तड़फियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० तड़फियोड़ी)

तड़पीलो–वि०—१ फुर्तीला, उतावला. २ प्रभाव रखने वाला, मेहनती ।

तड़प्फणो, तड़प्फबो—देखो 'तडफणो, तड़फबो' (रू.भे.)

उ०—पड़े पक्खराळा, तड़प्फे रताळा । जळां तोछ जेहा अोपे मच्छ एहा ।—सू.प्र.

तड़फ—देखो 'तड़प' (रू.भे.)

तड़फड़–सं०स्त्री०—तड़फड़ाहट, छटपटाहट । उ०—तड़फड़ सायक अातम भाड़, वड़वड़ काळज घाव बराड़ ।—गो.रू.

रू०भे०—तड़पफड़, तड़प्फड़ ।

तड़फड़णो, तड़फड़बो—देखो 'तड़फणो, तड़फबो' (रू.भे.)

उ०—पनंगेस पड़े कंध कोम पर, घोम अारावां धहहड़े । तड़फड़े पड़े मछ नीर तिम, पड़े दमंग गोळा पड़े ।—सू.प्र.

तड़फड़ा'ट—देखो 'तड़पड़ा'ट' (रू.भे.)

तड़फड़ियोड़ो—देखो 'तड़फियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० तड़फियोड़ी)

तड़फणो तड़फबो–क्रि०अ०—१ तड़फना, छटपटाना, व्याकुल होना. २ खूब प्रयत्न करना । उ०—अकबर तड़फे आप, फते करण च्यारूं तरफ । पण रांणो प्रताप, हाथ न चढ़े हमीर हर । —दुरसो आढ़ो

तड़फणहार, हारो (हारी), तड़फणियो—वि० ।

तड़फाड़णो, तड़फाड़बो, तड़फाणो, तड़फाबो, तड़फावणो, तड़फावबो—क्रि०स० ।

तड़फिओड़ो, तड़फियोड़ो, तड़पयोड़ो—भू०का०कृ० ।

तड़फीजणो, तड़फीजबो—भाव वा० ।

तड़पणो, तड़पबो, तड़प्फणो, तड़प्फबो, तड़फड़णो, तड़फड़बो— रू०भे० ।

तड़फाणो, तड़फाबो–क्रि०स०—तड़फने के लिए बाध्य करना, सताना ।

तड़पाणो, तड़पाबो—रू०भे० ।

तड़फायोड़ो–भू०का०कृ०—छटपटाया हुआ, तड़फाया हुआ ।

(स्त्री० तड़फायोड़ी)

तड़फियोड़ो–भू०का०कृ०—तड़फा हुआ ।

(स्त्री० तड़फियोड़ी)

तड़प्फड़—देखो 'तड़फड़' (रू.भे.)

तड़बंदी–सं०स्त्री०यौ०—१ स्वजाति या वंश का विभाजन, जाति का शाखाओं में विभक्त होने का भाव. २ दलबंदी ।

तड़बड़णो, तड़बड़बो–क्रि०अ०—प्यास के मारे व्याकुल होना, तृषातुर होना. २ भोजन का अधिक समय तक रहने से विकृत होना ।

तड़भड़णो, तड़भड़बो —रू०भे० ।

तड़बड़ियोड़ो–भू०का०कृ०—१ प्यास के मारे व्याकुल हुवा हुआ, तृषातुर हुवा हुआ. २ (भोजन का अधिक समय तक पड़ा रहने से) विकृत हुवा हुआ ।

(स्त्री० तड़बड़ियोड़ी)

तड़बो–सं०पु०—१ इन्द्रायन का फल. २ पकाया हुआ तरल खाद्य पदार्थ जो पड़ा रहने से विकृत हो जाता है ।

तड़भड़–सं०स्त्री०—शीघ्रता, ताकीद । उ०—हुवा नगारां सद हुए तड़भड़ नर इंदां । 'अभो' हुवो असवार हुवो जैकार कविंदां ।—रा.रू.

क्रि०वि०—शीघ्रता से, जल्दी से । उ०—तड़भड़ घड़ आयड़ गैतूळां, भड़फड़ ग्रीध उरड़ रंभ भूलां ।—सू.प्र.

रू०भे०—तड़भड़ि, तड़भड़ी।

तड़भड़णो, तड़भड़बो–क्रि०अ०—१ मारा-मारा फिरना, भटकना, ठोकरें खाना। उ०—आडा खाडां में भोडक अड़वड़ता, संतां आस्रम में जिम तूंबा तड़भड़ता।—ऊ.का.

२ देखो 'तड़वड़णौ, तड़वड़बौ' (रू.भे.)

तड़भड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०— १ मारा-मारा फिरा हुआ, भटका हुआ.

२ देखो 'तड़वड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तड़भड़ियोड़ी)

तड़भड़ि, तड़भड़ी—देखो 'तड़भड़' (रू.भे.) उ०—तुरत उठया तड़भड़ि करी, सुणि के साहि वचनो रे। मीर मुगळ मसती हुआ, सलह पहरी यवनो रे।—प.च.चौ.

तड़वड़–वि०—सदृश, समान, बराबर।

तड़ाक–सं०स्त्री०—तड़ाके का शब्द, किसी वस्तु के टूटने की ध्वनि।

उ०—इतरै तो बंगळा रै मांयनै सूं जोर सूं हाकौ हुवौ—चोर-चोर! वो भाग्यौ जितरै तौ किणीई उणनै लारां सूं काठौ पकड़ लियौ अर तड़ाक करती एक लकड़ी माथा पर पड़ी।—रातवासौ

मुहा०—तूं-तड़ाक होणी—तू-तू मैं-मैं होना, ओछेपन पर आना।

क्रि०वि०—शीघ्र, तुरन्त, चटपट।

यौ०—तड़ाक-पड़ाक, चटपट।

तड़ाकौ–सं०पु० (अनु०) १ जोर से होने वाली 'तड़' शब्द की ध्वनि।

२ चोट, प्रहार, वार।

तड़ाखड़ी–सं०स्त्री०—खलबली। उ०—तण अजमाल हूंत डरपंती, पतसाहां त्रिय चीत पड़ी। बुगचा आळमाळ कर बैठी, खड़े पाय हुय तड़ाखड़ी।—राजा अभयसिंह रौ गीत

तड़ाग–सं०पु० [सं० तडाग] तालाब, सरोवर। उ०—१ रोज सिकारां हेलणौ, देखे बाग तड़ाग। हूंकळ दळ गज हैवरां, अमरख नरां अथाग।—रा.रू.

उ०—२ तर धर सूका नदी तड़ागा, लाज धरम विद्या मग लागा।
—ऊ.का.

तड़ाछ–सं०स्त्री०—मूर्च्छा, बेहोशी। उ०—म्हे रावळा हुकम का आधीन रहसां, किसतूरी खवासण पनां सूं मिळायो जठै देखतांई तड़ाछ खाय इसड़ो पड़ियौ जांणै सीतंग रौ झोलो आयो।

क्रि०प्र०—खाणी। —पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—तड़च्छ, तड़छ।

तड़ातड़–क्रि०वि० —१ लगातार, निरन्तर।

सं०स्त्री०—२ तड़-तड़ शब्द की ध्वनि।

तड़ातड़ि, तड़ातड़ी–सं०स्त्री० (अनु०) ध्वनि, आवाज।

उ०—१ भड़ाभड़ि भड़ाभड़ि नाळ छूटं भली, कड़ाकड़ि कूट वाजै कुठारां। तड़ातड़ि-तड़ातड़ि सबद गढ़ ठावतां, वड़ावड़ि बांण लागै उठारां।—प.च.चौ.

उ०—२ तड़ातड़ी तोव करि गयण तड़के तड़ित, महा झड़ा झड़ि करि झूंझ झंम्यो।—लो.गी.

क्रि०वि०—निरन्तर, लगातार।

तड़ाळ–सं०स्त्री० [सं० तड़िता] बिजली, विद्युत (डि.को.)

तड़ि—देखो 'तड़ी' (रू.भे.) उ०—तरु ताळपत्र ऊंचा तड़ि तरळा, सरळा पसरंता सरगि। बैठै पाटि वसंत बंधिया, जगहथ किरि ऊपरी जगि।—वेलि.

तड़िछ—देखो 'तड़ाछ' (रू.भे.)

तड़ित—देखो 'तड़त' (रू.भे.) उ०—बपु स्यांम सुंदर मेघ रुचि फबि तड़ित पीत पटंबरं।—र.ज.प्र.

तड़ितदेह–सं०पु० [सं० तड़िद्देह] ४९ क्षेत्रपालों में से ३२ वां क्षेत्रपाल।

तड़ितवांन–सं०पु०यौ० [सं०] बादल, मेघ (अ.मा.)

रू०भे०—तड़ेतवांन।

तड़िता, तड़िताळ, तड़िति—देखो 'तड़त' (रू.भे.)

उ०—१ तन स्यांम अंबुद रूप तड़िता, वसन पीत विचार।
—र.ज.प्र.

उ०—२ जिण सक्ति परखि लजि तड़िति जात, व्रित गवन पवन मन ज्यौं विख्यात।—रा.रू.

तड़ियळ, तड़ियाळ–सं०स्त्री०—बिजली। उ०—१ कळह लंक कुर खेत पछै कर, दोमझि धिन 'गोपाळ' दुआढ़। मद झर सिर कर मांडे मारी, 'जसा' रा तड़ियळ जम दाढ़।
—राज बहादुर गोपाळदास चूंडावत रौ गीत

उ०—२ गजर झाट घड़ियाल त्रिजड़ तड़ियाल तूटि झल। पड़ै ढोल पुड़ियाळ वरंग गुड़ियाळ चहुंवळ।—पनां वीरमदे री वात

तड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ दरार पड़ा हुआ, फटा हुआ, चटका हुआ.

२ पतला मल किया हुआ (पशु)

(स्त्री० तड़ियोड़ी)

तड़ियौ–सं०पु०—१ एक ही बैल अथवा एक ही ऊंट से खींचे जाने वाले हल की दो हरिसाओं में से एक।

वि०वि०—ये दोनों बैल या ऊँट के आजू-बाजू में रहती हैं।

२ देखो 'तड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

तड़िल्लता–सं०स्त्री० [सं० तड़िता] बिजली, चपला।

तड़ी–सं०स्त्री०—१ वृक्ष की पतली टहनी।

क्रि०प्र०—देणी, बताणी, मारणी, लगाणी।

२ हंसिये को लम्बे बांस के सिरे पर लगा कर बनाया जाने वाला एक उपकरण जिससे भूमि पर खड़े-खड़े ही पशुओं को चरने के लिए वृक्ष की टहनियां काटी जाती हैं।

मि०—अंकुड़ो।

३ डंडा। उ०—कोमळ अंग न सहतौ कळियौं, ताती झळियां सहै तप। घडी घड़ी कर तड़ी ओवियौ, बड़ी-बड़ी वाळियौ वप।
—प्रथ्वीराज राठौड़

रू०भे०—तड़ि।

तड़ीक–सं०स्त्री० [सं० तड़िता] १ बिजली।

सं०पु०—२ ऊंट के वक्षस्थल का स्थान विशेष जहां का चमड़ा कठोर एवं खुरदुरा होता है ।

तड़ींदो—देखो 'तड़ंदो' (रू.भे.)

तड़ेतवांन—देखो 'तड़ितवांन' (रू.भे.)

तड़ेवड़-वि०—समान, सदृश, मिलता-जुलता ।

क्रि०वि०—करीब, लगभग ।

रू०भे०—तड़ोवड़, तड़ोवड़ौ, तड़ोवड़, तड़ोवड़ि, तड़ोवड़ौ ।

तड़ेल-सं०पु० [सं० तट+रा०प्र० एल] योद्धा ।

तड़ोवड़, तड़ोवड़ौ, तड़ोवड़, तड़ोवड़ि, तड़ोवड़ी-सं०स्त्री०—१ समानता, बराबरी । उ०—पद्मनाभ पंडित भगाइ, जिह तूठइ जगदीस । तास तड़ोवड़ि हुइ किसी, अंगि म आंणउ रीस ।—कां.दे.प्र.

२ देखो 'तड़वड़' (रू.भे.)

तड़ोवड़ियौ-वि०—बराबरी वाला, तुल्य, समान ।

तड़ौ-सं०पु०—१ हंसिये को लम्बे बांस के सिरे पर लगा कर वृक्ष की टहनियों को काटने के लिए बनाया जाने वाला औजार. २ डंडा । उ०—सौ मुंह मुंडी कर बैठियौ लोग नूं तड़ौ मार मांगस मेल्है सो मांगस तो आवता आवै ।—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

अल्पा०—तड़ियौ, तड़ौ ।

मह०—तड़ ।

तचणौ, तचबौ-क्रि०अ०—१ कष्ट सहना, संतप्त होना । उ०—तिहारे द्वारे पे पल पल पुकारे तन तचें । विना तेरी घेरी मूरत मति मेरी नहि बचें ।—ऊ.का.

२ गर्म या तप्त होना ।

तचा-सं०स्त्री० [सं० त्वचा] चमड़ी, त्वचा (जैन)

तचाणौ, तचाबौ-क्रि०स०—१ तपाना, गर्म करना. २ दुर्बल करना ।

तचायोड़ो-भू०का०कृ०—१ तपाया हुआ. २ दुर्बल किया हुआ । (स्त्री० तचायोड़ी)

तचियोड़ो-भू०का०कृ०—१ क्षीण या कृश हुवा हुआ. २ तपा हुआ. ३ कष्ट सहा हुआ, संतप्त हुवा हुआ । (स्त्री० तचियोड़ी)

तचोळ-सं०स्त्री०—कंपायमान होने की क्रिया या भाव ।

तच्च-वि० [सं० तथ्य] १ सचाई, यथार्थता, सत्य (जैन)

२ देखो 'तचा' (रू.भे.)

तच्छ—देखो 'तक्ष' (रू.भे.) उ०—धरा सुघाट घाट के कपाट छत्ति के घरें । घन प्रतच्छ तच्छ के प्रदच्छ स्वच्छ के घरें ।—ऊ.का.

तच्छक-सं०पु०—देखो 'तक्षक' (रू.भे.)

तच्छणि-सं०स्त्री०—लकड़ी छीलने का बढ़ई का एक उपकरण, बसूला ।

तच्छन, तच्छिन-क्रि०वि० [सं० तत्क्षण] तत्काल, उसी समय ।

तच्छणौ, तच्छबौ-क्रि०स०—संहार करना, काटना । उ०—तच्छै खळ 'पेम' खगा झट तांम । रचै जुध एम समोभ्रम रांम ।—सू.प्र.

तच्छणहार, हारौ (हारी), तच्छणियौ—वि० ।

तछाड़णौ, तछाड़बौ, तछाणौ, तछाबौ, तछावणौ, तछावबौ—प्रे०रू० ।

तछिओड़ो, तछियोड़ो, तछ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

तछीजणौ, तछीजबौ—कर्म वा० ।

तछियोड़ो-भू०का०कृ०—संहार किया हुआ, काटा हुआ । (स्त्री० तछियोड़ी)

तछेक-क्रि०वि०—शीघ्र, तेज । उ०—नळवर हुतां पोह समा, करहो खड़ै तछेक । हलकारां कर आविया, कुंवरजी एका एक ।—ढो.मा.

तज-सं०पु०—१ एक वृक्ष की छाल विशेष जो औषधि में काम ली जाती है ।—अमरत । २ एक वृक्ष विशेष ।

तजड़-सं०पु०—[सं० तृणता, भिन्नता] १ धनुष. २ देखो 'त्रिजड़' (रू.भे.)

तजणौ, तजबौ-क्रि०स० [सं० त्यज्] १ त्यागना, छोड़ना । उ०—गुण सूं तजै न गांस, नीच हुवै डर सूं नरम । मेळ लहै खर मांस, राख पड़ै जद राजिया ।—किरपाराम खिड़ियौ

२ कृश होना, क्षीण होना ।

तजणहार, हारौ (हारी), तजणियौ—वि० ।

तजाड़णौ, तजाड़बौ, तजाणौ, तजाबौ, तजावणौ, तजावबौ—प्रे०रू० ।

तजिओड़ो, तजियोड़ो, तज्योड़ो—भू०का०कृ० ।

तजीजणौ, तजीजबौ—कर्म वा० ।

तज्जणौ, तज्जबौ—रू०भे० ।

तजवीज-सं०स्त्री० [अ० तजवीज़] १ निर्णय, फैसला । उ०—और साथ नै तौ आप आप रा डेरां नै सीख दीनी । और खिलवति का लोगां नै साथ लेवा की तजवीज कीनी ।

—पनां वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

२ प्रबन्ध, बन्दोबस्त, इंतजाम । उ०—इण तजवीज चढ़ौ असवारी, घर बुगलांण धसे छत्रधारी ।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—करणी, बैठाणी ।

मुहा०—तजवीज बैठाणी—इंतजाम करना ।

३ उपाय, युक्ति । उ०—हूज किसी रीत धाड़ौ कीजे, इस तजवीजां कंवर वीरमदे गैला का साथ्यां सूं बतळावै छै ।

—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—तजवीज ।

तजवीर-स०पु० [अ० तज्रिब] अनुभव ? उ०—जैसा था भरोसा तैसा तुमने जवाब दिया । जंग का तजवीर ऐ भी मनजूर किया ।—सू.प्र.

तजरबौ-सं०पु० [अ० तर्जब:] अनुभव, ज्ञान ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

यौ०—तजरबाकार ।

तजवीज—देखो 'तजवीज' (रू.भे.)

तजियोड़ो-भू०का०कृ०—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ. २ कृश ।

(स्त्री० तजियोड़ी)

तजोरी—देखो 'तिजोरी' (रू.भे.)

तज्जणा—सं०स्त्री० [सं० तर्जन] तिरस्कार, भर्त्सना (जैन)

तज्जणौ, तज्जबौ—देखो 'तजणौ, तजबौ' (रू.भे.)

उ०—नारद जुध निरखता तिकौ पिण हांसी तज्जै। भयण अंभ भोजन भूख जीमियां न भज्जै।—चोथ वीठू

तज्जियोड़ौ—देखो 'तजियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तज्जियोड़ी)

तट—सं०पु० [सं०] १ किनारा, कूल, तीर। उ०—ज्यां थारै तट जाय, उदर भर पीधौ उदक। मिनख जिकै फिर माय, आया नह जननी उदर।—बां.दा.

२ सीमा, हद। उ०—हूं करत कूक हजार, पड़ि ठौड़ ठौड़ पुकार। दळ दक्ल ऊजड़ि देस, चढ़ि तटां लोक चलेस।—सू.प्र.

३ महादेव (अ.मा.)

क्रि०वि०—१ पास, निकट, समीप।

उ०—कट तट ओप निखंग कोट छिब कांम की। रूप अनूप सचूप यसी दुति रांम की।—र.ज.प्र.

२ नीचे।

रू०भे०—तट्ट, तड।

तटक—सं०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—तत नक ताथेइ ताथेइ तटक दे तोड़त तांन।—ध.व.ग्रं.

क्रि०वि०—तत्क्षण, तुरन्त।

तटणी—सं०स्त्री० [सं० तटिनी] नदी। उ०—नथ हुंत तीर निकाळतां, सदीव पीव सचेत। तटणि-तीर किम छिप तकौ, विग्रह सुण वांणेत।

—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—तटणी, तटिनी।

तटकणौ, तटकबौ—देखो 'तटक्कणौ, तटक्कबौ' (रू.भे.)

तटकियोड़ौ—देखो 'तटक्कियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तटकियोड़ी)

तटक्कणौ, तटक्कबौ—क्रि०अ०—तटकना, टूटना। उ०—अंत नाड़ि तटक्य प्रांण सटक्कय छोड घटक्कय सीर टरौ।—करुणा सागर

तटक्कियोड़ौ—भू०का०कृ०—तड़का हुआ, टूटा हुआ।

(स्त्री० तटक्कियोड़ी)

तटनी—देखो 'तटणी' (रू.भे.) उ०—उर बीचि उरोज स्वयंभु लसै, तटनी तट मांनहु कोक वसै।—ला.रा.

तटस्थ—वि० [स०] १ किनारे पर रहने वाला. २ किसी के पक्ष में नहीं रहने वाला।

तटा—सं०पु० [सं० तट] १ किनारा, कूल।

सं०स्त्री०— २ नदी, सरिता।

क्रि०वि०—१ पास, समीप. २ ऊपर। उ०—अरि गज घटा पीठि पछटै इम, जळ सिल तटा रजक दुपटा जिम।—सू.प्र.

तटाक—सं०पु० [सं० तडाग] १ तालाब, सरोवर, जलाशय।

उ०—तूटा वह जळ सर नदि तटाक, हूकळ असि कळळ नकीब हाक।—सू.प्र.

सं०स्त्री० (अनु०) २ (फलादि के गिरने से होने वाली) ध्वनि विशेष।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी।

तटारी, तटी—सं०स्त्री० [सं० तट] किनारा, कूल।

उ०—१ उतमंग खड़ाऊ उमग अगाऊ दरसण दाऊ पाव पिलै। भादव घण भारी फैल अफारी महण तटारी जांण मिलै।—र.रू.

उ०—२ नक्र तीह निवांण निबळ दाय नावै, सदा वसै तटि जिके समंद। मनवीजै ठाकुरै न मांनै, रावळ ओळगियै राजिंद।

—ईसरदास बारहठ

तटिनी—देखो 'तटणी' (रू.भे.)

तटी—सं०स्त्री० [सं० तटिनी] १ नदी, सरिता. २ घाटी, तराई।

तटे, तटै—देखो 'तठै' (रू.भे.) उ०—पीछै खंडेलै सूं रिड़मल निरवांण साथ कर कोस दो सांमां आया। तठै वेढ़ हुई।—द.दा.

तट्ट—देखो 'तट' (रू.भे.) उ०—तैसी झिलै झिलम मुख तट्टै, पूरण ससि कर ग्रहण प्रगट्टै।—रा.रू.

तठा—सर्व० [सं० तत्] उस। उ०—रांणी बळी तठा पछै विजैदत्त रै उण डावड़ा री औलाद हुई।—नैणसी

क्रि०वि० [सं० तत्र] १ वहां। उ०—हे पती, म्हनै आप लाया तद आगै आप नै लारै हूं ही पण आज आपरी जीव सूं ही प्यारी आपरी धण आप जूझ नै कांम आया तौ अबै छेलै पयांणै आगै हूं नै लारै आप। प्रयोजन सत करण नै वहीर हुई तठा री वात छै।—वी.स.टी.

२ तब। उ०—बोड़ां री ठिकांणौ घणा दिनां रौ थौ सु संमत १६६६ राव महेसदास दळपतोत नूं जाळोर हुई. वरस ४ महेसदास जीवियौ, तठा ता औ बोड़ा कल्यांणदास नारणदासोत नूं सैंणौ।—नैणसी

तठी—क्रि०वि०—१ उस तरफ, उधर. २ वहां।

उ०—दिखण डभोळ थी सूरत खुसकी रै राह कोस १३० तठी सिवा दिखणी रौ चाकर नैमूजी जादोराय तीन हजार असवार पांच हजार पाळा लै साथै नै संवत १७२० रा माह वद ५ सूरत मारी।

—बां.दा.ख्यात

तठे, तठै—क्रि०वि०—वहां। उ०—परमेसर तणी वडाई पेखौ, जळ सूं बारै काढ़ जठै। मेह करम पैठायौ मैंगळ, तिण भेळी खळ गयौ तठै।

—भगतमाळ

रू०भे०—तटे, तटै।

तड—देखो 'तट' (रू.भे.) उ०—नदी दो तड पाडती, कचवर उपाडती, रूंख उन्मूळती, कुंभिणि घातती।—व.स.

तडकस—वि०—तंग, कसा, दृढ़। उ०—चंदवदनी ते सिवि सहि लालइ, रमइ रंग रसि अबळा बाळि। तडकस कंचू उर वरि हार, रेणि रंगि रीझवइ भरतार।—प्राचीन फागु-संग्रह

तटरकणौ, तटरकबौ—देखो 'तड़कणौ, तड़कबौ' (रू.भे.)
उ०—उरनि कंचुइ तडफकइ, लहकइ नवसरहार, कणकवन्न करि चूडइ, रणइ लग झलकार ।—प्राचीन फागु-संग्रह

तटकियोड़ौ—देखो 'तड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तटकियोड़ी)

तटफड़णौ, तटफड़बौ—देखो 'तड़फणौ, तड़फबौ' (रू.भे.)
उ०—धाराम धटहड़इ, गोलट गड़हड़इं, पंखि तडफड़इं, वडां मांणस घटवड़इ ।—व.स.

तटरकौ—सं०पु०—जल्दबाजी, शीघ्रता ।

तटळ—सं०स्त्री०—अग्निकण । उ०—हुतासण तटळ सम्रां सिलह फौज होय, टाम 'पातल' जिसा किया रिण ढेर । मुवा नह सोहड़ चांपा तणा एक अमर, उदैपुर जोदपुर कहै आंबेर ।—धनजी भींवजी री गीत

तटूकं, तटूकौ—सं०पु० [सं० ताटंक ?] स्त्री के कान का आभूषण ।
उ०—सोवन तटूकां सोहि कांनि, एकि गोरी एक भीनइ वांनि ।
—प्राचीन फागु-संग्रह

तटौ—देखो 'टट्टौ' (रू.भे.)

तणंक, तणंकौ—सं०पु०—तार वाद्यों के तार की झनझनाहट, ध्वनि विशेष । उ०—अरथ जिकां दी आपणी, हरख गरीबां हत्थ । गवरीजे जस गीतड़ा, तांत तणंकां सत्थ ।—बां.दा.
२ देखो 'तणकौ' (रू.भे.)

तण—सं०पु० [सं० तनय] १ पुत्र, लड़का । उ०—हरनाथ भांण तण मांण हद्द । बळवंत जोध खाटण बिरद्द ।—रा.रू.
[सं० तनु] २ काया, शरीर । उ०—तसु रंग वास तसु वास रंग तण, कर पल्लव कोमळ कुसुम । वणि वणि माळिणि केसरि वीणति, भूली नख प्रतिबिंब भ्रम ।—वेलि.
वि०—तीन । उ०—मांन अर्न रहमांण वेहु एकण दन वदळीया । साजंतां सुरतांण तौ पण लागी पोहर तण ।—किसनौ आढौ
सर्व०—उस । उ०—जण तण आगळ जोय, पड़ियां काज न पालटै । लागै सैणा लोय, मिसरी सरखौ मोतिया ।—रायसिंघ सांदू
प्रत्य०—सम्बन्ध या षष्ठी विभक्ति का चिन्ह का, की, के ।
उ०—तियां कुणि भांजिसी भुवण अंधियार तण । भर्म नर संजोगी विजोगी इणि भुवण ।—हा.झा.
क्रि०वि०—१ लिए, इसलिए । २ देखो 'तिणकौ' (मह.,रू.भे.)

तणइ—प्रत्य०—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, के । उ०—जउ तूं साहिब नावियउ, सांवण पहली तीज । बीजळ-तणइ झबूकड़इ, मूंध मरेसी खीज ।—ढो.मा.

तणउ—प्रत्य०—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का । उ०—सुगि ढोला, करहउ कहइ, मामि तणउ मो काज । सरही-पेट न लेटियइ, मूंध न मेळूं आज ।—ढो.मा.

तणकणौ, तणकबौ—क्रि०अ०—१ तनना, खिंचाव में आना ।
२ तार वाद्यों के तारों का झनझनाना ।

तणकार—सं०स्त्री० (अनु०) १ तार-वाद्यों के तार की झनझनाहट, ध्वनि विशेष. २ तनना क्रिया का भाव, तनाव ।
३ देखो 'तणकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

तणकारी—देखो 'तणकारौ' (अल्पा., रू.भे.)

तणकारौ—सं०पु०—१ खींचने या तानने की क्रिया या भाव. २ झटका देकर खींचने की क्रिया. ३ तार वाद्यों की ध्वनि । उ०—भूपत भणकाराह, जसरा जिके न जो लिया । तां-तां तणकाराह, गाणै वयूं गरबीजिया ।—बां.दा.
रू०भे०—तणकार, तणकारी ।

तण-कासप—सं०पु० [सं० तनयकश्यप] सूर्य (डि.को.)

तणकौ—वि०—१ तना हुआ, खिंचा हुआ ।
रू०भे०—तणंक, तणंकौ ।
२ देखो 'तिणकौ' (रू.भे.)

तणक्कणौ, तणक्कबौ—देखो 'तणकणौ, तणकबौ' (रू.भे.)
उ०—तंत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह । भल वउळावौ दीहड़ा, दई वळावण देह ।—ढो.मा.

तणखा—देखो 'तनखा' (रू.भे.) उ०—तणखा-रा रुपिया मिळता हा ७०) अर देणा हा दूणा रै नैंड़ा ।—वरसगांठ

तणच, तणच्छ, तणछ—सं०स्त्री०—१ एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी बड़ी नरम और लचीली होती है । उ०—ताळ तमाळिय तणच्छ घण, तिहां तुळसी नइ ताड । तज तंदिल नइं तिलवडी, ताळीसांनां झाड ।—मा.कां.प्र.
२ इस वृक्ष की लकड़ी जिससे धनुष तथा चारपाई की पाटी आदि बनाई जाती है. ३ धनुष की प्रत्यंचा. ४ छटपटाने की क्रिया ।
उ०—आछटै तणछ पग हाथ आल, खळकै रंगाळ रुधर खाळ ।
—पा.प्र.

तणणौ, तणबौ—क्रि०अ०—१ चित्रित होना, खिचना । उ०—इंद्र धनुस तणियौ अजब, चातुक धुन मन चाव । बीज न मावै बादळां, रसिया तीज रमाव ।—बां.दा.
२ अकड़ना, ऐंठना. ३ गर्व करना, शेखी बघारना. ४ फैलना, विस्तार में होना. ५ बलपूर्वक बढ़ना, प्रवृत्त होना । उ०—पाउस री कादंबिनी रै अनुकार आपरी अनीक तणियौ ।—वं.भा.
६ खिचाव में आना. ७ जोश में आना, युद्धार्थ तत्पर होना ।
उ०—महण बन दहण 'केसर' गहण मंडियौ, तेण खग वहण घण सघण तणियौ ।—किसोरदांन बारहठ

तणणहार, हारौ (हारी), तणणियौ—वि० ।
तणवाड़णौ, तणवाड़बौ, तणवाणौ, तणवावौ, तणवावणौ, तणवावबौ, तणाड़णौ, तणाड़बौ, तणाणौ, तणावौ, तणावणौ, तणावबौ—
प्रे०रू० ।

तणिओड़ौ, तणियोड़ौ, तण्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

तणीजणौ, तणीजवौ—भाव वा० ।

तांणणौ, तांणवौ—सक०रू० ।

तणतणाणौ, तणतणाबौ–क्रि०अ०—१ तनना, तनाव में आना. २ क्रोध करना, कुपित होना ।

तणतणायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तना हुआ, खिचा हुआ. २ क्रोध किया हुआ ।

(स्त्री० तणतणायोड़ी)

तणय–सं०पु० [सं० तनय] पुत्र, लड़का ।

प्रत्य०—के । उ०—रांमायण भारथ तणय रंग, जांणियौ अभायण विकट जंग ।—वि.सं.

तणया—देखो 'तनया' (रू.भे.) उ०—द्रूपद तणी तणया रे, पांच पांडव नी नारि रे । समयसुंदर कहइ द्रूपदी रे, पहुंती भव तणइ पारि रे ।—स.कु.

तणस–सं०स्त्री०—वृक्ष विशेष । उ०—गली गोवल तणस त्रंवठ, करंज नइ कैळास । बिदांम वंणकउ सेलपी, फिर सांगरि पळास ।
—रुकमणी मंगळ

तणहस्तक–सं०पु० [सं० तृणहस्तक] घास का पुआल (जैन)

तणाव–सं०पु०—१ मादा ऊंट के ऋतुमती होने का भाव. २ मनमुटाव, वैमनस्य । उ०—सो रांम री मांणस आयौ उण वखत में दोय गुरजबरदारां आय तणावा सुणाय मांणस अरज कर भीतर लेय गया ।—महाराजा जयसिंह आंमेर रै धणी री वात

३ चित्रित होने का भाव । उ०—कागल्या नांखती दीठी जोईजै, घटा री वणाव, इसी ही तिण में इंद्र धनुस री तणाव ।—र. हमीर

४ शिविर, तम्बू आदि को तनाव में रखने के लिए कीलों में बांधी जाने वाली रस्सी । उ०—१ बाजी सांवळिया रा चरण डेरां रा तणावां उळभिया जांणि कुमार दूदा री चाबक वहियौ ।—वं.भा.

उ०—२ जय जरी सिमांनां खंभ जड़ाव, ते रूप मेख रेसम तणाव ।
—सू.प्र.

उ०—३ वेध धरती तणै खगाटां वाजियां, ऊभै राठौड़ छत्रधर अरोड़ा । तणावां चंदोळी तणी तोड़ीजतां, घातिया हरौळां बीच घोड़ा ।—पहाड़ खां आढौ

५ तनाव, खिंचाव ।

रू०भे० तांणाव ।

तणियर–सं०पु० [सं० त्रिनयन:] महादेव, शिव । उ०—तूं सुरतांण ऊथपण 'सांगा', समहर भोम अवीहण सार । त्रिपुर आगळी नमियौ तणियर, तणियर त्रिपुर पछाड़ी तार ।—महारांणा सांगा री गीत

तणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तनाव में आया हुआ, खिचा हुआ, तना हुआ. २ अकड़ा हुआ, ऐंठा हुआ. ३ गर्व किया हुआ, शेखी बघारा हुआ. ४ विस्तृत हुवा हुआ, फैला हुआ. ५ बलपूर्वक बढ़ा हुआ. ६ चित्रित हुवा हुआ ।

(स्त्री० तणियोड़ी)

तणीं, तणी–सं०स्त्री०—१ विवाह, भवन प्रवेश, पुत्र जन्मोत्सव आदि मांगलिक अवसर पर घर में आंगन के ऊपर बांधी जाने वाली मूंज की बनी रस्सी जो चारों कोनों में आमने-सामने कोनों से एक दूसरे को केन्द्र में स्पर्श करती हुई बांधी जाती है । उ०—कह्यौ महाराज ! तणी आडी दिरायीजै, ताहरां कह्यौ वाह वाह तणी बंधायीजै । तरै तणी बंधायी, डूम गावण लागा ।—प्रतापमल देवड़ा री वात

२ घर में वस्त्र आदि रखने, सुखाने व लटकाने के लिए बांधी जाने वाली रस्सी, अरगनी । उ०—तणियां छींकौ बोदौ रे ।—जयवांणी

[सं० तनया] ३ पुत्री, लड़की ।

४ तराजू के पलड़ों को डंडी से लटकाये रखने के लिए बांधी जाने वाली रस्सी । उ०—दगौ पालड़ा डांडियां, तोलां मझ तणियांह । गुरु सूं ही गुदरै नहीं, वणिक वैत वणियांह ।—बां.दा.

५ डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अंगरखी आदि में उसका पल्ला बांधने के लिए लगाया जाता है ।

६ देखो 'तिरणी' (रू.भे.)

प्रत्य०—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, की । उ०—भलभली भेट भूपां तणी भोगवै ।—ध.व.ग्रं.

तणीबंध–सं०पु०—विवाह, पाणिग्रहण संस्कार ।

तणु–प्रत्य०—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का । उ०—रुकमइयौ पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुखमणी जळ प्रसन्न । तणु लोहार वांम कर निय तणु, माहव किउ सांडसी मन ।—वेलि.

सं०पु० [सं० तनय] १ पुत्र. [सं० तनु] २ तन, शरीर ।

उ०—प्रतिहार प्रताप करै सी पाळै. दंपति ऊपरि दसै दिसि । अरक अगनि मिसि धूप आरती नियं तणु वारै अहोनिसि ।—वेलि.

रू०भे०—तणूं, तणू ।

तणे, तणै–प्रत्य०—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, के । उ०—१ तू ऊपर दोयण तणै, दया करे दुरवोध ।—बां.दा.

उ०—२ उठै तीन लोकां तणै दंड आवै, नरां हैमरा गैमरां पार नावै ।—सू.प्र.

क्रि०वि०—पास, समीप, निकट । उ०—खळकै नाडा नाडियां, छिल छिल नदियां जाय । ढळकै आंसू ढाळियां, पीव तणै मन जाय ।
—ओळू

तणुयरी–वि० [सं० तनुतरी] बहुत पतली (जैन)

तणुया–सं०स्त्री० [सं० तनुजा] १ सर्प की कांचली (जैन)

२ पुत्री, बेटी (जैन)

तणुवाय–सं०स्त्री०—स्वर्ग के तल की वायु (जैन)

तणू—देखो 'तणु' (रू.भे.) उ०—रावळियां रांमत समै, मावड़ियौ लौ मांग । तौ रतनां-पातर तणूं, सखरौ लावै सांग ।—बां.दा.

तणौ–प्रत्य०—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का । उ०—परतख ही दीसै रै प्रांणी, पिरभू भजन तणौ परताप ।—र.रू.

सं०पु० [सं० तनय] १ पुत्र, लड़का । उ०—किसन तणौ सांम्हौ क्रमै, बढ़तौ वांकिम वींद । नींदवतौ नवतै नरां, अणभंग रहै अनींद ।
—हा.झा.

२ पेट की आंत ।

मुहा०—तना अडीजणा—पेट की आंतों में विकार होना ।

३ छाती की हड्डी के ऊपर और पसलियों के नीचे का पेट का मांसी भाग. ४ ताकत, सहारा, दम । मुहा—टूटो तनो पड़ियो ।

रू०भे०—तागि ।

तत-सं०पु०—तत्त्व । उ०—निरगुन तत में परम तत, पांच तत ते और । कहीं कहा नहिं कहा, जहां तहां सब ठौर ।—ह.पु.

ततंग-वि०—नि[illegible], नग्न ।

तत-सर्व० [सं० तद्] वह, उस । उ०—हीर पनांवाळा हरण, पंपाळा तड़ पत । तै तर पाळा सौ तिरा, तुरमां माळा तत ।

—जुगतीदांन देथौ

क्रि०वि० [सं० तत्र] १ वहां, तहां । उ०—या बात समज में कही मत । तातें मत जाजो कोइ तत ।—रांमदांन लाळस

२ देखो 'तत्त्व' (रू.भे.) उ०—१ नहीं तहां थें सब किया, आपै आप उपाइ । निज तत न्यारा ना किया, दूजा आवै जाइ ।

—दादू वांणी

उ०—२ नूर तेज का मेळा कीजै, तत में तत बीलासा । कहण सुणण में आवै नाहीं, सहज्यां हुवा हुलासा ।

—स्री हरीरांमजी महाराज

उ०—३ ग्यांन गमंद गुण गाढ ग्यार मुगिती हू चेडै । ग्यांन तत गुण गाढ मात गरभां फळ भेडै ।—पी.ग्रं.

उ०—४ माया कया मिळै नहि माया, यूं वाचक तत कूं नहि पाया । दरद मिटै नहिं कोई ।—स्री सुखरांमजी महाराज

ततकार-सं०पु० (अनु०) नृत्य का बोल ।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी । उ०—सुत भ्रात लियां परवार संग । सेद निप चढ़ै ततकार रंग ।—पा.प्र.

ततकारणी, ततकारबौ-क्रि०स०अ०—१ तेज गति से चलने के लिए बैलों आदि को उकसाना । उ०—गोरी पणियारां 'तेजो' तन गाजै सारै धोरी रै जोगियारी लाजै । फेरै खाथा नैं गाळी फटकारै, तोरै जातां नैं हाळी ततकारै ।—ऊ.का.

२ तेज गति से चलना, तेज गति से भागना, जाना या दौड़ना, भागना ।

ततकारियोड़ी-भू०का०कृ०—१ तेज गति से चलाया हुआ. २ तीव्र गति से चला हुआ ।

(स्त्री० ततकारियोड़ी)

ततकाळ, ततकाळिं, ततकाळी, ततकाळौ—देखो 'तत्काळ' (रू.भे.)

उ०—१ मिरजै खबर निबाब नूं, पहुंचाई ततकाळ ।—रा.रू.

उ०—२ नलनीं वाडी मांहीं विसाळ, विहिटु वृक्ष दीठौ ततकाळि ।

—नळाख्यांन

उ०—३ नवलो कोई कुमर निहाळी, तुम परणावां ततकाळी हरो लाल ।—ध.व.ग्रं.

उ०—४ हंढ़ण कुमर हनू अमड, प्रतिबूधउ ततकाळौ जी । नेमि समीपि संजम लीयउ, जिन आग्या प्रतिपाळौ जी ।—स.कु.

ततखण, ततखणि, ततखिण, ततखण, ततखिण, ततखिणि, ततछिन, ततखेव, ततख्यण—देखो 'तत्क्षण' (रू.भे.)

उ०—१ ततक्षण सांमहणी सवि करी, राजा तेडिउ ऊलट धरी । आविउ राजा सिउं परिवारि, जिमवा नइ मिसि जोवा नारि ।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ देव छतां नळ सी परि वरि । गेहनि कोपि ततक्षणि मरि ?

—नळाख्यांन

उ०—३ ततखण माळवणी कहइ, सांभळि कंत सुरंग । सगळा देस सुहांमणा, मारू-देस विरंग ।—ढो.मा.

उ०—४ छावयो रहै छहुं रितु मस्त महा मतवाळ, हाथी झरणा जिम झरतो मद असराळ । परवत सम सबळो पूठ पड़यौ सुंडाळ, ततखिण जिण नांमै अंस करै नहि आळ ।—ध.व.ग्रं.

उ०—५ वळी प्रभाति पधारिया, महादेव नी सेव । ततखिणि ते तेडाविउ, भेटि भणी भूदेव ।—मा.कां.प्र.

उ०—६ ततखिन तुम्हें असुभ करम तोड़उ । नित नांम जपउ स्री नाकउड़उ ।—स.कु.

उ०—७ एहवूं मन वितरक करता सांचरि तव देव । मारग मांहि नळ निरखु अवनीइ ततखेव ।—नळाख्यांन

उ०—८ अखिल राजि ए तमने आपूं, निज भुजबळ देखाडूं । सुभ साहामो जे जोध आवै, तेहे ने ततख्यण पाडूं ।—नळाख्यांन

ततग्यांन—देखो 'तत्त्वग्यांन' (रू.भे.) उ०—देवी नारद रूप ते प्रस्न नांखया । देवी हंस रै रूप ततग्यांन भाखया ।—देवि.

तत-छिन—देखो 'तत्क्षण' (रू.भे.) उ०—अंतकाळ ऐसो भयो, तत-छिन भये सहाय ।—करुणासागर

ततताथेई, ततत्थी, ततथेई, ततथेयव-सं०स्त्री० (अनु०) नृत्य के बोल ।

उ०—१ रजै तेण तमासा सूं रुकेगी आयास रत्थी, धार सत्थी नचै के ततत्थी वीर धाड़ ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ सब जोगनि स्रोणित खप्र भरै, ततथेयव भैरव नित्य करै ।

—ला.रा.

रू०भे०—तत्थथेई ।

ततपर—देखो 'तत्पर' (रू.भे.) उ०—विणजै सासू अर बहू, धंधै ततपर धूत । ठग नह जे गणिका ठगै, वणियांणी रा पूत ।—बां.दा.

ततब—देखो 'तत्त्व' (रू.भे.)

ततवाउ-सं०पु० [सं० तंतुवाय] बुनकर, जुलाहा ।

ततबीर—देखो 'तदबीर' (रू.भे.) उ०—तोड़ जोड़ ततबीर में, कसर न राखै काय । आप अकबर ओलियो, गढ़ ओ लियो न जाय ।

—बां.दा.

ततरे-क्रि०वि०—इतने में ।

ततव—देखो 'तत्त्व' (रू.भे.)

ततवादी-सं०पु०—तत्त्ववेता, तत्त्वज्ञानी ।

ततवितत-सं०पु०—तांत अथवा तार वाद्य ।

उ०—ततवितत घन सुखिर पंचवरण वाजित्र वाजइ छइ।—कां.दे.प्र.

ततवीर—देखो 'तदबीर' (रू.भे.) उ०—आंनि करै कुण विण आप, इहं दिली थाप उथाप। ततवीर कर घरि तौर, असपति कीजै और।—सू.प्र.

ततवेग-क्रि०वि०—तत्काल, शीघ्र। उ०—ततवेग 'करनळा' आय तांम, जळ हूंत मंगायौ पुत्र जांम।—रांमदांन लाळस

ततवेत्ता—देखो 'तत्त्ववेत्ता' (रू.भे.) उ०—वित रज करम घरम ततवेत्ता, ओपै 'करन' हरा दळ एता।—रा.रू.

ततसार-सं०पु०—प्रथम जगण फिर रगण फिर भगण, अन्त में गुरु लघु ११ वर्णो का छंद विशेष।—ल. पिं.

ततार्थेई-सं०स्त्री०—नृत्य का बोल।

ततारी-सं०पु०वि०—१ तातार देशोत्पन्न घोड़ा. २ तातार देश सम्बन्धी।

ततियौ—देखो 'तत्तौ' (अल्पा., रू.भे.)

तती-वि० (पु० तत्तौ) १ क्रोधपूर्ण, क्रोध में लाल।

उ०—तती देख चसमां गयंदां घड़ा ताप खावै, धावै काळ रूपी जोस अमावै धींग।—महेसदास आढ़ौ

२ तेज, तीक्ष्ण। उ०—तती खग झाट खळां सिर तांम। सझै अवदार चहूंआंण संग्रांम।—सू.प्र.

३ तप्त, उष्ण। उ०—दादू सांचा साहिब सिर ऊपरै, तती न लागै बाव। चरण कमळ की छाया रहै, कीया बहुत पसाव।—दादू बांणी

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, तुरंत। उ०—मिळ मंदमती, सिय लेर सती, वर मांनवती त्रिय लोकपती। तकसीर निवारै होय तती।—र.रू.

ततैया-सं०पु० भागने की क्रिया।

क्रि०प्र०—मनाणा।

ततैयौ-सं०पु०—बर्र।

ततौ-क्रि०वि०—१ तत्पश्चात्। उ०—ततौ दक्षा पठति तसु तिहुअण जण दास।—स्रीपाळ

२ देखो 'तत्तौ' (रू.भे.)

तत्काळ-क्रि०वि० [सं० तत्काल] तुरन्त, शीघ्र, तत्क्षण।

उ०—फिकर करौ मत आप तौ, आप रहौ खुस हाल। ठाकुरजी करसे भली, मुगळह नूं तत्काळ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

रू०भे०—ततकाळ, ततकाळि, ततकाळी, ततकाळौ, तत्तकाळ, तत्तकाळू।

तत्काळीन-वि० [सं० तत्कालीन] उसी समय का।

तत्काळौ—देखो 'तत्काळ' (रू.भे.) उ०—आगि ओल्हाइ गई ते एहवए, कहि कुण करिस्यइ चाळौ जी। अरणी नउ सरियउ घसि लांकड़इ, अग्नि पाड़ी तत्काळौ जी।—स.कु.

तत्क्षण-क्रि०वि० [सं०, प्रा० तक्खण] तुरन्त, शीघ्र, तत्काल।

रू०भे०—ततक्षण, ततक्षणि, ततखण, ततखिण, ततखिणि, ततखिन, ततखेव, ततख्यण, ततछिन।

तत्त-वि० [सं० तप्त] पीड़ित, दुखी (जैन)

क्रि०वि० [सं० ततः] १ तत्पश्चात्, तदन्तर (जैन)

२ देखो 'तत्त्व' (रू.भे.) उ०—१ त्रिहुए पख तारणी सोभ जुग च्यार सुवांणी। पांच तत्त होमणी रीत मोटी खटरांणी।—रा.रू.

उ०—२ गुर थी लहियै ग्यांन, सास्त्र सहु तत्त सिखावइ। वळि सगळी ही वस्तु, दोस निरदोस दिखावै।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ ठांम देखि उपगार करौ कहियौ ठठै। तत्त तणी तूं बात म नांखि जठै तठै।—ध.व.ग्रं.

३ देखो 'तातौ' (रू.भे.) (जैन)

तत्तकाळ, तत्तकाळू—देखो 'तत्काळ' (रू.भे.) उ०—थंभै विचाळू; तत्तकाळू, विरद वाळू आंम ए।—करुणासागर

तत्तवेत्ता—देखो 'तत्त्ववेत्ता' (रू.भे.)

तत्तोथबौ—देखो 'थथोबौ' (रू.भे.)

तत्तौ-वि० [स्त्री० तत्ती] १ तीक्ष्ण, तेज। उ०—मांगी सीख मंडोवरै, सीखन अप्पै तत्ती। साह सेर विलंद री, असपत्ती उर दाह।—रा.रू.

२ तेज। उ०—कूदणा कछी छेकै कुरंग। तत्ता सब तुरंगां हूं तुरंग।—सू.प्र.

३ क्रोधित, कुपित।

मुहा०—तत्तौ तवौ होणौ—लाल होना, क्रोधित होना, गर्म होना।

३ देखो 'तातौ' (रू.भे.) उ०—थळ तत्ता लू सांमही. दाझेला पहियांह। म्हारौ कहियौ जे करौ, घर बैठा रहियांह।—ढो.मा.

सं०पु०—त वर्ण।

रू०भे०—ततौ।

अल्पा०—ततियौ।

तत्त्व-सं०पु० [सं०] १ पंचभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) उ०—पंच तत्त्व थैं घट भया, बहु विधि सब विस्तार। दादू घट थैं ऊपजै, मैं तैं वरण विकार।—दादू बांणी

२ परब्रह्म। उ०—एक तत्त्व ता ऊपरि इतनी, तीन लोक ब्रह्मंडा। धरती गगन पवन अरु पांणी, सप्त द्वीप नौ खंडा।—दादू बांणी

३ जगत का मूल कारण। सांख्य में इसके पच्चीस तत्त्व माने गये हैं उ०—तांमस अहंकार तै पांच महाभूत, पांच सूक्ष्म भूत नीपना। एवं चौवीस तत्त्व भेळा हुया, ताहरां ब्रह्मांड नीपनौ।—द. वि.

४ सार वस्तु, सारांश. ५ यथार्थता, असलियत। ६ स्वरूप।

रू०भे०—तत, ततव, तत्तव, तत्त, तत्त्व।

यौ०—तत्त्वग्यांन, तत्त्वग्यांनी, तत्त्वदरसी, तत्त्वद्रस्टी, तत्त्ववाद, तत्त्ववेत्ता, तत्त्वविद्या।

तत्त्वग्य-सं०पु० [सं० तत्त्वज्ञ] तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक।

तत्त्वग्यांन-सं०पु०यौ० [सं० तत्त्वज्ञान] आत्मज्ञान, ब्रह्म, सृष्टि आदि के सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान।

रू०भे०—ततग्यांन।

तत्त्वग्यांनी-सं०पु०यौ० [सं० तत्त्वज्ञानी] आत्मज्ञानी, तत्त्ववेत्ता, जीव-

बीर-सं०स्त्री० [अ०] उपाय, युक्ति, तरकीब, यत्न।
उ०—करै तदबीर गोरा चढ़ण कांगुरां तिलंग फरै फुरत फ़ैली ताळी।—बां.दा.
रू०भे०—ततबीर, ततवीर।

ाभी—देखो 'तदपि' (रू.भे.)

ारा-क्रि०वि०—तब से, उस समय से। उ०—तद विहारी मिलकखांन हेतावत नूं परगना ४ जाळोर वांसै दीया था सु तदरा जाळोर वांसै पड़िया ता सु हमैं जाळोर वांसै हीज छै।—नैणसी

ां-क्रि०वि०—तब।

ारुक, तदारूक-सं०पु० [अ० तदारुक] १ खोई हुई वस्तु के सम्बन्ध में की जाने वाली जांच. २ सजा, दंड। उ०—हुक्कांम हुकम हाजिर हजूर, करिए न तदारुक वेकसूर।—ऊ.का.
३ दुर्घटना आदि को रोकने के लिए किया जाने वाला प्रबंध।

दि, तदी—देखो 'तद' (रू.भे.) उ०—१ कमंध मतौ सिर ढाळण कीधौ, दरसण सकति प्रतखि तदि दीधौ।—सू.प्र.
उ०—२ वांमण देह वदीह, वळ री ज्याग विधूंसवा। तीनूं लोक तदीह, मापै त्रिण पद मोतिया।—रायसिंह सांदू

दीक-क्रि०वि०—तभी।

दीय-सर्व०—उसके। उ०—चहुवांण बार जिण सोदर मल्हण नवम जोध, सब कुळ तदीय माल्हण सुबोध।—वं.भा.

द्धित-सं०पु० [सं०] १ राजस्थानी व्याकरण के अनुसार संज्ञा, विशेषण व क्रिया विशेषण के अंत में लगने वाला प्रत्यय जिससे शब्द निष्पन्न होता हैं. २ वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्यय लगने से बना हो।

द्भव-सं०पु० [सं०] संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप, संस्कृत के शब्द का विकृत या परिवर्तित रूप।

दयां—देखो 'तद' (रू.भे.)

द्रूप-वि० [सं०] समान, सदृश, तुल्य।
सं०पु०—रूपक अलंकार का एक भेद।

द्रूपता-सं०स्त्री०—सादृश्य, समरूपता, समानता।

न-सं०पु० [सं० तनु] १ शरीर, देह, गात। उ०—हे सखिए, परदेस प्री, तनह न जावइ ताप। बाबहियउ आसाढ़ जिम, विरहणि करइ विलाप।—ढो.मा.
मुहा०—१ तन तपणौ—अधिक परिश्रम से शरीर का स्वेदयुक्त होना. २ तन तोड़णौ—अथक परिश्रम करना. ३ तन देणौ—तन की बलि देना. ४ तन फूलणौ—अत्यधिक प्रसन्न होना.
५ तन-मन एक करणौ—लगन से काम करना. ६ तन री लाय मिटाणी—अपनी इच्छा पूरी करना, संतुष्ट होना।
कहा०—१ तन सीतळ हौ सीत सूं मन सीतळ हौ मीत सूं—तन शीत से शीतल होता है और मन मित्र के मिलने से। मित्र ही दुःख में उचित शांति प्रदान कर सकता है. २ तन सुखी तौ मन सुखी—मन की प्रसन्नता के लिए सुस्वास्थ्य आवश्यक है।
यौ०—तनताप, तनत्रांण, तनदीवांण, तनधर, तनमन, तनसार।
२ मन।
मुहा०—तन लागणौ—किसी बात का हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ना।
३ सम्बन्धी, रिश्तेदार. ४ वंशज, संतान, पुत्र, लड़का।
रू०भे०—तन्न, तन्नु।
अल्पा०—तनड़ौ।

तनक-वि०—तनिक, थोड़ा, किंचित। उ०—जोड़ै ज्यूंही जोड़, बिणजारा रा ब्याज ज्यूं। तनक जोड़ मत तोड़, नातौ तांतौ नागजी।—नागजी
सं०स्त्री०—१ नाज, नजाकत. २ दिखावा।
यौ०—तनक-तनक।

तनक-मिजाजी-सं०स्त्री०यौ०—छोटी-छोटी या साधारण बात पर तुनकने का भाव या आदत।
वि०-पु० (स्त्री० तनक-मिजाजण) छोटी-छोटी बातों पर नाराजगी प्रकट करने वाला, असहिष्णु। उ०—धोरा भुवावौ डोडा एळची रे, म्हारी तनक-मिजाजण, क्यारां भुवा दौ नागर बेल।—लो.गी.

तनकळानिध-सं०पु०—चन्द्रमा (नां.मा.)

तनकीह-सं०स्त्री० [अ० तनक़ीह] तहकीकात, जांच।

तनखा, तनखाह-सं०स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन, तलब।
रू०भे०—तणखा तिनखा।

तनगणौ, तनगबौ-क्रि०अ०—अप्रसन्न होना, रुष्ट होना, रूठना।

तनगियोड़ौ-भू०का०कृ०—रूठा हुआ, चिढ़ा हुआ, अप्रसन्न।
(स्त्री० तनगियोड़ी)

तनड़ौ—देखो 'तन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ कोई मनड़ा तनड़ा सूं निरमळ म्हे रैं'वां।—लो.गी.
उ०—२ हेमांणी मरु हाट नरम तनड़ौ उपगारी। ऊपर चढ़ देखै दूर तक विपन-विहारी।—दसदेव

तनजा—देखो 'तनुजा' (रू.भे.)

तनताप-सं०पु०यौ०—शरीर का कष्ट, व्याधि।

तनत्रांण, तनत्रांन-सं०पु० [सं० तनुत्राण] कवच, बख्तर।
उ०—उण वार तहव्वर जोर इसौ, जुध रांम दळां सिर 'कुंभ' घण मांण बधतांय भीड़ घणौ, तनत्रांण सहायक प्रांण तणौ।
रू०भे०—तनुत्रांण।

तनदीवांण-सं०पु०यौ०—अंगरक्षक, (राजा महाराजाओं का)

तनधय-सं०पु० [सं० स्तनंधय] शिशु, बच्चा (ह.नां.)

तनधर-सं०पु० [सं० तनुधारिन्] शरीरधारी।
रू०भे०—तनुधारी।

तनपटाट-सं०स्त्री०यौ०—अनुपयुक्त वाद-विवाद, तर्क-वितर्क।

तनपात-सं०पु० [सं० तनुपात] देह का अवसान, मृत्यु।

तनबीचि-सं०स्त्री०—कटि। (ह.नां.)

तनमध-सं०स्त्री० [सं० तनुमध्य] कटि, कमर। (ह.नां.)

तनमय-वि० [सं० तन्मय] लवलीन, मग्न, तन्मय ।

तनमात्रा-सं०स्त्री० [सं० तन्मात्र] सांख्य के अनुसार पंच भूतों का आदि, अमिश्र व सूक्ष्म रूप । ये पांच हैं—गंध, रस, रूप, शब्द और स्पर्श, तन्मात्र ।

रू०भे०—तन मातरा, तन्मात्रा ।

तनय-सं०पु० [सं०] पुत्र, सुत ।

तनयत्नु, तनयत्रू-सं०पु० [सं० स्तनयित्नु] १ मेघ, बादल (ह.नां.) २ सम्बन्धी ।

सं०स्त्री०—३ बिजली, बिजली की चमक ।

वि०—रक्षा करने वाला ।

तनया-सं०स्त्री० [सं०] पुत्री, बेटी । उ०—मो कथ सखा धारि निज मन या, तूं इण देसपती री तनया ।—सू.प्र.

रू०भे०—तणया, तनिया ।

तनराग-सं०पु० [सं० तनुराग] १ शरीर पर केसर, चन्दन, कपूर आदि को मिला कर किया जाने वाला लेप, उबटन. २ उबटन के लिए काम में आने वाले पदार्थ ।

रू०भे०—तनुराग ।

तनरुह-सं०पु० [सं० तनुरुह] रोम, लोम (अ.मा.)

रू०भे०—तनोरुह ।

तनविड-सं०पु० [सं० तनु+व्याध] शत्रु, बैरी (ह.नां.)

तनसणगार-सं०पु० [सं० तनु+शृंगार] वस्त्र, वसन (अ.मा.)

तनसांच-सं०पु०—कामदेव (अ.मा.)

तनसार-सं०पु० [सं० तनु+क्षार] १ मनुष्य (अ.मा.)

२ देखो 'तनुसार' (रू.भे.) उ०—ए प्रदिमन का नांम जु कांमदेव को अवतार । दरपक, कांम, कुसुमायुध, संबरारि, रतिपति, तनसार, समर ।—वेलि.टी.

वि०—शरीर को छेदने वाला । उ०—जठै तठै इण जगत में, जींकारो स्रीकार । बालो जसरा वायकां, तूकारो तनसार ।—बां.दा.

तंनसुख-सं०पु०—१ फूलदार सुन्दर वस्त्र, फूल छाप का उत्तम कोटि का वस्त्र ।

यौ०—२ शारीरिक सुख ।

तनसोर-सं०पु०—मनुष्य (अ.मा.)

तनहंस-सं०पु० [सं० तनु+हंस] हंसावतार, विष्णु ।

उ०—नमो तन-हंस त्रिलोकी तात, नमो विध ग्यांन सुणावण वात ।
—ह.र.

तनहा-वि० [फा०] एकाकी, अकेला ।

क्रि०वि०—बिना किसी संगी-साथी के, अकेले ।

तनहाई-सं०स्त्री० [फा०] एकान्त, अकेलापन ।

तनाजांन-वि०—अकेला, एकाकी ।

मुहा०— तनाजांन सूं गमावणो—पूर्ण नष्ट करना ।

तनाजो-सं०पु० [अ० तनाज़ाअ] १ झगड़ा, फिसाद, टंटा, बखेड़ा. २ वैर, शत्रुता ।

तनाती-सं०पु०—१ शरीर सम्बन्धी. २ निकट सम्बन्धी, रिश्तेदार. ३ ईश्वर ।

तनायत-सं०पु० [सं० तनु+रा.प्र. आयत] स्वजन, निकट सम्बन्धी ।

तनारसी-सं०पु०—धनुष । उ०—तीखा नैंण तनारसी, सायक काजळ सार । छाती छेदै छैल की, निकस्या परलै पार ।
—जलाल बूबना री वात

तनिक-वि०—थोड़ा, अल्प ।

तनिया—देखो 'तनया' (रू.भे.)

तनु-सं०पु० [सं०] १ जन्मकुंडली में प्रथम स्थान.

२ देखो 'तन' (रू.भे.)

वि०—१ क्षीण, दुबला, पतला (अ.मा.) २ प्रिय, प्यारा ।

तनुज-सं०पु० [सं०] पुत्र, बेटा ।

रू०भे०—तनूज ।

तनुजा, तनुज्जा-सं०स्त्री० [सं० तनुजा] पुत्री, बेटी । उ०—वतक जग जाहुर हुई, सांप्रत आसुर आय । तनुजा खांमद नैं तजै, मिळी देवगत माय ।—पा.प्र.

रू०भे०—तनजा, तनूंजा, तनूजा ।

तनुत्रांण—देखो 'तनत्रांण' (रू.भे.)

तनुधारी—देखो 'तनधर' (रू.भे.)

तनुनपात, तनुनिपात-सं०स्त्री० [सं० तनूनपात्] अग्नि, आग । (ह.नां.)

तनुबंध-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)

तनुमध्या-सं०स्त्री० [सं० तनुमध्या] पतली कमर की स्त्री ।

तनुमध्यो-सं०पु०—एक वर्णवृत्त ।

तनुराग—देखो 'तनराग' (रू.भे.)

तनुरी—देखो 'तंदूरी' (रू.भे.) उ०—तनुरां तांत सिंधु झणकतां, नरां आय अपछर झुकी मगां असमान रा ।—जवांनजी आढ़ो

तनुसार-सं०पु० सं० तनु+सृ (धातु)] १ शरीर में व्याप्त होकर रहने वाला. २ कामदेव या प्रद्युम्न का एक नाम ।

उ०—दरपक कंदरप कांम कुसुमायुध, संबरारि रति पति तनुसार । समर मनोज अनंग पंचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार ।—वेलि.

३ बलवान शरीर वालो ।

रू०भे०—तनसार ।

तनूं, तनू-सं०पु० [सं० तनु] देखो 'तन' (रू.भे.) उ०—'पना' को तनूं येम 'गोपाळ' सज्जै, धरा नेत बंधी हयं खूर मज्जै ।—ला.रा.

तनूंजा—देखो 'तनुजा' (रू.भे.) उ०—धारा फेण कलिंद तनूंजा धारिया ।—बां.दा.

तनूज—देखो 'तनुज' (रू.भे.) उ०—कपोत कंठ पोत केम, मोह ओपमा मिळी । जिको तनूज भांणि जांणि, मेर स्रंग मंडळी ।—सू.प्र.'

तनूजा—देखो 'तनुजा' (रू.भे.)

तनूदर, तनूदरी-सं०स्त्री०—स्त्री, महिला (ह.नां.)

तनूनपात-सं०स्त्री०—देखो 'तनुनपात' (रू.भे.)
तनूर—देखो 'तंदूर' (रू.भे.)
तनेयक-वि०—तनिक, थोड़ा, किंचित। उ०—हां ए हां आंसूड़ां री धार तनेयक डट जाय, तनेयक डट जाय चिनेयक डट जाय।—लो.गी.
तनैं, तनै—देखो 'तनय' (रू.भे.)
तनेरुह—देखो 'तनरुह' (रू.भे.)
तन्न—देखो 'तन' (रू.भे.) उ०—सुणियां 'पातल' समर रा, नीधसता नीसांण। तेज न मावै तन्न में, तन्न न मावै त्रांण।
—किसोरदांन बारहठ
तन्नु-सं०पु०—१ निकट सम्बन्धी, स्वजन. २ देखो 'तन' (रू.भे.)
तन्मात्रा—देखो 'तनमात्रा' (रू.भे.)
तप-सं०पु० [सं० तपस्] १ वे नियम और व्रत जो मन की शुद्धि के लिए शरीर को कष्ट देकर किये जाते हैं, तपस्या।
उ०—सुजळ गिनांन मंजन तन सारिस। ध्रम क्रम जप तप नेम बधारिस।—ह.र.
क्रि०प्र०—करणौ, झेलणौ, साधणौ।
२ तन व इंद्रियों को वश में रखने का धर्म। उ०—'वंक' तेज कारण वणै, निहचळ तप निरदोख। ग्यांन मोक्ष कारण गिणै, सुख कारण संतोख।—बां.दा.
३ ताप, गरमी, उष्णता. ४ ग्रीष्म ऋतु. ५ माघ का महिना (डिं.को.) ६ बुखार, ज्वर. ७ अग्नि (ह.नां.) ८ शीत को दूर करने अथवा तापने के लिये जलाई जाने वाली आग, अलाव, कौड़ा।
क्रि०प्र०—करणौ।
९ सूर्य (क.कु.बो.)
यौ०—तपकर, तपकरण।
१० तेज, ओज, कान्ति। उ०—व्रिढ़ण पहल अथाक वागा, लखे तप सह पांय लागा।—सू.प्र.
रू०भे०—तपु, तप्प, तव।
तपई-सं०पु०—एक प्रकार का कपड़ा (व.स.)
तपकर, तपकरण, तपघण-सं०पु०यौ०—सूर्य (क.कु.बो.)
उ०—तेज तपकरण अञ्रत सुजस तेहड़ो, माहबळ दुग्री 'कुसळेस' कुळ मोड़। वसे सकळंक चन्द्र भाळ वांमीस रै, रखे भुरजाळ निकळंक राठौड़।—पीरदांन आढ़ौ
तपण-सं०स्त्री० [सं० तपन] १ ताप, गरमी, जलन, तपन. २ सूर्यकांत मणि. ३ वियोगाग्नि।
सं०पु०—४ सूर्य (डिं.को.)
रू०भे०—तपन, तवण।
तपणी-सं०स्त्री०—१ वह अग्नि जो सन्यासी अथवा योगी के अग्निकुण्ड में जलाई जाय. २ सन्यासी अथवा योगी के तपस्या करने का स्थान. ३ अग्निकुण्ड. ४ लोहे व मिट्टी का वह पात्र जिसमें ताप के हेतु अग्नि रखी जाती है। उ०—सो, सियाळा में राजकुमारी रौ जनम हुवौ है जिणसूं जचा रै तापण नै तपणी लाया है।—वी.स.टी.
५ गरमी, तपन।
रू०भे०—तउणि, तउणी।
तपणीय-वि०—तपाने योग्य।
सं०पु० [सं० तपनीय] सोना, स्वर्ण (ह.नां.)
रू०भे०—तपनीय।
तपणौ, तपबौ-क्रि०अ० [सं० तपन] १ गरमी या आंच से गर्म होना, तपना। उ०—१ मिळि माह तणौ माहुटी सूं मसिन्नन, तपि आसाढ़ तणौ तपन। जन नीजन पणि अधिक जांणियौ, मध्यरात्रि प्रति मध्याह्न।—वेलि.
उ०—२ देख तपतौ ताव सूं, मुरधर ब्रख रै भांण। हियौ हिमाचळ उफळियौ, वह चाल्यौ वरफांण।—लू.
२ दग्ध होना, जलना। उ०—धन सीळ रतन नै घरती तिम विरह करि तन तपतौ हो लाल।—ध.व.ग्रं.
३ क्रुद्ध होना। उ०—रुकमइयौ पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुखमणी जळ प्रसन। तणु लोहार वांम कर निय तणु, माहव किउ सांडसी मन।—वेलि.
४ संतप्त होना, दुखी होना। उ०—माळवणी कउ तन तप्यउ, विरह पसरियउ अंगि। ऊभी थी खड़हड़ पड़ी, जांणे डसी भुयंगि।
—ढो.मा.
५ तपस्या करना, तप करना. ६ कष्ट सहना। उ०—बाहु नांम तीर्थंकर थ्यउ मुझ, दुरगति पड़तां बांह रे। हूं तपतउ आवियउ तुम पासे तुम्हे करउ टाढ़ी छांह रे।—स.कु.
[सं० तप ऐश्वर्य दीप्तौ] ७ प्रताप फैलना, शौर्य बढ़ना।
उ०—१ राव चूंडौ वीरमोत मंडोवर घणौ तपियौ। पछै तुरकां नु मार नै नागोर लियौ।—नैणसी
उ०—२ इण विध राव केल्हण पूगळ धणी हुवौ। पछै रावळ केल्हण मुलतांण जाय नै सलेमखांन नूं नागोर ऊपर ले आयौ। राव चूंडा नूं मारियौ। राव केल्हण घणौ तपियौ।—नैणसी
८ ऐश्वर्य भोगना, सुख भोगना।
तपणहार, हारौ (हारी), तपणियौ—वि०।
तपवाड़णौ, तपवाड़बौ, तपवाणौ, तपवावौ, तपवावणौ, तपवाववौ—प्रे०रू०।
तपाड़णौ, तपाड़बौ, तपाणौ, तपाबौ, तपावणौ, तपाववौ—क्रि०स०।
तपिओड़ौ, तपियोड़ौ, तप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तपीजणौ, तपीजबौ—भाव वा०।
तवणौ, तवबौ—रू०भे०।
तपत-सं०स्त्री० [सं० तप्त] १ गरमी, उष्णता, जलन. २ कष्ट, पीड़ा। उ०—दादू तपत बिना तन प्रीत न उपजै, संग ही सीतळ छाया। जनम लगै जीव जांणै नहीं, तरुवर त्रिभुवन राया।—दादू बांणी

उदा०—भाण री तपत है। २ तपस्या. ३ तेज, कांति।

उ०—तपत महाहठ प्रचुर, पिंड महाहठ पौरिस। अति प्रकास उजळो, तपत तेजास वधै जस।—सू प्र.

४ वेदना, व्यथा। उ०—दूवना मुजरौ करती मांम्ही आई। हाथ पकड़ भीतर लेय गई। पोसाक वदळाय, पलंग पर बैठाय, निछरावळ कर मेरा सलाम नू दीन्ही। मांहोमाहे मिळिया। घणा दिनां रा वियोग री तपत मिटाई।—जलाल वूबना री वात

५ गरद, संताप. ६ ग्रीष्म ऋतु।

रू०भे०—तपती।

तपतरी, तपतती-सं०पु०—इन्द्र (ह नां.)

तपती-सं०स्त्री० [सं०] १ तापती नदी। उ०—तपती नदी रै माथै मांडली संगम रै घाट दाग दिराणी।—बां.दा.ख्यात

२ देखो 'तपत' (रू.भे.)

तपधर, तपधार, तपधारी-वि०—१ तपस्या करने वाला. २ ऐश्वर्य भोगने वाला।

सं०पु०—१ ऋषि, तपस्वी. २ राजा. ३ बादशाह।

उ०—तपधर मुगळांण तणौ आधमियौ 'अवरंग'।—सू.प्र.

तपन—देखो 'तपण' (रू.भे.) (क कु.बो.) उ०—मिळि माहतणी माटृटि नूं मसि अन, तपि आसाढ़ तणौ तपन।—वेलि.

तपनासी-सं०पु०—१ तपस्या में बाधा डालने वाला व्यक्ति.

२ कामदेव (अ.मा.)

तपनीय—देखो 'तपणीय' (रू.भे.)

तपबळ—देखो 'तपोबळ' (रू.भे.)

तपबळी-वि० [सं० तपोबली] १ तपस्या का बल रखने वाला.

२ वैभवशाली, ऐश्वर्यवान। उ०—विभाड़ै जादवां कोट घर कीध वस, सबळ अद खाटिया भवां सारू। तपबळी अभनमा 'माल' 'गंगेव' तो, समारक पोहकरण राव मारू।—महाराजा जसवन्तसिंह रो गीत

तपरस-सं०पु० [सं० तत्पररस] कुत्ता, श्वान।

तपरौ—देखो 'पतरौ' (रू.भे.)

तपवत-वि०—१ ऐश्वर्यवान, वैभवशाली. २ तेजस्वी, ओजस्वी.

उ०—पित मोहरि 'गजण' प्रचड जग चख जेहड़ो। तपवंत लड़ै सतेज अरिजण एहड़ो।—सू.प्र.

३ तपस्या करने वाला, तपस्वी।

तपस-सं०पु० [सं० तपसः] १ तपस्वी, सन्यासी. २ चंद्रमा (डि.को.)

३ सूर्य. ४ शंकर (एका.)

तपसण—देखो 'तपसिण' (रू.भे.)

तपसा-सं०स्त्री० [सं० तपस्या] १ तप, तपस्या। उ०—महाराज सिलामत श्री गोरखनाथजी तपसा मे विराजिया छै जी।

—रीसाळू री वात

२ तापती नदी का दूसरा नाम।

तपसाळी-सं०पु० [सं० तपःशाली] तपस्वी, योगी।

तपसिण-सं०स्त्री० [सं० तपस्विनी] १ तपस्या करने वाली स्त्री, तपस्विनी। उ०—ताहरां कहै—राजा आ वात किसी जु लीलां नूं गरभ छै। जिका इसड़ी तपसिण तिकै नूं गरभ सूं जांणीजै।

—देवजी बगड़ावत री वात

२ तपस्वी की स्त्री. ३ पतिव्रता या सती स्त्री. ४ कष्ट सहन करती हुई जीवन-यापन करने वाली स्त्री।

रू०भे०—तपसण, तपस्विण।

तपसी-सं०पु० [सं० तपस्विन्] (स्त्री० तपसण, तपसिण) १ तपस्वी, ऋषि, सन्यासी। उ०—सुतण सुरथ नृप सुमित्र सरूपति, तपसी हुवौ राज तजि भूपति।—सू.प्र.

२ ऐश्वर्य भोगने वाला व्यक्ति, भाग्यशाली व्यक्ति।

उ०—तद टीके हरनाथसिंघ बैठियो सो बडो भागवळी तपसी हुइयो।

—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

३ दीन, कंगाल।

रू०भे०—तपस्वी।

तपसील-सं०पु० [सं० तपः+शील] १ तपस्वी.

२ देखो 'तफसील' (रू.भे.)

यौ०—तपसीलवार।

तपसीलवार-वि० [अ० तफसीलवार] विस्तारपूर्वक। उ०—ऐ समाचार तपसीलवार। दीधा असपत नूं खबरदार।—सू.प्र.

तपस्या-सं०स्त्री [सं०] १ तप, व्रत. २ फाल्गुन मास (ज्यो.)

तपस्विण—देखो 'तपसिण' (रू.भे.) उ०—महाराजा लीलां तपस्विण स्नांन करि तीरथ महा नीसरती दीठी।—देवजी बगड़ावत री वात

तपस्वी—देखो 'तपसी' (रू.भे.)

(स्त्री० तपस्विण)

तपा-सं०पु० [सं०] माघ मास। उ०—सक चउदह सत्रह १७१४ समै, सिसर चरण अवसांण। असित तपा कंदरप अह, चढ़ियौ इम चहुआंण।—वं.भा.

तपाइ-सं०स्त्री०—एक वस्त्र का नाम (व.स.)

तपाक-सं०पु० [फा०] १ आवेश, जोश. २ वेग, तेज।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी।

मुहा०—तपाक देतीरौ—तुरंत, शीघ्र।

तपाड़णौ, तपाड़वौ—देखो 'तपाणौ, तपावौ' (रू.भे.)

तपाड़ियोड़ौ—देखो 'तपायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तपाड़ियोड़ी)

तपाणौ, तपावौ-क्रि०स० [सं० तप्] १ तपाना, गर्म करना. २ संतप्त करना, कष्ट देना, दुःख पहुँचाना. ३ दग्ध करना, जलाना.

४ ऐश्वर्य का उपभोग कराना. ५ संतप्त करना, क्रुद्ध करना।

तपाणहार, हारौ (हारी), तपाणियौ—वि०।

तपवाड़णौ, तपवाड़वौ, तपवाणौ, तपवावौ, तपवावणौ, तपवाववौ—प्रे०रू०।

तपायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
तपाईजणौ, तपाईजवौ—कर्म वा० ।
तपणौ, तपबौ—अक० रू० ।
तपाड़णौ, तपाड़वौ, तपावणौ, तपाववौ—रू०भे० ।

तपायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ तपाया हुआ, गर्म किया हुआ. २ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ. ४ ऐश्वर्य का उपभोग कराया हुआ. ५ संतप्त किया हुआ, क्रुद्ध किया हुआ ।
(स्त्री० तपायोड़ी)

तपावंत–सं०पु०—तपस्वी ।

तपाव–सं०पु०—देखो 'तपावस' (रू.भे.) उ०—अनीति कीहीं वात री नहीं तींसूं सारा परगना री न्याव तपाव सगळौ भटनेर आवै ।
—ठाकुर जैतसी री वारता

तपावणौ, तपाववौ—देखो 'तपाणौ, तपावौ' (रू.भे.)
उ०—तपावौ राछ ज्यूं पूठ री कारी करां ।—द.वि.

तपावस–सं०पु०—१ कृपा, महरवानी । उ०—चंगसखांन री बायरि पातिसाह स्री अकबर कन्हैं पुकारी । सु पातिसाह इयां नै सजा दीन्ही । हाथी रा पगां सूं बंधाई मारिया । चंगसखांन री बायरि महलां मांहे राखी । पातिसाह तपावस कियौ ।—द.वि.
२ न्याय, निर्णय, फैसला । उ०—१ वांणिये रै बेटै नै बेटौ कहै नहीं चोची करै तौ चाकर कहै का कोई बीजौ ठहरावै । पण कोईक तौ कारण छै । इसौ विचार कर राजा कनकरथ नां अेकांत में लेनै पूछियौ—महाराज, सांच कहौ नेठ तौ सांच कह्यां तपावस होसी, लारली सरब बात कही ।—पलक दरियाव री वात
उ०—२ ताहरां राजा अदभांण कह्यौ—देवीदास औ तपावस म्हांसूं ना होवै । औ तोसूं हीज होसी ।—पलक दरियाव री वात
उ०—३ तद कोटवाळ, पंच हसिया औ वडौ तमासौ कह्यौ जी औ तपावस म्हांसूं नहीं होवै । राजाजी करसी ।—पलक दरियाव री वात
३ पूछताछ । उ०—ठाकुर थे कठै रहो छौ, कासूं नांम छै । ताहरां कनकरथ कह्यौ—कासूं पूछ करौ छौ ? रजपूत छूं, परदेसी छूं । दरबारी कह्यौ—थे भागड़ छौ तौ तपावस तौ होसी हीज पण हूं हवालदार छूं ।—पलक दरियाव री वात
४ देखो 'तपास' (रू.भे.)

तपावियोड़ौ—देखो 'तपायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तपावियोड़ी)

तपास–सं०स्त्री०—१ खोज, तलाश, अनुसंधान. २ जांच-पड़ताल ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
रू०भे०—तपावस ।

तपियोड़ौ—देखो 'तापियोड़ौ' (रू.भे.)

तपियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ (गर्मी या आंच से) गर्म हुवा हुआ, तपा हुआ. २ प्रताप फैला हुआ, शौर्य बढ़ा हुआ. ३ ऐश्वर्य भोगा हुआ, सुख भोगा हुआ. ४ दग्ध हुवा हुआ, जला हुआ. ५ क्रुद्ध हुवा हुआ. ६ संतप्त हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ । ७ तपस्या किया हुआ, तप किया हुआ. ८ कष्ट सहा हुआ. ९ देखो 'तापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तपियोड़ी)

तपिस–सं०स्त्री० [फा० तपिश] गरमी, तपन, उष्णता ।

तपी–सं०पु०—तप करने वाला, तपस्वी, ऋषि ।
उ०—तपी तपतें सुरता इकतार, धपी रसना रस इम्रितधार ।
—ऊ.का.

तपीस–सं०पु० [सं० तप+ईश] तपस्वी ।

तपु—देखो 'तप' (रू.भे.) उ०—महीयळि महिळीय करइं विचारू, कवणु कीउ तपु द्रूपदीय । कोइ न त्रिहु जगि हुईय नारि, हिव पछी कोई न होइसि ए ।—पं.पं.च.

तपेदिक–सं०पु० [फा० तप+अ० दिक] एक रोग विशेष जो प्रायः फेफड़ों में को टाणु विशेष लगने से हो जाता है जिससे शरीर शनैः शनैः क्षीण व अशक्त होने लगता है । राजयक्ष्मा, क्षय रोग ।

तपेसर, तपेसुर–सं०पु० [सं० तपेश्वर] १ तपस्वी । उ०—१ कर हर धान चढ़ायै केसर । तपियौ धुमर ताप तपेसर ।
—जीवराज सोलंकी री गीत
उ०—२ गुफा ध्यांन लवलीन गिरोवर, ताळी खुलि ऊठिया तपेसुर ।
—सू.प्र.
२ महादेव, शिव ।

तपोअण—देखो 'तपोधन' (रू.भे.) उ०—सुखि तपोअण भरम भ्रम सम, मरम निध जिम माल ।—रा.रू.

तपोतम–सं०पु०—१ श्रेष्ठ तपस्वी । उ०—मछळी उर जाया जोग कमाया मीन मछंदर कहवाया । सिसिया तैं गौतम वडौ तपोतम व्यास कीरणी निपजाया ।—पा.प्र.
२ उत्तम तपस्या ।

तपोधन–सं०पु० [सं०] १ वह जिसका केवल तपस्या ही धन हो, तपस्वी, मुनि, महात्मा । उ०—दांत दमंकै अहर दुत, जांण चमंकै बीज । ज्यांरी धुनि मधुरी सुणे, रहे तपोधन रीज ।—बां.दा.
२ ऐश्वर्यवान, वैभवशाली ।
रू०भे०—तपोअण, तवोधण ।

तपोनिध–सं०पु० [सं० तपोनिधि] ब्रह्मा, विष्णु ।
उ०—उदोत-तपोनिध-त्रेगुण-ईस, अजीत-जरा-म्रत जोग अधीस ।
—ह.र.

तपोबळ–सं०पु० [सं० तपोबल] १ ऐश्वर्यबल, वैभवशक्ति ।
उ०—राजत प्रोहित रांण तपोबळ रूप कौ, भड़ घोड़ा घमसांण समोवड़ भूप कौ ।—बगसीरांम प्रोहित री वात
२ राज्यबल । उ०—धाक सुण खांन सुळतांन वोही धूजसी, सतारौ दिली मुळतांण सार्थ । आंन रा तपोबळ जगत कुण आदरै, 'मांन' रा तपोबळ जगत माथै ।—महाराजा मांनसिंघ री गीत

३ तपस्या, तपश्चरण। उ०—मन जिण मुनण तपोवछ मंडै, जिण दळिया दम्मट मद मांडै।—सू.प्र.

रू०भे०—तपवछ।

तपोभूमि-संस्त्री० [सं०] तपस्या करने का स्थान, तपोवन।

तपोमूर्त्ति-संपु० [सं० तपोमूर्ति] १ महातपस्वी. २ परमेश्वर।

तपोरति-संपु० [सं०] तपस्या में लवलीन, तपस्या-प्रेमी, तपस्यानुरागी।

तपोराशि-संपु० [सं० तपोराशि] तपस्वी, मुनि।

तपोलोक-संपु० [सं०] ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक जो जन लोक और सत्य लोक के मध्य स्थित है।

तपोवन-संपु० [सं०] वह वन प्रदेश जहां तपस्वी अपनी तपस्या में रत रहते हैं। तपस्वियों की निवासस्थली।

तपोवृद्ध-वि० [सं०] तपस्वियों में जो वृद्ध हो, महामुनि. २ तपस्या द्वारा जो श्रेष्ठ हो।

तप्त-वि० [सं०] १ गरम, तपा हुआ, उष्ण। उ०—जठै नदी रा जळ नूं पुदगल पवित्र करि कोई सिद्ध रा दीधा मंत्र रा जप पूरवक तप्त तेल रा कटाह में बड़ाह राजा झंप लीधी।—वं.भा.

२ दुखित, पीड़ित, संतप्त।

तप्तकुंड-संपु० [सं०] १ एक तीर्थ-स्थान. २ गर्म जल का कुंड।

तप्तमुद्रा-संपु० [सं०] शरीर के किसी अंग पर लगाये जाने वाले शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि के छापे। वैष्णव सम्प्रदाय में इसकी प्रथा प्रायः अधिक है।

तप्प—देखो 'तप' (रू.भे.) उ०—रहै बिलंबे रांम रस, अनरस गिणै अतप्प। एह महाधू आतमा, ऐ तीरथ ऐ तप्प।—ह.र.

तप्पड़—देखो 'तापड़' (रू.भे.)

तप्पना-संस्त्री०—तपस्या।

तफरीह-संस्त्री० [सं० तफ़रीह] १ आमोद-प्रमोद, प्रसन्नता. २ दिल्लगी, हंसी, ठट्ठा. ३ सैर, भ्रमण।

तफसीर-संस्त्री० [अ० तफसीर] १ टीका. २ किसी धर्म ग्रंथ की टीका।

तफसीळ-संस्त्री० [अ० तफसील] १ विस्तृत वर्णन, ब्योरेवार वर्णन. २ टीका. ३ सूची, फेहरिस्त, फर्द।

तफावज, तफावत-संपु० [अ० तफ़ावुत] १ अन्तर, भेद, फर्क।

उ०—१ देणां उत्तर कविजणां, सुवरन अरथ सनेह। सु कवि सूम सम दाखिये, नहीं तफावज रेह।—बां.दा.

उ०—२ सारो लोग तें भेळो करि फौज बणाई, परगना रो सरवत तें खांच लीन्हो। सजा तफावत करै छै।—ठाकुर जैतसिंघ री वारता

२ दूरी, फासला।

तर्फ-संपु०—वश, अधिकार। उ०—सं० १६४० बीलाड़ो तर्फ हुवो बीलाड़ा रो तर्फ रा वाघ प्रथीराजोत नूं हुतो।

—राजा उदैसिंघ री वात

तफो-संपु०—१ समूह, दल. २ वजन, बोझा. ३ कलंक, इल्जाम.

तबंकरा-संस्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा का नाम।

तब-अव्य० [सं० तदा] १ उस समय. २ इस कारण।

तबक-संपु० [अ० तबक़] १ ब्रह्मांड के कल्पित खंड जो पृथ्वी के ऊपर तथा नीचे माने जाते हैं, लोक, तल। उ०—सकल सिम्ठी का चित ही कारण, कारज बहु विध ठांणी। नांना रूप भावना नांना, चवदह तबक च्यारूं खांणी।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ सोने चांदी के पत्तरों को ठोक कर बनाया हुआ पतला वरक. ३ परत, तह. ४ मेंढ़क की चाल. ५ घोड़े को होने वाला एक रोग विशेष जिसके कारण उसके पेट के नीचे सूजन आ जाती है।

(शा.हो.)

६ थाली। उ०—नीली सोपारी, कातली, तवक खर वडी, तबकी कायु।—व.स.

रू०भे०—तवक।

तबकगर-संपु० [अ०+फा०] सोने चांदी के वरक बेचने वाला।

अल्पा०—तबकियो।

तबकिया हड़ताळ (हरताळ)-संस्त्री०—एक प्रकार की हरताल।

(अमरत)

तबकियो—१ देखो 'तबकगर' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'तबको' (अल्पा., रू.भे.)

तबको-संपु० [अ० तबक़] १ चांदी या सोने का वरक।

२ रह-रह कर उठने वाला दर्द, चीस. ३ किसी नुकीले औजार, शस्त्र तथा नुकीली वस्तु का सीधा प्रहार। नुकीली वस्तु के चुभने का भाव।

रू०भे०—तबीड़ो, तबोड़ो।

मह०—तबकीड़, तबीड।

तबड़क-संस्त्री०—१ कूदते हुए दौड़ने की क्रिया या भाव.

२ देखो 'तबड़को' (रू.भे.)

तबड़कणी, तबड़कबो-क्रि०अ०—१ उछलते हुए दौड़ना. २ ऊंट का चारों पैर एक साथ उठाते दौड़ना।

तबड़को-संपु०—१ ऊंट का कूद कर छलांग भरते हुए दौड़ने का भाव.

२ कूदते हुए दौड़ने का भाव।

मुहा०—१ तबड़को मारणो—नाराज होकर चला जाना, नाराजगी प्रकट करना. २ तबड़को लेणो—देखो 'तबड़को मारणो'।

तबज्या-संस्त्री० [अ० तवज्जुह] ध्यान, देख-रेख। उ०—उण दिन सूं सगळा महल लोगां री तबज्या करणे लागिया।

—कुंवरसी सांखला री वारता

क्रि०प्र०—देणी।

२ कृपा-दृष्टि।

तबदील-वि० [अ०] १ जो बदला गया हो, परिवर्तित.

२ देखो 'तबदीली' (रू.भे.)

तबदीली-संस्त्री०—परिवर्तन, बदलने का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।
रू०भे०—तवदील।
तवर-सं०पु० [फा०] १ लम्बे दस्ते की बड़ी कुल्हाड़ी, परशु.
२ कुल्हाड़ी के आकार का लड़ाई का एक हथियार.
३ देखो 'तवरौ' (मह., रू.भे.)
रू०भे०—तव्वर।
तवरियौ—देखो 'तवरौ' (अल्पा., रू.भे.)
तवरौ-सं०पु०—एक प्रकार का वर्तन विशेष। उ०—खाडा खाया खाय, कियौ थौ खाली तवरौ। माथ चढ़ावरण मोल, परम प्रसाद है जबरौ।
—दसदेव
अल्पा०—तवरियौ।
मह०—तवर, तव्वर।
तवरक-सं०पु०—कमरपट्टे की बारूद आदि रखने की पेटी।
तवल-सं०पु० [फा०] १ बड़ा ढोल. २ नगाड़ा.
३ देखो 'तवलौ' (मह., रू.भे.) उ०—तवल नै धवकै धर धूजवइ। अरि तणां मन नु मद खूटवइं।—विराटपर्व
४ कुल्हाड़ी के आकार का एक प्रकार का शस्त्र।
उ०—असि गयंद तवल नेजा लियां, खड़े अमर भड़ रिग खळे। भागा हजार वावन भिड़े, उभै हजारां आगळे।—सू.प्र.
यौ०—तवल-वंध।
रू०भे०—तवंल, तव्वल।
तवलवंध-सं०पु०यौ०—१ युद्ध में रणभेरी या बड़ा ढोल बजाने वाला. २ तबल नामक कुल्हाड़ी के आकार का शस्त्र धारण करने वाला।
उ०—१ सूरमा सेख अति वळ समंद। वाबरी वंगाळी तवलबंध।
—वि.सं.
उ०—२ पड़ि वत्थ वळथिय हथ पड़ि, चगदायळ मुख चीवरां। बीवरां तवळबंध वांनां वहसि, खांगी वंधां खींमरां।—सू.प्र.
रू०भे०—तवलवंध।
तवलवाज-सं०पु०—तवला बजाने वाला, तबलची. २ नगाड़ा बजाने वाला. ३ तवल नामक शस्त्र को धारण करने वाला।
उ०—तवलवाज गजराज सकवंध अकवर तणा, रहचिया मीर हालै रंढाळै। 'सतै' आफाळिया भला खुरसांण सूं, काछ पंचाळ सोराठ काळै।—नैणसी
तवली-सं०स्त्री०—सारंगी नामक वाद्य के नीचे का भाग जो चमड़े से मढ़ा रहता है।
तवलियौ—देखो 'तवलौ' (अल्पा., रू.भे.)
तवलौ-सं०पु० [अ० तवल:] संगीत, नृत्य आदि के साथ ताल देने का एक प्रसिद्ध वाद्य जिसमें काठ, मिट्टी या लोहे की चद्दर के कूंड पर चमड़ा मढ़ा रहता है। इस चमड़े पर बीच में लोहचून, मंगरैल, लोईझांवै, सरेस और तेल को मिला कर बनाई हुई स्याही की गोल टिकिया जमा कर लगाई हुई होती है। यह वाजा अकेला नहीं बजाया जाता। इसी तरह के दूसरे बाजे के साथ बजाया जाता है जिसे 'बायाँ', 'डुग्गी' अथवा 'नारी' कहते हैं।
वि०वि०—साधारण बोलचाल में तवला और बायाँ अर्थात् नर और मादा को एक साथ मिला कर भी तवला कहते हैं।
मुहा०—१ तवला उतरणा—तवले की बद्धी का ढीला पड़ना.
२ तबला उतारणा—तवले की बद्धी को ढीला करना. ३ तवला चढ़ाणी—बजाने के लिए तवले की बद्धी को कसना। तवले को तनाव में लाना. ४ तवला ठणकणा—तवला बजना, तवला खनकना।
२ चूतड़।
मुहा०—१ तवला कूटणा—संभोग करना. २ तवला कुटाणा—संभोग कराना (व्यंग)
अल्पा०—तवलियौ।
मह०—तवल, तवल्ल, तव्वल।
तवल्ल—१ देखो 'तवल' (रू.भे.) २ देखो 'तवलौ' (मह., रू.भे.)
उ०—मचे जंग वेसंग हिंदू मुगळ्ळं, त्रहक्के नफेरी टमंके तवल्लं।
—रा.रू.
तवक-सं०पु० [अ० तबाक़] बड़ा थाल, परात (क्षेत्रीय)
तबाह-वि० [अ०] नष्ट-भ्रष्ट, तहस-नहस।
तवियत-सं०स्त्री० [अ० तबीयत] १ चित्त, मन, जी।
मुहा०—१ तवियत आणी—किसी से प्रेम होना. २ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा होना. २ तवियत उळझणी—१ जी घवराना, २ किसी के साथ दिल का लगना, मुहब्बत हो जाना.
३ तबियत जाणी—१ किसी वस्तु पर मन चलना. २ नियत विगड़ना. ४ तवियत फड़कणी—१ उमंग से मन का प्रसन्न होना, २ जोश आना. ५ तवियत फिरना—मन में उचाट होना, जी हटना. ६ तवियत भरणी—मन में संतोष होना, तसल्ली होना.
७ तवियत लागणी—किसी पर तवियत आना, अनुराग हो जाना, चित्त को किसी कार्य में लगाना. ८ तवियत होणी—इच्छा होना।
यौ०—तवियतदार, तवियतदारी।
२ स्वास्थ्य या रोग के दृष्टिकोण से शरीर की दशा, मिजाज।
उ०—तीसूं जे वादसाह सिलांमत री तवियत जांणै थौ सौ कन्है रहियौ।—गौड़ गोपाळदास री वारता
मुहा०—१ तवियत बिगड़णी—स्वास्थ्य खराब होना, बीमार होना.
२ तवियत सुधरणी—स्वस्थ होना, स्वास्थ्य का सुधार पर होना।
३ बुद्धि, समझ, भाव. ४ प्रकृति, स्वभाव।
रू०भे०—तवीअत।
तवियतदार-वि०यौ० [अ०+फा०] १ मनचला, रसिक, रसज्ञ.
२ समझदार।
तवी—देखो 'तभी' (रू.भे.)
तवीअत—देखो 'तवीयत' (रू.भे.)

तबोड़—देखो 'तबरौ' (मह., रू.भे.)

तबोड़ौ—देखो 'तबरौ' (रू.भे.)

तबीब, तबीब—सं०पु० [अ० तबीब] वैद्य, चिकित्सक।
उ०—वैद करीजै राज पर, पावै केम गरीब। हेली दूध धपाड़ियौ, म्हारै नीम तबीब।—नी.म.

तबेलौ—सं०पु०—अस्तबल, घुड़साल। उ०—थांन वतन अरु मुलक म्हौ, पीठा चाक अमांण। सिरै तबेलै सोहिया, कूकड़ कंध केकांण।
—प्रे.रू.

तबोड़ी—सं०स्त्री०—अंग में चोट आदि लगने से अंग पर बढ़ने वाला मांस या फूला।

तबोड़ौ—देखो 'तबरौ' (रू.भे.)

तब्बर—१ देखो 'तबर' (रू.भे.) २ देखो 'तबरौ' (मह., रू.भे.)

तब्बल—१ देखो 'तबल' (रू.भे.) २ देखो 'तबरौ' (मह., रू.भे.)

तब्बी-क्रि०वि०—देखो 'तभी' (रू.भे.) उ०—मरा मीर मसूर कों दुख घाग तब्बी। ज्यों घ्रत डारा आगि में हिय पावक हुब्बी।—ला.रा.

तभी-अव्य०—१ उसी समय, उसी वक्त. २ इसी कारण।
रू०भे०—तब्बी।

तमंक-सं०पु०—क्रोध, कोप। उ०—जिण वार तमंक पावू जवांन, बिमताल भडै रोग रीठवांन।—पा.प्र.

तमंकणौ, तमंकबौ—देखो 'तमकणौ, तमकबौ' (रू.भे.)

तमंकियोड़ौ—देखो 'तमकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तमंकियोड़ी)

तमंचय, तमंचौ-सं०पु० [फा. तमंचा] १ छोटी बंदूक, पिस्तोल. २ बहुधा दीपावली पर पोटास छोड़ने के लिए लोहे का बना एक उपकरण विशेष। उ०—जम जमडाढ़ तमंचय जास, बिढै रिण काज सजय वांणास।—प्रे.रू.
क्रि०प्र०—छूटणौ, छोडणौ।
३ दरवाजे की मजबूती के लिए दरवाजे की चौखट के बगल में लगाया जाने वाला लम्बा पत्थर।

तमंस-सं०पु०—१ श्यामता, कालिमा। उ०—सरीम मोतियां सवार, कोर भाळ केसरी। कळा तमंस बीच कीध, चंद जांणि चंदरी।
—सू.प्र.
२ अंधकार, अंधेरा।

तम-सं०पु० [सं०] १ अंधकार, अंधेरा (नां.मा.)
उ०—तुलि बैठौ तरणि तेज तम तुलिया, भूप कणय तुलता भू भाति। दिणि-दिणि तिणि लघुता प्रांमै दिन, राति राति तिणि गौरव राति।—वेलि.
२ तमाल वृक्ष. ३ राहु. ४ पाप. ५ क्रोध. ६ अज्ञान. ७ कलंक. ८ नरक. ९ सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण, तमोगुण। उ०—सत रज तम रस पांच रहत रस, ता रस सूं मन लागा। यन्त्रित जरै प्रांण रस पीवै, भरम गया भै भागा।—ह.पु.वा.
सर्व०—तुम। उ०—तम छत्री तातें कहुं तोय, हम चारण आदु मीर होय।—रांमदांन लाळस
रू०भे०—तमि, तमु।
वि०—काला वर्ण, श्याम॰ (डि.को.)
क्रि०वि०—वैसे, तैसे। उ०—घम घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम वीच। तम तम यम 'मालू' तवै, म्यार(म) चसम म मीच।
—मयारांम दरजी री वात

तमक-सं०पु०—१ जोश, आवेश, तेजी. २ क्रोध, कोप।
उ०—सळसळ कमठ पीठ······लचक सेस रा, दहल पद कंक हक बक देस देस रा। पांण तज अनमी भरै पेस रा, तमक किण सिर बंद 'सगतेस' रा।—रांमलाल बारहठ
रू०भे०—तमख।

तमकणौ, तमकबौ—क्रि०अ०—१ तमकना, क्रोध करना।
उ०—१ तद रावजी जैतसी पर विराजी हा सू तमक'र कयौ, 'जैतसी नूं कांई दूं भाठा कै ?'—द.दा.
उ०—२ तद कान्हौ बोल्यौ तमक, मत करणा मनकर। बीरोटण पण बेखतां, नह सोभ चढ़ै नर।—ठा. झूंझारसिंह मेड़तियौ
२ आवेश दिखलाना।
तमकणहार, हारौ (हारी), तमकणियौ—वि०।
तमकाड़णौ, तमकाड़बौ, तमकाणौ, तमकाबौ, तमकावणौ, तमकावबौ
—प्रे०रू०।
तमकिओड़ौ, तमकियोड़ौ, तमक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तमकीजणौ, तमकीजबौ—भाव वा०।
तमंकणौ, तमंकबौ, तमक्कणौ, तमक्कबौ, तमखणौ, तमखबौ—रू०भे०।

तमकसास-सं०पु० [सं० तमकश्वास] एक प्रकार का दमा जिससे फेफड़ों में घरघराहट होती है और कंठ रुक जाता है।

तमकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ क्रोध किया हुआ. २ आवेस में आया हुआ।
(स्त्री० तमकियोड़ी)

तमक्कणौ, तमक्कबौ—देखो 'तमकणौ, तमकबौ' (रू.भे.)
उ०—बीर बक्तर पार कै, दै तीर तमक्कै, दंत दमक्कै हीर लौं, चिनगी कि चमक्कै।—वं.भा.

तमखणौ, तमखबौ—देखो 'तमकणौ तमकबौ' (रू.भे.) उ०—तस घरे मूंछ रवतेस बोलै तमख, हुआ वेद लेख म्हैं कीध हथां।
—सूरजमल आसियौ

तमगण—देखो 'तमोगुण' (रू.भे.) उ०—गया तमगण करेह, हेता सुध बसता हिवि। कर मुझ माळ ठवेह, जळ वसां जोगी थया।—जेठवा

तमगौ—देखो 'तुकमौ' (रू.भे.)

तमचर-सं०पु० [सं० तमीचर] १ निशाचर, राक्षस (अ.मा., नां.मा.)
२ उल्लू पक्षी. ३ सूर्य (अ.मा.)
रू०भे०—तमचार, तमचारी, तमचूर, तमाचारी, तमीचर।

तमचररिपु-सं०पु० [सं० तमीचररिपु] सूर्य (क.कु.बो.)

तमचार–सं०पु०—१ संध्याकाल, सायंकाल का समय (अ.मा.)
२ देखो 'तमचर' (रू.भे.)

तमचारी–सं०स्त्री०—१ रात्रि, निशा (नां.मा.)
२ देखो 'तमचर' (रू.भे.)

तमचुर–सं०पु० [सं० ताम्रचूड] मुर्गा, कुक्कुट।

तमचूर—देखो 'तमचर' (रू.भे.)

तमछीर–वि०—श्वेत कृष्ण वर्ण* (डि.को.)

तमजा–सं०स्त्री०—१ पार्वती. २ दुर्गा।

तमजारण–सं०पु० [सं० तमोदारण] सूर्य। उ०—अरघ दीध अरक नूं, जयौ जगमण **तमजारण**।—भगवान रतनू

तमजाळ–सं०पु०—अंधेरा, तिमिर।

तमणियौ, तमण्यौ–सं०पु०—स्त्रियों द्वारा धारण किया जाने वाला गले का एक जेवर।
उ०—हिवड़ा नै हार ज लावजो, म्हारै हिवड़ा नै हार ज लाव जो। म्हारै **तमण्यौ** पाट पड़ावजो, हो भंवर म्हांनै खेलण द्यौ गणगौर।
—लो.गी.

तमतमाणौ, तमतमावौ–क्रि०अ० [सं० ताम्र] १ धूप या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, तमतमाना. २ चमकना. ३ कोप करना।
तमतमाणहार, हारौ (हारी), तमतमाणियौ—वि०।
तमतमायोड़ौ—भू०का०कृ०।
तमतमाईजणौ, तमतमाईजवौ—भाव० वा०।

तमतमायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ क्रोध या धूप से लाल पड़ा हुआ, तमतमाया हुआ।
(स्त्री० तमतमायोड़ी)

तमतमाहट–सं०स्त्री०—तमतमाने का भाव।

तमतमौ–वि०—१ तीक्ष्ण स्वाद का, चरपरा, चटपटा।
उ०—पापड़ नि पापड़ी, सू जमसि जीभ बापड़ी? तीखा **तमतमां** राईतां, मीठां मधुरां, गळयां, तळयां, मचमचां इस्यां सालणा तणी युगति।—व.स.
२ क्रोधयुक्त।

तमता–सं०स्त्री० [सं०] तम का भाव, अंधेरा।

तमनास–सं०पु०—दीपक (ह.नां.)

तमनीत–सं०स्त्री० [सं० तमोनीत] रात्रि (अ.मा.)

तमपा—देखो 'तंपा' (रू.भे.)

तमप्रभ–सं०पु० [सं०] एक नरक (पौरा.)

तममात्री–सं०स्त्री०—रात्रि, निशा। (नां.मा.)

तममाळ–सं०पु०—राहु। उ०—खितसाल खळां **तममाळ** तिसौ, भ्रम ढाल धरा अवढाल इसौ।

तमरंग–सं०पु०—एक प्रकार का नींबू।

तमर–सं०पु० [सं० तिमिर] अंधेरा, अन्धकार (डि.को.)

तमरार–सं०पु० [सं० तिमिर+अरि] सूर्य (अ.मा.)

तमरिप, तमरिपि–सं०पु० [सं० तम+रिपु] प्रकाश (ह.नां.)

तमवाळी–सं०स्त्री०—रात्रि, निशा (डि.को.)

तमस–सं०पु० [सं० तमस्] १ अन्धकार, अंधेरा (ह.नां.)
उ०—सब **तमस** मिटियौ प्रगट्यौ सराह।—ध.व.ग्रं.
२ अज्ञान का अंधकार. ३ तमोगुण।

तमसा–सं०पु० [सं०] १ तमसा नदी, टौंस नाम की नदी।
उ०—विसवामित्र प्रसन्न वर, **तमसा** तटि निसि तांम।—रांमरासौ
स्त्री०—रात्रि (नां.मा.)

तमसि, तमसी–सं०स्त्री०—रात्रि (ह.नां.)

तमस्र—देखो 'तमिस्र' (रू.भे.) (ह.नां.)

तमस्वती, तमस्विनी–सं०स्त्री० [सं० तमस्विनी] १ रात्रि, रात.
२ हल्दी।

तमस्सुक–सं०पु० (अ०) वह लिखित पत्र जो ऋण प्राप्तकर्ता ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिख कर ऋणदाता को देता है। ऋणपत्र, दस्तावेज।

तमहडी–सं०स्त्री०—हांडी के आकार का एक ताम्रपात्र।

तमहर—देखो 'तमोहर' (रू.भे.)

तमां–सर्व०—तुम।
कहा०—आज हमां तौ काल तमां—आज हम तो कल तुम, संसार में परस्पर एक दूसरे व्यक्ति से काम पड़ता ही है।

तमांम–वि० [अ० तमाम] १ सब, संपूर्ण, कुल, पूरा।
उ०—रात दिवस हिक रांम, पढ़िए जो आठूं पहर। तारे कुटंब **तमांम** मिटै चौरासी मोतिया।—रायसिंह सांदू
रू०भे०—तम्मांम।

तमास्ती–सर्व०—तुम, तुम्हारी। उ०—वाजबी है—**तमास्ती** री पगरखी खिसकावां हां'र दिन तोड़ां हां।—वरसगांठ

तमा–सं०स्त्री० [सं० तम] १ अंधेरा. २ रात, रात्रि।

तमाकु, तमाकू, तमाखू–सं०स्त्री० [पुर्त० टबैको] एशिया, अमेरिका तथा उत्तर यूरोप में अधिकता से पाया जाने वाला प्रायः तीन से छः फुट की ऊंचाई का एक पौधा जिसकी पत्तियों को लोग नशे के लिए खाते, पीते तथा सूंघते हैं। इसके पते १ से २ फुट तक लम्बे, विषाक्त और नशीले होते हैं। भारत में विभिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न समय पर इसकी फसल तैयार की जाती है। पौधे पर ही जब पत्ते पीले पड़ने लगते हैं तब उन्हें काट कर धूप में सुखा लिया जाता है और सूखने पर ये ही पत्ते नशे के लिए भिन्न-भिन्न रूपों में काम में लिए जाते हैं।
वि०वि०—अमेरिका की खोज के पूर्व एशिया एवं यूरोप महाद्वीप के निवासी तमाकू के व्यवहार से पूर्ण अनभिज्ञ थे। सन् १४९२ में जब कोलंबस सर्व प्रथम अमेरिका पहुंचा, तब उसने वहाँ के लोगों को तमाकू के पत्ते चबाते और इसका धूंआँ पीते देखा। सन् १५३९ में स्पेन वाले इसे पहले-पहल यूरोप ले गए थे। भारत में इसे पहले-पहल पुर्तगाली पादरी लाए थे। सन् १६०५ में असदबेग ने बीजापुर में देखा

का पौदा वहां से इस पत्ते सहित लिस्बन ले गया। धीरे-धीरे इसका प्रचार बहुत बढ़ गया। आज समस्त संसार में इसका प्रचार इतना हो गया है कि प्रायः पुरुष, स्त्रियां, बच्चे, बूढ़े सभी किसी न किसी रूप में इसका प्रयोग करते हैं। कुछ इसके पत्तों को चूर कर खाते हैं, कुछ इसके महीन चूर्ण को सूंघते हैं तथा अन्य धूआं खींचने के लिए नली में या चिलम पर जलाते हैं।

उ०—१ नमक तमाकू चूगनो, कुत्तो न चाबै काग। ऊंट टाट खावै न खा, घरणौ जाण अभाग।—ऊ.का.

उ०—२ ध्यांन तमाकू धरै ध्यांन गुण कुछ गडांनूं। दोष हाय प्रभु दिया एक दियो पड़ांनूं।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—खाणी, पीणी, बाळणी, सूंघणी।

मुहा०—१ तमाकू चढ़णी—नशा हो जाना. २ तमाकू भरणी—१ तमाकू का धूंआ पीने के लिए चिलम या हुक्का तैयार करना, २ खुशामद करना।

रू०भे०—तंबाकू, तंबाखू, तमाकू, तमाखू, तम्माकू।

तमाचारी—देखो 'तमचर' (रू.भे.) (नां.मा.)

तमाचो-सं०पु० [फा० तबान्चः] १ हथेली और उंगलियों का गाल पर किया हुआ प्रहार। तमाचा, थप्पड़, झापट।

क्रि०प्र०—भरणो, देणो, मारणो, लगाणो।

२ तमाशा, खेल।

तमादी-सं०स्त्री० [अ०] किसी लेन-देन अथवा बात आदि की अवधि या मियाद गुजरने का भाव।

तमार-सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष। उ०—पाडर पुन रांयन तरु तमार। तहां मरु बकायन सरस तार।—मयारांम दरजी री वात

तमारा-सर्व०—तुम्हारा। उ०—मुर भुयणां रा महंत तोत्र दरबार तमारा। वहै मेरकिमेर हमैं गिमि पाप हमारा।—पी.ग्रं.

तमारि-सं०पु० [सं०] सूर्य।

तमारू-सर्व०—तुम्हारा। उ०—गरना डूंगर जागिया, फरवयां वेणु-वन। मेह तमारू मन, चकोळ ज्यूं वरड़ा घणी।—जेठवा

तमारौ-सर्व०—तुम्हारा।

तमाळ-सं०पु० [सं० तमाल] १ एक वृक्ष विशेष जिसकी ऊंचाई लगभग २०-२५ फुट होती है और जिसके पत्ते तेजपात और छाल दाल-चीनी कहलाती है।

यौ०—तमाळपत्र।

२ वरुणवृक्ष. ३ 'पिंगळ सिरोमणि' के अनुसार १६ गुरु और १६ लघु का छंद विशेष, इसका दूसरा नाम करभ भी है. ४ अन्त में एक गुरु लघु सहित उन्नीस मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

सं०स्त्री०—५ एक प्रकार की तलवार. ६ मूर्छा, बेहोशी।

उ०—होस उडै फाटै हियो, पड़ै तमाळां आय। देखे जुव तमवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय।—बां.दा.

तमाळक-सं०पु०—१ तमालवृक्ष. २ तेज-पत्ता. ३ बांस की छाल।

तमाळी-सं०स्त्री०—१ ताम्रवल्ली नाम की लता. २ वरुण वृक्ष. ३ तमाल वृक्ष।

तमास-सं०पु० [अ० तमाशः] तमाशा, खेल, क्रीड़ा।

उ०—थाकिया वीर मदधार छाक, टहरू नगार वज चंड डाक। रंभा'र हूर मिळ करत रास, तिण वार सूर देखे तमास।—वि.सं.

तमासगीर-सं०पु० [अ० तमाशः+फा० गीर] १ तमाशा देखने वाला।

उ०—तमासगीर लोग घणा ही लारै-लारै लागियो आवै, सगळा वाह-वाही करै।—राठोड़ ठाकुरसी जैतसिंघोत री वारता

२ तमाशा करने वाला। उ०—खालक सम तमासगीर नेड़ा न अळगा।—केसोदास गाडण

तमासबीन-सं०पु० [अ० तमाशः+फा० बीन] देखो 'तमासगीर'।

तमासबीनी-सं०स्त्री० [अ० तमाशः+फा० बीन+रा०प्र०ई] खेल या तमाशा देखने का कार्य।

तमासय—देखो 'तमासौ' (रू.भे.) उ०—अड़ियल सूर भिड़ेय आरांण, भाळै रथ थांभ तमासय भांण। खिले मिळ खेचर भूचर ख्याल, हलै संग जोगण देख हवाल।—प्रे.रू.

तमासाई-सं०पु०—तमाशा देखने वाला।

तमासागीर—देखो 'तमासगीर' (रू.भे.)

तमासू, तमासौ-सं०पु० [अ० तमाशः] वह दृश्य या क्रीड़ा जिसके देखने से मनोरंजन हो। तमाशा, खेल। उ०—सो इसड़ा तो चोख रा तमासा म्होकमसिंघ किताई कीधा।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, देखणौ, होणौ।

मुहा०—तमासा करणौ—हंसी-मजाक करना, दिल्लगी करना।

तमि, तमी-सं०स्त्री० [सं० तमी] १ रात्रि (ह.नां.) २ देखो 'तम' (रू.भे.)

तमिनाथ-सं०पु० [सं०] चन्द्रमा, निशिनाथ।

तमियौ-सं०पु०—मिट्टी का पात्र विशेष। उ०—कूट छांट कर तमियौ भर ल्यायी, गेरचौ हांडी मांय। खरण-खरण हांडी खरणावै, भाग ऊफण्या जाय।—लो.गी.

कहा०—तमियौ सिरांणै धर नै सोणौ—मिट्टी के पात्र आदि हीन वस्तु को भी सिरहाने रख कर सोना, दरिद्र होना, गरीबी में दिन तोड़ना।

तमिस्र-सं०पु० [सं०] १ अंधेरा, अंधकार।

यौ०—तमिस्र पक्ष।

२ क्रोध, गुस्सा. ३ एक नरक (पौरा.)

रू०भे०—तमस्र।

तमिस्रपक्ष-सं०पु० [सं०] किसी मास का कृष्णपक्ष।

तमिस्रा-सं०स्त्री० [सं०] अंधेरी रात, निशा।

तमी-सं०स्त्री० [सं०] रात्रि, निशा। उ०—सो सुणतां ही तिण ही अवसेस तमी रा अंधकार में मांगळियांणी स्वकीय सुत चूंडा समेत आपरी वसी री एक जाट ओठीपै साथ आयो।—वं.भा.

तमीचर—देखो 'तमचर' (रू.भे.)

तमीज–सं०स्त्री० [ग्र०] १ भले और बुरे को पहिचानने की शक्ति, विवेक, ज्ञान. २ अदब, कायदा।

तमीणौ–सर्व० (स्त्री० तमीणी) तुम्हारा। उ०—हंजा **तमीणौ** हेत, सर सारौ ही डोहियौ। सर में पंखी ढेर, नहीं मुग्रावे हंज रै।

तमीपति–सं०पु० [सं०] निशापति, चंद्रमा।

तमीसत–सं०पु०—चंद्रमा।

तमु—देखो 'तम' (रू.भे.)

तमुक्काय–सं०पु० [सं० तमस्काय] अन्धकार (जैन)

तमूरौ—देखो 'तंबूरौ' (रू.भे.)

तमूळ—देखो 'तंबूळ' (रू.भे.)

तमे–सर्व०—तुम।

तमेलौ–सं०पु०—किसी भवन के तीसरे खंड की छत, हवेली की सबसे ऊपरी छत।

तमोगण—देखो 'तमोगुण' (रू.भे.)

तमोगणी—देखो 'तमोगुणी' (रू.भे.) उ०—चख चोळ मूंछ भूंहां चढ़ी, तांमस ऊठि **तमोगणी**। मेह री गाज जांणै मरद, सारदूळ कांनां सुणी।—मे.म.

तमोगुण–सं०पु०—सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण जिसके प्राधान्य से मनुष्य विवेकहीन कार्य करता है।

रू०भे०—तमगण, तमोगण।

तमोगुणी–वि०—जिसकी प्रकृति में तमोगुण की प्रधानता हो, मध्यम-वृत्ति वाला, अहंकारी, क्रोधी।

रू०भे०—तमोगणी।

तमोघण, तमोघन–सं०पु० [सं० तमोघ्न] १ अग्नि. २ चंद्रमा. ३ सूर्य।

तमोटी–सं०स्त्री०—सोते समय चद्दर आदि ओढ़ने की क्रिया विशेष जिसमें ओढ़ने वाला वस्त्र का एक छोर सिर के नीचे दवे एवं दूसरा छोर दोनों पैरों के बीच दवे तथा दोनों छोरों का कपड़ा खूब तना हुआ रहे। उ०—ना मनै माळी सींच्यौ ना मेरी जड़ गई पताळ, सूत्यौ गूगो चौहांण जी कोई सूत्यौ ए **तमोटी** तांण—लो.गी.

तमोतम–सं०पु०—गहन अंधकार, घोर अंधकार।

तमोदरसन–सं०पु० [सं० तमोदर्शन] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो।

तमोनुद–सं०पु० [सं०] १ ईश्वर. २ चंद्रमा. ३ अग्नि।

तमोभिद–सं०पु० [सं०] १ जुगनू २ दीपक।

वि०—अंधकार को दूर करने वाला।

तमोमणि–सं०पु० [सं०] जुगनू।

तमोमय–वि० [सं०] १ तमोगुणयुक्त, क्रोधी. २ अज्ञानी. ३ अंधकार-युक्त।

सं०पु० [सं०] राहु।

तमोर—देखो 'तमोळ' (रू.भे.)

तमोरी—देखो 'तंबोळी' (रू.भे.) उ०—ग्राप मिळ्यां विन कळ न पड़त है, त्यागे तिलक **तमोरी**। मीरां के प्रभु मिळज्यौ माधौ, सुणज्यौ अरजी मोरी।—मीरां

तमोळ–सं०पु०—१ तांबूल, पान बीड़ा. २ उमंग।

उ०—पुटियां टोळ पंचोळ, चोळ चंगै चित आळां। झांमर झोळ **तमोळ**, मोळ मन मकड़ी जाळां।—दसदेव

३ क्रोध, गुस्सा।

तमोळी—देखो 'तंबोळी' (रू.भे.)

उ०—सांझ पड़ै दिन आथवै रे, **तमोळण** लावै पांन।—लो.गी. (स्त्री० तमोळण)

तमोविकार–सं०पु० [सं०] तमोगुण के कारण उत्पन्न होने वाला विकार।

तमोहंत–सं०पु० [सं०] दस ग्रहों में से एक।

तमोहपह–सं०पु० [सं०] १ सूर्य. २ चंद्रमा. ३ अग्नि. ४ ज्ञान।

वि०—अंधकार दूर करने वाला, अज्ञानता हटाने वाला।

तमोहर, तमोहरि–सं०पु० [सं०] १ सूर्य. २ चंद्र. ३ अग्नि. ४ ज्ञान।

वि०—१ अंधकार हरने वाला. २ अज्ञान दूर करने वाला।

रू०भे०—तमहर।

तम्माकू—देखो 'तमाकू' (रू.भे.)

तम्मांम—देखो 'तमांम' (रू.भे.)

तम्हं–सर्व०—तेरे, तुम्हारे, तुझे।

तम्हां–सर्व०—तुम।

तम्हारा–सर्व०—तुम्हारा।

तम्हीणां, तम्हीणा, तम्हीणौ–सर्व०—तुम्हारा, आपका।

उ०—हरि जस रस साहस करै हालियौ, मो पंडिता वीनती मोख। अम्हीणा **तम्हीणै** ग्राया, स्रवण तीरथे वयण सदोख।—वेलि.

तम्हे–सर्व०—तुम। उ०—**तम्हे** कहौ त्रिभुवन नौ राजा त्रीजौ खंड महीनऊं।—रुकमणी मंगळ

तय–सं०पु० [ग्र०] १ निश्चित, स्थिर. २ पूरा किया हुआ, समाप्त।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

३ निर्णीत, फैसला प्राप्त।

तयांळी, तयांळीस—देखो 'तंयाळीस' (रू.भे.)

तयांळीसौ—देखो 'तंयाळीसौ' (रू.भे)

तयांसी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)

तयार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—तद कुंवरसी ऊठ सूथण पहर नै झिलम टोप वखतर पहर **तयार** हुवौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

तयारी—देखो 'तैयारी'। उ०—सो उण वरड़ी सूं सांम्है मेड़तौ ज्यूं री त्यूं नजर आवै तींसूं फौज ग्राई देख मांहिला पण **तयारी** करणे लागिया।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

तयाळीसौ, तयाळौ—देखो 'तंयाळीसौ' (रू.भे.)

तय्यार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—ग्रै तौ पांचसौ आदमी थां निमित्त **तय्यार** हुवा छै।—पलक दरियाव री वात

तरंग-सं०पु०—१ तालाब, सरोवर। उ०—तरां जड़ ऊपड़ै भरां नूंकै तरंग।

२ मौज. ३ एक सुरूप रंग का घोड़ा विशेष. ४ ग्रंथ का अध्याय या विभाग विशेष।

सं०स्त्री०—५ हवा से पानी में आने वाला उछाल, लहर, हिलोर। उ०—सायर सारा मांह सा, केसर जिसा कुरंग। मैला मोती मानसा, मोटा सिंधु तरंग।—अज्ञात

पर्या०—ऊर्मी, उमळ, उमल्ल, उमेल, उतकलिका, उरमी, उळधी, निलोळ, कावळी, छोळ वेर, वेळ, भंग, भ्रमर, लहर, लहरी, वेळा, वेळावळ, हिलोळ।

क्रि०प्र०—उठणी।

६ मन की मौज, उमंग। उ०—१ आ वात सुणसी-सुणावसी ज्यांनै कंद्रप की फळ आछो दरसावसी। इण में नवरस की तरंग निजर आवसी।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ भवसागर में नवसै नदियां, उलट वाही में जाही। दुख-सुख तरंग उठै वहुतेरी, तीन लोक दुख पाही।

—श्री हरिरांमजी महाराज

मुहा०—तरंग आणी—उमंग उठना, मौज मनाना, सनक आना।

यौ०—तरंगवाज।

७ संगीत की स्वर-लहरी, स्वरों का उतार-चढ़ाव. ८ हाथ में पहिनने की एक प्रकार की चूड़ी जो सोने के तार को उमेठ कर बनाई जाती है।

तरंगक-सं०पु० [सं०] १ पानी की लहर. २ स्वरों का उतार-चढ़ाव, स्वर-लहरी।

तरंगण, तरंगणी, तरंगनि, तरंगनी-सं०स्त्री० [सं० तरंगिणी] नदी, सरिता (ह.नां.) उ०—उमंगी सुरखी कुच कोर कढ़ी, मनु वूडनि कंज कलीनि चढ़ी। अवळी तन रोम तरंगनि सी, मधु सिंधु में नाभिय कंज लसी।—ला.रा.

रू०भे०—तरंगिणी।

तरंगवाज-वि० [सं० तरंग+फा.प्र. वाज़] १ उमंग वाला, मौजी. २ सिनकी।

तरंगभीरु-सं०पु० [सं०] चौदहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

तरंगभ्रजण-सं०पु० [सं० तरंग-भ्राजन] जल, पानी (ना.डि.को.)

तरंगवती-सं०स्त्री० [सं०] नदी (डि.को.)

तरंगाळि, तरंगाळी-सं०स्त्री० [सं० तरंग+आलुच्] नदी, सरिता।

तरंगिणी—देखो 'तरंगणी' (रू.भे.)

तरंगित-वि० [सं०] लहरता हुआ, हिलोर भरता हुआ।

तरंगी, तरंगीलो-वि० [सं० तरंग+रा.प्र. ई, इलो] १ तरंगयुक्त. २ मनमौजी, मनोनुकूल करने वाला. ३ वेपरवाह. ४ सिनकी।

तरंज-सं०स्त्री०—लाख की बनी हुई एक प्रकार की चूड़ी जिसे केवल सधवा स्त्री अपनी कलाई में धारण करती है।

तरंजणग्रयी-सं०पु०—लोहा (अ मा.)

तरंड-सं०पु० [सं०] १ नाव, नौका (ह.नां.) २ नाव खेने का डांड. ३ वृक्ष। उ०—उचंड नवखंड तरंड ऊडंड, मंड कुमंड प्रभु वहे सर नंड।—सू.प्र.

तरंत-क्रि०वि०—१ जोर से, तेजी से। उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ तरंत। माळवणी इम वीनवइ, हूं किम जीवूं कंत।

—ढो.मा.

२ देखो 'तुरंत' (रू.भे.)

सं०पु० [सं०] १ समुद्र. २ मेंढ़क।

तरंती-सं०स्त्री० [सं०] नाव, नौका।

तरंद-सं०पु० [सं० तरु+इन्द्र] कल्प-वृक्ष (डि.को.)

तर-सं०पु० [सं० तरु] १ वृक्ष, पेड़। उ०—तर घर सूका नदी तड़ागा।—ऊ.का.

यौ०—तरअरि।

२ तैरने की क्रिया या भाव।

[सं०] ३ पार होने या करने की क्रिया. ४ अग्नि।

[सं० त्वरा] ५ वेग (अ.मा.)

सं०स्त्री०—६ मस्ती में आए हुए ऊंट की नाक की वालियों से बांधी जाने वाली खींप के रेशों, ऊंट की पूंछ के बाल या जटा की बनी रस्सी।

रू०भे०--तरक, तरक्का।

वि०—[फा०] १ भीगा हुआ, गीला, नम।

मुहा०—तर होणी—१ पूर्ण आर्द्र होना, गीला होना. २ सजल नेत्र होना।

२ शीतल, ठंडा।

मुहा०—तबियत तर होणी—जी ठंडा होना, दिली प्रसन्नता होना।

३ हरा-भरा, जो सूखा न हो. ४ मालदार, भरा-पूरा। ज्यूं—तर आसांमी। ५ गहरा हरा, (एक रंग)। उ०—वाबहिया तर-पंखिया, तइं किउं दीन्ही लोर। मइं जांण्यउ प्रिउ आवियउ, सराहर चंद चकोर।—ढो.मा.

अव्य०—तो। उ०—जन हरिदास कमोदनी, इस्ट एक विसारा। ससि निवस्यां विकसै भलौ, नहीं तर रहै उदास।—ह.पु वा.

क्रि०वि०—१ तले, नीचे। उ०—पीछे पड़गनो खीचियावाड़ री सू तर री धरती गांव १४० खीची देवराज मांनसिघोत नूं मार लियो।

—द.दा.

२ शीघ्र, जल्दी (ह.नां.) ३ शनैः, धीरे। उ०—यूं तर तर पड़ता दिन आसी, जीहा कर पद चख थक जासी। पाकड़ जम घातेला पासी, पापी इण दिन नै पछतासी।—वगसीरांम लाळस

यौ०—तर-तर।

प्रत्य०—गुणवाचक शब्दों के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय। इसका प्रयोग एक वस्तु का गुण दूसरी की अपेक्षा अधिक बताने के लिए किया जाता है।

तरग्ररी–सं०पु०यौ० [सं० तरु+ग्ररि] हाथी (ग्र.मा.)
तरई–सं०स्त्री० [सं० तारा] नक्षत्र (जैन)
तरक–सं०स्त्री० [सं० तर्क] १ विचार-विमर्श, सोच-विचार।
क्रि०प्र०—करणी।
यौ०—तरक-चरचा।
२ विचार। उ०—उनसे तुम्हारा घणा इकळास था तौ जो बात तुमने भेळ बैठ कर करी उसका तरक करी।—पदमसिंघ री वात
३ देखो 'तर' ६ (रू.भे.)
रू०भे०—तरक्क।
तरकक–सं०पु०—१ तर्क करने वाला, विचार करने वाला.
२ याचक।
तरकणौ, तरकबौ—देखो 'तड़कणौ, तड़कबौ' (रू.भे.)
तरकवितरक–सं०पु०यौ० [सं० तर्कवितर्क] १ सोच-विचार, विचार-विमर्श. २ वादविवाद, बहस।
तरकस–सं०पु० [फा० तरकश] तीर रखने का चोंगा, तूणीर।
उ०—पतळी सी केळ थी उणसूं तरकस टांक जाजम बिछाय बैठा।
—ठाकुर सी जैतस्योत री वारता
पर्या०—उपासंग, तरकस, तून, तूनीर, निखंग, भाथौ, विसखधाम, सरधि।
रू०भे०—तरगस, तरगस्स।
ग्रल्पा०—तरकसी।
तरकसासतर–सं०पु० [सं० तर्कशास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमें उचित तर्क या विवेचना ग्रादि करने के नियम लिखे हों। सिद्धान्तों का खंडन व मंडन बताने वाली विद्या. २ न्याय शास्त्र।
तरकसी—देखो 'तरकस' (ग्रल्पा., रू.भे.)
तरकाभास–सं०पु० [सं० तर्काभास] ऐसा तर्क जो उचित न हो, कुतर्क।
तरकारी–सं०स्त्री० [फा०तर:+कारी] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, जड़, डंठल, फल-फूल ग्रादि पका कर भोजन के साथ खाने के काम में लेते हैं। शाक, सागपात, भाजी। उ०—पांणी घटै तंद मांहै वेरी दोय सौ च्यार सौ ग्राखारी सी हुवै छै। ऊपर छोंतरा, गेहूँ, तरकारी हुवै।—नैणसी
२ खाने के लिए पकाया हुग्रा इसी प्रकार के पौधे का फल-फूल पत्तियां ग्रादि। शाक-भाजी।
३ पका हुग्रा खाने योग्य मांस।
तरकी–सं०स्त्री०—१ फटे हुए वस्त्र पर लगाया हुग्रा ग्रन्य कपड़े का जोड़, थिगरी। उ०—दरजी 'ग्रमरेस' बणाई दोमझ, तरकी सुजड़ कूंत खग तीर। रोम रोम खीलांणौ रावत, सिध कंथा ताहरौ सरीर।
—महारांणा ग्रमरसिंघ री गीत
[सं० ताडंकी] २ कान में पहनने का फूल के ग्राकार का एक गहना।
[रा०] ३ देखो 'तरक्की' (रू.भे.)
वि०—तर्क करने वाला।

तरकीब–सं०स्त्री० [ग्र०] युक्ति, उपाय।
क्रि०प्र०—लागणी, सोचणी।
२ शैली, प्रणाली, तरीका. ३ संयोग, मेल।
तरकुंज–सं०पु०यौ०—कुंज (ग्र मा.)
तरक्क—१ देखो 'तरक' (रू.भे.) २ देखो 'तर' (६) (रू.भे.)
उ०—तनै दाखवै जोसवाळी तरक्कां। करैदांत ग्रालावता क्रासळक्कां।
—रा.रू.
तरक्कणौ, तरक्कबौ–क्रि०ग्र०—१ जोर से ग्रावाज करना, जोश से बोलना। उ०—सुत 'द्याळ' 'मध कर' सांम छळ, तोले खाग तरक्कियौ। ऊपड़ै वहै न ऊगतां, ग्रालमसाह ग्रटक्कियौ।—रा रू.
२ तर्क करना, बहस करना। उ०—किता ग्रग्र पाछै किता चक्र कुंडे। तरक्कै किता साहता वाह तुंडे।—रा.रू.
३ देखो 'तड़कणौ, तड़कबौ' (रू.भे.)
तरक्कियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ जोर से ग्रावाज किया हुग्रा, जोश से बोला हुग्रा. २ तर्क किया हुग्रा, बहस किया हुग्रा.
३ देखो 'तड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तरक्कियोड़ी)
तरक्की–सं०स्त्री० [ग्र०] उन्नति, वृद्धि, बढ़ती।
रू०भे०—तरकी।
तरक्र–सं०पु० [सं० तर:+क्र=तरस्क्र] हरिण (ग्र.मा.)
तरक्षु–सं०पु० [सं०] लकड़बग्घा (डिं.को.)
रू०भे०—तरच्छ, तरच्छु।
तरखांसी–सं०स्त्री०यौ०—वह खांसी जिसमें बलगम ग्राता हो।
तरखा–सं०स्त्री० [सं० तृषा] १ प्यास. २ इच्छा. ३ लोभ।
तरगस, तरगस्स—देखो 'तरकस' (रू.भे.) उ०—१ जिसड़ै साथ ग्रायौ तिसड़ै हांसू नांखि तरगस-री खोळी ग्रर कबांण पकड़ी जिकै नूं तीर वाहै सू गुड़दा-पेच कबूतर दाई ग्रळगौ जाइ पड़ै।
—कंगूरै वळोच री वात
उ०—२ वे वे कवांण तरगस्स वंध, ग्रसुरांण कंध गिड़ जोम ग्रंध।
—सू.प्र.
तरगसबंध–सं०पु०यौ०—तीर-तरकश धारण करने वाला, योद्धा।
उ०—मिरजै इब्राहम री फौज विचळी पणि मिरजै रै तरगसबंधै कहियौ पातिसाह थोड़ै साथ सेती छै।—द.वि.
तरड़णौ, तरड़बौ–क्रि०ग्र०—१ पशु का पतला मल निकलना.
२ क्रोध करना, कोप करना, गुस्सा करना।
तरड़ाणौ, तरड़ावौ–क्रि०स०—१ पतली दस्त करवाना (पशु)
२ क्रोध कराना।
तरड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पतला मल किया हुग्रा (पशु)
२ गुस्सा किया हुग्रा, क्रोध किया हुग्रा।
(स्त्री० तरड़ियोड़ी)
तरड़ौ–सं०पु०—१ पशु का पतला मल. २ कुपित होकर ग्रावाज देने

का भाव, मिजाजी. ३ गर्म पानी या क्वाथ आदि का छींटे डालते हुए किया जाने वाला फिक्कार।

तरक्ख, तरक्खु—संपु० [सं० तरक्ष] १ देखो 'तरखु' (रू.भे.) [सं० तार्क्ष्य] २ गरुड़, पक्षीराज।

तरच्छौ—देखो 'तिरछौ' (रू.भे.) उ०—संजम जप तप सांपरत, व्रत सुध सील विचार। भांत तरच्छी देखतां, जीता समघा जांण।
—वां.दा.

(स्त्री० तरच्छी)

तरछणौ, तरछवौ—देखो 'तरसणौ, तरसवौ' (रू.भे.)

तरछाणौ, तरछावौ—देखो 'तरसाणौ, तरसावौ' (रू.भे.)

तरछायोड़ौ—देखो 'तरसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तरछायोड़ी)

तरछावणौ, तरछाववौ—देखो 'तरसाणौ, तरसावौ' (रू.भे.)
उ०—मोळी अति मूंघी गनो, प्यारो घर रो पीव। देस पराई गोरड़ी, यूं तरछावै जीव।—पना वीरमदे री वात

तरछावियोड़ौ—देखो 'तरसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तरछावियोड़ी)

तरछियोड़ौ—देखो 'तरसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तरछियोड़ी)

तरछौ—देखो 'तिरछौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तरछी)

तरछोळ-वि०—१ तरंगी, मनमौजी. २ चालाक, धूर्त।

तरज-संस्त्री० [अ० तर्ज] १ गीत या गायन की लय, राग।
क्रि०प्र०—निकाळणी, बैठावणी, सुणावणी।
संपु० [सं० तर्ज्ज] २ बादल (अ.मा.)

तरजणी-संस्त्री० [सं० तर्ज्जनी] अंगूठे की पास की उंगली, तर्जनी।

तरजणीमुद्रा-संस्त्री० [सं० तर्जनीमुद्रा] तंत्र की एक मुद्रा जिसमें बायें हाथ की मुट्ठी बांध कर तर्जनी और मध्यमा को फैलाते हैं।

तरजणौ, तरजवौ-क्रि०अ० [सं० तर्जनम्] १ डांटना, डपटना, धमकाना, डराना। उ०—आपरा अंगज में आई असाधारण आपदा ईखि मंडोवर रा महीप हम्मीर री माता बूंदी रा नरेस हम्मीर री सासू मंडोवर ही द्विजां नूं देण री जणाइ आपरा अप्रतिभ तनुज नूं तरजियौ।—वं.भा.
२ संकेत करना। उ०—वो'रा थळ विहुणां तिल खळवत तरजै। बूढ़ी चेली नै साधू ज्यूं बरजै।—ऊ.का.
तरजणहार, हारौ (हारी), तरजणियौ—वि०।
तरजवाड़णौ, तरजवाड़वौ, तरजवाणौ, तरजवावौ, तरजवावणौ, तरजवाववौ, तरजाड़णौ, तरजाड़वौ, तरजाणौ, तरजावौ, तरजावणौ, तरजाववौ—प्रे०रू०।
तरजिओड़ौ, तरजियोड़ौ, तरज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तरजीजणौ, तरजीजवौ—भाव वा०।
तरजणौ, तरजवौ—रू०भे०।

तरजमौ—देखो 'तरजुमौ' (रू.भे.)

तरजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ डांटा हुआ, धमकाया हुआ. २ संकेत किया हुआ।
(स्त्री० तरजियोड़ी)

तरजुई-संपु० [फा० तराज़ू] छोटी तराजू।

तरजुमौ-संपु० [अ० तरजुमा] भाषानुवाद, भाषांतर, उल्था।
उ०—पातसाह अकबर फिरंग रा पातसाह कनै सय्यद मुजफ्फर नूं वकील मेलियौ, रात लिख दीनौ, तौरत अंजील जबूरआं किताबां रो तरजुमौ मगायौ।—बां.दा.ख्यात
क्रि०प्र०—करणौ।
रू०भे०—तरजमौ।

तरझंगर-संपु०—१ वृक्ष समूह, झाड़-झंखाड़।
उ०—द्वादस कोस अजाद है, ओयण तरझंगर। सरणै आवै जगत सो, प्रतपाळ करै पर।—ठा. जूझारसिंघ मेड़तियौ
२ वन, जंगल। उ०—लंगर लज्जा रा तरझंगर रा लाडा, गौरव गायां रा गाहिड़ रा गाडा।—ऊ.का.

तरझणौ, तरझवौ—देखो 'तरजणौ, तरजवौ' (रू.भे.)

तरझियोड़ौ—देखो 'तरजियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तरझियोड़ी)

तरण-वि० [सं० तरुण] १ युवा, वयस्क। उ०—आलम का अड़माळ ईसे गूडर आसना। गढ़ का गा गढ़पति कन्हड़, अध अर तरणा बाळ।
—अ. वचनिका

२ तैरने वाला।
यौ०—तरणतारण।
संपु०—१ युवक। उ०—गुरु गुर है चिरंजीव, जिण जोड़ी कर मेळ। हूं तरणी थूं तरण पिव, करलै रस रंग केळ।—र.रा.
[सं० तरणि] २ सूर्य। उ०—१ घण मोहर अरावा गज घटा मोहरि रावत घणा। वरियांम दहूं झळहळ वरण, तरण जांणि ग्रीखम तणा।—सू.प्र.
उ०—२ उडै खाग ऊपरा, हसै नारद रिख हासौ। विढ़ण एम वेखवै, तरण रथ थांभि तमासौ।—सू.प्र.
३ तैर कर नदी, सरोवर आदि को पार करने की क्रिया।
[सं० तरुण] ४ बछड़ा (ह.नां.) ५ प्रकाश, उजाला (नां.मा.)
संस्त्री० [सं० तरुणी] ६ युवा स्त्री। उ०—अंब आदि तरण आमासे। परम कंवर लखि हरख प्रकासे।—रा.रू.
[सं० तरणी] ७ नाव, नौका।
रू०भे०—तरन।

तरणजा-संस्त्री०—देखो 'तरणिजा' (रू.भे.)

तरणसुतण-संपु० [सं० तरणिसुत] १ यमराज. २ कर्ण.
३ शनिश्चर।

रू०भे०—तरणिसुत ।

तरणाई—देखो 'तरुणाई' (रू.भे.)

तरणाट-सं०पु० (अनु०) १ ध्वनि विशेष. २ तार वाद्यों की ध्वनि।

उ०—घूघरां तणा झरणाट हुय घमाघम, वैण रा तंत्र तरणाट वाजै।
—खेतसी बारहठ

२ देखो 'तरणाटी' (रू.भे.)

तरणाटी-सं०स्त्री०—कोप, गुस्सा।

रू०भे०—तरणाट।

तरणाटौ-सं०पु०—१ कोप, गुस्सा. २ देखो 'तरणाट' (रू.भे.)

तरणापउ, तरणापौ-सं०पु०—तरुणावस्था, युवावस्था।

उ०—जिम जिम मन अमले किअइ, तार चढंती जाइ। तिम तिम मारवणी तणइ, तन तरणापउ थाइ।—ढो.मा.

रू०भे०—तरुणापौ।

तरणाय-सं०पु० [सं० तरणि] सूर्य। उ०—निमौ भव भांण निमौ ग्रह राव, निमौ तरणाय निमौ तमचूर।—सूरज अस्तुत

तरणि-सं०पु० [सं० तरणिः] १ सूर्य। उ०—तुलि बैठौ तरणि तेज तम तुलिया, भूप कणय तुलता भू भाति। दिणि दिणि तिणि लघुता प्रांमै दिन, राति राति तिणि गौरव राति।—वेलि.

२ आक, मदार. ३ किरण।

सं०स्त्री०—४ नौका, नाव। उ०—तौ पै धूळि सिल तरणी वारी सारै हि···। ऊं ही राघो तरणि उडै छै य्यौ साको स कुळ छुडै।—र.ज.प्र. [सं० तरुणी] ५ स्त्री, तरुणी। उ०—त्रिण फेरा लीधा तरणि, आगी करि रघुनाथ।—रा.रा.

रू०भे०—तरणी, तरांणि।

तरणिकुमार-सं०पु०यौ०—देखो 'तरणसुतण' (रू.भे.)

तरणिजा-सं०स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री यमुना नदी।

रू०भे०—तरणजा, तरनिजा।

तरणितनय-सं०पु०यौ०—देखो 'तरणसुतण' (रू.भे.)

तरणितनूजा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] देखो 'तरणिजा' (रू.भे.)

तरणीसुत—देखो 'तरणसुतण' (रू.भे.)

तरणी—देखो 'तरणि' (रू.भे.) उ०—१ पै रज रिख वरणी गति पाई। वळ तरणी भीवर तिरवाई।—र.ज.प्र.

उ०—२ पुरू गुर है चिरंजीव, जिसी जोड़ी कर मेल। हूं तरणी थूं तरण पिव, करलै रस रंग केळ।—र.रा.

उ०—३ भींकै खग जग भोंकणौ, कमाल कंथा रौह। रज छा रुकाय रथ करै, तरणी ध्रुव तारोह।—रेवतसिंह भाटी

तरणौ-सं०पु०—तृण, तिनका। उ०—तनु तरणा सरखु हवु, त्रूटइ रखै हिचोळि। वनिता ! तुझ नइं वागस्यइ, रहि रिदयांनी खोळि।
—मा.कां.प्र.

तरणौ, तरबौ—देखो 'तिरणौ, तिरबौ' (रू.भे.)

उ०—भीतर घर द्रढ़ भाव, तो मांझल डूबा तिके। दुस्तर भव दरियाव, नर तरिया निरझर नदी।—बां.दा.

तरणहार, हारौ (हारी), तरणियौ—वि०।

तरवाड़णौ, तरवाड़बौ, तरवाणौ, तरवाबौ, तरवावणौ, तरवावबौ—प्रे०रू०।

तराड़णौ, तराड़बौ, तराणौ, तराबौ, तरावणौ, तरावबौ—क्रि०स०।

तरिओड़ौ, तरियोड़ौ, तरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

तरीजणौ, तरीजबौ —भाव वा०।

तरत-सं०पु०—तरु पत्र, पेड़ के पत्ते। उ०—१ तरत झरत सूकत सरत, दादर मरंत दुरंत। प्रीतम घर नन पेखतां, वैरण वणी वसंत।
—अज्ञात

क्रि०वि० [सं० तुर=वेग] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

कहा०—तरत नी काकड़ी तरत नी लागे—तुरन्त बोई हुई ककड़ी के फल उसी समय नहीं लगते। परिश्रम का फल यथा समय ही प्राप्त होता है।

तरतम-सं०स्त्री०—फल देने की न्यूनाधिक शक्ति (जैन)

तरतात-सं०पु० [सं० तरु+तात] जल, पानी (अ.मा.)

तरतीब-सं०स्त्री० [अ०] क्रम, सिलसिला।

तरतोज-सं०पु०— उपाय। उ०—पीछै वाघंजी कंवर स्री वीकैजी नूं कयौ हूं तौ आपरी मदत मैं हूं सू आप कहौ सो तरतोज करूं जिण सूं आपरै फायदौ हुवै।—द.दा.

तरत्तड़-क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी।

तरदीद-सं०स्त्री०—काटने या रद्द करने की क्रिया, खंडन।

तरदोज— । उ०—कदेही सैंहलां नीकळौ नहीं सो दीवांण पधारौ, काळीयैद्रह विराजज्यौ म्हे पिण आवां छां। रांणोजी भोळा हुआ, यां रौ तरदोज चूक जांण्यौ नहीं।
—राव रिणमल री वात

तरन—देखो 'तरण' (रू.भे.)

तरनिजा—देखो 'तरणिजा' (रू.भे.)

तरनी—देखो 'तरणी' (रू.भे.)

तरप-सं०स्त्री०—१ तड़पने की क्रिया या भाव. २ चमक-दमक।

सं०पु०—१ सारंगी के मुख्य दो तारों के नीचे कसे हुए तार जो एक क्रम विशेष से लगाए जाते हैं और जो संख्या में कुल १७ होते हैं।

रू०भे०—तरब।

४ देखो 'तरफ' (रू.भे.)

तरपण-सं०पु० [सं० तर्पण] १ संतुष्ट करने की क्रिया, तृप्त करने की क्रिया. २ कर्मकाण्ड की एक क्रिया जिसमें देव, ऋषि और पितरों को तुष्ट करने के लिए अंजली से जल देते हैं, तर्पण।

उ०—अयोध्या कासी परस परागजी आय, मकर री नाहण करि, फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भराया, पछै वैजनाथजी, जगन्नाथजी, परस मारकंडेय कुंड तरपण किया।—पंचदंडी री वारता

[रा०] ३ ईंधन।

तरपणी-सं०स्त्री० [सं० तर्पणी] १ गंगा नदी. २ खिरनी का वृक्ष।

स्त्री०—[illegible] देने वाली, तृप्ति देने वाली ।

तरपत-वि० [सं० तृप्त] तुष्ट, अघाया हुआ, तृप्त ।

उ०—पन्नग भोगतां धणीं, वर नित दत वेदज्ज । हुव सुरपत तरपत हुवो, नरपत किंदं नेपज्ज ।—पा.प्र.

तरपी-वि० [सं० तर्पिन्] १ तृप्त करने वाला, संतुष्ट करने वाला या होने वाला. २ तर्पण करने वाला ।

तरपोस-सं०स्त्री० [सं० तरु+पोषः] नदी (अ.मा.)

तरफ-सं०स्त्री० [अ० तरफ़] १ ओर, दिशा. २ पार्श्व, बगल ।

उ०—दोनूं तरफां हूंत लियां दळ, मिळिया सांमंत रांम महाबळ ।

—रा.रू.

३ पक्ष, पासदारी ।

रू०भे०—तरप ।

यौ०—तरफदार, तरफदारी ।

तरफणौ, तरफबौ-क्रि०अ०—१ बिजली का चमकना, दमकना ।

उ०—जरदोज नी हेम ध्वजा सरफं । तड़िता घण बीच मनो तरफं ।

—ला.रा.

२ देखो 'तड़फणौ, तड़फबौ' (रू.भे.)

तरफदार-वि० [अ० तरफ+फा० दार] पक्ष में रहने वाला, पक्षपाती, समर्थक ।

तरफदारी-सं०स्त्री० [अ० तरफ+फा० दारी] पक्षपात, मदद, हिमायत ।

क्रि०प्र०—करणी, बतावणी ।

तरफळणौ, तरफळबौ—देखो 'तड़फणौ, तड़फबौ' (रू.भे.)

तरफांणू-क्रि०वि०—ओर से, तरफ से । उ०—भळ फंद जळांगू जळ वरसाणूं चहू तरफांणूं निहचंतू ।—भगतमाळ

तरब-सं०पु०—देखो 'तरप' (३) (रू.भे.)

तरबतर-वि० [फा०] खूब भीगा हुआ, सराबोर ।

तरबहणौ-सं०पु०—परात के आकार का तांबे या पीतल का एक पात्र जिसका उपयोग ठाकुरजी को स्नान कराने के लिए किया जाता है ।

तरबूज, तरबूजौ-सं०पु० [फा० तर्बुज] एक प्रकार की बेल जो भूमि पर पसरती है और जिसमें बड़े-बड़े गोल फल लगते हैं जिनका गूदा खाने के काम में आता है । संसार के सभी गरम देशों में यह फल उत्पन्न होता है । यह बेल कलिंग लता की बेल के समान ही होती है ।

अल्पा०—तरबूजियौ ।

तरभव-सं०पु० [सं० तरु+भव] पुष्प, सुमन (नां.मा.)

तरमंदार-सं०पु० [सं०मंदार+तरु] कल्पतरु, कल्पवृक्ष ।

उ०—कल्पव्रक्ष संतांन पारिजाती हरिचंदण । तरमंदार दुवार आंगण ऊगा गुण अप्पण ।—रा.रू.

तरमीम-सं०स्त्री० [अ०] संशोधन, त्रुटि निवारण, दुरुस्ती ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

तरय-क्रि०वि० [सं० त्वरया] शीघ्र, जल्दी (अ.मा.)

तरर-सं०स्त्री०—कांतिहीन होने का भाव, निस्तेज होने का भाव ।

उ०—तरर मुख खड़भड़े सहर तरसींग रा, ऊजड़ै झाक आथुण अरडींग रा । थरहरै धमंक धाका परै धींग रा, सीस किण आज रीस गजसींग रा ।—महादांन महड़ू

तररा-सं०स्त्री०—चाबुक का फीता या डोरी जो छड़ी में सिरे पर बंधी रहती है ।

तरराज-सं०पु० [सं० तरुराज] कल्पवृक्ष । उ०—तर सुर सरित गंगा तरराज ।—र.ज.प्र.

तरराट, तरराटौ-सं०स्त्री०—१ तर शब्द की ध्वनि. २ कोप, गुस्सा ।

तरराटौ-सं०पु०—१ तर-र-र शब्द की ध्वनि. २ गुस्सा, क्रोध ।

तरलंग-सं०पु० [सं० तरल=चंचल+अंग] घोड़ा । उ०—सीना गजां गुड़ावही, तीना वड़ा तुरंग । अे जेहल कीना अमर, तैं दीना तरलंग ।

—बां.दा.

वि०—चपल, चंचल, तेज ।

तरळ-वि० [सं० तरल] १ पानी की तरह बहने वाला, द्रव.

२ अस्थिर, क्षणभंगुर. ३ चंचल । उ०—रैण अंधारी भंवर डर, ऊठत तरळ तरंग । तट वाळा कहा जांणं, जो दुख म्हांरे अंग ।

—अज्ञात

४ तेज, तीव्र गति वाला, चपल । उ०—हाथी दीधा अति घणा, पाखरघा दीधा तरळ तुखार ।—वी.दे.

सं०पु०—१ वृक्ष, तरु । उ०—वणिया दंग लंगर चरणां विच, ब्रंद सुरतांण तांण वखांण । खळ दळ तरळ ढाय खेड़ैंचे, ठेल गयौ गज खंभूठांण ।—द.दा.

२ पिंगळ शिरोमणि के अनुसार १७ गुरु और १४ लघु का दोहा छंद विशेष. ३ पिंगळ शिरोमणि के अनुसार छप्पय के ७१ भेदों में से एक जिसमें २८ गुरु और ९६ लघु वर्ण होते हैं. ४ चन्द्रमा. ५ घोड़ा (मि० चंचळ) ६ तंतु । उ०—वेली तरळां तरां विलूंबी, वण हरियाळां वीस विसा । नृप अखभांण तणौ हर नागर, उपवण जोवण जोग इसा ।—बां.दा.

तरळकौ-सं०पु०—शीघ्र आने वाला गुस्सा, सनक ।

तरळता-सं०स्त्री० [सं० तरलता] १ चंचलता, चपलता. २ द्रवत्व ।

तरळनयण, तरळनयन-सं०पु० [सं० तरलनयन] एक वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण अथवा १२ लघु वर्ण होते हैं ।

—र.ज.प्र.

तरळभाव-सं०पु० [सं० तरल+भाव] १ पतलापन, द्रवत्व.

२ चंचलता, चपलता ।

तरळा-वि०—चंचल, चपल । उ०—तरु ताळ पत्र ऊंचा तड़ि तरळा, सरळा पसरंता सरगि ।—वेलि.

सं०पु०—घोड़े की एक जाति (व.स.)

तरळाई-सं०स्त्री०—१ चंचलता. २ द्रवत्व ।

तरवक्र-सं०पु०—सुदर्शन चक्र (अ.मा.)

तरवण-सं०स्त्री०—१ श्याम तने का एक पौधा विशेष जिसकी जड़ को निरगुंडी कहते हैं जो औषधि के प्रयोग में ली जाती है. २ एक परदार छोटा जंगली जन्तु विशेष जो प्रायः ग्रीष्म ऋतु में जंगल में लगातार

ध्वनि से बोलता रहता है ।

मि०—तिवरी ।

तरवर—देखो 'तरु' (रू.भे.) उ०—तरवर सरवर संत जन, चौथौ वरसै मेह । परमारथ रै कारणै, च्यारां धारी देह ।—अज्ञात

तरवरय—क्रि०वि० [सं० त्वरयैव] शीघ्र, जल्दी (अ.मा.)

तरवरियौ—देखो 'तरुवर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—भाखरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास। तरवरिया प्रफुलित थया, नीर निखरिया खास ।—लो.गी.

तरवरौ—सं०स्त्री०—द्रव पदार्थ में ऊपर तैरने वाली स्निग्धता, चिकनाहट।

उ०—तपत दूध अ्रत तरवरा, सासू ! सुत पातीह । तक तिण हेक न तरवरौ, रंगी धर रातीह ।—रेवतसिंह भाटी

तरवाड़ौ—देखो 'तरवाळौ' (रू.भे.)

तरवार—सं०स्त्री० [सं० तरवारि] लोहे की मोटी पत्ती का लम्बा एक धारदार हथियार जिसके प्रहार से वस्तुयें कट जाती हैं। तलवार, असि । उ०—रथ तांम थांम तेखंत रवि, उडै रीठ तरवारियां। घण करै पार जरदां घटा, करदां छुरां कटारियां ।—सू.प्र.

पर्या०—असमर, असि, आभानरां, आसुधर, ऐराक, कड़बांधी, करठाळग, करताळीक, करद, करमचड़ी, करमर, करवाळ, किरमाळ, केवांण, कोखियक, क्रग, क्रपांण, खग, खळकाळ, खांडहळ, खांडौ, खाग, घाव, चंद्रहास, जडळग, जनेव, झटसार, डोढ़हती, तिजड़ तेग, दुजड़, दुधार, दुधारौ, धड़च, धजवड़, धाराळी, धारुजळ, धूप, निसतेयस, निसत्रंस, नाराज, प्रभावंक, प्रहास, पांडीस, पांती, बांक, बांणास, बाढ़कढ़, बाढ़ाळी, बीजळ, बीजूजळ, भुजळग, मंडळाग्र, माळबंधण, मूछाळी, मूठाळी, रूक, लपट, लोह, लोहसार, विजड़, सगत, समसेर, सारंग, सार, सुजड़, सुधवट्टी, हैजम ।

मु०—१ तरवार काढ़णी—देखो 'तरवार खींचणी'।

२ तरवार खींचणी—तलवार को म्यान से बाहर करना, युद्ध के लिए ललकारना ।

३ तरवार जड़णी—तलवार मारना, तलवार से प्रहार करना.

४ तरवार तोलणी—तलवार संभालना, वार का अंदाज देखना.

५ तरवार बजाणी—युद्ध करना. ६ तरवार माथै हाथ पड़णौ—तलवार संभालना, क्रोधित होना. ७ तरवार म्यांन में रखणी—शांति धारण करना, युद्ध रोकना. ८ तरवार री धार चलणौ—कठिन परिश्रम करना, कड़ी तपस्या करना. ९ तरवार रै घाट उतारणौ—तलवार के प्रहार से मारना, यमलोक पहुंचाना.

१० तरवार रौ धणी—वीर, बहादुर. ११ तरवार रौ बळ दिखाणौ—१ अपना शस्त्र बल दिखलाना, २ अपना पराक्रम दिखलाना. १२ तरवार रौ हाथ दिखाणौ—तलवार का दाव दिखाना, प्रहार करना, वार करना ।

कहा०—१ तरवार रौ घाव भर ज्यावै पण बात रौ कोनी भरै—तलवार का घाव भर जाता है परंतु बात का घाव कभी नहीं भरता। किसी चुभती हुई बात का लगा घाव जन्मपर्यन्त नहीं मिटता.

२ तरवार बाजी आछी पण दांताकची खोटी—तलवार का चलना अच्छा परन्तु केवल वाक्युद्ध या तू-तू मैं-मैं होना ठीक नहीं। शस्त्र द्वारा लड़ने से फैसला शीघ्र हो सकता है परंतु केवल मुंह से झगड़ने से कोई प्रयोजन हल नहीं होता, उलटा वैर ही बढ़ता रहता है ।

२ तलवार के आकार का एक प्रकार का औज़ार जिससे बगीचों में दोब काटी जाती है।

रू०भे०—तरुआर, तरुआरइ, तरुआरि, तरुवारि, तरुवारी, तरुआर, तरुआरि, तरुयारि, तलवार ।

तरवारपिधांन—सं०पु०यौ०—म्यांन, तलवार का आवरण (डिं.को.)

तरवारि—देखो 'तरवार' (रू.भे.) (व.स.)

तरवारियौ—वि०—तलवार चलाने वाला, योद्धा ।

उ०—तरगै उण लुगाई कह्यौ, कंवरजी ! म्हारौ घड़ौ कांई फोड़ियौ ? इसड़ा तरवारिया छौ तौ मेवाड़ जेजियौ लागै छै सु परौ छोडावौ ।

—नैणसी

तरवाळी—देखो 'तरवाळौ' (अल्पा., रू.भे.)

तरवाळौ—सं०पु०—१ पानी व दूध जैसे तरल पदार्थ पर तैरने वाली स्निग्धता जो छितराई हुई होती है। उ०—ततरै खवास दूध मिस्री भेळा कर ल्यायौ, तिकौ कांनड़देजी रै आगै चमक हूं तीज नै तरवाळा निजर आया ।—वीरमदे सोनगरा री वात

रू०भे०—तिरवाळौ ।

अल्पा०—तरवाळी, तिरवाळी ।

२ काष्ठ की बनी तीन पायों की ऊंची चौकी जिस पर खड़े होकर हवा में अनाज साफ किया जाता है। तिपाई ।

रू०भे०—तरवाड़ौ ।

तरविसतार—सं०स्त्री०यौ० [सं० स्तरविस्तार] भूमि, पृथ्वी, धरा (अ.मा.)

तरसंग—सं०पु० [सं० तरु-संग] पक्षी (अ.मा.)

तरस—सं०स्त्री० [सं० त्रस] १ करुणा, दया, रहम ।

उ०—ताव अलाजां तरस, सरस रण चाव सलाजां। बणै न राजां बहिर, गहिर तोपां घण गाजा ।—वं.भा.

क्रि०प्र०—आणी, खाणी ।

मुहा०—तरस खाणी—दया दिखाना, रहम करना ।

२ ढाल ।

[सं० तर्ष:] ३ तृष्णा, प्यास । उ०—सेरी मांहि भमतउ पांतरचउ, भूख तरस लागी तात सांभरचउ ।—स.कु.

४ इच्छा, अभिलाषा । उ०—बिहुं थाट अकस बंधे बरकस, सरस जस कजि तरस साहस ।—रा.रू.

५ लालच, लोभ ।

सं०पु० [सं० तरसम्] ६ मांस ।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी ।

रू०भे०—तरसि, तरस्स ।

तरसाई—सं०स्त्री०—[illegible], [illegible], [illegible]।

मुहा०—[illegible]—[illegible], [illegible] करना।

तरसणौ, तरसबौ—क्रि०अ० [सं० तर्षणम्] १ किसी वस्तु के अभाव में उसकी प्राप्ति के लिए उत्सुक अथवा व्याकुल रहना, अभाव में बेचैन होना। उ०—तरसै देव नगर बनतारां, मुनि रघुबर भोळा। जद [illegible] निमनाथी जद गा, [illegible] फिरैना दोला।—र.रू.

२ [illegible]।

तरसणहार, हारौ (हारी), तरसणियौ—वि०।

तरसवाड़णौ, तरसवाड़बौ, तरसवाणौ, तरसवाबौ, तरसवावणौ, तरसवावबौ—प्रे०रू०।

तरसाड़णौ, तरसाड़बौ, तरसाणौ, तरसाबौ, तरसावणौ, तरसावबौ —क्रि०स०।

तरसिग्रोड़ौ, तरसियोड़ौ, तरस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तरसीजणौ, तरसीजबौ—भाव वा०।

तरस्सणौ, तरस्सबौ—रू०भे०।

तरसळणौ, तरसळबौ-क्रि०अ०—देखो 'तिरसळणौ, तिरसळबौ' (रू.भे.)

उ०—कोई हाथां री थाळी रा मोती तरसळिया।

—पाबूजी रा पवाड़ा

तरसा-क्रि०वि० [सं० तरस्] शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)

सं०स्त्री० [सं० तृषा] तृषा, प्यास।

तरसाड़णौ, तरसाड़बौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू.भे.)

तरसाड़णहार, हारौ (हारी), तरसाड़णियौ—वि०।

तरसाड़िग्रोड़ौ, तरसाड़ियोड़ौ, तरसाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तरसाड़ीजणौ, तरसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

तरसणौ, तरसबौ—अक०रू०।

तरसाड़ियोड़ौ—देखो 'तरसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तरसाड़ियोड़ी)

तरसाणौ, तरसाबौ-क्रि०स०—१ किसी वस्तु के लिए बेचैन करना। तरसाना, ग्राकुल करना. २ अभाव का दुःख देना।

उ०—ऊधो भली निभाई रे, त्यागे गोपी गोकुळ म्हांनै क्यूं तरसाई रे।—मीरां

३ किसी वस्तु के प्रति इच्छा और आशा उत्पन्न कर के उससे वंचित रखना। ललचाना, लालायित करना। उ०—हंसा हित सरवर नहिं हरयो, घन चातक न तरसाया रे।—लो.गी.

मुहा०—तरसाय-तरसाय नै खिलाणौ—ललचा-ललचा कर खाने को देना।

तरसणहार, हारौ (हारी), तरसाणियौ—वि०।

तरसाड़णौ, तरसाड़बौ, तरसवाणौ, तरसवाबौ, तरसवावणौ, तरसवावबौ—प्रे०रू०।

तरसायोड़ौ—भू०का०कृ०।

तरसाईजणौ, तरसाईजबौ—कर्म रू०।

तरसणौ, तरसबौ—अक० रू०

तरसाड़णौ, तरसाड़बौ, तरसाणौ, तरसाबौ, तरसावणौ, तरसावबौ, तरसाड़णौ, तरसाड़बौ, तरसावणौ, तरसावबौ—रू०भे०।

तरसायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ अभाव में दुखित किया हुआ, तरसाया हुआ. २ ललचाया हुआ।

(स्त्री० तरसायोड़ी)

तरसाळौ-सं०पु०—घोड़े की गर्दन में डाला जाने वाला बंधन या इस बन्धन की रस्सी।

तरसावणौ, तरसावबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू.भे.)

उ०—चढ़ो नैं चढ़ावो ढोला सिध करो, काहे तरसावो धण रो जीव, जी ढोला।—लो.गी.

तरसावणहार, हारौ (हारी), तरसावणियौ—वि०।

तरसाविग्रोड़ौ, तरसावियोड़ौ, तरसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तरसावीजणौ, तरसावीजबौ—कर्म वा०।

तरसणौ, तरसबौ—ग्रक० रू०।

तरसावियोड़ौ—देखो 'तरसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तरसावियोड़ी)

तरसि [सं० तरस्] देखो 'तरस' (रू.भे.)

तरसित-वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषातुर।

तरसियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु के अभाव में बेचैन हुवा हुआ. २ छीला हुआ।

(स्त्री० तरसियोड़ी)

तरसींग-वि०—बलवान, जबरदस्त। उ०—रयण रछपाळ ग्रा जोड़ चिरंजी रहो, धराथंभ भुजां रजवाट ग्रद धींग। छत्रांपत 'जसा' री सरै वंस छतीसा, तेज उत जोड़ रा सरै तरसींग।—दयाळदास ग्राढ़ौ

तरसुतर-सं०पु०—चंदन का वृक्ष तथा इस वृक्ष की लकड़ी। (ग्र.मा.)

तरसुर-सं०पु०यौ० [सं० सुर+तरु] कल्पवृक्ष। उ०—तरसुर सरित गंग तरराज, राजां सह सरहर रघुराज।—र.ज.प्र.

तरस्स—देखो 'तरस' (रू.भे.)

तरस्सणौ, तरस्सबौ—देखो 'तरसणौ, तरसबौ' (रू.भे.)

उ०—'ग्रखौ' परग्गह ग्रागळौ, जरद नमावै जोम। वाद तरस्सै साह सूं, बांह परस्सै व्योम।—रा.रू.

तरस्सियोड़ौ—देखो 'तरसिग्रोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तरस्सियोड़ी)

तरस्सौ-क्रि०वि० [सं० तरस्] जल्दी, शीघ्र। उ०—'जगपत्ती' बळ-रांम, रूप 'सांमळ' 'रूपस्सी'। ऊवां जुध ऊधरां, तेग ऊधरी तरस्सी।

—रा.रू.

तरह-सं०स्त्री० [ग्र०] १ प्रकार, भांति। उ०—मिनखां नूं पय माय, तूं पावै किण तरह री। जगणी खोळै जाय, पय फिर नह पीणौ पड़ै।—बां.दा.

२ बनावट, रचना-प्रकार, डौल. ३ हाल, दशा।

उ०—नापौ रावजी री तरफ सूं टीकौ ले आयौ सो दियौ, तरह दीठी सो सारा आप मुरादा, तद नापै दीठी इव दाव आयौ सो विदा हुइ रावजी कनै आयौ।—नापा सांखला री वारता

रू०भे०—तरै।

तरहटी—देखो 'तळहटी' (रू.भे.)

तरहदार–वि० [फा०] १ सुन्दर बनावट का, सुन्दर रूप-रंग का. २ शौकीन, सजधज वाला। उ०—जे नापा नूं एक घोड़ौ मतां दीजयौ, नापौ मांणस तरहदार छै।—नापै सांखलै री वारता

तरहर–क्रि०वि०—तले, नीचे।

वि०—निकृष्ट, नीच।

तरां–क्रि०वि०—१ तब। उ०—तरां सोढ़ीजी बोलिया—रावजी सलांमत नाळेर वांदिया कै नहीं।—वीरमदे सोनगरा री वात

२ तरह, प्रकार। उ०—रात का फेर तरां तरां का जीमण हुवा। —ठा. जैतसिंघ री वारता

तरांणि—देखो 'तरणि' (रू.भे.) उ०—सज्जण गुणांण पूरे, वयणे विछोह वांण अवगुण ए। ज्यां जळ तरांणि लहियं, काळे अकाळ उच्छवं कर ए।—रा.रू.

तराई–सं०स्त्री०—पर्वत के नीचे का वह मैदान जहाँ तरी रहती है। पर्वतीय प्रदेशों में पहाड़ों के नीचे आई हुई भूमि।

तराछणौ, तराछबौ—देखो 'तरासणौ, तरासबौ' (रू.भे.)

तराछणहार, हारौ (हारी), तराछणियौ—वि०।

तराछिओड़ौ, तराछियोड़ौ, तराछयोड़ौ—भू०का०कृ०।

तराछीजणौ, तराछीजबौ—कर्म वा०।

तराछियोड़ौ—देखो 'तरासियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तराछियोड़ी)

तराज–वि०—१ समान, तुल्य, सदृश। उ०—१ तणौ भ्रम हिंदव सिंघ तराज। सत्रां खग वाहत जोध सकाज।—सू.प्र.

उ०—२ तन घनस्यांम तराज तड़िता छिब भांत पीत पीतंबर। सुकर बांण सारंग सीता अंग वांम रांम भज नृप सिंघ।—र.ज.प्र.

२ देखो 'तराजू' (रू.भे.) उ०—कोट गयंद सतोल निधे कर, तोलण हेक तराज। पात 'किसन' अडोळ रघुपत, वोल गरीब-नवाज।—र.ज.प्र.

रू०भे०—ताराज।

तराजू–सं०स्त्री० [फा०] एक डंडी के छोरों पर रस्सियों से बंधे दो पलड़ों का यंत्र जो वस्तुओं का तोल मालूम करने के काम में आता है। तुला, तकड़ो। उ०—वाय भरी तोलै दीवड़ी, पछै काढ़ि रे वायं। घालि तराजू में तोलतां, किंचित फेर ज थाय।—जयवांणी

तराजै–वि०—समान, बराबर, तुल्य, सदृश। उ०—दावागिरां हिरदां जे औ गाजै वंदूका दारू, जगायौ कंठीर छाजै तराजै जोधा दार। जीवणां गराजै राजै सादै देह भोगं जमी, 'अ इसी' नवाजै राजै ईसरा औतार।—ठा. जैत्रसिंघ राठौड़ मेड़तिया रौ गीत

तराड़णौ, तराड़बौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.)

तराड़ियोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तराड़ियोड़ी)

तराणौ, तराबौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.)

तराणहार, हारौ (हारी), तराणियौ—वि०।

तरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

तराईजणौ, तराईजबौ—कर्म वा०।

तरणौ, तरबौ—अक०रू०।

तरायल–वि०—१ योद्धा, वीर. २ जबरदस्त।

तरायोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)

तराळ–वि०—भयंकर, भयानक। उ०—लपटै कराळ तोपां भाळ आसमांन लागी, देव वोम जागी जोम प्रळै काळ दीठ। नाराजां ऊनागी ढाळ त्रभागी तराळ नेजां, राठोड़ां गनीमां बागी नराताळ रीठ। —हुकमीचंद खिड़ियौ

सं०पु०—वृक्ष, तरु, पेड़। उ०—धरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार कराळां। ग्रहि ऊखलै गैतूळ, तूळ जिम मूळ तराळां।—सू.प्र.

तरावट–सं०स्त्री० [फा० तरः+रा.प्र. आवट] १ नमी, तरी, गीलापन, आर्द्रता. २ ठंढक, शीतलता. ३ क्लान्त या श्रान्त चित्त को स्वस्थ करने वाला शीतल पदार्थ. ४ स्निग्ध भोजन (दूध, घी आदि) ५ संपन्नता, वैभव। ज्यूं—इण रा घर में तरावट है।

वि०—सम्पन्न, वैभवशाली, धन-धान्यपूर्ण। ज्यूं—तरावट आसांमी।

तरास–सं०स्त्री० [फा० तराश] १ काटने की क्रिया, काटने का ढंग, काट-छांट. २ प्रहार। उ०—तोड़ै दळ मुग्गळ खाग तरास। जुजटुळ जेम लियै जसवास।—सू.प्र.

३ ढंग, तर्ज।

[सं० त्रास] ४ भय. ५ कष्ट, पीड़ा।

क्रि०प्र०—देणी।

तरासखरास–सं०स्त्री०यौ० [फा० तराशखराश] काट-छांट, कतरब्योंत।

तरासणौ, तरासबौ–क्रि०स० [फा० तराशना] काटना, कतरना।

उ०—'वाघावत' 'सूरज' गौ विकराळ। तरासत मीर खगां रिणताळ।—सू.प्र.

तराछणौ, तराछबौ—रू०भे०।

तरासियोड़ौ–भू०का०कृ०—काटा हुआ, कतरा हुआ।

(स्त्री० तरासियोड़ी)

तराहि, तराही—देखो 'त्राहि' (रू.भे.)

तरिंद–सं०पु० [सं० तरु+इन्द्र] तरुराज, कल्प-वृक्ष (डिं.को.)

उ०—साह उग्राहणी नांम आछा सुणै, तरिंद रै जेम तूं दळद तोड़ै। —खेतसी बारहठ

तरि–सं०स्त्री० [सं०] १ नाव, नौका (डिं.को.)

सं०पु० [सं० तरणि] २ सूर्य।

[सं० तरु] ३ वृक्ष, पेड़। उ०—वनि नयरि घराघरि तरि तरि सरवरि, पुरख नारि नासिका पथि। वसंत जनमियौ देण वधाई, रमं वास चढ़ि पवन रथि।—वेलि.

तरणि-संपु० [सं० तरणि] १ सूर्य । उ०—म्हैम ग्रांम मस्तकै जड़ै तरणकै प्रदै लिम । पुत्र व्योम सूरको तरणि भ्रम तोम तोम तिम ।
—रा.रू.

सं०स्त्री० [सं० तरणि] २ युवा स्त्री, युवती, तरुणि (ह.नां.)

तरियल-संपु०—रेनाल नामक फल लगी हुई लकड़ी से मस्त हाथी को राह पर लाने वाला । उ०—१ हरवळ पटांण तरियल हलाद, पातसाह तणा गड्डां बुलाय ।—वि.स.

उ०—२ तरियलां डाकदारां तलक, गुमारण नग सोलिया । सिघ पतह गुर्नै धारै गवद, बापुकारे बोलिया ।—सू.प्र.

उ०—३ तरियलां नजर ग्रांणी तयार । दौड़िया हाक करि डाकदार ।
—सू.प्र.

तरिया—देखो 'तिरिया' (रू.भे.)

तरियौ-संपु०—१ पतली लम्बी लचकीली लकड़ी. २ तर ककड़ी ।

वि०—प्यासा, तृषातुर ।

कहा०—तळाव तरियौ विवा भूखियौ—तालाब के होते हुए भी प्यासा रहा एवं विवाह अवसर होने पर भी भूखा रह गया । यदि साधन प्राप्त होते हुए भी उनका उपयोग न कर सके तो दोष किसका ।

तरिवर—देखो 'तरु' (रू.भे.)

तरी-संस्त्री० [सं०] १ नाव, नौका (डि.को.) उ०—मयंदी वर्णे 'कांन्ह' रै धाप मारी, तरी साह तोफांन रै माह तारी ।—मे.म.

२ नमी, गीलापन, आर्द्रता ।

क्रि०प्र०—होणी ।

३ शीतलता, ठंडक. ४ तरावट ।

क्रि०प्र०—श्राणी, होणी ।

५ पर्वत के नीचे की भूमि, तलहटी. ६ महंगाई. ७ अधिकता, बहुलता ।

तरीकौ-संपु० [अ० तरीका] १ विधि, रीति, ढंग ।

मुहा०—तरीकौ वरतणौ—नियम का पालन करना ।

२ उपाय, युक्ति, तदबीर ।

मुहा०—तरीकौ लगाणौ—युक्ति बैठाना, उपाय लगाना ।

३ चाल, व्यवहार ।

तरीप-संस्त्री० [सं० तरीप] १ नाव, नौका. २ समुद्र ।

तरु, तरुअर, तरुअरि-संपु० [सं० तरु] वृक्ष, पेड़ ।

उ०—१ श्रीहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयांण । तरु छंडे लागी लता, पत्थर ने गळ जांण ।—ह.र.

उ०—२ हूं पद्मिनी तूं भमरलू, तूं तरुअर हूं वेलि । माधव महा यौवन मांहि, हूं खेलूं तूं खेलि ।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—तरवर, तरिवर, तरुयर, तरुवर, तरू, तरुग्रर, तरोवर, तरोहर ।

अल्पा०—तरवरियौ, तरुवौ ।

तरुयार, तरुआरई, तरुआरि—देखो 'तरवार' ।

उ०—१ रांनी राउत वावरइ कटारी, लोह कटांकड़ि ऊटइ । तुरक तणा पाखरिया तेजी, ते तरुआरे गूटइ ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ भाला अणी कणस तरुआरइ, बाजइ खांडा धार ।
—कां.दे.प्र.

उ०—३ मूळ ऊथापिया साथ तैं थापिया, किलंग रा सेन तरुआरि सां कापिया ।—पी.ग्रं.

तरुकांम-संपु० [सं० कामतरु] कल्पवृक्ष । उ०—रात दिन हुलस मन सुजस 'किसनेस' रट, रखण जन मांम तरुकांम रघु रांम है ।
—र.ज.प्र.

तरुण-वि० [सं०] युवा, वयस्क । उ०—म्हारौ पती म्हारा बूढ़ा पणा पहला मारीजसी, इसौ सूरमापणौ दीसै छै श्रौर हूं लारै सत कर सुरग में पाछा तरुण मोटियार होय रहसां ।—व.स.टी.

संपु०—युवा पुरुष ।

रू०भे०—तरुण ।

तरुणज्वर-संपु० [सं०] वह ज्वर जो सात दिन का हो गया हो ।

तरुणतरणि-संपु० [सं०] मध्यान्ह का सूर्य ।

रू०भे०—तरुण-तरणि ।

तरुणाई-संस्त्री०—तरुणावस्था, युवावस्था, जवानी ।

रू०भे०—तरणाई ।

तरुणापौ—देखो 'तरणापौ' (रू.भे.)

तरुणि, तरुणी-संस्त्री० [सं० तरुणि] १ युवा स्त्री, युवती ।

उ०—फागण मास वसंत रितु, नव तरुणी नव नेह । कहौ सखी कैसे सहूं, च्यार अगन इक देह ।—र.रा.

२ स्त्री, श्रौरत । उ०—१ पणि मूळ एह कायर पणै, सांग धरै हरि वीसरै । कुळ तरुणि तेरा सोभै किसी, कंत मरण जीवण करै ।—रा.रू.

उ०—२ वीणा डफ महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग । तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग ।
—वेलि.

तरुणीपरिकरम्म-संपु० [सं० तरुणीपरिकर्म्म] ७२ कलाओं में से एक कला (व.स.)

तरुतूलिका-संस्त्री० [सं०] चमगादड़ ।

तरुपंच-संपु०—पांच की संख्या* (डि.को.)

तरुपत-संपु० [सं० तरुपति] कल्पवृक्ष । उ०—तरुपत सी रीभ वज्र सी तेगां, अरणव जिसी दया वरियांम । अरथी असुर संत जण ऊपर, राजै तूझ तणी रघुरांम ।—र.रू.

तरुयर—देखो 'तरु' (रू.भे.) उ०—ऊन्हाळी थी अति घणउं, अधिकुं करिउं आसाढ़ि । जेस्ठि तरुयर जे फळ्या, ते माहरुं काळिज काढ़ि ।
—मा.कां.प्र.

तरुराज-संपु० [सं० तरु+राट] १ कल्पवृक्ष. २ ताड़ का वृक्ष ।

तरुवर—देखो 'तरु' (रू.भे.) उ०—अति अंब मोर तोरण अजु अंबुज,

कळी सु मंगळ कळस करि । वन्नर वाळ बंधांणी वल्ली, तरुवर एक विए तरी ।—वेलि.

तरुवारि, तरुवारी—देखो 'तरवार' (रू.भे.) (व.स.)

तरुवौ—देखो 'तरुवर' (अल्पा., रू.भे.)

तरुसार-संoपुo [संo] कपूर ।

तरू—देखो 'तरु' (रू.भे.)

तरूअर—देखो 'तरु' (रू.भे.) उ०—साल्हा वाड़ी तरूअर चंग, राय तणउ छइ मंडप रंग ।—कां.दे.प्र.

तरूआर, तरूआरि—देखो 'तरवार' (रू.भे.) उ०—केतला फूलसिउं क्रीडा करइ, केतला हाथमां तरूआरि ज धरइ ।—नळ-दवदंती रास

तरूणौ—देखो 'तरुण' (अल्पा., रू.भे.) उ०—कोई पुरख तरूणौ थकौ रे लाल, विग्यांनवंत नीरोग । नवी कावड़ छींका नवा रे लाल, भार उपाड़वा जोग ।—जयवांणी

तरूनावत-संoस्त्रीo—घोड़े के कानों के पीछे होने वाली भौंरी जो अशुभ मानी जाती है (शा.हो.)

तरूयारि—देखो 'तरवार' (रू.भे.) उ०—खड्ग तणा खाटक, खेड़ा तणा भाटक । तरूयारि तणा भाटक ।—कां.दे.प्र.

तरे—देखो 'तरैं' (रू.भे.) उ०—१ घड़ियाल ची घड़ी मारैं तरे छीणी ठहकावै ।—चौबोली

उ०—२ पूछण री विरियां हुई, तरे लाज आई मन मांय ।

—जयवांणी

तरेपन—देखो 'तिरेपन' (रू.भे.) उ०—सेवै राज सत्रासै यकांवन साल पायौ, सत्रासै तरेपन सै'र सीकरी नै बसायौ ।—शि वं. .

तरेस-संoपुo [संo तरु+ईश] कल्पतरु, कल्पवृक्ष ।

तरैं-क्रिoविo—१ तब । उ०—राजा नूं दैत्यदमनी परणी जण री हौंस हुई छै, तरैं राजा दिलगीर हुवौ ।—पंचदंडी री वारता

विo—१ जैसा, समान, तुल्य । उ०—कणवारियौ आय बैठौ नै कंवर री तरैं हुकम चलावण लागौ ।—रातवासौ

२ देखो 'तरह' (रू.भे.) ज्यूं—विण तरवार हाथ में लीधी नें तरैं-तरैं रा हाथ बतावण लागौ (वो.स.टी.)

तरैदार-विo [अo तरह+फाo दार] १ होशियार, चतुर ।

उ०—केइ छळ सूं पिचरका कांन में नांखै छै, रसियौ तो छंदी, पिण वंदी भी तरैदार । पिचकार नै तो करणफूल सूं बचावै छै, पलटतां पहली डोलां री भड़कावै छै ।—पनां वीरमदे री वात

२ सजधज वाला, शौकीन, चतुर. ३ अच्छे ढंग का, सुन्दर, मनोहर ।

तरोवर, तरोहर-संoपुo [संo तरु+वर] १ कल्पवृक्ष ।

उ०—सूर सधीर सकज्ज तरोवर सारिखौ, पांण प्रमांणि संपेखि करै कवि पारिखौ ।—ल.पिं.

२ देखो 'तरु' (रू.भे.)

तळ-संoपुo [संo तल] १ नीचे का भाग, निम्न भाग. २ वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो यथा 'नभतळ' 'तरुतळ' ।

उ०—१ तळ पंथी गळ फूल फळ, सर पंछी न समाय । ओहिज हरियौ रूंखड़ौ, सूखौ ठूंठ कहाय ।—अज्ञात

उ०—२ भणके भालरियौ भूमरिया भटकै । लूंबी भौंगां री खूणी तळ लटकै ।—ऊ.का.

३ तला, पैंदा. ४ कूआ, कूप । उ०—महिला नीर भरण नै म्हाली, खारौ जळ ऊंडौ तळ खाली ।—ऊ.का.

५ आधीनता, मातहती । उ०—भागै सागै भांम, अम्रत लागै ऊंमरा । अकबर तळ आरांम, पेखै जहर प्रतापसी ।—दुरसौ आढ़ौ

६ जल के नीचे का भाग । उ०—लूआं भले न सांस ली, तळ में चीर चलाय ।—लू

७ पैर का तलुवा. ८ हथेली. ९ वस्तु का बाह्य फैलाव, धरातल, सतह. १० धनुष की प्रत्यंचा की रगड़ से बचाने के लिए बांई बांह पर बांधा जाने वाला चमड़े का एक पट्टा. ११ ताड़ का पेड़. १२ आधार, सहारा. १३ सप्त पातालों में से प्रथम. १४ एक नरक का नाम. १५ तलहटी, तराई । उ०—टीबै तो ओलै, अे लाडो बेटी, टीबड़ी, ज्यां तळ हाळीडै री खेत, बाबल नै कहियौ अे, हाळी नै बेटी क्यूं दई ?—लो.गी.

क्रिoविo—नीचे, पास । उ०—बांध्यौ भैंसौ बावळी, उण थाहर तळ आय । नाहर सो निरखै नयण, हियै अधिक हरखाय ।

—सिववगस पाल्हावत

तल—देखो 'तिल' (रू.भे.)

तळई—देखो 'तळै' (रू.भे.) उ०—मल्ल भाट सुरतांण पय, आयउ मंगण कज्जि । मुहुल तळई जइ द्वा करइ, जिहां खड़े असपति सज्जि ।

—प.च.चौ.

तलक-संoपुo—१ ऊंट के पांव द्वारा उत्पन्न ध्वनि विशेष ।

२ देखो 'तिलक' (रू.भे.) उ०—सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर । जनेऊ तलक तुळसी नरंजण जाय ।

—महाराजा जसवंतसिंघ प्रथम री गीत

स्त्रीo—३ इच्छा, चाह ।

क्रिoविo—तक, पर्यन्त । उ०—स्रावण री तीज सूं लगाय भादौं में जन्मास्टमी तलक बाहर ही नहीं नीसरणौ पावै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

तलकणौ, तलकवौ—देखो 'तलक्कणौ, तलक्कबौ' (रू.भे.)

तळका-संoपुo—चक्कर, फेरा, भ्रमण ।

तलकार-संoपुo—राजलोक, पौरलोक । उ०—आलविणिकार अलविकार कूटकार वंसकार यंत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुंगलकार ।—व.स.

तलक्कणौ, तलक्कबौ-क्रिoअo—शीघ्र भागना, रपट कर दौड़ना ।

उ०—तुरकांन तलक्किय हिंदु ललक्किय हूर हलक्किय हेरि वरं । करसेल भलक्किय ढाल ढलक्किय खाळ खळक्किय स्रोन भरं ।

—ल.रा.

तलग-क्रि०वि०—तक, पर्यन्त ।

तळगटी-सं०स्त्री०—चरसे के नीचे लगी लम्बी पट्टी के ऊपरी सिरे पर आड़ी लगाई जाने वाली एक पट्टी जिसमें चरसे की धुरी को सहारा देने के लिए दो लकड़ी की कीलियां लगी रहती हैं ।

तलगू-सं०स्त्री०—तैलंग देश की भाषा ।

तळघरो-सं०पु० [सं० तल+गृह] तहखाना ।

तळछट-सं०स्त्री०—पानी या इसी प्रकार के अन्य तरल पदार्थ के तले जमने वाला मैल ।

तळछणो, तळछबो-क्रि०स०—मारना, काटना, संहार करना ।

तळछियोड़ो-भू०का०कृ०—मारा हुआ, संहारा हुआ ।
(स्त्री० तळछियोड़ी)

तळणो, तळबो-क्रि०स०—१ खौलते हुए घी अथवा तेल में किसी पदार्थ को पकाना अथवा भूनना, तलना । उ०—तैंमें घणी नांन्ही छूनियो मांग मंदी आंच कढ़ाई में तळजे छै ।—रा.सा.सं.

२ कष्ट देना, सताना, तंग करना । ज्यूं०—गांव भांभी ठाकुर नूं जाय मिळियो नै अरज करी, आपरो कणवारियो मनै घणू तळियो ।

तळणहार, हारो (हारी), तळणियो—वि० ।

तळवाड़णो, तळवाड़बो, तळवाणो, तळवाबो, तळाववणो, तळाववबो, तळाड़णो, तळाड़बो, तळाणो, तळाबो, तळावणो, तळावबो—प्रे०रू०

तळिओड़ो, तळियोड़ो, तळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

तळीजणो, तळीजबो—कर्म वा० ।

तळतळणो, तळतळबो—देखो 'तळणो, तळबो' (रू.भे.)

उ०—तळत्तळि तोय तरो मनु तेल, लगे दुहुं ओर न तैं यह खेल ।
—ल.रा.

तळतळाट, तळतळाटो-सं०पु०—१ खौलने की क्रिया या भाव. २ कलह ।

तळतळो—१ कलह, झगड़ा. २ उद्वेग, चिन्ता ।

अल्पा०—तळतळी ।

तलप-सं०स्त्री० [सं० तल्प] १ शैय्या, चारपाई (अ.मा.)

उ०—तलप परहर अतुर चढ़ तुर चकर धर मग सधर संचर ।
—र.ज.प्र.

यौ०—तलपकीट ।

२ महिला, स्त्री (ह.नां.)

रू०भे०—तल्प ।

अल्पा०—तल्पिका ।

तलपकाउ-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)

तलपकीट-सं०पु० [सं० तल्पकीट] खटमल, मत्कुण ।

तळपट-सं०पु० [अ० तलफ+रा.प्र.ट] नाश, बरबाद ।

मुहा०—तळपट फेरणो—नाश करना, चौपट करना ।

तळफ-वि० [अ० तल्फ़] नष्ट, बरबाद ।

तळफणो, तळफबो-क्रि०अ०—देखो 'तड़फणो, तड़फबो' (रू.भे.)

उ०—१ बाबहिया निल पंखिया, मगरि ज काळी रेह । मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह ।—ढो.मा.

उ०—२ ऐसी लगन लगाय कहां तूं जासी । तुम देख्यां बिन कळ न पड़त है, तळफ तळफ जिय जासी ।—मीरां

तळफाणो, तळफाबो—देखो 'तड़फाणो, तड़फाबो' (रू.भे.)

उ०—चकवी निसपिउ सूं चहै रे लाल, त्यूं मुझ चित्त तळफाय हे सहेली ।—ध.व.ग्रं.

तळफी-सं०स्त्री० [अ० तलफ़ी] बरबादी, नाश, खराबी ।

तळपफणो, तळपफबो—देखो 'तड़फणो, तड़फबो' (रू.भे.)

उ०—बरक्खत पंच तते तनु अच्छ, तळपफत मीन मनो जळ तुच्छ ।
—ला.रा.

तळब-सं०स्त्री० [अ० तलब] १ खोज, तलाश ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

२ इच्छा, चाह, ख्वाहिश. ३ किसी नशीली वस्तु जिसके खाने की आदत हो, चाह ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

४ मांग, आवश्यकता ।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी ।

५ वेतन, तनख्वाह. ६ बुलावा, बुलाहट । उ०—झगड़ो लागो जिकां झूंपड़ां रगड़ो तळबां तणां रहै ।—बां.दा.

७ वह जागीर जिस पर सरकार से कर लगता हो ।

तळबगार-वि० [फा० तलबगार] १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला. २ मांगने वाला, याचना करने वाला. ३ बुलाने वाला ।

तळबजात-सं०स्त्री०—स्वयं अधिकारी का वेतन ।

तळबळाट, तळबळाटो-सं०पु०—व्याकुलता, बेचैनी, अधीरता ।

उ०—बेगम तौ देखत समांन भरतार धारचो, जीव तळबळाटा लेणा मांडिया ।—वी.दे.

क्रि०प्र०—करणो, मचणो, होणो ।

तळबांणो-सं०पु०—१ वह धन-राशि जो अदालत में गवाहों को बुलाने के लिए उनके सफर खर्च के रूप में जमा होती है. २ राजकीय तथा सरकारी रकम को जमा कराने की सूचनार्थ प्राप्त होने वाला सरकारी आदेश पत्र. ३ एक प्रकार का सरकारी कर जो प्रजा से वसूल किया जाता था ।

रू०भे०—तळवांणो ।

तळबियो-वि० [अ० तलब+रा.प्र. इयो] १ मांग करने वाला, मांगने वाला. २ चाह रखने वाला. ३ आदेशानुसार किसी को बुलाने जाने वाला. ४ रकम वसूली करने वाला ।

सं०पु०—सरकारी रकम वसूल करने के लिए नियुक्त किया गया कर्मचारी ।

तळबी-सं०स्त्री० [अ० तलबी] १ बुलाना, बुलाहट. २ मांग, आवश्यकता ।

तळमळ–सं०पु० [सं० तलमल] १ तरल पदार्थ में उसके तले जमने वाला मैल, तलछट, गाद।
सं०स्त्री०—२ तिलमिलाहट।

तळमळणौ, तळमळबौ, तळमळाणौ, तळमळाबौ–क्रि०अ०—तड़पना, बेचैन होना, तड़फड़ाना।
मुहा०—तळमळातौ फिरणौ—बेचैन घूमना।

तळमळयोड़ौ–भू०का०कृ०—तिलमिलाया हुआ।
(स्त्री० तळमळायोड़ी)

तळमळाहट—तड़फने का भाव या क्रिया, व्याकुलता, बेचैनी।

तळमीरोटी–सं०स्त्री०यौ०—वह परतदार रोटी जो तवे पर घी में सेकते हैं। तली हुई रोटी।

तलवर–सं०पु०—१ कोटवाल, नगर-रक्षक (व.स.) २ राजा द्वारा पट्टबंध से विभूषित सम्मान्य व्यक्ति (जैन)

तळवांणौ—देखो 'तळवांणौ' (रू.भे.)

तळवा–सं०पु०—बैलों के खुरों में होने वाला रोग।

तळवाईजणौ, तळवाईजबौ–क्रि०अ०—अधिक चलने से पैरों में विकार होना।
मि०—अकराईजणौ।

तलवार—देखो 'तरवार' (रू.भे.)

तळवौ–सं०पु० [सं० तल] १ पैर के नीचे का वह भाग जो खड़े होने या चलने पर जमीन पर लगता है। पैर के नीचे का वह हिस्सा जो एड़ी और पंजे के बीच में होता है, तलवा।
मुहा०—१ तळवां तणौ मेटणौ—नष्टभ्रष्ट करना, कुचलना.
२ तळवा ढूंगां रै लगाणा—खूब उछलना, उछल-कूद करना, भाग जाना. ३ तळवौ खुजाणौ—तलवे में खुजाल चलना, किसी यात्रा का शकुन मानना. ४ तळवौ चालणौ होणौ—अधिक चलने पर पैरों का शिथिल हो जाना, पैरों में कांटे लग जाना. ५ तळवा चाटणा—खूब खुशामद करना. ६ तळवौ धो'र पीणौ—अत्यन्त सेवा-सुश्रूषा करना।
२ जूते का तला।
रू०भे०—तळुऔ।

तळसारणौ, तळसारबौ–क्रि०स०—सजा देना, दण्ड देना ?
उ०—सो माधवसिहजी आछी तरह राखिया, सांभर री आधी ओपत दीवी अर धायभाई मेड़तियां सारां नू तळसारिया, मारिया और मनाइया।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

तळसीर–सं०पु०—जल की धारा जो भूमि से स्वतः निकलती हो, स्रोत, सोता। उ०—तठै अरजुन नूं कह्यौ 'अठै वडौ पांणी रौ कुंड तळसीर छै।—नैणसी

तळहटौ, तळहट्टी–सं०स्त्री० [सं० तल+घट्ट] १ कसी ऊंचे स्थान के तले की भूमि, नीचे का भाग। उ०—१ सो तळाव मोटौ इसौ ही पाळ ऊंची तिण री तळहटौ डेरा और तोपखांनौ सारौ तळाव ऊपर मांडियौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—२ रावजी रै साथ कंवर जोधोजी तळहटी रै डेरां रहै नै रावजी चीत्तौड़ ऊपरै फूल-महल तठै रहै।—राव रिणमल री वात
२ पहाड़ के नीचे की भूमि, पहाड़ की तराई।
उ०—विणजारै रै सदाई हुवै छै, इसौ वहांनौ करि चालतौ-चालतौ गिरनार री तळहटी पाबासर मांहे राजथांन छै तठै आय पड़ियौ।
—कहवाट सरवहिया री वात
३ अधीनस्थ भाग, अधिकार में रहने वाला भाग या भूमि।
उ०—अरु कई एक घोड़ा पांच सै सूं महेसदास मंडळावत चढ़िया, सू जाय जैसळमेर री तळहटी लूट खोस करी।—द.दा.
रू०भे०—तरहटी, तळहट्टी, तळैटी, तळैंटी, तळैंरी।

तळहासणौ, तळहासबौ—देखो 'तळासणौ, तळासबौ' (रू.भे.)
उ०—कांमदेव कटारउं बांधइ, वासुगि खाट पहरउ दिइ, कुळकि उपकुळिक पाय तळहासइं।—व.स.

तळावां–सं०पु०—एक प्रकार का सरकारी कर।

तळाई–सं०स्त्री०—१ छोटा ताल, तलैया, तालाब (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ढोला, हूं तुज बाहिरी, झीलण गइय तळाइ। ऊजळ काळा नाग जिउं, लहिरी ले ले खाइ।—ढो.मा.
२ तलने का भाव या इस कार्य की मजदूरी।
रू०भे०—तळायी।

तळाउ—देखो 'तळाव' (रू.भे.) उ०—कमकमौ गुलाब तैं कै पांणी तळाउ भरयौ छै।—वेलि.

तलाक–सं०स्त्री० [अ० तलाक] १ पति-पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद, पति-पत्नी का परस्पर विधानपूर्वक सम्बन्ध त्याग।
क्रि०प्र०—दैणौ।
२ त्याग. ३ प्रण, प्रतिज्ञा। उ०—तरै पातसाह कहण लागौ 'कांनड़ दे तौ म्हांनूं सांमौ डाकर दिखावै छै। नै पातसाह नूं तलाक छै जु वीच गढ़ मेळ विगर लीयां यूंही आधौ न जाय।—नैणसी
४ अवरोध, निषेध, रोक, मनाई। उ०—तिण ऊपरै रजपूत वैसै तिकौ इसड़ी आखड़ी पाळै, तिकौ इज बैसै नहीं तौ तलाक छै। गांव गांव रौ धणी पाटवी नै छै। और लोक नचंत बैठौ व्यापारी नचित वैसौ देसोत नै तलाक छै।—रा.सा.सं.

तलाकणौ, तलाकबौ–क्रि०स०—१ पति-पत्नी का परस्पर विधानपूर्वक सम्बन्ध विच्छेद करना. २ छोड़ना, त्यागना. ३ प्रण लेना, शपथ खाना।

तलाकियोड़ी–भू०का०कृ०—पति द्वारा छोड़ी हुई।

तलाकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पत्नी द्वारा छोड़ा हुआ. २ त्यागा हुआ. ३ प्रण किया हुआ।
(स्त्री० तलाकियोड़ी)

तलाची–सं०पु० [सं०] चटाई।

तळातळ–सं०पु० [सं० तलातल] सात पातालों में से एक पाताल का नाम। उ०—सर धून-धून दिगपाळ डरि, कसि कमठुनि पिट्ठि भर।

घर धुजि तळातळ तट्ठ वितळ, सेस सळसळ छड्डि धर ।—ला.रा.

तळाय—देखो 'तळाव' (रू.भे.)

तळाय—देखो 'तळाव' (रू.भे.) उ०—च्यारूं दिस कीरत रही, पीर तणी दिन छाय । जग में नीर तळाय सह, वणिया खीर तळाय ।
—वां.दा.

तळायो—देखो 'तळाई' (रू.भे.) उ०—डूंगरिया हरिया हुया, भरिया भरिया ताळ तळायो ।—लो.गी.

तलार-सं०पु०—१ नगर-रक्षक, कोटवाल ।
उ०—१ आसंगायत आवियो, तेहवें ते तलार । पायस भोजन पेखि ने, जिमवा करे जिवार ।—घ.व.ग्रं.
उ०—२ मह्ता भंडारी रसोई तलार, राजवैद्य गजवैद्य ज सार । दीवटिआ मुहबोला जेह, उचित बोला बइठा छइ तेह ।
—नळ-दवदंती रास
२ नगर-रक्षक (कोटवाल) के खर्चे के रूप में लिया जाने वाला कर ।
—नैणसी

तलारक्ष-सं०पु० [प्रा० तलवर] नगर-रक्षक, कोटवाल (व.स.)

तलारं-सं०स्त्री०—सेवा ? उ०—वैस्वानर वस्त्र पखाळइ, चामंडा तलारं करइ, विनायक गरद्दभ वारइ ।—व.स.

तलाल-सं०पु०—एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

तळाव-सं०पु० [सं० तड़ाग] वह लम्बा-चौड़ा गड्ढ़ा जिसमें वर्षा का पानी भरा रहता है, जलाशय, सरोवर, तालाव ।
पर्या०—कंधर, कासर, कासार, जीवांण, जोड़ो, तड़ाग, तळाव, ताग, ताळ, धरमसुभाव, नाडो, निवांण, नीरनिवास, पदमाकर, पयंद, पुस्कर, पोहकर, सर, सरवर, सरसी, सरोवर ।
मुहा०—तळाव पांणी रो सीर होणो—तालाव पानी का साझा होना अथात् किसी प्रकार का लेन-देन बाकी नहीं होना अत: भविष्य में सामान्य व्यवहार जारी रहना ।
रू०भे०—तळाउ, तळाव, तळाय, ताळाब ।
अल्पा०—तळाई, तळायी, तळावड़ी, तळावड़ो, तळावली ।

तळावड़ी—देखो 'तळाई' (अल्पा., रू.भे.) उ०—अहिलइं गयु अवतार इम, कांम कंदळा नारि । परवत सं'गि तळावड़ी, त्रिथा रहिउं जिम वारि ।—मा.कां.प्र.

तळावट-सं०स्त्री०—एक प्रकार का कर जो जागीरदार अपने गांव में विक्री की हुई वस्तु पर लेता था ।

तळावटियो-सं०पु०—तळावट नाम का कर वसूल करने वाला कर्मचारी ।

तळावरत-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (अशुभ) (शा.हो.)

तळावली—देखो 'तळाव' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—विकसित पंकज पांखड़ी, आंखड़ी ऊपम टाळि । ते विख सलिलि तळावळी, सा वलि पांपिणि पाळि ।—प्राचीन फागु-संग्रह

तळावो-सं०पु०—बैलगाड़ी के पहिये को धुरी पर स्थिर रखने के लिए पहिये के बाहर की ओर लगाया हुआ डंडा या काष्ठ का उपकरण जिसके एक सिरे में धुरी घुसी रहती है। ये दो होते हैं ।

तलास-सं०स्त्री० [तु० तलाश] १ खोज, अनुसंधान ।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी ।
मुहा०—तलास में रैंणी—खोज में रहना, फिराक में रहना ।
२ आवश्यकता, चाह ।

तळासणो, तळासबो-क्रि०स०—पैर चंपना ।
उ०—चित साळि पलियंक पउढणइ दक्षिण चीर, भलउ ओढणइ पाय तलासइ परणी नारि, अउर किसी से सरगह बारि ।—लो.गी.
रू०भे०—तळहासणो, तळहासबो, तळोसणो, तळोसबो ।

तलासणो, तलासबो-क्रि०स०—तलाश करना, खोजना, ढूंढ़ना.

तलासी-सं०स्त्री० [फा० तलाशी] किसी ग्रुम हुई वस्तु या छिपाई हुई वस्तु को ढूंढ़ने की क्रिया, तलाशी ।

तलिंग—देखो 'तैलंग' (रू.भे.) (व.स.)

तळि—देखो 'तळी' (रू.भे.) उ०—१ तदि हुवा हाजर तांम वड वडा खब वरियांम । तळि गोख ऊभा तांम सभ्रंत सुपह सलांम ।—सू.प्र.
उ०—२ ना हूं सींची सज्जणे, ना बूठउ अग्गाळि । मो तळि ढोलउ वहि गयउ, करहउ वांध्यउ डाळि ।—ढो.मा.
उ०—३ गिरि वेअड्ढह तळि गयउ, पणमिउ नाभि मल्हारु ।
—पं.पं.च.
उ० —४ वेउ खेलइं सरसि तळि सीतळ लाखारांमि । नीरंगु नेमि न भीजइ खीजइ नारि नांमि ।—नेमिनाथ फागु

तळिछणो, तळिछबो-क्रि०स०—१ संहार करना, मारना.
२ प्रहार करना ।
(मि० तड़छणो, तड़छबो)

तळिछियोड़ो-भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ. २ प्रहार किया हुआ ।
(स्त्री० तळिछियोड़ी)

तलिन-वि० [सं०] १ दुर्बल, क्षीण. २ थोड़ा, कम, अल्प.
३ साफ, स्वच्छ ।
सं०स्त्री०—शैय्या, पलंग ।

तळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ तला हुआ, घी, तेल आदि में भूना हुआ.
२ कष्ट दिया हुआ, सताया हुआ, तंग किया हुआ ।
(स्त्री० तळियोड़ी)

तळियो-सं०पु०—१ वह भू-क्षेत्र जो भवन निर्माण के लिए हो.
२ देखो 'तळो' (अल्पा., रू.भे.) देखो 'तळियोड़ो' (रू.भे.)

तळियो-तोरण-सं०पु०यौ० [सं० त्रिक+तोरण, प्रा० तिरिअ+तोरण] एक प्रकार का तोरण ।
उ०—राव कल्यांणमल अर सरब राजलोक दूल्ह-दुलहणि देखि दूणा रळियाइत हुआ । तळिया-तोरण वांध्या, हाट सिंगारी, पोळि सिंगारी, घरि-घरि गुडी ऊछाळी ।—द.वि.
वि०वि०—देखो 'तोरण' ।

रू०भे०—तळ्यौ-तोरण ।

तळींगण-सं०पु० [सं० तलेंगन] आग पर चढ़ाए जाने वाले वर्तनों पर कालिख से बचाने के लिए किया जाने वाला मिट्टी का लेप ।

तळी-सं०स्त्री० [सं० तल] १ किसी वस्तु के नीचे की सतह, पेंदी. २ जलाशय, गड्ढ़ा आदि का तल । उ०—तळी तळी में पापड़ियां, प्रगटी जोड़ां माय । जांणै लूग्रां कोरड़ां, दीन्ही खाल उडाय ।—लू. ३ जूते के नीचे की चमड़ी. ४ खलिहान का निचला भाग. ५ रहट की 'लाट' के दोनों सिरों के नीचे रखी जाने वाली चंद्राकार लोहे की पत्ती । इसके सहारे लाट सरलता से घूमती रहती है. ६ ऊंट के पैर के नीचे का तलुवा. ७ मकान के ऊपर की पक्की फर्श के नीचे का भाग, छत. ८ हथेली में किसी तरल पदार्थ को लेने के लिए बनाया जाने वाला गड्ढ़ा ।

मुहा०—तळी लैणी—हथेली में किसी वस्तु या औषधि का ग्रहण करना, हथेली की औषधि खा जाना ।

९ मोट के खाली होने के स्थान 'चाड' के नीचे जमाया हुआ पत्थर. १० तलहटी, तराई ।

क्रि०वि०—नीचे ।

रू०भे०—तळि, तल्ली ।

तळीकढ़-सं०पु०— बैठते समय पांव का तलुवा बाहर रखने वाला (ऊंट) (ऊंट का एक दोष विशेष)

तळुग्रौ—देखो 'तळवौ' (रू.भे.)

तळूंजी-सं०स्त्री०—पैंदा, तला ।

तळे—देखो 'तळै' (रू भे.) उ०—घड़ी दोय दिन थकां उण भाखरी तळे जाय ऊभा रहिया ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

तळेक्षण-सं०पु० [सं० तलेक्षण] शूकर, सूग्रर ।

तळेचौ-सं०पु०—१ द्वार की चौखट में नीचे फर्श पर रहने वाला काष्ठ का डंडा. २ इमारत में मेहराब के ऊपर और छत से नीचे रहने वाला भाग ।

रू०भे०—तळैचौ ।

तळेटी—देखो 'तळहटी' (रू.भे.) उ०—केसर चरुग्रां ऊकळै, कचमच मांच्यौ कीच । भरमल परणीजै तळेटियां, रिड़मल मेहलां बीच ।—लो.गी.

तळेम—देखो 'तसलीम' (रू.भे.)

तळै-क्रि०वि०—नीचे (विलो० ऊपर)

मुहा०—१ तळै ऊपर करणौ—एक पर एक रखना. २ तळै ऊपर रखणौ—एक के ऊपर एक कर तह से रखना ।

रू०भे०—तळइ, तळे ।

तळैचौ—देखो 'तळेचौ' (रू.भे.)

तळैटी—देखो 'तळहटी' (रू.भे.)

तळैम—देखो 'तसलीम' (रू.भे.)

तळैरी—देखो 'तळहटी' (रू.भे.) उ०—देवराज नूं घाट रै दहइयै मारियौ, पछै जैसळमेर सूं रावळ घड़सी केहर हमीर नूं तेड़ण नूं थाट मिनख मेलिया, आप तळैरी हुतौ, जसहड़ भाटियां आसकरण रा बेटां घोड़ै सवार घड़सी नूं झटकौ कियौ ।—बां.दा.ख्यात

तळोट-सं०पु०—घोड़े के अगले पैरों में 'फर' और घुटनों के बीच का अंग । उ०—तळोटा खुरां थंभ पावां तराजै, सकौ पिंड प्रासाद आधार साजै ।—वं.भा.

तळोदरी-सं०स्त्री० [सं० तलोदरी] स्त्री, भार्या ।

तळोदा-सं०स्त्री०—नदी, दरिया ।

तळोसणौ, तळोसबौ—देखो 'तळासणौ, तळासबौ' (रू.भे.)

उ०—तळोसै पग्ग नवै निध तुम्ह, मोटा सिध साधक जांणै अम्म ।—ह.र.

तळौ-सं०पु० [सं० तल] १ कुग्रा, कूप । उ०—१ जा भंवरी रोज न कर, भंवर मुवा न जांण । बाधा जे ही छूटसी, तळै चढंता भूण ।—र.रा.

उ०—२ 'नींवे' तळौ निकाळ्यौ नैड़ौ. जिण रौ आब नांव रै जैड़ौ ।—ऊ.का.

२ किसी वस्तु के नीचे की सतह, पेंदा ।

उ०—रांणाजी दुस्मन हाथ आया सो जांणै नहीं पावै, आज इहां रौ तळौ तोड़ देवौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ जूते के नीचे का चमड़ा ।

अल्पा०—तळियौ ।

तलौ-सं०पु०—१ छुटकारा, पृथकता, फारगती. २ संबंध ।

उ०—भगवन म्हारै तूं हिज साहिब भलौ, तूं किम लेखवै नहीय मोसुं तलौ । विरुद बारौ बिया चाल वीजौ चलौ, पूछस्यूं हुं पिण जाव पकड़ी पलौ ।—ध.व.ग्रं.

तलौ-बलौ-सं०पु०यौ०—रिश्ता, सम्बन्ध ।

तल्क-सं०पु० [सं०] वन, जंगल ।

तल्प—देखो 'तलप' (रू.भे.)

तल्पज-सं०पु० [सं०] क्षेत्रज पुत्र ।

तल्पिका—देखो 'तलप' (अल्पा., रू.भे.)

तळ्यौ-तोरण—देखो 'तळियौ-तोरण' (रू.भे.)

तल्ल-सं०पु० [सं०] १ बिल, गड्ढ़ा. २ ताल. ३ नाग ।

उ०—तेरह साख राठउड़ां तणी कहीजइ । तेह मांहे मोटउ स्त्री राठउड़ी रायां मांहे वड़उ राउ स्त्री सातळ, जिणइ मालविया सुरतांण तणउ दळ भांजी कीधउ तल्ल ।—जिनसमुद्र सूरि री वचनिका

तल्लड़-सं०पु०—लम्बा डंडा ।

मुहा०—तल्लड़ पड़णा = तल्लड़ चेपणा—डंडों की मार पड़ना.

तल्ली—देखो 'तळी' (रू.भे.)

तल्लीण, तल्लीन-वि०—तन्मय, मग्न । उ०—दह खट भूखण सारि करि, अनुभवि अठ्ठइ भोग । तनु भेळी तल्लीन थ्यां, स्वांमी विसि संयोग ।—मा.कां.प्र.

तव-सर्व [सं०] १ तेरा, तुम्हारा. २ देखो 'तव' (रू.भे.)

उ०—तव जादव वणराणिय लागिय रहिया पाणि ।—नेमिनाथ फागु

३ देखो 'तप' (रू.भे.) (जैन)

तवक्रिया-सं०स्त्री०—एक प्रकार की हरताल (अमरत)

तवक्षीर-सं०पु० [सं०] तवशीर, तीखुर ।

तवक्षीरी-सं०स्त्री० [सं०] कनकचूर लता की जड़ से निकलने वाला तीखुर । (तवक्षीर इसी तीखुर से बनता है)

तवड़पा-सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा ।

तवज्जा, तवज्जै-सं०स्त्री० [अ० तवज्जह] ध्यान, देख-भाल ।

क्रि०प्र०—देणी ।

तवणु—देखो 'तपण' (रू.भे.) उ०—तह वि न भीजइ मुणिपवरो तव वेस वोलावइ । तवणु तुल्ल तुह देह नाह मह तणु संतावइ ।

—प्राचीन फागु संग्रह

तवणो, तववो-क्रि०स० [सं० स्तवन] १ कहना, उच्चारण करना ।

उ०—मुणे ब्रह्म तोड़ै रखै लोपि मोनूं । तवै तास कोई न ह्वै घात तोनूं ।—सू.प्र.

२ वर्णन करना, विस्तारपूर्वक कहना, कथना ।

उ०—स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति, तारू कवण जु समुद्र तरै । पंखी कवण गयण लगि पहुंचै, कवण रंक करि मेरु करै ।

—वेलि.

३ स्तुति करना, प्रार्थना करना ।

४ देखो 'तपणो, तपवो' (रू.भे.) (जैन)

तव-तेण-वि० [सं० तपः+स्तेन] तपस्या का चोर (जैन)

तवन-सं०पु० [सं० स्तवन] स्तुति, प्रार्थना (जैन)

उ०—आप आप री उगत सूं, तीख रचै तवनांह । मात तणी महिमा कही, जैन वेद जवनांह ।—वां.दा.

तवर—देखो 'तवर' (रू.भे.)

तवलता-सं०स्त्री०—इलायची की लता (अ.मा.)

तवलबंध—देखो 'तवलबंध' (रू.भे.)

तवसमायारी-सं०स्त्री० [सं० तपः समाचारी] चार प्रकार के तप व उनका अनुष्ठान (जैन)

तवस्सी—देखो 'तपस्वी' (रू.भे.) (जैन)

तवह-सं०स्त्री०—बेल, वल्लरी (ह.नां.)

तवांनो—देखो 'तावांन' (रू.भे.)

तवाइफ—देखो 'तवायफ' (रू.भे.) उ०—आप जमीं ऊपर बैठतो, तवाइफां गावै थी ।—पदमसिंघ री वात

तवाखीर-सं०पु० [सं० त्वक्क्षीर त्वक्क्षीरी] वंशलोचन (अ.मा.)

तवायफ-सं०स्त्री० [अ० तवायफ] १ वेश्या, रंडी. २ नाचने गाने का व्यवसाय करने वालों की मंडली ।

रू०भे०—तवायफ, तवाइफ ।

तवारां-क्रि०वि०—उस समय, तब ।

तवारीख-सं०स्त्री० [अ०] इतिहास । उ०—तवारीख विलायत खुरसांण री में लिखियो छै ।—नी.प्र.

तविखि, तविसि-सं०पु० [सं० तविष] स्वर्ग (ह.नां.)

तवी-सं०स्त्री० [सं० तप+रा.प्र.ई] १ भट्टी पर औंधा रखा जाने वाला तवा. २ मिट्टी का बना छोटा तवा । उ०—खावण नै लायोड़ी बाजरी उण घणी ई मही पीसी पण कई वरसा री जूनी अर सू्ळयोड़ी खातर व्है जिसी होवण सूं उणरो सोगरो ई बणणो मुस्किल हो। तवा पर नांखतां-नांखतां सोगरा रा टुकड़ा-टुकड़ा व्है जावता ।—रातवासो

३ कढ़ाई के आकार का लोहे का पात्र जिसका तल समतल होता है।

तवोकम्म-सं०पु० [सं० तपः कर्मन्] तपकर्म, तपोनुष्ठान (जैन)

तवोधण—देखो 'तपोधन' रू.भे.)

तवो-सं०पु० [सं० तपः] लोहे की मोटी चद्दर का एक गोल पात्र जिसका तल छिछला होता है जो रोटी सेंकने के काम आता है ।

क्रि०प्र०—चढ़ाणो, तपणो, मेलणो ।

मुहा०—१ तवा जैड़ो मूंडो होणो—तवे के समान काला मुंह होना, अधिक लज्जित होना, क्षुब्ध होना, दुखी होना, कृश होना. २ तवा री छांट होणो—तवे की बूंद होना, प्रभावहीन होना, कुछ भी प्रभाव न पड़ना. ३ तवो हंसणो—तवे की कालिख का ज्यादा लाल होकर चमकना । (यह घर में कलह या किसी महमान के आगमन का संकेत करता है (अंध विश्वास)

कहा०—१ तवै की काची नै सासरै की भाजी नै कठैई ठोड़ कोनी—तवे पर कच्ची रहने वाली रोटी तथा ससुराल से भाग जाने वाली स्त्री को कहीं ठौर-ठिकाना नहीं रहता. २ तवो हांडी नै काळी बतावै—तवा जो स्वयं काला है, हांडी को अपने से अधिक काली बताता है । उस व्यक्ति के लिए जो स्वयं दोषी होकर दूसरों के दोषों की निन्दा करता है ।

२ मिट्टी या खपड़े का गोल ठीकरा जिसे चिलम पीते समय चिलम की आग को इधर-उधर गिरने से बचाने के लिए उस पर रखा जाता है। यह चिलम के अन्दर तमाखू के नीचे भी रखा जाता है । यह आकार में छोटा होता है. ३ युद्ध के समय योद्धा के वक्षस्थल या पीठ पर कसा जाने वाला लोहे की मोटी चद्दर का एक उपकरण ।

उ०—पथलोळ बरतां सार सांकळां वड़कै । तवा भीड़ पाखरां जंगी चाह वजड़कै ।—बखतो खिड़ियो

मुहा०—तवो बांधणो—१ युद्ध के लिए तैयार होना. २ आफत अपने ऊपर लेना ।

४ भाल या ललाट के मध्य का भाग । उ०—१ किसाहेक घोड़ा छै ?······उर ढाल ऐसा, कूकड़ कंध तैसा, आंख पांणी मोती, तवा लिलाड़ का बैठा नवां ।—रा.सा.सं.

उ०—२ मिळै मोहरां चोहरां पति मोती, कळा करतरी जीत पावै कनौती, दिपै भाळ बैठा तवां जेब देता, लसै गल्ल की आब भा नैण लेता ।—वं.भा.

५ रण के समय हाथियों के मस्तक पर बांधा जाने वाला लोहे का

एक उपकरण। यह ढाल से मिलता-जुलता होता है।
उ०—जद आप तीर री हाथी रा सिर मांहि दीन्हीं तौ सिर री तवौ भांजि तीर कारगर हुवौ।—ठा. जैतसिंघ री वारता

६ बखतर का ऊपरी कड़ा भाग। उ०—बगतरां रा तवा फोड़-फोड़ पूठी परा अणीआळा अणी नीसरै छै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—तावौ।

तस-सं०पु०—१ हाथ, हस्त। उ०—सामरथ भीभीखण रंक राखै सरणा। तसां आपण सुदन लंक तेहा रजवट्ट रखवणा।—र.ज.प्र.

रू०भे०—तसस, तसीस।

[सं० त्रस] २ द्वीन्द्रियादि प्राणी। उ०—आकास वायु दग प्रिथ्वी तस, थावर जीव होय।—जयवांणी

सं०स्त्री० [सं० तर्ष:] ३ प्यास. ४ इच्छा।

सर्व० [सं० तद् = तस्य] उस। उ०—तिथि दसम सुभ दिन तोम। मिळ वार तस सुभ सोम।—रा.रू.

क्रिoवि०—तैसे-वैसे। उ०—तिरगे हम ज्यूं तस ओर तिरै। फिरगे हम ज्यूं अस और फिरै।—ऊ.का.

तसकर—देखो 'तस्कर' (रू.भे.) उ०—काया नगर मझार पंच तसकर पवीजै। कांम क्रोध मद मछर, कुबुध ममता काढ़ीजै।—जग्गौ खिड़ियौ

तसटा-सं०पु० [सं० तष्टा] १ वस्तु को छील-छाल कर गढ़ने वाला, विश्वकर्मा. २ एक आदित्य का नाम।

तसटौ—देखो 'तसळौ' (रू.भे.)

तसणा—देखो 'त्रसणा' (रू.भे.)

तसतरी-सं०स्त्री० [फा० तश्तरी] थाली के आकार का बहुत छिछला छोटा पात्र, रिकाव।

तसतूंबौ-सं०पु०—इन्द्रायन का फल।

रू०भे०—तुंउड़ौ, तड़तूंबौ।

अल्पा०—तसतूंबियौ।

मह०—तसतूंब, तसतूंबीड़।

तसदीक-सं०स्त्री० [अ० तस्दीक] १ प्रमाण द्वारा की गई पुष्टि, प्रामाणिकता, सचाई. २ समर्थन।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

३ गवाही।

रू०भे०—तस्दीक।

तसदीह-सं०स्त्री०—दर्द, पीड़ा, कष्ट।

तसफियौ-सं०पु० [अ०+तस्फिय:] फैसला, निर्णय।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

तसबी—देखो 'तसबीह' (रू.भे.) उ०—१ सू अमीपाळ साह दोइ माळा पहिरै—गळै में एक तुळछी-री माळा, एक तसबी।
—अमीपाळ साह री वात

उ०—२ परदारा सूं फंस भी जावै, हंस भी जावै हेर। कांम पड़ै तव नस भी काटै, फेरै तसबी फेर।—ऊ.का.

तसबीर—देखो 'तसवीर' (रू.भे.) उ०—पांणी नह पाऊं रे प्यारा, सैनांणी न सरीर। कांणी कहै चितारा कोभी, तैं आंणी तसबीर।
—ऊ.का.

तसबीह, तसब्बी-सं०स्त्री० [अ० तस्बीह] माला, जपमाला।

उ०—१ दादू काया महल में नमाज गुजारू, तहं और न आवन पावै। मन मणके कर तसबीह फेरू, तब साहिब के मन आवै।
—दादू बांणी

उ०—२ कै तुम किल्ले तोरियौ, कै मरियौ सब्बी। देखौ नब्बी क्या करै, कर नाख तसब्बी।—ला.रा.

रू०भे०—तसबी।

तसमात-क्रि०वि० [सं० तस्मात्] इसलिए। उ०—रहणा नहीं निदांन अकेला जाइए, हरिहां जन हरिदास तसमात निरंजन गाइए।
—ह.पु.वा.

तसमौ-सं०पु० [फा० तस्म:] चमड़े का डोरी के आकार का कुछ चौड़ा फीता जो वस्तु आदि को बांधने या कसने के काम में आता हो, कस्सा, तसमा।

क्रि०प्र०—कसणौ, खींचणौ, बांधणौ।

तसरीफ-सं०स्त्री० [अ० तशरीफ़] १ इज्जत. २ बड़प्पन. ३ महत्व।

तसळियौ-सं०पु०—मित्र, दोस्त, साथी।

तसळी-सं०स्त्री०—१ छोटा तसला. २ मित्र-मण्डली।

तसळीम-सं०स्त्री० [अ० तस्लीम] १ प्रणाम, अभिवादन, सलाम।

उ०—१ आय नै राव जोधै नूं तसळीम कीधी।
—दूदै जोधावत री वात

उ०—२ तरै देवराज कह्यौ, मैं कदै थां कनां धरती मांगी थी। थे थांरी उचित सूं मोनूं तसळीम कराई थी। हमैं तौ म्हांरौ थांरौ ना कह्यौ भलौ न दीसै।—नैणसी

रू०भे०—तळेम, तळैम।

तसळौ-सं०पु० [फा० तश्त+रा.प्र. ळौ] १ कटोरे के आकार का परंतु उससे बड़ा व गहरा पात्र जो लोहे, पीतल, तांबे आदि का बनता है।

रू०भे०—तसटौ।

[सं० त्रि+रा.सळ] २ भाल पर पड़ने वाली तीन सिलवटें।

उ०—दुरत निलै तसळै वळ दीधौ। कमधज धनख टंकारव कीधौ।
— सू.प्र.

तसल्ली-सं०स्त्री० [अ०] धैर्य, धीरज, सान्त्वना, ढाढ़स।

मुहा०—तसल्ली देणी—सान्त्वना देना, धैर्य बंधाना।

तसवीर-सं०स्त्री० [अ० तस्वीर] किसी कागज, पटरी आदि पर किसी वस्तु की बनी हुई आकृति या किसी वस्तु व्यक्ति आदि का चित्र।

उ०—होस उडै फाटै हियौ, पड़ै तमाळा आय। देखै जुध तसवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय।—बां.दा.

क्रि०प्र०—उतारणी, खींचणी, बणाणी, लगाणी।

मुहा०—१ तसवीर उतारणी—चित्र बनाना, खर्च कराना.

२ तसवीर बणणी—चित्रलिखित-सा रहना, चित्रवत बन जाना।

रू०भे०—तसबीर, तस्वीर।

तमस—देखो 'तम' (१) (रू.भे.) उ०—हरख रण खेल लागां वसंत होळियां, पचारे धांन दुगहां दरट पोळियां। तमस मूछां दियां आभ भुंज तोलियां, बोलवाला कियां कूंत भकबोळिया—मेघजी मेहड़ू

तसां—क्रि०वि०—उसी ओर, उसी दिशा में, उसी तरफ।

तसियो—सं०पु०—१ संकट, कष्ट। उ०—पाछे भाटियां रै गढ़ में गामान खूटो अर पूरो तसियो हुवो।—द.दा.
२ छेह, अन्त।
मुहा०—तसियो लेणो—अन्त लेना, छेह लेना।
वि०—१ प्यासा, तृषातुर. २ लालची, लोभी।
उ०—नित रोगी बहु नींद, रंग वातां रो रसियो। रांमत में मन रहै, ताकल्यें सह रो तसियो।—ध.व.ग्रं.

तसीस— देखो 'तस' (१) (रू.भे.) उ०—असीलां रसी रेहियां हाथ आंणै। तसीसां करै जोस कावांण तांणै।—सू.प्र.

तसु-सर्व० [सं० तद्] १ उस। उ०—जोतां नवरस एणि जुगि, सवि हूं धुरि सिणगार। रागइं सुर-नर रंजियइ, अबळा तसु आधार।
—ढो.मा.
२ उसके, अपने। उ०—नितंवणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रुख। जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयण वाखांणै विदुख।—वेलि.

तसू-सं०पु०—लम्बाई का एक माप, इमारती गज का २४वां भाग।

तसो-सर्व०—तैसा, वैसा। उ०—मेच सगां रहै किम मीडां, तोलै उड उडियंद तसा। सीसोदिया तुहाळी समवड, कीजै जे भूपाळ कसा।
—ओपो आढ़ो

तस्कर-सं०पु० [सं०] चोर, दस्यु। उ०—१ अवधू सतगुरु सवद सहि गति आयुध, तस्कर मारि मनावै। आसण अचळ तहां मन निहचळ, निरभै वस्त बतावै।—ह.पु.वा.
उ०—२ तस्कर लेइ न पावक जाळै, प्रेम न छूटै रे। चहुं दिसि पसरा विन रखवाळै, चोर न लूटै रे।—दादू वांणी
रू०भे०—तसकर, तसगर।

तस्करता-सं०स्त्री० [सं०] चोरी का कर्म, चोरी।

तस्करस्नायु-सं०पु० [सं०] काकनासा लता।

तस्करी-सं०स्त्री० [सं०] १ चोरी. २ चोर की स्त्री. ३ वह स्त्री जो चोर हो।

तस्गर—देखो 'तस्कर' (रू.भे.)

तस्दीक—देखो 'तसदीक' (रू.भे.)

तस्वीर—देखो 'तसवीर' (रू.भे.)

तहं, तह-क्रि०वि०—तहां, वहां। उ०—जहां सुरति तहं जीव है, आदि अंत अस्थांन। माया ब्रह्म जहं राखिये, दादू तहं विस्रांम।—दादू वांणी
सर्व०—वह, उस।
अव्य०—तथा। उ०—तेहि न रोगो दोहग्गु तहु, तह मंगळ कल्लांणु।—ऐ.जै.का.सं.
सं०स्त्री०—१ चेतना, यथार्थ ज्ञान। उ०—मन पंगु थियो सहु सेन मूरछित, तह नह रही संपेखतै। किरि नीपायो तदि त्रिकुटी ए, मठ पूतळी पाखांण में।—वेलि.
देखो 'तै' (रू.भे.)

तहक—देखो 'त्रहक' (रू.भे.) उ०—बहक भाजै असुर बंका, डहक बंबी सुणै डंका, तहक बाजै तूर।—र.रू.

तहकणो, तहकबो-क्रि०अ०—१ चलना। उ०—दिस लंक अंगद आद द्वादस, तहकिया तेखी। इक अरण सो बिच त्रिसा आतुर, दरि द्रग देखी।—र.रू.
२ नगाड़े का बजना. ३ भयभीत होना। उ०—द्रढ़ प्रताप आठूं दिसा पसरै अवनी पर, हितू कमळ फूलै विहद, भात चक्र हणभर। निस अनीत कहु लेस न, तहकै दुख तीमर, सूरज कुळ सूरज तपै, बड तेत सियावर।—र.रू.
तहकणहार, हारो (हारी), तहकणियो—वि०।
तहकवाड़णो, तहकवाड़बो, तहकवाणो, तहकवाबो, तहकवावणो, तहकवावबो—प्रे०रू०।
तहकाड़णो, तहकाड़बो, तहकाणो, तहकाबो, तहकावणो, तहकावबो
—क्रि०स०।
तहकिओड़ो, तहकियोड़ो, तहक्योड़ो—भू०का०कृ०।
तहकीजणो, तहकीजबो—भाव वा०।
त्रहकणो, त्रहकबो—रू०भे०।

तहकाणो, तहकाबो, तहकावणो, तहकावबो-क्रि०स०—१ चलाना.
२ भयभीत करना. २ नगाड़ा बजाना।

तहकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ चला हुआ. २ भयभीत हुवा हुआ.
३ बजा हुआ (नगारा)
(स्त्री० तहकियोड़ी)

तहकीक-सं०स्त्री० [अ० तहकीक़] १ सत्य, यथार्थता।
उ०—१ बादसाह नूं चाहिए कांम करै तिण में रजावंदी प्रभु री चाहै। मन री चाही न करै। तहकीक में सारी गरज सूं प्रभु री रजावंदी ऊपजै।—नी.प्र.
उ०—२ जे उवा डाहळी टूटै तौ तहकीक धरती ऊपर पड़ै।—नी.प्र.
२ जांच-पड़ताल, सच्चाई की खोज, अन्वेषण।
रू०भे०—तहतीक, तैंकीक।

तहकीकत, तहकीकात-सं०स्त्री० [अ० तहकीक़ात] किसी घटना या विषय के सम्बन्ध में ठीक-ठीक खोज, अन्वेषण, जांच-पड़ताल।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।
मुहा०—१ तहकीकात आणी—किसी घटना आदि के सम्बन्ध में जांच-पड़ताल करने पुलिस अफसर आदि का आना. २ तहकीकात करणी—किसी मामले की खोज-बीन करना।
रू०भे०—तैंकीकत, तैंकीकात, तैंकीगात।

तहखांनो-सं०पु० [फा० तहख़ाना] मकान के अन्दर भूमि में नीचे बना हुआ कोठा या कमरा, तलगृह।
रू०भे०—तेहखांनो, तैखांनो।

तहड़-सं०स्त्री०— उ०—सहर सूं कोस पूण री तहड़ कूण में गांगड़ी नदी छै।—नैणसी

तहजीब-सं०स्त्री० [अ० तहज़ीब] शिष्टता, सभ्यता।

तहत—देखो 'तहत्त' (रू.भे.) उ०—ओळयां पाधरी लिखणी, जद हेमजी स्वांमी बोल्या, तहत स्वांमीनाथ।—भि.द्र.

तहतावणौ, तहतावबौ-क्रि०स०—आग्रह करना, अनुरोध करना, हठ करना।

तहतीक—देखो 'तहकीक' (रू.भे.) उ०—कही विध हुवै तहतीक बरखां कणां, वळै परसे अरस कहे किण वार। तोय घर कदाचित पार लंघै तउ, प्रभू गुण ताहरा न लाभै पार।—र.रू.

तहत्त-सं०पु०—तथ्य, सत्य। उ०—बिस्सा हाथ आवै नहीं, मिस्सा जीव रहत्त। जीव-सहित ते योगसा, स्री जिनवांणी तहत्त।—जयवांणी

तहत्ति-अव्य० [सं० तथेति] ठीक है, ऐसा, तथेति।

उ०—हियडइ हरख थयउ घणउ रे, सुणियउ सुपन विचार। तहत्ति करी उठि तदा रे, पहुंती भुवन मंझार।—ऐ.जै.का.सं.

वि०—सत्य, यथार्थ, तथ्य। उ०—भला अठांणुं भेदसौ, बोल्या अलप बहुत्त। जिण में भमियौ जीवणौ, ते सहु वात तहत्ति।—ध.व.ग्रं.

तहदरज-वि० [फा० तहदरज़] जिसकी तह या पड़त न खुली हो, तहबंध।

तहनाळ-सं०पु०—तलवार के म्यान पर नीचे के भाग पर लगाया जाने वाला सोने अथवा चाँदी आदि का बन्धन। उ०—इण भांत री तरवार, घणौ ककड़ै गोनीआ सांबर मां लपेटी थकी तहनाळ, मुंहनाळ, कड़ी, कुरसी समेत नकसी मंढ़ि उवां राजावां रै हाथ री।—रा.सा.सं.

२ तलवार के नीचे का भाग।

रू०भे०—तेनाळ, तैनाळ।

तहपेच-सं०पु० [फा०] शिर पर बांधी जाने वाली पगड़ी के नीचे का कपड़ा।

तहबंद—देखो 'तहमद' (रू.भे.)

तहमत, तहमद, तहमद्द-सं०पु० [फा० तहबन्द] धड़ के नीचे के अंग को ढंकने के लिए बिना लांग के लटकता हुआ बांधा जाने वाला पुरुषों का वस्त्र विशेष।

तहमल-सं०पु० [अ० तहम्मुल] धैर्य, सब्र, सहिष्णुता।

उ०—बीजे ठाकुरे वात विचारि अर राव भोज मेलियौ। कहाड़ियौ जु राजि पातिसाहजी सलांमति रावळी साथ आइ आपड़ियौ छै। पर पहुंचण दीजै। पातिसाहजी तितरै तहमल कीजै।—द.वि.

तहमूर-सं०पु०—तैमूरलंग।

तहरउ-सर्व०—तेरा, तुम्हारा।

तहरि-सर्व०—तुझको, तुमको।

तहरीर-सं०स्त्री० [अ०] १ लिखा हुआ मजमून, लिखित बात का आदेश. २ लिखावट, लेख, शैली. ३ लिखित प्रमाण. ४ लिखने का मेहनताना।

तहळकौ-सं०पु० [अ० तहल्कः] १ हंगामा, भगदड़, खलबली, विप्लव।

क्रि०प्र०—मचणौ, मचाणौ।

२ बरबादी, नाश।

क्रि०प्र०—मचणौ, मचाणौ, होणौ।

३ मौत, मृत्यु, मारकाट।

तहवि—देखो 'तथापि' (रू.भे.) (जैन)

तहवील-सं०स्त्री० [अ०] १ धरोहर, अमानत. २ किसी मद विशेष की आमदनी जो किसी के पास जमा हो. ३ खजाना, कोष।

तहवीलदार-सं०पु० [अ० तहवील+फा० दार] वह व्यक्ति जिसके पास किसी मद का धन जमा हो, कोषाध्यक्ष, खजान्ची।

तहस-नहस, तहस-महस-वि०यौ०—नष्ट, बरबाद, ध्वस्त।

उ०—करि तहस-महसां केक, असपत्ति सहर अनेक। महि साह सहरां मोड़, ठहराव सोबा ठौड़।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

तहसील-सं०स्त्री० [अ०] १ वह आमदनी जो भूमि के लगान के रूप में एकत्रित की जाती है. २ जिले का एक भाग जो तहसीलदार के आधीन रहता है, परगना. ३ इस भाग का कार्यालय जहाँ तहसीलदार कार्य करता है।

रू०भे०—तैंसील।

तहसीलदार-सं०पु० [अ० तहसील+फा० दार] वह सरकारी कर्मचारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा मालगुजारी वसूल कराता है, तहसील का अधिकारी।

रू०भे०—तैंसीलदार।

तहसीलदारी-सं०स्त्री०—तहसील का कार्य या पद।

तहाँ-क्रि०वि०—उस स्थान पर, वहाँ। उ०—दादू भावै तहां छिपाइयै, साच न छांना होइ। सेस रसातळ गगन धू, परकट कहियै सोइ।

तहारत-सं०पु०—१ शौच-स्थान, शौचालय। उ०—बारी रै नीचै तळझाड़ तहारत बण्यो छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—तारत।

यौ०—तहारतखांनौ।

२ शुद्धता, पवित्रता।

तहावि—देखो 'तथापि' (रू.भे.) (जैन)

तहिं, तहि-क्रि०वि०—१ तब, तो। उ०—अे त्रहूं वै मैं वात उचारी, तहि हवि तूझ रीझ इकतारी।—सू.प्र.

२ वहां। उ०—१ अतिरथि सारथि तहिं वसए राय तणइ घरि-सूत्तु। राधा नांमहिं तसु घरणि करणु भणुं तसु पुत्तु।—पं.पं.च.

उ०—२ कुंती जळ विणू तूंछीइ, तहि हिडंब जळु लेउ आवइ।
—पं.पं.च.

तहीम-सर्व०—तुम्हारा।

तहु-सर्व०—उस। उ०—तेहिं न रोगो दोहग्गु तहु, तह मंगळ कल्लांणु।
—ऐ.जै.का.सं.

तह्मौ-सर्व०—तुम। उ०—ते जोतां तह्मौ सा दूखिया? जु नि, धीरय आंणु। करम तणि वसि सघळा प्रांणी, एहवूं अंतरि जांणु।
—नळाख्यांन

तां-सर्व०—उन। उ०—१ ताहरां वटा नीसांण पड़ीया, तां उपरि राजा भोज एक डंको दीयो।—चौबोली

उ०—२ प्रमुर मार तूं आतमा, निमो तुम्हारा नांम। मारै तां समर्थ मुगति, राकस तारै रांम।—पी.ग्रं.

क्रि०वि०—१ तब तक। उ०—साहां उर अगुहावतो, राजावां रख-वाळ। जां जगराज प्रतप्पियो, तां सुर पूज अकाळ।—रा.रू.

उ०—२ जां जीविया तां सीमफड़ीस अर पगाखो छाछ पातळी री आरोगता।—द.वि.

२ तब। उ०—सज्जण अळगा तां लगइ, जां लग नयणे दिट्ठ। जब नयणां हूं बीछुड़े, तब उर मंझ पइट्ठ।—ढो.मा.

३ वहां, तहां।

अव्य०—१ तो। उ०—त्याहार पछी तूं नि तां अ[रजुन] साहाय्य सो जगदीस। एक थई दुरयोधन ऊ[पर] ऊतारज्यो सवि रीस।
—पं.पं.च.

२ देखो 'ता' (रू.भे.)

ताई-अव्य० [सं० तावत्] १ तक, पर्यंत। उ०—वडी वेढ़ हुई भीक पटी। वीगै दिन बेपोहर ताई वेढ़ हुई।—नैणसी

२ वास्ते, निमित्त, लिए। उ०—तद इहां अरज कीवी ओर खरची हम आय कर लेंगे. रुपया तीन सौ हमारे ताई अब दिरावो।
—दूलची जोइये री वारता

३ पास, समीप। उ०—मोनू एक वार रांणै ताई जावणै देवो जे रांणाजी म्हारी अरज मांनसे तो थांनू बुलाय लेयसे।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सर्व०—१ उस। उ०—महा कंकाळी बडी अविद्या, दसूं दिसा में छाई। वहु विध नाच नचावै माया, किस विध जीते ताई।
—स्री सुखरांमजी महाराज

२ देखो 'ताइ' (रू.भे.) ३ देखो 'ताईं' (रू.भे.)

ताउ-क्रि०वि०—ताउ। उ०—जांउ जागइ तांउ मागइ।—व.स.

तांग-सं०स्त्री०—एक प्रकार का बहुत पतला व विषैला सांप जो प्रायः पैरों में लिपट जाया करता है।

तांगड़-सं०पु०—१ वह रस्सा जो ऊंट से हल जोतते समय हल के लम्बे डंडे (हरिसा) से बांध कर ऊंट के गले में बांधा जाता है. २ हाथी को बांधने का लम्बा और मोटा रस्सा। उ०—इण वात नूं गिवार लोक जांणै कै कंवरजी हाथियां रो तांगड़ करायो है नै तांगड़ हाथ असी री लांबो छै।—द.दा.

३ एक पैर पर दौड़ कर खेला जाने वाला एक देशी खेल।

रू०भे०—तंगड़।

तांगलो-सं०पु०—एक छोटा सिक्का। उ०—ताकै की भड़ तांगळा, निख नाप न नह तोल। मूंघी घर मोलावणी, माथो समपो मोल।
—रेवतसिंह भाटी

(मि० घींगलो)

तांगी-सं०स्त्री० [सं० तंग या त्वंग] १ पैरों से लड़खड़ाते हुए चलने का कार्य, लड़खड़ाहट. २ एक देशी खेल।

तांगो-सं०पु०—१ एक प्रकार की दो पहियों की गाड़ी जिसमें एक घोडा जोता जाता है, इक्का या एक्का. २ एक देशी सवारी की गाड़ी जो बैलों द्वारा चलाई जाती है।

रू०भे०—धांगो।

३ असफल यात्रा, चक्कर।

क्रि०प्र०—काडणो, पड़णो, होणो।

४ अधिक या लम्बी दूरी तक परिभ्रमण करने से उत्पन्न होने वाली थकान, थकावट।

तांजो-सर्व० (स्त्री० तांजी) तुम्हारा, तेरा। उ०—समर सगतपुर मंडोवर छतर धर समोसर, तकर कर बजर वर धजर तांजो। ऊसर वगतर ऊग्रर वीर सांसर अतर, 'गंग' हर कळोधर कहर गांजो।
—वखतो खिड़ियो

तांड-सं०पु०—१ धधकता हुआ अग्नि-कण, बड़ी चिनगारी. २ संतान, पुत्र। [सं० तांडव] ३ नृत्य, नाच. ४ बैल या सांड की दहाड़। [सं० तुण्डकम्] ५ मुख, थूथन। उ०—तांड ऊपाड़िउ घालिउ पाइ, पूछिउं कुसलु युधिस्टिरि राइ।—पं.पं.च.

तांडणो, तांडबो-क्रि०अ०—१ बैल या सांड का जोश के साथ ध्वनि करना। उ०—वडै भार जूपै वहै, करै न खांचा तांण। जद तू तांडै धवळ जिम, तो तांडणो प्रमांण।—बां.दा.

२ गरजना। उ०—धमळ विभन्नो धुर तजै, देख दुमन्नो साथ। उण वेळा तांडै 'अजो' मूंछां घालै हाथ।—रा.रू.

३ दहाड़ना. ४ नृत्य करना, नाचना।

तांडळ-सं०पु०—१ बड़ा, दीर्घकाय सर्प. २ देखो 'तंडळ' (रू.भे.) ३ देखो 'तंदुळ' (रू.भे.)

तांडव-सं०पु० [सं०] १ पुरुषों का नाच. २ शिव का एक नृत्य विशेष।

रू०भे०—तंडव, तंडवि, तंडेव।

३ तीनों लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम (डिं.को.)

तांडवी-सं०पु० [सं०] संगीत के चौदह तालों में से एक।

तांडि-सं०पु० [सं०] नृत्य शास्त्र (तंडि मुनि का निकाला हुआ)

तांडियोड़ो-भू०का०कृ०—१ जोश के साथ आवाज किया हुआ (बैल या सांड) २ गरजा हुआ, दहाड़ा हुआ।

(स्त्री० तांडियोड़ी)

तांडी-सं०पु० [सं० तांडिन्] १ सामवेद की तांड्य शाखा का अध्ययन करने वाला. २ यजुर्वेद का एक कल्प सूत्रकार

[रा०] भील नामक जाति (व्यंग)

(मि० कांडी)

तांडीर-सं०पु०—बड़ा कृष्ण सर्प।

तांडीस-सं०पु० [सं० तांड] नृत्य, नाच। उ०—जागी जुनाळी तोपखांनां वाळी जुझाळ, नीधसै जांगी ताळी प्रेतकाळी खुले कपाळी तांडीस। वां आळी आवतां पैलरै हलै अबी हारी, 'पातला' सीह री वागी कराळी पांडीस।—जवांनजी आढ़ो

ण्डौ-सं०पु०—१ झुंड, समूह. २ गांवों में पानी पीने के कुए के पास का खुला मैदान. ३ फौज में तंबू आदि का सामान. ४ अंगारा, अग्नि-कण ४ वनजारे के बैलों का वह समूह जिन पर माल का लदान कर व्यापार के लिए ले जाता है।

तांण-सं०स्त्री० [सं० तनु=विस्तारे] १ दवाव, शक्ति. २ खिचाव, तनाव. ३ विवाद, जिद्द, झोड़, हठ। उ०—१ गुणवंत री निंदा करी, अंवळा किया रे वखांण। क्रिया पात्र रै साध सूं, उलटी मांडी रे तांण।—जयवांणी

उ०—२ मोसूं तांण मती करौ रे लाल, कह्यौ इम कोटवाळ। —घ.व.ग्रं.

४ खींचतान।

यौ०—तांणातांण, तांणातांणी।

५ वात रोग से होने वाली ऐंठन. ६ एक विशेष प्रकार की पत्थरों या ईंटों द्वारा की जाने वाली जुड़ाई जिससे विना घरन के मकान की छत रह सकती है (जयपुर)

[मि० लदाव (३)]

७ गर्व, अहंकार (अ.मा.) ८ लोहे की छड़ का वह टुकड़ा जो मजवूती के लिए पलंग के पायों तथा हौदे में लगाया जाता है।

तांणणौ-सं०पु०—गिरासिया जाति में विवाह की एक रीति जिसमें युवा होने पर युवक जिस युवती को चाहता है उसे राजी कर अपने साथ ले जाता है। जब लड़के के पिता को पता चलता है तव वह १०-१५ आदमियों को साथ लेकर लड़की के पिता के पास जाकर मुखिया के सामने गाय, भैंस, वैल आदि देकर उसका फ़ैसला करता है।

वि० [सं० त्राण] रक्षक।

तांणणौ, तांणबौ-क्रि०स० [सं० तनु=विस्तारे] १ वस्तु को उसकी पूरी लम्बाई या चौड़ाई तक वढ़ा कर ले जाना। फ़ैलाने के लिए जोर से खींचना, तानना। किसी वस्तु को स्थिर रख कर उसके एक छोर को जोर से खींचना. २ धनुष की प्रत्यन्चा पर तीर रख कर खींचना। उ०—१ आतस वांण चिला मझि आंणै। तेज अमोघ स्रवण लगि तांणै।—सू.प्र.

उ०—२ असीलां रसी रेहियां हाथ आंणै, तसीसां करै जोस कावांण तांणै।—सू.प्र.

३ घसीटना. ४ ताव देना, मरोड़ना (मूंछ)

उ०—दळ वादळ वळ देखि मगज धरि भूप महावळ। तांणि मूंछ खग तोलि हुकम इम दीध झळाहळ।—सू.प्र.

५ वलपूर्वक किसी ओर ले जाना, प्रवृत्त करना, वढ़ाना।

उ०—तुरक हिंदवां तांण, अकवर लायौ एकठा। मेछां आगळ मांण, पांण क्रपांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

तांणणहार, हारौ (हारी), तांणणियौ—वि०।

तणवाड़णौ, तणवाड़बौ, तणवाणौ, तणवावौ, तणवावणौ, तणवाववौ, तणाड़णौ, तणाड़बौ, तणाणौ, तणावौ, तणावणौ, तणाववौ—प्रे०रू०।

तांणिओड़ौ, तांणियोड़ौ, तांण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तांणीजणौ, तांणीजवौ—कर्म वा०।

तणणौ, तणवौ—अक०रू०।

तांणाव—देखो 'तणाव' (रू.भे.) उ०—तांणाव हीर खंभ नग जड़त त्रण, जरकस चंद्र तांणिया त्रण। तखत छत्र सझि छत्रपती, एम अंवासां आंणिया।—सू.प्र.

तांणि—देखो 'तणी' (४) (रू.भे.) उ०—ताहरां मदनौ पूंदां तांणि पड़ियौ, पाछौ हीज विगर लोहड़ै लागै।—द.वि.

तांणियोड़ी-भू०का०कृ०—ताव दी हुई, मरोड़ी हुई (मूछें)

तांणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ खींचा हुआ, ताना हुआ. २ धनुष की प्रत्यन्चा पर तीर रख कर खींचा हुआ. ३ घसीटा हुआ. ४ वलपूर्वक किसी ओर ले जाया हुआ, प्रवृत्त किया हुआ, वढ़ाया हुआ।

(स्त्री० तांणियोड़ी)

तांणौ—देखो 'तांणौ' (रू.भे.)

तांणूमौं—देखो 'तेरांणमौं' (रू.भे.)

तांणौ-सं०पु० [सं० तनु=विस्तारे] १ कपड़ा वुनने के लिए लम्बाई में खींचा गया सूत का तार।

यौ०—तांणौवांणौ, तांणौविझौ।

२ ताने में दोनों सिरों की खूंटियों के बीच की दो लकड़ियां जो थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ताने को सीधा करने के लिए गाड़ी जाती हैं।

रू०भे०—तांणी।

तांत-सं०स्त्री० [सं० तंतु] १ भेड़ वकरी की आंतड़ी. २ भैंस के चमड़े से काट कर निकाली हुई लम्वी-पतली पट्टी जो वैल गाड़ी के पहियों आदि को वांधने के काम में ली जाती है. ३ धनुष की डोरी, प्रत्यन्चा. ४ डोरा, धागा. ५ तार वाद्यों का तार।

उ०—अरथ जिकां दी आपणी, हरख गरीवां हत्थ। गवरीजै जस गीतड़ा, तांत तणंका सत्थ।—वां.दा.

६ सुधि, खवर। उ०—वडा महळ री पहिले महिने कोई तांत न कीवी सो उवा कुढ़-कुढ़ वळणै लागी।—नापै सांखले री वारता

क्रि०प्र०—लेणी।

७ जुलाहों का एक औजार. ८ मगरमच्छ आदि कुछ विशेष जलचर जन्तुओं के थूथन का तंतु जिससे वे अपने भक्ष्य प्राणी को झपट्टा मार कर अपनी ओर खींचते हैं।

रू०भे०—तांति।

अल्पा०—'तांतड़ी'।

[सं० तंत्र] ९ सेना (ह.नां.) १० देखो 'तांतौ' (मह., रू.भे.)

तांतण-सं०पु०—तागा, धागा, सूत का तार। उ०—काचै तांतण पांणी काढयउ, जिन सासन जयकार जी।—स.कु.

अल्पा०—तांतणियौ।

तांतणियौ-सं०पु०—१ गले में धारण करने का जेवर जो हँसली की हड्डी पर रहता है और उसी के आकार का होता है.

२ देखो 'तांतण' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तांणातांणी लागी रहै, नारैं नेह तांतणियै बांध रे।—जयवांणी

३ देखो 'तांतो' (अल्पा., रू.भे.)

तांतळ-संस्त्री० [सं० तातलः] १ शीघ्रता. फुर्ती, त्वरा. २ वकझक, कलह।

तांतळि-संपु०—कलह। उ०—राज कुळ रुधां खळि. राय रांणा वातइं छळि, क्षत्रिय नास दीठि दळि, भला मांणस हुइं तांतळि।
—व.स.

तांतवो-संपु० [सं० तन्तुः] मगरमच्छ। उ०—जद गजराज तांतवे ग्रहियौ, जळ भीतर जवरैं। पुकार सांभळ हरि वेग पवारिया, पाळा पांव घरैं।—ईसरदास बारहठ

तांति-संपु० [सं० तन्तुः] १ तंतु के आकार का स्नायु रोग का कीड़ा। २ देखो 'तांत' (रू.भे.) उ०—खुटै जरदंत जिकै इम खांति। तुटै तिम सावण दावण तांति।—सू.प्र.

तांतियो-संपु०—१ तांत की तरह लम्बा व पतला एक प्रकार का हरा घास. २ देखो 'तांतो' (अल्पा., रू.भे.)

तांती-संस्त्री० [सं० तंतु] १ पैर में पहिनने का चांदी के तार का बना हल्का आभूपण विशेष. २ किसी भी प्रकार के शारीरिक कष्ट की मुक्ति के हेतु देव विशेष के नाम से बांधा जाने वाला कच्चे सूत का धागा।

क्रिप्र०—वांधणी।

३ गंडो, तावीज. ४ सन्तान।

[सं० तंतिः] ५ खलिहान में अनाज निकालने के अभिप्राय से बालें या भुट्टों को कुचलने के लिए दो या दो से अधिक वैलों को एक दूसरे के साथ गले से बांध कर चलाई जाने वाली पंक्ति।

उ०—यम पळचरां जमांनो आयौ, दुसमण तोड़े गंज दिया। तुरंगां तणी चमूकर तांती, किलमां घट घाहट किया।
—करमसोत भीमसिंह रौ गीत

६ पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए लगाई जाने वाली अस्थायी हाट।

क्रिप्र०—ऊठणी, खुलणी, वैठणी।

७ देखो 'तांत' (रू.भे.) उ०—विमळ मजीरा वाजिया, के तांती झणकार। भजन कियौ मिळि भाइयां, ओ तूठौ अवतार।—पी.ग्रं.

तांतू-संपु० [सं० तन्तुः] ग्राह। उ०—तांतू जळ तांणीजतां, कीवी गज-राज पुकार, राज विनां स्रीरामजी, है कुण राखणहार।—गजउद्धार

२ देखो 'तांतो' (रू.भे.)

तांतो-संपु० [सं० तन्तिः] १ श्रेणी, पंक्ति, कतार।

उ०—तीरां रौ तांतौ वंध्यौ, गढ़-तीरां घण घांण। नद-तीरां में लुक निमयौ, भीरु न ब्रद रौ भांण।—रेवतसिंह भाटी

क्रिप्र०—वंधणौ, लागणौ।

मुहा०—१ तांतौ वांधणौ—किसी वात को हठपूर्वक लम्बी बनाना, झगड़ा बढ़ाना, वात को लम्बी खींचना. २ तांतौ मेटणौ—वात समाप्त करना, झगड़ा मिटाना।

[सं० तन्तुः] २ लता का वह अग्र भाग जिस पर लता का वढ़ना निर्भर रहता है. ३ लता का वह भाग जहां फूल व फल लगते हैं।

क्रिप्र०—निकळणौ, वढ़णौ, मेलणौ।

४ लता में से निकलने वाला वह पतला तंतु या रेशा जो आस-पास की वस्तुओं पर लिपट जाता है. ५ मुख्य द्वार के चौखट के बाहर की ओर चारों ओर लगाई जाने वाली खुदाई की कारीगरी-युक्त पतली लकड़ी. ६ सम्वन्ध, रिश्ता। उ०—अरज करां छां आप सूं, गरजवांन कर जोड़। ईडर चालूं आपरै, तांतौ कुळ रौ तोड़।
—पनां वीरमदे री वात

७ वन्धन। उ०—जोड़े ज्यूं ही जोड़, विणजारा रा व्याज ज्यूं। तनक जोड़ मत तोड़, नातौ तांतौ नागजी।—नागजी री वात

मुहा०—तांतौ वांधणौ—वन्धन में लेना, सम्वन्ध जोड़ना।

८ देखो 'तंत्र' ४ (रू.भे.) उ०—अहड़ो तांतौ भेळजे, पहुंचे यम रै द्वार। फेर कचाई ना रहै, करजै गहरौ वार।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

९ रहट की माल वनाने के लिए घास विशेष 'एरौ' तथा वृक्ष विशेप की छाल को वँट कर वनाया जाने वाला पतला लम्बा रस्सा।

क्रिप्र०—वटणौ, मेलणौ।

१० वंश, परम्परा. ११ डोरा, धागा। उ०—सोनौ थे लाइजो लंका देस रौ, वनड़ी रै भंवर घड़ायजै रे तौ रे. आवजो जिसड़ो कतवारी रौ सूत, जिसड़ो तांतौ राखजो।—लो.गी.

१२ देखो 'तांत' (८) (रू.भे.) उ०—आठ दिसावित हरै उताळा। तांता जांण तिमंगळ वाळा।—रा.रू.

रू०भे०—तांतू।

मह०—तांत।

अल्पा०—तांतणियौ, तांतियौ।

तांत्रिक-संपु० [सं०] तंत्र शास्त्र का जानने वाला, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि करने वाला।

वि०—तंत्र सम्वन्धी।

तांद-संस्त्री० [सं० तुन्दम्] वढ़ा हुआ पेट, तोंद।

तांदळ—१ देखो 'तंदुळ' (रू.भे.) २ देखो 'तांदाळ' (रू.भे.)

तांदळी-संस्त्री०—चंदलाई (अमरत)

तांदाळ, तांदाळौ, तांदी, तांदीलौ-वि० [सं० तुंदिल] वढ़े हुए पेट वाला, तोंदीला।

तांन-संस्त्री० [सं० तान] १ गान क्रिया का एक अंग, मूर्च्छना आदि द्वारा राग या स्वर का विस्तार। उ०—गांन सप्तसुर ग्राम मुर, अरु मुरछन यकवीस। तांन कोटि गुणचासते, मूरतिवंत मईस।—सू.प्र.

क्रिप्र०—भरणी, वैठणी, मारणी, मिळणी, मिळाणी।

२ अवसर, मौका. ३ मेल, घनिष्टता। उ०—आंना अघ आंना अरथ, तुरत विगाड़ै तांन। वदळै तुस रै वांणियौ, धुर गोढा लै धांन।—वां.दा.

मुहा०—१ तांन पीणी—संयोग से अवसर मिलना। परस्पर अच्छा सम्बन्ध होना, घनिष्ट मेल होना। २ तांन बैठणी—देखो 'तांन पीणी'. ३ तांन मिळणी—देखो 'तांन पीणी'।

वि०—प्रस्तुत, तैयार, कटिबद्ध।

सर्व०—उन, उनको।

तांनपूरौ—सं०पु० [सं० तान+रा० पूरौ] सितार के आकार का एक तार वाद्य जो गवैयों कोसुर साधने में बड़ी सहायता देता है। सुर में जहाँ विराम आदि पड़ता है वहाँ यह उसे पूरा करता है।

तांनसेन—सं०पु०—बादशाह अकबर का दरबारी संगीतज्ञ जो उसके प्रसिद्ध नवरत्नों में से एक था।

तांनांरीरी—सं०स्त्री०—साधारण गाना, मन बहलाव के लिए आलापी जाने वाली राग।

तांनियौ—सं०पु०—तुनक-मिजाज का व्यक्ति।

अल्पा०—तांन्यौ।

तांनौ—सं०पु०—वह चुभती हुई बात जिसका कुछ अर्थ छिपा हो, ताना, व्यंग्य। उ०—१ सांवरी मोही दे गयौ तांना। न जांणूं करायौ कहि वांना।—लो.गी.

उ०—२ तांना तीखा तीर, जिय में लागै जोर रा। परगट लखै न पीर, चित में सालै चकरिया।—मोहनराज साह

क्रि०प्र०—दैणौ, मारणौ।

अल्पा०—तांन्यौ।

तांन्यौ—१ देखो 'तांनियौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'तांनौ' (अल्पा., रू.भे.)

तांबड़ानकमुंह—देखो 'तांमड़ानकमुंह' (रू.भे.)

तांबड़ी, तांबड़ौ—देखो 'तांमड़ी, तांमड़ौ' (रू.भे.)

तांबपत्र—देखो 'तांबापत्र' (रू.भे.) उ०—काज कीरत तणै नकुं बंधै कमर, निरंतर सुणै मुख चुगल नांम। बावड़ै तौ हूंत आज 'अरजन' विया, गयोड़ा तांबपत्रां तणा गांम।—बां.दा.

तांबरस—देखो 'तांमरस' (रू.भे.)

तांबागळ—सं०पु० [सं० ताम्रागल] १ नक्कारा. २ ढोल।

वि०—तांबा सम्बन्धी, तांबे का।

उ०—स्री महाराज 'मांन' गुण सागर, दाखै जस हाका दोहुं राह। तांबा पतर दियै तांबागळ, गज-वरीस दूजौ 'गजसाह'।

—महादांन महड़ू

तांबाड़णौ, तांबाड़बौ—क्रि०अ०—(गाय का) रंभाना।

उ०—हींचता वाछड़िया तांबाड़, मिळै जद गायां अड़वड़ जाय।

—सांझ

तांभाड़णौ, तांभाड़बौ—रू०भे०।

तांबाड़ौ—सं०पु०—गाय के रंभाने की आवाज।

रू०भे०—तांभाड़ौ।

तांबापतर, तांबापत्र—सं०पु०यौ० [सं० ताम्रपत्र] १ तांबे की चद्दर का टुकड़ा जिस पर प्राचीनकाल में अक्षर खुदवा कर दिए गये दान के लिए दानपत्र लिखते थे। उ०—जस ध्रम काज जगीस, नवां गांव 'अजमल' नरिंद। तांबापत्र ब्रवि तीस, जस लीधौ 'जसराज' उत्त।

—सू.प्र.

२ तांबे की चद्दर या उसका पत्र।

रू०भे०—तंब-पत्र, तांब-पत्र, तांम्रपट्ट, तांम्रपत्र।

तांबियौ—देखो 'तांमौ' (अल्पा., रू.भे.)

तांबौ—देखो 'तांमौ' (रू.भे.)

तांबील—देखो 'तांमील' (रू.भे.)

तांबीली—देखो 'तांमीली' (रू.भे.)

तांबुलबेली—सं०स्त्री० [सं० ताम्बूलम्+वल्ली] पान की बेल, नागवल्ली।

तांबूल, तांबूलपत्र—सं०पु० [सं० ताम्बूलम्+पत्र] नागरबेल का पत्ता, पान का बीड़ा, पान। उ०—भगति भाव सूं भोग लगायौ, रुचि रौ मुख तांबूळरचाय।—मी.रां.

यौ०—तांबूलबीटिका, तांबूलवल्ली, तांबूलवाहक।

तांबूलिक, तांबूली—सं०पु० [सं० तांबूलिन्] पान बेचने वाला, तमोली।

तांबूली—सं०स्त्री० [सं० ताम्बूल+रा.प्र.ई] पान की लता, नागवल्ली (अ.मा.)

तांबेड़ौ, तांबेटौ—सं०पु० [सं० ताम्र+रा.प्र.ड़ौ.टौ] बनावट विशेष का तांबे या पीतल का बना पात्र, कलश।

रू०भे०—तंबेड़ौ।

तांबेसर—देखो 'तांमेसर' (रू.भे.)

तांबेसरी—देखो 'तांमेसरी' (रू.भे.)

तांबौ—सं०पु० [सं० ताम्र] लाल रंग की एक धातु विशेष, तांबा, ताम्र।

पर्या०—आस, उदुंबर, कनीअस, धरज, घिस्टि, भ्रिस्ट, भरमवरधन, मरकट, मलेछमुख, मेछमुख, रगत, वरसट, सुलव, सावर।

रू०भे०—तंब, तांमौ।

तांभाड़णौ, तांभाड़बौ—देखो 'तांबाड़णौ, तांबाड़बौ' (रू.भे.)

उ०—डांढ़ा तांभाड़ै केरड़िया ढींकै। रोटी पांणी नै टींगरिया रींकै।

—ऊ.का.

तांभाड़ौ—देखो 'तांबाड़ौ' (रू.भे.)

तांम—सं०पु० [सं० तामस्] १ क्रोध, रोष. २ अंधकार, तिमिर।

सर्व०—१ उस। उ०—वीस मत्त विसरांम हुवै, सत्तर गुरु अंत दस। तीस सात मत तांम, जिण पद छंद सफूलणा।—र.ज.प्र.

२ तुम (आप)। उ०—तळै पग छांह नवै ग्रह तांम। पगां दिग पाळ करंत प्रणांम।—ह.र.

बहु०—३ उन। उ०—वदै तांम सुग्रीव मो बालि वैरी। तिके पाहड़ां हूं वसूं धाक तेरी।—सू.प्र.

वि० [अ० तमाम] सब, समस्त।

क्रि०वि० [सं० तावत्] १ तब। उ०—तांम अजीम अरज की तैसी, साह नचीत हुवै मन जैसी।—रा.रू.

२ उस समय में। उ०—सासू पूछइ माहरइं, ए वर आविउ जांम।

रंगिट जोनी समद समद वरतावइ तांम ।—नळ-दवदंती रास

२ तहां, वहां । उ०—हुई कटक अब हाजरी, मथुरा नयर मुकांम । मध कुमुम केसर बरण, तुके वराती तांम ।—वं.भा.

तांमग–सं०पु० [सं० ताम:+रा.प्र.ग.] घमंड, गर्व, अभिमान (डि.नां.मा., अ.मा.)

तांमड़ानकमुंह–सं०पु०यौ०—एक प्रकार के अशुभ रंग का घोड़ा (शा.हो.)
रू०भे०—तांबड़ानकमुंह ।

तांमड़ायत–सं०पु० [सं० ताम्र+रा.प्र.ड़+आयत] वह भूमि का अधिकारी जिसको भूमि के अधिकार के लिए सनद के रूप में ताम्रपत्र प्राप्त हो ।

तांमड़ी, तांमड़ो–वि० [सं० ताम्र+रा.प्र. डी,ड़ो] तांबे के वर्ण का, ताम्रवर्ण, ललाई लिए हुए । उ०—रोभड़ा केक भसमय रंग, तांमड़ा केयक नुकरा तुरंग ।—पे.रू.

✓तांमजांन, तांमजांम, तांमजांमा–सं०पु० [सं० ताम्रयान] एक प्रकार की गद्देदार कुर्सी जो हाथी के हौदे की अगली बैठक के आकार की होती है जिसे कहार अपने कन्धों पर उठा कर चलते हैं, खुली पालकी ।
वि०वि०—यह आरम्भ में तांबे की बनी हुई बतलाई जाती है ।

तांमण–सं०पु०—१ घास का तिनका, तृण ।
सं०स्त्री०—२ एक प्रकार की हरी घास विशेष । उ०—खावण रूणै धन झूणै मन खूणैं । धांमण तांमण विन जांमण सिर धूणैं ।—ऊ.का.

तांमणियौ–सं०पु० [सं० तेमनी] मिट्टी का बना विशेष आकार का एक छोटा पात्र जो घर में सब्जी आदि पकाने या दही जमाने के काम आता है ।
रू०भे०—तांवणियौ ।
मह०—तांमणी, तांवणी ।

तांमणी—देखो 'तांमणियौ' (मह., रू.भे.)

तांमरस–सं०पु० [सं० तामरस] १ कमल. २ तांबा. ३ सोना. ४ धतूरा. ५ एक वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण दो जगण और एक यगण होता है ।
रू०भे०—तांब-रस ।

तांमळि–सं०पु० [सं० तामलि] एक प्रसिद्ध तापस (जैन)

तांमलित्ति–सं०स्त्री० [सं० ताम्रलिप्ति] वंग देश की एक प्राचीन नगरी जहां तामलि तापस ने जन्म लिया था (जैन)

तांमळोट, तांमळोट–सं०पु०—टीन का छोटा पात्र जिस पर चमकदार रोगन चढ़ा रहता है, तामलोट ।

तांमस–सं०पु० [सं० तामस] १ क्रोध, गुस्सा । उ०—१ तरै तांमस कर नै कह्यौ तरै पूतळी रो केह्यौ ।—वीरमदे सोनगरा री बात
उ०—२ चख चोळ मूंछ भूंहां चढ़ी, तांमस ऊठि तमोगणी । मेह री गाज जांणै मरद; सारदूळ कांनां सुणी ।—मे.म.
२ प्रकृति का एक गुण, तमोगुण । उ०—भाखि सतोगुण भलो खरो कोई कहीजै खोटो । त्रिविध तणी विच तीन त्रिविध तांमस गुण मोटो ।—पी.ग्रं.
३ चौथे मनु का एक नाम. ४ एक अस्त्र का नाम. ४ तैंतीस प्रकार के केतु जो सूर्य और चंद्रमा के भीतर दृष्टिगोचर होते हैं. ५ अंधकार (जैन) ६ अज्ञान ।
वि०—१ तमोगुण युक्त, क्रोधी प्रकृति वाला. २ अज्ञान भाव वाला (जैन)
रू०भे०—तांमस्स ।

तांमसकीलक–सं०पु० [सं० तामसकीलक] एक प्रकार के केतु जो राहु के पुत्र माने जाते हैं और संख्या में ३३ हैं (पौराणिक)

तांमसमद्य–सं०पु० [सं० तामसमद्य] कई बार खींची हुई शराब ।

तांमसवांण–सं०पु० [सं० तामसवाण] १ एक वाण विशेष जिसके द्वारा युद्धस्थल में अन्धकार फैला दिया जाता है (जैन) २ एक शास्त्र का नाम ।

तांमसी–वि० [सं० तामस] तमोगुण युक्त, क्रोधी प्रकृति वाला, क्रोधी । उ०—मुझ स्वभाव छै तांमसी जी, रहि न सकइ खिण मात ।—वि.कु.
सं०स्त्री०—१ अंधेरी रात. २ एक प्रकार की मायावी विद्या जिसे शिव ने प्रसन्न हो कर मेघनाद को दी थी. ३ रात्रि । (नां.मा., ह.नां.)

तांमस्स—देखो 'तांमस' (रू.भे.) उ०—दुय सहंस पमंग चढ़ चले दूठ । तांमस्स जोर तन त्रांण तूट ।—सू.प्र.

तांमिल–सं०स्त्री०—१ भारत के दक्षिण में रहने वाली द्रविड़ वंश की एक जाति. २ इन लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा, तामिल भाषा ।

तांमिस्र–सं०पु० [सं० तामिस्र] १ एक नरक का नाम. २ क्रोध. ३ द्वेष. ४ एक अविद्या का नाम ।

तांमी–सं०स्त्री० [सं० ताम्र] १ तांबे का तसला, तांबे का बना छिछला पात्र. २ द्रव पदार्थों को नापने का एक बरतन या नाप विशेष. ३ तांबे की करछी ।
रू०भे०—तांबी ।
अल्पा०—तांबियौ ।

तांमील–सं०स्त्री० [अ० तामील] १ (आज्ञा का) पालन, हुक्म मानने का भाव. २ किसी फरमान, परवाने या सम्मन आदि का निष्पादन ।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ ।
रू०भे०—तांबील ।

तांमीली–सं०स्त्री०—आज्ञा-पालन ।
वि०—१ पालन करने योग्य (आज्ञा) २ आज्ञापालक ।
रू०भे०—तांबीली ।

तांमेसर–सं०पु० [सं० ताम्र+ईश्वर] १ ताम्र-भस्म (अमरत)
सं०स्त्री०—२ एक लता विशेष जिसके पत्ते चौड़े होते हैं और घाव, फोड़े आदि पर बांधने के काम आते हैं ।
रू०भे०—तांबेसर, तांमेसुर, तमेस्वर ।

तांमेसरी-सं०पु० [सं० ताम्र+ईश्वर+ई] तांबे के रंग सा एक रंग विशेष जो गेरू के योग से बनता है।
रू०भे०—तांवेसरी।

तांमेसुर, तांमेस्वर-सं०पु० [सं० ताम्र+ईश्वर] १ ताम्र, तांबा. २ एक प्रकार का सर्प विशेष. ३ देखो 'तांमेसर' (रू.भे.)
वि०—कुपित, तमोगुणयुक्त।

तांम्र-सं०पु० [सं० ताम्र] १ तांबा. २ एक प्रकार का कोढ़।

तांम्रक्रमि-सं०पु० [सं० ताम्रक्रमि] बीरबहूटी (डि.नां.मा.)

तांम्रचूड़-सं०पु० [सं० ताम्रचूड़] १ कुकरौंधा नाम का पौधा. २ मुर्गा।

तांम्रतुंड-सं०पु० [सं० ताम्र+तुण्ड] मुर्गा। उ०—सुजि तांम्रतुंड कंधा समाथ। बाजोट उवर अइवाळ बाथ।—सू.प्र.

तांम्रपट्ट, तांम्रपत्र—देखो 'तांबापत्र' (रू.भे.) उ०—आखियो जिती धर ओयण थायो इळा, सुभोजन चाखियो थाळ सार्थे। तांम्रपत्र ढ़ाकियो चाखड़ां थांन तळ, हतेरण राखियो आप हार्थे।—खेतसी बारहठ

तांम्रपरणी-सं०स्त्री० [सं० ताम्रपर्णी] १ बावड़ी. २ तालाव. ३ दक्षिण भारत की एक नदी।
उ०—सिध तांम्रपरणी प्रमुख, नदियां ते नरनाह। हैवर ढोया 'भीम' हर, गिरां उतंगां गाह।—बां.दा.

तांम्रपुस्प-सं०पु० [सं० ताम्रपुष्प] लाल फूल का कचनार का पौधा।

तांम्रवरण-वि० [सं० ताम्रवर्ण] तांबे के रंग का, लाल।
सं०पु०—१ वैद्यक के अनुसार मनुष्य के शरीर पर की चौथी त्वचा का नाम. २ पुराणानुसार भारतवर्ष के अंतर्गत एक द्वीप, सिंहलद्वीप।

तांम्रसिखी-सं०पु० [सं० ताम्रशिखिन्] मुर्गा।

तांम्रसार, तांम्रसारक-सं०पु० [सं० ताम्रसार] लाल चंदन का वृक्ष।

तांम्रा-सं०स्त्री० [सं० ताम्रा] १ सिंहली पीपल. २ दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप ऋषि की पत्नी थी।

तांय-प्रत्य०—तृतीया या पंचमी विभक्ति का चिन्ह, से।
उ०—खळकियां स्रोण तांय बोह घट-खाळियां। रिण भड़ां सीस यूं वैठि रतनाळियां।—हा.झा.

तांवण-सं०पु० [सं० ताप] तेली का तेल औटाने का लोहे का बना पात्र।

तांवणियो—देखो 'तांमणियौ' (रू.भे.)

तांवणी-सं०स्त्री०—देखो 'तांमणियौ' (मह., रू.भे.)

तांवर-सं०स्त्री०—१ ताप, ज्वर. २ मूर्छा. ३ देखो 'तंवर' (रू.भे.)

तांह-सर्व०—१ उस। उ०—आडा डूंगर वन घणा, तांह मिळीजइ केम। ऊलाळीजइ मूंठ भरि, मन सींचांणउ जेम।—ढो.मा.
(बहु व०) २ उन। उ०—१ सदा तौ नांव लियै स्री रंग। भखै नंह तांह संसार भुयंग।—ह.र.
उ०—२ जिणि दीहे तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ। तांह दिहां री गोरड़ी, पड़तउ झालइ आभ।—ढो.मा.
३ तुम। उ०—हे सुभड़ां थे तरवार उण वीर पुरुख रौ नांम लेनै बांधौ सो तांह री कठे ही हार न होवै।—वी.स.टी.
क्रि०वि०—१ वहां। उ०—मेटे मुर लोक पैठौ जळ मांह, तठै इक अंड निपायौ तांह।—ह.र.
२ उस प्रकार, उस तरह। उ०—ते संतांन तणी अति चिंता, करतु राजा यांह। दमन नांम रिसि ईछा आवु, मंदिर तेणि तांह।
—नळाख्यांन
रू०भे०—तांहां, ताह।

तांहजौ-सर्व० (स्त्री० तांहजी) तेरा, तुम्हारा। उ०—रावळजी कह्यो, भाई मांहजी, निबळा तूं ले गयौ छै, तांहजी सूरज ले जाइया।
—वीरमदे सोनगरा री वात

तांहरा-क्रि०वि०—तब, उस समय। उ०—तांहरा उवां जांणियौ, राजा सांकड़ै पड़ियौ।—चौबोली

तांहां-क्रि०वि०—१ वहां. २ तब। उ०—सुब सुदा दीस्ट जोयौ सगत। तांहां उठयौ 'लाखण' वेग तंत।—रांमदांन लाळस
३ देखो 'तांह' (रू.भे.)

ता-सं०स्त्री०—१ तान. २ ताल. ३ मां. ४ स्त्री.
सं०पु०—५ विस्तार. ६ शिव. ७ ईश. ८ मैथुन. ९ वस्त्र. १० तरुण पुरुष. ११ तिल. १२ तार (क.कु.बो.)
सर्व०—१ उस। उ०—जिण मुख रांम न ऊचरै, ता मुख लोह जड़ाय।—ह.र.
२ इस। उ०—दादू पीड़ न ऊपजी, ना हम करी पुकार। ता थै साहिब न मिळ्या, दादू बीती बार।—दादू बांणी
प्रत्य०—१ करण या अपादान कारक का चिन्ह, से।
उ०—बोड़ां री ठिकांणौ घणां दिनां री थौ सु संमत १६९९ राव महेसदास दळपतोत नूं जाळोर हुई, वरस चार महेसदास जीवियौ, तठा ता श्री बोड़ा कल्यांणदास नाराणदासोत नूं सेणौ, सदा भोमिया रुखौ हुतौ त्यौं रह्यौ।—नैणसी
२ देखो 'तां' (रू.भे.) उ०—तद विहारी मिलकखांन हैतावत नूं परगना जाळोर वांसै दीया था सु तद रा जाळोर वांसै पाड़ि ता सूं हमे जाळोर खांसै हीज छै।—नैणसी

ताअळी—देखो 'तासळी' (रू.भे.)

ताअळौ—देखो 'तासळौ' (रू.भे.)

ताइं-सर्व०—उन। उ०—ताइं देखै धाइ ताड़िका सांह्मी रांम सुजांण।
—रांमरासौ

ताइ-सर्व०—१ वह। उ०—सरल बुद्धि पैं सनस सकल पिंडि अडोळ पहाड़ ताइ ओनाड़जी ओनाड़।—ल.पिं.
२ उस। उ०—खांनांणं खंड़े खड़ग बळ खाधौ, लाधौ औ व्रद आज सलाह। 'कांधळ' कहै रूथियां केहर, साथ किसौ ताइ किसौ सनाह।
—द.दा.
३ उन। उ०—वे पख सूवति विहु मास वे, वसंत ताइ सारिखौ वहंति।—वेलि.

क्रि०वि०—१ वहाँ, तहाँ। उ०—भड़ म्हारां पाछै भिड़ै, जिकां वहो़ड़ो जाइ। अब जे झड़ियो एक भी, तो पड़ियो पवि ताइ।
—वं.भा.

२ इसमें। उ०—रौंगां चड़ चोगांन न गेल्है, वैलै पड़ियो राज विजोग। आंगमणो गोसोद न आवै, रोद हिये ताइ लागो रोग।
—पीरदांन आसियो

वि०—१ आततायी, शत्रु। उ०—तन फूट पड़त तड़फड़त ताइ। नग हेक जांणी लोटण लुटाइ।—सू.प्र.

२ विधर्मी, दुष्ट।

सं०पु० [सं० तायिन्] १ मोक्ष को प्राप्त होने वाला (जैन)

[सं० त्रायिन्] २ रक्षक, परिपालक (जैन)

[सं० तापिन्] ३ तापयुक्त (जैन) ४ देखो 'तांई' (रू.भे.)

५ देखो 'ताइ' (रू.भे.)

ताइण–सं०पु० [सं० त्रायिता] रक्षक (जैन)

ताइत—देखो 'ताईत' (रू.भे.) उ०—१ बनाती पटा, रूपै री भंवर कड़ी रेसमी डोर, कांन में रूपै सोनै रा वेढ़ला, गळै में निजर रा ताइत। इण भांत सूं आंण हाजर हुवा छै।—रा.सा.सं.

उ०—२ छत्रधारी कना हूं इळा री कोट छोडावणी। तुड़ावणी भूखा वाघ गळा री ताइत।—महादांन महड़ू

अल्पा०—ताइतियो।

ताइफो—देखो 'तायफो' (रू.भे.) उ०—प्रथ्वी पैं रंग भोमि हुई। पंखी है इंहै मेळगर हुग्रा। मेळगर इहै जु आखाड़ो की सब सांमग्री ताइफो।—वेलि.टी.

ताई–सं०स्त्री०—१ बड़ी माता, पिता के बड़े भाई की पत्नी।

उ०—मारण मारण समझे मूरख, तारण लखै न ताई नैं। रात दिन हिंसा सूं राजी, कर दे मात कसाई नैं।—ऊ.का.

२ कपड़ा बुनने वाली एक जाति (नळ-दवदंती रास, व.स.)

३ घोड़े की एक जाति (व.स.) ४ [सं० आततायी] दुष्ट, असुर।

उ०—सेहाई संतां सेवगां ताई देणा तापरां। ओनाड़ा राघो भू भखै, पांणां घाड़ा आपरां।—र.ज.प्र.

५ शत्रु, दुस्मन।

उ०—१ ताइयां खांति तरवारियां भांत तह। लड़ण कजि दियंतो सुपह मुजि वीत लह।—हा.झा.

उ०—२ चवै ग्रेम जैमाल चीतोड़ मत चळवळै, हेड़ दूं अरी-दळ न दूं हाथै। ताहरै कमळ पग चढ़ै नह ताइयां, मोहरै कमळ जां खवां माथै।—राठौड़ जैमल वीरमदेवोत री गीत

६ देखो 'तांई' (रू.भे.)

ताईत–सं०स्त्री० [अ० ताअत, फा० तावीज] १ उपासना, आराधना, इबादत. २ धातु के चौकोर या अठ-पहलू चद्दर के टुकड़े पर किसी देव-मूर्ति विशेष को अंकित कर बनाया जाने वाला तावीज जिसे गले या बांह पर धारण करते हैं, जन्तर।

मि०—चौकी (८)

३ हाथी का एक आभूषण।

रू०भे०—ताइत, तायत।

अल्पा०—ताइतड़ो, ताइतियो, तायतियो।

ताईतिमर–सं०स्त्री० [सं० तिमिर+तायिन्] ज्योति, प्रकाश (अ.मा.)

ताईद–सं०स्त्री० [अ०] १ सहायता, मदद. २ पक्षपात. ३ समर्थन, पुष्टि। उ०—नै इता जोस खरोस रै साथै इणरी ताईद करणी पड़ै तद जरूर मन मैं संका ऊपजै।—वांणी

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

ताईधर–वि०—वीर, योद्धा। उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेल मन, ताईधर रजधर 'सींघ' तण। पूंगीदळ पतसाह पेरतां, फेरै कमळ न सहसफण।—महारांणा प्रतापसिंघ री गीत

ताईप्रयात–सं०पु० [सं० आततायी+प्रयात] युद्ध (ह.नां.)

ताउं, ताउ–क्रि०वि०—तक, पर्यन्त। उ०—पाटण तो आगै वडी ठौड़ हुती, रुपीया लाख सात री पैदास हुती, संवत् १६८२ तथा १६८३ ताउ उपजता।—नैणसी

२ तब। उ०—जाउं वाळी ताउं हुइ लाली पाळी।—व.स.

ताऊ–वि०—१ तेज गति से चलने वाला, शीघ्रता करने वाला, उतावला.

२ शीघ्र क्रोधित होने वाला, तड़कने वाला।

सं०पु०—पिता का बड़ा भाई।

(स्त्री० ताई)

ताऊन–सं०पु० [अ०] एक घातक संक्रामक रोग जिसमें गिल्टी निकलती है और ज्वर का प्रभाव होता है, प्लेग।

ताऊस–सं०पु० [अ०] १ मोर, मयूर. २ सारंगी व सितार से मिलता जुलता एक वाद्य विशेष।

ताऊसी–वि० [अ०] १ मोर के सदृश. २ बैंगनी रंग का।

ताक–सं०स्त्री०—१ ताकने की क्रिया।

यौ०—ताक-झांक।

२ टकटकी, स्थिर दृष्टि।

मुहा०—ताक बांधणी—टकटकी बांधना, स्थिर दृष्टि से देखना।

३ अवसर की प्रतीक्षा, मौके की टोह में रहने का काम, घात।

उ०—माल मुलक हैंगैं घणा, छत्र छांह मन छाक। के मारघा के मारसी; काळ करत है ताक।—ह.पु.वा.

मुहा०—१ ताक में रै'णी—मौके की टोह में रहना, घात लगाना, अवसर की प्रतीक्षा में रहना. २ ताक राखणी—देखो 'ताक में रै'णी'. ३ ताक लगाणी—देखो 'ताक में रै'णी'।

४ खोज, तलाश।

मुहा०—ताक राखणी—खोज में रहना, तलाश में रहना।

५ उपाय, तरकीब। उ०—साथ नूं पूछियो 'क्यूं ठाकुरे! अठा थी सूरजमल खींवावत नूं किण ताक थी मारियो जाय?'—नैणसी

६ देखो 'तासळी' (रू.भे.)

सं०पु० [अ०] ७ दीवार में रखा जाने वाला खाली स्थान जो वस्तु आदि रखने के लिए काम आता है, आला, ताख।

उ०—अनूप ताक गोख स्री विचित्र चित्र सूं अटा। घणूं उतंग अंग जांणि स्निग मेघ ची घटा।—रा.रू.

मुहा०—१ ताक माथै मेलणौ—किसी वस्तु को उपयोग में न लाना, प्रयोग न करना. २ ताक में मेलणौ—वस्तु को पृथक रखना, उपयोग में न लाना।

क्रि०वि०—तरह, प्रकार।

ताकड़–सं०स्त्री—शीघ्रता, ताकीद।

क्रि०प्र०—करणी।

ताकड़ियौ—देखो 'ताकड़ी' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तोला **ताकड़ियां** थकां, खलक तणी धन खाय। तिकै ग्रहै तरवार नूं, जबरी कही न जाय।—बां.दा.

ताकड़ी–सं०स्त्री० [सं० तर्कटी] १ सीधी डंडी के छोरों पर रस्सियों के सहारे बंधे हुए दो पलड़ों का यंत्र जिससे वस्तुओं का तोल मालूम करते हैं। तौलने का यंत्र, तुला, तराजू। उ०—लेखण तोला **ताकड़ी**, सोगन नै जीकार। वणियांणी जाया तणा, है ये हिज हथियार।

—बां.दा.

कहा०—ताकड़ी तणी रांम ना हाथ मांये है—तराजू की डण्डी ईश्वर के हाथ में है। ईश्वर ही सभी का न्याय कर सकता है।

२ पांच सेर का तोल।

रू०भे०—तकड़ी, ताखड़ी।

यौ०—ताकड़ी तोला।

अल्पा०—ताकड़ियौ।

वि०स्त्री०—१ उतावली, शीघ्रता करने वाली. २ हृष्ट-पुष्ट, सुडौल।

ताकड़ौ–वि० (स्त्री० ताकड़ी) १ उतावला, जल्दबाज. २ तेज, जोशीला. ३ हृष्टपुष्ट, सुडौल. ४ शक्तिशाली, बहादुर।

रू०भे०—तकड़ौ, ताखड़ौ।

ताकण–वि०—टकटकी लगा कर देखने वाला।

अल्पा०—ताकणियौ।

ताकणौ, ताकबौ–क्रि०स० [सं० तर्कणं] १ सोचना, विचारना. २ टकटकी लगाना, स्थिर दृष्टि से देखना। उ०—आइस्यै जाइ साथि सु चढ़ि-चढ़ि आया, तुरी लाग ले ताकि तिम। सिलह मांहि गरकाव संपेखी, जोध मुकुर प्रतिबिंब जिम।—वेलि.

३ अवसर की प्रतीक्षा करना, मौके की राह देखना, घात में रहना. ४ दृष्टि रखना, रखवाली करना. ५ रुख करना, प्रवृत्त होना।

उ०—उत्तर आज न जाइयइ, जिहां स सीत अगाध। ता भइ सूरिज डरपतउ, ताकि चलइ दखिणाध।—ढो.मा.

ताकणहार, हारौ (हारी), ताकणियौ—वि०।

तकवाड़णौ, तकवाड़बौ, तकवाणौ, तकवावौ, तकवावणौ, तकवावबौ, तकाड़णौ, तकाड़बौ, तकाणौ, तकाबौ, तकावणौ, तकावबौ—प्रे०रू०।

ताकिओड़ौ, ताकियोड़ौ, ताक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ताकीजणौ, ताकीजबौ—कर्म वा०।

तकणौ, तकबौ—रू०भे०।

ताकत–सं०स्त्री० [अ० ताक़त] १ बल, शक्ति, जोर।

मुहा०—१ ताकत अजमाणी—बल की जांच करना, ताकत दिखाना. २ ताकत दिखाणी—बल प्रकट करना. ३ ताकत रा खेल—शक्ति से ही सब कुछ सम्भव है. ४ ताकत लगाणी—१ शक्ति या बल का प्रयोग करना. २ सहारे के लिए शक्ति का प्रयोग करना।

२ सामर्थ्य, सामर्थता।

मुहा०—ताकत सार—सामर्थ्यानुसार, शक्ति अनुसार।

ताकतवर–वि० [अ० ताक़त+फा० वर] १ बलवान, शक्तिशाली. २ सामर्थ्यवान।

ताकधिन–सं०पु०—तबले की ध्वनि, तबले का बोल।

ताकळियौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का सांप. २ देखो 'ताकळौ'। (अल्पा., रू.भे.)

वि०—कृश, दुबला।

ताकळौ–सं०पु० [सं० तर्कुः, तर्कुक] चरखे पर लगाया जाने वाला लोहे का पतला व नुकीला सुइया। सूत कातने का तकुवा।

रू०भे०—तकळौ, तकवौ, ताकू।

अल्पा०—ताकळियौ।

ताकव–सं०पु० [सं० तार्किक] १ तर्क, मीमांसा आदि शास्त्रों में कुशल. २ कवि। उ०—ताकव नृप तणी जी कर-कर मुणै मंजुळ कीत। घट उमदा घणी जी पूछै गहर गुण घर प्रीति।—र.रू.

३ चारण।

ताकि–अव्य० [फा०] १ इसलिए कि, जिससे।

ताकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ सोचा हुआ, विचारा हुआ. २ स्थिर दृष्टि से देखा हुआ, टकटकी लगाया हुआ. ३ अवसर की प्रतीक्षा किया हुआ, घात में रहा हुआ. ४ रखवाली किया हुआ, दृष्टि रखा हुआ. ५ रुख किया हुआ, प्रवृत्त हुवा हुआ।

(स्त्री० ताकियोड़ी)

ताकीद, ताकीदी–सं०स्त्री० [अ० ताक़ीद] १ जोर के दबाव के साथ दी जाने वाली आज्ञा का आदेश। उ०—१ बादसाह लाहौर रै सूबायत नूं **ताकीद** कीवी जे चोर नूं पकड़ौ।

—दूलची जोइए री वारता

उ०—२ पण सबर नहीं कि बार-बार म्हांने बादसाह सलामत से अरज करणे की **ताकीदी** करता था।—सांई री पलक

२ शीघ्रता, जल्दबाजी। उ०—१ जितरै सुजांण नायक अरज कीवी–कुंवरजी महाराज अबै **ताकीद** करै छै।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ ब्राह्मण सूं ब्याव की **ताकीदी** कीनी छै।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ।

ताकू—देखो 'ताकड़ो' (रू.भे.) उ०—ताकू तेरे सोवणी, लाल गुलाबी माळ। नरकूं-नरकूं फिरै घेरणी, मघरी मघरी चाल।—लो.गी.

वि०—तकने वाला।

ताको-सं०पु०—१ ताकना क्रिया का भाव। उ०—हमार हीज अठा सूं ऊठिया दीसै छै। रावळ ताका करण लागो।—नैणसी

मुहा०—ताको रासणौ—ताक में रहना, घात में रहना।

२ अवसर, मौका।

मुहा०—ताको पौणौ—अवसर मिलना, मौका मिलना।

३ देखो 'ताखो' (३)

ताखंगी-सं०पु० [सं० तक्षक+अङ्ग+ई] १ तक्षक।

उ०—उरां सुरां कुंत ढंक ताखंगी पै नांख अेहो, काळ रूपी वना लागां-लागां जेहो कुंत।—रावत भीमसिंह रो गीत

२ वीर, बलवान, योद्धा।

ताखड़ी—देखो 'ताकड़ी' (रू.भे.) उ०—सात ताखड़ी साजांनी तोल रो गून मूंडण रा डील मांहि रहियो।—डाढ़ाळा सूर री वात

ताखड़ो—१ देखो 'ताकड़ो' (रू.भे.) उ०—जिण वन भूल न जावता, गैंद गवय गिड़राज, तिण वन जंबुक ताखड़ा, ऊधम मंडै आज।

—वी.स.

२ देखो 'ताखो' (अल्पा., रू.भे.) (डि.को.)

(स्त्री० ताखड़ी)

ताखणि-क्रि०वि० [सं० तत्क्षण] उसी समय, तत्काल, फौरन।

उ०—वेटउ रुद्रु करंतउ जांणी। ताखणि आवि गंगारांणी।

—पं.पं.च.

ताखणो, ताखबो-क्रि०स०—क्रोधित होना, कुपित होना, गुस्से में भरना।

ताखति-सं०स्त्री०—ताकीद, शीघ्रता। उ०—गूजराति मांहि ताखति कीधी सहूय समेटी लीधउं। वाजी सांन खांन सोमईया भणी पीआंणउं दीधउ।—कां.दे.प्र.

ताखा-तांखो, ताखा-तोखो-सं०पु०—छोटे-बड़े जेवर आदि।

उ०—ऊंठ पर बैठयोड़ी सेठांणी रा रूंगता ऊभा व्हैग्या अर सेठजी रो काळजो ऊंचो चढग्यो। सेठांणी कुरळाई वीरा, भीमजी वीरा! गम खाओ, लिजावण दो इण पापियां नै ताखा-तांखो।—रातवासो

ताखियोड़ो-भू०का०कृ०—क्रोधित हुवा हुआ।

(स्त्री० ताखियोड़ी)

ताखी-सं०पु०—१ ऐसा घोड़ा जिसकी एक आंख एक रंगढंग की और दूसरी आंख दूसरे रंगढंग की हो। ऐसा घोड़ा अशुभ समझा जाता है (शा.हो.) २ छोटे बच्चों के सिर को ढकने का वस्त्र विशेष।

ताखो-वि०—१ जोशीला, उत्साही। उ०—वाजै घाव जांगियां कुरांण वाच लागा वोम, रोस भीना दीवड़ा चळूळा उडै रीठ। साइकां छड़ाळां धारां कटारां जवंना सेती, ताखा भड़ां अपूकारै मेलिया नग्रीठ।—वखतो खिड़ियो

२ महान्, जबरदस्त। उ०—सींधुरां ढहाड़ सूंबां दहाड़ विभाड़ सत्रां, घाव सिघ्र विरदाई प्रवाड़ा धरेस। तुरंगां कव्यंदां वोबराड़ भड़ां रांम ताखा, निखंगां रीझणा धाड़ जांनकी नरेस।—र.ज.प्र.

३ वीर, बहादुर। उ०—मोड़ै आज रा अदावां मांण, राखै पातजादा''', दांन रो अमाप हाको, फैलै दसूं देस। लेवै कीत आडै अंक, जोवजो फूलांणी लाखो, ताखा जोड़ायत सिघां सोहै 'जगतेस'।

—राजाधिराज जगतसिंह रो गीत

सं०पु० [सं० ताक्ष्यं] १ गरुड़. २ देखो 'तक्षक' (रू.भे.)

उ०—१ जिको किसड़ोहेक रजपूत, आग अजाग, ताखो नाग।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ आखै अेम 'ओपलो' आढ़ो, खूनी कासूं लाभ खटै। ताहरी रसण डसण ताखा री, मेळूं जद मो दाफ मिटै।—ओपो आढ़ो

उ०—३ डाकी ठाकर री रिजक, ताखा री विख अेक। गहळ मुवां ही ऊतरै, सुणियां सूर अनेक।—वी.स.

३ निश्चित लम्बाई का पूरा कपड़ा, थान। उ०—ताखो आखो लावयो, कांमण प्यारा कंत। मोल मुंहगो मनि समो, सो क्युं रहै निरखंत।—व.स.

४ एक प्रकार का कपड़ा। उ०—खासो टुकड़ी जांमसाइ मुलतांनी तपाइ साळु मुगीपटण ताखो खीसाप तासतो चुनड़ी चोरसो लाखारस दुदांमी जांमावाड कचीयो।—व.स.

अल्पा०—ताखड़ो।

ताग-सं०पु० [सं० तड़ाग] १ तालाव (अ.मा.) २ देखो 'तागो' (मह., रू.भे.) उ०—सजण सिधाया हे सखी, परवत देग्या पूठ। हिवड़ो काचा ताग ज्यूं, गयो लड़ंगां तूट।—र.रा.

तागउ—देखो 'तागो' (रू.भे.) उ०—राजि हियइ राखुं रे बांभण तागउ।—वि.चं.

तागड़दी-सं०पु०—तवले का वोल। उ०—गंगा गड़दि दहूं ओडां दळ गाजै। तागड़दि तवल वाजै रिण तूर।—र.रू.

तागड़ी-सं०स्त्री०—१ तागे में पिरोये हुए सोने या चांदी के घुंघरुओं का बना हुआ कमर में पहनने का एक आभूषण विशेष, करधनी.

२ कमर में बांधा जाने वाला रंगीन डोरा, कटिसूत्र (शेखावाटी)

तागणो, तागबो-क्रि०स०—१ सुई में धागा डालना. २ दूर-दूर की मोटी सिलाई करना. ३ सुई आदि नुकीली वस्तु को किसी अन्य वस्तु में दबाव से चुभाना, गोदणा।

तागत—देखो 'ताकत' (रू.भे.) उ०—तागत तूटोड़ी तापड़ तूटोड़ा। खातां पीतां सूं पै'ला खूटोड़ा।—ऊ.का.

तागभरणी-सं०स्त्री०—करघे में एक पतली लकड़ी जिसका एक सिरा नोंकदार और दूसरा चपटा होता है। चपटा सिरा बीच में फटा होता है जिसमें तागे लगाये जाते हैं। कहीं-कहीं लोग लोहे का भी प्रयोग करते हैं।

तागावरण—सं०पु०यौ० [सं० त्याग+वर्ण] ब्राह्मण, सन्यासी, जोगी, जंगम, भाट और साधु जातियों के छः समूह।
मि०—खटदरसण (२)

तागीर—सं०पु०—अधिकारी या राज्य द्वारा दंड स्वरूप किसी अपराधी की जायदाद या संपत्ति पर अधिकार करने का भाव, जब्त।
उ०—पाधरो बीकानेर महाराज रै कदमां में आइयो। गांव लालमदेसर बडो पट्टो दियो। पछै फेर नोखो रूपावतां सूं तागीर दियो।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

तागो—सं०पु०—१ कच्चे सूत का धागा। उ०—तागो गयो निरधार, तागो रह्यो न तेण रै। लेगो 'वीसळ' लार, माया सांसो मोतिया।
—रायसिंह सांदू
२ डोरा, धागा. ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ।
यौ०—तागा-वरण।
[सं० त्याग] ४ देवता के पुजारी ब्राह्मणों आदि द्वारा आततायी के अधिक सताने पर उसे अभिशाप देने के अभिप्राय से अपने तन पर घाव लगा कर रक्त के छींटे लगाना। उ०—ते तन फिकर करे कई तागा। भय पड़ केइक जीव ले भागा।—गो.रू.
५ देव विशेष के विरुद्ध अभीष्ट फल की प्राप्ति हेतु अनशन करना या धरना देना।
मुहा०—तागो लेणो—दृढ़ निश्चय करना, व्रत धारण करना।
रू०भे०—तागउ।
मह०—तग्ग, ताग।

ताड़—सं०पु० [सं० ताड] १ बहुत लम्बे तने का एक वृक्ष विशेष जिसका तना शाखा रहित होता है और काफी ऊंचाई तक बढ़ता ही जाता है। इसके सिरे पर चौड़े और चपटे पत्ते होते हैं जो मजबूत डंठलों में चारों ओर निकलते रहते हैं। यह वृक्ष उष्ण प्रदेश में समुद्र के तट के प्रदेशों में अधिक पाया जाता है।
पर्या०—तळ, ताळ, ताळद्रुम, त्रणराजक, पत्री, मधुरस।
रू०भे०—ताड।
[सं० ताडः] २ पर्वत, पहाड़। उ०—छिळता भिलता घणूं छछोह, ताढी तट छाया व्रख ताडि। मद भरता इतरा मयंगळ पारा ले चालस्यांइ।—सिव पारवती री वेल
सं०स्त्री०—३ ताड़न, फटकार. ४ प्रहार, आघात।
उ०—खग्ग ताड़ वाजंति, सुहड़ अधो धड़ तुट्टई।—प.च.चौ.
५ बौछार। उ०—तठे गोळिग्रां री पड़ै छै ताड़। तिको गड़ां री सणक किनां घणा मेह री बोछाड़।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
६ कुए से पानी निकालने के 'पाट' के नीचे की सीधी लकड़ी।

ताड़का—सं०स्त्री० [सं० ताडका] यक्ष सुकेतु की कन्या मतान्तर से सुंद नामक दैत्य की कन्या, मारीच सुबाहु की माता तथा सुन्दर दैत्य की भार्या, एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसे रामचंद्रजी ने बाल्यावस्था में ही मारा था।
रू०भे०—ताड़िका।

ताड़काफळ—सं०पु० [सं० ताडकाफल] बड़ी इलायची।

ताड़कायन—सं०पु० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि—सं०पु० [सं०] ताड़का का शत्रु, श्री रामचन्द्र।

ताड़केय—सं०पु० [सं०] ताड़का का पुत्र, मारीच।

ताड़घ—सं०पु०—बेंत या कोड़ा मारने वाला, जल्लाद।

ताड़ण, ताड़णा—सं०स्त्री० [सं०] १ डांट, डपट, फटकार, ताड़ना।
उ०—साधु ही लाहांणि थाये, हास्य रोगी जांणि। निंदा थकी वध बंधना वळि, ताड़णादि पिछांणि।—स्रीपाळ रास
२ प्रहार, मार।
वि०—ताड़ना देने वाला।

ताड़णो, ताड़बो—क्रि०स० [सं० तड आघाते] १ ताड़ना देना, डांटना, फटकारना. २ पीटना, मारना। उ०—तरां नांपैजी ल्याळियां नूं ताड़ दूर किया। अर आ जागा खुस कीवी।—द.दा.
३ हांकना (मवेशी आदि को) उ०—धोरा मरदत्ता पुलिंद पास क्रिर घेनुक बछक ताड़िया। विद्याधर नळ विख अपहरीयो कंटक कोडि विभाड़िया।—रुकमणी मंगळ
मुहा०—ताड़ियो रै'णो—कुछ नहीं मिलना, अप्राप्य अवस्था में रहना।
४ भांपना, समझना, सतर्क होना।
ताड़णहार, हारो (हारी), ताड़णियो—वि०।
ताड़िओड़ो, ताड़ियोड़ो, ताड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
ताड़ीजणो, ताड़ीजबो—कर्म वा०।
ताडणो, ताडबो, त्राड़णो, त्राड़बो—रू०भे०।

ताड़पत्र—सं०पु०—१ ताड़ वृक्ष. २ ताड़ वृक्ष का पत्ता।

ताड़रोग—सं०पु०—घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण उसका मस्तक ऊपर उठा रहता है, वह कम खाता है और दुर्बल होता जाता है (शा.हो.)।

ताड़ासन—सं०पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दोनों हाथों को ऊपर कर के खड़े रहना होता है।

ताड़िका—देखो 'ताड़का' (रू.भे.) उ०—हणे ताड़िका बांण हूंता सुबाहां, वचै मूरछा होय मारीच वाहां।—सू.प्र.

ताड़ी—सं०स्त्री०—१ ताड़ वृक्ष के फूल के कच्चे अंकुरों को गोद कर उनमें से निकाला जाने वाला रस जो कुछ नशीला होता है. २ वह तार जो छाते में कपड़े के नीचे लगाया जाता है. ३ साइकिल के चक्के में धुरी के चारों ओर लगाये जाने वाले तारों में से एक.
४ मथानी के नीचे के चिरे हुए भाग की एक खपच्ची. ५ लोहे की शलाका या शलाख।
रू०भे०—तारी।

ताचकणो, ताचकबो, ताचणो, ताचबो—क्रि०अ०—१ हमला करना, क्रोधित होकर आक्रमण करना. २ ताकना, घात में बैठ कर आक्रमण करना।

ताचियोड़ो-भू०का०कृ०—हमला किया हुआ, झपट कर आक्रमण किया हुआ।
(स्त्री० ताचियोड़ी)

ताछ—देखो 'ताम' (रू.भे.) उ०—ताछ ताछ वंटि अतर मंडि, डंबर मनुहारां। नरमी करे अनेक 'अमा', आगळि उण वारां।—सू.प्र.

ताछटणौ, ताछटबौ-क्रि०स०—१ आक्रमण करना, वार करना. २ पछाड़ना, गिराना।
ताछटणहार, हारौ (हारी), ताछटणियौ—वि०।
ताछटिओड़ौ, ताछटियोड़ौ, ताछटचोड़ौ—भू०का०कृ०।
ताछटीजणौ, ताछटीजबौ—कर्म वा०।

ताछटियोड़ौ-भू०का०कृ०—आक्रमण किया हुआ, वार किया हुआ, पछाड़ा हुआ।
(स्त्री० ताछटियोड़ी)

ताछणौ, ताछबौ-क्रि०स०—१ बलिदान देना. २ सोने का जेवर आदि साफ करना. ३ वार करना।
ताछणहार, हारौ (हारी), ताछणियौ—वि०।
ताछिओड़ौ, ताछियोड़ौ, ताछचोड़ौ—भू०का०कृ०।
ताछीजणौ, ताछीजबौ—कर्म वा०।

ताछियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ बलिदान दिया हुआ. २ साफ किया हुआ (आभूषण)
(स्त्री० ताछियोड़ी)

ताज-सं०पु० [अ०] १ राजमुकुट।
मुहा०—१ ताज बखसणौ—राज्याधिकार देना, राज्य सौंपना. २ सिर रो ताज होणौ—श्रेष्ठ होना, पूर्ण सम्माननीय होना।
यौ०—ताजदार, ताजपोसी।
२ मुकुट। उ०—दादू साहिब मेरे कप्पड़े, साहिब मेरा खांण। साहिब सिर का ताज है, साहिब पिंड परांण।—दादू वांणी
३ कलंगी, तुर्रा. ४ मोर, मुर्गा आदि पक्षियों के सिर पर की चोटी, कलंगी. ५ वह बुर्ज जिसे मकान के सिरे पर शोभा के लिए बना देते हैं. ६ मुख्य द्वार अथवा भवन के ऊपर आगे की ओर बाहर निकला हुआ हिस्सा (शेखावाटी) ७ आगरे में यमुना के किनारे पर बना हुआ भवन, ताजमहल. ८ अरबी घोड़ा (डि.नां.मा.)
उ०—मिळै नहीं मकरांण, ताज केच मांझल तुरी। जेहलियै घण जांण, मोजां दियण मंगाविया।—वां.दा.
वि०—श्रेष्ठ।

ताजक-सं०स्त्री०—घोड़ी।
[फा०] एक ईरानी जाति।
सं०पु०—यवनाचार्य्य कृत ज्योतिष का एक ग्रंथ।

ताजगी-सं०स्त्री० [फा० ताज़गी] १ शुष्कता या कुम्हलाहट का अभाव, ताजापन, चुस्ती, प्रफुल्लता।
क्रि०प्र०—आणी, लाणी, होणी।

ताजण-सं०स्त्री०—१ घोड़ी। उ०—वरदायक ताजण कोड़ वणै, जिण खंगण मोल अमां न जुड़ै। समपै भुज बांधव जांण सही, लखमोलिय केसर मोल नहीं।—पा.प्र.
सं०पु०—२ एक लोक-नृत्य विशेष।
[फा० ताजियाना] ३ चाबुक, कोड़ा।

ताजणियौ—देखो 'ताजणौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ काळी पीळी बादळी, बरसत भोज्यो गात। ताजणिया लागा तिका, साजणिया बिन सात।—र.रा.

ताजणौ-सं०पु० [फा० ताज़ियाना] १ चाबुक, कोड़ा, हंटर।

ताजणौ, ताजबौ-क्रि०स० [सं० तर्ज्जन] डांटना, फटकारना।

ताजदार-वि० [फा०] १ ताज के ढंग का. २ मुकुट धारण करने वाला। उ०—ताजदार बैठे तखत, रज में लोटै रंक। गिणै दोनां नूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।—बां.दा.
सं०पु०—१ बादशाह. २ राजा।

ताजपोसी-सं०स्त्री० [फा० ताजपोशी] राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव, राज्याभिषेक।

ताजमहल-सं०पु०—मुगल बादशाह शाहजहां द्वारा अपनी प्रिय बेगम मुमताज की स्मृति में आगरे में यमुना के किनारे पर बनवाया हुआ प्रसिद्ध मकबरा।

ताजिणौ—देखो 'ताजणौ' (रू.भे.) उ०—मूरिख नाह नूं जांणै सार, हाथि लगामि ताजिणौ।—वी.दे.

ताजिम—देखो 'ताजीम' (रू.भे.) उ०—सरळिय अंगि लता जिम, ताजिम नमतीय बांकि। सोरठणी मनि गउलिय, कउलिय मांनि ज लांकि।—प्राचीन फागु संग्रह

ताजियोड़ौ—देखो 'तजियोड़ौ' (रू.भे.)

ताजियौ-सं०पु० [अ० तअज़ियः] मुसलमानों के धार्मिक नेता इमाम-हुसैन की याद में प्रतिवर्ष बांस की कमचियों व रंगीन कागजों आदि का मकबरे के आकार का बनाया जाने वाला मंडप। शीया मुसलमान इसके सामने मातम मनाते हैं और सायंकाल के समय इसे दफन करते हैं। मोहर्रम।
मुहा०—ताजिया ठंडा होणा—१ ताजिया दफन होना. २ अशक्त होना, निर्बल होना. ३ मृत्यु को प्राप्त करना।

ताजी-सं०पु० (स्त्री० ताजण) १ अरब का घोड़ा।
उ०—१ वणै लूम झूमां हुवां सज्ज बाजां, तुखारी खुरासांण भाड़ेज ताजी, किता खेत कंबोज बाल्हीक कच्छी।—वं.भा.
उ०—२ मन ताजी चेतन चढ़े, ल्यौ की करै लगांम। सब्द गुरू का ताजणा, कोइ पहुंचै साधु सुजांन।—दादू वांणी
२ ताज दशोत्पन्न कुत्ते की एक जाति या इस जाति का कुत्ता।
उ०—इतरां नै हुकम हुवै छै। कुतां रा डोर छूटै छै। लाहोरी ताजी लूच बांण गिलजा पहाड़ी, जिकां री मूढहय मोहनाळ हाथ भर नस, बड़ रै पांन जिसा कांन।—रा.सा.सं.

सं०स्त्री०—अरब की भाषा, अरबी भाषा ।
वि०—१ अरबी, अरब का । २ देखो 'ताजौ' (पु०)
उ०—पार पखै राजी प्रजा, पाजी न करै प्यार। साजी ताजी साहवी, माजी रै परताप ।—बां.दा.

ताजीम–सं०स्त्री० [अ० तअ़जीम] १ सम्मान-प्रदर्शन. २ सम्मान, आदर, सत्कार । उ०—रतनां लगथगती लाजती थकी लटकौ कियौ । कवर पिण तरह सूं ताजीम दियौ ।—र. हमीर
क्रि०प्र०—देणी ।
रू०भे०—ताजिम ।

ताजीर–सं०स्त्री० [अ० ताज़ीर] १ दण्ड, सजा. २ ईर्ष्या ।
उ०—तन मन मार रहै सांइसौं, तिनकौ देख करै ताजीर । यह वड़ी बूझ कहां ते पाई, ऐसी कजा अवलिया पीर ।—दादू वांणी

ताजीमी सरदार–सं०पु० [फा० ताज़ीम+रा.प्र.ई+अ० सरदार] दरबार का वह प्रतिष्ठित सामंत या सरदार जिसे राजा या बादशाह की ओर से ताज़ीम दी जाय ।

ताजौ–वि० [फा० ताजः] (स्त्री० ताजी) १ हरा-भरा, ताजा, जिसमें शुष्कता का अभाव न हो. २ स्वस्थ, प्रसन्न चित्त, प्रफुल्लित. ३ जो पुराना न हो, तुरंत का बना, सद्य प्रस्तुत, सद्य उत्पन्न. ४ मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।
यौ०—ताजौ-मातौ ।
५ जो बहुत दिनों का न हो, नया । उ०—१ नित हांजी नाजी, पूरा पाजी, ताजी रांड तकंदा है ।—ऊ.का.
उ०—२ हिवड़ां थांरौ जाभौ रे, वैराग छै ताजौ रे ।—जयवांणी
६ जो व्यवहार के लिए अभी निकाला गया हो या तय्यार किया गया हो । ज्यूं—ताजौ दूध, ताजौ पांणी ।

ताटंक–सं०पु०[सं०] १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ और १४ के विराम से ३० मात्रायें होती हैं और अंत में मगण होता है। लावणी प्रायः इसी छंद में होती है. २ छप्पय छंद का २४ वां भेद जिसमें ४७ गुरु, ५८ लघु से १०५ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं । इसको तालंक भी कहते हैं. ३ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रथम तीन चरणों में १६-१६ मात्रा और चतुर्थ चरण में ११ मात्रा, इसी क्रम से इसका उत्तरार्द्ध रख कर ८ तुक का द्वाला बनाया जाता है ।—क.कु.बो.
४ आर्या गीति या खंधांण (स्कंधक) का भेद विशेष ।—पिं.प्र.
५ कान का आभूषण, कर्णफूल । उ०—चालुक्यराज भीम आप रा वांय भुज नूं इच्छणी रा ताटंक रौ पीढ़ करण रौ संकळप तजियौ ।
६ प्रथम गुरु के रगण के प्रथम भेद का नाम ।

ताट–सं०स्त्री०—१ मिट्टी के पात्र में पड़ी दरार ।
कहा०—तपियौ घड़ौ ताट मेलै—अधिक तपने पर मिट्टी के घड़े या पात्र में दरार पड़ ही जाती है । किसी को अधिक दुःख देने या सताने पर वह आपे से बाहर हो ही जाता है ।
२ लंबी पतली रस्सी के छोर पर बांधी जाने वाली आक के छाल की बटी हुई रस्सी जिसको हवा में जोर से घुमाने पर आवाज उत्पन्न होती है। यह खेत में पक्षियों को उड़ाने के लिए काम आती है. (पोकरण)

ताटकणौ, ताटकबौ–क्रि०अ०—१ बादलों का गरजना. २ मूसलाधार वर्षा होना. ३ कड़कना, बिजली का जोर से चमकना. ४ आक्रमण करना, झपट कर ऊपर आना ।
ताटकणहार, हारौ (हारी), ताटकणियौ—वि० ।
ताटकिओड़ौ, ताटकियोड़ौ, ताटक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
ताटकीजणौ, ताटकीजबौ—भाव वा० ।

ताटाबरड़–वि—जबरदस्त ? उ०—जवां चारियौ रातवां चरा'र साताजी को, उपट थाटां कियौ जुळत आछौ । कायवां काज ताटाबरड़ काढ़ियौ, कमळ फाटा मठां देख काछौ ।
—चांदारुण ठा० सुरतांणसिंह रौ गीत

ताटियौ—वह टट्टी (आड) जो पानी को बाहर गिरने से रोकने के लिए उस पत्थर की कुंडी की बाजू में लगाई जाती है जहां रहट की माल पर लगे पात्रों से पानी गिरता है ।
मि०—छाजारी ।

ताटी—देखो 'टाटी' (रू.भे.)

ताटीसेवी–सं०पु०—नौकर, सेवक, आश्रित । उ०—एक जात रा भाट ज्यां मांहे पालू पोता सेखावतां रा ताटीसेवी ।—बां.दा. ख्यात

ताटौ–सं०पु०—१ चौड़े पैंदे और छोटी दीवार का मंझला पीतल का बरतन. २ वृक्ष, पेड़. ३ गर्मी की ऋतु में शीतल वायु के लिए लगाई जाने वाली टट्टी ।
अल्पा०—ताटी ।
४ रोक आदि के लिए लगाई जाने वाली आड़ ।

ताटी—देखो 'ताटौ' (अल्पा., रू.भे.)

ताठणौ, ताठबौ—छीनना, खोसना । उ०–पातसाहां राखै प्रसन्न, जेहा तौ घण जांण । मकै मदीनै मारगां, ताठ सकै कुण तांण ।—बां.दा.

ताठसकणौ, ताठसकबौ–क्रि०स०—छीन लेना, खोसना, अधिकार में कर लेना ।

ताडंक—देखो 'ताटंक' (४) (रू.भे.) उ०—अंजनि अंजिय वेवि नयण, पत्रवेलि कपोळि, मोतीलग ताडंक कन्नि, मुखि रंगु तंबोळि ।
—प्राचीन फागु संग्रह

ताड—देखो 'ताड़' (रू.भे.) उ०—ताळ तमाळिय तणच्छ घण, तिहां तुळसी नइ ताड । तज तंदिल नइं तिलवडी, ताळीसांना झाड ।
—मा.कां.प्र.

ताडणौ, ताडबौ–क्रि०अ०—तमतमाना । उ०—भ्रगुटी भीसण ताडतउ, विकट चपेटा ऊपाडतउ, ओस्ठ युगळ फुरफुरत, बोलतउ खळतउ,

गोद्रमुन करतउ, राजा नेत्र करतउ, दुरवचन बोलतउ, राजा कोपानळ प्रज्वळइ ।—व.स.

२ देखो 'ताडूकणो, ताडूकबो' (रू.भे.) उ०—म्हैं जांण्यो धवळो मुवो, मार्यो हो गयो वाग । थाड़ै उणहिज वाछड़ो, ऊठ'र ताडण लग्ग ।—महाराजा मानसिंघ

३ देखो 'ताड़णो, ताड़बो (रू.भे.) उ०—भूंटि धरी घूंवड धाइ ताडइ, आक्रंदनी द्रूपदि वूंब पाडइ ।—विराटपर्व

ताडियो—सं०पु०—सोने के तार से जंजीर गूंथने का कांसी का बना एक छोटा लंबा डंडा ।

ताडूकणो, ताडूकबो—क्रि०अ०—बैल का जोश में आकर आवाज करना । उ०—जद उणहीज वीर धवळा री बाळक वाछड़ो तिको हीज इण नरटै रै कंध लगाय नै ताडूकै छै ।—वी.स.टी.

ताडूकणहार, हारो (हारी), ताडूकणियो—वि० ।

ताडूकिओड़ो, ताडूकियोड़ो, ताडूक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

ताडूकीजणो, ताडूकीजबो—भाव वा० ।

ताडणो, ताडबो—रू०भे० ।

ताडूकियोड़ो—भू०का०कृ०—जोश से ध्वनि किया हुआ (बैल)

ताढ़उ—देखो 'ताढ़ो' (रू.भे.) उ०—लहरी सायर संदियां, वूठउ संदउ वाव । वीजुड़ियां साजण मळइ, वळि किउ ताढ़उ ताव ।

—ढो.मा.

ताढक—सं०स्त्री०—ठंड, शीतलता । उ०—सयणां तणा संदेस, जो कोइ केथे ही कहै । अंतर मिटै अंदेस, तो मन ताढ़क वापरै ।

—जसराज

ताढ़ो—वि०—देखो 'ठाढ़ो' (रू.भे.) उ०—मेहां वूठां अन वहळ, थळ ताढ़ा जळ रेस । करसण पाकां कण खिरा, तद कउ वळण करेस ।

—ढो मा.

(स्त्री० ताढ़ी)

ताणो—क्रि०स०—१ मक्खन को गर्म कर घी बनाना.

२ देखो 'तावणो' (रू.भे.) उ०—अंगां ऊससै सवायो तायो सुगो वैण रांणवाळा, वडाळां छोह में छायो चखां चोळ व्रन्न ।—र.रू.

ताण्पू—सं०पु०—कोपीन ।

तात—सं०पु० [सं० तातः] १ पिता । उ०—सुधन्य माता कौसल्या, तात दसरथ धनि भूपति ।—सू.प्र.

२ पूज्य व्यक्ति, गुरु. ३ पति । उ०—सयणां पांखां प्रेम की, तइं अब पहिरी तात । नयण कुरंगउ ज्यूं वहइ, लगइ दीह नइं रात ।

—ढो.मा.

४ ईश्वर । उ०—दादू मन माळा तहं फेरिये, जहं दिवस न परसे रात । तहां गुरु बांना दिया, सहजै जपियै तात ।—दादू वांणी

५ स्वामी । उ०—व्यथा तुम्हारे दरस की, मोहि व्यापै दिन रात । दुखी न कीजै दीन को, दरसन दीजै तात ।—दादू वांणी

६ प्यार का एक सम्बोधन या शब्द जो भाई-बंधु, इष्ट-मित्र के लिये बोला जाता है ।

सं०स्त्री०—७ चिंता । उ०—१ जोगी सुणि ढोलउ कहइ, तोनूं केही तात । थे पंथी हुआ पंथ सिर, म करि पराई बात ।—ढो.मा.

उ०—२ मालवणी म्हे चालस्यां, म करि हमारा तात । का हसि करि म्हां सीख दै, खड़ियां मांझिम रात ।—ढो.मा.

८ कष्ट, पीड़ा ।

रू०भे०—ताति ।

तातउं, तातउ—देखो 'तातो' (रू.भे.) उ०—१ त्रिसिउ कराळिउ मागइ नीर । तातउं करी ते पाइं कथीर ।—चिहुंगति चउपई

उ०—२ करहा माळवणी कहइ, संभळि बोल्यउ सच्च । तातउ लोहउ ताहरइ, वयण न लागो जच्च ।—ढो.मा.

तातकाळिक—वि० [सं० तात्कालिक] उसी समय का, तत्काल का ।

तातर—सं०पु०—समुद्र, सागर । उ०—ईस धुरती रा धांम नीरां तातर मा ओप, सूर तेजगीरां संतभीरां देत साल । धंकां-पंखी खगां सुधां सीरां ज्युं मुनंद्र धीरां, मही आसतीक वीरां दुजो रायांगाल ।

—हुकमीचंद खिड़ियो

तातायइ—सं०स्त्री० (अनु०) नृत्य में एक प्रकार का बोल ।

रू०भे०—थताथेइ ।

तातार—सं०पु० [फा०] हिन्दुस्तान और फारस के उत्तर कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर प्रान्त तक फैला हुआ एशिया महाद्वीप का एक दे ।

तातारी—वि०—तातार देश सम्बन्धी ।

सं०पु०—तातार देश का निवासी ।

ताताळ—वि०—तेज चलने वाला, शीघ्रगामी, उतावला ।

उ०—खळ काळ माथाळ खाताळ खड़ां, भिड़जाळ आताळ ताताळ भड़ां, चुड़सै धड़ ग्रीध भ्रखै संवळी, हिय मांझळ पेख उठी हवळी ।

— पा.प्र.

ताति—सं०स्त्री०—१ रटन । उ०—तेह कारणि हुं टळवळुं, दिवस न जाई राति । मुझ घाठी पणि जीभड़ी, करतां तेह नी ताति ।

— मा.कां.प्र.

२ देखो 'तात' (रू.भे.) उ०—बाळउं बाबा देसड़उ, पांणी संदी ताति ।—ढो.मा.

तातील—सं०स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिवस, छुट्टी, अवकाश ।

तातेड़खानो—सं०पु०यौ०—स्नानागार, हमाम ।

ताते—क्रि०वि०—इससे, इसलिए, इस कारण ।

तातो—वि० [सं० तप्तः] (स्त्री० ताती) १ गर्म, उष्ण, तपा हुआ ।

उ०—प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि । हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दझणती डरपाहि ।—ढो.मा.

मुहा०—तातो होणो—गर्म होना, कुपित होना ।

२ तृप्त, पूर्ण । उ०—उच्च जाति मद एक, महा कुळ मद सूं मातो । लाभ तणैं मद लोळ, तेम तप मद सूं तातो ।—ध.व.ग्रं.

३ उतावला, जल्दबाज । उ०—मरै नहीं झक मार, तिकै जीवण नै

ताता। मारै जूंवां मसत रहै रंगिया नख राता।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—होणौ।

४ चंचल। उ०—बारस आज सहेलियां, ऊगा वारै भांण। जांणै साजन आवसी, ताता तुरी पिलांण।—अज्ञात

५ शीघ्रगामी, जल्दी चलने वाला। उ०—ताता दोय धोरी जोतरिया, भंवर उजळ दोहुं पाख भलाह। वाजे जिहा पाटळी विध विध, इण रा खेड़ू आप अलाह।—ओपौ आढ़ौ

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्द। उ०—करही कंत कवेरियौ, सुगणी मारू संग। वो सै ऊमर सुंमरी, ताता खड़ै तुरंग।—ढो.मा.

रू०भे०—तत्तौ।

तात्परज-सं०पु० [सं० तात्पर्य्य] तात्पर्य, अभिप्राय। उ०—जिण सिरदार कनै रुजगार ले सिर देण साटै सूरवीर रहै है वौ देस धिन्न है, देस धिन्न कहण री तात्परज म्हनै सूरवीर नै परणावजो।
—वी.स.टी.

तात्विक-वि० [सं०] तत्त्व सम्बन्धी, तत्त्वज्ञानयुक्त।

ताथेइ—देखो 'ताताथेइ' (रू.भे.) उ०—तत नक ताथेइ तटक दे, तोड़त तांन।—ध.व.ग्रं.

तादागळ, तादात्मय-सं०पु० [सं० तादात्म्य] एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिल कर एक रूप हो जाने का भाव, आत्मसात होने का भाव, तत्त्वरूपता।

तादाद-सं०स्त्री० [अ० तअदाद] १ संख्या, गिनती. २ कुल योग।

तादृस-वि० [सं० तादृश] उसके समान, ठीक वैसा।

ताप-सं०पु० [सं०] १ एक प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने, फैलने और भाप आदि बनने के व्यापारों में देखा जाता है। इन्द्रियों को इसका अनुभव अग्नि, सूर्य की किरण आदि के रूप में होता है। उष्णता, गरमी. २ ज्वाला, लपट, आंच. ३ कष्ट, पीड़ा, दुःख। उ०—१ सखियां रांणी सूं कहइ, तजह न जावइ ताप। साल्ह विरह तिल तिल मइं, मारू करइ विलाप।—ढो.मा.

उ०—२ अहू जग मिटावण विघन तन ताप रा। खपावण पाप रा मूळ खोटा।—खेतसी बारहठ

४ ज्वर, बुखार। उ०—ताप सन्निपात जांणी अतीसर संग्रहांणि।
—ध.व.ग्रं.

क्रि०प्र०—आणौ, उतरणौ, उतारणौ, चढ़णौ, चढ़ाणौ।

५ भय, आतंक। उ०—१ बगसर भगा वेढ़ तज, सुण वगा नीसांण। ताप उनग्गा तेग री, अर डग्गा आरांण।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ किण ही वीर स्त्री री पती जुद्ध में हार अनै मरण सूं डरतौ तरवार रा ताप सूं घर में आय वड़ियौ।—वी.स.टी.

६ प्रताप, तेज. ७ जोश, साहस। उ०—फौज सारी गारत कराय देऊं, राती मगरूरी करै सौ कीं री ताप।
—महाराजा जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

रू०भे०—तापु।

तापक-सं०पु० [सं०] १ ताप उत्पन्न करने वाला, उष्णता देने वाला. २ रजोगुण. ३ ज्वर, बुखार।

तापड़-सं०पु० [सं० ताप+पट्] १ 'जट' या जूट का बना वस्त्र जो प्रायः बिछाने के काम में लिया जाता है. २ मैले-कुचैले वस्त्र।

उ०—तागत तूटोड़ी तापड़ तूटोड़ा। खातां पीतां सूं पैलां खूटोड़ा।
—ऊ.का.

३ ऊंट की पीठ पर चारजामे के नीचे डाला जाने वाला कपड़ा. ४ ऊंट की चाल विशेष. ५ व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त मृतक के घर उसके प्रति सहानुभूति एवं परिवार के सदस्यों को आश्वासन देने के लिए आने वाले व्यक्तियों के बैठने के लिए रिवाज के अनुसार निश्चित अवधि तक बिछाया जाने वाला वस्त्र।

क्रि०प्र०—न्हांकणौ, बिछाणौ।

रू०भे०—तप्पड़।

अल्पा०—तापड़ियौ।

तापड़णौ, तापड़बौ-क्रि०अ०—१ भागना, दौड़ना. २ दुखित होना, कष्ट अनुभव करना। उ०—सेत अकब्बर तापड़े, आप गयौ खह मग्ग। ज्यां क्रस भंजै तन गळै, घण गोळक तन लग्ग।—रा.रू.

तापडणौ, तापडबौ—रू०भे०।

तापड़धिन, तापड़धिन्न-सं०पु०—तबले पर प्रहार करने से उत्पन्न शब्द।

क्रि०प्र०—उडणा, उडाणा, होणा।

तापड़ाणौ, तापड़ाबौ-क्रि०स०—घोड़े ऊंट आदि को दौड़ाना।

उ०—इतरी सजनळ कहिनै घोड़ौ तापड़ाय नै घोड़े रै वांसौ दियौ।
—रा.घ.

तापडणौ, तापडबौ—देखो 'तापड़णौ, तापड़बौ' (रू.भे.)

उ०—जेतइ वे दळ हीचडइं, तेतइ तत्काळ कायर तापडइं।—व.स.

तापण—देखो 'तापन' (रू.भे.) (डिं.को.)

तापणौ, तापबौ-क्रि०अ०—१ शीतला (चेचक) के व्रणों का निकलना. २ आग की आंच से अपने को गरम करना, शरीर को आग या धूप के सामने गरमाना।

३ देखो 'तपणौ, तपबौ' (रू.भे.) उ०—सो सियाळा में राजकुमारी रौ जनम हुवौ है जिणसूं जचा रै तापण नै तपणी लाया है।
—वी.स.टी.

तापणहार, हारौ (हारी), तापणियौ—वि०।

तापिओड़ौ, तापियोड़ौ, ताप्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तापीजणौ, तापीजबौ—भाव वा०।

तापतिल्ली-सं०स्त्री०—तिल्ली बढ़ने का एक रोग।

तापती-सं०स्त्री० [सं०] १ सूर्य की कन्या, तापी. २ एक नदी का नाम जो भारत के दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत से निकल कर पश्चिम की ओर बहती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है।

रू०भे०—ताप्ती।

तापत्रय-सं०पु०यौ० [सं०] तीन प्रकार के ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक।

तापन-सं०पु० [सं०] १ ताप देने वाला, सूर्य. २ कामदेव के पांच बाणों में से एक. ३ सूर्यकांत मणि. ४ एक नरक का नाम. ५ तंत्र में एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को पीड़ा होती है।

रू०भे०—तापण।

तापमांनजंत्र, तापमांनयंत्र-सं०पु०यौ० [सं० तापमान यंत्र] ताप या उष्णता की मात्रा मापने का एक यंत्र, थर्मामीटर।

तापल-सं०पु० [सं० ताप] १ क्रोध. २ श्वास रोग से पीड़ित पशु।

वि०वि०—पशुओं में यह रोग प्राय: ग्रीष्म ऋतु में होता है।

तापस-सं०पु० [सं०] १ तप करने वाला, तपस्वी। उ०—नमो ससि तापस रूप रिखंभ। नमो अवतार उदार असंभ।—ह.र.

२ तेजपत्ता. ३ एक प्रकार की ईख. ४ शिव (नां.मा.)

रू०भे०—तावस।

तापसक-सं०पु० [सं०] वह तपस्वी जिसकी तपस्या थोड़ी हो, सामान्य श्रेणी का तपस्वी।

तापसतरु, तापसद्रुम-सं०पु० [सं०] हिंगोट वृक्ष, इंगुदी वृक्ष।

तापस्वेद-सं०पु० [सं०] १ उष्णता के प्रभाव से उत्पन्न किया हुआ पसीना. २ गरम बालु-कण. ३ नमक।

तापहरी-सं०स्त्री० [सं०] एक पकवान, एक व्यंजन का नाम (व.स.)

तापाड़ी-सं०स्त्री०—आंख की पुतली में अधिक चोट लगने के कारण होने वाला सफेद चिन्ह।

तापियोड़ी-भू०का०कृ०—व्रण निकली हुई (शीतला, चेचक)

तापियोड़ो-भू०का०कृ०—तापा हुआ, तप्त, गर्म।
(स्त्री० तापियोड़ी)

तापी-वि० [सं० तापिन्] १ ताप देने वाला, उष्णता पहुंचाने वाला। २ दु:ख देने वाला, सताने वाला। उ०—उठै मन उकळाइ, प्रांण छूटै नहि पापी। हाय रे निठर हिया, ताप किम सहियौ तापी।
—पनां वीरमदे री वात

सं०पु०—१ बुद्ध देव. २ तपस्वी मुनि।

सं०स्त्री०—३ सूर्य की एक कन्या. ४ तापती नदी. ५ नदी
(अ.मा.)

तापु—देखो 'ताप' (रू.भे.) उ०—सुगुरु साथिय हीण घणुं भमिया विसम वाट किहाइं न वीसमिया। वसइं जे जिनमंदिरि सीयळइ, तिहु परे तींह तापु सही टळइ।—अर्बुदाचळ वीनती

तापेंद्र-सं०पु० [सं०] सूर्य।

तापैलेदिन, तापैलैदिन-सं०पु०यौ०—आने वाला या बीता हुआ पांचवा या छठा दिन।

तापौ-सं०पु०—१ ऊंट के चारों पैरों से एक साथ उछलने का कार्य. २ ऊंट के द्वारा चलाया जाने वाला पदाघात।

ताप्ती—देखो 'तापती' (रू.भे.)

ताफतौ-सं०पु० [सं० ताफ्त:] १ चमकदार रेशमी कपड़े ताफ्ते जैसे रंग का घोड़ा। उ०—कासनी ताफता पंच कल्यांण। सूळहरी चंपा पट सिचांण।—सू.प्र.

२ एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताब-सं०स्त्री० [फा०] १ ताप, गरमी, उष्णता। उ०—आखै दिन वंटी अरक, लूआं नै निज ताब। आथवतां इण कारणै, उतरी मुख री आब।—लू

२ आभा, कान्ति, चमक. ३ शक्ति, हिम्मत, सामर्थ्य. ४ सहिष्णुता, धैर्य. ५ आतंक, रौब। उ०—सुण नबाब पत जाब, ताब नां सहे उरंतर। हुय वे आब सिताब, प्रांण विण आब मच्छ पर।—रा.रू.

रू०भे०—ताबि।

६ देखो 'ताव' (रू.भे.) ७ दांत निकलने के समय बच्चों के होने वाला फोड़ा.

ताबड़तोड़-क्रि०वि० [अनु०] तुरंत, एक के बाद दूसरा, शीघ्र, झटाझट, लगातार। उ०—आखर वरी रौ दिन नैड़ौ आयौ। परसूं वरी है। अबै कांई करसां। मूंडै आडी फेपया आयगी। ताबड़तोड़ लागी।
—वरसगांठ

ताबची-सं०स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक।

ताबदांन-सं०पु० [फा० ताबदान] १ दीवार में वस्तुयें आदि रखने के लिए छोड़ा हुआ स्थान, ताख, आला. २ कमरे के दरवाजे के ऊपर 'सिलदरों' पर गोलाकार स्थान जिसमें झरोखे भी होते हैं. ३ खिड़की, रोशनदान।

रू०भे०—तावदांन।

ताबातीबो—देखो 'ताखा-तांखो'।

ताबादार-वि० [अ० ताबऽ+फा० दार] १ आज्ञाकारी, हुक्म का पाबंद। उ०—जावतौ तौ बळदेवजी करसी पण ताबादार तौ लखावसी।—मयाराम दरजी री वात

२ आधीन, मातहत। उ०—पहली ग्यारहौं पातसाह अलावुद्दीन रै अनंतर केही सूबादार दिल्लो हूं पलटिया तिकां में किताक पाछा दिल्ली रा ताबादार हूंता तिका भी तैंमूरबेग रौ विजय देखि।
—वं.भा.

सं०पु०—सेवक, नौकर।

रू०भे०—ताबेदार, ताबैदार।

ताबादारी-सं०स्त्री० [अ०+फा०] १ मातहती, अधीनता. २ आज्ञाकारिता।

रू०भे०—ताबेदारी, ताबैदारी।

ताबि-सं०पु० [सं० ताप] देखो 'ताब' ५ (रू.भे.) उ०—जग पवन विना तर पत्र ज्यौं, थिरि जुवांन पण थप्पियौ। उरि ताबि सहो असपत्ति री, पाछौ ज्वाब न अप्पियौ।—रा.रू.

ताबीज—देखो 'तावीज' (रू.भे.)

.बीत-सं०पु० [अ० ताबईन, ताबऽ का बहु०] १ अधीनता, मातहती। उ०—सेखावत सादा माहाराज बखतसिंघजी री तावीत में रांमसिंघ-जी सूं झगड़ो हुवो। जद गांव रियां डेरा सेखावतां नूं खबर आई। —वा.दा. ख्यात

रू०भे०—ताबीन।

२ देखो 'तावीज' (रू.भे.)

ताबीन-वि०—१ मातहत, आधीन। उ०—त्रिय सहंस ताबीन, दीध महाराज पायदळ। उभै सहस उमराव, बंधव जतनेत सहंस बळ। —सू.प्र.

२ देखो 'तावीत' १ (रू.भे.) उ०—नृप गौड़ निज ताबीन, तस-लीम साजत तीन। गढ़ एण सौपुर गांम, इंद्रसिंघ इण री नांम। —सू.प्र.

ताबीनदार-सं०पु०यौ०—१ नौकर, सेवक. २ सिपाही।

ताबूत-सं०पु०—१ जनाजा, अर्थी। उ०—तद खुरम री ताबूत कर सारौ लोग उदास सो लार हालियौ आयौ। —गौड़ गोपाळदास री वारता

क्रि०प्र०—करणौ, काढ़णौ, निकाळणौ।

२ वह संदूक जिसमें लाश रख कर दफनाने को ले जाते हैं. ३ लाश, शव। उ०—कप्पूरो नै मरहटौ, भड़े उतारे भूत। मांगे साह कमाल दी, 'केहर' रौ ताबूत।—नैणसी

४ मृत व्यक्ति को दफनाने के बाद उसी स्थान पर उसकी स्मृति में बनाई गई इमारत। मजार, मकबरा, देवल।

उ०—महि वैर वंस गोहरि मंडप, अवरंग बहु कीधा इसा। ताबूत (रा.) वेर भूलै तिके, कहै 'अजौ' राजा किसा।—सू.प्र.

मि०—'छतरी' १

५ देखो 'ताजियौ'।

ताबे-वि० [अ० ताबऽ] वशीभूत, आधीन, आज्ञानुवर्ती।

उ०—मुनसबत तागीर हुवो। जद अमरसिंघ नूं खबर हुई जे केसरी-सिंघ नबाब रै ताबे कियौ थो सो गयो नहीं तिण सूं मुनसब तागीर हुवो।—राठौड़ अमरसिंघ री वात

मुहा०—१ ताबे आणौ—अधिकार में आ जाना, काबू में आ जाना. २ ताबे करणौ—वश में करना, अधिकार में करना. ३ ताबे होणौ—वश में होना, अधिकार में होना।

रू०भे०—तावे।

यौ०—ताबेदार, ताबेदारी।

ताबेदार—देखो 'ताबादार' (रू.भे.)

ताबेदारी—देखो 'ताबादारी' (रू.भे.)

ताबै—देखो 'ताबे' (रू.भे.) उ०—मुसकिल कूंच्यां मांडि, तिका निठि कीधा ताबै। अड़ता सिर आकास, फेण झड़ता मुख फाबै।—मे.म.

ताबैदार—देखो 'ताबादार' (रू.भे.)

ताबैदारी—देखो 'ताबादारी' (रू.भे.)

ताय-सं०पु० [सं० तात] १ पिता। उ०—पय पणमीय निय ताय कुंती मद्री पय नमीय। सच्च वयण निरवाहु करिवा कांणणी संचरई। —पं.पं.च.

रू०भे०—तायग।

सं०स्त्री०—२ रात्रि, रात (ह.नां.)

सर्व०—१ उस। उ०—गुरुजी गोविंद लखाया ए, लखिया ताय भक्या निज अनुभव, परगट गाया ए।—स्री सुखरांमजी महाराज

२ किस। उ०—लाख वरीस महत तूं लाखा, तायक समवड़ कीजै ताय। इळ अणवूठै किसौ अंबहर, अनड़ अदठ नै उहवै आय। —महारांणा लाखा री गीत

वि०—समान, तुल्य। उ०—रंग थारा हाथां दळपत रा, घणा देख आभंचे घाय। साहब मदत मदत भ्रम सांमै, तोप कटी खरबूजा ताय।—महेसदास कूंपावत री गीत

क्रि०वि०—१ तब। उ०—अवरंग तणौ सुरंग आवटियौ, जादव तै करतां घण जंग। मैंछां तुळ घातिया मुंडे, काढ़ै ताय सांकड़ा कुरंग। —रांमसिंह भाटी री गीत

२ लिये, वास्ते। उ०—इम पंच कल्यांणक थुणियउ त्रिभुवन ताय। मुनि सुव्रत सांमी वीसमउ जिणवर राय।—स.कु.

३ वैसे ही, ज्यों। उ०—दिनां जवांन सको बळ दाखै, सदा तनै अवसांण सदै। आइयौ दुरग तो आळी आसत, वदै वेस ताय जोस वदै।—दुरगादास राठौड़ री गीत

तायक-वि०—१ वीर, योद्धा। उ०—नरकंध हजारां नीफुड़ै, उभै करां जाय न लिया। तिण वार लियण सिर तायकां, करह सिव हजारां किया।—सू.प्र.

२ संहारक, नाश करने वाला। उ०—जांनुकी वर मरम जांणंग, तेग अरेसां तायक। 'किसन' भज जन मांन रख के, दांन अभै वरदायक। —र.ज.प्र.

३ शीघ्रतापूर्वक, त्वरायुक्त। उ०—सुणै 'गजण' कथ सूरसाह, तायक तिण ताळा। कळहण ऊससियौ कुंवर, पित धीर प्रमाळा। —सू.प्र.

४ शत्रु। उ०—कळह मरन हर पदम कुरम, ओरिया अजरायकां। तायकां मुगळां करै तंडळ, घाय खग घण घायकां।—सू.प्र.

५ एक देश का नाम (नळ-दवदंती रास)

सर्व०—तेरा, तेरी। उ०—लाख वरीस महत तूं लाखा, तायक सम-वड़ कीजै ताय। इळ अणवूठै किसौ अंबहर, अनड़ अदठ नै उहवै आय।—महारांणा लाखा री गीत

तायग—१ देखो 'ताव' १ (रू.भे.) (जैन)

२ देखो 'तायक' (रू.भे.)

तायत—देखो 'ताईत' (रू.भे.) उ०—म्हारे कांनां नै कुंडळ ल्याव, हंजा मारू यांही रैवो जी। यांही रैवो हिवड़ै रा तायत, यांही रैवो जी।—लो.गी.

तायतियौ—देखो 'ताईत' (अल्पा., रू.भे.)

तायत्तीसग-सं०पु० [सं० त्रायस्त्रिंश] इंद्र के स्थानीय देवता (जैन)
तायफ-सं०पु० [अ०] १ चारों ओर घूमने का भाव, परिक्रमा.
  २ चौकीदारी. ३ चौकीदार. ४ देखो 'तायफो' (मह., रू.भे.)
  उ०—केई केई तायफ लोग न करेंछै। वे पण गोळियां वांवण री हांम धरै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
तायफो-सं०पु० [फा० तायफः] १ नाचने गाने वाली वेश्याओं और समाजियों की मंडली। उ०—बना रै तायफो जैसळमेर रो सा रे घर आंगणां मुगरेजी रै पातरां नचाय।—लो.गी.
  २ वेश्या अथवा वेश्याओं का समूह। उ०—बाजै नित घूघर बंधै, फरगट वाळो फैल। तन मन मिळियो तायफै, छाकां हिळियो छैल।
—बां.दा.
तायल-वि०—१ वीर, शक्तिशाली, समर्थ। उ०—सत्रु प्रवळ की गोंचणो, सणी कढ़ै रण सार। तायल पिव नित तोलणो, भुज तुल पै भू-भार।—रेवतसिंह भाटी
  २ उग्र, तेज। उ०—जाजुळ दुजराज करण जुध जाडो, तस कुठार द्रग तायल। राह वरात ईख अजरायळ, आय'र ऊभो आडो।—र.रू.
  ३ संहारक। उ०—हूतो सयद हुसैन अंब गढ़ मझि अजरायळ। लोक विदा करि लगस तिको काढ़ै खळ तायल।—सू.प्र.
  ४ घाव। उ०—घण वीह पतंग डोळी वहे घायलां, पतंग झड़ छायलां कोह पूरो। ताव खग झड़ां तोड़ै कमळ तायलां। भड़ां अजरायलां बाघ भूरो।—बळवंतसिंह हाडा रो गीत
तायलो-सर्व०—१ तेरा, तुम्हारा। उ०—रहे न तायलो राज तर चोयल भालो टकै। मरसो जुध में भाज, वीर वचन अमणो वदै।—पा.प्र.
  २ देखो 'तायल' (रू.भे.)
तायां-सं०पु० [सं० आततायी] (बहु व०) अत्याचारी, आततायी।
  उ०—ग्रह छट्ठ विहायां सातम आयां सूर अठायां दरसायां। डर आसुर तायां सयद अभायां उभकै पायां असुहागां।—रा.रू.
तायोड़ो-भू०का०कृ० [सं० तप्तः] १ पिघलाया हुआ. २ तपाया हुआ.
  ३ सताया हुआ।
  (स्त्री० तायोड़ी)
तारंग—देखो 'तारक' ५ (रू.भे.)
तारंगमंत्र—देखो 'तारकमंत्र' (रू.भे.) उ०— तारंगमंत्र आदेस तो दिढ चा रंग निस संधि दिव। सारंग-नयण उमया सुवर सीस गंग धारंग सिव।—सू.प्र.
तारंगसिला-सं०स्त्री०—चौसठ योगिनियों के एकत्रित होकर नृत्य करने की शिला।
तार-सं०पु० [सं०] १ सूत, तागा, सूत्र, तंतु। उ०—सजण वोळावे हूं वळी, ऊभी मंदिर पूठ। हिवड़ो काचा तार ज्यूं, गयो लहंगां तूट।
—र.रा.
  मुहा०—१ तार तार करणो—किसी बुनी या बटी हुई वस्तु को एक-एक रेशे में बिखेरना. २ तार-तार होणो—वस्तु का ऐसा फटना कि उसकी धज्जियां अलग-अलग हो जांय। वस्तु का एक-एक रेशा अलग होना।
  यौ०—तार-जोड़।
  २ चांदी, रौप्य (डि.को., अ.मा.) उ०—जर तार चिंगां साइवांन जास। परगटे जांण बहु रवि प्रकास।—सू.प्र.
  यौ०—तारकूट।
  ३ सोना, चांदी, लोहा, तांबा आदि धातु को पिघला कर या पीट कर बनाया हुआ तागा। रस्सी या तागे के रूप में परिणत की हुई धातु। धातु-तंतु।
  क्रि०प्र०—खींचणो।
  ४ धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा बिजली की सहायता से संदेश भेजा जाता है, टेलीग्राफ।
  यौ०—तार घर।
  ५ तार पर बिजली की सहायता से आई हुई खबर, संदेश.
  ६ मादक पदार्थ सेवन करने के बाद की अवस्था। हलका नशा, खुमारी। उ०—जिम जिम मन अमलै कियइ, तार चढंती जाइ। तिम तिम मारवणी तणइ, तन तरणापउ थाइ।—ढो.मा.
  ७ बराबर चलता हुआ क्रम, निरन्तरता, सिलसिला।
  मुहा०—१ तार जमणो—क्रम बैठना. २ तार टूटणो, तार तूटणो—क्रम भंग होना, सिलसिला टूटना. ३ तार बंधणो—क्रम बंधना, सिलसिला लगना. ५ तार बंधियो हूंणो—क्रम में चलना, सिलसिला जारी रहना. ५ तार बांधणो—क्रम जारी रखना, निरन्तरता रखना. ६ तार लगणो—देखो 'तार बंधणो'. ७ तार लगाणो—तांता बांधना, क्रम लगाये रखना।
  ८ संयोग, अवसर।
  मुहा०—१ तार जमणो—कार्य सिद्धि का अवसर बैठना, संयोग मिलना. २ तार बैठणो—काम बनने का अवसर मिलना।
  ९ सार, तत्व, निष्कर्ष। उ०—उदयवत आज दुनियांण सह ऊपरा, सार रो तार लागो सवां ही। हंस राखै जिकां नीर अळगो हुवै, नीर राखै जिकां हंस नाहीं।—महाराणा प्रताप रो गीत
  मुहा०—तार काढ़णो—सार निकालना, तथ्य ज्ञात करना।
  १० वंश, परम्परा। उ०—मेवट कोटे राव मेलणो, साहण सेन सवायो। लोदां तार कहै लाखावत, ऊगै दीहत आयो।
—महाराणा मोकळ रो गीत
  ११ सुबीता, व्यवस्था।
  मुहा०—१ तार जमणो—सुबीता होना, कार्य सिद्धि की व्यवस्था बैठ जाना. २ तार बंधणो—देखो 'तार जमणो'.
  ३ तार लागणो—देखो 'तार जमणो'. ४ तार टूटणो—व्यवस्था का भंग हो जाना।
  १२ युक्ति, उपाय, तरकीब।
  मुहा०—१ तार बैठणो—तरकीब काम आना. २ तार लगाणो—

युक्ति काम में लेना, उपाय करना।
१३ राम की सेना का एक बन्दर. १४ तारकासुर नामक राक्षस. १५ मय दानव का एक साथी. १६ नतीजा, फल. १७ ध्यान, लगन।
उ०—बोलै चालै वैठै ऊठै, पारब्रह्म सूं तार न तूटै।
—स्री सुखरांमजी महाराज
१८ तार वाद्य। उ०—बीण ताळ सुर वीण, तार तंवूर चंग तदि। प्रत खंजरी पिनाक जुगति मरदंग वजत जदि।—सू.प्र.
कहा०—तार वजियौ नै राग पिछांणी—तारवाद्य बजा अर्थात् तार-वाद्य के तार झंकृत हुए और राग का परिचय मिला। कार्यारम्भ करने के ढंग से ही व्यक्ति की योग्यता का पता चल जाता है। व्यक्ति की वाणी से उसके चरित्र का पता लग जाता है।
१९ शुद्ध मोती. २० संगीत में एक सप्तक जिसके स्वरों का उच्चारण कंठ से उठ कर कपाल के अभ्यंतर स्थानों तक होता है. २१ प्रकाश, आभा, चमक। उ०—ऊपरिं पदपलव पुनरभव ओपति, निमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा हरिहंस सावक ससिहर हीर।—वेलि.
२२ चाशनी की परिपक्व अवस्था के समय जांच करने पर बनने वाला तंतु।
(मि० 'डोरौ' १९)
२३ आंख की पुतली।
सं०स्त्री०—२४ मूर्च्छा, बेहोशी।
क्रि०प्र०—आणी।
२५ पर्याप्त भोजन करने से पेट के तनने की अवस्था. २६ क्रोध, गुस्सा।
वि०—१ निर्मल, स्वच्छ. २ थोड़ा, किंचित, अल्प।
उ०—धूणै सिर पकड़ै धरा, असह सहै जे आर। बोहलिया विरदावियां, गरज सरै नह तार।—बां.दा.

तारक—सं०पु० [सं०] १ नक्षत्र तारा। उ०—गैंण नै मिळिया भोळा नैंण, जोवतां तारक जोड़्या हाथ। छुडावै कोई साथण मूंन, भलो है उण साथण रौ साथ।—सांझ
२ आंख की पुतली. ३ इन्द्र का एक शत्रु जिसे कार्तिकेय ने मारा था, तारकासुर। उ०—मनख्या मत विलळाय गाय प्रभुजी पख तूटल, रांमण हणियौ रांम गूह खाधौ तारक खळ।—र.ज.प्र.
४ चांदी, रौप्य। उ०—धरे तारक द्रव्य धारां, वंदे तोरण जेर वारां।—सू.प्र.
५ वह जो पार उतारे, तारने वाला। उ०—क्रतू करुणामय ध्रू करतार, भणै भव भाजन भू भरतार। उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस।—ऊ.का.
रू०भे०—तारंग।
यौ०—तारक तीरथ।
अल्पा०—तारकौ।
६ एक जाति विशेष जिसके व्यक्ति मृतक व्यक्ति के क्रियाकर्म-संस्कार तथा तर्पण आदि कराते हैं और मृत्यु कृत्यों का दान भी ग्रहण करते हैं।
मि०—कारट (१)
७ ईश्वर. ८ कर्णधार, मल्लाह. ९ प्रत्येक चरण में चार सगण और एक गुरु सहित तेरह वर्णों का वर्णिक छंद विशेष।
१० [सं० तार्क्ष्यः] गरुड (नां.मा.) ११ घोड़ा (अ.मा.)
रू०भे०—तारकी, तारख, तारग, तारच्छ, तारक्ष, तारिक, तारिक्ख, तारखि।

तारकअसवारी—सं०पु० [सं० तार्क्ष्यः+रा.अ+फा. सवारी] ईश्वर (अ.मा.)

तारकगाह—सं०पु०—स्वामी कार्तिकेय (डिं.को.)

तारकजित—सं०पु० [सं० तारकजित्] कार्तिकेय (डिं.को.)

तारकटोडी—सं०स्त्री० [सं० तारक+रा-टोडी] ऋषभ और कोमल स्वरों के लगने से बनने वाली एक राग जिसमें पंचम स्वर वर्जित होता है।

तारकतीरथ—सं०पु० [सं० तारकतीर्थ] गया तीर्थ जहां के लिए यह माना जाता है कि वहाँ पिंडदान करने से पुरखे तर जाते हैं।

तार-कबांणी—सं०स्त्री० [सं० तार+फा० कमान+रा.प्र.ई] धनुष के आकार का एक औजार जिसमें डोरी के स्थान पर लोहे का तार लगा रहता है और इससे नगीने काटे जाते हैं।

तारकब्रह्म, तारकमंत्र—सं०पु० [सं०] राम का षडक्षर मंत्र, राम तारक मंत्र।
रू०भे०—तारंगमंत्र, तारगमंत्र।

तारकस—सं०पु० [सं० तार+फा० कश] वह जो धातु के तार खींचने का काम करे।

तारकसी—सं०स्त्री०—१ तार खींचने का कार्य. २ तार खींचने की मजदूरी।

तारका—सं०स्त्री०—१ बालि की पत्नी. २ इन्द्रवारुणी. ३ नक्षत्र, तारा (अ.मा.) उ०—खींवरां हाथ बांणास खास, बहतीक जांण रोकी बनास। सांतरा अती धाराक सेल, तारका झबझबै अणीह सेल।—वि.सं.
४ ज्योति, प्रकाश (ह.नां.) ५ घोड़ों की जाति विशेष (शा.हो.)

तारकाक्ष—सं०पु० [सं०] तारकासुर का ज्येष्ठ पुत्र, यह उन तीन भाइयों में से एक था जो ब्रह्मा के वर से तीन पुर (त्रिपुर) बसा कर रहते थे।

तारकायण—सं०पु० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

तारकार, तारकारि—सं०पु० [सं० तारकारि] स्वामी कार्तिकेय, षडानन (अ.मा.)

तारकासुर—सं०पु० [सं०] एक असुर का नाम जिसका पूरा वृत्तान्त शिवपुराण में मिलता है।

तारकिक—सं०पु० [सं० तार्किक] १ तर्क शास्त्र को जानने वाला।
उ०—ज्योतिषी वैद पौरांणिक जोगी, संगीती तारकिक सही।

पारग्ग माट गुरुवि माना निग, करि ग्रेकठा तो ग्ररय कहि।
—वेलि.

२ तर्क करने वाला।

तारकिनी-वि०स्त्री० [सं०] तारावलीयुक्त, तारों से भरी।

तारकित-वि० [सं०] तारों से युक्त।

तारकी-वि० [सं० तारकिन्] १ तारकित. २ थोड़ा, किंचित।
उ०—खोयो ग्रासुरी धरम ग्रापो वीगोयो तैं मीरखांन, जोयो नहीं तारकी न मागनो जवाब।—नवळदांन लाळस
सं०पु०—देखो 'तारक' (१०) उ०—कंपू मार तेगां तीजी ताळी सो कुरंगी कीधी, जका बाद नौरंगी प्रजाळी भुजां जोम। मांनूं तारकी विरंगी काळी घड़ा मार्थ। भूप डूंगै विधूंसी फिरंगी वाळी भोम।
—डूंगजी जवारजी रो गीत
३ देखो 'तारक' (१०, ११)

तारकूट-सं०पु० [सं० तार+कूट=नकली] चांदी ग्रौर पीतल के योग से बनी एक धातु।

तारकेस, तारकेस्वर-सं०पु० [सं० तारक+ईश ग्रौर तारकेश्वर]
१ शिव, महादेव. २ एक शिवलिंग जो कलकत्ते के पास है.
३ तर्कशास्त्र।
[सं० तार्किक] ४ तर्कशास्त्र करने वाला।

तारको—देखो 'तारक' (५) (ग्रल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० तारकी)

तारखी, तारक्ष, तारख, तारखो, तारिख—१ देखो 'तारक' (१०, ११)
(डि.को., ग्र.मा.,नां.डि.को.)
उ०—१ पर्‌यो व्याल ज्यों कीलनी वज्र किल्लो। मनूं भखिख तारक्ष पीछे उगल्यो। वटू वायके वेग मांनू उवारचौ, पर्‌यौ छाग भूमी मनू तेग मार्‌यो।—ला.रा.
उ०—२ किवलो पिच्छू कहे लहू लघु ग्रंक लहावै, गिणै छंद वस गुरु कवी लघु चार कहावै। वीजा दीरघ वरण जपै गुरु ग्रादि संजोगी, विसरग ग्रग सिर विंदु भणै तारख सां भोगी।—र.रू.
उ०—३ ताखड़ा फरै फरंगांण तारख तरह, दुरंग वांको लयण रोड ददमां।—मोडजी ग्राढ़ौ

तारग—देखो 'तारक' (रू.भे.) उ०—मारग में तारग मिळै, संत रांम दोई। संत सदा सीस राखूं, रांम हृदय होई।—मीरां

तारगमंत्र—देखो 'तारकमंत्र' (रू.भे.) उ०—ग्रंत वार कहि ग्रंत उचारसि, तारगमंत्र समपि सिव तारसि।—सू.प्र.

तारगा-स्त्री०—१ यक्षों के इन्द्र पूर्णभद्र की चतुर्थ पटरानी (जैन)
२ नक्षत्र।

तारघर-सं०पु० [सं० तार+गृह] वह कार्यालय जहाँ बिजली के सहारे तार द्वारा संदेश भेजा जाता है ग्रौर प्राप्त किया जाता है।

तारच्छ—देखो 'तारक' (१०, ११) (रू.भे.)

तारजोड़-सं०पु०यौ०—कशीदाकारी का एक कार्य जो सुई ग्रौर धागे की सहायता से कपड़े पर किया जाता है। कारचोंबी।

तारण-वि० (स्त्री० तारणी) उद्धार करने वाला, तारने वाला।
उ०—१ तिण सुत संजय रघुकुळ तारण। सातय संजय सुत दुसह संघारण।—सू.प्र.
उ०—२ वारण रा तारण व्रजवासी, कारण किसे सुणै नह कांन।
—गणेसदांन रतनू
सं०पु० [सं०] १ (ग्रन्य को) पार करने का कार्य. २ उद्धार, निस्तार।
यौ०—तारण-तरण।
३ ईश्वर. ४ ऋण की रकम, जो सोना गिरवी रख कर ली जाती है, पर जब व्याज बढ़ता है ग्रौर ऋण की ग्रदायगी नहीं हो पाती है तब ऋणदाता गिरवी में ग्रौर सोना लेता है। यह ग्रतिरिक्त गिरवी में रखी जाने वाली वस्तु तारण कहलाती है (किशनगढ़)।
रू०भे०—तारन।

तारण-पारण-सं०पु०—एक व्रत जो ग्राश्विन शुक्ला पूर्णिमा के दिन से उपवास के द्वारा प्रारम्भ किया जाता है। इसमें प्रथम उपवास के बाद कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा को प्रातः एक समय भोजन, ग्रन्य दिवस सायंकाल में एक समय भोजन ग्रौर तृतीय दिवस पुनः उपवास। फिर ग्रगले दिन प्रातः एक समय, दूसरे दिन सायंकाल एक समय भोजन ग्रौर पुनः उपवास—इसी क्रम से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक यह व्रत किया जाता है।

तारणी-सं०स्त्री०—१ उद्धार करने वाली।
यौ०—तारणी तेरस।
२ देवी, दुर्गा. ३ कश्यप की एक पत्नी जो याज ग्रौर उपयाज की माता कही जाती है।

तारणीतेरस-सं०स्त्री०यौ०—बुधवार के दिन पड़ने वाली त्रयोदशी की तिथि जिस रोज स्त्रियां व्रत कर तेरह ग्रनाजों को सम्मिलित कर रोटी बना ग्रौर तेरह शाकों को एक साथ पका कर भोजन करती हैं।

तारणो, तारबौ-क्रि०स० [सं० तृ] १ पार लगाना, उद्धार करना, मुक्त करना। उ०—रात दिवस हिक रांम, पढ़िया जो ग्राठूं पहर। तारै कुटुंब तमांम, मिटै चौरासी मोतिया।—रायसिंह सांदू
२ बचाना, रक्षा करना। उ०—ग्राऊ में तूटी वरत, कुए मभ पैठांह। ग्रणंदो खाती तारियौ, (मा)खारोड़ै बैठांह।—ग्रज्ञात
३ तिराना। उ०—साह तणी करणी सुणी, ग्रळगा हूंत ग्रवाज। तद तारी मेहा तणी, जळ डूबंती जिहाज।—ग्रज्ञात
उ०—२ वैरी कड़छे 'वांकला', करै ग्रहोणी काज। रांम तार गिरवर रची, पांणी ऊपर पाज।—बां.दा.
तारणहार, हारौ (हारी), तारणियौ—वि०।
तरवाड़णौ, तरवाड़बौ, तरवाणौ, तरवाबौ, तरवावणौ, तरवाववौ, तराड़णौ, तराड़बौ, तराणौ, तराबौ, तरावणौ, तराववौ—प्रे०रू०।
तारिग्रोड़ौ, तारियोड़ौ, तारचोड़ौ—भू०का०कृ०।

तारीजणौ, तारीजबौ—कर्म वा० ।
तरणौ, तरबौ—अक०रू० ।
तारणौ, तारबौ—रू०भे० ।

तारत, तारतखांनौ, तारथ–सं०पु० [अ० तहारत] पाखाना, शौचालय ।
उ०—वासै अति विकराळ, महा मुख तारत मोखौ। है कूंडौ इक हाथ, हाथ हेकरा में होकौ ।—ऊ.का.

तारदी–सं०स्त्री०—एक प्रकार का कांटेदार पेड़ ।

तारन—देखो 'तारण' (रू.भे.)

तारपीन–सं०पु० [अं० टरपेन्टाइन] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो औषध के काम में आता है और दर्द के स्थान पर मला जाता है।

तारवणौ, तारवबौ—देखो 'तारणौ, तारवौ' (रू.भे.)
उ०—हूं बळिहारी जाऊं तेह नी, जे स्त्री साधु निग्रंथ। आप तरइ अउर तारवइ, साधइ मुगति नउ पंथ।—स.कु.

तारवियोड़ौ—देखो 'तारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तारवियोड़ी)

तारसार–सं०पु० [सं०] एक उपनिषद् का नाम ।

तारहौ—तेरा । उ०—गणै तारहा नाम सुर कोड़ि गनै। अला माहरी एक आराध मनै ।—पी.ग्रं.

तारां–क्रि०वि०—१ तब । उ०—तारां मंडळेजी अरु बीदेजी वा कांमदारां आय रावजी नूं कयौ ।—द.दा.
२ देखो 'तारा' (३, ४) (रू.भे.)

तारांण—देखो 'तारायण' (रू.भे.)

तारा–सं०पु०—१ युद्ध में बजाया जाने वाला एक वाद्य विशेष ।
उ०—रायजादा रा भाला भळकिनै रहीया छै। तबलबंधा मीरजादा वांकां बहादरवां नै तारा तबल बाजिनै रहीआ छै।—रा.सा.सं.
२ सुरणाई नामक संगीत वाद्य के छेदों का नाम जो संख्या में कुल ६ होते हैं ।
सं०स्त्री०—३ बालि बंदर की पत्नी. ४ सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की धर्मपत्नी शैव्या का एक नाम ।
रू०भे०—तारां ।
५ ज्योति, प्रकाश (ह.नां.)
यौ०—ताराधिप, ताराधीस, तारानाथ, तारापत, तारापति ।

ताराइण—देखो 'तारायण' (रू.भे.) उ०—करण सहंस सम करग, तिमर कुरियंद भगौ तिण। दबै तास तप देखि अवर छत्रपति ताराइण ।—सू.प्र.

ताराई–सं०स्त्री०—एक घास विशेष।

ताराक्ष–सं०पु०—एक असुर का नाम ।

ताराग्रह–सं०पु० [सं०] मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र और शनि इन पांच ग्रहों का समूह (ज्योतिष)

ताराज—देखो 'तराज' (रू.भे.)

तारादूती–सं०स्त्री०—चुगली करने वाली स्त्री । उ०—जेठजी के तारादूती नार, नित उठ थांसूं लड़ पड़ै जी म्हांका राज ।—लो.गी.

ताराधिप, ताराधीस, तारानाथ–सं०पु०—१ चन्द्रमा. २ शिव. ३ बृहस्पति. ४ बालि. ५ सुग्रीव. ६ राजा हरिश्चन्द्र ।

तारापंत–सं०स्त्री० [सं० तारा+पंक्ति] तारावली, तारों की पंक्ति ।

तारापत, तारापति—देखो 'ताराधिप'।

तारापथ, तारापह–सं०पु० [सं० तारापथ] १ आकाश. २ आकाश गंगा ।

तारपीड़–सं०पु० [सं०] १ चंद्रमा. २ अयोध्या के एक राजा का नाम (मत्स्य पुराण) ३ काश्मीर के प्राचीन राजा का नाम ।

तारापैंसांनी–सं०पु०—वह घोड़ा जिसके ललाट पर अंगूठे के बराबर सफेद तिलक हो (अशुभ) (शा.हो.)

तारामंडळ–सं०पु० [सं० तारामंडल] १ नक्षत्रों का समूह, तारागण ।
उ०—जगमगत फूल जरदोज रा, वयंडां पीठ बखांणियां। अंधार निसां जांणै अरस, तारामंडळ तांणियां ।—सू.प्र.
२ एक प्रकार की आतिशबाजी।

तारामंडूर–सं०पु० [सं०] अनेक द्रव्यों के योग से बनने वाला वैद्यक में एक विशेष प्रकार का मंडूर ।

तारामृग–सं०पु० [सं० तारामृग] मृगशिरा नक्षत्र ।

तारायण–सं०पु० [सं०] १ आकाश ।
सं०स्त्री०—२ तारावली, तारों की पंक्ति । उ०—नारायण देवां मही, ज्यूं तारायण चंद। कमळा पग चंपी करै, 'बंक' संक तज बंद ।—बां.दा.
३ नेत्र-ज्योति, नजर।
मुहा०—तारायण बंधणी—दृष्टि स्थिर होना ।
४ मस्तक, कपाल । उ०—वेढ़ परायण इसी वंचाई, मही सरायण सुणज्यो मूढ़ । निज नारायण गुरू निवाजे, फजर गई तारायण फूट ।
—बांकीदास वीठू
५ चोट लगने या कमजोरी के कारण यदाकदा आंखों के आगे छा जाने वाला अंधेरा।
क्रि०प्र०—आंणी, बंधणी ।
वि०पु० (स्त्री० तारायणी) उद्धार करने वाला, उद्धारक ।
उ०—अभे रूप धारायणी सांचेली जेहांन आखै, तारायणी सिला धु नाचेली निरत्याद । पारायणी प्रवाड़ां आछेली दसा दैण पातां, नारायणी रूप नमौ काछेली अनाद ।—नवळदांन लाळस
रू०भे०—ताराअण, ताराइण ।

तारायणी–सं०स्त्री०—नक्षत्र समूह, तारों का समूह ।
उ०—नखत जोतीक धिन 'बखत' नव साहसा, सो अचळ वीर पै तखत समराथ। पाय नांमै प्रथीनाथ सारी प्रथी, सुर गिरां जेम तारायणी साथ ।—महाराजा बखतसिंह रौ गीत

तारिक–वि० [अ०] १ तर्क करने वाला, तर्क छेड़ने वाला. २ त्यागी ।
उ०—दादू आसिक एक अल्लाह के, फारिग दुनियां दीन । तारिक इस औजूद थैं, दादू पाक यकीन ।—दादू बांणी
रू०भे०—तारिक्ख, तारिख ।

देखो 'तारक' (रू.भे.) (नां.मा.)

तारिका—देखो 'तारो' (२) (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सुंदर नयन तारिका सोभत, मांन कमळ दळ मध्य अलि हो।
—स.कु.

तारिख, तारिक—१ देखो 'तारक' (रू.भे.) उ०—तविक वेग तारिख गगन नन मविग विनारन। चंद मरद लख चमक, तमक तज्जत नह तारन।—जैनदांन बारहठ

उ०—२ करसि प्रांग केवियां दस्त अमरखि दुर-वंद्यां। सु-रिख वांग मारग, जांग सुरं तारिख यंद्यां।—रा.रू.

२ देखो तारिक' (रू.भे.)

तारिया—सं०स्त्री० [सं० तारिका] १ तारिका देवी (जैन) २ आंख की पुतली (जैन)

तारियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ उद्धार किया हुआ, पार किया हुआ. २ रक्षा किया हुआ, बचाया हुआ. ३ तिराया हुवा।
(स्त्री० तारियोड़ी)

तारिस—क्रि०वि० [सं० तादृश] वैसा ही। उ०—'सांवळ' को 'केहरि' सग साहै, मारू वर्ण घणी दळ मांहै। 'उमेदसी' तारिस 'अन्नावत', आयो राजी करण 'अजावत'।—रा.रू.

तारी—सं०स्त्री०—१ घी, चावल आदि के संयोग से बना एक चटपटा व्यंजन जिसमें चने की दाल, आलू, गोबी, मटर आदि भी डाले जाते हैं. २ तार का बना एक उपकरण जिससे बच्चे गोल पहिया चलाते हैं. ३ देखो 'ताड़ी' (रू.भे.)

तारीक—वि० [फा०] १ स्याही, काला. २ धुंधला।

तारीकी—सं०स्त्री० [फा०] अंधकार, अंधेरा, स्याही।

तारीख—सं०स्त्री० [फा०] १ मास का प्रत्येक २४ घंटे की अवधि का एक दिन, तिथि. २ कोई नियत तिथि जो किसी पूर्व की घटना के लिए प्रसिद्ध हो. ३ किसी कार्य के लिए ठहराया हुआ दिवस।

मुहा०—१ तारीख देणी—किसी कार्य के लिए कोई तिथि निश्चित करना. २ तारीख पड़णी—पेशी के लिए तिथि मिलना।

४ इतिहास।

मुहा०—तारीख वाचणी—इतिहास प्रकट करना।

तारीफ—सं०स्त्री० [अ०] १ वर्णन, बखान. २ प्रशंसा, श्लाघा।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।

मुहा०—तारीफ रा पुळ बांधणा—बेहद प्रशंसा करना।

तारु—देखो 'तारू' (रू.भे.)

तारुण—सं०पु० [सं० तारुण्य] युवावस्था, वयस्कता।

रू०भे०—तारुण्ण, तारुन्न।

तारुणी—देखो 'तरुणी' (रू.भे.) उ०—तारुणी सळजळ सेतदंत। वांणी सुवांणि नइ लाजवंत।—र.ज.प्र.

तारुण्ण, तारुन्न, तारुण्य—देखो 'तारुण' (रू.भे.)

उ०—वैरी तरवर हम है बयार, तारुण्य तरुन तत्पर तयार।—ऊ.का.

तारू—वि०—१ उद्धार करने वाला, पार लगाने वाला.

२ देखो 'तैरू' (रू.भे.) उ०—स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति। तारू कवण जु समुद्र तरै।—वेलि.

३ देखो 'ताहरां' (रू.भे.) उ०—चक्राकारि फिरइ तारू पठांण करइ किउ।—व.स.

रू०भे०—तारु।

तारेक—क्रि०वि०—कभी, यदाकदा।

तारै—क्रि०वि०—तब। उ०—इम करतां गुदहळक वेळा हुई, तारै कोहर उपर पधारीया। पछै करहा नै पांणी पावण लागा।—ढो.मा.

तारो—सं०पु० [सं० तारा] १ नक्षत्र, सितारा, तारा।

पर्या०—उडगण, ग्रह, जोत, जोतकी, तारा, तेज, दीपनभ, धिसन, नखत, भा, रिखभ, रूपमिण।

मुहा०—१ तारा गिणणा—तारे गिनना, कष्ट अनुभव करना.

२ तारा तोड़णा—तारे तोड़ना, कठिन कार्य करना. ३ तारा में—गुरु और शुक्र ग्रहों के अस्तकाल का समय जो मांगलिक कार्यों के लिए अशुभ माना जाता है. ४ तारो अस्त होणो—गुरु या शुक्र या दोनों का ही अस्त होना जो अशुभ समझा जाता है. ५ तारो ऊगणो—गुरु और शुक्र दोनों का उदयकाल में रहना। यह शुभ माना जाता है. ६ तारो लागणो—गुरु या शुक्र या दोनों ही के अस्तकाल से उदयकाल तक का समय जो मांगलिक कार्य के लिए अशुभ माना जाता है।

२ आंख की पुतली (ह.नां.) उ०—आंख्यां रा तारा अवस, सुख स्वारथ रा सार। साहब सिर रा सेहरा, आतम रा आधार।—र.रा.

३ अश्विनी नक्षत्र. ४ भाग्य. ५ प्रकाश. ६ नैचे के मध्य के उभरे हुए गोलाकार भाग पर लगाये जाने वाले धातु के बने फूल।

ता'रो—सर्व०—तेरा, तुम्हारा।

तारो-रांणो—सं०पु०—बालिकाओं द्वारा गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक-गीत।

तालंक—सं०पु०—छप्पय छंद का २४ वां भेद जिसमें ४७ गुरु ५८ लघु से १०५ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं।

ताळ—सं०स्त्री०—१ वेला, समय। उ०—ताहरां देवीदास कह्यो, ताळ तो कांही लागी नहीं। जावण आवण हीज कियो।
—पलक दरियाव री वात

२ हाथ का तल या हथेली. ३ करतल ध्वनि।

उ०—१ सुणै वात ऐ मात नै भ्रात साथै। हसै तेम लंकेस दे ताळ हाथै।—सू.प्र.

उ०—२ साचो धणी विपत में सांमी, तेड़्यां आवै तीजी ताळ। विखमी वाट तणो वोळाऊ, सांई तूं काळां तणो सुगाळ।
—ओपो आढो

यौ०—ताळताळी।

४ तली अथवा जांघ या बाहु पर जोर से हथेली मार कर उत्पन्न किया हुआ शब्द।
मुहा०—१ ताळ ठोकणी—बाहु या जांघ पर हाथ मारते हुए जोश दिखाना, ललकारना. २ ताळ देंणी—ताली बजाना।
५ घोड़े की टाप की ध्वनि। उ०—तठं दूंग तूटं धिकै आग तोड़ा। घणूं नाळ ताळां वजै नास घोड़ा।—सू.प्र.
६ टहनी. ७ हरताल. ८ हाथियों के कान फड़फड़ाने की ध्वनि। उ०—चले करण ताळां उजाळां चलावे। धरै काळ भा अद्रि पंखाळ धावै।—वं.भा.
९ तलवार की मूठ. १० भाल, ललाट. ११ हाथ ऊपर उठा कर खड़े हुए मनुष्य के बराबर की ऊंचाई और गहराई का एक माप, लम्बाई का एक माप।
(मि० ऊवता)
यौ०—ऊवताळ।
१२ सलाह, राय।
मुहा०—ताळ मिळणी—राय में एक होना, विचार मिलना।
१३ तरकीब। उ०—वास निकट निबळा बसै, सबळ न लागै ताळ। गांजीजै नहिं गुरड़ सूं, पैठा नाग पयाळ।—बां.दा.
मुहा०—१ ताळ जमणी—युक्ति बैठना, तरकीब काम आ जाना. २ ताळ बैठणी—देखो 'ताळ जमणी'।
१४ दांव पेच. १५ लय, धुन। उ०—रुघनाथसिंघ नैं भी अपनी वाकबी दिखाय समज का सुना सम छोड कर ताळ लगाई।
—दुरगादत्त बारहठ
यौ०—ताळधर, ताळधारी।
सं०पु०—१६ ताड़ वृक्ष। उ०—रे भोका स्रीराम तूं, सातै ताळ वेधण तीर। थूरै देतां थोका, दीनां चा नाथ जगदाता।—र.ज.प्र.
यौ०—ताळकेतु, ताळपत्र, ताळपिसाय, ताळपुत्र, ताळवन।
१७ तालीशपत्र. १८ बिल्व फल, बिला, बेल. १९ एक प्रकार का प्राचीन वाद्य विशेष जो मजीरे से बड़ा होता है।
उ०—वाज्या भूंगळ भेरी रै, ताळ नगारा वाजीया।
—स्रीपाळ रास
२० जलाशय, तालाव। उ०—१ पालर ठंढौ 'जांभै' पायौ, स्वाद अनोखौ घणौ सरायौ। दया करी निज ताळ दिखायौ, गया पांडिया जळ गिदळायौ।—ऊ.का.
उ०—२ जेहल ताळ खड़ीण ह्वै, तरवर लाकड़ होय। हरम ढहै ढूंढ़ा हुवै, जस अविकारी जोय।—बां.दा.
२१ पिंगळ में ढगण के दूसरे भेद का नाम, जो आदि गुरु और अन्त लघु होता है (डिं.को.) २२ लय का समय के आधार पर निश्चित विभाजन जो संगीत में मात्राओं के रूप में बँटा होता है.
२३ महादेव. २४ खजूर का वृक्ष. २५ देखो 'ताळौ' (मह., रू.भे.)
उ०—संयोगिणि चीर रई कैरव, स्री, घर हट ताळ भमर गोघोख। दिणयर ऊगि एतला दीधा, मोखियां बंध बंधियां मोख।—वेलि.

ताल-सं०स्त्री०—१ सिर के मध्य के बाल झर जाने पर होने वाली अवस्था। इसे शुभ माना जाता है।
(मि० धनटाट)
२ नाचने या गाने में उसके काल और क्रिया का परिमाण जिसे प्रायः हाथ से ताली बजा कर सूचित करते जाते हैं।
मुहा०—ताल देणी—नाच का गायन में क्रिया के लिए संकेत देना।
सं०पु०—३ ऊसर भूमि का समतल विस्तृत मैदान. ४ कठोर भूमि, कंकरीली भूमि। उ०—नैणां पटकूं ताल में, किरच किरच हुय जाय। मैं थनै नैणां कद कह्यौ, मन पैली मिळ जाय।—लो.गी.
५ देखो 'ताळ' (रू.भे.)
उ०—१ झालर वाज्या घंटा बाज्या, बाज्या ताल मजीरा।
—लो.गी.
उ०—२ राते सारस कुरळिया, गूंजि रया सब ताल। जांकी जोड़ी बीछड़ी, तांकौ कुण हवाल।—लो.गी.
६ तमालपत्र (अ.मा.) ७ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक कला (व.स.)

ताळउं-सं०पु०—पत्र, पता। उ०—रक्तोत्पल कमळ नी परिइं कुसुमाळ ताळउं, प्रकट जिह्वांगउं अग्र।—व.स.

तालडउ-सं०पु० [सं० तालपुट] तारपुर नामक विष, तत्काल प्राणनाशक विष (जैन)

तालकर-सं०पु०—१ प्रथम गुरु के ढगण के भेद का नाम (डिं.को.)
सं०स्त्री०—२ करताल।

तालके-क्रि०वि०—अधीन, कब्जे में, अधिकार में।
उ०—गढ़ रे मांही किलेदार भाटी सुजांणसिंह जैसौ थौ। लवेरे रौ ठाकुर सदा किलौ उणरे ही तालके रहतौ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

तालकेतु-सं०पु० [सं०] १ वह जिसकी पताका पर ताड़ के पेड़ का चिन्ह हो. २ भीष्म पितामह. ३ बलराम।

तालकेस्वर-सं०पु० [सं० तालकेश्वर] एक औषध जो कुष्ट, फोड़ा, फुन्सी आदि रोगों के होने पर दी जाती है।

तालकौ-सं०पु० [अ० तअल्लुक] बहुत से गांवों की जमींदारी, बड़ा इलाका।
यौ०—तालकेदार।

ताळजंघ-सं०पु० [सं०] एक यदुवंशी राजा जिसके पुत्रों ने राजा सगर के पिता असित से राज्य छीन लिया था।

ताळताळी-सं०स्त्री०—दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में जोर से मिलाने पर उत्पन्न शब्द या ध्वनि, करतल ध्वनि।
क्रि०वि०—शीघ्रता।

ताळधर, ताळधारी-सं०पु०—ताल प्रकट करने वाला, ताल धारण करने वाला। उ०—कळ हंस जांणगर मोर निरतकर, पवन ताळ-

पर ताड़ पत्र ।—वेलि.

ताळपत्र-सं०पु०यौ०—ताड़ वृक्ष के पत्ते ।

ताळपलंब-सं०पु०यौ० [सं० तालप्रलंब] गोशाला का एक श्रावक (जैन)

ताळपिसाच-सं०पु०यौ० [सं० तालपिशाच] ताड़वृक्ष के समान लम्बी काया वाला राक्षस (जैन)

ताळपुड़गविस-सं०पु०यौ० [सं० तालपुटक विष] शीघ्र प्राणनाशक विष। (जैन)

ताळफुस-सं०पु०यौ०—१ ताड़-फल. २ पंखा या पंखी.

तालबखांनो-सं०पु०—अंत: पुर में निवास करने वाली रानियों का समूह ? उ०—कांमेतियां कन्हा ओपत खपत सुणि नवी बीमाह करि अर महल मांह पधारै सु इसी भांति नर नांमै कोई पंखी जावण पावै नहीं, इसो तालबखांनो मंडेछै ।—सैणी री वात

तालबेइल्म-सं०पु० [अ० तालिबेइल्म] १ शिक्षार्थी, विद्यार्थी. २ जिज्ञासु। उ०—दूजे पाठसाळा स्थापित कर पंडित तालबेइल्म रोजगारी बैठांणे। —नी.प्र.

ताळबेताळ-सं०पु०यौ०—दो देवता या यक्ष जिनके विषय में ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था और ये बराबर राजा की सेवा में रहते थे ।

तालमखाणा-सं०पु० (बहु व०) १ एक प्रकार का वर्षा ऋतु में जलाशयों के समीप होने वाला पौधा तथा इस पौधे की गांठों में से निकलने वाले बीज, यह पौधा औषधि के प्रयोग में भी आता है. २ मैदे या चावल के आटे की बनी खाद्य सामग्री विशेष जिसे दूध में डाल कर खीर बनाई जाती है ।

तालमांन-सं०पु०—६४ कलाओं में से एक (व.स.)

ताळमेळ-सं०पु०—१ ताल व सुर का मिलान. २ मिलान, संयोग.

ताळयर-सं०पु० [सं० तालचर] १ एक मनुष्य जाति (जैन)
२ नट या नृत्यकारों का एक वर्ग. ३ ताल देने वाला ।
रू०भे०—ताळायर ।

तालरंग-सं०पु०—१ एक प्रकार का बाजा ।

तालर, तालरो-सं०पु०—१ पथरीला मैदान, ऊसर भूमि ।
उ०—खारी लालांणा सूं लगाय नै राखी तक पांच कोस री भुंइ में फैल्योड़ो है । बिल्कुल सपाट तालर उडणखटली रै मैदांन ज्यूं जिसो। —रातवासो
(मि० छापर २, ३)
२ छिछला गड्ढा । उ०—रुधर रा तालरा भर रह्या छै ।
—पनां वीरमदे री वात

ताळलक्षण, ताळलखण, ताळलखम-सं०पु० [सं० काललक्षण] तालध्वजी, बलराम (नां.मा., अ.मा.)
(मि० ताळकेतु)

ताळवन-सं०पु०यौ० [सं० तालवन] वह वन जहां ताड़ वृक्ष अधिक हों ।

ताळवाही, तालवाही-सं०पु० [सं० तालवाही] वह बाजा जिससे ताल दी जाय यथा मंजीरा, झांझ आदि ।

ताळ-विमाळ-वि०—नष्ट-भ्रष्ट, लुप्त । उ०—देस दसूं दिस दाविया, कीधा धकचाळा । अरि ओद्राहां उड गया, कई ताळ विमाळा ।
—बी.मा.

ताळवी-वि० [सं० तालव्य] तालु सम्बन्धी ।
सं०पु०—तालु से उच्चरित किया जाने वाला वर्ण ।
रू०भे०—ताळवी ।

तालविलंब-सं०पु०—नारियल (अ.मा.)

ताळवौ-सं०पु० [सं० तालु] मुंह के अन्दर का ऊपरी भाग जो ऊपर के दांतों की पंक्ति से लेकर कौवे तक होता है, तालु । उ०—प्रबल होइ जब खैंन प्रकार, बोली दंभ क्रिया तहां वार । एक ताळवै दीजै गोळ, दूजौ ग्रीवा जोत्रै ओळ ।—ध.व.ग्रं.
मुहा०—१ जीभ नै ताळवै रै बिचै छेटी पड़णी—भयातुर होने से बोलने में असमर्थ होना, स्तम्भित हो जाना. २ जीभ नै ताळवै रै बिचै छेटी पटकणी—भय दिखा कर किसी को मूक बना देना, भय से स्तम्भित करना. ३ ताळवै लगांम लगाणी—बोलने में असमर्थ करना, मूक बना देना, प्रत्युत्तर देने में असमर्थ कर देना. ४ ताळवो फोड़णो—सिर पर जोर का आघात करना, सिर पर जोर की चोट लगाने की धमकी देना ।
रू०भे०—ताळ, ताळू, ताळूओ ।

तालव्य-वि० [सं०] देखो 'ताळवी' (रू.भे.)

ताळसम-सं०पु०—ताल के अनुसार स्वर (संगीत)

तालांक-सं०पु० [सं०] बलराम (नां.मा.)
(मि० तालकेतु २)

ताळा-सं०स्त्री०—१ करताल, ताली । उ०—फैल क्रोध चसमां कराळां आग झाळा फुणां, ताळा दै भुजाळा त्यूं गुपाळा तीर बांन् ।—र.ज.प्र.
२ देखो 'ताळ' (१) (रू.भे.) उ० - सुणै 'गजण' कथ 'सूरसाह' तायक तिण ताळा । कळहण ऊससियौ कुंवर, पित धीर प्रमाळा ।
—सू प्र.

ताळाचर-सं०पु० [सं० तालचर] नृत्य का व्यवसाय करने वाली एक जाति । उ०—न ताळाचर वाइ ताळ, 'हारू हारू' भणी न हींचकइ बाळ ।—नळ दवदंती रास

ताळातोड़-सं०पु०यौ०—चोर, दस्यु ।

ताळाधारी-वि० [अ० तालअ+सं० धारी] भाग्यशाली ।

ताळाव—देखो 'तळाव' (रू.भे.)

ताळाविलंद, ताळावुलंद—देखो 'ताळाविलंद' (रू.भे.)
उ०—ताळावुलंद इसलांम ताज ।—ऊ.का.

ताळावेली-सं०स्त्री०—बेचैनी, परेशानी । उ०—अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हम से करी क्यूं पहेली । बहु दिन बीतै अजहुं नहि आये, लग रहि ताळा वेली ।—ह.पु.वा.

ताळायर—देखो 'ताळयर' (रू.भे.)

ताळायर कम्म–सं०पु० [सं० तालचर कर्म] ताल क्रिया (जैन)

ताळावग्घाडणी–सं०स्त्री० [सं० तालोद्‌घाटनी] ताल प्रकट करने वाली विद्या (जैन)

ताळाविलंद–वि० [अ० तालअ+फा० बलंद] भाग्यशाली, धनी।
उ०—जोहरी परखे जिण विध जुहार, दस चार परख विद्या उदार। बस सकत पाय ताळाविलंद, 'अध-जीत' सुतन नरलोक इंद।—वि.सं.

ताळि–सं०स्त्री०—१ समय। उ०—तिणि ताळि सखी गळि स्यांमा तेही, मिळी भमर भारा जु महि। वळि ऊभी थई घणा घाति वळ, लता केळि अवलंव लहि।—वेलि.
२ देखो 'ताळी' (रू.भे.) उ०—ताळि चरंती कुंभड़ी, सर संधियउ गंवार। कोइक आखर मन बस्यउ, ऊडी पंख संभार।—ढो.मा.

तालिब–सं०पु० [अ०] १ चाहने वाला, जिज्ञासा करने वाला।
उ०—१ इस्क मुहव्वत मस्त मन, तालिब दर दीदार। दोस्त दिल हरदम हजूर, यादगार हुसियार।—दादू बांणी
उ०—२ महा पुरख महुरं बंधै, तालिब काछे तार। 'रज्जब' जळहित जुगळ सों, अंतक अगनि मझार।—रज्जब बांणी
२ ढूंढ़ने वाला, तलाश करने वाला।

तालिस–वि० [सं० तादृश] समान, वैसा, उसी प्रकार का (जैन)

ताळी–सं०स्त्री० [सं० ताली] १ ताले को खोलने और बंद करने के लिए धातु का बना एक उपकरण, कुंजी, चावी।
कहा०—ताळी लाग्यां ताळी खुलै—चावी से ही ताला खुलता है अर्थात् युक्ति से ही काम चलता है।
[सं. ताल] २ हथेली।
मुहा०—१ ताळी देणी—हाथ में हाथ देकर वादा देना या बचन देना.
२ *ताळी मिळाणी—हाथ मिलाना, सांठ-गांठ करना, संधि करना.*
३ करतल ध्वनि। उ०—जसवंत गुरड़ न उड्‌डही, ताळी त्रजड़ तणेह। हाकलियां ढूळा हुवै, पंछी अवर पुणेह।—हा.झा.
मुहा०—ताळी बजाणी—मजाक उड़ाना, निरादर करना, प्रशंसा करना।
४ ध्यानावस्था, समाधि। उ०—गुफा ध्यांन लवलीन गिरोवर, ताळी खुली ऊठिया तपेसुर।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—खुलणी, लगाणी, लागणी।
५ छोटा ताल अथवा तलैया. ६ छोटा ताला. ७ तीन दीर्घ वर्ण या छः मात्रा का छंद विशेष (र.ज.प्र.) ८ समय, वेला।
रू०भे०—ताळि।

ताली–सं०स्त्री०—१ खलिहान में साफ किए हुए अनाज का ढेर.
२ साफ की हुई वह समतल भूमि जहां खलिहान बनाया जाता है। (मि० वळाव)
३ खलिहान में अनाज के रूप में किसानों से जागीरदार द्वारा लिया जाने वाला कर. ४ गिलहरी (मेवाड़)
कहा०—ताली री दौड़ पीपळी तांई—गिलहरी पर जब आपत्ति आती है तो वह दौड़ कर पास के वृक्ष पर चढ़ जाती है। यही उसका एक मात्र सहारा है। किसी निर्बल एवं असहाय व्यक्ति का सीमित सहारा होने पर यह कहावत कही जाती है।
(मि० मियां री दौड़ मसजिद तांई।)

ता'ळी—देखो 'तासळी' (रू.भे.)

तालीकौ–सं०पु०—१ सनद, पट्टा, जागीरनामा।
उ०—तरै पातसाजी कह्यौ 'रांणा री बेटी के लायक छै, तरै तालीकौ लिख दियौ', जगमाल तालीकौ ले आयौ।—नैणसी
२ देखो 'तालुकौ' (रू.भे.)

ताळीतड–सं०स्त्री० [सं ताल+रा. तड़] करतल ध्वनि। उ०—वसुधा काळी री ताळीतड वागी, भिड़ियां सोना री चिड़ियां पड़ भागी।
—ऊ.का.

ताळीपत्र—देखो 'ताळीसपत्र' (रू.भे.)

ताळीपीटौ–सं०पु०—धोखा, छल, कपट, फुसलाने की क्रिया।

तालीम–सं०स्त्री० [अ०] शिक्षा, ज्ञान, ज्ञानार्थ दिया जाने वाला उपदेश। उ०—कुंजर ज्यूं ओ केहरी, तूं लेतौ तालीम। कळ में रखवाळत कवण, संपूरण वन सीम।—बां.दा.

ताळीसपत्र–सं०पु० [सं० तालीश-पत्र] तमाल या तेज पत्ते की जाति का एक पेड़ तथा उसके पत्ते।
रू०भे०—ताळीपत्र।

ताळीहर–सं०पु०—महादेव ? उ०—तूटे नदी तटाक, हाक खूटे ताळीहर। पंगराव जिम प्रबळ, हलै फौजां घेंसा हर।—सू.प्र.

तालु–सं०पु०—मजीरा, झींझा। उ०—धां धां धपमु महुर म्रिदंग। चचपट चचपट तालु सुरंग।—विद्याविळास पवाडउ

ताळुकंटक–सं०पु० [सं० तालुकंटक] बच्चों के तालु में होने वाला एक रोग जिसमें तालु में कुछ कांटे से पड़ जाते हैं।

तालुक–सं०पु० [अ० तअल्लुक] सम्बन्ध, रिश्तेदारी, लगाव।

तालुकदार–सं०पु० [अ० तअल्लुक+फा० दार] बड़े इलाके का स्वामी, इलाकेदार।
रू०भे०—तालुकादार।

तालुकदारी—देखो 'तालुकादारी' (रू.भे.)

तालुकादार—देखो 'तालुकदार' (रू.भे.)

तालुकादारी–सं०स्त्री०—तालुकेदार का पद।

तालुकौ–सं०पु० [अ० तअल्लुक] बहुत से मौजों की जमीन, बड़ा इलाका।
रू०भे०—तालीकौ।
यौ०—तालुकदार, तालुकादार, तालुकादारी।

ताळुय, ताळुयौ—देखो 'ताळवौ' (रू.भे., जैन)

ताळुसोख–सं०पु० [सं० तालुशोष] एक रोग जिसमें तालु सूख जाता है और उसमें घाव-सा हो जाता है।

ताळू, ताळूइ, ताळूओ—देखो 'ताळवौ' (रू.भे.) उ०—फूल वींट छिणगइ करपूर ताळइ तवइ, गंगाजळि सेवाळ लागइ।—व.स.

उ०—२ पगतळ हूंती ताळूश्रा, लगइ लोहमइ लद्द । सूर गमा संध्या तिना, तिन सोह्या ममद ।—मा.कां.प्र.

यौ०—ताळूकंठ, ताळूफाड़ ।

ताळूकंठ-सं०पु०—घुग्गों के तालू में होने वाला एक रोग विशेष ।

ताळूफाड़-सं०पु०—हाथियों का एक रोग जिसमें हाथी के तालु में घाव हो जाते हैं ।

ताळूव्यंब-सं०पु० [सं. तालु+रा. व्यंब] छप्पय छंद का एक भेद जिसमें प्रयोग किये जाने वाले वर्ण तालु को स्पर्श करते हों ।—र.ज.प्र.

ताळेवर-वि० [अ० तालअ+फा० वर] १ भाग्यशाली. २ धनी, ऐश्वर्यशाली ।

ताळोड़ी—देखो 'ताळी' (४) (अल्पा., रू.भे.)

ताळोटा-सं०पु० (बहु व०) वर के छिकी पर आने पर औरतों द्वारा अगवानी के लिए गाये जाने वाले गीत । (पुष्करणा ब्राह्मण)

ताळोवळी, ताळोवेळी-सं०स्त्री०—१ व्याकुलता, बेचैनी । उ०—१ दीन वचन बोलती, सर्वोजन अपमानती, थोडइ पांणी माछळी जिम ताळोवळी जाती ।—व.स.

उ०—२ श्रोसीसुं अति दुख धरइ, ताळोवीळी थाय । श्रोसीसुं अति तापव्युं, तडफडतां निसि जाय ।—प्राचीन फागु संग्रह

२ उत्सुकता ।

ताळो-सं०पु० [सं० तलक] १ लोहे, पीतल आदि की वह कल जो बंद किवाड़, संदूक आदि की कुंडी में लगा कर कुंजी आदि से बंद कर दी जाती है । इसे बिना कुंजी से खोले किवाड़ या संदूक खुल नहीं सकता । ताला, कुल्फ । उ०—तोड़ण तूंहीज वेड़ियां ताळा, पाळां री तूंहीज सुखपाळ । वोह नांमी ऊघाड़ां वगतर, ढळियां लोहां न ढालां ढाल ।—श्रोपो आढो

मुहा०—ताळो तोड़णो—ताला तोड़ना. चोरी करने के अभिप्राय से घर, संदूक आदि का ताला तोड़ना ।

[अ० ताळअ] २ भाग्य । उ०—चहुं दिस सुणी च्यार चकां रै, निवळंक इसड़ो धणी नीकां रै । ताळै कीनो जोर तीकां रै । जोधपुरो जजमांन जिकां रै ।—भैरूदांन बारहठ

३ ललाट । उ०—महाजटियळ भ्रगुट भैरव वक्रत मयंक । अलंकत सेस मेचक उयाळो । किरणपत प्रभा परभात रा समीकर, तेज पुंज नाथ रा तणो ताळो ।—बां.दा.

ता'ळो—देखो 'तासळो' (रू.भे.)

ताव-सं०पु० [सं० ताप] १ वह गरमी या उष्णता जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिए दी जाय । ताप, आंच ।

मुहा०—ताव आणो—आवश्यकतानुसार किसी वस्तु का गरमी प्राप्त कर गर्म होना ।

२ गुस्सा, क्रोध ।

मुहा०—ताव देणो—आंच पहुंचाना, गरम करना ।

क्रि०प्र० —आणो ।

३ अहंकार का आवेग ।

मुहा०—१ ताव दिखाणो—अहंकार मिश्रित क्रोध दिखाना.

२ मूंछां पर ताव देणो—सफलता आदि के अहंकार में मूंछें ऐंठना ।

४ जोश, उत्साह । उ०—तोडै इह विध जुध खगां ताव, रजवट पाधोरे पंच राव ।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—आणो, दिखाणो ।

५ ज्वर, बुखार । उ०—लहरी सायर संदियां, बूठउ संदउ वाव । बीछुड़ियां साजण मिळइ, वळि किउं ताढ़उ ताव ।—ढो मा.

क्रि०प्र० —आणो, उतरणो, चढ़णो ।

मुहा०—ताव हाथी रा हाड भांगै—ज्वर हाथी जैसे विशालकाय प्राणी को भी शिथिल बना देता है । ज्वर से कमजोरी आना अवश्यम्भावी है ।

यौ०—ताव-तप ।

६ कष्ट, पीड़ा, संताप । उ०—रटै तो नांम ब्रंदावन राव । तिकां पिंड कोय न लागै ताव ।—ह.र.

७ तेज, ओज, पराक्रम । उ०—थांरो तो मुनीसर ! तेज अपार । सूरज ही सकै थांरा ताव सूं ।—गी.रां.

८ सूर्य का ताप, तड़का, धूप उ०—देख तपंती ताव सूं, मुरधर अख रै मांण । हियो हिमाचळ अूभळ्यो, वह चाल्यो वरफांण ।—लू

९ जोर, दबाव । उ०—दोय तीन वार हेला कर नीसरणी नांखी तद मांहिलां इसो ताव दियो सो मांणस पांच दस मराय पाछा आया ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

क्रि०प्र०—देणो ।

१० प्रकाश, चमक । उ०—ताव दांन के जलूस अस्ट पदी का भाव । अस्मूं को आव जै महतावूं का ताव ।—सू.प्र.

११ शीघ्रता एवं तेजी करने का भाव. १२ भय, आतंक ।

उ०—तरै न लागै ताव, श्रोट तुहाळी आवियां । नदी हुई तूं नाव, भवसागर भागीरथी ।—बां.दा.

१३ गति, चाल । उ०—कछ घर तणो कमेत ताव खग राज सरोतर ।—पनां वीरमदे री वात

क्रि०वि०—१ तरह २ तव.

[सं० तावत्] ३ तब तक (जैन)

रू०भे०—ताव ।

तावक—देखो 'ताकव' (रू.भे.)

तावकखेत-सं०पु० [सं० तापक्षेत्र] सूर्य का प्रकाश जितनी दूरी तक पड़ जाय उतना स्थान (जैन)

तावख—देखो 'तविख' (रू.भे.)

तावड़—देखो 'तावड़ो' (मह., रू.भे.) उ०—तावड़ वैठ तिग तिग तिरै, रमो सिकारां रावतो । ऊतरै अमल बस हूं नहीं, जूंवां रो ई जावतो ।—ऊ.का.

तावड़ियो—देखो 'तावड़ो' (अल्पा., रू.भे.) उ०—सूकै जेठ मझार

सर, तीखा तावड़ियांह । सूकै इम सिंधू सुणै, मुंहडा मावड़ियांह ।
—वां.दा.

तावड़ौ-सं०पु० [सं० ताप+रा०प्र०ड़ौ] सूर्य की गरमी, धूप ।
उ०—रीस भरयौ कोइ रांक, वस्त्र विण चालियौ वाटै । तपियौ अति तावड़ौ, चालतां मुसकल टाटै ।—ध.व.ग्रं.
क्रि०प्र०—पड़णौ, लागणौ ।
मुहा०—तावड़ै तपणौ—धूप में तपना, अधिक परिश्रम करना ।
अल्पा०—तावड़ियौ, तावड़ौ, तावडि, तावडी ।
मह०—तावड़ ।

तावडि, तावडी—देखो 'तावड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—'आ तु कळा कूबड़ा मांहि घणी', चित्ति चिंतइ वसुधा धणी । सूरच तणइ तावडि रस होइ, नळ विना अवर न जांणइ कोइ ।
—नळ-दवदंती रास

तावणियौ-सं०पु० [सं० ताप] मक्खन को गरम कर घी बनाने का पात्र ।

तावणौ—१ देखो 'तपणौ' (रू.भे.) उ०—सोनुं होवै तौ सोगी रे मेळावुं, तावणौ ताप तपावुं । लई फूंकणी नै फूंकवा बेसूं, पांणी जेम पिगळावुं ।—स.कु.
२ देखो 'तावणियौ' (मह., रू.भे.) (शेखावाटी)

तावणीय-वि० [सं० तापनीय] तापने योग्य (जैन)

तावणौ, तावबौ-क्रि०स० [सं० तापन] १ तपाना, गरम करना ।
उ०—१ पांणी पांणी विलोय कर कोई मांखण तावै ।
—केसोदास गाडण
उ०—२ तेज इसै दीसै झळहळ तन, किर ताविया सोळमी कंचन ।
—सू.प्र.
२ कष्ट देना, सताना, तंग करना ।
तावणहार, हारौ (हारी), तावणियौ—वि० ।
तवाड़णौ, तवाड़बौ, तवाणौ, तवाबौ, तवावणौ, तवावबौ—प्रे०रू० ।
ताविप्रोड़ौ, तावियोड़ौ, ताव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
तावीजणौ, तावीजबौ—कर्म वा० ।
ता'णौ, ता'बौ—रू०भे० ।

तावत-क्रि०वि० [सं० तावत्] १ उतने काल तक, तब तक. २ उतनी दूरी तक, वहां तक ।

तावतप-सं०पु०यौ०—१ बुखार, ज्वर. २ बीमारी ।

तावदांन-सं०पु०—१ द्वार पर के आले का छिछला पत्थर जिसके ऊपर बाहरी ओर खुदाई की हुई होती है ।
२ देखो 'ताबदांन' (रू.भे.)

ताव-भाव-सं०पु०यौ०—उपयुक्त अवसर, मौका ।
वि०—थोड़ा सा, जरा सा ।

तावलणौ, तावलबौ-क्रि०अ०—ज्वर आना, बुखार चढ़ जाना ।

तावलियोड़ौ-भू०का०कृ०—ज्वर-पीड़ित, बुखार चढ़ा हुआ ।
(स्त्री० तावलियोड़ी)

तावळौ—देखो 'उतावळौ' (रू.भे.)
कहा०—तावळौ सौ बावळौ—जो शीघ्रता करता है, वह पागल है ।

तावस—देखो 'तापस' (रू.भे.) (जैन)

तावसा-सं०स्त्री०—जैन मुनियों की एक शाखा (जैन)

तावह-सं०स्त्री०—नौकरी, सेवा । उ०—वध दोट भुज भुज बीस रा, सिर वोट कर दस सीस रा । तत इंद्र परगह सहत तावह, करै कळपह असह रह रह ।—र.रू.

तावांन-सं०पु० [फा० तावान] १ वह वस्तु जिससे क्षति पूर्ति की जाय । यह दंड के रूप में दी जाय या ली जाय ।
रू०भे०—तवांनौ ।

ताविख-सं०पु०—देखो 'तविख' (रू.भे.) (नां.मा.)

ताविखी-सं०स्त्री० [सं० ताविषी] १ देव-कन्या. २ पृथ्वी ।

ताविच्छ-सं०पु० [सं० तापिच्छ] तमाल वृक्ष (जैन)

तावियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ सताया हुआ, कष्ट दिया हुआ.
२ तपाया हुआ, गर्म किया हुआ ।
(स्त्री० तावियोड़ी)

तावीज-सं०पु० [अ० तअवीज] १ वह कागज जिस पर कोई मंत्र आदि लिख कर गले में या बाहु पर धारण करते हैं. २ सोने, चांदी, तांबे आदि धातु का चौकोर या अठपहलू संपुट जिसके भीतर किसी यंत्र-मंत्र को रख कर गले या बाहु पर धारण करते हैं ।
रू०भे०—ताबीज, ताबीत ।
अल्पा०—तावीतौ ।

तावीतौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का आभूषण (व.स.)
२ देखो 'तावीज' (अल्पा., रू.भे.)

तावुरि, तावुरी-सं०पु० (यू० टारस) वृष राशि ।

तावै-क्रि०वि०—विषय में, सम्बन्ध में ।

तावौ—देखो 'तवौ' (रू.भे.) उ०—चालने ढेलीइ, लोह घटित तावा कडे सहावा ।—व स.

तास-सं०स्त्री० [अ०] १ खेलने के लिए मोटे कागज के चौखूंटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियां या तस्वीरें छपी रहती हैं । खेलने का पत्ता, ताश. २ एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा । उ०—मुंहगा घण मोल रा, पड़ै पग मंडा अपारां । मह पसमी मुखमलां, तास अतलस जरतारां ।—सू.प्र.
[सं० त्रास] ३ कष्ट, पीड़ा । उ०—दुसमण री किरपा बुरी, भली सैण री तास । जद सूरज गरमी करै, तद वरसण री आस ।—अज्ञात
४ भय, आतंक । उ०—अजामेळ वड अघन तैं, तैं उण विघ तारै । तैं दुरवासा तास तैं, अंबरीस उबारै ।—भगतमाळ
५ मोह । उ०—तज जग झूठी तास, आस राख राघव अठी । प्रभु मेटै भव पास, भजन कियां सूं भैरिया ।
—महाराजा बळवंतसिंह, रतळांम
सं०स्त्री० [अ० तासीर] ६ प्रभाव, असर ।
सर्व० [सं० तद्=तस्य] उस, वह । उ०—जइ रूखां मारू हुई, छव-

तउ दखिउ तास । तउ हुंती चंदउ लियइ, नउ गनियइ आकास ।
—ढो.मा.

क्रि०वि०—प्रकार, तरह । उ०—तीर्थ ज्यूं धरती तरै, ऊपर तरै आकास । ज्यूं तरवां में दिन तरै, जीव तरै, इण तास ।—नू

रू०भे०—तास ।

तासक—देखो 'तासळी' (रू.भे.)

तासकारी-वि० [सं० तस् = उपक्षये] १ नाश करने वाला, मिटाने वाला। २ असर डालने वाला, प्रभावशाली ।

तासतौ-संपु० [अ० तास] एक प्रकार का ज़रदोज़ी कपड़ा (व.स.) उ०—लालां नीलां तासता तगतगड, पाडा सोना री छाप । मूडा पंनां सोभता, केई पड़हरड देई थाप ।—प्राचीन फागु संग्रह

तासना-संस्त्री०—पीड़ा, कष्ट । उ०—अब गरब कियौ अमलांन में, तन देखिला तासना । जनमांन फेर जासी नहीं, बुरा करम री वासना ।
—ऊ.का.

तासळी-संस्त्री० [फा० तास+रा.प्र.ळी] चौड़े मुंह वाला छिछला छोटा बर्तन, तश्तरी, रकाबी । उ०—तरै रावजी अरोगता रिसाय नै सोना री तासळी नांखी । जांणियौ थौ—तेजसी तासळी लेण रह्यौ ।
—राव मालदे री वात

रू०भे०—तास्रळी, ताक, ता'ळी, तासक ।

तासळौ-संपु० [फा० तास+रा.प्र.ळो] भोजन करने का कांसी अथवा पीतल का चौड़े मुंह वाला छिछला पात्र । उ०—जिकण सिरदार रै अमल गळियोड़ा रा तौ कचोळा तासळा ऊभळै छिलै है, केसर गळीजै है जिणसूं हौद भरियोड़ा ऊभळै छै ।—बी.स.टी.

रू०भे०—तास्रळो, ता'ळो ।

अल्पा०—तासळियौ, तासळौ ।

तासि-वि० [सं० त्रासिन] जीओ और जीने दो की भावना रखने वाला (जैन)

तासिय-वि० [सं० त्रासित] कष्ट प्राप्त (जैन)

तासियाळौ, तासियौ-वि० [सं० अत्यास+रा.प्र.आळौ] प्यासा, तृषातुर । उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति रातौ छाकै, ते दारू पियां तासिया तिसावंत हूआ ।—रा.सा.सं.

संपु०—वह पशु जिसे दो दिन प्यासा रख कर तीसरे दिन पानी पिलाया जाता है ।

वि०वि०—यह उन्हीं स्थानों पर होता है जहां जलाभाव के कारण कष्ट देखा जाता है ।

तासीर-संस्त्री० [अ०] १ असर, प्रभाव । उ०—अकबर खोस लियौ इण आंटै, मारण हंकिया किताक मीर । अै तौ दिली न लै इण आंटै, तिलियक नूंण तणी तासीर ।—वीर दुरगादास रौ गीत

२ गुण ।

तासीसा-संपु०—प्रत्येक चरण में सात-सात गुरु के चरण वाला छंद विशेष ।

तासु-सर्व०—उस । उ०—इंद्रां वाहण जासिका, तासु तणइ उणिहार । तन भख हुवउ प्राहुणउ, तिणि सिणगार उतार ।—ढो.मा.

तासूं, तासौ—उससे, जिससे ।

तासौ-संपु० [अ० तास] १ चमड़े से मढ़ा हुआ एक वाद्य जो उत्सव आदि पर गले में डाल कर दो पतली कमचियों से बजाया जाता है. २ एक प्रकार का कांसी का बना बड़ा झींझा. ३ तांबे और कथीर के मिश्रण तथा कांसी धातु से बनाया जाने वाला बड़ा कटोरा.

४ अभाव, कमी । उ०—तासौ सह अन जळ तणौ, वासौ कारावास । पासौ सासण पळटवा, रासौ भड़ री आस ।—रेवतसिंह भाटी

[सं० अत्यास] ५ कई दिनों का प्यासा (पशु) ६ जल-संकट । उ०—सु गढ़ में सांमांन तौ घणौ थौ पण पांणी नहीं जिणसूं पांणी री वडौ तासौ हुवौ ।—द.दा.

ताह-संस्त्री०—१ तेज गरमी, उष्णता । उ०—वैसाखां में धूप पड़सी, तावड़िये री ताह । पड़छावां में पड़िया रहसां, वाह रे सांई वाह ।—लो गी.

२ देखो 'तांह' (रू.भे.) उ०—१ ताह मांहि लै अधिका उतिमि ग्यांन रूप गाहेडि गडा । वारहट अनै रिखि वरावरि वेद व्यास ईसर वडा ।
—पी.ग्रं.

उ०—२ गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै । प्रभु वैमुख जिण री रिपु प्रांणी, ताह न कदै सतावै ।—र.रू.

ताहजा-सर्व०—तेरा, तेरे, तुम्हारे । उ०—तिण ऊपर रावळ जोस कर बोलियौ अरु लाल नूं इसौ कही कै ताहजा राठौड़ मांहजी धरती में घोड़ो फेरै जितरी जमी ब्राह्मण नूं उदक करदूं ।—द दा.

ताहम-अव्य० [फा०] तो भी, तिस पर भी ।

ताहरइ-सर्व०—तेरे । उ०—सेव करइ ते स्वारथइ हो लाल, तेह नी ताहरइ चित्त ।—वि.कु.

ताहरउ—देखो 'ताहरौ' (रू.भे.) उ०—हूं गुण रागी हो सागी सेवक ताहरउ, साहिब सुगुण सुपास ।—वि.कु.

ताहरड़ौ—देखो 'ताहरौ' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० ताहरड़ी)

ताहरां-क्रि०वि०—तब । उ०—ताहरां कुंवर स्री दळपत विचाळै परधांन फेरिया ।—द.वि.

ताहरुं, ताहरु, ताहरूं, ताहरू—देखो 'ताहरौ' (रू.भे.)

उ०—१ तारक ताहरुं नांम हो, जिनजी ।—वि.कु.

उ०—२ जीव माहरु तुझ कन्हइ, ताहरु मुझ नइ प्रांण ।—मा.कां.प्र.

उ०—३ लेई भेंटि कइ मिळवा आवै, कइ पुरुसारथ दाखै । कइ ताहरूं भलपण जांणिसिइ, घर आपण यूं राखे ।—कां.दे.प्र.

ताहरे, ताहरै-क्रि०वि०—तब, तदुपरान्त । उ०—मारियौ दळद्र दस लक्ख दे, इम उपाय अंकुस कियौ । हड़हड़ै भट्ट ताहरै हस्यौ, सिद्धराव एतौ दियौ ।—लल्ल भाट

ताहरौ-सर्व० (स्त्री० ताहरी) तेरा । उ०—वार-वार रांम कीत बोल रे

ताहरो वडो कवेस तोल रे।—र.ज.प्र.
रू०भे०—ताहरउ, ताहुरं, ताहरु, ताहरूं, ताहरू।
अल्पा०—ताहरड़ौ।

ताही–सर्व०—उस, वह। उ०—सदा सनेही राम है, ताही सूं मन लाइ। जन हरिदास देही सहत, दीजै अगनि जळाइ।—ह.पु.वा.
क्रि०वि०—तहाँ।
रू०भे०—ताही, ताहीं।

ताहे–क्रि०वि०—तब (जैन)

तिंतिड, तिंतिड्का, तिंतिडि; तिंतिडीक तिंतिडीका–सं०स्त्री० [सं०] इमली।—बां.द.

तिंतिणिग्र, तिंतिणियौ–सं०पु०—बड़-बड़ करने वाला (जैन)

तिंदुकतीरथ–सं०पु० [सं० तिंदुकतीर्थ] ब्रज मंडल के अंतर्गत एक तीर्थ।

तिंदुग–सं०पु० [सं० तिंदुक] १ ग्यारहवें तीर्थंकर का चैत्य वृक्ष (जैन) २ एक प्रकार का वृक्ष।
रू०भे०—तिंदुग।

तिंदू–सं०पु०—तेंदू का पेड़ (अमरत)

तिमची–सं०स्त्री०—१ कपड़े आदि रखने की तीन पायों की बड़ी मेज. २ काष्ठ या लोह की बनी एक तिपाई जिस पर पानी का घड़ा आदि रक्खा जाता है।
रू०भे०—टिमची, टिंवची, टिमची, टीमची।

तिंय–सर्व०—उस। उ०—मदन संजीवनी तिंय री नांम।
—सिंघासण बत्तीसी

तिंयाळी, तिंयाळीस—देखो 'तंयाळीस' (रू.भे.)

तिंयाळौ–सं०पु०—४३ वां वर्ष।

तिंयासी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)

तिंवरी–सं०स्त्री०—एक प्रकार का छोटा जन्तु जो कुछ देर के लिए निरन्तर ध्वनि करता है। यह ध्वनि रात्रि में विशेष रूप से सुनाई देती है। झिंगुर।
रू०भे०—तिमरी।

तिंवार–सं०पु०—त्यौहार, पर्व, मंगल दिवस। उ०—जांणां जोबन जावसी, आड खंचावत बाड़। कूं कूं कूंपळि मेलती, कढ़ती बार तिंवार।—र.रा.
रू०भे०—तिउहार, तिवहार, तिव्हार, तिहवर, तिहवार, त्यूंहार, त्यूंहार।

तिंवारी–सं०स्त्री० [सं०तिथि+वार+ई] त्यौहार के अवसर पर भिन्न-भिन्न प्रकार के सेवा कार्य करने वाले व्यक्तियों को दिया जाने वाला धन, अनाज या भोजन, त्यौहारी। उ०—लंगी गांव में लाय तकै तद डूंम तिंवारी। साघ सराहै सती निरषक ह्वै विधवा नारी।
—ऊ.का.
क्रि०प्र०—घालणी, देणी, लेणी।

तिंवारीक मरजादीक–सं०स्त्री०—राज दरबार में दरीखाने में पाग, पछेवड़ी, चन्द्रमा, रूमाल, आंगा, कमरबन्द, कटारी; तलवार और ढाल आदि धारण कर के जाने की एक प्रथा। (मेवाड़)

तिंवाळ–सं०स्त्री०—१ मूर्च्छा, बेहोशी। उ०—आवै लोही ईखियां, तन ज्यां भड़ां तिंवाळ। अचरज किसौ अचेत ह्वै, देख लोह विकराळ।
—बां.दा.

तिहैं–क्रि०वि०—वहां, उसमें। उ०—अकबर समंद अथाह, तिहँ डूबा हिंदू तुरक। मेवाड़ौ तिण मांय, पोयण फूल प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

तिहां–क्रि०वि०—वहां। उ०—देस बडौ 'मेवाड़' दयाळ, प्रारथियां दुखियां प्रतिपाळ। 'चित्रकूट' तिहां चावौ अछै, पहोवीगढ बीजा तसु पछै।—प.च.चौ.

तिंही–क्रि०वि०—तैसे, वैसे, इसी प्रकार से।

तिहुं, तिहु, तिहूं, तिहू–वि०—तीन। उ०—पूरै सूरै पाइयौ, भुयण तिहु चौ भूप। साघेई साराहियौ, आलमसाह अनूप।—पी.ग्रं.
रू०भे०—तिहुं, तिहु, तिहूं, तिहू।

ति–सर्व०—१ उस, वह। उ०—कुंभा रै बेटी मुदायत ऊदौ थौ ति कुंभा नुं कटारियां मार नै आप पाट बैठौ।—नैणसी
२ देखो 'तीन' (रू.भे.) उ०—वि, ति, चौ इंद्री जीवड़ा रे लाल।—जयवांणी
२ देखो 'ती' (रू.भे.)

तिग्र—देखो 'तिय' (रू.भे.) उ०—नारायण ! हौं तुझ नमां, इग्र कारण हरि ! अज्ज। जिग्र दी ग्री जग छंडणी, तिग्र दी तोसूं कज्ज।—ह.र.

तिग्रसिंद–सं०पु० [सं० त्रिशेंद्र] देवताओं के अधिपति इंद्र (जैन)

तिग्रार—देखो 'तयार' (रू.भे.)

तिग्राळ–वि० [सं० त्रिचत्वारिंशत्] तयालीस (जैन)

तिग्रोतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तिग्रोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.)

तिइंदिया–सं०पु० [सं० त्रिइन्द्रिय] तीन इन्द्रिय जीव (जैन)

तिइक्खा–सं०स्त्री० [सं० तितिक्षा] १ क्षमा. २ सहिष्णुता (जैन)

तिउण, तिउणउ–वि० [सं० त्रिगुण] १ तिगुना (जैन)
२ देखो 'त्रिगुण' (रू.भे.)

तिउल–वि० [सं० त्रितुल] मन, वचन और काया इन तीनों की तुलना कर जीतने वाला (जैन)

तिउहार—देखो 'तिंवार' (रू.भे.)

तिऊ–क्रि०वि०—वैसे, उस प्रकार। उ०—सुणियां थकां काच री सीसी रा टुकड़ा हुवै है तिऊ सत्रुग्रां री फौज में भिळ सरीर री विणांठा विणास करसी।—वी.स.टी.

तिऊड—देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

तिकड़म–सं०पु०—उपाय, तरकीब।
क्रि०प्र०—बैठाणी, भिड़ाणी, लगाणी।
रू०भे०—तिगड़म।

तिकण-सर्व०—उस, वह। उ०—१ तुहा बटेरा वाट, वाट तिकण बहणो विमट। नाग, स्याग, मग्रवाह, तूगो गंग झलापमी।—दुरसो आढ़ो
उ०—२ कुछ नैतो ओज जुध करणो मारणो मरणो इज है जिणसूं पग पर्तो आज नै काम आवसी तद अपछरा वरसी सो वा तुरग री सेज्या तिकण मोत री च्यार महेना कुमंग रहसी।—वी.स.टी.

तिकत-वि० [सं० तिक्त] १ तीक्ष्ण, तेज. २ चुस्त. ३ चरपरा (जैन)

तिकम—देखो 'टीकम' (रू.भे.) उ०—तन अरहट रचे अनोखा तिकम आयुस वळ जळ भरियो आंण। माळ ग्रहो! जिण में निस मेली, जिण यांधी घटियां वोह जांण।—ओपो आढ़ो

तिकर-सं०स्त्री०—कटारी।

तिकरण—देखो 'त्रिकरण' (रू.भे.)

तिकरि-सर्व०—उस, वह।
क्रि०वि०—के लिए। उ०—सरसती कंठि स्री ग्रहि मुखि सोभा, भावी मुगति तिकरि भुगति। उवरि ग्यांन हरि भगति आतमा, जपै वेलि त्यां ए जुगति।—वेलि.

तिकां-सर्व० (बहु व०) वे, उन। उ०—लागी हर हूंता लगन, जागी प्रीत जिकांह। वडभागी वे 'बांकला', त्यागी नांम तिकांह।—बां.दा.
रू०भे०—तकां।

तिका-सर्व०स्त्री०—१ वह, उस। उ०—आभा तेणि छांह मझि आवै, दुति घर तिका कनक दरसावै।—सू.प्र.

तिकाळ—देखो 'त्रिकाळ' (रू.भे.)

तिकावरतक-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जिसकी कटि पर तीन भौंरी होती हैं (शुभ, शा.हो.)

तिकी-सर्व०स्त्री०—१ वह, उस।
रू०भे०—तिक्की।
२ देखो 'तिगी' (रू.भे.)

तिकुं-सर्व०—वह, उस। उ०—तरै रावजी मन मांहे दळगीर हूंण लागा तरै जैतेजी कह्यौ—थे दलगीर मत हुवौ, थे कहस्यो तिकुं कांम करस्यां।—राव मालदे री वात
रू०भे०—तिकू।

तिकूंणौ-वि०—तीन कोने वाला, त्रिकोण।
सं०पु०—जयसलमेर के दुर्ग का नाम।
रू०भे०—तिखूंटौ, तिखूंणौ।

तिकू—देखो 'तिकुं' (रू.भे.)

तिकूड-सं०पु० [सं० त्रिकूट] १ जंबू द्वीप के मेरु के पूर्व में आई हुई शितोदा महानदी के दक्षिण दिशा में आया हुआ एक पर्वत (जैन)
२ देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

तिके, तिकै-सर्व०—वे, उन। उ०—समझावां सौ वार जिके समझण नह जांणै। दिन ऊंवेरै दौर तिकै नित ऊंधी तांणै।—ऊ.का.

तिकोरी-सं०पु०—१ फौलाद का बना एक औजार जिसके तीन तरफ धार लगती है. २ बढ़ई का एक औजार।

तिकौ-सर्व० (स्त्री० तिका) वह, उस। उ०—१ सिव कहाय जग संपरै, अंग पुजावै और। तो रासै सिर पर तिकौ, तज जबरी रा तौर।
—बां.दा.
उ०—२ जवन अनेक वैर धक जुड़सी, मरसी तिकौ काय जुध मुड़सी —सू.प्र.

तिक्की—१ देखो 'तिकी' (रू.भे.)
२ देखो 'तिगी' (रू.भे.)

तिक्ख-वि० [सं० तीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज. २ वेगवान. ३ कठोर (जैन)
उ०—पर माहम्मी नइ भवे, दीधा नारिक दुक्ख। छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख।—स.कु.

तिक्खुतौ-सं०पु० [सं० त्रिकृत्वस्] तीन बार। उ०—जद थें मोटा पुरख मत्थेन वदामि तिक्खुतो आया हिणं पयाहिणं इम कहि वांदो। इसा अजांण है पिण न्याय निरणो नहीं।—भि.द्र.

तिक्खुत्ता-सं०स्त्री० [सं० त्रिकृत्वस्] सूत्र में कहे हुए पाठ के अनुसार सविधि तीन प्रदक्षिणा देकर वन्दना करने की क्रिया। उ०—सिंघासण थी रांणी ऊठ नै जी, सात-आठ पग सांम्ही जाय। तिक्खुता रौ पाठ गिणी करीजी, लुळ लुळ नीची जी थाय।—जयवांणी

तिक्त-वि० [सं०] तीता, कड़ुआ।
सं०पु० [सं०] १ पित्त पापड़ा. २ कुटज।

तिक्षण-सं०पु० [सं० तीक्ष्ण] १ तीर, वाण.
२ देखो तीक्ष्ण' १ (रू.भे.)

तिखंग-सं०पु० [सं० तक्षक] सर्प, नाग। उ०—परां खेंगां उरड़ झलूसां पाखरे, विजड़ झड़ वाहि घड गजां बोळै। 'अभा' राजेस कासव सुतन आगळी, अर तिखंग ऊबरै गिरां ओळै।—महाराजा अभैसिंह रौ गीत

तिखंडौ-वि०—तीन मंजिल वाला।

तिख-वि०—१ तीक्ष्ण। उ०—चलतौ खड़ग तिख धार—जयवांणी
२ देखो 'तक्षक' (रू.भे.)
यौ०—तिखराव

तिखट-सं०पु०—तराने के समान गाए जाने वाला गीत जिसमें पखावज के बोल काम में लाये जाते हैं।

तिखण-सं०स्त्री० [सं० तीक्ष्ण] मिर्च, मिरची। उ०—जद आ बोली काचरी रा स्वाद री तो तिखण मिळी हुंती तो खबर पड़ती।—भि.द्र.
रू०भे०—तीखण।

तिखता-सं०स्त्री [सं० तीक्ष्ण] काली मिर्च (अ.मा.)

तिखनख-सं०पु०—तीखे पैर वाला घोड़ा।

तिखराव-सं०पु० [सं० तक्षक+राज] १ शेषनाग, नागराज.
२ तक्षक नाग. ३ कद्रू पुत्र कालिय नाग जिसको कृष्ण ने नाथा था। उ०—दड़ै काज जळ डोहि, नाग नाथियो निभै नरि। पुठै चढ़ियो प्रभु तुरत, तिखराव गयौ तरि।—पी.ग्रं.

तिखूंटौ, तिखूंणौ-सं०पु०—१ सोने-चांदी के आभूषणों आदि पर खुदाई

करने का लोहे का कीलनुमा औजार. २ देखो 'तिकूंणो' (रू.भे.)
उ०—तुंग हतै 'छांडे' तजड़ा-हत, धायौ माझी भोम धड़ी। रावळ खड़ आयौ सिर रावळ, पोळ तिखूंणै भीड़ पड़ी।—राव छाडा रो गीत

तिखणी-वि० [सं० तीक्ष्ण] तीखा। उ०—दुत(तं) लोचन काज लै रीख दीनें, बणे कांमदेव विख(खै) पांण मीनें। बणी नासिका कीर तुंड(डे) विमोयं, लसते किधूं तिखणी दीप लोयं।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

तिग-सं०स्त्री०—१ कमर, कटि। उ०—किलराहेकां का तिग टूट गया छै तिका रिगसता थका लफ-लफ कोटरै जाय-जाय कटारी लगावै छै।
— प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ हिलने-डुलने की क्रिया, लड़खड़ाने की क्रिया।
उ०—तावड़ बैठ तिग तिग तिरै, रमो सिकारां रावतौ। ऊतरै अमल बस हूं नहीं, जूवां री ई जाबतौ।—ऊ.का.
सं०पु०—३ तीन मार्ग का संगम (जैन)

तिगड़म—देखो 'तिकड़म' (रू.भे.)

तिगता-सं०स्त्री० [सं० तिक्तम्] कालीमिर्च (अ.मा.)

तिगतिगणौ, तिगतिगबौ-क्रि०अ०—१ लड़खड़ाना, डगमगाना।
२ लटकना।

तिगतिगाड़णौ, तिगतिगाड़बौ, तिगतिगाणौ, तिगतिगाबौ, तिगतिगावणौ, तिगतिगावबौ-क्रि०स०—१ लटकाना। उ०—मोती तणा झूमखा डंबाव्या, मांहि पद्मरागपटळ लंबाव्या, केळि ने स्तंभे तोरण तिगतिगाव्या।—व.स.
२ (हाथ पकड़ कर इस प्रकार खींचना अथवा झटका देना जिससे) लड़खड़ाते हुए चल पड़ना।
क्रि०अ०—३ लड़खड़ाना, डगमगाना।
तगतगाड़णौ, तगतगाड़बौ, तगतगाणौ, तगतगाबौ, तगतगावणौ, तगतगावबौ—रू०भे०।

तिगम-सं०पु० [सं० तिग्म] १ वज्र (अ.मा.) २ पिप्पली (अ.मा.)
३ प्रत्येक चरण में २६ मात्रा का छंद विशेष।
[सं० तिग्मगो] ४ सूर्य (ह.नां.)
रू०भे०—तिग्म।
वि० [सं० तिग्म] तीक्ष्ण, तेज।

तिगमअंस, तिगमअभीसु, तिगमांसु तिगमहर-सं०पु० [सं० तिग्मांशु, तिग्माभिसु] सूर्य (डिं.को., नां.मा., क.कु.बो.)

तिगरण-सं०पु० [सं० त्रिकरण] मन, वचन और काया (जैन)

तिगरी-सं०स्त्री० [सं० तुग्रही] १ संकट, कष्ट, पीड़ा.
२ जल का अभाव।
रू०भे०—तगरी।

तिगिच्छकूड-सं०पु० [सं० त्रिगिच्छकूट] पर्वत विशेष (जैन)

तिगिछिद्दह-सं०पु० [सं० त्रिगिच्छद्रह] निषेध पर्वत के ऊपर का भाग (जैन)

तिगिच्छ, तिगिच्छग-सं०पु०—चिकित्सक (जैन)

तिगिच्छा-सं०स्त्री०—चिकित्सा (जैन)

तिगी-सं०स्त्री०—१ ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूंटियां बनी हों।
रू०भे०—१ तिकी, तिक्की, तिग्गी।
२ अत्यन्त पतली टहनी।
रू०भे०—तिग्गी।

तिगुडय-सं०स्त्री० [सं० त्रिकटुक] सूंठ, पीपर और कालीमिर्च (जैन)

तिगुणौ-वि० (स्त्री० तिगुणी) तीन गुना, तिगुना।

तिगुत्त, तिगुत्ति-सं०पु० [सं० त्रिगुप्ति] मन, वचन और काया से गुप्त, सुरक्षित (जैन)

तिगूमिगू-सं०पु०—सूर्यास्त होने के कुछ पहले का समय।

तिगौ-सं०पु०—३ का वर्ष, ३ का अंक।

तिग्गी—देखो 'तिगी' (रू.भे.)

तिग्म [सं०] देखो 'तिगम' (रू.भे.)

तिग्मकर-सं०पु० [सं०] सूर्य।

तिग्मकेतु-सं०पु० [सं०] भागवत के अनुसार वत्सर और सुवीथी के पुत्र जो एक राजा हो चुके हैं।

तिग्मता-सं०स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता, तेजी।

तिग्मदीधिति-सं०पु० [सं०] सूर्य।

तिग्ममन्यु-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव।

तिग्मरस्मि-सं०पु० [सं० तिग्मरश्मि] सूर्य।

तिग्मांसु—देखो 'तिगमांसु' (रू.भे.)

तिघट—देखो 'तिवट' (रू.भे.) उ०—उलट सुलट मिति थट झपट, दुघट तिघट चढ़ पाइ। परख विकट अस गति लगै, नट नटवर उर लाइ।—रा.रू.

तिड़-सं०पु०—१ स्थान, निवास. २ जलाशय. ३ भाग, हिस्सा.

तिड़कणौ, तिड़कबौ-क्रि०अ०—देखो 'तड़कणौ, तड़कबौ' (रू.भे.)
उ०—छपर पुरांणा पिया पड़ गया रे, कोई तिड़कण लागा तिड़कण लागा बोदा बांस, हो जी ढोला बांस, अब घर आजा फूल गुलाब रा हो।—लो.गी.
तिड़कणहार, हारौ (हारी), तिड़कणियौ—वि०।
तिड़काणौ, तिड़काबौ, तिड़कावणौ, तिड़कावबौ—प्रे०रू०।
तिड़किओड़ौ, तिड़कियोड़ौ, तिड़क्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तिड़कीजणौ, तिड़कीजबौ—भाव वा०।

तिड़कियोड़ौ—देखो 'तड़कियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तिड़कियोड़ी)

तिड़की-सं०स्त्री०—सूर्य की किरणों की तेजी, धूप की प्रखरता।
ज्यूं—तावड़ा री तिड़की।
रू०भे०—तड़की।

तिड़कौ—देखो 'तड़कौ' (रू.भे.) उ०—जणां कुंवरसी कही थाळ जीम चढ़ज्यो, सियाळो छै, धूप तिड़कौ कांई नहीं छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता
अल्पा०—तिड़की।

तिड़णौ, तिड़बौ—देखो 'तड़णौ, तड़बौ' (रू.भे.)

उ०—किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी। तिड़गी तारायण सौ पुग्गां तूटी।—ऊ.का.

तिड़ियोड़ो—देखो 'तड़ियोड़ो' (रू.भे.)

तिड़ोतरसउ, तिड़ोतरसौ—वि० [तिड=सं० त्रि=तीन+उतर=उत्तर=बाद+सौ=शत्] सौ के बाद तीन और अर्थात् १०३।

रू०भे०—तिसय-तिड्डुत्तर।

तिचक्खु-सं०पु० [सं० त्रिचक्षु] चक्षु-ज्ञान, परमश्रुत ज्ञान एवं परम अवधि ज्ञान को रखने वाला साधु (जैन)

तिजड़, तिजड़ा—सं०स्त्री०—१ तलवार। उ०—तांण मूंछ तोले तिजड़, विमन सकति कर वंद। कूच नगारां हुय कटक, चवै हुकम जयचंद।

२ कटार। —सू.प्र.

यौ०—तिजड़हथौ।

तिजरौ—देखो 'तिजारौ' (रू.भे.) उ०—जव गेहूं चणां री क्यारियां मांही नैं खुसवू छाय रही छै, तिजरौ फूल रह्यौ छै।

—डाढ़ाळा सूर री वात

तिजणौ, तिजवौ—देखो 'तजणौ, तजवौ' (रू.भे.)

उ०—नयणि करइं न पयोधर, योधर सुरत संग्रांमि। कंचुक तिजइं संनाहू रे, नाहु महाभड्डु पांमि।—व.वि.

तिजाव-सं०पु० [फा० तेज़ाब] किसी क्षार पदार्थ का अम्ल सार जो तरल रूप में होता है।

रू०भे०—तेजाव।

तिजावी-वि० [फा० तेज़ाबी] तेज़ाव सम्बन्धी।

रू०भे०—तेजावी।

तिजारत-सं०स्त्री० [अ०] १ वाणिज्य, व्यापार, रोजगार।

रू०भे०—तेजारत।

तिजारती-वि० [अ०] व्यापार या रोजगार सम्बन्धी।

तिजारसी-सं०पु० [रा०] अफीम। उ०—जीवतौ हुवौ मुरदे ज्यूं ही, अवै देख मुख आरसी। कह कंत सोच तार न कियौ, तैं जद लियौ तिजारसी।—ऊ.का.

तिजारी—देखो 'तेजरी' (रू.भे.)

तिजारौ-सं०पु० [रा०] १ खस-खस। उ०—पछै दारू री तुंगां मण ५०-६० री भराई, कसूंबौ मणां-बंध कढ़ायौ। तिजारौ मणा-बंध कढ़ायौ। तिसै राति घड़ी च्यार गई।—जगमाल मालावत री वारता

क्रि०प्र०—काढ़णौ, दैणौ, लैणौ।

२ खस खस के दाने रहने का फल। वि० वि०—देखो 'डोडौ'।

उ०—तठा उपरायंत राजांनां मलूक कुंवरांरै साथ सारू कलाळी री हुकम हुवौ छै। तिजारौ मंगायजै छै। तिको तिजारौ किण भांत रौ छै? तासणी री वाड़ी रौ नीपनौ, इकतीस ताड़ी रौ नाळेर सो मोटौ खोपरा वड रौ, गरी रै दळ रौ, हाथ सुं छूट पड़ै तौ काच री सीसी ज्यूं किरचा किरचा हुइ जावै।—रा.सा.सं.

रू०भे०—तजारौ, तिजरौ, तेजारौ।

३ तीसरी वार निकाला हुआ शराव।

तिजोड़ी, तिजोरी-सं०स्त्री०—फौलाद के मोटे चद्दर की बनी वह संदूक जो धन, जेवर आदि सुरक्षित रखने के लिए काम में ली जाती है।

रू०भे०—तजोरी।

तिड, तिड्डु-सं०पु०—१ पक्ष। उ०—जांणै अकवर जोर, तौ पिण तांणै तोर तिड। आ वलाय है और, पिसण खोर प्रतापसी।

—दुरसौ आढ़ौ

२ देखो 'तीड' (रू.भे.) उ०—मारू थांकइ देसड़इ, अेक न भाजइ रिड्ड। ऊचाळउ क अवरसणउ, कइ फाकउ कइ तिड्डु।—ढो.मा.

तिणंग-सं०स्त्री०—चिनगारी। उ०—अवै क्यूं पूछौ? वारूद रा कोठार में जांणै तिणंग पड़ी।—वांणी

रू०भे०—तिणगार, तिणगारी।

मह०—तिणगारौ।

तिण-सं०पु० [सं० तृण] तिनका, तृण। उ०—अरियां जिकै आपरा झूंपड़ा रा तिणखला मूढ़ा मूढ़ा प्रतै पकड़िया पण धव धणी, वेही तिण लेनै जावण दीधा नहीं और पाछा पड़ाय लीधा।—वी.स.टी.

रू०भे०—तिन।

अल्पा०—तिणकलौ, तिणकौ, तिणखलौ, तिणगौ, तिनकलौ, तिनकौ।

वि० [सं० त्रीणि] तीन। उ०—अंविल करी पूजा करइ, तिण टंक सूध आचारौ जी।—स.कु.

सर्व०—१ उस, वह। उ०—राति जु सारस कुरळिया, गुंजि रहे सव ताल। जिणकी जोड़ी बीछड़ी, तिण का कवण हवाल।—ढो.मा.

२ इस। उ०—हमारी सांढियां लेवेगा तौ वडौ रजपूत विरद-धारी जांणेगो। तिण ऊपर महवेची कह्यौ—तुम्हारी सांढियां लेजाय तौ तुम रजपूत जांणजो।—रा.सा.सं.

क्रि०वि०—इसलिये। उ०—तिण तोरे चरणे हूं आवियौ।

—वृहत स्तोत्र

तिणकलौ, तिणकौ, तिणखलौ—देखो 'तिण' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ तिणकौ व्है तौ तोड़लूं, प्रीत न तोड़ी जाय। प्रीत लगै छूटै नहीं, ज्यां लग जीव न जाय।—र.रा.

उ०—२ अठै इण झूंपड़ै तिणखला रौ ही धाड़ौ खटै नहीं।

—वी.स.टी,

मुहा०—१ तिणकला चुगणा, तिणकला वीणणा—तिनके चुगना अर्थात् वेसुध होना, पागल होना. २ तिणका तोड़णा—तिनके तोड़ना, लज्जित होना, पागल होना. ३ तिणका री ओट में भाखर—तिनके की ओट में पहाड़। छोटी वात में वड़ी वात का रहस्य छिपा रहना। ४ तिणका रौ सा'रौ—तिनके का सहारा, थोड़ा सहारा.

५ तिणका मूंडे लैणा—तिनका मुंह में लेना, दया की भीख मांगना।

६ तिणखला चुगतौ करणौ—दरिद्र बनाना, कंगाल कर देना।

तिणगार, तिणगारी—देखो 'तिणंग' (रू.भे.)

तिणगारौ-सं०पु०—देखो 'तिणंग' (मह., रू.भे.)

तिणगौ—१ देखो 'तिण' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'तिणंग' (मह., रू.भे.) उ०—घड़ घड़ वलय धारू-

जळ धार, चमकै बीजळ जिम जळ धार। तूटै सन्नाहे तलवार, ऊडइ तिणगा अगन सुझाळ।—प.च.चौ.

तिणावत–सं०पु०—एक राक्षस का नाम।

तिणि–क्रि०वि०—१ इससे, इसलिए।

उ०—आरोपित हार घणौ थियौ अंतर, उरस्थळ कुंभस्थळ आज। सु जु मोती लहि नहीं सोभा, रज तिणि सिर नांखै गजराज।—वेलि.

२ देखो 'तिण' (रू.भे.) उ०—ते देखि तिणि पूछियउ, कुण श्रे राजकुमारी।—ढो.मा.

तिणी—१ देखो 'तिरणी' (रू.भे.)

२ देखो 'तणी' (रू.भे.)

तिणै–प्रत्य०—के। उ०—प्रभ मेघां रै परणिया, रिमां तिणै सिरि रीस। बारट ईसर बोलिया, जमौ करौ जगदीस।—पी.ग्रं.

तिणौ–वि०—दुबला, पतला, कृश।

सं०पु० [सं० तृण] तिनका, तृण। उ०—सूरा होइ सुमेर उलंघै, सब गुण बंध्या छूटै। दादू निरभय ह्वै रहै, कायर तिणा न टूटै।—दादू बांणी

मुहा०—तिणौ मेलियां आग उठै—तिनका रखते ही आग प्रज्वलित होती है। थोड़ी सी ही बात पर क्रोधित होना।

कहा०—तिणौ तोड़ नै दो तिणा को करै नी—तिनका तोड़ कर भी दो तिनके नहीं करता अर्थात पूर्ण निठल्ला है। अकर्मण्य व्यक्ति के प्रति।

तिण्णि–वि०—तीन (जैन)

तिण्हा–सं०स्त्री०—तृष्णा (जैन)

तित–क्रि०वि०—१ वहां, तहां। उ०—प्रभु पंथे एण पधारजे, तित नार गौतम तारजे।—र.रू.

२ देखो 'तिथि' (रू.भे.)

तितकार–सं०स्त्री०—नृत्य के शब्द, नाच के बोल। उ०—विसतार ग्यांन जैकार वाच, नितकार करै तितकार नाच।—वि.सं.

तितरइ—देखो 'तितरै' (रू.भे.) उ०—तितरइ तउवात कहतां वार लागइ।—श्र. वचनिका

तितरउ–क्रि०वि०—इतने में।

वि०—उतना।

तितर-वितर–वि०—१ जो इधर-उधर बिखर गया हो, बिखरा हुआ, २ अव्यवस्थित।

तितरै–क्रि०वि०—१ इतने ही में, तब। उ०—बेटौ तौ इंयारौहीज छूं। तितरै साह कह्यौ—रे कपूत ! कासूं कहै छै कै'रौ बेटौ छै ?—पलक दरियाव री बात

२ तब तक। उ०—म्हे महासरोवर न्हाय आवां छां तितरै तूं बैठौ रहजे।—पंचदंडी री वारता

तितरौ–वि० (स्त्री० तितरी) उतना। उ०—१ रांणी जितरी मन मांहे तेवड़ी, तितरी दीधी परकास रे लाला।—जयवांणी

उ०—२ सो जितरौ साथ हुतौ तितरौ जे हुवै और उणसूं कजियौ करां जणां तौ खबर पड़ जाय।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

तितली–सं०स्त्री०—एक उड़ने वाला सुन्दर कीड़ा या पतंगा जो प्रायः बागों में फूलों के पराग के लिए उन पर मंडराता है।

पर्या०—तीतरी, पुत्तिका।

तितलौ–वि० (स्त्री० तितली) उतना। उ०—तितलौ सकट सुघाट।—वि.कु.

तितिकखा–सं०स्त्री० [सं० तितिक्षा] क्षमता, सहनशीलता (जैन)

तितिक्ख–वि० [सं० तितिक्षा] धैर्यवान, सहनशील (जैन)

रू०भे०—तितिक्खिय।

तितिक्खण–सं०पु० [सं० तितिक्षण] सहिष्णुता, धैर्य (जैन)

तितिक्खा–सं०स्त्री० [सं० तितिक्षा] सहनशीलता।

तितिक्खिय–वि०—देखो 'तितिक्ख' (रू.भे.)

तितिक्षा–सं०स्त्री० [सं०] क्षमा, सहनशीलता। उ०—हिम्मत का हासकारी, विद्या को विणासकारी। तितिक्षा को तासकारी, भीड़ू भड़वाई कौ।—ऊ.का.

तितिक्षु–वि० [सं०] १ क्षमाशील, शांत प्रवृत्ति-वाला, सहिष्णु।

सं०पु०—पुरुवंशीय एक राजा जो महामना का पुत्र था।

तितिल–देखो 'तैतिल' (रू.भे.)

तितै–क्रि०वि०—१ तब तक, उस समय तक। उ०—परमेस भगत जितरै प्रगट, जो गमाय संकर जितै। उचरूं दवा जितरै 'अभा', तूझ राज रहजौ तितै।—सू.प्र.

२ वहां, उधर।

तितौ–वि० (स्त्री० तिती) उतना, उस मात्रा या परिमाण का।

उ०—आदि ग्रंथ रै स्त्री अक्षर, सुकवि कहै बुद्धि सार। तठै अगण दूखण तिता, लगै न हेक लगार।—सू.प्र.

रू०भे०—तित्तौ, तिथौ।

तित्त–वि० [सं० तृप्त] १ तृप्त, संतुष्ट (जैन)

[सं० तिक्त] २ जिसका स्वाद नीम, चिरायते आदि के समान हो, कड़ुआ (जैन) ३ मिरची के समान चरपरा, तीक्ष्ण।

रू०भे०—तित्तौ।

तित्तणांम–सं०पु० [सं० तिक्तनामन्] नाम और कर्म की एक प्रकृति। (जैन)

तित्तरि, तित्तिर—देखो 'तीतर' (रू.भे.)

तित्तौ—१ देखो 'तितौ' (रू.भे.) उ०—फळ तित्तौ ही पांमीयै, जितौ लिख्यौ नीलाडि।—स्रीपाळ रास

२ देखो 'तित्त' (रू.भे.)

तित्थंकर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.) उ०—तित्थंकर त्रिभुवन तिलौ, कर जोड़ी हे करि सुरनर सेव।—स.कु.

तित्थ [सं० त्रिस्थ] १ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का समूह, जैन-संघ (जैन)

[सं० तीर्थ] २ देखो 'तीरथ' (रू.भे.) उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीय तित्थ जां घरि पहुच्चई।—पं.पं.च.

तित्यंकर, तित्यगर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.)

तित्यनाह–सं०पु० [सं० तीर्थनाथ] तीर्थंकर, तीर्थनाथ।

तित्ययर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.) उ०—सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय, ते तित्ययर नमेवि। फागु वंधि पहुनेमि जिणु, गुण गाएसउं केवि।
—प्राचीन फागु संग्रह

तित्याहिव–सं०पु० [सं० तीर्थाधिप] चार प्रकार के तीर्थों के अधिपति, तीर्थंकर (जैन)।

तित्थी–क्रि०वि०—१ वहां। उ०--जित्यै-जित्यै जोइये, तित्थी दरसंदा।—सू.प्र.
२ देखो 'तिथ' (रू.भे.) उ०—तकै भादवी माह उपांत तित्थी पड़ै माग रै पाय प्रयीप प्रथी।—मे.म.

तित्थीय–वि० [सं० तीर्थीय] दर्शन शास्त्र सम्बन्धी, दार्शनिक।

तित्थु—देखो 'तीरथ' (रू.भे.) उ०—तित्थु रणुद्ध स मुणिरयणु, जुगप्रधांन क्रमि पत्तु। जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मळउ चरित्तु।
—ऐ.जै.का.सं.

तित्थुगाळीय–वि० [सं० तीर्थोद्गालिक] किसी भी दर्शन का ज्ञाता व अनुभवी (जैन)।

तिथंकर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.) उ०—लह्यौ अवतार भयौ चक्रधार। तिथंकर ह्वै पदवी दोइ पांमि।—ध.व.ग्रं.

तिथ, तिथि–सं०स्त्री० [सं० तिथि] १ चन्द्रमा की कला के घटने बढ़ने के क्रम से गिने जाने वाले महिनों का एक-एक दिन, तिथि, तारीख।
उ०—१ तिथ चतुरदसी सनवार तव, रयण पहर बीतां अरध।
—रा.रू.
उ०—२ तिथि नौमी चैत्र महिनौ तांम।—रा.रा.
२ पन्द्रह की संख्या*। उ०—कीजै दूहौ प्रथम यक, सतरह मत्ता पाय। तिथ रवि तिथ सिव तिथ सुपय, रड्ड छंद कहाय।—र.ज.प्र.
३ वृत्तान्त, गाथा।
मुहा०—तिथ वाचणी—गाथा कहना, हाल सुनाना।
रू०भे०—तथ, तित, तित्थी, तिथी, तिही।

तिथिए–क्रि०वि०—वहां।

तिथिनक्षत्रदोख (दोस)—फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्र संबंधी तृतीय योग।

तिथिपति–सं०पु० [सं०] तिथियों के स्वामी, देवता।

तिथिपत्र–सं०पु० [सं०] पत्रा, पंचांग।

तिथी—देखो 'तिथ' (रू.भे.)

तिथै–क्रि०वि०—वहां।

तिथौ—देखो 'तितौ' (रू.भे.)

तिदंड–सं०पु० [सं० त्रिदण्ड] सन्यासियों का एक उपकरण, त्रिदंडी का एक दंड विशेष (जैन)

तिदंडि, तिदंडी–सं०पु० [सं० त्रिदंडिन्] सन्यासी, त्रिदंडी (जैन)

तिदिसा, तिदिसी—देखो 'त्रिदिस' (रू०भे०)

तिदुग—देखो 'तिदुय' (रू.भे.)

तिदुळ–वि० [सं० त्रिदोल] मन, वचन और काया को डुलाने वाला (जैन)

तिद्र–सं०स्त्री०—हल्की नींद, तन्द्रा।

तिधारी–सं०पु०—बढ़ई का एक औजार जिसके तीन ओर धार लगी होती है।

तिधारीकटणी–सं०स्त्री०यौ०—आभूषणों में जाली के समान खुदाई करने का औजार।

तिधारौ–सं०पु० [सं० त्रिधार] १ थूहर जाति का एक वृक्ष जिसकी शाखाओं में पत्ते नहीं निकलते। इसकी जड़ से केवल डंडों के रूप में शाखायें ही निकलती हैं. २ एक प्रकार का भाला।

तिन–सर्व०—१ उन। उ०—तिन के सम या जगत में, नरपति नांहीं आंन।—सिंघासण बत्तीसी
२ देखो 'तिण' (रू.भे.) उ०—सब ही सौं डरै दांत लियै तिन रहै है।—स.कु.

तिनकळौ, तिनकौ–सं०पु०—देखो 'तिण' (अल्पा., रू.भे.)

तिनगनी–सं०स्त्री०—एक प्रकार की मिठाई।

तिनवइ–वि० [सं० त्रिनवति] ९३ की संख्या (जैन)

तिना–सं०पु०—प्रत्येक चरण में एक मगण और एक दीर्घ वर्ण का छंद विशेष।

तिनि–वि० [सं० त्रीणि] तीन। उ०—एकि अरजनि करया तिनि कुंची। आधि ऊडी हूया ति निकुंची।—विराट पर्व

तिन्न–वि०—१ नम, तर, आर्द्र (जैन) २ देखो 'तिन' (रू.भे.)
उ०—अट्ठ पहर अरस में, ऊभोई आहे। दादू पसे तिन्न के, अल्लह गाल्हाये।—दादू बांणी

तिन्नि–वि० [सं० त्रिणि] तीन (जैन)

तिन्नांण–सं०पु० [सं० त्रिज्ञान] मति, श्रुति और अवधि ये तीन ज्ञान (जैन)

तिन्हं, तिन्ह, तिन्हां–सर्व०—उन। उ०—जिन्हां खेत न संपजेउ, तिन्हां दीन्हौ गांव।—द.दा.

तिपंच–वि० [सं० त्रिपञ्च] पन्द्रह, १५ (जैन)

तिपड़ौ–सं०पु०—१ भवन की तीसरी मंजिल. २ भवन में दूसरी मंजिल के ऊपर की खुली छत।

तिपति–सं०स्त्री० [सं० तृप्ति] संतोष, तृप्ति।

तिपनी–सं०स्त्री०—घास विशेष।
वि० [सं० त्रि+पत्नी] तीन पत्तों वाली।

तिपाई–सं०स्त्री० [सं० त्रि+पाद+रा.प्र ई] १ बैठने या वस्तु आदि रखने के लिए तीन पायों की बनी छोटी परन्तु कुछ ऊंची चौकी, स्टूल.
२ पानी का घड़ा रखने की काष्ठ या लोहे की बनी तीन पायों की चौकी।

तिपाट–सं०पु०—क्रम से तीसरी बार लिया जाने वाला अफीम।

तिपाटौ–सं०पु०—१ वह स्थान जहां तीन गांवों की सीमा मिलती है।
वि०—१ तीन तह वाला. २ तीन हिस्सों वाला।

तिपुंज–सं०पु० [सं० त्रिपुञ्ज] शुद्ध, अशुद्ध तथा मिश्र इस प्रकार तीन पुद्गल का समूह (जैन)

तिपुर—देखो 'त्रिपुर' (रू.भे.)। उ०—महरा मथरा राघो वाग संसार माळी। तिपुर घड़ण भंजे वाजंता हेक ताळी।—र.ज.प्र.

तिपुरारि, तिपुरारी—देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे.)

तिपोकड़-उ०लिं०—वह लड़का जो तीन लड़कियों के बाद जन्मे या वह पुत्री जो तीन पुत्रों के बाद जन्म ले (अशुभ)

तिपोळियौ-सं०पु० [सं० त्रि-प्रतोली] १ वह स्थान जहां एक साथ और एक ही कतार में तीन बड़े-बड़े द्वार हों जिनसे होकर सभी प्रकार की सवारियां आसानी से निकल सकें. २ राजमहल का प्रथम प्रवेशद्वार।

तिफास-सं०पु० [सं० त्रिस्पर्श] आठ स्पर्श दोषों में से तीन स्पर्श दोष (जैन)

तिबणौ, तिबबौ-क्रि०अ०—'तीवणौ, तीववौ' का अक०रू०।

रू०भे०—तुबणौ, तुबबौ।

तिबर-वि० [सं० तीव्र] तेज, तीव्र।

तिबरसौ-सं०पु०] सं. त्रि+वर्ष+रा. प्र. औ] ऊंटों में होने वाला एक रोग विशेष जिससे ऊंट १५ दिवस बीमार रहता है और १५ दिन स्वस्थ। यह रोग तीन वर्ष तक रहता है और ऐसा माना जाता है कि इसके बाद ऊंट या तो ठीक हो जाता है या फिर मर जाता है।

रू०भे०—तिवरसौ।

तिबारियौ—देखो 'तिबारौ' (अल्पा., रू.भे.)

तिबारी-सं०स्त्री० [सं.त्रिद्वार] १ तीर, बंदूक आदि चलाने के लिए दीवार में बना छेद. २ तीन खिड़की या तीन द्वार वाला कमरा।

तिबारौ-सं०पु०—१ तीसरी बार लिया जाने वाला अफीम।

(मि० तिपाट)

२ तीसरी बार निकाला हुआ मद्य. ३ तीन द्वार या खिड़की वाला कमरा।

रू०भे०—तिवारौ, तीबारौ।

अल्पा०—तिबारियौ, तिबारी।

तिब्बत-सं०पु०—एक देश जो हिमालय के उत्तर में स्थित है।

तिब्बती-सं०स्त्री०—तिब्बत देश की भाषा।

वि०—तिब्बत संबंधी, तिब्बत का।

तिब्र-सं०पु०—पान (अ.मा.)

वि० [सं० तीव्र] तेज, तीव्र।

तिभवण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.)

तिमंगळ-सं०पु० [सं० तिमिंगल] १ बड़ा मत्स्य, एक बड़ी मछली जो तिमि नामक मछली को भी निगल सकती है। उ०—१ आठ दिसा वितहरै उताळा, तांता जांण तिमंगळ वाळा।—रा.रू.

उ०—२ इलोळत स्रोण विचे खळ एम, जळाधर बीच तिमंगळ जेम।
—सू.प्र.

२ ठाट-बाट, आडम्बर। उ०—हरवळां फेर कोतल हलै, साजियां मुजरा जोत रा। मोहकमां कबंध मोटा मिनख, तिमंगळ सारा तोत रा।—अरजुणजी वारहठ

रू०भे०—तिममंगळ, तिमिंगिळ।

तिमंजळौ, तिमंजिळौ-वि०—तीन खंड का, तीन मंजिल का।

(मि० तिखंडौ)

तिम-क्रि०वि०—१ तैसे, वैसे। उ०—सूरवीर गोयंद सहित, बढिया कुळ वट्टी। तूटा मोती हार तिम, भड़ पड़िया भट्टी।—सू.प्र.

२ त्योंही, तैसे ही। उ०—चिंतातुर चित इम चिंतवती, थई छींक तिम धीर थई।—वेलि.

सं०स्त्री० [सं० तिमि] १ एक बड़ी मछली।

२ देखो 'तम' (रू.भे.)

रू०भे०—तिमि।

तिमग-सं०पु० [सं० तिग्मगो] सूर्य (नां.मा.)

तिमची—देखो 'तिमची' (रू.भे.)

तिमणियौ—देखो 'तमणियौ' (रू.भे.) उ०—हिवड़ै नै हार घड़ाय भँवर म्हारै हिवड़ै नै हार घड़ाय, होजी म्हारौ तिमणियौ रतन जड़ाय भँवर म्हांनै खेलण द्यौ गिणगोर।—लो.गी.

तिमणौ-वि०—तिगुना।

तिमतिमाट-सं०स्त्री०—१ तमतमाहट, क्रोधित होने का भाव.

२ प्रबल चमक।

तिममंगळ—देखो 'तिमंगळ' (रू.भे.)

तिमर-सं०पु० [सं० तिमिर] १ अंधेरा, अंधकार। उ०—प्रहारै तिमर विख नजर छाकां पियै। घूमरां सत्रां खग धजर घावै।
—कविराजा करणीदांन

उ०—२ आठ पौ'र जळ इंदु री, जिण घर दुत जागंत। तिण घर सूं अपजस तिमर, अळगा थी भागंत।—बां.दा.

२ तैमूरलंग बादशाह। उ०—तिमर हर तणा आभरण सबळा तखत, 'रांण' हर आभरण तूंहीज राखै।—अज्ञात

३ गुफा, खोह, कन्दरा।

तिमरखतैन, तिमरत, तिमरहर-सं०पु०—सूर्य, भानु (नां.मा, अ मा.)

तिमरांण-सं०पु० [सं.तिमिर+रा प्र.आण] अंधेरा, तम। उ०—नदी वहनाळ त्रुटे जळ ताळ। मिळै रजभांण, मंडै तिमरांण—सू.प्र.

तिमरार, तिमरारि, तिमराहर-सं०पु० [सं० तिमरारि] सूर्य (अ.मा., नां.मा.)

उ०—निंमो तिमराहर कारज कथ्थ।—सूरज असतूत

तिमरि—देखो 'तिमर' (रू.भे.) उ०—धूळि नई तिमरि अंबर रोळिउ। सूरय बिंब मसि माहि कि बोळिउ।—विराटपर्व

तिमरी—देखो 'तिंवरी' (रू.भे.) उ०—वीच खचइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेख। विरहणिआं तनि वेदना, सांवण सरइ विसेख।
—मा.कां.प्र.

तिमहर-सं०पु०—सूर्य (ना.डिं.को.)

तिमहुर-सं०पु० [सं० त्रिमधुर] घी, शक्कर और शहद (जैन)

तिमासिय-वि० [सं० त्रैमासिक] तीन मास का।

तिमासियभत्त-सं०पु० [सं० त्रिमासिक भक्त] तीन मास का उपवास। (जैन)

तिमासियौ-सं०पु०—१ वह बच्चा जो गर्भ में तीन माह रह कर जन्म चुका हो ।
वि०—तीन मास का ।

तिमिंगिळ—देखो 'तिमिंगळ' (रू.भे.)

तिमिंगिळगिळ-सं०पु०—तिमिंगल नामक बड़े मत्स्य को भी निगल जाने वाला दीर्घकाय मत्स्य ।

तिमि—देखो 'तिम' (रू.भे.) उ०—बापड़ा कंटक बूडिसै, आइए पारि उतारि । ताहरा सेवग तारिया, तिमि मुनाई तारि ।—पी.ग्रं.

तिमिकोस—सं०पु० [सं० तिमिकोश] समुद्र ।

तिमिज-सं०पु० [सं०] तिमि नामक मछली से प्राप्त होने वाला मोती ।

तिमिध्वज-सं०पु०—शंबर नामक एक दैत्य ।

तिमिर—देखो 'तिमर' (रू.भे.)
उ०—गो तिमिर गच्छ सूझंत स्वच्छ । दरसन दयाळ क्रपया क्रपाळ ।—ऊ.का.

तिमिरनुद, तिमिरभिद, तिमिररिपु, तिमिरहर, तिमिरार, तिमिरारि-सं०पु० [सं० तिमिरनुद्, तिमिरभिद्, तिमिररिपु, तिमिरहर, तिमिरारि] सूर्य । (डिं·को., नां.मा.)
उ०—१ नर माधवनळ निरमि करि, कांम कंदळा नारि । कुंडाळयां वि कमळ भूह, तुहिन किरण तिमिरार ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ वंस तिमिरारि पुर अवध मघवांन वर । धनुस धर रांम अवतार धरे ।—र.रू.

तिमिरास्त्र-सं०पु०—एक प्रकार का अस्त्र (व.स.)

तिमिसा, तिमिस्सा-सं०स्त्री० [सं० तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (जैन) ।

तिमीस-सं०पु० [सं० तिमि+ईश] १ समुद्र. २ बड़ा मत्स्य, तिमिंगल । उ०—गज ठणियां धण ग्राह, बाह जणियां बादाळक । तणियां करभ तिमीस, चरम भणियां चउ चालक ।—वं.भा.

तिमुह-सं०पु० [सं० त्रिमुख] तीसरे संभवनाथ तीर्थंकर के यक्ष का नाम (जैन)

तिमोतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तिमोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.)

तियं, तिय-सं०स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, औरत, पत्नी । उ०—ढळतां आधी रातड़ी, जागै और न लोग । कै तो जागै संत जन, कै तिय पिय विजोग ।—र.रा.
रू०भे०—तिअ, तिया, तीय, तीया ।
२ देखो 'त्रिक' (रू.भे.) (जैन)
वि० [सं० तृतीय] तीन । उ०—प्रथम वार मत्त पनर दुवै पद, वळ तिय वार पनर चौथै वद ।—र.ज.प्र.
सर्व०—उस, वह । उ०—रमतां थकां गेंद जाइनै एक डोकरी छांणां चुगती हुती, तिय रै पगां मांहै जाय पड़ी ।—नैणसी

तियउ-सर्व०—उस । उ०—राजा कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ । माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पंथ जिकोइ ।—ढो.मा.

तियलोय—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे., जैन)

तियस-सं०पु० [सं० त्रिदश] देव, देवता (जैन) । उ०—ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर वर । इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर ।—ऐ.जै.का.सं.

तियह-सं०पु० [सं० त्रि+अहन्] तीन दिन (जैन)

तियां-क्रि०वि०—१ तैसे, इस प्रकार. २ वहां, उस जगह ।
उ०—किता केइ मारग मांहि कळेस, आवै केइ यात्री लोग असेस । सरै छै कांम तियां सतमेव, दीर्यं सुख वंछित रिखभ देव ।—ध.व.ग्रं.
सर्व०—१ उस । उ०—अरक जसौ जगि आथमै, गौ चकवां गुणियांह । भुवण अंधारौ भांजिसी, त्रिभुवण पति कुणि त्यांह । तियां कुण भांजिसी भुवण अंधियार तण । भमै नर संजोगी विजोगी इणि भुवण ।—हा.झा.
(बहु व०) २ उन, वे । उ०—मारुवणी भगताविया, मारू राग निपाइ । दूहां संदेसां तणा, दीया तियां सिखाइ ।—ढो.मा.

तिया—देखो 'तिय' (रू.भे.) उ०—तिया पिया पै ही हुती, अपने सुख के काज । परि गौ दिठ पहारिसौ, ढिग आयौ गजराज ।—गज उद्धार

तियाग—देखो 'त्याग' (रू.भे.) उ०—भारा तो धन भाग, जाड़ेचा दाखै जगत । तीखौ खाग तियाग, 'जेहल' वेटौ जनमियौ ।—बां.दा.

तियागणौ, तियागबौ—देखो 'त्यागणौ, त्यागबौ' (रू.भे.)

तियागियोड़ौ—देखो 'त्यागियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तियागियोड़ी)

तियागी—देखो 'त्यागी' (रू.भे.) उ०—रिणमलोत कहै रिण रूधां, अचड़ तियागी बोल इसौ ।—नापा सांखला री वारता

तियार-क्रि०वि०—१ उस समय, तब । उ०—वटै घट मुगळ द्रव्य विचार । अखै धनि रातळ दाद तियार ।—सू.प्र.
२ देखो 'तैयार' (रू.भे.)

तियारी—देखो 'तैयारी' (रू.भे.)

तियाळीस—देखो 'तयाळीस' (रू.भे.)

तियैं-सर्व०—उस, उसको । उ०—१ नरसिंघ री वेटौ मेघौ तियैं नूं जाय मारि ।—दूदे जोधावत री वात
उ०—२ तियैं रै पाट छोटौ भाई महिपाळदे वरस १३ मास २ दिन ७ राज कियौ ।—नैणसी

तियोतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तियोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.)

तियौ-सं०पु०—१ तीन । उ०—१ सिरोरूह कौसेय काळा सरीखा, तियौ आंक भ्रू वांकड़ा नेत तीखा ।—मे.म.
२ देखो 'तीयौ' (रू.भे.) उ०—तद बखतसिंहजी कही ठाकुरां रौ तियौ करि पछै लागस्यां ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
वि०—१ तीसरा । उ०—दस अठ मत विसरांम दो, चवद तियौ विसरांम ।—र.ज.प्र.
२ प्यासा, तृषातुर । उ०—एक दिन तियौ अर एक दिन पियौ, ब्याव रौ दिन कियौ ।—कहावत

सर्व०—उस। उ०—तियै री नांम बादसाह लाखावट दियौ।
—सोमसातल री वात

तिरंगौ-वि०—तीन रंगों वाला, तिरंगा।
(स्त्री० तिरंगी)

तिरंदौ-वि०—तैरने वाला, तैराक। उ०—बोहत तिरंदा डूब ही, डूबंदा तारै।—केसोदास गाडण

तिर—देखो 'तिरस' (रू.भे.)

तिरकाळ-सं०पु० [सं० त्रिकाल] १ तीनों काल-भूत, भविष्यत् और वर्तमान. २ प्रातः, मध्याह्न और सायं का समय, त्रिकाल।
वि०—पागल, मूर्ख।

तिरख, तिरखा—देखो 'तिरसा' (रू.भे.) उ०—१ तिरख न खमणी जाय।—वि.कु.
उ०—२ साधुजी साता पांमिया, तिरखा दीधि निवार हो।
—जयवांणी

तिरगस—देखो 'तरगस' (रू.भे.)

तिरगुण—देखो 'त्रिगुण' (रू.भे.) उ०—१ ख्याल मांयै नहीं ख्याल स्वरूपी, रहता आप निराळा। तिरगुण नहीं रे खोज्यां खबर करै।
—श्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ आतम सुद्ध अचित सदाई, भेदाभेद जहां नाहीं। भेदाभेदा भयौ तिरगुण में, तिरगुण चित के माहीं।—स्री सुखरांमजी महाराज

तिरछउड़ी-सं०स्त्री०—मालखंभ की एक कसरत।

तिरछाई-सं०स्त्री०—तिरछापन, वक्रता।

तिरछी बैठक-सं०स्त्री०—मालखंभ की एक कसरत जिसमें दोनों पैरों को ऊपर कर परस्पर गूंथ कर धड़ को ऊपर उठाते हैं।

तिरछोळ-वि०—१ दुष्ट, बदमाश. २ कठोर हृदय।

तिरछौ-वि० [सं० तिरश्चीन] (स्त्री० तिरछी) जो अपने आधार पर लम्बवत् न हो। उ०—त्रजड़ी धक धूण तकी तिरछी। बुरची तोग देवळ नां बिरची।—पा.प्र.
मुहा०—१ तिरछा वैण—तिरछे वचन, कटु वाक्य, अप्रिय बात.
२ तिरछी नजर, तिरछी चितवन—बगल से देखना, लोगों की दृष्टि बचा कर देखना।
रू०भे०—तरच्छौ, तरछौ।

तिरजंच, तिरजंचौ, तिरजक-सं०पु० [सं० तिर्यञ्च, तिर्यक] १ पशु, पक्षी। उ०—१ सात आठ भव लगतां नर तिरजंच में रहियौ।
—ध.व.ग्रं.
उ०—२ गुरु ऊपर जे राचइ नहीं, ते मांणस तिरजंचौ रे।—स.कु.
२ सर्प. ३ मृत्यु लोक या मध्यलोक (जैन) ४ मध्य।
वि०—तिरछा, टेढ़ा।
रू०भे०—तिरि, तिरिअ, तिरिक्ख, तिरिच्छ, तिरियंच, तिरिय।

तिरणी-सं०स्त्री०—१ कुछ अधिक खा कर पानी पी लेने पर पेट के तनने की अवस्था।
रू०भे०—तिरणी।
२ तैरने का कार्य, तैरने का ढंग।

तिरणूं, तिरणौ-सं०पु०—तृण, तिनका। उ०—सीकरी कासली बीच काटीव जंग जूटा। घोड़ा रजपूत का तिरणा ज्यां सीस तूटा।
—सि.वं.

तिरणौ, तिरबौ—क्रि०अ० [सं० तॄ] १ हाथ पैर या अंग संचालित कर के पानी पर चलना, तैरना। उ०—फिरिया नहीं फेरू, मारग मेरू तेरू पार तिरंदा है।—ऊ.का.
२ पानी पर ठहरना, उतराना। उ०—घड़ौ न डूबै बेवड़ौ ए पणि-हारी ए लो, ईडांणी तिर तिर जाय वाला जी ओ।—लो.गी.
३ उद्धार होना, मोक्ष पाना। उ०—१ जो थारै सिरणौ हुवै तौ समगत निरमळी पाळ।—जयवांणी
उ०—२ गळि अमलदार तिरणूं गिणै, मरणूं डूबि सु मांणसां।—ऊ.का.
४ क्षुद्र प्राणियों का ऊपर-ऊपर हिलना-डुलना। उ०—तावड़ बैठ तिग-तिग तिरै, रमौ सिकारां रावतौ। ऊतरै अमल बस व्है नहीं, जूंवां रौ ई जाबतौ।—ऊ.का.
(मि० टळवळणौ, टळवळबौ)
तिरणहार, हारौ (हारी), तिरणियौ—वि०।
तिरवाड़णौ, तिरवाड़बौ, तिरवाणौ, तिरवाबौ, तिरवावणौ, तिर-वावबौ—प्रे०रू०।
तिराड़णौ, तिराड़बौ, तिराणौ, तिराबौ, तिरावणौ, तिरावबौ—स०रू०।
तिरिओड़ौ, तिरियोड़ौ, तिरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
तिरीजणौ, तिरीजबौ—भाव वा०।
तरणौ, तरबौ, तैरणौ, तैरबौ—रू०भे०।

तिरथ—देखो 'तीरथ' (रू.भे.)

तिरप-सं० [सं० त्रि] १ नृत्य में एक प्रकार का ताल। उ०—आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिग्रति, मरुत चक्र किरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चंद धरू।
—वेलि
२ नृत्य में पैरों को टेढ़ा करके खड़ा होना, तिर्यक पद भंगिमा। उ०—नृत पलंग रुच लावै नूपर। उरप तिरप जंग बाजी ऊपर।
—सू.प्र.

तिरपण—१ देखो 'तिरेपन' (रू.भे.) २ देखो 'तरपण' (रू.भे.)

तिरपत-वि० [सं० तृप्त] १ तुष्ट, तृप्त। उ०—राजा भांत-भांत रा भोजन लेय गयां छै सु वांनै जिमाय तिरपत किया छै।
—पलक दरियाव री वात
२ प्रसन्न, खुश।

तिरफळौ—देखो 'त्रिफळौ' (रू.भे.)

तिरबंड-वि०—बदमाश, धूर्त।

तिरवेणी, तिरवेनी—देखो 'त्रिवेणी' (रू.भे.)

तिरमाळो—देखो 'तरवाळी' १ (रू.भे.)

तिरमिरा [सं० तिमिर] शारीरिक कमजोरी के कारण दृष्टि में होने वाला एक दोष जिससे अधिक चमक या तीक्ष्ण प्रकाश के सामने दृष्टि स्थिर नहीं रह सकती।

तिरमिरणौ, तिरमिरबौ—क्रि०अ०—दृष्टि का चकाचौंध होना, चौंधियाना।

तिरमिरायोड़ौ—भू०का०कृ०—चकाचौंध हुवा हुआ।
(स्त्री० तिरमिरायोड़ी)

तिरयग—देखो 'तिरजक' (रू.भे.)

तिरयण—सं०पु० [सं० त्रिरत्न] सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन तथा सम्यग् चरित्र—ये मोक्ष साधन रूप तीन रत्न (जैन)

तिरलोई, तिरलोक [सं० त्रिलोक] त्रिलोक, तीन लोक।
उ०—नवग्रह आसण आवि वइट्ठा, सुभ सांतिक होई। रिख वेद भणंति वांणी सांभळे तिरलोई।—रुकमणी मंगळ

तिरलोकमिण—सं०पु० [सं० त्रिलोकमणि] सूर्य। उ०—मेरु रंगे तिरलोकमिण, पुणग वार मिट पाय। गजबौ रंगै गिरवरां, जमी गेरु व्है जाय।—रेवतसिंह भाटी

तिरलोकी—देखो 'तिरलोक'। उ०—साचै मन राखै घर सारू, बैठे सहज घणी वरदास। बेटौ इसौ मिळै जे-वरळी, तिरलोकी मां किया तलास।—हिंगळाजदांन कवियौ

तिरवाड़ी—देखो 'तिवाड़ी' (रू.भे.)

तिरवाळी—सं०स्त्री०—देखो 'तरवाळी' (अल्पा., रू.भे.)

तिरवट—देखो 'तिवट' (रू.भे.)

तिरवाळौ—सं०पु०—१ मूर्च्छा, गस। उ०—खाय तिरवाळौ मिरगी हैं' पड़ी, कोई औ दुख सह्यौ न जाय। मिरगा विन मिरगी ग्रेकलड़ी, मिरगौ छोड गयौ वन मांय।—लो.गी.
२ देखो 'तरवाळौ' १ (रू.भे.) उ०—तरै सोनगरी पूछियौ—'पांणी मांहै इसड़ौ सुवास, इसड़ौ तिरवाळौ किण भांत पड़ै छै।
—नैणसी

तिरवेणा—देखो 'त्रिवेणी' (रू.भे.)। उ०—दरसी जोत दीदार, तिरवेणा री ताक में। छूटा सकल विकार, आया मन माग में।
—स्री सुखरांमजी महाराज

तिरस, तिरसइ, तिरसई—देखो 'तिरसा' (रू.भे.)
उ०—१ चतुर पुरुख चातक तणी सखि मिट गई तिरस तुरंत।
—वि.कु.
उ०—२ आगइ एक ढळवळइ तिरसइ, वीजी लागइ भूख।
—कां.दे.प्र.
रू०भे०—तिर।

तिरसड़ी—देखो 'तिरसा' (अल्पा., रू.भे.)

तिरसठ—देखो 'तिरेसठ' (रू.भे.)

तिरसठौ—देखो 'तिरेसठौ' (रू.भे.)

तिरसणौ, तिरसबौ—देखो 'तरसणौ, तरसबौ' (रू.भे.)
उ०—खारक पावया खोपरा स रै, म्हूं कांमण करती कोड। जद विलसण रुत हुई स रै, गया तिरसती छोड।—लो.गी.

तिरसा—सं०स्त्री० [सं० तृषा] तृषा, प्यास। उ०—जावै न तिरसा पीधां सुजळ। निज ध्रम कीधां नह फळै।—चौथ वीठू
रू०भे०—तिरख, तिरखा, तिरस, तिरसइ, तिरसई, तिरास।
अल्पा०—तिरसड़ी।

तिरसाणौ, तिरसाबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू.भे.)

तिरसायोड़ौ—देखो तरसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तिरसायोड़ी)

तिरसाळु—वि० [सं० तृष=तृषा+आलुच] तृषावान, प्यासा।

तिरसावणौ, तिरसावबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू.भे.)
उ०—गंगा ब्रह्म कमंडळी, पावनता विण पार। तू मो नूं तिरसावही, कै देसी दीदार।—बां.दा.

तिरसिंघ—वि०—१ शक्तिशाली, समर्थर. २ वीर।

तिरसूं—क्रि०वि०—तीसरे दिन।

तिरसूळ—देखो 'त्रिसूल' (रू.भे.)

तिरसूळियाळीलगांम—सं०स्त्री० यौ० [सं० त्रिशूल+आलुच्+फा० लगाम] उद्दंड घोड़ों को वश में करने के लिए उनके मुंह में डाली जाने वाली लगाम जिसमें त्रिशूल के आकार के नुकीले कीले होते हैं।

तिरसौ—वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषावान।
रू०भे०—तिरस्यौ।

तिरस्कार—सं०पु० [सं०] अपमान, अनादर।

तिरस्यौ—देखो 'तिरसौ' (रू.भे.) उ०—कइ घरि आव्या अतिथ न पूज्या, तिरस्यां नीर न पायौ।—कां.दे.प्र.

तिरहुत—सं०पु० [सं० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश जो बिहार के अन्तर्गत है।

तिरहुतियौ—वि०—तिरहुत प्रदेश का।

तिरां—क्रि०वि०—१ तब. २ पास, निकट।

तिरांणवे—देखो 'तेरांणू' (रू.भे.)

तिरांणवौं—देखो 'तेरांणमौं' (रू.भे.)

तिरांणू—देखो 'तेरांणू' (रू.भे.)

तिराई—देखो 'तैराई'।

तिराक—देखो 'तैराक' (रू.भे.)

तिराड़णौ, तिराड़बौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.)
तिराड़णहार, हारौ (हारी), तिराड़णियौ—वि०।
तिराड़िओड़ौ, तिराड़ियोड़ौ, तिराड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तिराड़ीजणौ, तिराड़ीजबौ—कर्म वा०।
तिरणौ, तिरबौ—अक०रू०।

तिराड़ियोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तिराड़ियोड़ी)

तिराणौ, तिराबौ–क्रि०स० ('तिरणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ हाथ, पैर या अंग सञ्चालित करा कर पानी पर चलाना. २ पानी पर ठहराना, तैराना. ३ उद्धार करना।

तिराणहार, हारौ (हारी), तिराणियौ—वि०।

तिरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

तिराईजणौ, तिराईजबौ—कर्म वा०।

तिरणौ, तिरबौ—अक०रू०।

तराड़णौ, तराड़बौ, तराणौ, तराबौ, तरावणौ, तराववौ, तिराड़णौ, तिराड़बौ, तिरावणौ, तिराववौ, तैराड़णौ, तैराड़बौ, तैराणौ, तैराबौ, तैरावणौ, तैराववौ—रू०भे०।

तिरायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ हाथ, पैर या अंग सञ्चालित करा कर पानी पर चलाया हुआ. २ पानी पर ठहराया हुआ, तैराया हुआ. ३ उद्धार किया हुआ।

(स्त्री० तिरायोड़ी)

तिरावणौ, तिराववौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.)

तिरावणहार, हारौ (हारी), तिरावणियौ—वि०।

तिराविग्रोड़ौ, तिरावियोड़ौ, तिराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तिरावीजणौ, तिरावीजबौ—कर्म वा०।

तिरणौ, तिरबौ—अक०रू०।

तिरावियोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तिरावियोड़ी)

तिरास–सं०स्त्री०—१ कष्ट, पीड़ा. २ देखो 'तिरसा' (रू.भे.)

तिराह–अव्य० [सं० त्राहि] रक्षार्थ पुकारने का भाव, त्राहि-त्राहि।

तिराही–सं०स्त्री०—तिराह नामक स्थान की बनी कटारी या तलवार

तिरि, तिरिग्र, तिरिक्ख—देखो 'तिरजंच' (रू.भे.)

उ०—सुर नर तिरिग्र प्रजागति, जागति मइं किम जाइ। तिणि त्रिणि जित कळकंठ रे, रेखा व(च)हुं माइ।—प्राचीन फागु संग्रह

तिरिक्खगइ–सं०स्त्री० [सं० तिर्यग्गति] तिर्यकगति (जैन)

तिरिक्खजोणि, तिरिक्खजोणी–सं०स्त्री० [सं० तिर्यग्योनि] तिर्यकयोनि। (जैन)

तिरिक्खजोणीय–वि०—तिर्यकयोनि में उत्पन्न।

तिरिच्छ—देखो 'तिरजंच' (रू.भे.)

तिरियंच—१ देखो 'तिरजंच' (रू.भे.) उ० १ देवता तिरियंच नार की, च्यार च्यार प्रकासी। चउदह लाख मनुस्य ना, ए लाख चउरासी।—स.कु.

तिरिय—१ देखो 'तिरजंच' (रू.भे.) उ०—२ सुर नर तिरिय आऊ तित्थंकर पुण्य बायाल।— वृहद स्तोत्र

२ देखो 'तिरिया' (रू.भे.)

तिरियलोग, तिरियलोय–सं०पु० [सं० तिर्यग्लोक] मृत्युलोक।

तिरिया–सं०स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री, औरत, पत्नी। उ०—१ मोरां बिन डूंगर किसा, मेह बिन किसा मल्हार। तिरिया बिन तीजां किसी, पिव बिन किसा सिंगार।—र.रा.

उ०—२ तजै मती तिरिया, पितु, माता, छोडि न घोरौ छोटा। धोती छोडि बनै मति धूरत, लेकर घोट लंगोटा।—ऊ.का.

मुहा०—तिरिया चरित—त्रिया चरित्र, स्त्री का रहस्य या कौशल।

रू०भे०—तिरिय।

तिरियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ हाथ पैर हिला कर या अंग सञ्चालित कर के पानी पर चला हुआ. २ पानी पर ठहरा हुआ, उतराया हुआ. ३ मोक्ष प्राप्त।

तिरीड–सं०पु० [सं० किरीट] मुकुट (जैन)

तिरीडी–वि० [सं० किरीटी] मुकुट धारण करने वाला (जैन)

तिरुडि–सं०स्त्री०—१ उपजाऊ भूमि। उ०—हिवि युगलियां ना सुख सांभळउ; तिरुडि निरयोद्योति रत्नमय भूमि।—व.स.

२ जितनी दूर तीर जा सके उतनी दूरी की भूमि।

तिरेपन–वि० [सं० त्रिपञ्चाशत्] पचास और तीन का योग, त्रेपन।

सं०पु०—५३ की संख्या।

रू०भे०—तिरपण, तेपन, त्रेपन।

तिरेपनमौं, तिरेपनवौं–वि०—५३ वां।

रू०भे०—तेपनमौं, तेपनवौं।

तिरेपनेक–वि०—त्रेपन के लगभग।

रू०भे०—तेपनेक।

तिरेपनौ–सं०पु०—५३ की संख्या का वर्ष।

रू०भे०—तेपनौ, तेपन्नौ।

तिरेसठ–वि० [सं० त्रयःषष्टि, त्रिषष्टि, प्रा० तेसट्ठि त्रसट्ठि] साठ और तीन का योग, तिरसठ।

रू०भे०—तिरसठ, तेसठ।

सं०पु०—साठ से तीन अधिक की संख्या, ६३।

तिरेसठमौं–वि०—तिरेसठवां।

रू०भे०—तेसठमौं।

तिरेसठेक–वि०—तिरेसठ के लगभग।

रू०भे०—तेसठेक।

तिरेसठौ–सं०पु०—६३ की संख्या का वर्ष।

रू०भे०—तिरसठौ, तेसठौ।

तिरेहण–वि०—१ पार लगाने वाला, उद्धार करने वाला. २ रक्षक।

तिरै–क्रि०वि०—तब।

सं०पु०—फीलवानों का एक शब्द जिसे वे नहाते हुये हाथियों को लेटाने के लिए बोलते हैं।

तिरोतर, तिरोतरइ—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तिरोभाव–सं०पु० [सं०] अंतर्ध्यान, अदर्शन, गोपन।

तिरोभूत–वि० [सं०] गुप्त, अदृष्ट।

तिरोहित–वि० [सं०] छिपा हुआ, अंतर्हित, गुप्त (अ.मा.)

सं०पु० [सं० तीर भुक्ति] मिथिला प्रदेश जिस के अन्तर्गत मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिला है।

उ०—केसां केरळियांह, वखांण न कीजही । किसूं तिरोहित नारि क, कच्छ कहीजही ।—बां.दा.

तिलंग—सं०पु०—१ अंग्रेजी फौज का भारतीय सिपाही ।

वि०वि०—भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के बाद सर्व प्रथम कम्पनी के अधिकारियों ने मद्रास में किला बना कर वहां के तेलंगियों को अपनी सेना में भरती किया था । इससे अंग्रेजी फौज के देशी सिपाही तिलंग कहे जाते हैं. २ तैलंग देश-वासी ।

उ०—वांमा भार नितंब तिलंगी वारियां । नहीं इस अंग वासंक सिंहल नारियां ।—बां.दा.

३ देखो 'तैलंग' (रू.भे.)

रू०भे०—तिलंगांण, तिलंगौ, तिलगांण, तिल्यंग, तेलंग, तेलंगी, तेलगू ।

तिलंगणी—सं०स्त्री०—तिलपपड़ी (शेखावाटी)

तिलंगांण, तिलंगी, तिलंगौ—देखो 'तिलंग' (रू.भे.)

तिल—सं०पु० [सं० तिल:] १ वर्षा ऋतु में बोया जाने वाला डेढ़ दो हाथ ऊंचा पौधा जिसकी खेती संसार के प्राय: सभी गर्म देशों में तेल के लिए होती है. २ इसी पौधे के बीज जो दो प्रकार के होते हैं सफेद व काले ।

रू०भे०—तिली, तिल्ली ।

मुहा०—१ काळा तिल खाणा—पूर्व जन्म में किसी के प्रति किए कुकृत्यों का फल भोगना. २ तिल-तिल—थोड़ा-थोड़ा. ३ तिल मात्र—किंचित, जरा सा. ४ तिल रौ ताड़ करणौ—तिल का ताड़ बनाना, बात का बतंगड़ करना । (मि० राई रौ भाखर करणौ) ४ तिलां में तेल होणौ—तिलों में तेल होना, सार होना, तत्त्व होना. ५ बाडिया तिलां में जाणौ—व्यर्थ भटकना ।

यौ०—तिलपापड़ी ।

२ शरीर पर पाया जाने वाला काले रंग का छोटा दाग. ३ काली बिंदी के आकार का गोदना जिसे स्त्रियां शोभा के लिए गाल, ठुड्डी आदि पर गोदाती हैं । उ०—वणियौ तिल थारै वदन, नेह रसिक मन नार । तिल ऊपर तिल्लोतमा, वार दई सो वार ।—बां.दा.

४ आंख की पुतली के बीचोंबीच की गोल काली बिंदी ।

[सं० तिलक, प्रा० तिलउ] ५ तिलक । उ०—धरपत सीहे लई मुरद्धर, आसथांन तिल पाट उजागर ।—रा.रू.

५ देखो 'तिलौ' (मह., रू.भे.)

रू०भे०—तल ।

तिलउ—देखो 'तिलक' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—नयण सलूणिय काजळरेह, निलउ कसतूरी यम णिधडीय । करयले कंकण मणि झमकारु, जादर फालीय पहिरण ए ।—पं.पं.च.

तिलकंठ—सं०पु०—एक प्रकार का घास ।

तिलक—सं०पु० [सं०] मस्तक पर केसर चंदन या गोरोचन आदि का लगाया जाने वाला चिन्ह जो किसी साम्प्रदायिक संकेत या शोभा के अभिप्राय से मांगलिक अवसरों पर लगाया जाता है, टीका ।

उ०—बादळ ज्यूं सुर धनुख बिण, तिलक बिना दुजपूत । बनौ न सोभै मौड़ बिन, घाव बिनां रजपूत ।—बां.दा.

मुहा०—१ तिलक उघड़णौ—तिलक का प्रकट होना । किसी के कपट का धीरे-धीरे पता चलना. २ तिलक काडणौ (लागणौ)—नुकसान पहुंचाना, क्षति पहुचाना ।

२ राज्याभिषेक, राजसिंहासन पर प्रतिष्ठा ।

क्रि०प्र०—करणौ ।

३ विवाह सम्बन्ध स्थिर करने पर कन्या पक्ष की ओर से वर के माथे पर अक्षत कुंकुम का तिलक कर उसके हाथ में कुछ द्रव्य देने की एक रीति. ४ विवाह सम्बन्ध स्थिर करने पर कन्या पक्ष की ओर से वर को दिया जाने वाला द्रव्य ।

क्रि०प्र०—चढ़ाणौ, देणौ ।

(मि० 'टीकौ')

५ माथे पर पहिनने का स्त्रियों का एक आभूषण ।

उ०—मुख सिख संधि तिलक रतन मैं मंडित, गयौ जु हूंतौ पूठि गळि । आयै क्रिसन मांग मग आयौ, भाग कि जांणै भाळियळि ।

—वेलि.

(मि० 'टीकौ')

६ श्रेष्ठ व्यक्ति. ७ एक जाति का एक घोड़ा. ८ संगीत में ध्रुवक का एक भेद जिसमें एक-एक चरण पच्चीस अक्षरों का होता है. ९ दो सगण का एक वृत्त विशेष.

[तु० तिरलीक] १० मुसलमान स्त्रियों द्वारा सूथन के ऊपर पहिने जाने वाला ढीला लहंगा ।

रू०भे०—तलक, तिलउ, तिलक्क, तिलिक, तिलौ, तिल्लक, तीलक ।

अल्पा०—तिलकड़ौ ।

तिलक कांमोद—सं०पु० [सं० तिलक कामोद] एक रागिनी जो कामोद और विचित्र अथवा कान्हड़ा कामोद और षड्योग से बनती है ।

तिलकड़ौ—सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा विशेष (शा.हो.)

२ देखो 'तिलक' (अल्पा., रू.भे.)

तिळकणौ, तिळकबौ—क्रि०अ०—१ फिसलना । उ०—नदियां नाळा नीझरण, पावस चढ़िया पूर । करहउ कादिम तिळकस्यइ, पंथी पूगळ दूर ।—ढो.मा.

२ प्रज्वलित होना । उ०—तन पर लूआं आगसी, अन्तर तिळकी आग । दो आगां री आंच में, पड़िया प्रांण अभाग ।—लू.

तिलकणौ, तिलकबौ—क्रि०स०—तिलक करना, टीका लगाना ।

तिलक पिछेवड़ौ—सं०पु०यौ०—साले के द्वारा दिया जाने वाला वस्त्र विशेष ।

उ०—ए तौ ओढ़ूं वां रा साळाजी रौ तिलक पिछेवड़ौ ।—लो.गी.

तिलकमग—सं०पु०—नासिका, नाक (अ.मा.)

रू०भे०—तिलक मारग ।

तिलकमणी-सं०स्त्री०—चूड़ामणि, शिरोभूषण ।

तिलकमारग—देखो 'तिलक मग' (रू.भे.) (ह.नां.)

तिलकमुद्रा-सं०स्त्री० [सं०] चंदन आदि का टीका और शंख चक्रादि का छापा जिसे प्राय: भक्त लोग लगाते हैं ।

तिलका-सं०पु०—दो सगण (।।ऽ) युक्त ६ वर्ण का छंद विशेष ।

तिलकायत-सं०पु०—१ वल्लभ कुल सम्प्रदाय के पीठाधीश । २ देखो 'टीकायत' ।

तिलकारक-सं०पु० [सं० तिल कालक] देह पर तिल के आकार का काला चिन्ह ।

तिळकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ फिसला हुआ. २ प्रज्वलित हुवा हुआ । (स्त्री० तिळकियोड़ी)

तिलकियोड़ो-भू०का०कृ०—तिलक किया हुआ । (स्त्री० तिलकियोड़ी)

तिलक्क—देखो 'तिलक' (रू.भे.) उ०—करंत कुंकम तिलक्क पांणि राज प्रोहित ।—सू.प्र.

तिलगांण—देखो 'तिलंग' (रू.भे.)

तिलड़ी—देखो १ 'तील' (अल्पा., रू.भे.) २ तीन लड़की ।

तिलड़ो-वि०—१ जिसमें तीन तह हों. २ तीन लड़ों का । (स्त्री० तिलड़ी)

तिलचावळी-सं०स्त्री०यौ०—तिल और चावल के मेल से बनाई जाने वाली खिचड़ी ।

तिलट-सं०पु०—तिल, तिलहन ।

तिलतांम-सं०स्त्री० [सं० तिलोत्तमा] १ अप्सरा (डि.नां.) २ तिलोत्तमा नामक अप्सरा ।

तिलपपड़ी, तिलपापड़ी-सं०स्त्री०यौ०—तिल के साथ गुड़ या शक्कर मिला कर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ, तिलपट्टी । रू०भे०—तिलंगणी ।

तिलभंगक-सं०पु०—एक प्रकार का आभूषण (व.स.)

तिलभ-वि०—१ अमूल्य. २ अद्भुत, विचित्र ।

तिलमंडेस्वरी-सं०स्त्री० —प्रयाग वट के पास शिवजी का स्थान । (बां.दा. ख्यात)

तिलवट्ट-सं०पु०—संहार, नाश । उ०—बाबा सुणि बादळ कहै, सोइ रहो सुभट्ट । तो भत्रीज हु ं ताहरो, खळां करूं तिलवट्ट ।—प.च.चौ. (मि० खळकट)

तिलवठ-१ तेल या तिल युक्त ? उ०—खप्पर ओ भैरव खप्पर भरावूं तिलवठ बाकळा । ऊपर ओ भैरव मद री जी धार ।—लो.गी. २ देखो 'तिलवट्ट' (रू.भे.)

तिलवडी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष । उ०—ताल तमालीय तणच्छ घणा, तिहां तुळसी नइं ताड । तज तंडिल नइं तिलवडी, ताळीसां ना भाड ।—मा.कां.प्र.

तिलवा-सं०पु०—वह खेत जिसमें प्रथम बार तिल बोये गये हों । अल्पा०—तिलवाड़ो ।

तिलवाड़ा-सं०स्त्री०—मन्द गति का एक १६ मात्रा का ताल ।

तिलवाड़ियो-सं०पु०—तिलवट का वंशज, चौहान वंश की शाखा का व्यक्ति ।

तिलवाड़ो—देखो 'तिलवा' (अल्पा., रू.भे.)

तिलवाय-वि०—तरबतर, सराबोर । उ०—घणा मींह जामा अतर में तिलवाय कीधा तिकां रा बंध छाती उपरांस खोल दीधा छै । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तिलवास-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।—व.स.

तिलसंकरांत, तिलसंकरांती-सं०स्त्री०—मकर राशि में सूर्य के आने पर तिल दान का एक पर्व, मकर संक्रान्ति ।

तिलसर-सं०पु०—तिल के डंठल ।

तिलसांकळी-सं०स्त्री०यौ०—खाजे के आकार का तिल मिश्रित व्यंजन । वि०वि०—देखो 'सांकळी' (रू.भे.)

तिलांगणि-सं०स्त्री० [सं० तिलाग्नि] तिल के पौधे की अग्नि (जैन)

तिलांजळी-सं०स्त्री० [सं० तिलांजलि] मृतक संस्कार के बाद की जाने वाली एक क्रिया जिसमें अंजली में जल भर कर उसमें तिल, डाभ आदि डाल कर मृतक को अर्पित करते हैं । मुहा०—तिलांजळी देणी—तिलांजली देना, बिल्कुल त्याग देना, कोई सम्बन्ध नहीं रखना ।

तिलाक—देखो 'तलाक' (रू.भे.)

तिलाकारी-सं०स्त्री० [अ०+फा] सोने पर मुलम्मा चढ़ाने का कार्य । उ०—तिलाकारी के पड़दे जोति के जहूर जरबफती चिगे का बणाव ।—सू.प्र.

तिलाकूटी-सं०स्त्री०—तिलों को कूट कर उसमें शक्कर या गुड़ मिला कर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ ।

तिलार—पक्षी विशेष जिसका शिकार मांस के लिये करते हैं । उ०—हमैं तीतरां ऊपर बाज छूटै छै, करवांन कां ऊपर जुररा छूटै छै, तिलारां ऊपर वासा छूटै छै ।—रा.सा.सं.

तिलिक—देखो 'तिलक' (रू.भे.)

तिलिम, तिलिमा-सं०पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष (जैन) उ०—भंभा मउंग मद्दल कडंब झल्लरि हुडुक्क कंसाळा । काहुल तिलिमा वंसो संखो पणवो य बारसमो ।—वं.स.

तिलियक-वि०—किंचित, जरा । उ०—अकबर खोस लियो इण आंटै, मारण हंकिया किताक मीर । अै तौ दिली न लै इण आंटै, तिलियक लूण तणी तासीर ।—वीर दुरगादास राठौड़ रो गीत

तिलियो-वि०—१ दुर्बल, क्षीण, कृश. २ तिल सम्बन्धी ।

तिली—१ देखो 'तिल' १, २ (रू.भे.) २ देखो 'तिल्ली' (रू.भे.) ३ देखो 'तीली' (रू.भे.)

तिलुक्क-सं०पु० [सं० त्रैलोक्य] स्वर्ग, मृत्यु और पाताल इन तीनों

लोकों का जन-समुदाय (जैन)।

तिलू-सं०पु०—१ घास में रहने वाला एक दुबला-पतला कीड़ा।
२ तृण, तिनका।

तिलेक-वि०—कुछ, थोड़ा, किंचित।

तिलोग्र—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.)

तिलोई-सं०पु० [सं० त्रिलोकी] स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक (जैन)

तिलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.)

तिलोकपति—देखो 'त्रिलोकपति' (रू.भे.)

तिलोकी-सं०स्त्री०—१ इक्कीस मात्राओं का एक उपजाति छंद जो प्लवंगम और चांद्रायण के मेल से बनता है। इसके प्रत्येक चरण के अंत में लघु गुरु ।ऽ होता है।
२ देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—तीन तिलोकी सूं है न्है निराळा, मरुधर थारा रूंख।—

तिलोड़ी-सं०स्त्री० [सं० तैलकुटी] १ तेल रखने का पात्र विशेष।
२ देखो 'टीली' (अल्पा., रू.भे.)

तिलोचण—देखो 'त्रिलोचन' (रू.भे.)

तिलोट-सं०स्त्री०—तिलों को कूट कर उसमें गुड़ या शक्कर मिला कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

तिलोतमा, तिलोत्तमा-सं०स्त्री० [सं० तिलोत्तमा] १ एक परम रूपवती अप्सरा जिसे सृष्टि रचना के समय उत्तम पदार्थों में से एक-एक तिल लेकर बनाया गया (पौराणिक)।
उ०—तिलोत्तमा मैंणका सची उरवसी सरोतरी। सुरपती सेवतां ईढ़ न घरै तिण ओसरी।—रा.रू.
२ अप्सरा। (डि.नां.नां.मा)
रू०भे०—तिल्लोतमा।

तिलोय—देखो 'त्रिलोक' (जैन)

तिलोर-सं०स्त्री०—शीतकाल में उत्तर एशिया से राजस्थान के रेतीले या कंकरीले भाग में आने वाला एक पक्षी जिसका शिकार किया जाता है।
रू०भे०—तिल्लोर।

तिलौ—१ देखो 'तिलक' (रू.भे.) उ०—न्याय निपुण पुहवी तिलौ रे लाल, रूपैं जांणैं कांम।—स्रीपाळ रास
२ देखो 'तिल्लौ' (रू.भे.)

तिल्यंग—देखो 'तिलंग' (रू.भे.) (जैन)

तिल्लक—देखो 'तिलक' (रू.भे.)

तिल्ला-सं०पु०—प्रत्येक चरण में दो सगण का वर्णिक छंद विशेष।

तिल्ली-सं०स्त्री०—१ पेट में बांई ओर पसलियों के नीचे का एक अवयव जो मांस की पोली गुठली के आकार का होता है, प्लीहा.
२ देखो 'तिल' १, २ (रू.भे.) उ०—जिणि दीहे तिल्ली अिइइ, हिरणी झालइ गाभ। तांह दिहां री गोरड़ी, पडतउ झालइ आभ।
—ढो.मा.

रू०भे०—तिली।

तिल्लोतमा—देखो 'तिलोत्तमा' (रू.भे.) उ०—वणियौ तिलधारै वदन, नेह रसिक मन नार। तिल ऊपर तिल्लोतमा, वार दई सौ वार।
—बां.दा.

तिल्लोर—देखो 'तिलोर' (रू.भे.)

तिल्लौ-सं०पु०—१ कलाबत्तू या बादले आदि का काम।
यौ०—तिल्लादार, तिल्लेदार।
२ वह तेल जो लिंगेंद्रिय पर उसकी शिथिलता दूर करने के लिए लगाया जाता है, तिल्ला. ३ एक जंगली वृक्ष जो पहाड़ी भूमि में अधिक पाया जाता है।
रू०भे०—तिलौ।

तिवग्ग—देखो 'त्रिवरगा' (जैन)

तिवट—देखो 'त्रिवट'।

तिवट्ठ-सं०पु०—भरत खंड के भविष्य के नौवें वासुदेव (जैन)
रू०भे०—तिविट्ठ।

तिवडौ-सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष। उ०—तिल तंदुल नइं ताड खर, तिवडा त्रिपुसी चंग। तिदुग तंतणि तिय वळी, तगर तणा तिहां तुंग।—मा.कां.प्र.

तिवणौ-वि०—तिगुना।

तिवरस-सं०पु० [सं० त्रिवर्ष] तीन वर्षों की दीक्षा वाले साधु, साध्वी (जैन)

तिवरसौ—देखो 'तिवरसौ' (रू.भे.)

तिवरस्यौ-वि०—तीन वर्ष का।

तिवरारि—देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे.) उ०—अरे साव सलखण राजल, रूपि नहीं अनु नारि। अरे के सावत्रीय ब्रह्मा, के गवरी तिवरारि।
—प्राचीन फागु संग्रह

तिवल-सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य। उ०—तिवल ददांमा दडवडी, निरदोस्यां नीसांण। रेणू असंखित ऊछळी, भूतळि छाहिउ भांण।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—तिविल।
२ देखो 'त्रिवलि' (रू.भे.) उ०—सरळ तरळ भुयवल्लरिय, सिहण पीण घण तुंग। उदर देसि लंकाउळि, सोहइ तिवल तुरंगु।
—प्राचीन फागु संग्रह

तिवळि, तिवळिया, तिवळी—देखो 'त्रिवलि' (रू.भे.)

तिवहार—देखो 'तिवार' (रू.भे.)

तिवाअ-सं०पु० [सं० त्रिपात] मन, वचन तथा काया इन तीनों को गिराना (जैन)

तिवाड़ी-सं०पु०—त्रिपाठी।
(स्त्री० तिवाड़ण)
रू०भे०—तिरवाड़ी, तिवारी।

तिवायण, तिवायणा-सं०पु० [सं० त्रिपातन] मन, वचन और काया का

नाश करना (जैन)

तिवारी—देखो 'तिवाड़ी' (रू.भे.)
(स्त्री० तिवारण)

तिवारौ—देखो 'तिवारौ' (रू.भे.)

तिवाव—सं०पु० [सं० त्रिपाद] तिपाई। उ०—जिकै खंदक भरवा नूं आवै आडा, लकड़ियां रा तिवाव। तिकां सूं भुरजां खोदवा रा दाव।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तिविट्ठ—देखो 'तिवट्ठ' (रू.भे.)

तिविल—देखो 'तिवल' (रू.भे.) उ०—भेर भुंगळ भरहरइ, करइ भाट जयकार। तूर तिविल वाजा सुणइ, तंति तणा टमकार।—मा.कां.प्र.

तिविह—देखो 'त्रिविध' (रू.भे., जैन)

तिव्व—देखो 'तीव्र' (रू.भे., जैन)

तिव्हार—देखो 'तिंवार' (रू.भे.) उ०—सांवणिये री अे मास, तीज तिव्हारां मा, बावड़ी जै।—लो.गी.

तिसंज्भ, तिसंभ, तिसंभा—सं०स्त्री० [सं० त्रिसन्ध्य, त्रिसन्ध्या] प्रातःकाल, मध्यानकाल एवं सायंकाल इन तीनों संध्याओं का समूह।
उ०—नांम मंत्र जे मुख जपइ ए मणु तणु सुद्धि तिसंभ।
—ऐ.जै.का.सं.

तिसंधि—सं०स्त्री० [सं० त्रिसन्धि] आदि, मध्य एवं अन्त (जैन)

तिस—सं०स्त्री० [सं० तर्ष, तृषा] प्यास, तृषा। उ०—मांणस कही अमल आरोगस्यी, तद कही तिस लागी छै पांणी हुवै तौ पावौ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

सर्व०—उस। उ०—सहर की तारीफ कुण कर सकै। अमरावती के अमर तिस गहर कूं तकै।—र.रू.

तिसड़े—क्रि०वि०—तब। उ०—तिसड़ै सै पातसाहजी नूं खवरि हुई ताहरां पातिसाहजी हेमूं रा डेरा ऊपर आवता हुता।—द.वि.

तिसड़ौ—वि० (स्त्री० तिसड़ी) १ वैसा, तैसा। उ०—१ आप जीमतौ तिसड़ौ खाणौ फकीरां नूं दीजै।—नैणसी
उ०—२ मन राखण नूं बात करौ खुसामद नूं नहीं। होवै जिसड़ी वात जे कहि देवौ तिसड़ी सही।—ठाकुर जैतसिंह री वारता
२ देखो 'तिसौ' (अल्पा., रू.भे.)

तिसटणौ, तिसटबौ—क्रि०अ०—१ स्थिर रहना। उ०—ज्यांरै थोड़ा सैण जग, वैरी घणा वसंत। तिसटै दिन थोड़ा तिके, अखै संत असत।
—वां.दा.

२ अनुकूल होना. ३ तुष्टमान होना, अनुकम्पा प्रकट करना।
तिसटणहार, हारौ (हारी), तिसटणियौ—वि०।
तिसटवाड़णौ, तिसटवाड़बौ, तिसटवाणौ, तिसटवाबौ, तिसटवावणौ, तिसटवावबौ, तिसटाड़णौ, तिसटाड़बौ, तिसटाणौ, तिसटावौ, तिसटावणौ, तिसटावबौ—प्रे०रू०।
तिसटिओड़ौ, तिसटियोड़ौ, तिसट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तिसटीजणौ, तिसटीजबौ—भाव वा०।

तिसटाड़णौ, तिसटाड़बौ—क्रि०स०—अनुकूल बनाना।

तिसटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ स्थिर. २ अनुकूल बना हुआ. ३ तुष्टमान।
(स्त्री० तिसटियोड़ी)

तिसणा, तिसना—सं०स्त्री० [सं० तृष्णा] १ प्यास, तृषा. २ प्राप्त करने के लिए आकुल करने वाली इच्छा, लालच, लोभ।
उ०—उर नभ जितै न ऊगयै, ओ संतोस अदीत। नर तिसना किसना निसा, मिटै इतै नह मीत।—बां.दा.
रू०भे०—तिस्णा।

तिसमारी—सं०स्त्री० [सं० तृषा+मारी] प्यास, तृषा।
उ०—मारग लूवां लपट मचाई। अब ऊपर तिसमारी आई।
—ऊ.का.

तिसय-तिडुत्तर—देखो 'तिड़ोतरसौ' (रू.भे.) उ०—मणुया तिसय-तिडुत्तर, नारय चउदसय तिरिय अडयाळा।—स.कु.

तिसर—सं०पु० [सं० त्रिशिरस्] खर और दूषण नामक राक्षसों का सेनापति। उ०—खर सधर दैत दूखण तिसर, दही बेल दहसीस री। चउदह हजार खळ चूरिया, जैत जैत जगदीस री।—पी.ग्रं.

तिसळणौ, तिसळबौ—क्रि०अ०—फिसलना। उ०—घड़े चीकणै छांट, रवै ना तिसळै नीचै। घट काचे पट रचै, जचै रंग सोणौ सींचै।—दसदेव
तिसळणहार, हारौ (हारी), तिसळणियौ—वि०।
तिसळवाड़णौ, तिसळवाड़बौ, तिसळवाणौ, तिसळवाबौ, तिसळवावणौ, तिसळवावबौ—प्रे०रू०।
तिसळाड़णौ, तसळाड़बौ, तिसळाणौ, तिसळावौ तिसळावणौ, तिसळावबौ—क्रि०स०।
तिसळिओड़ौ, तिसळियोड़ौ, तिसळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तिसळीजणौ, तिसळीजबौ—भाव वा०।
तरसळणौ, तरसळबौ, तीसळणौ, तीसळबौ—रू०भे०।

तिसला—सं०स्त्री० [सं० त्रिशला] भगवान महावीर की माता का नाम (जैन)

तिसळाणौ, तिसळाबौ—क्रि०स०—फिसलाना, गिराना।

तिसळायोड़ौ—भू०का०कृ०—फिसलाया हुआ, गिराया हुआ।
(स्त्री० तिसळायोड़ी)

तिसळियोड़ौ—भू०का०कृ०—फिसला हुआ।
(स्त्री० तिसळियोड़ी)

तिसाइयउ, तिसाइयौ—वि०—तृषित, प्यासा। उ०—१ करहउ पांणि तिसाइयउ, आयउ पुहकर तीर। ढोलइ ऊतर पाइयउ, निरमळ सरवर नीर।—ढो मा.
उ०—२ ऊकळै उपराळां आखौ, नाळां धांन तिसाइयौ।—दसदेव

तिसायोड़ौ, तिसायौ—भू०का०कृ० [सं० तृषित] प्यासा।
उ०—हिरण भागतौ तिसायौ होय एक बस्ती में मरणै गयौ।
—नी.प्र.
(स्त्री० तिसायोड़ी, तिसायी)

तिसाळवौ, तिसाळु, तिसाळुवौ [सं० तृषा+आलुच्] प्यासा।

उ०—तेरा रे वीरा तिसाळुवा घण देवां नै सरवत घोळ पिलाय।
—लो.गी.

तिसालौ-सं०पु०—१ तीन वर्ष का सम्मिलित रूप से लिया जाने वाला कर या लगान. २ ऊंट का एक रोग जो तीन वर्ष की अवधि का होता है।

तिसाहियौ, तिसियौ-वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषित।
उ०—भूखा तिसिया थाकड़ा, राखीजै नैड़ाह। ढळिया हाथ न आवसी, 'गोगादे' घोड़ाह।—गो.रू.

तिसै-क्रि०वि०—तब। उ०—तिसै रावजी अठी उठी देख नै बोलिया।
—वीरमदे सोनगरा री वात

तिसोतरी-सं०स्त्री०—तृषा, प्यास। उ०—(तरवार तांण'र) मा! आज थारी तिसोतरी धाप'र मिटाय लीजे।—वरसगांठ

तिसोता-सं०स्त्री० [सं० त्रिश्रोता] गंगा नदी। उ०—तिसोता जिसौ नीर गम्भीर टांकौ। विलूंमे विचै जाळ भुज्जाळ वांकौ।—मे.म.

तिसोवण-सं०पु० [सं० त्रिसोपन] जीने की तीन सीढ़ियों का समूह (जैन)

तिसौ-वि० (स्त्री० तिसी) १ तैसा, वैसा, जैसा।
उ०—तक लीधौ सोना तिसौ, पातर वाळौ प्रेम।—वां.दा.
२ वही. ३ प्यासा।

तिस्टौ-वि० [सं० तुष्ट] संतुष्ट, खुश, प्रसन्न। उ०—चेतन परम प्रकासी द्रस्टा, कारण कारज में नहिं रुस्टा रु तिस्टा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

तिस्णा—देखो 'तिसणा' (रू.भे.)

तिस्यां-क्रि०वि०—वैसे, उसी प्रकार।

तिस्लनायक-सं०पु०—एक आभूषण विशेष (व.स.)

तिहं-क्रि०वि०—वहां। उ०—वांण्या वंभण निवसइ घणा, लाख एक छइ हाटा तणा। वरणावरण लोक तिहं बहू, जाति प्रजा निवसइ छइ सहू।—हम्मीरायण

तिह—सर्व उस (रू.भे.) उ०—विरह सहू तिह भागलउ, कागलउ कुरळतउ पेखि। वायसना गुण वरणए, अरणए त्यजीअ विसेखि।
—व.वि.

तिहतरि, तिहत्तर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तिहवर, तिहवार—देखो 'तिंवार' (रू.भे.) उ०—उण चौथाई री पईसौ वार तिहवार वेस्यावां नूं दिरीजतौ, राज रै हरांम हुतौ।
—वां.दा. ख्यात

तिहां-क्रि०वि०—वहां। उ०—सउदागर राजा तिहां, वइठा मंदिर मांझ।—ढो.मा.

तिहारडौ, तिहारौ-सर्व० (स्त्री० तिहारड़ी, तिहारी) तेरा, तुम्हारा।
उ०—१ दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई नै।
—ऊ.का.

उ०—२ ब्रांम्हण ना कुळ भूप जे, मुखि तिहारडा मयंक। समवडि किम वईसी सकइ, राउ सरीसू रंक।—मा.कां.प्र.

अल्पा०—तिहारड़ौ, तिहारडौ।

तिहिं, तिहि-सर्व०—उस। उ०—१ दादू देख्या एक मन, सो मन सब ही मांहि। तिहिं मन सौं मन मांनिया, दूजा भावे नांहि।
—दादू वांणी

उ०—२ कुसुमित कुसुमायुध ओटि केळि क्रत, तिहि देखे थिउ खीण तन। कंत संजोगणि किंसुक कहिया, विरहणि कहै पळास वन।
—वेलि.

तिही—देखो 'तिथि' (रू.भे.)

तिहुं—देखो 'तिहु' (रू.भे.) उ०—कर दोनों कटि ऊपरैं, पुरुख फिरै चौफेर। औ आकार तिहुं लोक नौ, काढ़चौ ग्रंथ निहेर।—जयवांणी

तिहुंअण, तिहुअण, तिहुयण-सं०पु० [सं० त्रिभुवन] त्रिभुवन, तीनों लोक। उ०—१ सुयस तिहुंअण छाय।—वि.कु.
उ०—२ तिहुअण तारण सिख सुख कारण। वंछिय पूरण कल्पतरौ।—ऐ.जै.का.सं.
उ०—३ तिहुयणि ए मंगळा चारू जय जय कारू।—ऐ.जै.का.सं.

तिहूं, तिहू—देखो 'तिहु' (रू.भे.) उ०—तिहूं लोकां महीं जोड़ 'सांगा' तणी। हेक रवि दुवौ जटधर अरोड़ौ।
—कविराजा करणीदांन

तिहूअण, तिहूअणि, तिहूयण, तिहूयणि—देखो 'तिहुंअण' (रू.भे.)
उ०—१ गांन सूसर मुखि गाय करि, वायसि पंचइ बाध्य। तिहूयण त्रणवत लेखवउं, आज्ज नइ उन्मादि।—मां.कां.प्र.
उ०—२ वळी आ तुझ विरुदावळी। परदुख भंजन भूप। तिहूयणि को तोल नहीं, कांम कंदळा रूप।—मा.कां.प्र.
उ०—३ अेक अेक पाहिं भली, रूप तणी जे आलि। तिहूयण तेजइं तप तपइ, कोडि निसाकर भालि।—मा.कां.प्र.

तिहोतरे'क-वि०—तिहोतर के लगभग।
रू०भे०—तेवोतरे'क, तेहोतरे'क।

तिहोत्तर-वि० [सं० त्रयस्सप्तति, प्रा० तेसत्तरि अर्ध. मा. तेवत्तरि अप. त्रेत्तरि] सत्तर और तीन का योग।
सं०पु०—तिहोत्तर की संख्या।
रू०भे०—तिओतर, तिमोतर, तियोतर, तिरोतर, तिरोतरइ, तिहतरि, तिहत्तर, तीडोतर, तेओतर, तेवोतर, तेहवर, तेहुत्तर, तेहोतर।

तिहोत्तरौ-सं०पु०—७३ वाँ वर्ष।
रू०भे०—तिओतरौ, तियोतरौ, तेवोतरौ, तेहतरौ, तेहोतरौ।

तीं-सर्व०—१ उस। उ०—उवे दोनूं नोकर दरवाजे जाय बैठा छै तीं पथी री वाट जोवै छै।—साह रामदत्त री वारता
२ इस।

तींखोळी-सं०स्त्री०—१ शिखर, शृंग. २ वृक्ष की चोटी।

तींछे-क्रि०वि०—वहाँ। उ०—तां वणि पेखइ मणिमइ भूयणु, तींछे निवसइ नारी रयणु।—पं.प.च.

तींडसौ, तींडौ—देखो 'टींडसी' (रू.भे.)
तींण—देखो 'तीण' (रू.भे.)
तींदुलौ, तींदूलौ-सं०पु०—सिंह की जाति का एक हिंसक वन पशु, तेंदुआ। उ०—तठा उपरांयत करि नै राजांन सिलांमति वडा सिकारी सिंघली, सादूळ, पटाळा, केहरी··· तेलिआ, **तींदूला** बघेरिया, चीतरा भांति भांति रा जाति जाति रा नाहर सांकळै जड़िया।—रा.सा.सं.
तींमण—देखो 'तींवण' (रू.भे.)
तींय-सर्व०—उस। उ०—राव जैतसी विहारीदासोत बीकमपुर में राज करै, वडो भलो सरदार, व्रद्ध भयो **तींय** रै बेटो सुंदरदास।
—सुंदरदास बीकमपुरी री वारता
तींयाळौ-सं०पु०—४३ वां वर्ष, तैतालीस का वर्ष।
तींयासी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)
तींवण-सं०पु० [सं० तेमनम्=चटनी, मसाला] १ खाने के लिए पकाई हुई शाक-सब्जी. २ पकवान, व्यंजन।
कहा०—विगड़ी रा तींवण कदै आगे ही सुधरचा हा—विगड़े पकवान कभी पुन: नहीं सुधर सकते अर्थात् विगड़ी बात सुधरना अत्यन्त कठिन है।
वि०वि०—'तिम्मण' शब्द का अपभ्रंश साहित्य में व्यापक प्रयोग मिलता है। लगभग नवीं शताब्दी के स्वयम्भू कृत 'पउम-चरिउ' में तिम्मण या तिम्मणय कई बार प्रयुक्त हुआ है। दसवीं शताब्दी के पुष्पदन्त के 'महापुराण' में भी मिलता है। हेमचन्द्र कृत 'देसी-सद्द संग्रह' में कुसणं का अर्थ तीमन दिया गया है। यथा—
कुट्टाकुमारि कुट्टयरीकोसट्टइरियाउ चंडीए।
कुहियं लित्तम्मि कुहेडो य गुरेडम्मि तीमणे कुसणं॥
रामानुज स्वामी ने इसका अर्थ Sauce, किया है। आपटे के संस्कृत कोश में तेमन का अर्थ Sauce Condiment दिया है। 'पाइअ सद्द महण्णवो' में तीमण का अर्थ कढ़ी दिया गया है। अपभ्रंश साहित्य में 'भोजन-वर्णन' में तिम्मण, सालण और व्यंजन का साथ-साथ निर्देश मिलता है।
रू०भे०—तींमण, तीमण, तीवण, तेमण।
ती-सं०स्त्री० [सं० स्त्री, प्रा० तीय] १ स्त्री, नारी. २ औरत, पत्नी. ३ नदी. ४ भ्रमरावली।
सं०पु०—५ नट. ६ दोस्त, मित्र. ७ समुद्र (एका०)
वि०—१ तीसरी। उ०—धर तुक मत चौबीस धर, वळ दूजी अकवीस। ती चौबीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस।—र.ज.प्र.
२ तीन। उ०—भूआण वाऊ वण ती दिन तेऊ काय।
—वृहद् स्तोत्र
प्रत्य०—तृतीया और पंचमी विभक्ति की वाचक शब्द, 'से'।
उ०—१ सव कु मीठा वाद स्वाद मुख ती उचरण।
—केसोदास गाडण
उ०—२ ढोला आंमण-दूमणउ, नख ती खूदइ भीति। हम थी कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीति।—ढो.मा.
रू०भे०—ति।
तीअ-वि० [सं० तृतीय] तीसरा (जैन)
तीऊं-क्रि०वि०—तैसे, जैसे। उ०—जीऊं फिरियां तीरथ कीयां जाप, **तीऊं** दरसण करनळ मिटै ताप।—रांमदांन लाळस
तीक—देखो 'तीख' (रू.भे.)
तीकम-सं०पु० [सं० त्रिविक्रम] १ श्री कृष्ण। उ०—**तीकम** करै तीसरी ताळी, वाहर नाथ अनाथां वाळी।—र.ज.प्र.
२ विष्णु. ३ ईश्वर. ४ वामन अवतार। उ०—तूं **तीकम** रहमांण रव, तूं काइम करतार। तूं करीम वसदेव तण, आप लियौ अवतार।—पी.ग्रं.
तीकोरी-सं०स्त्री०—बढ़ई का तीन धार वाला एक औजार, तीन धार की अरगती।
वि०—तीन धार वाला, तिधारी।
तीकौ—देखो 'तीखौ' (रू.भे.)
तीक्ष—देखो 'तीक्ष्ण' (रू.भे.) उ०—आकास तारा मंडळ त्रोडतौ, कुळाचळ परवत पाताळि घाततौ, हाथि **तीक्ष** काती नचावतौ, महा-कपाळि रुधिर पीतउ।—व.स.
तीक्षण, तीक्षन—देखो 'तीक्ष्ण' (रू.भे.) उ०—रिदि लागां रामांनि ते वचन **तीक्षण** बांण। नयन आंसू कंठ बिठि, कंथ नि कहि वांणि।
—नळाख्यांन
तीक्ष्णसंग-सं०पु०—लवंग (अ.मा.)
तीक्ष्ण-वि० [सं०] १ तेज धार वाला या नुकीला. २ प्रखर, तीव्र, तेज. ३ प्रचंड, प्रवल, उग्र. ४ चरपरा, तीखे स्वाद का।
सं०पु०—१ लोहा. २ ज्योतिष में मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र।
रू०भे०—तिक्षण, तीक्ष, तीक्षण, तीक्षन, तिखण, तीखण, तीछण, तीछन।
तीक्ष्णरस्मि-सं०पु० [सं० तीक्ष्णरश्मि] सूर्य।
वि०—तीक्ष्ण किरणों वाला।
तीक्ष्णांसु, तीखस, तीखंसक्रम-सं०पु० [सं० तीक्ष्णांशु, तीक्ष्णांशक्रम] सूर्य (अ.मा.)
रू०भे०—तीखअंस।
तीख-सं०स्त्री०—१ तीक्ष्णता, तीखापन। उ०—तुटी खग रोद घड़ा पर **तीख**। सही जमदाढ़क झाळ सरीख।—सू.प्र.
२ श्रेष्ठता, विशेषता। उ०—ते सुतन सीह दन खाग **तीख**। साभाव सुपह जैचंद सरीख।—सू.प्र.
३ महत्त्व, बड़प्पन, गुरुता. ४ प्रतिष्ठा, मान।
उ०—त्यां में हीरानंद तिकौ, **तीख** लियां वड तोल। जनमी जिणरै पुत्रिका, अदभुत रतन अमोल।—र. हमीर
५ अधिकता. ६ कटाक्ष। उ०—लगि गुलाल पिचकार लग, साजै

छूट सरीख। करै पनां नैणां कहर, तरह अनोखी तीख।
—पनां वीरमदे री वात

७ उत्कंठा, जिज्ञासा। उ०—सहो आज इग्यारसी, म्हारै हिवड़ै तीख। करसां तौ ही पारणो, जो पिव मिळै हतीक।—र.रा.

८ शिखर, चोटी।

अल्पा०—तीखोळी।

[सं० तीक्ष्ण] ९ काली मिर्च (अ.मा.)

वि०—१ तेज, चरपरा। उ०—अेकइ लागइ मधुर फळ, अेकइ कड़ूयां तीख। अेक खाटां अेक खटरसां, सहि परि संगति सीख।
—मा.कां.प्र.

२ विशेष, श्रेष्ठ। उ०—प्यारी राखै पुत्र सूं, जाभा कर जतनांह। तीख रतन्नां तोल तिण, नांम कहै रतनांह।—र. हमीर

रू०भे०—तीक।

यौ०—तीखचौख।

तीखअंस—देखो 'तीक्ष्णांसु' (रू.भे., नां.मा.)

तीखड़ी-सं०पु०—१ द्वार के ऊपर अन्दर की ओर बनाया हुआ त्रिभुजाकार ताक या आला।

२ देखो 'तीखौ' (अल्पा., रू.भे.)

तीखचौख-सं०स्त्री०यौ०—१ विशेषता, अधिकता।

उ०—ताता रजपूतां में ही तीखचोख री बात अखियात रो उबारणहार।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ मर्यादा, प्रतिष्ठा।

३ स्पर्द्धा। उ०—घोड़ां रा उवटा लीजै छै। अमल पीजै छै। घोड़ां चढ़ियां सावळा तोलता थका मांहोमांहि तीखचौख रा वचन बोलता थका। आदमी कुण जकौ म्हां सूं अड़ै।—पनां वीरमदे री वात

४ मान, गौरव, बड़प्पन। उ०—१ आजांनबाहु पोरस अछाह, दीवां सूं लाय वडी वलाय, रिझवारां रिझवार, कमरां सिणगार, तीख-चौख रो राखणहार, रस-विलास रो चाखणहार। —र. हमीर

उ०—२ साथ में अमलां री मनुवारचां करै है, आसवर पिण प्याला भरै है, इण तरै हगांम करता वहै, तीख-चौख राखण री वातां करै है।—र. हमीर

तीखण [सं० तीक्ष्ण] १ लोहा (ह.नां.)

२ देखो 'तीक्ष्ण' (रू.भे.)

३ देखो 'तिखण' (रू.भे.)

तीखाचंद-सं०पु०—एक प्रकार का देशी खेल।

तीखोड़ौ देखो 'तीखौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० तीखोड़ी)

तीखोळी-सं०स्त्री०—देखो 'तीख' ८ (अल्पा., रू.भे.)

तीखौ-वि० [सं तीक्ष्ण] (स्त्री० तीखी) १ तेज धार या नोंक वाला।

उ०—१ हूं रांणी पिण थूं अछाई जी, निरागी निरधार। मावै नहीं इक म्यांन मांइ जी, तीखी दोई तरवार।—वि.कु.

उ०—२ तीखा भाला ऊपर चालणौ।—जयवांणी

२ उग्र, प्रचण्ड। उ०—सूकै जेठ मझार सर, तीखा तावड़ियांह। सूकै इम सिंधू सूणै, मुंहडा मावड़ियांह।—वां.दा.

मुहा०—तीखौ होणौ—तेज स्वभाव का होना।

३ तेज या द्रुतगति से चलने वाला। उ०—सर डावै वड जीवणै, दुहूं विचाळै वट्ट। तीखा खड़ियां ओठियां, कांमठियां मूं फट्ट।
—कुंवरसी सांखला री वारता

४ विशेष, अधिक। उ०—१ देह जिकण वातां अै दोई, तिके सदाई तीखा। बीजा जड़ जंगम वसुधा रा, सारा जीव सरीखा।
—र.रू.

उ०—२ 'भारा' तो धन भाग, जाड़ेचा दाखै जगत। तीखौ खाग तियाग, 'जेहल' वेटौ जनमियो।—वां.दा.

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

५ कुशाग्र बुद्धि वाला, बुद्धिमान. ६ सुनने में अप्रिय, कर्ण-कटु (ध्वनि या वाक्य) उ०—पाड़ोसणि नी जीभि जस्या कड़ूआ, जिसिया सद्गुरु तणा उपदेस तिस्या कसायला, जिसी सुकिनी जीभ एहवा तीखा, जिस्या माता नां चित्र तिस्या मधुरा पलेव।—व.स.

७ चरपरा, तेज स्वाद का। उ०—सेवयां संतल्यां तल्या ताव्यां तीखा तमतमां खाटां खारा कड़ूआं कसायलां।—व.स.

८ अच्छा, वढ़िया। उ०—मया लहइ नितु नवी, हीरा हेम पटंब। गो महिखी तीखा तुरी, क्रीड़ा करइ कुटंब।—मा.कां.प्र.

९ नोंकदार (सुन्दर नयन) उ०—१ झुर झुर कुरजां सी उरजां सुक झड़कै। तीखा नेतर री छेतर में तड़फै।—ऊ.का.

उ०—२ अंगियां री पेस बंद तणाइजै छै, तीखा लोयणां में अणियाळो काजळ सारिजै छै।—पनां वीरमदे री वात

सं०पु०—एक प्रकार का पक्षी।

रू०भे०—तीकौ।

अल्पा०—तीखोड़ौ।

तीड़ोतरौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का सरकारी लगान. २ तीन की संख्या का वर्ष।

तीछण, तीछन—देखो 'तीक्ष्ण' (रू.भे.)

तीज-सं०स्त्री० [सं० तृतीया] १ संवत् के मास के प्रत्येक पक्ष की तृतीया तिथि. २ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया का पर्व जो विशेषतः कुमारी बालिकाओं द्वारा मनाया जाता है।

वि०वि०—यह झूले का पर्व होता है। इस दिन कुमारियां अथवा स्त्रियां तीज संबंधी गीत गाती हुई झूला झूलती हैं। यह छोटी तीज के नाम से प्रसिद्ध है।

३ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया का पर्व जो सधवा स्त्रियों द्वारा मनाया जाता है। कजली तृतीया। उ०—जइ तूं ढोला नाविसउ, काजळिया री तीज। चमक मरेसी मारवी, देख खिवंतां बीज।
—ढो.मा.

४ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया के पर्व पर अपनी विवाहिता लड़कियों के लिये पितृ गृह की ओर से भेजे जाने वाले वस्त्र, मिठाई आभूषण आदि।

क्रि०प्र०—आणी, चढ़ाणी, देणी, भेजणी, मेलणी।

५ वीरवहूटी, इन्द्रवधू (शेखावाटी)

तीजण, तीजणी—सं०स्त्री०—१ श्रावण के शुक्ल पक्ष एवं भादों के कृष्ण पक्ष की तृतियाओं के पर्व को मनाने वाली कुमारी या वधू। उ०—झूलै झूलै झूमती, तीजण सांवण तीज।—लो.गी.

२ देखो 'तीज' ५ (रू.भे.)

तीजवर, तीजवर—[सं० तृतीय+वर=पति] सं०पु०—वह पुरुष जो दो विवाह कर चुका हो और तीसरी स्त्री से विवाह करने वाला हो अथवा कर चुका हो।

तिजियांण, तीजियांत—सं०स्त्री०—वह गाय या भैंस जो तीसरा बच्चा दे चुकी हो।

तीजोड़ौ—देखो 'तीजौ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० तीजोड़ी)

तीजौ—वि० [सं० तृतीय] (स्त्री० तीजी) १ तीसरा, तृतीय. २ अन्य।

अल्पा०—तीजोड़ौ।

सं०पु०—देखो 'तीयौ' ३ (रू.भे.)

तीजौ-पौ'र—सं०पु०यौ०—१ तीसरा प्रहर. २ सायंकाल के कुछ पूर्व का समय।

तीठ—सं०स्त्री० [सं० तृष्टि] १ अभिलाषा, इच्छा. २ दया।

तीठौ—वि०—निर्मोही, रूखा।

तीड—सं०पु० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा जो बड़ा भारी दल बना कर चलता है और मार्ग के पेड़ पौधे, फसल आदि को खा कर नष्ट कर देता है। उ०—१ छुटे तीर सा जोम त्यां व्योम छायौ, उडै चील कै हीड कै तीड आयौ।—रा.रू.

उ०—२ हरियौ दीठां हेम हरस तीडियां हाली।—ऊ.का.

वि०वि०—मादा टिड्डी नमी वाली रेतीली या कछार भूमि में ३ से ६ इंच तक की गहराई में अंडे देती है। यह दक्षिणी पूर्वी अरब, बलुचिस्तान, ईरान आदि में प्राय: बसन्त ऋतु में जनवरी से अप्रेल तक अंडे देती है। इनका झुण्ड मार्ग की फसलों आदि को नष्ट करता हुआ लगभग एक हजार से डेढ़ हजार मील तक की लम्बी यात्रा करता है। मानसून के आरम्भ में फिर इन्हें अंडे देने योग्य नमी वाली रेतीली भूमि मिलती है और ये सिंध, पंजाब, राजस्थान आदि में अपने अंडे देती हैं। जून-जुलाई से लगा कर यदि अनुकूल मौसम रहे तो ये अक्तूबर-नवम्बर तक अंडे देती रहती हैं।

मादा टिड्डी अपने अंडे प्राय: ६० से १०० अंडों के गुच्छों में कई बार देती है, प्रत्येक मादा लगभग ७५० अंडे देती हैं और इस प्रकार एक ही मादा से अनुमानत: उतने ही टिड्डे पैदा होते हैं। तापमान के अनुसार ११ से १४ दिन में इन अंडों से बिना पंख के फुदकने वाले (हापर्स) पैदा होते हैं जिन्हें 'फाकौ' कहते हैं।

ये 'एकांत' और 'सामूहिक' दशाओं में बढ़ते हैं। पहले ये 'एकान्त' (सालिटरी) दशा में बढ़ते हैं और फिर 'सामूहिक' (ग्रिगेरियस) दशा में। इस प्रकार अब ये फिर कुछ बड़े हो जाते हैं तो 'एकान्त' दशा में और फिर पूर्ण टिड्डे बनने पर 'सामूहिक दशा' में चलते हैं। 'एकान्त' (सालिटरी) दशा वाले 'फाके' का रंग हरा होता है और सामूहिक (ग्रिगेरियस) दशा वाले 'फाके' का रंग पहले काला फिर काले धब्बे सहित पीला हो जाता है जिसे राजस्थान में 'रींकण' कहते हैं। उसी प्रकार 'एकान्त' दशा वाले 'वयस्क' (एडल्ट) टिड्डे का रंग भूरा होता है और 'सामूहिक' दशा वाले वयस्क टिड्डे का रंग पहले गुलाबी होता है जिसे राजस्थान में 'फिरड़' कहते हैं और बाद में जब वह मैथुन की अवस्था को पहुँच जाता है तो उसका रंग पीला हो जाता है।

फाके से पूर्ण टिड्डा बनने में २५ से ५० दिन का समय लगता है। भारत में यह प्राय: खरीफ की फसल को हानि पहुँचाता है परन्तु कई बार इसके पैदा होने की अनुकूल परिस्थिति में इसका आक्रमण जाड़े में रबी की फसल पर भी हो जाता है।

रू०भे०—टीड, तिड।

अल्पा०—तीडौ।

तीडीभळकौ—देखो 'टीडीभळकौ' (रू.भे.)

तीडोत्तर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तीडौ—सं०पु०—१ चार पांच अंगुल का कई रंगों में मिलने वाला एक प्रकार का परदार कीड़ा जो पेड़ों या छोटे पौधों पर दिखाई पड़ता है और नरम पत्ते खाता है। उ०—तीडा मांखी डांस मच्छर कंसारी धार।—वृहद् स्तोत्र

२ देखो 'तीड' (रू.भे.) उ०—तीडां करसण सूंपियौ, वांनरड़ां नूं बाग। माल किराड़ां सूंपियौ, ज्यांरा फूटा भाग।—वां.दा.

तीण—सं०स्त्री०—१ कुये या रहट पर वह स्थान जहाँ कूए से चड़स निकाल कर खाली किया जाता है। उ०—खारौ कुवौ सहर में तेजसी री वाय ऊपर छै, तिण तीण छह वहै छै।—नैणसी

२ कुये या जलाशय में से पानी पीने या पिलाने का अधिकार।

उ०—पछै विकूं कोहर पांणी री तीण बेई माहोमांह बोलाचाली हुई तद भाटी अचळदास मारियौ।—नैणसी

मुहा०—तीण टूटणौ—१ अधिकार का समाप्त होना.

२ आमदनी का जरिया बंद होना।

३ कुए से पानी खींचने की क्रिया।

रू०भे०—तींण।

तीणी—सर्व०—उसी। उ०—राजा भोज आयौ तीणी ठाई सांमहौ आयौ छै बीसल राई।—वी.दे.

तीणौ—सं०पु० [सं० तक्षणम्] छेद, छिद्र, सूराख।

तीत-सं०पु०—बच्चा, बालक। उ०—अस्त्री ७००० पोताना लघु तीत साथै अफीम घोळ पीधो।—नैणसी

वि० [सं० अतीत] १ बीता हुआ, गत (जैन)

२ विरक्त, निर्लेप (जैन)

तीतकियो—देखो 'तीती' (अल्पा. रू.भे.)

तीतत्रागीउं-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)

तीतर-सं०पु० [सं० तित्तर] एक प्रसिद्ध पक्षी जो समस्त एशिया और यूरोप में पाया जाता है। यह काला और मटमैला दो रंग का होता है।

वि०वि०—यह जिस क्षेत्र में रहता है वहां की भूमि से इसका रंग मिलता-जुलता होता है। मांस के लिए लोग इसका शिकार करते हैं। कुछ लोगों द्वारा यह पाला भी जाता है और परस्पर तीतरों की लड़ाई भी कराते हैं।

तीतरी-सं०स्त्री०—१ छितराये हुए बादल।

[सं० पुत्तिका] २ तितली. ३ कागज का छोटा टुकड़ा, चिट। (जयपुर)

तीती-सं०स्त्री०—योनि, भग।

अल्पा०—तीतकियो, तीतौ।

तीतुल-सं०पु०—तीतर।

तीतौ-वि० [सं० तिक्त] १ जिसका स्वाद तीक्ष्ण और चरपरा हो, तिक्त. २ कड़वा. ३ देखो 'तीती' (अल्पा., रू.भे.)

तीथंकर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.) उ०—धनसारथवाहं साधु नइ, दीधुं घ्रित नूं दांन। तीथंकर पद मइं दीउं, तिण मुझ ए अभिमांन। —स.कु.

तीथ—देखो 'तीरथ' (रू.भे.) उ०—सेत्रुजि तीथि चडेवि पांचह ए, पांडव सिधि गया ए।—पं.पं.च.

तीधर-क्रि०वि०—कहीं, किधर ही। उ०—१ एक सांच सौं गहगही, जीवन मरण निवाहि। दादू दुखिया रांम बिन, भावै तीधर जाय। —दादू बांणी

उ०—२ काळा मुंह संसार का, नीले कीये पांव। दादू तीन तलाक दे, भावै तीधर जांव।—दादू बांणी

तीन-वि० [सं० त्रि० प्रा० तिरीण] दो और एक का योग।

सं०पु०—तीन की संख्यां, ३।

मुहा०—१ तीन तेरह करणौ—तितर-बितर करना. २ तीन तेरह होणौ—तितर-बितर होना. ३ तीनपांच करणौ—हुज्जतबाजी करना, बकवास करना. ४ न तीन में न तेरै में—न तीन में न तेरह में, जो किसी गिनती में न हो, जिसकी कोई पूछ न हो।

रू०भे०—ति, तीनी।

यौ०—तीनकाळ, तीनरेख।

तीनकाळ-सं०पु० [सं० त्रिकाल] १ तीनों समय—भूत, भविष्य और वर्तमान. २ प्रातः, मध्यान और सायंकाल तीनों समय।

तीनघूमौ-सं०पु०—आभूषणों की खुदाई का एक औजार (स्वर्णकार)।

तीननेयन-सं०पु० [सं० त्रि नयन] महादेव, शिव। उ०—कर तीननयन पिनाक कोदंड तांणवें तिहताळ।—र.रू.

तीनरेख-सं०पु०—शंख (डि.को.) उ०—कंबु-कंठ भुज विसाळ ग्रीव तीनरेख।—मीरां

तीनलड़ी-वि०—तीन लड़ वाली, तिलड़ी।

तीनसिर-सं०पु० [सं० त्रिशिरस्] कुबेर, अलकेश्वर (डि.को.)

तीना-क्रि०वि०—तैसे।

तीनी—देखो 'तीन' (रू.भे.)

तीनेक-वि०—तीन के लगभग।

तीन्हौ-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

तीब-सं०स्त्री०—१ धातु का पतला तार जो वस्तु की जोड़ के लिए काम में लेते हैं. २ टूटी वस्तु पर लगाई गई जोड़. ३ छोटा टांका. ४ लोहे पीतल आदि की छोटी बारीक कील, पिन.

५ सुन्दरता के लिए ऊपर के अगले दांतों में छेद कर के फँसाई जाने वाली सोने की मेख।

तीबगट्टौ-वि०—[सुहागिन स्त्रियों के शिर का] विशेष आकार का आभूषण।

तीबणौ, तीबबौ-क्रि०स०—१ पतले नुकीले औजार से किसी में बारीक छेद करना. २ किसी वस्तु आदि की टूट पर तार आदि से जोड़ लगाना. ३ वस्त्र में टांकों द्वारा तीब लगाना।

तीबणहार, हारौ (हारी), तीबणियौ—वि०।

तीबवाड़णौ, तीबवाड़बौ, तीबवाणौ, तीबवाबौ, तीबवावणौ, तीबवावबौ, तीबाड़णौ, तीबाड़बौ, तीबाणौ, तीबाबौ, तीबावणौ, तीबावबौ, —प्रे०रू०।

तीबिग्रोड़ौ, तीबियोड़ौ, तीब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तीबीजणौ, तीबीजबौ—कर्म वा०।

तिबणौ, तिबबौ—अक०रू०।

तीबणौ, तीबबौ, तूबणौ, तूबबौ—रू०भे०।

तीबारौ—देखो 'तिवारौ' (रू.भे.)

तीबियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तार आदि की जोड़ लगाया हुआ. २ नुकीले औजार से छेद किया हुआ. ३ टांकों द्वारा दुरुस्त किया हुआ।

(स्त्री० तीबियोड़ी)

तीमण—१ देखो 'तींवण' (रू.भे.)

२ देखो 'तमणियौ' (मह. रू.भे.)

तीमणियौ—देखो 'तमणियौ' (रू.भे.)

तीमारदारी-सं०स्त्री० [फा०] सेवा-सुश्रुषा, रोगियों की सेवा का कार्य।

तीयं-सं०पु०—त्रेतायुग (जैन)

तीय-वि० [सं० अतीत] १ बीता हुआ, गत (जैन)

२ देखो 'तिय' (रू.भे.)

तीयल—देखो 'तील' (रू.भे.)

तीयां-सर्व०—उन । उ०—खोजि नै च्यार आदमी आपरा हुता तीयां नुं तेड़ि नै कह्यौ सुरंग दीसै नहीं ।—चौबोली

तीयाग—देखो 'त्याग' (रू.भे.)

तीयार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—कचियौ प्रेम पिछेंवडौ, किधी सेज तीयार । गोवर रमे मंदिर गई, पिउ मांणी तिण वारि ।
—व.स.

तीये, तीयै-सर्व०—उस । उ०—१ तीये रै दरसण सुं मोनुं गरभ रह्यौ ।—देवजी बगड़ावत री वात

उ०—२ जीय घडी उदैराव रौ जनम हुवो तीये घड़ी प्रोळि रा कंगारा टूट पड़िया ।—देवजी बगड़ावत री वात

वि०—तृतीय, तीसरा । उ०—पद धुर बार दुवै पनरह पुण । तीये वार अठार चवथ तिण ।—र.ज.प्र.

तीयौ-सं०पु० [सं० त्रि] १ तीन का अंक ।

मुहा०—तीयौ पांचौ करणौ—जैसे-तैसे निपटारा करना, फैसला करना, समाप्त करना ।

२ ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूंटियां हों. ३ किसी की मृत्यु के पीछे तीसरे दिन किया जाने वाला संस्कार ।

मुहा०—१ तीयौ करणौ—किसी की अमंगल कामना करना.

२ तीयौ रांधणौ—किसी के प्रति क्रुद्ध होने पर उसका अमंगल चाहते हुए बुरा-भला कहने के लिए यह मुहावरा प्रयुक्त किया जाता है ।

रू०भे०—तइयौ, तियौ, तीजौ, तीसरौ, तेइयौ, तेयौ ।

तीरंददाज, तीरंदाज-वि० [फा० तीर+अन्दाज] तीर चलाने में दक्ष, तीर चलाने वाला । उ०—अर अमांमां तीरंदाजां नै चाप चढ़ावण री बातां बतळावै छै जिण री चोट अमांमी लागै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रू०भे०—तीरमदाज ।

तीरंदाजी-सं०स्त्री० [फा०] तीर चलाने की विद्या या क्रिया ।

तीर-सं०पु० [सं० तीरं] १ जलाशय अथवा नदी आदि का किनारा, तट । उ०—अधम न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरी तीर । दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजळ पखाळ सरीर ।—बां.दा.

मुहा०—१ तीर उतरणौ—तीर जाना, पार उतरना, किनारे पर पहुंचना, भव सागर पार होना. २ तीर उतारणौ—पार करना, किसी का उद्धार करना, भव सागर पार कराना. ३ तीर मेलणौ—किसी वस्तु को दूसरे किनारे रखना अर्थात् दूर रखना.

४ तीर होणौ—पार होना ।

[फा०] २ बाण, शर (डि.को.)

पर्या०—अलख, अजिहमग, आसुग, कंकपत्र, करडंड, कलंब, कांड, खंगाळ, खंड, खग, खुहम, ग्रीधपंख, चित्रपूख, तुक्कौ, तोमर, नाराच, निखद्द, नीरस्त, पंखाळ, पंखी, पत्रवाह, पत्री, प्रखतक, प्रदर, बांण, विसिख, मारगण, मृगणाल, इखु, रोप, रोपण, सर, सायक सिलीमुख ।

मुहा०—१ तीर करणौ—तीर करना, गायब करना, उड़ा लेना (किसी को) भगा देना. २ तीर चलाणौ—तीर चलाना, युक्ति लगाना, दांव फेंकना, वार करना. ३ तीर ठिकांणे बैठणौ—लक्ष्य पर वार होना. ४ तीर फेंकणौ, तीर बावणौ—देखो 'तीर चलाणौ' ५ तीर लागणौ—ठेस पहुंचाना, ताना सुनाना. ६ तीर होणौ—तीर होना, भाग निकलना ।

यौ०—तीरकस, तीरगर, तीरबार ।

३ बंदूक की नाल का वह छेद जिसमें बारूद और गोली आदि डालते हैं. ४ सीसा नामक एक धातु । उ०—आधा पाव तीर र धमाक छाती चाढ़ आयौ ।—कवि महकरण महियारियौ

५ जहाज का मस्तूल. ६ रहट के चक्र के बीच में खड़े रहने वाले काष्ठ के लट्ठे का नीचे का नुकीला भाग ।

अल्पा०—तीरियौ ।

मह०—तीरौ ।

क्रि०वि०—पास, निकट, समीप । उ०—भाव सहित सेवा करूं, रहूं जिणां रै तीर ।—जयवांणी

तीरइं—देखो 'तीरे' (रू.भे.) उ०—राय तणी सेवा करइ । राति दिवस तीरइं संचरइ ।—विद्याविळास पवाडउ

तीरकस-सं०पु०—१ द्वार के ऊपर बना धनुषाकार ताक (आला) जिसमें बहुत से छिद्र होते हैं और जिनमें रंगीन काँच के टुकड़े जड़े रहते हैं. २ द्वार या चहारदीवारी में बने वे छेद जिनसे तीर या बन्दूक की गोलियां चलाई जाती हैं । उ०—त्यारै ऊपरै केसर पतंग रंग री धारा पिचकारियां तीरकसां में घाली थकी छूटै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तीरकारी-सं०स्त्री०—तीर चलाने की क्रिया ।

तीरगर-सं०पु० [फा०] तीर बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

तीरत—देखो 'तीरथ' (रू.भे.)

तीरथंकर-सं०पु० [सं० तीर्थंकर] जैन समुदाय के उपास्यदेव जो देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से मुक्त माने जाते हैं । इनकी मूर्तियां दिगम्बर होती हैं और प्रायः एक-सी होती हैं ।

वि०वि०—समयसुन्दर कृति 'कुसुमाञ्जली' के अनुसार तीनों कालों में प्रत्येक काल के चौबीस तीर्थंकर माने गये हैं जो निम्न हैं—

अतीत काल के—१ केवळग्यांनी (केवलज्ञानी) २ निरवांणी (निर्वाणी) ३ सागर. ४ महाजस (महयश) ५ विमळनाथ (विमलनाथ) ६ सरवानुभूति (सर्वानुभूति) ७ स्रीधर (श्रीधर). ८ दत्त. ९ दांमोदर (दामोदर) १० सुतेज. ११ सांमी (स्वामी) १२ मुनिसुव्रत. १३ सुमति. १४ सिवगति (शिवगति) १५ अस्ताग. १६ नमीस्वर (नमीश्वर) १७ अनिल. १८ जसोधर (यशोधर)

१९ क्रितारथ (कृतार्थ) २० जिनेस्वर (जिनेश्वर) २१ सुद्धमति (शुद्धमति) २२ सिवकर (शिवकर) २३ स्यंदन और २४ संप्रति।
वर्तमान काल के—१ रिखभदेव (ऋषभदेव) २ अजितनाथ.
३ संभवनाथ. ४ अभिनंदन. ५ सुमतिनाथ. ६ पद्मप्रभ. ७ सुपासनाथ (सुपार्श्वनाथ) ८ चंद्रप्रभ. ९ सुवुविनाथ. १० सीतळनाथ (शीतलनाथ) ११ स्रेयांसनाथ (श्रेयांसनाथ). १२ वासूपूज सांमी (वासुपूज्य स्वामी) १३ विमळनाथ (विमलनाथ) १४ अनंतनाथ. १५ घरमनाथ (धर्मनाथ) १६ सांतिनाथ (शांतिनाथ) १७ कुंथुनाथ. १८ अमरनाथ. १९ मल्लिनाथ. २० मुनि सुव्रत. २१ नमिनाथ. २२ नेमिनाथ. २३ पारसनाथ (पार्श्वनाथ) २४ महावीर सांमी (महावीर स्वामी)।
भविष्य काल के—१ पद्मनाभ. २ सूरदेव (सुरदेव) ३ सुपास (सुपार्श्व) ४ स्वयंप्रभ. ५ सरवानुभुति (सर्वानुभूति) ६ देवस्रुत. (देवश्रुत) ७ उदैनाथ (उदयनाथ) ८ पेढ़ाळ. ९ पोट्टिल.
१० सतकीरति (सत्कीर्ति) ११ सुव्रत. १२ अमम. १३ निकखाय (निःकषाय) १४ निस्पुलाक (निःपुलाक) १५ निरमम (निर्मम) १६ चित्रगुप्त. १७ स्री समाधि (श्री समाधि) १८ संवरनाथ. १९ जसोधर (यशोधर) २० विजय. २१ मल्लिदेव. २२ देवचंद्र. २३ अनंतवीरज (अनन्तवीर्य) २४ भद्रकर (भद्रकृत)।
रू०भे०—तित्थंकर, तित्थकर, तित्थगर, तित्थयर, तिथंकर, तीथंकर, तीरथकर।

तीरथ-सं०पु० [सं० तीर्थ] १ वह पवित्र स्थान जहां धर्म भाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिए जाते हैं।
उ०—क्रम-क्रम तीरथ कीधू, धन ध्रम नेकी धारणा। लेटे लाहो लीध, मिनख जमारै मोतिया।—रायसिंह सांदू
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, जाणी।
यौ०—तीरथजात्रा, तीरथदेव, तीरथपति, तीरथराज।
२ हाथ के कुछ विशिष्ट स्थान जिनसे आचमन, पिण्डदान, पितृकार्य और देवकार्य किया जाता है. ३ शास्त्र. ४ दसनामी सन्यासियों की एक उपाधि. ५ माता-पिता. ६ ब्राह्मण.
७ अतिथि मेहमान. ८ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका का संघ या समुदाय (जैन)
९ तीर्थंकर का साम्राज्य, शासन (जैन)
१० जिन, तीर्थंकर का नाम (जैन)
रू०भे०—तित्थ, तिथु, तिरथ, तिथि, तीरत, तीरथु।

तीरथकर—देखो 'तीरथंकर' (रू.भे.)

तीरथजात्रा—देखो 'तीरथ यात्रा' (रू.भे.)

तीरथदेव-सं०पु० [सं० तीर्थदेव] १ शिव, महादेव. २ जिन, तीर्थंकर (जैन)

तीरथनायक-सं०पु०—तीर्थाधीश, तीर्थङ्कर। उ०—देवळ जोज्यो हरखित होज्यो, धुरि पातक मळ धोज्यो। सहु सुखदायक तीरथ नायक, ज्योवा लायक ज्योज्यो।—ध.व.ग्रं.

तीरथपति—देखो 'तीरथराज'

तीरथपाद-सं०पु० [सं० तीर्थपाद] विष्णु।

तीरथयात्रा-सं०स्त्री० [सं० तीर्थयात्रा] पवित्र एवं पुण्य स्थानों पर धर्म भाव से दर्शन पूजा आदि के लिए जाने का कार्य। तीर्थाटन।
रू०भे०—तीरथ जात्रा।

तीरथराई, तीरथराज-सं०पु० [सं० तीर्थराज] प्रयाग।
उ०—महपति घरम बंभ कुळ जगमिणि, तीरथराज दीजौ तिणि।—सू.प्र.
रू०भे०—तीरथ्थराज।

तीरथराजी-सं०स्त्री० [सं० तीर्थराजी] काशी।
वि०वि०—काशी सभी तीर्थों का केन्द्र होने से इसका यह नाम पड़ा।

तीरथाटण, तीरथाटन-सं०पु० [सं० तीर्थाटन] तीर्थ-दर्शन हेतु यात्रा करने का कार्य, तीर्थ-यात्रा।

तीरथीयो-सं०पु०—तीर्थस्थानों पर रहने वाला।

तीरथु, तीरथ्थ—देखो 'तीरथ' (रू.भे.)

तीरथ्थराज—देखो 'तीरथराज' (रू.भे.)

तीरदार-सं०पु०—दुर्ग की बुर्ज में बने छोटे सूराख जहाँ से तीर अथवा बन्दूक की गोली चलाई जाती है। उ०—तठै तेली बुरज चढ़ रसो वाय तांगड़ खांचियौ अरु खांच नै ऊपर तीरदारां सूं जरू बांधियौ।—द.दा.

तीरभुक्ती-सं०स्त्री० [सं०] गंगा, गंडक और कोशिकी इन तीन नदियों से घिरा हुआ तिरहुत देश।

तीरमदाज—देखो 'तिरंदाज' (रू.भे.) उ०—तद रावजी कही—भला भला तीरमदाज हाथियां ऊपर चढ़ लेवो।
—डाढ़ाळा सूर री वात

तीरवरती-वि० [सं० तीरवर्ती] १ तट पर रहने वाला, समीप रहने वाला. २ पड़ोसी।

तीरां-क्रि०वि०—पास। उ०—जो ईणां मांहरै माथै झूठी बदनांमी दीधी है तौ अबै हूं पण एक बार ईणां तीरां थी लेनै छोडसूं।
—साहूकार री वात

तीरांण-सं०स्त्री०—तैरने की क्रिया या ढंग। उ०—गुटकांण सीदांण वीमांण तणी गत, नाव तीरांण देधांण नूणै। पंखरांण वैगांण अमांण परछाक, वात वसै विडगांण भणै।—किसनजी दधवाड़ियौ

तीराई-सं०स्त्री०—तीरंदाजी का भाव।

तीराव-सं०स्त्री०—तिपाई।

तीरी-सं०पु०—तट, किनारा।
क्रि०वि०—पास।

तीरीया-सं०पु० (बहु० व०) रहट को उल्टा घूमने से रोकने वाली लकड़ी (डूग्रो) पर दो सीधी पतली लगाई जाने वाली लकड़ियां जिनमें मधुर ध्वनि उत्पन्न करने के लिए पटड़ियां डाली जाती हैं।

तीरीयौ—देखो 'तीर' (अल्पा., रू.भे.)
मुहा०—तीरिया चलाणा, तीरिया फेंकणा—भरसक प्रयत्न करना, पूर्ण प्रयत्न करना।

तीरें, तीरे, तीरैं, तीरै—क्रि०वि०—पास, समीप। उ०—१ जद साह आपरी वहू तीरें सीख मांगवा गयौ।—वंधी बुहारां री वात
उ०—२ सीमाळ पेंहली कांनड़देजी तीरै रहतौ।—नैणसी
उ०—३ तद साह री छोटी बहू राजा भोज तीरै पूकारू गई।
—साहूकार री वात
रू०भे०—तीरइं।

तीरौ—देखो 'तीर' (मह., रू.भे.) उ०—मारै मीर महावळी, ताकै वाहै तीरौ रे। कूटै कोट नै कांगुरां, धुव खंडै वड धीरौ रे।
—प.च.चौ.

तीलक—देखो 'तिलक' (रू.भे.) उ०—मांणक मोती ले बोल्यौ उठी नै गोरी तीलक संजोई।—वी.दे.

तील—सं०पु०—एक प्रकार का स्त्रियों के कण्ठ पर धारण करने का आभूषण विशेष। उ०—तनै रै वाछड़िया हंसली कड़ूला अगड़ घड़ाऊं तेरी माय नैं, तेरै रै बाछड़िया झुगला टोपी तील पहराऊं तेरी माय नै।—लो.गी.
रू०भे०—तीयल।
अल्पा०—तिलड़ी।

तीली—सं०स्त्री०—१ बड़ा तिनका अथवा सींक. २ धातु आदि का कड़ा पतला तार. ३ जुलाहों के करघे के उपकरण ढरकी की सींक जिसमें बाने के लिए लपेटे हुए सूत की नारी पहनाई जाती है।
रू०भे०—तिली।

तीवण—सं०स्त्री०—१ कुए से पानी निकालने की क्रिया।
२ देखो 'तींवण' (रू.भे.) उ०—भावज जीमेली फलका मोवण, तीवण जीमैली तीस बत्तीस।—लो.गी.

तीवणियौ, तीवणौ—१ देखो 'तींवण' (अल्पा., रू.भे.)
२ देखो 'तेवणियौ' (रू.भे.)

तीवणौ, तीवबौ—१ देखो 'तीवणौ, तीवबौ' (रू.भे.)
२ देखो 'तेवणौ, तेवबौ' (रू.भे.)

तीव्र—वि० [सं०] १ अत्यन्त, अतिशय. २ बहुत गरम. ३ नितांत, वेहद. ४ तीक्ष्ण, तेज. ५ कटु, कडुआ. ६ प्रचंड, प्रबल, वेग-युक्त. ७ असह्य. ८ कुछ ऊंचा और अपने स्थान से बढ़ा हुआ। (स्वर)
सं०पु०—१ लोहा, इस्पात।
रू०भे०—तिव्व।

तीव्र कंठ—सं०पु० [सं०] जमीकंद।

तीव्रगति—सं०स्त्री० [सं०] वायु, हवा।

तीव्रता—सं०स्त्री० [सं०] तीव्रता का भाव, तीक्ष्णता, तेजी।

तीव्रतेज—सं०पु०—लवंग, लौंग (अ.मा.)

तीव्रा—सं०स्त्री० [सं०] षड्ज स्वर की चार श्रुतियों में से प्रथम श्रुति (संगीत)

तीव्रानुराग—सं०पु० [सं०] एक प्रकार का अतिचार (जैन मत)
(इसमें पर-स्त्री या पर-पुरुष से अत्यधिक प्रेम करना तथा कामोत्पन्न के लिए मादक द्रव्य का सेवन होता है।)

तीस—वि० [सं० त्रिंशति] बीस और दस का योग।
सं०पु०—तीस की संख्या, ३०।

तीसटंकी—सं०पु०—एक प्रकार का मजबूत और बड़ा धनुष।
(मि० टंक १३)

तीसमार—वि०—बहादुरी की डींग हांकने वाला, अपने आपको बहादुर समझने वाला।
मुहा०—तीसमार खां होणौ—बहुत बहादुर होना, बहादुरी की डींग हांकना।

तीसमौं—वि०—तीसवां, ३० वां।
रू०भे०—तीसवौं।

तीसरौ—वि० (स्त्री० तीसरी) १ क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला तृतीय, तीसरा. २ जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध न हो, अन्य. ३ देखो 'तीयौ' (रू.भे.) उ०—सत्थरां सोय सारा सुखी, चवरी ढुळतां चौसरां तन लगन तीसरां री तिकां, मंगत ध्यांन मन मौसरां।—ऊ.का.

तीसळणौ, तीसळबौ—देखो 'तिसळणौ, तिसळबौ' (रू.भे.)
उ०—कदेक माख्यां तिसळती, भैंस्यां री पीठांह। अब पांणी नह तीसळै, जिण दिन लू दीठांह।—लू

तीसळियोड़ौ—देखो 'तिसळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तिसळियोड़ी)

तीसवौं—देखो 'तीसमौं' (रू.भे.)

तीसी—क्रि०वि०—तैसी।

तीसेंक—वि०—तीस के लगभग।

तीसौ—सं०पु०—तीसवां वर्ष।
क्रि०वि०—वैसा।

तीह—सं०पु०—१ वृक्ष. २ पक्षी।
सर्व०—वे, उन। उ०—तीह नइ घोड़ा दे रजपूत, दियइ बाप बळी दुइ पूत।—हम्मीरायण

तीहुं—क्रि०वि०—तैसे, वैसे। उ०—कमधज वासी मारवाड़ रा चीता रै कंई तीहुं ही वासी मेवाड़ रा चीतारै तमांम।
—रतलांम नरेस महाराजा बळवंतसिंह री गीत

तुं—देखो 'तूं' (रू.भे.)। उ०—मोहणी रूप तुं नां निमो विसन नमो तुं लच्छिवर। ताहरै सीत चलणां तणी स्रव विलगी संखधर।—पी.ग्रं.
क्रि०वि०—१ तैसे, तिस भांति। उ०—दिसि चाहंती सज्जणा, ने हालंदी मुंध। साधण क्रूंझि बचाह ज्यउं, लंबी थई तुं कंध।—ढो.मा.

तुंअ—देखो 'तूं' (रू.भे.) उ०—गिर आव तपै नृप दीह घणा। तुंअ

हत्थ जोग्रे लघु भ्रात तणा ।—पा.प्र.

तुंकार—देखो 'तुंकारो' (रू.भे.) उ०—दळ थंभ तुंकार पुकार दोग्रे । हिक साथ हूंकार धुकार होग्रे ।—पा.प्र.

तुंकारणौ, तुंकारबौ—देखो 'तुकारणौ, तुकारबौ' (रू.भे.)

तुंकारौ–सं०पु० [सं० त्वंकारः] (किसी को) तू कह कर पुकारने का शब्द । उ०—सू इणां रै चारण १ गैपी सिढ़ायच हो, इणरो पण मुलायजो छो । सारां नूं तुंकारो देय नै बतळावतो ।—द.दा.

क्रि०प्र०—दैणौ।

रू०भे०—तुंकार, तुकार, तुकारौ, तूंकार, तूंकारयड, तूंकारौ, तूकार, तूकारौ ।

तुंग–सं०पु० [सं०] १ सेना, फौज । उ०—तुंग ग्रणथाग चीतोड़ दली तणा, करै गौड़ीरवण चढ़ै केवी । कुरंभांराज गिरराज लोपै नको, वेहुं पासै रहै समंद वे वे ।—दयाळदास ग्राढौ

२ समूह, झुंड, दल, टुकड़ी । उ०—१ तिल तंदुल नइं ताड खर, तिवडा त्रिपुसी चंग । तिदुग तंतणि तिम वळी, तगर तणा तिहां तुंग । —मा.कां.प्र.

उ०—२ लखि फौज तुंग लड़ंग ऊबंध फिर दधि अंग । वाणि सुरथ पायक व्रंद जग जांण दळ जयचंद ।—रा.रू.

ग्रल्पा०—तुंगौ ।

३ पर्वत. ४ शिखर, चोटी. ५ नारियल. ६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और दो गुरु होते हैं.

७ देखो 'तूंग' (रू.भे.) उ०—वीरमदे नै इसी रोस चडचौ जांणै दारू रा गंज में ग्राग री तुंग पड़चो ।—पनां वीरमदे री वात

८ बावन वीरों (भैरव) में से एक वीर का नाम ।

सं०स्त्री०—६ शराव भरने का पात्र । उ०—सो मदवा कै मदभरी तुंग हाथ ग्राई । कना कांमी कूं रमणी एकंति दरसाई ।—रा.रू.

वि०—१ उन्नत, ऊँचा । उ०—वीरा चार पोळ तुंग प्राकार । —धर्म प.

२ प्रचंड, प्रबल । उ०—बन गहे गेलौ जेण विच में, रहे राखस रोस में । तन तुंग नांम कबंध तिण रो, करग जोजन कोस में ।—र.रू.

तुंगक–सं०पु० [सं०] १ नाग केसर. २ महाभारत के ग्रनुसार एक तीर्थ ।

तुंगणौ, तुंगबौ–क्रि०स०—फटे वस्त्र को छोटे-छोटे टांकों द्वारा ठीक करना, तीवना, तुनना ।

तुंगता–सं०स्त्री०—१ ऊंचाई. २ उग्रता ।

तुंगधज–सं०पु० [सं० तुंग+ध्वज] पर्वत (नां.मा.)

तुंगनाथ–सं०पु० [सं०] हिमालय पर्वत पर एक शिवलिंग जो तीर्थ-स्थान है ।

तुंगनाभ–सं०पु० [सं०] सुश्रुत के ग्रनुसार एक कीड़ा जिसके काटने से जलन एवं वेदना होती है ।

तुंगबाहु–सं०पु० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक ।

तुंगभद्र–सं०पु० [सं०] मतवाला हाथी ।

तुंगभद्रा–सं०स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत में बहने वाली कृष्णा नदी की एक सहायक नदी (देवि.)

तुंगळ–सं०पु०—देखो 'तुगल' (व.स.) (रू.भे.)

तुंगवेणा–सं०स्त्री०—महाभारत के ग्रनुसार एक नदी, तुंगभद्रा ।

तुंगार—देखो 'तूंग' (रू.भे.)

तुंगरी–सं०पु०—१ सफेद कनेर का पेड़ ।

२ देखो 'तुंग' (रू.भे.)

तुंगिनी–सं०स्त्री० [सं०] महाशतावरी, बड़ी सतावर ।

तुंगी–सं०स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी (ना.डिं.को.) २ रात्रि ।

उ०—नहु जांमणहि पवट्टरत्ति रहु भमइ नभ-मणाह । नहु विहारि वखांणु जत्त तुंगी भरि समणाह ।—ऐ.जै.का.सं.

३ हल्दी. ४ बन तुलसी ।

तुंगीनास—देखो 'तुंगनाभ' (रू.भे.)

तुंगीपति, तुंगीस, तुंगेस–सं०पु० [सं० तुङ्गीपति, तुङ्गीश] १ चंद्रमा.

२ राजा, नृप । उ०—तणु केहर मंझम राव मांगळ राव तुंगेस, भूपाळ भूपाळ भाटी वडो वखत वडाळ ।—नैणसी

तुंगौ—देखो 'तुंग' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—तेरै तुंगा भांगिया 'माले' सलखांणी ।—वी.मा.

तुंजाल–सं०पु० [सं० तुरंग+जाल] एक प्रकार का जाल जो मच्छर मक्खी ग्रादि के काटने से बचाने के लिए घोड़े की पीठ पर डाला जाता है ।

तुंड–सं०पु० [सं०] १ मस्तक, सिर । उ०—१ झड़ सुंड करी ग्रस तुंड झड़ै । पिंड रुंड गुड़ै इत मुंड पड़ै ।—रा.रू.

उ०—२ दईत पडिसै घणा दडदड, रुंड राकस तुंड रडवड । खाग खासा वहै खड खड, त्रिगडां त्रडत्रड ।—पी ग्रं.

२ मुख, मुंह । उ०—१ सरप वाघ गज रींछ सरीखा । तुंड कुंदाळ मगर मम तीखा ।—सू.प्र.

उ०—२ फुरक्कावतौ मुंछि फाडंत तुंड । ललक्कंत लोला विकट्टं विहंडं ।—ध.व.ग्रं.

३ शूकर ग्रौर हाथी के मुख के ऊपर का भाग जो नाक के समीप होता है, थूथन. ४ तलवार का ग्रग्र भाग. ५ पक्षी की चोंच.

६ हाथी की सूंड । उ०—कटै गजां भ्रसुंडा, प्रचंडा झड़ै तुंडा केई । —बुधसिंह सिढ़ायच

रू०भे०—तुंडि, तुंडिका, तूंड ।

तुंडकेसरी–सं०पु० [सं० तुंडकेशरी] मुंह में होने वाला एक रोग जिसमें तालू की जड़ में सूजन होती है ग्रौर उससे दाह-पीड़ा उत्पन्न होती है ।

तुंडि, तुंडिका–सं०स्त्री० [सं०] १ बिंबाफळ. २ नाभि.

३ देखो 'तुंड' (रू.भे.)

तुंडिकेसी–सं०स्त्री० [सं० तुण्डिकेशी] कूंदरू ।

तुंडिळ–वि० [सं० तुंडिल] १ बड़ी तोंद वाला. २ जिसकी नाभि निकली हुई हो. ३ बकवादी, वाचाल ।

तुंडी–वि० [सं० तुंडिन्] १ मुंह वाला. २ चोंच वाला. ३ सूंड वाला ।

संस्त्री०—नाभि।

तुंतुभ-संपु०—सरसों।

तुंद-संपु० [सं०] पेट, उदर।

रू०भे०—तुंदी, तूंद, तोंद।

वि० [फा०] तेज, प्रचंड।

तुंदळ—देखो 'तंदुळ' (रू.भे.)

तुंदिक-वि० [सं०] बड़े पेट वाला, तोंद वाला।

रू०भे०—तुंदी।

तुंदिका-संस्त्री० [सं०] नाभि।

तुंदिभ-संस्त्री०—तोंद, उदर।

तुंदी-संस्त्री० [सं०] १ नाभि. २ देखो 'तुंद' (रू.भे.)
३ देखो 'तुंदिक' (रू.भे.)

तुंदेल, तुंदेलौ-वि०—तोंद वाला, बड़े पेट वाला।

तुंव, तुंवक, तुंवग—देखो 'तुंवुक' (रू.भे.)

तुंवड़ी—देखो 'तुंबी' (अल्पा., रू.भे.)

तुंवर, तुंवरि-संपु० [सं० तुंबर] १ एक देव जाति या इस जाति का देव (नां.मा.) उ०—गावै तुंबर गीत वेद ऊचरै ब्रहमां, निमौ नंद रा नेस आज ऊतरै अक्रमां।—पी.ग्रं.

[सं० तुंवरम्] २ एक वाद्य यंत्र. ३ देखो 'तुंवरु' (रू.भे.)

उ०—१ सिर वरि मेघाडंबर तुंबर गाइं गीति। नाचइ रंभ घ्रिताचीय राचीय आपइ चीति।—नेमिनाथ फागु

उ०—२ वाजइ दुंदुभि अंबरि तुंवरि सुर अवतार। स्रीपति अति आंणंदिउ वंदिउ नेमिकुमारु।—नेमिनाथ फागु

रू०भे०—तुंवर, तुमर, तुम्मर।

तुंवरु-संपु० [स० तुंवुरु] १ तुंबर जाति के एक देव या गंधर्व का नाम. २ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम (डिं.को.)

रू०भे०—तुंवर, तुंवरि, तुंवुरि, तुंवुरु।

तुंविका, तुंवी-संस्त्री० [सं० तुंबी] १ छोटा कड़वा घीया. २ गोल कड़वे घीये को सुखा कर बनाया हुआ पात्र।

मुहा०—तुंबी लेणी—तुंबी ग्रहण करना, साधु व्रत अपनाना, संसार से विरक्ति लेना, फकीर होना।

रू०भे०—तूंबी।

अल्पा०—तुंवड़ी, तुमड़ी, तूंबड़ी, तूमण, तूमड़ी।

तुंबुक-संपु० [सं०] १ कद्दू का फल, घीया, लौकी. २ कद्दू को खोखला कर बनाया हुआ पात्र।

रू०भे०—तुंव, तुंवक, तुंवग, तूंबू।

अल्पा०—तूंवड़ियौ, तूंबड़ौ, तूंबौ, तूमड़ौ, तूमौ।

तुंबुरी, तुंवुरु—देखो 'तुंवरु' (रू.भे.) उ०—धुनि करै अमर मंगळ धमळ, गै तुंवुर गावंत गुण। कर जोड़ एम ईसर कहै, कर पूजा जांणै कवण।—ह.र.

तुंवेरव-संपु० [सं० स्तंवेरम्] हाथी।

तुंवर—१ देखो 'तंवर' (रू.भे.) २ देखो 'तुंवर' (रू.भे.)

उ०—नारद तुंवर गीत गावई, विप्र दांन अघट्ट। मंगळीक अनेक वरत्या, विड़द बोलई भट्ट।—रुकमणी मंगळ

तुंवरावटी-संस्त्री०—जयपुर राज्यांतर्गत एक भू-भाग जहां पहिले तुंवरवंशीय क्षत्रियों का राज्य था।

तुंवेरौ-संपु०—दोहा छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण में १३ मात्राएं द्वितीय और तृतीय चरण में ११ मात्राएं से तुकवंदी व चतुर्थ चरण में १३ मात्राएं होती है।

तुंह—देखो 'तूं' (रू.भे.) उ०—वीर, विहिल आवजै, कुसळ मारग तुंह नि। करै कारज मन वांछित, समइ संभारे मूहनि।—नळाख्यांन

तुंहारौ-सर्व० (स्त्री० तुंहारी) तुम्हारा। उ०—म्हारौ आतिमौ महा मूरिखि मयण। तुंहारै वातिडै तुहीज जांणै त्रिगुण।—पी.ग्रं.

तुंही-सर्व०—तुम।

तु-संपु०—१ कमल. २ सुरपुर. ३ रक्त. ४ कष्ट.

सं० स्त्री०—५ रमा (एका., क.कु.बो.) ६ देखो 'तूं' (रू.भे.)

उ०—अधम न जा तीरथ अवर, तु जां सुरसरि तीर। दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजळ पखाळ सरीर।—वां.दा.

सर्व०—तेरा, तेरे। उ०—पुकारत आय तु पास परम्म। उवार विसन्न! कहै सुर अम्म।—ह.र.

क्रिoवि०—तब। उ०—दांणवि कूरि कमोरि पंचाळी बीहावीयउ। झूझिउ मारीउ वीरु भीमिहिं तु दुरयोधनह।—पं.पं.च.

प्रत्य०—करण और अपादान कारक का चिन्ह, ततीया और पंचमी विभक्ति। उ०—सोळ कोडि वरसोवन तणी। एहं थांनक तु पुख भणी।—विद्याविलास पवाडउ

तुअ-सर्व०—१ तव, तेरा, तुम्हारा. २ वह (उ.र.)

क्रिoवि०—तब (उ.र.)

तुअर-संपु० [सं० तुवरी] अरहर।

तुआळौ-सर्व० (स्त्री० तुआळी) तुम्हारा, तेरा। उ०—१ अजूणी वार संसार ईखतां चौरंग अमिट अखूटत चाय। तडवड नह गजसिंह तुआळी, नाक तणा आभूसण न्याय।—महाराजा गजसिंह रौ गीत

उ०—२ तोय करम नासा तणै, नर सुभ करम नसाय। तोय तुआळै त्रिपथगा, मांठा क्रम मिट जाय।—वां.दा.

रू०भे०—तुवाळौ।

तुई-संस्त्री०—१ वस्त्रों के किनारे पर लगाई जाने वाली पट्टी, गोट, किनारी. २ लौह की खोखली नली जो धौंकनी के अग्र भाग में लगाई जाती है. एक प्रकार की चिड़िया विशेष।

तुईजणौ, तुईजवौ—देखो 'तूईजणौ, तूईजवौ' (रू.भे.)

तुईजियोड़ी—देखो 'तूईजियोड़ी' (रू.भे.)

तुक-संस्त्री०—१ किसी पद्य या गीत का खंड, कड़ी. २ पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल।

मुहा०—१ तुकजोड़णी—साधारण वाक्यांशों को मिला कर कविता

करना. २ तुकबंदी करणी—साधारण कविता रचना. ३ तुक बैठणी—परस्पर मेल होना. ४ तुक मिळणी—तुक मिलना, विचारों की एकता होना. ५ तुक मिळाणी—देखो 'तुक जोड़णी' ६ तुक लागणी—तुक लगना, युक्ति बैठना।

तुकणो, तुकबो—देखो 'तकणो, तकबो' (रू.भे.)

तुकबंदी-संस्त्री०—तुक जोड़ने का कार्य, साधारण कविता करने का कार्य।

क्रिप्र०—करणी।

तुकम—देखो 'तुख्म' (रू.भे.)

तुकमो-संपु०—तगमा, पदक।

मुहा०—तुकमो लेणो—तुकमा लेना, श्रेष्ठता हासिल करना, अग्रगण्य बनना।

रू०भे०—तकमो, तगमो, तमगो।

तुकांत-संपु०—पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल, अंत्यानुप्रास।

तुकार—देखो 'तुंकारो' (रू.भे.)

तुकारणो, तुकारबो—देखो 'तूकारणो, तूकारबो' (रू.भे.)

तुकारो—देखो 'तुंकारो' (रू.भे.)

तुको—देखो 'तुक्को' (रू.भे.) उ०—नै पछै उदैसिंघ दूखण चीतारियो, मोनुं मांनसिंघ तुको वाहचो थो।—नैणसी

तुक्कड़-वि०—तुक जोड़ने वाला, तुकबंदी करने वाला।

तुक्को-संपु० [फा० तुका] १ छोटा तीर जिसके सिरे पर गांसी के स्थान पर घुंडी लगी रहती है।

मुहा०—तुक्को लागणो—तुका लगना, युक्ति काम आना।

२ तुकबन्दी। उ०—थोड़ा दिनां पछै राखड़ी रै दिन तो एकाएक बेटो मर गयो। थोड़ा दिनां में घणी पिण मर गयो। जद सोभजी स्रावक तुको जोड़चो।—भि.द्र.

रू०भे०—तुको, तुगो।

तुख-संपु० [सं० तुष] १ भूसी, छिलका (अनाज आदि का) २ अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखाट—देखो तुरासाट (रू०भे०) (नां.मा.)

तुखानाळ-संपु० [सं० तुषानल] भूसी की आग (डि.को.)

पर्या०—कुकुल, तुसाग।

तुखार-संपु० [फा० तोखार] १ एक देश का प्राचीन नाम और इस देश का निवासी. २ घोड़ा, अश्व। उ०—मुलतांणी घर मन वसी, सुहंगा नइ सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ, आणउं हेडि तुखार।—ढो.मा.

रू०भे०—तोखार।

३ हिम-कण, हिम. ४ शीत, ठंडक।

तुखारी-संपु०—१ तुखार देश का. २ एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—वर्ण लूमझूमां हुवा सज्ज बाजी। तुखारी खुरासांण भाडेज ताजी।—वं.भा.

तुख्म-संपु० [फा०] १ बीज. २ वीर्य, शुक्र।

रू०भे०—तुकम।

तुगम-संपु०—१ किसी देवता या महापुरुष के पदचिन्ह. २ घोड़ा। [फा० तगमा] ३ पदक।

तुगल-संस्त्री०—१ गोल कड़ीनुमा कानों में पहिना जाने वाला आभूषण, बाली. २ नाथ सम्प्रदाय के कालबेलिया जाति के व्यक्तियों द्वारा कान में पहिनी जाने वाली मुद्रा।

रू०भे०—तुंगल।

तुगा, तुगाक्षिरी-संपु० [त्वक्क्षीरी] वंशलोचन।

तुगो—देखो 'तुक्को' (रू.भे.) उ०—इतरै में बगलाऊ खड़ा था, उहां भेळिया उहांरो मुंहो झालियो, इतरै दूसरो तुगो आंण पड़ियो, आगलां आंण भेळिया।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

तुग्गस—देखो 'तरकस' (रू.भे.) उ०—वे वे तुग्गस बंधि के, कमनैत कसाया।—वं भा.

तुग्र-संपु० [सं०] अश्विनीकुमार के उपासक वैदिक काल के एक ऋषि।

तुड़कणो, तुड़कबो-क्रि०अ०—१ रुक-रुक कर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पेशाब करना. २ रुक-रुक कर गाय आदि का थोड़ा-थोड़ा दूध देना।

तुड़कियोड़ो-भू०का०कृ०—रुक रुक कर पेशाब किया हुआ।

(स्त्री० तुड़कियोड़ी)

तुड़को-संपु०—१ टुकड़ा, खंड. २ चुल्लू भर, अल्प।

तुड़च्छो-वि० [सं० तुच्छ] निम्न, नीच।

तुड़णो, तुड़बो-क्रि०स०—मारना, संहार करना। उ०—करां तरवार सजे 'कलयांण'। तुड़े जिण हूंत कई तुरकांण।—पे.रू.

तुड़तांण-वि०—अपने वंश, कुटुम्ब या दल की मर्यादा बढ़ाने वाला।

उ०—१ तेण पाट तुड़तांण वधे 'सोभंम' वडाई। 'सोभ्रंम' रै सहंस मल्लं सूर रै 'क्रन्न' सवाई।—नैणसी

उ०—२ अरिजण बळ आखियो, सांमि तूनां नह छोडां। तूझ तणै तुड़तांण, हमै कुण करिसै होडां।—पी.ग्रं.

रू०भे०—तुड़ितांण।

क्रि०वि०—शीघ्र, त्वरित।

तुड़वाणो, तुड़वाबो-क्रि०स० ('टूटणो' का प्रे०रू०) १ तोड़ने का कार्य अन्य से कराना, तुड़वाना. २ बड़े सिक्के को उसके बराबर के मूल्य के छोटे सिक्के में बदलाना. ३ मूल्य में कमी कराना, दाम घटवाना।

तुड़ाणो, तुड़ाबो, तुड़ावणो, तुड़ावबो—रू०भे०।

तुड़वायोड़ो-भू०का०कृ०—१ तुड़वाया हुआ. २ बड़े सिक्के को छोटे में बदला हुआ. ३ मूल्य में कमी कराया हुआ।

(स्त्री० तुड़वायोड़ी)

तुड़ाई-संस्त्री०—तुड़ाने की क्रिया या भाव, तोड़ने की मजदूरी।

तुड़ाणो, तुड़ाबो—देखो 'तुड़वाणो, तुड़वाबो' (रू.भे.)

तुड़ायोड़ो—देखो 'तुड़वायोड़ो' (रू.भे.)

तुड़ावणो, तुड़ावबो—देखो 'तुड़वाणो, तुड़वाबो' (रू.भे.)

उ०—वाळया वाळ डाडी का उपाड़ त्यूंगी वाप खाणां, भोगना का राळया बांदा क्यूं सूजी रे भूंड। तकादो भोत बताड़ै दांत सै तुड़ावेगो तूं, माजनां सूं रै'ज्यै देज्यै फुड़ावेगो मूंड।—ऊ.का.

तुड़ि-सं०पु०—योद्धा। उ०—तुड़ि हेक गयो मरण दिस तांणै। पुहवि लयी हेक तूंग पणै।—राठौड़ सेखा सूजावत रौ गीत

तुड़ितांण—देखो 'तुड़तांण' (रू.भे.) उ०—बखांणै जांणै एक विसंन, कहै मति कूरम मच्छ किसंन। कहै दत देव कपिल कल्यांण, तवै दसरथ तणै तुड़ितांण।—पी.ग्रं.

तुच, तुचा-सं०स्त्री० [सं० त्वच्, त्वचा] चमड़ा, छाल। उ०—१ रांम सिकारां सहल कर, मिरग तुच ले आया।—केसोदास गाडण

उ०—२ चवै सीत मोनूं तुचा एह चाहै। वहो म्रिग मारीच नूं बांण वाहै।—सू.प्र.

उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलो कीध। हंसा नग हर नूं तुचा, दांत किरातां दीध।—बां.दा.

तुचामैल-सं०पु० [सं० त्वच्+मल] रोम (डि.को.)

तुचीसार-सं०पु० [सं० त्वचिसार] बांस (अ.मा.)

तुच्छ-वि० [सं०] १ अल्प, छोटा. २ हीन, क्षुद्र, नाचीज, अकिंचन। रू०भे०—तुच्छी, तुछ, तुछप, तूछ।

तुच्छता-सं०स्त्री० [सं०] हीनता, नीचता, ओछापन, क्षुद्रता।

तुच्छौ, तुछ, तुछप—देखो 'तुछ' (रू.भे.) उ०—१ पार न पावै कव वड़े, मत तुच्छी नर का।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ बोहळा ओगण तुछ गुण, दिल मंझ क सुधा।
—केसोदास गाडण

तुज—देखो 'तुझ' (रू.भे.) उ०—बसे तूं रोमाळी कवन थळ खाली तुज विनां।—ऊ.का.

तुजक-सं०पु० [अ० तुजुक] १ शोभा, वैभव. २ आत्म-चरित्र (विशेषत: किसी बादशाह का लिखा हुआ) ३ प्रवंध, व्यवस्था। यौ०—तुजकधार।

तुजकधार-सं०पु०यौ० [अ० तुजुक+धार] सैन्य-सज्जा करने वाला, फौज की व्यवस्था करने वाला। उ०—धरथंभ बरोबर तुजकधार। वेढ़ रौ एम कीधौ विचार।—सू.प्र.

तुजकमीर-सं०पु० [अ० तुजुक+फा० अमीर] अभियान या उत्सव आदि की व्यवस्था करने वाला। उ०—तुजकमीर ताप हूं, जाब दीधौ नह जाए। सझै अनंम सलांम, एम पाए निज आए।—सू.प्र.

तुजमात-सं०स्त्री०—पार्वती, गौरी।

तुजी, तुजीह-सं०पु० [सं० त्रिजिह्व] धनुष (डि.को.) उ०—बांणां ओक मोक धोक हजारां सणंका वज्जै, तोक भालां हजारां रणंका वज्जै तास। तुजीहां हजारां बज्जै भणंका छणंका तीरां, बीरां धू हजारां वज्जै खणंका बांणास।—हुकमीचंद खिड़ियो

तुज्ज-वि० [सं० तृतीय] १ तीसरा (जैन) [सं० तुर्य] २ चौथा (जैन) ३ देखो 'तुझ' (रू.भे.)

उ०—ईरांण वतन हिम्मत अथाह। सिर विलंद तुज्ज सिरखा सिपाह।—वि.सं.

तुज्झ, तुज्झो, तुझ, तुझ्झ-सर्व०—तुझे, तेरा, तेरी, तेरे।

उ०—१ कादि कळ जउ आपणउ, भोजन दिउंली तुज्झ।—ढो.मा.

उ०—२ सुख संपति छइ तुज्झो जी।—स.कु.

उ०—३ तुझ विण धण विलखी फिरइ, गुण विन लाल कमांण।
—ढो.मा.

उ०—४ दइ तंह रूधौ मारू देस, तिसा ही लंछण तुझ्झ नरेस।
—जै.सी. रासौ

उ०—५ किण दिन देखूं वाटड़ी, आतां पड़वै तुझ्झ। घाव भरंती आवगौ, बीतौ जोबन मुझ्झ।—वी.सं.

रू०भे०—तुज, तुज्ज, तूज, तूझ, तूझ्झ।

तुझे-सर्व०—तुझको, तुम्हें, तुझसे। उ०—तुझे वडा को नहीं हूं कहा जांणू।—केसोदास गाडण

तुट-वि०—तनिक, जरासा, टूक।

तुटण-सं०स्त्री०—फूट, विरोध।
वि०—कलह करने वाला।

तुट्टणौ, तुट्टबौ—देखो 'टूटणौ, टूटबौ' (रू.भे.)

उ०—इणि पर सहस सहस दुइ तुट्टइं, पगि पगि अडइन पग अवहट्टइं।
—अ. वचनिका

तुट्ठ—देखो 'तुस्ट' (रू.भे.)

तुट्ठणौ, तुट्ठबौ—देखो 'तुस्टणौ, तुस्टबौ' (रू.भे.)

तुट्ठि—देखो 'तुस्टि' (रू.भे.)

तुट्ठियोड़ौ-भू०का०कृ०—तुष्ट हुवा हुआ।
(स्त्री० तुट्ठियोड़ी)

तुठणौ, तुठबौ, तुट्ठणौ, तुट्ठबौ—देखो 'तुस्टणौ, तुस्टबौ' (रू.भे.)

उ०—१ काळी माता काहली, भगतां ऊपरि भाइ। जिमि तुठी सुरजेठ नां, इमि तूसे महमाय।—पी.ग्रं.

उ०—२ अज्जु सफळ अवतार असाड़ा, दिट्ठा पारस देव। वुट्ठा मेह अमियदा, तुट्ठा साहिब सतमेव।—ध.व.ग्रं.

तुड-वि०—वीर, योद्धा। उ०—रहूं तुड आंण तुले भउ दूठ, पड़े रिण धांण न दे फिर पूठ।—पे.रू.

तुडि-सं०स्त्री० [सं० तुलित, प्रा० तुडिअ] स्पर्धा, बराबरी।

उ०—पुरविइ कवि हवा घणा, तेह नी किम करूं तुडि। अचिंत्य सक्ति ना धणी, नवी आवूं तेणि जोडि।—नळ-दवदंती रास

तुडिकार-सं०पु०—बाहुयुद्ध करने वाला, मल्ल ?

उ०—तलकार तालाकार भुंगळकार आउजकार पखाउजकार गीतकार, वातकार नित्यकार पाडकार तुडिकार आरांमकार।—व.स.

तुडियांण-सं०पु० [सं० तूर्याण] एक प्रकार का वाद्य (जैन)

तुडुम-सं०पु० [सं० तुरम्] तुरही, विगुल।

तुणको-वि०—तुच्छ, अकिंचन ।

मुहा०—तुणकै पर तेह करणौ—तनिक सी बात पर क्रोध करना ।

तुणगार, तुणगारी—देखो 'तिणगारी' (रू.भे.)

तुणणौ, तुणबौ-क्रि०स० [सं० तूण=परिपूरणे] फटे वस्त्र को छोटे छोटे टांकों द्वारा पैवन्द के रूप में ठीक करना, तुनना । उ०—धोती घड़चाळी संधियोड़ा धागा । तुविया तुणियोड़ा वंधियोड़ा तागा ।
—ऊ.का.

तुणणहार, हारौ (हारी), तुणणियौ—वि० ।

तुणवाणौ, तुणवावौ, तुणाणौ, तुणावौ—प्रे०रू० ।

तुणिश्रोड़ो, तुणियोड़ौ, तुण्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

तुणीजणौ, तुणीजबौ—कर्म वा० ।

तूणणौ, तूणबौ—रू०भे० ।

तुणि-सं०पु० [सं०] तुन का वृक्ष ।

तुणियोड़ौ-भू०का०कृ०—छोटे-छोटे टांकों द्वारा ठीक किया हुआ, तुना हुआ ।
(स्त्री० तुणियोड़ी)

तुणीर-सं०पु० [सं० तूणीर] तर्कश ।
रू०भे०—तुनीर, तुन्नीर, तूनीर ।

तुतकारौ-सं०पु०—कुत्ते को पुकारने के लिए किए जाने वाले शब्दों का (तू-तू) का उच्चारण ।

तुतळाणौ, तुतळावौ-क्रि०अ०—तुतलाना, हकलाना, अस्पष्ट उच्चारण करना । उ०—तोता वोता में रै'ता तुतळाता, बातां बीसरगा बैता वतळाता ।—ऊ.का.

तुतळाणहार, हारौ (हारी) तुतळाणियौ—वि० ।

तुतळायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

तुतळाईजणौ, तुतळाईजबौ—भाव वा० ।

तुतळायोड़ौ-भू०का०कृ०—हकलाया हुआ, तुतलाया हुआ ।
(स्त्री० तुतळायोड़ी)

तुतळौ—देखो 'तोतलौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तुतळी)

तुत्थ, तुत्थक-सं०पु० [सं०] नीला थोथा, तूतिया ।

तुदन-सं०पु० [सं०] व्यथा या कष्ट देने की क्रिया, पीड़न, पीड़ा ।

तुन-सं०पु० [सं० तुन्न] एक प्रकार का वृक्ष जो प्राय: सारे उत्तरी भारत में पाया जाता है । इसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसकी लकड़ी में दीमक नहीं लगती ।
रू०भे०—तुनी, तुन्न ।

तुनतुनियौ-सं०पु०—बैंजो नामक तारवाद्य ।
अल्पा०—तुनतुनी ।

तुनतुनी-सं०स्त्री०—देखो 'तुनतुनियौ' (अल्पा., रू.भे.)

तुनवाय-सं०पु० [सं० तुन्नवाय] दरजी (डि.को.)
रू०भे०—तुन्नवाय ।

तुनी—देखो 'तुन' (रू.भे.)

तुनीर—देखो 'तुणीर' (डि.को.)

तुन्न—देखो 'तुन' (रू.भे.)
वि०—कटा या फटा हुआ ।

तुन्नवाय—देखो 'तुनवाय' (रू.भे.)

तुन्नीर—देखो 'तुणीर' (रू भे.) उ०—चुकुमार धनुस तुन्नीर सर, सार टोप पक्खर झिलम ।—ला.रा.

तुन्ह-सर्व— तुझे, तुझको ।

तुपक, तुपक्ख-सं०स्त्री० [सं तुपक] १ छोटी तोप. २ बंदूक ।
उ०—काराबीन जम्बूर, तुपक पिसतोल तयारिय ।—ला.रा.

तुपाणौ, तुपावौ, तुपावणौ, तुपाववौ-क्रि०स०—बीज बोना, बुआई करना । (बीकानेर) उ०—मूळ मोळता मिनख मिरड़िया घणां घुरावै । हळ वावतड़ी वेर, फोगड़ां बीज तुपावै ।—दसदेव

तुफंग-सं०स्त्री० [फा० तोप] तोप । उ०—भारथां पटैल बांक वीस वीस हाथां भालां । आवधां छतीस ढालां उफालां अनेक । कवांणां वत्तीस दूण तुफंगां चौरासी काळा । वखांणो जादवां पती कवादां विवेक ।—क.कु.बो.

तुवणौ, तुववौ—देखो 'तिवणौ, तिवबौ' (रू.भे.)
उ०—धोती घड़चाली संधियोड़ा धागा । तुविया तुणियोड़ा वंधियोड़ा वागा ।—ऊ.का.

तुभणौ, तुभवौ-क्रि०अ०—१ स्तब्ध रहना, स्थिर रहना. २ चुभना ।

तुभियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ स्तब्ध रहा हुआ. २ चुभा हुआ ।
(स्त्री० तुभियोड़ी)

तुभ्यौ-सर्व० [सं० तुभ्य:] तुम्हें, तुमको ।

तुम-सर्व० [सं० त्वम्] वह सर्वनाम जो उस पुरुष के लिए प्रयुक्त होता है जिससे कुछ कहा जाता है । 'तू' शब्द का बहुवचन, शिष्टता के विचार से एक वचन में भी प्रयुक्त होता है । उ०—कहु स्वांमी, कहीं छि तुम वास ? कीम कीधु अहीं करि आयास ?—नळाख्यांन
मुहा०—तुम-तोम करणौ—तू-तपाड़ करना, गाली-गलोच-देना ।
रू०भे०—तुमां ।

तुमड़ी—१ देखो 'तुंबी' (अल्पा., रू.भे.) २ सूखे कद्दू का बना एक वाजा जिसे संपेरे अधिक बजाते हैं ।
(मि० पूंगी)

तुमण-सं०पु०—चरखे के मध्य का डंडा ।

तुमणी-सर्व०—तुम्हारी । उ०—त्रिजड़ा लाय जांन हलै तुमणी । हव बांधन वात सुणी हमणी ।—पा.प्र.

तुमतड़ाक-सं०स्त्री० [फा० तूमतड़ाक] १ तड़क-भड़क, ठाट-बाट ।
२ गाली-गलोच, बोलचाल (झगड़े के रूप में)

तुमती-सं०स्त्री०—एक प्रकार का शिकारी पक्षी । उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलांमति बाज कुही सिकरा सिचांण जुररा तुमती हुसनाकां सारवांता हाथां ऊपरां सूं सगगाट करता छूटै छै ।
—रा.सा.सं.

तुमर–सं०पु० [सं० तोमर] १ बरछी. २ देखो 'तुंवर'। (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—ब्रह्मा वेद उच्चरै, वीण वहौ तुमर वजावै। रंभा अवसर रचै, गीत सुरसत्ती गावै।—ह.र.

तुमरा, तुमरौ–सर्व०—तुम्हारा।
(स्त्री० तुमरी)
उ०—सांभळ चित हरख्यो घणो, सरध्यां तुमरा वैण। भवि जीवां नां तारका, थे साचा मिळिया सैण।—जयवांणी

तुमल—देखो 'तुमुल'। उ०—विखे वेध तुरी उद्यम तुमल, महण मेछ उर मांडियां। —रा.रू.

तुमां—देखो 'तुम' (रू.भे.)

तुमार–सं०पु०—१ जांच, परीक्षा।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ।
२ अनुमान, अंदाज।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, जोवणौ, देखणौ, होणौ।
मुहा०—तुमार बैठणौ—सही अन्दाज लगना।
३ हद, सीमा।
[अ० तूमार] ४ बात का व्यर्थ विस्तार।
रू०भे०—तूमार।

तुमारूं, तुमारौ—देखो 'तुम्हारौ' (रू.भे.) तुम का संबंध कारक का रूप।
उ०—१ नाम तुमारूं स्युं अछै।—वि.कु.
उ०—२ गादी तौ हमारी छै तुमारी नहीं सादा।—सि.वं.
(स्त्री० तुमारी)

तुमुर–सं०स्त्री०—१ क्षत्रियों की एक जाति।
२ देखो 'तुमुल' (रू.भे.)

तुमुल–सं०पु० [सं०] ध्वनि, शोर, युद्ध का कोलाहल।
उ०—पत्त खरक्के जुग्गिनी के रत्त छरक्के। तक्यौ जिन तैसौ तुमुल ते फेरिन तक्के।—वं.भा.
रू०भे०—तुमल, तुमुर।

तुम्मर—देखो 'तुंवर' (रू.भे.) उ०—कसा करव हो महल, महल गिर-मेर कहावै। कसा गाव हौं गुणव, गुणवं ज्यां तुम्मर गावै।—ह.र.

तुम्यौ–सर्व०—तुम्हें, तुमको, तुझे।

तम्ह–सर्व०—१ तुम। उ०—तुम्ह जावउ घर आपणइ, म्हांरी केही वात।—ढो.मा.
२ तुमको, आपको। उ०—अम्ह कजि तुम्ह छंडि अवर वर आंणे, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि संग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छां वदनि।—वेलि.
३ तुम्हारा।

तुम्हां–सर्व०—तुम, तुमको, तुझे। उ०—महण मथे मूं लीध महमहण, तुम्हां किणि सीखव्यां तई।—वेलि.

तुम्हांण–सर्व०—आपका, तुम्हारा। उ०—सुश्रां जेण तुम्हांण वांणी सहेवं, गतं तस्य मिथ्यात्व-मात्मीय-मेवम्।—स.कु.

तुम्हारइ, तुम्हारउ—देखो 'तुम्हारौ' (रू.भे.) उ०—१ आज अम्हो मोटा करिया, सगे सणीजै स्वांमि। सीमाडा सवि संकसिइ, नाथ! तुम्हारइ नांमि।—मा.कां.प्र.
उ०—२ कवण देस तइं आविया, किहां तुम्हारउ वास।—ढो.मा.

तुम्हारड़ु, तुम्हारड़ु, तुम्हारड़ौ, तुम्हारडुं, तुम्हारडु, तुम्हारडौ—देखो 'तुम्हारौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ मीठी जीभ तुम्हारडी, लूणउ लागइ तेणि। वांणि हणे नर बप्पडे, सहिउ न जाई केणि।—मा.कां.प्र.
उ०—२ सूरिज! सहिजि तुम्हारडुं, साहमा दीइ संतापि। खेचर सही खीजी रहियां, अडवडि तावडि आपि।—मा.कां.प्र.
उ०—३ अे अविवेकै तुम्हारडू, अधर धरि रह्या राग। तु तुम्हं मंदिर प्राहुणउं, भरइं केणी परिपाग।—मा.कां.प्र.
उ०—४ मोर कठोर तुम्हारडा, सब्द हुई ते सत्य। हाळाहळ होसिइ गळड, संकर केरी गत्ति।—मा.कां.प्र.
(स्त्री० तुम्हारड़ी तुम्हारडी)

तम्हारौ–सर्व० (स्त्री० तुम्हारी) तुम्हारा, आपका।
उ०—साहिव हियड़ै मुझ सही जी, नित ही तुम्हारौ नांम। —ध.व.ग्रं.
रू०भे०—तुमारौ, तुम्हारइ, तुम्हारउ।
अल्पा०—तुम्हारड़ु, तुम्हारड़ु, तुम्हारड़ौ, तुम्हारडुं, तुम्हारडु, तुम्हारडौ।

तुम्हि, तुम्ही–सर्व०—१ तुम। उ०—लगनि थकी पहिलइ इक मासि। मांणस मूकेस्यां तुम्हि पासि।—वेलि.
२ तुमसे (उ.र.)

तुम्हीणौ–सर्व०—तुम्हारा, तेरा। उ०—नाम तुम्हीणौ हौं! घणनांमी, सास उसास संभारिस स्वांमी।—ह.र.
(स्त्री० तुम्हीणी)

तुम्हें, तुम्हैं–सर्व०—तुमको, तुझे। उ०—दादू बहुत बुरा किया, तुम्हैं न करणा रोस। साहिब समाई का धनी, बंदे को सब दोस। —दादू बांणी

तुय–सर्व०—तेरा। उ०—ज्यां हंदा क्रत जोय, दोजग नह वासौ दियौ। ते न्हावै तुय तोय, जोत समावै जहांनवी।—बां.दा.

तुरंग–सं०पु० [सं०] (स्त्री० तुरंगण तुरंगी) १ घोड़ा, अश्व।
उ०—परठि जीण पाखरां तुरंग, सझिया अतुळीवळ।—सू.प्र.
२ चित्त, मन. ३ सात की संख्या*।
वि०—जल्दी चलने वाला, चंचल*।
रू०भे०—तुरग, तुरय, तुरि, तुरिउ, तुरियंद, तुरिय, तुरीय, तूरंग, तूरंगम।
अल्पा०—तुरियौ।

तुरंगगौड–सं०पु० [सं०] गौड़ राग का एक भेद।

रू०भे०—तुरुस्कगौड़।

तुरंगण-सं०स्त्री० [सं० तुरंग+रा.प्र.ण] घोड़ी। उ०—धुर रूप तुरंगण देह धरी। फिर वीट कमंधज आंण करी।—पा.प्र.

तुरंगप्रिय-सं०पु० [सं०] जौ, यव।

तुरंगम—देखो 'तुरंग' (रू.भे.) उ०—इण तेज तुरंगम आरुहवा, चवियौ हुकमां तुर रोस चवा।—रा.रू.

तुरंगमसिक्षा-सं०स्त्री० [सं०] घोड़ों के सम्बन्ध में ज्ञान, ७२ कलाओं में से एक।

तुरंगवदन, तुरंगमुख, तुरंगवदन-सं०पु० [सं०] किन्नर गण, एक देवता विशेष (अ.मा.) उ०—तूझ तुरंगां दांन रा, हिमगिर तळहटियांह, गावै गीत तुरंग-मुख, जळरख जळवटियांह।—बां.दा.

तुरंगलक्षण-सं०पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक (व.स.)

तुरंगसाळ, तुरंगसाळा-सं०स्त्री०[सं० तुरंग+शाला] घुड़शाल, अस्तबल।

तुरंगांण—देखो 'तुरंगण' (रू.भे.) उ०—सुण हाक जगै उठ 'पाल' सही। वदळै तुरंगांण रै गाय वही।—पा.प्र.

सं०पु० [सं० तुरंग] घोड़ा। उ०—मांनह तात स मोलवीयै। निस दीह दला तुरंगांण तता। निज दांन सु जीवण सीह दीयै।

—किसनौ दधवाड़ियौ

तुरंगारि-सं०पु० [सं०] कनेर।

तुरंगी-सं०स्त्री० [सं०] १ घोड़ी।

२ अश्वगंधा।

तुरंगु—देखो 'तरंग' (रू.भे.) उ०—सरळ तरळ भुयवल्लरिय, सिहण पीणघण तुंग। उदरदेसि लंकाउळीय, सोहइ तिवळ तुरंगु।

—प्राचीन फागु संग्रह

तुरंज-सं०पु० [फा०अ० तुर्ज] १ चकोतरा नीबू. २ बिजौरा नीबू।

तुरंजका-सं०स्त्री०—हड़, हर्र (नां.मा.)

तुरंजबीन-सं०स्त्री० [फा०] नीबू का शर्बत।

तुरंजिया-सं०पु०—बैलगाड़ी के मुख्य चौड़े तख्ते को उसके नीचे रहने वाले डंडों के साथ जोड़ने वाली कील या कीला।

तुरंड-सं०पु०—एक प्राचीन देश ? उ०—सगवण गजण सवर बरबर-काय चिलाय तुरंड गुंड उडकुड पक्कण।—व.स.

तुरंत, तुरंतउ, तुरंत, तुरंतौ-क्रि०वि० [सं० त्वरितम्] शीघ्र, तत्क्षण, त्वरित। उ०—१ उठिउ भीमु गदा फेरंतउ, तउ दुरयोधन भिडइ तुरंतउ।—पं.पं.च.

उ०—२ इणि मारीसइ मुहडु भिडंतु, बीजउ कोई घाउ तुरंत।

—पं.पं.च.

उ०—३ विस्ठा घर मांहि वइठउ आदमी, तेड़इ तुं आवि तुरंतौ जी।

रू०भे०—तुरंत।

तुर-क्रि०वि० [सं० त्वर्] शीघ्र। उ०—तथास्तू कहि मुनिंदं वळे तुर, राका दिन मिळसी राजेस्वर।—सू.प्र.

वि०—शीघ्रगामी, वेगवान।

सं०स्त्री० [सं० तुरी] १ वह लकड़ी जिस पर जुलाहे कपड़ा बुन कर लपेटते जाते हैं।

सं०पु० [सं० तुरंग] (स्त्री० तुरी) २ घोड़ा। उ०—विकराळ तुरां खुरताळ बजै।—गो.रू.

३ तूरान देश का निवासी।

रू०भे०—तूर।

तुरई—देखो 'तुररी' (रू.भे.)

तुरक, तुरकड़ौ-सं०पु० [सं० तुरुष्क, फा० तुर्क] (स्त्री० तुरकड़ी, तुरकण, तुरकणी, तुरकांणी) १ तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क. २ यवन, मुसलमान। उ०—१ तुरक घड़ा नव तेग्ही, तेरह साख कमंध।—रा.रू.

उ०—२ सो आदमी चारसौ तुरकड़ रौ फौज रा कांम आया।

अमरसिंघ राठौड़ रौ गीत

मुहा०—तुरक रो दांतण होणौ—तुर्क का दातुन होना, एकाकी होना, साथ रहित होना, निर्धन होना, वस्त्रहीन होना।

रू०भे०—तुरक्क, तुरस्क, तुरुक, तोरक, तोरकौ।

मह०—तुरकांण।

अल्पा०—तुरकड़ौ, तुरकटौ, तुरकियौ।

तुरकांण-सं०पु० [सं० तरुष्क+रा०प्र०आंण] १ यवनों का राज्य.

२ देखो 'तुरक' (मह., रू.भे.) उ०—उण वेळा बोलियौ 'दलौ' सोनगरौ दारण। तुरंग थाट तुरकांण बीच ओरूं घड़ वारण।—सू.प्र.

तुरकांणी-सं०स्त्री० [सं० तुरुष्ट, फा० तुर्क+रा.प्र. आंणी] १ तुर्क की स्त्री. २ इस्लामधर्म. ३ तुर्कों का राज्य, तुर्कों की सत्ता।

उ०—सेरसाह खने सूं पातसाह अकबर दिली छोडाई। तिण समै मालदेजी जोधपुर लियौ नै पहली जोधपुर में तुरकांणी रही।—द.दा.

वि०—तुर्क सम्बन्धी, तुर्क का। उ०—पछै तुरकांणी राज हुवौ, हिंदवांणौ मिटियौ।—नैणसी

तुरकांणौ-सं०पु० [सं० तुरुष्क या फा० तुर्क+रा.प्र. आंणौ] १ यवन राज्य, बादशाहत। उ०—१ तद बादसाह औरंगजेब जोधपुर तुरकांणौ कियौ जद राठौड़ दुरगदास आसकरणोत विखौ कियौ।

—भाटी सुन्दरदास बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ तू तोलै तरवार, सिर साहां गजसिंघदे। हुवै तुरकांणै हार, हिंदवांणै ऊछव हुवै।—चतुरौ मोतीसर

२ तुर्कों का देश, तुर्किस्तान. ३ मुसलमान।

तुरकांवड़ौ-सं०पु० [सं० तुरी+कम्बा] काष्ठ का कीला या छड़ जो करघे की तुर या लपेटन में लगी रहती है।

तुरकिया बोहरा-सं०पु०—मुसलमानों की एक जाति जिसके लोग प्रायः लेन-देन का व्यवसाय करते हैं। इस जाति का व्यक्ति।

तुरकिस्तान-सं०पु०[तु०+फा] पश्चिम एशिया का एक देश, तुर्की, टर्की।

तुरकी-वि० [तु० तुर्क] तुर्किस्तान का, तुर्क देश का।

सं०पु०—१ घोड़े की एक जाति और इस जाति का घोड़ा।

उ०—ऐराकी आरबी, धाटी काछी खंधारी। के बलकी सोवनी केक तुरकी अग्रकारी।—सू.प्र.

संस्त्री०—तुर्किस्तान की भाषा।
रू०भे०—तुरक्की।

तुरकीय-संस्त्री०—घोड़े की चाल विशेष। उ०—रहवाळ **तुरकीये** डोळ खुरकीय अवी पै छारक आदर सीरै।—किसनौ दधवाड़ियौ

तुरक्क—देखो 'तुरक' (रू.भे.) उ०—धकां धकां चहूं चकां हू चकां खड़्ग धारा। वीर हक्कां हींदवां, **तुरक्कां** भिड़े बाद।
—महारांणा स्री जयसिंह (दूसरा) रौ गीत

तुरक्की—देखो 'तुरकी' (रू.भे.) उ०—चढ़े कुच्च दड्ढे सिखा हीन मत्थे। इरांनी अरव्वी **तुरक्की** चिगत्थे।—ला.रा.

तुरखूंटौ-संपु० [सं० तुरी+राज. खूंटौ] करघे का एक खड़ा डंडा जिस पर 'तुर' घुमाया जाता है।

तुरग-वि० [सं०] तेज गति से चलने वाला, द्रुतगामी।
संपु०—देखो 'तुरंग' (रू.भे.)
रू०भे०—तुरगम।

तुरगगंधा-संस्त्री० [सं०] अश्वगंधा।

तुरगदांनव-संपु० [सं० तुरग+दानव] केशी नामक दैत्य जो कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप धारण कर कृष्ण को मारने गया था।

तुरगबदन-संपु० [सं० तुरग वदन] वह जिसका मुंह घोड़े का सा हो, किन्नर (अ.मा.)

तुरगलीलक-संपु० [सं०] संगीत में एक ताल का नाम।

तुरगवैद्य-संपु० [सं०] अश्वचिकित्सक। उ०—भोजिक सूयकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य **तुरगवैद्य** विखभवैद्य मांत्रिक तांत्रिक।—व.स.

तुरगसाळा-संस्त्री० [सं० तुरग+शाला] अश्वशाला।

तुरगसिक्षा-संस्त्री० [सं०] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक (व.स.)

तुरगांण-संस्त्री०—घोड़ी। उ०—श्रम संगट मोद धरै अरसै। दिन जै **तुरगांण** चढ़्यौ दरसै।—पा.प्र.

तुरगारोहण-संपु० [सं०] अश्व पर सवारी करने की कला, ७२ कलाओं में से एक।

तुरगि-संपु० [सं० तुरगिन्] घुड़सवार, अश्वचालक।

तुरगी—१ घोड़े की एक जाति (व.स.) २ देखो 'तुरग' (रू.भे.)
उ०—**तुरगी** रचै कति तेहरी, किम अद्रि लंघति केहरी।—वं.भा.

तुरगु—देखो 'तुरंग' (रू.भे.) उ०—गइंवरि गइंवरु तुरगि **तुरगु** राउत रण रूधइं।—पं.पं.च.

तुरजका-संस्त्री०—हरड़, हर्रे (अ.मा.)

तुरजाळ-संपु०—घोड़ा।

तुरजिका—देखो 'तुरजका' (रू.भे.)

तुरण-क्रि०वि० [सं० तूर्णम्] तुरन्त, शीघ्र (ह.नां.)

तुरणी—देखो 'तरुणी' (रू.भे.) उ०—१ व्यास कहै सुर नर गन मोहनी रे, अद्भुत रूप अनेक। है चितहरणी **तुरणी** महल में रे, पिण नहीं पद्मणी एक।—प.च.चौ.

उ०—२ फाली भली ओढ़णि अंगि रेटइ। आवी रही जु **तुरणी** त्रिभेटइ।—प्राचीन फागु संग्रह।

तुरत-क्रि०वि० [सं० तुर] शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण (अ.मा.)
उ०—निज पितु छोडे नीच **तुरत** छोडे महतारी।—ऊ.का.
कहा०—तुरत दांन महा कल्यांण—१ विचारा हुआ दान तुरंत दे देना ही उत्तम रहता है. २ किसी कार्य को झटपट करने या कराने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
रू०भे०—तुरतां, तुरती।
यौ०—तुरतपुरत, तुरतबुद्धि।

तुरतबुद्धि-संस्त्री०—प्रत्युत्पन्न मति, हाजिरजबाब।

तुरतां—देखो 'तुरत' (रू.भे.) उ०—**तुरतां** लज राखण 'मोड' तणी, घर धावेय तीजिय ताल घणी।—पा.प्र.

तुरतांण-क्रि०वि०—शीघ्र, त्वरित। उ०—तेजल धनख चढ़ै **तुरतांणा**, बादळ तीतर पंख बखांणा।—वर्षा-विज्ञान

तुरती-संस्त्री०—१ गली (अ.मा.) २ देखो 'तुरत' (रू.भे.)

तुरतुरियौ-संपु०—भीगी दाल या बेसन में मसाला मिला कर खौलते घी अथवा तेल में तला हुआ खाद्य पदार्थ, बड़ा, पकौड़ा।
(मि० बड़ौ)
मुहा०—तुरतुरिया ज्यूं कूदणौ—खौलते तेल में बड़े के समान कूदना। शीघ्रता करना, जल्दबाजी करना, छिछलापन दिखाना।
वि०—जल्दबाज, उतावला।

तुरपंग-संपु०—नृत्य का एक भेद? उ०—नवरंग कटाच्छ रस रंग नृत, जंग जंग वाजिय जगत। ह्वै रमिय उरप **तुरपंग** हद, लाग दाट त्रेवट लगत।—सू.प्र.

तुरप—देखो 'तुरुप' (रू.भे.)

तुरपण-संपु०—हाथ से की जाने वाली एक विशेष सिलाई, तुरपाई।

तुरपणौ, तुरपबौ-क्रि०स०—तुरपन (तुरपाई) की सिलाई करना।
तुरपणहार, हारौ (हारी), तुरपणियौ—वि०।
तुरपवाड़णौ, तुरपवाड़बौ, तुरपवाणौ, तरपवाबौ, तुरपवावणौ, तुरपवावबौ, तुरपाड़णौ, तुरपाड़बौ, तुरपाणौ, तुरपाबौ, तुरपावणौ, तुरपावबौ—प्रे०रू०।
तुरपिओड़ौ, तुरपियोड़ौ, तुरप्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तुरपीजणौ, तुरपीजबौ—कर्म वा०।
तुरुपणौ, तुरुपबौ—रू०भे०।

तुरपाई-संस्त्री०—महीन टांकों की एक प्रकार की सिलाई।
रू०भे०—तुरपाई।

तुरपियोड़ौ-भू०का०कृ०—तुरपाई की सिलाई किया हुआ।
(स्त्री० तुरपियोड़ी)

तुरफ—देखो 'तुरुप' (रू.भे.)

तुरफरी-संपु० (स्त्री०) अंकुश का वह भाग जो सामने सीधी नोंक की ओर होता है।

तुरमती-संस्त्री० [सं० तुरमता] बाज की तरह शिकार करने वाली एक छोटी चिड़िया। उ०—लवां ऊपर सिकरा छूटै छै, बटेरां ऊपर **तुरमती** छूटै छै।—रा.सा.सं.

तुरमनांमो-सं०पु०—एक वाद्य का नाम । उ०—तुरमनांमो अंगरेजां रै बाजो हुवै ।—बां.दा. ख्यात

तुरय—देखो 'तुरंग' (रू.भे.)

तुरय्या-सं०पु० [सं० तुर्य्या] वह ज्ञान जिससे मुक्ति प्राप्त हो, तुरीय ज्ञान ।

तुररी-सं०स्त्री० [सं० तूरं] मुंह से फूंक देकर बजाने का एक वाद्य विशेष । उ०—उच्चरी तुररी कुररी जसी, सुभट ना सवि रोम उद्द्रसी ।—विराट पर्व

रू०भे०—तुरइ, तुरहा, तुरही, तुरैया, तूरही ।

तुररौ-स०पु० [अ० तुर्रा] १ घुंघराले बालों की लट जो सिर से लटकती हो, अलक. २ टोपी, पगड़ी आदि पर लगाई जाने वाली कलंगी । उ०—कसि जड़ित जवाहर खग कटार, तुररा स जवाहर रूप तार ।—सू.प्र.

३ पर या फुंदना जो कलंगी के स्थान पर लगाया जाता है.

४ पुष्प विशेष, गुलतुर्रा. ५ दूल्हे के शिर पर बांधे जाने वाले सेहरे के साथ लगाई जाने वाली कलंगी विशेष. ६ फूलों का गूंथा हुआ गुच्छा । उ०—बाग री सैल फिरै छै । अैस रस विनां महामगरूर फळ करै छै । वोहो मोती बागवांन तुररा बणाय-बणाय ल्यावै छै । जिकै तुररै रै तुररै मोहर पावै छै ।—पनां वीरमदे री वात

७ श्मश्रु, मूछ । उ०—तुररां हूंत भटतारां भली, पागां हूंत भली कोपींद । —बुधजी आसियो

रू०भे०—तुरौ ।

वि०—श्रेष्ठ, शिरमौर । उ०—मदवी को मछोळो, हाथ की हाल, तीजणियां को तुररौ ।—मयाराम दरजी री वात

मुहा०—तुररौ होणौ—तुर्रा होना, श्रेष्ठ बनना, सर्वोपरि होना ।

तुरळ-सं०पु०—बवण्डर, प्रचण्ड वायु-गोल । उ०—वणी गजां तणै सिरवांना, मिळिया तुरळ रजी असमांना ।—रा.रू.

तुरवसु-सं०पु० [सं० तुर्वसु] राजा ययाति का देवयानी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र ।

तुरस-वि० [फा० तुर्श] खट्टा ।

सं०स्त्री०—ढाल । उ०—पीठ तुरस केवांण कर, आसपास रजपूत । मावड़िया सोहै नहीं, मुख मूछां सिर सूत ।—बां.दा.

रू०भे०—तुरस्स ।

तुरसाई, तुरसाही-सं०स्त्री० [फा० तुर्शी=खटाई] १ जायका, स्वाद.

२ खटाई, खट्टापन ।

रू०भे०—तुरहाही ।

तुरस्स—देखो 'तुरस' (रू.भे.) उ०—विधे धज सावळ चोळ वरन्न । तुरस्स जरद अंगारक तन्न ।—सू.प्र.

तुरह-क्रि०वि० [सं० त्वर] शीघ्र, जल्दी (ह.नां.)

तुरहाही—देखो 'तुरसाई' (रू.भे.)

तुरही—देखो 'तुररी' (रू.भे.) उ०—सबद उग्र करनाळ सवाई, सुर वरधू तुरही सहनाई ।— रा.रू.

तुरांण-सं०पु० [सं० तुरंग] घोड़ा । उ०—हय ठांण धुपांण खीवांण हलासिखे, भांण तुरांण भुतांण थिये ।—पा.प्र.

तुरांन-सं०पु०—फारस के उत्तर पूर्व में पड़ने वाला मध्य एशिया का भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियों का निवास-स्थान है ।

तुरांनी-सं०पु०—तुरान देश का निवासी, यवन, मुसलमान ।

उ०—उजबकि इरांनी गोळ आप, चगताह तुरांनी दस्त चाप ।
—वि सं.

तुरा-सं०स्त्री० [सं० त्वरा] शीघ्रता, जल्दबाजी (ह.नां.)

तुराखाट, तुराखाड-सं०पु० [सं० तुराषाट्] इन्द्र, सुरराज (ह.नां.)

तुराट-सं०पु०—घोड़ा । उ०—भूप तुराटां भेळिया, जुध कारण जक्की ।—वी.मा.

तुराटो-सं०स्त्री०—हलका नशा ।

क्रि०प्र०—आणी ।

तुरातुर-क्रि०वि० [सं० त्वर] शीघ्र, जल्दी । उ०—तुरातुर नीसरजा भवतीर । विखे विख बीसरजा वरवीर ।—ऊ.का.

तुरापांचम-सं०स्त्री०—माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि, बसन्त-पंचमी ।

तुरायण-सं०पु० [सं०] एक यज्ञ जो चैत्र शुक्ला पंचमी और वैशाख शुक्ला पंचमी को होता है ।

तुरावत-वि० [सं० त्वरावत्] वेगवान, वेगयुक्त ।

(स्त्री० तुरावती)

तुरासाट, तुरासाह-सं०पु० [सं० तुरासाह, कर्ता एक वचन तुराषाट् या तुराषाड्] इंद्र (डि.को.)

तुरि, तुरिउ-क्रि०वि० [सं० त्वरा] १ शीघ्र. २ देखो 'तुरंग' (रू.भे.) उ०—तंती नाद तंबोळ रस, सुरहि सुगंधउ जांह । आसख तुरि घरि गोरड़ी, किसउ दिसाउर त्यांह ।- ढो.मा.

तुरिए, तुरित-क्रि०वि० [सं० त्वरित] शीघ्र, जल्दी ।

तुरियंद—देखो 'तुरंग' (रू.भे.)

तुरिय-क्रि०वि० [सं० त्वरित्] १ शीघ्र, तुरन्त.

२ देखो 'तुरंग' (रू.भे.) उ०—गज तुरिय न लाभइ पार, सधर सुहड सार, छाजति अवनिसार तुज्झ करो ।—व.स.

तुरिया-सं०स्त्री० [सं० तुरीय] १ ज्ञान की चतुर्थावस्था जिसे मोक्ष समझा जाता है । उ०—यूं ही खट चक्कर भेद अघाव । पछै त्रिपुटी तुरिया पद पाव ।—ऊ.का.

२ घोड़ा ।

वि०—चतुर्थ* ।

रू०भे०—तुरिय, तुरीय ।

तुरियौ—देखो 'तुरंग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—जांणीय दुरयोधनि वाहू वाह्या । रहइं किमइं ते तुरिया न साह्या ।—विराट पर्व

तुरी-सं०पु० [सं० तुरंग] १ घोड़ा । उ०—जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर तुरी सहाइ । तिणि रिति बूढ़ी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ ।
—ढो.मा.

सं०स्त्री०—२ घोड़ी। उ०—जद हरियाळौ वनड़ौ तोरण आयौ ओ, तोरण तुरी डकाई ओ बाई जी म्हारा राज।—लो.गी.

३ लगाम, वाग. ४ तुरही नामक वाद्य। उ०—त्रंवकां त्रहकां वजै भेर तुरी। घणवासुर को अधरात घुरी।—गो.रू.

५ देखो 'तुररौ' (२) (अल्पा., रू.भे.)

तुरीजंत्र-सं०पु० [सं० तुरीयंत्र] सूर्य की गति बताने वाला यंत्र।

तुरीय—१ देखो 'तुरंग' (रू.भे.) उ०—तुरीय सहइस पंचास, दोय सइं महगळ मंता।—प.च.चौ.

देखो 'तुरिया' (रू.भे.)

तुरीयतरग-सं०पु०—दो नलियों का एक वाद्य विशेष जिसकी नलियों को चिकुर के नीचे गले के लगा कर अद्भुत तरीके से बजाई जाती है।

तुरीया—देखो 'तुरिया' (रू.भे.) उ०—जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, इनते अलग रहाया।—स्री हरिरांमजी महाराज

तुरीस-क्रि०वि०—शीघ्र (ह.नां.)

सं०पु०—घोड़ा। उ०—करी उर टक्कर ऊडत केक। अरी जरदंत तुरीस अनेक।—सू.प्र.

तुरुक—देखो 'तुरक' (रू.भे.)

तुरुप-सं०पु० [अं० ट्रंप] ताश के खेल विशेष में कोई एक प्रधान माना जाने वाला रंग। इस रंग का छोटे से छोटा पत्ता दूसरे रंग के बड़े से बड़े पत्ते को मार सकता है।

क्रि०प्र०—वोलणौ, बोलाणौ, राखणौ।

रू०भे०—तुरप, तुरफ।

तुरुपणौ, तुरुपबौ—देखो 'तुरपणौ, तुरपबौ' (रू.भे.)

तुरुपाई—देखो 'तुरपाई' (रू.भे.)

तुरुस्क—देखो 'तुरक' (रू.भे.)

तुरुस्कगौड—देखो 'तुरंगगौड' (रू.भे.)

तुरुही—देखो 'तुररी' (रू.भे.)

तुरेस-सं०पु० [सं० तुरंग+ईश] श्रेष्ठ घोड़ा। उ०—पड़े भगांण देस देस अग्रवांण पीड़णी। सलाह पाछले पुरे मिटी तुरेस भीड़णी।—रा.रू.

तुरेया—देखो 'तुररौ' (रू.भे.)

तुरौ—देखो 'तुररौ' (रू.भे.)

तुळ, तुल-सं०पु०—१ एक लगन का नाम। उ०—अरु करणसिंघ रैं वड़ा कंवर अनोपसिंघजी री जनम संवत् १६९५ चैत सुद ६ रोहणी। इस्ट ३४-२- तुल लगन।—द.दा.

२ घास। उ०—अवरंग तणौ सुरंग आवटियौ, जादव तैं करतां घण जंग। मेछां तुळ घातिया मुहडै, काडै तांम सांकड़ा कुरंग।

—रांमसिंह भाटी री गीत

सं०स्त्री०—३ तुला राशि। उ०—दिन रात सम तुल रासि दिन कर सरकि अनुक्रम सरवरी।—रा.रू.

४ तुला, तराजू। उ०—१ छळ छिद्र 'खीचीडोह' तुल जोड़ै तोलीजतौ। 'धांधळ' तणौ धड़ोह, हव चेळै भारी हुवौ।—पा.प्र.

उ०—२ जसरी तुल पग दे ललका ले जावै, हीरा मांणक सब हळका ह्वै जावैं।—ऊ.का.

वि० [सं० तुल्य] समान।

तुळछ, तुळछां—देखो 'तुळसी' (रू.भे.) उ०—१ वादळा कनक रा गंग वार, धूमरां मंजरां तुळछ धार।—वि.सं.

उ०—२ धन वाई तुळछां धन थारौ नांम।—लो.गी.

तुळछांतेला-सं०पु०—कार्तिक शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक किया जाने वाला स्त्रियों का एक व्रत, तुलसीव्रत।

तुळछी—देखो 'तुळसी' (रू.भे.) उ०—घर घर में तुळछी को विड़लौ दरसण माधवजी को रे।—मीरां

तुळछीदळ—देखो 'तुळसीदळ' (रू.भे.) उ०—जळ गंगा जमना पुह-कर जळ, दळ ग्रह दरभ छिड़क तुळछीदळ।—रा.रू.

तुळछीपतियौ—देखो 'तुळसीपतियौ' (रू.भे.)

तुलजा, तुलजाउ तुलज्जा, तुलज्या-सं०स्त्री० [सं० तुल्य+ज्या] पार्वती, दुर्गा (ह.नां.)

वि०—वृद्धा, बूढ़ी।

तुलणौ, तुलबौ-क्रि०अ० [सं० तुल] १ तौला जाना, तुलना, तराजू पर अंदाजा जाना। उ०—काळी घणी कुरूप, कसतूरी कांटां तुलै। सक्कर बडी सरूप, रोड़ां तुलै राजियां।—किरपारांम खिड़ियौ

२ तोल या मान में बराबर उतरना, तुल्य होना. ३ अंदाज होना, बंधे हुए मान का अभ्यास होना. ४ किसी अस्त्र को भली प्रकार से चलाना जिससे वह लक्ष्य पर वार कर सके, सधना. ५ उद्यत होना, तैयार होना।

मुहा०—बात माथै तुलणौ—अपनी बात को पक्का करने के लिए उद्यत होना।

६ किसी आधार पर इस प्रकार टिकना कि आधार के वाहर निकला हुआ भाग किसी ओर को झुका न हो। ठीक अनुमान के साथ टिकना। उ०—अणी कढ़ जवांना अनै सुरतांण ऊत। खड़ै चढ़ हटी घोड़ां भड़ां खूर। जबर चेळा तुलै आठ मसलां जठी। वोह जठी हुवै वेहु अे बरापूर।—जसजी आढ़ौ

७ समझ में बैठना, ध्यान में उतरना। उ०—आप कहो हो कै धणी री फौज सत्रुआं ऊपरै जावै है सो धणी म्हांसूं रूठा रहै है तिण सारू वणियै झगड़ै हूं दूसरा जोधारां नैं मालक नैं छोड़ आय जावसूं सो आ म्हारै तुलै नहीं।—वी.स.टी.

८ समान होना, तुल्य होना। उ०—'अहह रूप असंभम भूवलइ। कवण कांमिनि एह समी तुलइ।—विराटपर्व

तुलणहार, हारौ (हारी), तुलणियौ—वि०।

तुलवाड़णौ, तुलवाड़बौ, तुलवाणौ, तुलवाबौ, तुलवावणौ, तुलवावबौ, तुलाड़णौ, तुलाड़बौ, तुलाणौ, तुलाबौ, तुलावणौ, तुलावबौ—प्रे०रू०।

तुलिओड़ौ, तुलियोड़ौ, तुल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तुलीजणी, तुलीजबौ—भाव वा० ।
तुलना–सं०स्त्री० [सं०] १ मिलान, समता, सादृश्य. २ उपमा ।
तुलनी–सं०स्त्री० [सं० तुला] तराजू की डंडी ।
तुलवाई—देखो 'तुलाई' (रू.भे.)
तुलसंक्रांत, तुलसंक्रांति—देखो 'तिलसंकरांत' (रू.भे.)
तुळसी–सं०स्त्री० [सं० तुलसी] १ एक छोटा पौधा जिसकी ऊंचाई दो तीन फीट के लगभग होती है और जिसकी पत्तियों से एक तीक्ष्ण गंध निकलती है । हिन्दू लोग इसे बहुत पवित्र मानते हैं और इसकी पत्तियां देव मूर्तियों पर चढ़ाते हैं । वैद्यक में बहुत से रोगों के लिए भी यह लाभदायक मानी जाती है । मथुरा के आस-पास इसका पौधा प्रचुरता में पाया जाता है । वृन्दा, वैष्णवी । उ०—वळिबंधण मूझ स्याळ सिंघ वळि, प्रांसै जो बीजौ परणै । कपिळ धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी करि चांडाळ तणै ।—वेलि.
यौ०—तुळसीठांणौ, तुळसीठांवड़ौ, तुळसीतेला, तुळसीदळ, तुळसीदांन, तुळसीवन ।
रू०भे०—तुळछ, तुळछां, तुळछी ।
सं०पु०—२ प्रसिद्ध कवि तुलसीदास. ३ एक मारवाड़ी लोकगीत ।
तुळसीठांणौ, तुळसीठांवड़ौ–सं०पु० [सं० तुलसी+स्थान] तुलसी के पौधे को लगाने का कुंड जो प्रायः घर के आंगन या मन्दिर के चौक आदि में लगाया जाता है ।
रू०भे०—तुळसीथांणौ ।
तुळसीतेला–सं०पु०—कार्तिक शुक्ला एकादशी से तीन दिन तक स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला उपवास जिसमें स्त्रियां तुलसी के निकट दीपक जलाती हैं और अखण्ड व्रत रखती हैं ।
तुळसीथांणौ—देखो 'तुळसीठांणौ' (रू.भे.)
तुळसीदळ–सं०पु० [सं० तुलसीदल] तुलसीपत्र । उ०—पोते रावराजा छांनौ थकौ लारै ऊभौ, जद दुरगा री मंत्र पढ़नै स्रीजी तुळसीदळ रंगनाथजी नूं चढ़ायौ ।—बां.दा.ख्यात
रू०भे०—तुळछीदळ ।
तुळसीदांणौ–सं०पु०—एक स्वर्ण आभूषण ।
तुळसीदास–सं०पु० [सं० तुलसीदास] 'रामचरित मानस' के रचयिता एक श्रेष्ठ भक्त कवि जिनका जीवनकाल सं० १५८९ से १६८० माना गया है । इनकी अनेक रचनायें हिन्दी में प्रसिद्ध हो चुकी हैं ।
तुळसीपत—देखो 'तुळसीदळ' ।
तुळसीपतियौ–सं०पु०—स्त्रियों के गले का एक आभूषण विशेष ।
रू०भे०—तुळछीपतियौ ।
तुळसीपांन, तुळसीपांनि—देखो 'तुळसीदळ' ।
तुळसीमंजर–सं०पु० [सं० तुलसी+मंजरिः] तुलसी के पौधे की बालें, तुलसीमंजरी । उ०—वेणी पवित्र करिस लिखमीवर । मसतग चाढ़ै तुळसीमंजर ।—ह.र.
तुळसीवन–सं०पु० [सं० तुलसी+वन] वह वन खण्ड जहाँ तुलसी की अधिकता हो ।

तुला–सं०स्त्री०—१ तकड़ी, तराजू, कांटा । उ०—असपत तणौ चीत आहाड़ा, तुला चढंतां हुवै तुला ।—महारांणा जगतसिंह री गीत
यौ०—तुलादंड ।
२ गुंजा (अ.मा.) ३ ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि. ४ मान, तौल ।
तुलाई–सं०स्त्री०—१ तौलने की क्रिया अथवा तौलने के कार्य की मजदूरी ।
रू०भे०—तुलवाई, तोलाई, तौलाई ।
[सं० तूलिका] २ तूलिका, तूली (उ.र.)
तुलाकोट, तुलाकोटि–सं०पु०—एक आभूषण, नूपुर ।
तुलाजंत्र–सं०पु० [सं० तुलायंत्र] तराजू, कांटा ।
तुलाडंड—देखो 'तुलादंड' (रू.भे.)
तुलाड़णौ, तुलाड़बौ—देखो 'तुलाणौ, तुलावौ' (रू.भे.)
तुलाड़ियोड़ौ—देखो 'तुलायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तुलाड़ियोड़ी)
तुलाणौ, तुलाबौ–क्रि०स० ('तुलणौ' क्रिया का प्रे०रू०) तुलाने का कार्य अन्य से कराना, तुलाना, तुलवाना ।
तुलाणहार, हारौ (हारी), तुलाणियौ—वि० ।
तुलायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
तुलाईजणौ, तुलाईजबौ—कर्म वा० ।
तुलणौ, तुलबौ—अक०रू० ।
तुलाड़णौ, तुलाड़बौ, तुलावणौ, तुलावबौ, तोलाड़णौ, तोलाड़बौ, तोलाणौ, तोलाबौ, तोलावणौ, तोलावबौ, तौलाड़णौ, तौलाड़बौ, तौलाणौ, तौलाबौ, तौलावणौ, तौलावबौ—रू०भे० ।
तुलादंड–सं०स्त्री०—तराजू या कांटे की डंडी जिसके दोनों छोरों पर पलड़े बंधे रहते हैं ।
रू०भे०—तुलाडंड ।
तुळादांन, तुलादांन–सं०पु० [सं० तुलादान] सोलह महादानों में से एक प्रकार का दान जिसमें मनुष्य अपने स्वयं के तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान करता है ।
तुलाधार–सं०स्त्री० [सं०] १ तुलाराशि. २ तराजू की रस्सी जिससे पलड़े बंधे रहते हैं ।
सं०पु०—३ वणिक्, बनिया. ४ काशी का प्रसिद्ध व्याध जो माता-पिता की सेवा में सदैव तैयार रहता था ।
तुलापुरुसदांत—देखो 'तुलादांन' ।
तुलामांन–सं०पु० [सं० तुलामान] १ तौल का अभ्यास, अंदाज, अनुमान. २ बाट, तौल ।
तुलायोड़ौ–भू०का०कृ०—तौल कराया हुआ, तुलाया हुआ ।
(स्त्री० तुलायोड़ी)
तुलावट–वि०—तौलने वाला । उ०—चौधरी चोकड़ती रे, तुलावट खाती रे, कायथ कांनूगा रे, केई लेता चूंगा रे ।—जयवांणी

सं०स्त्री०—तोलने की क्रिया।

तुलावणो, तुलाववो—देखो 'तुलाणो, तुलावो' (रू.भे.)

तुलावियोड़ो—देखो 'तुलायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० तुलावियोड़ी)

तुलि—वि० [सं० तुल्य] तुल्य, समान, सदृश।

सं०स्त्री०—१ तराजू। उ०—बाहुड़ि आय मंत्री इम बोलै। तुलि मेधा धरि धरि बोह तोलै।—सू.प्र.

२ तुला राशि। उ०—तुलि बैठो तरणि तेज तम तुलिया, भूप करणय तुलता भू भाति। दिणि दिणि तिणि लघुता प्रामै दिन, राति राति तिणि गौरव राति।—वेलि.

रू०भे०—तुलि।

तुलियोड़ो—भू०का०कृ०—१ तराजू पर अंदाजा हुआ, तौला हुआ. २ तौल या मान में बराबर उतरा हुआ. ३ बंधे हुए मान का अभ्यास हुवा हुआ, अंदाज हुवा हुआ. ४ किसी अस्त्र को भली प्रकार चलाया हुआ, सधा हुआ. ५ तैयार हुवा हुआ, उद्यत. ६ किसी आधार पर टिका हुआ, ठीक अनुमान के साथ टिका हुआ. ७ समझ में बैठा हुआ, ध्यान में उतरा हुआ. ८ समान हुवा हुआ, तुल्य हुवा हुआ।

(स्त्री० तुलियोड़ी)

तुलो—सं०पु०—तराजू का पलड़ा। उ०—तुके भुज रास नीवाज भाला तठी। जोधपुर भुकै बाजी तुलां जेम।—जसजी आढ़ो

तुल्य—वि० [सं०] समान, बराबर (रू.भे.)

तुल्यजोग—देखो 'तुल्ययोग' (रू.भे.)

तुल्यता—सं०स्त्री० [सं०] बराबरी, समता, सादृश्य।

तुल्यप्रधानव्यंग—सं०पु० [सं० तुल्यप्रधानव्यंग्य] वह व्यंग्य जिसमें वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ समान हो।

तुल्ययोग, तुल्ययोगिता—सं०स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें अनेक उपमेयों अथवा अनेक उपमानों का एक ही धर्म कहा जाय। इसके तीन भेद होते हैं।

रू०भे०—तुल्यजोग।

तुल्ययोगी—वि०—समान संबंध रखने वाला।

तुल्ल—देखो 'तुल्य' (रू.भे.) उ०—सब्बे भला मासड़ा पण बइसाह न तुल्ल। जे दवि दाधा रूंखड़ां, तीहूं मांथइ फुल्ल।—रा.सा.सं.

तुव—सर्व०—१ तुम. २ तेरा, तुम्हारा. ३ तुझे, तुझको।

उ०—नर नाग असुर सुर नीम वण, अलख पुरुस आदेस तुव।

—ह.र.

तुवर—देखो 'तवंर' (रू.भे.)

तुवाळो—देखो 'तुआळो' (रू.भे.)

तुसंडा—सर्व०—तेरा, तुम्हारा। उ०—फुरियंदा फुरमांण नर, रहमांण तुसंडा।—केसोदास गाडण

तुसंडो—सं०पु०—अपराध, गुनाह।

सर्व०—तेरा, तुम्हारा।

तुस—सं०पु० [सं० तुष] १ अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी।

उ०—आंना अध आंना अरथ, तुरत विगाड़ै तांन। बदळै तुस रै वांणियो, धुर गोढा लै धांन।—बां.दा.

मुहा०—तुस उतारणो—तुष उतारना, कूट-पीट कर साफ करना।

कहा०—आंख में पड़ियो तुस ओही हुओ मिस—आंख में गिरा तुष यही बना मिस। छोटा सा सहारा मिलने पर बहाना बना लेने पर कही जाने वाली कहावत।

२ सोने-चांदी का छोटा कण।

वि०—तुच्छ, थोड़ा, कम। उ०—सह वातां समरथ्थ करै तुस रंक नै राजा। सह वातां समरथ्थ पर्वै तारण दध पाजा।—ज.खि.

रू०भे०—तुसी।

अल्पा०—तुसियो।

तुसग्रह—सं०पु० [सं० तुषग्रह:] अग्नि।

तुसर—सं०पु०—तृण, तिनका। उ०—हरी तुसर ना नांव, छांट भर जळ न कोसां। ऐड़ी आपत खड़ा खेजड़ा राखै होसां।—दसदेव

तुसल्यो—सं०पु०—एक प्रकार के अशुभ रंग का घोड़ा (शा.हो.)

तुसाग—देखो 'तुसानळ'।

तुसाड़, तुसाड़ो, तुसाड, तुसाडो—सर्व० (स्त्री० तुसाड़ी, तुसाडी) तेरा।

उ०—सच्ची एक तुसाडी सेवा, दूजी गल्ल न दिल्ल।—ध.व.ग्रं.

तुसानळ—सं०पु० [सं० तुषानल] भूसी अथवा घासफूस की आग।

तुसार—सं०पु० [सं० तुषार] १ हवा में मिली भाप जो अत्यधिक शीत के कारण सूक्ष्म जलकण के रूप में हवा से पृथक होकर वस्तुओं पर जमती है, पाला. २ हिम, बर्फ। उ०—तर तुसार दव जळै, सीस माधव रुत आवै। ग्रीखम रैंगा गात जळण वरसात मिटावै।

—रा.रू.

३ ठंडक। उ०—जग संतोस तुसार नर, वसै निरंतर वंक। तियां लोभ ग्रीखम तणी, सुपनै ही नहिं संक।—बां.दा.

४ एक प्राचीन देश का नाम जहां के घोड़े प्रसिद्ध हैं. ५ तुषार देश का घोड़ा।

वि०—बरफ की भांति पूर्ण ठंडा।

तुसारकर, तुसारकांति—सं०पु० [सं० तुषारकर, तुषारकांति] हिमकर, चंद्रमा।

तुसारपाखांण—सं०पु० [सं० तुषारपाषाण] १ ओला. २ बरफ।

तुसारमूरति, तुसाररसमि, तुसारांसु—सं०पु० [सं० तुषारमूर्ति, तुषाररश्मि, तुषारांशु] चन्द्रमा (अ.मा., नां.मा.)

तुसाराद्रि—सं०पु० [सं० तुषाराद्रि] हिमालय पर्वत।

तुसिणीअ—सं०स्त्री० [सं० तूष्णीक] मौन भाव, मौनवृत्ति (जैन)

तुसित—सं०पु० [सं० तुषित] १ एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में १२ हैं. २ विष्णु. ३ एक स्वर्ग का नाम (बौद्ध)

तुसियो—देखो 'तुष' (अल्पा., रू.भे.) उ०—अम्रित भोजन छोडनै हो

मुनिवर, तुसिया को कुण खाय। देव लोक रा सुख देखनै हो मुनिवर, नरक न आवै दाय।—जयवांणी

तुसी—देखो 'तस' (रू.भे.)

तुसै-सर्व०—तुम्हारा, तेरा।

तुस्ट-वि० [सं० तुष्ट] १ संतोष-प्राप्त, संतुष्ट, तृप्त. २ प्रसन्न, खुश। रू०भे०—तुट्ठ।

तुस्टणौ, तुस्टबौ—देखो 'तूठणौ, तूठबौ' (रू.भे.)

तुस्टता-सं०स्त्री० [सं० तुष्टता] १ संतोष, तृप्ति. २ प्रसन्नता।

तुस्टमांन-वि० [सं० तुष्टमान] १ अनुकूल. २ प्रसन्न। उ०—तठै स्री गोरखनाथजी तुस्टमांन हुयनै बोलिया—राजा! मांग, तनै तूठी चाहीजै सो मांगलै।—रीसाळू री वात

तुस्टि-सं०स्त्री० [सं० तुष्टि] १ संतोष, तृप्ति. २ अनुकूलता. ३ प्रसन्नता।

रू०भे०—तुठि।

तुस्टियोड़ौ—देखो 'तूठियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तुस्टियोड़ी)

तुस्णि-वि० [सं० तूष्णीम] शान्त, मौन। उ०—यती सुसील डील में न तुस्णि सील योग में।—ऊ.का.

तुस्ततुरंग-सं०पु०—घोड़ा।

तुस्सांडौ-सर्व० (स्त्री० तुस्सांडी) तेरा। उ०—तरै कागड़ै कह्यौ तुस्सांडै जोवने चैन रख अस्सांडा लेख है त्यूं व्हैगा।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

तुह-सर्व०—तुझ (जैन) उ०—तुह मुह चंद विलो अणेण मह नाह सुहंकर।—स.कु.

क्रि०वि० [सं० ततः खलु=प्रा० तओ खु=तओहु=अप. तउहु=राज. तउह=तुह] तदपि, तो भी। उ०—तेह नूं रूप ते तुह ज खरूं जु थाइ पटरांणि।—नळाख्यांन

तुहइ-अव्य०—तदपि, तो भी (उ.र.)

तुहफौ—देखो 'तोफौ' (रू.भे.)

तुहमत—देखो 'तोहमत' (रू.भे.)

तुहां-सर्व०—आप, तू। उ०—सबै तुझ मंझ तुहां थिय सब्ब। उपज्जहि जेम सु अंबुद अब्ब।—ह.र.

तुहाइळौ—देखो 'तुहाळौ' (रू.भे.) उ०—तारण नांम तुहाइळौ, अइयौ केवळ आप।—पी.ग्रं.

तुहार, तुहारइ, तुहारौ-सर्व० (स्त्री० तुहारी) तेरा, तुम्हारा।

उ०—१ ढोला आंमण दूमणउ, नख ती खूदइ भीति। हम थां कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीत।—ढो.मा.

उ०—२ ध्यांन कर थारौ धरम, अलख अपंपर आप। महादेव सरीखा मरद, जपै तुहारौ जाप।—पी.ग्रं.

तुहाळ, तुहाळोय, तुहाळौ-सर्व० (स्त्री० तुहाळी) तेरा, तुम्हारा।

उ०—१ अछै सब्र मांझ तु आप अळूझ। गोविंद! तुहाळ लवौ हिव गूझ।—ह.र.

उ०—२ तुंहीज समंद तुंहीज तरंग, अनीयन मांय तुहाळा अंस।

—ह.र.

उ०—३ जग में रांम तुहाळै जोड़ै, हुवौ न कोई फेर हुवै।—र.रू.

उ०—४ एकण आस तुहाळी ऊपर, सीसोदा आवै सह कोय।

—महारांणा हमीर री गीत

रू०भे०—तुहाइळौ।

तुहिन-सं०पु० [सं०] १ पाला, हिमकण. २ हिम, बरफ।

उ०—नर माधवनळ निरमि करि, कांम कंदळा नारि। कुंडाल्यां बि कमळ भूह, तुहिन किरण तिमिरारि।—मा.कां.प्र.

३ चांदनी।

स०स्त्री०—४ शीतलता।

रू०भे०—तूहिन, तूहीन।

तुहिनगिरि-सं०पु० [सं०] हिमालय पर्वत।

तुहिनांसु, तुहिनास्त्र-सं०पु० [सं० तुहिनांशु] चंद्रमा।

तुहें-सर्व०—तुम्हें।

तुह्मारडौ—देखो 'तुम्हारौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ लेखण ताहरइ लेखवइ, चौद लोक नी चाल। चित्र विचित्र? तुह्मारडी, हूं छउं नाह नी बाल।—मा.कां.प्र.

उ०—२ हूं लूकिउ रे लाडकी? दिहाडी दूरि पीयांण। माहरू भमइ तुह्मारडा, पंजर पूठइ प्रांण।—मा.कां.प्र.

(स्त्री० तुह्मारडी)

तुह्य-सर्व—तुम्हारा, तेरा। उ०—हळधर बंधव गोकुळवाळ, खिमावंत साधुन दुस्ट खैगाल। तवै जै नांम अहोनिस तुह्य, जरांतक काळ न व्यापै जम्म।—ह.र.

तूं-सर्व० [सं० त्वम्] तू, तुम। उ०—प्रांणी तूं डूबौ पुखत, मोह नदी रै मांहि। देव नदी में डूबियौ, नख पग हुंदौ नांहि।—बां.दा.

मुहा०—१ तूंतड़ाक—अशिष्ट शब्दों में वाद-विवाद, बोलचाल.

२ तूं तूं मैं मैं—झगड़ा-फिसाद करना. अशिष्ट शब्दों में वाद-विवाद करना।

रू०भे०—तुं, तुंअ, तुंह, तु, तुअ।

तूंअर—देखो 'तंवर' (रू.भे.) उ०—भजि जात प्रजा मय वात भगेलां, पाटण तूंअर कंप पुरौ।, वड़गूजर जाट अहीर तजै वळ, दाट लगा पुर राट दुरै।—रा.रू.

तूंअरइ, तूंअरि-सं०स्त्री०—तुंबरि, तूंबी (उ.र.)

तूंकार, तूंकारचउ—देखो 'तुंकारौ' (रू.भे.) उ०—जिण कीधउ हो सदा हाल हुकम्म, तउ वे तूकारयउ किम खमइ।—स.कु.

तूंकारणौ, तूंकारबौ—देखो 'तूकारणौ, तूकारबौ' (रू.भे.)

तूंकारौ—देखो 'तुंकारौ' (रू.भे.) उ०—ते तूंकारौ किम खमै।

—वृहत् स्तोत्र

तूंग-सं०स्त्री०—१ आग की चिनगारी। उ०—धीर जवाहर अडिर

आगि झड़ै छै। जिकै तूंग उडि उडि कापड़ां में पड़ै छै।
—पनां वीरमदे री वात

रू०भे०—तुंगार, तुंगारी।

२ देखो 'तुंग' (रू.भे.) उ०—१ घणा नींदाळवां नींद वारी घणी तूंग नह छै भली, हींस घोड़ां तणी।—हा.झा.

उ०—२ पांच अथवा छ री मण धांन रंधायो। पछै दारू री तूंगां मण ५०-६० री भराई, कसूंभी मणांबंध कढ़ायो।—रा.सा.सं.

तूंगणौ, तूंगबौ—देखो 'तुंगणौ, तुंगबौ' (रू.भे.)

तूंगिम-सं०स्त्री० [सं० तुंग] १ महिमा, गौरव। उ०—भगवंत सुतन हुवौ त्रिहुं भुवण घण दीहां लगि नांम घणौं। ब्रह्मा विसन महेस वदीतौ तप तूंगिम जस तूझ तणौ।—गोपाळ मीसण

२ ऊंचाई, उच्चता।

तूंगियरौ-सं०पु०—फौज का एक भाग, दल, टुकड़ी। उ०—धक सांभळ चाक चढ़ी धर यूं, भुरिया गिर पाधर भंगर यूं। पतसा लुळ लेवण वित्त परा, असवार खड़ै अस तूंगियरा।—पा.प्र.

तूंगियोड़ौ-भू०का०कृ०—छोटे छोटे टांकों द्वारा ठीक किया हुआ।
(मि० तीवियोड़ौ)
(स्त्री० तूंगियोड़ी)

तूंगियौ—देखो 'तूंग' (अल्पा., रू.भे.)

तूंगी-सं०स्त्री०—१ पृथ्वी, भूमि. २ नाव, नौका (डिं.को.)

तूंगौ-सं०पु०—सेना, फौज की टुकड़ी। उ०—१ भिड़ियौ मालौ अउब भत्त, रीदां सगत रही न। किल तेरे तूंगा किया, अजड़ां तेरे तीन।
—बां.दा.

तूंछणौ, तूंछबौ-क्रि०अ० [सं० तृष्ट] तृषित होना, प्यासा होना। उ०—कुंती जळ विणू तूंछोइ। तहि हिडंब जळ लेउ आवइ।
—पं पं.च.

तूंछियोड़ौ-भू०का०कृ०—तृषित, प्यासा।
(स्त्री० तूंछियोडी)

तूंज-सं०पु०—एक प्रकार का बर्तन विशेष? उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति इकत्रीसमी तार रा पुरांणा पोसत। मंडवाई रा नीपनां, आगै बखांणिआ तिण भांति रा, तजारी तूंज, घणी कासमीरी केसर, घणी ऊजळी मिसरी रै भेळि कपूर वासिअै पांणी री कल्हारी झारीजै छै।—रा.सा.सं.

तूंजी—देखो 'तुजीह'।

तूझ-सर्व०—१ तुझको, तुझे. २ तुम्हारा।

तूंड—देखो 'तुंड' (रू.भे.) उ०—दुसमण सगळा रोळदे, खूब चला तूं तूंड। तो डाढ़ाळा वाछड़ा, गुड़ सूं भरस्यूं रुंड।
—डाढ़ाळा सूर री वात

तूंडी-सं०स्त्री०—१ नाव, नौका। उ०—तंब तणी पय धार लेवतां, सगत वधारै पांण सिताव। तूंडी उदध तणै डूबतां, ग्राढ़ै सुत तारियौ गाव।—चौथ वीठू

२ पेंदा।

तूंडौ-सं०पु०—तल, पेंदा।

तूंण-सं०पु० [सं० तूण:] तर्कश। उ०—कटी तूंण पांणं सर चाप अमाप तेजं कळासं।—र.ज.प्र.

तूंणणौ, तूंणबौ—देखो 'तुणणौ तुणबौ' (रू.भे.)

तूंणी-सं०स्त्री०—कमर, कटि।
रू०भे०—तूनी।

तूंणौ-सं०पु०—समय के पूर्व ही गिरा हुआ गर्भ (पशु)

तूंतड़, तूंतड़ौ, तूंतड़चौ-सं०पु०—१ बाजरी की बाल या भुट्टा. २ बाल के अन्दर का कच्चा दाना। उ०—त्रिया कहै पणि तुरत गरासे, सूखिम वीर चलावै। काचा तूंतड़ा कांनै डारै, सार सकळ चुणि खावै।—ह.पु.वा.

३ निकम्मी वस्तु. ४ घास विशेष।

वि०—दुर्बल, पतला, क्षीण।

रू०भे०—तूतड़, तूतड़ौ।

तूंतळौ-सं०पु०—१ बाजरी या ज्वार के भुट्टे का वह अंग जिसमें दाना लगा रहता है। इसके हटाने पर दाना साफ होता है. २ तुरई की बेल से मिलती-जुलती देवदाली नामक एक लता जिसके फल ककोड़े की तरह कांटेदार होते हैं।

तूंद—देखो 'तुंद' (रू.भे.)

तूंना-सर्व०—तेरा, तुम्हारा। उ०—जड़ौ रूप तूंना त्रणावंत जेहौ, कुहाड़ौ त्रणा ऊपरै मात्र केहौ।—ना.द.

रू०भे०—तूना।

तूंबड़ियाळौ-सं०पु०—१ 'तूंबड़ी' नामक वाद्य को बजाने वाला.
२ साधु, फकीर।

तूंबड़ियौ—देखो 'तुंबुक' (अल्पा., रू.भे.) उ०—पाचरिया चुग ऊंचा मेलै, तूंबड़िया गुड़ जावै। तूंबड़ियां री सिर में लागै, सूरदास गरळावै।
—रतनौ खाती

तूंबड़ी—देखो 'तुंबी' (अल्पा., रू.भे.)

तूंबड़ौ—देखो 'तुंबक' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—मटका जेहौ मूंडड़ौ, पड़चौ पाछटे खाग। तोउ उछट तूंबड़ौ, दड़ौ कि दोटे लाग।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तूंबर—देखो 'तोमर' (रू.भे.) उ०—रांणी मिरघावती जिकण पूठै देरावर। राजा मिण रांणियां तेण कुळ मोटौ तूंबर।—रा.रू.

तूंबिणि-सं०स्त्री०—एक प्रकार की लता या इसका फल कद्दू।
उ०—तूंबिणि तूरी आंगड़ी, आहिमांण त्रिपुरारि। तूरफळ तरसा उळी, त्रिजटा नइं त्रिव्रितारि।—मा.को.प्र.

तूंबी—देखो 'तुंबी' (रू.भे.)

तूंबु—देखो 'तुंबुक' (रू.भे.) उ०—भवि पहिलेरइ वंभणि हूंती। कडुउं तूंबु मुणिवर दिती।—पं.पं.च.

तूंबेल-सं०पु०—१ चारणों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.

२ दोहा छंद का भेद विशेष जिसमें तुकांत दूसरे और तीसरे चरण से मिलाया जाता है।

तूंबो—१ देखो 'तुंबुक' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'तमतूंबो' (रू.भे.) उ०—ऊख गिरी घर ऊपरै, यळ खांडां मय आव। तूंबा मीठम होय तो सूंबां होय सवाव।—बां.दा.

तूंमण—देखो 'तुंबी' (अल्पा., रू.भे.) (शेखावाटी)

तूंर-सं०पु०—गौड़ वंश के अन्तर्गत एक राजपूत वंश।

तूंराटी—देखो 'तंवरावटी' (रू.भे.) उ०—दिल्ली तूंराटी बीच रोकवा न पाया। तूंराटी तार तीर ज्यां सतेज आया।—सि.वं.

तूंवर—देखो 'तंवर' (रू.भे.) उ०—धरि उच्छव पाटण धणी, तूंवर वगसीरांम।—रा.रू.

तूंहट़-सर्व०—तेरा।

तू—देखो 'तूं' (रू.भे.) उ०—जग नायक चा नाह, विच जट जूट बसावियो। पावन गंग प्रवाह, पांणी तू कद परसही।—बां.दा.

सं०पु०—१ तू तू कर कुत्ते को पुकारने की ध्वनि।

मुहा०—तू तू करतौ फिरणौ—आवारा फिरना, भटकना।

वि०—२ युद्ध. ३ अंगुली. ४ हाथ. ५ कटाक्ष (एका.)

वि०—१ अशुद्ध. २ तुच्छ।

तूईजणौ, तूईजवौ-क्रि० भाव वा०—(पशु का) गर्भश्राव होना, गर्भपात होना।

कहा०—सौ लरड़ियां मांसू एक तूईज जावै तौ कांई डर—सौ भेड़ में से यदि एक का गर्भश्राव हो भी जाय तो कोई हानि नहीं। अधिक व्यक्तियों के कार्य में यदि एक का सहयोग प्राप्त न भी हो तो उससे कोई हानि नहीं होती।

तुईजणौ, तुईजवौ, तूणौ, तूवौ, तू'णौ, तू'वौ—रू०भे०।

तूईजियोड़ौ-भू०का०कृ०—(वह मादा पशु) जिसका गर्भपात हो गया हो।

रू०भे०—तूईजियोड़ौ।

तूकार—देखो 'तुंकारौ' (रू.भे.)

तूकारणौ, तूकारवौ-क्रि०स० [सं० त्वंकारः] तू तू कह कर सम्बोधन करना, अशिष्ट सम्बोधन करना। उ०—तू, तूकारेह सु कवि विरदावै सदा। दत तूं हैवर देह, तू जेहल जीकारा दिए।—बां.दा.

तुंकारणौ, तुंकारवौ, तुकारणौ, तुकारवौ, तूंकारणौ, तूंकारवौ—रू०भे०

तूख-सं०पु० [सं० तुष] तिनके का वह छोटा तिनका जिससे दोना बनाने के काम में लिया जाता है।

तूड़ौ, तू'ड़ौ—देखो 'तसतूंबौ' (रू.भे.)

तूछ—देखो 'तुच्छ' (रू.भे.) उ०—अंत उछाह रिम राहि उर आंणियौ, जुड़ंतै वहळ दळ तूछ जांणियौ।—गिरधास रौ गीत

तूछरेळ-वि०—तुच्छ। उ०—तंही लंक सांगा सौ जोजनां गिणै तूछरेळ।—र.ज.प्र.

तूज—देखो 'तुझ' (रू.भे.) उ०—अति विरद वहादर तव अवूज। तरवार बहादुर विरद तूज।—वि.सं.

तूजो—देखो 'तुजीह' (रू.भे.) (अ.मा.) उ०—गुपत छुरा पासियां कटारां, चूगां चकर तूजीयां कूंत भूथांण हवाई।—बखतौ खिड़ियो

तूझ, तूज्झ—देखो 'तुझ' (रू.भे.) उ०—१ गळ मुंडमाळ मसांण ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभाव सूं, संभु अपावन साज।—बां.दा.

उ०—२ धूप दांन क्रीत रांम माह वाह मोटा धणी। तीनूं बातां तूझ तणी मोख री दातार।—रा.रू.

तूटणी-सं०स्त्री०—नसों में होने वाला दर्द।

तूटणौ, तूटवौ—देखो 'टूटणौ, टूटवौ' (रू.भे.) उ०—१ कमालदी गढ़ आय घेरियौ, घणा दिन हुवा पण गढ़ तूटौ नहीं।—नैणसी

उ०—२ पछै पड़िहार तूट गया, सारी खरड़ केलणां रै हेठै आई।—नैणसी

उ०—३ तूटै नीर तळाव रौ, खूटै आंका खीर। भांणूं वन पावै भुटौ, नगियौ पालर नीर।—बां.दा. ख्यात

उ०—४ छत्रपति तुंग गमा गम छूटा, तिकरि गयण सूं नाखत्र तूटा।—रा.रू.

तूटियोड़ौ, तूटोड़ौ, तूटौ—देखो 'टूटियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० तूटियोड़ी, तूटोड़ी, तूटी)

तूठ—देखो 'तुस्ट' (रू.भे.) उ०—रिभां खग झाट हणै जमरूठ। तठै 'वखतेस' दलावत तूठ।—सू.प्र.

तूठणौ, तूठवौ-क्रि०अ० [सं० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] १ प्रसन्न होना, खुश होना। उ०—१ राव लाखण नूं नाडूल देवी आसापुरी तूठी नाडूळ रौ राज दियौ।—नैणसी

२ अनुकूल होना. ३ तुष्टमान होना। उ०—जेहनै तूठारे मोज लहीजीयै रे (वि.कु.)

तूंठणहार, हारौ (हारी), तूठणियौ—वि०।

तूठवाड़णौ, तूठवाड़वौ, तूठवाणौ, तूठवावौ, तूठवावणौ, तूठवाववौ, तूठाड़णौ, तूठाड़वौ, तूठाणौ, तूठावौ, तूठावणौ, तूठाववौ—प्रे०रू०।

तूठिओड़ौ, तूठियोड़ौ, तूठचोड़ौ—भू०का०कृ०।

तूठीजणौ, तूठीजवौ—भाव वा०।

तुस्टणौ, तुस्टवौ—रू०भे०।

तूठियोड़ौ, तूठौ-भू०का०कृ०—१ प्रसन्न हुवा हुआ. २ अनुकूल हुवा हुआ (स्त्री० तूठियोड़ी, तूठी)

तूण-सं०पु० [सं० तूणः] तीर रखने का चोगा, तर्कश। उ०—कड़ियां खग खंजर तूण कसै, तद पांण कवांण लई तरसै।—रा.रू.

रू०भे०—तून।

तूणियउ-वि० [सं० तूणितः] बुना हुआ (उ.र.)

तूणी-सं०स्त्री० [सं०] १ तरकश, तूणीर. २ मूत्राशय से सम्बन्धित एक वात रोग जिसमें गुदा और पेडू तक दर्द होता है।

तूणीर-सं०पु० [सं०] तरकश, निषंग।

रू०भे०—तूनीर।

तूणौ-वि०—तिगुना। उ०—लूटैं खावैं धन धन में धर लेवैं। दोढ़ा दूणां रा तूणा कर लेवैं।—ऊ.का.

तूणौ, तूबौ—देखो 'तुईजणौ, तुईजवौ' (रू.भे.)

तूत-सं०पु०—१ स्तम्भ, खम्भा। [सं० तूद] २ शहतूत।

तूतक-वि०—१ मूर्ख, अज्ञानी. २ लम्बा।

तूतड़, तूतड़ौ—देखो 'तूंतड़' (रू.भे.) उ०—पराकिरत पढ़ै रांमदास, संसकरत ले जोय। सबही कूकस तुतड़ा, रांम नांम कण होय।
—रांमदास की वांणी

तूताड़ियौ-सं०पु०—भेड़ व बकरी के छोटे बच्चों को रखने का स्थान विशेष।

तूताड़ी-सं०स्त्री०—बालकों का मुंह से फूंक देकर बजाया जाने वाला बाजा या वाद्य विशेष जो किसी वृक्ष के चौड़े पत्ते या सरकंडे की नली आदि से बनाया जाता है।

तूतियौ-सं०पु०—नीला थोथा, मोर थोथा।

तूती-सं०स्त्री०—१ मुंह से बजाया जाने वाला एक वाद्य जो प्रायः नौबत के साथ बजाया जाता है, शहनाई।

मुहा०—तूती बोलणी, तूती बाजणी—किसी की तूती बोलना, प्रभाव के कारण अधिक चलना, प्रभाव का जमना।

२ एक मटमैले रंग की चिड़िया जो बहुत अच्छी बोलती है।

उ०—दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै, सुवा केळ करै छै, तूती बोल रही छै, लाल हाक मार रह्यौ छै।—रा.सा.सं.

३ हाहाकार, चीत्कार।

उ०—धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै। पापी पुरखां नै सदव्रत संहारै। तद अनुग्रह बिन हा ग्रिहग्रिह तूती। जिण तिण बिग्रह में निग्रह री जूती।—ऊ.का.

तूदाग्र-सं०पु० [सं०] उदर का आगे बढ़ा हुआ भाग, तोंद (ह.नां.)

तून—देखो 'तूण' (रू.भे.)

तूनां, तूना-सर्व०—देखो 'तूंना' (रू.भे.) उ०—जम रा जम तूना जयौ, बडा धिणी तूं वाह वाह।—पी.ग्रं.

तूनारा-सं०स्त्री०—एक जाति विशेष जो फटे हुए कपड़े में तागे भर कर ठीक करती है (व.स.)

तूनारौ-सं०पु०—तूनारा जाति का व्यक्ति।

तूनी-सं०स्त्री०—१ एक रोग विशेष. २ देखो 'तूंणी' (रू.भे.)

तूनीर—देखो 'तूणीर' (रू.भे.) (अ.मा.) उ०—निज कटि सुघट तट तूनीर, सर धनु सकर धार सुधीर। भंजण कोड़ संतां भार रे, मन गाव स्री रघुवीर।—र.ज.प्र.

तूप-सं०पु० [सं० स्तुप समुच्छ्राये] घृत, घी (ह.नां.) उ०—निडर भूप नागोर समर झोकै दळ सब्बळ। क्रोध रूप कळकळै तूप सींचै किर मंगळ।—सू.प्र.

तूफांन-सं०पु० [अ० तूफान] १ वायु के वेग का उपद्रव, वात-चक्र. २ डुबाने वाली बाढ़। उ०—मयंदी बरौ कांन्ह रै थाप मारी, तरी साह तूफांन रै माह तारी।—मे.म.

क्रि०प्र०—आणौ, ऊठणौ।

३ प्रलय. ४ आपत्ति, संकट. ५ उपद्रव, झगड़ा, फिसाद।

मुहा०—तूफांन मचाणौ—तूफान मचाना, उपद्रव करना, शोरगुल मचाना।

रू०भे०—तोफांन।

तूफांनी-वि० [फा०] तूफान खड़ा करने वाला, उपद्रवी, उग्र, प्रचंड।

तूबणौ, तूबबौ—देखो 'तीवणौ, तीवबौ' (रू.भे.)

तूबियोड़ौ—देखो 'तीबियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तूबियोड़ी)

तूमड़ी—देखो 'तुंबी' (अल्पा., रू.भे.)

तूमड़ौ—देखो 'तुंबुक' (अल्पा., रू.भे.)

तूमां-सर्व०—तुम।

तूमार—देखो 'तुमार' (रू.भे.)

तूमौ—देखो 'तुंबुक' (अल्पा., रू.भे.)

तूयोड़ौ—देखो 'तूईजियोड़ौ' (रू.भे.)

तूरंग, तूरंगम—देखो 'तुरंग' (रू.भे.)

तूर-सं०पु० [सं० तूर्य] १ एक प्रकार का बाजा जो मुंह से बजाया जाता है। उ०—विरांण सब्द सुणिया विहद्द। नीसांण तूर अनहद्द नद्द।
—धि.सं.

[सं० तुवरी] २ अरहर नामक द्विदल अनाज।

सं०स्त्री०—देखो 'तुर' (रू.भे.)

तूरण-क्रि०वि० [सं० तूर्णम्] शीघ्र (ह.नां.)

तूरही—देखो 'तुररी' (रू.भे.)

तूरांन—देखो 'तुरांन' (रू.भे.) उ०—तिणरी धाक ईरांन, तूरांन, रूम, स्यांम, फिरंग, रूस, चीन्ह, महाचीन देस देसां रा पातसाह इण रा हुकम रा आधीन सारा डरै।—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

तूरांनी—देखो 'तुरांनी' (रू.भे.) उ०—घर हिंदू दूजां रजधांनी। तुरक 'इरांन' अनै 'तूरांनी'।—सू.प्र.

तूराटी—देखो 'तंवरावटी' (रू.भे.)

तूरी-सं०पु०—१ भाट जाति की एक शाखा जिसके लोग मोचों व चमारों की विरुदावली गा कर उनसे अपनी जीविका प्राप्त करते हैं
(मा.म.)

[सं० तुरंग] २ घोड़ा (ह.नां.) ३ देखो 'तुअर'।

४ देखो 'तोरू' (रू.भे.) उ०—तूंबिणि तूरी त्रांगड़ी, आहिमांण त्रिपुरारि। तूरफळी तरसाउळी, त्रिजटा नइं त्रिवितारि।
—मा.कां.प्र.

तूरीउं-वि०—चतुर्थ, चौथा। उ०—सिखा फरहरती, उत्तरासंगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउं जनोई, सिर भद्रिउं तिलक वधारिउं।
—व.स.

तूरय—देखो 'तूर' (रू.भे.) उ०—प्रभात समउ हुउ, अंधकार, फीटइ,

गाय तणा गाळा खूटा, तारागण विरळ हुउ, चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकड़ां तणी उलि लवई, देव तणां बार ऊघड़ियां, प्रभातिक तूरच वाजियां।—व.स.

तूळ, तूल–सं०पु० [सं० तूल] १ कदम का वृक्ष (अ.मा.) २ शहतूत का वृक्ष. ३ रुई। उ०—१ जाडा पापां दाहे जेही, तिलकरण दहण अगण मण तूल।—र.ज.प्र.

उ०—२ कासी की हांसी करी, लांबी दे ललकार। पिंजण पावै तूल जिम, उडतै फिरे अंगार।—ऊ.का.

तूळक–सं०स्त्री० [सं० तूल] रूई।

तूलता–सं०स्त्री० [सं० तुल्यता] तुल्यता, समानता।

तूळिका, तूळी, तूली–सं०स्त्री० [सं० तूलिः] १ चितेरे की कूंची. २ सींक. ३ तार आदि का छोटा व सीधा टुकड़ा. ४ आग जलाने की तिली।

तूस–सं०पु०—१ एक प्रकार की लता तथा उसका फल जो कच्ची अवस्था में तो सफेद धारीयुक्त हरा रंग और पकने पर पीले रंग का होता है। इंद्रायण का फल। उ०—खळ न तजै मन खार, जरा हुई वूढ़ो जोइ। पीळो हुवो पाकि, तूस खारो फळ तोइ।—घ.व.ग्रं.

२ भय, डर। उ०—उत्तम मूंसे अेक झड़, मध्यम दूहा मूस। अधम गीत मूंसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—बां.दा.

रू०भे०—तूह।

३ खुरासान का एक शहर. ४ खुरासान का एक प्रदेश जहां पर तूस शहर है।

तूसड़ौ—देखो 'तसतूंबौ' (अल्पा., रू.भे.)

तूसण—देखो 'तूस' (रू.भे.)

तूसणौ, तूसबौ–क्रि०अ० [सं० तूष=तुष] खुश होना, प्रसन्न होना, संतुष्ट होना (उ.र.) उ०—कवहूं रूसै कवहूं तूसै, नेह म्रिदंग वजावंती। कवहूं तांमी कवहूं सीली, जीवां जेर निरावंती।—ह.पु.वा.

तूसी–वि०—१ तूस देश का. उ०—वलखी हिजवी वाबरी, रूसी तूसी रोद। अै ले अकव्वर आवियो, सझ ऊभा सीसोद।—बां.दा.

२ देखो 'तूस' (३, ४)

तूह—देखो 'तूस' (रू.भे.)

तूहिन, तूहीन–सं०पु० [सं० तुहिन] १ शीत, जाड़ा। उ०—तूहिन कंठीरव तन कुंजर तावै। डग डगि चढ़ियोड़ा मरिया डुसकावै।—ऊ.का.

२ देखो 'तुहिन' (रू.भे.)

तें—देखो 'ते' (रू.भे.) उ०—थूळ उथापिया साद तें थापिया। किलंग रा सेन तरुआरि सां कापिया।—पी.ग्रं.

तेंण–सर्व०—उस।

क्रि०वि०—उसमें। उ०—चाल सखी तिण मंदिरइं, सज्जण रहियउ जेंण। कोइक मीठउ वोलडइ, लागो होंसइ तेंण।—ढो.मा.

तेंतीस—देखो 'तेतीस' (रू.भे.)

तेंतीसौ—देखो 'तेतीसौ' (रू.भे.)

तेंदूओ–सं०पु०—विल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु।

तेंदिय, तेंद्रिय—देखो 'त्रींद्रिय' (रू.भे., जैन)।

तेंहवार—देखो 'तिवार' (रू.भे.) उ०—वड़ला आयो आयो राखड़ियो तेंहवार, कुण नै बांधं ओ थारै राखड़ी।—लो.गी.

ते–सं०पु०—१ यमुना का जल. २ नासिका, नाक. ३ देवता. ४ राक्षस. ५ पुत्र. ६ ज्ञान (एका.)

[फा० तह] ७ वर्षा के कारण जमीन के अन्दर तक होने वाली नमी या आर्द्रता।

क्रि०प्र०—जमणौ, जाणौ, पैठणौ, बैठणौ, लागणौ, होणौ।

मुहा०—ते दैणौ—१ अपनी थाह को प्रकट करना. २ ते होणौ—थाह होना, गाम्भीर्य होना।

[सं० तेज, प्रा० तेय] ८ देवी-देवताओं को दूध चढ़ाने का मुकर्रर दिन।

रू०भे०—तेह, त्रेह।

सर्व० [सं० एषः, प्रा० एहो] १ तूं, तुम, आप। उ०—१ वहता रहै विमांण, ले तट सूं वैकूंठ लग। ते इम करड़ी तांण, अंतक लोक उजाड़ियो।—बां.दा.

उ०—२ तिण करमे करि साध री, ते खाल हो उतारी राय।

—जयवांणी

२ इस। उ०—ते माटइ करिनइ मया रे, आंणी मन उपगार। आवी नइ मुझ थी मिळउ, दरसण द्यो इक वार।—वि.कु.

३ वह। उ०—ऊनमियउ उत्तर दिसइं, मेड़ी ऊपर मेह। ते विरहिणि किम जीवसे, ज्यांरा दूर सनेह।—ढो.मा.

४ व। उ०—१ विरळा इसड़ा ब्रह्मचारी रे, ते तो नैणे न निरखै नारी रे।—जयवांणी

उ०—२ हित सूं कमठा क्रत हरी, सेवै पुळक सरीर। वदन छिपावण देह विच, ते मांगै तदवीर।—बां.दा.

उ०—३ चिंता बंध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न वध्ध। जे नर चिंता वस करइ, ते मांणस नहि सिध्ध।—ढो.मा.

उ०—४ सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा सुकवि अनेक ते एक संथ स्री वरणण पहिलो कीजै तिणि, गूंथियै जेणि सिंगार ग्रंथ।—वेलि.

५ उन। उ०—सउदागर-सदेसडा सांभळिया स्रवणेहि। मारुवणी ते मन दहइ, मूक्यउ जळ नयणेहि।—ढो.मा.

६ अपने। उ०—बोलंति मुहुरमुह विरह गर्म वे, तिसी सुकळ निसि सरद तणी। हंसणी ते न पासै देखै, हंस हंस न देखै हंसणी।

—वेलि.

क्रि०वि०—इसलिये। उ०—वे हरि हर भजै अताए बोळै, ते ग्रव भागीरथी म तूं। एक देस वाहणी न आंणां, सुरसरि सम सरि वेलि सूं।—वेलि.

प्रत्य०—तृतीया या पंचमी विभक्ति का चिन्ह से। उ०—१ सब ही रमता रांम है, ता ते रांम कहाया हो। गुप्त होता प्रगट किया, सतगुरु दरसाया हो।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ माया मांयै ग्रभास चेतन का, ता ते तिरगुण जांना। सत-गुण ग्रधिक सोई है ग्यांना, रज तम दोई ग्रग्यांना।

—स्री सुखरांमजी महाराज

रू०भे०—तेह ग्रेह।

तेग्र–देखो 'तेज' (रू.भे.) (जैन)

तेइंदिय, तेइंद्रिय—देखो 'त्रींद्रिय' (रू.भे.) (जैन)

तेइयों—देखो 'तीयो' (रू.भे.) उ०—खापरै री बहू ग्ररज कीवी छै-धणियां री वेळा छै वयूं खबर लेसो तो तेइयै किरिया री सरबरा हुसी।—राजा भोज ग्रर खापरै चोर री वात

तेइस—देखो 'तेईस' (रू.भे.)

तेइसमौं, तेइसवौं—देखो 'तेईसमौं' (रू.भे.)
(स्त्री० तेइसमीं, तेइसवीं)

तेईस–वि० [सं० त्रयोविंशति, प्रा० तेवीसा] बीस ग्रौर तीन का योग, तेबीस।

सं०पु०—२३ की संख्या।

रू०भे०—तेइस, तेवीस, त्रेवीस।

तेईसमौं, तेईसवौं–वि०—२३ वां, तेवीसवां।
(स्त्री० तेईसमीं तेईसवीं)

रू०भे०—तेइसमौं, तेइसवौं, तेवीसमउ, तेवीसमौं।

तेईसेक–वि०—तेबीस के लगभग।

तेईसौ–सं०पु०—तेवीसवां वर्ष। उ०—प्रथम तेईसे, पछै ग्रठाईसे तीजक फेर छतीसे, चौथा फेर तयाळीसे जुमले चार वार नाथजी दुवारै बडा महाराज पधारिया।—वां.दा.ख्यात

रू०भे०—तेवीसो, त्रेवीसौ

तेग्रोतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तेग्रोतरमौं, तेग्रोतरवौं–वि०—तिहत्तरवां।
(स्त्री० तेग्रोतरमीं, तेग्रोतरवीं)

तेउ–सर्व०—१ उस। उ०—१ नरकपात ऊवेलइ जेउ, मोटा संकट छोडिउ तेउ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ मंत्रीसर नंदन मनमोहन, नांमिइं लच्छिनिवास। तेउ तीहइ भणइ मनखंति, लहूउ लीलविलास।—विद्याविलासपवाडउ

२ देखो 'तेज' (रू.भे.) (जैन)

रू०भे०—तेऊ।

तेउकाय, तेउक्काय—देखो 'तेजकाय' (रू.भे.) (जैन)

रू०भे०—तेऊकाय।

तेऊ—देखो 'तेउ' (रू.भे.) (जैन)

तेऊकाय— देखो 'तेजकाय' (रू.भे.)

तेग्रोतरौ–सं०पु०—७३ की संख्या का वर्ष।

तेग्रो-लेसा—देखो 'तेजो-लेस्या (रू.भे.) (जैन)

तेख–सं०पु०—१ मान, इज्जत, प्रतिष्ठा [सं० तीक्ष्ण] २ क्रोध, गुस्सा उ०—सरणौ ग्रजरौ संपज्यां, ताकै कुण कर तेख। तारख जिम तण तिलमळै, ग्रह ग्रज गळ ग्रवरेख।—रेवतसिंह भाटी

३ घमंड, ग्रभिमान (ग्र.मा.)

उ०—१ गुरु लघु विप्लुत करी, व्यंजन वरण विसेख। धूया माठा पड-मठा, ताल तणा तिहां तेख।—मा.कां.प्र.

उ०—२ कस्तूरी! चूरी करिउ, ऊगटि ग्रंग विसेख। ग्रंबर! ग्रति घण वीनवउं, तूय म छंडिसि तेख।—मा.कां.प्र.

सं०स्त्री०—४ बढ़ई के ग्रौजार 'रन्दे' के ग्रन्दर की तेज धार वाली लोहे की पत्ती।

रू०भे०—त्रेख।

तेखट, तेखटियौ–सं०पु०—ग्राभूषणों की खुदाई करने का एक उपकरण।

ग्रल्पा०—तेखटियौ।

तेखड़ियौ–भू०का०कृ०—१ क्रुद्ध हुवा हुग्रा. २ बिगड़ा हुग्रा. ३ नाराज हुवा हुग्रा।
(स्त्री० तेखियोड़ी)

तेखणौ, तेखवौ–क्रि०ग्र०—१ क्रुद्ध होना. २ नाराज होना. ३ बिगड़ना।

तेखळ, तेखळौ–सं०पु० [सं० त्रिश्रृंखल] १ घोड़े या गधे के दो पैर ग्रगले ग्रौर एक पैर पिछला शामिल बांधने की क्रिया. २ ऊंट के पिछले ग्रौर एक ग्रागे के पैर को बांधने का बंधन या इस प्रकार बंधे हुए पैर. ३ एक दिन छोड़ कर फिर दो दिन किया जाने वाला दधि-मंथन।

तेखांनौ–सं०पु० [फा० तहखाना] भूमि के ग्रन्दर बना कोठा, तहखाना।

तेखा–सं०पु०— ढोली जाति की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति जो पंवारों से निकले कहे जाते हैं।

तेखियौ–वि०—पापी, दुरात्मा।

तेखी, तेखीलौ–वि०—क्रोधयुक्त। उ०—१ दिस लंक ग्रंगद ग्राद द्वादस तहकिया तेखी। इक ग्ररण सों विच त्रिसा ग्रातुर दरि दृग देखी।
—र.रू.

उ०—२ थे ग्रणखीला म्हे तेखीला, थांसूं म्हांरै नहीं काज। मारूड़ा जी म्हारा ग्राया मांझल रात।—लो.गी.

तेग–सं०स्त्री० [ग्र०] तलवार, कृपाण। उ०—जाहरां तेग तूं सब जिहांन। खोटड़ ग्रमीर सिर विलद खांन।—वि.सं.

ग्रल्पा०—तेगौ।

मह०—तेगाळ।

तेगझाट–सं०पु०—युद्ध (ग्रसि युद्ध) (ग्र.मा.)

तेगधर–वि०—खड्गधारी, योद्धा। उ०—चमू मेल गज चढ़ै 'विजसाह' ढुळते चंवर, तेगधर जोधहर जवर ताळै।

—महाराजा विजयसिंह रौ गीत

तेगबंध–वि०—खड्ग् रखने वाला, तलवारधारी, योद्धा।

तेगाळ—देखो 'तेग' (मह., रू.भे.) उ०—गाळै मांण कायरां सोकिया तीर बांण गोळा, गजांकंध ढाळै पांण तोकिया तेगाळ। भांण रथां रोकिया गैणाग खेल रीधा भाळै, 'गीध' वाळै सत्रां धांण झोकिया वेगाळ।—जालमसिंह चांपावत रौ गीत

तेगिच्छ–सं०पु०—रोग का प्रतिकार, चिकित्सा (जैन)

तेगून–सं०स्त्री०—तलवार। उ०—घड़ी चार लां सांवठी सोर दग्गी। तप्यौ लोक तेगून की रीठ वग्गी।—ला.रा.

तेगो—१ देखो 'तेग' (अल्पा., रू.भे.) उ०—मरणं सूं जे डरै, लोटिया तोपां को भै खाय। तेगो तेरो करै म्यांन में, पूठो घर नै जाय।
—डूंगजी जवारजी री पड़
२ तलवार का धारदार पूरा भाग, तलवार की पाती।
उ०—खींया यूं खुरसांण, घण तेगो तरवार रो। मुखमल हंदे म्यांन, खबं विलूंबू खींवजी —र.रा.

तेघड़-सं०स्त्री०—स्त्री के पैर का आभूषण विशेष। उ०—दूजी बार नृत्य करती कुलांच मारी सु पग री तेघड़ थी तेरी कील उछळ पड़ी।
—पचदंडी री वारता

तेड-सं०स्त्री०—१ वह खाली स्थान जो किसी वस्तु के फटने पर सीधी लकीर सी हो जाती है, दरार।
क्रि०प्र०—आणी, आवणी, पड़णी, पटकणी।
२ किसी भोज आदि के अवसर पर आमंत्रित, समीपवर्ती गांवों के जाति बन्धुओं का समूह. ३ बड़े भोज का आयोजन जिसमें दूर-दूर से अतिथि निमंत्रित किये जाते हैं. ४ योनि, भग। उ०—तार रो नहीं सुख तेड़ में, पावे दुख अपार रो। सार रो वांण खटकै सदा, नेह पराई नार रो।—ऊ.का.

तेड़णो, तेड़बो, तेड़वणो, तेड़वबो—क्रि०स०—१ बुलाना।
उ०—१ बादसाह चाही कोल आपरो पाळजे, सो खजांनची नूं तेड़ नै कही—नकद खजांने रो लेखो करो।—नी.प्र.
उ०—२ चाढ़ि छाक मद भख ले चवियो, तवि कथ मुझ केम तेड़वियो।—सू.प्र.
[सं० तट उच्छ्रये] २ बच्चे को उठा कर गोद में लेना।
तेड़णहार, हारो (हारी), तेड़णियो—वि०।
तेड़वाड़णो, तेड़वाड़बो, तेड़वाणो, तेड़वाबो, तेड़वावणो, तेड़वावबो, तेड़ाड़णो, तेड़ाड़बो, तेड़ाणो, तेड़ाबो, तेड़ावणो, तेड़ावबो—प्रे०रू०।
तेड़िओड़ो, तेड़ियोड़ो, तेड़योड़ो—भू०का०कृ०।
तेड़ीजणो, तेड़ीजबो —कर्म वा०।
तेड़वणो, तेड़वबो, तेड़णो, तेड़बो—रू०भे०।

तेड़वियोड़ो—देखो 'तेड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० तेड़वियोड़ी)

तेड़ाड़णो, तेड़ाड़बो—देखो 'तेड़ाणो, तेड़ाबो' (रू.भे.)

तेड़ाड़ियोड़ो—देखो 'तेड़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० तेड़ाड़ियोड़ी)

तेड़ाणो, तेड़ाबो—क्रि०स० ('तेड़णो' क्रिया का प्रे०रू०) १ बुलवाना।
उ०—ओ किसो उपद्रव। ताहरां पंडित तेड़ाया, कहियो ओ किसो उपद्रव।—देवजी बगड़ावतां री वात
२ गोद में उठवाना
तेड़ाड़णो, तेड़ाड़बो, तेड़ावणो, तेड़ावबो, तेड़ाणो, तेड़ाबो—रू०भे०

तेड़ायोड़ो—भू०का०कृ०—१ बुलवाया हुआ. २ गोद में उठवाया हुआ
(स्त्री० तेड़ायोड़ी)

तेड़ावणो, तेड़ावबो—देखो 'तेड़ाणो, तेड़ाबो' (रू.भे.)
उ०—बोलइ बीसळदे परधांन, राय कुंवर आयो बहुमांन। राज कुंवर तेड़ावियो, पाट पटोला कुलह कवाई।—वी.दे.

तेड़ावियोड़ो—देखो 'तेड़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० तेड़ावियोड़ी)

तेड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—१ बुलाया हुआ, आमंत्रित. २ गोदी में लिया हुआ।
(स्त्री० तेड़ियोड़ी)

तेड़ियो—सं०पु०—स्त्रियों का गले में पहिनने का एक स्वर्ण आभूषण।
(मि० तिमणियो)

तेड़ो—सं०पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा (शा.हो.)

तेड़ो—सं०पु०—१ बुलाने की क्रिया या भाव, बुलावा।
उ०—१ कंदोई कह्यो हूं तो रातयूं उडीकतो रह्यो पण तेड़ो कोई आयो नही, नै साह नै फिकर हुवो।
—राजा भोज नै खापरा चोर री वात
उ०—२ हर मत छाडै रे हिंया, लिया चाहे जो लाह। दिल साचै तेड़ो दियां, नेड़ो लिछमी नाह।—र.ज.प्र.
क्रि०प्र०—आणो, मेलणो।
२ बाजरी के साथ खरीफ की फसल के अन्य अनाजों का सम्मिश्रण.
३ घाटा, कमी, अन्तर।

तेजंगी—वि० [सं० तेजोऽअंगी] तेजस्वी, जोशीला, पराक्रमी।

तेज—सं०पु० [सं तेजस्] १ दीप्ति, कांति, चमक। उ०—गिणका रो जे नर ग्रहै, कवरी डंड करेण। खाग ग्रहै किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण।—बां.दा.
२ पराक्रम, शौर्यबल, ओजस्विता। उ०—सुणिया 'पातल' समर रा, नीघसता नीसांण। तेज न मावै तन्न में, तन्न न मावै त्रांण।
—किसोरदांन बारहठ
मुहा०—तेज दिखाणो—तेज प्रकट करना, शौर्यबल दिखाना, बहादुरी का कार्य करना।
३ वीर्य, ओज।
यौ०—तेजधारी, तेजवांन।
४ पंचभूत तत्वों में से तीसरा, अग्नि (अ.मा.)
उ०—१ प्रथी अप तेज वायू अकास। नहीं कुछ जेथ स तेथ निवास।
—ह.र.
उ०—२ धरणी नीर तेज वायू नभ, सर्व सता प्रकासी। निराकार आकार में पूरण, नहिं आवै नहिं जासी।—स्री सुखरांमजी महाराज
५ प्रकाश, ज्योति। उ०—आखै कवि ईसर तेज अंबार। प्रभूजी टाळो जम्म प्रहार।—ह.र.
यौ०—तेजपुंज।
६ वस्तु या पदार्थ का सार, तत्व।
क्रि०प्र०—निकाळणो।

७ गर्मी, ताप. ८ सूर्य (ग्र.मा.) ९ किरण (ग्र.मा.)
१० स्वर्ण, सोना । उ०—तेज सोळमौं जूंझियौ हिंदू तुरक । 'ग्रमर' ग्रकबर तणै तखत ग्रागै ।—ग्रमरसिंह राठौड़ री वात
११ तारा (ग्र.मा.) १२ सत्वगुण से उत्पन्न लिंग शरीर.
१३ प्रताप, रौब. १४ तेजी, प्रचंडता, प्रबलता. १५ घोड़ा (डिं.नां.मा.)
(स्त्री० तेजण)
१६ पित्त. १७ मक्खन. १८ घोड़े का वेग या चलने की तेजी.
१९ दीपक (ह.नां.)
वि०—१ तीक्ष्ण धार का. २ तीक्ष्ण, तीखा. ३ चलने में शीघ्रगामी, वेगवान, फुर्तीला. ४ चंचल, चपल. ५ मंहगा. ६ उग्र, प्रचंड. ७ कांतियुक्त, चमकीला. ८ सुन्दर (ग्र.मा.) ९ शीघ्र प्रभाव डालने वाला, अधिक असर डालने वाला. १० कुशाग्र बुद्धि वाला, बुद्धिमान. ११ अधिक ।
रू०भे०—तेग्र, तेउ, तेऊ, तेजइ, तेजि ।
[सं० तेज+फा० ग्रंबार] १२ सूर्य (ह.नां.)

तेजग्रानूप—सं०पु०यौ०—नृप, राजा (डिं.को.)

तेजइ—देखो 'तेज' (रू.भे.) उ०—तेजइ पटळि सूरच निवारइ । स्वेत छत्र कि इंद्र ज डारइ ।—विराटपर्व

तेजकाय—सं०स्त्री० [सं० तेजस्काय] तेजस्काय, ग्रग्नि ।
रू०भे०—तेउकाय, तेउक्काय, तेऊक्काय ।

तेजकिरण—सं०पु०यौ० [सं तेजस् किरण] सूर्य ।

तेजग्गळ—वि०—तेजगति से चलने वाला । उ०—सेवक सिउं राइं कहिउं, सीख कही ते सार । पांन पटंबर पाठव्यां, तेजग्गळ तोखार ।
—मा.कां.प्र.

तेजग्रह—सं०पु०यौ०[सं० तेज+गृह] १ दीपक. प्रकाश, ज्योति (नां.मा.)

तेजचंड—सं०पु०यौ० [सं०] सूर्य ।

तेजण—सं०स्त्री०—घोड़ी ।

तेजधार, तेजधारी—वि० [सं० तेजधारिन्] ग्रोजयुक्त, तेजस्वी ।
सं०पु०—सूर्य ।

तेजपत्तौ, तेजपात—सं०पु० [सं० तेजपत्र] दालचीनी की जाति का एक पेड़ व उसका पत्ता । इसकी पत्तियां व छाल ग्रनेक ग्रोषधियों में काम ग्राती हैं । तेजपत्र ।

तेजपुंज—सं०पु०यौ० [स० तेज+पुञ्ज] सूर्य (डिं.को.)
वि०—ग्रप्रतिहत, तेजस्वी । उ०—ग्रागळी उन्नत पाछलि विनत व्रिक्ष भांजई चमकतउ चालइ बाहीयउ देखी न सहइ न सहइ ताज्यउ न सहइ वाज्यउ न सहइ रूप न सहइ प्रति रूप जिसउ तेजपुंज प्रत्यक्ष जिसउ जमराउ ।—व.स.

तेजवळ—सं०पु०यौ० १ पराक्रम, तेज. २ प्रताप ।
[सं० तेजोवती] ३ एक कांटेदार जंगली वृक्ष जिसकी छाल चरपरी होती है । उ०—तठा उपरांत इलूरा री कूंडी तेजवळ रौ घोटौ घोय तैयार कीजै छै ।—रा.सा.सं.
४ तुरई की लता ग्रौर उसका फल (ग्रमृत)

तेजमालोत—सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा ग्रौर उसका व्यक्ति ।

तेजरौ—सं०पु० [सं० त्रिज्वर] १ हर तीसरे दिन ग्राने वाला ज्वर ।
उ०—ज्यूं वैद कहै लौ तेजरा री गोळी २ । तौ तेजरौ गमाव रौ ग्ररथो तिण नै तेजरा री गोळी विसेस प्यारी लागै ।—भि.द्र.
कहा०—तेजरा री कंवै जणां ताव रौ हांकारौ भरै—त्रिज्वर का कहें जब कहीं साधारण ज्वर के लिए हां भरता है । कार्य के कष्ट से बचने वाले व्यक्ति से साधारण कार्य कराने के लिए पहिले बहुत बड़ा कार्य बताया जाता है ताकि मना करते-करते साधारण के लिए तो तैयार हो ही ।
रू०भे०—तिजारी, तेजारौ ।
२ कोप की ग्रवस्था में ललाट में होने वाली तीन शिलवटें.
३ देखो—'तिजारौ' (रू.भे.)

तेजल—सं०पु० [सं०] चातक, पपीहा ।

तेजवंत, तेजवंती—वि०—१ तेजस्वी, प्रतापी । उ०—१ ग्रंग तेजवंत सोभा ग्रनंग । 'ग्रजमाल' पाट ग्रभमल ग्रभंग ।—सू.प्र.
उ०—२ सलागा रमा चख ग्ररु ढाल जेहा । तके तेजवंती ग्ररी साल तेहा ।—शि.सु.रू.
रू०भे०—तेजवांन ।
सं०पु०—१ घ्रत, घी (ह.नां.मा.)
सं०स्त्री०—२ ग्राग्नेय दिशा का नाम ।

तेजवांन—देखो 'तेजवंत' (रू.भे.)

तेजस—वि० [सं० तेजस्वी] बहादुर, पराक्रमी, तेजस्वी । उ०—सेवग पयपे तेजस मोह, विसंभ रखे हिव थाय विछोह ।—ह.र.
२ तेज धार वाला. ३ शीघ्रगामी, वेगवान, फुर्तीला. ४ मंहगा ।
सं०पु०—सूर्य (ह.नां.)
रू०भ०—तेजस ।

तेजसपुंज—वि०—१ तेजस्वी, प्रकाशवान । उ०—मुनीस महेस कोपन्नल मंज । प्रसिद्ध महाबळ तेजसपुंज ।
सं०पु०—देखो 'तेजपुंज' (रू.भे.)

तेजसवती, तेजसवी—देखो 'तेजस्वी' (रू.भे.)

तेजस-सरीर—सं०पु०—ग्रहण किये ग्राहार को तथा कर्म पुद्गलों को पाचन कर रस रूप बनाने वाला, ग्राभ्यंतर सूक्ष्म शरीर (जैन)
रू०भे०—तेयससरीर ।

तेजसिहोत—सं०पु०—'बीकावत' राठौड़ वंश की उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
रू०भे०—तेजसियोत ।

तेजसी—सं०पु०—१ सूर्य (ह.नां.) २ देखो 'तेजस्वी' (रू.भे.)

तेजसियोत—देखो 'तेजसिहोत' (रू.भे.)

तेजस्व—सं०पु० [सं०] महादेव, शिव ।

तेजस्वत्–वि० [सं०] तेजस्वी ।
तेजस्विनी–सं०स्त्री० [सं०] मालकंगनी ।
तेजस्वी–वि० [सं० तेजस्विन्] कांतिमान, प्रतापी, तेजयुक्त ।
सं०पु०—इंद्र के एक पुत्र का नाम ।
रू०भे०—तेजसवती, तेजसवी, तेजस्वत् ।
तेजागळ—देखो 'तेजग्गळ' (रू.भे.) उ०—नळ वाजि विड़ंगां राग नरै । पारेवर वोलै जेण परै । तेजागळ तेज तुरंग तिहै, नाखत्रव जांण निहंग खिड़ै ।—गु.रू.बं.
तेजाव—देखो 'तिजाव' (रू.भे.)
तेजावी—देखो 'तिजावी' (रू.भे.)
तेजारत—देखो 'तिजारत' (रू.भे.)
तेजारती—देखो 'तिजारती' (रू.भे.)
तेजारौ—१ देखो 'तिजारौ' (रू.भे.) उ०—खुरियां करता खूंद, हुवै तुरियां होकारा । घिरिया दुसमण घड़ा, तिकण वेळा तेजारा ।
—ऊ.का.
२ देखो 'तिजारौ' (रू.भे.)
तेजाळ, तेजाळू, तेजाळौ–सं०पु०—१ तेज, प्रताप । उ०—तेजाळ जागिया कमंध तोर, श्रागिया दवै भूपाळ श्रोर ।—वि.सं.
२ घोड़ा. ३ सूर्य ।
वि०—१ तेजस्वी. २ तेज गति वाला । उ०—घण तेजाळ घोड़लौ, तुरी करै वह तांन । हीरै जड़ित पिलांणियौ, दे वारट नां दांन ।—पी.ग्रं.
तेजावत–सं०पु०—देवड़ा वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
तेजि—देखो 'तेज' (रू.भे.) उ०—पोळि पहुंतउ पंडु, तेजि तरणि पयंडु । सीसि चमर वंवाळ, श्रनु कंटि कुसुमह माळ ।—पं.पं.च.
तेजिउ–वि० [सं० उत्तेजितम्] उत्तेजित । (उ. र.)
तेजिय–सं०पु०—घोड़ा, श्रश्व । उ०—तुंड पड़ै तेजियां नृपति, वळ वंड निहट्टी । प्रळैमंड कारणै काळ परचंड कि जुट्टी ।—रा. रू.
तेजी–सं०स्त्री० [फा०] १ तेज होने का भाव, तीव्रता. २ उग्रता, प्रवलता. ३ गुस्सा, क्रोध. ४ महंगाई. ५ शीघ्रता.
६ तीव्र गति ।
सं०पु०—७ एक प्रकार का घोड़ा (डि.नां.मा.)
उ०—वाजै वजै तीन लाख, लाख लाख श्रभिलाख । तजि के चोरासी लाख, तेजी रथ दंति दंति ।—ध.व.ग्रं.
तेजेयु–सं०पु० [सं०] रौद्राक्ष राजा के एक पुत्र का नाम ।
तेजो-मंडळ–सं०पु० [सं० तेजो मंडल] सूर्य चंद्रमा श्रादि श्राकाशीय पिंडों के चारों श्रोर का मंडल ।
तेजोमई, तेजोमय–वि०—१ तेजस्वी, प्रतापी । उ०—१ जिकै वार तेजोमई थाट जाडौ उभै, वीस कोसां जितौ कीध श्राडौ ।—सू.प्र.
उ०—२ जे सुत व्रहद्दस्व भूप करण जय । ते सुत भांनु मांनु तेजोमय ।—सू.प्र.
२ सूर्य, भानु । उ०—१ कांन जड़ाऊ कांम रा, कुंडळ धारण कीन्ह । झळहळ तारा झूमका, दुहुं पाखां ससि दीन्ह । दुहुं पाखां ससि दीन्ह, श्रंधार निकंदवा, तेजोमय रथ तास, निघात वही नवा । मांग फूल जड़ाऊ मंडिया, खिण खिण निरखै भाहे हित दुख खंडिया ।
—बां.दा.
तेजो-लेस्या–सं०स्त्री० [तेजो लेश्या] तपोबल से उत्पन्न होने वाले तेज की ज्वाला, कांति (जैन)
तेजौ–सं०पु०—राजस्थान में जाटों, गूजरों श्रादि द्वारा विशेष रूप से पूजा जाने वाला एक जूझार ।
वि०वि०—तेजा का जन्म राजस्थान के नागौर परगने के 'खड़नाळ' नामक ग्राम में हुश्रा था । इसके पिता का नाम 'बखतौ' श्रौर माता का नाम 'लछमा' था । राजस्थान के जाटों में यह एक परोपकार-परायण, प्रतिज्ञापालक, सत्यनिष्ठ जुझार हुश्रा है । इसका विवाह किशनगढ़ राज्य के 'पनेर' गांव में हुश्रा था । यह श्रपनी पत्नी को लेने ससुराल गया हुश्रा था । वहाँ गूजरों की गायें मेर जाति के लोग घेर कर ले गए । गूजरों की प्रार्थना पर 'तेजा' ने मेरों का पीछा किया श्रौर उनसे युद्ध कर के गायों को छुड़ाने में सफल हुश्रा । युद्ध में यह बहुत घायल हो गया था, उसी दशा में एक सर्प के काटने से इसकी मृत्यु हो गई । 'तेजा' की स्त्री उसके साथ सती हुई । गांव वालों ने तेजा की 'देवली' बना कर पूजना शुरू कर दिया । श्राज भी उसकी मृत्यु तिथि भादवा सुदि १० को परवतसर में एक बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें लोग श्रपने पशुश्रों को साथ ले जाते हैं श्रौर वहाँ उनका क्रय-विक्रय होता है. २ 'तेजा' से सम्बन्धित राजस्थान में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।
यौ०—तेजौ-धोळौ ।
तेजौ-वितांन–सं०पु० [सं० तेजस्+वितान] सूर्य (नां.मा.)
तेटलि–क्रि०वि० [सं० तत्तुल्यके] वहाँ (जैन)
तेटलौ–वि०—उतना । उ०—तेटला गजवर सार ।—धर्म पत्र
तेडणौ, तेडबौ—देखो 'तेड़णौ, तेड़बौ' (रू.भे.)
उ०—पांडव तेडौ एम कहै ।—धर्म पत्र
तेडाणौ, तेडाबौ—देखो 'तेड़ाणौ, तेड़ाबौ' (रू.भे.)
उ०—सयंवर मंडप मंडाउं, सहू देसाधिप तेडाउं ।—स्रीपाळ
तेडौ—देखो 'टेडौ' (रू.भे.)
तेढ़क–वि०—१ टेढ़ा, वक्र । उ०—कनै होत जो उठै श्रजमाल वेढ़क, श्रकळ लड़ण तेढ़क खळां दळां लाडो ।—वदरीदास खिड़ियौ
तेढ़, तेढ़ीमणौ, तेढ़ौ–वि०—१ वांका, वहादुर । उ०—१ देवीदास विसन्न तणा, जांणै विसन्न भुजांन । भांजेवा तेढ़ां भड़ां, वेढ़ा तणौ 'विसन्न' ।
—रा.रू.
उ०—२ चालसी जुध गयण धोम चेढ़ीमणौ, मुगळां गाळसी जोम वेढ़ीमणौ, तरह लंकाळ सी घाट तेढ़ीमणौ, वाळसी वयां कसर दाट वेढ़ीमणौ ।—वदरीदास खिड़ियौ

२ देखो 'टेढौ' (रू.भे.) उ०—हूं जांणी नै पूछिया, आड़ा तेढ़ा वैण। ग्यांन तणी प्रापत हुई, थे साचा लागौ सैण।—जयवांणी

तेण, तेणि–सर्व० [सं० तस्मिन्] १ उस। उ०—धवळ खंध भूसर दियां, धवळ करै नह त्याग। तेण धवळ सिर सींग है, तेण धणी सिर भाग।—वां.दा.

क्रि०वि०—उससे। उ०—१ घर नयर बधूंसे तेण दिव धूंधळौ, अमरवत आद सेवरै अणभंग।—भल्लो गांघणियौ।

उ०—२ ऊठिया जगतपति अंतरजांमी, दूरंतरी आवतौ देखि। करि वंदण आतिथ ध्रम कीधौ, वेदे कहियौ तेणि विसेखि।

—वेलि.

२ इससे. इसलिए। उ०—अहर-रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि-वन्न। जांण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न।—ढो.मा.

सं०पु० [सं० स्तेन] चोर, तस्कर (जैन)

तेतउं–वि०—उतना। उ०—जांउ जागइ तांउ मागइ, जांउ जोयणउं तांउ भोयणउं। जेतिय राति तेतउं जागर, जेवडउं खांडउं तेवडउं घाउ।—व.स.

तेतजुग—देखो 'त्रेतायुग' (रू.भे.)

तेतळइ, तेतळई–क्रि०वि०—वहां, तहां। उ०—करी सजाई दीयां दमामां, बीजइ दिवस विहाणइ। अलूखांन नां कटक तेतळइ, चाली गयां सिराणइ।—कां.दे.प्र.

तेतलउ—देखो 'तेतलौ' (रू.भे.) उ०—तेहनउ पुण्य हुवई तेतलउ। सामायक लीधे तेतलउ।—स.कु.

तेतला–वि०—उतने। उ०—जेतला दिहाड़ा तेतला प्रवाड़ा।

--रा.सा.सं.

तेतलु, तेतलौ–वि० [सं० तत्रस्य] (स्त्री० तेतली) १ वहां का. २ उतना। उ०—१ जेतलाइं वन तेतलाइं चंदन।—व.स.

उ०—२ अम्हि किम ए जांणिसुं तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए।

—पं.पं.च.

रू०भे०—तेतलउ।

तेता—देखो 'त्रेता' (रू.भे.)

वि०—देखो 'तेते' (रू.भे.)

(स्त्री० तेती)

तेताळीस—देखो 'तंयाळीस' (रू.भे.)

तेतीस–वि० [सं० त्रयस्त्रिंशत्, प्रा० तेत्तीस, अप० तेत्तिस] तीस और तीन का योग।

सं०पु०—तेतीस की संख्या, ३३।

रू०भे०—तेतीस, तेंतीसूं, तेत्रिस, तेत्रीस, त्रेतीस।

तेतीसमौं, तेतीसवौं–वि०—तेतीसवां।

(स्त्री० तेतीसमीं, तेतीसवीं)

रू०भे०—तेत्रीसमौं।

तेतीसूं—देखो 'तेतीस' (रू.भे.) उ०—जपै नर नार उभै कर जोड़। करै सुर सेव तेतीसूं कोड़।—ह.र.

तेतीसे'क–वि०—तेंतीस के लगभग।

तेतीसौ–सं०पु०—३३ की संख्या का वर्ष।

रू०भे०—तेंतीसौ।

तेते–वि०—उतने। उ०—तेते पांव पसारिये, जेती लांबी सौर।

क्रि०वि०—तब, तक। उ०—प्रांण गांठ जेते प्रखत, इण तन माफळ ऐह। क्यावर तेते नांम कर, दांम गांठ मत देह।—बां.दा.

वि० (स्त्री० तेती) उतना। उ०—दाता धन जेतौ दिये, जस तेतौ घर पीठ।—बां.दा.

अल्पा०—तेतलौ।

तेत्रिस, तेत्रीस—देखो 'तेतीस' (रू.भे.)

तेत्रीसमौं—देखो 'तेतीसमौं' (रू.भे.)

तेथ, तेथि, तेथी, तेथौ–क्रि०वि० [सं० तत्र] वहां, तहां।

उ०—१ सहर अजमेर वडौ गढ़। तेथ राजा वीसळदे चहुवांण राज्य करै।—देवजी बगड़ावतां री वात

उ०—२ मधू मास आसोज में रास मंडे। तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडे।—मे.म.

उ०—३ एकौ लाखां आंगमै, सीह कहीजे सोय। सूरां जेथी रोड़ियै, कळहळ तेथी होय।—हा.झा.

उ०—४ स्रावक थयउ चित्र सारथी, ते लेइ गयउ तेथौ जी। परदेसी पापी हुतउ, कहइ जीव जुदउ न केथौ जी।—स.कु.

तेन–सं०पु० [सं० स्तेन] चोर (ह.नां.)

तेनाळ—देखो 'तहनाळ' (रू.भे.)

तेनेता–सं०पु० [सं० त्रिनेत्र] महादेव, शिव।

तेपन—देखो 'तिरेपन' (रू.भे.)

तेपनमौं, तेपनवौं—देखो 'तिरेपनमौं' (रू.भे.)

(स्त्री० तेपनमीं, तेपनवीं)

तेपने'क—देखो 'तिरेपनेक' (रू.भे.)

तेपनौ, तेपन्नौं—देखो 'तिरेपनौ' (रू.भे.) उ०—इम सतरैसै तेपनै वरसै दीप परब सुदीसए।—ध.व.ग्रं.

तेपरार—देखो 'तैपरार' (रू.भे.)

तेपैलैदिन—देखो 'तैपैलैदिन' (रू.भे.)

तेम–क्रि०वि०—इस प्रकार, तैसे। उ०—अभपती जती गोरख अेम। तरै सख बारह पंथ तेम।—वि.सं.

तेमड़ा, तेमड़ाराय–सं०स्त्री०—चारणकुलोत्पन्न प्रसिद्ध आवड़ देवी का एक नाम। उ०—भालाळ पीठ रछपाळ भाळ, तेमड़ाराय तीसरी ताळ।—पा.प्र.

तेमड़ौ–सं०पु०—जैसलमेर का एक पर्वत जिस पर आवड़ देवी का एक मन्दिर स्थित है।

तेमण—देखो 'तींवण' (रू.भे.)

तेमरू–सं०पु०—आबनूस का वृक्ष।

तेमा–क्रि०वि०—तैसा। उ०—नहीं नेमा अेमा यम नहिन तेमा दगन में।—ऊ.का.

तेयंसी—देखो 'तेजसी' (रू.भे.) (जैन)

तेय—१ देखो 'तेज' (रू.भे.) उ०—तेय परिक्कमि ग्रागळउ, पुणि नारिविरत्तउ। सांमि सुलक्खण सांमळउ, सिवसिरिग्रणुरत्तउ।
—प्राचीन फागु संग्रह

तेयलेस्सा—देखो 'तेजोलेस्या' (रू.भे.) (जैन)

तेयस्सरीर—देखो 'तेजस-सरीर' (रू.भे.) (जैन)

तेयाळ—देखो 'तंयाळीस' (रू.भे.)

तेयो—देखो 'तीयो' (रू.भे.)

तेर, तेरइ—देखो 'तेरै' (रू.भे.) उ०—संवत तेर इकोतरइ, देस लहर ग्रधिकारो जी।—स.कु.

तेरलेरम, तेरमउ, तेरमौ—वि० [सं० त्रयोदशमः] तेरहवां।
उ०—१ तेरम विमळ ग्रज्जा लख उपर ग्राठसै जांण।—ध.व.ग्र.
उ०—२ तेरम संयोगी गुणधांम।—वृहत स्तोत्र
उ०—३ मत्स्यदेसि जाई नइ रमउ। ए तेरमउ वरसु नीगमउ।
—पं.पं.च.
उ०—४ वारै वेला नै तेरमौ तेलो।—जयवांणी
रू०भे०—तेरहमौ।

तेरस, तेरसि, तेरसी—सं०स्त्री० [सं० त्रयोदशी] प्रत्येक मास के किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।

तेरह—देखो 'तेरै' (रू.भे.)

तेरहमौ, तेहरवौ—देखो 'तेरमौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तेरहमी, तेरहवीं)

तेरही—सं०स्त्री०—मृतक की दाह क्रिया के वाद प्रेत कर्म की तेरहवीं तिथि जिसमें पिंड दान कर ब्राह्मणभोज दिया जाता है।

तेरांणमौ, तेरांणवौ—वि०—९३ वां, तिरानुवां, क्रम में ९३ के स्थान पर पड़ने वाला।
सं०पु०—९३ का वर्ष।
रू०भे०—तांणूमौ, तेराणूंमौ, तिरांणवौ, तेराणूंवौ।

तेरांणूं—वि० [सं० त्रयोनवति, प्रा० तेणउइ] नव्वे से तीन ग्रधिक, नव्वे ग्रौर तीन का योग।
सं०पु०—नव्वे से तीन अधिक की संख्या, उक्त संख्या को सूचित करने वाला अंक, ९३।
रू०भे०—तरांणू, तिरांणुं, त्र्यांणू, तिरांणवे, तिरांणू

तेरांणूक—वि०—तिरानवे के लगभग।

तेरांणूमौ, तेरांणूवौ—देखो 'तेरांणमौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तेरांणूंमी, तेरांणूवीं)

तेरा—देखो 'तेरै' (रू.भे.) उ०—तेरासै संमत वरस इकतीसै, जवन हींदवा हुवौ जुद।—महारांणा स्री गढ़ लछमणसिंह रौ गीत
सर्व०—'तू' का सम्बन्धकारक रूप, तुम्हारा।
(स्त्री० तेरी)

तेरातालो—सं०स्त्री०—१ वाद्य की एक क्रिया विशेष जिसमें एक ही व्यक्ति अपने हाथ से शरीर पर १३ स्थानों पर बंधे हुए मजीरों को वजाता है। इसके साथ ढोलक ग्रौर तंदूरे की लय मिलाई जाती है. २ इस प्रकार के वाद्य से उत्पन्न होने वाली ध्वनि. ३ उक्त प्रकार के वाद्य को वजाने वालों की मंडली।

तेरापंथ—जैन श्वेताम्बर शाखा की एक प्रशाखा।
वि०वि०—ग्राचार्य भिक्षुगणि ने विक्रम संवत १८१७ में साध्वाचार को शुद्ध ग्रौर सुदृढ़ बनाने के लिए व ग्रहिंसा दयादान ग्रादि को यथार्थ स्वरूप में उपस्थित करने के लिए प्रवर्तित किया। ग्रारम्भ में १३ साधु होने से इसे तेरापंथ कहा गया।

तेरापंथी—सं०पु०—जैन सम्प्रदाय की तेरापंथ शाखा का ग्रनुयायी।

तेरायळ—वि०—१ वदमाश, दुष्ट. २ क्रोधी. ३ दोगला।
मि०—'ग्रायल'।
रू०भे०—तैरायल।

तेराहियो—सं०पु० [सं० त्र्यहिक] एक प्रकार का ज्वर जो हर तीसरे दिन ग्राता है (जैन)

तेंरिंदी—सं०पु०—तीन इन्द्रिय वाला जीव या प्राणी। उ०—वेइंदी तेंरिंदी नै चोंरिंदी मझारे।—ध.व.ग्रं.

तेरीर—देखो 'तहरीर' (रू.भे.)

तेरूंडो—सं०पु०—मकर संक्रांति के दिन स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रतोद्यापन जिसमें उपवास करने वाली स्त्री १३ कुमारी कन्याग्रों को एक ही प्रकार की एक वस्तु भेंट करती है। यही क्रिया निरन्तर तेरह वर्ष तक की जाती है ग्रौर एक वार भेंट की जाने वाली वस्तु या पदार्थ दुवारा नहीं दिया जाता।

तेरु, तेरुड़ौ, तेरू—वि० (स्त्री० तेरुड़ी) तैरने की विद्या में कुशल, तैराक
उ०—फिरिया नहीं फेरू मारग मेरू तेरू पार तिरंदा है।—ऊ.का.
रू०भे०—तैरू।
ग्रल्पा०—'तेरुड़ौ'।

तेंरे—देखो 'तेरै' (रू.भे.)
सर्व०—तुम्हारे।

तेरै'क—वि०—तेरह के लगभग।

तेरै—वि० [सं० त्रयोदशः, प्रा० तेरस. तेरह] दस से तीन ग्रधिक, तेरह.
सं०पु०—दस से तीन अधिक की संख्या, उक्त संख्या को सूचित करने वाले अंक, १३।
रू०भे०—तेर, तेरइ. तेरह, तेरा, तेरं, तैरै।

तेरोड़ौ, तेरौ—सर्व० (स्त्री० तेरी, तेरोड़ी) तेरा, तुम्हारा।
उ०—जाळू वाळू रै सूवा तेरोड़ी चांच। तूं म्हारो वीर जगावियो।
—लो.गी.
ग्रल्पा०—तेरोड़ौ।

ते'री—तेरह की संख्या का वर्ष।

तेलंग—देखो 'तिलंग' (रू.भे.)

तेल—सं०पु० [सं० तैलं] वीजों या वनस्पतियों ग्रादि से विशेष क्रिया द्वारा निकाला जाने वाला स्निग्ध तरल पदार्थ जो पानी से हलका

होता है और उसमें घुल नहीं सकता है। यह अग्नि के संयोग से जल भी जाता है और विशेष प्रकार का अधिक सरदी पा कर जम भी जाता है।

मुहा०—१ तेल उतरणौ (उतारणौ) विवाह की एक रस्म जिसमें शादी के उपरांत दूल्हे और दुलहिन के घर पर उनके कुटुम्ब की चार या सात सधवाएं अथवा कुमारी कन्याएं हल्दी में तेल मिला कर वर के या वधू के शिर पर फिर कंधों या भुजाओं पर, फिर घुटनों पर, तत्पश्चात् पैरों के नाखूनों पर दोनों हाथों से वह तेल मिली हल्दी लगाती हैं। यह क्रिया हर स्त्री अथवा कन्या अपने दोनों हाथों को मिला कर चार बार या सात बार करती है। इस क्रिया के साथ गीत भी गाती रहती हैं. २ तेल काढ़णौ—तेल निकालना, परेशान करना, तंग करना. ३ तेल चढ़णौ—तेल चढ़ना, तेल की मालिश करने पर त्वचा पर तेल का प्रभाव होने से उसमें विकार होना. ४ तेल (चढ़ाणौ) चाढ़णौ—विवाह की एक रस्म जो साधारणतः विवाह से दो दिन तथा कहीं-कहीं चार पांच दिन पूर्व होती है जिसमें वर और वधू को अपने-अपने परिवार की कुमारी कन्याएं तथा सुहागिन स्त्रियां हल्दी में मिला तेल पैरों से शिर की ओर लगाते हैं। राजपूतों में यह रस्म बारात के दुलहिन के घर पर पहुँचने पर दूल्हे और दुलहिन को तेल चढ़ाया जाता है। ५ तेल तिलां री धार देखणी—तेल देखो तिलों की धार देखो—प्रतीक्षा करना, सोच-समझ कर करना. ६ तेल पाड़णौ—परेशान करना, तंग करना. ७ तेल पावणौ—अधिक कष्ट देना, सताना, जबान बन्द करना, मूक बनाना. ८ तेल बळणौ—तेल जलना, अधिक खर्च होना, धन का व्यय होना। ९ तेल जितै खेल—जितना तेल उतना ही खेल। जितनी आयु उतना ही जीवन। जितनी शक्ति उतना ही काम. १० तेल तेली रौ बळै मसालची री गांड क्यूं बळै—तेल तो तेली का जलता है फिर मसालची क्यों क्रुद्ध होता है। जब हानि या व्यय किसी का हो और अन्य व्यक्ति चिढ़ता है तब यह मुहावरा कहा जाता है. ११ तेल तौ तिलां सूं ही निकळै—तेल तो तिलों से ही निकलता है। जिस वस्तु की प्राप्ति जिस स्थान से होती है वह वहीं से प्राप्त होगी अन्यत्र से नहीं। निर्माण के लिए पैसा पूंजीपतियों से प्राप्त होगा।

तेलकार-सं०पु० [सं० तैलकार] तेल का व्यवसाय करने वाला।
रू०भे०—तैलकार।

तेलगू—देखो 'तिलंग' (रू.भे.)

तेलड़ौ-वि०—१ तीन लड़ वाला. २ तीन परत या तह का. ३ तीन पंक्तियों का।
(स्त्री० तेलड़ी)

तेलण-सं०स्त्री०—तेली की स्त्री, तेलिन।
रू०भे०—तेलिण।

तेल-फुलेल-सं०पु०यौ०—इत्र, पुष्पसार। उ०—पुराची मटकादार, पना काचा हरियाळा। अध बेस हुवौ दीसै बुरौ, धरते तेलफुलेल रै।
—अरजुणजी बारहठ

तेळा, तेलास-सं०स्त्री०—१ ऊंट पर तीन व्यक्तियों की सवारी, ऊंट पर सवार तीन व्यक्ति।

तेळायौ-सं०पु०—वह ऊंट जिस पर तीन व्यक्तियों की सवारी हो।
रू०भे०—तैळायौ।

तेलार-सं०पु०—तेली। उ०—रंगकार तेलार बिनु, बिनु कलार दरवेस। सारबंध 'लावै' असुर, पुर नहिं करत परवेस।—ला.रा.

तेलिण—देखो 'तेलण' (रू.भे.)

तेलियौ-वि०—१ तेल की तरह चिकना और चमकीला।
मुहा०—तेलिया करणा—राज-सत्ता के विरुद्ध तेल में कपड़े भिगो कर जल कर मर जाना (प्राचीन)
२ तेल के रंग का, मटमैला। उ०—आंटाळी पाघड़ी बांध नै तेलियै पांगळ माथै चढ़'र सेठ जठैई जावता खूब आव-आदर होवतौ पण औ आव-आदर होवतौ ऊपरला मन सूं ईज।—रातवासौ
सं०पु०—१ तेल के रंग का ऊंट विशेष।
२ उक्त रंग का घोड़ा. ३ एक प्रकार का बबूल. ४ सींगिया नामक विष. ५ श्याम रंग का भैरव। उ०—तमासौ बतावण वीस हत तेलिया। लार रिझवार गोरां सहत लेलिया।—महादांन महडू
६ एक तरह का सांप (शेखावाटी) ७ तेल में भीगा वस्त्र.
८ एक प्रकार का सिंह. ९ 'हावू' से कुछ बडा एक प्रकार का वर्षा ऋतु में होने वाला कीड़ा विशेष (शेखावाटी)
(मि० तेली)

तेलियौ-कंद-सं०पु०यौ० [सं० तैलकंद] एक प्रकार का जमीकंद। जिस भूमि में यह उत्पन्न होता है वह तेल से सींची हुई जान पड़ती है।

तेलियौ-कत्थौ-सं०पु०यौ०—एक प्रकार का कत्था जो अंदर से काले रंग का होता है।

तेलियौ-कुमैत-सं०पु०यौ०—वह घोड़ा जिसका रंग अधिक कालापन लिए लाल या कुमैत होता है।

तेलियौ-पांणी-सं०पु०यौ०—१ बहुत खारे स्वाद का भारी पानी.
२ वह पानी जिस पर तेल सी चिकनाई तैरती हो।

तेलियौसुरंग—देखो 'तेलियौ-कुमैत'

तेलियौ सुहागौ-सं०पु०यौ०—एक प्रकार का सुहागा जो देखने में बहुत ही चिकना और श्याम रंग का होता है।

तेली-सं०पु० [सं० तैलिक:] (स्त्री० तेलण) सरसों, तिल आदि पेर कर तेल निकालने का व्यवसाय करने वाली जाति तथा इस जाति का व्यक्ति।
वि०वि०—राजस्थान में तेल पेरने का व्यवसाय हिन्दू व मुसलमान दोनों जाति के लोग करते हैं। अतः तेल पेरने का व्यवसाय करने वाली मुसलमान जाति को तेली तथा हिन्दुओं को घांची भी कहते हैं। व्यवसाय के हिसाब से इनमें कोई अन्तर नहीं है, केवल धर्म का अन्तर है।
यौ०—तेली-तंबोळी, तेलीवाड़ौ।

तेलीवाड़ौ-सं०पु० [सं० तैलिकः+पाटक] वह मोहल्ला या कूचा जहां तेलियों का निवास हो।

तेलू-सं०स्त्री०—चिकनाई, स्निग्धता।

तेळौ, तेलौ-सं०पु०—१ स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक उपवास जो तीन दिन की अवधि का होता है. २ तीन दिन तक निरन्तर किया जाने वाला उपवास (जैन) उ०—१ ग्रहस्थ खूंचणौ काढ़ै जिसौ कांम करै तौ तेला रौ दंड।—भि.द्र.

उ०—२ वैरस वैरागी त्यागी तन तावै। बेला तेला विधि सहजां बण आवै।—ऊ.का.

३ भाद्रपद की शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक का गौ सेवा का एक व्रत विशेष।

४ एक ही स्त्री से एक साथ उत्पन्न होने वाले तीन बच्चे।

५ देखो 'तेलियौ' (मह., रू.भे.)

तेवड़-सं०स्त्री०—१ तैयारी। उ०—राज हिमैं चालण री तेवड़ करौ जांन करै नै परणीजण पधारौ।—लो.गी.

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

२ तीन लड़ों से बटी जाने वाली रस्सी की एक लड़।

सं०पु०—३ विचार. ४ निश्चय।

वि०—तीन तह वाला, तिगुना, तिहरा। उ०—व्याव मंडचौ अे भली हुई, दीज्यौ ये दोवड़ तेवड़ दांन, सोदागर महंदी राचणी।

—लो.गी.

तेवड़णौ, तेवड़बौ-क्रि०स०—१ विचारना, सोचना। उ०—तेवड़ां रीत द्वापुर तणी, इळ राखां कीरत अमर। कहि समर वात पिसणां करां, सराजांम हूंता समर।—सू.प्र.

[सं० त्रिगुणाकरणम्] २ निश्चय करना, तय करना।

उ०—पछै कुंवर भीमसिंहजी नूं राज देणौ तेवड़ियौ नै रांणांजी नूं कुंवर जैसिंहजी नूं चूक तेवड़ायौ।—बां.दा. ख्यात

३ दृढ़तापूर्वक निश्चय करना। उ०—इसडी वात विचार नै कुमर बोलाव्यौ पास रे लाला। रांणी जितरी मन मांहै तेवड़ी तितरी दीधी परकास रे लाला।—जयवांणी

तेवड़णहार, हारौ (हारी), तेवड़णियौ—वि०।

तेवड़ाड़णौ, तेवड़ाड़बौ, तेवड़ाणौ, तेवड़ावौ, तेवड़ावणौ, तेवड़ाववौ—प्रे०रू०।

तेवड़िओड़ौ, तेवड़ियोड़ौ, तेवड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तेवड़ीजणौ, तेवड़ीजबौ—भाव वा०।

तेवड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ विचारा हुआ. २ निश्चय किया हुआ. ३ दृढ़तापूर्वक विचारा हुआ।

(स्त्री० तेवड़ियोड़ी)

तेवड़ौ-वि० (स्त्री० तेवड़ी) तीन परत या तह वाला, तिहरा, तिगुना उ०—आरोह पखर घर उडडां, सिलह सस्त्र धर ऊससै। तेज में दुरंग सझि तेवड़ै, जंग 'मुरादि' 'अवरंग' जसै।—सू.प्र.

तेवट-सं०स्त्री०—तवले के बोल, एक ताल।

सं०पु०—देखो 'तेवटियौ' (मह., रू.भे.)

तेवटियौ, तेवटौ-सं०पु०—१ स्त्रियों के गले में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण। उ०—१ गरदन जसकी गांगड़ी, तक कुरज तरारां। नस में बांध्या तेवटा, झळ मोती ऊपरां।—मयारांम दरजी री वात

उ०—२ तेवटियौ घड़ावूं पनड़ी आळौ मेहड़ौ हुवण दै।

—लो.गी.

२ तीन जोड़ लगा हुआ पुरुषों के ओढ़ने का या पहिनने का सफेद वस्त्र।

रू०भे०—त्रेवटौ।

अल्पा०—तेवटियौ।

(मह० तेवट)

तेवडउ-वि०—इतना, उतना (उ.र.)

तेवण—देखो 'तींवण' (रू.भे.)

तेवणियौ-सं०पु०—कूए से पानी निकालने वाला।

रू०भे०—तीवणियौ।

तेवणौ, तेवबौ-क्रि०स०—कुए से चरस द्वारा पानी निकालना।

उ०—ताहरां आगै सेंचाळ कोहर तेवै छै, पणिहार घड़ौ भरियौ छै।

—नैणसी

तेवणहार, हारौ (हारी), तेवणियौ—वि०।

तेववाड़णौ, तेववाड़बौ, तेववाणौ, तेववावौ, तेववावणौ, तेववाववौ, तेवाड़णौ, तेवाड़बौ, तेवाणौ, तेवावौ, तेवावणौ, तेवाववौ—प्रे०रू०।

तेविओड़ौ, तेवियोड़ौ, तेव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तेवीजणौ, तेवीजबौ—कर्म वा०।

तीवणौ, तीववौ—रू०भे०।

तेवर, तेवरी-सं०स्त्री० [सं० त्रिकूट] १ क्रोध भरी चितवन, त्यौरी.

मुहा०—तेवर बदळणी—त्योरी बदलना, क्रोध प्रकट करना।

२ भौंह, भ्रकुटी।

तेवाड़णौ, तेवाड़बौ, तेवाणौ, तेवावौ-क्रि०स० ('तेवणौ' क्रिया का प्रे०रू०) कुए से चड़स द्वारा पानी निकलवाना। उ०—सो नापौ ऊपर खड़ौ छै, कोहर तेवायौ सौ वारा आठ नौ नीसरिया।

—नापै सांखले री वारता

तेवारी—देखो 'तिवारी' (रू.भे.)

तेवीस—देखो 'तेईस' (रू.भे.)

तेवीसमउ, तेवीसमौं—देखो 'तेईसमौं' (रू.भे.)

(स्त्री० तेवीसमीं)

तेवीसौ—देखो 'तेईसौ' (रू.भे.)

तेवोतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)

तेवोतरे'क—देखो 'तिहोतरे'क' (रू.भे.)

तेवोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.)

तेस-क्रि०वि०—१ वहां. २ देखो 'तैस' (रू.भे.)

तेसठ—देखो 'तिरेसठ' (रू.भे.)

तेसठमौं—देखो 'तिरेसठमौं' (रू.भे.)

(स्त्री० तेसठमीं)

तेसठें'क—देखो 'तिरेसठेक' (रू.भे.)
तेसठौ—देखो 'तिरेसठौ' (रू.भे.)
तेसौ-सर्व०—तैसा, वैसा।
तेह-सं०पु० [सं० तैक्ष्ण्य] १ क्रोध, गुस्सा। उ०—मोटा वाळी धीरज मोटी, खांवद कीध इती तें खोटी। पैली अंगद कीध परोटी, तांण पछै किय तेह।—र.रू.
२ अहंकार, गर्व. ३ देखो 'ते' (रू.भे.) उ०—१ वस्तु अपूरब दीठी जेह, मुझ आगळि परगासउ तेह।—ढो.मा.
उ०—२ कहिया रेहा कूड़ नेंह, वेहा वायक अेह। जे जेहा, जेहा नहीं, त्यागी केहा तेह।—बां. दा.
उ०—३ धमासौ भलो पांगरै, ऊंडे जावत तेह। वे नर कदे इ न बावड़ै, पर नारी सूं नेह।—र. रा.
उ०—४ दांनादिक सम भाखियउ रे, अरचा नउ फळ सूध। महानिसीथे ते लहइ रे, तोस्यूं तेह असूध।—वि.कु.
तेहखांनौ—देखो 'तहखांनौ' (रू.भे.)
तेहड़ौ-वि० (स्त्री० तेहड़ी) तैसा, वैसा। उ०—वांणिज विण साह सहर हाटां विण, जळ विण गांव वसै जेहड़ौ। विण गायां व्रिखभ, सभा पंडित विण, विण महमा तीरथ तेहड़ौ।—सुरतांण कवि
रू०भे०—तेहरौ।
तेहतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)
तेहतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे)
तेहत्त—देखो 'तहत्त' (रू.भे.)
तेहथी-सं०स्त्री०—बकरी के बालों से बुना फर्श पर बिछाने का वस्त्र जो प्रायः तीन हाथ लम्बा होता है।
तेहरौ—देखो 'तेहड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तेहरी)
तेहवइ-वि०—तैसी, वैसी।
क्रि०वि०—तब।
तेहवउ-वि०—तैसा, वैसा। उ०—१ जेहवउ तेहवउ दरसणी, सेत्रुजइ पूजनीक। भगवंत नउ वेस वांदता, लाभ हुवइ तहतीक।—स.कु.
उ०—२ समय अछइ इण रीत नूं, तउ पिण बखत प्रमांण। मुझ नइ प्रभु तेहवउ मिळयौ, सहज सुरंग सुजांण।—वि.कु.
क्रि०वि०—तब।
तेहवि, तेहवी-वि०—तैसी, वैसी। उ०—जेहवी मित्राई भेखधारी नी तेहवी हो कापुरुसां वांहड़ी।—वि.कु.
क्रि०वि०—उस समय, तब। उ०—१ वाडव बहु करि छि भोजन, तेहवी ते द्विज बोलि। नारी कोए नहीं तुझ सरखी, नर नहीं को नळ-तोलि।—वि.कु.
तेहवै-क्रि०वि०—तब। उ०—महल पधारया पदमिणि, तेहवै बादळ मांय सावत। सगळी वात सुणी करी, पासै ऊभी आय रावत।
—प.च.चौ.
तेहवौ-वि० [सं० तादृश, प्रा० ताइस) (स्त्री० तेहवी) तैसा, वैसा।
उ०—१ जेहवा रूपे छौ तेहवौ तोल रे।—धर्मपत्र
उ०—२ तेहवा हीज फळ थाय।—वि.कु.
तेहस्यूं-क्रि०वि०—उससे। उ०—तास तणा मंदिरि वीसमइ, भोगी पुरुख तेहस्यूं रमइ। वावि सरोवर वाडी कुआ, नगर निवेसि ढळइ ढीकुआ।
—कां.दे.प्र.
तेहि-क्रि०वि०—वहां, तहां। उ०—मुनि देख दरी मांय तेहि मंज छांह तोय। जठै वनै चरां जाय सोवजै इकंत।—र.रू.
सर्व०—उस। उ०—राजा धीर धवळ पाटण लियौ। वरस ४५ मास ३ दिन १ राज कियौ। तेहि न पाट वीसळदे हुवौ।—नैणसी
तेही-वि० [सं० तीक्ष्ण] १ गुस्सा करने वाला, क्रोधी. २ तैसी, वैसी।
क्रि०वि०—उसी प्रकार। उ०—तिणि ताळि सखी गळि स्यांमा तेही, मिळि भमर भारा जु महि।—वेलि.
तेहुत्तरि—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)
तेहोतर—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.)
तेहोतरमौ—देखो 'तिहोतरमौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तेहोतरमीं)
तेहोतरे'क—देखो 'तिहोतरे'क' (रू.भे.)
तेहोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.)
तेहौ-वि० (स्त्री० तेही) तैसा, उस प्रकार का। उ०—जेहौ पातल जो मरद, मेलण गरद अमेल। तेहौ जारज पातसा, हरक वढ़ावण हेल।
—किसोरदांन बारहठ
सर्व०—वह। उ०—१ अलिकापुरी सम तेहौ रे।—वि.कु.
उ०—२ छूटइ तप करि तेहौ जी।—स.कु.
तैं—देखो 'ते' (रू.भे.) उ०—तीन कारज तैं आगै सारचा, अबकै करदी निवेरौ। नरसी मूं तौ चाकर थारौ, जनम-जनम कौ चेरौ।
—रतनौ खाती
उ०—२ मोती धूड़ मिळाविया, तैं सादूळ तमांम। देतौ सदा जणाय दुप, किळ औ होणौ कांम।—बां.दा.
उ०—३ मिरजो इब्राहम मेन बीजा भाइयां हुंता टळि नैं हिंदुस्थांन नूं नीसरियौ हुतौ। तैं ऊपरि पातिसाह अकबर वांसौ कियौ।—द.वि.
उ०—४ राजस अहंकार तैं दस इंद्री नीपनी।—द.वि.
उ०—५ आपणी ही ऐब तैं अमूझणूं गयौ।—ऊ.का.
तैंडौ-सर्व० (स्त्री० तैंडी) तेरा। उ०—तैंडा अखूंदा तुझक दूणे दन संदा। एक थपंदा असपई एकै उथपंदा।—सू.प्र.
रू०भे०—तैंडौ।
तैंनाळ—देखो 'तहनाळ' (रू.भे.)
तैंयासियौ—देखो 'तंइयासियौ' (रू.भे.)
तैंयासी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)
तैंयासीमौं-वि०—तिरासीवां, ८३वां।
तै-सं०पु० [अ०] १ निर्णय, फैसला, निबटारा. २ निश्चय।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

रू०भे०—तह ।

३ मोह. ४ हित (एका.)

सं०स्त्री०—५ कांति. ६ ध्वनि (एका.) ७ परत, तह, पट।

वि०—१ जिसका फैसला हो चुका हो. २ जो पूरा हो चुका हो, समाप्त ।

सर्व०—१ जिसको, उसको। उ०—चकडोळ लगै इणि भांति सुं चाली, मति तै वाखांणण न मूं। सखी समूह मांहि इम स्यांमा, सौळ आवरित लाज सूं।—वेलि.

२ तूं, तुम, आप। उ०—तै थप्पै सूर धरम, धरम उसरां उथप्पै। देवळ तीरथ देव सुरहि इवकार समप्पै।—रा.रू.

३ उस, वह। उ०—ताहरां मुरिखै राजा री कुंवरी रै महलै हेटै साहरी घर हुंतौ तै मांहे कूद पड़िया।—चोवोली

अव्य०—एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिये या कभी-कभी यों ही किया जाता है।

उ०—अत थारौ जस ऊजळौ, जेहूल दिस दिस जोय। हिमकर तै घट वध हुवै, हिमगिर गळ जळ होय।—वां.दा.

प्रत्य०—तृतीया या पंचमी विभक्ति, से। उ०—केहर कुंभ विदारियौ, तोड़ दुहत्था दंत। रुहिर कळाई रत्तड़ी, मद तर तै महकंत।
—वां.दा.

रू०भे०—तैं।

तंई–सर्व०—तेरी।

तं'कीक—देखो 'तहकीक' (रू.भे.)

तं'कीकत, तं'कीकात, तं'कीगात—देखो 'तहकीकात' (रू.भे.)

उ०—मैं तौ चोखी तरै सुं विचार कर लियौ दांनां मिनखां सुं पण तं'कीगात करली।—वरसगांठ

तं'खांनौ—देखो 'तहखांनौ' (रू.भे.)

तंगधारी—देखो 'तेगधारी' (रू.भे.) उ०—कळो थारी तखत सुं ऊथाप खीरोद केहौ। तंगधारी रोद केहौ थापसी तगत।—वखतौ खिड़ियौ

तंडी–वि०स्त्री०—तैसी, वैसी।

तंडौ–वि० (स्त्री० तंड़ी) तैसा, वैसा।

तंजस–वि०—१ ग्रहण किए हुए आहार को पचाने वाला (जैन)

२ देखो तेजस' (रू.भे.)

तंडौ—देखो 'तंडौ' (रू.भे.) उ०—नंढ रै नींगर दे ज्युं अम्मां त्युं मेंडै तुं सांम। जौलुं अंदर जेद है, नहीं भुल्लां तंडा नांम।
—घ.व.ग्रं.

तंण–वि०—तैसा, वैसा।

सर्व०—उस, वह। उ०—जंपे जू कीरत जैण री, सो थके रसना तंण री।—र.रू.

तंतल, तंतिल–सं०पु० [सं० तैतिल] १ ज्योतिष में ग्यारह करणों में से चौथा. २ देवता।

रू०भे०—तितिल, तैत्तिल।

तंत्तिरि–सं०पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम।

तंत्तिरीय–सं०स्त्री० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक।

तंतिरीयक–सं०पु० [सं०] तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी।

तंत्तिरीयारण्यक–सं०पु० [सं०] तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिए उपदेश हैं।

तंत्तिल—देखो 'तंतिल' (रू.भे.)

तंथुं, तंथूं–क्रि०वि० [सं० तत्र, प्रा० तत्थ] वहां।

उ०—तुं जग जीवन प्रांण आधार, तूं मेरा पुत्ता बहुत पियारा। तंथूं वंजा घोळ ऋखभ जी, आउ असाडा कोल।—स.कु.

तंनात–वि० [अ० तअय्युनात] १ किसी कार्य पर लगाया या नियत किया हुआ, मुकर्रर, नियुक्त। उ०—बीजा मनसबदार साथ घणा दिया तिण में केसरीसिंह जोधौ हजारी रौ मनसबदार थौ सो उहां नूं तंनात कियौ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।

२ तत्पर, तैयार।

रू०भे०—तइनात, तइनाथ, तईनात।

तंनाती—देखो 'तईनाती' (रू.भे.)

तंनाळ—देखो 'तहनाळ' (रू.भे.)

तंपरार–सं०पु० [सं० तत्परारि] गत दो वर्षों के पहिले का वर्ष, बीते हुए वर्षों में तीसरा वर्ष।

रू०भे०—तेपरार।

तंपलंदिन–सं०पु०—वर्तमान समय से गत या आने वाला पांचवां या छठा दिन।

रू०भे०—तेपलंदिन।

तंम–वि०—तैसे। उ०—'अभपती' जती गोरक्ख एम, तैरै सख वारह पंथ तंम।—वि.सं.

तंयांळिसेक—देखो 'तंयाळिसेक' (रू.भे.)

तंयांळी, तंयांळीस—देखो 'तंयाळीस' (रू.भे.)

तंयांळीसमौं, तंयांळीसवौं—देखो 'तयाळीसमौं' (रू.भे.)

तंयांळीसौ—देखो 'तंयाळीसौ' (रू.भे.)

तंयांसियेक—देखो 'तंइयासीक' (रू.भे.)

तंयांसी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)

तंयांसीमौं—देखो 'तंयासीमौं' (रू.भे.)

तंयांसीयौ—देखो 'तंयासीयौ' (रू.भे.)

तंयार–वि० [अ०] १ जो काम के लिए बिल्कुल उपयुक्त हो, सब तरह से ठीक, लैस. २ तत्पर, उद्यत. ३ मौजूद, उपस्थित. ४ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

रू०भे०—तइयार, तयार, तय्यार, तियार, तीयार।

तंयारी–सं०स्त्री० [अ० तैयार+रा.प्र.ई] १ तैयार होने की क्रिया या भाव. २ तत्परता, मुस्तैदी. ३ धूमधाम. ४ सजावट. ५ प्रबन्ध।

रू०भे०—तयारी, तियारी, त्यारी।

तैयौ-सं०पु०—मिट्टी का वह छोटा पात्र जिसमें कपड़े की छपाई करने वाले छापने के लिए रंग रखते हैं।

तैरणौ, तैरबौ—देखो 'तिरणौ, तिरबौ' (रू.भे.)

तैरणहार, हारौ (हारी), तैरणियौ—वि०।

तैरवाड़णौ, तैरवाड़बौ, तैरवाणौ, तैरवाबौ, तैरवावणौ, तैरवावबौ —प्रे०रू०।

तैराड़णौ, तैराड़बौ, तैराणौ, तैराबौ, तैरावणौ, तैराववौ—क्रि०स०

तैरिग्रोड़ौ, तैरियोड़ौ, तैरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

तैरीजणौ, तैरीजबौ—भाव वा०।

तैराई-सं०स्त्री०—१ तैरने की क्रिया या भाव. २ वह धन जो तैरने के कार्य के लिए मिले।

रू०भे०—तिराई।

तैराक-वि०—तैरने वाला, तैरने में दक्ष।

रू०भे०—तिराक, तेरू।

तैराड़णौ, तैराड़बौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.)

तैराड़ियोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तैराड़ियोड़ी)

तैराणौ, तैराबौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.),

तैराणहार, हारौ (हारी), तैराणियौ—वि०।

तैरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

तैराईजणौ, तैराईजबौ—कर्म वा०।

तरणौ, तरबौ, तिरणौ, तिरबौ, तैरणौ, तैरबौ—अक० रू०।

तैरायळ—देखो 'तेरायळ' (रू.भे.)

तैरायोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तैरायोड़ी)

तैरावणौ, तैराववौ—'तिराणौ, तिराबौ' (रू.भे.)

तैरावियोड़ौ—देखो 'तिरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तिरावियोड़ी)

तैरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तैरा हुआ, पार किया हुआ। २ देखो 'तिरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तैरियोड़ी)

तैरीख—देखो 'तारीख' (रू.भे.) उ०—हमार दिवाळी छै, सारा साथ नूं लाखै जी सीख दी छै, कदै वैर वाळण री मन में छै तौ फलांणी तैरीख वेगा आवज्यो।—नैणसी

तैरू—देखो 'तेरू' (रू.भे.)

तैरै—देखो 'तेरै' (रू.भे.) उ०—'अभपती' जती गोरख एम, तैरै सख बारह पंथ तैम।—वि.सं.

क्रि०वि०—तव।

तैलंग-सं०पु०—१ दक्षिण भारत के एक प्रदेश का नाम।

रू०भे०—तलिंग, तिलंग, तेलंग।

तैलंगी, तैलंगौ-सं०पु०—तैलग देश वासी।

रू०भे०—तिलंगी, तेलंगौ।

तैलकार—देखो 'तेलकार' (रू.भे.)

तैलकौ—देखो 'तहलकौ' (रू.भे.)

तैळायौ—देखो 'तेळायौ' (रू.भे.)

तैलिंग-सं०पु०—ब्राह्मणों का एक भेद विशेष।

तैवड़ौ-वि०—१ तीन तह का. २ तीन लड़ का।

रू०भे०—त्रेवड़ौ, त्रेवडौ।

तैवार, तैवार—देखो 'तिवार' (रू.भे.)

तैस-सं०पु०—आवेश, क्रोध, गुस्सा, आवेग के साथ आने वाला क्रोध।

तै'सनै'स—देखो 'तहस-नहस' (रू.भे.)

तै'सील—देखो 'तहसील' (रू.भे.) उ०—मिळि के बादसाहूं का अमल कौ उठाया। ऊं तीन बरस होगा तै'सील कूं न आया।—शि.वं.

तै'सीलदार—देखो 'तहसीलदार' (रू.भे.)

तैसौ-वि० (स्त्री० तैसी) उस प्रकार का, वैसा।

रू०भे०—तैहौ।

तैहरू-सं०पु०—हाथी की पीठ पर चारजामे के नीचे रखा जाने वाला एक वस्त्र का उपकरण विशेष जो प्रायः २ गज लम्बा तथा ३॥ गज चौड़ा होता है। इसको गद्देदार बनाने के लिए इसमें रूई या चकमा डाला जाता है।

तैहौ—देखो 'तैसौ' (रू.भे.) उ०—सलागा रमा चख उरू ढाल जैहा। तकै तेजवंती अरी साल तैहा।—शि.सु.रू.

तों—देखो 'तो' (रू.भे.) उ०—दां ओगण दुख दाई नै रै, दां ओगण दुखदाई नै। तों मे ओगण तार नहीं है, ओगण भाग अन्याई नै।

—ऊ.का.

तोंगड़—देखो 'तांगड़' (रू.भे.)

तोंद—देखो 'तुंद' (रू.भे.)

तोंदळ—देखो 'तोंदीलौ' (मह., रू.भे.)

तोंदी-सं०स्त्री० [सं० तुंडी] नाभी।

तोंदीलौ-वि० (स्त्री० तोंदीली) जिसका पेट आगे बढ़ा हो, तोंद वाला, तोंदीला।

मह०—तोंदल, तोंदेल (मह., रू.भे.)

तोंदेल—देखो 'तोंदीलौ' (मह., रू.भे.)

तो-सर्व०—१ तुम्हारा, तेरा। उ०—करहा तो वेसासडउ, मो विण सारचा काज। अंतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळई आज।

—ढो.मा.

२ 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियां लगने के पहले प्राप्त होता है, तुझ। जैसे—तो को, तो नूं, तो सूं, तो से, तो पर, तो में।। उ०—१ भोलन कूं न भळावियौ, नहीं मेरां मीणांह। तो नूं रांण भळावियौ, सोहड़ां सुकळीणांह।—बां.दा.

उ०—२ मैं कीधौ सांचै मतै, नायक तो सूं नेह। बण आवौ सो देह वित, दाह विरह मत देह।—बां.दा.

३ 'तूं' का कर्म और संप्रदान रूप, तुझको। उ०—१ चंदा तो किण खंडियउ, मो खंडी किरतार। पूनिम पूरिउ ऊगसी, आवंतइ अवतार।—ढो.मा.

उ०—२ ईडरिया आचार री, वीर चढ़ै तो वेळ। हसत चढ़ै चारण हुवै, माया सरसत मेळ।—बां.दा.

४ तेरे, तुम्हारे। उ०—१ नीर मिळै तो नीर में, सायर मांहि समाय। नर न्हावै तो नीर में, जोत समावै जाय।—बां.दा.

उ०—२ साळू रा पांणी विना, रहइ बिलक्खा जेम। ढाढ़ी साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण ग्रेम।—ढो.मा.

उ०—३ तारण तरण नहीं को तो सारीखौ, पुहवि सहु सोभि नै ए लह्यौ पारिखौ।—ध.व.ग्रं.

अव्य० [सं० तद्] १ उस दशा में, तब। उ०—१ सीखावि सखी राखी आखै सुजि, रांणी पूछै रुखमणी। आज कहौ तो आप जाइ आवूं, अंब जात्र अंबिका तणी।—वेलि.

उ०—२ जिम जिम सज्जण संभरइ, तिम-तिम लग्गइ तीर। पंख हुवइ तो जाइ मिळि, मनां बंधाड़ां धीर।—ढो.मा.

उ०—३ दादू मन ही सूं मळ ऊपजै, मन ही सूं मळ धोइ। सीख चलै गुरु साधु की, तो तूं निरमळ होइ।—दादू वांणी

२ किसी शब्द पर जोर देने के लिये या कभी-कभी यों ही बोला जाने वाला एक अव्यय। उ०—सज्जण देसांतर हुवा, जे दीसंता नित्त। नयणे तो वीसारिया, तूं मत विसरे चित्त।—ढो.मा.

रू०भे०—तौ।

तोइ, तोई–सं०पु० [सं० तोय] १ तेज, कान्ति, आभा।

उ०—'तीड' री 'सळख' कुळ चाढ़ तोइ। दन खगां विरद अजवाळ दोइ।—सू.प्र.

२ देखो 'तोय' (रू.भे.)

सर्व०—१ तेरी। उ०—पही भमंतउ जउ मिळइ, कहै अम्हीणी वत्त। घण कणयर की कंब ज्यउं, सूकी तोइ सुरत्त।—ढो.मा.

२ तुमसे, तुझसे, तुझे। उ०—सहिए फिरि समझावियउ, सुहिणइ दोस न कोइ। सउ जोयण साहिब वसइ, आंण मिळावइ तोइ।
—ढो.मा.

अव्य०—इस पर भी, तो भी, तब भी। उ०—१ जइ खाडउ तोइ चंद्र, जइ वाळउ तोइ इंद्र। जइ ताव्यउं तोइ कांचन, जइ घसउं तोइ चंदन।—व.स.

उ०—२ सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ। खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ।—ढो.मा.

उ०—३ मारू तो इण कणमणइ, साल्हकुमर वहु साद। दासी तद दीवाधरी, सांभळिया पड़साद।—ढो.मा.

उ०—४ घणौ तोइ एक एकोइ घणौ गोविंद तुं चहु-ग्रै-गमा। देखै सवाद सुख दुख रौ तुं निसवादी त्रीकमा।—पी.ग्रं.

उ०—५ सरिखां सूं वळभद्र लोह साहियै, वड़फरि उछजतै विरुधि। भलाभली सति तोई ज भंजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि.

रू०भे०—तोहि, तोही, तोइ, तोई, तौहि, तौही।

तोईद—देखो 'तोयद' (रू.भे.)

तोक-सं०पु० [अ० तौक़] १ हंसुली के आकार का गले में पहिनने का एक आभूषण. २ हंसुली के आकार का ही एक बहुत भारी वृत्ताकार उपकरण जो अपराधी के गले में पहना देते थे. ३ पक्षियों के गले में वृत्ताकार प्राकृतिक चिन्ह. ४ देखो 'तोख' (रू.भे.).

वि० [सं० स्तोकं] थोड़ा, कम, तुच्छ।

रू०भे०—तौक, तौख।

तोकणौ, तोकबौ–क्रि०स०—१ प्रहार करने को शस्त्र उठाना.

उ०—नमो करनल्ल बळू अवनीस, तोक्यां कर पत्र ससत्र छत्तीस।
—मे.म.

२ वार करना, प्रहार करना. ३ संभालना। उ०—तोकतां बाग सत्रणां तणा, अग्र भाग दोनां अड़्या। जां पीठ जोध सावळ दुजड़, चाप वांण ले ले चढ़्या।—मे.म.

तोखणौ तोखबौ—रू०भे०।

तोकायत–वि०—शस्त्र उठाने वाला, योद्धा। उ०—सीस वह भुजां तोकायतां सावळां, रखां रोकायतां अरक रीझ। राळिया भड़ज घक नयण रोखायतां, बीच झोकायतां रयण बीज।—रांमकरण महड़ू

तोकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ प्रहार हेतु शस्त्र उठाया हुआ. २ वार किया हुआ. ३ संभाला हुआ।

(स्त्री० तोकियोड़ी)

तोख–सं०पु० [सं० तोष] १ संतोष, तृप्ति. २ मान, प्रतिष्ठा।

मुहा०—तोख राखणौ—मान रखना, किसी की मर्यादा रखने के लिए उचित व्यवहार करना।

३ देखो 'तोक' (रू.भे.) उ०—पीथल के तोख पारचौ, महमुद को मांन मारचौ। बुद्धसिंह को बिगारचौ नीके निरधारू मैं।—ऊ.का.

रू०भे०—तौक, तौख।

अल्पा०—तोखियौ।

तोखणौ, तोखबौ–क्रि०स०—१ संतुष्ट करना। उ०—कुदता उडता कूदता, ओद्रकता वप आप। 'जेहौ' तोखै जाचणां, साहण इसा समाप।
—बां.दा.

२ देखो 'तोकणौ, तोकबौ' (रू.भे.)

तोखार–सं०पु०—१ देखो 'तुखार' (रू.भे.) उ०—असि लख तोखार लख मैंगळ मदमाता, हाली अलीमसंद दयत राकस दीसंता।
—राव मालदेव री वात

तोखारी–सं०पु०—अश्व, घोड़ा।

तोखियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ संतुष्ट किया हुआ.

२ देखो 'तोकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तोखियोड़ी)

तोखियौ—देखो 'तोख' (अल्पा.)

तोखीर—देखो 'तोक' (मह., रू.भे.)

तोग–सं०पु० [सं० तूग] १ मुगल बादशाहों के शासनकाल में उच्च पदाधिकारियों तथा मनसबदारों को उनके सम्मान में प्रदान किया जाने वाला ध्वज विशेष जिसके सिरे पर सुरा गाय के पूंछ के बालों के गुच्छे लगे रहते थे. २ सेना का झंडा या निशान।
उ०—गजमिका तराजू अदल, ग्रहि तोग मही-मुरतब तुरंग। पतिसाह हुवौ 'अजमाल' पह, दिली जेम तारा तुरंग।—सू.प्र.

तोड़–सं०पु०—१ तोड़ने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।
यौ०—तोड़जोड़, तोड़मरोड़।
२ नदी, बांध या तालाब आदि का जल-प्रवाह के कारण टूटा हुआ तट या स्थान।
क्रि०प्र०—करणौ, घालणौ।
३ किले की दीवार या प्राचीर का वह भाग जो तोपों की गोलाबारी से टूट गया हो।
४ कुश्ती का एक पेंच जो दूसरे पेंच को रद कर देता है. ५ रोग आदि से शरीर के क्षीण होने का भाव. ६ वजन आदि उठाने के कारण होने वाली कमर अथवा वक्षस्थल की क्षति. ७ चौसर के खेल में एक खिलाड़ी द्वारा प्रथम वार अन्य खिलाड़ी की सारी को मारने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।
८ ढोलक और मजीरों की ताल में गीत, भजन आदि के पद की समाप्ति पर किया जाने वाला विशेष परिवर्तन।
क्रि०प्र०—देणौ।
९ शराब बनाते समय भपके से पहले पहल निकाला हुआ शराब। इसके बाद निकाला हुआ शराब अपेक्षाकृत कम नशीला होता है।
उ०—तठा उपरायंत दारू रा घड़ा मगायजै छै, सूं दारू किण भांत रौ छै? ······असवारां रौ पियौ प्यादौ छिकै, राजा पीवै परजा छिकै, इण भांत रौ पहलड़ौ तोड़ रौ घातौ।—रा.सा सं.
१० किसी कुमारी स्त्री के साथ प्रथम समागम करने की क्रिया।
मुहा०—तोड़ करणौ—कुमारी का कौमार्य खंडित करना।

तोड़कौ–वि०—१ काटने वाला. २ तोड़ने वाला।
(स्त्री० तोड़की)

तोड़जोड़–सं०पु०यौ०—१ चाल, युक्ति, दांव-पेंच. २ अपना मतलब साधने के लिए किसी के साथ सांठगांठ करना और किसी से पृथक होने का भाव।

तोड़ण–सं०स्त्री०—१ नसों में होने वाला दर्द. २ टूटने या तोड़ने की क्रिया।

तोड़णौ, तोड़बौ–क्रि०स०—१ झटके या आघात से किसी पदार्थ के दो या अधिक खंड करना, टुकड़े करना, तोड़ना, खंडित करना. २ किसी पदार्थ या वस्तु का कोई अंग भंग करना या उसमें लगी किसी वस्तु को झटके आदि से अलग करना। उ०—अनबांछा आगै पड़ै, खिरा विचार रु खाइ। दादू फिरै न तोड़ता, तरुवर ताक न जाइ।
-दादू बांणी

३ नष्ट करना। उ०—जती रांम साथै सिया बांम जोड़ै। तिकां नांम लेतां अघां ओघ तोड़ै।—सू.प्र.
४ संहार करना, मारना, काटना। उ०—अला महा संतांन तोफांन मोड़ै। अला त्रिघारै खड़ग सां दईत तोड़ै।—पी.ग्रं.
५ बिताना, व्यतीत करना। उ०—'वीरभांण' 'नेतसी' जिसा 'वीदा' भय कोकळ उजवाळ रिजक धणियां अरथ, विण गणगोरन दौड़िया। मोकमा कमंध मोटा मिनक, तोफां सुं इजा दिन तोड़िया।
—अरजुनजी बारहठ

६ बल, शक्ति, प्रभाव, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना, अशक्त करना. क्षीण करना. ७ क्रय-विक्रय में वस्तु के मूल्य में दाम घटा कर निश्चित करना. ८ कूए आदि का पानी निकाल कर प्रायः समाप्त कर देना. ९ किसी स्त्री के साथ प्रथम समागम करना, कुमारी का कौमार्य खंडित करना। (मि० 'फोड़णौ' सं० ८)
१० सेंध लगाना, चोरी के लिए घर फोड़ना. ११ किसी चलते हुए कार्य अथवा कार्यालय को आगे के लिए बंद करना. १२ किसी संगठन, व्यवस्था तथा कार्यक्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा दूर करना, हटाना या नष्ट करना. १३ मर्यादा का उलंघन करना, मर्यादा मिटाना। उ०—धन लोड़ै तोड़ै धरम, विध विध जोड़ै वात। जड़ सनेह खोड़ै जड़ण, गिनका मोड़ै गात।—बां.दा.
१४ मिटाना। उ०—पंथी एक संदेसडउ, लग ढोलइ पैंहच्याइ। साव ज संबळ तोड़स्यइ, वैसासणइ न जाइ।—ढो.मा.
१५ निर्धन करना, कंगाल करना. १६ दूर करना, पृथक करना, बना न रहने देना। जैसे—सनमन तोड़णौ, सगाई तोड़णौ, गरब तोड़णौ।
मुहा०—गढ़ तोड़णौ—किला तोड़ना, गढ़ पर विजय प्राप्त करना, अधिकार प्राप्त करना।
तोड़णहार, हारौ (हारी), तोड़णियौ—वि०।
तुड़वाड़णौ, तुड़वाड़बौ, तुड़वाणौ, तुड़वाबौ, तुड़वावणौ, तुड़वावबौ, तोड़ाड़णौ, तोड़ाड़बौ, तोड़ाणौ, तोड़ाबौ, तोड़ावणौ, तोड़ावबौ—प्रे०रू०।
तोड़िओड़ौ, तोड़ियोड़ौ, तोड़योड़ौ—भू०का०कृ०।
तोड़ीजणौ, तोड़ीजबौ—कर्म वा०।
टूटणौ, टूटबौ, तूटणौ, तूटबौ—अक०रू०।
तोरणौ, तोरबौ, त्रोटणौ, त्रोटबौ, त्रोड़णौ, त्रोड़बौ, त्रोडणौ, त्रोडबौ—रू०भे०।

तोड़ादार–सं०स्त्री०—पलीते से छोड़ी जाने वाली एक प्रकार की प्राचीन बन्दूक।
रू०भे०—तोड़ेदार।

तोड़ायत—१ देखो 'तोटायत' (रू.भे.) उ०—पड़ पड़ ठीक तोख पड़वा मां, कड़वा वचनां दगध करै। जीमै घी गोहूं जोड़ायत, मां तोड़ायत भूख मरै।—हिंगळाजदांन कवियौ
२ देखो 'तोड़ादार' (रू.भे.)

तोड़ासाट-सं०स्त्री०—छोटे बच्चों का या स्त्रियों के पैरों का आभूषण।

तोड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ झटके या आघात से किसी पदार्थ के दो या अधिक खंड किया हुआ, टुकड़े किया हुआ, तोड़ा हुआ, खंडित किया हुआ. २ किसी पदार्थ का अंग भंग किया हुआ, झटके आदि से अलग किया हुआ. ३ नष्ट किया हुआ. ४ संहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ. ५ व्यतीत किया हुआ, विताया हुआ. ६ वल, शक्ति, प्रभाव, विस्तार आदि घटाया हुआ. ७ क्रय-विक्रय में वस्तु के मूल्य में दाम घटा कर निश्चित किया हुआ. ८ कूए आदि का पानी निकाल कर प्राय: समाप्त किया हुआ. ९ किसी स्त्री के साथ प्रथम समागम किया हुआ, कुमारी का कौमार्य खंडित किया हुआ. १० चोरी के लिए घर फोड़ा हुआ, सेंध लगाया हुआ. ११ किसी चलते हुए कार्य अथवा कार्यालय को आगे के लिए बंद किया हुआ. १२ किसी संगठन, व्यवस्था तथा कार्य-क्षेत्र आदि को न रहने दिया हुआ अथवा दूर किया हुआ, हटाया हुआ. १३ मर्यादा भंग किया हुआ, मर्यादा का उलंघन किया हुआ, मर्यादा मिटाया हुआ. १४ मिटाया हुआ. १५ निर्धन किया हुआ, कंगाल किया हुआ. १६ दूर किया हुआ, पृथक किया हुआ।
(स्त्री० तोड़ियोड़ी)

तोड़ियौ—देखो 'तोड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

तोड़ेदार—देखो 'तोड़ादार' (रू.भे.)

तोड़ौ-सं०पु०—१ सोने अथवा चांदी का जंजीरदार स्त्रियों के पैर का आभूषण विशेष. २ हाथी के पैर का आभूषण विशेष. ३ रुपए रखने की टाट या मोटे वस्त्र की थैली।
अल्पा०—तोड़ियौ।
४ नदी का किनारा. ५ घाटा, कमी, न्यूनता, अभाव।
उ०—१ धणी मोर किसड़ा धनी, भूख न घर हुं भगाय। मोती-भूखन मो गळै, तोड़ौ अन री ताय।—रेवतसिंह भाटी
उ०—२ नांनांणा दादांणा जोड़ौ, ताजा कुळ दोनूं रोटी रो तोड़ौ।
—ऊ.का.
६ पलीतादार बंदूक या तोप को छोड़ने के लिए उस पर लगाया जाने वाला सूत का बना पलीता। उ०—तठै दूंग तूटै धिखै आग तोड़ां। घणूं नाळ ताळां वजै नास वोड़ां।—सू.प्र.
७ सोने चांदी के तारों की बनी एक रस्सी जिसमें बीच-बीच में सोने चांदी के तारों के छोटे-छोटे लच्छे लगे रहते हैं। यह दूल्हे के सिर की पोशाक, पगड़ी या साफे पर लपेटी जाती है।
उ०—चोगां तोड़ां पवत्रां किलंगी सेली पाग छाई। वाजूबंवां चौकी जोत जगाई वसेक। मोतियां मूंदड़ां कड़ां जनेऊ जड़ाव माळां, ओपै वींदराजा यसी पोसाकां अनेक।—मयारांम दरजी री वात
८ रस्सी आदि का टुकड़ा. ९ वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग पैदा होती है।
वि०—१ काटने वाला. २ मारने वाला।
रू०भे०—तौडौ।

तोच, तोचौ, तोछ-वि०—१ थोड़ा, अल्प, कम. २ छिछला।
उ०—ककर पथर वीटिया कुनण, जण तण दीठा तोच जळ। सुरा-वत तु है कण साचो, आभूसण नव कोट यळ।—भोपाळदांन सांदू
३ तुच्छ, क्षुद्र। उ०—बोले साह सग्गाह महावळ, सेना तोछ तपस्यां सव्वळ।—रा.रू.
रू०भे०—तौछ।
यौ०—तोछ-वुद, तोछ-वुध।
अल्पा०—तोछड़ौ।

तोछड़ौ—देखो 'तोछौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—नीच कहीजे नेट पेट री खोटौ पापी, तुरत वैण तोछड़ौ सेण नै कहै संतापी।—ध.व.ग्रं.

तोछ-वुद, तोछ-वुध-वि०यौ०—तुच्छ बुद्धि वाला, अल्पमति।
उ०—आद जस भेट सुज मेट संगट अवैं, कोड़ जुग लगां कव सुजस कहसी। तोछवुद कवंदजे चूक भरिया तोई, वडा वडपण तणै राह वहसी।—गंनजी वारहठ

तोछौ—देखो 'तोच, तोचौ' (रू.भे.) उ०—खाय पछट्टा मीर खग, कटिया कोपट्टै, जांण उलट्टै माछळा, जळ तोछा तट्टै।—लूणकरण कवियौ।

तोजड़-सं०स्त्री०—अपरिपक्व गर्भ को गिराने वाली गाय।

तोट-सं०स्त्री०—१ कंगाली, निर्धनता. २ कमी, घाटा, अभाव।
उ०—संदेसा ही वीज पड़ौ, नै कागद आवी तोट। सही सलूणा सज्जनां, का मन मांही खोट।—ढो.मा.
क्रि०प्र०—आणी, लाणी, होणी।

तोटक-सं०पु० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं।
रू०भे०—त्रोटक।
२ शंकराचार्य के चार प्रधान शिष्यों में से एक।

तोटकियौ-सं०पु०—दस वारह वयारियों का समूह।

तोटकौ—देखो 'टोटकौ' (रू.भे.)

तोटणौ-वि०—टूटने वाला, खंड-खंड होने वाला।
उ०—रगत रो जेस खग लाल रंग, वगतरां पोस उड्डे वरंग। तोटणा वरम घट दम तुटंत, लोटणा कवूतर जिम लुटंत।—वि.सं.

तोटायत-वि०—१ निर्धन, दरिद्र. २ दुखी, संतप्त।
रू०भे०—तोड़ायत।

तोटौ—देखो 'टोटौ' (रू.भे.) उ०—१ जीहा राघौ जंपै मोटौ छै भाग जेण री भूमं। तोटौ ना'वै त्यांरै, केसौ पय सेव अधिकारी।—र.ज.प्र.

उ०—२ मोटौ दाता मंगियौ, तोटौ भाजै तेण। कीजै सायर खेप किल, जुड़ै जवाहर जेण।—वां.दा.

तोठौ—वि० [सं० तुष्टः] प्रसन्न, खुश। उ०—ए छै कोई राजवी, रूपवंत रतिराज। जो जीपे किम ही करी, तू तोठौ महाराज।—प.च.चौ.

तोड—देखो 'टोड' (रू.भे.)

तोडड़ली—सं०स्त्री०—१ एक मारवाड़ी गीत. २ देखो 'तोड' (अल्पा., रू.भे.)

तोडड़ी—देखो 'टोडड़ी' (रू.भे.)

तोडड़ौ—१ देखो 'टोडियौ' (रू.भे.) २ देखो 'टोडौ' (अल्पा., रू.भे.)

तोडती—देखो 'टोडती' (रू.भे.)

तोडर—सं०पु०—१ स्त्रियों के पैर का एक आभूषण।

उ०—तोडर पायल पइहरणौ पाय, सोवंन्न घूंघरा वाजती जाय।—वी.दे.

२ देखो 'टोडर' (रू.भे.)

तोडरमल—सं०पु०—एक राजस्थानी लोकगीत।

रू०भे०—टोडरमल।

तोडरौ—देखो 'टोडरौ' (रू.भे.)

तोडारू—देखो 'टोडारू' (रू.भे.)

तोडियौ—सं०पु०—१ ऊंट का बच्चा।

(स्त्री० तोड)

२ लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला एक मारवाड़ी लोक-गीत।

तोडी—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार की सरसों. २ देखो 'टोडी' (रू.भे.) ३ देखो 'टोडो' (अल्पा., रू.भे.)

तोडूंकणौ, तोडूंकबौ—देखो 'ताडूकणौ, ताडूकबौ' (रू.भे.)

उ०—पछै पोसाक गेहणौ पहिरियां सूंघो चोवौ अतर लगाय कस्तूरी री कंठी बणाई। सेल रा थिगा दे तोडूंकतौ ताडूंकतौ आयौ।—जगदेव पंवार री वात

तोडौ—देखो 'टोडौ' (रू.भे.)

तोत—सं०पु०—१ धोखा, छल, कपट। उ०—१ तरै जगमाल कह्यौ 'जमैखातर राखौ इणां नूं तोत कर मारस्यां।'—नैणसी

उ०—२ तरै कह्यौ 'ऊ जमाई हमैं म्हांरै हाथ नहीं। उण म्हारी धरती कितरीहेक तोत कर ली, नै हमैं म्हांनूं मारण नूं सासता साथ करै छै।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणौ।

२ आडम्बर, ढोंग। उ०—हरवळां फेर कोतल हलै, साजिया मुजरा जोत रा। मोकमा कमंध मोटा मिनख, तिमंगळ सारा तोत रा।—अरजुनजी बारहठ

मुहा०—तोत रा घोड़ा खड़णा—आडम्बर दिखलाना।

३ झूठ, असत्य।

तोतक—सं०पु०—१ झूठ, असत्य. २ आडम्बर, पाखण्ड. ३ छल, कपट।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, मचाणौ, रचणौ, रचाणौ।

तोतळा सं० स्त्री०—१ पार्वती. २ देवी, दुर्गा (ह.नां.)

तोतळौ—वि० (स्त्री० तोतळी) हकला कर बोलने वाला, तुतला कर बोलने वाला। उ०—टावर री तोतळी वांणी सुणै न जांणै काळजा में बळबळतौ डांम लागौ।—वांणी

रू०भे०—तुतलौ।

तोतापुरी—सं०पु०—आम की एक जाति या इस जाति का आम।

तोतीबलाय—वि०यौ०—मूर्ख।

तोतौ—सं०पु० [फा० तोता] एक प्रसिद्ध सुन्दर पक्षी जिसका तन हरे रंग का और चोंच लाल होती है। शुक, कीर।

मुहा०—१ तोता ज्यूं रटणौ—तोते की तरह रटना, बिना सोचे-समझे रट लगा कर याद करना. २ तोता रटंत—तोते की तरह रटने की क्रिया।

२ बन्दूक की कल।

वि० (स्त्री० तोती) तुतला कर या हकला कर बोलने वाला।

क्रि०प्र०—बोलणौ।

तोत्र—सं०पु० [सं० तोत्रं=अंकुश या कीलदार चाबुक] १ भाला, बरछा। उ०—दो ही बीरां रा तोत्र दो ही तरफां कंकटां नूं काटि पुदगळां में पैठि तूटिया।—वं.भा.

२ वह छड़ी या चाबुक जिससे जानवर हांके जाते हैं।

तोत्रमहानट—सं०पु० [सं०]—महादेव, शंकर।

तोद—सं०पु० [सं०] कष्ट, पीड़ा, व्यथा।

वि०—कष्ट देने वाला, पीड़ा पहुंचाने वाला।

तोदन—सं०पु०—१ तोत्र, चाबुक. २ कष्ट, पीड़ा।

तोदरी—सं०स्त्री० [फा०] फारस में होने वाला एक प्रकार का बड़ा कंटीला पेड़ जिसमें पतले छिलके वाले फूल लगते हैं।

तोप—सं०स्त्री० [तु०] एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः पहियोंदार गाड़ी पर रखा रहता है जिससे युद्ध के समय शत्रु की सेना पर गोले छोड़े जाते हैं। आजकल वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण वायुयानों, जहाजों तथा मोटरों में भी तोपें रखी जाती हैं।

क्रि०प्र०—चलणी, चलाणी, छुटाणी, छूटणी, दगणी, दागणी।

यौ०—तोपची, तोपखांनौ।

तोपखांनौ—सं०पु० सं० [तु+फा] वह स्थान जहाँ तोपें व उनका सभी आवश्यक सामान रहता हो, रण के लिए तैयार किया हुआ तोपों का समूह। उ०—धर मुहर तोपखांना सधीर, ज्यां पीछ अरांनां गज जंजीर। सजतौ ह फिरंगी लियां साथ, हथनाळ हवाई बांण हाथ।—वि.सं.

तोपची—सं०पु० [तु०] तोप चलाने या दागने वाला, गोलंदाज।

रू०भे०—तोबची।

तोफ—देखो 'तोप' (रू.भे.) उ०—दगै तोफां वहै गोळा, रोहला मोरछा दोळा। जो लार सकै सूता सेर नै जगाय।—वां.दा.

तोफगी-सं०स्त्री० [फा० तुहफा] १ अच्छा होने का भाव, अच्छापन, खूबी. २ नमूना।

तोफांन—देखो 'तूफान' (रू.भे.) उ०—मयंदी वरण कांन्ह रै थाप मारी, तरी साह तोफांन रै माह तारी।—मे.म.

तोफौ-सं०पु० [अ० तुहफ] १ उपहार, भेंट.
उ०—१ चूक माफ करणे में तौ तहकीक तोफौ दरगाह म्हारी में सिवाय गुनैंगार रे न ल्यावै।—नी.प्र.
उ०—२ उजवाळ रिजक घणियां अरथ, विण गणगोर न दौड़िया। मोहकर्मा कमंघ मोटा मिनख, तोफा ही सूं दिन तोड़िया।
—अरजुणजी बारहठ
२ बनाव, आडम्बर। उ०—वलि राजा बांधिवा हुयौ खाटरौ वडौ हरि। आयौ प्रोळि अनंत, किसन इहड़ौ तोफौ करि।—पी.ग्रं.
वि०—बढ़िया, सुन्दर, अच्छा।
रू०भे०—तुहफौ, तोहफौ।

तोब—देखो 'तोबा' (रू.भे.) उ०—मुर मुयणां रा महंत तोब दरबार तमारा। कहैं मेर किमेर हैंमैं गिमि पाप हमारा।—पी.ग्रं.
२ देखो 'तोबा' (रू.भे.)

तोबड़—१ देखो 'तोबर' (रू.भे.) २ देखो 'थोबड़ौ' (मह., रू.भे.)

तोबड़ियौ-वि०—मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट। उ०—जितरै बीच थोहर झाड़ां रा बीड़ा मांहां खरगोस ऊठिया छै। सू किण भांत रा छै? मोटा पेदा छै, तोबड़िया छै।—रा.सा.सं.
२ देखो 'तोबर' (अल्पा. रू.भे.)

तोबड़ौ—देखो 'तोबर' (अल्पा. रू.भे.)

तोबची—देखो 'तोपची' (रू.भे.) उ०—तठा पछै राव डूंगरसी भाई रै वैर कटक कियौ। मोटा राजा रै पिण मेळ हुइ कठा की सु जोधपुर सुं नसीरदी रा तोबची मांणस ६०० तेड़िया था।
—राजा उदैसिंघ री वात

तोबणौ, तोबबौ-क्रि०स०—बीज बोना।

तोबर-सं०पु० [फा० तोबरः] घोड़े का दाना खाने का थैला।
वि०वि०—यह चमड़े या टाट का होता है और घोड़े के मुंह पर लटका दिया जाता है।
रू०भे०—तोबड़।
अल्पा०—तोबड़ियौ, तोबड़ौ, तोबरौ।

तोबरदार-वि०—रौबदार। उ०—भींवौ डीलां तोबरदार तौ खरौ पिण जखड़ा री सिबी डील रोब री मछर रंग मिळै नहीं।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

तोबराळ-सं०पु०—घोड़ा, अश्व।

तोबरौ—देखो 'तोबर' (अल्पा., रू.भे.) उ०—तरै पिउसंघी भींवाजी नै आय कह्यौ—अे कड़ा मोती पहरौ, सिरपाव पहिरौ नै तोबरौ ले जावौ नै कहिज्यौ—सिकार मांहे जिनावरां रा डावा कांन कठै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

तोबा-सं०स्त्री० [अ० तौबः] अपने किए हुए दुष्कृत्य अथवा अनुचित कार्य के लिए पश्चाताप करने की भावना प्रकट करने की क्रिया तथा भाव। उ०—हे गुलांम! बैद्य नूं कह—मैं झूठौ होय पछताऊं छूं। कोल तोड़ियां रौ तोबा करूं छूं।—नी.प्र.
(यह शब्द अनुचित कार्य करने वाले व्यक्ति तथा घृणास्पद पदार्थ के प्रति घृणा प्रकट करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है।)
मुहा०—तोबा करणौ—पश्चाताप करना, घृणा प्रकट करना।
यौ०—तोबा-तोबा।

तोबाकू—देखो 'तमाकू' (रू.भे.) उ०—तोबाखू छै नांमैं तेहनै रे, तंवाखू वळि तेम। नांम तणौ पिण अरथ भलौ नहीं रे, कहौ पीवै कुण केम।—ध.व.ग्रं.

तोम-सं०पु० [सं० स्तोम] १ यज्ञ, हवन (डिं.को.) २ अन्धकार।
उ०—सहंस ग्रांम सललळै, जळै परजळै प्रळै जिम। धूम व्योम धूंवळौ तरिण भ्रम तोम सोम तिम।—रा.रू.
३ दल, सेना। उ०—जिकौ दो ही पिता पुत्रां रौ मिळाप सुणि अंतर में अेक जांणि तुरकां रौ तोम त्रासियौ।—वं.भा.
४ समूह, झुण्ड। उ०—तमांम सत्रु संग की प्रतापतैं तपावणी, खलांन कोम भोम खोम तोम को खपावणी।—ऊ.का.
वि०—१ सर्व, सब। उ०—तुंही रोम मैं तोम वेमंड राखै। नवै खंड तूं ही घड़ै भांगि नांखै।—मे.म.
२ अधिक, बड़ा।
रू०भे०—तौम।

तोमड़ी—देखो 'तुंबी' (अल्पा., रू.भे.)

तोमर-सं०पु० [सं०] १ भाले के प्रकार का एक लोहे का बड़ा फल लगा शस्त्र (प्राचीन) उ०—धर तोमर खग धार पमंगां पाछटै, आचगळा अखड़ैत असंमर आछटै।—किसोरदांन बारहठ
२ बाण, तीर. ३ एक बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में गुरु लघु होता है. ४ एक देश का नाम (पौराणिक)
५ राजपूतों का एक वंश।
रू०भे०—तूंबर, तौमर।

तोमरार-सं०पु०—शस्त्र (अ.मा.)

तोय-सं०पु० [सं०] १ जल, पानी। उ०—गुर प्रताप हरि जाप घणी सेवग साधारे। मांनव कितइक बात तोय ऊपर गिर तारे।—ज.खि.
२ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र. ३ देखो 'तोइ, तोई' (रू.भे.)
उ०—साजन दुरजन के कहै, तुम मत विरचौ मोय। ज्यां मस लागी कागदां, त्यां हित लाग्यौ तोय।—अज्ञात
क्रि०वि०—तो भी, तथापि। उ०—चहुवांणां कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय। चाड न घट्टै खूंद की, सीस पलट्टै तोय।—रा.रू.

तोयचौ-सं०पु०—एक नृत्य विशेष।

तोयद-सं०पु० [सं०] १ बादल, मेघ (अ.मा.) २ नागरमोथा।
३ घृत, घी।

वि०—जल दान करने वाला, जल देने वाला।
रू०भे०—तोईद।
तोयदागम-सं०स्त्री० [सं०] वर्षा ऋतु।
तोयध, तोयधर—देखो 'तोयधि' (रू.भे.) उ०—१ नृप सुमेर 'पातल' निडर, अर घर करण उद्यांन। तोयध तरळ तरंग तिर, गा लंदन गहवांन।—किसोरदांन बारहठ
उ०—२ कही विध हुवै तहकीक वरखा कणां, बळै परसै अरस कहै किण वार। तोयधर कदाचित पार लंघै तऊ, प्रभू गुण ताहरां न लाभै पार।—र.रू.
तोयधार-सं०पु०—मेघ।
तोयधि, तोयधी-सं०पु० [सं० तोयधि] समुद्र, सागर।
उ०—तोयधी गिरराज तारे, प्रगट कर कपि सेन पारे रची लंका राड।—र.ज.प्र.
रू०भे०—तोयध, तोयधर।
तोयनिध, तोयनिधि [सं० तोयनिधि] समुद्र, सागर। उ०—भटक न अर भाराथ भिड़, बैर बसा लै वेग। तिरवा भव रो तोयनिध तरणी पिव री तेग।—रेवतसिंह भाटी
तोयनीवी-सं०स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरा।
तोयेस-सं०पु० [सं० तोयेश] समुद्र।
तोर—१ देखो 'तौर' (रू.भे.) उ०—मुहकम छोडै मेड़तौ, नास गयौ नागौर। पूछै जाफर जोधपुर, तूटै छूटै तोर।—रा.रू.
[सं० तुवर] २ अरहर।
सर्व०—१ तेरा, तुम्हारा। उ०—संवत गुणी तिहोतरै, तवियौ जस नृप तोर। तवियौ जस नृप तोर प्रथीप प्रताप रौ।
—किसोरदांन बारहठ
तोरइ, तोरई—१ देखो 'तोरू' (रू.भे.)
सर्व०—२ तुम्हारा, तेरा। उ०—१ तिण हुं तोरइ अरणइ आयउ, स्वांमी नयण निहालौ जी।—स.कु.
उ०—२ हुं प्रभु तोरइ सरणै आयउ, तुं मुझ नंइ साधारि जी।
—स.कु.
उ०—३ प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि। हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाझण ती डरपाहि।—ढो.मा.
तोरउ-सर्व०—तुम्हारा। उ०—ध्यांन इक तोरउ धरू, चरणइ लाऊं चीत।—स.कु.
तोरकी, तोरकू, तोरकौ-सं०पु०—१ तुर्किस्तान का उत्पन्न घोड़ा।
उ०—वीरउ भड़सी नइ मोखसी, कुंअरपाळ लोलउ खेतसी। पवन वेगि जे चालइ चंग, ईहां दीधा तोरकी तुरंग।—कां.दे.प्र.
२ देखो 'तुरक' (रू.भे.) उ०—जे निसांण तोरकां तिहां सिरि पांडवि घाउ वजाविउ। विसर वाजतां वेगि सुणि करि मलिक नेब तिहां आविउ।—कां.दे.प्र.
तोरड़ौ-सं०पु० (स्त्री० तोरड़ी) १ ऊंट का बच्चा. २ शतरंज का ऊंट नाम का मोहरा। उ०—त्यागी फेट किस्त की लखियै, हुई इतै वड हांणी। तीखै पग की एक तोरड़ी, कियौ प्रथम कुरबांणी।
—ऊ.का.
सर्व० (स्त्री० तोरड़ी) तुम्हारा, तेरा। उ०—१ मोरा साहिब हो स्री सीतळनाथ कि वीनति सुणि एक मोरड़ी। दुख भांजइ हो तुं दीनदयाळ कि वात सुणी मइं तोरड़ी।—स.कु.
उ०—२ चरण न छोडूं तोरड़ा।—स.कु.
तोरण-सं०पु० [सं०] १ किसी घर अथवा नगर का मुख्य प्रवेश द्वार जिसका ऊपरी भाग मंडपाकार होता है तथा प्राय: सजा हुआ रहता है। (डि.को.) उ०—जठे भीम रा सिपाहां तोरण रै बाहिर आया जिकै राजा सहित प्राकार में प्रविस्ट कीधा।—वं.भा.
यौ०—तोरणदुवार।
२ मांगलिक अवसरों पर केले आदि के पत्तों से बनाया जाने वाला द्वार. ३ वे मालायें जो सजावट के लिए दीवारों अथवा खम्भों पर लगाई जाती हैं। वंदनवार। उ०—केसरियां दळ कमध एम मरु-धर पति आया, वंदि कळस वर तरणि भार द्रव कळस भराया। तोरण चित्र जर तार सहर बाजार सिंगारै, वर नौबति वाजतां महिल महाराज पधारै।—सू.प्र.
४ विवाह के अवसर पर कन्या के पिता के भवन के मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ठ की खपच्चियों का बना एक मांगलिक उप-करण।
वि०वि०—इस पर काष्ठ की बनी चिड़ियां अथवा तोते लगे होते हैं। यह कई रंगों से सुसज्जित किया जाता है। यह कई प्रकार का होता है। इसमें 'तळियौ-तोरण' अधिक महत्वपूर्ण है। विवाह के समय बरात लेकर दूल्हा जब कन्या के पिता के घर आता है तब मुख्य द्वार पर इस 'तोरण' को वृक्षादि की हरी टहनी से स्पर्श करता है। विवाह कर के दूल्हा जब दुलहिन सहित अपने घर लौटता है तो घर में प्रवेश करते समय मुख्य द्वार पर ऐसे तोरण को अपनी तलवार से सात बार स्पर्श करता है। उ०—तिसे तोरण वांदीयौ। आरती कीधी। चंवरी वीराजिया। हथळेवौ दीधौ।
—वीरमदे सोनगरा री वात
क्रि०प्र०—वंदाणौ, बांदणौ।
यौ०—तोरण-घोड़ौ, तळियौ-तोरण।
५ वंदनवार अथवा मुख्य द्वार के आकार का हथेली में होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष। उ०—असि खड़ग सकति तोरण उदार। अंकुस संख चक्र सुभ अपार।—सू.प्र.
६ ऊंट को अंकुश में रखने के लिए उसके नाक में डाले जाने वाले काष्ट के छोटे टुकड़े में डाला जाने वाला रस्सी अथवा तार का फंदा जिसमें रस्सी बांधी जाती है।
क्रि०प्र०—घलाणौ, घालणौ, वाळणौ।
७ विशाखा नक्षत्र का एक नाम।
अल्पा०—तोरणियौ।

तोरण-घोड़ी-सं०पु०यौ०—वह घोड़ा जिस पर चढ़ कर दूल्हा तोरण का अभिवादन करता है।

तोरण-छड़ी-सं०स्त्री०यौ०—कणेर आदि की हरी शाखा जिससे दूल्हा-दुलहिन के घर के मुख्य द्वार पर तोरण को स्पर्श कर के अभिवादन करता है।

तोरणथंब, तोरणथंभ, तोरणथांभ-सं०उभ०लि०यौ०[सं० तोरण स्तम्भ] विवाह में काष्ठ का बना वह मांगलिक स्तम्भ जो लगभग दो या तीन फुट लंबे काष्ठ के एक डंडे पर दो खपच्चियां लगा कर बनाया जाता है। दोनों खपच्चियां आपस में एक दूसरी को काटती हुई रखी जाती हैं। उनके चारों छोरों पर छेद कर के लगभग छः इंच लंबी पतली गोल तीलियां लगादी जाती हैं।

वि०वि०—इस स्तम्भ को विनायक बधाते समय सुथार तोरण के साथ लाता है। फिर घर में सुरक्षित स्थान पर गाड़ दिया जाता है और उस पर मंगल-कलश स्थापित कर दिया जाता है जो गणेशजी का प्रतीक माना जाता है। लड़के के विवाह में बारात चढ़ते समय पहले मंगल कलश सहित इस स्तम्भ की पूजा होती है तथा लड़की की शादी में दूल्हे को बधाते समय पहले इसकी पूजा होती है। अच्छे शकुनों के लिए इसको साल भर सुरक्षित रखा जाता है। इसको माणक (माणिक्य) स्तम्भ भी कहते हैं।

तोरणदार-लगांम-सं०स्त्री०यौ०—घोड़े की एक लगाम विशेष जिसमें छोटे व पैने कीले लगे रहते हैं।

वि०वि०—ऐसी लगाम प्रायः उद्दंड घोड़ों के लिए काम में लाई जाती है।

तोरणद्रुत्री-सं०पु०—विवाह के अवसर पर दुल्हन के घर पर वर द्वारा 'तोरण' को छड़ी से स्पर्श करने के पहिले ब्राह्मण द्वारा पढ़ा जाने वाला मंत्र जिसका उच्चारण वर भी करता है।

वि०वि०—देखो 'तोरण' सं० ४।

तोरणमाल-सं०पु० [सं०] अवंतिकापुरी।

तोरणवार-सं०पु०—वंदनवार। उ०—सीसम सार की पाटली ऊंचा थरि थरि तोरणवार।—वी.दे.

तोरणस्थंभ-सं०पु०यौ०—१ मांगलिक अवसरों पर केले आदि की पत्तियों से बनाये गये द्वार में लगाया जाने वाला स्तंभ। उ०—ऊभीइ तोरण-स्थंभ विसाळ, ब्राह्मण उच्चरइ वेदोद्गार।—व.स.

२ देखो 'तोरण-थांभ (रू.भे.)

तोरणियौ-सं०पु०—१ वह बैल जिसके दोनों सींगों के मध्य ललाट पर भौंरी हो. २ देखो 'तोरण (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ बन्ना म्हे थांनै केसरिया ओ यूं कैयौ, बनजी मचकै नै तोर-णियै मत जाय, खातीड़ै री नीजर लागणी। म्हारौ केसरियौ हजारी गुल रौ फूल, चंपै री तीजी पांखड़ी।—लो.गी.

तोरणौ-सं०पु०—१ गेहूं और जौ की फसल काटते समय काटने के लिए एक व्यक्ति द्वारा एक बार में अपने सामने लिया हुआ भाग।

२ एक प्रकार का घोड़ा (व.स.)

तोरणौ, तोरबौ-क्रि०स०—देखो 'तोड़णौ, तोड़बौ' (रू.भे.)

उ०—अपराध विना तोरी प्रीति हो।—स.कु.

तौरणौ, तौरबौ—रू०भे०।

तोरात—देखो 'तौरात' (रू.भे.)

तोरी-सर्व०—१ तुम्हारी, तेरी। उ०—तुम मूं विचि अंतर घणउ, किम करूं तोरी सेव।—स.कु.

२ देखो 'तोरू' (रू.भे.)

तोरुं-सर्व०—१ तेरा, तुम्हारा। उ०—समय सुंदर कहइ हुं, धरिस तोरुं ध्यांन।—स.कु.

२ देखो 'तोरू' (रू.भे.)

तोरुद-सं०स्त्री०—तुरई के बेल से मिलती-जुलती देवदाली नामक एक लता जिसके फल ककोड़े की तरह कांटेदार होते हैं।

तोरूं, तोरू-सं०स्त्री०—चौड़े पत्तों वाली एक लता एवं इसका फल जो छील कर सब्जी बनाने के काम में लिया जाता है।

रू०भे०—तूरी, तोरी।

तोरे-क्रि०वि०—तब।

सर्व०—तेरे, तुम्हारे।

तोरौ-सर्व० (स्त्री० तोरी) तेरा, तुम्हारा। उ०—दोरी लागै दोयणां, छक तोरौ उर छेक। सैणां मन सोरौ रहै, पदवी डोरौ पेख।

—जुगतीदांन देथौ

सं०पु०—१ देखो 'तोड़ौ' नं० २ (रू.भे.) उ०—दळ बळ तुरंग गज ससत्र द्रव्व, समपिया साह तोरा सरव्व।—सू.प्र.

२ प्रभाव. ३ रंग-ढंग, चाल-ढाल. ४ सीमा, किनारा, छोर।

उ०—गोरी पणियारी तेजौ तन गाजै, लारै धोरी रै जणियारी लाजै। फोरै खाथा नै गाळी फटकारै, तोरै जातां नै हाळी ततकारै।

—ऊ.का.

मुहा०—तोरै आणौ—किनारे आना, किसी बात अथवा मामले का सीमा पर पहुंचना।

तोल-सं०पु० [सं० तोल] १ तराजू. २ तुला राशि. ३ किसी व्यक्ति पदार्थ आदि के भार का परिणाम, वजन। उ०—कई कई मोती कीध, तकलीणा घर घर तिकै। अधकै तोल अबींध, मावव घड़ियौ मोतिया।—रायसिंह सांदू

४ अंदाजा, अनुमान।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, देखणौ, निकळणौ।

५ थाह, गम्भीरता। उ०—बाळपणे की प्रीत रमैया जी, कदेइ नहिं आयौ थारौ तोल। दरसण विण मोहि जक न परत है, चित मेरौ डावांडोल।—मीरां

मुहा०—तोल देखणौ—थाह जांचना, किसी व्यक्ति की गम्भीरता आंकना।

६ स्थिरता, अटलता, दृढ़ता। उ०—१ बोलै साचा बोल, काचा न

यारै करै। तिण मांणस रा तोल, मेर प्रमांणै मोतिया।

—रायसिंह सांदू

७ मान, प्रतिष्ठा, बड़प्पन। उ०—पातिसाह जी ग्राछौ रजपूत देखि चरकी डील रौब री मरोड़ देख नै तीन हजारी रौ मुनसप दीधौ। ठौड़ बताई। सिरपाव, हाथी घोड़ौ मोतियां री माळा किलंगी खंजर दे विदा कियौ। जागीरी नीसरी। मोटै तोल में वधियौ।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

८ अधिकार, कब्जा, वश। उ०—भड़ाया ग्रोभाड़ां भांड़ कंकड़ेल पव्वै भूलां, सांकड़ेल भड़ां मूळां ग्रड़ाया सधीर। बीफरैल गुसैल कदेई तोल न ग्राया बीजां, कई दांतड़ेल जई गुड़ाया कंठीर।

—महकरण महियारियौ

९ शक्ति, बल। उ०—वोल्यौ मोय जोधा वडम बोल, त्यांरा पण देख्यौ चाहु तोल।—पे.रू.

१० विपदा, ग्रापत्ति। उ०—पड़ंतां तोल कई फिकन नाठै परा, उड गया केइक ग्रसमांण माथै। मातरा हुकम हू नाक काटै महिप, सात वीसां तणा हेक साथै।—बालाबक्ष बारहठ

ग्रल्पा०—तोलणौ।

११ इज्जत। उ०—सिंध धणी जद संकियौ, महमंद रा सुण बोल। दौ म्होरां पाछी 'दला', तिण दिन रहसी तोल।—वी.मा.

१२ स्वभाव, प्रकृति। उ०—'दलै' घणोई दाखियौ, 'मधू' परी दै मोल। 'मधू' न जांणै मोटमन राजवियां रा तोल।—वी.मा.

१३ विचार।

ग्रल्पा०—तोलौ।

वि०—तुल्य, सदृश, समान। उ०—बरापूर महासेर वेहु खेत नेत बंध, बराबरी लड़े चडे सूजस रा बोल। काची बात महा पात मुखां हुंती मतां काढ़ौ, तिसा दीठा विसा कहौ, विहुं एके तोल।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

रू०भे०—तौल।

तोलड़ी—सं०स्त्री०—मिट्टी का छोटा पात्र, छोटी हंडिया।

ग्रल्पा०—तोलड़ियौ।

तोलणौ—वि०—१ तौलने वाला, मूल्यांकन करने वाला. २ मारने वाला, संहार करने वाला। उ०—त्रिजड़-हथ मयंद जुध गयंद-घड़ तोलणा। ऊठि हरधवळ सुत ग्रढ़ंगा बोलणा।—हा.भा.

तोलणौ, तोलबौ—क्रि०स० [सं० तोलनम्] १ किसी पदार्थ ग्रथवा वस्तु के भार का परिमाण ज्ञात करने के लिए तराजू में रखना, वजन करना, तौलना। उ०—मैं चोर जीवतौ तोलियौ, पछै करि उपाय। मसोसि नै मारियौ, नहीं सस्त्र लगाय। पछै मारि नै तोलियौ, घटचौ वध्यौ न लिगार। तिण कारण मैं जांणियौ, जीव काया नहीं न्यार।—जयवांणी

२ तुलना करना, समानता के लिए परस्पर दो वस्तुग्रों का मिलान करना। उ०—सारंगवांणी सरिस बोलई, नहीं तोलई कोई। करणे नि सोवन भाल भवकइ, ग्रवसि रंभा होई।—रुकमणी मंगळ

३ प्रहार के लिए शस्त्रादि उठाना, हाथ में शस्त्र संभालना।

उ०—तिण वार तोलि खग मूंछ तांणि। ग्रसपति हूं कहियौ छोह ग्रांणि।—सू.प्र.

४ युद्ध करना। उ०—उत्तरा कूंयर बंधव बोलइ, वीर कोइ तुभ ग्राज न तोलइ।—विराट पर्व

५ संहार करना, मारना. ६ चिन्तन करना, विचार करना, मनन करना. ७ ग्रनुमान लगाना, ग्रंदाजा लगाना।

उ०—जद साध कहता उवै तौ उण गांम री मारग पूछ्यौ कहता था ग्रनै ग्राप ग्रठी नै क्यूं पधारौ। जद स्वांमीजी फरमायौ हूं जांणूं छूं उणां री कपटाइ। उण गांम री मारग पूछ्यौ तौ उण गांम नहीं गया ग्रठी नै इज गया दीसै है। ग्रागै जाय नै देखता तौ वैठा लाधता। ग्रनै कदेई गोचरी करता मिळता। साध देख नै वडो ग्रास्चरच करता। ग्राप वडी तोली।—भि.द्र.

८ समभ में बैठाना, किसी बात को ध्यान में लेकर जाँचना।

तोलणहार, हारौ (हारी), तोलणियौ—वि०।

तुलवाड़णौ, तुलवाड़बौ, तुलवाणौ, तुलवाबौ. तुलवावणौ, तुलवावबौ, तुलाड़णौ, तुलाड़बौ, तुलाणौ, तुलाबौ, तुलावणौ, तुलावबौ; तोलाड़णौ, तोलाड़बौ, तोलाणौ, तोलाबौ, तोलावणौ, तोलावबौ—प्रे०रू०।

तोलिग्रोड़ौ, तोलियोड़ौ, तोल्योड़ौ—भू०का०कृ०।

तोलीजणौ, तोलीजबौ—कर्म वा०।

तुलणौ, तुलबौ—ग्रक०रू०।

तौलणौ, तौलबौ—रू०भे०।

तोलरिण—सं०पु०—युद्ध का भंडा, ध्वज, पताका। उ०—दमगळ फळ दोख्यां दियौ, सज सत रौ सिणगार। तिड़ निज रौ पड़ तोलरिण, हेली जताय हार।—रेवतसिंह भाटी

तोलाइ—देखो 'तुलाई' (रू.भे.)

तोलाछपाई—सं०स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी कर।

तोलाड़णौ, तोलाड़बौ—देखो 'तुलाणौ, तुलाबौ' (रू.भे.)

तोलाड़ियोड़ौ—देखो 'तुलाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तोलाड़ियोड़ी)

तोलाणौ, तोलाबौ—देखो 'तुलाणौ, तुलाबौ' (रू.भे.)

तोलाणहार, हारौ (हारी), तोलाणियौ—वि०।

तोलायोड़ौ—भू०का०कृ०।

तोलाईजणौ, तोलाईजबौ—कर्म वा०।

तुलणौ, तुलबौ—ग्रक०रू०।

तोलायोड़ौ—देखो 'तुलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तोलायोड़ी)

तोलावणौ, तोलावबौ—देखो 'तुलाणौ, तुलाबौ' (रू.भे.)

तोलावियोड़ौ—देखो 'तुलायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तोलावियोड़ी)

तोलियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ तौला हुआ, वजन ज्ञात किया हुआ. २ प्रहार के लिए शस्त्र उठाया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ. ४ तुलना किया हुआ, समानता किया हुआ. ५ विचारा हुआ, मनन किया हुआ. ६ अनुमान लगाया हुआ. ७ संहार किया हुआ. ८ समझ में बैठाया हुआ।

(स्त्री० तोलियोड़ी)

तोलियौ—देखो 'तौलियौ' (रू.भे.)

तोले, तोलै–वि० [सं० तुल्य] सदृश, समान, बराबर।

उ०—त्रिभुवण मांझ नहीं त्यां तोलै, ओलै सुत अस्यंदो।—र.ज.प्र.

तोळौ–सं०पु० [सं० तोलक] १ एक तौल जो बारह माशे या छियानवे रत्ती के बराबर होता है. २ इस तौल का बाट।

रू०भे०—तोलौ।

३ ऊंट को होने वाला एक रोग जिसके कारण वह अगले पैर में झटका देकर चलता है. ४ इस रोग से पीड़ित ऊंट।

तोलौ–सं०पु० [सं० तोलः या तोलम्] १ पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण ज्ञात करने का उपकरण, बाट। उ०—लेखण तोला ताकड़ी, सोगन नै जीकार। वणियांणी जाया तणां, है ये हिज हथियार।—बां.दा.

यौ०—ताकड़ीतोला, तोलाताकड़ी।

२ अंडकोश।

मुहा०—तोला ऊंचावणौ, तोला तोलणौ—खुशामद करना, चाटुकारी करना।

रू०भे०—तौलौ।

३ देखो 'तोल' (अल्पा., रू.भे.) उ०—कांण कूरब थोड़ा हुसी, ओछौ होसी तोलौ रे। घणां झगड़ा राड़ां करी, आंणसी ऊंचौ बोलौ रे।—जयवांणी

४ देखो 'तोळौ' (१,२) (रू.भे.)

तोवौ—देखो 'तवौ' (रू.भे.) उ०—तोवै ज्यूं धरती तपै, ऊपर तपै आकास। लू लपटां सै दिस तपै, जीव तपै इण तास।—लू

तोस–सं०पु० [सं० तोष] १ तृप्ति, संतोष, तुष्टि।

उ०—सूर धपाये सुज्जड़ां, तौ उर पावै तोस। तोलै आभ भुजां बळी, बोलै सूर सरोस।—रा.रू.

[फा० तोश] २ भोज्य पदार्थ, खाने का सामान।

३ वस्त्र, कपड़ा? उ०—पहरण घण ओढ़ण पसमीनां। नोख तोस घण मोल नवीनां।—सू.प्र.

तोसक–सं०स्त्री० [फा० तोशक] रूई अथवा नारियल की जटा आदि भर कर बनाया हुआ गद्देदार बिछौना, गुदगुदा बिछौना, छोटा हलका गद्दा। उ०—अै तोसक-तकिया थारै, थारी बरोबरी म्हे करां स, कोई फाटी गुदड़ी म्हारै, बनवारी हो लाल।—लो गी.

यौ०—तोसक-तकिया।

वि० [सं० तोषक] संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला।

तोसकखांनौ—देखो 'तोसाखांनौ' (रू.भे.)

तोसण–सं०पु० [सं० तोषण] तृप्ति, संतोष।

वि०—संतुष्ट करने या होने वाला।

तोसणौ तोसबौ–क्रि०स० [सं० तोषणम्] संतोष देना, संतुष्ट करना, तृप्त करना।

क्रि०अ०—संतुष्ट होना, तुष्ट होना।

तोसदांन–सं०पु० [फा० तोशादान] १ वह थैला जिसमें यात्रीगण अपनी भोजन सामग्री आदि रखते हैं. २ रुपये-पैसे रखने का थैला विशेष। उ०—ताहरां घोड़ौ मंगाई तोसदांन मुहरां भरि सूतै कटक एकलौ चढ़ि खड़ियौ।—चौबोली

३ सिपाहियों की कमर की पेटी में लगी चमड़े की थैली जिसमें कारतूस आदि भरे रहते हैं।

तोसल–सं०पु० [सं० तोपल] १ कंस के असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने धनुर्यज्ञ में मारा था. २ मूसल।

तोसाखांनौ–सं०पु० [तु० तोश+फा० खाना] वह बड़ा कमरा जहां राजाओं अथवा धनाढ्य लोगों के अमूल्य वस्त्र अथवा आभूषण आदि रखे रहते हैं। उ०—तद नबाब हुकम दियौ—जावौ तोसाखांने से एक बाफता लावौ। सो मंगार चादर उठे हीज बैठां सिवाई।

—पदमसिंह री वात

रू०भे०—तोसकखांनौ।

तोसित–वि० [सं० तोषित] तृप्त, संतुष्ट।

तोहफौ—देखो 'तोफौ' (रू.भे.) उ०—उण कही—थारी दरगाह आयौ छूं। पण खाली हाथ न छूं, तोहफौ लायौ छूं जिसौ कोई दीठौ न सुणियौ।—नी.प्र.

तोहमत–सं०स्त्री० [अ०] झूठा कलंक, मिथ्या अभियोग।

रू०भे०—तुहमत।

तोहारौ, तोहाळौ–सर्व०—तेरा, तुम्हारा। उ०—अंसधारी हिंदवांण, रांण भांण अेम आखै। चितौड़ा तोहाळी भुजां, नचितौ चितौड़।

—रावत सारंगदेव रौ गीत

तोहि, तोही—देखो 'तोइ, तोई' (रू.भे.) उ०—१ घणा सियाळी जै जणै जंबूक घणा। तोहि नहं पूजवै पांण केहिर तणा।—हा.झा.

उ०—२ बास जग में त्रास जम की, अलप जीवनो मोही। जन हरिदास कूं विस्वास तेरा, मैं न छाडौ तोही।—ह.पु.वा.

तोहीन—देखो 'तौहीन' (रू.भे.) उ०—तोहीन अदालत अल कितीक, लिल्ला वजूद हैं लासरीक।—ऊ.का.

तौ—देखो 'तो' (रू.भे.) उ०—१ खत्रियां रा खटतीसकुळ, त्रदस क्रौड़ तेतीस। जिकै खड़ा तौ जाबतै, अकबर किसूं करीस।—बां.दा.

उ०—२ नर-पुर में रहसां नहीं, बससां सुर-पुर वास। मांग इंद्रायण! वर मुखां, अब तौ पूरां आस।—मयाराम दरजी री वात

उ०—३ धरिया सु उतारै नव तन धारै, कवि तै वाखांणण किमत्र। भूखण पुहप पयोहर फळ भति, वेलि गात्र तौ पत्र वसत्र।—वेलि.

उ०—४ विवरण जौ वेलि रसिक रस वंछौ, करौ करणि तौ सूझ

कथ। पूरे इतै प्रांमिस्यौ पूरौ, इर्ण ओछै ओछौ अरथ।—वेलि.
ज्यूं—आप उठै बैठौ तौ सही। म्हांरी बात उणां मांनी तौ ही अपां तौ साथे साथे ही चालस्यां।

तौइ, तौई—देखो 'तोइ, तोई' (रू.भे.) उ०—भागौ तौ वाराह राह ग्रहियौ तौइ दुणियर। खोड़ौ तौइ हणवंत जोर मथियौ तौइ सायर।
—द.दा.

तौक, तौख—१ देखो 'तोक' (रू.भे.)
२ देखो 'तोख' (रू.भे.)

तौड़ौ—देखो 'तोड़ौ' (रू.भे.) उ०—साह तांम समसेर जड़त जवहरां जमंधर। मुलक वधारै समपि हेम तौड़ा गज हैंमर।—सू.प्र.

तौछ—देखो 'तोछ' (रू.भे.) उ०—पड़ै पक्खराळा तड़प्फे उताळा। जळां तौछ जेहा ओपे मच्छ एहा।—सू.प्र.

तौदार—वि०—ओजस्वी, तेजस्वी।

तौबत—सं०स्त्री० [अ०] अपमान, निरादर। उ०—ईरांन तूरांन यह तौबत ज्वालसी ताती। सो तो वसि रही पतिसाह की छाती।—रा.रू.

तौम—देखो 'तोम' (रू.भे.) उ०—कुमद जन विकस सकुछै कमळ कंस कुंभ, भावकां चकोरां नयण भायौ। सबळ तम तौम मथुरा गयंद तणै सिर, अकळ गोकळ तणौ चंद आयौ।—बां.दा.

तौमर—देखो 'तोमर' (रू.भे.)

तौर—सं०पु०—१ चाल-चलन, चाल-ढाल।
मुहा०—१ तौर-तरीको राखणौ—व्यवस्था रखना, मान रखना।
२ तौर बिगड़णौ—व्यवस्था बिगड़ना, रंगढंग बिगड़ना।
यौ०—तौर-तरीकौ।
२ मान, प्रतिष्ठा। उ०—मयांण्यां भाग धिन कृपा फुरमावियो, तौर वाधावियो सुकव तांई। सांम्हळै वीणती धाविया सुरांणी, बैठ रथ आविया अठै बाई।—खेतसी बारहठ
मुहा०—तौर राखणौ—मान रखना, प्रतिष्ठा रखना।
३ वैभव, ऐश्वर्य। उ०—सुरज पणौ सतेज स्रवण अम्रत हिमकर सम। उर दाहक सम आग तौर सुर-राज राज तिम।—र.ज.प्र.
४ प्रभाव, आतंक। उ०—सिव कहाय जग संघरै, अंग पूजावै ओर। तो राखै सिर पर तिको, तज जवरी रा तौर।—बां.दा.
५ तेज, पराक्रम. ६ अवस्था, दशा. ७ गर्व, अभिमान।
रू०भे०—तौरो।

तौरणौ, तौरबौ—१ जोश पूर्ण आगे की ओर वढ़ाना.
उ०—धारण चित सिरदार नजर धरि। असि तौरियो सेरखां ऊपरि।—सू.प्र.
देखो २ 'तोरणौ, तोरबौ' (रू.भे.)

तौरां—क्रि०वि०—वहां। उ०—प्रघटै जटत जवहर पंत अति आछापणै, तौरां 'मांन' राजै तखत परस रवि तणै।—बां.दा.

तौरात—देखो 'तौरेत' (रू.भे.)

तौरावटी, तौरावाटी—देखो 'तंवरावटी' (रू.भे.)

तौरेत—सं०पु० [अ० तौरात या तौरेत] यहूदियों का प्रधान धर्म ग्रंथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था। उ०—१ जमके मे फिरसते लगे असमांण जिनूं कै देखै से सूकै मदमस्त फिलूं के डांण। फरकांन इजील तौरेत जंबूर के निडाह मांन।—सू.प्र.
उ०—२ फार कलिता ओ महमद रौ नांव तौरेत में है, याजुन माजुन ओ नांव महमद रौ अंजील में है।—बां.दा.ख्यात
रू०भे०—तौरात।

तौरौ—सं०पु०—१ मोट की लाव की कीली जोड़ने का स्थान जो बैलों के जुआड़े (पंजाळी) के मध्य में होता है।
२ देखो 'तोरौ' (रू.भे.)

तौल—देखो 'तोल' (रू.भे.) उ०—बार बार रांम क्रीत बोल रे, ताहरो वडो कवेस तौल रे।—र.ज.प्र.

तौलणौ, तौलबौ—देखो 'तोलणौ, तोलबौ' (रू.भे.)

तौलाई—देखो 'तुलाई' (रू.भे.)

तौलाड़णौ, तौलाड़बौ, तौलाणौ, तौलाबौ, तौलावणौ, तौलावबौ—देखो 'तुलाणौ, तुलाबौ' (रू.भे.)

तौलियोड़ौ—देखो 'तोलियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० तौलियोड़ी)

तौलियौ—सं०पु० (अं० टोवेल) एक विशेष प्रकार का मोटा अंगोछा जिससे स्नान आदि करने के उपरान्त शरीर पोंछते हैं।
रू०भे०—तोलियौ।

तौलौ—देखो 'तोलौ' (रू.भे.)
क्रि०वि०—तब तक। उ०—जब लग 'पातल' खग्ग झल, सिर कंधर उससंत। तौलौ पत दिल्ली तखत, चित नित रहौ निचंत।
—जैतदांन बारहठ
देखो 'तोलौ' (रू.भे.)

तौहि, तौही—देखो 'तोइ, तोई' (रू.भे.)

तौहीन, तौहीनी—सं०स्त्री० [अ० तौहीन:] अपमान, अप्रतिष्ठा, निरादर।
रू०भे०—तोहीन।

त्वो—अव्य०—ऊट, घोड़े आदि को पानी पिलाते समय उच्चरित किया जाने वाला शब्द विशेष।

त्यंहार—देखो 'तिंवार' (रू.भे.) उ०—बाळपणै रमता थकां, आवै आखातीज। बाकी थारै राज में, त्यंहारां री खीज।—लू.

त्यउ—क्रि०वि०—तैसे। उ०—या तौ छइ भाव नी आस। ज्यौं जांणउं त्यउं मरउ आसपास।—अ. वचनिका

त्यजउ—वि० [सं० त्यक्तः] त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ (उ.र.)

त्यजणौ, त्यजबौ—देखो 'तजणौ, तजबौ' (रू.भे.)
उ०—इम करतां आविउ वळी, वंस तणउ हवइ छेह। तिणि कारणि तुम्हनइं कहीइ, नगर त्यजीसइ श्रेह।—मा.कां.प्र.

त्यां—सर्व०—१ उन। उ०—१ लाग वाग दापै विना, त्यां सूं हुवै न तांन। कद इक कळह करावसी, 'जींदे' तणी जबांन।—पा.प्र.

उ०—२ नासतां भूंडं भारी पड़ी त्यां नरां।—वि.कु.

२ उसके, उनके। उ०—१ फिरि फिरि झटका जे सहै, हाका वाजंतांह। त्यां घरि हंदी वंदडी, घरणी कापुरसांह।—हा.झा.

उ०—२ सरसती कंठि स्री ग्रिहि मुखि सोभा, भावी मुगति तिकरी भुगति। उवरिं ग्यांन हरि भगति आतमा, जपं वेलि त्यां ए जुगति।—वेलि.

३ उनका। उ०—चिंता डाइणि ज्यां नरां, त्यां द्रढ़ अंग न थाइ। जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ।—ढो.मा.

४ उनको। उ०—कुंझड़ियां कळिअळ कियउ, सुणी उपंखइ वाइ। ज्यां की जोड़ी वीछड़ी, त्यां निसि नींद न आइ।—ढो.मा.

५ उन्होंने। उ०—ध्यायौ तोनै ध्यांन धरि, आराह्यौ जग ईस। त्यां पायौ वैकुंठ पुर, से जीता जगदीस।—पी.ग्रं.

६ देखो 'तां' (रू.भे.)

क्रि०वि०—१ तहां, वहां. २ तैसे।

अव्य०—तक, पर्यंत। उ०—झालै भार साथ सूं झालै, सिध सार जिहीं सह्या। रांणा बडै उवरिया रांणा, रवि उगै त्यां वोल रह्या।—अजा झाला री गीत

त्यांही—सर्व०—उसी। उ०—जळ मांहि वसइ कमोदणी, चंदउ वसइ अगासि। ज्यउ ज्यांहीकइ मनि वसइ, सउ त्यांहीकइ पासि।—ढो.मा.

त्या—सर्व०—वह, उस। उ०—नख की लेखणी। आंसू ग्रह काजळ मिळि त्या ही मसि हुई तासुं कागळ लिखै छै।—वेलि. टी.

त्याग—सं०पु० [सं०] १ किसी पदार्थ, वस्तु आदि पर से अपना स्वत्व हटा लेने का भाव।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ।

२ उत्सर्ग, दान. उ०—जेहा केहा त्याग, हैवर राखोड़ा हुवै। ताजी दीजै त्याग, जस लीजै सोई जगन।—बां.दा.

३ विरक्ति के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों को छोड़ने की क्रिया. ४ छोड़ने की क्रिया या भाव।

उ०—म्हारै तो तेरापंथ्यां नै रोटी देवा रा त्याग है।—भि.द्र.

५ किसी से सम्बन्ध या लगाव न रखने की क्रिया. ६ राजपूत जाति में विवाह के अवसर पर वर पक्ष की ओर से याचक जाति के लोगों को दान स्वरूप दिया जाने वाला द्रव्य।

वि०वि०—यह परिपाटी कहीं-कहीं ओसवाल जाति में भी पाई जाती है।

क्रि०प्र०—चुकाणौ, देणौ, लेणौ।

रू०भे०—तियाग, तीयाग।

त्यागण—सं०पु०—परित्याग, उत्सर्ग, त्याग। उ०—करण चहे ज्यूं ही करें, पण भोटा पण आप। कुण तौ विण त्यागण करण, पर अवगुण 'परताप'।—जैतदान बारहठ

वि०स्त्री०—त्याग करने वाली।

त्यागणौ, त्यागवौ—क्रि०स०—तजना, छोड़ना।

त्यागधारी—वि०—त्यागी, उदार, दानी।

त्यागपत्र—सं०पु०यौ० [सं०]—१ इस्तीफा. २ तलाकनामा।

त्यागियोड़ौ—भू०का०कृ०—छोड़ा हुआ।

(स्त्री०—त्यागियोड़ी)

त्यागी—वि० [सं० त्यागिन्] (स्त्री० त्यागण) १ जिसने सब कुछ छोड़ दिया हो, त्यागी।

२ विरक्त. ३ उदार, दातार। उ०—कहिया रेहा कूड़ नहं, वेहा बायक ग्रेह। जे जेहा जेहा नहीं, त्यागी केहा तेह।—बां.दा.

रू०भे०—तियागी।

त्यार—देखो तैयार रू.भे. उ०—पढ़णी वेळा में पग फावै, पढ़ियां विचै पोमाई नै। करै दलील जिकां सूं कोई, लाधै त्यार लड़ाई नै।—ऊ.का.

त्यारणी—वि०स्त्री० [सं० तृ] दूसरों का उद्धार करने वाली, तारक। उ०—तुही हुई करन्नला तरन्न त्यारणी। नरिंद्र सेख वंदि फंदता निवारणी।—मे.म.

त्यारां—क्रि०वि०—तब।

सर्व०—उनका।

त्यारी—देखो 'तैयारी' (रू.भे.) उ०—तद रावजी स्री बीकेजी फुरमायौ कै वरसंध थारौ भाई जिसौ इ म्हारौ भाई है पण तूं मेड़तै जाय त्यारी कर अठे सूं फौज कर, हूं ई आऊं छूं।—द.दा.

त्यारु—देखो 'तारू' (रू.भे.)

त्याव—सं०स्त्री० [सं० त्रिपाद] तिपाई।

त्याहार—क्रि०वि०—तब। उ०—त्याहार पछी तं नि तां अरजुन साहय्य स्रीयगदीस। एक थई दुरयोधन ऊपर ऊतारज्यौ सवी रीस।—नळाख्यांन

त्युं, त्यूं—क्रि०वि०—१ तैसे, जैसे। उ०—१ अकबर अगम अगाध गह, ते रहिया अज तन्न। वाचै त्यूंही विचारियो, कमधै साचै मन्न।—रा.रू.

उ०—२ बीदौ गुहिलोत, भारमल आसाइच त्यांह नूं कहियौ त्यूं करौ ज्यूं कुंवर सेतो वेढ़ि हुवै।—द.वि.

२ वैसा। उ०—ज्यूं दलपत ए डूंगर संमुहा, त्यूं जइ सज्जण हुंति। चंपावाड़ी भमर ज्यउं, नयण लगाइ रहंति।—ढो.मा.

त्यूंहार—देखो 'तिंवार' (रू.भे.) उ०—हरसा मेरा वाला रे आवैला वार त्यूंहार। ओदर का रे लोटचा खूणां मे बड़ बड़ रोवैली जीवणी।—लो.गी.

त्यों—क्रि०वि०—१ उस भांति, उस प्रकार, उस तरह।

उ०—जो हेणां छै त्यों रस रहियां, तो ऊ थोड़ौ साळ कटारी में मांग लेयसे।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ तैसा। उ०—हम थें हुआ न होइगा, ना हम करणे जोग। ज्यों हरि भावे त्यों करै, दादू कहैं सब लोग।—दादू वांणी

रू०भे०—त्यौं, त्यौ।

त्योरी-सं०स्त्री०—चितवन, दृष्टि, अवलोकन।

त्योहार—देखो 'तिवार' (रू.भे.)

त्यों, त्यो-सर्व०—१ तेरे. २ उनके।

३ देखो 'त्यों' (रू.भे.)

त्योणौ-वि०—तिगुना। उ०—तिणां नूं दूणा त्योणा अमल करावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

त्योर, त्योरी—देखो 'त्योरी' (रू.भे.)

त्योहार—देखो 'तिवार' (रू.भे.) उ०—अगर चंदन को ओढ़णूं ओढूं, ओढूं बार त्योहार। पिवजी कहै गोरी ओढ़लै मेरी, सासू झूळस्या खाय।—लो.गी.

त्रंब-सं०स्त्री० [सं० त्रम्बिका] १ देवी. २ देखो 'तंव' (रू.भे.)

उ०—देहरा पड़ै त्रंब कटै दुनियांण री, 'अमरिया' राख मरजाद हिंदवांण री।

—नीमाज ठाकुर अमरसिंघ री गीत

सं०पु०—३ नगाड़ा। उ०—बजै त्रंब जंगी गई नाळ वग्गी। लजावंत जंगी दुहुं दीठ लग्गी।—रा.रू.

[सं० त्र्यंबक] ४ महादेव।

रू०भे०—तंब

त्रंबक-सं०पु० [सं० त्र्यंबक] १ महादेव, रुद्र (नां.मा.)

उ०—गन भूत प्रेत पिसाच कौतुक, अंत तंतु जटा जुटी। जय व्योम केश महेश त्रंबक, भीम भूतप धुरजटी।—ला.रा.

२ नगाड़ा। उ०—१ वीर म्रिदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहते त्रंबक तणे, त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउं।

—व.स.

उ०—२ हे पती! नगर रै कांकड़ माथै त्रंबक नगारा त्रहकिया, त्रहत्रह इसो नगारां री सबद होवै छै।—वी. स. टी.

रू०भे०—तंवक, त्रवंक, त्रम्मक, त्रांबक।

अल्पा०—त्रंबकड़ौ।

त्रंबकड़ौ—देखो 'त्रवंकड़ौ' (रू.भे.)

त्रंबगळ, त्रंबट त्रंबटौ, त्रंबयळ-सं०पु०—नगाड़ा। उ०—१ सबळ कळ आस्ट्रियां विलोमां साफतां वाजतां त्रंबगळ कहर वेळा।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ विकट तोपां कठठ डंक त्रंबटा वगा। महरजी आगळै भांण टळै मगा।—नींबाज ठाकुर अमरसिंह रो गीत

उ०—३ गह चडे द्वारि जस त्रंबयळ गड़गड़ै। उवर फाटै सुणे अरी घड ऊजड़ै।—राठौड़ मनोहरदास री गीत

रू०भे०—त्रांवगळ।

त्रंबा-सं०स्त्री०—१ घोड़ी (अ.मा.)

२ देखो 'तंव' (रू.भे.) (ह.नां.)

त्रंवाक, त्रंवाकियौ, त्रंबागळ, त्रंबागळौ, त्रंवाट, त्रंवाळ, त्रंवाळौ, त्रंबोक, त्रंमक, त्रंमाट, त्रंमाळ-सं०पु०—नगाड़ा, नक्कारा।

उ०—१ हाक डाक जोगणी त्रंवाक पूठ हाक हुवै। अराक भचाक छाक सेलाक ऊनाळ।—पहाड़खां आढौ

उ०—२ त्यारी करै तमांम जळूसां साजियां। त्रंबागळ रिणतूर विहद्दां वाजिया।—र.रू.

उ०—३ बीजळ सेल गुरज घण बाजै। गाज त्रंबाळ सघण घण गाजै।—सू.प्र.

उ०—४ भाळो जुघ जूट कराळो भाटी, त्रंबाळौ घुरियौ तिण वार।

—दुरजणसिंह भाटी रो गीत

उ०—५ रोक रोक तुरी भांण आरांण विलोक रीझै। विभ्र मौक त्रलोक त्रंबोक घोक बाज।—बदरीदास खिड़ियौ

उ०—६ बजै त्रंमक धौंसर वजै, नोवति सबद निराट। मदमत खंभू ठांण मय, थटै गयंदां थाट।—बगसीरांम प्रोहित री बात

रू०भे०—तंवाळ, त्रंब, त्रंबक, त्रंवगळ, त्रंबट, त्रंवटौ, त्रंबयळ, त्रंवाट, त्रंवाळ, त्रमंक, त्रमक, त्रमागळ, त्रमाट, त्रमाळ, त्रमाळी, त्रांबाळ, त्रांमागळ, त्रिबागळ।

अल्पा०—त्रंबाकियौ, त्रंबागळौ, त्रंवाळौ, त्रांवाक, त्रांवाट, त्रांबाळौ।

मह०—त्रंबोक।

त्रंवठ-सं०पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। उ०—गळौ गोबळ तणस त्रंवठ, करंजनइ कैळास। बिदांम बंणकड सेलपी, फिर सांगणि पळास।—रुकमणी मंगळ

त्रंवाट—देखो 'त्रंवाट' (रू.भे.)

त्रंवाळ-सं०स्त्री०—१ मूर्छा, बेहोशी। उ०—डील ऊकळै बभकी उठै मरद त्रंवाळा आ गिरै। जाळ झाली देय बुलावै सुखद छांय सरजित करै।—दसदेव

२ देखो 'त्रंवाळ' (रू.भे.)

त्र-वि०—तीन।

त्रइलोक-सं०पु० [सं० त्रिलोक] तीन लोक, त्रिलोक।

उ०—त्रइलोक कीध रांमण सत्रास। साहाय करौ हरि जग निवास।—सू.प्र.

त्रइलोकनाथ—देखो 'त्रिलोकनाथ' (रू.भे.) उ०—रे जगा! समझ इण जीव नूं, पूरी दिन पछतावसी। त्रइलोकनाथ समरण तणी, इसी घात कद आवसी।—ज.खि.

त्रई-वि०—तीन। उ०—प्रकांड पाठ पाठ के त्रिकरमकांड को करै। तने त्रई उपासना व्रह्मांड ग्यांन तें तरै।—ऊ.का.

सं०पु०—ईश्वर (नां.मा.)

त्रईतन-सं०पु० [सं० त्रयीतनुः] सूर्य, भानु (नां.मा.)

त्रईविक्रम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू.भे.) (नां.मा.)

त्रकळ—देखो 'त्रिकळ' (रू.भे.)

त्रकाळ—देखो 'त्रिकाळ (रू.भे.) उ०—त्रकाळ तें त्रकाळ से त्रकाळ ह्वै तदा, सुकाळ में दुकाळ से अकाळ काळ व्है सदा। —ऊ.का.

त्रकाळग्य—देखो 'त्रिकालग्य' (रू.भे.) उ०—दिल मो ग्यांन त्रकाळग्य दरसी, वीर चंद्र राजा इण वरसी ।—सू.प्र.
(स्त्री० त्रकाळग्या)

त्रकाळग्यांनदरसी—देखो 'त्रिकाळग्यांनदरसी' (रू.भे.)

त्रकाळदरसी—देखो 'त्रिकाळदरसी' (रू.भे.) उ०—जद सिवलाल रांमवगस नै कह्यौ—रांमवगस थूं तौ त्रकाळदरसी छै नै थूं म्हारै तौ वडो पुत्र छै ।—मयारांम दरजी री बात

त्रकुकुत-सं०पु० [सं० त्रिक्कुद्] पहाड़ (अ.मा.)

त्रकुट-सं०पु०—१ एलची (अ.मा.) २ लंका का त्रिकूट पर्वत ।

त्रकुटांण-सं०पु० [सं० त्रिकुट+रा.प्र. आंण] १ लंका का त्रिकुटाचल उ०—साही सुरतांण दिखणांण मेलै सही । साही त्रकुटांण दिखणांण सांमो ।—महाराजा अजीतसिंह रौ गीत

त्रकुटाचळ—देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

त्रकुटवासी, त्रकुटवासी-सं०पु०—१ लंका का निवासी ।
उ०—वारवेस जोम गाज गाळिया त्रकुटवासी । राज चील जाळिया तारखी तेज रूस ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
२ रावण ।

त्रकुटी—देखो 'त्रिकुटी' (रू.भे.) उ०—लुळ कर लकुटी त्रकुटी सळ लाती, भूखी वाघण सी भ्रकुटी भळकाती ।—ऊ.का.

त्रकूंण-वि०—त्रिकोण, तीन कोने वाला ।

त्रकूटवंध-सं०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसमें प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण में चौदह चौदह मात्राएँ होती हैं और तुक मिलती है । तीसरे चरण में २६ मात्राएँ होती हैं और यह तुक द्वाले के अन्तिम चरण से मिलती है । तुकवंदी का वर्ण लघु होता है । तीसरी तुक और अन्तिम तुक के बीच में अनुप्रास की आठ तुक होती हैं जिसमें प्रथम तुक में १६ मात्रा और शेष सात तुकों में प्रत्येक में १४-१४ मात्रा होती हैं । अनुप्रास की आठों ही तुक मिलती हैं और तुकांत लघु होता है (र.ज.प्र.)
'रघुनाथ रूपक' के अनुसार बीच की अनुप्रास की आठ तुकों में प्रथम तुक में १४ मात्रा और शेष सात में बारह-बारह मात्रायें कुल होती हैं. २ इस गीत (छंद) का दूसरा भेद भी पाया जाता है जिसमें आदि में दो पद 'भंवर गुंजार' गीत के होते हैं जिसके प्रथम चरण में १६ और दूसरे चरण में १४ मात्रा होती हैं । तीसरे चरण में १४ मात्रा और चौथे चरण में ९ मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं । फिर चौदह-चौदह के दो चरण रखे जाते हैं जिनका तुकांत मिलता है । इसके बाद आठ पद अनुप्रास के होते हैं जिसमें प्रथम पद १६ मात्रा का और शेष सातों में १४-१४ मात्रा होती हैं । य आठों तुक मिलती हैं और तुकांत लघु होता है । अन्त में दस मात्रा का पद ही होता है जिसका तुकांत गीत के चौथे पद से मिलता है ।
'रघुनाथ रूपक' के अनुसार अनुप्रास के १६ पद होते हैं जिनमें प्रथम पद ९ मात्रा का और शेष १५ सात-सात मात्राओं के होते है ।
रू०भे०—त्रकुटवंध, त्रिकटवंध, त्रिकुटवंध, त्रिगुटवंध, त्रिकूटवंध, त्रुगटवंध ।

त्रकूणो-सं०पु०—जैसलमेर के गढ़ का एक नाम । उ०—त्याग में दिया गढ़ परणतां त्रकूणे, वीकपुर अंजस दूणा विकासै ।—द.दा.
रू०भे०—त्रखूणौ ।
वि०—तीन कोने वाला ।

त्रक्ख, त्रख, त्रखा-सं०पु० [सं० तृषा] १ प्यास । उ०—१ तोय ज्यूं पीवंत तांम, ज्वाल त्रक्ख मेट जांम । झाळ रूप खाग झाट, घूमरां अरवक घाट ।—सू.प्र.
उ०—२ जदि त्रख खुधा दहूं मिट जावै । लगै समाधि रहै चित लावै ।—सू.प्र.
उ०—३ खुधा न भाजै पांणियां, त्रखा न भाजै अन्न । मुकत नहीं हरि नांव विन, मांनव साचै मन्न ।—ह.र.
२ अभिलाषा, इच्छा. ३ लोभ, लालच. ४ कामदेव की कन्या ।
रू०भे०—त्रक्खा, त्रिख, त्रिखा ।

त्रखारथ, त्रखावंत, त्रखित-वि० [सं० तृषार्त, तृषावान्, तृषित] तृषातुर, तृषित, प्यासा । उ०—१ देसी के फिर दिया कड़ा मोती कवराजां । जळ वरस त्रखारथ छक जगत भोम सव्द जै जै भयौ ।
—साहवौ सुरतांणियौ
उ०—२ त्रखावंत देखे जिकै नीर पाया, इसा जोध दाखौ अठै केमि आया ।—सू.प्र.
उ०—३ त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कूंप खणत नर मूरख ।
—र.ज.प्र.

रू०भे०—त्रिखावंत ।

त्रखूणौ—१ देखो 'त्रकूणौ' (रू.भे.) २ तीन कोने वाला ।

त्रख्यणा—देखो 'त्रखा' (रू.भे.)

त्रगुट—देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

त्रगुण—देखो 'त्रिगुण' (रू.भे.)

त्रगुणनाथ—देखो 'त्रिगुणनाथ' (रू.भे.)

त्रघाई-सं०स्त्री०—ढोल या नगाड़े की ध्वनि ।
रू०भे०—त्रिघाई ।

त्रड़—देखो 'तड़' (रू.भे.) उ०—दईत पड़िसै घणा दड़दड़, रुंड राकस तुंड रड़वड़ । खाग खासा वहै खड़खड़, त्रिगड़ां त्रड़त्रड़ ।—पी.ग्रं.

त्रड़त्रड़णौ, त्रड़त्रड़वौ—देखो 'तड़तड़णौ, तड़तड़वौ' (रू.भे.)

त्रजड़—देखो 'त्रिजड़' (रू.भे.) उ०—भिड़ियौ 'मालो' अजब भत, रौदां सगत रही न । किल तेरे तूंगा किया, त्रजड़ां तेरे तीन ।—बां.दा.
रू०भे०—त्रजड़ौ, त्रज्झड़, त्रझड़, त्रिजड़ ।

त्रजड़ाहत, त्रजड़ाहाथ-सं०पु०—योद्धा, खड़्गधारी ।
उ०—१ मन सांक न राछत ओपमणा । त्रजड़ाहत नाचत 'दाल' तणा ।—पा.प्र.

उ०—२ त्रजड़ाहथ कोळू तणा, आया छलती आग । तद भूंठा जायल तणा, वीर हुवे वड भाग ।—पा.प्र.

त्रजड़ी—देखो 'त्रिजड़' (रू.भे.) उ०—त्रजड़ी घक धूण तकी तरछी, बुरची तोय देवल नां बिरची ।—पा.प्र.

त्रजट-सं०पु०—शंकर, महादेव । उ०—पुर अंब उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां आवियौ । 'जैसाह' ब्रहम अमरौ त्रजट, दइव 'अजौ' दरसावियौ ।—सू.प्र.

त्रजमा, त्रजामा-सं०स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि, रात (अ.मा.)

त्रटंक—देखो 'ताटंक' (रू.भे.)

त्रट—देखो 'तट' (रू.भे.)

त्रटकणौ, त्रटकबौ-क्रि०अ०—१ टूटना । उ०—तोरी प्रीत तांतण त्रटकइ री ।—स.कु.

२ जोश में आना, तड़कना । उ०—तप बोल्यउ त्रटकी करी, दांन नइ तु अवहीलि । पणि मुझ आगळि तुं किस्यउ रे, तुं सांभळि सील —स.कु.

३ देखो 'तड़कणौ, तड़कबौ' (रू.भे.) उ०—तव 'ग्यांन विमळजी' बोल्या, तुमे सास्त्र आगम नवी खोल्या रे । तमे तौ मरुस्थळीया ना वासी, तुमे वाक्य बोलौ ने विमासी रे ।—ऐ.जै.का.सं.

त्रटको-सं०पु०—नाज-नखरा, तड़क-भड़क । उ०—एहरइं वेंघ न लागइ, ए आगइ ए अंगि न अंगि । त्रटके ताहरै त्रासि सिइ, जाइ सिइ गिरिवर स्रंगि ।—नेमिनाथ फागु

त्रट्ट—देखो 'तट' (रू.भे.) उ०—लिया सार सिंगार गोचर लीला । नरै आजरी जम्मुनां त्रट्ट लीला ।—ना.द.

त्रण—देखो 'तिण' (रू.भे.) उ०—१ खंध वसण रण हाथ खग, घोड़ां ऊपर गेह । धर रुख वाळौ विन धरण, गिणै न त्रण सम देह । —जैतदांन बारहठ

उ०—२ हिक सिवड़ पड़ै त्रण बारहठ, सौ पड़िया वंका सुहड़ । —रा.रू.

उ०—३ चेईहर त्रण सय त्रेवीसा ।—वृहद् स्तोत्र

त्रणकाळ-सं०पु० [सं० तृण+काल] १ घास के अभाव का वर्ष ।
रू०भे०—त्रिणकाळ ।
२ देखो 'त्रिकाळ' (रू.भे.)

त्रणकेतु, त्रणकेतुक-सं०पु० [सं० तृणकेतु] १ बांस. २ ताड़ का पेड़ ।

त्रणदीठ-सं०पु० [सं० त्रिदृष्टि] शिव, महादेव । उ०—न लाभत सावत सीस नत्रीठ । देतौ चक्र दंड फिरै त्रणदीठ ।—मे.म.

त्रणद्रुम-सं०स्त्री०[सं० तृण-द्रुम] खिजूर (अ.मा.)

त्रणधज, त्रणधुज-सं०स्त्री० [सं० तृण ध्वज] बांस (ह.नां.मा.)
रू०भे०—त्रिणधज ।

त्रणनैण—देखो 'त्रिनयन' (रू.भे.) उ०—चढ़ी नभ रैण छई चहुं चक्क, धरा चढ़ि कम्प थई धकधक्क । गई चढ़ि चील्हणि गीधणि गैण, नसौ करि बैल चढ़चौ त्रणनैण ।—मे.म.

त्रणराज, त्रणराजक-सं०पु० [सं० तृणराज] १ ताड़ का वृक्ष. २ बांस ।

त्रणवाल-वि० [सं० तृण-बाल] नीला, आसमानी* (डिं.को.)

त्रताप—देखो 'त्रिताप' (रू.भे.) उ०—करै अलाप जाप के त्रताप में अनुंद्यमी । लगें दरिद्र लच्छयें समुद्र छुद्र उद्यमी ।—ऊ.का.

त्रताळीस—देखो 'तयाळीस' (रू.भे.)

त्रती, त्रतीय-वि० [सं० तृतीय] तीसरा । उ०—इम दिन त्रती सु सारिख आंणी, जिम सब कियौ कहे जिखयांणी ।—सू.प्र.

त्रतीया-सं०स्त्री० [सं० तृतीया] मास के प्रत्येक पक्ष की तृतीया तिथि ।
वि०—तीसरी । उ०—प्रथम्मां तुही पव्वई सैल पुत्ती, दुरग्गा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती । त्रतीया तुही चंद्र घंटा तवीजै, चतुरथी तुही कूसमांडा चवीजै ।—मे.म.

त्रत्रडणौ, त्रत्रडबौ-क्रि०अ०—टपकना । उ०—नेव त्रत्रडडइं, खोलड खडहडइं, वीज झळहळइं, परनाळ खळहळइं ।—व.स.

त्रदन, त्रदव—देखो 'त्रिदव' (रू.भे.) (अ.मा., ह.नां.)

त्रदवसा—देखो 'त्रिदवेस' (रू.भे.) (अ.मा.)

त्रदस-वि०—१ तेरह. २ देखो 'त्रिदस' (रू.भे.) (अ.मा.)
उ०—खत्रियां रा खटतीस कुळ, त्रदस क्रोड़ तेतीस । जिकै खड़ा तौ जावतै, अकबर किसूं करीस ।—बां दा.

त्रदसतप—देखो 'त्रिदसतप' (रू.भे.)

त्रदसा—देखो 'त्रिदस' (रू.भे.) (अ.मा.)

त्रदसाधिभू-सं०पु० [सं० त्रिदश+विभुः] इन्द्र (अ.मा.)

त्रदोख, त्रदोस—देखो 'त्रिदोस' (रू.भे.)

त्रधा—देखो 'त्रिधा' (रू.भे.)

त्रधार, त्रधारौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का तीर विशेष (अ.मा.)
२ तीन तीक्ष्ण धार वाला शस्त्र विशेष । उ०—त्रधारा चौधारा जड़ै भब्बतारा । पाटूरा प्रहार ढिका ढिचणां रा ।—ना.द.
३ थूहर ।

त्रन—देखो 'तिण' (रू.भे.)

त्रनयण—देखो 'त्रिनयन' (रू.भे.) उ०—साह दुसट आगा नव साहंसौ, सक जांगुर लायौ सकज । 'रासा हरै' सरण राव रांणां, रहै न त्रनयण सरण रज ।—द.दा.

त्रनया-सं०पु०—दुर्गा, भवानी । उ०—संकाळिका सारदा समया त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया ।—देवि.

त्रनेत्र—देखो 'त्रिनेत्र'(रू.भे.)

त्रप-सं०पु० [सं० पत्र] पलाश का वृक्ष (अ.मा.)

त्रपट-वि० [सं० त्रपया=पटति] नीच, दुष्ट । उ०—आगे कुखत्री अेक, तौ जेहौ हूंतौ त्रपट । सांप्रत कीनौ सेख, नाच नचायौ नागवी । —पा.प्र.

त्रपण-सं०पु० [सं० तर्पणकम्] कर्मकाण्ड की एक क्रिया जिसे देवों, ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिए की जाती है । तर्पण ।

त्रपणौ, त्रपबौ-क्रि०अ०—संतुष्ट होना, तृप्त होना ।

उ०—चाप करां नृप राम चढ़े, मांझ रजी तद भांण मढ़े। खोहण के असुरांण खपे, पंख सिवा पाळ खाय त्रपे।—र.ज.प्र.

त्रपत, त्रपतक–वि० [सं० तृप्त] तृप्त, प्रसन्न, संतुष्ट।

उ०—१ जैजैकार उचारिया, व्रम ब्रंद विचाळै। हुवा त्रपत तेतीस क्रोड़, सुरपुर वाळै।—पा.प्र.

उ०—२ धमक सेलक बंबक धक धक, तदि उबकि पत्र चंडिक त्रपतक।—सू.प्र.

रू०भे०—त्रपत्त।

त्रपति–सं०स्त्री० [सं० तृप्ति] संतोष।

त्रपत्त—देखो 'त्रपत' (रू.भे.)

त्रपथा–सं०स्त्री० [सं० त्रिपथगा] गंगा (अ.मा.)

त्रपरार–देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे.) (अ.मा.)

त्रपा–सं०स्त्री० [सं०] लज्जा, शर्म। उ०—नीचा तदि कीधा नयण, पाइ त्रपा रोपाळ। इम सजियौ हालू अनड़, कजियौ रचण कराळ।—वं.भा.

त्रपावंत–वि०—लजालु, शर्मीला. २ उष्ण, गर्म।

त्रपु–सं०पु० [सं०] रांगा नामक धातु (डि.को.)

त्रपुर—देखो 'त्रिपुर' (रू.भे.)

त्रपुरांत—सं०पु० [सं० त्रिपुर+अंतक] महादेव, शिव। उ०—त्रिगुणारम ईस त्रिलोचनं, त्रपुरांत मार-प्रजारनं। अलिकेंदु विंदु अदेव मरदन, वारिधी विख जारनं।—ला.रा.

त्रपुरा—देखो 'त्रिपुरा' (रू.भे.) उ०—सांभळि ध्यांन धरे दुज साचौ, तिण नूं वर बाळा त्रपुरा चौ।—सू.प्र.

त्रपुरार, त्रपुरारि—देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे.)

त्रपुरा-सुर-स्यांमणी–सं०स्त्री०—पार्वती (ह.नां.)

त्रपुरी–सं०स्त्री०—छोटी इलायची।

त्रप्त–वि० [सं० तृप्त] संतुष्ट, तुष्ट। उ०—सकळ योगनी त्रप्त हौ, ठाडी अति सुख पार। तीनूं दंडवत आय कियौ, राजा तंत सिर नाय।—सिंघासण बत्तीसी

त्रबंक–सं०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक पद में २६ मात्रायें होती हैं और प्रथम द्वितीय और चतुर्थ पद के तुकांत मिलाये जाते हैं। इसके तीसरे पद के आदि में दो मात्रायें, मध्य में दो चौकल और अंत में एक पटकल रखा है। तीसरे पद का चौकल तीन वार उलट-पुलट कर पढ़ा जाता है और उसके बाद छः मात्रा होती हैं। इस गीत का तुकांत गुरु होता है (र.ज.प्र.)

२ देखो 'त्रंबक' (रू.भे.) उ०—रांम रूप हु आगइं परणी सुर नर पंनग बइठ्ठा। त्रंबक धनुस किया त्रिहु कुटका तंहीयइं त्रिभुन दीठा।—रुकमणी मंगळ

अल्पा०—त्रबंकौ।

त्रबंकड़ौ–सं०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रथम चरण में १८ मात्रा और शेष के तीनों चरणों में सोलह-सोलह मात्रा होती हैं। इसके तुकांत में दो गुरु होते हैं।

२ देखो 'त्रंबक' सं० २ (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—त्रबंकड़ौ।

त्रबंकौ—देखो 'त्रबंक' (अल्पा., रू.भे.)

त्रबदी—देखो 'त्रिविध' (रू.भे.)

त्रबळी–सं०स्त्री०—देखो 'त्रिवळी' (रू.भे.)

त्रबाक–सं०पु०—नगाड़ा। उ०—पह वीरहाक पनाक पणचां, बाज डाक त्रबाक। असनाक पर ग्रीधक आवध, करग वाज कजाक।—र.ज.प्र.

त्रभंड–सं०पु०—देखो 'त्रभांड' (रू.भे.)

त्रभंगी—देखो 'त्रिभंगी' (रू.भे.)

त्रभवण, त्रभवन—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.)

त्रभवनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू.भे.)

त्रभांड–वि०—बदनाम, अपयश प्राप्त, कुख्यात।

त्रभाग, त्रभागौ, त्रभागौ–सं०पु०—१ भाला (तीन धार वाला) (ना.डिं.को.)

उ०—१ निजर पड़तां साह दळ, भड़ नव कोट अभंग। सेल त्रभागां झलियां, सांम्हा किया तुरंग।—रा.रू.

उ०—२ सकत त्रभागौ तोलियां, सकती 'पुरा मुरार।' बीज झड़ेली सारखा, कं सिव हंदी रार।—रा.रू.

२ त्रिशूल। उ०—लखीजै इसी भांति आकास लागौ, भवांनी खड़ा पांण लीधौ त्रभागौ—मे.म.

वि०—तीन भागों में विभक्त, तीन भाग वाला।

त्रभुयण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.)

त्रभुवणनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू.भे.)

त्रमंक, त्रमक—देखो 'त्रंमक' (रू.भे.) उ०—घाव डक त्रमक तोयां सबद घरहरे, दुजड़ भड़ उरड़ काढ़ण दुखदौ। रोद छरहरी लागौ करी ऊपरा, सै'र रौ सै'र जीम गयौ सूदौ।—महादांन महड़ू

त्रमागळ—देखो 'त्रंबागळ' (रू.भे.) उ०—घोड़ां घूमर रंग भड़ां, जाडी जोड़ां जोध। द्रीह डंका त्रमागळां, सुरवा किया सरोध।—पनां वीरमदे री वात

त्रमाट—देखो 'त्रंमाट' (रू.भे.) उ०—त्रमाटां धोक वज सोक गोळां तणी, आवधां झोक भड़ रोख आंणै।—कविराजा करणीदांन

त्रमाळ, त्रमाळौ—देखो 'त्रंबाळ' (रू.भे.) उ०—१ विकसै रणताळ त्रमाळ बगां, दमकै खिजि ज्वाळ विडाळ द्रगां।—मे.म.

उ०—२ स्लोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ़ रै राग सोभाग गावै। बंबी बीण सैतार सैनाय वाजै, त्रमाळा घुरै मेघमाळा तराजै।—मे.म.

त्रम्मक—देखो 'त्रंबक' (रू.भे.)

त्रय–वि०—१ तीन। उ०—त्रय खटकळ अंत रगण नांम छंद हीर है, सो पमु कव धन्य पढ़त कीरत रघुवीर है (र.ज.प्र.)

२ तीसरा, तृतीय।

त्रयण—देखो 'त्रिनयन' (रू.भे.)
त्रयदस-वि० [सं० त्रयोदश] तेरह।
त्रयनयण—देखो 'त्रिनयण' (रू.भे.) उ०—गजां कण कळ भूखण चुर्ण गूंथियौ। त्रिया तन त्रयनयण वणायौ तंत। पारवत रिदै सोभत कनकधांम पर, प्रभु मुगत माळ तारायणौ पंत।—कविराजा करणीदांन
त्रयरूप-सं०पु०—ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन रूप धारने वाला ईश्वर उ०—नमौ बळि बंधण रूप वावन्न, नमौ भर तीन पगां त्रिभुवन्न। नमौ त्रयरूप दतात्रय देव। नमौ जप तप्प धियांन अजेव।—ह.र.
त्रयलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.)
त्रयलोकनाथ—देखो 'त्रिलोकनाथ' (रू.भे.)
त्रयलोकी—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.)
त्रयलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—१ ए नवपद संपद दियण, उद्धारण त्रवलोय। जिन सासन नौ सार ए, एह थी चिंतित होय।
—स्रीपाळ रास
त्रयांळौ—देखो 'तंयाळौ' (रू.भे.) उ०—संथुण्यां सतरै सै त्रयांळै।
—वृहद् स्तोत्र
त्रयानेता-सं०पु०—ब्रह्मा, विष्णु, शिव। उ०—त्रयांनेता राखै असत नहीं भाखे अत त्रपा।—ऊ.का.
वि० [सं० त्रय] तीन, तीसरा।
त्रयासियौ—देखो 'तंइयासियौ' (रू.भे.) उ०—पूरण थयौ त्रयासियौ, वण वरसात सरस्स। स्रावण घण गैघूंबियौ, चौरासियौ बरस्स।
—रा.रू.
त्रयी-सं०पु० [सं०] १ तीन वस्तुओं का समूह. २ तीनों वेद (ऋक्, यजु, साम)। उ०—नीच क्रव्याद रा कुळ नूं दुहिता देण री किण मूढ़ कही छै। जिण रीति मुकुंदरा मंदिर नूं विहाय खेत्रपाळ पूजण री स्रद्धा किसौ कापुरुस चित्त धरै अर त्रयी रा तिरस्कार करि किसड़ो नीच चंडाळी मंत्र रौ साधन करै।—वं.भा.
त्रयीतन-सं०पु० [सं० त्रयी+तनुः] सूर्य (अ.मा.)
त्रयोदस-वि० [सं० त्रयोदश] तेरह।
त्रयोदसी-सं०स्त्री० [सं० त्रयोदशी] मास के प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं तिथि।
त्रयोसळ—देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.)
उ०—चढ़ भाळ त्रयोसळ नेत्र चोळ। भ्रगुटी मुछाळ मिळ करत खोळ।—पे.रू.
त्ररेख-सं०पु० [सं० त्रिरेख] १ शंख. २ ललाट पर पड़ने वाली तीन रेखायें।
त्रलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—रोक रोक तुरी भांण आरांण विलोक रीझै। विभ्र मोक त्रलोक त्रंबोक घोक बाज।
—बद्रीदास खिड़ियौ
त्रलोकपत—देखो 'त्रिलोकपति' (रू.भे.)
त्रलोकराव—देखो 'त्रिलोकराव' (रू.भे.)
त्रलोचणा—देखो 'त्रिलोचना' (रू.भे.)
त्रलोयण—देखो 'त्रिलोचण' (रू.भे.) उ०—खमां भणि जोगणि खांचत खून, सूरां कर मांचत मेहप्रसून। झखध्वज भूपति दोयण झूल, त्रलोयण लोयण रूप त्रसूळ।—मे.म.
त्रवंक—१ डिंगल का एक गीत छंद (क.कु.बो.)
२ देखो 'त्रवंक' (रू.भे.)
त्रवंकड़ो—देखो 'त्रबंकड़ो' (रू.भे.)
त्रवंकौ-वि०—१ वीर, योद्धा. २ संहारक, नाश करने वाला।
त्रवटौ—देखो 'तेवटौ' (रू.भे.)
त्रवधा—देखो 'त्रिविध' (रू.भे.)
त्रवळ-वि०—टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, बांकुरा उ०—हाकियां सुं पादरौ न हालै, वांकमनीर वहत त्रवळ। मंत्र जंत्र ओखद नह मुळी, खादा जिण दाठीक खळ।—नींबाज ठाकुर जगरांमसिंह रो गीत
त्रवळी—देखो 'त्रिवळि' (रू.भे.) उ०—मिळ रैख सुरंग परा गमयं। त्रवळी नव तीरथ राजखयं—पा.प्र.
त्रववेसा—देखो 'त्रदस' (रू.भे.) (ह.नां.)
त्रवाळौ-सं०पु०—१ चक्कर. २ देखो 'तरवाळौ' (रू.भे.)
३ देखो 'तिरवाळौ' (रू.भे.)
त्रविक्रम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू.भे.) (ह.नां.)
त्रवेणी—देखो 'त्रिवेणी' (रू.भे.) उ०—सरसति जमना गंगा त्रवेणी, त्रहुंवै उळटी वदै त्रिवेणी।—सू.प्र.
त्रवेळू-वि०—तीन समय का।
त्रसंझा-सं०स्त्री० [सं० त्रिसंध्या] संध्या।
त्रस-सं०पु० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की शक्ति रखने वाला जीव। उ०—जांणी पीछी आकूट नै, हूं त्रस जीव नहीं मारूं जी।—जयवांणी
२ जंगल. ३ त्रास, भय. ४ तृषा, प्यास। उ०—जिम जळ पीजइ त्रस नासइ, अन्न भोजनि भूख भाजइ।—व.स.
त्रसकत-सं०पु०—१ हाथ।
सं०स्त्री०—२ देखो 'त्रिसकति' (रू.भे.) (ह.नां.)
त्रसकाय—देखो 'त्रस' (रू.भे.) उ०—प्रिथी, पांणी, अगनी, वायरौ, जीवा, वनस्पति त्रसकाय। धरम कारच हेते हणै जीवा, ते भव तरिया नाय।—जयवांणी
त्रसगती-सं०स्त्री० [सं० त्रिशक्ति] देवी, शक्ति।
उ०—तूं हीज भद्रकाळी कमला, तूं त्रसगती···ताल।—रांमदांन लाळस
त्रसटणौ, त्रसटवौ—देखो 'तिसटणौ, तिसटवौ' (रू.भे.)
उ०—कुंवरी पित हुंतां कहे, सोढ़ां सरव सुणोह। धियां म दीजौ धांधलां, निज त्रसटेला नांह।—पा.प्र.
त्रसटियोड़ौ—देखो 'तिसटियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० त्रसटियोड़ी)
त्रसणा—देखो 'तिसणा' (रू.भे.) उ०—वेरण रसणा वस त्रसणां

तन ताई। आभा आंगण री अंन मांगण आई।—ऊ.का.

रू०भे०—त्रसनां, त्रसना।

त्रसणौ, त्रसबौ-क्रि०अ०—१ डरना, भय खाना. २ फटना।

उ०—भड़ कायर भाजै तिहां भड़कै, त्रेण त्रसै जिम तड़कै हो।
—वि.कु.

त्रसत-वि० [सं० तृषित] प्यासा। उ०—परै त्रसत घायल तहां, मरै सत्रि बहुमारि।—शि.वं.

त्रसन-सं०पु०—भय, डर।

त्रसनां, त्रसना—देखो 'तिसणा' (रू.भे.) उ०—ज्यूं ज्यूं लालच खार जळ, सेवै दुरमत संग। 'बांका' अत त्यूं त्यूं वधै, त्रसनां तणी तरंग।
—वां.दा.

त्रसर-सं०स्त्री०—ललाट पर कोप के कारण होने वाली तीन सिलवट।

उ०—दिन छिनदा उत्पात चित, रोख तरुनता रत्त। त्रगुन तोर भ्रगुटी त्रसर, भयौ असुर उन्मत्त।—ला.रा.

त्रसरी-सं०स्त्री—तीन रेखाएँ। उ०—कणइअर कांब जिसी कूंअळी, त्रसरी आटि पेटिइ वळी। आछां आंवर कूं कूं वांनि, झबकइ झालि को सीसे कांनि।—प्राचीन फागु संग्रह

त्रसळ-सं०पु०—१ जोश, आवेग. २ भय. ३ घोड़ा, अश्व।

४ देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.) उ०—त्रसळा चढ़ि भाल कराळ तकै, धड़कै नह चित्त लंकाळ धकै।—मे.म.

५ ललाट। उ०—भालौ हाथै भळहळै, त्रसळ पड़ै सळ तीन। जे खुर हाथी जोड़ रौ, जरद बनाती जीण।—पनां वीरमदे री वात

त्रसळौ—देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.) उ०—विकट रजवट उछट अघट वेवाहसा। नीपट त्रसळौ अगट कठी नव साहसा।
—जोधपुर नरेस महाराजा मांनसिंह रौ गीत

त्रसा-सं०स्त्री० [सं० तृषा] प्यास। उ०—ताप त्रसा अघहर तुरत, सुख दे दे सतसंग। की भीसम जणणी कहां, तूं जग जणणी गंग।
—वां.दा.

क्रि०स०—डराना, भय दिखाना।

त्रसाकौ—

उ०—तटाकां पांण छूटै कुरंग त्रसाकां। रूकड़ां पांण घमहम विखम रीस।—नाथौ सांदू

त्रसाणौ, त्रसाबौ-क्रि०स० [सं० त्रसि] डराना, धमकाना, भय दिखाना।

त्रसायोड़ौ-भू०का०कृ०—डराया हुआ, धमकाया हुआ।

(स्त्री० त्रसायोड़ी)

त्रसावंत-वि० [सं० तृषावन्त] १ प्यासा. २ अतृप्त।

त्रसिध, त्रसींग, त्रसींध-वि०—जबरदस्त, बहादुर।

उ०—१ सिवदांन भीम जोधै त्रसिध, सक भांण करन हैवत्तसिंघ।
—रा.रू.

उ०—२ राजा सींहलदीप रै, तोनू दीध त्रसींग। खित पुड़ गूजर खंडरा, सिंघ वधै तै सींग।—वां.दा.

देखो 'त्रिसंकु' (रू.भे.)

त्रसुर-वि० [सं०] भीरु, डरपोक।

त्रसुळ—१ देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.) उ०—आप सिलह कसि आवधां, भरि त्रसुळ भ्रगुट्टी। चढ़े किसन असि भड़ चढ़े, अग नयण उछट्टी।
—सू.प्र.

२ देखो 'त्रिसूळ' (रू.भे.)

त्रसूळ—देखो 'त्रिसूळ' (रू.भे.) उ०—झळाहळ साबळ वाहत झूल, सदा सिव वाहत जांणि त्रसूळ।—सू.प्र.

त्रस्त-वि० [सं०] १ भयभीत। उ०—सरण सहायक विरुद सिर, पहली ही कुळपांण। अकबर हूं मुड़ियौ अबै, त्रस्त करूं तुरकांण।—वं.भा.

२ पीड़ित, सताया हुआ।

त्रस्सरा-सं०पु०—त्रिशिरा नामक रावण का एक भाई जो खरदूषण के साथ दण्डकारण्य में रहता था।

त्रह-सं०पु०—१ भय, डर। उ०—घलियौ गढ़वाड़ां में सोर घणौ। त्रह ढोल घुरै बह छेड़ तणौ।—पा.प्र.

२ नगाड़े की ध्वनि।

वि०—तीन। उ०—इम त्रह दिन बीता तिण औसर। वेद धरम नांमा प्रोहित वर।—सू.प्र.

त्रहक-सं०स्त्री०—वाद्य की ध्वनि। उ०—त्रंबकां त्रहकां वज भेर तुरी, घण वासुर कां अधरात धुरी।—गो.रू.

रू०भे०—तहक।

त्रहकणौ, त्रहकबौ-क्रि०अ०—नगाड़ा बजाना, नगाड़े की ध्वनि होना।

उ०—हे पती, नगर रै कांकड़ माथै त्रंबक नगारा त्रहकिया, त्रह त्रह इसौ नगारां रौ सब्द होवै छै।—वी.स.टी.

त्रहत्रहणौ, त्रहत्रहबौ, त्रहळकणौ, त्रहळकबौ—रू०भे०।

त्रहकाणौ, त्रहकाबौ-क्रि०स०—नगाड़ा बजाना, रणभेरी बजाना।

त्रहकाणहार, हारौ (हारी), त्रहकाणियौ—वि०।

त्रहकाड़णौ, त्रहकाड़बौ, त्रहकावणौ, त्रहकावबौ—रू०भे०।

त्रहकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

त्रहकाईजणौ, त्रहकाईजबौ—कर्म वा०।

त्रहकणौ, त्रहकबौ—अक०रू०।

त्रहकवाड़णौ, त्रहकवाड़बौ, त्रहत्रहाणौ, त्रहत्रहाबौ—रू०भे०।

त्रहकायोड़ौ-भू०का०कृ०—नगाड़ा बजाया हुआ।

(स्त्री० त्रहकायोड़ी)

त्रहकियोड़ौ-भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ या बजा हुआ (नगाड़ा)

त्रहणौ, त्रहबौ-क्रि०अ०—नगाड़े का आवाज करना, बाजे का बजना।

उ०—तरवर डहै उकमै ताजी, परवत जुअळै हुवै पणा। मदझर वहै किणेसर मारू, त्रहै दमांमा 'गजन' तणा।—जगनाथ सांदू

त्रहत्रहणौ, त्रहत्रहबौ—देखो 'त्रहकणौ, त्रहकबौ' (रू.भे.)

उ०—मन द्रढ़ रह धड़कै मती, त्रहत्रहियां त्रंबाळ। सिर घड ऊपर सावतो, मिळण न दूं भुरजाळ।—लिखमीदांन बारहठ

त्रहत्रहाटि--सं०स्त्री०--नगारे की ध्वनि। उ०--वीरत्रिदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहते त्रंबक तणी त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउ।--व.स.

त्रहत्रहाणौ, त्रहत्रहाबौ--देखो 'त्रहकाणौ, त्रहकाबौ' (रू.भे.)

त्रहत्रहायोड़ौ--देखो 'त्रहकायोड़ौ' (रू.भे.)

त्रहत्रहियोड़ौ--देखो 'त्रहकियोड़ौ' (रू.भे.)

त्रहळकणौ, त्रहळकबौ--देखो 'त्रहकणौ, त्रहकबौ' (रू.भे.)

उ०--वादे महल छतीस राज वंस, कमंध नगारां त्रहळकियै। दहल पड़ै अवरां दैसोतां, थारै सहल सिकार थियै।--जगनाथ सांदू

त्रहळकाणौ, त्रहळकाबौ--देखो 'त्रहकाणौ, त्रहकाबौ' (रू.भे.)

त्रहळकायोड़ौ--देखो 'त्रहकायोड़ौ' (रू.भे.)

त्रहळकियोड़ौ--देखो 'त्रहकियोड़ौ' (रू.भे.)

त्रहाक--देखो 'त्रहक' (रू.भे.) उ०--त्रंब गजर तूर त्रहाक, हूवै कळळ हूंकळ हाक। तपवंत खूटत ताळ, बणि जांणि निस वरसाळ।
--सू.प्र.

त्रहासणौ, त्रहासबौ--क्रि०स०--नगाड़ा बजाना। उ०--खूरम खांन दराब खीसिया, त्रहासिया त्रांबाट। अवियाट दूजा 'वलू' अचळा, थोभियौ गजथाट।--जैतौ महियारियौ

त्रहुं, त्रहूं--वि०--तीन। उ०--१ समरथ विरुद लोक त्रहुं सांमी, पुणां भांमी समरथपणौ।--र.ज.प्र.

उ०--२ त्रहूं जग मिटावण विघन तन ताप रा, खपावण पाप रा मूळ खोटा।--खेतसी बारहठ

त्रांगड़--देखो 'तांगड़' (रू.भे.)

त्रांगड़ी--सं०स्त्री०--एक प्रकार का शाक। उ०--तूंबि तूरि त्रांगड़ी, आहिमांण त्रिपुरारि। तूरफळी तरसाउळी, त्रिजटा नइं त्रिवितारि।
--मा.कां.प्र.

त्रांण--सं०पु० [सं० त्राण] १ कवच। उ०--सुणियां पातल समर रा, नीधसता नीसांण। तेज न मावै तन्न में, तन्न न मावै त्रांण।
--किसोरदांन बारहठ

सं०स्त्री०--२ ढाल।

[सं० त्राण] ३ रक्षा।

त्रांणपत्र--सं०पु० [सं० त्राणपत्र] एक वृक्ष विशेष।

त्रांणपोरस--सं०पु०--अभिमान, गर्व (डिं.को.)

त्रांणौ--वि० [सं० त्राण] १ रक्षक। उ०--तूं गति तूं त्रिभुवन पती, तूं सरणागत त्रांणा। समयसुंदर कहइ इह भव पर, भव पारसनाथ तूं देव प्रमांणा।--स.कु.

२ देखो 'त्रांण' (रू.भे.)

त्रांन--देखो 'त्रांण' (रू.भे.)

त्रांपणौ, त्रांपबौ--क्रि०अ०--ऊंट का उछलना-कूदना।

त्रांबक--देखो 'त्रंबक' (रू.भे.)

त्रांबगळ--देखो 'त्रंबगळ' (रू.भे.)

त्रांबाक--देखो 'त्रंबाक' (रू.भे.) उ०--ऊपड़ै सराक वाग पैनाक रठीठ आचां, खंडाक भेराक वाढ़ तेजाक खेवेस। डाक धीह त्रांबाक गांजाक ते भाळाक दीसै, रचै अै थंडाक केण ऊरै रोजेस।
--पहाड़खां आढ़ौ

त्रांबाट--देखो 'त्रंबाट' (रू.भे.) उ०--समर धुबै त्रांबाट होय नाद सिंधू, सबद खहण लागै गयण भुगथ खाथै।
--मांनसिंह भाटी (मोही) री गीत

त्रांबा-त्रासिया--सं०स्त्री०--ताम्र के पात्र में उबाली हुई भांग? उ०--आप पूछियौ ठाकुरै सूरज वासिया किया। तौ हिवे त्रांबा-त्रासिया करौ।--प्रतापमल देवड़ा री वात

त्रांबाळ--देखो 'त्रंबाळ' (रू.भे.) उ०--घुरै बसराळ त्रांबाळ तासा घणा। महारांणा भीमसिंह रौ गीत

त्रांबाळौ--देखो 'त्रंबाळ' (अल्पा., रू.भे.)

त्रांबौ--देखो 'तांबौ' (रू.भे.) उ०--कांसी पीतळ त्रांबा रज तणी, चोरी कीधी जेणी जी।--स.कु.

त्रांभाड़--देखो 'तांबाड़' (रू.भे.) उ०--फुरणां वज वाह हिहाड़ फिरै, कळ गाय त्रांभाड़ त्रांभाड़ करै।--पा.प्र.

त्रांभाड़णौ, त्रांभाड़बौ--देखो 'तांबाड़णौ, तांबाड़बौ' (रू.भे.)

त्रांभाड़ौ--देखो 'तांबाड़ौ' (रू.भे.)

त्रांमागळ--देखो 'त्रंबागळ' (रू.भे.) उ०--दळ आगळ निसदीह विजय त्रांमागळ बाजै। दहसत गालिब देस आग कहतां मुख दाजै।
--मे.म.

त्रांमाळ, त्रांमाळौ--देखो 'त्रंबाळ' (रू.भे.)

त्राकड़ि--देखो 'ताकड़ी' (रू.भे.) उ०--जीवतउ नइ मुंयउ चोर मइं तोलियउ, त्राकड़ि घाली तंतौ जी।--स.कु.

त्राकळउ--देखो 'ताकळौ' (रू.भे.) (उ.र.)

त्रागौ--देखो 'तागौ' (रू.भे.) उ०--तुम्ह सुं लागउ नेहलउ, जांणि मजीठउ राग। पट्ट कूल फाटैं थके, रहे त्रागा सुं लागौ रे।--प.च.चौ.

त्राड़--सं०पु०--१ आतंक, भय।

सं०स्त्री०--२ ध्वनि, आवाज. ३ वृक्ष विशेष।

त्राड़णौ, ताड़बौ--१ काटना, चबाना, काट कर खाना।

उ०--सो किण भांति रा बाकरा जिके कड़कती सांधरा वड़कती नळी रा भाहरे साद रा मादळिए पेट रा माड़ि बोर काचर रा वरड़णहार घणे कुंभट नै बांवळी री टीसीआं रा त्राड़णहार।--रा.सा.सं.

२ देखो 'ताड़णौ, ताड़बौ' (रू.भे.) उ०--ताहरां सोम अढाई हजार आदमी लेनै उवै कोट मांहै आयौ, आगला आदमी त्राड़ि काढ़िया।--सातलसोम री वात

३ देखो 'त्राडणौ, त्राडबौ' (रू.भे.) उ०--भलौ त्राड़ियौ बाळ धमळ।--वचनिका

त्राचणौ, त्राचबौ--क्रि०अ०--मारना, नष्ट करना, संहार करना।

त्राचणहार, हारौ, (हारी), त्राचणियौ--वि०।

त्राचिओड़ौ, त्राचिओड़ौ, त्राच्योड़ौ--भू०का०कृ०।

त्राचीजणो, त्राचीजवो— भाव वा० ।

त्राचियोड़ो–भू०का०कृ०—मारा हुआ, संहार किया हुआ ।
(स्त्री० त्राचियोड़ी)

त्राछटणो, त्राछटवो—देखो 'ताछटणो, ताछटवो' (रू.भे.)
उ०—वड वड भीच वकार, खेंगां चढ़ कर खाट खड़। त्राछट जोध तवार, त्राछट घांधल राव उत ।—पा.प्र.

त्राछटियोड़ो—देखो 'ताछटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० त्राछटियोड़ी)

त्राछण–सं०स्त्री० [सं० त्रासन] काटने की क्रिया या भाव ।

त्राछणो, त्राछवो [सं० त्रासण] देखो 'ताछणो, ताछवो' (रू.भे.)
उ०—१ घाइ भांजे घड़ा खाग त्राछै घणो। मेर मांझी 'जसो' हेक रिण माल्हणो ।—हा.झा.
उ०—२ वळि विच मां वंदूक विछूटै, खिण आरावां खूटै। तरवारां त्राछंतां तूटै, सुभटां रो सिर फूटै हो ।—प.च.चो.

त्राछियोड़ो—देखो 'ताछियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० त्राछियोड़ी)

त्राजु–सं०स्त्री०—तराजू, तकड़ी । उ०—त्राजुए तोलावी मुझ नइं दियउ, एह पारिखा प्रमांण रूड़ा राजा ।—स.कु.

त्राट–सं०स्त्री०—१ शस्त्र का प्रहार, वार, चोट, घात ।
उ०—'पातल' री वग ऊपड़ी, त्रजड़ झड़ी मझ त्राट। बड़ी बड़ी वप वीर री, घड़ी वीर रस घाट ।—जैतदांन बारहठ
२ देखो 'ताट' (रू.भे.)

त्राटक–सं०पु०—१ योग के षट् कर्मों में छठा कर्म या साधन क्रिया । इसमें अनिमेष रूप से किसी विन्दु पर दृष्टि रखते हैं ।
उ०—साधो ऐसा जोग विचारा । त्राटक ध्यांन धरो धीरप सूं, खेलो जग सूं न्यारा ।—स्री हरिरांमजी महाराज
२ देखो 'ताटक' (रू.भे.)

त्राटको–सं०पु०— डिंगल का एक गीत (छंद) जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में १८ मात्राएं और दूसरे तीसरे चरण में सोलह-सोलह मात्राएं होती हैं। प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण का तुकांत मिलाया जाता है; इसके बाद पांचवें, छठे और सातवें चरण में १६-१६ मात्राएं होती हैं और इनका परस्पर तुकान्त मिलाया जाता है। चतुर्थ चरण तथा आठवें चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएं अन्त गुरु लघु के नियम से रख कर इनका परस्पर तुकान्त मिलाया जाता है। इसी प्रकार आगे भी आठ-आठ चरण का एक द्वाला होता है परन्तु प्रथम द्वाले के बाद बनने वाले प्रत्येक द्वाले के प्रथम चरण में सोलह मात्रा ही होती हैं।

त्राटि, त्राटी—देखो 'टांटी' (रू.भे.) उ०—१ खादि सीधां, कापि कीधां, सुवरणमइ त्राटि, सिखरनइ घाटि ।—व.स.
उ०—२ किहां भीति नइ किहां त्राटी रे ! किहां रंभा नइ किहां राटी ! अंतर दीसइ एवडू, किहां दूध किहां छासि खाटी रे !
—नळ-दवदंती रास

त्राटीहर–सं०पु०—टहनियों से बनाया हुआ मकान, घर ।
उ०—धूळ हुंडी ना राय नइ, न घटइ स्वेत छत्र रे ! त्राटीहर भीति जिहां नवि, घटइ वारु चित्रांम रे !
—नळ-दवदंती रास

त्राठो–वि० (स्त्री० त्राठी) १ भयभीत, डरा हुआ ।
उ०—त्राठी हिरणी तणी परइं जी, दह दिसि जोवइ माग। दीठउ त्रांह्मण आवतउ जी, स्रीहरि प्रणम्यां पाग—रुकमणी मंगळ
२ पीड़ित ।

त्राठउ–वि० [सं० त्रस्त] भयभीत, डरा हुआ (उ. र.)

त्राठणो, त्राठवो–क्रि०अ० [सं० त्रसि] १ भगना, दौड़ना ।
उ०—त्ररे कंस रे तुंबली तात घाठो। तदा ताहरी केथ खत्रोट त्राठो
—ना.द.
२ पीड़ित होना, भयभीत होना। उ०—रितु ग्रीखम रांन में त्रिखो त्रिग दव थी त्राठै। पंडियो पासी पाउ नेट साइ तोडै नाठै।
—घ.व.ग्रं.

त्राठियोड़ो–भू०का०कृ०—१ भगा हुआ. २ पीड़ित. ३ भयभीत।
(स्त्री० त्राठियोड़ी)

त्राड–सं०स्त्री०—बैल या सांड के दहाड़ने की ध्वनि, दहाड ।

त्राडकणो, त्राडकवो–क्रि०अ०—१ सिंह का दहाड़ना ।
उ०—सुणि वातां मन उल्लसी, बोलै वादळ वीर । केहरि जिम त्राडकि नै, अतुळीबळ रिणधीर ।—प.च.चो.
२ देखो 'ताडूकणो, ताडूकवो' (रू.भे.)

त्राडकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ दहाड़ा हुआ ।
२ देखो 'ताडूकियोड़ो' (रू.भे.)

त्राडणउ–वि०—दहाड़ने वाला । उ०—रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ सांड त्राडणउ, कुमित्र फाडणउ ।—व.स.

त्राडणो, त्राडवो–क्रि०अ०—बैल या सांड का दहाड़ना । उ०—गैणाग ज्यार पड़ियो गळै, बळहारी भुजग्रडंड बळ। तिण तार गजैसिंह त्राडियो, धुर हिलोळ वाळो धमळ ।—गु.रू.वं.

त्राडियोड़ो–भू०का०कृ०—१ दहाड़ा हुआ. २ देखो 'ताडूकियोड़ो' (रू.भे.)

त्राडूकणो, त्राडूकवो—देखो 'ताडूकणो, ताडूकवो' (रू.भे.)
उ०—आय मती अग्यांन क्रिपा करि, त्राडूकइ जिम सांड । हुं गीता-रथ इम मुख भाखतां, खुलनुं थाइरे खांड ।—ऐ.जै.का.सं.

त्राडूकियोड़ो—देखो 'ताडूकियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० त्राडूकियोड़ी)

त्राता, त्रातार–सं०पु० [सं० त्रातृ] रक्षक, बचाने वाला।
उ०—दीनानाथ अभै वरदाता, त्राता सेवग तारण ।—र.ज.प्र.

त्राप–सं०पु० [सं० ताप] देखो 'ताप' (रू.भे.)

त्रापड़णो, त्रापड़वो—देखो 'तापड़णो, तापड़वो' (रू.भे.)

त्रापणो, त्रापवो—१ देखो 'तापणो, तापवो' (रू.भे.)
२ देखो 'तापड़णो, तापड़वो' (रू.भे.) उ०—मे दीठी मारुई, चीता

जेही लंक। वांनर आंबा डाळ ज्यूं, त्रापे चडे डरक्क।—ढो.मा.
त्रापा—
उ०—कदाचि वाहण भाजिसिइ, इसिउं जांणी वांस वळी आंणी एक लोक त्रापा वांधइं, एके लोके गोत्रदेवता इस्टदेवता मंत्र आराधन कीजइं।—व.स.
त्रापियोड़ौ—देखो 'तापियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० त्रापियोड़ी)
त्राभाड़णौ, त्राभाड़बौ—देखो 'तांभाड़णौ, तांभाड़बौ' (रू.भे.)
त्रायणौ, त्रायबौ—क्रि०अ०—भयभीत होना, डरना। उ०—रांमसिंघजी इसड़ै ताव सेती आइ अर लोहे भिळिया। जिम मूंडौ हिरण त्रायतौ आवै छै त्यूं फोगां मांहे कूदता आइ भिळिया।—द.वि.
त्रायमांण, त्रायमांणा, त्रायमांणिक—सं०स्त्री० [सं० त्रायमाण] बनफशे के प्रकार की एक लता जो पृथ्वी पर फैलती है।
वि०—रक्षक।
त्रास—सं०स्त्री० [सं० त्रासः] १ डर, भय। उ०—कोड़ां पापां कीजतां, कोपै धू कीनास। जीहां राघौ जो जपै, तौ नांही तिल त्रास।
—र.ज.प्र.
२ पीड़ा, कष्ट, वेदना। उ०—मुनि सुणि त्रास धरम महिपत्ती। कीधौ विदा कुंवर कांमत्ती।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—दैणी, होणी।
३ [सं० तृषा] प्यास।
रू०भे०—त्रासा।
त्रासक—वि०—१ भय दिखाने वाला, डराने वाला. २ पीड़ा देने वाला.
त्रासणौ, त्रासबौ—क्रि०अ० [सं० त्रासनम्] १ डरना, भयभीत होना।
उ०—१ घरआंगण मांहे घणा, त्रासै पड़ियां ताव। जुध आंगण सोहै जिके, वालम वास वसाव।—वां.दा.
उ०—२ जिकौ दो ही पिता पुत्रां रौ मिळाप सुणि अंतर में अेक जांणि तुरकां रौ तौम त्रासियौ।—वं.भा.
२ कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना. ३ दूर होना, भागना।
उ०—जब ऊगं जगचक्ख तिमिर जिण वेळा त्रासै।—घ.व.ग्रं.
त्रासणहार, हारौ (हारी), त्रासणियौ—वि०।
त्रासिओड़ौ, त्रासियोड़ौ, त्रास्योड़ौ—भू०का०कृ०
त्रासवणौ, त्रासवबौ—रू०भे०।
त्रासीजणौ, त्रासीजबौ—भाव वा०।
त्रासन—वि०—आतंकित, भयभीत।
त्रासमांण—वि०—आतंकित, भयभीत करने का कार्य।
उ०—त्रासमांण सुरतांण, मांण पौरस बळ मूकै। करै निजर केवांण, चीतवै रांण स चूकै।—सू.प्र.
त्रासवणौ, त्रासवबौ—क्रि०स०—१ भयभीत करना।
उ०—गिरि नदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ साहसिक तणा मन खोहतउ, तुरंगम त्रासवतउ पवन जिम चालतउ।—व.स.
२ देखो 'त्रासणौ, त्रासबौ' (रू.भे.) उ०—तिण समै ते त्रिद्धा कहै जी, राखियौ तैं भलौ सील। जेथ थकी भय सहु त्रासवै जी, पांमियौ सिवपुर लील।—वि.कु.
त्रासा—देखो 'त्रास' (रू.भे.) उ०—१ सिमरू जगपति सासौ सासा, तीन लोक जम मनै न त्रासा।—ऊ.का.
उ०—२ करहा पांणी खंच पिउ, त्रासा घणा सहेसि। छीलरियउ ढूकसि नहीं, भरिया केथि लहेसि।—ढो.मा.
त्रासियोड़ौ—भू०का०कृ०—भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, डराया हुआ।
(स्त्री० त्रासियोड़ी)
त्रासौ—वि०—१ प्यासा, तृषावान. २ भयभीत, डरा हुआ।
उ०—आखर जंत्र मंत्र लै ओळख, कुक्रम भाखर जुलम करै। त्रभवण ठाकर हुं तन त्रासौ, डारण चाकर हुंत डरै।
—गंभीरसिंघ चांपावत रौ गीत
त्राहि—अव्य० [सं०] बचाओ, रक्षा करो आदि पुकार के लिए बोला जाने वाला शब्द। उ०—त्राहि त्राहि स्वांमी जगजीवन, दुख सहूं नवि जायि जी।—नळाख्यांन
मुहा०—त्राहि त्राहि करणौ—रक्षा के लिए चिल्लाना।
रू०भे०—तराहि, तराही।
त्राहिमांण—देखो 'त्रायमांण' (रू.भे.) उ०—तूंबिणि तूरि त्रांगडी, त्राहिमांण त्रिपुरारि। तूरफळी तरसाउळी, त्रिजटा नइं त्रित्रितारि।
—मा.कां.प्र.
त्रिंबागळ—देखो 'त्रंबागळ' (रू.भे.) उ०—रावत प्रतापसिंघ बडा सांमांन नै बडी फौजां रा पंसार लीधा, गढ़ आंण लागा अर विसर रा त्रिंबागळ ठौड़ ठौड़ वागा।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
त्रिंसांस—सं०पु० [सं० त्रिंशांश] १ किसी पदार्थ का तीसवां भाग. २ एक राशि का तीसवां भाग (ज्योतिष)
त्रि—वि० [सं०] तीन। उ०—प्रकांड पाठ के त्रि करम कांड कौ करै, तने गई उपासनां ब्रह्मांड ग्यांन तें तरै।—ऊ.का.
सं०स्त्री०—स्त्री।
उ०—तो सम त्रि नहीं ईणोई संसार।—बी.दे.
रू०भे०—त्री।
त्रिआ—देखो 'त्रिया' (रू.भे.)
त्रिआसी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.)
त्रि-इंद्रिय—देखो 'त्रींद्रिय' (रू.भे.)
त्रिकंटक—सं०पु० [सं०] १ गोखरू नामक भूमि पर फैलने वाली लता. २ त्रिशूल।
वि०—जिसमें तीन कांटे या नोंक हो।
त्रिक—सं०पु० [सं०] १ तीन का समूह. २ वह स्थान जहां तीन रास्ते मिलते हों, तिराहा। उ०—अथ नगर, प्रसाद प्रतोळी राजकुळ देवकुळ त्रिक चउक चच्चर राजमारगि।—व.स.
३ त्रिफला. ४ त्रिकुट. ५ कमर. ६ रीढ़ के नीचे का भाग जहां कूल्हे की हड्डियां मिलती हैं।
रू०भे०—तिर्य।

७ शोक, खेद ।

त्रिककुद–सं०पु० [सं०] १ त्रिकूट नामक पर्वत. २ विष्णु ।

त्रिकटबंध—देखो 'त्रकूटबंध' (रू.भे.)

त्रिकट्ट, त्रिकट्टक—देखो 'त्रिकुटी' (रू.भे.)

त्रिकरण–सं०पु० [सं०] १ मन, वचन और काया । उ०—त्रिकरण-सुद्ध इकतार तौ सूं कियौ ।—ध.व.ग्रं.

२ एक प्रकार का घोड़ा (अशुभ)

रू०भे०—तिकरण ।

त्रिकरण-सुद्धि–सं०स्त्री०यौ० [सं० त्रिकरण शुद्धि] मन, वचन और काया की शुद्धि (जैन) उ०—नळ मोटइ हकउ रिखिराय, त्रिकरणसुद्धि वंदू पाय ।—नळ-दवदंती रास

त्रिकळ–सं०पु०—१ तीन मात्राओं का एक शब्द । उ०—सात टगण फिर त्रिकळ यक, अंत रगण इक आंण । मत सैंताळी पाय में, पंच वदन सौ जांण ।—र.ज.प्र.

२ दोहे का एक भेद जिसमें ६ गुरु और ३० लघु अक्षर सहित ४८ मात्रायें होती हैं ।

त्रिकळस–सं०पु०—विशेष प्रकार का भवन ? उ०—१ जूनी ख्यातां में अलाउद्दीन आयौ जद चहुवांण सात त्रिकळस बैठौ हुरकणियां रौ नाच करायौ हो ।—वां.दा.ख्यात

उ०—२ वरणा वरण निवेडईजी, तुरीय अमोलक ल्हास । त्रिकळस जिम नृप तपइजी, जेहवा इंद्र प्रवास ।—रुकमणी मंगळ

त्रिकळाचळ–सं०पु०—लंका का एक पर्वत ।

त्रिकळाचळयितगति–सं०पु०—रावण (नां.मा.)

त्रिकलिंग—देखो 'तैलंग' (रू.भे.)

त्रिकसूळ–सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग जिसमें रीढ़ तथा कमर की हड्डी में पीड़ा होती है ।

त्रिकांड–सं०पु० [सं०] १ अमर कोष का दूसरा नाम. २ निरुक्त का दूसरा नाम ।

वि०—जिसमें तीन कांड हों ।

त्रिकांडी–वि०—तीन कांड वाला ।

सं०पु०—वह ग्रंथ जिसमें कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों का वर्णन हो ।

त्रिकारदरसी—देखो 'त्रिकाळदरसी' (रू.भे.)

त्रिकाळ–सं०पु० [सं० त्रिकाल] १ तीनों काल–वर्तमान, भूत और भविष्य । उ०—निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणौ लगा कहण । सगळै दोख विवरजित साहौ, हूं तौ जई हुओ हरण ।—वेलि.

यौ०—त्रिकाळ-दरसक, त्रिकाळ-दरसी ।

२ तीनों समय—प्रातः, मध्यान्ह और सन्ध्या । उ०—नवमौ सूर प्रभ नमूं, दसमौ देव विसाळ । इम वज्रधर इग्यारमौ, त्रिकरण प्रणमुं त्रिकाळ ।—ध.व.ग्रं.

वि०—तीनों ही काल में पागल रहने वाला, उन्मत्त । उ०—जत-राव महासिव पंथ जुओ । हाय आज भालाळ त्रिकाळ हुओ ।—पा.प्र.

रू०भे०—त्रकाळ, त्रणकाळ ।

त्रिकाळग्य–सं०पु० [सं० त्रिकालज्ञ] भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञाता, सर्वज्ञ, ईश्वर ।

रू०भे०—त्रकाळग्य ।

त्रिकाळग्यता–सं०स्त्री० [सं० त्रिकालज्ञता] तीनों कालों की बात जानने की शक्ति या भाव ।

त्रिकाळग्यांनदरसी, त्रिकाळदरसक–वि० [सं० त्रिकालदर्शक] तीनों कालों की बातों को जानने वाला ।

रू०भे०—त्रकाळदरसी, त्रिकाळदरसी ।

त्रिकाळदरसिता–सं०स्त्री० [सं० त्रिकालदर्शिता] तीनों ही कालों की बातों को जानने की शक्ति ।

त्रिकाळदरसी—देखो 'त्रिकाळदरसक' (रू.भे.)

उ०—त्रिकाळदरसी जोइसी, कहै एम आगम कहा । असमांण उपद्रव थाइसै, उठी आग पांणी महा ।—गु.रू.बं.

त्रिकाळनरेस–सं०पु०—त्रिकालज्ञ, परब्रह्म । उ०—अनंक न संकन धंक न धीस, अवास न वास न आस न ईस । निराळ न काळ त्रिकाळ नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह.र.

त्रिकिम–सं०पु० [सं० त्रिविक्रम] श्रीकृष्ण, विष्णु ।

त्रिकुट–सं०पु० [सं०] १ लंका । उ०—इम चढ़े सोन गह ऊपरां, सांमत 'गजण' सधीर रा । तोड़िवा जांणि चढ़िया त्रिकुट, विकट घाट रघुवीर रा ।—सू.प्र.

२ लंका का गढ़ । उ०—त्रिकुट अनै हथणापुर तीजो, घड़ा खूह-खण एकण घाय । इण निसपति असपति सूं अवडो, रिण काछियो जु काछी राय ।—नैणसी

३ देखो 'त्रिकुटी' (रू.भे.) ४ देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

रू०भे०—त्रिगुट ।

त्रिकुटगढ़–सं०पु०—लंका । उ०—रांमा अवतारि वहे रणि रावण, किसी सीख करुणा करण । हूं ऊबरी त्रिकुटगढ़ हूंती, हरि बंध वेळा हरण ।—वेलि.

रू०भे०—त्रिकूटगढ़, त्रुगटगढ़ ।

त्रिकुटबंध—देखो 'त्रकूटबंध' (रू.भे.)

त्रिकुटा–सं०स्त्री०—एकलिंग महादेव के स्थान की तीन शिखर वाली तीन पहाड़ियों से निकलने वाली मेवाड़ राज्य की एक नदी का नाम ।

रू०भे०—त्रिकूटा ।

त्रिकुटि, त्रिकुटी–सं०स्त्री० [सं० त्रिकूट] १ त्रिकूट चक्र का स्थान, दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर का भाग । उ०—१ सप्तमी आरती त्रिकुटी वासा । झिलमिल जोत हुई प्रकासा ।

—श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ भमर गुफा मझि रमै तजै भ्रम जीतै निंद्रा त्रिकुटी संजम ।

—सू.प्र.

२ ललाट, भाल ।

रू०भे०—त्रकुटी, त्रिकूटी ।

त्रिकुटी-सं०पु०—सौंठ, मिर्च और पीपल इन तीनों को मिश्रित कर बनाया जाने वाला पदार्थ ।

रू०भे०—त्रिकटुम, त्रिकुट, त्रिकूट, त्रिगुटी ।

त्रिकूट-सं०पु० [सं०] १ तीन चोटियों वाला लंका का पर्वत. २ सेंधा नमक. ३ योग में मस्तक के छः कल्पित चक्रों में पहला चक्र. ४ पर्वत (ह.नां.) ५ मेवाड़ राज्यान्तर्गत वह प्रदेश जहां एकलिंग महादेव का स्थान है. ६ एकलिंग महादेव के इर्द-गिर्द आई तीन शिखर वाली पहाड़ियों का समूह (मेवाड़)

७ देखो 'त्रिकुट' (रू.भे.)

८ देखो 'त्रिकुटी' (रू.भे.)

रू०भे०—तिऊड, तिकूड, त्रकुटाचळ, त्रगुट, त्रिगडू, त्रुगट ।

त्रिकूटगढ़—देखो 'त्रिकुटगढ़' (रू.भे.) (व.स.)

रू०भे०—त्रकुटांण ।

त्रिकूटा-सं०स्त्री०—१ तांत्रिकों की एक भैरवी ।

२ देखो 'त्रिकुटा' (रू.भे.)

त्रिकूटी—देखो 'त्रिकुटी' (रू.भे.)

त्रिकोण-सं०पु० [सं०] १ तीन कोनों का क्षेत्र, त्रिभुज क्षेत्र. २ तीन कोनों वाली कोई वस्तु. ३ योनि, भग. ४ जन्मकुण्डली में लग्न स्थान से पांचवां और नवां स्थान ।

त्रिकोणघंटी-सं०स्त्री० [सं०] लोहे की मोटी सलाख का बना एक तिकोना बाजा जिस पर लोहे की अन्य छड़ से आघात कर ताल देते हैं ।

त्रिकोणा-वि०—तीन कोने वाला, त्रिकोण ।

त्रिकोणासन-सं०पु०—योग के चौरासी आसनों में से एक आसन, इसके तीन भेद हैं—१ वाम त्रिकोणासन. २ दक्षिण त्रिकोणासन और ३ पूर्ण त्रिकोणासन ।

वि०वि०—उभड़ते बैठ कर वाम पांव की एडी का बायां भाग जंघा की ओर निम्न भाग को स्पर्श करा कर उनके घुटने पर बांयें हाथ को रख कर उसी हाथ के पंजे से मस्तक को स्पर्श किया जाता है । दाहिने पांव की एडी का दाहिना और जंघा के निम्न भाग को स्पर्श करा कर उनको झुकता हुआ रख कर उस पर दाहिने हाथ को रखने से वाम त्रिकोणासन होता है । इसके विपरीत दक्षिण त्रिकोणासन होता है । वाम तथा दक्षिण त्रिकोणासन दोनों को एक साथ करने से पूर्ण त्रिकोणासन होता है ।

त्रिक्षार-सं०पु० [सं०] जवाखार, सज्जी और सुहागा इन तीन क्षारों का समूह ।

त्रिख—देखो 'त्रखा' (रू.भे.) उ० -भूख त्रिख वीसरै सुणै कर जोड़ ए ।—ध.व.ग्रं.

त्रिखत-वि० [सं० तृषित] १ प्यासा । उ०—पावै त्रिखत हुवै तद तद त्रिप्त । हिम सर करां नीर अति चित हित ।—सू.प्र.

२ तलवार ? उ०—परदळ मिळइं, सुभट किळकळइं, नीसांणि घाय वळइं, चिघ । झळहळइं, त्रिखत खटकइं, सन्नाह त्रटकइं ।—व.स.

त्रिखनहौ-सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।

त्रिखा—देखो 'त्रखा' (रू.भे.) उ०—१ म्रिगसिर नक्षत्र वाउ वाज्यौ सुम्रिगां कौ वइरी हुऔ छै । त्रिखा करि व्याकुळ हुऔ छै ।—वेलि टी. उ०—२ क्षुधा त्रिखा निद्रा नहीं, नहिं लोही नहिं मांस । पंजर छंडइ प्रांणीउ, पणि माधव नी आस ।—मा.कां.प्र.

त्रिखावंत—देखो 'त्रखावंत' (रू.भे.) उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति रातौ छाकै ते दारू पिआं तासीआं त्रिखावंत हुआ । —रा.सा.सं.

त्रिगंग-सं०पु० [सं०] एक तीर्थ का नाम (महा.)

त्रिगड़-सं०पु०—एक राक्षस का नाम (पौराणिक)

उ०—त्रिगुण किलंग रिणिताळ विन्हइ, भिड़िसै अतळीबळ । तरुआरै त्रिगड़ां विळै, विढ़िसै नर विमळ ।—पी.ग्रं.

त्रिगड-सं०पु०—हाथी को बांधने का बंधन । उ०—चरण संबंधीआं त्रिगडां भांजी, वरंडा पाडतउ ।—व.स.

त्रिगडू—देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

त्रिगडौ, त्रिगढौ-सं०पु०—तीर्थंकरों के उपदेश देने का वह स्थान जो तीन वृत्ताकार दीवारों से घिरा हुआ हो । उ०—१ अस्टापद जे सुणतां आगी, सो विधि दीठी सागी । त्रिगडौ देखि मिथ्यामति त्यागी, जिन धरम महिमा जागी ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ तिरथंकर आवै तिहां, त्रिगढौ करय तयार । समकित करणी साचवै, एह कहु अधिकार ।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ भवणवइ देव त्रिगढौ ।—ध.व.ग्रं.

त्रिगरत, त्रिगरथ-सं०पु० [सं० त्रिगर्त्त] १ उत्तर भारत के एक प्राचीन प्रांत का नाम जिसमें आजकल पंजाब प्रांत के कांगड़ा और जालंधर आदि नगर हैं ।—व.स.

[सं० त्रिक्=नृत्य, गीत और वाद्य कला+अर्थ] २ हर्ष, प्रसन्नता । उ०—पारथ भूप 'प्रताप' रै, भारथ रा भुज भार । जरमन कुसळ न जाव हो, कर मन त्रिगरथ कार ।—किसोरदांन बारहठ

त्रिगुट—१ देखो 'त्रिकुट' (रू.भे.)

२ देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.) उ०—त्रिगुट गड थरहरै नाग दध डरै तद भरै चत्रकूट डंड जोड भुडंड ।—ईसरदास सूरजमलोत बारहठ

त्रिगुट-बंध—देखो 'त्रकूट-बंध' (रू.भे.)

त्रिगुटी—देखो 'त्रिकुटी' (रू.भे.) उ०—पुर पुरस मिळै पुन पैलै, वेगी सुमरण जुगत वणी । वळती डांग पछम री वागी, त्रिगुटी फाटी सीस तणी ।—बांकीदास विठू

त्रिगुण-सं०पु० [सं०] १ सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का समूह. २ तीन मुख्य प्रकृतियों का समूह. ३ शीतल, मंद और सौरभ इन तीनों गुणों से युक्त पवन । उ०—तव ही उह बाळक नूं भूख-त्रिस लागी छै, असै त्रिगुण कहतां, सीत, मंद, सुगंध मलयानिळ लागी

सीई त्यां ही वसंत नै जनमत ही भूख त्रिस लागी छै ।—वेलि.टी.

वि०—तिगुना ।

रू०भे०—त्रगुण, त्रैगुण ।

त्रिगुणनाथ, त्रिगुणपति-सं०पु० [सं०] परमेश्वर, परमात्मा (नां.मा.)

रू०भे०—त्रगुणनाथ ।

त्रिगुणा-सं०स्त्री०—१ देवी, दुर्गा. २ माया ।

त्रिगणातम, त्रिगुणातमक-वि० [सं० त्रिगुणात्मक] सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से युक्त ।

त्रिगुणी-सं०पु० [सं०] बेलपत्र का वृक्ष ।

त्रिगुण्-सं०पु० [सं० त्रिगुणम्] तिगुना (उ.र.)

त्रिगूढ़-सं०पु० [सं०] स्त्रियों के वेश में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य ।

त्रिघाई—देखो 'त्रिधाई' (रू.भे.)

त्रिड़इणौ, त्रिड़इबौ—देखो 'तिड़णौ, तिड़बौ' (रू.भे.)

त्रिड़णौ, त्रिड़बौ—देखो 'तड़णौ, तड़बौ' (रू.भे.) उ०—जिणि दीहे तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ । तांह दिहां री गोरड़ी, पड़तउ झालइ आभ ।—ढो.मा.

त्रिचक्र-सं०पु० [सं०] अश्विनीकुमारों का रथ ।

त्रिचक्षु, त्रिचख-सं०पु० [सं० त्रिचक्षुस्] महादेव । उ०—त्रिचख अनेक लिए सिर ताजा । रथ थांभै देखे ग्रह राजा ।—सू.प्र.

त्रिजंच—देखो 'तिरजक' (रू.भे.) उ०—प्रभु के दरस पाप गए सब, नरग त्रिजंच की भीति टरी री ।—स.कु.

त्रिजग-सं०पु०—तीन लोक, त्रिलोक ।

रू०भे०—त्रिजुग ।

त्रिजड़, त्रिजड-सं०स्त्री०—१ शस्त्र । उ०—पूठि भिड़जां आरुहिया भड़, तिस रूप लेय छतीसै त्रिजड ।—गु.रू.बं.

२ तलवार । उ०—अड़ियौ रांणा 'अमर' सूं, अणगंज रहियौ आप । तड़ितां सिर त्रिजड़ां जड़ि, वो रावत परताप ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रू०भे०—त्रजड़, त्रजड़ी, त्रभड़, त्रिज्झड़ ।

त्रिजटा-सं०स्त्री० [सं०] अशोक वाटिका में जानकी के पास रहने वाली एक राक्षसी जो विभीषण की बहिन थी ।

त्रिजांम, त्रिजांमा-सं०स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि (नां.मा.)

रू०भे०—त्रियांमा, त्रीयांमा ।

त्रिजात-सं०पु०—१ वर्णशंकर, जारज । उ०—तरै मंत मे मुंह बोल त्रिजात, वहूं नह तुज्ज तणी सत वात ।—पा.प्र.

२ देखो 'त्रिजातक' (रू.भे.)

त्रिजातक-सं०पु० [सं०] १ इलायची, दालचीनी और तेजपत्र के छिलके का सम्मिश्रण ।

रू०भे०—त्रिजात ।

त्रिजुग—देखो 'त्रिजग' (रू.भे.)

त्रिजोणी-सं०पु० [सं० त्रियोनि] तृतीय योनिज अर्थात् तमोगुण से उत्पन्न ।

त्रिजौ-वि०—तीसरा, तृतीय । उ०—दुति गयौ त्रिजै दिवस ।

—रा.रा.

त्रिज्झड़—देखो 'त्रिजड़' (रू.भे.) उ०—अवज्झड़ त्रिज्झड़ भड्ड असंध, कटै कर कोपर काळिज कंध ।—वचनिका

त्रिडोरियौ-सं०पु०—एक वाद्य विशेष । उ०—ताहरां विजाणंद त्रिडोरियौ यंत्र चाडि अर आलापचारी कीवी ।—सयणी री वात

त्रिण—देखो 'तिण' (रू.भे.) उ०—१ त्रिण जुध करि दूखण उतरावौ, जठी पायक गयंद जुटावौ ।—सू.प्र.

उ०—२ अकबर साह निरखिया, जेता चांपावत्त । मीढ़ सहस्सां मरयणे, लक्ख गिणे त्रिण मत्त ।—रा.रू.

त्रिणउ-सं०पु० [सं० तृणम्] तृण (उ.र.)

त्रिणकाळ—देखो 'त्रणकाळ' (रू.भे.) उ०—घणौ वित्त ले सिंध में गई, सोरठ त्रिण-काळ पड़ियौ सिंध रौ पातसाह सूमरो जिण जायल नूं घर में घालणी विचारी ।—बां.दा. ख्यात

त्रिणता-सं०स्त्री० [सं०] धनुष ।

त्रिणधज—देखो 'त्रणधज' (रू.भे.)

त्रिणपद-सं०पु०—तीन कदम, तीन डग ।

त्रिणवडि-वि०—तिगुनी । उ०—बादळळ कहइ रे नारि सुणि, असुर सेन त्रिणवडि गिणउ ।—प.च.चौ.

त्रिणि—देखो 'तिण' (रू.भे.) उ०—१ त्रिणि दीह लगन वेळा आडा तै, घणूं किसूं कहिजै आ घात । पूजा मिसि आविसि पुरखोतम, अंबिकालय नगर आरात ।—वेलि.

उ०—२ नयन मिळंतां मन मिळइ, मन मिळि वयण मिळंति । ए त्रिणि मेळवी करि, काया गढ़ भेळंति ।—अज्ञात

त्रिणिय-वि०—तीन ।

त्रिणी—देखो 'तिण' (रू.भे.)

त्रिणौ-सं०पु० [सं० तृण] तिनका, तृण । उ०—तरु लता पल्लवित त्रिणे अंकुरित, नीलांणी नीलंबर न्याइ । प्रथमी नदिमै हार पहरिया, पहिरे दादुर नूपुर पाइ ।—वेलि.

त्रिणह, त्रिण्णि, त्रिण्ह, त्रिण्हि, त्रिण्है, त्रिण्हौ—देखो 'तिण' (रू.भे.)

उ०—१ जुध सहस गुणा खळ मिळै जात । मन गिणै तिकां नूं त्रिणह मात ।—वि.सं.

उ०—२ पूरब पुण्य पसाउलइ त्रिण्णि नारि विळसइ विअक्खणि ।

—विद्याविळास पवाडउ

उ०—३ कोस त्रिण्ह देह त्रिण पल्ल आयु धारए ।—धा.व.ग्रं.

उ०—४ उचरइ विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्हि जीता तिरी ।

—प.च.चौ.

त्रितंत्री-सं०स्त्री० [सं०] कच्छपी वीणा की तरह की तीन तार वाली वीणा (प्राचीन)

त्रिताप-सं०पु० [सं०] तीन प्रकार के दुःख—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ।
रू०भे०—त्रताप ।
त्रिताळ-सं०स्त्री०—१६ मात्राओं की एक ताल ।
त्रितिय, त्रिती, त्रितीय-वि० [सं० तृतीय] तीसरा । उ०—१ भेदै मंडळ भांण आगै भोजाइयां आई । दोय धांधळ रा कंवर त्रितिय री जाई ।—पा.प्र.
उ०—२ भवांनिय दीध सिंदूर ज भाळ । भळाहळ जांणि त्रिती चख भाळ ।—सू.प्र.
उ०—३ कऴ चवद चवदै तणी दुय तुक, मिळै मोहरा तांम ही । कळ त्रितीय खोड़स बळै, दसकळ चतुरथी तुक में चही ।—र.रू.
त्रित्र-वि० [सं० त्रि] तीन ।
सं०पु० [सं० तृण] तिनका, तृण ।
त्रिदंड-सं०पु० [सं०] सन्यास आश्रम का चिन्ह ।
वि०वि०—बांस के एक डंडे के सिरे पर दो छोटी-छोटी लकड़ियां बांध कर बनाया जाता है ।
रू०भे०—तिदंड ।
त्रिदंडी-सं०पु० [सं०] १ मन, वचन और कर्म तीनों का दमन करने या वस में रखने वाला सन्यासी । उ०—आस्तिक बिन इंदुक नास्तिक निंदुक सास्तिक मत सोखंदा है । तज धरम त्रिदंडी अधिक अफंडी पाखंडी पोखंदा है ।—ऊ.का.
२ वैरागी साधुओं का एक सम्प्रदाय विशेष जो तीन दंड रखते हैं. ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
रू०भे०—त्रिदंडयउ ।
त्रिदंडयउ—देखो 'त्रिदडी' (रू.भे.) उ०—कवहि राजा कवहिं रंक, कवहि भेख त्रिदंडयउ । कबहि मूरिख कवहि पंडित, कबहि पुस्तक पंडयउ री ।—स.कु.
त्रिदख-सं०पु० [सं० त्रिदश] स्वर्ग (नां.मा.)
त्रिदळ-सं०पु० [सं० त्रिदल] १ बेल का वृक्ष. २ बेल-पत्र ।
त्रिदव—देखो 'त्रिदिव' (रू.भे.) (नां.मा.)
त्रिदवेस-सं०पु० [सं० त्रिदिवेश] देवता, सुर (नां.मा.)
उ०—हगांमा हमेसा बजत त्रिदवेसां नवबती । अई इंदु अंबा जयति जगदंबा भगवती ।—मे.म.
रू०भे०—त्रदवसा ।
त्रिदस-सं०पु० [सं० त्रिदश] १ देवता, सुर (नां.मा.) उ०—हुवौ रिण-थंभ निय साथ विमुहे हुवै, त्रिदस मंनव हूवा तिणि तमासै । सांमि-ध्रम दाखि 'केसव' तणौ सींधळी, वरेगो रंभ सुरलोक वासै ।
—गिरधरदास केसवदासोत रौ गीत
रू०भे०—त्रदस, त्रदसा, त्रदेस ।
यौ०—त्रिदस-गुरु, त्रिदस-तप, त्रिदस-पति, त्रिदस-वधू, त्रिदसांकुस, त्रिदसाधिप, त्रिदसायन, त्रिदसायुध, त्रिदसारि, त्रिदसालय, त्रिदसासदन, त्रिदसाहार, त्रिदसेस्वर, त्रिदसेस्वरी ।
त्रिदसगुरु-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश-गुरु] देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।
त्रिदस-तप-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश-तप] स्वर्ग (ह.नां.)
रू०भे०—त्रदस-तप ।
त्रिदस-पति-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश-पति] इन्द्र, देवराज ।
त्रिदस-वधू-सं०स्त्री०यौ० [सं० त्रिदस-वधू] १ अप्सरा । २ बीरबहूटी ।
त्रिदसांकुस-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+अंकुश] वज्र ।
त्रिदसाधिप-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+अधिप] इंद्र ।
त्रिदसायन-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+अयन] विष्णु ।
त्रिदसायुध-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+आयुध] वज्र ।
त्रिदसारि-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+अरि] राक्षस, असुर ।
त्रिदसालय-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+आलय] १ स्वर्ग ।
उ०—कंठठची घमसांण प्रमांण किसा, दहल्यौ हिंदवांण दिसा विदिसा । त्रिदसालय चाव चढ़चा तरुण्यां, समचार थळी छत्रधार सुण्यां ।—मे.म.
२ सुमेरु पर्वत. ३ देवालय, मंदिर ।
त्रिदसासदन-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+सदन] १ स्वर्ग (नां.मा.) २ मंदिर, देवालय ।
त्रिदसाहार-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+आहार] अमृत ।
त्रिदसेस्वर-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदश+ईश्वर] इन्द्र, देवराज ।
त्रिदसेस्वरी-सं०स्त्री०यौ० [सं० त्रिदश+ईश्वरी] दुर्गा, भगवती ।
त्रिदिव-सं०पु० [सं०] देवलोक, स्वर्ग (ह.नां.)
उ०—'लालां' 'उमां' साथ गति लीधी । पति सह त्रिदिव सुधा मिळ पीधी ।—वं.भा.
रू०भे०—त्रदन, त्रदव, त्रिदव ।
यौ०—त्रिदिवाधीस, त्रिदिवेस ।
त्रिदिवाधीस-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदिव+अधीश] देवराज, इन्द्र ।
त्रिदिवेस-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदिव+ईश] इन्द्र ।
त्रिदेव-सं०पु० [सं०] तीनों देवता—ब्रह्मा, विष्णु और महेश ।
त्रिदेवालय-सं०पु०यौ० [सं० त्रिदेव+आलय] स्वर्ग, देवलोक ।
त्रिदोख, त्रिदोस-सं०पु० [सं० त्रिदोष] १ तीन दोष—वात, पित्त और कफ. २ वात, पित्त और कफ जनित रोग, सन्निपात ।
त्रिदोसज-सं०पु० [सं० त्रिदोषज] सन्निपात रोग ।
वि०—तीनों दोष (त्रिदोस—वात, पित्त और कफ) से उत्पन्न ।
त्रिधज-सं०पु० [सं० तृणध्वज] बांस (ह.नां.)
त्रिधन्वा-सं०पु० [सं०] सूर्य वंश के सुधन्वा राजा का पुत्र ।—सू.प्र.
त्रिधा-वि० [सं०] तीन प्रकार का । उ०—धरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म । सरज्जै आप त्रिधा संसार, हुवौ मज्झ आप ही रम्मणहार ।—ह.र.
क्रि०वि०—तीन प्रकार से, तीन तरह से ।

त्रिघाई-सं०पु० [सं० त्रि+धा] १ ताल वाद्य का बोल. २ ताल वाद्य पर तीन वार 'धा' की ध्वनि करने की क्रिया ।

त्रिधार—देखो 'त्रिधारो' (रू.भे.) उ०—बावौ तरगस बांधिसैं, धुणिसैं खड़ग त्रिधार। खेत उजेणी खेलिसैं, करिसैं जैजैकार ।
—पी.ग्रं.

त्रिधारा-सं०स्त्री० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल में बहने वाली गंगा ।

त्रिधारी-सं०पु० [सं० त्रिधार+रा.प्र.ग्रो] १ एक विशेष प्रकार का भाला जिसके फल पर तीन धार होती हैं ।
२ एक प्रकार का थुहर, शोहुंड ।
वि०—तीन धार वाला ।
रू०भे०—त्रिधार।

त्रिधासी-सं०पु० [सं० त्रिध्वंशिन्] यमराज (नां.मा.)

त्रिध्यारुण-सं०पु०—एक सूर्यवंशी राजा का नाम (सू.प्र.)

त्रिनयण, त्रिनयन-सं०पु० [सं० त्रिनयन] महादेव, शिव। उ०—जुध समंद विरोळै देव दांणव जठै, दूसरां नरां नह भाग दीधौ। सुरतन सगह विख हुवौ सीसोदियौ, कमधज त्रिनयण गरकाव कीधौ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता
रू०भे०—त्रणनैण, त्रनयण, त्रयण, त्रयनयण, त्रीनेण, त्रीनैण।

त्रिनाभ-सं०पु० [सं०] विष्णु ।

त्रिनेत्र-सं०पु० [सं०] १ महादेव, शिव. २ एक भैरव का नाम.
३ स्वर्ण, सोना।
रू०भे०—त्रनेत्र ।

त्रिनेत्ररस-सं०पु० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

त्रिन्न-वि०—फैला हुआ ? उ०—अति स्वच्छ निरमळ वस्त्र, मस्तिक चंद्रमंडळ सम त्रिन्न छत्र, कनकदंड, चमर दिव्य आभरण डंबर।
—व.स.

त्रिपंखो-सं०पु० [सं० त्रिपक्ष] डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसमें सर्व प्रथम दो पद दुमेल गीत के (जिसमें प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं) होते हैं। इसके बाद बड़े साणोर गीत का प्रथम पद (जिसमें २० मात्राएँ होती हैं) होता है। इस प्रकार इस गीत (छंद) में तीन ही चरण होते हैं ।

त्रिपट-वि०—दुष्ट, नीच, नालायक। उ०—१ आगै कुखत्री एक, तौ जिसौ हुतौ त्रिपट। सांप्रत कीनौ सेख, नाच नचायौ 'नागवौ'।.
—पा.प्र.
उ०—२ इकावन्नै आइ दुनी दुरभख डुलाइ, काढ़चौ सौ कूटि नैं भीर बावनैं भाइ। बावनां बाहिरौ त्रिपट पडीयौ तेपन्नौ, दातारैं तजि ददौ, निपट करि भाल्यौ नन्नौ।—ध.व.ग्रं.
२ पागल ।

त्रिपण, त्रिपणउ—देखो 'तरपण' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—परसरांम कर फरस धर, पितु काज वयर का। धर दीधी इकवीस वेर, कर त्रिपण रुधर का।—दुरगादत्त वारहठ

त्रिपत—देखो 'तिरपत' (रू.भे.) उ०—अति प्रेरित रूप आंखियां अत्रिपत, माहव जद्यपि त्रिपत मन। वार वार तिम करै विलोकन, घण मुख जेही रंक घन।—वेलि.

त्रिपति-सं०स्त्री० [सं० तृप्ति] तृप्ति, संतुष्टि, संतोष ।
उ०—अदबुद मूरति अति भली, जोतां त्रिपति न थायोजी।—स.कु.

त्रिपथ-सं०पु० [सं०] तीनों मार्गों का समूह—कर्म, ज्ञान और उपासना।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी, त्रिपथा-सं०स्त्री० [सं० त्रिपथ गामिनी] तीनों लोकों में बहने वाली गंगा, भागीरथी (ह.नां.) उ०—तोय करम नासा तणै, नर सुभ करम नसाय। तोय तुहाळै त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय।—बां.दा.

त्रिपद-वि० [सं०] तीन पद या चरण वाला ।
सं०पु०—१ तिपाई. २ त्रिभुज. ३ घोड़ा (डिं.नां.मा.)
४ यज्ञ की वेदी मापने का एक माप (प्राचीन)

त्रिपदा-सं०स्त्री० [सं०] १ गायत्री. २ एक लता का नाम. हंसपदी।
रू०भे०—त्रिपदी ।

त्रिपदिका-सं०स्त्री० [सं०] १ देव पूजन के समय शंख रखने का पीतल का बना तिपाई की तरह का चौखटा. २ तिपाई।
रू०भे०—त्रिपदी, त्रिपादी।

त्रिपदी-सं०स्त्री० [सं०] १ हाथी का जेर-बंद. २ पद्य की तीन पंक्ति। उ०—छए भाखा बोलइ, पठित काव्य अठोतरउ अरथ दीसइ, एकपदी, द्विपदी त्रिपदी, चिंतित समस्या पूरइ।—व.स.
३ देखो 'त्रिपदा' (रू.भे.) ४ देखो 'त्रिपदिका' (रू.भे.)

त्रिपन—देखो 'तिरेपन' (रू.भे.) (उ.र.)

त्रिपरण-सं०पु० [सं० त्रिपर्ण] पलास का पेड़ ।

त्रिपाठी-सं०पु० [सं० त्रिपाठिन्] ब्राह्मणों की एक जाति, तिवारी, त्रिवेदी।
वि०—तीनों वेदों को जानने वाला, त्रिवेदी।

त्रिपाद-सं०पु० [स०] १ परमेश्वर. २ ज्वर, बुखार।

त्रिपादी—देखो 'त्रिपदिका'।

त्रिपाप-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार व्यक्ति के किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जाना जाता है (ज्योतिष)

त्रिपिंड-सं०पु० [सं०] कर्मकांड के अनुसार वे तीनों पिंड जो पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से दिये जाते हैं।

त्रिपिटक-सं०पु० [सं०] भगवान बुद्ध के उपदेशों का बड़ा संग्रह, बौद्ध लोगों का प्रथम धर्म ग्रंथ। यह तीन भागों में विभक्त है।

त्रिपुंड, त्रिपुंड्र-सं०पु० [सं० त्रिपुंड्र] शैव या शाक्त लोगों द्वारा ललाट पर लगाया जाने वाला भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक।

त्रिपुटी-सं०स्त्री० [सं०] ज्ञातृ, ज्ञान और ज्ञेय, ध्याता, ध्यान और ध्येय, द्रष्टा, दृश्य और दर्शन आदि का समाहार करने की क्रिया का नाम। उ०—१ सो बणाय गौरी पद्मासण। त्रिपुटी जोरि समाधि मग्न मन।—वं.भा.

उ०—२ यूंही खट चक्कर भेद अघाव। पछै त्रिपुटी तुरिया पद पाव।—ऊ.का.

रू०भे०—त्रुटी।

त्रिपुर–सं०पु० [सं०] १ तीन लोक, त्रिलोक. २ बाणासुर का एक नाम. ३ तारकासुर के तीनों पुत्रों द्वारा बनवाये गये स्वर्णमय, रजतमय और लौहमय नगर जिन्हें शिव ने एक ही बाण में नष्ट किए थे और उन राक्षसों को भी मारा था (महाभारत) ४ एक दानव जिसका शिवजी ने वध किया था (महाभारत)

उ०—अति कंध सवंकति याळ अंग। सिव त्रिपुर भ्रितकि धनु व्याळ संग।—रा.रू.

यौ०—त्रिपुरघ्न, त्रिपुरदहन, त्रिपुरांतक, त्रिपुरार, त्रिपुरारि।

५ महादेव, शिव. ६ चंदेरी नगरी का एक नाम. ७ तीन की संख्या* (डिं.को.)

रू०भे०—तिपुर, त्रपुर।

त्रिपुरघ्न, त्रिपुरदहन–सं०पु०यौ० [सं०] महादेव, शिव।

त्रिपुरभैरव–सं०पु० [सं०] वैद्यक का एक रस जो सन्निपात रोग में दिया जाता है।

त्रिपुरभैरवी–सं०स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

त्रिपुरमल्लिका–सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मोतिया।

त्रिपुरांतक–सं०पु०यौ० [सं० त्रिपुर+अंतक] त्रिपुर का अंत करने वाला, महादेव।

त्रिपुरा–सं०स्त्री० [सं०] १ पार्वती। उ०—अद्रिती उवरि आप अंस आवौ। मो अंसि उद्र त्रिपुरा मेलावौ।—सू.प्र.

२ कामाख्या देवी। उ०—सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया।—देवि.

रू०भे०—त्रपुरा।

त्रिपरार, त्रिपुरारि–सं०पु० [सं० त्रिपुर+अरि] महादेव (नां.मा.)

रू०भे०—तिपुरारि, तिपुरारी, त्रपरार, त्रपुर, त्रपुरार, त्रपुरारी, त्रिपुरारी, त्रुपरार।

त्रिपुरारिरस–सं०पु० [सं०] वैद्यक में उदर के रोगों को नष्ट करने के लिए दिया जाने वाला रस।

त्रिपुरारी—देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे.)

त्रिपुरासर, त्रिपरासुर–सं०पु० [सं० त्रिपुरासुर] त्रिपुरासुर राक्षस।

उ०—किधौं इभ कूंभ व्रकोदर हत्थ, किधौं जयद्रथ्थहि पै पन पत्थ। किधौं त्रिपुरासर पै त्रिपुरारि, किधौं मुरदांनव सीस मुरारि।

—ला.रा.

त्रिपुसी–सं०स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष। उ०—तिल तंदुळ नई ताडखर, त्रिवडा त्रिपुसी चंग। तिदुग तंतणि तिम वळी, तगर तणा तिहां तुंग।—मा.कां.प्र.

त्रिपुस्कर–सं०पु० [सं० त्रिपुष्कर] फलित ज्योतिष में एक योग जो कृतिका, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ा और पूर्वाभाद्रपदा (विषमपादर्क्ष) इन नक्षत्रों रवि, मंगल और शनि वारों (प्रकारान्तर से गुरुवार भी) तथा द्वितीया सप्तमी और द्वादशी इन तिथियों में से किसी एक नक्षत्र, एक वार और एक तिथि के एक साथ पड़ने से होता है। इसमें मृत्यु, विनाश और वृद्धि आदि का त्रिगुणित फल होता है।

त्रिपौळियौ—देखो 'तिपोळियौ' (रू.भे.)

त्रिप्त—देखो 'तिरपत' (रू.भे.) उ०—१ रोम रोम रस पीजिये, एती रसना होइ। दादू प्यासा प्रेम का, यौं बिन त्रिप्त न होइ।

—दादूबांणी

उ०—२ पावै त्रिखत हुवै तद तद त्रिप्त। हिम सर करां नीर अति चित हित।—सू.प्र.

त्रिप्रस्न–सं०पु० [सं० त्रिप्रश्न] दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न।

त्रिप्रस्रुत–सं०पु० [सं०] वह हाथी जिसके मस्तक, कपोल, और नेत्र इन तीनों स्थानों से मद बहता हो।

त्रिफळौ–सं०पु० [सं० त्रिफला] हड़, बेहड़ा और आंवला का समिश्रण।

रू०भे०—तिरफळौ।

त्रिबंक–सं०पु० [सं० त्र्यबंक] १ महादेव (ह.नां.) [स० ताम्रक]

२ नगाड़ा। उ०—त्रिबंक गड़गड़ गड़ड़, गोम ठड़हड़ तुरां, आद हड़हड़ तला ओपी। वीर बड़बड़ वढ़ण तूर तड़तड़ विकट, रोस चढ़ दुसह घड़ उरुड़ रोपी।—लखधीर ईंदा री गीत

वि०—टेढ़ा, तीन बल वाला।

उ०—भूठ बोल्या घणा जीभड़ी, दीधा कूड़ कळंक। गळ जीभी थास्यै गळै, हुस्यइ मुंहड़ौ त्रिबंक।—स.कु.

त्रिबळि, त्रिबळी—देखो 'त्रिवळि' (रू.भे.)

त्रिबळीक–सं०पु० [सं० त्रिबलीक] १ वायु. २ मलद्वार, गुदा।

त्रिब्राहु–सं०पु० [सं०] १ तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

२ रुद्र के एक अनुचर का नाम।

रू०भे०—त्रिवाहु।

त्रिबेनी—देखो 'त्रिवेणी' (रू.भे.)

त्रिभंग–वि० [सं०] जिसमें तीन जगह बल पड़ते हों, तीन जगह से टेढ़ा।

सं०पु०—खडे होने की एक मुद्रा जिसमें पेट, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता हो।

त्रिभंगी–सं०पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण. २ विष्णु. ३ ईश्वर, परमात्मा (नां.मा.)

४ शुद्ध राग का एक भेद. ५ ताल के साठ भेदों में एक भेद.

६ प्रत्येक चरण में (६ नगण, २ सगण, १ भगण, १ मगण, १ सगण और अंत में एक गुरु के क्रम से) ३४ अक्षर का एक गणात्मक दंडक का एक भेद. ७ १०, ८, ८, और ६ मात्राओं पर यति के क्रम से प्रत्येक चरण में ३२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद। 'लखपत पिंगळ' व 'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार इसके प्रत्येक चरण के अंतिम दो वर्ण गुरु होते हैं। 'पिंगळ प्रकास' के अनुसार इसके प्रत्येक चरण के अन्त में जगण नहीं होता है।

वि०—जिसमें तीन जगह वल पड़ता हो, त्रिभंग।
रू०भे०—त्रभंगी।

त्रिभ-वि० [सं०] तीन नक्षत्रों से युक्त।

त्रिभग-सं०पु० [सं०] भाला, सेल (ना.डि.को.)

त्रिभवण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) उ०—सवरी वन मांहि प्रीत सूं साचो, उवर जठै दरसण अभिलाख। आलम उभै सहोदर आया, त्रिभवण नायक सेस तठै।—र.रू.

त्रिभवणनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू.भे.) उ०—त्रिभवणनाथ जगत निस तारण। धरम वेद कीजै धू धारण।—रा.रू.

त्रिभागी-सं०पु०—भाला, सेल (डि.को.)
वि०—तीन धार वाला। उ०—अर कंवर भी आरूढ़ होतां ही त्रिभागी तोमर भुजादंड थी भ्रमाई सत्रुआं रै सांम्है आपरो वाह भोकियो।—वं.भा.

त्रिभुंइग्रो, त्रिभुंइयो-वि० [सं० त्रि+भूमि] तीन मंजिल का, तीन खंडों का, तिमंजिला। उ०—ग्रहंमदावाद, किसिउं ग्रहंमदावाद नगर? गढ़ गढ़ मंदिर पोळि प्राकार वावि सरोवर कूआ खाइ आरांम वनखंड विभुंइग्रा त्रिभुंइग्रा आवास, चउरासी चहुटां।—व.स.

त्रिभुग्रण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) उ०—हियै वसाई हरख सूं, मधुसूदन महाराज। नर जिणसूं ललचै नहीं, सो तिभुग्रण सिरताज।
—वां.दा.

त्रिभुग्रणधणी—देखो 'त्रिभुवणधणी' (रू.भे.) उ०—प्रिथमाद पवनं भुजं भुजनं, घण बारह धर प्रति धणी। समरे राजेसर आदि अपंपर, धरणीधर त्रिभुग्रणधणी।—पि.प्र.

त्रिभुज-सं०पु० [सं०] तीन भुजाओं अथवा रेखाओं से घिरा हुआ धरातल, वह क्षेत्र जो तीन भुजाओं से घिरा हो।

त्रिभुवण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) उ०—पुरुसोत्तम पूरण प्रभू, राघव गिरधर रूप। मुरळीधर मोहण मुकंद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह.र.

त्रिभुवणधणी-सं०पु०यौ० [सं० त्रिभुवन+धनिक] १ रुद्र, महादेव। उ०—अचरज! आदर देय निरखसी गण हरवाळा। त्रिभुवणधणियां थांन वेवतो जा भुरजाळा।—मेघ.
२ विष्णु. ३ परमेश्वर।
रू०भे०—त्रिभुग्रणधणी, त्रिभुवनधणी।

त्रिभुवणनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू.भे.) (डिं.को.)

त्रिभुवन-सं०पु० [सं०] तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल।
उ०—१ देवी गाजता दंत ता वंस गमिया। देवी नवे खंड त्रिभुवन तूभ नमिया।—देवि.
उ०—२ आयौ अस खेड़ि अरि सेन अतरै, प्रथिमी गति आकास पथ। त्रिभुवननाथ तणौ वेळा तिणि, रव सभळी कि दीठ रथ।
—वेलि.
रू०भे०—तिभवण, त्रभवण, त्रभवन, त्रभुयण, त्रिभवण, त्रिभुग्रण, त्रिभुवण, त्रिभुवन्न, त्रिभोयण, त्रिभोवण, त्रैभवण, त्रैभुयण, त्रैभुवण, त्रैभायण।
यौ०—त्रिभुवणभूप, त्रिभुवनधणी, त्रिभुवननाथ, त्रिभुवनपति, त्रिभुवनराय, त्रिभुवनसुंदरी, त्रिभुवनस्वांमी।

त्रिभुवननाथ-सं०पु०यौ० [सं० त्रिभुवन+नाथ] १ ईश्वर, परमात्मा.
२ विष्णु. ३ महादेव।
रू०भे०—त्रभवननाथ, त्रभुवणनाथ, त्रिभुवणनाथ।

त्रिभुवनसुंदरी-सं०स्त्री० [सं०] दुर्गा, पार्वती।

त्रिभुवन्न—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) उ०—देवी उम्मया खम्या ईस नारी। देवी धारणी मुंड त्रिभुवन्न धारी।—देवि.

त्रिभोयण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) उ०—भांजण घड़ण त्रिभोयण भांमी। नाग नरां अमरां धणनांमी।—सिवपुरांण

त्रिभोलग्न-सं०पु० [सं०] क्षितिज वृत्त पर पड़ने वाले क्रांतिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रिभोवण, त्रिभोवन—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) (गजमोख)
उ०—धारा गिरिनगरी त्रिभोवन जांणूं, नगर अहिमदावाद पुहुवि वखांणू।—व.स.

त्रिमणी—देखो 'तिमणी' (रू.भे.) (उ.र.)

त्रिमद-सं०पु० [सं०] १ परिवार, विद्या और धन इन तीनों कारणों से होने वाला अभिमान. २ मोथा, चीता और वायविडंग इन तीनों चीजों का समूह।

त्रिमधु, त्रिमधुर-सं०पु० [सं०] शहद, घी और चीनी इन तीनों का समूह।

त्रिमात, त्रिमात्रिक-वि० [सं० त्रिमात्रिक] जिसके तीन मात्राएं हों, तीन मात्राओं का प्लुत।

त्रिमारगगामिनी, त्रिमारगी-सं०स्त्री० [स० त्रिमार्गगामिनी, त्रिमार्गी] गंगा, सुरसरि।

त्रिमासिक—देखो 'त्रैमासिक' (रू.भे.)

त्रिमकुट-सं०पु० [सं०] वह पहाड़ जिसके तीन चोटियां हों।

त्रिमुख-सं०पु० [सं०] १ गायत्री जपने की चौवीस मुद्राओं में से एक मुद्रा. २ शाक्य मुनि।

त्रिमुखी-सं०स्त्री० [सं०] भगवान बुद्ध की माता, माया देवी।

त्रिमुनि-सं०पु० [सं०] तीन मुनि—पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि।

त्रिमूरति-सं०पु० [सं० त्रिमूर्त्ति] ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवता।

त्रिमेळपालवणी—देखो 'भड़लुपत'

त्रियच—देखो 'तिरजंच' (रू.भे.) उ०—तीन विधेइ सुरनर त्रियंच, ना मैथुन सुं मन लाय। कांम बिटंवन केम कही सकुं, जांणै तूं जिनराय।—ध.व.ग्रं.

त्रिय-वि० [सं०त्रि] १ तीन। उ०—त्रिय सहंस तात्रीन, टीध महाराज पायदळ। उभै सहंस उमराव, वंधव जतनेत सहंस वळ।
—सू.प्र.
२ तीसरा। उ०—चवद प्रथम दूजी चवद, अठाईस त्रिय 'अखा'।
—र.ज.प्र.

देखो 'त्रिया' (रू.भे.) उ०—१ त्रिय कोटि कोटि इम सरजु तीर। नग भटित भरत घट हेम नीर।—सू.प्र.

उ०—२ सिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियै। भूली चित माया भ्रित भ्रमियै।—सू.प्र.

त्रियांमा—देखो 'त्रिजांमा' (रू.भे.)

त्रिया–सं०स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, औरत। उ०—लेता नांम विदांम न लागै, विगत जिका नह व्यापै। ओछी त्रिया देख अंवरां री, सहसा माल समापै।—र.रू.

२ पत्नी, प्रिया। उ०—१ पति अ त आतुर त्रिया मुख पेखण, निसा तणौ मुख दीठ निठ। चंद्र किरणि कुलटा सु निसाचर, द्रव-डित अभिसारिका द्रिठ।—वेलि.

उ०—२ विस्वामित्र रै ज्यांग सोभा वधारी। त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी।—सू.प्र.

रू०भे०—त्रिआ, त्रिय, त्री, त्रीय, त्रीया।

त्रियूह–सं०पु० [सं०] सफेद रंग का घोड़ा (शा.हो.)

त्रियौ–वि० [सं० तृतीय] १ तृतीय, तीसरा। उ०—आदि त्रियै पाये दस आखर, पठि इग्यार विये चौथै पर। दीजै मात्रा पाइ चउद्दह, हाकल ऐम कहीजै छंदह।—पिं.प्र.

२ देखो 'तीयौ' (रू.भे.)

त्रिरसक–सं०पु० [सं०] वह मदिरा जिसमें तीन प्रकार के रस या स्वाद हों।

त्रिरासिक–सं०पु० [सं० त्रैराशिक] गणित की एक क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

त्रिरूप–सं०पु० [सं०] अश्वमेध यज्ञ के लिए एक विशेष प्रकार का घोड़ा (शा.हो.)

त्रिरेख–वि० [सं०] जिसमें तीन रेखाएं हों, तीन रेखाओं वाला।

सं०पु०—शङ्ख (ह.नां.)

त्रिल–सं०पु० [सं०] नगण जिसमें तीनों लघु वर्ण होते हैं।

त्रिलघु–सं०पु० [सं०] १ वह पुरुष जिसकी गरदन, जांघ और मूत्रेंद्रिय छोटी हो (शुभ) २ नगण जिसमें तीनों वर्ण लघु होते हैं।

त्रिलवण–सं०पु० [सं०] तीन प्रकार का नमक—सेंधा, सांभर और काला।

त्रिलोक–सं०पु० [सं०] तीनों लोक यथा स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

उ०—बांका हरख न व्रधि सूं, हांण हुवां नंह सोक। हरि संतोख दियौ हियै, तिण नूं दीध त्रिलोक।—बां.दा.

रू०भे०—तियलोय, तिलोअ, तिलोई, तिलोक, तिलोकी, तिलोय, त्रयलोक, त्रयलोकी, त्रयलोय, त्रलोक, त्रिलोकी, त्रिहलोक, त्रीयलोक, त्रीलोक, त्रैलोक, त्रैलोकि, त्रैलोकी।

यौ०—त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति, त्रिलोकमिण, त्रिलोकराव, त्रिलोकेस।

त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपत, त्रिलोकपति, त्रिलोकपती–सं०पु०यौ० [सं० त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति] १ तीनों लोकों के स्वामी, परमात्मा, ईश्वर. २ विष्णु. ३ महादेव।

रू०भे०—तिलोकपति, त्रइलोकनाथ, त्रयलोकनाथ, त्रलोकपत, त्रिलोकीनाथ, त्रैलोकनाथ, त्रैलोकपत, त्रैलोकपति।

त्रिलोकमिण–सं०पु०यौ० [सं० त्रिलोक+मणि] सूर्य। उ०—निरबीज करूं राकस निकर, मेटूं फिकर त्रिलोकमिण। धारूं वभीख लंका धणी, तो हूं दसरथराव तण।—र.रू.

त्रिलोकराव–सं०पु०यौ० [सं० त्रिलोक+राज] तीनों लोकों का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा।

रू०भे०—त्रलोकराव, त्रैलोकराव।

त्रिलोकी–वि० [सं० त्रिलोक] १ तीनों लोकों का।

२ देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.)

यौ०—तिलोकीतात, त्रिलोकीतारण, त्रिलोकीनाथ।

त्रिलोकीतात–सं०पु०यौ० [सं० त्रिलोक+त्राता] तीनों लोकों का स्वामी, रक्षक, परमात्मा, विष्णु। उ०—नमो तन हंस, त्रिलोकीतात। नमो विध ग्यांन, सुणावण व्रात।—ह.र.

त्रिलोकीतारण–सं०पु०यौ० [सं० त्रिलोक+तारण] तीनों लोकों को तारने वाला, ईश्वर (डिं.को.)

त्रिलोकीनाथ—देखो 'त्रिलोकनाथ' (रू.भे.) उ०—हित कर जोड़ै हाथ, कांमण सूं अनमी किसा। नमे त्रिलोकीनाथ, राधा आगळ राजिया।

—किरपारांम

त्रिलोकेस–सं०पु०यौ० [सं० त्रिलोक+ईश] १ सूर्य. २ तीनों लोकों का स्वामी, ईश्वर।

त्रिलोचण—देखो 'त्रिलोचन' (रू.भे.)

त्रिलोचणा—देखो 'त्रिलोचना' (रू.भे.)

त्रिलोचन–सं०पु०यौ० [सं० त्रि+लोचन] तीन नेत्र धारी, महादेव, शिव (अ.मा., नां.मा.)

रू०भे०—तिलोचण, त्रलोयण, त्रिलोचण, त्रिहनलोचन, त्रिन्ह-लोचन।

त्रिलोचना–सं०स्त्री०यौ० [सं०] १ पार्वती (ह.नां.)

२ अप्सरा (अ.मा.)

रू०भे०—त्रलोचणा, त्रिलोचणा।

त्रिलोतमा—देखो 'तिलोत्तमा' (रू.भे.) (नां.मा.)

त्रिवड़–सं०पु०—डिंगल का एक गीत छंद विशेष।

वि०वि०—इसके पूर्वार्द्ध में १४-१४ और १० की यति से कुल अड़-तीस मात्राएं होती हैं और उत्तरार्द्ध में भी इसी क्रम से अड़तीस मात्राएं होती हैं। पूर्वार्द्ध में भी तीन चरण होते हैं और उत्तरार्द्ध में भी तीन-तीन चरण होते हैं इस प्रकार कुल छः चरण होते हैं। पहले चरण की तुक दूसरे चरण की तुक से मिलती है। तीसरे चरण की तुक छठे चरण से मिलती है और चौथे चरण की तुक पांचवें चरण से मिलती है। राजस्थानी में इसका दूसरा नाम 'हेलो' भी है।

त्रिवट-सं०पु० [सं०] दोपहर के समय गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग।

रू०भे०—तिवट।

त्रिवरग-सं०पु० [सं० त्रिवर्ग] १ तीन प्रधान जातियां—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. २ तीन गुण—सत्व, रज और तम. ३ अर्थ, धर्म और काम. ४ वृद्धि, स्थिति और क्षय. ५ एक प्रकार का काव्य।

उ०—छेकानुप्रास लाटानुप्रास सरस त्रिवरग पंचवरग परिहारकाव्य करइ, कावइ घडइ पांणी वहइ।—व.स.

रू०भे०—तिवग्ग।

त्रिवळी, त्रिवळी-सं०स्त्री० [सं० त्रिवलि] १ स्त्री के पेट पर पड़ने वाले तीन वल जिनकी गणना स्त्री के सौन्दर्य में होती है।

उ०—१ घरघर स्रिग सुपीन पयोधर, घणी खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि, त्रिवळी त्रिवेणी स्रोणि तट।

—वेलि.

उ०—२ कवीसर कहै जिका सुण लैणी, पिण कठै त्रिवळी नै कठै त्रिवेणी।—र. हमीर

उ०—३ पेट थयु पांणि पातळुं, त्रिवळी वळइ सुलीह। राति जाइ तु तिम वळी, अधिकु थाइ दीह।—मा कां.प्र.

२ देखो 'तिवल' (१) (रू.भे.) उ०—वाजइ त्रिवळी ताळ कंसाळ, गीत गावइ बाळ-गोपाळ।—ऐ.जै.का.सं.

३ स्त्री की योनि, भग (?) उ०—पेट ज्यूं लच्छी पाटकी, नितंब नारियळ जांण। मदनांकुस की जायगा, त्रिवळी सीप समांण।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—तिवळि, तिवळिया, तिवळी, त्रवळ, त्रिवळी, त्रिवळि, थीवळि।

त्रिवस्ट, त्रिवस्टप-सं०पु० [सं० त्रिविष्टप] स्वर्ग, देवलोक (नां.मा.)

रू०भे०—त्रिविस्टप।

त्रिवायउ-वि० [सं० त्रिपाद] तीन पैर वाला, तीन हिस्सों वाला, तीन चौथाई वाला (उ.र.)

त्रिवाहु—देखो 'त्रिवाहु' (रू.भे.)

त्रिवक्रिम-सं०पु० [सं०] १ परमेश्वर, परमात्मा (ह.नां.)

२ विष्णु. ३ वामनावतार।

रू०भे०—त्रईविक्रम, त्रीकम, त्रीविक्रम, त्रीवीक्रम।

अल्पा०—त्रीकमो।

त्रिविद्ध—देखो 'त्रिविध' (रू.भे.) उ०—त्रिविद्ध त्रिजग्ग त्रिविक्रम सार। चतुरभुज चेतन आतम सार।—ह.र.

त्रिविध, त्रिविध्धी-वि० [सं० त्रिविध] तीन प्रकार का, तीन तरह का।

उ०—आधिभूतक आधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित। त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध मैं. न भवति वेलि जपंत नित।

—वेलि.

यौ०—त्रिविध-ताप।

क्रि०वि०—तीन तरह से, तीन प्रकार से। उ०—१ उत्तम मूसे एक भड़, मध्यम दूहा मूंस। अधम गीत मूंसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—बां.दा.

उ०—२ पवन त्रिविध भोला देकर पह। बादग सत पांखां हूंता बह।—सू.प्र.

रू०भे०—तिविह, त्रवदी, त्रवधा, त्रिविद्ध।

त्रिविस्टप—देखो 'त्रिवस्टप' (रू.भे.) उ०—किताइक वार नरां सुख कीध। दया करि देव त्रिविस्टप दीध।—ह.र.

त्रिविस्तीरण-सं०पु० [सं० त्रिविस्तीर्ण] वह पुरुष जिसका ललाट, कमर और छाती ये तीनों अंग चौड़े हों (भाग्यवान)

त्रिवेणी-सं०स्त्री० [सं०] १ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम जहां प्रसिद्ध तीर्थ प्रयागराज है। उ०—१ अभो त्रिवेणी आवियो, दिल्ली वाळै दाट। नेस प्रजाळै दुज्जणां, देस करै दहवाट।—रा.रू.

उ०—२ मिळियै तट ऊपटि बियुरी भिळिया, घण घर धारा धर धणी। केस जमण गंग कुसुम करंबित, वेणी किरि त्रिवेणी वणी।—वेलि.

उ०—३ घर घर स्रिग सघर सुपीन पयोधर, घणीं खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि, त्रिवळि त्रिवेणी स्रोणि तट।—वेलि.

२ *तीन नदियों का संगम.* ३ *तीन नदियों की मिली हुई धारा.*

४ इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का संगम (हठयोग)

उ०—रंग राग ज्या घाट त्रिवेणी, गगन में घोर परो री। ढूंढ़ जाय निज मन री कीजै, फूल्या मुक्ति गहो री।

—स्री हरिरांमजी महाराज

५ तीन की संख्या*।

रू०भे०—तिरवेणी, तिरवेनी, तिरवेणी, त्रवेणी, त्रिवेनी, त्रीवेनी।

त्रिवेदी-वि० [सं० त्रिवेदिन्] तीन वेदों (ऋक्, यजु और साम) का ज्ञाता।

सं०पु०—ब्राह्मणों का एक उपभेद।

त्रिवेनी—देखो 'त्रिवेणी' (रू.भे.)

त्रिसंक, त्रिसंकु, त्रिसंघ-सं०पु० [सं० त्रिशंकु] १ एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। विश्वामित्र ने उस पर प्रसन्न होकर उसकी सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा को पूर्ण करने का निश्चय किया था। अतः विश्वामित्र ने (देवताओं के नाराज होने से यज्ञ सफल न होने पर) अपनी तपस्या के बल पर ही उसे सशरीर स्वर्ग भेज दिया किन्तु इन्द्रादि देवताओं ने उसे वापस ढकेल दिया तदपि तपस्या के बल पर विश्वामित्र ने उसे अधर में ही रोक दिया। तब से त्रिशंकु वहीं आकाश में नीचे सिर किये हुए लटका हुआ है और विश्वामित्र के बनाए हुए सप्तर्षि और नक्षत्र उसकी परिक्रमा करते हैं. २ एक तारा जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु है जिसको इन्द्रादि देवताओं ने स्वर्ग से वापिस ढकेल दिया और वापिस गिरते हुए को

विश्वामित्र ने उसे आकाश में रोक दिया था. ३ एक पराक्रमी राजा सत्यव्रत जो महाराज त्र्य्यारुण का पुत्र था। उसने एक पराई स्त्री को घर में रख लिया था अतः त्र्य्यारुण ने उसको शाप देकर चाण्डाल बना दिया और वह चाण्डालों के साथ रहने लगा। वहीं पर उसने अकाल से पीड़ित विश्वामित्र की पत्नी और उसके पुत्र की रक्षा की किन्तु उसने वशिष्ठ की कामधेनु गाय मार कर विश्वामित्र के पुत्रों को उसका मांस खिलाया और स्वयं ने भी खाया। इस पर वशिष्ठ ने उसको कहा कि एक तो तुमने पिता को असंतुष्ट किया, दूसरा अपने गुरु की गौ मार डाली और तीसरा उसका मांस ऋषि-पुत्रों को खिलाया और स्वयं ने भी खाया, अब तुम नहीं बच सकते। सत्यव्रत ने ये तीन महापातक किये थे इससे वह त्रिशंकु कहलाया किन्तु उसने विश्वामित्र के पुत्र व पत्नी की रक्षा की थी अत: विश्वामित्र ने उसे वर मांगने के लिये कहा। उसने सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा प्रकट की। पहले तो विश्वामित्र उसकी बात मान गये किन्तु बाद में त्रिशंकु को उसके पैतृक राज्य पर अभिषिक्त किया। कैकयवंश की सत्यरथा नामक कन्या से विवाह करने पर उसके गर्भ से प्रसिद्ध सत्यव्रती महाराज हरिश्चन्द्र ने जन्म लिया (हरिवंश)

उ०—राजा हरचंद राजा त्रिसंघ री, हरचंद रै रांणी तारादे हुई, कंवर रोहितास हुवौ।—नैणसी

रू०भे०—त्रसिंघ, त्रसींग, त्रसींघ, त्रिसुंक।

त्रिसंकुज—सं०पु० [सं० त्रिशंकुज] त्रिशंकु के पुत्र राजा हरिश्चंद्र।

रू०भे०—त्रिसुंकज।

त्रिसंझ्या—देखो 'त्रिसंध्या' (रू.भे.)

त्रिसंथिउं—सं०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण।

त्रिसंध्या—सं०स्त्री० [सं०] १ तीन संध्याएं—प्रातः, मध्यान्ह और सायं

उ०—सुणत पुरांण त्रिसंध्या साधत। दिन प्रति दिन द्विज देव अराधत।—ला.रा.

२ दिन में तीसरा प्रहर।

रू०भे०—त्रिसंझ्या।

त्रिस—सं०स्त्री० [सं० तर्ष:] प्यास, तृषा। उ०—१ परमेसर पद्धरै हुवै आनंद घणाई, परमेसर पद्धरै कदै नह चिंता काई। परमेसर पद्धरै दुक्ख त्रिस भूख न आवै, परमेसर पद्धरै आठ सिध नव निध पावै।

—ज.खि.

उ०—२ दिन रात न जांणइ दूसरी। नींद भूख त्रिस वीसरी।

—अ. वचनिका

त्रिसकत, त्रिसकति, त्रिसकती, त्रिसकत्त—सं०स्त्री० [सं० त्रिशक्ति] १ पार्वती (क.कु.बो.) २ देवी, दुर्गा, शक्ति। उ०—१ जैत कमंध कर जोड़ियां, जीहा एह जपत्त। करनळ रिणमल वाचरी, पाळ करौ त्रिसकत्त।—राव जैतसी

उ०—२ जगदंब सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया वजै।

—मे.म.

३ गायत्री. ४ तीन ईश्वरीय शक्तियां—इच्छा, ज्ञान और क्रिया. ४ तांत्रिकों की तीन देवियां—काली, तारा और त्रिपुरा।

रू०भे०—त्रसकत।

त्रिसखरमुड—सं०पु०यौ० [सं० त्रि+शिखर+मुकुट] तीन शिखर वाला मुकुट। उ०—ऊपरि सजळजळदायमांन मेघाडंबर छत्र धरिउं, मस्तकि त्रिसखरमुड रचिउ।—व.स.

त्रिसणा, त्रिसना—देखो 'तिसणा' (रू.भे.) उ०—१ बांट प्रसाद वळोवळ वागा, त्रिसणा भागी लोभ तणी। चेलां गुरां वेढ़ री चरखा, साधां सौ सौ कोस सुणी।—बांकीदास बिठू

उ०—२ धमसी कहै वधतै धनै, त्रिसना वधै अथाग। घुर धी अधिकी धग-धगइ, इंधन मिळियां आगि।—ध.व.ग्रं.

त्रिसफरसा—सं०स्त्री० [सं० त्रिस्पृशा] एक एकादशी जो एक ही सायन दिन में उदयकाल के समय थोड़ी सी एकादशी और रात के अंत में त्रयोदशी होती है (अति उत्तम)

त्रिसम—सं०पु० [सं०] सोंठ, गुड़ और हड़ इन तीनों का समान समूह।

त्रिसयउ—देखो 'तिरसौ' (रू.भे.)

त्रिसर—सं०पु० [सं० त्रिशिर] १ एक प्रकार का मटर जिसकी फलियां चिपटी होती हैं. २ कुबेर, धनेस (नां.मा.) ३ एक प्रकार का आभूषण (व.स.)

४ देखो 'त्रिसिर' (रू.भे.) उ०—हरे हरि पेखियौ वन पावन हुऔ, जवन खर त्रिसर रौ कीयौ घर जूजूऔ।—पी.ग्रं.

त्रिसरकरा—सं०स्त्री० [सं० त्रिशर्करा] गुड़, चीनी और मिश्री इन तीनों का समान समूह।

त्रिसरण—सं०पु० [सं० त्रिशरण] १ जैनियों के एक आचार्य का नाम. २ भगवान बुद्ध।

त्रिसरनायक—सं०पु०—एक प्रकार का आभूषण विशेष (व.स.)

त्रिसरी—सं०स्त्री०—तीन लड़ वाली। उ०—पंच वरण पाटू तणा उल्लोच ताडचा, मुक्ताफळ तणी त्रिसरी मोतीसरी लंबावी।

(व.स.)

त्रिसळ—देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.)

त्रिसळा—सं०स्त्री० [सं० त्रिशला] चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का माता का नाम (जैन) उ०—सुपन त्रिसळा सुतन किया साचा।

—ध.व.ग्रं.

त्रिसळौ—सं०पु०—१ क्रोध या संताप के कारण ललाट पर पड़ने वाली तीन सिलवट या सिकुड़न। उ०—१ मन माया लालच लियां, त्रिसळौ लियां लिलाट। रसण नकार लियां रहै, औ सूंबां रौ घाट।

—बां.दा.

उ०—२ पड़ियौ असुर ऊपरा पड़ियौ, कोपिऔ ओपिऔ निमो कंठीर। भाळै त्रिसळै दैत भरड़ियौ, वडियौ मांस भरथ रै वीर।—पी.ग्रं.

२ त्रिशूल। उ०—कुळ देवी चारणां आड सिंदूर वणायां। सिर काळी लोवड़ी विकट त्रिसळौ भुज सायां।—साहिबौ सुरतांणियौ

रू०भे०—त्रसळ, त्रसळौ, त्रसूळ, त्रिसळ, त्रिसूळ, त्रिसूळउ, त्रिसूळौ।

त्रिसंध्य-व्यापणी-वि०स्त्री० [सं० त्रिसंध्यव्यापिनी] जो बराबर सूर्योदय से सूर्यास्त तक हो (तिथि, शुभ)

त्रिसा-सं०स्त्री० [सं० तृषा] प्यासा, तृषा। उ०—भूख त्रिसा नो सोग। —जयवांणी

त्रिसाख-वि० [सं० त्रिशाखा] जिसमें आगे की ओर तीन शाखायें निकली हों।

त्रिसिउ—देखो 'तिरसौ' (रू.भे.) उ०—त्रिसिउ कराळिउ मागइ नीर, तातउं करी ते पाइं कथीर।—चिहुंगतिचउपई

त्रिसिख-सं०पु० [सं० त्रिशिख] १ मुकुट. २ त्रिशूल. ३ रावण के एक पुत्र का नाम।

वि०—जिसके तीन शिखर हों, तीन चोटियों वाला।

त्रिसिखर-सं०पु० [सं० त्रिशिखर] १ तीन चोटियों वाला पर्वत. २ त्रिकूट पर्वत।

त्रिसियउ, त्रिसियौ—देखो 'तिरसौ' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—१ जिण कारण थळ लंघिया, तियां चिंतन काई। ते साजन बैठा खुह सिर, करहो त्रिसियौ जाई।—ढो.मा.

उ०—२ ताहरां कुंवरजी कहियौ—हूं गंगाजळ नहीं आरोगूं। ताहरां त्रिसिया हीज स्त्रीजी रै पासि पधारि ऊभा रहिया।—द.वि.

त्रिसिर-सं०पु० [सं० त्रिशिरस्] १ कुबेर. २ एक राक्षस का नाम (महाभारत)

३ रावण का एक भाई जो खरदूषण के साथ दण्डक वन में रहता था, मतान्तर से यह खरदूषण का सेनापति था।

वि०—जिसके तीन शिर हों, तीन शिरों वाला।

त्रिसींघ-वि० [सं० त्रिशंकु] १ बलवान, जबरदस्त, शक्तिशाली। २ देखो 'त्रिसंकु' (रू.भे.)

त्रिसीरस-सं०पु० [सं० त्रिशीर्ष] तीन शिखर वाला पहाड़।

त्रिसीरसक-सं०पु० [सं० त्रिशीर्षक] त्रिशूल।

त्रिसीस-सं०पु० [सं० त्रिशूल] तीन फल का भाला।

त्रिसुंक—देखो 'त्रिसंकु' (रू.भे.)

त्रिसुंकज—देखो 'त्रिसंकुज' (रू.भे.)

त्रिसुगंधि-सं०स्त्री० [सं०] दालचीनी, इलायची और तेजपात इन तीनों सुगंधित मसालों का समूह।

त्रिसूळ, त्रिसूल-सं०पु० [सं० त्रिशूल, प्रा० तिसूल] एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं, यह महादेव का प्रधान अस्त्र माना जाता है। उ०—१ कांन्हियौ त्रिसूळां मार खळ काळियौ। कमर परताळियौ जड़ां काढी।—खेतसी बारहठ

उ०—२ तां ईस्वर तणइ गौरी गंगा कलत्र, विनायक कारतीकेय के पुत्र, गजासुर त्रिपुरदैत्य मकरधज सत्रु, विकट चरित्र जटाजूट बांधइ, धनुसबांण साधइ, त्रिसूळ सस्त्र, गजचरम वस्त्र।—व.स.

यौ०—त्रिसूळ-धर।

२ तीन प्रकार के दुःख—दैहिक, दैविक, और भौतिक. ३ एक प्रकार की मुद्रा जिसमें अंगूठे को कनिष्ठा उंगली के साथ मिला कर बाकी तीनों उंगलियों को फैला देते हैं (तंत्रशास्त्र)

४ देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.) ५ तीन की संख्या*।

रू०भे०—तिरसूळ, त्रसूळ, त्रिसूळउ, त्रिसूळि।

अल्पा०—तिसूळौ।

त्रिसूळउ—१ देखो 'तिसळौ' (रू.भे.) उ०—जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नांही अज्ज। माथि त्रिसूळउ नाक सळ, कोइ विणट्ठा कज्ज। —ढो.मा.

२ देखो 'त्रिसूळ' (रू.भे.)

त्रिसूळघात-सं०पु० [सं० त्रिशूलघात] एक तीर्थ (महाभारत)

त्रिसूळधर-सं०पु०यौ० [सं० त्रिशूल-धर] त्रिशूल धारण करने वाले महादेव (डिं नां.मा.)

त्रिसूळि—देखो 'त्रिसूळ' (रू.भे.) उ०—ऊछाळइं जिम गगनि धूळि, पडतउ धाई नइ झलइं त्रिसूळि।—चिहुगति चउपइ

त्रिसूळी, त्रिसूली-सं०पु० [सं० त्रिशूलिन्] १ त्रिशूल को धारण करने वाले शिव, महादेव।

सं०स्त्री०—२ देवी, दुर्गा. ३ देखो 'त्रिसूळौ' (१) (रू.भे.)

त्रिसूळौ-सं०पु०—१ मेवाड़ और डूंगरपुर राज्य में प्रचलित एक प्राचीन तांबे का सिक्का। यह सिक्का घींगला सिक्का से प्राचीन है।

रू०भे०—त्रिसूळी।

२ देखो 'त्रिसळौ' (रू.भे.) उ०—लाल आंख त्रिसूळौ चढ़ै। —जयवांणी

३ देखो 'त्रिसूळ' (अल्पा., रू.भे.)

त्रिसौ—देखो 'तिरसौ' (रू.भे.)

त्रिस्कंध-सं०पु० [सं०] ज्योतिष शास्त्र जिसके संहिता, तंत्र और होरा ये तीन स्कंध हैं।

त्रिस्टुप, त्रिस्टुभ-सं०पु० [सं० त्रिष्टुप, त्रिष्टुभ] संस्कृत भाषा का ग्यारह वर्ण का वृत विशेष।

त्रिस्णा—देखो 'तिसणा' (रू.भे.) उ०—त्रिस्णा सूं लागी रह्यउ, पिण न भज्यउ संतोस।—वि.कु.

त्रिस्तंभासन-सं०पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन। इसमें दोनों पाँवों को घुटने से मोड़ कर दोनों जंघाओं के निम्न भाग को अधर रख कर एडिओं को जंघा के निम्न भाग से लगा कर बैठना होता है।

त्रिस्थळी-सं०स्त्री० [सं० त्रिस्थली] तीन तीर्थ—प्रयाग, गया और काशी।

त्रिस्नान-सं०पु० [सं०] सवेरे, दुपहरी एवं सायं तीनों काल में किया जाने वाला स्नान जो वानप्रस्थाश्रम में आवश्यक समझा जाता है।

त्रिस्रंग-सं०पु० [सं० त्रिश्रृंग] त्रिकूट पर्वत।

त्रिह-वि० [सं० त्रि] तीन। उ०—१ त्रिह रावळ गहलोत भांण तड़, भीम हठी उग्रसेन महाभड़।—सू.प्र.

त्रिहत्तरि—देखो 'तिहोतर' (रू.भे.) (उ.र.)

त्रिहनलोचन—देखो 'त्रिलोचन' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

त्रिहलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—इंदि अहल्यं उग्रारणा ऊपरा, गौरिज्या लूण उग्रारै। छात्र त्रिहलोक रै छोडिया छेहड़ा, त्रीकमो पिरिरिगयो संत तारै।—पी.ग्रं.

त्रिहुं, त्रिहु-वि० [सं० त्रि] १ तीन। उ०—१ हे त्रिहुं सबद उदार आदि गुण रै मैं आंणै। स्रोपति मंगळ सरूप ब्रहम चत्रु वेद बखांणै। —सू.प्र.

उ०—२ दउढ़ वरस री मारुवी, त्रिहुं वरसांरउ कंत। बाळपणइ परण्यां पछइ, अंतर पड़यउ अनंत।—ढो.मा.

उ०—३ कोइ न त्रिहु जगि हुईय नारि, हिव पछी कोइ न होइसि ए।—पं.पं.च.

२ देखो 'त्रिधा' (रू.भे.) (उ.र.)

रू०भे०—त्रिहूं।

त्रिहुतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.) उ०—त्रिहुतरौ जैसळमेर नगरै, विजयहरस विसेस ए। धरमसी पाठक तवन कीधौ, दुरस पुस्तक देख ए।—ध.व ग्रं.

त्रिहूं—देखो 'त्रिहुं' (रू.भे.) उ०—देवळियौ वंस-नयर अनै पुर डूंगर, त्रिहूं ग्रे भूप अभावौ तांम। वांधे तेग घणा वरदायौ, रांण बसायौ घासीरांम।—पतौ आसियौ

त्रिहोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे.) उ०—सतरै संमत त्रिहोतरै, उज्जळ त्रीज प्रकास। तजियौ इंदै नागपुर, सांवण हंदै मास। —रा.रू.

त्रिह्नलोचन—देखो 'त्रिलोचन' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

त्रींगड़ौ, त्रींगडौ-वि०—तीक्ष्ण ? उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति पचास टांक चिलेरीखा अणहारी कवांण रा घोकार बाजिनै रहिआ छै। त्रींगडा भालोड़ां रा बूम पड़िआ छै।—रा.सा.सं.

त्रींदिय, त्रींद्रिय-सं०पु० [सं० त्रीन्द्रिय] तीन इंद्रियों वाला जीव (जैन) रू०भे०—तिइंदिय, तिइंद्रिय, तेंदिय, तेंद्रिय, तेइंदिय, तेइंद्रिय, त्रि-इंदिय, त्रि-इंद्रिय।

त्री—१ देखो 'त्रि' (रू.भे.) २ देखो 'त्रिया' (रू.भे.)

उ०—१ सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि अनेक ते एक संथ। त्री वरणण पहिलौ कीजै तिणि, गूंथियै जेणि सिंगार ग्रंथ। —वेलि.

उ०—२ निवांण त्री भरंत नीर रूप कुंभ हेम रा।—सू.प्र.

उ०—३ पच्छिम दिसि पूठ पूरब मुख परठित, परठित ऊपरि आतपत्र। मधुपरकादि संसकार मंडित, त्री वर वे बैसांणि तत्र। —वेलि.

उ०—४ वहि मिळी घड़ी जाइ घणा वांछता, घण दीहां अंतरै घरि। अंकमाळ आपै हरि आपणी, पधरावी त्री सेज परि। —वेलि.

त्रीकम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू.भे, नां.मा.) उ०—१ किरि कूटियै कपाळ, त्रीकम तूं विमुखां तणा। घड़ी घड़ी घड़ियाळ, बाजै वसदेरावउत। —प्रिथ्वीराज राठौड़

उ०—२ भगवंत भिणे भगवंत भिणी, त्रीकम-त्रीकम प्रांण तवि। नाराइण किहिक तूं सां नरिंद, करै पुकारा 'पीर' कवि।—पी.ग्रं.

त्रीकमौ—देखो 'त्रिविक्रम' (अल्पा., रू.भे.) उ०—१ जळ मांही पैठौ जग जीवन, असुरां तणी भांजिवा आस। ताहरी जांणियौ हुओ त्रीकमा, प्रिथी मडांणी कोड़ पचास।—पी ग्रं.

उ०—२ इंदि अहल्यं उग्रारणा ऊपरा, गौरिज्या लूण उग्रारै छात्र। त्रिहलोक रै छोडिया छेहड़ा, त्रीकमौ पिरिरिगयो संत तारै।—पी.ग्रं.

त्रीखण—देखो 'तीक्ष्ण' (रू.भे.) उ०—आगाहूंत खुधा त्रीखण अति। भोजन करै दसगुणौ भूपति।—सू.प्र.

त्रीखौ—देखो 'तीखौ' (रू.भे.)

त्रीछण—देखो 'तीक्ष्ण' (रू.भे.) उ०—१ तणी ईस चख धोम नासा धुबै फुणी तक, कणी बज्र तणी अरणी घणी काळ। अेम बुदी धणी तणी अग्नियांमणी, बणी त्रीछण अणी तणी बाढ़ाळ। —कविराजा करणीदान

उ०—२ वहै कुवरां गुर त्रीछण वाढ़। गिरां कंध रोड़ पड़ै अवगाढ़। —सू.प्र.

त्रीज—देखो 'तीज' (रू.भे.) उ०—सतरै संमत त्रिहोतरै, उज्जळ त्रीज प्रकास। तजियौ इंदै नागपुर, सांवण हंदै मास।—रा.रू.

त्रीजउं, त्रीजउ-वि० [सं० तृतीय] तीसरा (उ.र.)

उ०—१ आ त्रीजउं तां अह्म-तणइ, नगरी फिरयु वेढ़ि। आपु तु तां आज थी, क्षित्री नहीं पणि ढेढ़।—मा.कां.प्र.

उ०—२ प्रथम पवाडइं कीचक मरइं, बीजइ दक्षिणगोग्रहु करइं। त्रीजउ उत्तरगोग्रहु हूउ, पंडवि वरसु इस परि गमिउ।—पं.पं च.

त्रीजणी—देखो 'तीजणी' (रू.भे.) उ०—जींण साकति साझ-वाझ लूंब झूंब करि नै स्रांमण री त्रीजणी ज्यौं पांडवै सिणगार पाखर घाति चोकि आंणि हाजर किआ छै।—रा.सा.सं.

त्रीजलौ—देखो 'तीजौ' (अल्पा., रू.भे.) उ०—बीजलइ फेरई डाईचउ देई, गज रथ सिणगार। त्रीजलइ फेरई डाइचौ देई, रतन कोड़ी भंडार।—रुकमणी मंगळ

(स्त्री० त्रीजली)

त्रीजांम, त्रीजांमा- सं०स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि, निशा (डिं.को.)

त्रीजौ—१ देखो 'तीजौ' (रू.भे.) उ०—१ बि घडि बोटी बि बलि चरै, त्रीजो तनु सुंपेखि। ऊंची द्रस्टि अमीय रस, ते ताडी हुं लेसि। —मा.कां.प्र.

उ०—२ त्रीजै प्रहरै रैण कै, मिळिया तेहा-तेह। धन नहिं धरती हुइ रही, कंत सुहावौ मेह।—ढो.मा.

(स्त्री० तीजी)

२ देखो 'तीज' (रू.भे.) उ०—जन्म कल्याणक जिन तणौ, माह तणी सुदि त्रीजी जी। दिन दिन वाधइ दीपता, चंद कळा जिम बीजौ जी।—स.कु.

त्रीठ—देखो 'तीठ' (रू.भे.) उ०- १ विण त्रीठ रीठ उड्डै विखम, हमतम ऊवम हैमरां। सक फोज कीध संका सहित, जांण क लंका वनरां।—रा.रू.

उ०—२ वडदातार वरिसतै वीदा, मांडै अधिकौ माप मन। धरा सरिस नित-नित धाराहर, त्रीठ न दाखै जोध तन।—हरिसूर बारहठ

त्रीठणौ, त्रीठबौ–क्रि०अ०—तृपित होना ? उ०—पालर अण त्रीठिया प्रिथी पुड़ि, प्रियमी अणत्रीठिया पुण। दीजै वीरम जगिदातारां, घण दांनेसर विरिद घण।—हरिसूर बारहठ

त्रीठियोड़ौ–भू०का०कृ०—प्यासा।

त्रीणि, त्रीणी, त्रीन—देखो 'तिण' (रू.भे.) उ०—पखे त्रीणि पोढ़ी मने सीख मोरी। अरी कोण लाजै पखौ आव ओरी।—ना.द.

त्रीनेण, त्रीनेयण, त्रीनैण—देखो 'त्रिनयन' (रू.भे.)

त्रीपत्रक–सं०पु० [सं० त्रिपत्रक] पलास का वृक्ष।

त्रीय–वि० [सं० तृतीय] १ तीसरा। उ०—त्रीय उपांग जीवाभिगम जांणियै, च्यार हजार सौ सात परिमांणियै।—घ.व.ग्रं.

[सं० त्रि] २ तीन। उ०—मारू मारइ पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न। टंनी, चूड़इ, मोतियां, त्रीयां हेक वरन्न।—ढो.मा.

३ देखो 'त्रिया' (रू.भे.) उ०—कोसिक ज्याग अभंग सिहायक, दांणव घायक दूधरी। पाय रजी रघुराय परस्सत, आ त्रीय गौतम ऊधरी।—र.ज.प्र.

त्रीयलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.)

त्रीया—देखो 'त्रिया' (रू.भे.)

त्रीलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—क्रीत संकर करै ध्यांन ब्रह्मा धरै। नाथ कीजै नहीं नाथ त्रीलोक रै। घर कती लोवडी सूरह चारै धणी, तरै त्रीलोक रौ भाल ठाकर तणी।—रुखमणी हरण

त्रीवंझ्या–सं०स्त्री० [सं० स्त्री+वंध्या] बांझ स्त्री (एका०)

त्रीविक्रम, त्रीवीक्रम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू भे.)

त्रीस—देखो 'तीस' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—त्रीस मात्र पायेव तवि, कवि चवि छंद किसोर। जांणै लाखौ गुण जुगति, घरपति कुळ ऊधोर।—ल.पि.

त्रीसटंकी—देखो 'तीसटंकी' (रू.भे.) उ०—कसीसै गुण त्रीसटंकी कबांणां। वळी भीम वत्थां कळी पत्थ बांणां।—वचनिका

त्रीसमउ, त्रीसमौं—देखो 'त्रीसमौं' (रू.भे.) (उ.र.)
(स्त्री० तीसमीं)

त्रीसां—देखो 'तीस' (रू.भे.) उ०—सैद अली मुहकम्म रै, रहियौ हाथ समत्थ। गोहर छूटां कोट सूं, त्रीसां तूटा मत्थ।—रा.रू.

त्रीहायन–वि० [सं०] तीन वर्ष का।

त्रुक, त्रुकौ–सं०पु०—एक प्रकार का तीर (अ.मा.)

त्रुगट—देखो 'त्रिकूट' (रू.भे.)

त्रुगटगढ़—देखो 'त्रिकूटगढ़' (रू.भे.) उ०—त्रुगटगढ़ थरहरै नाग दध डरै तद, भरै चत्रकुट डंड जोड़ भुडंड। गड़क डंडाळ करमाळ ग्रह गढ़पती, ग्रेहड़ी रीस कण सीस उमंड।

—ईसरदास सूरजमलोत बारहठ

त्रुगटबंध—देखो 'त्रकूटबंध' (रू.भे.)

त्रुच्छ—देखो 'तुच्छ' (रू.भे) उ०—प्रचंडेस जीता त्रहूं लोक पांणै। वियां नै डरावै जतु त्रुच्छ जांणै।—सू.प्र.

त्रुटणौ, त्रुटबौ–क्रि०अ० [सं० त्रुट्] १ नाश होना। उ०—खळ धारा सिगळाई खूटा, तुं सां वाद कियौ से त्रुटा।—पी ग्रं.

२ देखो 'टूटणौ, टूटबौ' (रू.भे.) उ०—त्रुटै घाव तुंड, भिड़ै रुंड-मुंड। लड़ै फौज लाडा, उडै लोह आडा।—सू.प्र.

त्रुटि–सं०स्त्री० [सं०] १ भूल, चूक. २ कमी, कसर, न्यूनता. ३ अभाव।

रू०भे०—त्रुटी, त्रूटी।

त्रुटी—१ देखो 'त्रिपुटी' (रू.भे.) (उ.र.)

२ देखो 'त्रुटि' (रू.भे.)

त्रुपरार—देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे.) उ०—कठठ थट कलकता तणां खग राज कळ, बाज पंख कूंत चंच जगत बरणै। उण समै उरग गत नृपत आवै उडै, सुतन गुमनेस त्रुपरार सरणै।—मोडजी आढ़ो

त्रुरकी—देखो 'तुरकी' (शा.हो.)

त्रुरहड़ौ–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष (शा.हो.)

त्रुळ—देखो 'तुरळ' (रू.भे.)

त्रूटणौ, त्रूटबौ—देखो 'टूटणौ, टूटबौ' (रू.भे.) उ०—१ लिखमीवर हरख-निगर भर लागी, आयु रयणि त्रूटंति इम। क्रीड़ाप्रिय पोकार किरीटी, जीवित प्रिय घड़ियाळ जिम।—वेलि.

उ०—२ विसरियां विसर जस बीज बीजिजै, खारी हाळाहळां खळांह। त्रूटै कंध मूळ जड़ त्रूटै, हळधर कां वाहतां हळांह।—वेलि.

उ०—३ संदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउं हीया फूटि। पारेवा का भूल जिउं, पाडिनइं आंगणि त्रूटि।—ढो.मा.

त्रूटी—देखो 'त्रुटि' (रू.भे.)

त्रूठणौ, त्रूठबौ—देखो 'तूठणौ, तूठबौ' (रू.भे.)

त्रूठियोड़ौ—देखो 'तूठियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० त्रूठियोड़ी)

त्रेख—देखो 'तेख' (रू.भे.) उ०—आया दूत खबर सह आई, विचित्र फौज लख दोय वताई। चडियौ अजन त्रेख मन चाडै, सांम्हो सुहड़ै भड़ै सचाडै।—रा.रू.

त्रेखळणौ, त्रखळबौ–क्रि०स०—रोकना। उ०—साह हेक दस हेक न साझै, विदस न साझै हेक वण। सुजसै रांण रायमल-संभ्रम-त्रेखळिया पतसाह त्रण।—महाराणा सांगा री गीत

२ बांधना।

त्रेखळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ रोका हुआ. २ बांधा हुआ।
(स्त्री० त्रेखळियोड़ी)

त्रेगडि, त्रेगति—सं०पु० [सं० त्रिकाष्ठिका] त्रिकाष्ठिका (उ.र.)

त्रेता—सं०पु० [सं०] १ जूए में तीन कौड़ियों अथवा पासे के उस भाग का चिह्न पड़ना जिस पर तीन बिंदियां हों।
२ देखो 'त्रेतायुग' (रू.भे.) उ०—सतजुग त्रेता द्वापर कळियुग, येक चौकड़ी जांणूं। ईसि चौकड़ी होय बहतरी, यंद्राराज पहचांणूं।
—रुकमणी मंगळ

त्रेताग्नि—सं०स्त्री० [सं०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय ये तीन प्रकार की अग्नियां।

त्रेताजुग—देखो 'त्रेतायुग' (रू.भे.) उ०—१ मधि त्रेताजुग चैत्रमास सक्रंति मेखि सरि। करक लगन पख सुकळ धरा पुन्नवसु नखित्र धुरि।—सू.प्र.
उ०—२ अगहन मास क्रितू य्यौ आखौ। पो त्रेताजुग वीतौ पाखौ।
—ऊ.का.

त्रेताजुगाद—सं०पु० [सं० त्रेतायुगाद्य] कार्तिक शुक्ला नवमी जिस दिन त्रेता का जन्म या आरम्भ होना माना जाता है (पुण्य तिथि)

त्रेतायुग—सं०पु० [सं०] चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्षों का माना जाता है।
रू०भे०—तेतजुग, त्रेता, त्रेता, त्रेताजुग, त्रेत्रा।

त्रेतीस—देखो 'तेतीस' (रू.भे.) उ०—त्रेतीस लघू गुर वार तार। सुणि मांणणि गाहा सिणगार।—ल.पिं.

त्रेत्रा—देखो 'त्रेतायुग' (रू.भे.)

त्रेत्रीस—देखो 'तेतीस' (रू.भे.)

त्रेदस—देखो 'त्रिदस' (रू.भे.)

त्रेपन—देखो 'तिरेपन' (रू.भे.) उ०—आबू द्रव्य सफळ कीयउ, लाख त्रेपन कोडि वार। नेमि प्रासाद मडावीयउ ए, लूणगवसही उद्धार।
—स.कु.

त्रेभवण, त्रेभुयण, त्रेभूग्रण, त्रेभूवण, त्रेभोयण—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.)
उ०—१ हुतौ जि आप केई जुग हुआ, केई वार कळपंत हुआ। त्रेभुयण भांजि हुयै एक तन हरी तुझ तोवह हीआ।—पी.ग्रं.
उ०—२ सह वातां समरत्थ भांज घड़वा त्रेभूग्रण। सह वातां समरत्थ लिग्रण लंका गढ़ दीग्रण।—ज.खि.
उ०—३ धारत कर सायक धनुख, त्रेभोयण सिरताज। भजियां जन कारक अभै, जै राघव माहराज।—र.ज.प्र.

त्रेवड़, त्रेवड़ि, त्रेवड़ी—देखो 'तेवड़' (रू.भे.) उ०—जदि त्रेवड़ि करिस्यां अउभणउ, तदि हहलांणउ कुमरी तणउ।—ढो.मा.

त्रेवड़ौ, त्रवडौ—सं०पु०—१ काव्य छद का भेद विशेष.
२ देखो 'तेवड़ौ' (रू.भे.) उ०—बिछाइत गादी तकिया फेर विराजमांन कीजै छै। बेवड़ी, त्रेवड़ी, चौवड़ी पांत्यां जुड़ी छै।—रा.सा.सं.
उ०—२ घडा मेलवै त्रेवडौ व्रूह गाडौ। यते आवियौ मैंदरौ फेर आडौ।—पा.प्र.
(स्त्री० त्रेवड़ी)

त्रेवीस—देखो 'तेईस' (रू.भे.) (उ.र.) उ०—त्रेवीस तीरथंकर समोसरचौ रे। प्रभु पूरव निवांणु वार रे।—स.कु.

त्रेवीसौ—देखो 'तेईसौ' (रू.भे.) उ०—चेईहर त्रण सय त्रेवीसा।
—वृहद स्तोत्र

त्रेसठ, त्रेसठि—देखो 'तिरेसठ' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—त्रिण्हिसइं त्रेसठि पाखंडी तणउ, मत खंडचउ धरि रंग, मोरा साजन।—वि.कु.

त्रेसठौ—देखो 'तिरेसठौ' (रू.भे.) उ०—अति सुख वरस त्रेसठौ आयौ। स्री 'अगजीत' जोत सरसायौ।—रा.रू.

त्रेह—देखो 'ते' (रू.भे.) उ०—१ आभ तणी छांह, कुपुरिस तणी बांह, दासी नु स्नेह, सरद काळ नु मेह, थोड़ा मेह नउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह।—रा.सा.सं.
उ०—२ भूख्या आगळि न रहइ भिक्ष, कुहाडा आगळि न रहइ व्रिक्ष। पवन आगळि न रहइ मेह, तडका आगळ न रहइ त्रेह।
—नळ-दवदंती रास

त्रै—देखो 'त्रि' (रू.भे.) उ०—त्रै दूज गुर कळ चवद तठै। जांणौ हाकळ छंद जठै। भव सागर तर रांम भजौ। त्रै विण आंन उपाय तजौ।—र.ज.प्र.

त्रैगुण—देखो 'त्रिगुण' (रू.भे.) उ०—उदोत तपोनिध त्रैगुण ईस, अजीत जरा अत जोग अधीस। विसन्न विमोह विसव्व विग्यांन, रती पति तात प्रकत्त राजांन।—ह.र.

त्रैमासीक—वि० [सं०] हर तीसरे महिने होने वाला, जो हर तीसरे महीने हो।
रू०भे०—त्रिमासिक।

त्रैयंबीका—सं०स्त्री० [सं०] गायत्री।

त्रैलोकि—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—चहुंघां चरित्र वैस्णवै विचित्र। त्रैलोक तत्र वह मिळत अत्र।—ऊ.का.

त्रैलोकनाथ, त्रैलोकपत, त्रैलोकपती, त्रैलोकराव—देखो 'त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति, त्रिलोकराव' (रू.भे.) उ०—ससि सूर पवन पांणी सती, मुगति कीअ जांमण मरण। त्रैलोकनाथ 'जगियौ' तवै, सरण राख असरण सरण।—ज.खि.

त्रैलोकी, त्रैलोकी—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे.) उ०—जे पद नहीं ज्याग नइ तीरथि, घणइ दांनि त्रैलोकि। सोमनाथ नी चाडि मरंता, ते पुहुता सुरलोकि।—कां.दे.प्र.

त्रोटक—देखो 'तोटक' (रू.भे.) उ०—भ्रम भंजन कौ भल छक्क भरचौ। कवि ऊमर त्रोटक छंद करचौ।—ऊ.का.

त्रोटणौ, त्रोटबौ—देखो 'तोड़णौ, तोड़बौ' (रू.भे.) उ०—निनाद वंध अध के टुकध त्रोटते नदें। महांन लंठ संठ के कुकंठ घोटते मदें।
—ऊ.का.

त्रोटयोड़ौ—देखो 'तोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० त्रोटियोड़ी)

त्रोटी—देखो 'टोटी' (रू.भे.) (व स.) उ०—जउ तंइ सोनार नइं जसद घड़िवा दियउ, तउ तूं मांगइ किम कनक त्रोटी।—स.कु.

त्रोटौ—देखो 'टोटौ' (रू.भे.) उ०—१ ईसर इमि आखियौ मुकंद मोटौ अति मोटौ। अनंत पार अपार त्रिविध त्रोटौ नह त्रोटौ।—पी.ग्रं.

उ०—२ भाखि सतोगुण भलौ खरौ कोई कहिजै खोटौ। त्रिविध तणी विच तीन त्रिविध तांमस गुण त्रोटौ।—पी.ग्रं.

त्रोड़णौ, त्रोड़बौ—देखो 'तोड़णौ, तोड़बौ' (रू.भे.)

त्रोड़ियोड़ौ—देखो 'तोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० त्रोड़ियोड़ी)

त्रोडणौ, त्रोडबौ—देखो 'तोड़णौ, तोड़बौ' (रू.भे.)

उ०—१ बडौ जस खाटियौ संगठ दांणव वहै। त्रिणावत त्रोडियौ कंस आघौ कहै।—पी.ग्रं.

उ०—२ तातै अति लोही तणां, वहिसै वाहिळिया। तिमि काळींगा त्रोडिया, जिमि दळिया डाहुळिया।—पी.ग्रं.

त्रोडियोड़ौ—देखो 'तोड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० त्रोडियोड़ी)

त्रोण-सं०पु० [सं०] तरकश।

त्र्यंबक—देखो 'त्रंबक' (रू.भे.)

त्र्यंबकसख-सं०पु० [सं०] महादेव।

त्र्यंबका-सं०स्त्री० [सं०] दुर्गा, देवी, शक्ति।

त्र्यंबाट—देखो 'त्रंबाट' (रू.भे.) उ०—कळह अवियाट घन सूर माहव काळ, वाजतां त्र्यंबाटां सत्रां रा फाटै वाका। घूण जे दुरंग फौजां लड़ंग हिक घकां, असुर री धरा मझ पड़ै नत ऊदकां।

—रावत सारंगदेव (द्वितीय) कांनोड़ री गीत

त्र्यम्रतयोग-सं०पु० [सं० त्र्यमृतयोग] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो कुछ विशिष्ट तिथियों, नक्षत्रों और वारों के संयोग से होता है।

त्र्यांणूं—देखो 'तेरांणू' (रू.भे.) (उ.र.)

त्र्यासी—देखो 'तंइयासी' (रू.भे.) (उ.र.)

त्र्यूखण, त्र्यूसण-सं०पु० [सं० त्र्यूषण] १ सोंठ, पीपल और मिर्च का समूह, त्रिकूटा. २ चरक के अनुसार एक प्रकार का घृत जो इन ओषधियों के मेल से बनाया जाता है।

त्वंतरात- । उ०—अविद्ध मोती तणा चउक पूरिया, परवाळां तणा नंदावस्त्र रचिया, त्वंतरात रा पुस्पप्रकर भरिआ।—व.स.

त्वक, त्वग, त्वचा-सं०स्त्री० [सं० त्वच्, त्वचा] चर्म, चमड़ा, त्वक्।

उ०—अन्न उदक पय परिहरि, आभरणां ऊवेखि। वकुळ त्वचा वींटि-करि, तरुणी तापस वेखि।—मा.कां.प्र.

त्वरित-वि० [सं०] तुरन्त, शीघ्र। उ०—रहै जाकी रोकी त्वरित त्रय-लोकी तथ तरै।—ऊ.का.

त्वस्टा-सं०पु० [सं० त्वष्टा] एक महा ग्रह जो बिना पर्व के ही सूर्य-चन्द्र पर ग्रहण करता है जिसे विश्व पर विपत्तिसूचक माना जाता है।

त्वां, त्वौ-सर्व०— तुम, तुमको। उ०—भ्रित जोग जीत द्रढ़ जोग मय। त्वां नमांमी गोरख गुरू।—पा.प्र.

त्हारौ-सर्व०—तेरा। उ०—सेवग त्हारा, 'लखा' समोभ्रम, अधिपति बीजां थया अकूप। रह किम करै अवर नदि रावळ, रेवा नदी तणा गज रूप।—ईसरदास बारहठ